



राजवादी

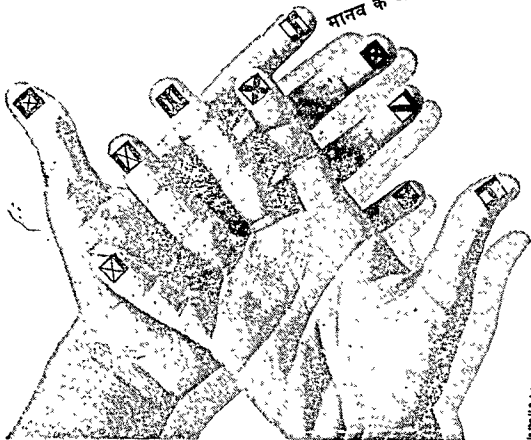
सर्व सेवा अधिका... १९४२
मई दिवसी, नौमस...



गांधी कार्य की गांधी को रिपोर्ट

मनुष्य के दस पुराने सेवक-श्रंक

मानव के अभियान



भारत की संसार को सबसे उपयोगी देन

बहुत पहले मनुष्य पाथरी का आधार बना कर अपनी बीड़े गिना करता था। बीड़े बीड़े इतने हुए की मनुषियों का सहारा नेबर गिनना शुरू किया, लेकिन इत तरह बहु कम में आगे नहीं गिन सकता था।

भारत ने ही सबसे पहले दस बिड़ों द्वारा मनुष्य की गिनना सिखाया और इस प्रकार दस अंशियों द्वारा गिनने के कथन में प्रथम कर दिया। मानवता को भारत द्वारा दिये गए उपहारों में सबसे मूल्य लेकिन बहुत ही अतमील उपहार है—गण्य का बिन्दु गण्य के प्रयोग में गिनती के क्षेत्र में एक क्रांति पैदा कर दी।

वे दस अंकों के बिहु पुजा के काम में लाए जाने जाने गण-गण्ड के बोधोद प्रसार से लिए गए हैं, हर बिहु का मूल्य अक में उसके स्थान पर निर्भर करता है। इन बिहुओं द्वारा सब कुछ गिना जा सकता था।

वे अक सफ़ाट अशोक के युग (२७३-२३२ ई० पू०) में शुरू प्रचलित थे। इसके एक हूबर मान बाद मोहम्मद इब्न-ए-यूसुफ अलक़ारख़मी ने बरदाद में इसका प्रचार किया। अरबों के यहाँ प्रयोग में रहने के बाद ये अक योरीय पुहुये, गिनती को सरा और आसान बनाकर इन बिहुओं में अतिगण्ड को भी गिन जमा।

इसके साथ ही मनुष्य अपनी विभिन्न जरूरतों के अनुसार अकी और गणित की दूसरी समस्याएँ सुलभने के लिए नए-नए माथनों की खोज भी करता रहा।

आधुनिक युग के प्रगतिशील धारणों में

कंप्यूटर ने हमको इन बोध बना दिया है कि हय गिनती और अंशों के बडिन के कठिन प्रणों को आग भर में हल कर सकते हैं। इन तरह जीवन की उन समस्याओं को हल करना सम्भव हो गया जिनका पहले कोई हल नहीं था।

भारत में बने आई बी एम कंप्यूटर देण की विकास-गति को सार्को-करोड़ों युवा बड़ाने में साहायक हो रहे हैं।

मानव-बानि को और अधिक बढ़ाने के लिए आज जीवन के हर क्षेत्र में — व्यापि के हर काम में मनुष्य कंप्यूटर का उपयोग कर रहा है।



mcn120778 IBM World Trade Corporation (Incorporated in the U.S.A.)

IBM

सम्पादक : रामभूति, भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाय जोशी

इस विशेषांक में

सम्पादकीय : भवानी प्रसाद मिश्र
न बुझने वाला प्रकाश . देवेन्द्र कुमार गुप्त
अद्वैतिक धर्मन सचिव बनना चाहिए . सांगेनकर बहुगुणा
समष्टि लोचनकिर्ति का धाराहिन . राष्ट्रीय परिषद का निवेदन
दुस्वीयिण यानी मानव-मजदूर सम्बन्धों में शान्ति . जयप्रकाश नारायण
महाजनो का राष्ट्रीय विभाग या है . निनीब
वेस्ट कन्ट्रोल . प्रयोग दुस्वीयिण का
उपवास दान . विनांग
श्रुति किनोबा का योगदान . कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा

सोम्ये हुए गांव जाग रहे हैं . ठाकुरदास बग
जमीन से धानमान में छाते हुए सुपट्टर . धमोत बग
जवहार में रोने गये छाते के बीच . बाबुराव कान्दावार
गोमिन्दुर . प्राम्मराज्य का गीत गोविन्द . धमोत बग
एक बदन पीछे, सा छाया छाये . विपुलसिंह शरण्य
भोपांड्यो की रात पर विजय पून . सुन्दरताय बहुगुणा
राजस्थान में सत्तामठ बन रहा है . किताकर
हृदिगुणा में भी सरादन्दरी . राधाकृष्ण बजाज
धीर को दन्ता . धीर भादमी को दन्ता छोड़ना होगा . निर्मला देशपाण्डे
जेट युग में पदधाना . मरणा बहन
सर्वोदय पाठ पुस्तक बनाना है
ग्रामराज में बनने नये मानवीय, सामाजिक धीर धार्मिक सम्बन्ध . धवधप्रसाद
समर्पित बागी बना कर रहें ?
सर्व सम्पत्ति ही मर चुका है . योगेनकर बहुगुणा

१६, राजपाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

संपादकीय

गांधी ही एक विकल्प बचा है

इस समय को राज्य पद्धति का हृदय है, निरुद्ध ही नहीं उनके द्वारा शासित या धनुसा-गिन सर्वसाधारण के मन में भी धर्मनिष्ठिज हो चुकी हैं। एए पद्धति पूजीवादी, प्रबन्ध-संघीय-राज्य की है और दूसरी पद्धति अधि-नायकवादी शासन की है। बंते जहां अधि-नायकवादी शासन-मंडा हृदय है वहां दावा यह किया जाता है कि पूजीवादी, प्रजातन्त्रीय, अनेक-दलीय सघटीय-शासन से अधिनायक-वादी एए-दलीय शासन अधिनायकवादी है

ये उभे प्रजातन्त्र ही मही गणतन्त्र बहने हैं और यह कहते हुए उनका अधिप्रयाय यह होता है कि ऐसी व्यवस्था में शासन-तन्त्र उनकी इच्छा के अनुसार चलता है जो वास्तव में समाज का सबसे अधिच जबरन-मर घटक-बर्ग है, सर्व-प्रकारी की राज्य-पद्धति में प्रजा कहिए, जाना कहिए या सर्वसाधारण ध्यक्ति कहिए, सर्वसा उपेक्षित है।

इन दोनों ही पद्धतियों का समार-मर की प्रजा नहीं बरग सुतकर तो बही ज्यादा सुन-

बर विरोध कर रही है, और इसका कारण यह है कि ये दोनों ही पद्धतियां किसी भी धर्म में प्रजातान्त्रिक या, गणतान्त्रिक न होकर प्रलय प्रलय दंग से ही बर्ग न हों, पूजीवादी और उपनिवेशवादी हैं। पृथ्वी के सारे महादीप बही प्रलय तो बही प्रमत्त्य रूप से इन दो प्रकारों के शासनतन्त्रों के विकल्प ही जबरन धाकर लते-मते दिन काट रहे हैं।

सबसे अधिच भयावक और भीषण वात तो इनके द्वारा किया जाने वाला बहु-वित-नया और धावधक उत्पादन है जिसे वे समस्त

१
५
५
७
६
१३
१५
१७
१८
२०
२५
३१
५१
५६
५८
६३
६४
६५
६८
७३
७७



Digitized by www.srujanika@gmail.com

संसार के लोगों पर सादते चले जा रहे हैं और संसार भर के लोग जिसके बोझ से दब-कर नित्य अधिकाधिक सत्वहीन और असमर्थ होकर भी उसे आवश्यक ही नहीं अनिवार्य तक महसूस करने लगे हैं।

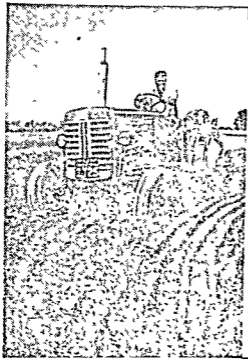
भावश्यक वस्तुओं का उत्पादन समाज-वादी और अ-समाजवादी दोनों प्रकार के देशों को एक-दूसरे से बाजार छिनाने की स्पर्धा में झलता रहता है। समाजवादी देश अनावश्यक वस्तुएं दूसरे देशों में ही बेचना चाहते हैं, अ-समाजवादी देश इस मामले में अपने देश और दूसरे देशों में अन्तर नहीं करते क्योंकि उनकी यह 'अनावश्यक-वस्तु-उत्पादन-क्षमता' समाजवादी देशों से बड़ी अधिक है। वे बाहर के लोगों के साथ-साथ अपने यहां के लोगों को भी निरर्थक वस्तु-बाहुल्य की चांद लगाकर उनका शोषण करते रहने में प्रवृत्त समर्थ हो गये हैं। समाजवादी देश अपने यहाँ के सामान्य लोगों को जहाँ तक बने नितान्त आवश्यक वस्तुएं ही देना चाहते हैं। जिन चीजों को ऐसे प्राराम के अन्तर्गत लिया जा सकता है, वैसी चीजें वे अपने देशवासियों के लिए नहीं बनाते, उन्हें तो आवश्यक चीजें भी सीमित रूप में ही देती जाती है—जैसे वहाँ प्रति व्यक्ति कपड़े आदि का प्रमाण तय है, बिन्तु वे इस प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में बाहर के बाजार हृदयाने के विचार से स्पर्धा करते

हैं और जब उनके देशवासी पूँजीवादी देशों के निवासियों को अधिक धाराम से रहते देखते हैं तो वे उसी रहन-सहन को मन में सजोने लगते हैं, वे उसे आदर्श रहन-सहन मानने लगते हैं। समाजवादी देश अपने देश में ऐसी रहन-सहन की इच्छा करने वाले व्यक्ति को प्रतिक्रियावादी बहते हैं और इस प्रकार के प्रतिक्रियावाद की मलामत भी भली-प्रकार से की जाती है। फिर भी आज निश्चय ही परिस्थिति यही है कि कोई देश उद्योगधंधों की दृष्टि से विवक्षित हो, चाहे अधिकसित, राज्य-पद्धति की दृष्टि से पूँजीवादी हो चाहे, समाजवादी उसकी रहन-सहन का आदर्श पूँजीवादी देश और उनमें से भी अमेरिका के द्वारा निश्चय हो, चाहे अनावश्यक वस्तुओं का निर्माण करके उन्हें अपने देश और देश के बाहर के लोगों को बेचता है।

अमेरिका की इस शक्ति को एक छोटे अमेरिका और अन्य पूँजीवादी देश अक्षुण्ण रक्षना चाहते हैं और दूसरी ओर समाजवादी देश उसकी इस शक्ति को तोड़ना चाहते हैं, इसलिए परस्पर शस्त्र-निर्माण में द्रामे बढ़ने की स्पर्धा भी चलती है और अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों को शस्त्रों से यथासम्भव अधिकधिक लक्ष्य करने के लिए जोड़-तोड़ भी चलती रहनी है। समाजवादी देश तर्क पेश करते हैं कि पूँजीवादी और उपनिवेशवादी देशों की शक्ति

अभाव और अभाव्य न हो जाये इसलिए अपने उद्देश्य की ओर पूरी गति से जाने प्रयत्न करने के बदले शस्त्र-उत्पादन में जुट पड़ना है और पूँजीवादी देश 'साम्यवा प्रभाव क्षेत्र को सीमित' रखने की आवश्यकता को प्रस्तुत करके अपनी बेतहाशा शस्त्र-निर्माण स्पर्धा का समर्थन करते हैं। इस तरह विधा की हद तक पूँजीवादी या समाजवादी पद्धति के अनुसार चलने वाले देश चाहे जितने भिन्न-भिन्न न हों वे जीवन एक ही प्रकार का अपनाये हुए हैं। कुछ दिनों पहले तक लोगों में भ्रुताने के लिए सहस्रसित्य का नारा लगाया रहा था, अब सत्वमसुल्ला यह वांछित हो रही है कि अधिकसित और विवासिद्ध देशों को ये दोनों प्रकार के शासन मिलजुल कर बनें न चूँ—रूस और अमेरिका, चीन और अमेरिका ने एक-दूसरे की ओर जो भाई-चारा जाहिर किया है, वह खुद उनके देशों की ग्राम जनता और विरोधियों पर अपेक्षाकृत पिछड़े देशों की जनता के द्वारा सदेह की दृष्टि से देखा गया है।

सर्वसामान्य आदर्शों के प्रति दोनों ही प्रकार के शासन-दलों का एव-सा व्यवहार सर्वसामान्य आदर्शों की बहुत दिनों से गढ़ने लगा है—वह बड़ी बहुत गहरे में भावजुद वस्तु-बाहुल्य या पर्याप्त वस्तुगत सुविधाओं के दोनों ही जगह बेचनी का आश्वासन कर रहा है।



अगर आपने पूँजी चाहे तो आप:

- विचरि-पद्धति का आधुनिकीकरण कर सकें
- सामाजिक शांति और सुखी स्थिति के बीच ला सकें
- लेगी बाड़ी की पद्धति में हैक्टर, ऑटो कारित हल (ट्रैक्टर) व अन्य आधुनिकताम उपकरणों का समावेश करके एक आधुनिक बना सकें
- लेगी बाड़ी के रूप का विस्तार करके विश्व स्थिति का काम लेगी लेगी प्राणी, मुर्गी पालन, उत्पादन-विकास का सफल पथ बन सकें
- ग्रीष्म, शरद का जीवन (सर्कट बाड़ी) आदि अन्य विविध सुविधाएं व अन्य विविध सर्वोत्तम सेवाएं लेगी लेगी, शालायात आदि विकसित कर सकें

**आपके स्वतंत्रों की
पैदावार
बढ़ाने में**



मदद के लिए
डॉ. ऑफ़ इन्डिया
सदा तत्पर है

RAAS-1527104

के सोचने-समझने वाले लोग मन की यह
 नी घबड़ाहट के सिद्धांतों, प्रकृति के
 रूप, मने-मने रोगों के फंसाव, शत्रुओं की
 तात्कालिक के नाम पर दुःखी-दुःखजर्जरी की
 रूप फैली व्यापकता को विषय बनाकर
 हैं, भास्वतानों, बहानियों, उपवासों,
 नेत्राओं तथा अन्य उपयोगी धोर नेत्र
 न करने वाले भास्वतों से बचक करते
 रहे हैं। प्रौद्योगिकीकरण धोर उसके छोटे-
 से परिणामों से लगाकर सबसे बड़े प्रति-
 के बाद से विरोध में विद्यते गह्रा-
 या या माना नहीं गया है। मगर साधारण
 ने इन विरोध प्रचारों को अभी स्वयं
 देकर तो अभी 'शक्ति' धारिका
 में ही उच्चारण करके व्यर्थ कर देने के
 लक्ष्य भी लगभग साम्य ही साथ प्रारंभ कर
 लिये हैं। साधारण धारणी धोर 'वैज्ञानिकी',
 इ इतिहास बार-बार संदेश में प्रयोजने हैं।

ऐसे संदेश के प्रतिरिक्त अभी समाजों में
 त्दन्त-महान् की जो पहले से प्रथम मुविधा
 नहरी की जनता को मिल गई है धोर जब उसे
 यह मुविधा किसी क्षण में कम प्राप्त होती
 गयी है वह सहजसिद्ध होने के कारण विना
 लगी बहिनार के, कम से कम प्रजासत्तिय
 गो से तो हस्तागत प्रदर्शन धारिके वैसी
 मुविधा प्राप्त कर लेनी है। मजदूर धारिके
 वैसा बनना लेना है, छात्र, सिपाय, डाक्टर,
 इन्जीनियर यहाँ तक कि विमान-वातक
 विधा वैसापान समस्त किसी भी नीरहरीया
 धारिके को बनना की सीमा से बाहर का
 होता है, हस्तगत, प्रदर्शन धारिके करने है, बैचन
 बनना लेने है धोर उन चीजों को धारिकाधिक
 माना में पाकर प्रमत्त हो जाने हैं जो उन्हें
 कानि नहीं करने देती, युवाग बनार रहनी
 हैं। त्दन्त-महान् की धारणिक मुविधाओं की
 निम्ने विनयी धारिके साधन पर जानी है, वह
 मान का उनका मोहनाह हो जाता है।
 उनकी मुन्दर रहने, मोचने सम्भवे की मक्ति
 बनी जाती है। प्रजा के नागरिक का कुछ
 ऐसा ही हान हो गया है। उनके लेने प्राप्त
 मुविधाओं को छोडना जीवन के धानत्व से
 धरने को काटने की तरह बहिन हो गया है।
 मुविधाओं को नकारने की हिम्मत जीवन को
 मारने की हिम्मत का पर्यन्त हो गया है धोर
 कनइन्धन रूप देना है कि विज्ञानगीत धोर
 धारिके 'न' देना में बहाने से मुविधाएँ वैसा

नगरो में मुनम है, भीड़ बढ़ती बनी जा रही
 है। गांधी का बेहिचर धार बारसानों का
 मजदूर, बाजार धोर स्टेशन का मुसी, पत्थर
 लोडनेवाला, सड़क बनाने वाला, रिक्शा
 चलाने वाला या दफ्तर का सपरानी होकर
 जीने के विषे बेकार होकर शहरो में विधा
 बसा या रहा है—उन शहरो में जहा उसके
 रहने का ठिकाना नहीं है, खाने का ठिकाना
 नहीं है, सोचने का ठिकाना नहीं है। यह सब
 उसके पास मान में भी नहीं है धोर शहरो में
 की रोगी है—मगर शहरो में रात की बिजली
 है, चलते-फिरते सिनेमा के गीत हैं, धोर नहीं
 है धारिके बारण धारिके अंतरे दिन बट
 लेने की धारें। इनके सिवा शहरो में संगठित
 धारिके योजना बनाकर या केवल भीड़ में
 धारिके होकर किसी प्रकार का विद्युत कर
 पाने को एक युवाइम है जो धार को कुछ
 नहीं देती तो एए हारण, अतिव होने का
 प्रहसात धोर सफल हो जाने पर बड़ी हुई मज
 दूरी या बैचन दे जा सकती है।

प्रौद्योगिकीकरण जिनका बढता जायेगा
 तत्पश्चात विधासशील धोर धारिके विनय
 भी पथिक धोर पूर्व के विनयि देना, धरने
 रिक्शा, इंजिन, फास, इत्यादि, रुस जर्मनी या
 जापान की तरह धारिकाधिक मुविधाधारी होने
 विधिया न बहा के किसी पैठ पर दिखी म
 किसी पर के छद्मे या धन की मुडेर पर।
 गांधी धारण में इनी मुविधावार से बचने
 धोर स्वयं बने रहने का मार्ग है। वह जग
 में धार जो मान्य प्रकार दृष्ट है उनका
 विरोधीता है। तसा उसे विनयुक्त नहीं
 चाहिए, या कमसे कम चाहिए। वह इसलिए
 केन्द्रीकरण के लिए विताक है, बाजार के
 विताक है, मुडा के विताक है, रेलगाडी के
 विताक है, बड़े-बड़े बारसानों के विताक है,
 बड़ी-बड़ी विनयी योजनाओं के विताक है,
 विनयण है, मिट्टी के लेन के विताक है धोर
 हार हरह धन्य शहरी में हिमा के विताक है,
 गोएण के विताक है, शहरो के विताक है,
 तत्पे धारों में धारों के विताक है
 धोर सच्चे धारों में धारिके सहयोग धोर
 धारिके सद्धारणा के पथ में है।

यही वह विचार है जो धार सवार-धर
 में दृष्ट हो प्रकार की धारण पद्धतियों को
 मूलभूतान धूरता धोर धारणा से धारणी को

बचासना है। प्रश्न है कि यह विकल्प हृद
 पद्धतियों को हस्तागत किन उरूह। गांधी 'हिंद
 स्वराज्य' में विनयी 'स्वराज्य शासन' में
 रक्षित 'धन दृष्टि साधन' में ईना 'धारिके
 प्रचरण' में धोर विभिन्न धारों के महापुर
 धोर तान धरने-धरने धगत से इस विकल्प को
 लागू करने के उपाय गुमा चुके हैं। इन उपायों
 को ज्यादातर लोग धारसंबंधी धोर धारणा-
 हारिके बहने धारें है, किन्तु धन यह रोज-
 रोज स्वच्छ होता जा रहा है कि यथायं धोर
 धारदर में ऐसा विरोध नहीं है जसा भूड-भूड
 के धारसंबंधी सम्भारते रहे हैं। बनि धारदर
 ही सच्चा धारण है। जिसे चतुर लोग धारण
 बह कर मान्यमानि को भूड से समझना
 करते हुए जीने पर बाध्य करते बने धार रहे
 हैं, वह एए प्रबन्धना है, जान है, धारिके धोर
 पथिके होने से लिए विधिया गया गोरसंधना
 है। जिने मुविधाधी धोर धारणधारिता
 बहा जाना है, वह धारिके धारणी धारणी
 करनी के धारन के सिवा क्या है। जो व्यक्ति
 या समाज या राज बधनी धोर करनी में
 जिनका बडा धर साध सक्ता है वह उक्त
 युवाग माना जाता है। शासन, राजनीति-
 व्यापारी सबको चतुर्धर का धरम उनकी
 बधनी धोर करनी के धारन में माया जाता
 है। इस प्रकार धारण को धारण धोर धारण
 की धारदर बहा जाना है। इन दोनों में धारण
 सारत है। इन धारण को स्वीकारना धारी-
 बनना, धरणातना उन देना के लिए बहुत
 बहिन है जो प्रौद्योगिकीकरण के सारत की तग-
 भय धारिके मजिन तक या पहुंचे हैं, जिन्होंने
 धरणा सब कुछ धरणातना, सारके, उपरकी
 धोर इनसे भी धारणतन सारणी को पाने की
 धुन में दाब पर बना दिया है। इसे तो वे ही
 धरणा सक्ते हैं जो धारी 'पिछड़े' हुए हैं।
 उनसे लिए धारणी धारणा का धारणा धोर
 धार को धारणने के विधान का धारणधरन
 सयोग साधना मुनम है। वैविज्ञान का रध-
 नायक धोरों में विरंकीधर धारिके धारणा का
 सारणीय उपयोग धरके विचार धोर धारण
 की धरता को एवजम सहन धगत से हस्तगत
 करने दिया सक्ते हैं धोर सारी धारणा में इस
 सधरणा का सक्ने धारिके धारण भारत के
 लिए मुनम है।

—भयानी प्रसाद मिश्र

→
 मूलधारा से कि स्वयं में कृष्णधर्म के बार माधर्म के मुद्रा प्रकटागिता इत्यं प्रकाशित हुए है, किन्तु पत्र मयता वि कि जीवन के धारित्री दिनों मे माधर्म धोर उन्मये पतने के माधर्म मे कोई समानता नहीं है। उनका महत्व या कि धारण एक स्थावर या, विन्तक या धोर विचार के क्षेत्र मे महत्व धारित्री वाली पोरणता का है। उन्होंने हाल मे प्रकाशित माधर्म की पुस्तक 'वेन्डरी' का उन्मये किया, किन्तु धारण पर कहा जा सपना है कि जीवन की परिपक्वतायका मे माधर्म गांधी-तरक के क्षेत्र पर प्रद्वंभ गये।

जहाँ पट्टी बार इय परिपद के मंच से गांधी-माधर्म मे गमान धर्मो (साधन की बात को धनय रगते हुए चिन्तन की दृष्टि से) का तथ्य प्रमाणों द्वारा एक भास्त्रविद् के मुद्र मे प्रवट हुआ वहा गांधी धोर नेहरू की पारस्परिक मंधारिक दूरी की भी गुणवर चर्चा हुई। इय चर्चा का महत्व कोई सामग्रीय दृष्टि से ही नहीं है किन्तु गांधी धोर नेहरू के पंच भी यदि स्पष्ट तीर पर समझ लिया जाये तो स्पष्ट जीवन दृष्टि के धारण मे जो दिग्ध्रानि देग मे पंजी है, वह दिग्ध्रानि ही सजती है। हय रिम तरह का समाज भारत मे बनना चाहते हैं—यही तय नहीं हो पाया है। इय निर्णय को लेने की धारणयकता पर स्पष्टक के श्री इरिडि धोर श्री कृष्णानं मे ध्यात धारणिय किया।

गांधी बनाम नेहरू का प्रयन परिपद की चर्चाओं मे प्रारम्भ मे धारणय वृत्तानती मे उठाया, उनका मानना रहा कि जवाहरलाल मे महात्मा को कभी टीरा से समझा ही नहीं। उन्होंने स्वराज्य के उपराजल मे गांधी धोर नेहरू के बीच हुए उय पत्र व्यवहार का भी उन्मये किया किन्तु मे गांधी ने नेहरू को अपना दृष्टिकोण समझाने का प्रयत्न किया है। इय तथ्य की धोर धारिक स्पष्ट रूप से बर्झ के मुद्रादिध वजीत श्री पारडीडाला मे, जो १६३५ से गारिक राजनीति मे रहे हैं, उन्मये किया। उनका मानना या कि नेहरू मे गांधी को धरने सजाये के लिए 'एकमलायट' किया उनका दिग्ध्रानि की तरफ था। नेहरू का गांधी मे विश्वास नहीं था। फिर भी गांधी मे बंधे उनको धरना उतराधिकारी माना मह मेरी

गामध मे नहीं घाता। स्वराज्य के बार गांधी को विदा दे दी गयी धोर महत्तनयोग को तया पयिन प्रगतिशील योजनाएं चलीं। उनका दुद्र मन या कि गांधी धोर नेहरू के बीच का पंच जब तक हाफ तीर से नहीं समझ लिया जाता तब तक हमारा देग किसी निश्चिन दिशा मे धरगे नहीं बड सपना है।

सर्वोप बतान राजनीति:—धारण से धरये एक गज्जन का गुभाय वा कि सर्वोप के सोंगों को सर्वोप धारण से पानियामेटरी बोष्टे बना कर चुनाव लडना चाहिए धोर सत्ता पर बज्जा करके देग को गांधी मूचित माधर्म की तरफ मोडना चाहिए। उनकी सलाह के विपरीत नागपुर टाईम के गम्पादक व मुद्रिपट्ट लेखक श्री नेवडे का विचार था कि २५ गाल तक सर्वोप के सोंगों की पसमुक्त भूमिका ही उनकी सबसे बडी पूजी है। श्री कृष्णानन का भी मंत्र था कि देग मे इय समय ग्यारह पाटिया है एक पाटी धोर बना लेने से किस तरह समस्या का हल हो पायेगा? धरतली बान गतिक की संरक्षण की है। गांधी दृष्ट परिचलन करने की शक्ति रखता था इय लिए सोग उसकी बान मुनते थे। उनकी राय मे इय संरक्षण को प्राप्त करने का तरीका उन २० बरोडयोगों को, जो वरिद्धता की देग से नीचे जीवन विना रहे हैं, संगठित करके चुनौती सडी कर देना है। श्री वृष्णाली की सलाह थी कि विधान समामो या सयद मे जाना धारणयक नहीं है, परन्तु सरकार नियुक्त भी नहीं होना चाहिए। यही गांधी माधर्म है। उये धरय धाप छोड़ते हैं तो समभना चाहिए कि धारणों कोई दूसरी फिनासफी मिले। है।

तात्कालिक समस्याओं धोर मूलगांधी परिचलन—जैसा कि प्रारम्भ मे ही कहा जा चुका है कि इय परिपद का धारणयत देग की वर्तमान चिन्तानजक स्थिति के सन्दर्भ मे ही हुआ। धरत तक सर्वोप धारणयता तात्कालिक समस्याओं को यह मह कर डालते रहे हैं कि 'तात्कालिक धोर दूरगामी' इय तरह का भेद राजनीतिक वृद्धि का त.र.ए. है। तात्कालिक समस्याएं' तबसे समय से कभी धा इन्ही दृष्टिक समाज रचना के सधए है धन: छोटी-मोटी समस्याओं के समाधान मे धरणी शक्ति न सपाकर धामुलाय परिचलन के लिए प्रयत्न

करना चाहिए। इय परिपद मे भी निर्मला देगपाण्टे धोर डा० दया निधि पटनायक ने इय धरणधारण की तात्किक धोर जोगीने स्वर मे प्रस्तुत किया। उनका मन था कि विनोवा का धारणस्वराज्य का धारणयक ही समस्याओं का धारणयक मे समाधान है। इरानि धरयवरा की जहाँ हिल रही हैं धोर इय समय एक प्र.तिवारी चिन्तन की धारणयता है।

व्यस्त, प्रस्त, प्रस्त धोर सुस्त:—परिपद का बितन धरुदा ही रह जाता यदि उसको विनोवा का सधर्म नहीं होता, दरतिए १६ की सुवट सभी लोग धाम नदी के विनारे छोटी सी टेकड़ी पर स्थित पवनार धारणय मे गये। पहाे दिन की चर्चाओं का सार विनोवा के पहाे पहले ही पट्टुधामो वा चुका था। उसी प्रकार मे उन्होंने धरणा विचार प्रस्तुत किया उन्होंने कहा

"गामन शक्ति पर धंठुका रहे मह दादा वृष्णाली का वटना है। इय बात को ये पहले भी बर्झ बार हमे बह चुके हैं। बादशाहयान भी यह कहते रहे हैं। इतनी कामनयस की बात भी बाबा के ध्यान मे धरत कर्णो नहीं धरई? धाराजी के बार गांधीजी के बर्झ साधी गामन मे व्यस्त हो गये। दूसरे मस्तर से प्रस्त हो गये, रचनायक साधियों की हिम्मत प्रस्त हो गयी धोर जनता मुक्त थी। बाबा मे सोचा कि प्रस्त लोगों की हिम्मत कैसे बडे धोर सुस्त जनता कंठे जगे? इसके लिए धरिण कामता हाय मे दिया। एशिया की मुद्रिण समस्था भूमि का सवाल है। १० लाख एवड जमीन बर्ण मुद्राधरने के प्रेमपूर्वक बडी, मंडिक मुहूर्त्तों को मानने वाले ४-५ हजार धारणयता घडे हो गये, धरत. धारण-गतिक के बजाय हमे खुद ही शक्ति सधित करनी चाहिए।"

सत्याग्रह के सम्बन्ध मे विनोवा मे महा-धोर की सधर्मों या धनेकालयड की धार दिखाने हुए कहा कि, इन्दिरा के पास भी एय सत्य है धोर मेरे पास भी एक सत्य है। कुल का कुल सत्य किसी एय के पास है यह मानना गलत है। सत्य का बंधनारा हो गया है। सत्य का धारण करके हय सधे हो जाते हैं धोर उपायधे, वहा तक कि हत्याग्रह कर बँडते हैं दरतिए धरिण के समक को, धधोभवृत्ति भी इन्तिमे धारणयकता है।"

विनोवा के समाधानो से बितने जिआमु बितको को समाधान हुआ होना कह नहीं सकते।
 योगेश धरड बहुगुणा

(देश की वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने के लिए सब सेवासंघ ने १८, १९ और २० सितम्बर को सेवासंघ में एक राष्ट्रीय परिषद बुलाई थी। परिषद में तीन दिनों तक समाजसेवकों, राजनीतियों, धर्मशास्त्रियों, शिक्षाविदों और पत्रकारों ने विचार-विमर्श किया, परिस्थिति का विश्लेषण किया और उसके हल के लिए सामूहिक कार्यवाही का एक कार्यक्रम बनाया। परिषद ने देश के सामने जो निवेदन रखा है उसे हम भविकल रूप से दे रहे हैं।—सम्पादक)

संगठित लोकशक्ति का आवाहन

देश की वर्तमान परिस्थिति के बारे में कई विचारधाराएँ सोप बिलित हैं। परिषद ने इस विषय पर गभीरता से विचार किया। परिषद की राय में आज जो परिस्थिति बनी है वह निम्नी इतनी-दुखी घटना वा नहीं बलिष वषों के इतिहास का परिणाम है।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद के हमारे इतिहास में कई ऐसे तत्व हैं, जिनसे गौरव वा अनुभव प्राप्त जा सकता है और कई ऐसे हैं जो निरा के विषय हैं।

जहाँ पत्र में रिवाजों का जिलीनीकरण, कई बहिष्कारों के बावजूद देश में सौजन्य की स्थापना तथा कई अराजकों के बावजूद उनका टिके रहना, मत्त और मरचा की होड़ में लगे हुए विद्रो में राष्ट्र की तटस्थ व शान्ति-सिद्धि नीति, सचद्वारा नीति, परिस्थितियों में देश की जनता में एकात्मता का दर्शन, बालना देश की स्थापना के किलगिने में हमारी दूरदमिलपूर्ण नीति, और देश उग्रतादीय में हमारी शान्ति की ओर बढाना गया बरस धर्मो ह्रास वा मारन-मार सम्भोग है। भूदान-सामदान आन्दोलन द्वारा देश की एक मुक्तक समरथा के हल के लिए जनता की सक्रिय शक्ति वा सक्रियक आगुल हुआ है। अजय-घाटी में सिकंदर आगुलों के धाममयंत्रण ने यह विद्व किया है कि हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया में जितनी महान सभावनाएँ हैं।

रार्च के खाते में

दुनरी और देश की गरीबी धर्मो ज्यो-की-ज्यो बनी हुई है। बेरोजगारी बढ़ी है, बस्तुओं के निरन्तर बढ़ते भावों ने सामान्य लोगों का जीवन बरीक-बरीक धमधम कर दिया है। हमारी विद्या पण्डित धर्म की

दविवागुल और जीवन-विमुख रही है। सरकारी कर्मचारी, पूर्वीपति, व्यापारी और राजनेताओं में अष्टाचार बढ रहा है तथा जनता भी इस अष्टाचार की नाचार सह्यगामी हो रही है। जनता अपने प्रश्नों को हल करने के लिए नाचारी ने सामन वा मूह ताकती है वा छुटपुट रिगा का प्राशय लेनी है, सामन धाते दिन युक्तिम और केना वा उपयोग करता है, हरिजन, धादिजामी तथा अन्य दलित एव पीडित जनता वा मोपण एव दमन करने वाली समाज व्यवस्था धर्म भी बाधन है जो बीच-बीच में धीमल धराधारों के रूप में प्रकट होनी रहती है, देश के नेता और विद्वान अपने विचार एव धारण के द्वारा स्वयं और सेवा वा नमुना बनने के बजाय स्वार्थ-साधन में लगे नजर भाते हैं।

अन्तिम आदमों का अन्त

'गरीबी हटाओ' का नारा यद्यपि एक सही विद्या वा संकेत करता है और उसने गरीबी और विषमता के बारे में लोगों की जागृत कर दिया है, पर देश की योजना पर उसका असर हुआ जान नहीं पड़ता। देश के करोड़ों बेकार वा धर्म-वेतारों की राय की गारटी के लिए जरूरी चरण देने वा उनके उपयोग की आवश्यक बस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने के लिए पाषवी योजना की उपरेखा में ध्यान नहीं दिया गया है न उनके लिए धारणक वित्त नीति बनी है। विज्ञान और टेकनीकी वा उपयोग भी गरीबी हटाने के लिए नही बलिष बनमान धरवा की विव-दता ही बढाने के लिए ही रहा है। योजना में देश के अल्पिध आदमी की ओर वा हमारी विज्ञान धारक-कर्मि वा उपयोग करने की

धर्म ध्यान नहीं दिया गया है। धनधानों की सम्पत्ति-वृद्धि पर रोक लगाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन देश के विज्ञान विनम स्तर का हमारा साध नहीं पड़ता है, फलतः विषमता तीव्रतर हुई है।

देश में सचरायशास, जातिवाद और सधु-विन राष्ट्रवाद मिटना तो दूर रहा उनमें वृद्धि ही हुई है, हमारी स्वयं राजनीति में देश की समाज रचना की दिग्ग-विन करने वाले इन तत्वों की धनना साधन बनाकर इन्हे पुष्ट किया है। देश के सार्वजनिक जीवन में साधन-वृद्धि वा स्थान व रूपमें से धारो और नीतिगत गिरावट धाई है।

परिषद की राय में इस विषय परिस्थिति वा धुजावना करने वा उपाय बड़ी है जो गांधीजी ने अपने जीवन तथा दर्शन द्वारा देश के सामने प्रस्तुत किया था। सार्वजनिक धारादी से गांधीजी के जीवन धर्म वा एक अंग परिपूर्ण हुआ, लेकिन सडिगत सामत-साही, बढते हुए पूंजीवाद तथा पश्चिम के अधानुकरण के खिलाफ संधार करने-देश के सार्वजनिक, सामाजिक तथा नीतिक स्वतन्त्रता लाने का काम धर्मो धारी है।

सोसलिसम की स्थापना के धाते अल्पिध विचार में गांधीजी ने इस ओर इतारा दिया था। लोककर्मि को मुहट कर के ही इस विषय परिस्थिति वा धुजावना किया जा सकता है। जनता के व्यापक शिक्षण द्वारा, जिसे गांधीजी ने लोकसेवक संघ वाले धनने प्रस्ताव में 'मनदात-विशाल' वा नाम दिया था उसमें सार्वजनिक धेतता साधना, कोटि-कोटि जनता का सपठन करना तथा धन्याय एव धराधार का प्रनिवार करना लोककर्मि की मुहट करने के उपाय है।



न बुझने वाला प्रकाश

सर्वोदय क्षेत्र से आये प्रत्येक गांधी विचार से जुड़े हुए रचनात्मक और यौद्धिक जगत के लोगों ने इन बात की भूरि-भूरि प्रशंसा की कि सोनमणिक का जो आधार और दलगत तटस्थता का जो व्युत्पत्ति सर्वोदय के द्वारा प्रतिपादित हुआ है, वह एक बहुत ही उचित और प्राथमिक देने वाला बरदास साबित हुआ है। परन्तु साथ ही साथ तीन चार प्रकार की धाराएँ दिखी जिनमें निम्न क्षेत्रों में काम करने वाले लोग थे।

सर्व सेवा संघ का अर्द्ध वार्षिक प्रतिवेदन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। इस के पूर्व तीन दिन की एक राष्ट्रीय परिषद हुई। सर्व सेवा संघ, गांधी स्मारक निधि, तथा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वावधान में दो दिन राष्ट्रीय परिषद की और से रते गये सुभाष विचार के लिए थे।

इस प्रकार से यह बैठक उस ऐतिहासिक सम्मेलन के पच्चीस वर्ष बाद हो रही थी जो गांधीजी के देहावसान के बाद सेवाग्राम में हुई थी और जिस में देश के सभी गण्यमान्य नेताओं ने भाग लिया था। सन ४८ के उस सम्मेलन में पहली बार विनोबाजी ने सर्वोदय का उच्चार किया था और सभी सर्वोदय समाज की स्थापना भी हुई थी। उस समय लोक सेवक संघ के उस विचार पर भी, जिसे गांधीजी अपने निधन के पूर्व सामने रख चुके थे, चर्चा हुई थी। वहाँ गठित सर्वोदय समाज के आगामी सम्मेलन में सभी रचनात्मक संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोने के लिए सर्व सेवा संघ का निर्माण हुआ और वहीं सर्व सेवा संघ भूदान-ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आन्दोलनों का वाहक बन कर धीरे-धीरे एक व्यापक क्रान्तिकारी संस्था का स्वरूप लेता गया।

इन दिनों विनोबाजी, तीन वर्ष पहले के निर्णय के अनुसार अपने को पवनार स्थित ग्रामदान में ही सीमित रखे हुए हैं। इसलिए उनके साथ सलाह-मशविरा देने के विचार से होने वाली बैठकें अब सेवाग्राम और पवनार में ही रखी जाती हैं। इस सम्मेलन ने भी पवनार जाकर विनोबाजी की सलाह और उनके मार्गदर्शन का लाभ उठाया। उन्होंने विनोदपूर्वक कहा, "चरमा नाक पर रसा है लेकिन उसका भान न होने से उसकी तलाश में इधर उधर हाथ पैर मार रहे हैं। इसी प्रकार सर्व सेवा संघ का जो स्वरूप पिछले बीस वर्षों से बंधे वर्षों में निकला है वह स्वयं लोकसेवक संघ की गांधीजी की कल्पना का प्रतिरूप है, इसलिए लोकसेवक संघ की प्रलय से स्थापना अथवा तलाश की

आवश्यकता नहीं है"। उन्होंने बताया कि गांधीजी ने लोकसेवक संघ से जो यह अपेक्षा की थी कि वह व्यापक रूप से जनता की सेवा करे और अपने को दलगत तथा सत्ता की राजनीति से अलग रखे साथ ही देश की प्रजातान्त्रिक राजनीति पर निगाह रखते हुए इस पर अग्र्य प्रभाव डाले, सर्व सेवा संघ ने पूरी की है। उस दिशा में और बढ़ने के लिए सुभाषा कि गांध-गांध में जहाँ सेवा कार्य चल रहे हैं अग्र्य बातों के प्रतिरिक्त प्रजातन्त्र के विचार के बारे में भी लोगों को शिक्षित किया जाये तथा सत्ता को नैतिक दिशा देने की धोर बरें। बाबा के विश्लेषण के अनुसार गांधीकार्य का जो स्वरूप ग्रामस्वराज्य आन्दोलन के द्वारा निपटा है, वह इतनी व्यापकता प्राप्त कर चुका है कि उसकी सेवा सत्ता को प्रभावित कर सकती है।

निष्पत्ता, त्याग और सेवा के द्वारा जो साक्ष सर्वोदय ने कमाई है उसका पूरा भान होने नहीं है, वह होना चाहिए और लोकसेवकों को उसका वाहक बनना चाहिए तथा राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी अधिक गहराई से महसूस करने अपने काम को आगे बढ़ाना चाहिए। अधिवेशन में जिस नियम पर उस बात की जायी थी वह ताल्कालिक प्रश्नों से सम्बन्धित कार्यक्रमों पर जोर देना था। ग्रामस्वराज्य के लोकशिक्षण ग्रामदान और शान्ति सेना आदि विषयों के साथ उनकी पूरक का रूप देना चाहिए। अतएव अधिवेशन ने विनोबाजी की अनुमति प्राप्त करते हुए यह निर्णय लिया कि जिस-जिस क्षेत्र में सेना की शक्ति हमने अर्जित की है अर्थात् जहाँ व्यापक रूप में सर्वोदय का कार्य, ग्रामदान अथवा दूसरे नामों द्वारा हुआ, जिनमें सभी रचनात्मक कार्य शामिल हैं-उन क्षेत्रों में स्थानीय तात्कालिक समस्याओं के सम्बन्ध में भी हमें संकेत रहना चाहिए और लोकशक्ति द्वारा उन के प्राथमिक निराकरण की कोशिश करनी चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो दूरगामी व्यापक कार्यक्रम सर्वोदय ने लिये हैं, उनमें किसी तरह की कमी भा जाये।

१. जो लोग संस्थाओं के अन्तर्गत वाली ग्रामोद्योग, ग्रामसेवा, हरिजन सेवा, एवं विज्ञान, आदिवासी सेवा आदि विशिष्ट कार्य क्रमों में लगे हुए हैं।

२. वे जो भूदान, ग्रामदान का सर्वोदय गांध-गांध में पदयात्रा तथा अभियानों द्वारा गठित त्याग और धोर धम उठा कर संकल्प पूर्वक पड़ुचा रहे हैं।

३. तत्परो के कार्य करने वाले वे सभी जिन का बुद्धिवादी और राजनीतिज्ञों से निकट सम्बन्ध है और जिनकी चेतना (तान्कालिक) समस्याओं को लेकर व्यग्र हो उठती है।

४. वे मित्र जो सभी दिशा में अपनी शक्ति समय-समय पर लगाने रहते हैं और इसलिए एक प्रकार का यह अग्रमाधान महसूस करते हैं कि आन्दोलन कीई समग्र रूप धारण नहीं कर पा रहा है।

सम्मेलन की सूची रही कि इन सभी मित्रों ने अपने विचार पूरी मुक्तता से रखे और अन्त में एक सर्व सम्मन निर्णय पर आ गये। ४००-५०० भाई बहनों का यह सेवाग्राम अधिवेशन एक ऐतिहासिक मोड़ पर हुआ और यद्यपि उसमें नेतृत्व देने वाले हमारे ज्यादातर बुजुर्ग और प्रमुख साथी उपस्थित नहीं रहे तबे परन्तु इसमें से गण-सेवकत्व की दृष्टि निष्पन्न हुई। इसमें कोई शका नहीं है कि देश की अग्र्य विनी जमात के पास बर्ध और विचारशील, पूरे समय एक ही ज्येष्ठ से काम करने वाले इतने कार्यवर्ता नहीं है और न कोई अग्र्य सम्मेलन ऐसा हो अपना है जो इनकी मुक्तता और विभिन्न विचार सरित्तियों को साथ लेकर चले। सेवाग्राम का यही सर्वोदय है और यही उदक न बुझने वाला प्रकाश है।

अहिंसक शक्ति संचित करना चाहिए

सेवाग्राम में राष्ट्रीय परिषद

परिषद के लिए समाज-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में १५० लोगों को सामाजिक शिक्षा तथा वाचस्पत्यु उपस्थिति एवं विचारों से साधने व बढ सकी। राजनीतिक क्षेत्र से साधारण जे० बी० हृदयानी, एम०एम० जोशी, कृष्णराज के बलाका विचारविद्युत्वालो के कुछ शास्त्रज्ञ और असीरय के प्रमुख कार्यकर्ता मांग के आये। इतनी कम उपस्थिति क्यों रही इसका कोई एक कारण नहीं हो सकता, लेकिन अव्यवस्था नाराज्य, जो इस परिषद के आयोजन के प्रेरक रहे, की बहुमिथ्यति की सूचना भी एक कारण रहा है और उस अभाव को परिषद में पूरे समान अनुभव किया जाता रहा।

प्रारम्भ से पहले देना—परिषद की चर्चाओं का प्रारम्भ २६ वर्षीय साधारण जे० बी० हृदयानी ने किया। उनको शक थी कि विद्यार्थी २५ वर्षों में देश की राजनीतिक, साहित्य व नैतिक स्थिति में भारी परिवर्तन आये है। इसका कारण गांधी का विचारधारा है। इस चर्चापरिषद में एकमात्र कार्यकर्ताओं ने बहुत भले भावों से परन्तु जीवन के प्रति गांधी की जो समग्र दृष्टि थी उसको छोड़ देने के कारण देना की हानि में बर्बाद मुचक नही हुआ। गांधी का मानना था कि जीवन धन-मयुक्त भावों में विकसित नहीं है। वह परस्पर सम्बन्ध है। इसलिए पानी में जीवन के सभी क्षेत्रों का काम किया परन्तु गांधी ने जो के बाद हम धरना काम को करने से परन्तु राजनीति को छोड़ हमने ध्यान नहीं दिया। हमने ग की समग्रता को छोड़ और न देना की हानि मुचक।

साधारण का मत था कि इस सारी परिस्थिति को देखते हुए गांधी मुक्ति मार्ग सरदा-प्रदा का प्रतिपादन प्रतिपाद है। कुछ के अन्तर्गत जग गया करते ही लोगों की प्रारम्भिक बातचीत का मत है। हमने मार्गों को 'जा' करना नहीं किया, हमने परतना की जो कोई रास्ता नहीं दिया, बना जा रहा है कि देना के भी में सम्बन्ध नहीं है। परन्तु हमारे देश में हमेशा की है बहा। हमारे देश में जीवन नहीं अनुभव नहीं है।

गांधी की व्याख्या करते हुए जे० बी० ने कहा कि गांधी के दो प्रकार हैं—व्यक्तिगत अहिंसक और सामाजिक अहिंसक। व्यक्तिगत अहिंसक धर्म की प्रथा के उद्धार के लिए है और सामाजिक अहिंसक सामाजिक मुक्ति के लिए है। मैं अपनी प्रथा के उद्धार के उद्धार का पहले रचूंगा। २६ वर्ष के उम्र में इस तरह की दार्शनिक के अवगत देपर भावना लोगों की भावना में साधू लक्षणा था। अहिंसक प्रतिपादन के लिए साधारण शक्ति हमारे पास है क्या? इसका जवाब देते हुए साधारण हृदयानी ने कहा 'भारत देश के समय बर्बरता का बहुत बड़ा पापी के साथ नहीं था किमतीर भी गांधी ने कहा कि मैं धरना ही बनना। धरना ही शक्ति न होने का प्रमाण ही नहीं। हमें धरना से धरना सरकार का भी मुकामता बनना पड़ेगा, यथा-यथा शक का धर्म है।'

राजनीतिक दलों में नैतिक मानक — राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की धर्म-निष्ठा प्रविष्ट हो चुकी है। इस पर कृष्णराजजी ने पहले ही तीर्थ रूप में इलाज कर दिया था किमतीर भी एम० एम० जोशी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने स्वीकार किया कि सामान्य रूप में राजनीतिक प्रथाकार के मत साधू है किमतीर हम दूसरे धर्म वाले की उमंग मुक्त नहीं है। इस-बदल हो, चाहे चुनाव का मतों धन का उपयोग हो बह सत्ता-धन धन की तरह हम भी उपयोग में आते हैं। बाद में भी कृष्णराजजी ने भी यह स्वीकार किया कि हम सभी धरने लोगों में राजनीतिक प्रथाकार फैला हुआ है। श्री जोशी की इस स्वीकारोक्ति का मुझे मनो पर इसका पहला धर्म हुआ कि परिषद में भय सेन को छोड़ प्रेशनों में उनसे अनुभव भावना की मूत्र चर्चा रही।

राजनीति में वैधिता का स्तर ऊंचा रहे हमने लिए श्री श्रीमन्मारायदा का मुभाष या कि चुनावों में सम्मिलित होने के द्वारा जो सर्वे होना है उम्मा दिया प्रविष्ट किया

जाना साधारण है। उनकी राय थी कि सन् १९६० के बाद से चुनाव के लिए सम्मिलियों के पेश देने पर जो प्रतिबन्ध हुआ है उसके कारण धन का चुनावों में भारी उपयोग होने लगा है। दूसरी तरफ श्री मार० के० पाटिल इस कानून के प्रस्ताव थे, परन्तु उनका मत था कि चुनाव की प्रविष्टि वाली और मुक्त होनी चाहिए। लोकतंत्र में वोटर के वोट का महत्व निश्चित रूप से सिद्ध है। चुनाव हर ५ साल बार होते हैं। मत उनके मत में प्रथम या कि चुनावों के बीच के बाल में सरकार को बंधे नियमित रखा जाये? गांधी ने इस बारे में मतदाना विचारों की बात नहीं की। हमने वैसा नहीं किया। इस दो ही राते हैं—पहला उल्लास और दूसरा शासन करना प्रभव कर देना।

नेहरू, गांधी और मार०—मार० की विचारों ने कि बर्षों मार्गों की विचार साधना में सम्मिलित का जन्म हुआ। गांधी और मार० की विचारों में सम्मिलित आने रहे हैं। दूसरी ओर यह भी माने विद्यार्थी हैं कि गांधी ने स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू को अपना राजनीतिक उल्लासविचारों कोपित किया था। एन साधारण बार-बार उठनी रही है, विचार क्षेत्र लोगों की तरफ से कि भारत में भारतीय धर्म का सम्बन्ध ही था सत्ता है। मान्य चाहिए। जैसे कि श्री कृष्णराज का विचार था कि मार्गों की विचारों में मार्गों के रूप में धरना में प्रथा और रूप में विनिर्माण के रूप में। मार० ने हम सम्बन्धों की तथा रूप में यह सभी तब नहीं ही पाया। परन्तु देश के उन लोगों के जो सम्बन्धों में भारतीय सम्बन्ध के लिए विहित व प्रत्यक्षता से सभी सम्बन्धों में देना कि जीवन के साधनों की विचारों में मार० का विचार उम दिया है किमतीर हुआ जिनको लक्ष्य था धर्म बहा जता है। श्री कृष्णराज मार्गों-धरने पर गांधी गहरा प्रभाव करते रहे हैं। उन्होंने

कार्यवाही का कार्यक्रम

परिपक्व इसके लिए नीचे लिखे 'एकसाल प्रोग्राम' सुभाठी है :

१. गांव-गांव में ग्रामसभाओं द्वारा तथा नगरो में मुख्या-मभा द्वारा लोकशक्ति की प्राथमिक इकाइयों के रूप में जनता को समर्थित किया जाए। इन इकाइयों में हर घर का प्रतिनिधित्व हो। ये इकाइया अपने निर्णय सर्वसम्मति या सर्वाधुमति से करें, पहले अपने कर्तव्य, फिर अधिकारों का विचार करें, तथा पूरी इकाई के हित के कार्यक्रमों को हाथ में लें।

२. भारत में हर नागरिक को काम मिले यह उसका सर्वोच्चानिष्ठ प्रथमकारण है। इसलिये इकाई के सदस्य अपने यहां के हर प्रोड्रुक्सी पुरुष को काम देने की योजना बनाए और इन्हें काम दिए जाने को मांग करें; अपने लिए आवश्यक प्रजाज तथा जीवन की अन्य प्राथमिक जरूरतों के वितरण की व्यवस्था करें; तथा गांव के हरिजन आदि-वर्गी तथा अन्य श्रम्यजनों की परिस्थिति सुधारने के लिए सचिव बनें। इकाइया अपने क्षेत्र में प्रजाज की जमाखोरी के खिलाफ कार्रवाई करें।

३. हिंसा का मुकाबला करने तथा अस्वामिक तत्वों का सामना करने के लिए जगह-जगह शांति सेना के जत्थे खड़े किए जायें।

४. सीलिय, वासगीत, वेदलनी आदि भूमि से सम्बन्धित कानूनों के अमल के लिए समाज-सेवक तथा राजनैतिक कार्यकर्ता यथासम्भव सरकारी कर्मचारियों के सहयोग से गांव की ग्रामसभा के सामने तात्कालिक कार्रवाई करें। जहां इस प्रकार के कानून न बनें हो, वहां इन प्रश्नों को हल करने के लिए लोकमत आगत किया जाए।

५. घूमखोरी के खिलाफ जनमत तैयार किया जाए और इसके प्रतिहार के लिए आन्दोलन किए जाए।

६. बहेज, फिजूलखर्च तथा विलास-पूर्ण उपयोग जैसी सामाजिक कुुरीतियों के खिलाफ आन्दोलन खड़े किए जायें। इसमें

विशेषतः युवाशक्ति और स्त्रीशक्ति को समाया जाए।

७. सविधान में उल्लिखित नशाबन्दी के मिटाउन को मान्य करने के लिए लोक-शक्ति जगाई जाए। इसके लिए व्यापक लोक शिक्षण किया जाए तथा जहां सोशल आंध्यन के मिटाउन की पूर्ति के बावजूद नशाबन्दी न होती हो, वहां सत्याग्रह किए जायें।

८. जहां कहीं भी हरिजनों तथा दलितों पर अत्याचार हो वहां समाज जीवन में दिल-चरपी सेनेवाले हर कार्यकर्ता एवं संगठन तथा राजनैतिक दलों को मिलाकर उसका जाहिर विरोध प्रकट करना चाहिए।

इनमें से एक या अधिक कार्यक्रमों को जगह-जगह लोगों के संगठनों द्वारा उठाया जाए। अस्वच्छ आन्दोलन के सघन क्षेत्रों तथा रचनात्मक कार्य के अन्य क्षेत्रों में इन कार्यक्रमों को विशेषरूप से उठाने का प्रयत्न किया जाए।

सिफारिशें

परिपक्व की शासन तथा जनता से निम्न-लिखित सिफारिशें हैं -

१. चुनावों को अष्टाचार रहित तथा कमखर्चीता बनाने के लिए तुरन्त आवश्यक कार्यकारी की जाए।

२. जिन सार्वजनिक कार्यकर्ता, विधायक, मंत्री आदि के खिलाफ अष्टाचार के आरोप सिद्ध हो चुके हो उन्हें कोई राजनैतिक दल चुनाव के लिए टिकट न दें।

३. भारत देश के लिए सादरी, मित्र-व्यवस्था और स्वदेशी ये गुणधर्म हैं। इनके अमल का आरम्भ राष्ट्रीय जीवन के उत्पन्नतम लोगों को अपने उदाहरण से करना चाहिए तथा समाज के हर स्तर पर उनका आग्रह किया जाना चाहिए। सैती तथा उद्योग-धर्मों में लगे हुए लोग उत्पादन बढ़ाने के अपने कर्तव्य को पूरा करें तथा उत्पादन में वाया पहुँचें ऐसे काम न करें।

४. वर्तमान शिक्षा पद्धति में प्रामुखाय परिवर्तन करना आवश्यक है। शिक्षा का जीवन से सम्बन्ध हो, उसका माध्यम समाजो-

पयोगी उत्पादक श्रम हो। डिग्रियों का सम्बन्ध नीकरियों से न रखा जाए।

५. गरीबी तथा आर्थिक विषमता का निराकरण आर्थिक दोजता का सर्वप्रथम ध्येय हो। जिन लोगों को काम चाहिए उन सबको, तथा दास करने सबसे नीचे के वर्ग को, रोजगार देने की तथा सामान्य गरीब जनता के जीवन की प्राथमिक आवश्यकता की चीजों का उत्पादन बढ़ाने की दृष्टि से योजना हो। ये उद्योग पूर्वी-प्रधान तरीके के बजाय श्रम-प्रधान तरीके से चलाए जायें जिससे बेकारी मिटाना, गरीबों की श्रम-शक्ति बढ़ाना तथा उनका जीवनस्तर उचा उठाने का काम एक साथ हो सके। विलास की तथा सर्वांगी चीजें, जैसे टेली-विजन, एयरकंडीशनर आदि के उत्पादन तथा आयात पर रोक लगाई जाए।

६. उपर बताई हुई दृष्टि से छोटी तथा मध्यम निचाई योजनाओं को प्राथमिकता दी जाए तथा गांव में उपलब्ध दफ्ते माल को पक्का माल बनाने के उद्योग मागे में लड़े लिए जायें। ऐसे उद्योगों को मारनेवाले बड़े उद्योगों पर प्रतिस्पर्धा लगाए जायें। आर्थिक रक्षता का वैकल्पिक दृष्टि-योगोपित समाज तथा उनका स्वरूप विकसित हो।

७. गरीब वर्ग का सर्वत्र बड़ा दुखमन मुद्रा-स्फीति है, जिससे बारण चीजों में भाव बराबर बढ़ने जाते हैं। इसलिए चांटे की वित्तीय-व्यवस्था 'रेगिमेन्ट फार्नेमिंग' को विलुक्त कर दिया जाए।

परिपक्व की विचारधारा है कि मात्र की परिस्थिति से ग्रहण पाने के लिए देश की जनता उपर सुभाए एकसाल प्रोग्राम को तुरन्त उठाये तथा देश के रचनात्मक कार्यकर्ता, जनोपेक तथा राजनैतिक दल सब दल काम में सक्रिय हो जायें। सामन भी परिपक्व की सिफारियों को अमल में लाने पर तुरन्त ध्यान देना ऐसी आशा है। परिपक्व का यह मत है कि मात्र की गरीब परिस्थिति का मुकाबला राष्ट्र का हित चाहनेवाले सब लोग मिलकर ही कर सकते हैं। देश की गरीब जनता, किसान ब मजदूर, उनके युवाजन तथा स्त्रीजन में परिपक्व की विमेष तोर पर अकीन है कि ये दल कार्यक्रमों को उठा कर देश को तथा देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशा ब आत्म-निश्चय प्रदान करें।

ट्रस्टीशिप यानी मालिक मजदूर सम्बन्धों में क्रांति

जयप्रकाश नारायण

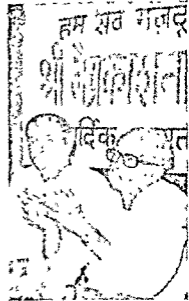
(जुलाई '७३ के छात्रिणी सप्ताह में जयप्रकाश नारायण ट्रस्टीशिप के काम को नया मापार और बल देने के लिए खम्बई गए थे। दो-तीन बैठकों कर पाये थे कि जे० पी० ध्वजानक बीमार हो गये और उन्हें हाथ का काम छोड़ना पड़ा। मजदूरों के बीच उनका भाषण हम यहाँ दे रहे हैं।)

ट्रस्टीशिप एक बहुत बड़ा विषय है, बहुत महत्व का विषय है। केवल मजदूरों के लिए ही नहीं छात्र समाज के लिए महत्व रखता है। जिस प्रकार के समाज की हृदय रचना करना चाहते हैं, उस समाज की जो बुनियाद होगी, वैचारिक बुनियाद, वह पक्कर इस ट्रस्टीशिप की बुनियाद होगी। प्राविट सेक्टर, पब्लिक सेक्टर, एजीवाड, साम्यवाद, समाजवाद धम्म दूसरे बाद— कोई भी धारा के लें, उनके आधार पर जो समाज बने है, वही जो समायाए उठती है, मजदूरों से सम्बन्ध रखने वाली और बाकी समाज से सम्बन्ध रखने वाली, छोटी, बड़ी कोई भी समाया धारा के लें, मुझे नहीं लगता है कि उनमें से किसी भी धारा में, न तो क्रांतिवादी समाजवाद में न धर्मिनायकवादी साम्यवाद में इतना कोई भी हृदय निरन्तर पाया है। जो समायाए उठती है, उनके हृदय के लिए, जो भी धारों के मजदूर उठाये जाते हैं, वही समायाही है, वही जो भी जेरे खबरखली होती है, वह भी जो जाती है लेकिन बाबजूद इसके उनको लोगों के दिलों को छुना पड़ता है। वे भी मजदूर बनते हैं कि लोगों के उस प्रकार की भरोसे बिने बंधर, जिससे उनके हृदय के कुछ भाग उदरें, और मैं केवल मजदूर हूँ और मेरा और बुनियाद का कल्पना ही बलम्ब है कि अधिक से अधिक हृदय दिखायें, और होने वाले मुनाके पर या और भी जो बुनियाद प्राप्त हो सकती है—केवल ऐसी ही भावना न रहे।

धर्मि बंधनेन धर्मि बन गये थे, उन्होंने वही धर्मिवादीय मूल्यों की भी बात की। ए. ए. के जाने के बाद हम में एक बहुत बली की कि हमें उपभोक्ता सम्प्रदायी की धार जाना चाहिये, छोड़े उद्योगों की धार जाना चाहिये जिसमें जनता की धारशक्ती की चीजों की हृदय पुनित कर सकें, उनका जीवन स्तर हम उठा सकें। या हमें वही धारें रखने—बड़े भारी उद्योगों के रखने की धार ही बढ़ने जाना है? सोच इस विचार के काफी थे, कि नहीं हमें धर्मि धर्मिवादी का सहयोग प्राप्त करना है, चाहे वे मजदूर हों, दफ्तर में काम करने वाले हों, स्कूलों में हों—वही तो सब काम करते वाले लोग हैं—इसका सहयोग प्राप्त करना है तो हमें केवल धर्मिवादी प्रसंग ही नहीं देना चाहिये। धार हृदय उस विचार में जायें तो हृदय साम्यवाद को तोड़ेंगे। हमें मजदूरों की धर्मिवादी भावनाओं को जागृत करना होगा।

मजदूर मालिक कैसे हों

कोई भी देश के लें। चीज ही लें। धारों की साथ निताक के लें कई कार्य प्राप्त निताक सकते हैं और उनके लीके धारों के काम के बलने महामत्ता धारों की निताकें तो कोई पहचान नहीं सकते कि यह धारों का है कि नहीं धार। उस भावना के बिना मजदूर का समाज नहीं बन सकता, न कल्पन से बन सकता है न मज से बन सकता है। इन सब लोगों में इसे महामत्ता विचार है लेकिन



मजदूरों की समा में जे. पी.

कोई रास्ता के निताक पाये हों ऐसा तो लगता नहीं है। जहां तक साम्यवादी देशों की बात है, मुझे लगता है कि सावद युगोत्सावियाने किसी हृदय रूप दस समाया ना हल निताका है। वही के मजदूरों की साधेदारी की ही बात नहीं करते हैं। वे मजदूरों की, समाज की, मिलियन की भी बात करते हैं। केवल मजदूरों की साधेदारी ही नहीं मजदूरों द्वारा समाजतन भी मांगते हैं। वही की मजदूर परिषदों की यह धर्मिवादी है कि धर्मिवादी के निती लीके धर्मिवादी धर्मि, नैसाधिन की जगह खाली हो तो दस मजदूर परिषद की धार के ही वितागत विचार जायेंगा, उनके उत्तर में नौकरी पाने में, दो सी जो प्राथम्याप धर्मि, उन लोगों का इन्टरव्यू मजदूर परिषद के लीके करेये। उनके साथ उनके समायाकार, विशेषतः पक्कर रहेये, मजदूर के लिए ऐसे विशेषता की राज्य भी जेज संघता है और पार्टी भी। लेकिन धर्मिवादी, जो, निदेशक तक की निवृत्त करने का धर्मिवादी दस मजदूर परिषद की ही होता। पाने वही उद्योग में केवल मजदूरों साधेदारी ही नहीं, पूरा समाजतन हाथ में, मिलियन उनके हाथ में है।

पिछले बर्ष यहाँ में यूगोस्लाविया नहीं गया हूँ। एक बार जब मेरे मित्र मिलोवान जिलास जेल से छूटे थे तो उनसे मिला था। वे मेरे होटल में भाये थे तो मेरे जो साम्यवादी भोजवान थे वे बृद्ध नाराज से हुए थे कि जिलास से प्राप क्यों मिले। उन्होंने कुछ बहाना नहीं मुझ से, लेकिन उनकी सहायता भी ब्यवहार से मुझे ऐसा लगा—फिर उस घटना के बाद से मेरी यूगोस्लाविया जाने की तबियत नहीं हुई, फिर से जाने का कोई मौका भी नहीं लगा। यहाँ भारत में जो सहकारी संघ मजदूरों द्वारा चलाये जाते हैं, जहाँ में मजदूर अपने इन मजदूरों को इतना बेतन नहीं देते जितना वे स्वयं अपने मालिक से मांग करते हैं। वलिके मजदूर अपने मजदूरों को भाषा बेतन ही देते हैं। प्राप देश सत्ते हैं कि इसमें मुनियारी कारण क्या है? कोई पूंजीपति हो या मजदूरों द्वारा चलाया जा रहा सहकारी संघ हो, जहाँ भी मालिक-मजदूर का सम्बन्ध होगा वहाँ यह झगड़ा शुरू हो जाता है। स्वयं मजदूरों द्वारा चलाये जा रहे सहकारी संघों में शोषण हो सकता है, हड़ताल हो सकती है।

युगोस्लाविया आगे है ?

युगोस्लाविया में मुझे एक कारखाने में से गये जहाँ उन लोगों ने हमें यह बतलाया कि जब पहली बार टीटो ने बहुत हिम्मत के साथ मजदूरों की मिलिक्यत के इस बन्दम को उठा कर इस कारखाने में इसे लाया किया तो पहले साल मुनाफा हुआ। मजदूर परिषद ने फँसता करके मुनाफा प्राप में बाँट लिया। तब वहाँ की साम्यवादी पार्टी की बीच में पड़ना पड़ा। उसने मजदूरों को समझाया कि मान लो किसान जो फसल पैदा करता है उसे सारा खा जये, भगली फसल के बीच के लिए भनाज न रहे तो क्या होगा? तो तुम्हारी मिल है, मालिक समाज है, उसने तुम्हें यह मिल सौंपी है, एक टुकड़ी के नाते तुम्हें उस समाज के लिए इसे बताना है, तुम्हें सारे अधिकार हैं। मजदूर परिषद है, मजदूर-निदेशक के बीच जो विवाद होये वे फँसे निपटारे जायेंगे—इसके कई तरीके उन्होंने बताये हैं। यदि

मजदूर परिषद एक बात बड़े और जो मशीनों का जानकार है, टेक्निकल है, वह कोई दूसरी बात बड़े तो विवाद को भी हल करने का उन्होंने रास्ता निकाला है। इस तरह पार्टी ने इन मजदूरों को समझाया कि यदि इस साल मुनाफा हो तो उसे भगले साल के लिए लिए से लगायो। मिल की उन्नति के लिए तुम्हें सचित कोय एकत्र करना होगा, तब वहाँ मिल का विस्तार होगा। और इसके भी भागे—बावजूद इसके कि हम एक साम्यवादी समाज बना रहे हैं, हम उद्योगों के बीच होड़ भी करायेगे। क्योंकि यदि वह होड़ नहीं रही तो कार्य-क्षमता घटेगी। मोनोपली रह जायेगी राज्य की तो कार्यक्षमता पर कोई प्रतिक्रम नहीं रहेगा। इसलिए टुकड़ीपि का काम कैसे होगा, जितना होगा—यह सब प्राप (मजदूरों) को तय करना है।

यह सब मैंने इसलिए कहा कि मुझे लगता है कि जहा लेबर पार्टी की सरकार बनी, समाजवादी सरकार बनी, भले ही मिलों-बुली सरकार की तरह भाषी (अमनी या स्केन्डेनेविया के देशों की तरह) तो वे भी इस प्रश्न को हल नहीं कर पायी।

जहाँ तक स्वीडन की बात है, मैं जब वहाँ गया था, तब सर्वोदय मन्दोलन में भा चुका था। फिर भी लोग जानते थे कि भारत का पुराना समाजवादी हूँ, और राष्ट्रीय मन्दोलन में बृद्ध किया है। जो वहाँ के इस्पात उद्योग के निदेशक थे, उनकी बगल में मुझे बिठाया गया। ताते समय मैंने उनसे पूछा कि मजदूर इस सारे काम में जितना प्राप देते हैं? क्योंकि यह पब्लिक सेक्टर है, समाजवादी सरकार है, तो काम की तरफ उनका जितना ध्यान रहता है? हम देश के उत्पाद में जितना भाग ले रहे हैं, देश को क्या योगदान दे रहे हैं? उन्होंने कहा कि प्रापको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हमारे मजदूर सोचते हैं कि हमें अपनी भगली छुट्टी किसी क्रावती या इतालवी गरम करके के स्थान पर बितानी है। इन देशों में बर्फ पब पडती है तो ऊंचा बर्फ बनकर ऐसे गरम पानी के सोतो पर ही छुट्टिया बिताना पसंद करता है। जन्ही की तरह मजदूर भी सोचते हैं। यह पूंजीवादी वर्ग की भावना उनमें का गई है, समाजवादी सरकार के होते हुए।

हम लोगो ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाई थी। उसमें चौहद कार्यक्रम थे। एक कार्यक्रम यह था कि 'हर एक से उसकी शक्ति के अनुसार और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार' कार्यक्रम लेकर हम बापू के पास भाये। उससे कहा कि हम लोगो ने पार्टी बनाई है, यह उसका कार्यक्रम है। उन्होंने उस कार्यक्रम के ऊपर अपनी उँगली रखी और कहा कि जयप्रकाश यदि यह कार्यक्रम तुम लोग पूरा कर दो तो मैं तुम लोगो के साथ भी फीसदी हूँ। यह कार्यक्रम असम्भव है, प्राप समाजीकरण कर दें, कामून बना दें या लोगो का दिमाग बदलने के लिए जेल लोत दें, दण्ड देने लगे तो भी यह नहीं होगा।

भौतिकवाद की विफलता

रूस में यह शुरू हुआ था कि वेतन का फर्क बहुत ज्यादा नहीं होना चाहिये। कम से कम और अधिक से अधिक वेतन में एक और तीन का अनुपात होना चाहिये। फिर वहा एक समस्या आई। जो नोजवान थे वे सोचने लगे कि हम इतना पड़ेगे-लिखेंगे, इंजीनियर बनेंगे तो भी हमें पगार तो उतनी ही मिलेगी। फिर यह सब पडने की क्या जरूरत है? फिर उनको सरकार की धोर से प्रलोभन देना पड़ा, साम्यवादी देश में अपने नोजवानों को भच्छी तरह से पड़ाई जारी रखने के लिए प्रलोभन देना पड़ा। इसलिए साम्यवादी देशों में अधिक सुविधाए पाने वाला वर्ग छोटे बच्चों का ही है जिससे वे भच्छी तरह से पड सकें। स्वीडन के बाद मैंने रूस में बच्चों पर सबसे अधिक ध्यान देते देखा है। वहाँ अगर कोई वर्ग है तो वह टेक्निकल का, वैज्ञानिकों का वर्ग है। उनको सब तरह की मदद देती है सरकार क्योंकि वह समझती है कि उनके ऊपर उतना मरिप्य निर्भर करता है। प्राज यह स्थिति है कि इतने सालों के बाद भी रूस का काम बिना धमरीकी, पब्लिकी जर्मन तकनीक के चल नहीं रहा है। प्राज रूस-धमरीका में जितने भी समझते हो रहे हैं, उसने पीछे यही कारण है कि उनको तकनीक का लाभ उन्हें मिले।

यह सब मैं आप से क्यों कह रहा हूँ ? समाज में एक जातिवादी परिवर्तन हो जाने के बाद भी, चाहे वह परिवर्तन शास्त्र से हो, भय से हो, लोकतांत्रिक पद्धति से हो, या क्रान्ति से हो—यह समस्या ज्यों की त्यों बचपन रहती है। यह बात सुन कर भारत के लोगों को आश्चर्य होगा—यह बात छत्तीसगीर में समझाई हूँ कि बुनियाद के सब साम्यवादी नेताओं में अजर भेरे विचार-विनी के सबसे नजदीक हैं तो वह यामो के हैं। यमो कि मैं देखा हूँ कि मामो इस कोशिश में है कि नौकरशाही को दूर रखा जाये, —चाहे वह नौकरशाही पार्टी में हो, जिस में हो, प्रशासन में हो, ऐसी में हो, —नौकरशाही का प्रभाव कम किया जाये और ऐसी प्रेरणा लोगों को भी अजर, नैतिक प्रेरणा, मनो-वैज्ञानिक प्रेरणा कि वे काम कर सकें। इस तरह की प्रेरणा रक्त में भी है। वही लेकिन पुरस्कार मिलता, किसी को कहा भी पंचवटी की बूबो में स्थान दिया। जैसे पहले यहाँ पदम किमुपल धारि पुरस्कार हैं, उही तरह ही मनोवैज्ञानिक प्रेरणामें दो मर्जी— इस सबसे बाद भी काम पूरा नहीं होता है।

गांधी का रास्ता

मैं यह नहीं जानता कि गांधीजी इस मामले में कोई मूल्य मान्य कह गये हैं। उनके बाद कोई मूल्य विचार हो नहीं सकता। वे स्वयं यह कह गये थे कि मैं भारत को बूढ़ रहा हूँ, यह मुझे मात्र हीन लगता है लेकिन वह अजर यह मान सके तो उसे बदलना। वे बतते थे कि भारत को बहना हूँ उसे हीन मानी, बूढ़ मान पहने बना बड़ा उसे बन देयो। उनका विचार सगुं बनना रहता था। उनको बुनियादों मान थी कि मनुष्य को कुछ ऐसा हीन बनाने, उसके अन्दर की भावनाएँ हीन बनाने कि समाज के सदस्य को हीन बनाने, जागरण को हीन बनाने, एक उद्योग के मजदूर, वैज्ञानिक, मैनजर किसी भी पर भी हीन बनाने में उतरे बना बर्तन हैं, यह उन मानवमो से उठे सामक ही। उन्होंने इसे टुट्टीलिया कहा। राजाओं की भी उन्होंने टुट्टी की तरह काम करते भी कहा। उन्होंने अर्धों का से कहा कि मुझ सोना

यहाँ धाकर एक टुट्टी की तरह राज करते तो भारत मुझे कोई नहीं बहना कि मुझ यहाँ से निकल जाओ। सब राज टुट्टीरा नहीं होता हमारा ही होता। टुट्टी जो प्रशासक होता है। मजदूरों को भी इस बात को मान कर कि उनका धर्म एक टुट्ट है, समाज के लिए उसे इस्तेमाल करना है। समाज का अधिकार है कि हमारे भरल-शोषण के लिये जो अधिकार है वह हम को मिले। जो हम पैदा करते हैं, जो हमें वाले पूजी लगा कर करते हैं, या विज्ञान वाले करते हैं, उस सब में से ऐसा विचार ही धारण में कि वह सब के लिए म्याय हो। गांधी जी तो बहते थे कि वो हजामत करने वाला है और वो दूकी-विचार है उसको भी अधिकार के अनुसार ही मिलना चाहिये। मानस का जो भाग या 'हरेक से जवरी अधिक के अनुसार, हरेक को अपनी भावव्यक्तता के अनुसार', उसे बापु सोचते माना मानते थे। और यह सब तक नहीं हो सकता जब तक मानस परिवर्तन नहीं होता।

गांधीजी से इस टुट्टीशिव पर बहुत कुछ लिखा है। कुछ सब भी दुष्प्रा है। अब उन चीजों को खोज कर लिखने की प्रयत्न उन बातों को लोगों के सामने रखने की जरूरत पार गई है।

भारत की आजादी का नेतृत्व करके उन्होंने आजादी विलाई, इतिहास ने भी मदद की, उन्होंने ही जो कुछ किया उमो से हुआ, ऐसा मैं नहीं बहता। लेकिन इस देश को यदि कोई उठा सके, एक आन्दोलन बना सके, और अंग्रेज को मासूम हो सके कि सारा देश उसके खिलाफ है, तो वह गांधी ही कर सके। अगर हम उनके बचाने मार्ग को भूल नहीं होते और उस पर चलते होने तो मान्य बनना ही हमारा होगा। भारत कोई इवान इनीच या जगा है, कोई विदेशी विचारण या जगा है तो दिल्ली में खलबली मच जाती है। कि मुझ कि प्रशासनिक ने प्रशासन इनीच की विचार 'सोसल-निज' और 'रिटुलिंग सोसल-निज' परी और उनसे बहुत प्रभावित हुई। उन्होंने उन विचारों को विचार मानलिय भी भेजा है।

यह बहुत दुःख की बात है कि इस तरह गांधी को बर्तन भुना ही गयो। विरोधी

का जो आन्दोलन चला उसमें उन्होंने गांधीजी के कार्यक्रम में नये कार्यक्रम भी जोड़े। और चूँकि यह कृपियमान देखा है, भूमिहीनता की एक बड़ी समस्या है, उन्होंने भूमि की समस्या ली, भूदान का काम शुरू किया। फिर गांधी जी ने कहा था कि स्वराज्य की इमारत बनेगी तो भीषे से बनेगी, जनता का राज्य होगा, जनता की सार्वभारती से काम होगा, जैसे धाफके महा मजदूरों की सार्वभारती की बात होती है। सार्वभारती याव स्तर से ही शुरू की जा सकती। इसलिये प्राथमिकता का आन्दोलन शुरू किया, उसमें भी कुछ म कुछ सफलता मिली है। विन्तनी प्रशिक्षण भी, उतनी नहीं मिली है अभी। लेकिन बुनियाद बनी है, धाफे का एक मार्ग खुला है।

बम्बई में काम

गांधी में काम करने के लिये श्रीधरपुत्र दास जाजू जी के साथ मैं बम्बई धाया था और यहाँ कुछ काम किया था टुट्टीशिव का। मुझे मात्र तक पाद है कि हमें ऐसा कोई नहीं मिला जिसने कहा हो कि हमारी जी मिल है वह हमारी सपत्ति है। यकने स्वीकार किना कि वह सब है समाज का ही, हमारा भी हममें हूक है सब। समाज की मदद से यह उद्योग चल रहा है। उनमें से जो उद्योगपति कुछ प्रगतिशील विचार के थे उनमें हमारे मुंह से शब्द हीन कर बहा कि यह समाज का ही है। लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि जाजू जी की मृत्यु हो गई। हम लोग भी सख्या में बहुत घांटे ही हैं, ज्यादा समय देहानो में गया तो यह काम बीच में रह गया। उन्नी समय घोंटे दिनां बाद आम्बेडकर साहब से भी बात हुई कि धार सोच गांधीजी के रास्ते पर चलना चाहते हैं तो कुछ सोचना चाहिये। मुझे ऐसा नहीं लगा कि उन्हें बहुत उत्साह या इस बातचीन से फिर भी विरोध नहीं मिला। कोई करे तो वे प्रयोग करने के लिये तैयार हैं। लेकिन पहले मजदूर तो कर नहीं सकता यह काम, जब तक उसके धाम पूरा एक कारखाना न हो। और धारने देश में भेरे खाल से ऐसा कोई कारखाना तो है नहीं। कुछ सोसायटी धारि तो है लेकिन उनमें भी तारे काम करने का तो सेयर तो

पिछले कई वर्षों से मैं यूरोपवादी नहीं गया हूँ। एक बार जब मेरे मित्र मिलोवान जिन्नास जेल से छूटे थे तो उनसे मिला था। वे मेरे होटल में भाये थे तो मेरे जो साम्यवादी भेजवान थे वे बुद्ध नाराज से हुए थे कि जिन्नास से भाप क्यों मिले। उन्होंने बुद्ध कहा नहीं मुझ से, लेकिन उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर मैंने उनसे कहा कि मैंने भी उनसे मिलने का कोई मौका भी नहीं मिला। यहाँ भारत में जो सहकारी संघ मजदूरों द्वारा चलाये जाते हैं, उनमें मजदूर अपने इन मजदूरों को इतना वेतन नहीं देते जितना वे स्वयं अपने मालिक से माग करते हैं। बल्कि ये मजदूर अपने मजदूरों को घाया वेतन ही देते हैं। भाप देख सकते हैं कि इसमें बुनियादी कारण क्या है? कोई पूजोपाति हो या मजदूरों द्वारा चलाया जा रहा सहकारी संघ हो, जहाँ भी मालिक-मजदूर का सम्बन्ध होगा वहाँ यह भगड़ा शुरू हो जाता है। स्वयं मजदूरों द्वारा चलाये जा रहे सहकारी संघों में शोषण ही सकता है, हड़ताल ही सकती है।

युगोस्लाविया आगे है ?

युगोस्लाविया में मुझे एक कारखाने में ले गये जहाँ उन लोगों ने हमें यह बतलाया कि जब पहली बार टीटी ने बहुत हिम्मत के साथ मजदूरों की मिलियत के इस कदम को उठा कर इस कारखाने में इसे लागू किया तो पहले साल मुनाफा हुआ। मजदूर परिषद ने फैसला करके मुनाफा भागस में बाँट लिया। तब वहाँ का साम्यवादी पार्टी को बीच में पड़ना पड़ा। उसने मजदूरों को समझाया कि मान लो किस्सान जो फसल पैदा करता है उसे सारा खा जये, भगली फसल के बीज के लिए भ्रान्त न रहे तो क्या होगा? तो तुम्हारी मिल है, मालिक समाज है, उसने तुम्हें उस समाज के लिए एक ट्रस्टी के नाते तुम्हें उस समाज के लिए देने चलाया है, तुम्हें सारे अधिकार हैं। मजदूर परिषद है, मजदूर-निदेशक के बीच जो विवाद होये वे कैसे निपटारे जायेंगे—इसके कई तरीके उन्हीं बताये हैं। यदि

मजदूर परिषद एक बात बड़े धोर जो मशीनों का जानवार है, टेकनोक्रेट है, वह फौड हुनरी बात बड़े तो विवाद को भी हल करने का उन्होंने रास्ता निकाला है। इस तरह पार्टी ने इन मजदूरों को समझाया कि यदि इस साल मुनाफा हो तो उसे भगले साल के लिए फिर से लगाना। मिल की उन्नति के लिए तुम्हें सचित कोष एकत्र करना होगा, तब वहाँ मिल का विस्तार होगा। धोर इसके भी आगे—बावजूद इसके कि हम एक साम्यवादी समाज बना रहे हैं, हम उद्योगों के बीच होड़ भी करायेंगे। क्योंकि यदि वह होड़ नहीं रही तो कार्य-भंगमा घटेगी। मोनोपली रह जायेगी राज्य की तो कार्यभार पर कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा। इसलिए ट्रस्टीशिप का काम कैसे होगा, कितना होगा—यह सब भाप (मजदूरों) को समझना है।

मह सब मैंने इसलिए कहा कि मुझे लगता है कि जहाँ लेबर पार्टी की सरकार बनी, समाजवादी सरकार बनी, भले ही मिली-जुली सरकार की तरह प्राथी (जर्मनी या स्केन्डेनेविया के देशों की तरह) तो वे भी इस प्रश्न को हल नहीं कर पाये।

जहाँ तक स्वीडन की बात है, मैं जब वहाँ गया था, तब सर्वोदय भ्रान्दोलन में भा चुका था। फिर भी लोग जानते थे कि भारत का पुराना समाजवादी हूँ, धोर राष्ट्रीय भ्रान्दोलन में बुद्ध किया है। जो वहाँ के रूपत उपयोग के निदेशक थे, उनकी बगल में मुझे बिठाया गया। सारे समय मैंने उनसे पूछा कि मजदूर इस सारे काम में कितना साथ देते हैं? क्योंकि यह पब्लिक सेक्टर है, समाजवादी सरकार है, तो काम की तरह उनका बितना ध्यान रहता है? हम देश के उत्पादन में कितना भाग ले रहे हैं, देश को क्या योगदान दे रहे हैं? उन्होंने कहा कि भापको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हमारे मजदूर सोचते हैं कि हमें अपनी भगली छुट्टी किसी प्राथी या इतालवी गरम भरने के स्थान पर बितानी है। इन देशों में बर्फ खूब पड़ती है तो ऊंचा बर्ग भरसक ऐसे गरम पानी के स्रोतों पर ही छुट्टियाँ बिताना पर्यटन करता है। उन्हीं की तरह मजदूर भी सोचते हैं। यह पूजोपादी वर्ग की भावना उनमें धराई है, समाजवादी सरकार के होते हुए।

हम लोगों ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाई थी। उसमें चौधव कार्यक्रम थे। एक कार्यक्रम यह था कि 'हरएक से उसकी आवश्यकता के अनुसार धोर हरएक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।' कार्यक्रम लेकर हम वापू के पास भाये। उनमें कहा कि हम लोगों ने पार्टी बनाई है, यह उसका कार्यक्रम है। उन्होंने उस कार्यक्रम के ऊपर अपनी उगली रखी धोर कहा कि जयप्रकाश यदि यह कार्यक्रम तुम लोग पूरा कर दो तो मैं तुम लोगों के साथ तो फीसदी हूँ। यह कार्यक्रम प्रसम्भव है, भाप समाजीकरण कर दें, कानून बना दें या लोगों का दिमाग बदलने के लिए जेल खोल दें, दण्ड देने लयें तो भी यह नहीं होगा।

भौतिकवाद को विफलता

रूस में यह शुरू हुआ था कि वेतन का फर्क बहुत ज्यादा नहीं होना चाहिये। कम से कम धोर अधिक से अधिक वेतन में एक धोर तीन का अनुपात होना चाहिये। फिर वहाँ एक समस्या आई। जो नौजवान थे वे सोचने लगे कि हम इतना पढ़ेंगे-लिखेंगे, इंजीनियर बनेंगे तो भी हमें पगार तो उतनी ही मिलेगी। फिर यह सब पढ़ने की क्या जरूरत है? फिर उनको सरकार की धोर से प्रलोभन देना पड़ा, साम्यवादी देश में अपने नौजवानों को अच्छी तरह से पढाई जारी रखने के लिए प्रलोभन देना पड़ा। इसलिए साम्यवादी देशों में अधिक मुश्किलें पाने वाला वर्ग छोटे बच्चों का ही है जिससे वे अच्छी तरह से पढ सकें। स्वीडन के बाद मैंने रूस में बच्चों पर सबसे अधिक ध्यान देते देखा है। वहाँ अगर कोई बर्ग है तो वह टेकनोक्रेट का, पेशानिवर्ग का वर्ग है। उनको सब तरह की मदद देती है सरकार क्योंकि वह समझती है कि उनके ऊपर उतना भविष्य निर्भर करता है। धात यह पब्लिश है कि इतने सालों के बाद भी रूस का काम बिना अमरीकी, परिचयी जर्मन तकनीक के चल नहीं रहा है। धात रूस-अमरीका में जितने भी सम्भोगे हो रहे हैं, उसके पीछे यही कारण है कि उनकी तकनीक का लाभ उन्हें मिले।

होने नहीं है। वहा भी मालिक-मजदूर संबंध प्रा ही जाने हैं। जिनमें काम करने वाले लोग हैं वे तब के सब मालिक होंगे तो फिर मालिकों से ही बान हो सक्ती है। बाद में उनके मजदूरों से बान होगी। मजदूर को स्वाभाविक ही लगना है कि यह कोई बाल है जो गांधी के नाम पर, या किंगो बड़े व्यक्ति के नाम पर हमें टगने के लिये चली जा रही है।

प्राय देवोंगे कि ब्रिटिश टी० यू० सी०, 'सेक्टर पार्टी' का प्रमुख स्तम्भ है, यह उसकी जान है, उगी पर पार्टी का तब कंगो का निर्भर करता है। लेकिन प्राय भी ब्रिटिश टी० यू० सी० के सामने यह कोई विचार रहे कि उद्योग का जब राष्ट्रीयकरण हो चुका है तो प्राय जो प्रायकी मूलियन है उसके प्रौर मनेज-मेंट के सम्बन्ध में फर्क ही जाना चाहिये तो वे मानेंगे नहीं। मेरी उनसे बात हुई तो उन्होंने कहा कि हमारा तो मजदूर मूलियन का काम है, हम बम मजदूरों के हित के लिये लड़ेंगे—मिलियन चाहे जिसकी हो। हमें उनकी बातों से बहुत धक्का लगा। इस प्रकार से यह जो द्रष्ट है समाज में वह मितने बाला नहीं है। प्राय देव सकते हैं कि इस देश में जिनमें भी पब्लिक सेक्टर के उद्योग हैं वे जिस तरह से चल रहे हैं। एक तो यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि मजदूर धान्दोलन में एकना नहीं रही। किसी भी उद्योग में यहाँ कामकर रहा मजदूर एक नहीं हो पाता। एक रही मजदूर धान्दोलन न होकर बहुत से राज-नैतिक दलों के भाग हैं यहा। यह मजदूर की दृष्टि से बहुत गलत बान है।

अब मान लीजिये एक फेक्टरी में, जिनके हमारी बान होती है, जे० प्राय० डी० टाटा हैं, लटाऊ हैं, मफलात हैं,—इनमें से जिसके हम कहते हैं कि प्राय अपने पूरे उद्योग को छोड़ दीजिये, केवल एक मिल की बात हम करें। उसमें इस सिद्धान्त को लेकर प्राय चलें। प्राय उसमें यह भूल जाईये कि प्रायका उसमें जितना पैसा लगा है। क्योंकि प्रायका पैसा जितना लगा है ? जूनता का पैसा है, पैसा लगाने वाली संस्थाओं का पैसा है, वाजार का, मेयट होल्डर्स का पैसा है। मिलियन का सिद्धान्त भी तो यहाँ पूरा नहीं होता—पूजो

पति मालिक है कहते हैं, लेकिन पूजो जिसकी सगी है ? लेकिन मान लीजिये कि वे इस पर संसार ही जाते हैं, 'प्रयोग, करने के लिए। अब यदि एक ऐसा बारखाता मिल जाये तो यहाँ सब तरह की जो मजदूर मूलियन हैं उनका सहयोग मिलना चाहिये तब हम यह प्रयोग करके देख सकते हैं। उद्योग में सम्बन्धों की दृष्टि से, उत्पादन की दृष्टि से, प्रायिक विवात की दृष्टि से, राष्ट्रीय हित की दृष्टि से, मजदूर की दृष्टि से—सभी दृष्टियों से, जिनका तप्या उधमे लगा है, इसके क्या नतीजे निकलते हैं यह देखना चाहिये।

हम लोगों ने सोचा था कि गांधीजी की ट्रस्टीशिप को यदि एक कदम में स्वीकार करने को कहेंगे तो कोई भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होगा।

ट्रस्टीशिप की प्रौर पहले बराम के रूप में हम लोगों ने एक विचार दिया। यह विचार परिवर्तन में भी फल रहा है कि हर किसी को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिये। जो ट्रस्टी है वह भरतल में है क्या ? वह किसी की प्रौर से ट्रस्ट चलाता है। ट्रस्ट की चलाने से उस पर यह जिम्मेदारी प्राती है। वह उत्तरदायित्व है उस पर। हम लोगों ने जब शास्त्रीजी प्रधानमंत्री थे तब 'उद्योग की सामाजिक जिम्मेदारी' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार दिल्ली में किया था। उस छः दिन के सेमिनार में बहुत बड़े उद्योग-पति स्वयं तो शामिल नहीं हुए थे, उन्होंने अपने प्रतिनिधि जरूर भेजे थे। उद्योग के संबालन के जो स्कूल हैं, उनके लोग भी प्राये थे। उस सेमिनार का एक घोषणापत्र निकला था। पहली जिम्मेदारी क्या थी उसमें ? कंपनी इस तरह चले कि घाटा न हो। फिर मजदूरों से क्या संबंध होंगे, फिर उपभोक्ता की प्रौर भी कंपनी को क्या जिम्मेदारी है ? जो शुद्ध सामान मिलता रहे। जिस जगह प्रायका कारखाना है उसकी प्राय को सेवा करेंगे ? यहाँ प्रायने हुए की बिमनी सगा दी है, चारों प्रौर गर्द जाती है लोगो की नाक में। कंपनी से मैला पानी छोड़ा जाता है। इस तरह कंपनी के, बर्तव्य, कंपनी, मजदूरों, उपभोक्ताओं तथा समाज के प्रति क्या होंगे—यह प्रसम कहा गया था। उस सेमिनार में सभी पार्टी के लोगो को तो नहीं बुलाया

गया था, लेकिन जितने मुख्य मजदूर संगठन थे वे उसमें प्राये थे। उसमें एक बरतव्य मजदूर मूलियन को जिम्मेदारी पर भी सगी की सलाह से बनाया गया था। पब्लिक सेक्टर की सामाजिक जिम्मेदारी भी तब करने के लिए एक प्रौर सेमिनार हम करें यह मेरा ह्याल था। यह मान लेते हैं कि यह प्राइवेट पूजो-पतियों का उद्योग नहीं है, इसमें किसी की निजी मिलियन नहीं है, मालिक कोई है तो वह जनता है, राज्य है इसलिए इस उद्योग के बर्तव्य क्या हो ? क्या प्राइवेट की तरह पब्लिक सेक्टर में भी मजदूरों के साथ बही सलुक होगा ? लेकिन यह सेमिनार हम नहीं कर सके। फिर शास्त्रीजी के जाने के बाद राजनीति का खल भी काफी बदल गया। सोचता हू कि इदिवाजी से बात करके इसे करना चाहिये क्योंकि इस विषय का महत्व मुझे बहुत दिखता है, पब्लिक सेक्टर देश के प्रति अपना बर्तव्य पूरा नहीं कर पा रहा है।

फॉलोअप की, काम को प्रागे बढ़ाने की दिक्कत प्राती है। उस जमाने में मैं यह उम्मीद करता था कि लोग इस विचार को लगे प्रौर प्रागे बढ़ायेंगे। लेकिन हमें दुल के साथ कहना पड़ता है कि वह प्रागे बढ़ा नहीं।

तो मेरा कहना है कि इस विचार को समझे प्रौर जिन्हें ठीक लगे वे करें। जो बुनियादी सवाल हैं वे प्राय भी ज्यों के त्यों सामने रखें हैं। साम्यवादी देशों में मजदूर को हड़ताल का भी अधिकार नहीं है। प्राय इस चीज को सोच सकते हैं कि वहाँ जिन लोगो ने वह लड़ाई लड़ी, लेकिन के साथी स्टालिन के गिनार बने, मारे गये। वह जमाना दूररा ही था। इसलिए मैंने वह फूट-भूमि सामने रखी। प्राय की हालत ओ देश की है वह प्राय देख ही रहे हैं, प्रायिक हालत देख रहे हैं। इसलिए हमें लगता है कि प्राय जब तक कुछ नया नहीं काम होगा, कुछ क्रांतिकारी काम नहीं होना तब, तब मरिय्य हमें अंधकार में दिखता है।

मैं ऐसा मानना हू कि प्रायद बम्बई के कुछ मालिक, अभी तो हम उन्हें मालिक ही कहेंगे, जब तब वे मालिक-मजदूर सम्बन्धों को नहीं बदलते, तब तक कोई नया काम होगा नहीं।

महाजनों का रास्ता विश्वास का है

(७, ८, और ९ सितम्बर को देश के कुछ प्रमुख उद्योगपति और उनके प्रतिनिधि ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में ट्रेस्टीगिप पर विचार करने प्राये थे। उनकी बैठक को दो बार विनोबा ने सम्बोधित किया। यहाँ हम उनके भाषण का एक अंश दे रहे हैं।) —सम्पादक)

आपको हिन्दुस्तान में महाजन संज्ञा दी है। जो उद्योगपति हैं, जगह-जगह बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट कहलाते हैं वे और छोटे-छोटे कारखानेदार, बड़े और छोटे व्यापारी, इन सबको गिना कर एक 'महाजन' शब्द है। महाजन जिस रास्ते से जायेंगे वह रास्ता दुनिया के लिए है। महाजनों के मनः सचप । जिस रास्ते से महाजन जाते हैं, उसी रास्ते से दुनिया को चलना है। महाजनों को हमारे यहाँ थोड़ा भी नाम दिया है, और कहा—बन्धुत्व आचरति श्रेष्ठ—श्रेष्ठ तुल्य जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा दूसरे लोग व्यवहार करेंगे। श्रेष्ठ वा भाग्यशं सेठ' है। आप सारे महाजन और श्रेष्ठ इकट्ठा हुए, आप सबकी शक्ति बनी चाहिए। उसके लिए आपकी सम्मिलित होना पड़ेगा और बहुत कुछ करना पड़ेगा। बाना-बना करना पड़ेगा उसका एक उसम विवेदन आपके सामने पेश किया है श्रीमन्जी जी ने। बहुत ही समुचित—वेनेन्सार्ड विवेदन है। लेकिन, कम से कम जिनका करना चाहिए उनका लिखा है। उससे आपका बोधा अधिक ही करना पड़ेगा। उन्होंने विनिमय लिखा है। विनिमय तो है ही नहीं, मांडियम भी नहीं है। केवल विनिमय है। इस पर सोच कर आप अपनी बुद्धि से जिनका करना है कर सकते हैं। कम से कम जिनका करना है, उनका तो आपको करना ही होगा। क्योंकि यह जमाने की मांग है।

सो + सौ = सौ

मैं भी अपनी यात्रा में कई दफा जोरता रहा हूँ पर कि महाजनों की शक्ति अपनी सजी नहीं हो रही है। पहली तीन शक्तियाँ जमाने में तो बाबा को कुछ न कुछ थोड़ा (नाम हुआ, परन्तु महाजनों की शक्ति जमाने के लिए क्या किया जाये ? मैंने महाजनों के लिए एक समीकरण बनाया है। आज जब

जलती है दुनिया में, एक प्राइवेट सेक्टर और एक पब्लिक सेक्टर। प्राइवेट सेक्टर ५० प्रतिशत है। पब्लिक सेक्टर ५० प्रतिशत है। और ५० + ५० = १००। देश की प्रगति ज्यादा होगी तो क्या होगा ? प्राइवेट सेक्टर ५० प्रतिशत। पब्लिक सेक्टर ९० प्रतिशत। ५० और ६० मिलकर १०० होगा। इस तरह होले-होले प्राब्लि ० + १०० = १०० होगा। यह आदर्श है। तब प्राइवेट सेक्टर जीरो हो जायेगा विंग जीरो, छोटा जीरो नहीं। और पब्लिक सेक्टर १०० होगा। यह आज की विपण की पद्धति है। बाबा ने कहा, बाबा का धर्ममैटिक दूधारा है। बाबा गणित शास्त्र उत्तम जानता है। बाबा ने गणित किया है १०० + १०० = १००। प्राइवेट सेक्टर १०० होना चाहिए और पब्लिक सेक्टर १०० होना चाहिए। और दोनो मिलकर १००। अब यह गणित गणिजो में लिखाया नहीं जाना। लेकिन यह गणित आप सहज समझ लेंगे। आपको समझने में जरा भी तकलीफ नहीं होगी, देती नहीं होगी। इस बास्ते गांधीजी ने ट्रेस्टीगिप की चिपरी आपके सामने रखी। गांधीजी आपकी जाति के थे, मेरी जाति के नहीं थे। आप हैं बनिया। मैं हूँ ब्राह्मण। और गुजराती में बहावत है, ब्राह्मण की बुद्धि बनिये के पीछे-पीछे जाती है। ब्राह्मण की बुद्धि 'पाछण' होनी है, आगे जानी नहीं। 'प्रागल बुद्धि' बणिया पादुन बुद्धि नामगिना। गांधीजी थे बनिया। बनिया होने के नाते उन्होंने भीषण इस्टेट खतम करने का नहीं सोचा। आपकी सारी इस्टेट पब्लिक बन जाये और आपके लिए दुनिया में आदर पैदा हो, आपके प्रतिष्ठा बढ़े, ऐसा वे चाहते थे। आपकी जो निजी शक्ति है, उसे अब्जो में आजकल 'नो हाऊ' कहते हैं। यह 'नो हाऊ' जो है, वह महाजनों की शक्ति है। और 'नो ब्याय' है ब्राह्मणों

की शक्ति। ब्राह्मण ने आपके सामने रख दिया कि ये पाल शक्तिया 'करो' यकी बननी चाहिए—'ब्याय'। अब आप लोगों को 'करो, बन' करना चाहिए इस पर सोचना है।

गांधीजी ने इसका नाम ट्रेस्टीगिप रखा। आप भी करें रहें, आपकी प्रतिष्ठा बनी रहे और आपके द्वारा दुनिया की सेवा हो, आपके लिए दुनिया में ट्रस्ट हो ऐसी बल्लना करके ट्रेस्टीगिप की बल्लना रखी। कोई भी आदर्मी अपनी जाति को उठाउना नहीं। जितना भी ऊंचा चढ़ जाये जाति को उठाव नहीं सकता। वह बनिया था। इस बास्ते बनियो की उठावने का काम वह कर ही नहीं सकता था। गांधीजी ने बंदकर महाजनों का दरखुर्कारा मेरे सामने कोई नहीं है। तो यह चीज थीमन्जी ने रखी है, उस पर आपकी सोचना होगा।

विश्वास यात्री व्यापक श्वास

लेकिन बाबा ने जो सोचा है, अपनी चीज, वह आपके सामने रखेगा। इगलिय शब्द है ट्रस्ट। बाबा ने थोड़ी इगलिय सीवो थी। बहुत थोड़े-थोड़े श्रुतावा आ रहा है। परिणाम यह हुआ कि ट्रस्ट बहते हैं तो बाबा बल हो जाता है एवढम। मैंने देखा भारत-भर में कई प्रकार के, तरह-तरह के ट्रस्ट हैं, उनके ट्रस्टी होते हैं। वे ट्रस्टी ज्यादातर सचस्त होते हैं। जिस को सभालने वाले बहुत थोड़े होते हैं। सचस्त ही, ज्यादातर होते हैं। इस बास्ते इगलिय शब्द को मैं छोड़ देता हूँ और सचस्त शब्द को लेता हूँ। सचस्त शब्द जानदार होते हैं। बहुत सूधम धर्म प्रकट करते हैं। ट्रस्ट में क्या-क्या गहरे और व्यापक धर्म हैं, मैं जानता नहीं। ट्रस्ट के लिए सचस्त में शब्द है निश्चय। आपके लिए जनता में विश्वास पैदा होना चाहिए, तो आपकी इमेज (चित्र)

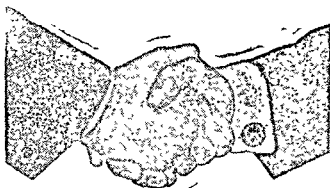
जीवन के लिए श्वास, समाज के लिए विश्वास

सुधरेगी। नही तो आपकी इमेज सुधरेगी नहीं। आज हालत यह है कि बड़े-बड़े महाजन, उद्योगपति उत्तम काम करते हैं। मन्दिर बनाते हैं, धर्मशाला बनाते हैं, गरीबों को दान-धर्म करते हैं। जब मैंने एक धनपति को कहा, मैं बहुत ज्यादा मागवा नही, आपकी तरफ से मुझे ४० वा हिस्सा मिलेगा तो मैं काफी मानूंगा, तब उन्होंने कहा, हम तो १० वां हिस्सा खर्च करते हैं, धाम बनवा की सेवा में। पदयात्रा में मैं पढ़ गया जमशेदपुर। बीमार था तो महीना बहा खर्चना पड़ा। धूम-धूम कर सारा देख लिया। पांच लाख का शहर है। बहा तीस-चालीस हजार सिख हैं। मुसलमान, पारसी, यहूदी, हिंदू सब धर्मों के लोग और सब भाषा वाले लोग बहा रहते हैं। देख कर मैं चकित हो गया। इतना सारा खर्च बिना पचास साल में। करोड़ों रुपये का खर्च

किया होगा और सर्वोत्तम नगर बना दिया। मैं नही जानता कि दुनिया के इतिहास में ऐसे चितने जमशेदपुर होंगे। मुझ पर उसका बहुत ही असर पड़ा।

तात्पर्य यह है कि आपके लिए जनता में विश्वास पैदा हो, यह मैं चाहता हूँ। विश्वास शब्द जो है, वह श्वास पर से बना है। व्यक्तिगत जीवन में श्वास की जो स्थिति है वही सामाजिक जीवन में 'विश्वास' की है। व्यक्तिगत जीवन में श्वास अगर नहीं रहा तो व्यक्ति मर जायेगा। वैसे सामाजिक जीवन में जो पटक है, उनमें अगर विश्वास न रहा तो समाज मृतप्राय हो गया, ऐसा समझना चाहिए। यह अर्थ विश्वास शब्द में है। विश्वास यानी निष्ठा, व्यापक श्वास। कुछ जनता का श्वास। बहुत बड़ा शब्द है। इस शब्द को आपकी पचास पिटठ करना होगा।

एक जमाना था, जब भारत में महाजन पर विश्वास था। किसी को बदरीकेश जाना है, उसके पास पांच हजार रुपये हैं तो वह महाजन के पास रख दिया। क निरक्षर है, लिखना-पढ़ना जानता नहीं, तं महाजन ने लिख लिया और वह चला गया माना पर। दो साल राह देखी, बाद में वा वापस आया, तो महाजन ने उस रकम में साथ उसका ब्याज भी उसको दिया और उसे प्रणाम कर लिया, इतनी यात्रा करती तो प्रणाम। अगर कोई शस्त्र यात्रा के लिए गया, वापस आया नहीं, मानस हुआ कि वह मर गया, तो फिर उसके सड़के को बसाया, पूरी रकम और ब्याज भी उसको दे दिया। ऐसे महाजन भारत में थे। यह भारत की सङ्कटि है। उसमें महाजन के लिए अत्यंत विश्वास है। मेरे प्यारे भाइयो समाज में जितने पटक हैं उन सब पटकों में अत्यन्त विश्वास हो, यही दुनिया के बचाव के लिए साधन है।



Meeting the Challenge of ,
Developing Society by
Undaunted Entrepreneurship
Geared to Generation of
National Wealth and
Development of National
Talent and Employment
Opportunities.

J. K. ORGANISATION *Synthesis of National Talent and Entrepreneurship*



पेस्ट कंट्रोल : प्रयोग-ट्रस्टीशिप का

“इयारा में माना जाता है कि ईमान-
 द्दी के काम चला नहीं सकता, हम लोगों ने
 ये चीनी की खरीदार कर अपना व्यापार
 कर दिया था। आज हमारी कंपनी ने
 तार के धंध में जो भी सफलता पाई
 वह हमारे ईमानदारी के प्रयोगों का ही
 परिणाम है।” पेस्ट कंट्रोल एक्ट इन्डिया के
 लेखक एम. एन. ट्रस्टीशिप के अध्यक्षों में
 अपनी कंपनी का इतिहास बोल रहा है।
 अपनी बात बताने से उन्होंने ध्यान रखना
 तार का ही, उनके सोच-समझ, मुर्दाबूतों
 पर के साथ सने एक बड़े हार्ड में पेस्ट
 ट्रस्टीशिप की देश भर में चीनी पीनी शानाओं
 का मुनाफा तार डग में कामकाज बिना
 रहा था।

मनु १४ में एक परिवार के दो भाइयों
 ने घरों, दफ्तरी और लोगों को मुनाफा पड़-
 जाने वाले कीड़े-मकोड़ों से उन्हें सुरक्षित
 रखने की प्रक्रिया इतिहास कर पेस्ट कंट्रोल
 की स्थानांतरित करने तीन हजार की पुत्री की
 की थी। आज कंपनी के पास ६ लाख की
 पुत्री है तथा व्यापार में लगभग एक करोड़
 एकाक टिका है। बीमारी, डिप्लोमा और
 से होने वाले मुनाफा को एक निश्चित प्रबंध
 तब के लिए प्रकाशमान है व ये टारने की
 पड़ विधि इस कंपनी की स्थानांतरित पहली
 बार भारत में शुरू की गई।

रार परिवार के धानका नाम कर रहे
 हुए बरेलू औरों की प्रतिक्रिया देख कर उनकी
 की मुनाफा को गई। भी राव तार कन-
 थक का प्रतिक्रिया लोगों की मुनाफा पर
 प्रतिक्रिया कर उन्हें अने-अने काम औरने से
 रक रखने हैं। मकानों, दफ्तरी की दीपका
 से सुरक्षित करने के लिए सीसरी, तीर,
 दफ्तरी में घेर कर दवायु और एन-बीसी
 का है। इस प्रक्रिया में कबरी में एका
 काला रिकट टिका का है। दवा इतिहास
 को की औरों को टुक की जाता रहता
 है। भी राव का कहना है कि “जब हमने
 काम शुरू किया तब काम करने वाली के
 काला का काला उपर-उपर मिलाने में
 हुए की का मुनाफा ही जाता था, इसे
 होने वाली कली रिकट कर कंपनी
 की और ने ऐसी की की का शुरू किया।

घोरे-घोरे हमारे कार्यकर्ताओं का प्रमुख
 भी बड़ा और हमारे छात्रों का हम पर
 विश्वास भी। आज कम्पनी में हम लगभग
 १००० एरो में कीड़े-मकोड़ों में सुरक्षित
 रखने की प्रक्रिया बना रह है। प्रतिक्रिया
 से बिरे हम शहर में व आरंभ हम पर इतना
 भरोसा रखते हैं कि वे कार्यकर्ताओं को
 पर की काफी गौरव अपने काम पर बाहर
 बने जाते हैं। यह विश्वास की काफी ही
 पेस्ट कंट्रोल की मजबूती की बूटी है।
 कंपनी के विश्वास पर ही जानने हमने
 काला रीका लगाया है। आज एक हजार के
 व्यापार में प्रतिक्रिया लेना जाता है।
 प्रतिक्रिया तब पर गया गया है।

यूनियन नहीं बनी

भी राव के परिष्कार पर काफी का धार
 परा था। एकाक तब की उम में स्वयं राव
 धारों की लड़ाई में शामिल हुए थे।
 धारों की बात जब उन्होंने व्यापार के धंध
 में काला सोचा था तब ही साक्षरानी उन्हें
 यही बतानी कि व्यापार में घरेलू कार्यकर्ता
 ही काम रहे। इस बरेलू कार्यकर्ता में
 व्यापार करने की उनको यादवानी ने उनके
 सचिवों में एक रूपने के प्रति विश्वास आया।
 अपने काम की किमी बड़े सफलता जाने का
 एक साधन कर जानने से ऐसी भवना का
 विश्वास हुआ। नीचे से लेकर ऊपर तक सब
 एक ही काम की धार-धार पर निर-
 बाने सारी हैं—देना समझा जाने सता।
 यही कारण था कि हमने एक धारदार की
 दिग्दर्शक काफी की मजबूर यूनियन नहीं बनी।
 बीच में एक बार भी राव हम प्रक्रिया में की
 लगी उलटी का धारण करने सुरों के कुछ
 देनों के दौर पर सने थे। उन धारण में
 सफलता करने जाने लगी और काम करने
 जाने लोगों में कुछ मजबूर उभर गयी।
 तब मजबूर नेता बाबू कर्नालिस ने पेस्ट-
 कंट्रोल में मजबूर यूनियन शुरू की थी।
 लेकिन जब भी राव औरों को उन्होंने
 स्वयं उन विचार की एक कर दिया। कर्म-
 कर्मियों ने अपने यूनियन के नेताओं के बड़ा
 कि सब हम कंपनी जहरत गयी है, का



भी राव : मुनाफा डग सने हैं

धारी लता उन कंपनी में लगी जहां
 मजबूर का धारों जहरत है। तब से धार
 तब इस कंपनी में मजबूर और कर्म-
 कर्मियों की सेवा एन ही यूनियन है,
 यह किमी की सचिवता हम से मुड़ी
 गयी है।

भी राव हम तरह घोरे-घोरे व्यापार की
 धारण करते थे इसी बीच मनु ११ में वे
 ७० की-० के सफल में धार। ट्रस्टीशिप की
 बात बनी। धार में भी राव ने—मनु सेवा
 मध में बानचीन की। फिर बाई सेवा सब की
 धार तभी यूनियनकार कर्मों धारें। धार तक
 भी राव करने डग में ही यह सब कर रहे थे
 लेकिन साथी कर्माओं धार में उन्होंने ट्रस्टी-
 शिप की धार बड़ा तब कर धारों कर्मियों
 के २४ प्रतिशत लेकर कर्मचारियों में वि-
 रित कर दिने हैं। भी राव धारें इन कर्मों
 से मुफ्त हो ऐसी बात गयी, वे कहते हैं कि
 “जब कुछ ही हुआ है इसे कोई भी कर
 सकता है, हमने मैं हीन नहीं हूँ।”
 वे खीदार करने है कि काफी कंपनी में विरि-
 धा का विचारें बहुत दूर है, धार भी
 कंपनी में सर्वोपरि धार राव परिवार में
 ही है, फिर भी वे मानते हैं कि कर्मिक और
 मजबूर दोनों की धार से विश्वास के एक
 पुन का निर्वाह चालू हो गया है। इसका
 उदाहरण किना मनु ७१ के भारत-भारत
 मुंड के रोडन। “जब लोगों ने धारकार
 कंपनी में जवा धारता दारन बाहर नेता



वेस्ट इंडीज के एक कर्मचारी

शुरू कर दिया था। लोग दुबहते से काम तक लम्बी कतार में खड़े रहते थे, हमने किन्नी को भी पैसा देने से मना नहीं किया, श्री राव यह बताने हुए उस दृश्य की याद

से एक बार फिर सिहर गये थे, "कम्पनी की वार्षिक रिपोर्ट टावाडोल होने लगी थी। ऐसे समय हमें अपनी सभी शाखाओं के कर्मचारियों की शोर से पत्र मिले कि हालत को देखते हुए हम खर्च घटाने में कम्पनी के साथ हैं, हम घोवरटाईम नहीं लेंगे, बाधापदा मिलने वाला वॉलस छोड़ देंगे आदि। युद्ध के दौरान कम्पनी के सभी साधनों ने युद्ध स्तर पर ही काम कर भयंकर वार्षिक सबट के दौर से कम्पनी को उबार लिया था।"

श्री राव ट्रस्टीशिप पर बातचीत करने सन् ६६ में विनोबा के पास भी गये थे। तब विनोबा ने उनसे कहा था कि बड़ी मिल, फैक्टरियाँ ही इसमें पहल करें। लेकिन भ्रम श्री राव का कहना है कि बड़े लोग इसे मानना नहीं रहे तो फिर हम छोटी कम्पनियों को ही पहल करना चाहिये।

श्री राव बम्बई में ट्रस्टीशिप विचार के फैलाव का कारण धार्मिक, राजनैतिक दबाव

के साथ-साथ नैतिक दबाव भी मानते हैं। वे रचय बम्बई की ट्रस्टीशिप फाउण्डेशन के साथ इस विचार को फैलाने में बहुत उत्साह से काम कर रहे हैं। बम्बई के उपनगर विन्-पाले के कुछ उद्योगपतियों की एक बैठक में श्री गोविन्दराव द्वारा इस विचार को रखने के बाद कुछ उद्योगपतियों ने इसे असंभव बना दिया तब श्री राव ने बहुत आश्रय में आकर कहा था, "लेग स्वीकार कर लूँगे थे कि बम्बई की जलवायु में गुनाब का पीला नहीं लगाया जा सकता, मैंने अपने घर में एक साल तक प्रयोग करने के बाद गुनाब का फूल पैदा कर दिखाया। आज बम्बई में १५० सदस्यों का गुनाब उत्पादन सप है। कोई भी विचार असंभव नहीं होता धर्म इनकी ही है कि हम स्वयं उसे असंभव न मान लें।" जनरी १९६६ है कि वेस्ट-इंडीज (इन्डिया) प्रगम्भव बागों को सभ्य बनाने की एक प्रयोगशाळा बन जाये।



आपके बर्छाँको सेंट्रल की बुक-बैंक भेंट देकर अनुमं बचत की आदत डालिये।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया



उपवास दान

होता है जतना प्राणका बानी जो बनेगा वह बाबा की श्मशान क्रिया के लिए रखा जाये। (हंसी)

इसमें मेरा एक श्रौर मुभाव है। सर्व सेवा सप को हर साल अनेक नामों के लिए जो भारत भर में चलते हैं, कम से कम दस लाख रुपये की जरूरत होती होगी। मैंने सोचा हमारे साथी, कार्यकर्ता, सहयोगी, सर्वोदय विचार मे थड़ा रखने वाले जितने भी लोग भारत में हैं वे श्रौर महीने में एक उपवास करेंगे श्रौर साल भर का जो सर्व (वचत) होगा उपवास का वह सर्व सेवा संप को देंगे तो बहुत बड़ा काम होगा। मेरे खाने का तीन रुपया सर्वां होना है, कार्यकर्ताओं का दो रुपया होता होगा। २४ रुपया साल उनके होंगे। परन्तु हिसाब के लिये २५ रुपया मानें तो १० लाख रुपये की रकम पूरी करने के लिए ४० हजार को उपवास करना पड़ेगा। मेरा स्थान है इन उपवास—प्रेमी भारत में ऐसे लोग तो

साथो मिलने चाहिए। सर्व सेवा सप के श्रय्यक्ष—हैं सिद्धराज जी। वे जैन समाज के प्रतिनिधि हैं। मेरा स्थान है अनेक जैन समाज साथ-साथ उपवास कर देगा। इसके भलावा दूसरे भी करेंगे।

तो मैं आशा करता हूँ कि ४० हजार उपवास करने वाले श्रय्य मिलेंगे। ज्यादा ही लोग मिलेंगे।

यह जो वैसे मिलेंगे उसके तीन पायदे होंगे। जो उपवास करेगा उसे धार्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह चित्त, मनन करेगा और एक दिन भगवान के नजदीक रहेगा। उपवास का अर्थ ही है भगवान से नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। दूसरा शारीरिक लाभ होना है। महीने में एक उपवास किया तो बालकोबा भी खुश होगा। बालकोबा यानी, प्राङ्गिक उपचार वाला। प्राङ्गिक उपचार वालो का कहना रहता है कि महीने में कुछ न कुछ उपवास जरूर किया जाये। तो महीने में एक उपवास से कार्यकर्ताओं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ है कि हमने

जरीये जो दान दिया जायेगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा सप को मिलेगा तो उसका सच भी अच्छी तरह से होगा। शकत है सर्वां नहीं होगा। तो यह तीन लाभ उपवास के दान से होंगे।

उमके साथ-साथ सर्वोदय-मान, धार्मिक पात्र पर-पर में रखने को जो हमने कहा है, रोज एक नया पैसा उसमें डालना, वह कायम है। वह अच्छा ही है। वह प्रक्रिया जारी रहे। बच्चों के हाथ से पैसा डाला जाता है रोज, उससे दान मिलना है और बच्चों को सम्भार भी मिलने हैं। तो यह प्रक्रिया जारी रखी जाये। उसके साथ-साथ उपवास की प्रक्रिया भी जारी रखी जाये।

मेरा स्थान है दोनों प्रक्रिया मिलकर सिद्धराज जी का पेट भर जायेगा। लेकिन हमने सोचा है भारत में पूरा पेट खाना अच्छा नहीं। हमेशा धाधा पेट खाना। पात्र पेट पानी से भरना, पात्र पेट हवा से।

इतलिये आशा करता हूँ कि सर्व सेवा सप का धाधा पेट भर जायेगा।

ब्रह्मविद्या मन्दिर पब्लिशर ११ मिन्यूट ७३

हमारे दुर्लभ प्रकाशन

श्री रमण महर्षि से बातचीत

(Hindi Edition of Talks with Shri Raman Maharshi)

संस्करण :

मुनपल एम बंकटारामय्या

मूमिका लेखक :

डॉ० टी० एम० पी० महादेवन्
डाइरेक्टर

सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडी इन
फिलॉसोफी, मद्रास विश्वविद्यालय

मूल्य : १२/-५०

रमण महर्षि एवं ब्रह्मज्ञान का मार्ग

(Hindi Edition of, Raman Maharshi and the path of Self-Knowledge)

लेखक

धार्तर ब्राह्मणेन

मूमिका लेखक

डॉ० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन्

भूतपूर्व राष्ट्रपति

द्वितीय संस्करण। मूल्य : ५/-५०

उपरोक्त तीनों पुस्तकों की धार्तर, भाग्य ठका गेट-पन बडुन मुन्दर है

प्रकाशक : शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, पुस्तक प्रकाशक एवं विप्रेता, भाग्यरा-३ (उ० प्र०)

मानस श्मशानो के पुन व्यवहार पर प्रबन्धित

मानस-मणि

संस्करण—राधेभोहन धारवाला

सम्मतिवा :

साम्प्रति मानस के इस संस्करण में राधेभोहन जी ने मेलनन तो अच्छी की है।

इस ग्रन्थ में ऐसे अनेक बचन हैं जिन्हें नियम उपाय में दिग्गु बट करने का जो चाहना है। प्रकृत मद्रह एक विशेष दृष्टि में किया गया है जो दृष्टि बहुत लोगों को मान्य होंगी।

—बाबा बालेभकर

संस्करण में गतिशीलता में बड़े बीजने के काम किया है। साथ-साथ अर्थ भी मरन भाग में स्पष्ट कर दिया गया है। मानस के साथी सोचानों की पर माना कृष्ण माटी में अक्षिज भावना पूर्वक कुछ कर ऐसी संभावना की है कि जिन राममन्त्र तथा माण्डूक्य-कार एव ममीशर गनी बड़े साथ में धरनाये, लेग मेग विरयगत है।

—विद्योती हरि

माई श्री राधेभोहन धारवाला ने बड़े मनोयोग, धूमधूम और सर्वाधिक धारम्यक ठक दधि-अरु मे पर मानस-मन्त्र श्रुता किया है। वे मन्त्र, माण्डूक्यकार और गामान्य पाठक गनी के निरट धन्यवाद के पात्र है।

द्वितीय संस्करण : १९७३

मूल्य : ३/-५०

—प्रधानी प्रमदर मिश्र,

स्वाधरक गनी मार्ग एव दुःखान-पत्र

समाप्त हो गये हैं और इस प्रकार से गांधी विचार मुक्त विचार रह सक्ता है। यहा तक कि विनोबा ने गांधी के मूल विचार सत्याग्रह तक में तरमोमें की है और सत्याग्रह की अपनी नयी व्याख्या की है। यदि हमें लोक-शाही चलानी हो तो इस तरह का मुक्त विचार आवश्यक है।

नया परिप्रेक्ष्य

इसका अर्थ यह नहीं है कि विनोबा ने गांधी विचार को छलन कर कोई नया ही विचार रखा है। इसके विपरीत विनोबा ने गांधी को नये परिप्रेक्ष्य में पेश किया है और खासकर आज तो गांधी को ससार के सामने जिस सफाई और प्रखरता के साथ रखा गया है उसका धारा श्रेय विनोबा को है। 'ग्राम-स्वराज्य' का विचार जो गांधी जी में एक पुष्पला सा विचार था वह आज एक स्पष्ट दर्शन और कार्यक्रम के रूप में ससार के सामने है। उसके लिए काम करने वाले सम-पित लोगो का एक समूह है और वह समूह अपनी शक्ति भर प्रयास कर रहा है। आज जहा तक गांधी विचार का प्रथम है देश में उस तरह का कोई अग्रकार नहीं जैसा वह गांधी जी की मृत्यु के समय था। यह अलग बात है कि गांधी के निवृत्त रहने और उनके विचारो को समझने का दावा करने वाले बहुत से लोगो को अब तक विनोबा समझ में नहीं आ सका है और वे निष्ठावान् विधवा की तरह गांधी के बताये कुछ कामों को, जिन्हे ये लोग रचनात्मक कहते हैं विन्तु जो गांधी के लिए समाज परिवर्तन के काम थे, करते आ रहे हैं। किन्तु गांधी का समाज परिवर्तन करने वाले क्रान्ति-कारी के रूप में परिचय देने वाले काम केवल विनोबा ही देश और दुनिया के सामने रख सके हैं। यद्यपि गांधी जी ने विनोबा को अपनी उत्तराधिकारी तो नहीं बनाया था किन्तु जिन्हे इतिहास ने यह सुविधा दी थी वे विनोबा के मुकाबिले गांधी विचार के लिए शतांश भी नहीं कर सके हैं।

विनोबा की सबसे महत्वपूर्ण और उन्ही की भाषा में सर्वोत्कृष्ट देन तो शिक्षा के क्षेत्र में ही है। यहा शिक्षा का तात्पर्य व्यापक अर्थ मेंना चाहिए। उनका विगत साहित्य-निर्माण उसका एक पहलू है और उससे भी अधिक

उन्हीने देन को एक नवीन शिक्षा-दर्शन दिया है। इन दर्शन का मूल यह है कि शिक्षा जीवन की परिभाषा ही है। यह मनुष्य को एक तरह तो उस ससार से तादात्म्य कायम करने से सहायक होनी चाहिये जिन्में मनुष्य रहता है और दूसरी तरह उसके मनुष्य की उस असीम सत्ता से भी तादात्म्य साधने में मदद होनी चाहिये जो समस्त विश्व की स्रोत है। इसके लिये विनोबा आरम्भ से ही वास्तवो को गणित, खगोलशास्त्र और भूगोल पढाने की सलाह देते हैं। गणित से वह निश्चित और तटस्थ विचार कर सकेगा, खगोलशास्त्र से उसे इस विश्व की व्यापकता और उसमें अपनी सही स्थिति का ज्ञान होगा जो मनुष्य के अहंकार निरसन में मदद करेगा और भूगोल से उसे उस दुनिया का ज्ञान होगा जिसमें वह रहता है। जीवन के प्रत्यक्ष काम के साथ शिक्षा को जोड़ देने का विनोबा का आग्रह ससार के सभी शिक्षा शास्त्रियों के समान है। गांधी जी ने जब 'बुनियादी-शिक्षा' का विचार देश के सामने रखा तो विनोबा उसके सबसे पहले समर्थक और भाष्यकार बने।

शिक्षा के उद्देश्य

सेवाधाम में गत वर्ष हुए राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में विनोबा ने जो प्रवचन किया था वह शिक्षासाहचर के भारतीय इतिहास में महत्व का है। उसमें पहली बार शिक्षा के एक ऐसे दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ है जो मनुष्य को विश्व और विश्व नियंता से तादात्म्य तो करायेगा ही साथ ही जो विज्ञान की नवीनतम आविष्कारों को भी पूर्ण करेगा। उसमें विनोबा ने कहा कि 'शिक्षा के तीन उद्देश्य होने चाहिये : योग, उद्योग और सहयोग।' विनोबा के ही शब्दों में 'योग का अर्थ प्राप्तन लगाना, व्यायाम करना, नहीं है। योग यानी चित्त कैसे प्रकृत में रखना, दमनियों पर कैसे सत्ता रखना, मन पर कैसे वातु पाना, जुवान पर कैसे अपनी सत्ता पाना, यह योग वा सच्चा अर्थ है। इन दिनों चित्त पर सत्ता रखना, चित्त अकुश में रखना, स्थिर रखना, जिसकी गीता में स्थितप्रज्ञता कहा गया है ऐसी स्थिर-प्रज्ञता की बहुत आवश्यकता है क्योंकि आज रोजमर्रा की संकेदो घटनाएँ मान पर पड़ती हैं, भास पर पड़ती हैं। चारों ओर से विचारों का आक्रमण होता है। जिनका आक्रमण

मनुष्य के दिमाग पर आज होता है उनका पहले कभी नहीं होता था क्योंकि साक्षरता न जमाना आया है। ऐसी हालत में चित्त को स्थान रखना स्थिर रखना, वातु में रखना अत्यन्त महत्व का विषय है। तो स्थिरप्रज्ञता को आज जितनी आवश्यकता है उतनी पहले कभी नहीं थी। अतः प्रज्ञा स्थिर करना योग का मूल्य विषय है।' यह बात सभी जानते हैं कि पश्चिम में सबसे अन्तर्दृष्टि की उदानी आरम्भ हुई है तब से वहा भी लोगों का ध्यान भारतीय योग दर्शन की ओर गया है यद्यपि वहा वह अभी 'प्राच्य' से पीडित, प्रभिन मनुष्य के लिए फलहाल एक प्रकार के शरणाालय का ही काम कर रहा है और उसके उस पहलू पर लोगो का ध्यान अभी नहीं है जिनका जिक्र विनोबा कर रहे हैं। किन्तु मनुष्य, स्थिरमति हो यह तो विज्ञान की आरम्भ से ही माग रही है।

उद्योग का स्थान

शिक्षा में उद्योग ही वह तो आज सर्व-मान्य बात हो गई है। किन्तु अभी उसका अर्थ इतना ही लगाया जा रहा है कि स्कूलों में छात्रों को कुछ धंधे का प्रशिक्षण दे दिया जाय ताकि वे बेरोजगारी से बच सकें और नाम जोड़ने के पीछे अभी निवाय उद्योग और कोई हेतु नहीं है। किन्तु विनोबा ने इसका का जो अर्थ किया है वह निजान्त भिन्न है। वे उसका अर्थ 'विश्व और प्रकृति के साथ तादात्म्य' करना करते हैं। उन्हीने इन सन्दर्भ में एक बार पंडित नेहरू जी के द्वारा बही गई बात का उदाहरण देते हुए कहा कि 'जो समाज प्रकृति के साथ सम्पर्क तोड़ देता है उसका साथ ही जाता है।' समाजशास्त्र के अध्येता जानते हैं कि समाज इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रकृति से जो समाज जितना दूर होता गया वह उतनी जल्दी नष्ट हो गया। महरी सम्पत्ता का यह सबसे बड़ा दुर्गुण है कि वह मनुष्य को प्रकृति से दूर कर देती है इसलिए ही समाजशास्त्रियों ने महरी को 'सम्पत्ताओं की बन्ध' कहा है। तो विनोबा बतते हैं कि शिक्षा के माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ गहरा और सवा रात्मक सम्पर्क होना चाहिए और इसके लिए अर्थ सम्बन्ध उत्तम

माध्यम है। हर विद्यालय के पास कुछ न कुछ खेत होना चाहिए और हर छात्र शिक्षक को दौड़ नहीं हर तार्किक को रोज कुछ न कुछ समय तक चाहे वह कितने ही भीर बड़े बड़े जाने वाले काम में क्यों न लगा हो खेत में काम करना चाहिए। यहाँ तक कि देश की प्रधानमंत्री तक को भी रोज दो घन्टा खेती करनी चाहिए। शिक्षा में उद्योग जोड़ने का बड़ी भी धर्म है और यही धर्म भगवत है कि हम सामीप्य द्वयि सम्पन्न वा सरदार और योग्य करे और सहृदिकरल के बनें यदि हम अपनी सम्पत्ता और सहायता की रक्षा करना चाहते हैं। क्या शिक्षा में उद्योग शामिल करने वाले रिती विधाताहारी को पहले से यह धर्म मान्य था। किसी ने क्या शिक्षा में उद्योग की बन्धी दस धर्म में लिखा।

केन्द्रवाद

भारत सरकार भी आज कल शिक्षा में उद्योग दामित करने पर बहुत जोर दे रही है और पारितय के भारी बोधे 'कोटनरी बन्धीन को रिपोर्ट' को तो उमके शिक्षा में 'भारतियुवन' के मुखाग्र पर भारी बन्धनदा दिया जा रहा है विन्तु क्या इस बन्धीन के रिती भी सरदार को सम्मुख शिक्षा में उद्योग दामित करने का सात्विक धर्म मान्य है? क्या बन्धीन यह जानकर कि हमके फिनित्तार्थ यह भी हो सकते हैं कि हमसे हमारी यह सहृदिक सम्पत्ता ही धाम्युन बदल सकनी है अपनी निभारिक पर रहा है। इसलिये शिक्षा में उद्योग दामित करने का सात्विक धर्म है कि हरि देस की राजनीतिक, धारिक और सामाजिक रचना में धाम्युन दामित करना। यह नहीं हो सकता कि हमारे देस का धारिक और राजनीतिक दावा तो बेद्विन व्यवस्था का रहे और देस की धर्मव्यवस्था भारी उद्योग को हमेशा ही केन्द्रवाद को ही बनाने है पर धाम्युनिक रहे और हर हर धर्म को बड़े ईश के विधानयो में ऐसे उद्योग कीलें किन्के निरूपे फिर भारी और बेद्विन व्यवस्था उद्योगों के मुखाग्रिने कोई अधिक्य नहीं है। यह दास की धमिभक्त इस दुर्धमिर्लभि को समय आयेंगे ही का शिक्षा में उद्योग की यह नीति बनने वाली है। धन, विनोवा ने जो बड़ा उमके शिक्षा इनका ही बुद्ध धर्म हो

ही नहीं बनना है कि शिक्षा के धनुषुत ही फिर हमें हमारी सामाजिक, धारिक और राजनीतिक बनना भी बननी होगी नहीं तो धाने चलकर फिर लेने के देने पड़ सकते हैं।

हमपन को प्रोत्साहन

शिक्षा में सहयोग का क्या धर्म है? इस का धर्म है कि हमारी बुद्धि और बुद्धि निर्माण की पद्धति तथा साधन ऐसे हो ताकि हमें यह धनुषुति होती रहे कि हमारे के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है धन हमें हमारे के साथ ही जीना है। शिक्षा में सहयोग द मिल करने का धर्म है। 'मैं' के बजाय 'हमपन' को प्रोत्साहन देना। इसका मतलब और यह हुआ कि तब हमारी सगठन प्रणाली बदनी होगी क्योंकि आज की प्रणाली तो होइ और निजी लाभ पर धारिकित है। साम्यवाद भी इसमें कोई फर्क नहीं कर पाया। इसलिये इनके लिए विद्यालय को पहले स्वयं एक ऐसी 'सामुदायिक इकाई' बनाना होगा जहाँ दूबकर छात्र और शिक्षक सामुदायिक जीवन का प्रविष्टा हो सके। नितकर बंठे रहना नहीं तो हमारी आज की समस्या है और शिक्षा दुर्भाग्य से इसे हल करने के बजाय और उलझा रही है। इसका विनोवा ने एक और धर्म भी किया है कि हमें न केवल मानव समाज के साथ रहना है अपितु मानवतर प्राणियों के साथ भी रहना है यह धनुषुति होगी चाहिए। आज के इन्फ्लैक्लिड भी वही कह रहे हैं। तो इसका धर्म यह है कि हमारे के सारे व्यवहार और सगठन बदल जाने चाहिए जो मनुष्य को मनुष्य से मिलाने में बाधक हैं। विनोवा ने कहा ही है कि 'सहयोग में मानव हाथ कि भारी पुष्ठी एक है। पुष्ठी के सारे मानव एक है और केवल मानव ही नहीं, धाम्युन के पशु पक्षी, प्राणी, वनस्पति सब एक हैं। शोच का धम देला तो बचिना स्तुरित हुई। तो धाम्युनिक है मुष्टिक के साथ भी एक होना चाहिए। मैं चिन्तियाँ हैं सुन्दर यात्री है, जनकी रक्षा होगी चाहिए। मैं बनें हैं, जनकी रक्षा होगी चाहिए ये गाये हैं जनकी भी रक्षा होगी चाहिए, बट-भुश भी रक्षा होगी चाहिए। सुनसती भी जो पूजा होगी चाहिए २ यह भारत का रागरतन है? यह भारतीय धाम्युनक मत्तल्य मत्तल्य का है कि कुल के कुल मानव हम एक है और

हमके मलावा धाम्युनिक के जो प्राणी है, वनस्पति है, हम सब एक ही हैं, सब हम ही हैं, यह एक रूपका हमको धाम्युनिक की मुष्टिक के साथ होगी चाहिए। यह भाग है जनाने की भाग है भौतिक विज्ञान सबको नजदीक लाता है, इसलिये सबका सहयोग, प्राणियों का, मानव का, धर्मित है।

यह शिक्षा का सम्पूर्ण दर्शन है जो विनोवा से हमें प्राप्त हुआ है। 'बन्धीन' के रूप में भी विनोवा का सौम्य भव्य है। इन्डिया का एक दावा धर्म है और भारत के कोने-कोने में सारो लक पंडल धुमता रहा है। यह नीति धाया है, बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरय सब पूछते हैं तो जबाब मिलता है 'यह विनोवा है' और गरीब के लिए उसने हक के तीर पर जमीन मागते हैं। इस तरह से विनोवा ने सारो एकउ भूमि प्राण्य की जो सारो भूमि होगी में बड़ी और उन्हें स्वयं प्राप्त हुआ। गांधी जी ने एक बार विनोवा से पूछा 'इतना कमजोर स्वाभ्य होने पर भी आप इतना काम बंठे कर लेते हैं तो विनोवा का जवान का बि धारनी इच्छाधर्मिन के बल पर? विनोवा की जैसी इच्छाधर्मिन के बल किसी को होगी। घटो नहीं दिनी नहीं महीनी और सारो तक एक काम में एकजना साधना धनुषुत बना है विन्तु विनोवा का यह सहज गुण है। भूदान और धारयान धाम्युनक के माध्यम से विनोवा ने ससार के मायने एक नई समा-बना प्रवट की है कि कालिक के लिए इतिहास की कोई निभितच लकीर नहीं होगी जैसे मार्क्स का थ्याल था धर्मितु बट इस पर निर्भर करनी है कि हम मानव के बिनाके निकट पहुँच सकते हैं। जैसे पहले कहा गया कि आज काय स्वराज्य के रूप में गांधी सवार के सामने चुनौती बनकर खड़ा है तो इसका श्रय विनोवा को है।

कथ समर्थों ?

क्या विनोवा को हमने सही समझा है क्या उसे हम बन्धीन समझा सकेंगे? यह दुल भी कहा है कि विनोवा के निकट रहते ही उन्को साथ काम करने वाले भी यह नहीं कर सके। सर्व सेवा सप तो हममें एकदम ही धाम्युनिक रहते हैं यद्यपि वह हमेशा ही विनोवा का

(बागी पेज २५ पर)

बापू की स्मृति में



बानूलाल माखरिया, चम्बई की ओर से

मुंबई जिले के सादीग्राम में गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए श्रमशाखा की स्थापना हुई है। धीरे-धीरे से प्राचार्य राममूर्ति ने इसकी स्थापना की। आज इसे विद्या बहन एव उनके गांधी कहा रहे हैं। बच्चे ६ घंटा शाला की सेती में श्रम करते हैं, दो-तीन घंटा अध्ययन करते हैं। इनमें से स्कूल के शिक्षकों का वेतन, शाला का अन्य खर्च, बच्चों के भोजन, कपड़े धारि का खर्च तिहाई हिस्सा निभल जाता है। इनमें से थोड़ी-सी रकम बच्चे अपने मां-बाप को भी ले जाकर देते हैं। कमाओ और सीखो ही नहीं, कमाओ सीखो और खाओ का यह मूढ नमूना यहाँ पेश किया जा रहा है। जो सादीग्राम में हुआ वह वही भी हो सकता है। इस उपक्रम में भारत के सब गरीबों की शिक्षा का प्रश्न चुटकी सरीया हल कर दिया है। लेकिन इसे देखने के लिए निश्चिंत जगत के पास आलें ही नहीं है, अनुकरण करने की बुद्धि बहा से भागे ?

मुजफ्फरपुर जिले के एक गाँव में सबर लगी कि एक बड़ा किसान अपने सेत बागेंह चुपके से मुजफ्फरपुर शहर में भेज रहा है, जिससे कि उसे प्रताप-शताप भाव मिल सके। पता चलते ही गाववालों ने उस मकान पर घेरा डाला। अपने सामर्थ्य को कम धाक कर मुजफ्फरपुर शहर की कम्युनिस्ट पार्टी को सबर दी कि हमारी मदद में आइएगा। पार्टी के लोग घाँसे और गाववालों को एक बतार में खड़ाकर गेहूँ बाँटा जाने लगा। बतार के प्रारम्भ में पार्टीवालों ने अपने कुछ गहूर के समर्थकों को भी खड़ा कर दिया और इनमें प्रनाज का कटौन दर पर वितरण होने लगा। गाववाले यह भ्रम्याय बितनी देर देखते रहते। गाँव वालों ने शिकायत की। कहा-मुनी से काम निपट नहीं रहा है, यह देखकर एक बंदम धागे बढकर गाँव वालों ने इन गहूरियों को बतार से बाहर निकाला, सब गाववालों को गेहूँ बाँटा गया और किसान को गेहूँ की पूरी रकम दे दी। ग्राम-शक्ति जग जाये तो किसकी हिम्मत है कि उसका मुकाबला कर सके ?

ऋषि विनोबा

(पेज २१ से जारी)

प्राथम्य खोजता है। विन्तु आज विनोबा का वह वैसा ही उपयोग कर रहा है जैसा कभी कांग्रेस गांधी जी का करती थी। विन्तु जैसे गांधी जी का काम कांग्रेस के बिना भी चलता था वैसे ही विनोबा को सर्व सेवा सघ की दर-कार नहीं है विन्तु सर्वसेवा सघ ही क्या यह देश भी गांधी जी की ही तरह विनोबा के व्यक्तित्व से सवार में सम्मान तो पाना चाहता है किन्तु उसके मार्ग पर चलने की उसकी कम से कम भ्रमी तो कोई मशा नहीं दिखती है। पश्चिम में आज गांधी, विनोबा को वही अधिक सम्भा जा रहा है। यह शायद इस माथे पर पर ही लिया है कि जब तक परिषद से होकर कोई बान हमारे यहा नहीं पहुँचती तब तक हम उस पर ध्यान नहीं देते। विन्तु इससे विनोबा का नहीं इस देश का ही नुकसान होगा यह निश्चित है।

With Best Compliments

From

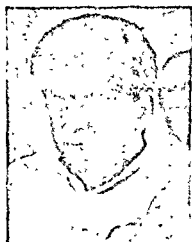
Transport Corporation Of India (P) Ltd.

P-4 New C. I. T. Road, (Near Tirhatti) Calcutta-12.

बाराचट्टी - जहां ग्रामस्वराज्य साकार हो रहा है

जमीन से आसमान में छाते हुए मुसहर

जिन्हें देला और दिलाया अशोक बंग ने



→
सो गांव ऐसे हैं जिनमें कुछ न कुछ काम
हम है।

क्षेत्र में निम्न प्रवृत्तियां चल रही हैं :

१. ग्रामदान—ग्रामस्वराज्य की चार
शर्तों के अनुसार कार्य।
२. भूमि-मुफार तथा उन्नत कृषि के
कार्य, घुमा बनाना आदि विरासत
कार्य तथा प्रशिक्षण-कार्य।
३. व्यापक रोजगारी, 'कुड़ फार बर्क'
के द्वारा।
४. नर्ज मुक्ति एवं भ्रष्टालत-मुक्ति।
५. मध्यम शिक्षण-योजना : बालबाढ़ी
से लेकर प्रौढ शिक्षण तक सम्पूर्ण।

ग्राम सभाओं की स्थापना, उनकी
सक्रियता, ग्रामकोष की शुरुआत, बीसवा
हिस्सा जमीन का वितरण आदि बातें
ग्रामर सभी गांवों में हो गयी हैं। ५५
गांवों से एक भी मुकदमा भ्रष्टालत में नहीं
है, गांव का न्याय गांव में ही होता है।
कुछ गांवों में थोड़ी जमीन पर ग्राम सभा
की धोर से सामूहिक खेती भी चल रही
है। ग्रामसभाओं में मासिक बूलेटिन पढुवाई
जानी है। इस प्रकार के कई काम चल
रहे हैं।

ग्रामीण तरणों का संगठन यहा के काम
की एक खूबी है। ग्राम शान्ति सेना के नाम
से बने इस संगठन में सशक्त सम्भावनाएं
भी निर्माण हुई हैं। ५५ गांवों में करीब दो
सौ-ढाई सौ तरण ग्राम शान्ति सेना में सक्रिय
बने हैं। इनके शिक्षण की धोर भी पर्याप्त
ध्यान दिया जा रहा है। द्वारकोजी धोर
उनके साथी दिवाकर जी के प्रलावा शान्ति-
सेना मंडल के प्रमत्तया भाई का माह में एक
सप्ताह इस काम के लिए मिले ऐसी योजना
है और उसकी शुरुआत भी हो चुकी है।
अब तक दस तरणों के दो गिर्बिदर एक
सप्ताह के हुए हैं। आगे ऐसा भी सोचा जा
रहा है कि तरणों का धोरियंटेशन उनके
गांव की परिस्थिति के परिवेश में समन्वय
पद्धति से हो इसलिए अपने-अपने गांवों में
तरणों के साथ प्रमत्तया भाई दो-दो
तीन-तीन दिन रहें। ग्रामीण युवा नेतृत्व
में सफेद पोश-पन में आये धोर उनका एक



मुसहर शिक्षक, मुसहर बच्चे: नयी शिक्षा

“नया कार्य” न बन जाय ये बातें इस तरीके
के प्रशिक्षण को बनाने से सध सक्की।
ग्राम नेताओं की जड़ जमीन से जुड़ी रहेंगी,
पनपैंगी धोर प्राप्त रुट लेवल संगठन बनेगा।
यह पद्धति धन्य क्षेत्रों में भी आजमाने
लायक है।

इनमें से करीब चालीस तरणों से
बोसला नामक गांव में हम मिले। बोसला
गांव एक कार्यक्षेत्र का केन्द्र है। इस केन्द्र
की मातहत पठने वाले करीब १० गांवों से
ये तरण इकट्ठा हुए थे। इनमें से कुछ
अपने-अपने गांवों में ग्रामसभा के अध्यक्ष
या मंत्री भी हैं। हर माह की पहली तारीख
को सघन क्षेत्र के ऐसे सभी तरण बोधगया
में मिलते हैं और बैठक होती है। इन तरणों
में से बच्चों के बेटों पर कुछ तेज धोर
चमक है ऐसा महसूस हो रहा था। अधिकांश
हाई स्कूल या मेट्रिक तक की शिक्षा
प्राप्त हैं।

इनमें से करीब २० युवक चुने गये हैं
जो क्षेत्र में चलने वाली २० रात्रि पाठशा-
लाओं में शिक्षक का काम करते हैं। कुछ
गांवों में शत प्रतिशत साक्षरता हो गयी है।
इस सघन क्षेत्र में पाया जाने वाला ग्रामीण

तरणों का यह इतना अश्रद्धा धोर सक्रिय
संगठन बहुत कम जगह देखने में आया है।
कुछ का निर्वाह गांव की सामूहिक खेती पर
होता है, कुछ तरण संगठन से नाममात्र
२५ रुपया माह आर्थिक सहायता पाते हैं।

इस क्षेत्र में पुराने जमाने के कठिन
ग्रामदान २०-२५ है। इनमें सारी जमीन
की मिलियत वास्तव में ग्रामसभा की हो
गयी है और उसका समान वितरण भी हो
चुका है। आर भी वे गांव अपने समान
वितरण पर कायम हैं और उनमें ग्राम-
स्वराज्य का काम आगे बढ़ाया जा सकता
है। परन्तु कार्यकर्तियों के प्रभाव से उनमें
आज शिथिलता आ गयी है।

मनकर का एक ऐसा ही गांव है।
मनकर का नाम लेते ही देश के कई सर्वोदय
प्रेमियों के मन हरे हो उठे होंगे। ग्रामस्वराज्य
आन्दोलन के मोर्चे पर एक समय झुगुर्दा
पर रहे चुका यह मनकर गांव !

पीपल वृक्ष के पास ही बने एक
चबूतरे पर मनकर गांव के लोगों के साथ
२ घंटा परामर्श हुई। आज गांव जगड़ा दुष्प्रा
सा लगता है। गांव के आज़के स्वरूप को

→

→ देवकर यहीन नहीं होता है कि एक समय गांव मीठून था। २२ एकड़ सामूहिक कमी होती थी। भोलाभा, सामूहिक दुबान, सारी प्रादि प्रवृत्तियां चली थीं। विभिन्न सामूहिक प्रार्थना हुआ करती थी। गांव का उपायन बाईं मुना बड़ा था। सबसे बड़ी बात यह कि गांव ने सारी जमीन का समान पुनर्वितरण किया—एक बार नहीं दो बार। एक बार भूमि पुनर्वितरण के बाद कुछ सालों के बदली हुई परिस्थिति को देखकर दुबान समान पुनर्वितरण हुआ।

दो गांव वालों की प्राथमिकी दुबानी गांव की फूट का एक प्रधान कारण बनी। फूट का एक कारण नगान की प्रधानी के सम्बन्ध में भी रहा। जमीन के पुनर्वितरण के बाद भी सरदार पुराने भूमि धारण के आधार पर ही नगान प्राथमिकी रही। प्रभाव पर ही यह वैचकूपी कलेक्टर से लेकर राज्य के सर्वोच्च देवेणू सेक्रेटरी तक पहुंचाये गयी। अंतर में उचित कार्रवाई के धारणासम भी मिलने रहे लेकिन प्रशासन की फाइलों पर जमीन भूमि ज्यों की त्यो बनी रही। सामूहिक नगान भरने की समस्या आज तक हल नहीं हुई है। गांव वालों को चाहिये था कि इस सन्धे को लेकर सत्याग्रह करते। यह बानों के हाथ सर्वोदय समझन भी सत्याग्रह में जुड़ा होगा। दोनो क्षीर से इस बात की उम्मीद हुई।

उन्ने से पहले धन्य मे ठाकुरदास बन ने गांव बानों से एक सवाल पूछा—“यदि धात्र राज को बंधवान धाय लोगो के सन्धे में धार्य क्षीर बड़े कि मनकरवासियो, तुम सबसे एक समय बहुत अच्छे-बच्छे काम किये, हम तुम पर प्रशन्न है। जो वर चाहो गांव सौ, ती धाय लोग कौन सौ क्षीर प्राथमिकी ?”

गांव बानों मे से नई लोगों ने जवाब दिया। जवाब दिव्यवत्स से। सबसे पहले धारमी ने कहा: “धाय के लोगों मे उल्लाह धारमी गांव गांव का समुदाय पहले की तरह मजबूत ही क्षीर धायन में एचनो ही, यह हम चाहिये।” कुछ क्षीर लोगों ने ऐसी ही बाने बयानी। एकने कहा: हम गांव के लिए लानाव मायने क्षीर कूर प्राथमिकी। एक क्षीर

प्राथमिकी ने कहा, “हम भयवान से मायने कि गांव मे जो ५-१० अच्छे समनधार लोग हैं जोर लोगों मे फिर से पुरानो निष्ठा जोर क्षीर के गांव की सभा को पड़ले जैसा जानदार बयानों।”

धाय का मनकर गहन इतिहास की विज्ञान वास्तु का एक लड़हर-भजन नहीं है। धाय मनकर की दीवारें भले ही बह गयी हों, लेकिन गांव वालों के मन में उसकी बुनियाद कायम है।

ऐसे गांव इस क्षेत्र में हैं जहां सधम कार्यकर्ताओं की बनी के कारण काम खा पडा है। ऐसे कार्यकर्ता सपियों की पणाल टीम महा लखी नही हो पायी। यह कामजोर पडा है।

उपरोक विशेषताओं से बदकर एक ऐसी बात है जो इस क्षेत्र के काम की छास विशेषता है। शिक्षण की प्रवृत्ति को धाम-स्वराज्य के काम से जोड़ने के लिए विद्यालयीन प्रवृत्तियां कुछ एक मन्त्र सधन क्षेत्रों में भी धन रही हैं। लेकिन इस क्षेत्र में चलने वाली ‘समग्र शिक्षण-योजना’ जिस बंदर समग्र है क्षीर जिन सूखी के जसे क्षेत्रोंय काम के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है वह अपने धाय में घातों क्षीर है।

बाल्यावस्था से लेकर प्रौढावस्था तक के लोगों का व्यावहारिक (कमजाल) शिक्षण हो सने इस दृष्टि से बालकों के लिए गांवों में बाल्यावस्था चलती है, बुनियादी शिक्षा के लिए बधा नामक स्थान पर विद्यालय है, उत्तर बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए उत्तर-बुनियादी विद्यालय, किसानों के लिए एक साथ का प्रशिक्षण कोर्स तथा श्रोतों के लिए गांवों में रात्रि पाठशालाए इत प्रकार की यह समग्र योजना है।

दिल्ली हावडा जी० टी० रोड पर बाईं तरफ एक रास्ता भांडियों में जाता है। बेर जैसे कटौले बुधों के बीच से होते हुए जपल से मुखरने बाना ३ मील का रास्ता पार करने पर धाय जिस नन्दनवन में पहुंचने उमडा नाम बधा-विद्यालय है। विद्यालय के छात्रों में प्रवेश करने ही बानाकरण की सुरक्षा प्राथमिकी पुनर्निष्ठ करेगी। समय परिस्थिती नाम का पा वग का नही तो पुदरने बाने बच्चे बारी क्षीर से धायकी

‘प्रणाम भाईजी, प्रणाम भाईजी’ बह-बहकर परेशान कर देंगे।

मीठे तौर पर, छह साल की उम्र से लेकर बारह साल तक के सड़के-नडकियों के लिए यह प्राथमिकी विद्यालय है। १९६८ से इसका भारम्भ बधा में हुआ। भूदान में मिले बजर क्षीर पम्परीने ८० एकड़ प्लाट पर यह विद्यालय बसा है। इस समय लगभग ११२ छात्र हैं, जिनमें से ३० तो लड़किया ही हैं। साप्ताह्य हर गांव से दो-चार लड़के-नडकियों को विद्यालय के लिए चुना गया है। सपियों से पीडित, दमित क्षीर शोषित मुषभा जाति के ही प्राथिकाएं छात्र



धानी में सेहनत

हैं। मनयोदय की दृष्टि से, जान-बूझकर बुनियादी मानी जाने वाली कारियों के बालकों को प्रशासना दी गयी है। ८० एकड़ समुदाय जमीन बारी थम क्षीर पूरों सगावर विरमित की जा रही है। सेती काम, गोभाला, सफाई, नमिण विद्या तथा प्रवृत्ति

"TRUSTEESHIP THE NEED OF THE TIMES"

"We must not under rate the business talent and know-how which the owning class have acquired through generations of experience and specialization. Free use of it will accrue to the society under my plan."

"My theory of trusteeship is no makeshift, certainly not camouflage. I am confident that it will survive all other theories. It has the sanction of philosophy and religion behind it."

Gandhiji

For more about 'Trusteeship' Read

'Humanised Society Through Trusteeship'

Published by—Trusteeship Foundation; 12, Punam, Jagmohan Das Marg
Bombay-400006.

Available at—Bombay Sarvodaya Mandal, Mani Bhavan, 19, Laburnum Road,
Bombay-7

Idachem Industries (P) Ltd. Sonpur Lane, Kurla Bombay.

PCI

"In the service of the Nation for More Food and Better Health"

Pest Control (India) Private Ltd.

Yusuf Building
Mahatma Gandhi Road
Fort, Bombay-400001

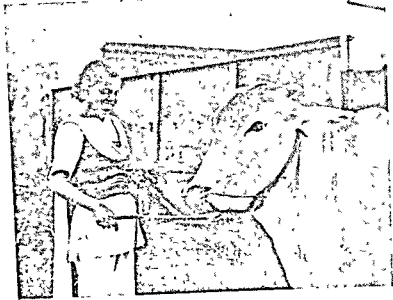
Tel: 251546

Grams: PESTCIL

Branches:

Ahmedabad, Allahabad, Amritsar, Bangalore, Baroda, Bhopal,
Bhubaneshwar, Calicut, Chandigarh, Cochin, Coimbatore,
Guntur, Goa, Hyderabad, Jamnagar, Kakinada, Kanpur,
Lucknow, Madras, Mangalore, New Delhi, Poona,
Pondicherry, Raipur, Varanasi, Visakhapatnam.

विज्ञान, मिर्चाई, रसोई, बौद्धिक बर्ण, सामूहिक कार्यक्रम आदि पहलुओं को लेकर जो समय विचार छात्रों का हुआ है, धीरे धीरे उठा है, वह देखने ही बनता है। निम्न पर ये सारी प्रवृत्तियाँ लड़कों के लिए अनंत भ्रान्त की प्रवृत्तियाँ बन गयी हैं— जिगी भी कार्यक्रम में शरीर होकर अनुभव कर लीजिए। प्रातः चार घंटे उठने हैं। प्रायःना में उनकी तमयना धीरे सगौर मुन लीजिए। २ घंटे बेची काम चलता है उस समय जिन उन्माह धीरे लगन के साथ सब लड़के-लड़कियाँ जुट जाने हैं वह देखकर स्वयं बनकर देखने रहना छात्रों के लिए मुश्किल हो जायेगा। १ घंटा सफाई धीरे रसोई का काम चलता है। चार घंटा बर्ण होने हैं। २ घंटे खेल धीरे सामूहिक कार्यक्रम। हर कार्यक्रम में काम, जान धीरे भ्रान्त की प्रतिभयना साफ भवतनी है—बच्चों के चेहरे पर ही; मोत्रने की जरूरत नहीं है।



बया विदातय मे गोपालन की शिक्षा

गारे जीवन में बलात्कमना, विज्ञान धीरे शिक्षा का समन्वय है। भोत्रनालय में द्ये विष देगने समय में द्ये रह गया था। द्ये-ब्यादू मान के लड़कों में प्रहृष्टि के कार्बन-मास्किन, धीरे नाइटीजन मास्किन के जो विष धरने हाथों से बनाये बेंबे देपकर मन में सहाय उठा कि केवल बौद्धिक पहलू को ही जाने तो भी, प्रचलित शिक्षा में पढ़ने बने हुए स्कूल के छात्र ब्यापारिच्छालय के इन लड़कों की बराबरी न पहिले में कर सकेंगे, न विज्ञान में, न भाषा-गुंदि धीरे लिखावट में।

राम को सामूहिक कार्यक्रम होने थागा था। मैं पढ़ना सब तक गारे लड़के पत्रियों में बेंड चुके थे धीरे सामूहिक गीत शुरू हो गये थे। जिन मुर धीरे नाल में वे गी लड़के सामूहिक गीत गा रहे थे वह नरुण मास्किन-मेना में भी मैं नही पहला। उनमें कुछ गीत कौरी के विभिन्न कामों पर थे—धान की रोमाई बच करेगे, बीज बिनावा बालेगे, गार बिनागे दैगे, जगान्नी तरिका बंभे बालेगे, मर्दी को कीर-मी उगा किन्ने कोरी बालेइ इल बालार के कुड गीत थे। एक गीत विचारत्र लक्ष्य का स्मृति

कोली में जिददा छद म मेय धनुवाद था। 'बोल रहा है मन किनोया चरके उचो बाह रे' यह गीत भी जिन जमावट धीरे बुलानी से १०० लड़कों ने गाया वह सुनने हुए मुझे इच्छा हो रही थी कि हमको देवाई करके बहू देण हमारे धन्य मास्किनो को सुनाया जाय।

गीतों के बाद बज नृत्य हुआ, डाडिया नृत्य हुआ, नृत्य-नाटिकाएँ हुईं। गारे कार्यक्रम उभे स्तर बंधे।

डास्कोजी बनना रहे थे कि प्रत्येक बला में कृष्ण ऐसे लड़के निवृत्त रहे हैं कि उनके विकास के लिए सुयोग्य शिक्षा का प्रभाव हो रहा है। एक लड़का चित्रकारी में धीरे एक मूर्तिना में काफी प्रतिभा रखता है, लेकिन उनके विकास में सहाय हो गये ऐसे शिक्षक का प्रभाव है। कुनी नामक एक लड़के मुर में काफी विद्याय कर सक्ती है पर बंसा जिज्ञास नहीं नहीं है।

कुनी का नाम विज्ञान को विज्ञानत्र की एक विशेष बाल बार था गयी। कुछ ही दिन पहले कुनी प्राणी एक मर्दी के घर गयी थी। वहाँ गार में भोजन के प्रभार में रोने-बिनावने बबका को देखकर उनके मन

पर गहरा प्रभर हुआ। बया में धारकर कुनी ने डास्कोजी से कहा कि सारी परिस्थिति को देखकर उसे बहुत रोद हो रहा है।

डास्कोजी ने पूछा, तुम उनके लिए कुछ कर सकती हो क्या? कुनी बना नहीं पायी क्या किया जाय। इस बारे में सोचने के लिए स्कूल के गारे छात्रों की सभा बुलायी गयी। पहले तो लड़कों ने कहा, हम क्या कर सकते हैं? सैकड़ा परिवारों में धारक यही हालत है। डास्कोजी ने सुभावा यदि हममें से कुछ लोग सप्ताह में एक शाम सना छोड़ दें तो जरूरतमंदों की कठिन परिस्थिति में हम कुछ राहत दिला सकेंगे।

पहले रविवार को धार्ये छात्रों ने स्वेच्छा से शाम को उपवास रखा। शाम की प्रायःना के बाद भोत्रनालय में न जाने हुए इल लड़के-लड़कियों ने गीत गाये धीरे पत्रों की कि उपवास में जो नौ बिलो धनात्र बना है उसे बंभे बाटा जाय। विद्यालय के भ्रान्त-भ्रान्त के धार देगानों को छात्रों ने चुना धीरे बारी-बारी से वहाँ जानर जन्ममर्दों को प्रभाव देने का लय किया।

यह मास धूरावया या महानुभूति का ए

निष्ठा नहीं है। बल्कि उससे कुछ अधिक भी है। सामंजसता के द्रोहों में रहकर बाहरी गमाज से बटे रहने का खतरा डालने की दृष्टि से देगें तो गाँवों के साथ इन छात्रों का यह त्रिन्दा सम्बन्ध बहुत गहरे माने रखना है। जिस समाज के निर्माण के लिए धन्यतोपलवा यह विद्यालय है, उसके साथ एक रूप होने का यह एक नान्दिकारी सांस्कृतिक कार्यक्रम है। दोन की जनता के जीवन और संस्कृति के साथ अधिक सम्बन्ध रखकर, बच्चों को उसकी क्षमियों और सुविधियों के प्रति जागरूक रखा जा सके जिससे कि घलगाव रूढ़ान हो, यह आवश्यक है।

जीवन और शिक्षण में यह जो धर्मिलता सपी है और उसके कारण बच्चों का जो समग्र विकास हो रहा है वह देगकर एक बार जयप्रवाश की ची घासों में घामू भर आयें थें। बहा था—'गमाज के जिस तबके को हमने जानवर बना कर छोड़ा है उन्हीं के इन बच्चों में जो सांस्कृतिक नान्द साधार होनी दिख रही है वह गमाधारण है!' बच्चों को एक

विशेष प्रकार के प्राथमीय संचि में डालने की प्रवृत्ति बढने का खतरा है, उससे जरूर बचना चाहिए।

कृपि गोशाला ध्यादि उत्पादक प्रवृत्तियों के प्राधार पर २ या ३ साल के भीतर ही विद्यालय स्वावलम्बी हो जायेंगा।

बुनियादी शिक्षा के बाद १२ से सोलह-साल की उम्र के लड़के-लड़कियों के लिए 'निर्माण से द्वारा शिक्षा' का तत्व धरनाया जा रहा है। निर्माण से मतलब है विकास कार्य और तब समाज-निर्माण का कार्य। योजना ऐसी है कि १२०० एकड भूदानी जमीन पर १० गावों में बसे ५०० परिवारों का क्षेत्र यही इस विद्यालय का ग्राहता होगा। इस क्षेत्र में ग्राम-निर्माण की प्रक्रिया में और ग्राम स्वराज्य के सपन कार्य को प्रारम्भ से सडा करने में छात्र सहभागी होंगे। वे गाँवों की परिस्थिति का सर्वेक्षण करेंगे, विकास की योजना बनाने में और उनके कार्यक्रमन में हिस्सा लेंगे। इस तरह बार-बार साल की प्रवधि में काम करते-करते सीखेंगे और सीखते-

सीखते काम करेंगे। बधा विद्यालय से निकले छात्र ही इस विद्यालय में क्रमशः लिये जायेंगे।

द्वारखोजी की प्रतिभा से चलने वाले ये दोनों प्रयोग अपने आप में अनोखे हैं। एचम शिक्षा में क्रान्ति के साधार उदाहरण हैं। रिबोल्यूशन इन एजुकेशन की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रमाण साबित हो सकता है। शिक्षा जगत में ग्राजकल 'डीस्कूलिग' की विचारधारा जोर पकड रही है। उस दृष्टि से भी यह प्रयोग सभावनाओं से भरपूर है। इस प्रकार की शिक्षा-प्राप्त नौजवान जब इस क्षेत्र में सब गाव-गाव में फैल जायेंगे तब वे ग्राम स्वराज्य की क्रान्ति में उत्प्रेरक की भूमिका धदा करेंगे। ग्रामस्वराज्य का नाम और विद्यालय की प्रवृत्ति ये दोनों पहलू परस्पर पूरक अतिव्यय अंग हैं। बधा में छः साल रहने के बाद भी बच्चे अपने गावों में अत में वापिस जायें, गाव के जीवन के प्रति तिरस्कार की भावना न रखते हुए उसे समभदारी से स्वीकार करें, और सुधारने का सतत प्रयास करें, यह होना तो ही इन प्रयोगों से अपेक्षित फल मिलेगा।

ग्रामीण भारत के रचनात्मक
उत्थान के लिए शुभकामनाएं

न्यू स्वदेशी शुगर मिल्स लिमिटेड

नरकटियागंज, चम्पारन (बिहार)

शुद्ध श्वेत खादार शक्कर के निर्माता

जवहार
ठाणा जिला

नौ रका डा

तखारारी तळ

शोलेरी ताल्लुका

डहाणू ताल्लुका

डहाणू

पालघर ताल्लुका

वा डा

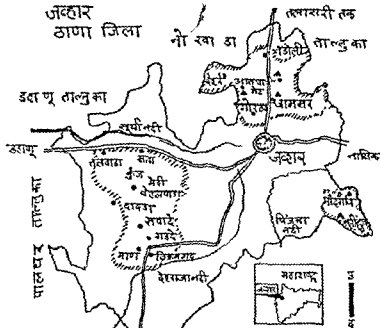
ताल्लुका

ग्रामदान कार्य पत्र खंड

दख्खीय ठाणा की ओर से

ग्रामदान की पुस्तकें

कानूनी कार्यवाही जारी है



ग्रामदान का समाज शासन दृष्टि से एक नया विचार प्रसारित किया गया है। इसलिए इस समाज शासन से शोषण की परिस्थिति विकसित हुई है, क्योंकि शोषण के बिना इस समाज शासन का अस्तित्व कभी भी बन नहीं पाता। बुनियादी परिवर्तन लाने का सफल लक्ष्य के विकसित करना नवी कल्पना है। इस क्रान्ति की दिशा में बढ़ने के लिए ग्रामदान का समाज सन्ना समाज नहीं है। और सच्चे समाज की वृद्धिपूर्ण बनाने के लिए नवी कल्पना की बहुत रचना करनी होगी। ग्रामदान का समाज एक दूसरे का शोषण करने वाला है। मनुष्य के सभी में विश्वास प्रकटित करने के ही सच्चा समाज बन सकता है। क्रान्ति की बहुत रचना विश्वास के आधार पर मनुष्य सभी को विकसित करने की है। ग्रामदान राज्य इसकी एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। हमारे पुष्टि क्षेत्रों में जो भी कार्य किया जा रहा है वह ग्रामदान के लिए गांधी की भावना अस्तित्व दिलाने के लिए किया जा रहा है। लेकिन दक्षिण के सहारे बनाये गये समाज शासन को कोटने के लिए भी वह ग्रामदान एक शासन है। इसलिए वृष्टि क्षेत्रों में हमारा कार्य लोगों में आपसी सहयोग बनाने का है।

जवहार में रोपे गये क्रान्ति के बीज

जवहार : महाराष्ट्र में ग्रामस्वराज्य की दिशा

—बाबूराम चन्दावार

(विनोबा के 'ठाणा कार्य' ग्रामदान को महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के १० नये, युवा कार्यकर्ताओं ने स्वीकार किया था। महाराष्ट्र के एक छोटे पर बनी जवहार तहसील जिला प्रभियान समिति का केन्द्र बनी। जवहार में आज से ठीक एक वर्ष पहले २ अक्टूबर, ७२ से शुरू किये गये काम में 'एक नया आन्दोलन बना है' ऐसा कहा जा सकता है। लोग कार्यकर्ताओं से शोर कार्यकर्ताओं लगे हैं, परिस्थिति में परिवर्तन हुए हैं। फिर भी काम में अभी रफार नहीं पत्ती है। कार्यकर्ता बहुत नये व समयवासी बहुत पुरानी हैं इसलिए ठाणा जिला ग्राम स्वराज्य समिति ने जामनर गांव में गण १५ जुलाई से १५ अगस्त तक 'ग्रामस्वराज्य कार्य कोटन' शिबिर आयोजित किया था। शिबिर में सहभाग्यवान व अम को युव एक नया 'ग्राम' बनाया है। बाबूराम चन्दावार, जो पूरे समय तक इस शिबिर में रहे, की यह रफट न सिर्फ शिबिर की जलजारी देती है, बल्कि सपन सेने में बाप की रफार बढ़ने के लिए सकारक सिद्धान्तिक बहुत का राला भी लाती है।)

यह सहयोग ही दृष्टि से शसहयोग करेगा। इसके लिए हमें नयी पद्धति भी खोज करनी होगी। सेने से सबधित कार्यकर्ताओं को इसलिए विनमशील बनना होगा।

ग्रामदान पुष्टि में लगे कार्यकर्ताओं को सबसर दिलाने के लिए ही ठाणा क्षेत्र के पुष्टि कार्यकर्ताओं का एक पहिले का शिबिर किया गया। महाराष्ट्र के इस जिले का सकलित जिलापाल धरिणित किया गया था। लेकिन पुष्टि कार्य का आरम्भ गन दो अक्टूबर से किया गया है। बस कुछ दिनेर ग्रामदान की गांवां में पुष्टि कार्य होता रहा है। लेकिन दो अक्टूबर से जवहार तहसील के पंचायतीस गांवां का एक सपन क्षेत्र

पुस्तक : शोषण, १ अक्टूबर, '७२

क्या आप भरपूर पैदावार का स्वप्न देख रहे हैं ?

हम एक नये तरह के ज्योतिषी हैं, हम भविष्य बताते नहीं, बताते हैं।

यदि आप प्राच्ययक योजना बना लें तो अपनी पैदावार पहले से कहीं अधिक बढ़ा सकते हैं। अपने कृषि फार्म के लिए आपको जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो उनकी सूची और लागत का अनुमान तैयार कर लीजिए। उन्हें लेकर आप हमारे पास आइये। हम आपके स्वप्नों को साकार कर देंगे।

पंजाब नेशनल बैंक आपको योजनाओं के लिए ऋण देगा—ट्रैक्टर, नलकूप, पम्प सेट, उन्नत बीज, उर्वरक और कीड़ेमार औषधियों के लिए, अपनी भूमि का समतल करने, उस पर मेड़ बांधने और वाड लगाने और सिंचाई के लिए भी आप पंजाब नेशनल बैंक द्वारा दिये जाने वाले ऋणों पर भरोसा कर सकते हैं।

ध्यानः यदि आपको कोई अन्य सहायता चाहिये.....

पंजाब नेशनल बैंक आपको दुधारू पशुपालन, मुर्गी पालन और बागवानी के लिए भी ऋण देगा। ग्रहण-सेवा और कृषि सेवा केन्द्रों की स्थापना के इच्छुक, बेरोजगार इंजीनियर भी सहायता पाने के लिए हमसे सपर्क करें।

ऋण चुकाने की हमारी शर्त बहुत उदार है। हमारी निपटनम शाखा में आइये, उनके बारे में हम आपको सब कुछ समझा देंगे।

सम्भव है, आप और हम किसी ऐसी योजना पर सहमत हो जायें जो आपके भाग्योदय में सहायक हो।

बहु धेक जहाँ आप की साख का सम्मान है।



पंजाब नैशनल बैंक

गांधी जयन्ती के अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

किशोर वन्धु

१५२/३६, सिविल लाइन्स, कानपुर

इन्जीनियर्स

विल्डर्स

कान्स्ट्रक्चर्स

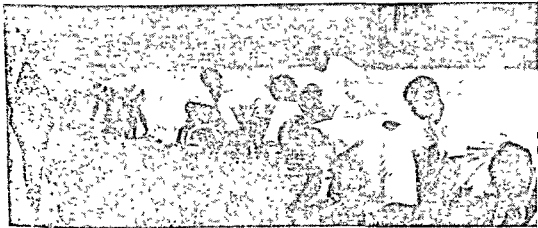
पो० बा० न० ३६६

बना कर पुष्टि कार्य किया जा रहा है। सघन क्षेत्रों में अनुभवी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है यह कई बार कहा जाता है। लेकिन अनुभवी कार्यकर्ताओं की कमी हर जगह महसूस होती है। जहदर क्षेत्र में भी इसकी कमी महसूस होती है। फिर भी महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से घाये प्राठ-दस कार्यकर्ता प्रारम्भ से ही पठा जमे हैं। ये सब कार्यकर्ता नये हैं। फिर भी लगन और सातत्य इनमें है। गिद्धने एक वर्ष में जो भी पुष्टि का कार्य हुआ है, उससे लोगों से कार्यकर्ताओं का और कार्यकर्ताओं से लोगों का परिचय हुआ है। क्षेत्र में एक नया वातावरण बनता दिखाई देने लगा है। कामूनी पुष्टि की तैयारी भी योग्य हुई है। कार्यकर्ताओं के प्रति लोगों में विश्वास बन रहा है। लेकिन आवश्यक गति धमो नदी घा पा रही है। सामने जो प्रश्न खड़े होने हैं, उनसे बँसे निपटा जाये इसका

वर्ता एक जगह बैठ कर अध्ययन ही कर सकेंगे, ऐसा माना गया था। लेकिन यह अध्ययन केवल किताबी नहीं कर पढ़ाने की सोच के लिए सहायक हो इस पर सभी साधियों ने बल दिया। तब यह सोचा गया कि अध्ययन किती ग्रामदानी गाँव में किया जाये। जामसर ग्रामदानी गाँव के ग्रामवासियों ने अपने गाँव में शिविर करने का प्रामत्तव दिया। लेकिन यह शिविर सातत्य से एक महीने तक चलने वाला था, इसलिए ग्रामस्वराज्य प्राभिवान समिति ने शिविर के खर्च आदि का भार उठा दिया। क्योंकि यहाँ का प्रत्येक गाँव प्रजासत्त से प्रसन्न है। शिविर काल १५ जुलाई से पन्द्रह अगस्त तक निश्चित किया। पन्द्रह जुलाई की शाम को सब साथी कार्यकर्ता जामसर गाँव के ग्राम पचापत्त भवन में पहुँच गये। जामसर गाँव के लोगों से खर्च करके दूसरे दिन याने सोलह जुलाई को

अपने बैल तथा हल जहदरतमंद लोगों को दिये। हमारे सब कार्यकर्ताओं ने गाँववालों को प्रत्यक्षान दिया कि वे स्वयं क्षेत्र में काम करेंगे। रोज ४ घंटा इमी में लगायेंगे।

एक महीने का यह सहजीवन मजे में बीता। सब का स्वास्थ्य अच्छा रहा। एक दो मिन एक दो रोज जुकाम, सिरदर्द से परेशान जहदर रहे। लेकिन एक दिन विधाम लेते थे और दूसरे दिन अपने काम में लग जाते थे। इस एक महीने में चार ग्रामसभायें हुईं। चार बार सामूहिक भवन गान हुआ। जिस के पास अत्यल्प भूमि है और जो अधिकतर मजदूरी पर ही अपना जीवन बिताते हैं और जिनकी जमीन हर साल रोजी रोटी के काम में लगने से कोई नहीं जाती है, ऐसे पञ्चीस ग्रामवासियों की भूमि में हमने धान, नागली, बरई के रोप लगाये। कुछ अच्छे किसानों के क्षेत्र में धमकार्यें हुआ। ऐसे उन्नीस



जामसर शिविर में किसानों के क्षेत्रों में धान रोपते कार्यकर्ता

नये कार्यकर्ताओं को ज्ञान कम है। लेकिन सामग्य की वजह से यह प्रश्नों को जान लेते हैं, सभी प्रश्नों से निपट भी लेते हैं। कभी निराश होने हैं। फिर भी जैज को पकड़े हुए हैं। मूल्यांकन किया गया। सभी ने कार्य की गति नहीं बरनी है। इसकी चिंता व्यक्त करने पढ़ाने में शोध करने पर बल दिया। वर्षों के दिनों में यहाँ के गाँवों में लोगों से संपर्क करना सहर सम्भव नहीं है। इसलिए कार्य-

प्रासरास के ५-६ गावों के प्रमुख मित्रों की एक जगह बैठक तय हुई। उस दिन पाच-छ गावों में सम्पर्क किया गया। शाम को सब साधियों की बैठक हुई। बैठक में तय किया गया कि इस वर्ष प्रास-ग्राम के पाँच-छ गावों के क्षेत्र बोये जायेंगे। किसी की जमीन पतली नहीं रखी जायेंगी। सहायना की आवश्यकता हो एक दूसरे को सहायना देंगे। बैल या हल की सहायना हो तो बैल और हल के मालिक

किसानों को क्षेत्रों में श्रमकार्यें हुआ। प्रति व्यक्ति ८७ ३० घंटे काम हुआ। सोलह एकर नौ गुठे भूमि में रोज रोपे गये। कुल बीबीस दिन श्रमकार्यें कर सके। दो दिन हमें काम नहीं मिला, क्योंकि सेनी के काम सत्य होने प्राये थे। चार दिन गाँव के लोगों ने छुट्टी मनाई। रोज भीसन प्राधी एक-दू जमीन में रोज रोपन हुआ। इनमें क्षेत्र से प्राप्त निकाल

भारती

आटा-चक्की

मुगम, सस्ती और टिकाऊ

● २ हार्स पावर से

१० हार्स पावर तक

शक्ति से चालित

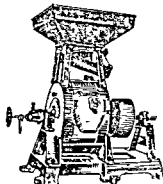
● १ हार्स पावर सिंगल

फंज मोटर से चालित

छोटी परेसू चक्की

स्थानीय चलन के अनुरूप विभिन्न

आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न माडल



निर्माता : सिंगल इन्डस्ट्रीज

यमुना रोड, आगरा (उत्तर प्रदेश)

अल्मोड़ा जिले में सेवारत औद्योगिक संस्था

हमारे मुख्य उत्पादन

खादी—ऊनी :

स्वेटर, चादरें, ट्चीड, घाल, धुल्ले, पशमीनें

सूती :

शर्टिंग, कोटिंग, रेडीमेड वस्त्र, चादर, दरी

ग्रामोद्योग :

विरोजा, तारपीन, शहद, दिवासलाई, हिमाचल की जड़ी बूटिया,
रामबास की रस्ती, दरी, मजबूत व भावपूर्ण फरनीचर, छेती के औजार

शोक ग्राहकों को विशेष रियायत

पर्वतीय ग्रामस्वराज्य मंडल,
जयन्ती, अल्मोड़ा (उ० प्र०)

बर बाहर फेंकना, रोप खोदना, और उन्हें रोपना ऐसे काम के तीन प्रकार थे। मागली को सुपरी मराठी में नाचणी कहते हैं। इसकी रोटी बनाई जाती है। बरई को भगर कहते हैं, जिसे उपवास में पकाकर खाया जाता है। मागली और बरई रोपने में थम कम और रोप उसाइकर जुड़े वापने में थम अधिक लगता है। धान के रोप निकाल कर उसे नीचड़ में लगाना सब से अधिक थम का कार्य था। सेतो में काटे, कंकड़ और पत्थर भी बहुत रहते हैं। धान के रोप कीचड़ में लगाने वक्त नाखून के प्रन्दर कंकड़, नीचड़ और कभी काँटा भी जाता है। फिर भी सावधानी से थम कार्य किया गया। लेकिन धान के रोप लगाने की कुशलता भी हमें प्राप्त हुई है। एक महीने के तिवरि में बार घंटे का थमकार्य सबके लिए उलाहल्यंकर रहा। जस्तगतमरी को गाँव के लोगों में बैच, हथ की सहाया दी। विनये गाँव में सहयोग का वातावरण बना थमकार्य के प्रतावा हमारा जो एक महीने का तिवरि चला वह चर्चा और विनय के द्वारा समयाधो को समझने के लिए तथा तिवरा का स्तर बढ़ाने के लिए कारगर साबित हुआ। खाना पकाने का हो, कुए से पानी निकालने का हो, तिर पर पानी का बर्तन ढोने का हो, सफाई करने का हो, या रोप नीचड़ में लगाने का हो, हर समय चितन तथा तिवार की प्रथिमा चलती रही। इन कारण मुवह से काम तन को सपूर्ण दिन-परां निली को बोध मही लगती थी। धीरेद मनुपदार को 'अति प्रयोग और चितन' निनाब केवल पड़ने के लिए पडी नहीं गई, उसे समझ भी गया। इसलिए एक महीने में पड़ कर लय करने का कोई लक्ष्य नहीं रहा। जितना पडा उसे सयभे बिना धागे नहीं बड़े मुवह की प्रथिमा के बाद विनोबा की प्राशस्तिकन किताबें 'स्वियप्रज्ञ दर्शन' इत्यादि पढी पडी गयी। प्रनुशासन, निर्देहन, सचालन, मार्गदर्शन नाम की कोई और तिवरि मे नहीं रखी गयी। इसलिए तिवरि में सबकी प्रथिमाकि हो पायी। स्वय प्रेरणा मे ही सब कुछ होना था। कभी कोई तिवरान करना भी था तो किसी को चुने



अध्ययन तिवरि : कति, तिवरान और प्रयोग

नहीं इसका ध्यान रखते थे। पत्रह अगस्त जामसर गाँव में ही विनाया गया और नये उल्साह के साथ सोलह की मुवह सब विनो ने धीपलाओ के वातावरण में जामसर गाँव छोड़ा।

तिवरि में अध्ययन दो प्रकार से किया गया। कति की व्यूह रचना के लिए तात्विक पहलुओ को स्पष्ट करते जाने का एक प्रकार था। दूसरा प्रकार या क्षेत्र में काम करते वक्त जो समस्यायें खडी होती हैं उनको ठीक से समझना, नया उनके निराकरण के लिए उपाय खोजना। चर्चा से जिस निष्कर्ष पर हम प्राये उमका सार है प्राय स्वराज्य की सीडी प्रासदान की चार जनों से तय की जाती है। (इन चार जनों को तिर से गहराई में जा सोचा गया) सचालन पद्धति को सहाय्य करके स्वचालन पद्धति विकसित करने के लिए लोगों को स्वचालन का महत्व समझना प्रावश्यक है। लेकिन इसे बिना समझे लोग बुझ करे जायेंगे तो स्वचालन नहीं भा पायेगा। इसलिए स्वचालन के लिए लोगों में अधिकम निर्माण करना प्रावश्यक है। यह अधिकम कार्यकर्ता और लोगों के धीन विश्वास बनने पर ही निर्माण हो सकेगा। इसलिए क्षेत्र के लोगों से कार्यकर्ताओ का सर्क बनने की प्रावश्यकता रहनी है। धरती जो सर्क है वह हमारी बातें लोगों तक पहुचाने के लिए है। लोगों को अपनी बातों पर भरोसा हो सके ऐसा विश्वास धरती नहीं बन पा रहा है।

इसलिए कार्यकर्ताओ को क्षेत्र में मागरिक को भूमिका लेनी पडेगी। समाज सचालित न रह कर स्वाचलित रहे, इसको लोग जब तक महसूस नहीं करेंगे तब तक कार्यकर्ताओ के द्वारा किये जाने वाले पुष्टि कार्य से भी एक सचालन सडा होगा। तो सोचा गया कि लोगों में सर्क ऐसा बने कि विश्वास पैदा हो। यह विश्वास कार्यकर्ताओ के प्रति बने और कार्यक्रम के प्रति भी। कार्यक्रम को जनाधार मिलेगा तो ही कार्यक्रम में विश्वास बनेगा। लेकिन यदि स्थूल लक्ष्य के प्रति प्राकर्षण बढाते जायेंगे और लोगों में सोचने की प्रक्रिया चलेगी नहीं तो कति कभी भी सभव नहीं होगी।

स्वचालन के लिए सबसे बडा बाधक तल राज्य सत्ता है। उसकी सहायक है धर्म सत्ता से बने सप्रदायो की परंपरा। समाज सचालन की एक कडि बन गई है। इस कडि से समाज को बाहर लाना सामान्य प्रयत्नो से सभव नहीं होगा। इसलिए जिन परंपराओ को तोडना है उनसे हमें सहयोग नहीं करना चाहिये। लेकिन यह सभव नहीं हो रहा है। सचालन नहीं चाहते हैं तो हमारी पद्धति ऐसी बन जाती है कि सचालन भा ही जाता है। तो लोग पद्धति में करना है। हमारी सस्थाओ और सर्व सेवा सच में धरती स्वचालन को पूरी तरह धननासा नहीं गया है। इसलिए उनका प्रतिज्ञ परिणामशून्य है। स्वचालन

शुभकामनाओं के साथ

दि सिंह इन्जीनियरिंग वर्क्स प्रा० लि०

(स्थापित : १९२०)

जी० टी० रोड, कानपुर

स्टील की रोलिंग में अग्रणी और स्टील के निर्माता

तार : सिंह

फोन : ६४२३१ (३ लाइन)

गांधी जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

दि ग्वालियर रेयोन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग
(वीविंग) कंपनी लिमिटेड

(स्टेपल फाइबर विभाग)

पो० ब्रा० बिड़लाग्राम (नागदा) म० प्र०

तार : 'GRASIM' बिड़लाग्राम

फोन : नागदा : ३८ घोर ८८

→
 को नहीं मानने वाली संस्थाएँ राज्य सत्ता और धर्म सत्ता के विचलन नहीं सझा कर पानी, बल्कि पूरक बनती हैं। इसलिए क्षेत्रों के पुष्टिकार्य में संस्थागत सहायता देने से स्वचालन का तत्त्व पनपेगा नहीं। क्योंकि संस्थागत सहायता निररोध नहीं रहेगी। कार्यकर्ता का जनानधार, कार्यक्रम का जनानधार-दोनों विश्वास को आधार बनाकर विकसित करना आवश्यक है। यह पुष्टि क्षेत्रों में ही संभव हो सकेगा।

लोगों की कई प्रकार की समस्याएँ हैं। जिनके निवारण संस्थाग्रह करने की बात भी हम सोचने रहते हैं। जहाँ कहीं काम रूज जाता है वहाँ संस्थाग्रह का स्थान अवश्य होगा ही ऐसा मानने वाली की संस्था कम नहीं है। लेकिन क्या संस्थाग्रह सत्य समझे बिना किया जा सकता है? हरेक का अपना सत्य होता है। इस स्थिति में हरेक अपना संस्थाग्रह चलायेगा। लेकिन कानून की झूठ रचना में में संस्थाग्रह का स्थान क्या हो? जो संस्थाग्रह पर सोचने हैं वे कानून के सधर्म को भूलते हैं ऐसा ही कुछ मनुष्य होने लगा है। इसलिए संस्थाग्रह किमति? यह सवाल सजा हो जाता है। कोई बहुता है ग्रहिसता को व्यक्त करने के लिए संस्थाग्रह करना होता। तो क्या यह संस्थाग्रह प्रतिनारतात्मक रह पायेगा? सोचना यह है कि हमारा सत्य क्या है। हमारा सत्य सामनहीन, शोषणहीन समाज बनाना है। केवल प्रतिनार करना नहीं है। यह सत्य राज्यसत्ता को क्षीण करने की कोशिश में परक में धायेगा। इसी के लिए तीसरी शक्ति बनाना है, जो दशकान्त से भिन्न दिया विरोधी है। इस सत्य के लिए यदि प्राग्रह करना है तो उसकी पद्धति मूल्य परिवर्तन की शक्ति को झूठ रचना किंसे बिना किंसे हासिल होगी? शक्ति की झूठ रचना में संस्थाग्रह का स्थान प्राग्रह है। लेकिन संस्थाग्रह केवल प्रतिनार का रूप लेकर सत्य से प्रलग पड़ जाये यह नहीं होगा चाहिये। प्रश्नों को लेकर संस्थाग्रह करने की बात सोची जानी है। लेकिन जो प्रश्न हैं वे सब मात्र की जीवन पद्धति से पैदा हुए हैं। जीवन पद्धति को बदले बिना प्रश्नों का हल निकलेगा किंसे? एक तरह संस्थाग्रह चलेगा, दूसरी तरह परंपरागत जीवन पद्धति चलेंगी।

और बिना विश्वास का आधार बनाये नया समाज विकसित नहीं होगा। तो क्या इस स्थिति में संस्थाग्रह का मूल्य बन सकेगा? अनेकित परंपरागत निबलेगा? हमारा संस्थाग्रह यदि तीसरी शक्ति बनाने के लिए चाहिये तो अन्याय के प्रतिनार का संस्थाग्रह नहीं चलेगा। गलत समाज शास्त्र से बनाये गये अन्याय की प्रतिक्रियाएँ हमेशा होती रहती हैं, जिसे हम अन्याय कहते हैं। गलत समाज-शास्त्र से बने अन्याय को भी हम नहीं चाहते। क्योंकि इस अन्याय से मनुष्यों में सब बनें नहीं, विग्रहते हैं। इस तथ्य को बिना समझे हम संस्थाग्रह करेंगे तो वह प्रतिनारतात्मक भी रहे तो भी समाज जीवन के प्राज्ञ के वे पलत मूल्य ही प्रतिगठित होते जायेंगे, जो राज्य सत्ता तथा धर्मसत्ता को हमेशा बल देते धाये हैं, राज्य सत्ता के पूरक बन कर जीते रहें हैं। संस्थाग्रह हमें चाहिये। लेकिन वह केवल प्रतिनारतात्मक नहीं, क्योंकि प्रतिनार से सत्य प्रलग पड़ जाता है, प्राग्रह बाकी रह जाता है, जो शास्त्र में प्राग्रह ही हो सकता है। तो हमारा संस्थाग्रह राज्यसत्ता तथा धर्मसत्ता के सप्रदायों को असहयोग करने प्रकट होगा। (क्योंकि इन्होंने ही प्राज्ञ का समाज बनाया है।) यह तभी हो सकेगा जब लोकशक्ति बनेगी। लोकशक्ति लोगों में प्रापसी सहयोग बढ़ने से बनेगी। याने जब लोगों के सहयोग की शक्ति राज्यसत्ता से असहयोग करेगी तभी राज्यसत्ता क्षीण हो पायेगी और यदि इस स्थिति में राज्य सत्ता से सधर्म होता है, तो यह करने की चीज है। इसके लिए संस्थाग्रह प्रकट हो सके तो उसकी सधर्मता सिद्ध होगी। इसके लिए देवारी बननी चाहिये। लोक शिष्टाएँ करना चाहिये। इसलिए पुष्टि क्षेत्रों को नयी शक्ति के प्रारोहण के लिए विवसित करना चाहिये। राज्य सत्ता से सधर्म होगा संस्थाग्रह के माध्यम से, लेकिन यह माध्यम उपयोग में लाया जायेगा लोकशक्ति को प्राधार बनाकर ही। इसलिए पुष्टि क्षेत्रों में शक्ति के नये प्रारोहण भी हमें देवारी बननी चाहिये। लोगों का प्रापस में सहयोग बने इसकी सरचना करने के लिए ही हम प्राप्रदान को पुष्ट कराना चाहते हैं। प्राप्रदान द्वारा ही लोकशक्ति बन सकती है। इस दृष्टि से प्राप्रदान की पुष्टि माने प्रापसे संपूर्ण संस्थाग्रह है।

गाव की समस्याओं को समझने के लिए लोगों से ठीक सपर्क करना पड़ता है। लेकिन समस्याओं का सही धर्म लगाना हो तो उनके जीवन-रूप का अध्ययन भी करना पड़ता है। कृषि उत्पादन में लोगों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जवहार क्षेत्र के गावों में भूमि धारण की विपमता कम है। बहुत बड़े जमीन मालिक यहाँ पर नहीं हैं। बीस एकड़ के भूमि मालिक गाव में दस के अन्दर ही मिलेंगे। इसमें भी उत्तर या पास उगने वाली जमीन होगी। तीन-चार एकड़ जमीन के मालिक अधिक मिलेंगे। भूमिहीन गाव में दस से कम ही होंगे। लेकिन हर एक भूमिवाज यदि उसके पास साल भर काम करने के लिए नौकर हो तो उसको कुछ जमीन जोतने के लिए दे देता है। उसका मुद्राभोग लेना नहीं। हर एक के पास घणनी ओपडी है। ओपडी और ओपडी की जमीन का मालिक दूसरा नहीं है। भूमिधारण की पद्धति में अधिक विपमता नहीं होने पर भी जीवन स्तर नीचे है। सेतो से साल भर के लिए जितना धन चाहिये उतना जुटा नहीं पाते। सेतो में हम अरम के लिए जाते थे तो कई प्रकार की समस्याओं का धर्म स्पष्ट होता जाता था। हमारे अरम की गति बड़ गई थी। मजदूर जितना काम कर सकते थे उससे बड़ गुना अधिक काम हम किया करते थे। पच्चीस मजदूर एक काम जितने समय में कर सकते हैं उतना काम उतने ही समय में हम दस कार्यकर्ता कर लेते थे। इसके कारण की जब हमने खोज की तो पता चला कि मजदूर सेतो में काम बचा कर रखते हैं। यदि वे सेतो से काम करे तो बोड़े ही दिनों में काम समाप्त हो जायेगा और उनको खाना तक नहीं मिलेगा। मजदूर को यहाँ एक समय रोटी दी जाती है। केवल रोटी और रोजी के लिए ही मजदूर पतिपूर्वक काम नहीं करता। एक महीने के अन्दर-अन्दर ही सारे सेतो के नाम समाप्त हो गये। दूसरा कोई काम यहाँ उपलब्ध नहीं है। अकाल महापता वा काम पत्थर तोड़ने का है, उस काम पर लोग जाते रहे। रोजी रोटी का सवाल इतना भयकर है कि धरने सेतो में भी खेन का मालिक भूले

ELECTRICITY

THE WAY TO MODERN LIVING

The Amalgamated Electricity Co. Ltd.

has been serving the country for over 36 years.

1972-73

Fixed Assets

Rs. 5, 23, 17, 703

Revenue

Rs. 5, 19, 59, 518

BRANCHES · Belgaum—Bhiwandi—Bhusaval—Bulsar—Chalisgaon—Dohad—Jalgaon—
Malegaon and Khandesh Ext

17-B, HORNIMAN CIRCLE,
FORT, BOMBAY-1

With Best Compliments From

Motilal Padampat Udyog Ltd.

(Formerly known as Motilal Padampat Sugar Mills Co. Pvt. Ltd.)

(Name changed with effect from 26/5/1973)

P. B. No. 69, Gutaiya, Kanpur-208005

Manufacturers of :

“Sugar”

“Iron & Steel”

&

“Moti” Vanaspati

Grams :

‘MOTIPAT’ KANPUR.

Phones : PBX (4 Lines)

8439, 8673, 8279 & 8239

Telex : MOTIPAT KP-266

काम करता है। यदि नहीं करता है तो शेत पड़े रह जाते हैं। हमें ऐसा दिखाना कि, शेत का मालिक उसकी पत्नी तथा बच्चे सब भूषे रहते हैं। उनके लिए शेत जोड़ना और बोना आवश्यक है। लेकिन भूल मिटाने के लिए मजदूरी कर लेते हैं, और शेत पड़ा रहता है। हम लोगों की सहायता से इस प्रकार के लोगों ने रोप रोपने का काम किया। यदि हम उनके सेतो में नहीं जाते तो उनके रोप बेकार हो जाते। धरतले वाल के लिए उसके पास थोड़ा भी धन जुटा पाना सम्भव नहीं होता। ऐसे कई छोटे किसान हर साल अपना सारा शेत जीत नहीं पाते। फिर कर्जा लेकर निकट जीवन जीने हैं। हम एक चार-पाच एकड़ भूमिदान के सेत में चावल के रोप रोपने गये थे। वह हमारे गिवरि के निकट रहता था। उसके दोनो बच्चे हमारे यहा से रोज रोटिया ले जाया करते थे। उसके पुत्र तो कहने लगा "भारे पाय खाने को कुछ नहीं है। बच्चे धारी रसोई गे रोटिया लेते हैं। धनी जह्दार के कच्ची साहूकार से बरह रुपये लाया हू। फसल धाने पर उसको मैं एक मन धान दे आउगा।" मैंने एक दूसरे भन्ने साने-पीने किसान से पूछा, "एक मन धान की बीजम जितनी होती है ?" उसर मे उपरने कहा, "एक मन धान की बीजम सत्तारस रुपये होती है।" इस प्रकार किसानो के पास जमीन रहते हुए भी कर्जा मे ही सारी फसल साहूकार को दे देनी पडती है। इनको कानून की सहायता नहीं मिल पाती। महाराष्ट्र मे "पापेमोड" का कानून बना है। साहूकारी नष्ट करने के लिए कानून बना है। हर साल छोटे किसानो के पास सेत बोने के समय परिवार के लिए धनाज बचना नहीं। थोडे मूद से सारकार की तरफ से धनाज मिल जाता है। लेकिन इसका नाम कर्जापत्र उठा रहते गने। भन्ने साने-पीने किसान फायदा उठा लेते हैं। इसलिए धनी भी साहूकारी पाश बँसा का ठेका बना है।

भूमिहीनो की भूमि मिलने पर भी वह अपने सेत से परिवार के लिए धनाज जुटा नहीं पायेगा। इनके कारण की कोज करने

पर पता लगना है कि इति उत्सादन तथा उत्पादक का गोपण भौद्योगिक वस्तुए कर रही है। इसलिए किसानो के लिए अधीन पर गुजारा करना प्रागे सम्भव नहीं होगा। किसान धन्य का उत्पादक है। लेकिन वह मालिक नहीं है। उद्योगो के मालिक स्वय उत्पादक नहीं है वहा मजदूर उत्पादक है, लेकिन उत्पादन का मालिक स्वय उद्योग-पति है। उद्योगपति उत्पादन के मूल्य धरने नियंत्रण मे रखता है इसलिए वह उत्पादन का मालिक बनता है। किसान उसके उत्पादन के मूल्य धरने नियंत्रण मे नहीं रख पाता। बाजार तथा सरकार उसको नियंत्रण मे रखते हैं। इसलिए वह उत्पादन का मालिक नहीं बन पाता। उद्योगो मे उत्पादन वस्तुए शरीरदकर किसान अधिक मूल्य देना है। लेकिन जब धनना उत्पादित धन बेचना है तब कम मूल्य लेता है। इसलिए भौद्योगिक वस्तुओ के द्वारा किसान के धन का अप-हरण होना जा रहा है। अधिक धनोत्पादन होने पर भी धनोत्पादन के मूल्य किसान के नियंत्रण मे नहीं रहते तो वह हमेशा की तरह नगण्य ही रहेगा। इसलिए किसान तग भा कर सेतो की धोड़कर शहरो के कारखाने के इर्द-गिर्द घा कर बसते हैं शहरो मे गरी बस्तिया बनती है। यह सब मलिनियत भौद्योगिकरण का परिणाम है। मलिनियत उद्योगो से किसान को मुक्ति दिलाये बिना धन उत्पादन मे जो उत्साह चाहिए वह नहीं आ पायेगा। धन के बारे मे भारत निर्भरता नहीं आयेगी। तो गावो की समस्याए शहरो की भौद्योगिकना को है इसलिए गाव शहरो तथा उद्योगो के उपनिवेश बने हैं। गावो मे पतने वाले छोटे उद्योग नष्ट कर दिये गये हैं और जो शेत धनी बचे हैं उनका भी भा-हरण होने लगा है। इसलिए गाव मे धनोत्पादन की प्राज की पद्धति मे फर्क करना आवश्यक हो गया है। उत्पादन का संयोजन मूल्य किसानो के नियंत्रण मे रह पाये ऐसा करना होगा। भूमिहीन का भूमिदान बन जाने से गाव की समस्या हल नहीं होगी। गाव की समस्याओ का हल गाव शहरो से भ्रमहयोग करिये तो ही हो सकता है। इस लिए गांवो का मुहट संयोजन करना अनिवार्य है। गाव का मलित्व बनाने के लिए गाव को धारमनिर्भर बनना होगा, पैरों पर सड़ा

होना पड़ेगा। यह समय हुआ तो गावों में शान्ति होगी।

शान्ति समाप्ति के तीन दिन पहले से ही गिवरि का मूल्यांकन करना शुरू किया गया था। इसमे सभी मित्रो का मानस बिना सबोध के व्यक्त होता था। "धामस्वराज्य के महुत्पूर्णे धर्मियानो को सही तरीके से समझने का अवसर एक महीने में मिला इसमे सतोध है" — ऐसा कहने से कोई भी पीडे नहीं रहा। एक वृष्टि अवश्य रही वह यह कि गाव के लोगों के घरों मे जाकर सम्पर्क करने का सोचा गया था वह ही नहीं सका। गाव के सब लोग मुबह होते ही शेत पर या पत्थर तोड़ने के लिए चले जाते थे। शम को दे बक कर भाते थे, हम भी चके ही रहते थे इसलिए रात को सम्पर्क करना सम्भव नहीं हो सका। दूसरा कारण यह भी है कि रात को सब लोग शराव पीकर घर मे रहते हैं। स्त्री-पुरुष, बच्चे सब शराव पीने हैं। इसलिए भी रात को सम्पर्क करने का कोई फायदा नहीं हो पाता।

उत्तराखण्ड की पावन धरती आपको चुलाती है

बद्रीनाथ, केदारनाथ, नृगनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, उत्तरकाशी, देवप्रयाग, धौनगर प्रायि पावन तीर्थों के दर्शन व हिमालय की चोटियों, सुरम्य घाटियों और सघन चौड बंदेदार के बनों की संर के लिए

एक बार भ्रमदय घ्राइये
मोटर-यात्रा की उत्तम व्यवस्था है
संपर्क करें

(1) टिहरी गढ़वाल मोटर प्रोवर्त कार्पोरेशन, ऋषिकेश (फोन : ८) (२) यातायात पर्यटन सहकारी सघ, ऋषिकेश (फोन २४४) (३) गढ़वाल मोटर प्रोवर्त यूनियन, ऋषिकेश (फोन : ७६) (४) सीमान्त सहकारी सघ, ऋषिकेश

समुक्त रोडेशन यातायात व्यवस्था समिति, गढ़वाल मण्डल, डा० ऋषिकेश, उ० प्र० द्वारा प्रसारित

With best compliments from

SHREE SYNTEHTICS LIMITED

Naulakhi, Maksi Road, Ujjain (M.P.)

Manufacturers of

SHREELON & SHREESTER

The yarns that make beautiful fabrics.

Gram : SHREENYLON

Phones : 1025
: 1135
: 1225

With best compliments from :

JANKI PRASAD & SONS

DEALERS IN

ESSO

Lubricating Oil, Transformer Oil
&

Allied Products

Depot : Fazal Ganj Kanpur.
Phone : No. 65736

Office : 97, The Mall
Kanpur
Phone No. : 52333



गोविन्दपुर : ग्रामस्वराज्य का गीत गोविन्द

—अशोक बंग



बरवाने से भक्तिता ज्ञान का सूरज

गोविन्दपुर : जहाँ ग्रामस्वराज्य पैरों पर खड़ा है

उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले का पहाड़ी इलाका गोविन्दपुर। ग्रामिणियों की आबादी है। छः साल पहले पूरी एक तहसील में ग्रामदान हुआ। उनके बाद ग्रामदान वहाँ साकार हो रहा है।

सुरज-पत्र : सोमवार, १ मार्च, '७३

सोन नदी के दक्षिण में मिर्जापुर जिले का जो इलाका पड़ना है, उसमें पिछले छ मासों में ग्राम सेवा के काम में अति बड़ी काम चलायी गयी है।

यह ग्रामिणियों का एक पिछड़ा इलाका है। मजबूत ग्राम सेवा ही इस इलाके का उद्धार कर सकती है। इसमें से बना एक मालगा—अथवा ग्राम सेवा निराशावादी, परन्तु मनोवृत्तिवादी और नृदिवादी।

ऐसे इस क्षेत्र में ग्रामदान के जमाने में कुछ न कुछ काम सर्वोदय आन्दोलन का हुआ था। ग्रामीणों की भावना का केन्द्र भी वहाँ सेवा के काम करता था। ग्रामदान के विचार-प्रचार का और ग्रामदान प्रगति का जो आन्दोलन देश-भर में चला, वह यहाँ भी चला और सन् ६७ में इस क्षेत्र को दुर्भी तहसील आगदानी क्षेत्र घोषित की गयी। लेकिन ग्रामीणों की समस्या हल होती दिखाने लगी थी। ग्रामिणों की दिशा में तो दूर, विचार के लिए भी लोगों की भावना बग नहीं पायी। जनता पूर्ववत् निर्धन बनी रही। ग्रामदानोत्तर काम शुरू नहीं हो पाया।

यही स्थिति नवोदय क्षेत्र के ग्रामिणों के आन्दोलनों में भी। सर्वोदय आन्दोलन में ग्रामदान के बाद विचार-प्रचार के स्तरों को जो व्यापक काम चला उसके बाद मात्र ग्रामदान की विचारों के प्रचार की शुरू रचना की। ऐसी स्थिति में १९६७ में ग्राम सेवा के काम करने का तय किया। 'ग्रामिण' प्रोजेक्ट

के नाम से काम नये ढंग से और दीर्घ-दृष्टि के साथ धारम्भ हुआ। ग्रामदानोत्तर नवनियमों का तथा ग्रामस्वराज्य की स्थापना की श्रद्धा रखना या एक अनोखा तरीका यहाँ अपनाया गया। क्षेत्र में काम खड़ा करने की दिशा में दो चरण माने गये : प्रथम चरण में, ज़ान्ति की श्रद्धा रखना में उत्प्रेरक भूमिका [बेटे, लखरी] निभाने के लिए समर्थ संस्था खड़ी करने की दृष्टि से गोविन्दपुर प्रथम पर अधिक ध्यान दिया गया। द्वितीय चरण में क्षेत्र के गावों में ग्रामस्वराज्य को स्थापित करने के लिए माध्यम के तौर पर विभिन्न प्रवृत्तियाँ शुरू की गयीं।

ग्रामस्वराज्य के विचार को गतिमान तथा क्रियान्वित करने के लिए विभिन्न विधाओं के तथा गुधार के कार्य भी चलाये जायें ऐसा प्रेमभाई मानते हैं। लोगों को सक्रिय करना, सर्व मम्मति, परस्पर सहयोग तथा त्याग-भावना पर आधारित ग्रामसमुदाय बनाना, उनमें निर्भयता, हिम्मत एवं आत्मविश्वास अनुप्राणित करना ये तो हमारे उद्देश्य हैं।

हैं। लेकिन यह बात तभी सम्भव होगी जब गाव के स्तर पर सतत कार्यक्रमों का मजबूत विद्यमान किया जायेगा जहाँ पर कि अपनी समस्याओं के निवारणार्थ ग्रामीण जनता सहयोग की बुनियाद पर खुद सजग हो। इसे प्रत्यक्ष करने के लिए ऐसा लोक-संगठन गाव-गाव में और सारे क्षेत्र में खड़ा करना चाहिये जिसे लोग सतत अपने बीच 'महसूस' करें।

इस दृष्टि का और काम का अध्ययन करने के लिए सर्व सेवा सभ की ओर से एक अध्ययन दल इस क्षेत्र में जुलाई के तीसरे सप्ताह में हुआ। सभ के अध्यक्ष और सभी इसमें थे।

उत्प्रेरक संस्था

प्रथम चरण के रूप में इस क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने के बाविक संस्था को बनाने का काम प्रेमभाई ने अपने साथियों समेत किया। वृषि की वैज्ञानिक ढंग से करके उत्पादन बढ़ाकर दिलाया यह भी यहाँ के जनमानस के लिए कान्तिकारी बात थी। एक दिन सुबह ८ बजे जब हम लोग सिंचाई के

लिए बने बंधारे पर सड़ें होकर प्राथम की खेती देख रहे थे, तो प्रेम भाई हमें ६ साल पहले के प्राथम में ले गये। प्राथम की सारी जमीन बज्रर थी और अधिकांश पर फसल नहीं होती थी। ६७ के पहले जिस जमीन पर कुल १० मन घान होना था, आज उसी जमीन में ३००० मन ली केवल घान ही होना है। सन्धिवा, फल तथा अन्य फसलें होती हैं सो अलग। प्रेम भाई ने पढाई नो भाटंम् के विषयों में की और यहाँ खेती में कमातकर दिखाया। यह बात इस प्राथमी ने बसें साथी यह जितनी अधरज की बात है, उतने अधिक है इस प्राथमी के दबंग इरादों की, ग्राममान को छुनेवाली उमंगों की और धरती में जमे हुए पदार्थों की।

"हारे और से धनेवाले पाच नावे सामने उस जगह मिलते थे और सारी जमीन चट्टानों और पत्थरों के सिवा कुछ नहीं थी। जयली सुभरों के खोह तो वे थे ही।" बंधे पर खड़े होकर प्रेम भाई बता रहे थे। आज इसी जमीन में साल में घान की तीन फसलें उगायी जाती हैं।

आदिवासियों के.

आर्थिक, सामाजिक, नैतिक व शैक्षणिक

उत्थान के लिए

सन् १९५२ से संलग्न

वनवासी सेवा आश्रम

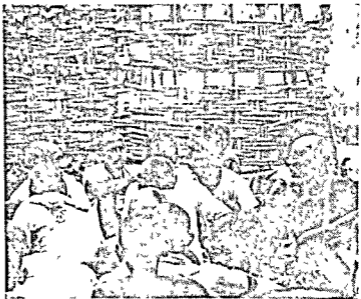
गोविन्दपुर; बाया—तुरी

मिर्जापुर (उ० प्र०)

सत्या में खेती के अलावा अन्य कई प्रवृत्तियाँ चलती हैं जो सभी गांवों में चलने वाले ग्रामस्वराज्य-कार्य से धनुष-धनुष ही गयी हैं। ग्राम की खेती क्षेत्र के लिए डिमा-स्ट्रुं शत धान का काम तो करती है ही, गांवों के किसानों के लिए उन्नत कृषि के जो विचार समय-समय पर चलते हैं उनमें प्रशिक्षण के लिए भी इसका लाभ होता है। क्षेत्र के कई कार्यकर्ता सत्या में चल रही खेती व उत्पादक प्रवृत्तियों के आधार पर मुक्त रूप से ग्रामस्वराज्य का कार्य करते हैं और जनता जीविका के लिए उन्हें बाहर से अन्न नहीं लेनी पड़ती। खेती के अलावा सत्या में अन्नपाल है तथा क्षेत्र में स्वास्थ्य-शिक्षा और स्वास्थ्य-सेवा का भी कुछ काम चलता है। प्रेम भाई की पत्नी डॉ० रागिनीबहन एम डी हैं। बर्बगाँव, गोसावा, गैतप्लॉट, आदि प्रवृत्तियाँ भी इसी तरह सहायक हैं। पिछले साल से ग्राम्य में एक विद्यालय भी शुरू हुआ है। गांवों से सड़कों को चूनाकर उन्हें उद्योगोपारित जीवन-शिक्षा दी जायेगी। लड़के-लड़कियाँ शिला पूरी होने पर अपने गांवों में लौटेंगे तो ग्रामस्वराज्य के कार्य के लिए गांव-गांव में वे उत्तरेक ही प्रोत्साहन निभा सकेंगे।

विस्तारीय संगठनात्मक रचना

क्षेत्र का काम देखने के लिए दो दिन दूर-दूर तक देहातो में घूमना हुआ। करीब १०० गांवों में सघन कार्य चल रहा है। इन्हें बुनियाद के लिए पांच क्षेत्रों में बांटा है। हर क्षेत्र के बीच में एक गांव में सघन का केन्द्र होता है। हर केन्द्र पर एक पूरा समय देने वाला एक प्रमुख सक्षम कार्यकर्ता और उसके साथ दो सहयोगी कार्यकर्ता होते हैं। ये तीनो मित्रकर्म धरम-धरम क्षेत्र में पड़ने वाले गांवों के काम के साथ एव लोगों के साथ सन्तु-सम्पर्क में रहते हैं। इनमें से अधिकांश कार्यकर्ता मित्री आदि का भी अच्छा ज्ञान रखते हैं। हर केन्द्र के धन्यार्थ धानेजिन लगभग १५-२० गांवों में गांव वीदे एक आधिकांश-समय-कार्यकर्ता होता है। यह सामान्यतः गांव का ही मित्रित युवक होता है। व्यावहारिक साक्षरता योजना के अन्तर्गत लगभग सभी गांवों में रात्रि पाठशालाएँ चलती हैं। इन में



ग्रामदात्री गांव की ग्रामसभा की बैठक

साक्षरता की प्रोत्साहन निभाता इन ग्राम-कार्य-कर्ताओं का प्रधान काम है। इनमें अलावा सघन की धोर से चलनेवाले सब प्रकार के विकास, प्रतिकार और विचार-प्रचार आदि कामों में वे सक्रिय सहयोग देते हैं। इन तरह हर क्षेत्र के पीछे १ प्रमुख कार्यकर्ता और २ सहायक इनमें पूर्ण-समय-न्यायकर्ता, एव १५-२० आधिकांश-समय-नेनेवाले तरण कार्यकर्ता ऐसी विपुली या विस्तारी सघनात्मक व्यवस्थापना पद्धति की गयी है।

इन्हीं क्षेत्रों में एक क्षेत्र बकुनिया है। बकुनिया गांव में तीन क्षेत्रों के ग्रामीणों की ग्रामसभा आयोजित की गयी थी—बकुनिया क्षेत्र, अपनी क्षेत्र के कुछ गांव और परिसर क्षेत्र। सन् ७० में इन क्षेत्रों पर कार्यकर्ता धारण बैठे।

बकुनिया क्षेत्र में रामाकर भाई रहते हैं। सभा के धारम्भ में काम का सक्षिप्त विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि जहाँ और रहने के मामलों का मुक्तभाव, पानी की समस्या के लिए गांव-बधा तथा उन्नत कृषि की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम तयिये गये हैं। रात्रि पाठशालाएँ भी ग्राम-क्षेत्रों की तरह हर

गांव में चल ही रही हैं, ३ गांव पीछे १ चल-मुक्तसाक्षर भी है। परन्तु इस क्षेत्र विशेष काम कुछ और भी है। ५ गांवों ग्रामदान की शर्तों की पुष्टि का काम पूर्ण गया है। ५ गांवों की एक 'समय विचार योजना' बनायी गयी है। भूमिहीनता प्र-मित गयी है। बाहर से धारण बने ३-४ भूमिहीन हैं।

बकुनिया केन्द्र की मासिक पडनेवा कुल २० गांवों में से १५ में ग्रामसभाएँ व गयी हैं और कुछ सक्रिय भी हैं। मीटिंग हर गांव की होती है। वही-वही उनके रिक्त भी रहे गये हैं। हर गांव में ग्रामकीय धारम्भ हुआ है और ४ में १२ सिबटल त अज्ञान ग्रामकीय में हर गांव में है। उनके रिक्त वही वही हैं।

जून ७३ में एक पुष्टि अधिपान इस क्षेत्र में ६ गांवों में हुआ। लोह-पडवाभाएँ भी और कुल २५ लोगों ने उनमें भाग लिए कुछ गांवों में से तो हर घर से एक अर्ध लोह-पडवाभाएँ के बांधे के साथ शामिल हुए कुल १५० एकट भूमि दात में मित्री वि-

से नयी प्रायः भूमि ४२ एकड़ है। इसमें से ६० एकड़ विनयारण हो चुकी है।

गौन के बाद धनगौर गाव के सम्भारण ने अपने गाव की पुष्टि की बातें बनायी फिर कुछ मजदूरी का निपटारा गाव ने वेंसे किया घट भी मुनासा। धन गाव में भूमिहीन कोई नहीं है। पुस्तकालय, रात्रि पाठशाला सब चल रहे हैं। १० बंधे बने हैं। बकुलिया गाव के सम्भारण ने मुनासा कि हमारा ग्रामदान ६५ में ही हो गया था। ६० एकड़ जमीन बटी है। भूमिहीन कोई नहीं। ३ छोटी बणिया गाव में बनी है।

शेख में बाड लेबर (यथा धर्मिक) का काम रखा जा था। ऐसे ही एक धन्याय का नाम निपटारा रमाशबर भाई ने करवाया उसका हिस्सा यों है—एक मजदूर ने ७ मन मल्ला घोर १०० रुपया बर्ज लिया था। उस पर माहूकार ने मजदूर से १० वरम तक बाड लेबर करवाया जो कि 'स्लेब लेबर' से कम नहीं था। १० गाव बाड भी माहूकार ने मजदूर को छोड़ा नहीं, उल्टे सूद के रूप में ३० मन भनाज नाम पर चड़ा दिया। धन

में रमाशबर भाई ने १० गाव का हिमाव माहूकार को समझाकर बतलाया कि बर्ज की प्रदायगी पूरी हो गयी है ऐसा मान लो धोर बंधा ही हुआ।

धन गाव में भूदान काफी मिला। गज-राज नाम के एक बड़े दाना गभा में प्राये थे। पूछने पर सडे होकर बतलाया—'बिनना दिया हमे बाद नहीं। मेरी ६० एकड़ जमीन में से कोई ३० एकड़ दिया होगा। मैंने बड़ा इनना बाद रखा है ? इनको दिया, वो भी दिया, कुछ जमीन इसे भी दो'।

धाम पूरा के रामशरण वृद्ध है। पीले मुह से जब वे बाने करते हैं तो अशरज होता है कि बूडा इननी बाने बने समझना है। वदन पर बिना बाह की बडी धोर घुटने तक मैली सी धोती। अपने गाव के एक धन्याय निवारण का वाक्या बनाने हुए सडे होकर कहा 'कज-मुक्ति की एक बात हमारे गाव की भी मुनिये। एक जरूरतमद मजदूर ने माहूकार से बर्ज लिया। बाद में जब कुछकी धापी लो हमारे पाम धाया। हमने उसे समझाया कि भैया, मुझे जरूरत के समय पहले गाव को बनाया होता तो गाव ने मिनकर कुछ रास्ता निकाला

होता। सीधे बर्ज क्यों वे लिया ? तो खेर। धानिर में हम गाव बानो ने मित के सडे होकर, मामला शान्ति से निपटारा।

धगरा गाव के एक धाम-नेता ने कहा कि बंधे प्रादि मुधार के कार्यक्रम से हमारे गाव में धान की उपज काफी बडी है। बंधे के लिए मजदूरी के रूप में जो 'कुड पार बर्ज' हमे मिला था वह हम धामसभा को स्वेच्छा से लौटा देगे। इस समय धामकोप में ६४० किन्वा भनाज है। लौटा देना यानी तो 'अपने को ही देना' है। 'खुद ही दे खुद ही ले' ऐसा धर्म-भूत दान बरे वाली बात गाव बानो की समझ में कुछ कुछ धार रही है, देखकर मैं कुछ रोमांचित-सा हो गया।

ठलनी दोषहर में बकुलिया से निवृत्त बन्धी प्राये। बन्धी कनाक का गाव है तथा इस क्षेत्र का केन्द्र भी बन्धी में ही है। अन्य शोधो की तरह यही भी बर्जमुक्ति धन्याय निवारण, रात्रि पाठशाला, भद्रालनमुक्ति, सिंचाई के लिए बंधे बनाना प्रादि काम चलते है धोर हर काम धामसभा के माध्यम से ही चलना है। धाम-ममुदाय की सक्रिय धोर प्रथिकम्

Hindustan Aluminium Corporation Ltd.

(India's Leading Producer of Aluminium)

Producers of

Primary Metal

Properzi Rods

Rolled Products

Extrusions

and

Hindalium Utensils Alloy

Works

P. O Renukoot

Dt. Mirzapur, U. P.

→
 बढ़ाने में वे कार्यक्रम भाषणरूप तो होते ही हैं, मोक्ष-निष्पत्ति के लिए भी निमित्त बन जाते हैं। बमनी क्षेत्र की एक धामिदा यहाँ के कार्यकर्ता ने बताया कि पाच ग्रामपंचायतों के मन्ना दनि (मरकती ग्राम पंचायतों के) भी सर्व-सम्मति से चुने गये हैं और वे सर्वोदय विचार से प्राप्ता भी रहने हैं।

क्षेत्र की मन्ना में गांव वाले धरने-धरने गाव के बारे में बतलाते लगे। मुद्दी नाम के एक रिमान भी बँडे थे। उन्होंने साहूकारों के शोषण का बरान मनेदार तरीके से बिया— 'एक गाव में साहूकार ने १२ आने मूलधन को कुछ ही सालों में ३५ रुपये बनाकर कर्जदार के माँव बनाया। पूछिये कैसे! तो मजदूर ने १२ आना कर्ज लिया था। एक साल बाद मजदूर को बनाकर साहूकार ने उवटा-नीचा हिमाव करके कटा, दम रफिया हुआ। धमन में मन्ना-उयोडा भी मूद लें तो गाव के बाद १-२ रुपये के ऊपर नहीं होता चाहिये। परन्तु भाइ और दीन मजदूर क्या जाने हिलाव-रिनाव, और कड़ा रहे बिलकर कि रिनावा पैसा कर्ज लिया था? तो फिर मजदूर से साहूकार ने कहा, 'दस शैया हुआ न?' मजदूर बोले, 'हाँ।' तब दो-चार गाव वालों को बनाकर उनके सामने यही बात दोहरा ली गयी कि दम रखा हो गया है। भ्रम बटों से



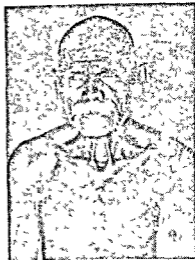
सापक्षित घर चम पुस्तकालय

चलिये साहूव। एक साल बाद १० रुपया मूल-धन हो गया। तो पैंतीस शैया तक पढ़ना कौन मुश्किल बात है?"

ऐसे कई मसले भ्रम गावों में ही सुलभाये जा रहे हैं। सयठन के कार्यकर्ता की शक्ति उसमें लगनी जरूर है। आरम्भ में बड़-स्वाभाविक भी है। लेकिन इन सब समस्याओं का निराकार व्यक्ति-नेमिष्ठ नहीं है—इन्होंने प्रेम-भाई नहीं करते, बल्कि प्रेमभाई तो करते ही नहीं। केन्द्रों में बँडे कार्यकर्ता और गाव वाले ये काम करते हैं।

ग्राम को हम गाव के घरो घोर लेतो में गये, गाव-गाव में लेता पर बडे-छोटे मिट्टी के भ्रमेक बंधे बने हैं। इगवे गाँव वालों को रोजगार तो मिलना ही है, तननीक भी इस स्तर की होती है कि गाव वाले उसे समझ सकें और उसका रख-रखाव भी बाहरी मदद के जिना खुद ही कर सकें। विकास के कायों में धन्योदय की दृष्टि रखी जाती है यह भी प्रेम भाई ने बनसाया। लेकिन उस बात को अधिक समझने के लिए मैंने उनमें प्रूदा, 'विकास के कामों में धन्योदय कैसे मघना है?' प्रेमभाई ने बताया कि सबसे पहले यह बात समझ लेनी चाहिये कि यहाँ क़रीबी तो भयकर है लेकिन विपमना बहुत नहीं है और वर्गभेद भी कम है। मत प्रायः सभी लोग अन्निय प्रादमी ही होने हैं। भूमिहीनता भी बहुत कम है। तिमपर बंधे, बुरे और धन्य विकास-कार्यों के लिए साधनादि देने समय हम ग्रामपंचायतों के सामन धन्योदय की बात ररते हैं। विकास कायों से सामाजिक विमानों से सामनेय में धानिारिख गल्ला भी दिखपादे हैं। इनके प्राचा वीमवा रिस्मा जमीन का विवरण, सामनेय भादि सामदान की बातें तो यहाँ भी हैं हीं।

मुवह उठकर गिरहर केन्द्र के लिए रवाना हुए। पड़ुकर पहले गाँव का बकर कराने के लिए कर दिव। एक बंधे को ऊँचा करने का काम चल रहा है। क़रीब १०० मजदूर स्त्री-पुरुष काम कर रहे थे। हमारे पढ़ने पर प्राचा घटा काम म्कवाकर देड़ के लवे मजदूरों के साथ बातचीत बनी। प्रेम भाई ने बनसाया कि इन तरह कार्यकर्ता धन-सर करते हैं। 'पूठ फार वरं' देवर बंधे पर



कजदार जनम के पर ध्रव

जहा काम चल रहा है, उमे बीच में प्राचा घट्टा बन्द करवा कर (मजदूरी बिना काटे) सबको इचट्टा किया हो और फिर गाव की परिस्थितियों का लेकर वैचारिक शिक्षण का एक वर्ग चल रहा हो ऐसा प्रायः होता है। 'एजुवेकन फँट बर्क', वा यह तरीका प्रनोसा है।

गाव में प्रवेश करने के पहले एक बडा बंधा पडता है। इस बंधे के बनने से पहले जमीन बिलकुल पथरीली और बजर थी, उसे बाट-काटकर समान बनाकर लेन बनाये गये और क़रीब ४० एकड़ जमीन ऐसी बनी जो काश्त योग्य बनायी जा सके। उसमें प्राय दो-ती फजलें साव में होती हैं। इस जमीन को गाव वालों ने समान रूप से प्रापण में बाट लिया।

देवने-देगते मूरज माये पर प्रा गाव था। गिरहर गाव में ग्रामपंचायत के पबन में ग्रामपंचायत की बँटक होने वाली थी। 'मिलकर रहना करना प्यार, बाट कर खाना धर्म हमार' इन तारों के साथ मन्ना की कार्रवाई शुरू हुई। हर मरीने होने वाली ग्रामपंचायत की बँटक की कार्रवाई बाकायदा रजिस्टर में नियमित रूप से लिखी गयी है।

सहमीबद त्यागी ने कार्रवाई प्रारम्भ की। त्यागीजी एचिनस्वरन एमपेटेगन में एम० एम० सी० हैं। पिछले ४-५ वर्षों से

→ सोबिन्दपुर क्षेत्र में है। रत्रप्रगादजी से भी परिचय हुआ। भाग धीरे-धीरे मजूमदार के गाय भी वरमपुर प्रयोग में रह चुके हैं। विचारों की गड़बड़ है। गिरधर क्षेत्र के भाग प्रयोग कार्यकर्ता हैं। रत्रप्रगादजी में बरनाबा वि विद्यालय का कार्य ग्रामसभा की गरानुपनि में धीरे-धीरे ग्रामसभा के प्रस्ताव के बाद ही हो, यह हमारा विवेक साहस रहता है।

बैठक शुरू होने जा रही थी। जगनों के बीच बसा हुआ यह गांव, गांव का यह संगठन, उस ग्राम-संगठन की यह बैठक। ग्रामसभ में सभागनि व्यवहदरजी ने गांव के नाम की जानकारी दी।

“भूमिहीनता भव नहीं बची है। सरकारी अधिकारियों का जुल्म धीरे-धीरे घुस-सोरी हमने बन्द कर दी है। भगडे भाषण में ही सुलभने हैं। इस समय गांव का एक भी भगडा अदालत में नहीं है और निघने दस सालों से नहीं गया है। ग्रामसभ में १५ विचल भनाज है। उनमें से जकरत-मंदों को नर्ज देते हैं और बसुली ठीक हो जाती है। एक बार एक बुडिया के दो सपे मर गये। क्रिया-बर्म के लिए उसे साहवार

से नर्ज न लेना पड़े दस लिए गांव वालों ने चढा करने विचारों का धनी निभाया। ग्रामसभ से सहवारी दूकान भी ग्रामसभा ने खोली है। इस दूकान के भलाया गांव में धीरे-धीरे दूकान नहीं है। रात्रि पाठशाला हर रोज चलती है, ५०-५० लोग भाते हैं। महिलासभ में से फिलहाल कोई नहीं आता। करीब आधे बच्चे ही आते हैं रात्रि पाठशाला में। हमारे गांव में ग्रामस्वराज्य का काम शुरू हुआ उसने पहले हम साल में केवल ३ महीने भनाज छा पाने थे। अब करीब ८ माह होती का भनाज छा सनते हैं इतनी उपज बढ़ी है और उत्पादन का वितरण भी गांव में ठीक से हुआ है।”

इस साल मुझे के कारण हागत कुछ बचप है। सस्ते गल्ले की दूकान गिरधर गांव में है ही नहीं। ८ मील दूर बिलबिल नामक गांव में एक दूकान है। चार गांवों के लिए एक दूकान। हर माह प्रति व्यक्ति ६ किलो भनाज भना है ऐसा बहा जाता है। उसमें भी गेहूँ कभी नहीं मिलता। गेहूँ का राष्ट्रीयकरण जो हो चुका है। भक्ता, मायलो, ज्वार आदि कभी-कभी आते हैं।

“गेहूँ बिल्लुत नहीं मिलता ?”
 “जी ना। सारा गेहूँ दुप्दी (तहसील

का गाव) में ही गायब हो जाता है।”
 “धीरे-धीरे ?”
 “क्या सूख रहे हैं ? हय गांव वाले भू गेहूँ, चावल, धीनी ये चीजें साना जाते हैं जागते तो हैं तिफें शहर वाले। एच भा पहले भनाज भाया या गांव की दूकान में तब से कुछ नहीं है। जो कुछ भनाज भात है उसमें से भी भाया सरकारी बर्नवार खा-नी के सौपट कर देते हैं।”

एक साल में गांव का एक नौबरा काफी कुछ बह गया था। हमे यारं धर विहार के पूरिया, मुनेर, गया जिले के बर्न क्षेत्र जहा गांववालों ने बहा था : भाग-भाठ माह से राशन की दूकान से भनाज का एक फूटा दाना नहीं मिल पाया है।

सभा समाप्त होने पर रत्रप्रगादजी ने एक धीरे बात बनायी थी। नाबालिग विह नाम के एक धीरे धालकवारी सामंत पदा थे। जीप, रिस्तील और बन्दूक रखते थे। “भार के दबा दंगे” यह थी उनकी नीति। लेकिन खुद ब खुद ग्रामसभा की बैठक में आते हैं। कुछ तो उनमें परिवर्तन हुआ है, कुछ लोगों में भी शक्ति का प्रहास हुआ है कि—“संगठित होकर प्रतिहार करेंगे।”
 एक तरफ जगनी दिखानकर प्रेमभारि ने

रचनात्मक कार्यकर्ताओं की सफलता
 के लिए शुभकामनाएं

अपर गैजिस शुगर मिल्स लिमिटेड

सेओहरा, जिला विजनौर (उ० प्र०)

शुद्ध श्वेत खादार शक्कर के निर्माता

जाया, यही है वे नाबालिग विहारी।
उन्हें देखा रहा था तो स्मरण हुआ कि
परहर रामस्वराज्य समाजी बैठक में
वे मेरे पास ही बैठे थे।

१९४० वर्षीय क्षेत्र में पंजे १००
को मेरे पास आया रहा है। इसके लिए
अं प्रति का सगठन और व्यूह रचना यहाँ
तकित की गयी है। पूरा समय देने वाले
० तथा सामाजिक समय देने वाले १००
सर्वकर्ता पूरे क्षेत्र में लगे हैं। पूरा समय
ने वाले ५० कार्यकर्ताओं में से करीब प्रायः
सर्वकर्ता प्रधानतः उत्पादन प्रवृत्तियों में
लाभ में लगे हैं।

शारीर जनता, शान्तेता तथा कार्य-
ता इन सबके त्रिस-जिप स्तर तक सर्वोदय
व्यार के प्रति चेतना जगी है और बढ़ रही
। यह मात्र एक सामाजिक उपान या दूरफोन
। नर जाय, लेकिन उममे साजत्य बना रहे
। और यह विवर्णित होती जाय इस बात को
। प्रेमभाई काफ़ी मर्त्य देते हैं। तीन बारण
। इतनेके आधार पर कहा जा सकता है कि
। यह सम्भव होगा।

एक विचार-प्रचार के कार्य को
। रचनात्मक कार्य, अन्वय विचारण तथा
। प्रतिवार के कार्यक्रमों के साथ जोड़ा है।

दो : इसके-दुर्भे कार्यकर्ताओं के बजाय
। वारे क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को 'टीम'
। सपटिन तरीके से जमाने का प्रयत्न है।
। प्रेमभाई नहटा करते हैं कि 'मिगल फोल टेट
(एक-समा टेट)' टिक नहीं सकता। प्रमुख

कार्यकर्ताओं को प्रावश्यकता धीरे-धीरे
। घटती जाय और स्थानीय नेतृत्व ही इसे
। उठाना बना जाय यह प्रयास है।

तीन : प्रमुख कार्यकर्ताओं में उद्देश्यों
। के प्रति काफी चेतना है एवं वंचाधिक
। सज्जता है।

सरकार की अनेक योजनाओं का
। उपयोग ग्रामस्वराज्य-कार्य के लिए साधन
। या माध्यम के रूप में किया जा रहा है।
। मसलन, माध्यात्म-योजना। प्रभर जान के
। लिए जो पुस्तकें क्षेत्र में चलाई जानी हैं
। उनमें सब ग्रामस्वराज्य का ही विचार है।
। रात्रि पाठशालाओं के शिक्षकों के लिए प्रति
। माह २० रुपये शालन की शिक्षा-योजना
। से मिल जाता है। इन शिक्षकों का ३ माह
। का प्रशिक्षण गोविन्दपुर माध्यम से ही हुआ
। है। दम तरह मालन की प्रौढ-शिक्षा योजना
। इस क्षेत्र में पूरी तरह ग्रामम्बराज्य की ही
। दिशा में मोड़े गयी है। और ऐसी इन
। प्रवृत्तियों के लिए किसी प्रकार का सम्बन्धना
। नहीं किया जाता है। प्रेमभाई कह रहे थे
। कि 'लाभकर जो नयी योजनाएँ लागू न
। होनी हैं उनमें वारे में सरकारी तंत्र को न
। कोई प्रान्टिष्टि होनी है, न उमयी अगनी
। कार्यविषयन की व्यूह रचना तैयार होती है।
। इमलिए यदि हम लोग शालन के एक कदम
। पहले तैयार हो जाते हैं और प्रीच करते
। हैं तो उन योजनाओं को अगनी तरफ मोड़
। सकते हैं। और उन्हें अपने सगठन द्वारा पूरा
। करने-करते उस माध्यम से ग्रामस्वराज्य के
। काम के लिए बल पहुँचाया जा सकता
। है तथा सगठन लड़ा किया जा सकता
। है। मावघानी इनकी ही बरतनी चाहिये कि
। हमारे मुख्य पक्ष से वे हम भटका न दें, गीणु
। प्रवृत्तिया में उलभान न दें। ऐसी योजनाओं
। को साधन के तौर पर इस्तेमाल करते ही



प्रेमभाई : एक बात पर तम्बू नहीं सतता।
। सामर्थ्य और कुशलता हम में होना जरूरी
। है, जो यहाँ पायी गयी।

हर म ह की पहली दूगरी और तीगरी
। तारीख को क्षेत्र के सारे कार्यकर्ता तीन दिन
। प्राथम में मिलते हैं। पहले दिन रिपोर्टिंग
। और बचे दो दिनों में काम की तथा
। वंचाधिक पहलू की चर्चा होगी है और
। भावी योजना बननी है।

वर्तमान समाज-रचना में मौजूद सगठनों,
। सस्थाओं तथा सत्ता-केन्द्रों के साथ सम्बन्ध
। और उन पर धसर बना है, यह एक
। दिनचरन विषय है। पाया गया कि शासन,
। सरकारी कर्मचारी, देसी-विदेसी स्वयमेवी
। सस्थाएँ इन सबका ग्रामस्वराज्य कार्य के
। लिए कुशलता से साथ लेने की नत्ता यहाँ
। सधी हैं। यह करने समय कार्यकर्ताओं की
। दीनता बड़ने का सतरा यहाँ देखने में नहीं
। पाया। धीरे-धीरे ग्रामसभाएँ और पंचायतों
। में सर्वोदय के तत्वों से प्रभावित व्यक्ति प्रा
। रहे हैं।

समस्त सर्वोदय साहित्य का प्राप्ति स्थान

सर्वोदय साहित्य भंडार

महात्मा गांधी मार्ग, इन्दीर (म० प्र०)

ग्रंच : रेलवे स्टेशन, फोन : ३४५२५

With compliments of

**MESSRS NEW INDIA MINING
CORPORATION PVT. LTD.**

PIONEERS OF IRON ORE MINING IN KONKAN
AND ONE OF THE LARGEST IRON
ORE EXPORTERS FROM
MAHARASHTRA
STATE

Mines :

P. O. REDI
DIST : RATNAGIRI
PHONES : 24, 42, 43, 46 & 49
CABLES : NIMCO

Registered Office :

"Nirmal", 16th Floor,
NARIMAN POINT,
BOMBAY-1. BR.
Phones : 295467
 : 295532
Cables : MININGKING.

एक कदम पीछे, दस छलांग आगे

—त्रिपुरारि शरण्य

बिहार-राज की घोषणा १९५६ में हुई थी। इसके विप्रे जो भूदान सभा का उद्देश्य जलदायकता के कार्यक्रम को सरल बनाने का है। इस प्रशासन में भूमि के प्राथमिकीकरण विधिमा में एक मनोवैज्ञानिक बदल है जिसमें रक्षा की धाम सभा के संगठन कीया बढडा । मुम्बईन परिवारों के बीच विवरण और सम्पत्ति के विमोह जैसे लोचन और समता के बीच परे है। धार धामा विनी कति- धारी कार्यक्रम को सद्क मानने लगे तो मानना माहिने नि सामाजिक कानि का प्रथम चरण सम्पन्न हुआ। लेकिन जब तक स्वेच्छा अध्या- रिष्ट कानि में साक्ष्य नहीं होता तब तक उभये न तो गति धारी है और न उभया प्रभाइ ही रिष्ट माता है। यही होन बिहारराज के साथ हुआ।

ऐसा हुआ क्यों? कहा जाता है कि कानि विनी के विप्रे इलजार नहीं करनी। यह भी कहा जाता है कि धामों में परिवारा और कई प्रकार की मरगियों भी उभरी है। नई कानि के साथ भी जुड़ी हुई है। इन मुद्दान के साथ एक बड़ी भूज यह हुई कि परिवन्ध परिवर्तन की वैज्ञानिक मनोदमा सामाजिक केवला पर हावी हो गई जिससे कानि के पहले का लये और उभया का भी बदल गया।

जमीन पर पुष्टि

पुष्ट कदम पीछे हटकर कई धडाम धामे माते जा सकनी है। इमरिने उपप्रशासक की ने धारराज पुष्टि के विप्रे नवमवसारीयो के क्षेत्र मुद्रनी में कार्य करना धारम्भ कर रिना। यह इन कानि का मनेय था कि धार ह्य पुष्ट कदम पीछे हटें धानी नियन्त्रण काम शुरू करें।

धाम निर्मोह मरगन में धारन के बाद केही कौञ्जाकोल प्रशास में सचन कर में धारन पुष्टि मून निर्माण का कार्य धारम्भ कर रिना। लेकिन वे ० सी० के इन सकेज

का धये था, मुम्बईरी के गतिक ल्गाकर ग्रहि- सरक कानि के लिए काम करना।

धामदान के बाद इन प्रलाप में १५० गरीयो में से १५६ धामों में धामगना की स्थापना की गई। लेकिन अनुभव हुआ कि सामान्यन बीधा नटडा के विवरण के बाद ही धाममभए वास्तव में कियागोला हा। सननी है। धामी ७५ २६ गावा में बीधाकट्टे का विवरण ही चुना है जिनमें से २३ धाम मभाए कियागील है। कानुनी पुष्टि के लिए २२ गावा के कागज वन मुष्टि पदाधिकारी को प्रेषित किये जा चुके हैं जिनमें से २३ गावो का मजट हो चुका है। ४० गावा म धामकोप निर्माण के भी कार्य हुए हैं।

माध्यम धामसभा

धार यह की धाममभाये सहकारी प्रयत्नों से सामूहिक उपभाग के लिए निचाई के कुमा, धार, गावाए एव बाधा का निर्माण तथा उनके पुनरुद्धार, पविम सेडा की सारी, विपुती करण, धामकोज निर्माण तकनी की प्रशिक्षण के लिए व्यक्ति का पुवाव वि निर्माण, उद्योगों के संगठन, स्वाभ्यन् एव मिशा की स्ववस्था धारि के कार्य करनी है। ये मभाये समय २ पर धाने कार्यो का लेना- जंला करनी है और गरीबी से मुक्ति, उप- युक्त नेतृत्व, धमवी स्ववस्था, पूजी निर्माण धारि के विप्रे प्रयत्न करनी है।

धाम सभा का संगठन कर देना बाकी नहीं है।

धाम मनुष्या की रचना स्मृति धोर परि- धार की इष्टि धोर सम्भार में काली परिवर्तन की मान करती है। बाबर धम्यान धारिदे बरतु स्मृति धोर परिवार के स्थाये धाम मभायो पर हावी हो जाये है।

जहाँ पुनर्गामी नवमवाये विवेकशील कार्यकर्ता मजठ रूप से काम करते हैं, वहाँ की धाममभाये धारिष विगिन होगी तथा इसका पत्रांन के मातो पर भी बढतु अनुकूल

प्रभाव पड़ता है। धाम सभायो के सही विभास के लिए मुञ्जशील संगठन की धारव्यवस्था होने है कालिक प्रचलित मान्यतायो पर धामा- रिन प्रशासन की पदविधा स्वकासन की इष्टि धोर सार्क प्रदान नहीं कर सकती।

धारम्भ में धाम सभाए सामान्यन कापी किमाशील रहती है। कुछ दिनों के बाद उनमें विहित स्थाने उभर धाने हैं और नीनकता एव नेतृत्व के मजट उपास्थन हो जाते हैं कालान्तर म पुन गाव म सहकारी केतना प्रकट होनी है जिसमें धामसभायो का र्थ महरन हो जगता है। कुछ धाममभाये तो बहुत दिना के लिए मर-नी जाती है।

विभिन्न कानि के बर्दे गांव में धामसभा की विभिन्न बनना एक बरिष्ठ कार्य है। इन विप्रे किये माध धर्याधिब सचये के निधार रहने है तथा धामी धरा में मयर्क करना एक बरिष्ठ कार्य हा जगता है। धार इनके तीक उभय उपायन मवने है। एक तो धाम धारडा बनना। दूसरु तक बने टापी में गाव का स्वतन्त्र धर्मनल साडा करना और बढा धाम सभा की स्थापना करना। दूसरा, धार के गाव के रूप में विभक्त नहीं होने सवने तो उम गाव के परिवारा का धरण मवने के लिए उपाहिष्ट करना। तीसरा, धार के सचन धमवा के बाबतूर यह कई टोनों में कानि नेतृत्व धमवा धोर कई धाररगा से विभक्त रहना है। उन विभक्त टोनों में तथा नेतृत्व साधारण धाम सभा की सामूहिक सार्क प्रदान करना।

सहकारी शक्ति

धारम्भ में धाममभाये सामान्यन कानि बायो भावता से प्रचलित मान्यतायो पर धाधा रिष्ट होकर काम करनी है लेकिन ये ती सभा- धान बाबरु होनी नहीं। इसलिए लोगो को धाममभाओ धोर सामूहिक रिष्ट की पुष्टि से नवी मायनायो का विभास करना होना है जिससे धरिष्ठ धारके ईयाँ की अतिथया न होने

→ पाये । उदाहरण के लिए किसी भगड़े में सामान्यतः दोनो ही परा सच्चे और भूटे तक प्रस्तुत करते है । और वे इसको लिए भूटे सासी भी तैयार रखते हैं । ऐसी प्रक्रिया के कारण ग्रामगभा की शक्ति क्षीण होने लगती है । लेकिन आदर्श के प्रभाव या धैर्यधिक विकास के कारण अपनी गलतियों को स्वयं स्वीकार करने तथा आपसी भगड़ों को ग्राम सभा की सहायता लिए बिना समाप्त करने से गांव में एक मौलिक सहकारी शक्ति का उदय होना है । इस प्रक्रिया से ग्राम-सभाएं गांव के संघर्षों को हल करने में समर्थ होती हैं । लेकिन इसके लिये गुजरातील कोष और सतत अभ्यास की आवश्यकता होती है । आज समाज में अपनी गलतियों को छिपाने और निहित स्वार्थ को पूरा करने की वृत्ति प्रचलित है । जब तक उस प्रवाह में आसूत परिवर्तन नहीं होता तब तक सच्चे मायने में सहकारी प्रयत्नों को कटीले तारों पर पालने जैसा होगा ।

ग्रामदान प्राप्ति के समय हमने सभी क्षेत्रों के नेताओं की सहायता ली जैसी कि हमारे कार्य की प्रशिया है । यह अचछदा हुआ । इन नेताओं में कुछ तो आज भी ग्रामदान के

कार्यो को सहायता या नैतिक समर्थन प्रदान कर रहे हैं । लेकिन ग्रामदान के बाद के कार्यों में इनमें से अधिकांश नेता महायुक्त नहीं सिद्ध हो रहे हैं उनके नेतृत्व के कारण नयी शक्ति भी खड़ी नहीं हुई । अतः ग्रामदान के बाद उपयुक्त नेतृत्व का विकास हमारे लिए एक मौलिक समस्या बन गई । ऊपर कहा जा चुका है कि ग्राम सभा के गठन के कुछ दिनों बाद नेतृत्व का सकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि निहित स्वार्थ उभर पड़ते हैं, नेतृत्व के प्रति गहरा भविष्यवास प्रकट होता है । अगर सावधानी के साथ तथ्यों के आधारे पर भविष्यवासी और प्रकामो का हल नहीं निकाला गया तो स्थिति और भी गम्भीर हो जाती है इसलिए एक तरफ सहकारी भावना के आधार पर समस्याओं के समाधान और दूसरी तरफ उपयुक्त नेतृत्व की तलाश और उसका विकास आवश्यक है । उपयुक्त नये लोगों को ग्राम सभाओं के सचालन का दायित्व देने में तथा-कथित नेता बहुत प्रकार की बाधा डालते हैं इसलिये नये नेतृत्व के लिए गांव में पीपल तत्व की नैतिक शक्ति का विकास आवश्यक है । इसके लिए यह आवश्यक है कि हरेक गांव के साथ हमारी एक जैसी कड़ी हो जो उसके सम-

ठन और उपयुक्त नेतृत्व के सपठन का मार्गदर्शन कर सके । इसी दृष्टि से यहाँ छः क्षेत्रों की स्थापना हुई जो ऐसी शक्ति विकसित करने में सहायक हों । हमारे सघन कार्य के हरे गांव में बेहतर नेतृत्व प्रकट होने क्षीण रहा । और बड़े गांव को सही दिशा में ले जाने में प्रयत्नशील भी है । वह नेतृत्व उपयुक्त हो सके इसके लिए अभी और काम करने की आवश्यकता है । वहाँ नेतृत्व का कार्य गण सेवकत्व की भूमिका में है ।

अब तक ग्राम सभाओं द्वारा ६०,००० रुपये के मूल्य का विभिन्न रूप में ग्रामकोष का निर्माण हुआ । इस कोष निर्माण में प्रत्यक्ष धम का प्रधिष्ठ प्रश है । इस कोष से सहारे सिचाई के पक्के कार्य, मालगुजारी भुगतान, पम्पिंग सेट खरीद, सदस्यों को सेवा के लिए बर्ज देने आदि के कार्य मुख्य हैं । उपर से मन में एक सेर का कोष निकालना उसी अन्वस्था में सफल होता है जब किसी प्रभावकारी समस्या के हल के प्रसंग सामने आते हैं । इसके लिए विद्युतीकरण, पम्पिंग सेट की खरीद, सिचाई के कुछ पक्के कार्य बड़े प्रभावकारी प्रमाणित हुए हैं । गांव में प्रब दो

गांधी जयंती के अवसर पर

रचनात्मक कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं

भारत शुगर मिल्स लिमिटेड

सिद्धवालिया, सारण (विहार)

शुद्ध श्वेत रवादार शक्कर के निर्माता

साधनों के उपयोग की शक्ति बन रही हैं

भारत की पूरवी वा निर्माण हो रहा है—
 पारिवारिक धोरण का की। जहाँ काम की
 [नी के निर्माण में लोगों की दिव्यशक्ति है
 बड़ा वास्तविक वेर विभाग के प्रभावकारी
 कार्य होने हैं। गांव को पूरवी काषिण विभाग
 के निर्माण धोरण के प्रभावकारी उपयोग
 के लिए प्रभावकारी को भावना साधुदा-
 निर विभाग का एक कर्मिवाय ताव है।

भारत में ६२५ ग्रामिण स्तम्भ हैं पूरे
 ११०० एकर ग्रामिण परिवार को बीच
 १२५ कारख १०६ एकर ग्राम का उत्तरे
 बीच विभाग हुए। ग्रामिणियन मिटाने के
 कई प्रयत्न हुए। अनेक प्रमुखताएँ बाहर
 के ग्रामिण परिवार के भावने निर्माण के साथ
 का जाते हैं। इतनीक ग्रामिण के साथ
 सम्बन्ध बन गये हैं।

ग्रामिण के ग्रामिण परिवार की
 गाँवी को उनको ग्राम भित्त गयी, ऐसी बात
 नहीं। जब तक उनको पत्नी उन के साथक
 बन, गांव, धरा, सेनी के साथ भोजन
 के लिए धरा, बंन, सेनी के साथ भोजन
 कम्पनार विभाग के ही भाव सम्बन्ध ग्रामिण
 माने ही तो घर सबे नहीं हो सकते।

यह सब बदलकर से ग्रामिण परिवार का
 दूरी है। इतनीक परिवार छोटे ग्रामिण परि-
 वार के लिए गांव घर के लिए धरा का उत्ता-
 रिणने गयी है। यवले से घर सब ५००
 हुए। २१ गाँवों में जो कुम्भी, कोरिया, बाहर,
 गलवा, परदे, बाघ, गाँवों, धारि के निर्माण
 हुए उनमें ११०० परिवारों के निचे जो हजार
 एकर गाँव की सेनी की निर्वाही हो रही है
 कोर ५०० एकर ग्रामिण की गांव घर निर्वाही
 हीने। इन परिवारों में से ३००० से हैं जो ग्रामि
 धीर के धोरण निर्वाही हो गये।

इन कारणों से ग्रामिण परिवार में की मर-
 गत के निचे एक मरनामानी में स्थापना की

गयी जिसके जरिये धोरण के ७०-८० परिवार
 सेटी की मरमयन का साथ हो रहा है। भारत
 के शालाग की मुक्ति के लिए एक धारण मन्थार
 की स्थापना की गयी है। यथा के समय
 निर्माण अपना धाराइ इग मन्थार के साथ
 उस समय के मुख्य दर पर वेच जायेंगे से हाथों
 जस समय के मुख्य दर पर वेच जायेंगे से हाथों
 धनुषुल बाजार दर के समय समन भाधार को
 वे धाराइ बच देते का धाराइ देते हैं। मन्थार
 व्यवस्था सर्व काउटर विभागों को धारिणिक
 मूल्य देता है।

विभागा को विना पूर पर गांव, जीन,
 दवा, बंन इति यत्र बृण निर्माण के निच बंन
 देते की व्यवस्था भी की गयी है। इति प्रवि-
 सर बंन की स्थापना की गयी है। इत्ये
 जगि धर वन धारण मन्थारों के द्वारा मने से धने
 ५५ युक्तों का मयन सेनी के निचे प्रविशान
 किया गया है। इत्ये में धारिणिक युक्त धारणी
 सेनी के विभाग में सक्ता नाम कर रह ही धोर
 के धारने गांव की सेवा भी रह रहे हैं। इनके
 करने एक उनमें प्राग्भिक मरमयन के लिए
 प्रविशान किया गया है।

निर्वाही प्रयत्न के पूर्व इनमें से १०० परि-
 वार ही ऐसे धोरण में गांव भर के निच धारणी
 निर्वाही प्रयत्न में धारण का उत्पान करने वाले
 धर १००० परिवार ऐसे हैं जो धारण में स्वा-
 लम्बी हो गये हैं। ये ३०० परिवार वर्ष म
 ५ से ८ महीनों के निचे धारण में स्वावलम्बी हो
 चुके हैं धारण इनी प्रभार प्रयत्न हुआ रहा जो
 धारणी तीन वर्षों में कुल १३०० परिवार
 धारण में स्वावलम्बी हो जायेंगे। यह निचने
 गांव वयों के इति धोरण में विभाग की बहानी
 है।

धार में गांव सर्व पूर्व की तुलना म के
 परिवारों की देणा के नीचे के परिवार लन ईने
 तावक धाराइ वयन का प्रयत्न करने लगे हैं।
 धोर की पहलने लगे हैं। धर में मिट्टी के
 धोर के स्थान पर सावलेन का उपयोग करने
 लगे हैं। इतिवजन भी पहलने से धारिण प्राण
 होने लगा है। सबसे बड़ी दो बाँनें सएट
 कीयती हैं—बीजन में धाराइ का मन्थार धोर
 धारणी लयन को निर्मित करने की इच्छा।

प्रभावयन के बाद गांव के लोगों की बुद्धि
 धोर व्यवहार में प्रभावशाली परिवर्तन हो गया,
 एता नहीं। धारणान के विचार के प्रति धारणा
 का बंन बरकर हो जानी है। लेकिन परिवर्तन
 जो निर्माण की प्रविद्या से ही सम्भव है। पुरानी
 धारणों की गयी धारणों में परिवर्तन करना
 एक बुनियादी कार्य है जें से धोरों की धारण
 को जगह पर धारणयोजना की पूर्ण के निचे

ईमानदारी पूर्वक सामुहिक व्यवस्था में प्रति
 धारणा धारण कर पुराणों करने में धारण
 की धारणयोजना है। यह धारणयोजना ही है
 कि ऐसे परिवर्तन गांव की एक बड़ी समस्या
 के हल करने से ही हो। उदाहरण के निचे
 एक गांव के लोको, दुग्ध, सब्जे समी साने के
 लिए मनुष्य के पडा से निरे कुन नुराया करने
 रखा गया धोर उनके मनुष्यवत्त भयापह
 परिक्षाम पर समीरणा गुम्हाय चर्चा हुई।
 तब इन नाम को सामुहिक रूप में चर्चा हुई।
 धारा गाँव धोर धारण को रोबने का
 सर्व मरमयन से मनुष्यका। इन प्रकार मनुष्यका
 पूर की धोरों समाय हुई धोर ताव साथ

स्वस्थ करने में उनके प्रति लोगों में विश्वास
 धोर सम्पान बा। इन प्रयत्न में जस पहलक
 पूर्ण चर्चा को महा प्रयत्न करने। धारणयक
 मरमयन है कि जिचने धारण के मभी लोगो को
 प्रभावित किया था। इस गांव में दो डिवाल
 परिवार सेट सस्था की तरक में माडा-भय
 पढान से दिने गये थे। उन दिन की धारण मभा
 में कना मया बा कि गांव में धारिणिक रूपने
 की नीतिन लागत नहीं है। मान तीजिये वि

एक टीम के धारिण सेट के कुछ गाँव बुनें दूट
 गये। धोरों की धारण के कारण दुग्ध धारिण
 सेट के पाई पुराकर दूटे हुए धारिण सेट में
 लयाये जा सकते हैं। इसी प्रकार दुग्ध धोर के
 धारिण सेट माने करीये। इस प्रकार गांव में
 धारिण सेट नहीं बचते। धारण उग गाँव में
 धारिण सेट रखने की नीतिन समता नहीं है।
 किमी भी धारण के धारणयोजनाधारा
 महारतिता का सफल मरमयन धारणयक है।

गरीबी और अमीरी में फर्क गुणात्मक नहीं है

→ इस सहकारिका का उदय मात्र इस उद्देश्य से नहीं हो कि भौतिक भावनाओं की पूर्ति करनी है बल्कि सहकारी जीवन की भावनाओं और व्यवहार के रूप में घना जाय, इसकी आवश्यकता है। मण्डल जिन कार्यों की पूर्ति के लिये आर्थिक सहायता करता है उनमें इसी प्रक्रिया को धारणा है और उसमें बहुत ही तक सफलता भी मिलनी है। उदाहरणार्थ ग्राम निर्माण मण्डल प्रायः ५ वर्ष पूर्व से ही गाव के लोगों को सामूहिक रूप से सिंचाई के कुओं के निर्माण में सहायता करता है। वह इस बात पर सहायता करता है कि कुएँ निर्माण से कम से कम सात परिवारों को लाभ प्रदत्त होगा चाहिये और उनमें निर्माण में सबब परिवारों का उत्साहपूर्वक सहयोग हो। प्रारम्भ में ऐसे सहयोग का प्रायः अभाव था। विशेषकर कूप निर्माण में परम्परा यह रही है कि कोई एक व्यक्ति कुएँ का निर्माण करता है और कोई भी व्यक्ति उनका उपयोग। पहले कूप निर्माण एक धार्मिक कार्य था। लेकिन प्रायः वह निजी स्वार्थ का साधन मात्र है। ऐसी हालत में सबके सहयोग से कूप का निर्माण होना एक कठिन कार्य हो गया है। मण्डल के इस प्रयत्न से दूसरे वर्ष से ही लोगों में सहयोग की भावना में बँटने लगी। तीसरे वर्ष से मण्डल ने स्थानीय सहयोगी शक्ति को उत्साहित करने के लिए सिंचाई की समस्या हल करने में मदद देने की नीति अपनायी। अत्यन्त गरीब लोगों ने इस सहयोग की शर्त प्रायः बड़ा कर पूरी की। जैसे-जैसे सहयोग की शक्ति बढ़ती चली गयी जैसे-जैसे आर्थिक सहायता की आवश्यकता भी कम होनी गयी। इस प्रकार समस्या को समझने और वैयक्तिक प्रयत्न के स्थान पर सामूहिक हित के सहकारी प्रयत्नों के क्षेत्र का विकास एवं विस्तार हुआ।

गरीबी, विपन्नता और शोषण से तीनों तत्व कुर्तमान समाज व्यवस्था में निहित हैं।

इनमें लड़ाई लड़ना हमारे से नहीं है बल्कि सबको स्वयं से है। लोग जिनमें हम कार्यकर्ता सबसे पहले सम्मिलित हैं जिनमें इन विपन्नकारी तत्वों से ऊपर उठेंगे उतना निर्माण का कार्य पूरा होगा।

इस निर्माण के कार्य में अनुभव यही हुआ कि गरीब और अमीर में कोई बुनियादी गुणात्मक फर्क नहीं है। जब गरीब धनी बन जाता है तब वह शोषक दीखता है और जब धनी गरीब तब शोषित। इसलिये भौतिक विपन्नता मानसिक विपन्नता का परिणाम है। इसलिये गाव में परस्पर ऐसे सहयोग की शक्ति खोजी करनी है जिससे सत्ता और समूह के स्थान पर सेवा की दृष्टि और सत्कृति का निर्माण हो सके।

प्रायः किसी भी आर्थिक परिवार की अर्थ व्यवस्था समुचित स्वभाव की है चाहे वह धनी या गरीब परिवार हो। जैसे अगर कोई किसान परिवार है तो वह सेती, गोपालन तथा साथ ही वह कुछ और धंधा करता है। अगर कोई चर्मकार परिवार है तो वह चर्म-छोम के साथ-साथ सेती, मुद्यर पालन, मुर्गा-पालन आदि का काम करता है। इनमें से किसी भी धंधे के ह्रास से उस परिवार का आर्थिक अनुलन बिगड़ जाता है। अतः किसी भी परिवार के आर्थिक विकास के लिये समूह रूप से सहायता होनी चाहिये।

अगर किसी परिवार को आर्थिक सहायता करनी हो तो उसे इतनी सहायता प्रदत्त हो जिससे वह अर्थ व्यवस्था स्वयं सृष्टि की स्थिति में पहुँचे जाये।

आदिवासी तथा दुर्गम मजदूरों को उत्पादन का साधन प्राप्त करने में सहायता की जानी है। सहायता प्राप्त परिवारों में से १०-१५ प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जिनके पास आर्थिक व्यवस्था की समस्या है और प्रतिनिधि की कल्पना भी। इनमें से १०-१५ प्रतिशत परिवार ऐसे मिलते हैं जिनमें निरामा घर दबाये रहती है और उनकी प्रगति की भावना

मरी हुई जैसी लगती है। उनमें न समूह वृद्धि है और न बँसा संस्कार। अगर संस्था सहायति से काम करने लगती है और परिणाम पर ध्यान देती है तो वे परिवार सहायता से बचि रह जाते हैं। ७५-८० प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जिनके विचार की दिशि मंथर है। उनकी सहायता करते समय सहज ढंग से उनकी भावनाओं को भागना और बचो तक लगातार उन्हें संगठित करना किसी भी संस्था का प्राथमिक कर्तव्य है।

उन्हे उत्पादन के साधन की प्राप्ति में उतनी ही सहायता करनी चाहिये जितनी की वे व्यवस्था कर सकें।

प्रायः गरीब की आर्थिक प्रगति का सबसे बड़ा बाधक शोषण से ज्यादा शराबखोरी है। अगर इसे रोकना नहीं गया तो समाज के इस कमजोर अंग के उठाया नहीं जा सकता।

इस क्षेत्र में अत्यन्त बर्ष अत्यन्तधता और बीमारी के कारण कम से कम एक प्रतिशत परिवार कालान्तर की रक्षा में चले जाते हैं। यह बड़ा कारण है कि बगलों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसलिये प्रायोग्य का प्रदत्त अत्यन्त बर्ष और आर्थिक प्रगति के लिये एक भौतिक कार्यक्रम है।

यह प्रश्न दबाकर उठना रहा है कि परिवर्तन और रचना का एक छोटा नमूना प्रस्तुत किया जाय या व्यापक मानदोलन हो। प्रचलित मान्यताओं के बीच नमूनावाद सफल नहीं होता। लेकिन व्यापक मानदोलन भी सातत्य के अभाव में विफल हो जाता है। इस लिये सातत्य के साथ व्यापकता भी और बढ़ते जाना फाति और रचना के लिए यहाँ से अनुभवों की दृष्टि से सही बतम होगा।

इसके साथ ही किसी परिवर्तन के लिये शासन के नियमों का क्रम बदलना अत्यन्त आवश्यक है अन्वया रचनात्मक क्रान्ति द्वारा संसार की हुई परिस्थिति कुछ दिनों में प्रभावहीन हो जाती है। अतः सत्ता का अनुबल होना विधायक क्रान्ति के लिये भी एक आवश्यक गर्त है। लेकिन वैयक्तिक परिवर्तन एवं रचना के लिये प्रत्यक्ष रूप से काम करने वाले लोगों और उनकी संस्थाओं को सत्ता से स्वतंत्र होना चाहिये अन्वया परिवर्तन करने की शक्ति कुटिल नहीं होती है।

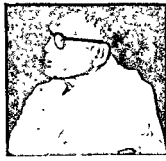
चौन राज्यों द्वारा निर्मित बावरी विचारों को ब्रह्मसमाज से विचित्र तजानूर की उर्वर भूमि सोना उगलती है। धान की दो और दाल की तीसरी फसल उगाने वाली इस भूमि के कारण तजानूर को दक्षिण का धान-भण्डार होने का गौरव प्राप्त हुआ है। जहाँ भी जायें सबक के बोली और धान के हरे-भरे खेतों का मनोहरी दृश्य है। कई स्थानों पर तो सबक के साथ-साथ दूर तक बहने वाली नहरें इन पर धार-धार लगा रही हैं। परन्तु प्रकृति के इन बरदान के पीछे मनुष्य की कठोरता खिरी हुई है। कई भूमि सुधार कानूनों के बावजूद भी यह भूमि अभी तक बड़े-बड़े भूमि-पतिवों (मीरासदारी) के कब्जे में है। इसके बनवा मंदिर और मठों की जमीनें हैं। तजानूर जिले की कुल भूमि का पाचवा हिस्सा मंदिर और मठों के पास है। इन जिले के तीन बड़े-बड़े मठों धर्मपुरम धर्मीनम् के पास १४,००० एकड़, तिरुवाट्टुडुसई धर्मीनम् के पास २४,००० एकड़ भूमि है, और निशानेण्डल धर्मीनम् के पास २०,००० एकड़ भूमि है। तिरुवाट्टु के त्यागराज स्वामी मंदिर के पास ८००० एकड़, कुपकोणम् के महातिग स्वामी मंदिर के पास ११,०५४ एकड़ तथा शिवकी के नरसीयेस्वराज के पास ११,२३ एकड़ भूमि है। भूमि सीमा कानून के अनुसार कोई परिवार अपने पास ११ एकड़ से अधिक भूमि नहीं रख सकता और मंदिर तथा ट्रस्ट २० एकड़ से अधिक भूमि खुद कानून में नहीं रख सकते, जेप उन्हें पट्टे पर देती होगी और वह भी एक परिवार को १ एकड़ से अधिक नहीं। परन्तु भूमि सीमा कानून में इनके बावजूद वे कि उनका पट्टा लेकर एक ही व्यक्ति कई भी एकड़ भूमि रख सकता है। भूमिपतियों में धर्मी कानून भूमि के विभाग सरयायो, मल्पनाली मंदिर के नाम से ट्रस्ट बनाया गिये। कुछ केसो भी बाजारवालों के नाम से दर्ज करता दो, परन्तु धर्म में उनका उपयोग के रयय ही करते हैं। नरसीयेस्वम् के मीरासदार के पास १८०० एकड़ भूमि थी।

किस बातका वे दाव में दो हुई यह भूमि ही मन्ति में भूमिहीन दृष्टि-मजदूरों के उपेक्षा का कारण बनी, बेमाकूमों के ११ बर्षीय भाएस्वन् के पास अभी भी

सवर्ण जमींदारों के श्रत्याचारों से पीडित तजानूर के हरिजनों को पुनः स्थापित करने और उनके हकों के लिए लगातार सघर्ष कर रहे सर्वोदय सेवक ग्रय केलवणमणि में नयी रचना कर रहे हैं।

भोपड़ियों की राख पर खिलते नये फूल

—सुभरत्ताल बट्टुगना



एस० जगन्नाथन

सन् १९४४ तक सेत-मजदूरों पर होने वाले अमानवीय श्रत्याचारों की कहानिया सुनाने को हैं। उन्हें छोड़े के चावुन से पीडा जाता था। पानी में गोबर घोलकर पिलाया जाता था।

वह हत्याकाण्ड

तजानूर जिले के पिछले २५ वर्षों के आन्दोलनों की कहानी सामयिकियों द्वारा मजदूरों की मुक्ति और उनकी मजदूरी बढ़ाने के लिए किये गये सघर्ष की कहानी है। पल्लवर और पल्लवन में केवल एक ही अक्षर का अंतर है, परन्तु पल्लवर माधव सपन्न भूमिपति और पल्लवन विपन्न सेत मजदूर। पूरे भारत में सेत मजदूरों का घोषण १९०० प्रतिगन है, परन्तु तमिलनाडु में १८.४२ प्रतिगन और तजानूर जिले में ३२.४० प्रतिगन है। परन्तु नान्नीनथ, सिर-कान्नी और नापरट्टुम तमपुरो में तो यह क्रमशः ४९.०८ और ३९.३९ प्रतिगन है। धान की रीतार्द से पूर्व मजदूरी बढ़ाने के लिए माजिक-मजदूर सघर्ष एक नियमित घटना है।

इन सघर्ष का मुआवला करने के लिए पाच वर्ष पूर्व जमींदारों ने उत्पादक सघ बनाया। वे अपने साथ कुछ मजदूरों को भी शामिल करते थे। इसने उद्योगियों को और भी उग्र बना दिया, जिसके फलस्वरूप मजदूरों को जागीरदारों को और तोड़ने के लिए जिम्मेदार एक व्यक्ति को २५ दिवस, ६८ सायकाल को चाप के होटल में हत्या कर उसका शव केलवणमणी गाव में डाल दिया गया। इस खून का बदला लेने के लिए रात के ९ बजे केलवणमणी गाव की हृषिकारो से मुसज्जिन सैकड़ लोगो ने घेर लिया। जो सशस्त्र थे वे भाग गये, कुछ धान के सेने में छिप गये। इस भयानक से चली मोतियों के निदान धर्मी सैकड़ लोगो के शरीर पर हैं। इसके बाद सेत-मजदूरों की भोपड़ियों में धार लगाई गयी। बूढ़े, बच्चे और स्त्रिया जो भाग नहीं सके थे उन्होंने भूमिपतियों का पसघर माने जाने वाले एन मजदूर की भोपडी में शरण ली, परन्तु धानादियों ने इस भोपडी के बाहर ताला लगाकर इनमें भी धार भोक दी। धार की लपटों से बाहर नूडकर आने वालों को पुनः जमी में डाल दिया गया और इस प्रकार ४४ मामूम लोगों का स्वतंत्रता, समानता और बचुवा का उद्घोष करने वाले देश में, मध्य युग में नहीं, बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बलिदान हुआ। इन दिन सारी दुनिया में नहीं केलवणमणी से कुछ दूर प्रसिद्ध शारोष्यमाता के निर्माघर में कहला की मूर्ति ईया के भक्त क्रिमस का स्वीकार मना रहे थे। इस काण्ड में जयने वालों में से ३,५ और ६ वर्ष के २-२ बच्चों से लेकर ७० वर्षीय बूढ़े मुलान

→
 तक थे। तीन पूरे परिवार और कुल २५ परिवारों के संग थे।

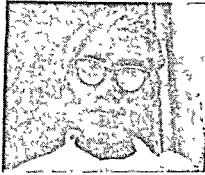
कल्याण का भरना

बेसवणमण्णी काण्ड से कठोर से कठोर हृदय भी रो उठे थे। इन रोंने वालों में दलित और पीड़ितों के सेवक एम० जगन्नाथन् और उनकी सहयोगिणी वृष्णाम्माल भी थी। जगन्नाथन् को उनकी आध्यात्मिक वृत्ति विद्यार्थी भ्रष्टरथा में ही सामुन्नी के प्राथमो में ले गयी थी। उन्होंने युवा साधु के रूप में उत्तराखण्ड की पैदल-यात्रा भी की। रामकृष्ण मठ में गये, परन्तु समाधान मिला उन्हें गांधी के रास्ते में।

इसलिए सन् १९३३ में उन्होंने हरिजन सेवक के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया, सन् १९५१ में एक और सेविका वृष्णाम्माल के साथ परिणय-सूत्र में बंधकर दोनो तमिलनाडु के दलित और पीड़ितों की सेवा के लिए विनोबा के भूदान आन्दोलन में शामिल हो गये। महीनों तक विनोबा के साथ उत्तर भारत की भूदान-यात्रा में रहने के बाद वे दक्षिण में विनोबा का सत्य, प्रेम और करुणा का संदेश फैलाने के लिए विनोबा के हनुमान बनकर प्रायः और तब से यह हनुमान ब्रह्मिण्ड निष्ठा और अग्रक पश्चिम के साथ राम की सेवा में लगा हुआ है। जगन्नाथन् की सेवा से वामराज इनमें प्रभावित हुए कि जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष हुए तो नार्सेस का सदस्य न होने हुए भी नार्सेस कार्य समिति के सदस्य के रूप में जगन्नाथन् के नाम की घोषणा कर दी, परन्तु जगन्नाथन् का तो रास्ता ही भ्रष्टरथा था—सत्ता और दलगत राजनीति से अलग रहकर निष्काम सेवा का।

यमय के साथ लोग केलवणमण्णी की घटना को भूलने लगे, परन्तु जगन्नाथन् बंफति ने पूर्वी तंजावूर धो हीं धारनी पर्म-श्रेणि बना लिया जिस तरह परस्पर प्रतिस्पर्धा, घृणा और द्वेष का वातावरण बना हुआ था, उससे दक्षिण में कई केलवणमण्णी काण्डों की पुनरावृत्ति हो सक्ती थी। कुछ निष्ठावान सर्वोदय-सेवकों के साथ उन्होंने इन क्षेत्र की परयात्राएँ की। गांधी जन्म शताब्दी कार्यक्रम के अंतर्गत हरिजन बरितयो में पीने के पानी के कूप

सुदवाये। इनके साथ-साथ वे मानव-सूत्रयो में दिने करुणा के खोनों की सुदाई भी करने लगे, परन्तु जिनकी ही अधिक कोमल और उपजाऊ तंजावूर की शाये शायतना धरती है, उनमें ही कठोर और नीरम उन लोगों के दिल हो गये थे, जिनके पास धन है, धरनी है, बिद्या है, बुद्धि है, सत्ता है और अधिकार है।



माणिवधम्

अहिंसक संघर्ष

भूमिहीनों को मठ, मदिरों और दूट्टो की भूमि पट्टे पर दिलाने के लिए वे उनसे मिले। श्री शंकरराज देव के नेतृत्व में हृदय-परिवर्तन के लिये प्रयास प्रारंभ हुए। परन्तु चट्टानें पिघली नहीं तो कई गांवों में मामू-हिक सत्याग्रह हुए, उपवास हुए और भीनों लम्बी परयात्राएँ हुयीं। जानि के इन प्रयोगों ने काल चक्र को पलट दिया। हिंसा और प्रतिशोध पर उतारू भूये लोग अब कई गांवों में ग्राम-स्वराज्य, ग्राम सभाएँ बनाकर शांति और अहिंसा के तरीके से मानवता की नव-रचना करने में लगे हुए हैं। लगभग ३० भाई सहित ५ शांति-वेन्द्र और १० बालवाडियों के माध्यम से उनका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें से इगलैण्ड के एल् मिशा शास्त्री की २९ वर्षीय बेटी त्रिग भी चार वर्षों से इन क्षेत्र में काम कर रही है। उसने केवल भारतीय भोजन और वेशभूषा ही नहीं धरनाई है, बल्कि पीड़ितों के साथ धारनी विस्मृत भी जोड़ दी है। किसने कई उपग्रामों और नल्या-ग्रहों में भाग लिया है। वह आग्रजन तमिल

तमिलना और पटना सीव रही है। एम० जग-न्नाथन् का जो डेढ़ वर्ष पूर्व सर्व सेवा सभ के अध्यक्ष थे, मुख्य वेन्द्र मद्रास और मद्राई के बड़े नगरी में नहीं है। यहा तक कि वे तंजावूर और तिरुवारुर में भी नहीं रहते हैं। सनके के लिए तिरुवारुर के शानि केन्द्र में उनके मुख्य साथी माणिवधम् रहते हैं। वे स्वयं वल्लीवल्लम् की बालवाडी की भोडी में रहते हैं। गांधी की कल्याण का लोक सेवक भारत के दोन दु खी और दलितों के साथ एक रूप हो गया है।

गांधी शानि वेन्द्र का पहला काम केलव-णमण्णी के पीड़ितों का पुनर्वास था। उनकी भोपडियो में सब कुछ स्वाहा हो गया। शांति केन्द्र में उन्हें रोजी कमाने के लिए चढाई बुने के वर्ष दिये। कर्जा दिलाकर १० परिवारों के लिए १० एकड़ वृषि भूमि का प्रवय कर दिया। अब उनके धरने सेव हैं। तमिल-नाडु सरकार ने ३० परिवारों के लिये पक्की भोपडिया बना दी हैं। हाल ही में मद्रास हाई कोर्ट के फंतेने से केलवणमण्णी कांड के सभी अधियुक्त निर्दोष करार देकर रिहा कर दिये गये हैं। धीरासदाओं के सघ में मुख्य अधियुक्त का अभिनन्दन कर उसे धरना अध्यक्ष बना दिया है। परन्तु जागीरदारों के एनेष्ट की हत्या के अधियुक्त पांच वृषि-मजदूर २ वर्ष से सेबर आजीवन कारावास तक का दण्ड भुगत रहे हैं। इनमें से एक परतीवेन के डेढ़ वर्षीय बेटे वासु-देवन ने धरनी धरना काय नहीं देसा है। शानि केन्द्र द्वारा स्थापित बालवाडी वासुदेवन और उमो की तरह घुम-भिडटी तथा गन्वो में दिन गुजारने वाले बच्चों के नव-जीवन का वेन्द्र बन गई है। यह पीड़ी मानवीय घृणा की विरा सन से मुक्त होकर कल्या के अन्तो का स्रोत बनेगी।

ग्रामस्वराज्य का चित्र उभर रहा है

मदिरों के प्रदेश तमिलनाडु के १५५ मदिरों में से १२०६ तंजावूर जिले में हैं। धरनी भक्ति भावना को प्रकट करते धोर जनता को रोजगार देने के लिए इन मदिरों का निर्माण चोन राजस्रो के कान में हुआ। वही में से ५०० वर्ष पुराना हृदय कमलमय

→

→
झासी का मिन मंदिर मत्स्योत्सव में है।
झापा, मुन्दरार और माण्डव वास्कर
मंदिर इन वहाँ पाये हैं।

रवहन का रक्षण

परन्तु इस मंदिर की ३०६ एकर उत्तम
उपजाऊ भूमि पर जहाँसे वे भ्रम करने वाले
केन-मजदूर मातृश्रीय जीवन ही भोगने रहे।
झासी १८०० एकर भूमि में घनात्तर इस भूमि
का बचना भी जमींदारों के पास था, यही
वही घने रक्षोदार मंदिर के दृष्टिगत भी
पारसे वे वही मंदिर के मारिष्य घोर झरती के
पैरी के पत्थों की चिकी का टेंका भी नाममात्र
के मूल्य पर ले लेता था। जमींदारों के साथ
कारिष्य मजदूरों पर बड़ा रक्षण भी काम
करता था। उसे मंदिर की ४ एकर भूमि
मिली थी। रक्षक का वेडा प्रसिद्धि फाय-
वर्ष है। एक मार रक्षक के बेटे के मंदिर के
समीचे के पत्थों की नीताभी में बोयी सोपन
का दु मारुण कर दिया घोर घना बर्षों की
बाद ४०-५० रुपये के मजदूर ११०० रुपये में
देखा ले लिया। इसके जमींदार की खोरीया
का घरी। रक्षक की मजदूरों से निकल
रिना घरी बाहर से मजदूर खुसकर रक्षण
की मारण करता ही। इस घटना के भीतिय
मेरवों को हिला दिया। राजाशाही के हृदय
कमनाजय के मंदिर में घोर जगन्नाथन् के
वेद मजदूरों की जपनी में एक शोभाया में ३१
अवर्षी, ११६६ को जगान धारम कर
रिना। जमींदार ने इस शोभाया की मुद्रणने
का खाने किराया भी जगन्नाथन् से इसकी के
वेर के नीचे धारम जवाया। जगन्नाथन् के
उत्सव में जो १४ दिन तक बना, सरकार,
कला घोर सार्वजनिक पत्थों में सावबनी मच
परी, रक्षण का धनाज शोभाया गया।

वृ पत्थी विवर की, इसके धारम
मंदिर घोर हुन्वों की भूमि के विचार के
रिण धारमोत्सव काय हुआ। इसके बर्द बेतारी
करते हैं। काजुक के धनुषार कोई वाय एक
के धारम गरी कर सकता था। समोने के इसके
रिण धारमोत्सव काय वह विने घोर मोर बनी
के धारम कर मंदिर की ३१२ एकड़ तथा
हुन्वों की २२६ एकड़ भूमि भूमिहीनी को
पुने पर निच पत्थी है। जमींदारों को मोरने

झासी मुद्रमोवाकी जारी है। विद्वने धर्म
ममन बाइने के भी पर रिभीकर की विमुक्ति
की गयी, रिजका लोग म विरोध दिया, २००
से अधिक लोग वेम पर भ्रम धरिभीकर की
विमुक्ति का धारेष्य २२४ वरा घोर भूमिहीन
लोग झानो महजन का वचना सेके।

इस मधवी के बच वर पत्ता सर्व है जब
वेम-मजदूर धारम था। म मजदूर पर धारम की
रोशनी का ३६ है। रिभीकर की विमुक्ति के
लिए हाईकोर्ट में बमदार की धारिण भी वर
ही रही है। इस एकरभूमि में १६ अरण्य
(३२) की राय का वे मजदूरम में एक टान
(३२) की राय की दाम मजदूरम दाम मभा की
वैठक धारमम हुई है। १-१-१२ धारम १६७०
की धारम-गारि ३ मजदूर दिवनी के धारम म
मभा-मजदूरमम दाम का। घनी की का
इने म म न य -ी था। वे मजदूर काय
धारिणमम का मारे म न मजदूर काय म धारिण
मजदूरमम की मभा -ा पत्थो का। धारमम
धारम मल के मजदूरमम की मजदूरों जय मोर
म धारम मय ही म म है।

दुकता घोर घोरता

३४ वर्षीय धार मजदूर जगन्नाथन् मजदूर
परि है किना रिनी धारधारिणम के उत्सवे
झल मजदूर म मार का मारे मरे मरु
अरम की बर्षी प्रारम कर ही। मजदूर धारिणम
धारिणमम प्रदर्शन घोर मेकदाया के बाइ
मिरी हुई जमीने पर वृ मार धारिण कति-
नाईया घोर कुछ घरनी मजदूर के धारम
मंकी गरी कर का ३६ है। धार मभा घरनी
मभा हुन्वा धारम मजदूर करने बानी है,
इसका घरनी रक्षण मय है। कुछ लोग हुन
पिने के जाल म कलाज मारु है। उनमें मय
धारिण मजदूर। म मजदूर के कला जिस प्रकाश
इस धारम बनी का धारम-मोखर करने है,
उनी प्रकाश मय भी मोखर करनी धारम म

एक धारिणर का से डी गरी कर मवना
था, उनमें झासी भूमि काय मभा का मोर
ही। निर घाने पति धारिणमम एक मुद्र
मरुका की भूमि का मभा धारममभा के मारम
काय। इस जमीने के ही धारिणर के—उमका
परि घोर मोर मारी। इस प्रकाश वर कला
के मजदूर से। ७ म मजदूरम के वृ मय
हुका रि जमीने धारममभा की मीने म

प्रथम में जगन्नाथन्मरी ने बहा, "हमारो
धारिणर घोर मजदूरों के बाइल वृ मजदूरता
मिली है। इसके नामने काय-मजदूर रायो की
बर्दी भीमन उही है। हमारो वृता घोर
भीमता ही धारिणर मरिने से धारममम धारि-
धार करने का हमारो मदन है। हमारो
मजदूर को कोई ताइ नही मजना। धारिण
दिना तक भूमिहीन के विचार उधारी मारम
बायो वामुनिमम घोर जमींदारों का धारिण
मजदूरमम गरी टिक मजना किनि लाधारम-
वार का क्या हुभा है। रिभीकर यदि विमुक्त
हुभा तो केवल जगन्नाथन् घोर धारिणमम
की मभा का उपर ही धारमो ममन बाइ
मजना है।

धारमो झासी मरिणर बाने ने तिने ही
हुम धारममम मजदूर करने के लिए बहा है।
जिस धारममम म बाव मो धारमम के एक
दाम म मेकका काय वेदा हो। हे इनी प्रकाश
म म म मभा का धारम मासुकि काय के
रिण जभा मय, वृ मजदूर म म भी मंका
हा जाये। कलमजदूरों के नाज म वृ बर्दी
बुना रिना है जो उर मेयमें घरने से भूमि
मजदूर व रिण दिया मभा था।

३० धारिणर के मय ममे ३६ लोग
मभा में धारम म जिनेम १७ वर्षीय धारमम
मे मेकन ६० वर्षीय निवार तक से।

झाजादी की धोषणा

इसने मोभा धारिणर पूरा हो गया है।
परन्तु मजदूरों की धारमम म मय धारि के
बाइ ही हुई थी, राय के डेढ़ बजे ३६ वर्षीय
मजदूर धारममम मजदूर की टोपी के साथ
इस धारमम का मेकन धारि धार रि हुने
मजदूर धारि देना बलाई है। धार इवका
उधारम होया। वृ धारि मेका मार की
मेरा करेती घोर बर्ष मोभा की धारम करेती।
धारिणर मभा में धारमो के उम पर के भीव जरी
जगन्नाथन् का धारिणर उधारम हुभा था,
धारिणर धारि का धारमम मने का भी धारि-
धार रिना है। इसके मजदूरों का वृ मीने
धारि के लिए धारममम करने बानी को वि-
धार म म प्रेरण देना रहे।

२ अक्टूबर १९७३, महात्मा गांधी जयन्ती के अवसर पर

उज्जैन नगर पालिक निगम

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का

हादिक अभिनन्दन कर

देश के समुज्ज्वल भविष्य की

कामना करता है।

डी० सी० धारूढ़
प्रायुक्त

पृ० २० कण्ठे
प्रशासक

उज्जैन नगर पालिक निगम

(जनसंपर्क विभाग के सौजन्य से)

भूदान-यज्ञ पत्रिका की सफलता के लिए इच्छुक

मारबल एम्पोरियम, आगरा

संगमरमर हस्तकला में सक्रिय

मारबल एम्पोरियम
पोस्ट बाक्स नं० ६८,
१८/१, ग्वालियर रोड
आगरा केन्ट (उ० प्र०)

रामप्रताप हुकमीचन्द एगड कं०

नमक उत्पादक और व्यापारी

भाईन्दर, जिला थाणा (महाराष्ट्र)

तार :
: "AGRAWAL" Bhayandar
उत्पादन केन्द्र :
भाईन्दर, उरण (महाराष्ट्र)
धौप्रधा, माजीया, दीव
सौराष्ट्र

फोन : ६६१५६१ (बम्बई)

भाईन्दर आफिस

: ३५२०६१ द्वारा बम्बई सर्वोदय मंडल

: २३ उरण

: ११६ धांप्रधा

शराबबन्दी के लिए आन्दोलन महात्मा गांधी के अठारह रचनात्मक कार्यों में एक प्रमुख कार्यक्रम था। आजादी के पहले गांधीजी ने शराबबन्दी के लिए जो किया और करवाया उसे दुहरा रहा है राजस्थान। शराबबन्दी सत्याग्रह राजस्थान का खास कार्यक्रम हो गया है। अजमेर में तो महीनों से सत्याग्रह चल रहा है। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, जंतालमेर, सिरौही, बांसवाड़ा, सीकर, कोटा, भरतपुर आदि शहरों में उपवास और प्रदर्शन हुए हैं। अब तक कोई आठ सौ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए हैं। देखिले वर्ष राजस्थान ने जो किया उसकी यह रपट है—लिवी है—त्रिलोकचन्दजी ने।



राजस्थान में सत्याग्रह चल रहा है

देश में अर्धशतक से शराब का धाम हल के प्रयत्न ही नहीं बरदा, बल्कि मिश्रित मसाले में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी थी। उस समय के प्रशासकों की दिलचस्पी शराबारी धाम बढ़ाने की थी। सन् १९०० में लोकमान्य तिलक ने भारतीय समाज में बड़ी हुई शराबबन्दी के विनाशकारी अर्थों के बारे में धारणा की। फिर गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्र प्रांति का जो अहिंसक

आरोपण अला शराबबन्दी उमका एक विशेष व अभिन्न कार्यक्रम रहा। पहले उस समय शराब की दुकानों के सामने मिट्टी की गंधी और तख्ताघड़ियों ने जेब धारण उठाई।

स्वराज्य के बाद भारत के संविधान में भी शराबबन्दी को निर्दिष्ट तत्त्वों में स्थान दिया गया। कई राज्यों ने शराबबन्दी के लिए उत्साहपूर्वक कदम उठाए जिसके परिणाम-

स्वयं ललितकाठ, महाराष्ट्र, गुजरात राज्यों में पूर्ण शराबबन्दी तथा आन्ध्र के प्रांतिज विनाश शराबबन्दी लागू की।

राजस्थान में आन्दोलन का प्रारम्भ गांधी आरम्भ के वर्षों में राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए राजस्थान ने अक्टूबर १९६० में प्रदेश के वयोवृद्ध लोक सेवक श्री गोकुलदास अर्ध के नेतृत्व में आन्दोलन शुरू

→। लगभग साढ़े तीन महीने शराब निर्माण शालाओं पर सत्याग्रह चला। परिणामस्वरूप सत्याग्रीह राजस्थान सरकार ने नर्मित शराबकर्म द्वारा अप्रैल, ७२ तक राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू कर देने की घोषणा की। गुजरात से लगे जिले, सिरोही, वामवाड़ा, वाटमर, जंसलमेर, जालीर, उदयपुर की ६ तहसीलों में शराबबन्दी लागू कर दी। इसके अलावा सरकार की ओर से अपने यवन को सन्, ७२ की अप्रैल में पूरा कर देने की घोषणा के सिवाय कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। प्रदेश नयाबन्दी समिति राज्य सरकार से हर वर्ष शराबबन्दी को जिले में यशाने की मांग करती रही।

सन्, ७१ में सुलाड़िया सरकार ने स्वयं पत्र दे दिया और श्री बरतकुला खान ने नयी सरकार बनाई। नयी सरकार ने मार्च ७२ के अन्तिम सप्ताह में आर्थिक कारणों से राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने में अपनी अवमर्यादा व्यक्त कर दी। इस प्रकार

यह अपने वायदे से मुक्त गयी।

फलस्वरूप राजस्थान को फिर आन्दोलन प्रारम्भ करना पड़ा। अप्रैल, ७२ से ही आन्दोलन की तैयारियां शुरू हो गयीं। श्री गोडुलभाई भट्ट ने १६ मई से आग्रह प्रदर्शन किया तथा श्री यशदत्त उपाध्याय ने २१ मई से अनिश्चित काल के लिए अजमेर में अन्वयन शुरू किया।

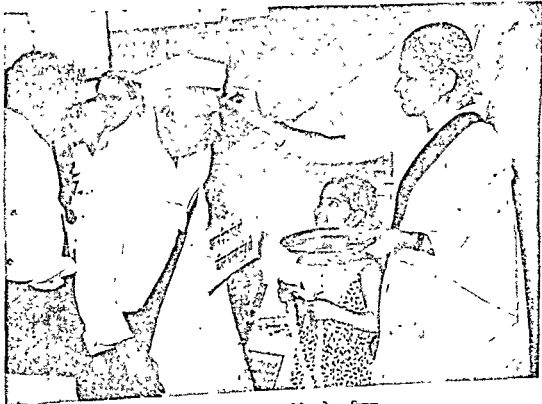
अधिक उपवास, विकेटिंग, प्रदर्शन तथा ध्यापक सहयोग : श्री गोडुलभाई भट्ट के उपवास से सारे प्रदेश और देश के विधायक क्षेत्र में हलचल हो गई। अजपुर, भरतपुर, बीकानेर, अजमेर व फलोदी में शराब की दूकानों पर विकेटिंग हुई। अजपुर में सचिवालय के सामने, जोधपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, जंसलमेर, सिरोही, वासवाड़ा, सीकर, कोटा, भरतपुर, अजमेर इत्यादि नगरों में जिलाधीश कार्यालयों के समक्ष अतिक उपवास हुए।

जयपुर, अजमेर, जोधपुर, फलोदी, बीकानेर, भरतपुर नगरों में शराब की

दूकानों पर विकेटिंग हुई, फलस्वरूप फलोदी में स्थान वेयर हाऊस आज तक बन्द है। राज्य विधान सभा के सम्मुख विगत प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसका नेतृत्व अ० भा० नयाबन्दी परिषद की अध्यक्षता डा० मुशीला नैयर ने तथा सर्व सच के प्रतिनिधि श्री अशयकुमार बरख ने किया। सरकार को एक तापन दिया गया। इसी प्रकार जिलाधीश कार्यालयों पर भी प्रदर्शन किये गये तथा जिलाधीशों को भी जापन दिये गये।

आन्दोलन को सफल बनाने के लिए राजस्थान अणुबत समिति, राजस्थान शिक्षक सघ, आर्य समाज, प्रदेश की सब विधायक सत्याए, धार्मिक सम्मानों, मजदूर सगठनों, विधायकों, व सासदों का समर्थन प्राप्त हुआ। राज्य विधान सभा में सभी दलों तथा निर्दलीय विधायकों ने शराबबन्दी का समर्थन किया। राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू कर गोडुलभाई की प्राण रक्षा के लिए सरकार

→



अन्नदान के लिए गोडुल भाई के माथे पर तिलक

भूदान-यज्ञ : सोमवार, १ अक्टूबर, '७२

से प्रार्थना की। शवद में भी राजस्थान में
 मराठवन्दी लागू करने का प्रश्न उठा।
 मराठवन्दी में विशेष रूप से बाले सखी
 भाई बहू को ने जल्पाह से धारोलेन म
 सहयोग दिया। प्रदेश से बाहर सारे देश
 से सत्याग्रह में सम्मिलित होने के लिए जल्पाह
 पहुंचने की सूचनाएं बराबर आ रही थी।
 मजोर में हुए ३० भा० मजोरिय सम्मेलन
 में राजस्थान में चले रहे मराठवन्दी धारो-
 लेन का समर्थन किया और सारे देश से
 सत्याग्रह में शामिल होने के लिए जल्पाह
 पहुंचने का आवाहन दिया गया। दादा धर्म-
 विपारी, आचार्य राममूर्ति, सर्व-मेधा सच
 के मंत्री श्री० ठाकुरदास प्रग, तथा मराठवन्दी
 के गौतमदास देवगढ़ के बन्दी सर्वोदय कार्य-
 कर्ता श्री दिलो तथा दिल्ली में रहे रहे ताकि
 जल्पाह से सूचना मिलने ही वे सत्याग्रह के
 लिए जल्पाह में जल्पाह पहुंच सके।

उत्तम के तीन दिन भी पूरे न हो पाये
 और राज्य सरकार ने भी गोड्डुमभाई भट्ट
 को सत्याग्रह का प्रचारण में निरस्त कर
 दिया, उन्हें अस्पताल में हिरासत में रखा
 गया। उत्तम के ११ वें दिन २६ मई की
 भी रात को एकादश प्रधानमन्त्री भीमरी
 इन्दिरा गांधी ने टेलीफोन द्वारा हत्याग्रह
 किया तथा गोड्डुमभाई से बातचीत की।
 प्रधानमन्त्री द्वारा मध्यस्थता का आश्वासन
 दिये जाने पर २७ मई, ७२ को गोड्डुमभाई
 भट्ट का भजन छटा।

आशवासन पूरे नहीं हुए

२७ मई, ७२ में २१ जनवरी, ७३ तक
 इस बात का इन्कार रहा कि प्रधानमन्त्री
 राज्य सरकार को निर्देश कर्मी और राज्य
 मन्त्रालय २ फरवरी, ७२, गांधी जयन्ती या
 १५ नवम्बर, वैशाख जयन्ती धरमा २६ जन-
 वरी, ७३ सार्वजनिक दिवस में राज्य में पूर्ण
 मराठवन्दी लागू करा देंगे। इस मन्त्रालय म
 नई मेधा सच, नयाजम्बी परिदर का प्रतिनिधि
 मन्त्र प्रधानमन्त्री से मिला। श्री गोड्डुमभाई
 भट्ट ने भी प्रधानमन्त्री से दो कर तथा
 राज्य के मुख्यमन्त्री के विलयों से भी
 मन्त्रालय की। सर्व मेधा सच के अध्यक्ष
 निन्दराम इन्द्रा भी इस मन्त्रालय में प्रधानमन्त्री
 से मिले। पर मन्त्रालय चला। किन्तु कुछ



डिस्टोली के बाहर धरना

परिणाम नहीं मिलता। राज्य सरकार
 बराबर आग्रह करते ही दर्जाल देनी रही
 और मराठवन्दी के नैतिक कदम की टालने
 का श्रवैतिक साहस करनी रही। प्रधानमन्त्री
 भी मराठवन्दी के तिलतिले में उदासीन हो
 रही और राज्य सरकार को पूर्ण मराठवन्दी
 की श्रवै कदम उठाने के लिए निश्चित निर्देश
 नहीं दे रकी।

ऐसी उर्ध्वा और उदासीनता से भरी
 परिस्थिति में २६ जनवरी, सार्वजनिक दिवस
 में प्रदेश मराठवन्दी सम्मिलन ने कुल धारोलेन
 प्रार्थना कर दिया। २६ जनवरी से गोड्डुम-
 भाई भट्ट ने ६ दिन का मन्त्रालय प्रारम्भ
 किया। मन्त्रालय का प्रारम्भ मुख्यमन्त्री के
 निवास के बाहर सामुहिक उत्तम से हुआ।
 मेघ व दिन का उत्तम धर्मदेव नगर में गांधी
 स्मृति प्रतिष्ठान में हुआ जो ५ कारवरी की
 निश्चित मन्त्रालय हुआ। उत्तम काज के
 निदेशों बाबासाह, टीर, सजमेर, नलीर,
 धनकर भीतकाडा जल्पाह जिमा मुख्यमन्त्री
 पर धर्मदेव दिन गरी और आग्रह दिये गये।

सौधो कार्यवाही

१२ कारवरी से धर्मदेव में सामगज
 डिस्टोली में प्रवेश कर शराव उठेने की
 भीभी कार्यवाही मूक हुई, किन्तु वेनेन
 गोड्डुमभाई भट्ट के ३० सुगीता नैवरने

ने किया। पुलिस के घेरे से घिरी डिस्टो-
 ली म सुगीता बहान व गोड्डुमभाई भट्ट ने
 प्रवेश करने का प्रयत्न किया। राज्य सरकार
 ने उन्हें अन्य चार साक्षियों के साथ निरस्त
 कर लिया और दिन भर हिरासत में रखा।
 शाम को उन्हें व अन्य चार साक्षियों को
 मुक्त कर दिया। इस प्रकार १२ कारवरी से
 लेकर आज तक बराबर डिस्टोली पर
 सत्याग्रह चल रहा है और निरस्तारियां हो
 रही हैं। अब तक लगभग ६०० भाई बहान
 निरस्तार किये जा चुके हैं।

१७ कारवरी को लगभग ७० भाई बहानों
 के व जल्पाह डिस्टोली पर सत्याग्रह के लिए
 पहुंचे। उन दिन सत्याग्रहियों को निरस्तार
 किया गया। उन पर १०७,११७ व १५१
 की चारा लगाकर उन्हें जेल भिजवा दिया
 गया। निरस्तार कर जेल भेजने का यह
 क्रम १७ मार्च तक चलता। इस क्रम में लग-
 भग २५० व्यक्ति जेल भेजे गये। इनकी
 श्रवैधानिक निरस्तारियों के बारे में डिस्टो-
 ली बोर्ड के मुख्यधर्म की वेररी
 भीकारे के सुनिश्चित एवरोलेट रजुवरमाल
 गोपाल तथा तथा नागौर जिले के लीकरनेरी
 भीजवादा स्वामी ने की। १७ मार्च की
 सब सत्याग्रहियों को राज्य सरकार ने विना
 शर्त जेल से रिहा कर दिया। ३० मन्त्रालय को
 ५ सत्याग्रहियों पर दवा ४५१ व ४५० सत्या-

→
 भर गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल भेज दिया गया।

१८ फरवरी को प्र० भा० नगरावन्दी परिषद, सर्व सेवा संघ, प्रणुवन समिति के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी के प्रश्न को लेकर विभिन्न राज्यों के ७०० भाई बहनों ने प्रधान मंत्री निवास पर शान्ति प्रदर्शन, उपवास व प्रार्थना का आयोजन किया। इसी दिन एक शिष्ट मंडल प्रधान मंत्री से मिला और उन्हें शापन प्रस्तुत किया। शिष्ट मंडल में नगरावन्दी परिषद की अध्यक्षता डा० सुशीला नंभर, सर्व सेवा सभ के अध्यक्ष सिद्धराज डड्डा, ससद सदस्य डा० जीवराज मेहता व श्याम-नन्दन मिश्र, गांधी स्मारक निधि के यशो देवेंद्र कुमार गुप्त, गोकुलभाई भट्ट व रूपनारायण जी इत्यादि सम्मिलित हुए।

विधायकों एवं सांसदों द्वारा नगरावन्दी का समर्थन १६ मार्च व १६ मार्च को राजस्थान विधान सभा के सभी पक्षों के व निर्दलीय विधायकों ने शराबबन्दी का पूरा समर्थन किया और शराबबन्दी के मामले में वित्तमंत्री की धार्मिक धांटे की दलील को चुनौती दी। विरोधी दलों के सभी विधायकों ने इतनी दूर तक जाकर समर्थन किया कि शराबबन्दी के लिए यदि राज्य सरकार किसी नये कर का भी प्रस्ताव करेगी तो वे उसका समर्थन करेंगे। इसी प्रकार राजस्थान के सांसदों ने भी शराबबन्दी आंदोलन का समर्थन किया तथा राज्य सरकार से अपने वायदे को पूरा करने तथा शराब से होने वाले धांटे की पूर्ति के लिए राज्य सरकार को धार्मिक सहयोग के लिए प्रावधान करने के छूटे वित्त आयोग को ज्ञापन देने का निश्चय किया।

डिस्टीलरी पर अवरोध

राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए चल रहे आंदोलन के समर्थन में विधान सभा के सामने जयपुर में २४ घंटे के क्रमिक उपवास का आयोजन २१ मार्च से किया गया जो ६ अप्रैल सत्रावसान तक बराबर चला।

फिर इसी प्रकार के उपवास का क्रम १८ अप्रैल भूकानि दिवस से सचिवालय के

सामने प्रारम्भ हुआ जो ७ जुलाई तक बराबर चलता रहा। फिर राजस्थान वर्मचारी आंदोलन के सिलसिले में पुलिस द्वारा की गई ज्यादतियों तथा उपवास करने वालों के साथ हुए दुर्व्यवहार के विरोध स्वरूप ७ जुलाई से उपवास क्रम स्थगित किया। १३ अप्रैल से डिस्टीलरी पर अवरोधात्मक कार्यक्रम शुरू किया गया। २४ घंटे का सत्याग्रह प्रारम्भ कर डिस्टीलरी से शराब का धावागमन रोक दिया गया। इस प्रकार डिस्टीलरी पर प्रारम्भ किये गये अवरोधात्मक कार्यक्रम का क्रम प्रायः तक जारी है।

पदयात्राएँ . अजमेर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह करने व गांधी ने शराबबन्दी का सदेश पढ़ाते हुए जयपुर, नागौर, एवं भीलवाड़ा जिले से तीन पदयात्रा टोलियां अजमेर पढ़ीं। जयपुर की टोली का संयोजन जवाहरलालजी जैन, भीलवाड़ा टोली का संयोजन सेठू रामजी लोधी तथा मकराना टोली का संयोजन बडीप्रसाद जी ने किया। टोलियों ने अजमेर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह कर गिरफ्तारी के लिए अपने को प्रस्तुत किया।

हर जिले में सत्याग्रहियों द्वारा १२ तारीख को जिलाधीन कार्यालयों, तहसील हेडक्वार्टरों, पर प्रदर्शन करते ज्ञापन देने का आयोजन किया जाता है। कई नगरों में हुकानों पर रिफ्रेटिंग किया जाता है। जिनमें अजमेर, सिरौही, टोंक, बूंदी, दासवाड़ा, नागौर, भित्तनगढ़, जोधपुर, फलोदी, जयपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, इत्यादि जिले व कस्बे प्रमुख हैं।

सरकार की घोषित नीति के अनुसार शिक्षणालयों, देवालयों, धार्मिक दलितों व सांस्कृतिक स्थानों के नजदीक जो स्थान हैं, उनको हटाया जायेगा। इस प्रकार की अवंध दुकानों का सर्वेक्षण कर उनको हटाने के लिए जिला प्रशासकी अधिकारी तथा जिलाधीनो को ज्ञापन दिये जा रहे हैं। तथा इनके लिए नागरिकों के सहयोग से आंदोलन व रिफ्रेटिंग प्रारम्भ किये गये।

शराब की दुकान हटो : शराबबन्दी आन्दोलन, रिफ्रेटिंग एवं प्रतिरोधात्मक चरम के कारण अजमेर नगर में बन्दुमपुरा की दुकान हटो, टोक में पाटी समिति के

पास की दुकान, तथा साबर ग्राम में सरात के टेके की दुकान तथा जयपुर में बामसौ गांव की दुकान तथा ब्यावर नगर की चायली तार रोड पर स्थित शराब की दुकान बंद करवा दी गई है। फत्तोदी में मई, ७२ में सरकारी गोदाम पर सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ, जिसके फलस्वरूप वह गोदाम अब तक बंद पड़ा है और मानू मद्रा है कि फत्तोदी में शराब का गोदाम हटा लिया गया है।

प्रदेश की बहनों ने भी शराबबन्दी के लिए काफी उत्साह दिखलाया। जेल भी गईं। दुकानों पर रिफ्रेटिंग में भाग लिया। अजमेर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह के लिए तथा गिरफ्तारी के लिए अपने को प्रस्तुत किया। धार्मिक उपवास के कार्यक्रमों व प्रदर्शनों में भी बहनों ने उत्साह से भाग लिया। उत्तर प्रदेश की लोक सेवी बहनों ने भी जयपुर व अजमेर नगर में शराबबन्दी का प्रचार किया और बहनों को प्रेरणा दी। इन बहनों ने अजमेर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह में भी भाग लिया और डिस्टीलरी में भी प्रवेश किया।

सदका सहयोग

शराबबन्दी एवं नैतिक आंदोलन है। और यह प्रदेश के नैतिक जीवन के उत्थान के लिए है। इसलिए लोचकहित में किये गये इस आंदोलन को प्रदेश के कई भाई बहनों का व्यापक समर्थन मिला है। प्रदेश की रचनात्मक व धार्मिक व सामाजिक व धार्मिक स्थानों, स्वतंत्रता सेनानियों व शराबबन्दी में विश्वास रखने वाले भाई बहनों, राजनैतिक पक्षों, विधायकों व सांसदों तथा प्रदेश के रचनात्मक व समाज सेवी कार्यकर्तियों का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

शराबबन्दी का वचन देकर राज्य सरकार द्वारा शराबबन्दी लागू नहीं करने तथा एक लोचकितकारी कार्य के लिए जल्द से किये गये वायदे से मुक्त जाने के विरोध स्वरूप स्वतंत्रता सशम के सेनानी जीवनम लूणिया तथा श्री अजना देवी ने धरान लालपत्र सरकार को धार्मिक लोटा दिया। उनकी इस घोषणा में आंदोलन को काफी बल मिला।

गोकुलभाई आत्मोत्सर्ग के लिए भी तैयार हैं

अधिक व हरिजन इस्तिफों से प्रचार : जयपुर नगर की धार्मिक इस्तिफों एवं हरिजन इस्तिफों में शराब के लिए सभाएं की गईं व शराब छुड़वाने के लिए अभियान चलाया गया। स्थानीय प्रार्थ सभाएं का इस कार्यक्रम में सहाय्यीय सहयोग मिला।

कुमारपा ग्राम स्वराज्य संस्थान जयपुर ने जयपुर नगर की रेलवे की फोटी की पूर्ण भन्ती वग, धारनन शराब पीने वालों की धार्मिक, सामाजिक व स्वाभिम्य सम्बन्धी स्थिति का सर्वेक्षण किया। इसी प्रकार संस्थान द्वारा वायवाडी जिला जो आदिवासी क्षेत्र है और जहां शराबबन्दी है, उस क्षेत्र का शराबबन्दी के बाद के प्रभाव का सर्वेक्षण किया गया जिसने बड़े उद्बोधक फलितार्थ सामने आये। इसी प्रकार जयपुर जिला सर्वेक्षण मण्डल ने १७ प्रखण्डों में स्थित शराब की दुकानों का सर्वेक्षण किया। जोधपुर नगर का भी सर्वेक्षण किया जा रहा है।

सर्व सेवा संघ का समर्थन : सर्व सेवा संघ ने प्रदेश के शराबबन्दी सत्याग्रह को पूरा समर्थन दिया है। प्र० भा० सर्वोदय सम्मेलन नकोदर म सारे देश के सर्वोदय कार्यकर्ताओं का समर्थन मिला। सत्याग्रह में सम्मिलित होने के लिए सारे देश के कार्यकर्ताओं ने तैयारी बताई। वाराणसी की सभा में सर्व सेवा संघ प्रबन्ध समिति ने केन्द्रीय सरकार से मांग की है कि वह पञ्चवर्षीय योजनाओं में शराबबन्दी कार्यक्रम को भी स्थान दे।

सदस्य सदस्य डा० जीवराज मेहता, डा० सुशीला नैयर वरावर इस प्रयत्न में हैं कि राजस्थान का शराबबन्दी का प्रश्न सुलभाया जाये। डा० जीवराज मेहता प्रधान मंत्री से इस बारे में मर्कट बनाये हुए हैं। डा० सुशीला नैयर कई बार मुख्य मंत्री से मिल चुकी हैं। गोकुलभाई भट्ट केन्द्रीय नेताओं और प्रदेश मंत्री मण्डल के सदस्यों से कई बार मिल चुके हैं। मातुम हुआ है कि प्रधानमंत्री भीमती इन्दिरा गांधी ने

राज्य के मुख्य मंत्री को पत्र लिखकर शराबबन्दी को शर बन्द बढाने के लिए सलाह दी है।

गोकुलभाई भट्ट की घोषणा : राजस्थान सरकार शराबबन्दी की ओर कदम नहीं बढ़ा रही। प्रधान मंत्री ने भी इस प्रश्न की ओर उपेक्षा ही बरती है। पिछले नौ माह से सत्याग्रह चल रहा है। गोकुलभाई ने घोषणा की है कि वे अब अधिक दिनों तक इस परिस्थिति को नहीं देख सकेंगे। उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर सूचना की है उन्होंने राष्ट्र के सविधान पर हस्ताक्षर किये हैं, इसलिए वे निर्दोष तत्वों को इस प्रकार अक्लवृत्त के साथी नहीं रह सकेंगे और आणोत्सर्ग कर सविधान की मान-मर्यादा की रक्षा करेंगे। विनोबाजी प्रधान मंत्री व देश एवं प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं ने गोकुल भाई से इतना सक्त कदम न उठाने के लिए आग्रह की है।

खादी को पारिवारिक पोशाक बनाइये

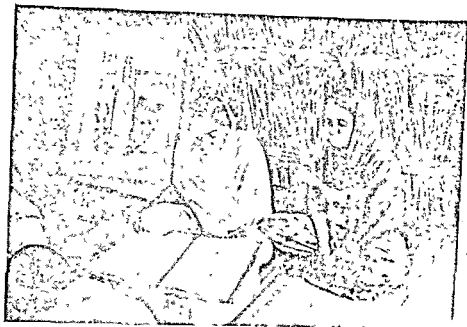
अपने

निकटतम खादी भवन या भण्डार से मनोहारी रेशमी साड़ियां तथा अन्य खादी वस्त्र खरीदें

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन द्वारा प्रसारित

हरियाणा में भी शराबबन्दी आन्दोलन

राधाकृष्ण वजाज



शराबबन्दी के लिए बहनों का सत्याग्रह धर्मग्रन्थ का पाठ : सम्मति किस मिल रही है ?

चण्डीगढ़ से करीब २५ मील रायपुर रानी नामक एक स्थान है, जहाँ पर शराबबन्दी के लिए २७ मार्च, ७३ से सत्याग्रह चल रहा है। सत्याग्रह के लिए स्थानीय लोगों का खासकर स्थानीय बहनों का उत्साह देखकर लगाता है आज नहीं कल शराबबन्दी अवश्य होकर रहेगी।

विरोध के वावजूद

एक जैन मुनिजी उस तरफ कई दिनों से घूम-घूम कर मदिरा-मात के खिलाफ प्रचार कर रहे थे और लोगों से सलाह भी लिखा रहे थे। उस क्षेत्र की १६-१७ पंचायतों से प्रस्ताव कराया गया कि हमारे यहाँ शराब के ठेके न खोले जायें। वही एक गद्दीबोटा गाव है जहाँ की पंचायत ने अपने यहाँ शराब का ठेका न खोले जाने का प्रस्ताव किया और मार्च के पूर्व ही विधिवत मुख्यमंत्री, धाबकारी कमिश्नर, जिला धाबकारी अधिकारी और बलेकटर को प्रस्ताव भेज दिये थे। स्थानीय जनता का विरोध होने के बावजूद यह बहकट्टर कि गाव में धर्मध शराब पकड़ी गई है इसलिए ठेका खोल दिया गया।

बहा की पंचायत के धादेशानुसार ठेके-

दार को शराब की दुकान के लिए किसी ने भी मकान नहीं दिया। यहाँ तक कि खाली जमीन भी नहीं दी। मजबूर होकर गाव से डेढ़ मील पहले मैन रोड पर दो गावों की सीमा के बीच सार्वजनिक निर्माण विभाग की जमीन पर ठेकेदार ने रातों-रात मकान बना लिया। इसकी सूचना सार्वजनिक निर्माण विभाग को दी गई। उन्होंने ठेकेदार को नोटिस दिया लेकिन हटाने की कोई कार्रवाई आज तक नहीं की। तब मुनिजी के मार्गदर्शन में ठेके के मकान के सामने ही टेम्परेरी बन्दूक लगाकर २७ मार्च ७३ से सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया। दादा गणेशी लालजी ने जो हरियाणा शराबबन्दी समिति के अध्यक्ष हैं, इस काम को सहाया।

कार्यकर्ताओं की पिटाई

शुरू में प्रायः सप्ताह और २५ घण्टे का उपवास रखकर कार्य की शुरुआत की। बीच-बीच में बहनों और पुरुषों ने ५-५ दिन के उपवास भी रहे। हरियाणा सरकार या ठेकेदार पर इसका कोई परिणाम नहीं हुआ। एक बार ठेकेदार ने कार्यकर्ताओं की मार-पिट्टाई भी की जिसकी खबर पुलिस को कर दी गई थी लेकिन कोई मुनबाई नहीं हुई।

दादा गणेशीलालजी तथा गोमभाई बेदान-कार, अध्यक्ष हरियाणा सर्वोदय मण्डल दोनों ने मिलकर हरियाणा के मुख्यमंत्री, धाबकारी मंत्री, विधान मन्त्रा के अध्यक्ष को सारी घटना की जानकारी दी। इस सम्बन्ध में शारंभाई बरने का वादा करने पर भी गावों आगे नहीं बढ़ी।

ठेकेदारी प्रचार

इस मामले में सरकार की लापरवाही देखकर या बहों सरकार की धनुरतता देख कर ठेकेदार को प्रचार का उल्लाह हुआ। उनमें १७ धनूतल को जीप पर साउथरीयर लगाकर गावों में घसी शराब का सूत्र प्रचार किया। उस प्रचार का परिणाम उनके विपरीत गया। गावों में लोग एवदम चौकन्ने हो गये एक उस दिन में गाव-गाव में गणवापटी घाने लगे। सत्याग्रहियों को मन्वा हूनी-तिगुनी बड गयी। बहों भी बाहर निकल पायी।

रोजाना १५-२० स्त्री-पुरुष मणवापट्ट के लिए देहानों में धा जाते हैं। धी मुनिजी और दादा गणेशीलालजी बडा उटकर बँडे हुए हैं। उन्हें विश्वास है कि उजवा गरी कदम बट्ट से शराब को उठाकर रहेगा।

कुरक्षेत्र में ११ अप्रैल '७३ को हुए महिला सर्वोदय सम्मेलन ने फैसला किया था कि ११ से १७ अक्टूबर '७३ पूरे देश में 'स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह' के रूप में मनाया जाये। इस सप्ताह में देश के ३०० जिलों से ३०० महिला पदायताएँ निकालने की तैयारी में लगी सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने कहा है—

स्त्री को दबना और आदमी को दबाना छोड़ना होगा

है। हम धन से सबल पुरुषों आर्य्य कि हम नौन है ? तबम बड़ी ताकत रहानी ताकत है। गांधीजी क धाम कौनसी ताकत थी ? आत्मशक्ति। शरीर स तो वे धन कम-जोर वे कि छाटा बच्चा उनको पटक दना। हम उस शक्ति का पहचानें। हम देख नहीं, धारणा है। हम उन पहचानन का शक्ति प्रबल होंगे, समाज की आत्मशक्ति जगमी तो जनशक्ति जगमी।

पहाड़ और मैदान की बहनें

पर्वत-निक्षी लड़कियाँ अर्धवृत्त की हैं। क्या धारणा गहर की लड़की १२ बजे रात का बोलनी नहीं जा सकती है ? इसके विपरीत पहाड़ी क्षेत्र की बहनें बरतुर हैं। उन्होंने मराठकन्या के लिए सत्याग्रह किया था, जिसे की क्षियन नहीं उनको साथ छोड़वाना पड़े। एक बार दा जवान लड़कियाँ अगल से घास काट कर गीत गानी हुई रात का घेर घा रही थी। वो निराहिया ने प्रवेता देख कर उनका छेड़ना शुरू कर दिया, तो इन लड़कियां न क्या किया। वे रोपी बिल्नाई नहीं। उनमें से एक न गियाही वा हाथ काट डाला। पौब की छावनी पान थी। धरमर ने गांव के लोगों से कहा, 'मानी लड़कियों को सहायता, सहर और छावनी की तरफ न जाने दीजिये। यहा गियाही है।' गाँव के लोगों ने कहा, 'हमारी लड़कियां तो बँहें ही चुभेंगी। धाय धरने गियाहिया को सहायता।' कभी-कभी वे बाप का सुरक्षा बना भी पवती हैं। यह बहादुरी तब महि-लाओं में छापी आर्य्यि। पुरन नेंसे दाहा बनेगा ? श्रेणी के तो पाप-पाक पनि थे, परन्तु अब सकत धायो तो विमने रक्षा की ? उनमें जो हम सबको धरमर है। हमें केवल सुरक्षित ही नहीं बनना है, स्वराक्षित बनना है। बुल समाज निर्भय बनें। हमको जो गतन सक्कार दिवें हैं कि हम धरना है, उन्हें

साकत आत्मा मे है

सुनसीदामजी ने कहा है—पराधीन सपनेटु मुल नहीं।

पराधीन ता सपने म भी सुल नहीं देखता। मैंने बम्बई की बहना से कहा कि धारणो राजन की दुहाया के समने लम्बे-लम्बे बूँ में सदा रहना पडना है। धाय तो सपने में भी 'बूँ' ही दगनी हागी। धोर देवनी हांगी कि धायकी वारी धाने तप दुगान पर सखी टंग गई 'दुगान बन्द। धाय को सपने में भी दुख, जागृति में भी दुख। बिनोबाजी का धामदान, धाय-भरदाय्य वा सप्योवन क्या है ? गाँव की शक्ति जूड़े। धायन में जूड़ जायेंगे एक बनने और नेक बनने। धायनी धारम-शक्ति को जगाता है। उन शक्ति के अल पर हम समाज की सम-स्थाओं को हल करेगे, सकार भी उनमें मरद करेगे। धमनी ताकत दिली मे नहीं, देहान मे है। देह में नहीं, धार्या मे है— यह सदेश गाव-गाव फैलाना है।

स्त्री शक्ति जागरण के लिए एक शक्तिर आर्गन किया गया था। मैं बम्बई गई थी। लोग कह रहे थे—कदाब नहीं, चीनी नहीं, वेत नहीं। सर्वत्र यही चर्चा होती रहती थी कि क्या करें ? धारम में शार्कशिषण महोदय का सदेश सुनाया गया, 'अधरे को बोमने का सदेश सुनाया गया, 'अधरे को बोमने रहने के बजाय बोया जवानो।' लोग भाव्य की बात कहते हैं। भाव्य किमता सोना है ? वेद कहना है—सोने वाला कल्पियुग में, बँडे काता येता युग में, उठने वाला धायर में धोर चाने वाला सनमूग में रहना है। देन के भाव्य को बचाना है तो हमें चलना होगा, स्त्री को शक्ति जागृण हो, इत्ययि यह परधा—कश्मीर से बन्दाहुमारी तक शरिास से मरिया तक ११ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक देन के प्रत्येक क्षिने मे चलनी।

मैंने भी मरियाएँ चाने लगेनी तो दग का भाव भी चलना। जब कोई नया विचार मिलना है तो उन पर धारणा होना है, फिर सचार और प्रबल होना है। यह प्रकिया है धर्म विचार को फैलाने की। हम क्या कह रहे हैं सबसे — गाँव, गाँव में जाना है।

किसके खिलाफ

जिन्को ने पूछा स्त्री शक्ति जागरण क्या दुगनी के खिलाफ आन्दोलन है ? स्त्री शक्ति किम बाध नहीं, दुगनाबाध है। स्त्री के जो विमन मुग हैं—धोर, कीर्ति, धृति, शायी—उनका बाधना। वे मुग जगेगे तो जन-शक्ति बोगी। कौन करे ? धाय हूर बाण के लिए हम सरकार की धोर देगने हैं। बिनोबाजी कहने हैं कि लोग मुद को तो ब्रून ही रवे, गुरा को भी ब्रून रवे ? कश्मीर में बिनोबाजी घुम रहे थे। जिन्को ने कहा सर्वेस में सर्वेस का सदेश सुनाया तो उन्होंने कहा "गुर पर भरोसा रखी, गुरा पर भरोसा रखा।"

हम सबको गियाने है धाय तो धरना है धोर कति मे कहा है— धरना जेहन हाथ दुहारी यही कहानी, धायन में है दुष धोर धार्या में पानी। जो गियाणा बाधा है कि तुम भेद हो। हम ना भेद है। धोर में जगडा बरतुर होनी है केरती, हम धरना नहीं महिना है। महान

महिला श्रवला नहीं है महान है—

→ बदलना है। विज्ञान क्या बट्ठा है? प्रकृति की सर्वोत्तम कृति क्या है? मनुष्य का शरीर और उससे भी सर्वथोष्ठ कृति स्त्री का शरीर। शरीर भी मजबूत है। गलन सस्कारों के कारण हम अपने को कमजोर समझते हैं। आत्म शक्ति तो है ही, ऐसी निर्भयता समाज में लानो है।

मंत्रों के रिस्ते

हमके साथ-साथ गलत मूल्यों को भी बदलना है। जहाँ-जहाँ तानाशाही चलती है उसे मिटाना है। परिवार में भी तानाशाही चलती है। मेरे भाई बहुत उपेक्षित हैं। भाभी डाक्टर है परन्तु घर में आते ही भाभी पर हुकूम चलते हैं। इस प्रकार परिवार में पनि का हुकूम चलना है। समाज में जहाँ-जहाँ तानाशाही चलती है, मिटानी है। नये समाज में सबके रिस्ते में मंत्री होंगे। पति पत्नी दोनों एक-दूसरे के मित्र बनेंगे। 'मंत्रों' का सम्बन्ध परिवार में, समाज में सब जगह कायम करना है। समाज को बदलना है। यह मंत्री का रिस्ते कैसे कायम होगा? इस याना में यह सम्झना होना ही जमाना बदल गया है। स्त्री को देवता छोड़ना पड़ेगा पुत्र को देवता छोड़ना पड़ेगा।

मैं दक्षिण में गई थी, वहाँ एक क्लिबल एंजि-मण्टी गई है। ४४ मासूम हरिजन स्त्री-बच्चों और बूढ़ों को पाच साल पहले जिंदा जलाया गया था, उनका एक ही मरणदाय या कि-के अपने काम की उक्ति मजदूरी मांगते थे। एम०ए० पास हरिजन शिक्षा को जूता पहने या छाता लगाकर बाहर निकलने पर पीटा गया। यह मानस बदलना होगा। आज के जमाने के नये सम्बन्ध कायम करने होंगे। यह स्त्री शक्ति जागृत सप्ताह का सन्देश है।

इस्लाम में एक वान है कि अल्लाह एक है। अब हमको इसके साथ एक नया मरत

देना है कि इस्लाम एक है। इस्लाम-इस्लाम के बीच का रिस्ते 'मंत्रों' का होगा। यह काम हमको करना है। गांधीजी ने हमसे यह अपेक्षा रखी थी कि उनके बाद हिन्दुस्तान का काम निम्ना चलायेंगे।

प्रेम किसके पास है ?

स्त्री का प्रेम परिवार के अन्दर सीमित हो गया है। उसको व्यापक करना है। प्रेम सरिता को बहाना है। प्रेम जब परिवार में सीमित हो जाता है तो असाक्षित बन कर गदा हो जाता है, जैसे आप अपने बच्चों के दुख को मिटाने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं, वैसे ही आप सारे गांव के बच्चों का दुख मिटाएँ। हमारे यहाँ कहा है 'बसुधैव कुटुम्बकम्' गांव को परिवार मानो। आज क्या गांव में अज्ञान नहीं है? पर कुछ बच्चे भूखे क्यों हैं? हमारे गांव में कोई भूखा नया न रहे। प्रेम का व्यापक बनना है। पैमाने को बदलना है। अभी तक हम समझते थे कि यह परिवार जो घर में रहता है, हमारा है। विज्ञान का जमाना है, लोग चन्द्रलोक में जाते हैं। हमारे शहर की लडकी स्पेश यान में बैठ कर जापान पहुँच जा सकेगी और फिर शाम को वापस लौट सकेगी चन्द्रलोक में घरनी का प्रादमी जायेगा, तो यह यह नहीं कहेगा कि उत्तर प्रदेश या भारत में आया हूँ। कहेगा पृथ्वी से आया हूँ। नये जमाने में दुख गांव या मुहल्ला हमारा परिवार बनेगा। जिला गाँव बनेगा, प्रदेश बनाव और देश जिला बन जायेगा। अब बिच बन गया है देश। पृथ्वी के देश सब प्रदेश बन जायेंगे जब दिन जुड़ेंगे तो देश जुड़ेंगे। जोड़ू का काम प्रेम करेगा और प्रेम बिगने पास है? रिश्ते को के पास। बाग हमने कहे हैं कि हमारी प्रधानमन्त्री इन्दिराजी हैं। सीलोन में श्रीमती भण्डार नायके हैं, इब्रानाम में श्रीमती गोलामापर हैं। क्या अमेरिका, इंग्लैंड, रूस और चीन में कोई महिला राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री बनी? करो? इस देश की

सम्पत्ता में स्त्री-पुरुष भेद है ही नहीं। यह बाहर से आया। वेद में गर्मी, मंत्री आदि विद्वानों का वर्णन आता है। दुनिया की पहली मिशनरी कौन थी? एक महिला सप-मित्र, जिसने धर्म-विचार देश के बाहर फैलाया। प्राचीन परम्परा में स्त्री-पुरुष भेद नहीं है। सब भेदों को मिटाकर एक नया समाज बनाया है, जिसमें समता होगी। नई कानि करनी है। इसका सन्देश लेकर ११ से १७ अक्टूबर तक हम गाँव-गाँव जायेंगे। साथ-साथ तक पुत्र को बच्चों को सप्ताहों, बूल्हा जलारों और समाज का नेतृत्व करने के लिए महिलाएँ निकलेंगी।

आर्थिक स्वतन्त्रता

बहा जाता है कि पुरुष कमाने का काम करते हैं। इ ग्लैंड में स्त्रियों ने हिताक जोड़ा अपने काम का तो वह पुरुषों की कमाने से दुगुना निकला। मैं मानती हूँ कि स्त्रियों को आर्थिक स्वतन्त्रता होनी चाहिये पर परिवार में माँ का आना रिस्ते ही वह बहुत बड़ा काम है।

हम चलना शुरू करेंगे तो भाव्य भी हमारे साथ चलने लगेगा।

महिला मिशनरी

स्त्री शक्ति आत्म शक्ति, जनशक्ति जगने का कार्यक्रम है सबके कल्याण का आन्दोलन है। जैसे एन जमाने में सैकड़ों बौद्ध भिक्षुणियां बुद्ध भगवान का यह सदेश लेकर धर्म प्रचार करने के लिए निकली थी :

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय। ये चीन भी गयी होंगी। उसका अन्त क्या हुआ? चीन में हमारे पहले राजकुमार सरदार परिवार ने एक पुस्तक लिखी है 'इन टू चाइना'। उस में वे लिखते हैं कि जब मैं माघी लोके तैंग के पास अपने परिचय पत्र भेज करने गया तो उनसे पूछा क्या आप जानते हैं कि हम चीनी आपकी बारे में क्या सोचते हैं। हमारे यहाँ बतावत है कि जब कोई चीनी पुत्र्य करके मरता है तो वह पुत्र्य भूमि भारत में जन्म लेता।" हो मरता है साग और हम विद्वाने जन्म में चीनी रहे हो।

*

जेट युग में पदयात्रा : क्रान्ति का नया आयाम

—सरला बहन

पश्चिम में शोक के लिए तथा भारत में तीर्थ के लिए सन्धी पैदल यात्राएँ करने का रिवाज रहा है। लेकिन हवाई जहाज के युग में पदयात्रा का एक नया धोरण प्राविचारी महत्त्व हुआ है।

यह कबसे शुरू हुआ? जब नमक सत्याग्रह का क्रान्तिकारी विचार बापू को सूझा तब उनके साथियों को, निबट के साथियों को भी सबा हुई कि समुद्र के तट पर नमक बनाने से स्वराज्य नहीं मिलने वाला है? इसलिए, उन विचार को व्यवहार में लाने के लिए बापू को एक नई क्रान्तिकारी पद्धति की सोच करनी पड़ी और वह पद्धति क्या निकली? डाढ़ी कूच पर साथियों को साथ लेकर हाथ में धानी लाठी पकड़कर बापू समुद्र के तट पर नमक बनाने के लिए निकले। गांव-गांव के किनाले और मजदूरों ने निकल कर उन्हें साथ दिया। यदि बापू देलगाड़ी में या बग में बैठकर जाते, तो शायद नमक बनाने की क्रिया एक महीना रह जाती। लेकिन डाढ़ी कूच ने उसे एक देशव्यापी जोशिला स्वरूप दिया था। बापू के पात्रों ने हमारे गांव-गांव की मिट्टी का स्पर्श करके, गांव-गांव के निवासियों के हृदय में प्रवेश किया।

नयी तीर्थयात्रा

बाद में, जब दगाप्रस्त मोघासली में बापू अपने परम्परागत वाहनो को छोड़कर दुस्त्रिण हृदय से नये पाव, गांव-गांव में अपने साथियों को साथ लेकर पैदल चलने लगे, उसका प्रसार विजली का सा हुआ। घर-घर में पहुँचकर बहु धरनी प्रेमधरी बोली देने, अपने दुस्त्रिण हृदय से सब के आसुधो को पोषने लगे, सबके हृदयों की जोड़ने लगे। यह यदि मोटर में बैठ कर गांव-गांव में पहुँचते तो इतना प्रभाव नहीं हो पाता। यह पदयात्रा सँ सपाटे की तो नहीं भी बहू की एक प्रकार से तीर्थ यात्रा। लेकिन एक नये तीर्थ की

सरला बहन : सन् ३२ में भारत प्रायों और सेवाप्राप्त पहुँच कर गांवों की हो गयीं। तब से वे देश भर में घूम कर गांधी कार्य में लगी हैं।

यात्रा। मानव के हृदय में दुस्त्रिण दरिद्र नारायण के दर्शनों के लिए यह तीर्थ यात्रा थी। और नूतन के बाद शांति की स्थापना होने से, वह दर्शनों बराबर मिलते रहे।

भूदान यात्रा

लेकिन उसके बाद पदयात्रा का सिलसिला फिर टूट गया। १९४७ से लेकर १९५१ तक लोग सोये रहे। लोग इस नई तीर्थ यात्रा के महत्त्व को भूल गये थे। मारि १९५१ में, जब साथी लोग विनोबा जी को लग कर रहे थे कि वे जिवरामपल्ली के सत्र दय सम्मेलन में श्रवण्य बर्ल, और बहु धरनी काचन मुक्ति का प्रयोग नहीं छोड़ना चाहते थे तो उन्हें भी यह सूझा, कि यदि उन्हें जाना ही है तो गांव-गांव में दरिद्रनारायण के दर्शनों करके जाना चाहिए, ताकि सम्मेलन में वे अपने देश के देहातो की परिस्थिति सही ढंग से रख सकें।

इस यात्रा के फलस्वरूप, पहली बात वे समझे कि इस देश के सामने सबसे बड़ी समस्या जमीन की है। सम्मेलन के बाद जब वे पदयात्रा करके दगाप्रस्त तेलपाना की और बड़े तो बहो पर हमारे देश की प्रतिभा अपने धाय प्रगट हुई, और जमीन की समस्या का हल करने के लिए एक नई महत्त्वक पद्धति का जन्म हुआ—करणा का मार्ग भूदान का मार्ग! यदि उन्होंने बहाने से यात्रा की होती, तो वह प्रतिभा प्रगट नहीं हुई होती। पात्रों की मिट्टी का स्पर्श मिलने के साथ ही साथ, अनुसुधो के हृदय का स्पर्श भी बढा रहा।

उस नाम की प्राणे बढाने के लिए हमारे

देश में सिर्फ विनोबा जी की हजारी मील सन्धी पदयात्रा ही नहीं बली, बल्कि देश के गांव-गांव में देश के छोटे-बड़े सेवक पदयात्राएँ निरालते रहे, और उनके फलस्वरूप भूदान यम में ४५,००,००० एकड़ भूमि का हस्तांतरण स्वेच्छा से, करणा प्रेरित भावना से हुआ।

दुनिया के दूर देशों से जिज्ञासु लोग आते रहे, देखने के लिए कि हवाई जहाज के युग में इस पदयात्रा की पद्धति में क्या जादू है? पश्चिम में भी, शांति स्थापना के लिए, लड़ाई या सत्याचार का विरोध करने के लिए बन्धुके विचारों का प्रचार करने के लिए पदयात्राएँ शुरू होने लगी। अन्तर्राष्ट्रीय पदयात्राएँ भी चलने लगी। कई देश के सेवक मिलकर, कई देशों में शांति और पारस्परिक समझौता बनाने के लिए घूमने लगे। समुद्र में अणु विस्फोटक का विरोध करने के लिए नाव यात्राएँ भी निकली। हमारे देश के दो युवक शांति का सम्मेलन सुनाने के लिए प्रखिल विषय की काचनमुक्त पदयात्रा पर निकले। चीन भासत स्पर्श के दिनों में दिल्ली से एक अन्तर्राष्ट्रीय पदयात्रा पीकिंग के लिए निकली थी। हालांकि पाकिस्तान से होकर घूमने की इजाजत नहीं मिलने से वह यात्रा अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाई थी।

पदयात्राएँ—विदेश में

फिर सघन पदयात्राओं की पद्धति का विकास हुआ। विलायत के अणुबम बनाने वाले कारखाने के लिए ५० मील दूर लन्दन से सघन पदयात्रा बली जिसमें हजारों लोग शामिल हुए। अब यह यात्रा हर साल चलती है। अमेरिका में कालो के नामांकित अधिकार पाने के आन्दोलन की मुष्टि में अब वाणिज्यतक तक ऐसी सघन पदयात्राएँ चलती हैं जिनमें काँडे लोगों के साथ मोरे लोग भी मिलकर सामाजिक न्याय और समानता के लिए धरनी भावाज उठाते हैं।

सामाजिक क्रान्ति की प्रतीक्षा है, अपेक्षा है महिलाओं से

→ हवाई जहाज के युग में पदयात्रा एक बड़ी महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक क्रान्ति की प्रतीक है। और सांस्कृतिक क्रान्ति के लिए वायु हमेशा बहनों को पुकारते थे। उन की सबसे प्रथम पुकार दक्षिण अफ्रीका में, बहनों की इज्जत के वानुवी संरक्षण के लिए हुई थी, बाद में भारत में, शासक के विशद नमक सत्याग्रह में लाठी का सामना करने में, छुआछूत के बल्बू को मिटाने के लिए, नई जाली में, सब में वायु ने बहनों को पुकारा बहनों ने धनसार उनका साथ दिया, कभी उन्हें धोखा नहीं दिया। मोघलाली की पद यात्रा में बहनें पूरी यात्रा में उनके साथ रहीं और उस त्रस्त क्षेत्र में भी अकेली घूमती रहीं।

जिनोबा की प्रथम पदयात्रा में भी बहनें और बच्चे उनके साथ रहे। और भूदान और ग्रामदान यात्राओं में भी, बहनों ने वफा

कर दिया। अब, इस साल में, भारत की बहनों के सामने, पदयात्रा की पद्धति को धाम्ये बढ़ाने का एक बड़ा मौका मिल रहा है—सभ्य पदयात्रा का विकेंद्रीकरण।

११ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक भारत से जिले-जिले में बहनों की पदयात्राएँ निबलाने की योजना है।

हालाकि मैं बराबर उसकी तैयारी में साथ दे रही थी तथापि मेरे मन में शका बराबर रहती थी कि यह बँसें सम्भव होगा? लेकिन अब कस्तूरबा धरसीकेरी में मंगूर राज्य के प्रथम पूर्व तैयारी के शिविर में स्पष्ट हुआ कि वास्तव में यह पद्धति हमारी बहनों की प्रतिभा के लिए सर्वथा अनुकूल है। जो बहनें पहले-गहल कुछ तिरस्कार और शका की दृष्टि से मुनती थी, तीन दिनों के अन्त में, इस सांस्कृतिक पुकार के महत्त्व को सुनकर समझकर, इत सतल हुई हैं कि प्रथम बार

अपने शमीण केन्द्रों को छोड़कर ये एक ज्यादा व्यापक क्षेत्र में, एक ज्यादा व्यापक संदेश को लेकर घूमेंगी। अष्टाचार, अश्वी-लता से सांस्कृतिक पतन, विवाह में गलत मूल्य, श्रुगार शोषण और अत्याय के विरुद्ध, बापू के आन्दोलन को धाम्ये बढ़ाने के लिए, बहनों को घर-घर में इस काम को धाम्ये बढ़ाने की प्रेरणा देंगी।

विदा लेते समय आवाज उनके नारों से गूँज उठा, हमारा मन—जय अगत, हमारा तन ग्रामदान, हमारा सद्य विश्व शान्ति—गाव-गाव से बहनों का अहितक संगठन उस विश्व शान्ति की नींव बनेगा, उस संदेश को अन्वेषी तरह समझकर, ये अपनी पड़ोसी बहनों में फैलानी रहेगी और इस विचार से कि भारत के तीन सौ जिलों में हजारों बहनें हमारे साथ घूम रही हैं, एक नई शक्ति महसूस कर रही है।

With The Best Compliments From

INDUSTRIAL JEWELS LIMITED

Manufacturers of :

Synthetic Sapphire Jewel, Bearings For Meters,
Instruments, Watches, Etc.

Phone: 267215
268261
Grams: 'Jewelberin'—Bombay
Telex: 2673

Registered Office :
32, Nicol Road,
Ballard Estate.
Bombay-400001



सर्वोदय पात्र, सुपात्र बनाता है

मानदोलन से जुड़ीं। फिर वे बन्धुत्वा द्रष्ट छोड़कर विनोबा की पुत्रदान परंपरा में शामिल रही। डेविनल मामगावकर से विवाह होने के बाद उन्होंने पहली बार बम्बई में प्राकर शहरी जीवन देना।

हंसा बहन धारने साइके के साथ

बम्बई शहर हानाकि समुद्र किनारे बना है फिर भी हर बड़े शहर की तरह यहां के घर छोटे-छोटे कुम्भों की तरह हैं, जिनमें रहने वाले जमी की दुनिया मान बैठते हैं। उन्हें ऐसे सौभाग्य कुम्भों से निवाला कर विमान सेवने समुद्र से जोड़ने के लिए सड़ ६४ से श्रीमती हंसा बहन सुपुत्र उपनगर में काम कर रही हैं। सुपुत्र बम्बई का एक पत्नी प्रावारी कामा इलाका है। सन् ६२ के पहले साइके के सर्वोदय कार्यकर्ता एनी गडकर ने हाके परिवारों से सायकें शुरू किया था, तब सन् ६४ तक इनी मध्यम के आधार पर डेविनल मामगावकर ने इस काम को धारने बनाया। सन् ६४ के बाद श्रीमती डेविनल ने इसे एक मवे इय के शुरू कर उसे सर्वोदय पात्रों तक पहुंचाया।

सावना देने की जतनी तलाग मन में बहून गहरी पडे चुनी थी, ऐसी हालत में उन्हें बम्बई में कुछ भी न कर हाय पर हाय घरें बैठे रहना प्रथम्य धारपाय ही लगा। उन्होंने तय किया कि वे इस परिस्थिति में काम से कम गाव से पूरी तरह बटे गहरी लोगों को फिर से गावों की समस्या से जोडने का काम तो कर ही सकनी हैं। माध्यम पुना सर्वोदय साहित्य प्रचार।

सर्वोदय साहित्य से शुरुआत

गाव के वातावरण से पत्नी प्रावारी वाले शहर में धारने काम शुरू करने में धीमती हंसा बहन के सामने कई तरह की दिक्कतें थी। गावों में वे किसी भी समय किसी भी घर में प्रवेश कर पाती थी, यहां हरेक के दरवाजे बन्द रहते थे। घरों के धारमी सुकट बने दरवार चले जाते हैं, सत्तर हजार की धारवारी वाले इस उपनगर में सुकट भाठ से काम भाठ तक नैवल मडि-साएँ घोर बच्चे रह जाते हैं, वे शहरी में होने वाले धारपायो से डर कर दरवाजा बन्द रखे रहते हैं। सीधे किसी भी घर में पुग जाना ठोक नहीं माना जाता—इस शहरी विभाग को उनका मन कभी पकड़ नहीं पाया था। वे रोज सुबह घर का काम जल्दी निपटा कर, अपने में सर्वोदय साहित्य लेकर निकल पडतीं। किसी का दरवाजा खटवाटाती थी प्रायतन वाले छेद से माननी हुई भीरार की मुहएरी तबानों की बोझार लगा देती—“तुम कौन हो? क्या बेचनी हो? बोझार से पूछकर प्रहाते में धायी हो?” धीमती हंसा मामगावकर का कहना है कि, “बहुत गहरी तो तब लोग सर्वोदय साहित्य से भरे भोले को एक घोर के भोले की तरह साहित्य होकर देखते रहे। धीरे-धीरे यहां के काफी

लोग मुझसे, मेरे भोले से परिचित होने लगे। जहां पहले घरों में प्रवेश पाना प्रथम्य था, वहां धीरे-धीरे नये घरों में भी मुझे नुलाया जाने लगा। यहाँ सुपुत्र के परिवर्नी माग में बच्चों के बहुत से लोग भाकर बसे हैं, उनसे पुत्रराजी के ‘सुमिपुत्र’ पत्र के धारण बातचीत शुरू होने लगी। रोज सुबह निव-लनी काम तक कोई तो घरों में साहित्य ब सर्वोदय पत्रिकाएँ लेकर पहुंचनी। बच्ची महिलाएँ ज्यादातर धारण होती हैं, वे धारने स्थल से कुछ नहीं खरीद सकनी थीं। वे तब बह भी मानवर चलनी कि इस भोले में काम को बके लोटेक वाले उनके पति, भ्रादि के लिए कोई विताव नहीं है, इमनि सन् ६४ से ६६ के दौर में ग्रथिक्कर वालों पर में धारतन १० रुपये का साहित्य विकना था। जब इस धार में काफी साहित्य बट पुका तब फिर मैंने धीरे-धीरे उनके सामने सर्वोदय पात्रों की योजना रखी। तब ५००० घरों में साहित्य बढता था, धार ५००० घरों में सर्वो-दय पात्र चलने लगे।”

कुँडों को परिधि से ऊपर

“ज्यादातर लोगो में तब इस योजना को बहुत बहन के बाद काफी मोच-समक कर धारनाया था। धीरे-धीरे वे धारने सौभाग्य कुम्भों के ऊपर भाकर धारने धारकों एक बड़े परिवार का सदस्य मानने लगे थे। सुपुत्र के सुल, तुल में प्रहासुप्रति जाने लगी थी। इन घरों में सर्वोदय साहित्य धार पत्रिकाओं की पहुंच भी व्यापक होने लगी थी। सर्वोदय विचार-प्रचार का तो काम ठोक चल रहा था, फिर भी सर्वोदय का तो हालत जतनी बच्ची नहीं बन पा रही थी। हमारी धार से धारण का संकट करना, फिर उले रागत भी धारण पर दिने में बदतबाना तब बड़ी जतना जीवन विगारण करना—हमारे लिए भी एक नम्बी प्रथिमा साविन हो पडी थी। फिर एक

ग्रान समझया से भूवान में

धीमती हंसा मामगावकर ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश बन्धुत्वा द्रष्ट के माध्यम से किया था। वे पुत्रदान में प्रथमधारवाके के निवट कोमा नामक स्थान में बन्धुत्वा नेत्र में सारी प्रथिमाएँ देनी थीं। वहा पदा प्रया थी, यहहाएँ सेतों पर काम नहीं कर सकनी थीं। फिर धारण का दौर बना। धारमी काहाट मझरी हुईने जिनमें लैविन प्रावारी पत्रों के धारण पर रह पडी, ऐसी हालत में धीमती हंसा बहन को लगा कि हम इन्हें सजने हैं, उन्होंने इन गावों को पुत्रकर सादी प्रचार का व्यापक कार्यक्रम बनाया। वे धारण के दौरान कपडा देती रही, साके के बारे में सोचनी रही। साके की समस्या से वे प्रजोन के सगले तक धायी धार फिर धारण

मुपात्र बनाता है.....

→
बार जब हम विनोबा ने पास गये तो उनके सामने हमने यह समस्या रखी। बाबा ने एक दम कहा कि भ्रजाज के बदले एक-एक पैसा दया जा सकता है। उन्होंने तब केरल का उदाहरण भी दिया कि वहाँ मुपारी ज्यादा पैदा होती है तो वहाँ के लोग सर्वोदय पात्र में मुपारी डाल सक्ते हैं।”

“किर इस तरह यहाँ एक मुट्ठी भ्रजाज के बदले एक पैसा डालना शुरू हुआ है। भ्रजाज भी ५०० सर्वोदय पात्र नियमित रूप से चल रहे हैं। मैं केवल २०० सर्वोदय पात्र रखने वाले परिवारों से सम्पर्क कर पाती हूँ। भव

काम बढ रहा है। इसलिए धीरे-धीरे स्थानीय महिलाएँ इसे उठा सकें, ऐसी कोशिश कर रही हूँ। मुलुण्ड के एक वकील, एक दो डाक्टर और एक इन्जीनियर ने भी इस काम को आगे बढ़ाने में दिलचस्पी लेना शुरू किया है।”

हसा बहून रोज सुबह अपने पति डेनियल और दो बच्चों—मार्केल तथा मोजेस (जिन्हें विनोबा ने प्यार से लव और कुय कहा है) के साथ घर का काम निपटा कर सपक के लिए रवाना हो जाती हैं। साहित्य विन्धी, सर्वोदय पात्र आदि के भ्रलावा इन परिवारों में बम्बई में देश के अन्य भागों से आने वाले सर्वोदय कार्यकर्ताओं पर बातचीत चलती है। अक्सर किसी न किसी परिवार से

उन्हें अपने यहाँ ठहराने का, मुलुण्ड उपनगर में उनकी एक सभा आयोजित करने का निर्माण मिल जाता है। मुलुण्ड के ये परिवार सर्वोदय ग्राम्योत्थान के अनेक कार्यकर्ताओं को समय-समय पर ठहरा चुके हैं। लेकिन केवल सर्वोदय कार्यकर्ताओं से परिचित हो जाना सर्वोदय पात्र का लक्ष्य नहीं है। हसा बहून का कहना है कि भ्रमी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है यहाँ, पैसा भी कोई खास इकट्ठा नहीं हो पाता। यह काम उन्हें सर्वोदय कार्यकर्ताओं के माध्यम से जब दूर गाव के लोगों और उनके घरों ही दरवाजे पर रहने वाले पडोसी से उनके बीच की दूरी कम कर देगा तब हम अपने को इस काम में सफल मान सकेंगे। ●

Phone : 337838
Res. : 695228

Shree Meena Chemical Products
Chemicals, Intermediates, Solvents, Dyes and
Minerals Merchants.

Prop. Ramanlal M. Shah

35 Tripathi Bhavan, 2,
Aarey Road,
Goregaon (West)
Bombay-62. N. B.

28/30, Dariasthan Street,
Dwarka Bhavan
1st Floor.
Bombay-3.

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं
का हम अभिनन्दन करते हैं।

● खाद्य रंग ● सूती वस्त्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि.

(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :

२०३, डा. डॉ. एन. रोड
बम्बई-१

वारधाना :

लेणानी टेंबरदाइल
मिल बम्बनी
सोनपुर लेन
कुर्ला, बम्बई

राजस्थान के कुछ ग्रामदानी गांवों का एक सर्वोच्च कुमारणा ग्रामस्वराज्य संस्थान जयपुर की घोर से किया गया है। इस सर्वोच्च में निम्नलिखित गांवों को शामिल किया गया है—खेजड़ावास (जयपुर), श्रीकृष्णपुरा (नागौर), भसावा (सिरोही), गांधीग्राम (टोंक), मुन्दरराज (बांसवाड़ा) घोर नाथवाडा (सीकर)। इस सर्वोच्च से प्राप्त सभ्यो का एक सशिक्षित ग्रंथ वहाँ प्रस्तुत है।

ग्रामदान से बनते नये मानवीय सामाजिक और आर्थिक सम्बन्ध

डॉ० श्रवधप्रसाद के सर्वोच्च की रपट

ग्रामीण जीवन में नई स्तर पर सामाजिक सहृदयता का विकास होता है। ग्रामदान इस सहृदयता की घोर प्रतिक्रिया मजबूत करने का प्रयास करता है। भारतीय समाज व्यवस्था में वर्णाश्रम धर्म ने धारण पर सामाजिक सम्बन्धों का विकास हुआ है। परन्तु मात्र इस वर्णाश्रम धर्म की स्थापना उचित नहीं है। वर्ण जातियों एवं जातियों के घेरे में विरत कर सतीलुता का स्थापन बन चुका है। ग्रामदान सामाजिक सम्बन्धों में घायली सतीलुता को समाप्त करने का सद्य रणनीति है। इस लक्ष्य को घोर करने के लक्ष्य में कई चरणों पर चलते रहेंगे। परम्परागत समाज में जातिगत सतीलुता को कम करने ही एक बड़ा सामाजिक परिवर्तन का नाम है। ग्रामदान की घोषणा के बाद जातिगत सतीलुता या छद्मदान तुलना समाप्त हो जायेगी ऐसी घोषणा हमना समाज व्यवस्था की स्थापना को नहीं सम्भले के समान है। हा, रिखा करा है, यह महान की बात है।

(ग्रामदान) घोर गांधीग्राम एक जातीय गांव है। गांधीग्राम में हरिजन जातिवासी हैं। इन दोनों गांव में जातिस्तर पर भेद भाव देखने को नहीं मिलेगा। ग्रामदान के बाद इनके मन में जातिगत सतीलुता दूर करने का प्रयास किया है। इस प्रयास का टोम प्रमाण उनके पानक को देकर लगाया जा सकता है। ये लोग परम्परा से नीच सम्भले जाने रहे हैं घोर स्वयं को हीन महसूस करते रहे हैं। मात्र जो परिस्थिति है हमने इनका स्वाभिमान वापसी मजबूत हुआ है। ये भागे को हीन नहीं सम्भले है। इस परिवर्तन की पान पत्रों में उच्च जाति के लोगों के साथ व्यवहार, उठना-बैठना, बाजार में उनके साथ किया जाने वाले व्यवहार में सहज ही देखा जा सकता है।

की मांग गांव में जाकर लोई भी व्यवहार कर सकता है। पाल पत्रों के गांव में जिन प्रकार का जातिगत व्यवहार है वह इन गांवों में नहीं मिलेगा। विविध जाति के गांवों में इस परिवर्तन को सहज ही परखा जा सकता है। भगवान में प्राय हर प्रकार की जातिवासी हैं। ब्राह्मण प्रधान इस गांव में ग्रामदान के विचार में जातिगत सतीलुता की गांठें किस हद तक ढीली की हैं उसे पान-पत्रों के गांवों में ब्राह्मण तथा अन्य उच्च जाति के साथ सतीलुता के व्यवहार को देकर देखा जा सकता है। परम्परा से बड़ा जाति बट्टरता मजबूत की। ग्रामदान के बाद विचार प्रकार के माध्यम से इस बट्टरता को कम करने का प्रयास किया गया है। अब यह स्थिति है कि ब्राह्मण जाति के लोग उच्च जाति के साथ एक भेद बँटने हैं, एक बए पर घायली करने हैं तथा व्यवहार में सम्भले का बर्ताव करते हैं। यह स्थिति पान के गांवों में नहीं है। यही स्थिति खेजड़ावास में देखने को मिलेगी। ग्रामदान के बाद जातिगत सतीलुता के लक्ष्य में विद्ये में साक्षात्कार एक प्राप्त उत्तरो से स्थिति घोर भी मात्र नजर आयेगी।

ग्रामपति सौहार्द

गांधीग्राम एक थी इच्छुपुरा में सामाजिक — सामाजिक दृष्टि से माध्यम वर्ग के लोग हैं। सर्वोच्च के दौरान इस बात पर ग्राम महसूस देखने को मिली कि ग्रामदान के [बाद विभिन्न जातियों में घायली सौहार्द बना है।] घायली व्यवहार में जातिगत बट्टरता काफी कम हुई है। इस बट्टरता

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन

जातिवाद में परिवर्तन को दिशा

वक्तव्य

१. कुम्भो पर नीच जाति के लोग भी पानी भरते हैं।
२. मन्दिर में जाने पर प्रतिबन्ध नहीं है, जाते भी हैं।
३. जानिगत सकीर्णता कम हुई है।
४. ग्रामसभा की बैठक के निर्णय में पिछड़ी जाति के लोगो का भी पूरा सहयोग रहता—वे झुल कर बोलते हैं।

प्रतिशत

- ६०
७०
७०
६०

वाद जमीन का सेंडीकरण उन समय कम होगा जबकि व्यक्ति अपनी जमीन का २० वा हिस्सा निकालेगा और भूमिहीनो को देगा। ग्रामदान के बाद भूमिहीनता समाप्त होती है यह ग्रामदानी गांव में देखा जा सकता है।

ग्रामदान के बाद भूमिहीनता विचरण गांव वितरित भूमि परिवार स० (बीघा में)

१. सुन्दरराव	१२०	२०
२. गांधीग्राम ^१	—	—
३. नाथवाडा	२३	४
४. श्रीकृष्णपुरा ^२	२७७	६
५. प्रसाधा	६०	३
३. शेजडावास ^३	१६६	१३

^१ गांधीग्राम भूदान की जमीन पर पर बसा गांव है।

^२ गांव के ६ भूमिहीनो के प्रतिरिक्त अन्य कम जमीन वालों को भी जमीन दी गयी है।

^३ इस गांव में जोत की जमीन कम थी। फल पास के गांव से जमीन प्राप्त कर उसका विवरण किया गया।

पारिवारिकता का विकास

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन की दृष्टि से सामाजिक सम्बन्धों के विभिन्न पक्ष में हुए परिवर्तन को देखना आवश्यक है। जातिगत सकीर्णता से मुक्त होना एक पक्ष है। विवाह, पड़ोसी के साथ व्यवहार, रिश्तारिवाज में परिवर्तन का भी खास महत्व है। गांधीग्राम में मृत्युभोज न करने तथा विवाह में अधिक व्यय न करने की परम्परा विकसित हुई है। यही परम्परा श्रीकृष्णपुरा एवं शेजडावास में भी विभिन्न की गयी है। विवाह में व्याप्त रूढ़ियों के कारण परिवार जिस प्राथिक सफट का सामना करता एवं मृत्यु के दुःख में भोज का जो स्थान बना चुका था, उससे मुक्त होने का प्रयास सामाजिक परिवर्तन का मुख्य बंदन माना जाना चाहिये। परिवार सबसे छोटी तथा सबसे मजबूत सामाजिक संस्था है। व्यक्ति के किास में इनका प्रमुख स्थान है।

ग्रामदान के बाद गांव परिवार के रूप में विकसित हो इस दिशा में सोचा जाना प्रारम्भ होता है। यह तभी सम्भव है जब हर परिवार में शान्ति एवं सद्भाव हो तथा पड़ोसीपन की भावना का विकास हो। परिवार में प्राथमिक तथा एक दूसरे परिवार के साथ सम्बन्धों में मधुरता लाने का प्रयास किया गया। प्राय सभी गांवों में इस प्रकार के प्रयास किये गये हैं। १ पारिवारिक भगडे कम हो और यदि हो तो इसका निपटारा गांव में ही हो जाय २ ग्रामसभा में सभी परिवार के लोग प्रायें और सबके मत का समान महत्व हो ३ गांव के भगडे घटालत में न जायें। यह जानकर धारणयें हुआ कि ग्रामदान के बाद गांव के गिने-चुने भगडे ही भदालत में गये हैं। स्थिति इस प्रकार बनी कि जो भगडे भदालत में थे वे भी वापस ले लिये गये।

जमीन का वितरण

ग्रामदान जमीन का सामूहिकरण या सहकारी सेती का प्रादोशन नहीं है। यह तो गांव की हर दृष्टि से एक मूढ में वापस का प्रयास करता है। और प्रथम चरण के रूप में चार शर्तों को मूर्तरूप देने का प्रयास करता है। यह शर्तों का रचना कि ग्रामदान के बाद जमीन का समान वितरण होगा एवं सामूहिक भेती होगी, विचार को न समझने के समान है। ग्रामदान के

वितरण कैसे

जमीन वितरण ग्रामसभा की बैठक में किया जाता है। ग्रामसभा को इसका पूरा अधिकार है। साधारणतः हरिजन एवं पिछड़ी जातियां भूमिहीन होती हैं और उन्हें जमीन दी जाती है पर यदि अन्य जाति के लोग भी भूमिहीन हैं तो उन्हें भी जमीन दी जाती है। जहां एक इंच जमीन के लिए खून बहना है वहां स्वेच्छा से इतनी जमीन बंटना श्रातिचारी बंदन माना जायेगा। फिर ग्रामदान के बाद जमीन सम्बन्धी भगडे काफी कम हुए हैं, यह बही भी देखा जा सकता है। सर्वोक्षित गांवों में सामान्य तथा जमीन सम्बन्धी भगडे घटालत में नहीं हैं। शेजडावास, श्रीकृष्णपुरा, सुन्दरराव में जमीन सम्बन्धी अनेक भगडे घटालत से वापस प्राये एवं ग्रामसभा द्वारा सुवभाये गये।

ग्रामदान सरकार ने प्रगतिशील कानूनो को मुहंफ देते मे भी सहायक सिद्ध होता है। ग्रामदान व्यक्तिगत स्वामित्व की जड़ की हिलाता है और प्रथम चरण के रूप मे एव हिसा भूमिहीनों मे बढ़ता भी है। सरकार यदि जमीन का ग्रामदान विनएण कम करता चाहती है तो ग्रामदान इस कार्य मे सहायक होता है। वास्तव मे तो ग्रामदान व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर ग्रामस्वामित्व की स्थापना की और बढ़ता प्रारम्भ करता है। सरकार के प्रगतिशील कानून मे ग्रामदान बाधा पहुचाना है, ऐन उदाहरण देखने को नहीं मिला। वास्तविकता तो यह है कि सरकारी कानून ही इस प्रकार के है, जिनमे कानून से बच निकलने के रास्ते छोड़ दिये जाते हैं। सरकार यदि कानून मे जमीन की ग्रामस्वामिता दूर करना चाहती है तो ग्रामदात्री यदि एव उपम भये लोग इस कार्य मे मदद करते है।

श्रायिक विकास

ग्रामदान श्रायिक विकास को नई दिशा प्रदान करता है। उलादन मे सहयोग एव उभांश मे सहयोग का प्रथम ग्रामदान के बाद प्रारम्भ होता है। गाव मे उलादन मे सहयोग का विकास है। इसके लिए कई ग्राम दानी गावों मे सेवो की कार्य मे सहयोग की परम्परा विकसित हुई है। मुन्दरराव एव सेजडावास मे ग्रामस्वामिता दान का प्रथम करनी है कि सामान्यतया किराये की सेवो सिद्धे नहीं। यदि किराये परिवार के पास कनिष्ठ बरएणो से हल-भैल, बीज वा धान-पाणि का प्रभाव है तो ग्रामस्वामिता कुछ गावों के साथ इस प्रभाव की पूति करती है। गाव का धनिय कर्म जो कि भूया रहता है, जिनके पास जोविना का साधार नहीं है उनके लिए इन गावो मे मे प्रयोग किये गये हैं—

१. भूमिहीनो को भूमि दी गई।
२. ग्रामस्वामिता देते किराये की कृषि कार्य मे मदद करती है जो कि कनिष्ठ बरएणो से कृषि नहीं कर पाते हैं।
३. छाजन वा अन्य कष्ट के समय ग्राम-कांय वा अन्य तरीको से जबरनमन्द को मदद करता।

मुन्दरराव की ग्रामस्वामिता मे कृषि के लिए बीज वा प्रबन्ध किया है। समय पर निमान को अच्छा बीज श्राज हो जाय इस आवश्यकता की पूर्ति यहा की ग्रामस्वामिता करती है। पूति के लिए परिवार मे कुछ न कुछ धन्य जमा किया जाता है। इन समय ग्रामस्वामिता के पास ६० किन्टल गेहूँ एव धान जमा है। अन्य गावों मे विभिन्न कार्यों के लिए श्रम-दान एव नकद बन्टा एकत्र किया जाता रहा है।

ग्रामदान के बाद इन गावो मे कई नियोजनकार्ये हाथ मे लिये गये। ये सारा नियोजन कार्य गाव की सामूहिक शक्ति के सहयोग से किया गया है। ग्रामदान के बाद गाव की श्रम शक्ति के सहयोग से किये गये निर्माण कार्य का इस रूप मे दल बनन है—

श्रायिक विकास के कार्य			
गाव	ग्रामदान एव नकद बन्टे (रु०)	श्रमदान एव साधन सहयोग (रु०)	निर्माण कार्य
१ मुन्दरराव	३५६५०-००	४४७००-००	कुडो, पणिपेट, बीज गोदान, दूधान, विद्यालय, सभा भवन।
२ धीरङ्गपुरा	२५०००-००	११७५०-००	तालाब, कुआ, पार्न काटक।
३ नायकाडा	१५००-००	१८२००-००	बाघ, विद्यालय, सडा
४ सेजडावास	३५०-००	३८५०-००	विद्यालय, सार्वजनिक भूया, मन्दिर।

मुन्दरराव पहाडी भेक है। मीट्रीनुमा भेज होने के कारण सिचाई के लिए जगह-जगह बाघ बनाकर सिचाई का प्रबन्ध किया जा सकता है। इस दृष्टि से ग्रामस्वामिता दान काय के लिए हेतुया प्रवर्तनीय है कि धनिय से अधिक बाघ बने। ग्रामदान के बाद व्यक्तिगत एव सामूहिक ग्रामदान से अनेक कार्य बनाये गये एव सिचाई का प्रबन्ध किया गया। जस्त सारणी मे स्पष्ट होता है कि प्राय सभी गावो मे स्वयं से श्रम एव साधन सहयोग से निर्माण कार्ये को पूरा किया गया। छापीणो का सहयोग मुख्यत दो प्रकार से प्राप्त हुआ है। एव, श्रमदान करके और दूरता जिनके पास साधन नहीं वे

साधन एवं नकद धन प्रदान करते हैं। श्रायिक विकास के कार्य मे ग्रामस्वामिता मुख्य भूमिका निभाती है। जहा तो ग्रामस्वामिता जिनको सक्ति है वहा उतना ही विकास कार्य हो सकता है। ऐसा गाया गया कि ग्रामस्वामिता उन-कार्यों को पहले हाथ मे ले पाती है जिसमे सबका हित है। निर्माण कार्य मे गरीब तबके के लोगों का सहयोग-प्राप्त करने के लिए श्रमदान की पद्धति उपयोगी सिद्ध हुई है। साथ ही साथ ऐसे निर्माण कार्य भी हाथ मे लिए गए हैं जिनसे बेकार को—तासकर मजदूर को—मजदूरी प्राप्त हो सके। निर्माण कार्य से एक और श्रायिक विकास की यदि भिन्नी तो दूसरी ओर जबरनमन्द न गाव मे ही काम मिला तथा ऐसे कार्य हु जिनके भविष्य मे उन्हें ही उससे लाभ प्राप्त होगा।

पिछले २५ वर्षों मे दलगत राजनीति मे समाज को हर स्तर पर तोड़ने का काम किया है। इस बात की पुष्टि के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है कि दलगत राजनीति एव ग्रामस्वामिता के रात्रदलिक संगठन गाव मे किस प्रकार कटुता का विकास करता है। नोट के दष पर गाव एव घर को तोड़ने का भरसक प्रयास किया जाता है। बुराब चाहे दलगत संगठन का हो वा पचायत बँधी कल्याणकारी समवाय का हो सबसे बोट प्राप्ति के लिए दिनों को तोडा जाता है। नोट-पत्र के नाम पर तोड़मन को विहृत करने का इतने अच्छा उदाहरण देखने को नहीं मिलेगा।

लोकनीति

ग्रामदान गाव में लोकनीति के विकास का एक प्रयोग कर रहा है। ग्रामदानी गाव लोकनीति पर चलने का प्रयास करता है। हम महा स्पष्ट करता चाहिये कि जबकि पूरे समाज का वातावरण लोकतांत्रिक मूल्यों को समाप्त करने की ओर है, ग्रामदान के इस प्रयोग का खास महत्त्व है। इस प्रयोग की सीमा को स्वीकार करते हुए इस बात की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए कि ग्रामदान के बाद गाव में तुरन्त लोकनीति का लक्ष्य प्राप्त जायगा। आखिर ग्रामदान के बाद भी गाव में वे ही लोग रहते हैं जो बल तक दलगत राजनीति के दल-दल में फसे थे। फिर पूरे समाज में उनके प्रयोग के विपरीत वातावरण है। इस विपरीत परिस्थिति में यदि वे गाव एक कदम भी लक्ष्य की ओर बढ़ सकें तो बड़ी उपलब्धि माननी जानी चाहिए।

संबन्धित गावों में यह देखने की नहीं मिलता कि ग्रामदान के बाद ग्रामीण राजनीति में कटुता बड़ी है। ग्रामीण राजनीति में गुट-बन्दी, स्वार्थ, आदि स्वभाव बने गया है। इन स्वभाव से मुक्ति पाना सहज नहीं है। ग्रामदान ग्रामजनों के माध्यम से लोकनीति की स्थापना का एक प्रयास है। इस प्रयास में निर्णय प्रक्रिया में "सर्व" को स्थान प्राप्त है। ग्रामदान में सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाता है। समाज का अछूत तथा हर हृष्ट से देखा व्यक्ति समान मंच पर आकर निर्णय-

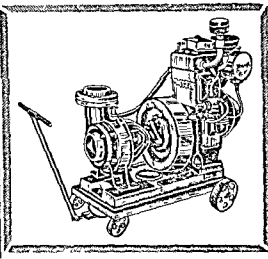
प्रक्रिया में हाथ बँटाता है। व्यवहार में इस समान मंच का खास महत्त्व भले न दीखे पर इससे विभिन्न सामाजिक स्तर के लोगों को समान सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और हर वर्ग के लोग एक दूसरे को समझने का प्रयास करते हैं। इसमें नीकरशाही का प्रभुत्व न होकर लोक व्यवस्था होती है। जनता अपनी प्रशासन, अपनी व्यवस्था स्वयं करती है।

ग्रामदानी गाव इस दिशा में चलने के लिए प्रयत्नशील है। आवश्यकता है इस प्रयत्न को धीमे बढ़ाने की। ग्रामस्तर के नेतृत्व की पूर्ण प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि उनका बंधारिक आधार मजबूत हो सके और उनमें विपरीत परिस्थितियों का मुहान्ना करने की क्षमता प्राये।

ग्रामदान के बाद स्वामित्वगत मूल्यों में परिवर्तन की दिशा क्या है यह भी विचारणीय है। यह सामान्य अनुभव है कि ग्रामदान के बाद व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर ग्रामस्वामित्व (सामूहिक स्वामित्व) की जड़ें मजबूत हो रही हैं। जमीन सम्बन्धी भण्डे तो कम हुए ही हैं साथ ही साथ यह धारणा भी मजबूत हुई है कि ग्रामदान जिस प्रकार की स्वामित्वगत व्यवस्था प्रस्तुत करता है इससे सबको लाभ है और यह विचार सरकारी की किसी भी प्रगतिशील कानून से अधिक प्रगतिशील है। जमीन के समान विवरण की ओर बढ़ने से प्रथम कदम के रूप में २० वें हिस्से का पुनर्वितरण तत्काल प्रारम्भ हो जाना है और भविष्य में ग्रामजनों

स्वयं के निर्णय द्वारा धार्मिक धर्ममालता को दूर करने के लिए स्वतन्त्र होती है। प्रथम कदम के रूप में उत्पादन में सहयोगी की भावना को मूर्तरूप देने का प्रयास किया जाता है।

सर्वोदय आन्दोलन, भू-दान, ग्रामदान आन्दोलन किसी प्रकार का बरिश्मा नहीं है और न यह कोई धार्मिक आन्दोलन ही है। हा, यह आन्दोलन धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों को स्वीकार करता है। कानून इस आन्दोलन में बाधक नहीं है। कानून इसमें उसी सीमा तक साथ देता है जब तक कि वह इसमें सहयोगक है। सिद्धान्त एवं व्यवहार के सम्बन्धन को कायम रखने के लिए कानून जितना आवश्यक है ग्रामदान उतना कानून स्वीकार करता है। इस बंधारिक आन्दोलन को मूर्तरूप देने का प्रयास कुछ ग्रामदानी गाव कर रहे हैं। गांधीजी ने सिद्धान्त और व्यवहार का सम्बन्धन साध्य-साधन की समरूपता के रूप में प्रस्तुत किया है। जब सिद्धान्त व्यवहार के लिए प्रतीक्षा नहीं करता और साथ-साथ चलता है तो शक्ति की प्रक्रिया वह नहीं होगी जो साम्यवाद या अन्य विचारधारा में होती है। ग्रामदान तो तत्काल सिद्धान्त को व्यवहार में लागू करता है। साध्य की ओर बढ़ने के लिए साध्य अनुभव ही साधन को स्वीकार करता है। सिद्धान्त और व्यवहार, साध्य एवं साधन के इन सम्बन्धन में शक्ति की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती है जो विपरिष्परागत शक्ति की प्रक्रिया से भिन्न है। आवश्यकता है भिन्न प्रक्रिया को समझने की।



समस्त प्रादेशिक सरकारों द्वारा मान्यता प्राप्त
 भारत डीज़ल पम्पिंग सेट
 अधिक पैदावार व उपज
 के लिए लगायें
 निर्माता : स्टर्लिंग मशीन टूल्स
 जीवनी मंडी, आगरा-४ (उ० प्र०)

"The world fears a new experience more than it fears anything.
Because a new experience displaces so many old experiences".

D. H. Lawrence]

Jiyajeerao Cotton Mills Ltd.

Birlanagar, Gwalior (M.P.)

Manufacturers :

JIJAJEE
SUITING,
SHIRTINGS, DRESS MATERIALS

"One must, as far as possible, purchase one's requirements
locally and not buy things imported
from foreign lands,
which can easily be manufactured in the country."

—Mahatma Gandhi

*With Best Compliments
From :*

THE GWALIOR RAYON

BIRLANAGAR, GWALIOR (M.P.)

→
 ममरंछुआरी बाणियों को ६७,२२५ रुपये तथा बाणियों द्वारा पीठिन १२ परिवारों को १५,५०० रुपये पुनर्वसन-महापगम दी जा चुकी है। सहायता देने का काम जारी है।

छात्रवृत्ति : भारतममरंछुआरी बाणियों के २०५ बच्चों को ५५,३७१ रुपये और बाणियों द्वारा पीठिन परिवारों के १५०७ बच्चों को ३,१३,६७२ रुपये छात्र-वृत्ति के रूप में प्रदान किये गये हैं।

वर्ष ७२-७४ के लिए ११,३५,१५० रुपये को धनराशि स्वीकृत की गयी है। जो कि चम्बल-क्षेत्र के ६ जिलों (खातियार, मिण्ड, मुर्दावा, बुना, जिनपुरी और बरिया) को बितरण के लिए दे दी गयी है। छात्रवृत्ति के १२७५ प्रकरण अभी सजिन हैं।

शासकीय-सेवा : ३ भारतममरंछुआरी बाणियों के तथा बाणियों द्वारा पीठिन ८६ परिवारों के बच्चों को शासकीय-सेवा में लिया गया है।

भूदान भूमि : २० प्र० भूदान यज्ञ बोर्ड, भोपाल द्वारा १३ भारतममरंछुआरी बाणियों को भूमि योग्य लाभभय १३० एकर भूदान भूमि दी गयी है।

उत्तरप्रदेश राज्य शासन द्वारा : भारतममरंछुआरी बाणी भी गणराज्य (जालीन) को ५ बीघा जमीन, रादा, हल तथा बीज आदि के लिए ५०० रुपये की नकद सहायता एवं सड़ने की पट्टाई के लिए १० रुपये प्रति माह की छात्रवृत्ति की ससुक्ति की गयी है।

भारतममरंछुआरी भी शहीद साँ (इटावा) को ५ बीघा जमीन एवं तीन माह के लिए धनराशि-सहायता के रूप में २ निवृत्त साक्षात् देने की ससुक्ति की गयी है। श्री गोविन्द सिंह (जालीन) के माई रुक्मिणी की शयि बोध प्रति माह की छात्रवृत्ति को ससुक्ति की गयी है।

नवसंस्कार

भारतममरंछुआरी बाणियों में नवे संस्कारों के लिए मिशन प्रारम्भ से ही प्रयत्न-शील है। खातियार, नरसिंहगढ़ और सागर क्षेत्र में देश के ध्येक मनीषी और विद्वानों के

सत्यं का लाभ प्राप्तममरंछुआरियों को मिला है। प्रबन्ध, क्या, गीन-रामायण पाठ, भजन-पूजन के अलावा ह्य कार्यक्रम में खेत-पूद, मनोरंजन, पी० टी० परेव तथा बिना पट्टे-लिपे समरंछुआरियों के लिए लिखाई-पट्टाई आदि का कार्यक्रम चलता रहा है।

सागर जेल में भारतममरंछुआरियों के बीच भाषी विचारपीठ डेवड़ी, (मुनरान) के स्नातक-प्रधान-मन्दिर के ३० भाई बहनों द्वारा ४ सितम्बर ७३ से १४ सितम्बर ७३ तक एक गिबिर का आयोजन मिशन द्वारा किया गया। समरंछुआरियों ने गिबिर में काफी उत्साह से भाग लिया। सभी ने ह्य गिबिर की सराहना की है। मुनरान के इन्हीं साणियों ने गत वर्ष खातियार जेल में श्री भारतममरंछुआरियों के बीच इसी प्रकार का एक गिबिर सगाया था।

सर्वेपी धीरेन्द्र मन्मथार, सरतावहन, काशीनाथजी त्रिवेदी, रामगोपाल दीक्षित, और यशवन्तकुमार सिन्धु का इस दिशा में योगदान उल्लेखनीय है।

महिला-लोक यात्रा

पुन्य विनोबाजी के परामर्श के अनुसार चम्बल घाटी क्षेत्र में महिला-लोकयात्रा २ अर्ध से १५ अगस्त ७३ तक चली। यात्रा का शुभारम्भ सुधीं निर्वाह देसायण्डे ने किया। सरोवर बुला पूरे समय यात्रा में रही। सुधीं धन्यपूर्यां महाराणा, पद्मा भावसार, शारदा देसाई, भीरा अर्ध, मुन्दा धामन्दीवर, दोषा बुल्ले, जम्प चौधरी, हरजिवाला शाह, गकुन्तला पाण्डे, गीता, जिनपुरी शर्मा, प्रेमलता शर्मा, बीरबाला शर्मा, लक्ष्मी शर्मा आदि बहनों ने महिला-लोकयात्रा में समय-समय पर रहस्यर पोषदान दिया।

खातियार की मुनरगिड समाजसेविनी श्रीमती चन्द्रबाला सह्याय ने साथ ही तरह यात्रा की देवभाल की और अनेक पदावों पर यात्रा में हाथ रही। श्रीमती बमला देवी जाधव ने भी शरोवर क्षेत्र में यात्रा के पदावों पर पहुँच कर यात्री बहनों का उत्साह बढ़ाया।

महिला-लोकयात्रा चम्बलघाटी के चार जिलों में हुई। सभय १०५ गावों में यात्रा का पडाव हुआ। हजारों माईयो और बहनों ने पदयात्री-बहनों के विचारों का लाभ

उठाया। सत्य, प्रेम, कष्टका का सन्देश और शासस्वार्थ का विचार गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचा।

चम्बलघाटी क्षेत्र में यह प्रभूतपूर्व और भन्नुठा आयोजन था। लोग बहते सुने गये नि हमारे इलाके में धान्नादी तो प्रच झापी है। बहनों के परामर्श की सर्वत्र सहायता हुई।

महिला-लोकयात्रा को खातियार की महिला सस्थाओं का सहयोग मिला। जिला सर्वोदय मंडल, जिला प्रामदान-धामस्वाराज्य समिति, खातियार, मिण्ड, मुर्दावा और गिनपुरी, मध्यप्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड भोपाल, तथा पञ्चायत एवं जिला विभाग के सहयोग से मिशन ने यात्रा का आयोजन किया। सर्वधी प्रेमनारायण शर्मा, राजकुमार चौधे, रामसेकध पाठक, डा० मनोहरलाल मेहता श्री मधुसूदनराम नामदेव, माधुराम धाकड पन्द्रका मिह, सोवरनसिंह, मुन्दाजीशका पाण्डे और शिवचरण सात दीवान ने यात्रा की व्यवस्था में विशेष सहयोग दिया।

सभय सभी बननी सरदारों ने अपने अग्रप्राय स्वीकार किये। चम्बल तप मुन्देखण्ड क्षेत्र के सभय सभी प्रभुव बाण सरदारों ने हत्या के आरोप में अपने अग्रप्राय पञ्चायत में स्वीकार किये हैं।

समाचार

भारतममरंछुआरी विनोबाजी से मिले भारतममरंछुआरी बाणी सरदार माधोसिंह बल्लारसिंह, रामसहाय, मोनीराम नूरसिंह, शकरसिंह और लालवतिया ने विनोबा से उनके प्राथम परधाम पवनार में भेंट की और अपना जीवन सुधारने के लिए उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अम्बर चरके : मिशन की ओर से केन्द्रीय-जेल खातियार में ७५ और नरसिंहगढ़ उप जेल में दो नये माडल के अम्बर चरके साल किये गये हैं।

ह्य कार्य के लिए जे० सी० मिल्ल खातियार में ५,००० रुपये (पाच हजार) की रई देना स्वीकार किया है।

श्री रामचन्द्रध विद्यगत : केन्द्रीय जेल खातियार में भारतममरंछुआरी श्री रामस्वरूप (जिना मुर्दावा) का बीमारी के कारण निधन

हो गया। सभी आत्मसमर्पणकारियों ने अपने साथी के नियम पर एक दिन का उपवास रखा।

श्री मधुराप्रसाद की हत्या : आत्म-समर्पणकारी श्री रामप्रकाश शर्मा के पिताजी श्री मधुराप्रसाद शर्मा की उनके विरोधियों द्वारा हत्या कर दी गयी। यह घटना उस समय घटी जब कि-श्री रामप्रकाश पॅरोल पर अपने भाव उदोनगढ गये हुए थे।

राजस्थान शासन द्वारा १०,००० रुपये : राजस्थान राज्य-शासन ने, मिशन को शक्ति कार्य के लिए १०,००० रुपये (दस हजार) की सहायता स्वीकृत की है। स्वीकृत-धनराशि सभी प्राप्त नहीं हुई है।

उत्तरप्रदेश शासन द्वारा १,००,००० रुपये : उत्तर प्रदेश के आत्मसमर्पणकारी बागियों तथा उनके द्वारा पीड़ित परिवारों

की सहायता के लिए उत्तरप्रदेश राज्य शासन ने १,००,००० रुपये (एक लाख) की सहायता मिशन को देना स्वीकार किया है। स्वीकृत धनराशि सभी प्राप्त नहीं हुई है।

अनहोनी घटना : दिनांक ८ अगस्त ७३ को जयारोय घस्पताल ग्वालियर में इलाज के लिए भेल से आये १२ बागियों और मेडीकल कॉलेज के छात्रों के बीच हुए सघर्ष को मिशन और बागियों ने दुःख, वेदपूर्वक और अनहोनी घटना माना है।

आत्मसमर्पणकारी बागी पॅरोल पर : मध्यप्रदेश शासन की उदार नीति के अनुगार आत्मसमर्पणकारी बागियों को पॅरोल पर छोड़ने का क्षेत्र में अच्छा असर हो रहा है। सदियों से चली आ रही आपसी बटुता कम हो रही है। परस्पर सद्भाव बढ रहा है। पातावरण नम हो रहा है। लगभग ५० प्रति-शत आत्मसमर्पणकारी पॅरोल का लाभ उठा चुके हैं।

धीरेन दा सागर, ग्वालियर तथा नरसिंह-गढ़ में : देश के मुखसिद्ध विचारक श्री धीरेन्द्र भूजमदार २६ अगस्त से ३० अगस्त तक सागर में, ३१ अगस्त से ५ सितम्बर तक ग्वालियर में तथा ६ से १० सितम्बर तक मिशन के मेहमान रहे।

बृहत्तर-ग्वालियर के शिक्षक, शिक्षिकाओं, रचनात्मक कार्यक्रमों, पत्रकारों, व्यापारियों, महिलाओं तथा नगर पालिक नियम के पार्षदों, महापीर, उपमहापीर आदि ने धीरेन्द्र दा से गप की और उनके विचारों से लाभ उठाया। सागर में बहनों तथा नगर पालिका के सदस्यों के बीच कार्यक्रम हुए। केन्द्रीय-जेल ग्वालियर में दो दिन तथा जिला-जेल सागर में एक दिन आत्मसमर्पण-कारियों के बीच धीरेन्द्रदा की गप-गीष्ठिया चलती।

हेमदेव शर्मा

मंत्री, चम्बल घाटी शांति मिशन, कम्पू, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०) द्वारा प्रसारित

With The Best Compliments From :

● B. C. Automobiles
Automobiles Engineers
Dealers - Burmah Shell.

● Auto Engineers
Repairer of all Makes
and Type of Cars, Trucks,
Buses and Tractors,
Specialists of Accidental Jobs.

● The Gwalior Motors
Specialists : Engine Reconditioning,
Cylinder Boring, Bearing—
Remelting, Valve Seat Fitting,
Crank Regrinding, Metal spraying,
Valve Refacing, Spray painting.

Kampoo, Lashkar Gwalior-474001 Phone 23295.

गांधी जयन्ती के अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं
नेशनल आयरन फाउन्ड्री,
मोतीलाल नेहरू रोड, आगरा

रचनात्मक कार्य की सफलता
के लिए
दि हीरा मिल्स लि०, उज्जैन

सर्व सम्मति ही सब कुछ है

-योगेश चन्द्र बहुगुणा

सैनाग्राम में २१ सितम्बर से २३

सितम्बर तक सम्पन्न हुए सोवियतों के अधिवेशन की इस माने में ऐतिहासिक माना जा सकता है कि इनमें अपनी सब तक की विपुलताओं की शक्ति तर्क जाल में उनमाने के बजाय धार्मिक भी दिशा में बढने के लिए नये साधाम तलाश करने का प्रयत्न किया गया। नारायण देसाई के शब्दों में सर्वोदय आन्दोलन की सेवाग्राम में एक 'बैक वू' मिला है। अधिवेशन में धोषचारिक चर्चाओं की धरौंसा आपसी बहम व विचार मयन का जोर रहा।

यह अधिवेशन भी कुछ आदर्श और कुछ कार्यक्रमों की बातें करने के वार शायद सम्पन्न हो जाया अगर सर्व सेवा रूप के मन्त्री टाकुरदान बग कुछ लट शब्दों का प्रयोग न कर बँटने। उन्होंने कहा "सैनाग्राम के इस सम्मेलन में लोक सेवक सच का एक नया अन्वयण हो रहा है। हमारे काम का एक व्यापक धैर्य बन रहा है। सर्वोदय आन्दोलन का पोलिटिक्लाइजेशन हो रहा है। यह सेवाग्राम का संदेश है। बाबा (विनोबा) का प्राथमिकता हमें मिला है।"

श्रीफ ! एक शब्द

उनके पोलिटिक्लाइजेशन ने लोगों में धर्मनौप और उत्तमता पैदा कर दी इसलिए २२ को मुझ तक अधिवेशन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई ता निर्दिष्ट दस्तावेजों, ने धार्मिक पेश की। 'हम सर्वोदय आन्दोलन का पोलिटिक्लाइजेशन (राजनीतिकरण) चाहते हैं या लिबरलवाइजेशन, आध्यात्मिकरण ? अगर राजनीतिकरण चाहते हैं तो रूपया विनोबाजी का नाम इसके नाम में जोड़िये।' ताणियों की गजबडाहट से लगा कि उन्होंने पूरे मदन की भावना प्रस्तुत की। प्रयाग माई, रामचन्द्र राही न भी कुछ इसी तरह के विचार प्रकट किये। इनकी लजा कि सर्वोदय को एक राजनैतिक पक्ष का रूप दिया जा रहा है। डॉ० दयानिधि पटनायक ने तो यद्वा तक कहा कि यदि सच भी भावना 'गान्धुगति' ही है, सब तो मुझे कुछ नहीं कहना है लेकिन यदि भावना कुछ दूसरी माने राजनैतिक दिशा देने की है तो हमें विचार का पॉि "पोलिटिकल को आध्यात्मिक बनाना भी पोलिटिकल ही है", वहाँ नारायण देसाई ने इन बारे में काफी स्पष्टता की। उन्होंने कहा "हमारे मन्त्री ने एक शब्द इन्मेनाल किया उन पर अधिग्रहण करना अपनी पारलारिणा को पीठ पट्टाचना है। इस आन्दोलन में कई नये शब्द बनाये हैं। हमें अपने आंदोलन को नया रंग देने के लिए

नये साधामों की जरूरत है इतना ही बग सहब का मतलब था।" इराकी १९५७ता घन्त में धीरेनडा ने की। उन्होंने कहा "मुझे लगता है कि शब्दों की गलतफहमी हुई है। पोलिटिक्लाइजेशन इस देश में बढ भवानी है जो तिर पर बढ कर बोलती है इसलिए इस शब्द का सम्भवतः प्रयोग इस आदि। पोलिटिक्लाइजेशन की जो पदां है उसमें वे उन निवेदन (राष्ट्रीय परिषद व निवेदन) के द्वारा धार्मिक बढें हैं। उन्होंने बोर्ड मार्गदर्शन प्राप्त की नहीं दिया है। उनका यह कदम हमारे काम के लिए बहुत मददगार होगा।" शब्द के सम्यक प्रयोग न होने के कारण बितनी आश्रितिया हो सकती हैं यह पटना जद्वा इस और इतिगत करते हैं वहा इस तथ्य की धार भी ध्यान दिलानी है कि पुराने शब्दों पर नये धार्मिक की बलम समाने को बिलो शक्ति की महत्वक प्रशिक्षा मानने वाले लोग शब्दों के प्रयोग के प्रति बित्तने असहिष्णु हैं।

सत्याग्रह, हत्याग्रह नहीं

तात्कालिक समस्याओं व समाज में होने वाले घण्टियों व श्रत्याचारों का मुकाबला करने के लिए गांधी प्रेरित सत्याग्रह पद्धति का समल होना चाहिए या वहीं यह सर्व सेवा सक्ष के प्रस्ताव के वाजुद भी विवाद का विषय रहा है। १९६५ में इसी महादेव-भाई भवन में इन विषय को लेकर गरमा-गरमी पैदा हुई थी और घन्त में दादा धर्माधिकारी ने इन शब्दों के साथ सबको निश्चित किया था कि जिस नागरिक को बोट देने का भी तमीज नहीं है वह सत्याग्रह क्या टाक करेगा ? १९७३ में जैता कि विनय धरमणी ने कहा वही लोग इनके सबसे बडे पदाधर बन गये हैं जो तक विरोध में थे। सत्याग्रह का प्रश्न अधिवेशन की तरक के लिये था के सामने भी प्रस्तुत किया गया था और यह उनको जीवन का पट्टा मौना है जबकि उन्होंने इनकी स्पष्टता से, हाकारि मर्पता के साथ, सत्याग्रह पद्धति को अपना

अधिवेशन का प्रारम्भ २१ को मुझ बतिल भारतीय रचनात्मक सहायों के प्रतिनिधियों के सम्मेलन के साथ हुआ। अधिवेशन के इस सत्र के अध्यक्ष के रूप में देवेन्द्र बुधरा गुल ने धार्मिक प्रस्तावित भाषण में धारा प्रकट की कि यह सम्मेलन सर्वोदय आन्दोलन और रचनात्मक सहायों की मददके लाने के प्रयत्न में सफल होगा। इस सम्मेलन से पूर्व इसी स्थान पर राष्ट्रीय परिषद की एक दिवसीय बैठक सम्पन्न हो चुकी थी। परिषद में स्वीडन निवेदन की सोवियतों व रचनात्मक सहायों के प्रतिनिधियों के सामने विचारार्थ रखा। नारायण देसाई ने और उस पर निर्भरता देनापाडे और सोमदत्त जी ने धारा मन्तव्य रखा।

धारा का दीप

धार्माई इज्जतानी पूरे अधिवेशन में उपस्थित नहीं रहे मके परन्तु पहले दिन उनके विचारों का नाम मिला। महादेव-भाई भवन के हॉल की प्रतिनिधियों से संचालक भरा देश कर इज्जतानी जी ने कहा "देश में बढने से लोप है। स्वीकार करना पोलिटिक्लाइजेशन के निरास है, मैं स्वीकार करना हूँ कि मैं भी उन लोगों में से एक हूँ। परन्तु धार्म लोगों के बीच आघार मेरी निरासा कुछ कम हुई है। हमारे काम में कमजोरी की धार्मिकरण की है।"

भारतीयवाद दिया। उन्होंने कहा, "सर्व सेवा संप्रदाय वाले इतना ही कर सर्व सम्मति से तय करेंगे तो बाबा को यह स्वीकार होगा। अगर शान्ति सैनिक सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव करें कि हरेक को पिस्तौल रखना है तो बाबा पास करेगा। सत्याग्रह के लिए मैं भारतीयवाद देख चुका बयान कि वह सर्व सम्मति से हो। गांव के टुकड़े नहीं होने चाहिए परन्तु अगर आपके भी टुकड़े हो गये तो सर्वनाश हो जायेगा। बाबा ने सत्याग्रह क्यों नहीं किया? इसके बाबा के अपने कारण हैं। उन्हें बाबा के पास ही रहने दीजिये। बाबा पर शकराचार्य का सबसे अधिक असर है। शंकराचार्य का कहना था कि जब तक शक्ति होगी तब तक अपनी बात समझता रहूंगा। बाबा ब्राह्मण है। ब्राह्मण भगवान का मुख है। मुल के दो काम हैं—खाना धोर बोलना। वही बाबा करता है। बाबा समझाने के अलावा न करता है, न बिया धोर न करेगा।"

विनोबा के इस वक्तव्य से बाल गुरुजी की इस भावादा को समझकर कि 'सत्याग्रह का विफल असन होगा' जहाँ सर्व सम्मति की मर्यादा रख कर उसकी छूट दी गई है वहाँ जैसे कि धीरेन्द्र दा ने बताया, सत्याग्रह की प्रक्रिया एक शैक्षणिक प्रक्रिया होगी चाहिए इस धोर भी इशारा दिया गया है। जगन्नाथन जी ने, जो तमिलनाडु में मठों की जमीन को भूमिहीनों में वितरित करने के

लिए सत्याग्रह की पद्धति से संजावर जिले में काम कर रहे हैं, भूमि समस्या को लेकर राष्ट्रीयीय सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ करने पर जोर देते हुए कहा, 'बाबा शकराचार्य की परम्परा में है परन्तु मुझे लगता है कि गांधी की पद्धति के अनुसार कुछ कार्यक्रम लेने चाहिए। भूमि का मसला, शराब का मसला भारत भर में है। इन मसलों को लेकर भारत भर में सत्याग्रह के प्रयोग करना आवश्यक है। हम लोग विनोबा की तरह शकराचार्य की परम्परा में नहीं हैं और न लड़ने वाले गुण्डे ही हैं। हम गृहस्थ हैं अतः हमें प्रतिवार वा कोई रास्ता ढूँढना ही होगा। विनोबा को दान में मिली पवित्र भूमि में बेदखली हो रही है यह मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सकता। बाबा का कहना है कि सत्याग्रह में दबाव नहीं होना चाहिए। कुछ न कुछ दबाव तो होगा ही, कुछ प्रभाव भी होगा धीरे-धीरे दबाव कम होता जायेगा। हम गांधी धोर विनोबा दोनों को लेकर गांव में काम करेंगे।' उन्होंने बताया कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने ग्राम सभाओं में 'हजारों विलंबलम्' (जहाँ भूमि समस्या को लेकर सत्याग्रह का प्रयोग हो रहा है) बनाने की मांग की है।

धीरेन्द्र दा ने कहा 'हमारे नाम की मर्यादा नहीं आई है। अब तक हम ढोल पीटने का काम करते रहे। नादश्रय की उपासना चलती रही है। इस उपासना से हमने सब लोगों तन विचार पड़चाया है।

वह ध्रुव कर लिया है। क्रान्ति के आरोहण की प्रक्रिया में इस समय हम बक कर कुछ सास ले रहे हैं। रकावट है, ऐसा मुझे नहीं लगता। आपे जो स्टेज है वह श्रम्य सत्कार करने वाले शुद्ध भगवान की उपासना की है।" इसीलिए उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि 'ग्राम स्वराज्य का मूल काम करते हुए राष्ट्रीय परिषद की सिकांरियों को उन्हीं क्षेत्रों में प्रमत्त में लाना चाहिए जहाँ हमारे काम के सघन क्षेत्र बने हैं। अगर 'ग्रामो-सेशन' में हम उन प्रयोगों को करेंगे तो उसमें मेरी जरा भी मदद नहीं होगी।" उदाहरण के लिए उन्होंने कहा "ग्रामाज के मामले को लेकर यदि सत्याग्रह करना है तो उन सघन क्षेत्रों में ही यह हो, लोग गांव से बाहर, यहाँ तक कि सरकार को भी अनजान देवना बन्द कर दें।"

इस बार का पूरा संप्रदाय अधिवेशन इन्हीं प्रश्नों के जवाब ढूँढते-ढूँढते एक सक्षिप्त निवेदन की सर्व सम्मत स्वीकृति के साथ समाप्त हुआ। निवेदन में कहा है कि सेवाग्राम में हुई राष्ट्रीय परिषद द्वारा की गई सिकांरियों का यह अधिवेशन स्वागत करता है। ग्रामसभाओं के सफरून द्वारा समस्योओं को हल करने की पद्धति को स्वीकार करके परिषद ने ग्रामस्वराज्य के विचार वा जो समर्थन दिया है उससे हमारा उत्साह बढ़ा है। साथ रचनात्मक कार्यकर्ताओं, सोचनेवालों, व विचारशील लोगों से परिषद के निर्णयों को अपने-अपने क्षेत्र में प्रमत्त में लाने की सिकांरिया करता है।

Where You Don't Go, Your Photograph Goes

FOR PERFECT RESULTS

IN

Portraits

Groupings

Colour Photography

Flash Photographs

and

Oil Paintings

Please Remember

VERIFINE STUDIO

Near Roxy Cinema, GWALIOR-1

दिल्ली-उज्ज्वल भविष्य की ओर जन-जन के लिए शिक्षा

शिक्षा की नगरी

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ५ साल बच्चे ५३६ उच्चतर माध्यमिक स्कुलों में शिक्षा पा रहे हैं।

इस वर्ष की परीक्षा तथा विज्ञान प्रतिभा प्रतियोगिता में मेधावी छात्रों की संख्या का प्रतिशत बहुत उंचा रहा। यह विद्यार्थियों का रिकार्ड है।

विज्ञान की शिक्षा

दिल्ली प्रशासन ने रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा तकनीकी प्रगति का आधार तैयार करने के उद्देश्य से विज्ञान-शिक्षा को सबसे अधिक प्राथमिकता दी है।

विज्ञान की परीक्षा ५०१ माध्यमिक तथा २५० प्राथमिक स्कुलों में चालू की जा चुकी है और ५०० से अधिक स्कुलों में और चालू की जायेंगी।

इस वर्ष विज्ञान केन्द्रों एवं कर्मशाखाओं, विज्ञान परियोजनाओं और प्रशिक्षणों को मुक्त रूप से चलाने के लिए २० लाख ८० की धनराशि खर्च की जायेगी।

व्यावसायिक मार्ग-दर्शन

कार्य अनुभव पाठ्यक्रम ६० स्कुलों में चालू किये जा चुके हैं और व्यावसायिक मार्ग-दर्शन की सेवाएं भी १५ और स्कुलों में लागू की गई हैं। इस पर इस वर्ष ३.१५ लाख ८० खर्च किया जायेगा।

विशेष सहायता

अल्पसंख्यक छात्रों को शिक्षा सुविधाएं देने के लिए इस वर्ष २२ लाख ८० खर्च किये जायेंगे। इन सुविधाओं में कमजोर छात्रों के लिए विशेष शिक्षण, अध्ययन केन्द्रों की स्थापना, पुस्तक बैंक, मुक्त परिवहन और शिक्षाप्रद यात्राएं शामिल हैं। ६५ हजार से अधिक छात्रों को छात्रवृत्तियां दी जा रही हैं और ५० हजार स्कुली बच्चों को शौचालय का भोजन दिया जा रहा है। मेधावी बच्चों के लिए रिगेन बढ़ाए भी चालू की गई हैं।

बचस्क शिक्षा

इन क्षेत्र में ६५ महिला समाज शिक्षा केन्द्र और ५७ विद्यालयों के लिए व्यावहारिक साक्षरता केन्द्र चले रहे हैं। रोजी बमाने वाले लोगों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए सन्ध्याकालीन तथा पञ्चाचार विद्यालय चलाये जा रहे हैं।

शिक्षा का प्रसार

शिक्षा के विस्तार के लिए और अधिक स्कुलों की स्थापना की जा रही है।

समाज के समाज वर्गों, विशेषकर कमजोर वर्गों के हित के लिए उच्चतर की शिक्षा की व्यवस्था है।

और उनको अच्छा मायविक बनाने तथा विभिन्न क्षेत्रों में सफल नेतृत्व की बागडोर सम्भालने की शिक्षा में बदन उठाये गये हैं।

दिल्ली के अपने विद्यार्थियों के लिए एक योजना है जिसमें शिक्षा, औद्योगिक विज्ञान, ग्रामीण विकास और समाज कल्याण के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। इसे लागू करने में धारणा गठयोग सबसे महत्वपूर्ण है।

दिल्ली की प्रगति में सहयोग दें

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली प्रशासन द्वारा प्रसारित

हरियाणा

आशाओं और उपलब्धियों की भूमि

हरियाणा भारतीय गणराज्य के सबसे नये और छोटे राज्यों में से एक है। फिर भी इसने शानदार प्रगति की है। पिछले पाँच वर्षों में राज्य ने जिस तेजी से कदम बढ़ाये हैं उसे देख कर आश्चर्य होता है।

सिंचाई :—राज्य में कुल सिंचित भूमि १९६६ में १४.८३ लाख हेक्टेयर से बढ़ कर १५.६५ हेक्टेयर हो गई है।

विद्युत :—हरियाणा की एक अनोखी उपलब्धि भारत का यह सर्वप्रथम राज्य होना है जहाँ शत-प्रतिशत ग्रामीण विद्युतीकरण पूरा हो चुका है।

खाद्यान्न :—राज्य में खाद्यान्न का उत्पादन १९६६-६७ में २६ लाख टन से बढ़ कर १९७१-७२ में ४५.४८ लाख टन हो गया।

प्रति व्यक्ति आय :—राज्य में प्रति व्यक्ति आय १९६८-६९ में ३५२ रु० से बढ़ कर १९७१-७२ में ४३५ रु० (१९६०-६१ की कीमतों पर) हो गई। इस संबंध में राज्य का देश में दूसरा स्थान है।

सड़कों :—राज्य के साठ प्रतिशत गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ दिया गया है।

यातायात :—नवम्बर १९७२ में मुसाफिर यातायात का पूर्ण राष्ट्रीयकरण हो गया था। हरियाणा रोडवेज देश में कार्यरत सबसे कार्यकुशल यातायात संस्थान है। इसकी वसों की संख्या १९६८ में ५६७ से बढ़कर १,४३० हो गयी है।

निदेशक, जन संपर्क हरियाणा द्वारा प्रचारित

हरियाणा विद्युतीकरण में सबसे आगे है

यह छोटा सा राज्य प्रगति के बड़े कदम रख रहा है ।

हरियाणा वह राज्य है जहाँ :—

- हर गाँव में बिजली पहुंच गई है ।
- प्रत्येक वर्ग किलोमीटर खेती योग्य भूमि के लिए तीन नलकूप हैं ।
- कृषिकार्य के लिए विद्युत शक्ति के उपयोग का प्रतिशत देश भर में सबसे अधिक है ।
- प्रत्येक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के लिए १.५ किलोमीटर बिजली की लाइनें हैं ।
- प्रति व्यक्ति विद्युत उपयोग ११६ यूनिट है और हर चौथे रिहायशी मकान में बिजली लगी है ।

हरियाणा राज्य विद्युत मंडल

पंजाब के समृद्धि की ओर बढ़ते कदम

पंजाब की जनता ने विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के राहों पर लम्बी दूरीया तय की हैं । हमारी कुछ उपलब्धियाएँ हैं —

- ☞ शुष्क गोबिन्दसिंह मार्ग का ६४० कि० मी० हिस्सा पूरा हो चुका है ।
- ☞ ६६२९ गाँवों में बिजली लग चुकी है ।
- ☞ मार्ग, १६७४ तक लकी गाँवों तक पहुँच जायेगी ।
- ☞ केन्द्रीय अंतरा की धार तक २६ ४० लाख टन से भी अधिक गेहूँ का भण्डारण ।
- ☞ ६ से ११ वर्ष की आयु ६१ के प्रतिशत से भी अधिक बच्चे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।
- ☞ १,७५,००० ग्रामीण भूमिहीनों को मकान बनाने के लिए मुफ्त जमीनें दी गईं ।
- ☞ २,००० से भी अधिक साधारण नलकूप और ७१४ से भी अधिक गहरे नलकूप लगाने गये ।
- ☞ १,००० मध्यम और लघु उद्योग इकाइयों को पजीवित किया गया ।
- ☞ ग्रामीण क्षेत्रों में पानी पहुँचाने की योजना पर ३,१०० गाँवों में वैकी से काम आगे बढ़ाया जा रहा है ।
- ☞ रोपड़ जिले में सर्वोत्तम मान्यम योजना लागू हो चुकी है । इम्प्रेजिती में भी यह कार्यक्रम लागू किया जा रहा है ।

हम और अधिक जोग और उलाह के साथ राज्य की सेवा करने का संकल्प लेते हैं ।

निर्देशक, सूचना और प्रचार, पंजाब द्वारा प्रसारित

With compliments from :

LAL-IMLI & DHARIWAL

The Cownpore Woollen Mills, Kanpur
&
The New Egerton Woollen Mills, Dhariwal

Branches of

The British India Corporation Ltd., Kanpur

TO PUT THE INDUSTRY & THE NATION IN TOP GEAR
FOR THE CLIMB AHEAD

GAJRA GEARS

Makers and Exporters of All Types of Precision Gears

Station Road, Dewas (M. P.)
Phone : 58-83-26.
Telex : ID-261

H. O. :—Elve Chambers,
Green Street, Fort,
Bombay-1
Phone : 263981-2-3
Telex : Elve 011-3856
Cable : 'ELBUSCON'
Bombay-1

हमारे मुख्य उत्पादन

ऊनी खादों

ग्रामोद्योगी वस्तुएं

मुलने, घुटके, सेइंग माल, दूधोइ, ऊनी चादरें,
कातोन, स्वेटरें तथा निटिंग यानें

बिरोजा, तारपोन तेल, रिगाल का सामान, ग्रामोद्योगी
कूने, रेडे का सामान तथा शह्व

रियायती दरों पर मिलते हैं

हपमा तिलें :

मन्त्री, बेरोनाग ग्रामस्वराज्य संघ, उडियारी, पो० काण्डे, बिला पिथीरागड़ (उ० प्र०)

गांधी जयन्ती के अवसर पर

“जब तक देश के करोड़ों देशवासियों को पहनने के लिए
कुर्ता नहीं मिलता, तब तक मैं कुर्ता नहीं पहन सकता।”

—महात्मा गांधी

उत्तर प्रदेश शासन बाबू के उक्त वाक्यों की क्रियान्विति के लिए क्या कर रहा है ?

- ❖ प्रदेश में अब तक २,८८,४३१ हाथ रुपये लगाने जा चुके हैं।
- ❖ ३७४०० एजेंटन सप्ल-उद्योग स्थापित किये हैं।
- ❖ दसवींवार तथा के हरिजन छात्रों के लिए ११७३-७४ से २,६४,७४०००००० की धनराशि स्वीकृत की गई है। इसके ५६००० छात्रों को लाभ मिलेगा।
- ❖ दसवीं वार्षिक के पूर्व के हरिजन छात्रों को १६७३-७४ वर्ष के लिए ८३ लाख रुपये का व्यय प्रस्तावित है। इससे ८८०० छात्र लाभान्वित होंगे।
- ❖ हरिजनो के लिए सरकारी क्लबाओ में १८ प्रतिजन पदों को सुरक्षित रखने के आदेशों का बजाई के साथ पालन।
- ❖ कुशल, प्राविधिक तथा अन्य विभिन्न बेरोजगारों को काम दिवाने की ८६४ करोड़ ४० की योजना।
- ❖ पूरे प्रदेश में ३ लाख व्यक्तियों को रोजगार देने की योजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में ११ करोड़ ८० की योजना लागू करके ४०,००० व्यक्तियों को रोजी देने का कार्यक्रम।
- ❖ भूमिहीनो के लानार्थ १८ एकर की क्षयिस्वम जेन सीमा निर्धारित।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित विज्ञापन।

सख्या ५



Repro-graphics

LINE, HALF-TONE, LINE HALF-TONE COMBINED AND
MULTI-COLOUR BLOCK MAKERS
QUALITY JOBS, PROMPT SERVICE AND REASONABLE RATES

Office :-6465, KATARA BARYAN DELHI-6 PHONE : 268371



PHOTO GOODS SERVICE

Manufacturers of "GRAFIX" Photo Mechanical Equipment & Machines for Block Making,
Offset & Screen Printing.

Show Room & Office :-6465 Katra Baryan, Delhi-6

Grams : MALTI

Phone : 268371

"सम्पति सद्य रघुपति कं द्याही"

गांधी जयन्ती के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

भारत कामर्स एगड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,

पो० आ० विड़लाग्राम, नागदा (म० प्र०)

तार : "भारत"
विड़लाग्राम

फोन : २३, २६
नागदा

With best compliments from :

Murarilal Balkishan

Commercial Chamber,
Masjid Bunder Road,
Bombay

Dealer : All Types of Chemicals and Solvents.

Phone : 328028
327255

ALWAYS USE

VITA PASTEURISED BUTTER.

Because it tastes so butterly.

Its freshness 'N' creamy flavour make it so different
from ordinary BUTTER.

VITA PASTEURISED BUTTER is good and economical also.

VITA PURE GHEE, INSTANT NON-FAT DRY MILK POWDER,
WHOLE MILK POWDER, PASTEURISED BUTTER, SWEETENED
CONDENSED MILK, ICE-CREAM AND STERILISED FLAVOURED
MILK ARE

Manufactured by

The Haryana Dairy Development Corporation Ltd.

(State Govt Undertaking)

at its most modern and sophisticated milk plants

at JIND, BHIWANI AND AMBALA, in a most hygienic
manner from FRESH MILK procured directly from producers in the Area.

Phones : 471343 (Res.)
691436

PETRO-CHEM INDUSTRIES

Manufacturers of :

Specialised Lubricants and Greases

Model Industrial Colony,
off Aarey Rd.,
Goregaon (East)
BOMBAY-63

अगर आप अपनी बात

उन तक पहुंचाना चाहते हैं

जिन तक कोई नहीं पहुंचता

तो

सर्वोदय साप्ताहिक

‘भूदान-यज्ञ’

में विज्ञापन दीजिये

भूदान-यज्ञ प्रामाणिक है
और उसके शब्द में वजन है

‘भूदान-यज्ञ’,
सर्वोदय साप्ताहिक,
१६ राजघाट कॉलोनी,
नई दिल्ली-११०००१

आप अपनी
बचत से



अपना भला कीजिये
और
अपने देश का भी
यूकोर्वेक की आर्थिक सहायता के जरिये

हमारे यहाँ डिपॉजिट एकाउन्ट में जमा अपनी बचत पर
आपको व्याज मिलता है और हमारी विभिन्न आर्थिक सहायता
योजनाओं के जरिये आपकी उस बचत से कृषि,
लघु उद्योगी तथा निर्यात की अभिवृद्धि में मदद पहुँचती है।
अपनी बचत से यूकोर्वेक के जरिये स्वयं अपनी
और साथ ही देश की समृद्धि व खुशहाली का चक्र सदा
गतिशील रखिये।



प्रधान कार्यालय : कलकत्ता

यूकोर्वेक समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है

UCB-37

अगर आप अपनी बात
उन तक पहुंचाना चाहते हैं
जिन तक कोई नहीं पहुंचता
तो

सर्वोदय साप्ताहिक

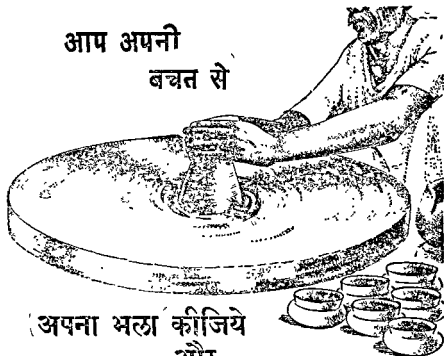
‘भूदान-यज्ञ’

में विज्ञापन दीजिये

भूदान-यज्ञ प्रामाणिक है
और उसके शब्द में वजन है

‘भूदान-यज्ञ’,
सर्वोदय साप्ताहिक,
१६ राजघाट कॉलोनी,
नई दिल्ली-११०००१

आप अपनी
बचत से



अपना भला कीजिये
और
अपने देश का भी
यूकोर्वक की आर्थिक सहायता के जरिये

हमारे यहाँ डिपॉजिट एकाउन्ट में जमा अपनी बचत पर आपको व्याज मिलता है और हमारी विभिन्न आर्थिक सहायता योजनाओं के जरिये आपकी उस बचत से कृषि, लघु उद्योगों तथा निर्यात की अभिवृद्धि में मदद पहुँचती है। अपनी बचत ने यूकोर्वक के जरिये स्वयं अपनी और साथ ही देश की समृद्धि व सुशहली का चक्र सदा गतिशील रखिये।



प्रधान कार्यालय : कलकत्ता

यूकोर्वक समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है

अगर आप अपनी बात
उन तक पहुंचाना चाहते हैं
जिन तक कोई नहीं पहुंचता
तो

सर्वोदय साप्ताहिक

‘भूदान-यज्ञ’

में विज्ञापन दीजिये

भूदान-यज्ञ प्रामाणिक है
और उसके शब्द में वजन है

‘भूदान-यज्ञ’,
सर्वोदय साप्ताहिक,
१६ राजघाट कॉलोनी,
नई दिल्ली ११०००१

गांधीजी की पुण्य स्मृति में

सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कं० लिमिटेड बम्बई, के लिए
श्रीमती सुमतिबेन मोरारजी के सौजन्य में

सर्वांतर्य

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, = ध्रुवद्वार, '७२



10 एप्रील, 1973

वर्ष २०

अंक २

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

सम्पादकीय	२
गांधी की याद फिर से	३
भाषी दुनिया को जगाने के लिए आन्दोलन के लिए तन, मन और धन	४
—सिद्धराज ढड्डा	५
विश्वविद्यालय : बेकारी बढ़ाने वाले कारखाने	
—वंशीधर धीवास्तव	६
हृदय परिवर्तन : धीरज की जरूरत है	
—हेमदेव शर्मा	७
खुली जेल का सफल पूर्वाम्यास	
—यशवंत कुमार सिंघु	८
संयोजक की चिट्ठी	११
त्रिना टिप्पणी के	१२
टिप्पणियां	१५
समाचार	१६
मुखपृष्ठ : गांधी समाधि पर पुष्पांजलि (राक्षस प्राण इण्डिया के सौजन्य से)	

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

सेवाग्राम में राजनीतिवालों ने सर्वोदय सेवकों से कहा कि उनका राजनीति से दूर रहना ही बेहतर है। पिछले कई वर्षों में यह पहला मौका है जब राजनीतियों ने सर्वोदय के मंच से राजनीति की व्यंग्यता स्वीकार की हो और यह कहा हो कि वर्तमान परिस्थिति में एक ऐसी जमात होनी चाहिये जो राजनीति और सत्ता से दूर रह कर जनमत बनाने और लोकशक्ति खड़ी करने में अपनी पूरी ताकत लगाये। उनका ऐसी जमात की आवश्यकता में विश्वास और राजनीतिक कार्याहियों के तौर तरीकों से उनकी निराशा हमारे लिए विश्वास की जनक होनी चाहिये। यह कोई कम महत्वपूर्ण नहीं है कि जिस विश्वास को लेकर हम बीस-बासीस वर्षों से धूनी रमाये हुए थे उसे आखिर महल के लोगो ने स्वीकार किया। अपनी इस उपलब्धि पर हम सन्तोष कर सकते हैं।

इस सदर्भ में सध अधिवेशन में वग साहू के 'पोलिटिकलाइजेशन' शब्द के उपयोग से जो उत्तेजक बहस चली वह निश्चित ही निरर्थक और अधव्ययी लगती है। जब राजनीति वाले हमें बार-बार उनके ब्रह्मांड में आने का निमन्त्रण दे रहे थे और हाथ पकड़-मकड़ कर ले जाने की बोशिश कर रहे थे तब हम नहीं गये तो अब जब कि वे स्वयं हमारे रास्ते के सही होने की दाद दे रहे हैं तो हमारे राजनीतिवरण का सवाल ही नहीं उठना है? एक विसुल दूबरे सदर में मैं गये एक रुठ शब्द से इनकी उत्तेजना ध्वारण तो है ही आपसी विश्वास में सभी का भी परिचायक है। थापर इसीलिए विनोबा को कहना पडा—गाव के टुकड़े नहीं होने चाहिये पन्तु ध्वार ध्रापके भी टुकड़े ही गये तो सर्वनाश हो जायेगा।" प्रलम्बा है कि राजनीतिकरण की बहस आखिर सद्भाव में समाप्त हुई और हमारे विश्वास की पहली शर्त सर्वसम्मति पूरी स्वच्छता के साथ प्रकट हुई। संघ अधिवेशन ने परिपद

के निवेदन को स्वीकार किया और लोकसेवकों ने उस पर प्रमल की तैयारी दिखायी।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि परिपद ने जो 'एकशन प्रोग्राम' सुझाया है और सध अधिवेशन ने जिसे स्वीकार किया है उस पर किस तरह और कहां कार्यावाही की जाये? सध अधिवेशन ने माना है कि कार्यावाही उन सधन क्षेत्रों में की जाये जहां प्रामस्वराज्य का कार्य बरसों से चल रहा है। यह क्षेत्र-चुनाय बहुत अर्थवान है। जहां बुनियादी काम से हमारी जड़ें न उतरती हो वहां इस तरह की कार्यावाही का कोई फल नहीं होगा क्योंकि स्थानीय समस्याओं का केवल हल हमारा उद्देश्य नहीं है। तात्कालिकता को हमें प्रलम्बता में बुनियादी काम से ही जोड़ना है और इस तरह की कार्यावाहियों से जो लोक-शक्ति बनेगी उससे समाज परिवर्तन के सपने को साकार करना है। ऐसे प्रयोग व्यक्त रूप से उत्तराखण्ड और तंजावूर में हुए हैं और सधन क्षेत्र उनका लाभ ले सकते हैं।

प्रभाप जोशी

शुभ-संकल्प

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने राज्य में पूर्णरूप से शराबबन्दी के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया है। गांधी शराबबन्दी वर्ष में वहां शराबबन्दी हटाई गई थी। और धव गांधी जयन्ती के अवसर पर ही यह मत व्यक्त किया गया है, यह निःसंदेह और भी प्रसन्नता की बात हो जाती है। श्री कर्णानिधि ने इस बीच राज्य को शराब से होने वाले लाभ और हानि की तोल वर ही ऐसा सोचा होगा। दूसरे राज्यों को भी इस घटना के बाद पुनर्विचार करने की बात सोचनी चाहिए। नेपाल मादक-द्रव्यों की हानि को अभी कुछ दिन पहले समक कर इस प्रकार ना नियंत्रण ले ही चुका है।

भगानी प्रसाद मिश्र

गांधी की याद फिर से

द्वैत धीर विदेश से गांधीजी के १०४ वें जन्मदिवस मनाने के समाचार आ रहे हैं। इस वर्ष गांधी जयन्ती के समारोहों के दायरे में बंधना देना भी उत्साहपूर्वक शामिल हुआ। दिल्ली स्थित राजघाट समाधि पर बहुत कुछ से ही पुष्पाञ्जलि अर्पित करने वाली बड़ी सभ्यी कतार लग गयी थी, जो शाम तक कायम रही। राष्ट्रपति फिर ने कुछ समाधि पर हार चढ़ाया। उपराष्ट्रपति श्री पाटक, केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री उमासुकर बीडित, सादरमन्त्री श्री फकरुद्दीन अहमद, श्री मोना पासवान सार्वी धारि के समाधि पर कुछ हार्द प्रार्थना समा में भाग लिया। एक घण्टे की इन प्रार्थना के बाद अवन हुए। समाधि पर २४ घण्टे की अक्षरक बतारों भी इन सारे समारोहों के साथ-साथ चलती रही। सर्वथा समा में हजारों नगरियों के अनाक जवान से श्रमे व बौद्धिभु भी शामिल थे। समा के बाद श्री पाटक ने गांधी स्मारक सभ्यतालय में इस अवसर पर आयोजित एक दिवस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। गांधी जी के १०४ वें जन्म दिवस के अवसर पर नगरई गई इन प्रदर्शनी में गांधीजी के १०४ रणों चित्रों को, जिन पर ऊँची के १०४ मुशयिन अंकित हैं, एक-एक गल्पने से सजाया गया है। गांधी सभ्यतालय के श्री दुर्गादेवा श्री का बहुला है कि इन प्रदर्शनी का एक उद्देश्य यह भी है कि मात्र की विषयनामी धीरे विश्वकारणों के बीच कना हुआ स्थित इन मुशायकों को पढ़, चिन्तन-मनन करे धीरे उनका धारने जीवन में प्रचरण कर उन सभ्यताओं से निपटने का मार्ग प्रशस्त कर सके।

येक मुने १०४ पक्षों में रोने सेने में सचि सुनन कीरन के हूर कोने की निरना करन की सायना रहने है। अथवा का एक अनाक प्रदर्शनी से दर्शकों की राय अक करने वाली मुशयिन से भग सायना है। प्रदर्शनी पर धारती सभ्यति अक करने हुए

एक दर्शन विव गये है कि मैं इस प्रदर्शनी से बहुत प्रभावित हुआ, मैं याद से ही बीबी-सिगरेट पीना बन्द करने भी प्रतिज्ञा करता हूँ।

अश्रीयद् पत्राव, हरियाणा तथा चञ्डीगढ़ में अनेक स्थानों पर प्रभाव फैलियो, प्रार्थना-सभ्य, जगह-जगह गांधीजी की मुतियो पर माल्यार्पण तथा पत्राव राज्यपाल श्री एम० एम० चौधरी के निवास पर हुए एक सारे समारोह से गांधी जयन्ती सम्पन्न हुई।

कागजुर प्रभाव फेरी, नरकनिमन गांधी अवन पर विजली से रोगीनी, शाम की भातिजवाजी से जन्म दिवस मनाया गया।

भोपाल सार्वी जिंकी पर विदेश छूट, जलना द्वारा चलाने जाने वाले एक सहरारी बजार के निर्माण के दिवस पर हुए इस दिवस की विशेषता रही।

सिमला हिमालय हृदि मन्त्री श्री शालियवाम की अभ्यसना में आयोजित समा में नगरियों से गांधीजी के दर्शन पर चलने का आग्रह किया।

कागजुर गांधी जयन्ती उत्सव यहा पर सयान सेना सलह के रूप में शुरू हुआ।

अनरतनी, पटना तथा मधुरा में जन्म जुट फिर, तेजसे सविम अर्पण तथा तेज मोक्ष कारखाने का शिवालयान किया गया।

अहमदाबाद में विभिन्न बर्गी, अथवाओं की प्रार्थना सभ्यओं, हूर-हूर गारों में लोच-लेखों द्वारा नगावरी के कार्यकम की मजबूती से अवन में सामे के लिए दिने यो अवसरक विदेश उल्लेखनीय है। राज्यपाल के० के० विभवतालय तथा काकर

वालिंकर की उपस्थिति में सावरमणी माधम में प्रार्थना सभा व अखट सुन यज्ञ सम्पन्न हुआ।

कोहिमा : नगा शक्ति केन्द्र में सार्वदिवस तथा गांधी-नवनो के समुच्च पटन से लोगो ने गांधी जयन्ती मनायी।

हैदराबाद : अश्रीय प्रदेश नगावरी संघ की पत्रह संहिता कार्यकर्ताओं ने शहर में लगे शराब के विशालकाय विनाशन-पट्टों पर काला रण पोतर।

मद्रास : राज्यपाल की पत्नी द्वारा प्रशस्तिय दिया गया एक पत्राल जन्म सहर के प्रमुख गांधी से निकला।

मगतारदेश जहायरी अवर विचर-विचारण में अनेक छात्रों, बुद्धिबिंधो ने एक विचार गोष्ठी में भाग लेकर निष्कर्ष निकाला कि गांधी इस महाद्वीप में अर्धनिर-पेक्षता के पहले उपदेशक थे।

सदन भारतीय विद्या भवन द्वारा आयोजित परिषदी धीरे भारतीय संगीन के एक समारोह में गांधीजी का स्मरण किया गया। विश्व प्रसिद्ध आयोजित कादक श्री पट्टरी मेहुदत वतारों धीरे वादको सोनो में ही शामिल थे।

धीरे सक्ने अत में बिहार के दरभंगा जिले के दरभंगालक कार्यकर्ताओं द्वारा इन अवसर पर किया गया निर्णय है। दरभंगा जिला मुजम स्वच्छ मोनालय निर्माण समिति के मंत्री अश्रीय नारायण पाण्डेय के अनुसार गांधी जयन्ती से समिति इन जिले में सयन रूप से अयो-मुक्ति पायामों के निर्माण में लग जायेगी। अब तक समिति जिले में ११,५०० गांधी मुक्ति पायामे बना चुकी है। दरभंगा इन सभ्य में न केवल बिहार में, बल्कि भारत के अन्य सभी जिलों से धारने है।

आधी दुनिया को जगाने के लिए

बापू ने कहा है, "महिा की नीव पर रचे गये जीवन की योजना में, जितना धीर जैसा अधिभार पुरुष को अपने भविष्य की रचना का है, उतना धीर जैसा ही अधिभार स्त्री को भी अपनी भविष्य तय करने का है। लेकिन अधिभार समाज की व्यवस्था में जो अधिभार मिलते हैं, वे किसी न किसी कर्तव्य या धर्म के पालन से प्राप्त होते हैं।"

भारत भारत की स्त्री को न अपने अधिभार का भान है, न उसके साथ घाने वाले कर्तव्यों का। भारत की बहनों की प्रसली स्थिति का भान तब होता है, जब हम जागोने प्रगते हैं, एक बुजुर्ग सर्वोदय-सैनिका स्त्रोत्तम के प्राप्तीलन से स्त्रियों में काम करती हैं। उनका अधिभार समग्र उत्तर प्रदेश की बहनों में काम करने में ही भया और बहा की बहनों जिस कदर परदे में, पूषट में बन्द हैं, उसे वे देख चुकी हैं, फिर भी बार-बार साल पहले जब उन्हें बिहार के गावों में काम करने का मौका मिला, तब वहा की बहनों की स्थिति वे देख नहीं पायीं। विनोबाजी बिहार की बहनों का 'सवाई भ्रतविद' कह कर यणन करते हैं। श्री भ्रतविन्द अपनी साधना के लिये पालीम साव एक कोठीरी में बन्द रहे। बिहार की बहनों की छोटी उन्न में शादी हो जाती है। धीर शादी होकर एक बार वे घर के अन्दर गयी कि बाहर तभी जाती हैं, जब उनकी लाण बवती है। चम्बल के ठापुर जगत के एक भाई बना रहे थे कि उनकी प्रमान में सात-प्राठ साल की उन्न में ही लड़की की शादी हो जाती है। जब वह मन्वपु अधी ससुराल में जाती है तब घर के अन्दर प्रवेग करने के पहले एक बार उसे मानन के बारे परिसल में पूगामा जाता है, भगन में भी पूगामा जाता है कि एक बार नू अपना मकान देख ले, बाद में यह कभी तुम्हें देखने की नहीं मिलने वाला है। घाठ साल की वह लड़की प्रथम बार अपना मकान जो देखनी

है, वह अधिभार का ही-। उसके बाद यह अन्न-पुर के बाहर नहीं घा सकती, पूषट अन्न नहीं उठा सकती। स्त्री-जीवन की ये बरण बहानिया भारत के सभी प्रदेशों में कमवेगी प्रमाण में देखने को मिलती हैं।

शहर की बहनों की स्थिति इस मुवाबले में कुछ अच्छी जरूर है। पर वहां भी उनका मानस अधी पूषट में ही पडा है। अपने कर्तव्यों का, अपनी शक्ति का, अपनी बमियो का, अपनी विधेपताओं का, किसी का भी धाज उन्हें भान नहीं।

बोर्ड बठिनाई नहीं रहेगी। इसलिये प्रथम प्रावश्यक है उसे मानव के रूप में देखना।

मानव के नाते उसका क्या कर्तव्य है? मानव के नाते उसका कर्तव्य है मानव-जीवन का प्रतिम लक्ष्य गाठना। इसका भान धाज स्त्री को नहीं है। मनुष्य-जीवन का प्रतिम लक्ष्य है धारमसाहायता।

धाज समाज का एक घटक—पुरुष इन बातों पर सोच सकता है और उसे वह पूरा करने का भी स्वान्तव्य है। पर स्त्री को वह नहीं है। माना गया कि स्त्री को अपनी गति



ऐसी कम से कम तीन तो पदयात्राएं निकलेंगी

स्त्री प्रथम एक व्यक्ति यानी मानव है, फिर बुद्धत्व की अधिष्ठात्री है और फिर समाज की एक जिम्मेदार घटक है। उनकी इन तीनों हस्तियों का धाज उसे भान नहीं।

उसकी हस्तियों की व्यापकता के साथ-साथ उसके कर्तव्य म्यापन बनने जाते हैं। समाज का एक अंग, यह उसकी सर्वाधिक व्यापक हस्तियों, पर उसका बहा कर्तव्य तबने अधिक प्रस्तान हो जाता है। अग्रर यह बुद्धत्व की योग्य धीर परिपुर्ण अधिष्ठात्री बन जाये, तो उसका सामाजिक कर्तव्य बहू बड़ी मात्रा में पूरा हो सकेगा। धीर अग्रर यह व्यक्ति के नाते—मानव के नाते अपनी कर्तव्य पहचान ले, तो बुद्धत्व की नीव बनने में उसे

नहीं, पति ही उसकी गति और जिसको पति नहीं उसको गति ही नहीं। विनोबाजी ने उसे उगाया दो है अनूर-नेलो से भरे देखने के डिब्बे की। इन्जन कोकेले ले करा है, पर उसे अपनी गति है। डिब्बे अनूर-नेलो से भरे हैं, पर उनकी गति इन्जन के धाधार से तय होती है। यही धाज स्त्रियों की हालत है। अग्रर मनाज का धाया अंग अपने प्रानती कर्तव्य से च्युन रहे तो मनाज धागे बंठे बड़ेगा ?

गुप्तवादी, मानव समाज में भी हर घटक को अपनी कर्तव्य पूरा करना प्रावश्यक होता है, तो धाज विज्ञान के कारण जब कि समाज जटिल बना है, इसकी प्रावश्यकता सहज ही (बाकी पेज १३ पर)

आन्दोलन के लिए तन, मन और धन

—सिद्धराज उड्डा

सम्मेलन' देशभर से हजारों सर्वोदय कार्यकर्ता प्रमेलन के अवसर पर बोधपया में इकट्ठे। जयप्रकाशजी सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। साप्ताहिकी जयप्रकाश प्रजासामाजिक समाजवाद की राह से होते हुए सर्वोदय तक पहुंच चुके थे। भारते भाषण में उन्होंने भूदान आंदोलन और सर्वोदय के महत्व की बनावटें हुए क्षण में जब यह घोषणा की कि मैं सर्वोदय आंदोलन के लिए अपना वेप जीवन समर्पित करता हूँ तो सम्मेलन के पटान में एक बिजली सी दौट गयी। कौन-कौन से 'जीवनदान' का ताता लप गया और तो और भूदान आंदोलन के प्रलेखी और पुरस्कर्ता बन गिनोका ने स्वयं अपनी छोटी से जयप्रकाशजी को लिखकर दिया, "भूदान-जन भूदान, धर्मोयोग प्रदान अक्षिण कर्मि के लिए मेरा जीवन समर्पण" भूदान आन्दोलन के इतिहास में वह अविस्मरणीय घटना थी। जिस क्रांति का सूत्रले जयप दिया, उन्ही के लिए क्रांति का जन्मदाता स्वयं बनना जीवन समर्पित कर रहा था।

जीवनदान के बाद उपचारादान

११ नितम्बर १९७३ को ऐंगी ही एक घटना अज्ञात रूप से फिर घटी। ११ नितम्बर का दिनोका का जन्म-दिन। धान उड़ी ७० वर्ष पूरे करके जीवन के ७६वें के प्रवेश किया था। संदेरे सत्ता दम बड़े का समय, धाम गरी के विनासे स्वयं विनोका जो द्वारा स्थापित किये गये परस्पर प्राथम्य के विनोका के जन्म-दिन पर अपनी धना के पून उन्हें समर्पित करने के लिए अपनी छोटी-सी सी आई-बहुतों का एक छोटा-सा समुद्र बहाई खोजित था। सर्वप्रथम प्रत्येका के बाद विनोका ने मोचना शुरू किया। सामने धाम गरी बन-बन जागाड कर रही थी। विनोका ने कहा,

"मैंने धानजन उपवास नहीं किये हैं। तुमपराम ने दिया है जिसे बहुत ही कम के साथ उपनाय मेरा है वह उपनाय ही करता है। इन इतिहास तो धमी तब मेरे २०-२२ हजार उपनाय ही होते हीने लेकिन मैंने उपनाय नहीं किये। धन मैंने उपनाय,

शुरू किया है—भापे दिन का उपवास तारीख ११ की, जिस दिन मेरा जन्म हुआ था और भापे दिन का उपवास तारीख २५ की जिस दिन मैंने गृह-त्याग किया था। इस प्रकार दो दिन मिलाकर एक पूरे दिन का उपवास होगा। मेरे प्रति दिन के खाने का खर्च ३ रुपया चलता है। (विनाया धानजन निजमर में ४ वीं १ सेर दूध और १५ गोलि पुन की चर्चितो प्रयुक्त लेते हैं। रोज थोडा ईतनागोड भी। यही उपरी सूखा है। पेट म बहुत पुराना 'घनर' होने से क्षण तो रई बर्ती स बन्द है।) माघमर में ३६ रुपया हास है। मैं सोच है कि सर्व सेवा सच के काम से लिए गरी तरफ से इतना दान दूना। माघ भर का ३६ रुपया धान पहले ही दे दूना। तब मेरा नय को अपना काम चलाने के लिए हर मास २०-३५ लाख रुपय की जरूरत होगी है। उपभर में देने हुए हमारे कार्यकर्ता, सहयोगी और सर्वोदय विचार में बहुत रुपये काय लागू इन प्रकार एक महीने में एक उपनाय करके उन्हें जो बचत होगी वह सर्व सेवा सच को अपना काम चलाने के लिए देने ही सर्वोदय आंदोलन का सर्व इम परिवर्तन से चलाना मुश्किल नहीं होगा यहिण।

नये कार्यक्रम का प्रारम्भ

इस प्रकार सभी उपनाय न करने वाले विनोका ने हर मास उपनाय करने का निश्चय किया। रोज 'केमिस्टिक का हिमाज करके नाना-मुना खाने खाने मछिनी सादमी' महीने में १ दिन के मौजनी की जो बचत होगी वह सर्व सेवा सच के काम के लिए उसे दान के देने की घोषणा। यह सब कुछ अपना धानगादा था कि कुछ खाने तो मुझे खाने की जले टीक से समझने में लगे हूँ। यथा से उठने ही विनोकाजी ने सातमाई से कहा, "हमारी सेवा से सच के ३६ रुपये सर्व सेवा सच को भरी दे दो।" विनोका ने अपने

भाषण में कहा था कि उनका अपना एक दिन के मौजनी का खर्च तो ३ रुपये होता है लेकिन परिवार में रहने वाले कार्यकर्ताओं का खर्च एक दिन का २ रुपये भापे तो धर्च से २५ रुपये होता है। उन्होंने कहा कि हिमाज की सरपस-की इतिहास महीने में एक दिन उपनाय करने वाले कार्यकर्ता अपने मोटा की बचत के वर्ष के २५ रुपये सर्व सेवा सच को दें। कुछ मिनो ने तरफाल अपने उपनाय-दान की राशि रखन हम लोगों को दे दी। इस प्रकार उपनाय-दान के एक नये कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ।

एक नया संकेत है

जिम तरह जीवनदान के समय धानदान के प्रवेश में स्वयं आदानान के लिए जीवनदान की घोषणा की उन्ही प्रकार धान फिर विनोका ने अपनी धार से सर्व सेवा सच का दान देने की घोषणा करने का सर्व कार्यकर्ताओं को इस बात का संदेश दिया कि हम सर्वोदय आंदोलन के लिए तन-मन तो बर्ती से काम कर ही रहे हैं, धन हमें सब जिस काम में से अपना धानजन दिया स्वयं सेन होये उसमें से कुछ 'धन' भी क्रांति खाने से बचत करके उन्ही काम के लिए दें।

भूदान आन्दोलन में हम प्रथम ५ अर्द्धशत दान सेवा होना ही रहा है। धान समाज के लोग अपनी जमीन से से मात्र भूमिहीन के लिए जमीन का दान करते और यह जमीन उन्ही धाम-महाज के भूमिहीन के माटरी जानी है। धाम-महाज ही ही दान करता है गुरु ही उन्ही माज कर ही है। देने वालों और लेने वालों का इतिहास प्रथम समान ही कर धाम-महाज में का धरुन सहा हो जाना है। वेना विनोका का यह उपनाय-दान है। "सुद ह, सुद ही से सेवा अर्द्धशत दान करे।"

×

विश्वविद्यालय : बेकरी बढानेवाले कारखाने

वंशीधर श्रीवास्तव

इन विश्वविद्यालयों की इनसे संबंधित डिग्री वालेको की अनुयायक शिक्षा देश में बेचल बेकार और निरन्त्रे तरफों की वृद्धि कर रही है। १९७१ में इन विश्वविद्यालयों की डिग्री वालेको से निकले हुए ३ लाख ६५ हजार प्रोजेक्ट बेरोजगार थे। १९७२ में यह संख्या लगभग दूनी यानी ६ लाख ३ हजार हो गयी थी। इसका धर्म हुआ कि प्रति वर्ष निकले वाले प्रोजेक्टों का बड़ा प्रतिशत बेरोजगार है। फल: बेरोजगार और बेकारी बढाने वाले इन कारखानों की बंद करने में संसद का किसी प्रकार का महत्त्व नहीं होगा।

विश्वविद्यालय किन के लिए

हमारे विश्वविद्यालय और डिग्री वालेज बेचल कुछ अल्पसंख्यक मुविद्यालय विभिन्न जगों की सफलता के लिए हैं और बेचल घोड़े से भादमियों को मुविद्यालयों पर एकाधिकार दिवाने में मदद करते हैं, और इस तरह हमारी उच्च शिक्षा एक मुविद्यालय सामाजिक और धार्मिक प्रणाली को बनाये रखने में सहायता करती है। यह शोध और शोधियों के दुबड़ों में बढे हुए समाज के प्रदान हियत हृत्को को स्वीडि प्रदान करती है। सब प्रदाने तो गोएएँ का आधिकारिक प्रदान करने वाली यह शिक्षा ससमानता और बौद्धिक सकोएँगा को बनाये का सुबेये बड़ा साधन हो रही है। हमारे विश्वविद्यालय अल्पसंख्यकियों के सबसे बडे गड हैं और इनके बे घनेशायें सभी भी पूरी नहीं होंगी, जो हमारा सोजधनीय समाजकार शिक्षा में बरतना है।

संस्कृत को बाद विश्वविद्यालयों की संख्या में एक तरह का विभंगोट हुआ है। यह संख्या २.५ लाख से बढकर २५ लाख हो गयी है। परन्तु अगर हम ऐसे सडके सडकियों को उम्र १७ से २५ वर्ष की हों, किहें विश्व विद्यालयों और डिग्री वालेको में पढ़ने का मोका मिलना चाहिए तो इस उम्र के सडके सडकियों का बेचल ३.२ प्रतिशत हवाई विश्वविद्यालयों और वालेको में मिलना पा रहा

है। धर्मात इन उच्च शिक्षा-संस्थाओं में पड सकेने वाले हमारे लहके-लहकियों का ६६ व प्रतिशत ऐच्छिक या अनच्छिदा रूप से विश्व-विद्यालय शिक्षा से वरिष्ठ रह रहा है। पूरी शिक्षा अब भी मुविद्यालय वृद्ध घोडे लोको तक ही सीमित है।

विश्वविद्यालयों से निकले हुए स्नातक और दूसरे लोको का ८० प्रतिशत हमारे समाज के ऊपर से लबके से घना है और इस प्रकार इस उच्च शिक्षा के कारण समाज में घनगों की प्रवृत्ति का पोषण हो रहा है, और वर्षभेद की पाईडिन् प्रॉडिन् गठरी होंगी जा रही है। जो २० प्रतिशत स्नातक शिक्षा में वन पर नीचे के स्तरको से घाने हैं वे भी घाने विभिन्न वर्ग में प्रवेश करत हैं और वे जिन समाज में घाने हैं उमें ही नीचे गिगाहू से दाने लणो हैं। संरक्षण के लिए यह प्रवृत्ति पातक है।

हिंसा और विनाश के विद्यालय

ये विश्वविद्यालय और वालेज शिक्षणय और विनाशालय विनाशालोको के गड हों रहे हैं। १६ दिसम्बर १९७२ को केंद्रीय सरकार द्वारा संरक्षण में यह घोषणा की गई कि विश्वविद्यालय स्तर की ३२६७ संस्थाओं में से १० प्रतिशत को धामयण नियम लागू कर रही हैं और सार्वजनिक सगति के विनाश में सगो रही हैं। यह बिना की बात है। सेरिअर इमने सचिब बिना की बात पर १६ दिसम्बर १९७२ को जून और सप्टेम्बर में बीच देश की शिक्षा संस्थाओं में घणाति पैदा करने वाले ५३१६ मान्ये हुए। इसका धर्म यह हुआ कि ६ सडकियों के बीच घानो देश के सभी विश्व-विद्यालय और वालेज कम गेनम एक बार घणाति-घन हुए और एक डिग्री भी दो बार घणाति के गिहार हुए।

हमने घाने इति विश्वविद्यालयों और संस्कृत इस्वीदुधयु और टेकनोलोजी की सफलता करके इन विश्वविद्यालयों और वालेको को घनय और एकाधिक कर दिया है। घान के घुम में इन टेकनिक संस्थाओं

की घानयकता है। परन्तु उनका सामान्य विश्वविद्यालय में साथ न रहना इन सामान्य विश्वविद्यालयों की व्यर्थता स्वतः सिद्ध कर देता है।

विश्वविद्यालय बंद हो

विश्वविद्यालय को बंद करने से जो घन बचे उसका उपयोग माध्यमिक शिक्षा के व्यर्थ-साधोवरण में बिना जाये। परन्तु माध्यमिक स्तर की शिक्षा के व्यर्थसाधोवरण का धर्म उत्तर माध्यमिक व्यावसायिक वालेज (पोस्ट सेकेंड्री बोर्डगतल वालेज) पोसना नहीं है (जेंगा मध्य प्रदेश में बिना जा रहा है) बकि सामान्य शिक्षा की सफलता की ही दतना व्यापक बनता है कि घान माध्यमिक स्तर के शिक्षित प्रकार के शिक्षणों में जो भेद है वह मिट जाये जेंगे सामान्य, वैज्ञानिक, टेकनिक और व्यावसायिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा एक साथ संघान-न, टेकनिक और व्यावसायिक हो। विश्वविद्यालयों के बंद होने के पतलवकर जो घणातक घानो हो वे इन संस्थाओं में घणातक का काम करें। नये पाठ्यक्रम के घनुनार करने को उनको संघारी होंगी चाहिए।

इस प्रकार के विद्यालयों के लिए जनता घषदा सरकार परतल पूजी, भूमि सनन और साड-गुडना दे। परन्तु अब हम सर्वसाधारण की शिक्षा (साग एजुकेशन) की बात सोचें हैं जो संरक्षणय गमात्रवाद में घानयक है, जो बिना भी सहायता विद्यालयी शिक्षा को सफल बनाने में सार्वजनिक सिद्ध होंगी और हम अनुयाय में गिन प्रौद्योगिक कारखानों और इति घानो का व्यापक वैज्ञानिक उपयोग बनत होंगा। व्यावसायिक और टेकनिक इति का उत्तरदायित्व बेचल विद्यालयी प्रणाली का भेद में काम नहीं करेगा। विद्यालय के सडके में सभी प्रकार के उच्च इग टू गिग में घान में। बरफे दिना गिगको, उद्योगी और घनगार के जेंगा और धार्मिक एवं सकार के सडकियों के यह काम पूरा नहीं होगा। पर- (इग पेंड १० पर)

संभल व सुन्दरतण्ड क्षेत्रों के बाणियों के सामूहिक प्रारूपण में सम्मति-गति और सहकार-पद्धति की व्यापक, समावर्ण प्रकट हुई थीं। सदियों के बाद, पहली बार लोगों को इज्जत से जीने का मौका मिला। ऐसा लगा कि हमारे इलाके में भाजारी सब सार्द्ध है। बाणियों के भारतवर्षणु के बाद मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री जी जब चम्बल-क्षेत्र के दौरे पर गये तो लोगों ने पुलिन घानो और चौबियों के बजाय सेतो के लिए पानी और बच्चों की शिक्षा के लिये स्कूल, कैंटीन की माग की।

संचालन से सहकार पद्धति

लेकिन दृष्टान्तित और संचालन पद्धति के विफल के रूप में जिस सम्मति-गति और सहकार-पद्धति को हमने सिद्ध किया, उसे क्षेत्र के गांव-गांव में संगठित करने का काम नहीं हो सका। विनोबा जी और जनप्रशासनी की सहाय्य तथा महिला लोचबाणी ने बड़ोनी की सपना में बाबूद भी गांव-गांव में धान-समाए गठित करने और उनके माध्यम से क्षेत्र में शक्ति और विकास के काम की पहल नहीं हो सकी।

मिशन के सामने सामाजिक काम है। उसे पहले से काम करते हैं, जिन्हें करने का बचन उसने समर्पण से पूर्व बाणियों को दिया था। जैसे समर्पणकारियों के मुखरमों की पंखी, उनके परिवारों की देखभाल, और उनका पुनर्वास आदि...

बानुनी पंखी के मामले में मिशन के द्वारा जो काम गिदने एक वर्ष में हुआ है वह सरोजनकर रहा जा सकता है। आशियर और सागर जैसी वे स्थानिक विशेष न्यायानियों में प्रमुख बागी सरदारों ने हत्या के कथय आरोपों में स्वेच्छापूर्वक भागे घाराप लीशार करने धाने धरम्य सारम, और धरुई शर्दे का परिचय तो दिया ही है। साथ ही धरराध माण, दंडमान और मोन शम्भ में स्वर्णिम धरमान ओडकर धाराध और धरराधी के प्रति नये तरीके से मोचने के लिए ठेग धाराध प्रलुभ जिने है। स्वाशियर में २० प्रतिगण और सागर में १२ प्रतिगण मुखरमे गिठ भये हैं। एक वर्ष में सभी मुखरमों का निवारण हो सका था यदि स्वाशियर न्यायानियों की विशेष

चम्बल घाटी

हृदय परिवर्तन : धीरज की जरूरत है — हेमदेव शर्मा

न्यायालय का दर्जा दिया गया होता। दिये गये धारासमन के अनुसार माननीय न्यायाधीशों को भला दिया जाता और उनके लिए समुचित स्टॉफ की व्यवस्था भी जाती। सागर में बापी समय तक विशेष-दण्डाधिकारी की बनी चलती रही, धन धार साय न्यायाधीश महोदय की बनी प्रसर रही है। अधिवेशन पक्षा के कर्मी सहजान की मुकद हस्त में दिया जा रहा पारिश्रमिक भी मुकदमा के निपटारे में विलम्ब का कारण बन रहा है।

उत्तर प्रदेश और राजस्थान के मुखरमे विशेष न्यायालय स्थापित करने में स्थानांतरित करने का काम राज्य-सरकारों का था। यह दाखिल से पूरा नहीं कर सके और मिशन को सहक ही इस काम में पटना पडा। सभी मुखरमों की सूची एक बारगी ले दी गई होंगी लो टोक था। दूसरी सूची तो जुलाई आशिर में मिली है। सैर, मिशन को तो यह काम पटना ही है। उत्तर प्रदेश के १४ और राजस्थान के ५ प्रकरण स्वाशियर विशेष न्यायालय में स्थानांतरित करने से लिए मिशन ने सर्वोच्च न्यायालय में पहल की है। ८ फरवरी को अंतिम मुखरम है। उत्तर प्रदेश के ५१ धारम-समर्पणकारी बाणियों के ११६ प्रकरण स्वाशियर और सागर स्थित विशेष न्यायालयों में स्थानांतरित करने के लिए मिशन प्रयत्नशील है। धार० एल० बोहनी एचनोट सुधीम बोटे, मई-पंखी, मिशन की धार से यह शर-कार्य कर रहे हैं।

मन को ऊंचा उठाना

जैन जीवन में समर्पणकारियों का मानसिक उन्नत हो, इस सदाशय से सब सन्तार कार्यरम मिशन में शुरु किया। काशीनाथ चिन्दी, सरला बहन और यरजल कुमार मिथु ने समर्पणकारियों से प्रत्यक्ष सम्पर्क रख कर उनके मन को ऊंचा उठाने की निरन्तर कोशिश की। काशीनाथ चिन्दी

के व्यापक सर्कल के कारण ही देश के मनीषी, मुखरम, समाजसेवी, साहित्यकार और रचनात्मक कार्यकर्ता भाई बहनों के सत्यप, प्रवचन आदि का लाभ समर्पणकारियों को मिला और उनके अध्ययन के लिए मुर्धाबुधों और सुजनसमक साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था हुई। गांधी विद्यापीठ, वेददी, गुजराल के भाई बहनों ने शिथिल लगाये खेत-बूट की छी, परेड व्यापार, सामुहिक गीत आदि कार्यक्रमों के माध्यम से उन पत्र को मोडने की कोशिश की गई। ध० आ गांधी सेना मण्डल के राममोहान दीक्षित; इन दिना में मन्दा काम किया। किन्तु उन्हा अधिन समय मिशन को इस काम के लिए उत्तमन्व नहीं हो सका। इन सभी प्रयासों का प्रत्यक्ष प्रसर भी हुआ है। प्रमुख बागी सरदारों द्वारा हत्या जैसे जघन्य-धरराधी में स्वेच्छापूर्वक की गयी धरराध स्वीकृति, पेंडोल के समय विरोधियों से की गई सदा वाचना द्वारा क्षेत्र में सद्भावना का विकास, विकासशील धार की ही अधिष्ठािका है। लेकिन जेल और धरराधन की दुग्ध घटनाएँ इन बात का सबेन है कि सभी मन में संक बाकी है। और इन दिना में मिशन की धार उमले भी बहो अधिक स्वय धारम समर्पणकारियों को करना शेष है। इस सच्चाई से इनकर नहीं किया जाता चाहिए कि धारमसमर्पणकारी भादवों का मानसिक विकास सब तक नहीं होगा जब तक कि वे स्वयं इन दिना में पूरे मनमोयोग से प्रयत्न नहीं करते। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका उद्धार उन्हें स्वयं करना है और देश के प्रच्ये और जगदीश नागरिक बनना है। नये जीवन की राह धर चलने में मिशन उनकी सहायता भर कर सकता है। यह सही है कि धारम-समर्पणकारियों का पूरा तरह हृदय परिवर्तन नहीं हुआ है लेकिन यह उमले भी बहो वे धारित सही है कि हृदय परिवर्तन एक

सहकार पद्धति का संगठन : शांति मिशन का मुख्य काम

प्रक्रिया है और उसके लिए सबको पैयें पूर्वक प्रतीक्षा करनी होगी।

समर्पणकारियों के लिए, मुगावली (पुना) में खुली जेल बनाने तथा ७ वर्ष या उससे अधिक राजा प्रांत आत्मसमर्पण-कारियों को उतारने रखने का निर्णय मध्य प्रदेश शासन ने लिया है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रवास चन्द्र सेठी और जेल-मंत्री श्री कृष्णपाल सिंह राज्य-शासन द्वारा लिये गये इस प्रगतिशील कदम के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। २ अक्टूबर ७३ को खुली जेल गुरू हो जाये और अत्यंत अल्पप्रकाश की उसका उद्घाटन करें यह शासन की इच्छा है। २ अक्टूबर के बजाय खुली जेल १४ नवम्बर को भी गुरू हो तब भी कोई हर्ज नहीं है। लेकिन जिन्हें खुली-जेल में काम करना है उन सभी अधिकारी व कर्मचारियों को नये इस्तान बनाने के काम में सहायक होना है इसलिए काम गुरू करने के पहले उनका इस दृष्टि से प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है। साथ ही जिन आत्म-समर्पणकारी भाइयों को उस खुली जेल में रहना है उनकी छवि भी जेल-विभाग ने तैयार कर ली होगी। यदि यह काम अभी तक नहीं किया गया हो तो वह प्रयोग गुरू करने के पहले ही कर लिया जाना चाहिए।

शक्ति कहां लगती है ?

म० प्र० शासन ने आत्मसमर्पणकारियों के पुनर्वास का काम उठा लिया है। राज्य द्वारा आत्मसमर्पणकारी बान्नी भाइयों को दी गई १,२०,००० रुपये की तात्कालिक—आर्थिक सहायता, ४२३६-७१ एकड़ भूमि, बैल, बीज, खाद और इति उपकरणों के लिये दी गई ६७,२२६ रुपये की पुनर्वास सहायता और ४५,३७१ रुपये छात्रवृत्ति के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री और उनकी सरकार निःसंदेह धन्यवाद की पात्र है। लेकिन सहायता का यह कार्य केवल सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा न हीकर पुनर्वास बोर्ड के माध्यम से किया गया होता तो निरश्चय ही किरण अधिक व्यापक रूप से उपयोगी और जल्दी होता।

आत्मसमर्पणकारियों के घर की समस्याओं में मिशन को बहुत समय और शक्ति खर्च करने पड़ी है। समर्पित भाइयों के जन्म जीवन के साथी और सहयोगी तथा उनके परिवार के लोग ब्रह्मर छोटो-मोटो बातों को बड़ा-बड़ा कर उनके सामने रखते हैं और मिशन उनकी सब समस्याओं को हल कर दे यह अपेक्षा रखते हैं। परिणामस्वरूप मिशन के दफ्तर का काम अनावश्यक रूप से बढ़ना जाता है। और क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का अत्यधिक समय और शक्ति इन्हीं छोटी-मोटो बातों में बर्ती जाती है।

ताल-मेल की कमी है

बैले आत्मसमर्पणकारी बाणियों की कठिनाइयों को सुलने के लिए शासन ने शिकायत प्रकोष्ठ की स्थापना जेल में की है। एक उपजिताप्यक्ष और एक उपाधीक्षक (पुलिस) इन्हीं काम के लिए नियुक्त भी है। लेकिन शिकायत प्रकोष्ठ बहुत सक्रिय नहीं है। यदि शिकायत प्रकोष्ठ सक्रिय हो, उसके लिए नियुक्त अधिकारी केवल उसी काम के लिए हो, उन्हें आवश्यक साधन दिये जायें और वे सम्बन्धित अधिकारियों से सम्पर्क करके समर्पित भाइयों की कठिनाइयों दूर करने में पूरी तत्परता से सहायता करें, तो मिशन का समय और शक्ति अधिक उपयोगी बान्नी में लग सकती है।

मुख्यमंत्री की अनुसूचना और शासन की उद्देश्यनीति के बावजूद भी प्रशासन का अनुभव बहुत अच्छा नहीं रहा है। जिना मुख्यमंत्री के बोर्ड काम होता नहीं है और मुख्यमंत्री अन्य आवश्यक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण अपना समय इस काम के लिए नहीं दे पाते, जिना कि उन्हें देना चाहिए। सम्बन्धित विभागों में ताल-मेल की कमी है। परिणामस्वरूप काम में गिरफ्तारी तो है ही फनावर्यन विनम्ब भी होता रहता है। समर्पणकारियों में घसटोप और मिशन के प्रति गलतफहमिया पैदा करने के लिए प्रशासन का यह स्वभाविक

और परंपरागत तरीका काफी है। समर्पित भाई समझते हैं कि सरकार ने तो सब कुछ मिशन पर ही छोड़ दिया है मिशन जो चाहे सो कर सकता है, लेकिन करता नहीं है। शासकीय अधिकारियों व कर्मचारियों की वास्तविक भी इस गलतफहमी को बढ़ावा देने में सहायक रही है। यदि राज्य-शासन ने इस काम के लिए अपने ही अधिकारियों व कर्मचारियों में से समझदारों पूर्वक अधिक उपयुक्त व्यक्तियों की खोज की होती तो उसे ऐसे लोग तो अपने में से ही मिल सकते थे, लेकिन वैसी खोज शासन ने दिखाई नहीं देती।

अभी तक के अनुभव के आधार पर मिशन को धागे बौन से काम करने हैं यह मिशन को तय कर लेना चाहिए और उसके अनुसार अपनी नीति निर्धारित करना चाहिए। जेल के अन्दर समर्पणकारियों के मानसिक विकास और क्षेत्र में सहकार-पद्धति (भूदान ग्रामदान पद्धति) की उपयोगिता की प्रतीति लोगों में कराते हुए सम्मतिमानित सगठित करने का काम मिशन का मुख्य काम है। छोटी-मोटो बातों को सरकार पर ही छोड़ कर उसे अपने मुख्य काम को ध्यान में रख कर योजना बनानी चाहिए और उसका आयोजन इस प्रकार करना चाहिए कि क्षेत्र में लोग जागृत हो, अपनी जिम्मेदारियों को समझें और उन्हें निभाने में धागे पायें।

मुख्यमंत्री की अनुसूचना, राज्य-शासन की सहायता, प्रशासन और सहयोगी तस्मात्तों से जो भी सहयोग मिले इतना-पूर्वक स्वीकार करते हुए मिशन को अपने और क्षेत्र की जनता जनार्दन के भरोसे काम लडा करना होगा। तभी क्षेत्र में पुरस्कार का संचार होगा। मिशन की छवि निरदरेणी और सरकारों की जो मिशन की कमी सुननी है, कभी सुनी अनसुनी करती है और कभी बिनकल नहीं सुननी, वे भी मिशन की राय को बड़ परेनी और उन पर प्रमन करने के लिये मिशन के साथ शर्योग करने की तत्परता दिवायेंगी।

खुली जेल का सफल पूर्वाभ्यास : नरसिंहगढ़ ट्रांजिट कैम्प

—पद्मशंकर कुमार सिन्धु

सम्पूर्ण पाठो के ऐतिहासिक भास समर्पण के बाद ग्वांतियर सेन्ट्रल जेल में गठित विशेष सत्र न्यायालयों में प्रथम स्वीडिश का अग्रिम कीर्तिमान स्थापित करने वाले जिन प्रमुख बाणियों को भारतन नारायण की सजा सुनाई गई थी उन्हें खुली जेल में रखने से पूर्व राज्य शासन ने ट्रांजिट कैम्प में खुली जेल व्यवस्था का प्रस्तावित करने की योजना बनाई। इसके अन्तर्गत नरसिंहगढ़ उप जेल को प्राप्त समर्पित बाणियों के ट्रांजिट कैम्प के रूप में प्रयुक्त किया गया। ट्रांजिट कैम्प को प्राप्त समर्पित बन्दी बाणियों के नये जीवन का प्रवेश द्वार भी कहें जा सकता है। क्योंकि सम्पूर्ण पाठो ट्रांजिट मिशन के अग्रिम सहयोग से इन ग्वांतियर में नवजीवन संस्कार ग्वांतियर की मजूरी सुविधा पत्र का पाठो में बढी सफलता के साथ निभाई है।

इन ग्वांतियर को सफलता करने के लिए अब सन्तुष्ट पाठो शान्ति मिशन ने मेरी सेवाएँ काहीं तां बाणी सहायों के सान्निध्य की योग्यकर कल्पना और फिर उनकी योजना धारा को सफलतापूर्वक दिशा में सहायित करने की पहल से मुझे मुसाम।

१ अगस्त १९७३ से प्रारम्भ हुए इन नवजीवन संस्कार ग्वांतियर में कुल १४ ग्वांतियरवासी हैं। मोहरगिह, भाषोर्गिह, भाषोर्गिह और भाषोर्गिह के साथ छोटे कालोर्गिह, स्वर्ण गिह, माकाग्राह, जलकर्मगिह, मनोराम, विजालार, प्रभा-गिह, हृदयगाम, राधकाम और गवाधर। मेरी पूरे की यह धारणा कि धररापी सम्पन्न नहीं होने उन्हें परिवर्तितमा धररापी बहार दे देती हैं पहा धारण का प्रथम मही उपरी। नवजीवन परिवर्तितमा के अग्रिमको मानवता के बीच यहां के अज्ञानी मान्य ने मेरे जीवन को धनधर दिया।

धररं धररं धररं, सीता, रामारण और विष्णुसहस्रनाम के साथ गाथी-धर्म और विचार के सम्पन्न बने हैं इन्हें धार्मिक

दिशा दी। धरमान सफाई और अपने बग्यों को स्वयं करने के सफलता से इनके जीवन में धन की पर्येष्ट प्रतिष्ठा हुई। कुछ समय में ही निरधार बाणी भाइयों ने साधरता के महत्व की स्वीकार किया और फिर धरर शान से लगाकर स्वाध्याय तक का कार्य नियमित रूप से करने लगा। सभी ग्वांतियरवासी बली भाई सामूहिक प्रार्थना और सामूहिक भोजन करने लगे।

जब १४ अगस्त ७३ को बाणी भाइयों ने अपने धामसमर्पण की पहली वर्षादा मनाई तो स्वच्छता से उन्होंने महीना गाथी के बीच को साक्षी मानकर बोली, गिग्रेट धारण और मास को विज्ञानित दे दी। प्रेरणादायी सरलता के इस धररुते पूर्व पर उनके द्वारा लिय गये धररुत सफलता से उनका मानस और ऊचा उठा, जलता के जीव उनकी स्थिति और स्पष्ट हुई। मुझे ऐसा लगते लगा कि यह ग्वांतियर मात्र बन्दीगृह और खुली जेल के बीच का ही ट्रांजिट कैम्प नहीं है बल्कि मानवता और परमात्म के बीच का ईश्वर ट्रांजिट कैम्प भी है। विद्यालय और प्रयोगशाला धररुताहार मुक्त हो धारण जग, कोष घर, तीस को जीवन की साधना में लग रहे हैं वह ईश्वर के नजरको पहुंचाने वाला ही रहना है।

१ अगस्त १९७३ से ३० जून ७३ तक इन ग्वांतियर का पहला सैमागिध चल रहा था। इन को प्राप्त समर्पित बन्दी बाणी भाइयों को व्यक्तित्व कठिनाइयों को हल करने और धररं के रूप में धररने वाले सम्बन्धित विभाग के प्रमुखों द्वारा दिये गये सौमिक धारणायुक्तों को स्वायत्तारिण कर दिखाने से मुझे बहुत सा समय प्रदेन की राजधानी में देना पडा।

इन ग्वांतियर के सभी ग्वांतियरवासी जिनमें दो साथ रहने के धीयन सुरक्षार वाले मोहरगिह, और भाषोर्गिह, और भाषोर्गिह हैं, जिना जितनी सुविधा व्यवस्था के पूर्णतः सम्पन्न होकर बहुत से धीयन पर मुक्त हुए और परिवर्तित धररिध बरी शान्ति के साथ धररने पर लक्ष्य यह मान में विज्ञानर मजस से नरसिंहगढ़ जेल शान्ति का मने। धररुत सम्पन्न और धररुत स्वीकृति के बाद धररुत परिवर्तन की एक और बन्दी पर भी मे निरन्तर एक सन्तुष्ट के पक्षे बाणी भाई लगे उन्हें।

नवजीवन ग्वांतियर को धररों तक जिन महामुसामों ने देखा है वे बाणी भाइयों के विनम्र और सफल स्वभाव की साक्ष्य करने साथ लेकर लगे हैं। विधि विभाग के मनी कृष्णपालगिह, वन राज्यमन्त्री उमराव गिह और लोकरगिहए कर्मो तेजपाल देयर्न मोदी ने नवजीवन संस्कार ग्वांतियर का निरीक्षण करने के बाद इसकी कार्य पद्धति को सराहा है।

प्रादेशिक जेल व्यवस्था और प्रशासन के इतिहास में धररुतधरिध मनुवृत्ति के सौम्यता धररुतधरिधों के हृदय परिवर्तन का यह एक मूला प्रयोग था जिसकी सफलता पर आज खूबस पाठो शान्ति मिशन को ही नहीं बल्कि प्रादेशिक जेल व्यवस्था एक प्रशासन को भी गर्व है।

नवजीवन संस्कार ग्वांतियर के माध्यम में धामसमर्पित बाणियों ने अपने नये जीवन की देहरी पर पर रत कर धररों तक जो धररुते दूरी तक की है उनमें, धाररणीय सरलता रहन प्रदेन सहीरुध मजस के धररुत बाणीयय विवेदी, धररुतधरिधों के गोपाल भाई भदुर और भोगत बिना मर्याद मजस के मन्त्री धररुतधरिध भारतीय का उल्लेखनीय योगदान रहा है। हृदाय साथ धररुत करने के लिए समय-समय पर दण्ड भाई, महावीरगिह, हेमदेव धररुत और लक्ष्मीनारायणगिह के साथ १० लोकरगिह ने जो सहाय की है उनका भी इन ग्वांतियर के ग्वांतियरवासी बाणी भाइयों पर पर्येष्ट प्रभाव पडा है।

नवजीवन ग्वांतियर के नाम से प्रयुक्त नरसिंहगढ़ उप जेल के जेलर बालाजी शान्ति जी विचारों ने जिन धरिध के साथ जेल मिशन का गानन करने हुए धररुतधरिध का सन्तुष्टता दिन जिनन किया है—उमना ही धररुत पर परिणाम हमारे सामने है कि नवजीवन संस्कार ग्वांतियर की व्यवस्था में सतार और शान्ति मिशन एक दूसरे के पूरक हैं।

धर जता हम इन नवजीवन ग्वांतियर के ग्वांतियरवासी बाणी भाइयों को दो धररुतधरिध से खुली जेल में रखने की तैयारी कर रहे हैं, वही हूने हम धररुत का बराबर धररुत रखना का धरिधित धररुतधरिध को हम मनीरुतधरिध हम में इन प्रकार सहायित करें कि धररुत, इनकी धरिधधरिध और भी सुधरिध हो सकें।

शिखा : स्कूल से खेत खलिहानों तक

(पेज ६ से जारी)

खेत-श्रमियान, दूकान, सरकारी दफ्तर, खानें और कारखाने यदि सभी शिक्षा लेने-देने के साधन नहीं बने तो शिक्षा को सार्वभौमिक नहीं बनाया जा सकता ।

और फिर अगर इन व्यावसायिक विद्यालयों में जो ट्रेनिंग मिलनी है, उसे अगर उन स्थानों पर पूरा नहीं किया गया जहां सचमुच काम होता है तो विद्यार्थी का सामाजिक व्यक्तित्व विकसित नहीं होगा जो लोकतंत्र की सफलता की सबसे बड़ी शर्त है ।

इन माध्यमिक संस्थाओं में सर्वत्र शिक्षण का माध्यम मानुभाषा या क्षेत्रीय भाषाओं हो ।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा का व्यवसायीकरण तब अधिक सहज और प्राकृतिक होगा जब प्राथमिक स्तर की शिक्षा भी धनिसार्य रूप से उत्पादन और विभाग बाणों से सम्बन्धित कर दी जाये और समाजोपयोगी उत्पादन काम शैक्षणिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन जाये । धनः इस स्तर की शिक्षा

भी एक साथ संवैधानिक, प्रायोगिक, संसु-धल और टेकनियन हो । सामान्य विषयों के शिक्षाएण का पूरा मूल्य प्राप्त करने के लिए बौद्धिक शिक्षा और हाथ के काम की शिक्षा का समन्वय किया जाये ।

प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा का ढांचा ऐसा बनाया जाये कि वह बच्चों के लिए ही नहीं यमस्त्रों के लिए भी सुबन हो । यह शिक्षा व्यक्तिक में ज्ञान और निर्वाण-शक्ति के विकास के साथ इस भावना का भी सुबन करे कि यह समुदाय का अंग है और उमना अपने और दूसरों के प्रति सधतात्मक उत्तरदायित्व है ।

जाटिर टैरिब ऐसा ढांचा तभी बनेगा जब इस स्तर की शिक्षा भी स्कूल की चट्टारदीवारियों के बाहर खेन-गन्धियाणों, दूकानों-कारखानों में दी जाये । निर्वाण रूप से विद्यार्थी समुदाय के इन क्षेत्रों में जटा-गन्धियुच काम हो रहा है शिक्षा प्रदण करे, और इस प्रकार स्कूल के बाहर विराज कर समुदाय के उणा-दन केन्द्रों में काम करता विद्यालय के टाटम-

टेशन का अंग हो ।

धनः व्यवस्थापना इस बात की है कि अधिवाधिक विद्यार्थी अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक एक ही संस्था में एक स्तर से दूसरे स्तर तक अधिध-धायानी ले जा सकें । धनः विभिन्न प्रकार की शिक्षा संस्थाओं, व्यवस्थापकों, पाठ्यक्रमों और स्तरों के बीच द्विधम अन्तरोध और धीनचारित और धनोनचारित शिक्षा के बीच का व्यवधान समाण किया जाये और विद्यार्थी प्रारंभिक स्तर की परम्परित धनिसार्य शिक्षा-काल को समाण किये बिना ही उच्च शिक्षा प्रदण के लिए स्वतन्त्र हो । उन्हें शिक्षा की एक धायना से दूसरी धायना में जाने की पूरी स्वतन्त्रता हो । इस प्रकार की पुनराकनंन शिक्षा (रिप्लेंट ऐडुकेशन) विद्यालयी और अधिवा-गयी शिक्षा के विरोध को समाण कर देगी । इसका यह भी अर्थ हुआ कि संस्थाओं में प्रवेश पाने की बगौठी धनोरधारित और उत्पाद हो और यह विद्यार्थियों की व्यवस्थापकों और उनके व्यावसायिक अर्थव्य की ध्यान में रख कर निर्धारित की जाये, उनके स्कूल के प्रमाण-पत्रों और डिप्लोमाओं के आधार पर नहीं ।

J. S. T.

ज्योतिन्द्रा स्टील एण्ड ट्यूब्स लिमिटेड दिल्ली ने

बिहार के लिये अपने बितरण के रूप में नियुक्त की है :

मेसर्स केडिया एजेन्सीज

डाक बंगला रोड, पटना

फोन : १०१०

भाई० टी० सी० (टाटा) बालिगा, धी० एम० टी, जे० टी० सी०
एवं त्रिन्दत पाइपिंग के भी बियेता

उत्तरप्रदेश के लोकसेवकों के नाम

[निम्न 19 महीनों से यह चिट्ठी आपकी सेवा में इस भाशा से निःशुक्क भेजी जाती रही है कि आप भ्रूयान-यज्ञ के प्राहक बन जायेंगे। बर्द मित्र बन भी गये हैं। जो प्रकेले न बन सकने हो, २-३ मित्र मिल कर प्राहक बनें या अपने मुहब्बे के किसी समर्थ साथी या सख्या को प्राहक बनायें, जिससे आप आन्दोलन के समाचारों से अवगत रहें। इस माह से यह चिट्ठी तो पहले सप्ताह में प्रकाशित होनी रह्यगी, परन्तु थक निःशुक्क नहीं भेजा सकेगा।—संयोजक]

हमो शक्ति जागरण : ७ धीर व मिन-स्वर को प्रदेग वा चौपा धीर अन्तिम स्त्री-शक्ति जागरण शिविर वेदारनाथ के निवट चमोली जिले के रामपुर गाव में हुआ। पनधोर बर्षा धीर टूटी हुई सडको के बावजूद गोमेधवर, टिहरी धीर कोटद्वार के भगवा शासपाल के गावों से भी बहिनें आई थी। इस शिविर में कलेज की दो छात्राओं को छोड़कर सब ग्रामीण महिलायें थी, जिनमें से अधिकतर ने शारावन्वी सत्याग्रहों में भाग लिया था। शिविर का सभोजन उत्तरा-सण्ड सर्वोदय मण्डल के संयोजक श्री प्रानन्द सिंह बिष्ट धीर केदारनाथ के निष्ठावान सेवक श्री केदार सिंह रावत ने किया। भ्रातृ-पान के गाव के लोगों ने अपने खेतों से धान खोद कर दिये धीर अन्न खाद्य-सामग्री भी दी।

अगले दिन अधिकतर शिविरार्थी बहिनें निर्मला बहन के साथ केदारनाथ की यात्रा पर गयीं। केदारनाथ की २० कि० मी० की चढ़ाई की पदयात्रा उन्होंने हलते हलते पूरी की। एक बहन को दूध पीती बच्ची को गोद में लेकर गई थी। प्रायः शकराचार्य की समाधि के निकट मंदिर के प्राणण में हुई धाम सभा में ब्रह्म विद्या पर निर्मला बहन का प्रवचन हुआ।

१६ सितम्बर को लखनऊ गांधी भवन में प्रदेशीय महिला सम्मेलन हुआ, इस में भारतीय ग्रामीण महिला संघ के यत्ना, कई जिलों की यात्रा-संयोजिकायें आई थी। प्रायः प्रत्येक जिले में एक-एक पदयात्रा निकालने की योजना बनी। लखनऊ, कानपुर धीर भागमा में एक से अधिक पदयात्रायें निव-

सेंठी। जहाँ-जहाँ बस्तूरता द्रुष्ट धीर ग्रामीण महिला समाज के बैन्ड है, वहाँ निश्चित रूप से यात्रायें निकलेंगी। हरिजन सेवक तथा वे भी अपनी बाल सेविनाओं को इन यात्राओं में शामिल होने के लिए निर्देश दिये हैं। यात्रा-टोलियों को विपरी के लिए साहित्य गांधी ग्रामों से शायद हो सकेगा। कई शिविरों में धीर सासुरों से उत्तराखण्ड में हमारे साथियों ने घर का काम स्वयं सभालकर अपनी सहधर्मिणियों को शिविरों में आने का प्रवसर दिया। आशा है ११ से १७ अक्टूबर तक स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के दौरान सभी लोकसेवक घर का दायित्व सभालकर बहनों को यात्रा में शामिल होने की प्रेरणा देंगे धीर इस कार्यक्रम को सफल बनायेंगे।

उपवास दान : ७६ बें वर्ष में प्रवेश करने के दिन (११ सितम्बर को) पवनार से वाका के ये शब्द भ्राने पड़े होंगे, "इन दिनों मैंने उपवास शुरू किया है, एक है ११ ता० का आज का धीर दूसरा २५ तारीख को।" इनने से एक उनका अन्न धीर दूसरा गृह-त्याग वा दिन है। इस उपवास से एक वर्ष की बचत भी रकम—३६ रु० उन्होंने सर्व सेवा सच को धान देते हुये भणोल की है कि "हमारे साथी, कार्यकर्ता, सहयोगी, सर्वोदय विचार में श्रद्धा रखने वाले जितने भी लोग भारत में हैं वे महीने में अगर एक उपवास करे धीर साल भर वा जो सार्ध होगा उपवास का वह सर्व सेवा सच को देंगे तो बहुत बड़ा काम होगा।" उन्होंने देश भर में ५० हजार उपवास करने वाले लोगों की अपेक्षा रखी है। रचनात्मक कार्यकर्ताओं की

सभ में इसकी व्याख्या करते हुए यात्रा ने बहा भाज तक हमारा काम सर्व (सब) के दान से चलता था, भव गुड दान से चलेगा।

उपवास-दान देने वाले दो प्रकार के लोग होंगे। २५ रुपये धीर ३६ रुपये वार्षिक देने वाले, परन्तु यह दाता की इच्छा पर छोड़ दिया है। कई मित्रों ने सेवाप्राप्त सम्मेलन में ही अपना उपवास-दान सर्व सेवा सच को दिया धीर वहा से अपने-अपने क्षेत्रों में अधिक उपवास-दाता तैयार करने वा सफल लेकर सोटे। लखनऊ के हकीम श्यामदास जी ने बताया कि वे सिंधी समाज से ५० उपवास-दानियों वा दान भगले २ माह में भेजेंगे।

जिस सबके लिए धरने छोटे-छोटे समूहों, धीर जिला सर्वोदय मण्डलों की बैठकों में विचार कर तुरन्त प्रमल करने के लिए एक व्याव-हारिक कार्यक्रम मिला है। यह केवल उपवास करने वाले को ऊंचा उठाने के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे सगठन को गुड साधन लेकर ग्रहिला वा कारगर शस्त्र बनाने का अभिनव प्रयोग है। भारतीय लोकजीवन में धीर सास-तौर से राजनैतिक पक्षों द्वारा अपने कांयों के लिये चन्दे के रूप में, जमा किये जाने वाले काले धन के कारण आई हुई मनीता को दूर करने वा एक नया रास्ता खल गया है।

सहारा महा अभियान : कई वर्षों से सहारा में चलने वाले सचन पुष्टि अभियान पर एक शार पुनः देश की शक्ति लगाने का निश्चय हुआ है। इसके लिए नवम्बर से अप्रैल तक का एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया है, जिसमें प्रखण्ड स्तर के शिविरों, पदयात्राओं धीर ग्राम-गाव में वायसभायें गठित करने की योजना है। इस अभियान के लिये देश भर से ऐसे २५ वरिष्ठ कार्यकर्ता जो प्रखण्ड के काम का दायित्व ले सकें धीर १२५ अन्य साथियों की मांग की गई है। बंगाल से धारु बाबा धीर तमिलनाडु से

विना टिप्पणी के

में भूदान-यज्ञ पत्रिका का प्राहक, लोक सेवा तथा प्राथमिक सर्वोदय मंडल का सचोदक हूँ। मैं सगतावर पत्रिका पढ़ते आ रहा हूँ। कुछ ही दिनों से मुझे पत्रिका में कुछ कमियाँ मिल रही हैं। जिनके मार्ग-पथ पर यह सत्सा चल रही है, उनकी अनमोल बाणी नहीं दिख पाती, मेरी आपसे व्यक्तिगत प्राह्रह व निन्ता है व इसे आप मुझसे ही सम्बन्धित कि हर पत्र में बाणूजी की बाणी जहर लिखी हो, ताकि वे व पुराने पाठक पत्र वर उपयोगी सिद्ध कर सकें और विशेष लाभ उठा सकें। बाणूजी की बाणी में इनकी कुछ प्रसार शक्ति है वहाँ रीछपति मुत्तु हनुमान। वा चुप साधि रहेक चलना। राम काज सधि तत्र आनारा। गुनगहि भयज पर्वनाकारा ॥ घाम इसे साँचिए, समझिए, उचिता जवे तो जकर व्यक्त्या करे।

धर्मदीप राम,

मु० व पो० सोतावर, बालोदर
जिला दुमंग (म० प्र०)

मैं कुछ ऐसा अनुभव करता हूँ कि जबसे भूदान-यज्ञ वनास से राजधानी दिल्ली पहुँचा है, उस पर भी वहाँ की हवा का प्रसार हो गया है। वहाँ भी देश के हर व्यक्ति को उदय न चाह कर पक्ष-विषेय की बान ज्यादातर बहने लगा है और सरकार का प्रत्य राजनैतिक दलों की भाँति झालोचन बन गया है। सर्वोदय का उद्देश्य तो रचनात्मक है और होना भी चाहिए न कि झालोचनात्मक ही झालोचनात्मक। शायद रचनात्मक, सर्वोदयी विचारधारा यैली पीडी धीरे-धीरे साम्राज्य हो रही है। मैं भूदान को कई साल-से पढ़ना आ रहा हूँ और एक लोचसेवक के नाते कुछ न कुछ रचनात्मक काम भी करता रहता हूँ। अब इसके पढ़ने में बहू रस नहीं आता।

प्रताप चन्द्र जैन, २१/६३

धूलिसामंज, धारागा-३ (उ. प्र.)

हमारा धान्दोलन असफल रहा, जनता सबसे बड़ा प्रमाण है कि हम अपने लक्ष्य का

सिद्धान्त, जनता में से 'दे-इज्म' (हमारा काम हमारे प्रतिनिधि, मार्ग-वाप, सरकार या कोई तानाशाह करेगा) की भावना को जनता में भी दूर नहीं कर सके, जिनका कि धामदान हो चुका है। बल्कि आजकल हम सरकार के कामों की झालोचना या समर्थन वर अपने इस उद्देश्य से भी चुन रहे हैं। व्यक्त्या के अन्दर ही समाधान ढूँढकर या उसकी झालोचना-या समर्थन कर कालि करने की कल्पना कितनी मुन्दर है? इससे कितनी अधिक लोकशक्ति जाग्रत होगी।

इस धान का सबसे ताजा उदाहरण है, हमारे द्वारा गेहूँ के सरकारीकरण पर ध्याताया गया रस। हमने सरकार की झालोचना की, उसके समक्ष कुछ सुभाव रखे और ध्याता की कि वह उन्हें मान ले। हमने जनता को बोर्ड टिप्पणी दी। जिन गाँवों का धामदान हो चुका है, उनमें से कुछ गाँवों को तैयार करते कि वे यह धोपराग वर देने कि उनके यहाँ इतना गेहूँ हुआ है, इतना उन्हें साल भर तक खाने के लिए चाहिए और इतना बीज के लिए, इतना वचना जिते वे प्रमुख तागत वर, जो उन्हें धायी है, सरकार को देने के लिए तैयार है। धगर सरकार इससे प्रथित गेहूँ लेने की कोशिश करेगी या इससे कम भाव देगी तो सार, धान सत्याग्रह करेगा।

किसी काम की, या कालि की सफलता के लिए नीयन हिम्मत माहुर व मातल्य चाहिए। हम में सानल्य है, नीयन के बारे में वभी-वभी शंका पैदा होती है। फिर भी बहू है। साहस का मोवा नहीं धायता या हमने ऐसे मोवा को टाल दिया। हमारी सबसे बड़ी शक्ती है—हिम्मत (सम्भीक)।

भाज की स्थिति में धार्मिक कालि की हिम्मत क्या हो सकती है? जिन प्रकार गांधी जी ने बहा धा रि समुद्र प्रहृति का दिना हुआ है और धम वरना मनुष्य का धयिकार है धनः समुद्र से नमक बनाना

हमारा मौलिक धयिकार है; उसी प्रकार हमें धाम सभाओं से यह धोपित करवाना चाहिए कि धाम की व्यक्त्या हमारा, उसमें चुनाव व निर्णय करना हमारा मौलिक धयिकार है और उसमें सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। 'धामस्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध धयिकार है'—यह नारा धाम की धयिधक कालि की सही हिम्मत हो सकती है।

इसके लिए हमें धामसभाओं से यह धोपराग करवाना चाहिए कि धाम व नगर समाज की प्रथम व सपठित इकाई हैं धनः प्रशासकीय व धन्य कार्यों के लिए वे सक्षम व पूर्ण हैं और जिला, प्रांत व देश भी इकाइयाँ वा धर्म्य निर्णय करवा धाम में समन्वय व सतुलन बनाने वा है, उन पर धामन करने वा नहीं। धर्यान धाम व नगर धनने धाम वे सार्वभौम गणराज्य हैं और जिला, प्रांत और केन्द्र उनके सध। धन वे इकाइया धनने यहाँ की विनाश, स्वास्थ्य, न्याय, धानि, ध्योगिक, वितरण, उत्पन्न, निर्माणकार्य धारि की व्यक्त्या स्वय करेगी और इस समन्वय में प्रांतीय व केन्द्रीय सरकार वे नियम, वानून व धाँदेन नहीं धामनेगी और न उनके धर्मचारियों को धननेक्षेत्र में धार्य करने देगी। साध ही भूमि वा लगान, धाय-वर, विक्रय-वर, मवन-वर, ध्योगिक-वर धारि वे स्वय वगुल कर रही हैं। प्रांतीय सध के लिए उत्पन्न-कर, सध-वर, मनोरजन-कर धारि हैं और केन्द्र के सध के लिए बड़े उद्योगों के उत्पादन-कर, धायत-निर्धान वर धानि हो सकते हैं। वे यह भी धोपित वर दें कि धंन की समल भूमि उनकी है और उनका वितरण, पुनर्वितरण और बढोबस्त वे स्वय वर रही है।

धगर सरकार इगवा विरोध करे या इनके पातन में धरचन काले तो हम गाव को सत्याग्रह के लिए तैयार बनना होगा।

धगर हमें ईमानदारी से कालि बनना है और बहनामोह से पट्टी पर उत्ताना है तो हमें इग पर गभीरता व सकिन्धना में विचार बनना होगा।

मदन मोहन ध्यात

१३ धरंता टाकीज के धाय
रतलाम (म. प्र.)

स्त्री को सबसे पहले निर्भय बनना होगा

(पत्र ५ से जारी)

ध्यान में था सकती है। विज्ञान ने आज हमारे सामने जो चुनौती लगी कर दी है, उसे हम सब जानते हैं। यदि विज्ञान की शक्ति को ठीक दिशादर्शन नहीं दिया गया तो वह दुनिया को सर्वनाश की धोर ले जायेगी। इसलिए इसके धारण समाज की रचना प्रक्रिया की बुनियाद पर ही हो सकती है सभी समाज बनेगा, यह धारण की एक मान्य राय है। प्रक्रिया समाज की स्थापना सभी होगी, पर प्रक्रिया के लिये आवश्यक गुणों का विकास होगा। प्रक्रिया के लिये आवश्यक गुण मानव मात्र में मौजूद हैं, पर धारण के लिये तय्य मानवी प्रकृति के कारण स्त्रियों में वे अधिक तय्य हैं। इसलिए प्रक्रिया समाज की स्थापना के नाजिलतय्य में स्त्री ही प्रधान रहेंगी। उनकी शक्ति का विकास करना आज एक सामाजिक आवश्यकता है। स्त्री शक्ति नियंत्रण शब्द नहीं है, वह गुणमय शब्द है। प्रक्रिया का धोष विधा-यक गुण यानी स्त्री-शक्ति। जहाँ बड़ी वे गुण हैं, वहाँ उनका परिपोष करना होगा। इसलिए आवश्यक है कि समाज का धाराण, जो धारण याद विज्ञान में पडा है, उसे जगाये।

रही है, क्योंकि धारण समाज में धोर स्वयं स्त्री के मन में उनके शरीर का ही मूल्य है, जिसके कारण वह धारणकार का शिवाय बन जाती है धोर इमजिले खुद को भयभीत तथा भयुक्त मानती है, क्योंकि मानवमात्र को मान्य प्रक्रिया का शिवाय उममें हीन लिया गया है। इन स्थिति में ऊपर उठाने के लिये स्त्री को क्या करना चाहिये?

मान बहनें पुरुषों पर प्रभावित है। गुणों में अपने स्वार्थ के लिए स्त्रियों को पराजयभी बनाया है। स्त्री को अपने मन पर लडा रहना चाहिए। उनके लिए सबसे पढ़ते ही उसे निर्भय बनना चाहिए। उनकी शक्ति शक्ति जगूनी चाहिए। उसे शक्तिमान में विश्वास कर, विश्वास से विश्वास तक धारण चाहिए।

समय तथा व्ययर्ष्य का विकास करना चाहिए। दुर्जनता का धारण सभी हो सकता है जब उममें कई गुण शक्ति परिणाम में सज्जनता साधन लगी होनी है। स्त्रियों पर होने वाले धारणकारों का मुकाबला सभी होगा, जब स्त्रियों का समय गुण भोग्युक्ति से कई अधिक परिमाण में समाज में पनपेगा। धोर यह सभी बनेगा, जब समाज में मुझ स्त्रियां प्रवर दक्षार्थ का धारण करेंगी धोर पूरे समाज में सकल्युक्ति का स्तर ऊपर उठेगा।

समय गुण के विकास के लिए धारण धारणों की पुन प्रतिष्ठापना करना आवश्यक है। जिस तरह गृहस्थधर्म की प्रतिष्ठापना विधिबद्ध हाते है, उसी तरह मानवस्थायम की विधिकर प्रतिष्ठापना होगी चाहिए। उनमें गृहस्थधर्म का स्तर एकदम ऊपर उठेगा। समाज में समय की स्थापना होगी। गृहस्थी के बर्तव्य के मुक्त दपनी समाज को लेवक के रूप में प्राप्त होगा, जिसके द्वारा लोभशिक्षण का नाम सज्जनता से ही पायेगा।

इस सब के लिए धारण तौर पर स्त्रियों के सपरक करना, स्त्रियों को सोचने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। यह काम किशु तरह हो ही सकता है?

भारत की परमाणा करने वाली चार बहनें धारण सात में घूम रही हैं। उनका जगद-जगद सर्वसाधारण स्त्रियों से सम्पर्क माना है। सर्वसाधारण स्त्रियों तक पहुंचने हैं, जो बना चलता है कि वे परिवार की सुनने के लिए जिनकी उत्पुक्त हैं। समाज उन्हें फास पहुंचने का। परमाणा उनके लिए एक उत्तम माण्य है। इसलिए भारत की परमाणा करने वाली ऐसी धोर बहनें निकलें। प्रादेशिक स्तर पर भी महिलाएं परमाणा करें धोर भारत के बोने-बोने में रहने वाली बहनों से मिलें, उनके मुक्त-मुक्त सुनें, विचार का उन्हें परिचय कराये। साथ में एक 'स्त्री शक्ति जगारण गण्टाह' मनाया जमै, जिसमें सैकड़ों की सादा में छोटी-छोटी महिला धारण निकले।

छोटे-छोटे क्षेत्रों में धारणाय की बहनों के शिवाय हो। कुछ शिवाय प्रत्यय-शिवाय भी हो।

इस क्रान्तिकार्य में महिला-सत्याग्र भी सक्रिय बनें, इसलिए उनके पास भी पहुंचना होगा।

कई बहनें शक्तिवाहित रह कर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती हैं, ऐसी बहनें को बल, हिम्मत रितानी होगी। उनमें से जो कोरे सिना करना, निष्ठापूर्वक जीवन चाहती हो। उन्हें धोष धमिनी या धारण से सपरक करना चाहिए।

कई बहनें केवल इतीति लिए विवाह करती हैं कि वे भ्रमेते रहने की हिम्मत नहीं कर पाती। सामी या विज्ञान के धारण के शिवाय जीवन धारणती हैं। परिणामतः जीवन में एक रिक्तता महसूस करती हैं ऐसी स्त्रियों का शिवा स्त्री-समूह में यु धारणकार है, उनके भ्रमेतान में महसूस करें। उनके सामने पराक्रम के द्वारे धारण भी है, यह उन्हें साधु हो।

रिवाजों की शक्ति को शक्ति बनाने लिए कुछ ऐसे कार्यक्रम हाथ में लिये जा जिनमें बड़ी सादा में स्त्रियां इतराती हैं।

स्त्रियों की शक्ति को सक्रिय बनाने लिए कुछ ऐसे कार्यक्रम हाथ में लिये जा जिनमें बड़ी सादा में स्त्रियां इतराती हैं।

हम स्त्री-पुरुष की गुत्थी से ऊपर उठकर विचार करें

→ सके। एक० मा-बहनों को सममानित करने वाले गंदे धर्मोन्मीय पोस्टर्स तथा इतिहास के खिलाफ संगठित आवाज उठाये, प्रादोलन चलाये; दो० महिला-शांतिसेना का गठन करें, घर-घर शांतिपात्र की स्थापना करें; तीन० किशोर शांतिसेना संगठित करें; चार० शहरो के विभागों में तथा गावों में साप्ताहिक सामूहिक सर्वधर्म-प्राथना चलाये, पाच० अध्ययन-मंडल चलाये।

स्त्रीशक्ति पर सोचते हुए एक बात ध्यान में रखनी होगी कि मूलतः हमें पूरे समाज के सदस्यों में सोचना है। सारी दुनिया हमारी है यह विश्वास बन पायेगा, सभी हमारा व दुनिया का बन्धुत्व होगा। इसलिए हमारा चिन्तन स्त्री-पुरुष-गुत्थी में, तेरा-मेरा की भावना में बद्ध नहीं रहना चाहिए। अतः समाज के पूरे सदस्यों में ही स्त्रीशक्ति-जागरण की बात सोचनी है।

भारत की गण वीर-जाई सात की गतिविधियों को देखें तो एक बात स्पष्टरूप से ध्यान में आती है कि इस काल में विधियों की शक्ति विकसित अवश्य हुई है। सामाजिक,

धार्मिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में भारत की महिला अपनी हिस्सा उठाने की कोशिश कर रही है। ग्रामीण क्षेत्र में कस्तूरबा ट्रस्ट ने जो विशेष काम किया है, वह सर्वविदित है। अलावा इसके, प्र. भा. महिला परिषद, अ मा ग्रामीण महिला संघ, समाज बन्धुत्व बोर्ड आदि राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं ने भी इस कार्य को धीरे धीरे बढ़ाया है। सर्वोच्च प्रादोलन में भी इस काम में बड़ा योगदान दिया है। इन सब माध्यमों से जो कुछ बहनों कार्यकर्ता या सेवक के रूप में आये, उन सबके कार्य का निचोड़ यही रहा कि यद्यपि इस दिशा में कुछ कार्य हुआ है, साधारण—खासकर ग्रामीण क्षेत्र की महिला आज की विनास-घारा से लगभग अछुती ही रही है। इसलिए भिन्न-भिन्न क्षेत्र में काम करने वाली ये स्त्री बहनें एक बार इत्तहा हो और स्त्रीशक्ति-जागृति जैसे सर्वव्यापी, गहरे विचार तथा काम का स्पर्श सब स्तरों की महिलाओं को किस तरह हो सकता है, इस विषय पर चिन्तन करें, इस हेतु पत्र ११ अग्रलेख को कुछक्षेत्र में एक सर्वोच्च महिला

सम्मेलन का आयोजन किया गया था। चर्चा के बाद सम्मेलन ने निर्णय लिया कि ११ अक्टूबर से १७ अक्टूबर १९७३, समूचे देश में 'स्त्री शक्ति-जागरण सप्ताह' के रूप में मनाया जाये।

वहा एक सामूहिक राय यह भी रही कि आम स्त्री-तक-प्राप्त कर गाव की बहनों तक पहुंचने का सर्वोत्तम साधन गावों की पदयात्रा ही है। इस राय के आधार पर सोचा गया कि इस सप्ताह में भारत के ३०० जिलों में ३०० महिला-पदयात्रा निकलें। हर जिले में (कम से कम) एक महिला टोली तैयार हो, जो सात दिन गावों की पदयात्रा करे। वडे-बडे शहरो में सात दिन नागर-परिष्कारा करें। पदयात्राएं बहनों से सम्पन्न साधने, उनमें विकास की उमंग जगाने, और उनका उत्साह कायम रखने का समर्थ साधन है। इन यात्राओं में स्त्री के अपने स्वाभाविक गुणों के विकास की शिक्षा, शांतिवाच्य, सहिष्णुता, सामाजिक एकात्मता आदि विषयों पर स्त्री समाज का ध्यान आकर्षित किया जायेगा। समूचे भारत में एक साथ ३०० या उससे भी अधिक महिला-टोलियां अग्रे पदयात्रा पर निकलती हैं, तो एक बहुत बड़ी शक्ति शक्ति की दिशा में प्रकट होगी।

संयोजक की चिट्ठी...

जगन्नाथजी ने इस अभियान के लिये पूरा समय दिया है। प्रत्येक प्रदेश से साथी, हमने भी रहे हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रदेशों के साथियों के लिये एक साथ मिलकर काम करने और एक दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाने का अच्छा अवसर हमारे सामने उपस्थित हो रहा है।

केवल विहार के पड़ोसी और हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश होने के नाते सहरसा के अभियान के लिये हमारी सेवायें अधिक उपयोगी नहीं होगी, बल्कि प्रारम्भ ही से हमारा सहरसा के मोर्चे से सम्बन्ध रहा है। श्री बाबूलाल जी मित्तल और पुजारी राज जी

बहा है। अलस भाई लगे धरते तक बहा रहे हैं और कई साथियों का बहा के साथ-साथ से धनित्व सम्पूर्ण है। मेरा आशय निवेदन है कि इस विषय पर प्राथमिक, जितना और शैक्षिक बँटवों में विचार कर सहरसा अभियान के लिये अपनी सेवायें दें। आप कब और कितने समय के लिये जा सकते हैं, प्रदेश सर्वोच्च मण्डल वरें सूचना भेज कर इनायत करें।

नवीनीकरण. एक बार लोक सेवक का निष्ठा पत्र भरने के बाद प्रति वर्ष तीन रुपये पैसठ वसे या ६ गुण्टी मून देकर नवीनीकरण कराना होता है। हमारे प्रदेश में अधिनायक लोकसेवक सन् १९७१ में वरें थे, उनमें से कुछ का नवीनीकरण १९७२ में और बहुत

कम का १९७३ में हुआ है। जिन मित्रों ने अपना धनित्व शुल्क १९७२ के लिए दिया है, उन्हें देर से देर ३१ दिसम्बर १९७३ तक इस वर्ष के लिये अपना शुल्क जितना सर्वोच्च मण्डल में जमाकर नवीनीकरण कराना है। आपने अपना इस वर्ष का शुल्क कब और कहा जमा किया है, इसकी जानकारी इस पत्र के पढ़ो ही उत्तर प्रदेश सर्वोच्च मण्डल, श्री गांधी आश्रम, गढ़ रोड, मेरठ को भेजिये।

किनीत
मुम्बर साल बहुगुणा
संयोजक

विज्ञान और विज्ञान

सर्व एंजिल्स के प्रसिद्ध विचार-धारा 'मनस' में ४-४ महीने पहले किसी एक अक्षर में कहा कि यह विज्ञान के बचने बचम धारणी के मन में धारणा की जगह भय उत्पन्न करते हैं। वैज्ञानिकों को अपने प्रति पक्ष रहे इस भाव का अर्थनाम होने लगा है और ईर्ष्याएँ खतर के अनुसार 'अभेदिकता एंजिल्स' धारा द एंजिल्स 'मनस साइम्स' में अपने अपने अधिवेशन में 'विज्ञान के विज्ञान का ध्येय और लोगों को उस ध्येय के प्रति धारणा करने के प्रयत्न' का मुख्य विचारणीय विषय की तरह रहता लय दिया है।

मानव में विज्ञान की इच्छा तो लोगों का एक मनुष्य की अधिकाधिक सुधी बनाने की रही है किन्तु उद्योग के क्षेत्र में मानवत्वक बस्तुओं में मनमाने उत्पादन, राजमता के क्षेत्र में धारणात सेक्टर-सक्ति और परम सहायक शक्तों को बढ़ाते जाने की होउ तथा बिचिता पद्धति में हूराणमो परिणामों की सोचि बिना रासायनिक पदार्थों के निर-नने निष्पत्तियों के प्रयोगने विज्ञान के अक्षय्याएँ का ही उपयोग को देना रुक कर दिया है कि मान विज्ञान एक धाराणी की तरह बटपरे में यथा दिशाई दे रहा है।

धाराणी का धारोय लगाकर विज्ञान की बटपरे में मान की धारिकरकार जिम्मे दिया है ? वैज्ञानिकों ने ही। इराजिबो-मानव वैज्ञानिक ही रह सकते हैं, रासायनिक धारो धीर धीरविधो के बारे में वैज्ञानिक एक ही अर्थाने लय उपस्थित कर रहे हैं। जहाँ वे अपना है कि जन धारणा, ऐलगासिधो, कीडर धारिबो बढ़ाते और ह्वाई बढ़ाते तथा धर रहितों धीरे धर-धरना, के बरती के धीर, समुद्र की गण, धरुडर धारमयन में परीष्टर धारि के बरते हुए धरुडरोंने प्रहृति का गुरु मनुजम धार-मयन कर दिया है, यहाँ तक कि वे पाय धीर पेय पदार्थों को धरती की इया से 'मनुष्य

के हाथ के स्थानों में धरुते' हमारे पास पहुँ-चाये जाने में धीर इर्ष्याएँ जो स्वस्थ के लिए सर्वथा निरानर रहने जाते थे, लोगों ने निधान बनाये जा रहे हैं। जैसे इन्दा बंद भोजन लसों से मिमन कासा पानी, गुलाबा गया दूध साक की हुई चीनो, साक बिना हुआ काजल धीर वापर धनय बिना हुआ धारा, मंदा धारि के धुणुण लो बहूधुन है। रासायनिक गाराओ के उत्पन्न सारे प्रकार के धन धीर धार-मन्त्रिया बिनी न किसी प्रकार के रोप का पैदा करके कौन बहे जा रहे है। इन गाणा में भूमि धीरे धीरे गरीबी बकर का जाती है। यह सब इस वैज्ञानिक ही बना रहे है। धीरुधारीकरण धीर धारणी का नगरीकरण मानविक धरमनुपन का उद्गम है यह हम मनोवैज्ञानिक बना रहा है। इसी प्रकार धरु-विज्ञानवेला ही धरुधना के मयन बड़े धीर सर्वाधिक निर्मम धाराणक है। धरुधन समझना यह है कि पदार्थों धीर उनकी धृति को हट कर विज्ञान की गाव डीक है, किन्तु जब इन लोगों का मनुष्य धीर प्रहृति से साधुताम सवध करने में बलाय उनके हित की धरना करके धरान्तर धारणों से उन्हें लागू किया जाता है ता विज्ञान का मानो स्वभाव ही बनल जा- है। इर्ष्याएँ धारकल है कि पदार्थों के स्वभाव धीर गति को मनुष्य तथा प्रहृति के धरुधन बना कर रुपायित किया जाय। विज्ञान का धन्य बिनी की डम का उपयोग अहितकारी ही होगा।

'मनस में दिने लये विचार प्रस्तुत करने का उपस्थित धारण विज्ञान का एक छोटा सा उपयोगी धरुधनधान है, जिसके धारणी की धन के बम उगानार, मन्व-पूर्व भोजन की समझा कागो बरी इन तक हूड हो सकते हैं। सभी विज्ञान के प्रयोगों के एक मन्वे निर्माणने के धरुधनका एक लया धन उगारना है जिसे हम 'मैट्रि-स' कह सकते हैं। मैट्रि-स मैट्रि धीर सई का सकर परिणाम है। इसका परिधिाधिक नाम 'दाइड-केन' तथा पाया है का कि टुइरुधिय मैट्रि

धीर डीकेल सई के वैज्ञानिक नाम हैं। यह नया धन मैट्रि के धरुधनान में अधिक परिधिाक होने के गाव-लाय पैदाकार की अधिक देता है धीर यह ऐसी भूमि में योगा जा सकता है जो बजर मानो जाती है। बम बर्षा का भी इस पर दुपरिणाम नहीं होता। सई मै-मैट्रि का सकर होने के कारण विवेसाय धरिधरकन यूरों के प्रमाण में इसमें प्रोटीन त भी पर्यन्त माया में अधिक होगा है।

उत्तर प्रदेश में पननपर कृषि धरुधनय निरुधविद्यालय मध्यप्रदेश में जगाहरत कृषि निरुधविद्यालय जबपुर धीर कृ धरुधनधान सत्याक नई दिल्ली में धानी इस समायनी को पूरी तरह जानने में प्रयोग क रहे है। धारा की जानी है कि प्रयोगों का यह अधिव्य में सगार को भूल धं धरुधनमय ले बचने वाला धरुधन धन नि होगा। धरुधन इसके बाँध प्रकार लय बिभे जा चुके हैं। एक प्रकार धरुधनी र को धुधरई के वचन तक दिहालों को बोने लिए दिया जासकेगा। बम वर्षा के प्रदे में इसका निरुधुण दिया जायेगा धीर सभ बना ऐसी है कि वे प्रेश इस लये धरुधन क्षेत्र बन जायेंगे। ऐना विज्ञान प्रणम्य है।

गौरव इतिहास का या गुतामी का ?

धमी वे- निरुधर को एक गोमा धं ऐशरवे धीरे धीरे बूठ करनक धीर बन सानी के बीच एक उत्तर राधुधन भयन में मनावा गया—धरसर राधुधन के अ-रधरों की परम्परा का दी-ती बरल पूरे। जाने का था। उस दिन इय इतिहास में धरुधन में एक शाक टिकक ही तिहाता सदा सनी को धारणामराली धीर धरुधने दिन को धरुधरारी ले बड़े उत्साहपूर्वक शक्तों में दल-धरुधर एक धरुधन किया। मय में दो धरा धारो। एक ही यह कि दो ही वर्षों १९४८ में गुताम बना कर रवने धरुधनी में, धरुधनी गुतामी में दिने की भी गौरव

आन्दोलन के समाचार

○पूरण शांति सेना का चौथा राष्ट्रीय सम्मेलन २० से २२ अक्टूबर तक महाराष्ट्र में श्रीरंगवाड में हो रहा है। सम्मेलन का विषय है 'भारत में गरीबी : कारण और निवारण'। तत्पश्चात् शांति सेना ने इन सम्मेलन में शामिल होने का निमन्त्रण देते हुए कहा है कि गरीबी उन्मूलन और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के इस कर्तव्य काम में केवल इस देश के युवा ही सहायक हो सकते हैं। इस स्थिति पर विचारों का आदान-प्रदान करने और एक ऐसा कार्यक्रम बनाने के लिए जो इस स्थिति का मुकाबला करके हम सभी युवाओं को शामिल करते हैं। सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी इस प्रकार है - प्रवेश शुल्क ५ रुपये है। इसे मनीआर्डर द्वारा संयोजक तत्पश्चात् प्राप्त करना, रात्रिपाठ, ०१:०० २२:०१ को भेज कर सम्मेलन स्थान तक पहुंचने का रेलवे किराया प्राप्त किया जा सकता है। निवास व्यवस्था मुफ्त है। भोजन शुल्क ५ रुपये है जो सम्मेलन स्थल पर ही जमा कराया जा सकता है।

के भूतपूर्व मंत्री श्री कपिल शंकरजी ने राय-वरेली जिले में १० गांवों का एक सचन क्षेत्र बनाया है जिसमें किसानों के बीच गोठिया करके आरोग्य योजना और प्राथमिकभरता का प्रयोग करेंगे। सभी उन गांवों में पाकिस्तानी गोठिया हो रही है।

○पत्रकारों में विनोबा के सान्निध्य में सम्पूर्ण ट्यूबवेलन परिषद की विचारियों के धमक के लिए श्रीमन्नारायण के संयोजकत्व में भी सार्वभौम समन्वय समिति गठित की गई है। सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं सर्वश्री श्रीमन्नारायण (संयोजक), नवल टाटा, धनतराष्ट्रीय चेंबर ऑफ कामर्स के भू० पू० अध्यक्ष डा० भरतलाल, मामोहन मंगलदास, फेडरेशन ऑफ इन्डियन चेंबर ऑफ कामर्स एंव इंडस्ट्री के अध्यक्ष चरनराम एसोसिएटिड चेंबर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष ए० एन० हक्सर तथा आल इन्डिया फेडरेशन के अध्यक्ष श्री राम प्रकाश।

के श्रीय विलसनजी श्री बन्ध्याए, धोवो-गिन निराम मंत्री श्री सुमन्यम तथा युद्ध अध्यक्ष केन्द्रीय मंत्री श्री उजत समिति से

सम्बन्धित रहेंगे। समिति की पहली बैठक नवम्बर के मध्य में दिल्ली में होगी।

○कस्तूरबा स्वास्थ सत्या, जो कि सेवायाम में महात्मा गांधी मेडिकल कलेज चलाती है, ने अपने प्रत्येकाल में दस ब्रिस्तरों की व्यवस्था वाला प्राथमिक चिकित्सा विभाग खोलने का निर्णय किया है।

पता चला है कि इस के लिए गुजरात सरकार ने ५१,००० रुपये का प्रथम दान दिया है।

श्री भा० प्राथमिक चिकित्सा महासम की कार्यकारिणी की बैठक में तथा निर्माण में इस निर्णय का स्वागत किया है।

यह देश का पहला अस्पताल होगा जहाँ एलोपैथी के साथ प्राथमिक उपचार की भी व्यवस्था होगी।

○शराबबन्दी समिति के अध्यक्ष श्री गीतुल भाई भट्टा राज्य में पूर्ण शराबबन्दी के मामले पर विनोबा से विचार-निर्णय कर हाथ ही में लोटे हैं।

विनोबा ने भी भट्टा को पितृहत्या टिप्पणा न करने का परामर्श दिया है।

विनोबा के सान्निध्य में स्वयं आश्रम के सर्वोदयी नेत्रा श्री प्रभाकर मोक्ष ही प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से शराबबन्दी पर विचार करने के लिए दिल्ली पहुंचने वाले हैं।

टिप्पणियाँ

साथ मनाते की बात किसान मुम्हारी होगी। और वह जिस आधार पर, मान्य की गई होगी। दूसरा सजान मन में यह उठा कि साईं हैसियत के कार्यकाल में अवरक्षक दल का समूह हुआ था। हमको बतावती तो अंग्रेजों के समय में भी मनाई जा सकती थी। क्या हमने उनकी बुद्धि की ही इन प्रकाश भूति की है ?

अवरक्षकों ने घुड़सवारी के कुछ करतब दिखाये। उन की भी इस भाव से प्रसूया की गई कि प्रकर राष्ट्रपति के अवरक्षक तपे हुए घुड़सवार हों तो फिर राष्ट्र को इस फाशिन जान-शौचन को सारे राष्ट्र का शोभापूर्ण मान कर सतुष्ट और प्रसन्न रहना चाहिए।

अवरक्षकों की भेदभूया और घाटी की मुहरी की दान भी आनाशवाणी और श्रवचारों के बापों की। गरीब देश के निराशियों को ऐसी तकरें बनने विचार से देना नम से नम रंजकरी तो माना ही जाना चाहिए। इनसे विलो का मत प्रकल्पित नहीं हो सकता।

कवि डब्लू० एच० आडेन

सितम्बर २६ की प्रास्टिया की राजधानी विन्ना के होटल में कवि आडेन का गहरी दौर में गरीब छुट गया।

आडेन हमारी मनावली के बड़े में बड़े कवियों में थे। और वे बहुत दिनों तक आने कायम-गल मुल्लों के कारण साहित्य जगन में श्रिय बने रहेंगे। आडेन का जन्म हंगरी में हुआ था। जिनु वे १९३६ में अमरीका

चले गये। वहाँ की नगरिकता से भी और पच्छीम वर्ष बहा रहे।

आडेन कवि और गद्यकार दोनों रूपों में प्रतिष्ठित हुए और एक इंग्लैंड गीत-कार साथे तब उनके राज-कवि घोषित किये जाने की आशा भी की जाती रही। जिनु दो बारण कदाचित्त इसके छोड़े आने रहे। एक तो उनकी प्रारम्भिक रचनाओं का आशोचयन स्वर, दूसरा देश की नागरिकता छोड़ कर एन लम्बे अरसे तक दूसरे देश की नागरिकता स्वीकार करने बहा रहना। इंग्लैंड ने उन्हें उक्त मान दिया था मना, यह उन्होंने भी शायद महत्वपूर्ण नहीं माना होगा, उनके पाठकों ने तो उसे भी महत्वपूर्ण नहीं माना। कवि के रूप में वे गरीब नगर के साहित्य समझों के निवृत्त आदर के साथ बने रहे और बने रहेंगे।

सर्वादाय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १५ अक्टूबर, '७३

विश्वी-गढ़वाल में हरिजन वृत्त × संगठन व व्यक्ति-अभिक्रम
के बीच सामंजस्य बना रहे × क्या अनदि-अन्नन दसागड का छोर
मिल गया है? × सहरसा : अन्तिम अभियान

श्रीमद्वारा के पास सुनियों व नाथ राजाजी विद्यालय जो



भूदान-यज्ञ

१५ अक्टूबर, '७३

वर्ष २०

अंक ३

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

सम्पादकीय — प्रभाष जोशी २

टिहरी-गढवाल में हरिजन-पूजा

— अनुपम मिश्र ३

संगठन व व्यक्ति-अभिक्रम के

बीच सामंजस्य बना रहे

— जयप्रकाश नारायण ५

रूस और चीन लक्ष्य साम्यवाद

या युद्ध

— म० प्र० मिश्र ७

टिप्पणियाँ — म० प्र० मिश्र ८

विना टिप्पणी के

क्या अनादि-अनन्त ब्रह्माण्ड

का छोर मिल गया है ?

महिला पदयात्राएँ महिला

संगठनों की नींव रखें

— कान्ता-हरविलास १२

सहृदयता : अन्तिम अभियान

— विश्वासराय, सर्वनाारायण १३

काल-पुरुष की प्रेरणा हमारे

साथ है

— विनोबा १४

आन्दोलन के समाचार १५

—

राजघाट कानोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

अरबों और इजराइलियों के बीच इस बार जब लड़ाई छिड़ी तो चीन ने शिकायत की थी कि यह युद्ध रूस और अमरीका की मिलीभगत से हो रहा है। चीन ने सही कहा था। लेकिन अन्ताराष्ट्रीय राजनीति के इस तथ्य पर उसकी शिकायत बेमानी थी क्योंकि इस तरह की मिलीभगत में वह स्वयं कई जगह शामिल रहा है। रूस, अमरीका और चीन अपने-बो दुनिया के जमींदार मानते हैं और अपने-अपने इलाके में अपनी साक्ष-धाक बनाये रखना चाहते हैं। वे जानते हैं कि उनके इलाके के देश आपस में लड़ना चाहते हैं लेकिन उनके लिए हमें आपस में सीधे नहीं लड़ना चाहिए। इन तीन महा-शक्तियों की संज्ञित ताकतों ने उन्हें आपस में लड़ने से बच रखा है और महानाश की सभावना उन्हें एक दूसरे के प्रति समझदारी से काम लेने पर बाध्य किये हुए है। लेकिन यह शानि की सवारात्मक इच्छा नहीं है उसे बनाये रखने की मजबूरी है। इसलिए सीधे में लड़ते हुए और सीधे में लड़ने का अव्यक्तित्व अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र के देशों को बचाता है। हथियार देनी रहती है और इस कारण सीमित युद्ध होते रहते हैं। महायुद्धों से कृत्रिम अड विभी की कोई विजय नहीं मिल सकती न उनसे कोई मरणा हल हो सकता है इसलिए स्थानीय और सीमित युद्धों को उपयोजिता बढ़ गयी है। सन् '७१ में अफगान देश के लिए हुआ भारत-पाक युद्ध और पश्चिम एशिया में चल रही वर्तमान लड़ाई ऐसे युद्धों के नमूने हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पश्चिम एशिया में चल रहा युद्ध अमरीका और रूस की अनुमति से ही हो रहा है। सन् ६७ में छः दिनों के युद्ध में इजरायल ने जो जमीन जीती थी उसे लौटाने के लिए जितनी ही नौशिकों राष्ट्रसंघ और रूस और अमरीका ने पिल्ले छः बर्षों में की हैं लेकिन इजरायल ने एक नहीं सुनी। अमरीका भी इजरायल को मना नहीं पाया जो कि उसके अन्तःसंघार का मजबूत बड़ा दावा है। दूसरी तरफ अरब

देश अपनी हारी हुई जमीन को वापस लेने के लिए बटविद्ध हैं और रूस उन्हें चाहे जितने हथियार दे दे वह उन्हें इस पर राजी नहीं कर सकता कि वे जमीन छोड़ दें। इस तरह रूस और अमरीका अपने प्रभाव क्षेत्र के इन देशों को बचाने चाहें भी तो उनसे उनके राष्ट्रीय हितों के खिलाफ काम नहीं करवा सकते। ऐसी स्थिति में युद्ध होना ही था। रूस और अमरीका को अपने बिगड़ते और अन्तः-द्वेष दोनों को यह अनुमति देनी पड़ी है कि वे आपस में निगट लें। उनमें शायद यह भी आपसी सम्मम है कि जब तक उनके हित-स्वार्थ सुरी तरह न बिगड़ें और जब तक युद्ध स्थानीय और सीमित रहे तब तक वे कोई बड़ा हस्त-क्षेप नहीं करेंगे। लेकिन अब यह संप्रभु तथ्य है कि युद्ध सम्पन्न करने पर उसे अपने चताने की स्वतन्त्र सक्षता न अरब देशों में है न इज-रायल में। इसलिए इस लड़ाई में भिड़े इन देशों में अपने-अपने दावाओं से नये अरबों और मोला बाश्चर की माग की और रूस और अमरीका दोनों ही शक्त दे रहे हैं। अब जिस की सेना में जितनी क्षमता होगी उतनी जल्दी वह इस युद्ध को तिरुपतिक स्थिति में ला देगा।

राष्ट्रसंघ में अरब शक्ति का कोई प्रयत्न अभी तक सफल नहीं हो पाया है तो इसका कारण यही है कि रूस और अमरीका तब तक युद्ध बिराम नहीं चाहते जब तक कि युद्ध के मंडान में कोई फंमला न हो जाये। वे अपने-अपने गुणों को लड़ा रहे हैं और उनसे सम्भला है कि वे युद्ध नहीं लड़ेंगे। लेकिन इस लड़ाई के लिए अमरीका और रूस को मोते में कोई मतसब नहीं है। गलतों उन छोटे देशों की है जो युद्ध बनते हैं, सेमों वे बढते हैं और बड़ी शक्तियों के हित-स्वार्थों की रक्षा करते हुए अपने राष्ट्रीय हित पूरे करना चाहते हैं। यह सैत भयानक है लेकिन इससे महाशक्तियों का कुछ भी अलाना-विगडहता नहीं। कीमती जार्न और सम्पति इन्हीं देशों की बर्बाद होती है और हर युद्ध के बाद उनकी परिनिर्मलता बढ़ती जाती है। सन्मति को अहरण इजराइ-लियों और अरबों की है, इजराइलियों को ज्यादा है। हम मिवाय इनके क्या कर सकते हैं कि इन्हे सन्मति देंगे वे लिए मरणास से प्रार्थना करें ?

— प्रभाष जोशी

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय भाग टिहरी गढ़वाल में इस वर्ष गांधी-जयन्ती के भव्य पर प्रभातफेरी और प्रार्थना समारोहों के परम्परागत कार्यक्रमों के अलावा स्वामी विद्यालन्कारी द्वारा हरिजनो को पौडपोषणकार पूजा की गयी। स्वामी विद्यालन्कारी क्रमिकेन स्थित दिव्य जीवन सच के परमाध्यय है। वे गांधीजी की मृत्यु के बाद से प्रति वर्ष अपने धारम में वैदिक यज्ञों को व्याजहारिक रूप देते हुए, हरेक में एकत्र की धनुमूनि करने के लिए निजी रूप से हर गांधी जयन्ती पर हरिजन पूजा करण था रहे थे। यह दूसरा वर्ष था जवनि उन्होंने इसे सार्वजनिक रूप से सम्पन्न किया है। इस वर्ष गांधी जयन्ती का इसी पर्वतीय भाग के सीमान्त जिले उत्तरकाशी में एक सार्वजनिक स्थान पर इस हरिजन-पूजा के कार्यक्रम को सम्पन्न कर वहां के राजनैतिक, समाज सुधारकों, प्रगतिशील व बच्चेर परिषदों के सामने अनेक सवाल सारे कर दिये थे।

घोर भी सहयोगी माय दे रहे थे। पर दो-तीस रहे स्वामीजी और पर घुना रहे हरिजन के चेहरो में एक भजीव अंतर होता था। इस सारी प्रक्रिया के दौरान स्वामी का चेहरा सभी गंभीर बनता, सभी उनको आने समय पड़ जातो ही सभी के आने आने प्रारंभिकन सा कर लेने वाला मान कर संतुष्ट की मुद्रा में आ जाते थे। लेकिन जिस हरिजन के पर धुन-धुल रहे होने वह शाय भोचकरा सा पडा रहता। कुछ हरिजन तो शायद अब तक उम घटना पर विचक्षण भी न कर पाये हुंगे कि कोई मुद्र गेए कपडो वाला स्वामी या ब्राह्मण उनके पर रहा था, पौड रह पा।

पर पत्तारले के बाद सभी 'मूनिषा' भीतर आयीं। इन १६ मूनिषों को एक बनार में प्रतिष्ठित किया गया। फिर स्वामी विद्यालन्कारी ने उनके पासों पर एक-एक करके भस्म, रोली तथा तिलक चढ़ाया। फिर पूजा की घासी में पूज सजाये गये। स्वामीजी अपने सहयोगियों के साथ एक कोने से दूसरे

टिहरी-गढ़वाल में हरिजन-पूजा

-अनुपम मिश्र

टिहरी वस्ती में नाम कर रहे कोई १६ मराई कर्मचारियों को स्वामीजी द्वारा १ घण्टा की शाय की नियमण भेजा गया था। वे सभी नियमित कर्मकारी जिन्हें पूजने वाले स्वामीजी 'मूनिषा' कहते थे, गांधी जयन्ती को सुदृढ़ स्वामीजी के स्थान पर आ गये थे। चरण पत्तारले से लेकर बधिरा स्वर्ण गांधीजी के घाट आने वाले सिक्के देने तक इस प्रक्रिया में उन सीलह चरणों का समावेश था जो देवमूनि की विभिन्न पुजा-अर्चना में सम्मिलित किये जाते हैं।

स्वामी विद्यालन्कारी 'मूनिषा' को प्रवेस द्वार पर सा कर पहुँचे उनके चरण धोये। उनके एक सहयोगी चरणों पर लौट से सभी आने स्वामीजी अपने हाथों से राख-राख कर सामने सारे हरिजन के पात्र बोने, फिर वरत में रहे एक कपडे से सीने पात्रों को पौड कर सुगाने। इस क्रिया में उनके कुछ

कोने तक हर मूनि के भाल व चरणों में पूज चढ़ाते गये। वे सभी १६ हरिजन स्थानीय सापाई विभाग के थे, वे इसे भी विचो तरह का सरकारी प्राथमिक मान कर अपनी सभी बर्तियों में ही धाये थे। लेकिन अब जब स्वामीजी उनकी साची टोपी पर पूज रखते, पंरो के अण्डों, उगलियों के बीच कुल का उठन कमाने तो अनेक हरिजनो आले गीली पड जातीं। पुणःपुणः के बाद धूपवती को लेकर स्वामीजी एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूम गये। धूपवती का सुगंधित धुआ सभी कमरे में सहरा ही रहा था कि स्वामीजी व उनके सहयोगी शिष्य मनोचरण के साथ एक-एक हरिजन मूनि की आरती उकारते गये। पूरा पूजा स्थल सुगंधित धुए, बर्तिक मधो, मल व पटी की ध्वनियों से भर गया था। इस क्षण यह कल्पना करना कि किसी

→

संगठन व व्यक्ति-अभिक्रम के बीच सामंजस्य बना रहे

—जयप्रकाश नारायण

एक दूसरे के विचारों के लिए आदर होना चाहिए

→ कर, पूरे वर्ष तक हम सहरसा के मोर्चे पर भिड़ जायें और उस अभियान में जो प्रामुख्य प्राप्त करें, जो नया नैतृत्व या सेवकत्व निर्माण हो, उन सब पर प्रायेण वा कार्य भार समर्पित कर हम दूसरे मोर्चों पर जा डटें। इस योजना से हम में नया उत्साह प्रायेण, नई शक्ति प्राप्त होगी। हमारा निरन्तर दूर होगा। आन्दोलन के चरण प्रायेण बढ़ेंगे। हाँ, एक अत्यन्त आवश्यक योजना इसके साथ-साथ हमें तय कर लेना होगी कि हममें से कौन-कौन साथी कब-कब और कितने-कितने समय के लिए बायीं-बायीं से सहरसा से सम्पर्क कायम रखेंगे और वहाँ की नवोद्भूत शक्ति के प्रायेण बढ़ते रहने में सहायक होते रहेंगे।

इस सम्बन्ध में आपके सामने एक विचारणीय प्रश्न रखना चाहता हूँ। कल्पना कीजिए कि जो मार्गदर्शन बाबा ने सहरसा के सम्बन्ध में दिया, वह हम में से किसी और ने दिया होता; मान लीजिए मैंने दिया होता या वैद्यनाथ बाबू ने या त्रिपुरारिजी

या अन्य किसी ने दिया होता तो उसका क्या हथ होता? कितना वित्तवादा खड़ा होता, विनोबा के प्रसली और गैरप्रसली अनुयायियों का भेद खड़ा होता, हममें क्या बिलराव पैदा होता! तो इस घटना से हमें सबक लेना चाहिए। हममें विचार की मुक्तता होनी चाहिए और एक दूसरे के विचारों के लिए आदर होना चाहिए। हम में बिलराव न हो, इसके लिए सर्वसम्मति सचानुमति की प्रक्रिया बाबा ने सुभाई है। वह सामान्य रीति से सुन्दर और उपयोगी है। परन्तु उसके नाम से विचार-स्वातन्त्र्य को कुँठित नहीं करना चाहिए और जो भी व्यक्ति सर्वसम्मति-सचानुमति की धारा में अपने को किसी समय बहाना पाये, उसके अकेले चलने का न नेवल हमें आदर ही करना चाहिए, उसको प्रोत्साहित भी करना चाहिए।

एक अतिम बात। प्रदेश सर्वोदय मण्डल के निर्माण का वह नदीका बन्धी न होना चाहिए कि किसी व्यक्ति के अभिक्रम पर प्रतिबन्ध लगाया जाय। सगठन और व्यक्ति

अभिक्रम के बीच सामंजस्य बिठाते रहना पड़ेगा। नियम, अनुशासन, अधिकार प्राप्ति के बंधन कम से कम हों, यह प्रयास होना चाहिए, नहीं तो सगठन हिंसा का साधन बन सकता है। प्रथमा सगठन एक भाईचारा, एक बिरादरी बने। नियमों से नहीं, स्नेह से वह बाधा जाये। एक दूसरे की हम सहायता करें और किसी को गिराने के बजाय उसे उठाने का यत्न करें। दोषों को स्नेह से दूर करें, न कि निंदा और अनुशासन से।

सहरसा के कठिन मोर्चे पर आप जुझने की तैयारी कर रहे हैं। श्रद्धेय धीरे-धीरे आपके लिए कुछ और भीम दोनो का ही पार्ट भूदा करते आ रहे हैं। मैं उनके सामने सहज वार गतमस्तक हूँ कि रोगग्रस्त शरीर को सेवर भी वे इतना घोर तप कर रहे हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे वे शक्ति प्रदान करें कि आपके साथ कम से कम एक मास तक कार्य करूँ। कुछ अधिक तो न कर पाऊँगा, पर आपके बीच आकर यदि चुपचाप भी बँटा रहूँ तो मुझे आपका सनोप होगा। प्रायेण प्रभु की जैसी इच्छा।

Tea-Saif Tools Corporation

Dealers In :

Hardware, Small-Tools, Arc And Gas

Welding Accessories & Foundry Requisites,

Milstores & precision Tools,

Station Road,
Patna-1

Phone : 26678

रूस और चीन : लक्ष्य साम्यवाद या युद्ध

घमरोवा के जासूसी विभाग ने वर्षों तक रूस-चीन सम्बन्धों की छानबीन करके कुछ निष्कर्षों पर पहुँचे हैं। निष्कर्षों के हिसाब से रूस-चीन की घुलघुलान्त की परिस्थिति होने के पहले, धीरे धीरे वास्तविक सार्द के प्रति चीन की जनता के मन में घमरोव के विरुद्ध जागृत होने के बाद हमला करने की तारीख है। हमला हमलियाँ किया जायेगा कि चीन रूस पर हमला करने की परिस्थिति में माने के पहले शक्तिहीन कर दिया जाये धीरे घुलघुलान्तों के जो एक प्रभाव महासागर पर से हवा के साथ जायें वे घमरोव पर भी अपना प्रभाव छोड़ें धीरे महार की शक्ति सतुवन की पुत्री ही बनने जाये। घमरोव घमरोवा के लिए यह प्रतिपाद्य है कि वह इन दोनों साम्यवादी देशों के बीच युद्ध न होने देने की परिस्थिति बनाये। निष्कर्षों के अनुसार इस समय रूस की सेना की बागडोर पुराने लोगो के हाथ में लेकर अधिक लाठी धीरे हमने के लिए उद्युक्त जवान अधिकारियों के हाथ में ही ही धीरे चूरी है। इन लोगों की बनने वाले विरोधों पर कहना है कि रूस, मजूरिया, विभाग धीरे चीन की उत्तरी पट्टी की विस्तार बेधवार हिम्मा बना देना चाहता है। इस दृष्टि से यह धारणाओं धीरे भीतरगी को भी प्रयोग भी रहेगा।

चीन को रूस की १०० मील की सीमा पर दोनो देशों के धानी सेनायें रख करके रक्षा छोड़ी है। यह सीमा पतिन सवार की मन्त्रे बड़ी धीरे शक्तों से मंत्र सीमा पतिन सेना है। चीनो मोमा में स्पार्टि-काप्ट, इन्डो-कंध धीरे साहसियता के धम्य शक्तों को नेरनातुर कर मानने में समर्थ कम दुरी नरु माग करने वाले घम्य घल्ल निजाओं पर धम्य सन्तरे लड़े है धीरे रूस में भी सा डिअर-नीर से हमला कर मन्त्र बाजी दुर्घटना ही नरह तलर है। चीनियों ने कई शिक्क इन हिस्सों के भी नेवार रहे है कि वे ब्रह्मण परने ही धुपमान मोरपव की मरु मून कर कमी सेना के पीछे सार कर धीरे मुस्लिमा युद्ध करने में बूट मन्त्रे है।

घम्य भी यह परिस्थिति कमज १९६४ के बन रही है। १९ घम्यूर १९६४ में

चीन ने पहला घम्य परकीण किया। चीन की बर्किम की बातों की रूस मुनी धममुनी कर देता था। जब चीन ने भारत पर हमला किया था तब रूस से सत्तार ने इस पर उमहा रोर जानना पाहा था तब रूस ने साक कहा था, भारत हमारा मित्र है। मगर चीन भाई है। धीरे भाई तो भाई ही होता है। १९६४ के इस घम्युरीराल के बाद भाईकारे में एक बड़ी बरार भाई धीरे कोई चार साल बाद मववर १९६५ में ब्रजेनेव ने बीराने वाली धोपया की कि साके कम्युनिस्ट देण एक सीमित धर्म में ही स्तत्र सत्ताए है। रूस के कम्युनिस्ट दल को उनके किसी भी काम में जब धावकक जान पडे हल्लधोर वा अधिहार है धीरे वह भी इन्ही धारार पर कि हम सब कम्युनिस्ट देण एक विरादरी के है। इस धोपया से रूस ने साम्यवादी धारदों की रक्षा के लिए धारने ही चीन पर हमला करने वा अधिचारी कह दिया।

इन्ही के बाद १९६६ में चीन धीरे रूस की सीमाओं पर तनाव बढ़ने लगा धीरे कभी-कभी साधारण शिभाने-बिडाने से धोउ जा कर भडों भी होने लगी। १९६६ में ही क्रमदिन में परस्पर चीन की घम्यु-जक्ति हीन करने की सभावना पर विचार निमग्न हुआ धीरे उन्ही वर्ष रूस राजनयिक गाने-बगाने प्रीति भाज धारि में पानने किन्ते बिना कोई गभीर रंग धरनाये एवाध बन्ध में बध विचार प्रकट ठर करने लगे धीरे इस बान की समर्थने की कोशिश भी की जाने लगी कि धार रूस चीन पर हमल कर दे तो घमरोवा वा रूस बग होगा। निम्नन ने इरानापूर्वक ऐसा न करने की समझ ही धीरे सध मार्गो लुकीर में भी यह बरन उटाने की दिगा में बूट करने की बाउ पर धम्युनिस्ट प्रकट की। १९७१ के दिसम्बर में, इन जाधरता के धनुवार, रूस ने भारत को उस समय यह धारणाएन दिया कि यदि चीन युद्ध में पार्किन्सन की धीरे में बूटन है वा नवा मोर्चा मोवता है तो रूस विररोध

में अपना सेनाए प्रविष्ट कर देगा। यह वह बजर विभाग है जहा चीन माने घम्यु भस्तो वा परीक्षण करता है।

मई १९७३ में प्रिसोपेट निवसन ने मास्को शिखिर सम्मेलन के समय बडे तपे-नुने शब्दों में सावधानी के साथ यह बान प्रस्तुत की कि रूस और चीन के बीच वा तनाव समाप्त होने में सबकी मुरधा है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के पाग पार्किन जमीन की बमी नहीं है—बजर धीरे वेवार जमीन की मसला बना कर उनवा परस्पर लड़ बँठना प्रबुधित होगा। उन्होंने कहा ऐसा युद्ध घमरोवा के हित के विरोध में जायेगा। इसका यह धर्म भी था कि ऐसी धरवसा में सायद घमरोवा को ही हृत्प्रेष करवा पडे। कहने में धीरे ब्रजेनेव ने कहा कि कम्युनिस्ट देशों के धरने सामने में घमरोवा वा धम्य किन्ती की भीर कम्युनिस्ट देशों को बोलने को वाई जहरन नहीं है। धम परिस्थिति यह है कि मगर रूस धीरे चीन मिड जायें तो रूस के पाग इस समय चीन की धम्यन कर देने योग्य धम्यवास्त है। किन्तु चीन के प्रेषावास्त ऐसे पहाडी प्रदेशों में सम है जहा उन्हे धाव पृचाना बढन बरिडन है। वे जवाबी हमला कर ही मन्त्रे। इसके धरिदिक्ष उनता धीरे उद्योगों की रक्षा के लिए भी चीन ने पक्की धीरे पुरी तैयारी कर रखी है। मगर इस सबने भी अधिच विचारणीय चीन की धारार सेना है जो मुस्लिमा-बुद्ध में निध्ठान है धीरे जो साहसियता में रूस की सेनाओं के पीछे पृद्व कर उन्हे शेष देण में धम्य धम्य कर सकनी है। विरतनाम के युद्ध में मुस्लिमा मंदिरों में जो कर में दिगाया बू बरिष्मा भी इन्ही बना के धम्ये धाँवा पड जायेगा। मगर कि भी बूट निबच्य पूर्वक नहीं कहा जा सकता। प्रविष्ट घम्युनिस्ट देशों जो धीरे धम्युनिस्ट धार-बार् बू रहा है रूस हमला करेगा, रूस हमला करेगा धीरे घमरोवा इस तपयध धावकक प्रविष्ठाणी वा कोनेचर बरिडन है।

(सूत्रादेश धीरे निडोकि के एफ धीरे वा भरानी प्रगाद निध इरार हायनर)

देश के भीतरी मामले ?

यो तो जय रस मे 'शान्ति' होकर राजतंत्र मे परिवर्तन हुआ तब से वहाँ मत-भेद रखने वालों के प्रति होने वाले व्यवहार की बात बनी बन्द नहीं हुई। 'शान्ति' मे हाथ बटाने वाली ट्रास्टकी जैसी हस्तियों से लगा कर अभी-अभी खुशबू तक के साथ वहाँ जो व्यवहार हुआ और स्वयं खुशबू ने अपने पूर्ववर्ती 'महान् स्टालिन' की समाधि तक के प्रति जो वर्नाच किया, उसे वहाँ सीडी दर सीडी मतभेद के प्रति खी जाने वाली सनौरी हट्टि का उत्थान ही वह। जायेगा। वहाँ व्यक्ति और समूचे समुदाय अपने-अपने समय के तानाशाह से अलग विचार रखने की आशयः भर के आधार पर 'लिविंगडेड' किये जाते रहे हैं। अब शायद किसी वहुने योग्य सत्या मे वहाँ ऐसे लोग बचे ही नहीं हैं जो अपना कोई विचार रखते भी हों—सब एक ही तरह सोचने विचारने और जीवन जीने के आदी बना दिये गये हैं, इसलिए शायद किसी वहुत बड़ी सत्या मे लोग प्रमुदित सताये या मारे नहीं जाते किन्तु शक्य भी बीच-बीच मे कोई कवि, कलाकार, उपायसकार वहाँ ऐसा उग आता है, जिसका वहाँ की धरती पर उगना साधारणतया सम्भव नहीं होता था। यह विगतत स्वर मे बोलता है और तग किया जाता है। तबपि अब 'लोकप्रचारण' प्रपेशाकृत उनका टोल और अपारदर्शी नहीं दबा है। ये आवाजें और आवाज उठाने के कारण बी जाने वाली तब-तबोके की धाहटें वाहरी दुनिया तक क्यादा आसानी से पहुंच जाती हैं। स्वाभाविक है कि वाहरी दुनिया मे इस सबका चर्चा होता है और तब रस बाहर के लोगों से बहता है यह हमारा भीतरी मामला है—इन पर टीका-टिप्पणी करके कोई हमारे भीतरी मामलो मे हस्तक्षेप न करे। इस दिनेो यही हो रहा है।

जैसे रस के बुद्धिजीवी अपने जीवन को घुटा-घुटा महसूस कर रहे हैं। इसे उन्हीने

वहाँ और बाहर के लोगों ने उनके कथन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। अपनी बात मे विशेषतौर पर इसकी आलोचना हुई और रस ने अपनी बात को इस विशेषतौर से प्रगाह किया। तो क्या इसे रस का भीतरी मामला भर माना जा सकता है ? और यदि यह एक भीतरी मामला है तो चिन्ती की सत्ता मे जो उपल-पुषल हुई, वह भीतरी मामला क्यों नहीं है ? रस को उस पर क्यों बोलना चाहिए या पाकिस्तान मे खान भन्दुत गणधार का भी नजरबन्दी और तीन-तीन, चार-चार बार खान बलो खा की हत्या का प्रयत्न वहाँ का भीतरी मामला, क्यों नहीं है ? भारत को या किसी अन्य देश को इस पर बोलने का हक कैसे मिल सकता है ? या वाटरगेट का मामला अपनी बात का भीतरी मामला क्यों नहीं है ? क्या ऐसी गभीर घटनाओं और खलों और तीर-तरीकों को वही ना भी भीतरी मामला मानकर उस तरफ से प्राव बन्द करना विज्ञान द्वारा देश-काल जीतने के जवर्देन तथ्य को पीठ देने की बोधिग्य नहीं है ? क्या जो ऐसा करेगा या कराना चाहेगा, आज तक के मनुष्य की बुद्धि और हृदय के गुणों को धर्य करता हुआ नहीं बहता जायेगा ?

ऐसी बातें कदापि किसी देश की अपनी बातें नहीं हैं, क्योंकि समार आज लगभग एक इकाई है, एक का गुण या अगुण दूसरे को छूता ही है—आज अन्ध्याई हो चाहे तुराई सत्तामक है। वही अन्ध्या हीम, तो उगकी स्निग्घना सबको सहलायेगी और वही कृष बुरा किया जायेगा तो सब तक उसकी प्राच चायेगी। आज सब कुछ जागर्निक रमाने पर अपना कम ज्यादा अमर डालना है। हमारे यहाँ के अतिवर्षण या अतिवर्षण का जब सारे ससार की अर्पहट्टि पर प्रभाव पडना स्वाभाविक है तो फिर हमारे या अतिवर्षण प्रचारण, उग्रामन, अन्ध्याचार या अन्ध, चार का भी जगत भर का ध्यान अपनी और पीचना उचित क्यों नहीं है ? तब कहें तो

सार्वजनिक जो कर दिया गया है यह काम कितने सारे लोग हैं जिनके मरने वामनाता पडेगा हमें शोक खुले घाम।

पूरे एक युग का सिवालोकन करती हो जाना है जिनके मरने पर कितने सारे लोग हैं ऐसे बंसे नुप रह सकते हैं हम कप से बम ऐसे लोगों के मरने पर तुले रहते हैं जो कुछ न कुछ करने पर हमारे लिए !

रोज रोज मरता है ऐसा कोई न कोई आदमी सोला वा जितने हमारे सामने हमारा दुल और उसकी पतों को समझाया वा जितने हमें हमारा सुल और सुल की बातों को जोर जानता वा जो कि कुछ खाम नहीं है जिते वह हमारे लिए बर रहा है मगर फिर भी बदलते के सिवलिते मे हमारी हानत, वह बस भर उसे हमारे सामने धर रहा है।

ऐसा ही एक आदमी सो गया महीरी गीद मे बच की रात जो हो गया था बूडा और फिर भी सोचना वा धरनी नहीं हमारी धान !

(डब्ल्यू एच० आशेन की फ्रायड की मूलु पर लिखी एक सवी पत्रिका के आरम्भिक अक्ष का स्थानर)

आज की दुनिया मे वही कुछ भी किनी एक देश वा समाज का नहीं है, जिान जब हम इतने पाय-पाय के घाया है तब हम जो कुछ करें वा कहे उते मैसा मान कर ही करें वा कहे कि उममे केवड हमारा कुछ नहीं है। तबकी उसका सम्भव है। आज भी जो अपनी मुर्गी की तीन टांगें होंग पर जोर देता चाहता है उसे जगत भर मे बट कर रहने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

युद्ध, स्वार्थ और हित

चित्री घोर गिरी-बसाऊ मे सत्ता की उलट-मुलट धरती सबको धरने-धरने दग से विन्ता मे डाले हुए थी कि भरख देशों और इबराइल के बीच फिर युद्ध भटक उठा है। युद्ध दुनिया के किसी भी हिस्से मे घोर तिन्ही भी देशों के बीच क्यों न हो सबकी किताफा नकारण बन जाता है घोर सत्ता वाले-धनवाने धरती महाबुद्धि मे आधार पर सभो मे बटने लगता है। भ्रम परिवर्तन के ग्यासापर प्रबलवीर्य देशों और धरतीका की महाबुद्धि इबराइल की तरफ तथा पूर्व के तरफ बहे जाने वाले देशो तथा साम्यवादी रमाल जाने दोगो की महाबुद्धि धरत राष्ठी की तरफ होता स्वाभाविक है। इन तरह धरतीका और इस इसी प्रकार धरतीका और चीन के बीच जो सामान्य सम्बन्धो की भासा बर रही थी उसे धरता लगा है। धरतीका मे घोर रूस मे इस युद्ध के बारे मे धरती मुलकर कुछ नहीं कहत है, मगर चीन कह चुका है घोर भारत की कह चुका है।

इन समय राष्ठी सभ वा धरिभंगन पार रहा है। यदि हमला धरत राष्ठी की घोर मे हुंघार है तो बहा जा सकता है कि जहाने ठीक समय चुना है। राष्ठी सभ के पुनाने प्रत्यान जो इबराइल मे नहीं माने मे भ्रम फिर पूरी मक्ति के साथ दोहराये जा सकते है घोर ठीक समझीना मारु बरताया जा सकता है। यों राष्ठी सभ मे विना विद्वानी जनोंपर जोर दिने युद्ध विराम की जो मान उगाई है उसे हम घोर चीन मे धरतीवृत्त कर दिया है। यह उचित दमनिए है कि धरत के मगर मे के दिन गने-बोने माने जाने चाहिए जब कोई तिगो की जमीन पर बरपुर्वक बरता करके उसे छोडे विन्त मानि की स्या मनमाने मे स्वल्प देस सकता हो।

धरतीका बाधो सयन भाव मे मयने की हल करने की बौगिक करता दिगाई

देता है। यह एक धर्यदा लक्षण है। दूसरी बड़ी धरिभंगना भी धरदेश मे न धरवे, दुनिया भर की स्यास मे रख कर सोचें। युद्ध की यह चित्तगारी चाहे जैसा रूप धर ले सकती है। सभ मयनी धरती जोत या जिदूर न सोचें, ठीक परिस्थिति बनने की रीत विचारों और सबवा हित सामने रखकर। सभोनि स्वार्थ धलन-धलन हो सकते है, हित सबके एक है।

यह धर्यदा और म्भ सयोंग हे कि मारी दुनिया के प्रतिक्रिया राष्ठी सभ के धरिभंगन मे इकट्ठा हैं, मिल-जुल कर सोचने की सुविधा उपस्थित है। उत सुविधा को सब मिल कर सायंक करें, धर्य न जाने दें। जागतिक-सम्बधा धर्यता पूरा जोर सही हल निकालने मे लगयें। युद्ध का यह धरतर एक बड़े धरामन वा धरतर हो सकता है।

चीन, तिब्बत और भारत

हमारे राष्ट्रपतिजो की स्यासिका के राष्ट्रपति ने बताया है कि चीन के मन मे भ्रम भारत के प्रति पहले विन्ता रोप नहीं है। यदि ऐसा है तो तंत्र हम युजक होने की तैयार है। मगर मन मे प्रश्न तो उठता ही है कि रोप के कारण तो चीन महोदन ही देते रहे हैं और हम हर जग मी बात पर धरतन लगते रहे हैं कि वे मगर धरत बच नाराज हैं। चीन-बीज मे हल बहते भी रहे कि हम चीन मे मित्र भावें मिचे तो उसका स्वागन करिये। चीन मे इन पर बड़ी कोई सयक प्रतिक्रिया नहीं दिगाई। हम 'कोनकाल को डांड' बताने की पुगानी मगर सटीक बहावत वा उपयोग दमनिए नहीं

● मयनल धरती के पूनपूर्व बाधो सरदार सभोनिहू मे धरनी धरतमयना पूरी कर नी है। मानि विन्तन के एक प्रबन्ध ने बताया कि पुनरुत्थ मे न धर्यदाय है। पहले तोन भाग ६०० बरें पूर्व के दरनु तिया धरतगान व दरनुत्थ माननिहू मे सययय है।

करना चाहते कि हम बोडा जोरर भी सत्ता मे मानि के हाथी बने रहना चाहते हैं, चीन की भ्रुट्टी-भगिया उसे मुबारक। इन धरतक उत धर-धरन के मानि के साथ उसकी सद्भावना की प्रतीक्षा करिये। हमारे मिर पर तो काम है, हजार धरयें हैं। मनाने के लिए जहानही धरने-जाने वा हमारे पास धरतका धरयय नहीं है, मगर कोई मुजब नर भूना माम को हमारे पास वा जाना चाहे तो हम उसका स्वागत करिये।

इसी तरह जबें इस धरामन की भी है कि चीन स्यासिका को तिब्बत लोट धाने के इरिग दे रहा है। दलाईलामा इन दिने पुरोंग के देशो मे घूम रहे हैं। दो महीने पहले उन्होंने येनचैटर धरिभंगन की भेंट देते हुए कटा वा कि चीन की घोर मे नताव कम होने के कारण दिगाई दे रहे हैं और सभासना है कि वे कभी धरने देस मे फिर लोटने की परिस्थिति को धरने-धरने देवें। दो दलाईलामा एक धरिभंग महापुत्र है। राजनीति मे निष्ठाान चीनी मानसो को जने साधारणतया कोई भ्रम नहीं हो सकता, तो भी धरत उन्हें तिब्बत लोटने की बात मुमाने के पीछे कोई भय हो, यह एकदम धरतगानो भी नहीं है। दलाईलामा जहा जाने हैं, चाहे उनकी सौम्यता वा एक धरत मडल तो बनना ही है और चीन की ठमवीर जो बंधे भी बहुत सरक नहीं है घोर कानो पदती है। बंधे राजनीतिज सयवीर के बानी-पीनी होने की बहुत विन्त नहीं करता। हो सकता है, यह दलाईलामा को तिब्बत मे महदूर कर रखने वा एक तरीका चीन को सूझा हो।

'सयय घोर सभोनिहू' नामक इस धरतमयना मे दिन्नी व मित्रपुरी के ऐतिहासिक धरतदरुण बंधे, सभेदपुरी मे वरपुनन व सुविध के बीच २० बंधे की दमन तथा सययण मे पूर्वे विन्तीबाजी व जयप्रथा मानसययनी मे हुंई बागीनों का पूरा विन्तरा है।

हम बारह साल तक भूदान वमेटी के माहुद्रहापुर जिले के संयोजक रहे तथा लोक सेवक रहे और शांति सैनिक तो अभी भी हैं। गांधी स्मारक निधि में मैंने छह हजार रुपया इकट्ठा करके जमा किया। झाजाद हिन्द फौज का कॅम्प सयामा उसमें ६० सैनिक थे, वह भी अपने सचं पर, तिस पर भी दो सौ रुपये वाली पेगान व विल्ला मुझे अभी तक नहीं मिला, जिन्होंने सिवा जेल काटने के और कुछ नहीं किया उनकी पेगान मंजूर हो गयी। कृपया प्राप्त 'कुर्बानी का बदला बनाम प्रथमानन्दक निबंध' (ब्रह्मन यज्ञ २० अगस्त '७३) को और ३-४ अक्षरवारो मे छापावें। मेरी उम्र ७५ वर्ष है, बीमार रहता हूँ, मजजोर हूँ।

कन्हैलाल शुक्ल,
द्वारा राजाराम, प्रा० व पो०
ररुधा, तह० पुवाया,
शाहजहापुर (उ० प्र०)

राष्ट्रीय परिषद मे तीन दिन की निरसंकोच तथा उन्मुक्त चर्चा के बाद सर्व समति से राष्ट्र के नाम एक निवेदन स्वीकार किया गया जिसके आठ-भूत्री कार्यक्रम की घोषणाएँ एवं व्यापकता ही सम्मेलन की सर्वोच्च उपरतिथि है। इसे न्यूनतम कार्यक्रम की उपमा दी जा सकती है, जिसमे व्यक्तिगत एवं सामूहिक पहल-उपक्रम की पूरी-पूरी सम्भावना विद्यमान है। इसके कार्यक्रमों में हर विचार का देशभक्त-नारायण प्रथम अपना न्यूनाधिक सहयोग दे सकता है।

आज के सदर्भ मे सम्मेलन की प्रात्यक्ष्यता तथा महत्त्व स्वयं सिद्ध है। सर्वमान्य दानव राजनीति ने राष्ट्र के जीवन् को अस्तव्यस्त कर रखा है। चरित्र का ह्रास सर्व दिवदिन है। सामूची भारतीय सङ्घति संकटग्रस्त है। ऐसी विवट घडी के मुकामले मे एक दलनिरपेक्ष, नि स्वार्थ व्यक्तित्व प्रथवा संगठन की अपेक्षा थी, जो विभिन्न विचारधाराओं के एक साथ की भूमिका धरा कर सके ताकि राष्ट्र की और अधिक पवन से बचा

लिया जाये। लेन्के कर पूज्य विनोबा और उन्ही के हाथो परवान चडी संस्था सर्व सेवा संघ ही इस भूमिका के लिए उपयुक्त है।

बड़े हर्ष की बात है कि २५ वर्ष पहले विनोबा के नेतृत्व मे इसी पुण्य भूमि पर अपनी स्थापना के बाद सर्वोदय समाज ने अपनी राजनीति-निरपेक्ष सर्वोच्च नीति से कुछ हट कर अपनी वास्तविक भूमिका को पहचानना आरम्भ कर दिया है। यही राष्ट्रीय सम्मेलन इसका ताजा प्रमाण है। अन्यथा कौन इस तथ्य से इन्कार कर सकता है कि बापू के वलदान के बाद यदि एक समग्र-सर्वांगीण नेतृत्व का जो कदाचित अभाव रहा है उसकी जिम्मेदारी बहुत हद तक सर्वोप्य नेताओ पर ही पारती है। उन्हीने ही गांधीजी को समग्र नीति से मुह मोडकर राजनीति से मानो सन्ध्या लेने का पाठ पढाया। वे मुझते रहे हैं कि रचनात्मक कार्य और राजनीति मे कोई मेल नहीं। सत विनोबा के शब्द हैं, "राजनीति के दिन लय गये" इस सर्वोदयी मनोवृति के फलस्वरूप राजनीति मे निरमुद्य अनेकिकता का बोल-बाला तो होने ही लगा, रचनात्मक कार्य भी रहलत कार्य बन गये। अन्धाय-नीपण का प्रतिवारात्मक अहितक सधपं मद पड़ते-पड़ते नितान बंद हो गया। इतना ही नहीं, सत्याग्रह का विचारसंकट विरोध भी होने लगा और अपनी सरकार को परेशान न करने का उपदेश दिया जाने लगा। मानो अपनी सरकार के साथ किसी प्रकार के मतभेद का सधपं का आधार ही राजनीतिक स्वतन्त्रता के बाद समाप्त हो चुका है। अण्डव की भावना की वितनी शान्तिपूर्ण धारणा है। जित प्यार मे भगडा न हो और मात्र सौजन्यता ही हो वह प्यार का विवृत रूप है। वितना सधपं-भगडा होना या बापू-बा के बीच।

रचनात्मक कार्य के सधपं मे भी सर्वोदय समाज ही हृदित प्रामिक रही है। समुचे रचात्मक कार्य का कोई सदय नहीं रहा, जैसे

गांधीजी के निकट सारे रचनात्मक कार्यो का एकमात्र उद्देश्य स्वराज्य था। सर्वोदय नेता भी नह सकते हैं कि उनके ग्रामदान का लक्ष्य ग्रामस्वराज्य है। परन्तु ये यह भूल जाते हैं कि ग्रामदान आन्दोलन ने ही रचनात्मक कार्यो को निगल लिया है। ग्रामदान का आधार ग्रामस्वायत्तबन है ही नहीं, क्योंकि सारे आन्दोलन मे उत्पादक शरीर अथवा कोई स्थान नहीं। विरला ही कोई सर्वोदय नेता नियमित रूप से उत्पादक शरीर अथवा करता है। उनकी भूमिका अधिकतर प्रचारक-उपदेशक-शिक्षक की बन गयी है। गत वर्ष राजघाट, नई दिल्ली मे रचनात्मक सध्याओं के अखिल भारतीय सम्मेलन मे सर्वोदय नेता आचार्य रामभुति ने इस तथ्य को खुले आम स्वीकार भी किया था।

सर्वोदय समाज की इस राजनीति-निरपेक्ष नीति का एक अन्य दुष्परिणाम भी सामने आया। राजनेताओ ने भी रचनात्मक-कार्य निरपेक्ष राजनीति अपना कर विशुद्ध सत्ता की राजनीति की शरए ली। इस तरह बापू का समग्र व्यक्तित्व उनके दो उत्तराधिकारियों-विनोबा और नेहरू मे विभक्त होकर दो लगभग इतन समानान्तर धाराओ मे बहने लगा।

एकमात्र इनी कारण से आज देश की गम्भीर स्थिति देशभक्तों की चिन्ता का विषय बनी हुई है और इसी चिन्ता का परिणाम सर्व सेवा सध द्वारा आमंत्रित यह राष्ट्रीय सम्मेलन था। सर्व सेवा सध के अध्यक्ष (और सम्मेलन के अध्यक्ष भी) श्री सिद्धारा डड्डा और मन्त्री श्री ववा ने सम्मेलन के मंचालन मे अपनी श्रुभ-श्रुभ और अक्षरहार कुशलता का स्पष्ट परिचय दिया। सभी विचारधाराओं के प्रतिनिधियों ने मुक्त कंठ से सम्मेलन के निवेदन का अनुमोदन किया और आशा व्यक्त की कि इस प्रतिष्ठा को आगे बढ़ाया जायेगा। (शेष पृष्ठ १६ पर)

क्या अनादि—अनन्त ब्रह्माण्ड का छोर मिला गया ?

आइन्सटीनजी बरसी से ब्रह्माण्ड को मानने की, सोचने की कोशिश कर रहा है, मानहीन इन सोच में अपने अन्ध विश्वास, विश्वास, दर्शन-शास्त्र, गणित शास्त्र सभी का सहारा लिया है। लेकिन सब अमेरिका की वैज्ञानिक विचार हैं। वैज्ञानिकों के समीक्षाएँ ऐसी हैं कि उन्होंने तथा अमेरिका में ही शोध कर रहे कुछ उनके विचारों ने शायद इस मानहीन सोच का अन्त पा लिया है। भी एवेन का कहना है कि उन्होंने स्पष्ट रूप से ब्रह्माण्ड की 'सीमा' को देखा है।

कहते हैं।) ब्रह्माण्ड, जिसका समीक्षात्मक नाम भी० एच० डब्ल्यू रखा गया है, देखने पर एक बरसी का और बिलकुल साफ दिखता है। यह ब्रह्माण्ड इतना साफ दिखता है कि यदि इसके पीछे कोई और भी ब्रह्माण्ड होना या होते तो हम से कम कुछ घुसने ही नहीं, दिखाई जरूर देने। अब कुछ समीक्षात्मक इस ब्रह्माण्ड के बाहर और कुछ भी नहीं देख पा रहे हैं, भी एवेन सिद्ध का कहना है कि ब्रह्माण्ड का विस्तार असीमित न होकर सीमित है, अनन्त नहीं है। समीक्षात्मक इसी ब्रह्माण्ड की

बैजल दस बरस ही बीते हैं। अर्थ जो समाचार साप्ताहिक टाइम्स ने ब्रह्माण्ड की सीमा सोचने का दावा करने वाले इन समाचार पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इसमें काफी गुणात्मक है कि यह समीक्षात्मक जो देख रहे हैं वह शायद उनके दृष्टि की सीमा है। जिसे हम ब्रह्माण्ड की सीमा मानें वें हैं यह शायद हमारे विचार की ही सीमा है।

हजारों बरस से धारणी रात को आकाश देखना रहा है, वह चिंतित होता रहा, मुग्ध होता रहा, भय व्याप्त रहा है। लेकिन अभी कुछ मुट्टी भर तथ्या ही बोनी है जब हमें यह मान्य हो सका है कि हमारा यह पृथ्वी और यह सूर्य एक ही प्रणाली का भाग है। हमारी पृथ्वी और उसके आस-पास के अन्य ग्रहों (आस-पास भी आस-पास) हैं धनी चार पांच बरस ही हुए जब कि धारणी ने पृथ्वी के उन ग्रह चार पर ही कदम रखा है। सौर ग्रहों में से दो की ओर जाने मंगल और शुक की ओर मानव विहीन गान ही खाना चिपे जा सके है।) का विज्ञान (इसने वाला परिवार पूरे ब्रह्माण्ड में एक घबरे बराबर है)मिथन रखता है। ब्रह्माण्ड में अनेक सौर प्रणालियाँ हैं, हमारी ही आकाशगंगा में अनेक तारे हैं। इन तारों का अन्त प्रह-परिवार होगा। इन विस्तार में नहीं हम पर है दुबककर। हम अपने को विशाल इस समुद्र में हीन भी न मानें, लेकिन गर्व की, दम्भ की तो कोई गुनाह नही होनी चाहिए। इस विस्तार का कोई और परिणाम ही मान ही, इतना तो होना ही चाहिए कि हमें धृत्वा का, अपने अन्त का मान ही जाये। यह अन्त का आत्मविश्वास ही हमें अपने ब्रह्माण्ड जोयगा। ऐसा लगना है कि जैसे-जैसे हमारे अन्त में आत्म विश्वास की सीमा बढ़ती जायेगी जैसे-जैसे ही ब्रह्माण्ड की भी 'सीमा' सरकती जायेगी। शायद जो हालत बनोपरिपद्य से बड़ा की है नही ब्रह्माण्ड की है :

यसमान तन्म मत गर्त यद्य न वेद सः ।
अविज्ञान विज्ञानानां विज्ञानपरिज्ञानानाम् ॥



एक आधुनिक की ब्रह्माण्ड की कल्पना : परमदृष्टी जगत्सर्व को एक जगत्त बुद्धक

भी एवेन की कल्पना इस प्रकार है : ब्रह्माण्ड, जो कि तारों की तरह होते हैं, अन्तर्ग्रह में सबसे अधिक बरसदार सीमा में से एक है। अब तक की सोच के मुताबिक जो सबसे दूर ब्रह्माण्ड है उसकी दूरी, १२,०००,०००,००० प्रकाशवर्ष मील है। (प्रकाश की गति १८६,००० मील प्रति सेकण्ड है, इस धरणीय गति से चलने वाले प्रकाश को मिला दूरी को हम करने में हुए एक बरस लगना है, उसे प्रकाशवर्ष

की सीमा मान रहे हैं।) ब्रह्माण्ड के अनादि-अनन्त होने का विचार, सूर्य की कल्पना की तरह पूर्व से ही निकला था। लेकिन पश्चिम का आकाश प्रकाश-असीमित की सीमा को मानने का रहा है। आज ब्रह्माण्ड भी० एच० डब्ल्यू उस मानहीन विचार का अन्त मान लिया गया है। इससे पहले कि अनादि-अनन्त की कल्पना विज्ञान की सोच पर अकनापूर कर दी जाये, यह धार कर लेना जरूरी है कि इन ब्रह्माण्ड नामक जगत्तों की सोच हुए धनी

महिला-पदयात्राएं महिला संगठनों की नींव रखें

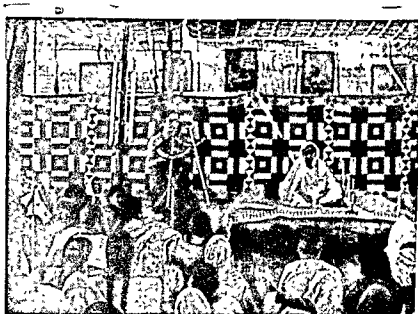
कान्ता-हरविलास

“मेरी युवावस्था मे मैंने कुछ भाइयों को तैयार किया, अब कुछ बहनें तैयार हो ऐसी मेरी इच्छा है। मुझे शेष जीवन स्त्रियों की सेवा मे व्यतीत करना है।” विनोब जी ने कई बार अपनी यह इच्छा प्रकट की है। इसी सिलसिले मे उनकी प्रेरणा से १९५६ मे मकनार मे ब्रह्मविद्या मन्दिर की स्थापना हुई। वहाँ रहकर ब्रह्मचारिणी बहनें धात्र चौहद साल से साधना कर रही है।

जन्मी इन तीव्र इच्छा का दूसरा परिणाम है अखिल-भारत-महिला पदयात्रा। चार ब्रह्मचारिणी बहनें पूरे देश की वरह साल की वेदल यात्रा करने निवृत्ती है। पिछले छ साल मे न-रीध वारह-चौदह हजार मील की पदयात्रा वे कर चुकी हैं। देश के नौ प्रदेशों मे उनकी यात्रा हो चुकी है। अभी वे भाद्रपद प्रदेश मे घूम रही हैं। जनता की भ्रोर से इस महिला पदयात्रा टोसी का बहुत स्वागत हो रहा है। कई लोग उनसे कहा करते हैं कि ऐसी तों अनेक महिला लोक-यात्रायें निकलनी चाहिए।

ऐसा ही सुभाष जनवरी मे विनोबाजी के सानिध्य मे जब भगिनी स्त्रीह मिलन हुआ तब भी सामने आया। बहनों के प्रश्नों के बारे मे वहा लोच विचार हुआ। तब सोचे गये कुछ कार्यक्रमों मे एक यह भी था कि सारे देश मे स्त्री-शक्ति-जागृति सप्ताह मनाया जाये। उस सप्ताह में देश के प्रत्येक जिले मे बहनों को पदयात्रायें निकलें। कुछ माह पहले कुश्नेत्र मे पहला ३० भा० महिला सर्वोदय सम्मेलन हुआ। तब से इसके लिए तैयारिया शुरू हुईं। इनके अनुसार अब ११ से १७ फरव्रबर तक सारे देश मे करीब ३०० जिले मे बहनों की पदयात्रायें निकल रही हैं। जैसे दिवाली, जन्माष्टमी आदि त्यौहार एन एन सारे देश मे मनाये जाते हैं, उसी तरह इन सात दिनों मे कन्नौर से लेकर केरल और प्रसम से गुजरात तक सब जगह एक साथ हजारों बहनें पदयात्रा करेंगी।

गुजरात मे भी हमने यह कार्यक्रम उठाया है। अत माह मे इनके लिए एक प्रारम्भिक विचारि नडियाद मे हुआ था। ५५० बहनें



कुश्नेत्र मे हुआ पहला महिला सम्मेलन जिसमें स्त्री जागरण सप्ताह का निर्णय हुआ

पाई। कई संस्थाओं के लोगों का बहना था कि अपना निरमा खुद सर्च करके इतनी बड़ी तादाद मे शायद ही कभी इतनी बहनें इकट्ठी हुई होगी। बहनों मे इतना उत्साह था कि हरेक जिले मे सिर्फ एक ही पदयात्रा नही, बल्कि चार-चार, पाच-पाच पदयात्रायें निकालना तय हुआ। उस मुवाकित सब जगह तैयारिया हो रही हैं। अब तक मिनी हुई जानवारी के अनुसार गुजरात के कुव १६ जिलों मे सो-सावा सो पदयात्रायें तयल रही है।

ये सब टोलिया हमारे दूर-दूर के गावों की बहनों के पास पहुँचेंगी और जागृति के बारे मे बातचीत करेंगी। गाव की बहनों तब बहुत कम लोग पहुँचते हैं। और खास बहनों के सवालों के बारे मे बहुत कम चर्चा हुआ करती है। इस सप्ताह के निमित्त उन सबका सपर्क होगा। और पदयात्रा चुकि बहनों की है इसलिए डेट पर के अन्दर पहुँचे तक उनका प्रवेश ही संवेगा।

इस सप्ताह मे पदयात्रा के प्रतिरिक्त स्त्री जागृति के सन्दर्भ मे अन्य विविध कार्यक्रम भी होंगे। नाटक, संगीत, गीत, चर्चा आदि के द्वारा व्यापक प्रचार होगा। अनु-

भवी बहनों के व्याख्यान भी आयोजित विये जायेंगे। मूरत, शेखा, प्रहमसावाद जिले मे इस तरह के कार्यक्रम सब्से नगर और महुरों मे आयोजित हुए हैं।

गुजरात मे कई सालों से कुछ संस्थायें स्त्री जागृति के लिए काम कर रही हैं। उन सबका सुन्दर समन्वय ही और सब एक साथ मिल कर स्त्री जागृति का काम सचिय रूप से चलवायें ऐसी हमारी कोशिश है।

जगह-जगह महिला संगठन बनाने की धीर जहा हो वहा सकिय करने की कोशिश की जायेगी। ये संगठन स्त्री-समाज के लिए साधन रूप ऐसे प्रगामीनीय पोस्टर और विज्ञापनों के सामने विरोध जगायें। विप्रयो की छेड़छाड, बलात्कार आदि के विरुद्ध लोक-शिक्षण करने कोशमत सद्दा करें। बालविवाह दहेज आदि क्रूरिवाजों के सामने मान्दोलन जगायें। बहनों को धार्मिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाने के लिए विविध गृह उद्योग और प्रामोद्योग बनायें। सर्वोदय-शात्र जैसी प्रवृत्ति द्वारा घर मे और समाज मे शक्ति एव महिला के सत्कार दें। इस प्रकार के विविध कार्यक्रमों के बीच इस सप्ताह के दौरान भारत भर मे बोये जायेंगे।

सहरसा : अन्तिम अभियान

सहरसा सामन्तवाज्य समूह केन्द्र के मित्रों का मित्र मिलन तारीख १२ से १५ मिनम्बर तक बिजोडा के सानिध्य में हुआ था। १५ अगस्त से ही सहरसा के साथी श्रद्धाविजय मन्दिर में इकट्ठा होने लगे थे। ऐसे ही तीराही बाबा साधियों के कुछ न कुछ शोर्ले करने ही थे, पर १० मिनम्बर को साथी साधियों को इकट्ठा देना कर विजोडा में रहने ही तीन महीने में सहरसा के काम को पूरा करने का प्रावधान किया। वेचनाप बाबू ने कहा कि पहा तीन साल से हम सब लोग ही हुए हैं, लेकिन काम पूरा नहीं हो पा रहा है। बिजोडा ने कहा कि इसी अनुभव के इन्हें तीन महीने में काम पूरा करने को कह रहे हैं। तीन महीने कम करने ही तो कार महीने मिल सकते हैं। २ अक्टूबर से काम शुरू हो और तीन जनवरी तक पूरा किया जाए।

११ मिनम्बर बिजोडा जयन्ती के कुछ समय पर बिहार के राजस्व मंत्री श्री लहटन चौधरी विजोडा को अपनी धरदा भर्षिया करने का प्रयत्न। बाबा की चतुर्धास के दिनों में, सहरसा जिनके में लहटन चौधरी पाया के समय सामन्त वेकर धाने वगैरे थे, तब से बाबा उन्हें लहटन के बदल 'कामदेव' चौधरी ने काम से पुकारा है। उन दिन चौधर में बाबा ने पुन कहा, "सब दिन कर मरणा का काम कर महीने में पूरा करें। काम पूरा नहीं हो पाया तो गयी मगत में सम्पूर्ण प्रयेग करें।" बाबा के इन प्रावधान पर राज में सहरसा के मित्रों के पुरो सधोरता के चर्चा थी। गयी सम्भूष कर रह थे कि वंगपान मित्र देवने हुए। मित्रों का सम्बन्धन की तालिम में सहरसा का काम पूरा होने की सम्भवता बहुत कम है। इनके लिए बाबा की प्रयत्न उचितिये की साधनरत्ना सम्भूष को सर्व छोड़ जा का सहरसा करने का सम्भवता के का निर्णय हुआ। यह भी ऐसा काम कि कर महीने में काम पूरा हो सके, लहने लिए सधोरी पूर्व संघारी करना

प्रयत्न जरूरी है। तब पाया कि अक्टूबर से दिसम्बर तक पूर्व संघारी की जाये, जिसमें कार महीने के अभियान सञ्चयन के लिए मित्रा सलीप प्रयत्न बन जाये, प्रलम्ब स्तर अभियान समितिया गठित कर ली जाये, जिनके में मार्जजिक कार्यकर्ताओं, बड़े बुद्धि-वानों तथा सकारारी सेवकों की समाए ह। और अभियान में इन मर्गों का भरपूर सहायग मिले। फिर जनवरी में शर्पत तक चार महीने का अभियान बनेगा। इस शर्षथ म काम का पूरा वेग देन के लिए एक महीने का पूर कर महीना करन का तन हुआ। १४ महीने के लिए कर प्रयत्न में काम से कम दो मर्ग संघारी ह। जिनमें एक बिहार से और एक दूसरे प्रदेश में प्रयत्न ह, जो प्रयत्न में काम की सम्पूर्ण वाज्ज्य करेग। मात्रा पया कि शरप तथा वन जाय, काम म उदने वाली जमीन की कम से कम पयल प्रविशत भूमि बट जाय श्रान की जमीन का निरवशा हो जाये जोर प्रयत्नरत की मर्गों के साधार पर सभी प्रयत्न में प्रयत्न सम्भूष बन जाये तो काम पूरा हुआ मात्रा जायगा।

दूसरे दिन १२ मिनम्बर का बिजोडा के साथ मित्रा का यह चर्चा हुई। पहले दिन सोची हुई अभियान की वाज्ज्य बाबा के सामने प्रस्तुत की गई थीन उनको वृत्ति के लिए बाबा ने सहरसा करने का अनुरोध किया गया। बाबा ने कहा, "बाबा की योजना ठीक है। इनके गरीर प्रयाग के लिए बाड महीने की मुदत चाहिए, यह ठीक है। का मने कहा का कि सहरसा का काम पूरा हो पा सगा में प्रयत्न करे। यह जो निश्चय मगत में याता लगाने का है उमका दूसरा भी धर्ष है। वृह मर कि भाग्य व्यपति मगत है, उमके प्रयेग करे। बिहार के साथी निश्चय सर्व भारत में। बाबा भारत में साथ सम्भूष रदन काये जिनके लोग होने ३ प्राय भारत में सधियन भागारीर नेत्र नही बन रहा है। पहले एक-एक प्रदेश के नेता सधियन भारत के नेता होने थे। समाप्त

प्राय हमारे कुछ साधियों को श्रविल भारत में पहुँचना चाहिए। बाड महीना पूरी शक्ति के साथ सहरसा के काम में लगें। पवास प्रविशत काम पूरा हुआ तो सम्भवता माना जायेगा। शरप सकल हुआ तो सम्भवता के साथ भारत में जायेंगे। सम्भयन रहा तो सम्भवता के साथ जायेंगे। बाड महीने के बाद बिहार के साथ भारत में जायेंगे। पूर्ण प्रयत्न के बावजूद सम्भवता मिली तो वह वडी सम्भवता मानी जायेगी। मुसीबतों का अनुभव था जायेगा। सम्भुषकी मनुष्य होकर प्राय बाहर निरन्तरग। उन सम्भुष का साथ दूसरे को मिलेगा। जिनकी भी सम्भवता मिले, उनी ही वेर बाहर निकलकर है।

अपने सहरसा करने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि काज इन माया में प्रायवे ही सम्भवता मिल भी सकती है। ऐसा मान सकते हैं। लेकिन उमके भावकों तावत बड़ेगी नहीं। एक मनुष्य की तावत प्रकट होगी। बाकी तावा का मजहोम होना। उनकी तावत उक जायगी। इत बावने बाबा अभियान करेगा। अभियान में तावत मिलेगी। बाबा वटा मृतम रूपेए हाकिम रहेगा।

बिजोडा से प्राय बाडम और निर्दोषन के सम्बन्ध में सहरसा अभियान की, जिनके उन्होंने जनिम अभियान कहा है रूप देया मित्र मिलन को गोष्ठी में स्थिर की गई। सर्व सेवा मर्गों के सम्भूष तो पिटराज इट्टा तथा मर्गों टाहुरदन बग भी इन गोष्ठी में शर्षान्त हुए। निर्धारित कार्यक्रम के सम्भूषन तबखर और दिसम्बर म पूर्व संघारी के बाद जनवरी के शर्षन तक अभियान बनेगा। एक महीने का सुदर अभियान जनवरी महीने में होगा। जिनमें सहरसा के सधियन बिहार में १२५ तथा देश के अन्य भागों में १२२ कार्यकर्ता भलग लेंगे और एक साथ सधारी मर्गोचित गति प्रापदान पुष्टि करायें में लगायें। सुदर अभियान के बाद भी वे साथी गेय महीने का सम्भवता के काम में देंगे।

सेवापान मध सधियेयन में भार लेने के लिए बिहार में प्रांतीय संघारीर मध्यम, जिनका सम्बन्धन मरणा व सारी सम्भूष सम्भवता

कालपुरुष की प्रेरणा हमारे साथ है

प्रश्न: मानव समाज जिस दिशा में जा रहा है उसे अपनी मरजी को दिशा में ले जाने में सामाजिक हिंसा और आसक्ति का प्रभाव नहीं है क्या ?

विनोबा: मुझे लगता है कि धीरे-धीरे मानव समाज उन्नति की दिशा की ओर जा रहा है। कुल दुनिया शांति, एकता की ओर जा रही है। तब क्या कोई बहेगा कि हम चीन गयी जायेंगे। मानव समाज शांति की ओर जा रहा है। यदि वह किसी खतरे की दिशा में जा रहा हो तो उसे उलटने की बात छाती है। पर मुझे ऐसा नहीं लगता है।

प्रश्न: आज जो परिस्थिति बनी है, उसका कर्ता मानव ही हो तो उसमें बाध पुरुष का सबेते है क्या ?

विनोबा: आज जो परिस्थिति पैदा हो रही है वह कालपुरुष का परिणाम है। फिर से बुद्ध जाग्रत हो जाये ऐसी धर्म कालपुरुष की चाह है। २५०० वर्ष पहले मौनबुद्ध पैदा हुए। फिर वे हट गये। अब फिर पैदा हुए हैं। जिनकी जयन्ती २५०० साल के बाद शुरू हुई है। वे आगे भी। टिकेगे बौद्ध काल में शांति आयेगी। मानव जाति गिरेगी, फिर ऊपर उठेगी। पर आज हमारे लिए अत्यंत अनुकूल परिस्थिति है, ऐसा मुझे दिखता है।

प्रश्न: आज की विषम परिस्थिति का भान लोगों को होने के बावजूद भी उनके निराकरण की तीव्रता क्यों नजर नहीं आती है ?

विनोबा: देखिये यह आश्रम है। दूर से देखने वाले को लगता है कि आश्रम कितना सुन्दर है। पर पास वाले को लगेगा कि यहाँ कुछ बचरा पड़ा है, बहा पड़ा है। दूर वाले को यह बचरा दिखता नहीं है। पास से देखने पर दिखता है। यानी सफाई नहीं करना, ऐसा नहीं है। सफाई अच्छी है। ऐसी भद्रा रखनी ही है। आसपास गदगी है ऐसा न बहो। पर सफाई करते रहे। गुजराती में बहाव है कि दुमरा दूर थी रतियामणा' यानी पहाड़ दूर से ही मुहावने लगते हैं। यह बात भी समझती चाहिए।

प्रश्न सौराष्ट्र में शेरंग भूमि छोड़ दें, ऐसा वातावरण नहीं है। बहा का भिन्नान ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ने का कोई कदम सुझाइये।

विनोबा जमीन वाटने की जो बात है उसे आप बहा छोड़ दें। और सबसे बहें कि ग्रामसभा की रचना कीजिये। सर्व सम्मति से गाव के काम कीजिये, गाव में कोई भूसा न रहे। एक भी व्यक्ति भूसा हो तो उसकी जिम्मेदारी ग्रामसभा की लेनी चाहिए। वह जब चाहेगा तब ग्रामसभा वाले भोजन करेंगे। ऐसी हवा गाव-गाव में बनाइये। इतना होगा, ग्रामसभा बनेगी भले ही जमीन न बटे तो भी बाबा उसे बाबा मान्य करेगा। क्योंकि बाबा बनी आने शब्दों का आग्रह नहीं रखता है। सौराष्ट्र में ऐसा करने तो भी चलना। सौराष्ट्र के लोग बहो-बहा

नही जाते ? महासागरों के उस पार दूर-दूर तक जाते हैं। गुजराती इतने दूर नहीं जाते हैं। वह बहाव है न "जे जन जाय जाये, पाछीना भावे। भावे तो परिवानां चावे एरलु धन सावे" अर्थात् जो व्यक्ति जायादेश जायेगा वह वापस गयी लौटता। यदि लौटेगा तो इतना धन कमा कर वह लायेगा कि उसकी पत्नी घर पीछी को भी पुरेगा। पहली बात तो यही है कि वह वापस नहीं लौटेगा। वापस चला आया तो यह दूसरी बात।

प्रश्न: आज की अन्त्यापूर्व समाज रचना ही गाव की एकता का तोड़ रही है। तब एकता-एकता की रट कहा तक बचिनोबी सुमंगल है ?

विनोबा कितनी गिणें ? एक बार एवता कि दो बार, कि तीन बार या चार बार एवता ? "कितनी बार क्षमा किया जाये," ऐसा ईसा से पूछा गया। ईसा ने कहा, "सात बार क्षमा करूँगा।" "फिर भी कुछ नहीं हुआ तो ?" ईसा ने कहा कि "७ x ७ इस प्रकार गणित के गुण के हिसाब से क्षमा करते रहो।" एवता का जाप चितना किया जाये ? राम...राम जपने से बुद्ध न मिसा तो क्या रावण... रावण ऐसा शुरू किया जाये ? यह तो भक्ति की बसोटी है। गाव की एकता बनी टूटनी नहीं चाहिए। आज की परिस्थिति, सरकार, मजदूर, मालिक कोई भी बाराए हो, फिर भी एकता टूटनी नहीं चाहिए। अद्यतपूर्वक एवता का प्रयत्न करते रहना यही हमारा काम है। (गुजराती से अनुवाद)

है, घर कुनो भीरु लगे इस काम में। धाम-स्वराज के काम में पूरी शक्ति और पूजा लगा दो। खादी का अभिप्रेत और उसकी समस्याओं के समाधान का एवमात्र उपाय है खादी राम को गाव के आधार पर खड़ा करना। बिहार सर्वोदय मंडल की गारी शक्ति इसमें सगनी चाहिए।" बिहार के साथियों ने उत्साहपूर्वक इस अभियान में लगने का निश्चय किया है।

इस अभियान में अग्रविद्या मन्दिर की ओर से दो बहनें और दो भाई भेजने का

निश्चय किया गया है। बाबा के मुभाव पर बगाल के श्री नाचन्द भडारी मार्च तक सहरसा में रहेंगे और फिर बगाल में होने वाले सर्वोदय समाज सम्मेलन के लिए जायेंगे। तमिलनाडु से श्री जगन्नाथन् जी भी अभियान में तीन महीने का समय देंगे। इसी तरह गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश, वृत्तिक तथा अन्य प्रांतों से आन्दोलन के बहुत से माथी एक उल्लाही मित्रों ने बाबा की प्रेरणा से सहरसा से इस अभियान में लगने का निश्चय किया है। (विद्यासागर व सर्वनारायण द्वारा)

→

सत्याभक्त के पदाधिकारीयण तथा अनेक लोचनेवक, कार्यकर्ता आये थे। २० सितम्बर को इनके समाज बोलेते हुए बाबा ने कहा, "आज सहरसा काम का अन्तिम दिन है।" बिहार की खादी-सत्याभक्तों के मार्गदर्शन एवं पदाधिकारियों से खादी कार्य की समस्याओं एवं उनके समाधान की चर्चा के दौरान कबीर की पक्ति 'जो पर पूके भागनो चले हमारे साथ' का उल्लेख करते हुए बाबा ने कहा कि, "खादी की बचाने का एक ही रास्ता

मध्य प्रदेश

प्रगति और सफलताओं का एक वर्ष

- डाकुओं के आत्मसमर्पण के परिणामस्वरूप सदियों से डाकू पीड़ित चम्बल और मुन्देलखण्ड क्षेत्रों में शान्ति, सहयोग तथा आत्मविश्वास के नये युग का प्रारम्भ ।
- खेती की जमीन और शहरी सम्पत्ति की नयी न्यायपूर्ण सीमा निर्धारण को कानून बनाया गया ।
- राज्य के सतुलित विकास के लिये पहली बार राज्य योजना मण्डल का गठन ।
- वर्ष के अन्त तक सभी उपलब्ध कृषि योग्य भूमि वितरण का कार्य प्रारम्भ ।
- खेतिहर मजदूरों के आवास के लिये नि:शुल्क भू-खण्ड का वितरण ।
- नलकूपी तथा लघु सिंचाई योजनाओं द्वारा १ लाख १० हजार एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई ।
- २ से २ एकड़ वाले छोटे किसानों को सहकारिता का लाभ ।
- १ लाख ८६ हजार पम्पों द्वारा खेतों की सिंचाई सुविधा ।
- द्रुत धीचोगीकरण की दिशा में ठीस कदम ।
- शासकीय कर्मचारियों को अच्छे वेतनमान, भत्ते तथा अन्य सुविधाएँ ।
- स्वायत्तपदासी संस्थाओं के कर्मचारियों की सेवा शर्तों में सुधार ।
- ग्राम पंचायतों को व्यापक अधिकार ।
- छात्र-कल्याण सलाहकार परिषद का गठन ।
- बांस के व्यापार के राष्ट्रीयकरण का निर्णय ।

उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में सघन प्रयास

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म० प्र० द्वारा प्रसारित

पृ० प्र० न० १ २३९४/७३

मुद्रण-मन्, सीमन्तार, १५ अक्टूबर १९७३

सर्वोदय

सं. ३२५ (६-१२)
प्रकाशक
सर्वोदय समाज

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २२ अक्टूबर, '७३



भारत जिले के अतिरिक्त बिहार लख में महिलाओं के साथ महिला

× शानि पुरस्कार - × बीने साल की दिल दुखाने वाली यादें × सूदन के साथ
का भी विकास चाहिए! × इस दीवाली की जुनोती × क्या मुसलमान देश की मृ
के साथ है? × स्त्री को सुवित का अधिकार नहीं है व आन्दोलन के स

शांति पुरस्कार

जिती एशियाई की यह धार प्रदान करता है और इसके लिए जहाँ वे एक और बधाई के पात्र हैं और शांति पुरस्कार समिति की प्रशंसा की जानी चाहिए वहाँ यह ध्यान भी भाग्य विना नहीं रहता कि विश्व शांति की दिशा में इन ७३ वर्षों में क्या इसके पूर्व किसी एशियाई ने ऐसा शांति कार्य नहीं किया कि जो विश्व के इस पुरस्कार के योग्य हो ? साथ ही शांति पुरस्कार के सबंध में अन्य सबाल भी उठते हैं।

पहला तो यह है कि शांति के ही दो प्रकार हैं एक अशान्ति शमन का है, जिस कोटि में इस वर्ष का पुरस्कार आता है, और दूसरा है शांति के स्वाई आधार निर्माण करने का यह दूसरी कोटि बुनियादी है और इसमें सगे शांतिवादियों के काम गहराई से दिखने पर ही समझे जा सकते हैं। नोबेल शांति पुरस्कार ऐसे, जिन्होंने मानवीय सम्बन्धों में शांति बी दिया है अशान्तिकारी परिवर्तन विरोध है, महा-मानवों को भी दिया गया है। इसमें एलबर्ट ब्राइतजर और पाउल पीयेर के नाम हमारे सामने हैं। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि भारत में गांधी के नेतृत्व में जो काम हुआ और ही रहा है उनको नोबेल शांति समिति ने मान-भने की कोशिश क्यों नहीं की और विश्व शांति की सीमाओं को धार्य बढ़ाने का जो मूलगामी प्रयोग यहाँ हुआ उसकी उत्कृष्टता के ब्योवर क्यों है ? देगन की जरूरत है कि इसमें गुमानों बालों की गलती है या नोबेल इस्टी-च्यूट की बर्मी है या कि चुनाव करने वालों के दिल पर राजनीति ज्यादा हावी है।

१९६६ की गर्मियों में नोबेल इस्टीच्यूट के प्रमुख और पुरस्कार समिति के बची से उन्नी बमरे में मिलने का मोका मिला अहाँ बेंड कर समिति निर्माण लेनी है। उन्होंने पूरी कार्य पद्धति में सूत्रधर में विचारते तब बताया सभी ऐसा महत्त्व हुआ कि जो तटस्थता, गहराई और सहृदयी दया में मुक्त आधारारण की जैसी धारण्यकता इस प्रकार के चुनाव के लिए है यह वास्तव ही समर्थ है और सब बतार ही इस पुरस्कार के बारे में बहने लगे भावना रखते हैं। पिछले मान किर्नीब्रिट का और दग-मान का चुनाव यह बताया है कि किन्ना हम-निश्चि धर्मिक गहरी है, मानवीय बम। ६०

नोबेल शांति पुरस्कार के लिए इस वर्ष अमेरिका के डा० हेनरी किंजिजर और उत्तरी वियतनाम के ली डक थो के नाम घोषित किये गये हैं। पिछले वर्ष की अशान्ति शमन की पटनाओं में जिन्होंने सबसे अधिक कार्य किया उनमें इन दोनों का योगदान माना गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वियतनाम का लम्बा युद्ध इन दोनों के प्रयास से थमा है फिर शांति चाहे वहाँ जितनी कमजोर और अस्पष्ट ही। शांति के इन वास्तविकों के दिल में लिये गये निर्णय को स्टाकहोम में विवाद का विषय माना गया है। स्वीडन के शांति-वादियों और सेलको ने इस निर्णय पर आक्षेप प्रकट किया है। यह भी सभावना है कि ली डक थो पुरस्कार स्वीकार ही नहीं करें। नैतिकता लिट्टमन ने कहा है, 'आर लिफ की डक थो की ही यह पुरस्कार दिया जाना तो बात फिर भी समझ में आ सकती थी, लेकिन आर इसमें उन्हें हेनरी किंजिजर जैसे युद्ध आरक्षी के साथ भागेदारी करनी है तो यह निश्चित ही उनका अपमान है।'

शांति पुरस्कार की यह परम्परा इस सदी से प्रारम्भ हुई है। पुरस्कार प्राप्त करने वालों का चुनाव नाबों की पालियामेंट के द्वारा बनाई गई पात्र सदस्यों की एक समिति करनी है। और जिसको सत्कार देने के लिए नार्वेजियन नोबेल इन्स्टीच्यूट मददगार होता है। यह इस्टीच्यूट अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास और उनकी समस्याओं का शान्तिपूर्ण हल निकालने की दिशा में होने वाले बर्ने बापों का अध्ययन करता है, तथा इन सब के आधार पर शांति पुरस्कार के विवरण के सबंध में सलाह भी देता है। नोबेल बमेटी के सामने जो नाम पेश किये जाते हैं वे या तो बमेटी के सदस्यों या भूतपूर्व सदस्यों द्वारा सुभाये जाते हैं या विभिन्न देशों के संसद सदस्यों द्वारा या विश्व के विश्वविद्यालयों के राजनीति, इतिहास जानून और दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्षों द्वारा के द्वारा पेश होते हैं। इस प्रकार से धार्य हुए नामों के बारे में सत्र जानकारी इकट्ठी की जाती है और उनमें से योग्य नाम तय होता है।

थो का बचन इतिहास में पहली बार

भूदान-यज्ञ

२२ अक्टूबर, '७३
वर्ष २० अंक ४
सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

- शांति पुरस्कार — देवेन्द्र कुमार गुप्त २
- जगन्नेर में जापरण, आगरे में झगुवाई — भ्रनुपम मिश्र ३
- वोले साल की दिल दुखाने वाली यादें — देवेन्द्र कुमार गुप्त ५
- स्त्री को मुक्ति का अधिकार नहीं है — डा० इन्दु टिबेकर ६
- तमिलनाडु, उत्तराखण्ड और शराबबन्दी — मुखरलाल बहुगुणा ७
- विना टिप्पणी के सूक्ष्म के साथ स्थूल का भी विकास होना चाहिए — सरला बहून ६
- क्या मुसलमान देश की मूलधारा के साथ हैं ? — त्रिलोकचन्द्र ११
- इस दीवाली की चुनौती — सुरेश राम १३
- आन्दोलन के समाचार — १६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

जगनेर में जागरणा, आगरे में अगुवाई

—अनुपम मिश्र

(देग के तीन सौ जिलों; अनेक सहरो में ११ अगुवार से १७ तक स्त्री-शक्ति आगरेण सत्ताहके दौरान महिला पदयात्राए हुईं। उत्तर प्रदेश के आगरा में मुल ६ टोलिया, बिनामें से ५ जिनके के विभिन्न विवाल खण्डके के गायो में तथा एक सह्र के मुहल्लो में निकली। आगरा सह्र तथा विकास खड जगनेर में, जहा शसभान-आमस्वराज्य का श्री काम चल रहा है, स्त्री-शक्ति जगनेर को निकली दो टोलियो की रपट यहा बी जा रही है।)

'इस लोग अगले पडावक द का रास्ता भूल गये थे, सेतो का आ रहे थे कि' सामने कुछ दूर पर बहूँ लिए कुछ लोगों को बँधे देखा। वे सब गायबने बलिदान, बनेरा पहले थे, हने लगा कि ये बागी होंगे। बहुत डर लगने लगा फिर सने हिमन बटोरी घोर सीधे उनकी ओर ही चलने लगे', जगनेर विकास खड के गावो के पुम रही टोली की कृष्णागुण बडे मेने में किष्णा मुता रही थी, 'हमे आना देव के सब सहे हो गये, हिमन करके उनसे रास्ता पूछा। बहूँर लिये एच आरमी ने हमे साता रास्ता समझा दिया और फिर बोपाक से सहरो दीपने वाली हम बाते महिलायो से इने दुहर-मुहल एच गाव तक जाने का कारण भी पूछा जात।' पदयात्री टोली ने कारण समझाया। त्रिबोवा बा निक सुनकर इने बहूँर बायो ने कहा कि, 'इस इलाके में एच आरमी बायो बन कर कारण हुआ है, हम पुनिन के लोग इमीनिए गान लगा रहे हैं। आय लोगो को धकते जाने में खतरा है। इतारें कुछे साथी अगने पछार लक भाषको छोड बहूँर में' जाकिरयो से स्त्री की 'मुखा' के नाथ पर उने घर के भीतर एचदम नबर बन्द नह रूपने जाने गुण-नरमांष का ही यह कतेना था—हालाकि यहा उनको नीरज धरती दी थी। फिर भी महिला पदयात्रा टोली ने पुनिन की 'मुखा' में अगने पडाव तक जाने में इन्कार किया। जो टोली स्त्री को 'गुरांग' के स्तर में उतर उठा कर 'स्वर-विन' बढाते निकली थी, वह रामने में ही

अगने उद्देश्य से कीते डिगती ?

रुंद पहचने पर गाव के लोगो ने टोली का आलाभिय स्वागत किया। टोली के अगने की खबर उन्हे पहले ही लग चुकी थी। दोपहर की सभा को छोडकर, सुबह और शाम दोनों ही आमपत्राओ में काफी सख्या में आदिमियो ने भाग लिया, स्त्री-शक्ति आगरेण विषय पर हुए भाषणो के बाद लगभग १७ रूपये का साहित्य भी बिका।

दोपहर की सभा में केवल महिलाए ही भागी थी। सभान परिवारो की महिलाए दोपहर से पहले चुन्डे से मुक्त नही हो पाती। सभा में गाव की ऐसी महिलाओ की सख्या ही अधिक रहती थी, जो निशिक्षित जात, विशिष्ट आर्थिक स्थिति की होते हुए भी बृषप परदा, वृद्धा-नोका मे बंधी रहती हैं। गिद्धी जाति की माने जाने वाली बीरसे अनेभाउत ज्यादा स्वतन्त्र भी हैं और 'स्वरक्षित' भी। लेकिन वे प्राय इन सभाओ में नही भा पाती थी। वे दूसरे के सेतो में मजदूरी कर रही थी क्योंकि यह पगल का समय था।

पदयात्रा टोली का पडाव प्राय गाव की पाठशाला था फिर गाव का कोई प्रमिष्ठित घर होता था। पाठशाला में टहराने पर भी उनका खाना पीना तो घरों में ही रखा जाता था। गाव के लोगो को चार महिलाओ का 'इस तरह अनेना' पूमना बहुत धार्षिकजनक मानता था। महिला पदयात्रियो द्वारा अपनी यात्रा का उद्देश्य बताते पर भी यह धार्षिक प्राय कम नही होता। वे 'इस तरह अनेने' पूमने के पीछे एक बडे सत का आर्शावाद मानते।

पदयात्रा टोली के भाषणो से महिलाओ पर क्या अमर पडा, क्या पहना ऐसा सोचने का सभी सम्य नही भाष्य है। यह पहचने पदयात्रा थी, इमने दूर-दूर परसो मे डकी, बबनो में बसी महिलाओ तब एच बसक दी है, केस महिलाओ में ही नही पुखरी से भी मुनी है आगरा जिनके जनसाधार विकास खड के गावों में टोली नायक प्रशासनकी दूर के भाषण के

बाद दो आरमी भाव विभोर हो गये। सभा में ही उठ कर उन दोनों ने घोषणा की कि वे कई बरस से शराब पीकर घर लौटते थे, नके में मारपीट भी हो ही जाती थी। आज ते हम साथ चलते हैं कि हम फिर कभी भी शराब नही पीएंगे।

जगनेर टोली का १३ तारीख का पडाव ऐसे गाव में था जहा बहूँर रंगने पर पूरा गाव खुजली फोडे आदि से पीडित था। जिस घर में यह टोली टहरी थी वहा भी पाव में से चार सदस्य बीमार थे। सभी सदस्याएँ अगने-अगने भोतो में रखी प्राथमिक उपचार को पीट-लियो को खोलकर इन सबके उपचार में पुट गयी। सुद के लिए जो दवाए लेकर वे चली थी वे दूसरे के काम भा गयीं।

पदयात्रा भी पहली बार निकली और अगरेण जिनके ही इन पदयात्राओं में भाग लेने वाली महिलाएँ भी पहली बार इस तरह से आहूत भायी थी। उनके अगने भी अनुभव कम नही हैं। जगनेर विकास खड की टोली की कृष्णागुणा भूगोल विषय में एच० एच० हैं। उनका कहना है कि हमने दुनिया भर का भूगोल पढ डाता लेकिन गाव का भूगोल अब शुरू हुआ है। सह्र में उन्हे काफी घने वी भावन है लेकिन यात्रा में वे अगने साथ जान-बूझ कर बाची नही सायीं। सात दिन खूब चलना, खूब खाना तथा खूब खूज रहना—इस विचारों से उनका सभी भागी गुरु हुआ रक्तचाप का रोग भी गायब हो गये है। इसी टोली की एक अन्य पदयात्री यात्रा पर



भीषनी वाकुलता और कृष्णा गुला

रवाना होने के पहले बाटा की नयी चणल पहन कर प्रायी थी, वह पहले ही दिन टूट गई। गावों में व जहर में घूम रही सभी टोलियों से शहर व गांव के सर्वोच्च कार्यकर्ता धारी-धारी सम्पर्क रखते थे। सम्पर्क करने वाले कम थे इसलिए एक दिन इधर तो दूसरे दिन उधर जाते थे। जगनेर टोली से जब १५ अक्टूबर को सम्पर्क हुआ तो पदयात्रियों को सोप की याद प्रायी। अन्नदार पाच दिन से देखा नहीं था, उसी क्षण उन्हें श्री बरखुल्ला जी के निधन की खबर मिली। इस टोली की सचालिका श्रीमती शर्मा शहर के एक प्रसिद्ध फोटो ग्राफर तथा मोर्वंधन होटल के सर्वोर्ध्व धी केदारनाथ शर्मा की पत्नी थी। उसी दिन उन्हें मालूम पड़ा कि उनके पति व्यापारिक नाम से हवाई जहाज द्वारा अक्षम चले गये हैं। पति हवाई जहाज पर और पत्नी पदयात्रा पर। जब भी सम्पर्क करने वाले एक टोली में पड़ते तो टोली अत्यन्त विकास साधे व प्रागरा शहर में चल रही टोलियों की खबर पृच्छती। सम्पर्क के लिए जाने वाले कार्यकर्ता बचते टोली से ही सम्पर्क नहीं करते थे गांव के अन्य घरों में भी कुछ देर बैठते, बातचीत करते। रुद गांव में गलियों में जगह-जगह घरों से निकलने वाला पानी भरा था। उन्हें पानी सोपने वाला गद्दा बनाने की तरकीब इन कार्यकर्ताओं ने सामनायी।

चसोरा गांव से टोली जब अगले पड़ाव पर जाने लगी तो गांव के प्रधान की पत्नी रोने लगी, उन्होंने पूछा कि क्या दुबारा हमारे गांव में बच आधेगी? "अगले साल फिर ऐसी ही टोली आयेगी" मुन कर उनका रोना रूना नहीं। उन्होंने कहा कि एव हवने तो हमारे गांव में रचना ही चाहिए था। एक दिन से क्या हुआ?

प्रागरा जिनके इन विचार खण्डों के अलावा शहर में भी पदयात्रा निकली थी। शहर की जिन्दगी की घण्टी एक भगदड़ होनी है, जिसका कि इन पदयात्रा पर धार पड़ना ही। लेकिन कुछ और भी बड़े दिलचस्प कारण थे। शहर में एक से अधिक टोलियां निकलने लगी थीं। पत्नी के जाने के बाद ही शहर में खबरें

जाने बाले, स्वल्प बालेज जाने वाले के वास्ते खाने के डिब्बे तैयार करने लग जाती हैं, उससे छुटी तो बाजार के काम और बड़ी कुछ समय सांसी मिला तो बौड़ी देर "कमर सीधी" करना। सुद दफ्तर जाने वाली महिला के लिए तो मुदह १० से ५ एक दूसरा ही चीना खुल जाना है। घर में रहने वाली महिलाएं किसी तरह सात दिन के लिए अपने पतियों को बूल्हा-चोका सोप देती। पति स्वीकार भी कर लेते, लेकिन ११ अक्टूबर का दिन प्रागरा वालों के लिए बड़ी तबलीक बड़ा गया। उन दिन शहर पूर्णमा थी। प्रागरा में ताजमहल है—शोर शरद पूर्णमा की रातनी में ताज को देखने के लिए कोई एक लाख दर्शन प्रागरा चले आते हैं। इस बार भी यही हुआ। घर-घर में मेहमान और बही-बही तो घर के सदस्यों से अधिक मेहमान। ऐसी हालत में कई महिलाओं को बहुत सचोच लगा कि वे सात दिन के लिए "बूल्हा-चोका" पुरुषों को सोप कर चली जायें।

"किर हमारा भी एक त्योहार इनी हवने पड़ता था", प्रागरा की एक महिला ने पदयात्रा में शामिल होने की इच्छा रखते हुए भी शामिल न हो पाने का कारण साफ करते हुए कहा कि, "बरसाचोप को

हम उपवास रखते हैं, उस दिन घर से बाहर बैसे जाते?" एक अत्यन्त महिला पदयात्रा में जाने की तैयार थी लेकिन उनके सामने एक दिक्कत थी। उनकी टोली का एक पड़ाव उस घर में था, जहा इनके परिवार की लडकी का विवाह हुआ था। जसा कि चलन है वे उस घर में कुछ भी खा-पी नहीं सकते थी। लडकी को "परया" मानता, फिर विवाह के बाद उसके घर का सामा-पीना छोडना वे धार, गायें गहरी हैं—न तो एकाध पदयात्रा में शामिल होने से और न एकाध पदयात्रा निकलने से इन पर कोई असर होगा। योजना है कि स्त्री-जागरण पदयात्राएं जगह-जगह महिला संगठन बना-येंगी। ये संगठन कारगर ढंग से सात भर तक महिलाओं के बीच इन धारणाओं को मिटाने के लिए काम करेंगे।

अनेक दिक्कतों के बाद शहर की पदयात्रा भी निकली ही। श्रीमती शत्रुल्ला शोष, जो वहा अंबेजी की प्राध्यापिका हैं, भी शामिल हुईं। उनका बालेज बन रहा था। इसलिए वे बालेज के समय घांती बक्षए लेकर वापस पदयात्रा में शामिल हो जातीं। घर पास ही होने के कारण शहर की पदयात्रा टोली के सामने एक भयट और (शेष पृष्ठ १५ पर)



विवाह: प्रागरा शहर तथा गांवों में निकली टोलियां

बीते साल की दिल दुखाने वाली यादें

(११ फरव्र को जे. पी. ने अपने संघर्षमय जीवन के ७१ वर्ष पूरे कर ७२ वें में प्रवेश किया। पिछले एक साल में कम से कम एक ऐसी घटना हुई है जिसने जयप्रकाशजी के न सिर्फ व्यक्तिगत जीवन को बल्कि सामाजिक जीवन को भी भ्रूणभोर दिया है। लोग कहते हैं कि प्रभावशाली बीबी के अस्तित्व के बाद जे. पी. बहुत ब्रल गये हैं। देवेन्द्र भाई ने यहाँ जे. पी. के वर्तमान कार्यबन्धी और जीवन के बारे में सार में लिखा है।)

पटना में अपने पुराने स्थान पर ही जयप्रकाश जो रह रहे हैं। बीबी के जाने के बाद वह जगदू विजयन मुनी-बी लगनी है पर उनकी स्मृतियों से भरी हुई। इन ११ फरव्र को उकाए एक वर्ष पुरा हुआ जिसमें वे जिम्मेदारियों से मुक्त होकर रहना चाहते थे और उन्होंने अपने ७२वें वर्ष में प्रवेश किया। गले-बीन साल की यादें दिन दुगाने वाली हैं। अपने शरीर स्वास्थ्य पर उन सबका भी ध्यान पडा ही है। इधर कम्बई में बुलाई-कमण्ड माह में दो सप्ताह अस्पताल में और तीन सप्ताह आराम लेने के लिए वे अपने भाई के यहाँ रहे। २० अगस्त को वे पटना आए। और डॉक्टरों का कहना रहा कि तीन माह तक शरीर पर बिलकुल जोर न डालें। इसलिए नवम्बर अन्त तक उन्होंने अपना एक कम बरपाया है जिसमें बान्धन करने पर भी समय की टोक रखी है। पर वे अपने दिव्य भी आराम न ले पायेंगे। बीबी के जाने के बाद बीबी को मुनी ही जायेगी पर वे रहेंगे तो जो बत्ती उन्हें पुरा करना का बर्नब्ये ७० पी० में अपना माना है।



श्री जयप्रकाश जी

अपने शरीर के बारे में बताने हुए उन्होंने कहा "हृदय में कई पाने होने हैं। बाई तरफ का साना जहा से रक्त पम्प होकर जाता है वहा की मानसेवी (मसल) नवमोर है। जब शरीर पर जोर अधिक पड़ता है जैसे अणु, अधिक योजना आदि तब हृदय का बोझ बढ जाता है। ऐसे में पंपको का रक्त पुरा नहीं निकल पाता और सान प्लन से लगती है। तब ६०-६५ की जगह ६०-६५ हो जाती है इसे डाक्टर दिन का बीटा तो मही बहते पर ऐसे में शरीर को धानि पहुँचा है। दिन अपनी धानि को पूनि करने की तागत रखता है तभी वह इतना जबरदस्त काम शरीर में कर पाता है, पर इसके लिए उसे आराम चाहिए। इसलिए मुझे आराम की सलह दी गई है।"

× मध्यप्रदेश के नातून व जेल मंत्री श्री कृष्णपाल सिंह १० फरव्र को श्री जयप्रकाश जी के मिलने दिल्ली में पटना गये। श्री सिंह की जे० पी० से भेंट का मुख्य हेतु जयप्रकाश जी का मध्यप्रदेश में रक्त रही मुनी जेल के उद्घाटन समारोह हेतु आमंत्रित करना था। जेल मंत्री अपने साथ मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा का एक पत्र भी जयप्रकाश जी के लिए ले गये। भागन में अपने इग की पढ़ती मुनी जेल, जिसमें आत्ममर्त्या पायियों का रखा जायेगा, का उद्घाटन १४ नवम्बर को होगा। यह जेल दिल्ली-मोघान मार्ग पर स्थित बीटा जलन से २५ मील पश्चिम में मुगावनी नामक स्थान पर बनायी गयी है। इस मुनी जेल में १०० बांधी रह सकेंगे। प्रायः जानकारी के अनुसार इन की वागियों में कम्बन व बुन्देलखंड क्षेत्र के बांधी सरदार, सम्मिलित होंगे। बुन्देलखंड क्षेत्र के बांधियों ने लिए एक अलग मुनी जेल बनाने का विचार भी चल रहा है। भारत जयप्रकाश जी मुनी जेल के कार्यक्रम हेतु अपनी स्वीकृति दे देने हैं तो वे १४ व १५ नवम्बर को मुगावनी में १६, १७ व १८ को सागर में, १६, २०, २१ को खासिपार में व २२ व २३ नवम्बर को भागल में रह कर दिव्यी पायेंगे।

× ११ फरव्र को मोर्चादेवना (विहार) सर्वोच्च प्राथम में श्री जयप्रकाशजी की ७१ वीं वर्षगांठ मनायी गयी। इन ही खबर पर सर्वोच्च प्राथम में विहार के सर्वोच्च मंडल के तत्कालीन प्राध्यापक श्री राम स्वराज्य प्रिधालु विहार का एक उद्घाटन समारोह श्री विद्यानागर श्री डॉ. सम्पन्न हुआ। उपस्थित समुदाय ने श्री जयप्रकाश जी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के

एक समर्पणकारी बांधी भाई ने पत्र लिखा है कि अपने बापदा किया था कि इन आराम के एवं में भी हमारे काम का न अडॉरें पर आप ताल भर स प्रा न सने, अथ छोडिये। मुद्रामकी मेठी का धाराह है कि अब जय मुनी जेल का प्रयाग समर्पणकारी बन्धिया पर हाने जाना है ता उस प्रयोग के उद्घाटन में वे प्रायें इसलिए नवम्बर को वे पटना के निकरने का सोचें हैं। लखनऊ स्थित, मुगावनी (जहा मुनी जेल बनी है, बीना के पास), सागर, स्थानियर, भोपाल का कार्यक्रम २१-२२ तक का चल रहा है। बाद में वे दक्षिण भारत जाने का सोचें हैं। बाबा से भी मिलना है।

स्त्री को मुक्ति का अधिकार नहीं है

स्त्री-शक्ति-जागरण युग की मांग है, आवश्यकता है। स्त्री-शक्ति-जागरण का मतलब हमें समझना होगा। यो तो प्रापुनिक काल में स्त्रियों को हर तरह से धामे धामे के लिए मोहा दिया गया है। राजनीतिक स्तर पर, सामाजिक स्तर पर, यदि इस स्थिति का सविधान देवेंगे, तो किसी भी स्तर पर स्त्री को बानून की दृष्टि से पीछे नहीं रखा गया है। यह नहीं कह सकते कि बानून की दृष्टि स्त्री पिछड़ी है। फिर आज हमें स्त्री-शक्ति जागरण की आवश्यकता क्यों महसूस होती? क्योंकि बानून से जो पाया, जो दिया या वह अपने जीवन में प्रत्यक्ष उतरा नहीं है। तो ही हमारा प्रथममंथी एक स्त्री है। आज महसूस करता है कि स्त्री हर जगह र दबी पड़ी है।

कहते हैं, वैदिककालीन और उपनिषद्-कालीन समाज में स्त्री का और पुरुष का मान दर्जा था। आर्थिक दृष्टि से भी समाज। समान स्तर था। लेकिन यह इतिहास भी 'म' जानते हैं, जब कई धर्मों के शास्त्र-ग्रन्थों में तारा गया कि स्त्री को मुक्ति का अधिकार नहीं है। पुरुष के बराबरी की वह हो नहीं सकती है। यह कह दिया कि उसे तो घर-बार में रखना है। लेकिन वैदिक और उपनिषद्-कालीन विद्वानों और धार्मिकशक्ति से सम्बन्धी स्त्रियों—मागी, मैत्रीयों आदि के नाम रताये जाते हैं। महाभारत में कुलमा का संसंग साता है, जिसने राजा जनक को भी बुतनी दे दी थी।

मैं मानती हूँ कि वेद, पुराण उपनिषद्-काल में स्त्री को आध्यात्मिक समानता का अधिकार कुछ हद तक आवश्यक मिला होगा, तभी तो कुछ स्त्रियां ऊपर धायीं। बुद्ध-काल में, सायकट जैनकाल में स्त्रियों को अधिकार मिला। वह बराबरी के नाते से अपना आध्यात्मिक अधिकार पा सकीं। लेकिन बाद के काल में एकदम घननति हो गयी, स्त्री को एक वस्तु माना गया। एक भगवते, चुराने और उपभोग करने की वस्तु माना गया। प्रापुनिक

काल में तो मध्ययुग से भी ज्यादा घननति हुई। क्या वास्तव में प्रापुनिक काल में शिक्षा-प्राप्त स्त्री भी निर्भर होकर केवल मनुष्य के नाते समाज में काम कर सकती है?

मुझे लगता है यह स्त्री को देखते भी जो दृष्टि समाज में व्याप्त है, उसमें आधा जिम्मा प्रापुनिक काल की स्त्री का है। वह स्वयं अपनी तरफ किस दृष्टि से देखती है, इस पर भी बहुत कुछ निर्भर है। सारे समाज ने सदियों से स्त्रियों के रक्त में यह भावना प्रवेश करायी है। जो कुछ स्त्रियों में जीवर दिया दिया—मुक्ता हुई, मोरा हुई, लल्लेखरी हुई—ये सारी जो रिन्या हूयीं, इन सबने दिया दिया कि स्त्री अपने शरीर से ऊपर उठ सकती है। जैसे, शुक्र, शकराचार्य हो सकते हैं, वंसा स्त्रियों में भी वह सत्व है। जब तक सारे समाज में मनुष्य और मनुष्य के सबंध प्रेम के, स्नेह के या बहिष्के अहिंसा के आधार पर नहीं होंगे, तब तक मनुष्य एक-दूसरे का शोषण करता रहेगा। नाम कोई भी हो। लिंग भ्रमण है इसलिए करुणा, जाति भ्रमण है इसलिए करुणा, धर्म भ्रमण है, इसलिए करुणा, राष्ट्र-वश भ्रमण है इसलिए करुणा, गरीब है इसलिए करुणा—नाम कुछ भी हो, लेकिन दूसरों को दबाऊंगा। जब तक मनुष्य के चित्त में यह प्रेरणा है, तब तक स्त्री-वैभी भी समाज में सुरक्षित नहीं हो सकेंगी।

हमारे बहुत से विद्वान, उद्भट लोग कहते हैं कि स्त्री का रक्षण तो होना ही चाहिए, क्योंकि जिसमें उसको कोमल शरीर दिया है। प्रापुनिक काल के बहुत से विद्वान इस ढंग से बहस करते हैं। लेकिन अपना रक्षण दूसरे किसी के हाथ में देना क्या सुरक्षितता है? जो वास्तव में स्वरक्षित है वही सुरक्षित है। गोल और धारिद्र्य की रक्षा और उसकी पवित्रता का मुख्य जैसे जैसे समाज में बढ़ता जायेगा, जैसे-जैसे समाज से दृष्टि स्त्री की तरफ देखने की बदलती जायेगी।

श्व यह अंधाचार ही सौंजिए। 'करण' का पैसा मेरे घर में नहीं आयेगा, यह

धर पत्नी कहती है तो जिस पति को हिम्मत होगी कि बरप्यल का पैसा सारे। सारे समाज में घननितवता बरती जाती है। आज चारों तरफ हम यह वान सुनते हैं। स्त्री स्वयं इसके खिलाफ लड़ी नहीं होती और खुद भी जीवन में बन्ध-सहन नहीं करती, तब तक समाज में आत्म-परिवर्तन होने को कोई सम्भावना नहीं है। स्त्री और पुरुष दोनों में यह होने की आवश्यकता है। लेकिन प्रयुग्ना उसे बनना होगा जो ज्यादा दबा हुआ है।

जब तक स्त्री ऊपर उठकर यह नहीं कहेगी कि मनुष्यत्व का जो आन्तरिक सत्व है, उस सत्व को हम अपने जीवन में जाग्रत करेगी फिर न पुरुष स्त्री पर अत्याचर व अत्याचार करेगा और त कोई गरीब को दबायेगा, न कोई अत्याचारी दूसरे पर अत्याचर करेगा। अस्त्र, सत्ता, और सम्पत्ति का सम्पूर्ण रूप से विलीनीकरण हो, प्रेम और अहिंसा की शक्ति समाज में उपरे—इस दिशा में स्त्री ज्यादा काम कर सकती है। शरीर की अनुकूलता है, जिसमें न उसको मा वन्दने की शक्ति दी है कि बच्चे को जन्म भी दो और प्रेम से उसे बड़ा भी करो। यह प्रेम करने, अपने को भूलने की, श्व की विराजित करने की शक्ति नित्य न शरीर के साथ स्त्री को दी है—समाज-जीवन के समस्त अंगो-उपायों में उसका विकास करने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हम शरीर नहीं है, कोई भी मनुष्य वास्तव में शरीर, मन, बुद्धि नहीं है। स्त्री स्वतन्त्रता के आन्दोलन को नहीं दिया देने के लिए भारतीय स्त्री में जागरण लाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। स्त्री की असली शक्ति का परिचय स्त्री को होगा तभी सारे समाज को होगा। पुरुष की अमिस्ता चलानी है यह स्त्री-शक्ति-जागरण नहीं है। मनुष्य की शक्ति का, आन्तरिक शक्ति का जागरण करते हुए सारे मनुष्य-समाज में पारस्परिक व्यवहार प्रेम के आधार पर ही—इसलिए स्त्री को अपना जागरण करने की आवश्यकता है। स्त्री को बचाव का यह ही एकमात्र ध्येय है।

तमिलनाडु, उत्तराखण्ड और शराववन्दी

उत्तर में हिमाचल के जंत निपटरो की गतिविधि में रहते वातां के लिए समुद्र तट पर बने हुए सुन्दर दक्षिण की यात्रा एक रोमांचकारी अनुभव है। पर्वतीय सीमा पर से दूर जाने पर घर की याद में उदास रहने के लिए प्रसिद्ध है। गङ्गाली भाषा में जो हमें के लिए "गुड" एक ऐसा शब्द है, जो किसी दूसरी भाषा में मिलना नहीं। परन्तु दो सप्ताह की तामिलनाडु की यात्रा के दौरान मैं मुझे बनी "गुड" नहीं लगी, घर की याद नहीं आई, इसका कारण शायद उत्तराखण्ड के लोगों का दक्षिण से १२०० वर्ष पुराना घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिसकी नींव जयपुराघाट शहरवासीय शायद गये थे।

तब से प्राप्त तप मठिनय मंदिर के राखल (गुप्त पुत्रादी) केवल के नम्बूदरी जानि के होने हैं। केन्द्रालय, नृपनाथ धोर मठमठेश्वर के पुत्राचो वर्तमान से प्रती है।

उत्तराखण्ड की यात्रा के लिए प्रति वर्ष दक्षिण से आने वाले मठस्थों तीर्थ यात्री अपनी भक्ति-भावना से इस संपर्क पर मजबूती की सुदूर स्थानों जाते हैं, परन्तु इसकी पवित्र स्थिति प्रयास किया है, दक्षिण के दो सप्ताह में। पाठशाठ (केरल) में जन्मे स्वामी ताराचन्द्रजी मठस्थान से उत्तराखण्ड की धोर पट्टमगार्दी (तमिलनाडु) में जन्मे स्वामी निरालन्दजी मठस्थान से मुनि की देवी की अपनी तप स्थायी बनारस पुनीत किया है। स्वामी निरालन्दजी के मुख्य गिण्य धोर उत्तराखण्ड की स्वामी चिदानन्दजी का जन्म भी सगनोर (बर्जस्टर) में धोर गिण्य गायना बलिष्ठ, मदास में हुआ था। उनके शरण में प्रति वर्ष दक्षिण से हजारों मठ, मठस्थ धोर तीर्थयात्री आते हैं। स्वयं स्वामी चिदानन्दजी देश-विदेश में प्राध्यापिक प्रचार के प्राने स्वयं कार्यक्रमों के वाक्युद भी पहाड़ी यात्रों की सेवा के लिए समय देते हैं।

जो भी शरण में परमात्मा हिमाचल का एक नया महत्त्व प्रकट हुआ है। जिन मुझाधों में रहते अधि-मुनि हठोर तपया करने में, वहा साज देस की सुरक्षा के लिए लेनाज जवाब बढोर साधना कर रहे हैं। वर्षोंकी चाँदियों से सुदूर कन्याकुमारी में जन्मा सीमा का प्रवेश भारत की एकता का उद्घोष करता है। सैनिक-सेना धोर तीर्थ-

यात्रा के परात्रा उत्तराखण्ड में मुझा-मराकम का एक नया जन्म मुझा है। वह है नेहरू पर्वतारोहण सम्पान के माध्यम से दुर्गम गिण्यो पर चढ़ने, स्वयं बर्तों की बूटारों से रात्र्या बनाने हुए श्रेणियों की पार करने का गिण्य। समुद्र तटभागियों ने लिए वर्षाणि गिण्यो पर चढ़ना एक श्रुत रोमांचकारी अनुभव होगा।

प्रेरणा भूमि

संज्ञा मंदिरों के कारण दक्षिण धार भी भक्ति का प्रदेज बना हुआ है। मेरे मन पर इस भक्ति भावना की गहरी छाप २१ वर्ष पूर्व यहा की गिण्यो यात्रा के दौरान पडी थी। धनमगार्दी नगर से कुछ मागे एक गाँव में हनुमन्ना भजन गण—ई धोर मेरा साथी नवीन। पूरा धोर भूष से स्थायुल होकर हम रोते लगे। तामिल हूय जानते नहीं थे धोर हिन्दी या अर्बजी गाय के लोग जानते नहीं थे, रात्रा भी पूछते तो चिन्ने? धारिष्ठ हनुम धोर से बिल्ला, "बन्दीनाथ" "गणोंभी" धोर हम यह देखकर हकी-बन्ने यह गण कि मुझ बँतगाडी से बूढकर दो स्थाज हमारे चरणों पर दम्भर प्रत्यास कर रहे हैं। उन्होंने हमें गाडी पर बिठाया धोर नगर में छोड़ दिया। इस घटना का मेरे दिम पर इतना गहरा प्रभाव है कि जब उत्तराखण्ड में शराव का प्रचार करने लगा, तो मैंने सैकड़ों सन्नाधों में इस घटना का स्मरण करते हुए लोगों से कहा, "दक्षिण के लोग इसे देखभूमि धोर हमें देवना समझते हैं, वे एक-एक बीड़ी जोऊकर यहाँ की तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। धगर मेरा वह धन्यमगार्दी नगर का मित्र यहाँ धारिया धोर हूयें शराव के मने में घूर देनेका तो उनके दिम को चिन्तन बढा चकरा लयेगा!" इन्हीं लोगों में धार्यलौदर की भावना जागृत हुई। उन्होंने देश की धारिष्ठ अर्थ भावना के धनानतदार के रूप में धारना धारिष्ठ पहिचाना, उत्तराखण्ड में शरावबन्दी के निम्न कई सत्यापन हुए, जिसमें हजारों लोगों ने, मुख्यत:

मानाधों ने, नक्षिण भाग लिया, कई जैन। धोर धर उ० १० के पात्र पर्वतीय जिलों पूर्ण शरावबन्दी है।

तेईय वर्षों की शरावबन्दी के व. शराव की धामदती के मोह से ध्रान धार्य सरनारो के साथ होड करने के नि दो वर्ष पूर्व तामिलनाडु में शरावबन्दी व समाप्त किया था। इमने यहाँ शरावबन्दी। तमर्षकों की धारी धरना लगा था। भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह बनने रावगोपात्राचार्यजी नये वर्ष की बुद्धावस्था व कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद भी शरावबन्दी कायम रहने की भाग को लेकर कर्णार्थिनि के पास गये, परन्तु खाली हाथ लौटे। तामाधों, प्रदर्शनों, विरोध धोर उपवास का कोई प्रभाव नहीं पडा, परन्तु इस वर्ष इंडीया के उन्मुनाथ में महिला मन-रात्राधों ने शरावबन्दी के विलान मठवात बन्दे द्रविड मुनेज बन्धम की प्रार्थे लोय दी, तामिलनाडु पुत्र, शरावबन्दी की धोर बरा है। १ सितंबर से ताडी की ७००० की दुपानें बन्द हो गयी धोर प्रगले वर्ष से देशी शराव भी धूकानें भी। तामिलनाडु ने सादे देश के लिये शरावबन्दी का मात बुझन किया है धोर बहा के मुख्यधारी कर्णार्थिनि ने उपवा नेतृत्व करने की संवारी बनाई है। शारयान के नेतृत्व में सगठन कार्योस तामिलनाडु में तत्काल पूर्ण शरावबन्दी के लिए जन-धान्दोलन चेतने की संवारी कर रही है। इमने जिनकी भी राजनीति हो, परन्तु तामिलनाडु के गरीब, लोग, काम तोरों से महिला सशाल शरावबन्दी हो की धोरसा से प्रगुक्ति है। १ सितंबर की उ ताडी की धूकानों के बन्द होने के दिन, बर्दों गवनों से ताडी के दैव्य का पुष्पा जलाने का एक कार्यक्रम बनया गया। इस दो वर्षों में। धारु के दैव्य के तापत्र बुझनारो से धारली बर्ष गोडी को मुक्त करने के लिए।

—गुजरलाल बहुगुणा

बिहार सरकार की ओर से भूमि 11 वर्ष के उपलब्ध में 11 सूत्री कार्यक्रम विचार किया गया है, जिनका क्रियान्वयन 8 वर्ष की अवधि में होना है। वास्तव में 6 कार्यक्रम वर्तमान परिस्थितियों में पथुवन तथा समाजवाद की दिशा में अत्यंत रागर कदम है। सभी सरकारी अधिकारियों को पूरी मुक्तियों के साथ इसे समल में लेने के लिए हिदायतें दी गई हैं। गत छ-हीनो में इस दिशा में जो कुछ हुआ, उससे भी मुबार के लिए किये गये इस प्रयास की क्यात्मक दृष्टि से वास्तविक निष्पत्ति क्या होगी, अभी कहना कठिन है।

सरकारी प्रयासों को सामने रखते हुए अब हम भूदान आन्दोलन की उपलब्धियों पर विचार करेंगे तो लगता है कि वे 'कारिक प्रयत्नों के द्वारा स्वैच्छापूर्वक दिया या भूदान, भूमि मुबार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण नहीं बल्कि समाज परिवर्तन की दिशा में भी एक सफल प्रयास व भारतीय सङ्घर्ष की दृष्टि से उपजुक्त प्रयोग सिद्ध रहा है। अपने जिले को ही जब मैं देखा ; तो लगना है कि कितना विशाल जन समूह हरने विचार-प्रचार व शान्तिमय प्रयास के द्वारा गैर-सरकारी स्तर पर कितनी बड़ी उपलब्धि हुई है। जिले के 3,00,00 गांवों के 6,50,000 दात्यों में एक लाख एक हजार एकड़ भूमि दान में दी, अर्थात् जिले के सभी पर्वों में कार्यकर्ता पहुँचे और लिखार प्रचार किया। गांधीजी के बाद, स्वराज्य प्राप्त होने पर बिनाजी भी ही ऐसे गांधीवादी हैं कि हमें गांव-गांव पदयात्रा के विचार के आश्रय पर जन मानस को तैयार करने में सफलता प्राप्त की। भूमि जैसी कीमती व मूल्यवान् भी गरीब भाइयों के लिए दान में प्राप्त की।

समाज का सबसे कमजोर वर्ग जो आजादी के बाद भी अपने को आजाद नहीं मानता और निम्नवी मायना है कि वह गुनाम पैदा हुआ है और इसी स्थिति में

उसका अन्न होगा, मदियों से जोपरण व अन्त्याय का विचार रहा है। गांव में न उसका घर न भूमि, किसी प्रकार फूम का छोटा सा घर बना कर जीवन व्यतीत करता रहा है। और इस भोगड़ी से भी कभी भी बे-दखल किया जा सकता है, अंगर मालिक की ताबेदारी में कोई कुमूर हुआ। ऐसे निराशाजनक जीवन में रहने वाले व्यक्तियों के लिए भूदान की भूमि से निरक्षण का कार्य आरम्भ हुआ। जो कभी सोच भी नहीं सकता था कि उसे भूमि मिलेगी वह भी अपनी भूमि जोन-आवादा करके समाज में अधिकार, प्राप्त करेगा। ऐसे लोगों में भूमि दी गई, उन्हें बसाया गया, साधन दिये गये। यह सब कार्य इनके सामने विधिन व स्वल्प ही है। देखते व पटना के लोग स्वराज्य का लाभ ले सकते हैं परन्तु इस वर्ग को भोगड़ियों में स्वराज्य की किरण का प्रवेश भी नहीं हो पाया। वास्तव में गांधी जी चाहते थे कि स्वराज्य सभी सच्चा स्वराज्य होगा जब कि गांव-गांव के गरीब मुली होंगे और इनलिए वे चाहते थे कि अन्न कार्यक्रम की आश्रयता नहीं बल्कि लौकिक सच बने जिसके माध्यम से गांव-गांव में निर्माण के कार्य किये जायें। उनको इस दृष्टि की पूर्ति बहुत दृढ़ तक विनोदा जो ने की।

जहाँ तक हम वर्गों की सामाजिक सुरक्षा का प्रश्न है उनमें आज भी उन्हीं प्रकार के जहाँ तहाँ जुलूम होने रहने हैं जब कि बान्धु बने हुए हैं। परन्तु बान्धुओं से अभी तक कोई सुरक्षा नहीं हो पाई। गरीब मुसलमों में क्या दिया जाना है, उनको रक्षा तो वित्तबुद्ध ही नहीं हो पायी। इन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा मिले तथा किसी प्रकार का अन्त्याय नहीं इसके लिए गांव-गांव में ग्राम मसजिदों का गठन किया गया है ताकि गांव की समस्याएँ गांव के ही अधिकार में मगाना हो।

गांव की गरीबी का कारण, अज्ञान और पुराने सम्भार भी है। इनके लिए यह सोचा गया कि इन समाज की युवक पीढ़ी

में परिवर्तन लाया जाये। अन्न उनके शिक्षण आदि के लिए रात्रि में सामाजिक शिक्षण केन्द्रों की स्थापना करके युवकों को प्रशिक्षण करने का कार्य जारी है। गांव के छोटे बच्चों को प्राथमिक विद्यालय में रखा गया है तथा कृषि गोपालन व अन्य शिक्षण की व्यवस्था है। ये सबके इस विद्यालय में पाठ वर्ष रहने के बाद अपने-अपने गांव में छोटे-छोटे केन्द्र स्थापित करेंगे और समग्र विकास का कार्य आरम्भ करेंगे। गांधी जी को कल्पना थी कि भारत के प्रत्येक गांव में कार्यकर्ता पहुँचें ही और वे अपने गांव में कार्य करें इसी दृष्टि से हम विद्यालय की स्थापना की गई है। कुछ संस्थानों में बालबालियों के माध्यम से सम्भार बनाने के कार्य सञ्चालित हैं तथा रात्रि में युवकों के सामाजिक शिक्षण हेतु गांव में केन्द्र है।

इन सब उपलब्धियों से उत्साहपूर्वक परिणाम निकलें हैं। लेकिन भूदान भूमि संबंधी विचार भूदान पत्र एकत्र के अन्तर्गत सरकारी स्तर पर हुए कार्य से निराला ही हुई है। गत 15 वर्षों से भूदान विमानों के दाखिल-नारिक की कार्यवाई, आनयन की मरुदृष्टि आदि कुछ ऐसे कार्य हैं जिनके कारण भूदान आन्दोलन को शक्यता पड़ चुका है। अंगर सरकारी स्तर पर भूदान पत्र एकत्र की वास्तव रूप में दिया जाना और सभी वागवादा को प्रसूतना दी होगी तो इन काम में और भी गतिगो बना आती।

यह रूप का विषय है कि भूदान कार्य को भी 11 सूत्री कार्यक्रमों में रखा गया है और इन कार्य को भी प्रमुख स्थान देकर विशेष अभिमान रखने का प्रयास है। इन कार्य में इन कार्य को अंगर पूर्ण रूप में मगाना कर दिया जाना है तो भूमि मुबार वर्ग का बड़ा महत्व बढ़ेगा और मजदूर परिणामों की आशा की जा सकती है।

सूक्ष्म के साथ स्थूल का भी विकास होना चाहिए

—सरला बहन

इस समय भारत के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी हैं—हम गिन्ने जगते तो शायद हम उन्हें अग्रणीय पायेंगे। जमीन की समस्या, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा औद्योगिक समस्याओं की समस्या, राजनैतिक समस्याएँ, ये सब स्वार्थ और लोभ से जिनत समस्याएँ हैं। बाला बाजार, भ्रष्टाचार, विप्लवना के बीच में भूखपरी, महापाई और कठिनाई के गिन्ने बाला न्याय इन सब समस्याओं के मूल में एक ही रोग है। और यह रोग है मनुष्य का अत्यन्त स्वार्थ और लालसा। अहिंसक क्रान्ति का मूल प्रहार उन सूक्ष्म भावनाओं पर है और इसलिये उसे हम सिर्फ स्थूल प्रयासों से नहीं नष्ट कर सकते।

अभी तक पश्चिम में जिनकी क्रान्तियाँ हुई हैं, उन्होंने प्रत्यक्ष स्थूल आर्थिक पहुँचों को उठाया था, लेकिन परीबो और धर्मोरो में व्याप्त, उनके पीछे प्रेरक लोभ, लालच और स्वार्थ की सूक्ष्म भावनाओं पर उन्होंने प्रहार नहीं किया था।

गांधी जी की क्रान्ति मूल में सांस्कृतिक क्रान्ति थी, लेकिन हम लोग उसके मूल का महत्व समझ पाये थे। वे अपने ऊपर के स्थूल स्वल्प—राजनैतिक दृष्टि भर के समझ पाये थे। उनके लिए राजनैतिक स्वतन्त्रता लक्ष्य था। गांधी जी के लिए वह साधन था। शायद यह स्वाभाविक मानना चाहिए कि देश की राजनैतिक भागदौड़ उन लोगों के हाथ में पड़ी जो अक्षुचित राजनैतिक लक्ष्य को, देश की माझरी को ही समझ सकें थे, लोकनीति या विवेचन उदात्त के लक्ष्य को वे समझ नहीं पाये थे।

भौतिक विचार गंभीरता होना है, जगह होना है, जड़ नहीं रहना है। इसलिए दुनियाँ धार, गांधी जी के घने जाने के बाद उन विचारों का सांस्कृतिक स्वरूप बहुत तेजी से घायल बनना रहा। भूदान के समय भी धार्मिक के द्वारा दुनियाँ में, बहला की भावना के फल को देखने से दुनियाँ की समस्या का हल करना। उसके बाद, धारों जाकर बहला के द्वारा

पारिवारिक भावना का विस्तार करके, जनता की स्वच्छिद्र अहिंसक शक्ति के द्वारा, दुनियाँ को एक नया दर्शन मिला। ईश्वर के धन को देखने के बदले में करणों के फल को देखने से दुनियाँ की समस्याओं का हल हो सकेगा। गांधी की समस्याओं का हल स्थानीय जनता की अहिंसक संगठित शक्ति से करना।

यह एक बहुत लम्बा प्रारोहण है। पूरे समाज के दूध में आमन डालकर पही बनाने का मसाला है। यह स्थूल काम नहीं, सूक्ष्म काम है। स्थूल काम की प्रगति प्राकड़ों से गिनी जा सकती है। किन्ती भूमि का वितरण हुआ, ग्रामसभाओं की जिनकी बैठकें हुईं ग्रामकोष कितना जमा हुआ, कितने अनाड़ों के फलते गांव में हुए, जिनके लोगों को बर्ज भुक्त बनाया—ये सब प्रत्यक्ष दिखने वाले स्थूल काम हैं। लेकिन उन्हें प्रेरणा देने वाली सूक्ष्म भावनाओं को जांच नहीं हो सकती है ?

भाजवत्त कार्यकर्ताओं में जनता से यह कहने का एक फंजन हो गया है कि हम केंद्रित (जामन) हैं। हम कुछ नहीं करते। हम प्राणको सिर्फ प्रेरणा देते, सब कुछ प्राणों स्वयं करना पड़ेगा। घूमते-परते वे ऐसी घोषणा करके स्थूल प्रयासों को नापने की फिक्र में रहते हैं।

मेरी नम्र राय में इसी प्रकार से सोचने में कुछ विचार दोष हैं। क्योंकि मूल में हमारी भावि सूक्ष्म मूल्यों की क्रान्ति है। जिसका नाप प्राकड़ों में नहीं हो सकता। शायद उन मूल्यों की जांच बाहर से करना समझ नहीं है। दूध का दही जमाने में, जामन को सारे दूध में मिन कर भुक्त होना पड़ना है। बाहर से आमन देखना रहा और दही बनने के तरीके पर उरदेश देना रहा तो दूध न दही बनेगा न शुद्ध दूध रहेगा। अपने समय में वह खराब होकर फट जावेगा। मुझे लगता है कि यदि हम एक भुक्त किसान की तरह, धारी जमीन पर तथा धारने बीज

पर विश्वास रखते हैं तो बच्चे की तरह हम बारम्बार अपने बोधे हुए बीज को उखाड़ कर देखने की प्रावण्यवत्ता महसूस नहीं करेंगे। लेकिन अमर बाहर से देखने में, सूक्ष्म धनुभव नहीं आते से, भीतर दूध की परिस्थिति क्या है, क्या वह भीतर से मोटा बन रहा है या जानन आलने की धूपित पड़ति से वह कडवा बन रहा है, उस बात की सती जांच हम नहीं कर पाते हैं। बारम्बार उ हिलाकर देखने की आवश्यकता महसूस होते है तथा उन उपायों में वह सही ढंग से ज नहीं पाता है। लगता है कि जो लोग ए क्षेत्र में बैठ कर तुल्य होते कि क्या सा पायेंगे, वे ही साम्बराज्य की भावना में विकास की सही प्रोधा कर पायेंगे। वे हैं समझ पायेंगे कि लोगों की भावनाओं में कितना फर्क हो रहा है, पुराने गल सामाजिक शिक्षाओं को तोड़ने की विनम्र हिम्मत बढ रही है, समाज में स्त्रियों प्रवि भावना कितनी बदल रही है, छुआछूत की भावना छूट रही है या नहीं। गांधी जी की क्रान्ति सिर्फ आर्थिक और राजनैतिक तथ्यों में यदि प्राची गयी तो फिर उमक भयं यह होगा कि साम्बरादी क्रान्ति तब अहिंसक क्रान्ति में सिर्फ साधनों का बोध फर्क रहा है—लक्ष्य में कोई फर्क नहीं रहा है।

यह तो निश्चिन है कि सूक्ष्म के साथ, स्थूल का विकास भी होना चाहिए। सूक्ष्म यदि अमरहार में परिणित नहीं हुआ तो वह नैचन बीज और मिष्या रहेगा। लेकिन इस आरोहण में हमारा गंमता सिर्फ स्थूल प्रयासों पर निर्भर नहीं रह सकता है, सूक्ष्म प्रयास मुख्य रहना चाहिए। आरोहण में समय लेना। लेकिन जो कार्यकर्ता अपने फलितार को छोड़कर समाज में धूल फड धुल हो गये हैं वे सारी परिस्थिति को समझ कर उनका प्रयास सही ढंग से समझ सकते। स्पष्ट लगता है कि आमन-जामन बह कर

(गैप पृष्ठ १२ पर)

मध्यप्रदेश

अर्थात्

मानव सभ्यता के विकास की कहानी

नर्मदा, चम्बल, सोन, घोर वैश्वती की नदिया
पचमढ़ी, होशंगाबाद, रायसेन, सिहोर, सागर, रायगढ़
चित्रकूट, दण्डकारण्य
सांची, भरहुत, विदिशा, दमावती, सिरपुर
सुहागपुर
उदयगिरी, भूमरा, नचना वांघ
त्रिपुरी, रतनगढ़, गुर्गी
खजुराहो
खालियर और माण्डू, दतिया, घोरछा
भिलाई, हैवी इलेक्ट्रिकल्स भोपाल, गाधी सागर
उज्जयिनी, दशपुर, महिष्मती

—मानव सभ्यता की जन्मस्थली
—प्रागैतिहासिक गुफा चित्र
—रामायणकालीन प्रमुख स्थल
—बौद्ध स्मारक
—महाभारतकालीन बिराट नगर
—गुप्तकालीन कला केन्द्र
—कलचुरिकालीन श्रवणेश्वर
—सन्देशकालीन विश्व विख्यात शिल्प केन्द्र
—समन्वयवादी कला प्रवृत्तियों के प्रतीक
—राष्ट्रीय नव निर्माण के प्रमाण
—प्रारम्भिक शताब्दियों के सांस्कृतिक केन्द्र

इनके अतिरिक्त

श्रीकारेश्वर, मानघाता, अमरकण्ठक, सोनगिरि आदि के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल

तथा :

भेडाघाट, चचाई, चित्रकूट आदि प्रकृति के श्रेष्ठ स्थल

गौरवपूर्ण अतीत तथा प्रगतिशील वर्तमान ने युक्त

मध्यप्रदेश

का स्वर्णिम भविष्य सुनिश्चित है

(सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय द्वारा प्रसारित)

क्या मुसलमान देश की मूलधारा के साथ हैं ?

जा सकता। सच धर्मों ने अपने मूल सिद्धान्तों को छोड़ कर अपने चारों ओर कर्मकांडी और तदंगित अथ बिचवामी का एक झंझट डुबकर लडा कर लिया है। जिसके भेदन के लिए धर्मत्रिलिपियों में ही बहुत बड़ा पुरपाथ और साहस चाहिये। जिसका प्रायः उनमें अभाव ही पाया जाता है। यही भावना इन्हे राग-द्वेष से अनुप्रेरित रखती हुई, राष्ट्रीय एकता की भावनाओं में विभाजन—रेखाएँ खींचती हुई वोट प्राप्त करने में सहाय्य होती है, वोट मांगने के समय राष्ट्रिय उपेक्षण हो जाता है और निजी-स्वार्थ, सत्तालोचुपता तथा दलील हिन प्रबल-तर हो उठते हैं, जो साम्प्रदायिकता के विषय को धाज तक हटा रखते हैं मर्मथ हुए है।

यह एक दुःख प्रमंग है कि राष्ट्रीय भावना में प्रोत्साहन और स्वतंत्रता सश्रम की प्रभुत्व मरथा राष्ट्रीय कार्य में के २६ वर्ष तक लगातार शासन मंत्रहने पर भी वृष्ट एक राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण करने में अक्षमथ रही। क्योंकि उसने भी शून्याओं के समय येनेत्र प्रवर्धकता से बने रहने की नीति अधिभार्या एवं तुष्ट्या में सिद्धान्तों से हट करके धरास्थीय तयकों के साथ गमभोता किया और यह इष्टी ममभोती का प्रतीक्षण है कि समय-समय पर सर्वोत्तम हिंदू व मुस्लिम साम्प्रदायवाद फिर उठाना रहा है और राष्ट्रीय जीवन की पारा को बनुपिद करता रहना है। इस प्रकार राजनैतिक दल ही साम्प्रदायिकता में प्राणवायु धने हुए है।

साम्प्रदायिक और धोर उन्नती मरानधरा में एक प्रयत्न शक्ति होती है। उनको राष्ट्रीय निर्माण-कार्य में विपोजित कर देने में शासक-गता अक्षमथ रहे है। इस अक्षमथ शक्ति के साम्मुख राष्ट्रीय सरकारों कीर्ति ऐसा उदात्त राष्ट्रीय स्वयं रखने में अक्षमथ रही है, जिस धोर इन दुर्गम शक्तिधर का मरथा पुरपाथ मुडकर राष्ट्र निर्माण के विषयक कार्य की धारा में प्रवर्धित हो सके। उनके पुरपाथ को पलुकर अक्षमथ सदने में काम करने का अक्षमथ मित सके और जिसमें एक गमन्वित सम्पन्न राष्ट्रीय जीवनधारा निवृत्त हो सके। निरहित निर्माण के मारे कार्य तो धीरे-धीरे मरकार के हाथों में निवृत्तने गये। पलनः

नागरिक जीवन की स्वतंत्र परमधारा से राष्ट्रीय संस्कृति को पलनवित होने के अवसर भी कम होने गये। अतः इन सर्वोत्तम मनो-वृत्तिवासी साम्प्रदायिक शक्तिधरों को परिप्लवित होने को अवसर ही नहीं रह गया। एक स्वयं एक प्रबुद्ध राष्ट्रीय संस्कृति की जीवन धारा का उद्भव नहीं हो सका। जो सारी साम्प्रदायिक सर्वोत्तम मनोवृत्तियों को अपने साथ लेकर उनको परिप्लवित करती हुई हिन्दू के मरामागम में विलीन कर देती है। इसके लिए अक्षमथता भी एक अक्षमथ-वृत्त शिक्षा प्रणाली की धोर गीटाईदुर्ग निर्पृष्ट एक गमव राष्ट्रीय चेतना की। जिसके लिए अक्षमथता होती है राष्ट्रिय-चिन्तन, पारम्परिक-मर-भार एवं भार्द धारे को प्रयत्न भावना की जो इस साम्प्रदायिक सशोभता के दुर्गम दुर्ग की दीवारों का मरुकर एक नई गमन्वित संस्कृति का निर्माण कर सके। इसके लिए परिप्लवण का मरथा हासक है मरथा प्रांतिक के विप्लव-वृत्त-मर-ममभोती को मनोवृत्त का।

लेकिन राष्ट्रीय धारा को एक गमने बड़ी बमभोती कड़ी है मुस्लिम साम्प्रदाय को सर्वोत्तम मनोवृत्ति एवं धार्मिक बृष्टमूल्यत्व। जिसका व्यापक मानवीय सदने की अक्षमथ अक्षमथ-

कता है। यह प्रबुद्ध मुस्लिम चेतना के लिए चुनौती है। मुस्लिम-अमल जागरण की नव चेतना से विलुक्त ही अक्षमथ है, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। उसमें भी जागरण की धाराएँ एवं उदारतावादी दृष्टिकोण तरंगित हो रहा है। अतः यह धारा धीरग है। फिर भी सर्वोत्तम सप्रदायवाद से उपर उठकर निर्भीकता धोर साम्प्रदायिक बंदन धारे बंदने को उत्पुक्त है। इस धारा को प्रयोगमय बढाने के लिए अक्षमथता है मुस्लिम मजाम को राष्ट्रीय मिश्रा के मजरीय लाने की तथा मनुजित मानव धाने उदात्त राष्ट्रीय परिप धाने मार्ग दर्शन की। क्योंकि मुस्लिम राज-नैतिक वास्तु प्रविशोध को भावना से अनुप्रेरित रहकर राष्ट्रीय जीवन की बनुपिद धरने के लिए जिगप्र वार पुन गमन्व हो रही है, उदारा समय रहने परने ही समभ-विना जाना चाहिये। अक्षर राष्ट्रीय जीवन को प्रभाविन कर उसके पढने ही उदारा निराकरण हो जाना चाहिये, जो दनन के वत्राय मानव का परिप्लवण कर गये। यह प्रयत्न राजनैतिक दलील एक शासन की धरिशा स्थल साम्प्रदायिक शक्ति द्वारा हा जो राष्ट्रीय पुरपाथ का प्रतीक बन सके और जो धाने चल कर राष्ट्रीय जीवन की गमत्त धारा बन गये।

—निशोबकाद

(पृष्ठ ६ में जारी)

साहर रहने से शक्ति का काम धाने नहीं बडेगा। निगरे-विनारे गटे रह कर लेने के बरबो का तरीका बटने-नहने का हासक उनको करने में भी सैमना नहीं धा जायेगा। उसमें जो बटिनाई है वह ममभ में भी नहीं धायेगी। यदि सैमना मीगला है तो धार्मिक मरुद बूदना पडेगा। धर यदि धामम्भमरुद की मरी मभावनताओं को जानता हो तो एक धोर धे, धारे यह वह बडा धोर हो या छोटा, उमों में पृवद में धामम्भमरुद की मरी मभावनताओं की मरी खींच हो सकती है। धाहर में पृवद रहने में, धारने धोर मरुद देने में, मरुद प्रकट करने में कि धर मरुदने

विदुषा गया है—काम नहीं पाया। जिस प्रकार एक छाया छाया, जटा धापी जी को तय करना पडा कि यदि काम करने में धाम्भो कार्यकर्ता इनकी बटिनाईय मरुद बनने में मूँ मूँ मरुद धरि धर को धाँध कर मरुद में मरुद मरुद प्रयोग करना चाहिये, उमी प्रकार अक्षमथ उदर धरने का धाम-बर्ताओं को एक धोर मरुद उमों मुन होकर प्रयोग करने का मरुद धा गया है। जानत मूष में निरन्तर विपर रहना मरुद प्रमाल की मरी जाव हा मरी ही इहरी। किम इह तय तीव्र बन रहा है।



इस दीवाली की चुनौती

—सुरेश्वराम

सुराज्य प्रायिक के बाद जिनकी दीवालिया मनायी गयी हैं उनमें यह १९७३ की दीवाली शायद सबसे शान्तकारपूर्ण और शिवाग्रमूलक प्रमाण हो रही है। पहलेक घरो में दीये जल ही नहीं रहे हैं, जहाँ जल रहे हैं वहाँ दीयो की तारादार पारखण से कम है और उन दीयो में भी तेल तो और भी कम है। बहूँ-बहूँ दिवली की बतियों की जगमगाहट जबर ही रही है, लेकिन वह उस बूढ़ी वृद्ध दुग्ध प्रदत्त कर रही है जो उनके मुट्ठी भर मण्डल्यो की चौर निरनुकृष्ट भावितो को विगास घोषित—धीरे-धीरे जलना से घलत बिन्दे हुए है। और-आजारी का पंसा पाने वाली के खाना, कोई ऐसा विरल ही होगा जो अपने बच्चों या भावितो की साथ भर की शान्तजनताओं की पुनि मनोपन्नक रोग से कर सके।

हर रोज शाम को सुरज हुन पर ऐसा लगता है मानो धार्मिक स्वतन्त्रता और स्वतन्त्र्यन के अपने साथ से हम और पीछे लगना भाये। जहाँ यहाँ पचरवींय योजना की लागत से विदेशी पूँजी बेचल तो प्रतिशत थी, दूसरी से यह प्रतिशत बढ़ हो गया, तीसरी से ठीस और १९६६-७१ में बढ़ता पर चतुर्थ गया, यानी घटे से भी ज्यादा। विदेश बँकों को बुझा के लिए सरकार को नये पैसे देने पड़े हैं और धर्मनीति के 'समुद्रमण्ड' के लिए 'प्रचलित' धारण जारी रखना पड़ते हैं। देश बुरी तरह बर्ज से फगा है। हर भारतीयवासी पर विदेशी भीतल को धारणारी का लगभग डेढ़ को हान्य बर्ज है और उनके बुद्ध ज्यादा पैसा से धन्य मानो जा। हमारे विदेशों का मुल्य देने से विपन्नता का रस है और विदेशी निरिन्धय के दो सम्मानपर बाजार चल रहे हैं। धार्मिक यह है कि अब लागतों पर प्रतिशत जाहिरातमूलक है कि वही धार निरान भद्रा णा के मूल दहास का दब वा लया पाव लय, यह भीषाई से भी कम रहे गया है। बेरोजगार बेगना पर भाम दर्ज कराने

बाधे मुक्तों की लावार १९५१ में जहाँ ३३ लाख थी, १९६६ में यह बढ़कर डेढ़ करोड़ के लगभग हो गयी।

सन्तोष का विषय है कि दुर्घि और उद्योग, दोनों ही क्षेत्रों में देश में उत्पादन बढ़ा है। प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है। लेकिन अन्य देशों के मुकाबले हमारी प्रगति ज्यादा उत्पादक नहीं कही जा सकती। यूरोप अमेरिका के देशों का बौन बढ़े, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों को ही तो १९५१ से १९७१ तक प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि का खोरा यह रहा

जापान	१०२ गुनी
ताइवान	३५ गुनी
थाईलैण्ड	६३ प्रतिशत
विनीयाराइन	७५ प्रतिशत
सिंगापोर	५० प्रतिशत
भारत	२५ प्रतिशत

इससे भी ज्यादा चिन्ताजनक बात यह है कि हमारे पास ही और शहरी क्षेत्रों के बीच की खाई बड़ रही है। पृथ्वी योजना बाल से देहाल में प्रति व्यक्ति आय नगरीय भाग के लोग का जहाँ २७ प्रतिशत थी, दूसरी में २५ प्रतिशत रहे गयी तीसरी में २० और १९६६-७० में १८.५ ही। विन्ती भी साथ में प्राय जाने रहने पर मासूम होगा कि वहाँ जो मकान हैं, जेबे भी हैं, विरले जा रहे हैं और नये वनने वालों की मात्रा बढ़ने कम है। बँकी निम्बलता है कि निम्बलता ज्यादा सम्भावना के मूल का उन्कारण होता है उन्ना ही ज्यादा पीपल हम जानसूँ कर पन धारणने से धार्मिक-सांस्कृतिक विपन्नतायत की देना जाते हैं।

रामे कीई मन्देश नहीं कि सरकार बड़ी नेकतिरती और मेहनत के साथ समाज-वादी ढांचा गठना करने और समानताय कम करने की कोशिश कर रही है। लेकिन किस व्यवस्थापक के अन्दर यह मजबूत होनी है वह ऐसा भ्रान्त है कि उनको मारे प्रशान्ती और उद्देश्यो पर पानी-सा कर

देना है। प्रथमराष्ट्री, पूँजीवादी और खेतीवादी का भूल हमारे प्रशासन और धर्मनीति पर आज इतना ज्यादा हावी हो गया है जितना पहले कभी नहीं था। गेहूँ के व्यापार के राष्ट्रीयकरण की मूलिक प्रशासनता इस भीषण संघर्ष का निरन्तरण कराती है। जिन खेतीवादी ने अपने खेतों में गेहूँ पैदा किया, उनके सरकारी एजेंटियों से पेशानी खपा, पाद धारिक अनेक लाभ भरपूर मिले, जिन धार्मिकों के गोशालों में गले का स्थान है और जिनके इशारे पर बाजार ताजना है उनको बँकों ने निरन्तरण भरपूर खपा दिया, जिनके मित्रिण और बुद्धिमत्त अर्थकारियों का दोनो से पूरा सराई था और दाने-दाने के बारे में यह खबर थी कि कहां पैदा हुआ और कहा रखा है और उनकी 'अगर की धामदनी' भी भरपूर हुई—और फिर भी सरकारी योजना को नाममात्र ही मिली। नहीं, नहीं, उल्टे उपयुक्त हीनो अगो को पिछले किसी भाव के मुकाबले कहीं ज्यादा मुनाफे हुए, जायज और नाजायज दोनो तरीकों से और साथ ही बाजार में मल्ले के दाम बढ़ गये—ऐसे बड़े कि पणचुम्बी तीसा को पार कर गये। एक बार जहाँ गहूँ का दाम बढ़ा, तो ऐसी प्रक्रिया चल पड़ी जिससे सभी चीनो के भाव अपने साथ चढ़ने चने गये। यह कहा जाना था कि उत्पादन कम होने के कारण दाम बढ़ने हैं, लेकिन वाक्या यह है कि अन्दर की पैदावार जिनकी प्रचुर मात्रा में हम आज हुई उन्नी गिद्धे कासीय सात में नहीं हुई थी, मगर अन्दर के शाय भी जितने ऊंचे दाम धार रहे उनसे कम नहीं रहे थे। इसलिए धारों के लिए कोई धरोगा नहीं कि उत्पादन बढ़ने पर शाय विदेशों या उनको उबर उठने से रोका जा सकेगा। भारतीय धर्म-व्यवस्था प्रत्येक ऐसी विधि की पट्टक गती है कि उत्पादन का मूल्य से कोई भीषण सम्बन्ध नहीं रहे गया है। ऐसी हालत में मगर मूल्य-वृद्धि का अर्थ-व्यवस्था पर खराबा जाये तो वा प्राथम्य है। १९६१-६२ के दामों को धार एक गो के मानक के रूप में लें, तो जुलाई १९७३ में मूल्य सूचकांक २५८ पर पहुँच गया

→
 और इस वषों यह बुद्धि ४५ ए प्रविजन के लगभग होने का डर है। यही वह खिज है जिसने रुपये की कीमत को छाट बाता है और इस दोबाली को सभसे मंहगी विवाहितता बना दिया है।

यह देश भर बढ़ा हुआ है कि स्थिति सरकार के बाबू के वाहर हीनी जा रही है। इस डर से कि कहीं सेनीगह या वाजार-नरेण गल्ला न दें और शहरो में गल्ला न पहुचने से अक्वाल न पड जाये, सरकार ने विदेश से अक्वाल मगाना शुरू कर दिया है। इससे पीड पावने का हमारा तास-मेल (वेलेम आफ पेमेन्ट) गडबडा जाना है और बहुत सी योजनाओं या वषों की रद्द करना या कम कर देना पडा है। फिर, सरकार घटे के बजट का सहारा बढ़ी तेजी से ले रही है। १९७२-७३ में यह आकडा ८८० करोड रुपये था और इस साल के शुरू के तीन महीनो में ही ३०० करोड रुपया को तो पार कर चुका है। साथ ही, मुद्रा की आपूर्ति भी वही ताबड में सरकार कर रही है। जहाँ १९६५-६६ से १९६८-६९ तक इसकी मात्रा सात प्रतिशत वार्षिक थी वहाँ पिछले चार सालो में कहीं ज्यादा बढ़ी है:

१९६६-७०	१० ८ प्रतिशत
१९७०-७१	११ ५ प्रतिशत
१९७१-७२	१३ ६ प्रतिशत
१९७२-७३	१५ ६ प्रतिशत

जब घाटे का बजट बढेगा और मुद्रा की आपूर्ति असीम रूप से होगी तो मूल्यों का बढना अनिनाय है। अब लाचारी की हालत में सरकार ने निजी पूजो, विदेशी और देशी, को प्रोत्साहन देने और पूजिगहों को हर तरह की सुविधाएँ देने का फैसला किया है। जब हमारे मजदूर, गाधुन, लेबर, विस्तुड, कारखाने, फाउंडे, बूँदें आदि जखरल की चीजें विदेशी पूजो से सहारे बनेंगी तो क्या भारत कभी भी आर्थिक स्वराज्य प्राप्त कर गयेगा? आज देश को गिद्धा हरयों के महा विरसी रखा जा रहा है और दीन-दुनी जनता के पैसों पर ऐसी कुडकड़ी मारी जा रही है कि वह कभी सीधे उठ कर खड़ी भी न

हो सके। आने वाली सतति आश्चर्य करेगी कि स्वराज्य के बाद की पहली पीढी इतनी निर्बीज और हतप्रभ कैसे हो गयी कि उसने देश को बिना सिद्धान्त, विवेक या अनुकरण के गोपकों के हाथ बेच डाला।

वास्तव में परिस्थिति अत्यन्त विपदाजनक और चुनौतीपूर्ण है। लेकिन सरकार को इस तरह हतोत्साह होकर अपना आत्म-विश्वास नहीं खोना चाहिए। उसे हिम्मत बाधनी चाहिए और जनता पर विश्वास करने का सक्ल लेकर उनसे प्राणदायिनी शक्ति महशुस करनी चाहिए। जनता को मदद और सहयोग से, वह भयानक कठिनाई और संकट का चाहे वह वाहरी हो या अन्दरूनी, सामना कर सक्ती है।

ब्रॉड पैपेट्या—सरकार क्या करे, जिससे उसे जनता का पूरा साथ मिल सके? इसका क्या जवाब हो सकता है। बहुत नम्रता-पूर्वक, सात सुभाव पेश करता हूँ

एक० यह ऐलान कर दिया जाये कि सत्ताधारण करने की साठ साल की सीमा रहेगी और इसके ऊपर उमर वाला कोई व्यक्ति कोई भी पद धरल्ले नहीं करेगा और न विधान-सभा या ससद के लिए चुनाव लड़ेगा। साठ के ऊपर वाले सत्ता से हट कर, जनता से समरस होकर सेवा करें।

दो० केन्द्र या प्रदेशों में जो मिनिस्टर या विधायक हैं उनके धर्ममान केतनों को उच्चतम घोषित कर उनकी मिल्ने वाली सुविधाएँ, मुद्रा मजान, गौरव, पानी, बिजली, टेलीफोन, परिवार-शाय्य आदि परम कर दी जायें, ताकि ग्राम आरमी को तरह वे जीवन विता सक्ें।

तीन० वानानुपूलित वष और सञ्चिध सहायित्वें सारे मकानों, दफ्तरो, भवनों (जिनमें राष्ट्रपति भवन और राजभवन भी शामिल है) से हटा दी जायें और बिजली के पत्थो का तम को टट्टियों से काम बनाया जाय।

चार० भूमि का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाये और उसकी धरती नियी सदा के लिए कब्द कर दी जाये।

पाच० खाने, पहनने और रहने की सारी वस्तुओं पर से बन्दोल हटा लिए जाये और उनके आने-जाने पर कभी सारी पाबन्दियो (जिनके कारण भारत एक न रह कर ३५० भारतो में बंट गया है और हर जिलाधिकारी एक निरंकुश तानाशाह की तरह व्यवहार कर रहा है) खतम कर दी जायें।

छ० आजीविका—धम (उत्पादक, शारीरिक भयानक) सबके लिये, वृद्धो और बच्चो को छोडकर, अनिवार्य कर दी जाये ताकि उत्पादन में सब प्रत्यक्ष रूप से भाग ले सकें।

सात० गल्ला और खाने पहनने और रहने सम्बन्धी सामान और पूजो का विदेशो से आयात न किया जाये और स्वदेशी या स्वावलम्बन के सिद्धान्त को हर क्षेत्र में लागू किया जाये।

उपर्युक्त सात बरदम उठाना सरकार के लिए एक बडा जोसिम का काम हो सकता है, लेकिन वह कोई जुझा नहीं है। योक्ति, जनता पूरे दिल से उसका साथ देगी और उठकर काम करेगी। जरूरत सिर्फ यह है कि सरकार निडर हो के बहादुरी से काम करे और जनता पर अपना विश्वास रखे। साथ ही साथ, जनता को भी स्वदेशी या स्वावलम्बन की शरण लेनी चाहिए और हर नागरिक को यह देवना चाहिए कि जो भी पैसा खर्च किया जाये या जिस चीज का भी उपयोग किया जाये, उसका काम उद्योग-पतियो या पूजिगहों को, देशी हो या विदेशी, न जाकर अपने मेहनतकश दीन-दुनी भाई-बहनों को जाये जिनकी भरपेट पुराक तब कभी नसीब नहीं होती है। अपने सक्ल को हड़ता के साथ जिनकी तपो से जनता आगे बढेगी, सरकार में भी उमो तेजी से आत्म-विश्वास बढेगा और वह आगे बढम उठा सकेगी। जनता की स्वायत्तभी ताकत यानि लोक-शक्ति और सरकार की अपनी ताकत, यानी राज-शक्ति, इन दोनों का भेद होने पर देश की बाधा पण्ट बनेगी और आने वाली हर दीवाली दुस्तार, ज्योति और आनन्द का स्रोत बन जायेंगी। ●

रहनी थी। घर में कुछ गड़बड़ हुई तो पदयात्री से हट कर रान को उठे सभातने घर आना पड़ता। ऐसे एक-दो मौके आये, पदयात्री महिलाएं घर गयी और फिर अपने दिन फिर पड़ाव पर मुड़ह तक के ही शामिल हो गयी। शहर पदयात्री टोली ने मुहल्लो में घाम सजाए ली, जिनमें स्त्री-मुख्य दोनों ही आये। मुहल्लो में पड़ने वाली पाठ-शाळाओं में भी कार्यक्रम रखा जाता था। शहर की टोली अपने एक पड़ाव तालाबज में रहने वाली नैस्यामो के संपर्क में आये उनके बीच में भी एक सभा आयोजित करने वाली थी लेकिन इस बार वहु इस काम में प्रयत्न रही। अपने बर्ष टोली इतनी तैयारी पहले से करे—ऐसा आयोजक सोच रहे है।

पुरुषों के लिए यह सप्ताह कैसा रहा ? आगरा के एक व्यापारी महोदय जिनकी पत्नी एक टोली के साथ घूम रही थी, का कहना है कि "पूरा हफ्ता ब्याता का था। इपर ब्यापार बौट रहा, उधर घर भी का सभाव पाये, पहले पदयात्रियों की विचारों में व्यस्त रहे फिर अलग धतग टोलियों से संपर्क में हुना चल हो गया धन टोलियों के स्थान में भी, एक दिन लगेगा।" उनका सप्ताह निरासन का नहीं था, प्रचलक था गयी नयी विमनेनारी के भार की परेगानी घर को।

आगरा जिले के पाच विभाग लखनो तथा शहर में निजली इत पदयात्रियों में— सभी महिलाएं शहर की थीं। वे श्राप ऐसे घरों से थी जिनका "सर्वोदय चित्र" या "सहरोगी सनि" कहा जाता है। इन कार्यक्रम के लिए धाम नामावतियों ने तो उलगाह बाया ही शहर के कार्यक्रम करने में ही इनमें प्र. मि. होकर राजवर्तिक हलीं की परामर्शन पदवि की छोडा है। रक्षामनी जगजीवन राम ने आगरा भाषो शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र द्वारा आयोजित एक सभा में भाषण दिया था। भाषण के बाद केन्द्र के कार्यकर्ता 'रंगण' फरद सहाय से अब बहल के कुछ कार्यक्रमों कायर्कर्ता मिले, तब उन्हें स्त्री

शक्ति जागरण सप्ताह और उस दौरान निकलने वाली पदयात्रियों का भ्रमनाश लगा। उन्होंने ऐसे कार्यक्रम में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। सहाय ने उन्हें एक नई टोली निकालने का सुभाव दिया। कार्यक्रम की १५ महिला कार्यक्रमियों की एक टोली प्रगते दिन से शहर के मिन्दरा सत्री में घूमने लगी। इस टोली के पास भी स्त्री-जागरण से सम्बन्धित वही सर्वोदय साहित्य है जो हर पदयात्री टोली वाटने के लिए अपने साथ रखती है। श्रीमती प्रेमवता धाकरे के नेतृत्व में चल रही इस टोली की ध्यक्षता नगर कार्य से बनेटी में की तथा साहित्य दिया नगर सर्वोदय मंडल ने।

आगरा में स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह की प्रारम्भिक तैयारी के लिए दो दिन का एक शिविर प्रगते २ अन्तिम दिनों में हुआ था, जिसमें निर्वाह देशपाठों ने महिलाबाधा को सम्बोधित किया था। (२ अक्टूबर '७३ भूदान यज्ञ) फिर कृष्णा गुप्ता ने नगर की महिलाओं से व्यापक संपर्क कर २६ महिलाओं को तैयार किया था। इन २६ महिलाओं में आलादी की सहाई में भाग लेनी वाली श्रीमती सत्यवती सुद में लेकर आगराए गृहस्थी में लगी महिलाएं, कजिज छाया कुं बनौटी आदि तक शामिल थीं। ११ अक्टूबर को इन २६ पदयात्रियों को त्रिवा करने के लिए स्थानीय वेंचूटी देवी बन्दा महाविद्यालय में भूगर्भ नगर प्रमुख सम्भूषण चतुर्वेदी की अध्यक्षता में एक समारोह आयोजित किया था। समारोह के बाद विभिन्न इलाकों के लिए रवाना होने वाली टोलियों को गारिफन, मोना प्रबन्ध तथा प्रार्थना पुस्तिका दे कर निडा किया गया। पदयात्राए आगरा शहर के घनाबा जगिनर, प्रमनाबाद, धधेरेरा व टूडला जिकाम सडों में लगी।

पदयात्रियों की बन्दास्था नगर सर्वोदय मंडल शहर के नामावतियों के सहयोग से कर रहा है। व्यक्षता में गोकर्षन होटल के मालिक रीणाशानाय शर्मा, शिरोमणि, जिन्-नारायण प्रचवान तथा नगर सर्वोदय मंडल के मन्त्री लीजन्स प्रसाद, रामनाथ शर्मा आदि विशेष सक्रिय रहे।

× गांधी विद्या मन्दिर, २२/२२, २२/२२ के भी एरोमणल दूगठ ने राजस्थान के आबकारी मन्त्री श्री चन्दमल बंद को एक पत्र लिखकर कहा है कि आगामी वर्ष सारे भारत में भगवान महादेव का २५००था निर्वाण वर्ष मनाया जा रहा है। धन. उपयुक्त ही होभा अमर राज्य सरकार पूरे शान्त में शराबबन्दी लागू करने की चापला कर दे।

× रक्षाम से प्राप्त समाचारों के अनुसार ११ अक्टूबर की महिला जागृति सप्ताह पदयात्रा के लिए निकले पदयात्रा-दल के सदस्यों को श्रीमती धूरीवाई की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में निदाई दो गयी। इस अमर पर विधान सभा सदस्य श्रीमती लीलादेवी चौधरी ने भी महिलाओं को सम्बोधित किया।

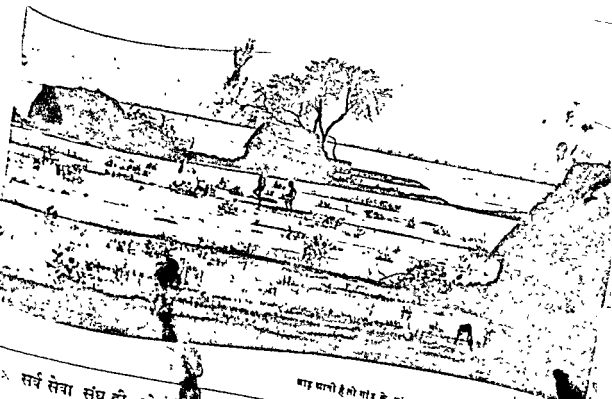
इस अमर पर भी मानवमुने व श्री नायपाल मूठतजी ने भी अपने विचार प्रकट किए। महिला पदयात्रा दल की आठ टोलियां जिन्में से छ विभाज सडों में १७ अक्टूबर तक घूमने। पदयात्रियों का संयोजन श्रीमती पुनराज देवी मूठ ने किया है।

× ४० भा० शान्ति सेना मंडल से प्राप्त आबकारी के अनुसार अन्तिम भारत ग्राम शान्ति सेना नायक प्रशिक्षण शिविर १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर १९७३ तक शान्ति सेना विद्यालय बराडी (पुत्रराव) में होगा। ग्राम शान्तिसेना में रुचि रखने वाले कार्यकर्ता इस शिविर में भाग ले सकते हैं। शिविर में भाग लेने वालों के लिए प्रायु तथा लिंगा को कोई मर्यादा नहीं है। शिखा का मध्यम शिक्षा रखा गया है। शिविर के दौरान, निवास में प्रशिक्षण वि. मुहल्ले रहेगा। प्रथम छवें भाग लेने वालों का नयेने वाली सस्या को ही देना होगा। प्रवेश मुक्त १० रखा है। आयोजन पत्र ४० भा० शान्ति सेना मंडल राजपाठ, वाराणसी-२२१००१ पर ५ नवम्बर तक भेजे जा सकते हैं।

× राजस्थान शराबबन्दी सत्याग्रह समिति के नायक भी गान्धुभाई अट्ट ने घोषणा की कि उनको निर्वाण जो ने २५ दिसम्बर, १९७३ तक आगरा करने हेतु परामर्श दिया है।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २६ अक्टूबर, '७३



गाइ पाली है तो गाँव के गाँव उबर आते हैं। विशेष सेल पूर्व ३ परत।

सर्व सेवा संघ ही लोक सेवा संघ है × जंगल कटेंगे तगाही आयेंगी ही
× अनाज न मिलने पर क्या रभया? × सबसे ज्यादा अपमानित और तिरस्कृत
रोगी कुष्ट के हैं × जनवरी से पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्र

भूदान-यज्ञ

२६ अक्टूबर, '७३

वर्ष २०

अंक ५

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी
इस अंक में

सर्व सेवा संघ ही लोक सेवक संघ है

—विनोबा २

वाह, वाह, वाह

—मोरा बहन, श्रीमती गांधी व के० एल० राव ३

प्रनाज न मिलने पर बदले में क्या खाया ?

—एक सर्वेक्षण रपट ५

सबसे ज्यादा प्रपामनित और तिरस्कृत रोमी कुष्ट के हैं

—मुधाकर तारे ७

२६ जनवरी से पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्रह होगा

—बन्दना भारतीय ८

सत्याग्रह की लड़ाई उच्च ढंग से ही चलानी चाहिए

—काका कालेलकर ११

विना टिप्पणी के

—राही, चन्दावार व १३

सहाय पुरोहित

राजघाट कालोनी, है,

गांधी स्मारक निधि,

नई दिल्ली-११०००१

रा

T। हम अगस्त १९७३

विश्व भ्रम भाषाविज्ञान हुए और हम

न समझायो के सन्दर्भ में विनोबा सिंह

मासिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रत २०

एक पंक का मूल्य २५ पैसे। प्रयाग जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित

सर्व सेवा संघ ही लोक सेवक संघ है : विनोबा

सर्व सेवा संघ ही लोक सेवक संघ है यह सुनकर सब लोगों को एकदम उत्साह प्राप्त हुआ। तो सोचा कि उस शब्द का छोटा इतिहास प्राप्त के सामने रखें।

लोकसेवक संघ क्या है, उसकी क्या ब्युत्पत्ति है, यह मैं आज सुबह फिर से पढ़ गया। १९४८ में गांधीजी के जाने के बाद, ५० नेहरू के आमंत्रण पर उनके वाम में मदद देने के लिए मुझे दिल्ली जाना पड़ा था। दिल्ली और पंजाब में उनके साथ घूमने और बात करने के बहुत मौके प्राये। उनके सामने मैंने यह बात रखी की 'कार्य संघ' को 'लोकसेवक संघ' बनाना चाहिए या 'वापू' का वह अन्तिम शब्द है। उन्होंने कहा, 'बह शब्द तो अच्छा है। लेकिन आज की हालत में जरा भी व्यवहार्य नहीं है। आज कार्य संघ

आजादी टिक सकती है। यह सुनकर मैंने उनसे कहा कि प्रायकी बात मुझे १०० प्रतिशत से ज़रूरी है। इसलिए मैंने वह भाव लिया। कार्य संघ लोक सेवक संघ क्यों नहीं बनी उसके प्रारंभ का यह इतिहास है। फिर ८-१० साल के बाद कार्य संघ वाली सं बात हुई, ५० नेहरू से नहीं हुई। कार्यसंघालो ने कहा इट इज नाउ टू लेट, पहले या टू मरती प्रथ टू लेट हो गया। कुछ भिन्नाकार कार्य संघ लोक सेवक संघ नहीं बन सकी। वह अभी बनती तो वह तो देशव्यापी परिणाम प्राता। जो काम गांधीजी ने सोच रखे थे, वे बहुत सारे ही बनते थे। परंतु सर्व सेवा संघ जमाने में हवा में ही था। सिर्फ चन्द साधी थे। उनकी हालत ऐसी नहीं थी कि वे इसे उठावें। लोग भी उनको नहीं जानते थे और वे लोगों को नहीं जानते थे। ऐसी हालत में हम विनोबा भी शोषित करते तो भी "लोक सेवक संघ" नहीं बन सकते थे।



विनोबा

लोक सेवक संघ बनेगी तो हिन्दुस्तान के आज टुकड़े बने ही हैं, और ४-५ टुकड़े करके प्रायः १५-२० टुकड़े बन जायेंगे। देश में ही, यह ही तो हमें पता है।

मेरा ख्याल है कि कार्य संघ के ध्यान में यह बात प्रायी होगी कि हर चीज का धरना एक समय होता है। १५-२० साल के प्रादेशिक के बाद अब सर्व सेवा संघ का सम्भव लागे लोको से, गांधी से प्राया है। इसलिए वह जिम्मेदारी सर्व सेवा संघ पर प्रा सकती है। लेकिन उसमें सर्व सेवा संघ को क्या-क्या करना पड़ेगा, यह जब मैं सोचता हूँ तब ध्यान में प्राता है कि बहुत ही धीमा करना पड़ेगा, जो आज तक न किया ही। प्राय गांधी-राय में जाते ही हैं। गांधीजी को स्वातंत्र्यवी बनाना, प्रागतमाए रखी बनना, भूमि-समस्या को हल करना, लोगों को जागृत करना, यह सब प्राय करते ही हैं। अब इसके अलावा शोषण निरस्त देवना प्रादि बात सुनायी गई थी, वह निरस्त टोक है या देवक है, यह देवना। लेकिन प्रायको मान्य है कि

(हिन्दुस्तान सूखे और बाढ़ों का देस है। हिन्दुस्तान के आम आदमी की जिन्दगी सूखे और बाढ़ के बीच का घनंतराल है। विशेषज्ञ कह रहे हैं कि लगातार कटने वाले जंगल बाढ़ का कारण हैं। पर जंगल लगातार कट रहे हैं और वन महोत्सव भी लगातार मनाए जा रहे हैं। पिछले दिनों के ० एल० राव ने बाढ़ों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा था उसने बड़ा हंगामा खड़ा किया था (देखिये 'भूदान-यज्ञ' १० सितम्बर '७३)। प्रधानमंत्री हाल ही पहाड़ी क्षेत्रों के दोरे पर गईं थी, उन्होंने जो कुछ कहा वह काफी महत्वपूर्ण है। गांधी जी की सद्गुणी सुथी मीरा बहन भारत की बाढ़ों के प्रति धास्त्रीया में भी चिन्तित हैं। यहा हम तीनों के विचार दे रहे हैं।)

आराम से बैठे हुए मंत्री बाढ़ नहीं रोक सकेंगे

फिर से उत्तर भारत हिमालय से उरन रही बाढ़ में डूब गया है। भारी वर्षा होने पर इसके प्रताप और हो भी क्या सकता है? जब तक की हिमालय के शोक बुझाओ उन्हें प्रकृति द्वारा दी गई जमीन में फिर से स्थापित नहीं किया जाता और भीड़-भाड़ के बुझाओ जे अबर्देन कटीनी नहीं की जाती। हिमालय क्षेत्र में काम करने के दौरान मैंने बार-बार इन के लिए प्रार्थना की, समाचार पत्रों में विस्तृत लेख भी लिखे, रेडियो गया को बुलेटिन वाली के क्षेत्र में स्थल हो रहे शोक बुझाओ के बीच रहनी की। प्रतिन नेहरू के वन-विभाग के उच्च अधिकारियों से मुझे मिलनाया। उन्होंने मेरी बातों को मितवत् सुना, पर इसके प्रताप कुछ नहीं किया। हिमालय के शोक को पुनः प्रकटित करने और भीड़-भाड़ को पटा देने में उनकी क्षमं श्रमंता उरत जाती। हिमालय का शोक व्यावसायिक रूप से उपयोगी नहीं है, जब कि चीड़-भाड़ से रोजिन, धमारी लक्ष्मी शोना मिलने है। साथ ही इनका उगाना बहुत सरल है क्योंकि यह जपनी पाव की तरह सुद-ब-सुद फैला जाता है।

शान्त के सामने घर दोही मूल्यें हैं जिनसे से उसे चुलता है। या तो हिमालय में पानी इकट्ठा होने वाले इनके में मिट्टी टूटने से जिनके परिणाम स्थल बाढ़ों की विनाशकारी बननी हो जायेगी। भयावह घटक मुश्किल के प्रताप इसकी क्षीय धारणी आने और दुर्गो में धरती परनेगी। या फिर चीड़-भाड़ के बुझ २००० फुट की

ऊचाई पर ही रोक दिये जायें और कम से कम २००० से ८००० फुट तक शोक बुझाओ की फिर लगाया जाय।

प्रकृति ने शोक बुझाओ की यह पट्टी इस ऊचाई पर टूट कर गिरने वाली वर्षा को सोखने के लिए ही रची है। शोक बुझाओ की चौड़ी पटिया और इसके नीचे उगने वाली भाड़ियों और घास के कारण यह काम वे सुगमता से कर पाते हैं। अब जहा-जहा चीड़-भाड़ फैल गया है वहा वर्षा का पानी दोबारा दूना क्षीय घाटियों में घाता है। जहा छोटी-छोटी धारायें पचण्ड प्रवाह बन जाती हैं। ये धाराए ही इकट्ठी हो कर मैदानों में जाने वाली नदियों में मिलती हैं।

'क्षायीता' ने शोक वनों की विनाशकारीता को रिन तरह बढ़ावा दिया है, यह मैंने धाने कुछ लेखों में समभाया है। लेकिन मैं बड़ा विस्मय में नहीं जाऊंगा। क्योंकि धावजन लोगो ने पाग इन तरह की चीजें करने के लिए समय नहीं है और मैं सच में चाहती हू कि यह लेख पडा जाय।

मैं यह पूरी तरह से जानती हू कि शोक वनों को पुनर्जीवन करना एक दीर्घकालीन योजना होगी। जिनके लिए इन क्षेत्र में दृढ़ धारणा और धैर्य की जरूरत होगी। इनके एक तो स्थानीय धायी उ दिशानियों का महत्त्व विनाश धारणा है। धायी और ईंधन की गहरी में दूध प्रसार जो कनी होगी उसे पूरा करने के लिए सुभायने के रूप में उनकी मदद करना होगी। जब तक कि प्रकृति का सन्तुलन फिर से सौद नहीं घाता। साथ ही शोक वनों में वन विभाग के

कर्मचारियों की संख्या बढ़ाना पड़ेगी। जिससे गवर्नामियों द्वारा पेड़ बाटने और वन सपदा को नष्ट करने पर स्थायी रोक लग सके। पर सबसे महत्वपूर्ण बात जिसके बिना कुछ भी नहीं हो पायेगा, वो सरकारी कर्मचारियों की ईमानदारी है। धमनी जो हालत है उसमें भ्रष्टाचार सारी सरकारी योजनाओं को विफल कर देता है और इस तरह की दूर दूरान योजनाओं में तो ईमानदारी के प्रति आवश्यक रहना दुहरा आवश्यक हो जाता है।

परिस्थिति ऐसी है पर जहा चाह है वहा राह भी है। और यदि मंत्रियों को, जो नई दिल्ली में आराम से बंटे रहते हैं, उन इलाकों में दुश्चिन्ता के साथ जीना होना, जहा बार-बार बाढ़ उनके घरों को तबाह कर देनी, तो हिमालय के और पुन धरनी प्रकटित पा जाते। इनके तिवाय सुनत कोई उपाय नहीं है।

—मीरा बहन

दीपावली अभिनन्दन

देश के हजारों हजार गावों में कंठे हुए सर्वोच्च परिवार के साधियों का हम दीपावली पर अभिनन्दन करते हैं। हम धरने उन सहयोगियों के प्रति भी संवचकामता प्रकट करते हैं जिनके सन्तु स्नेह को जुटाकर हम लगातार धरने बढ़ने के प्रयत्न में हैं।

'भूदान-यज्ञ' परिवार

भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हाल ही में उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों का दौरा किया। इस अवसर पर वहाँ की वन-समस्याओं को लेकर कुछ सार्वजनिक कार्यक्रमों (श्री घनजय भट्ट, श्री ध्यानन्द मिश्र बिष्ट, श्री चण्डी प्रसाद भट्ट और श्री योगेश चन्द्र बहुगुणा) ने उनसे मुलाकात की और वन सम्पदा पर आधारित प्रामोद्योग इकाइयों के काम की जानकारी देने, उनके काम में आने वाली समस्याओं और उत्तर प्रदेश सरकार की वननीति में आवश्यक आन्तिकारी परिवर्तन सुझाने वाला एक जापान भी प्रधानमंत्री को दिया। इस चर्चा में केन्द्रीय संचार मंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, गृह राज्य मंत्री श्री के० सी० पत, प्रायुक्त गङ्गानाल कमिश्नरी और बन्जरवेटर आफ फोरैस्ट ने भी भाग लिया। मुलाकात का आयोजन सचार मंत्री, जो हिमालय सेवा सप के नृपिकेश सम्मेलन के बाद से पहाड़ी क्षेत्रों की समस्याओं में गहरी दिलचस्पी ले रहे हैं, के प्रयत्नों से किया गया था। प्रधानमंत्री ने काफी ध्यानपूर्वक और गम्भीरता से सारी बातों को सुना।

इस मुलाकात का धोरण चाहे जो भी परिणाम निकले परन्तु इतना तो तत्काल हुआ कि पौड़ी की धामसभा में प्रधानमंत्री ने इस विषय पर रोजनी डाली, उन्होंने कहा "श्रीमती श्रीमती जगलाल के सम्बन्ध में चर्चा हुई, हमें लक्ष्मी की आवश्यकता कई कामों के लिए है। परन्तु जगलो के तेजी से बढ़ने के कारण मौसम में भारी परिवर्तन हो रहा है। मिट्टी का बटाव तेज हो रहा है। इसके मंदानों को भी भारी नुकसान हो रहा है। बाढ़ का खतरा भी बढ़ रहा है," इसलिए उनका सुझाव था कि जितने पैड़ काटने आवश्यक हो उतने ही लगाये भी जाने चाहिए, हर स्कूल का हर बच्चा एक पैड़ अवश्य लगाये।

यह हर्ष का विषय है कि देश की प्रधानमंत्री सहित देश के नेताओं, प्रशासकों और जनता का ध्यान वनों के महत्त्व की ओर प्राकृत हूमा है। उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों के वन विभाग व राजस्व विभाग की तरफ से वनीकरण की विस्तृत योजना बन रही है और क्षेत्र विकास समितियों में उसकी

चर्चा हो रही है। वनों को आर्थिक विकास में चिन्तन के केन्द्र में स्थापित करने का यह श्रेय परिवेश शास्त्रियों, (जिनका एक महत्त्वपूर्ण सेमिनार कुछ समय पहले दिल्ली में हुआ) रचनात्मक नारायणतियों व देश के समाचार पत्रों को है।

वनों को उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के आर्थिक विकास में केन्द्रीय स्थान देने की बात काफी लम्बे समय के काम के अनुभवों के बाद उठी है। तीन साल पहले सादी-धामसभे आयोजन की आर्थिक मदद से आठ स्थानीय समाज-सेवी संस्थाओं ने चीड़ के पैड़ों से निकलने वाले लीते से विरोधा व तारपीन तैयार करने की इच्छा प्रारम्भ की है, इसके साथ ही वनीयधि सग्रह का काम भी इन्होंने अपने हाथों में लिया। इन संस्थाओं के काम प्रारम्भ करने से पूर्व उनका दोनों काम (विरोधा व तारपीन तैयार करना तथा वनीयधि सग्रह) या तो व्यक्तिगत क्षेत्र में या फिर सहकारी क्षेत्र में ही किया जाता रहा है। प्रामोद्योगी क्षेत्र में इस तरह का प्रयोग करने का पहला ही अवसर है।

हमें वादों के साथ रहना सीखना होगा

—के० एल० राय

केन्द्रीय सिंचाई और बिजली मंत्री के० एल० राय ने कहा है कि हमें बाढ़ों के साथ जीना सीखना होगा। बाढ़ें प्राकृतिक विपत्तियाँ नहीं हैं, वे प्रादमी के द्वारा बूझाई गई हैं। शासन की वन-नीति के अनुसार पहाड़ों में वनों का क्षेत्र ६०% से कम नहीं होना चाहिए और मैदानों में यह कम से कम २०% होना चाहिए। सब मिला कर जगलों का कुल क्षेत्रफल ३३% से कम नहीं होना चाहिए। यदि यह प्रतिशत ३३ से कम हो जाता है तो नदियाँ भारी वर्षा में अपने किनारों से उफन कर विनाशकारी बाढ़ें लायेंगी। और जगत सारे देश में समान रूप

से फैले होने चाहिए। भारत में हमारे सारे क्षेत्रफल के कुल २४% में वन हैं। पञ्जाब में वनों का प्रतिशत पाचवा हिस्सा। फिर इतने बराबर आश्चर्य कि हमें बाढ़ों का प्रयोग भेदना पड़ना है।

एक छोटी का उदाहरण नीजिये यदि हिमालय की ढलानों पर के सारे पैड़ काट निचे जायें तो सिन्धु-नगा के मैदानों के सारे गाँव और शहर केवल एक बरसात में बह जायेंगे। वृत्त धरनी जहाँ में बहुत पानी गोप लेते हैं, जिसे वे धीरे-धीरे भरनों के रूप में, पतियों से भाग बन कर आदि तरीकों से निकालते हैं। पैड़ों की जड़ों की जमीन पर

मजबूत पकड़ होती है। जब कोई पैड़ काट जाता है यह पकड़ ढीली पड़ जाती है और जमीन वर्षा में भुल कर नदी में घा जाती है और मैदानों तक धाँटे-धाँटे इसके परिणाम से बाढ़ का तावड़ होता है। इसलिए वन प्राकृतिक बाधों और जलाशयों का काम करते हैं। हमने हजारी-बरोड रुपये प्रमाणात्मक बाधों और जलाशयों के बनाने में गर्व किया है ताकि हमारी आर्थिक हानि सुधरे, पर अपनी वनसम्पदा को हमने नष्ट कर दिया है।

वन केन्द्र या विषय होना चाहिए ताकि एक राष्ट्रीय वन-नीति को लागू किया जा सके।

पिछले साल भारत के अधिकांश प्रदेशों में भयंकर धराल था। गुजरात भी उनमें से एक था। जून, जुलाई, अगस्त के तीन माह के दौरान धराल के बटवारे और इस्तेमाल की परिस्थिति, मुख्यमंत्री का धराल, बेकारी की स्थिति, गेहूँ और चावल के व्यापार के राष्ट्रीय कारण के बारे में जनमत और इन सब से बचने के उपाय जानने के लिए गुजरात सर्वोदय मंडल की ओर से एक सर्वेक्षण किया गया।

10 सितम्बर तक 702 फार्म भरकर आये। सार के रूप में निम्नलिखित गये धारणाएँ प्रत्यक्ष दिलचस्प हैं। धारणाएँ हुए फार्मों को 4 विभागों में बांटा गया।

(अ) धनिक वर्ग: इनमें 10 फार्मों में से 66 फार्मों भरकर आये।

(ब) मध्यम वर्ग: ज्यादातर नगर में नीचरी करने वाला वर्ग, इस वर्ग के 229 फार्मों भरकर आये।

(ग) किसान वर्ग: गांव में धराज उगाने वाला और खुद की जमीन वाला वर्ग, 103 फार्मों भरकर आये।

(द) गेहूँ मजदूर वर्ग: गांव में रहने वाले खेती मजदूरों का वर्ग, इनके 304 फार्मों भरकर आये।

इन प्रश्नावली के उत्तरों का सार इस प्रकार है।

प्रश्न: (क) मलेरी धराज की दुकान से किनासा धराज मिला ?

उत्तर (घ घण्टों की यह प्रश्न लागू नहीं होगा)	ब	स	द
कम	95	77	80
5 फि. या तक	82	19	85
5 से 10 फि. या तक	82	7	76
10 फि. या से ज्यादा	50	—	63
	229	103	304

(ख) धराले गेहूँ में से किनासा धराज मिला ?

उत्तर 103 किसानों में से केवल सी गिन (37) किसानों को धराल 60 फि. या धराज मिला।

सर्वेक्षण

अनाज न मिलने पर बदले में क्या खाया ?

प्रश्न (ग) किसानों से किस भाग में अनाज मिला ?

विभाग	घ	ब	स	द
गेहूँ	—	90 पैसे से 1-75 रु तक	85 पैसे से 1-55 रु तक	90 पैसे से 2-00 रु तक
चावल	—	2-25 रु से 3-50 रु तक	2-55 रु से 2-50 रु तक	1-65 रु से 3-75 रु तक
मोटा धान	—	1-00 रु से 1-75 रु तक	1-10 रु से 2-00 रु तक	80 पैसे से 2-00 रु तक

(भाज 1 फि. या के हैं)

प्रश्न (घ) व्यापारियों ने किस भाग में अनाज मिला ?

विवरण	घ	ब	स	द
गेहूँ	—	1-00 रु से 1-75 रु तक	1-25 रु से 1-75 रु तक	90 पैसे से 2-00 रु तक
चावल	—	1-50 रु से 4-00 रु तक	1-80 रु से 3-00 रु तक	1-50 रु से 3-50 रु तक
मोटा धान	—	90 पैसे से 1-80 रु तक	1-00 से 1-90 रु तक	90 पैसे से 2-25 रु तक

प्रश्न (क) यदि मूया रहना पड़ा हो तो ?

इन प्रश्नों के उत्तर निम्न प्रकार के हैं:

विवरण	सदस्य	विजने व्यक्ति	योग्य दिन		
1- दिन भर भूने रहे	206	98	7		
2- एक दिन भूने रहे	184	120	11		
3- (घ) पैसे होने पर भी अनाज न मिला	211	93	136		
(ब) पैसे ही नहीं थे	161	141	15		
प्रश्न (ख) मलेरी धराज की दुकान से धराज टोट टोट मिला है क्या ?					
उत्तर	विवरण	घ	ब	स	द
	सदस्य	14	75	36	80
	हो	0	101	50	117
	ना	52	53	17	102
योग		66	229	103	304

भुखमरी के कारण कितने मरे ?

प्रश्न : गेहूँ का व्यापार द्वारा अपने हाथ में लेने के संबंध में

	1	2	3	4	5
वर्ग विवरण सामान्य अभिप्राय		क्या गेहूँ सस्ता हुआ ?	सरकार बीच में पड़ती तो भाव ऊँचा उठता क्या ?	सरकार के बीच में पड़ने से गेहूँ महंगा हुआ क्या ?	गेहूँ के अभाव के कारण मोटे अनाज के दाम बढ़े ?

प्र	तटस्थ 2	1	3	2	1
हां (अनुकूल)	6	7	6	60	62
ना	58	58	57	4	3
योग	66	66	66	66	66

ब	तटस्थ 18	13	10	22	9
हां (अनुकूल)	27	26	37	181	199
ना	184	190	182	26	21
योग	229	229	229	229	229

घ	तटस्थ 4	3	6	11	9
हां (अनुकूल)	19	17	24	82	89
ना	80	83	73	10	5
योग	103	103	103	103	103

द	तटस्थ 55	26	29	35	32
हां (अनुकूल)	96	101	141	200	248
ना	153	177	134	69	24
योग	304	304	304	304	304

प्रश्न ६ : चावल का व्यापार सरकार को हस्तगत करना चाहिए या नहीं ?

विवरण	अ	ब	स	द	कुल
तटस्थ	2	14	4	33	53
हां	4	42	21	111	178
ना	60	173	78	160	471
योग	66	229	103	304	702

प्रश्न : (ग) अनाज न मिलने पर उसके बदले में क्या लाया ?

उत्तर सिरफ़ द वर्ग से संबंधित है उनके सामान्य उत्तर इस प्रकार है—

1 भूखे रहे 2 जंगली फल खाये 3 चाय पी प्रश्न बेकारी से संबंधित (सिरफ़ द वर्ग को लागू होता है)

उत्तर विवरण तटस्थ व्यक्ति औसत दिन 1-कितने दिन काम मिला ? 129 175 26

2-मजदूरी का दर क्या था ? औसत रु- 2-00

3- चाय में रोटी

या अनाज मिलता ? 19 31 (रु) 154 नहीं

प्रश्न भुखमरी के कारण कितने मरे ?

उत्तर द वर्ग में से 6 मोटे हुईं । विवरण इस प्रकार है

ग्राम लेवो, तालुका धामादे जि० भरत (1) जेसग भाई गोपालभाई, उम्र 60 वर्ष (2) श्री फकीरा भाई; अमयाभाई, मूरत नगर वें (3) भाएग भाई, उम्र 4 वर्ष, (4) मजूबेन उम्र 3 वर्ष (5) भाएग उवा, उम्र 25 वर्ष (6) सोमीबेन, उम्र 20 वर्ष ।

प्रश्न (क) महगाई दूर करने के उपाय धाप कुछ मुभा सकते हैं ?

उत्तर अ वर्ग : (1) उत्पादन बढ़ाना, (2) मुद्रास्फीति कम करना, (3) केन-बूदि स्थगित करना, (4) जोन-बन्दी खत्म करना, (5) मुक्त व्यापार रखना ।

ब वर्ग : (1) उत्पादकों को पूरे भाव देना (2) जीवन की आवश्यक चीजों का उत्पादन बढ़ाना (3) जीवन की आवश्यक चीजों की विपरीत के दाम निर्धारित करके उत्पादकों को होने वाले घाटे की पूर्ति सरकार करे (4) वेतन का उच्चांक तय किया जाय (5) सरहू खोरी बन्द की जाय ।

स वर्ग : (1) नगरी की पगल का नियमन किया जाय, (2) लगत अनाज के रूप में वसूल किया जाये, (3) सरहू मोरों को खन्ड सजा दी जाये (4) ग्राम स्तर पर आवश्यक अनाज सुरक्षित रखा जाये। (5) मजदूरी को मजदूरी मुद्द नबद तथा मुद्द (मिप मुट्ट १० पर)

सबसे ज्यादा अपमानित और तिरस्कृत रोगी कुष्ठ के हैं

बीमारियों के नाम पर बैसे तो कई रोग हैं, पर समाज में कुष्ठरोग के बारे में जिनकी धारणासमझारी और गलतफहमी व्याप्त है वैसी किसी और किसी रोग की नहीं। साथ ही समाज में जितने धमामानित और तिरस्कृत रोगी कुष्ठ रोग के हैं उनके और किसी के नहीं। इन धमामानित और तिरस्कृत रोगियों का एक सा हाल है। भारत में कुष्ठ रोगियों की संख्या का एक चौथाई विद्यमान है। लगभग २५ लाख कुष्ठ रोगी भारत में हैं। इतनी बड़ी संख्या में कुष्ठ रोगियों के होने का सबसे बड़ा कारण इसके साथ धर्मश्रितासों, पुराणियों, भय और सामाजिक प्रतिश्रिया की लम्बी सू सला का जुड़ा होना है। रोग की वास्तविकता और समाज की धारणाओं में दो झुंको वैसी दूरिया है।

कुष्ठ रोग के प्रति भय का एक कारण यह भी है कि जिनको शारीरिक धति इस रोग में कारण होती है उतनी धन्य किसी रोग के कारण नहीं होती। कुष्ठ रोग के रोगी के साथ समाज का निरस्कार तो शारीरिक धति के बहुत पहले से ही प्रारम्भ हो जाता है, जब वह कुष्ठ रोग के रोगी के हाथ, बेहरे या होठों पर रोग के चिह्न देखना प्रारम्भ कर देता है। दूसरा परिणाम यह होता है कि इन रोग पर के लगभग भलेनाए भी शारीरिक कर दी जाती हैं, जिनका रोग की मूल प्रवृत्ति से कोई संबंध नहीं है। रोग के प्रति ध्यान भय का यह हाल है कि एक संभव यह माना जाता या कि धरर जिनो लम्बे प्राणी की कुष्ठ रोग का रोगी धू ही ने का उगारी छाह ही उस पर पड़ जाये तो भी स्वयं प्राणी की रोग लग जायेगा। परिवार के किसी सदस्य को धरर यह रोग हो जाये तो परिवार के जेप लोगों के प्रति भी इन धारणा का होना कि कुष्ठ पीड़ी दरनीड़ी ही सकार है, एक सभ्य संभव तक सामाजिक मान्यता रही है। यह भी मान्यता रही है कि धरर कोई ध्यक्ति सिन्ही बुरे और धर्मनिक कुटुम्बों में फगा हुआ है तो उसे कुष्ठ रोग

जाता है। ऐसे भय विषयसों और मान्यताओं की एक लम्बी फेहरिस्त है और उन सभी धेगों से संबंधित है, जहां तक हमारी कल्पना चौक सक्ती है।

उन गलत मान्यताओं के कारण सामाजिक परिदेष में किफ कुष्ठ रोगियों के प्रति सांकासक दृष्टिकोण धमनाए रहता है, बल्कि उन रोगों के प्रति भी संवेदनशून्य हो जाना है जो इन रोगियों के संबंधीक रहते हैं। इस सामाजिक प्रतिरोग के कारण कुष्ठ रोगी न तो सम्मानपूर्वक धमना जीवन यापन कर पाता है और न ही उसे समाज में रहने का स्थान ही मिलता है। उसके लिए केवल एक ही रास्ता मेप रह जाता है कि वह या तो भीष माग कर जिन्दा रहे या मारमहत्या कर में।

धररर यह कुष्ठ रोग है क्या? क्या यह उतना भयकर है, जितना इतना प्रसार किया गया? यह सच है कि कुष्ठ एक सजासक रोग है पर उतना नहीं जितना कहा

जाता है। कुष्ठ का हर रोगी संक्रामक नहीं होता। सत्य तो यह है कि कुष्ठ कुष्ठ रोगियों का धरसी प्रतिगत संक्रामक होता है। केवल बीस प्रतिशत कुष्ठ रोगी ही इस प्रकार के होते हैं जिनसे रोग प्रसार का भय होता है।

कुष्ठ रोग वधामुगत नहीं होता और यह जरूरी नहीं कि कुष्ठ रोगी पिना की सतान भी कुष्टी ही हो, धरर रोग की रोकधाम के पणोत्त उपाय किये जायें। बैसे धव कुष्ठ रोग धमामभ भी नहीं रहा है। हर प्रकार के कुष्ठ रोग के लिए प्रभावकारी दवाइया धाज उपलब्ध है। रोग चाहे जिस धवस्था पर हो ये दवाए प्रभावकारी हैं और सरलता के ली भी जा सक्ती हैं। कुष्ठ रोग से सम्बंधित धरररानो और सासकीय बिचिन्तासयों पर ये दवाए सहजता से उपलब्ध हैं। जरा ही सावधानी धरर बरती जाये तो प्रारंभिक धवस्था में ही रोग के लक्षणों की समक कर इलाज किया जा सक्ता है।



कुष्ठ के रोगी बच्चे : वरजवत मलिय की जित्ता (विषय : विषय सवाय सगज)

धन: कुष्ठ भी अन्य रोगों की तरह वा एक रोग है और उचित उपचार द्वारा दूर किया जा सकता है। सहज ही है कि जल्द उपचार निरोगी बनने में कम समय लेगा और देरी से प्रारंभ किया उपचार ज्यादा समय।

कुष्ठ रोग के वटने को दो शब्दों में बाधा जा सकता है, एक तो भ्रान्त और दूसरा भय। रोग के प्रति भ्रान्त के कारण रोग की आरंभिक अवस्था में ध्यान नहीं दिया जाता और रोगी जाने-बनजाने अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को भी रोग से प्रभावित करता है। चूकि रोग के लक्षण किसी जन्म का नहीं होते और रोगी किसी प्रकार दर्द व पीडा नहीं महसूस करता इसलिए रोग के प्रति अनभिज्ञ ही रहना है और जन्म विनिश्चित के विचारित नहीं कर पाता। इस कारण रोग फैलता जाता है। इसके परोक्ष कुष्ठ रोगी सामाजिक प्रविष्टा और हृत्पार के भय से अपना रोग कुपुण्ड्रा की धति ध्या जाने तक छुपाने रहते हैं। इस रोगी न केवल स्वयं को यातना देता बल्कि सम्पर्क में आने वालों को भी प्रभावित करता है।

कुष्ठ रोग के जीवाणु की खोज करने में वैज्ञानिक हेन्सन की स्मृति में यह वर्ष की दुनिया में शताब्दी वर्ष के रूप में गया जा रहा है। हालांकि कुष्ठ रोग के कारण की खोज ती वर्ष पहले ही हो गई थी, जिस अनुमान में कुष्ठ सेवा के कार्य की रत है यह नहीं हो पाई। निष्कर्ष कुष्ठ रोग की दृष्टि में भारत पिछड़ा हुआ है। रोगियों को समाज में सबसे हीन दृष्टि दी देखा जाता है, जो कि दुनिया के दूसरे भागों में संशुद्धिप्रति और सहायता के पात्र आते हैं। समस्याओं की जिस दुनिया व लोग आज जी रहे हैं उसमें कम से कम। तो ही सचता है कि इस देश के पीछे-पीछे मात्र लोग कुष्ठ मुक्त हो जायें और ज में एक सम्मानजनक हस्तान की तरह। रह सकें।

(सिवाग्राम में सम्पन्न हुए कुष्ठ कार्य-सम्मेलन के अवसर पर श्री मुयाकर एक लेख के आधार पर)

उत्तरप्रदेश के गोंडा जिले के श्री बस्ती ग्राम में तरण शान्ति सेना वा चतुर्थ प्रादेशिक शिविर तथा तृतीय प्रांतीय सम्मेलन १ से ७ अक्टूबर तक बाबा राधवदास श्रम साधना आश्रम में सम्पन्न हुआ।

हमारे अथ तक के शिविर सम्मेलनों में विशेष विशेष पर ही चर्चा से हुआ करती थी किन्तु इस शिविर में समस्याओं का विश्लेषण प्रश्नोत्तर से प्रारम्भ हुआ। आज सभी समाज सेवी सस्याए तथा राजनीतिक पाठिया श्रमोपी योगदानों में प्रन्तिय व्यक्ति की चर्चा करती है। यह प्रन्तिय आदमी वास्तव में है कौन? क्या खाता-पीता है? क्या उसकी समस्याए हैं, समाज की वह प्रन्तिय इकाई इसी दशा में रहे, इसके लिए हम किस हद तक जिम्मेदार है? आदि सारे तथ्यों का प्रच्छा विश्लेषण हुआ। श्रमप्रकाश दीपक ने सरकारी योजनाओं और देश की वर्तमान आवश्यकता के अन्तर्विरोध को स्पष्ट करते हुए गरीबों के कारण बताये, अल्पज की स्थिति को स्पष्ट किया। उनके साथ तीन-चार भागों में हुई चर्चा में यूरोप और भारत के तात्विक चिन्तन में जो अन्तर रहा और उसकी वजह से सामाजिक बदलाव के सन्दर्भ में दोनों जगह जो एकांगिता रही, उसे उन्होंने स्पष्ट किया। दुनिया के कुछ बड़े और प्रमुख देश मार्क्स के सिद्धांतों से प्रभावित रहे हैं, जो मोटे तौर पर अन्तिम वर्ग के दिनों का प्रवृत्ता समझा जाता रहा और जिसने वर्ग-सघर्ष को अन्तिम वर्गों बनाते हुए शोषक समाज के खतम होने की बात कही। मार्क्स ने यूरोप के निचले तबके अर्थात् गौरे मजदूरों की मुक्ति वा दर्शन तो दिया किन्तु दुनिया की आधी से अधिक वाली और रगिण अर्थादी के लिए उनकी पक्षी घटें यह रही कि उनकी मुक्ति यूरोप अर्थात् गौरे समाजवादी के अन्दर ही होगी। 'दुनिया के मजदूरों एवं ही' वा नारा देते हुए भी अपने विश्लेषण में उन्होंने मान्य किया कि वाले और रगिण लोगों की सांस्कृतिक चेतना का विकास तो गौरी के अनीन ही सम्भव है। नाथी के विचार और उनकी कार्यप्रणाली इस मायने में भिन्न रही। उनमें भारत की आजादी ने लिए जिम अर्थ वा प्रयोग किया उसने मानव-मानव के बीच कोई भेद नहीं माना और प्रचार के लिए आनयों गये

उनके सत्याग्रह-अर्थ वा इत्सेमाल विभिन्न देवों ने किया। महिला और सत्याग्रह की की शक्ति इस माने में दुनिया के लिए एक अमूर्त तात्व साहित हुई कि इसका उपयोग केवल अपने से निर्बल वर्गों के लिए ही उपयोगी होगा, ऐसा नहीं। इस सन्दर्भ में गांधी वा यह अमूर्त आविष्कार हमेशा याद किया जायेगा।

हिन्दुस्तान में शोषण और बेरोजगारी की बात स्पष्ट करते हुए विश्व पटनायक ने कहा कि वास्तविक बदलाव के लिए मध्य वर्गीय शिक्षित तबकों की तैयारी नहीं है। हिन्दुस्तान जितनी धनी आजादी वाले देश में किसी भी तरह की शिक्षित बेरोजगारी की समस्या का सवाल ही नहीं उठता, यदि ङग से उत्पादन बनाने की बात की गयी होगी होती। कृषि क्षेत्र के उत्पादन और अशिक्षित बेकारों की तरफ उचित ध्यान दिये वगैरे जो हम बेरोजगारी हटाने की बात सोचने हैं, यह तबत्व उगत है। शिक्षा के अग्रप्रेषण को भी उन्होंने उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया।

इस तरह कुल ४ दिनों की चर्चाओं में शिविरार्थियों की तरफ से विवेक गये प्रश्नोत्तर, आगामी चर्चाओं एवं व्याख्यानो द्वारा दुनिया की वर्तमान परिस्थिति, देश की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति और उसके बीच 'प्रन्तिय आदमी' की हैसियत का प्रच्छा विश्लेषण हुआ।

अथ सवाल उठा कि आगे क्या करना है और समग्र सामाजिक परिस्थिति के सन्दर्भ में हमारी भूमिका क्या होगी? हम क्यों हैं? यदि सामाजिक परिस्थितियों में अग्रमूल परिवर्तन करना है तो उसकी दिशा क्या होगी और हमारी आगामी तैयारी क्या होगी? हम जिस अन्तिम आदमी की परिस्थिति वा निर्देशण करते रहे हैं, उसमें चेतना जागृत करने के लिए क्या हमें अपने अस्कारों में परिवर्तन नहीं करना होगा? क्या शिक्षित तबकों के बीच बँटवर्त इस विषय की चर्चा भर कर लेने में और अथ की प्रविष्टा होनी चाहिए वा नारा भर देने से हम दायित्व मुक्त हो जायेंगे? यह तो गठी है कि जिन परिवेश में हम पले-गडे हैं उनमें एवम से अन्तिम आदमी की भूमिका में हम उनको तो यह सम्भव नहीं हो पायेगा। अतः हमें साथ में

२६ जनवरी से पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्रह होगा

३-४ महीने लो एसे विविध करने हो चाहिए जहा उत्तरप्रदेश भर के तटस्थ शान्ति सेनिक एचर होकर डिप्लोमेटिककेलन की भूमिका में रह सकें। चर्चा के मही तक पहुंचने के बाद स्वभाविक रूप से गांधी के चिन्तन और विनोबा के मार्ग के प्रति उत्सुकता बनी। विविधार्थी एक दिन पढोस का एक गांव देगने भी गये थे। उनके विभिन्न विराम के सवाल जवाब भ्रम धीरेन का से मुक्त हुए। दादा मुक्त हो ही मिदिर-सम्भवन की चर्चा-मोडियो में बराबर घण्टे, डेढ़ घण्टे के लिए धाते रहे। जब-जब उनमें बातचीत हुई तब-तब विषय-विशेष को बहुरूपक सामाजिक मूल्यों के सम्बन्ध में जो मूलम व्याख्या उन्होंने भी उल्लेख कई तथ्य स्पष्ट हुए। साथ ही गांधी के चिन्तन और विनोबा की कार्य-पद्धति का भी पता चलता। उन्होंने सामाजिक विनाश का ऐतिहासिक सम्बन्ध बताते हुए राज्य की स्वायत्तता की बात बहोई। प्रमुख की सेवना के विकास से साथ-साथ ही जिस तरह व्यक्ति और सत्त्वाएँ समस्यारो के समाधान में धमकाने हो रही हैं, इसका उन्होंने दृढम विषय-एक किया। इसके पंदा होने वाली सजाय की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि भ्रम शम सत्ता के परिवर्तन से नहीं कलेवा बरन् सनाय में स्थापित हो गये मूल्यों के विरोध में काम करना होगा। इस परिदृश्य में गांधी और विनोबा की भूमिका स्पष्ट करते हुए उन्होंने गांधी के तीन रूप बताये 'महात्मा' गान्धी विषयो क्लरप हो दिन्दुन्मान से प्रतिष्ठा प्रदान की है, 'विद्रोही' गांधी जिसे परिसर में पहुंचना है और दिन्दुन्मान में मोहिया के चलकर गांधी के बृद्ध धनुवाद्यों ने। विन्दु गांधी के तीसरे स्वरूप, क्रान्तिकारी गांधी को सब तक विन्गी ने नहीं पहुंचाना है। यह सही है कि विद्रोही गांधी की सम्भावना को गांधी अपने जीवन-काल में प्रकट करके गये विन्दु क्रान्तिकारी गांधी की

सम्भावना का प्रवर्तक उनके जीवन काल में सम्भव नहीं हो सका। वह उनके विचारों में धरा गया था। राज्य और सत्ता की शक्ति से भिन्न जिस सम्पत्ति शक्ति के निरपेक्ष की उन्होंने कल्पना की थी भ्राज विनोबा उसी सम्भावना को प्रतीति पर उतारने के लिए प्रयत्नशील हैं विन्दु साथ सबको को अपनी राह खोजती होगी। यार्क गांधी या विनोबा किसी का चिन्तन धारके समय में उभर रही जटिलताओं के समाधान में पूर्णतः सक्षम हैं, ऐसा नहीं। बाल की प्राजाय और समाज की दासकल्पनाओं की पहुंचाने हुए, धारको-दुश्चको मुख्य बदल के सम्बन्ध में नयी दिशा खोजने होगी।

मिदिर में हुई सम्पूर्ण चर्चा की रोशनी में उत्तर प्रदेश तरफ शान्ति सेना के सम्भवन में अपने समाज का नवीनीकरण करके कार्यक्रमों को उठाये का निश्चय विधा। प्रथम तो उनके इस बात का निर्णय लिया है कि तरफ शांति सेनिक समूह अपने पुराने सखार तोड़ने की भूमिका में धारिया धारिया उपकी वीरिण सानु विनासी-सीमिकेशन की रहेगी। दूसरा निर्णय जो रिपेसे मान लिया गया था उसे फिर से दुहराया गया और पुन २६ से ३० जनवरी तक पब्लिक स्कूल पर सत्याग्रह का कार्यक्रम बनाया गया।



समूह-बांधों का दृश्य। बार दिनों की चर्चाओं के मिदिरासियों की तरफ से किये गये प्रयत्नोत्तर, चर्चाओं और व्याख्यानो द्वारा दुनिया की वर्तमान परिस्थिति, देश की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति और उसके बीच 'सन्तिय धारयो' की हैसियत का अर्थदा विवरण्य हुआ।

विधा में कानि की हमारी मांग विपदिने तीन सालों से रही है। सन् '७३ की जनवरी में हमने देश में बात रही दो प्रकार की शिक्षा प्रणालियों की धोर सम्पूर्ण सजाय का व्यापक प्रकटि करने के लिए पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्रह के कार्यक्रम का निश्चय किया था विन्दु कई कठिनाइयों को बजह से वह पुर नहीं हुआ। इस बार पुन वह कार्यक्रम हो ऐसा प्रस्ताव कई मित्रों की धोर से भाया। कुछ साधियों का इससे मतभेद रहा। उनका कहना था कि व्यापक तैयारी के अभाव में हमें इस कार्यक्रम को नहीं लेना चाहिए। फिर यह राजनीतिक स्ट्रेट से ज्यादा मुक्त नहीं बनने का। धाम विद्यार्थियों को इसमें कोई मतलब नहीं होता। राजनीतिक पार्टी वाले तुरन्त इसे धारना तारा बता लेंगे। कुल मिला कर इससे बड़ा निश्चयने वाला नहीं। विन्दु कई मित्रों का कहना रहा कि कार्यक्रम में हम विजने सफल या असफल होते हैं बात इसकी नहीं। प्रमुखता इस बात की होनी चाहिए कि हमारी मांग सही है या नहीं। हमारे काम की कभीटो पब्लिक स्कूलों का बन्द होना नहीं होगा बरन् जो एक गलत प्रणाली इस समाज में चल रही है उसकी तरफ देश का ध्यान धारकित करने में यह ही जरूरी भी सफल होने है तो यही हमारी सफलता होगी। मात्र पब्लिक स्कूल नवर महापालिका या जिला परिषद के स्कूलों के बीच जितनी बड़ी सार्दी है उसे कौन नहीं जानता? पब्लिक स्कूलों में जिस तरह सारुच वर्ग तैयार करने और शोध स्कूलों में शोधित समाज बनाने की जो सोची-समझी नीति विभिन्न वर्ग के सताधियों द्वारा बराबर बतायी जा रही है। उसको हम इकार करते हैं। जब इस देश में सम्पूर्ण सामन्तवाद चलता था तब भी सत्याग्रहों के धोर धाम जनता के बच्चे एच ही स्कूल में पढ़ने में (एम्प और

→

मुद्रामा) फिर आपकी इस समाजवादी सरकार के अन्तर्गत ही ऐसी विपत्तियाँ क्यों ?

पब्लिक स्कूलों का कार्यक्रम हो या नहीं इस विषय में धीरे-दवा से भी सवाल किये गये। उन्होंने बड़ी बेबाक विन्तु तीखी भाषा में कहा कि मैं प्रच्छेदी तरह जानता हूँ कि तुम सब गण्डों हो। सामाजिक परिवर्तन की किसी भी सड़क को तुम नहीं उठने देना चाहते। तुम जो अन्तिम आदर्शों के विषय में लम्बी-बीड़ी बातें करते हो वास्तव में उसके बन्धों पर बैठे हो, उसे चुस-चुसकर मोज कर रहे हो। आपके (बुद्धिजीवी मध्यमवर्ग के) बन्धों पर पूजोपति देना है। आप उसे तो उतारना चाहते हैं विन्तु बुद्ध अर्थजीवी के कंधों से उतारना नहीं चाहते। पब्लिक स्कूल का कार्यक्रम शिक्षा में क्रांति का कार्यक्रम नहीं सामाजिक परिवर्तन का कार्यक्रम है। केवल इसकी मांग हम शिक्षण में क्रांति के द्वारा कर रहे हैं और ऐसा मात्र इसलिए, क्योंकि शिक्षा में परिवर्तन की मांग समाज में उठ चुकी है जबकि सामाजिक परिवर्तन की मांग की कोई सुसमुगाहट नहीं। अतः जिस चीज की मांग हो उसी माध्यम से अपनी बात रखो। पब्लिक स्कूल ही क्यों ? इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि जो सबसे लम्बी नाक है उसे सबसे पहले खींचो तो ध्यान जल्दी आकर्षित होगा। पब्लिक स्कूल स्थापित समाज ही सबसे ऊंची नाक है। अतः इस पर उगली रखने में भी यदि तुम सफल हुए खोबड़ा काम होगा। शिक्षा में क्रांति का मतलब क्या होता है ? ...विना सामाजिक क्रांति के शिक्षा में क्रांति सम्भव है क्या ? यह कार्यक्रम सामाजिक परिवर्तन का कार्यक्रम है। नीतिगत रूप में उतना ध्यान जरूर देना कि उस स्कूल को पहले मत सेना जिस पर जनता की श्रद्धा हो। उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि उस कार्यक्रम की प्रवेशिक स्तर पर भले उठाया जाये विन्तु दूसरे समर्थन अर्थात् भारतीय स्तर पर मिलना चाहिए। यह कार्यक्रम तुम सबों का सामूहिक मोर्चा होना चाहिए, भले बरे उसे कोई एक प्रदेश।

शिविर में कुल ५२ शिविरार्थी क्रमः इटावा, इलाहाबाद, वाराणसी, जौनपुर, बलिया, गोरखपुर, गोंडा, कानपुर, लखनऊ, उन्नाव, फर्रुखवादा, जालौन, टिहरी गढ़वाल, हरदोई, शाहजहाँपुर १५ जिलों तथा ६ विद्यविद्यालयों से आये थे। २८ तारीख से होने वाली लगातार बारिश ने शिविर के अर्थ आदि के कार्यक्रम मुचाराहण से चलने नहीं दिये। सख्या भी इसलिये कम रही। फिर भी बुलाये गये वक्ताओं में प्रोमप्रकाश दीपक, बाबूराज चन्दाकार, किशोर पटनायक, परेन्द्र भाई और धीरेन्द्र दादा की उपस्थिति ने शिविर को लगातार सोचने का मसाला दिया, जिससे बारिश और भोजन की दिक्कत महसूस नहीं हुई।

स्वागुशासन के आधार पर चलने वाले इस शिविर के संचालन में अमरनाथ भाई, रामचन्द्र राही और विनय भाई ने अरुण भाई आदि तरणों को आवश्यक सहयोग प्रदान किया। व्यवस्था का मुख्य भार आश्रम के व्यवस्थापक बाबा सीताराम सिंह तथा श्री गोपाल भाई ने उठाया। अहिक संयोजन पूर्णतया स्थानीय आधार पर आश्रम द्वारा बलरामपुर आदि पड़ोसी क्षेत्र के नागरिकों के सहयोग से जुटाया गया।

वन्दना 'भारतीय'

(पृष्ठ ६ से जारी)
अनाज के रूप में दी जाये, (b) ग्रामोद्योगों को बढ़ाया जाय।

ब सर्ग (1) गरीब वर्ग के लिए जीवन की आवश्यक सभी चीजें पर्याप्त निश्चित व सस्ते दामों में गार की हो दूनायें से मिलनी चाहिए (2) खेत मजदूरों की रोजी बढ़ाई जाय।

प्रश्न (ख) : मजदूरी या वेतन का कुछ हिस्सा अनाज के रूप में मिले तो ?

उत्तर	विबरण	अ	ब	ग	द
	स्टटथ	14	64	13	121
	अच्छा	39	107	71	143
	अच्छा नहीं	13	58	19	37

योग 66 229 103 304

सम्पादन : जगदीश शाह। गुजराती से अनुवाद : श्री अश्विनी भाई

अब इलैक्शन बनीशन बन गया है तो बहुत सारी बातें, जो गांधीजी लोकसेवक सभ से अपेक्षा करते थे, वह सब इलेक्शन बनीशन कर देता है। फिर भी इलेक्शन में प्रत्याचार बगैरह होता है, तो उतना देखना आज बाक्य है। सर्व सेवा सभ ही आज 'लोक सेवक सभ' बन गया है तो और क्या-क्या करना पड़ेगा ? गांव-गांव से आपका सम्बन्ध है ही। वह थोड़ा व्यापक करना होगा। और कुछ नहीं करना है। लेकिन एक शब्द होता है, जिससे संरक्षण मिलती है। 'लोक सेवक सभ' वैसा शब्द है। उन शब्द में से 'लोक सेवक' तो हमने उठा लिया था। भारत में आज कई लोक सेवक हैं। आर्जित सैनिक भी कई लोग हैं। इस वास्ते नवर एक में यह बात है कि भव समय था गया है।

नवर दो में यह बात है कि फिर भी कुछ लोगों को समझाना नहीं होगा। ये कहेंगे जो मूढ बापू को भी वह बाबा को नहीं है। यह बात सत्य सत्य सत्यम् है। त्रिवार सत्यम् है। एक बात महादेवभाई से बात हो रही थी। ये बोले बापू बनी ऐसी बात करते हैं कि मुनने पर लगता है कि यह बात इतनी सरल थी फिर भी हमारे ध्यान में क्यों और कैसे नहीं आई। मैंने पूछा, 'आपने क्या उत्तर निकाला ?' तो उन्होंने कहा, एक ही उत्तर निबन्धा, गांधीजी थे प्राण्ड बुद्धि वारणीया और हम हैं प्राण्ड बुद्धि वामणीया। महादेवभाजी वामणीया थे। मैंने उनसे कहा कि आपका विनकुण ठीक उत्तर है। फिर भी आप वामणीया होकर भी गुजराती हैं। इन-लिपि वामणीया को भी वारणीया की संगति से बोझा हिसाब आता है। लेकिन वाबा है महा-राष्ट्र का वामणीया। वह हियाव जाता ही नहीं। इन वाले वट वामणीया 'रेड्डू टू संवेन पाउर' यानी वामणीया है। यह हांनत वाबा की है। इन वाले इतने बोर्ड शक नहीं कि गांधीजी की जो अपनी मूढ थी, दसवा दिनना बोझा-सा हिस्सा वाबा की अपनी मूढ के मुनादिक सम्भन्धा है, उसको धमक में लाने की कोशिश करता है।

सत्याग्रह की लड़ाई उच्च ढंग से ही चलानी चाहिए

-काका कालेलकर

आन्दोलन की बात है कि जिस जमाने में ब्रिटेन का प्रचार इतना जोरों से और व्यापक हो रहा है, जहां और चिन्तन का प्रचार इसी प्रमाण में कम होता जा रहा है। हमारे राष्ट्रीय जीवन में जो विचार प्रचलन मौखिक और सर्वव्यापी हैं, उन्हीं के धर्म का अर्थ सामान्य समझाना में और व्याप्तानों में सार्वजनिक होना ही ही पड़ता है। महात्मा गांधी ने भारतीय संस्कृति को ठन्डा उठाते बाला एक नया प्रयोग प्रथम करके अपनी बातों में और बाद में भारत में करके दिखाया और उसे अपना राष्ट्रीय स्वरूप भी वे दे सके। उस महान् प्रभुति के साथ उन्होंने हमारी और दुनिया की भाषा को एक धर्म-समृद्ध लेखनी भाषा भी दे दिया, 'सत्याग्रह'।

आज देश के सामान्य ही बंधा, चढ़ बढ़े-बढ़े मैना लोग भी सत्याग्रह शब्द का दिन-रात दुर्बुध्दोपयोग कर रहे हैं, मानों सत्याग्रह यात्रा भ्रमण करने का एक मसूनी तरीका।

और जो लोग उस शब्द का सच्चा अर्थ पोंझा कुछ जानते हैं वे तबिक भी चिन्तन किंचि बिना उसका मतलब उठाने ही ही पड़ते हैं।

यह तो हुई हम युवा में एक सर्व-प्रायःसारी शब्द की हालत। लेकिन यहिना, मरर तो, हमारी भारतीय संस्कृति के जिनसा ही, पुराना और सर्वव्यापी है। साथ ही यहिना, समय और देश, स्वयं और वैसाय, सामना और सिद्धि ऐसे शब्द हमारे भारतीय साहित्य में बेरजाल से पाये जाते हैं और भारत की सभी भाषाओं में इनका प्रचलन है।

इन शब्दों में यहिना शब्द को साधारण सभने ध्वनि के नाम में लाया जाता है। और यहिना का प्रथमकार क्रिया वैदिक कृपिया में किया, उनका ही वैदिक धारि दार्शनिक भी किया है। महात्मियों के सर्वप्रथम कथ्य रामायण, पुरुषारण, भागवत और महाभारत में ये शब्दों में यहिना की विन्ती चर्चा है इनकी किसी और शब्द की नहीं होती।

और सनातनी संस्कृति में प्रथम प्रचारक गुणार करने वाले दो गुणारक पवने, बौद्ध और जैन धर्मों में यहिना की प्रतिष्ठा सर्वोपरि मान ली। आज यह शब्द निरालम्ब हो गया है। चढ़ लाग इसका एक ही संकुचिन्तन धर्म करने हैं कि मान नहीं सता। 'साक्षात्कार और पुष्पाहार से सनोय मानस' इनका ही यहिना का प्रचार पर सामों में है। और दूसरे लोग कहते हैं 'सदना-भगवत टाल देना, मारवाट से बचजाना और जहा भगवत या विरोध हीन पड़े, यहिना का नाम लेकर भगदा टाल कर जाए जाता यही यहिना का अर्थ है।'

'यहिना का ऐसा अर्थ करने उग नीति की निन्दा करना और लोगोंको भगवत के विचार करना यही एक बड़ी समाज-क्षेपण वाली जाती है।

जिन भारतीय-संस्कृति में शक्ति बलों को जन्म दिया, कुछ कठने के संस्कृति-माल्य नियम बनाये और भारतीय बुद्ध के जैसे महायुद्ध पर मरवातक लिये ऐसे देश में आज के चढ़ने का साक्षरधर्म का नाम लेकर जब प्रथम में मारवाट करते हैं और उसका समर्थन करने हैं तब कुछ से कहना पड़ता है कि 'संस्कृति का धारण तो बाजू पर रहा, सामान्य और पर साक्षरपूर्वक मारवाट

करने के सर्वमान्य नियम भी ऐसे लोगों को मान्य नहीं हैं।' हमारे बड़ा हिंसा और यहिना दोनों का गहरा चिन्तन हुआ था। हिंसा का प्रचार करने वाले भी अपना उत्तरदायित्व जानने थे; और बुद्ध बलाकर, उस में प्रत्यक्ष हिंसा लेकर, जिन लोगोंने विजय पायी थी ऐसे-जैसे लोगोंने ही जब यहिना का प्रचार चलाया था तब हिंसा-यहिना का जो अर्थ हुआ था उसे आज के लोग जानने तो नहीं, लेकिन समझने की सेवा ही भी नहीं बनाने।

ऐसे जमाने का यहिना क्या चीज है और सत्याग्रह के द्वारा गांधीजी ने मानवी-संस्कृति की नींव ही बड़ी देन दी है, इसका घोडा मुचन करना साध्य सामर्थ्यही होगा।

सौंदर्य जीवन ही वा सामाजिक मानसोपयोगी हो, सचप के अर्थ माने ही हैं। मर-नरि के महायुद्ध के सेवा धारणसिद्धि। युद्ध ही, उमम सफलता पाने के लिये और संस्कृतिनाश टालने के लिये चढ़ नियमों का और समय का पालन करना ही पड़ता है। उस की चर्चा इस बचन हय छोड़ दें और। सामाजिक शब्द का अर्थ ही प्रथम स्पष्ट कर दें। जहा जीवन है बड़ा मनभेद, हृदिभेद और साक्षर-सिद्धि के सचप रहेगे ही। ऐसे समय पर परस्पर विरोधी दल के नेता मानते हैं कि जहा मलन पड़नी में कारण विरोध नहीं छटा होने की समाधान छटा, बड़ा परस्पर निश्चर-निश्चिय करने धानी-धानी बाजू समझाकर न्याय और सर्वहित बना है यहुँ एक दूसरे की समझना जरूरी होता है। इन के लिये साथ बैठकर चर्चा और विचार, विनियम दिया जाता है।

धोड़ी चर्चा के बाद प्रयुक्त होता है कि दोनों पक्षों में कुछ सत्य, कुछ यहिना और कुछ गमाव होता ही है। तब ईशतदार लोग, धानी-धानी बात धोड़ी कुछ धोड़कर विरोधी की हृदि का जिनसा दिया हो स्वीकार कर लेते हैं और उच्च-हितकारी ऐसा बीच का रास्ता निगलते हैं। इन के



काका साहब कालेलकर

→
लिये शब्द है समन्वयकारी रास्ता। जिसके लिये अर्थों को शब्द है सिन्थेसिस Synthesis

ऐसा सिन्थेसिस मिल जाना बड़े सौभाग्य की बात है। दोनों पक्ष जब समझदार और न्यायी होने हैं तब समन्वय पर आ जाना बहुत बार आसान होता है। और समन्वय उभयमान्य होने से उसका फल भी तुरन्त प्रसन्नता से हो जाता है।

लेकिन कभी-कभी समन्वय न मिलता तो भी दोनों पक्ष किसी समझौते के लिये तैयार हो जाते हैं। क्योंकि समझौता न किया तो जो भगड़ा चलेगा उसमें दोनों पक्षों की अराह्य हानि होने वाली है।

ऐसे समझौते में जो पक्ष कमजोर है, वह अपनी कमजोरी समझ कर अपने हक की बातें भी छोड़ देने की तैयार होता है। कभी-कभी एक पक्ष भगड़ा और उससे होने वाली हत्या और नाश की टालने के लिये उदार होकर अपना स्वार्थ छोड़ देने को तैयार होता है और श्रेयवायी समझौता भी कभी-कभी मजूर करता है।

ऐसे समझौते दुनिया में हमेशा चलते आये हैं। क्योंकि भगड़ा अथवा मुक्त चलने से दोनों पक्षों को बेहद नुकसान सहन करना पड़ता है। अपनी बात न्याय की ही तो भी डर के मारे अथवा उदारता के कारण लोग समझौते पर आने के लिये तैयार हो जाते हैं। समझौते की बात अलग है। मानवी जीवन में उसको अवश्य स्थान है। लेकिन 'समन्वय' चीज ही फलन है।

दो पक्षों को साथ रहना पड़ा, सहयोग करना पड़ा और दोनों में बंद बातों में मतभेद हुआ। जीवन के प्रारंभ भी भिन्न रहे। तब क्या किया जाय ?

दोनों अंगर सत्य के उपासक हैं, समाज सेवा की दीर्घदृष्टि दोनों में है तो सत्य का जो अर्थ दूसरे पक्षों में दीख पड़ेगा, उसका प्रसन्नता से (या परिस्थिति के कारण) स्वीकार करेंगे। और उसमें से जो उत्तम समन्वय निकालेंगे वह दोनों के लिये परम सत्य होगा। क्योंकि सत्य भी जीवन के लिये ही है। जीवन की शुद्धि, जीवन की कार्य-शक्ति और उसकी समृद्धि प्राप्त करने के लिये ही

हम सत्य की उपासना करते हैं। ऐसी हानत में दो सत्यों में से जो समन्वय निरलेगा वही जीवन के लिये परम हितकारी होगा।

महात्मा गांधी सत्य के उपासक थे। सत्य से बढ़कर उनके सामने कोई चीज थी नहीं। 'सत्य ही ईश्वर है' यह था उनका सिद्धांत।

सत्य की उपासना करते गांधीजी को अनुभव हुआ कि हिंसा के द्वारा मनुष्य अपने पक्ष की विजय प्राप्त कर सकता है, लेकिन सत्य को नहीं। परम हितकारी सत्य प्राप्त करने के लिये लड़ना पड़े तो लड़ने में गांधीजी की पूरी तैयारी श्रुष्ट से आसिर तब थी। लेकिन उन्होंने देय लिया कि हिंसा द्वारा सत्य की विजय हो नहीं सकती। तब जाकर उन्होंने सत्य की मदद में ब्रह्मिणा को ले लिया और तुरन्त अनुभव किया कि सत्य की सफलता के लिये जब लड़ना अपरिहार्य होगा तब ऐसी लड़ाई उच्च ढंग से ही चलानी चाहिये।

यहां पर गांधीजी का विचार खान ध्यानपूर्वक समझना चाहिये।

अगर मेरा सत्य मेरा विरोधी प्रार्थनी नहीं मानता है तो उसे धमकाकर या मारपीट कर उससे मानवाङ्ग और वह प्रार्थनी मान जाय तो अपने शरीर को बचाने के लिये, शारीरिक दुःख से बचने के लिये, या दूसरे-दूसरे लाभ पाने के लिये, अथवा सवत टालने के लिए, वह मान जायेगा। याने वह मेरे विचार की सत्यता, श्रुष्टता और परम उपयोगिता का स्वीकार करके नहीं, विन्दु केवल हीन वृत्ति से अपने शरीर को बचाने के लिये, नुकसान टालने के लिये वह मान जायेगा। इसमें उन प्रार्थनी की चायस्ता याने हीनवृत्ति की विजय सिद्ध होगी। और न उसका सत्य सिद्ध होगा, न मेरे सत्य का उसके मन पर प्रभाव पड़ेगा। हिंसात्मक लड़ाई-भगड़े के अन्त में विरोधी की हीनवृत्ति की विजय होती है और मेरा सत्य अपमानित होता है। शत्रु को मने मार जाना तो वह मेरी भौतिक शक्ति की विजय हुई, मेरी बडोरता और क्रूरता की विजय हुई। मेरे विरोधी ने मेरी क्रूरता और बडोरता के सामने मारण न जानें हुए मारण की पसंद किया, इसमें तो उसी की विजय हुई। मेरा समाधान इतना

ही रहेगा कि मेरा विरोधी अपने विरोध को जिदा रखकर स्वयं इस लोक से चला गया इस बातसे उसके विरोध की भी उद्देश्य कर सकता है और अपनी बात को ध्रमल में सा सकता है। (दुनिया के लोगों की इतने से सतोंय होगा है लेकिन सत्य के उपासकों को नहीं होगा।)

सत्य का सच्चा उपासक कहेगा, मैं अपने सत्य को नहीं छोड़ूंगा, उसके प्राग्रह पर बायम रहूंगा। वैसा करते अगर मेरे विरोधी ने जोर दिया, मुझे बन्ध दिया, जेल में डाला तो वह मैं सारा सहन करूंगा। उस बन्ध के सामने शरण जाने जिनना शरीर धर्म में नहीं है। मैं कन्ध सहन कर के अपने सत्य पर के विश्वास की दृढता सावित करूंगा और उस तपस्या में फलस्वरूप मेरे विरोधी की नैतिकता जाग्रत होगी। मेरे प्राग्रह का महत्त्व वह समझेगा और अन्त में मेरी बात को मान जायेगा।

मेरे सत्य के समर्थन में मैं अपनी तपस्या खरों कर दूंगा। इस तरह अपने विरोधी की न्यायवृद्धि जाग्रत करूंगा। फिर वह अपनी जिद छोड़कर मेरी वाङ्ग समझने जितना तटस्थ और उदार बनेगा। सहन करूंगा मैं और विरोधी को सज्जन बना दूंगा। यह है उत्तम नैतिक लड़ाई का तरीका। तपस्या देखकर मेरा विरोधी अपनी सुल-सातगा छोड़ देगा, अपनी लोभी वृत्ति से मरमायेगा और मेरी बात मानने में ही अपनी भलाई है, इनना मान्य करेगा।

हिंसा द्वारा होने वाली विजय में वह लाभ नहीं है। गांधीजी के सत्याग्रह के अन्त में दोनों पक्ष आदर के साथ एक-दूसरे के न्यारीक आने ही छोड़कर बनने की सभावना पैदा होती है। दुनिया में तो बन्धपाण की वृद्धि होती ही है। मेरी नेत्र-विनता और शत्रु की उदारता दोनों की वृद्धि के कारण समाज मानवता उन्नत होती है। यह है गांधीजी का सत्याग्रह। यह व्यक्तार्थ है, इसको प्रजमाना (योग्य नैतिक रहूँ तो) बरोड़ों के लिये भी शक्य है। इसके पूरे ऐतिहासिक सद्भाव देकर ही गांधीजी बने गये।

ऐसे सत्याग्रह की हार्मों करना, उद्देश्य करना प्रयोग है। समन्वय और सत्याग्रह वही मानव जाति के पास उत्तमोत्तम और नैतिक सफल साधनाएँ हैं।

गम्हार भातर दूर बन्ने की बोई गामूहिक
गायना प्रविषा सवायें ?

३: पन्द्रह शतक के अन्त में विना टिप्पणी के स्वप्न के अंतर्गत श्री जगन्नाथ साहनी ने जिग बुद्धे को उठाया है, यह भाष्य भाष्यकल सार्वभौम-जगन्ने में सबसे प्राथम चर्चा का विषय बना हुआ है। मेरा मुभाव है कि इस पर 'भूदान-यज्ञ' को एक परिचर्चा पत्राती चाहिए।

श्री साहनी जी ने राजनीति में निरदुग्ध धर्मांतरणा का घोषणावादी होने और रचनात्मक कार्यों के रास्ता-पर्यन्त बन जाने की जिम्मेदारी 'राजनीति के दिन लगे में' वाली सर्वोच्च-मनोवृत्ति पर डाली है। भव यह जिम्मेदारी इनकी बड़ी है कि एक सार्वभौम-साधकत्व के माते मुझे तो इसे अपने ऊपर लेने में बहुत सकोच हो रहा है और भाष्य ही ऐसा लगता है कि क्या यह सोचना एक महत्कार का ही घोषण नहीं होगा कि भाष्य हम् राजनीति निरपेक्ष नहीं हुए होते तो भाष्य देश की यह दुर्दशा न होनी ? सार्वभौम के जिन व्यापक वृत्तों की भी साहनी ने ध्यान में चर्चा की है क्या उत्तम दिशाओं देते वाले इस देश के महान् नेता भी राजनीति निरपेक्ष ही रहे हैं ? वे तो राजनीति गांधी ही रहे हैं न ? क्या वे गांधी विचार के अनुयायी और जिम्मेदार व्यक्ति नहीं रहे हैं ? वे तो जन-नेता रहे हैं। क्या उनके अनुभवों पर से भी हमें कुछ सीखने की जरूरत नहीं है ? वे-देशर एक जयप्रकाशजी ने विनोबा और भूदान-आन्दोलन के कारण साहनी जी कीयत राजनीतिक निरपेक्षता स्वीकार की थी और उन्होंने तब से भव तक इस सन्दर्भ में देश के गामने बराबर स्पष्टीकरण भी प्रेषित किया है। क्या राजनीति के सन्दर्भ में सारी सार्वभौम दृष्टियों को, जिसे जयप्रकाशजी ने प्रस्तुत किया है, भाष्य 'राजनीति-निरपेक्षता' बहू देना न्याय-संगत है ? मेरी विमर्श सलाह है कि सार्वभौम की राजनीति के सन्दर्भ में क्या दृष्टि है, इसे पूरी तरह समझने के लिए जयप्रकाश नारायण की 'नवीनतम पुस्तक 'मेरी विचार माना' पढ़ें।

हाँ, सारी सार्वभौम राजनीतिक दृष्टि-बोणू के सन्दर्भ में गिबाम्यन प्रणर हो सकती है तो यह कि आन्दोलन प्रवृत्त प्रानी घोषित सोचनीति की (राजनीति की वैकल्पिक) गामिन पंदा करने में प्रमत्त रहा है। इसकी चर्चा हो सकती है, चर्चा की दृष्टारचना में सशोचन हो सकता है, लेकिन उनकी दिना प्रामस्वराज्य की ही हो सकती है, होनी चाहिए।

प्रामस्वराज्य की दिना सञ्चिच या सीमित है, यह मानना और कहना या तो इसकी समग्रता के दर्शन का प्रभाव प्रकट करता है या इसकी सम्भावना के प्रति प्रभावणा। भारत को क्या सारी दुनिया की—क्या दक्षिण पची और क्या वायव्यी—राजनीति जानित जित विन्दु पर पडुची है, उनसे प्राये की तलाश हर जगह तभी का के साथ ही रही है। क्या उस तलाश में प्रामस्वराज्य की विकेन्द्रित राजनीति (जिसे हम कितनी विषये सन्दर्भ को प्रस्तुत करने के लिए सीनीति कहते हैं) के तल नजर भा रहे हैं ? मुझे लगता है कि दुनिया के चिन्तकों का ध्यान जित दिन्दुओं पर भाज की राजनीति के सन्दर्भ में केन्द्रित हो रहा है, उनमें प्रामस्वराज्य की लोकनीति भी एक महत्वपूर्ण विन्दु है। इसलिए इसे सीमित साधन में प्रदान किया जाय तो ही अच्छा।

एक कठिनाई जरूर है। प्रणर हम् मौजूदा राजनीतिक ढांचे को ही आधार मानकर प्रामस्वराज्य को परगने चलेंगे, तो भाष्य इस आन्दोलन के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे। मौजूदा ढांचे तो अपने अर्थव्यवस्था के कारण भारत में ही नहीं, सारी दुनिया में चरमराने ले लगे हैं। और ऐसा ही रहा है इतिहास के एक विकासक्रम में। इसलिए प्रवृत्त तो इसके संरक्षण के लिए प्रामस्वराज्य की भीर नहीं देवना चाहिए, बल्कि इसके मुक्ति के लिए इसमें सक्रिय होना चाहिए।

रामचन्द्र राही

वाराणसी (उ० प्र०)
रोम में करीब दो सप्ताह ठहरा। यहा पोपपाल से पुन. भेंट हुई। इस बार की भेंट

बुद्ध सम्मि तथा रचनात्मक हुई। मेरी पहली बार की भेंट की उनकी स्मृति थी। मैंने पुन उनकी निवेदन किया कि यह प्रानी उचित समय है कि उन्हें अपने नैतिक दबाव का इस्तेमाल विषय में शांति स्थापना के लिए करना चाहिए। प्राणी यह उचित समय है, जब वे वेतकास्ट, पेलेस्टाइन, दक्षिण विषयनाम, पूर्वगात, रोडेसिया आदि का दौरा करें। मैंने उनको स्मरण कराया कि दक्षिण विषयनाम और पूर्वगात में कॅपोलिक सरकारें हैं। दक्षिण विषयनाम में वहा की सरकार उन हजारा-लाखों बोद्ध राज-नैतिक केंद्रियों को खान कर रही हैं जो वास्तव में हितक नहीं हैं बल्कि जनजातिक शान्त की स्थापना वहा चाहते हैं। वहा के राष्ट्रपति को अपने रिखीव किया है। इसी प्रकार से दक्षिण प्रानी का और राजीव गांधि का जिक्र उनसे हुआ। उन्होंने कहा कि प्राणी बाहर जाने की स्थिति में तो वे नहीं हैं, लेकिन वे प्राज की इन घटनाओं से बहुत चिन्तित हैं।

मैंने उनसे कहा कि यदि वे प्राणी जाने की स्थिति में नहीं है तो एक सप्ताह या दस दिन का उपवास वे किममिस कर विषेपणर प्रमुक्त प्रगात क्षेत्रों के लिए करें तथा सब चर्चों तथा विभिन्न धर्म के मठों, मस्जिदों, मन्दिरों और विषय के शांतिप्रिय लोगों को प्रीति करें कि वे उस समय उपवास उनके साथ रहें। सब धर्मों के मुखियाओं को लेकर एक कान्फेंस का आयोजन करें, सब साथ बैठें, विचार करें और विषयशांति के लिए सामूहिक रूप से प्रार्थना करें। संयुक्तराष्ट्र सभ के अन्तर्गत एक स्थायी शांति सेना के गठन के लिए संयुक्त राष्ट्र की संदेश दें। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्थायी शांति सेना की स्थापना का यह विचार समयानुसार है और इसकी शुरुआत हो सके तो ठीक है। लेकिन यह काम बहुत कठिन है। इसके प्रलावा निशान्चिचण आदि विषयों पर भी उनके चर्चा हुई।

रामसहाय पुरोहित

(पूरो प्रवासे से)

भदान-यज्ञ, सीमपार, २६ अक्टूबर, '७३

‘आपके टुकड़े पड़ सकते हैं, वे न पड़ें यह देखना है’

प्रश्न — क्या आप हमें सत्याग्रह के लिए इजाजत देंगे ?

विनोबाजी - मैंने एक बात कह दी है कि आप सब सेवा सब वाले २००-३०० लोग जो होगे वे सब इन्फ्रंट बैठ कर सर्वसम्मति से जो तय करेंगे, उसे बाबा की सम्मति है। अगर आप सर्वसम्मति से यह तय करेंगे कि शान्ति सेना से काम नहीं चलेगा, हाथ में पिस्तौल सेना होगा तो सर्व सेना सब के २-३० बंदोबे दे, अविरोध से यह तय किया तो बाबा उसे मानपूर्वक सम्मति देगा और कहेगा कि भगवत् गीता का नाम लो। मारो समय मन में बंद नहीं रखना। निर्वैर भाव से काम करो ताकि उसके हृदय में आपका विचार भी बंद जाये। सीना की याद करो। यह मैं कहूँगा और पिस्तौल रखने को सम्मति दूँगा। एक बार स्त्रियो ने मुझे पूछा था कि स्त्रियो पर आक्रमण होना है ता क्या हम पिस्तौल रख सकते हैं ? मैंने कहा, जो स्त्री अस्पृश्य रहित होगी है उस पर कोई आक्रमण नहीं हो सकता है। जैसे सीना अस्पृश्य पवित्र थी तो राष्ट्र एक नहीं कर सका। परन्तु वह शक्ति हर एक की नहीं हो सकती है। इसलिए मैंने स्त्रियो से कह दिया कि कोई अत्याचार करने मारो तो उसे मारो। लेकिन इस दुःख-स्तता से धारो कि वह जरूरी होकर फिर पड़े, मरे नहीं। फिर भी वह मर गयाती उसे स्वर्गदान मिलेगा। तो इस तरह मैं सम्मति दे चुका हूँ। इसलिए आप सब लोग मिलकर पिस्तौल से मारने की बात तय करो तो भी बाबा प्रेमपूर्वक सम्मति देगा।

प्रश्न - आप कहते हैं कि गांव की एकना न टूटे इन तरह से काम करो। फेड़न भाइयों के दखल है, मोपण्ड है, वो एकना कैसे रहेगी ? क्या सत्याग्रह भी प्रक्रिया से समाज के अन्दर बैठे मोपण्ड, विपयता, विरोध भादि को दूर कर सकते हैं ?

विनोबाजी - मैं आपसे मार्गदर्शन दे चुका। मैंने यहाँ तक कहा कि आप सब लोग मिलकर यह तय करने कि आप की परिस्थिति में शान्ति सेना के बन्दे पिस्तौल रखना ठीक

है तो उसके लिए भी बाबा की सम्मति है। बगल, जो भी करना हो सर्वसम्मति से करो। नहीं तो मुझारे आपने टुकड़े पड़ जायेंगे। गांव के टुकड़े न हों, यह तो धागे की बात है। आपके टुकड़े पड़ सकते हैं वे न पड़ें यह देखना है। आप सत्याग्रह कर सकते हैं, जो भी करना हो, फेड़न से बँधकर सर्व सम्मति से तय करो ता बाबा की पूर्ण अनुमति है। बाबा ने ऐसा सत्याग्रह क्यों नहीं किया ? उसके कारण बाबा के अर्थने हैं। बाबा ज्यादा पला है, अमरिदा के विचार में। अमराचार्य का बाबा पर सबसे ज्यादा अग्रह है। उनको पूछा गया था कि लोगो रो आप अन्ती बात समझायें और वे नहीं समझेंगे तो आप क्या करेंगे ? कहा, दुबारा समझाऊँगा। फिर पूजा, दुबारा समझाये से नहीं समझेंगे तो आप क्या करेंगे ? उन्होंने कहा, सीपारा समझाऊँगा, जबतक वह नहीं समझेगा तब तब समझाना रूँगा। या जबतक मुझमें समझाने की शक्ति है तबतक समझाना रूँगा। ‘समझाना’ एक मात्र शक्ति है। शास्त्र आपन, न तु कारकम्। जनता है, कराता नहीं। हाथ पकड़कर सुरक्षित से जाना एक पद्धति है। और दूसरी पद्धति है कि सामने पुल टूटा हो वो साइड पोस्ट बगल है कि पुल टूटा है, आपन मन जाना। फिर लो उधर जायेंगे ता उनकी मर्जी को बात है। यह मकराचार्य का मार्ग है। यह बाबा का मार्ग है। लोग पूछते हैं कि जानती समस्या है तो बाबा आपन करा करेंगे ? मैं कहूँगा तो धर्मो मैं जा कल्याण हूँ यही कल्याण। धर्मो मैं क्या करना हूँ ? समझाना हूँ, बँधे हय में डंडा रखा है वट पीठने के लिए नहीं। सुननी-दान जो भी आज्ञा से रखा है। तुनसोतजमी की आज्ञा है दण्ड जनीतकर। राम राज्य के दण्ड के, सन्यासी के हाथ में डंडा था। राजा के हाथ में, दण्ड नहीं था। काद्रा, चक्रवर्ती, जेठ, अजयपुर, है तो उडा मदद करना है। आर्यसमय मुख-मानोत—आर्यसमय के दो काम हैं। मैं आर्यसमय यानी धुन, उसके दो काम, धाना और बोलना। ये दो काम बाबा करना है। फिर अग्र परमरामा की प्रेरणा हो जाये कि बाबा भव

तु बहुत धन भया है इसलिए अग्र तुम अग्रियम उपवास कर लो, तो वह होगा। बाबा के मन में कुछ उस विषय में चलता रहता है। धर्मो निर्णय नहीं हुआ है। क्या इनके नि रांगी होकर परमरामा के पास पढ़ने, अग्रियम उपवास करके उसके पास पहुँचना अच्छा है। तार्थ्य यह है कि समझाने के अलावा न और कोई काम करता है न उनसे कभी किया है और न वह काम करेगा। बाबा तो यही काम करेगा। बाकी सब काम करने के लिए इजाजत है।

प्रश्न - उम दिन इपतानी जी ने मेराश्रम के सम्मेलन में कहा है कि गांधीजी लोगल नाल बायलेनस मानते थे। इसलिए उन्होंने सोजय अग्र्याय के प्रतिनकार वे लिये सत्याग्रह चलाया। लेकिन विनोबाजी सोजान मान बायलेनस नहीं मानते हैं। किफ इन्दिन्द्रकुवल नाम बायलेनस उनको मान्य है। उनकी नीति—‘रेमिस्ट नाट इनीला’ क्योंकि आपने कहा कि जित वे विज्ञाप सत्याग्रह करना है उस पर सत्याग्रह करने वाले को प्रेम होना चाहिये और उस का भी सत्याग्रह करने वाले पर प्रेम होना चाहिए। जहा ऐसा पारस्परिक का संपर्न है वहा ही सत्याग्रह चलने लायक है। लेकिन मुझे लगता है कि आपने उपवास के सम्बन्ध में वह बात कही थी, सामान्य सत्याग्रह के बारे में नहीं। बाप भी सोशल-नाम बायलेनस मानते हैं। लेकिन अग्र उसका योग्य क्षेत्र कौन सा होना चाहिये, यह विचार्य है। आप तबिननाटु मे गिन्दरो की जमीन के बारे में सत्याग्रह या संपर्न करो है। राजस्थान में शारदाबन्दी के बारे में सत्याग्रह चल रहा है वह धारणो का नमनूर नहीं है। लेकिन आप मानते हैं कि एक साधो सब करें। अमरसमय, कर, नुह, सेने, थलस, है, अग्र, लिये अग्र सब शक्ति उस पर लगनी चाहिये, उस पर जोर देना चाहिये। यानी कुछ हद तक प्रीअरिटी (Priority) का प्रश्न है। इपया इस विषय पर प्रकाश डालें, ताकि

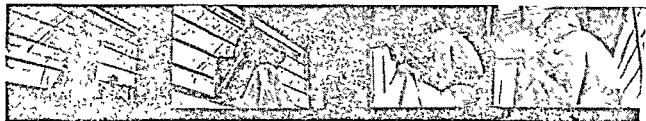
इस विषय में कोई प्रस्ताव धारणा नहीं रहे।

विधोवाजी : मैंने जो बात कही थी उपशान्त-सत्याग्रह के बारे में, सामान्य सत्याग्रह के बारे में नहीं कही थी, साधारण बात सही है कि लोग धीरे धीरे व्यक्तिगत प्रक्रिया इस प्रकार का फर्क बाबा के मन में नहीं है। यह एक सामाजिक है। एक मनुष्य में जो धर्मगत रहती है उसे हमेशा मनुष्य में रहती है। दुर्भाग्य सामान्य मनान है। पर किसी चीज के एकमात्री-मैत्री-संबंधों में होने है। वे मरना ही नहीं हैं। फिर धर्मगत (Apply) विधि जाते हैं। दुर्भाग्य नरक व्यक्तिगत धर्म में प्रथम प्रयोग करते पड़ते हैं। वे मरना ही तो

वे सफल सत्याग्रह नहीं मानते थे। इसकी एक मिसाल दूंगा। उन्होंने सत्याग्रह शुरू किया था बाबा साहेब आरेडकर के मामले इतिहास के मामले में। उन सत्याग्रह की बात सुनकर रवीन्द्र नाथ बनजा से पूना दौड़े आये। अनन्त में मेल-मिलाप हुआ। बापू ने श्री आरेडकर ने जो विचार साम्य विषय उन्होंने भी मान्य किया। लेकिन बनजा बापूम जलने के बाद उन्होंने लिखा, 'गांधीजी के भर जाने का मुझे डर लगा था, इसलिए मैंने अपने मन का, विचार को छोड़ा।' लेकिन मैं मानता हूँ कि वह जो प्रभाव हुआ, उनका इतना पर गमन करने होगा।' समझन की बात है कि रवीन्द्रनाथ टेंपार जैसे महत्पुरुष पर भी जिसका दबाव पड़ सकता है—वह सामान्य सत्याग्रह है

भाई से पूछा कि "यह नाम क्यों रखा?" तो उत्तरने कहा कि "तुकाराम बीडी नाम इसलिये रखा कि बीडी पीने वाले जरा समय में पीते हैं।" जहाँ तुकाराम के नाम से बीडी चलती है, वहाँ सर्वोदय के नाम से श्रीर बुद्ध करने तो नहीं। सबको प्रचारित है, उन शब्दों को इस्तेमाल करने का।

प्रश्न बाबा, सर्वोदय वाले सब कहते हैं कि बाबा ने कहा विचार-प्रचार करो, इसलिये हमारा काम विचार-प्रचार ही है। लोग समझते हैं कि वे सर्वोदय वाले वाक्य हैं कार्यरत नहीं। वेग में प्रचार-प्रचार की ही जरूरत है। प्राण सर्वोदय वाली से क्यों नहीं कहते कम से कम शब्द में प्रचार-प्रचार करो, यानी काम ज्यादा करो बात कम करो। सर्वोदय वाले केवल विचार-प्रचार करते हैं। वे वाक्यरत हैं, कृतिगूर



किर व्यापन क्षेत्र में साम्य विधि जाते हैं। एक हीना है पीपल साह्य और एक हीना है धनसाह्य साह्य, पीपल साह्य के प्रयोग सेक्टरी में निरत हुए हैं तो फिर समाज में धनसाह्य विधि जाते हैं। इसलिए सेक्टरी में प्रयोग होना अत्यन्त आवश्यक है।

आपनों सोचने की बात है कि गांधीजी ने धर्मगत में क्या कहा था? प्यारेलाल जी के शब्द में कहें, उन्होंने कहा था, स्वराज्य-प्राप्ति के काम में भयानक को मेरा उपयोग कर लेना था इसलिए भयानक में मेरी बात पर पड़ती बाध थी। इसलिए मैंने नहीं कहा कि हमारे सत्याग्रह की लोको के थे। सत्याग्रह धर्मगत के थे, स्ट्रॉग (strong) के नहीं थे। यह तो पंचायत रेमिसेन्स का ही प्रकार था। ये वास्तव में सत्याग्रह नहीं थे। उनके जितने सत्याग्रह हुए उसे

नहीं। सामान्य मनुष्य पर दबाव पड़े तो दूसरी बात है। प्रभाव एक चीज है, दबाव दूसरी चीज है। सत्याग्रह का प्रभाव पड़ना चाहिये, दबाव नहीं पड़ना चाहिये। लेकिन उत्तम दबाव पड़ा और रवीन्द्रनाथ जैसे महापुरुष के चित्त पर पड़ा। यह एक मिसाल मिलेगी, लेकिन ऐसी प्रमेव है। तुलना मिलाने अन्त में बापू को यह अनुभव आया कि यह सत्याग्रह रेमिसेन्स था, सत्याग्रह नहीं था। उनके अनुभव का लाभ हमें लेना चाहिये। उन अनुभव के आधार पर हमें विचार करना चाहिये।

प्रश्न : सर्वोदय शब्द का बहूत गहन उपयोग भी किया जाता है, इसे कैसे रोके?

विधोवाजी : महाराष्ट्र में एव शब्द चलता है, "तुकाराम बीडी"। तुकाराम एक महान सत थे, उनके नाम से बीडी चलती है। जो पुराने का बहूत रोचना है उसे? मैंने उन

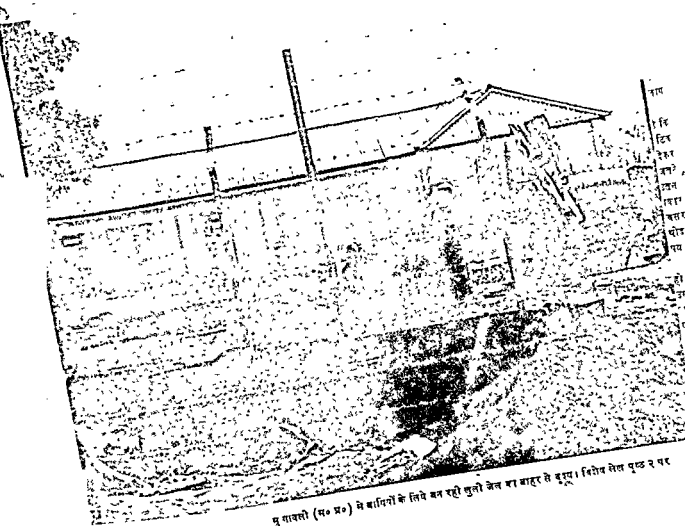
नहीं। कोई कृति का कार्यरत उठाना चाहिये।

विधोवाजी सर्वोदय वाले विचार-प्रचार करते हैं, इस धर्मगत उनको पचास मील घूमना पड़ना है। वह बड़ा भारी धारण है। फिरतर घूमना क्या कम धारण है? शब्दार्थय मोह मान घूमे। केवल के थे और वजहों तक गये। कर्मधर्म में हम गये थे तो देना बहूत पर एव शब्दार्थय हीना है। शब्दार्थय यहा धारण थे, यहा शब्दार्थय के सुगममान भी रखने हैं। इतना गारा विचार-प्रचार उन्होंने किया, क्या वह धारण नहीं है? उसमें 'चर' धारण है। पर-पर जाना, घूमना, यह धारण ही है। नहीं तो घर में बकवास करना दूसरी बात है। जो घूमने है और बोलने है उसके अनुसार उन्हें शब्दार्थय करना पड़ेगा। नहीं तो बोलना नहीं। कौन जानूँ हुए हैं वे सुखन प्रद्वेन कि धारणा धारण क्या है? *

सर्वांग

"इति मघर"
15-11-72
प्रा.
पु.
मि.
मि.

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ५ नवम्बर, '७३



मु. गावली (म० प्र०) में बाणियों के लिये बन रही सुनो जेल बन बाहर से दृश्य। विशेष सेवा पृष्ठ २ पर

भवान-यज्ञ

१५ नवम्बर, '७३

वर्ष २०

श्रंक ६

सम्पादक

रामभूति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस श्रंक में

खुली जेल : अक्सर और

चुनौतियां

—प्रभाप जोशी २

राजनीतिक झड़चनें

और सीकर में कुश्मी की खुदाई

—राधाकृष्ण वजाज ४

'बाबा'—गांधी जी के नाम से

कोई बात नहीं बोलता है'

—विनोबा ५

छोटा परिवार कि स्वस्थ

परिवार, सुखी परिवार

—ब्रनवारीलाल चौधरी ८

सेवाग्राम में कुण्ड-कार्यकर्ताओं

का सम्मेलन

—डा० रविगंकर शर्मा १०

हम सब अपनी-अपनी

तरफ देखें

—चैतनाय प्रसाद चौधरी १३

चलता मुसाफिर ही पायेगा

मंजिल और मुकाम

—योगेशचन्द्र बहुगुणा १४

ग्रान्दोलन के समाचार

१६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

प्राप्त-समापित बागी बन्दियों के लिए मध्यप्रदेश के गुना जिले में मुंगावली में जो खुली जेल नेहरू जयन्ती पर खोली जा रही है वह कोई साधारण खुली जेल नहीं है। देश के ग्यारह राज्यों में जो अठारह खुली जेलों इस समय चल रही हैं उनमें अधिकांश रूप से ऐसे बन्दी रहे गये हैं जिन्होंने अपराध किये, फिर पुलिस द्वारा पकड़े गये, अपराधन में उन्हें सजाए दी और वे अपनी सजाओं की काकी बड़ी अर्द्धि बन्द जेलों में काटकर अपने अच्छे व्यवहार के कारण खुली जेल में भेजे जाने के योग्य पाये गये। ये सभी ग्यारह राज्य खुली जेलों में बन्दियों के सुधार और न्याय से सन्तुष्ट हैं और मोटे तौर पर यह माना जा सकता है कि खुली जेलों का सिर्फ बीस साल पहले शुरू किया गया प्रयोग अपराधियों को समाज में पुनर्प्राप्त करने में सफल हुआ है।

मुगावली की खुली जेल में १४ नवम्बर को जो बन्दी भेजे जायेंगे वे अपराधियों की साधारण थैलों में नहीं माने। वे चम्पल घाटी और बुन्देलखण्ड के नामी-गिरामी डाकू और डाकू दलों के सरदार थे। सरदारों ने उनके सिरों पर लाखों रुपयों के इनाम घोषित किये थे। उन्हें पकड़ने प्रयास उनकी गतिविधियों की निषेधित करने के लिए मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान की सरकारों ने हजारों सशस्त्र पुलिस वाले तैनात कर रखे थे और कुछ मिला कर करोड़ों रुपयों का खर्च करना पड़ता था। चम्पल घाटी और बुन्देलखण्ड के जंगल इन डाकू दलों के कारण ध्वस्तिये थे और वहां वा जीवन घन-घन था। इन क्षेत्रों का समाज स्वयं डाकू दल और पुलिस वाले एक सदियों पुराने दुश्चक्र में फसे हुए थे। विधि और व्यवस्था की परम्परागत बाधा-बाहियां इस दुश्चक्र को तोड़ने में नाबामयाव थी।

मुगावली की खुली जेल में आ रहे इन सो बन्दियों में अपने अन्य चार ही माणियों के साथ डेढ़ साल पहले फैलाया किया कि वे संगठित और सबसे खुलार अपराधों का अपना जीवन बदलेंगे। जयप्रवाच नारायण और सर्वोदय कार्यकर्ताओं से सम्पर्क कर के इन भूतपूर्व डाकूओं में शस्त्र विदाई के अपने

निर्णय को धमल में साने की पहल की। वे १० पी० की चर्चाओं से सरकारी को विश्वास हुआ कि दुश्चक्र तोड़ने का एक नया रास्ता निकल सकता है। सरकारी की स्वीकृति से आश्वस्त हो कर पाच सौ से ज्यादा डाकूओं ने आत्मसमर्पण किया और सार्वजनिक सभाओं में अपने अपराधों की समाज से क्षमा मांगी। अदालतों में खुद अपने अपराध कुबूल किये और सजा भुगतने के लिए तैयार हुए। जिन सरदारों में योग्य अपराधों बड़े थे उसी तरह वे बन्दी भी बड़े मानिये हुए। जो खुद अपने को समाज और मानून के सामने दर्शाव करे और अपराधों की सजा भुगतने को स्वेच्छा से तैयार हो वह माफारण बन्दी नहीं माना जा सकता। इन भूतपूर्व डाकूओं ने विधि और व्यवस्था की जो सहजया की है और एक सदियों पुरानी मजज विरोधी सस्था की समाप्ति में जो योगदान दिया है उसे देखने हुए यह उचित और स्वाभाविक ही है कि सरकार उनके प्रति उदारता का रवैया अपनाने और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनने में उनकी महत्तमा उपेक्षा। सरकारों ने, वास्तव मध्यप्रदेश की सरकार ने, इन भूतपूर्व अपराधियों के परिवारों के पुनर्वास और इनकी पुनर्प्राप्ति के लिए ओ निर्णय किये वे सचमुच ही एक प्रगतिशील सरदार के योग्य है। उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बमलाल निपाठी ने तो अपनी यह निजी राय दो माल पहले ही व्यक्त की थी कि जब इनकी बड़ी सत्या में डाकू आत्म-समर्पण के लिए तैयार हैं तो उन्हें जेलों में रखा हो क्या जाये और उन पर भूतपूर्व भी क्यों चलाने जायें ? उन्हें क्यों नहीं सीधे पुनर्वास की सुविधाएं दे दी जायें ? पर निपाठीजी की यह निजी राय भी और निविबधी सरकारी तंत्र इसे समझी स्वीकार करने की अनिश्चिनि में नहीं थी। सरकारों को यह मता होना स्वाभाविक था कि अगर आत्मसमर्पणकारी डाकूओं के मामले में दण्ड और मानून व्यवस्था को विस्तृत निताजनि दे दी जायें तो हमने विधि-व्यवस्था पर बड़ा अक्षर पड़ेगा और हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया बना कोई सस्था का रूप ले सकती है कि जिनके कारण प्रचलित व्यवस्था की टूटने दिया जाये। हृदय परिवर्तन हम

कोई सन्देह नहीं कि समाज जीवन के लिए सबसे उपयोगी प्रक्रिया है। लेकिन हृदय परिवर्तन एक वैयक्तिक प्रक्रिया है और वह व्यक्ति में कई तरह के कारणों और उद्देश्यों में शुरू हो सकती है। इस कारणों और उद्देश्यों को व्यक्ति निरपेक्ष नहीं किया जा सकता और ब्रह्म प्रक्रिया को व्यक्ति निरपेक्ष नहीं किया जा सकता उसे सब पर समान रूप से लागू होने वाली व्यवस्था का रूप कैसे दिया जा सकता है? भारतीयों सरकारों भी कई मामलों में परम्परागत ढांचे और धारणाओं पर चलती है। एक संवेदनशील, पूर्ववर्ती और प्रजातान्त्रिक सरकार का यह प्रतिबन्ध बंधन्य जरूर है कि जो धर्मराष्ट्री हृदय परिवर्तन के कारण उसकी सहायता के लिए स्वयं अपने को सौंप रहा हो उसके प्रति यह साम्प्रदाय धर्मराष्ट्रियों जैसा व्यवहार न करे और मानुष के उद्देश्यों की पूर्ति करने में धर्मराष्ट्रों के प्रति उदारता करे। भारत सरकार और मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान की सरकारें और दूसरों

शास्त्रों और उद्देश्यों से विदा ली। जेल बन्द हो या खुली हो, अपने धर्मराष्ट्रों की सजा भुगतने के लिए कठिबद्ध बन्दिनों को कोई पुर्ण नहीं पड़ता। अगर जेल में वे नहीं भी भेजे जाते और उन्हें सजाए नहीं भी होती तो भी इनकी सभासत्ता बहुत कम ही कि वे डकैतों के पुराने जीवन में लौट जाते। उन्हीं, हत्या, आत्महत्या आदि छोटके के लिए उन्हें बन्दिनी में श्राव्य नहीं किया था। इन धर्मराष्ट्रों के कारणों से पुनित द्वारा पकड़े नहीं गये थे। उस जीवन को छोड़ने का निर्णय उन्होंने स्वयं किया था और जो अपना निर्णय स्वयं करता है उसकी जिम्मेदारी से धर्मराष्ट्र मानते हैं। अधिकांश बन्दिनों में स्वयं अपना जीवन बदला है इसलिए उनके टीक रास्ते पर चमके की स्याट्टी जेल और रक्षक नहीं हो सकते उनको धर्मराष्ट्रों सेना या सहाया ही हो सकती है। इसीलिए हमने कहा कि खुली जेल साम्प्रदायिक बन्दिनों के लिए घबरातुन है, प्राथमिक नहीं है।

लेकिन ब्रह्म तरह इन लोगों के डाकु होने के लिए हमारी समाज-व्यवस्था और

मर्णाण्य का धर्म सम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड पर निर्मित ही बहुत अच्छा हुआ है लेकिन यह धर्म इतना बर्बरता नहीं है कि स्वयंसेवी सहाय्यो और सरकारों के प्रयासों के बिना स्याट्टी रह सके। धर्मराष्ट्र को स्याट्टी बनाने और सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन लाभ में उनका कारण उपयोज्य करने के लिए कहीं ज्यादा संगठित, समन्वित और साहसिक प्रयासों की आवश्यकता है। स्वयंसेवी सहाय्य और सरकारें अभी ऐसे प्रयास शुरू भी नहीं कर पायी हैं। ऐसी स्थिति में यह बेहतर है कि साम्प्रदाय डाकुओं को छोड़ उस समाज में न भेजा जाये जो उन्हें पलत जीवन जीने पर मजबूर कर चुका था। सुनी जेल की प्रागमिकता उसी में है कि जेल तरफ तो सरकारों और समाजिकों सहाय्यो की उन्हीं की मददों पुराने अधिकांश के मुक्त हुए समाज को परिवर्तित करने का धर्मराष्ट्र सर्व और दूसरों तरफ मर्णाण्य बन्दियों की मोक्ष देगी कि प्रविश्य में वे किस प्रकार का जीवन जीना चाहते हैं उनके लिए अपने को तैयार कर लें। यह नहीं है कि डाकु बनने की पहलू में लोग कई में कोई प्रतिष्ठित कार्य करने थे। लेकिन डाकु का जीवन बिनासे हुए भी उन्हें काफी समय ही मुक्त या और एक जीवन पद्धति को छोड़ कर दूसरी जीवन पद्धति अपनाते थे कुछ समय, कुछ प्रयोग, कुछ परिवर्तन्यो जरूरी होतीं। मुक्तकों की सुनी जेल उन्हें यह धर्मराष्ट्र है। लेकिन भूतपूर्व डाकुओं ने जो माय की है उसमें लिए इतना ही स्थिति नहीं है। उन पर एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी भी है। डेढ़ सान पढ़ने तक वे जिस समाजघानी सहाय्य के सक्रिय सदस्य थे और जिस समाज में सम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड में परिवर्तन और विकास के दशाब्दे बन्द कर रहे थे उस सहाय्य के धर्मराष्ट्रों में भी उन्हें सौंप कर ले भान लेना है। यानी सुनी जेल में उन्हें स्वयं की प्रतिभय देना है कि वे सम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड में आये होने वाले विकास काजों में ह्रासित करने लग सकें। उन्हें स्वयं अपना जीवन को सुधारना ही है, एक सामाजिक ऐतिहासिक जिम्मेदारी के लिए तैयार भी होना है।

(लेखक मन्मथ गृह पर)

खुली जेल : अक्सर और चुनौतियाँ

मायको में चाहे जिनको दक्षिणमूल और संवेदनशील ही हमने सन्देह नहीं कि तत्काल उदासीनता से कुछ उदाहरणों को छोड़ कर मर्णाण्य बन्दिनों के प्रति इन सरकारों में उदार और संवेदनशील व्यवहार किया है। इस व्यवहार को देखते हुए मध्यप्रदेश सरकार का धर्मराष्ट्रों में खुली जेल लाना एक सम्बल तरफ निर्णय की प्राथमिक परिणति ही कहा जायेगा।

मर्णाण्य बन्दिनों के दृष्टिकोण से जेलों की सुनी जेल उनसे लिए धर्मराष्ट्र है। सुनी जेलों का उद्देश्य धर्मराष्ट्रियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना पैदा करना और उन्हें समाज में शामिल होने का अवसर प्रदान करना है। मर्णाण्य बन्दिनों के दृष्टी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मर्णाण्य किया था। वे चाहते थे कि अपना धर्मराष्ट्र जीवन बदलें कर, अपने पारो का प्रागमिक बन दें वे समाज के हिस्सा बन सकें इसीलिए उन्होंने

परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं उसी तरह इनको अच्छे मर्णाण्य बनने की परिस्थितियाँ देने की जिम्मेदारी समाज के प्रतिनिधि के नाते सरकार की है। मर्णाण्य बन्दिनों में श्राव्य एक भी बाणी ऐना नहीं है जिसने निर्णय किया हो कि वह डाकु बने। परिस्थितियों की मजबूरी के बिना तरह वे लोग डाकु बने उसी तरह परिस्थितियों इन्हे पुन उस जीवन की और लौटने की मजबूर कर सकती हैं। क्योंकि इनके मर्णाण्य में सामाजिक परिस्थितियों से तो कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं आता है। सब पूरा जाये तो मर्णाण्य जेलों ऐतिहासिक घटना भी परिस्थितियों का बुनियादी रूप से इनकी जन्मी नहीं बदल सकती। एकसम सान चलते दिनों धर्मराष्ट्रों भारत के राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन की एक ऐतिहासिक क्रांतिकारी घटना भी। लेकिन इस पात्र सही में हमने देखा है कि सामाजिक परिस्थितियाँ और सामाजिक मन चितने धीरे-धीरे बदलता है।

राजनीतिक अड़चनें और सीकर में कुओं की खुदाई

पिछले पाच-सात वर्षों में राजस्थान में १०० करोड़ से भी अधिक की रकम अकाल लहाया में खर्च हो चुकी है। जो अस्पाई हायें हुए जैसे कच्ची सड़क बनाना आदि में खर्च करने में उड़ गये। ऐसी विधम परिस्थिति में ३० साल के एक नवजवान कर्तव्य के दिल् में सरकार के अस्पाई हल की योजना प्रकट हुई। अकेले सीकर जिले में बारह माह के भीतर ४००० कुएँ तैयार कराने की २ करोड़ की योजना राज्य सरकार के सामने रखी। राज्य सरकार ने उदारतापूर्वक योजना स्वीकार की। योजना का शुभारम्भ अप्रैल १९७३ में राज्यपाल श्री जोगेंद्रसिंहजी के कर कमलों द्वारा किया गया। नवजवान कलेक्टर की सुभ-सुभ और साथियों का अग्रक परिधम दोनो के कारण अप्रैल १९७३ में प्रारम्भ किया हुआ काम वायु वेग से बढ़ने लगा। तीन चार महीने में अठार तीन चौथाई काम हो गया। अक्टूबर में ७३ में योजना को आरम्भ हुए ६ माह पूरे होंगे, इस अवधि में ३७०० कुएँ तैयार हो चुके हैं। बाकी ३०० भी अक्टूबर के अल तक पूरे हो जायेंगे। इन कुओं पर निजली के पम्प लगाने की भी कलेक्टर की योजना है। अघे कुओं के क्षेत्र में निजली जानी है।

किया गया। इस काम के लिये १७ दल बनाये गये थे; ६०० गावों में ये चार हजार कुएँ बने हैं। इस योजना की प्रमुख सभाकार पत्रों द्वारा सलाहना की गई। अनेक प्रत्यक्षदर्शियों के अभिप्राय अघे हैं। राज्य सरकार की ओर से विधायकों के दल भी योजना का निरीक्षण कर गये हैं।

सितम्बर के मध्य में विधायकों का एक दल एसीटीएस कमेटी के अध्यक्ष भूतपूर्व शिक्षामंत्री पंममचन्द्रजी त्रिपाठी के मणोजल में धाया। विधायकों का दूसरा दल पीठ-जल कमेटी के महासचिवजी गोपी भू-० उपमन्त्री के संयोजकत्व में धाया। सभी विधायक प्रभावित होकर गये— राज्य सरकार को रिपोर्ट दी ही होगी। १६ सप्ताह तक का दल सितम्बर में श्री विजय जी मोदी के राजो-जलत्व में इस क्षेत्र का निरीक्षण करके आया है। इन लोगों ने भी अघनी रिपोर्ट भाल सरकार को दी होगी। इन दल में अग्रियुगल, राव बीरसिंह, दरवारसिंह, गायराम मिर्भा, बालचण्ड आल आदि कई प्रमुख सामद थे।

इस प्रकार विना किसी अघ्टाकार और विना किसी प्रशासनिक अडलाई के बुद्ध स्तर पर योजना पूरी करने दिगाने वाले कलेक्टर को राज्य सरकार की ओर से यह पुरस्कार

मिला कि उनका भरतपुर तवादला कर दिया गया। यह तवादला इसलिये नहीं हुआ कि राज्य सरकार को उन पर नाराजी थी या राज्य सरकार उनके काम की कलर नहीं जानती थी। इस काम से प्रेरित होकर राज्य सरकार ने ऐसा ही रूप निर्माण का काम भूतपूर्व व जयपुर जिलों में भी शुरू किया है। लेकिन राज्य सरकार को राजनीतिक विधायकों की गुटबाजी के अघे भुगतना पडा।

स्वराज्य के बाद इन पक्कीम सारों में अकाल के व्यापक हाक के लिये कोई ठोस योजना हो नहीं ली यह कुओं की योजना थी। इसका अघनी पूरा विधान होना वाली है। कलेक्टर को इस जिले में अघे वेकल ६ महीने हुए हैं। यह भी नहीं कि बहुत धर्म हो गये। ऐसे शुभ कार्य में विना राजनीतिकों के निहित स्वार्थों प्रकट नहीं लगाई हैं उनका पंमला जनता की फीट में होना चाहिए।

राज्य सरकार की चाहिए कि सीकर जिले के इस निर्माण के नमूने का नाम इन्टी कलेक्टर ने पूरा नाराज अघे और इन्हे कम से कम ५ वर्ष का समय दिया अघे। इस अमूलपूर्व काम में करने वाले नौजवान कलेक्टर का नाम पम्पनिष्ठम अघ्टारी है।

—राधाचण्ड अघ्टारी

(पिछले पृष्ठ से जारी)

मध्यप्रदेश सरकार का यह प्रयोग भी सभी सार्यक होगा जब यह गहुर एन प्रचलित और प्रगतिशील कदम के माने लुनी जेल को न देखे। देश में लुनी जेलों की कलर नहीं है। कम से कम अघरह और सरकारों ऐसी जेलें खोल चुकी हैं। एक प्रगतिशील रकम से नाने अघर मध्यप्रदेश सरकार ने इस लुनी जेल को लिया तो कोई बडा काम नहीं होगा। यह जरूरी है कि मध्यप्रदेश की सरकार और लोग कर मुख्यमंत्री सेठी और देव मी हृदयपाल सिंह इनकी व्यग्रता करें कि मुगलजी में रहने वाले बडी अघनी गना बाटने का अघ्टने की तैयारी में दोगम अघियर के विकास के अघ्यय बल मई। उन्हे एए हालत दस्ते की रूप में प्रगतिशील करने में लिए यह जरूरी है कि उन्हे न मिर्भा अघ्यवा

घाटी और बुधनेपठ के विभाग की योजनाओं से अघगत कगना अघे अघि उ के तैयार किये जाने में उका मरुतोस लिया अघे उन्हे अ-वाक्य किया अघे और उन्हे इस पंथ बनने की गुणिया की अघि ईने से अघरमन में मानें की अघरी की रूप में अघर्य कर अघे। लुनी जेल में लेग करने के लिए सरकार को अघने अघ्यअघियों का अघनाव भी अघी उन्हे म में कगना होगा, वैसे ही नीति नियम जाने होंगे और समाजसेवी मरुतोसों काम कर अघरम धाने अघि अघिल का पूरा अघरम लेग होगा। लुनी जेल, अघरमन अघिदरों की ली अघी निर्माण नहीं बननी चाहिए यह उन्हे न्व मरुतोस और अघिअघरियों के दिर्डी की अघमना पैदा करने की बाकी पाठगाना होंगे

—प्रमाण अघी

बनना है। बाबा "महात्मा गांधी" है नहीं। इसलिए गांधीजी के नाम से कुछ नहीं बोलता। बाबा की जो सत्य लगता है वह बोलता है। उसमें से जो स्वीकार हो वह भाग लीजिए। स्वीकार न हो वह छोड़ दीजिए। "बाबा वाक्यं प्रमाणम्" नहीं होना चाहिए। अपने दिमाग से सोचना चाहिए।

बाबा ने जो सम्मति दी थी "धामवस्त्र" के लिए दी थी। फिर रामचन्द्रजी ने जो लोक वस्त्र बनाया, उसके लिए बाबा की सम्मति है नहीं। उन्होंने तो "मिनी-मिल" धराम्यी। वह ठीक नहीं है। फिर भी वह कर सकते हैं, उससे कई लोगों को काम मिलेगा। बाबा की उसके लिए सम्मति है ऐसा माना जाता था, लेकिन सम्मति है नहीं। इस वास्ते धामवस्त्र के लिए बाबा ने जो सम्मति दी है उसमें बाबा को कोई पसंदी नहीं मालूम होती है। क्योंकि वह सम्मति बाबा ने गांधी जी के नाम से नहीं दी थी, अपने नाम से दी थी। लेकिन काका साहब का पत्र पढ़कर नारायण दास गांधी ने लिखा कि यम के तौर पर भूत वातना और वही भूत दान देना। इसे मैं पसन्द करता हूँ। धम्बर से नहीं, तबली से या चरबे से यम के तौर पर कातें और वह दान दें। वह भी अत्यन्त पवित्र है। जैसे उपवास की बात पवित्र है। दौनों का योग धाम अच्छी तरह कर सकते हैं।

प्रश्न: अपने धाम्न्दोलन में युवक कम आते हैं। उनके लिए कोई धामर्पक कार्यक्रम होने चाहिए। जिससे युवकों की बड़ी जमात इस धाम्न्दोलन के साथ लग सके।

विनोबा जी: युवक की व्याख्या क्या है, इस पर निर्भर है। युवक की व्याख्या यह है कि ४५ साल के नीचे जो हैं वे युवक हैं। अपने धाम्न्दोलन में ४५ साल के नीचे का ही लोग हैं। लेकिन २०-२२ साल के जवान युद्ध काम हैं। वे कौंसे आयें? उसके लिए अपने बहुत अच्छा कार्यक्रम उठाया है, "मकाल बनाम तरण!" उसमें सरकार की भी की। फिर भी बाबा ने मजूर किया

घोर बहाना, गान-गांधि जाओ और धामशक्ति खड़ी करो। भाविर हमें सरकार को तोड़ना भी है। लेकिन जिस पेड़ की टहनियों को तोड़ना है, उस पेड़ की टहनियों पर, बैठकर उसे काटना। टूटने से पहले अलग होना इतना देख लो। यह मैंने सरकारों लोगों को भी कहा है कि यह धाम्न्दोलन सरकार की शक्ति को काटने का धाम्न्दोलन है। फिर भी आपकी मान्यता हो तो धाम इस धाम्न्दोलन में आ सकते हैं और वे धाम्ये भी हैं। इस प्रकार हम तरणों की मदद ले सकते हैं तो तरण भी इसमें आ जायेंगे।

प्रश्न: धामने कहा कि लैबोरेटरी में खूब प्रयोग होना चाहिए। सरकार को अपने काम की लैबोरेटरी मानते हैं, तो धाम कहा के प्रयोग की अवधि क्यों तय करते हैं? धामने तो सरकार को एक बार ईश्वरार्पण कर दिया था।

सहरसा के सापियो से धामने कहा कि धीरेन भाई का नाम ही धीरेन है इसलिए वे धीरे-धीरे करने को बहते हैं। धीरेन दादा ने कहा कि बाबा को मालूम नहीं कि मेरा नाम धीरे-धीरे नहीं है, धीरे "न" भाई है।

विनोबा जी: वे धीरेन भाई हैं, उनको जितनी उतावली है उतनी धाम्य ही विनी की है। वे मानते हैं कि इस काम में लिए हड़ती गलानी पड़ेगी। धाम्य पाच साल लगेंगे। यह मैं भी मानता हूँ। मैंने मुद्रित इसलिए रखी है कि हमें लैबोरेटरी में अनेक प्रयोग करने हैं। इसी प्रयोग में जिन्दगी भर रहेंगे तो धाम्यपन नहीं बनेंगे। इसलिए घन व महीने की मर्यादा रखी। यह सफल हुआ तो इस सफलता को लेकर, सफलतापूर्वक भारत में जाना है और निष्पत्त होगा तो भी भारत में घूमना है। दोनों हालत में वहा के कार्यकर्ताओं को भारत के कार्यकर्ता बनना है। यह धाम्यकी योजना है। मैं चाहता हूँ कि युवराज से २-४ कार्यकर्ता वहा जायें, हर प्रांत से जायें। पूरा पानीपत का सधाम करो। धर्मधेने-नुरोधे, बराबर सधाम करो। औरत-यादों की लड़ाई का क्या परिणाम धाम्या? क्या किसी को सपना

मिले? १-७ लोग जीवित रहे। वैसे ही इस लड़ाई का हो सकता है।

प्रश्न: शुद्ध भगवान की उपासना शुरू करने के लिए हमारे पास पानी सर्व सेना सप के पास कोई संपत्ति रहे, यह धाम्य उचित नहीं है। धाम्यकी क्या राय है?

विनोबाजी इस प्रश्न में "धाम्य" जो लिखा है वह अच्छा है। हम यह बहते हैं कि धाम्यपन नाम हमारे पास पैसा रखना उचित नहीं है। जितना त्याग कर सकते हैं, उतना अच्छा है। लेकिन हमारा समूह बना है तो कई नामों के लिए पैसे की आवश्यकता पड़नी है। तो शुद्ध, पवित्र पैसा उनके पास पहुंचे यह जरूरी है। लेकिन मैंने विद्या-सागर को सहाय दी थी कि तुम सहरसा जामोगे तो तुम्हारे पास जो पैसा है वह पटना में गया नदी में डुबा दो। फिर सहरसा चले जाओ। धाम्य के नाते यह ठीक है। लेकिन सामूहिक काम के लिए पैसा होना चाहिए। लेकिन यह पैसा पवित्र होना चाहिए। उसकी धर्मो योजना बनी है।

प्रश्न क्या धामसभा के लिए ध्यान सूचना धाम्य देने?

विनोबा जी: मैंने सूचना दी है कि धामसभा हर हफ्ते एक घण्टा इकट्ठा होना चाहिए, सामूहिक प्रार्थना करने की चाहिए, विष्णु सहस्रनाम भी कर सकते हैं और फिर लोगों की समस्याओं पर चर्चा करने की चाहिए। हर महीने या तीन महीने में प्रयाग में सेमिनार करवाएँ हों, लेकिन गांधि में हर हफ्ते प्रार्थना के नाम पर इकट्ठा होना चाहिए।

प्रश्न: महारता गया जब समाधी के लिए प्रेरणा दें?

विनोबाजी: महारता की स्पष्ट गण में दुबने के लिए बाबा की सम्मति नहीं है। गांधि गंगा में डूबना है। घाट महीना मोर गंगा में डूबने के बाद फिर वही डूबना है या भारत जाना है, यह सांचेय। जो विहार के नहीं हैं, उनके बारे में गांधि जायेंगा। जो विहार के हैं उनको धाम्य मिला है कि घाट महीने के बाद भारत में जाना है।

प्रश्न : उपवासदान धरत सात्त्विकता देना किसी को सम्भव न हो तो क्या कोई मासिक या निमाही भी दे सकता है ?

विनोबाजी : उपवासदान के लिए छोटा शब्द चाहिए तो उपदान हो सकता है। सिद्ध-राज बड़ा जो पसन्द है तो चलेगा। इसमें मासिक दान भी दे सकते हैं लेकिन मेरी सलाह से वार्षिक दान देना अच्छा रहेगा। मासिक में १२ दफा रिश्टी देना वगैरह की तकलीफ रहेगी, शायद कठिन जायेगा। इसलिए मासिक का सफल करो।

प्रश्न : सर्व सेवा सभ के कार्यक्रमों में "विश्व-एकता" स्पष्ट रूप से स्वीकृत होना चाहिए। इन विचार की तरफ ध्यान की ओर से ध्यान दीखना जरूरी लगता है ?

विनोबाजी : मैंने कई दफा कहा है कि भाव शान्ति भावना जिसकुछ भी पुरानी पड़ गयी है। भारतीय भावना रहेगी तो माफ है। क्योंकि भारत धनक भाषाओं का एक राष्ट्र बना है। इसलिए भारतीय भावना सगभग इन्टर-नेशनल भावना है। इसलिए वह भावना हो तो बाबा की तरफ से माफ है। लेकिन यह प्योत्र नहीं है। भाव विश्व-भावना चाहिए। खास कर विद्वान्जनों के धारणासुन्द को, मुनिवर्तिनी के लोगों के सामने मैं रखना हूँ कि प्राणको बैलव भारत को ही नहीं, बल्कि दुनिया भर को समस्याओं का निवारण करना चाहिए और धर्म विचार प्रवृत्त करते चाहिए।

प्रश्न : धामदान धामोवन त्याग की भावना पर लडा कहता है। अगर गांव में त्याग की बात कोई सुनना नहीं और धाम-स्वराज्य मिट नहीं होता। इसलिए क्या करता ?

विनोबाजी : धामदान में जो काम करना है उन्हें त्याग का स्थान है नहीं। ध्येय तो मुनिवर्तियों के लिए, ब्रह्मचारियों के लिए होता है। मासिकों को हदना ही कहना है कि मुशर्रा मूठसाधम उलम चने, इनके लिए जरूरी है कि बोडा हिस्सा गांव के लिए दिया जाये। नों धारणा गल्लेय गांव को मिलेगा और राव का सहयोग धारणा को मिलेगा। धामको टायनी, सन्धनी बनाने के निचे बाबा यह नहीं कह रहा है। बलि-

धारणागृहसाधम अच्छा चले इसलिए कह रहा है। बाबा त्यागियों की, सन्धियों की सेना जरूर चाहता है। सारे भारत में ५०० त्यागि, ब्रह्मचारी, सन्धियों पूर्ण प्रतिज्ञा करके इसमें लग जाते हैं तो बाबा को समाधान होगा। बाकी जो काम हैं उसमें बाबा की यही कीर्ति है कि गृहसाधयनी लोगों का गृहसाधम अच्छा चले।

प्रश्न बहुत से लोगों का धाव राज-नैतिक क्षेतों विश्वास नहीं है। फिर भी लोग छोड़ने को तैयार नहीं होते, ऐसा क्यों ?

विनोबाजी राजनैतिक लोगों का राज-नीतिपर विश्वास नहीं रहा है। फिर भी के उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं। क्योंकि उसमें सत्ता है। सत्ता का बोडा लाभ हमको मिल जाये। ऐसी सत्ता की वास्तवता बड़ा पडी है। इसलिए बोडा सत्ता का चिन्तन होता रहता है। धरत उन्हें मान्म हो कि धर्मो बाबा का राज्य चलने वाला है, सर्वोदय के मिनिस्टर्स, प्राइम मिनिस्टर वगैरह बनने, तो लालो लोग धारणें।

लेकिन हमारे धामोवन में क्या मिलेगा ? "कबीरा लडा बजार में गिये लुकाडी हाथ। जो घर फूके भ्रमना चले हमारे साथ।" कबीरदास बाजार में लडा होकर लुकास्ता है। उसी तरह हर गांव में पुरानो लडा, "बल्ले हमारे साथ।" अपना घर जो फूकने के लिए तैयार होंगे वे हमारे साथ चरें। ऐसे घर फूकने वाले कुछ माथी बाबा जरूर चाटना है। पर ५-७ हजार नहीं। बाकी गांव-गांव में काम चले। सत्ता-बालों की सत्ता हाथ में लेना बाबा का ध्येय नहीं है। बाबा सत्तावालों की सत्ता खत्म करना चाहता है, शासन मुक्ति चाहता है। गांव-गांव में सत्ता बट जाये और ऊपर नाभि-नव गत्ता रहे। ज्यादा से ज्यादा सत्ता गांव में उसने कम प्रयत्न में, उसने कम बिने में, उसने कम धारणा में और उसने कम देग में हो इन बाबा धारणा सत्ता की धमिनाणा है गांव को नेता करी, गांव के प्रेमी बनो। तो गांव के लोग धारणा धामनामा के सभामनि चुनने। फिर धारणा हाथ में बढन सत्ता धारणें। बाड़े की सत्ता ? बाटने की।

प्रश्न : राम प्रकाश में लिखा है विचार

के लिए सन्धे चाहिए।

विनोबाजी : विचार की जनता के पास बाबा का सन्धे कैसे पढ़ेगा ? इसके लिए धारणा गांव-गांव जाना पड़ेगा। धारणा गांव-गांव जायेंगे तो यहा धारणा जो मुना है वह गाववालों को मुना रहे। निमित्त चिट्ठी की क्या जरूरत है ?

प्रश्न धारण की परिस्थिति में कार्यकर्ता धरणी धारणा और विचार-स्वतन्त्र्य की रक्षा किस रूप में करें ?

विनोबाजी : विचार-स्वतन्त्र्य के बारे में धारणाको जैन धर्म सेवना चाहिए। जैन धर्म में एक बडी धान नहीं है कि धरणा पास पूरा सत्य है ऐसा धमिनाम मत रखो। धारणाके पास सत्य का एक अर्थ है, दूसरे के पास भी सत्य का एक अर्थ चाहिए। हमें मन प्रगट करने का स्वतन्त्र्य होना चाहिए, तो सामने बालों को भी ऐसा स्वतन्त्र्य होना चाहिए। लेकिन दोनों टकरावों को ऐसा टकराने का स्वतन्त्र्य नहीं है। दोनों का मुना चाहिए। खेल-खेल, जोड जैसे हो सकता है, यह देवता चाहिए। इसलिए मत-स्वतन्त्र्य दर, विचार-स्वतन्त्रता पर ज्यादा जोर नहीं देना चाहिए। जोर देना चाहिए भावनात्मक एकाता पर। यह शाम बहादुर के लिए जरूरी है। यह शाम है ही और बहादुर भी है। इसलिए भावना धरणा है। लेकिन जरूरी यह है कि धरणा में कोम जरा भी न हो।

प्रश्न कल परतोनी महाराष्ट्र सरकार में धरणा के भाव धारणें वह डीक है। लेकिन हमें नाशकारी को जीवनयोगी बनने के बढने भाव बंद कर देने चाहिए, वरना हम धनाज वसुनी यात्री बैठी नहीं देंगे। इन पर धारणा बुद्ध विचार सुभाषों।

विनोबाजी : धरणाके बारे में मैंने जो कहा है वह सबने मुना है। लेकिन करते कोई नहीं है। मैंने कहा, धरणाज में टंकन दिया जाये। (बात्री लंप देवेनु) निमित्त को धरणाज वैचरर धरणा, चिट्ठी (१९७७) नरपार तो रने को लिए कहना, महापूर्वना है। हारा धरणा सुभाष यह है कि सत्तावाली धरणावाली धरणा को जो लपटाह दिने जाये हैं उनका एक हिस्सा धरणाज में दिया जाये। मेरी दन दो प्रस्तावों पर जब तक धरणा होता है तब तक देग के मेजर धरणा सरकारी नौकर मुनी होंगे नहीं।

→ शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को सुपर ग्रामचयं होता था कि सेवा-नाम निवासार्थी धार्मिक मे उनका स्वास्थ्य सुधारा। उनमें कुर्ती धादि, शारीरिक धौर मानसिक कार्य करने की शक्ति बढ़ी। जब उनको स्वभा मूल वारणए बहा शुद्ध धौर उचित भोजन वताया जाता तो वे स्वत्वा महज रूप से स्वीकार नहीं करते थे। बसोकि इच्छे भोजन को उनकी सामान्य धारणा बटाटा, उनकी धारत अनुमाई जीत को दधिक भोजन था। कहा उनवी यह धारणा धौर बहा उनका सेवा-धाम ना धम्यार वृत्ति पर स्वास्थ जीवन के निदान्त से पका भोजन। प्रत्यक्ष की जरूरत था, स्थय को वे प्रवर्तकार भी नहीं कर सकते थे।

स्वस्थ भोजन धौर परिवार नियोजन

ऐसी एक प्रचलित मान्यता है कि पूर्ण स्वस्थ दमर्ति की सन्तानें स्वस्थ होगी धौर सीधिन भी होगी। सामान्य धनवोकन से इनकी पुष्टि भी होती है। ऐसे वैज्ञानिक धम्यन को धारवतता है जिससे पता चले कि भोजन का धौर सनातोत्पत्ति का मनुष्यी में क्या सम्बन्ध है। यदि यह मिड होता है कि मनुष्यिन धौर स्वस्थ पोषक भोजन वे मनुष्यी वे गाय गाय शतानोत्पत्ति भी सीमित हो जागी है। इस हकारा परिधार नियोजन का गरा धमी मत दिने गये सामान्य पुहुड नारो से भिन्न 'स्वस्थ भोजन, मुसी परिवार' होगा।

स्वास्थ्य धौर कृषि की समन्वित योजना

मलन का कुपोषण धौर भूमि का कुपोषण, मलन भोजन धौर धम्यन्य एक स्वस्थ भूमि धौर स्वस्थ मानव का एक दूसरो से पूरा हुआ सम्बन्ध है। इनके धम्यन्य प्रमाता है। कुपोषण, उनका उद्गम काहे जो भी हो, धम्यन धौर धनुषुक भोजन, धम्यन धौर धम्यन धिधितया या इन सबके समन्वित प्रमाध के धारत करीर-मन्, उन्माई, धम्यन्य धौर जीवन-मन् का हाव होना है धौर किनी रोग

धादि से यच्छे होने मे, उबरने मे धम्यन सम्भव लगता है।

नदाल धम्यनिका मे बिचे "बोधा हिल स्वास्थ्य केन्द्र" वे इन बानो का प्रत्यक्ष धनुभव बहा के धादिवासियो के स्वास्थ के धम्यनयन के धाधार पर पाया। उनके सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि भूधु जाति के लोग कुछ ही पीडियो पहले उनके उत्तम गउन, स्वास्थ्य, कठिन परिधम करने का पीडी यन धनुषामन एव सामाजिक धमिक के लिए प्रसिद्ध थे। उनका परधमरगत धाधार धमि पोषक था। वट था संपूर्ण मक्का के पदार्थ, दलिया धादि। पकी गुषाई पतिया, खाते योग्य जगनी पत्ते, एक प्रकार का दही धौर कभी-कभी मालाहार। इन साहाय से उनका स्वास्थ्य स्तर बहुत उच्च था।

सर्वेक्षण से यह भी ज्ञान हुआ कि उनका स्वास्थ्य का स्तर बहुत सराज है। वे सगोपण धौर कुपोषण के गिकार है। तथाकथिन हुए विकास मे उन्हें नगराभिमुल दिया। उनकी भूमि की उत्पादकता माटी गई धौर वे फार्म धौर पर रत्वार बिचे धाधार के स्वात पर र्कृच्छरी मे बने पदार्थो को उपयोग से हटे लगे जैसे सफेद चौर हिल धाटा, सफेद शकर, जैम, चाय, बीटा सरीरे पेव धादि। यह ही उनका दैनिक धाहार बन गया।

एक धौर बात का पता चला वह है उनरी भूमि की गिरी हामत। भूमि की उबेरा धमिक बसाये रगने का ध्यान न देने के धारण, भूमि बेकाम-सी हो गई थी।

डा० स्टार (जा कि यहा की स्वास्थ्य योजना के सवा नापे) को लगा कि लोग का स्वास्थ्य सुधारने के लिए उनरी भूमि सुधारना धम्यन्य है बिनाके कि उहे स्वस्थ धौर पोषक धाहार दिने। भूमि सुधार एक धमिक वृत्ति उच्च प्राप्त करने का धार उन्नीं लगे धम्यन्य लीता बिन्ने धम्यनयन दिधार कि इह हाताउत्क म्कडे उच्छोरे के बिना एव मिधाई की धागा के बिना यह कार्य बरेग। इस धम्यन मे वही रीति धम्यनयन मे इन्वीर मे हाउडे, नींती मे दिधनयाम धौर सेनाधाम मे नायन बूडी एव धम्यन साहडे मे धम्यनई थी।

सधेय मे यह वृत्ति है भूमि का सेन्द्रित

त्व बढाकर उसनी उत्पादन क्षमता एव नमी धारण करने की धमिक धडाना है धौर भूमि को नमी प्राप्त हो इस हेतु बन्धान एव छोटे-छोटे तालाव धादि बनाना है। सेन्द्रिततर बचने के लिये मे लाईया छोडकर उनीम कचरा डाल कर मिट्टी से ढकना है। लाईया ना माली, धार बनाने वाले हल से बनाई जा सकती है। दम युक्ति से एव ही बर्ष मे फलतो का उत्पादन बढ गया तथा धेत से प्राण फलते स्वस्थ धौर पोषक थी। इनका भोजन मे समावेश करने से फिर से भूधु लोगो का स्वास्थ्य बरमे पूर्ववत् होने लगा।

मध्य प्रदेश के धार-भन्नुमा सरीरे इलाको की भूमि धौर नियमितयो के स्वास्थ्य की वही हालत है जो बोधा हिल के लोगो की थी। यहा उल्लिखित पद्धति इन क्षेत्रो की हालत सुधार सकती है। बहा के लोगो को न-वेव भूधुधरी से बचावेगी, उहे उत्पादन काम भी देगी धौर स्वास्थ्य भी। "केश" धम्यन्य के धम्यनयन सञ्च के नाम से मिट्टी उल्लाने के बजाय सेतो मे सेती लोड, कूडा-कचरा धवाने की योजना धमिक स्थायी धौर समस्यामक सिद्ध होगी। प्रश्न है तथा-कथिन विज्ञान के नाम पर हमारे मत मे भरी धम्यनयन भावना से उरता। यह गमय का तराज है धौर चुनौती भी। हम इसे स्वीकार करे धौर स्वस्थ भूमि मुवी धौर स्वस्थ नागरिक वा धम्यनयन धारताये।

× श्री हीमिता प्रसाद विपाटी, ममी, जिता सरोदय मण्डल केजाबाध से प्राण जान-बानी के धनुषार दम धार गधी वननी धम्यन-स्वराज्य-सहायद दिवम के रूप मे धम्यनयन क्षेत्रो मे मधाई गई। तथातन सो न-वेव धी मन्गनी प्रसाद विपाटी मे इपने दम गट-वीगिया के साथ किया। फंजागार जिने का दलिया धौर परिधमी धम्यनयन क्षेत्र जो धम्यनयन विज्ञान हुआ है, उनमे धम्यनयन की धम्यनयन का काम धाररम किया गया। जगह-जगह धम्यनयन सभाए धम्यनयन करके यह भी सफल किया गया कि यदि धम्यनयन की वृत्ति धम्यनयन हुई तो गल्यारुह नि-आये।

सेवाग्राम में कुष्ठ-कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन

१२ से १६ अक्टूबर तक सेवाग्राम (वर्षा) में कुष्ठ रोग के जीवाणु की शोध-सहाय्यी, डॉ० आ० कुष्ठ-कार्यकर्त्ता सम्मेलन की रजत जयन्ती के साथ बनाई गई। कुष्ठ-सेवा के सम्बन्ध में उच्च स्तरीय वैज्ञानिक विचार-विमर्श के साथ सम्मेलन में तीव्रता से यह महसूस किया गया कि रोग के सम्बन्ध में जितनी जल्दतर प्रत्यक्ष सेवा की है उतनी ही विज्ञान की खोज की भी है। डॉ० सुयुला नैयर ने सम्मेलन की सगठन-अध्यक्षा होने के नाते परिश्रम के साथ सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन में अग्र्य अनेक विषयों के साथ फॉन्ट डेमियन धीर डॉ० हेन्सन की यज्ञाजलि अर्पित करने के लिये सम्मेलन के अक्षर पर विशेष अधिवेशन रहे गये। डॉ० हेन्सन ने सौ वर्ष पूर्व कुष्ठ रोग के जीवाणु की खोज की थी धीर फॉन्ट डेमियन ने रोगियों की सेवा के लिये ही अपना जीवन अर्पित कर दिया था।

सम्मेलन का धारम्भ विनोबा जी के प्राचीनवादि से हुआ। १२ अक्टूबर की प्रातः सम्मेलन में भाग लेने आये सभी प्रतिनिधि पचनाकर गये। विनोबा जी ने कुष्ठ कार्य के सम्बन्ध में अपना मार्मिक उद्बोधन प्रतिनिधियों को दिया। विनोबा जी ने कहा—

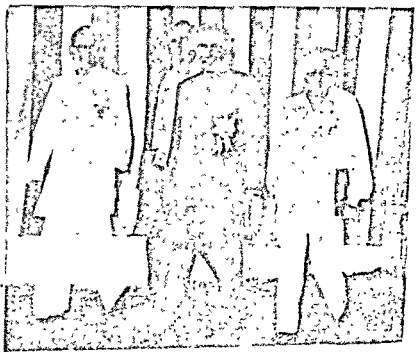
“साम्राज्य-किमी भी समाज के सामने जब मुझे खोना होता है तो मैं कुछ नीचा नहीं। चेहरे देखकर जो सुनना है मैं बोलता हूँ। यहाँ पर आसाम से लेकर केरल तक के अस्तित्व भारतीय डाक्टर इकट्ठा हुए हैं, यह बड़ी प्रशंसा की बात है। इस प्रकार का यह पहला ही प्रयोग है। यहाँ मैं क्या कहूँ यह मेरे तामने मशरूफ़ घता है, क्योंकि हमारे साथी जो यहाँ कुष्ठ सेवा का काम कई सालों से करते हैं, मनोहर जी, उन्होंने अभी तक मेरे जो व्याख्यान कुष्ठ रोगियों के बारे में हुए थे वह सारे मुझे दिया दिये।

उस पर से ध्यान में आया कि मेरे पास कोई नयी बात कहने को बानी नहीं है।

“मुझे भूदान-यज्ञ में काम करने की प्रेरणा हुई थीर लगभग २२ साल मेरे उस काम में बीने। सारे भारत में परयाया हुई, मोटर याया हुई, रेल याया हुई, धीर जगह-जगह लोगों से मिलने का प्रयोग आया। जहाँ-जहाँ मेरे मार्ग में कुष्ठ सेवा होती थी, ऐसा एक भी कुष्ठ-सेवा केंद्र नहीं होगा जो मेरे मार्ग में होने हुए बड़ा पढ़चा नहीं धीर हर जगह करने के नाम समझना रहा है। कुछ काम करना है प्रथमभा की। हर गांव में ग्रामसभा बने धीर बह जिम्मेवारी उठाये। यह बीर की जिम्मेवारी है ? तो देने उनको व, या, वि, बी, वू, नाम दिया है। वारासडी होती है। बन्ने, बूडे, जिषवाए बीमार धीर बेकार इस तरह पाव “ब” की सेवा करनी है। सनाय बन्ने होते हैं, बूडे होते हैं जिनके बच्चे यगह नहीं रहते।

विषवाए—जिनको कोई धायय नहीं, बीमार की सेवा धीर बेकार को नाम दिलाया, इन सबकी विन्या करना प्रथमभा का बर्तव्य है। हर ग्रामदागी गांव में ग्रामसभा बनायें। यह सब गांव की जिम्मेवारी उठाये। इसके अलावा बेकारों को काम देने की जिम्मेवारी धीर बीमार की सेवा करना, यह उत्तरा बर्तव्य है। बीमारों के नाम से पहला स्थान महारोगी, वूडे, लयडे, नयबर दो अक्षरोगी तथा तीमरे में धीर भी जो रोगी होये—उनकी सेवा करना यह गारा मैंने बह दिया है जगह-जगह। कुछ काम करना है प्रथमभा की, कुछ काम करना है सरकार की, कुछ काम करना है डाक्टर की धीर कुछ काम करने है सकेबी को। मैं प्रथमभा का काम धायवे मानने रना जो करना है।

“डाक्टर लोग आये है जो जगह-जगह सेवा का काम कर रहे है। धाय दग काम



उद्घाटन अवसर पर श्री साडिनकर (दाएं) मुखयमंत्री श्री माईर (मध्य में) डॉ. रविशंकर सामा

के लिए प्रेरित हुए हैं, भगवान की हवा से तो कुछ न कुछ काम प्राप्त कर रहे हैं। मुझ पर यह धरम पड़ा है कि मरकर भी यथा-मनित कर रही है, जो कुछ कर सकते हैं, काम करने महाराष्ट्र सरकार को रिपोर्ट जो मेरे पास आई है कुछ मंजूर के लिए कहा है। मैंने देखा है, क्या-क्या काम हुए हैं धारि। उस पर से ध्यान में घाला कि काफी कोशिश के करने हैं। जिनको भी कुछ करना है वे कर रहे हैं। हर घर में जनकारी पट्टा बना लेना का काम है। सेवक जिनके हैं ? लगभग १० हजार हैं बाबा की कल्पना के अनुसार। भारत में घोष है पांच लाख। पांच लाख के लिए एक सेवक मानें तो भी एक लाख सेवक चाहिए और है १० हजार। मगर १० प्रतिशत हैं। परमात्मा के सेवकों की उपाय बड़े। मेरी बहुत यात्रा हो रही है साज करने में। जो उपाय बसते हैं। वहाँ उपाय बड़े भी ध्याना काम होगा। यह भी मैंने जो कुछ हो रहा है। इनका चाहिए और हो सकता है, उनका एक चित्र धारण में मानते रहना।

“परन्तु जिनका है भाव लोगों की जो कि नहीं है कि रोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। पहले भारत में बढ़ते हैं कि ३० लाख कुछ रोगी हैं। ५५ करोड़ का देश है। इसका मतलब है कि ३० लाख हैं। दो लाख का ४ लाख और बड़े जयेंगे—दिन-दिन बढ़ा करी के मरने। यह बड़ रही है। इसमें किन्ना काम माया की हो रही, यह हमको बत ही है। परन्तु तीन दोष हैं इन विरोधों के कारण यह रोग बड़ रहे हैं। न केवल महाराज बत किन्ना दिने नाम दिया वे भी बड़ रहे हैं। मयाज के विरोध हुआ है।

‘पहला दोष है योग का धनाय। विविध विद्या विनया धारिण, संविभयम भी बात नहीं करता, देह और धारण भी एक रोग के लिए किन्ना चाहिए, वह भी धारण ५० प्रतिशत लोगों को नहीं मिल रहा है। इसलिए उपायों में उपाय देते हैं—धन पूज बसो, उपाय का भी। यह का उपाय है—वह पत्रकीय बचना बनते बाता धारिण कमीशन नहीं है।

उपनिषद कहता है “अन्न ब्रह्मेति विज्ञानात्” अन्न को परमेश्वर समझो। प्राण, मन, विज्ञान और किन्ना इन तरहे से सब बड़ बाताय। धारिण में धारण बड़ बड़ा किन्तु सबसे पहले अन्न बड़ है ऐसा पड़ा। “भूमे अन्न न होई मीमाणा।” कुछ भगवान के लिए धारण एक धारण का सेवक धारण उपदेश व लिए। कुछ भगवान ने कहा कि यह भूवा किन्ना है। उसमें पदत पर बनाया कि कहो नहीं कि मैं भूवा है, धारण नहीं किन्ना। मीमांसा कुछ न कहा पहले उसका खाना किन्नाय। यह मीमांसा कुछ ने किन्ना कि जा भूवा है उसमें अन्न का किन्नाय ? पहले अन्न से सुनि ही जो किन्ना कुछ किन्नाया जा सकता है। इन धारण पत्रका नाम है। यह समझा केवम भारत को ही नहीं है किन्ना यह एशिया की समझा है। किन्ना की भी नहीं किन्ना सुनिभा भर की समझा है। किन्ना व करके सुनिभा नकरीया धारण है। इन धारण इन समझा व ही न किन्ना किन्ना सुनिभा व कथन नहीं पूरी मायाका का कथन है, एका काका मानता है। यह बहुत बड़ा धारण है किन्ना कारण धारण नाम बड़ रहे हैं।

‘दूसरा दोष है स्वर्गचा’, धर्मधम। क्या नाटक, क्या मिनेमा, क्या महिद इनका मदा संबंध भरा है कि उन हारण में वित्त का पत्रिक रखा अत्यन्त बड़ हो जाता है। महरो की हारण ऐसी है कि रात्रण किन्नाय है, काज पर जाए। जा रू बनना है उमें रात्रण कहे हैं। एका काका ने नाम दिया। बड़-बड़ काज पर व बड़ने हुए मयाज माने धारण को जोरदार धारण धारण है परिणाम का हीमा है कि वित्त अन्न हो जाता है। उमें अन्न का वे सर्व मरना बड़ नहीं है। कल्प ही नररुने बड़नी नहीं तो उपाय क्या परिणाम होगा ? १० लाख में सुनिभा की धारणरी सुनि ही धारणरी, भारत की धारणरी ५५ करोड़ के बड़ने ११० करोड़ हो जायेगी। उसका परिणाम बड़ होगा कि जमीन का रचना वम पड़ना। ऐसी हारण में भूधररी और धारण करेगी, धारण के कारण बड़नी। किन्ना धारण में उपाय हारण, समुदाय वना रोग तो उमें सुनिभा पर धारण बड़ जायेगा, वे उपाय धारण करेगी।

परन्तु यह जो सतान बड़ रही है, धारिण-धारण के बड़ रही है। मनुष्याधम को धारण व्याभिचार का लक्षण मानते हैं। जो मनुष्याधम धारण पढ़ते भी वह लक्षण ही नहीं है। किन्ना साज धारण का नाम धारण लोग जानते होये। मैं उनके बात कर रहा था—नरमी मेहता बरा कहता है “दुसरे की स्त्री को माना समझो”। मुनाराम कहना है—‘दुसरे की पत्नी को माना के समान देना’। इस तरह से जा भी उठना है वह बात बगला पर-नरी के मान सब न रना, बड़-बड़ की बात ही नहीं करते। इस पर किन्ना नाम धारण न कहा कि धारण को समाज का हान नहीं है। उद्योगेवनाया कि हजार पुरुष के से नहीं एन ही निकलेगा जो पर स्त्री के साथ संबंध न रचना हो। यह धारण की बात है। सररु में भी बड़-बड़ है कि धारण दारा में सुनुप रूने पाते बचित ही दिखत है। इस प्रकार से व्याभिचार सब बड़ रहे हैं। इसमें बड़ी समझ में रोग बड़ना, यह भगवान का साक्षीव है। धारण कहेये कि हम धारण है रण हुआने के लिए और यह बड़ रहे हैं कि धारण भगवान का धारणव है। यह दुसरा कारण है।

‘तीसरा दोष है हरा में हूणए है। नरिया यही हो रही है। कुछ उद्योगेवनाया के निकली है। उमें समुद्र का समुद्र लघु हो गया है। बड़ा के मरुतिया भाग गई मा पर गई। हरा रू ही हा गई है, बनस्पति दुहित हा गई है। इसके लिए नया साक्ष-किन्नाय है “इकोलाकी” धारण धारण की परिधिण की स्वरु धारण, धारण बड़न उररत है। इस तरह धारण मोझे के लिए नया साक्ष किन्ना है। धारण में नीचे सपारि मरुती रणने है, किन्ना बड़ा ऊपर की हरा संबंध किन्ना बड़ है। हेतुधारण में नीचे सपारि कम रणने है, किन्ना धारण ऊपर की हरा किन्ना दुहित नहीं हुई। धारण में तरह-तरह के रोग रूने रहे हैं। पाव धः साज बड़ने की बात ही मौर-अमेरिका के डाक्टर एनक हुए हैं। उद्योगेवनाया कि यह समझ में नहीं धारण कि डाक्टर बड़ रहे हैं उमें साध-साध रोग भी बड़ रहे हैं। तरह-तरह के नये रोग बड़ रहे हैं किन्ने नाम भी नहीं मिलते।

हम सब अपनी-अपनी तरफ देखें : वैद्यनाथ बाबू

(श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी पिछले तीन वर्षों से विहार के हपीली प्रखण्ड में अपने साधियों के साथ लगे हैं और गांधी-विनोबा की कल्पना के स्वराज्य को शकल दे रहे हैं। हपीली प्रखण्ड और ब्यासपास की परिस्थिति से दुम्नी होकर पिछले दिनों जब उन्होंने पाचदिनों का उपवास किया तो कई लोगों ने उन्हें बिछुआ लिखी और कारण जानने चाहे। प्रस्तुत पत्र में उन्होंने अपने उपवास के कारणों को स्पष्ट किया है।)



श्री वैद्यनाथ बाबू

मैं सर्वप्रथम यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मेरा उपवास किसी घटना के विरोध में या उसके प्रतिरोध स्वरूप नहीं था। मैंने प्रार्थना के जो भाव मुझे रहे हैं और उस पर अपने वी भाविक प्रदान के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी थी। आठ दिनों के उपवास के बाद मुझे 'मुझे' की जगह 'हमें' शब्द का प्रयोग किया है। यों ही मेरा व्यापक परिवार है जिना, प्रदेस तथा प्रतिष्ठित भारत भर की सभाओं से भी मेरा सम्बन्ध रहा है तथा आज भी है परन्तु आज तक जानने है कि सवा तीन वर्षों में मैं अपने प्रेम क्षेत्र के रूप में राष्ट्रीय प्रखण्ड में आस स्वराज्य के कार्यक्रम के लिये सक्रिय तथा रहा हूँ। इसलिए मेरे 'हमें' शब्द के अर्थों में ही राष्ट्रीय प्रखण्ड की जनता तथा यहाँ की सरकारी, मंडलरकारी एवं ग्राम स्वराज्य सबकी सम्बन्ध। मैंने जिन बातों का उल्लेख किया है वह जरा भी हर्द बात है कि उसके मध्य में अनेक भ्रष्टाचार मेरी ओर से तथा इन प्रखण्ड के अन्य स्वयंसेवकों से इस भाँति के हो गये हैं। बिना ही एश्वर्य बुद्धि न हो, दोष रहित ही यह तो भगवान ही ही होना है। मानव से बुद्धि होंना स्वाभाविक ही प्राप्त होना पर बुद्धियों का मान होने पर उसके परिमार्जन के लिए प्रायश्चित्त किया जाता है और ईश्वर से सक्रिय की याचना के लिए प्रार्थना भी जाती है। मैंने यही किया था। अब समय-समयाने के लिये सोचें किस्तर में बहूँ तो कहना होगा कि—

● गणतन्त्र पर चरने वाला प्रशासकीय, संस्थापक, नेता किन दिशाओं का आँस पर मजूरी लेना-देना, भूरी गवाही

देना, परस्पर विरोधी कागजात पर हस्ताक्षर करना आदि कैसे कर सक्ता है ?

● अपने सत्यों पर हठ रहने के लिए कुछ जगह एवं कष्ट सहन तो करना ही पटना है। उदाहरण के लिए भ्रूदान दिया, बीधा बढ़ा दिया देकर उसे नहीं निजालना, बेदखल करना हम आज का ५० वाँ हिस्सा भयवा धरणी मजदूरी का ३० वाँ हिस्सा श्रमकर्मोपनिवेशों, बीधा कठडा भूमिदानी के लिये देंगे, इसी प्रकार शम सभाओं के ११ संकल्प का मान-मान में दुर्गमों गये हैं उसे कार्यसिद्धि नहीं करना पटना उमय सुनो की क्या कहा जायगा ? इसी प्रकार सांख्यिक कामा, मेरा कार्य के लिए समय देने की घोषणा करने पटना कार्यक्रम निश्चित करने के लिये पूरा नहीं करना आदि संकल्प सब ही शक्य जायेंगे।

● आने भाषिका तथा पत्रोत्तियों के साथ मैं चरने के मध्य में हट देय करने है कि कार्य-सभाओं में, आम सभाओं के प्रशासिकादि में, सत्याग्रह, विज्ञानय आदि के स्थोक एवं समितियों में मजबूत वा पत्रोत्तियों के द्वारा दर्द भी समवेदना का प्रभाव हमने ही था 'ही' ?

● अन्वय एवं गोपण के विरुद्ध सांख्यिक जागृत करने तथा अहिंसा के मार्ग से उसके विदारण के लिए हृदय कण बद्ध करने है ? मजदूरी की समस्या, बढाईकारी की समस्या, शीतल्य कानून, बाल्यगीत का पत्र, दारिद्र्य आदि आदि अनेक समस्याएँ जो हैं हमारा ध्यान भौचनी है।

● गांधीजीय कोय के व्यवहार में सत्याग्रह, सरकारी मजबूतों, रितीक आदि बातों में भाव को स्थिति है उनसे हट सब मुक्त भोगी है।

मैंने ऊपर जिन बातों का उल्लेख किया है मैं यह कहने की स्थिति में नहीं हूँ कि मैं पूर्णरूप से इन बातों से मुक्त हूँ। जब तक सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं होता— कोई व्यक्ति इन बातों से पूर्णरूप से मुक्त नहीं हो सकता है। उनके उदाहरण में नहीं पड़ना। इन प्रश्नों तथा बातों की तरफ हमारा ध्यान जाये और हम सब अपनी-अपनी तरफ देखें, अपने दोषों तथा जिन सत्याग्रहों में हम रहते हैं उस सत्याग्रह के उन दोषों को दूर—नष्ट करने के लिए प्रयत्न करें, उन्हें उद्देश्य से मेरा प्रायश्चित्त तथा उपवास हूँ। मैं मानता हूँ कि मेरी ही कमी है कि मैं जिन क्षेत्र एवं जलगा की सेवा का प्रयत्न कर रहा हूँ मैं उन्हें अपनी बात समझा नहीं सकता था प्रभावित नहीं कर सकता। और इसीलिए मैंने सबको सब मायों पर चलने की सुझाई एवं साक्षात् ईश्वर प्रदान को एतदर्थ यह छोड़ा सा प्रयत्न किया है।

उपवास जैसी प्रक्रिया में बहूतों को विवशत ही नहीं है। विरोधात्मक उपवास में उपवास को प्रतिष्ठा भी पठाती है। जो ऐसे माध्यमों में नहीं मानने हैं उनसे मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं गांधीजी के बताये मार्ग में विश्वास करता हूँ और उसी हृदय से यह पाप दिन का उपासक किया है। मैंने बहुत प्रायश्चित्त एवं प्रार्थना के रूप में यह उपवास कर्तव्य मानकर किया है। वन तो ईश्वर की शक्ति है।

आज सब की सदाबुद्धि मुझे उपवास में स्थिति है अपने लिये प्रयत्नकार।

चलता मुसाफिर ही पायेगा मजिल और मुकाम

अक्टूबर २५ में श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने अपने कुछ साहित्यिकों के साथ उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों की १०० दिन की परयात्रा प्रारम्भ की है। इस दिन जाहा पूरे देश भर में दीपावली के त्योहार की छूमधाम से मनाते की तैयारी घर-घर चल रही थी वहा टिहरी नगरी में प्रेम का प्रकाश और हृदय के दीप जलाने के लक्ष्य को लेकर इस यात्रा की तैयारियां सम्पन्न हुईं। टिहरी नगर वेदान्ती सम्प्रदायी रामतीर्थ का निर्दाल-स्थल है और इस वर्ष २५ अक्टूबर से उनकी जन्म-शताब्दी मनायी जा रही है।

१२ वर्ष पहले भूदान-यज्ञ के प्रणेता सन्त विनोबा भावे की प्रेरणा और गांधी जी की अंग्रेज शिष्या सरल बहन के मार्गदर्शन में उत्तराखण्ड में सर्वोदय विचार-प्रचार का व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ था। उस समय देश की सीमाओं पर चीन की चुनौती उपस्थित थी; अतः सर्वोदय के प्रत्यक्ष कार्य के रूप में ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य का कार्यक्रम उत्तराखण्ड में चलता गया। उत्तर काशी जिलादान व जोशीमठ व धार-चूला प्रखण्ड दान सहित लगभग १००० गांवों में ग्रामस्वराज्य की घोषणा की। लगभग १४ विकास-क्षेत्रों में प्रखण्ड-स्तर के रचनात्मक कार्यों की संस्थाएँ बनीं। उत्तराखण्ड की पवित्रता, 'वंतीय क्षेत्रों की गरीबी और सीमा-मुश्किलों के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार ने जनता की मांग का आदर करते हुए उत्तराखण्ड के अधिवास क्षेत्र में शराव-वन्दी लागू की। 'पंचको' आन्दोलन के रूप में उत्तराखण्ड की जनता का ध्यान बन-सम्पदा की सुरक्षा और उसका लाभ बनने के निम्न रहने वाले वन वासियों को दिखाने को और छाष्ट्ट हुआ है। इस तरह उत्तराखण्ड के स्वतंत्र विकास के लिए और यहाँ की जटिल समस्याओं के समाधान के लिए जनशक्ति को संगठित करने की एक पृष्ठभूमि तैयार हुई है।

केन्द्रित सुनियोजित सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए अलगावलिख प्रयोगों के साथ

साथ निरन्तर जागरूकता और सतत प्रयत्न-शील रहने की आवश्यकता होती है। एक वैदिक मंत्र का आशंखन है: 'यो जागरः तपः श्रुचः कामयते, यो जागरः तपु सामानि यन्ति'—जो जागृत है श्रुचाएँ उन्नी की कामना करती है, जो जागृत है उन्नी को सामगान प्राप्त होता है। सामाजिक मोर्चों पर टकराने हुए सैनिक कई बार बक जाते हैं, निराश व पस्त हिम्मान हो जाते हैं। तब नई व्युत्पन्न रचना, नई रणनीति का विकास करके फौज को आगे बढाना पड़ता है। पूरे देश की तरह उत्तराखण्ड के रचनात्मक आन्दोलन को भी घायर इस सक्रमण काल से पुनराल पडा है। सीमाय से उत्तराखण्ड के सर्वोदय परिवार की थी बहुगुणा जैसे कर्मठ, युगल व निष्ठावान् सेवक का नेतृत्व प्राप्त है। वे एक सुलभे हुए सेनापति के साथ-साथ एक समर्पित सिपाही भी हैं। उनके नेतृत्व में चलने वाली इस १०० दिन की परयात्रा—जिसमें वे पूरे समय तब रहेंगे—का उद्देश्य जहाँ एक ओर ग्राम-स्वराज्य का विचार मान-मान्य पढुवाना है और ग्राम-स्वराज्य की पृष्ठभूमि में हृदय गावों तक पहाड़ों की ऊंची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों पर पंदल चलकर अदालत-मुक्ति भूमि समस्या शरावन्दी, बन-सामस्या व स्थी शक्ति जागरूक जैसे उत्तराखण्ड के हृदय सवालों पर गाव के लोगों के साथ विचार-विमर्श करना और उसके लिए आवश्यक अनुकूल वातावरण तैयार करना है वहाँ उसका सहज परिणाम रचनात्मक जनन में छाये नारायण की समाप्ति में होने वाला है।

परयात्रा का प्रारम्भ टिहरी नगर में कुछ भौतचारिक कर्मचारियों के द्वारा हुआ। २५ अक्टूबर को प्रातः मिलंगना के तट पर जहाँ ६७ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन राम बाराहाह (स्वामी रामतीर्थ) ने जन्म-माघि ली थी, मोन प्रायंका के साथ जन्म-शताब्दी का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दिव्य जीवन संघ, शिवानन्द नगर में आयोजित स्वामी विदानन्द, जो पिछले दो वर्षों से सर्वोदय

परिवार के बहुत निकट आये हैं, ने इस अवसर पर अपने प्रेरक प्रवचन में कहा कि स्वामी राम हमें कुछ व्यक्तित्व को महान जीवन-रूपी रूप में होम करने की प्रेरणा देते हैं। मोन कोठी में सचं वधमें प्रायंका हुई तथा स्वामी रामतीर्थ प्रवाण स्वान में पुष्पाञ्जलि अर्पित की गयी। वही पर विष्णु सहस्रनाम के पाठ के पश्चात सुन्दरलाल बहुगुणा की टोली की १०० दिवसीय उत्तराखण्ड परयात्रा प्रारम्भ हुई। इसमें अत्य नागरिकों के साथ-साथ चर्चा करते स्वामी चिन्तानन्द भी वढ़ें।

दोपहर में टिहरी नगर के पास आराद मैदान में स्वामी विदानन्द की अध्यक्षता में एक धाम सभा हुई जिसमें श्री महावीर प्रसाद गैरोला, श्रीमती बडुनी; प्रसिधित नरेन्द्र महिला विद्यालय, श्री सुन्दरलाल, श्री भक्त दर्शन व स्वामी प्रानन्द में प्रवचन विये। श्री सुन्दरलाल ने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताते हुए कहा कि, "स्वामी राम का व्यावहारिक वेदान्त का संदेश जन-जन तक पहुँचाने और पर्वतीय समाज को उनकी महान् आध्यात्मिक विरासत का भान बनाने के लिए मैं मान-मान जा रहा हूँ। मैं उनसे अधिरो, शिरो और वचको का आदर करने का निवेदन करता हूँ।" श्री भक्तदर्शन का मानना था कि इस कार्यक्रम से पहाड़ों में एक नये विकास युग का प्रारम्भ हो रहा है। लोग इसमें प्रेरणा लेंगे। उन्होंने कहा कि यह हमारा सीमाय है कि हमें महापुरुष अन्तिम दिनों में यहाँ पर आये। उनमें से दो को साथ शरणावस्थान और स्वामी रामतीर्थ ३३ वर्षों में ही अपनी जीवन कार्य पूरा कर चके गये। स्वामी विदानन्द ने अखण्डीय पर से बोलते हुए कहा कि राम शरादया की शताब्दी ऐसे अवसर पर आयी है जब हमें अधिरो व अक्षम के प्रति श्रद्धा की भावना जगानी है। शान्तिपडा देव को ला रही है। भारतीय एकता को हमें पुष्ट करना है। कल्याणुगानी के विवेकानन्द स्मारक की उद्घाटन शिवालय



मे स्वामी रामतीर्थ का एक विग्रह स्मारक बनना चाहते हैं, जिनमे उत्तर-घोर दरिद्रता के बीच की सामाजिक कड़ी जुड़े और यह सम्प्रदाय के क्षेत्र में गहरे विचार का नेतृत्व करें।

घन्ट में पदयात्रा टोली ने मन्दिर, मस्जिद और युद्धाडों की परिकल्पना करके गांधी प्रौद्योगिकी विद्यालय में निर्माण की पुष्टि करते हुए कि "बनना मुनाफिर ही पावेगा मस्जिद और मुनाय रे।"

६ मधुपुर की जब दिहरो के टकर बना छात्रावास में उत्तराखण्ड के कुछ सापी इस तरह की परदाया टोली विचारने की योजना पर विचार कर रहे थे तब से भग तप बिड़पोने इस पर अपने प्रेक्ष चिह्न अतिव किया है। कश्मीर में हमने मजाल उडाया है। जेट गुण का भावपी परदाया को बनवाना या विठलो के मनयहवाय का साधन समझता है। निरसनेह पंदल बनना एक पापमाला ही है यदि उनका सम्बन्ध किसी मरुतन व व्यापक कार्य से नहीं जुड़ता है। पहाड़ी भादमी की पीठिया गिठ चुकी है पंदल बनते चलते। वह बहुत बया है निम्नु पढ़ना नहीं भी नहीं है। लेकिन बुद्ध, मरुतीर, शकर जब तक को, कश्मीर की धनय जगने भूमि, गांधी ने जब इतिहास प्रमिड पंदल दफ्ती मांच किया, विनोय ने २० साल लगातार हजारों मीन तापे तो उपमे से धर्म के चक्र को नई दिशा प्रिमी। बुद्ध, विनोय हर भाव व हर देश में नहीं होते। नव भावय बना यह धारयन नहीं बनना लियेगा कि मातृका के लिए दिये जलाने के लिए तापो महेश्वर और सम्प्रतिपा धरपी के बोधने-नेने तप बह्याणकारी दाणी को सोचो तप चढ़वाने के लिए जिगल पडे? क्या बाव बलायो का क्यानि जेम्मे " क्या स्वामी विवेकानन्द का यह बचन धारयणिक है कि कात्या मुकता बना है घोर कुल भोजने रहने है? या जितके पास कोई काम नहीं होता वे राह बनने वालो पर-कक माता बचते है?

एक गहरा प्रश्न यह भी उठता है कि

१०० दिन की यह पदयात्रा स्वामी रामतीर्थ जन्म-शताब्दी समारोह के साथ प्रारम्भ हुई है, यह अनुभव बड़ा तक मजबूत हो सकता है? स्वामी राम ने कहा एक और सम्प्रदाय की धरम उपास्यों को स्वर्ण किया था वहा उनके जीवन की कुछ घटनाओं में भावी मानवता के स्वरूप के विचार चिह्न भी हैं। उनके जीवनो लेख सरदार पूरण सिंह ने लिखा है कि विदेग की यात्रा से सोहने के बाद स्वामीजी जब हिमालय की गोद में विचारण कर रहे थे तब उन्होंने अपने उद्गार प्रगद करते हुए कहा था कि मैं जब मरानो मे जाऊंगा तो सत्याजी के इन वस्त्रों को पाउ-पाउ कर के, तुम, घोर दुनिया को वाउगया कि सत्याम भी एक वस्त्र है। सरदार पूरण सिंह ने इन उद्गार का विवेचण करते हुए कहा है कि स्वामीजी का हृदय मूलतः बलि का हृदय था। सत्याम की कठोरता उनो स्वभावक अनुभूत नहीं थी। सत्याम और बन्धन। सत्याम तो समल बन्धन से मुक्ति का नाम है। सत्याम कायद कुछ विरोध हो गनती है। सारा धारण, सारी नाम वदित्या, सारे विचार, विद्यालय और मूल्य प्रतिष्ठात मानव की धारया को मार देने वाले हैं, उन्हें नाम वाहे जितना धना रंक दे दिया जाय। मुक्ति तो निपट इत्याय की भूमिका पर रहने और सहज स्वाभाविक जीवन जीने में ही है। क्या यह परदाया टोली इस तरह की हिम्मत कर सकेगी कि वह किसी विचार, विद्यालय वय व धारण की लम्बी हटावर निपट सादरिक की भूमिका से जन-जन को मुक्ति का मन्देश करे।

सरकारोशी को हमन्ना जिनके मन में रहती है उनके पापो को सिन्धी की उडी हुई उदनिमा बव रोक सानी है? ऐसे लोगो के लिए ही चलना ही जिनगी है। उनके मानने चलने का विरल्य मिट जाना है। ऐसे ही विर सानो भी भाव-दशा मे रुचि बाजू ने मान्य होगा "मरुतीर काशो भोरे। चलने पडे मान गाड़ी प्रगद भरे।" क्या यह १०० दिन की धारय परदाया बनो दिना की घोर दणित नहीं है?

—धोनेदाधर बहुगुणा

× तरण गांति सेना समिति, जिला सागर (म० प्र०) ने अपना प्रथम एव सफल प्रयास ३० सितम्बर को मध्य प्रदेश के बाड पोडियो को सहायतापूर्वक एक मन्त्र बेरिदो को का सायोजन करके किया। इस सायोजन के द्वारा २००१ रुपए की राशि एकत्रित की गई। यह रकम जिलाधीन श्री धारयद मोहन का ११ मधुपुर को एक सभा में दी गई।

× महाराष्ट्र के मद्राजीबल क्षेत्र को धोडकर शेष क्षेत्र के जिलो से १ मधुपुर १६७३ तक ४०, १६० एकड़ भूमि भूदान प्रान्त हुई और २६, ३०० एकड़ निररित बां दी गई। ०००३ दाताओ द्वारा दी गई जमीन ५३६५ घनताओ में विभरित की गई।

× बिहार भूदान-यज्ञ समिती द्वारा एक तब सम्पादित पायो, ी स धल्प जानमार्द इन प्रारत है —

प्रालि—गाँव सख्या—३७, ६६; दत्ता-सख्या—२, ६७, २००

रकबा—१६, १७, ४६७ एन ७१

विहार—विनो के योग्य तितरित भूमि वा रकबा—४, ३२, ४६७ घनता सख्या—२, ६२, ६६७, वेतो के लिये धर्मोय पायी गई भूमि का रकबा—११, ६४, ६०५ सर्वे-हाल के लिये यपी भूमि का रकबा—४, ०६, ६०५

शमशान्त —बिहार राज्यके मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहरसा, मुयेर, समाल परगना, पूर्णिया, गया एव पटना जिले में मुष्टि क्षति-कारी कार्यरत है। कुल १, ६ २६ गाँवों में ०६, १७० समर्पण पत्र दाखिल किये गये जिनमें ४१, ५३५ भूमिवालो एव ४४, ६२५ भूमिहीनो के हैं। बिहार गजट में ६७५ गाँवों का सायदान ग्राम के रूप में प्रकाशन हुआ है। क्षतिनिवदन के अनुसार धारित्य क्षान सभाधी को सहकारी समिति के रूप में पञ्जीकृत करते हेतु बिहार सरकार के सहकारिता विभाग द्वारा परिवार जारी विचार का चूना है। ग्राम, सभाधी का राजव बन्नी सम्बन्धी क्षतिगार, देने के लिए राज्य सरकार का ध्यान दाखल किया गया है।

आन्दोलन के समाचार

× गत धर्मन में कुश्चेत्र में आयोजित हुए महिला सम्मेलन के निर्वायानुसार पूरे देश में ११ से १७ अक्टूबर तक महिला-पदयात्रा सम्पन्न हुयी। बाराणसी में पांच बहनों की एक टोली नगर के पूरे क्षेत्र में घूमती रही। इस टोली में सर्वश्री धनुराधा नूत्र, गीरा मेहता, चम्पा देवी, माया शौर मञ्जू पूरे समय रही। पदयात्रा का समोजन नगर सर्वोदय मण्डल के तत्वावधान में गांधी शांति प्रतिष्ठान, स्त्री शक्ति सस्त्रांग, भारतीय समाज बदलाव परिषद तथा नगर की अन्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से हुआ। अन्ततः तल्लु धौर श्रीमती शक्ति मेनेज ने किया। पूरी यात्रा में श्री रामकृष्ण शास्त्री शौर हरदोबी मल्लवानी का पूर्ण सहयोग पदयात्रियों को मिला।

द्वारपुर (म. प्र.) जिले में भी बहनों की पदयात्रा उल्लाहपुर चली। बहनों में श्रीमती मनुमता पाण्डेय, पुष्पा बन्दी, पुष्पा देवी त.म.र., मासुकी श्रीगालन, मालती सम्भेना, कुं. शक्तिगिह, पत्नी गिह व श्रीमती विजयेंद्रा खरे ने भाग लिया। श्री बहोरी शाल बुधवाहा पूरे समय पदयात्रा टोली के साथ रहे। पूर्व तैयारी में श्री कमलापति चौधरी ने सहयोग दिया। समोजन श्रीमती नाथवी देवी पवार ने किया तथा धनसहायिता ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समिति एवं गांधी-स्मारक-मठन, द्वारपुर ने की।

बरेली में इस उल्लाह के दौरान पदयात्रा के अलावा नगर की विभिन्न महिलाओं से सम्पर्क करके उनके पास 'स्त्री शक्ति' 'सत्त्व-नास्तिक' आदि पुस्तकें पढ़ाई गयीं। श्रीमती शांतिदेवी चतुर्वेदी ने १७ अक्टूबर को समापन समारोह की अध्यक्षता की।

सादायत सहज धोत्रायें प्रारम्भिक सर्वोदय मंडल (मयूर, उ. प्र.) के तत्वावधान में पदयात्रा का कार्यक्रम श्रीमती इंदोरी देवी ने नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। पदयात्रा टोली में श्रीमती नटोरी देवी

चन्द्रकला देवी, सहोद्री देवी, कृष्णा देवी, कुं. सुमन वर्मा, कुं. विशालता तथा श्री हरनामसिंह व श्री जयन्ती प्रमाद जी ने भाग लिया।

बानपुर के ग्रामीण क्षेत्र 'बचकन' में स्थानीय महिला सर्वोदयी कार्यकर्ताओं ने उल्लाहपूर्ण श्रम से सप्ताह बनाया। श्रीमती सन्ता बहन व सावित्री बहन ने घर-घर जाकर महिला समाज से सम्पर्क किया। स्थानीय कार्यकर्ता श्री झलकनारायण पदयात्रा का मार्गदर्शन किया। पूरी पदयात्रा में लगभग १०० बहनों ने सक्रिय भाग लिया।

पूना (महाराष्ट्र) के पहाड़ों क्षेत्र मावळ में स्त्री-शक्ति-जागरण सप्ताह उल्लाहपूर्वक मनाया गया। पूर्व तैयारी के लिये ६ अक्टूबर को मकबली गाँव में सी० मावली, बचकनवर व श्रीमती इन्दुलाई बनरे ने एक गिरिहार आयोजित किया।

× बिहार सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री देवानन्द मिश्र ने सूचित किया है कि बिहार राज्य सर्वोदयसम्मेलनदरम्यान जिले के विचोले प्रमण्डल में ४, ५ व ६ नवम्बर को होगा। सम्मेलन का उद्घाटन बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री हरिनाथ मिश्र करेंगे व उद्योग मंत्री, श्री चन्द्रशेखरसिंह, मुख्य अतिथि होंगे।

श्री मिश्र ने बताया कि विचोलाजी के आवाहन पर बहुरता जिले में काम स्थापित के अतिथि को मान्य बनाने की दृष्टि से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है। बिहार राज्य के करीब ५०० प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेंगे।

श्री मिश्र के अनुसार नवम्बर १९७३ में अप्रैल १९४४ के दौरान महारता के राष्ट्रीय मोर्चे पर रामस्वराज की स्थापना के कार्य में सहयोग देने के लिए देश भर से पावन की वरिष्ठ कार्यकर्ता माग लेने कायेंगे। श्री जन प्रवाज जी ने अपनी अध्यक्षता के वाक्यूर भी अभिमान में एक माह का समय देने की इच्छा व्यक्त की है।

× गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, जयपुर द्वारा आयोजित विचार सभा में डा० दयानिधि पटनायक ने 'वर्तमान युग में गांधी की उपादेयता' विषय पर बोलते हुए दुनिया में शांति और समृद्धि के लिए विज्ञान तथा अध्यात्म के समन्वय की आवश्यकता प्रति-



डा० दयानिधि पटनायक

पादित की। उन्होंने समाज परिवर्तन के लिए विचार शक्ति पर बल दिया और कहा कि विज्ञान के युग में हम सर्वोदय का सर्वोदय में एक नया चुनाव होगा। शांति प्रतिष्ठान के मन्त्रि और संयोजक रिश भी ने ध्यानपूर्वक वा स्थापन किया व पेश की जानकारी दी।

× विद्या के विद्यालय छात्रों का विद्यालय और मनाज में प्रध्यापनी के योगदान पर बम्बई में २ नवम्बर से तीन दिवसीय महत्त्वपूर्ण गोष्ठी आयोजित की जा रही है।

गोष्ठी का, जो दोहवार बॉजिंग हॉल, माटुंगा में होगी उद्घाटन बम्बई विद्यालय के कुलपति श्री टी० के० टांगे करेंगे। सर्वोदय-सर्वज्ञ के प्रसिद्ध भाष्यकार दादा चमोपिठारी प्रमुख वक्ता होंगे। इनके अलावा स्थानीय कीर्ति बानेज के प्रो० एम० पी० रेंडे, पी० जे० जोगी (बोडरार बॉजिंग) तथा टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सांख्यिकी के डॉ० एम० एम० मोरे भी गोष्ठी में विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करेंगे। श्री प्रभात माहळ महत्त्वपूर्ण गोष्ठी में विशेष रूप में भाग लेंगे। गोष्ठी का आयोजन सर्वोदय मण्डल द्वारा किया जा रहा है।

सर्वोदय

758

सर्वोदय संघ की साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, बुधवार, १६ नवम्बर, ७३

17.11.73

समर्पणकारियों के लिए
मुंगेरली में
खुली जेल

प्रशिक्षित बेरोजगारों को
चिन्ता मुक्त करने के ठोस प्रयत्न
छोटे उद्योग स्थापित करने के लिए राज्य शासन
द्वारा विशेष सुविधाएं

- ❖ छात्रवृत्ति और सांघांत्रिक प्रशिक्षण की व्यवस्था ।
- ❖ दुर्लभ कच्चे माल की प्राप्ति की सुविधा ।
- ❖ भूमि एवं वितानों के आवंटन में प्राथमिकता ।
- ❖ किरत खरीदी पर यन्त्र सुलभ ।
- ❖ राज्य सहायता अधिनियम के अन्तर्गत सहायता ।
- ❖ मध्य प्रदेश वित्त निगम से ऋण प्राप्ति की सुविधा ।
- ❖ मुक्त तकनीकी सहायता और उद्योगों के चयन में मार्ग दर्शन ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क साधिये
उद्योग संचालक, मध्य प्रदेश, भोपाल ।

(उद्योग संचालनालय, मध्य प्रदेश द्वारा प्रसारित)



भूदान-यज्ञ

१४ नवम्बर १९७३

वर्ष २०

सम्पादक : राममूर्ति, भवानो प्रसाद मिथ : कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

श्रंक ७-८

इस श्रंक में

जेलों को अस्पतालों में बदलना हो तो.....	—महात्मा गांधी	३
क्या डाकू भगवान् ने पैदा किये हैं ?	—विनोबा	३
मध्यप्रदेश सरकार का सराहनीय कदम	—जयप्रकाश नारायण	५
दण्ड विधान के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम	—प्रकाशचन्द्र सेठी	५
मुंगावली और खुली जेल यानी नवजीवन शिविर	—प्रभाप जोशी	७
खुली जेल कैसी हो ? बदलते लचोले मानदण्ड	—संकलित	६
'अपराध-शास्त्र' के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान	—ज्योत्सना राह	१२
खुली जेल से निकलकर वागी अछड़े नागरिक वनों	—कृष्णपाल सिंह	१५
हृष्ट अपराध में समाज का हाथ है	—प्रिस क्रोपाटकिन	१८
दण्ड-शास्त्र : बदलती धारणाएं	—संकलित	२१
मृत्युदण्ड कब बन्द होगा ?	—जी. डी. खोसला	२५
वागी सभ्य नागरिक बनना चाहते हैं	—बनवारी लाल बिहारिया	२७
सारी दुनिया ही एक खुली जेल है ?	—माधोसिंह	२६
खुली जेल भी बनाने की कथा जरूरत है	—वातचीत	३३
मुंगावली की खुली जेल गुना जिले में महान घटना	—व्ही. पी. सिंह	३५

१६, राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

हमारे छायाकार

मुंगावली में खुल रही खुली जेल के अवसर पर प्रकाशित हुए इस विशेषांक का आनर्पक मुखपृष्ठ एवं अन्दर के भी लगभग सभी छाया चित्र 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक के सह-सम्पादक श्री अनुपम मिथ के हैं। अनुपम जी के चित्र हमारे पाठक चिखले प्रकाशित चार विशेषांकों में देरा चुके हैं। 'भूदान-यज्ञ' के प्रकाशित होने वाले सामान्य अंकों में भी इनके चित्र नियमित प्रकाशित होते रहते हैं। गुशल छायाकार श्री अनुपम के चित्र देश के सभी प्रमुख समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

—सम्पादक



अनुपम मिथ

प्रकाशकीय

इस वर्ष में सर्वोदय साप्ताहिक 'भूदान-यज्ञ' का यह पांचवा विशेषांक है। पाठ जानते हैं कि हम व्यावसायिक पत्र नहीं हैं। अलवारी बागज के अवाल और-आसमान पर चढ़ते हुए भावों ने क्रांतिक रूप से सम्पन्न अछड़े-अछड़े व्यवसायी पत्रों को दुर्भिक्ष-पीड़ितों की हालत में सा दिया है। अतर हम पर भी हुआ है। फिर भी गांधी जयन्ती के विशेषांक के बाद समर्पणकारी बागियों के लिए मुगावली, मध्यप्रदेश में खुल रही खुली जेल पर यह विशेषांक हम निवाल पाये हैं तो इसका मात्र कारण सर्वोदय विचार को समर्थन देने वाले व्यक्तियों का बाहुल्य है। यह समर्थन इस वर्ष हमें कई क्षेत्रों और बर्ष प्रचार में मिला है। बागज की बन्नी ने तफसील पर प्रतिबन्ध लगा रखा है नहीं तो हम कृतज्ञतापूर्वक उसके नामों का उल्लेख करते।

समर्पणकारी को वा खुली जेल में आना एक ऐसी घटना है जो दण्डशास्त्र और अपराधियों को समाज में पुनर्प्राप्त करने के प्रयत्नों में—स्वयं समर्पण से कम महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन हर ऐतिहासिक घटना एक चुनौती होती है और हम जितनी तत्परता और तैयारी से उसका सामना करते हैं उतना ही बेहतर उपयोग इतिहास था हमसे हो सकता है। हमें विश्वास है कि मध्यप्रदेश सरकार और बन्वल घाटी शान्ति मिशन दम चुनौती को अवसर में बदलने में समर्थ होंगे। छाया है यह विशेषांक इस चुनौती को स्पष्ट करने में सहायक होगा।

विशेषांक हम निवाल सके बागीर हमें मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री प्रकाशचन्द्र सेठी, जेल मंत्री वृष्णपाल सिंह, नूचना एवं प्रशासन सचिववार राजेंद्रलाल हाण्डा, गुना के जिलाधीन विष्णुप्रताप सिंह और शान्ति मिशन के देवेन्द्र शुभाकर गुप्त, महावीर सिंह और हेमदेव चर्मा का सहयोग मिला। विशेषांक आर्पक हाथों में है बागीर दगरे लिए मेरे सहयोगी अक्षर कुमार गंग और अनुपम मिथ ने जी लोड मेहनत की, बागीर सत्येन्द्र त्रिपाठी और विष्णुशंकर पन ने व्यवस्था सभाली और बागीर ए० जे० प्रिंटर्स के अरुन नरेन्द्र, जनकराज जी और पुत्तीलाल जी ने इसे बावजूद हमारी बठिनाइयों में छाप दिया।

छाया है विशेषांक आर्पक पठनीय लगेया। —प्रशासक



जेलों को अस्पतालों में बदलना हो तो... महात्मा गांधी

अहमक दग के स्वतंत्र भारत में अपराध से तिनू धराधी नदी होये । अपराध रने वाले को दण्ड नहीं दिया जायेगा । पराध धन्य किनी भी रोग की तरह एक थ हो ही है । इन रोग की उत्पत्ति प्रचलित आत्मिक व्यवस्था से होती है । इसलिए भी अपराधों को, जिनने हलाक तक सामिन , स्वतंत्र भारत में एक रोग ही माना जायेगा रीर ऐसी दृष्टि रखकर ही उनकी चिकित्सा होगी । इस प्रकार के भारत का निर्माण कभी असम्भव होगा या नहीं—यह एक अलग बात है ।

स्वतंत्र भारत में हमारे जेलों का स्वरूप क्या होगा ? वहाँ सब अपराधियों को रोगी मानकर चला जायेगा । इस दृष्टि से हमारे जेलों को इन प्रकार के रोगियों की चिकित्सा करने की रोग बन्गाने के धर्मोपामय-र्यसे बनाया जायेगा । अपराध बोर्द शोकिया नहीं करता । यह तो मन की चिह्नित वा चिह्न है । चिकित्

रोगों के लक्षणों का पहले निदान किया जाना चाहिए और फिर उनका इलाज ।

यदि जेलों को अस्पतालों में बदलना तो इसके लिए भी किन्हीं बड़ी-बड़ी इमारतों या भवनों की आवश्यकता नहीं है । किसी भी देश में इसकी आवश्यकता नहीं है, खासकर भारत जैसे गर्मीय देश में । जेल के कर्मचारियों का दृष्टिकोण अवश्य ही अस्पतालों के चिकित्सकों और परिचर्या करने वालों जैसा होना चाहिए । और जिस तरह रोगी अस्पताल में यह महसूस करता है कि वहाँ के कर्मचारीरोग उसके मित्र हैं, जेल में अपराधी को उसी प्रकार महसूस होना चाहिए । उसे अनुभव होना चाहिए कि कर्मचारीरोग उसे किसी भी तरह लग नहीं करना चाहते बल्कि उसके मानसिक स्वास्थ्य को पुन लौटाने में मदद करना चाहते हैं । जब सरकारी की इसके लिए आवश्यक भादेश निकालने चाहिए; किन्तु जब तक यह नहीं होता तब तक भी

जेल के कर्मचारी अपनी प्रशासकीय पदवि को बदलने के लिए स्वयं ही बहुत कुछ कर सकते हैं ।

जेल में अपराधियों का बर्तव्य क्या है ? उन्हें आदर्श कैदियों के समान बर्तव्य करना चाहिए । जेल के अनुशासन को तोड़ने से पूरी तरह बचना चाहिए । जो भी काम उन्हें सीधे जाय, उन्हें चाहिए कि वे उन्हें मनोयोग के साथ करें । उदाहरण के लिए कैदियों को अपना भोजन स्वयं बनाना होता है, उन्हें बाल, चावल भजना भोजन की जो सामग्री दी जाती है, वे उसे भलीभाँति साफ करें, ताकि उसमें ककड़न रहने पाये नहीं न किसी भीर तरह वा कोई बूझा बर्कट !

कैदियों को अपनी हर छोटी-बड़ी शिक्षामय कर्मचारियों के सामने बड़ी ही शालीनता के साथ रखनी चाहिए । वे अपने छोटे-से समाज में पारस्परिक व्यवहार भी ऐसा समूहान कर करें जो उन्हें जेल से बाहर जाते समय जेल में धाने के समय से अच्छा व्यक्ति बना सकें ।

क्या डाकू भगवान ने पैदा किये हैं... विनोबा

डाकू कोई जन्म से नहीं होते । हम जैसे भाई वे भी हैं । डाकू बोन हैं और कौन नहीं है, इसका फंगना करने वाला तो परमेस्वर है । कुछ नीम दुनिया में डाकू बने जाते हैं । यह प्रकृति नहीं कि केवल वे ही डाकू हैं । परमेस्वर की निगाह में कुछ दूसरे लोग अविद्यमान रूप में भी होते हैं । परमात्मन हमें भी 'डाकू' की उपाधि दे सकता है । वे डाकू बना भगवान ने पैदा किये हैं ? डाकूओं के दो नरुनं होनी हैं क्या ?

चार हाथ, चार पैर होते हैं क्या ? हमारी तरह ही एक नाक वाले, दो पैर वाले भादमी को 'डाकू' कहना ठीक है क्या ? कोई आदमी डाकू पैदा नहीं होता । हम दूसरों को लुटते हैं, चूसते हैं, कब्रुम बनते हैं, दूसरों की परमात्मा नदी करते निष्ठुर होकर जीवन बिताते हैं । उसी का यह नतीजा है । हरेक के दिल में अच्छे बुरे स्वभाव छलते रहते हैं । भयवान की जिन पर भयद कृपा होती है उन्हीं को सारा सन्निवार माने हैं । इसलिए हमेशा के लिए कोई डाकू नहीं होता । दो बातें ध्यान में रखने लायक हैं—एक तो जन्म से कोई

बुरा नहीं होता और दूसरा कायमी तौर पर कोई बुरा नहीं होता । इसलिए हमारे मन में दया हो, महादुर्मि हो ।

सुमति-कुमति सबके उर रहती

हमारे दिल में डाकू के लिये बड़ा प्यार है । हम जानते हैं कि वे बड़ा दुःख हैं, तिरकं उनको शांति मिल पटरी पर चली गयी है । जैसे वे दिल के सीधे और सरल होते हैं । डाकूओं का परिवर्तन अच्छे साधुओं में, सिपाहियों में और नगरिकारों में हो सकता है । इसलिए जब अपने धारको भूज जाना है



तो ऐसे बदतर काम कर सकता है कि जानवर से भी नीचे जा सकता है। ऊँचा चढ़े, तो दबता चढ़ सकता है, त्रिभुजा देवता भी नहीं पड सकता। नर-देह ऐसी देह है, जिससे मनुष्य परमेश्वर को पा सकता है। ये बागी भाई क्यों न ताम्रु बनें ? जोरदार इज्जत है, पटरी बदलने भर की देर है। ऐसे लोगों को प्यार से जीतना बहुत सरल है। जो डाकू बहलाने हैं उनमें से भी उत्तम शान्ति कायम करनेवाले निकल सकते हैं। सच्चा पश्चाताप ही तो उनमें से महात्मा जी पैदा हो सकते हैं। हमें डाकूओं को भी अपना भाई मानना चाहिए। इग्नान-दग्नाल में कोई फर्क नहीं करना चाहिए। 'मुमति-मुमति सबके

उपर रहें हा' ऐसा मान कर सब ादल एक करने की कोशिश करनी चाहिए। प्रेम से मसले हल होते

भगवान ने मनुष्य को तीन धनमोल देन दे दी है। एक देन है—बोलने की। जानवरों की यह देन नहीं। प्रेम से हम सत्य बोलें। रामजी का नाम लें। दूसरी देन है—हाथ। हाथ बदर के भी हैं। पर वह तोड़ना धीरे उखाड़ना ही जानता है, बोना नहीं। हम हाथ से तरह-तरह के सेवा के काम करें। 'हाथ रिये कर दान रे' दुखियों को बचाने के लिए, दूसरों की मदद के लिए ये हाथ हैं। भगवान की तीसरी धीरे सबसे बड़ी देन है—हृमददं दिल। सदा के लिए कोई निठुर नहीं हो सकता है। भगवान ने

सम्न ादल लक्ष्मी का नहीं दिया। हम सब क साथ हृमददं करें।

समाज यह तप कर ले कि हम दून गुम-राह भादरों को ज्यादा सवायेन नहीं, सरकार भी सोचे कि जो लोग अपना मुनाह बचल करते हैं उनके साथ सलती न बरते। पुनिम उनके साथ युवा व्यवहार न करे। इस तरह प्रेम, सद्भाव से यह सत्समा जहर मुलक बनती है। मान-धन का स्वर्ण होने पर दुर्जन एक क्षण में सज्जन बन सकता है। मैं पूरे विश्वास से मानता हू कि यहाँ लोगों की मानवता का स्वर्ण होगा, ऊपर से खना हट जायेगा धीरे भीतर का प्रकाश बाहर आ जायेगा। यह सज्जनों का क्षेत्र सलती का जाहिर होगी। अनेक सज्जनों का उदय यहाँ हो रहा है। हम हृमददं धीरे थडा से काम करें।

शांति के पुजारी, त्याग के प्रतीक
साहस के स्तम्भ
महान युग पुरुष, सर्वोदय नेता
माननीय श्री जयप्रकाश नारायण जी

एवं

माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी जी
का

हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं

प्रो० शानन्दकुमार पालीवाल
शानन्द टैक्सटाइल्स
मुगावली (म० प्र०)

कार्यालय नगर पालिका
मुंगावली

मुगावली मण्डल गुना में भारत समाधि डाकूओं के लिए निर्मित खुली जेल के उद्घाटन समारोह के अवसर पर माननीय श्री जयप्रकाश नारायणजी, सर्वोदयी नेता, एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्दजी सेठी, मध्यप्रदेश, का नगरपालिका मुगावली अपने नगरवासियों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करती है।

हरिहरप्रसाद लिटोरिया, रामदयाल सोनी

मुन्द नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका मुगावली

अध्यक्ष एवं समस्त पाठोपाठ
नगर पालिका मुगावली

मध्यप्रदेश सरकार का सराहनीय और कल्याणकारी कदम

जयप्रकाश नारायण

मेरे विवे मह बड़े सन्तोष का विषय है कि मध्यप्रदेश शासन ने पूरा सोच-विचार करने के बाद सूची वेतन के सम्बन्ध में मेरे भाषण को स्वीकार किया है। चम्बल घाटी तथा बुन्देलखण्ड में बागियों के फालत-मार्गण में जुर्म और मुर्दाबियों की कठिन समस्या का एक नया हल देना है जो समाज तथा मुज-रिफों दोनों के विपरीत दूरगामी दृष्टि से वर्तमान प्रयास से अधिक कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है।

इस प्रकार के धाराविधियों के साथ मजरा होने के बाद चित्त प्रकाश का बर्णन ही जिनमें कि जो कलर खादिने के दर्शनी मे वो मजरा बाटने के बाद कच्चे लामारिक बनकर निकलें किनी भी मजरा कण-शामक का उद्देश्य यह नहीं हो सकता कि अन्न जो कृषान के प्रमुख भाग के बनने काग और दाग के बदलें दाग ही बलिह यह हो सकता है कि जो कलर का बागिन का अन्य प्रकार का बागिनी का उनका सुधार हो और यह कल्याणकारी बन सके।

इस उद्देश्य को सामने रखा जाए तो चम्बलघाटी और बुन्देलखण्ड के धारम-सर्मागियों को दण्ड होने के बाद पुरानी विषम को ही जिला में यदि रखा जाता तो जो भी उनके सामन्य और हृदय पर नये सत्कार पडे हैं को भी गुण जाने और वे पहले के मुराबने में और भी सुधार बनकर निकलने। इसविधे बेचम बागियों के हिन की दृष्टि से ही तही बलिह मयाज के हिन की दृष्टि से भी यह धारमयक था कि उनके लिए नये प्रकार की वेतन बयार्द जाती जिसे सुनिता मे सुनी वेतन बहने हैं। हमारे वहा भारत मे धारम जगहों पर सुनी वेतने हैं और उनमें पच्छे प्रमुख धारम है।

मैं ही प्रकाशचन्द्र सेठी, उनके प्रिय तथा जेनमयी श्री इच्छामान मिश्र, उनके प्रिय मयल तथा प्रमात्यन को बयार्द देता हू कि उन्होंने हिम्मत बतने सेमे प्रसिद्ध डाकुषा और बागिना के लिए एक प्रदुद विचार और दृष्टि की वेतन का विचार किया है।



खुली जेल : दण्ड-विधान के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम

—प्रकाशचन्द्र सेठी

भारत में महान् वेग, क्रांति के लान नेटुक के अन्य दिशा पर भारतमार्गणकारी सुधारें बाधुओं के लिए सुनी वेतन का उद्घोषण भी जयप्रकाश नारायण के हाथों ही रहा है। इस सुनी वेतन मे वेतन रहे जो इन्धन से घाते धाराय कसीदार कर चुके हैं। उन पर चलाया गये सुधारों में



प्रकाशचन्द्र सेठी

उन्हें दण्ड सुधार का सुधा है। इनमें मे प्राग हल क्रांति प्रवेश पर बाहर रह कर फिर वेतन के बागन का सुधा है। इन सुधार बने

सांसात्रिक परीक्षण का दूगम चरण यही समाधा तथा कि धारमसुधार के मागे पर धारमर एत सुनयुर्द बाधुओं को और धारम सुविधाएँ दी जायें जिनमें कि धारम मयाज म यलर और कानिपुर्द तथा सुनी जीवन डिजाये का उन्ह धारमर सिद्ध सके। यह क्रांति समाज सुधार के क्षेत्र मे जये ही एक परीक्षण है, लेकिन दण्ड विधान के क्षेत्र मे क्रांति मे बच नहीं।

इस महान् कार्य के लिए हम मध्यप्रदेश-राज्यी सर्वोच्च विचार धारा, सर्वोच्च कार्य-कार्यालय के सक्रिय मयल म और विधि कर्मी जयप्रकाश नारायण के मद्विधारा के प्रति धारमारी हैं। यह कार्य दण्ड वहा है कि धारम ही बच पर घने वे ता इमे मयल कर सकता है और म मयाजवेतनी बने ही। इन दोनों वहा के विवे-दण्ड प्रकाश और उनके विचारों तथा कार्य मे सुने समाजधर डार ही यह किया जा सकता है और धारम नल किया जा सकता है। इसके लिए मैं भारत और मध्यप्रदेश के जनमग को और मे जयप्रकाश बाधु और उनके भाषियों के प्रति

धारम प्रकट करता हू। जहाँ तक हम लोगों का मयाज है मैं वेतन एत ही दण्डम विवेकन बन सकता हू। धारम मयप्रकाश के प्रति हमारी मदधारना ही नहीं, अन्य धारमारी है। इसविधा उन दिना मे अधिक से अधिक मयप्रोग देना मैं धारम और धारम का बर्दम मयप्रकाश हू। धारम विम राह वहा जये है यह बाटा मे एकदम सुन नहीं, फिर भी मयल हवे दिव है और उनारी धारम के लिए धारम सुने महान् का मैं फिर मे धारमारी हू देना बाधुका। यह मयाज मयाज सुधार और मानर को मयरी उन्निर जा ती है ही, इया। प्रदेश की मयरी सुनयी दण्ड मयप्रकाश मे सु धारमारी इन का भी एक माय उन्निर यही है।

मेरी यह दृष्टि क्रांति है कि मह प्रयास मयल हो, सुधारें मार किने मे मयाज के उपायों का बन जये और जत करारा, के हेतु मयरी, धारम और क्रांति के धारमारी का धारम मे धारम मयाज प्रयास ही।

यदि भूतपूर्व टेक्निशियन-कर्मचारी
श्री मलहोत्रा ने

एक लघु उद्योगपति के रूप में
अपना निजी व्यवसाय सफलता के
साथ स्थापित कर लिया है...

तो इस का श्रेय
हेवी इलेक्ट्रिकल्स (भोपाल) को जाता है।

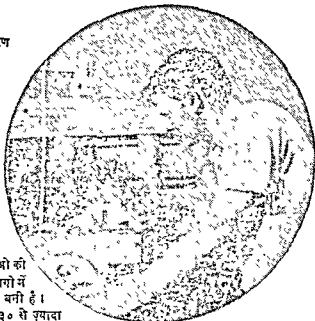
हेवी इलेक्ट्रिकल्स (भोपाल) का जन-साधारण
के जीवन से बड़ा गहरा संबंध है।

उदाहरण के लिए श्री मलहोत्रा और
उन्हीं जैसे बहुत से व्यक्तिगो को
सौजिये जिन की इच्छा थी कि अपना
स्वयं का लघु उद्योग स्थापित करें।
परन्तु उनकी फुल पूँजी या तो उनकी
कुशलता थी या सीमित वित्तीय साधन।
परन्तु दोनों कभी नहीं।

हेवी इलेक्ट्रिकल्स उनकी इच्छाओं की
पूर्ति में सहायता देने के योग्य हो सकी है।
हेवी इलेक्ट्रिकल्स को अपने विभिन्न उत्पादनों के
लिए विभिन्न प्रकार के कल-मुर्तों और कच्ची
सामग्री की आवश्यकता होती है। इन आवश्यकताओं की
पूर्ति के लिए हेवी इलेक्ट्रिकल्स देश के विभिन्न भागों में
लगभग ८०० सप्लायर्स की स्थापना का साधन बनी है।

साय-साय भोपाल में फ़ैक्टरी के आस-पास ही ३० से ज्यादा
सहायक यूनिट स्थापित हो चुके हैं, इनमें २६ यूनिट स्थापित हो रहे हैं।
इनमें से ५०% यूनिटों के मालिक हेवी इलेक्ट्रिकल्स के गृहपूत
कर्मचारी हैं। श्री मलहोत्रा इन्हीं में से एक हैं।

इन लघु-उद्योगपतियों को हेवी इलेक्ट्रिकल्स की ओर से
सहायता में मूल्य टेक्निकल सहायता, जैसे बीज की सुविधाएँ,
यूनिट पर निरीक्षण की सुविधा, कच्ची सामग्री की व्यवस्था,
कल-मुर्तों तानने के लिए विशेष औज़ारों की व्यवस्था, टेक्निकल
कर्मचारियों के मुफ्त प्रशिक्षण की व्यवस्था आदि शामिल हैं।



हेवी इलेक्ट्रिकल्स (इंडिया) लि.

भोपाल

(मालक सरकार का एक संस्थान)

JASONS-2243-His

निपट दीवारों, तालों, सीकचों और विशेष सुरक्षा पाटें जैसी भौतिक सावधानियों न्यूनतम हैं और जहाँ सामान्यमान पर प्राधत्त एक ऐसी व्यवस्था है जो बन्दी के मन में उन सभ्य के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना पैदा कर सके कि जिसमें वह रहता है।

इसमें वे श्रापसमर्पित डाकू रहे जायेंगे जिन्हें सात और उससे ज्यादा वर्षों की सजा हुई है।

मुपायकों का शिबिर मुख्यतः रूपि पर प्राधारित होगा और बन्दियों का अधिकतर धम सेती में ही लगेगा। सेती के मतानुसूची पालन और डेरी का काम भी होगा। धीरे-धीरे सारी, सुधारों, सुहारी और शिबिर की ज़रूरतों के मूरी करने वाले धर्म भी शुरू किये जा सकेंगे। प्रारम्भिक तौर पर पचास बन्दियों की सेती और बागवानी, दस को डेपरी, दस को मुर्गी पालन, पाँचको दर्जीगिरी और धुलाई, बीस को शिबिर के रखरखाव के काम दिये जायेंगे। माना गया है कि प्रौद्योगिक तौर पर पाँच बन्दी रोज काम के योग्य भी नहीं हो सकते। ही सकता है कि शुरु के चौदह काम नहीं हो लेकिन जैरो-जैस उपकरण बरेगा और लाभ होगा सखार द्वारा काम करने वाले बन्दियों को बोनस दिया जा सकता है। काम करने वाले प्रत्येक बन्दी को प्रति दिन साठ पैसा दिया जायेगा। अच्छे कार्य पर सप्ते तक का वार्षिक पुरस्कार दिया जा सकता है। पारिश्रमिक का एकनिहाई धन बन्दी को भेज सकता है और बाकी का एक निहाई उसके नाम पर जमा किया जायेगा जो कि छुट्टों पर उसे दे दिया जायेगा। प्रत्येक बन्दी को उससे काम का कुछ न कुछ पारिश्रमिक मिलना जरूरी है।

बन्दी शिबिर के पूरे प्रदान में धूमने-फिरने के लिए स्वतंत्र होंगे। निपटारी रखने वाले बम्बकारी बिना मखर बाहर के उनकी निविधियों को देखरेख करेंगे। बन्दियों के लिए सुबह पाच बजे से रात नौ बजे तक का कार्यक्रम बनाया गया है। इसमें प्रार्थना, गायन, भोजन, काम, विश्राम, सेनकूट, मनो-ज्ञान और पठन-पाठन होगा।

बन्द जेलों में जो छुट्टियाँ होती हैं वे सुबही जेल में भी होंगी।

बन्दियों को भोजन, कारावास सहिता में वसित 'जी' धंणी के बन्दियों जैसा मिलेगा। प्रतिदिन का भोजन व्यय वाकार भाद के उचार-बढ़ाव के कारण तय नहीं किया गया है।

बन्दियों को अपने कपड़े पहनने की छुट्ट होगी। जिनके पास अपने कपड़े नहीं होंगे उन्हें दो सफेद पायजामे या धोतियान, दो सफेद कुर्ते या कमीज, दो सूती टांगिया और तीन महीनों में एक सूती तोलिया दिया जायेगा। विस्तर के लिए एक गद्दा, एक दरवा या मोनागट्टी, दो चादरें, एक तेलिया और दो स्मल दिने जायेंगे। बीमारी की हासत में पम्बलों की सखा बड़ाई जा सकेगी। बर्न बसे की एक बानी, एक बटोरा और एक पिलास।

एक पाटें टादम सहाय सजें और पूरे समय के लिए एक गम्माउच्छर या सुरूप पादिकारन की सेवाए उपलब्ध होंगी। ये सेवाए पररिस्वर्न के अनुसार बड़ाई जा सकेगी।

साल में दो बार कुल १० दिनों की पर जाने की छुट्टी प्रत्येक बन्दी को मिलेगी। इसमें यात्रा के दिन शामिल नहीं है। यह छुट्टी की श्रावधि सुबही जेल में बिनाई गयी श्रावधि में ही मानी जायेगी। छुट्टियों मुना के जिला न्यायाधीश स्वीकार करेंगे।

सजा में छुट्ट महीने में पन्द्रह दिन; सद्व्यवहार पर तीस दिन। कठिन परिश्रम और जेल प्रशासन में सहयोग पर अधीशक साल में तीस दिन की विशेष छुट्ट दे सकेंगे। अधीशक की सिफारिस पर पुलिस महा-निरीशक (पाराकाम) साल में साठ दिन की छुट्ट दे सकेंगे। राज्य सरकार द्वारा जव-त दी जाने वाली छुट भी मिल सकेंगी।

बन्दी अपनी कॅन्टीन सभ्य बना सकेंगे। कॅन्टीन के लिए शुक में पाच सौ रुपये की भी व्यवस्था की जायेगी। यह पूरा नाम में उचित बिबनों में बायन ली जायेगी। शिनाय-किनाय देखने वाले बम्बकारी की पन्द्रह रुपये प्रति साह भत्ता दिया जायेगा।

सुबही जेल के बन्दी महीने में दो बार

मुनावातियों से मिल सकेंगे। मुनावात का समय घंटे भर का होगा। मुनावात नजदीकी देखरेख में नहीं होंगी। मुनावातें और उनका समय जेल अधीशक के नियुक्त और विवेक पर बढ़ सकेगा। बाद में जब सरकार को उचित लगेगा तो बन्दी की रिहाई की पूर्व तैयारी के लिये बन्दी श्रान्त परिवार प्रतिनिध-पूह में रत सकेगा।

सरकारी सचं पर बन्दी महीने में चार पत्र लिप सकेगा। अपने सचं पर रह चाहे जिनके पत्र लिप सकता है। पत्र पाने पर कोई सीमा नहीं होगी। अपने-जाने वाले पत्र को एक जिम्मेदार अफसर देवेगा।

बाचानालय में पुस्तकें, रसिनाए और भाषवार रहे जायेंगे। जेल अधीशक की अनुमति से बन्दी अपनी लितायें और कामाज भासि रत सकेंगे। रोमनों की उब तांके और बन्दियों को शारीरिक और मानसिक रूप में स्वस्थ रखने के लिए सेलकूट की प्रासाहन दिया जायेगा। फिके दिनाई जायेंगी।

सबसे बडा दण्ड होगा बन्द जेल में बापनी और मह दिया उग बन्दी को जायेगा जो सुरक्षा व्यवस्था को तोड़ेगा और अनुमानन को बुरी तरह भंग करेगा। लेकिन दण्ड में उगकी शत्रु तन श्राजित छुट्ट बारी नहीं जायेगी। छोटे दुमों में—बैसाकनी, छुट्ट की समाप्ति, सुभाना और विनापापकार का निवम्बन शामिल होंगा।

बन्दी प्रायम में अपने पाच-षच पुनेने और दू पाचाप छोटे काराखों का दण्ड देने पर जेल अधीशक को मनाह देगी। धन्य मामलों में भी पाचन में मलाह सी जायेगी। श्राजि मिलने में दो कार्यकर्ता रतेने जो जेल अधिकायियों और बन्दियों के बी मध्य में शुक गमने का कार्य करेंगे।

कुछ और विशेषतायें: गाना बन्दी स्त-बायेंगे। गाना बनने काठो का मुनाय बर्द करेंगे। बंदको में राग को गाना नहीं मगाय जायेगा। सो मुने-मुगियों के साथ मुर्गी पाठन और तीन मन्दी को मनेने के साथ पाठ-पाठन करेगा होगा। रूपि अधिकायों को प्राय मेवन बन्दियों की महापना करें। पुनिस अधीशक की बावरलिस गेट दिया जायेगा।

खुली जेल कैसी हो ? : बदलते लचीले मानदण्ड

जिसमें दीवारें न हों, ताले न जड़े हों, पीचने न हो और न हथियारबंद रखने हों, सुरक्षा के इन बाहरी माथनों को जगह पर सामाजिक-शासन की ऐसी व्यवस्था हो जो बन्दिनों में अपने माथियों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जगाये।

सुनी जेल की परिस्थितियाँ सामान्य जीवन के विनती-जलनें हैं। वे बन्दिनों के व्यवहार और हठिष्टियों को इन प्रकार प्रभावित करें कि उनके सामाजिक नैतिक और धार्मिक बुजबुझ में मददगार साबित हो सकें। इसी बन्दिनों के धारणस्थान की भावना लोगों और हथियाँ बँधा होंगी कि छतने के बाद वे वास्तु का सम्मान धरन वाले धार्मिकवर्धन व्यक्त करें।

सुनी जेल ऐसे स्थान में हो जो न बिल्कुल गहरे में हो न गहरी झरझरी से दूरी दूर हो कि बन्दिनों के शोषण सामाजिक और शुरुजक सम्पर्क टूट जायें। गहरा से पक्कीम से दीवार किलोमीटर की दूरी दीन गहरी होनी। यह जरूरी है कि सुनी जेल रेल, मोटर गाँव मार्गों से जुड़ी हुई हो। पानी मिलने के भरपूर साधन हो। बिजली होना भी जरूरी है। अगर नियमी से लाइन न लाई जा सके तो एक जनरेटर लगाया जायित्।

साधारणतः सौर पर एक सुनी जेल में दो से पाँच से बन्दी रखे जाते जायित्। लेकिन कुछे ज्यादा से ज्यादा दासी की व्यवस्था बनाई में रचना बेहतर होना ताकि उन्हें वैयक्तिक रूप से सम्भर जा सके और उन पर समूह का धमक हो सके।

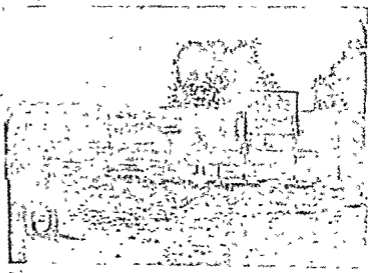
इसको सुनी जेल में बन्दिनों को या तो बंदरों में रखा जाय या कुटीरों में। एक कुटीर में बीस और बँटन में पचास बन्दिनों के लिए जगह हो। पढ़ा तक सम्भव हो कराये, स्थानपर और पक्क शौचालय भाट बन्दिनों पर एक हो। सरकारी सुनी जेल में निवास के लिए ऐसी सामग्री का उपयोग किया जाये जो बाहरी से हटायी जा सके।

एक ऐसा सभा भवन जरूरी है जितने कई तरह की गतिविधियाँ चलाई जा सकें।

बाहर के लोगों की सुनवँठ और जानवरों को राकब के लिए सुनी जेल की सीमाएँ तय करने वाली बाई व्यवस्था होनी चाहिए। बागड पार्क नाट्यरंग मारो से यह काम किया जा सकता है।

सुनी जेल में गये सभी बन्दी भेजे जा सकत है जितने अच्छे सामरिक बनने की पूरी मानवीय सम्भावनाएँ हैं। फिर भी बन्दिनों के चुनाव के लिए कुछ मानदण्ड तय होने ही चाहिए। ऐसे बन्दिना का प्राथमिकता दी जा सकती है जो सादरन धाराधीन न हो राज्य के रहने वाले हो, उच्च शैली से पबलन बने की उमर के हो और उनका शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो उन्हें एका कोई राग पढ़ने न हुआ हो। जो सुने वालवरण से फिर हो सकता है, व्यवहार अच्छा हो, और मानसिक रूप में स्थिर हो, अच्छे पारिवारिक सम्बन्ध हो, जिन्होंने सजा की कुछ अवधि कारावास में काटी हो और साधारण तोर

पर नियमों रिहाई पाव प्राप्त में पढ़ने होने वाली हो। जो बन्दी वैरोल या घर की छट्टी पर जा चुके हो उन्हें प्राथमिकता दी जा सकती है। जो सुनी जेल में दाम करान को तैयार हो। सुनी जेल में भागे न हो, और ऐसे अपराधों के लिए दण्डित हो जिन्हें कोई गहरी मानसिक गडबडी के बिना किया जा सकता हो। बिजने पित्तक कोई और सामान्य सदानन के सामन न हो। प्रारम्भिक चुनाव स्थानीय चुनाव समिति द्वारा किए जाए जिनमें जेल अधीक्षक, मेडीक ऑफिसर, बरिष्ठ जेलर और जेल के कर्काला अधिकारी शामिल हो। समिति जिन बन्दिना का चुने उन्हें गहरे सुनी जेल के गजदी। बन्द जेल में भेजा जाय ताकि वहाँ सुनी जेल के अधीक्षक उनसे पूछताछ कर सकें और अन्तिम चुनाव करने उन्हें सुनी जेल की तैयारी का प्रस्तावण कर सकें। सुनी जेल में बन्दिनों का बिना हथियारों-बेडी का ले लाया जाय ताकि उनका धारणविषयम तब भाव धाये और उन्हें लगे



सु गावलो (मध्यप्रदेश) की सुनी जेल

कि उन पर भरोसा किया गया है। बन्दिनों को इस तरह ले जाने के लिए पहरेदारों की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

सुली जेल के पास अपने बाहन होने चाहिए नाकि जेल कर्मचारियों, बन्दिनों और मिलने जुलने वालों को साया-पहुँचाया जा सके। सामान लाने से जाने के लिए बाहनों की जरूरत तो होती ही है।

सुली जेल के लिए एक अभीष्टक, एक उपभोक्षक और एक जेलर होना चाहिए। बन्दिनों की संख्या पर इन परों में फेरबदल किया जा सकता है। इसके भलावा प्रत्येक दो सौ बन्दिनों पर एक जेलर, दो उप जेलर या नवत्यारू अधिकारी होने चाहिए। देयरेल करने वाले कर्मचारियों की संख्या बन्दिनों की संख्या का दस प्रतिशत हो। इन कर्मचारियों का उपयोग बन्दिनों के साथ वाहुर भ्राने-जाने में और दूसरे कामों में भी किया जा सकता है। प्रत्येक दो सौ बन्दिनों पर एक पारकून या सहायक जेलर हो।

पाच सौ बन्दिनों वाली सुली जेल में एक मेडीकल ऑफीसर और एक कम्पाउंडर होना चाहिए। जहाँ बन्दिनों की संख्या कम हो और पास में अस्पताल हो वहाँ के डाक्टर को भी नियुक्त किया जा सकता है। लेकिन यह जरूरी है कि डाक्टर दिन में एक बार दौरा करे। प्रत्येक सुली जेल में कम से कम तीन नर्स हो और गम्भीर बीमारों को जेल के या दूसरे अस्पताल में भेजने की व्यवस्था हो।

अक्षर ज्ञान, सामाजिक शिक्षण और अनुसूचन के कार्यक्रमों को चलाने के लिए कर्मचारी होने चाहिए। धार्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था होनी चाहिए। सुली जेल में जो भी उद्योग पंथा सिलखाया जाना हो उसे सिलाने के लिए योग्य व्यक्ति नियुक्त किये जाने चाहिए। सफाई आदि के लिए अलग से कर्मचारी होने चाहिए।

सुली जेल के अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रतिष्ठित होना जरूरी है। उनमें नेतृत्व, प्रामाणिकता और मानवता के गुण होने चाहिए। वे ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो बन्दिनों को संभलने और उनमें वैयक्तिक रचि देने को तैयार हों। अगर ऐसे प्रतिष्ठित

व्यक्ति न मिल सकते हो तो उनके प्रशिक्षण और तैयारी की व्यवस्था करके उन्हें नियुक्त किया जाये। सुली जेल की नीतियों और कार्यक्रमों पर विचार करने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों की बैठकें लगातार होनी चाहिए। सुली जेल के उत्तरदायित्व और परिस्थितियों के अनुसार ही इन लोगों को तनख्वाह और अन्य सुविधाएं दी जायें।

सुली जेल में काम ना तरीका और संगठन ऐसा हो जैसा कि इस तरह का काम वाहुर किया जाता है। इससे बन्दिनों को सामान्य परिस्थितियों में कामवाज करने की भावत पड़ेगी। नूकि अधिकार बन्दी गावों के होते हैं और खेती जानते हैं इसीलिए उनके पुनर्स्थापन की दृष्टि से उन्हें खेती करने का सौका दिया जाता चाहिए। खेती के अलावा और पर प्रापारित उद्योग-धंधे जैसे पशुपालन, मुंगीपालन, बागवानी, कल्लो ना रस निकालना आदि शुरू किये जा सकते हैं। उन्हें खेती के औजारों का रखरखाव, उनकी मरम्मत आदि सिलाई जा सकती है। बन्दिनों को उपयोगी रोजगार देने के लिए जेल विभाग या सरकार द्वारा छोटे-मोटे उद्योग चलाने जा सकते हैं। ऐसे कामों से बन्दिनों को रोजगार तो मिलेगा ही राज्य को कौछ भी कुछ भ्रामदनी भी हो सकती है।

बन्दिनों को बाप बनाने, नहरे लोदने, पुल, सड़कें और भवन बनाने, जगल नाटने या लगाने, खेती के लिए जमीन तैयार करने जैसे राष्ट्रीय महत्व के काम में भी लगाया जा सकता है। इससे बन्दिनों का पुनर्वसन होना ही देश के विकास में योगदान मिलेगा। और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से बन्दिनों के धम का सम्बन्ध जुड़ेगा। बन्दिनों से दो पातियों में भाठ घटे तब काम लिया जाना चाहिए। दिन का कार्यक्रम ऐसा बनाया जाना चाहिए कि बन्दिनों को सामूहिक प्रार्थना, अपनी पूजा-याठ, शिक्षा, मनोरंजन आदि के लिए पर्याप्त समय मिल सके। स्पोर्ट्स, राष्ट्रीय स्पोर्ट्स और रिवारों की बन्दिनों को छुट्टी मिल सकनी चाहिए। प्रत्येक बन्दी को उसके द्वारा किये गये कार्यक्रम पर परिष्मिक मिलना चाहिए। साम में से पाच से दस प्रतिशत तक वार्षिक बोनस भी दिया

जाना जाएगा।

सुली जेल के रख रखाव का खर्च बन्दिनों के पारिष्मिक से निकलना चाहिए। खर्च का हिसाब विद्युत् साध राज्य भर में बन्दिनों के रख रखाव पर हुए खर्च के आधार पर किया जाये। बन्दिनों को प्रोत्साहित किया जाये कि वे अपनी कमाई का एक तिहाई अपने परिवार को भेजें और दूसरा ही छुटने पर अपने पुनर्वास के लिए बचायें। बाकी की कमाई वे अपनी वैयक्तिक आवश्यकताओं पर एक सीमा में खर्च कर सकते हैं।

सुली जेल के जीवन का हर पहलू बन्द के दृष्टिकोण पर अक्षर बातता है, पर चर्चा गुधार के विशेष प्रवसर शिक्षा, कार्य अनुसूचन और धार्मिक कार्यक्रमों से मिलते हैं। इसलिये अक्षर-जान देने की व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक शिक्षण भी दिया जाना चाहिए। इसके लिए शिक्षकों के भलावा शिक्षण के अन्य साधन भी दिये जाने चाहिए। बन्दिनों को स्थानीय सामंजसिक व्यवस्था के सहयोग से कार्यक्रम करने की सुविधा मिलनी चाहिए। चुनिन्दा पुस्तकों का एक पुस्तकालय व्यवस्था रखा जाना चाहिए। पुस्तकें मनोरंजन करने के साथ शिक्षा देने वाली भी हो, यौन और धारापर सम्बन्धी पुस्तकें न रखी जायें। बन्दिनों को प्रोत्साहित किया जाये कि वे वाचनालय का पूरा उपयोग करें।

धार्मिक और वैदिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था जरूरी है। बन्दिना को उनके धर्म के अनुसार धारापना करने, धर्मबंध पढ़ने और अन्य गतिविधियां चलाने का पूरा सौका दिया जाये। मेलबुद, मनोरंजन आदि की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

मुक्तिधर्म और विशेष अधिकार दृष्टिकोण दिये जायें कि बन्दिनों में अन्वेष व्यवहार, सामाजिक उत्तरदायित्व और अपने धर्म में रचि पैदा हो गते। म्दतपना और मुक्तिधर्म प्रयोग में गजलता में अनुदान में बढ़ावो जायें।

सत्रा में छुट वर धारापर बन्द जेल की प्रवेशा सुली जेल में बसादा उदार होना

→
 चाहिए। लेकिन जो भी छूट बन्दी प्रार्थित करें वह उनकी बुन सजा की छाया से जगसा न हो। वैरोन या घर की छट्टी पन्द्रह दिन के लिए दी जाने पर उसी बन्दी को जो काम से काम हटा दें तब खुली जेल में रह चुका हो। बुकि खुली जेल में बन्दी का सामाजिक पुनर्स्थापन जरूरी होता है इसलिए सभ्य सभ्यता उसे रखने का उस पर उतरी धमक भी पड़ सकती है। इसलिए सभ्यी सुझावों को बन्दी को बन्दी छोड़ने के लिए विभिन्न विधियों के अनुसार उदार नीति बरतनी जा सकती है। वैरोन पर छोड़ कर बन्दी को काम पर या अपने परिवार के साथ रहने की सुविधा दी जा सकती है।

खुली जेल में बन्दी को काम के अनुसार भोजन दिया जाये। ऐसे बन्दि न दिये जायें जो उनके हंडो होने का स्वरूप दिखाते हों नहाने-धोने के लिए साधुन धारि दिये जायें। बन्दि को एक कैदीन बनाने की जाये और उनके साथ का उपवास मनोरंजन के कार्यक्रमों और उच्चस्तर पर बन्दि को मरद में रकवा जाये।

खुली जेल में चिट्ठीपत्री लिखने और पाने पर उदारता की नीति बरती जाये। बन्दि को के परिचार वाले जब मिलने कायें तो उन्हें तीन दिन रहने की सुविधा पुन दी जाये। शोधक भी अनुमति से बन्दी को उनके परिवार के साथ रहने जाने की इजाजत दी जा सकती है। लेकिन कायें से छट्टी न दी जाये।

अनुशासन के लिए जोर सजा पर नहीं बलक सामंजस्य और अच्छे व्यवहार पर दिया जाये। शोधकरी और बर्नकारी स्वयं अपने उदाहरण से नियमों के पालन की वृत्ति पैदा करें। प्रवेश बन्दी को शोधक से निवेदन और सिफारिश करने का अवसर दिया जाये।

खुली जेल में दिया जाने वाला दण्ड निश्चिन्त ही बन्द जेलों से भिन्न होता चाहिए। बुकि खुली जेल में बन्दी पर निश्चय ही सबसे बड़ी चीज है शारीरिक दण्ड या मौजिब प्रतिवण्ड कारण नहीं माने जा सकते। दण्ड में प्रचार निम्नलिखित हो सकते हैं—वेडावनी, पारिवर्गिक में बढोती या काम के निम्निले में हुए अचरारण पर जुमना, सजा की छूट में समाचित, चुप धरति के लिए विरोधाधिकारी की समाचित, बन्द जेल में वापसी और तो दित की छूट की समाचित। धार शोधक की दान में तो दित की छूट से अधिक की समाचित करती हो तो शारीरिक सजा की अनुमति लेनी होगी।

खुली जेल से छूटने वाले बन्दि को समाज में पुनर्स्थापना के लिए सरकारी प्रयत्न समाजसेवी एजेन्सियों को व्यवस्था करना चाहिए। रोजगार क्षमता में उनके ताम दर्न दिये जाने चाहिये और सरकार के बोयी बं हों के कामकारियों के पदों के लिए उम्मीद-बारी करने की छूट उन्हें दी जानी चाहिए।

**GANDHI SMARAK NIDHI
 RAJGHAT, NEW DELHI-110001**

Dear friend,

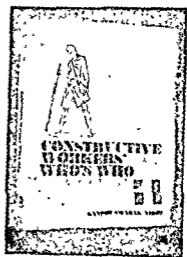
We have pleasure to inform you that the English Edition of the Constructive Workers, "Who's Who" is available now. Thus "Who's Who" contains the biodata of more than 2000 Constructive Workers with their photographs, as well as a separate Districtwise and Statewise lists of them.

Your copy can be had by paying Rs 10/- by Cash or by Money Order in the name of Gandhi Smarak Nidhi, Rajghat, New Delhi-110031. A separate plastic cover for the Volume is also available on payment of Re 1/-

Thanking you,

Yours sincerely

DEVENDRA KUMAR GUPTA
 Secretary



खुली जेल : 'अपराध-शास्त्र' के क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण योगदान

—श्रीमती ज्योत्सना शाह

निदेशक, सेण्ट्रल म्युरी प्रांश करिबनगत सविसेज

“खुली जेल” के शब्द में कुछ विरोधाभास सा मालूम होता है कि अपराध वह जेल है तो खुली कैसे हो सकती है? किन्तु ‘अपराध शास्त्र’ का जो नया सिद्धान्त प्रकाशित रहा है, उसमें ये कोई नई बात नहीं है। नयी कि जो समाज सजा देना है उसका हेतु कंड़ी को या गुनाहवार को ज्यादा से ज्यादा समय जेल में रखने का नहीं होता, बल्कि जल्दी से उसका सुधारकर समाज में वापस भेजने का होता है। इसलिए जेल में बिटना वकन किसी कंड़ी को रखना चाहिए, उसका आचार उसके सुधार पर होता है। यह जो ख्याल है कि पीरे-पीरे कंड़ी को मुक्ति का वातावरण दिया जाए, यह स्वयंसिद्ध और स्वीकृत किया हुआ अर्थात् सिद्धान्त है। हमारे यहां लोगों को लगता है जैसे यह कोई नयी बात ही और वे सवाल ध्रादि पूछते हैं। लेकिन अन्य देशों में इसका काफी अर्थात् प्रयोग किया गया है। कुछ देशों में तो जेल में जाने का मौका कम से कम लोगों को ही दिया जाता है। क्योंकि कंड़ी को जो समझाया है, जेल ध्रादि में रहने की, उसके अपराधी बहुत सारी समस्याओं में धिर जाता है। इसलिए यह जो ‘खुली जेल’ का ख्याल है—प्राचिन किया हुआ और अमल में लाया हुआ एक अर्थात् प्रयोग है। भारत के अनेक राज्यों में आजादी के बाद के पच्चीस वर्षों में खुली जेल के अर्थात् अनुभव लिये हैं। तब वर जब उत्तर प्रदेश में ‘खुली जेल’ का कार्य प्रारम्भ हुआ तब अन्य प्रान्तों ने भी धरने-धरने यहां प्रयोग करके देखा कि कंड़ी को कुछ वकन के बाद जब इसकी जाय कर ली जाए, व्यक्तित्व रूप से उससे परिचय-हो जाने कि समाज के लिए ध्रव वह इतना खतरनाक व्यक्ति नहीं है और उनको मुक्ति देने से समाज को ज्यादा नुस-सान नहीं होगा है बल्कि भला होगा है—तो इस तरह से चूने हुए कंदियों को, खास करके सभ्य धर्म के कंदियों को, खुली जेलों में भेजा जा रहा है। उसको वहा जाने के लिए कुछ

उत्साह बढ़ाया जाये इसलिए ‘रिजिशन’ (सजा में कटौती) वह भी कुछ ज्यादा दिया जाता है कुछ प्रान्तों में। इसमें अर्थात् एक तब यह है कि व्यक्ति के ऊपर धरने विवास का बोझ डाला जाता है कि जैसे और जितनी जल्दी वह धारम-विकास करेगा, उतनी जल्दी ही वह मुक्ति पा सकता है। बिल्कुल वकन और संपूर्ण स्वतंत्रता इसके दरम्यान में यह प्रयोग है। समाज, सरकार भी देख सकती है कि ऐसे कंदियों को भी पूरी मुक्ति देने में समाज को कोई खतरा या घोषा नहीं होगा।

ध्रव एक बात यहां मध्यप्रदेश के शम्भू को के बारे में सोची जाती है, वह यह है कि सजा के तुरन्त बाद ही उन्हें खुली जेल में भेजने का निर्णय ले लिया गया। भारत में इस प्रकार का प्रयोग पहला ही है। अन्य देशों में अगार स्वीडन का उदाहरण ही लिया जाय तो, वीस प्रतिशत अपराधियों को ही जेल में भेजा जाता है, शेष अर्थात् प्रतिशत लोगों को मुक्त वातावरण में, पर अनुशासन में रखा जाता है। दरम्यान का रास्ता है, हाँफ-बे हाउसेस इनको बोलते हैं जिसमें गुनाहवार दिन में बाहर जाकर अपना काम करेगा और शाम को आकर होस्टल में अपना समय बितायेगा,—इस तरह के काफी प्रयोग यहां हो चुके हैं।

हिंदुस्तान में जो कंड़ी खुली जेल में जाने है वे ज्यादातर अज्ञान वारावास की सजा पाये हुए होते हैं। ऐसे कंदियों के माय पांच-सात साल का प्रयोग बन्द जेल में करने के बाद ही उन्हें खुली जेलों में भेजा है। यह प्रयोग हमारे यहां, भारत में, महान प्रयोग होगा और इसलिए यह जरूरी है कि इन धरने धाराओं में जो पूरी तरह से गाँविक धरने और इसके लिए पूरी तरह से सोचकर तैयारी रखें।

एक धारम चीज यह है कि गुनाहवार को वकन में गिवा प्राप्त विवास में लिए और

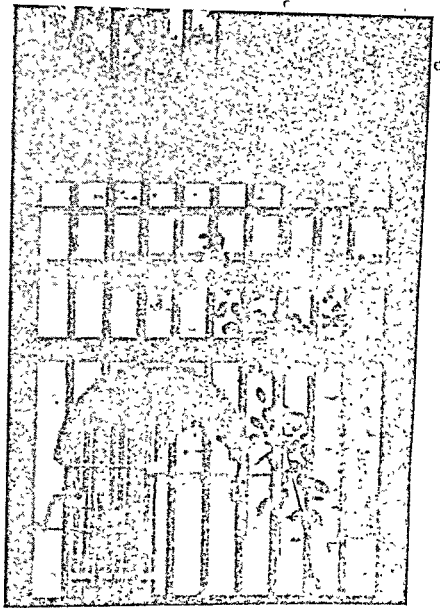
समाज के प्रति धरने उत्तरदायित्व के लिए तैयार करना। खुली जेल की यह जो संस्था तैयार होगी उसमें हर बन्द पर ध्यान रखा होगा। यह नहीं होना चाहिए कि बागी होने से या डाकू होने से कोई विशेष सुविधाएं उन्हें दी जायें। किन्तु जैसे समय-एकिया है वैसे-वैसे धरने लिये के प्रति परचताप के लिए और धरने उत्तरदायित्व के लिए उन्हें यह ख्याल रहे कि वे समाज के प्रति धरने के प्रति धरने रहे हैं। यह एक खास चीज होगी कि खुली जेल में उन पर न्यूनतम निगरानी रहे, बिल्कुल नहीं रहे यह तो नहीं होगा क्योंकि ध्रादिर में वह अनुशासन की ही एक सत्ता है। साथ ही बागीयो के सहकार में उन पर कंड या निगरानी का ध्रायोग न करें, जिससे हर एक कंड़ी, हर एक बागी को यह लगे कि समाज के प्रति उसे जो योगदान करना चाहिए उसमें वह लगा हुआ है। इस ख्याल से वे काम करें तो उनका उत्साह बढ़ेगा। अनुशासन के प्रति ये विरोध प्रकट नहीं करेंगे। जैसे-जैसे उनका व्यक्तित्व सुधार और उनकी प्रगति देखी जायेगी उसी तरह उनको विकास की सुविधाएं तथा पुनर्वास की सुविधाएं होगी। सहकारी भावना, सहकारी जीवन के लिए उनके समूह वर उपयोग (समाज को नुसगत पढ़चाने के लिए उनका समूह बना दिया था) हम समाज को नुसभाने में, समाज की महायत्ना करने में और खुद उनकी महायत्ना में वर सक्ते हैं। पूरे ध्राविक, सामाजिक विवास में धरने उनको जुटने का मौका दिया जाये तो यह प्रयोग दुनिया भर में एक अमिनव तरह का होगा और ‘अपराध-शास्त्र’ के क्षेत्र में भारत में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है—एसा माना जायेगा।

यह एक नया ही सबाल था हमारे सामने कि खुली जेल का स्वरूप क्या हो? लेकिन उनके दो-चार पहलू थे जिन पर सर्वोच्च

वाली है) उसमें इन लोगों की क्या सामंदायी होगी और उसमें इन लोगों का विकास के लिए बिना तरह से उपयोग किया जायेगा ?

उत्तर : इन प्रश्न पर मैंने इनके नेनाथो से बात की थी। प्रमुख रूप से माधोसिंह से जो बहुत खुरद व मून्-बूक वाला आदमी है। उसने मुझ से कहा कि अब हमने जब आत्म-समर्पण किया है तो हमारी यह अनुभवना है कि हमारे निकलने के बाद फिर हमें बड़ा कोई बागी मजदूर न आवे। हमने उसने कहा कि हम भी यही चाहते हैं। अगर आप लोगों का सहयोग शासन के माध्यम से उपलब्ध रहा तो हम हर बंदम पर आपसे सहयोग लेना चाहेंगे और शासन आप सबको हर बंदम पर सहयोग देना चाहेगा। हमसे सम्बन्ध पाठो न जहा बन्दूकें रोज धमकती थी, वे आदार्ज सामोय हो जायें और दुनिया में जो हम धेन की बदनामी लग गई है कि यहा सिर्फ डाकू ही पैदा होते है-वह सत्य हो जाय। हम पर उन लोगों ने हमें आश्वासन दिया कि हम पूरा प्रयत्न करेंगे, और इसके लिए शासन उनका जो भी उपयोग करना चाहे वे उन काम को करने के लिए तैयार हें। उनके मुनाब बंस तो ब्यक्तिगत जीवन के बटन है, जैसे परिवार के लोगों को हमारे साथ रहने की ज्यादा से ज्यादा सुविधा ही जाय। केवल इन्हीं लोगों से नहीं है जो जब निवेदन गया था तो कहा भी मैंने किन्तु के मुनाब मांगे थे। उनका कहना था कि परिवार के लोगों को हमारे साथ रहने की ज्यादा से ज्यादा सुविधा दी जाये। वैसे हम खुद सुविधा ज्यादा से ज्यादा देना चाहेंगे। लेकिन जेल के नियम के प्रबन्ध हैं। दूसरा हम इनका ई-सुविधा के आशयान जना स्वरूप नहीं बनने देंगे। बल्कि हम उन्हें रक्षामन्त्र का भी के लिए प्रोत्साहन दें, उसका प्रयोजन देंगे और उस समय में जतना भी होगा सहयोग देंगे। मैं तो विस्तृत सम्बन्ध हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि इन कि जो आदमियों में से तो जो कम से कम तो कुछ प्रतिष्ठ लोग निरालों को केवल समाज में सुधार का काम करने और जितना प्रयत्न हो होगा कि इन क्षेत्र के लिए डाकू सम्बन्ध मेला के लिए मिट जाये।

प्रश्न: लोग पूछते हैं कि क्या सुली जेल



शोरस जेल पर जगती एक सरत जेल

चल सकेगी ? उन्हें कहा कि जेल तो देना में कई जगह चल रही है, और सुली जेल से भागने वालों की संख्या बढ़ जेल से भागने वालों की संख्या से बढ़ा कम है। तो कहते हैं वे लोग तो चोर-चकारे थे, वे तो डाकू हैं। तो क्या यह जेल चल जायेगी ? आप लोग सतरे का निर्माण तो तो ही रहे हैं, क्या सतरे को लेने का आपने काम बना चौकिल है ? आप इन लोगों में अपना जो विश्वास रख रहे हैं, उसके लिए क्या कारण हैं और क्या

कारणों काटना है कि इन सुली जेल में कुछ निरालों ?

उत्तर: देखिये, सुली जेल और बंद जेल दोनों का गुणवत्तात्मक अंतर नहीं है। सुली जेल में भागने वालों की संख्या हजार में एक निरालों जब कि बंद जेल में भागने वालों की संख्या हजार में एक है। सुली जेल में जो भागते हैं उन्हें शिष्टाचार, उनका हम प्रोत्साहित किया कि हमने हमें सहकार्य मिले।

→

दूसरी बात यह है कि जिस तरह गांधी के प्रशान्दी-मन में भाग लेने वाले लोग गांधी एक दिन के गांधी के अनुयायी नहीं बन गए और न गांधी बन्दी का नाम एक दिन में ही हम लोग समाज-वादी आन्दोलन में लाते थे। तब क्यों भी भीड़ हमारे साथ चलती थी तो सब उसी समय एक्टिव समाजवादी नहीं बन गए थे। लेकिन प्रतिफल अनुभव धारित वे हमसे थे बहुतों को समाजवादी और बहुतों को गांधीवादी बना दिया। मैं मानता हूँ कि अनुभव पर विश्वास रखना चाहिए। मैं उन लोगों के जीवन में जो मानना है उन पर विश्वास रखता हूँ। यही पूर्ण धारणा है कि इनमें से बहुत से लोग बहुत धन्य हैं। फिर भी यह प्रमाण हम पर रहे हैं तो इतना सतर्क हो ही है। लेकिन अब तक हम सतर्क नहीं हो सकते हैं, मानव कोई काम नहीं कर सकते। मैं यह सतर्क भी सोच लेने को तैयार हूँ कि दो-चार प्रतिशत लोग हमें विश्वास लग सकते हैं क्योंकि हमने उनको बिना बर जेल में भेजे, बँसा कि दूसरी खुली जेलों में बिना जाना है, उनको भी खुली जेल में भेजा है। किन लोगों को एक समय तक बंद जेल में रखने के बाद खुली जेल में भेजा जाता है, वे ऐसे

गांधीजी की तस्वीर के सामने आमतौर पर पड़े जाते हैं, जिन्होंने बिना हमारे कहे अपने पुत्रों मजूर किये, जिन्होंने जब हमने लम्बे बीरों पर छोड़ा तो वे वहाँ बिना कोई परिस्थिति विचारों के हीक समय पर आपस लौट आये उनके जीवन पर हम पूरा विश्वास रखते हैं और सतर्क के रहने हुए भी हम दृष्टि की तैयार होते हैं।

प्रश्न खुली जेल में भाग इन लोगों से सम्बन्धित क्या बचाना चाहते हैं? किन्तों का बच बचाना चाहते हैं? उन दोनों को क्या बचाना चाहते हैं?

उत्तर इस दिशा में तो हम अधिक संशय प्रतीत हो सकते हैं। सर्वोदय नेता, गुरु सचिव, आई० जी० जेल, मैं स्वयं सब बंद कर दूँ तो अतिव्यवस्था होगी। लेकिन सभी बंद कर देने में यह मानना है कि इनमें भी चर्चा हो जाये। एजुकेशन और इन्फ्रमेशन में चर्चा है। शिक्षा मन के भीतर तक समाप्त है। इन्फ्रमेशन ऊपर से बाँपा जाता है। उसी तरह मैं समझता हूँ कि हम इन लोगों से भी चर्चा करनी चाहिए। इनमें से कुछ लोग अनुशासन में, खुली पालन, मुफ्त पालन में, कुछ लोगों में तो कुछ अंतर तक में चर्चा है, हम उनको प्रोत्साहित हैं, पैसा दें, सुविधाएँ दें, और फिर उन्हें

जा सकते हैं। उगते हुए सुभाष बहुत धन्य हैं जैसे पहाड़ ईट-भट्टा का काम शुरू किया जा सकता है, क्योंकि वहाँ की मिट्टी इसके लिए बहुत अच्छी साबित होगी। तो क्या आप उस कमीशन की रिपोर्ट को भी ध्यान में रखेंगे?

उत्तर जी हाँ, हम सभी कमीशन की रिपोर्ट का अध्ययन करवायेंगे। आप सब लोगों की हम राय लेँगे और इसके आधार पर उनिफ में जिनकी खुशी जेलें हैं उनपर भी अध्ययन करेंगे। प्रथम देश में भी पार-पार जगह की जेल प्रथी हमें देखने जानता है, वहाँ देखेंगे। हम चाहेंगे कि यह खुली जेल एक बटन पध्दती खुली जेल का स्वरूप के लिये और बन करने वालों के सुधार की दिशा में बहुत एक बचन मिले। यह इन जेलों के साथ कोई परभाव नहीं है। वे इस-व्यवस्था में बहुत कर जले जायेंगे। धारण धारण बाँके बिना भी हम इनमें से रखेंगे। यह ला बच बन बनना रहता। मैं समझता हूँ कि उनमें बचने वाले लोगों के साथ वे व्यवहार करने का जो तरीका है या धारण इतिहास से बना या रहा है कि हाथ बाँके के बन्दी हाथ बाँके लोग, फिर के बन्दी फिर बाँके लोग, इन के बदले

जब तक सतर्क हम भोज नहीं लेँगे, शासन कोई काम नहीं कर सकेगा

धरती में जिन्होंने आमतौर पर नहीं किया था। लेकिन वहाँ हम सामने से बात दूसरी थी। इन लोगों को शासन एकदम से सफल नहीं रहा, संस्था जहाँ थी, हमारा भी उन्होंने बना, हमारा मुठ गए। दूसरे जब मुद्रण करार चलने लगे तब भी लोगों ने यह सर्वेक्षण किया कि वे लोग क्या करना चुनें बहुत करेंगे? कर्मों की मजरा, धारणीय प्रशासन को मजरा कोई मजूर करने कायदा? लेकिन हमने, धारण देखा कि सब लोगों ने अपने पुत्र मजूर किये और धारण ००% मुफ्त दाने खातिर तथा १०% मुफ्त में मागर में निर्यात किये हैं। अगर इन लोगों ने मजूर बनने का पारण स्वीकार कर एका सहयोग नहीं दिया होता तो वे मुफ्त इनकी जल्दी नहीं निर्यात करने थे। किन लोगों ने बिना परदे गये व्यवस्था की के, मुफ्तमों की के सामने,

उन धर्मों में लगाने। लेकिन हमारा प्रथी सब यह विचार है कि हम पाच-पाँच बार दल बना दें। दूसरा यह जो जमा बनेगा उसे इकाई मात्र कर काम किया जाये। उन पाँचों के कहेंगे कि भाई अपना एक नेत्र चुन लें। काम लेने की और ठीक काम करने की जिम्मे-दारी उसी की होगी। उनमें हम बिसा काम नहीं लेता चाहते जैसे एक प्रोबोर्न धारण-योगिक सम्मानों में धारण मजदूरों से लेना चाहता है। जमा से ज्यादा सोचकर करना है। हम उनमें एक सज्जन नागरिक की तरह एक समाजवादी सरकार किन तरीके से व्यव-हार करती है, उस व्यवस्था करना चाहते हैं।

प्रश्न नेशावर में एक नेवाकर कमीशन के साथ, इन्हीं एकदम समाज के लिए। नेवाकर साहब ने कुछ मुनाब रखे थे कि इस इलाके में नौन-नौन से उद्योग स्थापित किये

सुन धारित सा बचन ही गया है। अब इन्हीं लोगों के साथ सहानुभूति के साथ विचार किया जाने लगा है, यह साथ कर कि इनका हम भी मजदूर नागरिक बना सकें। आज जो सजा पाकर जाय वह फिर कोई मुत्र बनने सजा भोगने पावत न धारण। बहुत ही एक अच्छा नागरिक बन गये इन दिशा में दुनिया में बहुत तेजी से काम हो रहा है। हम से भी ज्यादा विचार करने लोगों ने हम भाषना को धारण बढाया है। हम तो सभी इसमें बहुत पीछे हैं। हम चाहते हैं कि जो लोग हम लुकी में रहे, वे बड़ी से निर्यात कर धर्मों नागरिक बनें—यह उनको सजा न हो, उनका प्रतिफल साबित हो।

(प्रभाव जोशी से हुई एक मान-घोले के आधार पर)

हर अपराध में समाज का हाथ है

—प्रिस क्रोपाटकिन

हम लोग जिसे अपराध कहते हैं, हमारी संज्ञाओं उसे माने चल कर 'सामाजिक ब्याधि' के नाम से पुकारेंगे। हमें इस सामाजिक ब्याधि के लिए भी वही करना पड़ेगा, जो हम शारीरिक ब्याधि के लिए करते रहे हैं। इस रोग को होने से रोकना ही उसका सर्वश्रेष्ठ इलाज है। समस्त भाषुनिक चिन्तनशील व्यक्ति, जिन्होंने 'अपराधो' पर विचार किया है, इसी परिणाम पर पहुंचे हैं। इन व्यक्तियों द्वारा लिखे गये समस्त ग्रन्थों में इस बात का पूरा भसासा मौजूद है कि हम लोगों को उन लोगों के प्रति—जिन्हें समाज ने श्राव तक बड़ी कायरता से पंगु बना रखा है, कैद कर रखा है या फाँसी पर लटका दिया है—एक नवीन भाव ग्रहण करना चाहिए।

समाज विरोधी बायों के, जो अपराध के नाम से पुकारे जाते हैं, होने के कारण हीन प्रधान श्रेणियों के होते हैं। ये श्रेणिया सामाजिक, शारीर-धर्म-सम्बन्धी और भौतिक हैं। इनमें से मैं पहले दलित्य कारण पर विचार करूंगा। यद्यपि इन कारणों का ज्ञान लोगों को कम है, लेकिन उनके प्रभाव में कोई सन्देह नहीं है।

जब हमारा कोई मित्र बिट्टी लख कर उस पर पता लिखे बिना ही उसे डाकखाने में डाल देता है, तो हम कहते हैं, यह एक दुष्टपंटा है। यह तो ऐसी बात हुई जिसका पहले कभी ख्याल ही नहीं किया था। मगर झलती बात यह है कि मानव-समाज में ये दुष्टपंटाएँ, ये अप्रत्याशित बातें, जैसे ही नियमित रूप से हुआ करती हैं, जैसे वे घटनाएँ, जिनका बहुत पहले से सोच-विचार किया जाता है। डाक में छोड़े जाने वाले बिना पते लिखे हुए पत्रों की संख्या प्रतिवर्ष नियमित रूप से एक ती रहती है, जिसे देख कर श्रावचर्च होगा। उनकी संख्या में प्रतिवर्ष कुछ थोड़ी-बहुत घटा-बढ़ी हो सकती है, लेकिन यह घटा-बढ़ी बहुत ही थोड़ी होती है। इसका कारण लोगों का भूलवकइपन

है। यद्यपि यह भूलवकइपन एक अनिश्चित ही बात जान पड़ती है, लेकिन दरमस्त वह भी ऐसे कड़े नियमों के अधीन है ही जैसे वहाँ की बाल।

यह बात प्रतिवर्ष होने वाली हत्याओं के लिए भी लागू है। पिछले वर्ष के भाइयों को लेकर कोई भी व्यक्ति यह मस्तिष्कवाणी कर सकता है कि फला देश में इस वर्ष लगभग इतनी हत्याएँ होगी। यह मस्तिष्कवाणी श्रावचर्चजनक रूप से ठीक होती है।

हमारे कर्मों पर भौतिक कारणों का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका पूर्ण विश्लेषण अभी तक नहीं हुआ है, मगर यह मान्य हो गया है कि गर्भों में शार-पीठ मादि सामने अधिक होते हैं और जाड़ों में सम्पत्ति के विरुद्ध अपराधों की संख्या अधिक रहती है। प्रोफेसर इरिको फेरी ने श्राफ वेपर पर अपराधों की संख्या की बकुरेखा खींची है। यदि श्राप उस रेला का ताप (टेम्परेचर) की बकुरेखा के साथ मिलाव करें, तो यह साफ दिखाई दे जाएगा कि अपराधों की बकुरेखा ताप की बकुरेखा के साथ उठती-गिरती है। तब श्रापको यह मान्य हो जायगा कि मनुष्य चितना अधिक मजबूत के समान है। मनुष्य अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति का गर्व बिना करता है। पर वह ताप की घटा-बढ़ी, शारीर-शारी तथा श्राव भौतिक कारणों पर चितना निर्भर करती है! जब श्लु घच्छी हो, फसल भी भरपूर हुई हो और गाव वाले मजे में हो, तो अपने भगडों को मिटाने के लिए वे छूरी की शरण नम लेंगे, परन्तु जब श्लु घच्छी न हो और फसल खराब हो, तो उस समय गाव वाले चिन्तित होते हैं और भगडों का रूप अधिक भवंचर हो जाता है।

शारीर धर्म सम्बन्धी कारण—जो मस्तिष्क की बनावट, पाचन-शक्ति और स्नायु-प्रणाली पर निर्भर करते हैं—निश्चय ही भौतिक कारणों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। पैतृक शक्तियों और शारीरिक संगठन का

हमारे कर्मों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस बात की बड़ी खोजपूर्ण जाच हो चुकी है। इसलिए हम इनके महत्व का काफी सही भ्रान्दाज लगा सकते हैं।

सेसारे सम्ब्रोतो का कथन है कि जेल-अधिवासियों में प्रथिमश्राय के मस्तिष्क की बनावट में कुछ दोष होता है। इस बात को हम तभी स्वीकार कर सकते हैं, जब हम जेल में मरने वालों के दिमागों और जेल के बाहर की दरिद्रता में बुरी तरह जीवन व्यतीत करके मरने वालों के दिमागों की तुलना करें। उसने यह दिखाया है कि निर्दयतापूर्ण हत्या करने वाले व्यक्ति वे होते हैं जिनके दिमागों में कोई बड़ा दोष होता है। उसके इस कथन से हम सहमत हैं, क्योंकि यह बात निरोदाश द्वारा सिद्ध हो चुकी है। मगर जब सम्ब्रोतो यह कहता है कि समाज को अधिभार है कि वह इन दोषपूर्ण मस्तिष्क वालों के विरुद्ध कार्रवाई करें, तब हम उसका कथन मानने में वेगार नहीं हैं। समाज को इस बात का कोई अधिभार नहीं है कि वह इन रोगी मस्तिष्क वालों को मर्द कर दे। हम मानते हैं कि जो लोग वे क्रूर अपराध करते हैं, वे शारीर-शारीर दुर्बल-सिद्धी से—होते हैं। मगर सभी सिद्धी तो पूर्णी नहीं होतीं।

राजमहलों से लेकर पागलखानों तक अपने-के कुटुम्बों में श्रापकी सिद्धी लोग मिलते जिनमें वे सब लक्षण मौजूद हैं, जो सम्ब्रोतो के अनुसार 'अपराधो सन्नयियों' में विशेषता से पाये जाते हैं। उनमें शारीर कर्मों पर घटने वालों में यदि घन्तर है तो वे कल उग्र पातावरण का, जिसमें वे रहते हैं। दिमागी बीमारियाँ निश्चय ही हत्या कर्त्तों की प्रवृत्ति को उकता सकती हैं, मगर यह श्रावचर्चाभासी नहीं है कि वे ऐसा करें हैं। प्रत्येक बात उन परिस्थितियों पर निर्भर करती है, जिनमें मानसिक रोगी को रहना पड़ता है।

हम सम्भव में जिनमें मध्य एकत्र हो चुके हैं, उनमें प्रत्येक सामभार श्रादमी यह

आसानी से देना मना है कि जिन लोगों के साथ व्यवसायी की भाँति व्यवहार होता है, उनमें से अधिकांश किसी न किसी रोग से पीड़ित हैं। सर्वांगी व्यापक रोग बाप भी है कि होजिवांगी से उनका रोग दूर करने उन्हें चण्डू बनाने की कोशिश की जाये, न कि उन्हें वैजनाथों में बहुत उपचार रोग घोर भी बन जाय है—उपचारित जाये।

घर पर हम लोग स्वयं धारण की विचारों का बड़ा विवेचन करें, तो हम देखेंगे कि मध्यम-मन पर हमारे विचारों में वेग घनेक विचार विचारी की मेरी से दौर आना करने ही खिन्न बुनवों की नीत धारणें बाँधे कीजाना जिन्हें नहीं है। सामान्यतः हम लोग इन विचारों को सुनकर देखे हैं, लेकिन यदि हम ऐसी परिस्थिति में हों, जिनमें इन विचारों को अनुकूल प्रोत्साहन मिले व्यवसाय ही हमारे धन्य भाग—जीव प्रेम, दया, प्रामुख्य-भाव धारि इन क्रूर विचारों का प्रतिहार न करें, तो वे विचार भी हमें धन्य में धारणियों में वा फोड़ेंगे। मरण में यही बहुरा चाँदिए कि लोगों को जैन गुरुजनों से शरीर धर्म-गणवर्षी बरालों का महत्त्वपूर्ण ह्य है। परन्तु यदि टीक तीर से देविग भी मान्य होगा कि वे कारण धराराओं के कारण नहीं है।

मरिचक के इन विचारों की मुखदान हम सब में पाई जाती है। हम में वे अधिकांश को इस प्रकार बोद्धे न बोद्धे रोग होता है, मगर जब नर बाहरी परिस्थितियों हमारे इन रोगों को सुलाई भी घोर नहीं कर देती, नर नर ह्य संयोग तुम्हें नहीं करते।

जब भौतिक कारण हमारे मनो पर इतना औरतार प्रभाव धारणें ही घोर जब शरीर-धर्म सामर्थ्य कारण धारण हमारे समान विरोधी मनो के कारण हुआ करते हैं, तब यह बात महत्त्व में ही समझी जा सकती है कि हमारे धारणों के सम्बन्ध में सामाजिक कारणों का किनासा अधिकतम प्रभाव होगा। हमारे समय के सबसे अधिक दुखवर्षी घोर बुद्धि सम्पन्न मन्त्रिण बाँधे महापुरुष यह धीमिण करते हैं कि प्रत्येक समाज-विरोधी धारण के लिए मनुष्य समाज योगी है। यदि हमारे वीरो घोर

प्रतिभाषणीय मन्त्रिणों की प्रभाव में हमारा विन्यास है, तो हमारे मन्त्रिणों के दुखवर्षी में भी हमारा भाग है। हमारे धराराणी में है, उन्हें हम लोगों में ही बँगा बनाया है। मान के मान मन्त्रों बाँधक हमारे बड़े बहुरों की धर्मिक तथा सामाजिक मन्त्रों में पड़ते हैं। उनका धारणा-योग्य उन लोगों के बीच में होता है किन्हीं रोग बहुरों घोर बन गाने गीत बहुरा है घोर इमी कारण उनका मरिचक पदम हो चुका है। इन बहुरों में बनी यह नहीं जाता कि धारणा धर बँगा होता है। यदि धारण के किसी दूरे-दूरे भौतरे में है तो सब सहज पर पड़े विगाई है। जब हम देखते हैं कि बहुरों की धरनी बड़ी मन्त्रा ऐसी बुरी दशा में पवती है तो धारणवर्षी इस बात का होना चाँदिए कि उनमें से इनके बाँधे लोग क्यों बाँधे घोर ह्यगों होते हैं। मुझे तो मान्य भाग में सामाजिक धारणों की महुराई देण कर साहजुब होता है। मरारत में मरार मनुष्यों में भी धारणों विचारा के भार दिगाई गे। यदि यह न होता तो समाज के विचारक विद्वान् बाँधे बाँधों की मन्त्रा बहुरा अधिप होगी। यदि लोगों में विचारा के भार न होते, यदि उनमें दिगा के प्रति विरोधी प्रवृत्ति न होती, तो हमारे महुरों के बड़े-बड़े महुरों का एष पत्पर भी मान्य न बचता।

यह तो दुर्द समाज की निम्नतम मीठी की बात, परन्तु सब यह देखिये कि मरार पर पड़ने बाँधे वे मरारें समाज के सबसे ऊपर वाली मीठी पर बना देणें है ? उन्हें बना देणाना-मूल्य घोर मूर्खतापूर्ण धारणों, मरारी ह्य दुर्दान्त, धन का प्रदर्शन करने वाला साहित्य, मरिचक की मन्त्रा उद्वान करने वाली धन की उपायना घोर दूरके के मन्त्रे धारणवर्षी मरार करने की प्रवृत्ति दिगाई पवती है। बड़ा का मूल संभ है—“धरमान बनो। सुन्दारे मार्ग में जो कुछ उपायत धारें, उसे मरार कर दो। जिन उपायों से जैन जाना पड़े, केवल उन उपायों को छोड़ कर, इतने लिए तुम जो उपाय चाहो, काम में लाओ।” शारीरिक मेदन्त तो वे यदा तन धरणा करते हैं कि अधिप से अधिप के जिनासिटिक कर लेंगे या देविग केन संगे, मगर पावका या धारा धरणा उन्हें गुनाह है।

जब बहुरों में मीठी मनुष्य विन्यास का चिह्न मन्त्रों का भी घोर देणों योग्य उपायना की जिनासी मानी जाती है।

एतन् समाज रोग ही ऐसे लोगों को उद्वान बना है जो ईमानदारी में परिणम करने कीलन विनासे के योग्य नहीं है घोर जिनमें समाज विरोधी धारणाएँ भरी रहती हैं। जब उनके दुखवर्षी के साथ उन्हें धारिण गणना भी प्रान्त हो जाती है तो यही समाज उनकी प्रभाव के गीत भागा है घोर जब वे लोग ‘मरार’ नहीं होते, तो उन्हें जैन भेज देता है। जब सामाजिक धारि अधिप मन्त्रों के धारणवर्षी सम्बन्ध को बरन देती, तब बाहिरों का नाम न रह जायेगा, जब प्रत्येक धारिण धरनी धरनी प्रवृत्ति के धरुगार मार्गदर्शक धरारी के लिए काम करेगा, जब प्रत्येक धारण को उपायों धारणा घोर मरिचक के विचारों से मान्य-ग्राह्य ह्य के काम बनना भी जिनासा जायेगा, तब हमें जैनगणों, उपायों घोर बहुरों की उपाय न रह जायेगी।

मनुष्य को धारणें धारणें घोर की परिस्थितियाँ का, जिनमें वह बहुरा ही घोर धारणा जैवक धरनी बनना है, बना हुआ पवता है। यदि वह धारणें को मनुष्य समाज का अर्थ सम्बन्धे का धारो हो जाय, यदि वह यह सम्बन्धे सगे कि धरार ह्य किमी को बुद्धि हाँकि पुरुषाध्याया, तो उन हाँकि का धरार धन में उन पर भी बँगा पड़ेगा, तो नीतिग विद्वानों का उपायन करने बाँधे बाँधों की मरारा बहुरा बम यह जायेगी।

मैं यह नहीं बहुरा कि जैनगणें तो बहुरा उनके धरान पर मान्यगणें बना दिवें जायें। ऐसी बहुरा मरे ह्यव्य के मनुष्य बहुरा है। धरणा-मन्त्रों भी तो एष तरह का जैनगणों है। बहुरा उपाय विचार बाँधे लोग बहुरे हैं कि जैनगणें का बायम रगना ही धारिण, मरार उनमें बाँधकल जिन विचारों की नियुक्ति कर देना चाँदिए। मेरे विचार उनमें इस विद्वान् तो भी बहुरा दूर है। धरान में न विचारों को मरारन में धारकल जिन धीक का धरभाव है, वह है उनको सहायता के लिए बहुरा हुआ हाय। उन्हें समाज में कोई ऐसा नहीं मिलना जो बायनाधरणा से ही मरारन-धरुवक विचारा का हाय बड़ा कर उनकी उपाय मानविक धरुतियों घोर धरारा से किमिण करने में सहायता दे। शरीर की बनाओ में दोर होने के कारण या मरार सामाजिक

दशाओं के कारण, जिन्हें स्वयं समाज वालों धार्मिकों के लिए उत्पन्न करता है, लोगों की इन उच्च मानसिक वृत्तियों के स्वाभाविक विकास में व्यापान पहुँचना है, और इसलिए वे लोग धराधी हो जाते हैं, लेकिन यदि किसी धर्म की अभिन्न स्वतंत्रता छीन ली जाय और उसे किसी भी नाम को पसन्द करने या न करने का अधिकार न रहे जाय, तो वह अपने मस्तिष्क और हृदय की उच्च वृत्तियों को इस्तेमाल नहीं कर सकता। उनके लिए डाक्टरों वासा जेलखाना या पागलखाना भोजूदा जेलों से भी खराब होगा। मनुष्यों को उन धोमसारियों का, जिन्हें हम धराधर बना करते हैं, बैल मात्र इलाज मानवी बन्धुत्व भाव और स्वतंत्रता है।

निःसन्देह प्रत्येक समाज में—चाहे वह फौजी ही उत्तमता से संगठित क्यों न हो—ऐसे मनुष्य अवश्य ही मिलेंगे, जो धाराली से भावेष में आ जायें और जो समय-समय पर समाज विरोधी कार्य भी कर डालेंगे, लेकिन इसे रोकने के लिए जरूरत है तो इस बात की कि उनके भावेष को स्वस्थ राह पर लगाया जाय, वे उसे दूसरे ढंग पर निकाल सकें।

आजकल हम लोग बड़ा एकत्री जीवन ध्यनीन करते हैं। निजी संपत्ति प्रणाली ने हमारे पारस्परिक संबंधों में एक अतिरिक्त व्यक्तिसत्ता उत्पन्न कर दिया है। हर एक दूसरे को बहुत कम जानता है। हमें एक दूसरे के सार्वं में छाने के भीते बहुत कम मिलते हैं विन्तु हमें देख चुके हैं कि इतिहास में सम-द्वितीयारी जीवन के उदाहरण-अिनमें लोग एक दूसरे से अधिक परिचित प्रविष्टना से बधते हैं—सौत्र है, जैसे चीन का 'सम्मिलित कुटुम्ब' या 'हृष' सभ' वे लोग एक दूसरे को सम्बन्ध जानते हैं। परिस्थितियों के दबाव से उन्हें एक दूसरे को सामाजिक और नैतिक महायाया देनी ही पसनी है।

आदि काल में वैशुम्भिक जीवन सम-द्विवाद था अथवा। वह धर लुप्त हो गया है। अब उसके स्थान में एक नये वैशुम्भिक जीवन का प्रादुर्भाव होगा जो समाज धाका-शासकों वाले धार्मिकों का कुटुम्ब होगा।

इस कुटुम्ब में लोगों को मजबूर एक दूसरे को जानना पड़ेगा, एक दूसरे की सहायना करनी पड़ेगी और प्रत्येक धरमर

उन्हें एक दूसरे को नैतिक सहाय देना पड़ेगा। इस पारस्परिक धरलम्बन से अधिकतम समाज विरोधी कार्य, जिन्हें हम आज देखते हैं, रक जायेंगे।

लेकिन यह कहा जा सकता है कि फिर भी समाज में बहुत से लोग ऐसे बने ही रहेंगे धाय चाहे तो उन्हें रोगी कह सकते हैं—जो समाज के लिए खतरनाक होंगे। क्या यह धारवयक नहीं है कि हम लोग उनसे छुटकारा पा लें ? या कम से कम उन्हें धोरों को हाँकि पहुँचाने से रोकें ?

कोई भी समाज—चाहे कितना ही कम समझ क्यों न हो—इस ऐसे ऊट-पटांग समा-धान को मसूर नहीं करेगा। उनका कारण भी सुन लीजिये। पुराने जमाने में यह समझा जाता था कि पागलो धर गंतान धाता था, इतिथिये उनके साथ उसी के धरनुताल बतवि भी किया जाता था, वे लोग जंगली पशुओं की भाँति जजोरों में जकड़कर धरनवल की दीवारों में बाध दिने जाते थे। मगर महान क्रांतिकारी पाइनेल ने उनकी जजोरें तोल-कर उनके साथ भाई की भाँति व्यवहार करने के बेट्टा की। पायलो के रथको भी बेट्टा 'वे तुम्हें निगल जायेंगे'। मगर पाइनेल ने उनकी बतों की परवाह न की और साहसपूर्वक इन पागलो को धरनाया। फल यह हुआ कि वे लोग, जो पहले जानवर समझे जाते थे, वे समा पाइनेल के चारों ओर धाकर एवधित होने लगे। इस प्रकार उन लोगों ने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया कि चाहे मनुष्य को दुःख रोग से धाध्यादिन क्यों न हो गई ही, फिर भी मानव स्वभाव के उत्तम अंशों पर विश्वास करना बठिन नहीं है। इसके बाद पाइनेल का धान्दोलन सफल हो गया, और तभी से 'पागलो को जजोर में बाधना बन्द हो गया'।

इसके बाद वेक्ट्रियम के धील नामक एक छोटे धम के किमानों ने कुछ और भी धरुद्धी बात निकाली। उन्होंने कहा—'तुम लोग अपने पागलो को हमारे यहा भेज दो। हम उन्हें पूरी स्वतंत्रता देंगे' उन्होंने उन्हें अपने कुटुम्बों में शामिल कर लिया और उन्हें अपनी मेज पर स्थान दिया। वे भीके-भीके पर उन्हें अपने सेत जोनने में साथ से जाने लगे और नाच तमाशे में उन्हें सम्मिलन करने लगे। उनका कथन था—'हम लोगों के साथ

खाओ, पियो और नाच तमाशे में सम्मिलित हो। तुम्हारी सबीयन चाहे तो काम करो, या मंदान में दोड़ लगाओ। जो चाहो करो, तुम एकदम स्वतंत्र हो।' वस वेक्ट्रियम के विचारों का यही मित्राज्ज और यही प्रणाली थी।

यह धारम्भिक काल की बात बहता है। आजकल तो धील में पागलों का इलाज एक खाना पेशा हो गया है। जब कोई बात पैसे के लिए पेशा बना शली जाती है तब उसके कोई तत्व नहीं रह जाता। इस स्वतंत्रता में बादू जैसा अक्षर किया। पागल लोग धरुद्धे हो गये। यहा तक कि उन लोगों का, जिनका विचार धरुद्धा था, व्यवहार भी मसूर हो गया और वे कुटुम्ब के धरय व्यक्तियों की भाँति मानन मानने के योग्य हो गये। एष्य मस्तिष्क तो सदा धरुद्धाभाविक रीति से काम करता था, मगर उन लोगों का हृदय ठीक था। वे कहने लगे कि यह एकदम जादू की भाँति था। लोग बूढ़े लगे कि रोगियों का रोग मोचन एक देवी और देवता की हृषा से शाँत हुआ था, मगर धरुद्धन में देवी स्वतंत्रता की देवी थी और देवता था सेतों का नाम और भाई चारे का व्यवहार।

माइस्ले बहता है—'पागलपन और धर-राध के बीच में एक विरलत क्षेत्र है इल क्षेत्र के एक सिरे पर स्वतंत्रता और बन्धुभाव ने धरुद्धना जादू कर दिखाया है, धतः उसके दूसरे सिरे पर भी वे वैसा ही कर दिखायेंगे'।

जेलखाने समाज-विरोधी बर्णों को होने से नहीं रोक सकते। वे उन बर्णों की संख्या में शुद्धि करते हैं। वे जेलखाने उन लोगों का, जो उनमें जाते हैं, कोई धरुद्धन नहीं कर सकते। जेलों में चाहे जितना सुधार किया जायें, वे सदा बँद खाने ही रहेंगे। उनका बाधावरण सटो की भाँति कुत्रिम ही रहेगा और वे संस्थियों को उत्तरोत्तर सामाजिक जीवन के धरुद्धोत्थ बनाते हैं। जेलखाने अपने उद्देश्य को पूरा नहीं करते। वे समाज का धरुद्धन करते हैं। उनका नाम ही मिटा देता धरुद्धिए। वे धरुद्धाधरुद्धा उदारतामिथित बर्तन के धरुद्ध-धेष है।

('क्रांति की भावना' नामक पुस्तक से साभार)

दण्ड-शास्त्र : बदलती धारणाएं

दण्डशास्त्र मान भी दण्ड बाण का हल निराल पाने में समकल है कि प्रचारायी दण्ड के लिए क्या साधन हो, प्रविलम्ब तथा प्रतिश्राप्य प्रतिशोधन वैसे हो, नई शूद्रपात्र के लिए उचित धनकर कैसे प्रदान किये जाए तथा राज्य द्वारा समर्थित मूल्य वैसे हो, जिन्हें प्रचारायी अपने स्वयं के मूल्यों से अधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मान सके।

यद्यपि प्रचाराय मूल्य प्रचारायो में वृत्तियय दूरव्यापी परिवर्तन हुए हैं किन्तु दण्ड की पद्धतियां मूल्य, सभी भी 'मान्यवाद' के उस सिद्धान्त पर आधारित हैं जिसे कि सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'श्रुतिमान्य' के उदय के साथ समस्त मानवीय धारणाओं के प्राथमिक स्पष्टीकरण के रूप में स्वीकार कर लिया गया था और जो सत्सुपुत्रित दण्डशास्त्र में 'दान के लिए दान' के सिद्धान्त के स्थान पर प्रतिष्ठापित हुआ था। 'मान्यवाद सिद्धान्त' में वह बाण निर्दिष्ट थी कि किसी प्रचारायी ने कोई धनराश इकट्ठा किया है कि उसे धनराश करने से मिनते काने मान्यक का मूल्य बनना अधिक है कि वह सामान्य दण्ड से होने वाले कष्ट की बजाय नहीं करता और इसलिए धाराय तथा दण्ड के बीच समतुल्य बनाये रखा जाना चाहिए।

सामाजिक विमान के क्षेत्र में और विशेषतः प्रचाराय समर्थी मान की धारणाओं में हुई प्रगति ने 'मान्यवाद' के निम्नी तथा प्राथमिकी समर्थी एवं सिद्धान्त को पूरी तरह प्रामाण्य सिद्ध कर दिया है। अनेक कल्पयन्त्री द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि प्रचारायियों को, उत्पत्ति, अनुचित, विनाश, धन्य सामाजिकवाद तथा अंत्यपूर्ण धारा-करण के प्रभाव के कारण होनी हैं।

समाजशास्त्रियों ने तो यहाँ तक कहा है कि प्रचारायियों को उत्पत्ति का मूल कारण वैयक्तिक विकृति नहीं है। प्रचाराय समाज-कर्मिण सुशासन है। प्रचाराय सामाजिक उद्देश्यों (उत्साहपूर्ण, धनी प्राथिक

रिपनि) एवं सर्वप्रधान साधनों (उदहर-एण, धनकर की प्रयोजनता) के धारणी टकराव से पैदा होते हैं।

सामाजिक दान की कल्पना धन्यवाय ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देती हैं जो सामाजिक सद्गुणों (जिनमें विधिक सद्गुण सम्मिलित हैं) के उत्पन्न के प्रति 'सामाज्य' प्रतिक्रिया (सामाज्य प्रतिक्रिया से मतलब है ऐसी प्रतिक्रिया जिसे सांस्कृतिक स्वीकृति प्राप्त हो भले ही, सांस्कृतिक अनुपयोग प्राप्त न हो) जन्म करती हैं। यह अनेक बार स्पष्ट हो चुका है कि सामाजिक दान का रूप धारणियों पर 'समाज विरोधी' दंडों प्रदान के लिए उठना अधिक दबाव डालता है कि वह ध्यान-कौशल का उचित प्रयोजन वह तन्मयी धन्यकरणों पर तथा इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सा तरीका सामाजिक रूप से अनुपयोगी मूल्यों को प्रत्यक्ष करने की दृष्टि से अधिक कारगर है।

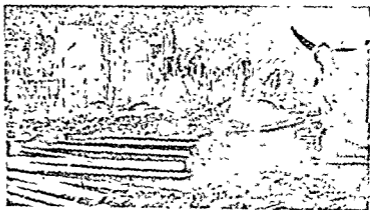
ध्यान में भी प्रायः यही स्थिति है। यदि हम बदल क्षेत्र में सदिनों से होने वाली वृद्धि की प्रचाराय प्रदानों के कारणों का विश्लेषण करें तो हमी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वे एक बड़ी सीमा तक समाज-

जनित धनराश को धेणी में ही मानी है।

प्रश्न यह है कि जिन प्रकार प्रोपियेतास्य में सभी रोजियों के लिए एक जैसा उपहार नहीं हो सकता उसी प्रकार सभी 'धनराशियों' के लिए एक जैसी सजा नहीं हो सकती। किन्तु इन बातों से इनकार नहीं किया जा सकता कि धनराश के सामाजिक सांस्कृतिक सीतों के बारे में विचारों में निर्यात भले ही कुछ भी कम न हो, प्रायः की दृष्टिपद्धति एक बड़ी सीमा तक 'मान्यवाद' के सिद्धान्त पर आधारित है जो कि 'धनराश' के सिद्धान्त से मिलता जुलता है।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में मान्यवाद तथा प्रजासामाजिक सिद्धान्त के विकास के साथ दण्ड पद्धति में सुधार के लिए लोच ध्यानपूर्वक देखे गये किन्तु उनका मिन-मिन देशों में मिन-मिन प्रभाव रहा। प्रथमिक श्रेणीस्य नवा सभी को देशों पर दण्डशास्त्र की दण्डनीय प्रवृत्तियों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा।

यह विचार कि धनराश में धनराशियों का सुधार हो सकता है धन्यप्रजनन रूप से एक नया विचार है। प्रचारायी धनराशियों के



मुंबाई की सुनी जेल का बाहर से एक दृश्य

पूर्व लोगों ने बनारसकारियों का नृपुंसकीकरण कर दिया, चोरों के हाथ बाट डाले। किन्तु इस पर भी जब धारापथ बढते ही गये तब गुपाराधो ने यह विचार व्यक्त किया कि 'धोवर जिन' दण्ड डर उत्पन्न करने वाला दण्ड नहीं है और मानवीय विचलता की तोर पर 'धोवरिज सिस्टोम' (धारापथ) को पदवि का विक्रम हुमा जिनने वर्तमान युग के दार्डिक-गुपाराधो को गतिहीन बना दिया है।

किन्तु यह भवोभाति सिद्ध हो चुका है कि कारागारों के कैदियों का सुधार नहीं होता। न्यूनाधिक रूप से सभी धरपराधियों को यह धारणा होनी है कि समाज दोगी है न कि वह, और उनके लिए कारागार सर्वसत्तावादी समाज के एक ऐसे माध्यम के प्रतीक होने हैं जिनके द्वारा उन्हें उसके प्रशासन के प्रति समर्पित होने के लिए विवश किया जाता है। इस प्रक्रिया के कारण उनमें से अधिकांश मानवद्वेषी होकर बढोर समाजद्रोही बन सकते हैं। भ्रष्ट, यह स्पष्ट हो जाता है कि 'दण्ड' का उद्देश्य न तो 'समन करना' है और न ही 'आयुवता पूर्ण स्पष्टार' करना है और इसका एकमात्र हल भ्रातसम्मान है। अमेरिका के कारागारों का नैतिक स्तर कभी भी इतना ऊंचा नहीं था जितना कि वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान रहा, जब कि बन्दियों को युद्ध सामग्री तथा साध उपदान का कार्य सौंपा गया। उनका नैतिक स्तर कभी भी इतना निम्न नहीं रहा जितना कि वह युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् पुनः प्रक्रमण्डला भा जाने के समय था। कारागार, जिबिस्तालयों के समान होने चाहिए, दण्ड का उद्देश्य मनुष्यों को कर्मशील बनाना है जो कि धरपराधो को रोक्ने का एकमात्र उपाय है। कारागार पदवि में ध्रायुनिक मनोविज्ञान के इस मूलमंत्र का समावेश होना चाहिए कि 'पार्जिटिव रिदन्पोसैमेट (दण्ड की अपेक्षा पुरस्कार)' के माध्यम से चाइनीय व्यवहार अधिक सरलता से सुनिश्चित किया जा सकता है।

धरपराध निवारण अंगतः धरपराधो को जन्म देने वाली सामाजिक परिस्थितियों पर प्रहार करने के और अंगतः अधिक कुशल एवं

कार्यदक्ष विज्ञान तथा म्यायालयों की स्थापना करने के द्वारा जा सकता है। कैदियों तथा समाज के पारस्परिक मेलजोल के नवीन विचार का भी धरपराध महत्व है। धरपराधो को यह भ्रवसर मिलना चाहिए कि वह समाज में पुनः स्थान प्राप्त कर सके।

मृत्यु दण्ड

उसी समय से जब कि केन (वाइबिल का एक पात्र) ने धरपराधो को हत्या की, समाज मृत्यु दण्ड की समस्या को लेकर उलझा रहा है किन्तु अभी भी उस समस्या का कोई निदान नहीं हो पाया है। शताब्दियों से, मृत्यु दण्ड प्राप्त कैदी का वध करने के लिए बहूधा भयानक और वीरमत्त तरीके निकाले जाते रहे हैं जिन्हें जुगुप्साजनक और श्रुत्यारूप मानकर धारण के युग में धरपराध कर दिया गया है।

वर्ग पक्षपात

यद्यपि मध्ययुग में दण्ड की प्रथा प्रायः नृपुंस एवं धनिपणित थी, तथापि एक ध्यान देने योग्य बात है कि मृत्युदण्ड का सर्वाधिक प्रयोग पश्चिमी यूरोप में धोयोगिक और दृष्टिक क्रान्ति के काल में किया गया जब कि धोयोगिक और दृष्टिक क्रान्ति के परिणाम स्वच्छ सामाजिक-विस्थापन हो रहा था और सामाजिक-धरान्ति फैली हुई थी तथा गंभीर धरपराधो की सख्या बढत बढ गई थी। इस काम में मृत्युदण्ड का धनिपणिक प्रयोग इतिहासिक वर्गों की उच्च विक्रम के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया का चोत्क है। इंग्लैंड में १३ वर्य के बालको को भी छोटी-मोटी चोरी के या दूसरो के खेतों में भेड़ चराने के धरपराध के लिए सरे धाम फासी पर सटवा दिया जाता था।

अमेरिका में लगभग सभी दक्षिणी राज्यों ने मृत्युदण्ड वापस रखा है लेकिन बढत से उत्तरी राज्यों ने मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया है। दक्षिणी राज्यों में चरम कोटि के दण्ड का प्रयोग अधिकांशतः काने सिद्धदोष व्यक्तियों पर किया गया। सन् १९३०-३५ की कालावधि के दौरान जिन सिद्धदोष व्यक्तियों को मृत्युदण्ड दिया गया उनमें ५५.५ प्रतिशत अश्वेत व्यक्ति थे। मात्रकल

जिस देश में इस दमनकारी तरीके का अत्यन्त प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जा रहा है वह है दक्षिणी अफ्रीका। एक अन्य उच्चतम तम्य जिस पर विचार किया जाना चाहिए, यह है कि धरपराधो की गरीबी तथा विधि प्रतिरक्षा की धरपराधिता जिससे कि यह सिद्ध होता है कि कुछ मामलों में न्याय असमान हो सकता है और यह कि न्याय की विक्रमता की सभानता उतनी कम नहीं है जितनी कि यह समझी जाती है।

विश्व व्यापी प्रवृत्तियाँ

मृत्युदण्ड की प्रथा पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका तथा लेटिन अमेरिका में समाप्त होती जा रही है। यह प्रतीत होता है कि मृत्युदण्ड को समाप्त विषयक धरान्ति प्रजातात्विक धरान्ति के उद्भव पर निर्भर करता है। बढत से एफियाई एवं अफ्रीकी देशों ने मृत्युदण्ड वापस रखा किन्तु उन धरपराधो की, जिनके लिए कि मृत्युदण्ड निहित किया गया है, संख्या में लगभग सभी देशों में कमी कर दी गई है। जापान में अभी भी ऐसे धरपराधो की सख्या १३ है जिनके लिए कि धरपराधो को मृत्युदण्ड दिया जा सकता है किन्तु भारत में केवल पूर्व चिन्तित हत्या ही ऐसा धरपराध है जिसके लिए मृत्यु-दण्ड दिया जा सकता है।

यूरोप में केवल फ्रान्स, स्पेन, तथा ग्रीक में ही मृत्युदण्ड वापस रखा गया है। किन्तु फ्रान्स के स्पेन में भी पिछले दशकों के दौरान मृत्युदण्ड का प्रयोग "राजनैतिक धरपराधो" तक के लिए अत्यन्त ही विधि तथा।

ब्रिटेन में जहाँ वि २०० वर्षों तक सिद्ध-दोष व्यक्तियों को (जिनमें कुछ तो सात वर्य तक की ध्रायु के वर्षके थे) फासी की सजा दी जाती रही, पाच वर्य के प्रतिबन्धकाल के पश्चात्, जिसमें कि हत्या की दर में कोई सिद्ध नहीं हुई, इस प्रथा को सन् १९६६ में समाप्त कर दिया गया।

अमेरिका में, १४ राज्यों ने मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया है और अन्य तीन राज्यों ने उसे कुछ वर्यो के लिए समाप्त किया था किन्तु बाद में उसे पुनः लागू कर दिया।

→

→
विष्णु संधीय स्तर पर, उच्चतम व्यापकता के उत विनिश्चय के अनुसार जो कि मृत्युदण्ड की सार्वभौमिकता के संबंध में २६ जून, १९५२ को दिया गया है, समस्त राज्यों में मृत्युदण्ड समाप्त हो जायेगा।

सन् १९६२ में राष्ट्रपति ने प्रस्तुत की गई रिपोर्ट में यह स्पष्ट प्रकाश में आया कि ऐसे अधिराज्य के, जिनके लिए मृत्युदण्ड अपराधीन किया जा सकता है, अपराधी की बख्ता को कम करने की प्रवृत्ति विरलव्यापी बन चुकी है, तथापि मृत्युदण्ड समाप्ति के प्रावधानों के बहुत अधिक प्रवर्ति नहीं की है।

सर्क और आंकड़े

इन अवयव तर्कों के दृष्टिकोण कि मृत्यु-दण्ड अमान्य प्रायश्चित्त पर व्यापकता है और यह कि मृत्युदण्ड का अन्वेषण प्रतिदण्ड है, मृत्यु-दण्ड नकार रखने के दृष्टिकोण का प्रतिपादन निम्नलिखित प्रायश्चित्त पर किया गया है।

(१) 'समुच्चय' का सरक्षण: सम्भाव्य हत्याओं के निष्पन्न यह एक प्रत्यक्ष प्रभावी प्रतिरोधक है और यह कि उसके स्थापन पर भावीयत बराबरास वा कम दण्ड भी व्यवस्था करना सफट अलभ है।

विष्णु यह कारण कि मृत्युदण्ड एक प्रतिरोधक दण्ड है सिद्ध नहीं हो पाई है। उन राज्यों में जहाँ मृत्युदण्ड कायम रखा गया है तथा उन राज्यों में जहाँ यह समाप्त कर दिया गया है, मानव बच से हुई मृत्युओं की दरों से सर्वप्रथम साम्यता का उपयोग मृत्युदण्ड कायम रखने के द्विपक्षी तथा उनके समाप्त करने के द्विपक्षी दोनों में ही करने-काने मनों के समर्थन में किया है और अधिराज्य मानवों में महत् परिश्रम करने से यह सिद्ध हुआ कि अधिराज्य नियंत्रण स्थापन नहीं से विष्णु उनके निशाने पर अनुमान आमत है।

सैनिक (पार्यटन) के अमेरिका के उन राज्यों राज्यों के बहु मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया गया था तथा साथ ही उन राज्यों में जहाँ मृत्युदण्ड कायम था, ३६ वर्ष से भी अधिक समय तक, मानव बच से हुई मृत्युओं के महत्व से आमत आचरण कि और से इतिहास पर यह है कि किसी ऐसे राज्य में, जहाँ इन्हीं के लिए मृत्युदण्ड भी व्यवस्था

है, मानव बच की दरों पर कोई अधिराज्य प्रभाव नहीं है।

मृत्युदण्ड के संबंध में गौटल रायल कमीशन भी, जिसने ५ वर्ष के मॉरेटोरियम के दौरान मानव बच से हुई मृत्यु की दरों का पुनर्विचोचन किया था, इसी निष्कर्ष पर पहुँचा था कि "इस बात का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि मृत्युदण्ड की प्रथा समाप्त करने से परिणाम स्वरूप हत्या की दरों में कोई स्थायी वृद्धि हुई है और इस प्रकार के अनेक अपराधी हैं जिन पर अपराधीय प्रभाव बहुत कम या प्रायः नहीं के बराबर हुआ।" (२) यह कि मृत्युदण्ड विधि-अवर्तन ऐजेंसीज, गुप्तता तथा सरक्षात्मक, धार्मिक के व्यक्तियों के सरक्षण के लिए प्रभावी प्रतिरोधक है।

इन कारणों की, जो कि मृत्युदण्ड कायम रखने के द्विपक्षी व्यक्तियों द्वारा बहूधा व्यक्त की गई है, सौख्यीय करने के लिए अवैधताएँ की गईं। अमेरिका में सैनिक (पार्यटन) द्वारा किए गये अत्याचर समाप्त से यह सिद्ध नहीं हो सका कि आधिराज्य (गुप्तता तथा) भी हत्या का तथा मृत्युदण्ड की व्यवस्था होने या न होने का भावस म कोई संबंध है।

(३) यह कि मृत्युदण्ड बंदोर आधिराज्य का निराधार करने का प्रत्यक्ष विरोधक स्तरीय है। तथापि, इसके निष्पन्न प्रस्तुत किया गया एक तर्क कि सम्यकी अधिराज्य की समाप्ति प्रायः सभी न केवल आधिराज्य के अनेक विरोध करने का नुसार कर लेने है बल्कि वे समाप्त के प्रति भी अमान्य आचरण कर सकते हैं, किन्तु अर म विषय यह अनेक प्रयोगों द्वारा प्रमाणित हो चुका है। यदि वे समाप्त के लिए बोध स्वरूप है। तो यह समाप्त का ही बोध है। अमेरिका के आधिराज्य के रॉडियो ने रॉडियो किंग्समूड के दौरान सार्वीय आचरणों की बीयन की वृद्ध साम्यी तथा सामान्यता का उदाहरण दिया और बर्तियों का नैतिक लक्ष्य सभी की इतना उच्च नहीं रहा किना कि उन वर्षों के दौरान था।

कारागार सुधार को प्रवृत्ति

इन के दण्ड आरम्भ में 'केमिन' (आराम) की प्रथा एक सुराभी प्रवृत्ति सिद्ध हुई है जो कि सुविधम से समाप्त होगी है।

एमे
आराम
प्रतिरोध
नहीं है अधिराज्य
मुष्ण प्रयोजन है।
क
सिद्ध दोष व्यक्त
न्य ही
है और यह कि उसे मत्
न्यूनतम
आवश्यक के लिए ही समाप्त हो देना
नियमित वातावरण में रखा जाना चाहिए
जिससे कि समाप्त में उनका पुन. स्थापन
हो सके।

अन प्रत्येक कैदी को केवल व्यक्तिक के रूप में ही समझ जाना चाहिए। किसी वर्ग के सदस्य के रूप में नहीं। उसकी भावात्मक आवश्यकताओं तथा दृष्ट्युष्णिकों को आवश्यकतापूर्वक धार्मिकविचरन करने, उनमें शिक्षा तथा उसके पुन. स्थापन के लिए उपयुक्त कार्यक्रम तैयार किये जाने चाहिए। इस प्रक्रिया में न केवल कारागार के सर्वोच्चार्यों को ही बरत बन्दी के दृष्ट्युष्ण के सदस्यों, उनके मित्रों तथा रिश्तेदारों को एवं ऐसे सामाजिक कार्यकर्तियों को भी जिन्हें कि भावनात्मक परेशानियों से लोगों की सहायता करने में सक्षम हारित हो, महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। न केवल उन्हीं, अपितु समूचे समाज को सुधार की योजना तैयार करने चाहिए, जिससे कि बंदी यह महत्त्व कर सके कि समाज उसे 'स्वीकार' कर लेता और वह आत्मसम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने में लिए सक्षम म वापिस आ सकेगा।

संसार के अनेक विविधताएँ इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि शिक्षा सचची तथा पुन. स्थापन सचची प्रक्रिया केवल उन्हीं सर्वाधिक सफल हो सकती है जब कि कारागार की धार्मिक परिस्थितियों उसके बाहर के विचारधारा समाज की परिस्थितियों के समाप्त हो। अतः उक्त समय भी जब कि बंदी कारागार की समाप्त भूत रहा हो, समाप्त से उपरान्त पूर्व-नहीं दृष्ट जाना चाहिए। धार्मिकता सुधारण, अन्वेषण पत्र लेखन की सुविधाएँ आदि के दृष्टिकोण कायम करने के लिए छोड़ देने जाने (अपराधी को कारागार के बाहर कार्य करने के लिए विशिष्ट समय में लिए छोड़ दिया जाता है) परंतु, विशिष्ट दण्ड धार्मिक की योजनाएँ रॉडियो से पुन. स्थापना में बहुत महत्त्व सिद्ध हुई हैं।

अब मध्य प्रदेश में

—०—

आइये और देखिये

- Ⓐ मुप्रसिद्ध खजुराहो के मंदिर, मध्यकालीन मूर्तिकला एवं वास्तु-कला के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण, प्रस्तर में काव्य
- Ⓐ ताची वा महान स्तूप
- Ⓐ माण्डू—हर्ष-उल्लास की नगरी
- Ⓐ भ्वाणियर वा गौरवपूर्ण दुर्ग
- Ⓐ बाघ मुफ़ाओं के सुन्दर भित्ति चित्र जो भ्रजना के परम्परानुगत हैं
- Ⓐ जबलपुर के निकट दुग्ध धवल सगमरमर की चट्टानें
- Ⓐ उज्जैन की प्राचीन नगरी, जिसकी यशोगाथा बालिदाग ने गाई है
- Ⓐ पचमडो—राज्य वा स्वास्थ्यप्रद शीष्मकालीन केन्द्र

तथा तीर्थ के ब्राधुनिक स्थान

जैसे—

चबल बहुदैशीय योजना, भिलाई
इस्पात कारखाना, भिलाई,
हैवी इलेक्ट्रिकल्स भोपाल;
तेजा धलवारी बाण्ड
कारखाना, तेजापुर

तथा

सौंदर्यपूर्ण दृश्यावली तथा गिहार के अन्य घने व
स्थान । मध्य प्रदेश सभी प्रकार की रचि
तथा प्रवृत्तियों के व्यक्तियों के लिए
सुख एवं भ्रानन्द प्रदान करने
वाले स्थानों से परिपूर्ण
है ।

—०—

पर्यटन संचालनालय, भोपाल [म० प्र०] से सम्पर्क कीजिए

पर्यटन संचालनालय, मध्य प्रदेश द्वारा प्रसारित

मृत्युदण्ड कब बन्द होगा ?

—जी. डी. खोसला

आपने उन मस्तराहों की कहानी तो सुनी होगी, जिनका अज्ञान दूब गया था और जिन्हें एक क्षणार्थमें ही तब तैरकर जाना पड़ा था। वे मस्तराह बहुरंग ही थीं मीठी रसदार से घोरे-घोलने होकर भागते बड़े रहे थे ही नहीं, बरबसात भाविय या लम्बी कबोते उन पर आक्रमण न कर बैठें। अचरमात एक मांड पार करते ही उन्होंने एक सुने मेंढान में फापी की टिपटी देखी। वे बड़े तथा उन्होंने आश्चर्यचर्चिता हाकर कन्वो की भाष लेत हुए बहा, 'परमलसा तेंप काग मक ह्य मन्म र्पान पर है।' मच्छे म्माय की निर्मम प्रतीक बहा टिपटी उनमें निह क्षयना का अर्थात् ऐसी व्यवस्था बहा ह्यमा के लिए मृत्युदण्ड दिया जाता हा, बिहू था।

दुसी प्रकार का दृष्टिकोण ह्य सम्बन्ध के प्रयोगी मास्ट 'मूचुदण्डि' में भी मिलना है। इस मास्ट में इस बात का अर्थ है कि मृत्युदण्ड चाहे क्षयरापी का अर्थ प्रसार वध विना जाना था। हत्यार को तगर की मरना पर से जाना जाना था, उनके क्षय भाग काटान दक्षता साध करत खनय था। क्षयरापी के साथे पर एर मृत्युद तथा हाता था तथा उनके शरीर पर घाट का लेप दिया होता था तथा रजत बदन के उमर शरीर पर चिह्न होते होते थे। उनके साथे पर एक साखा होना था, जिस पर उनकी मृत्युदण्ड दिया जाना होता था।

बार-बार एक हीन बरमाना जाना था और बस इत प्रसार की पायला की जानी रहती थी, मुना, भयभीतों। यह मसुक व्यक्तित्व है तथा इन मसुक व्यक्तित्व की हत्या का दोषी पला गया है। इस राजा की अज्ञानता ह्य क्षयरी मृत्युदण्ड दे देता। यदि कोई भी कोरे ह्य प्रसार का अर्थ पर धारणा करता तो उसे भी दण्ड इती प्रसार का मर देता।

आश्चर्य क्षयरापी को बरबसात पर ले जाना जाना था और उसे भूज पर बिना विनाय जाना था और अज्ञान की सन्सार एर मरुत पर से उन का गिर पड ते अना कर देते थे।

अपराधी—एक रोपी

केलिन एक मरत ऐना भी क्षयना कर मृत्युद का हीना, मरत तब कि न्याय

समाप्त जाने गया। क्षय के बदले क्षय, मोत के बदले मोत जानी बाते तब तक ही गयी थी, अब तक नि कर्मिड, जुग, कर्हाक तथा क्षय दूषणों में मानवमन की सहसाहो। म नही भाया था तथा मानव को क्षयरापी के लिए उपभाल काने लका और मनोभावा का वन्य नहीं गमना था।

एकक्षय म मीमुणय बरतरे के लक्ष ऐस दस के गाहरपारा का वन्य विधा है जहा क्षयरापी तब मर राकी व्यक्तित्व माना जाता है। उनका अज्ञान के लिए भयान होता था। बहा उमर विधि व क्षयरापी उनका मिलन तथा उनमें अर्थ मृत्युदण्ड प्रसार करत। इस विधिमें एक रापी का मरत क्षय रापा जाना तथा उन क्षयरापी की भाति हाता-कटकांग जाना कर्नाति उनका शरीर व मरतकी करक और क्षाहा मरतकी क्षय अर्थमिलन का वे निग रापी माना जाता था।

इस प्रकार बहा दण्ड म मृत्युदण्ड दटा दिया। उनके मनुकार राज्य का प्रसिद्धी का क्षयाभा गती हाता चरिणि। दण्ड का उद्देश्य क्षयरापी व बरताने मरत हाकर क्षयरापी जाना तथा क्षयरापी का सुधार हाता चरिणि।

हालांकि क्षयरापी मने क्षयिण क्षयिण में ही जानी है उक्त पानी का मय भी हत्यारे को नहीं हाक पाया। क्षय मृत्युदण्ड मायद ही क्षयरापी निवारक का काम करता है और मायद दण्ड क्षयरापी सुधरता भी नहीं। ऐसा बहा गया है कि मृत्युदण्ड बन्द कर देने से हत्यारा या क्षय टिका मर क्षयरापी में मृद्वि नहीं होई है।

चौकानेवाले दो मामले

दो-दो मने चौका देनेवाले मामले हुए बिहूमें मृत्युदण्ड बन्द कर देने के लिए धारा लेनार दिया। एक घरेलू की विधा-धारा केरत को कील-बर्तीन घटाई की हत्या के क्षयरापी में मृत्युदण्ड निग जाने के विधायिक अमर के बुद ही क्षालों गदने उसकी निर्णय का अर्थ मरत हुआ। धावनिह हावेने के अर्थ क्षयरापी की नारा बरत दिया था।

एक अर्थ, ईशान, पर हत्या के क्षयरी में सुधरना बरतना गया तथा उसे रापी पावे जाने पर मृत्युदण्ड दिया गया। बाद म कना जना कि बर निर्दोष था, अर्थात् घसती क्षयरापी काई क्षयरा ही व्यक्तित्व था। इस घटना का विवेक म मृत्युदण्ड क्षयिण रूप से हत्यार जाने के लिए बानुस बरताने से बरती हाथ रहा। उच्चिमय, हावेने, अेनगाई, नावे, म्पीडन तथा क्षय बई देशों म मृत्युदण्ड नहीं दिया जाना।

केलिन क्षयरापी की क्षयात्मक प्रवृत्तियों म लक्ष धार फिर मृत्युदण्ड के बारे म दायारा मानव पर विक्रम कर दिया है। नरेभाज कुचर। हांग निष्पारा का अर्थ विवेकी दृष्ट्या, रानीनिव क्षयरापी, विनाय क्षयरापी एक विधय, युक्तिना के साथ क्षयात्कारी की घटना तथा क्षयात्मक क्षयरी-धर्मियों की घटना का वे बुद मरत हा वन पर विनायक बरत के निग मरुत हा गए है कि बरती दण्ड तथा मृत्युदण्ड क्षयना ही क्षयिणय है।

केलिन एक बात बता दु कि काई भी मृत्युदण्ड दण्ड और दृष्टा के मरत स्वरूपों के बीच मरुत-व क्षयिण नहीं बरत पाया है। इस प्रकार वे नरे प्रसार के क्षयरापी का क्षयात्मक बरत के रोमन म किरी प्रसार की क्षयपना मिलने की क्षयना गती है। दण्डा मरुतमरत नहीं और ही क्षयना होता।

पौड़ियों का अन्तर

पुरा-धर्म की कुठाला को दूर करने, पौड़ियों के अन्तर को दूर करने, सम्भारिय क्षयरापी का निमित्त करने और उनमें क्षयना के अर्थ उत्तरदायिण की भावना उलान करने तथा उन्हें सुधरनायों के बराने के लिए सुधरिण प्रमाण बरताने क्षयरापी है। सम्भव है कि वे क्षयों क्षयरापी क्षयिण और क्षय हीन दृष्टिकोण मरत, केलिन अरुत निर्दोष मरुत और निर्दोषी क्षयरापी क्षयरापी भी मरत ही क्षयरापीकी हाती है।

→
हालांकि मैं वर्तमान की इस भ्रुशशासननामक स्थिति वा समयक नही हूँ, जिसके परिणामस्वरूप भ्रुशशासनहीनता, गुडगर्दी और हिंसात्मक अपराधों की अपनाने वा भ्रवत्तर मिला है, फिर भी मैं इस बात पर विश्वास नही करता कि मृत्युदण्ड से थोड़े से हत्यारों को रोका जा सकता है। नतीजे तथा न्याय में भूल की सम्भावना बनी ही रहती है। और निर्दोष व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड दिये जाने के बाद इस प्रकार की भूलों को सुधारने वा कोई रास्ता ही नही रह जाता।

मैं समझता हूँ कि भारत में मृत्युदण्ड उन्मूलन की जनता वा शगर्बन नही मिल पाया है। अतः हमें तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कि हमारी जनता और विधेय कर हमारे विधि-निर्माताओं को अपराध-मनोविज्ञान वा और अच्छा ज्ञान 'न हो जाय तथा वे सुधार के तरीकों व समाज-बहिष्कृत अपराधियों वा पुनर्धार करने के उपाय नही जान पाते।

कैसी विडम्बना है कि बकील और न्यायाधीश, जिन लोगों को इन मामलों पर सड़क चलते आदमी से अधिक ज्ञान होना चाहिए, मृत्युदण्ड उन्मूलन के प्रस्ताव वा विरोध करते हैं। शायद उन्हें रोजमर्रा वास्ता पढ़ने वाले अपराधियों की नृसंज्ञता और द्विदंयता से डर लगता है और भ्रुशुभव ने उनमें हत्यारे के प्रति गैर-सहायुभूतिपूर्ण भावनाएं भर दी हैं।

कुछ बरों पहले हमारे कानून में मामूली-सा संशोधन किया गया था। इसके अनुसार किसी हत्यारे को पहले की तरह मृत्युदण्ड न दिया जाकर उम्र-कैद की जा सकती है। इससे पूर्व मृत्युदण्ड से बच दण्ड देने के लिए न्यायाधीश को बाररए बताने होते थे।

मैं नही बह सकता कि मृत्युदण्ड उन्मूलन के लिए हमें निजती प्रतीक्षा करनी होगी। दुर्भाग्य की बात है कि विश्वव्यापी भाषुविक प्रवृत्तियों ने मानव को पापाख-हृदयी बना दिया है तथा मौजूदा हिंसा और अपराजता के मूल बाररणों की दूर करने के बजाय हम अपराधी से सहायुभूति और उससे ब्यवहार करने के प्रति उदासीन हैं।

(“जनवाता” से साभार)

“भारत का मवियु जानना हो तो इस देश के बच्चों की बालों और चेहरों को देखिये। बच्चों के चेहरों के भाव जाने वाले भारत को भ्रुक वते हैं। यदि हमें देश में कुशाहली साता है तो इसको गुरुभात बच्चों से ही होनी चाहिए।”

—जवाहरलाल नेहरू

तो देश और प्रदेश की खुशहाली के आधार इन बच्चों के लिए उत्तर प्रदेश शासन क्या कर रहा है ?

❖ प्रदेश के बाल-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए राजकीय सनों, असहाय महिलाओं के बच्चों के लिए बाल-सदनों की स्थापना और परित्यक्त शिशुओं की देखभाल के लिए शिशु सदनों की ब्यवस्था।

❖ उत्तर प्रदेश बाल-शर्धिनयम १९५१ के अधीन बाल-बालिकाओं को समाज विरोधी बनने-से बचाने के लिए बाल न्यायालयों एवं पयवेद्यसदनों की स्थापना।

❖ बाल बचक शिशुओं के पुनर्वास हेतु वाराणसी, हरिद्वार तथा सतनऊ में शिशुकर्म-शालाओं की स्थापना।

❖ भिद्यावृत्ति-निवारण एवं एक अपरागी परिशुक्रना के जावार में लागू।

❖ मानसिक रूप से ब्रविवसित बालकों के लिए सतनऊ में विद्यालय की स्थापना।

❖ गैरसरकारी संस्थाओं के लिए सरकारी वित्तीय सहायता।

❖ मूक एवं बधिर बालकों के लिए धारा, बरेली तथा फर्रुकाबाद में प्रशिक्षण विद्यालय और प्रशिक्षित छात्रों के पुनर्वास की ब्यवस्था।

❖ नेत्रहीन बालकों के लिए, सतनऊ, गोरखपुर, बांदा में जूनिपर हार्ड स्कूलों में श्रेष्ठ पढाई द्वारा शिक्षा ब्यवस्था।

❖ नेत्रहीनों को ब्यवसायिक स्तर पर प्रशिक्षण देने हेतु गोरखपुर और सतनऊ में प्राथित कर्मशाला की स्थापना।

ये हैं प्रदेशीय सरकार की बाल-विकास योजनाएं। आज हमें इन योजनाओं को पूरी तौर से सफल बनाने के लिए ब्रत लेना है।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित। विज्ञापन सं० ६

वागी, अब समाज के सभ्य नागरिक बनना चाहते हैं

—बनवारीलाल बिसारिया

(१४ घोर १६ फ़रव्र १९७२ को अन्वयपाटी के अधिकाग वागियों ने आत्म-समरण किया था। अपने मुकदमों के दौरान [ये स्वानियर स्पिन वेंत्रीय जेल में ही रहे। मार्च १९७३ तक अधिकाग वागी सुरदारों के मुकदमों समाप्त हो गये और जानून के अनुसार उन्हें सजा भी हो गई। मुकदमों की समाप्ति के बाद प्रयोग के लिये चौदह प्रमुख वागियों को २३ मार्च १९७२ को नरसिंहगड (म० प्र०) की उप जेल में रखा गया। ग्यानियर जेल के कुछ अन्य वागियों के साथ ये चौदह लोग भी अब मुफ्तगी की खुशी जेल में रहेगे। नरसिंहगड खुली जेल में मार्च से नवम्बर के दौरान वागियों का भी रूप रहा उसका मुफ्तगी में भी प्रभाव होता स्वभाविक ही है। यहा हम नरसिंहगड उप जेल के जेलर श्री बिसारिया के अनुभव दे रहे हैं। स)

प्रश्न : जेल में साधारण बंदियों और समर्पित वागियों के व्यवहार में क्या फर्क है ?
उत्तर : ये लोग जेल के नियम का पालन बिचकुल नियमित रूप से करते हैं। यह जान इनके अंदर इतनी मही है। वह धारणी जरूर। परिवर्तन आया है इतम, लेकिन धीरे-धीरे। अभी तक ये लोग जंगलों में बिल्कुल आजाद रहे। धरव दिश में उन्हें यहा रटना पड रहा है तो धीरे-धीरे उसके धारी होगे।

प्रश्न : ऐसे कौन से नियम हैं जिनका इन्होंने यहा पालन नहीं किया ?

उत्तर : जैसे इनके रिश्तेदारों की मुलाकात का समय है, साथ सामग्री का सामान बर्गरा है। इन सब में ये लोग कुछ न कुछ बदलाव चाहते ही हैं। जिसमें साथ सामग्री में तो ये लाग बहुत एडवैस्टमेंट करना चाहते हैं। मुकामशोकी ने बेड़ साल पहले धार खया प्रति व्यक्ति वहा भा और फिर ग्यानियर जेल में इन लोगों को स्वेज बन गयी, वही स्वेज हय यहा मिली। अब उस स्केन के अनुसार धीरों के भाव में काफी अरर आ गया है।

प्रश्न : अब प्रति बरी डाइट करीब छ राया आया है ?

उत्तर : हा करीब छ, रुपये दोनों समय का, पूरे दिन का।

प्रश्न : और कौन से नियम हैं जिनका पालन नहीं हो पाता ?

उत्तर : जैसे मुकह सोकर उठने का है, नहाने-पाने का है, तरतीब से बैठकर पाने

का है। जब जिसकी मर्जी आनी है खाना बनाने चला जाता है। नही भी जाता है। कभी-कभी जो साधारण बंदी है हमारे यहा उनसे भी इतने लिए काम करवाना पड़ता है।

प्रश्न : याने नियमबद्ध कोई काम ये नहीं कर पाते हैं।

उत्तर : हा, लेकिन अब धारने काम को करने की धादत तो पैदा हो रही है और उम्मीद है कि खुली जेल में ये काम करने लगेंगे।

प्रश्न : अब से ये धारये ये यहा, छ महीने पठते, सब से क्या परिवर्तन आये हैं ?

उत्तर : सबसे बडा परिवर्तन तो आप यह समझिये कि इनमे जो मुल्का बर्गरा जंती चीज थी ये बर्ग हो गयी हैं।

प्रश्न : लडाई-भगडा... ?

उत्तर : नहीं कभी भी नहीं किया।

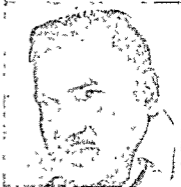
प्रश्न : आरथ में कोई तुरमनी ?

उत्तर : नहीं, कभी कोई नहीं।

प्रश्न : आप चाहते तो इन नियमों का भी पालन इनमे करवा सकते ये ?

उत्तर : हाँ, लेकिन नियमों का पालन कराने के लिए हमारे पास इतना स्टाफ नहीं है। कुछ स्टाफ होता तो ठीक था। जब तक आदि नियम के विषु जी रहे तब तक नियमों का पालन होना रहा। और इनके कार्यक्रम नियमबद्ध चलते रहे। जब वे चले गये तो हमने यह सोचिन्त किया कि अब सर्वोदय और आदि निशान जेल बाने के साथ रहेगे तो वहाँ ये चीज सुनिश्चितक चलेगी। अकेले

स्टॉफ के सामने तो इन लोगों की समस्या ज्यादा पैदा होती ही है कुछ न कुछ भी उनका हल करने में उनको दिक्कत भी धार है। अब जैसे इन्हें किसी धीर की जरूर पडती है तो ये पीरल कह देंगे कि कल ह यहा उपनय्य होनी चाहिए नहीं तो ह भनयन कर देंगे।



बिसारिया जी

प्रश्न : इनके दृष्टिकोण में और क्या कहा आया है ?

उत्तर : पहले जंगल में रहते थे, अब छ दिनगी को तो ये परस्य नहीं करते, वे उस पछता रहे हैं और ये चाहते हैं कि ये समा के अंदर एक अच्छे नागरिक बन कर रहें वैसे एकदम पूरा परिवर्तन तो आयेगा नहीं धीरे-धीरे जरूर आयेगा।

प्रश्न : निम आदिन में आप मानते कि काफी परिवर्तन आया है ?

उत्तर : इन २३ में से माधोसिंह, जियू सा, पचमसिंह, प्रतापसिंह, नारायण कुजार्, मोहसिंह, इनमे बहुत परिवर्तन आया है जियासाल व प्रतापसिंह तो एकदम साधु हो गये हैं।

प्रश्न : इनके (जियासाल व प्रतापसिंह) परिवर्तन का क्या कारण आप मानते हैं ?

त्तर : कारण है शान्ति मिशन ।
 के जरिये इनके ऊपर कुछ अच्छा
 तो पड़ा ही है। इन लोगों ने महसूस
 है कि हम लोगों ने जो काम किये थे
 वे ठीक नहीं थे, समाज के लिए वे काम
 निदा के थे और उस पर अब उन्हें
 आ हुआ तो इन लोगों ने अपने को इन
 का दान लिया ।

प्रश्न : सब लोग अपना-अपना अपना
 प्रलय बनाते हैं क्या ?

त्तर : नहीं सब तो नहीं । २३ में ७-८
 प्रलय बनाने हैं ।

ये नारायण पुजारी और पंचमसिंह
 का मत है, जगराम का, प्रतापसिंह
 का-प्रलय है, जिमालाल का भी प्रलय
 घर स्वसिंह, हरबिलाससिंह का भी
 प्रलय है और फिर आठ-दस जनों का
 एक साथ है ।

प्रश्न : क्या यह फल शाकाहार और
 आर के कारण है ?

त्तर : नहीं केवल इसलिए नहीं है ।
 आने-पीने का फल है, फिर कुछ
 तो वा भी इनके दिलों में विचार है ।

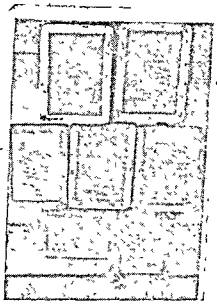
पाने का स्वभाव भी प्रलय है जैसे जिमालाल
 बहुत शुद्ध सात्विक खाना बनाता है ।

ऐसे ही नारायण पुजारी और पंचमसिंह
 का है, प्रतापसिंह का है। इसलिए इनका
 सामयिक खाने प्राणों से प्रलय होता है ।

प्रश्न : ये लोग मेहनती लगे कि नहीं
 प्राणों ?

उत्तर : कुछ तो हैं ऐसे, लेकिन कुछ
 लोग, मैं उम्मीद करता हूँ कि शायद खुनी
 जेल में भी उनकी मेहनत न करें। या हो
 सकता है कि उनके दिल में हो कि हम मुसिया
 रहे हैं, मरदार रहे हैं, और यह भावना खुनी
 जेल में हट जाये और फिर वहाँ ये मेहनत
 कर सकते हैं। खुनी जेल में परिश्रम जरूर
 करेंगे वहाँ खेती उद्योग वगैरह का बशोबल
 किया गया है—प्रशिक्षक रहे हैं तो ये लोग
 उसमें चाब लगे इसमें कोई शक नहीं। यहाँ
 पर (नारसिंहजेल में) कोई काम नहीं था
 इसलिए भी ये लोग अपना अपना साकर लेट
 जाते थे। इससे एक प्रकार का आलसीपन
 बढ ही गया है ।

प्रश्न खुनी जेल के बारे में ये प्राणव मे
 क्या बातें करेंगे हैं ?

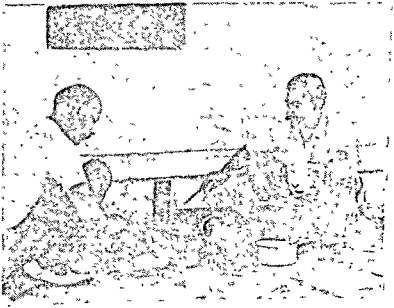


इन स्तंभों पर जो कुछ लिखा है उसे माँगियों
 ने लिखा है जिनकी उपायियों केवल राइफल
 के दृग्ध पर चलती थीं ।

उत्तर खुनी जेल में जाने के लिए ये
 सब तैयार हैं, उम्मुव हैं। वहाँ पर एक साम
 ध्यान यही रखना पड़ेगा अपने को कि इन
 लोगों को काम में लगाये रहें। खानी कम
 बैठें, जो भी कार्यक्रम तो एक नमगवड तरीके
 से ही। अगर इन्हे पानतू समय मिला तो
 प्राणसीपन बना बना जायेगा और फिर
 इसी राँच हट जायेगी ।

प्रश्न बगोचि खनी से ये लोग मुँटकर
 पी रोस पर भय और लोटे, इनके अन्तहार से
 क्या ये भविष्य में समाज के लिए उपयोगी हो
 सकते हैं ?

उत्तर हाँ मैं तो धाररकर हूँ। ये धारों
 जाकर समाज के लिए एक उपयोगी भूमिका
 धरा कर सकते हैं। अब खुनी जेल में जा भी
 धारा रहे, उनसे बाद धार में समाज में
 जायेंगे—उस पर भी इनका उपयोगी योग्य
 निर्भर करेगा। ऐसी मैं अब मे ये धारों हैं
 (२३ मार्च '७३) सब से मानता हूँ। मेरी यही
 धारा है कि इनमें परिवर्तन हुआ है और इनमें
 परिवर्तन की भावना है। और धारों में कुछ
 करना भी चाहते हैं और अगर दुनिया ठीक में
 उतरेगा लिया गया तो ये समाज के लिए
 उपयोगी भी हो सकते हैं ।



जान नारसिंह (दाएँ) का खाना कभी उनके लोभ बनाते थे, पर समय-समय
 नारसिंह अपना भोजन स्वयं बनाते लगे हैं ।

सारी दुनिया ही एक खुली जेल है — माधोसिंह

प्रश्न : खुली जेल में जाने के लिए आपके मन की क्या तैयारी है और आपकी कंठा सप रहा है ?

उत्तर : खुली जेल में जाने के लिए तो हम पिछले पाच सान महीनों से ही तैयार थे और तैयारी स्वाभाविक से ही हो गई थी। यहाँ (नरसिंहगढ़ जेल में) तो मरकर नै महीने रखने के लिए कहा था, पर तैयारी करने के लिए पाच सान महीने ल गये। मेरे विचार से तो सभी लोग ही जेल की तैयारी जो मानी जानी है, कर चुके हैं।

प्रश्न : क्या सम्पूर्ण करते समय या उके पहले आपके मन में यह था कि आप इस खुली जेल में जाकर रहेंगे ?

उत्तर : सम्पूर्ण के समय और सम्पूर्ण के लिए ऐसा कुछ तय नहीं था कि सम्पूर्ण कार्रवाई लिए खुली जेल बनाई जायेगी। वैसे तो मरे दिन में, और दूसरे लोगों के दिन में, एक ही बात है कि खुली जेल हो या नद जेल हो नाम रखने से तो कुछ नहीं लिा है। हा, अगर खुली जेल बाई में खुली ही है तो बट धान्य बात है। मरकर मर जायेना बरम उठाना यह भी सर्वर गी बावचीन के व पहले तय करके, यह ह्नुन भन्ना हुआ है। खुली जेल अगर खुली केन ही है तो यह बरम से उदारता ही मानी जायेगी, बाप्य प्रदेय सरकार की।

प्रश्न : जेल मंत्री जी ने खुली जेल का विचार अगर आप लोगों के सामने पढ़ाया था और आप लोगों से पूछा था कि कि खुली जेल कंठी हो ? आप लोगों ने जा बर। क्या मुझसे इच्छे थे ?

उत्तर : हमने जो मुझसे दिखे थे उनमें बड़ा था कि खुली जेल का मतलब खुली जेल ही हो। वैसे बरम जेल में जब दिन म प्राये दिन से हो शर बरम बरम से है। जालर भा देते हैं, रात का बरम कर लेते हैं। मौबादि के लिए भी बेडियों में बन्ना पडना है—येभी भेक कर दिखने में ही है। खुली जेल में यह मर नहीं होना चाहिए। खुली जेल में बरम रखने का तो सारा ही नहीं

होना चाहिए। चाहे वह दिन हो या रात हो। इसके अनाता उसम कंठी को कुछ स्वातन्त्रता होनी चाहिए।

प्रश्न क्या आपको कंठी मानेंगे, खुली जेल वाले फिर ?

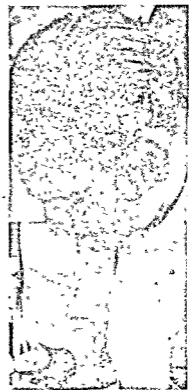
उत्तर बात यह है कि खुली जेल तो देवी नहीं मीने और धमी तक रहा नहीं, पहला ही शोषण है।

प्रश्न क्या सम्पूर्ण के पहले खुली जेल में नहीं थे ?

उत्तर : ये तो। वैसे तो यह सारी दुनिया ही एक खुली जेल है। दोनो ही बाप हैं कि सारी दुनिया खुली जेल में भी है और बन्द जेल में भी है। कोई जेल से बाहर न जेल के भीतर है। जहाँ तक हमारा बानून रख सके उनसे ज्यादा से ज्यादा स्वतन्त्र हम रहना चाहते हैं। इसके लिए बड़ा साधन होने चाहिए, जिससे कि हम धारणा मानसिक सन्तुनन बनाये रहे और अपने आप में यह महसूस करे कि हम स्वतन्त्र है ? उसके लिए यह जरूरी है कि जैसा हमारे गांवों में जो लोग है, पशुपालन, मुर्गीपालन, कृषि, मोटे बहुत कुटीर उद्योग में साधन प्रादि खुली जेल में हो। ये मुझसे रने गये थे, खुली जेल के लिए। अब विचार तो सरकार के सामने रख दिख है, सरकार में इन बारे में बहुत तय कुछ विधा है बाद में, हमको पता नहीं पडा है। दरअसल में दीवार हो या ना हो उसे तो हम कुछ नहीं मानते हैं। हम तो जेल के मैनुअल को मानते हैं। भारत में जेल का मैनुअल तो आप ऐसा गमभिने जैसे 'गरुड पुराण' है। 'भग्ग पुराण' हम लोगों में काया जाना है, उसमें कंठी भी पंर रखने के लिए बन्द नहीं है। तो पुराण को मैनुअल बना हुआ है, गरुड पुराण जैसा है। मर खुली जेल तो जकार से जो मैनुअल है जेल का, जो पुराण ही तब तो जेल खुली है।

प्रश्न : आप अपनी स्वतन्त्रता का उदारोपनिष प्रचार करने ? पुराने जीवन से मुक्त हो कर नये समाज-जीवन को प्राप्त किस प्रकार बना सकते हैं ?

उत्तर भुक्त हो ही कहा रहे है ? है तो जेल ही उसका नाम ! भाई, बन्द जेल को भी हमने तो अपना घर जैसा ही माना



माधोसिंह

है और ऐसा महसूस किया है कि यह हमारा घर ही है और इसके अनात प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए और जब प्रायश्चित्त की भावना किसी के दिम में आती है, तो संस्कार बरम जाते हैं। यह तो स्वाभाविक ही बात है। अब जब खुली जेल का मतलब है तो खुली जेल को भी घर जैसा मानते हैं, घर में जो कुछ भी होगा है उगी तरह में करेगे।

प्रश्न : खुली जेल सोचने के पीछे एक यास विचार यही था कि आप लोगों की जो सक्ति है, आप लोगों में सगठन सक्ति है,

बहादुरी है, कुछ कर गुजरने की इच्छा है; इन सब धर्मियों का उपयोग वहां हो सके— आपके हित में और समाज के हित में, इसके लिए धारा क्या करना चाहते हैं ?

उत्तर : हम तो कई दफा सरकार को बह चुके हैं। समर्पण के बाद कई दफा कहा है कि हमारे दिल में एक ही भावना है कि हमने बुरा किया है। ऐसा अक्षर महसूस करते हैं कि सरकार हमें कोई मौका दे तो हम समाज के लिए, दुनिया के लिए कुछ प्रच्छा करें। अब सुली जेल में हम विनया कर सकते हैं यह तो बड़ा के मंत्रुपाल पर निर्भर है। हम तो अब, सभी लोग, यह निश्चय कर चुके हैं कि वाकी जो जीवन है, समाज की भलाई के लिए ही है।

प्रश्न : मान लीजिये जेल का मंत्रुपाल आपको काफी छूट देना है, तो कित प्रकार के काम धारा बहा करना चाहेंगे ?

उत्तर : सबसे ज्यादा लोग तो खेती करना पसन्द करेंगे। उसके बाद जो भी बड़ा काम होगा वह सभी पसन्द करेंगे। जैसे पहले मैंने बताया—मुर्गी पालन, पशुपालन, बेती और छोटे-मोटे कुटीर उद्योग। जेल में तो ये ही हो सकते हैं।

प्रश्न : जैसा कि जयप्रकाश जी ने कहा है कि समर्पण से धारा लोगों की मुक्ति तो हुई है, उर्खती नाम की सत्या का अन्न भी हुआ है लेकिन यह सान होने के बाद समाज के प्रति धाराकी उपयोगिता किस प्रकार बढ़ सकती है और धारा अपनी गतिविधियों को किस प्रकार उभरे लगा सकते हैं ?

उत्तर : अब्रजी में बहते हैं कि जिस काम को जो करना है, करना रहा है उन काम को वह दूसरे लोगों से प्रच्छा कर सकता है। हम लोग बड़ी से बड़ी 'रिस्क्' वाला काम उठाने के सादती हैं। इनका ज्यादा से ज्यादा जो तजुर्वा है वो जंगली क्षेत्रों में रहने और एा बोररा के माथ रहने, एकउठर बगैरा करने और गोली बगैरा चलाने का रहा है। मैंने धारा में बान की तो मैं विचार मिले हैं कि सरकार चाहे तो फौज या पुलिस इनमें देण की सेवा करने का मोवा दे तो हम लोग संवार हैं।

मेंने विचार में भी जो लोग इन कामों में जाना चाहे उनको खुशी से खुली छूट देकर और ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन देकर उसमें भेजा जाय तो ये अधिक से अधिक काम कर सकते हैं। क्योंकि वाकी लोगों का पन्द्र-पन्द्र, बीम-बीम सालो का तजुर्वा है और सब कामों से ज्यादा तो इन काम में शीघ्र से शीघ्र कामयाब हो सकते हैं और दूसरे लोगों से अधिक प्रच्छा काम कर सकते हैं।

प्रश्न दो-तीन बातें और हैं जो सुली जेल में जाने के बाद धारा लोगों के नामने धारा मन्त्री हैं। सुली जेल में वातावरण खुला होगा, धारा लोग धूम-धूम कर सकते हैं, धारा काम-काज कर सकते हैं, लेकिन उसके कारण धाराकी भगडा को हल करने, उसको काम करने के लिए धारा लोग क्या सोचते हैं ?

उत्तर उसका विचार किया है। भगडे का कारण तो एक ही एला है, संसार। स्वावियर से लेकर सागर तक की जेल के समर्पणस्थानों में संसारों की बन्नी रही है और संसार प्रच्छे न होने से भगडे बगैरा हुए। मेरा तो ख्याल है कि पहले से हालत अब बेहतर है और प्रच्छे संवार हुए हैं। लेकिन फिर भी सुली जेल में इत बान को देखना है कि ज्यादा से ज्यादा संसार हम सब में भरे जाएं। उसमें लिए प्रबन्ध विधे जाएं। सर्वोदय करे या सरकार करे। तब मुक्ति है कि कोई भगडा नहीं होगा धारा में।

प्रश्न : सुली जेल खुलने से धारा लोग यह मानते हैं कि समर्पण के बाद का बड़ा प्रच्छा संभाव्य बड़ा और एा नया संभाव्य बड़ा हुआ है। लेकिन इस सारे समय में धारा के परिवार के लोगों को पुनर्स्थापित करने के

लिए, उनकी सहायता करने के लिए मध्य-प्रदेश सरकार ने और शान्ति मिशन ने जो कुछ किया उसके बारे में धारा क्या बहता है ?

उत्तर : धारा तक बुल किया कर जो हुआ है उसने तो सबकी मान्यता है।

प्रश्न धारा लोग पीरोल पर छुटकर बाहर गये और अपने घरों में जाने के बाद धारा में मिले जुले हैं, बड़ा लोगों में रहे। बड़ा जो हालत धारा ने देखी वह क्या धारा जब बागी थे, तब से बदल गई है ?

उत्तर हम जब छुट्टी पर गये, मैं हमने अनुभव किया, छोटे गांव से लेकर बड़े बड़े तक और बाजार तक में, बड़ा धारा ऐसा लगता है जैसे रामराज्य हो।

प्रश्न : धारा लोगों के प्रति लोगों में श्रुतक था, भय था, या दुश्मनी का जो भाव था वह कुछ कम हुआ है क्या ?

उत्तर तो मैं पांच प्रतिशत ही अब बकया है। बदले की भावना अब पांच प्रतिशत ही रह गई है। मैं तो वैसे 'ना' के बराबर मानता हूँ उसे।

प्रश्न हम ऐसा क्या कर सकते हैं कि चम्बल घाटी में बुनियादी परिवर्तन हो सके। मुद्रा का जो हिस्सा जो इतिहास से इतनी सधियों से बना रहा है वो फिर से दण देण या लट्ठहाना हुआ भाग हो सके ?

उत्तर : इसके लिए तो अब पैत की जरूरत है। अगर योजनाओं पर पैत बड़ा खर्च किया जाय तो धारा कुछ बन सकता है। हुआ भी यह है कि धारा गमला (टांजी) के कारण सीमाओं बर्षों से बड़ा विनाश का घेरे काम नहीं हो पाया है। मैंने बड़े

समर्पण से पहले जीरा (पुरेना, मं० प्र०) के पास धीरेसा नामक गांव के इतनी स्थान पर माधो सिंह धरा ने साधियों के साथ ठहरे थे



“अपने देश के लोगों को बायदे किये हैं—उनकी खाना, कपड़ा, रोजी और मकान देने के, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य रक्षा का प्रबंध करने का। इन बायदों को हमें पूरा करना है।”

—इन्दिरा गांधी

डेकेदार बगैरा डर की बजह से जंगल में जा नहीं पाते थे। तो प्राइवेट डेका लेने के लिए कोई तैयार नहीं था। रहा गवर्नमेंट का। वह ऐसे काम बहा कर नहीं सकती थी। ये कई दिक्कतें थीं। इसके बलावा इस समस्या पर ही सरकार का पूरा पैसा खर्च हो जा रहा था। तो दूसरी तरफ ध्यान नहीं गया। इसलिए यह बलावा विपदा ही रहा।

बम्बल घाटी का सारा ही इलाका हम लोगों का ज्यादा जाना हुआ है। बम्बल घाटी का हर वातावरण हम लोगों के दिमाग में जाना हुआ है। अच्छे से लेकर बुरे तक। धीरे धीरे से आदिवासी से लेकर एक बड़े पूंजीपति तक की भावना का हम लोगों के पास धजलना है। मानव का भी धीरे वहा की प्राकृतिक-ईश्वरीय देन था भी। हम लोगों के दिमाग में हर चीज बँधी हुई है। धर सरकार की कोई योजना बने तो सरकार हमसे जो कुछ करना चाहती हो, सेवा कराना चाहती हो, तो हम लोग तैयार हैं। हम लोगों की एक समिति बना दी जाये और समिति से सरकार जो भी मुभावा पूछे तो हम बतायेंगे। अभी तक तो किसी ने ये नहीं पूछा कि यहाँ क्या होना चाहिए? वहाँ जो पैसा टप गया रहे है हमने कैसे खर्च करें, हमने क्या होगा।

प्रश्न . समर्पण करने के बाद से धर तक प्राण के मन में क्या फर्क थाया ?

उत्तर . ग्वाल्ियर जेल में घाने ही घाने घोड़ा सा एक भट्ठाया महसूस हुआ कि हम नहीं ऐसी जगह पर हैं जहाँ अच्छा नहीं लगता। उसके बाद जब कैम चलने का वातावरण बना तो बड़ी परेशानी हुई। कोई बहने बकूल कर ली, कोई बहने थे, कोई बहने, तयाम रूढ़े बने, मखिल कोई रिसार्ड नहीं दे रहे थे। लेकिन जब जयप्रकाशी ने और मुख्यमंत्री ने एक दस्ता बनाया कि यह प्राण के लिए दीक है, हालांकि उम राही पर हम नहीं पढ़ कर पाते थे, तो उम राहने को भालावा धीरे बाने भारतप रीकाररिये तो आदिन हो गई। एक मखिल सो मित गई। फिर तललीठ नहीं हुई। (पंचायत बाने से हुई राजनीत के आधार पर)

उत्तर प्रदेश शासन प्रधानमंत्री के उक्त संकल्प को पूरा करने के लिए सतत् जागरूक हैं

कैसे ?

✧ पूरे प्रदेश में १ लाख व्यक्तिगणों को रोजगार देने की योजना के अन्तर्गत ११ करोड़ रुपये की योजना लागू की गई है।

✧ अमिटीय व्यक्तिगणों एव हरिजननों में १८ एकड़ की अधिकतम जोत सीमा लागू करने के पत्रव्यवस्था पालतू भूमि का वितरण।

✧ नुजुर, प्राथमिक तथा अन्य शिक्षित बेरोजगारों को काम दिवाने की ८६४ करोड़ रुपये की योजना।

✧ हरिजननों के लिए राजकीय सेवाओं में १८ प्रतिशत स्थान सुरक्षित।

✧ हरिजननों के बच्चों के लिए हार्द स्कूल तक नि:शुल्क शिक्षा।

✧ १९७२-७३ में डिग्री कॉलेजों की संख्या २६२ और विभाषिद्यालयों की २१ हो गई।

✧ १९७२ म ४१४८ रजिस्टर्ड कारखानों में ३९७६ कारखाने नॉनरल थे जिनमें ३,६५,००० एरशिन काम कर रहे थे।

✧ मार्च, १९७३ तक रजिस्टर्ड लघु उद्योग इकाइयों की संख्या ४००००० हो गई।

✧ राजकीय निचय गांधी की शमता बढ़ कर ३१ मार्च, १९७३ तक ६२ लाख हैक्टर तक पहुँच गई।

✧ निजी निचय गांधी की संख्या फीते दो साल से ऊपर पहुँच गई।

✧ इन सुविधाओं के पत्रव्यवस्था १९७२-७३ में १८७-९० पंचम मैट्रिक टन साखाना पैदा हुआ।

ये हैं प्रदेशीय सरकार के बतियप प्रयास। आज के दिन हमें प्रधानमंत्री के सकल्प को पूरा करने के आडिग एव घट्टट निरदय को दुहराना है।

सूचना विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित। विज्ञापन सं० ७

मध्य प्रदेश

प्रगति और सफलताओं का एक वर्ष

- ❖ सांच सी एक डाकुओं के आत्मसमर्पण से सदियों पुरानी डाक समस्या प्राय समाप्त ।
- ❖ बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त तथा जन कल्याण केन्द्रित प्रशासन ।
- ❖ खेती की जमीन और शहरी संपत्ति की नयी सीमा निर्धारित ।
- ❖ राज्य के समुचित विकास की दृष्टि से पहली बार राज्य योजना मंडल का गठन ।
- ❖ इस वर्ष के अन्त तक सभी उपलब्ध कृषि योग्य भूमि तथा ग्रामीण क्षेत्रों में नि शुल्क प्रावासिय भूमि का वितरण ।
- ❖ पांचवी योजना के अन्त तक कुल क्षेत्र के २३ प्रतिशत में सिंचाई के विस्तार की योजना का सूरुपात ।
- ❖ २१,५११ सिंचाई पम्पों, १०२४ गावों तथा १६७ हरिजन वर्मियों को विजयी उपलब्ध ।
- ❖ ६७,०३- एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई ।
- ❖ मूलाग्रस्त क्षेत्रों को तत्काल सहायता ।
- ❖ द्रुत औद्योगीकरण की दृष्टि से ठोस कदम ।
- ❖ शासकीय कर्मचारियों को अर्द्ध वेतनमान, भत्ते तथा अन्य सुविधाएँ ।
- ❖ छात्र कल्याण सलाहकार परिषद का गठन ।

उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में सघन प्रयास

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म० प्र० द्वारा प्रसारित

सू० प्र० सं० २७११/७३

खुली जेल भी बनाने की क्या जरूरत है ?

नाथूसिंह

प्रश्न : बागी होने के बाद नाथूसिंह को धाप बाहर चले गये थे, बनारस में गुप्त रूप से कान्डे का व्यापार करने लगे थे। इस प्रकार से धाप बगवान खोजकर दुनिया में धा हो गये थे। उनके बाद धापको लगा कि समर्पण करना चाहिए। तो धाप दुनिया की जेल छोड़कर खुद अपनी मर्जी से जेल में क्यों प्राये ?

उत्तर : पहले के पार थे चुटके के लिए। बाड़ी भी हम रहने, बीई भी व्यापार करने, एमें डर रहना, हम धापने परिवारवाला थे नहीं मिल सकते थे। दुनिया के लिए हम मियां झालू ही बने रहने।

प्रश्न : डार होने से जिन लोगों की गले काएण खराबी हुई थी उनको धापने के लिए धाप बना करके ?

उत्तर : पहले के पार थे चुटके के लिए। बाड़ी भी हम रहने, बीई भी व्यापार करने, एमें डर रहना, हम धापने परिवारवाला थे नहीं मिल सकते थे। दुनिया के लिए हम मियां झालू ही बने रहने।

उत्तर हा।
प्रश्न : धाप पैरोल पर गये थे तब भी वो मारने पर तुले थे ?

उत्तर : हम बहा बहई गये ही नहीं धीर हम जाने नो बंसा हो जाना।

प्रश्न : तो जल लोगों का हृदय परिवर्तन धापका करवाना चाहिए।

उत्तर : हृदय परिवर्तन तो हमारे जय-प्रकाश वाजु से करवाओ, मुख्यमन्त्री सेठी जी से करवाओ।

प्रश्न : फिर भी धापको उनके हृदय परिवर्तन में ना उनको मदद करनी चाहिए।

उत्तर : मदद तो हम उनकी तब करें जब हम का रहते हैं। वो हमको रहने ही नहीं देंगे तो हम उनकी क्या मदद करेंगे ? वो तो हमको पहन ही मार देंगे। जैसे हमने उनके धापकी मार दिया था, वो हमको मारने के लिए खुद डाल रह है।

प्रश्न : पक्की बाग है ?

उत्तर : पक्की बाग है। दो-चार बैंग तो सामने था भी चुके हैं वो पैरोल पर गये उनका मारने धाप, वो भाग धाप तो उनके चिन्ता का मार जाना।

प्रश्न : इनका मतलब है कि धापके मन में एक चुकचुकी नो बनी ही होगी।

उत्तर : यह चुकचुकी न हो तो हम लोग इन लोगों से क्यों रहने है कि इनकी बड़के बापम होगी चाहिए। यहां जो कोई भी धापना है इन अपने धारदार बटने हैं कि उनकी बड़के जमा कराई जायें। हमका डर है, हमार परिवार वालों को भी डर बना रहना है।

प्रश्न : इन काय में धापको चिन्तकी मदद चाहिए।

उत्तर : अयप्रकाश वाजु से काय कर सकते हैं। वो भी मजबूत है उन्हें समझ में था सरना है।

प्रश्न : धापके मन में इनकी ताकत नहीं पैदा हुई है कि धाप उन्हें खुद मजबूत करें ?

उत्तर : इनकी ताकत नहीं पैदा हुई है कि धाप उन्हें खुद मजबूत करें ?

उत्तर : इनकी नहीं है, धापनी। हमने डर लगना है कि जब तक हम समभावों को हमारी पीठ में बड़के लगा देंगे।

प्रश्न : डेड साल तब परा धाप क्या करते रहे ?

उत्तर : यहां कोई काम है ही नहीं। खाना बनाओ, भोजन का नाम सो धीर किन्ना जी ने जो चिन्ताई थी है उनको पडने।

प्रश्न : धापको बंसा लगना है ? उसके बारे में भाग क्या सोच है ?

उत्तर : हमें तो बड़के धापना लगता है। यहां तो कोई काम है नहीं करने को वहां जायेंगे ता खुब सेती मिलेंगे, सीकार नहीं होगी, खुब सुनी हवा मिलेंगी, वो धापकी भी धापायें करेंगे हमारे पाग। खुब वो बतायेंगे खुद हम करते।

प्रश्न : यदि धापको खुली जेल बनाती है कि पडे नो कंठी बनायेंगे धाप ?

उत्तर : तब तो हम इन लोगों को जेल बना देंगे। धीर बलिह हमें तो खुनी जेल की जरूरत न पडनी। यदि वे सोच लें कि इन लोगों में इनने प्रत्याचार जिये, धीर फिर वे इन हमारे सामने हथियार लेकर धा गये। जेल में से इनको दल-दम टिक के लिए छोड़ दिया, तो भी धापने धाप डीन समय में बापम धा जाते हैं, फिर इनके लिए खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

प्रश्न : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

उत्तर : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

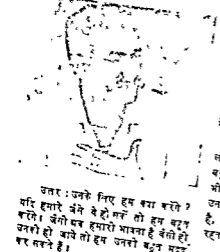
प्रश्न : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

उत्तर : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

प्रश्न : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

उत्तर : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।

प्रश्न : धापको खुली जेल बनाने को ही भी क्या जरूरत है ? फिर तो इनका धर बनू केने कि वहा फास है, जाओ सेनी मरु करो।



उत्तर : उनके लिए हम क्या करते ? यदि हमारे बने थे हो मरें तो हम बदन करते। जैनी सब हमारी भावना है वंसी हो, उनको ही धापें तो हम उनको बड़के मरद कर सकते हैं।
प्रश्न : उनकी ऐंगी भावना बनाने में भी धाप मदद कर सकते हैं या नहीं ?
उत्तर : निश्चि अब को हयको मारने को सँवार है तो हम मदद करें कर सकते हैं ?
प्रश्न : धापी भी को धापको मारने के लिए सँवार है क्या ?
प्रश्न : धापी भी को धापको मारने के लिए सँवार है क्या ?

मोहरसिंह

प्रश्न : खुली जेल मुंगावली जाते हुए मन में कैसा लग रहा है ?

उत्तर : मन में ध्रुव तो बड़ी चुगी है। अच्छी हवा में जाय रये हैं, कोठरा-गोठरा कुछ नहीं होयगो। वहाँ आके तो अच्छीतनेगा, चौड़ी जगामे जा रये हैं, वहाँ अच्छी मुविपार रंगी।

प्रश्न : वहा आप क्या करना चाहते हैं ?

उत्तर : वहाँ जो सिरकार बतायीगी वही करे।

प्रश्न : नहीं, पर आपके मन में क्या है ?

उत्तर : हमारे मन में ? बेती भी कर सकते हैं। पशुपालन भी कर सकते हैं, मुर्गी पालन भी कर सकते हैं। कुछ भी काम कर सकते हैं। कमी फौज में कहे, मिलेटरी में कहे। पशुपालन करे हम तो।

प्रश्न : बागी बनने से पहले भी आप पशुपालन करते थे न ?

उत्तर : हाँ, मेरा यह काम था पहले।

प्रश्न : पशुपालन में आपकी इतनी रचि क्यों है ?

उत्तर : रचि तो दूध पीता हूँ और दूध तपकता हूँ और का रचि है ?

प्रश्न : पशुपालन के थलवा भापके मन में क्या है जो आप करना चाहेंगे ?

उत्तर : देश की सेवा कर सकते हैं।

भोला टाये फिरेंगे गाव-गाव।

प्रश्न : गाव-गाव में क्या बहेंगे ?

उत्तर : कहेँगे के भैय्या शान्ति से रहा करे, लड़ा-भड़की मत करे।

प्रश्न : सिर्फ़ समयभाने से मान को नहीं भी काम बने, उन पर बसतर न हो तो फिर आप अपनी जिन्दगी इस तरह से चला सकते हैं कि उन लोगों को लगे कि देखो मोहर सिंह आजकल ऐसे काम कर रहा है, इतना भला आदमी बन गया है।

उत्तर : हम अपनी तो जिन्दगी चलायेंगे ई वंसी। हमने तो दोई तरफ़ देख लई है। या तरफ़ तो हम भव भुक्त ही नहीं बनत।

प्रश्न : जिस दिन पगारा में आपने गाँधी जी के चरखे में अपनी बँकूक रख दी थीर लोगों से हाथ जोड़ कर माफी माँगी थीर फिर भातिपर जैल गये, उसके बाद से

भव तक आपने अपनी नई जिन्दगी के लिए क्या-क्या किये हैं ?

उत्तर : नई जिन्दगी के लिए थोड़ा बहुत पढ़े-लिखे हैं और बचल करके मुकदमे से निपट गये। शान्ति से पढ़े रहते, हैं बहुत अच्छे, रात सोते, सुबह जागते, नाच-धोते हैं, मस्ती चल रही है। पूजा-गाठ करत है, भव थोड़ा चिन्ता नहीं हम लोगन को।

प्रश्न : पेंरोल पर आप गये थे तो वहा क्या किया ?

उत्तर : वहाँ कुछ नई, धूमत-फिरत रहे, लोगों से मिलत रहे, अच्छी तोर से। गावों में घूमे फिरे खूब, कोई तकलीक नई।

प्रश्न : आपने वहाँ का वातावरण कैसा पाया ?



मोहरसिंह

उत्तर : वह तो बहुत ही अच्छा पाया, कोई डर नई, रातों-दिन लोग फिरते रहते हैं, कतई कोई डरता नई। पहले दिन के रात बजे के बाद थोड़ी खेत पर मिलत नई था—आज जाते थे पर को सवे, भव तो सब खेत में रात-रात रकते हैं। कोई डर नई, बहुत धुन्डर है।

प्रश्न : पेंरोल पर जब आप लोगों से मिले, जो लोग आपसे मिलने आये, उनमें आपसे कैसा व्यवहार किया ?

उत्तर : बहुत अच्छा किया। पहले जैसा डर उन्हें लगता था वो डर भव नई रहा उनमें। भव तो वी भाई की तरह में देखते हैं, हमारा भी भला चाहते हैं। कोई डर का उनका सवाल नई। वो लोग मानते हैं कि भव इन लोगों में अच्छा किया है पहले अच्छा काम नई करते थे। भव डरते नई

बोत ज्यादा इज्जत भी करते हैं।

प्रश्न : चम्बल घाटी में सबकी जिन्दगी खराहाल हो, उनके घर, खलिहान भरें उनमें शिवा भाये, वहा उद्योग-धंधे खुलें—इस सबके लिए आप क्या कर सकते हैं ? आपके मन में क्या है ?

उत्तर : मन में हमारे ? उनकी मदद करी जाय, पढाई की जाय, नौकरी पर लं जाय, धंधे भी करें, सिरकार पुनर्बति कर रही है।

प्रश्न : इस डेड़ साल में ऐसी कौन सी पटना घटी जितने आपके मन पर सबसे ज्यादा असर किया ?

उत्तर : डेड़ साल में कोई भी ऐसी बात नई होई कि हमें बुरी लगी। सब अच्छी लगी। फिर भी सबसे अच्छी हमें जे लगी कि हमने जो पाप बरे, वे हमने बचल कर दने तो हमें बीस साल की सजा हो गयी।

प्रश्न : बचल करते बन्त आपके मत में क्या था ?

उत्तर : ये था कि हमारे पाप की सजा हो जाय। भदासत गया होती है, तो जाके बहा, गोता मार के कि गया मया पू पाप भी हमारे। और बचल नई करते (गंगा नई लगाते) तो पाप नई धुलते हमारे। बूढ़ या जनम में भोगत पड़ते बहू, जा जनम में ई भोगते।

प्रश्न : मान लो कि मध्य प्रदेश सरकार आपनो एक जितरा दे दे और बहे कि मोहर सिंह जी आप और आपके साथियों की यह क्रियेदस्तरी है कि हम जितने में ध्यव नई डकैती, चोरी, मारपीट, पूरा फ्राँट नहीं होना चाहिए। ये दिन यह धार बँकूक के बल पर नहीं करेंगे, लोगों के बीच रह कर उनको समझा कर करेंगे। तो आप करेंगे इस ?

उत्तर : हाँ, बिलबूल, टटने में बल से नहीं, समनाय के हम कर सकने। कोई भी हम में से डाकू नहीं बन सक्ता। बनेगा तो हम सिरकार को पकड़ कर दे देंगे। हम भाँटि सैनिक बनने को उँतार है—छाती टोच के।

मुंगावली की खुली जेल : गुना जिले में महान घटना

—श्री. पी. सिंह, जिलाधीश, गुना



श्री. पी. सिंह

वर्ष १९७१-७२ मध्य-प्रदेश के इतिहास में ही नहीं बल्कि समस्त भारत के इतिहास में एक नया घुट जोड़ने वाला वर्ष रहा है, जब कि पीड़ितों से पीड़ित समाज को तथा बन्धन घाटी की जनता को दसपुत्रों द्वारा शासन समर्पण के पश्चात् गुना की नींद सोने का शवसर मिला।

दसपुत्रों से प्राप्त भूमि, जनमानस तथा बनावरण जो भारत और घाटों के भयभीत रहना था, शांति मिशन के प्रयागों द्वारा शांत हुआ। अहिंसा ने हिंसा पर विजय पायी। बन्धन घाटी में बोहो नछार, भरारामर्ग, साईं-सन्दर, धेन लानियान जहाँ गोत्रियों की मूक मुनावी बन्धी थी तथा जहाँ की भूमि रक्त रजित हो चुकी थी, कल्पना नहीं हो सकती थी कि उसी भूमि पर हरे-भरे धेन सह-हाथियों और गांधी, विनोबा का स्वप्न साकार होगा।

मध्यप्रदेश शासन के दसपुत्रिकारी तथा दसपुत्रों द्वारा मारे गये व्यक्तियों के परिवारों, सन्तानों एवं व्यक्तियों के परिवारों तथा इनके पुत्र-पुत्रियों की विशेष सहायका प्रदान किये जाने के आदेश प्रसारित किये।

फलस्वरूप ऐसे परिवारों को, उनके पुत्र-पुत्रियों को मंडल गुना में भी वर्ष ७२-७३ में सहायता की गयी। यद्यपि इस संघर्ष में दसपुत्रों का विशेष प्रभाव नहीं रहा है, फिर भी खिलपुरी मंडल के निवृत्त होने से यह क्षेत्र भी पूर्णतः अछूता नहीं रहा है।

मंडल गुना में इस प्रकार सिरसी गुना क्षेत्र के तीन पीड़ित व्यक्तियों को ५५ एकड़ भूमि छपि कार्य हेतु प्रदान की गयी तथा वर्ष ७२-७३ में दस धान-दानाओं की विद्या विभाग द्वारा २५१६५-५५ रुपये की अनुरागि विद्या-वृत्ति में निर्धारित की गयी एवं वर्ष ७३-७४ में इसी तक १२१७०-०० रुपये की अनुरागि निर्धारित हो चुकी है। छात्रवृत्ति एवं प्रतिमाह विवरित करने की व्यवस्था है जिससे वे अपनी विद्या-दीक्षा सुविधा पूर्वक चलाए कर सकें। जैसे ही छात्रों की ओर से आवेदननाम प्राप्त होते हैं, उन्हें तत्काल पुत्रिय अपीलक के पास परीक्षण हेतु भेज दिया जाता है। तदोपरान्त माये आवेदन वको कर कलेक्टरेट द्वारा प्रमाणीकरण हो चुकने पर विद्या विभाग द्वारा छात्र वृत्तियाँ विवरित की जाती हैं।

इससे प्रतिदिन पीड़ित परिवारों के व्यक्तियों में से इस मंडल में ८ व्यक्तियों को आश्रय देना में तथा ६ व्यक्तियों को शिक्षक पद पर नियुक्त किया जा रहा है। दसपु परिवारों में से ३० परिवारों को १७०००-०० रुपये की अनुरागि भूमि प्रदान हेतु धन्तन की जा चुकी है तथा ७१ दसपुत्रों को सामान्यत एक हजार एकड़ भूमि छपि कार्य हेतु प्रदान की गयी है। ●

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का

हम अभिनन्दन करते हैं।

- साध रंग
- सूती बस्त्ररंग
- इषोसित्त
- रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि.

(सुरक्षित उद्योग गुम)

कार्यालय :
२०३, डा. जी. एन. रोड
बम्बई-१

कारखाना :
मेडानी ईश्वरदास
विन सप्पाउण्ड,
पोन्पुर तैक,
दुर्गा, बम्बई

केशरदास कस्तूरचन्द अरोड़ा

किराणा मर्चेण्ट, मालती वनस्पति घी,
बिस्कुट, पान-मसाला, रस्सी बांध,
माचिस नं० २७ व आर्या गोली और
बिस्कुट के विक्रेता

अमर ट्रांसपोर्ट, ग्वालियर-अशोक नगर-इन्दौर

डेली सर्विस

फोन : ५७

मेसर्स वरकतराम शिवनारायण

किराना मर्चेण्ट्स व डिस्ट्रीब्यूटर्स
(टाटा साबुन व डी० सी० एम)

सुभाषगंज, अशोक नगर

(गुना) म० प्र०

टेलीफोन : २६

फोन : २३

मेसर्स मिट्टूलाल हंसराज अग्रवाल

इंडियन आयल डीलर्स तथा एजेंट्स

ए०सी०सी० सीमेन्ट स्टाकिस्ट, इयूटूज किलोस्कर
ट्रेक्टर, एन्जिन, पम्प के गुना और विदिशा जिलों के
लिये अधिकृत विक्रेता, जवाहर डीजल एन्जिन तथा
पम्प सेट्स डीलर्स, मोटर तथा ट्रेक्टर पार्ट्स के डीलर
और गवर्नमेन्ट कान्ट्रैक्टर और सप्लायर्स ।

अशोक नगर (म० प्र०) [प० रेल्वे]

भूदान यज्ञ : बुधवार, १४ नवम्बर '७३

खुली जेल के उद्घाटन अवसर पर

पिस्तौल छाप बीड़ों के निर्माता
माननीय मुख्यमंत्री श्री सेटीजी व
श्री जयप्रकाश जी नारायण का
हादिक अभिनन्दन करते हैं

मेसर्स शिवराजसिंह राजाराम

मुंगावली (म० प्र०)

तार: देवामुरी, फोन: दूकान ६, निवास: २०/११४, मन्डी ७६

चौधरी रज्जूलाल मोतीलाल जैन

अनाज तथा तिलहन के व्यापारी तथा कमीशन एजेंट्स
अशोक नगर (गुना) प० रेल्वे

शास्त्रा

तार: देवामुरी

फोन: ३२८३१३
४७१२०१

चौ० रज्जूलाल मोतीलाल जैन
२४, २७ मस्जिद साइडिंग रोड,
देवा भवन, बम्बई-६

तार: देवामुरी

चौधरी ब्रदर्स

जवाहर चोक बुधेरावी
भोपाल (म० प्र०)

एक मान अधिकृत एजेंट

तार: बमल दाल

चौधरी दाल मिल

चने की दाल के विशेष व्यापारी
अशोक नगर (गुना) प० रेल्वे

फोन: कार्यालय ३०८७

निवास ४४६१

मन्डी ४१५७

अशोकनगर को-ऑपरेटिव मार्केटिंग सोसायटी लिमिटेड

अशोकनगर, जिला गुना (म० प्र०)

तार: मार्केटिंग सोसायटी

फोन: ३३

जय जयान

जय किसान

१४ नवम्बर, १९७३ को मुगावली में सर्वोदय नेता श्री जय-
प्रकाश नारायण व माननीय मुख्यमंत्री श्री सेटीजी द्वारा खुली जेल
के उद्घाटन अवसर पर खुली जेल का प्रगोषणकार को-ऑपरेटिव
मार्केटिंग सोसायटी लिमिटेड, अशोकनगर, जिला गुना का तथागत
मण्डल हार्दिक स्वागत करता है।

एम.एस राजरुन एन के श्रीरामन्त पी एन. गुन रामबलीशर्मा
प्रंडर विद्यागाल प्रवन्धक धरेश

मुंगावली खुली जेल के उद्घाटन अवसर पर

हार्दिक अभिनन्दन

परसादीलाल केशरीचन्द्र

प्रेम मचेंट एण्ड कमीशन एजेंट

लक्ष्मीगंज, गुना (म० प्र०)

फोन: ८८, मन्डी १५३

तार: मऊवाले

गणेश कुमार प्रमोद कुमार एण्ड कं०

गोद, मोम, गहू, प्रेम मचेंट एवं कमीशन एजेंट
गुना (म० प्र०), दूरभाष: ८८, तार: मऊवाले

कार्यालय सहकारी विपणन संस्था मर्या०

मुंगावली, जिला गुना (म० प्र०)

पंजीयन क्रमांक DR/GWR/४/१९५६

तार-मार्केटिंग

दूरभाष-२३

१४ नवम्बर १९७३, मुंगावली मण्डल गुना में प्राथम शर्माजिन
दम्पुषों के निवेदनपरिचित खुली जेल के उद्घाटन समारोह के अत्र
अवसर पर माननीय श्री अन्नदास नारायणजी, सर्वोदयी नेता,
एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रबन्धनाम नारायणजी, मन्डी-२ की नेता,
विपणन संस्था मर्यादित मुगावली, जिला गुना हार्दिक अभिनन्दन
करती है।

एल. धार. मिह

प्रवन्धक, सहकारी विपणन

संस्था मर्या० मुगावली, जिला गुना (म० प्र०)

दी गुना को-आपरेटिव बैंक लि० गुना (म० प्र०)

दरभाप : कार्यालय ३२ एवं ६८

तार : को ग्राम बैंक

क्या ग्राम चाहते हैं कि:-

(१) ग्रामको धमानती पर धविर ब्याज मिले (२) ग्रामको उत्तम, विगम एव त्वरित सेवा मिले (३) ग्रामकी बचत का देश के हित उत्पादन-कार्यो मे उपयोग हो (४) ग्रामकी धमानती धमानन बीमा नियम द्वारा सुरक्षित रहे (५) ग्रामको देश के किसी भी भाग मे म्यूननम कर्मीशन पर डाप्ट प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त हो (६) प्राधुनिक बैंकिंग सुविधाए प्राप्त हो (७) ग्रामको साद, बीज, रसायनो एव घास एव विद्युत् इतिल, कृषा आदि हेतु सुविधाए प्राप्त हो ।

तो फिर कृपया आम निकटतम शाखा के व्यवस्थापक से सम्पर्क साधिये ।

हमारी शाखाए : गुना, शाहीदा, भगोर नगर, ईलागड, मुगावली, चन्देरी, विरई, म्याना, कभोरी, भारोन, राधोगड, कुरदान, चालीम, मन्डूरनाड, मूरशन तथा प्रात एव सत्यकामनी नगर शाखा गुना ।

त्वरित सेवा

सुरक्षा

वित्तम व्यवहार

मानोरिया ट्रेडर्स, अशोक नगर (म० प्र०)

(सब प्रकार की दालो व हल्दी मार्फत दान के निर्यात)
विशेषता : चना दाल प्राथमिक यथा से निर्यात करते हैं

तार : मानोरिया

पोल धार्मिक ७

निवास ८३

मण्डो १२२

सम्बन्धित फर्म

हृरामचन्द सुमेरचन्द जैन
कपडा, रेडीमेड, चांदी व धातरी
के बेहर, एस्मो डीतर व
मोटर पार्ट्स-निर्माता
साजयनराय मार्ग
अशोक नगर (म० प्र०)
पोल : दुर्गा ७ व
बैंग्लोर १४

मुगनचन्द

राजेंद्रकुमार जैन
अम व मिलहन के
पोर व्यापारी व
कमीशन एजेन्ट
साजयनराय मार्ग
अशोक नगर (म० प्र०)
परिवहन सेक्टर
फोन : दुर्गा ७

मुगावली में

खुली जेल के उद्घाटन के अवसर पर

हार्दिक अभिनन्दन

दरभाप : १०

रामदेव फुलचन्द

पैन मर्चेंट एण्ड कमीशन एजेन्ट

नई मण्डो, गुना

एवं

दरभाप : ११२

गोपाल दाल मिल

लिबिल धरमाला के सामने
गुना (म० प्र०)

मुंगावली, जिला गुना, स्थित

स्वतंत्र कारावास भवन के

उद्घाटन के शुभ अवसर पर

मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी

एवं

सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश जी का

हादिक अभिनन्दन करते हैं

मेसर्स विश्वन्द्याल गजानन्द अग्रवाल

इण्डियन आयल एजेंट, गुना (म० प्र०)

कार्यालय कृपि उपज मगड़ी समिति, गुना

हादिक अभिनन्दन

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गुना जिले की मुंगावली तहसील में खुली जेल के उद्घाटन हेतु सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण के पधारने के शुभ अवसर पर मगड़ी समिति गुना मगड़ी क्षेत्र के समस्त कृषक एवं व्यापारी बन्धुओं की धोर से हादिक अभिनन्दन करती है।

मगड़ी समिति धनुरोध करती है कि इस शुभ अवसर पर कृषकगण देश में हो रही हरित क्रांति को सफल बनावें तथा व्यापारियान क्रय-विक्रय की व्यापारपूर्ण व्यवस्था बनाने में सहयोग दें।

नेमरीचन्द जैन
सचिव, मगड़ी समिति

एस० जी० कापसे
भारसायक पराधिकारी

: यमवार, १४ नवम्बर, '७३

नगर पालिका परिषद् गुना माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी एवं सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण जी का मुंगावली नगर में खुली जेल के उद्घाटन समारोह पर हादिक अभिनन्दन करती है।

गुना नगर पालिका शासन के विभाग कार्यों के अन्तर्गत गुना नगर में नगरवासियों के लिये अपने सीमित प्राधिकार साधनों से समुचित नागरिक सुविधाओं के लिये हर सम्भव प्रयास कर रही है।

परिषद् की वर्तमान व भावी योजनाएँ (१) नगर की सड़क, शिव, सुन्दरम् बनाने के लिए सफाई के टैंकरो की खरीदी। (२) सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों के लिए प्राधुनिक व्यवस्थाओं से सुसज्जित टाउन हाल निर्माण, (३) छात्राओं की शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु बस्तुरवा बन्धा विद्यालय में बसों का निर्माण (४) सड़कों पर डामरीकरण, नालियों का निर्माण, दूध साइट्स की व्यवस्था, उद्योगों का विकास, कार्यालय भवन आदि। (५) नगर के सुनियोजित एवं व्यवस्थित विकास के लिए मास्टर प्लान बनाना (६) पावर ब्रिगेड व तत्सम्बन्धित सामग्री का प्रय करना। इन विकास कार्यों में जन सहयोग की यह परिषद् कामना करती है।

सी० बी० शाह, मुख्य नगरपालिका अधिकारी एच एटाक
पुरनचन्द्र जैन, अध्यक्ष एवं पायंडरगल न० पा० गुना

कार्यालय कृपि उपज मंडी समिति

मुंगावली

मुंगावली मण्डल गुना में आरतगमपिन दस्तुओं के लिए निर्मित खुली जेल के उद्घाटन समारोह के अवसर पर सर्वोदय नेता माननीय श्री जयप्रकाश नारायणजी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्रजी सेठी, मध्यप्रदेश, का कृपि उपज मगड़ी समिति मुंगावली, कृषक वर्ग एवं व्यापारी वर्ग की धोर से हादिक स्वागत करती है।

रमेशचन्द्र जैन,

शिवनारायण पाण्डे

सचिव, मंडी समिति
मुंगावली (म० प्र०)

भारसायक अधिकारी,
मंडी समिति मुंगावली

सावधान !

कीड़े और बौमारियां आपकी हरी-भरी लहलहाती फसल, आपके अथक परिश्रम और खेती में लगी पूंजी को नष्ट कर रही हैं ।

इसके बचाव के लिए

पौध संरक्षण कार्य नियमित रूप से करें ।

किसानों को पौध संरक्षण कार्य के लिए :
कृषि-विभाग, मध्य प्रदेश में

- ❖ औषधियां विकास एजेंडों पर पहुंचाई हैं ।
- ❖ पौध संरक्षण यंत्र खरीदने के लिए २५ प्रतिशत अनुदान की व्यवस्था की है ।
- ❖ फसलों के रोग व कीड़ों से बचाव करने हेतु निःशुल्क सप्ताह हर समय स्थानीय कृषि अधिकारियों से प्राप्त कर सकते हैं ।
- ❖ रोग/कीट ग्रस्त फसलों के उपचार की औषधियों के छिड़काव, भुरकाव के लिए साधारण किरायों पर यंत्र प्रत्येक विकास खंड से प्राप्त कर सकते हैं ।

अधिक लाभ पाने के लिए

पौध संरक्षण कार्य अवश्य करें ।

कृषि विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा प्रसारित

SWING HIGH WITH

bajaj
PRODUCTS



Swinging times and carefree living. If that's your wish for a modern lifestyle Bajaj can make it come true. Any time of day. Any season of year.

The world of Bajaj Products is, in fact, created for modern homemakers. Icecream Freezer Pressure Cookers, Toasters Mixers Ovens Fans Lamps Lighting Fixtures, Accessories and so forth.

And, Bajaj alone have as many as 3,500 Dealers and 16 Branches throughout the country. Here you'll find the greatest Before and After Sales Service-where everything goes with a swing!



bajaj electricals limited

45-47, Veer Narain Road, Bombay-400 001
Branches all over India

heros BE 150

मासिक शुल्क : १२ रु० (यदि कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेह १० रु० या ३५ मिलिट्र, या ५ काल, इस बंक का मूल्य ५० पैसे। प्रभाव बीडी द्वारा सर्व सेवा सच के लिए प्रकाशित एच ए० के प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में प्रिंट

भूदान-यज्ञ

२६ नवम्बर, '७३

वर्ष २०

अंक ६

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

श्रव उन हाथों में हैंसिया है
—प्रभाप जोशी २

अपराध श्रौर दण्ड के प्रति
दृष्टि बदलनी होगी
—जयप्रकाश नारायण ५

जो सरकार करेगी,
हमें अच्छा ही लगेगा
—वातचीत ७

तरुण शांति सेना सम्मेलन की रपट
—रामभूषण ८

टिप्पणियाँ
—भवानी प्रसाद मिश्र ११

मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर
देवत्व की श्रौर बढ़ सकता था
—सरला बहन १३

समुद्र को भीठा बनाने की कल्पना
मत कीजिए
—विनोया १४

आन्दोलन के समाचार १६

छायाकार : मनुपम मिश्र
राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

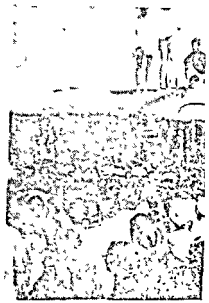
श्रव उन हाथों में हैंसिया है

श्रौर श्रव चम्बल घाटी के भूतपूर्व डाकुओं की एक पूरी पीढ़ी के हाथों में हंसिया है।

सदियों के एक अभिजाप को अपनी नियति की तरह ढीले वाली इस पीढ़ी को एक दुश्चक्र ने हिसन पशुओं का जगती जीवन जीने पर मजबूर किया था। जाने कब तक यह दुश्चक्र इन्हे, इनसे परिवारों को श्रौर पूरी चम्बल घाटी को अपनी निगम वाल से चुचलता रहता। घाटी के सीने पर रोज नये जन्म संगते, रोज लाजा लहू बहता घौर रोज कोई पुराना जन्म बँसर बत कर एक बिदगी को मिटा देता। लेकिन जो घाव एक बँसर में बदलने वाला था उसी ने मरहम खोजा श्रौर पकते घाव ने ही एक सहानुभूतिशील डॉक्टर का ध्यान खींचने में सफलता पायी। घाव श्रौर डॉक्टर ने मिल कर चम्बल के कँसर की दवा इजाद की। जब दर्द दबा हुआ श्रौर घाव इलाज बन गया तो एक पूरी पीढ़ी ने उपचार के लिए अपने को मौन दिया।

डेढ़ साल पहले चम्बल घाटी के इन भूत-पूर्व डाकुओं के हाथों में धार्मिक शक्त थी। ये शस्त्र इन लोगों ने गांधी के चरणों में समर्पित किये श्रौर बदले में तुलसीदास की रामायण श्रौर विनोया का गीता प्रबचन जय-प्रकाश नारायण से प्राप्त किया। रामायण श्रौर गीता ने इन्हे प्रायश्चित्त की प्रेरणा दी श्रौर एक के बाद एक इन लोगों ने ब्रह्मचर्य को गंगा में या मान कर उसकी धारा में अपने अपराध डुबूल किये। मध्यप्रदेश की सवेदन मौल सरकार ने इनमें श्रायि परिवर्तन की समझा श्रौर समर्पण की आत्मा का सम्मान करते हुए मुगावली में नेहरू जयन्ती के दिन खुली जेल की स्थापना की।

जयप्रकाश नारायण इन खुली जेल का उद्घाटन करते १४ नवम्बर की सुबह दिल्ली से बीना पहुँचे। आमपास के लोगों म दक्षिण के क्षेत्र में किये जा रहे इस अभिनव प्रयोग को ले कर कितना उत्साह है इसका पहला प्रदर्शन बीना स्टेशन पर ही हुआ। बहुत में लोग हार-भूत लेकर जे. पी. की जय-जय बार बरने श्रायि श्रौर देखने-देखने से खुशी से सादर दिने लगे। मुगावली—बीना कटेनी लाइन पर बीना से छटा रह बिन्तोमीटर दूर है। मुगावली जाने वाली रेल खड़ी थी श्रौर उसका प्रथम श्रेणी का एक टम्बा पहले श्रौर पना-काघो से सजा था। भीड़ जे. पी. को उत डब्बे तक ले गयी श्रौर घान की बन्नी से पाजपल प्रस्त हो जाने वाले जे. पी. के मन्दर वापर



मुगावली स्टेशन पर स्वागत

गहरी साँस ली। युनिफ के जवानों ने भीड़ को डब्बे से एक सम्मानजनक दूरी तय गिखवा दिया। सभी तरह के लोग उनसे मिलने आने लगे। जे पी के लिए किये गये इन्जनाम में धार्मिकता का एक सिनेटर भी था श्रौर



हस्त कर हैंसिया उठाया

गाइटर भी। टीका दास मेज पर पीस मिश्रण पर जगती विनचने लगी। विरिन बीना स्टेमन। विनचने में उसे कोई दल मिश्रण डाले होंगे। इतनी के बाद यह पाइरो समान पर बनी थी और इस कारण रोज के सम्बन्ध यानी सेंट हो माये में और बार-बार चैन लीची आ रही थी।

आधा घण्टे में गाड़ी मुपावली पहुच गयी। घाम तोर पर ऊपने कावा स्टेमन धका-धका था। और उमाराठन भरा हुआ था। मुख्य-मुखी गैडी, जेन और विधि यन्त्री इन्जिनारन विद्, बहुत से प्रशासन और कोई दो हजार लोग जे. पी. का स्वागत करने के लिए आने उम्मादिन ये जि गाडी के इतने ही घरायक नगरन सब गयी और बाहर एक बँड उम्मादी बँड लख बजने सार। भागसो और फली की दस्तोतमी पर गयी जि लोगो ने इन्वे की घरायक तहस-तहस करने कुल लीब छोरे जे पी. पर लोहावर जिये। लोग इन्वे पर बड गये। तारी भात्री जय जय कर और भीड की देन वेन इनकी धमक बड गयी जि जे पी को मोप्रही बहने से निवारा ले जाने का भायक बलावा हो। बुनिन, प्रशासन और स्वय सेवा की से भीड को हटाया और जे पी को घरायकीविद् स्टेमन के बाहर निकाल ताये। एक एन्जेनेर के बँड कर जे नजदीकी ही बने मौनट हाउस के निर खला हो गये। सेटीजी और इन्जिनारनविद् एक सूची जौन में बँड कर मौनो का भविष्यद दर्शिवरने हुए बुनम से निरने। नगरपालिका की और से पहला सगाड डार बनाया और उसने बाद गाटर और सूची देन फानी लखबीवन विधिर तब कई सगाड डार गटे रिने गये से। विरिन बुनन विरिट हाउस पर ही सथाव हो गया। मौनट हाउस के इन्वे में दाहिने हाथ पर गानि विमन का सिंहर या और गये हाथ पर लख बलावा इन्जिनारन गरा। रिना गया का बड लीब कर जि जे पी. बाहर बजा बँड कर छोटी बँड में नेता पकर बटे। विरिन जे पी का हाथ घासफन उगाड कोरवाले बरिठ गयी कथा इन्जिनरन लीब फली तब से मुपावली में रहे गाविचने में विरि दर्शिवरी और बुनिन बाने बँडे रहे।

बीन-यन्त्री विरिन रहने जब हूय मुपावली घने में तब बह घासफन की दीवार में घास की गाड पर उम्मा टुका एक कथा था। भागसगा जेन की और गमन बाहर की बुनिन से बेसक दफर चैन से बना टाग था। और सूची देन की बान बने हुए बरन दे कि बने ही सब लोग मुन हे मौनट देन का बँड हाथ गये एक ही मन बहे टुके है।



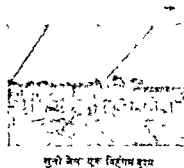
अवनीवन विधिर का निरीक्षण । जे. पी. के साथ थी नाथू

घालिर यहा सुनी देन म हाथु था रहे है। विरिन घास इली लागो न बडे-बडे सगाड डार सगाड य, रकड म बडी घासफन की घासफन के गारो-गट रो से मुपावली की घासफनी लन बोपाई बजा सी थो। वागावरम उन्वय के उम्मादे से भर था। मुपावली जैसे बरन में जे पी. मुनम को सरी उनके सविनय और हूपरे 'बड-बडे लागो का भागमन विधिर हो एक गामंजिक उन्वय था। जीरे, मोटर और बने दौर रही थी।

सिंहर हाउस से लखमन जी किनोनीटर दूर-दूर (काबाड म बनी सुनी जेन के रहने में नीन बने उद्घाटन कार्यक्रम शुरू हुआ। लखमन साव इतार मौग सगाडहे में धारे थे। उन्वयुव जेन का गज-घास फसफोला बँड और सारी के धवन बपडे में बँडे गाटर सारी घासफन के केट था। इन धुनपूर्व बाँगियो के भजन से सगारोठ शुरू हुआ। सब पर गायी किनोला के धा बने विन मे। उनकी लाइन मे जे पी., मुपावली गैडी उनरी पली और बनीगाग बँडे और सब पर गानि विमन के देवेन भाई, मनुतोर भाई, हेयदेर भाई, मुखावरन, ग सांरमन, नरपीनसार विद्, बरवाविद् गादि की घासह पूर्व क बँडया सार। जेन बनी इन्जिनारनविद् न सुनी देन लीबने के बारे में सप्यवेन सारकार का बुदिबोर बलावा और घन्य जालबारी से। धुनपूर्व बालियो के उलोने बहा रि ब भाने स्याहार से विड बरे जि जे पी और सरकार से उनमे थो रिहाय प्रष्ट किया है जे उनके योग्य है। जे पी. ने अपने भागसु मे सुनी देन के प्रयोग का दर्शन बनाया और सगाड के धार-धार काली में हुई गतिकियो का उतर लिया।

(भाषल इन जन मे धान्य पड़िये) जे पी के बाद सरी जी ने सप्यवेनी भावले के धरराध और बण के बारे म जे पी के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि सगाड को बुनिन के प्रति सलाह बुदिबोरन बनना चाहिये। सब यह बुनिन गाजारी के पड़िये की बुनिन नहीं है। बुनिन से सेटीजी ने कहा कि उसे लीबो का इस्त और गामंरसं बनना चाहिये सप्यवेनी और बुन्वेसगड से विवात की घोसगास) पर धमल के लिए जे पी ने जो जोर दिया था उनका भी धनुमोदर सेटीजी ने किया। सार्थविह ने एक बाँगियो से सप्यवेन-हार की प्रतिना करवाई। विरि गये जीन के प्रयोग के रूप में एक-एक बाणी ने धारक गयी किनोला के विन से प्रशास कर ने हाथ से हथिया लिया। डॉ. टुगलगास ने भागार प्रदर्शन किया।

सगारोठ के बाद जे पी और सेटीजी घासह सारन की सगाड से बनी सुनी देन में भीतर गये। देन के बाँडेदार तारी पर मुपा-



सुनी देन एक विरिगम दूर



माधवराव सिन्धिया की स्मृति में शिलालेख

त चमक रहे थे। जलपान में मूलपूर्व बागी त्रिभुज ब्यक्तियों, शासकों, पद्मवारो प्रादि मिले-जुले और जे. पी. के प्रति कुलशता हट करके सेठी जी चले गये। शाम हो गई। और लोग लोट रहे थे। देर से लोटने नों में ज्यादातर लोग मिराबाद के थे

मोगिया, दाबड़ी और सासी लोग थे जिन्हें ७४ वर्ष पहले यहा माधवराव सिन्धिया ने बसाया था। इनमें से एक बूढ़ी खगनुमा महिला ने कहा—ये (बागो) लोग तो हमारे भाई-बन्द हैं। हमे इनसे क्या डर? फिर वह महिला स्मृतियों की पण्डितियों पर पीछे भटक गयी और मिराबाद सेटलमेन्ट के विरसे

गुमाने लगी।

पन्द्रह नवम्बर को जे. पी. ग्याह्र बजे खुली जेल देखने और बागियों से मिलने प्राये। जेल मन्त्री, वृष्णपाल सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (नारावास) नायडू, जेल अधीक्षक इस्लार ब्रह्मद ने उन्हें जेल दिखाई। जगह-जगह भ्रमण करते देख कर जे. पी. ने बागियों को मजाक में समझाया कि भ्रम खूल्हा एक ही होना चाहिए। माधोसिंह, मोहंरसिंह प्रादि माधो फिल्म समिति द्वारा बनायी जा रही फिल्म की शूटिंग के लिए अपने पुराने सूटो में थे। जे. पी., खेल के मैदान वृष्णपाल प्रादि व्यवस्था देखी। फिर प्राधिकारियों से पर्चा की और बाहर के शामियाने में बागियों की बैठक में प्राये। सुब्बाराव और बागियों ने 'जय-जगत पुचारे जा' गीत गाया और दृश्य और वातावरण विलकुल १४ अप्रैल ७२ गगारा जैसा हो गया। जे. पी. की स्मृतिया ताजी हो गयी। जब उनसे बोलने को कहा गया तो जे. पी. का कण्ठ भर गया और आँसो से प्रांगू बहने लगे। दीदी आज नहीं थी... दीदी आज नहीं थे... कहीं नहीं थी और जे. पी. बागियों के सामने प्रकले थे। पाच मिनट में तिसविणो को रोवते-बरजते जे. पी. ने एक वाक्य कहा— 'आज प्राप लोगों के बीच घरेना प्राया हूँ।' सब लोग सन्नाटे में थे... 'आरो के दुःख-दायी ससार में खोये हुए गीने और गुमगुम। तिरफि चिडियाओ की पट्टा भी जो स्मृति के मन्दिर में घण्टियों की तरह घन रही थी। जे. पी. ने अपने को सन्नाहा और पीरे-पीरे बोलना गुरु किया।

एक बजे जे. पी. उठे। मध्यप्रदेश के मरौ चन्द्रप्रतापसिंह, शान्ति मिश्र के लोगों और बागियों ने उन्हें बिदा किया। मोहंरसिंह ने जे. पी. के पात्र छुए और कहा—'बाबूजी प्राण भच्छे हो... तभी प्राहने! ... हम लोगों की तरफ से कोई विक्रम न करें।'

जे. पी. को बागियों की और ने फिर नहीं है। उनके हाथ में भ्रम हगिये हैं और सामने घरनी माना है नये जीवन की नयी पगल सामने हैं। मैदिन गमात्र में घनी बहल बुद्धि बानें बदलती है और जे. पी. उनके वैदिक नहीं हो सक्ते।

जे. पी. को बागियों की और ने फिर नहीं है। उनके हाथ में भ्रम हगिये हैं और सामने घरनी माना है नये जीवन की नयी पगल सामने हैं। मैदिन गमात्र में घनी बहल बुद्धि बानें बदलती है और जे. पी. उनके वैदिक नहीं हो सक्ते।

—प्रभाव डेरी

मोगिये : पुराने जरायमपेशा : नये मजदूर

सुदान-अन : सोमवार, २६ नवम्बर, '७१

अपराध और दण्ड के प्रति दृष्टि बदलनी होगी



भागियों के बीच इस बार जे. पी. बिना सीबी के छोले गये थे इसलिये जब बीसना घुट किया तो घूट घूटकर रो पड़े ।

पिछले दान धारमपमंगल करने वाले धीर अत्र लम्बे कारावास के लिए दण्डित चम्पलघाटी धीर बुन्देलखण्ड के डाकुओं के लिए सुनी जेल स्थापित करने पर मुख्यमंत्री श्री जे.पी. सिन्हा धीर जेल नहीं थीं दृष्टान्त सिद्ध तथा मध्यप्रदेश के प्रशासन को मैं यथादि देना हूँ । चम्पलघाटी शान्ति मिशन धीर मध्यप्रदेश सरकार ने शुरू से जो मानवीय दृष्टिकोण धारताया है धीर कुष्यान डाकुओं ने उनका जो मानदार उत्तर दिया है उसे देखते हुए इन लोगों को धरत साधारण जेलों पठन-कारी धीर अत्याचारी बाजाररुण में रखा

जाता तो वह निश्चिन्त ही गलत होता । इस-लिए मैं शुरू से जोर देता रहा हूँ कि इन्हें ऐसी परिस्थितियों में रखा जाये जिस उनके परिश्रम और समर्पण से समाज में उनकी पुन-प्राप्ति की जो प्रक्रिया शुरू हुई है वह चलती रहे धीर जब वे अपनी सजा काट कर रिहा हों तो समाज में भच्छे भले धीर जिम्मेदार नागरिकों की तरह मोट सके । इस प्रक्रिया को सफल कर मध्यप्रदेश सरकार ने सुनी जेल की स्थापना की इसलिए श्री सेठी धीर उनके साथियों के प्रति मैं विशेष तौर से प्रसन्न धीर इतन्न हूँ ।

मुझे मान्य है कि डाकुओं के साथ जो व्यवहार किया जा रहा है उसे कतिपय सर-कारी धीर सार्वजनिक क्षेत्रों में जनस्य धरा-राधों के लिए दोती माने गये धाराधियों की तरह सजाया माना गया है । यह बड़े दुःख की बात है कि धाराध धीर दण्ड के मामले में कुछ लोग, धीररत्नाहू धीर राजनीतिक नेता, बहुत ही दक्षिणानुम धीर पिछड़े हुए हैं । वे सभी भी दान के लिए दण्ड, ध्याय के लिए ध्याय, धीर मोन के लिए मोन के दुर्रजन से विभरे हुए हैं । उन्हें कोई धन्दाय नहीं है कि दण्डशासन के ऐसे दर्शन की विजनी भारी धीर भयानक मामाजिक, नैतिक धीर जीवन कीमन समाज को चुबानी पडती है । इन लोगों को अभी यह समझना है कि धाराधी एक धीमार धारमी की तरह होना है धीर समाज का काम उसे अपने रोग के लिए दण्डित करना नहीं बल्कि उसका इलाज करना है । जूच गहराई से सोचा जाये तो समझ में आयेगा कि धाराधी का इलाज करने की विधिग में समाज स्वयं धरना भी उपचार करना है । जो ही, धाराध धीर दण्ड के बारे में इस दक्षिणानुम रवें में उपजा मेरा दुःख, मेरी इस प्रसन्नता से काफी कुछ हलका हो गया है कि देग के सबसे बड़े धीर एक प्रमुन राज मध्यप्रदेश ने इन बारे में शुरू से इतनी जगमग धीर दूरदर्शी नीति धारनाई है । यह सुनी जेल दधी नीति की पनगुनि है ।

कतिपय क्षेत्रों में एक धीर धालोचना यह की गई है कि चम्पलघाटी धीर बुन्देलखण्ड के कुछ ही डाकुओं के समर्पण का बड़ा डोल पीटा जा रहा है । इस धालोचना को मैं स्वीकार करना हूँ धीर मुझे दमता दुःख भी है । लेकिन साथ ही इस घटना की गृहलार गमाज शासनीय दृष्टि से महत्वहीन मान कर इसे इतिहास की बरगह में डाल कर भुला दिने जगें में खलरे की धीर को मैं लोगों का ध्यान लीचना चाहता हूँ । समर्पण के बाद हुई कुछ घटनाएँ, मय पूछा जाये तो इस

→

सतरे को रेखांकित करती हैं। केन्द्रीय और मध्यप्रदेश सरकार ने तो गये साल अप्रैल में मेरे साथ हुए सम्मेलन को बमोद्वेष पूरा किया है, लेकिन मुझे भय है कि मध्य दो राज्य सरकारों, खास कर उत्तर प्रदेश की सरकार के बारे में यह नहीं कहा जा सकता।

समर्पण की इस घटना से जो उस समय वित्ती भी दृष्टि से बिलक्षण और अद्भुत मानी गई थी, कोई व्यापक और गहरे सबक लिये गये हैं इसके कोई संकेत नहीं हैं। केन्द्रीय गृहमन्त्रालय सम्बन्धित राज्यों के गृह विभाग और उनके विधि और व्यवस्था के प्रशासकों में से किसी ने भी ऐसी कोई जागरूकता नहीं दिखाई कि इस घटना से भ्रष्टाचार और सामाजिक हिंसा को हल करने का शायद कोई ऐसा तरीका निकल सकता है जो ज्यादा मानवीय और ज्यादा समझदारी का हो और जो सामाजिक और पूंजी की लागत की दृष्टि से कम खर्चीला हो और जिसे आमतौर पर लागू किया जा सकता हो।

नये तरीकों का विस्तार करने के बजाय मध्यप्रदेश जैसी जागरूक सरकार ने भी चम्बल घाटी और बुन्देलखंड तक में स्थायी सामाजिक शान्ति स्थापित करने के लिए विधि और परम्परागत मंत्रियों पर भरोसा किया है। इसका एक उदाहरण यह है कि मन्वेले चम्बल-घाटी क्षेत्र में इकतालीस नये वाले स्थापित किये गये हैं। पुलिस के प्रति पूरे सम्मान के साथ कहना चाहता हूँ कि ज्यादा संभारना इसी की है यह थाने शान्ति स्थापित करने वाले केन्द्रों के बजाय खतनाव बढ़ाने वाले साबित होंगे। पूरी विनम्रता के साथ मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि शान्ति मिशन के मार्गदर्शन में काम करने वाले शान्ति सेनिकों के इकतालीस शान्ति केन्द्र इन थानों से कहीं अधिक सस्ते और प्रभाव-शाली होते।

सही है कि शान्ति मिशन को अपने ही बलबूते पर ऐसे शान्ति केन्द्र स्थापित करने चाहिए थे। लेकिन आर्थिक सहयोग के अभाव में शान्ति मिशन अपनी मूलतः मीठे और आर्थिक प्रतिबन्धों गतिविधियाँ भी बड़ी मुश्किल से

चला पा रहा है। समर्पण के समय चम्बलार से उत्पन्न वाचाल और उत्तर आर्थिक जन समर्थन अब लगभग शून्य हो गया है। अगर मुश्किलें थी तो सेठी ने समय-समय पर धनुरान नहीं दिया होता तो शान्ति मिशन को धन तक अपने सारे काम बाज बन्द करने पर मजबूर होना पड़ता। मेरे साथी धर्मो भी योड़ा बहुत कोप जमा करते हैं, लेकिन उससे हथारा काम आगे नहीं बढ़ सकता। फिर पिछले महीनों से मेरा स्वास्थ्य इतना ब्रह्मा नहीं चल रहा है कि मैं कोप सग्रह करने का कोई प्रभियान छेड़ सकूँ। जो हो मैं योड़ा भटक गया। लेकिन मैंने यह मुद्दा इसलिए उठाया कि सम्बन्धित क्षेत्रों में शान्ति मिशन अपनी शान्ति योजनाएँ क्यों नहीं चला पाया इसके कारण बता सकूँ। जिस खास मुद्दे पर मैं यहाँ जोर देना चाहता हूँ वह यह है कि 1952 के समर्पण से उत्पन्न हुई समस्त संभावनाओं पर सिर्फ भोगाल में ही नहीं, दिल्ली में भी अगर उच्चतम स्तर पर विचार नहीं किया शायदा तो भ्रष्टाचार और दण्ड का पुराना दुष्कर्म निश्चित ही फिर चलने लगा है। इस दुष्कर्म के एक बढ़ने वाले हैं और इसकी वित्ती भयावह नैतिक और भौतिक भीमत देना जो चुकानी पड़ेगी इसकी बहना पिछले धनुषों से की जा सकती है।

इसी सिलसिले में एन वान घोर बहूँ। उत्तरप्रदेश सरकार चाहती है कि चम्बल घाटी शान्ति मिशन धारावा से इलाका के डाकू प्रस्त क्षेत्र में अपनी गतिविधियाँ शुरू करे। लेकिन मैं अपनी समिति और अपने साथियों को यह जिम्मेदारी उठाने से सलाह देने में सावधानी बरतना चाहता हूँ। जब तक उत्तर प्रदेश की सरकार उत्तर प्रदेश के समर्पण वाली डाकुओं के बारे में किये गये बचनों को पूरा नहीं करती तब तक यह जिम्मेदारी हम नहीं लेना चाहते। विघाटी प्रशासन ने जो नियंत्रण लिए थे उन पर धर्मो तक धमक नहीं हुआ है।

ऐसे बड़े मुद्दे हैं जो पिछले महीनों में प्रखारों और सार्वजनिक क्षेत्रों में उठे हैं और जिन पर मैं बोलना चाहूँगा। लेकिन धर्मो मैं सिर्फ एक मुद्दा उठाऊँगा और भाएए समाप्त करूँगा। यह मुद्दा-चम्बल-

घाटी और बुन्देलखण्ड के पिछड़े हुए क्षेत्रों की प्रस्त क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक विकास की योजनाओं के बारे में है इस योजनाओं पर बड़ी चर्चा हुई है। भारत सरकार ने बहुत से ही इस मामले में बड़ी रवि की और शीघ्र विकास की योजना बनाने के लिए एक टॉल्क फॉर्स की नियुक्ति की। तब मैंने मुना था कि कुछ ही बरोंड़े रखों की लागत से इन क्षेत्रों का मुद्दा स्तर पर विकास किया जायेगा। मध्य प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग में भी इन क्षेत्रों के सामाजिक शिक्षण और विकास के लिए पाठ बरोंड़े को एक योजना बनाई थी हालांकि वित्ती सहायता के मामले में वह केन्द्रीय सरकार पर निर्भर थी।

यह बड़े खेद की बात है कि जिनके इस साल में शुरू-शुरू का वह उत्साह नूपुर की तरह उब गया है। इस रविये को मध्यप्रदेश बड़ा मुश्किल है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त आयोजकों ने ही नहीं चम्बलघाटी में उर्कती की समस्या का अध्ययन करने वाले हर व्यक्ति ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि जब तक विधि व्यवस्था और शान्ति स्थापना के अन्य कार्यक्रमों के साथ सामाजिक और आर्थिक विकास के बहुमुखी कार्यक्रम जल्दी से जल्दी शुरू नहीं किये जायें तब तक सारियों पुराने इस क्षेत्रों की निराशा नहीं जा सकती। मैंने भी अपने सभी सार्वजनिक बचनों में इस बात पर जोर दिया है। और जहाँ तक मैं जानता हूँ प्रशासनिक, केन्द्रीय मन्त्रों और मीनों सम्बन्धित मुन मन्त्रियों ने इन बातों को पूरी तरह स्वीकार किया है और फिर भी, जब तक इन भावनों के लगभग कुछ नहीं किया गया है और जहाँ तक मैंने मुना है पावकी योजना में इस कार्यक्रम का शापद ही कोई उल्लेख है। यह कहना है एक ऐसी बहानी के जिसे धातुनिर्णय कर के इतिहास में गोखरूनों म्यान मिन मुना है। मैं धारा करना हूँ कि प्रधानमंत्री, भारत की अपनी दूसरी समस्याओं के इस बात पर पूर्ण संभोचता ने विचार करेगी।

जो सरकार करेगी, हमें अच्छा ही लगेगा

साखनसिंह

प्रश्न : क्या करना चाहते हैं आप, सुनी में ?

उत्तर : कामगारों को करीब हफ्ता साव । मेरे हफ्ता कामगारों ही करते थे ।

प्रश्न : कामगारों को क्या करना चाहते ?
उत्तर : पर पर तो बाजरा देना करते थे किन्तु उपर सरकार बना करायेंगी, मायूम ।, कंसो जमीन है ?

प्रश्न : जमीन तो मूगावली की बहुत छोटी है ।

उत्तर : जमीन तो टीक है, पर फल क्या बाई की क्या हालत है ? पानी की जमीन थप होती है धीरे जिला पानी का गाज ल होडा है । पानी हुआ तो धालू कर लो, ली कर लो ।

प्रश्न : जब आपने तब ही कर लिया है : फाट सेती करेते धीरे सरकार ने भी तब पा है कि सेती चाहते बाई की हूर प्रकार साधन दिये जायेंगे तो फिर आप किंग कर लो सेती करता चाहते ? क्या साधन ल साधे ?

उत्तर : पानी धीरे टैक्टर । जमीन गडा है, मो हल से होगी नही, टैक्टर अच्छा होगा । पानी खेपा लो पकन लुच होगी । ल लो बाई मे भी बिमान टैक्टर खरा है है ।

प्रश्न : पहले आपने पाग बिजली जमीन ले ?

उत्तर : हमारे पाग ५ एकड़ थी । और : पाग पकरी है ! बीधा जमीन है हमारे पाग, ल बाई ले ही रहते थे ।

प्रश्न : उस पर बिजली पकन कर लेते है ?

उत्तर : ४०-४० मल बाजरा, १०-१० मल लुच धीरे खरा हो जागे थी । यहा पानी बिजल लो कहां से भी आडा करके दिगायेंगे । किना पानी से कुछ नही होपा सब ।

प्रश्न : उन्होने क्या है कि जिला घाग

देना करेते उसका कुछ हिस्सा लो आपको दे भी देंगे वा आपने नाम जमा कर देंगे वा पर भेज देंगे । यह आपको बंसा लगता है ?

उत्तर : यह लो सरकार की भर्त्सो है, करेते लो अच्छा ही है । जो सरकार करेगी वह हमें अच्छा ही लगेगा । जब कुछ बुरा भी करेगी लो भी अच्छा ही लगेगा । सरकार वा, जयप्रकाश बाबू का विचारम है हमें, वह नही (विचारम) होना लो जेक में क्यो घाते ।

प्रश्न : अच्छी सेती की ट्रेनिंग चाहिए आपको ?



साखनसिंह

उत्तर : हा ट्रेनिंग जरूरी सीगनी पड़ेगी ।

प्रश्न : अगर मान लें आपको अच्छी ट्रेनिंग देकर कहा जाये कि इन प्रकार पाग मे जाकर धीरे लगेगा मे सेती करजाये लो क्या आपको जमेगा ?

उत्तर : हा जमेगा, ट्रेनिंग जरूरी देनी चाहिए, क्योंकि हफ्ता लोप पड़े-जिसे लो है नही, घातो लीकी सेती करते थे, फिर १९ साल से धालू रहे, इन बीच नये तरीके धाले होये, नये बीज बन गये धालू, गार भी धाले है, मो हल लर जायेंगे नही, बुदाता काम जायेंगे है । लो ट्रेनिंग जरूरी है ।

प्रताप सिंह (जो साधू सा हो गया है)

प्रश्न : आपकी जिन्दगी मे बहुत कंठ बदल धाया है । उसके बारे मे कुछ जानिये ?

उत्तर : मेरी बड़ि जीक काम नही देनी है महाराज । मैं लो खरा सुली जेल मे ही रहना हू । यहा भी सुली जेल ही है ।

प्रश्न : किस तरह आप घागना समय व्यतीत करते है ?

उत्तर : पागन लो तरह बंठा रहता हू । एक जिला लकी रहती है रात-दिन हू । जिम कारण यह देह माना हुई भी लो काम में पूरा नही कर पाया, रात-दिन इसी जिला मे लगा रहता हू ।

प्रश्न : जनहित के लिए आप क्या कर रहे है ?

उत्तर : इसने लिए भगवान से यही बिनती करना चाहता हू कि ऐसी बुद्धि देदे कि पहले लो मे जनहित कर, सबकी सेवा कर सकू । फिर लुभ लेदे दर्शन हो सकें ।

प्रश्न : सुली जेल मे धाग क्या जगहित करेगे ?

उत्तर : मैं लो कुछ नही कर पाऊगा । प्रश्न : भाग कुछ नही कर पाते ?

उत्तर : लो हूँ, रात-दिन बाई उपेड-मुन लगी रहती है । उलो से दुर्भत नही मिलती । भगवत कदम रक्षना हू लो सामने लगता है कि क्या रपू क्या नही ।



प्रतापसिंह

निष्पन्न संगठन : विधायक आन्दोलन : क्रांतिनिष्ठ लोगों की जमात

—रामभूपण

अखिल भारतीय तरुण शांति सेना का पहला सम्मेलन विद्याभवन कालेज, बम्बई में १९६६ में हुआ था। ३० भा० शांति सेना मंडल द्वारा संचालित इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जयप्रकाश नारायण ने की थी। बम्बई विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री पी० पी० गजेन्द्र गडकर स्वागत समिति के अध्यक्ष थे और प्रसिद्ध शिक्षा विचारक एच कवि श्री उमाशंकर जोशी ने उद्घाटन भाषण किया था। देश के विभिन्न भागों से आये ४०० प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया था। तरुण शांति सेना का दूसरा सम्मेलन १९७० में इन्दौर में कुमारी मद्रासिनी दवे की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन में काम के लिए एक वर्ष का समय देने वाले कई तरुण निकले, जिन्होंने बगला देश भी जाकर काम किया। बैलगाव (कर्नाटक) में १९७२ में हुए अपने तीसरे सम्मेलन तक आति-आति तरुण शांति सेना भाईचारे के आधार पर निर्मित एक स्वतन्त्र संगठन बन गयी। श्री तख्तदीन की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन को चलाने की पूरी जिम्मेदारी तरुणों की ही रही। 'प्रकाल बनाम तरुण' के संदर्भ में आयोजित अखिल भारतीय तरुण शांति सेना का श्रीरगाबाद (महाराष्ट्र) में गन २० से २२ अक्टूबर तक हुआ यह चतुर्थ सम्मेलन पूर्णरूप से तरुणों द्वारा आयोजित व संचालित सम्मेलन रहा जिसकी अध्यक्षता कुमारी जानकी पांडे ने की।

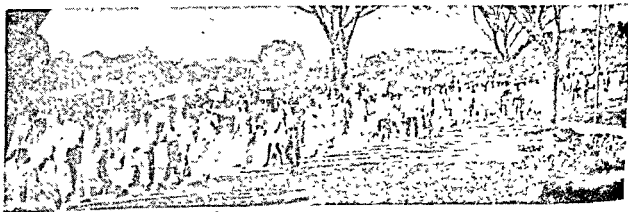
श्रीरगाबाद में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय तरुण शांति सेना सम्मेलन को सफलता-असफलता के बारे में यदि वही मापदण्ड रखे जायें जो साधारणतः सम्मेलनों के लिए रख दिये जाते हैं तो संभवतः कहने के लिए कोई बात नहीं मिलेगी और कुछ प्रोपचारिक बातें ही बह कर इतिथी कर देनी होंगी। तरुणों की एक अच्छी संख्या, चहल-पहल पूर्ण खातावरण, भाषण व चर्चाएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम व मनोरंजन, पर्यटन व देश-दर्शन जो साधारणतः सभी सम्मेलनों

के अंग होते हैं, इसके भी थे। इन सम्मेलन की श्रान्ती (विशेषता क्या थी? बोन या बालें इसे एक अलग व्यक्तित्व प्रदान करती हैं और कौन से चिन्ह इसका भावी स्वरूप निर्धारित करते हैं?

यह राष्ट्रीय सम्मेलन श्रीरगाबाद के मौलाना आजाद डिग्री कालेज के विद्यालय व छात्रावास कंपस में सम्पन्न हुआ। कालेज के लाइब्रेरी-हॉल में उद्घाटन की वारंवाई हुई और यहीं तीसरे दिन समापन की भी। कार्य का प्रारम्भ सुधी भद्रावेन के मुखपुत्र

भजन से हुआ। मराठावाडा विश्वविद्यालय के उपकुलपति व स्वागत समिति के अध्यक्ष प्रो० २० ए० नाथ ने अपने भाषण में भारतीय सभ्युति की भौतिक विविधता 'अनेकता में एकता' पर बल देते हुए देश के विभिन्न भागों से आये तरुणों (६००) एवं अन्य लोगों का स्वागत किया और भाव के सन्नातिवाले में ऐसे सम्मेलनों व शिविरो की उपयोगिता बतायी, क्योंकि ऐसे सम्मेलनों एवं शिविरो से देश की भाषनात्मक एकाता को बल मिलता है। "जैसे इन्द्र धनुष अपने सात प्रखर के रंगों द्वारा सुन्दरता का निर्माण करता है वैसे ही आपका एक शिविर में रहना और एक साथ रहकर विचार करना शून्य व उपयुक्त है और यही अनेकता में एकता है।" सतुलित विचार की प्राव-भयना और उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने प्रावश्यक मूल्यों को प्रष्टण करने और प्रावश्यकता पूर्णों को छोड़ देने के बीच के समय का सघर्षता से उपयोग करने की सलाह दी। "यदि हम इस सन्नातिवाले पर काबू पा जायें तो हम अच्छे मार्ग पर जा सकते हैं और उस पर जिन राशार से युवा पीढ़ी जायेगी अन्य नहीं जा सकेगी।"

आये हुए तरुणों व अन्य लोगों के सघर्ष



सम्मेलन की अध्यक्ष कुमारी जानकी पांडे का परिचय श्री धर्मरत्नाथ भाई ने दिया। अध्यक्ष के साथ सभा-सचालन में दयादा के साथ सहयोग करने वाले कुमार प्रकाश का तरणो के सामने अधिक परिचय देने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि भारतीय तरण शक्ति सेना व उससे सबंधित लोग धर्मयुग, लक्ष्मणन, सर्वोदय व अन्य पत्र-पत्रिकाओं से परिचित थे। कुमारी जानकी पांडे उत्तरा-सप्त के निपौरगढ़ जिले में जंगलाना के अजय में स्थित एक सुदूरपूर्वी गांव की निवासी हैं। सुभी निर्मिता बहन के सान्निध्य में कच्छूरावा ग्राम शांति सेना विद्यालय, इन्दौर में प्रशिक्षण के बाद वे सर्वोदय आंदोलन के महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र सहरसा (बिहार) में लगीं और प्रायः भी वही के अभियान में कार्य कर रही हैं।

श्री नारायण देसाई ने उपस्थित लोगों के सामने तरण शक्ति सेना का परिचय देने का काम तोन तरणो की चर्चा की। निम्न श्रेणियों, शिक्षण आंदोलन और क्रांतिकर्तव्य लोगों की अजात। ऐसे तरणो की निष्पक्षता उन्हें राजनीति से अलग नहीं रखना चाहनी, लेकिन उसमें न फसने हुए उसे प्रभावित करना चाहनी है। पत्र व पत्रिकाओं पर राजनीति को प्रभावित करना तरण शक्ति सेना का वैचारिक पक्ष है। भावना के क्षेत्र में उसकी निष्ठा शक्ति के साथ है। मोजूदा समाज रचना, मोजूदा मूल्य एवं मोजूदा मनोवृत्तियों में प्रथम पत्र-पत्रिका तथा नये मूल्यों के स्थापना एवं नये मूल्य-निर्माण के प्रयास उसकी शक्ति दिव्या के किहू हैं। तरण शक्ति सेना के नाम में ही उगना स्वरूप, उगरी निष्ठा व सगठन निहित है, धर्म तरण शक्ति सेना के स्थान में तरण शक्ति सेना रखने की आवश्यकता नहीं। कम से कम ऐसे ६० प्रायः ही जो चण्डू पड़ाई छोड़कर या लम्बे कर एच-डेड गांव से तरण शक्ति सेना के कार्य में सते हुए हैं। प्रायः हमें यदि शक्ति कर्त्ती है तो उसकी शक्ति सेना स्वयं अपने ही से कर्त्ती होगी। "यह सम्मेलन तभी सफल माना जायगा जब इन विने ही सही, लेकिन ऐसे पापन निरन्वये

जो कहें कि गरीबी मिटाने के लिये हम अपना यौवन व साहस लगाने के लिए तैयार हैं।"

अध्यक्ष जानकी पांडे ने दो शब्द कहकर तरणो को उद्बोधित किया और कहा हम देश की समस्याओं के चिन्तन व समाधान के लिए इच्छुक हुए हैं। प्रायः देश की दशा क्या है? गरीबी, भुखमरी, विपत्तियाँ, शोषण, उत्पीड़न और विपत्तियाँ व्याप्त हैं। दुनिया में सबसे बड़ा आंदोलन सर्वोदय आंदोलन है, जिससे तरणो को मार्गदर्शन मिलेगा।

श्री ठाकुरदास बगवां उद्बोधन भाषण सारगर्भित व महत्वपूर्ण रहा। "जो दुष्ट है वह गलत है। मीठी, चिकनी-चूड़ी बातें गरीब के साथ द्रोह हैं। गरीब के हित में इस देश में इच्छाशक्ति जपनी चाहिए, जिसके लिए सभी दिशाओं में प्रचंड सगठनात्मक कार्य की आवश्यकता है।" धर्म के युधिष्ठिर-यज्ञ प्रश्नों तथा अमेरिकी गुलाबी प्रथा की समालिख के साथ ही गैरिचमन के शब्दों की याद दिलाने हुए वगैरह ने अपना भाषण समाप्त किया।

तरण शक्ति सेना के केन्द्रीय संयोजक श्री अमोल भागवत ने विद्यने वर्षों के कार्य की रूप प्रस्तुत की। पिछले वर्ष तरण शक्ति सेना ने प्रकाश बनाम तरण अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका धरा दी। तरण शक्ति सेना ने ही इस अभियान की योजना बनायी थी, और उनमें इसमें अपनी शक्ति भर पूरा सहयोग भी दिया था। गुजरात व मराठवाड़ा में इस अभियान के सदर्भ में विशेष कार्य हुआ।

सम्मेलन के अंतिम दिन सम्मेलन की अध्यक्ष कुमारी जानकी ने अपने अध्यक्षीय भाषण के देश के गरीबी निपटान का जिक्र करते हुए देश के क्रांतिकारियों का गहराई से सोचने के लिए आह्वान किया। ऐसे चिन्तन के लिए विधायक धर्मयोग की आवश्यकता है जिसका हममें प्रचुर अभाव रहता है। हमारी इच्छा स्पष्ट है इसके लिए हमें नये समाज का स्वरूप ऋच्छी तरह समझ लेना चाहिए। नये समाज की दिशा में हमें क्रांति-कार्य, सेवा-कार्य व सुचर्या के बीच का फर्क भी ऋच्छी तरह समझ लेना चाहिए। यदि सर्वोदय आंदोलन में भारतीय तरणो की उनके मन्दों की तस्वीर दिनाई पड रही हो तो उसे समझने

और उनके निष्ठा धारण की जरूरत है। इच्छा से गांधीजी ने जिन ७ लाख जिन शहीदों की मांग की थी हमें देखना चाहिए कि क्या हम वे शहीद बन सकते हैं। आ-स्मित यह है कि गरीबी जितनी बड़ी समस्या है धर्मोरी भी उतनी ही बड़ी समस्या है। ऐसे समाज का निर्माण होना चाहिए जिस दोषों न हो, जहाँ केवल मनुष्य हो।

श्री रामयोगाल दीक्षित द्वारा सम्मेलन के संयोजन में विशेष प्रकाश की मदद देनालो के प्रति आभार प्रदर्शन व धन्यवाद प्रकाश के बाद देश के प्रसिद्ध विचारक सत्यचिन्तक श्री अच्युत पटवर्धन ने अपने समापनार्थ भाषण दिया। पटवर्धनजी ने अपने विचारोत्प्रेरक भाषण में अपनी पीढी की उ-ऐतिहासिक भूल की चर्चा की जो दादा भ-नौरोजी के जमाने से लेकर मुभापचन्द्र तक लोग करते आये थे। यह भूल यीके राजसत्ता प्राप्त करने पर जोर, लेकिन ऊ-वाद के परिचयों एवं निर्माणार्थ भी उ-प्रायः युवकों के बीच कुछ अज्ञानों का दिनाई पडता है लेकिन अज्ञानों को जब-व्येक की डीर नहीं मिलती है जब तक नहीं होगी। प्रायः हम गरीबी टटाने की व-बारे हैं और यह समझते हैं कि गरीबी कारण धमीर है लेकिन यह धर्म है। गरी-की जड़ हमारे दिमाग में है। हिन्दुस्तान गरीबी तक नहीं मिलेगी जब तक शक्ति व बुद्धिचिन्तन का मेल नहीं बँट-प्रायः हमारे धामीए-उजोय इनीलिए-प्रायः रहे हैं, क्योंकि धामीएों में अधिका-व्यवस्था-गति का अभाव है। तरण शक्ति-को इन सारी बातों पर सोचना होगा। प्र-भच्छा ही है कि उमे धमी सोच-प्रति-प्रायः नहीं हुई है, क्योंकि जिन कार्य को ल-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी है उसका विनाश-जाना है।

समूह गोष्ठियाँ

राष्ट्रीय सम्मेलन में चर्चा का विषय 'गरीबी : कारण और निवारण' इस-पर अभिनिधियों की सहायता के लिए मु-दो धर्मरत्नाथ पत्र विवरित बिये गये थे-की विचारण भाई व गांधी विद्या सहायक

1 प्रभुतानन्ददास ने तैयार किया था। वर्षों १६ विभिन्न भोष्टियों में दो दिनों तक नी। अन्त में श्री ठाकुरदास बंग द्वारा प्रस्तुत वारण के उपायों पर भी विचार हुआ। ती चर्चा के बाद टोलियों की सम्मिलित फारिजों सम्मेलन में प्रस्तुत की गयी। ये फारिजों मुख्यतः ये हैं: प्राथिक दृष्टि से पट्ट की भास-निर्भर बनाने वाले उद्योगों। प्राथमिकता दी जाय। सीमिन उद्योगों। छोड़कर अन्य सभी उद्योग लघु एवं मोद्योग के स्तर पर हों, जिनसे अधिकारियों को काम मिल सके। समान काम के ए स्त्री-पुरुष को समान वेतन दिया जाय व वेतन की घुनमम सीमा जीवन चरण योग्य हो। गान में वस्त्रावलवन को पहिन्वता दी जाय तथा शुद्ध जल एवं लाई पर विशेष ध्यान हो। थम-बैक का पंचवर्षिक प्रयोग हो। राजनीतिन दृष्टि से सम्मति के आधार पर ग्रामव्यवस्था, माध्याह्निक एवं भ्रमबहुल उद्योग, सला के केंद्रोकरण, सर्वसम्मति द्वारा चुनाव, पशुन राजनीति, भूमि-वितरण, सभी प्रगति-स वातूनों पर अविच्छेद घमल व भवदाता शक्षण की आवश्यकता महसूस की गयी। त्रिण्व दृष्टि से अमप्रधान उद्योगों से सम-र रखने वाली शिक्षा तथा प्राथमिक प्रौढ शा के प्रसार एवं शिक्षण में वेतन की प्रस-ना अविच्छेद दूर करने की बात बही। सामाजिक दृष्टि से जनसंख्या-नियंत्रण, वन शैली में आमूल परिवर्तन, मादक ती से मुक्ति और समाज में नीचे से उदा-वर्ण करने की सिफारिश की गयी। तरण त सेना की दृष्टि से राष्ट्रीय शिबिर-मेलन को गावों में रखने, गरीबी टटाने में एणो द्वारा यामसभाओं के मार्गदर्शन, बी की देवा के नीचे के परिवारों का धरण, बँजिर या तरण शक्ति सेना द्वारा ती को छाटाट किये जाने तथा व्यक्ति एव व मंडलियों के स्तर पर प्रतिवार कार्यक्रम ने के शुभाव रते गये। स्वयं सम्मेलन के व में यह सिफारिश की गयी कि भविष्य म्मेलन के साथ समानान्तर कार्यक्रम न जाए।

क्या देश या समाज तथा गरीबी के

संबंध में किशोरो के भी कुछ विचार है? हा, हैं और काफी सख्त विचार है। सम्म-लन में प्राये किशोरो का प्रतिनिधित्व किया १२ वर्षीय विकास शास्त्री व १५ वर्षीय हेमन्त वाघ ने। विकास शास्त्री ने चारो ओर फँकी गरीबी की तीव्र अनुभूति व उसके प्रति वेदना प्रकट की और साथ ही इस बात पर धोष प्रकट किया कि राजादी की लड़ाई के दिनों के सच्चे देश सेवक आज एक किनारे पड़ गये हैं और अनाद्यतनी तत्व सला प्राप्त किये बैठे हैं। हेमन्त वाघ ने जन-जन को शिक्षित करने और जनता की शक्ति को प्राये बढ़ाने की बात बही।

निर्णय व भावी कार्यक्रम :

राष्ट्रीय सम्मेलन में तरणो ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए और काम की योजना बनायी। तरण शानि सेना राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ जिसके सदस्य हैं सर्वश्री अमिल राठीर, अशोक बग, अशोक भागव, कुमार प्रशांर, सु० जानकी पाडे, रचिकेता देसाई, वु० मदाकिनी देवे, रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, वेणु गोपाल, शिवाजी बागशीकर, सत्यो भारतीय, समरजीत धरुवर्ती, तुषाकर जायस व सुधीर जोशी।

यह निश्चय किया गया कि तरण शक्ति सेना का संयोजक एक वर्ष तक कार्य करे व उसका एक सहायक रहे। प्रादेशिक संगठन अपना श्रोत्रिष्ठ स्वयं करें। किशोरो के प्रशिक्षण के प्रशिक्षण के लिये एक समिति बना जिसके संयोजक इन्द्रसिंह रावत व सदस्य सुहास मरोडे, मदाकिनी देवे, भारती बदन तथा भगवान वज्राज हैं। हुनरो (स्वित्ज) के प्रशिक्षण के लिए एक समिति बना जिसमें श्री दीनानाथ राय, प्रेमभाई तथा अशोक भागव (संयोजक) हैं। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में इन्दौर में नाटक-मिलन के परबन्ध सघन कार्य क्षेत्रों का अयन किया जायेगा। तरण शक्ति सेना मुक्ति का निर्माण के लिए कुमार प्रशांत, महेन्द्र भाई तथा नचि-केता देसाई (संयोजक) की एक समिति बनायी गयी। वु० मदाकिनी देवे तरण शक्ति सेना की संयोजक चुनी गयी। श्री नचिकेता देसाई व कुमार प्रशांत उनके सहायक रहेंगे। तरण शक्ति सेना की मासिक पत्रिका 'तरण

मन' की श्राथिक सहायता के लिए अलग-अलग लोगों ने संकल्प लिया। 'तरण मन' के नव निर्मित संपादक मण्डल के सदस्य हैं: अशोक बहादुर नम्र, कुमार प्रशांत, रामभूषण व नारायण देसाई (संपादक)। तरण शक्ति सेना के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए कोप एक-त्रित करने की जिम्मेदारी तरणो ने उठाई।

मौन जुलूस

सम्मेलन का एक प्राकल्पक कार्यक्रम था मौन जुलूस। मौलाना आजाद कॉलेज के छात्रावास से प्रारम्भ होकर यह मौन जुलूस शीलावाढ नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ सरस्वती डिग्री कॉलेज तक पहुँच कर सावंतजिक सभा में परिवर्तित हो गया। सभा की अध्यक्षता नारायण देसाई ने की। कुमार प्रशांत, मन्दविनी देवे, नीलकंठ कोठकर तथा अशोक भागव ने अपने भाषणों में 'गणतन्त्र' को प्रतिरिच्छ करने पर बल दिया। "हय तरणो के मन में आज की दुनिया के बारे में निराशा नहीं है। हमसे जो वाद में पैदा हुए हैं वह हमारी जैसी नहीं बल्कि हमसे अछ्डी दुनिया बनाए।" इस शुभेच्छा के साथ श्री नारायण देसाई ने अपना भाषण समाप्त किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

क्या सम्मेलन में दिन-भर वायें व चर्चाएँ होती रहीं या कुछ मनोरंजन के भी कार्यक्रम रहे, जिससे दिन भर की थकान दूर होकर प्रायं के दिन के लिए स्वस्थ प्रेरणा मिल सके? हा, २१ अक्टूबर की शाम को मौलाना आजाद कॉलेज विपेट्ट छात्रवृत्त पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें तरणों का स्वयं मनोरंजन हुआ। नारायण देसाई व अरुणानुन देसाई द्वारा प्रस्तुत 'हुनरो ग्रह का प्राणी, कुमारी जयधी घडोड का नृत्य, वेणुगोपाल का नाटक व कुमारी मट्टा-चर्वा की गजल विशेष आकर्षण के कार्यक्रम रहे।

यह कहा जा सकता है कि इस सम्मेलन में तरणो का अतिशय जगजा है और उन्हें सरकार, राजनीति और पशुमन्त्र होकर स्वयं अपने पुर्याय पर प्राये बड़ने की प्रेरणा दी है।



1 प्रभुतानन्ददास ने तैयार किया था। वर्ष १६ विभिन्न गोष्ठियों में दो दिनों तक थी। मन्त्र मे श्री ठाणुदास बंग द्वारा प्रस्तुत वारण के उपयोग पर भी विचार हुआ। ती चर्चा के बाद दोस्तियों की सम्मिलित फारिषों सम्मेलन मे प्रस्तुत की गयी। ये फारिषों मुख्यतः ये हैं : धार्मिक दृष्टि से पट्ट की प्राम्थ-निर्भर बनाने वाले उद्योगों । प्राथमिकता की जाय। सीमिन उद्योगों । छोड़कर अन्य सभी उद्योग लघु एवं मोद्योग के स्तर पर हों, जिनसे धार्मिकारिषों की काम मिल सके। समान काम के ए स्वी-पुरष की समान वेतन दिया जाय (र वेतन की भ्रूनतम सीमा जीवन यापन योग्य हो।) गाँव मे बस्नाबलवन की यमिवता दी जाय तथा शुद्ध जल एवं ताई पर विशेष ध्यान हो। श्रम-बैंक का धर्माधिक प्रयोग हो। राजनीतिक दृष्टि से र्ग सम्मति के आधार पर श्रामव्यवस्था, माधारित एवं श्रमवृद्ध उद्योग, सत्ता के हेंद्रीकरण, सर्वसम्मति द्वारा चुनाव, पधन राजनीति, भूमि-वितरण, सभी प्रगति-ल वानुनों पर अखिल बमल व मतदाना संशय की आवश्यकता महसूस की गयी।

श्लेषक दृष्टि से श्रमप्रधान उद्योगों से सम्प-र रखने वाली शिक्षा तथा प्राथमिक प्रौढ शा के प्रसार एवं शिक्षण मे वेतन की अस-ता। अखिल बमल वरने की बात बही।। सामाजिक दृष्टि से जनसंख्या-नियंत्रण, इन शैली मे धामूल परिवर्तन, मादक तों से मुक्ति और समाज में नीचे से दबाव-रिण करने की सिफारिश की गयी। तरण तें सेना की दृष्टि से राष्ट्रीय गिर्व-मेलन को गाँवों मे रखने, गरीबी टटने मे एो द्वारा यामतभाओ के मार्गदर्शन, की भी रस्ता के नीचे के परिवारों का क्षण, बलिज या तरण शांति सेना द्वारा ने की अडाप्ट किये जाने तथा ब्यक्ति एवं । मडलिओ के स्तर पर प्रतिवार कार्यक्रम के मुभाव रने गये। स्वयं सम्मेलन के र मे यह सिफारिश की गयी कि भविष्य म्मेलन के साथ समानान्तर कार्यक्रम न जाए।

बना देश या समाज तथा गरीबी के

संघर्ष मे किणोरो के भी कुछ विचार हैं ? हाँ, हैं और काफी सशक्त विचार हैं। सम्म-लन में ध्याये किणोरो का प्रतिनिधित्व किया १२ वर्षों विनास शास्त्री व १५ वर्षों हेमलत बाप ने। विनास शास्त्री ने चारों ओर फेंकी गरीबी की तीव्र अनुभूति व उसके प्रति वेदना प्रकट की और साथ ही इस बात पर शोभ प्रकट विषय कि आजादी की लड़ाई के दिनों के सच्चे देश सेवक आज एक किनारे पड़ गये हैं और अनाजनीय तत्व सत्ता प्राप्त किये बैठे हैं। हेतत बाप ने जन-जन की शिक्षित करने और जनता की शक्ति को आगे बढ़ाने की बात बही।

निर्णय व भावो कार्यक्रम :

राष्ट्रीय सम्मेलन मे तरणो ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए और काम की योजना बनायी। तरण शांति सेना राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ जिसके सदस्य हैं सर्वोच्च अखिल राठी, अशोक बंग, अशोक भांगव, कुमार प्रगान, कुं जानकी पाडे, नचिनेता देसाई, कुं मदाकिनी देवे, रमेशचन्द्र थोबास्तव, वेणू गोपाल, शिवाजी बागएलीकर, सत्योप भारतीय, समरजीत चक्रवर्ती, गुधाकर जाधव व सुधीर जोशी।

यह निश्चय किया गया कि तरण शांति सेना का संयोजक एक वर्ष तक कार्य करे व उसका एक सहायक रहे। प्रादेशिक संगठन अपना डॉडिट स्वयं करें। किणोरो के प्रदिशको के प्रदिशण के लिये एक समिति बनी जिसके संयोजक इन्द्रसिंह रावत व सदस्य गृहसत सरोदे, मशकिनी देवे, भारती बहल तथा भगवान बजाज हैं। हुनरो (विरसल) के प्रदिशण के लिए एक समिति बनी जिममे श्री दीनानाथ राय, प्रेमभाई तथा अशोक भांगव (संयोजक) हैं। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह मे दन्दोर मे नाहन-मिलन के प्रसक्त सघन कार्य कीजा का चयन किया जायेगा। तरण शांति सेना पुम्तिका के निर्माण के लिए कुमार प्रगान, पट्टिर् भाई तथा नचि-नेता देसाई (संयोजक) की एक समिति बनायी गयी। कुं मदाकिनी देवे तरण शांति सेना की संयोजक चुनी गयी। श्री नचिनेता देसाई व कुमार प्रगान उनके सहायक रहेयें। तरण शांति सेना की मासिक पत्रिका 'तरण

मन' की धार्मिक सहायता के लिए अलग-अलग लोगों ने संकल्प लिया। 'तरण मन' के नव निर्मित संपादक मण्डल के सदस्य हैं : श्याम बहुदुर नन्न, कुमार प्रगान, रामप्रणव व नारायण देसाई (संपादक)। तरण शांति सेना के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए एवम् ए-व-वित्त करने की जिम्मेदारी तरणो ने उठाई।

मीन जुलूस

सम्मेलन का एक भाग्यक कार्यक्रम था मीन जुलूस। मोलाना आजाद बलिज के छात्रावास से प्रारम्भ होकर यह मीन जुलूस श्रीरंगाबाद नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ सरस्वती डिवी बालेज तक पहुँच कर सांस्कृतिक सभा मे परिणत हो गया। सभा की अध्यक्षता नारायण देसाई ने की। कुमार प्रगान, मन्दिनिनी देवे, नीलकण्ठ कोठेरक तथा अशोक भांगव ने अपने भाषणों मे 'मनुष्य' की प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। "हम तरणो के मन मे आज की दुनिया के बारे मे निराशा नहीं है। हमसे जो वाद मे पैदा हुए है वह हमारी जैसी नहीं बल्कि हमसे अच्छी दुनिया बनाए।" इस आशुचेच्छा के साथ श्री नारायण देसाई ने अपना भाषण समाप्त किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

बना सम्मेलन मे दिन-भर बायें व चर्चाएँ होती रही या कुछ मनोरंजन के भी कार्यक्रम रहे, जिससे दिन भर की थकान दूर होकर आगे के दिन के लिए स्वस्थ पैरणा मिल सके ? हाँ, २१ अक्टूबर की शाम को मोलाना आजाद बलिज पिपेटर थ्रॉउप पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिममें तरणो का स्वस्थ मनोरंजन हुआ। नारायण देसाई व अरुणानुव देसाई द्वारा प्रस्तुत 'दूरे प्रह का प्राणी, कुमार जयश्री बगोड का नृत्य, वेणुगोपाल का नाटक व कुमार भट्टा-छात्रों की गजन विगेष प्रायश्चम के कार्यक्रम रहे।

यह बहाज सत्ता है कि इन सम्मेलन ने तरणो का अन्तिम जगाया है और उन्हें सरकर, राजनीति और पशुमुक्त होकर स्वयं अपने पुरन्दारे पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।



“इंग्लैंड में बहा कि इजरायल ने जो कुछ किया सो उत्तम किया। उसने दुनिया को दिखा दिया कि विह्वल मामूली जमीन में मरस्थल सारी भू-भाग में वे उत्तम फलें पैदा कर सकते हैं और सस्त्र-शक्ति सम्पन्न भी बन सकते हैं। उन्हें धरत देनों ने पीठ दिखायी। दोनों ही प्रकार से इन्होंने अपनी शक्ति प्रगट कर दी। इंग्लैंड में उनका जपजयकार करता हूँ। मैं उन्हें तस्यवाद देता हूँ। प्रश्न करने वाले के ध्यान में यह अभिप्राय ठीक बैठ जायेगा यह मैं तो प्राणा करता हूँ।”

विनोबा का इजरायल के प्रसंग में सत्याग्रह विषयक यह स्पष्टीकरण हमारे यहां भी उन लोगों के लिए बहुत विचारणीय है जो इन दिनों शासन की मनमानी के विरोध में सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग करने की बात उठाते रहते हैं। सोचकर देखना चाहिए कि जब स्वयं विनोबा सत्याग्रह करने योग्य विमूढ़ अहिंसक शक्ति का अपने भीतर अनुभव नहीं कर रहे हैं तब हममें से अन्य किसी की इस मंडान में उतर पड़ने की इच्छा कितनी अतन्नायक सावित हो सकती है।

सत्ता विरोधी रुख !

पाँचवी योजना को अन्तिम रूप दिया जा चुका है और रंग रोगन देकर वह सत्यप्रकाश रूप में प्रकट हो जाने वाली है। ऐसे अवसर पर लोगों को भाववस्तु किया जा रहा और बताया जा रहा है कि हमारे पिछले दो दिनों का झलक निश्चय है। कहा जा रहा कि अनेक प्रकार के अभावों की जड़ों में मला देश को जो मरदं करनी पड़ी उसका भी बड़ा हाथ था। हड़ताल और सत्ता विरोधी दलों द्वारा मुचाक रूप से काम न देने के प्रत्यक्ष भी पिछले चट्टों के कारण रूप में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

चौथी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य किसी भी प्रकार से पूरे नहीं हुए और १९७२ में जून १९४२ प्रथम मद्रास स्पीच हुई है वह

दम मय तर १५६ और बढ़ गई है। नितान्देह इमे बागला देग वा हड़तालें घाटि के मिर नहीं मडा जा सकना। चौथी पंचवर्षीय योजना की अवधि में तीन वर्षों तो उत्तम वर्षों के रहे और बावजूद इस लक्ष्य के सरकार ने केवल गैरू की फलत में १५० लाख टन प्रतिवर्ष का इजाफा करने के विचार से इस दिशा में १५० करोड़ रुपया प्रतिवर्षिक व्यय भी किया, फलत में कोई इजाफा होता तो दूर रहा वह कम होनी चली गई। लोगों से सदा यही कहा जाता रहा कि हमारे पास पर्याप्त धन का भंडार है, चिन्ता की कोई बात नहीं है—किन्तु जब परिस्थिति संभाले नहीं संभली तो हमें विदेशों के दरवाजे खटखटाने पड़े।

इसी तरह हमारी बड़ी-बड़ी विचार्य विजली और इस्पात की योजनाएँ भी मूजल साबिन हुईं। उदाहरण के लिए १९७१ में आन्ध्र ने अपने यहाँ इस्पात कारखाने के लिए अखिल आन्दोलन किया, और शीघ्र ही मजूर किया जा कर विद्यापीठ बनाने में प्रदानमन्त्रों के द्वारा उसका उद्घाटन किया गया। इस योजना की आशा की उच्चता दमाने के लिए उस समय एक साठ फुट ऊंचा सिंह द्वार खडा किया किन्तु सिवा इसके कि उस सिंह द्वार पर भी जग चढ़ रही है इस योजना में अन्य कोई करिक्मा कर के नहीं दिखाया। कौचीन के लिए दूसरी जहाजी गोदी तो दूसरी योजना के अन्तर्गत ही बन कर तैयार हो जायेगी, ऐसी बात भी, किन्तु अभी तक उसकी नींव भी पूरी बन कर तैयार नहीं हो पाई है। तमिलनाडु सरकार

× थी मानव मुनि से प्राप्त समाचारों के अनुसार म० प्र० के वनोद्भूत सेवक श्री दादाभाई नार्डक १५ अगस्त १९७२ को खालियर में श्री जयप्रकाश जी के आर्गावाट से प्रारम्भ हुई प्रदेग की अपनी पदयात्रा १ दिसम्बर १९७३ को विनोबा जी द्वारा १९६० में स्थापित किये विस्तर्जन आश्रम में परार्णण से पूर्ण करेंगे। यात्रा का पूर्णोद्दिष्टि कार्यक्रम

और केन्द्रीय सरकार ने मिल कर १६० करोड़ रुपये की लागत से जो भूरे रंग का बोयला (लिग्नाइट) तैयार करने की योजना तैयार की थी उसका कारण प्राथिक के बजाय राजनीतिक अधिक सम्भ में आ रहा है। क्योंकि आज तक उस पर ५० करोड़ का मुजसान हो चुका है और आगे मुजसान कम हो कर लगभग ही कोई सूरत नकार नहीं रही है। हिमाचल प्रदेश की पाँच-वर्षीय योजना का पूरा तत्वमीना १२० करोड़ का था उस पर २०० करोड़ लग चुके है और तीन वरस के बाद भी यह नहीं बहा जा सकता कि वह पूरी बच होगी। इस योजना के सिलसिले में जिन विस्तारों की जमीन ली गई थी, वे विचार्य तो दूर सूली सेती से भी गये।

दादासा जी की हमारी इन अनेक बड़ी योजनाओं का बड़ा दिल दहलाने वाला साक्षात् बोधा है। उसे और रिजर्व बैंक की हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट को पढ़ कर अमनसताओं के जो कारण सामने आते हैं वे हैं, तर्क हीन तथा प्राथिक आधार से अहिंसक राजनीतिक आधारों पर तय की हुई योजनाएँ, उनको सफल बनाने की दिशा में सब और से सापरवाही भ्रष्टाचार और लोगों की चौख पुकार को किसी न किसी ढंग से दबा देने की शक्ति पर सत्ता का असीम विश्वास। पाँचवी पंचवर्षीय योजना इतने अवर्दस्त चट्टों की भोग चुकने के बाद कुछ अधिक सावधानी से लागू की जायेगी, हम इतना आशा और आग्रह व्यक्त करना चाहते हैं। सच है ऐसी प्राणा रखना भी सत्ता द्वारा विरोधी रख माना जाये।

भवानी प्रसाद मिश्र

विनोबा जी के लघुपत्राणा श्री निवाजी भाये के सान्निध्य में सम्पन्न होगा। इन्दौर जिले में साठरे लक्ष्मीग के आर्गावाट में २० नवम्बर को दादाभाई ने प्रवेग किया। इस अगस्त पर जिले के कार्यकर्ता व नागरिक सीमा पर दादाभाई व गार्धियों का स्वागत हुआ।

मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर देवत्व की ओर बढ़ सकता था

—सरला बहन

कपड़े बर्तों से हमारे पूरबी-बढ़ पर 'प्रकृति की मूल सुधार' पद्धति से विज्ञान का क्रम चलता रहा है।

एक कौशीय एलगाईं से वनस्पति का विज्ञान विज्ञान बनने तक हुआ। वे विज्ञान बन दबकर हमारे लिए बीजों का बीज बनने वाली वे धरती वन में बहुत गलत सिद्ध नहीं हुए। समाप्त होने पर उन्होंने बीजों के रूप में परिवर्तित होकर नये युग की बुनियाद डाली। उन्होंने अपनी विज्ञान में ज्यादा सोम्य भीषण की छोड़ दी उनसे ज्यादा सपन सावित्र हुए।

प्रारंभिक विज्ञान एनबोकोय प्राली, प्रमोवा से, डिनेसोर सब हुआ। हर युग में मातार का विज्ञान भी हुआ। उस क्रम की पराजय डिनेसोरो के युग में हुई। २०-२० फुट लम्बे वे विज्ञान प्राली जिन्होंने एक दूसरे से लड़ाई में विजय पाने, के लिए अपने शरीर को भयकर क्षत्रों से सुसज्जित किया, एक दूसरे के वन का प्रसन्न करने के लिए एक दूसरे के धरती भी था जाने में।

लेकिन प्रारंभिकों के विज्ञान में भी इस हर तरफ पशुवत्तर प्रकृति केन गई। सावित्र, उसे सर्वशक्ति का प्राण प्रपत्ता प्राद्वि, या सुबन का प्राण? क्या डिनेसोरो के युग में, धीरे-धीरे, एक ऐसे प्राणी का विकास होने लगा, जिसका मूल सिद्धांत सफल नहीं सहाय्य था, जो विज्ञानों के स्थान पर सहाय्यता की धीरे बढ़ने लगा। प्रथम धार दुनिया में एक नई पक्ष्य शक्ति प्रकट होने लगी—मयूर के बच्चे में ऐसा धीरे प्रम।

धरती वन की सुरक्षा के लिए उन स्तन-पायी प्राणियों ने बाहुबल के भयकर सफल के बच्चे में धरती वन के पालन योग्य के प्रेम और सेवा का सिद्धांत ध्यानात्ता। धरती शरीर को भयकर क्षत्रों से सुसज्जित करने के बच्चे धरती वन में दूध के प्रेम

पुहारे का विज्ञान किया। धरती वन का के क्षत्रों को भाष्य की मर्जों पर छोड़ने के बच्चे उन्हें जन्म तक धरती शरीर में समालने की प्रकिया प्रपत्ता। धरती में डिनेसोर लक्ष भयंकर धरती वन को खल करने, सडकर भविष्य के लिए प्राणिज तेज का सङ्कार बन-गये धीरे स्तनपायी नये युग के सहाय्य बने।

इस युग में भी शुरू से प्रकृति ने धरती नई दिशा का पूरा महत्त्व नहीं समझा था। प्रेम की धारा के साथ ही साथ, धरती तक विज्ञान बाहुबल और सफल का प्रयास भी चलता रहा। लेकिन धरती में विज्ञान संभव तथा सहाय्य-दान वाले मेर के स्थान पर छोटे धीरे सोम्य पशुओं का विज्ञान ज्यादा सफल सावित्र हुआ। धीरे सहाय्यक जल-बरो का भी धरती हुआ।

उन जानवरों के बीच में एक दूसरे प्राणी का विज्ञान धीरे-धीरे हो रहा था, जिनके धरती विज्ञान के लिए एक धीरे तथा सिद्धांत प्रपत्ता। सर्वप्रथम लक्षे होकर, प्राण के बच्चे में हाथों का उपयोग करना विज्ञान प्रम में एक बहुत बड़ा कदम था। फिर सहाय्य-वृत्ति की शारीरिक शक्ति के बच्चे में प्रथम बार दुनिया में एक धीरे नई शक्ति विकसित होने लगी—बुद्धि और भावनाएँ, धरती ध्याना का प्रवेश हुआ। बुद्धि और भावनाओं के विज्ञान से प्रकृति के स्वाभाविक विज्ञान के प्रम में युवा मनुष्यों ने धरती शरीर के बाहर प्रम और भीषणों का विज्ञान करना शुरू किया। प्राण को बाहु म किया, इति की सहायता प्राप्त हुई। धरती बुद्धि का उपयोग करने मनुष्य में एक हर तरफ विज्ञान की दिशा की निर्धारित करने की शक्ति प्राप्त। सुबन करने की शक्ति प्राप्त हुई। इतने साथ ही साथ परिवार में प्रेम और सहाय्य धीरे सहाय्य की भावना का विज्ञान हो रहा

था। धरती मने-मनवियों के लिए सेवा, स्थापना तथा धाम करने की वृत्ति का विज्ञान हुआ। इतने साथ, मगर तथा राष्ट्रीय संगठन का विज्ञान भी हुआ। लेकिन 'पाना' और 'पराया' 'तेज' और 'सेवा' की भावना रहने से सफल धीरे सहाय्य की भी वृत्ति दुनिया में रही। इधर लगता है कि 'पुन-युग' का प्रयोग तभी तक चलता रहा जब तक मनुष्य ने ध्याना धीरे बुद्धि का धरती पूरा नहीं समझा; धरती की भावना की पूरी पहचान तक जाने की चुनौती की वह पूरा उत्तर दे नहीं पाया। सहाय्यवृत्ति, धरती सुधार की पद्धति में ध्याना पर धीरे विकीर्ण विज्ञान की धीरे बच्चे की विज्ञान का प्रमोवा तक विज्ञान नहीं हुआ। उसके मनुष्य ध्याना की धीरे बच्चे लगे। परिवार से प्राणियों का, प्राण के सहाय्य और उस सहाय्य की ध्याना की सहाय्य से, धरती राष्ट्रीय प्रपत्ता तथा सहाय्य साधनों के विज्ञान से सहाय्य विज्ञान ध्याना धीरे सहाय्य राष्ट्रीय प्रपत्ता बढ़ने लगा।

इधर भी बुद्धि नहीं, धरती सुधार की पद्धति में मनुष्य धरती बढ़ा। जैसे जैसे वह सहाय्य धरती की धरती बच्चे लगे तथा जैसे जैसे धरती के लिए धरती लगे। इधर बढ़ लगी। एक डिनेसोरो के सहाय्य की पद्धति में सहाय्य रहा धीरे अटक रहा है।

धरती, धरती शरीर के बाहर अपने लिए सहाय्य प्रम बनाने, डिनेसोरो के प्राद्वि प्रम सहाय्य धीरे वन के निर्माण में। सहाय्य के विज्ञान से सहाय्य धीरे सहाय्य शक्ति से भी विज्ञान सहाय्य का सहाय्य हो रहा है।
इस सब धरती, धरती की बुद्धि के ही उपयोग से हुआ है। लेकिन धरती जैसे बुद्धि के उपयोग से धरती में धरती धरती विज्ञान साधनों का विज्ञान प्रम धरती (२५ फुट १२, १२)

समुद्र को मीठा बनाने की कल्पना मत कीजिए

प्रश्न: पाद-पाव रोज से सम्भलन मे गाय के घारे मे जिगी मे एक घबद भी नही बटा है। इतिम गर्भाधान से इतिदुलान की घपनी गाय सोपा होने वा डर है। मार्गदर्शन देने की कृपा करो। लोग दूध बधाने के लिए इतिम-महिता वा सोपन नही रखने हैं। यह पाप अपनी ही संस्थाओं मे बन रहा है। आप इसे नही रोक सकते हैं ?

उत्तर: बलवन्त सिंह यानी गाय। उनको चिन्ता है गाय की। राय वर श्रम है गरीब। लेकिन वह गरीब गाय नही है। भगवान् गाय है। इनकी उम्र ७५ है, फिर भी बलवन्त सड़ते है। स्पष्ट बात है कि यह (इतिम वर्षा धान) भगुनिम काम है। इससे मनुष्य पापान नहीं। मनुष्य को दूध लेना है तो गाय के पावित्र्य पर ध्यानमय नही करना चाहिए। वह गोमाना है। मलय की रखा के लिए प्रह्लादिता की गिरा देनी होगी। ब्रह्मनिद्या की साधना होगी, सभी मानवता दिखेगी।

प्रश्न: सर्व सेवा संघ के कार्यक्रम मे धाम-स्वराज्य-आमदान भादि व्यापक क्षेत्र होगा। उसमे भगी-मुनिम कार्यक्रम का जो शहरो से ही सम्बन्धित है, क्या स्थान होगा ?

उत्तर: भंगी मुनिम करना, इसका श्रम यह है कि हमारे कार्यकर्ताओं को श्रादेश है पाव-पाव जाकर भाड लपाओ। उन्हें उमका पालन भी किया है। गाव मे जाकर प्रथम क्या करना ? भाड लगाना और सब जाति, धर्मवासी को इकट्ठा करके प्रार्थना करना। यह भंगी-मुनिम के लिए श्रादेश है। बाबा मुनिमतीपाटी वगैरह काम करेंगे। सैतिक श्रेय, संडास वगैरह को योजना सब दूर होनी चाहिए। फिर खाद भी बनेगी और भंगी-मुनिम होगी।

प्रश्न: श्राचार्य बुल का काम भी रचना-मय है। वह भी एक एनयन प्रोग्राम है, ऐसा नैतिक काम मे लगे लोगों को लगता नही। इ काम कैसे प्रभावकारी बने ?

उत्तर: उसका एक कारण यह है कि वे अपने काम मे इतने द्रुत होते हैं कि उन्हें सोचने का समय नही मिलता। और दूसरा कारण यह है कि वे बेचारे विद्वान हैं नही।

लेकिन विद्वानों को इस काम के लिए प्रागे धाना चाहिए। और हाथ मे डंडा लेकर सर्वोप के सेवकों के पास जाना चाहिए और कहना चाहिए, हमारी बात सुनो।

गाव-गाव शिखरों के पास जाकर हमारी बात सुनाओ। क्योंकि तुम गाव-गाव जाते हो। श्राचार्यबुल का काम धलन्त मल्ल वा है। लेकिन श्रुती-श्रुती चार-पाव सात से शुरू हुआ है। ऊपर के प्राणों मे शुरू हुआ है। गुजरात मे भी शुरू ही रहा है। गुजरात मे यह विचार जायेगा तो पूर्णमास्य होगा। गाधीजी का विचार था कि शिक्षा पूर्ण सरकार मुक्त हो। इसलिए श्राचार्यबुल का संगठन गुजरात मे मान्य होना ही चाहिए। इसमे किसी भी श्राचार्य का मतभेद नही हो सकता है। वहा कुछ उत्तम श्राचार्य हैं, श्राचार्य की योग्यता समभते हैं। लेकिन सुरत राजनीति को छोड नही सक्ते। उन्हें भास होता है कि "गाधीजी जीवन को समग्र मानते थे। इसलिए राजनीति को प्रलय नही रख सकते हैं।" मैं भी वहुना हू कि राजनीति को श्रवण नही रख सक्ते हैं, आपको राजनीति को तोडना है पर वे समभते हैं कि वहाँ श्रद्धर प्रदेश बरके सरकार पर, काब्रड पर बसतर डालेंगे। मैंने कहा कि यह प्रयोग गंगा, यमुना भादि सब नदियों मे कर लिया है। श्राणा मीठा पानों डाकवर समुद्र को मीठा बनायेंगे, यह प्रयोग उन्होंने किया है। यह गंगा, यमुना को गंगा नही, तो प्रापको कैसे संभेगा ? इसलिए इस धारे समुद्र को मीठा बनाने की कल्पना मत कीजिए।

प्रश्न: कुछ लोगों को देश की परिस्थिति देखकर अल्पन्त निराशा और अंधकार दीखता है। प्रापके कहने से मन्दिप्य उज्वल है। वे कहते हैं, देश सर्वनाम की तरफ जा रहा है

प्रापको दीखता है कि उदय की तरफ जा रहा है। यह इतना मन्दिप्य दर्शन क्यों होता है ?

उत्तर: ऐसा है कि जो मानव होते हैं उनको दिन मे श्रल्पन्त उज्वल प्रकाश दीखता है। लेकिन जो घोर होते हैं उन्हें दिन मे अंधेरा दीखता है। मानव की दृष्टि में और घोर की दृष्टि मे फर्क है।

इस वचन बुल बुनिया वेग से शानि की तरफ जा रही है। बुल बुनिया के लोग नजदीक भा रहे हैं। यहा जो चलता है, जो सम-स्थाप है, जैसे मुसमरी, दादिदय उसके कारण कुछ लोग इन्दिरा पर टीका करते हैं। मैं कहता हूँ कि कुछ लोग हैं इन्दिरा के भवन और कुछ हैं विरोधी भवन। रायण राम का विरोधी भवन था। विरोधी भवन बरके वह राम की ज्योति मे लीन हो गया। इतुप्राय सख्य भवन बरके राम की ज्योति मे लीन हो गया। श्रुती इय समय भारत मे दो प्रकार के इन्दिरा भक्त हैं। एक है विरोधी-भक्त जो बग बर विरोध करते हैं। सदा सर्वदा इन्दिरा, इन्दिरा, इन्दिरा ' इन्दिरा ने यह दूरा किया ऐसा कहते रहते हैं। वे लोग सर जायेंगे तो इन्दिरा की ज्योति में लीन हो जायेंगे। दूसरे कुछ हैं जो सत्यभक्ति करते हैं। वे भी सर जायेंगे तो इन्दिरा की ज्योति मे लीन हो जायेंगे। श्राप इन दो मे से एक भी बनें, यह बाबा ठीक नहीं मानना।

यहा को समस्थाप बोर्ड पार्टी या कोई सरकार हल कर सकती है, ऐसा बाबा नही मानता। हम सबको मिलकर यह काम करना होगा। मैंने व्यापारियों की सभा मे कहा था कि समाज को पाव शक्तियों के (जनशक्ति, सजजनशक्ति, विद्वज्जनशक्ति, महाजन शक्ति, मानव शक्ति) सहयोग से मिले हन होंगे। लेकिन इन्दिरा फीट है या पाप इसकी बाबा ने पाप एक ही बसोटी है, कि यह अन्तर राष्ट्रीय क्षेत्र मे सफल होगी है या धनकल। अभी तक नही दीखता है कि जितना उतने

मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर देवत्व की ओर बढ़ सकता था

(पृष्ठ १३ का संप)

रिया है वह सपन ही सीलना है। बागला देव स्वयं बना, वहाँ से सारा ही सपने थे, उनके लिए बहुत गर्वा उठाया योरल, धमरीना में जाकर सबको समझाया और बागला देव के जोन हुई तो बेहतर कट पर। फलत बुद्धि-संकेतक गौर पावर रिया। धर्मो मिमला में धोर दिल्ली में धानजीन धरायी। कुन मिना कर उमने धानरद्रीय धीय में धापी मफलता प्राप्त की है। इसीलिए धाया इन्द्रिया को धन्य-वाद देना है। धन यहा की जो समसयाए हैं, गरीबी बीरद वह इन्द्रिया हल नहीं कर सकेगी। बट जो धाराको, हमको मन्वरो मिन कर हन करना है।

प्रश्न: बांगला देव की धारादी के लिए इन्द्रिया जो से वही धंधिर धाम तो जयप्रकाश जो ने रिया है ?

उत्तर प्राधिर राम रिनने रिया धोर रिनने नही रिया, इतना विचार में नही करता हू। परन्तु प्राधम मिनिरिटर के नाते उहोंने जो काम रिया वह प्रगतीवी है। तुपना मैं रिया की, रिनती मे करता नही।

प्रश्न मैं गौर के काम करना हू, बुद्ध लोग मुझे जिन पुखे हैं। मैं उहें दलमान बनाया हू। जब हिरजन म्हार बनाया जाता है तो पहले से कार्य करने में मदद काम मिनती है। मार्गदर्शन है ?

उत्तर धानी मन्वी जिन है, वह बरासी जाये। धानी जिन है, मानव। वेद में लिखा है, विरभमनुष्य। इस तरह विरभमानव है। 'मनु' परने 'मानव' बना है। मानव करता है, वह मानव है। हम सब मानव करनेवाते हैं, मानव है।

प्रश्न. मायाशार रिन है या 'रिद्विधार-धार ?' धानीशारी के हीन भाग की प्रगाथना में 'रिद्विधारधार' धारने रिया है। इतना 'रिद्विधारधार' के बारे में मनुष्य करता ?

उत्तर इतना विरभल १३०० साल से फकर रासामुख करने धाने है। धनरना भी धानन बन कर बनना रोना। इसीलिए यह धनरन कामाया के लिए धारता।

बैसे-बैसे प्रहृति के निरुट रह कर जो धार्म्यात्मिक साधना धोर कर्त्तिका वा विनाम हुषा था, धार्म्यात्मिक, साहृदयिक, दार्शनिक विचारो से मानवीय जीवन में जो मोक्षधर्म, कता, बाध्य ध्यानधर का प्रवेग हुषा था, वैसे वह उन सबको भूतना गया। धाने धारता धोर भावनाधो वा विनाम बुद्धिधर होने लगा, बुद्धि का विनाम प्रधान रहा।

इन सब साधनो का विनाम, मुन्य-मान्ति की खोज में हुषा है। लेकिन धन इनके सामने मानव की मिनती नही रही है। धरव-इजरादन के सधर्य की खबरो में, कितने मिनल नष्ट हुए, कितने टैक नष्ट हुए, उगरी मिनती मिनती रही लेकिन कितने मनुष्य नष्ट हुए धायन हुए, धन गये, कितनी बटनें विधवा हुई, कितने बच्चे प्रताप हुए, कितनी माताए पुन विहीन हुई, इतना कोई जिक्र नही।

मनुष्य के विनाम में, मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठ कर देवत्व की ओर बढ़ सकता था, लेकिन धन वह पशुधो से वीधे गिर कर दानवता की ओर बढ रहा है। धन महृद-बुद्धि में भगवता है। मनुष्य जगमें बुद्धि का उपयोग करता है, जो सर्वथा बुद्धिमत्ता का धमाव है। फिर भी वह धर्मो लक्ष जग भूल-मुधार, को पद्धति में भटक रहा है। इतना धरने दानवन्ध को छोडकर देवत्व की ओर बढ़ने की इत्थान धोर धडा नही है।

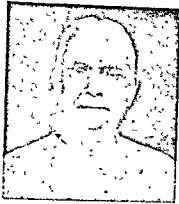
इन युग में धापी जी ने दुनिया के सामने नये युग की धनीनी का उत्तर बताया था। उन्हीने मानिक रिया जि प्रेम में सधर्य को जीन्ने धोर धने में मिन की जीन्ने की कर्त्तिका हू। पुनिक की कर्त्तिका को, साधन्य की कर्त्तिका को, जीन्ने में धर्मा सधर्य है। फिर भी, मनुष्य धर्मो लक्ष वेधा नही। रिया बचने का रिद्विध नही कर पाता है, बुद्धिधरिधन नष्ट-हृदक विनाम को रिया में धाने करने के

वयले में, वह धर्मो लक्ष 'धेरे' परिवार, 'धेरे' राष्ट्र की भूत में पडा है। म्क्षियो तथा रान्नी के विनाम धर्मान को छोड कर वह इधिम दिधोभोर के युग में धाने बढने को तत्पर है।

व्यभिचान धोर, राष्ट्रीय स्थाधो की टकरार में, मकुचिन धनीगीन भावनाधो की टकरार से, धानि की पुजा के मध से सधर्य पंडा होना है; तब मनुष्य मानि वा समनीता करने के लिए दौडता है, लेकिन धर्मो लक्ष वह गमय नही पा रहा है कि रिया बदलना है। बाह्य धानि के स्थान पर धान्तरिक धानि वाहुवन के स्थान पर प्रेम की धानि, सधर्य की धानि के बदले में सहयोग की धानि विनामना के बदले में सौम्यता की धानि विनाम करता है। नही तो मनुष्य धन का गुनाम बना कर धानवर से भे बदतर, धन्य का एक पुर्जा बनना का रहा है—धन के सामने मनुष्य के धनित्व के कोई मिनती नही रही है।

धर्ममान युग को हम धानता का युग कह सकते हैं। दुनिया धर में पचधर्षी धोरनाधो की धरधार है। लेकिन उन स धानताधो में एक भी धानता मी नही है उ निरधर करने सधर्य की जरां का बाह्य दुनिया को धानि की धार ने का मने जिनका धनभूत मिद्वान धर्मो लक्ष जग भू-मुधार की पद्धति धर धार्म्यात्मिक है इसीलिए यह मनुष्य को सर्वनाम की धोर ब कर ने जा रही है।

धारी परिद्वान्य को धैव कर, उध रिनेपध करके, धन धरि नदी रिया मोकता धोर बनाया, उधे रीकार नही कर है तो धने बुद्ध में, बाह्य प्रहृति के साधनो धर्माधर धोरना में, बाह्य प्रहृति के महुध में मानव कर्त्तिका, धानी बुद्धि धोर रिद्विध कर्त्तिका के विनाम के बाधधूर नाधो धाने का सर्वनाम की धोर ही बढेगी।



श्री डॉ. बी. दिवाकर



श्री धीमन्ताराम

अर्घ्य ही भास्वरूप धीर शरीरधारिक समारोह के अन्तर्गत १६ नवम्बर को राजघाट पार्कोनी, नई दिल्ली, स्थित केन्द्रीय मायोनिधि के कार्यकर्ता परिषद ने निधि के अन्न तक के अन्नदादा दारदरणीय श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर को भावभोनी विदाई दी, धीर अपने नये अन्नदादा श्री धीमन्ताराम का स्वागत किया। दिवाकर जी विगत सत्रह वर्षों से निधि के अध्यक्ष थे। निधि के मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार ने दिवाकर जी को विदाई देते हुए आशा व्यक्त की कि अध्यक्ष पद से मुक्त होने के बाद भी दिवाकर जी का मार्गदर्शन निधि को प्राप्त होगा रहेगा। दिवाकर जी ने कहा कि शारीरिक रूप से वे चाहे निधि से मुक्त हो जाए, पर मानसिक रूप से वे हमेशा निधि से जुड़े रहेंगे। धीमन्ताराम जी ने निधि के कार्यकर्ताओं से सहयोग की अपेक्षा करते हुए आशा व्यक्त की कि जिस प्रकार दिवाकर जी को निधि के लोगों का सहयोग मिलता रहा उन्हें भी प्राप्त होगा।

नये अध्यक्ष का चयन १७ नवम्बर को नई दिल्ली में निधि के ट्रस्टियों की बैठक में हुआ।

× भारतीय समारोह के अन्तर्गत पश्चिम बंगाल के सर्वोदय और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने १६ अक्टूबर को कलकत्ता के कुमारसिंह हाट में बंगाल के सुप्रसिद्ध सर्वोदय सेवक श्री चारुचन्द भण्डारी का ७८वां जन्म दिवस मनाया। बंगाल के सम्मानित सर्वोदय कार्यकर्ता व स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री कृष्णचन्द्र चक्रवर्ती ने इस अवसर पर चारदा को दो हजार पाच सौ नौ रुपये अन्नदादा पैसे की बैली भेंट की। पश्चिम बंगाल सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता श्री शशिसेखर पाल ने की।



चारदा को बैली भेंट करते हुए श्री चक्रवर्ती

रणी सभा भवन में १४ नवम्बर को व्याख्यान का आयोजन हुआ। श्री मेहता ने 'सोन्-तात्रिक समाजवाद' पर अपने विचार प्रकट किये। व्याख्यान माला का प्रथम भागण केन्द्रीय रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने १३ अक्टूबर को दिया था।

× मध्य प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा प्रदत्त एक जानकारी के अनुसार आगामी ४ व ५ दिसम्बर, '७३ को बम्बूरवा ग्राम (इन्दौर) में तेरहवां प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन होने जा रहा है। सम्मेलन का उद्घाटन श्री दादाभाई नारई करंये और अध्यक्षता हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एच 'भूदान-भक्त' कं सम्पादन श्री भवानी प्रसाद मिश्र करेंगे।

सम्मेलन की कार्यवाही ४ दिसम्बर को तीसरे पहर से शुरू होगी। सम्मेलन में बिना सर्वोदय मण्डल के सयोजक, प्रतिनिधि, रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं सर्व सेवा सघ के प्रादेशीय सघ सदस्यगण भाग लेंगे।

× भारतीय नगरी के अनुसार सुपरिचित लेखक श्री सुब्रह्मण्यम की 'चम्पल घाटी में डाकू समस्यु' के समाधान में राज्य शासन और सर्वोदय का योगदान' विषय पर एक शोध-ग्रन्थ की रूपरेखा स्वीकृत कर जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वाियर ने पी० एच० डी० के लिए पत्राचार कर ली है।

× आगामी १२ व १३ जनवरी, १९७४ प्रथम राष्ट्रीय आचार्यकुल सम्मेलन आचार्य विनोबा भावे के सालिन्ध्य में परमेश्वर आश्रम पवनार (बर्धा) महाराष्ट्र में आयोजित होगा। सम्मेलन में देश भर से कई विद्वान भाग लेंगे और देश की ज्वलन्त समस्याओं पर तटस्थ चिन्तन तथा आचार्यकुल के संघटनात्मक पहलुओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

× महात्मा गांधी आश्रम जोरा के संचालक श्री एस० एन० गुम्बाराव ने आशा वि आगामी १ से १५ दिसम्बर तक जोरा (जिला-मुर्दा) में गांधी-मेला लगवाया जायेगा। २ दिसम्बर को मेले का उद्घाटन केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम करेंगे। मेले की व्यापक संवर्धनाय शुरू कर दी गयी है।

मेले के अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। जिसमें सम्पादन श्री० गुम्बाराव हैं।

मेले के बाद चम्पल घाटी के लोगों को लेकर एक विशेष रैलयायन के आयोजन का विचार है।

नये आयाम × पचास रुपय में लड्डुका विक्रम हे
 राज ही बदलना होना × बिना लोगों को हिस्सेदार बनाए योजनाएं नहीं चलेंगी
 × चीनी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन

कलकत्ता नगर पंचायत

सचिवरी



भूदान-यज्ञ

३ दिसम्बर, '७३

वर्ष २०

अंक १०

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

नये आयाम (सम्पादकीय)

—भवानी प्रसाद मिश्र २
पचास रूपए में लड़का बिकता है

—वि० ३

अपराधों को रोकने के लिए
पूरा समाज ही बदलना होगा

—जयप्रकाश नारायण ५
बिना लोगों को हिस्सेदार बनाए
योजनाएँ नहीं चल सकेंगी

—रणबहादुर सिंह ८
चीनी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन

—दिलीप पाडगांवकर ९
मध्यप्रदेश में सर्वोदय कार्य १०

कार्यकर्ताओं के भरोसे
अभियान कब तक चलेंगे ? ११

टिप्पणी —देवेन्द्र कुमार १३
बिना टिप्पणी के—संतोष भारतीय १३

युजरात में महिला पदयात्राओं
की उपलब्धियाँ

—कान्ता, हरबिलास १४
आन्दोलन के समाचार १६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

नये आयाम !

सोवियत दल के प्रधान नेता भारत प्राये हुए हैं। हमने उनका भी खोल कर स्वागत किया है। पारस्परिक हित में एक दूसरे के लिए क्या कुछ किया जा सकता है इसके विभिन्न पहलुओं पर हमारी प्रधानमंत्री श्री श्री ब्रंभेव ने बातचीत चल रही है। बातचीत के बाद जो सयुक्त बक्तव्य निकलेगा उससे साफ होगा कि क्या-क्या तय हुआ है। अभी तक दोनों देशों के प्रतिनिधि लगभग एक सप्ताह से बात करके हमारे प्रधानमंत्री श्री श्री सोवियत दल के नेता के बीच बातचीत का आधार बना चुके हैं और नागरिक अभि-नन्दन के घबराहट पर लालकिले में दोनों बरिष्ठ नेताओं ने जो कुछ कहा है उससे इतना समझ में आ गया है कि भारत और रूस अपने को एक-दूसरे का घनिष्ठ मित्र मानते हैं। रूस ने भारत के प्रति सदा मैत्री-भाव को बढ़ाते चले जाने की घोषणा की है और भारत ने तो मुक्त कंठ से कहा है कि ऐसे गाढ़े अक्सर पर जब कोई बागला देय और पाकिस्तान के सघर्ष के बीच हमारी परि-स्थिति समझने तक को तैयार नहीं था, रूस ने हमारा अग्रत्यागित समर्थन दिया और उसके कारण हम एक बड़ी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुसीबत से पार हुए। इन्दिराजी ने बृहत्तम भाव से कहा कि रूस ने हमें जो सबसे बड़ी चीज दी है, वह उसकी हमारे प्रति असंदिग्ध मैत्री है—उन्होंने यह भी कहा कि मेरे पिता का यह कहना था कि कोई किसीको बड़ी से बड़ी कुछ चीज दे सकता है तो वह मित्रता ही है। रूस ने हमें यह मित्रता दी है। श्री ब्रंभेव ने कहा कि भारत-रूस मित्रता के घनिष्ठ होने का मतलब 'लेनिन के सपने का साकार' होना है। भिलाई कारखाने से निकर आने तक की मित्रता के सूत्रों को उन्होंने अपने दीर्घ भाषण में उपस्थित लोगों के सामने रखा। इन्दिराजी ने नम्रतापूर्वक जनता को और सोवियत दल के नेता को यह बताया कि हम समाजवाद का मार्ग अपनाते हैं प्रयास कर रहे हैं—मगर हर देश को अपनी एक परम्परा होती है और कुछ विभिन्न से मूल्य भी होते हैं। हम उनके धनुष्य रास्ता

प्रधानकर वाकिफ दिया में बढना चाह रहे हैं। अभी तक की बातचीत आदि से समाधान इस बात की दिख रही है कि कोई दीर्घकालीन प्राथिक और तबनीकी समझौता दोनों देशों के बीच होगा। संभव है यह अवधि पंद्रह से लेकर बीस वर्ष तक की तय की जाय। सुरक्षा के प्रश्न को व्यापक दृष्टिकोण से देखा जा रहा है—इसमें यूरोप और पूर्वी-अफ्रिकी एशिया के क्षेत्र भी किसी रूप में शामिल रह सकते हैं, इस पहलू पर भी पर्याप्त जोर है। यह सर्वथा उचित है। शान्ति या मित्रता प्रयत्न उसके विपरीत भावनाएँ भ्रम महसूस नहीं रखी जा सकती। शान्तिपूर्ण सहमति, प्राथिक सहयोग और सद्भावना बढ़ाने के कार्यों की निरन्तर अधिकाधिक व्यापित किये बिना निरन्तर नहीं है। भारत-रूस-बागलादेश के बीच की सधि इसका केवल प्रारम्भिक बिंदु है। इसे केन्द्र मान कर एक ऐसे वृत्त का निर्माण किया जा सकता है जो अपने में यथासम्भव सभी पास दूर के देशों को समाहित करके उन्हें शान्ति और सहयोग के साथ रहने में समर्थ बना सके। इसे सोवियत-शासन-समाचार-अधिकांश तास के सचलक श्री जामियातिन ने 'ब्रंभेव-योजना' कहा। 'ब्रंभेव-योजना' का ठीक अधिप्राय जानने के लिए भारतीय पत्रकारों ने जब श्री जामियातिन से कुछ प्रश्न किये तो उन्होंने स्पष्टीकरण देना अनावश्यक माना। इतना तो स्वीकार किया ही गया है कि शान्ति और सहयोग के लिए उत्सुक सारे देश इन योजना में शामिल हो सकते हैं—यहाँ तक कि चीन भी इसमें शामिल होकर योगदान कर सकता है। शीतयुद्ध की पंढरेबाजी से निवृत्त कर भीचे और सद्भावनापूर्ण सहयोग की सीमा और संभावनाओं को वक्रमा देना का विचार सर्वथा स्वाभाविक है। इस प्रकार के द्वारा ही मिलने हैं कि राष्ट्रसभ बड़ी शक्तियों के सहयोग से हम परिणाम को यथासम्भव जल्दी से जल्दी प्राप्त करने और बनाने के लिए उत्सुक हैं। यदि भारत और रूस के इन सहायक समन्वित प्रयासों को प्राथिक सफलता भी मिल सके तो संदेह और उस कारण करतों

(शेष पृष्ठ ५ पर)

पचास रुपए में लड़का बिकता है

किन्ना सारे तीन पार जैसी कोई बपोल-बलिग बना का नहीं और न यह बात प्रार्थित-हासिक बाल की जगती सम्पत्ता की ही है। पुण्ड्रिका नामक और खड़ेजी सलतन के जमाने की भी बात नहीं। नाउ है यह नकबदर उन्नीस ती तिहतर की, जब भारत की धारवादी का रजन-जपनी बर्ष दूरा हो गया है। धार भी प्रसम, नेपा और नेपास की लयाई की बात होती तो धारकी की मजालना मान कर बाफ करने लायक बात थी। बडे-बडे शहरो मे भी धरपहाड स्वच्छ सुड की बडोर बिना बरफ बंक मे चुन बेचकर रिफसा वालो की चुकते देला जात है। पर लठमीपुर धारने के लामोश्राम (मभर, बिहार) के पास-पडोस के गावो का तो सामान्य जीवन, ब्यापार-व्यवहार तथा धाम रिवाज गोपल की परा-बाधता तक पदुष गया है। खारीधाम मे भडारुड बर्ष रहने के बाद भी इस प्राकृतिक गोपल का दर्शन नही हो पाया था। पर दो-तीन दाड से इन गावों मे जाने का धारनर धारनर धारण है। इनकी धारई पर बैडनर इनके टिकट धारने पर नित्य कुछ ऐसी जान-बारी विनमती हे जिस पर, विरकाय करने मे बडियाई होनी हे।

बौन मानेगा कि पचास रुपये मे लड़का बिकता है ?—नितरु-नदेरु नहीं, 'तोरा' की माना की प्रनुनायथा, न पाच रुपये का उधार धारी सोड, नाइन, बाँचिन मे खर्च हुआ था। तोरा की उर के साथ यह बर्ष की बडता जाना था। दस बर्ष की उर मे तोरा भ्रमभालता मे भरती हुआ। उन समय उरके पित पर पचास रुपये का बर्ष हो गया था। यदि मनुरी बरके धारने की व्यवस्था नही होनी तो तोरा की धारना नाम नितरु भी नही सीय पला। धर तक को बचती चराना था, गीधरी से मुर्षी की रसधानी बनता था। मी-नाप अर जीविका के लिए अणव बने जाते तो 'धर' की रसधानी भी तोता ही बनता था। इन बमाऊ बच्चे की पडने का एक धारनर अब खारीधाम मे

मिला तो महाजन के काल सडे हुए। धर तोता अणवकोड ही जायगा, यह हमारे विचरे से बाहर होमे बाता है। महाजन 'होमे' की सोर मे लारीधाम धारण। महाजन मे बहा धारने हमारा मजदूर भण निपा। उसे ५० रुपये मे खरीदा है। धारचार्म राममृति ने कहा, "यहा तो सब बच्चे हैं।" महाजन मे कहा, "यह तोता बडा होकर येरा मजदूर बनेगा। इसे हमने खरीदा है।" धारचार्म राममृतिजी ने ५० रुपये नकद देकर तोते को मुक्त किया। उनका बहुका है कि हमारे चुल साठ विद्यापियों के परिवार के साथ करीब चौवन हजार रुपये का बर्ष है। इनके बाप-पडे इसी ऋण मे महाजनो की गुलामी करते रहे और यदि इनकी ऋण मूलो नही हो जाती है तो इनकी भी यह भार बोना होगा।

कुछ रोज पहले समाजवादी नेत्र जाजं फार्जिगिस ने खारीधाम मे जब यह मुला तो धारचार्म से उन्हीने कहा, "नाय यह 1९७३ मे भी होना है ?"

डाईरु रुपये सेर नहीरु रुपये का डाईरु सेर धारण

सरकार चिल्लाती है कि सतर रुपये निरुपल पर निनात लेवी का धान नही देता है, निकिन धान पकने के एण माह पहले दुर्गा-पूजा और दिवाली के खर्च मे, बर्ष काल मे होने वाले शीत-अरर, मोरी-भरी जैसी बीमारी के इलाज मे और सबसे अधिक खाली पेट को भरने के लिए दस बट्टा, एक बोध, जमीन जोनने वाला मजदूर परिवार महाजन के हाथ धारनी बराटी के धान की भुमनी बाली बेच देता है। बनया, धर के मोरी मे कि सवा तीनहू रुपये मन धान का भाव कोडा जायगा। निनात धान काट-गीट कर महाजन के सामने सुनाकर लेनलेगा।

सरकार सात-भाटी मे यदि दस निनातो को ऋण देने की व्यवस्था करती तो इनको धार के दुगना दाम निनता और सरकार

को सही दर मे धान मिल जाता। पुनः यह धान इनके हाथ बेचा जाता तो वे महागर्दी के गिजार नही होते।

घोडे को पांच रुपये का चना, मनुष्य को पाच भर दाना नहीं

मलेपुर स्टेशन से इन्के पर खारीधाम धा रहा था। राते मे नौचरान ने बहता सुक किया, "दस रुपये रोज मालिक को देना होता है, उस पर भी मालिक धर टमटम रखने की तंवार नही है। मालिक की मुनाफा नही भा रहा है। दो सेर चने का दो दाम पाच रुपये हो गया। चुन्नी, मूली और धाम का दाम तो धारा है।" यह धर्ष प्रसवत के घोडे का नही, टमटम सीचनेवाले टट्टु था है। मने हुसकर कहा, "सतरा तो दूध पिनाना होयार। रुपये मे एक किलो खारी दूध इस सोन मे धारानी से उपलव्य है।"

परकी सबक पर टमटम घोडकर खारीधाम की और बडा। यही सेठ हेमचम साथ हो गया। "भाईजी मे लपलप स्कूल मे बर्षा दस मे पडता था। पडई का लर्च नही चल सका..." मने बीच मे बात काट कर पछा, "बना तुमको स्टाइरु नही मिलता था ?" भाईजी दसलपन तो खारबर बनताया गया पर बर्षी कुछ मिला नही।" मुनकर कोई धारचर्च नही हुआ। यहाँ ही नही, धारण स्वानो धर भी धरनर यही सुनने को मिला है। इन चररुण काल ऐना सुनने के धार्यस्त वत गये हैं। सेठ ने सलाह बहना जारी रला, "यही पहाड़ पर पदर कोडने का काम करता हू, मुधिजन से साठ-सतरा पैसे रोज बना पाता हू। मेरा धर्यस्त नही है, दूनरे लीग धार बने मुनह मे लगते हैं। दस-बाराह धडे काम करते हैं। वेतना हू धारध भरिया से रही हूँ, पर हपीडे की धारनर नही बननी। साठ-सठ-साठ।" सुवह पांच बडे जब मुमने निचलता हू तो चनतीर, बोधरा, केडु, मलबोरी सखी

पहाड़ियों से सी-सी शब्द 'खट-खट' के गुनायी देते हैं। पत्थर से भी कठोर काया चट्टानों से बिपटी, अपने लून की बावी जलाती "बड़े भाय्य मनुष्य तन पावा", की लीला देख रहा हूँ। प्रौद्योगिकरक्षण शहरीकरण की चकाचौंध में समाज इसे देख नहीं पाता है, लाउडस्पीकर की ध्वनि गरीबों की कराह सुनने नहीं देती, 'जयन्ती-जनता' और 'राजधानी' एक्मप्रेसो में चलने वाले प्रतिनिधि दिल्ली पहुंचने के पहले इनलपसीली की गुदगुदी नींद में भूल जाते हैं—अपने गाव की यात्र। याद रह जाती माय मधुवनी पेंटिंग।

प्रधानमन्त्री ने पेट्रोल की बचत और सादगी के प्रतीक में राष्ट्रपति भवन के बाही घोड़े से जुती ज्वर्षी पर सवारी की। लेकिन वह-घोड़ा नित्य कितने गरीब वा हिस्सा खाकर अस्तवल की शोभा बड़ा रहा है यह हिसाब कभी प्रधानमन्त्री के वास्तव्य-भूण हृदय को स्पर्श कर सका है क्या ?

जंगली जानवरों से भी खूँखार कौन ?

जंगल-विभाग के एक अधिकारी ने कहा 'जंगल का सब से बड़ा दुश्मन मनुष्य है। जंगल उजड़ रहे हैं, जंगली जानवरों की पूरी जानि समाप्त होने लगे हैं। कौन उजाहता है जंगल को ? वीज समाप्त कर रहा है, वन-पशुओं को। जंगल के जीवन का नीरव संगीत कितने छीन लिया ?

'जितनी बँसरीज जखरी है, इसके जिने के लिए ?' आचार्य राममणि ने लकड़ी ढोने वाले एक आदिवासी को देख कर कहा। बच्चे के मोक्ष से भुंजकर धनुष हो रहा वा यह। बँहगी के दोनों किनारे से एक-एक मन भूरी लकड़ी का बोझा लटक रहा था। बीच में काली दुर्बल देह, सम्पत्ता की धोर निशाना कर रही थी। ५ मील पहलछे वा रास्ता तय कर पत्र की सड़क तकआपा है वह, अभी साय नील शहर पहुंचने को बाकी है। पीपल की छाँह में साँस लेकर फिर शहर की गलियों में घूम कर बेचने की दूरी, इस बारह मील के अतिरिक्त होगी। शाम तक जो पैसा लेकर वापस आया उस का गणित करने से पता चलता कि एक किलो गेंहू की कीमत इसके हाथ घाने वाली है।

आरचयें हुआ, कम से कम बारह रुपये की लकड़ी होकर ले जा रहा है, फिर इतनी कम मजूरी क्यों आयी ? बताया गया कि जंगल से लेकर शहर तक अनेक 'देवताओं' की पूजा करनी होती है। मन्थु की बड़िया विक गयी। उतने गत वर्ष अगनी भोपड़ी खड़ी की थी। उसी समय से अँधट चला आ रहा था, वन-रक्षक पचास रुपये से कम पर राजी नहीं हो रहा था। यह तो सामान्य सरह खुली है। जंगल के विनाशे बसने वालों को घर बनाने पर प्रति घर ५० रुपये वन-विभाग के सिपाही को देना पड़ता है। साल में दो बार ढाई-ढाई सेर पर्वी देनी पडती है। सज्जो-मुर्गी तो शिष्टाचार बस बराबर देनी ही होती है। इन सब के अतिरिक्त प्रतिदिन जंगल की सीमा में प्रवेश करने के पहले दक्षिणा चुकानी होती है।

'तेरा घर' अस्पताल के डाक्टर ने आरम-खोर खूला नर-मशुओ से घूँटे गये इस क्षेत्र के नरकनालों के स्वाध्य का सर्वक्षण किया तो यह पता चला कि इन में से सिँडे में ३० आरमी यक्ष्मा रोग से पीडित हो रहे हैं।

फागज का भंयकर-भूत

अर्धशास्त्र में पडा था कि ये नोट भूत है। लेकिन इनसे भी भयकर सरकार की मानगुजारी की रसीद है। यह सरकारी रसीद गरीब को कोई मदद नहीं करनी पर मजबूत की तनवार है। पुराना बीह के मोनवै साहब अडाएह एकड़ की रसीद लेकर अडाएह साय से चकरकर बाट रहे हैं। पर अगुटे भर भी जमीन उनको पाना बटिह हो रहा है। जब-जब आदमी उसे घुघने नहीं देता। सरकारी की शरण में घाता है तो बढाया जाता है। कि इस रसीद की पीठ पर सरकार ने पढ़ने की मुहरलगा दी है 'जिना जिमी विपरीत अमर है' यानी पैसा तो लिया, पर जमीन की जिम्मेदारी नहीं, अजीब है यह रसीद। बीउने के मयप गाप धोर दुग्ने के समय बेल। दग सरकारी रसीद से जमीन नहीं मिल सकती है, पर मानगुजारी नहीं चुकाने पर दरवाने की सोलट तो छुड़ाई ही आगयी। अब तो मोनवै साहब को अडाएह एकड़ जमीन पर धान-की लेवी भी देनी होगी क्योंकि इस 'लेवी' की देवी की सपर बागज के भूतनी भर पाते हैं।

लेकिन ये भूत भी बड़े बेदमान हैं, इनकी भी दुष्टि गरीबों पर लीच्छी होती है, जीवित शरीर का अम्यास भूत भी नहीं भूलता। सरकारी बागज तो छपा है, उस की कुप बचन भी है, पर आदिवासियों और मुसहुरों के लिए तो पुराना सड़गला बागज भी भंयकर रूप पारए कर लेता है। बाप-दादो से दसल-नरने की जमीन, धान के लहलहाते सेत, मान एक कागज के टुकड़े से छीन लिये जाते हैं ! फरजी कागज जितना कोई आधार नहीं, इनकी जमीन पर से भगा कर पर घुसाने के लिए काफी है।

वारिक पूर्णिया के दिन भूदानपुरी की पूर्णिया-मन्ना में पात-पडस के बीज-बाईस गाँवो की ग्राम-सभाओ ने पदाधिकारियों की बरीब सवा-नी लोभो की प्रतिनिधित्व उप-स्थिति सभा में सुनने को मिली। रायत बाईस पाम में है, पर साल भर में कभी गेहू नहीं मिला। चीनी-किरोसिन का तेल भी इस पर मिलाता है यह बिचो को मानुम ही नहीं और भी न जाने क्या-क्या सुनने को मिला। कायस प्राते समय रास्ते में सोच रहा था बीज बि-बास करेगा इन बाभो पर ? बाँद पर जाने वासा मनुष्य धरती से बित्तन, दूर है ! इनने में बाद का हुसना चेहरा बासले में दिखा गया। मानो धरती की क्रूरता को बाँद का पकव धोर बीमल बिन स्वीकार करना नहीं पाहता।

(पृष्ठ २ का अंश)

को स्पर्श से कई दिनों को राहत मिलेगी, वे रक्षारम्यक दृष्टिकोण घाता कर धरती पर एक नया युग माने की दिशा में बढ़ गयेंगे। तब हम गरीब देश में धरती अर्धकर अगस्त्यो के दिनों में सोवियन दम के मेठा के स्वागत में जो अघार उगाहा दिशाअर मयमन धनुसान से परे धरनामि सचं की है वह मायें अानी जा सकेगी। विद्यने बीगम-गर्भवी दिनों की नापदोड़, धायबारी धरकनें, आभासगामी के अति-उन्माह समालिन बापारिबारी धोर पत्रकारों की परिषदियों के अरर धोर और के बीच अनी लख मुद डंग में सोचना अमन नहीं था—उन सबनें विचार अतिन की अमन घाना जकर जगाई है। यह घाता बीसा वि हमने जहर, अरनः भी पूरी हुई, तो गव कुप भर पाया।

अपराधों को रोकने के लिये पूरा समाज ही बदलना होगा

—जयप्रकाश नारायण

मैं यह मानता हूँ कि अपराध और मुक्त को समाज से दूर करने का यह रास्ता, पापी जी का, बिनोया जी का, सबसे उत्तम रास्ता है, इस रास्ते का विवरण होने से न बीई मानन, प्रभावित था, न बीई पुलिस केन का धारणा हीना है। बल्कि उनके काम में भी धार धार लगते हैं। अपराध के घटने को इस रास्ते पर था सके, इस लक्ष्य में घटने की धार सके। यह उनका ही काम है। यद्वासा काम नहीं यह मेरे जैसे माथिया

का काम नहीं, चाहे वे पापी सर्वोदय में ही या बिनी और विचारधारा में ही। हर पुनित निराही को और अपराध का मानि का निराही बनना चाहिए क्योंकि ता एक पापर, मानि की स्थापना उसका ही काम है।

जता नर युग का प्रथम है अपराध का प्रथम है, प्रपतिगीन देना म दूसरे प्रकार के प्रथम है। भी रह है सेडी जी व साम्प-कारिडा के विषय म बरत था कि उन्नी

मानन वक्तव्य तो मानन मुक्त समाज की है, त्रियमे मानन को व्यस्तथा ही नहीं रहे। उनके ध्यान में यह बात नहीं रही कि महात्मा गांधी के भी एकदम एही विचार हैं, वे भी मानन-मुक्त समाज ही कायम करना चाहते थे—शोधन मुक्त भी और मानन मुक्त भी। जीवन भर साम्पशर का, समाजवाद का धारणन करने के बाद मैं इस लक्ष्य पर पहुँचा हूँ कि मानन-मुक्त समाज की स्थापना का, जो साम्प-कारिडा का रास्ता है। उनसे मानन मुक्त



के.पी.

नहीं ही मानना। घटने से वे मानन की सके स्थापना बनाते हैं, जैसे परभावना को सर्वोपमान बढ़ते हैं। हर प्रकार का पूरा अपराध के मानन के साथ में देते हैं। यहाँ के अपराध विर के मानन मुक्त की धार बना जाहते हैं। इससे मानन और

मानन म धारमान-जोषन का अपराध पर जाना है। गांधी जी के और गांधी जी से एके बरत में जोषिगाती के, पतिमान के भी शीतिगाती के, विचारको के बरत मानिनि किया है कि मानन-माननी से हम मानन तक नहीं पहुँच सकते और साम्पकारिडा का रास्ता

मार्ग प्रपिजन ही है। गांधी जी का माने अनुभव है। के बरतने से कि मानन-मानन के हमारे लिए कोई भेद नहीं है। मानन ही मान्य है। एक एक बरत हम उठाने जाते हैं। उन्नी एक बरत को ह्वे देवता है कि बरत

ठीक है कि नहीं। साथ ही हम भूल भी जा सकते हैं। लेकिन हम जो पहला कदम उठाते हैं, फिर दूसरा कदम उठाते हैं, फिर तीसरा कदम उठाते हैं तो हम फिर वहीं पहुँचेंगे। इसका उल्टा रास्ता है—हम कदम हमारा गलत हो और हम सोचें कि हम उसी रास्ते पर जा पहुँचेंगे—यह असम्भव बात है।

यह नवम्बर ७ बीता—७ नवम्बर १९१७ को रूस की क्रांति हुई थी। प्राय ७३ है, ५६ बरत हो गये। इन ५६ बरतों में ध्यान मुक्त समाज के कितने करोब भ्राते हैं वे? प्राय उसका सौवा हिस्सा भी वहाँ नहीं है। उनके बड़े से बड़े वैज्ञानिक जैसे सखारोव, बड़े से बड़े साहित्यकार जैसे सोलेव्जिन्सकन ये दोनों प्राय उनके निशाने बने हुए हैं और पता नहीं किस दिन उनको पकड़ लिया जाये। प्राय दुनिया में जितने भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त लोग जीवित हैं उन सब लोगों ने, कोई भस्ती-पक्षासी लोगों ने, मिल कर रूस के प्रशासको से झपलती है कि ये भाषकी दो महान् विभूतियाँ हैं। इन्हें बचाइये। इन्में से एक की तो यह नोबेल पुरस्कार मिल भी चुका है। सखारोव दुनिया के वैज्ञानिकों में किसी से कम नहीं है। रूस की प्राय जो शक्ति है, चाहे वह अणु शक्ति हो, चाहे अन्तरिक्ष में, चाद पर जाने मंगलग्रह तक जाने की शक्ति हो, वह सारी सखारोव के बुनियादी काम के ऊपर आधारित है। तो यह तो प्राय उनकी हालत है। चम्बल पाटो में जो काम हुआ, इसका आधार यह है कि मनुष्य की भगवान ने बुद्धि दी है, बुरा-भला उसका किसमें है—यह वह सोच सकता है। उसको सहारा मिलता है अपना सब करने के लिए, तो वह एक कदम आगे बढ़ता है, अब इसे हृदय परिवर्तन कह लीजिए या जो भी कह लीजिए। वह अपनी भलाई की तरफ जाता है। मैं तो हृदय-परिवर्तन की बात करता नहीं हूँ, यह बहुत बड़ी बात है। माधोसिंह जी भेरे पास आए तो उनके बहुत राजी करने पर तो मैं राजी हुआ। ठीक है यह काम सँपा। उन्होंने कहा कि इस बार दस, बीस, पचास के भावसमर्पण की बात नहीं है, सैकड़ों के सैकड़ों कर देंगे। तो मैं

समझा कि वहकी हुई बात कर रहे हैं। भागी बात करें, या अपने दल की बात करें। दूसरो का नाम भी सुना हुआ था, मोहरसिंहजी मादि का, सब सरकारी का नाम तो मैंने सुना था कुछ थोड़ा बहुत परिचय था इस इलाके से फिर भी मैंने समझा कि जब ये कह ही रहे हैं तो कुछ तो बात होगी ही। उन्हें याद होगा तब मैंने उनसे कहा था कि देखिए मैं महत्त्वा नहीं हूँ, किनोवा नहीं हूँ, मैं यह नहीं कह सकता कि भगवान का ध्यान करने के उनको धारण में चले जाओ और अपना भावसमर्पण कर दो, जो कुछ होना होगा, होगा। हम इस बात की कोई जिम्मेदारी नहीं लेते हैं कि तुम्हें फासी होगी या नहीं होगी। मुझ से पूछते हो तो मेरी भावना वही है कि तुम्हें फासी नहीं होगी। लेकिन मैं तुम्हें सरकार की ओर से कोई आश्वासन दिताने का काम नहीं कर सकता हूँ। लोचमनजी वगैराने किनोवाजी की बात समझी और यह सब किया। मैंने माधोसिंहजी से कहा था कि मैं तो एक सामाजिक कार्यकर्ता हूँ। समाज को सुधारने का बग समाज शासन के कुछ सीखा, कुछ गांधी से सीखा, कुछ किनोवा से सीखा। जिस हद तक स्वयं सुधरा हूँ, उसी हद तक दूसरो को सुधार सकता हूँ। अब जियालालजी और प्रतापसिंहजी बन गए साधु और वहुते थे कि आप की कृपा से हुए हैं। तो मैंने कहा कि यह तो भगवान की कृपा से हुआ है। मैं तो साधु नहीं बना हूँ, प्राय बन गए, मुझ से वही भ्राते चले गए, बेला चीनी हो गया और मुझ को भी मुझ ही रहा है। तो माधोसिंहजी से मैंने कहा कि आपकी शर्त क्या है? किन शर्तों के पूरा होने से आप लोग भावसमर्पण कर सकते हैं। बचानी कहा उन्होंने कुछ तो मैंने उन्हें हमारे का भाराप करने भेजा कहा कि शाम को और बात करेंगे। शाम को सात शते लिख कर वे से आए। उसमें मुख्य बात यह थी कि फाँसी की सजा किसी को हो भी जाए तो भी फाँसी न हो और हमारे साथ प्रच्छा व्यवहार हो। कोई हमें जेल में या घाते में माली देगा, मारपीट करेगा तो हम सहन नहीं कर सकते। 'बो' कतास का बर्ताव हो, बच्चों की देख-रेख हो। मादि।

मैंने कहा कि मुझे तो आपकी ये शर्तें बहुत ही सुनासिब लगती हैं। मैं तो

किसी का भावसमर्पण स्वीकार नहीं कर सकता हूँ, मुझे यदि दस्तीगान न हो कि फाँसी की सजा हाईकोर्ट से मिलने के बाद इनको फाँसी नहीं होगी। मैं किसी को मौन ना अपने ऊपर पाप लेना नहीं चाहता। किनोवा से सकते थे, मैं तो नहीं से सकता हूँ। किनोवाजी को यह विचार था कि शासन दसने से किसी को फाँसी नहीं देगा। फिर माधोसिंहजी से और बातें हुईं फिर इन्होंने हमारे आधम में विधान किया। अंत में मैंने तो बात कह भी दिया था कि 'अब तो बात फँस गई जाने सब कोई' वह फाँसी की बात इतिराजी तक गई और जिस दिन मैं आने वाला था पचारा डेढ माप लोगों से मिलने के लिए सेठीजी अपने वहाज में साने वाले थे। १० तारीख को हम लोगों की मुलाकात हुई। उस दिन भी मैंने गृहमन्त्रालय में कहा था कि मैं नहीं जाऊँगा। यह निश्चित है। मुझे पंतजी ने (तत्कालीन गृहमंत्री) और शर्तें लिखित दे दी हैं। लेकिन जब तक यह बात भी नहीं तय होती तब तक मैं इसमें नहीं पड़ूँगा। ९ ता० को १० बजे रात को, गोलिन्द नारायण जी जो उस समय गृह सचिव थे, उनकी बिट्टी लेकर उनका एक चपरसी भाया हमारे निवास पर दिल्ली में। मैंने उनको फोन किया कि अब हमारे जान में जान भारी है। आपका बहुत शुक्रिया, बहुत धन्यवाद। उन्होंने कहा कि यह बात वही की, इतिहास नहीं। अगर आपके भी मुह से यह बात निकलेगी तो फिर हमें सहन करना पड़ेगा कि हमने कोई ऐसा भावसमर्पण जयपराय नारायण को नहीं दिया है। मैंने कहा कि आप साहित्य जमा रखिए, दस्तीगान रखिए। मैं नहीं नहीं कहने वाला हूँ। लेकिन चाणियो को कहूँगा कि नहीं? क्योंकि उनसे नहीं कहूँगा तो भावसमर्पण कैसे करवाऊँगा? उन्होंने कहा कि उनसे जरूर माप उन्हें। मोहरसिंहजी से मैंने कहा था कि भाग में से एक घटना से घटना जो बगरी है, उसकी और हमारी जान बराबर है। मैंने देखा तो नहीं इनकी, लेकिन नारायण देसाई ने बाद में कहा कि वे अपनी बंदूक उठाकर भागते उड़लते-बुदने भाट्टर निकले, यह बहने हुए कि बाबू जी ने कह दिया है कि हमारी जान, मुहारी जान बराबर है।

यह एक प्रक्रिया है इसे मैं वैज्ञानिक प्रक्रिया कहता हूँ। यह समाजशास्त्रीय वैज्ञानिक प्रक्रिया है मनुष्य को समाज कर मनुष्य के साथ बर्ताव करने की। नहीं तो एक दुष्कर्म है इसमें वे सभी भावपूर्ण विचार नहीं सजता है। सदियों से कोई रास्ता नहीं निकला है। यदि कोई रास्ता निकला तो इस प्रकार ही निकलेगा। धर्म विज्ञान का इतरा विकास हुआ है कि इसमें चाँद तक भी जा सकते हैं। लेकिन मनुष्य का उनका विकास नहीं हुआ है यह दुष्परिणाम की बात है। और यह विकास मनुष्य का भारत के धर्मशास्त्र से ही हो सकता है। दूसरी बात यह कहना चाहता हूँ कि मैं विश्वासपूर्वक मानता हूँ कि यह मार्ग ऐसा है कि जन्मज घाटी या बुद्धिलेश्य के ब्राह्मिणी पर ही लागू होना ही ऐसा नहीं है। यह किसी के भी ऊपर लागू हो सकता है। यह एक शास्त्रीय तरीका है, शास्त्रीय माने वैज्ञानिक, धर्मशास्त्र के मानने में नहीं बल्कि रहता है, यह रास्ता वैन नहीं कर सकता। गाँधीजी ने यही बात लिखी है कि वेतनसने की तो अस्तित्वात होता चाहिए। जिनसे जुर्म किया है, धाराधन किया है यह रोगी है। जो कदा से घाना है जन्म से घाना है ? जन्म से नहीं तो रोग उनके माँ-बाप से आया होगा। पूरे समाज में यह रोग फैल घाना है। तो जब तक इन समाज का मुधार नहीं होगा और केवल धाराधन का मुधार करना चाहेते, हम क्या का, उस प्रक्रिया का उपरोक्त करने तो मुधार स्थित नहीं होगा। समाज में से ही यह सब पैदा होता है। समाज से ही ये बुलाईवाँ है। समाज में शोषण, विपत्तया, अभाव, ये अभाव अन्धकार, वैदंगीति—यह सब समाज में जाता रहे और जो जुर्म करने हैं, धारा धानने हैं, धाराधन करते हैं, उनका मुधार करना चाहें, तो यह अभाव होगा, सरकार पैन करनेगी और हम भी इस रास्ते में फँस करेते। मरत नहीं हो सके। हुदरों लोग हैं, लाना लोग हैं इस देश में जयमे से ४३० काहु निकल कर आये हैं, इनमे क्या होगा है ? लेकिन हमरी का एक बावत निराश करनेमे से यह पता चल जाना है कि वह क्या है कि नहीं। उनी तरह हमने यह विदु होता है कि यह नाम सजक ही सकता है। लेकिन माय ही माय विचार कीया है यह

सुर्म, जिसकी स्वान है यह धाराधन, उस याता को, उस समाज को मुधारना आवश्यक है। यह दुर्गम है कि एक तरह उसके मुधार का भी काम हो रहा है लेकिन मैं देखता हूँ कि पिछले बरसो में हमारा समाज विगड़ना ही जा रहा है। तो यह तरीका है। अँग का तरीका, मनुष्य को धारणा को छुने का, उसकी बुद्धि को, उसके विवेक को जगाने का तरीका। धारित क्या हुआ ? मैंने माधोविह जी के पुछा कि धारित क्यों धार्य करते कि इनके सोच धार्यसमर्पण कर देंगे ? उन्होंने कहा कि सोच ऊँच मये हैं, बाहु जी ने तोम कोई जला-धमपेसा लोग नहीं हैं। ये अमुक अभाव्य से, गाँव के अभाव्य, समाज के अभाव्य से, प्रशा-सन के अभाव्य से, अमुक परिस्थिति से, चले गये उस तरह बन्दूक उठा ली, जगल में भाग गये। लेकिन जैसे हिमालय पशुओं का हाल होता है जैसे इनका हाल है कि बुलिय मे भागे-भागे करते हैं। यह ठीक है कि हमारे पास बन्दूक है मो मारते हो हम भी मारते, हीरक्य से मरते। बहादुर को मौत मरते यह ठीक है। लेकिन इस जीवन को देख लिया है हमने निचलेका का रास्ता कोई नहीं मिलया, हम उस रास्ते से जाये गे तो फिर वही सब चलेगा। सन् ४० की बात है स्वराज्य के एक बरस बाद उन्होंने समर्पण किया। उनके साथ क्या हुआ ? उनके महे से विपदा लक डालने की कोशिस की गयी। पिछले कोशिस की ? युजिस ने की। अब इस प्रचार से मुधार तो ही नहीं सकता। यह मो मानव की नीचे ठीकने की कोशिस है, नीचे फँसने की बात है। मैं कहना हूँ कि मेरे पास, महावीर सिंह जी के पास, हेमचन्द्र जी के पास, पंडित लोकमान के पास तद्गीतुधार सिंह जी के पास क्या तागत की ? नीने भी धारणात्मक धारित है, जो हम लोग धारणो उठा सकेते ? माने हुदर का परि-वर्तन कर सकेते ? अमुकियाव बैसा भववान इन से किया बैसा बुद्ध कर सकेते ? लेकिन इस दुष्कर्म से सम्मानपूर्क निवर्तने का धारणो मारना मिला, चना ही हमारा धारा है। यह जो मरदा चलता है कि बुजिय के डर से समर्पण हुआ—हम धारणो में धारणो में भी जाना नहीं चाहता कि से एक विचार मुक हो सकता है। उनको भी समझना चाहिए कि उनकी क्या मर्यादा है, और हमको भी समझना चाहिए कि हमारी क्या मर्यादा है।

× श्री श्रीय प्रकाश विद्या से प्राप्त जनवररी के भुवार 'धाम-भावना' मासिक पत्रिका जनवररी माह से 'सर्वोदय आन्दोलन' के रूप में प्रकाशित होगी। जनवररी से 'धाम-भावना' मासिक भावने प्रकाशत के ग्राहकों के रूप में पत्रार्पण कर रही है। नये रूप के अन्तर्गत पत्रिका में यथासम्भव सभी भारतीय पत्र-पत्रिकाओं से प्रेरक सामग्री संकलित कर प्रकाशित की जायेगी। पत्रमार्ग और मार्ग-दर्शन के लिए एक सम्पादक मंडल का गठन किया गया है। सम्पादन श्री सादरीराम जोशी व श्री जयदीनचन्द्र जोहर करेते। सम्पादकीय पत्र व्यवहार का पता है : डारा : श्री शि० ०० भावने, ४ राववाट कालोनी नई दिल्ली-११०००१।

× धारागो २, ३ व ४ दिसम्बर को बनारस धाम (दुन्दी) मे मध्य प्रदेश सेवक सच द्वारा वाचिक मित्र-मिलन धामगितल किया गया है। मित्र-मिलन में प्रदेश में सभा-सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत ऐसे रचनात्मक कार्यकर्ता भाई-बहन भाग लेते जो इन और सत्ता की राजनीति से मुक्त हैं। इस वर्ष मित्र-मिलन में बनारसो सेवा मण्डल के श्री लाला बापट 'मध्य प्रदेश के धारिवासी उनकी समर्थता' और उनका निराकरण, पर अगला निरन्ध प्रस्तुत करेते। मित्र-मिलन की अवधि में 'अन्त्यो-द्य' विषय पर एक भाषण-माला भी रखी जा रही है।

× धारागो १ दिसम्बर, १९७३ को मध्य प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन, तीसरे प्रादेशिक मित्र-मिलन और स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के निमित्त से प्रदेश के योयुद्ध लोकसेवक श्री दादाभाई नारई के नेतृत्व में चल रही धामधराज्य पदयात्रा की पूर्णद्विती के मध्य अक्षर पर ३० मं० साठी स्मारक निधि द्वारा सभागत पा० 'जलान्दी-सन्देश' का विशेषक प्रकाशन किया जा रहा है। इस विशेष्य में मध्यप्रदेश में सर्वोदय-आन्दोलन, प्रादेशिक धामधराज्य-पदयात्रा, प्रदेश-मित्र-मिलन के बजने शररत, मुगलकी से प्रारम्भ हो रही लुकी जैन, बागी-धामसमर्पण के बाद, मध्य प्रदेश के धारिवासी : उनकी समर्थता और उनका निराकरण, देश में सादी-धामोयोग का विकास और ऐसे ही महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जायेगी।

बिना लोगों को हिस्सेदार बनाए, योजनाएं नहीं चलेंगी

—रणबहादुर सिंह, संसद सदस्य

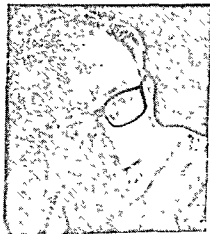
हृदय विभक्त देश में योजना बनाने का उद्देश्य दो मुख्य लक्ष्यों की प्राप्ति होता है— सामाजिक न्याय की उपलब्धि और जनता की धाम जरूरतों की पूर्ति। हम भी पिछले बीस वर्षों से इस युक्ति का सहारा ले रहे हैं और भ्रम गांधी की योजना में भी इसी प्रयोग को जारी रखेंगे। क्या पाचवी योजना इन दो उद्देश्यों को पूरा करेगी? पिछले १५ वर्षों से गांव में रहने के कारण और वृद्धा की परिस्थितियों से परिचित होने के कारण मुझे यह लगता है कि योजना एक तरह का बर्तमान बन कर रह गया है। जैसे कि हिन्दू धर्म के पुराने मन्त्र जिनके मात्र शब्द बचे हैं और और धर्म खो गये हैं कुछ इसी भाँति हमारी योजनाएँ हो गई हैं।

एक यह धारणा भी जोर पकड़ रही है कि योजना का उद्देश्य धीरे-धीरे योजना बनाना ही होना जा रहा है। योजना बनाने का एक अनवरत क्रम चलना रहता है। हमने ऐसा प्रशासन और समस्याएँ सुलभाने के ऐसे तरीके बना लिये हैं जिनका सुद ही भारी बोझ हो गया है। देश में लगभग १०० करोड़ रुपये प्रशासन के द्वारा ऐसे कार्यों में खर्च कर दिये जाते हैं जिनकी कोई उत्पन्नता नहीं है। अभी हाल में ही गेहूँ के व्यापार के राष्ट्रीयकरण का प्रयोग चलाया। गेहूँ की बमूली के लिए वही-वही प्रशासन का सारा जिला तंत्र इधर से उधर भाग-दौड़ करता रहा। यदि इसमें हुए पैट्रोल के खर्च को जोड़ा जाये तो इस तरह बमूले गेहूँ की लागत वही-वही २०० रु० प्रति क्विंटल से भी अधिक पड़ेगी। इस दशा में ऐसी परिस्थिति भी घा गई है जब विकास के रास्ते में आने वाली रुकावटों को दूर करते-करते प्रशासनिक तंत्र की ही हड्डाने की माग उठने लगी है।

इन विभक्त परिस्थिति का मूल कारण यह है कि पिछले बीस वर्षों से हमने भ्रामक के एक सीमित वर्ग द्वारा सारे देश को उड़ाने की कोशिश की है और बाकी की बहुसंख्यक जनता को इस योजना की बनाने में और कार्यान्वित करने में सहयोगी नहीं

बनाया गया। यह विचार धारा हमारे देश में बनी भी फलवती नहीं हो सकती। मुझे लगता है कि यह पाचवी योजना भी ऐसा ही निरा बौद्धिक पराक्रम बन कर रह जायेगी।

अभी तक जनता का सहयोग प्राप्त करने के जो तरीके प्रयत्न किये गये हैं क्या उनसे इसमें सफलता मिलेगी? क्या योजना की भाकड़ों में बड़ी रूपरेखा प्रस्तुत करने भर से जनता का उत्साह जगया जा सकता है? भेरे विनम्र विचार में यह तब तक संभव नहीं है जब तक कि हम देश के दो विचारकों गांधी और विनोबा से सीख नहीं लेते। सिवाय समानता के और किसी भी आधार पर जन सहयोग प्राप्त नहीं किया जा



रणबहादुर सिंह

सकता। एक ग्रामीण और एक शहरी के बीच कोई समानता नहीं है। प्राज्ञ जैसी परिस्थिति में योजना यहाँ बननी है और उसको लागू करने का काम जिलों के प्रशासनिक तंत्र पर छोड़ दिया जाा है। गांव तक पहुंचने-पहुंचते यह तब एक बीमार की तरह कुछ भी कर पाने में असमर्थ हो जाता हो जाता है। यह ऐसा ही है जैसे नेत्र में खून प्रथिव इकट्ठा हो जाये और चित्तारों पर पहुंचे ही नहीं।

इस जटिलताई से बचने का रास्ता है गांव के स्तर पर विनोबा जी के सर्वोद्य

कार्यक्रम को विस्तृत करना। इसका मुख्य प्रयत्न गांव में ऐसी परिस्थिति बनाना है जिनमें ग्रामता विकास करने के लिए लोग स्वयं ही उन्मुख हो जायें। भ्रम समय घा गया है कि विकास की गीरे बन्धों से भूरे बन्धों पर आई जिम्मेदारी गांव के वाले बन्धे बढ़ा सकें। इसके लिए श्रम तक के तरीकों को विस्तृत छोड़ देना होगा। यह तभी हो सकता है जब गांव के लोगों को पूरी भाजादी दी जाय, जब लोगों में विश्वास किया जाय और जब प्रशासनिक कार्यों का विवेकीकरण हो।

पढ़ते हैं जब बचिन ने हिन्दुस्तान को भाजादी देने से इनकार किया था तब उनका एक तर्क यह भी था कि भूखे-धनहीन लोग अपना शासन स्वयं चलाते के बजावित नहीं हैं। लेकिन हम स्वतन्त्र हुए और पिछले छव्वीस वर्षों से एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में नायम हैं। भ्रम समय घा गया है कि गांवों के लोगों पर जो अभी भी अक्षय और अक्षय हैं, भरोसा किया जाये। योजना और प्रशासन के काम उनके हाथों में दिये जायें। भले ही हमें यह लगता हो कि वे इनका दुरुपयोग करेंगे।

स्वतन्त्रता का दुरुपयोग नहीं हो सकता। उसका तो केवल प्रयोग ही हो सकता है। सच्ची भाजादी में गलतियों को सुधार कर भ्रमों को सही करने की क्षमता निहित है। लेकिन यदि यह सोचा जाये कि भाजादी किसी तरह प्रशिक्षण से या नियोजन से सात्वनी है तो यह संभव नहीं है। अभी तक यह दुनिया में वही नहीं हुआ है। घातः जब हम योजना बनाने लिये, पिछले २० से अधिक वर्षों, साधान की पूर्ति की और स्वावलम्बी बनने की बात सोचते हैं तब यह भी मोर्चे नि यह सब बिना लोगों के इसमें हिस्सेदार बने संभव नहीं है। सुभाशीदान की परिस्थिति इस संदर्भ में बहुत बुभिनयन है—

बुधिया मुल हम बाहिए,
सात पात में, एह।
पासे पोसे सबत धग,
तुसती, सहित विवेक।

चीनी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन

-दिलीप पांडगांवकर

चीन में कुछ सप्ताह पहले जब नया शिक्षा मंत्र प्रारंभ हुआ तो विश्वविद्यालयों में १,५०,००० नये विद्यार्थी थे। वे हीमें माध्यमिक शिक्षालयों से नहीं आये थे। वे उन लोगों और कारखानों से आ रहे थे जहाँ उन्होंने 'उत्पादन श्रम' करने से दो से तीन वर्ष तक बिना थे। सांस्कृतिक क्रांति के समय शिक्षा में जो धारणाएँ सुधार प्रारंभ हुए थे उनके यह अनुभव ही थे।

सुधारों में उद्देश्य कारीरक और बौद्धिक श्रम के विमोक्षों को मिटाना था और इस तरह उस जड़ को ही समाप्त करना था जिससे विज्ञानियों का वर्ग पनपता है और जिसकी पुस्तकी शिक्षा बढ़ति है मजबूत किया था।

नये स्वरूप में बौद्धिक श्रम में धीरे-धीरे हथके काम करने में, क्रांतिक से बचने और क्रांतिक लगने के कामों को बंद नहीं होगा। साथ ही श्रुती और धारणों में काम करने में भी धारणाएँ पर बंद कर नहीं होगा। जोर सामग्री और उत्पादक श्रम पर होगा न कि हिनामी ज्ञान और व्यक्तिगत महत्वकांक्षा पर।

इन नये सुधारों का दो दोषों पर बड़ा स्फूर्तिपूर्ण ध्यान पड़ा है, उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों के घबराएँ उच्च शिक्षा के स्वरूप तथा समय पर। विज्ञानविद्यालयों के लिए चूने जाने के लिए केवल अपने विषयों को रटना बरती नहीं है, उनके साथ यहाँ और कारखानों में काम करने वाले माध्यमों की निष्पत्ति जाना भी जरूरी है। प्रवेशार्थी ने जिस उत्पादक और संपन्न के साथ कारखानों या सामुदायिक संघ में काम किया, संपन्न वह उस पर निर्भर करता है।

उच्च शिक्षा की धारणा भी पांच पर आ: बर्षों में घटा कर तीन वर्ष कर दी गयी है। इन धारणों में भी विद्यार्थी सप्ताह में दो दिन 'उत्पादन श्रम' में लगाते हैं। राष्ट्रीय पुस्तकें भी बनाने लगी हैं ताकि वैचारिक उत्पादों की बड़े धीरे-धीरे संपन्न माध्यमियों के अनुभव व्याप-

हारिक ज्ञान पर भी जोर दिया जा सके। शिक्षक और विद्यार्थी के संबंधों का अन्तर भंग हो गया है क्योंकि अब शिक्षकों को भी काम में हाथ मीने करना पड़ता है। परीक्षा प्रणाली कुछ और बदली भी बन गयी है।

इन सुधारों में कहा तक सफलता मिली है? 'पीपुल्स डेली' ने जिनसा सत्र के प्रथम पर प्रकाशित अपने एक लेख में स्पष्ट रूप से इस सवाल को उठाया है। लेख में कहा गया है कि सभी और कारखानों के काम में विद्यार्थियों को कोरी-बुद्धिगतिका से दो बचा दिया है पर जनमानस विषमताओं को पूरी तरह से मिटाने में सफलता नहीं मिली है।

वे ही विद्यार्थी बड़ों विज्ञान परीक्षा में सफल हो सके जिन्होंने अपने दिव्य का 'उत्पादन श्रम' करने के साथ-साथ मेहनत से परीक्षा को तैयारी भी की थी। एक 'थैंक' विद्यार्थी कामगार ने 'पीपुल्स डेली' में प्रकाशित एक पत्र में शिकायत की है कि परीक्षा देने में वह बिल्कुल असमर्थ रहा क्योंकि अपने अपने सारी क्रांतिक किताबों के साथ काम करने में लगा दी थी।

इन पत्रों में प्रकाशन का उद्देश्य मुक्त शिक्षा सबको ऐसे प्रश्नों पर बहुत शुरु करना था जैसे परीक्षा, योग्यता जानने और मानने की संख्या परीक्षा, पाठ्यक्रम और विज्ञान विषयों में लगने वाला समय। विद्यार्थियों को इसके लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे दीवानी कामगारों द्वारा जिशा पढ़ति भी क्रांतिकारी हालाँकि बनाएं।

उच्च शिक्षा की बड़ी सफलता में व्यापक रूप से बहम होने की संकेत मिली है। विद्यार्थी इस पर बहम करते हैं कि उन्हें मिलने वाली शिक्षा से जनता की सेवा करने में मदद मिलेगी या नहीं। वे अपने कुछ प्राथमिकों की प्रशंसा करते हैं और कुछ अन्य की धारणाएँ करने में घबराते हैं। विद्यार्थियों ने जिशा में दो-दो-दो 'कारीर' श्रम का क्या स्थान हो इन पर भी बहुत बहम रही है।

यह सारी बहम अभी-अब सतुलित मानावरण में हो रही है और सांस्कृतिक क्रांतिक के जैसा जोर शरारत, उत्तेजना और तोड़-फोड़ धारि नहीं है। शिक्षा का स्तर ऊपर उठाने की काम पर धारणाएँ विषेय रूप से जोर दे रही हैं। सांस्कृतिक क्रांतिक के समय दो वर्षों से भी अधिक समय तक लग-भग सभी शिक्षा संस्थानों के बंद रहने के कारण जिशा का स्तर एकाएक गिर गया था।

(दाइस थॉक इण्डिया में प्रकाशित लेख में धारणाएँ पर भी सत्येन्द्र बिबादी द्वारा अनुकृत)



परीक्षा का सप्ताह प्राईमरी में विश्वविद्यालय तक

दिसम्बर के प्रथम गज़ाह में कन्नूरवा
 घाम, इन्दौर (मध्य प्रदेश) में मध्य
 प्रदेश का प्रांतीय सर्वोदय सम्मेलन आयोजित
 हो रहा है। मध्य प्रदेश सर्वोदय मंडल ने
 प्रदेश में हुए सर्वोदय कार्य की जानकारी देने
 के उद्देश्य से १९७० से १९७३ के बीच हुए
 कार्यों की जानकारी देने वाला एक प्रथम
 प्रकाशित किया है। इस प्रथम के अनुसार
 भूदान आन्दोलन के अन्तर्गत प्रदेश में करीब
 ५ लाख एकड़ भूमि प्राप्त हुई थी। प्राप्त
 भूमि में से २ लाख एकड़ भूमि प्रदेश के ४०
 हजार भूमिहीन परिवारों में बांटी जा चुकी
 है।

‘भूदान’ आन्दोलन के बाद जब ग्रामदान
 आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो प्रदेश के २०-२२
 हजार गावों में ग्रामदान का विचार पहुंचाया
 गया। प्रदेश के सात जिले धीरे धीरे करीब ११
 हजार गांव ग्रामदानी बने। गांधी शताब्दी
 वर्ष के बाद विनोबा जी की हीरक जयन्ती
 मनाते के उद्देश्य से मध्य प्रदेश की जनता
 द्वारा १० लाख रुपये का ग्रामस्वराज्य कोष
 विनोबा जी को समर्पित किया गया।

प्रदेश के पहले ग्रामदानी जिले टीकमगढ़
 के बलदेवागढ़ विकास खण्ड में बलदेवागढ़ को
 केन्द्र मानकर जून १९७१ में पुष्टिकार्य
 किया गया, फलस्वरूप कुछ नाम भी हुआ।
 इसी प्रकार इन्दौर धीरे सरयुजा जिले में
 भी कार्य की शुरुआत की गयी। इन्दौर जिले
 की सावेर तहसील के पालिया गांव को
 केन्द्र मानकर उस क्षेत्र में पुष्टिकार्य शुरु
 किया गया। २३ गावों में ग्रामसभा का गठन
 हुआ धीरे धीरे ग्राम शान्ति सेना भी बनी।

प्रदेश के सात जिलादानी जिले हैं—
 ५० निमाड़ (ग्रामदान १४८१), देवास
 (ग्रामदान ८८८), टीकमगढ़ (ग्रामदान
 ७७०), भिण्ड (ग्रामदान ७६०), खालियर
 (ग्रामदान ६६४), इन्दौर (ग्रामदान ४६७),
 दतिया (ग्रामदान ३४०)।

प्रदेश के अन्य जिलों में ग्रामदान की
 स्थिति इस प्रकार है: सरयुजा ६६८, सोपी
 ८८०, सीहोर ५८३, मुरैना ५७५, विदिशा
 ५२६, मन्डनौर २६०, गढ़दोल २४०,
 जबलपुर २३६, रीवा १६३, रतानाम १७२,
 मण्डला १२५, भिवनी १२१, बलार ११६,
 उज्जैन ११८, रायपुर १११, छतरपुर ६५,

भूदान-यज्ञ : सोमवार, ३ दिसम्बर, '७३

मध्यप्रदेश में सर्वोदय कार्य

नरसिंहपुर ६३, पार ८७, बँतूल ८५,
 भायुष्मा ६६, राजापुर ६०, राजगढ़ ३७,
 सागर ३५, बालाघाट ३१, दुर्ग २०, सतना
 १८, विलासपुर १५, रायगढ़ १२, गुना ७७,
 होशंगाबाद ७, छिंदवाडा ७, गन्ना ५, पूर्वी
 निमाड़ ५ व दमोह ३।

प्रदेश में चल रहे कार्य में शक्ति लगाने
 के अलावा भी समय-समय पर प्रदेश के
 कार्यकर्ता अन्य प्रदेशों में ग्रामस्वराज्य के
 कार्य हेतु गये। सहरसा, मुजफ्फरपुर
 (विहार), भण्डारा (महाराष्ट्र) धीरे महबूब-
 नगर (आन्ध्र) के सयन अभियानों में प्रदेश के
 कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया।

ग्रामदान के कार्य की सबसे ज्यादा
 सफलताएँ प्रदेश के जिलों में चले सामूहिक
 अभियानों में प्राप्त हुईं। उज्जैन जिले के
 तरावा विकास खण्ड में फरवरी १९७२ में
 एक सप्ताह का अभियान चला। इसमें १४
 नये ग्रामदान धीरे ३० बीघा जमीन प्राप्त
 हुई। नवम्बर १९७२ में गुना जिले के बमोरी
 विकास खण्ड में चले अभियान के फलस्वरूप
 २० ग्रामदान धीरे १६२ बीघा जमीन की
 की उपलब्धि हुई। १८ अगस्त से ३० अगस्त
 १९७२ तक सोपी जिले में चले प्रांति गुटि

अभियान में ३३ नये ग्रामदान मिले, १२७
 एकड़ भूमि प्राप्त हुई, २६ गावों में तदर्थ
 ग्रामसभाओं का गठन किया गया।

मार्च १९७२ में सितवनी में हुए १२वें
 प्रदेश सर्वोदय मण्डल में व्यपन भावना को
 ध्यान में रख कर आजादी की रजत जयन्ती के
 निमित्त से समूचे प्रदेश में ग्रामस्वराज्य का
 विचार पहुंचाने की दृष्टि से प्रदेश स्तर की
 ग्रामस्वराज्य परयात्रा का कार्यक्रम
 बना। प्रदेश के बयोवृद्ध लोकसेवक श्री
 बादामाई माईक के नेतृत्व में १५ अगस्त
 १९७२ के दिन श्री जयप्रकाश की शुभ-
 वामनामी के साथ यह परयात्रा खालियर
 से शुरू हुई। प्रकाशिन विवरण के अनुसार
 प्रदेश के ३८ जिलों में यात्रा पूरी हो चुकी
 है। १४ महीनों में ७००० रिक्तोमीटर की
 परयात्रा हुई।

प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा चम्बल घाटी
 धीरे सुन्देलखण्ड क्षेत्र के भालसमर्पित
 बागियों के बीच जेलों में गचसतार कार्य में
 भी सहयोग दिया गया। बाघाबाँकुल, लादी,
 सर्वोदय साहित्य प्रचार-प्रसार, नगावन्दी,
 मित्र मिलन व शान्ति सेना भांडि कार्य की
 दिशा में भी विगत तीन वर्षों में सफलताएँ
 प्राप्त हुईं।



सोपी में अभियान के दौरान एक सभा को सम्बोधित करते श्री बंग

कार्यकर्त्ताओं के भरोसे अभियान कब तक चलेंगे ?

१९६३ में बिहार सर्वोदय मंडल का विघटन हो गया था। १० वर्षों के बाद इस साल पुनः काफ़ी विचार विमर्श करने के पश्चात् इसका गठन जुलाई महीने में हुआ। साथ ही यह भी सोचा गया कि प्रदेश में इस गठन को मजबूत करने की दृष्टि से समय-समय पर विविध-सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया जाना चाहिए। तदनुसार बिहार सर्वोदय मंडल की प्रबन्ध समिति ने अपनी २ ध्वनू-बर की बैठक में तय किया कि इस बार का प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन विरोल में ४, ५ और ६ नवम्बर को किया जाये। यहाँ इस सम्मेलन की रपट प्रस्तुत है।

विरोल दरभंगा जिले का विद्यदा हुआ प्रसन्न है। लोगों जनता और बलाग नदियों की किर्पीरिका ने यहाँ ने जन-जीवन का अस्त-व्यस्त कर दिया है। तरह-तरह की बीमारियों और कष्टों से यहाँ के निवासियों को से चुभते रहे हैं। कानापाल की भी कोई उचित व्यवस्था नहीं है। जैसे विरोल तक जाने के लिए दरभंगा, लहौरेयासाराय और मकरी से प्रायः दस बस सेवा है किन्तु छ पन्टों ने दोरान ये पुरानी बसें यात्रियों को बच और कहीं मजिज तक पहुँचाने के पक्षे उतार देनी, यहाँ नहीं जा सकता इस पर भी यात्रियों की मोड इतनी हँसी है कि दम घुटने लगता है।

किर भी सम्मेलन के लिए एताद विद्यदा और उपेक्षित क्षेत्र चुना गया, इसका क्या धर्म हो सकता है? एक तो विरोल प्रायः स्वराज्य अभियान के राष्ट्रीय धर्म का एष हिस्सा है, जगता पश्चिमी घोर है और दूसरे कहीं भी जनता के कष्ट और निराश मानस की ऐसी पाठ थी। यो तो अधिकांश सम्मेलन बड़े-बड़े नगरों में हुआ करते हैं, या प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में या फिर प्रकृति की गोद में बसे हिल श्रेणियों में। अगर विरोल का यह सर्वोदय सम्मेलन विद्यदा तीर्थस्थलों के तट पर हुआ।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए बिहार के सभी जिलों के लोगलेखों एक रचनात्मक संघामों के कार्यकर्त्ताओं को तैयार गया। बिहार सर्वोदय मंडल, जिला सर्वोदय मंडल

और प्रत्येक सर्वोदय मंडल की सम्मिलित शक्ति पूर्व तैयारी तथा सम्मेलन की सफलता के लिए तैयारी गयी। विरोल प्रबन्ध के स्थानीय लोगों के एक स्वागत समिति भी बनी। स्वागत समिति ने सम्मेलन के लक्ष्य की पूरी जिम्मेदारी बहा की जनता को और से अपने ऊपर उठायी। बिहार सर्वोदय मंडल तथा जिला सर्वोदय मंडल ने भी सहयोग दिया।

सम्मेलन में २२ जिलों तथा १० रचनात्मक संघामों की ओर से लगभग ३२३ प्रतिनिधि भागे थे। तादी के कार्यकर्त्ता भी शब्दी संख्या में इस बार बहा दिखाई दिये। जो भी प्रतिनिधि सम्मेलन में भागे थे उनमें एक नया उल्लाह, एक नया जोश, एक नया प्राथमिकतात्मक अलक रहा था।

विरोल का शौरार उच्च विद्यालय प्रतिनिधियों के टहरने के लिए तथा जहाँ विद्यालय का क्रिकेट मैदान सम्मेलन के लिए चुना गया जाता था। मैदान के एक सिरे पर विशाल मंच बनाया गया जो रंग-बिरने लादी बस्ती से सजा हुआ था। उनके सामने थोडासा के बँटने के लिए आतिथ्याता सजा था। अगत-बगल बैठ के नीचे का स्थान लोगों के बँटने की उपयुक्त जगह थी। महिलाओं के लिए मंच से दायाँ घोर की जगह सुरक्षित थी।

सुबह साठ बजे से १२ बजे तक २-३० बजे से ४ बजे तक तथा ७ बजे सध्या से ६ बजे रात्रि तक प्रतिनिधि सभा के लिए निरि-

चन समय था और ४ बजे से ६ बजे तक शाम-सभा के लिए। त्रिदिनीय सम्मेलन की अध्यक्षता प्रतिबन्ध प्रसाद सिंह ने की। प्रायः सभा की अध्यक्षता प्रथम दिन प्रतिबन्ध प्रसाद सिंह, दूसरे दिन योगल जी भा हा की तथा तीसरे दिन निर्मला देशपांडे ने की।

सम्मेलन में चर्चा के लिए मुख्य दो विषय रखे गये थे। पहला, राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्षी सुभाषी और विवेकानंद का कार्यन्वयन तथा दूसरा सहरसा का प्रतिपक्ष और सर्वोत्तम अभियान।

प्रथम विषय पर प्रथम दिन ही चर्चा हुई और प्रतिनिधियों ने उल्लाह से इसमें भाग लिया। प्रतिनिधियों के दो सुझाव प्राये (क) राष्ट्रीय मोर्चे के विभिन्न प्रखंडों की परिस्थिति को देखते हुए बहा के लिए जो कार्यक्रम अनु-कूल होता हो उसके कार्यन्वयन को दिशा में प्रयत्नशील होना और (ख) शान-शांति अथवा प्रसन्न स्तर पर एक सभा बुलाकर प्रायः लोगों के बीच उपरोक्त कार्यक्रमों को प्रचारित करना तथा उनके कार्यन्वयन को दिशा में उनवर सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना।

अन्य में तीन प्रादेशिकों की उपस्थिति को इससे सम्बन्धित एक प्रस्ताव तैयार कर सम्मेलन के सामने प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी दी गयी। समिति ने जो प्रस्ताव तैयार किया वह इस प्रकार है

“बिहार प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन, विरोल सर्वसम्मति से राष्ट्रीय परिषद एक सर्वोदय संघ द्वारा स्वीकृत अध्यक्षी कार्य-क्रमों को सर्वोदय आन्दोलन में एक ऐतिहासिक मोड़ मानता है। इन कार्य-क्रमों से प्रायः स्वराज्य का आन्दोलन जनसाधारण का रूप लेगा। प्रायःसभाओं में व्यापक सगठन द्वारा तोषाकानि घोर तोष-सगठन मजबूत, सुदृढ़ एक संघ बनने पर।

प्रायः कार्यकर्त्ताओं एवं आन्दोलन के मुख-विचारों द्वारा प्रायः तब जिस प्रकार की भाँति होती रही है उनकी पूर्ण इन कार्य-क्रमों से हो

→

गवनी है। गाय ही कार्यकर्ताओं एवं ग्राम जनता में एक नया उत्साह और उमंग पैदा होगी।

ग्राम की परिस्थिति का सुधारना लोक-शिक्षण से ही संभव है। व्यापक और मजबूत शिक्षण योजनाओं के द्वारा जनता में राज-निष्ठ, वैतन्य, सामा, मजदूरी शिक्षण एवं जनता का संगठन ही मध्यम-वर्गीय कार्यक्रमों का सही संकेत ही बनना है।

सोशलिज्म की मुद्रा और मजबूत करने की दृष्टि से ग्राम प्रामसभाओं और मुहल्ला समितियों द्वारा हमें 'एक्शन प्रोग्राम' के रूप में प्रत्याचार एवं प्रत्यायन, भ्रष्टाचार और प्रभुत्व का प्रतिहार करना चाहिए। हमारा विश्वास है कि उनमें से ही लोकसंगठन सदा हो सकेगा।

ग्राम: इस कार्यक्रमों को ग्रामसभा-ग्राम-स्वराज्य के मजबूत क्षेत्रों में एवं स्वनात्मिक कार्य के क्षेत्रों में विशेष रूप में उठाया जाय। ग्राम क्षेत्रों में जहाँ अनुभवता है वहाँ निश्चित रूप से उठाया जाना चाहिए। व्यापक शिक्षण की दृष्टि से सर्वोच्च के मित्रों की राष्ट्रीय परिषद के जैसा ही प्रसंग से प्रवेश स्तर तक एक आयोजन करना चाहिए और प्रोत्साहन यह होनी चाहिए कि इसके माध्यम से एक स्वतंत्र शक्ति पैदा हो सके।

सम्मेलन यह अनुभव करता है कि राष्ट्रीय परिषद के अवसर पर विभिन्न पक्षों एवं सर्वे सेवा सभ में वास्तविक लोकशाही की एवं राष्ट्रीय हितों के संरक्षण हेतु, लोक-शक्ति के उदय एवं संगठन हेतु ग्रामसभा एवं मुहल्ला सभा की स्थापना और उसके मजबूत करने की कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का जो संकेत किया है, वह हमारे काम की बुनियाद होगी।"

दूसरे और तीसरे दिन सहरसा ग्रामियान के संबंध में चर्चा हुई। चर्चा के दौरान प्रति-निधियों ने महसूस किया कि सहरसा में अभी तक कार्यकर्ताओं की शक्ति से ही ग्रामियान घलना है। हम स्थानीय शक्ति को ग्रामस्वराज्य के काम को उठा लेने के लिए तैयार नहीं कर सके हैं। कार्यकर्ताओं के भरोसे बच तक हम वहाँ का (सहरसा का)

ग्रामियान घलना सकोए ? हम वहाँ प्रागे के लिए ऐसी पद्धति प्रयत्न करें सर्वोच्च कार्य-कर्ताओं के वहाँ से हट जाने पर भी स्थानीय शक्ति के घल पर वहाँ का काम चलना रह सके। सहरसा की शक्ति से ही वहाँ का काम होने वाला है।

बुद्ध साधियों ने ऐसा स्वीकार किया कि हमने अब तक सहरसा ग्रामियान को ईमान-दारी पूर्वक, निष्ठा के साथ तथा समर्पित होकर प्रपना समय दिया ही नहीं है। हम बार-बार वही दुहराते हैं कि विनोबाजी ने सहरसा में ग्रामस्वराज्य का ग्रामियान चलाने का आह्वान किया है, इसलिए हमें वहाँ के काम में लगना चाहिए। हमने कभी ऐसा महसूस नहीं किया कि सहरसा में ग्रामस्वराज्य का काम करने का निष्पत्त हमारा भी निष्पत्त है, विनोबाजी का प्रादेनमात्र नहीं है।

बुद्ध साधियों का कहना था कि बरिष्ठ और समर्थ शब्दों के प्रयोग से हम ग्राम कार्यकर्ताओं में हीनता सते हैं। ऐसे विशेष शब्दों का इस्तेमाल अपने भावोदन में नहीं होना चाहिए। भावोदन के सभी साधों समर्थ हैं, ऐसा माना जाना चाहिए।

चर्चा के अन्त में सबने एक स्वर से सहरसा के इस अतिम और सर्वोत्तम ग्रामियान के लिए अपनी शक्ति और साधन लगाकर इसे सफल बनाने के लिए ईमानदारी पूर्वक प्रपना समय देने का निश्चय किया। प्रतिनिधियों ने खुद लगने की अपनी तैयारी तो बनायी ही साथ ही अपने क्षेत्र से दो-चार दूसरे साधियों को भी सहरसा जाने के लिए प्रेरित करने का वचन भी दिया। कई खादों संस्थाओं में भी अपने कार्यकर्ताओं और साधन देने की घोषणा की। उन्होंने स्वीकार किया कि खादी संस्थाओं के लिए भी ग्रामस्वराज्य एक मुख्य कार्यक्रम है।

उपस्थित प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से तय किया कि सहरसा का ग्रामियान वहाँ के जिला सर्वोच्च मंडल के तत्वावधान में ही चले। इससे सर्वोच्च मंडल की ताकत बढ़ेगी। पूर्व साधियों की प्रांत स्तर की उपसमिति भी वनी जो ग्रामियान के लिए बाहर से कार्यकर्ताओं तथा साधनों को बुटाने का

काम करेगी। इस उपसमिति के संयोजक बिहार सर्वोच्च मंडल के मंत्री देवानन्दजी बनाने गये।

प्रतिनिधियों ने यह भी महसूस किया कि बिहार सर्वोच्च मंडल का एक केंद्र कार्यलय पूरे ग्रामियान काल में सहरसा में रहना चाहिए। पटना कार्यलय में तात्काल बन्द करना उचित नहीं होगा।

प्रत्येक दिन ४ बजे से ग्रामसभा का आयोजन किया गया था। ग्रामसभा में १० से १५ हजार की भीड़ होती थी। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था जिसमें स्थानीय कलाकारों के अलावा मोद मंडली के कलाकारों ने भी भाग लिया। तरण शक्ति सेना के साधियों ने भी जनता का प्रच्छा मनोरंजन किया।

सम्मेलन का उद्घाटन बिहार विधान सभा के अध्यक्ष हरिनाथ मिश्र तथा सनातन पुराने समाजवादी नेता रामनन्दन मिश्र ने किया। दोनों वक्ताओं ने श्रोताओं पर ज़रूरी सा दखतर डाला। दूसरे दिन ग्राम सभा में निर्मला देगडाके का तथा प्रथम दिन कार्य-कर्ताओं के बीच बिहार सरकार के उद्योग मंत्री चन्द्रशेखर सिंह का बड़ा ही प्रेरक भाषण हुआ।

६ नवम्बर की राध्या की सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त हुई। प्रतिनिधियों के चेहरो पर यकान के बावजूद एक इकट्ठा भलता रही थी। सम्मेलन में लिये गए सचत्वों से उनमें ग्रामविश्वास की दीर्घ पृष्ठ रही थी।

श्रीमान्नात भा स्वर्णाध्यक्ष तथा वामेश्वर सिंह स्वागत मन्त्री ने उम क्षेत्र की जनता की ओर से आगत प्रतिनिधियों से शब्द के लिए धामा मागी। और तब 'जय जगन्' के नारों से आरम्भ शुरू उठा।

प्रमोद कुमार

गुजरात में महिला पदयात्राओं की उपलब्धियाँ

—कांग्रस, हरबिलास

एक कंचे पर है झाट महीने का बच्चा और दूसरे कंचे पर है दस पन्द्रह सेर का बगल भोला। देखने वाले को दया भायी। 'जिस गाँव से यात्रा प्रारंभ करनी है, वहाँ तक बस में जाइये और फिर वहाँ से पदयात्रा शुरू कीजिये।'

लेकिन जवाब मिला। 'भाज तो स्वर्ग से पुष्पक विमान भी भाये तो उसमे नहीं बँटूगी। पदयात्रा याने पदयात्रा।'

भद्रांचल जिले की इस कुमुद बहन जैसे संघर्षों बहनों के दृढ़ सक्ल और मनोबल के कारण ही अक्टूबर ११ से १७ तक गुजरात के दो जिलों को छोड़कर सभी जिलों में, शहरों में बहनों की कुल १७३ टोलियाँ पदयात्रा करती हुई धूमि धूमि स्त्री-शक्ति-जागृति का संदेश गुजरात के करीब ७००-८०० गाँवों में पहुँचा कर भायी। करीब ११७५ बहनों ने इन पदयात्राओं में भाग लिया। उसमें जोशीली युवतियाँ थी, समझदार प्रौढ़ाएँ थी, और अनुभवी बुद्धाएँ भी थी।

बावला गाँव की ७० साल की पार्वती बहन ने घोसका तहसील की पदयात्रा की। बहती थी 'एक जगह तो घाघे भोल तक कीचड़ में चलना हुआ। मेरे पैर तो कीचड़ में ऐसे घूस जाते थे! डाकौर की (गुजरात का तीर्थस्थान जहाँ भगवान कृष्ण का बड़ा मन्दिर है) यात्रा के लिए तो पदयात्रा करके प्रायी थी। लेकिन ऐसी श्रद्धी-श्रद्धी बातें लेकर गाँव-गाँव पैदल जाने का यह पहना अनुभव है।' बलसाड जिले की हमारी निष्ठावान प्रौढ़ बहन बर्गल बहन पैर में लकड़ी का होने पर भी पूरे सात दिन पदयात्रा में रही। और शेडा जिले की एक प्रौढ़ संपन्न बहन ने भी पदयात्रा की।

बहनों के लिए इस तरह सात दिन घरके बाहर निकलना कोई आसान बात नहीं है। समाज की अनेक शक्तियाँ भी होती हैं। कुछ पति देवों ने तीसरे नेत्र का परचा भी बनाया। 'बच्चों को घनावाधम में छोड़कर पदयात्रा

में या जहाँ कहीं घूमने जाना हो, चली जाओ।' तो दूसरे ने कहा, 'पवनार आधम में बच्चों को लेकर रहने चली जा, और उसके बाद जो करना है सो कर।'

लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू भी होता है। पति ने बच्चे को सुद सभालकर पत्नी को उत्साह से पदयात्रा में भेजा। भद्रांचल जिले के दीनुभाई ने पूर्णगुटि समारंभ में अपनी पत्नी का फूलहार पहना कर खुशी से स्वागत किया।

दो-चार गावों में लोगों की घोर से नाराजी भी प्रकट हुई। एक गाँव से संदेश आया, 'पदयात्रा लेकर आइये मत। बहुत जागृति हो गयी है। सजोग मुखिल है।' कहीं-कहीं लोग ऐसा भी कह बँठते। 'सुनाव की बातें हम सुनना नहीं चाहते, और बुद्धि-नियोजन की बात भी नहीं सुननी है।' लेकिन सभी जगह पर बहनों ने बहुत प्यंघ और विवेक से काम लिया। ऐसे मौके पर बहनों पदयात्रा के परचे लोगों के हाथ में रख देती थी। उसे पढ़ कर लोगों के चेहरे के भाव बदले जाते थे। यह तो किसी पक्ष और चुनाव की बातें नहीं हैं। बुद्धि और समाज के उत्थान की बातें हैं। अच्छे संस्कार की बातें हैं। गलतफहमी दूर होते ही सत्कार होने लगता।

सामान्यतः पदयात्रा टोलियों का बहुत उत्साह था स्वागत हुआ। साबरकाण्डा जिले में सुनने को मिला कि इतने अन्दरनी गाँवों तक ऐसी बातें बहने के लिए बौन आता है? कई जगह पर क्षीफल बलाश के साथ बहनों का स्वागत हुआ। बड़ौदा जिले को एक पदयात्री कमला बहन कहती थी, 'एक गाँव में तो बहनों ने मुझे हाथों में उठा लिया और भावविभोर होकर वे घोलने लगी—बिनोबा का सत भाया है! बिनोबा का सत भाया है! एक गाँव में तो एक भायक बहन ने सत बिनोबा की बातें लेकर सङ्घनियाँ धाँ रही हैं इसलिये रात को दो बजे उठकर मीठी रसोई बनायी और अल्दी गुबह उनके स्वागत के लिए तैयार हो गयी। मुसलिन गाँवों में रोजे

धामू होने पर भी बहनों स्वागत में और सभाओं में बड़ी सख्या में जाती थी।

भाय नगर जिले की साबरकुडवा तहसील के गाँवों में पचास बहनों की एक टोली धूमि, और गाँव-गाँव में स्त्री-जागृति की बातों को जोड़कर सांस्कृतिक कार्यक्रम किये। इधमें गाँव की ५०-७५ प्रतिशत आवादी उमड़ती और पूरा घाटापरण उत्सवमय बन जाता। बड़ौदा जिले के एक गाँव में गरवे का कार्यक्रम हुआ। उसके समाप्ति में क्या उपहार बाँटा जाय? तब हुआ, 'पदयात्री बहनों अपने साथ जो परचा बहनों घाटसु तो बरे ज !' बहनों इतना तो करे ही—साथी हैं वह बाँटा जाय।' यह विगिष्ट उपहार लेकर बहनों अपने घर गयीं। गाँधी-विद्यापीठ, वेदद्वी के विद्यार्थी भाई बहनों में वेद बाल से लेकर धाज तक स्त्री-जागृति के प्रयासों का परिचय करने वाला एक प्रच्छा प्रदर्शन तैयार किया।

गाँव-गाँव में भाईयो की आम-सभाएँ तो होती रहती हैं। उन सभाओं में कभी-कभी बहनों जाती हैं। लेकिन सास बहनों की आम-सभा होने का यह अनुभव विगिष्ट ही रहा। उसके लिए यह कूनुहल का विषय भी बन जाता था। लोग भी सभाओं आते थे और बहनों की बात दिलचस्पी से सुनते थे। जूनागढ जिले के एक गाँव में भाई बहने लये, 'हम भी आपकी बातें सुनना चाहते हैं। पुरुषों के क्या दोष है, क्या शक्तियाँ हमसे होती रही हैं। उतरवा खयाल हमें भी आना चाहिये न?' और दाद में उस गाँव में घाट सो-द्वारा भाई बहन इकट्ठे हो गये।

इस तरह सो-दो-सो-पाँच-सो हजार लोगों की सभाएँ हुईं। पदयात्राएँ में गयी बहनों कोई नेता मा बनना तो भी नहीं। बलिक बहुत सो बहनों तो पहली बार इस तरह की पदयात्रा में भायी थीं इधतिये मत में एक प्रचार का डर था। पदयात्रा करने जायेंगी तो सही, लेकिन गावों में क्या बरेंगी? क्या बहेंगी? सभा के बीच क्या बोसंगी? स्वा-

→

सूचना-यज्ञ : सोमवार, ३ दिसम्बर, '७३

सांस्कृतिक ही मन में प्रवेश था। समाज-संरचना बर्बाद करने लिए विद्वान् नई बात, इसलिए बहनों को धरने प्राप्त पर विरहवास नहीं देना था। सबसे तीव्र सखे होकर प्रवचन में से देनी? हम उनके बीचमाते थे कि भाग प्राप्त था प्रवचन करने जा रही ऐसा सोचिए ही मत। भाग प्राप्त की बहनों से मिलने जा रही है। धीरे धीरे घरने जिस तरह बातें करती हैं उसी तरह गात्र की बहनों ही इकट्ठे करने बातचीत कीजिये। हरके टोली को हमने बातचीत के मुद्दों का पत्रका दानाकर दिया।

धीरे धीरे बहनों सुन्दर परिष्कार था। जवाहर बहनें गात्र-भाग में बहुत ही बुद्धिमान करने काये। धरने जीवन के, घर-मुहूर्त की निजी अनुभवों की बातें बहनी होनी हैं, तब उनका सहज स्फुरण होता है। बहनों के बातें सभारो रसपूर्ण बना देती थीं। कुछ सांस्कृतिक बहनें बला की तरह उनकी। बहुत कामनी तो साने मुहूर्त की "धाम की घा" पुस्तक में से उदाहरण देकर सभा को भाव-विशोष बना देनी थीं।

इन सब बातों का भावो पर धनर भी हुआ : 'भाषनी बातों से समाज में साहित्यका धीरे धीरे प्रवेश, 'ऐसा सब बहनों को मिला। सभे-सभे विचारों में बहनों को ध्यान की वही-वही राहें बनायीं। स्त्री-साहित्य-आपूर्ति के संदेश दे बहुत बहनों को प्रेरित किया। मेधा जिले में कुमुम बहनों के नाम गात्र की हीन बहनें भावो धीरे धीरे सा-साधुर के नाम विद्वो विपचारण से गात्र कि बहनों के नाम धूर्त निरलवारा सुखा हैं। बने-बुद्धों को सम्मान देना, उनके साथ विवेक से बातना मही सचो इज्जत है—धूर्त निरलवने का मही धर्म यही है। दमोई तह-सोने में पोस्टमें, विज्ञान में—कारिदेह का प्रयोगनीय प्रदर्शन होकर है उनको भेदा में सभा की सभामें ही बहनें बहनें तापी कि दमोई साठी सारीने के निवे जाना होया तब दुःखाने से ही प्रुद्धो वि स्त्री की ऐसी नवी बुद्धि बनो रनी हैं? तो एका बहनों कोच उठो कि उनमें प्रुद्धो की धीरे धीरे को बना करण? उदाहर देक देना ही है। बेसो, गात्री विद्यापीठ के परि-वारो की बहनें ने पत्रों के मोहले की स्त्री-

बच्चों के लिये महीने में एक सप्ताह देने का नियम किया।

बहनों ने गात्रों में जाकर सर्वोप के साहित्य की जिन्को की धीरे 'भूमिपुत्र' के छाहक भी बनाये। साहित्य कुल विचारण करीब २५४ रूप्यों का विचार 'भूमिपुत्र' के २५५ छाहक बने।

सहरो में भी कार्यक्रम रखा गया था। वहा कही-कही ऐसा भी सुर मुतापि दिया कि 'सहरो में तो स्त्री-सहित जापूत ही है, लेकिन नये दृष्टिकोण के साथ जब विचार सुने तब उनकी समझ में आया कि सहरो में भी इन कार्यक्रम की जरूरत है। धर्मो तो मजिल बहुत दूर है। धर्मदादा, मूल धीरे बडीदा सहरो के बाडा में पदयात्रा धीरे समाज-जानागारो का कार्यक्रम हुआ। बडीदा धीरे बगसरा सहरो में जैन साधुनीधो की भी सहकार मिला। धीरे सहरो में गाथो-विद्यापीठ की १० बहनें सात दिन तक हर-रोज दो घंटे तक गीत भजन गाती हुई पद-यात्रा करती थीं। भावनगर-वेरावल जैसे कुछ सहरो में सिके सभाधो के कार्यक्रम रहे।

सहरो की धीरे धीरे घर की बहनें गात्रो में गईं तो उनकी भी स्मरणीय अनुभव हुए। ऐसी एक बहनें बहनी थी कि गात्रो के तोप गरीब हैं, लेकिन दिल के बड़े उदार हैं। सहरो की बहनों के निवे हरे-भरे सेत, एता सात-सात धीरे प्रकृति का साहित्य साहाय्य अनुभव था।

इन तरह धीरे धीरे पदयात्रा के माध्यम से स्त्री-साहित्य-आपूर्ति का सन्देश

पहुंचा। धामोद-जयपुर के पूरार्णवित समाचार में प्रा. धी घनर भाई ने सब ही कहा, "जिनोवाजी एक विलक्षण सत हैं। उनका दिया गया स्त्री-साहित्य-आपूर्ति का बीज भावनर भातमा में बोया गया, इसलिए वह धारणे हो उगेया ही, लेकिन साम-साध जिन गात्रो में वे बीज धान बाट धामो उन गात्रो में भी वे उगेये।"

भावनगर की मनुष्या बहनें इन कार्यक्रम के लिए धारण से ही उतराही थीं। उन्हीने जिनो की सभा तथाधो के सहकार से सुन्दर धायोजन करके ४४ पदयात्रा टोलिया के मार्ग बढो प्रच्छा वातावरण तैयार किया। उनको हरेक टोली २-४ दिन के लिए मधुमी थी।

जिनोवाजी बहनें ही कि पत्राते मुनि ने हजार उपवास किये ऐसा कहा जाता है, उनका धर्म है कि उनमें प्रेरणा से हजार व्यक्तियों ने एक साथ उपवास किया। उमी तरह गुजरात में कही-कही बहनें स्त्री-साहित्य-आपूर्ति का संदेश लेकर एक साथ हजार से भी ज्यादा गात्रो में पहुंची। हरेक टोली ने अपनी विशिष्ट मूल-बुद्ध के साथ काम निष्पादकिये उसमें दिलचस्प वैचित्र्य भी रहा। धीरे गुजरात में इनकी वडी-सभामें पदयात्रा टोलिया एक साथ मधुमी हो साधत यह पहला ही प्रयास है। धारणविद्यालय, लोको में विकास और कार्य में विद्यालय—इन विविध विद्यालय से धारण बोई भी काम उठाने हैं तो उनके पीछे परोश प्रेरणा-सहित भी काम करती है, ऐसा अनुभव थाया।

(गृह १३ का गेय)

स्त्रीवि एक साथ ही भावण रचनाकार सभाधो की बंड भी हो रही थी। यदि वे होते तो समझते कि सारी जर्वा के मूल में धाम स्वरणका वा जो कि 'दुनिया के हर काम' के बीच घुटता जा रहा है।

विविधेकन ने राष्ट्रीय परिषद के सचयन में जो प्रस्ताव स्वीकार किया उसमें स्पष्ट उल्लेख था कि 'धाम स्वरणके समर्थन' में सारे कार्यक्रम होने चाहिए। पर साहलीकी की इसका धर्म 'साप का भावो कार्यक्रम

साधनस्वरण की बोहदुरी में जकडा न रहने वाला' दिशाई दिया।

धाम साधनस्वरणका इन बात की है कि हम धरने सारो का विवेकलेप करें, इन सामान्य जन की बहला का मुद्दा बनायें, जिससे हम स्वयं को दिग्भ्रमित होने से बचा सकें। धामत्या 'ऐसी दिग्भ्रमण' इस धामत्व की सामान्य, लेकिन बुनियादी दशाधो को धम में बाव देनी।

सन्तोष 'भारतोप'

आन्दोलन के समाचार



नवम्बर के प्रथम सप्ताह में शान्ति सेनियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय दल सायप्रस के लिए रवाना हो गया। यह दल वहाँ जनवरी १९७४ तक मध्यस्थ के रूप में विस्थापितों के पुनर्वास की व्यवस्था करेगा। यूनान और तुर्की दोनों देशों में इतिहासक संपर्क गामक और सायप्रस पुनर्वास प्रायोजना केन्द्र को लिखित रूप से भावश्यक अधिकार दिये हैं कि वह उन उद्देश्यों को पूरित के लिए दोनों देशों को सन्धि सहायता देने की व्यवस्था करे। इस दल में घनेक देश के स्वयंसेवकों के अतिरिक्त भारत के ६ स्वयंसेवक भी शामिल हैं। भारतीय दल के सदस्य हैं : गुजरात में शान्ति सेना के संयोजक श्री जगदीश साहिबा, सचिव भारतीय शान्ति सेना मण्डल के प्रशिक्षक श्री धर्मनाथ, तरुण शान्ति सेना की राष्ट्रीय समिति के सदस्य श्री नचिकेता देसाई, कलकत्ता के सामाजिक कार्यकर्ता श्री मानव मण्डल और गुजरात के सर्वोदय कार्यकर्ता श्री धरएण भाटिया। कटक के अनुमारी माधवी चौधरी भी नवम्बर के अन्त में सायप्रस के लिए रवाना हो कर दल में शामिल होगी। चिब में बायें से सर्वेथी धर्मनाथ, नचिकेता देसाई व मानव मण्डल।

× जिला सर्वोदय मण्डल मुन्दरवाह (बिहार) जिले के विनायक प्रखण्ड में के तत्वावधान में ६ दिसम्बर १९७३ को एक प्रतिस्वादा का आयोजन किया गया है। प्रतिस्वादा का विषय है—'जमान और राष्ट्र की बहुमुखी समस्याएँ और उनका समाधान'। प्रतिस्वादा का धारम्भ डा० पाण्डेय तथा समापन मास्टर मुन्दरवास करेंगे।

× श्री शतीकुमाररायण से प्राप्त समाचारों के अनुसार श्री धीरेन भाई की लोक गंगा यात्रा १७ नवम्बर से प्रारम्भ हो गई है। २० फरवरी '७४ तक यात्रा सहस्रा

(बिहार) जिले के विनायक प्रखण्ड में के तत्वावधान में ६ दिसम्बर १९७३ को एक प्रतिस्वादा का आयोजन किया गया है। प्रतिस्वादा का विषय है—'जमान और राष्ट्र की बहुमुखी समस्याएँ और उनका समाधान'। प्रतिस्वादा का धारम्भ डा० पाण्डेय तथा समापन मास्टर मुन्दरवास करेंगे।

× जनशक्ति और शासनव्यक्ति के सहयोग से भूमि वितरण कार्यक्रम पिछले दिनों पूर्णिया (बिहार) में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में बिहार के राजस्व मन्त्री श्री सहदेव चौधरी एवं श्री वृष्णचन्द्र ने भाग लिया। ११२ एकड़ भूमि ११० भूमिहीनों में वितरित की गई। जिस भूमि पर भूमिहीनों का बंझा नहीं था उन्हें बच्चा दिनामा पया। २१० बासगीत के पंच बांटे गये।

× २० नवम्बर १९७३ को नया सच को उपवासदान के अन्तर्गत २०६ रुपये की राशि प्राप्त हुई। यह राशि २०६ लोगों के उपवास दान से प्राप्त हुई। सबसे ज्यादा राशि महाराष्ट्र से (१,२६६ रुपये) प्राप्त हुई, जिसे ५० लोगों ने दिया।

× नारी-जागरण सप्ताह के दौरान उड़ीसा में १० से १० नवम्बर तक २१४ महिलाओं के २४ दवायों के दिनों में ७४६ भोजन की पदार्थों का वितरण किया गया। नारी पर सभाओं का आयोजन भी किया गया, जिनमें बड़ी सत्या में शामिलों ने भाग लिया।

× श्री हरिहर राम, सूर्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार शान्ति सेना स्वाध्याय मण्डल तमकुहीरो में (बारा) में अपना १५वां वार्षिकोत्सव तथा स्त्री-शक्ति-जागरण सम्मेलन २० नवम्बर को सुथी निर्मला देशपाण्डे की उपस्थिति में मनाया।

× ४ नवम्बर को सम्पन्न हुए भागलपुर नगर शाखा के चुनाव के दौरान स्थानीय गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, तरुण शान्ति सेना के साथियों ने मतदान प्रक्रिया के लिए प्रशसनीय कार्य किया। चुनाव शान्तिमय ढंग से सम्पन्न हो इसके लिए छोटी-छोटी टोलियों में शान्ति सैनिक प्रायः सभी ३२ वार्डों में घूमते रहे।

× केन्द्रीय गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ने विश्वविद्यालयों में गांधी-विचार अनुसंधान यात्रा का एक विभाग स्थापित किया है। यह विभाग विश्वविद्यालयों से यह जानकारी प्राप्त कर रहा है कि उनके यहाँ गांधी-विचार के अध्ययन-अभ्यापन का क्या स्थितिना चल रहा है और पाठ्यक्रम में क्या-क्या बातें शामिल हैं? ताकि उसके आधार पर स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तावित की जा सके। निम्ने देश भर के विश्वविद्यालयों में गांधी विचार के अध्ययन-अभ्यापन में एक-एक साली जा सकेगी।

वार्षिक मुक्त : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या ३५ पणिया का ५ डाकर, एक घंटा का मूल्य २५ पैसे। प्रयास कोषी प्रायः-नवसेवा सच के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० फिटल, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

सौंदर्य

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुल पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १० दिसम्बर, '७३

भूदान-यज्ञ

१० दिसम्बर, '७३

वर्ष २०

अंक ११

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

मतदाता पांचों साल सजग रहे

—ठाकुरदास बग २

जनता चुनौती स्वीकार करे

—सिद्धराज डड्डा ३

उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं

द्वारा तैयारी

आखिर कोई आवाज तो

उठनी चाहिए

—श्रवण कुमार गण ५

घुलिया : हरित जाति से आघात

—वेन त्रो ६

खेत में काम कर रहे भगवान

से मिलने

—स्वामी चिदानन्द ११

चालीस हजार उपवास-दान

कब मिलेंगे ?

—विनोबा १२

घोषी से वड़ी बुलाक !

—निर्मल चन्द्र १३

मतदाता शिक्षण अभियान

के बुनियादी लक्ष्य

संसद सदस्य अपनी सुविधाओं

का दुरुपयोग न करें

—ब्रान्दोलन के समाचार १४

—

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

मतदाता पांचों साल सजग रहे

ठाकुरदास बग

भारत में प्रजातंत्र है ! इस देश की अधिकांश प्रजा गरीब है। प्रजातंत्र में एक-एक को एक वोट है। देश में चार भाग चुनाव सम्पन्न हुए, तो भी गांव को, शोषित पीड़ित को न्याय नहीं मिला। उसी के मत पर बनी सरकार ने चार विकास योजनाएं बनाईं। फलस्वरूप देश की दौलत बढ़ी। लेकिन साथ-साथ गरीबी, बेकारी एवं विपन्नता भी बढ़ी। व्यसन बढ़े। परावलम्बन बढ़ा, जनता दिनों-दिन प्रसहाय होती गई। ऐसा क्यों हुआ ?

क्योंकि मतदाता सोया हुआ है। घोषणाओं की, नारों की शराब पीकर वह बेहोश हो गया है। जाति, धर्म, दल दौलत वपन उसे जकड़े हुए हैं। इस भ्रमजाल में रहकर वह मताधिकार का उपयोग करता है। कभी-कभी इसके साथ शराब, धंसा धादि का भी प्रयोग उसे सलवाने के लिए किया जाता है। उसमें वह फसाया जाता है। माछी से उसे डराने की चटनाएं भी मिछने काम चुनाव से होने लगी हैं। ऐसी परिस्थिति में मताधिकार का सही उपयोग नहीं होता है। उस उसके दुर्दिन कैसे पलटेंगे ?

रामायण में एक कहानी घांटी है। बटने है कि राक्षस राज रावण का भाई कुम्भरणें थे; माह सोना का धोर एक दिन जापना था। मतदाताओं की नींद कुम्भरणें की नींद से भ्रमिष्ठ सम्बन्धी है। मतदाता पांच साल में पंटे दो घंटे के लिए जापना है धोर उगने मत पर बनी सरकार पर धनना भाष्य छोड़ कर फिर चार सान, ग्यारह महीने, उन्नीस दिन धोर तेईस घंटों के लिए गो जाता है। जब जापना है ऐसा समझा है कि सब भी सही नहीं जापना। यह हमने ऊपर देगा ही है।

इसलिए मतदाता भी जापना होय। मतदाता निगरण का काम हाप में मेना होय। जो चुनावों में उम्मीदवार होना था उनके समर्थक होने के निगरण का बुनित काम नहीं कर सकेंगे। उनके बारे ठकरी का फलितपाय एक ही होय कि येन-नेन-प्रकारण

• वोट प्रमुक को मिले। इसलिए चुनावों की दल-दल से दूर तदर्थय नागरिकों को, समाज सेवकों को यह कार्य धरने बन्धों पर भेतना होय।

प्रजातंत्र के प्रारम्भ के दिनों में चुनाव बाल में गांव-गांव में एव नगरी के हर मुठल्ले में चुनाव सभाएं होती थीं। इन चुनाव सभाओं में धर्म के स्थानीय प्रभन, सङ्ग, विचारी, शाला, गृहर धादि सामने प्राते थे। उम्मीदवार को उन पर धनना मनस्य बनाना पड़ना था। नेहरू सरीते बरिष्ठ नेता चुनाव सभाओं में समाजशास्त्र, तदर्थय विदेशनीति, सहकारिता, समाज-विकास धादि बुनियादी मसालों को धर्मा करते थे। इससे सोचविचार होता था। धन से दोनो बानें कम होने लगी हैं। धन धर-धर जाकर वोट मागने का तरीका रिपना है। हमने न ब्यापक, न शोनीय प्रसनों की बर्बादी होती है। इस प्रकार-चुनाव के समय जो घोषा बटन सोचविचार होना था वह भी नमासनाय है। धर-धर जाकर वोट मागने में जाति, रिश्तेदारी, मर्यादगुण धादि का प्रभाव धादि बानें धाना धार करती धोर वोट मिन जायेंगे। विचिन मतमें बिना दिये हुए वोट को कीमत ही बना ? धात्र की ही बचना जारी रहेगी।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए २५ जनवरी को नई दिल्ली में परीक्ष्य सगठनों के प्रमुक एवं इन विषय में रिचरचारी रचने वाले धन्य ध्यानि मेधासाध गच्छुंन, परिषद में निरिन किमानसल सनिनि के रूपमें बैठे। उनर प्रदेश में धनने पत्रकों में हुंने वाले चुनावों में धर प्रजा धरिष्ठ बना दिना था। सबने निर बन् निर्णय किया कि इन समय मतदाता जागरण का ब्यास धादिना चलाना चाहिए। उग कार्य-उपान में प्रमुक मनोदय कार्यकर्ताओं की एवं मारिनीको भी मारीय १२ को बैठना हुई। उररररररर ने विचार रगा कि प्रजातंत्र में जो दुर्ग बंन इतिवत ही इमरिए ब्यापरीय कर हुए

(निप पृष्ठ १५ पर)

उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं द्वारा तैयारी

उससे भी ज्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए यह चुनौती अब स्वयं जनता को और स्वयं से ऊपर उठकर सोच सकने वाले जिम्मेदार नागरिकों को उठा लेनी होगी। क्योंकि अगर इस प्रवृत्ति पर रोक नहीं लगी तो जनतंत्र खतरे में है। अगर चुनावों के निष्पत्ति, सही धीरे-धीरे जानूँगे हमें होने में जनता का विश्वास उठ जायगा, वह उसका प्रतिहार करने में साक्षरी महसूस करने लगेगी तथा विरोधी पार्टियाँ भी कमजोर होने के कारण, या शासक दल को ज्यादा भ्रष्ट करने के कारण, उसे भ्रष्ट करने में असमर्थ रहें, जैसा कि आज हो रहा है, तो देश में तानाशाही के लिए रास्ता खुल जायगा, चाहे फिर चुनावों का यह खेल चलता रहे और जनतंत्र का ऊपरी ढांचा कायम रहे।

इस विषय में समय-समय पर कुछ छुट-पुट भावांश या चिन्ता प्रकट होनी रहती है। पर भावधर्यकता संगठित और समन्वयकर प्रयत्न करने की है। अभी दो महाने पहलें सर्व सेवा संग के निम्नलिखित पर सेवाप्राप्त में देश की मौजूदा स्थिति पर विचार करने के लिए एक राष्ट्रीय परिषद मिली थी। उसमें विभिन्न वर्गों और दलों के कुछ प्रमुख लोग, पत्रकार, साहित्यसेवी-समाजसेवक, राजनैतिक नेता आदि इकट्ठे हुए थे। इस परिषद ने सर्वसम्मति से तय किया है कि इस विषय में सरकार और जनता को सावधान करने के साथ-साथ निर्दलीय और निष्पक्ष तरीके से कुछ सक्रिय और सामूहिक कदम भी उठाये जायें। अब शुरूआत के तौर पर उत्तर प्रदेश के छात्रागामी चुनावों में इस दिशा में जनमत सज्ज करने, चुनावों में भ्रष्ट तरीकों को रोकने और भावधर्यक हो तो इन तरीकों को काम में लाने वालों के खिलाफ सत्याग्रह करने का भी तय हुआ है।

राजनैतिक पार्टियाँ और उम्मीदवार जनता की उदासीनता का फायदा उठाकर जनतंत्र की प्रक्रिया को दुर्भित करते रहें यह अब बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि हमने सारे देश को भ्रष्टाचार में डालने से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि हमें सगभ्रष्टाचार नागरिक, सामान्य नई पीढ़ी के नौजवान, संगठित रूप से यह भ्रष्टाचार उखाड़े ताकि कोई भी राजनैतिक पार्टी या उम्मीदवार चुनावों में भ्रष्ट तरीके काम में न ला सके। समय भी गया है जब जनता को इन चुनौती को उठा लेना चाहिए।

दिसम्बर शुरू हो चुका है। फरवरी में उत्तर प्रदेश में चुनाव हो रहा है। समय कम बचा है, साधन सीमित हैं ही, लेकिन बचे हुए कम समय का ज्यादा से ज्यादा तथा सीमित साधनों का बेहतर उपयोग हो सके इसकी तैयारी शुरू हो चुकी है। दिल्ली में हुई २४-२५ नवम्बर की बैठक के बाद २६ नवम्बर को सखतक में सर्वोदय कार्य-कर्ताओं की एक बैठक हुई जिसमें मतदाता शिक्षण अभियान पर बातचीत हुई। बैठक में मास्टर मुन्दरलाल, फरुखाबाई, विनय भाई, रामप्रवेश भास्कर, राधेश्याम योगी आदि के प्रतिनिधित्व दिल्ली से रूपनारायण तथा कृष्णस्वामी ने भी भाग लिया। कृष्णचन्द्र सहाय श्रवणस्यना तथा मुन्दरलाल बहुगुणा उत्तराखण्ड में चल रही ती दिन की परयात्रा में व्यस्त रहने के कारण भाग न ले सके।

बैठक में स्पष्ट किसे विचारों में यह बात सबसे ज्यादा उभर कर आयी कि मतदाना सिद्धाण अभियान क्षणिक न होकर एक स्थायी कार्यक्रम होना चाहिए। हरिजन मतदाताओं के बारे में स्पष्ट देने वाले एक कार्यक्रम का बहना था कि हरिजनों की वसतियों से प्रायः लोग बोट डालने निकलने ही नहीं हैं। इन हरिजनों को कनेक्टर गुरु आचार्य भी भावशायक से रि भाग निरदर होकर बोट डालें, ये बोट देने नहीं आते। उनकी सीधी सी दलील है: हमें महाराज चुनाव के बाद भी यहीं पर रहना है, भाग यहाँ से चले जायेंगे। ज़रूर है कि ये चुनावों में भाग लेकर किसी एक पक्ष को तो नाराज करेगा ही। चुनाव के समय यदि माहल बटोर कर वे बोट से भी दौं तो उनके बाद मारपीट होनी है। अन्वय ही इन घटनाओं को निवार के मतदान भी नहीं आ पाए। कार्यकर्ताओं का बहना था कि इन अभियान को मजबूत करने समय हूँ हम भी तय कर डालना है कि हमें केवल मनुदान के समय ही निर्भय होकर मतदान करने में मतदाना का साथ नहीं देना है, यह साथ तो मतदान के बाद भी बना रहे, इनका भी ध्यान रखना है।

यह बहुत एक बार फिर उठी कि पहले हम इस राजनैतिक प्रणाली के ही विरुद्ध थे, अल्पमत और बहुमत के बदले सर्वसम्मति की बात करते थे फिर क्यों हम उठे हाथों की गिनती के आधार पर चलते बाले इस खेल में गिनती में बरनी गयी बेईमानी को ईमानदारी की धोर से जाना चाहते हैं।

यह साफ है कि इस देश में घाते बावें काफी समय तक बहुमत का राज चलेगा। जब तक उस पद्धति का कोई विकल्प नहीं बनता जब तक तो वह पद्धति ही कम से कम घाते पोषित नियमों और एक सर्व मान्य निर्वाचक को आधार मानकर चले। फिर पद्धति, नियम धारि गये हैं, सबसे ऊपर है आदर्श। उसे आज एक मन मिला है अपनी पद्धत, नापसंद बनाने के लिए। अब जो मिल कर एक ऐसा यत्नाकरण बनाने में मदद करनी है कि किसी भिन्न पद्धति में उभरा मन दिल जाने की स्थिति में भी वह साहमयुर्वन अपनी पसंद-नापसंद जाहिर कर सके। आज उसे यह हक है फिर भी बर्दा-वरण ऐसा बनना जाता है कि वह उभरा उभरा जगह भूतना जा रहा है।

सखतक में एकर हुए थे कार्यकर्ता गुरु-मन थे कि मतदाना घाते मन का उपयोग न भूत पावे। उन्होंने इन अभियान पर विचार करने रविवार, १६ दिसम्बर '७३ की गांधी भवन में एकर बने उत्तर प्रदेश में काम कर रहे कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन बुलाया है। संयोजक हैं मास्टर मुन्दरलाल। उनका सह, मेरठ, बानपुर, इलाहाबाद, बनारस, आगरा, सखतक आदि जगहों के अन्वय गुरुदास, धनीगढ़, देवरिया का दिग्गजों के इस सम्मेलन में कार्यकर्ता भाग लेने का रहे है। इन्हीं में से कुछ स्थानों पर मतदाना सिद्धाण अभियान को सफल रूप में चलाया जायगा। सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के अन्वय कार्यकर्ताओं के भी कार्यकर्ताओं की मदद देने के बारे में निर्णय किया जायगा। सखत और माधन कम हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ता उन्का बेहतर उपयोग करने में तृप्त होंगे हैं।

सम्बर २५, १९७३ को गांधी मॉनि

प्रतिपादन, नई दिल्ली में सर्व-सेवा-सभ द्वारा
पारमर्शित राष्ट्रीय परिषद की 'कालो-घर'
कमेटी की बैठक हुई। बैठक की कार्यसूची में
तीन विचारशील विषय थे। एच. गिन्दराज
७३ में सेवाधाम में आयोजित राष्ट्रीय परिषद
के निर्णयों को क्रियान्वित करना। दो, कालो
घर कमेटी के को-आयोजन। तीन, उत्तर प्रदेश
के धारावी चुनाव के उपनाटक कालो में
समे लोग की भूमिका।

बैठक में प्रमुख रूप से भाग लेने वालों में
सर्वश्री जयप्रकाश जो, धारावी कृषानाथी,
कृष्णराम, श्री ७० डब्लू, गिन्दराज
दत्ता, राधाकृष्ण, देवेन्द्र कुमार व
हरिवन्धन पारिभ ने भाग उल्लेखनीय है।
उत्तर प्रदेश के चुनावों में जनशक्ति गिण्टण का
कार्य देते की दृष्टि से सम्प्रदायों पर
विचार करने के लिए सर्वश्री कृष्णराजराज,
धामप्रवेश शास्त्री (नारायण) व धामप्रवेश
श्री की भी बैठक में धामप्रवेश किया गया
था।

गिन्दराज जो ने धामप्रवेशों के सम्मुख
बैठक बुनाने जाने के उद्देश्यों की जनशक्ति
की धीरे सेवाधाम की राष्ट्रीय-परिषद से
स्वीकृत हुए भाट मूर्खीय प्रतिवेदन की कर्षा
की। धारावे कहा कि सर्वोच्च भाटमूर्खीय
कार्यक्रम को लागू करने के लिए पालोभय
कमेटी के गठन की तुलना धारवरचना है।

गिन्दराज जो ने भी जयप्रकाश जो ने
निवेदन किया कि वे पालोभय कमेटी की
सम्प्रदाय का भार स्वीकार करें। जयप्रकाश
जो ने कहा कि सर्वमान्य एमएचके विचारों
की समर्थन हुए जनते लिए यह सम्भव नहीं
होता कि वे कोई नई क्रियेकारी ले। हां,
जहाँ तक राय मयदे का प्रश्न है वे यथा-
सम्भव सहायता देने रहेंगे।

उत्तरप्रदेश में चुनाव की सर्वमान्य विषय
का धामप्रवेश करने के लिए गांधी-मॉनि
प्रतिपादन की धीरे के भी कालोघर/हाल
ही में जयप्रवेश देने के धीरे सम्भवतः खादि
कालोघर स्थानीय व्यक्तियों के साथ उद्देश्य
कर्षा भी की थी। धारा: जनते निवेदन किया
गया कि वे सम्भवतः अपने जनशक्ति हैं।

श्री कृष्णराजराज ने अपने दोरे के बारे
में बैठक को जनशक्ति देने हुए बताया कि

राष्ट्रीय परिषद के बाद

आखिर कोई आवाज तो उठनी चाहिए

समयक्रम में विभिन्न व्यक्तियों से हुई चर्चा के
बाद उन्हें लगता है कि समय बापरी बीत चुका
है धीरे चुनाव नजदीक ही है। लेकिन यदि
जनशक्ति प्रगतिशील का काम तेजी से उठाया
जा सके तो अपना काम वे कम कुछ चुनाव
क्षेत्रों में तो समुहक ही प्रभाव पड़ेगा।

श्री एम० जी० भारे जिन्होंने बैठक में
केवल एक पर्यवेक्षक की हैमिण्ड से भाग लेना
स्वीकार किया था, कहा कि क्या हम चुनावों
में प्रत्यक्ष रूपत भाग लेने की कोई इच्छा
रखते हैं धीरे जनशक्ति को यह स्पष्ट बहने
को संसार है कि प्रायः समूह व्यक्तियों की ही
घोटे हीमिण्ड। इस बात की सम्भावना कम
ही होगी है कि चुनाव में किसी मुठ उम्मी-
दशारों की हम खाक कर सकें।

दादा कृष्णरामने ने कहा कि हम इनका तो
कर ही सक्त है कि जनशक्ति का गिण्टण
कर सकें। हम जनशक्ति को इनका तो कह
ही सक्त है कि वे जनता की वे नदी धीरे
ईमानदारी से जनशक्ति हैं। चुनाव वे समय
नई प्रलोभन धारावे सामने धारावे जो धारावे
प्रभट करका बाह्ये पर धारा धारनी धारना
को यथासंभव हीमिण्ड।

श्री जयप्रकाश जो ने कहा कि सर्व सेवा
सभ द्वारा गिण्टे बुनाने के दौरान भी जन-
शक्ति गिण्टण का कार्य किया गया था
धीरे उत्तम काली हृद नरक सफलताएँ भी
मिली थी। यह सच है कि हमारे प्रयासों की
कुछ मर्यादाएँ हैं। सर्वोच्च वालों की राज-
नीतिकारों से यह बरख पुरानी है कि प्रभाव-
शाली कुछ करने के लिए उन्हें (सर्वोच्च वालों
को) राजनीतिक में धारा चाहिए। धारित
राजनीतिक दलों के धारावा नर पार्टी स्तर पर
भी कुछ धारावा उठ सकेगी ही। कल्याण-
वारी धीरे जनशक्ति ही सक्त है। सम्प्रदा-
देत का सर्वोच्च जनशक्ति धारावे सक्त सौमिण्ड
होकर रह जायेगा। जनता भी धारा हो सके
वहापरी ही, काहे यह धीरे ही सक्त है।
धारित कोई धारावा होनी को चाहिए।

उत्तरप्रदेश के चुनाव के बारे में कार्य-
क्रम बुनाने हुए जे० पी० ने कहा कि जो हम
पुराने लोग हैं—सर्वोच्च धारा, कुछ लोग
तो उत्तरप्रदेश के पचास-साठ सालों में
विचारधारा के समक्ष भागए हैं। विचारधारा
की नर दलील देलियो का धाराजन करे धीरे
जनका धारावाहन करे। विचारधारा धारा धारने
कालोघर में निरन्तर धारा का दौरा करेने
धीरे नई धारिक धारावा हो सकेगी तो
बड़ा काम होगा। धारा चुनाव इसी प्रकार
प्रभट होने रहेंगे तो प्रजासभ सम्भव ही
जायगा। जे० पी० ने कहा कि समयक्रम खादि
एक-दो स्थानों पर जनशक्ति ने भी विचारधारा में
बोलना चाहेंगे।

श्री कृष्णराम ने जे० पी० के विचारों
का पूरे हृदय से समर्थन करते हुए कहा कि
जयप्रकाशजी ने उनके मन की बात कही थी है।
जिनमें भी बाह्य है धीरे सक्त है वे धारा-
वाहन बनाने में सक्त देने हैं। धारा हम धारनी
से हवा बनाने धीरे विचारधारा के सामने धार
रहें कि वेक विचार का दौरा है, तो बड़ी
नाम बनेगी। यह काम केवल जनशक्ति गिण्टण
का ही नहीं है, सब राजनीतिक दलों के लिए
धुनीवी धारा करने की धारा है। श्री कृष्ण-
राम ने कहा कि धुंकि पार्टी को कुछ मर्या-
दाएँ उनके साथ है इसलिए वे बाह्ये धारा
जयप्रकाश मदद नहीं कर सकेंगे, पर पार्टी के
धारावा जनता भी सम्भव होगा, वे धारा
करेंगे।

श्री सुरमोक्ष मावलकर ने भी जय-
प्रकाश जी द्वारा किये विचारों पर धारनी
सहमति जाहिर की।

श्री पी० पी० डब्लू ने भी मोरना के
प्रति धारनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि
यह तो एक मर्यादा है जिसमें यदि हम धीरे
भी सक्त हुए तो एक सक्ती धारिक को धारावा
दे सकेंगे।

—धामप्रवेश धारा

धुलिया

[हरित क्रांति विपन्नता की नींव पर सम्पन्नता का एक नया वर्ण खड़ा कर रही है। धुलिया में हाल में ही हुई घटनाएं इस तथ्य को उजागर कर रही हैं।

वहां अब खड़ी फसलों की लूट की आशंका कर भूमिवानों ने संशय फसल बचाव सेना की योजना भी बना डाली है। भूमिहीनता और व्यापक गरीबी की समस्याओं से कतराकर ऐसा प्रयास करना भविष्य में शान्त वातावरण की कोई गारंटी नहीं है। प्रस्तुत लेख में वेन क्रो ने

इस स्थिति का सर्वे किया है। वितानी वेन क्रो इंजीनियर थे, बाद में वे 'आपरेशन ओमेगा' के सदस्य बने। आजकल वे भारत में चल रहे ग्रहिसक आन्दोलनों का अध्ययन कर रहे हैं। शाहादा में चल रहे सर्वोदय कार्य की एक रपट हम अगले अंकों में दे रहे हैं। सं०]

हरित क्रांति से आक्रांत

महाराष्ट्र में वर्षा का आगमन हुआ। पिछले कई वर्षों में सबसे अच्छी वर्षा। अब पहली फसल कट चुकी है। दुमिध चला गया है, पर समस्याएँ बाकी हैं।

उत्तरी महाराष्ट्र के धुलिया जिले के कुछ हिस्से में 'फसल बचाव सेना' का प्रस्ताव वहाँ के भूमिवानों ने रखा है, जिसको लेकर संसद में सवाल उठाये गये हैं। कुछ अवधारणा ने इस प्रस्ताव को भूमिवानों और भूमिहीनों के बीच बढ़ते हुए टकराव के घनत्व मान कर बढ़ी सुरक्षा दी है। सचार्ई यह है कि धुलिया में अभी तक दूरे नहीं हुए और बड़े भूमिवानों की धारणा के विपरीत फसल लूटने को एक राजनैतिक धारण को तरह दस्तेमाल करने का अभी तक कोई संगठित प्रयास भी नहीं हुआ है। लेकिन, भूमिवानों और भूमिहीन दोनों धरना-धरना संगठन कर रहे हैं। यदि क्षेत्र की घने विपन्नताओं का कोई हन नहीं निवृत्ता तो आगे-पीछे संघर्ष होगा ही।

धुलिया जिला अनेसाइड सपन्न क्षेत्र है। तापी और उसकी सहायक नदियों से उपजाऊ जमीन को पानी मिलता है। जिनके

पास जमीन और पूजा है उनको हरित क्रांति से अपूर लाभ मिला है। केवल कुछ खेतों में सिंचाई होती है। बड़ीली भाइयों में समायी-विपरीत धूल इस पानी से गीली कल्पई सरली में बदल जाती है, जिनमें गन्ना, रोहें और मूकफली का खवदस्त उत्पादन होता है। शाहादा के छोटे से बस्ते में चमरनी हुई मोटर साइकिलों और वृत्त नये ट्रेक्टरों पर इधर-उधर जाते हुए सगन्न भूमिवालों में उर्वरक, पम्पो और ग्रिथक पैदावार वाली किस्मों से हुआ फायदा अलरता है। १९५६ में शाहादा ताल्लुके में कोई ट्रेक्टर नहीं था। १९६७ तक वहाँ १५० थे जो चढ़कर १९७१ में ३०० हो गये। उन समय सारे महाराष्ट्र में (२३५ ताल्लुके) लगभग २००० ट्रेक्टर थे। इस इलाके के उपजाऊ होने के बावजूद कुछ लोगो पर उनके हिस्से से ज्यादा गरीबी का बोझ लदा है। ये हैं इलाके के भूमिहीन—ग्रथिवतर हरिजन और आदिवासी। शाहादा ताल्लुके में ४० प्रतिशत और तलोदा में ७५ प्रतिशत लोग आदिवासी हैं। महाराष्ट्र के दल क्षेत्र के पाकिशान आदिवासी भील हैं। केन्द्र और राज्य सरकारों के ऊँचे

विचारो और योजनाओं के बावजूद किसी हरिजन के साथ पशुवृत् व्यवहार फिर जाने की रोज कम से कम एक खबर छपती है। आदिवासियों के शोषण में भी कोई धमी नहीं हुई है, हालांकि उनका हाना प्रचार नहीं होता।

आदिवासियों की ग्रथिक दुर्दशा बहुधा दोहराये जाने वाले नारे 'विधिना में एवना' पर एक सूक व्यंग है। शाहादा इलाके में बेवेल लगभग ५० प्रतिशत के पास जमीन है। बाकी के लिए है—ठीन महीने दफर-उधर जाकर मजदूरी करना, पसल बाटना और शोष कर्ष छोटे-मोटे काम करना या घनी भूमिवानों के यहाँ साहादा टेके पर पदेन और मेहनत के काम। १९७६ में अब ज्यों में तब तब अरबों-फिरते भीनों को जमीनें दी। २५ गांव बाद जब सरकारी धरनों की सट सभभ में धारा कि वे जमीनें हस्तांतरित हो रही हैं तो आदिवासियों की जमीन की परीक्ष-बिनी पर रोर लगा दी गयी। स्वर्नत्रता के बाद जमीन पर लगी ये रोक हटा ली गई लेकिन जमीन के गारे में

→ विज्ञापक की धनुमति लेता तब भी अकरी रहा । तब से इस नियम के बावजूद भीलों की गरीबी में उल्लेख्यतः प्रतिकूल शक्तों पर से अन्तर्गत विपरीत स्वतंत्र के लिए मजबूर कर दिया, आलापूर से १९४४ से ४० के बीच यह प्रस्तावों के दौरान ।

ऐसे कई मामलों में जमीन का भीत मानिक उस पर सेनी तो बचना देहा पर उसे महाजन की पत्नी का अधिपत्य भाग तब तक देने रहता था जब तक वह उसका कर्ज नहीं चुका देता । कही-कही तो सारी जमीन पर महाजन का कब्जा हो गया और ऐसे में जमीन के पट्टे के कानून को महाजन के फायदे के लिए उलटा कर दिया जाता है । इस कानून के धनुमत्तर बिगो भी पट्टेदार द्वारा यह शिता मन्त्रे पर कि वह कई वर्षों से उस पर सेनी कर रहा है, जमीन पर बच्चा हो जाता है । जहाँ भी महाजन ने बंधन रखी जमीन पर सेनी करना शुरू कर दिया वहाँ इस तरह अपना कब्जा हो जाता है ।

कुल मिला कर महाारा घोर तरोटा में बोई ५० से ६० प्रतिशत परिवार अधिहीन हैं । उनके लिए तो जैसा कि एक हरजिन बनि ने हान ही में लिखा है "किंचित गरीबों ही खसकी खूबो जमीन है" ।

दो वर्ष पहले महाारा घोर तरोटा में भूमिहीनता पर हुए एक सर्वेक्षण के बाद फारिबानी नेता अधिपति अन्तराल में जम्हई में एक सभा बुलाई, जिसका उद्देश्य था— भूमिहीनों को संगठित करने उनकी रक्षा करना में सादरी तरोटा घोर महाजनता बुलाना । इनमें कार्य के से केर जलपय घोर 'सात दिनात' लक्ष सभों राजनैतिक क्लो ने भाग लिया ।

इस सभा में बायदे तो हुए पर बोई क्रियात्मक परिणाम द्योगे नहीं दिखता । केजिन कन्वई के फार कानिजारी युक्त यह यलकर कि सभा परिकर्षन के लिए महाारा को उनकी ही उपयुक्त जगह थी जिनकी कि बोई घोर, बन्दरनिट महाारा के साथ ही लिए । उन्होंने महाारा के सान कनी के साथ भिन्न कर सलुका मोर्बा, गडिज दिना । क्रिपरी परिणति 'धमिक सगणन' में हुई ।

उनके पहले मसियान को बोई माटवीय सक्ताता को धिनी नहीं लेजिन उसने उन्हें स्थानीय तांगों घोर स्थानीय समस्यारो के परिचित करा दिया । मार्च '७२ के चुनावों में उन्होंने लोकतन्त्रीय पद्धति घोर गरीबों का उद्धार करने में उनकी विकलता के विलास प्रचार किया । उन्होंने गरीबों से कहा कि अपने मतदान-पत्र फाड़ दें । बोदे ही लोगों ने यह किया, कुछ इस कारण से कि लोग स्थानीय राजनैतिक नेताओं से इतने के घोर कुछ ही यह मसियान समझ में नहीं थाया । लेकिन कानून, जो सामान्यतया ४५ से ६० प्रतिशत तक होता था, गिरकर ३२ प्रतिशत रह गया ।

गात्र में सगणार होने वाली बैठकों से सगणन ने एक 'लक्षण सडक' की शुरुआत की । इनके बाद तरण सडक के तरखा की



दुनिया जहाँ घनी घोर गरीबों को पलकर विपरीत प्रश्न बन गये हैं ।

शक्ति को आधार बना कर सगणन 'प्राथम्य स्थानीय' लोडिंग के लिए संघारी करने गया जब सगणन डेके पर काम करने वाले मजदूर 'मानदार' बने जाते हैं या दुखरा देने जाते हैं । सारदारो को एक सविड ने मसियान को धानते मागे दों । धमिक मेहनताना घोर सगणन रूप से मजदूरी तप करने का अधिपति । दोनों तांगुको के ३०० गरीबों में से ४५ से ५० गावों में मार्च पूरी न होने पर हाथपाव रही । कुछ दिनी बाद सगणने को दसवीं भूक हुई । कानचीन की भूधमन भी तब ही शुरू हो गई जब फारिज तांग धानी दुर्गिमी से उबर कर मजदूरों के साथ जमीन पर बैठे । "पहली बार बराबर से

इस तरह की वागचीत हुई, यह सचने महलपूले बात थी । हमे उनके केहरो पर खुशी दिखाई दी क्योंकि पहली बार वे अपने मेहनताने की बात कर सके थे" । सगणन का दावा है कि इन हलगतों से घोर इस वर्ष फिर उनकी पुनरावृत्ति से, मेहनताने २५ से ५० प्रतिशत तक बढ़े है, साप्ताहिक घुट्टियों घोर सात में मपवेदन के ३० दिन की घुट्टी मिलनी है । जिन सडें भूमिवालो से मीने बात थी उन्होंने धावेन के साथ सगणन के धन्य वाचों की तरह इन तब्यों को भी गलत बताया ।

प्रदर्शनों की घुलता में सगणन ने अपना पहला प्रदर्शन अगस्त '७२ में आयोजित किया, हरेक प्रदर्शन में कई हजार लोगों ने भाग लिया । इसमें सारदारों से धमकान का सामना करने के लिए अधिच 'राहुन-नाचों' की माग की गई, रोजगार की अधिच सुविधाएँ मांगी गईं । लगभग बने सा रहे सभ का यह तीसरा साल था घोर महााराष्ट्र में तो इनके जैसा दासण समय पहले कभी नहीं थाया था । सारे महााराष्ट्र में इस तरह के प्रदर्शन हो रहे थे । अचरत में मिले इन राहुन कावों, घिट्टी तांके के सेकद सिचाई योजनाओं के विचार तब, के जिना मूके घोर पनाज नष्ट होने से बड़ी सख्या में लोग मरते ।

संगठन का सबसे चानिजारी अधिपयान निम्बर '७२ में प्रारम्भ हुआ । तीन माह के समय में सगणन ने ४००० एक्ड जमीन महाजन के कब्जे से वापस ले लेने का दावा किया है । जहाँ उनको रोगा सगा वि बजें भी सदापनी ही चुकी है वहाँ उन्होंने पुनिच को गुलना देने के बाद वेदतल किये गये जमीनने मूल मानिक की घोर से फलन पाट नी । मानिक के फाम कानून का फायदा उठाने का बोई तरोटा घट्टी का कने कि अधि-कांज रेंडन जिना जिना गरीबों के हुआ था घोर दल तरह जमीन फिर से अपने मूल फालिक के वापस की गई । इनी तरह धनुमत्तर में वन विभाग के धीमे विकास कार्यक्रम के कारण केफार घरी जमीन में सेनी करने का काम उठाया गया । वेरगन्ती मिटाने में अग्रदं हुए थे घोर फिर इस नवी सेनी से

गिरफ्तारियां हुईं। इन दोनों मामलों में प्रचार भी काफी हुआ, जिससे भ्रान्दोलन की ताकत बढ़ी। संगठन की धारणा है कि वे काफी घागे बढ़े हैं। संगठन के इन दावों का भी उन मानिकों ने खंडन किया जिससे मैंने वातचीत की। अब संगठन ने इस फिर से कच्चा की गई जमीन पर खेतों के लिए बैल खरीदने और ग्राम्य चीजें जुटाने के लिए बैंकों से ऋण लेने में मदद की। एक गांव में दुकानदारों के मन्दी के समय प्रताप खरीदने और तेजी के समय बेचने के हुचक्र को तोड़ने के लिए एक दुकान भी खोली गई।

अब तक बैबल एक गांव में हाई-स्कुल शुरू करने का प्रयास सफल हुआ है। वह यहा दो माह से चल रहा है। श्रमिक संगठन में धांधल शूद्धता का आग्रह रिला। सावद यह मानिकों की दंग मान्यता के जवाब में है कि 'ये धांधलवासी मट्ट्यावासी लोग नहीं हैं—अगली कठिनाई तो यही है। ये धांधलगी हैं और अत्यधिक शराबपौर हैं।' हर गांव में तरल मण्डल से लोगों की शराब और जुआखोरी छुड़वाने के लिए सबों द्वारा सम-भ्राया है, मनाया है और मही मानने पर उनके गिराफ घटना देने की धमकी का भी इन्ते-

मंदिह नहीं है। गंगटन के कार्यकर्ता के साथ मैं सहादा के निवट एक गांव से १।४ मील के अघेरे रास्ते के बाद नदी पार करते एक बड़े रेतीले तट पर पहुंचा संगठन के लोगों ने नारा लगाया 'श्रमिक संगठन ...'। याने बनाने के लिए जगह-जगह जत रही घाग के पास से पहले एक घीमा 'श्रमिक संगठन जिन्दाबाद' उत्तर में मुनाई पड़ा। दूसरी बार 'जिन्दाबाद' काठी बुलन्द था। जब हम लोग गिरिब में गये तो कई लोग धमिबाद करते हुए घायि और गिरिब के लगभग एक घंटे तक शराबो का धादान-प्रदान करते रहे।

३०० मील, घुमकण्ड मन्दीरों का यह गिरिब रोमोचर तो पा पर रहा टण्ड थी। सबों से बचाव के लिए बिगो के पास एक बम्बल से ज्यादा बुल्ल नहीं था। रात में जतनी हुई घागे मन्दी पर गईं। भोर के समय तट पर निकुटी-गिमटी से घाहुँरिया १६ बी मदी के धमिरिकन इण्डियनों के बिगो बिच की पार रिला रही थी—निरराय और फनेले।



समय करते हैं, "मोत्रना का समाचारपत्रों ने गलत धर्म लगाया है।" फसल की रसाई नई बाग नहीं है। हरिक को धरनी-धरनी जायदाद की रक्षा करने पड़ती है। हम धार्मिकियों की जमीन धीनवा करते हैं, यह बहना गरी नहीं है।" उनका बहना है कि धनी लोग गरीबों के खिलाफ सर्जिन हो रहे हैं यह गरी नहीं है। पारो धोर बीस मील के इलाके में बड़े लोगों के पास जमीनें हैं। छोटा भूमिदान धरना निजी चीनीदार नहीं रख सकता..."

मनसनी तो सचमुच में इस बात से फंसी है कि सारी दुनिया में ठीक इस तरह की योजना बनी नहीं है।

".....महाराष्ट्र में बान्द्र के धरतारण फल की सुरक्षा समितियों का विधान है। कभी-कभी धाम पचायत यह काम उठाती हैं, कभी यह गैरसरकारी होता है, कभी सर-कार के साथ मिला जुग, धारभयकन होने पर बन्दूक के साइंस की उन्हें मिलने है। यह कोई धनीसी बात नहीं है।" (मुझे एक पुनिष्ठ अधिकारी ने यह बताया था कि ऐसे मामलों में बन्दूक का साइंस नहीं दिना जाता) "इसमें केतुना है ही क्या? हम तो बेराबन्दी कर रहे हैं, धोर बचरद निकल न पायें इतिवत्...धोर धरनी लाकल बटोर रहे है।"

"क्या फगत की बोरी बड़ रही है?"

"यह रोबमर्रा की बाग है। ऐसा भी होगा है, जिसमें २००-४०० तीग फगत बाटते हैं जो धुन धरनी तीग करते हैं धारिकानी भी, वे फगत चुराने के लिए धन्य बगह नहीं आने। वे धरना काम करते हैं। उननी फगतों की सुरक्षा भी दम योजना से होगी।"

एक दूसरे भूमिगत में मुझे बताया "बोरिसा समरिन बग से ही रही है। इनकी रोबधाम के लिए जिसको धोर भूमिगतों का एक प्रजार का सपटन होना चाहिए...वही १०० के० फरिन का सुमार है...वही जलना कि बीस दम बोरियो का सपटन कर रहा है लेकिन मिसाल के लिए मेरी बचाम की फगत एफ बार १५० लोगों ने मुझे। इने धामन को इन बोरी की लकर दी। एरट बर्न बरार्दी।" लेकिन उनसे

भूमिदानों द्वारा प्रस्तावित सशस्त्र फसल वचाव सेना एक नजर में

प्रारम्भिक खर्च	रपयों में
१ जीर	३०,०००
१२ मोटर साइकिल	८५,०००
१००० घोडे	२००,०००
१२० बन्दूकें	१०८,०००
कुल	५२३,०००

मासिक ध्यय	
१२०० चीनीदार (१००० प्रति माह वेतन)	१०८,०००
१०० हवलदार (१५०० प्रति माह वेतन)	१५,०००
१२ कमाण्डर (२५०० प्रति माह वेतन)	३,०००
६ क्लर्क (१५०० प्रति माह वेतन)	९,०००
१०० घोडों के रखरखाव का खर्च	६,०००
१२ मोटर साइकिलों के रखरखाव का खर्च	२,५००
१ मेजर	५००
१ जीप के रखरखाव का खर्च	१,०००
कुल	१५६,५००

प्रति माह धरतारों में इस्तेमाल किने जाने वाले गोदरा बाकद का खर्च	१,५००
मनसनी खर्च	१,७३८,५००
पिगाबट	१०५,०००
कुल	१,८८३,५००

प्रारम्भिक खर्च के लिए जुटाई गई राशि बड़े हुए उत्पत्तन द्वारा तीन वर्षों में इन तरह से वसूल की जाएगी	
३०,००० एकड़ जमीन जिस पर कन्हा लगा है	
३० प्रति एकड़ के दियाम ले	२१,००,०००
५५,००० एकड़ जमीन जिस पर धान्य मिचित पमलें लगती हैं, ५० प्रति एकड़ के दियाम ले	२२५,०००
५००,००० एकड़ धरनी जमीन ५० प्रति एकड़ के दियाम ले	१,९००,०००
कुल	२,०२५,०००

घृणा के परस्पर दो विपरीत ध्रुव

खेत में काम कर रहे भगवान से मिलने

-स्वामी चिदानन्द

यह यन्त्रा एक धनीश्री श्रीर नवीन यात्रा है। उत्तरालम्ब मे तीर्थस्थल श्रीर मन्दिर मे बसे हुए मूर्तिमत्त भगवान् के दर्शन के वास्ते हर साल लाखों की सख्या मे यात्री घाते हैं। गणेशी, समुनोत्री, तुणनाथ, बडी-नाथ, वेदारनाथ, हेमकुण्ड सोनपाल के दर्शनो के वास्ते घाते हैं श्रीर उनको सेवा-युवा के रूप मे परिचय के रूप मे श्रीर अंत घातने के रूप मे, धानी धन्डी के फूल चढाने है। यह प्रथा तात्पन्दीय के चलती आयी है। परन्तु उत्तरालम्ब के पर्वतीय क्षेत्र के १०० दिन के इस पर्वटन की धानी एव निर्दिष्टता है। जिम यात्रा का मैंने धनी भयान विषा है वह भवल हेतु होनी है, लेकिन जित विषाद स्वस्थ मे धनीय प्रवेश के निवासी है, उन तापान्य मे उपस्थित ओ भगवान् विचरता है चवता-किरता है उस प्रभु के वहा जाकर दर्शन करने के लिए यह यात्रा है। उनकी सेवा मे श्रीर उनके द्विज मे हमारी धाने तामप की, धाने धैम की श्रीर धानी सदाभक्ता प्रभु बनने को क्यथा है। यह व जन्म-किरता भगवान् धैम मे काम कर रहा है, जलन मे धान-यत्री के लिए जा रहा है, कैंको मे सिवाई कर रहा है। हल के पीछे है। भाषा को चराने गया है। इस तरह प्रभु के मानक रूप मे धानर मे न रहने हुए धाने-किरते सर्वत्र विराट् मूलि के दर्शन, सेवा द्वारा, धमयदान द्वारा, विद्या के दान द्वारा, सब प्रकार के दान द्वारा उनके चरणो मे, उनके दरवार के अंत घाते हुए एव सर्व दिविक तर्ह को पूजा यह पदयात्रा शुरू कर रही है। इसमे मैं भारत बर्द के लिए एक बहुत भाविक धर्म देना हूँ। यह यात्रा सबसे लिए प्रेरणादायी है श्रीर भारतवर्ष के सभी प्रदेशो मे, हर एक प्राय मे, बने-बने मे इस प्रकार के यात्रीगी सेवा के लिए निस्सर्वाभक्ता को धनना कर जनता को सेवा ही भाग्य उद्देश्य बनाने धानर लोग ऐसी यात्रा को धनयार्थ, जिमते भगवन्तर्ष को जनता का कल्याण जनता के द्वारा ही है। किसी बालर के द्वारा, किसी एव विभाग के द्वारा जनता का कल्याण नहीं हो सकता है। मैं भारतीय सभ्यता का महान धन्देन इन देश के धानर जनता को सिद्धि, १०० दिन को इस यात्रा मे देता हूँ।

सात बरके जब सुन्दरनाथ की घण्टा

पीरट्ट (पहाडो पर पीठ पर सोभा डोले का बडा घेला) लेकर यात्रा मे निकले हैं तो सर्वो-दय के कार्यक्रम के प्रस्तावका बुद्धश्रीर कार्यक्रम के बारे मे भी उनसे वार्ता कराएगा हूँ। जब प्राय पर्वतीय जनता मे निर्णय होने धाम-स्वराम्य ममारा बनाने, धरदारन मुक्ति, धाम शान्ति भवन, नूयिदारन, धारायन्दी धनयन-मुनि-सञ्चलन वन धमयदा की सुरक्षा, स्त्री-गर्भिन जागरण धीर धल्लुधवा निगरण के बारे मे कह ना स्वामी रामनीय जी का धार्यार्थिक मन्देश भी नैतयै। रामवादाकाह का धानरमप वेदान्त का मन्देश जिमके सब नित्य नवीन धाराए ह्य धीर धार्यार्थक जवता कुटी हुई है, जो मनुष्य-र के बीच भय दूर करता है। सुतयै। धैम धीर एवाभावना के द्वारा निर्भयता का मन्देश दे। इस वर्ष स्वामी रामनीय की जन्म जन्मावडी है इसलिए धानी पदयात्रा के दौरान राम के नाम की घोषणा करने धीर जनता सन्देश फैलाने का धायको पूरा-पूरा धर्मधार है।

मैं इससे साथ दो धीर बात जोड देना हूँ। बहुत मना इन शरीर के धानर विधाने के बार मुझे यह प्रतीक होता है कि मानव के लिए सार्वत्रिक स्वास्थ्य एव समुल्ल निर्भि है, शर्मोधि वा बुद्ध शान्त की करना है। बनता है यह शरीर के द्वारा करता है, बनता है। यही एक धन्य भगवान् मे धानर को दिना है। इसी पन्थ से काम लेकर हमे धाने जीवन का बर्द करना है। इसको पुराधा धीर दण्डा स्वास्थ्य हमे ठीक रखता है।

'धर्मार्थिकमधोधातार सारोय इद्रमुत-मय' ऐसी बहाराह है। धारोय बनाने का मुक्त स्थान होता है हर एक ध्यनिक के जीवन मे, लेकिन मे यह देना हूँ कि शरीर का स्वास्थ्य धाने धाय नहीं बनता है, अंत कि बरतावी धोषमे मे जलन मे धार्यिमा का जायी है। लीगो मे भावना जागुनि रखनी है कि स्वस्थ रहना तुम्हारा एक कर्तव्य है।

जिस तरह हर ध्यनिक का मागा-विना के प्रति, पदोस के प्रति कर्तव्य होता है, हर एक ध्यनिक का धाने प्रति भी एक कर्तव्य है धीर। इतमे मुक्त यह है कि भगवान् ने जो शरीर हमे दिना है उसे धान्यी तरह तनुधन बनाना। सरल स्वास्थ्य विज्ञान उनको देना है क्यकि हम देवने हैं नि जहा पर धमड है, सतिधर है, योग स्वास्थ्य का व ल भी नहीं जानते है। छाटी भी जान है। धान की धूमो धानय करने के लिए हवा करते है। लीगो का इतना भी ज्ञान नहीं कि कच्को को उमते दूर रखें। दिवका बण्को की धाय मे चला जाता है तो जीवन भर के लिए धील खराब हो जाती है। छोटी-छोटी धीज बडा रूप धारण करे लेनी है। सरल स्वास्थ्य विज्ञान देखर इसे टाका जा सकता है। बीमार होकर ठीक होना एक धान है, लेकिन बीमार ही नहीं होना है, यह जगता है। इसी तरह बुद्ध योग के बारे मे लोगो म जो मलड धारणा है, यह मिटानी है। इस योग का इलाज ही सकता है। रोगी मे मपरत नहीं करना धीर उसके साथ दया का चरता बनना।

धीर बरनी शुभ काम जो है, वह स्वयं धानीवा देता है। यही धानीवा स्वस्थ है। शुभ भावना धा गयो तो भयान का धानीवा स्वस्थयवेक है। भगवान का धानीवा जब मानव के ऊपर धाय है तब जाकर उसके दिल मे शुभ भावना धानी है, शुभ कार्य करने के लिए प्रेरणा धानी है। सकल जनता तात्विक होता है। प्रभु के दरवार में मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि इन पदयात्रियों का सार्वत्रिक स्वास्थ्य बना रहे। जिनकी भी बडिदादर्शो धायै, बडिदादर्शो जन्के स्वास्थ्य को धीर भी बडानी जायें। जनता तपाम रास्ता निश्चिन ही, बाधा से रक्षित ही तार्कि १०० दिन के समय में वे जनता का उपकार, भलाई धीर सेवा पर्वण्य का के कर सके, उनी में हम जायें।

चालीस हजार उपवास-दान कब मिलेंगे ?

विनोबा

विनोबा ने प्रदेश गुरद्वार को एक समय का भोजन छोड़ना शुरू किया है। इससे पहले उन्होंने गण किया था कि वे हर महीने ग्यारह घोर पन्चमी तारीख को पांच दिन का उपवास रखेंगे घोर दस तक महीने में एक दिन के भोजन की जो वचन होंगी वह सब सेवा सप को उनका काम चलाने के लिए दान स्वरूप देंगे। दस वर्ष अपने उपवास-दान की प्रथम रात ३६ रातों के सबसे सोना सप को भेंट कर चुके थे। अब इन सफल में जुड़े दो समय के नये उपवासों से होने वाली प्रतिरिक्ता बचत की राशि भी सब सेवा सप का उनकी घोर से दी जा चुकी है। सर्व सेवा सप के प्रधान कार्यालय (गोपुरी) को विनोबा विनाम से मिली राशियों के धनुवार विनोबा के प्रासाहन पर देश में बड़े कार्यकर्ता व गर्वोदय-श्रेणी उपवास दान का संकल्प ले रहे हैं। प्रधान कार्यालय ने सूचना दी है कि उपवास-दान की रकम जिला प. प्रदेश सर्वोदय मंडल में जमा करने के बदले सीधे सर्व सेवा सप गोपुरी वर्षा (महाराष्ट्र) ही भेजी जाये।



हर मनुष्य महीने में एक उपवास करे। प्राधा-प्राधा उपवास दो दिन में करे अपना पूरा एक दिन उपवास करे। इस प्रकार से बौध्दिनी की जाये, तो प्रकृति वर्षा में हजार होगे। इनकी संस्मार्ण यहाँ है तो इनका काम यहाँ प्रागानी से हो सकता है।

मैंने पूछा था प्रबन्ध समिति में, कितना समय लगेगा ५० हजार उपवास-दान प्राप्त करने में ? उन लोगों ने पांच उगलियाँ दिखायीं। मुझे लगा, पांच महीने बहते होंगे। उन्होंने कहा, 'पांच साल' मैंने कहा, 'पांच साल में तो भयमान जाने क्या-क्या होगा।' धारिवर उन्होंने एक साल कबूल किया। एक साल में डेढ़ महीना तो निकल गया।

विचार की पहुँच कितनी दूर ?

यह अपने भ्रातृसैन्य का महत्व का पहलू है ५० हजार उपवास। नम्बर दो, अपने जो धारिवर हैं, पत्रिकाएँ उनको प्राहक बनाना। धामी दो धामों पर और दें।

मात ऐसी है, आप लोग सोच रहे हैं कि क्विल भारत में लोक सेवक सप का काम करें। हमने यह किया कि सर्व सेवा सप ही लोक सेवक सप है। तो इन लोगों को उनका धा गया। लेकिन आपका कोई विचार एकदम कितने लोग ग्रहण करते हैं, जलते मान होगा कि भारत पर आपका प्रार पड़ेगा या नहीं ? मान लीजिए ५० हजार उपवास की बात जाहिर की घोर वह

दो महीने में पूरा हो गया तो धारावा भारत पर धसर है घोर उसके डारः प्राप काम कर सकते हैं। परन्तु आपके भ्रातृसैन्य का भारत पर एकदम धसर नहीं होगा, इतने छोटे से भ्रातृसैन्य का भी धसर नहीं होता तो बड़ा काम क्या करेगा प्राप ?

गांधी जी ने प्रथम चौबीस घंटे का उपवास जाहिर किया। भारत में हजारों लोगों ने वह उपवास किया। २५ घंटा उपवास यानी प्राज शाम को ६ बजे ताया तो दूसरे दिन शाम को ६ बजे भोजन करना। वास्तव में वह प्राड-दस घंटे का ही उपवास होता है। नाम दिया उसे २५ घंटे का उपवास। मैंने उनसे पूछा था, इसका उद्देश्य क्या ? उन्होंने कहा, 'उद्देश्य यह है कि भारत में कितने लोग प्रावाच देंगे इसका, इस पर से अपना भ्रातृसैन्य व्यापक होगा कि नहीं होगा, इसका भ्रातृसैन्य सचता है।'

५५ करोड़ का भारत। ३५० जिले हैं। उनमें से १०० जिले छोड़ दिये जायें, २५० जिले लीजिये। हर जिले में उपवास करने वाले कितने होंगे प्राहिए ५० हजार के स्थान से ? २६०। वीन सा कठिन काम है ? मैंने इन लोगों से (सर्व सेवा सप) पूछा था, भारत में ६ हजार प्रसन्न हैं। कितने प्रावशों के कार्यस कमिटी होगी ? जवाब मिला लगभग हर प्रसन्न में। कितने प्रसन्नो में सर्वोदय-मंडल है ? तो २०० प्रसन्नो में है,

राजा बोले सेवा हिते...

ऐसा उत्तर मिला। तो प्राप लोक सेवक सप का काम कैसे करेंगे।

बाबा ने धामी दाडी साफ कर ली है। पहले दाड़ी काफी भी बड़ी। पंडित नेहरू से एक बार मान हो रही थी। मैंने कहा, 'कलानी जगह नाहक पचाने धारमी को जेल में डाला है।' उन्होंने कहा, 'उसको जेल से मुक्त करने के लिए मैं हनुम दे चुका हूँ। दो-तीन महीने हो गये। प्रमल नहीं हो रहा है। ऐसी नीतिरमाही है।' मैंने उनको मराठी बहावन सुनाई, 'राजा बोले दब्य हावले। मिया बोले दाड़ी हावले।' राजा बोलता है तो सेवा हितनी है। मिया बोलता है तो दाड़ी हितनी है, बाबा बोलता है तो दाड़ी हितनी है घोर पंडित नेहरू बोले तो बुद्ध भी न हिते।—वैसे प्राज हमने विचार जाहिर किया। प्रापके डेढ़ लाख प्रामदानी गाव हैं। तो बाबा का विचार पड़का है इन डेढ़ लाख गावों में ?

(शेष पृष्ठ १५ पर)

वीची से बड़ी बुलाक

निर्मलचन्द्र

जिला भागे रहा, इन बानूजों के कार्यान्वयन में उतना ही पीछे। यहाँ सीलिंग-एक्ट से जमीन निजाल कर भूमिहीनों के बीच वितरित नहीं की जा सकी। लाखों एकड़ गैरसबका जमीन पर भूमिवालों ने बचका कर लिया, पर सब तक सरकार जमीन नहीं बांट सकी। भूमिवालों की चासगीन जमीन के अधिधार देने का एकमात्र काम किसी अन्न में पूरा हुआ है। सरकार की धोर से तो यह दावा किया जाना है कि यह नाम किसी हुरतक गाँव राज्य में पूरा हो गया, लेकिन गाँवों में जानकर देवाने से निराशा होती है। सब भी पूरे-पूरे हरिजन आदिवासियों के ऐसे गाँव मिलने हैं, जहाँ जनता धरपर अपनी जमीन पर नहीं है। जहाँ पछी दिव भी गये हैं, वहाँ मात्र बानूजी सामाज्युती की गयी है।

बासगीत या कबूतर के दरये

इन बड़े हुए पक्षी की छात्र-गीन करने से पता लगता है कि बड़े वैसेना पर एक जिनमन, सारा जिनमन जमीन के पर्वों दिने गये हैं। आरम्भ हीना है—ये पर के पर्वों हैं या कबूतरों के दरये। एक पर मे दो सार्दें विधाने हुमा इनके चारों ओर माने-जाने के रखने के लिए पूर वगै-रूप का पर बाँटिए। गाँवों में विज्ञान नौ-सत्ता पर बताने हैं। इनकी सिट्टी की दीवानों का नीके का हिस्सा दोला दो-हाथ रसता बाँटिए, फिर इनकी धोवनो के लिए दो-हाथ ओर जगद बाँटिए। सब यह है कि ६० वगै-जम मे सिर्फ एक पर सदा होना है। निजाल का पर है, एक बचामन तो बाँटिए ही। रसोई बहा बतानेया? फिर एक प्रांगन बाँटिए। इसने अधिधिका माय, बहिष्वा ओर ककरी के नार-मुट्टे की जमीन तो बाँटिए। सरकार के सब १३० वगै-जम की म्युनिसिपल सोमा निर्धारित की है। इनके पर, धानन तो ही जलवा, लेकिन धाने-जाने के राक्षने की समझा करी रह जायेगी। सबसे अधिक चिन्ता का प्रांगन तो सब उन लोगों के लिए उत्पत्ति है जिनको पट्टेन एक वा डेड रिजमन का पर्वों रिया बत चुका है। जिन भू-कामियों की जमीन पर बासगीत का

पर्वों दिया गया, ये विचारों निजान उनके कोष भाजन बन रहे हैं। घर के बाहर माने-जाने का रास्ता नहीं। बच्चों के टट्टी-पेसाब में स्थान की बहिर्नाई है। साधार होकर पर छात्रने को वाध्य होने की नौयन धानी है।

बासगीत के पर्वों का काम १९६० के बाद बडे पंमाने पर मूक हुमा था। इसके लिए अधिधान चलाने गये, इस अधिधारपंता में काफी सुट्टि-पुर्ण काम हुए हैं। मिनिस्टर माहाब के हाथ से पर्वों बाँटने की तारीख तय हुई। बंमंधारियों का कोटा निर्धारित हो गया। गाँवों मे कहर जात है—घर-कचर दिवहा, कलाट्टी सिन्दूर, पछी अरितीय हुमा। गति के साथ अपनी टोक नहीं रही। बुद्ध का सतना नम्बर डीक है तो सतना मतल ओर जलरा डीक है तो सतना नम्बर मतल। खैर यह भून तो बुद्ध कम हुई है पर बौद्धों तो प्राय शेष-पुर्ण देती जानी है।

दो पैसे पर बीस रुपया

करने अधिक कष्ट यह देना कर होता है कि तीर-नार वगै पर्वों मिले हो गये लेकिन यह सब कर खरीर नहीं कटा गये। बंद बंमंधारियों को भी यह मासूम नहीं कि उन्हें इस सम्बन्ध में करण करना बाँटिए।

पहले के बाटे गये पर्वों में बासगीत जमीन कातो को दर-रसरी हुक दी गयी। इसके अनुसार बासगीत जमीन का पर्वों पाने बाने हिलानो की, भूमिवालों को मासुमुसारी भूधानो की। पर बाद में बानूज में ससोधन कर बासगीत के पर्वों में पूर्ण रसनी हुक-प्रदान किया गया तथा भूमिवालों की मुभाकजा देने का प्रावधान किया गया। बंमंजारों यह नही समझ पाये हैं कि इन ससोधन के पूर्व की विपत्ति मे उन्हें सब बचत करना है।

अधिकारों विज्ञानो को तो यह मासूम भी नहीं कि उनको रसोद भी कटानी है। रसोद काटने के लिए बीस-बीस रुपये रिक्शन की कमदिन भी जाती है। पर्वों पर लिखा है—मासुमुसारी दो पैसे मात्र, पर पूर बीस रुपये। दुल्हन मे बनी बुलाक!

भूमिहीनों को सामगीन के पर्वों दिने गये। एक पवित्र काम हुमा। विहार में १९६० के बाद जो भी राजन बन गये हुए, उन्होंने इन पर्वों में अपनी रवि दियायी। राष्ट्रपति धामन-जाल में राज्यपाल के परा-मर्शों की टी० पी० सिंह (जुमियर) प्राई० सी० एस० के समय मे सबसे अधिक पर्वों बाँटे गये। पर बडे अधिधारियों की सरोपडा ओर ओर सब-अभाव धरती ठक नहीं पहुच पाती। वाये बाँते उनकी सारो से ओमल है? यदि सर-बार समय से ध्यान नहीं देयो तो पर्वों के बाद भी मानवीय अधिधार के लिए विषा गया यह सामान्य काम भी सम्भव हो जायगा।

बहुत बडा प्रश्न नहीं है। पौडों की मुन्नेदी से पीछे की मुल्ले सुधारी जा सकनी है। १९७३ का यह वर्ष भूमि सुधार वर्ष माना गया। उठे-बडे सधन लिए गये, लेकिन साक-सना चितने प्रतिजन मिली? प्रथम ओर दूसरे दवों की बात तो दूर रही, उत्तीरों मानकर धाधा या तिहाई काम भी क्या किसी जिनके मे पूरा हो सका? क्या विहार सरकार इस विमलता का मूल्यानन करने को प्रस्तुत है? नवम्बर में धोँगोन प्रतिजन सवाल बसुल करना था। दिसम्बर मे तो इनी का पूरा अधिधान मुक होया। मुनि-मुदबदी भूमिवालों की निजाट्टी मासानी मे नहीं तोहने वाली है। लेकिन जिन बेजमीन लोगों को बासगीत के पर्वों सब तक नहीं मिल पाये हैं, उनको भी पर्वों देने का काम धरि पूरा हो जाय तो किसी अन्न में भूमि सुधार वर्ष के दावे को एक मार्फतमा मिट हो पायेगी।

मतदाता शिक्षण अभियान के बुनियादी लक्ष्य

१. इस अभियान का एकमात्र उद्देश्य यह है कि चुनाव गही घोर स्वतंत्रतापूर्वक संपन्न हो, जिन्को भी पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष विपक्ष में यह अभियान नहीं है।

२. मतदाता किस उम्मीदवार को अपना वोट दे इस बारे में इस अभियान में भाग लेने-वालों को कुछ गही कहना है। उनका एक-मात्र काम यह देखने का है कि मतदाता को स्वतंत्रतापूर्वक और बिना किसी दबाव के अपनी इच्छा के अनुसार वोट देने का अवसर मिले।

३. यह अभियान केवल मतदाता शिक्षण का अभियान नहीं है, बल्कि चुनाव सही, शुद्ध और बानूनी ढंग से होइ इस बात को सुरक्षित करने का प्रयत्न है। इसलिए इस अभियान में

भाग लेनेवाले इस बात की चौबीसी रखेंगे कि चुनाव के दौरान उम्मीदवारों की ओर से या पार्टियों की ओर से किसी प्रकार का भ्रष्टाचार, जोर जबरदस्ती या अनैतिक काम न हो।

४. मतदान के दिन मतदान केन्द्रों पर किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती या अनियमितता न हो और जो मतदाता जिसे अपना मन देना चाहे, वह निर्भयतापूर्वक दे सके इस बात की निगरानी के लिए अभियान की ओर से नव-जवानों की टुकड़ियां मतदान केन्द्रों पर विशेष सतर्कता बरतेंगी।

५. अभियान की ओर से किसी भी पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष में या विपक्ष में किसी प्रकार का प्रचार नहीं किया जायेगा। इस

मार्गों का पालन करते हुए सर्व-सामान्य तौर पर उम्मीदवारों में क्या गुण होने चाहिए और क्या भ्रष्टगुण नहीं होने चाहिए इस बारे में मतदाताओं का आवश्यक शिक्षण किया जायेगा।

६. जिन व्यक्तियों के खिलाफ किसी जाच कमीशन या समिति के द्वारा भ्रष्टाचार के या अपने सार्वजनिक पद का दुरुयोग करने के आरोप सिद्ध हो चुके होंगे ऐसे लोग अगर चुनाव में खड़े हो या सड़ें विद्ये जाएं तो उन्हें मतदाता मत न दें इसका प्रचार अभियान की ओर से किया जा सकेगा।

७. चुनाव संबंधी कानूनों और नियमों का उल्लंघन न हो इसको देखरेख अभियान की ओर से करने का प्रयत्न होगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

कदमे में लेना, बोगस वोटिंग आदि बतई नहीं होनी चाहिए। ये बातें होने का जिन मतदाता क्षेत्रों में अंदेशा हो वहां प्रजातंत्र प्रहरी दल कायम किये जाएं एव व मतदान के दिन इस विषय में पूरी सावधानी बरतें। कही बलप्रयोग की घटना होने लगे तो वहां सत्याग्रह किया जाय। उत्तर प्रदेश के कालेज के छात्रों का आवाहन किया जाय कि प्रजातंत्र की रक्षा के लिए वे एक माह के लिए अपना समय इस काम में दें। श्री जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, श्री सिद्धराज ढड्डा आदि इस काम लिए विद्यविद्यालयों में जायेंगे। वैसे ही अन्य स्वेच्छा संगठनों से कई सहायक मिलेंगे, जिन्हें इस काम में रचि है। नागरिकों में से भी कई व्यक्ति मिलेंगे। इन सबका मतदाता शिक्षण एवं प्रजातंत्रीकरण के इस कार्य के लिए आवाहन किया जाय।

जाहिर है इस काम में लगने वाले स्वयंसेवक किसी उम्मीदवार का या दल का न प्रचार करेंगे, न किसी दल या व्यक्ति के खिलाफ बोलेंगे। वे स्वयंसेवक सामान्य बसोटीया मतदाताओं को बतलायेंगे जिन पर परख कर मतदाता हर उम्मीदवार की

परीक्षा करें और इन कसोटियों पर खरे उतरने वाले उम्मीदवार को वोट दें। दलों की दलदल से भ्रष्ट बाहर निकल कर उम्मीदवारों को जाचना-परखना होगा, क्योंकि विभिन्न दलों के घोषणापत्रों में प्रथिकाश भाग समान हैं—भले ही शब्दवाली भिन्न हो। सभी समाजवाद (जनसभ, भारतीय समाजवाद की, भारतीय ज्ञानि दल, ट्रस्टीनिप की), गरीबी हटाने की, बेकारी मिटाने की बातें करते हैं। आखिर व्यक्ति ही दल बनाते हैं। यदि व्यक्ति सच्चरित्र, ईमानदार, पद का लाभ उठाकर अपनी संपत्ति न बढाने वाला, व्यक्ति लाभ के लिए दल न बदलने वाला, शांतिमय साधनों में विश्वास रखने वाला, शराब से मुक्त, जनसेवा में समय देने वाला रहे तो ही दल के प्रच्छेद उद्देश्य सफल होंगे। जो उम्मीदवार ऐसी बसोटीयों पर खरे नहीं उतरते हैं, उन्हें बदापि न वोट दिया जाय—वे चाहे जिस पक्ष के हो।

यह सब मतदाताओं को समझना होगा। राष्ट्र निता न कहा या कि लोक सेवक सभ का पहला काम मतदाता शिक्षण का है। यह नहीं हुआ। परिणाम सामने है। अतः मतदाताओं को जगाना होगा और वे अपने

पसन्द के व्यक्ति को मत मुक्तता से दे सकें ऐसा वातावरण कायम रखना होगा। इसलिए इसमें हर नागरिक को हिस्सा लेना चाहिए। स्वराज्य प्राप्ति से कम महत्व का यह कार्य नहीं। मतदाता भारत भाग्य विधाता है उसे उसकी ताकत भान बना देना होगा। तब ही प्रजातंत्र सफल होगा।

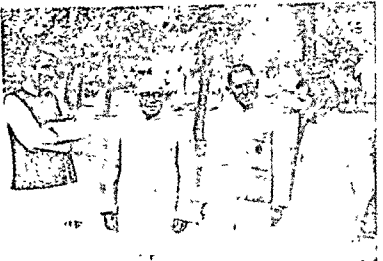
कृकवन ट्याक की ३० ग्रामसभाओं में से २० ग्राम सभाओं के लोगों का एक प्रति-क्षण शिविर नवम्बर के पहले सप्ताह में आयोजित किया गया, जिन में जिन के लाभचन्द वर्मा, विनय भाई, विनय कुमार, भानन्द स्वरूप शुक्ला, धनरा भाई, जवाहर लाल, सूर्य प्रसाद, मन्वी जिला सर्वोदय मठन ने भाग लिया। कृकवन ट्याक के शेष बचे हुए गावों में ऐसे ही प्रतिक्षण शिविर लगाने के लिए भ्रलस भाई व विनयकुमार एक पदयात्रा के माध्यम से तैयारी में जुटे हैं।

भूदान-यज्ञ, सोमवार, १० दिसम्बर, '७३

संसद सदस्य अपनी सुविधाओं का दुरुपयोग न करें

संसद सदस्यों द्वारा अपने ही बनाने वाले कानून को तोड़ने के विवाक सत्याग्रह के उद्देश्य से चले रामचन्द्र मेहरोत्रा दिल्ली पहुंच गये हैं। यहाँ वे सत्याग्रह से पहले संसद सदस्यों के घनावा बुद्धि जीवियों, साहित्यकारों, समाज-सेवियों आदि से भ्रमण-भ्रमण समूहों में मिलकर अपनी पदयात्रा का उद्देश्य स्पष्ट कर रहे हैं, एक बान्धव बन रहे हैं, जो सायद सत्याग्रह करने की जरूरत को ही मान्य कर दे। मेहरोत्रा अपने सापिनो के साथ १५ भ्रमण की टायबोरी में चले थे व भ्रमण ५ माह की पदयात्रा के बाद ५ नवम्बर को वे दिल्ली पहुंच गये थे। इस पदयात्रा टापी में दाहिने मे अग्र-अग्र पडावों पर धाम नोगो से चर्चा की, उन्हे समझाय कि जो दूसरे देश का कानून बनाते हैं, देश की चीजों को व्यवस्था रूप से रखने की जिम्मेदारी जिनके ऊपर है वह स्वयं अपने बनाये हुए कानून का नहीं तोड़ तो नहीं रहे हैं, अपनी जिम्मेदारी से भाग तो नहीं रहे हैं—इस की विचारणीय रायना जरूरी हो गया है। मेहरोत्रा ने बहुत से ऐसे पदयुक्तों से नेकत एक पहलू उठाया है, प्रतीक के रूप में।

संसद सदस्यों की दिल्ली में रहने के लिए भ्रमण, वीरन, लोकरो का कमरा आदि सुविधाएं मिलती हैं। रहन-रहन की सुविधाएं संसद सदस्य के ऊपर निर्भर करने वाली को भी दी जाती है। सदस्य का मेहमान भी इस में शामिल किया जाता है। लेकिन मेहमान को रखने के लिए संसद सदस्य को सूचना देनी पड़ती है। विचारोत्तर रखने की नहीं कोई बात नहीं है। लेकिन मेहरोत्रा का कहना है कि इन विधियों का वेबन १० प्रतिशत सदस्य ही पावन कर रहे हैं। मेहरोत्रा की दलील है कि यदि विचारोत्तर रखना जरूरी हो है तो संसद सदस्यों को कानून में संशोधन कर लेना चाहिए। जनप्रतिनिधियों का जीवन देश को बनाने के नजरिया होना चाहिए व उनको अपनी धीरे बनने में ध्यान नहीं होना चाहिए। दिल्ली में घाते के बाद मेहरोत्रा संसद की हाउसिंग-कमेटी के अध्यक्ष में मिल चुके हैं। अध्यक्ष ने धारागतन दिया है कि वे अतिरिक्त एक बैंक मुनरपेंगे जिसे



बायें से बायें हृषणकुमार विध, रघुचर दयाल मोदी, शेर खान, रामचन्द्र मेहरोत्रा

संसद सदस्यों के सामने इस सब को रखेंगे। अध्यक्ष ने एक संसद सदस्य की भी नियुक्ति की है जो अन्य सदस्यों से इस मामले में जानकीत मुक्त कर चुके हैं। इस संसद सदस्य श्री एम० एम० बनर्जी ने मेहरोत्रा से हुई अपनी बातचीत में खापी पडे मोटर गैरज तथा पेरनु तोड़ने के मामलों के बेहतर हलेशास के लिए जरूरत कर विचारोत्तरों का रखे जाने के मामले के मानवीय पहलू पर भी ध्यान देने बड़ा है। लेकिन साथ ही साथ भी बनर्जी मंत्रालय में सदस्य द्वारा विचारोत्तर रखने के पथ में नहीं दीजते। श्री मेहरोत्रा से यह पूछते पर कि क्या इन आरोपन में कुछ संसद सदस्य भी शामिल हो सकते, उन्होंने बताया कि श्रीमती मुनीमा आदिबेकर पूरा सम्बंध में रहें हैं। वे सोय सदस्यों के मंत्रालय में रहने का कुछ विचारोत्तरों से भी मिल चुके हैं लेकिन अभी तक ऐसे किसी संसद सदस्य से भी बातचीत नहीं हो पाई है जिन्होंने कानून तोड़कर विचारोत्तर रखे हैं इस आरोपन में जोखिम भ्रमण तारकन भ्रमण भी घटना सम्बंध में देना। बान्धव द्वारा कोई हान नहीं मिलने की दशा में संसद सदस्यों के मोहन में मार्ग एकेनु और साउय एकेनु पर कबडती में किसी समय साक्षात् होनी की सम्भावना है।

(पृष्ठ १२ का मेष)

सवाल यह है कि सापिनो कोई बात लोगों के कानों तक पहुंचती है? ऐसी योजना होनी चाहिए कि सापिनो बात कम से कम सुनने में तो भागें लोगों के। ध्यान करना दूसरी बात है। जवान दान की बाग बाजा ने की। यह बात अतिरिक्त भारत में कितने लोगों को मान्य है? मान्य ही नहीं है, ध्यान करना तो भागे को बान है।

जवान का पुत्र्य गहर है, तोषियों। बहू का दीनक धन्यकार है, 'तोषियों निनुन।' ६० लाख शाहक है उनके। जवान को जलसख्या २० करोड़ है। ६० लाख को को वह धन्यकार समेटता है। भारत में; केरल में 'मानुस्य' मनोंया' के पीने तीन लाख शाहक है। 'मानुस्य' के सदा दो-दार्द लाख शाहक है। ऐगर ही संशाल में 'मुगानर' चलता है, उसके शाहक है दो-आई लाख। ऐसे सापिनो परिवारों के शाहक बनने चाहिए और धारणा विचार मुनन लोगों तक पहुंचना चाहिए।

(अभर्षी के कार्यकर्ताओं के साथ २६-१०-७३ को हुई चर्चा)

आन्दोलन के समाचार

× हरियाणा सर्वोदय मंडल ने निश्चित किया है कि राधपुर राणी, गड़कोटा क्षेत्र में जड़ा शराबबन्दी आन्दोलन चला रहा है सर्वोदय विचार प्रचार वा ठोम काम किया जायेगा। गड़कोटा में एच सर्वोदय प्रचारकेन्द्र के माध्यम से लोचमेरश पुरीराम ने धारापास के गाँवों में सर्वोदय विचार फैलाना शुरू किया है। जैनमुनि श्री जनक राज जी, जिन्होंने हरियाणा शराबबन्दी आन्दोलन का संचालन किया था, ने घोषित किया है कि वे भगवान महाश्वीर की डाई हुजारीवी जयन्ती के उत्सव में भाग लेने के लिए दिल्ली पैदा हो पड़ेंगे। इनकी पदयात्रा का प्रथम प्रदेश सर्वोदय मंडल कर रहा है।

हरियाणा सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष सोमभाई को भ्रम्भाडी के डिन्डी बगिचर ने बनाया कि नवाबन्दी आन्दोलन के समय में गिरफ्तार किये गये गत्याग्रहियों के मुक्तमें मोक्ष ही वापस ले लिये जायेंगे और ३१ मार्च ७४ के बाद गड़कोटा में वर्तमान शराब वा टेका दुखारा नीलाम नही किया जायेगा।

× बलिया के कार्यकर्ताओं ने लोगों के सामने अपने इलाके से, पड़ोस से, पड़ोसियों की समस्याओं से परिचित होकर उनके हल करने में हाथ बटाने के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। पड़ोसी-धर्म अधिभान 'जामक इस नायकम ने नगर को पड़ोस की सुविधा के अनुगार बुद्ध इकाइयों में बांट कर काम किया जायेगा। एक इकाई के कुछ चुने हुए व्यक्ति परस्पर पड़ोस धर्म के अधिभान को समर्थ कर अपनी इकाई के सभी परिवारों से एक-एक व्यक्ति की पड़ोसी सभा बुलायेंगे, जिनमें सामूहिक रूप से व्यक्तिगत व सामूहिक समस्याओं पर चर्चा कर समाधान का छोर तलाशने की कोशिश की जायेगी।

× लखवा जिले की ग्राम स्वराज्य समिति की शोर से ग्राम ललावाड़ा, मूदी, बोकवाड़ा, बिजौरा, पिपलिया, सरपावनिमानो, टियारिया, जामली बला धादि १६ गाँवों में ग्राम

स्वराज्य का प्रचार नवम्बर माह में किया गया। धव जिले के एक प्रमुख गाव मूदी को केन्द्र मानकर आगामन के क्षेत्र में धारावाय बुल, शानि सेना के माध्यम से सचन कार्य करने की योजना है।

× अगिले भारत कृषि गोसेवा सघ का कार्यालय नवम्बर के पहले सप्ताह से गोपुरी बर्षा आ गया है। मये स्थान पर काम शुरू करते हुए सघ ने गय किया है कि वट एक सर्वे द्वारा अपने समर्थकों के बारे में जानकारी एकत्रित करेगा। सदस्य सत्या वढाने का भी प्रयत्न है। सघ के माधाराए सदस्य, सहयोगी सदस्य और सत्या सदस्यों का एक सम्मेलन फरवरी के दूसरे सप्ताह में बर्षा में आयोजित किया जायेगा।

× कालिक प्रणिमा तथा गुरानाक जयन्ती के अवसर पर उन्नाव जनपद में गमा स्नान के मेला-स्नान पर तरण शानि सेना उन्नाव तथा गांधी-शानि प्रतिष्ठान कानपुर के सहयोग से एक सजुक्त शिविर लगाया गया। शिविराधिकारियों ने गमा स्नान केले के दौरान शहर के धाराओं, पाटो धादि पर तीर्थ-यात्रियों की भारी भीड व यात्रायतकों व्यवस्थित बनाये रखा। लोये हुए बच्चों को या लो उनके संरक्षकों को सौपा या उन्हे सरकारी केन्द्र तक पहुंचाया।

× नारायण देसाई, सयोजक ध्रं भां शानि सेना मंडल, प्रणव्रत पोप, सयोजक अस्पताल प्रदेश शानि सेना कार्यालय और धार सुवहृण्यम, पील्ड डायरेक्टर आंध्र-फॉर्म अस्पताल प्रदेश यात्रा के दौरान मुख्य के मुदा से धानवाल बचे। वे शानि फेरी की यात्रा पर जा रहे थे जहाँ शानि सेना ने आंध्र-फॉर्म की सहायता से धय तथा चर्म रोगों के निवारण का एक व्यापक कार्यक्रम उठाने की योजना बनाई है। इन लोगों की जीप पर नवम्बर की शाम को लखोमपुर भीरो सडन पर अभिनय से २३ बिलोमीटर दूर एक जंगली हाथी ने धनधान्य धावा बोल दिया। हाथी की

सूड के धक्के ने सारे वाच तोड़ दिये और दूगरे धक्के ने जीप को उल्टा दिया। जीप के ड्राईवर तथा सुवहृण्यम वाहक फँके गये और श्री पोप व देसाई जीप के नीचे फन गये। हाथी ने धनधा एक पैर जीप पर रखा था लेकिन चुनि वह हिस्सा अजिन की शोर था इसलिए उस दिक्के से चक्काचूर हो जाने के बाद भी यात्रियों को कोई नुकसान नहीं हो पाया। इसी समय सडन का एक भाग नीचे की शोर धस गया और हाथी जल्दा होकर नीचे गडे में जा गिरा जहाँ से वह जंगल में भाग गया। चारों यात्रियों ने जंगल में एक मजदूर की भंगपट्टी में रात बिताई और दूसरे दिन अपनी चोटों में बानबूड सुवट फिर से धरनों यात्रा शुरू कर दी।

× मध्यप्रदेश भूदान यज बोर्ड के सजुक्त सचिव सत्यनारायण धर्मा ने एक जानकारी म बताया कि भूदान-आन्दोलन की धनार्थ प्रदेश में श्रव तक ४ लाख ६ हजार ६६६ एकड भूमि भूदान में प्राप्त हुई है। इसमें तत्कालीन मध्य भारत शासन द्वारा प्रदत्त २ लाख १७ हजार ६६६ एकड वन भूमि का भूदान भी सम्मिलित है। प्रदेश के ११, ७६६ गाँवों में भूदान मिलता है। भूदान यथाओं की सत्या ५८, ८७७ है। बोर्ड के नाम से २ लाख ५२ हजार ४६६ एकड भूमि निहिता है। प्राप्त भूमि की जाच के पश्चात १५, २२७ एकड भूमि स्वीकृत की गई है। १ लाख २ हजार २४७ एकड भूमि का शासन द्वारा प्रमाणीकरण होना फिलहाल मेप है।

प्रदेश में १ लाख ६७ हजार ८६६ एकड भूदान भूमि ५६, ८५५ भूमिधन परिवारों में बाटी गई है। धारायात्रो में मकर, हरिजन तथा धादिशनी तीनों वर्ग सम्मिलित है। यह भूदान-निर्धारण प्रदेश को ६, ७३८ गाँवों में हुआ है। ३३, ४८६ भूदान रूपकों (धारायात्रो) को पत्रके पढ़टे दिये जा चुके हैं। धारायात्रो की सहनारी समितियों से चर्च भी मिलता है।

श्री धर्मा ने यह भी बताया कि लगभग ४०० भूदान रूपकों की भूमि से वेदमन्य निचे जाने के प्रकरण सामने धाये हैं। इसे लोगों के लिए बोर्ड अधिनियम १९६८ में धारा ३६ के धनार्थक कार्यवाही करता है। बलिया द्वाशा द्वारा दान वापस लेने के प्रकरण भी बोर्ड में चल रहे हैं।

भाषिक शुल्क : १२ ६० (सफेद कागज) : १५ ६०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १०. ४० या ३५ प्रतिग या ५ डातर, एक ढंक का मूल्य २५ पैसे। प्रवाच बोधो धारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० डे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ से मुद्रित

सवादिया

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १७ दिसम्बर, '७३



मध्यप्रदेश में दारुभाई गार्ड की बदमाश

असुराधी, परिवार और कानून × सिवनी के बाद कस्तूरबाग्राम में बहस × अहिंसा का पुजारी
हर हिन्दु पर चौकन्ना रहे × ब्रेजनेव को परास्त करने वाला समाजवाद × सर्व सेवा संघ
उपवास-दान पर चलेगा × मतदाता, धोखा देने वालों को धोखा दें

भूदान-यज्ञ

१७ दिसम्बर, '७३

पृष्ठ २०

अंक १२

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

धरपराधी, परिवार और कानून

—जयप्रकाश नारायण २

सिवनी के बाद

कस्तूरवाग्राम में बहुस

—श्रवण कुमार गर्ग ३

ग्रहिस्ता का पुजारी हर विन्दु पर
चौकन्ना रहे

—धीरेन्द्र मजूमदार ५

दिना टिप्पणी के

—जीवोराम १०

ब्रेजेनेव को परास्त करने वाला
समाजवाद

—राजेन्द्र माधुर ११

टिप्पणी

—भवानी प्रसाद मिश्र १३

ग्रहरह कार्यक्रमों को लेकर
पदयात्रा

१४

सब सेवा संघ उपवास-दान पर
चलेगा

१५

मतदाता, धोखा देने वालों को
पोसा दें

—जे. पी. कृपलानी १६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

अपराधी, परिवार और कानून

[जे० पी० का यह वक्तव्य बिहार के नवसत्तवादी नेता सत्यनारायण सिंह के सम्बन्ध में है। सत्यनारायण सिंह भोजपुर जिलान्तर्गत धमार गांव के रहने वाले हैं। गत पन्द्रह बरसों के बिहार और बंगाल की पुलिस ने धमार स्थित उनके पंतुक घर पर छापा मारा। सत्यनारायण सिंह मिले नहीं। तब पुलिस ने उनके भाइयों धीरू दूसरे सम्बन्धियों को सम्पत्ति जप्त करने की धमकी दी। इसके पहले भी पुलिस ने उनके घर पर छापा मारा था। इस प्रकार वह उनके भाइयों धीरू सम्बन्धियों को एक घर से परेशान करते लगी है।]

समाचार पत्रों से यह जानकारी मुझे हुआ है कि बिहार और बंगाल की सुविध पुलिस ने संयुक्त रूप से भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के प्रभावशाली गु के महामंत्री सत्यनारायण सिंह के पंतुक घर पर छापा मारा है और धीरू सिंह का पता न मिलने पर उनके भाइयों तथा अन्य सम्बन्धियों की सम्पत्ति जप्त करने की धमकी दी है। सत्यनारायण सिंह एक सम्पी प्रवधि से फरार बतया जाते हैं, पुलिस के कपनागुस्तर उन प हितक धरपराधी में शामिल होने के आरोप हैं।

धरर इन समाचारों से कोई सचवादी है तो यह विषय बिहार और पश्चिम बंगाल ब सरकारों के लिए गंभीरतापूर्वक ध्यान देने योग्य है। किसी अभियुक्त या प्रमाणभूत भारार्थ के भी परिवार को दंडित करना बहुत अनुचित और हमारे सविधान के बुनियादी सिद्धान्त तथा देश के कानूनों के विरुद्ध है। बड़ा तक मैं समझता हूँ, सत्यनारायण सिंह का उनका पंतुक सम्पत्ति में कोई हिस्सा नहीं है, क्योंकि उन्होंने धरना हिस्सा, जो किसी भी स्थिति में बहुत योग्य हो था, अपनी पत्नी के नाम से लिख दिया है। उन्होंने चाहे जो धरपराध नियो हो, उनसे लिए न तो उनको पत्नी धीरू न उनके भाई धरना परिवार के अन्य कोई सदस्य जिम्मेवार ठहराये जा सकते हैं। इसलिए मैं आशावान हूँ कि भविष्य में दोनों सरकारें सत्यनारायण सिंह के सम्बन्धियों को परेशान करने से बाज धायेंगी।

मेरे कथन का वही कोई गलत धर्य न लगा लिया जाये, इसलिए मैं यह स्पष्ट कर देना चाहूँ कि मैं सत्यनारायण सिंह तथा उनके गुट की हितक विचारधारा और कार्यक्रम का समर्थक नहीं हूँ; फिर भी उनके प्रति मेरे दिल में थोड़ी सहानुभूति है। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि निरर्थक व्यक्तित्व हत्या एवं राष्ट्रीय कीर्ति-स्वप्नों को विद्विषित करने का जो उन्मादपूर्ण मार्ग स्वर्गीय चारु मजूमदार का रहा है, उससे मनसलवादी धान्दोलन के एक बड़े भ्रम को विरत करने का बहुत कुछ श्रेय सत्यनारायण सिंह तथा उनके प्रमुख साथियों को है। दूसरा कारण यह है कि सत्यनारायण सिंह ने चारु मजूमदार के इस बचकाना नारे का लक्ष्य नहीं है कि 'अध्यक्ष माधो हमारो भी अध्यक्ष हैं', जिसकी कल्पना का सादर धारा भी कलकत्ते की दीवारों दे रही हैं। साथ ही उन्होंने साहसपूर्वक यह कहा है कि यद्यपि माधो भारत जैसे कृषि-प्रधान देश के लिए धारा भी सर्वाधिक प्रासंगिक हैं, परन्तु वे भारतीय (साम्यवादी) दल के या भारतीय संघ के अध्यक्ष नहीं हो सकते। मुचानुसार हिंदी 'जनता' को एक भेद में उन्होंने यह बताया कि चीनी नेता ने स्वयं कभी ऐसे विचार को प्रस्तुत या प्रोत्साहित नहीं किया। शेष मामलों में, साम्यवादी दल (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) उस पुराने हितक सामार्थिक क्रांति के मार्ग का धर भी अनुसरण करता है, जिसका धनुषमन सभी प्रकार के भारतीय साम्यवादी करते हैं, उनके बीच यदि भ्रम-भेद हैं तो इन प्रश्नों पर हैं कि 'उत्त भाति के लिए अग्रहरचना और मुहूर्त क्या होगा, उसमें धीरोगिक श्रमिकों को तथा भूमिहीन मजदूर सहित गरीब किसानों को सापेक्ष भातिवारी भूमिभाए क्या होगी, रुत एवं चीन के प्रति बफादारी बड़ा तक होगी और धरने भातिवारी लक्ष्यों को ध्रागे बढ़ाने में ससदीय संस्थाओं की जगयोगिक के प्रति उनका रुत क्या होगा ?

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सिवनी के वाद कस्तूरवाग्राम में वहस

घोर और एवं दिसम्बर को बस्तूरवाग्राम, इन्दौर, में तेरहवा मध्यप्रदेश सर्वोदय मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में वह वृद्धा को नहीं भी हो सकता था और एक छ नहीं हुआ जो घोषित था। निम्न वर्गों हुए सर्वोदय सम्मेलनों को ध्यान में रखकर व सम्मेलन के बारे में धार सोचा जाए तो देश में सर्वोदय आन्दोलन के कार्य के बारे इस सम्मेलन में सामान्य ज्वरों भी नहीं के खबर हुई। सम्मेलन में प्रदेश भर से कोई भी लोग एकत्र हुए और दो दिनों के दौरान पर बैठके हुई।

मध्यप्रदेश का यह सर्वोदय सम्मेलन कई आयतों में विभक्त था। दो, तीन व चार दिवस की सत्रोत्सव सम्मेलन में प्रायः सिने वाले प्राणियों ने प्रदेश के क्षेत्रों में प्राणियों की शक्ति बढ़ाने की विचार से बनाई गई सस्था 'मध्यप्रदेश सेवा समिति' के कार्यालय 'विश्व-विमल' में आयोजित और उनकी चार बैठकों में प्राण के बारे में मन्थन और मन्थन आता-हर भाई 'बारे में काम करने की सम्भावनाओं पर विचार किया, मुख्य प्रतिनिधि सुविधि की भारतीय समाज विधि के तत्सम्बन्ध में वैश्व-राष्ट्रीय उद्घोषण प्रणय किया। विश्व-विमल और सर्वोदय सम्मेलन के साथ एक प्रस्तावों की प्रकाश भी इस सम्मेलन पर प्रकाश था, वह था भी साराभाई नारिक और कार्यालय की मध्यप्रदेश-समाज परकाश को प्रकाशित। ३ दिवस की साराभाई में पहले कार्यालय के साथ ४३० दिन की प्राण के बाद इन्दौर में विमल में प्राण में प्रवेश किया। सम्मेलन के आयोजक और उद्देश्य के अर्थों को विचारकर मन्थन के ४३ दिनों में परकाश को।

विश्व-विमल के औद्योगिक भागों के बाद सर्वोदय सम्मेलन की भी चर्चा चली। एक क्षण सुने पर विचार नहीं वह भी प्रदेश-बारे में लिए एक सही नेतृत्व की तलाश। राष्ट्रीयकृत सत्रों और सर्वोदय के प्रकाश और

दूसरी सभाओं में प्राण और के नेतृत्व की लेकर इतनी परेशानी नहीं होनी, क्योंकि एक स्थापित परम्पराओं का मिलना-जुलना ही रहता है। इन स्थानों पर परेशानी वैचारिक मन्थनों की रहनी है। सर्वोदय में धार व बाहर सभी जगह सर्व सम्मेलन और या सर्वोदय पर जोर दिया जाता है इन लिए नेतृत्व का सत्र उभर कर दीखता है, कई बार इतना उभरता है कि और सत्रों छूट जाते हैं और यही एक मुख्य हो जाता है। मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल का बाहरों



साराभाई नारिक

सम्मेलन सिवनी में हुआ था। प्रदेश में सर्वोदय-कार्य के नेतृत्व में सर्वसम्मति को लेकर नहीं हुआ मान सकते हुए वे और उसकी याद इस सम्मेलन तक भी सोचों को थे। मध्यप्रदेश देना होगा कि इन बार सिवनी के किन्ना कक्षा सुधारने नहीं गये और भारतीयता के सत्कारण में सर्व सम्मेलन में नेतृत्व की विचार में रहने की गई। हालाँकि इस प्रकार पर जिनके भी विधि-धनविधि सम्बन्ध दिखे गये उनमें प्रदेश में आन्दोलन की सफलता कम होने की प्रतीति प्रकट होकर खबर ही सुधार था।

सम्मेलन में रहने दिन प्रदेश सर्वोदय मण्डल के संचालकों की सहायता विधि में विधि

दें-दो वर्षों में हुए कार्य की जानकारी दो। भी विधि में अपनी रण में बाणियों के सम्पर्क को प्रदेश के सर्वोदय कार्य की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया। स्थित भारतीय सत्र पर सर्व-सेवा सम की रण में भी एक से अधिक बार बल्ले सम्पर्क को एक बड़ी उपलब्धि के रूप में गिना जाता रहा है। देश के सर्वोदय कार्यकर्ता भी प्राण जनता से प्राप्त-चित्त में सम्पर्क की घटना को अपनी उपलब्धि के रूप में गिनाता नहीं भूलते। इसलिए मध्य-प्रदेश सर्वोदय मण्डल अपनी रण में इसका विस्तार से उल्लेख करे तो कोई हर्ज नहीं। पर सम्पर्क का कार्य बाणियों के सम्पर्क से पूरा नहीं होता। बाणियों के परिवार और बाणियों से दीक्षित परिवारों के पुनर्वास का कार्य, और बाणियों कि उचित शिक्षा-दीक्षा का सवाल और सम्बन्ध-बुद्धि-विकास में स्थायी शांति की दिशा में प्रयास ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य हैं जिनके लिए उचित योजना और कार्यक्रम का समुचित उल्लेख और उचित क्रियान्वयन की आवश्यकता स्पष्ट महसूस की जा सकती है, पर न तो रण में इन बारे में कोई उल्लेख है व सम्मेलन में ही कोई विधि नहीं इस पर हुई। सम्मेलन में बहुत पुराने चर्चा अवकाश को द्वारा विधि गये इस पर हुई कि सम्बन्ध पड़ती में स्थायी शांति की स्थापना का कार्य प्रदेश मण्डल उठावे और जेवों के सदा या रहे बाणियों के सर्व सम्कार का कार्य प्रदेश स्थायी स्थापक विधि। पर इन बारे में विस्तार से कोई चर्चा नहीं हुई और न ही ठीक कार्य-क्रम सुझाये गये।

सिवनी के १२ व सर्वोदय सम्मेलन की मासिक के बाद ही प्रदेश के ३२ कार्यकर्ता सहजता के राष्ट्रीय सम्मेलन में सम्मिलित हुए के और सारोपुर, बसन्तपुर, सुगौन, सिन्धुली और जिनकी प्रकाश में कुछ समय का विचार था। दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में भी प्रदेश के इन बाणियों द्वारा साराभाई गई



→

भक्ति का रपट में उल्लेख है। सर्वोदय सम्मेलन एक उचित अवसर था जब सहृदयता के प्रतिपक्ष अधिमान के बारे में चर्चा की जानी और विनोबा द्वारा दिये गये भावाह्वन को ध्यान में रखकर कार्यकर्ताओं को माग की जाती।

विद्येय दो वर्षों में आमस्वराज्य के मुख्य कार्य के सन्दर्भ में केवल दो अधिवर्षों का रपट में उल्लेख है। एक अधिवर्ष १० से १८ नवम्बर १९७२ तक मुना जिला ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समिति के तत्समावधान प्रान्त जिले में जिनके वायोरी प्रपञ्च में हुआ था और सीधी के रामपुर नैविन प्रपञ्च में जिना समिति सीधी तथा प्रदेश मण्डल के सपुक्त तत्समावधान में १८ अप्रैल ७३ से ३० अप्रैल ७३ तक प्रान्तीय ग्रामदान प्राणि पुष्टि का दूसरा अधिवर्ष आयोजित किया गया था। राट के अनुसार पहले अधिवर्ष में ३९ नये ग्रामदान प्राप्त हुए और १९२ बीघा भूमि भूदान में प्राप्त हुई। १४ बीघा भूमि भूमिहीनों में बाँट दी गई। १४ गावों में तदर्थ प्राण समाप्ति का गठन हुआ। सीधी अधिवर्ष में ३३ नये ग्रामदान मिले। १२७ एकड़ भूमि भूदान में मिली। २९ गावों में तदर्थ ग्रामसमाप्ति का गठन हुआ।

मुना के अधिवर्ष का एक वर्ष से ऊपर हो गया है व सीधी अधिवर्ष का भी गठन महीने। सीधी में सतत सदस्य श्री रघुवहादुर सिंह, जिन्होंने अधिवर्ष में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, के अनुसार जनवरी में एक और अधिवर्ष आयोजित होगा। पूरे

देश में ग्रामस्वराज्य आन्दोलन की तीव्रता और प्रवेश के कमजोर योगदान के सन्दर्भ में यह महत्वपूर्ण अवसर था जब कुछ चर्चा नये सधन क्षेत्र लेकर सगने की होगी, कुछ चर्चा इस बात पर होती कि मुना अधिवर्ष में प्राप्त पुरी भूमि का वितरण शीघ्र सम्पन्न हो और बनी हुई ग्रामसमाप्ति सक्रिय हो, प्राण ग्रामदानों में पुष्टि का कार्य कैसे चले आदि, आदि। इस बात पर भी चर्चा आवश्यक थी कि अगस्त जनवरी (एक माह बाद ही) अधिवर्ष होना है तो उसकी स्ट्रैटेजी क्या रहेगी। सम्मेलन में पन्द्रह मिनट इस विषय पर चर्चा हुई कि नये सधन क्षेत्र कौन से लिये जाएँ। जो कार्यकर्ता जहाँ बैठे हैं उसने वही का नाम सुना दिया।

श्री राधेसाज भूते ने सुझाया कि प्रदेश में चार-पाँच क्षेत्र हों और उनमें सबकी शक्ति लगे। श्री शंकर लाल मण्डजोई इन्दौर जिले की पारिया सहसील में ग्राम वन्दे के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होंने इन्दौर को सधन क्षेत्र बनाने की बात कही। इसी प्रकार एक सुभाष मन्डोर को सधन क्षेत्र बनाने का आया। श्री सिन्धुजी ने सुझाव दिया कि सीहोर जिले की इच्छावर तहसील में सबकी शक्ति लगे। साना भी सधन क्षेत्र हेतु सुझाव गया। पर शीघ्र ही सारी चर्चा सधन क्षेत्रों से हटकर शारावन्दी पर आ गयी।

प्रदेश में सर्वोदय कार्य की दृष्टि से वर्षों की सबसे बड़ी घटना श्री दादाभाई साईक की ग्रामस्वराज्य पदयात्रा है। लगभग सोनह महीने तक वे अपने सहयोगियों के साथ धुमे और लगभग १४०० मशायों में प्रदेश के लाखों लोगों से जीवित सम्पर्क में आये। सर्वोदय आन्दोलन में सहरी पैठ होने के कारण वे इस बात की भनी-भाँति समझ सकते हैं कि प्रदेश की जालत क्या है और किन क्षेत्रों में किन कार्य के लिये अनुकूलताएँ हैं। दादाभाई ने यात्रा के बाद प्रदेश के सन्दर्भ में जिन तथ्यों को उजागर किया है वे काफी रोचक हैं।

एक जनता के धाज भी जागृत नहीं, वह धान को इस दृष्टि का मानिक नहीं मानती बल्कि धानित प्रजा ही मानती है।

दो, वह धमकाएँ, भीर, धरद, धमकाएँ-प्रस्त है। नेता शासन मुनापेसी है।

लोग, शिक्षित समाज जनता से सहानुभूति रखता है। पर वह श्रीमानों की ओर दृष्टि रखे है। परिश्रम से बचना चाहता है। परोपजीवी है।

चार, नेता तथा अधिकारीगण जनतंत्र की जय करते हैं पर राजतंत्र ही चलाते हैं। जो ऊपर से नीचे को देता है उनके नाम पर सब कुछ करता है।

पाँच, राजा नहीं तो राजनीति कैसे? जनतंत्र में लोकनीति ही चाहिए। राजनीति भेदपरक शासन है। जननीति ऐश्वर्यमूलक स्वाभिमानी होती है।

छह, विनाश बढती धावादी और मुली मुल्ल सुबिया की हृष्टि, श्रम के कारण महंगाई, भ्रमण, भ्रष्ट, रिश्वत, बालाबजार, गलत नापनील, पक्षपात पनपना है। स्वदेशी तथा पराक्रम से अज्ञान की प्रशस्ती हो।

सात, सेती के साथ ग्रामोद्योग आवश्यक हैं। ग्रामोद्योग कृषि तरीके पर नहीं बल्कि आधुनिक विज्ञान तथा इन्टरमीडिएट टेकनीशियनो के यंत्रों द्वारा विप्रेरीकरण के सिद्धांत पर खड़े हो। अन्तर चर्चा प्राज सांस्कृतिक वस्त्र स्वावलम्बन के लिए प्रतिपाद हैं।

आठ, ग्राम्यता निर्णय के लिए अतिम रूप से सत्याग्रह आवश्यक है उसी से जनता में हिम्मत आयेगी। वह सगठित होगी। उनसे पूर्व रचनात्मक कार्य तथा शिक्षा हो। शिक्षण जीवन से सम्बद्ध तथा हृषि उदात्त से सम्बन्धित हो।

नौ, जीवन के वर्ष दो वर्ष देने वाले, नियमित घटे प्रतिदिन देने वाले निरपेक्ष युवा वे वास्तव्यही चाहिए।

दस, जनताधार, सर्वोदय पात्र, सर्वोदय में धन बपूनी, मार्गनिदान, परिश्रम इरा २५ ग्रामों का क्षेत्र बनाकर रद्दने जल कार्य-कर्ता तथा प्रतिशिक्षण व्यवस्था हो।

मध्यप्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश के ४५ जिलों में इनकी विविधता है कि एक बड़े राष्ट्र के समान समयाएँ उनके जोड़ते हैं। सर्वोदय कार्य के लिये सामाजिक परिस्थितियाँ जिनकी अनुकूल सम्पद्यते में हैं और जिनका अधिक सहयोग प्राप्त हो सगा है, वह अग्र्य दुर्गम है। तमाम मनमें, (गैर पुष्ट १४ पर)

गाव में फँस जाएँ और अपने ही विचार और व्यक्तित्व के आधार पर रहते रहकर समग्र ग्राम सेवा द्वारा स्वराज्य की बुनियाद डालें। उन्होंने तत्काल एक सन्धिवादी व्यवस्था का भी सुझाव दिया। फिर कॅबिनेट मिशन का भागमन, भाग्यदी की प्राप्ति, साम्प्रदायिक दंगे आदि में वह सम्पूर्ण रूप से फँसे रहे और उसी परिस्थिति में ये चले भी गये। फलस्वरूप हम लोग समुचित मार्गदर्शन के अभाव में नया मार्ग पकड़ नहीं पाये, पुरानी सोच से यानी संस्थावादी तरीके से ही चलते रहे। गांधीजी ने जिस तरह चर्चा संघ को शून्य बनाने के लिए कहा था उसी तरह चलते-चलते उन्होंने कांग्रेस को भी राजनैतिक दल के रूप में विसर्जित कर 'लोक सेवक संघ' के रूप में परिणत करने के लिए कहा था और उसकी व्यवस्था के लिए कुछ प्रारूप के सकेत भी दिये थे। वह संस्था का रूप न होकर संगठन का रूप होता। लेकिन वे इस दस्तावेज को रूप दिये बिना ही चले गये।

एक अंधकार के बाद

गांधीजी के निधन से मानो देश में अंधकार ही फैल गया। नेता लोग अंधेरी राज्य के छोड़े संघ के संचालन के मलावा बाकी हर विषय में शून्यता का अनुभव कर रहे थे। वे समझ नहीं पा रहे थे कि राज्य के बाहर भी कुछ किया जा सकता है। अतएव देश के समान कार्यक्रमों को बुलाकर गांधी जी के छोड़े हुए काम को किस तरह आगे बढ़ाया जाय इस पर सोचने के लिए १९४८ में सेवा-ग्राम में एक रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया जहाँ सभी नेता उपस्थित थे। उससे पूर्व विनोबा एकात्म साधना में सभे हुए थे। लेकिन उस सम्मेलन में उन्होंने महत्वपूर्ण पाठ पढ़ा किया। उन्होंने कहा कि सर्वोदय का विचार इतिहास का विचार है यह विचार स्वतः स्पूत होना चाहिए। उसकी प्रक्रिया का संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिए किसी विरले को संस्था नहीं बननी चाहिए और कोई वैधानिक संगठन भी नहीं। देश भर में फैले हुए सर्वोदय सेवक अपने-अपने क्षेत्रों में विचार का फैलाव करते हुए और जनता को तदनुसार प्रवृत्ति चलाने के लिए

प्रेरित करते हुए समय-समय पर परस्पर मिलें और चर्चा करें। चर्चा का निष्कर्ष लेकर अपने क्षेत्र में लौट कर अपने-अपने दंग से पुरायता करते रहें। प्राचीन काल के कुम्भ मेला का उदाहरण देते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसे सेवक साल में एक बार बही मिलकर व्यापक स्तर पर चर्चा करें ताकि एक दूसरे के विचार और चर्चा के अनुभव से लाभान्वित हो सकें।

सर्वोदय समाज का सेवक कौन होगा ?

इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा एक रजिस्टर होगा और कोई धार्मिक सम्मेलन में भागवत् के रूप में रजिस्टर को संभावना और सम्मेलन के लिए निमन्त्रण भेजेगा। जो कोई सेवक नाम दर्ज कराने की इच्छा जाहिर करे उसका नाम वह रजिस्टर में दर्ज करेगा। उन्होंने उसको सर्वोदय समाज की सजा दी और कहा कि यह कोई संगठन नहीं होगा बल्कि एक विचारधारा के रूप में दीर्घा जमात रहेगी।

उस सम्मेलन में उपस्थित नेता और कार्यकर्ता को मानो कोई चाद हाथ लग गया। प्रत्यन्त उस्ताह और सर्व सम्मति के साथ उस सम्मेलन को स्वीकार किया। उस कारण पूरे वातावरण में एक उस्ताह की लहर दिखाई देने लगी। जहाँ कहीं भी दो-चार दस लोग घूम में बैठते थे वे प्रस्ताव की अनुकूल चर्चा करते थे और प्रत्यन्त प्रसन्नता के साथ कहते थे कि देश का सौभाग्य है कि ऐसा मार्गदर्शन हुआ और इस अंधकार में एक धार्मिक निक्ल भाग।

इतिहास की अपूर्व घटना

सम्मेलन के समारोप के बाद हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के अध्यक्ष डा० जाकिर हुसैन जब आशादेवी आर्यनायकम के घर पर पहुँचे और वहाँ के लोगों के साथ बैठें तो बैठते ही, उनके मुँह से निवला भाज इतिहास की एक प्रद्युम्न और अपूर्व घटना घट गयी। इतिहास का यह प्रथम भवसर है कि किसी युग पुरण के चले जाने के बाद उनके अनुयायियों ने कोई संगठन नहीं बनाया। बल्कि विचार पूर्वंक संगठन के विरोध में ही अपनी भावना प्रवट की।

यह तथ्य हुआ और देश के बड़े राजनैतिक नेता अपने-अपने स्थानों में बापस चले

गये। तब रचनात्मक कार्य का नेतृत्व सर्वोदय विचार के कार्यन्वयन की पद्धति और तरीके की खोज में चर्चा के लिए बँठा। स्पष्ट है कि उस समय भावमयकता यह थी कि जिस नये विचार को स्वीकार किया गया था उन दिना में शासन विकसित करने के लिए नये दंग से खोजना शुरू होता और उसके प्रयोग के लिए नयी पद्धति अपनायी जाती। लेकिन नेताओं ने निर्णय किया कि इस समाज की क्रियाशीलता के लिए सर्व सेवा सघ के नाम से एक संगठन बनाया जाय जिसका स्वरूप गांधीजी द्वारा प्रवर्तित भिन्न-भिन्न रचनात्मक सत्याग्रहों के प्रतिनिधियों द्वारा बनायी गयी एक युगियन का हो।

इस प्रकार सर्वोदय समाज का क्रान्तिकारी विचार पीछे पड़ गया और रचनात्मक कार्यकर्ता परम्परागत सत्यावादी पद्धति से सर्व सेवा सघ नामक एक संस्था बना कर बँठ गये। गांधीजी द्वारा प्रवर्तित हर प्रवृत्ति के लिए अलग-अलग सत्याग्र्य योजन थी तो स्पष्ट है कि सर्व सेवा सघ के पास चर्चा के बिना कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं था। अतः वह एक प्रकार से एक निष्क्रीय सत्या के रूप में कायम रहा।

भूदान गंगा का चरमा

१९५१ में पोचमपल्ली से जब भूदान गंगा का चरमा फूट, तो मौजूदा भिन्न-भिन्न रचनात्मक प्रवृत्तियों से भिन्न देश में एक नया कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। लेकिन शुरू-शुरू में उसे विनोबाजी की व्यक्तिगत प्रवृत्ति मानकर सर्व सेवा संघ उस आन्दोलन को अपने आन्दोलन के रूप में ग्रहण नहीं कर सका। विनोबा जी ने अपनी गिनी प्रेरणा से तथा भिन्न-भिन्न सत्या और कार्यक्रमों की मदद से भूदान यात्रा शुरू कर दी। बाद में १९५२ के सर्वोदय सम्मेलन, तैवापुरी में जब इस आन्दोलन की सभायना विराट रूप से परिलक्षित हो गयी तो सर्व सेवा सघ ने इसे अपने आधिपत्यकारी कार्यक्रम के रूप में स्वीकार कर लिया। उसी सम्मेलन से सर्वोदय सम्मेलन भी व्यवहारतः सर्व सेवा सघ का सम्मेलन बनता चला गया, और सर्वोदय समाज के बुनियादी विचार पर ग्रहण लगता गया। सम्मेलन के उपर का ढीला भाज बैसा ही बग्न हुआ है अर्थात् प्रारंभ

मे परिचलित किया गया था। सर्वोच्च समाज का धार भी एक धार्मिक है और धर्मोपा-
 रिक रूप से उमी पर सम्मेलन का भार है।
 लेकिन सम्मेलन का सारा काम काज सर्व सेवा
 संघ द्वारा ही संचालित होता है। उसका एका
 ही उद्देश सम्मेलन सूत्रि पर चला जाता है।
 मेरा कहने का अर्थ यह है कि सर्वोच्च भी
 अन्तः सर्व सेवा संघ की एक प्रवृत्ति बनकर
 रह गयी। जब तक सर्व सेवा संघ में भूदान के
 काम को धारणा नहीं लिया या तब तक
 विनोबाजी जहाँ जाते थे वहाँ भी भिन्न-भिन्न
 संस्थाएँ, पाठियाँ तथा व्यक्तित्व मित्र भानी
 उपर से उन काम को उठाते थे। लेकिन जब
 वे भान्दोनन सर्व सेवा संघ के संचालन में आ
 गया तब वे भिन्न संस्थाएँ तथा दूसरे व्यक्तित्व
 मित्र भी यह मानने लगे कि यह काम सर्व
 सेवा संघ का ही है। जिनको यह काम पसन्द
 था भी उच्च मरद करना चाहते थे वे वह
 मरद सर्व सेवा संघ में सौजन्यत्व में ही करने
 थे।

विनोबा की कोशिश चलती रही

यह सब हुआ। लेकिन विनोबा धरने
 भान्दोनन के सिद्धांतों में हमेशा हमारे काम
 को उमी दिशा में ले जाने के लिए प्रयास करते
 रहे, किन्तु विनोबा ने उन्होंने प्रथम संचालक
 सम्मेलन के अन्तर्गत पर मार्गदर्शन किया था।
 एतने उन्होंने गंभीरी द्वारा परिचलित
 विनोबा जी सर्वसाधारण को एक सूत्र में बांधने
 का प्रयास किया और उनके लिए सभी
 संचालक संस्थाओं को सर्व सेवा संघ में
 रचिन होने का सुझाव दिया, ताकि सब लोग
 एक साथ व एक तह होकर भिन्न-भिन्न प्रवृ-
 त्तियों को समग्र रूप में तथा भान्दोनन के
 समाज में चला सकें। सुप्रसन्न कह सकते
 हैं कि विनोबा जी का यह प्रयास उनके
 विचार के साथ में नहीं आता था। उनमें
 विमर्शित दिशाओं देखी होगी। लेकिन मैं
 कहना हूँ कि उनका प्रयास धारण सुझाव
 के रूप में ही परिचलित था। हर संस्था को
 केवल एक तरफ का काम करने-करने कोच
 रिट्टीन हो रही थी। वे सब भिन्न-भिन्न क्षेत्रों
 में भिन्न-भिन्न लोगों की दौलतों के संचालन
 में जाती थी। वरन् सारी संस्थाओं को एक

निश्चित दिशा में मोड़ना या तो यह प्राथमिक
 प्राथमिकता थी कि भिन्न-भिन्न सभी नेतृत्व
 और दौलतों एक साथ हीकर समन्वित
 विनय में लयें। यह सभी समग्र हो सकना या
 जब विनोबा इस समन्वित दौली को नियोज
 निश्चित दिशा में मुड़ने के लिए प्रेरणा देते।
 धीरे-धीरे सभी संस्थाएँ सर्व सेवा संघ में
 रचिन हो गयी और तब एक समग्र संस्था
 बन गयी।

इसका काम पूरा करके जब उन्होंने देखा
 कि संघ की दौली धीरे-धीरे कुछ ठोस बन
 पर आ गयी तब सब को भारी भार के रूप में
 धारने को परिचलित करने की दिशा में प्रेरणा
 देना शुरू कर दिया।

पहला संकेत

सन् १९५५ में बाजीपुरम् सम्मेलन के
 अन्तर्गत पर ही उन्होंने इस दिशा में मोड़ने के
 लिए प्रथम संकेत किया। वे शुरू से ही धारने
 इस विचार को रूढ़-रूढ़कर दोहराते रहे कि
 सभी संस्थाएँ संस्था द्वारा चालित नहीं हो सकती
 हैं। बाजीपुरम् में उन्होंने हम सबके सामने
 उन विचार को स्पष्ट रूप से रख दिया।
 उन्होंने कहा था कि कौन न हम चालि का एक
 वाक्य करके भी और इस संस्थात्मक संकलन को
 बन्द कर दें। हम में से दो चार लोगों को यह
 विचार पसन्द आया। लेकिन पूरी प्रयास को
 यह पसन्द नहीं था। इसलिए उन समय सर्व
 सेवा संघ उन प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर
 सका। हमने स्वीकार नहीं किया।

लेकिन विनोबा हम बात का बीच-बीच
 में निकलते हुए हमें तैयार करने का प्रयास
 करते रहे। और १९५७ के पत्तली सम्मेलन
 के अन्तर्गत सर्व सेवा संघ की प्रथम समिति
 को भी बैठक हुई थी उसमें समिति दिन
 से संपन्न रूप से संघ मुक्ति और विधि मुक्ति
 का प्रस्ताव रख दिया। विनोबा जी ने इन
 प्रस्ताव को सुनकर भारी निश्चय के दिग्ग
 एकरम उभारा धारण हुआ और उन्होंने उद्देश
 प्रस्ताव दिया कि इन प्रस्ताव पर विचार
 करने के लिए बैठक की कार्यवाही एक दिन
 बाँटी जाये। सभी व्यक्तित्व विमर्श में धारण
 उभारने के साथ भारी निश्चय के रूप प्रस्ताव
 को स्वीकार कर लिया तथा एक दिन कार्यवा
 ही का निर्णय किया। राज को विनोबा जी
 को अनुचितचित्त में उनके उन प्रस्ताव पर

विचार करने के लिए धार्मिकारिक रूप में
 सब एकमत हुए। उस बैठक में एक प्रतीक
 किया बनी हुई थी। सब लोग इतने अधिक
 उत्साहित थे कि एक साथ उस पर अपना
 प्रथमय वाक्यद्वारा लगे और उभार कर एक
 उम्मी लहने में चर्चा करते रहे। सर्वप्रथम उक्त
 मुक्ति का अर्थ क्या है इसी पर सब लोग जोर-
 जोर से समिदाय प्रकट करने लगे। लेकिन
 वे सारे उत्साह और जोश के बावजूद किसी
 नतीजे पर नहीं पहुँच पाये थे। रात बहुत
 अधिक चोल गयी तो शकाराव जी ने कहा
 कि हम सब अर्थ लोच हाथी का बंदान करते
 में लगे हुए हैं। इसलिए हल्काइ हम चर्चा को
 स्थगित कर दिया जाय और मुहल हाथी की
 पास पहुँच कर प्रस्ताव जाये कि वे धारने प्रस्ताव
 का क्या अर्थ लगाते हैं। दूसरे दिन विनोबा
 जी ने अपना विचार बताया कि धारने धारने
 धारने धारण सभी तब विमर्शित करें, सब
 लोग धारने-धारने स्थान पर काम करें और
 सर्वोच्च सम्मेलन में धारण चर्चा द्वारा विचार
 भी संपन्न कर लें और लौट कर धारण में काम
 करें। यह प्रस्ताव पर कि बीच में विचारों के
 धारण-धारण के लिए बीच में एग्जम्प्ली
 रहेगी तो उन्होंने कहा कि प्रस्ताव
 विचार स्वतंत्र मुक्ति के रूप में रहे। प्रस्ताव
 यह चर्चा और उम्मी के जरिये बीच-बीच में
 विचारों का धारण-धारण होता रहे। प्रथम
 समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से उस
 प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

विचार बनाम संस्कार

मनुष्य बना धर्मज्ञ प्राणी होता है।
 धारण प्राणियों मनुष्य भी विचार और
 धारण के रूप का विचार ही जाता है।
 विचार प्रवृत्तियों और चालिकाओं होते हुए
 भी उनका संस्कार किसी न किसी रूप में तब
 पेशान पर बहिरंग रह ही जाता है। इन
 कारण उक्त मानव विचार और संस्कार
 में संपर्क में उनका काठा है और प्रायः संस्कार
 विचार पर हावी हो जाता है। बहुत छोटे
 धारणों व्यक्त ऐसे होते हैं कि विचार में
 कुछ संस्कार को धारण उभार विच्छेदन कर
 पाते हैं। हम लोग भी इसी मत विचारों के
 विचार हो गये और भान्दोनन को नहीं

→
 भूमिका में प्रथिष्ठित नहीं कर सके। हम लोग परम्परागत संस्कार के प्रधान सर्व सेवा संघ के सम्मेलन में ही काम करने रहे। इतना प्रथम किया कि तंत्र मुक्ति के प्रथम से भूदान-यज्ञ समितियों को विघटित कर दिया और निधि मुक्ति के कार्यान्वयन के लिए गांधी स्मारक निधि के अनुदान को धरतीद्वत कर दिया। इस प्रकार 'अधुरे' प्रथम से आन्दोलन को साथ के बनाय हासिल ही हुई। भूदान कमि-टियों को विघटित हो गये या फिर उन्हें गांधी और छोटे कार्यकर्ताओं को मुक्त कर दिया और छोटे कार्यकर्ताओं को मुक्त कर दिया लेकिन हम लोगों के निधियुक्त बने रहने के कारण न निधि मुक्ति की प्रेरणा दे सके और न सामान्य कार्यकर्ताओं के गुजारे के लिए निधि-मुक्त-पद्धति का मार्ग-दर्शन ही कर सके। हम उन्हें मुक्त कर या तो उदासीन हो गये या फिर उन्हें गांधी निधि आदि विभिन्न संस्थाओं में शामिल करके निधि युक्त ही बना दिया और जिन्हे दूसरी संस्थाओं ने स्वीकार नहीं किया, उन्हें असाहाय बनाकर मंदान में छोड़ दिया। दुर्भाग्य से ऐसे असहाय कार्यकर्ताओं की संख्या बहुमत में ही थी, अल्पसंख्य हमारी मांजिन विचार गयी और हम कमजोर हो गये। हमें न दीन मिला न दुनिया मिली। हम न तब मुक्त विरादरी बना सके और न मस्यागत मजदूरी को ही रख सके।

विनोबा का दूसरा प्रयास

बाद में अजमेर सम्मेलन के अन्तर पर विनोबा ने हमें जो समझाने के लिए एक बार फिर कोशिश की थी और सब सेबा सघ को विकसित करने की सलाह दी थी। लेकिन इस बार किसी ने उसे स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप जब उन्होंने देण लिया कि हमारी तैयारी विरादरी मूलक सर्वोदय समाज बनाने की नहीं है तब उन्होंने उस बात को बहाना छोड़ दिया तथा अपनी अन्वितगत प्रेरणा से सरकारी और गैर सरकारी, हर प्रकार की संस्थाओं और व्यक्तियों से काम लेने की परिपाटी को डाला।

इस तरह हम परिपूर्ण संस्थागत संचालन पद्धति से अब तक चलते रहे और इसी पद्धति से एक बनवास को भेद कर एक नया स्तूपान भी खड़ा कर दिया। लेकिन जैसा कि

में हमेशा बहता हूँ यह सब करके हमने केवल देश और दुनिया का ध्यानाकर्षण ही किया। ग्राम स्वराज्य के धारोहण में कोई विशेष कदम नहीं बढ़ा सके हैं। यद्यपि प्राथमिकरण ही किसी नये क्रांति विचार के प्रथिष्ठान में बड़ी निष्पत्ति होती है। अब ध्यानाकर्षण का प्रथम्य समाप्त हुआ, तो समय आ गया है कि हमने २५ साल पूर्व जिस कल्पना को लेकर सर्वोदय समाज बनाने की बात सोची थी और जिस आधार पर इतने दिनों तक एक निश्चित दिशा में तथा तीव्र और व्यव-स्थित कदम से इतना आगे बढ़े हैं, उस कल्पना को साकार करने की दिशा में हमें तीव्रता के साथ सोचना चाहिए। यही कारण है कि पिछले मार्च, अगस्त के प्रथिष्ठान के दिनों में यैने तुम लोगों के सामने संचालन पद्धति के स्थान पर सहकारी पद्धति से कार्य खोजने के लिए निवेदन किया था। मुझे खुशी है कि तब से हमारे तमाम भिन्न भिन्न-भिन्न संस्कार और दृष्टिकोण के अनुसार विचार करने लगे हैं। यद्यपि इन प्रश्न को लेकर तुम लोगों में आपस में दृष्टि भेद पैदा हो रहा है। फिर भी इसमें अपनी क्रांति के लिए श्रम लक्षण ही मानता हूँ।

सत्या, सगठन और विरादरी प्रथम-प्रथम बस्तु हैं। उनमें क्या अन्तर है यह समझना चाहिए। सत्या और सगठन में एक निश्चिन् विधान होता है। उसका काम उस विधान के अनुसार चलता है। विरादरी में कोई विधान नहीं होता है। केवल भाई-भारता होता है, और उसका काम परस्पर से चलना है। सत्या और सगठन में सदस्यों के लिए किसी विचार के आधार पर संबन्ध पत्र होता है और विरादरी की सदस्यता के लिए दृच्छा जाहिर करना काफी होता है। सत्या और सगठन में वह सबल पत्र एक दूसरे को एक साथ बांधता है। विरादरी में परस्पर स्नेह है जो एक दूसरे से जोड़ता है। सत्या और सगठन में काम करने के लिए कार्यकर्ताओं को नियुक्ति होती है। विरादरी में किसी कार्यकर्ता की नियुक्ति नहीं होती है बल्कि विरादरी के सदस्य ही अपनी-अपनी परिस्थिति के अनुसार जिससे जितना होता है करते हैं। सत्या और सगठन में अपना कोप होता है जिसके महारे नियुक्त कार्य-

कर्ताओं का गुजारा होता है। विरादरी का अपना कोई कोप नहीं होता है, हर सदस्य अपने व्यक्तिगत प्रयास से गुजारे की व्यवस्था करता है। यह प्रयास से बड़ी नोकरी करके, ट्यूशन करके, व्यवसाय करके या किसी संस्था या निधि से मदद लेकर कर सकते हैं। लेकिन यह सदस्य अपने-अपने भरोसे या अपने स्नेही जन के सहारे करते हैं। सत्या और सगठन में निर्णय होता है जिसको प्रस्ताव के रूप में प्रसारित किया जाता है। विरादरी में चर्चाओं का निचोड़ होता है जिससे विरादरी के निवेदन के रूप में प्रसारित किया जाता है।

सत्या और सगठन में भी कुछ धनत्र होता है। सगठन का प्रारम्भ किसी देश या क्षेत्र के बुनियादी लोक से होता है। सत्या का प्रारम्भ किसी निश्चिन् विचार में निष्ठा रखने वाले अनुष्ठयो या किसी प्रवृत्ति को चलाने वाले व्यक्तियों द्वारा स्थापना करने से होता है। सत्या, सेवक होती है, लोक सेवक होती है। सगठन लोक द्वारा निर्मित प्राप्त व्यवस्था के लिए बनाता है। विरादरी किसी विचार को मानने वाले का भाईचारा होता है जो ग्राम लोगों में उस विचार का प्रसार और सिधार करता है। उदाहरण के लिए सर्व सेवा सघ सत्या है और तुम लोग जो गांव-गांव में ग्रामभवा और प्रसंगसभा बनाने का प्रयास करते हो वह सगठन का स्वरूप होगा और विनोबा जी ने जो सर्वोदय समाज की कल्पना की थी अगर यँसा सभब दृष्टा तो वह विरादरी का स्वरूप होगा। सर्व सेवा सघ का वर्तमान विधान बनने से पहले गुजरात के मित्रों ने अपने काम के लिए विरादरी विचारित करने का कुछ प्रयोग किया था। वह चलता होता तो विरादरी का कुछ और स्वरूप पड़ता होता। गांधी जी ने लोक मेवक सघ का जो प्रापट तैयार किया था वह भी संस्था न बनकर सगठन का ही कुछ स्वरूप होता। इय दृष्टि से विनोबा ने जो कहा है नि लोग मेवक सघ की कल्पना ही सर्व सेवा सघ है मेरी दृष्टि में उनमें कुछ भेद है। कार्यक्रम के विन्तु सघ विनोबा जी ने जो समझाया है कि 'सर्व सेवा सघ लोक मेवक सघ का समर्पण' है उसमें ही संशय प्राना रहस्यम हूँ। लेकिन मेरी राय में सर्व सेवा सघ

→
संस्था है और परिचालित लोक सेवा संघ संगठन से मिलती-जुलती कोई चीज है।

हमारे कुछ मित्र मानते हैं कि धरतृ बिनी संस्था के संचालक कार्यकर्ताओं को पूरी-पूरी स्वायत्तता का अधिकार देते हैं, उनके काम में हस्तक्षेप नहीं करते, हर निर्णय सबसे चर्चा के निचोड़ पर लिया जाता है इसलिए धरतृ संघ उपलब्ध करा दी जाती है तो वह संस्था न रहकर बिहाररी बन जाती है। लेकिन ऐसा सम्भवता भूष है। हम बिन्दु पर चर्चा करने २५ मार्च के पत्र में लिखा था कि ऐसा स्वरूप संचालन की कृपासला मात्र है, संचालन पद्धति का विस्तार नहीं है।

मान लो मुझ तक सर्व सेवा संघ के सदस्य मेरे विचार को स्वीकार करने हो लो मुझसे सीधा सवाल यह होगा कि धरतृ सर्व सेवा संघ जो संस्था के रूप में दृष्टिगत है उसे बिहाररी में परिणत करने के लिए संचालनीय बनाना क्या होगा ? और उसकी प्रक्रिया क्या होगी ? यह प्रश्न बहिन हैं। धरतृ धरतृ में सम्मेलन के धरतृ पर बिनीका

री में सर्व सेवा संघ के विस्तार का जो मुझसे दिया था वह माना गया होना और फिर तब विदे से प्राप्त हट के बिन्दु पर सर्वोदय समाज की बिहाररी मंत्री बननी होती तो वह क्षामल होता। फिर भी संस्था को क्रमशः बिहाररी में परिणत करना है तो बहिन होने पर भी उनके मार्ग खोजने की जरूरत है। मेरे पास कोई बना बनाया उत्तर नहीं है और बिहाररी के धरतृ पर इन प्रक्रिया का कोई चार्ट नहीं बना हुआ है। क्योंकि धरतृ संघ ऐसे हस्तक्षेप का कोई प्रयोग नहीं हुआ था। धरतृ संघ का गूट धरतृ पर संघ की यात्रा है। इसके लिए हर एक को मार्ग खोजने में सहायता होगी, धरतृ चर्चा करना होगा और कोई रास्ता खोज निकालना होगा। फिर भी यहाँ मैं कुछ प्रवृत्त चर्चा करता चाहूँगा जिसका रूप निम्न लिखित हो सकता है। एक धरतृ सर्व सेवा संघ कापी डीको संस्था है और उसे धरतृ डीका करने का प्रयास करना चाहिए जैसे धरतृ मंत्री और प्रबन्ध समिति का गठन न करना तथा सर्व सम्मति से एक निवेदन बनाना। दो रिश्ते विषय के विशेष प्रश्न पर

चर्चा के लिए, धरतृ निवेदन दिनी सेवाग्राम में डीको परिषद बुलायी गयी थी, उस तरह निम्न प्रदेशों में धरतृ संस्था में चर्चा-चर्चा की चर्चा संघ की भी परिषद बुलायी जाये। उनी परिषद की समुहिक चर्चा का निचोड़ निवेदन के रूप में प्रसारित किया जाये। धरतृ संस्था बनने पर एम मिश्र जो लोक सेवा नहीं है और साम विचार रखते हैं उन्हें भी धरतृ संस्था दिया जाये। उनी परिषद में सर्व सम्मति से यह भी निर्णय किया जाये कि धरतृ संस्था के चर्चा भी चर्चा होगी ?

तीन स्थान धरतृ समय के लिए परिषद में उपस्थित सदस्यों के निर्णय पर विचार किया जाये।

संघ के धरतृ में जो यह है कि संघ की प्रारम्भिक इकाई प्रारम्भिक सर्वोदय संगठन होगा उसको कार्यात्मक बनाने के लिए धरतृ संस्था धरतृ संस्था के साथ प्रयास किया जाये।

गूटकारी पद्धति और बिहाररी के स्वरूप की धरतृ संस्था की मोटने के लिए मेरा यह सुझाव प्रयास बनना रूप है। संघ लोगों का बिन्दन शुरू होगा तो कोई रास्ता निकलना। धरतृ चर्चा-चर्चा पर नवी शुरु प्रवृत्त होगी ऐसा मुझे विश्वास है।

प्राचीन भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का

हम अभिनन्दन करते हैं।

● साधु रंग ● सूती चरित्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इगडस्ट्रीज प्रायवेट लि०

(सुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :

२०३, डा. टी. एन रोड
बम्बई-१

कारखाना :

नेवारी टैंगरशासन
मिशन बम्बई-१४४,
मोगपुरा रोड,
बुधनी, बम्बई

२६ नवम्बर' ७३ के सर्वोच्च में विनोबा जी के हवाने से एक टिप्पणी दी गयी है, जिसका अभिप्राय यह है कि शासन की मन-मानी के विरुद्ध सत्याग्रह को बान करना गलत है।

यदि टिप्पणी केवल धमकी देने के अर्थ में किये गये सत्याग्रह के बारे में होनी है (जैसे तथातथिन सत्याग्रह आन्दोलन होने रहने हैं) तब तो कोई बात नहीं थी किन्तु टिप्पणी में सरकार की मनमानी के विरुद्ध सत्याग्रह मात्र विचार को चुनौती दी गई। धन- इसके पीछे छिपी हुई भ्रान्ति के निवारण का प्रयत्न आवश्यक है।

यह टिप्पणी विनोबा जी की इतराईन सम्बन्धी उक्तियों के आधार पर दी गई है। वास्तव में यह धादमियों की उक्तिवा हमेशा ही माननीय नहीं होती। विरोध, तब जब वे और बड़े धादमियों की उक्तियों के विरुद्ध हैं। श्री खल्लुभाई पटेल ने सही कहा कि सत्याग्रह या हथियार केवल भले शत्रुओं के विरुद्ध ही प्रयोग करने की चीज नहीं है। वह निष्ठुर से निष्ठुर शत्रु के विरुद्ध भी प्रयुक्त होना चाहिए। हिटलर के हृदय में क्रोधमत्ता थी या नहीं यह विलकुल अप्रासंगिक है। हिटलर के हृदय में न हिंसा सकना आवश्यक तो पर साधना की कमी नहीं है। साधना तो बहा पूरी हो जानी है जहाँ सत्याग्रही सत्य की रक्षा करता हुआ धानाई के द्वारा मारा जाना है। विन्तु धातनाई का धातनाई पन नहीं जा सका इसका कारण यह होता है कि उसके लिए जिस विरम का और जितना तादर में लून बहना आवश्यक था, उतना गही बहा।

विनोबा जी का यह कहना सही नहीं है कि यहूदियों से सत्याग्रह के लिये बहना मूर्खता थी। येंसे तो विनोबा जी की इस उक्ति को अनुचित सिद्ध करने के लिए गांधी जी का इस सम्बन्ध में लिखा हुआ वह लेख ही काफी उचित्युक्त है जो उन्होंने २६/११/३८ के हरि-कन में लिखा और जो 'सत्याग्रह' नामक पुस्तक में पृष्ठ ३४८-५० पर छापा हुआ है।

किन्तु इसके अलावा भी विनोबा जी स्वयं मानते हैं कि गांधी जी का सत्याग्रह और गांधी जी द्वारा कल्पित अहिंसक शक्ति निरन्देह ऐसी है कि वह किसी भी परिस्थिति में सर्वत्र सफल होगी। ऐसे व्यक्ति का यहूदियों को सत्याग्रह के लिए बहना मूर्खतापूर्ण तो नहीं ही था, गलत भी नहीं था।

वास्तव में जानमार्गे प्रेरणा शकर के अनुयायी विनोबा और कर्ममार्गी गांधी के विचारों में मानेद होना स्वाभाविक है। गांधी हिटलर द्वारा सजाये गये यहूदियों को अथवा याहिया द्वारा सजाये गये बगालियों को पीठ दिखा कर देश छोड़कर भागने का मशवरा नहीं दे सकता था उसके पास तो एक ही मशवरा था कि आनतायी के सामने सिर मत झुकाओ उसे पीठ दिखा कर भागो नहीं बल्कि मुकाबला करते हुए प्राण उत्सर्ग कर दो। हाँ यदि प्राण में पर्याप्त अहिंसक शक्ति नहीं भाई है और उसमें धातना विस्वास जाग्रत नहीं हुआ है तो धातनाई के सामने झुकने या पीठ दिखा कर भागने से तो हिंसात्मक मुकाबला करना ही धेयस्वर है।

इस संदर्भ में निश्चय ही वह बगला देशवासियों को भी यही सलाह देते और इसके न माने जाने पर भी बीरो की, जिन्होंने हथियार से ही सही याहिया का मुताबला किया, तारीफ करते। तो इसलिए यह मुभाव देना गलत है कि जब तक इतनी शक्ति प्राल्त न हो जाये मुकाबले का मशवरा देना ही गलत है बल्कि भागने का मशवरा देना चाहिए। यह तो इतफाक है कि यहूदियों को बसने के लिए फिक्तनीन मिल गया बरना देश छोड़ना उनके लिए बहुत ही पातक होता जैसा फिक्तनीनी धरदों के लिए हो रहा है।

ऐसी दशा में गिवाय मुकाबले के और कोई मशविरा सम्भव ही नहीं है और क्योंकि गांधी जी अहिंसा तथा उसकी शक्ति में विश्वास रखते थे और हिंसा तात्क हथियार ही ही नहीं सवते थे इसलिए उन्होंने धाय-

बल को जाग्रत करके अहिंसक धातमबल द्वारा मुकाबला करने को कहा।

हिन्दू-मुस्लिम मारकाट से व्यथित गांधी के मुह से निकले हुए कुछ शब्दों को लेकर विनोबा जी का यह कहना भी गलत है कि चूकि अंग्रेज सरकार जिन्ही विधिनिषमो को मानने वाली थी इसलिए हमारी कमजोर शक्ति का भी निवाह हो गया। अंग्रेजों को विधि-निषमो का मानने वाला अथवा दयालु बहना न केवल उन धातनाकारियों के प्रति धोर धान्याय है जिनके सूत से अंग्रेजों ने अपने हाथ लाल किये बल्कि जनिधावाला वाग के निहत्थे शहीदों व प्रद्वीचिमुर् में मारे गये मामूमो के प्रति भी धोर धान्याय है, फिर जे० पी० व धान्य लोगों पर जेल में जो धमनायुक्त धातनाचार हुए उनका तो कहना ही क्या।

जहाँ तक कमजोर शक्ति का सवाल है यह तो सही है कि भारते धातमिक स्वायं को देखते में चतुर अंग्रेज ने भारतवासियों को इस धयसर से बचिन कर दिया कि वह अंग्रेजों का यहा टिकना प्रसम्भव बना कर उन्हें निकाल देते और समय को देवने हुए वह कुछ पढ़ने ही चला गया। विन्तु स्वतन्त्रता के लिए सड़ने की शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है उसे एक विरोध समय की दशा में ही समकें रहना गलत दृष्टिकोण है। धन-यह माना जा सकता है कि १९४६ तक हमारी शक्ति इतनी बड़ न पायी हो कि हम उन्ही समय भारत राज्य अंग्रेजों की जगह स्थापित कर पाते। विन्तु इसमें सन्देह की मुताबक नहीं है कि गांधी जी के अहिंसक मार्ग पर चलने हुए ही हम निश्चित ही कुछ समय बाद अंग्रेजों का यहा टिकना प्रसम्भव बनाकर धनरा राज्य स्थापित कर लेने। बदाचिन यह धयदा भी होता। यह कहना तो सही है कि धाने यहा कुछ लिये चोर दूरो को उरदेग देना सही नहीं है। विन्तु साथ ही यह बाद भी गलत है कि जब तक हम ईमानगीह या शंकराचार्य जैनी (शेष पृष्ठ १२ पर)

ब्रेजनेव को परास्त करने वाला समाजवाद

— राजेन्द्र माथुर

ब्रेजनेव की भारत यात्रा से जनता ने कोई उम्माह की तरह पंरा नहीं हो सकी, दुर्भाग्य भारत के प्राथमिक एवं प्रान्तीय प्रतिष्ठा की हानि से वह बेहतर महसूस नहीं था। इसका कारण यह नहीं है कि सोवियत रुम बलका कारण यह नहीं है कि सोवियत रुम बलका गया है। बल्कि हुए हम है। इसलिए १८ साल पहले दुर्भाग्यजन और कृषकों की भारत यात्रा ने जो एक मोड़ की स्थापना दी थी, वह आज गायब है। जो सोम भौतिक धरातल पर सोवियत रुम से हमें बह सब मिल रहा है, जो एक मित्र राष्ट्र से हम चाह सकते हैं। चीन, अमेरिका और पाकिस्तान की युवा-कावो के विनाशक सोवियत रुम ने हमें लगभग सींचित पाटी दे रखी है। हमारी धर्मनिरपेक्षता की सीमा बलुक करने के लिए उनमें से भारी भारमाने भारत में लीये हैं, जिनकी पूजी-वादी विरक्त के देना से कभी उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। भारत को अन्तर्द्वन्द्वीय धरातलीय विचरता की जितनी भी जमानत एक बाहरी देश धरने स्वामी को स्थान में रखते हुए दे सगा है, उतनी रुम दे रहा है। अपने देशों और सहोरो के बाद भी यदि हम विरक्त हैं, तो हमसे बेबल यही सिद्ध होगा है कि अपने रूप में हमें विनया कम करोया क्या है। विदेशी धर्मगणों से ताजकी यह युवा करने के दिन धरत बड़े हैं, लेकिन धरती कर्मजता पर गर्व करने के दिन कभी छाए नहीं है। निरव्य ही बोधारी विनी दिन एक करोड़ टन दुष्पान पंरा करोया और विचारों की समानता बर १०० लाख टन होगी। मायद हमारे बाद की पीढ़ी इन धर्मगणों को कोई बेहतर धर्म दे सकेगी। लेकिन आज तक तो विचार यह है कि सोवियत रुम जब भारत में एक कचरो हुई धर्मनिरपेक्षता को कायम करने के लिए पूरी धरती दे रहा है, तब हमारे नेता, नाते, नीतियाँ और नर बाह्यर उल्लेखनीय को टप करने के लिए कोई कचर बाको नहीं छोड़ रहे हैं। ब्रेजनेव कायद भारत को सुविधा का एक कायदर देश बनने देगना चाहते हैं, ताकि वह कोच के बन्दू को समुक्त करे और

एशिया की विचरता में सपना योग दे। लेकिन सोवियत रुम के इन लक्ष्यों के जो दो बड़े दुश्मन इस देश में हैं, वे हैं भारतीय राष्ट्रीय कावोस और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और यह ब्रेजनेव का दुर्भाग्य है कि वे इन दोनों के साथ सहयोग करने के लिए प्रतिबन्धित है। यहाँ इन पाटियों का नाम लेना भी शायद बेमसलब है, क्योंकि वे भारत के उन शासक वर्ग (याने मोटार वर्ग) का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो देश को कानू या ठण्ड रखने का निरुपेक्ष दे सक्ता है। ब्रेजनेव का यह दुर्भाग्य है कि भारत में मात्र एक शासकवर्ग गत्तारुद है जो भारत की गति देने के नाम पर रुम से मदद लेता है और फिर ऐसी नीतियाँ धरनाता है जिनके कारण वह मदद गटर में बह जाती है। आज के समय में अमेरिका ने यह पारा का कि एशिया और अफ्रीका में उभरने जो भी मदद की है, उससे विरिद्धपन में कोई फर्क नहीं पडा, क्योंकि सारी मदद ठेकेदारों और सरकारी शोकोषों और दलानों की जेब में पहुँच गई है। मायद धरती दुश्मन में सोवियत रुम की यही लोच करे, और तब यह वह जानकर निरव्य ही चौंकेगा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भी इस दलानों में शामिल रह रही है।

धरातल साल पहले धरणात्र नहीं था कि भारत-सोवियत मैत्री का यह हल होगा। २६ जनवरी १९६२ को "सोवियत युधि" नामक पत्रिका ने पड़नी बार भारतीय गणरुक्त का प्रतिबन्धन किया था और लिखा था कि कावोस पार्टी एक प्रगतिशील पार्टी है और उनमें तत्पराधन में समद्वी प्रदानत के सक्षम कचर भी समाजवाद का गणना है। तब यह सुनना बहुत धरणात्र तथा या और हुए हम बाउ का शेष लेकर धरती पीठ धरया रहे थे कि रुम जैसे महादंभ को हराविलेताई प्रथमा के अचरार से हम उदार रहे हैं। हमें तब लगा था कि भारत के प्रगति के साम्यवाद की धरतें सुन गई हैं और नेहरू के कारण सोवियत रुम का प्रतिबन्धन रहा है। कावोस का प्रतिबन्धन

करके कमलिन के कम्युनिस्टों ने तीन बावें स्वीकार की। एक तो यह कि निमान मन्डूर कावोस को कोई विचारिया महा नहीं है, दूसरे यह कि कावोस के दाते के नीचे जो बुन्दू धा नवबाह्यर देश पर राउ कर रहे हैं, वे इस बात के लिए हुनमबलर है कि भारत पूजी-वादी विरक्त को कचर माय देते रहने वाला मेतिलर, धर्मनिरपेक्ष, प्रतिबन्धित साम्यवादी देश न बना रहे। वे सोचो से उद्योग की धार, उपनिवेश विधान में प्राथमिक स्वाधीनता की धार, प्रतिबन्धन में धोरनायक विरक्त की धार, साम्यवाद से प्राधुनिकता की धार जाना चाहते हैं। तीसरे उन्हें यह भी लगा कि स्वाधीनता सपनों के दिनों में जनता के साथ कचर विना कर कायं करते वाली कावोस में दरिद्रता लक्ष्यों के प्रति सहानुभूति है, और सामाजिक न्याय का बोध है, जो उसे साम्यवादी दिशा में खींचता है। धार के कावोस की ही रट लक्ष्यो रहने लगे धरार सरकार की निरुक्त गणना के धरणात्र क्या पाते ? न नैचन भारत, बहिक सारे धरती एशियाई विरक्त में प्रगतिशील हुकुमत् से ह्राय विनया का कर्मना सविषय रुम ने किया और ये कम्युनिस्ट कायदध का एक नया धारोत्तम बोनी महादंभों में शुरू हुआ। जब सोवियत रुम को पंरते के लिए धरतीरता सींचित प्रतिबन्धन दे रहा था, तब कमलिन ने विचारधारा के इन नये धरक्त का उद्योग नीतनुद में किया, और उमे यद्वी सपना भी मिनी। जब धरतीरता बदनय तत्परागाहो को बन्दू दे रहा था, तब सोवियत रुम सोवियत राष्ट्रीय धरन्तनीको को प्राथमिक स्वाधीनता की दिशा में सहानुद दे रहा था।

नेहरू और कृषकों का यह सानुक्त स्थान रखने में बहो टप हो गया ? कावोस की विचारिया धरक्त भी नहीं है। भारत का बुन्दू का मन्धर वर्ग धरक्त भी प्रगतिशील है। परोको के प्रति ह्यरद्वी जितनी मुणर धरक्त

है, उनकी पहले कमी नहीं थी। इस सबसे बावजूद हिन्दुस्तान एशिया का सबसे बीमार और रबनहीन मुक्त क्यों है ?

इस विस्मयजनक प्रक्रिया का कारण शायद यह है कि भारत का शासन बर्ग सिर्फ प्रकृत से मायुनिक है, और देश सिर्फ प्रकृत से ही नहीं चला करते। वे सत्कार, सहजवृत्ति और उन आदतों के महारों चला करते हैं जिन्होंने राष्ट्रीय रिफॉर्म का रूप ले लिया है। अगर हमारे यहाँ एक मजदूर की नियरानी करने के लिए पाच कन्नके और केशियर और मुपरवाइजर खड़े हो जाते हैं, तो गृह निषिचन ही एक राष्ट्रीय रिफॉर्म है। यह बट ठुले की दुम है जो मार्क्सवाद की भोगनी में बारह साल रहने के बाद भी सीधी नहीं होनी। दरमसल समाजवाद हमें सालना देता है कि कन्नके और केशियर और मुपरवाइजर नियुक्त करके हम कोई गलत काम नहीं कर रहे। धर्म व्यवस्था पर राज्य का कन्ना ही प्रथम नियरानी हो, यही समाजवाद है। इस-

लिए कन्ना और नियरानी करने वाले घफसर बड़ने जा रहे हैं, और काम करने वाले के बजाय नियरानी करने वाले का कन्ना बड़ता जा रहा है। जो भी प्राज्ञ मेहनत करता है, उसकी धाबका है कि बन उसकी तरफ ही हो, और यह नियरानी करनेवाला बन जाए। मेहनत न बूझकम है, इसलिए त्याग दे। नियरानी सबसे बनाती है, इसलिए ध्येयस्कर है। समाजवाद में भारत के हर जनजात बोटर को पहनी वार भीसा दिया है कि वह मखणें बने, मुपरवाइजर बने। सर्वहारा को तानाशाही को हमने धीपतान करवा दिया है, और हम तुरन्त एक ऐसे भारत में साम लेना चाहते हैं, जो सर्वहाराविहीन हो, श्रमविहीन हो और जहाँ हर आदमी नियरानी करता पाया जाये। समाजवाद हमें इसलिए पसन्द है कि वह हमारी प्रकृत की तरह उन्ना और हमारे सत्कारों की तरह पिछड़ा हुआ है। यह बंजनेव का आग्रह नहीं, बल्कि हमारी प्रकृत की जखरत है।

समाजवाद के नाम पर बीमार रहने

वाले हिन्दुस्तान के बजाय बंजनेव शायद ऐसा भारत पसन्द करे, जो स्फूर्त हो, उल्लाहित हो और अपनी भाष खुद पंदा करके तेजी से चल रहा हो। जापान और पश्चिम जर्मनी और अमेरिका समाजवादी नहीं हैं, लेकिन वे रूप की विगाह में सामान के पात्र हैं, और उनसे बराबरी के आर्थिक समभेने किये जाते हैं। साइबेरिया के किसान के लिए रन पूजीवादी विश्व से पूजी और हतर उधार लेना पाहला है। प्रत के मलिन की प्राथमिकता समाजवादी हिन्दुस्तान नहीं, सक्षम और समर्थ हिन्दुस्तान है। जो लोग समाजवाद, अपना रहे हैं, और यह नहीं जानते कि राष्ट्रीय आदतों के कारण हिन्दुस्तान में उनकी शक्ति की प्रतिक्रियावादी और प्रगतिविरोधी हो जायेगी, वे अन्तल बंजनेव के हाथ बमजोर कर रहे हैं। रन हमें बंसे ही मदद दे रहा है, जैसे कि वह १८ साल पहले दे रहा था। लेकिन इस दौरान अपनी बमजोरियो और प्रसफलताओं से हमने क्या सब सीखा है ?

(पृष्ठ १० से जारी)

पूर्ण शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते तब तब हमें अहितक सत्याग्रह के बारे में कुछ कहने का प्रयत्न करने का अधिकार नहीं है।

शक्ति तो विकासशील और बड़ने वाली चीज है और यह सधर्ष से ही बढनी है। यदि इस डर से कि प्राप्ति पूर्ण शक्ति प्राप्त नहीं हुई है कोई संघर्ष ही न करे तब तो संभावित्वि ही रहने वाली है। मुनाबले के अहितक जदोजेजहद के प्रभाव में ही तो प्रामदान का क्रान्तिकारी तत्व खलम हो कर एक मुषारवादी वार्यक्रम मात्र रह गया, जिसने मुषार तो किया किन्तु चिन्मारी नहीं जलाई थी।

अतः हम बहुत नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि यह विचार गलत है कि शासन की मनमानी के विरोध में जब स्वयं विनोबा जी सत्याग्रह करने योग्य विमुक्त अहितक शक्ति को अपने भीतर प्रभुभव नहीं कर रहे हैं तब हम में से अन्य किसी की इस

मैदान में उतर पड़ने की इच्छा वितनी लगरनाश साबित हो सकती है, अर्थात् त्याग्य है, शासन की मनमानी को बदल करने हुए हमें न केवल स्वय ही उसके विच्छद सम उठाना चाहिए बल्कि जनता को भी अपने साथ लेना चाहिए। हमारा कदम दभ या धमकी वा न हो लासल या श्वापि की नीयन से न किया गया हो यही प्रेरणा जनता को देनी चाहिए। वह कदम अहितक सत्याग्रह का हो। यदि इसमें कुछ बमी रहती है तब भी हम शासन की मनमानी वा अपनी अग्रुण

अहितक से मुनाबला करने-करते पूर्ण अहितक सत्याग्रह को और उत्तरोत्तर बड़ने रहे।

वास्तव में खतरा शासन की मनमानी होने देने में है, उम्मा मुनाबला करने में नहीं है। चाहे वह अग्रुण अहितक ही क्यों न हो।

जीशोराम, एडवोकेट
तिविल साईंस, मुरादाबाद

(पृष्ठ २ का पेष)

इतना भी केवल अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कह रहा हूँ; मैं इस बात की वास्तव नहीं कर रहा हूँ कि श्री सिंह या उनके सहयोगियों के माप बानुन समुचित वग से पेष नहीं पाये। परन्तु मैं पुनः इस बात पर बल देना चाहूँगा कि बानुन की, बानुन की नजर में अपनी भी एवं उसकी सम्पत्ति तथा उसके परिवार के सदस्यों एवं उनकी सर्गति के बीच एक स्पष्ट रेखा प्रवश्य खिचनी चाहिए। अगर राज्य नागरिक की स्वतंत्रताओं का तथा सम्पत्ति वा आदर करता है तो उसे किसी अपनी की सम्पत्तियों के शरीर या सर्गति पर प्रहार करने का अधिकार नहीं है। मैं दोनो संबंधित सरकारों से साहज प्रभुरोप करता हूँ कि वे इस मुनाब पर प्रभुद्विग्न भाव से विचार करें।

भुदान-मस : सोमवार, १७ दिसम्बर, '७३

वेचारे वैज्ञानिक

मस्तिष्क की सख्तरी धोर विद्युत् से मस्तिष्क को उत्तरी क्षोभन गति के अधिक गति देकर धारकल मुमुक्षु भी प्रवृत्ति धोर प्रवृत्तियों को बदलने के प्रयोग हों रहे हैं। इन नये प्रयोगों के सामग्रीय धोर निम्न परिष्कार किये गया है। पहले ही, इस पर म्यूरार्ड की 'इस्टीमेटुड प्राकसोसायटी एपिपम' के प्रमुख धारकताओं का एक दल तैयार किया है। 1901 के दिनांक में इन दल के कुछ सदस्यों ने 'मस्तिष्क की सख्तरी' विषय में लेखक सख्तरी से जो परिष्कार किया था हम उन्मत्त से केवल एक सख्तरी से बेतपोसे की तीव्रता के बारे में उन्होंने जो जानकारी दी, उसे पाठकों के सामने बहुत सशेष में प्रस्तुत रहे हैं। पाठक देखेंगे कि इन प्रकार की सख्तरी धोर उपयोगों के जहाँ शब्द प्रयोग हो सकते हैं, वहाँ धारक वैज्ञानिक लोगों की तरह दूर से बुरे जैते उपयोग सत्ता के माध्यम करवाये जा सकते हैं। शोचना चाहिए कि शब्द उपयोग की तरह विद्युत् जमा कर और धारक की तरह प्रमुख करने का विद्युत् धारक शोना है।

डा० डेलनेरो से प्रमुख धारकताओं के एक सदस्य कीर्तिन ने कुछ शरतिभ्रम किये हैं। प्रथम बिन्दु: पहला तो यह कि मस्तिष्क की सख्तरी धोर विद्युत् से उत्तरी प्रेरित करने के लिए इन दिनों धारक विद्युत् तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं, उत्तरी उपयोग या प्रयोग किस विचार से कर रहे हैं, दूसरा तर्क सख्तरी के जो शक्ति पर उपलब्ध शक्ति है, बीच बीच ही ही धोर धारक को सौकरार्थ ही रहा है। उन्मत्त मनुष्य किम तादा है, तीसरा धारक धारक के पास समय धरना होता है, शक्ति धरना ही है, धरना शक्ति सत्ता में इन दिनांक मनुष्य करते शोना प्रतिभाषन व्यक्तित्व मिल सकते हो तो धारक धारक शोना से क्या शक्ति चाहेंगे? धोर अतिम कि इन प्रयोगों के पीछे तर्क क्या है, ये जखरी ही सख्तरी लगे रहे

हैं—इससे क्या कोई बढ़ते समय या सख्तियुक्त प्रत्यक्ष उद्देश्य हस्तगत होते ?

डा० डेलनेरो के वैज्ञानिक शक्ति के साथ जो उत्तर दिया उक्त सार श्रवण विचारों से तर्क है। ये सोने, देखिये धारक के वार्ता की विविधता प्रयासिया देने के दा उपाय हैं: एक तो उसे कालाजाल देकर धोर दूसरा उपाय जो इय समय द्वारा विषय है, मस्तिष्क पर ही सीधे-सीधे वैज्ञानिक प्रयोग करके। मस्तिष्क पर ही तरह के श्रुतुजः प्रभावों का उपयोग किया जा सकता है।

एव—सख्तरी करके, दो—विद्युत् से मस्तिष्क की सख्तियुक्त करके धोर तीन—मस्तिष्क के भीतर कुछ रासायनिक पदार्थ रखकर। वहाँ धारक उन मादक द्रव्यों से नहीं है जो खारे जाने हैं धोर जिनमें मस्तिष्क पर विविध धारक होते हैं। वहाँ ही मस्तिष्क पर ही मस्तिष्क को खोलकर उल्लेख विधी प्रकार का रासायनिक पदार्थ जो उम मस्तिष्क वाले के लिए खरही हो, वहाँ रख कर फिर मस्तिष्क बद कर देने से है। इसके मिला एक प्रकार धोर भी है, विद्युत् धोर रासायनिक दोनों के सम्मिश्रित प्रयोगों से निमित्त परिष्कारित का दिमाग पर धारक शालन। इस नयी निमित्त परिष्कारित से भी हय दिमाग की प्रवृत्तियों धोर उत्तरी विद्युत् या प्रवृत्त शालन को बदल सकते हैं। डा० डेलनेरो ने कहा, 'दमन का यह कायक प्रका कि स्थिति क्या है, यह भी शोना में धारक तर्क नहीं होता है। प्रकत तब इन तरह मन जाना है कि हय किम तरह का धारक बनाया चाहते हैं ?

सख्तरी, विद्युत्-सख्तियुक्त या रासायनिक प्रयोगों से हय मस्तिष्क को मनचाही प्रकृतियों में रत धोर विच्छेदन बना सकते हैं। इनसे प्रकृत में मन की सत्ता ही बदल जाती है। शोचने-सख्तियुक्त के नये धारक इतने विधे जा सकते हैं। यह धारक तो ही हय धारक ही गई है कि हय धारक की 'मस्तिष्क' के साथ करने के पूरे तरीके को जान गये हैं धोर धारक इन तरीकों को धारक इय से जना कर, जैसे

मन के नये के सुभाविक मरान बनाया जा सकता है, जैसे सख्तरी मानव जति को मन चाहें सखि से जनाया जा सकता है। सुनने में यह धारक भी मन सकता है। कबोकि इतने व्यक्तित्व, स्वतन्त्रा धोर निम्नता, धारक-विद्युत् के मदमें ही नहीं बचते।

केवल यह रह जाना है कि ये 'हय' धोर ही जो धारक की धारक मन के साथ से डालना चाहते हैं, या धारक चाहेंगे, इन शोना धा उपयोग करने, डा० डेलनेरो ने इनो पदार्थ से सम्बद्ध सख्तियुक्त प्रयोगों को उत्तर दिने उम उत्तरों में यह विधीयुक्त विभिन्न जमानों के शक्तिधरान 'हय' धारक-धारक मन को धरक से शिवाय से धारक की मनचाही दुमारात या चलनी-चिरतो सखि धारक में सहज समय हो जाये।

उन्मत्त यह भी प्रकृत गया था कि तब क्या यह एक सख्तरी धोर पदार्थ कारका मर्तों है कि धारक धारक सख्तरी बद कर दें धोर जितनी कर सकते हैं, उन्मत्त प्रयोगों का प्रचार लखें उन्मत्त जनाबदिवा कि सम्मिश्रित प्रारभस धारक को जमाने के विभिन्न उपयोगों का धारक केकर प्रयत्न होते धारक हैं। एक सदस्य ने कहा कि इसका धारक कि मस्तिष्क कोई भी-तरी धोर ही नहीं है, काही धोर है। धारक जैसे धोर से उवे बदल सकते हैं, यह धारक धारक से भी बदल जाना रहा है—धारक उत्तरी सामग्रीय धारक में क्याय धारक बहुत शक्ति के धारक पर बदला वा सकेगा, यह धारक के साथ सख्तरी है वैज्ञानिक से जनाब दिवा, 'मेरे सख्तरी का सखाप नहीं है—मुझ शोर्में नीने की है। उन्मत्त शब्द प्रयोग हों, यह धोर इच्छा है।

धारक से ही इच्छा का भी कोई क्या धारक करे। सख्तरी धोर उत्तरी साधुनिय पहलु से जलकर उमकी धारक को प्रकृत से ये शोर्में निम्नता समय है किन्तु धारक शोना के परिष्कारों की तरह धारक उपयोग धोर परिष्कार भी धारक हो सकते हैं। किम भी वैज्ञानिक शोच करना कैसे शोके। यह तो ही है कि प्रवृत्ति का सुभाष शोना भी किन्तु धारक बहुत जमान विधे हैं जितना प्रवृत्ति को सामग्री में जान हय तत्त्वों में उपयोग का सुभाष शोना ?

अठारह कार्यक्रमों को लेकर पदयात्रा

तीन दिग्गजों को अपनी प्रसङ्ग की कामसभाओं से सम्पर्क करते सर्वोदय प्राथम शरीरी से तीन टोलियां रवाना हो गयीं। हर तीली के ३ पदयात्रियों के झंझारा प्रसङ्ग बराबरसभा के पदाधिकारी प्रसङ्ग महिला समिति की संयोजिका श्रीर जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष भी पडावो पर पहुंचते रहेये। यह अभियान तीस दिसम्बर तक चलेगा। प्रसङ्ग तो सम्पर्क की मुविधा के स्थान से उत्तरी, क्षिणी व पूर्वी, क्षेत्र में बाटा गया है। इन्देवर प्रसाद राय, महावीर प्रसाद गुप्त व रामशरण सिंह क्रमशः इन क्षेत्रों के प्रभारी हैं।

पदयात्रा टोलियों के रवाना होने से पहले खड्ड स्वराज्य सभा के मंत्री ने ग्रामसभाओं के नाम लिखे गये एक पत्र में कहा है कि अगर हम में क्षात्रीयता की भावना सूराती थी और वर्तमान सरकारी तंत्र इसी प्रकार दनो-दिन बेन्द्रित व घट्ट होने गया और पापारियों की वर्तमान क्रूरनीति और क्रूर नीति गयी तो इस प्रसङ्ग और देश को घरा-कृता और घमाव व घरात से शायद ही टुकारा मिल पायेगा। पदयात्रा टोली जिन ८ कार्यक्रमों को लेकर ग्रामसभाओं तक हूँच रही हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

१. हुबहू ग्रामसभा की कार्य समिति की ठक बुलाकर उसमें ग्रामसभा की सही नीति की जानकारी प्राप्त की जाय। १।धारण सभा में पेश किये जाने के लिए भार की गई रिपोर्ट एवं ग्रामद-खर्च का हराव विचारार्थ प्रस्तुत किया जाय।

२. दोपहर में ग्रामसभा की साधारण भा की बैठक बुलायी जाय, जिसमें मंत्री, ग्रामसभा द्वारा किये गये कार्यों का प्रतिवेदन या ग्रामद खर्च का हिसाब पेश करे। पुर्ण बन निर्णयानुसार ग्रामसभा के हृषि, धोष, शिक्षा, निवत, स्वास्थ्य, न्याय, शान्ति ना, ग्रन्थोदय और महिला उपपरामितियों की नवीकरण किया जाय।

३. ग्रामसभाओं को पेशजव एवं सिचाई विचार रितीक कमिटी द्वारा दिलाये गये का निरीक्षण तथा किसानों की

उपसे मिले लाभ एवं ऋण के निवत भुगतान करने सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की जाय।

४. हिसा तथा प्रसामाजिक तत्त्वों का मुकाबला करने की हृषि से शान्ति सेना की भर्त्ती तथा उसके प्रशिक्षण को योजना बनायें और बरतूरवाग रुई द्वारा १७ जनवरी '७४ से प्रारम्भ होने वाली महिला शान्ति सेना प्रशिक्षण विद्यालय के लिए ग्राम महिला समिति के सहयोग से एक महिला प्रशिक्षार्थी का चयन किया जाय।

५. भूमिवातों से वीषा-कट्टा को जमीन प्राप्त कर उसका निररण करना और वितरित जमीन पर प्रादाताओं का कब्जा है कि नहीं, उसका निरीक्षण।

६. ग्रामकोष के हिसाब का निरीक्षण, ग्रामकोष सग्रह में ग्रामसभा को यदि टोली की प्रत्यक्ष मदद की जरूरत हो तो उसे प्रावश्यक सहयोग दिया जाय।

७. जिस ग्रामसभा का बैंक में खाता नहीं खुला है उस ग्रामसभा की बँठक में खाता खोलवाने सबधी प्रस्ताव पारित कराने की कार्यवाही की जाय।

८. एक सौ परिवार से कम प्रादादी वाले ग्रामसभा में ५ तथा सौ परिवार से ऊपर वाले गांव में प्रति सौ परिवार ५ सर्वोदय मित्र बनाये जायें।

९. भूदान की विनरित एवं निररण योग्य भूमि की जानकारी प्राप्त कर ग्रामसभा स्थानीय सरकारी कर्मचारियों के सहयोग से भूदान किसानों के नाम लगान निर्धारण कराने एवं वितरण योग्य प्राप्त भूमि का वितरण करने सम्बन्धी कार्यवाही करे।

(पृष्ठ ४ का जेष)

और मतभेदों के बावजूद अभी इतनी क्षात्रीयता यहाँ है कि एक साथ एकर होकर विचार कर लेते हैं। अनुकूलताएँ इतनी हैं और देश की परिस्थिति ऐसी है कि सब कुछ विलोड के फगार पर है। लोगों का मानना है कि इस बार अक्षर ह्राष से निवृत्त गया तो माणद फिर नहीं प्राये। बीस-बाईस ययों की सर्वो-

१० गांव में उत्पादन बढाने की हृषि से विहार रितीक कमिटी, रूपौली द्वारा चलायी जा रही सिचाई योजना की जानकारी देना। सरकारी विकास योजना द्वारा प्रघवा किसान के अपने खुद के प्रयत्न से गांव में घब तक हुए सिचाई सम्बन्धी कार्यों की जानकारी प्राप्त की जाय।

११. गांव में चल रहे खर्च का निरीक्षण तथा खासी एवं सर्वोदय साहित्य व पत्रिकाओं का प्रचार।

१२ गांव में कोई गमला मुकदमा हो तो उसके प्रापसी समझौते के लिए पहल की जाय।

१३ परिवार की घाय बढाने की हृषि से फलदार वृक्ष रोपने के लिए प्रोत्साहन और रूपौली में चल रहे नर्सरी की जानकारी दी जाय।

१४ ग्रामसभा हर बालिग स्त्री एवं पुरुष को काम देने की योजना बनाये और उसकी व्यवस्था करे। सरकारी सस्ते-गल्ले की ध्यान से प्राप्त होने वाले धन्न, बरत तथा भूख जरूरी सामान सही उपभोक्तियों को प्राप्त कराने में जनस्तर पर सजिय सहयोग करे। ग्रामसभा का यहाँ कर्त्तव्य है कि वह अपने गांव के प्रश्नाभाष दूर कराने के लिए ऐसा कार्यक्रम बनाये कि ग्रामसभा द्वारा निर्धारित मूल्य पर वहाँ के निवासियों को प्राजाज उपलब्ध हो सके।

१५ ग्रामसभा सीमित, बाग्यीत, बेद-खली प्रादि भूमि से सम्बन्धित कानूनो के भनल के लिए कार्यवाही करे और तत्सम्बन्धी प्रतिवेदन अपनी बैठकों में पेश करे।

१६. पुष्पागरी, ददेख, फिज्जुलखी तथा विलासपुर उपभोग जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ ग्रामसभा भान्दोलन करे।

दय-साधना को प्रगर वर्तमान संकट तोड़ देना है तो उन लोगों पर सायद इमका बन घसर हो को नूड रोजी-रोटी की तलाग में सर्वोदय में भा घटके हैं, पर उन लोगों के लिए तो यह प्राधात का निषय ही होगा जो एक विचार से प्रभावित होकर इयमें प्राये हैं और प्राणा-जीवन ही इसके लिए समर्पित कर दिया है।

—अक्षय कुमार गण

सर्व सेवा संघ उपवास-दान पर चलेगा

विज्ञोबा धोर जयपराशरजी की उपस्थिति में एक से छ. दिसम्बर तक श्रद्धा विद्या मन्दिर पवनार में हुई संघीयता में सर्व सम्मति से विचारित की है कि सर्व सेवा संघ प्राणी विनोबा उपवासी यान्त्री ११ दिसम्बर '७४ से अपना सर्व उपवासदान में प्राण भूट प्राय से बचाये। संघीयता में यह भी सुभाष दिया है कि संघ अपना सर्व बलाने के लिए प्राय वन्या इकट्ठा न करे। लेकिन धारणी धरती से जो दान देना सम्भव न करे उसे वह स्वीकार कर सकता है। सर्वोदय-प्राण धोर सर्वोदय मित्र बनाने से जो रूपम उसे प्राप्त होनी है उसे वह पूर्ववत् स्वीकार कर सकता है।

संघीयता में देश भर के कोई बालक सर्वोदय सेवाएं एकात्मिक रूप में धोर छ दिनों तक उठ्ठोने धारणीय, सपटन, लोकगीत धोर इनसे सम्बन्धित अन्य सभी विषयों पर धोर चर्चा करेगी। संघीयता में प्राय प्राय

प्रत्येक व्यक्ति को पहले तीन दिन में श्रवण दिया गया कि वह सुखकर अपनी बाल सबके सामने रहे। इस प्रकार जो वक्तव्य प्राय उनमें से चर्चा के मुद्दे छाटे गये धोर फिर तीन दिनों तक उन मुद्दों पर चर्चा हुई। उपवासदान में नाम बालके के सुभाष पर तो जहरी हो सर्वसम्मति हो गयी थी, लेकिन उत्तर प्रदेश में प्राणको प्राण चूतन के समय मददाना शिक्षण का कार्यक्रम उठाने पर काफी जीवन व्यर्थ हुई। धारणीय दिन धोर धारणीय बंधन में जयपराशरजी द्वारा इन सम्बन्ध में लिखे गए एक वक्तव्य पर विनोबा जी ने तो पी मदी सहमति प्रकट की धोर उसे बंधन में सुनाया गया। यह भी स्पष्ट दिया गया कि श्रद्धावर में सेवाधाम में हुई राष्ट्रीय परिषद में भी इस कार्यक्रम की विचारित की थी धोर मध्य अधिदेशन में उसे स्वीकार किया गया था। फिर भी उत्तर-

प्रदेश में सार्विकों से इन कार्यक्रम पर धारणी धोर विचारविमर्श न करके इसे उठाया जायेगा। संघीयता की चार बार विनोबा ने धोर तीन बार जयपराशरजी ने सम्बोधित किया। विनोबाजी ने सात बार उपवासदान पर जोर दिया धोर कहा कि प्राणों को चालीस हजार उपवासदान का लक्ष्य पूरा करना चाहिए। उत्तर जोर इन बात पर जो था कि एक नाव की प्रसार-सहभा वाकी एक साप्ताहिक पत्रिका निकालनी चाहिए जो देश में मध्य जगह पहुंचे धोर सभी प्रकार के पाठन यहाँ की जरूरत पूरी करे। धरती चुनि ऐसा कोई पत्रिका निकलना सम्भव नहीं है। इसलिए सब किया गया कि सभी सर्वोदय वर्गों की प्रसार सहाय विनुती की जाये। सभी यह छत्तीस हजार के लक्ष्य है। संघीयता में सब किया गया कि सभी धरती में सर्वोदय वर्गों की प्रसार सहभा विनुती करने पर जोर दिया जायगा।

× जयपराशर माराएल तथा मुख्यमंत्री प्रशासक सेठी के बीच हुई चर्चाओं के अनुसार सामग्री अधिकाधिक व सर्वोदय प्रतिनिधियों की एक तीन सदस्यीय समुच्चय समिति गठित की जा रही है, जो मुद्राकर्मों की सुनीय में सजा बाट रहे प्राणसम्पत्ति बाहुधुओं के सार्विकों से चर्चा कर उन लोगों के नाम पूरेगी जिनसे बाहुधुओं की प्राय-प्राय विषय रहे हैं। राज्य सरकार ने प्राणसम्पत्ति बाहुधुओं की यह सर्व स्वीकार कर ली है कि जिन लोगों के नाम हथियार देने के समय में बनाये जायेंगे, उनके विषय कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी। लेकिन ऐल सोचों पर इस दृष्टि से धारण विचारणीय रणों जायेगी कि वे सीधे धार भी मध्य बने बाहुधुओं की हथियार दे रही है या नहीं धोर कर्त्तव्य सोच हथियारों को उपभोग कराकर गये शत्रु दान बनाने में भी योग नहीं रहे हैं।

मार्च १४ मध्यमर को सुभाषकी में सुनीय वेग के उद्घाटन समारोह में जयपराशर जी ने काफी सरकारी से चर्चा कर उनको जिनसे हथियार मिलते हैं, उनके नाम बनाने के लिए

बाहुधुओं की समस्त सहमति की बाल व्यक्त की थी। उस समय मुख्यमन्त्री ने धारणी कोई प्रतिनिधिया प्रकट नहीं की थी, लेकिन भीवाल में जयपराशर जी से चर्चा के दौरान वे इतने लिए सहमत हो गये। इस समय में जो समिति गठित की जा रही है उसमें मूल सचिव धारणीय ० सी० दास० के प्रधाना प्राणिक नियम के उपस्थित वैकेन्द्र कुमार को भी लिया जा रहा है।

× बिहार में भूदान में प्राण अधिवर्तन भूमि में से चालू वर्ष में मार्च मिनम्बर तक ४,२४४ एकड़ भूमि का विवरण ४,९६३ भूमिहीन किसान परिवारों में किया गया है। भूदान में प्राण २१ लाख एकड़ जमीन में से छत्र लक्ष्मी के भीष्म शर्मा १६६६ लाख ३६ हजार एकड़ जमीन का विवरण हो चुका है।

बिहार भूदान यज्ञ समिती के मन्त्री जयपराशर किश विषय में बताया कि सभी भी सभास प्राय सात एकड़ जमीन का सर्व करता बाकि है। इस प्राय में बर्निटी बाणी

तलर है धोर १३ भूमिदार टोटलों के माध्यम से चालू वर्ष में अधिवर्तन जमीन को बाट लेना चाहती है। सरकार ने भी इस काम के लिए प्रतीक २०० धरणीयों को रखा है। चालू भूमि सुधार वर्ष में सरकार, अधिकाधिक को भी भूदान से सम्बन्धित कामों को पूरा करने का सरकारी धावेन है। इन वर्ष १२४२ भूदान विभागों के नाम दारिद्र्य साधित हुआ है। परन्तु किसानों के नाम सभासकारी की दिशा में काफी बाध करल बाकी है। दानवर्ग की सङ्कट करने में सरोजनक प्रवृत्ति हुई है। इन वर्ष ५३६१ दानवर्ग सङ्कट विषय रहे हैं।

यो मध्य उत्तरप्रदेश के धोर पर सर्वसेवा संघ ने सभी भी शत्रुदास को उत्तरप्रदेश में सरदाना प्रशिक्षण के कार्यक्रम में सरोजन के विचारित में प्रवेश के बाधक के दोरे पर धार रहे हैं। वे १९ दिसम्बर को सप्तमक धारिद्र्य, १० को माराएली १६ को दवादाबाद, २० को बालपुर, २१ म फेरठ, २२ को बर्निटी धोर २३-२४ दिसम्बर को धारण में रहेंगे।

मतदाता, धोखा देने वालों को धोखा दें : आचार्य कृपलानी

हम मतदाताओं के सामने निम्नलिखित तथ्य स्वतंत्र चुनावों की आवश्यकता की बात रखेंगे। हम जानते हैं कि मतदाताओं को फुगवाने के लिए बटून पैगा खर्च किया जाता है। मतदाननाम्यता मत विन्नी विधेय व्यक्ति या पार्टी को दे, इसके लिए जाति और समाज का दबाव, शराव गिलावा और नाना प्रकार की भ्रमकियों का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी मतदाताओं पर दबाव डालने के लिए मजदूरी सबको भी इस्तेमाल किया जाता है।

हम मतदाताओं को इस प्रकारियों से सावधान बनना है। भाग्य राजनैतिक दल इनमें से कुछ से एक इस्तेमाल में आते हैं। हम इस बात से भयानक हैं, जहाँ जहाँ पास प्रभाव डालने के लिए राज्यपाल नहीं है, जो सत्ता-धारी दल को मुक्त है।

उपभोगका तो क्या देश को चुननी पड़ रही है उससे भी हम भयगत हैं। कभी-कभी सत्ता-धारी दल जो कुछ करता है वह मात्रा में इतना अधिक हो जाता है कि जीजो के मुण तक बदल जाते हैं। हमारी जनता गरीब और

अनराज्य के अनुसार देश के भले को साँचकर मत देने को कहेंगे, न कि सिर्फ किसी व्यक्ति विधेय या पार्टी के हित में।

हम उनसे कहेंगे कि वे किसी प्रलोभन के शिकार न बनें। फिर भी हमें मालूम है कि कभी-कभी प्रलोभन इतना बड़ा और दबाव इतना अधिक होता है कि हमारे लोग उनका सामना नहीं कर सकते। हम उन्हें मुशकिल बनने को कहेंगे, पर यदि वे ऐसा नहीं कर सकते तो उन्हें हम बचावेंगे कि वे देश को धोखा देने के चलन हैं। देश के साथ विश्वास-घान करने से यह उनके लिए बड़ी बेहतर है कि वे धोखा देने वाले को ही छोड़ दें। धोर भी कई तरीके से हम मतदाताओं को समझा-येंगे कि वे भ्रम, धर्म, गौरव, प्रजातिविक और राष्ट्रप्रीति प्रयत्नों के शिकार न हों और अपना मत स्वतंत्र रूप से अपनी अनराज्य के अनुसार दें। धोरिकार मत मुक्त होता है और हमें कोई निगी पर दबाव नहीं डाल सकता। (अप्रेजी से अनुदित)



आचार्य कृपलानी

घमान है, हम यह जानते हैं। हम उन्हें इन दुराद्यों से सागाह करेंगे और उनसे अपनी

बालाधन और परमिट-बोटा-भाइसेस जो भूमिका धरा कर रहे हैं और जिसकी भीमत

आन्दोलन के समाचार

हार और पाँच दिग्भर को कन्दूरवा-ग्राम, इन्दौर में सम्पन्न हुए मध्यप्रदेश सर्वो-दय सम्मेलन के प्रथम पर प्रदेश सर्वोदय मंडल के नये अध्यक्ष के लिए श्री हेमदेव शर्मा का चयन किया गया। मन्त्र-सद हेतु श्री इन्द्रलाल मिश्र का ही पुनः चयन किया गया। इस प्रथ-म पर हुई प्रदेश गांधी स्मारक निधि के राज्य बोर्ड को बैठक में श्री बनारसीलाल चौधरी को म. प्र. गांधी स्मरक निधि का अध्यक्ष व श्री बालकृष्ण जोशी को मंत्री मनो-नित किया गया।

गावों में विधिवत ग्रामसभाओं का गठन हुआ। पदाधिकारियों ने ग्रामकोष के निर्माण के लिए ₹३६ रुपये २५ पैसे और ₹२७ वित्तोद्योग भण्डान तत्काल तत्काल प्रह किया। सभाओं ने धान की नई फसल धाने पर उपज का ५० वा हिस्सा निविद्यत रूप से निवल-दाने का सर्व सम्मति से प्रस्ताव किया है।

जिले में सर्वोदय समिति के ६ खादी उलादान एवं वस्त्र स्वावलम्बन वेन्ड, ४ खादी विधी भण्डार और १ ऊनी खादी उलादान वेन्ड है। समिति जिले के १५७ ग्रामदाती गावों में खादी और ग्रामोद्योग का कार्य कर रही है। २५७० वस्त्र स्वावलम्बनी मन्त्रि-धोर ४४४ पजोवृत्त बनकर हैं। परंपरागत वस्त्रों के लिए वस्त्रों हाथ चुनावों में विधी से पोनी बनाकर बनाई करती हैं। ग्रामदाती सोनापुर प्रखण्ड में १५० सर्वधामु दो तनुषा धम्बर धर्ष वितरित किये गये हैं। दपने अलावा जिले में प्रलग्न-प्रलग्न जगह सूनी-ऊनी

खादी उलादान, मधुमक्खी पालन, सोहारी-मुनारी, धान-टुटाई तथा ग्रामोद्योग लेल-उद्योग के द्वारा लगभग १३०० लोगों को उपभार दिया गया है। खादी-ग्रामोद्योग-धामुयों ने उक्त प्रवृत्तियों के लिए प्रादश्यक अनुदान एवं कार्यशील पूँजी प्रदान की है।

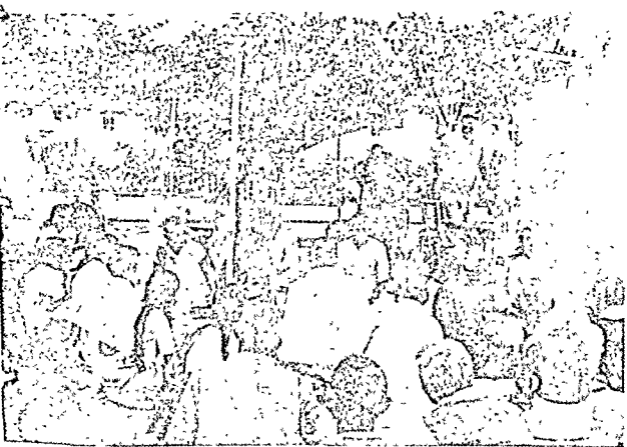
× जिला सर्वोदय मंडल नदीशाल के कार्यवर्धियों ने सर्वसम्मति से तय किया है कि हर माह की पञ्चमिषी शारोण को विन्नी न किसी गाव में बैठक रखी जाये और जन-सर्व बड़ाकर जनशक्ति को जगया जाये। निम्नधामुसार २५ नवम्बर को इन्दूरपुर में बैठक हुई। बैठक में तय किया गया कि गाव के स्वल्प जाने वाली मजुब की श्रमदान में सम्मन की जाये। बैठक में उपवाग-दान के लिए निम्ननिविद्यन मापिनों ने मरुतल किया: सर्वोधी इन्वारी देवी, बगु प्रगाद, मुषेभानेवी, मेदारु भणन, रामप्रभारार राम, कुन्हाई भणन, रामप्रगाद देवी।

× सर्वोदय समिति सरगुजा के मन्त्री श्री गोडने बताया कि जिले के धोरपुर, सीता-पुर और धर्मिकापुर प्रखण्ड के ३४ गावों में पदधायक करके ग्रामवासियों से पुनः संपर्क किया गया और ग्रामदान-ग्रामस्वरज्य का विचार समझाया गया। परिणामस्वरूप १५

वापिक मुल्क : १२ र० (सफेद वापक : १५ र०, एक प्रति ३० पैसे), विदेग ३० र० या ३५ जिलिय या ५ धागर, एक अंक का मूल्या २५ पैसे। प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ०० जे० डिन्वी, नई डिन्वी-३ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २४ दिसम्बर, '७३



पवनार में संगीति : विवरण पृष्ठ २ पर

- × सक्की संगत : छः दिन की संगीति × चुनावों में बढ़ता भ्रष्टाचार और प्रजातन्त्र का भविष्य
× सर्व ब्रह्म के बदले शुद्ध ब्रह्म की उपासना × पैगम्बर की तस्वीर × साइप्रस में तुर्क शरणार्थियों के बीच × घड़िपकार वस्तुओं का या व्यवस्था का ?

भूदान-यज्ञ

२४ दिसम्बर, '७३

वर्ष २०

अंक १३

सम्पादक

राममूर्ति : भवानो प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

सबकी संगत : छः दिन की संगीति

—प्रभाप जोशी

२

चूनावों में बढ़ता भ्रष्टाचार

और प्रजातन्त्र का भविष्य

—जयप्रकाश नारायण

४

सर्वे ब्रह्म के बदले बुद्ध ब्रह्म की

उपासना

—विनोबा

५

पंगम्बर मुहम्मद की तस्वीर

—यदुनाथ यत्ते

६

साइप्रस में तुर्क शारणाधिकारों के

बीच

—अमरनाथ

८

बिना टिप्पणी के

—जगत राम साहनी

११

बहिष्कार वस्तुओं का या

व्यवस्था का ?

—त्रिलोकचन्द

१३

संयोजक की चिट्ठी

—सुन्दरलाल बहुगुणा

१४

ग्रान्दोलन के समाचार

—

१६

राजघाट कालोनी,

गांधी स्मारक निधि,

नई दिल्ली-११०००१

सबकी संगत : छः दिन की संगीति

प्रतिस्वराज्य संगीति के लिए सर्व सेवा सप की धोर से सिद्धराज जी धोर बग साहब ने बाबागदा कार्यमूची बनायी थी धोर विषयो का चयन कर के उन पर सजित टिप्पणिया भी तैयार की थी । लेकिन एक से छः दिसम्बर ब्रह्म विद्यामन्दिर पवनार मे चलने वाली यह संगीति सही मानी मे संगीतिही सिद्ध हुई धोर उस मे पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कुछ नहीं हुआ । एक क्षण मे यह ठोक ही हुआ, क्योंकि 'यामस्वराज्य संगीति' हो कर यह कुछ धीप-चारिक हो जाता धोर विचारशील कार्यवर्तियों के धायसी विश्वास के सम्पादन को जो उपलब्धि इस संगीति मे हुई वह शायद नहीं हो पाती । संगीति को धर वास्तविक धोर धायसी समझ बढ़ाने वाली बनना था तो यह जरूरी था कि वह सेवाश्रम मे शकटबद्ध मे हुई राष्ट्रीय परिपद धोर फिर हुए सप अधिवेशन से जुडती । वहा गया था धोर वही लोग महसूस भी कर रहे थे कि हालाकि राष्ट्रीय परिपद द्वारा पारित प्राठ सूत्री कार्यक्रम को सप अधिवेशन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया था लेकिन इस दौरान ऐसे कई अवसर धाये थे जब साफ लगा था कि हम लोग एक दूसरे की धान ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं धोर ऐसे कई विषय धोर शब्द हैं जिनके धुप धलय-धलय मनो मे धलय-धलय ध्वनिया धोर धोर धोर वंदा करते हैं । विचार की प्रेरणा धोर भाईचारे के बंधन से बचे लोगो मे धायसी समझ की यह कमी निश्चिन्त ही बांधनीय नहीं मानी जा सकती । परमधाम संगीति मे एक दूसरे को समझने का भरपूर मौका मिला धोर उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यही मानी जानी चाहिए कि सर्वोदय धान्दोलन मे लगे विचार-शील लोग एक दूसरे के करीब धाये ।

संगीति के लिए धसती से उरादा व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया था । धाये पचन । लेकिन इन पचन व्यक्तियों में तमिसनाट्ट के जगन्नाथन धोर इच्छाम्मा थे तो हिमाचल प्रदेश के भूमिधु, गुडराज के हरिचल्लभ परोव, काना, हरविनाल धोर बाति भाई थे जो उड़ीसा के मनमोहन चौधरी, धामान मे बाटी

वर्षों तक राम किये चुन्नीभाई बंद धोर बंगाल के विमल पाल थे । महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, केरल, पंजाब हरिणाणा धादि सभी प्रान्तों के लोग संगीति मे धाये थे । कमी थी तो मिर्ग मध्यप्रदेश के भादसो की जो उन्ही दिने नस्तूरबाधाम मे हुए प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन के धारण नहीं धा पाये । उम्र धोर धनुभव के नाते भी संगीति बहुत सपन्न धोर विविध थी । बंधनाथ बाबू जैसे स्वराज्य धान्दोलन के बयोबद्ध सिपाही मौजूद थे तो बुमार प्रमान्त भी थे जिनकी उम्र 'शायद उननी ही है विनोब कि सर्वोदय धान्दोलन को । धनुभव बुद्ध लोगो के साथ बुमार मुभमूति, धशोक धोर धधयवग धोर बीच मे ये धाये से ज्यदा प्रोड । सपन धोरने के धर्मठ कार्यवर्तों ये तो श्रान्ति के लिये सर पर कपन धाय कर निजने लोग भी थे । धोर इन सब के बीच धाने के लिये ये विनोबा धोर जयप्रकाश नारायण । छ दिन का समय धा धोर ध्यान धा पवनार, वहाँ से जरूरी कार्य के लिये भी किसी का निरुण पाना मुश्किल था । (नरेन्द्र भाई ने सेवाश्रम धरने धर बुद्ध मित्रो की बुलाया था लेकिन छः दिग्-म्बर तक उनका नियन्त्रण खडा ही था ।) गुलाबी टाइट धोर गुनगुनी धूप मे एक बाबूराज चन्दावार को छोड कर बिगि की बाप्ट नहीं होने दिया ।

शुक्ति विश्वास मग्यान धोर धायसी समझ बढ़ाना एक प्रमुख उद्देश्य था इसलिए विषय धोर समय के रचधने को धोर दिया गया धोर रकीनार किया गया कि सब खुले दिन से बोले धोर जो भी बोचना चाहे, जैसे भी बोचना चाहे बोयें । पढ़ने तीन दिने तक यह 'बोचना' चलना रहा । पार्टीना माहूब ही धनीरचारिण धयधना मे यह बोचना बहुत ही मुक्त ढंग मे चला धोर पूरा नहीं हो पाया इसलिए तीन दिग्म्बर की रात को भी एक बैठक हुई जिसमे उत्तरप्रदेश के हरदरभाबू ने टेट धामोए मंत्री में बहूज गटीक ढंग मे धानी बातें रखीं । धायिनाम बोचने कानो ने बिना

चुनावों में बढ़ता भ्रष्टाचार और प्रजातंत्र का भविष्य

पैगम्बर मुहम्मद की तस्वीर

—यदुनाथ थत्ते

प्रख्यात पत्रिका टाइम के ५ नवंबर १९७३ के अंग में पैगंबर मुहम्मद का चित्र छापा था। भारत सरकार ने उस अंक के वितरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया। आर्थर बच्चो के एक विश्वविद्यान साहित्यकार हैं। आपने बच्चो के लिए एक विश्वकोष बनाया और प्रकाशित किया। मुहम्मद पैगंबर जैसी शक्तिशाली शक्ति के साथ जुड़े जानवारी चित्र कोष में दी गयी और इंगी बजह से उन अन्यमाता पर भारत सरकार ने पाबन्दी लगा दी। बच्चो की विद्वानों चित्रमय होना अनिवार्य होता है। अभी एक अमेरिकन कम्पनी मुहम्मद साहब की जीवनी पर एक फिल्म बनाने की बात सोच रही है। अमेरिकी चित्र निर्माताओं के बारे में भारत सरकार कुछ नहीं कर सकती, लेकिन भारत में उस फिल्म का प्रदर्शन करने

संगठन ने संपादक को कोर्ट में खींचने का नोटिस दिया। जो चित्र छापा था वह कोई संपादन की सूझ से किसी स्थानीय कलाकार द्वारा निर्मित नहीं था। कला के बारे में छपी एक पुस्तक से वह लिया गया है, ऐसा स्पष्ट उल्लेख उस चित्र के साथ साधना के संपादन में किया था। इस्लामी चित्रकला की यह पुस्तक १९२६ में पहले छपी। उसके अनेक संस्करण हैं धन तक निबल चुके हैं और उसकी लाखों कॉपियां बिक चुकी हैं। इन्हें इके अलावा और देशों में भी उनके संस्करण निकल चुके हैं। अन्य देशों के मुसलमानों को ताज है कि इतनी सुन्दर कला का इस्लाम ने निर्माण किया। मुसलमानों को अपनी यह एक बड़ी वसीयत है ऐसा लगता है, लेकिन भारत के मुसलमानों को न इन पर ताज है, न उगरो के स्वीकार करने को संसार है।

से मिलने आया। संपादक से उन्होंने जवाब तलब करना चाहा और मांग की कि संपादन मुसलमानों से माफी मांगे। इस तरह के वाक्यांत जो पहले हुए हैं उनके बारे में भी उन्होंने बताया। उनके बोलने में धमकी की सुभा रही थी। भारतीय विद्याभवन की एक पुस्तक में मुहम्मद की तस्वीर छापने के कारण उन पुस्तक को पकड़ जवाहरलाल नेहरू के जमाने में वापस खींचना पड़ा था। कलकत्ता के प्रख्यात पत्र 'स्टेडमन' के दरबार पर मुसलमानों ने धारा खोल दिया था और विवक्षित किया था, इसलिए कि उसने टॉर्नबी जैसे एक विश्वविद्यान इतिहासकार का एक लेख छापा था, जिसमें मुहम्मद पैगंबर और महात्मा गांधी की तुलना की गयी थी। पैगंबर के साथ तुनिया के जिनगी भी मदान व्यक्ति की इस तरह तुलना मुगलमान कभी बर्बर नहीं कर सकते, ऐसा बड़े गुर्ब के साथ उन्होंने सांपादकी से कहा। सांपादकी ने मजगा-पूर्वक शिष्ट मजल्ल के मदरसों से कहा कि आप इस तरह की धमकियों की भाषा का प्रयोग करना चाहते हैं तो आपसे चार्ज नहीं हो

→
 मन में माध्यम द्वारा धार्मिक अनुभूति को प्रकट करेगा जो विचारकार वाचक, रस धीर कवय के या निमित्त में माध्यम द्वारा उबरे प्रकट करने की कोशिश करेगा। लेखक धीर बरि की तो धार्मिकी है, लेकिन विचारक को नहीं ऐसा बनी होगा चाहे वह धारने माध्यम का चुनाव करने की स्वतंत्रता क्या कलाकारों की नहीं होनी? दुनिया के मुख्यमान तथा गैर मुख्यमान महिह्वलरारों में मुहम्मद साहब की कीर्ती तथा कार्य के बारे में बहुत छाप पिला है। कलाकारों पर धर धारण या वाचक का उपायों करना चाहे तो उनको हथ मना करके? यह तो दोगली नीति होगी। धन मुहम्मद देवो के कलाकारों को यह धार्मिकी थी, सभी तो 'पोपटल प्रोक इस्लाम' बेसी पुनक में मुहम्मद साहब का, मुख्यमान कलाकार का कलावा विच हथ पाने हैं। एच ऐसी कीर्ती कई विचारों विचारों हैं और विचकोय धार्मिक में या उसके समग्र किमी वंशालय में हथ उनको देव सजने हैं। मरहब के नाम पर कलाकार पर इत तरह पावरी तयाता उचित नहीं होगी। लेकिन भारत के मुख्यमान हमको धर्मो समक नहीं रहे हैं। धरुवे धीर मरुवे का फुर्न जरूर करना चाहिए और मरुवी काव के विचारक धार्मिक भी उजारी चाहे, लेकिन मरहब के नाम पर नहीं, धमटना के नाम पर उजारी चाहे।

दुसरी बात धार्मिक गरीबी है। क्या मुख्यमानों को यह इच्छे प्रभावित पिया गया है कि वे धार्मिकी मान्यताओं को दूसरों पर मोप दें? क्या वे भारत के सर्वमान्य नागरिक न होकर विच नागरिक धरने को मानते हैं? मुख्यमानों को यह पूरा प्रभावित है कि वे मुहम्मद साहब की कीर्ती प्रतिभा न बनायें, लेकिन गैर मुख्यमान पर पावरी तयाता का विशेषप्रकार उनको हिलने दिया है? मुख्यमानों की मान्यताएँ और विशेषप्रकार के गैर मुख्यमानों पर कैसे ताद प्रभावित है? और दूसरा भी ऐसा बर्ताव करे तो?

भारत को छोटी बनी दुनिया में धर्म की पुनकी पर सकार के किमी अथ का डेर नहीं बन सकता। विचार के कारण धर्मो धर्म की पुनके सब के लिए सुनी हो गयी

है। धार्मिकी रीति को स्वीकार करने की उनके लिए कोई मायबराता नहीं। विचारों की पुनक की दुखत से कोई भी धार्मिकी जावर नीता, धारमिन, बुरान, जेद धरनेना रारीद करना है उनको पर गतना है, उनके बारे में धरने विचार प्रकट कर सकता है। गैर मुख्यमान बुरान को पर गतना है, गैर हिंदू नीता का अध्ययन कर सकता है, गैर ईसाई धार्मिक का अध्ययन कर सकता है। धर्मधर्मो का तत्त्वज्ञान, महिह्वल तथा साहित्य की इति के अध्ययन किया जा सकता है धीर उस पर धरने विचार कीर्ती प्रकट करना चाहे तो उनको छूट होगी है। इस नयी परिस्थिति में भारतीय मुख्यमान धरने का धनमान रखना चाहते हैं, ऐसा सगना। क्या मुख्यमान बुरान धार्मिक के तथ मुहम्मद पैगबर साहब के धरने को देखकर मानते हैं? क्या बुरान धरकी या मुहम्मद पैगबर के बारे में गैर मुख्यमानों को बोलने तथा चिन्तने की स्वतंत्रता वे नहीं देंगे? देना कोई धर्मिकार मानने का मानव विशेष नगर्तितता की भाग बनना है। और पैगबर लाकतष में यह धर्मिकार विचारों का दिया नहीं जा सकता।

क्या मुख्यमान पैगबर को पैगबर मानने के बदले इतिहास के प्रवाह को नग मोक देने वाली हकी मानते या गैर मुख्यमान कीर्ती धरपरा करने हैं? मुख्यमानों या हमना तीधा जवाब देना होगा। इतिहास की नका मोप देने वाले एक व्यक्ति के रूप में अरब मुहम्मद पैगबर साहब की कीर्ती देना चाहे तो धर्य समक व्यक्ति को उनको पुनक की जानेगी। मुख्यमान उनको भले पैगबर माने, लेकिन यह धारण नहीं कि गैर मुख्यमान भी बंग हो करे। वही बात बुरान धरकी के बारे में भी गरी है। यदि मुहम्मद साहब पैगबर और बुरान धरकी का इरादो समक है उभ पर कीर्ती पुनकोनी नहीं होनी चाहे, गैर मुख्यमानों से इत तरह बटा जा सकता है? मुख्यमानों का यह रूप धमने से मत नहीं छाता। उभ पर कीर्ती भी सरकार धमन नहीं कर पायेगी। प्रतिमना का यह दावा प्रगति-विरोधी है।

(पृष्ठ ५ का योग)

धार्मिक हम ऐसा सोचते थे कि हम हैं समूह। समूह में गन्ने माने भी मिल सकते हैं और गंगा भी मिल सकती है। इतिहास अच्छे नाम के लिए कोई भी पैसा देना है तो लेने में कोई हर्ष नहीं है। खोलि हथ समूह स्थान में हैं। यह धरणी बात धर्य तक थी। भगवान को प्रकर का है। एच है 'तव' भगवान, दूसरा है 'मुद' भगवान। भगवान बंगा है, यह पूछते तो उत्तर धरनेगा कि उतारे दो रूप हैं। (१) भना, धर सब भगवान है। (२) भगवान स्वच्छ, मुद, निर्मल है। उभने से पहला रूप तेकर हथने धान तक काम किया। सबकी धर्मति को दान में मिलती थी वे नहीं। धन बाका ने तय किया है कि हथ 'सर्व' भगवान की जो लेना कर सकते वे वह भव तक को। धर 'मुद' भगवान को सेवा करेंगे। धर मरुहिय को मानने वाला हर मनुष्य हर महीने एच पूछे उपवास करे और उभने का सर्क बनेगा वट सर्व सेवा सप की दाव दे है।

इस प्रक्रिया से गवं सेवा सप सामूहिक समाधि प्राप्त कर गतना है। हथ सोता, जो बाव कर रहे हैं, यवने सब उपवास कर के दान दें। उभने विच-शुद्धि होगी, धार्मिक प्रगति होगी। धर ४० हजार तीव महीने में एच दिन उपवास करते हैं और एच अर्द्ध के गावधर के १० उपवास में २५ ५० मिलने हैं तो १० लाख पाने होगी। धर्म क्या होगा? कीर्ती बरुडगति है मान नीतिगत, धर वह दान दान चाहता है, तो उनको १२ उपवास करने हथ। उभका मात्र सर्व ज्यादा हो सकता है। बाग का तीर सवरे होगा है, उभका वाव, ए या सात हो सकता है। तो मान लें, उभो १२ उपवास के १०० रुपये होने, उभका दान यह देना। है करोड़पति, लेकिन उभने उनका ही काम करे। यह है मुद, स्वच्छ, निर्मल रूप।

इस तरह सप उपवास करके दे दे १० लाख (धर्म सेवा सप को)। १० लाख के उभर होगा तो वह मात्रा को देना। १० लाख हथ सर्व सेवा सप को। 'सर्व देव समकारः सेवक प्रति मच्छति।' इस तरह सबको पाने का देना सर्व सेवा सप के पार, गोपुरी (गो-गोपुरी, धर्म, धार्मिक) पदुच जाये।

साइप्रस में तुर्क शरणार्थियों के बीच

—प्रमरनाथ

कुछ समय पूर्व विनोबा जी ने मुभाव दिया था कि संयुक्त राष्ट्र सच को अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सेना रखनी चाहिए। जयप्रकाश जी ने भी इस दिशा में पहले की धीर यह बात संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों तक पहुंचाई गई। अथिनास सदस्य राष्ट्रों ने मुभाव का स्वागत किया और प्रयोग के तौर पर साइप्रस के तुर्कों के पुनर्वास का मामला उठाने का मुभाव दिया। साइप्रस में ग्रीक व तुर्कों के प्राणिकी दलों के फलस्वरूप पिछले दस वर्षों से कोई भीस हजार तुर्क घर-बार छोड़ कर भटक रहे हैं। कार्य की प्राथमिकता भूमिका तैयार करने के उद्देश्य से प्रमरीवा से प्रो० पाव० हैपर व चार्ली वाकर, भारत से श्री नारायण देसाई तथा इंग्लैंड से बुद्ध मित्र साइप्रस आये थे। साइप्रस के राष्ट्रपति श्री मेनार्सियोस तथा तुर्क नेता उपराष्ट्रपति श्री डेन्टास ने भी प्राणिकी स्वीडनि और सहमति इस पुनर्वास-कार्य के लिए दी।

नवम्बर के दूसरे सप्ताह में यह अन्तर-राष्ट्रीय शान्ति दल साइप्रस पहुंच गया। इस दिन भारत से पांच सदस्य हैं, अमरीका से चार सदस्य तथा दक्षिण अफ्रीका से एक सदस्य। मुन विचार दल सदस्यों का दल पुनर्वास के कार्य में जुटा है। दल के सभोत्रक श्री पाल हेरर है। इंग्लैंड में भी कुछ लोगों के दल में सम्मिलित होने की आशा है।

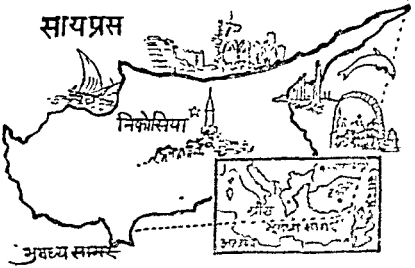
प्रारम्भ में एक गल्लाह निकोमिया में रहकर साइप्रस के बारे में सामान्य तथा शरणागती समस्या के बारे में विचार रूप से जानकारी प्राप्त करने के बाद एकदम नवम्बर से तीन टोमियों में विभाजित होकर इस कार्य में आ गये। दल के सभी सदस्य दही पारो में रहते हैं और क्षेत्र के सम्म्याप्रम्य दवालों में काम करते हैं। गल्लाह में एक दिन आने पिछले काम का वेसा-जोना करने तथा भारी योजना बनाने आदि की दृष्टि में सभी लोग निकोमिया में मिलते हैं।

साइप्रस के बीस हजार तुर्क शरणार्थियों के बीच पुनर्वास का कार्य करने नवम्बर में जो अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दल साइप्रस पहुंचा है उसने भारत के पांच लोग हैं (देखिये "भूदान-यज्ञ" ३ दिसम्बर '७३)। शान्ति दल में अखिल भारतीय शान्ति सेना मंडल के प्रतिभक्त श्री प्रमरनाथ भी हैं। साइप्रस पहुंचकर दल ने वहाँ की जो स्थिति देखी उसकी दृष्टि थी प्रमरनाथ भाई ने 'भूदान-यज्ञ' के लिए मेत्री है। दृष्टि हम सबों की र्यों प्रभावित कर रहे हैं।

साइप्रस की वर्तमान समस्या के सम्बन्ध में पुनर्वास कार्य का स्वरूप जानने के लिए साइप्रस का पिछला इतिहास संक्षेप में समझ लेना उचित होगा। साइप्रस भूमध्यसागर स्थित एक छोटा सा द्वीप है। यहाँ द्वीप तथा तुर्क मुन्य दो जातियां रहती हैं। तुर्क लोग कुल प्रावारी का १० प्रतिशत हैं। साइप्रस की कुल प्रावारी ६ लाख है। १९७१ में साइप्रस पर तुर्कों ने प्राणा शासन किया। अर्धजो के शासक बनने तक वे शासन करते रहे। १९७० में इंग्लैंड से अर्धज अगामर के लिए साइप्रस आये और १९६२ तक वे वहाँ के शासन बन गये। १९६१ में साइप्रस के द्वीक लोगों ने अर्धजो की पुनर्वास के लिए स्वरचना

प्रथम प्रारम्भ किया। साइप्रस के तुर्कों ने स्वरचना सक्षम में भाग नहीं लिया और वे अर्धजो के ही साथ बने रहे। स्वरचना प्रादो-तल के प्रमुख नेता साइप्रस के वर्तमान राष्ट्रपति मेनार्सियोस थे। प्रावारी की लक्ष्मी लडाई के बाद १९६६ में इंग्लैंड में एक संधि हुई। संधि में साइप्रस में शीत तथा तुर्क प्रतिनिधि व तुर्कों व चींग सरकारों के प्रतिनिधि और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि शामिल हुए। संधि में तुर्कों को विशेष अधिकार देने की बात सुन रूप में लप हुई। १९ अगस्त १९६० में साइप्रस स्वरचना घोषित हुआ। शीत नेता मेनार्स-

सायप्रस



योग के राष्ट्रपति बने तथा तुर्क नेता डा० बुबुक उपराष्ट्रपति बने। मन्त्रिमण्डल के अनुसार उपराष्ट्रपति की विदेशी मामलों, सुरक्षा तथा कुछ आर्थिक प्रश्नों में विशेषाधिकार दिये गये। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति दोनों को धरने दिए। समय-समय पर गान और तील मन्त्री नियुक्त करने की सुविधा भी प्रदान की गई। यही अनुदान और और सुर्तों के लिए सभी सांकेतिक सेवाओं में माना गया। मन्त्रिमण्डल में तुर्कों का आनुसारीक अधिकार मिले, पर प्रत्यक्ष व्यवहार में तुर्कों का वे सुविधाएं नहीं मिलीं। उनके प्रति सोवियत का व्यवहार ही जानना रहा। परिणाम स्वरूप धीरे धीरे तुर्कों में घबराहट बढ़नायमा और आरम्भ की घोषणाएं चलीनीं शुरू। धीरे धीरे तुर्कों के बीच ईर्ष्या-द्वेष की सुगन्धी घाय भीषण ज्वालना के रूप में १९६३ तक भयानक उड़ी और २१ दिसम्बर १९६३ से साइप्रस में दंगे आरम्भ हो गये। प्रथमतः वे हुंसे के कारण तुर्कों को ही अधिक क्षति पहुंची। आगजनी, लूट धोरे हुएएए दयाएर घिसाने पर हुई। धीरे धीरे बढ़ता है कि उन पर चीज-माल दंग से हमला किया जा। यहाँ के मान्य में हुंसे पाया कि कुछ जगह तुर्क और हीर सम्मिलित रूप में रह रहे हैं, कुछ मात्र केवल तुर्कों के हैं और कुछ केवल हीरवासियों के हैं। स्वतंत्रता के समय दंगे उभरे हैं तुर्क मन्त्रि के अनुसार चीन, ब्रिटेन, टर्की—नीला ने साइप्रस की आगारि तथा बाह्य मामलों में रक्षा की जिम्मेदारी ली थी। जग दंगे हुए सो केन तुर्कों की युद्धबलना के अन्तर्गत जहाजों ने चेसायों के रूप में विकीरिवा पर चक्कर काटने शुरू कर दिये, तब ५ दिनों का लगातार बने रिक्त दलों पर करतु पाया जा सका। बाद में ब्रिटेन के सैनिक भी आये। सैन्य के साइप्रस राष्ट्रों ने भी कुछ मात्र की और मान्य में यह मानना सुगुण राष्ट्रमन्त्रों हीर किया गया।

१९६४ में मधुवन राष्ट्र सच की शीर 'वीम विंगरिड' के रूप में यहाँ कार्य की साइप्रस भी साइप्रस में सोझ रहे। मधुवन राष्ट्र सच की शीर ने सांकेतिक विवरण का काम भी शुरू किया गया। दंगे में लगभग २० हजार तुर्क बेघरदार होकर बनी आबादी के तुर्क मन्त्रों में कारवायों के रूप में बने गये।



बाए से श्री अमरनाथ, श्री मन्दिक्ता देसाई व श्री मान्य मन्त्र

दंगों के बाद तुर्क लोग साइप्रस की सरकार से प्रलग हो गये। १९६० के चुनाव में तुर्कों ने धरने नये नेता डेन्टल को चुना, जिन्हें वे उपराष्ट्रपति बढाने हैं। डा० बुबुक ने डेन्टल के समर्थन में अपने भी वाक्य में लिया था। उपरत मन्त्रिमण्डल ही राष्ट्रपति बने रहे। आग साइप्रस की मान्य सरकार मन्त्रिमण्डल की ही है, लेकिन डेन्टल के नेतृत्व में तुर्क लोगों ने सरकार जैसा ही स्वकार देने की कोशिश है, जिसे श्रीक लोग 'दिलरी लिडरशिप' कहते हैं।

समुक्त राष्ट्र सच की मध्यस्थता में मन्त्रों के तुर्क बहुरण क्षेत्रों की श्रीक क्षेत्रों से भाग्य विद्या गया है। जिसे चीन लाइन कहते हैं। प्रायों में तुर्कों की बहुसंख्यक मात्र उनके प्रथम-मन्त्र हैं। तुर्क और चीर सीमाओं पर उनके प्रथम क्षेत्र पोस्ट हैं, जहाँ तुर्क व चीर पोषित रादी रहती हैं। बीच-बीच में राष्ट्र सच की नियरती भीकिया है। तुर्कों को चीरों के क्षेत्र में जाने की छूट है लेकिन चीरों को तुर्क क्षेत्र में जाने की छूट नहीं है। उन्हें तुर्क क्षेत्र में आने से लिए नाम लेना पडता है। सामान्यतया उनका जाना कम ही होता है। तुर्कों की साइप्रस सरकार से प्रथम धरने तुर्क की सुविधा-क्षेत्रों, मण्डल तथा कार्य सांकेतिक सेवाओं की सामन्तीय व्यवस्था है। टर्की का राष्ट्रिय भवना ही तुर्क लोग लगाते हैं, और उद्ये ही वे अपना राष्ट्रिय भवना भी मानते हैं। श्रीक लोग चीर का भवना लगाते हैं। साइप्रस का राष्ट्रिय भवना तो केवल तुर्क सरकार ही भवने पर चीरना है। यद्यपि मन्त्रिमण्डल स्वतंत्र

साइप्रस के पक्षधारी है, पर मुदा है कि उनका घर पर भी चीर का ही भवना लगा है। साइप्रस में तुर्कों की टर्की का समर्थन और सहायता है और चीरों को चीर की।

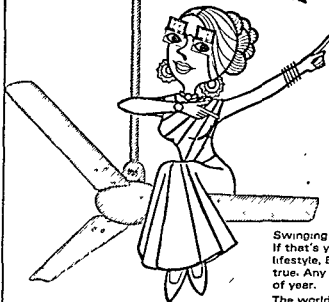
ऐसी विषय परिस्थिति में धन्तरीयों द्वारा जो सुझाव का कार्य करता है। लगभग क्या है कि सरकारियों का पुनर्वाता तो है भी जायेगा, पर दोनों सधुदायों के सम्बन्ध आर आर जैसे ही रहे तो सब कुछ फिर से उजड़ जायेगा। सरकार से विस्थापितों में मरान बनसार उन्हे बताने से भी बर काम उनके टूटे हुए दिलों को जोड़ने का है प्रताप के स्वर पर यह काम पौरुष साम्राज्य ही करता है, क्योंकि दम कर्षों के अन्तराल के बाद चीरों का सच विद्या कुछ भूल रहे हैं। १९६३ के पहले का जमाना वे हुरल भरी विद्या से धार करत हैं। लेकिन नेतार्य की बतानाशीर और राजनीतियों के वृत्त जनता को बरा ध्यान में रिलने देते हैं सायन यहाँ भी समन्वयों का हल उभरलरीय राज नीतिव सन्धि से ही सम्भव है।

तुर्क सरकारियों को उनसे सार्वो के बगाने का काम राष्ट्रसच के प्रथम से कुछ कर्ष पहले किया गया था। सरकार ने कुछ सारो में मरान बनाने, लेकिन तुर्क वापस कहा नहीं गये। सरकार का कहना है कि तुर्कों के नेता उन्हें वापस धरने परो को नहीं मानते हैं। 'साइप्रस रिसेलमन्ट प्रोजेक्ट' के सांकेतिक, जिसके नाम से हम काम करते हैं, दोनों शीर से मन्त्रों का उन्हे राती किया गया है। 'दली सोडरशिप' ने सर्वेक्षण

(पंच पृष्ठ १२ पर)

SWING HIGH WITH

bajaj
PRODUCTS



Swinging times and carefree living
If that's your wish for a modern
lifestyle, Bajaj can make it come
true. Any time of day Any season
of year.

The world of Bajaj Products is, in
fact, created for modern homemakers.
Icecream Freezer, Pressure Cookers,
Toasters, Mixers, Ovens, Fans, Lamps,
Lighting Fixtures, Accessories and so
forth.

And, Bajaj alone have as many as
3,500 Dealers and 16 Branches
throughout the country. Here you'll
find the greatest Before and After
Sales Service-where everything goes
with a swing!



bajaj electricals limited

45-47, Vee Nariman Road, Bombay-400 001.
Branches all over India.



heros' BE-180

नवम्बर २६ के अंश में 'इजराइल सत्याग्रह और बिनोबा' शीर्षक से टिप्पणी प्रकाशित हुई है जिसमें सत्याग्रह सचिनी तन्तुभाई पटेल के अभिप्राय के मुताबिक मैं बिनोबाजी के विचार का स्पष्ट समर्थन मिलता है।

सर्वे विदित म भी हो, हम के बच सर्वोदय की केंद्र गांधी नेगा-नामंजतों इस बात से भनी प्राणि परिवर्तित हैं कि गांधी जी के सत्याग्रह और उनके द्वारा बलिदान प्रतिष्ठा प्रतिकार के बारे में बिनोबा जी मूल मन-भेद रखते हैं। सत्यवादी के भौतिक मन विनाश को यह मान्य नहीं कि कोई सत्य का प्रायश्चित्त हो, वह सत्यवादी ही सकता है धार्मिक-धार्मिक।

यहां इजराइल के प्रथम म सत्याग्रह विषय पर उक्त स्पष्टीकरण भी उनकी इसी मान्यता की व्याख्या है जो बहुत विचाररूपी है, म केवल उन लोगों के लिए ही, जो टिप्पणीकार के विचार में 'इन दिनों सायन की मनवाणी ने विरोध में सत्याग्रह के स्वर का प्रयोग करने को बाध उठाते हैं' बलि-उपकरणे लिए भी जो गांधी जी के बलिदान के बाद के प्राय दिन पूर्वक गोपणामात्रित सायन की चुनौतियों में यह चुनते या रहे हैं। टिप्पणीकार को यह भय-मम तो साधक का रहा है कि 'जब स्वयं बिनोबा सत्याग्रह करते योग्य विद्युत् धार्मिक शक्ति का धारण भीतर अनुभव नहीं कर रहे हैं तब हमसे से धार्य विपत्ती की इस मैदान में उतर पड़ने के उच्छ्वास विनाश कर देते हैं। बिना टिप्पणीकार के प्रभाव में और धार्मिक महीन विचारों का रहे हैं। वे तो बिनोबा के उच्छ्वास पर कर स्याधितित से सन्तुष्ट हो रहे हैं। जिन्से सत्याग्रह के लिए जिम 'विद्युत् धार्मिक शक्ति' के अभाव में रहते हैं वह तो सुविचार को देना से समान एक धारण कर है किन्तु धारण सत्याग्रही पुरुषों की सत्य साधना करता है। अतएव ऐसी

शक्ति न तो ईसा में भी न गांधी में। सभी तो ईसा ने कहा था, स्वयं में धारण विना (यहां विद्युत् धार्मिक शक्ति पर तरने हैं—आम) के समान पूर्ण नको। वे धारण में ऐसी पूर्ण शक्ति का प्रभाव रखते थे। गांधी जी तो धारणी धारणों की व्याख्या बार धारण भी कर चुके हैं। वे स्वयं धारण थे, उनके सत्याग्रही और अनुयायी और धार्मिक धारणों में। इसी धारणों के साथ उन्होंने विषय में सत्य के सत्याग्रह के साथ न्योत्रा विना, धारण पुनः-धारण के सुताबने में नातुक्त-निबन्ध (शारीरिक लोचन) विद्युत् को छोड़ा कर दिया है। वे धारण इस धारणों को लेकर अर्थ को गांधीजी की मनवाणी का बिनी धारण में बैठे हुए उदु-उदु नही देखते यह उनके भीतर न ही उन्होंने भी सत्याग्रह करते योग्य विद्युत् धार्मिक शक्ति की धारण भीतर नको तो गया है। उनका समूचा जीवन इस कमी को दूर करने के सत्य प्रयास-समर्थन की धारण है जिसमें धैर्य ही कर मीनोत्तम, जवाहरलाल, भी० धार० दाम, विपिनचन्द्र सत्य जैसे सुधी-सम्पन्न और क्रोधमय व्यक्ति सत्याग्रह समर्थन की धारण में तप कर लोच-पुखर सिद्ध हुए।

इस सत्य में, गांधी जी ने यह ठीक ही धारण कि मेरी धारण में जिने सत्याग्रह हुए थे, वे सब धारण (निर्दम) व्यक्तिगत के सत्याग्रह थे, सार्वजनिक सत्याग्रह नहीं थे। धारण में, उस धारण में तो साक्षात् देज ही पराधीन-निर्दम था। सार्वजनिक सत्याग्रह-सहिष्णुता सम्बन्ध बनवाना ही ही है। परन्तु ऐसा करने से गांधी का मतलब यह बर्दाश्त नहीं था कि वे सत्याग्रह गलत थे। यह ठीक है कि उनमें सत्याग्रह सत्य ही है। सत्य के हेतु बलिदान की धैर्य धारण पर धारण धारण पर धारण निराला ना कि वे धारण थे गांधी जी ही नहीं, सत्य धारण-सहिष्णुता स्वतन्त्रता सेवामियों, बलिदानियों के प्रति भी बनवाने है। स्वतन्त्रतापूर्वक से इन धारणों सत्याग्रहों की स्वतन्त्रता के बाद नये रूप के गोपण के विचार स्वतन्त्र-बलवाणी के सत्याग्रहों द्वारा बनने वाली-धारणों को धारण गांधी जी के

उत्तराधिकारियों का संस्था था जो उन्होंने पूरा नहीं किया, बलिदान पूर्वक सत्याग्रह को प्रभाव को ही बुद्धि किया, जिसका धर्मियाज भार ही नहीं, विचार की गोपण अन्ततः भूयं रहो है।

सायन म उक्त 'विद्युत् धार्मिक शक्ति' का सायन तो ही व्यक्ति के धारण में है। इस धारण में धारण विद्युत् सत्याग्रह उक्त सायन में विद्यमान है। धारण, सत्याग्रह उक्त में तप उक्त उक्त कर रहे हैं।

किन्तु बिनोबा जी बटते हैं। 'गांधी जी का सत्याग्रह और गांधी जी द्वारा बलिदान धार्मिक शक्ति विषय में ऐसी है कि वह बिनोबा भी परिधि में से सत्य सत्य होवे। प्रलयता सेवी शक्ति सत्याग्रह का हीना चाहिए। क्या यह सत्याग्रह का है ?'

यहां प्रथम उक्त है व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए जब गांधी जी ने बिनोबा जी को चुना था, तब क्या उन्होंने वचन से पहले बिनोबा से ऐसा प्रश्न पूछा था? यदि नहीं तो स्वयं बिनोबा को यह देना चाहिए था कि ऐसी शक्ति कुछ में नहीं है, अतः कि वे स्वयं बटते हैं।

बिनोबा जी यह भी बटते हैं कि 'यह शक्ति ईसा मसीह में थी'। यहाँ भी एक प्रश्न पैदा होता है कि क्या बनी गांधी जी ने भी धारण देखाधियों से ऐसा कहा था? धारणी और बटते, मैं जिसकी साक्षात्कार के विषय सत्याग्रह करने योग्य ईसा मसीह जैसे विद्युत् धार्मिक शक्ति का धारण भीतर अनुभव नहीं कर रहा हूँ, इसलिए मैं बिनी को सत्याग्रह के लिए नहीं कहना !' उन्होंने तो उक्त यहूदियों को द्वेष के विरुद्ध सत्याग्रह करने की सत्याग्रह ही थी। लेकिन बिनोबा जी के अनुसार 'यहूदियों के विरुद्ध सत्याग्रह करने की सत्याग्रह में किंसा कुछ नहीं है'। अतः 'ऐसी धारण में तुम सत्याग्रह करो इस प्रकार का उच्छ्वास देते रहना 'परिणत धार्मिक' जैसे बात है। ऐसे उच्छ्वास पर टिप्पणी कोई बना नके। सत्यता ऐसा है कि

कर अपने घरों को वापस लौटने वालों की सूची तैयार करना शुरू किया है, उती के अनुसार सरकार में मवान बनाने का या मरम्मत करने की अनुबन्धना व्यक्त की है। वस्तुतः पिछले दस वर्षों में जो भी तुर्कों शरणार्थी जहाँ भी गये, व वही बस गये हैं। केवल गड़रिये तथा विज्ञान मुख्य रूप से वापस होना चाहते हैं, लेकिन उनका रहना है कि वे पूरे गाँव के सभी परिवारों के साथ एक साथ ग्राम में वापस जाना चाहते हैं, ताकि ग्राम सामाजिक, भाषिक व्यवहार व ध्यान में बर सके। गुरदावा वा प्रश्न भी उनके मन में है ही। पहले के बने मकानों में कहीं-कहीं कुछ परिवार वापस भी लौटे हैं। सरकार की कठिनाई है—एक गाँव के सभी मकानों की मरम्मत या निर्माण के लिए मजदूरों तथा अन्य मुविधाओं को जुटाना। हमारे प्रयास से, सरकार अपने चालू बजट से प्रायः ४ गावों में शीघ्र ही काम शुरू कर दे, ऐसी आशा है।

बन २१ गाँवों की सूची शुरू में पुनर्वास के कार्य के लिए बनी थी। बाद में यह सूची ३४ गावों तक फल गयी। हम गावों में धीरे-धीरे तथा तुर्कों—दोनों परिवारों से सम्पर्क करते हैं। अपने क्षेत्र के जिस गाँव के शरणार्थी बड़ा बसे है, इसकी जानकारी प्राप्त कर उनके जाकर मिलते हैं। सर्वेक्षण वा काम भी देखते हैं। हमारी बहुत बड़ी मर्यादा भाषा की है। गाँवों में अर्थजी जानने वाले मुश्किल से ही मिल पाते हैं। स्कूल-विद्यालय, पुलिस तथा दफ्तर में काम करने वाला कोई मिल जाता है तो अनुभव में सहानुभूति मिल जाती है। कार्यक्रम तो हम बहुत सारे सोचते हैं, जैसे धीरे-धीरे अपने गावों में तुर्कों को आने के लिए अपने स्तर पर भी अभिवर्तित करें। सम्भव हो तो प्रायस में चन्दा कर तुर्कों लोगों के लिए मसजिद व स्कूल आदि प्रतीक के रूप

में स्वयं बनवा दे या मरम्मत करावा दे। दोनों समुदायों के बच्चे आपस में खेलकर रहें। प्रीक-नुरकी के बीच सामूहिक कार्यक्रम किये जायें। दोनों समुदायों में भाषणी सद्भावना, प्रेम, भाईचारा विकसित हो और वे पड़ोसियों की तरह रह सकें। लेकिन हम दिशा में पहल करने के लिए भाषा बड़ी बाधा बन कर हमारे सामने घा घडी होती है। वैसे ही हमारा यह मानना है कि यह प्रश्न साइप्रस का है और साइप्रसवाले ही इसका स्थायी हल ढूँढ सकेंगे। अगर राष्ट्रीय, जिला तथा गाँव के स्तर पर समिनिया गठित की जायें, जिसमें दोनों समुदायों के विचारक, नेता, प्रतिनिधि शामिल हो जो मंथो, एवता व भाईचारे की दिशा में प्रयत्न करें तो इस समस्या को निराकरण में बड़ी मदद मिलेगी।

समुद्र की गोद तथा पर्वतों की छाया में रहने वाले यहाँ के लोग बड़े ही प्रेमन, परिश्रमी, स्वस्थ व सुन्दर दीखते हैं। समृद्धि यहाँ काफी है। प्रति ६ व्यक्तियों के बीच एक कार है। गाँवों के सामान्य घरों में भी रेफ्रीजरेटर, टेलीविजन आदि विज्ञान की आधुनिक सुविधाएँ देने को मिल जाती हैं। अंगूर, सतरे, मीठू आदि के फल बड़े पैमाने पर होते हैं। यहाँ की सराब प्रसिद्ध मानी जाती है। होटल यहाँ वा बड़ा व्यवसाय है, क्योंकि अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण साइप्रस विश्व के पर्यटकों वा मुख्य केन्द्र है। लगभग पूरी ही लेनी यात्रिक उपकरणों से होती है। दूध, दही, मकलन भी पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है। हर गाँव में दो-चार बॉकी हाउस मिल जाते हैं जो हर वर्षा भरे रहते हैं।

वधुन, प्रकृति तथा विज्ञान वा भरपूर बरदान साइप्रसवासियों को मिला है, लेकिन राजनीतियों के दाब-बँच के शिकार बनकर वे अभिव्यक्त जीवन जी रहे हैं।

लता का कोई प्रश्न भी तो नहीं होता। शायद विनोबा जी के निश्च इसका भाषम बाहरी दीख रही तथाकथित सफलता ही सबता है। तभी तो यहूदियों द्वारा हिटलर के विरुद्ध सत्याग्रह न कर अपने मलय राष्ट्र इजराइल की माँग में उनकी सफलता की वह मुकज बँट से प्रमंसा करते हैं : 'इसलिए मैंने कहा कि इज-

× डा० श्यामिनिधि पटनायक वा कार्य-क्रम हिमाचल प्रदेश के सिरमोर जिले में हुआ। सर्वोदय विचार से लगभग श्रद्धत इस जिले में डा० साहब ने मात्रा सतान और पावटा साहिब गाँवों में मिलिब जिले। दिन में स्कूल के विद्यार्थियों की सभा और फिर श्रव्यारकों के साथ चर्चा होनी थी, रत्न को आसपास के गाँवों में घूम सभाएँ। छात्रों और ग्रामीणों के युवम भी मिलने थे। सम्भाव्यताओं को सुनभाने में मदद दें, गाँव सगठित होकर अपनी समस्या को कैसे हल कर सकना है—इस पर विस्तृत चर्चा जगह-जगह होती थी।

× गांधी शालि प्रतिष्ठान पेन्ड वान-पुर में २० नवम्बर को वेन्ड की मलाहवार समिति के उपाध्यक्ष डा० गोमनाथ शुक्ल ने रूस की सामाजिक स्थिति पर भाषण दिया। शुक्ल हाल में ही रूस से लौटकर आये हैं। स्नेह मिलन में उन्होंने कहा कि 'रुस में धन, वस्त्र, भावात, पोषण, शिक्षण आदि सुविधायी प्रावश्यकताएँ जनता को उपलब्ध हैं किन्तु इन सब को पाने के लिए बहो के निवारणियों को बहुत बड़ी कीमन देनी पडती है। उन्हें अपना मन और महितत्व सरकार को सौंप देना पडता है। बहो अध्ययन और विचार भी प्राजायी नहीं है। हमारी रिवाज भी ताराबद में जमा कर ली गयी थी। उनका आशंस तो शासन मुक्त समाज वा लेकिन प्रविद्या उल्टी ही चन रही है। हम विचारों की प्राजायी नहीं सोना चाहेंगे, लेकिन हमारे सामने बरडो घाभावधन लंग भी है। सर्वोदय विचार से यह हल होगा' डा० शुक्ल ने ऐसी प्रागा व्यक्त की।

→ गांधी जी के सत्याग्रह के प्रति विनोबा जी के ये विचार कि 'वह किसी भी परिस्थिति में सदैव सफल होगा' मान्य शिष्टता और शीघ्रकारित्वता वा पुट लिए हुए दीखते हैं। और फिर सत्याग्रह में मफलता-असफ

राईल ने जो बुद्ध किया वो उतम किया... इसलिए मैं उनका जयजयकार करता हूँ' सत्य विनोबा वा यह तर्क मेरे जैसे सत्य मानर की समर्थ से परे की बात है। इस प्रकार मुद्दे तो बर्द हैं इस विषय पर चर्चा के लिए परन्तु ऐसी तात्पत्र चर्चा निरर्थक ही होती है।

जगतराम साहनी,

मुद्रारत दोरे के मध्य बहुमदावार में काँचम
 कार्यवाही को सभा में बोले हुए मुहूर्तिगो
 का प्रास्तावक किया कि जो चीज यद्यपी हो
 गयी है और बाजार में बड़ी हुई भीमयो पर
 उपलब्ध होती है, उनका वे बहुत्वार करें।
 इनके दृष्ट्य है कि प्रधानमन्त्री जी को या
 तो बहुत्वर्यन कि प्राण नहीं है कि प्राण
 भारतीय परिवार इतनी बड़ियाँ में है ?
 (उन्हें समझारी प्राण बरकर होगा।) या
 प्राण बरकरों की रिपोर्ट के मास्करा
 बिना प्राण उन्हें बरादा जाता वगैरह प्राण
 प्राण है उनका होगा का प्राणो वृत्तिका
 युक्त ही रिपोर्ट के द्वारा किसी वृत्तिकाभी
 से प्राण मार की चोरी की जानकारी होगी
 जो धनी धनारी उने प्राण बहुचकी है।
 उनरी सारी जानकारी प्राण की हुई है,
 वर बहुभुन नहीं है। नहीं तो बहुमदावार
 की सभा में वृत्तियों को ऐसी वेह गारा
 देने का मास्करा बहु नहीं कर सकयी थी।
 लेकिन जो लोग प्राणी के प्राणव के रूप पीने
 प्राण है, उन्हें सामान्य जनता की बडियाँ
 की बाँटवियाँ धनुपुन नहीं हो सकती,
 इसलिए वे जले वर नमक दिखवने का काम
 ही कर सकी है।

सरकार ही महंगी है

प्रधानमन्त्री हमारी सेवा है। उनकी नेक
 मनाह बनें नहीं मानी जाय और सफाई के
 प्राण ही जात तो हम निराने पर बहुचोरे कि
 या तो उनकी बहु मरकार ही बहु मरपी
 पद रही है, इतना बहुत्वार किया जा
 सकता है प्राण कि बहु जीवन ही मरगा
 पद रहा है, इतना बहुत्वार किया जा
 सकता है। जनता का तो सफाई में भू
 कोरे वा जीवन से। सरकार से बहुत्वार करे
 पदरा जीवन से।

जदि प्रधानमन्त्री जी को माराई मारकर
 भुयो बगैरे बँडे तो मरे, प्राणव व मध्य मनाह
 बहुवे साँकन होरे, तो इतर बहुत्वार
 भीकन। सफाई मरपी है, उने हो'की'किये।
 पी, नेन मरपी है, उन्हें दारा हीकिये। दाँव,
 मरिगाय, कुच मरपी है, उन्हें मरीदा होरे
 हीकिये। प्राणो को बहुत्वर्य के प्रजात विरोधी
 का मरक, कोपन, सफाई वर प्रधान मरपी
 कोरे केरक बने ही उपलब्ध है। तैली

कोई बहुत नहीं जो काम बाजार में उपलब्ध
 नहीं। प्राणी प्राण तो यह है कि रागिन में
 जो, मेहु विपता है बहु विपता रदो-मरागाया
 मरिग उये प्राण के साँकन करवा। मर
 प्राण व मरपी मानु मरपी। वेह जानव
 से मास्करा मे इतरकर बहुत्वार विपतो से
 खरीदा जाता है। लेकिन गोराय म बाँगिया
 मे पर-पदे ही मर की विपय मे पर हा
 जाता है। का प्राणानिक जान है। जनता
 को प्राणान मर दोबो मरक मु दारा। पदरा
 है। जनता बेचारी इतनाप्रा। मरामराठी
 राज का बहुत्वर है कि उसम जनता 'न सफन
 ही मरपी है और प्राणान्य मरकर। उस वकन
 बेचो की मरक मरपी के सफेक पर चकना
 मरि रोड़का होगा है।

पंडित और जीवन भी मरगा हा प्राण
 है। धन मरीको वर प्राण इतनी मरपी
 पंडेपी। प्राणामयो मे बहु कि बहुत्वार मरगा
 होगा तो बेचन धीमको को कोडी धनुपुन
 होगी। इन्नी से धनुमान हा सवता है कि
 हमारी प्रधानमन्त्री को जन जीवन में विपता
 कर का मरपी है। हर वस्तु के प्राणो पर
 प्राणानिक की सुविधा और विपनि का मरकर
 होगा है। बहुत्वार मरि विरोधीन मरगा हा
 जाने स धीमका पर मरपी धनर पंडेदा।
 वे बहुत्वार भीकन मरपी। लेकिन मरीक या
 वेचारा मर ही कोपन। दैनिक प्राणो को
 बहुत्वर्यो को मरना पर जो प्राणव प्राणो
 प्राण वा रदा है, वेह तो उनका प्राण ही
 केकर द'दगा।

इगलिए प्रधानमन्त्री जी को राय मरन
 लीकिये तो जीवन की उन प्राणन प्राणानिक
 बहुत्वर्य का बहुत्वार करना पडेगा जिन्
 वर जीवन निरंरक है। इगलिए इन प्राणोय
 या तो जीवन वर ही बहुत्वार मरके कोरि
 प्राणानिक दुबन होगा जा रहा है का
 धन उन प्राण वरमथा का, प्राणानिक का
 बहुत्वार करे, विपयो लन भीकियो के
 बाँटन बहु वर है। जनता को मुताव है कि
 का विपना बहुत्वार करे।

जनता का मरकार की मरक तीर्किये के

दुपरिगाम स्वरूप जो दारद दुली का
 मारता करता पद रहा है जनता यदि बहुत्वार
 प्रधानमन्त्री जी करना चाहती है तो उन्हें ठव
 का सुमरिद विपनि मानु मरगा मरपी मरि
 वे द'द मु व मरपी मरमथा के मारमया मरपी-
 मरपी की विपन मे एव रथता केकर प्राणान-
 मरपी निरान से निकरें। स्वयं बहुत्वर्य वग
 पर प्राणी व बहुत्वर्य मरमथा जायें। राजन
 की दुआन पर मराम लेने जायें। रदु मे
 प्राणी रहे, मरम दाराव करे। विपने प्राणे
 मराम की विपने दें। पी की, मरकर की,
 मरपी की वरके की दुआन पर जायें। तब
 जनता की तबतोके धीर बडियाँ मरपी का
 प्राणान द'दने मरगा। उनके प्रधानमन्त्री
 मरमथा का मरपी मरुमरकन होगा। प्राणान-
 मन्त्री के मरमुन या बहु प्रस्ताव राज्य वर-
 चरिया को धार म दाले दाला है कि हर
 मरपी से पहले मरगाह का कार्यवाही मरमथा
 दैनिक उपदायें की साधरी मरपी मरकर मे
 मरके दारा बुटान के विरु वैधानिक का से
 पिनता चरिजे। बरिहि हर मरके मे प्राणो
 बुटान मे कि मरम चरिजे।

परेदानियों का धंधारा

मरक का साधरी मरमथा किया, बहु
 मरमथा मरगा। राजा मरमरादायें के
 विपनाविपार को मराम कर उन्हें मराम
 बन बना मरगा, इगलिए प्राणानिक। पर
 इनमे मरके जनता का मरगा मरगा वे उनको
 मर उगरी दान-राठी से मरमरक। तब मरके
 के प्राणे से मरमरक। बहु को इतनी ही बाहना
 है। लेकिन वे पीने उनके विरु मरपी धीर
 दुर्गम होगी का रकी है। का प्राणान मरकर
 की मरन मरिगा एव प्राण प्रधानमन्त्री के
 विपनान स्वरूप उनमे विरिधियो का
 बुटान मरमुन का बहुत्वार करके करे।
 प्राणे प्राणानिक प्राणानिको को धीर कर करे।
 तब तो बहु मरकर से ही प्राणान करी व
 मरके कि उने बहु ऐसी राजनीय मरमथा
 मे उगरी करी मने।

(प्रिय गुड इर पर) ..

यह पत्र मैं भागको टिहरी-गढ़वाल के एक दूरस्थ गांव से अपनी १०० दिवसीय पदयात्रा के छठे पड़ाव से लिग रहा हूं। यह डाक, सार घोर मोटर से दूर है, इसलिए इस पत्र में मैं प्रदेश के अन्य भागों के अधिच समाचार प्राप्त नही दे सकूंगा।

अक्टूबर के प्रारंभ में मेरठ में ३० प्र० भूदान यज्ञ समिति की बैठक हुई थी और चौथे सप्ताह में सदानरूप में ग्रामदान उप-समिति की बैठक। राज्य सरकार द्वारा बनाये गये ग्रामदान अधिनियम के मसविदे पर विचार हुआ और उसे अंतिम रूप देने से पूर्व एक बार राज्य सरकार के अधिकांशियों के साथ बैठक होगी, भूदान समिति की ओर से जिला विनरको के एक सिविलर का आयोजन इस माह के अन्तिम सप्ताह में बनवासी सेवा ग्रामभ, गोविन्दपुर में होगा। प्राणो याद होगा बनवासी सेवा ग्रामभ द्वारा दुदो क्षेत्र में पुष्टि का सघन कार्य चलाया जा रहा है और वमनी विनास सण्ड के कई गांवों में भूमिहीनता मिटाने में ये सफल हुए हैं।

अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में ही श्रावस्ती में प्रदेशीय सहए शांति सेवा का सिविलर एवं सम्मेलन हुआ। प्रदेश के विभिन्न भागों से भाये हुए ५० से अधिक तरणों को इस सिविलर में एक सप्ताह तक पू० धीरेन भाई का सानिध्य प्राप्त हुआ और उन्होंने देहरादून के पब्लिक स्कूल में प्रदर्शन व चिकेटींग करने का निश्चय किया है।

११ से १७ अक्टूबर तक रवी शक्ति जागरण सप्ताह मनाने के लिए कई जिलों में महिला पदयात्रा निकली और उनके अनुभव बहुत उत्साह वर्धक रहे। मुझे स्वयं टिहरी-गढ़वाल जिले की पदयात्रा टोली के विदाई समारोह में उपस्थित रहने और उसके पश्चात उनके अनुभव सुनने का अवसर मिला। ५ बहनों को इस टोली के साथ एक लोक-लेखक थे, पत्रक गावों में जगह-जगह उनके लिए विद्यालय सभाओं का आयोजन किया गया था। जहां-जहाँ ये गईं, महिलाओं में अनुभूत-पूर्ण जागृति प्राई और सेती-जाडी के काम के दिनों में सार्वजनिक काम करने के लिए पहली बार बहनों को प्रोत्सा देना कर अन्य बहनों को भी इस कार्यक्रम से प्रेरणा मिली। मैं जल्द-

उत्तरप्रदेश के संयोजक की चिट्ठी

वता के साथ आपके जिलों के विवरण को प्रतिधा कर रहा हू।

पचली लुदे में प्रदेशीय सर्वोदय सम्मेलन के दौरान और उसके पश्चात क्षेत्रीय सम्मेलनों में मैंने प्रदेश के आन्दोलन को गतिमान बनाने के लिए तीन सुझाव रखे थे। (१) प्रत्येक क्षेत्र में कम से कम एक सघन क्षेत्र का चुनाव कर उसमें ग्रामस्वराज्य का सघन कार्य, (२) प्रत्येक क्षेत्र में एक पदयात्रा और (३) महिला लोचयात्रा। इस बीच सभा सम्मेलन तो होये रहे हैं, परन्तु कश्चन के सघन क्षेत्र और वमनी के अधिभान तथा महिला लोकयात्राओं के अभाव प्रत्यक्ष कार्य की दिशा में हम बहुत तेजी से नहीं बढ़ पाये। मेरा अधिकांश समय भी बैठकों और यात्राओं में गया। इस प्रकार के कार्यक्रमों का निश्चिता टूटने के बजाय बढ़ना ही जा रहा था और जगह-जगह से किसी सिविलर या गोष्ठी के लिए मित्रों के निमन्त्रण मुझे मिलते रहते थे। मैंने यह महसूस किया कि अपने सुभाये हुए कार्यक्रमों में से किसी एक पर मुझे ही सबसे पहले ध्यान करना चाहिए। उत्तराखण्ड में चिपको आन्दोलन को अधिक व्यापन बनाने और उसके लिए लोकशिक्षण करने हेतु सारे क्षेत्र की एक पदयात्रा निकालने का सुझाव मैंने हमारे सामने आया था। हमारे अन्य कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जनता को निरन्तर जागरूक रखने और नये साधियों को आन्दोलन में लाने के लिए भी इस प्रकार की पदयात्रा आवश्यक थी इसलिए उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के निश्चयानुसार २५ अक्टूबर को स्वामी रामनीथ जी की जन्मशताब्दी के दिन टिहरी से हमारी पदयात्रा प्रारंभ हुई है।

इस शताब्दी के प्रारंभ में जिन महापुरुषों ने भारतीय युवकों को राष्ट्र सेवा की ओर प्रेरित किया, उनमें युवा बेदागी वन स्वामी रामनीथ प्रमुख थे। २७ वर्ष की अवस्था में साहोदर ने बाल्य की प्रोत्पत्ती छोड़ कर दे हिमालय में भाये और टिहरी के पास अपनी पत्नी के गहनों की पोखरी तथा अपनी सारी

भौतिक संपत्ति को भागीरथी में प्रवाहित कर के वे सत्याग्रही हो गये। वे हिमालय के जंगलों, पहाड़ों और हिमानीयों में घूमते रहे। युवाओं में निश्चल करते थे और भेड़ पावक उनके समी-साथी थे। अमरिका में जाकर उन्होंने वेदान्त की पताका पहलाई और वहाँ से वापस लौटकर सोये हुए भारत की जगाने के लिए 'वेदान्तिक समाजवाद' का विचार बिधा। उस समय यदि 'सर्वोदय' शब्द निश्चल होता तो वे सर्वोदय का ही पोंप करते। ३३ वर्ष की आयु में उन्होंने दीपावली के दिन टिहरी में मिलगना नदी में जल-समाधि लेबर अपने प्रणु स्वाम दिने, परन्तु उनके द्वारा दिया गया प्रनाश भाज भी करोड़ों हृदयों को आशोचित करता है।

पहाड जहा हम काम करते हैं, अभावों की भूमि है, परन्तु सबसे अधिक अभाव लोगों में ध्यात्म विश्वास का है। लोग निराश हैं कि गरीबी और कष्टमय जीवन से बनी हृदय मुक्ति मिल नहीं सकती। स्वामी रामनीथ जी ने पहाड़ों लोगों के बीच उन्हीं जैसा कठोर जीवन बिनाया, इसलिए हमने अपनी यात्रा उनके स्मारक से प्रारंभ कर उनके उपदेशों और उनकी जीवन कथा के द्वारा लोगों में ध्यात्म-विश्वास पैदा करने का यह कार्यक्रम शारंभ किया है। हमने उनमें साथ जगस्वराज्य की पुष्टिमय में रवी शक्ति जागरण, वनों की सुरक्षा, सरावणन्दी, अदानन्द-मुक्ति आदि धार्मिक कार्यक्रमों को जोड़ दिया है। हमारी यात्रा के पहले दो पड़ावों पर ३० प्र० तरण शांति सेवा के प्रथम थी कृपर सभूत रहे हैं और अब मैं और उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री आनन्द सिंह विष्ट हैं। हम अपने साथ लगभग २०-२० जिलों सामान, जिनमें प्राणै बच्चे व बिनरों के अभाव, मेगामाइन, टेन-रिखाईर व सर्वोदय सार्वजनिक, लेबर प्रशिक्षण १०-१३ जिलोंमोटर उक्त करते हैं। शीमउव २-२

→

भगला पड़ाव बर्फीला होगा

समर्थ बने हैं, और लोगों से अपना कर्तव्य है। वन (३० फरवरी) हमने धीरे-धीरे विनाशकारी की सर्वोपेक्षा किया।

हमारी यात्रा को विनाश देने के लिए पूरे उत्तरी विदालन्ड की महाराज भागे थे। उन्होंने सामना की कि इस प्रकार की यात्राओं भारत के प्रत्येक तट में बर्फी कागुर विनाशकारी के उप-सुपानि भरतदेश में स्वयं प्राप्त इन स्थानों में भगला कागुराधिपति के बारे में "इस बारे में उत्तराखण्ड में एक नये युग का सूत्रण हो रहा है।"

२

उत्तराखण्ड सर्वोपेक्षा पदमात्र के दौरान ही मैंने अपनी मित्रों चिट्ठी प्राप्त की मेरा मैं भोजी थी, ऐसा लगता है कि इन की गठबन्दी के कारण यह समय पर न पड़ने सभी और प्रचारित भी नहीं हुई है। मैं स्वयं दूरस्थ थाकी में घूमता रहा। उत्तर-

बाकी और दिहरी गठबन्दी जिलों की ४२५ कि०मी० की परमात्रा सम्पन्न कर २ रियल-मन्डर बमोली जिले में पड़ने। यह 'विनाश' धान्योलन की जन्म भूमि है। दिहरी और उत्तराखण्ड दोनों वन-प्रधान जिले हैं। धन: उत्तर पर हमारी बर्फी का मुख्य विषय सरकारी लाजब, ठेकेदारों कोपण और जनता की उपेक्षा से बगलों की गवाही को राखने, सर(बन्धनी की सम्पत्तियों के लिए अनधिकृत का वास्तु बनना तथा सभी कार्यों को जमाने का हमारा कामकाज रहा है। यात्रा के ६ सप्ताह में 'मूदान-यज्ञ के ६६ प्राह्व बने हैं और ३६५ ५० के माहिल्य की बिक्री हुई है। गोट पर ही बाह्य डाने के कारण हम अपने साथ बर्फीय माहिल्य भी रख सकते हैं। हमने अपने साथ एक टेप-रेकारडर रखा है। इससे हम दूर-दूर बसे हुए पहाड़ी गांवों को लोगों को एक दूसरे की भाव मुद्रा पाते हैं। मैं अपने

पर तो निरन्तर रियने हैं, पर बर्फी-नभी एक गांव से दूसरे गांव तक पड़ने में पूरा दिन लग जाता है। प्रायः प्रायः पाटियों में बसे हुए हैं और एक पाटी से दूसरी पाटी तक पड़ने के लिए ७ से लेकर ६ हजार फुट की ऊंची कोटियां पार करनी पड़ती हैं। हेमन्त की पर्वतों वर्षा ३ दिनांशर को हुई थीर उनसे ताप ही हिमात्मक की पाटियों पर इस मौसम का पहला हिमपात। घाने घगले पड़ानों पर हमें बर्फी विमाने की भागा है।

म वीच डाक का तपके प्राय टूट गया है। इसलिए अन्य दिना के अधिन ममाकार नहीं भिन गये। नैनीताल जिला सर्वोपेक्षा मडल में ११ उपजानदावियों में सफल कराने। घागा है घगल जूको में भी इस दिना में बर्फी हुआ होगा। हमारे सामने भव मन्दावा विनाश का कार्य भी भा गया है। इस दिना में भारतीय नैदावियों को जानने के लिए ज्युनरूह।

विनील सुन्दरलात बहुगुणा

(पृष्ठ १३ का शेष)

एक ठी परेशानियों का सम्भार, फिर उपर पर उपरनेकी भी बिलत बड़ा वही वरीकी मित्राने की घोषणा है, जोमें के लिए राष्ट्र की कल्पना के साथ वास्तु किया है और उपरान विन्धाय प्राप्त किया था। क्या उसका वही प्रतिदान है कि गरीब धारकी जीवन को प्राणशय बन्धुओं का बहिष्कार कर, घाना जीवन यत्न नैतिकों की सम्पत्ति कर दें। मूक महाह है और वह भी बिजनी सत्तता से दे की गई। धान हट करानेय इस विषय में बीच-बन्ध रहा है कि वह विद्वानों को स्वीकार करे या इसे नगरे और विनाश करे।

यह तो बहिष्कार काि प्रत्यक्ष राज्य-शासक को बहिष्कार नैनीतरण की नीति का यही सुपरिद्वेषण घाने का का था। हम इसका बीच-बन्धिए एक घानावृष्टि पर भारतीय पर मुद्रा होने की अपेक्षा कर सकते हैं। या धारकी-धारा कागुराधिपति के धून-धुनित्य में जनता का प्यार बटा सकते हैं। लेकिन केंद्रित धन सम्पत्तियों के सुपरिद्वेषण है। जो घानाप्रकारों है। स्वार्थ-परत गौबरगाही,

धानरगाही और नैनागाही क भरोसे पर राष्ट्रीयकरण को व्यङ्ग्यता का विनाश सम्पत्तिया नहीं उठाया जा सकता है। जब गोदाय में पड़े हुए गेहूँ की निम्न बतल सानी है, हजारों टन धानका प्रतिबन्धित धन से बाहर बना जा सकता है, सरकारी नियंत्रण की वस्तु अन्ध मार्केट में खुले बाजार में है, वह प्रभावित राष्ट्रीयकरण की धर्म व्यङ्ग्यता को सम्पत्तियों के समाप्त कराना है, यह मानना मुझों के स्वयं में रहने है। इसके लिए सार्वजनिक नैकापराण और ईमानदार राष्ट्रीय कारिण्य घाने व्यक्ति बहिष्कार विनाश काज में बंध विनाश प्रभाव है।

इसलिए ऐसी हानि में तो ऐसी राज्य व्यङ्ग्यता का बहिष्कार ही व्यङ्ग्यता है। बहिष्कार का धर्म है जनता की धानकी व्यङ्ग्यता स्वातन्त्र्य, स्वाधीन और स्वतंत्र पर सादा-विश्व स्थायीय प्रभावमान। विरेन्दित धर्म अन्धरता, विरेन्दित धर्म व्यङ्ग्यता। इस प्रकार जनसिद्धि के आधार पर स्वदेशी और स्वाधीन व्यङ्ग्यता से ही धान की इस विषय परिस्थिति का मुषाजना किया जा सकता है।

प्रधान मन्त्री द्वारा बहुमन्दावाद में मुक्ति एको को जो सनाह ही गई वह उनकी क्षान्त व्यङ्ग्यता पर एक व्यङ्ग्यता सम्बोधा है। इसके विनाश क्षान्त में विषय एक राजपुत्र की धरने निजाम की विचक्षण एक प्रभावना की इससे बहुरूप प्राप्त क्या प्रतिबन्धित हो सकती है। परन्तु को के मुद्रा में निरन्तर प्रभावधारण बृद्धि करतुओं का प्रभाव, विनाश की व्यङ्ग्यता और स्व-गति का निरन्तर हानि में ऐसी परिस्थितियों का निष्पत्ति कर दिया है कि बस्तु को स्वयं ही प्रभाव्य ही गई है। जगके लिए किसी योजना और प्रतिबन्धित की आवश्यकता नहीं है। उसने लिए बहुतरु पंथा का प्रसार लेबर धूनना होगा है, तब वही वस्तु पकड़ में पाती है।

प्रधान मन्त्री की प्रतिबन्धित स्पष्टता को बगलों की धार संकेत करती है मानवसुनि और राजार सुनि। धोवना है इस निजाम को एक वातावरण व्यङ्ग्यता को। तब हीही इन बहिष्कारियों से सुनि। धन, प्रकट होना पाटिने, एक सुनि धान्योलन।

आन्दोलन के समाचार

× केन्द्रीय आचार्यकुल समिति द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रीय आचार्यकुल सम्मेलन पटना, बर्धा (महाराष्ट्र) में १२ व १३ जनवरी ७४ को आयोजित हो रहा है। १० दिसम्बर १९७३ को सम्मेलन की स्थापना समिति एवं तैयारी समिति की बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

विद्ये गये निर्णयों के अनुसार १२ जनवरी को सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमन्नायरायण करंठे और विनोबा जी सम्मेलन को अपना आशीर्वाद देगे। १३ जनवरी को सम्मेलन का समारोह महाराष्ट्र के प्रतिष्ठित पत्रकार श्री धनन्तगोपाल शेवडे करेंगे। इसी दिन विनोबा जी चर्चाओं में उठे प्रश्नों के उत्तर भी देंगे। चर्चा गोष्ठियों की अध्यक्षता श्री रोहित मेहता और जैनेन्द्र कुमार करेंगे।

विषय प्रवेश प्रो० महेश्वरबुडे और श्री गुणशरण करने।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि शुल्क १० रुपए रखा गया है। रेलवे विभाग द्वारा सम्मेलन में भाग लेने के लिए रेलवे पैसेशन की सुविधा भी प्रदान की गई है। रेलवे नसेशन संयोजक प्रादेशिक आचार्यकुल संघदा श्री वी० ह० सहस्वरबुडे, धर्मपेट, नागपुर (महाराष्ट्र) से १० रुपए अग्रिम भेजने पर भी प्राप्त विद्ये जा सकते हैं।

× श्री फूलिया भगन से प्राप्त जानकारी के अनुसार उन्होंने मन्बर माह में हरियाणा के जिन, रोहतक व भिवानी जिलों में ८१ मील की परयात्रा करने १९६२ र० का सर्वोद्य साहित्य देवा।

× प्राप्त जानकारी के अनुसार २, ३ व ४ जनवरी १९७४ को परतूरबाघाम (इन्दौर) में एच रिातल-सम्मेलन का आयोजन परतूरबा गानी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा सम्बन्धित रूपि क्षेत्र द्वारा किया जा रहा है। सम्मेलन में उल्लेख एव सतुलिन रूपि के बारे में जानकारी दी जायेगी।

× प्राप्त एक जानकारी के अनुसार उल्लेख प्रदेश में आचार्य विनोबा भावे द्वारा चलाये गए भूदान-आन्दोलन के अन्तर्गत १ लाख ६८ हजार २७६ एकड़ भूमि भूदान में मिली है। यहाँ ६२,२२२ गावों में भूदान प्राण हुआ है एव भूदान दाताओं की संख्या २३,३७४ है। प्राण भूदान भूमि का वर्गीकरण भी हुआ है। समूचे राज्य में १ लाख ४० हजार ८७१ एकड़ भूदान-भूमि ३७७६ गावों में बसने वाले ६६,४६७ दाताओं (भूमिहोनों) में वितरित की गई है। भूदान-भूमि का अधिकतम नामोत्तरण भी हुआ है।

(पृष्ठ ३ का योग)

और बोर्ड साइलेंट ऑफ एक्शन नहीं निकल पायी। निर्मला देवगण्डे ने कहा कि यह तो एक प्रक्रिया है। इसी तरह सुल बनवाना करने और निर्बन्ध सामूहिक विचार से ही भाईधारा और सर्वसम्मति पदप रखनी है। समय इसमें लगना ही लेकिन बिना समय काया—यह ध्यासमिष्ट है। प्रत्येक कह है कि हम एक-दूसरे को समझ रहे हैं। विनोबा और जे. पी. सी. की संगीति में पूरे समय अपरिर्वर्त नहीं रहे पाते थे इसलिए उनके लिए रिपोट लिखी जाती थी। संगीति की रिपोट प्राप्त करने के बाद विनोबा ने विनोद ने कहा कि हमारे यहाँ कई तरह के ध्यानन्दा होते हैं—हम लोग ध्यानन्दा हैं। जे. पी. ने कहा कि इन प्रश्नों पर हम विनोबा वार बरस कर चुके हैं? हम प्रश्न ही उठाने रहेंगे या उनके उत्तर भी देंगे। जे. पी. ने यह भी कहा कि धर्मबान सावाद के लिए संगीति की संस्था ज्यादा थी। इनमें बोलना ही ज्यादा होना है—संवाद, सम्प्रेशन नहीं हो पाना।

निर्मला देवगण्डे, कनिष्ठाई साह, रामकेश राठी और कुमार प्रशांती रिपोटिंग समिति में अपने नोट्स के धाराएँ पर चर्चा के मुद्दे छाटे और फिर तीन दिन तक मनमोहन चौधरी की अध्यक्षता में उन मुद्दों पर चर्चा हुई। मुद्दे राजनीति से हमारे सम्बन्ध से लेकर आपसी विश्वास वजते और भाईधारे तक फैले हुए थे और यह प्रसन्न ही था कि सब विषयों और मुद्दों पर सर्वान और निर्णायक चर्चा हो पती। इसलिए एक-एक विषय पर विचार करके जिनकी बातें सामने धानी गयो उन्हें भागोहन भाई—'समय' करते गये। निर्णय पर पहुँचना वीते जरूरी भी नहीं था। चुनाव के समय (सास कर उत्तर प्रदेश के चुनाव में) मनदाना प्रमाण के अनन्वय भी विवर बापी बहस हुई और धनलन: जे पी. के सुभाये गये कार्यक्रम पर जब विनोबा ने सी पी सदी सहमति प्रकट की तो उसे माना गया।

विनोबा ने अपने चारों प्रवचनों में

उपवासदान नागरी निर्णय के प्रसार का ही एक पत्रिका सार्वभौमिक प्रसार। उपवासदान पर अच्युती चर्चा सगठन पर विचार के दौरान हुई। सर्वसम्मति से सिफारिश की गयी कि सगठन की सुनिवासी द्वाारा प्राथमिक सर्वोद्य महत्त्व और लोकनेतृको बो सिक्रि प्रीत मयक किया जाये और गानें संक्षम सप पन्दा इनदटा करना बन्द करने उपवासदान की शृष्ट रचम से अपना नाम चलाये। धन बंगाल में होने वाले सर्वोद्य सम्मेलन के समय प्रबन्ध समिति और सध अधिवेशन में इन पर विचार किया जायेगा और पूरे सम्भावना है कि सिफारिश मान ली जायेगी। बाबा ने आजीव हजार उपवासदान की जो धरैला भी है उसना प्राप्त्कार विभाजन हुआ। पत्रिकाओं में श्राक तिपुने करने के भी सक्तल हुए।

जे. विनो की संगीति जे. पी. के भाषण के साथ ममात्त हुई। जे. पी. ने राष्ट्रीय रिस्तिन और उत्तर प्रदेश के चुनाव के दौरान—लोकतंत्र की सुनिवासी सुरक्षा रतने के कार्यक्रम पर जोर दिया। प्र० जो०

वार्षिक शुल्क: १२ र० (सफेद बागज: १५ र०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश ३० र० या ३५ शिपिंग या ५ डाकर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा सध के लिए प्राणित एव ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ३१ दिसम्बर, '७३

भूदान-यज्ञ

३१ दिसम्बर, '७३

वर्ष २०

अंक १४

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

कही नहीं बचे हरे वृक्ष (कविता)

—भवानी प्रसाद मिश्र १

नये साल की सम्भावना

—प्रभाप जोशी २

ठूठ पेड़ पर कोमल स्निग्ध कोपलें

—भ० प्र० मिश्र ३

चादर की लम्बाई से अधिक

पैर न पसारिए

—सरला बहन ७

कदमौर के दो रूप

—चण्डी प्रसाद भट्ट ८

पसीने के साथ भ्रान्दोलन के

लिए भ्रव खून भी

—ठाकुरदास बंग ११

बिना टिप्पणी के

—वि० ना० खानोलकर,

धम्मदयाल त्यागी, सरला बहन १२

टिप्पणी

घोर अन्धेरे में उजाले की रेखा

प्र० जो० १४

उ० प्र० में मतदाता

शिक्षण अभियान १५

समाचार १६

—

राजघाट कालोनी,

गांधी स्मारक निधि,

नई दिल्ली-११०००१

नये साल की सम्भावना

आजाद हिन्दुस्तान के इतिहास में शामिल होता यह वर्ष निश्चित ही-बड़ती कीमतों और विगड़ती धर्म-व्यवस्था का वर्ष माना जायेगा। ग्राम धादमी इन पिछले छद्मीय वर्षों में शायद कभी भी इतना परेशान, निराश और उत्तेजित नहीं रहा होगा जितना वह इस वर्ष रहा। लगभग हर आदमी ने निजी और पर या सार्वजनिकरूप से यह सवाल ध्वष्य पूछा है कि उसका और उसके परिवार का क्या होगा ? इस देश का क्या होगा ? उसे कोई विश्वसनीय उत्तर नहीं मिला है। उसे मिले हैं कुछ नारे, भड़काने वाले कुछ भाषा-हन और पाचवी योजना का प्राक्षप। दुकान-दार, कारखानेदार और व्यापारी जिनके गले राजनीति ने यह सकट लाने की पटी बांधी है, ग्राम धादमी की तरह रोते हुए और अनिश्चय से भय खाते हुए दिखाई दे रहे हैं। धार्मिक धराजकता के इस वातावरण में हर आदमी का एक बियावान कोना है जहाँ बैठ कर वह धरष्य रोदन कर रहा है। यह नहीं कि चीजें नहीं हैं, यह भी नहीं कि उन्हें खरी-दाने के लिए पैसा नहीं है। चीजें मिल भी रही हैं और लोग श्रूयो नहीं मर रहे हैं लेकिन अर्थव्यवस्था, अनिश्चय और घमन्तोप ने वह विश्वास छीन लिया है जो लोगों को मानसिक रूप से वर्तमान में स्थिर और भाविष्य के प्रति आश्वस्त करता है। हमारे सामने जो सबट है इससे बड़ी अधिक बड़े और गहरे सबट हम भेल चुके हैं और उनसे संघर्ष करते हुए सही ताबूत निकले हैं। नरेंसप-निद्रापा कर कारख-अष्ट नहीं है, इस सबट से उबरने के लिए सही कोई पथिक्रम न कर पाने की असहायता है। इतने की ई सन्देश नहीं कि आज हम जो भुगत रहे हैं उसकी मुश्किल दो साल पहले यानी सन् '७१ से हो गयी थी। मार्च '७१ में बागला देश के लिए पूर्व बयालियों को संघर्ष छेड़ना पड़ा और शरणाथियों की घनल और घनल्य भीड़ हमारे पूर्वी भागों में घाने लगी। उन्हीं दिनों हमारे यहा मध्याधिम चुनाव हुए और सब जानते हैं कि मध्याधिम में कितना घने सचें बिया गया और यह बड़ा

से भाया ? शरणाथियों को किलाने में हमारा भन भण्डार समाप्त हुआ और चुनाव में मिले घने ने घोले घने को बालि में बदलने की प्रकिया तेज की। फिर हमने बागला देश की मुश्न का युद्ध सड़ा और जीतने के तीन महीने बाद फिर राज्यो में चुनाव हुए। इने सबके हमारे पाटे की धर्मव्यवस्था पर जवदेस्त असर पड़ा।

लेकिन जिन्हे हमने भाग्यविघाता बनाया था उन्होंने धर्मव्यवस्था को गुथारने के सही, वास्तविक और ईमानदार प्रयत्न करने के बजाय जनता को नारे और भ्रम दिये और उत्पादक क्षेत्रो पर ऐसे प्रतिबध लगाने की कोशिश की जिन्हे लगा सबने की क्षमता उनमें नहीं थी। कुछ से श्रूया और कुछ उत्पादन का गला घोटने वाली नीतियां दोनी ने मिलकर भ्रमव और धारषी प्रविशवास का ऐसा वातावरण पैदा किया कि सब धीरे-धीरे के दाम दुगने-तिगुने हो गये। जनता समझी थी कि सरकार इस हालत पर कानू पा घना है क्योंकि उसके पास घनल सत्ता है। नेवि सत्ताधारियों के पास पूरी सत्ता होने के बाजू जूद नैतिक अधिकार की शक्ति नहीं थी वे सब जानते हैं कि उन्होंने क्या किया है धो कैसे किया है और क्यों किया है कि बिषय यह नतीशा है। जो वे सार्वजनिक रूप से करते हैं और करते हैं उसमें स्वयं उनल विश्वास नहीं है और इमलिए उनमें ब नैतिक शक्ति नहीं है जो सबट का साधन करने में लिए जरूरी है। सबके नीचे देने हैं सबकी धवमारियों में मुद्रं छुपे हुए हैं इसलिका कोई बिचो को कुछ नहीं कह सकता न किस्सं वा कुछ बियाज करता है। धारषं धीरे-धीरे दिवससहीता के बारए पैदा हुई अर्थव्यवस्था, धराजकता और अन्धकार में यह साल गुजरा है। और हालांकि प्रधानमंत्री ने कहा है कि नाजुक समय धर गुजर गया है पर नये साल में उत्तरप्रदेशके चुनाव हैं और राजनीति के धर्मव्यवस्था पर धनर के दुष्परिणाम अभी और घाने हैं ! नया साल धाम धादमी की अघहायता में और बूँड नहीं बरेगा क्या ? —प्रभाप जोशी

ठूठ पड़े पर कोमल स्निग्ध कोपलें

—भवानी प्रसाद मिश्र

मैं नयी धारमी हूँ—जातों का जमा
सब घनने सामो में करता रहता हूँ। अब जो
मे ऐसे धारमी को 'मैन प्राफि नेटम' कहते हैं।
अब यह 'मैन प्राफि नेटम' नियम मन्त्रों की रक्षा
है? शायद किसी मन्त्र को नहीं। तो फिर मैं
क्या बकूँ? क्या विद्या कि मैं कुछ नहीं करूँ या
नयी कुछ अर्थात् है। अर्थात् जिनसे मैं बचा
हूँ और जिन से मुझे बाध कर चुक चुका है।
मेरी मान्यता है कि जो किसी बड़ी धम्मा से
बचना नहीं है—कड़ी से छूट नहीं पाता,
हजार नगण्यमाधो का दास होकर जीता है।
पर वह किसी एक बड़ी धम्मा, एर किसी
मट्टी मूल्य, किसी एक विद्या विचार को अपने
पर बस लेता है तो नगण्यमाधो की पदने
समानी है, नियम-नियम कर गिरने समानी है।

धम्मा का अर्थन धार्यपण में बधन जाग है।
"म" हो जाता है, एर से दूगरे को दूगा
है धो। "दूगरे के धार्यपण को परिधि
बहुती बन, ५ है। धार्यपणम यह-नश
कर ताविकाध। धम्मा के ये धनश्य
धार्यपण दूगरेन, धोर धारनद
मय धारनद की मृष्टि धोर धारनद
पह विकिरण तरी होना, मान, अनोरजन नहीं
होता है, मधिप धारनद होना है। सर्वना का
धारनद होना है, धोरें धमने बन पर धमने मे
से उजमे धोर बनने सामोनी है। ये उपस्थित
धीनो पर धारमी अनो सर्वना को किरणें डाने
कर उनको निवार देनी है।

तो मैं धारमी पट्टी धम्मा धारके सामने
रखता हूँ। मेरी पट्टी धम्मा यह है कि यह
बयन कोई अभी परेनी नहीं है। यह दिन
अपरे मे मे उजमे मे अस्थि धोर प्रवेसमान
किसी वेनय की धनुसाग इच्छा है। यह धन-
नियम धिन रुम मे पालिका हो रही है वह
कोई धारमिक मन्त्रो का मेन धम्मा है। "धीन
एक दृष्टि, दस समुची मृष्टि की मट्टी को तक-
मीन मे बन करती रही है धोर धम्मा मय
काहे किता धनिकरन हो, धम्मा अज या
इसकी परिधि कल्पना की ही प्राथि मे है।

इस धम्मा के कारण मेरा मन है कि जीवन
का दर्शन धोर उसको जीने की पद्धति प्राहनि
मे से लेनी चाहिए धोर अपने जीवन को उभी
तरह विकसित धोर अपने जीवन को उभी
जित तरह पीया पून मे विकसित धोर फल मे
परिष्ण होता है। अब यह बात धारमी के
लिए पून-पीये, पयु-पयो धारि की तरह
सरल नहीं है। धारमी धारमी पद्धति को धम,
समक, प्रेम धोर विवेक के नित्य माधतमन्य
के द्वारा हस्तगत कर पाना है धोर इमीलिए
हम देखते हैं कि हर गुणाक के पीये का गुलाब
हो जाना, या माप के बड़े का शानदार
डीलरन या लेना स्वाभाविक है। हर धोर का
बन्धा धोर बन जाता है, हर धार्यपण धाम
के फल देता है धोर हर बरून का पेड काटे।
नरी हर एन बहनी है पतर हर एन सत्त
होना है, हीग हर एन धमकना है। मय
धारमी सब न पून पाने हैं, न तरन-सरल हो
पाने हैं, न धन्य धरोपित गुणो का उनमे
विचार होता है। उन्हें तो यह कठिनाई से
प्राप्त होना है। हजारो मे से एक धारमी
'धारमी बन पाता है।

मेरी धारमी धम्मा यह है कि धारमी की यह
साधरी ही उनका बरणन है कष्टोके धीने से
विधान, मनिदून परिस्थितियो मे से धनुदून
धोर साध-मुधरे धमने विचार लेने की प्रतिमा
प्यारो मिनी है। रास्ते निकालने के प्रयत्न को
प्रकार के हो सक्ते हैं। एर तथ्यों का विवेक-
पण करते उन्हें धनुदून बना कर या फिर
उजमे सामग्र्य देना शरके। पट्टी पदनि
हये पद्धति के तीर तरीको को समक कर
जीने की दिशा में धोर धारमी उज उतर
तरीको केतव्यो की पद्धति का समुचन बिगाडे
बर्ध धाने धनुदून धानने की दिशा मे से
जानी है।

धारमी हम विनयेपगालक पद्धति धोर उमके
नतीको के कारण पद्धति से सधर्ष पर बन्दी
जोर देते हैं। धोर उमके सामग्र्य बँडाने का
धोर से साधारण है फनरकन विधान मे जो

प्रयति की है, वह पदार्थ बद्धता धोर धना-
शक धरकाय, साध ही निरंतर भाग दोड के
विधा हमें जो कुछ दे रही है, वह सब धानि-
कारन है। धारके धारमी को ऐसा सपना है
कि जैसे वह किसी तूफान मे पडे अहाज का
साथी है, निम साए अहाज सहरो के धरोडो
से तितर-बितर हो जायेगा कोई नहीं
जाता। लोग जो उमके धारयाय हें वे एक
दूगरे से धनजान धोर धार्यचित है—माने
ऐसे है जिन्हें न वह धारवल करना चाहता है
न उनमे उडे धारयायत मिन सत्ता है धोर
साध मित कर बने का उलय न वे जानते हैं
धोर न धव धोडी डेर मे जान सक्ते हैं।
जदारके के कुछ धताने वाले धारि ई के उजमें
धीलने पुकारते पर काट देने है या धारय की
बीतल पमा देने हैं कि लो इसे पीकर चुप हो
जायो—उब तक हय कुछ करते हैं। धव
इस तबधीर या धपको को बड़त बवा नर
इससे केवल जाना सक्ता है—मय उतका
उद्देश्य उमके बनाना यह है कि धारके
धारमी की परिस्थिति दयनीय है—पहल
दिनी काय भी उमने हाथ मे नहीं है धोर यह
नियम यह या तो एक मशीनी पुर्जा या 'धोर
ध्राक सटन (काय का पयु) है, यह सब जगह
तबनीके धनयो मे बधा धारक उमनी धारयोरो
से लिखा फिर रहा है। उम मे साकार किसी
वध्प पयु की तरह धार्यें बन्द करली है कि जो
होना होना, सो होना। जब धारमी मे धामने
कुछ होने का भाव नहीं बना तो उमने धपने
को पया-युधर मान निवा है। 'धरिन्धरकार'
का सिद्धान्त उमका बरते बडा दर्शन हो गया
है—उमे यह सामधाने धाने बुद्धिजीवियो की
एक जगात है कि हम धन दुनिया मे धारमी
प्रति से नहीं धामे है। इमलिए दस सागर के
पति हमारो कोई जिम्मेदारी, कोई उतर-
दायित्व नहीं है। धरिन्धर की योजनार्प बनी
है, से साधनीसे से बतानी जाती है मय एक
उदय्य महा तम कि विरोधी रण, लोगों का
उमके तरफ बनता है धोर लीम धूधो है, कभी

झरने-झरने बनी समुदायों में, कि मानव मूल्यों का आधार स्वतंत्रता है या यथेच्छाये कमी चौकट में फिट होना ? इस प्रकार एक तरह के दरवाजे पर धाज सारी मानव जाति सड़ी है—बलि: वह सजते हैं भ्रंसभ्रवना के पित्रे में पडी फड़फड़ा रही है । हर नयी समस्या का जमाव एक नयी पहली में होता है—मोनि समस्या पंदा करने वाले उसका हल नहीं दे सकते । समस्या पंदा हुई है अर्थ-धिक संगठन से । अर्थ-धिक संगठन ने आदमी के द्वारा खोजी हुई हर वडी चीज को बोना बना डाटा है । हजारों वरस की खवधि में पनपाये और विवसित भिये गये धर्म, दर्शन, संस्कृति और सम्यता के मूल्यों के अर्थ-धिक संगठन ने सारीयें क्षेत्रों में भीच कर बोना कर दिया है—ने ऊपर उठाने वाले मूल्यों के बजाय नीचे गिराने वाले बहन तरु लगने लगे हैं । तब फिर सोचना पडता है कि आदमी को नये सिरे से प्राकृतिक नियमों के दर्पण में भाक कर देवना चाहिए और अपने रहने-सहने के तरीके वही से उठाने चाहिए । हमे जिये के भरने पर धार-धार ऊपर जाना चाहिए और जहा से फूटा है वहा बँठकर उसमे पाव डाल कर कुछ क्षण बैठने का अनुभव लेना चाहिए । यह एक समयी प्रकृतिस्थ आदमी की हुई । मगर वही एक तसवीर उसकी नहीं है । प्रकृति का आदमी से सजध विचिन और निविध है । भारत की संस्कृति तो आरप्यक ही बही गयी है । रवीन्द्रनाथ ने उसे तपोवन की संस्कृति कहा है—हमारे बडे से बडे धर्मबन्ध 'श्रमो' लोगों की, आरप्यकी की, अर्थियों की देना । बुद्ध को भान एक वृक्ष के नीचे हुआ था और कृष्ण ने आनी ज्योति भी एक वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे जितनी की थी, नर्वंशपायी बतायी थी । हमारी संस्कृति के इस सार को, सरल और सारे रहन-सहन के धीकी ही मानवीयता के तस्वी के पनपने की संभावना को, सारे संसार के न्येपन के बीच सडे होकर गांधी ने दिखायी और इसलिए वह ऐसी बार्ने वह सभा जिन के उसके मुह से निकालते ही पूरे देग को लगा कि उन के प्राण को मयने बानी आवाज-वाणी हो गयी है । आधे-अधूरे बंग से ही मडी शहरो के पडे-तिपाये ने उमकी बाणी को नाना और यह शायद इसलिये कि गाँवों के लोगों ने उसे प्राणपण से मान लिया था । शहर की

अधुरी मान्यना और गाँवों की विचार की हद तक पूरी-पूरी मान्यता, गांधी को मिली और परिणाम प्राये । धव ये परिणाम गांधी के जाने के बाद भीजते चले आ रहे हैं । कारण है हमने आत्मविश्वास के साथ उही मूल्यों को पकड़कर चलना तय नहीं किया जो हमने अपनी एक मजिल तक लाये थे ।

हम गांधी और भारत की, समूची आध्यात्मिक होने के साथ-साथ जो परम व्यावसायिक पद्धति है. उसे एक अर्थ-विश्वास म पड कर छोड़ें । अर्थ-विश्वास यह वि प्रगति पत्रिम में विज्ञान के द्वारा हुई है और उनी वा प्रतिक्रम बने बिना हमारा निस्तार नहीं है । हमने इतना ही सोचा कि विज्ञान और यांत्रिक प्रगति के सहारे हम अपनी प्राथिन परिस्थितिया बदल लें, बाद में और कुछ सोचा जायेगा । इसमें तो कोई सदेह नहीं है कि विज्ञान और यांत्रिक सहारे से उत्पादन बहुत यश्या जा सकता है, मगर यह जो उत्पादन होना है शायद आदमी की जरूरत पूरी कर देता है, वह हमें संसूत यटा तब कि सम्य नहीं बनाता, क्योंकि यह उत्पादन मनुष्य के मन और प्राण और अनुभूति, बनी-बनी उसके स्वर्ज तक से प्रकृत है । फिर यह जो उत्पादन इस प्रकार चलता है इसके अपने तर्क बन जाते हैं, मानवीय बुद्धि से निनात निरनुग और अमन इन तर्कों की शक्ति दूहे एक अमाध गति देगी है । तब ये तर्क इस प्रकार के उत्पादन के रानेने में जो कुछ धाता है उने दवाने, बुचलने जगत्वापी होने चले जाते हैं । रास्ते में आते क्या हैं ? मानवीय-मूल्य । इतिहास हमारी प्रकृति, हमारी जानी-मानी स्वस्थ परम्पराए के चीजें जो सुरक्षा और शांति की एक भावना दिखे हुए थी, हमारी अपनी अति—मत्ता, बभी अपने वेड सजने के मुविधा, सुतापन, सोर्य्य और हरजीज जो कोमल है और प्रिय है । 'यात्रिकता' के तर्क अर्थात् केन्द्रीय अर्थ-व्यवस्था, विमाल पंमाने पर व्यवस्था और संगठन और इन का संचालन करने वाले तब हमारे जीवन की हर छोटी-बडी तपनो न तय करते हैं और जब वे मुविधाएँ जो हमने वाग्म्य मानी थी, निच गतकमे बानी ही नहीं, कटने बुचलने वाली शक्तिया बन जाती हैं । अरथ देशो का कोई छोटा गा हिसा तब हमें अंधेरे में रल सजता है,

बिजली घर का कर्मचारी हमारी हरी-भरी फल को दो दिन में मेहनतबूद कर सजता है, और नयी मुविधाओं के धादी हम एवदम याचार, निकलत-व्यवमूद, दस-पाच दिन भी कैसे पट्टेये, यह समझ नहीं पाते ।

अर्थ-व्यवस्था तब इस व्यवस्था का पहला परिणाम होता है, दूसरा होता है अष्टाचार, तीगरा होता है हम को नहीं है वह दिग्ने रहने का प्रयत्न याने तब शासक, नितात स्वेच्छाचारी शासक, अपने को जनता का सेवक, गरीब का हितैपी बनाता है, अथा-चारी अपने को दूध का घुला, बडी-नडी तन-कशाहे पाने वाला अपने को शोविता और गुम-राह करने वाला अपने को मार्गदर्शन पुमिण करता है । उत्पादन की इस तर्क-विगतत बलि मानवता विरोधी प्रणालियों से युद्ध का जन्म तो होता ही है । उत्पादन अपनी आरथ्यवता के विचार से नहीं, एक बडे लये चीडे विन-व्यापी बाजार के विचार से होने लगता है, तब बाजारो को मुट्टी में बरने की होइ चलती है और प्रभाव क्षेत्र बनाने की धुन में बडे-बडे देग जो पहले खुद लडते थे अब छोटे देशो को परस्पर सजाने की कला निवाल बन निश्चिन हो गये—उहे हथियार बेचने है और भूमी मरने पर गलता भी ।

बोर्डे यांत्रिक उत्पादन के गुणगान गिनाये तो गिनाता ही चला जा सकता है । मलत वरनुभो के उत्पादन को प्राथमियता मिलती है, जैसे यल्ले और वपडे के उत्पादन पर उनका जोर नहीं होगा, जितना जितान की चीजों के उत्पादन या शस्त्रो के उत्पादन पर होगा, बेचन चीजें ही नहीं रहन-सहन के डग जो बनें और बानुन भी जो बनें, उन पर मलत उत्पादन का बवाल रहेगा और इसलिए वे मलत बनेंगे । तबनीक के नाहन और गीर जरूरी प्रयोगों के कारण, फिर वे चाहे प्रजा-तन्तीय पद्धति के देशो में हो रहे हों, चाहे साम्यवादी पद्धति से जनाये जाने वाले देशो में ही, मोडर्नादि में हाम अर्थात् व्यक्तिकी स्वतंत्रता का विनाय, बानावरता या सद्गुण, इतिम और अनुत्पादन बामो तब मे व्यन्य रहने की सजबूरी, पारस्परिक न्ये मिनने-दिनते की सामाजिक, जिनमे सामाजिकता

बैं, धारणन की प्रकृति जाने, यहाँ तक कि पशुवियन का भारी लगना सर्व साधारण और एकरम मोटी नजर से दिल जाने वाले सुवचन है। धारापन, व्यक्तित्व तो एक सुवचनवा बोज है। बच्चा जब से जरा समझने-सोचने शुरू कि उसे स्कूल या उसके मिलन-उत्पत्ती सहायों के निरन्तर में शान दिया जाता है। ये स्कूल या घर स्कूल बच्चे की सख्त परिहारनता, सर्वज्ञता, प्रयागजीवता के बजाय उन पर गमाज के तयगुता सुन्यो, धनुगामन, मायो-डाचों, और ऐंगी विरक जावकारी शोचने सपने हैं, जो उसे या ता कूटित कर देती या सपनों की दोड़ में पीच कर उपाका जीवन बरबाद कर देती हैं। वह निर नये सुग-मापन उदामे की बलनन से दूसरों के सुग-पुच से बेमान एक सवा धाम-रहित धराणी बन जाता है, जिनके हर धाम्ने काम का मनबध पटने उठीं को लाभ देता होता है। वह सोचना नहीं है, किमी सत्यवाहित पथ की तरह बलना है—यह नहीं सोचना कि उसकी धाम की धार में क्या बहा और किस तरह लय रहा है।

रसधर, भावना, सहज रूप से किसी बात की ओर धारविन हो जाता क्या होता है, कोई जलना ही नहीं। काम जो करते हैं उनका साम्यवित जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं हाता। धारा धारधार उनको मिलने वाले वैसे के निरा धारना होता है। जिसकी निर तरह घर के हर व्यक्तित्व धार पसु तक जुड़ी है, गाद के हर धारमी से जुड़ी है, वेग धारा को गमना के बायो का स्वभाव नहीं है—और धार बाँध बढ़ा बचा है जो हमारे विद्यते बने जाने वाले देतो में। वे धारधर में इतनिए पिछरे हैं कि धारी तक उम मुद लाग धारमी बने हुए है।

धर इय सखरे बीच में घाने घने अंधेरे से बड़ इय नये सुग के मन में धार-धार एक निरती कोप रही है। गाभी धारमी वगं में धारधरमान में हथने सन लय को देया कि शिवाता बने से बडे उद्योगशील देतो में दग मय का धमयिग उन्धारण शिवा कि इय दुनिया में एए बोलन जीने से लिए धारनामे जाने का नयी निरन्तर होता चाहेए धार उनमे बने कुमजता बनी धारनाई जाती

चाहेए जिसे योना ने 'योग' कहा है—धनार् जीवन पदनि ऐंगी नहीं होंगी चाहेए सुविधाधो की, व्यक्तितव सुविधाधो की, या नमराजन सुविधाधो की या राष्ट्रजन सुविधाधो की धारा रने, बलन जो निरन्तर है। धरार्थं द्वारा वर ध्यान पटल रने धार इमे ताधन के लिए जा काम हो वे कुमजता से मिल जायें धार ताधने बाने न हो जोधने वाले हैं। समार में धार इय तरह में ताधन धारा की सग्या रा-ग-गज बर रही है या धारिक जीवन में सुनि का पाय धामो द्वारा का धाने बन पर पाय ताया इध धरगुम करना चाहते न। वे उन गमाज के द्वारा विनी एकदम धामन दग जानि या जमान के लिए निरधारा मय वा गदरक जग्न बनाने की ताकारी मरुता चाहते हैं व धरनिधन पटुता वा निर धाय बन्ने धरने में मय का धनुबध कर रह है। क्यारि वे दयन रह निर धारक शिप पठ या मीग-मीय कर उठ जिने वामा में धारना गारा मय नमना पटना व राई करन ताया वगं करन ताया शिप धर कगम्यन वा सुगुनि की मारक रन वी काम नहा है। व उवान धारा कबन सगान गय काम की जगट मीध धारा धरर धार, धारक बन वाया काम धारना चाहते हैं—धोर यह धारीता वैचन दग मायिकता में छुटकारा पात के लिए। विर ना वे धाम उदम धोर जान धरनामे गाभीसाद से ध दगं व नय सुगोदय को उगा रने। यही बलिध ना वह धारधर है जा गारे सवार वा धर नय की धारनयी सुग में वर-ताया। गाभीकारनन के धारमं की गतवीर है, ये न गारे समार ने मयक लिप्य है। यह धर-नधेर दली धार इती विचार बने धरनात वाता है। यही एक साय विचार है जा जिता किसी धुगाग, जानि वत मय धरधा धारा के भेरभाय की बाधा माई एए धारणन, एए धार धार प्रेरणा देण, धोर यर प्रेरणा देना धार जीवी ही नहीं निर धरंधाल होमी, धोर हांभी, धरर हांभी धोर इगारी गभावताए धारा में धरन-धरन बूझो पर कूटने गाती कोधनो की तरह गाधन धोर निरधर धोर समार धोर धारक धरन धारधारे तेषर पटुती। तामय गिधन इतकी धार में धारक धोर कर सुग से सना जाना चाहेए, निरगा कोई

विद्यन नहीं, धाररने-मुपदरे सव, क्योकि सबसे मूल में धरर इच्छा तो शान्ति धोर धारक की ही पती हुई हैं। यह विचार भारत की सभ्यति की तरह समत्वधरारी है। यह विचार रात्रनीन गिदतो धोर कयो को मनुष्य ही नहीं गारी प्रुति के साथ सामजय साथ कर जा प्रयोग करेया वे बाटरी रिवाजे, ताम वा सधेगन छरछर को छाड देते धोर मनुष्य को प्रगति करेय उनके स्वाभाविक धोर सभ्यन उम रूप में जो उमका वागचिक प्राप्य है। गांधी का विचार एक ठाम धोर प्रेम से भरो विचार शक्ति है जिनका सग धारमी को वा धनुबध, नयी तरय दगा, दन है। गिदने इमे यतिविधि भी धारनाय है वे नगमि है, विरनिन है, प्रेरित है धोर विर भी प्रमय हैं। जयने गभन्या को नाशन वा एए नया र्वमाना प्रमुन किया है दयन व लिए एक नयी धार की है। यह नया र्वमाना, नयी यह हटित धारने धरमान की र्वनिधता का ठोस रिखा देती, उन पर अदुग सगारन गिग धरनिधन धोर धारधरन गति में उसे बलना है, उनी गति में उसे चलावती।

जिना धारधी विचार की प्रयागना को धारन की किसी सभावना का गमना भी नहीं दया जा सकता। शक्ति सत्य विज्ञान के मय का वही तांशेगा धरर रही शक्ति के धार इय तरह धररा कि धार का विर भी विधीन हो जाय। इय तरह गांधी विचार धारमी को धारमी के पाय से जायगा। भोनिर धररो में नहीं, धारधरिधन धरों में। इन विचार का नरं राष्ट्रो की सपनों को धोष दगा धोर वे धरनी-धरनी गीताधो को उनी तरह शिची मानय जैसे कयी धारन-धरं में दाना धा धोर उम धार्य, धा, धोर हूग धोर सुन धोर पडन धोर धरनी-धरनी तर्क गुरार के जानि वग धारने से। तब देण धारना धारने ताधन वे लिए बड़ी नहीं भेजेन। बनुप तो धरनार के नाच को तरह धारने धारने विचारक भेजेये धोर धारे तरह धारने-धरने के धरन पटुद्वार रन की धारा पर प्रजाय शोभे। वरं धार की गमनी छुटपुनि नर गांधी की अदरिष्ट, गांधी के सगनीक,

भाषा और विचारों से परिवर्तित हो जायेगी। भाषा की वैज्ञानिक योजना में जो भय सामने उपस्थित कर दिये हैं, उनको जगह विकेंद्रित और इसलिए सबको धमक देने वाले और जितनी चाहिए उतनी मुविधा देने वाले प्राप्य कर्म और विचार हितोत्थित होने लगेगे। गांधी का सत्य, गांधी की अहिंसा, गांधी के शाश्वत मूल्य एक सर्वभूम स्वतंत्रता को प्रकाशित करेंगे।

हम यह नहीं बहते कि जब गांधी विचार प्रस्थापित होगा तब सब जगह उसका नाम भी गांधी से संबन्धित रहेगा। हमारी समझ में तो उसके अपने-अपने धरतू नाम होंगे, मगर शक्ति उसे मिलेगी ऊन्ही मूल स्त्रोतों से जितने गांधी ने सामने रखा था, धार्मिक सत्य और अहिंसा और इसलिए पार-स्परिक प्रेम और व्यक्तिगत धरती श्रम से यंत्र का स्थान सब जगह निहाल गौए हो जायेगा। जैसे दाल में नमक। इसके अस्तित्व की धारा के चल में किसी प्रकार की स्वर्धा या स्वार्थ या वैमनस्य के उत्पन्न का विपाक कर देने वाला मूल धाकर नहीं मिलेगा, इसके अस्तित्व की धारा का नित्य के सरल कामों में तरल ही नहीं विमल उपयोग होगा। इतिहास का सर्वश्रेष्ठ, हर गांव, हर राष्ट्र के हृदय की धड़कन होगी और व्यक्तिगत आदर्श और सर्वभोमता में कोई-विरोध नहीं बचेगा। सारी हिंसा, सारी स्वर्धा, सारी भागे डोड़ अपनी व्यर्थता को समझ लेंगी। विचार—देख की हृद तक यह होने भी लगा है, कोई इसे 'डोटेस्ट' कह रहा है, कोई 'सहस्रतित्व' तो कोई एक-विश्वसता' को इस दृष्टि से मुहड़ करने का सपना देख रहा है कि सारे देश एक बड़ी माला के मनके बन सकें।

अब यह गांधी का विचार विभिन्न देशों में चाहे जिस नाम से ध्राये, नदी पीठियों के हाथों से ध्रायेगा—वे अपने को पुराने इंध के सामने देश करेंगे, उसकी बी हुई मातना भोगेंगे

और हर तपे और सप रहे गिर पर स्नेह की छाया बरेंगे। स्पष्ट है कि खुरबेव, ब्रंजेन, निम्नन, मायो, वास्को या टीटो और फिर जरा कम शक्तिशालियों में नासिर, सातार, धम्यूव या मुट्टो और हमारे देश के शासकों में आनरिक्ता से न सही मुंह से परम मूल्य शान्ति को मानना शुरू कर दिया है। अब जरूरत नहीं है कि वे नाम गांधी का लें। सबने इतना समझ लिया है कि हम कोई ४ शताब्दियों से नित्य एक गलत दिशा को सही मान कर उसकी तरफ बड़ रहे थे। हमने सगउन, सत्याग्रहो और उनके चल पर उत्पन्न यम के फंताव की समस्याओं का हल माना था। अगर यह मान लिया जाये कि अपने ही भले की इच्छा एक गलत इच्छा है तो-इस इच्छा से उदभूत सारे सगउन फिर उसका नाम चाहे प्रजातंत्र हो चाहे गणतंत्र चाहे राजतंत्र समान रूप से बुरे हैं। इसलिए जरूरी हो गया है एक नये ही अर्थान बहान पुराने जीवन को नये रूप में साना। नये जीवन की रूप देखा बना कर सामने रख देना, भविष्य को साकार कर देना ही है। गांधी हिन्द स्वराज्य में यह रूप देना बना कर रख गये हैं। उसको निमित्त करने लगे तो राजनीति और धार्मिक सवाल नगण्य ही नहीं निरपेक्ष तक ही रहते हैं। नया जीवन एक बार धारण हो गया तो फिर कोई नये समाज-सदहन भी बनने लगेगे। यह ठीक-ही और स्थानीय प्रति-भाम्रो के हिसाब से उनका नामकरण भी होने लगेगा। किन्तु इसमें सदेह नहीं कि इन समाजों की चिन्ता राजनीति या धार्मिक शक्ति समेटना नहीं होगी, इनकी चिन्ता के मूल्य होंगे, जिनसे धारमी का जीवन मूल्य-दान बनने लगे।

इस नये जीवन को साने के लिए जितों के द्वारा पहल जिये जाने की प्रतीक्षा का सवाल नहीं है। पहल गांधी कर गये हैं, इसलिए भारत के छोटे-छोटे हम लोग जो गांधी की बात समझें हैं उसकी पहल के उत्साह-धियायी हैं। पहल वास्तव में हमारे हाथ में है। हम पुराने तमाम मूल्यों को समवेत करके और नया जितना उपयोगी है उसे उनमें फंटे-भित्ताकर एक ऐसा पात्र बनाने में सने हैं जिनमें भविष्य भरा जा सकेगा। वलपन और बला और मूढबूढ़ और स्नेह इस नये

सृष्टमान-पात्र के तत्व हैं। गांधी ने इन्हे एकादशतत्त्व पूर्वक साधने की बात कही और विनोदाकेवल सत्य प्रेम और बरणा बहकर उनका समाहार कर चुके हैं। भाषा की नई पीढ़ी चाहे तो इसे जितनी दूसरी तरह से व्यक्त कर सनती है कि परिवेश के प्रीति सतंत्रता और चेतना काभालकर हम पुराने जितनों में पडे-गडे सड़ने और सड़ने वाले उन 'वैज्ञानिक' अथविश्वसियों को शिक्षित करेंगे जो बीजे, कामो और अनुभवों को प्रलासी-यक्ष जिये बैठे हैं। शिक्षा की वे परिभाषा भी नयी दे मनते हैं जो उसकी वास्तविक परिभाषा है। वे कह सकने हैं कि शिक्षा-शास्त्रों में डाई या पात्र बरता ही उन्नत से शुरू होकर १८ वा २५ वर्ष की उम्र तक खत्म नहीं हो जाती। वह तो आदर्मी को जितनी एक लकीर का धरती भर बनाकर छोड़ देनी है और जैसे ही वह लकीर धारों के आगे धुंधली पड़ी, व्यक्ति भटक जाता है, जितनी काम का नहीं रहता, या ठीक नौकरी कर सकता है, तस्वीर कर सकता है, गर्मों से बचने में मारने वाला बन सकता है या भूख और अभाव और श्लेषाचार बर्दाश्त करने वाला निरीह एक प्राणी।

यह भी सच है कि गांधी के विचार की प्रस्थापना में लये लोग धाने की बनी अनेकता, बनी धरा, बनी धार्यन्त, बनी परिवर्तन साने में प्रथम तब मूलस्य करने लगे—ज्योकि शक्तिशाली जिनके विरोध में उन्हें बड़ना है, बड़ी हैं और बहुत हृद तक धार-धार मुंह से एक बात कहते हुए जाना दूसरी ही और चाहे रही हैं—जो उन और नहीं जा रहे हैं उन्हें विरोधी मान रही हैं और बूचा रही हैं, तथापि समय अब उनसे साप नहीं है, हम इन विरोधों की गाठ बाय लें। बाल्युद्यम उनको या पूना है, ऐसा मगभिन् और कण जो उनको सत्ये बड़ी ताजन्त भी उनके लितारफ का रही है। अब न यत्र उन्हें बचा-येगा न उनका तपः। अब व्यक्ति का विमान होगा व्यक्ति-व्यक्ति समाज केगा और भारी-भारी फिरने वाली भोड की उगट, जगह-जगह धर्म और रनेट के निर्भर बहने दिखेंगे।

कश्मीर के दो रूप : एक अशांत और एक शांत



समुभयो उपासितो द्वारा परमोत्तम की कक्षाई

१८ नवम्बर की हम लोग प्रायः कार्यक्रम के अनुसार दोबो-नुपरास के दिन कम पढ़ाई के छोड़ कर गये। वहाँ जाकर मानस परा हि भाइ दुगलापॉर्टोस की हडताल है। हम लोग सरशाह पुत्र के पास एक लगे। कृपु साकाशिन लडके गये तथा यह वे भीर-वासिम गदुली छोडो का किगला बडाभा, वैदुल की बीसन के बडे के बाद सरकाग वे रितासा बडाभा लेविन विर वर मानवर नि इरुवे जनना मारुद हो जायती उन कम कर दिया। दूसर प्राईवेड दुगलापॉर्टोस कास विरदि की बडाये रखने की माग कर रहे थे। जाकी इस माग में बहुत सारे लोग भी शामिल हो रहे थे। जो लडके रितासा बडाभा का नाम लगा रहे थे उन्हें तो रितासा कम बनने पर मन्तर को सम्पराद बना कहलिया था।

कृपु ही गणप बीना हवा वि बडाभा कम छोडो से ५ मिन गुलागण भी ही हुई बडोराबाद में लावलाग की छार धारी। उनके भीतर बडे छोर धानसग लडके गलग रितासा बडाभा के लगे मरा रहे थे।

साज थोडा कर को री। दार पर इलाका करदे हुए माग व मास उन के पानी विर कर चुकुर के रूप में डीने को। लडको पर बजने वाली डैविगला, मोटर कारिगे धारि को रोह कर उनको बधर कर, लीगे लोड विर। पुविग भागने गडो की लेविन भीड को देडना मरी कएली थी। तावकाड की बावेंकरी चडगी मरी कोलहर बाड मन्तराड बरट हो गया। ४ बने के बडीके भीड में एक मोलन धोर एक मन्तराड बर क धारि न को लोड कर आभा। कपरा की बर्ग बरने हुई वह भीड धारि बरन

के चोरों से भुड गई। वह पाकिस्तान मणपन गारे बीच-बीच में लगाये रहती थी। धारि करन के दुर पर गृह कर भोड ने पुन की धान लगाने की कौशिल की। इन बीरनी० धार० पी० के लीडवाल बहा पर सा वन धोर उज्जान भीड का विर-विबर कर दिया। हम भीड में जिनमें धारिभर राग मिन पड कपडे गहन थ। गनीवी जिनके ब्रेकर पर नरक रनी थी ऐम लोड कम का किगला उजान की माग बडा कर रहे है वह नमर मयम म धारा था धोर न धम धारा है।

हमबराद धोर मोरवत धारि भीरनी मागला म भी भाइड सपी की। पुविग धोर उज्जान म पुकेडिरी रहे रहती थी। जिनकी लडाग उगाड ज। जानी एक दुमरे का बीड लगे लगे। गगलरकिगार मुलने म लो धोर भी मनेसार मनाशा था। १८ २० धोरने एर धर को दूत पक म पुविग का व धर धार रहती थी। पुविग धार धम के पाना मे धोरलो का ममभान के लिए गर रहती थी।

वरमन्तर की धार धार धार धारेंका हा गया। ७ ३० बर बर ना गारा भीनवर मा मरा था। राड की ८-३० बडे गारी बनीजन का चोरीदार भी चोरोपारी बने धारेंक मरी धारा। विर भर की धारल विधि व देमग हुए उगाड बरन हु भी उनके माग धार ना। का डीरो का बहना था कि दार की भीड नीसा धार वे उगाड वर लवकी है। विर बरधोर पुविग ने रितासा के बागला की गे लाम मर धार काम कर है। कपरा का लेविन लगे लगे कम धारन है। धार धार के पुविग ली उगाड की धारि व म गरी ही है मन्तराड की दार भी ३० धार० पी० धोर मन्तराड धारिभरनी को देमगे व विधिग गुलागण होन लगी। हम लोग का वि। धारगुर पुव। धारगुर वर-धीर वा धोर विर मरट है। वर कमर की भी गरी है। कमर की वेनी से हुर वरिगर की विधिग धार २ हजार से २० हजार धरन के बीच है। गणी धारन के मन्तराड धरधर की मन्तराड विदुवरी का बहना था कि उनको १७ धारन अधीन पर वेमर से १ हजार लगे की धारनेही होती है। वेमर के धाराग विदुवरी लडके, लारीग कधारिग धार

मिन, वेमर वर मागना बनावे था वर। धारा, धारो के वरन, रोडी बगाने के कार-दारे भी गरा स्थापित किने गये है। लेविन इन मबडे धाराग धर धारिभर चोरो की रोडगार देवे वाला गारी धारोपीग है। गारी धारकोपीग धर पर प्रनिगम २० नाग सपे की ऊरी गारी वेमर बगर है। धर पर वेमर विरलरम मीड स्टेशन भी है जहाँ मे पूरे भारत म वेमर के बीडो का विरलरग विरा जाता है। धारुविग उगाडको मे मुग-विजिन यह स्टेशन देमग मे क्षेत्र मे विर वर प्रयाग कर रहा है। स्टेशन के उगाडवटर की की १०० डीरु बनाया कि धारिभर मे रगन का धारा गदरि गदरे मे रोडा धारा है। धार म लममम १२५ कर्पे गदरे एक बीनारी के कारल गरा रगन के बीडे विजुल मगल ग गये थे। आके धार मे धार वर लगे पर धाराग विर मे रोडे ही धार जाते है। मुवत आगाम के धरों वा धाराग विरा कला है। धाराग मे होने धारी विविग बरिगारीका म उरबाग गने के लिए वेमरीग रगन बीडे म उग स्टेशन की स्थापना की की-१ भी २ बी-२, जारि के बीडे उरानि जात रह है। गणी भी इनके धारिग वेमरग लेने के लिए भी धारा विरा जा रहा है।

पी-१ धोर पी-२ जारि के बीडे जग्म-बधोर राग की जग्मों का धारा कर देवे है। रितासा प्रदग एक वजम में भी धार जारि क बीडे धार है। की डिक्कू मे बरावा कि हमने धारी १२-३५ धर व भूमि म गदरुन उगाडन धोर धारुगधन वा गरी भी धार न रिता है। इन मयमधर पर ३० जारि के जग्म म पड है जिनमें २१ वेमरी लो ११ बीडे है।

जग्म-बधोर राग मे धारुगध १ लाम बरावा का उतादन करवा है। लोरा राग मन्तराड के लमरिधर म है धमविग धारि १ मने प्रति लिने वेचना पडना है जब कि मन्तर म रनी जारि का लोरा २५ धर प्र रिग के रिताक म रिता है। धारा उगाड म जग्म बधोर के गरा की १० गला रर प्ररिगे धारनेही होती है। देमग उदोके म बागल होने जाने धारिग धार, को नकर। धरन हुन हम उगाड म बडावड कोमने का

जन-शासन प्रदेश का भविष्य संवारने के लिए कटिबद्ध

संकल्प की पूर्ति में तीव्रता और दृढ़ता

दलित वर्गों की ओर विशेष ध्यान

को राज्य की ओर से राहत मज्जा की व्यवस्था की गई है : शहजून के पेड़ को हानी पहुँचाने पर हर क्षेत्र में बड़ी मज्जा का प्रयत्न है। एक परिवार की नाकून से होने वाली घोगन ग्राम-दनी ५००/राया है। शहजून के पेड़ गाव-गाव में पुनर्वन् वाले जाते हैं। नवम्बर सेव वा भी बडा जयोंमी राज्य है लेकिन फल वा मूल्य घटने तथा सबने के कारण सेव वा स्थान भीरे-भीरे नकून लेता जा रहा है। अभी तक साल में अन्य राज्यों की २ फगलों की तुलना में केवल एक ही फगल मिनम्बर-अक्तूबर में प्राप्त की जाती है।

रेगम के रिपरिंग और रीथिंग का कार्य शीनगर में होता है। यहा पर गावों में रेगम उत्पादकों की समस्पाओ की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। बीहड़ गांवों के साधारण लोग नयून वेचने के लिए शीनगर आते हैं। उसमें उनका पैसा लगता है। इसलिए यदि नकून के विषय का प्रबध गांवों में ही हो जाय तो किसानों का अतिरिक्त धन लचं नही होगा। रीथिंग और रिपरिंग के कार्य को केन्द्रित करने के वजाय ५-५ गावों के बीच में यह कार्य शुरू किया जाय जिससे गाव वालों की खचि रेगम उत्पादन में अधिक से अधिक बढ़ाई जा सके।

२० नवम्बर को स्थिति सामान्य हो गई थी। हम लोग शीनगर के उस इलाके में घा गये जहा घासरोट की सबडी का बहुत सारा सामान बनाया जाता है। उस पर हाथों से नक्काशी वा काम किया जाता है। चमड़े का भी काफी काम इस इलाके में होता है। ऊनी कपड़े पर हाथों की बुजलता और सादी प्राणो-छोग द्वारा मचावित्त यानी जाम बार बुनाई केन्द्र वा माहीन तो देखते ही बनता है। शीनगर के यह सारे कार्य शीनगर के प्राङ्ग-निक नजारे से कम घासपंक नही है लेकिन दूसरे दिन जब हम लोग शीनगर से भी भीनर के गाव में गये तो उन गावों में घनने वाले सामान के घागे शीनगर वा सामान घुघला सा पड़ने लगा। एक और घनर यह था कि जहां शीनगर में भ्रान्त वातावरण दगे भगडे रोज की घटना बन गई थी वहा दूसरी ओर इन गावों में चारों ओर शान्ति और सर-सता का वातावरण बना रहता है।

२४ नवम्बर को जम्मु से १६ मील दूर (गुच्छ १२ पर जारी)

- ① नौकरियों में हरिजनों को १८ प्रतिशत अंश सुरन्त दिया जायेगा।
- ② पचास प्रतिशत पुलिस कांस्टेबुलों के रिक्त स्थान हरिजनों के लिए आरक्षित किये गये हैं।
- ③ वर्ष के अन्त तक चार लाख हरिजन परिवारों के लिए आवासभूमि का प्रावटन सम्पन्न कर दिया जायेगा।
- ④ आगामी मार्च तक ८७५ गांवों में हरिजनों के लिए एक करोड़ पच्चीस लाख रुपयों की लागत से ५,७५० मकान तैयार कर दिये जायेंगे।
- ⑤ हरिजनों के उत्पीड़न के मामलों में स्थानीय पुलिस तथा सिविल अधिकारियों से जवाब-तलब किया जायेगा।
- ⑥ प्रदेश के सरकारी तथा गैर सरकारी डिप्टी कालेजों के छात्रावासों में १८ प्रतिशत स्थान हरिजन छात्रों के लिए आरक्षित कर दिये गये हैं।

शासन सामन्तवादी प्रतिक्रियाओं का दमन करके ही रहेगा।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित, विज्ञापन संख्या-८

पसीने के साथ अब आंदोलन के लिए खून भी

—ठाकुरदास बंग

साथ के पेट में धलतर है और उन्हें बर्द बार पीसा-पीसा तरल आहार वह भी केवल ७० सेंटा-ग्रांम के लिए लेना अनिवार्य है। फिर भी उन्होंने उपवास कर बचन की सात की राग ४० टायरा सर्वोत्तम सप वा सर्वे पत्राने के लिए दिया। मानो यह भाषुनिवर्णनीय प्रामे खून मे सर्व शेषा सप के पीके को मीथवा आहार है और उसे बलवान एव आरोग्यमान बनना चाहता है।

विशोग्नी ने यह प्रोधा रती कि जल-से जल सर्वे सेवा सप चन्दा इष्टदा बनना बंद कर उपवासमान से प्रधा लक्ष बनवते। इसीलिए हर अति साताना २५ वं देगा तन हिसाबत १० नात रूपये को पूरि के लिए ५०,००० उपवासमानो प्राप्त करते के लिए उन्होंने सत्र सर्वोत्तम प्रेषिषा से आशाजन किया।

दुनिया में तरह तरह के ज्वरवाक के उपवासए के एव जालि के काम चल रहे है। इन सब कामों का चयाने के लिए सर्वे को लगना ही है। यह सर्वे सदस्यवा गुरुक एव सर्वे आरा सर्वे सत्रह करके चलना है। लसय बड़ने एव धर्मसत्र करके मसह-सह के प्रसार का, दवाय का उपयोग प्रसार किया जाता है, कई बार दाना पत्र लेने हुए एकीर 'ध' के नाम से बचाने को कहते हैं। यह कई बार शीत न ही इस तरुणसे त्रिणा जाता है, विचार कई बार करने पत्र मे दान दिया गया इनविष भी होता है। डाट्टा भी मणी एवम का विविधोय देवना हीन से ही होता है यह आरती नही। पैसा बाकी रहा ही प्रशासनाय सर्वे होता है। जो बर्यवर्त है उनका दान दायम गम्भिरिण न हान ये धीर धर्मो के दान पर ही सध्या चलने से सर्वे को लसय विनम्रविना करते को कार्यकर्ता को र्द रखत नहीं रहती है। धनवानों के धाने कभी कभी रिश्वी-विश्वो को दबना भी पडता है, उनको बालकनी भी को जानो है इतनादि पोग भी कभी-नभी देते जाते है। दाने कार्य भी एव कार्यकर्ता को तेजोवर्ति होती है धीर

भावसाजिनि पैदा होती है। धनवान का धर-वार इससे निष्कारण बहार है। कई बार मन रहने हुए भी दवाय के बारण दशन का चर देना पडता है। धन यह कार्यकर्ता का टासने लगता है। इससे दानय मानव के बीच सम्पर्क का मार्ग अवरुध होता है।

ये सब दाय सर्वे सेवा सप के सर्वे सत्रह को पदनि मे धान का इर पैदा हा सप था। बाबा ने इस पर गहराई से सोचा होगा। और अर्थ ही हाने बरते सोचा मे सप का सुख मरन के लिए एव उपाय उठ चुका। यही वह उपवासमान है। इसका आरंभ कर उन्होंने हम प्रेरणा दी है कि कार्यकर्ता न केवल धाना तन एव मन सर्वोत्तम धानोत्तम के लिए दें, लेकिन धनना धन भी दें। और धन धनकी प्रथम धारव्यवस्था म से धानो धन म ये। धन यह दान मुदलम होगा। उन्होंने हीन ही बहा कि धारी तत्र हयने सर्व भगवान की उपलब्धा की, धर हमें गुरु भगवान की उपासना करती है। इससे न केवल मुद दान प्राप्त होगा, बल्कि मुट्ठीभर धनीर या से करे। मध्यमवर्ग के मित्रों वर धनलब्धिव रहने के बजाय हजारों कार्यकर्ताओं एव सर्वोत्तम प्रेषी वाशिना एव सर्वोत्तम प्रेषी कागरीको से दान प्राप्त होने के कारण सप का धार्मिक धाकार व्यापक होगा एव मुदलम होगा।

येसे ५०,००० लोगों से धानापी सर्वोत्तम सामेयन तक सम्बन्ध साधना है। इनमे इसने कई युवा लोको से सम्पर्क करेगा। इन उपवासमानियों से बराबर सम्पर्क रखा जाता बाहिए। इनमे से कई व्यक्ति सर्वोत्तम धानोत्तम को धानि-धनी से न धरना समय भी देंगे। उन्हें उनकी शक्ति एव धनना के समुदाय सर्वोत्तम के विविध कार्यकर्ता में लगाने की योग्यता सर्वोत्तम बहनों को बतानी होगी। इनमे धान मने धानोत्तम के प्राणकान होने मे मदद मिलेगी।

हजारों सम्पर्क धानकन साठो भूरावदना धारदासों से धार। लेकिन हमने उनसे सत्रह सर्वर् नहीं रखा। क्योंकि यह दुःख कि दानी

मानवीय शक्ति धानोत्तम की दृष्टि से व्यर्थ-नी गई। दुःखदा एषा न हो इसकी पूरी मान-धनी हमें बरनी चाहिए। केवल हजार-बी हजार सर्वोत्तम कार्यकर्ता की छत्रछाट्ट से कृतिन नहीं हा मनी। उनमें किए हजारों जात। धानिण समयदानी कार्यकर्ता लगे। हजारों उपवासमानियों से सम्पर्क रखर इत कभी को पूरि बरल का कार्य धारभ हो सकता है। यदि सेवा हम न कर गये तो पैसा भवे ही प्रथम बर निन जाय, लेकिन धानोत्तम के धारय मे धरत उठ मान भी छोड़ो होने कने का इ है। प्रथमकारण कीर से उर मान मरन मे धानोत्तम वा वेम प्रवेशाएव नहीं बर मर। यह हमन देत विधा है। प्रायो म भरनसाय का म रहा ता केवल सर्वे के मानव कार्य धानोत्तम से वे चन सरन है? और क्यों भी नरे?

धानान दुनिया म यारी सम्पा, संघठन या धानोत्तम उपवास की वचन से बचन हो पैसा देना नहीं पता। यह एव मनुष्य प्रयोग है। दाने धानोत्तम, धार्मिक, विनिवोगमूदि एव कई मानवीय शक्ति धारी धाने वाली है। उर न काय मे काना मे माना धरना रक्त देकर, सर्व सेवा सप के प्राणरल बनाने का गुण धारम विधा है। हय सत्र दने सम्पर्क, हृदयगत करें और इस काम मे धाने पात्र महीन एवम हजार लया दें। इसमे धानो-त्तम वा एव नया धाराय सुनेगा, निधये कति एव मुदि दाना प्राप्त होगे। मैत्राधनि ने सत्रर्दा का एक नया मोर्चा खोल दिया है। हय सत्र दयम धानापी दिनों मे बट जावें तो विधि ध्याय्य नहीं, कष्टगाम्य जरूर है। और विशा कष्ट के भी किडि प्राप्त हो उसकी कीमत ही बितनी। साठो धानापी मे साठो एव उ भूदान प्राप्त करने वाली जमात के, एक नाम देहना मे धनोत्तम को सारी इतर सत्रर् देनानी जमान को, विभिन्न रचनायत कामों मे लगे हुए गांधीसाथियों को सत्रर् नरु धनुषना धामान मने ही न हो, बहुत बर्तन भी नही है।

विना टिप्पणी के

महोदय,

आनन्दत पू० विनोबा जी मुझ कोर पत्रिच पत्रों की बात कर रहे हैं। मुझ पत्रों के धन का परिचय मुझ में होगा ऐसा वे कहते हैं (मार्च २०-२१) स्वामी विवेकानन्द मुझ छात्र पर जोर देते थे। छात्र मुझे मन्व-मुझि, उगना, कर्ण है मुझ में मानिहना था। तब विनोबा जी की बात जरूर गये उरती है। परन्तु मैंने यह धका पंदा होंगी है कि गांधी जी ने व्यापारियों और उद्योगपतियों से जो धन लिया वह समुद्र तो था ही। उनके कारण आज गांधीवार का तोष होकर सब जगह सब और झुटाचार दिखाई देता है। (विनोबा जी का भी यही अनुभव है) यह मानना पड़ेगा। परन्तु गांधी जी द्वारा हम नरद की 'हिमाचलम वलडर' केंसे हुई इसका सुतामा कोई कर सकेगा ?

वि० मा० सातेलकर

महोदय,

आपने पत्र में मिटर राज इच्छा व जे० पी० व अन्य शोधियों के चुनाव सम्बन्धी विचार पत्र में पड़े और उत्तर प्रदेश की उपनऊ वाली बैठक की कार्यवाही भी पड़ी। इसी प्रकार मैंने पिछले चुनाव में भी कुछ दोष-धूप

की टिप्पणी पड़ी-देखी। ठीक ध्यान जेना ही तब दुभा था जब चुनाव के दो दाईं तरीक में प रह गये थे। प्रदर्शन चुनाव में आज के चुनाव तक करीब-करीब पूर्ण रूप से गामोधी वाली धारों और सारी बहन की बातें चलतीं। इस चुनाव की बात सरकार की धार ग तथा पार्लियों की धार से आज कमसे कम एक मास से चल रही है। तब हम नर्मोस बालों का अर होऊँ प्रयास जब यह बहन । मोना मानन द्वारा वि मलय कम है।

मैं तो एक छाटा सा वाक्यकों हूँ और पत्र कोंसे मैं एक गरीब की भाव पत्रा माचत रहूँगा हूँ और कुछ करना रहता हूँ। जरा एक ईन विचार पड़े, वडे मुन्दर और न-नीयनी के ही और धार ही जन्मे नही बहन मान पटने भी जरूरी थे। आज मुझे दुख है नान बहन है कि सर्वोदय वाला न वृ १३ सम्पन्धी कार्यभर केवल इमोए सुभाष के भागत लाय गये है ताकि लोग समझ लें कि सर्वोदय वाले भी सम्पन्न के दिन ग हे बारी कुछ हास भी है नही। धर मरदाना प्रजापण की बात करता है तो एक स्वामी अनवग्न रूप से चगन वाला भेदधाम सोचा जाये। आज नहीं चुनाव के बाद। दुनिया या देज आज ही गमन नही

हो रहा। देव रहेगा, चुनाव रहेगा। आज निवा रिना के कुछ ह्राय आने का उा नही है। मुझे तो आचार्यकुल वापस करने और उनके माध्यम से सारे मानव कल्याणकारी कार्य करने की योजना ही एक मात्र सही और प्रभावकारी प्रतीत होती है। और इसी में सारे विचारक, दज नेदरने और सतों को जुट जात चाहिए। पत्ता गीचने के स्थान पर मून मोवा जम्ब ता देज रही वृष टरा होगा और पले-पुनता।

सम्भूदपाल तपागी, इत्या

विज्ञान ग धरले मान धाम चुनाव आ रहा है। प्रधानमंत्री की शीघ्र माचने लगे है कि प्रागाभी चुनाव म निववा के दोट श्वाता स उयात मध्यम म कैसे निज मनेने ? इमनिग व अब पार्लियामट म धरनीन पॉस्टर तथा मन्त्रीन विज्ञान विरोधी विव पेग करने की संझारी कर रहे है।

जब विदेन म एसा विचार बड रहा है, ना भागन म हमारी बनेने इस सम्पन्धी के बने म ज्यादा सखि करे नही होनी है ? हमारे महा ता प्रधानमंत्री भी एक महिगा ही है।

राजत भूहन

(पृष्ठ १० का शेष)

उपमन्त्र की और धरती गाय के हरिजन भाई श्री चरएणाम का मेहमान बनने का सीमाप्य मिला। चरएण भाई ने ७ एकड भूमि में फलों का एक बगीचा लगाया है। इनसे प्रतिरूप २ हजार रुपये की आमदनी होती है। सब्जी उत्पादन के कार्य में २ हजार और एक हजार रुपये प्रतिवर्ष अन्य फलों से आमदनी हो जाती है। चरएण भाई सादी आमोद्योग बनी-जन की सहायता में विजनी से चलने वाली एक सहायरी सेवापानी भी चला रहे है। मुर्गी पालन और भेडपालन भी उनके यहाँ हो

रहा है। आधिन सम्म्याएँ उतनी हल ही चुकी है लेकिन सुभाषन की नमस्वा अभी बरनकर है। एन ही हुए में वाली भरने के कारण स्थलों में मासपट की थी, कोर्ट में भी मुबदमा चल रहा है। फिर उनके घरों-बार को भी देस कर कुछ बर्षों के लीए उनमें ईर्ष्य करते हैं। धरती गाय में पत्र रही सेवा-धानी की बतमात-प्रवध समिति मुझे भारत में एक छादसं संगठन तथा जिम में सभी जगियों के लोगो का प्रतिनिधित्व है। समिति राजगार के सभने के लिए नटिबड है। मैंने सेवाधारी महावारी समिति के मंत्री श्री शरदुदरीन में धीनवरधोर जम्मु की परि-स्थिति के बारे में पूछा तो ज्ञान रहा कि

उन संज में हमारा कोई सयध नहीं है हम न तो वह पगन्ड करते हैं और न वह हमारी छादन है। ना लोग हलता मचाये है, गरकार धारो मने भेज देती है। यदु क्रम चलता रहता है। लेकिन हम अपने पुरपार्य में काम कर रहे हैं धरती और अपने दत्तके की टाउन बनने के लिए।

२६ नवम्बर को वापस उत्तराखण्ड लौटने हुए मेरी धारो में एक नही दो बरगीर धरे थे। एन बरगीर में पश्वर और गीतिया चल रही थी, दवे हो रहे थे तो हमारे बरगीर में पशुधने, तानी जाया करे बुना जा रहा था।

निष्काम कर्म के वजाय

द्वेष की शक्ति सारी तपस्वीयो में सराव है। इस परिस्थिति में से देश की धर्मशाह्न घोड़ी भी धम्प्टी हलन्व में निबन्ध ले जलना सामन्तरताओं के लिए बहुत बड़िया हो गया है। जहाँ इस बात का अह्मत्वात् तो है कि एक के बाद जो दूसरा दिन आता है, उसका रटिन आता है, किन्तु वे लोगों से बहुत पड़ है कि नूरे दिन से तो वे चीन रहे हैं। प्रधान-मन्त्री में घनी २३ दिसम्बर को उड़ीसा के रंगाली धीर सोहनवीर नाम की जगहा में तो यहा तक बहा, निस्संकोच धीर जोर देकर दि देश प्रान्तिव ही नहीं प्रतिनिधित प्रगति कर रहा है—आने सत्कार में हमारी सम्पूर के भावना का 'प्रभा-मन्त्र' बजना जा रहा है, महगार्द, बेरारी, घन्ना वा (वर्तिवित) धभाव जकर है, मगर ये सारी यत्तों विरोधी दलो धीर जन्मे भी विरोधत उन पुराने राजा महाराजाधो के कारण है, जो अब हल अर्धों में से सड रहे, उनके मूल पाट रहे थे। प्रधानमन्त्री के बचन में जान हो गयता है। उनकी जिमी नही हुई बान का लोचनगण सिद्ध करके देश का मनीवन्त गिराने का क्याल भी हमारे मन में नही आता चाहिए। समाधि परिस्थिति को इस प्रकार बिना जिमी द्विषक के धरना पल्लवा मङ्गकर दूसरो पर मङ्गकर निश्चिन्त होना मा सोचो को निश्चिन्त बनना व धेयन्कर है न सत्यं। यह सत्यताक तक है। मच तो यह है कि प्रथमि, हर दिन का हर निमित्त व बङ्गर, परेमानिया प्रतिभल्ल अड रही है। इमी तल्य को समभकर तथा लोगों को समभकार धीर उनकी समस्थाधो के हल में साथ केकर निन् का धयन्कर रोना, सभाका धीर सुपारा जा सयता है।

विरोधी धर्मो, राजा-महाराजाधो धीर सर्वसाधारण के धर्मो-जलो के धमकर पर कामन द्वारा जर भी सत्ये धन से सहयोग मणन क्या, भागतियो को हल करने में पूरी

शक्ति लयाई। राजनीति में दो मुँही बाणें बरने का चलन है। देश के स्वतन्त्र होते ही देशी राज्यों के राजाधो धीर नयाको ने जा सहयोग का एव धमनाया धीर दो को खडिन करने की बात को जैसे उपाहृ के साथ निकल किया उनकी स्व० सरदार पडेने ने धीर हमारे हृदय मप्रगट पडिन जवाहर नाल नेहरू ने की लोचनकर प्रथमा की की। बापेस दन की कर्तिव दडाले म भी उन का भाभा हाय रहा धीर केन्द्रीय तथा प्राणीय मनि-मन्तरा तक में उन्होंने दूसरो को धमता तोने हुए लामा की धधिक प्रमासिाकना धीर तलरना में अशक्त दिया। इनमें से अधिस्वर लोच धमने-धमने समय के प्रधानमन्त्रीयो धीर युवकमन्त्रिया का निष्काम धीर विश्वास-पात्र व्यक्तिधो म रहे। धरि उनको से कुछ सकारण विराध करने है तो विरोध के कारणा को दूर करना चाहिए। वैसा न बनने धमोभन भाषा का प्रयोग करना धीरिबल्य मही रहना। विरोध प्रजातन्त्र का प्रण है। धारा विरोध करने की धाराही नही है वहा का तन् धीर चाहे जिय नाय से पुराना जाय, उसे प्रजातन्त्र नही बहा जा सयता। निस्पर जो दल द्विषड मुनेनवदय, मुस्लिम लोच धीर मिडलका जैसे सनीधो मयापुति का प्रयोग करने वाले दलो से अघसर देवकर हाय मिकाने में नही द्विषयता, अन्मे लोचधय व्यक्तियो का धमोडाहृण अधिच उदार दलो के प्रति धमनाय जाने बाता रवैया समस्थाधो को धीर उत्तमाने पाका ही बनता है।

धर्मो सत्ये नडे को सयान है वे धमन का नुस्सूरो विवरण, धाराधमन का धमन पूर्व सत्य, मुद्रासमीन, चौमुधो बदनो हुई महगार्द है। घन्ना की वगुधी धीर उनका विवरण सत्यध धुरी तरह सरचार ने हाथ में है। देर, हवाई अडान धीर बयो डारर पडिबहन सरचार के हाथ में है। इन्ने सभ्यनिव लेन, सोयला धीर कर्मचारी भी उनकी के द्वारा सभ्यनिव है। इनके धमन्य धमनाय धीर धर्मनाच प्रथम के लिए विरोधी

दलो को दोष देकर धमने धाय को निरधीय बनाना हायाम्पद है। मुद्रासमीन के लिए भी निवा सरचार के किने उत्तरदायी माना जाए। सरचार स्वय भी इस तथ्य को मनी-भाति जाननी है। धाराधर धीर धमनाक धर्मो के धामा म सारे मान प्रथिमन युद्धि को धोपणता का विरोधी दला ते बय मध्मध है, धीर कि धर्मो को माई मान प्रतिगल मही धामना में सत्यध लोच प्रतिगत बडाये गय दारो पर बिबने देने का भी विरोधी दलो के बरा सत्यध है। रागन की दुकाको पर धमने मिनने ने बाणे म भी विरोधी दलो का किन प्रकार दोष दिया जा सयता है। भूल स धमन जल माधाराए छोडे-छोडे रोणो का धामनाय बडिन नही कर पा रहे हैं। मूल्य का प्रतिगल बड रहा है। एक सयताह में शीत लहर से धमने विहाड में सत्यध दो-लो व्यक्त मर मय। क्या उनके मरने के कारण धो मन्त धीर वय के धमनाय से जोडना धीर उसे बहना देमटीह माना जायेगा? रागन की सयता को बडने के वजाय पडने बने जयता क्या प्रगति का लक्षण है? महाराष्ट्र के नयपुत्र नगर में धनि व्यक्ति १० किलो मासिक राशन दिया जाता है। तीस दिन की माड लुरारो का मात बिलो में बाटे तो जो प्रमाण बनता है, उन्ने अधिन की माग करत, माहानुभूति के साथ सोचकर उपाय दुँदने की बात है या माग करने वालो पर धम्युमम दाखने धीर लाडाकाय करे की?

देश का हर व्यक्ति चाहता है कि शासन स्वच्छ धीर ऐसा शक्ति मणन ही हो कि सभ्यता धीर-धीरे ही मही हज की जा सके। मभी बरयो में काय म से धमनी धामा लगाये बडे धीर धमन-धमने डग में सहयोग भी बनना चाहते हैं। मगर बायेंग है कि जन सेवा की मुमिात दोडकर धीर मायक की भूमिा को मिय धधिताविक धमनाये जा रही है धीर पुराने राजा-महाराजाधो से भी अधिच उत्तरदायिन्हीनता, धाराधमनकी

(३५ पृष्ठ १६ पर)

स्वैच्छिक सेवा यानो घोर अन्धेरे में उजाले को रेखा

यह विचार आगामी के घने नदी उतरना कि आगे की एक ऐसी गंगा में आग लेना है जो घने घने कठिनी शहर के गरवारी धर्मपाल के घाउट डोमर में हो रही है। गंगा के किनारे गंगा भजन होने हैं, गुनी जगत् में लगे भागियाने होने हैं या किमी सार्वजनिक सरथा का कोई बमरा होना है। किमी धर्मपाल के घाउट डोमर किभाग का गुना बरामदा तो निश्चय ही गंगा का स्थान नहीं हो सकता है। हो भी सकता है तो साधर सभी जब कोई शोक समा हो रही है। लेकिन जब आगो मानस हो कि आग जगम जा रहे है यह शोक समा नहीं है और फिर भी धर्मपाल के घाउट डोमर में ही हो रही है तो आग बंता भट्टम करे ?

आगार की धर्मपाल सर्वोदय सेवक समिति के सत्रहवें वार्षिक अधिवेशन की सभा गरीबिनो नायडू धर्मपाल के घाउट डोमर बरामदे में २४ दिसम्बर की दोपहर को हुई और गंगा गमना होने-होने में प्रच्छी तरह समझ गया कि यह सभा घाउट डोमर के निवास रही हो नहीं सकती थी। अधिवेशन भी—अधिवेशन जैगा कोई समारोह नहीं था। धर्मपाल की उन बच्चों पर जो गन्दे मरीजों के काम धानी हैं, दसक बँटें थे। दसक नी 'दसक' नहीं थे वे या तो समिति के कार्य-कर्ता थे या सहयोगी। समाप्ति और वचना जिन बुगियों पर बँटें थे वे भी घाउट डोमर की ही बुगिया थी और सभापति की मेज भी वही थी जिन पर धर्मपाल का कार्यकर्ता गन्दे बँट कर मरीजों को बिठिया बाटना है।

सभापति के धर्मपाल के प्रथीक्षक डॉ० प्रा० पी० एम० राठौर को प्राधी से ज्यादा जिन्दगी उत्तरप्रदेश के धर्मपालों में बराम करते रहे हैं। डॉ० राठौर ने कहा कि धानी जिन्दगी में उन्होंने ऐसी कोई समिति कही नहीं देगी जो-धर्मपाल सर्वोदय सेवक समिति की तरह काम करती हो। इस काम में वे अपने प्रभावित हैं कि समिति के लिए उन्होंने धर्मपाल के घाउट डोमर में एक बमरा बसा दिया है। बाबूजान मित्तल ने गंगा के बाद समिति के दम कार्यरत वा उद्घाटन किया।

यह भी साधर पहला ही मोरा है जब किनी गरवारी धर्मपाल में स्वैच्छिक सेवकों की समिति को दम नरह का कार्यरत दिया गया हो।

यह समिति ऐसा बसा कार्य करती है कि धर्मपाल के प्रजातान में उसे बाबायरा कार्यरत गेनेने का स्थान दिया है ? समिति के सत्रे जन्ममर कोडजनी ने काम वा बडा प्रभावकारी और भावनामय बोरा दिया। सरोजिनी नायडू धर्मपाल में धर्मपाल के गरीबों के और आगार शहर के भी ऐसे कई मरीज घाउटे थे जो धर्मपाल की धर्मपाल न जानने के कारण भटकनेसे और दम भजन में बस बचने हो जाना था जो मरीज के लिए धानक सिद्ध होना था। फिर धर्मपाल के सही उपयोग का भी सराल था। दवाए की डॉ० थे और धर्मपाल था लेकिन दम सबका ठीक और जरूरतमन्द मरीज के लिए उपयोग हो पाना कई कारणों से सम्भव नहीं था। इन कारणों में एक तो था मरीजों की संख्या प्रत्यधिक होना और दूसरा था व्यवस्था का अभाव होना। ऐसी स्थिति में कुछ सेवकावारी लोगों ने सत्रह साल पहले अपनी सेवाए देने का प्रस्ताव किया और लक्ष्मीन प्रथीक्षक से बडा कि वे तिसर कर दे दें कि उन्हें काम करने दिया जायेगा। लिखित अनुमति मिल गयी और एक पैड के नीचे से दम लोगों ने काम शुरू किया। कोडवानी जी ने कहा पाच महीने पैड के नीचे और सत्रह साल एक तख्त से हमने काम किया और सब हमें बमरा मिल गया है। अब हमने काम शुरू किया था तो लीम बहते थे कि वे दम गये धर्मपाल घधा करते। धर्मपाल में भी लोगों के मन में शक है—लोग पूछते थे कि आग बसा करते हैं—तो हम बहते कि हम तो सिकं रास्ता बगाने वाले हैं। हम बुलिया हैं। लोग बहते वम हमीलिए भाप बँटें हैं ! लोग पूछते कि आगार गुजारा कैसे होता है ? कुछ तो मिलना होगा, वही से ? बाइस की तरफ से तनकाह मिलती होगी ? जब हम बहते कि हम इस काम से बछ नहीं लेने तो लोगों की बिरसात नहीं होता। अभी तक ऐसे लोगों

हैं जो यह नहीं मानते कि हम बिना कुछ बिने यह काम करते हैं। ठाकुरदास बंग के शब्दों में "कृतमता के दम प्रभाव और दोषारोपण के बावजूद"—यह समिति सत्रह साल से काम कर रही है। रविवार कि छूट्टी के प्रतावा साल में सिकं चार दिन समिति के कार्यकर्ता छूट्टी मानते हैं—१४ भगवत, २६ जनवरी, होली और दीवाली। इन छूट्टियों के प्रतावा किसी मौसम में कोई तापा नहीं। कोडवानी जी, गंगासिंह, गिल्ली बाबू, मुलचाल, पुरवी-सम पडा, राबारास प्रादि कार्यकर्ताओं की दम धर्मपाल का उल्लेख करते हुए रो पडे कि बँसे हम इन्हें पान्चवार दें - सब धर्मनी रोजी रोटी के लिए धर्मपाल काम करते हैं, नीबुरिया करते हैं लेकिन धर्मपाल में अपनी खुट्टी से कभी नहीं चुबते। सत्रह साल हो गये इन्हे, कोई इमबंती बाइस में काम करता है, कोई टी. बी. बाइस में और कोई रसोईघर में देखता है कि मरीजों के लिए बना खाना ठीक है या नहीं और सबको मिला कि नहीं। गरीबीलाज हैं, सरदार सिंह वैन हैं, जानचन्द मरीजानी हैं, जिनके दम पुनरत मिलती है आता है और धर्मपाल काम पूरा कर के जाता है।

समिति के सस्थापकों में से एक बाबूजान मित्तल ने कहा कि लोग आगार के ताममहल के बपूरो को तो देखते हैं, क्योंकि वे ऊपर दिखते हैं लेकिन नीब के पत्थरो को कोई नहीं देखता कि जिनके ऊपर ताममहल खडा है। यहा सेवा करने वाले लोग नीब के पत्थर हैं। चुपचाप और ऐसे सानस्य से काम करने वाले लोग दुनिया में बिरते ही हैं जो सेवा का धूम तक दूसरों के नाम कर देते हैं। निस्वार्थ सेवा का कला भगवान मानता है और वह ऐसा बजंदा है जो पार्य-पार्य तक चुकना है। मैं तो यही प्रार्थना करूंगा कि भगवान समिति के कार्यकर्ताओं और सहयोगियों को बडा और शक्ति दे। बंग साहब ने जिनमम का जिक करते हुए कहा कि ऐसे लोगों के लिए ईगा महीह प्रभावकारी दे गये हैं कि तुम्हारी जमाउ बढ़े। डॉ० राठौर ने कहा कि उन्हें समिति के लिए बमरा इसीलिए बनवाना पडा कि

→

समाचार

सूनाजनि के लिए धनीन करों हुए मर्ग सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज डड्डा ने अपने एक विवेक में कहा है कि १२ फरवरी का दिन निश्चय रहा है। वह दिन गांधी जी के प्रतिभ्रष्टा व्यक्त करने के लिए "सर्वोदय दिवस" के रूप में मनाया जाना है। इस दिन देश के प्रोत्सुधालो पर सर्वोदय मेले लगने के जिनमें पाने हाथ से पाने हुए भून के लिए मुंठी (एक हजार मीटर) समर्पण करने का कार्यक्रम मुच्य होता है। पू० विनोया जी ने इसे सर्वोदय समाज की रचना के लिए दिव्य ज्ञानेश्वर मोट, की मना दी है।

रिणों से सूनाजनि प्राप्त करने की बोधिज की श्रम। सूनाजनि समर्पण के लिए विशेष कार्यक्रम मनाये जाय।

१२ फरवरी के बाद पसदी से जल्दी सूनाजनि समग्र ही पूरी रियाई, तथा सर्व सेवा मय की उत्तम से मिलने वाली रचना मय सेवा सभ, गोपुरी, धर्मा के पने पर भिजवाने का कष्ट करें।

प्रांत जलचारी के अनुसार १० दिग्-म्बर की नोकगमा में सवरदस्य स्वामी ब्रह्मानन्द ने कहा कि अग्रराध बना हाते हैं, इस पर हमें विचार करना चाहिए। प्राय चाहे जितने बानून बनाने जायें, ज्ञान बानून बनाने, ज्यदा दूटेंगे। अग्रराध परीवी त होने हैं और सारा देश मिल कर गरीबी मिटा सना है, केवल सरकार नहीं। अग्र सरकार के ऊपर सारी जिम्मेदारी है ता सरकार को सारी चीजों का राष्ट्रीयकरण कर नना चाहिए और सारा इन्जनाम सरकार करने, न्य ११ मना है।

मै जानना है क्या १०३ की क्या हालत है? एक दरोगा पैसा लेकर एक पार्टी न पचास प्राधमियों का नाम लिग देना है। सारे का सारा भाव घुमता है, सब वकील के धागे-पोड़े धूमने हैं। इसलिए वे जिन बानून हैं, सब तक सफल नहीं होते जब तक परीवी नहीं मिटती। कोई मुट्ठी भर चना उवाड लेता है तो उसे हथकड़ी डाल कर जेल म बंद कर देते हैं, लेकिन जो करोड़ों की सम्पत्ति हडप कर लेता है, बड़े-बड़े पूजोगनि है, बर-मातो नहीं करते हैं, उनको प्रापना बानून पबड नहीं पाता। इसलिए बानून थोडा होना चाहिए, मजबूत होना चाहिए और उनका पालन होना चाहिए। पहले जमाने में चारी करने वाले के सारे हाथ काट दिये जाने थे, परन्तु ऐसा नकहूँगा था? जब उनको सारी सुधिधार्ण उपलब्ध थी। एक तरफ एक प्राधमी भूसा भरता है, सदी में ठिठुरता है, दूसरी तरफ एक प्राधमी के पास करोड़ों रुपये के कम्पत्त हैं। अग्र सदी से मरने वाला कम्बल चुरा लेता है तो उस पर बानून लागू हो जाना है, लेकिन जिसके पास करोड़ों रुपये के कम्बल हैं, उस पर बानून लागू नहीं होता। यह सारी सृष्टि भगवान की है और सारे

मनुष्यों को बराबर के अधिकार हैं। हर प्राधमी को भगवान ने मूह दिया है, बान दिने हैं, बाजू दिने है ताकि हर प्राधमी नाम करे, हर प्राधमी मरुतन करे। हर प्राधमी को बराबर भोजन मिले लेकिन मिलता क्या है? जो यह प्राधमी हूँ वे वकील कर लेते हैं। ईने एक बार बताया था कि प्राय गांधी जी के सपने की पूरा करें, प्राय शराबबन्दी करें, बीडो-निम्बट पीना बन्द करें। अमी शराबबन्दी मानने में ही इलाहाबाद में दगा हो गया और वहाँ पर बर्ष लगा। तो इसमें क्या करेगा बानून जब तक कि प्राय नशाबन्दी न करें। इसलिए प्राय गांधी जी के सपने के अनुसार गाँव पचायत बनायें तथा ब्रदासतो धोर वकीलों को समाप्त करें। वकील भूतो की तरह ब्रदासता में घुमा करत है, तो जो अग्र-राध हाते हैं, वह फंस निष्पत सक्ते है? और व जो बानून हैं वे तभी काम करिये जब कि अग्र सभी लोग के लिए दावे-पीने धोर बपडे का इन्जनाम करिये। यह बान तभी हां सवती है जब देश से पू जीवाड क्षम होय। [इस-लिए प्राय ऐसे बानून लागू जिससे करोड परियों का सात्सा हो। बड़े-बड़े जमींदार और राजा तो चलत हुए लेकिन अब नये-नये राजा पैदा हो गये हैं, जिनकी दिल्ली में १२-१२ कोठियां हैं। उनकी मोटर से अग्र को नहीं प्राधमी बुचल जावे ता भी उनका बुध नहीं होना है। प्रायको यह देखना चाहिए अग्रराध क्यों होते हैं और उनका इलाज करना चाहिए अग्रराध इसलिए होते हैं कि प्राय बड़ी-बड़ी सम्पत्तियों की क्षम नहीं करते है।

(चुट १३ का शेष)

धोर स्वार्थ साधन का आग्राम दे रही है। अमी-अमी स्वय प्रभागमन्त्री ने किसी हृदय-मंथन के शरण में, यह कह दिया था कि हम 'निकास वरम' के (प्राधमं के) बजाय 'निकास वाम' (भोग विलास) की धोर बड़ रहे हैं। प्रधानमन्त्री ने यह कहते समय 'हम' की परिधि सवीरुं नहीं रखी होगी—याने अपने दल को भी निश्चिन ही उसमें शामिल माना होगा। वे तटस्थ होकर सोचें तो उनका यह कथन अग्र सवार्थिक बड़ी धर्षणा होता है तो तत्तास्तु उन्ही के दल पर।



सिद्धराजजी

प्राधमों मानून ही है कि पू० विनोया जी ने अग्र इस बात पर जोर दिया है कि सर्व सेवा मय का बान चडे से नहीं बलिन व्यञ्जिन-२ के स्वाम द्वारा एकाधिन रकम से चनवा चाहिए। इसके लिए उन्होंने उपवासदान का प्रयतन कार्यक्रम भी हमको दिया है। इस सभ में सूनाजनि का महत्त्व और भी बड़ जाना है।

गांधी जी के विचार में श्रदा देगनेवाले सब मित्रों, रास करने सारी कार्यकर्ताओं से और संस्थाओं से प्राथना है कि वे अग्र मय सभ में सूनाजनि समर्पण के कार्यक्रम की और विशेष व्यत्न दें। सारी कार्यकर्ताओं, कतिपय, बुनकरों प्रादि से तथा अन्य नाग-

वायिक शुल्क : १२ रु० (सक्रेड बाणज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विवेक ३० रु०, मा ३५ तिथिग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाप जोषी द्वारा सर्व सेवा सभ के लिए प्रकाशित एवं एक प्रिंटय, मई दिल्ली-२ में मुद्रित।

सर्वाङ्ग

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र,
नई दिल्ली, सोमवार, ७ जनवरी, १९४४



नये साल की शीत लहर विदेश सेल युक्त २ वर

× नये साल की शीत लहर × उत्पादन क्यों नहीं बढ़ता, वितरण क्यों नहीं होता ? × बालाघा
में मजदूरों पर अत्याचार. × गांधी के जमाने का सत्याग्रह आज नहीं चल

भूदान-यज्ञ

७ जनवरी, '७४

वर्ष २१

श्रंक १५

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

पाठ्यकारी सम्पादक : प्रभाय जोशी

इस श्रंक में

नये साल की शीत लहर

—प्र० जो० २

उत्पादन क्यों नहीं बढ़ता,

विप्लव क्यों नहीं होता ?

—प्र० जो० ३

नया जमीन कानून

—जगदीश शाह ४

वालाघाट में मजदूरों पर

अत्याचार — लिम्बाजी पारधी ५

गांधी के जमाने को सत्याग्रह

आज नहीं चल सकता

—विनोबा ६

कार्य ही हमारी सबसे सशक्त

भाषा है —रामभूषण ६

अन्तिम अभियान आति की

आकांक्षा का निर्माण करे

—धीरेन मजूमदार १३

टिप्पणी —भ०प्र०मिश्र १५

समाचार १६

मुक्तपृष्ठ : श्र० कु० गां

—

राजघाट कालोमी,

गांधी स्मारक मिश्र,

नई दिल्ली-११०००१

नये साल की शीत लहर

नया साल समेटे-जगते की। सहर में उत्तर भारत में लगभग साठे तीन को व्यक्तियों की डिग्री कर मार दिया। दहन पर बाड़े और गिर पर धन के प्रभाव से मरने वालों की बढ़ती सत्याग्रहियों के बारे में घटने-उठने की संख्या के उभरे गणित के साथ छपती रही। हवाई जहाजों के न उड़ पाने, दस्तारों के पाली रहने और बिजली के ज्यादा लचके होने जैसे तथ्यस्रोतों में ही मौन के धावड़े गुप्त होते रहे। और इस सब को हीटरो के सामने बड़े बड़े लोग पढ़ते रहे जंगल में बाड़ों में लिपटे, बर बमरों में सुरक्षित और रोज की रोजी कमाने के अभिप्राय से भुगत हैं।

यह हर साल होता है। ठण्ड के महानों में लोग ठण्ड से मरते हैं, गर्मी के दिनों में गर्मी से और बरसात के दिनों में बाड़ से। इन मरने वालों की संख्या सत्याग्रहियों की नहीं छपती है। यह सभी नहीं छपता कि ये लोग कौन हैं और ऐसी नौबतों पर लिखितिया हैं जो देश के इनके लोगों को हर साल अचानक मृत्यु के गुनगुन धाव पर उतार देती हैं ? इन गुनगुन लोगों की मौन से निष्पी का क्या बोर्डे सरोकार नहीं है। क्या बल्ल्याणवारी राज्य का, उत्तरवामी समाज का और स्वयंसेवी संस्थाओं का इन तावाचिक लोगों के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है। उस समाज की सवेदनशीलता के बारे में क्या बढ़ा जाये जो इनके लोगों को इस तरह मार जाने देता है और उसके गले से कोई झाड़ तक नहीं निकलती। लोगों के मागलों का और उनके परिस्थितियों का अध्ययन करने वाले विद्वान संस्थान इन देश में हैं। क्या कभी कोई संस्थान इन विषय में रचिवर्ती से सकता ? क्या वह सरकार और समाज को बता नहीं सकता कि किस हद तक यह अपने लोगों के प्रति तावाचिक है ?

ऐसा नहीं होगा। क्योंकि ऐसा अध्ययन डॉक्टरेट, सरकारी सहायता और पाठ्यपुस्तक बाह्यवादी नहीं दिया सकता। समाज मंत्रालय और राज्य सरकारों के आवाग विभाग, नगर निगम और नगर पालिकाएँ भी इन लोगों के प्रति तावाचिक नहीं हैं।

ऐसा नहीं होगा। क्योंकि ऐसा अध्ययन डॉक्टरेट, सरकारी सहायता और पाठ्यपुस्तक बाह्यवादी नहीं दिया सकता। समाज मंत्रालय और राज्य सरकारों के आवाग विभाग, नगर निगम और नगर पालिकाएँ भी इन लोगों के प्रति तावाचिक नहीं हैं।

अभिप्राय लोग समाज के उस तबके के हैं जो संगठित नहीं है, जो नीकरीपेजा नहीं है और जिनके पास इतना समय और बन होगा कि राजनीति को प्रभावित कर पाने तो इन तरह कुत्ते की मौन मरते ही नहीं। ये वे लोग हैं जो बल्ल्याणवारी राज्य और संगठित समाज के धारों से बाहर हैं और जाने क्या तन बाहर ही रहे जायेंगे। देश में ऐसे ही लोगों का वृद्ध-मत है और उनके चल पर ही यह प्रजाजन' कायम है, वैश्व निर्योजित अर्थ व्यवस्था और विनाश के सारे सामने लोग जा जाते हैं जो अपनी ही नहीं, बल्कि बाली अपनी सत्तानों तक के भाष्य सुरक्षित कर चुके हैं। सार्व-जनिक संस्थाएँ, नगर पालिकाएँ और नगर निगम इन्हीं लोगों को मुविधाएँ देने के लिए सड़के, बगीचे, पक्वारे आदि बनवा कर बाहरों को खूब खूब बनाती हैं। सहर के 'शहर' होने के मानदण्ड ये नहीं हैं कि उनमें लोग छन के अभाव में, सुरक्षा के अभाव में और सवेदन-शीलता के अभाव में न मरे। आवाग विभाग और बीमा निगम उन लोगों के लिए पत्रांच धरएस्थलिया नहीं बनाया जो सड़कों पर रहते और मरने के लिए मजबूर हैं। देश में सबसे बड़ा तबका उन लोगों का है जो अपना धाम खुद करते हैं, जो अतिरिक्त रोजी में हैं और किसी की दबाव में नहीं ला सके। ठण्ड से, गर्मी से और बरसात से ये ही लोग मरते हैं, क्योंकि इनका काम पर जाना जरूरी होता है और परिस्थितियाँ नाम पर होते हुए उनकी सुरक्षा की कोई गंभीर नहीं देती। इसकी सुवार्दी क्यों करेगा ? —प्र० जो०

शुभकामनाएँ

एक साल हुआ जब 'भूदान-यज्ञ' सर्वोदय साप्ताहिक का प्रकाशन दिल्ली से आरम्भ हुआ था। दिल्ली आने से पूर्व दिल्ली से १२ वर्षों से इसका प्रकाश वास्तुवाणी से हो रहा था।

हमें जो भी बुद्ध सफलता मिली है उसका सारा श्रेय हमारे पाठकों, लेखकों, पत्रकारों और विज्ञान दाताओं को जानूँ है। हमें आशा है कि इस अर्थ से आरम्भ होने वाले वर्ष के लिए भी आपका सहयोग हमें मिलेगा।

नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ,
भूदान-यज्ञ परिवार

उत्पादन क्यों नहीं बढ़ता, वितरण क्यों नहीं होता ?

— नये बने की पूर्ण सभ्यता को मई दिल्ली के हुई विश्वभारत परिषद दरबान एक देसा मजदूरी का जिसमें प्रधान मन्त्री बरखावरी के अर्थ के पुरे देश से वाचचीन कर रही थी। उन्होंने विद्वान् बर्ष की धर्मशास्त्री की धीर धन्यते बर्ष की सभाकार्यों का धरना चिन देश के सामने रखा। उन्होंने नये बर्ष की प्रथमभाषणा दी धीर बड़ा कि मुण एव मरिषा चीन है। मुण का मन्त्रण धरर चीन जना बरना है तो धामद यह मुण धन्यते साल नही चिन खेरना।

फिर प्रधानमन्त्री ने देश के लोगों से कहा कि वे धारा, एवना धीर प्रयोग की नही दिना मे काम करें। "मैं यह नही बट्टी कि १९४५ कम मुचिबकी का बर्ष होगा लेकिन वो भी मुचिबर्ष धार्य, धार्यमे उनका देन धार्यमे धीर प्रथमत्न से सामना बर्ष। धारन धार्यमे के कई बर्षो से मुबर्ब चुना है। हम धारा करें कि धनरा साल मे धरना साधन होगा।" प्रधान मन्त्री ने कहा कि उपाय नही होय बढाना ही होगा लेकिन उपायन बर नबना ही पोजेन नही है। उनके साथ ही एक अध्यापन धीर समन विारण ध्यवस्था की बरती है ताकि लोगो की प्रतिबन्ध धार्य-यवनाए पुरी हो सके। "प्रतिबन्ध वस्तुए हमे उरु देने की वीणिया बरना चाहिए कि जिन्हे उनको सभ्य जकरती है। बाकी के लिए एव नयी जीवन पद्धति खोजनी होगी।"

धारिन दृष्टि से सभ्यते बढिन मुबरे बर्ष के बारे मे प्रधान मन्त्री ने जो भी कहा उनमे दो राय नही हो सकती। उत्पादन बढाना प्रतिबन्ध है बर्षोद्विज मजदूरी से देश की धाराकी बढ रही है धीर जिनमे व्यापार लोग एव उन मे गरीबी खोज रहे हैं जन्हे देशो दृष्ट उत्पादन बढाना ही होना नही तो धार्य-यवना को देन टान नही सकेगे। हमे भी कई सारे नही कि समुचिन धीर धनरा विरारण बरचना के उपाय न बढा हुआ उत्पादन को बाम का नही होना बर्षोद्विज पुरी रन जारही धीर से उा तन नही बढुवै तो जिन्हे उनको सभ्य जकरती है। लेकिन सवार यह है कि धर्मशास्त्र के इन मन्त्रण धीर जवनाए किडलगायें। जो दुदुदने के बसा देन की धारिक सिधन मुबर्ब तावो ? क्या प्रधान मन्त्री देश के अनेक लोगो को नये मान के उपायन में धरनाकरने के मूच किडान सभ्यता रही थी ? उत्पादन बढाना धार्यमे धीर विरारण धीर बरना? धार्यमे प्रेमी बर्षों क्या हम धर्मनीय बरने नही। मुन रहे हैं ? डिडी धीरधाराए बरने सरी धीर धिने

धरक रहने सभ्य विने मने लेकिन किताब उत्पादन बढा ? गरीबी के धारन हमारी धारो धोजनका धीर धाचकी धोजनके सभ्यो की मन्तो उठा रहे हैं। वितरण ध्यवस्था मुधारन के बढान धरधार ने विनने प्रतिबन्ध लगाये धीर धरधार राष्ट्रीयकरणा विना लेकिन क हूए उत्पादन का लाभ उन लोगो को नही धिया जा जो बूब राडी धाने के लिए तरस रहे ये धीर धनो भी तरस रहे हैं। एक एचिन इच्छा की तरह प्रधान मन्त्री ने कहा कि धरिनायें वस्तुए पहले हम उरु दें किन्हे उनको मन्त्र जकरन है लेकिन सारी धरिनायें वस्तुए एव एक कररे जकरनमन्त्रो की पदुन से बढार हा रही हैं धीर विद्वाने साल तो धनरा भी उनको पढुन से बढार धा मना। उत्पादन धीर वितरण ध्यवस्था के मारे लाभ उन नामो मे पास पढुवे हैं जो उनका लाभ लेन ही क्षमता मे थे। यह जकर है कि इन मारे मररानी प्रयत्नो से ऐसे लोगो की सभ्यता जकर बढी है जो लाभ उठा सकते हैं। वह जकरनमन्त्र धार्यो—यह धारिना धार्यो धरती की बर्षो है जहाँ दोनना के 'स्वर्लुडुण' के पढने था। ऊपर से सफार ने धोजनके के जिनमे धूब-बढी की जो नहीरया बढायो हैं उनको एव बूब की नीचे उय धार्यो के पास नही पडवो है जिन्हे उनको मन्त्र जकरती थी। साथ उन लोगों को किता है जिनके बारे मे प्रधान मन्त्री ने पट्टा कि उरु पढवो जीवन पद्धति धरनायनी होगी।

देश का दुर्भाग्य यह है कि जिन लोगो को नयी पद्धति धरनायनी बरदिए वे धरिनायें जीवन पद्धति को ही नयी जीवन पद्धति मानने हैं धीर इन लोगो मे हमारा पूरा विश्वास सभ्य नहीं, मन्त्रधर धीर उन्धरधर धारिना है। वे ही से मोह हैं जो धरिनायें की जीवन पद्धति के धान करे हैं। बर्षो के धारो मे धारिनायें साम्योतिक धीर धारिनायें सला हैं धीर धार्यो के बरद पढनी लोगो मे एक ऐसी धरिनायें धर्य ध्यवस्था धरिनायें की है जिन्मे पूरौधारी धीर साम्य-बारी दोनो ध्यवस्थायो मे धोए हैं धीर इन धारो का लाभ इन बर्षों को मिलना है। यह बर्ष धार्यो के बरद लेनी से बढा है धीर धनरा: मन्त्री धीरके मे धरती धूबपडते हैं। धरना-मान बररररर धीर बलाये रहने मे इन बर्ष के गढे किडन सभ्य हैं धीर धीर धरती धरती धरती हैं धरिनायें ऐसी धीर धरनायें धर विरारण न नही होया जो इन देश की धार्योतिक धरिनायेंधरिनायें के धरुदुन धीर धीर जिनमे लाभ नीचे उन लोगों का चिन सके कि जिनकी

बहुतात्मन है धीर जो गरीब है। प्रधान मन्त्री बट्टी हैं कि यह जहरी नही है कि हम धारिनायें एव पर वही पद्धति धरनायें जो कि धरिनायें के जिनतिन देशो ने धरनायें हैं। हम धार्यो पद्धति धोजनी चाहिए। महलगा गायी मे धार्यो मे बाकी पढने एक ऐसी धार्यो पद्धति देश के सामने रन दी थी जो देश की धार्योतिकताओं मे मे उपजी धीर धीर जिनमे सभ्यो 'धरिनायेंधरिनायें' धार्योकार हो सकते थे धीर जिनके साम-गरीबो को चिन सपते थे। धारर देश के समधरर धीर विधाधर लोगो ने इस पद्धति को समना होकर तो न उरुें 'धरनीकी धान' के लिए बढार दोनका पढना मे धारिनायें सहायता के लिए।

लेकिन देश ने धार्यो को उस विरिद्वित धीर धार्योधारा धरना धरिनायें पद्धति को जिन धार्योधारा धीरधरिनायें। धरिनायें से लगभग दो सौ मान तक बढे हुये के बाद जरा हुयेने तुलने मे माग की तो न तीरुम दिमाग से सच-मुच धार्योधारा धरना धार्यो धार्यो धरिनायेंधरिनायें का हर्षे समुचिन सान था। हमारी धुनायी की धार्योधारे ने हमें धरिनायें के डग से सांभले, बर्षो की जीवन पद्धति धरनायें धीर धरिनायें धरिनायें के धरिनायें मन्त्रा दो उडारने धर मजदुर धिया। ऐसा बर्षे मे सबसे बढा धोय दान नीरररररी हो दिहा धीर धारो के धार्यो धर चलने वाली धुनायी धरनीनि ने बुकि-धारी धरिनायें धरने धारो धीर जिन्हे नही धिया। धरिनायेंधरिनायें के नीररररररी सवाकी को जवना धररन बर्षो धरने धार्यो धरनीनि से धीरए मिलता। नीररररररी बढी 'धरम बरदारा' धरम बरने धारो धरनीनि पवनी धीर इन दोनो के धरधारा से मेले 'उधोयधरिनायें' की नयी जवना धरती हुई जो बडा धरिनायें धरिनायें से बर धरती उरुें ध्येन धरिनायें से धेव कर धरनायें होनी उरुें। उत्पादन मे रचि रहने धरने उधोयधरिनायें धर धरनायेंधरिनायें के नाम धर अरुण सभ्ये, मन्त्राधरिनायें के नाम धर ही धरान्धरिनायें धेय मे बडे-बडे उधोयधरिनायें धरने जो नीररररररी धीर डूँड धरिनायेंधरिनायें के धरुदुने धर धीर धरिनायें धरिनायें के मे धार्योली सभ्य की बर्षो धरु नही धरिने जो पहले धीर धीर धरने मे ही पुरे हो। धरने चाहिए मे। सभ्ये धरनायेंधरिनायें मे उधोयधरिनायें धरिनायें धरिनायें धरने धरने धरिनायेंधरिनायें की नयी जकरती धरना

की। सरकार ने राष्ट्रीयकरण किमा उत्पादन का धोर वितरण था, लेकिन वही भी वह योजनाओं को सही ढंग से लागू नहीं कर पायी।

गये साल जो आर्थिक संकट देश में भुगना है धोर जो अभी भी किसी तरह बर्ग नही हुआ है उनके लिए जिम्मेदार वर्य वही है जो इन संकट के बावजूद मन्त्रे मे है। इस वर्ग को मान्यता के लिए उत्पादन को नहीं बर्गना, विवरण ठीक से बयो नहीं होना, लेकिन इसमें उनकी खिच नहीं है कि अर्थ व्यवस्था सुधरे। राजनीतिज्ञो मे इतना साह्य नहीं है कि वे यकिनपनी गलतियों को ठीक करने वाले निर्णय ले सकें। वे लोकप्रिय बने रहने के लिए धांटे की अर्थ व्यवस्था बराबर चलाने जायेंगे। कृषि यथास्थिति के राजनीतिक लाभ वे लेते रहे हैं धोर लेते रहना चाहते हैं इसलिए उनमें वह नैतिक शक्ति नहीं है कि नोकरशाही, धन बनाने वाले उद्योगपतियों धोर काम न करने वाले नोकरों धोर मजदूरों को कह सकें कि यह नहीं चलेगा। अर्थशास्त्र रोचना इसलिए सम्व नहीं है, कीमतों को बढने से इसलिए रोचना नहीं जा सकता धोर इसलिए—मरीच धादमी की स्तर नहीं उठ सकता।

तात्कालिक लाभ पर दृष्टि सबकी है— राजनीतिज्ञ की, नोकरशाह की धोर तथाकथित उद्योगपतियों की। इन तीनों का एक प्रसंगित मुद्दा है धोर इन तीनों मे एक समन्वित सन्धिमा है कि वे एक दूसरे के हितों को मुसताज नहीं पहुचायेंगे धोर स्वार्थपूर्ति मे एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इस गुट की धोर इसके दुश्चक्र को जब तक प्रधानमंत्री तोड़ेंगे नहीं तब तक अर्थ-व्यवस्था सुधरे नहीं सकती। जिस वर्ग को धरणी जीवन पढति बदलना चाहिए ताकि जहरमन्दो की धावचक्रपाएँ पूरी हो सकें—वह वर्ग यही है। अर्थशास्त्र के सिद्धान्त समझाने से यह वर्ग नहीं समझेगा, क्योंकि उनका अर्थशास्त्र अलग है धोर वे जानना है कि दूसरे विस्म के अर्थशास्त्रों की किस प्रकार रोना जाता है। वह वर्ग एक नये 'आधुनिकता' की तरह स्थापित हो गया है धोर देश के राजनीतिक, आर्थिक धोर सामाजिक मामलों पर से हमको पबउ दीनी कर्नी होगी। जब तक यह नहीं होगा धोर एक वास्तविकता-वादी विकेंद्रित अर्थ व्यवस्था की धोर हम नहीं बर्गे तब तक, ७३ जेंसे मुखिल वर्ग आते रहे।

धोर धन्य मे जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा—गुल अजर बस्तुएँ हानुदही करने मे है तो यह मुख इस मान्य नहीं मिलेगा। यानी गुल धन्य मे सत्ता के केन्द्रिकरण मे है धोर उसी से सब काम होना है तो बहुत सम्व है कि यह साल नहीं मिलेगा। —प्र० जो०

नया जमीन कानून

जगदीश शाह

गुजरात की सरकार ने जमीन का नया कानून बना कर एक प्रगतिपूर्ण कदम उठाया है। पर इस कानून के प्रयत्न के लिए सरकार एक सत्तापारी पक्ष पर्याप्त रूप से ईमानदार है, इसकी प्रतीति जनता को कराना आवश्यक है।

भूराज मुहूर्ति के समय रविशंकर महा-राज जमाने के तबाने को इन शब्दों में रखते थे—“तीर भय्या दौडे क्यो ?” मीर भाई का जवाब था “न दौडू तो बना कस ? पीछे जो डोरी (प्रस्थवा) की मार है !” वैसे ही इन्दिरा जी के तीव्र उद्घमसादी कार्यक्रम के धक्के से यह कानून तो बन गया है, पर गांधी में इससे किसी प्रकार भी नई ध्याना बुा कोई संचार दीख गही रहा है। उचते यह कानून न बने इस हेतु निगान-समाज के कार्यकर्ताओं ने अग्रसर धनयन किया। यह समाचार कानून के तीव्रता से पालन कराने के बारे में धैर्य पैदा करता है।

यह कानून अपने अर्थ में प्रसामान्य है। विधानमन्त्रा सदस्य एव मन्त्रिणए जो जमीन के मालिक हैं, वे ही यदि इस कानून के पालन के प्रति उत्सुक न हों व बीपे हों तो सरकारी तब किसी भी प्रकार के कानून को प्रयत्न में नहीं ला सकता है। उचते कानून को ना-वामयाच बना कर संघ अन्धिन दीना व रिज्वन-खोर बनेगा।

मन्त्री, विधानक, सत्तापारी पक्ष के द्रोहदेदार, एव सक्षि सदस्यों को जनता के सामने इस बारे मे स्पष्ट हो जाना अत्यन्त धारयना है। दिलावे के धोर, बचाने के धोर, वाली नीति इन्हेनी ली लीगो मे शका निराशा धोर अतः हिंसा पैदा होगी। हम ध्यासा रखते है कि इस सम्बन्ध मे सरकार व मत्त-धारी पक्ष अपने अग्रसर्य द्वारा जनता के सामने साफ एव स्पष्ट होंगे। क्या सरकार इतना करेगी?

एक, इस कानून की मोटी जाकारी गुजरात के सभी दैनिक, साप्ताहिक व पक्षिधर्मों मे प्रकाशित करें।

दो, विवरण सहित इस कानून की छोटी पत्रिका, ताबों को लादार मे छपवा कर मूचना एव समाज कल्याण विभाग के द्वारा गांव-गांव-हरिजन, बारांवा, भोल जैसे गरीब तबके के योगो मे मुबन-हस्त से वितरित करे धोर लाउडस्पीकर द्वारा ऐलान करे।

तीन, इस कानून के प्रतर्गत जिन व्यक्तियों की प्रतिरिक्त जमीन निबल सकती है उनकी नामावली हर लहसूली भी प्रकाशित करे। उसमे मालिक का नाम, गांव, व जमीन की तफसील, पचापन, बचहरी, पक्ष वंचावत, सत्तारी समिति, सार्वजनिक वाचनालय सादि में धाम भोगो की जानकारी के लिए लगाई जाए। माथ ही जो चाहे जिनको यह नामावली-०-१० या ०-२० पैसे में मिल सके। क्या सत्तारी पक्ष इतना करेगा ?

एक, सभी मन्त्री, विधायक धोर वंचा-तो के नेता, धरणी मालिक्यत की जमीन की घोषणा करें। कानून का जिन पर अग्रर होता है उसका वे विशेष उल्लेख करें। प्रतिरिक्त जमीन भूमिहीनों में बांटने के लिए समारोहो का आयोजन करें।

दो, पक्ष के सक्षि सदस्य जिनको यह कानून स्वयं करता है वे भी विधायकों के बदलो पर धारें बडे।

तीन, इस कानून की व्यवस्था में से छूटने वाले पक्ष के सदस्यों को तुरन्त मुक्त किया जाय।

धोर समाज के धाखिरी स्तर के लोग भी सरकार व राजकीय पक्ष के नेताओं को सोदेवावो, लाच-रिज्वन, पक्ष-पट्टा सादि प्रस्तियों की निंदा करते है। पत्तन-एक देश के सभी समल क्षेत्रों मे व्यापक अर्थशास्त्र की जिम्मेदारी नने नेताओं के धावचक्र पर रनी जानी है। यही अक्षर है कि व्यापक जन-समुदाय को प्रभाविन करने वाले इस कानून के पालन का एव प्रामाणिक प्रयत्न हम प्रकार से होगा तो निराशा धोर उनमे पैदा होने वाली हिंसा धोर धरने वाली जनता को इतने उबगने का एव अल्प धाधार मिलेगा, यह निश्चय है।

(सचिव भाई द्वारा गुजराती से अनुदित)

बालाघाट में मजदूरों पर अत्याचार

—लिम्बाजी पारधी

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के वाली प्रन्ध में जंगली भाग के गाँव सावरी के पास एक भयंकर अत्याचार की भिखार रोयट खड़े (देने वाली है) मजदूरों को उल्लिखित करने की भी समासमिता बिस हूट तय पढ़न एभी है, उसका यह एक नमूना है। देश के (के बोने पर विद्युत हुए भाग में सरकारी पिकारी धोर ठेकेदार जैसे कामन भवारा रो हैं, यह पढ़ कर किसी भी स्वात्म्य प्रभी पर प्रजातन्त्र में विचारण करने वाले व्यक्ति 1 घण्टा ही भयेगा।

सावरी घाट के पास सराई सावरा के हूर का बाघे सिचार्ड विभाग की धोर से (रहा था। काम शुरू हुआ दिसम्बर ७२ में सावरा में। काम एक ठेकेदार के जिम्मा था। आणव्य के गाँवों के ४१६ मजदूर, स्त्री व पुरुष, मिल कर कामेंत रहे। मजदूरों पुढरो ले रो रूपे धोर रिश्वो की हेंद रूपे प्रति रंत थी। मकान के दिन थे। मजदूरों के घरों 1 घाँते की बुद्ध न था। जगली भाग आजी रोड पेय पीकर लीज जी रहे थे। मुजह ७ (रें से शाम को पाव बजे तक भूरे पेट रह कर काम करते थे। कारण, पाज नहीं तो एन मजदूरों मिलेगी ही ऐसी प्रथा थी।

मेरिन पहले बटवारे में मजदूरों के हाथ में सिने केवल घाँसे पेंते। ठेकेदार ने कहा कि गाली पेंता सामने बटवारे में मिलेगा। दिन गलीन हो रहे थे धोर लोग काम करते ही वा रते थे। कारण उर्हें अतिथि की प्रथा थी। दुसरा धौर् घाँसे को न था। फिर दूसरा बटवारा हुआ, मेरिन उर्हें सिने बटवारे के रेंने को जिरे नहीं, एन बटवारे के भी घाँसे से ही पेंने मिले। ठेकेदार ने बहाना बनाया कि काम पास नहीं हुआ, पास होने पर चुनना कर दुँगा। भोजेभाले मजदूरों ने उस पर विचारण किया। काम चालू रहा। तीसरा बटवारा भी हो गया पर वही बहानी दुहराई गई।

मकान की परिस्थिति में मजदूर जर्जर हो गये थे। जंगली गरीबों में एक रुपये जिनो मिलन था। माटा चावल दो रुपये धोर बाँट रखा बिना ही गया था। जखल के आजी राते पर भाग जी रहे थे। बेसी स्थिति में नहर पर मिट्टी छोड़ने का बहिष्कार कायं व कर रहे थे। चौथे बटवारे की बारी धारेंतव ठेकेदार चणत हो गया। सब मजदूर रेंने न मिलने में बहुत परेजान हुए धोर विड मय। उन्होंने किसी तरह ठेकेदार को जोखर काय की जगह बुकसाया धोर उसका छत्र-बोगा में तय स्वागत किया। धर्मिख में उनें दिया कि छुटवारा नहीं है, तब मजदूरों की प्रिन्तने कर-३३ धारें ७३ को सय पेंने चुनना करने का प्रथा चारा स्थिति काय न दिया। तब मजदूर न उनें छाड़ा। ठेकेदार बाहर गया था था। जब छुटवारा था कर पेशा तो घाँसे का नाम ही नहीं। मजदूर को लमा कि प्रय काम शुरू करने में कुछ घणें नहीं 1४ माघं की उर्हाने काम बंद कर दिया धोर कई दिनों तक काम बंद ही रहा। धारेंत ७३ के शुरू होने ही प्रजातन्त्र काम शुरू होने का सितासिया मजदूरों का दिखाई दिया। वही धारेंत काम एक दुसरे ठेकेदार को दिया गया था। उसने धारेंत मजदूर सावर काम शुरू किया था। मुकामोगी मजदूरों ने बिनार विद्य कि यदि दुसरे ठेकेदार का काम चालू रहा धोर काम शुरू हो गया तो धारेंती मिलने वाली मजदूरों की जीवन परिस्थिति सुनेगा? वे सब ईमल कर काम की जगह मय। उस जगह पर धारेंत-विद्य साहब उपस्थित थे। उन्होंने मजदूरों को डाट लगाई कि काम मरकार की तरफ के काम रहा है। यदि तुम काम के किसी प्रकार का रिफ्ट डालोगे तो उमारा परिणाम मुहें भुगाना पड़ेगा। परन्तु सब मजदूरों ने मिल कर जवाब दिया कि काम सरकार की तरफ से नहीं, सबे ठेकेदार की तरफ से हो रहा है। मजदूरों ने तबे मजदूरों की सम्पत्ता कर उनका बीबी-पावड़ें चतला करवाया। काम

बन्द हुआ। धोरमिपर धोर ठेकेदार ने पुलिस को गिफायन की। दूसरे दिन पुलिस धारें धोर उमारी मदद से काम फिर शुरू हुआ। पर चिर्हें हुए मजदूरों ने फिर बीच में पडकर काम बंद करवाया। पुलिस धोर विचारेंत धारेंतों की कुछ न चली। धारेंत उर्हें प्रजातन्त्र देना पडा कि मुण्डारा कवाया पेंता रिप वगैर काम शुरू नहीं करे।

उसके बाद एक दिन सूचना दी गयी कि २४ धारेंत ७३ को करवाया पेंने का बटवारा किया जायगा। उस दिन सब मजदूर सराई डाक बागे में धारेंत हुए जहा नि उपस्थित होने को कहा गया था। सिचार्ड विभाग के एम० टी० धोर साहब मय थे। उन्होंने पेंती का बटवारा करने का नार्थ छोटकर मस्टर कनक को मस्टर रात को नई प्रति लैवरा करने की गोना दी। परन्तु ४१६ मजदूरों का मस्टर रोम ही बटवारा वसम्भव हो था। फिर भी उनको बंसी प्रथा देने पर एम० टी० धोर साहब ने मस्टर कनक व मजदूरों को गालीगलीज देना शुरू कर दिया। कुछ बारण न होने हुए भी साहब की गालीगलीज करने हुए धारेंत कर काम धोर स्वाभिमानी मजदूर धारेंत ही वगैर न बाहर आ गये। साहब ने पुलिस की बुकसाया। पुलिस धारेंत धोर उसन बडुको की मजदूरों की धोर गिफायन करके मोर्ली से उडा देने की प्रसवी दी। परन्तु मजदूरों ने बिना बटवारा हुए अपना पक्ष धारेंतव साहब के सामने रखा। धारेंतव ने देखा कि काम मजदूरों की खी है, तब उर्हाने धारेंतव दिया कि 'मि मुण्डारेंत देवे, रिफ्टने नैँ, सरको केडा नू 1' २० फरवरी ७३ को मस्टर कनक ने मय मस्टर रोम की प्रति लैवरा करके धारेंतव साहब को लामो मय में जाकर दे डी। उर्हाने बटवारा कि १ मई ७३ को कंसे भी हो मुहें पेंसे जिरे जायेंगे। पर 1 मई को कोई भी बटवारे के लिए नहीं पड़ना।

मजदूर अधिभक्षित और देहानी थे। उन्हें भरणे हक के लिए सड़ना मासूम न था। संगठन भी न था। पर उनका धा पेट जो माली और गड्डा मात्र था। उनके स्वाभिमान को ठेस पड़वाई गई थी। वे जिद्द की धारा से मुलते हुए थे। उनकी लडाईं मजदूरी के जमा-तर्ज के धागे पहच गई थी। इसलिए वे एकजुट हुए और संगठित रूप से अन्वय्य वा प्रतिकार कर अपनी मजदूरी मागने का आग्रह अधिकांशियों के सामने रखते गये। आगे चलकर उन पर ऐसी बिलक्षण घटनाएँ प्रत्यक्ष घटीं जिसमें मजदूरों ने अपनी मूखबूझ वा परिचय दिया। अवरसियर वा बगला मजदूरों के भाव के पास ही था। शायद उन्हें मजदूरों की क्रोधान्ति वा डर लगा हो। ५ मई '७३ को उन्होंने अपना सब सामान दो गाड़ियों में रखवा कर लाइकी की तरफ रवाना किया। मजदूरों को इस घटना का सुराग मिला। औररसीयर अपनी पंसा न देते हुए मो-दो-म्याद हो रहे हैं, यह दृष्टान्त में घाते ही उन्होंने सामान की गाड़ियाँ रोक लीं और सीधे अपने भाव के मध्य में साकर एक घर के पास मैदान में खड़ा किया। गाड़ियाँ निरपे की थीं। उन्होंने निरापेदारों को बँलजोडी के साथ अपने घरों को जाने को बहा और औररसियर को खजर भिजवाई कि हमारी मजदूरी के पैसे, जो छ-हजार रुपये से अधिक होते हैं, दे दिये जायें तब हमारा धापसे कोई भगडा नहीं रहेगा।

१५ मई '७३ की रात दो बजे के लगभग औररसियर ने दो कोटवार और चार नौकरों को सामान की दोनों गाड़ियाँ चोरी से लाने भेजा। गर्मी के दिन थे। रात में लोग आगम में ही सोते थे। गाड़ी जातेन वे खाना करने की आवाज से लोग जाग उठे और धासपास के सोचे हुए अनेक लोग गाड़ी के सामने आये। कुछ लोगों ने गाड़ियाँ रोक लीं। कोटवार और नौकर खाली हाथ वापस गये। पर जाते हुए कोटवारों ने जमा हुए लोगों में से मुहल्ले के १६ लोगों के नाम नोट कर अधिकांशियों को दे दिये। केसल से अधिकांश लोग मजदूर नहीं थे। केसल कल्लुलववा और के वाएए गाड़ी के पास जमा हुए थे।

उसने बाद १६ मई '७३ को सब-इन्सपेक्टर और सक्लि इन्सपेक्टर बई पुलिस

जवानों को लेकर गाड़ी ले जाने सावरी हाजिर हुए, लेकिन मजदूरों ने उन्हें गाड़ियाँ नहीं ले जाने दीं। मजदूरों ने कहा कि हमें चोरी नहीं करना है। इन सामानों में से हम एक वस्तु भी हाथ नहीं लगायेंगे, सब सुरतित रहेगा। हमने भूखे रह कर पानी भी गाड़ी बमाई की है। मजदूरों वा छ हजार रुपया विलवा दीजिये। वह हमें मिला तो हम गाड़ियों को अभी लाजी पड़वा देंगे। लेकिन पहले हमारी गाड़ी बमाई के पैसे हमें मिलने चाहिए।

मजदूरों के प्रश्नों वा उत्तर सगीनधारी पुलिस के पास नहीं था। बाल्तिबन्ना को ये नजर आना भी नहीं था। सब तथे थे। इसलिए उन्हें मजदूरों के पैसे को दिलाने वा आश्वासन दे कर ही वापस जाना पडा।

यह प्रश्न यह उठना है कि क्या मजदूरों की विजय हो गई थी? उनकी सीधी मादी और हक की मागे पूरी हो गई थी? पर इसका उत्तर अधिकांशियों के अंधकर हृद्यों से ही उन्हें मिला। वह हृद्य मनुष्यता पर नालिमा पोतने वाला था।

पल जून ७३ की दोपहर १ बजे दोखराडी तालाब के डाक बगले पर मजदूरों वा बटवारा होगा, ऐसी सूचना मिली। उनके धनुसा मजदूर हाजिर हुए और १ बजे से ६ बजे शाम तक डाक बगले पर बैठे रहे। लेकिन तब तक कोई भी अधिकांश बटवारे के लिए नहीं आये। इसलिए सब मजदूर अपने-अपने घरों को वापस हुए। उसके पश्चात् सात-आठ बजे मजदूरों चुवाने आये १० डी. बाल्पाय, एल. डी. मो. एरीमेशन, सेक्लि इन्सपेक्टर बाल्पाय, सब इन्सपेक्टर लाजी और औररसियर तथा ठेकेदार। उनके साथ नगर सेना बाल्पाय और पुलिस के २५-३० जवान जो सब लाड़ियों व बन्दूकों से लैस थे।

इस तरह मजदूरों चुवाने का नया तरीका अधिकांशियों ने अपनाया। वह बिलक्षण और क्रूर बंटवारे की पद्धति चाकर प्रथम ही धपनाई गयी होगी। इतनी रात को मजदूरों लेने बगले पर जाना संभव नहीं था। इसलिए उपरोक्त दल वही बंगले पर रखा और सूचना दी गई कि मजदूर ६ जून को सुबह ७ बजे मजदूरों लेने बंगले पर पहुँचे।

मजदूरों वाटने के लिए अधिकांशियों की क्या आशय्यता थी? और शायद इतने सगीनधारी पुलिस विस्तारिये थे? को सापेद इसीलिए कि मजदूर पसंने की रोटी माग रहे थे। इसके बलावा उन्हें कुछ नहीं चाहिए था।

अधिकांशियों और सगीनधारी जवानों के जमाल से मजदूर समझ चुके थे कि इतने कुछ रहस्य ही, जो कि बगले पर घटने वाला है। किन्तु भूखे पेट ने उन्हें मजबूत बनाया। और धातन पंदा करने वाली नीचरगाही वा मुताबता करने बगले पर पहुँचे। अधिकांशियों ने सर्वप्रथम मस्टर क्लर्क से रजिस्टर और मस्टर रोल अपने कब्जे में किया। फिर ठेकेदार के सङ्योग से बनावटी मस्टर रोल तैयार किया, जिसमें हाजिरी के दिन कम किये गये। मस्टर क्लर्क ने इसका विरोध किया तो उसे बन्दूक से उडा देने की धमकी दी गई। एक पुलिस अधिकांश ने उसका गला पकड़ा और अधिकांशों हुए पुलिस के हवाये किया और बोलने को उस पर पावडी लगाई, फिर दहगन के वातावरण में मजदूरों वाटने का काम शुरू हुआ।

मजदूरों बनावटी मस्टर रोल के हिसाब से दो जाती और दस्तगत या अगुडा सही मस्टर रोल पर लिया जाता था। कुछ मजदूरों ने इसका विरोध किया तब उसमें से दो मजदूरों का गला पकड़ कर धक्का देते हुए पुलिस के कब्जे में दिया गया। उनकी हालत देख कर गाँरे मजदूर रामोसि उठने और डर के मारे जिनमें पैसे मिले उन्होंने स्वीकार लिये। पैसे देने के बाद बाहेरची हो या पुरण, पुलिस प्रत्येक जाते हुए मजदूर को पीठ पर उण्डे में डबलने हुए बगले से १ फर्नाग तथा ही जाती रही। सबको सोतने की सरन मनाही थी। बाँधों भी आवाज धाने पर पुलिस व अधिकांशों डाट-टाट, गाना गवौज करते और क्रूर दम के बाहर डबलने रहे।

उसके पश्चात् गाड़ी रोकने के जुर्म में १६ लोगों को पुलिस में गिरफ्तार किया तथा उन्हें सीधे दाम्ने से सानी न ले जाने हुए जीव और डूब से बटैला गिरावा फेरे बाँधे मागे १०-२५ त्रिलोमीटर दूराकार ले जाया गया। जब कि डाकबगले से लाजी दम-बाहल गिरा, मीटर दूर है। जब उन्हें गिरफ्तार करके सारी पड़-

→ चपचा घटा तब बाकी रात बीन चुवी थी।

माझे रोहने के जुर्म मे बने हुए लोगों के लिए सब इन्फेक्टर पुर्नित जवानों को लेकर ट्रक मे रात को १२ बजे गावरी पहुंचे। पंचम नार्ड के ध्यान मे मीने घूम कर सब पुनिम के बहारोने उभने जबरार सारोड की धोर मारने हुए ही उभे ट्रक मे हाथ-पैर परत कर दान दिया गया। धनल म पंचम नार्ड मजदूर नही था। उगी प्रारर कीमत नाम के मजदूर के घर मे पुनिम घुमी धोर उभे माग्ने हुए ट्रक मे बैदाया मे लेनिन कीमक वास्तर मे जुपी लीगी की फिट्ट मे ही नही धा। उगे घूम से पबडा धोर लूज जम कर पिटाई की। रात की हुक से माझे धानि मे लाकर पुन पुनिम मे पंचम नार्ड की घुरी तरट्ट रोटा। जिनमे बहु मेहोश हो गया। सात-आठ दिन बाद वे सब जवानन पर रिहा हुए। कुछ दिनों बाद पंचम नार्ड की मृत्यु हुई। उसके कारण पुनिम की सारोडि है ऐना गाव कातो की पकरी चरगा है।

मी डेढ़ मी मजदूर गाव के थे जो ६ जुन ७३ के दिन हारिन नही हुए थे। उन्हे आज भी दंडा नही दिया है।

उसी प्रारर मिट्टी रोदने के पट्टे पंचम की जिन्दगी का नाम होगा यह। उम नाम के लिए सात आठ मजदूर थे। ये मजदूर सिवाई विभाग की धोर मे काम पर थे। उनका धारदा बडा कर लगभग १०० की सज्या बनाई गयी धोर यह पंगा हक पर रिहा गया। ये बडे हुए मजदूरों के नाम मिट्टी रोदने वाले मजदूरों के नाम म से थे।

पारडे हुए मजदूरों पर पुनिम ने १०७ १० बरा का घुट्टया दायर किया। उन्के लिए उन्हे १०० रिजर्वोटर दूर बलाघाट के घने जंगल म लाने पडे। उमन उन्हे धापी गाव बाकी धापी-लोटा, धोर जेकर बेकने पडे। लेनिन बेन म कुछ 'रान' न या इकलए भक्तिभूट न धान म केम की ताकिज कर दिया।

मजदूरों की गमन मे नही दाला नि उन्हाने बीन मा जुमे दिया है। उन्के निय तरट्ट मताया जा रहा है यह देखे धापी-धामी उन्हे नाटिम मिया था नि २४ नवम्बर ७३ को उन्की पैगी बाताघाट मे है। उन्के लिए वे धाने पर धाई धोर जमलनदार के गाव प्रलव १०-१० २० गावें। निम्नु बडे धार के दूक से से जले मजदूर हारिगार बन गये हैं। उन्हाने

एम० डी० एम० के पाग जावर पना मताया ठर पना चला नि पैगी पर झाने की कोई जरूरत नही है तब एर धोर तरट्ट टला।

धोर भी एर विभाग गुनिने। मजदूरों मे सानुभूति रखने वाले धार व्यक्तियों पर गुडा गिरी का निष्ठा मताया गया है जिनमे एर प्रकिन्टिन विभाग भी है।

धार के प्रशानाधिक युग मे सामनजार्टी की भी लजाने बाता ऐना भरतर धाराना है इन पर लामद विगी को विरसाण न हो पर घट क्षीयता है। एगी क्षेत्र म कुछ दिन पट्टे मरगा की अधिशासिरी क भ्रष्टाचार का एन धोर नमना प्रकाश मे आया था। मडक बनाने के साहनकार्य म ७० हजार एरने का धरना पण्डा घडा था। जिनमे एम० डी० डी० मडक विभाग का हाथ था।

कुछ धनुषकी लोपी का पैगा धन्दाज है रि डेरेसार का नाम गाव के ही पट्टे है। पीछे कुछ बडे धारनारी गने हैं धोर उनकी धाड म बायो का नून चपकी रहती है। उन्की से तेन दिवसी धारवाधार होने है। क्या इस प्रकरण की निष्ठा म एतनी उच्च स्तरीय जाच नही हानी चाहिए ?

Swastik SERVES HOME

INDUSTRY

Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and industrial use

Footwear and hoses gloves moulded products and oil seals, foam rubber mattresses, pillows and cushions Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.
Pune 411 003

‘गांधी के जमाने का सत्याग्रह आज नहीं चल सकता’

—विनोबा

भाजतल हर वान मे गांधी का नाम लेकर अपने मन से काम करने का एक रिवाज-सा हो गया है। सत्याग्रह के बारे में भी गांधी का नाम लिया जाता है। हर कोई बताता है। किन्तु मैं तो कभी गांधी के नाम से कोई काम करता नहीं हूँ। उसका कारण है। मैं गांधी का नाम लेकर अपना काम करता हूँ तो जेठन वह सचता है कि अनुक मोके पर गांधी क्या करते ? भाज यह बहना कि अनुक अवसर पर गांधी इस तरह से करते, ऐसा है मानी हम ही गांधी हो भये। किन्तु मेरे लिए तो वह शक्य नहीं है। मैं गांधी नहीं हूँ। मुझे वह शक्ति में देखता नहीं। तब मैं गांधी के नाम से क्यों अपना काम करूँ ? यदि हम ऐसा करेंगे तो लोभ कहेंगे देवो यही गांधी हो गया है और यह बात सही नहीं होगी।

फिर गांधीजी ने कहा था कि मैंने जितने भी सत्याग्रह किये थे सफल में सत्याग्रह थे नहीं। वे यह भी बहते थे कि मेरे विचारों में सोम सामानि (वासिस्टसी) न हूँ, क्योंकि मेरे विचारों का विकास होना रहा है और मैं निराल बदलना रहता हूँ। इसलिए मेरे नये विचार पकड़ते, पुराने को नहीं। अब उनके विचारों को कैसे पकड़ें ? मेरे पास सरकार के प्रवचन वाले कुछ वर्ष पहले भ्राते थे जब गांधी शान्ती नगरी आ रही थी। वे गांधीजी के सभी पुराने पत्रों, लेखों आदि का सहज करने छाप रहे हैं। वाणी छाप भी गया है। मुझे बहने लगे कि मैं इस पर अपनी कुछ राय दूँ। अब मैं क्या राय देना। मुझे तो हंसी-मीसाई और मैंने जरा कुछ गभीर होकर कहा कि गांधी के पुराने जन्म की भी कुछ सामग्री इसमें हो तो बहुत अच्छा हो। तो वे भी हसने लगे। यह हसने का ही मामला है। शक्याचार्य ने अपने जीवन के उन सोचने सालों में, जब वे सारे भारत में घूमें, हजारों भाषण दिये होंगे। उन सबको यदि एकात्र किया जाये तो मैं कितने हौसे ! किन्तु उनका जो भी साहित्य है वह शायद कुछ ५०० पन्ने से अधिक नहीं होगा। किन्तु यह १२०० साल

से चल रहा है। इसलिए मैं बहना हू कि आपको जो कुछ करना हो अपने नाम से करो उसमें गांधी का नाम मत जोड़ो। पिछले साल पंजाब से कुछ मिल भाई नामदेव के जन्म स्थान को जाते हुए मुझे मिलने आये। अब नामदेव गुरु नानक से कोई ३०० साल पहले हुए होंगे। वे घूमते-घूमते पंजाब तक भी गये थे और उनका देहावामन भी हो गया। अब गुरुग्रन्थ साहब में नामदेव तो ७०० साल तक जिये। हम कितने जियेंगे ? इसलिए हम अपना कर्तव्य देखें और बसा करें। उसमें हेंर बात में गांधी का नाम नहीं जोड़ें। आज गांधीजी होते तो उनके विचार बही रहते क्या ? वे हमेशा विकसित होते रहे हैं।

फिर मैं एक वान और भी मानता हू। गांधीजी के जमाने का सत्याग्रह आज नहीं चल सकता। इसका कारण है। उस समय किसी को विचार स्वातंत्र्य नहीं था। हमें तो केवल विचार प्रकट करने की जितनी स्वतंत्रता आज के भारत में है उसकी दुनिया के अन्य किसी भी देश में नहीं है। अमरीका में भी नहीं है। अतः आज का सत्याग्रह खतित हो गया है। आज तो अणुबाद रोज सरकार के विरुद्ध वातो से भरे रहते हैं। इसलिये लोभनय में सत्याग्रह की श्रमिना भिन्न होगी, यह मेरा मानना है।

फिर एक बात पर भी विचार करना चाहिये। आज सत्याग्रह परिणाम के लिये किये जाते हैं। किन्तु परिणाम एक मातम-शासन है। स्वामी रामतीर्थ जब अमरीका गये तो जहाज पर से उतरते समय और लोग तो हड़बडी करके जल्दी-जल्दी उतर कर अपने-अपने घरों की ओर जाने लगे। किन्तु उन गारी हलचल में और एतदम अग्रविचन जनह पर भी रामतीर्थ अग्रविचन, शात बैठे रहे। तो अग्रविचन में एक महिला का ध्यान उनको तरफ गया। उसने देखा कि यह अग्रन्दी इतना शात बंटा है क्या बात है। उनगे राम से पूछा कि “आपको क्या जाना है ?” राम ने जवाब दिया कि वे अमरीका आये हैं। महिला ने पूछा

कि “क्या यहा उनका कोई जान-बहुवान का है ?” राम ने कहा कि, हा है। महिला ने पूछा कौन है ? तो राम ने कहा “भाज ही है।” इस पर वह महिला आश्चर्य में पड गई। उसने पूछा, क्या आप मेरे घर चलेते ? राम ने कहा “हा चल्गा” और यहा से फिर राम की अमरीका यात्रा का अरन्भ हो गया। रामतीर्थ भी दूसरो की तरह से हड़बडी करते तो उनके अमरीका प्रवास का यह परिणाम नहीं होना जो हुआ है। वे उस सारी हलचल के बीच एक एकदम अग्रविचन, शात रह सके इसलिये ही अमरीका पर उनका प्रभाव पडा। अग्रविचलता, शात चिलता की बहुत आवश्यकता है। किन्तु आजकल तो सत्याग्रह के नाम से क्या होता है। आज तो अग्रवारी में रोज सत्याग्रह होता है। छात्रों का सत्याग्रह, मजदूरों का सत्याग्रह, नौकरों का सत्याग्रह, पुलिस का सत्याग्रह। और ये सभी सत्याग्रह फिर सत्याग्रह और फिर सत्याग्रह बन जाते हैं। तब इस हालत में भाज क्या करेंगे। भाज शात रहेगे और शाति से अपना काम करते रहेगे तो परिणाम आयेगा।

अभी मैं महावीर का स्मरण करके बोल रहा हू। अभी महावीर स्वामी की २५००वीं जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। मुझे उनके उपदेश ही पीसदी मान्य हैं। उन्होंने एक श्रयन्त ही महल की बात कही है। उन्होंने कहा कि सत्याग्रही को सत्य का अण तो हर एक के पास है। तो दूसरे का सत्य पहले प्रहण करने का प्रयास करें। तभी वह आपका भी सत्य प्रहण करेगा। इसमें विरोध मिटेगा। यह जैन धर्म की सर्वोत्तम शिक्षा है कि मानने वाले का मुणु प्रहण करने की वृत्ति होगी तो ही वह आपके मुणु देख लेगा। तो मैं पूछता हूँ कि दूसरो के पाग भी कुछ सत्य है या नहीं ? क्या सत्य स हमारे ही पाग है, कोई यह दावा कर सकता है ? यदि किसीके पाग पूर्ण सत्य हो जाय, जैसे कि राम के पाग था, तो यह रावण का क्या भी कर सकता है जिनके (नेप पृष्ठ ११ पर)

'कार्य ही हमारी सबसे सशक्त भाषा है'

'कार्य ही हमारी सबसे सशक्त भाषा है' यह विचार १६ दिसम्बर को सबिस सिबिस इण्टरनेशनल की नई दिल्ली में हुई अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेस की समूह-गोष्ठी में एक विद्येको प्रतिनिधि द्वारा प्रकट किया गया। ममस्वाधो की प्रतीति, अध्विभक्त बुद्धि, उपयुक्त ज्ञान, मानवीय स्तर पर अध्विभाषिक सेवा व चिन्ता, सगठन की सदस्य संस्था व उनके कार्यो का विचार धारि सत्य कई बाणो भी बहो गई, जिनसे लोगो की सहमति गही। मॉडल सिबिस इण्टरनेशनल की इस अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक का विषय था - 'स्वायत्त सेवा का शासि के लिए योगदान'। 'सहयोग्य के प्रतिनिधि के तौर पर मैं इस बैठक में शामिल होने के लिए धन्या था।

गावोस की बैठक में कुछ मिलाकर लगभग १५० प्रतिनिधि शामिल हुए जिसमें बेल्जियम के मिनेलीन सिबिस, ब्रिटेन से एम० कैलर, जर्मनी से कोबायागी, नार्वे-स्वीडन से एरिच मंडी और सिडनबर्ग से गार्ड मोंटिज के साथ उल्लेखनीय हैं। विदेशो से आए हुए प्रतिनिधियो की संख्या ४० और भारतीय संस्थाओ-संगठनो के प्रतिनिधियो की ३० थी। बैठक प्रातः १० बजे से शुरू हुई जिसकी अध्यक्षता फादर सीरा ने की। इस बैठक में श्री वैल्लेगनोर, श्रीमती धन्ना बार्बा, श्री एम० के० व प्रोफेसर पीक हाबुस्टाल के भाव्य हुए।

एम० सी० धार्डी (सबिस सिबिस इण्टरनेशनल) का प्रारम्भ १९२० में सिडनबर्ग से हुआ था। धार्डी भी हैं। इसका अन्तरराष्ट्रीय मेम्बर्टीरिएट सिबिस है। प्रथम महासुद के बाद हुए मनेरमीन लोगो ने एरिचिन होकर दिया, फुलगा, मराम्पार, बिनाय धार्डी से ममार का बसाओ और उसे शासि की दिशा में वे जाने के सम्बन्ध में चिन्तन व विचार-विमर्श किया। परिणामस्वरूप इस सगठन का जन्म हुआ। धार्डी धारी बन्नाओ से भी ऊपर के धार्डी कार्यक्रम में यह ममार के २४ देसो में धारी शाखाएं स्थापित कर रहा है। इसके

समय १०,००० सदस्य सभार के ५० से भी अधिक देसो में मनुष्य की विभिन्न रूपो में सेवा कर रहे हैं। सबिस सिबिस इण्टरनेशनल की मानवकारी नार्यो में आस्था है। उसका विश्वशासि का सबसे सशक्त माध्यम अन्तरराष्ट्रीय सेवाकार्य ही हो सकता है। और इसीलिए साहित्यिक व प्राकृतिक जिनस के धारणो में यह सगठन अपने स्वयं सेवका को भेजकर मनुष्य की भरण सहयोग करने की प्रेरणा देता है। इस सगठन के उद्देश्य संघर्ष में इस प्रकार हैं - एक जगह से अध्विच नार्यो को महत्व देना दो प्राकृतिक विपत्तियो तथा अन्य सगठनो में गभी देसो के स्वयं सेवको के माध्यम से सभी आर्यार्यिक सहायता एक सेवक प्रदान करना, गीन मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली सभी सीमाओ व बाधाओ को तोड़ कर एक ऐसी सहभावनता का प्रसार जो देसो के एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध को नैतिक रूप से अग्रभर बनाये, और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे रचनात्मक कार्य करना जिनसे लोगों के बीच गहरा विश्वास को बल मिले और मानव के सैनिक सेवाओ की समाप्ति की जा सके, तथा पाष राष्ट्रीयता, जाति, धर्म, राजनीति, व अन्य धारि के अंदमान से बिल परस्पर सहायता, अन्तरराष्ट्रीय सहभावनता, स्वायुगमन व नपुंस के प्रतिभाओ को व्यवस्था करना।

जहाँ तक सबिस सिबिस इण्टरनेशनल की प्रतिनिधियो का प्रश्न है यह विशेष रूप से कहा जा सकता है कि यह सगठन विश्वभर के उन सभी लोगो के लिए कार्यो सिबिस धार्यो-जिन करना है जिनको एक कार्य सिबिसो को जरूरत रहो है। वे कार्य सिबिस मुम्बय तीन प्रकार के होते हैं - सहायान सिबिस कार्य, छोटे समय के सिबिस कार्य तथा दीर्घ-कालीन सिबिस कार्य। इन कार्य सिबिसो में देश-विदेश के सम्बन्ध भण होते हैं जो बहुत भारीरिच धम करने हैं। दीर्घकालीन सिबिसो के लिए प्रत्येक कार्य सिबिस देसो के अनुभव-शील सदस्यो की चुनकर सिबिसो एक देस में

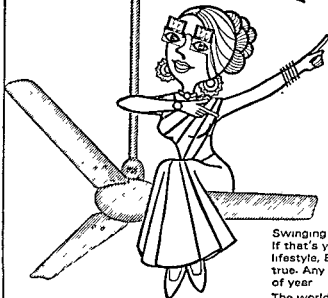
कार्य के लिए भेजा जाता है। यह सेवा कार्य तीन या छ मास या वर्ष भर का हो सकता है। बूँकि यह सगठन व इस स्था गैरसरकारी है इसलिए धार्डी व सगठनी धार्यकताओ के लिए इसे मुम्बय धार्डी सदस्यो के वार्षिक बन्दे अग्रस अध्विनियो, समुदायो व प्रतिष्ठानो से प्राप्त होने वाली राशिओ पर निर्भर रहना पटना है। विदेशी नार्यो व धार्यकताओ व विशेष धार्योको के लिए धार्डी-नारी सरकार से भी अनुदान मिल जाता है। साप्लाकीन सहायता नार्यो व दीर्घ कालीन सेवाओ के लिए प्रदान की, कर्तव्यको तथा पैदल मायाओ का आयोजन करने भी घन सयह किया जाता है। सम्प्रति सहाय के पास ६० ऐसे कार्यकर्ता हैं जो विश्वभर में पूरे समय सहाय का कार्य कर रहे हैं।

भारत में इस सहाय ने १९३४ के प्रथम मुम्बय से पीठिन बिहार के उदके गावो के पुनर्निर्माण से धार्डी कार्य प्रारम्भ किया था। उस समय देसाल डा० राजेन्द्रप्रसाद नार्योस की तरफ से बिहार मुम्बय सहायता कार्य के सञ्चालके। स्थानीय व विदेशी लोगो के साथ उनकी इस कार्य में सहभावनता व सहयोग की धारतक साथ धार करते हैं। सम्प्रति इस सहाय की पाष उपगाताओ भारत में कार्य कर रही हैं। वे भागायो दिन्नी, महासुद, पत्रिमकी बगात, मध्य प्रदेश व मद्रास में हैं। सहाय की भारत माया ने पिछले वर्षों में कई नार्यो का आयोजन किया है जिनमें मद्रास में मद्रु को भी बन्नी बगात, उडीगा से कोरियो की सहायता, भागोर्डी (दिन्नी) मुम्बो-ओरी की बन्नीयते में दवायाना बनाना, रोमियो व बन्नीय बन्नी के लिए पीठिक साह्य तथा दवाओ तथा उनकी जीविका एवं प्रतिभण का प्रवष, विशेष उल्लेखनीय है। १९७० में इस सहाय की ५००० कार्यकर्ता एक स्टाँ-जपनी का आयोजन २७ दिसम्बर से २९ दिसम्बर तक जवपुर में किया गया।

श्री रंजक हेगारि इस समय एम० सी०

SWING HIGH WITH

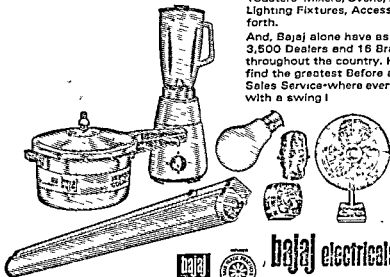
bajaj
PRODUCTS



Swinging times and carefree living
If that's your wish for a modern
lifestyle, Bajaj can make it come
true. Any time of day Any season
of year

The world of Bajaj Products is, in
fact, created for modern homemakers.
Icecream Freezer, Pressure Cookers,
Toasters Mixers, Ovens, Fans, Lamps,
Lighting Fixtures, Accessories and so
forth.

And, Bajaj alone have as many as
3,500 Dealers and 16 Branches
throughout the country. Here you'll
find the greatest Before and After
Sales Service-where everything goes
with a swing!



bajaj electricals limited

45-47, Veer Nariman Road, Bombay-400 001.
Branches all over India

heros* BE-180

संघ और समाजवाद के आंदोलन से व्यक्ति-वाद से निकल करके सत्त्वावाद तक पहुँचा। और फिर व्यक्तिगत क्रियाशीलता से प्रागे बढ़कर इन्सान संस्थागत क्रियाशीलता पर पहुँच गया। तब राजा, गुरु तथा पुरोहित के स्थान पर राज्य सत्त्वा, शिक्षण सत्त्वा और सेवा संस्थाएँ क्रियाशील बनीं। और उन्हीं के सहारे प्राज की दुनिया चल रही है। अब विज्ञान की प्रतिप्रति तथा समाज शास्त्र के विकास के कारण प्राज चेचना सार्वजनिक बन रही है और समस्याएँ जटिल बन गईं। अब कोई भी समस्या न स्थानीय रह गयी और न राष्ट्रीय। हर समस्या विश्व समस्या बन गयी है। प्राज देख रहे हैं कि प्रभो-प्रभो सुदूर इ-राज्य और अरब की लड़ाई दिखते ही मानों मे मिट्टी का तेल दुप्राप्य हो गया है। दूसरी तरफ सत्त्वाएँ भी दीर्घकालीन विकसित पदाधिकार के फलस्वरूप प्रभुत्वानित और प्रबल हो गयीं।

अन्य वर्तमान परिस्थिति मे सत्त्वाएँ भी समस्याओं के मुकाबले मे सामर्थ्यहीन हो रही हैं। दूसरी छोटी-छोटी सत्त्वाओं की बात तो छोड़ ही दीजिए, राज्य शक्ति जो धीरे-धीरे सर्वाधिकारी बनती जा रही है, प्राज भी समस्याओं के सामाधान के लिए असमर्थ हो रही हैं। इस वस्तुस्थिति का प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे हैं तो फिर इन्सान के सामने नई शक्ति के आविष्कार की नई आवश्यकता उदयन हो गई है। गांधी इसका दिशा संकेत कर के चले गये और प्राज उनके महान शिष्य किनोवा मनुष्य के लिये प्राग-स्वराज्य आन्दोलन का दिशा दर्शन कर रहे हैं, अपरिचित जिस तरह मनुष्य के विकास क्रम मे व्यक्तिवाद से प्रागे बढ़कर सत्त्वावाद की आवश्यकता हुई थी, उसी तरह प्राज सत्त्वा-वाद से प्रागे बढ़कर मनुष्य को समाजवाद पर पहुँचाने की आवश्यकता हो गई है। समाजवाद का अर्थ जैसा कि प्राज समझा जाता है सरकारवाद नहीं है। सरकारवाद, संस्थावाद है, समाजवाद नहीं। समाजवाद का अर्थ है, जिस तरह व्यक्तिवाद मे व्यक्ति हर समस्या के समाधान मे क्रियाशील था, सत्त्वावाद मे संस्था क्रियाशील थी, उसी तरह समाजवाद मे समाज को धरती ही शक्ति से क्रियाशील

होना है। अपरिचित प्राज संस्था-शक्ति के स्थान पर नागरिक-शक्ति का अधिष्ठान और सगठन करना होगा।

यही कारण है कि किनोवा सहारा जिले मे धीरे-धीरे नागरिक-शक्ति विकास के प्रायस कर रहे हैं। वस्तुतः सगर मे प्राज तक नागरिक शक्ति मुक्त रही है। इतिहास के प्रथम युग से उसने कभी नहीं मागा था कि सामाजिक व्यवस्था और समस्या के समाधान के लिए वह खुद जिम्मेदार है, उसने हमेशा यही माना कि कोई राजा, गुरु, पुरोहित या कोई राज्य सत्त्वा, सेवा सत्त्वा, वत्सारा सत्त्वा, धर्म सत्त्वा आदि उनकी सारी समस्याओं का समाधान तथा उनकी शान्ति और सुखला की व्यवस्था करेगी। उनसे जो पीग या शुल्क मागा जायेगा वो सहर्ष देगे। ये शुल्क ईश्वर के रूप मे, चन्दे के रूप मे, दक्षिण के रूप मे, या इसी प्रकार चाहे जिस रूप मे हो। धत. यह स्पष्ट है कि अभियान के प्राथमिक चरण मे इस सुल नागरिक के जागरण के लिए शुद्ध सत्त्वा-शक्ति का इस्ते-माज करना था, और १९७१ मे वो किया गया। पहले साल अभियान की अवधि मे ५०० से अधिक सत्त्वा मे देश भर की मिन्य जिले सत्त्वाओं के कार्यकर्ताओं ने सहभागिता के नाम पर प्राज प्राज और जिले की नागरिक शक्ति को प्रेरित किया। पहले साल के काम से जब शुद्ध नागरिक-शक्ति प्रेरित हुई और आन्दोलन के प्रति उनकी दिलचस्पी बढ़ी तो सत्त्वाओं से २००-२५० से अधिक कार्यकर्ता नहीं आये और बाकी काम नागरिक शक्ति के सहयोग से चला। अब इस तीसरे-साल के अभियान मे, जिसे किनोवा मे प्राकृति अभियान की संज्ञा दी है, शुद्ध नागरिक शक्ति का ही पुरापर्य निलरना चाहिए ताकि प्रागे का काम वैश्व नागरिक-शक्ति मे ही चल सके। प्राज प्राति के लिए साधन और साध्य की एकरूपता आवश्यक है तो स्पष्ट रूप से यह समझ लेना चाहिए कि समाज की क्रियाशीलता के लिए सत्त्वा-शक्ति को पीछे छोड़कर नागरिक-शक्ति का ही अधिष्ठान सत्त्वा है, तो उनके लिए प्राज नागरिक-शक्ति ही होनी चाहिए।

नागरिक-शक्ति भी दो चरणों मे विभ-जित हो सकेगी। पहना चरण अर्थ नागरिक

वा नेतृत्व होगा। यानी पहला चरण संस्था-मूलक नागरिक का होगा। यह सत्त्वामूलक नागरिक कौन है? पहले प्राज शुद्ध सत्त्वा-शक्ति और सत्त्वामूलक अर्थ नागरिक शक्ति मे फर्क क्या है, समझ लें। शुद्ध सत्त्वा-शक्ति का अर्थ है "सत्त्वा का कार्यकर्ता जिस काम, वो करता है वह उसी सत्त्वा का ही कार्यकर्ता है और कार्यकर्ता उसी सत्त्वा के अनुशासन और आदेश से काम करता है। वह नागरिक भी है। लेकिन सत्त्वा के काम को यह नागरिक भी है हीमियत से नहीं करता है, बल्कि सत्त्वा के कार्यकर्ता की हीमियत से ही करता है।"

यह अर्थ नागरिक दूसरी सत्त्वाओं के कार्यकर्ता होंगे, जिन सत्त्वाओं का उद्देश्य या कार्यक्रम सीधा प्राग-स्वराज्य नहीं है। उदाहरण के लिए प्राज शिक्षण-सत्त्वा तथा दूसरी सरकारी सत्त्वाओं को भी सकते हैं। उन सत्त्वाओं के कार्यकर्ताओं मे जिनमे सामाजिक भावना है, विचार की प्रेरणा है, जिनको दुनिया के सत्त्व मे कुछ करने की उरठा है. वे इसका नेतृत्व करेंगे। यह काम के प्राज अर्पनी सत्त्वा की धोर से नहीं करेंगे और उनके आदेश से। संस्था के कार्यकर्ता के उ-रण से जो नागरिक हैं उस हीमियत चरेंगे।

इस तरह जिनो का काम पहले शुद्ध सत्त्वा-शक्ति से, फिर दूसरे चरण मे सत्त्वा शक्ति का नेतृत्व तथा नागरिक-शक्ति से सहचार से हुआ। अब अर्थ नागरिक शक्ति मे नेतृत्व तथा शुद्ध नागरिक-शक्ति के सहकार से इस अभियान को चलाना होगा। कुछ सत्त्वा के लोग भी रहेंगे। लेकिन उनकी भूमिका बीच मे शुद्ध मार्गदर्शन करने की होगी, ना कि काम चलाने की। तब यह अर्थ नागरिक का प्रयास होगा। अभियान के निरतिसे मे पहले के काम की अर्पनी मे जो नागरिक सहयोगी शक्ति उभरी है उसे विक-सित करना, प्रमाहित करना और उनमे से कुछ अनुपात मे सहयोगी शक्ति को क्रियाशील शक्ति मे परिवर्तन करना। ताकि अर्थ चरण मे यह अर्थ नागरिक के साथ विकसित निर्मा-यार नागरिक शक्ति मिलकर सम्मिलित नेतृत्व करेंगे। सवाल विनना काम होगा है (शेष अर्थ पृष्ठ पर) .

‘भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार’

भारत सरकार के विचार-विचार को जोष करने वाले कपूर कायोग ने गैर-हद हवाार मुठों की घापी रिपोर्टों के एक समाज के मादे पर करों की क्षतिग्रहितता का जो लेना-ओगा प्रयुक्त किया है, उनका यह बहुत स्पष्ट रूप से कटु गवण है कि सामाजिक परिवर्तन को आनिगना लक्ष्य हीन उपराग के लिए पर्व करो हुए भारत केवक समाज के क्षतिग्रस्तों ने कही कही क्षाम-भीक्षा नहीं किया। यहा तक कि अपने परिवार के विचार क्षामर धारि तक में उनका भुगतान उपराग किया।

सार्वजनिक धन की धोर लागतगही इन दिग में गभरी की केनेतुल की समारण के साथ ही पर करने लगी थी। व्याप, निगम, सरकारी धोर दण्ड-भारकारी गारी मक्षणा उनका ही गड्डी बमाई के एरिनत वने का बदनेय पर्वकले से मिउहृण्य हीनी जा रही है। क्षम-निगत उदाहरण सामने हैं। कायोग बेंचने हैं कभी निष्पर्व ऐसे होने हैं जैसे भारत सरकार के सम्बन्ध में हुए धोर कभी वीन हाने हैं जैसे बिदार सरदार द्वारा ‘निध परिवार’ के सदस्यों को ठेके धारि देने के मामले में या बनीतान द्वारा मार्गनि रिनिटेड की जमीन धारि देने के मामले में पञ्चागत करने का क्षतिग्रह लक्षण से सम्बन्धित।

भारत गैरक समाज के दोषी होने धोर निरुत्तर-सरकार के निरीन होने को तजरें एक ही दिग क्षाकारी में छोपी हैं। यह एक रखर को जमी दिन छोपी है कि राधी निगन भारी इन्कीनिष्पर्विग निगम में दो करोड़ रुपये की लागत के कपूरों पर-पर्वे जग साते रहे धोर बिचपुन बेकार हो गये। सरदार ने दल सञ्चालन क घटना को यह कट कट समभाजा चाहुनी जिस समय में वे पुञ्ज लघावे जाने से, यह बाद के लघीदा गण दनेने यह धोर क्षाधिक में दो करोड़ के पड़ने से लघीर लिये गये से पुञ्ज क्षाम हो गये। सरदार का बहना है कि जिन क्षतिग्रस्तों ने

मुख्य गवण की लघीरी के गहरे दो करोड़ के कप पुञ्ज गरीने क दल के दल निगम दण्ड वृत्ते से, इमरिग उनके निगमर कोई कपूरों की क्षतिग्रह नहीं है।

हमारी गवणर एक दल में सातबार जगत देखी है। यथार्थ मार्गनिगत वीन के साधन में सार्वणी की दृष्टिक रण सखट कउन बानी एक बयला हम दिग ही रे रो है। सिधे की दृष्टिक-निगत का रीण एक क्षाम से पञ्चा सात है। भ भी वेता दल में धोर लोम उन म कपासिग गवण है। गैर धारि दराता। ऐसी हीन गवा गम नरा जभा करने जद गभरी की क्षाम उतर कर उतर ना कदा की नरु श्रद्ध। इन समुदाय भी उनर गी-गीन वग। कपूर गवण कपूर गवण रहे धोर कपूर जमीन पर कुल दल रहे। पञ्चा रीन सखट गेग। वे प्रदण्य क वरुजद उमडो कनी द्या रगी थी। गव गवक में कपूर वे कदा, कपूर क्षाम कथा कर रहे हैं। क्षमिग नरी का भीरय का उरुता कायेव। वा ने

(तृष्ठ १५ का अन्त)

पर्व करी, काय सराग यह है कि क्षामराज की प्रविगा म से विजने जिम्मेदार नगरिक निवलय है। का इस सभासञ्चद की क्षति का नेपुर्व कर गंवा। क्षमर ऐला नही दृष्टाती दो इतिहास क्षाम की गीठी के क्षारीय सगात्र का यह उरुन विचरागैसा कि इनके गीठी जेगा मरदनाज बिता। धोर विनीचा जेगा मार्गदर्शन बिता विर भी ये दुनिया की निगाम के पर्व में दुबने से नही बचा गके। जो क्षामरारिक निग है उले येरा निवेदन है कि उनका मुख्य काम नगरिक क्षमिग निवराते ना है। क्षमर इस प्रविगा के जन मानस में क्षामरारण्य भी कौमी भी क्षामरार रितुल्य हो करती ली में ऊर्धे प्रपम श्रंछी की कोडि में रनु था।

बलुन: बिभी भी क्षामरारण्य के लिए जनता में क्षामरार निगाए ही मुख्य काम

कदा, वंशे कपूर, सार्वजनिक घण्टे का गव कोई छोटा निगम विर गया है—यह मेरी जान में क्षमिग मुखरगत है। भगवान की क्षाम, कपूर कुचन जाने इमो पर्वे यह मित्रता उन्हे दिख गया धोर ये उंम उंछि कर क्षामे यह गवे।

दिग्गजा सखट गवण का क्षम गव सखाल दृष्टा, उगम गवरादण्य मखाल-जराय भ्रष्टाधाय के क्षामने का वेकर ही उडे। क्षमर-निगम में क्षामर भ्रष्टाधाय की इना उरुगार क्षामिग दृष्टा नि रग्य भी गायुराम निघर्षि में सखट पुरसवाई की प्रपम ना क्षीतार करने हुए जग गंवांन का गवण कउन की काय क्षाम्य भी। क्षामरारिग के निगमों के गद दल सखाल गवण की क्षमों के निगमों को क्षम में ही चाते क्षामना म। यद कदा जग क्षमिगिगों क कटन-क्षामरररिना वंशे का क्षामररररी नही है। निवारा न भ्रष्टाधाय की क्षामरररता पर प्रक विग जाने पर क्षमी-क्षमी एक दिन हवणर कदा शंठे, यह ली क्षामरररर ही गया है।

—मं० प्र० नि०

है। भारत की क्षामरी के सगम के लिए १८८५ म जउते काय म गकठर प्रारम्भ दृष्टा या लघेये दादा भाई लोरोडी, गामले, निवलय, गामी धारि गमी वेरा १७ सरद लव देक में क्षामरारी को क्षामरारा निगमिग करते रहे। धोर जंशे ही क्षामरारा निगमिग हो गयी व्हे ही १८९२ में पुर्वी जलता क्षामरारी के गवाम में सग गयी। धारिद '४२ का सगम क्षिउने दिन कला था? २०-२५ दिन ही म? जने से ही यर्ध लघो सखल में कने गये। यही कारण है कि निवनी का जो क्षेगा बहने है कि क्षमिग धीरे-धीरे नही होती है। धीरे-धीरे ली क्षमिग की क्षामरारा निगमिग का ही क्षाम होगा है। ली क्षाम की ली क्षम रहे हैं उलेसे मुख्य क्षामरारण्य नही हो जलगा। क्षाम क्षामरारा ही निगमिग करेगे। धोर बही क्षामरारा सखल भर में क्षामरारण्य की क्षमि-प्लित कर देगी।

क्षमिग ने ० पेटेल द्वारा प्रस्तुत

आन्दोलन के समाचार

शुल्क वृद्धि की सूचना

बाणजी की बीमारी और मुद्रण की वरी में हाथ ही मे अगामान्य वृद्धि होने के कारण 'पुरान-पत्र' का लागू वर्ष वार्षिक बढ़ गया है। इस स्थिति मे पत्र का प्रसारण बहुत कठिन हो गया है और हम न चाहे हुए भी इस बड़े हुए टार्वर की सामान्य प्रतिक्रिया लिए पत्र का मूल्य बढ़ाने मे विवश हो गये हैं। अतः आगामी ७ जनवरी ७४ के ज.स. से पत्र प्रकाशन मूल्य २५ पैसे के स्थान पर ३० पैसे तथा वार्षिक मूल्य १२ रु० के स्थान पर १५ रु० किया जा रहा है। इसी प्रकार जनसंकेत बाणजी पर ७५ का प्रकाशन भी बढ़ कर रहे हैं। जनवरी के ज.स. से पूर्ण प्रकाशन-मूल्य प्रति पत्र ही प्रकाशित हुआ होगा।



उत्तराण्ड के सर्वोच्च सेवक सोहन-चाल भूमिधु यने माह विनोबाजी से मिलने के लिए पटना गए थे। वहाँ उन्होंने बाबा से कहा कि २ अक्टूबर '७४ मे वे उत्तरभारत की सामंतीय पदवाजा पर निवृत्ता चाहते हैं। बाबा ने उनसे कहा कि अच्छे काम मे देर मती करनी चाहिए और उत्तर के बराबर

उन्हें दक्षिण की पदवाजा करनी चाहिए। भूमिधु प्रेरित हुए और ६ दिसम्बर की ही पदवाजा पर निवृत्त पड़े। सर्वोच्च के समय उन्हें बाबा और जे० पी० ने आजीवन दिने और मरणाति म आदि भाइयों और ब्रह्म विद्या मन्दिर की वचना मे उन्हें रिदा दिया। उपरान्त चिद भूमिधु के पहले पडाव दत्तपुर का है।

उपवास-दान पर पत्र

उपवास-दान के सम्बन्ध मे जानकारी मिली। सिद्धराजजी का 'सर्वोच्च' मे लेख भी पढ़ा।

ई. आर.पी. बीमारियों के कारण दिन भर का उपवास तो नहीं कर सकता, परन्तु एक दिन के भोजन का सर्व अन्दाजे से न्यूनता माठ पडना है। व. व. महीने का न्यूनता २-६ हुआ। उसमे अपना चार जोड़कर अपना ही भोजन की महीने-दर से भोज दिया है। यह अक्टूबर १९७३ से सितम्बर १९७४ तक का उपवास-दान होगा।

पटना (विंदा)

जयप्रकाश नारायण

(जयप्रकाशजी ने हर सप्ताह एक घाना छोड़ने का वचन दिया है। प.)

मैं लोड सेवक हूँ। बहुत वर्षों से सप्ताह मे हर शुभवार को एक समय का भोजन छोड़ता हूँ। प्रभु हुआ से वह चालू रहेगा। सब विनोबाजी की प्रेरणा से उनके जन्म दिवस, ११ सितम्बर १९७३, से हर सप्ताह

एक भोजन का एक रुपया के हिसाब म एक वर्ष का बाणन रुपया उपवास दान का सर्व सेवा सच के लिए भेज रहा हूँ।

—साईलत भाई भीलाभाई बोरियावा (गुजरात)

पू० विनोबाजी की प्रेरणा से ५ भावित होकर श्री मील नारायण सक्का पाम भर-कर भेज रहे हैं। हर महीने मे एक दिन उप-वास करके उस दिन के भोजन-सच की रजत सर्व सेवा सच की देंगे। एक श्री मन्नामणि, बी० श्री वेदप्रकाश, तीन श्री जगद्वारा।

बायवती सच नूरुल्ला जिला-पञ्जाब साही आर.सोय 'उपवास-दान' के सम्बन्ध मे विनोबाजी का विचार, अथवा महोदय की प्रतीति तथा सर्व सेवा सच का परिपत्र देता। नवम्बर माह से मैंने प्रति एकादशी को एक नाम उपवास तथा एक शाम भोजन पत्ताहार रखना प्रारम्भ कर दिया है। एक वर्ष के उप-वास-दान की सूचना वा २५ रुपये १२-११-७३ को आपकी सूचना मे मनीषादर मे भेज दिया है।

रामनारायण सिंह
जिला सर्वोच्च मण्डल, मुंबई

विनोबा प्रधानमंत्री के प्रेरणा श्रोत

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की नार आश्रम मे बड़ा कि आचार्य विनोबा जी की प्रेरणा से हो रही है। विनोबाजी राष्ट्रीय-यना से ऊपर उठ गये हैं और सारी मान्यता मे आदर्श सचपून करने हैं। उनसे लगी इति-याने आदर्श भी सम्भवे मे, मन्मद जन्म है। वर्तमान पीढ़ी के बच्चे से सोच, अथे विनोबा जी के विचारों से महान्म नती हो पाये तोना भागी शीपना उनके विचारा ही मान्यता और उनका आदर्श करनी।

प्रधानमंत्री के जनवरी को विनोबा जी से सम्मो मिलन नर राष्ट्रीय परिषदा पर विचार करने के बाद आश्रम के कार्यकर्ता भी से बोल रही थी।

विनोबा जी ने कहा कि सर्वोच्च विचार और श्रीमती इन्दिरा गांधी के वृद्धिकोण मे सम्मो के बड़े श्रेय है। इन्दिरा जी जब माण-पुत्र मे हस्तिनपुत्र आर पवनार शारी और प्रह्ला विद्या मन्दिर मे पढ़ती तो विनोबा जी ने वाहर आकर म्हेतुपुत्र उनका रक्षण किया। इन्दिरा जी ने सम्मो मे मुन्नी हुए अन्ना-मेरी आगामी के लिए आप यसे एउनी ल-लोक उठा रहे हैं। मैं तो खुद ही आदि पान धा रही थी।

वापिस मूल्य : १५ रु० प्रति ३० रु० या ३५ मिलिय या ५ डाक्टर, एक धन का मूल्य ३० पैसे। प्रभाव जोगी द्वारा सर्व सेवक के लिए प्रकाशित एवं ए० ७० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

सर्वांगी

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १२ जनवरी, ५२



उत्तराखण्ड में किसानों का योगदान विदेशीय मुद्रा ११

× पिनोषा-इन्दिरा वार्ता × इन्दिराजी सर्व सेवा संघ की सदस्या ही हैं × सन्धे जन प्रज्ञानत्र
के लिए × 'चिपको आन्दोलन' की एक और विजय × भूलिया में आदिवासी आन्दोलन

भूदान-यज्ञ

१४ जनवरी, '७४

वर्ष २०

अंक १६

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

विनोबा-इन्दिरा वार्ता

—प्रभाप जोशी

इन्दिराजी सर्व सेवा संघ की
सदस्या ही है

सच्चे जन-प्रजातन्त्र के लिए
—जयप्रकाश नारायण

'चिपको आन्दोलन' की एक
और विजय —अनुपम मिश्र
घूलिया में आदिवासी आंदोलन
की उपलब्धियाँ

—सन्तोष भारतीय

किशोर शाह

बापा, बापू से भी दो कदम आगे

—रामगोपाल त्यागी

विगत वर्ष —भ० प्र० मिश्र

सर्वोदय आन्दोलन का नया पर्व

—कान्ति शाह

समाचार

मुख पृष्ठ : अनुपम मिश्र

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक तिथि,
नई दिल्ली-११०००१.

विनोबा-इन्दिरा वार्ता

राज्य शक्ति के प्रतीक महल और
प्राध्यात्मिक-सामाजिक शक्ति के प्रतीक
प्राथम्य के बीच सम्बन्धों की एक लम्बी
परम्परा इस देश में रही है। जब-जब महल
और प्राथम्य के बीच सहयोग, सम्मान और
समन्वय के सम्बन्ध रहे हैं तब-तब समाज
ऊपर उठा है और ऐसे कालखण्ड हमारे देश
में घाये हैं जिन्हें इतिहासकार स्वर्णयुग कहते
हैं। लेकिन अब यह सहयोग टूटा और महल
ने प्राथम्य की या प्राथम्य ने महल की उपेक्षा
की और एक दूसरे के कार्य तथा प्रभाव क्षेत्रों
का अधिकरण किया तब समाज टूटा है, देश
गुलाम हुआ है और हमारा पतन हुआ है।
प्राथम्य हमारे प्राध्यात्मिक, नैतिक और सामा-
जिक जीवन के मूल्यों को विकसित, स्थापित
और नियमित करते रहे हैं और महल राज-
नीतिक मामलों और विधि-व्यवस्था को
चलाते रहे हैं।

अब जीवन बहुत सकलमष्ट हो गया है।
चीजें एक दूसरे में अपनी मूँच मयी हैं कि पहले
के दायरे और कार्य तथा प्रभाव क्षेत्रों को
विभाजित करने वाली रेखाएँ टूट गयी हैं।
कोई भी मूल्य महज प्राध्यात्मिक, सामाजिक
या नैतिक नहीं रह गया है। एक विचार एक
घटना और एक कर्म का अक्षर प्रायः सब
तरफ़ होता है। राजनीति और धर्मव्यवस्था
की ऐसी सगाई हुई है कि वे दोनों मिल कर
सामाजिक, नैतिक और प्राध्यात्मिक जीवन
को ही नहीं, लोगों के वैयक्तिक जीवन तक
को प्रभावित, नियमित और नियंत्रित करना
चाहते हैं। राजनीति और धर्म व्यवस्था को
यह महत्व विज्ञान के कारण मिला है क्योंकि
मात्र जो दुनिया है उसे ऐसी बनाने का श्रेय
विज्ञान को है। लेकिन यह मनुष्यता का दुर्भाग्य
है कि विज्ञान अपनी स्वतंत्र सत्ता कायम नहीं
कर पाया और राजनीति तथा धर्म व्यवस्था
ने उसका इस्तेमाल अधिक से अधिक शक्ति
पाने हाथों में केन्द्रित करने में किया है।
प्राथमिक रूप से विकसित माने जाने वाले देशों
में धर्म व्यवस्था और राजनीति के बीच एक
सन्तुलन बन गया है। दोनों एक दूसरे को
प्रभावित करती हैं और एक दूसरे पर निय-

त्रण रखती हैं। लेकिन जिन देशों को विनाश-
शील या अस्थिरित बना जाता है उनमें प्रायः
राजनीति ही अधिक शक्तिशाली है और वह
अपने लक्ष्यों और निहित स्वार्थों के अनुसार
ही धर्म व्यवस्था को संचालित करती है।

अपने देश में आजादी के बाद से राज-
शक्ति व्यापक हुई है और राजनीति की तो
प्रायः हर क्षेत्र में दखलदाजी हो गयी है।
घाट सी बर्षों की मुलामी के बाद पहली बार
जब पूरे देश में अपने लोगों की सरकार बनी
और सत्ता उन लोगों के पास आयी जो बीसवीं
शताब्दी में प्राथम्य के सबसे जीवन्त और
शक्तिशाली प्रतीक महात्मा गांधी को मानने
वाले थे तो राज्यशक्ति के प्रति लोगों का मोह
और उस पर निर्भरता बड़ना स्वाभाविक था।
हालाकि सरकार पर एक स्तर पर इनकी
अधिक निर्भरता और राजनीति को इनकी
अधिक मान्यता के बावजूद मानस के एक
स्तर पर लोग गैर राजनीतिक भी बने रहे हैं।
और 'कोउ नुष होय हमें का हाती' का हमारा
स्वाधी भाव भी पूर्ववत् है। शायद इसी भाव
के कारण राजनीति इतनी निरदुःख हो गयी
है और राज्य पर निर्भरता इनकी बड़ी हुई
है। राजनीति और राज्य के जो तात्कालिक
राश्य धन्यता निहित स्वार्थ हैं उन्हें देखते हुए
यह स्वाभाविक ही है कि ये लोगों की उदा-
सीदता का लाभ उठाने से बाज नहीं आये
और न यह चाहेंगे कि उनके हाथों में प्रभु
की धारा राजनीतिक और धार्मिक सत्ता है
वह बनना की जागरूकता के कारण घटे मा
कम हो। इसलिए लोकशिक्षण पर न राज्य
जोर देता है न राजनीतिक पाठियाँ।

इस असन्तुलन को मनाष्ट करके के लिए
और मन्चा स्वराज्य को के लिए (विनोबाजी
ने लोकशिक्षण को धर्मियाँ माना और अम-
स्वराज्य के सपने को साकार करने के लिए
लोकशिक्षण का करने कारण मान्य के
नामने उपयोग किया। उनकी प्रेरणा में धर्म
हमारे सर्वोदय के एक लोकशिक्षण में मने हुए
हैं। लोकशिक्षण को अपनी माय्या का पटना
तत्व मानने वाले विनोबा जी से प्रयास नहीं
(विप पृष्ठ १६ पर)

इन्दिराजी सर्व सेवा संघ की सदस्या ही हैं

२ जनवरी को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी विनोबा जी से मिलने गईं। विनोबा जी से उनको ७० मिनट तक बातें हुईं। उस दिन उनका भोजन ब्रह्मविद्या मंदिर में ही हुआ। भोजन के बाद, श्रीमती देव प्रभाय की बहुतायत के साथ धनीयारिक बातें होने के बाद, विनोबा जी तथा इन्दिरा जी, दोनों ने माध्यम के बहन परिवार को संबोधित किया।

विनोबा जी ने कहा : भाव्य हमारी बातें एक घंटा होने वाली थी। उनके बचने में ७० मिनट हुईं। काफी विषयों पर चर्चा हुई। ऐसा पाया गया कि बहुत से विषयों में एक ही राय हमारी हो गई। उससे विश्वास बन गया कि सर्वोदय का विचार, साथ ही उसकी धार्मिकता ब्रह्मविद्या और धर्म जो सामाजिक कार्य चल रहा है सरकार की ओर से, उनके बीच उत्तम संपर्क हो सकेगा, ऐसी भाशा दोनों बाबू से की है। इनके मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैंने तो यहां तक कह दिया कि धार्मिक और हमारे विचार-विशेषों से लगता है कि भाव्य सर्व सेवा संघ की सदस्या ही हैं। यह सुन कर धामने बड़ा कि इन कथन में मैं धारा गौरव सम्झती हूँ यह हमारा जो प्रेमभाव हुआ थीरों में धार्मिक सामने रखा।

विनोबा जी ने उद्बोधन के बाद इन्दिरा जी ने कहा : "मुझे तो बहुत दिनों से इच्छा थी भावा से मिलने की। सातभर से ऊपर हो गया जब मैं भावा के पास धार्मी थी, इतने बहुत पहले धारा चाहुनी थी। परन्तु ऐसा जीवन हमारा बन गया है कि बहुत पहले से निर्गत करते कार्यक्रम बनने को इच्छा होने पर भी सम्भव नहीं होता है। भाव की बार बहुत पहले ही निर्गत करते लिन रखा था। भावा के विचारों में हमारा ही बहुत आनन्द होता है, प्रेरणा मिलती है और धर्म बन विनया है।

"इसके देग का यह बड़ा सौभाग्य है कि हर काम में ऐसे महापुरुष हमारे देग में रहे हैं। चाहे हरकत चाहे निर्गतों भी धर्मात्मा

हों या जिसे हम मल्ल बात बहते हैं जो नहीं होने चाहिए वह होती हो, तो भी उसके बीच में धार एक क्षान्ति केन्द्र है, वह चाहे जितना भी छोटा हो तो भी उसका प्रभाव उस काम में भी पड़ता है और बाद में धामे भी पड़ता है।

"सभी धार्मिक की वहुते मुझे बाबू के बारे में सुन रही थी, तो मैंने कहा कि बाबू से मैं पहली कथा जब मिली मुझे याद नहीं है, क्योंकि बहुत छोटी थी तब से हमारे घर में उनका धारा जाना होता था। हम उनके इतने पास थे कि मुझे लगता है कि उनको सभी कोई पहचान नहीं पाया है। जैसे-जैसे समय जायेगा, उनकी जितनी महत्ता भी वह प्रतिस्था-प्रतिष्ठा लगेगी। वह उनकी ही खुलेगी जितनी जिसकी जानने की शक्ति होगी। हमारा स्वयं का इच्छिकोण छोटा हो तो हम उनका ही देखेंगे। लेकिन प्राहित-प्राहित हमारे ही देग में नहीं, दूसरे देगों में भी इसकी पूरी जानकारी चाहेगी वे जितने महान व्यक्ति हैं और जितनी महान शक्ति भी। जैसे ही हम भावा के बारे में भी कह सकते हैं। धामे जीवन काम में योग उन्हें नहीं पहचान पाते हैं। लेकिन हम इस प्रयोग के और भारत में दूसरे लोगों के जिरिये उच्छेति एक दिशा की है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

"भाव्य यह बात बहुत होती है कि देहान का उद्वार होना चाहिए, यह ठीक है। लेकिन यह सार्धन (विमान) का युग है। सार्धन और टेकनाली बनुनी चाहिए। मैं उन लोगों में से हूँ जो मानते हैं कि उन लोगों की (देहान का उद्वार और सार्धन) कोई लड़ाई नहीं है। भाव्य हम दुनिया से प्रपण नहीं रहे सकते हैं। जो भी दुनिया में प्रगति रही रही है, उनका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ेगा ही। लेकिन उनका उपयोग किन्च तरह करना जितने कि हम समाज का सुधार, देहान का सुधार कर सकते हैं और हमारे समाज में जो बुनियादी गुण हैं, प्राचीन समय

के जो गुण हैं उनको रखते हुए, जिस तरह कर सकते हैं, वह देवना है। मैं मानती हूँ कि उन दोनों में कोई विरोध नहीं है।

"भाव्यक बहुत से लोग धामने की भाष्य-विक समझते हैं। उनकी भाष्यवित्ता बाहरी चीजों में, वस्त्र वर्णन में होती हैं, लेकिन वह कोई बुनियादी चीज नहीं है। पैमान तो भावा है और जाता है। क्या बुनियादी चीज है यह हमें देखना है। और हमारे धुराने तरीकों में भी क्या बुनियादी चीज है और क्या दूसरा है, अध-विधवास वर्णन है, वह देवना है। हमारे पास भी कई धुरानी चीजें हैं जो अच्छी नहीं हैं। जैसे साम्राज्यता, भाष्य अंद वगैरह, जिनसे बाबू हमेशा लड़ते थे और भाष्य भी लड़ते हैं, वह सब छोड़नी होगी। भावा तो राष्ट्रियता के भी ऊपर उठ गये हैं और जगत की बात करते हैं। वह भविष्य की बात है धाम्य जो वे कह रहे हैं भविष्य में वह सब होगा। जब स्वयं कोई मजबूत होता तब वह बाय बनती है और वह सबसे प्रेम कर सकती है। हमें राष्ट्र के लिए प्रेम न हो तो जगत के लिए प्रेम नहीं हो सकता। राष्ट्र लिए हम प्रेम करते तब दुनिया के लिए भी कर सकते हैं। जो छोटा प्रेम होता है, जैसे परिवार, बंध, जाति, राष्ट्र के लिए जगका बड़े प्रेम से मानते नहीं है। छोटे प्रेम को और बड़ाते जाना चाहिए। मैं विचार एक माने में पुषाते भी हैं। और धाम्य हम-वह सकते हैं कि नये भी हैं। दुनिया के दूसरे देगों में भी इन विचारों की अवक दिशाई देनी है, सब में लगी, जोड़े लगी में। लेकिन कोई नहीं बात पड़ते पर-दे लोग ही धामयते हैं।

"यह पर धाम्य सब लोग को काम कर रहे हैं, जो दुनिया प्राप्त कर रहे हैं उसका काफी योगदान हो सकता है। हमें भावा है कि उसका प्रभाव देग पर पड़ेगा।"

सच्चे जन-प्रजातंत्र के लिए

जनप्रकाश नारायण

(कानपुरा में २६ मीर ३० दिसम्बर '७३ को हुई प्राँत इन्डिया रेडिकल ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन को सम्मेलन में विद्ये गये उद्घाटन भाषण से—)

दलीय प्रजातंत्र का अर्थ हमें छद्मोत्त बधों का मनुभर हो चुका है। इत दौरान रागभग हर एक राजनीतिक दल को सत्ता में भागीदारी मित चुकी है मीर सत्ता में धरने के बाद इनके रण-रंग हम देख चुके हैं मीर हमें मालूम है कि लोगो के लिए इन दलो ने क्या किया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि धरने घोषणा पत्रों से भिन्न इन पाटियों का व्यवहार मीर कामकाज सापनाय के भाई नामनाथ जैसा रहा है फिर चाहे वे सरकार में रही हो या उसके बाहर। लेकिन इसे एक बार छोड़ो भी दें तो बुनियादी मुद्दा यह है कि पार्टी-प्रणाली पर प्राधारित मीर पाटियों द्वारा संचालित दलीय प्रजातंत्र एक बहुत ही असन्तोषजनक मीर ऋष्टिपूर्ण प्रजातंत्रिक प्रणाली है। साम तोर पर जोग राजनीतिक पाटियो मीर प्रजातंत्र के वर्तमान स्वरूप मीर तोर-नरीको से ऊर गये हैं। वे शोठ दे कर इन प्रजातंत्र में जीने-नैते नाममात्र का प्राणा रोज धरदा करो हैं, कमीक उनके सामने कोई विकल्प नहीं है। चर्चित के: इम कथा की हृथं प्राणर याद प्राणी हैं: दलीय प्रजातंत्र में स्पष्ट ही कई ऋष्टिया है लेकिन जब तक कोई दूसरी प्रणाली नहीं सोच ली जाती, सरकार चलाने की यह सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है। मेरा विवादात है कि लोगो के पास विकल्प है मीर लोगो को सबसे प्रजातंत्र का बेहतर प्रजातंत्रिक स्वरूप सभव है:

ऐसा मन सोचिए कि यह मेरा विकल्प है या मने धरने के ही इन पर विचार किया है। प्रजातंत्र के इस स्वरूप के निडान मीर दग ली कुरदरेया हय मधी जी मीर एम० एन० रॉय ने बनाई है। गध पूछिये तो इमका सन्निहित विचार तो मीर भी पहले का है। इने प्राण श्रीमती एनीबेरेट की भारतीय प्रजातंत्र की प्राधारणा में देख सकते हैं, देण

प्रधान-पत्र : सोमवार, १४ जनवरी, '७३

बन्धु चितरजन् दास के विचारों में पा सकते हैं मीर डा० भगवानदास की स्वतंत्र भारत के सविधान की तयकथित रूपरेखा में भी यह पाया जाता है।

जहा तक मैं जानता हू एम० एन० रॉय जिन्हासे रेडिकल ह्यूमनिस्ट नेता है जिन्हीने रेडिकल ह्यूमनिस्ट पार्टी का विचार दिया, पार्टी बनाई, मीर खरी की मीर फिर स्वय ही उसे समाप्त कर दिया। इममें कोई संदेह नहीं कि माधी जी भगर जिन्दा रहते तो अपनी सहायन के पहले वाली रात में प्रायस कायकारिणी के मुकभ पर उन्होंने कार्य में को भग रने मीर लोचलेक सप के रूप में उसे पुनर्गठित करने का जो मतविदा प्रस्ताव लोचर किया था उग पर वे धमन करते। लेकिन दूसरे ही दिन उनकी हत्या कर दी गयी मीर इम तरह रॉय ही ऐसे एक-मात्र राजनीतिक नेता हैं जिनमें अपनी पार्टी भग की हो।

माधी जी मीर राय दोनो के ही उर राजनीतिव टाके के धरने-धरने चिन थे जिन्ह दे बनाने की कोशिस करते। जहा तक मैं समझता हू, इन चिन्ता य बहुत प्राथि ममाना है। हालांकि जिन मद्रवलो में इन दोनों ने धरने चिन्ता का अर्थोत किया है मीर उनके मयवर्त में जो दलीयों की है के प्राधियार्थ हा थे भिन्न है, यकीन इन दोनो की पुष्टभूमियो मीर हृष्टिकोशों में धरतर था। दो बुन्यादी तत्त्व जो शंको में सम न हैं, इम प्राार हैं— दोनो में ही पार्टी विधीन प्रज तंत्र को बात कही है मीर दोनो ही इम मुद्दे पर स्पष्ट थे कि 'यह प्रजातंत्र नीचे से बनाया जायेगा। माधी जी इनका प्राधार धमराज (धम सरगामन) को मानते थे मीर राय जन सविन्त्रो को मानते थे। सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते वैचारिक ढांचे सङ्के करते में ही मेरी रुचि नहीं है। म. गो प्रापके सामने मीर प्रापके जिये पूरे देस मीर मन्त्र कर उरगो के सामने सामाजिक-राजनीतिक कार्यवाही का एक तात्कालिक कार्यक्रम रखना चाहना हू। मेरा प्रावाहन है—'जन प्रजातंत्र की मीर'।

जन प्रजातंत्र की मीर पहला बधम है— इतकी नीव रखना। यह नीव गाँवो में प्रा-समाए मीर नगरो मीर बस्वो में मोहला या वार्ड समितिया गठित करने से रखी जा सकती। ये ग्रामसभाएँ लोंगो के प्रतिनिधियो की सस्था न हो कर, गाव के सभी बावियो की प्राथमिक सस्थाएँ होगी। गाव का मतलब भी यहा मीर से नहीं है बल्कि छोटी-बड़ी कीर् भी बस्ती से है फिर चाहे उसे पल्ली कहा जाना हो, टोला कहा जाता हो या पुरवा। यह एक ऐसा समाज है जिनमें शोग एक दूसरे को श्रद्धी तरह जानते हैं मीर प्रापस में उनके सीधे सम्बन्ध हैं। ऐसे समाज में ही सीधा प्रजातंत्र व्यवहारिक हो सकता है। शहरी इलाको में वर्तमान नगरपालिका वार्ड ऐसी इनाई के नाते बहुत बडेँ पड़ये। इन वार्डों की प्रावारी एक ऐसे समुदाय के नाते बहुत ज्यादा है जिनमें सभी बाविय या प्रत्येक परिवार वा एक सदस्य भी, प्राधने-सामने बैठ कर निगी सार्थक कार्यवाही में भाग ले सकें। इमलिए मैंने मोहला सभाओ या पडोस परिषदो का सुधार दिया है जो पाग में रहने वाले सो परिवारो की हो। कारगानो, दपनरो, स्कुलो-बालियो मीर काम के सरगानो में, दुबानो, दपनरो या किसी भी मुवपा-जनक स्थान में ऐसे समुदाय बलाये जा सकतें हैं जो नियंत्रण करते, कार्यवाही करते मीर कामकाज चलाने में भागीदारी के पूरे धवरण दे सकते हो।

कमल
मूल अंशजो के सन्निधि
× प्रापत जानकारी के धनुमार
२२वां मर्वादेय सम्मेलन कलकत्ता के नियम रहा मं ३०, ३१ मई मीर ? जून १९७४ को प्रापोजित किया जा रहा है। सम्मेलन के पहले सर्व मेदा सप की प्रदन्ध समिति मीर प्राधिवेशन की बैठकें भी होंगी। सम्मेलन की तैयारी शुरु हो गई है।

'चिपको आंदोलन' की एक और विजय

—अनुपम मिश्र

तीसहत्तर बेंदाराताय से २६ किलोमीटर नीचे ही रामपुर गांव में बनवासियों के लिए एक 'नया बेंदाराताय' बन गया है। इस नये बेंदाराताय पर एक धूसर कटा हुआ घोंघर चार घूरे बंधे हुए अंगू के पंच बंधे हुए हैं।

मेनकूट का सामान बनाने वाली इलाहाबाद की साइमन कम्पनी तथा देहरादून की सरकारी एरोस्टैल गुप्त कम्पनी के अधिकारी अंगू के ३० पेड़ काट कर ले जाते थे बन-विभागीय प्रादेशों में रहते हुए भी बनवासियों के सचिव प्राणेश्वर प्रतिहार के कारण इन बीमारों पेड़ों को उखाड़े जाने में प्रसफल रहे।

बनवासियों अंगू की लकड़ी से कृषिजन्य बनाने से लेकर घर-कारखानों की बननीति के कारण अंगू की लकड़ी उठे नहीं मिल कर मेनकूट का सामान बनाने वाली कम्पनियों को मिलने लगी थी। स्थानीय लोगों के विरुद्ध बड़ी कम्पनियों के पक्ष में जाने वाली बननीति को बदलने के लिए उत्तराखण्ड के संसदीय व उत्तर-बासी दिनों में गन बंध जो 'बिचको आन्दोलन' शुरू हुआ था उसकी सफल परिणति इस २४ दिवसपर की कम्पनियों के ठंडे धारों द्वारा बटवाने एवं हरे पेड़ों को जंगल में बाहर नहीं निकलने देने में हुई।

दोस साल भर पहले उत्तर प्रदेश सरकार के बनविभाग से इलाहाबाद की साइमन कम्पनी ने अंगू के पेड़ काटने का मोटा तय किया था। सच गोपेश्वर के पत्नीय प्राणेश्वर कायस्थ सच ने इस पर धार्मिक भी धीरे धीरे पेड़ बनवासियों द्वारा भी बनाने के काम माने हैं उन्हें न देकर मेनकूट का सामान बनाने वाली कम्पनी को देना ठीक नहीं है। यदि ऐसा हुआ घोंघर कम्पनी ने घाकर पेड़ काटने की कीमत का ही बनानी ही ३० पेड़ों के विचार का मुद्दाओं के कारण को बनानी पेड़ पर मड़े। गोपेश्वर के संसदीय के जंगल में अंगू के पेड़ काटने का प्रादेश कम्पनी को मिलता। कम्पनी ने उन्हें काटने की कीमत का ही लेकर बहो के लोगों ने दोस बाजे-गाजे बनाकर बननीति में परिवर्तन के लोकोपयोग गांव

अंगू का पेड़ जो बननीति की जड़ें हिला रहा है

उत्तराखण्ड से ६ हजार फुट की ऊंचाई वाले जंगलों में मिलने वाला अंगू का पेड़ (देत) अंगू की लकड़ी उच्च में कोई १०० फुट ऊंचा जाता है। घोंघर की लकड़ी १००० वंश। बनवासियों इसकी लकड़ी का उपयोग परम्परा से हीत का जुगा बनाने में करते रहे हैं। घोंघरों में कृषि यंत्रों के लिए इन्हें चुने जाने का कारण इसकी विविध लकड़ी है। पहाड़ों में टापू के नैसर्ग में घटक रूप मिलती है। लेन में हल खींच रहे बंश के बंधों पर ऐसी लकड़ी का जुगा रखा जा सकता है जो मोसम के अनुसार न गरम होता ही न ठण्डा। बंश के बंधों पर घजन भी बहुत कम परना चाहिए, क्योंकि अधिक लकड़ें में सास चढ़ जाती है घोंघर पहाड़ों पर उचाई में सहज ही सांस पूल जाती है। अंगू में वे सच गुण हैं। हल्केपन के साथ यह लकड़ी मजबूत भी लकड़ी है घोंघर न घासानों से गरम होती है न घासानों से ठण्डा। इन्होंने गुणों के कारण कृषि-यंत्रों के घासों अंगू की लकड़ी का लेलकूट का सामान बनाने में भी उपयोग होने लगा। इससे बंधमिशन, टैलिन, घादि के बने बनाने जाते हैं। गांव बाने इस पेड़ का लेलकूट में इति-मास बन्द नहीं करना चाहते। उनको केवल हलने ही मांग है कि बन के समस्त निकट रहने के कारण उ-हें उनकी जलन की लकड़ी मिल जाती चाहिए। यद्यपि लकड़ी का लेलकूट का सामान बने तो उन्हें एतरान नहीं है। लेकिन वे कृते हैं कि सरकार घासी नीति तो खटक कर दे। बया यह देना में केवल लेलकूट का सामान बनाना चाहते हैं या सेतो बाड़ी की घोंघर भी उलने ही गयोखरा से ख्यत देना चाहते हैं। अंगू की विविधता देखते हुए हूए इन गांव बासी का बहना है कि संदान के किसानों को भी अंगू की लकड़ी से जुगा बनाना शुरू करना चाहिए।

ऐसा बाजाररण बना दिया कि तबरातीन जिना मजिस्ट्रेट को बेगार के तार से यह खबर लखनऊ भेजनी पड़ी कि कम्पनी द्वारा पेड़ काटे जाने की हागत में महा की स्थिति हाथ के बाहर भी हो सकती है। राजधानी में तब साइमन को दिन मय प्रादेश स्थानिक विचरि मर ७३ की सरकार ने कम्पनी के ठंडे का स्थान गोपेश्वर से बदल कर बेंदाराताय बनविभाग के ज्योसिठ रेंज के जंगल में कर दिया। बेंदाराताय मांग पर पाटा-रामपुर के १० हजार फुट पर लगे इस जंगल में साइमन के धर्मिरकत देहरादून की एन-घोंघर कम्पनी ने प्रवेश कर एक साल प्युने मिलने गये प्रादेशिक विचार ३१ दिवसपर तक थी, अंगू के पेड़ काट कर ले जाने की एक घोंघर धगपन भी मिलती है।

इस जंगल की छाया में बसे गांवों को गन सई में बनक लगी थी कि सरकार ने गोपेश्वर

के स्थानीय लोगों का विरोधी रूप देल कर धब कम्पनी का रामपुर के पास जंगल से पेड़ काटन का प्रादेश दिया है। उपर २ सई की दलीकी प्राणेश्वर कायस्थ सच ने बनवासियों की एच-बैंक हूई जिमम विभिन्न मामलाओं के प्रधानों, स्थानीय जालों राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों प्रादि ने मांग किया था। बैंक न तय किया कि कम्पनी का जिय लये स्थान पर पेड़ काटने के प्रादेश मिले हैं हटा के निता-मिया को इसकी सूचना देनी चाहिए। ३ सई की मुजब गापेश्वर ने एक पदवाया टोनी धमकी सूचना देते गोपेश्वर ने कम्पनी द्वारा पेड़ काटन की धगपनका बनाने तथा बननीति में परिवर्तन के लिए अनभिधाय करते उत्ती-मठ रवाना की। टोनी में मुण्डरनास बहू गुला उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के वंशवा संयोजक प्राणेश्वर बिठ घादि के घासका एक १४

वर्षीय विशोर भी शामिल था। ५ मई को यह टोली रास्ते में पड़ने वाले सभी गावों में दम घटना की जानकारी देते हुए उजीमठ पहुंची। वहाँ टोली के यात्रियों ने क्षेत्र समिति के सदस्यों की एक बैठक में अपनी बात की रखा। समिति की बैठक ने पेड़ का स्थान बदल कर उजीमठ रोज में रखने का विरोध किया और तब दिया कि अग्रे के पेड़ गाव वालों को भी मिल सकें इसके लिए धारादीपन जारी रहेगा। १६ जून को इस नये जगल में बनविभाग ने बम्पनी द्वारा काटे जाने वाले पेड़ों पर छापे लगा दिये। छापे लगाने की खबर से लोगों में चिन्ता फैली। बेदारनाय मार्ग पर अन्निम बस पड़ाव सोनप्रयाग पर २० जून को एक बैठक हुई। बैठक ने शासन से निवेदन किया कि सन् १९११ का वन बन्दोबस्त सुरन्त बदला जाय, गाव वालों को कृपियं व बनाने अगू का पेड़ पूर्ववत् दिया जाए तथा इस क्षेत्र में लोगों की क्षमता देख कर बनाधारित उद्योग धंधे खोले जाय तथा साइमन को इस जगल हट्टे गये पेड़ निरस्त करें नहीं तो बनवासी पेड़ काटे जाने की स्थिति में उनसे चिपक कर उन्हे बचायेंगे। ज्ञानप जिला मजिस्ट्रेट को भेजा गया तथा उनसे २७ जून तक इस सिलसिले में जवाब की उम्मीद की गयी।

१९ गाव वालों को शासन जवाब देने लायक तो छोड़िये, पत्र की पहुँच की सूचना देने लायक भी नहीं मान पाया। रोज मिलते रहने वाले ज्ञानपों के बड़े डेर में बनवासियों का ज्ञानप भी अनुत्तरित रखा गया।

२७ जून को शासन से कोई जवाब न मिलने पर फाटा गाव में भारी वर्पा के बाद भी छात्रे घोर ऊनी बरसाती दोरका भोंडे धामीनी में धननीति में परिवर्तन की माग लेकर फिर एक प्रदर्शन किया।

इस तरह २ मई से २७ जून तक प्रदर्शन प्रादि होने रहे, लोग जगह-जगह से शासन से धननीति में बनवासियों को शामिल करने के धनुरीय करते रहे। किसी भी आपन का कोई उत्तर नहीं आया। फिर मिनम्बर तक फाटा, रामपुर में बिहुकुल चुप्पी रही। इस चुप्पी के दोरान यहा कनिष्ठ उपमखुल से दारसिंह रावल, जिन्होंने इस क्षेत्र में 'तीर्थयात्रा मजबूर मह-कारी संघ' का निर्माण किया था, ने गावों में



श्री गिणुपाल सिंह, श्री चण्डी प्रसाद भट्ट व निगरानी दल के १७ वर्षीय अध्यक्ष धरने साधियों के साथ धूमकर जगल पर निगरानी करने वालों का एक दल बना लिया था।

२६ सितम्बर को साइमन वाले धारा-कुहवाड़ी प्रादि लेकर फाटा बस स्टैंड उतरे तो लोगों ने उन्हे पहचान लिया। बड़ानु गाव पर, जो जगल के टीक नीचे पड़ता है, लोग एकत्र होने लगे। हलचल देख साइमन बम्पनी वाले ऊपर नहीं गये, बागस लौट गये। जनवरी '७३ में साइमन को उत्तराखण्ड से अग्रे के पेड़ काटने की अनुमति मिल गई थी। वे उन पेड़ों को काट कर देश और विदेश की खपत के लिए बैडमिंटन और टेनिस के रैकेट, हॉर्ली की स्टिक और क्रिकेट के बल्ले बनाते हैं। इधर गाव वाले इन पेड़ों को पीछियों से हल के जुए बनाने के काम में लाते थे। गाव वालों का इन पेड़ों को लेकर यह सघर्ष इस बात के लिए था कि इस देश में कृषि के यंत्रों की कीमत पर खेत, सिलाने तैयार किये जायेंगे क्या? गाव वाले इस में किसी सवीर्य धैर्यीयता या मंदान बनाम पहाड़ी जैसे संघर्ष में नहीं पडे थे। उनका कहना था कि अगू के सारे पेड़ों से जुधा नहीं बनाया है। हम अगू जैसे बीमती पेड़ की लकड़ी को बर्बाद नहीं होने देना चाहते। लेकिन जब से सरकार ने कृषि यंत्रों के बजाय इस लकड़ी को सेलकुद का सामान बनने के लिए देना शुरू किया है तब से हमनी दोहरी बर्बादी हो रही है। गाव वाले धर्म भी यथा समभव धर्म से ही जुधा बनाते हैं। नीति उनके पास में नहीं होने के कारण ध्रुव वे लोग चोरी दिपे जगल में जा कर अगू को काटते

हैं। चोरी की हडबडाहट में बाटा गया पूरा पेड़ तो वे उठा नहीं पाते, उसके कुछ हिस्से लेकर भागते हैं। इस तरह पेड़ तो पूरा बट जाता है पर जुधा एक या दो ही बन पाते हैं। पूरे पेड़ काटने पर १०-१५ तक जुए बनने चाहिए। इस तरह बाकी बीमती लकड़ी बर्बाद हो जाती है। प्राइवेट बम्पनी वाले भी इस पेड़ पर अत्याचार करते हैं। बनविभाग में उन्हे जितने पेड़ काटने की अनुमति मिलती है प्रायः उससे ज्यादा ही काटे जाते हैं। इसमें मजबूरी भी है और अत्याचार भी। वई बार बाटा गया पेड़ बम्पनी ऊर्चाई के कारण (९० से १०० फुट) गिर कर घासपात के बम उत्र के पेड़ों में अटक जाता है। गम्बर छापे गये उस पेड़ को पाणे के लिए बिना छापे गये पेड़ भी काटने पड जाते हैं। चाहे गाव वाले ही चाहे व्यापारी, बनविज्ञान से विमुक्त नीति के कारण अगू का पेड़ दोनों का ही शिकार हो रहा है। इस पेड़ की सख्या घटे जगलों में भी लगभगतर कम होती जा रही है।

१५ दिसम्बर '७३ को अगू के पेड़ को लेकर गाव वाला और बम्पनी के बीच घास-मिचौली का खेल फिर शुरू हुआ लेकिन इस बार स्थिति कुछ बदली थी। अत्याचार को प्राइवेट साइमन बम्पनी ने साथ देहरादून की सरकार को स्पेशल एगेंट्स मुहूर्त के टेंचरेखा भी फाटा गाव ध्रापे। इन लोगों में गाव वालों और सर्वोच्च कार्यकर्ताओं की गैली में ही पदनाम निष्पत्ती। जगह-जगह लोगों को समझना कि 'गोपेश्वर के सर्वोदय-कार्यकर्ता रिश्तत से चुके हैं और अब वहाँ चिपको आन्दोलन का हल्ला कर रहे हैं। रामपुर में भी जो लोग चिपको आंदोलन का हल्ला कर रहे हैं वे भी हमसे पैगा रामा काहते हैं। धरने काम करो, चिपको आंदोलन छोड़ दो।' लोगों ने जगह-जगह उनसे कहा कि हमें जुधा नहीं मिल रहा, दम पेड़ में हमारी सेनी, हमारी संव, हमारा पेड़ जुधा हुआ है। हम इसे बटने नहीं देंगे।

बेदार सिंह रावन ने एक पत्र द्वारा पठने धरने माधियों की गटायना के साइमन और एगेंट्स मुहूर्त बम्पनी के धाने की खबर गति-गात पठवाई। २२ दिसम्बर को फाटा में त्रिजुगी नारायण (बेदारनाय मार्ग पर साख निव्वन सोमा पर यह अन्निम गांव है) राव-

पुर, याम्बू, सेरमो, बडाम्, जाम्, रविशाम, मेवला धारि गावो के ग्रामप्रधान तथा अन्य लोग, क्षेत्र समिति के सदस्य धारि की एक बैठक हुई। बैठक ने शाम से ५ बजे, २० जून २० जून की रातों को पुरा करने का प्रतुरोध किया। कहा कि प्रभू के पेड़ नहीं कटवाये जायें। अन्यथा हमें धरती पीठ पर कुल्हाड़ी की वार करना हीमा। इस बैठक में दस गांव बावो ने कर्मियों के प्रतिनिधि, सब्जी धो धनेमा, श्रीधरतव धोर डेकेदार नौदियान की श्री धरता पक्ष गांव बावो के सामने रखने कायचित्त किया था। वे धारि भी उन्होंने तो पेड़ काट कर नीचे ले जाते ही ही वाज कही। उनका कहना था कि "हम तो इन पेड़ों की बीजान सरकार को दे चुके हैं। बीज धरता है पेड़ से बिजने, हम उजवे निरत लीम। गांव के लोग धरते ही मजसे उनही उतंनर को पीने रहे।" फिर बहम चली गांवो में बनाधारिन उद्योग धरते लगाने की। कम्पनी के लोगों ने इसे बेमनन करार दिया। उनका कहना था कि एक-एक महीने २०,०० रुपये की धारि है। तुम लोग शरीर मरते हो? जानकार, रिमाग बावो विचार्य चांहे, सा तकते हो? कौन करेगा यह सब तुम लोगों से, धोर कर तकते हो तो मज तक उद्योग लया धो नहीं लिये?"

बन-उद्योग गांव में नहीं लगने के कई कारण हैं। जलन की धारा में ही बसे इन गावो को जंगल का कच्चा माल अत्यार के लिए तो शीतले, इतनी तक के निरत नहीं मिल पाया। बैठक में पेड़ों से बिजने का प्रत्यान कम्पनी के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ही प्राप्त हुआ।

बैठक सत्र हुई, मोग पर लौट रहे थे कि सभी ग्राम प्रधानों को खबर मिली की गांव को गुलबानी में बनविभाग की धोर से एक बर्तनिक का धायोवन दिया गया है। सत्रों धरकर कही। बैठक के सभी लोग गावो के अधिकाय धारि भी १२-१४ दिनोंकीधर पंडन चर कर सा गुलबानी धारि। कदा भीट पड़ो की माज्म हुआ कि निरन मो रबनिग कर दिया गया है। कारण बताया गया कि निरन की गाड़ी नहीं धारि है धोर गावो भी वा जानी तो गुलबानी में



सत्तर धरयो धीमती इयामा डेही

विजनी कीन ही गई थी। शरक वाले रात को गुलबानी में ही रहे। खुबेह जल्दो धरने धरने धरों को रवाना हुए। बापस लौटने वाले थे सभी रातों में बिपको धान्दोलन के तारे लगते रहे। इन लोगों को लेकर जब बम धाम को रामपुर पड़ो की गां जगह-जगह तक रहे तारे एतदम वामोश हो गये। बम धरते पर ही गांव की धोरतो से खबर लगी कि जलन में कुछ लोग धारा धारि ले कर जवर गये हैं। सलवनी मज गई एक बारफिर से। रात की जलन के धारधाम के हुर गावो में, शायद ही कोई घर बचा हो, जो बैठकपर में नहीं बदन गयो ही। जगह-जगह लोग धारि ठंड के खबबूद (रामपुर में तामान मज्म से २ इन्धी नीचे था) धारि के चारों तरफ बैठ कर बिाको धान्दोलन पर वाज करते रहे, बल की मीजना बरते रहे। कुछ को धा पा कि लोगों की जिगाह से बजार कम्पनी के प्रतिनिधियों को जलन जेबने के लिए भूठमूठ इत फिम को खबर दी गई थी।

२४ दिमबर को सुबह, रामपुर से ७० लोगों का एक बल डोल नगावे ले कर जलन बढ़ते लया। गांव से करीब १५०० गुट धोर बढ़ते पर जलन का मीजकई धारि। नील (कीनल) दिमि में ही प्रभू पेड़ पाया जाता है। जलन का यह हिस्सा हमेशा पतड़ को

धारा में रहता है, पूरा नहीं छाया। धने पेड़ों से धिरे इत मीजल हिस्से में डोल नगावे बजाते हुए थे ७० लोग धारि प्रभू के स्थान पर पहुंच ही गये।

५ पेड़ काटे जा चुके थे, एव के तने पर कुल्हाड़ी के कई कार हो चुके थे पर धरभी वह पुरा कट नहीं पाया था। डोल नगावो का हल्का मुज का डेकेदार धरने धीजारो, मज्दुरो समेत इस जगह में धार चुके थे। उन्होंने धरता कर लयत तो उनरने के लिए दूसरा रास्ता चुन लिया था। गांव बावो ने पाया कि बिना धारि गये पेड़ों को भी काटने की नौशिया की गयी है। बेंदारा सिद्ध रायत का कहना है कि हमें बटे पेड़ देख कर बहुत दुःख हुआ लेकिन धोरक इमलिए बना रहा कि कम्पनी वाले कटे हुए पेड़ों को धरने साथ नहीं ले जा पाये। हम सब बहुत देर तक बटे पेड़ों को घेरे जल्दीलि में परिवर्तन के तारे मगाते रहे। फिर नहीं पर एक धारा हुई त्रिमन तब किवा कि मजोर पदवलि से (हर पदवार से एक बालिग सदस्य) इन काटे गये पेड़ों की नौशिया की जायेगी। रामपुर धोर जलन के इस स्थान के बीच पडने वाले तरनाली गांव को जलन में होने वाली किमी भी हलवर की खबर रामपुर से देने के लिए नियुक्त किया गया। फिर तकने डोल नगावे के साथ बने को अथाधुंष कटारि से बवाने, बने को काटने से भूमिजनन बाध, पाने नहीं मिलना, धारि वाधाधरए सखधी नतीको कर बगुंन करने वायल लोकगीत गाया। दलीनी धाम लवराइ मज के किमपान सिद्ध का कहना है कि बोधे से काट लिये गये धरनाप पेड़ोंको हम बिाक कर रल। यही कर पाये इतगा हूधे बहुत गूरा मरधा पड़ुंवा। फिर धारि के लिए निजानी रखने के धरनाग हम लोगों ने बगह-जगह लोगों पेड़ों से बिाक कर उनरने बटने से बवाने का प्रविमाल भी दिया। डेकेदार धोर मज्दूर धारि उत समय मिन जाने तो धाम लोग बना करने, इनके जराव में उन्होंने कहा कि हमने मज्दुरी होकर वे क्यों भागे यह समझ नहीं धाना। हमारका डेकेदार से न मज्दूर से ही कोई विरोध था। हम तो एक ऐसी बनवीलि की साथ कर रहे हैं, त्रिमवे बन के

(शेष पृष्ठ १४ पर)

धूलिया में आदिवासी आन्दोलन की उपलब्धियाँ

—सन्तोष भारतीय व किशोर शाह

'भूदान-यज्ञ' के १० दिग्गमर के अरुम हम्ने धूलिया मे चल रहे आदिवासी आन्दोलन के बारे मे आर्जेज पत्रकार श्री वेन श्री की रपट प्रकाशिन की थी। हरिन भाति विपन्नता की नीर पर सम्पन्नता को जो नया दगं धूलिया मे लडा कर रही है और वहा सडी फमलो की आदिवासियो द्वारा लडा की आगवा से भूमिजानो मे शसहन बचाव सेना की जो योजना बनाई उसमा विवरण अर्जेज पत्रकार ने दिया था। इस अरु मे हम सर्वोदय क्षेत्र के दो युवा पत्रकारों, श्री सन्तोष भारतीय व किशोर शाह, द्वारा धूलिया के आन्दोलन का सर्वोदय की दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं। दोहो ने हान ही मे धूलिया का दौरा किया था।—स०

धूलिया जिले की उम्जाऊ शाहद, और तलोदा तहसील मे फमल सरक्षण के नाम पर एक समूह विशेष की संगठित सशस्त्र सेना बनाने की योजना बनी। जब एक परचे के माध्यम से देश को इसकी जानकारी मिली तो समाचार पत्रों मे और महाराष्ट्र विधानसभा मे भी इसका हंगामा मचा। इससे फलस्वरूप इस सेना की हथियार के लाइसेंस देने पर रोक लगाई गई और महाराष्ट्र सरकार की निर्णय की जाच के लिए एक बरिष्ठ अधिकारी की नियुक्ति बरनी पड़ी। सनमनी और चर्चा ज्यादातर इस परिस्थिति को लेकर है कि इलाके के भूले नये और भोले-भाले आदिवासियों का बहद फोपण हो रहा है। इस समय वहा पर बहुरने कुछ युवकों के काम से जागृति पैदा हुई है और इस जागृति को पुषसने के लिए इस सेना (जो पुरुषोत्तम सेना के नाम से प्रसिद्ध हो गई) की योजना बनी है। प्राधिकरण से इन तहसीलों के आदिवासियों की परिस्थिति देश के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों से फरक नहीं है—उदाहरण स्वरूप उत्तर बिहार के भूमिहीन मजदूरों का भूखण्ड और नगापन ज्वादा गहरा है। इस आन्दोलन के प्रारंभ के पहले शहादा मे मजदूरों की ओर की, उत्तर-बिहार मे खेतीहर मजदूरों को आजा भी उस से कम मजदूरी मिलती है। यहा कं ज्यादातर आदिवासी भूमिहीन भी नही है। अनेक गावों मे आदिवासियों के पास ही अधिक जमीन है। यहा की सामाजिक चेतना भी अन्य आदिवासी इलाकों से कम गही है। आज की सामान्य ग्रामीण सामाजिक चेतना मे कुछ ज्यादा ही है। रसम-रिवाज और जीवनना का मापदंड हिन्दू समाज से भिन्न

भले ही हों, लेकिन जहा तक सामाजिक न्याय की आकांक्षा और शास्य-सम्मान की संलाग, व्यापक दुनिया से सफल, और उसके साथ कदम मिला कर चलने की इच्छा का सवाल है, यह क्षेत्र कतई इस देश के मुख्य ग्रामीण समाज से पीछे नहीं है। अन्य आदिवासी इलाकों की तरह यह देश के मुख्य प्रवाह मे बटा हुआ हुआ भी नहीं है। सनपुडा की तराई का यह इलाका है। भूसावल से मूलतः जाने वाली रेल के किनारे है और शिरपुर से भडोच जाने वाली सडक शहादा से गुजरती है। घरों मे ट्रांसिस्टर कोई फ्राधारण बात नहीं है, इस सामाजिक चेतना का श्रेय केवल विद्युत दो साल से चल रहे आंदोलन की नहीं है। आन्दोलन ने इस बडती हुई चेतना को रूा और गति जरूर दी है। शहादा, तलोदा और अन्य ग्रामीण इलाकों मे एव महत्वपूर्ण अन्तर यह प्रकथ है कि यहा पीडित वर्ग मे निम्नी राशननिक दान का प्रवेश भर तक गही हुआ है।

भर. शहादा तलोदा की परिस्थिति का विश्लेषण इस इलाके का विशेष न मानकर बरना अधिक, लाभदायी होगा। परिस्थिति की सामन्य मानने है तो यह स्पष्ट होगा है कि आज देश मे चलरहे सक्रमणकाल काग का यह एक प्रबल लक्षण है। सक्रमण के बाद जो स्थितिजा निर्मित हो सकती है उसकी सम्भाननाएँ समाज मे पहले से ही दीयने पतनी है। इन सम्भाननाओं मे से कुछ मभावनाएँ देश की परिस्थित और मन-स्थिति से विनायुक्त प्रतिकूल रहती हैं और समाज उमको तुरन्त धरवीकार कर देता है। कुछ सम्भाननाएँ ऐसी होती हैं जो एक हलचल से

पंदा कर देती है और समाज के सदस्यों का समीकरण बदल देती हैं। कुछ सम्भाननाओं का अन्तर बाहरी हलचल के रूप मे विशेष गही हो ग है। लेकिन समाज के अन्तर-करण को प्रभावित कर देती हैं और संकटफाली परिस्थिति मे उस सम्भानना की बार से समाज का पूरा प्रवाह ही एक नया मोड ले लेता है। इन अनेक जाने-भनजाने प्रयोगों से समाज अनेक बडाना रहता है, कभी धीरे-धीरे कभी तेजी से, कभी भटके के साथ। इतिहास, शहादा-तलोदा मे आदिवासियों के लिए हो रहे अर्थेकाम को या पुरपोराम सेना की सफलता-अमफलता को उतना महत्व गही देता जितना शहादा-तलोदा मे जो सम्भाननाएँ प्रकट होगी उनको देता। बारडोली मे सरदार बल्लभ-भाई पटेल ने अघडा संगठन लडा किया था, लेकिन वह संगठन के नाते आज प्रसिद्ध नहीं है, प्रसिद्ध है नमक सत्याग्रह के गर्भ स्थान के नाते। क्योंकि नमक सत्याग्रह ने उस समय की समाज के परिवर्तन के लिए जन-जाति की एक बहूत उपयुक्त साधन बनाया था। उती तरह से नमकसत्याही ने भी मजदूरों और अधीन का अधिकार प्राप्त करवाने की एक सम्भानना प्रकट की, जिसने कुछ समय तक देश मे हलचल मचा दी। शहादा और तलोदा समाज के सामने बीन ती सम्भाननाएँ प्रकट कर रहे हैं—या कर सनें ?

आज के मनाज मे जो सम्भाननाएँ प्रकट हो सकती हैं उाको पहचान लेने से शहादा-तलोदा क्या भूमिगत अड्डा कर सकते हैं उले समझने मे सहायित होगी। आज विश्व ऐसे चौराहे पर लडा है जहा से कुछ हफ्तों को जाने-पहुचने मे निवृत्त है, लेकिन वह ऐसे मार्ग है जिनकी सम्भानना अतीत के लिए अगीम थी, उद्वेगित सामाजिक अन्तर विरोधों को गुलभागे देकर अगे बडने मे बहूत सहायता दी, लेकिन आज की परिस्थिति मे उन सम्भाननाओं की सीमा धा चुकी है। कुछ ऐसे मार्ग है जिनकी उपलब्धियों के बारे मे आज एक प्रम बना हुआ है—एक समय इन मार्गों



विद्योत साहू

शान्त घोर साहूजी, धम्बर सिंह १९६० से ही सामाजिक कार्य में लग गया था। करीब १० साल तक उसने महात्मा जवाहर से लगे पहाड़ी इलाके, चण्डीगढ़ में सर्वोदय संस्थाओं के काम किया। एक समय वह सतपुड़ा सर्वोदय मण्डल का कार्य भी रह चुका है। धारने ही गांव, पञ्जाब में प्रत्याचार के समाचार उसको वापस महात्मा खींच लाये। महात्मा के गांव में घूम-घूमकर भजन घोर बाणों के माध्यम से उनमें लोगों का दिल जीत लिया। लोगों के मनदे सुनाने का धीरे-धीरे कार्य भी शान्त साहब से छूटवाने का अच्छा कार्य बहा होने लगा। २ मई १९७१ को एक भील की हत्या हुआ तो उन्होंने सर्वोदय के लोगो को मदद के लिए बुलाया। महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल के एक वरिष्ठ साथी, गोविन्दराज जिंदे धीरे-धीरे कुछ धन्य साथी एक सप्ताह तक बहा पूने धीरे-धीरे लगे कि बहा काम करना चाहिए। धीरे-धीरे ३० जनवरी १९७२ से जमीनी समस्या लेकर एक धाम्बोलन सडा हो गया। इन धाम्बोलन में धारिवासीयो को एक प्रतिपाली व्यक्ति धम्बर मित्र के रूप में लिया है। धम्बर मित्र धाम्बोलन में लोक-नायक की भूमिका भटा कर रहा है। साथ म धारवासी की बुलन्दी, भाषण देने की शैली जाने के मुझे से उनकी लोकप्रियता बढ़नी जा रही है धीरे-धीरे लोगों में सहामिक्ता बढ़नी जा काम उसके लिए धाम्बोलन हा जाना है। धारने धारने धाम्बोलन में पुनित धोर जमीनदारो को चुनौती देने हुए देव कर धारिवासीयो को धरना छोडा हुआ धाम्बोलनधाम्बोलन धोर प्रतिन काभान वापस मिलना है।

धम्बरसिंह के सट्टोयंग में पूरा स.य. देने वाले १०-१२ कार्यकर्ता हैं। इनमें से २-६ युवक बम्बई, पूना धारि शहरो की छोड़कर समाज परिवर्तन की युन में गांव का कठिन जीवन मस्तो से बिता रहे हैं। ३० जनवरी '७२ से इन युवको का धाम्बोलन प्रारम्भ हुआ। मई ७१ धोर जनवरी ७२ के बीच में गोविन्दराज जिंदे धोर धाम्बोलन सर्वोदय साधियो ने करीब ७० गावो का सर्वेक्षण किया। जिससे वे दूत तरीके पर पडुचे कि जमीनी की समस्या के बारे म कुछ करना चाहिए। सर्वेक्षण के दर-भ्यान यह समझ में धारया कि धारिवासी विद्यने लालो में धरनी बहुत सारो जमीन पर से मानवियन का धारिधार को बँडे है। जितिन राज के समय धारिवासी की सुरक्षा के लिए 'जुनीगत' नाम से प्रतिष्ठ एक बानून था वो धारिवासी की जमीनी की एक बानून रोक लगाना था। स्वराज के बाद जमीनदारो ने धारने स्वार्थ के लिए इन बानून को रद्द करवाया। इनके बाद जब धारिवासीयो की बर्जे के लिए वंते की जरूरत पडी तो जमीनदारो ने उनकी जमीन धारने नाम पर कर ली। जमीनदार बहूते है कि जमीनी के ट्रांसफर के बारे में धारिवासी यागो को मालूम था धोर धाम्बोलनकारियो का बहूना है। धारिवासीयो के धनजाने ही जमीनी क ट्रांसफर हो गया। वे तो समझने थे कि बर्जे जमीन गिरवी रखी जाती थी धोर दो से दस साल का बरार रहता था। बरार की धारिध में जमीनी वापस न मिलने पर जमीनी देवदार के नाम पर ट्रांसफर होनी पई। धोर धाम्बोलनकारियो का दावा है कि कुछ जमीनी सीधे-सादे ठगी गई—जमीनी की धरना बरती में भी जिम जमीनी की धरना-बदली बरती की वह ना की ही नहीं, बल्कि नहीं-बर्ती तो साफ बेदखल कर दिया गया।

धोर, सर्वोदय कार्यकर्तायो ने इन जमीनी का मतवा हन करने के लिए पहल करने का सोचा धोर ३० जनवरी ७२ के दिन इलाके की सब पाटियो की एक बैठक बुलाई। बम्बई धोर पूरा से पत्रकार धोर कुछ युवक भी धारये। इन युवको को बहा पर काम करने के लिए रत जाने का धाम्बोलन किया। धोर धार युवक उसी समय रत गये। कुछ युवा



सन्तोष भारतीयो

बरी उपलब्धिया हुईं, लेकिन धाम्ब नही हो सकी है। इनका साल समाज में सब तक ध्यात नही हुआ है। कुछ ऐसे मार्ग हैं जिनकी मानवताए धाम्ब की परिस्थिति में धरनी हैं, लेकिन उनके धारिधार होने से धाम्ब मानस उन मार्गों को स्वीकार नही कर पा रहा है धीरे-धीरे उन मार्ग पर चलने की हिम्मत बढीर पा रहा है। हर सम्मणपाल की हिम्मत बढीर धार दूरदूरी धारिधारो निरन्तर है जो इन मार्गो पर चल कर समाज का भय दूर करते हैं। महात्मा-जवाहरो के धाम्ब के सामाजिक अनुभव को देखने समयमें पर बहा की धारने की दिशा के बारे में एक अच्छी भन्वर मिलनी है। इन अनुभव को तब करने में तीन बरको का विशेष महत्व है—धारिवासी, जमीनदार धोर मरदार। धारिवासी समाज के बचालन की धोर धार धारोमल के हाथ में है। उस धाम्बोलन के तीन मुख्य घटक हैं—धारिवासी मोक्ष, उनका लोकनायक धम्बर मित्र धोर पूरा समय देने जाने कार्यकर्ता—जिनमें से कुछ तो बहा के ही धोर कुछ युवा, बम्बई, जनसर्ज (महाराष्ट्र) धारि शहरो से धारने हुए हैं। धाम्बोलन का धारधार है धाम्बोलन, धार्याचार धोर मोक्ष का प्रतिधार धोर धारिवासी समाज का उद्धार। धम्बर सिंह मानस ३०-४० वर्ष का महात्मा-जवाहरो की ही निगयो धारिवासी युवक है। स्वभाव से

साथी पत्रिका और प्रचारकारों की रिपोर्टिंग या प्रथम माध्यम से प्रकाशित होकर बाद में इस प्रादोलन के साथ जुड़ गए।

प्रादोलन में जुड़ने के लिए तीन शर्तें हैं—एक: किसी पार्टी के साथ जुड़ने हों, दो: सब मिल कर समस्या का हल करेंगे, तीन: प्रतिसूच साधनों का उपयोग करेंगे।

स्थानीय साधनों के एक शिबिर के बाद ८ फरवरी ७२ से ही सलसाडी गांव से कार्य प्रारंभ हो गया। बातचीत के बाद उस गांव के जमीनदार, प्रादिवसियों की जमीन वापस देने के लिए तैयार हो गये थे। निर्णयों को वाजिब पर लिया हो जा रहा था कि पुलिस की जीप पट्टी की और प्रादिवसियों को भारते लगी तथा भ्रमरसिंह सहित सब कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में तो ८ ही घंटा रहना पड़ा लेकिन इससे भ्रमरवारों में प्रच्छेद प्रसिद्धि मिल गई और प्रादोलन में भी तेजी आई। प्रादोलनकारियों का दावा है कि उन्होंने प्रच तक ३००० से ४००० एकड़ जमीन पर वापस प्रादिवसियों का बक्सा दिलवाया है। जमीन के भलावा भूखंडों की पहले से लेटे से दोगुनी हो गई है, नई नई से कर्ज दिलवाने में मदद की है और गांवों को शराब और भ्रमरालन से मुक्ति वा कार्यक्रम भी उठाया है। महिलाओं में जो जागृति आई है वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस प्रादोलन में कार्यकर्ता का मुख्य दायित्व रहा है लोगों को मोर्चा, सभ्यग्रह, सभा, शिबिर आदि के लिए इकट्ठा करना, लोगों की मसीबतों को मुलभूतने के लिए उनके और सरकार-जमीनदारों की बीच की बड़ी बनना; और प्रादिवसी लेकिन महत्वपूर्ण कार्य—दिशा निर्देश करने का। इनके दिशा निर्देश वा प्रभाव लोकनायक पर भी पड़ता है।

प्रादिवसी समाज वा मुख्य काम जगह-जगह पर इकाइया बनाना, जन शक्ति के प्रदर्शन करना, अपने गिण्टण के लिए मोर्चा, सभा, शिबिर के समय इकट्ठा होना, और प्रादोलन चलाने के लिए चर्चा इकट्ठा करना है। गांवों में तीन प्रकार की इकाइया बनायी जाती हैं—ग्रामिक संगठन, तरुण मंडल और महिला मंडल। प्रादोलन चलाने के कुल खर्च में से ६० प्रतिशत बम्बई—पूना के मित्रों से

मिलता है और ४० प्रतिशत प्रादिवसी इकट्ठा कर लेते हैं।

इस पूरे चिन्तन से यह स्थान प्रायोगिक दिशा-निर्देशन और उसके माध्यम से जो योग्यिष्ठा होता है वह दूरगामी महत्व रखता है। दिशा-निर्देशन वा एक महत्वपूर्ण साधन है शब्द जो भाषण, गोष्ठी, शिबिर, साहित्य, गाने बगैरह के रूप में प्रयुक्त होता है। शहादा-सलोदा में नये समाज वा कोई चित्र प्रस्तुत करने में इन साधनों का उपयोग या तो नहीं ही किया जाता है और जब किया जाता है तो नये समाज के चित्र को गोल मानकर इन साधनों का उपयोग किया जाता है। शब्द-शक्ति के उपयोग के समय मुख्य जोर रहता है प्राज की कठिनाइयों को हल करने पर। जमीन की आवश्यकता है इसलिए जमीन मिलनी चाहिए, रोटी, कपडा मकान आदि की व्यवस्था करने में दिवतत धाती है इसलिए भूखंडों बढनी चाहिए, प्रादि-प्रादि। इन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए नया समाज सडा करने की प्रक्रिया पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। आवश्यकता की पूर्ति करने के तरीके भी परंपरागत है और कोई नई सामाजिक व्यवस्था कायम करने में साधक होने के बजाय इस देश को लाल रही व्यवस्था को ही मजबूत करते हैं। शहादा-सलोदा के सीमित सदर में जरूर अन्तर धाता दिलाई देता है। जमीनदार समाज के सामने, मायें प्रस्तुत करने का काम प्रादोलन का एक मुख्य कार्यक्रम है। इन मागों पर फिर बातचीत होती है जिसके लिए प्रादिवसी और जमीनदार की शक्ति वा धामने-सामने धाती है। दोनों की सगठित शक्ति वा और कानून ही प्रादिवसी निर्णय की प्रक्रिया में प्रमुख रहते हैं। प्रादोलन का इसके भलावा किसी व्यापक सदर में जमीनदार वर्ग से सार्क नगण्य ही रहता है। समस्याओं को हल करने में सरवार के प्राधार वा व्यापक जोर रहता है। कार्यकर्ता, प्राज के समाज में सरकार का जो रोल है उसको ठीक ही मानते हैं। उन्हें शिरावण इसी की है कि सरकार उस रोल को ठीक से धरा नहीं कर रही है और युव के वे सर-वारी व्यवस्था से ठीक से काम करवाने के लिए स्वयं नियुक्त पुलिस मैन जमा मानते हैं। राधेय में यह कहा जा सकता है कि यह प्रादोलन, प्रादिवसी जमीनदार और सरवार

के बीच के सबब कानूनी प्राधार पर तथा कार्यकर्ता के सहारे ठीक करने वा प्रच्छेद प्रयत्न कर रहा है। पुलिस मजदूरी के प्रभो को छुने के भलावा जमीन का भलावा, नैतिक उखान, सरवार और भ्रमरालन से मुक्ति और बैंक से कर्ज दिववाने वा कार्य भी प्रादोलन के माफत से हो रहा है।

कुमार और प्रवाग दोनों बम्बई में इजी-नियर थे। दोनों में प्राज के समाज के प्रति प्राक्रोश और प्रादिवसी समाज की श्रवस्था के प्रति करुणा है। यह विद्रोह और बरुणा दोनों की, बम्बई के सुरक्षित मुल और सुविधा से मुक्ति दिलवा कर इन गांवों की भूल में घुमा रही है। वे एक नई मस्ती का अनुभव कर रहे हैं। इनकी धातो और क्षेत्र के कार्य से यही एहसास होता है कि इनके साधों-समूह की विद्रोह और बरुणा भावना को कान्ति भावना में परिवर्तित होना श्रभी भी शेष है। और यही कारण है कि प्रादोलन का दिशा-निर्देशन प्राज की तात्कालिक समस्याओं को हल करने में व्यस्त है, पर इसके साथ-साथ नये समाज वा चिन्तन प्रस्तुत करने में तथा उसकी रचना से बनजार है।

प्रादोलन ने एक बडा काम जो यह किया है कि बहुके जमीनदारों को उननी प्रगाढ निद्रा से बहक्योर दिया है। वे भयभीत हो गये हैं, लेकिन पवरा नहीं गये हैं, वे परि-स्थिति को वापस धामने हाथ में लेने में लगे हैं। शहादा-सलोदा में जाने ही जमीनदारों वा धामपस में बितना मजबूत सगठन है वह समय में जा जाता है। वे केवल सगठित ही नहीं, चतुर भी हैं। समय की हवा पहचान कर उन्होंने धामने तीर, तारीको और प्रादरों को बदल दिया है। सगता है कि बम्बई के व्यापारी और उद्योगपतियों की मजदूरी के सगठन के साथ व्यवहार करने की जो कौशल-संज्ञा है उसे वे धामनाने लगे हैं। उन्होंने घोडे, मोटर-साइकिल और जीप से सगठन सगठन खानगी सेना बनाने की योजना की भूल जरूर की, लेकिन उस भूल से सबब लेकर प्रादिवसियों को नियंत्रण में रखने के लिए वे नये तरीके ढूँढ लें तो कोई श्राश्चर्य नहीं होगा। श्रमरसिंह और कार्यकर्ताओं के बारे में या तो वे ईमानदारी में मानते हैं या बेबन

प्रकार करते हैं कि वे लोग छपे नमनवादी हैं और सर्वोपयोग के मुखे पहले हुए हैं।

गहारा-तलोदा के धार के इस सामाजिक चित्र से दो स्थितियों के प्रकट होने की परिधि सम्भावना दी जाती है। एक स्थिति तो यह मा सक्ती है कि दोनों धारों के बीच में सवाद बन्द सा हो जाय, धारक फेन जाय और नमनवादी से जो प्रक्रिया शुरू हुई पी उबरी पुन बल मिले। यदि पूरे देश में इस तरह ही धारक की स्थिति फैलती है तब ही गहारा-तलोदा में यह स्थिति टिक सकेगी। परन्तु यदि पूरे देश में ऐसी स्थिति फैलती है तो सावाद उसना अन विवेकहीन धरातलवादावाद होगा। परन्तु कि यह धारातलवादाद विवेकहीन होगा इसलिए टिक नहीं सकेगा और इसका पावदा उठाके देगी या विदेशी ताताग्राही पानेगी। इस ताताग्राही में से एक निम्नलिखित ताताधारी वर्ग का भी निर्माण होगा।

धारक की यह परिस्थिति तभी प्रायेणो जब धारक का धारक वर्ग वैवर्क की बरे और धारके दोष-नेच मन्तव्य से श्रेते। तन्मतवादा की हलचल के बाद वेतल की गेद इस धारक-वर्ग के हाथ में मा गई है और धारकवर्ग ने बहुत ही कुशलता से गेद का धारके हाथ में रखा है। धारक स्वर पर इस कुशलता का उदाहरण है इन्दियाजी का 'गरीबी हटाओ' का नारा और गहारा-तलोदा में इसका उदाहरण है धारिवाचियों की धारों की उपेक्षा न करना, बलिबूने हुए धारिवाचियों को कर्म धारिद दिखाने की पहल भी करना। ग्यदा सम्भवतः इसी बात की है कि धारक वर्ग धारकारी से मेल-मेल कर गेद प्राणे हाथ में लेगा तथा धारक और धारक का स्वरक बन्द कर जनता को धार फेले में धारक जायेगा। यह बन्दन हुआ स्वक भागत स्वर पर जो होया सो होगा लेकिन गहारा-तलोदा धार देश के धार धारोए इलाकों में इसका धारक लेनी में धारारिक मूल्य प्रायेण करवले का होगा। अधीनधार धार लेनीहर मरदूर के कवच धिन-मन्निन धार धिन-मरदूर के मपान हो जाये धार इन सबधों की तलाश रदिक बनाये धारके के निम्न दोष की बड़ियों का निर्धार होगा। मरदूर मरदूरों के नेगा, धारस्वरक वर्ग धार धारक के रूप में धारकारी

मशीनरी—यह होया इन बड़ियों के निर्धार का स्वरूप। ये बड़िया मीरग्राही, उद्योग धार लेनी—तीनों जगह बल एवच करती है। तीनों धारिबनों के इकट्ठा होने से धारक-धारक का एक नया वर्ग बडा हो जायेगा जिसने पुराने धारक-धारक वर्ग के कुछ लोग बने रहेंगे और लेप नये धारोए। धारक-धारक के यह नये तरीके धारक के तरीके से ज्यादा गहरी जड़े जमा सक्ते हैं। धारक पुराने तरीके का किसी भी धारक मान्यता नहीं रही है। नये तरीके का तरे मुक्ति धारक के रूप में स्थापन किया जाता है। स्थिति धारके धरिन्म धार पर नहीं भी जाती है तब भी इस दिशा में एक नया सन्तुलन बनने की सम्भावना सम्भव है।

यह दोनों सम्भावनाए पहले धारक से ताताग्राही धार धारकी सम्भोता से नये धारक धारक वर्ग के निर्माण की धार के धारक समाज (गहारा धार तलोदा दोनो) में ज्यादा दीवली है। यह दोनों सम्भवतः धारक धारक के सबधों की जगह पर कई नये सबध का निर्माण नहीं करती है, केवल इन सबधों के नये रूप धार सन्तुलन सामने आती है।

यदि इन दोनों में से कोई एक सम्भावना प्रकट होती है तो धारक से धार हुए धारकों को समर्थ-भावना धार मेहनत का पूरा लाभ समाज को नहीं मिलेगा। समाज को धारके ही ऐसे धारक मिलते हैं इसलिए इन धारकों पर बहुत बडा धारिक धार आता है। इस धारिक को निभाने के लिए इन धारकों को सबधों के श्रेते नये धारक सामने का प्रयास करना चाहिए जिससे धारक धारक धारक धारक की सम्भावना प्रकट हो। यह धारक मरल नहीं है। धारिबिन धारों की डटोलना पड़ेगा और धारक की तरफ से धारक धारिबिन किये जाने की तैयारी करनी पड़ेगी और धारके से ज्यादा धारक 'हम कुछ नहीं कर रहे हैं' ऐसी भावना में बचता पड़ेगा। बहुत सम्भव है कि नये धारों की तलाश में इन धारकों को धारकी धारक की 'कर्ता' की भूमिका धारकी पड़े। ऐसे समय पर धारक का प्रहार मेलना मुक्ति बल भरता है। पर धारकों का साहस दिख कर उभरना होता है कि धारके के खुला दिमाग सखी धार धारक की ऐसी तीव्र लगे हुए धारके सखियों के धारक से देखते रहेंगे तो समाज को धारके के धारक धारके से मुक्त कराता कर एक नये धारक पर ले जा में इनका बहुत ही बडा योगदान रहेगा।

शुल्क वृद्धि को सूचना

कागज की कीमतों धार मुद्रण की दरों में हात ही में असामान्य वृद्धि होने के कारण 'भूदान-पत्र' का सागत खर्च अत्यधिक बढ़ गया है। इस स्थिति में पत्र का प्रकाशन बहुत कठिन हो गया है और हम न चाहते हुए भी इस बड़े हुए खर्च को प्राणिक पूर्ति के लिए पत्र का मूल्य बढ़ाने को विवश हो गये हैं। मूल्य ७ जनवरी '७४ के धक से एक प्रति का मूल्य २५ पैसे में स्थान पर ३० पैसे तथा धारिक शुल्क १२ ६० के स्थान पर १५ ६० कर दिया गया है। इसी प्रकार हम सफेद कागज पर धक का प्रकाशन भी दन्द कर रहे हैं। जनवरी के धक से पूर्ण 'भूदान-पत्र' मूज्युधित पर ही प्रकाशन हुआ करेगा।

हमें धारा है कि पाठकगण हमारी विवशता को समझेंगे और मूल्य में की जा रही इस अनिवार्य वृद्धि को किसी प्रकार धरनया न लेते हुए पूर्ववत् पत्र के प्रति धरना सीद्धाई धार रहेत बनाये रखेंगे।

बापा, बापू से भी दो कदम आगे थे

—रामगोपाल त्यागी

१६ जनवरी ठरकर बापा की जयन्ती निधि है। मन में आज उनकी याद का उमर घाना भेरे लिए बटन स्वाभाविक है। मैं बापा के सान्निध्य में उमर समय पढ़ा था जब वे लगभग मस्तर वर्ष के हो चुके थे। परन्तु उस समय भी वे इतना काम करते थे कि हम सब लोग उमे देकर मन ही मन लज्जित होते रहते थे। गोस्वामी तुलसीदास ने भरत की जो महिमा गायी है और उसमें धादर का जो स्तर है, उसे रामभक्त भी ऐसा कुछ मानते हैं मानो तुलसीदासजी के मन में किसी न किसी वान की हृद तक भरत के प्रति राम से भी अधिक श्रद्धा थी। इसी प्रकार जिन्होंने ठरकर बापा के साथ काम किया है उनके मन में भी कभी न कभी ऐसी प्रतीति हुई है कि बापा, बापू से भी दो कदम आगे थे। स्वयं बापू ने बापा की सत्तरवीं वर्षगांठ पर कहा था कि मैं अपना जीवन बापा की तरह समर्पण जीवन बनाया चाहता हूँ।" सदातर वृत्तभ-भार्ये पटेम उन्हे 'अनमोल हीरा' और नेहृज्जी उन्हे सदा ही व्यक्ति नहीं 'संस्था' कहा करते थे। भारत को ससद के जन्म कहे जाने वाले दादा साहेब मानलकर तो उन्हे सेवा के क्षेप में अपना गुरु ही मानते थे। दादा साहेब मानलकर पहले कर्नाटक करते थे; बापा ने ही उनसे कर्नाटक छोड़कर उन्हे सार्वजनिक क्षेत्र में दीक्षित किया था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति 'देश रत्न' और 'भारत रत्न' डा० राजेन्द्र प्रसाद तो उनके प्रति इनकी प्रशंसा थडा रखते थे कि जब वे राष्ट्रपति चुने गये तो राजपाट पर गांधीजी की समाधि पर माला चढ़ाने के बाद सीधे हरिजन निवास में बापा के पास पहुंचे और उन्हे प्रणाम करके आशीर्वाद माँगा, 'पूज्य बापा! मुझे आशीर्वाद दें कि मैं इस बड़ी जिम्मेदारी को निभा सकूँ।' इस समय बापा और राजेन्द्र यात्रु दोनों के नेत्र सज्जन हो गये। जिन्होंने भी वह दृश्य देखा है, वे उसे भूल नहीं सकते। महात्मा गांधी ने अपने सती रचनात्मक कार्य प्रारम्भ करते समय अन्य बहुधाचारियों के

निवास बापा से भी सदा सलाह ली। यो वारा न कार्य से के सदस्य थे और न बापू के प्राथम-वानी ही, वे तो गोखले जी द्वारा स्वयंभ सवेंट ब्राँफ इण्डिया सोसायटी के प्राचीन सदस्य और उपाध्यक्ष थे तथा राजनीति से प्रलग रहकर निष्ठापूर्वक सामाजिक सेवा को ही अपना क्षेत्र मानते थे। अग्रज, बाड, मुवा, साम्प्रदायिक दगे—'जिमी भी प्रकार की कठिन परिस्थिति में बापा बापू के शब्दों में, 'गृह वेग' से दोड कर पडुव जाते से।

बापा बापू के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले से प्रेरणा लेकर बम्बई में इन्फो-नियर का पत्र छोड कर सर्वोच्च ब्राँफ इण्डिया के नियमानुसार ४५ रुपये मासिक पर पंतालीस वर्ष की अस्था में सेवा के लिए चले गये थे। कुछ लोगों ने उस समय यह कहा था कि जो व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश उपयोगी भाग सरकारी नौकरी में लगा चुका है वह अब यहा आकर क्या सेवा करेगा, परन्तु गोखले जी ने कहा, 'सच मेम्सस विल यो लखरड आन धरर सोमायटी।' अनुप्य हगी ररने के पारखी श्री गोखले के शब्दों को बापा ने अपनी सेवा, निष्ठा, प्रायासिकाता और परिश्रम से प्रसरण सिद्ध कर दिया था।

जंसा कि मैंने ऊपर कहा है, मैं जब उनके चरणी में पहुँचा तब वे लगभग सत्तर वर्ष के हो चुके थे। परन्तु उस उम्र में भी वे छ वने मुवह से लेकर रात के दम और कभी-कभी ग्यारह बजे तक निरन्तर काम करते रहने थे। स्नान और भोजन के समय भी वे लोगों को बुलाकर उनसे काम-धाम की वार्ने करते रहते थे। दिन में कभी विश्राम नहीं लेते थे। कभी बहुत ही थक गये तो घटा प्राप घटा लेट गये किन्तु काम तब भी बन्द नहीं हुआ। आँखें बन्द करके उस समय भी या सो कोई रिपोर्ट सुनते थे या सहायक को पत्र लिखते थे। कार्यालय का समय समाप्त हो जाने के बाद भी वे कभी ६ और कभी ७ बजे तक उठने का नाम नहीं लेते थे—हम तपानचियन नवयुवक कर्मचारियों की भुम्माहट होती

और गृहस्थियों को तो इतने कष्ट ही होता था। उन समय बापा पक्वतर वर्ष के हो चुके थे, किन्तु उनका काम घन्टे के बजाय वडना ही जाता था। प्राखों से कम दिखाई देने लगा था, किन्तु उनका काम बडना जा रहा था और उनके साथ दूसरों का भी। हरिजन निवास की महिलाएँ सोचने लगी कि क्या करें? एक दिन श्रीमती पद्मा शिवम् हरिजन निवास की महिलाओं का एक शिष्ट मडल लेकर बापा के निवास पर जा पहुँची। शिवम् जी पहले बापा के साथ ही रहते थे और बापा उन्हे पुत्रवत मानते थे, इसलिए श्रीमती शिवम् बापा से निस्संकोच बात कर लेती थी। श्रीमती पद्मा शिवम् ने बापा से कहा कि प्राप पाच बजे के बजाय रात सात बजे तक दफनर चलाने है। प्रापके सभी कर्मचारी बालबच्चेदार है। उन्हे परिचार के भी कई काम होते हैं, प्राच-सकरी और पर का सोडा के बच जायें? प्रापको तो इन बातों से कोई बास्ता नहीं? प्रापका सब काम तो नौर कर देता है।" बापा ने उस दिन की आरटी डायरी में लिखा, 'आज पद्मा के नेतृत्व में हरिजन निवास की महिलाओं का शिष्टमडल मिलने प्राया। पद्मा ने मुझे खूब सताडा और कहा कि 'बुद्धिया साथ होंगी तो पना चलता कि गृहस्थों बंसे चलती है।' मैंने उसकी बातों को हसकर भेल लिया और सबको सुन करके बापाम भेजा।"

एक समय तान बने से दस घंटे तक मेरी इट्टी उनके साथ काम करने के लिए लगायी गयी। समाचार पडना नीस रिपोर्ट पडकर सुनाना, पत्रों के उत्तर लिखना आदि काम तभी से शुरू हो जाते थे। फिर १० से ११ बजे तक स्नान-भोजन करके वे मुझमें भी पहले ११ बजे दफनर में पहुँच जाते। काम को दफनर के बाद मेरे ही जिले मुरादाबाद के श्री रामचरणदास दम बजे रात तक उनके साथ काम करते थे। एक बार रामचरणदास कुछ दिनों की छुट्टी पर गये और दस उनकी (शेष पृष्ठ १४ पर)

टिप्पणी : विगत वर्ष

सन् १९७३ देन की आन्तरिक स्थिति की दृष्टि, से बहुत बन्धक वर्ष रहा। अना-वृष्टि, अनेकवृष्टि और फलस्रक्क बरान, बाढ़ें, महौषाई, सरकारी और गैर सरकारी सभी धंधों में बंद और हड़तालों के कारण अन्नसहा तथा उत्पादन में कमी, बैरोजगारी और भूखमरी, प्राये दिन की चिन्तनी रही। भारत इन सब मनसहाओं को हल करने में सफल रहा, ऐसा कहना कठिन है। गेहूँ के उत्पादन का राष्ट्रीकरण करके जहाँ उजवा एह दावा है कि उमने लोगों की व्यापक धंधों में प्रायः पूर्णतःकार राहने पहुँचाई, वहा सर्व-साधारण का इनाम है कि इवके कारण अन्न के अभाव से सम्बन्धित सरकारी धंधों में अष्टाचार और उनसे सम्बन्धित मार्जिनिक धंधों में तलकरी और कानाबाजार पयने। चीनी, तेल, कोयला जसो रोजमर्रा की जरूरत की चीजें वर्ष के अधिकांश हिस्से में खुले बाजार से सवभय सायक रही, और विजली और धान साधनों से प्रायः होने वाली अर्जा की कमी के कारण केवल कम-आरखाओं के उत्पादन पर ही फर्क नही पडा परने पर प्रायी हुई फयलें कमजोर यटां तन कि निरर्थक ही रही।

सोचो ने इन सब अभावों का बहादुरीसे मुआवना किया, दूसरे जितनी भी देन में इनाम कम हो-हलता जिये वगैर इतने बडे-बडे अभावों को हल करने की बान की बलना कठिन है। भारत के लोगों को अभावों से रहने की आशा है, ये यह सब बर्दाश्त कर रहे। इन सब अभावों के शासन के मन में यह एक निवार अकर उत्पन्न किया है कि भारत को धनी बन बरखाय अने डक की बनानी चाहिए। उने बन्धुओं के उत्पादन में बडे-बडे बल आरखाओं की जगह दुखीर उद्योग बनाने चाहिए और उसी तरह बेरो, पम्पुआन आदि की दिका में भी दुआरे डक में ही सुधार करके बनने की अन्न सोचनी चाहिए। आधुनिक आर की कमी के अरन में प्रधानमन्त्री ने मोतारके के गुणों का जो बयान किया और टैक्टर आदि की जगह

अपने ही पम्पुआन का उपयोग करने की बात कही, यह इत बात की और इशारा है कि लाघारी से ही कमी न हो अधिकतम देसों के लोगों को दुआरे टक के सतोपप्रद रहने-तहने से जहाँ-तहाँ आधुनिक की मदद लेकर साधारण आराम से मानवीय मूल्यों और आत्मसम्मान की रखा करके रहना अधिक उपयोगी और व्यावहारिक लगने लगा है। पिछले वर्ष भर बार-बार इय सिलसिले में हमारे देन में ही नही विकसित देसों में भी चीन का उदाहरण देकर यह बात बही जाती थी कि विनासिता और पदायं बहुलता के बीच जीने की इच्छा अलतोपला सारे सतार के लिए बन्धकारक सिद्ध होगी। अल्टो मुआवना में तो एक पूरी किलाय ही इत बात को लेकर लिखी कि अनास्रक्क उत्पादन की पायल डोड की छोडकर स्वच्छा के साथ समय का पालन करते हुए नितान्त आरव्यक बन्धुओं का व्यवहार करना और जीवन को हार्दिक गुणों से सम्पन्न बनाना ही सच्चा जीवन है। उनसे बहा धाज की दुनिया में विमुलता बहा है ? अकरत से ज्यादा उत्पादन जरूर है, मगर वह तो आदमी को हाना एक अहृशित चीज है। उसका समय, धम, अहृशित और संसे से कोई सम्बन्ध नही है। अहृशित के निरीक्षणमात्र से विमुलता प्राय हो जाती है। तथापि हने मानना चाहिए कि हमारे देन में पिछला वर्ष पसीसे में नही, आदि में चिन्ताया है। आदि, अरुनिक आर, राहुड को चीन और ही बनाया है, ऊार नही उडता। हम मानसि रूप से पिछले वर्ष दुनी अस्था में रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, हमारे देन में पिछले वर्ष कई इटियों से उन्भि की दिका में पान बर्राये, ऐसा कह सकते हैं। जैसे सिमला समझौते के कारण पाकिस्तान के साथ हमारे सम्बन्ध सुधरे। अरने के पाकिस्तान ने इयने जंगा चाहिए अंग महुवांग नही दिया, तथापि हमारी प्रधानमन्त्री ने बही मूम-मूम के साथ काम किया और सम्बन्धों

को अधिक खराब नही होने दिया। ये ऊन्हे बल्लारुप्रद दिका में ही ले जाने के लिए कठिबड रही और उनका पाकिस्तान पर भी प्रभाव पडा। नेपाल के साथ हमारे सम्बन्ध सुधरे। मूटान, अरपागानितान और ईराक के साथ तो सुधरे हुए थे ही, ये और भी सुधरे। अर्मा से भी सुधरे। अगनादेश से हमारी मित्रता इड से दुइतर होती बली गई और एक ऐसे समय जब अमेरिका से हमारे सम्बन्ध काफी सराब हो गये थे, हम के साथ हमारे प्रायने सम्बन्धों का और भी व्यापक और गहवा बनया और इन प्रकार एक ऐसी बली नै जब सारे अमार में यह बात फँताई जा रही थी कि हम अकेले और निरहून है, हमने अरिण का अनुभव किया। यह अलय बात है कि रूस और अमेरिका ने भी इत चीज प्राये सम्बन्ध बने किये हैं और कुल मिलाकर यह बात अधिकतम साक होती जा रही है कि भारी दुनिया के दो-बडे देस अच सवने पहने अनी ही बाा सोचने हैं, मित्रता स-जगद शीम्य दरजे की चीज है। अरत और इनायल के युड न इते दिन की तरह साफ कर दिया है, सो इगके पहने भी अमेरिका ने चीन से दोस्ती का अधिक आरव्यक मानवक तापवाजनी और से मुह मोड लिया था। अर इनायल युड के बाद तो तेल की आर से सारे सोरोष को उपाडा कर दिया है। साथ अरत देसों के प्रति हमारी मद्भावना तेल में मायने में हमारे लिए अरिण में आभार अहरे-अनी तक तो ऐसा युड हुआ नही है मगर शीष बीच में इन अरार की मूअन प्राती रहती है कि अरत देस भारत के बा में दूसरी तरह से शीष रहे हैं।

भारत के सामने तीन मुख्य मस्यारा हैं एक तो अनी रात्रनीतिक स्वतंत्रता को अह स्वतंत्रता में बदलना अर्थात् मुआरिपेट अर आर आरतनिक अरखाओं से ऊार उडकर सो के जीवन को सवोय से जी सकते साथ बनाना। दो आरपायन के पसीसी देसों मद्भावना का आनाबरण बनाना और अ-

घरने ही देशवासियों के मनमें त्वाय, बलिदान और एतना की भावना पैदा करना। पहला उद्देश्य भारी भरकम योजनाओं का मोह छोड़कर गांधीजी के बतयै हुए रास्ते से हल किया जा सकता है। यद्यपि पंचवर्षीय योजनामें इमरा कोई बड़ा इमारा नहीं मिलना तथापि प्रधानमंत्री का बीच-बीच में संव्यास और पवनार जाना इस बात का चोखक है कि वे इस दिशा में भी मोच रही हैं। दूसरी बात की हद तक बीच को छोड़ दिया जाय तो हम बहुत हद तक सफल हो गये हैं। श्रीर तीसरी बात पर प्रधानमंत्री ने अपने नये बर्ष के भाषण में काफी जोर दिया है। यह तीसरी बात प्रधानमंत्री स्वयं भी, जिन विशेषों को उठाने या गिराने की प्रवृत्ति को समाप्त करके बढ़ा सक्ने में समर्थ हैं। हर राष्ट्रीय मसले पर राष्ट्रीय दृष्टि से विचार होना चाहिए सत्ता-कूट दल के दृष्टिकोण से नहीं। यदि इतना होने लगे तो पिछले वर्ष की आन्तरिक घनेक आपत्तियों को हल निकल आयेंगे। आन्तरिक समस्याओं के हल को निकलने पर अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां तो कम होने ही लगती हैं। निराशाओं के बीच में आशा करने का हक सबको है हम नये बरस के बारे में ऐसी ही आशा व्यक्त करना चाहते हैं।

५० प्र० १०

(पृष्ठ ६ का शेष)

पवते निवट रहने वाले आदमी का वन पंदा पर हक हो, अपने हित के लिए, स्वार्थ ल लिए नहीं।

पेठ बट जाने वा दुषद समाचार फेलाते १५ दिसम्बर को सीतापुर गांव से फाटा तक २५ निर्जोमीटर लम्बी रैली निकली। ध्वजा चिको आन्दोलन के जनक-स्थान गोपे-वर में भी रामपुर में पेठ बटने की जलन-शिरी मट्टनी, बहुरा से सर्वोदय कार्यकर्ता प्रिप्रपाद भट्ट और उनके साथ ४ महिलायें रामपुर आयीं। २५ दिसम्बर को फिर ५०० लोगों का प्रदर्शन हुआ। इस बार इसमें अग्निम गाय त्रिजुगीनारायण के रसमिना को बजरठे थे (रसमिना एक बाघ है जो अग्निमा या फिर किसी विशेष ध्वमर पर ही जाया जाता है) २६ को गोपेखर से घावी ३२ औरतो ने गार-गार जाकर औरतो से लचीव की। औरतो का बहना का नि उन्हे

इस वननीति से सबसे ज्यादा तन्वीक है, उन्हे ही जंगल में भेड़ो के लिए पत्नी, प्राण के लिए लखड़ी आदि बटोरने जाना पड़ता है। वनरक्षा उनसे बुरा ब्याहरी बरते हैं। सभी रखन तो कभी जुमोना देना पड़ता है। कभी रक्षक शोध में आ कर उनकी दरानी तोड़ देना है। औरतो द्वारा गाये जाने वाले अधिकांश लोकगीतों में पारोला (प्रायियों की रसा करने वाला-फोरिस्ट गाई) प्रायः रातनायक की तरह ही पेश किया जाता है। औरतो को सपठिन करने गंगेश्वर से जो चार औरतें घायी उनमें भीमनी श्यामा-देवी भट्ट ७० वर्ष की थी। ३० दिसम्बर को श्यामा देवी भट्ट की श्रद्धांशना में ५० औरतो की सभा रामपुर में हुई। सबर लगी थी कि इस दिन चमोनी जिला मजिस्ट्रेट रामपुर जाने वाले हैं। औरतें वननीति के वारोंमें अपनी तनलीकें मजिस्ट्रेट महोदय को सुनाने के लिए उनका इतनाकर करती रही। लेकिन किसी कारण से वे उस दिन आ नहीं पाये।

एक नई वननीति के लिए पिछले साल शुरू हुए इस चिपको आन्दोलन में अभी तक वित्तों की पेठ से चिपक कर उसको रक्षा करने की उकलत नहीं पड़ी है। पेठों के कट जाने पर, फिर भी वननीति द्वारा उनकी न ल जाने से इस आंदोलन ने एक विजय पाई है। आन्दोलन की शुभधान उत्तरासष्ट के काम कर रहे सर्वोदय कार्यकर्ताओं के रचनात्मक कामों के बाद उनमें सरकारी नीति के कारण घाले वाली खा-वटो से हुई थी। आन्दोलन सर्वोदय कार्यकर्ता से शुरू हुआ लेकिन धब बह लोगों में फैल गया है। चमोली जिले के कुछ गावों में लोगों में इस परिवर्तन की आकांक्षा फैल चुकी है। इस बार रामपुर में जो भी हुआ उसमें उत्तरासष्ट के कोई भी सर्वोदय कार्यकर्ता उपस्थित नहीं हो पाये, कुछ सबर देरी से मिलने के कारण तो बच अन्यत्र व्यस्त रहने के कारण। गांव वालों में विना किसी नेता के आन्दोलन चलया। वेदार सिंह रावठ का बहना है कि यहा हर डिब्बा एजिन के साथ तैयार हुआ है। यदि यह नहीं होना तो हम सब टिब्बे किसी एक एजिन के चलने से ही चलते उसके टाप होने से टाप रहते।

(पृष्ठ १२ का शेष)

जगह रात को भी मेरी ही झुपुटी लग गयी। मेरा स्वभाव बिजार्थी जीवन से ही जल्दी सोने और जल्दी उठने का रहा है। धब भी मैं आठ बजे सो जाता और तीन बजे सुबह उठता हू। बापा के साथ काम करते हुए श्री आदत के अनुसार मुझे आठ बजे से नींद रखाने लगती। नौ बजे के बाद तो भावें सोने रतना मुश्किल हो जाता, तब बापा कहते, "जामो, तब पर जाकर ठंडे पानी से मुह धोकर आओ, नींद भाग जायेगी।" रामचरण दास कोई दम दिन छुट्टी पर रहे। जब वे लौट कर आये तो बापा ने मुझसे कहा, "त्यागी, तुमने एक गरासिया की तरह काम किया। जानते हो गरासिया कौन होता है? गुजरात में गरासिया राजपरिवार के स्थानिक को बहने हैं। अगर राजा अपने परिवार के आदमी से ही बेगार लेने लगे तो वह उस प्रकार काम करता है जैसा तुमने रामचरण के छुट्टी जाने पर किया।"

भाई रामचरण, जिवन् श्यामलाल जी धादि निरसन्देह मुझसे अधिक निष्ठा से काम करते थे, मगर बापा ने मुझे सर्वेभ श्याम किया। बापा अपने सहायकों को वेतन-भोगी कार्यकारी नहीं समझते थे, बलिक परिवार के सदस्य के रूप में देखते थे। कभी कोई बीमार हो जाता तो दस्तर जाते समय और घर लौटते समय उस देखने जाते। कभी-कभी साथ में डाकट या बंद भी होता। एकाध बार भ्राना मोटा बैन रोगी को दिखाकर बट्टे कि बल तक टीक नहीं हुए तो इग बैन से खबर लूंगा।

एक बार मुझे उडीमा के प्रादिवामी क्षेत्र से लोडन पर मलेरिया में घर दबाया। जब १०४ डिग्री से भी ज्यादा आता था। बापा अम्सी वर्ष की अवस्था में भी रात भर मेरी साट के पास बुर्सी डालकर बंटे रहते थे। पेशाब करने उठना तो स्वयं पकड़ कर सहारा देते। जब एक हृष्य को दाद बरना हू तो आज भी मन भर जाता है। वे जैसा बल कर काम लेते थे, वैसा ही स्नेह और प्यार भी सुटाने थे।

समाचार

× शान्ति-दिवस तथा गांधी स्मृति के लिए एक वसंत की भीमन के मांति दिवस मिलने के नयार चिये गये हैं। श्रमिय राशि भेजकर या जे. पी. पी. द्वारा ६० भा० शान्ति सेना (प्लस, राजघाट, वाराणसी २२१००१ से बरने प्राप्त चिये जा सवने हैं।

(पृष्ठ २ वा शेष)

गीमती इन्दिरा गांधी का स्वयं मिलने जाना गीर उनगे भरती मिनट तक बाज करना भारतीय परम्परा और वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थिति के गर्दन में धर्यवान है। इन्दिराजी के मन जिनकी राजनीतिक शक्ति आज है और नवी सरकार के हाथों में जिनकी श्रापित ता हैं उनकी शायद किसी भी प्रथम मन्त्री हूष में कभी नहीं रही। इसलिए वे सगठित ज्यसक्ति की श्रद्धी प्रतीक है और राज्य-सक्ति की प्रतीक का लोकसक्ति के अर्थता से जनजीन करना देश के लिए शुभ संकेत है। नवी बरने ने तो कहा ही है कि बहुत से रक्ष्यों पर इन्दिरा जी की उनसे एक राय ही और सरकार की और से होने बाने

× संवर्धित सुत्रों के अनुसार उत्तर प्रदेशमें श्राचार्य विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन के प्रतर्गत ५ लाख ३६ हजार ६ एकाड भूमि भूदान में मिली है एवं भूदानकर्ताओं की संख्या ३०,२६७ है। जाचने परघाट ८७,२७३ एकाड भूमि वारिज कर देनी पडी है।

उत्तर प्रदेश में प्राप्त भूदान में से २ लाख २३ हजार १६५ एकाड भूमि ७७,१४३ भूमि-

सामजिक कार्य और सर्वोदय विचार में उत्तम सम्पर्क हो सकेगा। इन्दिरा जी ने कहा कि गांधी-विमोचन जैसे दृष्टांतों को घासानी से समझा नहीं जाता और इन लोगों के विचारों का सम्मान प्राण प्राणें वाली पीढ़ियाँ करेंगी। इन्दिरा जीने यह भी कहा कि उनमें विनोबाजी से चर्चा करके प्रेरणा मिलती है। हमें आशा है कि इन्दिरा जी इस प्रेरणा को वाच्यरूप में बदलने की कोशिश करेंगी।

फिर भी एक सवाल उठता ही है। गांधी और विनोबा को शान्दिक भोग दिखनेडी अर्थात्तवित्त इस देश में कोई कम नहीं श्रापित हो गयी है। सरकार, राजनीतिक पार्टियाँ और लोग अकार ही उनका नाम लेते हैं और ऐसा मानने वाली भी भी कभी नहीं है कि देज

हीन परिवारों में वितरित की गई है। सभी धादाताओं को पक्के पट्टे भी दिये गए हैं और धादाताओं के नाम भूमि का विधिवत नामान्तरण भी हुआ है।

यह उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश भूदान यज बोर्ड ने भूदान किसानों के सात गांव भी बसाये हैं।

की वर्तमान स्थिति का कारण यह है कि हमने गांधी को बुरा दिया और विनोबा की नसीब। यह सही हो सकता है कि प्राणें वाली पीढ़ियाँ इन दृष्टांतों को समझेंगी और उनके विचारों पर प्रमल करेंगी। लेकिन ये पीढ़ियाँ यह भी पढ़ेंगी और जानेंगी कि उन लोगों ने क्या किया जो गांधी और विनोबा का नाम लेते थे। महापुरुषों को अर्थात्तवित्त चढ़ाना घासमान है क्योंकि यह कुछ हद तक हमारे कर्मों से उत्पन्न होने वाले अपराध भाव से दूर्यं चलाया है। लेकिन इन्दिरात प्रयवा कालपुरुष सह-सुत्रिय से निर्णय नहीं करता। वह कथनी को नहीं सुनना करनी को जाचना है और उली के अनुसार फंसता देता है।

दि हमने सगठन की हमारी सुविधाएं पवनी नाली, तो कारोहरा में हम उस व्यापक गटन को भी हमारे गण के सखेंगे। और तनी मात्रा में हमारा धादोलनजन धादोलन न सकेगा। जन-धादोलन, जन-धादोलन अरे रहने से वह कभी जन-धादोलन बनने ला है नहीं।

मैं मानना हू कि जैसे 'बूफान' के स्ट्रेज में हार प्राणे रहा, वैसे इस स्ट्रेज में गुजरात गे रहेगा। हा, प्राण है, बंधनाथ बाबू हैं, बिहार में भी धावाबद्ध रहेंगे। लेकिन न मिलाकर धाभी का यह रचनात्मक काम रात के स्वभाष्य को विमोचन प्रमुक्त है।

संक्षेप में, हमारे वाच्यक्रम विचार श्रादि कोई फर्क नहीं पड़ता, फिर भी मत्र बदले

होने से वाच्यपद्धति में सुनिश्चयी परिवर्तन हो जाता है। जैसे कि ग्रामदान तो बंध-क-बंधा ही रहा था। फिर भी 'बूफान' मत्र मिलने से उस में एक गुणात्मक परिवर्तन (संशुद्धि-देविकेज) आ गया। फिर उसी तरह 'लोक-सेवक सभ' के नये मत्र से भी होगा। 'बूफान' खडा करना ही तो एक अर्थ रहना (स्ट्रेडेजी) काम में प्रायेगी। 'लोकसेवक सभ' खडा करना हो, तो दूसरी व्यूह रचना (स्ट्रेडेजी)।

हमारे धादोलन वा एव अर्थत महर का मोड़ वा बिन्दु (टनिंग पाइन्ट) प्राज है। इसलिए मेरे मन में बात प्रायी वि इस वक्त धाए एकाध महींना पवना रह सवते, तो धादोलन के लिए साभदायी होगा।

यह सभ मपन पिछले कुछ महीने से मेरे मन में चल रहा था। इसलिए 'भूमिपुत्र' से हटकर कोई क्षेत्र में बँठने वा तय तो कर

निया था। लेकिन 'बूफान' के बाद 'प्रति-बूफान' वा जो ऐतान बाबा के मूठ से निकला था, यह मेरे चिन्तन में और एवजन में बाधा-रूप बनता था। मैं सोचना रहता था कि क्या मेरे चिन्तन में कुछ बदली तो नहीं है? क्या बरू? इतना यावा-परस्त तो मैं हूँ ही! लेकिन धन की वार से दोषाभास में सोचनेवा-साध का नया मत्र मिलने में धर मेरे सामने का रास्ता विलकुल साफ हो गया है। धर तो रविशकर महाराज सम्मान-प्रथ्य, प्रभा-मर्दि प्रथ्य, सध प्रकाशन और कई विलकर जिम्मे-दारिभी से दिमाग्जन अर्तत एक धृत्कारा पाकर मैं किसी एक जित में बँठ जाऊँगा, और ऊपर लिखी बल्पना अनुसार बहा काम सदा करने की कोशिश करूँगा।

(२६-१०-१९७३ को थी जयप्रभाज नारायण के नाम थी वानि शाह द्वारा लिखा गया पत्र।)

वाच्यक शूल : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ लिपिया या ५ डालर, एक अक वा मूल्य ३० पैसे। प्रभाज जोशी द्वारा सर्व सेवा सभ के लिए प्रकाशित एवं ए० के० प्रिण्ट, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

भूदान-यज्ञ

२१ जनवरी, '७४

वर्ष २०

अंक १७

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

- प्रातिभिकता और बुद्धिमानि (सम्पादकीय)—भ० प्र० मिश्र २
वैकल्यवचन वचन सकता है, अमर चुनाव शुद्ध हों ३
जनाधारित प्रजातन्त्र के लिए —जयप्रकाश नारायण ४
आखिरी कमजोर कड़वी —ठाकुरदास बंग ५
कृषि-नीति के आधार क्या हों? —वनवारोलाल चौधरी ६
कृष्णराज मेहता के प्रश्न ८
धीरेनदा के उत्तर ९
विना टिप्पणी के —उमराव वेग मिर्जा ११
वलरामपुर गोष्ठी की रपट —रामचन्द्र राही १३
टिप्पणी — भ० प्र० मि० १५
समाचार १६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

प्रातिभिकता और बुद्धिमानि

साधारणतया 'प्रातिभिकता' की जगह 'प्रतिभा' शब्द का प्रयोग प्रयाप्त होना चाहिए किन्तु हमने जानबूझ कर यह शब्द, आप चाहे तो बड़े सकते हैं, गढ़ा है। धर्मो लॉसएजिलस से प्राकशित होने वाले प्रसिद्ध पत्र 'मनस' में लॉयड कान्हु नाम के एक वास्तुकार के किसी-लेख का सारांश दिया गया है। लेख का नाम था 'स्मिथ वट नाट वाइज', और यह गोरीदुनिया की उस चारबाई की कॅलीफोर्निया के एक प्रादिवासी द्वारा दिये गये उस काम का वर्णन है जिसे गोरी दुनिया 'देवतावाजी' कहती है। कॅलीफोर्निया के प्रादिवासी गोरी दुनिया की वैज्ञानिक प्रगति को चतुराई या चालाकी मानते हैं, बुद्धिमानि नहीं। हम भी उसे चालाकी न समझे, 'प्रतिभा' मानने को तैयार नहीं हो सके और इसलिए 'प्रातिभिक' शब्द का उपयोग किया। कहने का अर्थ यह है कि विषयों की सम्यक्त, 'विज्ञान के चमत्कार' कह कर जिन बातों का भ्रम उठावी चली आ रही है वे सच्ची प्रतिभा के फल न हो कर उनके किसी एक पहलू का अंग के बरफन निद हो रहे हैं इसलिए उन्हें प्रतिभाजन्य न कह कर बुद्धि चालाक लोगों की प्रातिभिकता कहना अधिक योग्य जान पड़ता है।

लॉयड कान्हु ने अपने लेख में सफ़ी, ईट, पत्थर की जगह धातुकल पवित्रम में इमारतें खड़ी करने में प्लास्टिक का जो उपयोग बढ़ता जा रहा है, उसी की निरर्थकता, मोहर्ण-हीनता और उसके सम्भविता धारों के सम्बन्ध में लिखा है। उसका कहना है, 'जरा सोचिये कि मूख को इमारती लकड़ी बनाने तक मूरज क्या-क्या करता है; वह उसे ठीक अनुपात में हवा, पानी और सजिन पदार्थ कर एक ठीक मुनाष देता है और मजबूत बनाता है। इनके सिवा मूख अपने बच्चे की श्रवण में और पूरे बड़ चुबने पर बानावरण को सोचने देते हैं। हवा को साफ करने में मदद पहुँचाते हैं, पत्थी को छाया देने हैं, पक्षियों, मिलहरियों तथा अन्य प्राणियों को पन देने हैं और हमारे समूचे दुष्टि पथ को मानी रूप और रंग में भर देते हैं। फिर लकड़ी ही ऐसा एकमात्र इमारती साधन है जिसे हम पैदा करते रह

सकते हैं, जब कि ज्यादा प्लास्टिक पाने के लिए हम रोज-रोज जमीन से श्रवणियाँ लेते निबालते रहना जरूरी है। उसे हम पैदा नहीं कर सकते, उसे निबाल सकते हैं, जला सकते हैं, साफ कर सकते हैं या उसे किसी एक रूप से दूसरे रूप में बदल सकते हैं। हम इन सारी प्रक्रियाओं में हवा और नदियों और समुद्रों की दुर्गन्ध से भरते हैं, वायु मडल को विपाठ करते हैं। तथा तमाम समभदार लोगों की तरह इस वास्तुकार ने यह भी कहा है कि जरूरत सार मसार की धन-नीति बदलने, पेड़ लगाने और उन्हें बढ़ने देने का समय देने की है, ताकि हमारे प्राते वाली पीढ़ियाँ पर बनाने के लिए ठीक साधन या सने—हवा, पानी और धूप में सारी-भारी न फिरें।

गुणित्व उत्पन्न होनी है उद्योग धर्मों में पद लोभ और सर्वसाधारण लोगों को दुष्टि के अन्धरे के कारण। पत्थी विज्ञान के लोग हस्तदुष्टि रख कर अपनी ही हद तक सोचते हैं और दूसरी विज्ञान के लोग प्राते वाले दिनों की चिन्ता भी करना चाहते हैं। उद्योग-धर्मों में सर्व लोभ और उनके सम्बन्धित बंधानि भी प्राय इतना बारी भूने रहते हैं कि विज्ञान में या प्राज्ञ में दो प्रचार माने गये हैं। और उनमें एक वा नाम मानव-मानव (ह्यूमैनिटी) है। इसका क्या मह अर्थ नहीं है कि जो बच रहता है वह धमानतीय बलिदानवीय प्राज्ञ है। धन यह धनय वात है कि इग दानवीय प्राज्ञ को 'व्यावहारिक विज्ञान (एप्लाइड साइंस) का नाम दिया गया है, किन्तु धीरे धीरे दुष्टि दीर्घने में मगमभ में घा जाता है कि हमारे ये व्यवहार-विज्ञान विनाश को धाम, माने के धनुष नरीके हैं। पहले इनकी मनीषण की वि दतरी गति मदिन थी, धन तो वह धरलनीय रूप में गनिमीन हो गई है। व्यावहारिक-विज्ञान को 'प्राथमिक-विज्ञान' का मान्यन यदाये जिना हम सनि नहीं, दुर्गति ही की प्राज्ञ हो गयी है। पानी की मे इन बाल की 'हिन्द स्वराज्य' में प्राते सोच-मारे दम में धार-धार कर है। जब विनोबा ने 'विज्ञान और श्रम' के नामधर्म की

(निध गृष्ट १५९२)

लोकतंत्र वच सकता है, अगर चुनाव शुद्ध हों

नवम्बर माह में मयी दिल्ली स्थित गांधी प्रतिष्ठान में सर्व सेना सभ में एच बंडूक का प्रायोजन किया था। यँसे बंडूक का मूल हेतु नवम्बर 1९०३ में सेनापाम में आयोजित राष्ट्रीय परिषद में लिए गए निर्णयों को फल में लाने की पहल करना था। पर बंडूक की पूरी चर्चा उत्तर प्रदेश के धाराभी चुनाव में मतदाता प्रशिक्षण के कार्य पर ही केन्द्रित रही थी। बंडूक में जयप्रकाश जी के प्रभाव का कार्य इय्यासानी, श्री टाण्डनार भी एच जी गारे, श्री पुष्पोत्तम मावलकर भी उत्प्रेषित थे। जयप्रकाश जी के इस मुझार का बंडूक ने सम्पन्न किया था कि "हो हम पुरान लोग हैं—मर्बोदय बाने, कुछ साथ उत्तर प्रदेश के पकास-नाउत नावेतो में विद्यापियो के मदद मारए हैं। विद्यापियो की वर लोचय रैलियो का आयोजन करें और उनका धाराहन करें। विद्यार्थी प्रगर धारने बलिगेसे निकजकर गावो का दौरा करते और नई गाविन प्रगर लखी हो सकेगी तो बुद्धा बडा काम होगा। प्रगर चुनाव इसी प्रकार प्रप्ट होने रहेगे तो प्रजातन्त्र समाप्त हो जायेगा।" बंडूक में जे० पी० ने कहा था, कि प्रगर धारापय हुआ भी धारने प्रभाव स्वस्थ के बारमुद वे नसकत धारि स्थानो पर आतर विद्यापियो के बीच बोलना चाहेंगे।

धरने कृपण के प्रमुपार उत्तर प्रदेश मत-दाना निजए समिति के नियमण पर जय-प्रकाश जी धरनी का दरिबीय था। पर सतकरा पृष्ठ नये।

१ जनवरी की दोहरा चाहेंगे स्थानीय पापीभनर में नगर के विभिन्न वर्गों जैसे धारदो, बरौयो, मडिनाधी, प्राजासकरो, सगारको तथा ससरो के धनय-धनय मेट की धार में मतदाना निजए समन्धी कार्यक्रम के धार में बहा कि समी लोग प्रदेश में स्वतंत्र का मुद्दा चुनाव बनाने में धारता योगदान राज करें।

साय नगर के युवकों, छात्रों तथा गदम गांधी सेनिकों के बीच में धाराटा करते हुए जे० पी० ने कहा कि लोकतंत्र को जड़ें निर-नर

खोखली होती जा रही है। जो सन् १२ में चुनाव में नीतिवता भी वह धार नहीं रही धार जो बुद्ध भी शेष बची है वह भविष्य में रहने वाली नहीं है। जब नीतिवता ही नहीं रहेगी तो लोकतंत्र की स्थिति क्या होगी? यह सब के लिए चुनौती है। उसे कल नहीं, धार ही स्वीकार करना चाहिए और लोकतंत्र की बचाने के लिए गांधी निष्पक्षतापूर्ण नीतिवत बुद्ध और स्वतंत्र चुनाव बनाने के कार्य में लगना चाहिए। जे० पी० ने कहा कि यदि बही गलत वोटिंग हो रहा हो तो युवको को उस समय शांतिपूर्ण षेराव भी करना चाहिए कि जब तक यह काम मुद नहीं होगा हम हटते नहीं। जरूरत पड़े तो पीत भी रद्द कराने की तैयारी रहनी चाहिए।

जे० पी० ने धारने कहा कि मैं कभी भी राजनीति का विरोधी नहीं रहा हूँ। प्राधिर धार विधायिवालय में राजनीति नहीं सीयेमं तो बहा सीयेमं ? लेकिन पूनियत जो धारने की है वह धनय निर्दोष्य होनी चाहिए, क्योंकि पूनियत का निर्माण ही धारको के हित में हुआ है।

मया प्रसार हाल में डा० राममगोहर सस्थान द्वारा धायोजित सभा में जे० पी० ने कहा कि समाजवादी शांतिवता विलर रही हैं प्रसारण समी लोग धारने को समाजवादी बहने लगे हैं। इस सस्थान को समाजवाद के बारे में गहरा धार्यवत तथा शोधकार्य करना चाहिए।

१० जनवरी को प्राण प्रदेश के सर्वोदय कार्यकर्ताओं के बीच जयप्रकाश जी ने कहा कि हमारा चिन्तन केवल मतदाता प्रशिक्षण का नहीं है बल्कि प्रदेश में होने वाले चुनाव मुद और स्वतंत्र हो इसके लिए प्रयास करना चाहिए इसीलिए मैंने पवनार (बर्धा) से युवको को धाराकृत करते हुए 'यूथ वनाम देनाकंती' शीर्षक ले, एक सतयत्र प्रकाशित किया था। प्रदेश के कुछ सारियो के इस धनय पर कि मतदाता निजए के काम में विलम्ब हुआ है तथा सतन् काम करना चाहिए, जयप्रकाश जी ने कहा कि यह काम तो प्रदेश वालों का है। उत्तर प्रदेश में मर्बोदय सतयत्र बना है उसे तोषना चाहिए का कि यत् काम उठाना

है या नहीं। धर्य में समय की धार करके समय बर्बाद करते हैं। जिसको यह काम धरणा सल्ला है उन्हें जुट जाना चाहिए। जिन्हें नहीं लगता है उन्हें जो वे इस समय काम कर रहे हैं करते रहना चाहिए। मेरी धार है यह काम कानिकारी ही लगता है, क्योंकि चुनाव से पैदा हुआ धरणाधार ऊपर तक पढ़ना है। जब नीय में ही यह कमजोरी का जायेगी तो लोकतंत्र कंठे बल सनेगा ?

पवनार गोष्ठी में जे० पी० ने कहा कि उन्हें भी इस काम में मदद करनी चाहिए क्योंकि चुनाव में यदि धरणाधार हुआ तो लोकतंत्र के लिए सतरा है। धार जो प्रेत तथा बोलने को स्वतंत्रता है वह भी सतरा में पड़ सकती है।

एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि चुनाव के समय सतरा की मशीनीरी का दुष्-प्रयोग नहीं होना चाहिए—यह बात तो धाराधार सल्ला में ही स्वीकार की है। उन्होंने कहा कि पाष बरौ के बाद केवल एक धार जनता की धारने सताधिकार के प्रयोग का धर-तर मिलता है। यदि इस धरतर को प्रप्ट तरीको द्वारा धीन किया गया तो लोकतंत्र निस्तेज हो जायेगा और धानागाही का रास्ता खूब जायेगा।

११ जनवरी को प्राण उत्तर प्रदेश मत-दाना निजए समिति की बंडूक में जे० पी० ने कहा कि कुछ क्षेत्र लेकर सतयत्रय से काम करना चाहिए—विशेषकर बर्धा हरिजन या धनय के लोग शोट नहीं दे पाते हैं वहा धार ही धारने-धारने धेन में इस काम के लिए युवको और धारकों को निज्वातना चाहिए। समिति के सदस्यों एवं सतयत्रक महोदय ने धारणान दिया कि प्रदेश की पाष महोदय ने रियो एच धनय १५ दिनों को नेकर सतयत्रय के कार्य किया जायेगा। धनाधारा, रामपुर, धारागा में समिधिया बन गई हैं। श्री धार० जे० पाटिल प्रदेश का दौरा कर रहे हैं।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

जनाधारित प्रजातंत्र के लिए

—जयप्रकाश नारायण

(२६ मीर ३० दिसम्बर ७३ को प्राल
इण्डिया रेडिकल ह्यूमैनिस्ट एगोसियेशन के
सम्मेलन में दिये गये उद्घाटन भाषण का
गतांक से प्रागे का अंश)

प्रायः सभायें, नगर सभायें और धर्म
सभायें—धो में शब्द कोई एकके पारिभाषिक
शब्द नहीं हैं, हम इनकी जगह कोई दूसरे
शब्दों को इस्तेमाल भी कर सकते हैं—
यनायी जायें; मगर इनको बना लेने भर से
सच्चे जनाधारित प्रजातंत्र की दमार्त उठाने
का काम पूरा नहीं हो जाता। ये सभायें
सक्रिय होनी चाहिए। इन सत्स्थाओं की बैठकें
बराबर होती रहें। ये स्थानीय सार्वजनिक
समस्याओं पर बहस करें और मिलजुल कर
सहयोग के प्राधार पर अपने मतलों को खुद
हल करें। परस्पर हाथ बँटाने के तरीकों
और एक दूसरे को विन-विन रूप में मदद
दा या सकती हैं, इस पर सोच कर उनका
विचार करना होगा। ऐसे पड़े-लिखे जवान
जिन्होंने स्कूल या कालेज छोड़ दिये हैं या
ऐसे उच्च शिक्षा प्राप्त क्रेजुएट या पीएच-
ड्रेजुएट तरण जो जीविका उपार्जन के किसी
कार्य में नहीं लगे हैं, खाली हैं, प्रागे प्रायें और
इस काम को हाथ में लें। मैं इस काम के लिए
सास तौर पर ऐसे ही तरणों का प्रावाह
कर रहा हूँ।

जब लोगों के बीच में इस तरह का प्राधम
निर्भर जनतंत्र चलने लगेगा तब एक ऐसी
स्थिति प्रायेगी कि इस प्रकार चलने वाली
जनतांत्रिक इकाइया विस्तृत भी होंगी और
ऊँची भी उठेंगी और उस समय सच्चे जनतंत्र
का संचालन करने वाली दल प्राधिकार
इयो से प्रागे की माध्यमिक सत्स्थाओं का
निर्माण होगा।

मैं अपने विचार को प्रातीय चुनाक का
उदाहरण के रूप स्पष्ट करना चाहता हूँ।
प्राज की दलीय पद्धति में दल प्राधमियों
का हाई कमान ऊपर से उम्मीदवार पीपला
है। लोगों का इसमें कोई हाथ नहीं होता।

विभिन्न दल जिन लोगों को चुनाव में खड़ा
करते हैं, लोगों का काम उनमें से किसी एक
को बोट देना भर होता है। जो उम्मीदवार
जीत जाता है वह सम्बन्धित क्षेत्र के लोगों
का 'प्रतिनिधि' बन जाता है। विन्तु बोट
डालने वाले मतदाताओं का किसी भी प्रकार
का अडुख इस ब्यक्ति पर नहीं होता। सच
नहीं तो मतदाताओं की कोई सामूहिक सत्ता
या प्राधम कोई ऐसा सामूहिक समूह नहीं
होता कि वे अपने इस तप्याकथित प्रतिनिधि
की बागडोर सम्भालें रख सकें या उस पर
किसी तरह का प्रभुत्व कायम कर पायें। यह
तो हाई कमान के हाथ में होता है।

मैं जो तरीका सोच रहा हूँ उसमें काम
किस तरह चलेगा ? हम विधान सभा के
किसी देहाती क्षेत्र को लें। मामूली तौर पर
इसमें कोई लाख या ६० हजार मतदाता
होंगे। इस मान लें कि उक्त क्षेत्र में १०० गाव
हैं। सच मान लें तो गावों की सख्या इससे
अधिक हो सकती है। हम पहले जिस स्थिति की
चर्चा कर चुके हैं, मगर हमने उसे पूरा
कर लिया है तो हर गाव में हमारे पास एक
सक्रिय प्राधम सभा होंगी। विधान सभा के
चुनाव के लगभग छः महीने पहले से
हर प्राधम सभा को चाहिए कि वह
अपना-अपना प्रतिनिधि चुने और इस
तरह चुने गये सब प्रतिनिधियों की एक
प्राधमसभा परिषद बन जाय। गाव की प्रावादी
के अनुपात में प्राधम सभा परिषद के लिए
प्रतिनिधि चुने जायेंगे। धर्यान कोई प्राधम एक
प्रतिनिधि चुनेगा, कोई एकाधिक। विन्तु
छोटे से छोटे हर गाव का एक और बड़े से
बड़े गाव के प्राज तक प्रतिनिधि हो सकते हैं।
मान हीजिए कि इस तरह प्रतिनिधियों की
प्रति गाव प्रासत सख्या तीन हुई तो प्राधम
सभा परिषद में ३०० सदस्य होंगे। ये सब
प्रतिनिधि परिषद के बन जाने के बाद क्षेत्र
के किसी केन्द्रीय स्थान में इकट्ठा हो और
वहा विधान सभा के लिए अपने क्षेत्र का
उम्मीदवार चुनें। इस प्राधार-प्रकार के प्रा-

तंत्र के सफल संचालन की दृष्टि से दो बातें
बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहली तो यह कि प्राध-
सभा प्राधम उसकी कार्यकारिणी के सभी
निर्णय सर्वसम्मति से हो या उनके बारे में
एक सर्वसाधारण ऐसी सहमति हो जिसमें
विरोध कम से कम हो। जहा ऐसा लगे कि
सत्काल निर्णय न लेना मुकसानदेह को सकता
हो, वहा निर्णय कम से कम ६० प्रतिशत
सहमति के प्राधार पर लें लेना चाहिए।
प्राधम्यकता पढ़ने पर निर्णय लेने के दूसरे
तरिके भी काम में लाये जा सकते हैं, बिट्टो
डालना या निर्णय किसी एक ब्यक्ति या
ब्यक्तियों की समिति को सौंप देना। विन्तु
इन तरीकों को भी तभी प्रापनाया जाय जब
उनके बारे में सर्वसम्मति हो, या कम से कम
विरोध न हो।

प्राधम से फूट रोबने और दल बन्दी को
बचाने की दृष्टि से यह जरूरी है। जो दल
बिना दल निर्णय लेने के जो दोष है वे काफी
स्पष्ट है। विन्तु विनोबा जी ने प्राधम-प्रवराण्य
का जो प्रान्दोलन चलाया है, तप्यम्बधी
अपने अनुभवों के प्राधार पर मैं यह कह
सकता हूँ कि कुछ मिला कर इससे होने वाली
हासि के मुनाबते में लाभ की मात्रा अधिक
है।

दूसरी जरूरी शर्त यह है कि गांव या
शहर या नाम करने वाले किसी जमान का
ऐसा कोई भी प्राधम, प्राधम सभा का प्राधम
जनतांत्रिक इकाइया हाना जिन पर के लिए
नहीं चुना जाना चाहिए, जो किसी राजनी-
तिक दल का सदस्य हो। सबब विन्तुल प्राध
है। सबब यह है कि दल विशेष का सदस्य
अपने दल के नेताओं की राय के मुनाबि
चलता है जब कि सच्चे प्राजातंत्र में प्राजा
जनता का दबाव नीचे में ऊपर तक होता
चाहिए या उसके द्वारा चुनी गयी किसी
सत्स्थाओं का जनता हमने प्राधी मन्ताता
किया है। इसका यह अर्थ भी हाना कि प्राध

(पेग पृष्ठ १२ पर)

आखिरी कमजोर कड़ी

—ठाकुरदास बंग

! X 10 फीट की छोट्टी सी घाव की उपरो मुद्रिया में उपरो मुहम्मदी मसजिदी थी, जिसमें बीजों के बच्चे जमादा थे। एक मूर, तीन दोस्तिया, एक बडाई, धन-मुमिनियम का एक बॉन, एक भागी तथा धनाज रखने का मिट्टी का एक बोला, जिसको सादर ही कभी धनाज का दर्शन होता होगा, यह भी मारी मर्यादा। इसी की गन्दी देह पर तथा फटे-सँचे कपड़ों पर मरियया निर-भिया रही थी। मेरा जी निबलाने लगा।

'बसों, हर रोज स्नान नही करती हो?' इसलिए मुझे पूछते हैं। अच्छी तरह नहाना करो ना मुझको पानी जामिनी। बगडे करो नही पानी हर रोज? पानी तो बहुत है यहाँ?' की उजसा दिया। "एक ही तो माझे है, नद्वार बढाने के लिए दुपार बनाडा है नही, सँचे स्नान कर धोर सँचे धोऊ बगडे हर रोज? जब धम्पेरी रान होनी है तो ८-१० दिन में कभी एकाध बार नहा लेनी हू। साडी धाकर बडी गीनी पहनकर पर धानी हू। देह पर ही साडी मूयती है।" उनत जवाब दिया।

उपरो बॉन मुनेसरर के पास एक एकड़ में भी कम भूमि है। गुजनी से कीटिन उसकी लम्बी की उपरो एक-बच्चों के घेर रखा था। निघने तीन मजाना में रोटी का भाज का निरया भी इन परिवार के लोगों से नही देता था। पाग को नही से "धोपा" पत्र बर लाना, धोर लाना यह कम था। निघने कई दिनों के काम नही निरया था तो लाना कडा से निरया?

यह हलान निके मुनेसरर धरने की कही थी। बुक 122 परिवारों के में 22 परिवार होने ही भूमिगत है धोर करीब 20 परिवार होने हैं जिनके पास माममाज की भूमि है। वे सँचे बीन है, तो मजाना है कि धरने नही लम्पिन?

धोर बर का बसा लोहार बिहार भर में भूमिपाय से मान है। देविने पर उपका भूमि-पत्र : सोमवार, 22 जनवरी, '७4

वहाँ। भी मा. रडा है। इन पात्र में देवा तो रान्ने में एक पैगड गलर माल की कमर मुकी बुडा चूहा बलानी दियाई दी। 'माजी, क्या छट का लाना बना रही हो?' की पूछा। "मार-मारें घुम फिर कर कम ई (उदर) की ये मुट्टी भर पतिया नाई हू जो उवाज कर पेट की भाग बुभाऊगी। बहाँ से बनाऊ लाना? किना धूमो पर काम नही मिला।"

'क्या गुम काम करोगी?'

'हाय हाय बट, सँची पूछते हो। बसों नही करूगी।' निने ना मही काम। बुडा ने मेरा हाथ धारने बालने हूण हाथों में परडा धोर मेरी धोर देखने लगी। उसकी धोर मेरी दोनो की धागा में मगा-मुत्ता बढने लगी। इनने में उबर से गक तरफ बढन चिल्ला—'दिन भर धूमो पर काम नही मिला, छट का पर्व हान हूए एर शाना नही पाया?'

पात्र के करीब एक मिटाई परिवारों को निघने तीन सप्ताह से यही हालत थी। य साग भीषण तो मही मानने, काम करके धपने पानी की राटी लाना चाहते हैं। क्या वह उनकी माग स्वराज्य के पच्चीम सात बार, धार धार बिभाग यात्राओं के बार भी देकरिव है? इसी बर्न के तुपार माड में हम इसी भूमिपाय जिनके से धाय बुड देहानों के धूमे थे। तब भी यह हाल था। पटगन की पतिया गा-गा कर लोग जी रहे थे। उस बक बॉरिन समय पर न हलेंगे की बरह बाराई बर्न थी। पर इन सबर तो मिना देवारी के कोई हुमरा धारए नही था। इसलिए यहाँ का भूमिगत भूमि के लिए तरलना है।

उस बक के मुट्टु की भूरान की निघने प्यारह बूटा (पत्र का सोमका हिसा) भूमि विधी है। लेकिन धारन पत्र की मदद से बहिया धमक जगता है। दो-बार गाये धोर जैने भी पाव रही है। तुकी है।

पात्र में भूदान की भूमि का बटवारा होने के बाद दूसरे दिन एक भूमिहीन धाया धोर बढने लगा—'सबको भूमि मिनी, पर हमरों नही मिलती। कवन क मिनी?' उनत पूछा "तुम बाहे दो-चार बूटा भूमि चाहते हो? अबर कर्ना क्यो नही लेते हो जो तुम्हें 2-3 रुपया नियमित रोजी देगा?"

बोल—'बाजू जी पैगा तो हम मजूरो के बघाते ही हैं। कभी कम, कभी ज्यादा। हमारे बच्चों को कभी एकाध बार बूटा का मिर्चा पाने की इच्छा हू तो वह कहा से लायें? बाजार से ही न खरीद कर लाना होगा? धानी दो-चार बूटा भी भूमि ही हो है।'

पत्रबन्दी जाने इसका क्या जवाब देंगे? भारत में कभी भूमिहीन परिवारों की भूमि के पति देखने की यही हदित है धोर इसलिए उने भूमि की गीर चाह भी है।

एने मेराश पात्र में गात्र ना सर्व होने के बाद तीन बार धामना बँडी। यहाँ भूमि धामन उपजाऊ है धोर पानी बढन करीब है। पात्र को एकड़ भूमि जिसमें से करीब तीन तो एकड़ के धं बने जमींदार बाहर गात्र रहते हैं। एक इंच भी भूमि पडती नही है। गात्र में रहन की इमारत धोर हुए ई इमारत गात्र बर्गीय योजनाओं की धार दिना रहे थे। निघने पच्चीम सालों के बिभाग की यही निर्याप है। जो ग्यारह देवपय निने ये पजय में तो ग्यारह निरके धोर वा किमी तक बन रहे थे। बिभाग धरिबारियों ने गात्र के भूमिगत को हर पत्र के पीछे पच्चीम हाया धूम की, धूर ने पचरह लाने की धोर की था। इनका पदती मान सँचे काम देता?

निघा दो के एक भी पत्र ने एक इंच जमीन भी न गीवी।

(मेर बूट 12 पर)

कृषि - नीति के आधार क्या हों ?

—वनवारीलाल चौधरी

ज्ञानने क्या भोजन दिया है यह मानूँ करके बताया जा सकता है कि प्रायः कैसे है ? भोजन की गुणवत्ता अन्तर्गतत्वा भोजन करने वाले के गुणों को, उसके स्वभाव को, उसके आचार-विचार को प्रभावित करती है। मनुष्य का स्वास्थ्य तो स्पष्टतः भोजन के प्रकार से बना-बिगड़ता है। आयुर्वेद में बात, कफ और पित्त के अम्लानुजन को बीमारी का कारण माना है, निरचय ही यह अम्लानुजन भोजन से उत्पन्न होता है। अम्लानुजन का पुनः स्थापन भी भोजन में तदनुसृत परिवर्तन या सुधार करने किया जा सकता है। इस रूप में भोजन एक प्रकार से औषधि ही बन जाता है। मनुष्य का भोजन और अन्य वनस्पतियाँ जिनमें अन्टी-यूटी के रूप में उपयोग करते हैं, कृषि जनित हैं। इस प्रकार सदियों या यो बहिये कि अन्तकाल से कृषि और औषधियों का प्रायः में घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

मानव ने पोषण का स्रोत भूमि-धरती माता-ही है। जिस पर जीवन की निरन्तरता अवलम्बित है। पौधे और प्राणियों द्वारा भूमि की उर्वरकता का सन्तुलित किया रूप ही मनुष्य का भोजन है। अन्तकाल से पीपों में मनुष्यों की कई बीमारियाँ और व्यथियों का इलाज प्रस्तुत किया है। एक क्षेत्र विशेष के पर्यावरण में जगती रूप में पाने या काष्ठ की विशेष पौधों का उस क्षेत्र और पर्यावरण में औषधि के रूप में विशेष महत्त्व रहता है। इसी कारण पहले के वैद्य अपनी बगिया में और लोगों की बाड़ी में औषधोपयोगी पौधे लगाने का सुभाव देते रहे हैं। रैसलपुर (जिला हांगवावा) के कई घरों में एक स्थानीय वैद्य ने गुणल, वनडुलली, तेज, गुर-वेन, कडुआचिरेता, मह आदीना, मोती-चाय, वाल आदि लगवाये हैं। निजानी के रूप में प्रायः भी इनमें के कुछ पौधे इनके-दुर्घर्ष घरों में मिलते हैं। कृषि और औषधि की यह एक दूसरे पर आपाचित निर्भरता ने ही हलधर कितान की वैद्य बनने को प्रेरित किया और कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कई डाक्टर

और वैद्य भूमि की, खेती की और आरपिन होने हैं।

स्वास्थ्य का आधार—दिनोदिन उत्तरोत्तर रूप में यह माना जाने लगा है कि स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण आधार घटन स्वस्थ, पोषक, स्वादिष्ट और रचिरा भोजन है। भोजन की गुणवत्ता का यह महत्त्व यदि निर्विवाद है तब औषधोपचारक को इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि उपभोगका को लाभ पदार्थ किस स्थिति में (ताजे, वाली, सड़े, गले, गन्धे आदि), किस रूप में और गुणवत्ता की किस कोटि में उपलब्ध होते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि न वैद्य, हकीम और न डाक्टर ही इन और ध्यान देते हैं और न वे इसके लिए चिन्तित हैं। तथा सब बीमारियों का उत्तम एव उपयुक्त इलाज स्वस्थ, पोषक भोजन को छोड़ के पुनिया भर की औषधियाँ, विटामिन की मालिया और पाचक बूँधें देते हैं। यह पद्धति चिकित्सक के धर्म की अवश्य पोषण है, पर मरीज को नहीं।

अमेरिका में जिये मानव पोषण के एक अध्ययन से इस चौकाने वाले निष्कर्ष का पता चला है कि सबसे अधिक मृत्यु दर उन क्षेत्रों में पाई जाती है जहाँ कि भूमि की उत्पादन शक्ति का ह्रास हो चुका है। हमारे प्रति भूरक्षण के क्षेत्र के आदिवासी और सघन जंगल में बसे वनवासियों की मृत्यु दर में भी सभब-है इसी प्रकार का अन्तर मिले।

भूमि शोषण—कृषि की वर्तमान नीति हर सभब मुक्ति से कम-से-कम समय में, उत्पादन अधिक से अधिक व अधिक से अधिक दुनाफ़ा कमाना है। इस कर्माई में उपज की गुणवत्ता, भूमि का दरण, भूमि का दित दूटन, भूमि में नावी स्थिति आदि की और ध्यान देना दक्षिणानुसूची और अर्धजातिव माना जाना है, पिछड़ेपन की निजानी गिना जाता है। यह आर्थिक निर्भरता या गला पोडन को प्रकृत्या परोक्ष रूपेण निहित स्वार्थ द्वारा प्रेरित सत्तात्मक दबाव का प्रतिपन है। मोनध्वनि की

विरणों के समान ही अस्थय में यह धानक प्रभाव करती है। समाज इन प्रभावों से वेकवर होने से उत्पादन की चनाचोष में पर फूँक तमाशा देयता है, आनन्द मनता है। रक्त वर्णण्य नाति को हरित प्रातिवा नाम दे उसमें अफ़ोम रत बाते ले लोगों को गच्छत में डालता है।

तयारपिन वर्तमान वैज्ञानिक कृषि, भूमि का अधिक-से-अधिक शोषण करने पर आपा-रित है। भूमि के शोषित होते रहने की भी एक सीमा होती है। फिर उसका दिस दूट जाता है। यह इव स्थिति के घाने पर अधिक उपज देने के लिए अकस्य कई कृत्रिम उपारों का सहारा लेना पडता है और वर्ष-दर-वर्ष अधिक और अधिक प्रमाण में रासायनिक दाद, कीटनाशक औषधियाँ आदि का प्रयोग करना पडता है। यह ऐसी हालत बना देता है कि जठो-जठो दवा की ल्यो-ल्यो बीमारी बढती गई। इससे निष्कृति पाना बठिन हो जाता है।

सूक्ष्म तत्वों की कमी—वर्तमान सघन कृषि पद्धति में मूलतः नत्रजन, स्फुर और पोटास रसायन ही बाहुल्यता में रासायनिक मिश्रण के रूप में दिये जाते हैं। भूमि में प्रचुर मात्रा में इनकी उपस्थिति भूमि में मुहित सूक्ष्म तत्वोंको खींच उतारा उपयोग कर लेता है और कुछ वर्षों में इन सूक्ष्म तत्वों की कमी प्रदर्शित होने लगती है। "हीरा" मरीची बोनी विरम के गेहूँ की सघन काल में १-४ वर्षों में ही अस्ता की कमी सा जानी है। इस प्रकार अमग. अन्य सूक्ष्म तत्वों की कमी भी प्रदर्शित होने लगती है। मक्का की काल में ऐसे अमपान में मक्का के दान में जस्ता कम हो जाता है। यदि यह सामान्य रूप में होता हो तो इगवा गाव की मरीच जनना के स्वास्थ्य पर, जो कि मक्का, उजार आदि भोटे घनाच पर आपाचित है, बढूट अघर होता।

सूक्ष्म तत्वों की कमी बायी स्थिति में पैदा किया अन्न, नामाभकी आदि को पाने वाले

क्या इन्दिराजी की गलत नीतियों के कारण लोकतंत्र समाप्त हो रहा है ?

सेवा-ग्राम सभ अधिवेशन और उसके बाद की हमारी चर्चाओं में जो विचार भिन्नता और मतभेद प्रकट हो रहा है, उसे मांग-तोजन की दिशा में शुभ संकेत मानकर आपने जो स्पष्टीकरण और मार्ग दर्शन किया उसके लिए धन्यारी हूँ।

श्रमति की मुख्य धारा, कार्य-प्रणाली सहयोगी खोजन के साथ-साथ आपने देश और राज्य व्यवस्था के सन्दर्भ में लोकतंत्र को स्पष्ट किया और बताया कि अफगानिस्तान का गणतंत्र और भारत का लोकतंत्र जो ऊपर के राज्य तंत्र के द्वारा स्थापित हुआ है वास्तविक गणतंत्र या लोकतंत्र नहीं है। गण और लोक की सम्मति और सगठन से जो तंत्र बनेगा और जिस पर लोक का अकुश रहेगा वही सही लोकतंत्र होगा। उसी की स्थापना के लिए गांधीजी ने कांग्रेस को लोक सेवक सभ बनाने का सुभाषा था। और चरखा सभ को गांव-गांव में फैलने का बताया था। बिनावा भी ग्रामदान-ग्रामस्व-राज्य द्वारा लोक सम्मति और लोक-सगठन नीचे से खड़ा करने का बता रहे हैं। यानी आज के गणतंत्र और लोकतंत्र के द्वारा लोकराज्य स्थापना से भिन्न लोक के द्वारा उनका लोक राज्य बनाने की नयी पद्धति

और विकल्प बना रहे हैं। इसमें लोगों को त्याग और नित्य करने का व्यवहार है। इससे उनकी शक्ति और जिम्मेवारी दोनों विवक्षित होती है।

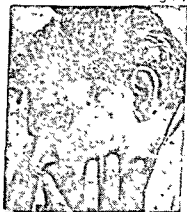
परन्तु आज सर्वोदय आन्दोलन में हमारे साथी लोक शिक्षण और लोक सगठन से पक्षमुक्त लोकराज्य की बात करते हैं, और सर्वसम्मति की नयी पद्धति से विकल्प खड़ा करना चाहते हैं। साथ-साथ आज के राज्य तंत्र और उसकी व्यवस्था के सन्दर्भ में निम्न भूमिकाएँ व्यवस्था करते हैं—

× आज की समस्याएँ वर्तमान राज्य पद्धति का परिणाम है। उससे निराश या दुःख न होकर उनकी उपेक्षा करना और अपनी कार्य-एवापना पूर्ण कर लेना।

× आज की समस्याओं और प्रश्नों का विश्लेषण करना, और प्रचलित राज्य व्यवस्था द्वारा निराकरण का हल सुभाना, उसके लिए लोक शिक्षण करना, साथ-साथ लोगों द्वारा भी निराकरण का मार्ग बनाना।

× आज की समस्याओं और प्रश्नों के सन्दर्भ में प्रचलित पक्षीय राज्य तंत्र के अध्ये कामों का गौरव करना और गलत कामों की आलोचना करना। इन दोनों से लोगों की भावना राज्यतंत्र में ही पुष्ट होती है। आलो-

चना से लोगों में अस्तित्व फैलता है। जाने अज्ञानों हम सहयोगी या विरोधी पक्षी की भूमिका में माने जाने लगते हैं। इससे जन-पुत्रुन उलभन. फैलता है। आज के राज्य-तंत्र और इन्दिराजी के बारे में कुछ ऐसा



हृषणराज मेहता

ही नजर आता है। क्या आप भी यह मानते हैं कि इन्दिराजी की गलत नीतियों और कार्य पद्धति के कारण नीतिवत्ता का ह्रास हो रहा है, अष्टाचार बढ़ रहा है और प्रचलित लोकतंत्र समाप्त हो रहा है ?

—हृषणराज मेहता

होगा। यदि ऐसा न हुआ तो मनुष्य को कई प्रकार की नई-नई बीमारियों का सात्ता करना पड़ेगा और उनके इलाज के रूप में कई विपरीत प्रतिक्रियात्मक उपचार या स्वापक का आधिकार करना होगा। बीमारियाँ और मनुष्यों की यह एक ऐसी बीज है जिसमें मनुष्य व भी की विजयी नहीं होगा। बीमारी का पलड़ा हमेशा भारी रहेगा।

हमारा अस्तित्व इन आश्रयकारी उप-विष और बीजनाशक रसायनों के भरोसे नहीं टिक सकता। वह केवल भूमि की उत्पादक क्षमता

बनाये रखने पर निर्भर करता है। वही उसकी नींव है। घातामी पीढ़ी के पापस्य की माय को पूरा करने का अन्व कोई तरीका है नहीं। इतिहास साक्षी है कि जिस राष्ट्र में, जिस जिस सस्कृति ने भूमि की अक्षयता को यह काल के गर्त में तथा गई। भारतीय सस्कृति अभी टिकी है। "कुछ धान है कि हल्की मिट्टी नहीं हमारी"। यह वाक्य है कि अभी तक भारत ने घरती माता का दोहन किया है शोषण नहीं। परन्तु अज हम ऐसे चौराहे पर पहुँचे हैं जहाँ हम सही मार्ग चुनना होगा। चुनाव हमें रीति का नती नीति का करना है। प्रश्न पद्धति का नहीं जिलात्मों का, जीवन मूल्य का है। हमारे द्वारा निर्धारित

जीवन मूल्य के अनुरूप ही हमें साधन और पद्धति का निर्णय करना होगा। नागरिकों का वर्तमान और भविष्य में उत्तम स्वास्थ्य बनाये रखने से घबड़ी कोई कृपि नीति हो नहीं सकती। स्वस्थ राष्ट्र ही स्वतंत्रता बनाये रख सकता है। राष्ट्रपति स्वतंत्रता कायम रखने के लिये "गरीबी हटाओ" सरीने राज-नीति(नारी) के स्थान पर हमारा उद्देश्य हो "स्वस्थ नागरिक" स्वकल्प देना।

एक जनवरी १९७४ से 'भूदान-यज्ञ' के मूल्यों में परिवर्तन किया गया है। नये दाहक बनते और बनते समय ध्यान-धरते कि एक प्रति का मूल्य ३० पैसे और आर्थिक मूल्य पन्द्रह रुपये है।

इन्दिराजी ने रचनात्मक शक्तियों को सम्मलने का मौका दिया है

हैंय लोग में जो मतभेद चल रहा है यह पुराने सत्कार और नये विन्तन का घबन है। इसे सम्मलने के लिए धारा बुनिया में लोक-तंत्र का जो परंपरागत विचार चल रहा है, उसे समर्थ लेना चाहिए। राजतंत्र के जमाने में नये राजनैतिक विन्तन ने लोकतंत्र का विचार रखा था। विन्तन को का विन्तन इसाने को धारण करने के लिए होगा है, मनुष्य में जो पाषण्डयन वाले धामुरो तत्व मौजूद हैं उसे नियंत्रित कर उनके बौद्धिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा धार्मात्मिक तत्वों के विकास के लिए दमनित करने दबाव की शक्ति का निकाल विचार गया था। लोकतंत्र के विन्तन के नये धामुरी शक्ति के नियंत्रण तथा नियंत्रण के लिए सैनिक-शक्ति के रूप में दबाव शक्ति के रूप में धामुरी शक्ति के इस्तेमाल का विरोध किया। उन्होंने देखा यद्यपि धामुरी शक्ति द्वारा इमान के धमनितिंग धामुरी तत्व कुछ नियंत्रित किया जा सका है, यद्यपि उसने सांस्कृतिक विकास के लिए उत्तरोत्तरा धामुरी शक्ति के साधन का नेमाल प्रभावही होना, और देखा हुआ

नहीं तो हैरानी शक्ति द्वारा इमानती वृत्ति के विनाश का प्रयास माया ही शक्ति होगी। उस वृत्ति का विनाश उसे धमनी शक्ति द्वारा ही करना होगा, तभी वो सकल प्रयास होगा। धनएव उन्होंने समाज के संचालन, सर्वप्रथम तथा उनके समुलन की रक्षा के लिए दबाव शक्ति के स्थान पर मानव शक्ति माने सम्मलित शक्ति का विचार रखा।



हीरेनबा

यद्यपि लोकतंत्र के कृतियों ने सम्मलित शक्ति का गौरव किया और मानव की गति-शक्ति तथा धुनि-शक्ति के लिए उसी शक्ति का इस्तेमाल धर्मिण्य माना। तथापि पुराने सत्कार की परंपरा के धनुषार लोकतंत्र में मजबूती के उसी शक्ति को धोरे डेरकर के साथ लोकतंत्र के विकास में लिए भी इस्तेमाल की पद्धति बनाई। राजतंत्र के धनुषार राजा के एक-ध्वज-धर्मिण्य का इस्तेमाल राजा के सयोजकों के केवल दम एव-ध्वजता को बदलकर लोक-सम्मलित का विकल्प रखा। उन्होंने यह पद्धति बनाई कि मनुष्य के विकास के लिए तथा उसकी शक्ति और समुलन की रक्षा के लिए सैनिक शक्ति माने धामुरी शक्ति को धर्मिण्य है ही लेकिन यह शक्ति धमनी के सम्मलत प्रतिनिधि के हाथ में रहना चाहिए। धमनी को उन्होंने दबाव शक्ति के स्थान पर सम्मलित शक्ति का कोषमन के स्थान पर कर्सेट का धर्मिण्य माना। फिर शक्ति

का दुर्घयोग्य न ही इसलिए पक्षगत राजनैतिक विद्वान का धर्मिण्यकार किया। उन विद्वान के धनुषार दृष्ट-शक्ति के संचालन के लिए पक्षी शासन के संचालन में लिए शासक दल तथा उस दल की गतिधियों में धनुषार के लिए और शक्ति में दुर्घयोग्य की रक्षा के लिए एक विरोधी दल की कल्पना की।

प्रधान धारा के परंपरागत तथा प्रचलित लोकतंत्र के धनुषार राजनीति के क्षेत्र में इतना ही धनुषार हुआ कि दृष्ट-संचालन लोक-सम्मलित तथा कुछ हद तक शासक की अक्षय के अनुरोध रूप में परिष्कार बनी। लेकिन मूलत इमान का विकास के लिए, धामुरी शक्ति का ही गौरव तथा उनको प्रतिष्ठा को ही सर्व-मान्य बनाये रखा गया।

राजनीति के क्षेत्र में गांधी के धर्मिण्य के पहले तक लोकतंत्र के विन्तु पर शासक दल और विरोधी दल का समूह लोकतांत्रिक विन्तन की धर्मिण्य की पद्धति बनी रही। लेकिन उद्देश्य की सिद्धि नहीं हुई। यद्यपि विरोधी दल का रोल शासक दल का धनुषार और नियंत्रण है ऐना माना गया, तथापि वह दल उस स्थान पर टिक नहीं सका। उसका रोल प्रतिष्ठा के रूप में विकसित हुआ। फलतः एक धमनी धामुलन धनुषार की दृष्टि से न होकर उसे समाप्त कर शासक दल के रूप में धमनी को परिष्कृत करने के लिए प्रयास मात्र बन गया। फिर गांधीजी ने उसी प्रचलित लोकतंत्र के धनुषार एक नई कल्पना की बात की। यह धमनी शासक दल और विरोधी दल के धनुषार तथा सत्ता संपर्क से प्रकृत एने संचालन का धर्मिण्य, जो वे लोकतांत्रिक दलों में शामिल नहीं होते रहेंगे। उनके सही धनुषार प्रकृत का नो का गौरव करने तथा गलत धर्मियों की धामुलन

माया में जिन तत्व को प्रतिष्ठा मिलेगी उसका विकास और प्रसार होगा ही। धनुषार के युद्ध में धनुषार देन-तत्व की सुरक्षा के लिए धमुरी-शक्ति का ही अयोग्य किया गया, तो स्पष्ट है उसी के गौरव तथा प्रतिष्ठा को मायाया मिले, फलतः हीरेनबा हीरेनबा बुनिया में धमुरी वृत्ति विकसित होनी गयी और धारा विचार भर में उनके साधनात्मक की स्थापना ही गयी।

लोकतंत्र के प्रथम विन्तन के मनुष्य के सामाजिक विन्तन की इस प्राथमिक धुन की धुनारता चाहा था। इसाने की इमानियत को धनुषार धारण देना है तो हीरेन-वृत्ति के नियंत्रण के लिए भी इमानती शक्ति का इस्तेमाल ही धर्मिण्य है, ऐसा उन्होंने सोचा।

करेंगे। ये पक्ष कोई समष्टि जमान भी हो सक्ते हैं और स्वतंत्र विचारकों के रूप में अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का अस्तित्व रख सकते हैं।

लेकिन वास्तविक तथा प्रत्यक्ष लोकतंत्र की स्थापना के लिए गांधीजी की मूल कल्पना यही थी। वे स्पष्ट रूप से लोकतंत्र का निर्माण लोक की बुनियादी इच्छाई से शुरू करके विध्वंस-नश्व तक पहुँचने की बात करते थे। उसी की एक तस्वीर के रूप में दुनिया के सामने पेश करने के लिए आधुनिक संकलन के चित्र को रखा। दुर्भाग्य से विदेशी राज के हटते ही गांधी चले गये, और अपनी इस परि-कल्पना को साकार करने का अवसर उन्हें नहीं मिला। गांधी के चले जाने पर विनोबा ने ग्रामस्वराज्य आंदोलन द्वारा उनके छोड़े हुए छोर से उम दिशा में प्रयास करना शुरू कर दिया और २० साल में इन विचार को दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से प्रकाशित कर दिया। मैं मानता हूँ कि देश में आज जो सफल चल रहा है वह पुरानी राजनीतिक परंपरा का फलित भाव है। और तब तक दुनिया के राजनीतिक संकट का निराकरण नहीं होगा, जब तक लोकतंत्र की इमारत के निर्माण का शीघ्रतया लोक द्वारा समाज की इकाई पर से प्रारंभ नहीं होगा। इस प्रश्न पर मैंने काफी चर्चा की है, इसलिए इसकी अधिक चर्चा आवश्यक नहीं है। मैं सिर्फ इतनी ही इच्छा रखता चाहूँगा कि जो लोग बुनियादी लोकतंत्र की स्थापना के लिए गांधी द्वारा परिकल्पित तथा विनोबा द्वारा प्रतिपादित ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रम में लगे हुए हैं, उन्हें विष्ठा, सातत्य और एकाग्रता के साथ अपनी शक्ति को इसी में केन्द्रित करना चाहिए। वे अपनी शक्ति प्रचलित लोकतंत्र के मुद्दों के दूसरे कामों में, चाहे वे तात्कालिक हितों से विलेने ही उपयोगी और आवश्यक क्यों न हों, न लगायें। नहीं तो उनकी शक्ति विभ्रम जायगी। उन कामों के लिए परंपरागत लोकतंत्र के प्रति-शील विचारकों पर भरोसा करना चाहिए। वस्तुतः इस पद्धति में मुद्दा की कल्पना इन्हीं लोगों के चिन्तन का परिणाम है।

प्रचलित लोकतंत्र के प्रश्न पर तटस्थ पक्ष के मुद्दा के अलावा कुछ और मुद्दों की

बात सामने आयी है, और इसी पहलव-प्रवाह बाधू जैसे प्रगतशील विचारकों द्वारा हो सकी है। लोकतंत्र के अद्यतन विचार के अनुसार तंत्र में लोक की प्रत्यक्ष भागीदारी को अनिवार्य माना गया है। इस तत्व को पार्टिसिपेटिव डेमोक्रेसी की संज्ञा दी गयी है। अल्पकाल बाधू के लोक राज्य की कल्पना इसी विचार के अनुसार है लेकिन तुम लोग विनोबा की प्रेरणा से जिस लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते हो वह पार्टिसिपेटिव डेमोक्रेसी से थाने बदकर इनीशिएटिव डेमोक्रेसी की कल्पना है।

आज तुम लोगों में जो मान नये चल रहा है वह मुख्यतः इन्हीं प्रश्नों को लेकर है। बाकी जो व्योरे की चर्चा हो रही है वह सब इन्हीं मुख्य दो हितों से जुड़ी हुई है। हमारे कुछ मित्र लोकतंत्र की पहली हट्टि में मुद्दों के पक्षपाती हैं। और उस हट्टि को फलीभूत करने के लिए हमने जनता के उम्मीदवार के विचार को अस्वीकृत किया है और सर्व-सेवा-सभ को उपरोक्त तटस्थ पक्ष के रूप में विकसित करना चाहते हैं। मैं मानता हूँ शायद जमात की हैसियत में हम वही तक बढ़ सकते हैं। लेकिन उस काम को संचालित करने में हमें इस बात पर ध्यान रखना होगा कि उसे ग्रामस्वराज्य की मूल कल्पना के समवाय में ही प्रसारित और सगठित करना होगा। जो लोग ग्रामस्वराज्य की परिपूर्ण कल्पना के अनुसार लगे हुए हैं वे उसी काम में अपनी शक्ति केन्द्रित करते हुए भी उपरोक्त प्रचलित राजनैतिक मुद्दों के प्रयास के साथ अपना पूर्ण सहकार कर सकते हैं। मैं मानता हूँ कि उपरोक्त दोनों हितों को मानने वाले संपूर्ण रूप से परस्पर सहकार में लग सकते हैं। इतना ही नहीं बल्कि वह सहकार एक दूसरे की पूरक शक्ति के रूप में काम करेगा। तुम लोगों को ये जो भय है कि तीसरे तटस्थ या राजनीति निरपेक्ष पक्ष द्वारा राजनीति में 'सही कामों का गौरव और जनतंत्र कामों की आलोचना से लोगों में ये बृद्धि-प्रेरणा पैदा होगा कि हममें से कुछ मासक पक्ष से साथ और कुछ विरोधी पक्ष के साथ है वह सही नहीं है क्योंकि वह जो तीसरा पक्ष है वह केवल जनमत के लिए चलन-नहीं बानों का विवेकपूर्ण करता रहेगा। उसमें किसी के साथ

जोड़ने का सवाल पैदा नहीं होना चाहिए। प्रत्यक्ष आज जो मनभेद और हट्टिभेद का दर्शन हो रहा है उससे धवराके की आवश्यकता नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि अगर हम इस चीज से धवराके तो भय है इस धवराहट के गर्भ में से पक्षभेद का, जन्म न हो जाय।

आखिर वे तुमने इन्दिराजी के बारे में मेरा अभिप्राय पूछा है। अच्छा है तुमने पूछ लिया। क्योंकि मैं इस मसाले पर कुछ कहता नहीं हूँ मेरा विचार अपने साथियों से भिन्न है। वस्तुतः इन्दिरा के लिए मेरे मन में बहुत अधिक सहानुभूति है। मैं मानता हूँ इसने सत्ता पर पहुँचने के लिए और उसे चाराने के लिए काफी अर्थनिक काम किया है, लेकिन उस विन्दु को मैं विशेष महत्व नहीं देता हूँ। आज की राजनीति इतनी गरीबी और यह स्वाभाविक रूप से है, क्योंकि यह राजनीति अब भाउट काफ़े डेट हो गई है, बासी हो गयी है और उसने लगी है। इन स्पष्ट है कि जो कोई भी उभरे रहेगा वह अर्थनिकता का शिकार होगा ही। तो दुनिया के राजनीति वाले जो धया करते हैं, इन्दिरा भी वह ही करती है। हम लोग बचपन में एलजबरा का इक्वेशन बनाते थे। उसमें कुछ मजबूत में जिनका समान, कामान होना था उसे क्रैकेट के बाहर करके बाकी क्रैकेट के अन्दर रखते थे उसी तरह जब मैं सभी राजनैतिक व्यक्तियों पर विचार करता हूँ तो अर्थनिकता को क्रैकेट के बाहर करके उमके बैचल काम का ही विचार करता हूँ। यानी मैं यह देखा हूँ कि अर्थनिकता के अलावा उमने जो कुछ किया है उसका स्थान राष्ट्रजीवन में बड़ा रहता है।

इस हट्टि ने जब मैं, इन्दिरा ने क्या किया है, इस पर विचार करता हूँ, तो मैं देवता हूँ कि उमने बहुत बड़ा काम किया है। वस्तुतः मेरी हट्टि में उमने देश को बचाया है। १९४७ से १९६७ तक दो दशकों में मुल्क के सबसे मजबूत पक्ष में अपनी सारी मास गवा दी थी और देश के अधिकांश राशियाँ में उसकी सत्ता समाप्त हो गयी थी। नेट में भी उमने जो शक्ति आर्थनिक कमजोर हो

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विना टिप्पणी के : भोल श्रादाता नौकरशाही के चक्कर में

राजस्थान में उदयपुर जिले की रेलमयरा तहसील में करीब १००० बीघा भूमि भूदान में प्राप्त हुई जिसके विवरण श्री अन्तरा राजस्थान भूदान यज्ञ बोर्ड ने अपने कार्यकर्ता हुए स्थानीय सादी सभा के माध्यम की। इसी तहसील में बंदूको गाँव में १२ पिछड़ी जाति (भौल) के भूमिहीन लोगों को १०० बीघा भूमि विनिर्दिष्ट की गयी। तत्पश्चात् तहसीलदार ने सन् १९६६ में भूमि पैसुद कर भूदान बोर्ड के नाम दिये जाने के श्रावण पत्रकारी हस्ताक्षरों दिने किन्तु यह श्रावण पत्रकारों में ही पड़ा रहा और दो-तीन साल तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी। कई बार भूदान बोर्ड के जमपुर से कार्यकर्ता इस काम को निपटाने हेतु बार-बार स्थानीय सभा के कार्यकर्ता न भी समय-समय पर तत्राजि लिखे किन्तु पत्रकारी जी के काम में अंत तक नहीं रंगी। तत्पश्चात् तत्राजि से पत्रकारी जी को ड्राफ्ट देई और उन्होंने भूमि मांगी। किन्तु रियुनराइज की संपूर्ण कार्यवाही नहीं की गयी। भौल लोग हुए और वे उस भूमि को अपने कठिन परिश्रम से उपजाऊ बनाते थे खुद गये। लेकिन ४ वर्ष बाद फिर साफल्य की धरो धार्य। नये पत्र-सौलदार ने उन भौलों को सरकारी भूमि पर साक्षात्क रक्खा करने के कारण भूमिना धरा करने तथा भूमि से रक्खा हटाने का नोटिस जारी कर दिया। भौलों में तहलका मय था। उनके समग्र भविष्य के सपने डह गय। इन तहसील गरीबों पर ४० ६० से लेकर २०० रुपये तक भुमिना किया गया। इन लोगों ने साल बहा कि यह भूमि हमें भूदान में मिली है—इस पर हम पर ४ वर्षों के दायि कर रहे हैं—इस पर हस्ताक्षर रक्खा है। हमने कई नासायक रक्खा नहीं किया है। लेकिन इन गरीब भूमिहीनों को धाराज इस धाराज मुक्त से कैसे मुक्त है? कई बड़े जमीनदार, गाँव-गाँवों की प्रतिष्ठित लोगों ने सैन्य दो बीघा सरकारी भूमि पर नासायक रक्खा कर रखा है। लेकिन उन्हें बेखत करने का नोटिस जारी नहीं होता, क्योंकि वे सायन सारण हैं, प्रभावशाली हैं, उन्हें भेंट देने और दिवंगत हैं। मराने के लिए गरीब को है। तहसीलदार

ने इन गरीबों की एक न सुनी और न धाने वायंमय में दीयक बाटनी भूदान की पाइल का देवने की पावबयकता भी महसूस की। वे सताये हुए भौल मेरे पास आये। मैं उन दिनों स्थानीय सादी सभा में कार्यकर्ता था। सादीभारी लोगों के पास उनके कई बड़े दवा हानि हैं, ऐसी उनकी धारणा थी। मैं उनको लेकर तहसीलदार से मिस्रा और उनका संपूर्ण जानकारी से प्रत्यक्ष कटाया और प्रायेंना की वि इस समस्या को तत्काल सुलभमाय जाय। तथा जब तक यह मामला तय न हो जाय तक तब इन्हें तय न दिया जाय। इस प्रायेंनायक की प्रतिनिधि भूदान यज्ञ बोर्ड जमपुर तथा जिलाधीश, उदयपुर त्र भी दो। माननीय मन्वत जी उपाध्यक्ष, मध्यस्थ भूदान यज्ञ बोर्ड ने इनमें साहरी दिनबस्ती लेकर त्रिनापीठासभा तहसीलदार को इन कार्य की लिए तार दिये। और पर त्र लिखे। लेकिन बचने सायजुद की भीरो को खाना जारी रखा। उन्हें माये दिन पेसो पर रेलमयरा तहसील में बुलाका जाना। उन्हें नहीं मालूम कि एक दिन मजदूरी नहीं करने से उन गरीबों के घरों में पूछा तक भी नहीं जवेगा। कई लाग ने मजदूरी से बचें लेकर जर्मना भर दिया।

लेकिन भाय ने पलटा साया। तहसील-दार का खानासाराण हो गया। उसकी जगह एक देवता वृषभ शायद उन भीलों का उदार करने धिया। मैंने उन्हें फिर से इस बेग की जानकारी दी। उन्होंने औरत सभी सर्वाधिक कार्यकर्ताओं को पत्रकारा और कहा कि इन गरीबों के पास जाने की घर में दाने भी नहीं है और मुझे इन्हें टण बतले ही, हम नहीं धार्य। ६ वर्षों में भी इस भूदान के कामों को क्यों नहीं निपटाया गया? धार्यरकार हम बंदूकी गये। मात्र के प्रतिष्ठित लोगों को बुलाया गया। भूमि नापी गयी। किन्तु मामला बड़ा देवीदा निकला। भूदायुर्द पत्रकारी ने अपने स्वार्थवत वालात्रिक भूमि को गरीब न कर आजाज से सीमा निर्धारण कर दिया था और तत्समय भौलों ने जिन भूमि पर रक्खा किया उनमें कुछ सरकारी भिना नाय की,

मुझे बरनोट भी और कुछ भूदान की भूमि भी। उस पत्रकारी ने मामला निकला उनका दिया। बरनोट किसी को बन्दोबस्त नहीं की जा सकवी है। ६ वर्षों तक वे लोग इत भूमि पर कायिज थे और बाजन करते धा रहे थे। इन वर्षों में सरकारी रक्खागरी नीद निरखत रहू ध—इसक मायवालो को भी भूदायुर्द मया। जिससे वे लोग भी बरनोट की भूमि नौ देन का विरोध करने लगे। बरनोट प्रसोट करने के लिए सचविन द्रायतमा को सहायि वाहिए। दुर्नाययव्य शायतमा के कानून में गरीबों का जना बरखा नहीं मिला है। तह-सौलदार जी के मानने गरीब समस्या पैदा हा गयी। इसर में यह भौलों का मना करना चाहिए से उभर मायवाजि उन्हें बेखत करने पर धडे हुए थे। तहसीलदार ने मायवाजि को ममसाया कि देसों में गरीब भूमिहीन धारने सहारे बहा वृष भूए है वे धार ही की मेहनत मजरी करने अपना पट भरते हैं। यदि इनको भूमि से बेदमन किया गया तो वे भूको मर जायेंगे। वर्षों में की गयी इनकी मेहनत बकार जायगी। यदि धार इन्हें भूमि देने में सहायक होने तो वे लोग धायकों दुधा देंगे। इस बात का लोग पर धसर कर धायक उनके दिमल म बरणा जागी—स्वीकृति मिल गयी—भौलों को भूमि मिल गयी—उन्होंने मात्र बालों तथा तहसीलदार की अय-अकार की। इस प्रकार उन गरीब भौलों को परेशानी से उद्वारना मिला।

बाज भी कई जगह ऐसी सामर्याए है। भूदान की भूमि के भागडे चल रहे हैं। लोगों को इसी प्रकार सरकारी तब का विचार होकर पड रहा है। भूदान यज्ञ बोर्ड को वषा-सोषक भूदान की भूमि का निपटारा करना चाहिए। इसके एक और गरीबों को साहज मिलेगी तो दूसरी ओर प्रभावकाराव्य की रथायक के लिए शोकासिकि जायुत होगी। सर्वोय्य कार्यकर्ता लोकसेवकों का यह परम वनय्य है कि वे धाने-धाने शोच में ऐसे कार्य हाय से तै और धरने को सहायि माने में लोक-सेवक मिड करें। ताहि पाणी, जिनोवा, अयप्रवाक का स्वयं साकार हो।

अमरावत बेग मिर्जा

भूदान-यज्ञ, सोमवार, २१ जनवरी, '७४

प्रादरभयना को अपनी बेनी दृष्टि से, योग्य शब्दों में रखा तो विज्ञान के प्रात्यंतिक पक्ष-पर और अध्यात्म के बारे में कदाचित ही सहानुभूति के साथ सोचने वाले पंडित जवाहर लाल नेहरू को घात कुछ ऐसी पटी कि वे बाद में जहां जाते वहां 'विज्ञान और अध्यात्म' में सामंजस्य का सर्चा किये बिना नहीं रहते थे। ये मन्त्र-युग के प्रारम्भ से ही पश्चिम की टीका-प्रतिभाषाओं ने इस 'प्रतिभिकता' के खतरों से लोगों को भागाहू करवा प्रारम्भ कर दिया था। किन्तु जैसी बुद्धि-देलखड़ में लोकोक्ति है। बुद्धिमा कहल तो टीका है, पूरे सुनं कौन ?' शहर ने भटारहवीं शताब्दी में ही कहा था, भ्रमरवत धूमते चने जाने वाले यंत्र के चक्रों की नीरस धुन में भ्रामरी अपने अस्तित्व के लक्ष्य को कुठित किये बिना नहीं रह सकता— हटत होगा तो वह विज्ञान को हस्तगत करके जन भोजारो से काम लेने में कुशलता प्राप्त

करेगा, उन्हीं की छाप उसके बेहरे पर धा जायेगी धीर वह भ्रामरी नहीं, भोजार की शकल लिए धूमेगा। समाज में बड़ रही प्रदर्श बहुलता के प्रति व्यक्ति के धार्मिकता को धीर भी सटीक शब्दों में बांधा हमसने ने ; उन्हींने लिखा :

चीजे होइ पर नही हूँ
होबा यथा है भ्रामरी की पीठ पर
दूसरी तरह कहे नो वह सकते हूँ
भ्रामरी चीजो के फेर में
कोल्हू का बँल हो गया है
मोठी पट्टी बधी है जिसकी पीठ पर
क्योकि नियम निश्चित है कच के
विरोधी धीर पकने
चीजो के धीर व्यक्ति के
उनकी शलग-भलग शक्ति के
चीजे शहर बनाती है धीर सैनिक धीर सिपाही
भ्रामरी को कुछ नहीं देती वे
देती हैं तो सिर्फ तबाही

भ० प्र० मि०

प्रांतीय सरकारों का गठन या संचालन करेंगे, वे मसले महत्वपूर्ण हैं। मेरे इस सबंध में अपने विचार हैं; किन्तु विप्लववादी उनके बारे में कुछ कहना प्रासंगिक नहीं है।

एक यह प्रश्न भी पस्चित महत्वपूर्ण है कि पास-पड़ोस के समाज और उनके परिपदों, कार्यसमितियों और उनकी परिपदों जिस ढंग से काम करती हैं, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मैंने इस क्षेत्र में कुछ किया नहीं है और इस लिए मेरे पास ऐसा कोई अनुभव नहीं है जिसके बल पर मैं कुछ सर्वसामान्य निष्कर्ष सामने रख सकूँ। मेरे स्थान से यही वह क्षेत्र है जिसमें धारण सबको जुटना है और जिसके लिए धारण भरपूर योग्यता भी रखते हैं। धारण में से ज्यादातर लोग शहरों से संबंधित हैं और धारण में से कुछ का तात्कालिक मजदूर आन्दोलन से भी है इसलिए यह धारण के लिए ठीक क्षेत्र और उचित पक्षों है और श्रीराय का 'जन-समितियों' से जो अभिप्राय था, उसे साकार कर सकते हैं।

इमा प्रतिनिधि परिपद को या तो सर्वसामान्य इहमति के आधार पर या केवल मतों की संख्या के आधार पर इस विचार से अपने प्रतिनिधियों को चुनना चाहिए कि सबसे अधिक लोकप्रियता किये प्राप्त है। इस प्रकार प्रतिनिधि को चुन लेने के बाद परिपद को चाहिए कि यह सर्व सम्मति से उसे अपना उम्मीदवार घोषित कर दे। यदि वह सारा काम समझदारों और सद्भावना से हो सके तो स्पष्ट कि निर्णित उम्मीदवार एक भी संसा ज्वं किये बिना चुनाव जीत जायेगा। वह लोगों का ही उम्मीदवार होगा और यह लोगों का नतीज्य ही वह जायेगा कि वे उसे चुनें।

यह तो ठीक ही है कि यह एक भ्रामरी उस्वीर हुई। इसे व्यावहारिक स्तर पर लाने में कई कठिनाईयाँ सामने धायेंगी और राजनीतिक दल तथा दूसरे निहिन स्वार्थ इस रूढ़ि को विफल बनाने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देंगे। यह तो कोई भी नहीं कहता कि सच्चा जनार्थित लोचलन धन्यायस या

पहले ही प्रयत्न में साकार हो जायेगा।

अपने प्रस्ताव को सोझा धीर साफ करने की गरज से मैं दो-एक बातें धीर कहूँगा। पहली तो यह कि धामसभा प्रतिनिधि परिपद अपने उम्मीदवार को चुनने और घोषित करने के बाद समाप्त नहीं हो जायेगी। बल्कि भगला चुनाव घाने तक वह भी सक्रिय रहेगी दूसरी यह कि उसका मुख्य काम धामसभाओं से सम्पर्क रखने का होगा, वह उन्हें नहीं बना हो रहा है इससे भागाहू रखेगी और उनसे भी उनकी बात सुनेगी-जातेगी। दूसरी धीर वह विधायक से सम्पर्क रख कर इसकी जानकारी भी रहेगी कि कहा, क्या हो रहा है, जान लेने पर उसके साथ विचार विमर्श करेगी और उसे सलाह देगी और उसका मार्गदर्शन करेगी। परिपद सम्बन्धित क्षेत्र में विधायक के द्वारा सम्पर्क, कार्यक्रम का प्रवर्ध करेगी, ताकि विधायक अपने मत-दाताओं के साथ सीधा-सीधा जुड़ा रहे।

विधान सभा में इस पद्धति से चुने हुए विधायक, काम किस प्रकार करेंगे और यदि उनका बहुमत हो जाता है तो वे किस प्रकार

गाँवों के लिए पिछले कुछ वरसों में बिनोबा जी के भूदान-ग्रामदान और ग्राम स्वराज्य ने क्रमानुसार मुझे और देश भर में संभव कार्यकर्ताओं को इस बात में लिए आवश्यक अनुभव और इच्छा दी है कि वे इस दिशा में पहले कर सकते हैं और कार्यक्रम को ठोस रूप दे सकते हैं। एक और दलील जन-संघ की निरर्थकता का ग्रहण धीर दूसरी धीर सर्वोदय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग ले कर विस्तृत अनुभव पर खड़े हो कर धाम स्वराज्य की दिशा में काम कर चुनना, ऐसे दो अनुभव हैं जिन्होंने इन विच्छेद दिशाओं से धारण कर वह धारण और वातावरण बना दिया है जिसका लाभ उठा कर सच्चे जनार्थित लोकसंघ की दिशा में लड़ी छत्राग लगाई जा सकती है। देश के नौजवानों से मेरी अपील है कि वे इस ठीक मोर्चे के प्राचन को हाथ से छूटने न दें, हम भ्रमरवत को बस कर पकड़ें और जमना उनसे जो धामा धारण रहा है उसे अजाम दें। भव युवक धीर युव-निधिया धामा का कर इस मरणाज को धारण करें बड़ें। धामा धारण सबको धारण लगा रहा है। सफलता प्राप्ति में सारी है।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सर्वश्री ब्रह्मानन्द रेड्डी, केशवदेव सालवीय और बुद्धप्रिय सीर्य को राज्य मंत्री नियुक्त करके अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कर लिया है और इस तरह अब केन्द्रीय मंत्रिमंडल में छोटो-बड़े मंत्रियों की संख्या साठ हो गई है। किसी दिन वह एक भी साठ ही हो सकती है—मगर वह अल्प संख्या है। यहाँ हम श्री केशवदेव सालवीय को मंत्रिमंडल में लेने पर जो बातें चल गिबती हैं, उनको-भर धूना चाहते हैं।

श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी की कोई क्षणिकी नही है और बुद्धप्रिय सीर्य विद्युत् के बर प्रतिनिधित्व करने वाले माने जा सकते हैं, इसलिए उन्हें मंत्रिमंडल में लेने के विरोध में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। सालवीय जी की नियुक्ति की विरोधी प्रतिक्रिया हुई है। बारम्बार स्पष्ट है। वे पंडित जी के समय में कभी नेटो-विषम धारित के मंत्री थे। अब तक रहे उनका विवादास्पद काम बना रहा, फिर सिंघुआडूरीन क्षणिकी से सर्वप्रति अष्टाचार की इतनी चर्चा हुई कि आज करबानी पडी। सालवीय जी अष्टाचार से युटे माने मये और न चाहते हुए भी पंडित जी को उन्हें मंत्रित्व पर से हल्य करना पडा।

एक पहाड़ से हटा कर भी लोगों को बहो न बहो कुछ देने की कोई लाचारी सला की रायनीम से मायब चुडो हुई होती है। (श्री रेड्डी की नियुक्ति भी इसी लाचारी के धन्यमन मानी जा सकती है) मातवीय जी को मंत्रिमंडल से धन्य होने का बाद राणी-रिण्ड भारी उद्योग-विद्योग का 'मायब सला दिना गया—धन्यत् अष्टाचार से तब भी एक सार-भोजन किया गया था। किन्तु अब उनका दम बरों के बाद फिर से नेटवीय मंत्रिमंडल में ही शामिल कर लिया जाना तो बहुत ही विचारी है। प्रधानमंत्री द्वारा की गई इस नियुक्ति के पीछे, मगरत, बाँधम में साध्यकारी विचार-धारा से महाभूमि रखने वाले तबों तथा भारतीय साम्यकारी दल के दबाव का ह्राप है। दबाव को एक धरते से था। विगत मई में

विमान दुर्घटना में श्री कुमार मगतम् की मृत्यु हो जाने के बाद साम्यवादियों ने यह धनु-भव करना शुरू किया कि अब नेटव में उनका ऐसा कोई साथी नहीं रहे गया है जिसने साम्यम से वे अपने लक्ष्यों की प्रति करवाते रहने के साथ ही सरकार की नीतियों को भी प्रभावित कर सकें। साम्यवादियों के दबाव को धान लेने का एक छोटी बारम्बार उत्तर प्रदेश के चुनाव भी बन गये। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से सला बाँधम दल कोई न कोई चुनाव सम-भोजन तो चाहता ही है। वे ३० से ४० के बीच में सीटें माग रहे हैं। जब कि अभी तक विधान सभा में उनके पास केवल ४ सीटें हैं। कदाचित् श्रीमती गांधी ने विचार किया हो कि मगर साम्यवादी विचारधारा का कोई अचिन संविदेक स्वर के मंत्री के रूप में ले लिया जाये तो उसी को धारापर बनकर उत्तर प्रदेश में साम्यवादियों से, भरदाइत कम सीटें दे कर, चुनाव गठबंधन कर पाता धातान हो जायेगा। साथ ही साम्यवादी दल 'जगदा जी खोल कर चुनाव अभियान में भी ह्राप बढ़ायेगा। ये चुनाव अभियान की प्रधान मंत्री को विरोध खिला होता है पंजाबि दिलाता है। सला काँधम के पास चुनाव लड़ने के जो साधन हैं वे इनके विविध और पर्याप्त से बहो धधिक हैं कि प्रचार-प्रधियान उसके लिए चिन्ता का विषय नहीं हो सकता। सालवीय जी को नेटवीय मंत्रिमंडल में लाने का सम्बन्ध सीटों से सीदेबाजी से ही धधिक है।

(पृष्ठ ३ का शेष)
सलतक विचारविचारालय में छात्रों की धारांशिक सभा में बोले हुए ७० शी० की बहो कि छात्र अपनी सक्ति छोटे-छोटे कामों में धान्योलन करने लष्ट कर रहे हैं। निष्ठा के धामुन परिवर्तन के लिए धारोवन किया होता तो निष्ठा का स्वकण ही इस देश का कुछ भी होना। उन्होंने बहो धन्यत् माह में प्रदेश में चुनाव होने जा रहे हैं—धारित छात्र क्या यह अष्टाचार दलने ही रहे? अपनी लक्ष्य की उपभोग करने का बर धरकर मिलेगा?

कुछ भी हो, एक ऐसे सज्जन को फिर से मंत्रिमंडल में शामिल करना जो अष्टाचार में सम्मिलित तप किये जा चुके हो, स्वल्प लोकतांत्रिक परम्पराओं के साथ बठईं शीक नहीं बैठता। इसीलिए जी होता है कि तुलसीदास जी के धन्य सदरमें बहू गये ध्राधबयं मूचक इन बहों का उपभोग किया जाये 'केसव, बहि न जाय, बर नहिए।' धारा विपसी दलों के विरानुद्दीन नाड की रिपोटें प्रकाशित थीं आज, ऐसी माग भी की है। किन्तु हमारी वर्तमान सरकार विपसियों की माग परकान देने की जरूरत क्यों समझे!
एक उत्तम उदाहरण

इसी अष्टाचार टुनिधिया और सीविया दोनो देशों में दो बरी जगह मिल कर एक देश हो जाने की सोचा है। अब दोनो देशों में एक ही सेना, एक ही सभद, एक ही सविधान और एक ही राष्ट्रध्वज तथा एक ही राष्ट्रगान होगा। दोनो देशों में मिलकर एक ही 'इस्लामिज ध्राध रिपब्लिक' बनना तय किया है। धरती में इसका कोई दूसरा नाम रखा गया होगा—मगर हमें तो सभाधार बरों जी में हो मिलते हैं और इस प्रकार विध्यसियो, मूल सध्याओं और देशों के सही नामों का अनुमान तक लघाता सुविधान हो जाता है।

दो देशों का इस प्रकार एक हो जाना 'जय-जगत' की दिशा में चाहे जितना छोटा कम्ये न हो, एक महत्वपूर्ण कदम होगा।
—म० प्र० वि०

अब समय धारा है कि धारा की सक्ति स्वकण तथा शुद्ध चुनाव बनाने में लगती चाहिए—चाहे इसके लिए पन्ड-श्रीम दिव की वरगईं ही छोड़नी पडे।

उन्होंने बहो कि इस समय मूड तयों स्वकण चुनावों ध्राधमिक बन्य होगा। लेकिन धारे लोकतंत्र को मयबुन करने के लिए देश में साम्यवाद पर धाम सभाओं की सर्व सम्मिति से निमार्ण होगा और वहाँ के द्वारा सर्व सम्मिति से चुने गये निष्ठा अचिन चुनाव लड़ने। —इच्छाकण सहाय

समाचार

× ३० नवम्बर को बेगुमराय ने खादी प्रेमियों एवं कार्यकर्तियों की बैठक में खादी का नव संस्करण कर उसे जनाधारित बनाने का निर्णय लिया गया। इस कार्य के लिए एक साक्षर रूपे की धनराशि एकत्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। विधान एवं कार्य योजना के लिये जिले की एक तदर्थ समिति गठित की गई। बैठक की अध्यक्षता बिहार के भू. पू. मंत्री श्री सरयुप्रसाद सिंह ने की। रामस्वरराज्य संघ के मंत्री श्री निर्मलचन्द्र ने भी बैठक को सम्बोधित किया।

× रतलाम जिले के रामदासी गाव रुपाखेडा में २८, २९ व ३० दिसम्बर को सम्भागीय तरुण शक्ति सेना शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में इन्दौर, रतलाम, धार तथा पूर्व निमाड़ जिले के ३० तरुणों ने भाग लिया। विचारधाराओं के भोजन एवं निवास की व्यवस्था का भार गाववासियों ने ही वहन किया। शिविर संचालन श्री धर्मपाल भाई ने किया। रुपाखेडा के ब्यक्तिगत प्रभिक्रम से किसानों ने १७ गोबर गैंग प्लाट लगाये हैं।

× २२ एवं २३ दिसम्बर को पलामू जिला सर्वोदय मण्डल द्वारा जालदण्ड में जिला भूदान किसानों का सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में लगभग चार हजार किसानों ने भाग लिया। सम्मेलन में जिले के सभी सरकारी अधिकारियों ने भी भाग लिया। भूमि सुधार बर्ग के दौरान जिले में सहाय्यीय कार्य हुआ है। इस अवसर पर श्री सहटन चौधरी, राजस्व मंत्री बिहार, तथा वन राज्य मंत्री श्री राजेश्वरी सरोजदास भी उपस्थित रहे।

× गत २५ दिसम्बर को पूरानन्द इन्टर कालिज दुबे छपरा में प्राचार्यकुल के तत्वावधान में 'शिक्षा में स्वायत्तता' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ लगभग ४० शिक्षकों ने गोष्ठी में भाग लिया। बैठक का सभापतिव्यवस्थापिता जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री रामेश्वर प्रसाद ने किया। श्री रामचन्द्र राही, श्री राम जी भाई व श्री वासुदेव चन्दावार ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रकट किये।

× पिछले दिनों बाराणसी में सम्पन्न हुए पन्तराष्ट्रीय शक्ति शोध सभ के पाठ्य प्रमेलेन ने एक प्रस्ताव द्वारा निर्णय लिया कि एशिया में इम्रा की एक क्षेत्रीय शाखा स्थापित की जाय जिसका मुख्य कार्यालय बाराणसी में गांधी विद्या सस्थान में रहेगा और जिसके प्रथम महामंत्री गांधी विद्या सस्थान के निदेशक प्रो० युगत दासगुप्त होंगे। सम्मेलन में श्राये जापान, दक्षिण कोरिया और भारत के प्रतिनिधियों की एक बैठक एशियायी सगठन के सचय में हुई और एक कार्य-समिति निम्नलिखित व्यक्तियों की बनायी गयी —

सर्वथी इम्रोडा ताकेशी, जापान, बोई बाग-जी, दक्षिण कोरिया, मुशाकोजो, जापान, राधाकृष्ण, भारत; रामलाल पारील, भारत, नुरुल हक चौधरी, बंगला देश, मुन्देन्द्र कुमार श्रीवास्तव, भारत, एसवियानों श्रादेव (महामंत्री, इम्रा)

× सर्व सेवा सभ ने मंत्री श्री ठाकुरदास बग ने मन्त्री-पत्र भेजते हुए सभी प्रांतीय एवं जिला सर्वोदय मण्डलों को लिखा है कि प्रति वर्ग जनवरी में लोकसेवकों की सदस्यता दर्ज होनी है जिसकी अन्तिम तारीख ३१ जनवरी है। इसके बाद जिला सर्वोदय मण्डलों के पदाधिकारियों एवं सर्व सेवा सभ के लिए जिला प्रतिनिधि चुनने की कार्यवाही प्रारंभ होती है जो फरवरी माह के अंत तक पूर्ण हो जानी चाहिए।

श्री बग ने विशेष रूप से स्थान प्राकार्यित करते हुए लिखा है कि लोक सेवक निष्ठा-पत्र में वर्णित निष्ठाओं का वास्तविक पालन करने वाले व्यक्तियों को ही लोकसेवक बनाना चाहिये। चुनाव के लिए समस्त लोक सेवकोंके यथा समय सूचना दी जानी चाहिए। इन सूचनाओं में वे लोकसेवक ही हिससा लें जो ३१ जनवरी, १९७४ तक लोकसेवक बन गये हों और जिनका सदस्यता मुक्त मिल गया हो। चुनाव के पश्चात जिला सर्वोदय मण्डलों के पदाधिकारियों एवं जिला प्रतिनिधियों के नाम एवं पत्रों की सूची प्रदेश तथा सर्व सेवा सभ को मार्च, १९७४ तक भेज देना चाहिए। लोकसेवकों के निष्ठा पत्र पूर्ण रूप से खाना-पूति कर मुक्त एवं सूची

के साथ सभ कार्यालय में भेजी जाय और सूचना प्रदेश सर्वोदय मंडल को भी दी जाय प्रत्येक जिले में निश्चित लोकसेवक रिजिस्टर भी रखा जाय।

अतः में सभ मंत्री श्री बग ने प्राचा प्रकट की है कि सगठन को पवित्र, नियमित, और आर्थाचार्य एवं विश्वास पर प्राधारित बनाये।

× हरियाणा प्रान्त सर्वोदय मंडल ने दिसम्बर माह में साठे सान सौ रूपये के साहित्य की बिक्री के अतिरिक्त माह के पहले सप्ताह में सानपुर गुरुकुल डिप्टी वाजेज तथा नवलन कलेज परिवार में पश्चिमी प्रो० प्र० टिखा के प्रवचन, दूसरे सप्ताह में जगाधरी राठी, कुर्छेय और रायपुरदासी की विभिन्न शिक्षा सस्थाओं में मुनि जनक विजय तथा प्रांतीय मण्डल के मंत्री शीलभाई ने नवाबदी को मुख्य विषय बना कर विचार प्रचार किया। इस सप्ताह में लगभग तीन हजार विचारधियों से सपर्क हुआ।

दूसरे सप्ताह में जगाधरी नवाबदी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। पूर्व तैयारी और व्यवस्था में मन्त्री के प्रतिनिधि बाबा साल सिंह तथा भीमसिंह जी ने ध्यक प्रयत्न किया तथा सम्मेलन मुनिजनक विजयी जी के योगदान से सफल हुआ। सोमभाई तथा एण्ठी सान जी धारि सर्वोदय नेमणए भी इन में पधार और उन्होंने इसमें भाग लिया। तीसरे सप्ताह में भी नवाबदी का प्रचार, कार्य हुआ। चौथे सप्ताह में पट्टीदास्याणा प्राथम के कार्य के प्रतिनिधि २५ दिसम्बर को गलीर जता हाई स्कूल के वार्षिक उत्सव में सर्वोदय कार्यकर्तियों ने हाथ बटाय और अभिष्य के लिए रोहतक, हिसार, मिवाजी, सिरसा, एलनाबाद धारि में प्रचार और सम्पर्क कार्य किया गया। × प्रांत जानकारी के अनुसार तमिलनाडु में भूदान-सम्मेलन के अन्तर्गत ४७, ४९ ए व ४९ भूमि मिली है। यह भूदान प्रदेश के ५७७३ गावों में ६,७६३ दानाओं से मिली है।

प्रांत भूदान में से २०,४०६ ए व ४९ भूमि ५३५३ गावों में बसने वाले १२,६०० भूमि-होत परिवारों में वितरित की गई है तथा जॉब के बाद २३,६६७ ए व ४९ भूमि वितरित कर देने की पटी है।

वायिक मुक्तः १५ व ० विदेश ३० व ० या ३५ वित्तिय या ५ शालर, एक बंक का मूल्य ६० पैसे।
प्राथम जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्राप्ति एवं ०० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदाय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, बुधवार, ३० जनवरी, '७४



गांधी के प्रतिम धारणी को उतकी जमीन का टुकड़ा। विशेष लेख पृष्ठ ६ पर

सहरसा की सहस्र चुनौतियाँ × वेदखल दाखिल होंगे, दरवाजे खुलेंगे × हजारों हाथों में जकड़ी ह
ति × सहरसा अन्तिम अभियान के लिए तैयार है × मुसहरी प्रखण्ड लोक-नगराज्य की अ
ग्रामदानी और गैर ग्रामदानी गांव में फर्क क्या है ? × ग्रामदान की गाड़ी कहाँ ? × कुदाल व
तम पर समान अधिकार × लाशों की गिनती का पेशा, पेशेवर लोग × हिंसा से हालत सुधरेगी ना

भूदान-यज्ञ

३० जनवरी, '७४

वर्ष २०

अंक १८-१६

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

भारत सरकार की धोर (सम्पादकीय)

—भवानी प्रसाद मिश्र २

सहरसा की सहस्र चुनौतियाँ

—प्रभाप जोशी ३

बेदखल दाखिल होंगे, दरवाजे खुलेंगे

—अनुपम मिश्र ६

हजारों हाथों में जकड़ी हजरा जाति

—श्री० मि० ६

सहरसा अन्तिम अभियान के लिए तैयार है

—सुरेन्द्र चक्रपाणि ११

मुसहरौ प्रखण्ड लोक-गणराज्य की धोर

—सुरेन्द्र चक्रपाणि १३

ग्रामदानी धोर और-ग्रामदानी गाँव में फर्क क्या है ?

—विस्तार के वास्तविक १५

ग्रामदान क्या गाड़ी कहाँ ?

—निर्मल चन्द्र २१

ग्रामदानी : कुदाल धोर कलम

र समान अधिकार २५

विद्यया बहन

नार्यों की गिनती का पैसा, २८

निर्धर लोग —श्री० जो०

३०

हानपुर में, स्त्री शक्ति जागरण

रप्ताह ३१

हैसा से हालत सुधरेगी नहीं

—जयप्रकाश नारायण

—

राजघाट कालोनी,

पंथी स्मारक निधि,

ई दिल्ली-११०००१

आदर्श राज्य की ओर

'राज्य' शब्द का अर्थ है वह स्थिति जो शोभनीय हो। राजे, परिस्थिति में धोर परिस्थितियों में सजे। सजने वाली या शोभनीय स्थिति में सबसे पहली चीज होनी है—तर्तवीय, व्यवस्था, जैसा धोर जितना होना चाहिए वैसा—पन। भादशं राज्य को गांधी 'राम-राज' शब्द से व्यक्त करते थे धोर स्वराज्य धारणे के बाद ज्यादातर लोगों ने 'स्व' से भी अधिक महत्व शायद इसीलिए उपसर्ग—'सु'—शोभनीय, सुन्दर को दिया है। भारतीय सवधान ने हमारे ज्ञान को बल्कि 'बेल्केयर-स्टेट', बल्कि एकादरी राज्य के रूप में की धोर यह भाता कि लोगों के सर्वतोमुखी बल्कि एक प्राथमिक उपकरण शासन-तंत्र बनेगा। इसी दृष्टि से हमारी चार पंचवर्षीय योजनाएँ बनायी गईं धोर पाचवी धरणे अतिम रूप में सामने धरा गईं हैं। इस धवसर पर धार एक बार फिर से यह देख लिया जाये कि हमारा स्वराज्य कब धोर कहा-कहा धराशोभनीय है तो उसे शोभनीय बन्दाने, तर्तवीय देने, व्यवस्थित करने में मदद मिल सकती है।

हमारे राष्ट्रपति ने गणतंत्र दिवस पर धरणे संदेश में जो कहा उसके निहितार्थों में से इतनी बातें धराती हैं : एक तो यह कि देश में सर्वत्र हिंसा का वातावरण धोर अनुशासन हीनता व्याप्त है। दूसरी यह कि इसका परिणाम 'सुराज' तो दूर 'अराजकता' में प्रतित हो गयी है। तीसरी यह कि जीवन में बदनी चली जा रही है धोर लोग जैसे अभावग्रस्त धोर भ्रष्ट कभी नहीं रहे वैसे धराज है। उन्होंने इस स्थिति से गुणकले के कुछ उपाय भी सुभाये—विन्तु वे उपाय मूलतः प्रजा को धार में लाने हैं। जब कि सत्य है, प्रजा के हाथ में पहल किसी दखनात्मक काम या रोजमर्रा की जरूरत को भी व्यवस्थित कर सजने की नहीं है। सब कुछ राष्ट्रीयकरण की धारा में है—धरात राज्य के हाथ में है; राज्य में नीकर ही धरा होता है। प्रजा के धराधर हर जगह पहल सरकारी कर्मचारी के हाथ में है धोर सरकारी कर्मचारी धरणे वेतन की बढ़नी के साथ-साथ ध्रष्ट उपायों से धपनी धामदनी

बढ़ाने के धरातिरक धन्य किसी धान को महत्वपूर्ण नहीं मानता। सत्ता की तबसे अधिकारिध राष्ट्रियकरण के कारण उसके हाथ में धरा गई है। यातायात, शिक्षा, चिकित्सा, धन्य धोर वस्त्र सब सुविधाएँ बही दे सकता है धोर देना चाहता है, सत्ता की बल्कि के हिसाब से नहीं धरणे स्वार्थ को अधिक से अधिक साध कर, जनता के बन्ध को बच से कम परवाह किये बिना।

राष्ट्रपति के मन में यह स्थिति संदेश देते समय स्पष्ट थी धोर उन्होंने इसीलिए यह कहा कि देश तो गांधी में बसा है। हमारा शासनीय तंत्र धोर अधिक तंत्र गांधी को निगाह में रख कर संचालित किया जाना चाहिए। धोर उनको सहन सजा दी जानी चाहिए जो धरासाधारण रविये धरणते हैं, व्यतिरिक्त लाभ के लिए समाज की धारि की बर्तई परवाह नहीं करते। उन्होंने यह भी कहा कि जो दुष्कर्मी हैं, प्रजा को चाहिए वह उन्हें सब के सामने लीचकर खडा करे।

धव कौन है ये दुष्कर्मी ? प्रधानमंत्री, गृहमंत्री धोर धन्य मंत्री बहने हैं ये दुष्कर्मी विरोधी पक्ष हैं धोर विरोधी पक्ष बहने हैं दुष्कर्मी की धारा सत्ता के शिखर से फूटकर बह रही है। कभी कभी सत्ताच्छेद लोग भी बहते हैं, 'भारतीय धरातंत्र में बाले धन का राज है।' कम से कम तमिनाडु के परिवहन मंत्री एत० रामचन्द्रन ने तो इसे खुले धाम कहा—या बहिए स्वोचारे किया। धरातंत्र पर बाले धन के राज का मननव होता है, समूचे तंत्र पर बाले धन का राज। हमारा तंत्र चुनाव-धराधरित है। चुनाव ध्रष्ट तरीकों से, जिनमें सजने धराधर प्रधान 'धाना धन' होता है, जीने जाने हैं। जो पधानीत हैं धराधर धन मत्ता में हैं, न मत्ता के विरोध में हैं वे यही बहते हैं कि चुनावों को स्वच्छ बनाओ, मव स्वच्छ हो जाएगा। धराधरधारी यही कह रहे हैं, मव सेवा संप यही मन ब्यक्त पर रहा है, विनीवा का इमे मवमव है। धराधर

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

सहरसा की सहस्र चुनौतियां

—प्रभाप जोशी

तीन वर्ष से ग्रामस्वराज्य के राष्ट्रीय मों के नामे प्रसिद्ध विद्यार्थ के महुरमा जिनो मे प्रथम प्रशियान शुरू हा गया है। बैसे मो जो अब तक ग्रामस्वराज्य कायम नही हो जाना तब तक बोर्ड भी प्रशियान प्रशियान नहीं हो सक्ता। फिर मो इन प्रशियान प्रशियान प्रशियान विनोया मे प्रशियान कहा है ना इगलिए कि देगे के कार्यकर्ताओं की परिभाषित शक्ति को एक पूरे जिनो मे एक बार पूरी तरह क्या कर के यह देखना चाहते है कि क्या क्या होता है ? क्या के अनुभव के आधार पर फिर नये नाम की गुरुपान हा मकोनी है। महुरमा मे जिन लोगो न धयने को प्रशियान कर दिया था उनके लिए भी यह प्रशियान बोधा है कि वे धायनी प्रशियानना को पलिन करे और वहा से जो भी प्राप्त करे उमे फिर पूरे देगे को दे।

प्रथम प्रशियान का धावाहन विनोया मे धायनी ७६ को वर्षगांठ के एक दिन पहले १० नितम्बर ७३ को किया था। सहरसा के कार्यकर्ता उन दिनों प्रष्ट किया मन्दिर पवनना मे इकठ्ठे हुए थे और विनोया के साहित्य मे उनका मिन मिलन चल रहा था। विनोया मे जब वहा कि तीन महीने मे सहरसा का काम पूरा होना चाहिए तो बीचयाय बाबू ने कहा था कि तीन मास से हम सब सहरसा मे मग्ये हो हुए है लेकिन काम पूरा नही हो पा रहा है। विनोया से हम बहुत कि तीन मास के हमी अनुभव से हम तीन महीने मे काम पूरा करने को कह रहे है। ती. काम पडन है ना चार महीने मिल सके है। दो. प्राइवर से काम शुरू हो और तीन जनवरी तक पूरा किया जाय।

११ नितम्बर को दोहाड़ मे बाबा ने फिर कहा "मन मिल कर सहरसा का काम चार महीने मे पूरा करे। काम पूरा नही हो पाया तो मनी गंगा मे साप्ताहिक प्रवेश विचार-विमर्श किया और बाट महीनो के काम की एक योजना बनायी। प्राइवर से दिन-दर-दिन तक पूर्ण तैयारी और प्रशियान

संयोजना के लिए जनवरी मे धरत्र ७४ तक प्रशियान चलावेगा कार्यक्रम बताया। इस योजना पर १२ नितम्बर को विनोया ने कहा—'प्रभापकी योजना ठीक है। दान पम्भीर प्रयाग के लिए धाट महीने की मुद्रण चाहिए। कन मैन कहा था कि महुरमा का काम पूरा करा या पाया प्रवेग करा। यह जो निरपेक्ष गया म माना लगान का है उसका दूसरा भी धार्य है। यह यह कि भारत ध्यागो गया है उसम प्रवेग करो। विहार के साथी निरन पडे भारत मे। बाट महीना पूरी शक्ति के साथ सहरसा के काम म नवो। पचास प्रांतगत काम हुआ तो सफ्त माना जायेगा। अगर सफल हुआना सफलता के साथ भारत म जायेगे, प्रमर्श हुआ ना धन-पटना के साथ जायेगे। पूरा प्रयत्न व बाव-जुद प्रयत्नता मिली तो यह बड़ी सफलता मानो जायेगी। सुमीकनी का अनुभव धा जायेगा। अनुभवी मनुष्य हा। कर धाव बाहर निकले, उन अनुभव व लाभ दूसरो को मिलेगा।'

विनोया से इन धावाहन के उत्तर मे सहरसा सब फिर गरमा रहा है। पूर्व तैयारी हो चुकी है, प्रशियान सयाजन हो गया है और नागरिक शक्ति के साथ इस बार समाज-कारी दल के लोग भी कार्यकर्ताओं की मदद कर रहे हैं। चूकि देश म धीर भी जगह ग्रामस्वराज्य के मोर्चे खुले हुए है और कार्य-कर्ता उनमे सगे हुए है इसलिए देश के साथी लोग सहरसा पहुंच सही पाये है। मच पुष्टि एते ऐसा कभी भी हो नही पाया है। सहरसा मे यिदने वर्षों से लगे लोगों को धरमरत यह सिखावत रही है कि जिनके कार्यकर्ता महुरमा मे लगने चाहिए वे उनमे कभी नहीं लगे और दूसी कारण वहा का कार्यपूरा नही हो पाया। एक देशज्यापी धार्यजन मे ऐसा हो पाया थापद मभर भी नही है। जिन लोगो ने जगह-जगह काम से रने हैं और ग्रामस्वराज्य के मोर्चे मीन रहे हो उन सब के लिए

प्रयाग काम पूरा तरह छोड कर सभ्ये सम-के लिए किसी जगह जुट जाना समभव नहीं हो पाया। फिर जैसा कि विद्यपी नवम्बर मे दरमया जिन के विरोल मास म हुए धार्मिक सर्वोदय सम्मेलन मे कहा गया—'हमने धर तक सहरसा प्रशियान को ईमानदारी पूर्वक लिपटा के साथ तथा समर्पित हो कर धयना समय दिया ही नही है। हम बार-बार यही दुहराना है कि विनोया जी न सहरसा मे ग्राम-स्वराज्य का प्रशियान चलावे का धावाहन किया है इसलिए हम वहा के काम मे लगाना चाहिए। हमने कभी ऐसा महसूस नही किया कि महुरमा म ग्रामस्वराज्य का काम करने का निर्णय हमारा भी निर्णय है, विनोयाजी का धावेगमात्र नही है।' इसी सम्मेलन मे प्रशियानियों ने यह भी कहा कि 'सहरसा मे धमी तक कार्यकर्ताओं की शक्ति से ही प्रशियान चला है। हम स्थानीय शक्ति को ग्रामस्वराज्य के काम को उठा लेने के लिए तैयार नही कर सके है। कार्यकर्ताओं के भरोसे हम सब तक वहाँ प्रशियान चलाने सके। हम धायने के लिए वहाँ ऐसी भक्ति क्षमतायें कि वहा सर्वोदय कार्यकर्ताओं के हट जाने पर भी स्थानीय शक्ति के सब पर काम चलना यह सके। सहरसा की शक्ति से ही वहा काम होने खाता है।'

फिर भी यह सही है कि वहा काफी कार्यकर्ता शक्ति लगी है और स्थानीय सहयोग भी कम नहीं मिला है। लेकिन काम पूरा नही हो पाया। कमी नही हो पाया ? इसके के जमाने मे काफी जमीन मिली थी और धयवान भी वहां बहुत प्रच्छा हुआ था। विहार दान की पीपला, अक्टूबर ६६ मे हुई थी और स्वयं विनोया उप राजगीर सम्मेलन मे मोडुद मे जहा गांधी प्रतापकी वर्ष मे के पी ने एक सृजान उठा कर यह कार्य पूरा किया था। लेकिन समापार पको और मुद्र सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने कहा था कि विहार

दान में काफी कुछ योगस काम हुआ है। विनोबा धीरे-धीरे ने तब कहा था कि इतने सड़े पैमाने पर जब इतना बड़ा काम होता है तो सभी लोग काम मुस्ता नहीं हो पाता। बाबा ने तो गद में बोगस की मजाक भी खाई थी जिसमें वे अपने को भी बोगस कहा करते थे। लेकिन "काम सिर्फ कागज पर हुआ है" की चुनौती स्वीकार की गयी थी धीरे-धीरे विनोबा ने कहा था कि सब एक प्रति तुफान उठा कर पूरे बिहार में ग्रामदान की पुष्टि की जाये। यानी जिन गांवों में ग्रामदान की शर्तों को स्वीकार करके घोषणा पत्र भेरे हैं—उनमें बांधा में बट्टा निकाला जाये, ग्रामसभा गठित धीरे सक्रिय हो, प्रादि। लेकिन बिहार से विनोबा सेवाग्राम भाये धीरे फिर क्षेत्र संन्यास ले कर वे पटना में रहने लगे। तुफान से पहले लोगों ने प्रति तुफान उठाने की कोई जल्दी वा बेमन्त्री नहीं दिखाई। अक्टूबर ६६ से मई ७० तक के प्राठ महीने में पुष्टि का काम शुरू जरूर हुआ लेकिन वही भी उसने गति नहीं पकड़ी।

तभी निर्गत जे. पी. की मुसहरी खीच सायी। विनोबा के शब्दों में—“जयप्रकाश जी का शरीर थका हुआ था धीरे लोगों के प्राघट से जिन प्रायाम के लिए वे हिंसात्मक की मोद में पहुँचे थे। इतने में हमारे दो माधियों को लिखित धमकी दी गयी, नवमल-वादिनों की तरफ से कि तुमको कदल दिया जायेगा। इसकी जानकारी जय प्रकाश जी को मिली तो फौरन दौड़े प्राये धीरे जान की बाजी लगायी।”

लेकिन जे. पी. ने जान की बाजी मुजफ्फरपुर के दो साधियों की जान बचाने के लिए ही नहीं लगायी थी। पुष्टि का काम कैसे तेजी से चले धीरे बिहार में पूरे ग्रामदान कागज पर हुए हैं वे प्रत्यक्ष में पूरे करते हो, इग पर जे. पी. लगानार सोच रहे थे। मुजफ्फरपुर के मुसहरी प्रलड में नवमलवादिनों के कारणा एक सांकातिक चुनौती प्रायी धीरे जे. पी. जून के प्रथम सप्ताह में यह प्रतिज्ञा ले कर मुसहरी भाये कि या तो यहाँ काम पूरा होगा या मेरी हड्डिया गिरेंगी। नवमल-वादिनों की सूनी प्राति के सामने जे. पी. प्रॉटिवक प्राति की मिसाल पेठ कराना चाहते

ये धीरे इसके लिए उन्होंने ग्रामदान की पुष्टि का माध्यम अपनाया। जे. पी. की प्रतिज्ञा धीरे उनके मुसहरी प्राणे से बिहार के सर्वोप्य जगत में हलचल मची धीरे लोग तन्दा से जागे। चार महीने तक जे. पी. मुसहरी में भिड़े रहे। फिर दो अक्टूबर की सेवाग्राम में सघ प्राधिवेशन हुआ धीरे विनोबा को ग्रामस्वराज्य कोष भेंट दिया गया। उन्ही दिनों पवनार में जब बिहार के सभी विनोबा से मिले धीरे पूरे बिहार में चल रहे पुष्टि कार्य को रीपोर्टें उन्हे दी तो विनोबा ने पूरे सहरसा जिले में पुष्टि प्राधियान चलाने का प्रावाहन किया। उन्होंने कहा—“बिहार में पुष्टि का काम जिले के नीचे तो सोचना ही नहीं चाहिए।” फिर उन्होंने महेन्द्र नारायण को बुलाया धीरे पूछा—“महेन्द्र जिला की पुष्टि हो सकेगी न ?” उत्तर मिला—“बाबा का प्राथोर्वाद है तो जरूर होगी।”

फिर १६ दिस १७ अक्टूबर को सर्वोप्य ग्राम, मुजफ्फरपुर में बिहार प्रायस्वराज्य समिति को बैठकर हुई। जे. पी. इस बैठक में उपस्थित रहे धीरे सहरसा जिला पुष्टि प्राधियान की योजना बनी। एक सप्ताह बाद सहरसा में काम शुरू हो गया।

विनोबा ने पूरे जिले में पुष्टि प्राधियान चलाने की बात क्यो वही धीरे इसके लिए सहरसा को ही क्यो चुना ? इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं। ग्रास तो विनोबा, जे. पी. के मुसहरी प्राणे से बिहार धीरे सारे देश में प्रायी जागरूकता की बिज्जी बड़े काम में लगाना चाहते थे। जे. पी. के मुसहरी नीचे पर जे. पी. पर्याप्त वे धीरे क्यो हुई कार्यकर्ता शक्ति प्रागर वहा पूरी तरह लगनी भी तो प्रायद इसकी जरूरत नहीं थी। इग लिए विनोबा एक दूसरा मोको सोचना चाहते थे जिसमें देश के अन्य कार्यकर्ता तथा बिहार के बचे हुए कार्यकर्ता प्राणे को भोक सकें। फिर पहले प्रधान-यात्रा के समय धीरे ग्रामदान-तुफान के समय विनोबा दो बार सहरसा में चूमे थे। उन्का दिग्गम था कि पुष्टि कार्य के लिए सहरसा सबसे प्राधान जिला है। उन्होंने कहा भी था कि जे. पी. ने बिहार का सबसे कठिन क्षेत्र चुना है। यानी के लोगों को सबसे प्राधान सहरसा में प्रानी ताबन

लगाना चाहिए। “महरसा सारे बिहार में छोटा है 1 लोगों की भागना बहाई बहन प्रकु-कूल है। बाकिरा में वहा बाड प्रातो है। धात्र रास्ते धुले हुए हैं इमलिए प्रामी दो महीना तावत लगायो। पूरा हुआ तो ठीक, नहीं तो मर जाना ऐंसा निश्चय करो। सहरसा ही जाने के बाद मैं कुछ बहूना नहीं। बहूने ही जरूरत ही नहीं होगी। सहरसा की प्रेरणा से ही काम ही जायेगा।” दिसम्बर ७० में विनोबा ने विद्या गणर को कहा था। इसी चर्चा के दौरान उन्होंने यह प्रसिद्ध वाक्य कहा था—“अब तुम सब प्राॉफेस को ताला लगाओ धीरे सहरसा में जा कर बसो। धात्र का काम धात्र ही करा। कन करेग, परंतु करेगे-रुंसा नहीं होना चाहिए। ... अब यह प्रांखरी बुद है (सहरसा)। प्रयत्न करके सफलता नहीं मिली तो परमात्मा की मदद मिल सकेगी है। धात्र प्राप प्रयत्न ही नहीं करे तो फिर तो प्राडेट काम करने हूँगे। प्रापके हाथ में १६११ ता ही समय है। प्रागे का समय मैं नहीं मानता। १६६१ में प्रावेरी-लन शुरू हुआ। बीम साल के बाद कुछ नहीं होगा तो प्रापकी टैनेमिटी, प्रायत्ना मानस्य प्रशमनीय है। लेकिन बट होने वाला काम नहीं ऐसा माना जाया। ... प्राज जो भी प्रायेगा उसे ही सहरसा जाने के लिए बहूना। ...”

सहरसा का काम पूरा करने के लिए विनोबा का सन्देश करा या मरो था। उतने जो भी मिलने प्रााग उसे वे सहरसा जाने को बहूने धीरे धीरे-धीरे सहरसा प्रायस्वराज्य का राष्ट्रीय संघा बन गव। सहरसा का विनोबा-प्राधक कार्यकर्ताओं की बाजी बन गया। इन्गाराज गहना, जिंमोना देगार, उडे, रिंखालकर धीरे ०६ अक्टूबर १९६६ पर धात्र पर गये। धीरेन ०१ प्रादे धीरे उन्की सीध-बाया प्रात्रा शुरू हुई। बैंगलाय बाहु धीरे बाहुनाले मिता ०१ अक्टूबर ६६ स. मी घस। विंशोर प्र ७, मुमार प्रसिन, मुभ्रमि धीरे जात्री जम प्रागो ने धूनी मभरी। नीम प्रास नर ०१ प्रादे की छोड कर मयन काम चला लेकिन १० प्रादे है कि ०१ प्रामी काम पूरा नहीं प्रा है।

लोक गिरण्य धोर विचार-प्रचार मह-
 रसा के काम के दो मुख्य आधार रहे हैं।
 मरौना में प्रसन्न समा का गठन भी हुआ है
 धोर जहाँ-जहाँ काम बना वहाँ बीचों में मजूदा
 भी निकाना गया है धोर जमीन बँटी भी
 है। महूरसा का आधार ही ऐसा कोई गाँव
 होगा जहाँ धामदान-धामस्वरूप का विचार
 हुआ में तर कर जमीन पर न उतरा था।
 लेकिन धर्मो विरक्त मरौना में प्रसन्न समा बनी
 है। तैरिय प्रसन्नो में बननी हैं। सब धामों
 में धामस्वरूप गठित नहीं हुई हैं। जहाँ हुआ
 है वहाँ में इतनी सक्रिय नहीं हैं कि धाम-
 स्वरूप बनाने में सक्षम हो। भूमि बँटी है,
 लेकिन धर्मिकतर भूमि धर्मो बटनी है। भूदान
 की पद्धत हजार एक जमीन का विचार
 होता है। विनरित समूह हजार एक जमीन
 पर धाराताघो का धसन बच्चा हुआ है।
 जब तक जमीन का यह काम नहीं हो जाता
 तब तक धामस्वरूप की गाड़ी महूरसा में
 में यकी रहेगी।

विनोदा ने धर्मिय धर्मियान का धावा-
 हून शायर इमजिए किया कि अचार-प्रचार
 धोर लोकगिरण्य वहाँ पर्याप्त हो चुका है।
 विचार हीन तरह में समझाया जा चुका है
 धोर धाराधर से प्रसन्न होने वाली मजूमि
 मिन चुकी है। इतना सब हो चुकन के बाद
 धर्मो का प्र-पक्ष विवरण, धामसमाधो में
 सक्रिय हो कर गति के मामला को धरने हाथों
 में उठाने की धारणा धोर धामस्वरूप की
 धोर बाने की योजना ही चाहिए। धरन यह
 सब नहीं होता है तो फिर लोकगिरण्य धोर
 विचार-प्रचार के कोई सामो नहीं है। सकार
 नहीं धरनी पबबोधो योजना धोर धाम-
 स्वरूप के प्रचार प्रसार में कोई कम
 धरन धोर सक्रिय नहीं लगायी है। धरन हम
 उनके प्रभावहीन होंगे की बात बहने है तो
 हूँ मुद भी देना चाहिए कि हजारों धारणा
 धामकम जमीन पर विनता उतरा धोर
 धरना सब विनता पुरा हुआ है।
 धर्मि के हटवें करना, उनके धर्मनिरिह
 विचार को सामो के माने उतारना
 धर्मि का मरना लोगों को देना धोर धर्मि
 के लिए हमारे सब जो धाराता है वही लोक

धाराता पैदा करना सब धर्मियान हैं। लेकिन
 यह सब प्रयत्न में हाना चाहिये धोर विनता
 हुआ है इनको जन्मने के मामलर भी हमारे
 पाम हाने चाहिए धोर जहाँ हम पण-पण पर
 लागू करना चाहिए। भूमिहीनता की मजूमथ
 का निराकरण निश्चिन ही हमारे काम का
 एक मामलर है धोर महूरसा के काम को भी
 इस कसौटी पर चढ़ाना चाहिए।

इसमें कोई मज्दह नहीं कि धामदान की
 धारणा जिनकी सामान है उसकी धर्मो का
 पूरी कर के प्रयत्न काम शुरू करना उतना
 ही कठिन है। गाव एक टाँ, धरन को पर
 सडा हो भूमिहीनता मिटे, समानता धाम,
 सब मिल कर धामसमा में जरिय गाव के
 मानने विपटायें इनमें गाव का कार्य भी धामो में
 इन्वार नहीं करना। य सब धाम एमी है
 जो भारत के गावा का मान्य रही है धोर
 इनकी संज्ञानिय धर्मियानता स्थापन है।
 फिर भी जा धामो भी भूमि देन न गाव पर
 धरनारन कर चुका है वह भूमि निधान कर
 देने के प्रयत्न कार्य का पूरा बरतने किनारा
 है होने इताने करना है धोर उन धाम का
 टानने की नौगिन करना है विमन उन जमी।
 का कुछ भाग छाडना है। ले बन जब तक
 यह दूरी से धर्मो जमीन मानने भूमिहीनता
 में नहीं बना जब तक उनमें हजमदार बरानी
 कौन का यही सबह है कि महूर धारणा स
 कुछ नहीं होता। प्राणि धोर पुष्टि एक साथ
 होना चाहिए। कबो धोर बनने का पक्
 धामस्वरूप का कर्मो सब नहीं होने दगा।
 जब हम भूमि के तस्मान विनरण पर जा
 देंगे धोर यहाँ धोर धर्मो की ना-नायिनता
 का धामस्वरूप पैदा करने नमी भूदान के
 समय में बना यह प्रभाव दूर होगा कि हम
 महूर भले लोग है मरा काम करता धारणें
 है लेकिन हमारा कोई धामर नहीं है। यहाँ
 धोर धर्मो का धामस्वरूप बनाने के लिए यह
 भी जरूरी है कि हम निष्ठा दिखाव साक
 करें। भूदान की विनरी जमीन धर्मियान
 पड़ी है उनका तस्मान विनरण करवाने धोर
 निराल जमीन पर धाराता का प्रयत्न बच्चा
 करना है। महूरसा के धर्मियान में इन गव
 कागो पर धरन देना जरूरी है।

धर्मियान पद्धति में हब एक हजा बनाने
 है धोर प्रारम्भ के लिए कुछ जमीन भी बँट-
 वाने हैं। धामसमा के जरिये ही यह सब
 बातें हैं क्योकि उसे ही सब कुछ करना है।
 धामसमा वह भोजार है जिसे धामस्वरूप
 की कर्मि को कसौभूत करना है। लेकिन हम
 धरनर देखते हैं कि वन जाने के बाद धाम-
 स्वरूप सक्रिय नहीं होती। इसका कारण
 धामर यह कि वे धामस्वरूप विचार में तो
 गाँव की प्रभुसत्ता सम्पन्न इकाईयाँ मान ली
 जाती है पर प्रयत्न में इनके हाथों में लगना
 कुछ नहीं होता, न सब कुछ करने की तीव्र
 इच्छा ही होती है। उनके हाथों में प्रयत्न
 नसा धामें धोर उनमें सक्रिय बरने की तीव्र
 इच्छा ही इमजिए यह जरूरी है कि उन्हें
 गाँव के नात्यायिक प्रभो धोर धर्मियान
 मामला से संबद्ध किया जायें। सँबडो बंधों
 की गुलामो धोर उनसे उल्लेख हीनता धोर
 हीनभावना न गाँव वालो के मन से यह
 विश्राम उठा दिया है कि धरने सकार के
 मानिक वे सुद हैं। धाराती के बाद कल्याण
 कारी राज्य में कल्याण के नाम पर उत्तरी
 परनिर्भरता धोर परमुखापोधना की धोर
 बरना है। धरन धामनिर्भरता धोर धाम
 विश्राम विचार-प्रचार में नहीं धार्येगा। यह
 "नी धार्ये" उर के धरा में सर्वमान्य सभा
 धामसमा के जरिये भीयें धोर प्रयत्न कार्य
 को करेंगे। यह पुरानी बहानिय निरर्थक नहीं
 है कि एक मन विचार से एक लोग धमल में
 ज्यादा सक्रिय है। यह सही है कि उत्तरी
 धार में काम करने धोर उनके काम करवाने
 स हम उनर मानन का परिवर्तित नहीं कर
 मारने। लेकिन हम करन जाने नहीं है यह
 मान वर भी हम उनके मानन को बदल नहीं
 सकते। हम कर्मि के मूख-वसत राजहृम
 की तरह हर पडकडाने गाँव पर उत्तरी धोर
 धरने गुजने से धामारण्य को शुद्ध रूप
 मान कर बने जायें तो न तो इतिहास की
 परने उत्तरी न लोकधर्मि जानूँ होगी।
 हमें गाँव धारो की तरह ही धरने को मान
 कर धोर बना कर गाँव धरने की तरह
 जिम्मेदार होना होगा। कार्यकर्ता की भूमिका
 में हम जब तक रहते सब तक हम चाहें

वेद खल दाखिल होगा, दरवाजे खुलेंगे

—द्रमुपम मिश्र

जहाँ तक नजर जाती है ऊद-भाबड़ पचरी से पत्नी जमीन है। बड़ी-बड़ी छोटी-छोटी बड़ीनी भादिमा। दूबने जा रहे गुरुज की माफी से मुग्ध बागी मान बिट्टी की घोर भी पटन बना दिया है। बरफ्ट गोर सोड़े लुट गया है, दूर दोन बरने की धाराओं का गी है। उम घोर सोडा घाने बरने पर पचरी परे द्रम बडे भूगण्ड के टीनों पर जेग-जगट एक-एक सो-ना सोंग लड़े दिगार्दे दौ है। इन सोसो के पैरो के पास धामधाम मे बटोर कर रगे मये छोटे-छोटे पल्लरो मे कुप टुकड़े रगे है। चारों घोर पल्लरो के उन निगालो पर गटे पचाम सोसो के लिए १० जनवरी '७४ की घट धाम पीछियों की बर्द धामों मे बिन्कुन भिन है। धाम उगहे जमीन बिन रही है। कुप देर धपने-धपने टीनों पर लटे रहने के बाद वे गव सोड़ी दूर बर रहे डोन की घोर पच दिए है।

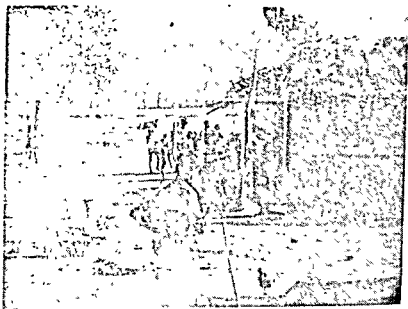
छोटे बच्चों, बूढ़ो घोर घोरसो मे पिरे सपान सोग डोन बजा कर नाच रहे हैं। जमीन बिनने की पटना उनके लिए निगी भी उलग मे बटो है। हर डोन बजाने वाले मे उलग मे पहना जाने वाला एक मान कपडा धपने कधो से कमर लन डाना है, उलाह-सुबक मापने से कगडा ऊपर उठ जाता है, नीचे उनके बिगडे लगे, या पटे हुए कपड़े उपड़ धाने हैं।

मुंगेर जिले के सधमीपुर प्रगण्ड मे भूमि-हीनता निवारण मे लगे गाडीधाम के कार्य-कर्मी मे पट्टेचने पर एक बार डोन घोर तेज हुए फिर ममा के लिए धीरे-धीरे मद रहबर बन्द हो गए। भूमिहीन परिवारों द्वारा माफी गई एक पुढानी दरी पर एक घोर प्राचाय राममृति, रामनारायण बाबु मुंगेर जिले के गाडी धामोधीय प्राधिकारी शिवेन्द्र गिह, हेमनाथ गिह व निमलचन्द्र बँडे, उनकी सगल मे दो धमीन घोर धामने पचाल भूमि-

हीन परिवार के गदग्य बँडे है। रामनारायण बाबु मे बीचना शुरू किया—वे स्वामीय बोली मे विनोबा द्वारा शुरू किये धान्दोलन के परिचय मे क्षेत्र की जमीन गमरवा, बागमीन का पचा, जमीन मिल जाने पर लगान के बदले प्राधिकारियों द्वारा रिक्शन लेना, रबीद नही देना, कभी भी बेदयन कर दिये जाने धादि की समस्या पर धाय।

भापण के दौरान धमीन गहब जरीब (गांवल) मे जमीन की नागी बर चुके थे धव वे हर परिवार को दी जा रही जमीन मे नरने बागज पर उतार रहे हैं। पचाल परि-धारों मे बाटी जा रही ६२ एकड जमीन भूदान की घोर नरकारी गंर मजबूत की है। फिर भी कोई भी नरकारी प्राधिकारी उपस्थित नही है। रामनारायण बाबू के भापण के बाद

शिवेन्द्र जी ने भूमिहीनों को जमीन के बागज बाटना शुरू किया। गमारोह मे मालाधो की कमी है। भूमिहीनों ने धपनी वस्त्रियो से धाने समय दो-तीन माला बना ली थी, सर्वोदय कार्यकर्ताओं को पहनाने के लिए। धव शिवेन्द्र जी उन्ही मालाधो को बारी-बारी से बागज पाने वाले भूमिहीन को पहवाने, भूमिहीन यह जानने हुए कि मालाए कम है, जाने समय धपनी माला उतार कर रख देना। ६० एकड जमीन ५० परिवारों मे बाटी गई, पुनमे लगभग १५-१५ परिवार सवाल, मुमहूरव यादव हैं। जेप ५ परिवारों मे कुम्हार, नाई व मिस्त्री लोंग। इनमे से २५ परिवार ऐसे हैं जिनके पास धपनी भोपडी का बासगीत पचा तक नही है। कुछ ध्राम रास्तों पर बसे



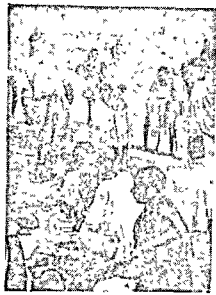
भूदानपुरी में फिर से जीवन सौट धाया है

भूदान-यज्ञ : बुधवार, ३० जनवरी, '७४

साधियों के साथ मल्लपुर से एक ट्रेक्टर-ड्राली पर फिर उन्नी खादीग्राम की कीरती सड़क से भूदानपुरी धाये। सभी लोग साधियों से लीग थे। इतने लोगों को घाता देख भूदानपुरी के लोग भाग खड़े हुए। धाक्रमलखारियों ने उनके खाली घरों पर ही हमला बोला। एक मुगहर के घर होता ही क्या है? सुनिया, कुछ पुराने कपड़े, टूटे-फूटे फलम्मुनियम के बर्तन और भगदड़ में छूटा एक छोटा बर्चन उठा ले गये। उड़े हुए भूदान किसान कई दिनों तक अपने परिचितों के घर छिपे रहे। फिर पुलिस में दोनों धोर से रपट दर्ज हुई। मल्लपुर के धीरेन्द्र सिंह जी ने कहा कि वे दो हजार रुपये लेकर जा रहे थे, भूदानपुरी धाली ने सूट लिए! उधर भूदान किसानों ने भी अपने सेतो से वेदखल किये जाने, घर को नूटने की रपट की। फिर इलाके के समाज-साधियों व साम्यवादियों ने दोनों पक्षों में एक 'समझौता' करा दिया—भूदान किसानों से लिखवा लिया कि जमीन उनकी नहीं है, मल्लपुर की है।

२८ जून को धाचार्य राममूर्ति खादी-ग्राम धाये। उन्हे घटना मालूम पकी। उन्होंने रोज भूदानपुरी जाना शुरू किया। भूदान किसानों को एकज कर साहाय दिलाता शुरू किया। उधर मल्लपुर वाली से भी मपकें किए जाति की तलाश शुरू हुई। मल्लपुर ने ३-४ दिन का समय माया। सारे काँडे ने राममूर्ति को हिला दिया था। उनका कहना था कि प्रहार केबल मुतहरो पर नही सर्वोदय पर भी हुआ है। भूदानपुरी में रामू को दादी विनोबा की ब्रेदखल किया गया है। इधर सभी कार्य-कर्ताओं ने मामले पर बातचीत की, राम-नाटयलक्ष्माई मु येर जाकर जिना मजिस्ट्रेट से मिले, कार्यकर्ताओं का निलय सुनाया कि भूदान किसानों को वे वेदखल नहीं होने देंगे।

मल्लपुर के श्री चन्द्रशेखर वर्तमान सरकार में उद्योगमंत्री हैं। मल्लपुर के कुछ दानवर्गों पर उनके गवाह होने के दरखस्त है। उन्हीं के गाव ने यह वेदखली की है। मन्त्री जी ने स्वयं भूदानपुरी धाले की कहा। स्वयं बनेकटर से मिले, कहा कि इस मामले में सरकार की धोर से जो भी मदद भूदान किसानों को दी



धीरेनपुरी जमीन नप रही है

जा सक्ती है, दी जाय। धाचार्य राममूर्ति के रोज भूदानपुरी पहुचने से गाव वाले घब अपने घरों में धाने लगे थे। इस बीच वेदखल किये खेत पर ट्रेक्टर चला कर वे लोग ब्रह्मर वी गये थे। खेत पर कुछ लठेन भी पहरा देते थे, जो राममूर्ति के धाने पर जरा हट कर खड़े हो जाते थे। १८ अगस्त को घटना-स्थल पर बलेकटर धाये, धाधिकारियों को एक टोनी के साथ वही गम्बखियत धाधिकारियों को एक-का 1, कुछ के तवादे हुए। इमे देवकर मल्लपुर के लोगों का पाणथिब मनोबल टूटा। वे सब अगले दिन धाधम धाये और राममूर्ति जी से ही फंमला निपटाने को कहा। मल्लपुर के कीरेन्द्र सिंह ने, जिन्होंने रामू का वेदखल किया था, फिर सारी जमीन छोड दी। वह जन नाकी गई तो पिछले बन्डे से कुछ ख्यादा हों निबन्धी, ब्रह्मर वी बोयो फंमल भी रामू को दी गयी।

मामले में सरकारी मन्त्रको विगहड तक साठी के साथ थे? विचाइरमन जमीन मल्लपुर धाले ने एक मुयममान ने खरीदी थी। वह ३३ एकड था। दाम था ६ हजार और माल गुजारी केवल गो रपया। दमगे ५ एकड का भूदान था। दान का टुपया भी मूल जमीन के साथ तिक गया। तारीदी दिसम्बर ७२ में हुई, फरवरी ७३ तक उसके कागज वपौरा था।

पक्के हो गये। इस सारी विद्या में साधारणतः ये सरकारी विभाग ५ साल से १० साल तक समय त्याग देते हैं। लेकिन धायद रिखलत के कारण कुछ कागज ३ महीने में पक्के हो गये।

घटना आलाचिक थी, उस गई लेकिन उससे राममूर्ति जी की लगा कि इसके मनीजे दीर्घकालीन होंगे। मुपेर के कार्यकर्ताओं ने, जो इस मामले में नजदीक थे, सोचा कि धाच हमारा समठन नहीं है। हम प्राण जमीन की पुष्टि भी नहीं कर पाये। अगली पकिन्या लिखले रहे, पिछली पकिन्या मिटाते रहे। चारों तरफ घूमन रहे लेकिन नाक के नीचे भूदान किसानवेदखल हुआ। धाधम ने निर्माण के काम कम नहीं किये थे, धासवाम के हर गाव में हुए खुदवा दिये थे, लेकिन वास्तविकता की जमीन न खुद पायी थी व उसने पानी था।

भूदानपुरी की वेदखली से नूटने के इस क्रम में खादीग्राम के धामपास के भूमिहीनों में धामविश्वास लाना था उन्हे लगा कि सर्वोदय के लोग शरीरों के साथ हैं, जोखिम उठा सकते हैं। धीरे-धीरे धाधम में कुछ मुगहर व धादिवागी धाने लगे। उन लोगों ने राममूर्ति जी से कहा हय जहाँ बने है जो जमीन हम जोर रहे हैं, उगकी हमे रसीर नहीं मिलती। लगान के बदले रिखलत मांगते हैं हमसे। धन्य कुछ लोगो ने धाएर कहा कि हम जिस जमीन पर बगाये गये हैं, उसका हमें पक्का नहीं मिलता है। जमीन से हटा देने की धमकियाँ भी दी जाती हैं। कुछ ने तेगे नोटिज भी दियाये।

भूदान किसानों की वेदखली की घटना ताजी ही थी। उगने और फिर धामपास से धाये इन गाववालों की बानों ने गादीयाम के कार्यकर्ताओं को जानि बगमस्था को मुन-भाने धाने पूरे काम पर एक तरफ मिर से गोचने को मजबूर किया।

जोर, भट्टा, पंचेरी धादि गाँवों के जमीन की दनिदरिगतताओं की घटनाएँ सबमे ज्यादा धादी थी। धाचार्य राममूर्ति, निर्मलचन्द्र धादि टन गाँवों में गये, वना ऐसे लोगों के साथ बैठ कर गाँव निजिज गममने की बोशिंग थी। अंगों के सजदीक धादि में तथ्य गामने धाया। 1०-१० साल से जमीन (मैप टूट ०४ पर)

हजारों हाथों में जकड़ी हजरा जाति

ब्रह्मर्षि प्रवड (बिना मुनेर, बिहार) के भगवतीह नामक गांव में ११ जनवरी, ७५ को एक अनोखा सम्मेलन हुआ—'असहाय परराथी सम्मेलन'। सम्मेलन में हजरा जाति के, बिल्हे जयामपेक्षा बरार किया गया है, २२ गांवों के १५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस जाति को घोर सम्मेलन का स्थल भगवतीह गांव को बिहार गजेटियर तक म बोरी को प्रायः के लिए दुःस्थान माना गया है। लेकिन अब से आभास घोर बरार् प्रसंगों में धामदान-धामस्वराज्य का प्रादोत्तन शुरू हुआ तब से इन दोनों प्रसंगों के कारंबन्तों इन लोगों के नजदीक धाने लगे। इस नजदीकी में से इन लोगों के परराथी बरिच का एक महत्वपूर्ण पहलु सुना—ये परराथ बरने के लिए मजबूर हैं, यदि बाढ़ें भी तो थारी करतुा छोड़ नहीं सकते। आभास के सिवागतक भाई ने धाने प्रत्युसाधियों की मदद से हजरा लोग को परहायना समझने की कोशिश की। बोरी बरने बाने हजरा को हर बार बोरी का धान एक निश्चित स्थान को ही बचना पडता है। थारी का धान सरोदने बाने से दलान बिल्हे भर्वन बहा जाता है, इन लोगों से ऐसे धान को बट्टन कम दासों पर सरोदने है। इस तरह होने वाले पापदे के कारण ये भर्वन इन लोगों को पुनिस से बराएए देते हैं। बहा जाता है कि इन सारे मामले से पुनिस का भी हाथ होता है। यदि किसी बारएकय हजरा जाति के ये बोरे भर्वन डार मुभाये गये स्थान पर बोरी बरने से इन्कार करते तो इन्हें किसी भूडे धारों में फना दिया जाता है। स्थानीय सरोदय कारंबन्तोंको भी इस जाति को यह धुसद स्थिति मान्य पडी। जहोंने इस मामले को सहारुमुनि से देगना शुरू किया। जहोंने यह साफ दिखा कि ये लोग परराथी नहीं हैं, परराथ बरने को विश्वास लिने गने हैं। धाम भारती, विमुक्तका के सिवागतक भाई ने तय किया कि इन्हें घोर इतके गांवों

को धामदान-धामस्वराज्य के प्रादोत्तन में प्रदत्ता भडी रचना चाहिए। इन गांवों से कारंबन्तोंको ने सम्पर्क रचना शुरू किया, प्रवेक्ष किया गया घोर इन बान को टोह ली गई कि क्या ये किसी बरती हुई परिस्थिति का, जो बोरी बरन पर विचम बरते हैं, मुक्तबना कर धरने इस बलक का धाकर समाज म एक सार्यक जीवन बिना सतन है? नवीजा धामागतक निबला। घोर इनी नवीजे म गन ! जनवरी को भगवतीह में ब्रह्मर्षि प्रवडके परराथाड बोडा कीरद बाला-बू, मानसिहूमीह, भादि गाँवोंमें १५० प्रहाय परराथियों ने भाग लिया। सम्मेलन म २१ सदस्यों की एक समिति बनी है, जिसके सरोदक तेजानाराथर है। सम्मेलन न र्वसना किया कि इस बने से सम्बन्धित प्रलख में प्रत्य घटे हुए गांवों की भी सम्पर्क किया जाये वहा के प्रहाय परराथियों को समभाया जाय

कि एक बार पूरी हिम्मत के साथ सार्वजनिक रूप से बोरी के पथे को छोडने की शपथ सतना है। शपथ लेने के बाद बोरी का धान शरीरन बाने भर्वनो व उनसे मिले पुनिस बिना जाये घोर सिनयी ही विवचना हो— इन काम को तदा के लिए छोड दिया जाये। तेजानारायण के सरोदकत्व में गठित हजरा लोगों की यह समिति जनवरी से प्रध्वल तक धरने लोगों से सम्पर्क करेगी। ब्रह्मर्षि प्रवड के किसी हजरा गांव में ही धामाभी मुक्तान्त रिवस, १८ प्रध्वल का ये प्रहाय परराथी एक बडा सम्मेलन धामोजिन करेये घोर समाज के सामने शपथ तेकर धरने, धरनी जाति घोर धरन गांव से इस बलक को मिटा देंगे।

इन प्रहाय परराथियों के बीच कुछ रचनात्मक काम किया जा चुका है। धाम-



बिहार सारो धामोजोग बोरे के प्रध्यस रवापति को हजराओं को सम्बोधित करते हुए

सहरसा अन्तिम अभियान के लिए तैयार हैं

सहरसा में जाने अभियान की तैयारियाँ पूरी कर ली हैं। पूर्व तैयारी नजरबंद में शुरू की गई थी। इस दौरान में प्रत्यक्ष स्तर पर अभियान मर्मितिया गठित कर ली गई हैं। जिनके के सार्वजनिक कार्यक्रमों को और समाज के अन्य हिस्सों में संपर्क किया गया है। जिनके व प्रदेश की विभिन्न राजनात्मक सम्साधो में स्वीकार किया है कि ग्राम-स्तराध्य उनका भी मुख्य कार्यक्रम है।

सहरसा के अन्तिम अभियान में सभी तरह की ताकतें एक जुट हो कर काम कर मनें इस प्रयास में विशाल प्रयास योगदान पायीं भी मोर्चे पर ला रही है। चार जनवरी को समाज में समाजवादी नारा शुरू की ठाकुर ने प्रदेश में समाजवादी कार्यक्रमों की एक बड़ी सूची की सर्वोपरि करने हुए उनमें शामिल किया कि वे सब इस अभियान को अपना अभियान मानें। जिनमें शामिल समाजवादी कार्यक्रमों में सर्वोदय के काम को लेकर गवाए थी। कई कार्य-कारणों से इन वक्त को बड़ा उदाया कि सर्वोदय प्रयास से नहीं मछला तो हय सहरसा अभियान में बने शामिल हो मने हैं? क्यूंरी ठाकुर ने, जो सर्वोदय विचार को नजदीक से जानते हैं, अपने कार्यक्रमों को इस तरह की निरर्थकता समझाये, उन्होंने प्रयास में लड़ने के छोड़ उदाहरणों को सामने रखने में कहा कि ग्राम इन जमान के लोग यारों के प्रशोचन से, वहां के प्रोपगण्ड से, जिनके परिचिन है उनके शायद ही कही मिलें। हमें इस अभियान में शामिल होकर उनके काम में मदद करनी चाहिए। और यदि धारोक्ता भी करनी है तो उस काम को गभीरता से जान लेने के बाद ही चल की जाये। बिना ज्यादा जाने यह कह देना कि सर्वोदय प्रयास में लड़ नहीं रहा, ठीक नहीं। रैंतो मे प्रगत में निर्माण निरा कि बिहार में समाजवादी कार्य-कारणों इस अभियान म यथामात्रिक साथ देंगे।

रैंतो के बाद क्यूंरी ठाकुर ने सहरसा में चार मील लड़ कर मर्मितिया में प्रदान जगोनि

का निवरण किया। रैंतो मे प्रदेश के ५ विधायक और १२५ कार्यकर्ता उपस्थित थे। लेकिन लाठी सम्साधो, समाजवादी दल के

उत्साही कार्यकर्ताओं के भयाना सर्वोदय (सोप पृष्ठ २३ पर)

सहरसा अभियान एक नजर में

अभियान का क्षेत्र २५ प्रखण्डों का है —
सहरसा के २२ प्रखण्ड—

१ बहरा २ महिषी ३ नरहुट्टा ४ बकिवारपुर ५ मलदुआ ६ मीर ७ सोन-बर्षा राज ८ मुषोय ९ किजनपुर १० निवरा ११ त्रिवेणीगंज १२ मधेपुरा १३ मिट्टे-खर १४ सिधुनगंज १५ बीमा १६ धामनगंज १७ कुमार खंड १८ मुरलीगंज १९ छानापुर २० तपनपुर २१ राछोपुर २२ निर्मली।
(मरीना में प्रत्यक्ष ग्रामस्तराध्य मर्मित गठित हो चुकी है।)
पूर्विका का एक प्रखण्ड—महावीरपुर प्रखण्ड (रुतौती में ग्रामस्तराध्य मर्मित गठित हो चुकी है।)

दरभंगा का—विरोल प्रखण्ड।
अभियान की शरयि—जनवरी से प्रथम १९७४ तक तथा विशेष अभियान की शरयि—२५ जनवरी से १ मार्च।

अभियान की पूर्व तैयारी—
प्रखण्ड के सेवक, सहयोगी कार्यकर्ता तथा समय दानियों का प्रशिक्षण। प्रखण्ड स्तरीय ग्रामस्तराध्य मर्मित गठित करना। कार्यलय का समुचित स्थान तय करना। प्रखण्ड के सर्व के ४० मन धानाज और जिनके के लिए ५ मन धानाज सहेह करना।

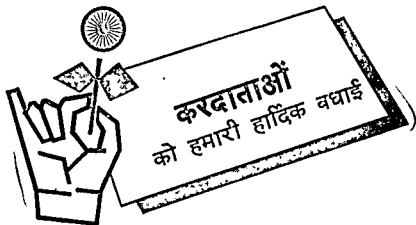
अभियान में करने के कार्य—
कानूनी रूप से घोषित तथा गठित धानमन्त्राओं को ग्रामस्तराध्य की रिमा में सक्रिय करना, धाममन्त्रा सर्वमर्मित से बनवाना।
बीधान-बहुला भूमि बटवाना, ग्राम धानित लेना बनवाना वायगीत के पर्व दिलाना, भूदान की जगोनि बटवाना, प्रखण्ड धाममन्त्रा का गठन करना।

विरोध अभियान का कार्यक्रम—
२६ जनवरी—जिला स्तरीय निविर सहरसा में
२७ जनवरी—प्रखण्डस्तरीय निविर और धाम तथा
२८ जनवरी—संज्ञो में पदयात्रा और गोष्ठी
२९ फरवरी—प्रखण्डस्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्यसंयोजन।
२८ फरवरी से १ मार्च—जिला स्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्यसंयोजन।

अभियान का कार्यक्रम—
२७ मार्च—प्रखण्डस्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्यसंयोजन।
२८-३० मार्च—जिल्लास्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्यसंयोजन।



गणतंत्र दिवस
की 24 वीं जयन्ती पर



इस अवसर पर हम आपका सहयोग चाहते हैं। समय पर भ्रपना सही कर देकर सहयोग वा हाप बढ़ाइये। कर सम्बन्धी किसी भी मामले में सहायता भ्रपवा सूचना पाने के लिये भ्रपने क्षेत्र के करनिर्धारण भ्रपकर अधिकारी भ्रपवा भ्रपकर विभाग के जन सम्पर्क अधिकारी से सम्पर्क कीजिये। भ्रपकर विभाग के साथ समस्त पत्र व्यवहार में भ्रपना स्थायी लेसा नम्बर देना न भूलिये। हम एक बार फिर यह वचन देते हैं कि हम भ्रपकी भरसक और तत्काल सेवा करते रहेंगे।

भ्रपकर विभाग की ओर से जारी:

निरीक्षण निदेशालय
(गवेषणा, अनुसंधान और प्रकाशन)
मयूर भवन, कनाट सर्कस,
नई दिल्ली

ध्यान के लिए निष्ठा और विश्वासपूर्वक सहयोग करते हैं कि : १. गांव के नैतिक, भौतिक और सांस्कृतिक विकास के लिए धारा में निरंतर धानी शक्ति भर कोरिंग करेगा। २. गांव में शांति बनाये रखेगा। पहले के जो मामले—मुद्दमे होंगे, उन्हें सम्बन्धित व्यक्तियों को राजी कर कर धारा-सभ से उठवा लेने और धानी समझौते धारा पंच-समिति द्वारा मुलभाने का प्रयत्न करेगा। ३. भविष्य में गांव में भ्रष्टाचार न हो, और ही तो उन्हें भी धानी समझौते का पंच फंसाते से मुलभाने का प्रयत्न करेगा। ४. कोई भी निर्णय सम्प्रदाय, जानि, वगैरें धारि के भेदभाव से प्रभावित न करेगा न ही, और तथा धानी के प्रति सामान्य धारा तथा प्रेमभाव रखेगा। ५. स्वयं धारा धारि व्यसनों से दूर रह कर गांव को इन सारी बुराइयों से बचावेगा। ६. धाने गांव में शांति स्थापना और सुरक्षा का स्वयं प्रयत्न करेगा और इस लिए धाम-शांति सेना का गठन करेगा। ७. हम गांव का हर तरह से विकास करने के लिए हमेशा कोशिश करते रहेंगे और गांव में कृषि तथा उद्योग के विकास के लिए गांव के सहयोग से जो भी सम्भव होगा करेगा। ८. हमारे गांव में चन्पाय का धनीरित न हो, इसका हम प्रयत्न करेगा। ९. हमारे गांव में अंधे भ्रूता, गंगा, बेरोजगार या बेघर न रहने पाये, इसके लिए हम यथाशक्ति उपाय करेगा। १०. गांव का हर बच्चा भविष्य का धरुदा मनुष्य तथा नागरिक बने, इसलिए उसे जीवनोपयोगी शिक्षा दिलाने के लिए हम पूरी तरह प्रयत्नशील रहेंगे।

११-हम धामसभा में हर निर्णय सर्व-सम्मति धारा सर्वानुमति से करेगा।

मुसहरी प्रसन्न स्वराज्य सभा ने जय प्रकाश जयन्ती मनाने का निर्णय लिया। तैयारी समिती की बैठक में निश्चय किया गया कि ११ अक्टूबर जय प्रकाश जयन्ती दिवस तक कार्य समिति के सदस्य धरणा बीधा-बट्टा निवाल भूमिहीनों में वितरित कर देने की योजना करेगा। और अगली जयन्ती तक प्रसन्न स्वराज्य सभा की धाम सभा के २०० सदस्य तथा धामसभाओं के पदाधिकारी धरणा-धरणा बीधा-बट्टा निवाल भूमिहीनों

भूदान-सभा : बुधवार, ३० जनवरी, '७५

में वितरित कर देगा। बीधा बट्टा से १३०० बीधा जमीन भूमिहीनों को मिलेगी। अब तक ३५५ भूमिहीनों को भूमि प्राप्त हो चुकी है।

संघाटम में आयोजित राष्ट्रीय परिषद के निर्णय को मुसहरी प्रसन्न में कैसे क्रियान्वित किया जाये यह एक प्रश्न चर्चा थी। १८ नवम्बर को झीरपुर धामसभा में प्रसन्न स्वराज्य सभा की ओर से एक दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय परिषद के निर्णय को व्यापक चर्चा हुई। धारायें रामभूमि का एक पत्र भी गोष्ठी के सामने रखा गया। इसी सदन में बिहार में सरकार की ओर से चलाने जा रहे भूमि सुधार वप के कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। काफी विचार-विमर्श के बाद तय हुआ कि सभी धामसभाओं को राष्ट्रीय परिषद के धरुदसूत्री कार्यक्रम भेज दिये जायें और उनको धरणी की जाय कि धरणी शक्ति और क्षमता के आधार पर उसमें से सब वा कोई कार्यक्रम वे धरणायें और उसे पूर्ण रूप में। यद्यपि मुसहरी प्रसन्न को धरुदसूत्री कार्यक्रम कोई नई बात प्रस्तुत नहीं करता था किन्तु फिर भी वह एक धाराहून तो था ही। धामसभाओं का उल्लाही नेतृत्व जाना। पर छोटे धरणाओं कायं-कतों धाम सभाओं में फैल गये, उपस्थाओं को एकजुट करके उनके समाधान खोजने चल पड़े।

मुसहरी प्रसन्न स्वराज्य सभा और धाम-सभाओं में नेतृत्व की विशेषता रही है कि यह हर क्षण कुछ पाना चाहता है। धाम-सभाओं की बान्नी पुष्टि का काम बहुत ही धम और समय साध्य होता है। यका देने वाला काम है। धामसभाओं का इतने अनु-कूल काम करने को धरुदसूत्री नहीं है जिससे धरुदके कठिनाईयाँ सामने आती हैं किन्तु मुसहरी के लोग धरुदकीय मशीनरी की उदासी-नता से धरुदरते नहीं हैं। उनका उल्लाह मन्द नहीं पड़ता। १९ नवम्बर इन्दिरा जयन्ती से ३ दिसम्बर राजेन्द्र जयन्ती तक पुष्टि धरुदियान धरुदवागति से चलता रहा। पुष्टि धरुदियान की उपलब्धि थी : १६ धामसभाओं की पुष्टि सम्बन्धी दस्तावेज पुष्टिदायिकारों की संपुष्टि के लिए सम्पन्न किये गये। इस प्रकार संपुष्टि धामसभाओं की संख्या ३६ तक पहुँची है।

३ दिसम्बर को राजेन्द्र जयन्ती मनाई गई। बड़ी गण्डक के किनारे-किनारे बुद्धनगर धामसभा में जयन्ती समारोह में बाद प्रसन्न स्वराज्य सभा एक बुद्धनगर धामसभा का फंसाया था कि भूदान किसानों को देवकी समाप्त करेगा धरुदियान धरुदियान प्रतिवार का सम्पन्न धरुदियान में। सत्याग्रह का विपुल गण्डक की तलहटी में पूँज उठेगा। उनका बाधक था, छुटे हुए लोगों को धरुदियान के पंच मिलें, धरुदियान पंच के आधार पर सरकारी रसीद बटाई जाये। १६ दिसम्बर से प्रसन्न स्वराज्य के सार्वभौम की टोली ने जिला सर्वोदय मंडल के धरुददर्शन तथा बुद्धनगर धामसभा के उल्लाही कार्यकर्ताओं के धरुदवाहन पर गण्डक की तलहटी में धरुदना लेना गाड़ दिया। भूमि-धानी से सम्पर्क किया गया। तीन दिन तक रात-दिन यह सितसिता जारी रहा। भूमिधान का मन जागा, "धान में दी हुई जमीन को मैं धरुद तक धरुदने पास रखे हुए था धरुदरात को लेना नहीं चाहता था यह पाप है।" भूमिधानों ने से एक धरुद बड़ा, उसने धरुदपणा की कि मैं धरुदरिचित करता हूँ, धरुदरात जमीन जात है। उसकी भूमि उसको सम्पन्न है। भूदान किसान का हीसला बड़ा वह बोला— "मेरी जमीन पर धरुदने धरुदवा धरुद के किसी सहयोगी ने धरुद को रखा है। मैं धरुदको मेहनत इस प्रकार नहीं लूँगा। धरुद धरुदनी फसल में से धरुदवा ले लेंगे इसी धरुदवासन पर मैं भूदान में मिली धरुदनी जमीन पर धरुदम बड़ा-जगा।" सब एक-दूसरे से गले मिले। संकोको की तादाद में एकत्रित लोगों ने जय-जयकार कर सर्वोदय को प्रेम धरुदवा में स्नान किया। गण्डक नदी यह सब देखती रही।

यह तथ्य भी सामने आया कि बुद्धनगर र्चनापत में ५० एकड़ जमीन वैरमजहदा है। प्रसन्न स्वराज्य सभा का धरुदवात है कि उन जमीन की धरुदरुदक जाच पड़ताल कर उसे भूमिहीन किसानों में वितरित कर दिया जाये। परमानन्दपुर गांव में भी इस का धरुदरुद हुआ। ५ बीधा जमीन पर भूदान किसान बड़ा बे-सहल थे। भूदान किसानों को उनकी जमीन वापस मिल गई।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

ग्रामदानी और गैर-ग्रामदानी गांव में फर्क क्या है ?

• राममूर्ति. हम देख रहे हैं कि ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य तक जाने का रास्ता नहीं खुल पा रहा है। गांव दानना स्वाभिवल ग्रामसमाज को हीप दे, यह ग्रामीण समाज को स्वीकार नहीं हो रहा है वृद्धे भूमिदान को तो छोड़ दें, छोटे से छोटे भूमिदान को यहा तक कि गरीब को भी ग्रामदान स्वीकार नहीं है। इसका कारण सब समझ में आता है। यहा लारीशाम के ग्रामदाता १५ ग्रामसमाजों है। उनमें हर एगिना को किमी गांव में मोटी हो गये। उन एगिनी ही मोटी में गांव बायो पर बर्नो बान बनी। तय हुआ कि इन गावा म विन उचितता बर्न है और विग महाजन म विना है, कसका एक सर्वशुआ विना जाय। सर्वशुआ हुआ तो लोग ने धरना बर्न तो क्या दिया सेविन बर्न देने वाले महाजन का नाम बराने से इन्कार दिया। उनका बहना था कि हमारे पाय जा बोरो बहान जमीन है उनके प्राधार पर हमे विपत्ति में इनी महाजन से बर्न मिलता है; दूसरी बोर्डे क्या नहीं है जहा से बर्न ला सकें, इगमिए हम महाजन का नाम बना कर उवे माराज नहीं करेगे। ऐसी हासत में किसान धारो जमीन के छोटे से टुकड़े के स्वाभिवल का विमर्ज नहीं करना चाहते। जमीन स्वाभिवल से मिलने वाली मुक्तिधारो के कारण बड़े भूमिदान धरना स्वाभिवल नहीं छोटे। इन तरह ग्रामीणों ने ग्रामदान छोड़ने के साथ सीधमय ब्रह्महार किया है। यमे भूदान माया तो उन्होंने दे दिया, ताभिल विसर्जन पर दस्ततय कराने मये तो भी कर दिया। सुष्टि के लिए गये तो उने कर दिया—सेविन उनमे शालत मे जमीन नही। धार ग्रामदानी' धोर गैर-ग्राम-दान गांव मे क्या फर्क है? एक भोषियर ग्राम-दानी गांव धोर पुष्ट ग्रामदानी गांव मे क्या फर्क है? इगमिए धाम स्वाभिवल के साथ धामदान पर लदान धारह रखने का क्या प्रयोदन होगा? ग्रामस्वराज्य हमारा लक्ष्य

जकर रहेगा लेकिन भूमिहीनता। लवाराएण का मुख्य प्रश्न हमारे सामने रहना चाहिए। धोषीगणों का मगटन हम भूमि से करेगे तथा मध्यमवर्ग का रोजगार के प्रश्न से। जमीन हम भूदान की बात मकत है। दान मे मर्ग मकने है, धारि।

मनमोहन चौधरी विमर्जन की बात में दोनो तरह के प्रनुभव है। बोरापुष्ट में धाम-दान हुआ। वहा भी मराजनों ने बर्न बन्द कर दिया फिर भी लाग ग्रामदान गर टिके रहे। उन दिनों में हमारे धामकीय वर्गो भी बचे नहीं थे। बर्न लेने के विबल्य के विना भी ये लोग काम बनाने रहे। फिर पुष्टि धारिकारी धाय। ये लोग भी ग्रामदान से बर्न बन्द कर सहानुभूति रखने वाले नहीं थे। उहांन गांव-बायो से पुष्टि के दौरान उठे-सीधे प्रश्न विचे तो भी पाब, मान साज बाद भी बोर्डे ७५ प्रतिशत लोगो ने यह स्वीकार किया कि उन्होंने ग्रामदान किया है। इगमिए इन धरु-भव से दोनो धारों सामने धानी है।

राममूर्ति. विनोबा ने बहा कि ग्रामदान 'ट्रस्टीशिय इन एक्शन' है। ट्रस्टीशिय मे भी मानिक से स्वाभिवल-विमर्जन के बागज पर हस्ताक्षर लिया जाता।

मनमोहन मुझे दादा धर्मधिकारी का भोषण वाया सिद्धान्त जचता है। भूमिहीन धोर छोटे भूमिदान मगटन हो कर बड़े किमान के सामने धारों।

राममूर्ति मान लें इस सिद्धान्त से एक गांव में भूमिहीन धोर छोटे भूमिदान मगटन हो कर बड़े नियतन के पास गये, यदि बह राजी नही होगा तो ठीक है तलपारह वर्गो का धामदान है लेकिन एक स्थिति यह भी धा मरानी है कि बह बडा किमान राजी हो जाये तब हम उनमें धारो स्वाभिवल-विमर्जन का कामज नो मही पेश कर देंगे?

मनमोहन: एक स्थिति धोर भी मुझे दिखती है। मान लें धार लवाराएण ग्रामदान

एक नही बनानी तो भी हम समाज में नैतिक दबाव से बोर्डे पचाग जगह ग्रामसमाजों बना सकने थे। तो इन तरह बनी ग्रामसमाज पर स्वाभिवल-विमर्जन की बोर्डे बानुनी मुठर नही लपनी लेकिन नैतिक दबाव तो होता ही।

राममूर्ति स्वाभिवल-विमर्जन तो लक्ष्य होगा ही धाम मगटन में। वट तो बिलुन पकरी बात है लेकिन मोचना तो केवल इस पर है कि स्वाभिवल-विमर्जन का क्या फम होगा। स्वाभिवल-विमर्जन से शुरु करे या बहा चलकर पठुं।

मनमोहन जैसा कि मैंने धारो कहा था, दानो तरह के प्रनुभव है। किसान स्वाभिवल-विमर्जन से डरता भी है और बहो-बहो उवे इतले साहस भी मिलता है। लजाराएण में ज्यादार गरीब ही है लेकिन उन लोगो ने ग्रामसमाज बनाई है।

राममूर्ति: मनमोहन जी, जहां तक मुझे मानुम है—शायद मेरी जानकारी मकत हो, बहा ग्रामसमाजों भिन्न परिस्थिति में बनी है। ये शायद हरजिन भूमिहीन को गावो में बनी है। बहा ग्रामसमा के पीछे स्वाभिवल-विमर्जन की बात भी नही थी, क्योंकि सब भूमिहीन थे।

मनमोहन: सब भूमिहीन नही थे, कुछ के पास थोड़ी बहुत जमीन भी थी। इगमिए मैं मानता हू कि दोनो प्रकार के प्रनुभव हमारे सामने हैं। स्वाभिवल-विमर्जन कर देने बाद, उनको यह मानुम है कि उनका एक मगटन बन जाता है। ऐंमे मगटन से उनमें धाम-विमर्शाग आता है। लेकिन यह मान लेना चाहिए कि धार हम एक जगह पठुं ब गये है। धारो जाने के लिए तरह-तरह के प्रयोग करले हुं। बहो विभो परिस्थिति में स्वाभिवल-विमर्जन को धार रखना पड सकता है, तो बहो पीछे लेकिन बह लक्ष्य है ही हमारा।

राममूर्ति: स्वाभिवल-विमर्जन पर बोर्डे

तात्विक मतभेद नहीं है। आज नया समाज बनाने के लिए लोगों के सामने कोई नयी प्रेरणा रखनी होगी। मुझे अब ऐसा लगता है कि ग्रामदान के विविध कार्यक्रम शायद उतने काम न धर्यें।

मनमोहन : 'त्रिविध कार्यक्रम' एक सारे की तरह बन गया। हम कहते रहे कि ग्रामदान के बाद लोग संगठित होकर अपनी समस्याओं से खुद लड़ेंगे, यह हमारा सिद्धांत तो था लेकिन व्यवहार में यह कम धर्या। लोग निडर नहीं बन पाये। हमें क्रांति करनी है, हम तो क्रांति के बाहक हैं, वर्गों सब ठीक हैं और इसलिए हम बूध केप्लर ग्रहदि में अपने को घटकाना नहीं चाहते लेकिन यह हमें सोचना चाहिए कि बूध-केप्लर यदि हो रहा है तो वह वहा के लोगों को निर्भय नहीं बना रहा। मतदान केन्द्र पर कब्जा करने की घटनाएँ बहुत सारे लोगों के मन में घाट-दस धारदामियों की लाठी का डर घुसा रही हैं। ऐसी कई घटनाएँ धारदामियों की तावक को रोज-रोज क्षीण कर रही हैं। इसलिए मुझे लगता है कि ग्राम जिन हलाकों में ग्रामदान अभियान नहीं चल रहा है वहाँ जो भी समस्या धर्या उसको सामने रख कर रखता खोजने का प्रयास करना चाहिए। कोई बधा-बधाया धर्या सा नेकर नहीं चलें। शक्यताओं जो की बात होगी है। बाबा ने ग्रामदान को एक विचार-प्रचार की तरह रखा था। लेकिन क्या केवल 'ग्रह प्रहमार्गमि' जैसा कहते रहने से या 'मिलिक्यत मिटवी' चाहिए' ऐसा कहते जाने से मिलिक्यत समाज से समाज ही जायेगी? यदि केवल विचार-प्रचार की, गांवतक यह विचार पहुंचाने का काम ही बाबा को हमसे करना था तब तो वह कामूलों ले कर जाने से काम चलना और आज भी हमसे से कई सारी केवल विचार-प्रचार के काम को ही करते रह सकने हैं।

राममूर्ति : एक गांव से दूसरे गांव विचार पहुंचाये, कहीं रुक कर प्रचार को एक छोत क्रांति का रूप देना था—एक ऐसी क्रांति जिसका धमर पटना और दिल्ली में भी दिखाई पड़ेगा। उस क्रांति के लिए विचार-प्रचार एक क्रम था। स्वामिब विसर्जन भी उस बड़ी क्रांति का एक अंग होता।

मनमोहन : उस क्रांति के लिए लोगों में धारमविश्वास पैदा होना चाहिए। इसलिए मुझे लगता है कि यदि स्वामिब-विसर्जन ठोक-पीट कर कराया गया तो वह लोगों का धारमविश्वास नहीं बढायेगा। धारमविश्वास बढाने के लिए दादा का सिद्धान्त अपनाया गया है तंजापुर तथा रगपुर में।

राममूर्ति : लेकिन रगपुर में हरिबल्लभ परिवल जी का नाम धारदामियों के बीच है।

रामनारायण : यहा बिहार में भी धारदामियों की खेज हैं। रसीली, भाभा, मुसहरी हमारे मुख्य क्षेत्र हैं। इनमें धारमसभाओं को बानुनी और व्यावहारिक दृष्टि से प्रोत् करना का काम चल रहा है। लेकिन इसमें एक दिक्कत है सामने। यदि पूरे प्रलड में बानुनी पुष्टि ही भी गयी तो एक प्रलड में एक प्रतिशत से ज्यादा जमीन नहीं निकलती। इससे धार विलने भूमिहीन को अपने वंश पर छाड कर उनमें धारमविश्वास ला सकते हैं?

मनमोहन : इसका तो वह धर्य है कि हम या तो बक गये हैं या फिर लोचप्रिय होने के लिए, विवादास्पद नहीं बनने के लिए, हम जमीन का प्रश्न छोड कर निर्माण के कामों में लग जाते हैं। तो क्या यह स्वीकार किया जाये कि हम जमीन के प्रश्न को हम्य लगाने से डरने लगे हैं? यदि हम क्रांति नहीं चाहते, हिंमन नहीं है हममें, समझ नहीं है हममें, तो फिर हम निर्माण कार्य ही करने रहेंगे। उज्जीमा में भी मुझे लग रहा है कि हमयोग कुछ हलके कामों को धार धारकियन होने लगे हैं। उज्जीमा में हमारे एक बहून बमंड साथी हैं, उनके पीछे बॉर्डम पडो है कि यदि तुम कार्य में के टिकट पर चुनाव नहीं करना चाहते तो निर्दोष ही लडो या जन प्रतिनिधियों बाने तरीके से लडो। लेकिन के चाहते है कि यह बडा लडा हो। हमारी भी जो धारणा है। एक में हम प्रवना पवित्र धारिटर बनाये रखना चाहते हैं, दूसरे में हम इस बात की भी मन ही मन उम्मीद करते हैं कि यदि सरकार में हमारी दूर-दूर तक या पाम तक भी पहुंच होगी तो हम बहों बेदधमी होंगी तो उने धारिधारियों में बह कर मिटका देंगे। इस तरह हम लोगों को संगठित बनने के बढाये कहीं-कहीं सरकारी धारिधारियों में मदद ने

नवगठित जन

दलित वर्ग की श्रोर विशेष

—नीकरियों में हरिजनों

प्रतिशत प्रश तुरन्त दिया ३
—पचास प्रतिशत पुलिस कांस्टेबल रिक्त स्थान हरिजनों के लि क्षित। —चारलाप हरिजन ९ के लिए धावास भूमि का प्रतिशीघ्र किया जायेगा। —५ माच तक ८७५ गावों में हरि लिए ५,७५० मकान तैयार क जायेंगे। —हरिजनों के उत्पी मामले में स्थानीय पुलिस सिविल धारिधारियों से जाव बिया जायेगा। —प्रदेश के स तथा गंर सरकारी डिप्टी काले छात्रावासों में १८ प्रतिशत हरिजन छात्रों के लिए धारिधत

जमाखोरी और चोर-याजा विरुद्ध चोमुखी चौकसी

—गल्ले की जमाखोरी, चोर बा धोर मिलावट की रोकथाम के बठोर दण्ड की व्यवस्था। — धारिधारियों और मण्डलायुक्तों राशन की हूकानों का निरन्तर नि धान। —मिट्टी के तेल, शीज उर्वरकों की पूति में वृद्धि। म के तेल पर बन्टोल मन नः गूह का राशन दुगना। —

सूचना

लेने है। इस क्रांति पीछे की धा जाडी है। फिर यदि लोच समझ में तो धारिधार धारि बनने पर भी रुड नहीं निकल पाया। इसमें से धारिधार

शासन उत्तरप्रदेश का भविष्य संवारने के लिए कटिबद्ध

1. को मिलें यदि अपनी पूर्ण धामतामुत्तार उत्पादन और सम्पूति न करेंगे तो उन्हें प्रतिबन्धित कर लिया जायगा।

प्रायोजनायें जिनका शिल्याग्यास हो चुका है

—पाठा पेयजल प्राणीय सम्पूति योजना, कर्वी (बांदा)। —हरिपुरा बांध, नैनीताल। —कृषि विश्वविद्यालय, फंजाबाद।

किसानों को सिंचाई-सुविधा, बिजली की सम्पूति, जिसमें मेलों का निर्माण यातायात की व्यवस्था

शिक्षक वर्ग और राज्य कर्मचारियों को राहत

कताई मिलें—सण्डौला, बाराबंकी, भाँसी, धरुबरपुर और मऊनाथ भजन।

शोनी मिलें—कायमगज (फर्रुखाबाद), हरदुभागज (भलीगढ), सठियांव (भाजमगढ) और रसडा (बलिया) पुल—फतेहगढ़-बांदा यमुना पुल, केन पुल (बिजकूट, बांदा), गगपुल (बिजनीर), रामनगर-बाराणसी गंगा पुल, जलसेतु, लखनऊ।

रेल—रामपुर, हल्द्वानी नहर—सोन पम्प नहर, मिर्जापुर विद्युत—भारी ट्रांसफार्मर का

बारखाना, भाँसी ११० मेगावाट के विद्युत सयंत्र, हरदुभागज (प्रनौगढ़) और धोबरा (मिर्जापुर), प्राणविक

विद्युत गृह, नरोरा (बुलन्द शहर) —इल्ला सीमेंट कारखाने का विस्तार।

—सयु फोनार की भट्टी, हनधरपुर (बलिया)।

प्रायोजनायें जिनका उद्घाटन हो चुका है

—गारदा सहायक परिवोजना बराज, लखीमपुर-सीरी। —भारत इलेक्ट्रानिकन कारखाना, गाजियाबाद।

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक और नैर शिक्षक कर्मचारियों का वेतन तथा महंगाई भत्ता सरकारी विद्यालयों के समस्तरीय कर्मचारियों के समान। —विश्वविद्यालयों की वित्तीय कठिनाइयों को दूर करने का भारत शासन स्वयं वहन करेगा। —कुमाऊँ और गढ़वाल में दो नये विश्वविद्यालय। —फंजाबाद में कृषि विश्वविद्यालय। —विश्वविद्यालयों में नये छात्रावासों का निर्माण इसी वर्ष। —सरकारी नर्सरी की जिल्हों १ जनवरी १९७४ को तीन वर्षों की निरन्तर सेवा पूरी की है, स्थायी कर डिये जायेंगे। —पकान किराया भत्ता ७५० ८० तक वेतन पाने वाले कर्मचारियों को भी। —कार्यालयों में सभी स्तरों पर झट्टे काउन्सिल की तरह संयुक्त संराधन समितियाँ प्राणामी ३१ मार्च तक गठित कर दी जायेंगी।

—किसानों को प्रब प्रतिदिन १०० पट्टे बिजली उपलब्ध। नलकूप क्षेत्र के किसानों को पास-बुक का प्रवन्ध। —बिद्युत उत्पादन पहले की प्रपेशा इयोश। —बिद्युत-चालित कोल्हड़ों को तत्काल पिजली मिलेंगी। —औद्योगिक सस्पायों को नो पट्टे का प्रतिरक्षण निगट। —इल्ला (मिर्जापुर) सीमेंट कारखाने का विस्तार प्रारम्भ। —टिहरी गडवान में सीमेंट और पत्थर के कारखाने उद्वे ही स्थापित किये जायेंगे। —बाइगीडित जिनो के एक एन्ड तक की जोन के किसानों को मुग्न बीज। —छव्योग प्रभावप्रस्त जिनो में टेस्ट वर्क पुनः शान्। —मैनिहुर मजदूरी को अधिक मजदूरी। —छोटें किसानों को सार-सम्पूति में प्राथमिकता।

निदेशालय

कर्मों काय इन बाणों को धार धारोना से कही मोच रहे है, हम लोग बन इवे एक कार्य-कम बनकर कामे जा रहे है। इतनीय मुझे मन्ना है कि जो जहाँ है वहाँ की परिस्थिति

उत्तरप्रदेश

द्वारा

प्रसारित

स इस मया हुँकर प्रयण मुक करे। एक ही चीज को दोरुपाने जाने से क्या बनेगा ? साम्पूति। हाँ, प्रयोग स्थानीय और मन्पन्पूक हों तथा उनके साथ धनुषध

कतिन का हो, साथ ही 'निर्वा' ध्वनिन भार-तीव हो, नच कोई नयी चीज हाथ पावेंगी।

विद्युत पूर्ति में आत्मनिर्भर

खेतों व कारखानों

को

उदार दरों पर विद्युत पूर्ति

चतुर्थ योजना में स्थापित विद्युत क्षमता ७५७.५ मेगावाट

अर्थात्

१९५१-५२ की क्षमता से दस गुनी वृद्धि

राज्य की तीव्रगामी औद्योगिक प्रगति हेतु पांचवी योजना में विद्युत उत्पादन में ८६० मेगावाट की अतिरिक्त वृद्धि प्रस्तावित

राज्य के सन्तुलित विकास हेतु
पिछड़े जिलों में विद्युतीकरण के विशेष प्रयास

विद्युतीकरण पंप के लिए

लाइन बिछाई गई

१,४५,६५२

विद्युतीकृत ग्राम

१०,३६३

विद्युतीकृत हरिजन वस्तियां

१,६२५

राज्य एवं उपभोक्ताओं की सेवा में

मध्यप्रदेश विद्युत मंडल

वासगीत कानून जिन्दा हुय़ा

सेलिहूर मजदूर धरनी भोजवी बना कर जिस स्थान पर रहना है वह उनकी है। उसे वहा से कोई हटा नहीं सकता। तत्सम्बन्धी कानून जिन्दा सरकार ने सन् १९४८ में पास किया था। विन्तु अन्य कानूना की तरह इस पर भी धमन ली हो सका। क्या प्रथम नारादण ने इस धोर तत्परण दियाई। मुम्बही प्रण्ड की धामनभाषो ने इस नाम को उठा लिया। हुबारी को तादार में सम्बन्धित सेलिहूर मजदुरो का उनके वास-गीत के पर्व विरहित किये गये। धाम भी धामनभाए खोज-खोज कर एव नाम लेवा रही है और अवधानधरनी से सम्पर्क कर पर्याप्त नाम का प्रयोग कर रही है। कामगीत के पर्व को उठाया भी बाटी जायतो साकि रीतिधन ख्याय तथा के धाराहान पर धामनभाए बहुत जल्दी पढ़ धामन करने वाली है कि सरकारी की नई व्यवस्था के धमर्गत तबीयत ३० वर्षयज प्रथि प्रयंर को रहने को दी जा रही है।"

धामलत-मुक्ति

प्रथमस्तराज्य का यह एक महत्वपूर्ण अंग है। सदियों से धामीए सामाज माने, कचहरी के बुचक का गिकार होगा धामा है। धामारी के बाद तो इतने धोर भी बुद्धि हुई है। धाम-लतारज्य के मायन से मुम्बही की जनता को इनके राहत मिली है। धमैर्वे अग्रे-अग्रहट धामनभाषो ने तय किये हैं। मुम्बही प्रण्ड के मुम्बही गाँव से मुक्ति के एक छोटे से कचहरे को लेकर एक मकर धिवाड उठा, रघुनाथ-पुर गाँव में एक मरीच विषया की बंदलकी से सामाजिक कालांतरण परल हो बना, मुस्ता घना म एव भोजवी को लेकर ऐसी ही धमिय घना हा गई। धामनभाषो ने जिस दग से उस समयधाषा का गिकारा किया उसके सोभावना पर धामारिज म्याय अस्तथा की कार्यरत एक बार पुन उभर कर आई।

धाम शान्ति सेना

मुम्बही प्रण्ड में धाम शान्ति सेना कार्य विरहण १९३० से ही प्रारम्भ हो चुका था। मन्हा धोर मरीची-विन्दा धोर मरिजा के युवाओं की ६० वीं से पचास के परिणाम लक्ष्य सर्वप्रथम शान्ति सेना का गिकार धामो-

जित किया गया। गिकार ने ४४ शान्ति सैनिकों के भाग लिया था। उसके बाद से तो गिकारो का ताडा ही सग गया। धामलतारज्य की हवा घुरे प्रखड में फँस जाने से शान्ति सेना का कार्य भी पँसा है। सोखोदेवरा, धारालणी एव बुबराण धादि स्थानों में भी मुम्बही को नौबतन शान्ति सैनिक पहुचने रहे हैं।

शिक्षा का नया प्रयोग

शामीए विवास के समय चिन्तन के दौरान धाम की प्रचलित शिक्षा पद्धति को धामियों की धोर मुम्बही की जनता का ध्यान पडुन गया। वह समझने लगी है कि समाज में र्वनी धाराजकता, धनुसातनहीनता, बुरे तत्वों से बुद्धि, मिथित बेरोजगारी की जनता का बडों रानी धादि के मूल म धाम की नित्त जीवन विरपेज हो चली है। जे ० पी ० के प्रेरणा से वह उवे नया मोड देने के लिए कटिबद्ध है। शिक्षा जीवन सापेक्ष हो, विवा-लय धोर धामसभा एव धुरे के पुरक हो, शिक्षक धमिभायक एव छात्र समन्वित विचार से शिधा का जीर्णोद्धार करे वह उनकी चाह है। इतने निश्चय ही एक नये उल्पाह का जन्म हुआ। युवराज विवापीठ के प्राचार्य श्री ज्योतिभाई देसाई का मार्गदर्शन मुम्बही के विद्यालय धोर शिक्षक संघुपाय को बराबर मिलता रहा। धामी हान ही में वे एक दिन लिए मुम्बही धामे ये। नये प्रयोग की महता एक गिधा की गई रिधा के बारे में उन्होंने कहाँ की। नये पहलू सामने धामे जिस की पूर्ण मिशरन समाज धाने प्रयास जारी रहेगा।

धामोय नेतृत्व की गतिशीलता

धामनभाषो में समयसा की मुनमज्जे के लिए पहल करने की क्षमता धा रही है। धम ब चिन्ती राजनीतिक दल के मोहताब नही रहना चाहते। उदाहरणमें-जयानाथ से धाम तय गई। ध्याहट परिवार पूरी तरह लबाह हो गये। धाम पर काबू धामे के उपरलत धामसभा ने वीरिधत परिवारो के लिए भोजन की व्यवस्था की। धमने दिन मातवीय धामि-पौधित सेन की धामनभाषो के नेतृत्व में भी इनो प्रकार की गतिशीलता दिखाई दी। प्रण्ड से जिता स्तर तक के धमिधारियो से मिल कर राहत हावित की। प्रतिदिन की

समस्याधों : जैसे रायन, मिट्टी का तेल, विद्यालय धादि की व्यवस्था के लिए वे धामन धरनी समयधाषो के समाधान के लिए वे उन्हें भ्रमभीरते हैं।

धाम स्वराज्य एवं विकास कार्य

यह धमनुभ किया गया कि धामीए विवासके लिए जिनो ठोन योजना का होना आवश्यक है। धामीए उत्यान का कार्य कर रही सरधाषो के महासच धवाड जिते धाम-सेवा सगम भी कहा जाना है के सचन प्रयास से मुम्बही योजना स्वरूप में धाई। दैग के गन २० वर्षों के योजना नाम में सम्भवन-यह पहरा प्रयास था जब धामीए जनता में बँड कर उसकी धामयकताधो को समय कर जनकी प्राथमिकताधो को धामत सात कर एक योजना बनाई गई। जनता के द्वारा जनता के लिए जनता की धमनी योजना की सजा दी जा सकती है। इनकी सफलता से योजनाबद्ध विकास में नये मार्ग खुलेंगे। नई विधिधामो का दिग्दर्शन होगा। केन्द्रीकृत धामोबज के पुराने मानदण्ड टूट जायेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर सरकार द्वारा किये जा रहे धामोयनको इस से वेई रिधा मिलेगी। यही सय योजना की एक उद्योग सती कार्य स्वावलम्बन एवं स्थानीय उद्योगों के धामार पर होने है। धम तक किये गये विकास नारो का सतिया ब्योर इस प्रकार है :-

सिचाई

सिधाका मन उत्यान सिचाई योजना के धार्यत को १२४ धमवर्धन के उत्यान विन्डु तथा १० धमवर्धन के सात सपु मलधूर विन्डुतीकरके के लिए संधार है। धामा है तत्काल विन्डो नित जायेगी धोर इन से वर्तमान र्वनी में समय ८०० एकड भूमि में सिचाई होगी। इसके धर्मरिधन उपा से धामाई को दान में धाम ४ दीनत पण्य सेट धार सक्ष्य धाम सभाधो को सामहिक उन्-योग के लिए किये गये हैं। बुधनगर, चांतीमा नुल्लर, मुना, धमबज धाम सभाधो में भी मलधूर धेदन का कार्य दृढ गति से चल रहा है।

कृषि

एक शुष्मोष्ण कृषि विरोपण के मार्गदर्शन में पूरे प्रखण्ड में निःशुल्क कृषि प्राविधिक सहायता उपलब्ध कराने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

उपयोगी प्राविधिक जानकारी किसानों के पास समय से पहले चार पम्पसेट के रूप में पहुँचा दी गई है और उचित मूल्य पर गेहूँ के उन्नत बीज के विवरण से एक श्रद्धी गुरु-मात हुई है। घागे मिट्टी जाच रबी तथा सरोफ की फसलों के लिए नियोजन करके समयांतरगत आवश्यक व्यवस्था की जायेगी।

पशुपालन

इसे धन्योदय का मुख्य साधन बनाने तथा मुसहरी को इस क्षेत्र में धानन्द (गुजरान्त) की तरह विकसित करने योजनाकी है और इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न भी हुए हैं। परन्तु अभी यह कार्य प्रारंभ होने में कुछ समय और लग सकता है।

उद्योग

घनाई द्वारा धन्य कुशल हिस्तेदारी के सहयोग से प्रवर्तित गुडभरण फार्म इवियपेट प्रा० लि० नाम से एक पॉलिग सेट बनाने की औद्योगिक इकाई की स्थापना बेला औद्योगिक प्रिण्ट में हो चुकी है और अब तक उसमें मुसहरी के पाँच बेरोजगार युवकों को काम

पिल चुका है। इसके प्रतिरिक्त बेल्डिंग में युवाल एक धन्य युवक को ट्रेनी बनाने की भुनुरक इकाई की स्थापना का कार्य सोंप दिया गया है। गुडभरण को आवश्यक सुविधाएँ मिलती रही तो यह उत्तर बिहार में एक महत्वपूर्ण उद्योग समूह की स्थापना में अवश्य सफल होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठान होने के साथ-साथ इसके कुछ सामाजिक उद्देश्य भी हैं—जैसे २०% लाभ का स्थानीय विकास में खर्च, स्थानीय बेरोजगार लोगों को काम देना तथा अपने अभिन्न अंग के रूप में विकास विभाग की स्थापना।

कार्य के लिए भोजन कार्यक्रम

इसके अन्तर्गत अब तक १६ किलोमीटर लम्बी एक सड़क का निर्माण हो चुका है। जिसमें ३५ ७६५ श्रमिक दिवस लगे और १४२.४७ निवटल गेहूँ का पारिश्रमिक दिया गया। धोसतन प्रति श्रमिक दिवस पारिश्रमिक ४ किलो गेहूँ दिया गया। श्रमिक कल्याण की दिशा में पारिश्रमिक सहित साप्ताहिक भवकास का प्रणामी कदम इस कार्यक्रम की एक धन्य विशेषता है।

बिहार रिलीफ कमेटो द्वारा चापा कल

बिहार रिलीफ कमेटो द्वारा सिचाई के लिए ८५८, हरिजन बस्तियों में पेय जल के लिए २०७, गैर हरिजन बस्तियों में पेयजल

के लिए २१, एक बाढ़ पीड़ित में २४ चापाकल लगाये गये हैं। ३०० चापाकल अभी हाल में छोटे किसानों को सिचाई के लिए और दिए गये हैं।

सम्पूर्ण ग्राम विकास परियोजना

पचम पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित चार प्रणामी सम्पूर्ण ग्राम विकास परियोजनाओं में से मुसहरी भी एक है। मुसहरी को केन्द्र की इस योजना के लिए केन्द्रीय अर्थपयन दल ने सर्वोदय क्षेत्र के रूप में पाया, क्योंकि यहाँ ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य के कार्य के फल-स्वरूप एक श्रद्धा आधार तैयार है। इसके अन्तर्गत मुसहरी की २३ सक्रिय घास सभाएँ प्रथमतः चुनी गईं। सम्बन्धित ग्रामसभाएँ सामान्यतया इस परियोजना के लिए स्वेचिद्ध चकवन्दी सामुदायिक सिचाई कार्यों के प्रावस्था दन क्षेत्र में समाज फसल कार्यक्रम, श्रमिकों के लिए धर्तमान पारिश्रमिक दरों से भरपूर श्रमिक न्यूनतम पारिश्रमिक दरों को स्वेच्छा से लागू करना, गैरमजदूरों का भूमिहीनों में वितरण इत्यादि जैसे प्रगतिशील धन्यवनों को स्वीकार कर चुकी हैं। इस योजना के लिए चुनी गई ग्रामसभाओं की सक्रियता उनकी बैठकों के नियमित रूप से होने, उनमें बीपा-कट्टा वितरण होने, ग्राम कोष की स्थापना, पुलिस प्रदानत मुक्ति, इत्यादि कार्यक्रमों में प्रगति के आधार पर प्राकी गई है।

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का हम अभिनन्दन करते हैं

● खाद्य रंग ● सूती वस्त्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि०

(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :

२०३, डा० डी. एन. रोड

बम्बई-१

कारखाना :

बैतानी टंकसटाइड

मिन कम्पाउण्ड,

सोनापुर लेन,

कुर्ना, बम्बई

ग्रामदान की गाड़ी कहां ?

—निर्मलचंद्र

सारे भारत में ४१, ७०, ६८ एकड़

जमीन के भूदान-दान की घोषणा की गई। भारत के कुल दान का आधा से थोड़ा अधिक दान बिहार में प्राप्त हुआ। बिनोबा जी ने बिहार की भूमि समस्या के हल के लिए ४० लाख एकड़ भूदान का लक्ष्य निर्दिष्ट किया था। उनसे यह बताया गया कि बिहार की बागन की जमीन का छठाया ३२ लाख होता है तब से यही लक्ष्य मानकर बिनोबा जीने ३२ लाख एकड़ में से २१ लाख एकड़ में भूदान की प्राप्ति की घोषणा हुई। इनका धर्म है कि विद्यमान प्रतिष्ठा गणना नहीं। भूदान की इतनी बड़ी सफलता के बावजूद बिहार की भूमि-समस्या बरस बदतर होती गई, इनका क्या कारण है? एक तथ्य तो प्रकट है कि क्या घोषित दान में से प्रकट कुल करीब साठे चार लाख एकड़ जमीन का विवरण ही मिला है। प्रमुदान किया जाता है पांच लाख एकड़ तक जमीन बट सकती है। यह भी कम नहीं जाना जा सकता। तबका का छठाया ही मही, १ एकड़ बड़ बड़ी उपनिधि सामने धाई। इन पक्षों के बावजूद भूदान भूमि की मस्या की हर्ष भी नहीं कर मरा। यह 18 तथ्य है। कारणों के विवेचन में जाने इनका सबसे बड़ा तथ्य यह निवृत्त है कि भूमि भूमि का दान नहीं रहा। यह धारण कर भूमि की मान-विभवा का दान ही गया। इसे स्पष्टता से समझने के लिए बिहार की भूमि के निम्न विवरण पर ध्यान दे-निम्न करता होगा—

- जमीनदारों की योग जमीन 7 लाख ३४, ६०, २६० एकड़
- जमीन रेंवो की जमीन 1 लाख १, ६४, ०० १३३ एकड़
- राजकीय जमीनदारों 1 जमीन ३, ३४, १३१ एकड़
- दर रेंवो के जमीन ३, ३३, ०२४ एकड़
- कुल योग २, ३३, ३०, ९६६ एकड़

भूदान-जम, मुम्बई, ३० जनवरी, '७४

बिहार की भूदान में मिली जमीन में से १७ लाख एकड़ जमीन का दान जमीनदारों की सात जमीन में से मिला तथा चार लाख एकड़ जमीन कायमी रेंवो का दान मिला। जमीनदारों की सात जमीन में से अधिकांश जमीन अमल, पहाड़ धाई में। जेय धाबाड़ी जमीनदारों ने जमीनदारों को नाम बदलेवती परिवार या हिल सबंधियों के नाम बदलेवती में स्थानों का प्रयत्न किया। ३४ लाख ६० हजार एकड़ जमीन जमीनदारों की सात जमीन में से जो १७ लाख एकड़ भूदान में प्राप्त हुई, इस दान की जमीन में से जमीन-दारों की कुछ बागन तथा बागन होने योग्य का खना नगण्य ही मानना चाहिए। विवरण के प्राकटो से यह पता चलता है कि जमीन २० प्रतिशत मात्र जमीन ऐसी निकल पाती है जिसे किसी प्रकार धारण किया जा सके। दूसरी घोर कायमी रेंवो की २ करोड़ एकड़ जमीन में से सिर्फ चार लाख एकड़ का दान मिला जो कुल कायमी रेंवो जमीन का मात्र दो प्रतिशत है। यह भी बिहार के अधिकांश गांवों में छोटे-छोटे टुकड़ों में बिभरा है। इनमें से करीब २४ हजार एकड़ जमीन ५ विद्यमान में कम के दान के योग्य है। पला भूमिपानों के तेष प्रतीपायक दान की जमीन दानों को ही वापस देने की घोषणा भूदान कमेटो की धार में की गई। जेय जमीन में से अतोशील तथा बिगरे रहने के कारण भूमि-दान में १०-२५ प्रतिशत का ही विवरण ही मिला है। धर्म यह कि मध्य काज जमीन के दानका क। या यानी १६-१७ प्रतिशत जमीन दान में मिली घोर धारणा प्रतिशत कायमी रेंवो की जमीन बांटी गई।

पोषणपत्नी के हरिजनों की घोर से ०० एकड़ जमीन की घोष हुई थी तथा भी रामचन्द्र रेड्डी ने भी एकड़ जमीन का दान किया। प्रत्यक्ष जमीन का दान मिला। यही से भूदान की गंगा बहावित हुई, लेकिन बिहार के भूदान के बिहार से यह साफ ही

जाता है कि गंगा बाँटो के भूदानों की जवा में भूदान नहीं। हमने यह देखा कि जोत भी जमीन नहीं, 'मात्र मानकियण के दान को' भूदान मान लिया गया। वास्तव में इन जमीनदारों की मान-विभवा भी नहीं रह गई थी। कई जमीनदारों ने धर्मने दान पत्र में लिखा कि जमीनदारों उन्मुदान कायन के कारण हमारा दान देने का हक नहीं रहा। पर ऐसा कहा जाता है कि हम धारणी गैरमजबूर जमीन का दान दे सकते हैं। इसलिए हम धारणी गैरमजबूर जमीन का दान दे रहे हैं। इस जमीन में से अधिकांश पहाड़, जंगल हैं। मात्र थोड़ी सी जमीन के के साथ बताया जा सकता है। धारणों की भूमि से मान-विभवा के दान धारणी भूमि को भूदान मान लिया। इससे मान-विभवा में घटा गया।

धामदान में ऐसी मान-विभवा को महत्व दिया गया है। धामदान में समितित होने वाले को जमीन की जोन तथा उपज का हक कायम रहता है। जमीन का उत्तराधिकार भी पूर्ववत बना रहता है जमीन के अर्थात् करने के अधिकांश को सुरक्षित रखने हुए मात्र जमीन धारणा जोडी गई जिनमें मात्र भी जमीन मात्र में रह गये जा। बावजूद भूदान उत्तराधिकार के प्रतिबन्धन निवृत्त तथा स्पष्ट रूप से घोर बच बना जाता है? इनकी घोर भी गहराई में जाने है तो ह्यामिन्-विभवा में मध्य धारणी घोर भी मध्य ही बना है। जो धारण विभवा के धामदान में धामिभ जेय हूया है, उत्तराष्ट्र माण्डिर्-मिन्विभवा-विभवा जेय राजमंत्र गांव में हया विभवा-जय के धामदान में वह समितित है। बड़े धारण-कारों की जमीन कई राजमंत्र गांवों में हानी है। धारण यह गांव भी भूदान में बड़े भूमि-दानों को नहीं बांटेगी। एक तो धामदान में मध्य बड़े भूमिदान घुट गये, दूसरे धामदान में धारण भी तो उनकी जमीन धामदान के बावजूद कठपंरे में बाहर रह गयी।

धामदान में जो नकर हिम्मा है, वह है बीषा कट्टा दान का। एक बीषे में एक कट्टा, दानो पाँच प्रतिगत भूमि का दान। यदि प्रत्येक राज्य में पाँच प्रतिगत भूमि का दान भी धामदान से हो सके तो सम्भावना होती तो बड़ी बाध थी। हिमाचल में कबीर दन लाख एकड़ होता है। जिन गावों का धामदान नहीं हुआ तथा भूदान की जमीन वार कर दे तो भी पाँच लाख एकड़ जमीन और बंठनी चाहिए, यह मट्ट सम्भावना इसके बाह्य वर्गों से प्रकट होती है, लेकिन व्यापकता में इसे भूदान से धामदान-दान मात्र बना दिया। जिस गाँव में धामदान हुआ उसकी जमीन का बीषा हिम्मा देना है। इसलिए भूमिदानों में से भी ३० प्रतिगत धामदान में धामे उनको गैर गाव की जमीन छूट गई। जो धम भूमिदान है जिनकी जमीन गाव का २० प्रतिगत होता है, उनका बीषा कट्टा इसलिए नहीं निकाला जा सकता क्योंकि वे भी कानूनी परिभाषा में भूमिहीन होते हैं। हमें देवना यह है कि बाह्य रूप से भारत धामदान से जहाँ ३ प्रतिगत जमीन भूमिहीनों के लिए होने वाली थी, वहाँ वास्तव में जिनकी जमीन प्राप्त होने की सम्भावना रही। धामदान कानून के अनुसार धामदानी गाँव में रहने वाले भूमिदाताओं की इन गाव में कुछ जिनकी जमीन है, उनका २१ प्रतिगत धामदान में शरीर ही जाड़ा है तो धामदान की शर्त पूरी हो जाती है। प्रत्येक गाव में कम से कम २५ प्रतिगत जमीन पड़नी गाव के लोगों की या उन गाव के बाहर रहने वाले भूमिदाताओं की होती है। धामदान की घोषणाओं की शीघ्रता में न्यून मत शर्त ही पूरी की गई। इस प्रकार गाव की कुल जमीन का २५ प्रतिगत में अधिक धामदान में सम्मिलित नहीं हो सका। धामदान कानून के अनुसार धामदानी जमीन ३१ प्रतिगत धामदान में शरीर जाड़ी है। लेकिन बीषा कट्टा के हिमाचल में इसे धम माना जायेगा। इस प्रकार अब कुल जमीन में से ३० प्रतिगत जमीन गड़ जायगी है, जिसमें वे बीषा-कट्टा निकालना चाहिए। अब इन ३० प्रतिगत में भी कम से कम ३० प्रतिगत ऐसे लोगों की जमीन है जो धम भूमिदान हैं उनकी जमीन में वे बीषा-कट्टा नहीं निकाला जायेगा।

अर्थ यह है कि १० प्रतिगत जमीन में से ५ प्रतिगत जमीन भूमिहीनों को निकलने की सम्भावना रही। पूरे बिहार का एक-एक गाव यदि धामदान हो जाये तो बिहार की कुल जमीन का धामा प्रतिगत जमीन भूमिहीनों के लिए उपलब्ध होगी जितना कुल रचना एक लाख एकड़ से अधिक नहीं होगा। इसी में से भूदान में भी मिली जमीन वार होगी। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि इन महायज्ञ को पूर्ण सम्भवता भी प्राप्त हो जाये तो भी भूमिहीनों को विभूति मिलेगी, उनकी समस्या को यह स्थान नहीं कर सकेगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित हो जाता है कि भूदान में भूमि समस्या का हल नहीं किया और यह धामदान, जो भूमि समस्या के निराकरण की धामा से जितन 'भूदान-यज्ञ' धामोदन के बाद का कदम है, उसमें भी भूमिहीनों के लिए जमीन मिल सके की कोई सम्भावना नहीं है। यह मात्र धनुमान नहीं बल्कि धामदान पुष्टि के मयन धमियान के धोको की जो उपस्थित सामने आई हैं उसने इसे धोको की पुष्ट किया है। मिनचिचन-निर्मन्त्रक का नारा तो निराकार ब्रह्म जैसा है। कहीं भी उनका सदेह माहात्मार नहीं हो सका। धामदान भूदान के बाद धामदान के सत्य पत्रों की धूल साड़ कर विनोबाजी की मुरम डाइलूटड प्रेरणा शक्ति में प्रे देन सारे भारत के चुने हुए सेवकों के अथक प्रयास में जो निष्पत्ति अब तक सामने आई है, वह निरागाजनक है,

अब इन मोर्चों पर अन्तिम धमियान धामन किया गया है। कानून के रथी, महारथी और अतिरथी सब लोग इनमें लगने वाले हैं। विनोबा जी ने कहा है कि यह धमियान मल्ल होगा तो सारे देश में इनका विवरण करना है और यदि धमफल होगा तो भी सारे देश को धमन करवा होगा। लेकिन कोई भी यह प्रश्न पूछेगा कि वह लक्ष्य कौन सा है जिस पर मैं मरूना या समरुना याकी जायेगी। हमने देखा कि भूमि समस्या का प्रत्यक्ष हल तो इनमें सम्भव नहीं है। तो क्या इन धमिरी धमियान से धामदान की कानूनी पुष्टि की जायेगी? धमियान की मूरु रचना पर सब जो सामने आई है उसमें इन ही कोई देनाही नहीं दीखती है। एक मात्र लक्ष्य है— गाव-गाव में धामयज्ञ का मंडन करना। लेकिन

गाव यह पूछेगा कि यह धाम गमा कौन सा काम करेगी? तात्कालिक प्रश्न से धामोदन दूर रहना है तो कोई शक्ति नहीं बनती।

तात्कालिक प्रश्नों को लेकर यदि बड़े पंमाने पर कोई धामोदन चलता है तो नीचे का संगठनों को मुविषा होती है। नीचे का संगठन म्यान मेना के जैसा है और ऊपर का धामोदन हवाई हमले का काम करता है। गाव के लोग यह जानना चाहेंगे कि क्या गले का भाव कम होगा? क्या बेजमीन को जमीन मिलेगी? क्या बटाईदारों को कानूनी हक प्राप्त होगा। यह सब कुछ नहीं भी हो तो क्या कम से कम सहरमा जिले के भूदान की १५ हजार एकड़ अतिरिक्त जमीन ही बाकी जायेगी? न सही अतिरिक्त जमीन का विवरण, तो हम जिले के भूदान की १७ हजार एकड़ जमीन जो धम तक बटी है, उसकी ही रमीड कट जायेगी क्या? क्या अब भूदान किमानों की बेदखली इन जिले में नहीं हो जायेगी? क्या अत में मात्र इनका ही संकल्प लिखा जायेगा कि इन महायज्ञ के कम से कम दो गावों में जहाँ भूदान की धमयामो धोका की बन्नी की परिवर्तना की गई थी और भूमि पुर्णों को काफी धामा लेकर भूदान के भूदानधो पर बसाया गया था। क्या प्रतीक रूप में उन दो गावों की भूदान की बेदखली का प्रत्यक्ष कार्यकल्प लिखा जा सकेगा? क्या धमियानों में उनकी बेदखली की यह समस्या, अहिल्या की जितना सी पड़ी रही। इन धमियान के लिए इतना सा भी प्रत्यक्ष कार्यकल्प लिखा गया होगा तो शक्ति प्रयोग का आधार माना जा सकता था। धामोदन के चरम-रज की महिमा बढ जायेगी, लेकिन ऐसे प्रत्यक्ष लक्ष्य के धमयान से सफलता और विफलता के माप का धारान क्या होगा?

मान लें कि धाम-यज्ञ के सफलता का दावा मात्र सडा कर लेता ही लक्ष्य हो तो इनसे क्या बनेगा? क्या धामयामा बराने के पहले यह देख लेना आवश्यक नहीं है कि इन धमियान के पहले जो धाम-यज्ञों बनायी गयीं, वे क्या कर रही हैं? धामयिच समस्या के लिए उन्हें सन्निध किया भी नहीं गया था। सकीर्ण, मत्स्य, मुविषा आदि माहूर्तिक

मुन्दर मन्द, जितने उनका उद्बोधन किया था वे धर भी उन्हें याद रह गये हैं क्या? हमारा ग्राम-सभाएं बनी। एक गांव में दुबारा जाने तक पहली ग्राम-सभा विस्मृत हो चुकी होती है। एक घण्टे में यह प्रणाली ही एक एक ग्राम सभा अधिक बन गयी पायी थी और बनी भी हैं तो शक्तिशाली नहीं बनी। कहा जाता है कि गांव का गांव दुर्बोधन का दरवार है। इस दरवार का पाठ्य भी जुगारी है।

अन्तर जीते और हारे पस का है। इस दरवार में भीम धीर मोए भी दीवरी का चीर-हरण देखकर मोन रहते जाते हैं। इस दुर्बोधन के दरवार में सब कुछ हार जाने वाला व्यक्ति इस दरवार में क्या भरेगा? रक्षता है? जो भी सभा बनेगी वह मोएण करेगी। उसे तो शौरी के बाहुल-नेम कुशलन की बटिबटता के लिए सलवार रहा है, दूधे तो धर निरनय करता है।

हलो वा प्राण्यसि स्वर्गं निम्वा
 सामोष्य ते महोम ।
 तस्मान्मुचि कोनेय
 युद्धाय हृत निरध्व. ॥

धरने कुशलनारो से जूमना होगा। सामा-
 जिक कदियों को भक्तभोरता होगा। हर
 प्रवार के अन्वय का विद्रोह करना होगा।
 यह सही है कि कुशलन में हिता के पुराने
 प्रायुष काम नहीं धाने जाने हैं और यह भी
 सय है कि कार्यकर्ता वृष्टण बनेंगे, मरुन तो
 तियों की सोच-भक्ति में से लडे होंगे।

तेजिन धरुनं तो निमित्त मान ही था। पाइय
 के पिता राजा में, इस राजकी की बर्तव्यता
 नष्ट करने के लिए वृष्ण को गीना सुनना
 पडा, सत्त्व के विरुद्ध अरुण प्रदण करना
 पडा। धार में गाव की निरीह शोषित जनता
 साह भी भर सके इनकी भी प्राण्य बाधु धर
 सेप नहीं है। लोच-नगा में धीरेन्द्र भार्द 'छोर'
 रोज रहे हैं। विनोबा जी ने धरने को सास्त्री
 और धीरेन्द्र भार्द को मिन्ची माना है। उन्होंने
 कहा कि ग्रामदान की घोषणा के बाद सास्त्री
 का नाम ममान हो जाया है। ग्रामदान-गुष्टि
 और निर्माण का काम धीरेन्द्र भार्द जैसे
 मिन्ची का है। तब में धीरेन्द्र भार्द धरने
 जर्दर रोगग्रस्त तरीर को लेकर लोकभक्ति
 का 'छोर' सोच रहे हैं। उनको दीग मिन्चा
 में धर बानी ही जलनी पनी जा रही है।

कार्यकर्ता विचार है कि इस टिमटियाने
 दीप के बाद क्या होगा? क्या इसलिये 'छोर'
 मिल जाने की प्रतीक्षा बिचे विना विनोबा जी
 एक के बाद दूसरा अभियान लेइते चले जा
 रहे हैं। जा कार्यकर्ता अभियान में लगते हैं,
 उन्हें यह अनुभव होता है कि शक्ति के दिग्ने
 की तरह रात भर माघ पटरी बदलता रहा।
 इस बार धाउटर-सिगलन मिल गया है, लेकिन
 जनता में, विना साशन-बोर्ड के उन्के ये चक्रे
 का कोई बौद्धत नहीं। पायी तो जेटकार्य
 पर टगा सा टिकता सा लडा है, यदि होय में
 होता तो गार्ड से पुद्धता 'पुराना साशनबोर्ड'
 कहाँ उजार रहा? क्या भूमि ममस्या की
 हमारी मजिल तप हो गयी?

(शुद्ध ११ का भाग)

कार्यकर्ता भी इस बार अभियान के मीचे सब
 तक नहीं होंगे। पूर्व तैयारी में जिन अन्तक
 में इस विचार और काम के, प्रति स्थानीय
 लोगों ने उल्लाह किया है, वही अभियान
 चलाया टोक रहेगा—एसा तय किया गया
 है। धरनी १५ या १६ अन्तक ऐसे तैयार हुए
 हैं, इनमें स्थानीय लोग ही काम करेंगे तथा
 सभी तरह के कार्यकर्ता उनकी मदद ही
 करेंगे।

राष्ट्रीय मोर्चे सदस्यता में चलते बाते
 इस धर्मिय अभियान में स्थानीय लोगों को
 धारें बढ़ा कर ताबो में सर्वगम्मति से प्राय-
 सभा बनने, भूमिहीनो में बीया-मट्टा बटिने,
 प्राण्यण जमा करने और शक्ति सेवा गठित
 करने को बडे पंजापे पर कोशिश की जायेगी।
 कार्यकर्ताओं को तौतिया सहरता जितने के
 सभी प्रसङो के अन्वय सहरता से सटे हुए
 पुष्टिया और दरभगा जिले के भवानीपुर
 तथा बिरौल प्रसङो में भी सघन अभियान
 चलायेगी।

१५ और २६ जनवरी को एक शिविर
 द्वारा पूर्व तैयारी के बाद स्थिति का मूल्यान
 करने तथा धारें चलते बाते अभियान की
 पद्धति शक्ति पर विचार किया जायेगा।
 शिविर में जयप्रकाशजी भी शामिल रहेंगे।
 मुख्य बूद्ध अभियान में ६० कार्यकर्ता प्रदेग
 के बाहर से व करीब १०० विहार से भाग
 लेंगे, ऐसी उम्मीद है।

इस समय एक और गोविन्दन, निर्मला
 देसायडे, कृष्णराज मेहता, बगल के बंगोड
 लोकिक का स्वादायु ब कीरनरा जैसे ही लौग
 तो दूसरी धोर जानकी, सलोच, किमोर साह,
 कुमार ममान, मृगमुति जैसे तखण साथी
 काम कर रहे हैं।

C S T 2226

Gram;—Thakkar

Thakar Dass Nand Gopal

Commission Agents & Cotton Traders
 Chemicals & Pesticides

Distributors & Sole Agents, Haryana State
 : Cyanamid, (India) Ltd.

132, Nai Mandi, SIRSA (Hissar)

S. T. 6162

Phone 407

को आवाद कर रहे किसानों के पास उस जमीन की रसीद नहीं है। लोगों ने बताया कि सरकारी कर्मचारी द्वारा सो-सो रुपये की रिश्तन मांगने पर अपनी गरीबी के बावजूद भी हमने पक्की रसीद पाने के लिए रिश्तन दी है लेकिन रसीद कभी मिलती नहीं। खादी-ग्राम के बमल में एक गांव है। पीछियों से लोग बहा बसे हैं, छेती कर रहे हैं लेकिन अपनी जमीन का कोई सरकारी कागज नहीं है उनके पास। हर साल राजस्व कर्मचारी ५०० रुपया ले जाते हैं, रसीद कभी मिलती नहीं। गांव के गांव हैं जिनमें राजनकरांड बटे हैं लेकिन उन पर स्थायी दुकानों से साल में एक या दो बार ही सामान मिलता है। मुमहर छादिवासी दुकान पर जाते हैं, दुकानदार बह देना है अपनी भाल नहीं है फिर धाना। दुकान भी छाड-दस गांवों के बीच एब ही है। ४-५ मील दुकान तक जाना फिर खाली हाथ वापस लौटना। रायन का गल्ला वनक में बिक जाता है।

राममूर्ति जी को लगा कि ऐसी परिस्थिति में हम उन्हें कैसे केवल प्रामदान की बात समझा सकते हैं, शायद मुक्ति की बलवानों जैसे उनके मन में विडा सकते हैं। उन्होंने शायन मुक्ति से पहले दुष्कासन मुक्ति की बात प्रागे रखने की कोशिश की। जब नभ जनता दुष्कासन को अपनी पीठ से फेंकने को तैयार नहीं होंगे, वह कैसे शायनशाव को अपनी पीठ से उतार सकते हैं? इसी घटदाक्रम से उन्हें ह्रास जमीन का छोर लगा।

जगह-जगह से गांववापि परती पडी सरकारी वर मजदर्रा जमीन की नियति बनवाने का धायन कराते नगे। धायन से प्रखड में भूमि हीनता निवारण, भूमि के निम्नवर्त में बढती जाने वाली सनियमितनप्रो से लडने का नित्यण से लिया था। दाता धोर धादाताप्रो से टूटे सपरक को फिर से जोडने सितम्बर में दाता-धादाता सम्मेलन हुआ। फिर धमीन नियुक्त किये गये। जगह-जगह धडितररर भूदान भूमि का हिसाब लगाया गया। धासगत से भूमि-हीनो के धावेदन पत्र धाने लगे। उन गावों में सभा होंगी, जिनके धावेदन पत्र होने। सभी की उरस्थिति में पूडा जाना कि धावेदनकर्ता के पाम जमीन तो नहीं है? सबकी सहमति

से उतारा धावेदन रख लिया जाता। ११ फरवरी ७३ को जदप्रकाश जी के जन्मदिवस पर उद्योगमन्त्री चन्द्रशेखर द्वारा पहला भू-वितरण समारोह हुआ। इससे ६० भूमिहीनों को पक्की मिला। भूदान-यज्ञ बोर्ड समिति को सरकारी वर मजदर्रा जमीन बांटेने का भी हक है लेकिन उसके फार्म सरकार से मिलने हैं। किरण के समय कार्यकर्ताप्रो को सरकारी फार्म लेनेमें दिक्कतझाई। प्रखड स्त्रीय कर्मचारी धायद फार्म देना पसन्द नहीं करते। कार्यकर्ताप्रो ने हूबहू वैसे फार्म स्वय धायतकर विभाग से उन पर मुहर लगशाना तप किया है।

सेवाधाम में हुई राष्ट्रीय परिषद में प्रस्तुत एक नोट में सर्वे सेवा सधने कहा था, केरल को छोड शायद अन्य किसी भी देश में बेजमीन धोरबेधर सेतिहरनजदूर को भीपडी लडी करने लायक जमीन दिलाने का यत्न गभीरता से नहीं किया गया। विहार में घोडा बहन हुआ लेकिन समस्या की सुलना में वह भी धपर्याप्त है। धन हम भूमि के न्याययुक्त वितरण, भूमिहीनो में भूमि का हस्तान्तरण, भूमिहीन धमिनों को वाम धोर पर्याजन मजदूरी की समस्याओं का निराकरण करने के लिए तत्काल सम्मिलित प्रयत्न करना चाहिए। गांव-गांव में धामीणो की धामसभा में सम्बन्धित धप्रधिकारी, विभिन्न दलो के सदस्य, सभासदकेवियो धादि के गामने मीके पर गांव की जांच कर तत्काल वितरण किया जाये धोर भूमि सम्बन्धित धण्य धमसभाओं का निराकरण किया जाय तभी सपनना मिल सकती है।

भू'रे के लक्ष्मीपुर प्रखड में जमीन का धोर पकड कर सभया ह्रास से ले मी गई थी। सभया वृ कि लक्षाल धा पडी वितरि से गुरू हुई थी, नित्यण तम्भान लेने पडे इग लिए सारे प्रखरण को तात्कालिक धोर दीर्घ-कालिक शब्दो के द्रष्टु में फंसना पडा है। बुध साधी दने राहन कार्य की तदरहेग सकते हैं। द्रुड दमे स्थायो क्रांति से सडक धर सुड-डुड सधर्य मान सकते हैं। राममूर्ति जी का कहना है कि जमीन का प्रसन्न तात्कालिक नहीं है, केवल भारतके लिए ही नहीं, मारे एणिया के लिए। जमीन की धपनी एक भाषा है, जिसे भूमिहीन ही नहीं, भूमिवापन ही इन

भाषा में सोचता है। धामीण समाज का केन्द्र बिन्दु जमीन है। फिर बुध कीर्ण तात्कालिक दित्त सकती हैं, हो भी सकती हैं, लेकिन यह हमारी धामता पर निर्भर करता है कि हम उनको दीर्घकालिक नतीजो तक बराबर चला ले जा सकते हैं या नहीं। एक जमाना था जब शकतर धोर गुड बनानेवालो में भी नमक बनाया था। स्वराज्य का नमक भी तात्कालिक था लेकिन नतीजे उसके दीर्घकालिक थे। इसलिए धाय लोचनेचना में प्रवेश करने के लिए कोई भी स्थायीय मुद्रा उठाना पडेगा। धामस्वराज्य हमारा लक्ष्य है। धामस्वराज्य के धादीनलो को बहुमुखी बनना होगा। गांव में कोई भी मोर्चा धाय खुले, ध्यान इतना ही रखा जाय कि जमीन का प्रसन्न नहीं छूटे। हमारे यहाँ के नाम में एब हिसाब से राहत या लोचकल्याण भी है लेकिन लोचसगठन उतका नतीजा होना धमिन्वापण है। जमीन के धोर को पकड कर हम उनके नजदीक गये हैं, उनी धोर से वे हमारे नजदीक धाये हैं। इत नजदीकी से बने सगठन का एक ही बरदम बाकी है, वगने वह सही दिशा में हो।

जमीन का धोर मिल गया है इसलिए सारोधान धव किमी जमाने का सेशासन हो गया है। इसके पट्टे में भी सारीधाम गया हू धोर धामधाम की नीरबना के बीच चलने वाली सारोधाम की सनियमितन मुझे क्रयि-क्रेण के किमी महामसा में धाधुय भी तरह समय की धमार्ति सनान नदी में बुदबुद से समान चलनी लगी है। धव सारोधान धाधम नहीं है, प्राणहीन प्रतिष्ठान नहीं है। सारी-धाम धव धाने धानितव की धमिन्वापन में सम्बद्ध धोर बेबेन है। उसके नित्यणुने धायन पर गांधी के धमिन् धादमी धोर दैता में उग वेदपल (डिगइन्हेरिटेड) धादमी के पांशो का कीचड लग रहा है। इय कीचड से सारीधाम जगदा जीसन्ध धोर इयार्ण जगदा पकिरहो गया है। धमिन्धव क्रांति के धवध भी धवडिति होने के लिए बहाँ सारी-धाम रहा है। धोर तात्कालिक है लेकिन उनके धिया कोई भी धाडर-धमर धायधायकड नहीं हो सकती। सारी तात्कालिक है लेकिन उसके धिया कोई भी दीर्घकालिक धाये नहीं हो सकता। सारीधाम में प्राण प्रतिष्ठा ही नहीं है, सारीधाम की नहीं उग वेदपल धमिन्धव धादमी की!

श्रमशाला : कुदाल और कलम पर समान अधिकार

—विद्या बहन

भारत में १३ वर्ष पहले सन् १९२६ में थमभारती, सादीग्राम, में धीरेन भाई के मार्गदर्शन में एक 'श्रमशाला' के माध्यम से बाल-शिक्षण का प्रयोग प्रारम्भ हुआ था।

तीन साल बनाकर जनवरी १९२६ में हम लोगों ने थमशाला बन्द कर दी क्योंकि प्रधान-श्रमदान का कार्यक्रम तैयार हम नाग माध्या से बाहर भागों में चले गए थे। ६ साल बाद ४ मार्च १९६८ में थमशाला की पुनर्स्थापना हुई। नितीश जी ने अपना उद्घाटन किया। इस पुनर्स्थापित थमशाला में एक विशेष प्रकार के बच्चे हैं। बच्चे सब 'प्रुमिटीम या निवट प्रुमिटीम' हैं और अधिकांश 'हलवाती' में बिके हुए हैं। इन बच्चों की उम्र गिना पाके की है, किन्तु यहाँ जाने के पूर्व के धरती परि-निर्वन्धन करने साहित्य की (जिसमें उनके माँ-बापों ने कभी कर्न लिया था) बजहूरी करने को मजबूर थे। यदि वे बच्चे थमशाला में न होंते तो भाजीवन गिना के धरतार से बचिन रह जाते।

हम ऐसे प्रुमिक्त बच्चों को गिणए के निणए लेते हैं जो पवि-भाल साथ की धातु से ही कर्माई के छुटे-मोटे कामों में लग जाने के कारण मुख्यवन्धित गिणए से बचिन रह जाते हैं।

थमशाला में हम इन बच्चों को घाट साथ म इतना गिणए देना चाहते हैं कि वे बच्चे प्रचलित पद्धति में धनुसार माध्यमिक स्तर तक पहुँच जायें साथ ही इन घाट वर्षों में इन बच्चों के हाथ कोई ऐसा हुनर धा जाए जिसमें य धानीय समान के लिए उप-धायी सिद्ध हा तथा धरनी जीविका के लिए स्वाधयी हो।

कालक्रम से हम धरनी गिणए योजना बच्चों के परिवारों तक पहुँचाना चाहते हैं। हमारी योजना यह है कि इनकी छोटी सेनी का विनास हो उन्ह कोई पूरक उद्योग मिलाया जाए, तथा संगठित होकर वे समाज की एक परस्पर सहाकारी इकाई बनें। गिनाए, संगठन और विनयन का यह समन्वित कार्य हम धरने विद्याथियों तथा गिणकों के माध्यम से कराना चाहते हैं।

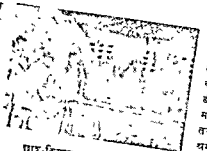
इनमें यादव १४, बडई ५, कुम्हार ५, तेली १, धानुक २, पटवार ३, पासवान १४, मूसहर ६, चमार १ धोबी ४ तथा पातो २ हैं।

इस समय ६० विद्यार्थी पाच वर्गों में विभाजित हैं। पवि गिणक हैं। सस्था के अन्य कार्यकर्ता भी गिणए में सहयोग देते हैं। पड़ोस के गणक के एच दर्जी, मिलाई-गिणक हैं एक भाविक-नेतिहर हल चलाना मिलाया है।

जरा तक पुस्तकों का माध्यम है हम विचार सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम की पुस्तकों के आधार पर परिभाषित गिणए दे रहे हैं। किन्तु हमारे गिणया का मुख्य माध्यम जीवन की किशाए प्रकरणा ही हैं। विद्यार्थी प्रतिदिन दो घंटे पढते हैं, धा घंटे सेनी, बघीये, बर्कशाप धादि में व्यत करते हैं।

घन, दलहन, तेलहन, खाद, प्रुमि मुषाए (पशुओं प्रुमि की सेनी के योग्य बनाना) धायीए इजीनिरिया, मेहबन्दी, रीत की समान करना, वषों के पानी को सेतन, सिंचाई के लिए पानी को सेत-सेत में पहुँचाना अधिकांश पानी की निक्काओ धादि हमारी मुख्य प्रयत्निया हैं। इसके अलावा हर मौसम की मन्डो, बागवानी, फल-मौसमों धोर स्वाधी तावाओं में मधुकी-गालन, छोडारी मशीनी काम जैसे सेनी के सामान्य छोडार बनाना, डोजन, रिजली की मोटर की देवभात धोर मरम्भन धादि भी मिलायी जाती हैं। तापी तलह के कामों में छात्र धोर गिणक साथ-साथ यम करत हैं।

कापिण परीक्षा के लिए प्रश्न-पत्र पठांठ के स्तुत से प्राण्य विवेक जाते हैं। परीक्षा फल मासाम्य स्तुतो से प्रच्छा ही रहना है। इस बार परीक्षापत्र परोडाइज प्रच्छा रहा। नग बघों की प्रोडाा बच्चे धाव पडने की धोर अधिकांश ध्याम दे रहे हैं। गिना, कापी का महत्त्व समझने लगते हैं। वे परिवार के धर्ग-श-गिणक सम्भार में धुक्त हो रहे हैं।



छात्र-निक्का धरने साविधायक में

इस समय थमशाला में ६० विद्यार्थी हैं। समयमयता साथ से ८, लकडा से १७, देगहड से २, नुसर में ३, बिनापुट से ४, पातो से १०, लकडा भट्टार में २, करमा से ३, माजिनुहर से १, मन्डरा से २, सोप से ३, सबबाट से २, जानपुर से २ तथा पूर्णसीड से १।

थमशाला को एक विशेष गिणए-प्रयोग गना है। इसका उद्देश्य है कर्माई के साथ शर्त का, धरनी थमसाकिन का जालसाकिन माय मन्त्रय सिद्ध करना। इस समय-व-रा हम साधनहीन बच्चों को मुक्ति की रा म से जाना चाहते हैं। गिना हो ऐसी चीज है जिसमें तनी धर, जन धोर समान की शक्ति से मनुष्य का निर्माण होना है तथा मनुष्य समाज के विनाम में मरुधायक न बनना है और उसके प्रति उत्तरदायित्व निभा बनना है। स्वल्प समाज के लिए स्वल्प मनुष्य धादि को जीवन में भौतिक तथा मार्गदर्शक तत्वों का मनुष्य रूप मके। धात्र जो धरनी, निररहन, बचिन तथा धारिण है, उन्ह धरनी सिपिन का बोग हा, धरने धरितार की प्रयोग ही, धरने धारण विधाया के स्वल्प बन मके धोर हुनर धोर कर्मरर उन्नत समाज अधिकांश ही, यह तवारी अथावाता की मूत्र धर रहा है।

→ विद्यार्थियों ने अपना एक कोप बनाया है, जिसमें डेढ़ किलो अनाज प्रतिदिन पाने वाले विद्यार्थी प्रतिमाह ५ किलो और १ किलो पानेवाले विद्यार्थी ३ किलो जमा करते हैं। इस कोप की धनराशि उनके कपड़े तथा चापा, विनायक आदि में खर्च होती है।

विद्यार्थियों का एक मंत्रिमण्डल है। यह मंत्रिमंडल छात्रावास की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में सहायक होता है। इसका चुनाव हर माह होता है। इस समय सब विद्यार्थी छात्रावास में ही रहते हैं। छात्रावास में रहने से उनको सामूहिक निर्माण और सहकारी व्यवस्था द्वारा उन्हे सामूहिक जीवन का अभ्यास ही रहता है। सध्यम वर्गीय बच्चों की छोटी-छोटी श्रमिक बच्चों में सहकारी वृत्ति अधिक दिखाने देती है।

अपने भोजनालय की व्यवस्था एक शिक्षक की मदद से विद्यार्थी स्वयं कर लेते हैं। बच्चों ने दाल-भात, रोटी-सब्जी, खीर-लिचडी, पूड़ी-पूरसा तथा डेबुआ आदि बनाना सीख लिया है। भोजन व्यवस्था का बच्चों के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ा है, उनके स्वास्थ्य में निरंतर सुधार है।

विद्यार्थियों के स्वास्थ्य का डाक्टरों की निरीक्षण हर तीन माह होता है। बच्चे, ऊर्जाई आदि की जांचकारी रली जाती है। तीन महीने में किसी-किसी बच्चे का वजन तीन किलो तक बढ़ा है।

बीमार पड़ने पर रोगी-विद्यार्थियों के लिए अलग रहने तथा दवा आदि की व्यवस्था है लेकिन रोगी-सेवा के लिए जिन माधनों की आवश्यकता है उनका धर्मो पूर्ण धारा है।

स्वस्थ रहने के लिए माफाई की विधि आवश्यकता है। इसको बच्चे घर बाहर अग में समझने लगे हैं। जब बच्चे नये छाने हैं उनसे तीन महीने तक इन कामों के लिए बार-बार कहना पड़ता है, तब धीरे-धीरे ध्यान बन पाती है। शुक्रवार दिनेय कपड़ा का दिन माना गया है। बच्चों का कपड़े धोने के लिए गप्पाह में एक दिन (शुक्रवार को) मान्यता दिया जाता है। जाड़े के दिनों में सर्द के धारा में साफ रहना धमधम नहीं तो धमधम कटिज धरस्य ही जाना है। बरगान में भी कभी-कभी कपड़ों की कमी बहुत धरस्यती है, जबकि काम करने समय कपड़े भीम जाते हैं

और बदलने के लिए कोई अन्य कपड़ा नहीं रह जाता है।

धर्मो बच्चों की आवश्यकता भर कपड़े नहीं बन पाते। वर्ष में दो जोड़े वुशर्ट-पैंट तथा एक जोड़ा गजी-जायिया बनवा सकें तो उनकी आवश्यकता पूरी हो सकेगी। उनके पास जाड़े में श्रोतन-बिछाने के लिए भी कमी है। दो साल पहले एक-एक चादर बी गई थी। मान यही एक चादर उनके पास है। उसको ही श्रोतकर बच्चों ने ध्रव तक शरीर को नया देने वाली सर्व हवाओं का सामना किया है।

विद्यार्थियों के अन्दर उत्तरोत्थित की भावना का विकास दिना-दिनो हो रहा है। ये जिम्मेदारी से अपने कार्य में पूरा करते हैं काम करते समय कोई शिक्षक बर्हा रहे या न रहे ओ काम उन्हे सीपा जाता है उसे पूरा करने में वे प्रयत्नशील रहते हैं। वे किसी अचानक पंदा हुई परिस्थिति में घबड़ाने नहीं, उनमें परिस्थिति का मामना करने की भावना डट हो रही है। वे निरंतर धमिक बर्हा सदा से मालिक का ह्रमक बजान का घाटी है। उनका मन मालिक के भय और धरसा की भावना से भरा रहना है। धरम-सम्मान की भावना तो उनमें पंदा होने ही नहीं दी जाती। गुरु के दिग्गने दिग्गने तक ये धमिक बच्चे नामने लड़े होकर बोल तक नहीं पाते थे। धरट बच्चे सस्था के व्यक्तियों को देखकर शरम जाते थे। लेकिन ध्रव इनने दिग्गने म इन गभी पट्टुलो में सशरट सुधारा हुआ है। विद्यार्थी ध्रव भावने को मजदूर से बड़ी धमिक विद्यार्थी मानने लगे हैं।

विद्यार्थियों की धरमानी और धरमिय पनी-शरपो के बाद धरमभादचो की सभा बनाने जाती है। उन्हे पनीशाचन की तथा बच्चों के बारे में धरम जानकारी दी जाती है। वे जिन प्रकार बच्चों के विकास में मरगरो हो सक्ने हैं इन धरम उन्का ध्यान सीपा जाते हैं। धरमगाना में रहने के बाद में वे धरमने बच्चों के बारे में क्या सोचने है, धरम उन्की क्या राय बनी है, इनके बंटक में धरमन करने हैं। बच्चों का व्यवहार धरमकों में नंगा रहना है, यहा में जाने पर वे काम में मरगपो देन है या नहीं, इन सानो पर धरमों की जानी है।

धरमगाना में पास १६ एकड भूमि है जिनमें ३ एकड का नया पनी का बाग मरगाया

जा रहा है। १६ एकड में मेनी होनी है। सिचाई के लिए एक तालाब और दो कुए हैं। दो बिजली की मोटरें तथा एक डीजल पम्प है। १६ एकड भूमि में धरमगाना के नन्हे धमिक सेती सील रहे हैं। वे रबो, खरीक और जादद, तीनो फमले बोते और नाटते हैं। पूरी १६ एकड भूमि इन बच्चों के धम पर ही निर्भर है।



विद्या बहन : विद्यालय की संघालिका

भूमिहीन परिवारों के बच्चों की शिक्षा के इस प्रयोग में धर्मो हम लीम ६० से ७० प्रतिशत के बीच स्वारसम्बी हुए हैं। ३०-४० प्रतिशत की कमी दात और महायना से पूरी हानी है। पूर्ण स्वारसम्बी बच हो सकेगें यह धर्मो भविष्य के गर्म में है।

हम लोगों का निर्णय है कि धरमगाना के विराम के साथ-साथ धरमभादचो की पूर्ण मेनी धरमगाना के धरमगने धर जायेगी। उन स्थिति में विद्यार्थियों की मरग्या दो गो तक बढ़ गयेगी। धीरे-धीरे धरमगाना का विकास एक विस्तृत रूप तक धरम विद्यालय का होगा। मेनी के धरगाव भोपातन, मुर्गी पातन, पत-सरसग, रेगा-उयोग, दुशहारी, लोहारी, यदुईमिरी आदि धरम उद्योग भी जोड़े जा सक्ने हैं। इनमें से बर्द उद्योग गुरु दिनेय में है लेकिन धरगावभोपातन के धररगम उन्का पूर्ण विकास नहीं हो सक्ता है। विरमिन उद्योगों के धरभाव में हमारी धरमिक स्थिति नहीं सुधर पाती।

हम सोचते हैं कि ४ घण्टे काम करें और ३ घण्टे पढ़ाई तथा १ घण्टा कर्माई की जाय ताकि धरमभादचु हो, किन्तु मरगाव यह कर्ता समक नहीं दिग्गाने देना है। मेनी

प्रधिक समय ले लेती है। बड़े विद्यालयों की सव्या करने से शायद स्थिति में सुधार हो। प्रधिक मुचरे हुए यन्त्रों की भी आवश्यकता है। यदि हर बच्चा अपनी नमाई में से बचाकर माह में पाच से दस रुपये तक अपने परिवार को नहीं देगा तो भय है कि परिवार की गरीबी बच्चों को श्रमशाळा से घास पर लीज लेगी। श्रमिक बच्चों के शिक्षण का यह एक अच्छा सरप है जिसकी उपस्था नहीं की जा सकती। बच्चों के माना-पिता को यह प्रोत्साहन देनी है कि दिनों दिन बच्चों की नमाई बढ़ती जाये विन्तु अभी ऐसा होना शक्य नहीं है। गरीबी से सतप्त लोग कुछ प्रधिक पैसा पाने के लोभ में बच्चों की पढाई छोड़ देने हैं और उन्हें श्रम्यत्र करी काम पर लगा देने हैं। इस प्रकार सीधे हुए कई बच्चे शून्य स्थानों पर चले गये हैं और अपने पाम नौसिधिये ही रह गये हैं।

श्रमशाळा के उन्हें एक योजना की सफलता के लिए हमको साधन चाहिए। क्योंकि अन्त में प्रभाव में योजनाएं सफल नहीं होती हैं।

हमें काम के विस्तार को देखते हुए मोटे तौर पर ७०,००० रुपये की जरूरत है इसका तिलाई उद्योग, ३० सेट स्मॉल धारि, मशीन, रुई बरफा धारि, छात्रावास के लिए चौकोर टाट पट्टी धारि, वर्कशाप, डेंगरी उद्योग, पत्र सारक्षण, रेशा उद्योग, कुम्हारी धारि में परद मिलेगी।

(गृह ५ का शेष)

श्रमिक क्रांति वाले हो जाये, श्रमिक क्रांति वाले, या फिर भले ही क्रांति की अवधारणा में ही श्रमिक करने वाले हो-इसमें वह सर्वोपर्य समाज नहीं बनेगा जिसके लिए हम सिर पर नकन बांधें घूम रहे हैं। गांधी के लोगों में प्रथम स्वयं शांति करने की इच्छा और श्रमिक हलती ता वे अभी तक कर चुके होते। तब न हमारी जरूरत होती न विनोबा को पवित्र पाव भारत नाचना पड़ता। बिनावा के 'हमें जानम बनना है वाक्य का यही मूलतत्व है। जानम तब तक शून्य नहीं हो सकता जब तक कि तारा दूध पही नहीं हो जाना।

इसलिए श्रमशाळाओं की साक्षरता की

जिम्मेदारी हमें श्रमशाळा के एक सदस्य की तरह लेनी होगी और गांधी के प्रतिवचन के प्रश्नों से श्रमशाळा को जोड़ना होगा। गांधी ने जब काम शुरू किया था तो स्वराज्य एवम् सपना या और श्रमशाळा से लेकर साम्प्रदायिकता की समस्याएँ सभी तात्कालिक थी। वे देश के प्रतिवचन की समस्याएँ थी और गांधी ने स्वराज्य को उन्हे जोड़ा। इसलिए इन देश के इतिहास में पहली बार लोगों में जागृति और शक्ति आयी। गांधी का स्वराज्य प्रथम नहीं प्राया तो इसका एक कारण यह भी है कि उनके स्वराज्यमें विधायन करने वाले लोग प्रति तात्कालिकता वाली राजनीति और श्रमशाळा संपूर्ण क्रांति के चक्रवर्त मंड्य गये।

श्रमशाळा के प्रतिपक्ष अभियान के सामने वे और ऐसी प्रश्नको चुनौतियाँ हैं। अभियान की सफलता-असफलता को तापने का मान-दण्ड यही होगा चाहेहिए कि इन चुनौतियों का बिनावा उत्तर अभियान से मिलता है। प्रतिपक्षयंत्रा और तात्कालिकता पैदा करने में विनोबा ने कोई नक्श नहीं छोड़ी है।

With best Compliments from

The Ambala Rolling Mills and Foundry Works
17-Industrial Area

CHANDIGARH-160002. (India)

Phones Office 25020
Res. 29452

Manufacturers of round, square, angle, window sections etc.

- M/S Sister Concern
- Raja Ram Salh & Sons, Railway crossing Morinda,
- Distt Ropar Pb (India) Phone 84
- Manuf.: Sugar cane crusher, Wheat thresher rolling mill & other machinery,
- M/S Shearing M/C etc. & Agricultural Machinery.
- Avtar Salh Gases Private Limited 177-J&H-Industrial Area
- Manuf.: CHANDIGARH-160002 (India) Phone 29198 Res, 27452
- Oxygen Gas is being set very soon.

लाशों की गिनती का पेशा, पेशेवर लोग

डॉक्टर बनने में जो सर्व परिवार करता है उसके नाम वह मेना चाहता है। यह वो पधा है। हममें इसान की जाग बचाने, यरीजी वो मेना करने धीर देना को तन्मुख रखने जैसी बड़ी बातों के लिए जाना नहीं है। जिन तरह हमारे घाँट बाराखाने बचाने वाले समाज के प्रति ध्यान प्रायश्चित नहीं मानते उसी प्रकार कोई जिम्मेदारी नहीं मानते। जैसे तो बाराखानों की पधो में लगने वाला पैसा भी लगाने वाला ना नहीं होता, समाज का ही होता है। लेकिन पैसों में तो लोगों को समाज ही संवार करता है। डॉक्टर को डॉक्टर इन्जीनियर को इन्जीनियर धीर बड़ धंधवार को धंधवार मानने में समाज का जिनपू लखों होता है उना उनका या उनके परिवारों को लेकिन पैसेवर लोग इन समाज के रे में जिम्मेदार नहीं होता चाहते। गये हवार प्योरोक हर माह बमोनेमिने डॉक्टर, इन्जीनियर, हवाई जहाज उड़ाने वालों धीर धंधवारों में हडाताँ से ही धीर सरकार को उनके सामने भुक्ता पडा। क्योंकि देश के पचान करोड़ लोगों को जिनकी वे कुछ लाख लोग तहस-नहस कर सकते हैं। इनके सप ही धीर धंधनी एवता धीर धाने काम धीर धानेपू जी के बल पर ये सरकार को भुक्ता धानेती है। सरकार इसलिए भुक्ती है कि इनकी हडताने वे लोगों को जो बमोनेकहीगी है उनमें बहू करती है। लोगों को धंधर लव-सीक हूई तो वे सोट नहीं उंगे। धीर सोट नहीं मिलते तो हमारी सरकार बंसे बनेगी। सरकार के इस डर को वेनेकर काम धंधनी तह जानने हैं धीर उनका पायदा धाने लिए धुन-मुशिक्षा तुलने में बरत है। इन लोगों को धंधनी है धीर इन कारणे नोट ज्यादा धंधन्यवस्था में मिलना है। धुजाना पडता है धीरको को ही। उनहीं धीरको को धिक्की इन नोवेर लोगों को कोई फिर नहीं है धीर ? निदम में डॉक्टर, इन्जीनियर, धादि लोगों को जिनका पैसा मिलना है। हप भी उनै ही धादिनै कि जिनके वे हैं फिर उदा लता ज्यादा धीर हूँ इनका कम बयों

मिलता है ? ये लोग धाम जनता को सहानुभूति पाने के लिए धंधनी तुलना भले ही धंधरानी से कर लें लेकिन उनके मय में सपना तो बिदेना जैसी दोलत का है। इन्हे इस सच्चाई में कोई सेना-नेना नहीं है कि देश में धीरके ही क्योंकि इस देश के समाज में इनकी जड़ें नहीं हैं। इनकी जड़ें बड़ा पृष्ठा चाहती हैं जहाँ की बिधा इन लोगों में सीखी है। भौवा मिनने में वे लोग पत्रियम के किसी भी धंधी देश में चले जाते हैं। धाने पैसे का उपयोग नहीं करना चाहते हैं उनका उपयोग वे धाने लिए करना चाहते हैं धीर जहा ज्यादा पैसा मिलने हैं वहा जाते हैं। नहीं जा पाते तो सरकार के सीत पर मूय दपने हे वा समाज का नूतन है।

छाते डाक्टर को सतत्याह तप करने धारी एक सर्मिनि के तप धाधमी में विदुने दिने नहा कि इन डाक्टरों को पाद रखना चाहिए उन्हे डाक्टर बनाने में समाज का बहूत सा पैसा लगा है धीर इस समाज के प्रति भी इनकी कोई जिम्मेदारी है। लेकिन डॉक्टरों में हडतान नहीं तोड़ी। डाक्टर धंधनी तरह जानने है कि समाज के बारे में हमको धंधनी जिम्मेदारी की याद दियान धानी सरकार जिनकी जिम्मेदार है। धंधर डॉक्टरों को धाने पैसे भी फिर है ता सरकार को गान्धीजी को फिर है। उनको भी जनता के वा पर बात है मिन जानत है कि इन जनता को तिराम स बरपाना जा सकता है। दोनो गक हूरे की बमजायिया जानने में धीर इन्जिनियर ज्यादा पावद वे लिए धीर समाज के प्रति धुन बचावार् धीर जिम्मे धार हता को यह धादिनी बनी बत मधनी धीर। डॉक्टरों धाध वेगा है धीर उनमें पैसा है तो राउ-जिनि भी पसा धीर उनमें पैसा तो म नोट भी पैसेवर धंधन पैसों को उनमें मिलने वाले पैसे धीर ताकन में जाह ता है। समाज से नहीं जोडता।

धंधर डॉक्टरों, इन्जीनियरों धीर इनके पैसेवर लोगों को देना भी फिर नहीं है तो है। इनके लिए पैसा जिम्मेदार है ? मिन बहू मान है।

समाज में कौनार्ड कि डॉक्टरों, इन्जीनियरों धीर धंधरनों की देना को सख जरूरत है धीर जो लोग देना को एकदम सुहावन बना सकते हैं उन्हें ज्यादा पैसा धीर सम्मान मिलना चाहिए ? लोगों को धुन करने वाली हमारी सरकार ने। क्योंकि सरकार के सामने भी देश को सुखहाली का जा सपना था धीर है वह उनमें पत्रियम के देशों से उधार लिपा है। इस देश के लोगों वा धीर धीर लोगों का क्या माना है इसे न सरकार ने समाज न सरकार बचाने वालों ने। चीन ने तो डॉक्टरों इन्जीनियरों प्रोफेसरो सेना धीर सरकारी धंधरनों में मेनो धीर बाराखानों में काम कर-बायाबोकि वहा भी भारत की तरह ही धीर लोग ही ज्यादा है। चीन में धीरकी बापी निट पसी। हमारे यहा ही निटि बयों कि हमने जो भी किवा उसका पायदा उन लोगों को मिला जो धीरके नहीं थे। धंध इन लोगों की एक जमात खड़ी हो गयी है जिनके मेहनत-मसबबन के काम में, समाज से देशकी गरीबी से धानना नहीं है। इनके पास पैसों की ताकन है धीर बहू सरकार धीर समाज को धंधनी दया पर रख सकता है।

पढ़ने कम तो बम इतना धो वा कि धीरके धाधनी को धम तो इनके वसे से बच सकता था। लेकिन धंध जैसे-जैसे सारकार धंधन हाथ पाव लीना कर ताते कामकाज धंधने उधार ले रही है। जैसे-जैसे धाम धाधनी ज्यादा में ज्यादा इन लोगों की धाम धाधनी के लिए मजबूर होना जानता है। य ही लोग हैं जो संधार को ज्यादा से ज्यादा काम लेने के लिए उचमाने हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सरकार को मुजाना धामान है धीर उनमें साध काम करने में मदद बना पायदा पड है कि काम नहीं करना पडता, नोकीने से कोई निवाल संधार धीर पैस कमपाने की पूरी छट धीर रास्ते लुन जाते हैं।

गये मान सरकार ने जिनने ज्यादा काम हाथ में लिए उनको ही ज्यादा हडतानें हूई धीर वे हडतानें उन धीरके लोगों से नहीं की जो कीमती के धाममान पर चडने में जमीन में धंध पय है। हडतानें मब समयें लोगों में की है। सरकारीकरण के पायदे हमारे सामने

कानपुर में स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह

स्त्री-शक्ति जागरण के लिए उत्तरप्रदेश की उद्योग नगरी कानपुर में ११ से १७ अक्टूबर ७३ तक महिलाओं की पदयात्रा चली। पदयात्रा में डाक्टर चन्द्रकान्ता रोहतगी, श्रीमती मुमति भटनागर, श्रीमती कमला नैयर, श्रीमती शांति जोहरी, श्रीमती बनक त्रिवेदी, श्रीमती चन्द्रप्रभा और बुभारी सरोजा ने भाग लिया। इनकी पदयात्रा ११ अक्टूबर को फूलबाग, गांधी प्रतिमा से शुरू हुई। प्रसिद्ध भारत महिला सम्मेलन की श्रीमती सलोप महेश्वरी सिंह, श्रीमती सावित्री बोहरा, श्रीमती लक्ष्मीदेवी तथा श्रीमती कोहिली ने टोली की सदस्यों को फूल मालाएँ पहनाईं और नगर की समाज-सेविका श्रीमती स्वरूपरानी रोहतगी ने तिलक लगा कर प्रार्थना दिया।

पहला पड़ाव सती चौरा में हुआ जहाँ पहले मवेश विद्या मन्दिर में और फिर जुहारीदेवी डिप्टी कॉलेज में सभाएँ हुईं। शाम को पड़ाव स्थल पर ही एक मडिना सभा हुई। दूसरे दिन पड़ाव शांति नगर में हुआ। गर्ल इंटर कॉलेज में सभा हुई और रात में घर-घर सम्पर्क किया गया। साहित्य विन्नी और सर्वोदय पात्र रखने की बात हुई। तीसरे दिन बिरहाना रोड पड़ाव पर जाने हुए टोली के बहनें पर विनय भाई ने एक धरोभनीय पोस्टर फाड़ दिया। दोपहर को प्राचार्य नरेंद्रदेव कॉलेज में सभा हुई। चौथे दिन का पड़ाव सिविल लाइन्स में हुआ। चार बजे महिला सभा हुई और घर-घर सम्पर्क किया गया। पाँचवें दिन श्याम नगर के पड़ाव में मुस्लिम युवती गर्ल इंटर कॉलेज

में मुस्लिम बहनों के बीच सभा हुई। छठा पड़ाव स्वरूप नगर में हुआ जिसे पदयात्रा का सबसे श्रद्धा कार्यक्रम कहा जा सकता है। वहाँ पहले एम० एन० कॉलेज में एक विशाल सभा हुई और शाम को वाल निकुंज में महिलाओं की सभा हुई। गृहलक्ष्मी समाज की बहनों ने प्रमुख रूप से भाग लिया। सरोजा बहन ने चञ्चल घाटी महिला पदयात्रा के संस्करण सुनाये। सावित्री पड़ाव धर्मोक नगर में हुआ जहाँ मुबह फातिमा बानवंत स्कूल और फिर तिलक व्यायामशाला में महिला सभाएँ हुईं कार्यक्रम शाम तक चला। सातों दिनों बहुत श्रद्धा सम्पर्क हुआ और सर्वोदय आंदोलन में महिलाओं की रूचि जागृत हुई। उन्हें अपनी शक्ति और उसके लिए ध्वंसरो का भाव हुआ।



जिन में जाएं ने जाएं सर्वोधी सरोजा बहन, कमला नैयर, श्रीमती त्रिवेदी, श्रीमती जोहरी, श्रीमती चन्द्रप्रभा, डॉ० चन्द्रकान्ता रोहतगी व श्रीमती मुमति भटनागर

हिंसा से हालत सुधरेगी नहीं : जे० पी०

पिछले कुछ दिनों में गुजरात में विभिन्न प्रकार के प्रजासैनिक दंगों में लोगों को, इनका उद्धार लोको को धारोचन करने के लिए प्रकट करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

वैने मिश्रा की सम्पूर्ण पद्धति, उसके लक्ष्य और तत्त्व में शक्तिकारी परिवर्तनों की जल्दना प्रारम्भिकता के समर्थन में करी थी। किसी भी प्रकार के शक्तिपूर्ण प्रयोगों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

बायें है और इनमें विभिन्न प्रकार के शक्तिपूर्ण प्रयोगों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

वैने मिश्रा है कि वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

वैने मिश्रा की सम्पूर्ण पद्धति, उसके लक्ष्य और तत्त्व में शक्तिकारी परिवर्तनों की जल्दना प्रारम्भिकता के समर्थन में करी थी। किसी भी प्रकार के शक्तिपूर्ण प्रयोगों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

बायें है और इनमें विभिन्न प्रकार के शक्तिपूर्ण प्रयोगों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

(पृष्ठ २ का भाग)

तो मैं तो जिनका बोट देने ही नहीं गये। जो राम सुभिर जग मरवा है के हिंसा के उद्देश्य में बुलाए को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

भी उसी पद्धति में पाएंगे। तब क्या करें? प्रारम्भिकता में उत्तर या विवक्षित न उत्तर। लोगों में बुलाए में भाग देने को बट्टे का बुलाए में उत्तर या विवक्षित न उत्तर। लोगों में बुलाए में भाग देने को बट्टे का बुलाए में उत्तर या विवक्षित न उत्तर।

बायें ही नहीं तो शायद इनका धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान प्राधिकारियों को धारोचन करने का प्रयास किया गया है।

With best Compliments from
ESSEN APPLIANCES
94, Sector 28-A
CHANDIGARH
Manufacturers of Electrical Accessories

मो २० गि०

पुस्तक-पुस्तक, १० जनवरी, '७४

तीस जनवरी की स्मृति में



द देहली क्लॉथ मिल्स क० लिमिटेड के लिए श्री भरतराम के सौजन्य से

वार्षिक मुल्य : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ मिनिम या ५ डायर, इस अंक का मूल्य ६० पैसे ।
प्रभाप जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एच ए० जे० मिटल, नई दिल्ली-१ में मुद्रित ।

सर्वोदय

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली सोमवार, ११ फरवरी, '५४



× गांधी को याद करने वाले × लोकन्त्र नया चाहिए, समाजवाद नया चाहिए × आचार्यकुल
शिक्षकों की डू ड यूनिशन नहीं है × सर्वोदयवाले राजनीति में नहीं पड़े × शिक्षा-संस्थाएं
सरकार से स्वतंत्र हों × देश जल रहा है और ये बंसी बजा रहे हैं × हम
पशुओं से बदतर हैं × चुनावी नक्कारखानों में तूती की आवाज

गांधी को याद करने वाले

भूदान-यज्ञ

११ फरवरी, '७४

वर्ष २० अंक २०

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

गांधी को याद करने वाले

(सम्पादकीय) — प्रभाप जोशी लोकतंत्र नया चाहिए, समाजवाद नया चाहिए, — राममूर्ति प्राचार्यकुल शिक्षकों की ट्रेड यूनियन नहीं है — महेंद्रकुमार सर्वोदयवाले राजनीति में नहीं पड़े — विनोबा शिक्षा-संस्थाएँ सरकार से स्वतन्त्र हों

देश जल रहा है और वे बंसी बजा रहे हैं — सिद्धराज डड्डा हम पशुओं से बदतर हैं

— सरला बहन चुनाबी नक्कारखाने में तूती की धावाज — निर्मलचन्द्र सहूरसा शिविर से — कृष्णकुमार जौनसार बाबर में पदयात्रा — कृष्णमूर्ति गुप्त भ्रामा में प्रलण्ड-सभा

वापिकोत्सव — नर्मदेस्वर रामस्वराज्य के विना लोकतंत्र खोखला — विनय भ्रवस्थी

देश भर में उपवास-दान

समाचार

मुखपृष्ठ : श्री अन्न भद्राहम (इन्डियन एक्सप्रेस के सौजन्य से)

—

राजघाट कालोनी,

गांधी स्मारक निधि,

नई दिल्ली-११०००१

इस बार तीस जनवरी को देश में जिस हालात में गांधी को याद किया उसकी सच्चाई अन्न भद्राहम के उस व्यंग्य चित्र में प्रकट होती है जिसे हम मुखपृष्ठ पर प्रकाशित कर रहे हैं। गांधी अपने शालिरी दिनों में धाज हो रही हिंसा से कहीं अधिक उग्र और सब तरफ फंकी मारकाट के बीच घनेले घुसे थे और एक ज्वालामुखी के बीच शानि की चट्टान की तरह खड़े थे। उनकी शहादत के छव्बीस साल बाद हालत यह है कि गुजरात जहां वे जन्मे थे, धराजक भौंड की हिंसा में जल रहा है और जहां उनका प्राथम या उस प्रहमदावाद की रक्षा सेना कर रही थी। पन्द्रह दिन के धान्दोलन में चवत्तीस लोग मर चुके थे, चालीस गहरो और कस्बों में कम्पूँ लग चुका था और बाजार गुड चुके थे। देखने वालों का कहना है कि गुजरात में भारत छोडो धान्दोलन के समय भी जनता का मुस्ता इतने विचराल रूप में नहीं पड़ा था। भारत छोडो धान्दोलन से इस धान्दोलन की तुलना का एक सबसे बडा मतलब यह भी है कि उस समय नेतृत्व विहीन लोग बिना किसी संगठन के एकदम सडकों पर धा गये थे और अर्धों को बता रहे थे कि उन्हें भारत छोडना पडेगा। इन बार भी नेतृत्व-विहीन लोग, बिना किसी संगठन और योजना के गडकों पर धा गये हैं और बिमनभाई पटेल की प्रष्टाचारी सरकार से गद्दी छोडने की माग कर रहे हैं।

लोगों के इस हिमन प्राक्रोंग को गृह मंत्री ने विरोधी पार्टियों द्वारा उकसायी गयी धराजकता बहा है और जनसभ तथा कम्पूँ-निष्ठी पर धारोप लगाया है कि धनाज की कमी से उदेलन धमनीय था इन लोगों ने राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश की है। प्रचारित किया गया है कि रिखले एक महीने में गुजरात में धनाज की लेकर दगे कचे रहे हैं। यह गद्दी है कि धनाज और शानि के लेन के धानमान पर बडने भावों में गुजरात में व्यापक धमनीय फैलाया है लेकिन लोगों का प्राक्रोंग महंगाई पर जनता नहीं है जिनका बिमनभाई की सरकार की धरिश्चमनीयता पर है। केन्द्रीय सरकार ने जिन तरह बिमन-

भाई का समर्थन किया है उससे लोगों का विश्वास उसके भी इरादों से उठ गया है। बिमनभाई ने प्रहमदावाद में एक पट्टी पर इन्दिरा जी के लिए लिखा — 'आपको गुजरात में पचपन प्रतिशत बहुमत दिया और प्राप हमें ऐसे पाव प्रतिमान मंत्री भी नहीं दे सवी जो ईमानदार हो।' बिमनभाई जब दिल्ली में इन्दिराजी से मिलने गये तो विद्याधियो ने तार भेजा — 'कृपया उन्हें वापस मन भेजिये।' लोगों के विद्याधय हैं। इन निर्वाचित प्रतिनिधियों में से एक की भी ताकत नहीं है कि वे जनता का सामना कर सकें। लोगों को धव सस्ता धनाज और तेन नहीं चाहिए — वे चाहते हैं कि बिमन भाई की सरकार इत्तीपा दे। लोगों का सरकार पर विश्वास पूरी तरह उठ गया है। धरिश्चमनीयता के कारण है। गुजरात में इस साल मंगफन्दी भी बच्छी फसल हुई है लेकिन तेन के भाव और ऊंचे बडे हैं, बाजार चष्ट्या हुमा है पर एक लाख टन की बसूलों के लख्य में से सरकार तिर्फ एक हजार सात सौ टन इकट्ठा कर पा-ी है। लोगों को लगता है कि सरकार तेन मिल मालिकों और बडे किसानों से मिल गयी है और इसलिए बच्छी फसल के बायजूद चीरें नहीं मिल रही है और भाव बढ़ गये हैं। विरोधियों का यह धारोप उन्हें सही लगता है कि सरकार ने उत्तरप्रदेश और उडुसा के चुनाव के लिए पंता लेकर बीजों को महगा होइ दिया है।

रक्षितकर महाराज जैसे बयोड्ड सर्वोदय सेवा तक ने इन्दिराजी से माग की है कि वे बिमनभाई की सरकार को हटायें। बुकि केन्द्र ऐसा नहीं करना चाहता इसलिए महाराज ने मनी विद्याधको से धरील की है कि वे इत्तीपा दें। संगठन काइम के विद्याधको ने तो इत्तीफे पट्टा भी दिये हैं। महाराज किसी विरोधी पार्टी के गुणों नहीं है और उनकी सच्चाई क्या ईमानदारी में किसी को मदेह नहीं है। फिर भी बिमनभाई की प्रष्टाचारी सरकार वेगमी से हटी हुई है और इन्दिराजी दबाव धीरा के सामने भूकना नहीं चाहती।

जिन मांगों पर जनता को विश्वास नहीं है क्या वे सरकार में रहने और गांधी जी का याद करने के धरिश्चारी हैं? — प्र० जो०

लोकतंत्र नया चाहिए, समाजवाद नया चाहिए

—राममूर्ति

दूस वक्त उत्तर प्रदेश में चुनावों की घूम है। कुछ दिन बाद जनता प्रायः वाट से तय करेगी कि पिछले पाच वर्षों, कौन जाने उसने कम भी, उत्तर प्रदेश की शासन करेगा। शासन बनने के लिए ही सारी दौड़ घूम है। हैनरिबेन्टर से, जी.पी.डी. साइडिस से, मोटर से और पंदल हार-महार, गांव-गांव, घर-घर के घक्कर लगाने जा रहे हैं, बादा और धारावायनों की मंडी लवाई जा रही है। एक कहना है "किना मन करो, धान बाबा कल मुंह हरा होगा। तबन्तीक बुनिया में कहा नहीं है। धीरज रखो, देश बहुत धागे बड़ बुझा है। हमारे हाथ में तुम्हारा भाग्य परलिन है। हम बोट दो" हैं। दूसरा सम-मता है "अब ज्यादा इनके मुखाये में मत पडो। यह महामारी, यह अंधाकार, यह चोर बाजारों, यह जाइर और धावन, क्या अब भी धामें नहीं सुलती? बोट इन्हें नहीं हमें दो, हम तुम्हारे सारे दुख दूर करेंगे"।

इसी तरह की बातें हम पिछले सालों में क्यों से सुनने धा रहे हैं। इन वर्षों में देश भर में किलनी ही सरकारें बनीं और टूटीं। सभी दलों की सरकारें बनीं, सभी मिल कर बनीं और सभी फेकनीं। हम बाती-बाती धाम बोटी देते रहे—कभी इन सब को कभी उम दल को। लेकिन हुआ क्या? क्या हुआ कोई उम्मीद? पूरी हुई? कोई समस्या हम हुई? सबको रोजी मिली, रोजगार मिना? हमारे बच्चों का भविष्य बना? जनता की सुहावनी पटी? देश की मान बढती? गैर, जो कुछ हुआ भी वह कितने लोगों के लिए हुआ?

कहा जाना है कि लोकतंत्र ऐसा ही होता है। इनमें नाम जनता का चलना है लेकिन राज दल और धरनर का होता है और बाजार होता है सेठ और साइरर का। गारे समाज है समाजवाद के, लेकिन बडना है मार्क्सवाद और पूँबीवाद। पिछले वर्षों में सरकार में समाजवाद का नाम लेकर सब कुछ

धामने हाथ में कर लिया और हम रोटी-पानडे तक ५ लिए मुस्ताज हो गये। विकास के नाम में कारीगर की कारीगरी गई, छोटे किसान की बरर टूटी, युवक का भविष्य गया, हर गांव गूट और जातिवाद और दलबन्दी का धनाडा बन गया जाणए का बोलबाला हुआ। वंसा परमेश्वर बना। धार पी में उगली पडी तो उवकी जा "नेता" हुए, जो पिछलपू बने, जो धरमर दुर्भी पर बंटे।

देश की विधान ममाओं, विधान-परिषदों और समर कोमिना कर समभम पाच हजार नेता हैं। इन्हीं के दल हैं, इन्हीं की सरकारें हैं। एक करोड़ से अधिक सरकारों के धरिधारकों बर्मचारी हैं। जनता के टंकम का बहुत बडा हिस्सा सरकार धामने इन कुटु-नेता हैं। इन्हीं के दल हैं, इन्हीं की सरकारें हैं। दिल्ली तक ये ही धामे हुए हैं। गांव में लेकर प्रमुख और पूजी है, प्रभाव और पडुन है, पद और पदवी है। क्या प्रभासन और व्यवस्था, क्या विकास, क्या रेल, पानी और विजनी, क्या बाजार-भाव और धामरार, तथा क्या मिना और ग्यास, सब इन्हीं के हाथों में है। सब पर दलो की राजनीति हुनी है। स्वराज्य का धराली मुस ये और इनके लाग भीम रहे हैं। बाकी लोगों के लिये जिन्यपी एक लम्बी अचरी रात है। क्यों ये लोग कोई ऐसा बुनियादी परिवर्तन चाहिये जिनसे उनका प्रमुख घटे? ये जानते हैं कि हम लोग थोडे नारों के भुलाये में पड जाते हैं, इसलिए ये एक से एक मोहक नारे लगाते हैं। हम कभी इस दल को धरना मानते हैं कभी उस दल को। इस अम में पड कर हम भूल जाते हैं कि दलो के नाम धाहे जो हों, राजनीति सबकी एच ही है। लाला जो एक ही है, दुगर्न जलन-मनप हैं। हर दल सत्तावादी है। जनतावादी कौन है? सत्ता बढ रही है और सत्ता से सर्वात पन रही है। दौनी के गठ-बन्धन का नाम राजनीति है। यह दलगत राजनीति परिवर्तन विरोधी है, राष्ट्र विरोधी है, मोक्षर विरोधी है।

सब धान तो यह है कि धाज तक हमने जिने लोकतंत्र समना धा वह लोकतंत्र नहीं दलतक है, और जिने समाजवाद माना धा वह गूड सरकारवाद है। हमारी इस भूल के कारण हमारे ऊपर दोहरी धार पडी। लोक-तंत्र के नाम में हम धामने दलो और भग्ने से बट गए। एक और गठिन हो कर हमने बुनियादी समसामा धा ही हल करने की कोशिस नहीं की, गांव के लोग, शहर के लोग, विधाओं, मिशरक, मजदूर सब एक दूसरे के सामने मुक्का नान लखे हो गये। पूरा देश सत्ता के कुला में फल गया। उधर सरकार लाक बडगारा के नाम में समाज को निपतनी चली गयी। जनता निमो कुछ रह ही नहीं गई। सरकार जो जिनसे हम धामें, जो पडामे हम पडे, जो बडे हम करे—अब यही रिवात हो गई है। कहा है गांधी का धामराज, कायें स का स्वधराली राज, लीधिया का चौलरा राज, का मन्मुभितर का विधान-मजदूर राज? कतने ही सरकार धराली है, देश धराला है, दल धराले हैं, लेकिन जनता? जनता धराली हो गई है।

यह चुनाव क्या है, दलों का धमहाय जनता पर धामरण है, जिनमें सब धमियाय धामरण करने वालों के हाथ में हैं। उनके धामने वाले प्रचार के साधन हैं, मोट धीन लेने वाले हथकंडे हैं। ये हमें निर्भय हो कर, सोच-मामक कर बोट भी नोट देने देते। ऐसे धामरण से मुक्त लोकतंत्र किस कायम होगा?

सवाल है कि क्या तक हम दल तरह दीन और धमहाय बने रहेंगे? क्या धर भी समय नहीं धामा है कि हम इस दलतक को धोड दें और सच्चे लोकतंत्र की सत्ता बनें? क्या यह सम्भव नहीं है कि गांव-गांव में (सब धालियों को लेकर) धाम समायें और नगरो में मुहल्ला समायें गठिन हों, और उची तरह कारखानों, विधानमों और दलरों में भी

धरणी-धरणी सभायें बने? हर सभा धरणी समस्याधी के बारे में धामने-धामने बैठ कर सोचे और उनका हल निकाले। ये सभायें धरने दायरे में एक स्वायत्त इकाई के रूप में काम करें, और धरने जीवन में अनुचित गहरी हस्तक्षेप न होने दें। नीचे की मर्यादा जान जायें तो उनके सर्व सम्मत प्रतिनिधि तब-तब जिला सभायें बनें, और धरने चलकर राज्यसभायें और राष्ट्रसभा भी बन जायें। इन सभाओं में विचार के भेद भले ही हों, लेकिन सबसे काम सबसे राय से हो, काम, काम और धारण की व्यवस्था सबके लिए हो, सबको ईमान की रोटी और इज्जत की जिन्दगी मयस्तर हो। क्यो बोई दल हो, और क्यों हमारा जीवन सरकार के हाथ में पड़े? सरकार का धरणा क्षेत्र होवो सीमित हो।

चुनाव सामने है। धाप इसमें बोट दें और जिसे चाहे बोट दें। लेकिन सालक और डर तथा जाति और धर्म के भेदभाव से धराण रह कर बोट दें। और यह सोच कर


बोट दें कि देश दल से बड़ा है। अब हमें वंसा लोकतंत्र बनाना है जो चुनाव के साथ धरने वाला और चुनाव के साथ ही चला जाने वाला न हो, बल्कि जिसमें समाज धरणी इकाईयों में संगठित हो, जिसमें हर व्यक्ति हिस्सा ले सके, जिसमें सिर्फ इस बात का फैसला न हो कि हमारे ऊपर हुकूमत कौन करेगा, बल्कि यह तय हो कि हम धरने पड़ोसियों के साथ मिल कर धरणी जीवन के काम कैसे चलायेंगे। ये ही स्वायत्त मह्वारी, संगठित इकाइया सरकार में धरने प्रतिनिधियों के काम का ध्येय लेंगी और उन पर अदुश रखेंगी। इस तरह जो सरकार बनेगी वह दलों की नहीं होगी। यह प्रतिनिधियों की धाम राय से बनेगी। तथा सर्व मान्य कार्यक्रम के धनुषार काम करेंगी। जो सच्चे धनुषा होयें वे सरकार में न जाकर लोक शक्ति विवसिन करने का काम करेंगे। इस प्रकार पूरा तंत्र 'लोक' का हो जाएगा, "दल" का नहीं रहेगा।

हम धाप सब मानते हैं कि धराण का लोकतंत्र निकलना है। सभी चाहते हैं कि लोकतंत्र नया हो। लेकिन होगा तब जब उसको तलाश होगी। हम धाप उसकी धुर-धरान कर सकते हैं। नीचे की छोटी-इकाइया संगठित और सक्रिय होगी तो लोकशक्ति बनेगी और लोकशक्ति बनेगी तो नया लोकतंत्र बनेगा। नया समाजवाद धरणीगा। लोकशक्ति नहीं तो कौसा लोकतंत्र और कौसा समाजवाद?

बिहार में उपवासदान

सहरसा कुसुम जाधव, राजेन्द्र मिश्र, धीरेन्द्र भाई, धरणा जाधव, महेंद्रनारायण, कृष्णरज बेहता, विष्णोर शाह, वंशनाथ प्रसाद चौधरी, हरि भाई, पुजारी राम, ऐनी-गडबद, सोभनाथ साहू, कैदार प्रसाद मंडल, बलिताल बोरा, चारचन्द्र भण्डारी, पटना : जयप्रकाश नारायण, राम पंचक सिंह, विद्यासागर, श्यामबहादुर सिंह, सर्व नारायण दाग, उदितराम बरई, धनवाद, रामन रायण सिंह, मुंगेर, धनजयप्रसाद साहू, सुजयकरपुर, प्रनिरट, नवादा, भीतिनारायण धर्मा, फरीदपुर।

Swastik SERVES HOME



INDUSTRY

Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and industrial use.

Footwear and hoses gloves, moulded products and oil seals foam rubber mattresses, pillows and cushions Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.,
Pune 411 023.

प्राचार्यकुल शिक्षकों की ट्रेड यूनियन नहीं हैं



प्राचार्यकुल के सदस्यों को सम्मोहित करते हुए प्राचार्य विनोबा

(परमप्राय प्राथम, पवनार में १२ व १३ जनवरी, १९७४ को प्राचार्यकुल का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यहाँ उनकी एक प्रस्तुति है।)

है। भारत के बिना मनुष्य विचार नहीं कर पाता वन यह जरूरी है कि समाज के धर्मगत व्यक्ति का भी राष्ट्रीय मिते और उनमें कुशाचार्य से उत्पन्न मनाइ है।

दक्षिण भारत में प्राचार्यों की परम्परा रही है। या दक्षिण भारत में प्राचार्यकुल का विचार ज्यादा मजबूत मयबनीय है। इसने लिए प्राचार्यों का सहज भाषा का उत्तम प्रचलन कर रहा था जोड़ने का महान राय करना होगा।

बाबा ने कहा कि पहले से प्राय प्राचार्य कुल की जरूरत ज्यादा है। घने घन देहा और दुनिया के सामने है। सब समझाओ का मान समत्वयुक्त धर्मप्रणय करना और धरना अधिप्राय प्रकट करना बहुत जरूरी हो गया है। प्राचार्यकुल के शब्द की प्रविष्टा तभी विनोबा जब प्राचार्यों ने सत्याचारण तथा निरन भाषिणा के गुण होना।

तीनरे पहर सम्मेलन की दूसरी बैठक में भी विनोबा फिर बोले (पूरा भाषण इस अक्षम धन्यव)

उनके पूर्व मोविन्दराव देसायों ने 'प्राचार्यकुल की महत्वता' विषय पर बर्चा करते हुए कहा कि प्राचार्यकुल शिक्षकों की कोई ट्रेड यूनियन नहीं है। इनका उद्देश्य बहुत व्यापक और दूरदर्शी है। तीसरे से

प्राचार्यकुल पीड़ित मानवता का मुकाबला करने की प्रवृत्ति है।

प्राचार्यकुल महान् बड़े ने 'प्राचार्यकुल की शिक्षा नीति और उसका कार्यान्वयन' विषय पर प्रकाश डाला। इस बर्चा में विभिन्न शासकों के प्राचार्यों ने भाग लिया। कई बर्चाओं में शिक्षा क्षेत्र में राज्यभक्त के बड़ने हुए दखन में बार में विराध एव बिना व्यक्त की। इन गाथों की प्राथमता प्रायरा विनोबिद्यालय के भूतपूर्व कुलपति मोतीलप्रसाद ने की।

दूसरे दिन प्रांने साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार की प्राथमता में सम्मेलन की तीसरी बैठक शुरू हुई, जिसमें सर्वप्रथम भागतपुर शिक्षविद्यालय के प्राचार्यक शां रामजी मिश्र ने वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थिति में प्राचार्यकुल विषय पर प्रोजेन्सी एव भावपूर्ण व्याख्यान दिया। देश के वर्तमान राजनीतिक, सांख्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिक दम सभी क्षेत्रों में हो रहे वैतिक ह्रास एव धनमूल्यन के बारे में तीव्र विवादा और क्षाम व्यक्त करने हुए प्रांने शिक्षकों को हृदयकृत म तटस्थ दृष्टि से न्याय का पत्र धारण करने की धारणा दी।

प्राचार्यकुल सम्मेलन में प्राचार्यकुल सम्मेलन और प्राथमिक तबकी धरना निषेध प्रस्तुत करते हुए प्राथमिक एव शिक्षा प्राचार्यकुल (मेय गुच्छ एवर)

सम्मेलन के प्रारम्भ में केन्द्रीय प्राचार्यकुल के सदस्यक प्रो० गुरु शरण (प्राचार्यकुल के सयोजक बसोयध भीशास्त्रक सम्मेलना के कारण धनुषिणय में) ने विभिन्न राज्यों में प्राचार्यकुल की प्रवृत्ति की रिपोर्ट देना की तथा स्वागत-संविधि के सयोजक प्रो० महेश कुड़े (नागपुर) ने सम्मेलन की सफलता के लिए प्रार्थना प्रकृत सन्देश पढ़े।

सम्मेलन को सम्मोहित करने हुए विनोबा (जो प्राचार्यकुल के सत्यापक भी हैं) ने देश की वर्तमान सन्दर्भस्थिति के बारे में विस्तार व्यक्त की और कहा कि प्राय देश में घन उत्पन्न में बृद्धि प्रथम भावयवता

सर्वोदयवाले राजनीति में नहीं पड़ें -

ह्रस्व परिपद में लगभग ३०० लोग ध्याये हैं। उनमें तमिलनाडु के १ हैं, केरल के २, प्राय के ५ और बर्मादेश के अन्य। दक्षिण के ४ प्रांत मिलकर ८ लोग हैं। ३०० में दक्षिण भारत के प्राठ। हम लोगों के लिए सोचने की बात है। सुबह मैंने इशारा किया था कि भारत के लिए जो खतरा है वह हम लोगों को ध्यान में रखना चाहिए। भारत १५-१६ विकसित भाषाओं का देश है और भारत की जन संख्या ५५ करोड़ है। इस को ध्यान में रखकर तो बाकी के योरोप की जन संख्या ४० करोड़ है। उसका मनसब दुष्प्रा कि योरोप जितना ही यह देश बड़ा है। यहा १५-१६ भाषाएँ विकसित हैं। वहा के १५-१६ राष्ट्र हैं। विशाल राष्ट्र बनाया प्राचीनकाल से आज तक। इन दिनों कुछ ऐसी प्रवृत्ति रही है कि मालों प्रात भ्रमण-भ्रमण टूट रहे हैं। ऐसे तो भारत से कोई भ्रमण नहीं होना चाहिये, परन्तु अपने प्रातो के लिए ज्यादा अधिकार चाहिए, ज्यादा सत्ता चाहिए इत्यादि-इत्यादि। इनमें से कुछ मार्ग ठीक भी होती हैं, कुछ बेठीक भी होती हैं, प्रात-प्रात भ्रमण-भ्रमण टूट रहे हैं, यह हमारे लिए खतरनाक बात है। आज योरोप एक हो रहा है, कॉमन मार्केट प्राभ हो गया है। वहा एकता का प्रारम्भ होता है और हमारे यहाँ जो एकता पहले से है वह विषय-एक होती है। तो हमें मद्दयूस करना चाहिए कि हमको दक्षिण भारत के साथ विशेष सम्पर्क रखना है। मेरी प्रपेशा यह है कि अगर महाराष्ट्र से १२६ सदस्य ध्याये हैं तो गुजरात के १२६ से कम तो होना ही नहीं चाहिए। क्योंकि गुजरात में नवी-ताहनी के प्रयोग जगह-जगह पर पर बहुत प्रच्यी तरह से चलते हैं। यह विचार गुजरात मालों के लिए नया नहीं है। गांधीजी ने इसे बार-बार दुहराया है लेकिन यहाँ चलत-रहमी है। कहते हैं कि गांधी जी कहते थे, जीवन एक है उसके टुकड़े नहीं हो सकते। इस बास्ते राजनीति से मैं प्रथम नहीं हो सकता। इस प्रकार से गांधी के नाम में गुजरात में एक प्रात भावना पड़ी है। मुझको

लगा कि गांधी जी के नाम से कार्य से दो टुकड़े हुए तो कम से कम हमारा भ्रम-निरसन हुआ होगा। हमारी शक्ति तब बढ़ेगी जब हम इस भ्रमेले से दूर होंगे। यह जो राजनीतिक भ्रमेला है वह तोड़ना जानता है, जोड़ना नहीं जानता। राजनीतिक भ्रमेले के कारण प्रात-प्रात, राष्ट्र-राष्ट्र टूट रहे हैं हैं। यह बलिन की दीवार है। कोरिया के दो टुकड़े कर दिये गये। इस प्रकार छोटे-छोटे राष्ट्र के टुकड़े पैदा हुए। कहीं घोंघ, भगडा, बरो टुकड़े। राजनीति को ऐसा ही सूझता है। इसलिए मुझे प्राणा है कि भ्रम-निरसन हुआ होगा। नही हुआ, कुछ बचा होगा तो बाबा दो मिनट में बात रखोगा।

बाबा नहीं मरता कि जीवन के टुकड़े बरो जीवन पूरा एक है। राजनीति उसके प्रन्दर शामिल है। बाबा जानता है, मानता है, कहता है, परन्तु कि क्या परन्तु? अगर हम राजनीति पर अयुश रखना चाहते हैं तो राजनीति से भ्रमण होना पडेगा। अगर राजनीति का हमको ठीक निरीक्षण करना है तो जरूरी है कि उसका शाशी होना चाहिए, न कि खेल के प्रन्दर दाखिल होना चाहिए। जो खेल के प्रन्दर दाखिल है उसे मामूम नहीं खेल बहाँ खेला जा रहा है, क्या ही रहा है? इस बास्ते खेल के लिए सदस्य निरीक्षक रखने पडते हैं। निरीक्षक खेल से प्रथम रहकर ठीक राय दे सकते हैं। इसलिए हम लोग प्राचार्यकुल के साथ, पिछक लोग राजनीति का अपना राष्ट्र परस्फेक्टिव प्राण करना चाहते हैं तो भ्रमेले में पडना, प्रन्दर जाना हमारे लिए किसी प्रकार से लाभदायक नहीं। परन्तु उनसे भ्रमण रहकर अंधरे पर टाँच का साइड डालना, प्रहार करना हमारा कार्य होना चाहिए। गुजरात में यह प्रच्यी तरह से हो सकता है। क्योंकि गांधी के प्रथक भाषी रचनात्मक काम, मैं, नयी ताहनी के काम में लगे हैं। मेरी प्राीन है गुजरात वालों में कि बाबा का यह विचार ठीक समझें। यह नही चाहता कि राजनीति का चिन्तन प्राण न करे।

केवल अपने देश का नहीं, विश्व की राजनीति का चिन्तन चले। बाबा ज्यादातर इन दिनों विश्व का चिन्तन करता है। बाबा का मन एक बाजू है प्रातदान, दूसरी बाजू है अय जगत। जगत से कम बाबा बोलाता नहीं। और इन दिनों जानते हैं वीलासक-प्रदोषण हो गया। सारी माटर-गांधिया गडबडाने लगीं। और बहुत बडा प्रच्य सबट खडा हो गया जापान के सामने। जापान की प्राधी राजनीति टूटने लगी और प्रव तीन दिन का हफता करने की नीवत प्रायी लन्दन में!

आज दुनिया एक ही गमी है विश्वात के कारण। हृदय एक नहीं बना। लेकिन बुद्धि एक बनी है। वडी खतरनाक बात है। बुद्धि एक बनी और हृदय एक नहीं बना ता मानव जाति के भगडे होये! देखने में क्या दोसेगा? फास और जर्मनी के भगडे। प्रमरीका और योरोप के भगडे। क्या दोसेगा, जापान और चीन के भगडे। चीन से भगडे? बुद्धि और हृदय के भगडे। लेकिन नाम उनको तरह-तरह से मिलेगा। इसलिए हमको विश्व राजनीति का अध्ययन करना चाहिए और इन दिनों बाबा ज्यादातर अध्ययन विश्व की राजनीति का करता है। हिन्दुस्तान की राजनीति का कम करता है। क्योंकि जानना है यहा पर क्या होता है। यहा जो मुनने को मिलता है, बापी है। इसलिए अध्ययन को जरूरत नहीं। अध्ययन करता है विश्व का ज्यादा। विश्व की विस तरह की कौन-सी ताकतें नजदीक आ रही हैं उसका नित्य चिन्तन चलता है। बाबा के पास नकशा रखा है। सब राष्ट्र की यादें रखी हैं। चिन्ती पाण्डित्यम इत्यादि-इत्यादि। तो अध्ययन सब बरो विश्व की राजनीति का। परन्तु अपने को प्रथम माशीकोण रखो नभी तुम्हारी शक्ति काम देनी। अध्ययन मुन्हारे टुकड़े हो जायेंगे, जैसे राजनीति के टुकड़े हो जाते हैं। राजनीति के मद्दुय दिनाग लगाता है, एकदम टुकड़े हैं। कहीं कहते हैं कि हमारे यहाँ कायम के दो टुकड़े हो (मेघ घूट ८ पर)

शिक्षा-संस्थाएं सरकार से स्वतंत्र हों

प्राचार्य कुल के विचार का उस समय उदय हुआ जब तत्कालीन राष्ट्रपति डा० जॉर्ज हुवर्नसन ने १९६० में प्राचार्य विनोबा से विहार में मिले घोर उनके शिक्षा की समस्याओं पर विचार विनियम किया। प्राचार्यकुल की सफलता के घबुआर उसका विधान बना, सगठन की स्थापना हुई, प्राचार्यों के लिए भवन निष्ठा, विद्याविषय के प्रति बालम्ब एव सटम्बन्धि पर जोर दिया गया, बीरे-वीरे कार्य धामे बड़ा। अब प्रथम राष्ट्रीय प्राचार्यकुल सम्मेलन परमप्रथम ध्यायम पत्रकार के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। देगन्तक के सभ्य-भय ३२० प्रतिनिधियों ने इनके भाग लिया। तत्समन राष्ट्रीय परिषद्भिन्नि घोर प्राचार्यकुल सगठन घोर प्राचार्यक के सम्बन्ध में दो दिन तक सम्मौर जर्वा हुई घोर सम्मेलन की घोर से निम्न निवेदन सर्वधर्मान् से स्वीकृत हुआ :

“स्वाधीनता के बादे पिछले पचीस बर्षों में राष्ट्र में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक घोर मौखिक धेशे में धनेक उपलब्धिया प्राप्त की हैं। किन्तु बर्षे परिस्थितियों के कारण ध्यन्त के सार्नीक शिक्षा घोर लोक-प्रति के निर्माण में कुछ बाधायें भी उदानी हुईं। शिक्षा के क्षेत्र म बड़ना दुष्का लकारी निष्पत्त सधपुत्र गदरी विघना का कारण बना है। प्राचार्यकुल का शारम्भ सि ही यह मुनियारी सिद्धान रहा है कि शिक्षा सामन मुक्त हो घोर शिक्षा संस्थाघो की स्वायत्तता में सरकार दायम न दे। पवनि निन्वी संस्थाघो । बरनी हुई धनेक बुरादयों हुटाने के तए भरणम प्रयत्न होना चाहकपर है लेकिन सामन को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष परि-पनि के धामान सामान्य रूप से हलसोय नही बनता चाँदिए। प्राचार्यकुल का यह राष्ट्रीय सम्मेलन धामा करता है कि सभी राज्य सरकारें इन घोर विशेष ध्यान देंगी।

यह भी प्रायन्त धायकपर है कि बतमान शिक्षा प्रणाली में धामुलाय परिवर्तन तेजी से किये जायें। पिछले बर्ष सेनाधाम में राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में जाहिर किया या कि शिक्षा हर स्तर पर सामाजिक दृष्टि से उप-योगी एव उदात्तक क्रिया रूपघो द्वारा धार्मिक विधान व समृद्धि से सम्बद्ध रहे वर धामीक और तमरीय धेशे में प्रचलिन हो। इस बात पर भी जोर दिया गया था कि सभी पाठ्यक्रमों में प्रा-पनिर्भरता, ध्याय विरसात सामुदायिक सेवा घोर नैतिक मूल्यों के तिषय का धामुलाय होना धायकपर है। प्राचार्यकुल शिक्षािन्नि के धाधार पर देश की शिक्षा प्रणाली में तबो से परिवर्तन लाय जायें ताकि राष्ट्र का विकास सही दिशा में हो सके।

इसके लिए यह भी जरूरी है कि शिक्षा जगत दल, पथ मध्प्रदाय धादि की समीक्षा से मुक्त हो। तभी हमारी शिक्षा संस्थाए सत्बोनी। इसी दृष्टि से यह निश्चिन किया गया है कि प्राचार्यकुल के सभी सदस्य दायन राजनीति से मुक्त रहें घोर देश की तात्कालिक समस्याओं पर पथ मुक्त दय से धायनी तदवक सभ्य हो सकता है जब शिक्षक विनी राज-नीतिक पाटी के सदस्य न हो। घोर सता की भरण में न प-ते। हालांकि शिक्षक बर्षों को देश घोर दुनिया की ध्यायम राजनीति का गहुराई में धध्यवन हो बरने ही छटना चाँदिए।

स्वायत्त शिक्षा, लोकप्रानि का विकास घोर राष्ट्र की विभिन्न मसमलाघो के हलने लिए प्रभिनम शक्ति को सगठिन बनना धायकपर है। इस धूलम शक्ति को विनोबा ने तीसरी शक्ति कहा है जो हिला शक्ति की विरोधी घोर दम शक्ति से निम्न है। उनका विकास सभी किया जा सकता है जब जन-

शिक्षाए द्वारा समाज में विचार में परिवर्तन लाया जाए घोर लोको की धार्मिक शक्ति घोर धामुलायिधाम को जगत्या जाये। इस विने प्राचार्यकुल ने यह तय किया है कि किमी भी उद्देश्य की सिद्धि के लिए हिला का धामान बननाया जाय घोर न उसका सम-यन ही किया जाय।

प्राचार्यकुल को राष्ट्र निर्माण घोर नये समाज की स्थापना का लज्य घोर सक्रिय प्रदुती बनना चाँदिए। हाल ही में मुख्य म्या-धाम की निर्गुलिन घोर मय देश में जो विषम परिस्थिति पदरी हुई उनका प्राचार्यकुल ने तद-ध्याय से गहुरा धध्यवन किया घोर उनका प्रभिनम भी प्रकाशिन किया गया। इसी प्रकार हाल ही में विश्वविद्यालयों के सम्बन्ध में जो विषेक विभिन्न विधान सभाघो में पेश किये गये है या पारित हुए हैं उनके बारे में भी प्राचार्यकुल का सतुतिन प्रभिनम राष्ट्र के सामने कीप्र प्रलुन होना चाँदिए ताकि उनके द्वारा सही लोक शिक्षण घोर तापरिक जागृति का सकार हो सके।

पथ समय धा गया है कि प्राचार्यकुल का सगठन सारे देश म ध्यायम वय से कर्तव्या जाए। देश की तीन शक्ति को जगत्या के लिए घोर राष्ट्र की विद्यम योजनाघो को सही दिशा में ले जाने के लिए यह बहुत जरूरी है। यह सम्मेलन धामा करता है कि देश की प्राथमिक माध्यमिक घोर उच्च तमरीय ६ शिक्षा संस्थाघो के शिक्षक घोर प्राचार्यकुल की निष्ठाघो में विश्वास रखने वाले साहित्यकार, कलाकार, वक्तार घोर समाज सेक इस संस्थाके सदस्य बनें घोर राष्ट्र निर्माण महत्वपूर्ण कार्य में हाथ बढायेंगे। यह सम्मेलन प्राचार्यकुल के सभी सदस्यों व उनकी इकायों को इस दिशा में तत्परता से धप-लनोनी होनी लिए धावाहूत करता है घोर धामा एव विश्वास रखता है कि इस राष्ट्रीय कार्य में इन्हे जनता का प्रोत्साहन व सहकार्य प्राप्त होगा।

केन्द्रों के अधिक सक्रिय होने, धार्मिक स्वामन्वन तथा समन्वय पर जोर दिया। कार्यक्रम के बारे में सुभाव देते हुए उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार के खिलाफ प्राचार्यकुल में प्रतिकार का सामर्थ्य प्राना चाहिए। स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर निष्पक्ष वैज्ञानिक विश्लेषण का मिलसिला सन्तु चलते रहना चाहिए। इसके अलावा राज्यों में शिक्षा सम्मेलन आयोजित हो और उनके लिए प्राचार्यकुल पहल करे जिनमें शिक्षा की समस्याओं पर खुलकर चिन्तन हो। व्यापक मांगों के लिए सशक्त वातावरण बने और कुछ ऐसी स्थिति निर्मित हो कि शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाले सभी विषयों पर जनता और सरकार के बीच प्राचार्यकुल संपर्क वा माध्यम सिद्ध हो।

जैनेन्द्रकुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विद्वत्जनो को केवल प्राण के हिमालय पर चढ़कर बैठने की अपेक्षा करणा-पूर्ण हृदय से जनसाधारण की समस्यायें हल करने की दिशा में पहल करनी चाहिए।

तीसरे पहर की बोधी बैठक में साहित्यकार अन्नत गोपाल शेरदे के श्री अध्यक्षता में सम्मेलन का समापन शेरदे ने संबोधित किया। जिसमें

सम्मेलन में हुई चर्चाओं और निष्कर्ष का सार रूप निवेदन पूर्णचन्द्र जैन ने प्रस्तुत किया।

शेरदे ने अपने समापन भाषण में प्राचार्यकुल के व्यापक उद्देश्यों के प्रति समाधान प्रवृत्त किया और कहा कि शासन शक्ति पर नैतिक व आध्यात्मिक अंकुश की परम्परा भारत में प्राचीनकाल से चली आ रही है। विनोबा ने जिस संशुद्धि—जनशक्ति, सज्जनशक्ति, विद्वानशक्ति, महाजनशक्ति और शासनशक्ति—में परस्पर विश्वास सम्मय और सामंजस्य का आवहान किया है उसे प्राचार्यकुल उठा ले। परन्तु समता है कि प्राचार्य विद्वानों वा स्वयं वा बुद्धिशक्ति पर विश्वास जवाबोल हो गया है और चारों ओर अधिकार दीखता है। मेरा निवेदन है कि अन्धकार को दोप देने की अपेक्षा स्वयं एक दीप प्रज्वलित करना अधिक श्रेयस्कर है।

अन्त में अपने आशीर्वात प्रवचन में विनोबा ने कहा कि सज्जनशक्ति का सगठन प्राज्ञ की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। सभी पक्षों से मुक्त होकर विद्वान प्राचार्यकुल में सम्मिलित हो। राजनीतिक दलों में शामिल होकर राजनीति वा शक्तिरक्षण सम्भव नहीं है। राजनीति से दूर रह कर सर्वत्र निरीक्षक की आवश्यकता स्वयं गांधीजी ने अनुभव की थी।

इसलिए अन्त में उन्होंने कार्य सौ सहायता भी छोड़ दी थी।

दुनिया में अहिंसा का विकास हो रहा है और सारे देश निकट आ रहे हैं। दो कोरिया, चीन, जापान, दो जर्मन, अफ्रीका वृह इत्यादि देशों में स्वयं सुधार शुभ चिह्न है।

भारत में उपरिष्ठ अर्थव्यवस्था में से पथराने का कोई कारण नहीं है। यह बात ध्यान में रानी चाहिए भारत अर्थव्यवस्था में बना एक देश है।

सम्मेलन में देश के अलग-अलग राज्यों से लगभग ३५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, महाविद्यालयों के प्राध्यापक, प्राचार्य, पत्रकार, साहित्यिक समाजसेवक सभी शामिल थे। इन प्रतिनिधियों के निवास की व्यवस्था आश्रम में बने नये भवनो तथा तम्बूओं में की गई थी। प्रतिनिधियों में आश्रम की प्रथा एवं साधु-कालीन सामूहिक प्रार्थना कार्यक्रमों में भी भाग लिया। कई प्रतिनिधियों ने व्यक्तिगत रूप से विनोबाजी से मुलाकात की।

महाराष्ट्र प्राचार्यकुल के संयोजक एवं स्वागतसमिति के अध्यक्ष श्री धीरवारण ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

—सहस्रकुमार

गये। मैंने कहा, तीन नहीं हुए मेहरबानी की बात है। तीन होते तो आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि संस्कृत में तीन बहुवचन है, दो के लिए द्विवचन है, कम से कम तीन टुकड़े होने दो। बाबा राह देवता है कि अनेक टुकड़े हो जाए। एक-एक पाटी के अनेक टुकड़े हो जायें। पी० एम० पी० में हमारे पूर्व मित्र है। पी० एम० पी० याने पशोपेय। उम पाटी का अमेला कहीं खत्म नहीं होगा। हमेशा अर्चा करते रहेंगे। पी० एम० पी०, एम० एम० पी०, इन तरह उनके एक के दो, दो के चार टुकड़े होने रहेंगे। दक्षिण भारत में यह प्रक्रिया चल रही है। धर्म के, भाषा के कारण टुकड़े हो रहे हैं। दक्षिण भारत के चार प्रांतों में से एक प्रांत के यहाँ पर जीरो है। बाकी के तीन प्रांत के धाट्ट धाये हैं। एक प्रांत का जीरो

क्यों धाया ? क्योंकि कर्नाटक-महाराष्ट्र का भगडा चलता है इसलिए बाकी जो ताकत हमारी है, वहाँ के दगे मिटाने में लग गयी। उनको वहाँ पुरसत है यहाँ धाने की ? इसलिए कर्नाटक में जीरो। क्योंकि टुकड़े हैं। कौन टुकड़े हैं ? बेलगाव महाराष्ट्र में हो या कर्नाटक में। भारत में तो है ही। विषय में भी है, और ये नक्षत्र मानिना है उन्में भी है। फिर भी सचान है कि प्रान्त में हो, और सरकार का विषय है, सरकार देखेगी। परन्तु मेरा कहना था कि जीरो प्राण हुआ है इगता मुठ्ठा कारण भगडा है। ऐसे धाटे भगडे प्रांतों के बीच चरने हैं।

हमारी जिम्मेदारी है कि राजनीति में न पड़े, नती तो हमारे भी टुकड़े होये, मैं गांधी जी के नाम में बोलना नहीं, क्योंकि आज जो उटना है मेरी गांधी का नाम लेना है। गुजरात में लिए खस कहना था, मेरी बागी

सब दूर पढ़ाये। तुकाराम होटेले, तुकाराम बीडी। तुकाराम महाराज का नाम बीडी के कारणने के लिए क्यों ? ऐसा मैंने पूछा। तो विसी ने कहा कि तुकाराम महाराज के नाम से कम पीयेगे। बीडी के लिए तुकाराम महाराज नाम लेने का अधिकार है तो गांधी का नाम लेने का अधिकार है ही। इस संकेत बाबा गांधी के नाम तो कहना नहीं। प्रायः एक सद्विचार गुजरात के गमने रहता है। यह मेरा व्याख्यान नाम बाबो गुजरात के वास्ते है। बाबा प्राणा करता है कि जिनका महाराष्ट्र में प्राचार्यकुल का स्थापना है उन्में गुजरात में प्राचार्यकुल का व्यापक स्वरूप स्थापना होना चाहिए।



देश जल रहा है और वे वंसी वजा रहे हैं

गणतन्त्र विधायी मेहता इस देश की पुण्यनी पीढ़ी के एक प्रथम समाम्य व्यक्ति हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त, अर्थ की धीरे-धीरे मुक्ति के उच्च चोटि के लेखक, एक युवा संचालक। (ये देश की मायद भवते बड़ी धीरे पुण्यनी ज्ञानदायी कर्तवी, 'मि-पया स्टीम नै-मेन' के नवीं तन व्यवस्थापक रहे) वे प्रायः ही लडाई के दिनों में देश के उन पीढ़े में अनेक तबके के लोगों में से थे जिनका राष्ट्रीय भावना थी और जो अर्थ-शासन की नाराजी मोल लेकर भी सदा राष्ट्रियता के प्रथम समर्थक रहे। स्वतंत्रता के बाद वे अमेरिका में इस देश के राष्ट्रपति और भारतीय फार्मिंट बापरेरिज के अध्यक्ष बने जिनमेदार पदों पर रहे।

यह सब घुटभूमि बताने की जखन इतिहास दुर्द कि उन्हीने कभी हास ही में कहेनी दैनिक 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में जो पत्र लिखा है (२५ जनवरी, दिल्ली संस्करण) उसकी भीमकता हमारे धीरे देश के शासकों के व्याप्त से छाये। गणतन्त्र विधायी मेहता की भावनाओं की म तो किसी किराणी पार्टी के नेता भी बात कह कर उनके स्वार्थ प्रेरित नहा या सफल है, न किसी वंसी-जिम्मेदारी व्यक्ति की बात नह कर उनको धरुदेना की जल सकती है। श्री गणतन्त्र विधायी के 'टाइम्स' में प्रकाशित पत्र का हिन्दी अनुवाद हल ज्यो बर ज्यो इस उद्देश्य के लीके दे रहे हैं ताकि देश को सर्वमान्य प्रतिनिधित्व की गभोरा और सामाजिक स्थिति प्राप्त हो सकें।

इस पत्र का अन्तिम वाक्य 'गणतन्त्र में ध्यान में देने योग्य है, अर्थ-शासन देश में सर्वोच्च नेता, हमारी अज्ञान मन्त्री धार देन के करोड़ों लोगों की सामाजिक स्थिति में धर्मभंग नहीं होनी तो मायद कभी होन ही के पाने एक भावना में से महत्तर काज की प्रतिनिधित्व का वकार नहने की कोशिस नही करनी कि जिन्हेमायरो की तिथिकियों पर टिप्पट लेने कानो की होत, भाव-शासन की दुखनी पर और खासि बार्न यह जाहिर

करती है कि वायव्य कठिनाइयों के देश की जनता वही से अधिक सुखदायक है। अन्तिम न होने पर इस प्रकार की बात कहने का जो पणित होता है उसको बलया हमारी प्रधान मन्त्री अंशो सम्मान्य धीरे जिम्मेदारी व्यक्ति के लिए करना उचित नहीं होता।

श्री मेहता का पत्र इस प्रकार है

"महोदय,
बदा धाराओं मण्डलन दिवस (२५ जनवरी) के अन्तर पर हम मान-नीयत धीरे उच्च भद्रक के प्रदर्शन से बाज नहीं आ सकते? रोम के वादसाह धरनी प्रकाश के लिए 'रोटी और गर्भ' की व्यवस्था किया करते थे (शाकि उसका रजन होता रहे धीरे बहु सर न उठाने—मनुवादक) वृत्ति हमारी शासन राटी नहीं दे सकते (उन लोगों को भी जो परीद सकते हैं उन बहुसंख्यक लोगों की लो बात छोड़ दीजिये जो खरीद नहीं सकते हैं), इतिहास पच्छा होना वे के 'सर्वस' रिहाता भी छोड़ दें।

सरकार द्वारा हर मान जनता को धानी (सरकार की) सफलताओं से प्रभावित करने की कोशिस करने की धारव्यवस्था नहीं है। वे कानो दैनिकीय जीवन म उनमें अन्धवी तरह परिचित हैं। सामारण धादमी एक धीरे बड़ी संख्या में उद्योगपतियों, व्यापारियों धीरे युवादासों की मायद धीरे बेईमानी तथा दुपरी धीरे सरकार की कार्यालयता के धारव्य धीरे उनके अज्ञातकार की बकरी, इन लो पाशों के बीच रिल रहते हैं। उनका मनोरजन करने की धारव्यवस्था नहीं है, धारव्य-कता है उनका पत्र भले की।

धरुदास, धार उच्च मनाता ही लो मोटर गाड़ियों पर परेड निवात नर बहुसंख्यक लो नकार शर्क करने के बजाय कभी नहीं सेना के धुकावारी धीरे वंदन रलों की 'माय' कराई जाये? क्यो नहीं विचारियों धीरे मी-अज्ञान नरके-नरकियों की दुको पर 'भाजियों' निजन्ते के बजाय उन्हे वंदन कतायें (बजाय इनके कि वे हस्तान कले या

धारव्यवस्था की चीजों के लिए लम्बी बतारों में खड़े रहे?)

देश में धानी लोप धारियों, स्वाभ-मना रोहो धीरे विनावितापूर्ण बड़ी-बड़ी होंडलों में लोको के अन्तार पर लो प्रदर्शन-कारी शर्क धीरे व्याप्य करते हैं नह तो कानो धार में दुरी चीज हैं ही, पर क्या भाजिकारी लोप निज-व्यथिता या कोर-नमर का उपदेश देने के साथ-साथ पत्र बुद्ध धमन नही कर सकते?—विना जीवन के धरणे तोर-नरीको को बजने या जिना उल्लेख प्रथम के चूनाको पर प्रतिनूत प्रथम शाने, जो कि नई दिल्ली के शासकों के गामने मायद धाज की केन्द्रीय समस्या है?

धाज देश में अज्ञातकारता या अज्ञान-स्था की स्थिति के वायव्य (शासकों में) जो तपस्वता का अभाव धीरे अज्ञानि ज्ञानया नजर धा रही है उने जब देखने हैं तो इन्हें वी कजर्बदिष पार्टी के एक सहाय की यह उक्ति पत्र का जानी है जो उनगे हेराल्ड मिलन (प्रिन्ट में तत्कालीन प्रधानमन्त्री) के बारे में बही थी कि 'हमारे शासकों में धीरे नीरो (धानी) रोम का विनाशी राजा जितके बारे में यह कहा जाना है कि जब रोम जाक रहा था तब कह वही वजा रहा था—धुण्ड) में यह धारनर है कि नीरो जब बनी वजा रहा था तो उस समय उसे बज ही बज यह लो मायु' " कि रोम जाक रहा है।

—सिद्धराज ठाकुर

उत्कल में उपजासदान

भागेसपात्र, सक्नपुर, विनायक, राउटर, नेता, सेक्यारण्य निकारी, मुन्डर, मोरम्पद बाजी, कासपुत्र; ककू रमा देवी चौधरी, श्रीमती धन्यपूर्ण महाराणा, मगत सेर, सावित्री सोहननी, सरोमी देवी, सुरेन्द्र मोहननी, विमलकन्द राउ, लक्ष्मिदासद मोहननी, मोहन मोहननी, रामचन्द्र प्रयाग, गणतन्त्रवादी सेर, ज्योतनकन्द राउत, श्रीमती सावित्री पात्र।

तीन वर्ष पहले बल्गेरिया में १०८० राजकीय पार्स और सहकारी समितियों का नवीनीकरण हुआ। उनके स्थान पर कुल १७२ द्विपक्षीय-संगठनों का निर्माण हुआ था, जिनका द्रोमत्त क्षेत्रफल २०,००० हेक्टर (६५,२५८ एकड़) ही है। सब से छोटी इकाई १६,००० हेक्टर की है, जिस पर १२०० मजदूर काम करते हैं। उन मजदूरों का वाटिक वग मजदूरी मिलती है, लेकिन उन्हें सामाजिक सेवाएं भरपूर मिलती हैं तथा सुराक में भी उन्हें सहूलियतें मिलती हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा की अच्छी सुहूलियतें मिलती हैं। बुढ़ो को पेंशन भी मिलती है। कुछ गावों में ग्रामीणों काफ़ी रहती है, लेकिन यांत्रिक प्रगति को तेजी से धाम्ये बढ़ाने का प्रयत्न चल रहा है। दफ्तर सब बहुत साधारण कच्चे मकान के हैं, लेकिन सामान्य पूरे आधुनिक हैं। यन्त्रीकरण के सहारे सब, दफ्तरों में बीस कारकूल पूरे १०० लोगों का काम आसानी से पूरा कर लेते हैं। लेकिन चूँकि सब मजदूर प्रायः अधिक्षिप्त रहते हैं, इसलिए द्विपक्षीय के यन्त्रों का उपयोग वे कम कर पाते हैं।

बल्गेरिया में फल और तरकारी का उत्पादन एक मुख्य द्विपक्षीय उद्योग है। लेकिन अभी उनका निर्यात होने की वजह से उनकी बाफ़ी बन्नी भी रहती है।

लेकिन इस केन्द्रियकरण के साथ ही साथ, फिर भी अभी तक कुछ छोटे पैमाने के द्विपक्षीय सहाकारी संघ काम कर रहे हैं। वे ६१ प्रतिशत कुल द्विपक्षीय भूमि में काम करते हैं। १६७० में राष्ट्र भर के उत्पादन में २२८ प्रतिशत गोबर, १५५ प्रतिशत दूध और ३०७ प्रतिशत घण्टो का उत्पादन उन छोटे द्विपक्षीय संघों में किया था। वे मानते हैं कि यदि मत्स्यार की तरफ में उन्हें उचित प्रोत्साहन और सहायता मिलती तो वे प्राण्य उत्पादन और २०/३० प्रतिशत बढ़ा सकते थे। लेकिन अधिकारी उत्पादनर उनके काम में सहायक नहीं, बाधक ही हो जाते हैं। इन आश्चर्य से, ऐसी छोटी द्विपक्षीय

इकाईयों की उपयोगिता स्पष्ट सिद्ध होती है, जिनमें मजदूरों का अपने उत्पादन से सीधा सम्पर्क होता है। ये प्राञ्जल के 'भीमबाय' संगठनों की उपयोगिता पर शका डालती हैं।

बल्गेरिया की सरकार घटती हुई जन-सख्या से परिणाम है। लोगों को ज्यादा सन्तान पैदा करने का प्रोत्साहन मिले, और जचकी के समये छुट्टी तथा अन्य बाफ़ी सुहूलियतें देने की व्यवस्था कर रहे हैं।

हम पशुओं से बदतर हैं

विज्ञान के युग में हम अनुभव करते हैं कि हर एक वैज्ञानिक प्राक्किार का उपयोग सत्ता और सत्यता के लाभ के लिए होता है। इसके साथ-साथ जहाँ एक तरफ लाभ इस क्रम में बढ़े हैं कि हम सत्यता की पराकाष्ठा तक पहुँच रहे हैं, वास्तव में, हर प्रकार से हम पशुत्व की ओर बलिक पशुत्व से नीचे भी गिर रहे हैं!

इसका एक प्रमाण, बंद में अपने दुरमनो को सताना या राजनैतिक कैंदियों को सत्ता कर उनके 'बन्केशन' सेने की बढती हुई प्रथा है।

हाल ही में चिली की राजकानि में, सेन्टिनेगो के राष्ट्रीय स्टेडियम में जिस प्रकार बन्धियों को सत्ता-सत्ता कर मारा गया था, बहु धक्केंनीय है। उसका वर्णन पठ कर रोंगटे खड़े होते हैं।

हाल ही में तुर्की की गाम्पशारी पवि-बाधों में मताने की प्रक्रिया के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया और जनता के सामने बाफ़ी नथ्य प्रकट किये, लेकिन सरकार बहती रही जिस व उन्हें राजबन्धियों को सताना छोड़ दिया है। उन्होंने साधिन किया है कि धाज तक भी 'बस्टिजे दो' का उपयोग हो रहा है, बिकनी 'धमाज' होता है, लोगों के मानवों को जबाग जाना है और कई प्रकार की चोटें लगायी जाती हैं।

एक महिला को जमीन पर गिरा कर उसके हाथ बन्धों पर बाध बिये गये। उनके पंथ में घोंगडे पर एक नया दिखनी का तार बाध कर उनके दूमरे गिरे को एक छोटी

लकड़ी पर बाध कर उस लकड़ी को उसकी योनी में दूस दिया गया। बढते हैं कि पुरखों को इराते बूरे दग से सताने हैं लेकिन अभी तक उसका पूरा सत्य नहीं खुल पाया है। अब तुर्की की सरकार ने इस सिलसिले में एक प्रदानाध आयोग काम किया है।

इन प्रश्न पर प्रदानाध करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति की स्थापना हुई थी। पहले यूनेस्को में उन्हें अपने पेरिस स्थित मकान का एक हिस्सा किराये पर देना स्वीकार किया था लेकिन बाद में यूनेस्को के प्रभावशाली सदस्यों ने इस पर एतराज किया और उन्हें एवदम निवाला गया। दूसरा मकान मिलने में उन्हें काफी कठिनाई हुई। बाहर से फिल्मों के आयात में भी उन्हें बाफ़ी बजिनाई होती है। इसी प्रकार बडे राष्ट्र उनके काम में बाधा पहुँचा रहे हैं। इसका मतलब यह है कि ये खुद इस सताने की प्रथा को मान्यता देने हैं और उसका उपयोग भी करते हैं।

अधिकारी अब बंदियों को सताने के लिए नई पद्धतियों का प्राक्किार कर रहे हैं। बाफ़ी प्रयोग पावलोव के मनोवैज्ञानिक प्रयोगों पर आधारित हैं। पाया जाता है कि लोगों से बन्केशन करवाने में ये पद्धतियाँ बहुत ज्यादा बहती सफल होती हैं और बाहर के मुनने वाले लोगों को वे इतनी बुरी नहीं मान्य होती हैं। घनस्टर में तथा माईग्रम में ब्रिटेन में उनका बाफ़ी उपयोग किया है। शायद उनके प्राक्किार सबसे प्राधुनिक माने जाते हैं। बंदी को एक दिशा देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियों का उपयोग होता है। लोगों को चौकीय घड़ी तक जगवते रखते हैं— उन्हें विलुप्त सोने नहीं देते। लोगों को चौकीय घंटे सडा रखने हैं उन्हें बँडने या लेटने नहीं देने हैं। सबसे मजबूत तरीका है, पूरे गिर पर एक बाफ़ी टोपी बाधना। बढते हैं इनमें चौकीय घंटे में अन्तर घाय बंदी में जो कुछ बन्धनवाना चाहते हैं, बढवाना सकते हैं।

(जेप गृष्ट १३ पर)

विना टिप्पणी के

चुनावी नवकारखाने में तूती की ध्रावाज

चुनाव की चर्चा बतुर, वास्तविक और चरफड़े लोगों के चित्त में बहुत-बहुत ला देती है। मोहन-भायण, मोटर-माईई, नारा-नया, पोस्टर-पर्वा, सन्दूक-सन्दूक की सम्मिलित शक्ति के बाबजूद भारत के सर्व-सामान्य लोगों के लिए इतने कोई धार-पंख पैदा नहीं किया। पचास-साठ प्रतिशत लोग किसी प्रकार पोलिंग बूथ तक पहुँचाने आते हैं। इनमें से चौथाई व्यक्तियों के भी हृदयमें कोई स्वाभाविक नौजु-हल नहीं, बल्कि लोग का तमाशा है, ताने-हल के बा धृष्टा धरहर मान। हा सर्वोदय-समाज के सर्व-सामान्य से अधिक स्वयं-दोषणा है। सत्ता की राजनीति से दूर रहने का भरो ही सफल किया हो, पर चुनाव की चक्र-दार पाठ धन मन को धारोपित कर ही देती है। दर्शन-दीर्घा में बैठे बैठे मित्राओं का भी पाय गोल के समीप मँद जाते ही फटक जाता है।

धरतल नकरत है राजनीति से, पचास-इकठान की चुनाव नीति निहायण। यत्न मानी जाती है। लोक-तन्त्र में लोक हत्या देखकर ममदित होने है। वर्तमान के प्रति विरोध, घुएण, उपेक्षा सब स्वीकार है, पर समाज तो यह देखना चाह्या कि सर्वोदय सेवकों का यह दय-चित धरउक विरल्य प्रस्तुत करने में किना सकल हुआ है? लोक-प्रतिनिधित्त की बात को मात्र शब्द-मालि को पुष्ट करती है; धरती पर चिन्ते गाँसों में पूँज उठी—लोक शक्ति को? कोई पाच-दस गावों का भी एक शंभ होता जहा नगरिक पद-नौतुण प्रत्यागियों से यह पूछ सकते कि 'ध्याने किम ध्याय' के हमारे इस कीमती मत का हकदार माना है? इस लोक-नुस्पर्याय के आधार के धभाव को कोई जितना नहीं, पर पूरे समाज को सीध देने की हवाई-रोजना बन जानी है। देश-भाम का किना सवाकर मुड़ में शरीक होना रण-नीति का विरोध नहीं बहा वा सत्ता? शक्ति का सत्ता प्रयत्न, मुड़ का धर-सर ही न पंश होने देता है।

सहत्ता से अधिक सर्वोदय के नेताओं का

ध्यान उत्तर-प्रदेग के चुनाव की ओर है। गुरु चुनावों में तो विरोधाक निजन्ते देखा, लोक-गिशाए के नाम पर व्यग-चिन्ते के द्वारा चुनाव की बुराईयों पर प्रहार किया गया। इतना उज्याह इनकी तैयारी। जिनकी कभी धरनी विधायक पीठिका प्रस्तुत करने में नहीं होती। उस वेण्युड की कथा साकार होती है जो धरनी नियम-निष्ठा से अधिक सामने के मकान में रहने वाली वेस्था की विनामिता से चिन्तन रहा करते थे।

बान बुध सामान्य समझ के बाहर मालुम होभी है। सर्वोदय के लोग कहते हैं—'धृष्टे उम्मीदवार को बट दें।' मनदाता सोचना है कि हमारे लिए धृष्ट्या धारमी कौन? जिनन घोषा-धोगी करके इलाके की सडक पर रोडे विधुता दिये, जिसके सामने सरकारी धरिचारी सरकत के बन्दर की तरह नाचने ही वा सह सज्जन व्यक्ति जो शोक, सभान और सिद्धान्त की नीमाधों में सिमटे-सिमटे रहता है? मनदाता यह जानना चाहता है काय के राग-राग में पुजारीजी कौन सी भूमिका निभायेंगे? धरता देग के मुक्ति मोर्चे पर किनोवा क्या काम धाते? सरकार का सारा कारोबार घेरार, पपरार से चल रहा है। यह पत्थर भी जब नाच के नचने पर प्रहार करता है, तभी सरकार का ध्यान जाता है। जयल का न्याय, जिसकी साठी उली की भ्रंश। कोई भला धारमी नुकार-जाने में तूती की ध्रावाज लगाने वा दु साहस्य करके उस धोर कसम उठाना चाह्या भी हो तो उस पर मसता कर रोजना चाहिए, समझाना चाहिए। सरजनों की सेवा के धभाव में समाज बेचना-मूल्य बना हुआ है। ऐसे ध्रमिन सज्जन ध्यक्ति के प्रति करणा तथा समाज की वास्तविक सेवा, योग्य लोगों के दायन को राजनीति से बचाना है। भला धारमी ध्रावर 'हरिदाम' लेना हुआ बायन ध्रायेण तो यह मानेगा कि दिनभर का भटकता हुआ भाय को धर लौट गया।

विना व्यक्त की जाओ है कि शारा ह-सानी तथा भी डेवर जैसे लोगों को शक्ति

सर्वोदय प्रणाली में नाकामयाव मिड्ड हृद सर्वोदय सेवकों की निष्ठा में उम्मीदवारी में रूध माना गया है। सत्ता की राजनीति में धार रहने को प्रतिज्ञा की जाती है। सर्वोदय विचार इनकी मुडि में धारया नहीं रखता, इसरा विरल्य प्रस्तुत करना चाहता है। सर्वोदय के इस विचार का येन युवाय की वर्तमान पद्धति को मुड्ड करने के प्रयत्न से मत नहीं खाना। सत्ता की राजनीति धोर वर्तमान चुनाव-प्रणाली के भौतिक दोष है, इसकी जो लीलाए देखने क। मित्रों हैं, वे धर्याभाविक नहीं स्वभाविक हैं। जो डातकर धाम की बाहकना समाज करने का प्रयत्न करना। ऐसे धर्याभाविक प्रयत्न में पडवार नाहक शक्ति का धारयण होता है। लोक-परिहास होता है तथा मिड्ड होता है सर्वोदय समाज का धिदनायन। विधायक शायंभम क एकाधना नष्ट होती है।

निर्मल धरद धृष्ट्या, सर्वोदय मज्जन, भुंगेर

उपवादान (प्रदेशवार संख्या)

प्रदेश	उपवात-दान
ध्याभ	७
उत्तर प्रदेश	१७
केरल	२६
कर्नाटक	१
गुजरात	५
तमिलनाडु	६६
पंजाब	३
प० बंगाल	७
बिहार	१२
मध्य प्रदेश	२५
महाराष्ट्र	३७
राजस्थान	६७
हरियाणा	२६
जिल्लो	८
विदेश	५
कुल	५०१

हम वीज वो रहे हैं

२५ जनवरी १९७४ को सहरसा के जिला स्कूल में ग्रामस्वराज्य के मुख्य एवं अन्तिम अभिमान में भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं के दो दिवसीय शिविर का उद्घाटन जयप्रकाशजी ने किया। जयप्रकाशजी ने कहा कि आज देश में विस्फोटक स्थिति पैदा हो गयी है। भ्रम का अंधा, छिटाचार मह-गार्ड, बेकारी और वह भी विधितो की बेकारी के कारण लगता है कि डेढ़-दो वर्षों में देश में विस्फोट न हो जाये। देश टूट रहा है। देश को सरकार उबार सकती है। इश्ये में शंका प्रकट करते हुए ध्याने कहा कि जन्मा चाहे तो देश को प्रवश्य उबार सकती है। जयप्रकाश जी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि इन समस्याओं के सामने में ग्रामस्वराज्य का विचार लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाये।

ग्रामस्वराज्य विचार की चर्चा के साथ गांव की कुछ समस्याओं की धोर लोगों का ध्यान दिलाने की बात भी ध्याने कही। जैसे मजदूरी का प्रश्न, बास पीत का पत्र, प्रावाम, पीने का पानी आदि। ग्राम तथा को सक्रिय करने की बात उन्होंने बताया और कहा कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को ग्राममभा की बैठने में घाना चाहिए। मुसहरी के लिए तैयार विये गये स्मारक सखलो का जिक्र करते हुए ध्याने कहा कि ग्राममभाओं में ये सखल करने चाहिए। सहरसा जिले के बाहर के कार्य-कर्ताओं से उन्होंने धोधेधा की कि वे जिस प्रसङ्ग में इस समय काम करें उससे धारे भी सपक बनाये रखें। क्योंकि सभक टूट जाने से बिया बराया काम भी समाप्त हो जाता है।

सिद्धराज जी की अध्यक्षता में शिविर धारम्भ हुआ। महेश्वर नारायण जी ने शिविर में ध्राए लोगों का स्वागत किया। विद्याधर भार्डी ने कहा कि सहरसा में सन् ७० से ग्राम-स्वराज्य का काम शुरू हुआ है। इस दर-मियान धनेक प्रकार के प्रयोग किये गये। अनुभवों के आधार पर जिले के चार प्रसङ्गों के नाम को समेटा गया। सहसा के काम से

हमें निरागा नहीं हुई। धनुभव ध्याए कि यह कार्य समय साध्य है। लम्बे समय तक कार्य करने के लिए धीरज और सातत्य की आवश्यकता है।

बिहार सरकार के राजस्व मंत्री लहटन चौधरी ध्राए हुए थे। उन्होंने कार्यकर्ताओं का सम्मान करते हुए सहरसा में किए कार्यों के लिए धधाई दी। उन्होंने बहरा कि भूदान से बिहार में साडे चार लाख एकड़ जमीन बाटो जा चुकी है। जबकि सरकार की धोर से धमी प्रधास ही बिया जा रहा है। सरकारने धीनिज से दस लाख एकड़ जमीन बाटने का सोचा था। बाद में पाच लाख एकड़ धुधा धोर धाज राजस्व मंत्री होने के बावजूद उन्होंने बहा कि मैं इस स्थिति में नहीं हू कि वह सक्र वितनी जमीन बाटेगी। स्थानीय लोगों से उन्होंने धरीसकी कि वे धानीय शक्ति इस धमियान में लगायें और बाहर से ध्राए सर्वोदय कार्यकर्ता उनको प्रेरणा दें।

सहरसा जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष तपेश्वर जी ने पूर्व तैयारी की जानगारी प्रस्तुत की। धब तक सहरसा में जो कार्य हुए वे धावडों में निम्न प्रकार हैं -

५८५ ग्रामसभाएं बने। १५४४ बीघा कट्टा प्राप्त हुआ। १०४४ बीघों का वितरण हुआ। १३५ शान्ति सैनिक बने १७०० धास शान्ति सैनिक हैं। ४६ सखल शान्ति सेना केन्द्र हैं। ४०२ सखल शान्ति सैनिक हैं। २३ धावाचरकुल केन्द्र हैं।

सहरसा के कवि सखल ने धानीय कविता पेश की। जहा पर चाह होनी है वहा पर राह होली है। रात को साडे सान बने पुन बंठक हुई। बिहार भूदान यज वमेटी के मन्त्री स्याम प्रकाश जी ने इस जिले की भूदान की स्थिति की जानकारी दी। ध्याने बताया कि ६००० एकड़ जमीन का व्यौरा प्राण है, जिस के बिहार की अर्थसाध इस धमियानके दोरान की गयी है। यह काम भूदान वमेटी के २६ कार्यकर्ता ४ टोलियों में घटकर करीब ५००० एकड़ जमीन का व्यौरा धमी तक प्राण नहीं

है। व्यौरा प्राप्त करने की कोशिश की जायेगी व्यौरा प्राप्त कराने में सर-कारी अधिकाारी धोर वमंचारी मदद करें इसके लिए सरकार की धोर से धाधेध हो चुका है। निर्मली धोर मरीना प्रसङ्गों में गलत रिज रिज १००० एकड़ भूमि का पुर्नवितरण बिया गया। इन धमियानों में वमेटी के अध्यक्ष धोर मन्त्री में से कोई एक बराबर रहेने। वमेटी का एक इन्सपेक्टर भी रहेगा।

२६ जनवरी को सुबह नौ बजे तीसरी बंठक शुरू हुई। यह बंठक चुकी चर्चा के लिए धी। निर्मला वहन ने वर्णी शुरू की। उन्होंने सहरसा के ग्रामस्वराज्य धमियान से निष्पन्न धनेव धायामों की धोर ध्यान दिनया धोर कहा कि हम कार्यकर्ता साथी एए सख की प्राप्ति के मार्ग लोजन के काम में लगे हुए हैं। मार्ग लोजन में विभिन्न पद्ध-तिया धोर विभिन्न प्रयोग हो सकते हैं। सहर-सा के काम को दो दुष्टियों से देलना चाहिए पहली दुष्टि यह कि सहरसा से क्या मिला धोर सहरसा में क्या हुआ ? पहली दुष्टि में हम देखेंगे तो गायेंगे कि सहरसा में ध्रागे चलने की दिशा धी, प्रेरणा दी धोर कार्य की पद्धति मिली। इसके धलावा ध्रागे की धार्य की गहराई दी धोर वह तपस्या धी धोर हमें से गया। कई कार्यकर्ता साथियो ने तपस्या की। बाबा ने धमिध्यान धोर धीरेन भाई ने हमें प्रसख मार्ग दशन किया। विकास धार्य की चर्चा करते हुए ध्याने कहा—वि महत्व की चीज है विकास धोर निर्माण के कार्य को हम जिस दिशा म से जा रहे हैं। प्रांत के प्रति धानी ध्रावा प्रकट करते हुए निर्मला वहन ने गहा कि हम वीज बने तो बा कार्य कर रहे हैं धोर वीज बने के बाद फन के लिए सड की धावचरकना होनी है। ध्रायिक विकास के कार्यक्रमों से स्वाधयिना, स्वातन्त्र्य, परि वार भावना, धामभावन धोर धैरिक उत्थान की निरूपित होनी चाहिए। ध्याने इस धमियान को राष्ट्रीय मोर्चे का सर्वोत्तम धमियान करते हुए कहा कि इस से ज्यादा से ज्यादा स्थानीय साथी निरलने चाहिए। यह इस धमियान की महत्वपूर्ण बसोटी है।

धनुमनि से चर्चा ध्रागे बड़ी। धनेक कार्य-कर्ता साथियो के धलावा स्थानीय धामीग

(जेप ध्रागे वृष्ट में)

जौनसार बावर में पदयात्रा

जनवरी ६ की घातक प्राथम कात्सली (जिला देहरादून ७० प्र०) से एक पदयात्रा टोली इन क्षेत्रों में व्याप्त बेव्याधुनि घाटि सप्तमाघो का अध्ययन करने के लिए रवाना हुई। टोली में उत्तरखण्ड सर्वोप्य मण्डल के सरोजक भानन्दविह विष्ट, बुद्धर, सुरेन्द्रदास भट्ट, भवानो दत्त, गंगा प्रसाद बहुमुष्ण, पञ्चगव्य रङ्गेश, हिमाचल प्रदेश के रतन चन्द कोठे तथा योगेश चन्द बहुमुष्ण शामिल हैं। राधा भट्ट व मयता उपाध्याय प्रादि सभी यात्रा के दौरान किसी प्रकार सभिमिलित होंगे। पदयात्रा एक माट तक धनौली जिलामें देहरादून, टिहरी और उत्तर-काशी जिलों के चारोप न कानगो, जोगपुर-नौपात्र व पुरोला विभाग सखा का अध्ययन किया जायेगा। सम्य है कि अध्ययन के बाद लिनित सखी को सपन क्षेत्र मात कर काम शुरू किया जाये। एक माह की पद-

यात्रा में ३२ गाव से सम्पर्क किया जायेगा। दिसम्बर २२, १९७३ को कुछ सार्वभो की बैठक, दिव्य जीवन सभ शिवारानन्द नगर, ऋषिकेश में हुई थी, जिसमें मुख्य रूप में जौनसार बावर व उसके आसपास के क्षेत्रों के बारे में विस्तृत विचार विनिमय हुआ। इन क्षेत्रों के बारे में पहले भी कई बार सभा सम्मेलनों में विचार होना आया है। इस बैठक में भी इन विषयों पर गम्भीरता पूर्वक बानचीन हुई और कुछ निर्णय लिए गये। स्वोत्तर किया गया कि इन क्षेत्रों में विनयो की समस्या धाराधारण है और उत्तराखण्ड रूपरी कई समस्याओं से जुड़ा हुआ है। इनके माय ही इस क्षेत्र में सामुदायिक सङ्गठन के रूप धामी भी मुठड़ हैं और ग्राम स्वराज्य के प्रथम के लिए यह क्षेत्र अनुकूल है। बैठक की राय थी कि इन क्षेत्रों में प्रत्यक्ष काम की कोई भी योजना सुमाने से पहले यह धावश्यक

प्रतीत होता है कि इन क्षेत्रों का सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक दृष्टि से प्रत्यक्ष अध्ययन किया जाये ताकि वास्तविक स्थिति का सही-सही मूल्यांकन हो सके।

इस काम के लिए एक मास की पदयात्रा का निश्चय किया गया। पदयात्रा का उपयुक्त समय माघ का महीना (जनवरी व फरवरी) माना गया क्योंकि इसी महीने में यहाँ 'मरोत्र' (पञ्चमति) बड़े पैमाने पर होती है और इसी प्रया के कारण लोगों के साथ आसानी से सम्पर्क किया जा सकता है। प्रया के परि-एामसकष गरीब परिवारों के लोग बफरे खरीदने व लिए आने जेवर, बटन और सेत भी बेच देते हैं और कराव व माताहार का बड़े पैमाने पर खान-पान चलता है।

पदयात्रा की समाप्ति पर सभी साथी मिलकर अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करके और सभी सम्भन्धित सत्पाधों व सहयोगियों की सम्मिलित शक्ति से कार्य-योजना निर्धारित की जायेगी।

—हृष्णमुनि मुक्त

लोगों में भी चर्चा में भाग लिया। बगाल के बयोदुद नेता चार बाजू में ग्रामसभाओं की सभिय बनाने के लिए लोगों के दिल धौर दिमाग को जगाने की बात कही। इसके लिए अन्दर धौर बाह्य परिस्थिति को समझने की धारनचरता उन्होंने बनायी। मसलन वे कहा कि इन सम्भन्धित के बाद बापडतों का क्या रोल होगा इसे प्रवेद की निश्चय चरता चाहिए।

बाजूबाज चन्द्रराज ने कहा कि हम बना बनाया कोई काम लेकर माघ में न जायें। ग्रामस्वराज्य का लिए स्पष्ट करे धौर धामीणों को निश्चय बनाने हैं। उन्होंने कार्य-चर्चाओं के प्रिशाण को बात भी कही। उनकी राय में नेताओं से मार्गदर्शन की धरेशा न रहकर स्वयं मार्ग खोजने की कोशिश करनी चाहिए। रामेशी भाई ने प्रस्ताव भी सुदि का आगुनि बनाने पर भी बल दिया।

इनके बाद विधान में चुने गये प्रसखी धौर टाणियों की जानकारी दी गयी। सपन विधान के लिए निम्नलिखित १२ प्रखण्ड चुने गये :

१. महिषी २. रांघोपुर ३. विजयपुर

४. निर्मली ५. चौमा ६. विरोध ७. भवानीपुर
८. नौदटा ९. मधेपुरा १०. त्रिवेणी नर
११. धारापुर १२. विजयनाथ। कुल कार्य-चर्चा २२० है।

विचार का समारोह जयप्रकाश जी ने किया। धारणें प्राधा प्रवट की कि जिन १२ प्रखण्डों को सपन कार्य के लिए चुना गया है उनमें धारा यह दिया सके कि जिनका कार्य सरकार में नहीं किया उनमें ज्यादा काम धारणें किया है। ग्राम में गोएण सुदि धौर शासन मुक्ति सधनी चाहिए। लोग धारण ल में मुक्त हों। ग्रामस्वराज्य, प्रखण्डस्वराज्य, जिला स्वराज्य, राज्य स्वराज्य, एक-एक मजिन के क्रमिक विरास की चर्चा करते हुए धारणें कहा कि विधान सभा के धारणें चुनाव में धाम मगा के उम्मीदवार इन बापड प्रखण्डों के चुनाव क्षेत्रों से सड़े लिए जाने चाहिए।

समगरीय धाएण के बाद प्रखण्डों की सयोजनो को निरर लयाण गया और उन्हें प्रखण्ड के कामगो का सेवा जयप्रकाश जी द्वारा प्रदान किया गया।

—हृष्णमुसा

(पृष्ठ १० का जेप)

कहते हैं कि सबसे पहले, पाठकों की सज्जों की बुनियाद पर हम से इन प्रयोगों का उपयोग प्रारंभ हुआ, लेकिन अब जितने उन्हें अपनी परराज्या तक पहुँचा रहा है।

पेरिस की एक सत्या दुनिया का धाराहन करती है, कि हम सब लोगों को मिल कर सताने की पद्धति का विरोध करके इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि दुनिया से हम पंडित का घन्ट हो जाये।

लेकिन वास्तव में वह पद्धति धारणें धारणें के एक समस्या नहीं है—आर्थिक युग में मानव प्रकृति से धौर धारणें स्वाभाविक से दूर हो रहा है—यह उठी बात का एक लक्षण मात्र है। हमें जड़ में जाकर समस्या का हल करना ही पड़ेगा—इन सब सधणों से मलक मीन कर इनके लिए हमारी नीत्रा बदनी चाहिए।

—सरला देवी

बीग जनवरी, ७४ को प्रखण्ड स्वराज्य सभा भाभा का वार्षिकोत्सव साढ़े ढंग से मनाया गया। हार्ड स्कूल भाभा के प्राण में सम्पन्न हुआ। 'ग्राम स्वराज्य' सम्मेलन के पूर्व ग्रामदानी ग्रामसभाओं के प्रतिनिधियों का विशाल शक्ति जुलूस भाभा शहर की मुख्य सड़कों पर निकाला गया।

सम्मेलन में प्रखण्ड स्वराज्य सभा के मन्त्री मोहम्मद इराहाक खली ने अपने प्रतिवेदन में साल भर के कार्यों की समीक्षा करते हुए ग्रामों के काम की योजना प्रस्तुत की। उसके बाद गांव के अनपढ़ एवं साधारण लोगों ने बड़े ही महज्ज ढंग से अपने-अपने गांवों में ग्राम सभा द्वारा किये गये कार्यों का ब्यौरा दिया।

मुख्य प्रतिनिधि के पद से भावपूर्ण रूप से कार्यवाही करने के लिए श्रीगणेशजी भूतपूर्व विद्यार्थी मन्त्री विहार ने वर्तमान परिस्थिति में ग्रामदान की आवश्यकता बताते हुए प्रखण्ड सभा के प्रति मतलब कामना की। उन्होंने कहा कि ग्राम सभे छोटे लोग बड़ा काम कर रहे हैं। अपने गांव के भूमिहीन भाइयों के लिए बीघा-कट्टा देना तथा गांव के विकास के लिए ग्रामकोष इकट्ठा करना निश्चय ही शक्तिकारी कदम है। ग्रामकोष इन सदस्यों से शक्ति की सहायता दीवर्ता है।

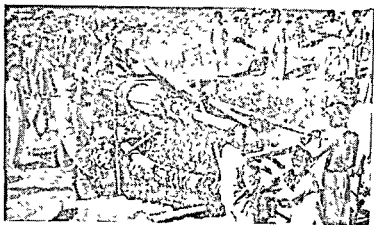
स्वामीय सो० पा० विधायक शिवनन्दन

भाभा में प्रखंड सभा-वार्षिकोत्सव

भाभा में ग्रामदान के सगठनात्मक स्वरूप पर विस्तार से चर्चा करते हुए ग्रामीणों से ग्राम सभा तथा प्रखण्ड सभा द्वारा किये जाने वाले

घोर से भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया।

प्रखण्ड सभा के चुनाव में द्रव्यले तीन वर्षों



भाभा में निर्माणकार्य

लोक संगठन के लिए

निर्णय पर ठोस रूप से धमल करने का निवेदन किया। श्री भा ने इस पुनीत कार्य के लिए ग्रामीणों का अभिवादन करते हुए अपनी

के लिए पुन श्री गोपालचरण सिंह, अध्यक्ष, सो० इराहाक खली मन्त्री; तथा महावीरसहा कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गये।

—नमोदेव

ग्राम स्वराज्य के विना लोकतन्त्र खोखला

काठपुर। 'अभी देश की जनता को बेवज्र अपने प्रतिनिधियों को चुने का अधिकार मिला है। जब तक गाँव और भुइयारों के नागरिकों को अपने-अपने क्षेत्र के लिए कामना बताते, उन्हें धमल में लाने तथा न्याय करने का नागरिक अधिकार नहीं प्राप्त होता तब तक जनतन्त्र खोखला ही रहेगा। क्योंकि इसके बिना मूलतः मजदूरी, भूमि सीमा और सयोजन आदि के संबंध में बनने वाले सारे कामना तथा योजनाएँ मजदूर नहीं हो सकती। इसलिए हम धमल जनतन्त्र के बिना दाताओं को चाहिए कि वे सत्ता के वास्तविक विकेंद्रण की मांग उम्मीदवारों से करें।'

श्रीरामकृष्ण पाटील ने १७ जनवरी ७४ को को जिला सर्वोदय मण्डल द्वारा आयोजित मन्दाता शिक्षण अभियान विषयक शिवली ग्राम की मंडा ये विचार रखे। उन्होंने कहा कि इन गरीब देश में जहाँ सारांशालाव्योग प्रकृत से भी बचते हैं वहाँ चुनाव में इनका अधिक धन खर्च करने वाले उम्मीदवारों को बोट न दें।

दुर्गा दिन काकरदेव नागरिक सभ द्वारा आयोजित सभा में श्री पाटील ने कहा कि 'हमें केन्द्रीकरण तथा विकेंद्रीकरण के बीच एक सर्वसम्मति मुसमति बनानी चाहिए। यदि ताताशाही की तरह लोकशाही में भी

अन्या की शासन पर निर्भर रहना पड़े तो फर्क क्या रहा? जिस तरह सविधान में राज्य की मूची में निर्धारित विषयों पर ससद भी कामना नहीं बना सकती है उन्नी तरह सविधान में ४०वीं धारा के आधार पर राज्य को भी गांव तथा भुइयारों को स्वशासन के पूर्ण अधिकार देने चाहिए। नगर प्रमुख की आशा के बिना गोली नहीं चल सके। प्रतः गांवों में मत देने से मन्तीय न करके सच्चे स्वशासन की मांग करनी चाहिए। यही गांधी जी के पंचायतराज और विनोबा के ग्रामस्वराज्य का उद्देश्य है।'

श्री पाटील ने अपने त्रिदिनीय कार्यक्रम में कायेंनगर और मिथिल लखन्य क्षेत्र के नागरिकों तथा बार प्रगोसिपेशन और आइएट का नाग्रेज की मंडाओं की भी सम्बोधित किया।

—विजय प्रवचनी

देश भर में उपवास-दान

पोकिन्दराय देशपांडे, श्रीमती इन्दिरा रावटर, लालजी भाई वीरजी भाई, श्रीमती प्रभावती लालजी, चुनीलाल ल० इगली, रसिकलाल नन्दलाल सैठ, शशिचल कः-न्या।

प्रांथ प्रदेश

हैदराबाद विरधीचन्द्र चौधरी, सुरभि शर्मा, सी० बी० चारी, के० बंजारायण, गड्डम सन्यासी राव, के० बोरदण्ड रामा रेड्डी, कोडाडी नारायण राव।

केरल

पी० नारायण, पाल्लिपाट।

कर्नाटक

बेलगांव : गणाधर स्यामनि, कञ्जाली, प्रभाकर मराठे, मिडाराम मुक्की, मुणबसाऊ, के० ए० बेंकेट रामेंग, बगलोर, टी० ए० दासपा।

तमिलनाडु

मद्रास : मानाताल भट्ट, श्रीमती मधु-बेन शाह, के० धरल्लायलम्, मरुडी।

पंजाब

धार०के० निहला, चडीगड, ऋषि गोरी शंकर, जासवर, डा० दयानिधि पटनायक, चन्दीगड, मसाला युल, पटानकोट। यश-पाल मित्तल, एन० एस० शर्मा, एम० एस० शर्मा।

प० बंगाल

२४ बराना : प्रभुहुलचन्द्र राय, सु० मुलिया हुमकार, इच्छा राय, कलकता : दारायाम मखड, विठ्ठलदास जाधव, मल्लि-बहन विठ्ठलदास, दिनेश कलभदान, धरल्ल कलभदान, सिद्धिगाराय चौधरी, शिवरजन शायरी, मोतीलाल साठ दुर्गाचरण दत्त।

हरियाणा

हिसार : हरलाल गाहू, सतनाल, रामे-शरदान, जयनारायण, पीठरनाम। माना शानि देवी, देवारी, विजयनारायण लाल, मुकुशार, पूर्णिया प्रमन, रोहताक।

दिल्ली

फि० न० धार्वे, देकेड कुमार, डा० विरमनाथ टण्डन, मित्रवदास भाई।

राजस्थान

जयपुर विठ्ठल राज इब्दा, पूर्णचन्द्र जैन, पवम भाई, सिबदेवी धरपाल, रामवल्लभ धरपाल, राधाहृष्य बजाज रामेश्वर विद्याधी, हरिचन्द स्वामी, रामनिह भाटी, जवाहरलाल जैन, जयपुर टोनदयाल दशांतर, उमरावदेव मिर्जा, सिरौही देवी-चन्द सागरमल, नन्दनमल बंननल सोलरी, नागौर हीराभाल भालोड, मेरुगाम, जवा-पनि, बडीसाद स्वामी, बासवदास जगन्नाथ, लक्ष्मीबहन पाठक, रतनलाल हिडुस्तानी, जोधपुर : भवानी भाई, पाली महीधर, मुम्भूर महादेव, गगामनर कैलाशचन्द्र धरपाल, बीकानेर : भबरलाल कोठारी।

महाराष्ट्र

वर्धा विनोबा, रविशंकर शर्मा, ठाकुर दास बग, भाऊजानेते, प्रभाकर जर्ना, डा० जगन्नाथ महोदय ऊगा, कातिन्दी, जना, देसा, कुरुणा, बीना, शानि, निरंला, गया, लक्ष्मी, गौला, गीरा, परमा, कला, श्यामा, जयदेव, बातभाई, धन्वुलभाई, बालू भाई मेहता, सूरजपल सामा, बाबा जी घोषे, गोविन्द बजाज, गोविन्दन, सत्यवत, लक्ष्मी-सत्यवत, जानकीदेवी बजाज, मनोहर दीवान, मुशीला धरपाल, निरजन गोवल, नारायण-जग, ए० ए० धाचानू, निरंला देवपांडे, कामेश्वरप्रसाद बड्गुणा, मुमन बग, श्रीमती कल्पना पानले, श्रीमन्नारायण, दत्तोबा दस्ताने, कमल भाई पोहरे, भाऊराम बेने, पी० एस० मिठल, पूना रानादे, सोमया रानादे, डा० ह० रा० दिवाकर, गीताभाई शानर, चन्द्रा किर्लोस्कर, प्रथमन नरोत्तम रावनिया।

• बम्बई : कपना गायबजाड, सोमंदा टी०, माणवज्यो देवपांडे, मानाभट्ट, विठ्ठल दास बोराणी, लीना विठ्ठलदास बोराणी, राजीव, बी० बोराणी, धरणा ह० बोराणी, जगदीश बोराणी, लक्ष्मण दुर्गा जी महाजन,

महामदनगर : श्रीमती वल्लभलाल भण्डारी, शिवजी नितल, कमला रानादे, मधुरा भाई जयन्त देशमुख, पी० वि० वडी, फकीरचन्द बालराय, गुलाबबाई कनकमल गाधी, म्हु बरलाल सीताराम सारडा। पूर्णिया रामेश्वर पोद्दार, गगावेन रामेश्वर पोद्दार, नामपुर धार० के० पाटिल, ठाणा भा० ग० राजत, धरमुद्राम भागवत, जोधक हरि मुनार, हरिचन्द्र गाऊ कमलाजी, शशिचला सुप्रेम कट्टे ट्येन्वर वल्लभ वरंकर, मनोहर देवीदास जोशी, दत्तात्रय सताराम बाघ, कु० मन्दा माहनि जवेर, कर्कोला : रामचन्द्र धाडे, ल० वि० मराठे, धमरावतो : कातिन्दी सरवटे, ए० के० मराठे, प्रबलमाल गुहास सरवटे, लक्ष्मीचन्द चुनीलाल शौर-दिया, द० गु० नन्दापुरे, परभणी धारन प्रसाद धरपाल।

उत्तरप्रदेश

सत्यनन्द हकीम श्यामदास, भयटमल मिथी, बाराणसी : चुनी भाई बेंच, राम-चन्द्र राही, नागणण देसाई, बालादेव चौधरी केवजी भाई चौधरी, जानकी पाडे, देवी-प्रसाद याज्ञिक, नगीनदास चित्तपुरे, गया प्रसाद वर्मा, लालता प्रसाद पाण्डे, राजाराम मिह, रवीन्द्र प्रसाद भांग, स्वामी सत्यनन्द। भागलूर : बाहुलाल मित्तल, श्री रामजी, दाउदयाल धरपाल, सिबदेवर दयाल धर-पाल, गोविन्द प्रसाद चतुर्वेदी, रामदुलारे निवारी, कातिन्धकर कौशिक, मुमनन्दन गुप्ता, डा० ज्योति प्रकाश धरपाल, धोम प्रकाश धरपाल, भूबनेश्वर प्रसाद, पणादेवी धरपाल, मिथनारायण धरपाल, लोचन प्रसाद माहेश्वरी, सीतादेवी, कन्हैया लाल एडकोवेट, रामलाल वर्मा, फूलचन्द कमल, सीतालक्ष्मी बयल, मिटालमिह वर्मा, कंताग-नाथ शर्मा, विशम्भरदास लखेंतवाल, विनोद-भुषण मिहल, कामदेव गुप्ता, जगदीश नारा-यण भायवं, प्रयाग चन्द्र धरपाल, इच्छाचन्द्र

सहाय, कु० मधुसहाय, वृष्णगोपाल शर्मा, चन्द्रदेव शर्मा, श्रीमती विलोत्तमा अग्रणी, जमपदराम-मधुर, जैनाश्रम-धर्म-देवदत्त जमुजा, श्रीमती धावाशर्माजी प्रकाश, कु० कृष्णा, राजेन्द्र कुमारी गुला। मधुरा : जयन्ती प्रसाद, भद्रमोहन गुला, माधव प्रकाश, मूरजपाल गोनम, धनश्याम सिंह, शिवलाल, कुमारी मुधन वर्मा, विशान सिंह, डा० रमेशचन्द्र गर्ग, राधारमण गोनम मनीताल इन्द्रामन सिंह, भुवनेश्वर भगत, दीपनारायण साही, सरजू प्रसाद, रामचौरव सिंह, हीरालाल श्रीवास्तव, मुवशादेवी, इतवारी देवी, इन्द्रासन सिंह। इलाहाबाद : राधकप्रसाद गुप्त, शकटदत्त जोशी। विहारी लक्ष्मण सुन्दरलाल बहूगुणा। मेरठ : लक्ष्मण प्रकाश, राजाराम भाई। बरौली : वलवीर बहादुर। हरदोई : कामतानाथ गुप्त मूरजप्रकाश, बानपुर विनय धरस्थी, भानन्द स्वर्णगुप्ता, इबबाल बहादुर सिन्हा, कालचन्द्र वर्मा, श्रीमती भगवती देवी पत। गोधडा रामलाल भाई। रायबरेली : गिरजाशंकर दीक्षित।

मध्य प्रदेश

इन्दौर : मानवमणी, जसल राय, काशीनाथ त्रिवेदी, श्रीमती कान्तिदेवी, किशोरीलाल गुप्त, यमवन्त कुमार मिथु, रामकुमार भारती, शरदचन्द्र भटोरे, बालकृष्ण जोशी, इन्द्रलाल मिश्र। होशंगाबाद : बनधारीलाल चौधरी, रामकुमार चौधरी, काला कुमारी चौधरी, हरप्रसाद ज्योतिषी, नर्मदाप्रसाद पटेल। बेंगलूर : ग० उ० पाटनकर। प० निमाड : वि० ग० मोडे र्वालिपर : गुरुशरण, हेमदेव शर्मा। उज्जैन : रामचन्द्र भागवत, रश्मिणी भागवत। रायपुर : नन्दकुमार दानी, हरिराम बिसराम चौहान, धनीराम वर्मा, भागीदेव मोहनजी भाई चावडा, मोतीलाल त्रिपाठी, रामानन्ददुबे, स्वालदाम डागा, ज्ञानाबाई, श्रीमती हरिराम चौहान, बबीबाई कृष्णाबाई सावरिया, श्रीमती सरस्वती दुबे, हरिप्रेम जी बघेल, राधेपाल भूले, भीलकण्ठ डेवाना। खंडवा : बादव जी मास्, रायचन्द्र नागड, अनोपे लाल राठीर।

गुजरात

भावनगर : मनु खिमानी, तुनेराय भाटलिया, गुमाया बहन लालजी भाई ताराणी, धरणा बहन लालजी भाई सबाणी, वीकिंग भाई दवे, धरणा भाईमट, मीरा बहनभट्ट, भद्रचन्द्रमट, भारती बहन नारा। डेका : मोहनभाई मयूरभाई, भाईलालभाई भीलाभाई, श्रीमती शांतबहन बाबू भाई पटेल, भीलाभाई, धीरुभाई। द्विसोमोरा : विष्णुनारायण धर्मकर। जूनागढ़ रामजी परसाणिया, हिममलाल रामजी भाई पटेल, रामजी भाई प्रेमजी भाई। सावरबाठा हरगोविन्ददाम धनेश्वर जोशी। पोरबन्दर बालजी रतनजी रघाणी, मनुभाई रघाणी। भद्रसाणा डाह्या भाई भ० पटेल, मोतीलाल भागलाल सेठ, रामोदर भाई दयाराम-मणिलाल, पाथंडीदेवी रामोदरदास भावसार, जयन्त कुमार रामोदरदास भावसार, डा० द्वारका दास जोशी, रत्न बहन द्वारकादाम, डा० मिहिर भाई द्वारकादाम जाशी हेमलता बहन मिहिरभाई जोशी, सोभायचन्द्र। कच्छ धनभाई न० ब्रह्मदासाई। मगनलाल गोविन्द जी सोनी। बड़ोवा मुलजी भाई लक्ष्मीदास पटेल, गोरधन भाई सोनी भाई पटेल, कार्मिलाल-जमनादास पारिल, मुकुन्दभाई पडवा, श्रीमती धनमूया बहन मुकुन्दभाई पडवा, जगदीशभाई ध० शाह, मधुवा बहन जगदीश भाई शाह, विनुभाई शाह, मधुवहन-विनुभाई शाह, हरविलास बहन शाह, बर्नभाई शाह, भगवानल थोटालाल शाह, गबर लाल रतीलाल शाह, बालिलाल मल्लाल शाह उन्नति, पूजा भाई धन्वालाल पटेल, छोडू भाई बलनजी मेहता। सुरत : निर्मला बहन ठक्कर। ब्रह्मदासाबाद : नन्दलाल जी ठक्कर, हिम्पत लाल मगनलाल दीवाना, बीनकुमार प० मेहता, धीरूभाई दीवाना पटेल न० घागा बहन छोटालाल मेहता। बलसाह : मगनलाल तुलेंभदास देसाई, सोमाभाई डाह्या भाई पटेल, इन्द्रसिंह रावत, धीरू भाई मल्लिभाई देसाई,। अचर : पुरुषोत्त न० मजूमदार, सल्ला देवी, बडीशंकर मंगीराम जोशी, हितेन जयेन्द्रलाल भवेरी। राजकोट : बिकोर बा० गोहिल।

विद्याधियों में गजब का उस्ताह

उत्तर प्रदेश में मतदाता शिक्षण अभियान ध्रुव पुरे जोर पर है। अल्पवयस्का नारायण ने विद्याधियों से—ग्राम चुनाव का निष्पक्ष और स्वतन्त्र वातावरण में सम्पन्न करवाने में सक्रिय भाग लेने के लिए जो धावाहूत किया था उसका गजब का फलर हुआ है। पाठियों द्वारा राजनीतिक हितों के लिए मोहरो की तरह उपयोग किये गये विद्याधीं उनको सभाओं में हजारों की संख्या में भाग देने रहे हैं और 'लोकतंत्र के लिए गुणजवान' नाम से समितियां कुछ चुनिन्दा क्षेत्रों में युवा शक्ति के संगठन वर रही हैं और वे इस पर कटिबद्ध हैं कि उत्तरप्रदेश के चुनाव में अत्याचारी तरीकों का उपयोग नहीं होने देंगे। वे मतदाताओं को समझ रहे हैं कि उन्हें अपने बोट का उपयोग सोच समझ कर करना है।

दिसम्बर '७३ में सलतनत में गठित उत्तर-प्रदेश मन्दाया शिक्षण समिति के निष्पन्न पर जे० पी० गये माह सलतनत गये थे और वहा उन्होंने विद्याधियों से बातचीत की थी। ३ और ४ फरवरी को वे बानपुर गये, ५ ६ और ७ फरवरी को धारवा और १० और ११ फरवरी को इलाहाबाद जाने के बाद वे बाराणसी जायेंगे। (विरचित रिपोर्ट धनपे अक में)

दिल्ली में संत-सेवक समागम

धामागी १५ से १६ मार्च, १९७४ तक दिल्ली में संत-सेवकसमागम सम्मेलन करने का तय किया गया है। यह जानकारी सम्मेलन के सयोजक श्री मानव मुनि ने कहा है।

परिषद के सदस्य सर्वेधी-ज०ग० हेबर, जैनेन्द्रकुमार, धार० धार० दिवाकर, धन्नुभाई गार० गुरु० नुरेशी, ललिता बहन, निर्मला देशगार, बृधमण सामसुल तथा मानव मुनि (सयोजक) मनांजित हुए।

सम्मेलन का उद्देश्य है सन्ती की धार्या-स्मिन्त शक्ति राष्ट्र के निर्माण जागृण, मेव धर्याय के परिवार में मंगई जांवर देण को उन्नतिमीन बनाने में सहयोगी बने। इस पर विचार-विनिमय किया जाएगा।

धामार्थ त्रिनेवा भागे में संत-सेवक सम्मेलन के लिए पूर्ण आजीवादा दिया है। सम्मेलन में सर्व मेवा मध, तापी स्मारक निर्मित, गांधी शक्ति प्रतिष्ठाण द्वारा प्रकृत भारत स्तर की गमाजसेवी सम्भावों के प्रमुण भी भाग लेंगे।

वाचक शुल्क : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शक्ति या ५ डाक्टर, एक रुक का मूल्य ३० पैसे। प्रभाव जोशी द्वारा सनं देखा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिन्स, नई दिल्ली-२ में मुद्रित।

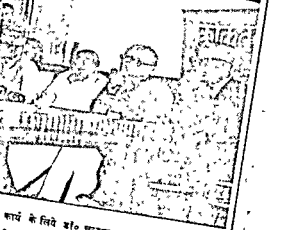


सर्वांगीण

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १८ फरवरी, ७४



सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १८ फरवरी, ७४



पुर में मतदाता शिक्षण : जयमन्दा नारायण कामतभा को सम्बोधित करते हुए : इस कार्य के लिये डॉ० कश्यपकाता रोहतगी से भारद्वाज हवार की धलो लेते हुए और काइस्ट सचं कलिज में विद्यावियों के बीच । (विशेष रिपोर्ट पेज ४ पर)

- गुजरात की जनता क्या फिर नहीं छली जायेगी ?

भूदान-यज्ञ

१८ फरवरी, '७४

वर्ष २०

अंक २१

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

क्या गुजरात की जनता फिर नहीं छली जायेगी ?	२
लोकतंत्र के भारतीय विकल्प का शिक्षण — एक सवाददाता	४
गुजरात के महाराज कह रहे हैं क्या हम संकेत समझेंगे ?	८
—सिद्धराज ढड्डा	८
गुजरात के विधायियों का खूसा पत्र	९
जनता का आरोपनामा	
—कांति शाह	१०
घन भी राजनीति का मोहरा	
—कुमार प्रसांत	११
म्राजादी के बाद के बदतर पच्चीस साल	
—धवनकुमार गर्ग	१३
संयोजक की चिट्ठी	१४
समाचार	१६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

चिन्तनभाई ने बहुत वेष्टावरू होकर गुजरात की गदरी छोड़ दी है। महीने भर के जन भ्रान्दोलन के बाद अब वहाँ राष्ट्रपति का शासन है और विधान सभा स्थगित है।

भारत सरकार और कांग्रेस हायकमान को धाया है कि चिन्तनभाई के इल्को के गुजरात में भाति लीट धायीं और फिर ठण्डे दिमाग से वही की समस्याओं का हल किया जा सकेगा। राष्ट्रपाल विश्वनाथन स्वयं एक कुशल प्रशासक हैं और उनको मदद के लिए सरील साहब को सलाहकार बनाया गया है। सरील साहब ने गये साल बहुत समझदारी से प्राध्न प्रवेश में मुल्की भ्रान्दोलन को समझना था और उनकी इन सेवाओं के ऐवज में उन्हें इस साल छद्मीस जनवरी को पद्म विभूषण का खिताब दिया गया है। उत्तरदायी निर्वचिन सरकार जब इस तरह विफल हो जाती है और सर्वथातिक मशगरी जनभ्रान्दोलन के दबाव से टूट जाती है तो भारत सरकार किसी भी बलि देकर भूत उतारना चाहती है और प्राग पर पानी डाल कर फिर किसी जोड़तोड़ से नयी सरकार को बंठाल देती है। यह एक स्थापित तरीका है और कई बार कारगर भाँतिन हुआ है। इसलिये भारत सरकार को धाया है कि महीने दो महीने बाद चिन्तनभाई की जगह कोई नया मुख्यमंत्री बना कर वह ठण्डे दिमाग से गुजरात की समस्याओं का हल कर लेगी। विधान सभा इसीलिए स्थगित की गयी है, भय नहीं की गयी।

काँग्रेस हायकमान और भारत सरकार का मानना है कि गुजरात में जो कुछ हुआ वह महगाई और भनाज की बमों के कारण हुआ है। पहले विरोधी पाटियों ने विद्यार्थियों को उखसाया और बम बरखाये। फिर काँग्रेस के दमनुष्ट मन्त्रियों ने प्राग में घाम के पूत डाले और मुख्यमन्त्री को निशाना बनाया। वृत्ति प्राग पर बाबू पाने के लिए म बीमण्डन के मचात लो गिराना जरूरी था इसलिए प्राग बुझाने के लिए जलवे घटमदाबाद से दूर दिल्ली में दमकन सडा करना पडा ! यह सब कुछ ही समय के लिए है। थोड़े दिनों में सब ठीक हो जायेगा।

गुजरात की हानत का यह विघ्नेपग भारत सरकार और काँग्रेस हायकमान को सुबारक हो। भगवान बटे उनका भेनान विरवात उन्हें काम प्राये।

लेकिन गुजरात के इस जन भ्रान्दोलन में घगुप्राई बरने वाले विधायियों की तब निर्माण युवक समिति ने कहा है कि उसका भ्रान्दोलन तब तक चलता रहेगा जब तक कि विधान सभा भग नहीं की जाती। यानी विद्यार्थी फिर से विधान सभा में फिर से चुनाव हो। चिन्तनभाई ने विधान सभा के लिए की मांग विरोधी पाटियों ने भी की है। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि केन्द्र नये चुनाव बरवाने पर राजी होगा। सब पूछा जाये तो नये चुनाव की सभावना का उपयोग काँग्रेस हायकमान गुजरात विधानसभा के १६८ सदस्यों में से १४० काँग्रेसी विधायकों में एकता लाने में बरेगा। ये विधायक जो महीने भर के जन भ्रान्दोलन में घपने धर से निकलने का साह्य तक नहीं कर सकते थे और जिनके घरों पर नूड भोड ने बार-बार हमला किया था और जिनसे इस्तीफे की मांग की थी, फिर चुनाव लड़ने को तैयार नहीं होंगे। ये जानते हैं कि लोग उनके बितने नाराज हैं और श्रावद यह भी जानते हैं कि जिस सर्वथागी भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों ने भ्रान्दोलन किया था उसके लिए वे खुद बितने जिम्मेदार हैं। गुजरात के काँग्रेस विधायकों में न इतना राजनीतिक साहस बचा है न इतना नैतिक बल कि वे मतदाताओं के सामने जा सकें। इसलिए सभावना यही है कि घब ये विधायक राष्ट्रपाल की मदद बरने किसी तरह काँग्रेस को पुनः सत्ता में लाने की कोशिश करेंगे।

वृत्ति भारत सरकार मानती है कि गुजरात में जन भ्रान्दोलन महगाई और भनाज की बमों के कारण हुआ इसलिए राज्यात विश्वनाथन और उनके सलाहकार सरील पूरी कोशिश करेंगे कि गुजरात को केन्द्र से और ज्यादा भनाज मिले और सत्ते भनाज की दुकानों के जरिये टीका से उनका विवरण हो। भनाज बमूली को घब तब मदद से एक दवाई भी नहीं हो पायी थी, संज भी जायेगी और सभब है काफी हो भी जाय। कांतिरंज कूट के कारण जिन विधायकों ने जमावदों को राजनीतिक मरक्षण दे रमा था वे ही घब बमूली में मदद करेंगे। हायत मुधारने में राष्ट्रपाल की जो जितनी महायता करेगा बाद में राजनीतिक लाभ पाने में वह उतना ही प्रागे रह सकेगा। हायकमान के मानने उगकी छवि

लोकतंत्र के भारतीय विकल्प का शिक्षण

(उत्तर प्रदेश के चुनाव की गर्म फ़िज़ा और अघाघुन्ध प्रचार से अमित मतदाताओं के सामने जय प्रकाश नारायण ने मतदाता प्रशिक्षण के निमित्त लोकतंत्र का भारतीय विकल्प रखा। नवयुवकों ने विकल्प खड़ा करने की ठानी है।)

—हमारे सवादाता द्वारा

“श्रव बताइये यह प्रजातंत्र है ?” जिस रेलगाड़ी से मैं कानपुर गया उसके एक डब्बे में एक सूटथारी सज्जन बहुत उत्तेजित हों कर अर्थजी में पूछ रहे थे। सवाल मुझे नहीं पूछा गया था और पूछा भी गया होता तो उत्तेजना में अर्थजी बोलने वाले भारतीयों को मैं जवाब नहीं देता। ये सज्जन पहले से अपनी बर्ष रिजर्व करवा के नहीं धाये थे और अर्थजी बोलकर उस कण्डक्टर पर रोव गालिब कर रहे थे जो पैसा लेकर दूसरों को बर्ष दे रहा था। वू कि उन्हे बर्ष मिल चुकी थी इसलिए श्रव उनका ध्यान प्रजातंत्र पर गया था। उनकी शिवायत बैसे सही थी। वे कह रहे थे (जो हूँ अर्थजी में) “श्रव बताइये यह प्रजातंत्र है ? एक मन्त्री को देर से भ्राने की धादन है इसलिए यह मेल गाड़ी रकी हुई है। एक धादमी के लिए पूरी रेल रुकी है। और ये वहते हैं कि यह प्रजातंत्र है।”

मन्त्री जो उत्तर प्रदेश की किसी चुनाव सभा के लिए आ रहे थे और रेलगाड़ी उनके भ्राने का इन्तजार कर रही थी। वे कोई पन्द्रह मिनट देर से धाये तब गाड़ी चली। प्रजातंत्र में ऐसा नहीं होता चाहिए लेकिन ऐसा होता है क्योंकि सवाल उठाने वालों का ध्यान प्रजातंत्र की तरफ़ नहीं जाता है जब उन्हें बर्ष मिल जानी है। प्रजातंत्र को सब उससे भ्राने की मिलने वाले लाभ से तोलते हैं। प्रजातंत्र में सरकार के पास बाटने के लिए बहुत से लाभ हैं लेकिन ये लाभ उन्हीं की मिलते हैं जो उन्हे लेने की स्थिति में हैं और जो उनके न मिलने पर कामकाज ठण्ठ कर सकते हैं। इसलिए हम देश में प्रजातंत्र राजनीतिज्ञों, नोकरशाहों और पैसों वालों का हो गया है। बैसे तो कहीं भी प्रजातंत्र जनता का जनता के द्वारा और जनता के लिए नहीं हो

पाया है लेकिन भारत में तो ऐसा वह बिलकुल ही नहीं है। लाखों रुपये खर्च करने वाला उम्मीदवार चुन लिये जाने के बाद उन लोगों पर ध्यान देता है जिन्होंने उसे चुनाव लड़ने के लिए पैसे और साधन दिये हैं, फिर वह उनको फिर करता है जिन्होंने उसे वोट दिलाये हैं, इसके बाद वह पार्टी की मुनता है जिसके कारण उसे प्रजातंत्र की अपनी दुकान चलाना है। मतदाताओं के लिए उसके पास समय नहीं रहना और मनदाता उस पर कोई दबाव नहीं डाल सकते क्योंकि वे न उसे वापस बुला सकते हैं न वे सगटित हैं कि धरने प्रतिनिधि की मोद हुराम कर सकें। पाव सात बाद वे उसे वोट देने से ज़रूर इन्कार कर सकते हैं लेकिन तब तक मतदाता को बरगलाने और उसे खरीदने के कई साधन उम्मीदवार के पास जूट चुके होते हैं।

कानपुर के नावाराव पार्क की छात्रसभा में जयप्रकाश नारायण लोगों को यही सभभा रहे थे। नेहरू के अमाने में चुनाव फिर भी लोकशिक्षण के प्रथम होने थे और स्वयं वे धरने युक्तानी चुनावी दौरो में एक प्राथमिक शिक्षक की तरह लोगों को देश की समस्याओं और उनके हल के रास्ते बताते थे। लेकिन जब चुनाव पाठियों के छात्रों भगदे और मतदाताओं के सामने एक दूसरे को जलौल करने के मौके रह गये हैं। चुनाव देश की समस्याओं और उनके लवराकरण की नीतियों को समझाने का अवसर नहीं है। चुनाव बोगस मनदान से, बूध पर अधिचार करने से, बल प्रयोग करने से और धन्धाधुंध खर्च करने से जीते जाते हैं। इन अध्याचारी हथकण्डों को धाजमाने से कोई दाब नहीं धाया। प्रजातंत्र की मूलतः जिनकी चुनाव के समय उदायो जानी है उनकी उनके बाद नहीं उदायो जानी है।

जयप्रकाश नारायण ने उत्तर प्रदेश में मतदाता के इस पवित्र अधिचार की रक्षा, और चुनावों को निष्पक्ष और स्वतन्त्र रूप में सम्पन्न करवाने के लिए नवजवानों का धाशाहन किया है। दिसम्बर में सखनऊ में एक मनदाता शिक्षण समिति गठित की गयी थी जिसने पाच महानगरो और पन्द्रह जिलों में इस अधिधान को उठाना तय किया था। इस समिति के सम्पर्क में नागरिक और बाणी सभ्या में नवजवान धाये धाये हैं और वे निष्पक्ष और स्वतंत्र मनदान के लिए समिति प्रयास कर रहे हैं। इस समिति के नियमण पर ही जे० पी० ३ और ४ करवरी को मानपुर और ५ ६ और ७ करवरी को धागरा में रहे।

कानपुर में उनकी पहली सभा डी० ए० पी० बांज में हुई और छट्टी के बांजवद वह लभप्रह ही हजाज विचारों धाये। विचारधायो ने जे० पी० ३ कहा कि वे राजनीतिक पाठियों द्वारा उपयोग रिये जाने से ऊप गये हैं और वर्तमान प्रणाली में उनके लिए कोई जगह नहीं है। हम देर रहे हैं कि देश गांवे में उतर रहे है। बताइए, हम क्या करें ? जे० पी० ३ ने कहा कि देश के शिक्षण पर सत्त ब्यालीस त्रैती ज्ञानि के सबेस स्पट दिवाई दे रहे है। मैं धाय लोगों की गकिन पर विश्वास करता हू क्योंकि मिर्के जवान लोग ही देर गई ज्ञानि ला सकते हैं। देश भर में अध्याचार है और इस कारण लोगों में हताशा की भावना धा रही है। जगह-जगह जो दिगा हो रही है, वह किसी दिन देश की सानागाड़ी के गर्तों ला पटवेगी। धान, चीन और रूस के उदाररण देकर जे० पी० ३ ने कहा कि युनी ज्ञानि से कभी भी गता जनता के हाथ में नहीं धानी। इसलिए जो नई ज्ञानि धाय लोगों की करता है उनका अधिचर होना ज़रूरी है।

भारत में समस्या खाली हाथों की है

→ कि जनता राज चलाने के लायक नहीं है। मैं मानना हूँ कि जब तक जिम्मेदारी दी नहीं जाती तब तक कोई भी अपनी योग्यता बना नहीं सकता। जनता के हाथों में मत्ता तभी धायेंगी जब हम जनता का नया लोचन खड़ा करेंगे। धाम सभा के पहले मदनदा सिधाय के लिए दृष्टांटे विजे गये ११ हजार रुपये की धैली डॉ० चन्द्रबाना रोहनगी ने जे० पी० को गेट की।

दूमरे दिन यानी ४ फरवरी को-लोचन के लिए प्रजातन्त्र फोरम और मदनदा सिधाय समिति के कार्यकर्ताओं की बैठक काइस्ट चर्च बालेज में रागी गई थी। लेकिन विद्यार्थी और लोग इनने धाये कि बैठक सभा हो गई। बलिज के विद्यार्थी सभ के अध्यक्ष सुरेश शुक्ल ने जे० पी० से कहा कि वे बतायें कि हम गन्दी राजनीति में भाग में या नहीं? न लें तो गन्दगी बढती जाती है और हम प्रहाय देवते रहते हैं? इस गन्दी राजनीति को हम कैसे ठीक कर सकते हैं। गांधी शांति प्रतिष्ठान के विनय भाई ने बताया कि जिस तरह बिहार रिलीफ कमिटी के काम से तरए जाति सेना निवृत्ती भी उसी तरह जे० पी० के लोचन के लिए नवजवान-भावाहन से लोक-तन्त्र के लिए नवजवान फोरम-कानपुर में बना है। इसमें बड़ी युवक धाये हैं जो कि लोकतन्त्र के लिए काम करना चाहते हैं। कानपुर में हमने जनरलमंज चुनाव क्षेत्र काम के लिए चुनाव है। सो कार्यकर्ता धा गये हैं पांच सौ हो जायेंगे।

नवयुवकों में काम करने के लिए जास्तीर से धाये राधेश्याम योगी ने कहा कि दस दिनों में कोई दस हजार विद्यार्थियों से हमारा सक्क हुआ है। विद्यार्थियों में एक प्रकार की उन्मत्ता है। वे मानते रहे हैं कि उनके सामने कोई रास्ता नहीं है। लेकिन जे० पी० ने नवजवानों का जो भावाहन किया है उससे विद्यार्थियों में उत्साह भाया है और उन्हें लगने लगा है उनके लिए रास्ता खुल रहा है। लेकिन यह युग मोडा वाटर योतल का युग है। उपान भ्राता है और चला जाना है। विद्या-

धियों के उसाह को बनाये रखने के लिए-युव फॉरे डेमोनेगी फोरम गठित कर लिया गया है जो इन चुनाव में मदनदा सिधाय का काम करने के बाद मोवस्वराज्य की स्थापना में लगेगा।

कानपुर की मदनदा सिधाय समिति के सयोजक इन्बाल भाई ने कहा कि कानपुर में मदनदा सिधाय सन् ५७ के काम चुनाव से ही चल रहा है। '७१ के मध्यराधि चुनाव में नाफी भन्दा और प्रभावशाली मदनदा सिधाय हुआ था।

रामजी भाई वर्मा ने कहा कि ग्राम स्व-राज्य के सपन क्षेत्र नञुजन में विद्यार्थियों का स्वान है। वे टेलिविधो में धायें और ग्राम-स्वराज्य के बुनियादी कार्य में सहयोग दें।

जे० पी० ने विद्यार्थी सभ के अध्यक्ष के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि विद्यार्थियों का सगठन राजनीति से ऊपर होना चाहिए। नागरिक के नाते उन्हें राजनीति में भाग लेने का पूरा अधिकार है। पर जो विद्यार्थी राजनीति में जाते हैं वे इस या उस पार्टी के गिबार हो जाते हैं। राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन, देश की समस्याओं को समझ और उनके ध्यावल-हारिक निराकरण के प्रयत्न वे नहीं कर पाते। धाज की राजनीति ऐसी धनिवार्य गनि-विधियों के लए धायोय हो गयी है। विद्यार्थी पार्टी में जाते ही धगर टिकट और पदों की मांग करने लग जाते हैं तो राजनीति में कोई योगदान नहीं हो सकता और इससे विद्यार्थियों की शक्ति तो बढती है ही।

युवकों के जो धावाहन मैंने किया है वह सिकं मतदान, सिधाय के लिए नहीं है। वह भी वीजिए। इससे मतदान के पवित्र अधि-कार की रक्षा होगी। प्रजातन्त्र में धापात्र प्रगिक्षण होगा और देश की बुद्ध सेवा होगी। पर मूल बात तो विचल खडा करने की है। विचल खडा करने के लिए लछाई का जोश चाहिए, शक्ति चाहिए, लगन चाहिए, सातत्य चाहिए। सिकं भाएए देने से कुछ नहीं होगा। पाच बर्य धभी धगले चुनाव के लिए हैं। धाए लग जाते हैं तो बहुत से चुनाव

क्षेत्रों में नये ढग से उम्मीदवार खड़े बित्तें जा सकते हैं।

नाइस्ट चर्च बलिज से जे० पी० धाई० धाई० १० गये। वहा विद्यार्थियों से लछा-खच भरे हालमें जे० पी० ने कहा कि मैं धाएके लिये एक सदेग लाया हूँ। यह सदेग मेरा नहीं है। सदेग गांधी का है, सदेग भारत की सस्ठति, इतिहास और दूसरी भूमि का है। सदेग यह है कि धाए लोगों की प्रजातन्त्र का धपना विचल खडा करना है। पिछले छवसो वर्षों में हमने देला है कि पविचम का प्रजातन्त्र हमारी जीनियत के मुनाबिक नहीं है। हमें सामुदायिक प्रजातन्त्र विकसित करना होगा।

किर जे० पी० तबनीक शास्त्रपर दोसे। उन्होंने कहा भारत में एक तरफ बँलगाडी है और दूसरी तरफ जेट यान। एक तरफ धागणिक शक्ति है और दूसरी तरफ गेवर के उपलो से मिलने वाली शक्ति है। और हमारे सामने विकास की समस्याएँ हैं। सताल यह है कि हम तबनीक शास्त्र का उपयोय करके इन समस्याओं को कैसे हल कर सकते हैं। धगर हम ध्राधुनिकतम तबनीक धपनते हैं तो लखों हाय बँकरा हो जाते हैं और ऐसे विकास के लाभ जहरतमन्द लोपो तक नहीं पहुँचते। हर साल बेवारी की सख्या बढती जाती है और हम सामाजिक स्तर पर एक ऐसी विस्फोटक स्थिति उपलभ्य करते हैं जो हमारे समाज को ध्वस्त कर देगी। मशीन के खिलाफ हम नहीं है, न महात्मा गांधी से। उन्होंने तो धयें का विचसित मांडल बनाने वाले भी एक साथ धपे का इनाम देने की धोपणा की थी। चरला भी ध्राधिर हक मशीन ही है। गांधी सिकं यह चाहते थे कि मशीन इन्सान से बड़ी न हो। धमरीक में जहाई इन्सान को प्रगति का केन्द्र बिन्दु नहीं माना गया वहाँ धव जे समस्याएँ पैदा हुई हैं जे धाए जानते ही रें

ता भारत में सत्राल यह है कि यहाँ जो प्रधक मनुष्य शक्ति मौजूद उसका उपयोय विकास में कैसे हो और इन विकास का विव-रण समान कैसे किया जाये। इस तरह की स्थिति के लिए पविचम के केन्द्रीश्वर तबनीक शास्त्र की जहरत नहीं है। इसके लिए हमें

मध्यम दर्जे की तकनीक चाहिए । लेकिन जब हम मध्यम दर्जे की तकनीक की बात करते तो जो लोग कहते हैं कि हम गांधीवादी लोग देश को पिछड़ा हुआ ही रखना चाहते हैं । इसलिए हमने इसे "उपयुक्त तकनीक" का नाम दिया है । जब तक हम अपनी परिस्थितियों के अनुसार तकनीक विकसित नहीं करेंगे कुछ देशों में उपार ही हुई किन्ती ही प्रायुजिन तकनीक इत्यामान कर लें देश पिछड़ा हुआ ही रहेगा । लेन के मउर से सब लोग सूकरा रहे हैं और गांधी की तरफ धार रहे हैं । प्राय इस देश के सबसे बुद्धिमान लरके हैं, प्रायका समाज विवेकाधिकार समज समज है और प्राय प्रायना प्रसी प्रतिगत ने प्रथम समय और शक्ति धरमी देगा ही सबस्यार्थों पर शोध करने में लगाने हैं । जब तक प्राय की शोध वा सम्यय इन देश के प्राय प्रायमी की समस्यार्थों से नहीं जुड़ेगा तब तक प्रायका सब काम प्रसाराणित है ।

दोपहर बाद जे० पी० न पनकारों प चर्चा की और फिर मूय फार डेमोकेंसी फोरम के कार्यकर्ताओं से आरंभित की । विचारियों ने कहा कि हमारा विचार तस्यता से उगादा गुणात्मकता में है । हम दो ही ऐसे गुण कार्यकर्ता मतदाना सिधायण से लिए लड़े करना चाहते हैं जिन्हें लोकतांत्रिक तरीके में निश्चित है और जो विरल्य लडा करने के लिए तयार है । इन चुनान के बाद हम उमी में लगते ।

शाम को जे० पी० ने रोटी की बच में कहा कि जब तक इन देश के उद्योग और व्यापार में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना नहीं धारिणी तब तक राष्ट्रीयकरण होना रहेगा । और उदाय लठ होत रहेगा । एडीगिन को स्वीकारे बिना इस देश में उद्योग पनप नहीं सकता । तथा की समानि के बाद रोटी की बच की और में मतदाना सिधायण से लिए १०१ की संकी जे० पी० को ली गई । प्रेरित शं० चडवर्गीना रोडपनी की फीनिज पर देन-देयनें वहाँ—१७१३ हवये और कइठें हुए ।

१ फरवरी को मउर जे० पी० प्रायरा चलता हा गय ।

प्रायरा में

जयप्रकाश नारायण ने प्रायरा के सेण्ट जोन्स कॉलेज, प्रायरा कालेज तथा जनवत विद्यापीठ विचपुरी में प्रायोजित छात्रों एवं लरहणों की सभाओं में कहा कि जब तक वर्तमान लोकतन्त्र की प्रराणी प्रायम है तब तक मनदान निष्पक्ष तथा स्वतंत्र होना चाहिए । मनदानाओं को शराय, दबाव, रिश्वत, जातिविरादी धारि से प्रभावित करने प्रायका प्रयोगिन करने वाले प्रस्थासियों का बहिष्कार किया जाए और उनको बोट न दिया जाए ।

जे० पी० ने कहा कि पश्चिम वा लोकतन्त्र व समाजवाद प्रौद्योगिक परिवर्तन की देन है, हमारा देश कृषि प्रधान है धन यदा पर समाजवाद का स्वरूप क्या हो यह भी सोचने की बात है । हम पश्चिम व कम या चीन की नकल नहीं कर लवने । वडा की भोगिनि "सहित्विक" व अन्य परिस्थितियाँ यहाँ में भिन्न है । उनकी जीवन पद्धति प्रायल है । चीन में प्रायस्वकता होने पर देश भर के विचारियों को प्राय होने पर भेज दिया गया । क्या यह यहाँ सम्भव है ?

ई प्राय अनुभव करना ह कि हिमा के डारार समाजवाद स्थापित करना न सम्भवी हो सकता है । प्राये जाकर वह कु ठायल हो जाता है जिसका उदाहरण कम में बढती हुई प्रायता की प्याल है । वहाँ प्राय मलमूय जननि में सलुष्ट नहीं किया जा सकता । इसके लिए हृदय परिवर्तन द्वारा समाजवाद की जागर है ।

देश में व्याप्य छप्टाचार के बारे में जे० पी० ने कहा कि छप्टाचार एक व्यापक शब्द प्रराणा होनी है उनके प्राये बढने में उमरगा कालार हो जाता है जैसे पानी एक स्थान स्थिी पर मरं हने पर प्राय बन कर उब जाता है । छप्टाचार में सभी वर्ग दुकी हैं । युवक उमों विरुष्ट प्रदर्शन करते हैं, उमैकला धरती है, बन्द होने हैं किन्तु इसके मद्द्गार्थ, धरती, वा शराय पर कोई प्रभाव नहीं पडता । इसके लिए सभी को मिनकर उपाय साधना चाहिए कि नाराय्य छप्टाचार की

बैठे रोके ? छप्टाचार उमर में चलना है इस को दूर करने वा जो तरीका निकले वह शान्तिमय प्रसय होना चाहिए ।

जे० पी० ने कहा कि हमारे देश में दुर्भाग्य से राजनीति वा स्थान सर्वोपरि है जबकि प्राय देमों म सता के मुक्तवले प्राय शक्तियों भी हैं । राजनीति ने प्रायरा का बदलना जरूरी है ।

जे० पी० ने छात्रों वा प्रावाहन किया कि प्रायों वे निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनान के लिए १५ दिन के लिए कालेज छोड़ें फिर प्रायनाम के दिनों में गाँवों में जायें और धम लोगों को लोकतन्त्र की दम-बहिनी पद्धति प्रायने से लिए नकार करें । इसके लिए प्रायसभाएँ स्थापित की जायें और उनके प्रायनिधि मिल कर ऐसी कार्य समिति बना कर प्रस्थाओं नकार करें जो विधान सभा तथा लोकसभा के लिए चुनान लड सके ।

जे० पी० ने मरुडा कानून प्रकट की के उपायों के प्रति धार नाराजगी प्रकट की और कहा कि यदि इसके हटाने में गुवा शक्ति का प्रयोग होता है ता उनका साटम बडेगा । उहाँनें सर्वोदय कार्यकर्ताओं तथा पनकारों से लोकतन्त्र के नय मूव्यों की स्थापना के लिए प्रायस्वगउय को प्रयुक्त करना देने की बात कही ।

जे० पी० स्वावी हृष्टकण्ठ से उनके प्रायम में भेड करने में गुय को सिगत चार माह से एक बस दुपुंठना में प्रायल लड़े हुए हैं । प्रायरी दिन दैनिक विकास सवठन के २० युवकों ने मूय पारं डेमोकेंसी से लिए प्राये को प्रस्तुत किया । विचपुरी ने ४० छात्रों ने प्रायना ममय दिया । जे० पी० ने रबाना होने से पूर्व मूय पारं डेमोकेंसी की मूनिट को प्रायना प्रायोजन किया ।

प्रायरा में बात तथा जनरेर प्रसङ मे तथा नगर में प्रायरा पुर्णी शैर में काम करने का निश्चय सर्वोदय मिर्कों ने किया उसके जे० पी० को प्रायना प्रताप गया । मुख्य प्राय काम को जिम्मेदारी बढीया ताव एक-बाकेर, महावीर विंढ गणेश भाई, शिव-नारायण प्रसाद, लोक प्रसाद, बालमुकुन्द भल्ला संताग भाई, हृष्टकण्ठ महाय, गोताण नाशयल शिरोमणी और राय मोहन प्रसाथ ने से ।

गुजरात के महाराज कह रहे हैं.....



रविशंकर महाराज

क्या हम इस संकेत को समझेंगे ?

गुजरात में जो घटनाएँ घट रही हैं वे किसी परिस्थिति या कारण विशेष के प्रति जनता का आक्रोश नहीं है, बल्कि आजादी के बाद पिछले २५-२६ वर्षों में जनता का जो भ्रम निरसन हुआ है उसका मकेत है। तरह-तरह के प्रश्नों को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में छोटे-बड़े आन्दोलन होने रहे हैं परन्तु पिछले महीने भर से गुजरात में जो कुछ हा रहा है वह देश के सिद्धान्त पर नये अणुआदय का सकेन प्रतीत होता है। गुजरात में जनता का आक्रोश छूट-पुट बिन्ही भी कारणों को लेकर प्रकट हुआ हो परन्तु उसका ध्व जो स्वरूप बना है वह किसी एक या दूसरी समस्या के समाधान का प्रयत्न नहीं है बल्कि पिछले पच्चीस वर्षों में एक के बाद एक जनता की जो आशाएँ और आक्षान्ताएँ टूटी हैं उनके प्रति लोक-विद्रोह का संकेत है। सवाल किमी पाम समस्या के हल का, एक ही सरकार बन जाने के बजाय दूसरी सरकार के बन जाने का नहीं है, परन्तु एक प्रकार से जनता के सम्पूर्ण भ्रम निरसन का यह संकेत है।

गुजरात का जन-विद्रोह जिन चीज की ओर संकेत कर रहा है उनका समाधान छूट-पुट समस्याओं के हल से, मतिमूलक परि-

“सरकार ने जनता का विश्वास तो दिया है ऐसी स्थिति में गौपीयारी, उडा भार या गिरनारियों से बारोबार लम्बे प्रसँ तक नहीं चल सकेगा।

शान्ति, अनुशासन और इतिहास से आन्दोलन चलाने का प्रत्येक नागरिक को दायित्व है।

समभदार गुजरात में, पिछले कुछ समय से लुटपाट, तोड़फोड़ और मकान धादि जनाने की जो घटनाएँ घटी हैं उनसे मैं अत्यन्त व्यथित हुआ हूँ। वे धरना मय नहीं बढ़ायेंगी। मैं साय-टिका के दर्द से पीड़ित हूँ धन लोगों के बीच में धूम नहीं सक्त। यह मया दुर्घन है। पर गुजरात की जनता को एक दर्दभरा आवाहन



बाने से या जनता की कुछ तात्कालिक कठिनाइयों को दूर कर देने का संकेत नहीं होगा। या दर वह दिन की सारी परिस्थिति में एक रहे किसी बहुत बड़े परिवर्तन का संकेत है। जिन जन-आश्रित की प्राप्ति करने की घोषणा हम इनने वर्षों में कर रहे हैं वह एक धारलिन रूप में गुजरात में प्रकट होनी नजर आ रही है। क्या हम इस संकेत को समझेंगे ? गुजरात की घटनाओं में एव नई शान्ति के धरलण्डिय का दर्शन हो रहा है। क्या हम इस संकेत को और इस धरलर की पकट पायेंगे ?

—सिद्धराज डड्डा

बरता है कि हम गांधी के नाम को न सजाएँ। कोई भी आन्दोलन शान्ति और अहिंसात्मक ढंग से किया जाये तभी सफल हो सकता है। गांधी और सरकार ने जो सिद्धि पायी वह इसी मार्ग में पायी है। राष्ट्र की या दूसरी की सम्पत्ति तोड़ने या जलाने से तो हम ही गरीब बनते हैं। चाहे जैसी उत्तेजना फैलायी जाती हो तो भी, शान्ति अहिंसा और अनुशासन से आन्दोलन चलाना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। विद्यार्थी मित्र, जो कि जन वरपाएँ, राहत और कृदरशी प्रकोप धादि कार्य में नित्य तत्पर रहे हैं—जिसका मैं स्वयं साक्षी हूँ—उन्हे मैं आग्रहपूर्वक बहूया कि किसी के विध्वंसमा हुए बिना शान्ति और इतिहास के मार्ग से विचलित भी विचलित न हो।

आम लोगों से मैं विशेष रूप से अनुभव करूँगा कि सामाजिक, राजनैतिक एव धार्मिक व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन किये बिना हमे परधान करने वाली समस्याओं का निराकरण हो नहीं सकेगा। इसके लिए सब को मिल कर पुरपाद करना पडेगा।”

बिन्ही चूहे को पकडे और तितर-बितर हो जाये ऐसी स्थिति चुनाव लखे के बारे में विधायक की हो जानी है। वे भी उतने ही अत्यन्त-धरत हो जान हैं और चुनाव-लखे वापिस पाने के प्रयत्न में ही मजतू सलग रहते हैं। पहले दो-दो, पाच-पाच हजार रुपये के लखे की बात करते थे, लेकिन आज लाख रुपये के लखे की बात होनी है। इस प्रकार रैसे लखे करके मुद चल कर सेवा करने के उद्देश्य से गये हुए विधायक इतनीच देने नहीं, चुनाव लखे वापिस प्राप्त करने के लिए विधान सभा में पहुँचे हैं।

लोगों को तो धव बिना पैसे चुन कर आ जाये—एसे लक गेवक प्रतिनिधियों को विधान सभा में चुनकर भेजना चाहिए जिससे—चूँकि चुनाव में मुदु मीना नहीं पड रहा है—धन: उमे वापस प्राप्त करने की उन्हे दृच्छा ही न रहे या जनता के बलाने पर तुरन्त इतनीपद दे कर वापस आ जाए।

मे मरने को तैयार हूँ

(रविगणकर महाराज की उपस्थिति में हुई धर्मप्रवचन के प्रथम भागिकों की बैठक में मुजराज की वर्तमान परिस्थिति में, नागरिकों ने निम्न प्रश्नोत्तरों के बारे में चर्चा की।)

मुद्रेश चट्टे (मुजराज विश्वविद्यालय भौतिक विद्यापीठ गणक) विद्यापीठों से धारा बना संस्था रखत है ?

महाराज नगर में ही नाव कर्ते यह विद्यापीठ हवें।

मुद्रेश विद्यापीठों की हिसक कम से ही बनना चाहते हैं। विद्यापीठों की हिसक नहीं है। छात्राण भी उत्साह से जन जायति के हवासे हम ध्यानीजन में जुडी हैं। पर मरकार

उन्हें रोनी है। ध्याचार देलकर विद्यापीठों का दिन तिवन्तिला उठता है। शासन को कुरीति धोर गलत नीतियों का जिकार जब धाम-समुदाय बनता है, तब वह बर हो यही विद्यापीठों का प्रधान लक्ष्य है। यदि विद्यापीठ धान्दालन में दुष्मा होना तो शासन इतना भी तबने नहीं होता।

महाराज इत जायति ने साथ सेना भी काई है।

मुद्रेश माय में घाज भी धारा है। उमाधकार जोशी यह सेना ता धा गई

धवाज क्या ?

महाराज धाण मोचिने कि क्या विद्या

जाय ?

धवाज वसन्त मुद्रेश धावने जो अन्तर-

ध्याय व्यक्त की है वह सवने स्वोचर की है। यह सिर्फ दाना-पानी का मवात नहीं है।

महाराज मैं मरने का तैयार हूँ।

मुद्रेश नगर के नेता भी इन जग में साथ हैं। धामनी रमिसा दूर रख कर धनुभवन हीन विद्यापीठों का मार्गदर्शन करें। वे यदि मुद्रेशों हैं ता हम धारत का निवाज कर ही दम लेंगे। ध्यायवा विद्यापीठों को धोर काई दिवसकपी नहीं है।

उमाधकार जोशी यदि धान्दालन की हिसक सव हवा तो सभी उत्तम धार्येंगे। धाण भी ध्यावानी में रहेंगे।

मुद्रेश हम को धागे हैं ही धोर रहने के लिए तैयार भी हैं।

ध्याचार के सवने बड़े पुनवे को निवृत्त करेंगे तभी ध्याचार सत्य हवा।

परिवर्तन में विश्वास रखने वाले युवकों का खुला पत्र

पूज्य रविगणकर महाराज,

मुजराज की वर्तमान परिस्थिति के बारे में धार्यें विचारों के धनुवार हम जैसे लोचकों के लिए को नूनन प्रभात के दर्शन हो रहे हैं। उमाधि यह पत्र लिख रहे हैं।

हमने मापी को देना नहीं है पर गाम्भी के नाम पर धारी पदवार राजसत्ता धोर ध्यावर उद्योग चलने वाले धाधार्यें होने के ही धोर धारणन स्वार्थ-लोचण होते हैं ऐसी ही हमारी धारणा धनी है। सत्ता में बँडे हुए भीय प्रजाजन के नाम पर गरीब ब प्रजाज जनता के पैसे से सेना के नाम पर युवकों उडा रहे हैं। ऐसी सिस्ट्री से सवने बना वानचीन या धनुभवन-विद्य को तो मुद्रेश ही नहीं है, ध्याचार या एकाध जन को जताना ही पडता है, जेना धनुभवन रहे हा बुझा है।

इस धार ध्याचार धोर उम्मे ही धारण उमाध धारा धारीजनों में गाम्भी मुजराज की गाम्भाव जनता ने जो धाराज उमाधि उमाध हवासे जैसे नवजवानों ने ध्यावनी की है धोर ऊपर जैसे कटा गया है जैसे ही हिसक माधन जनता ने - पणने। हम सवभने है कि मोड-धारा ने जो मुद्रेशन होता है वह राधु की सगत का ही होता है धोर उमे दुध ही को धारा ही हिसक है। धनुभवन ध्याचार की वेना धारा की वेना धारा धारा है। हमने माधने हमने हुए मुद्रेशन की मुद्रेशन बना हा गमकी है ?

धमि मुजराज में धानि दीवनी है पर युक्ति धोर सवा के बल पर धानि रहेगी नहीं।

जिन जनता ने अर्थज जैसी को हटाया, उमके गामने इन छोटे जनुधों को हटनी नहीं है। नरकारी धाधार्यमनों में जनता को कोई भरोसा नहीं है। मुजराज की धाई करोड जनता को धार्यन माया में धोर उच्चिन माय में धाराज, सेल, धिरोमीन, कपडा धादि उच्चिन दाग से पडवाने की ताकत इस ध्याध सवकार में नहीं है। धोर उसके द्वारा धाये गये इस धनुभवन में युम को जनता मूलने धानी नहीं है। धमनि ए इस धामन के धिवाधको को धनीधारा देन की धार्ये जो धनाधनी की है इमसे हमें बडी लुगी हुई है। पर धाधके निवेदन माय से धानधारा, जिद्री, ध्युत्वाधारी अर्थज नेनागल धनीधारा वे इमे हम धाम में की धाधधरणा रहेगी। धन या उम धय धा धुम में हमें कोई दिवन्तली नहीं है। धार्ये जैसे मुधवाज है उम ध्यार के लोचसेना निवृत्त को धम प्रनिर्दिध ही विधान मधम म पडुवे वह धाधधरा है।

इस परिस्थिति में हमारे जैसे हजारों नरमुद्रेश धान्दालन के धुमरे धरण के लिए धोर धोर तलार है। मुजराज में धाज धिद-माध नेनुभव की बनी महदुम हो रही है। हम जैसे विद्यापीठ, ध्याचार, धाधिव्यकार, तसवीधी धार्यनता ध्याचार तथा सामाज्य धानिधिय

नागरिक धार्ये जैसे सर्वथा धोप्य धुरन के मार्गदर्शन की ध्यासा रखते हैं।

इस गमय के धनुभवन से हमें लगा है कि नेवरीव दने धरने से हमारा उद्वेग सिद्ध नहीं हुआ है। सामाज्य जनता भी परधानी में पड गयी है। गेने मोडे पर धाधके जैसे धनुभवन-वृद्ध गाम्भीधारी, ल्यागी नेना के नेनुभव की हम धाधधरणा है। हमें धिदितार धिदितार की तालीम धाधयें। नोई तीव्र धार्यक्रम होने दे। प्रजाजन में किम तरीके से धाधालन ही सत्ता है इमका मार्गदर्शन करे। हमारे धुरुवे से अर्थजो को भी मात दे दे, ऐसा धाधिव्यकार की नेनुभव धाज है जो ध मन-तब धोडने को तैयार नहीं है। हम धरि-धरते को गाम्भी के सत्याग्रह के लिए उरुवुक ब धाम्भ धधरत मानवर धाध हमारी धार्यनता करें।

इस मुजराज राज्य का धार्ये उदधधन विधा है। मुजराज राज्य के सभी धुधधमनों धरणा पर ध्रुव करके सवने पदने धाध के धरए धरने है। धमनिध जनता को यही राह धिरवाने की धय धाधकी ही धिमधारी है।

हम धाधको राधु देन रहे हैं।

निधित

सामाजिक परिवर्तन में विश्वास रखने वाले युवक

गुजरात मुगल रहा है। अपनी चुनी

हुई लोकतांत्रिक सरकार और अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के सामने सामान्य जनता का रूप विविध स्वरूप में प्रकट हो रहा है। जनता उनके सामने धारोपनामा पेश कर रही है—

—जनता का धारोप है कि हमने 'गरीबी हटाओ' के नारे पर विश्वास रखा कर जिन को प्रकाश बहुमन के साथ चुन कर विधान सभा में भेजा, उन्होंने हमारा विश्वासघात किया है। इस नारे को ब्यवहार में चरितार्थ करने के लिए उन्होंने न कोई तत्परता या एकाग्रता दिखाई है न कोई प्रतीनकर पुरपाय किया है। बल्कि उनके बरतना से तो ऐसा लगता है कि उनमें से ज्यादातर लोग ध्रामा-एक ही नहीं हैं। उनके लिए यह महज एक राजनीतिक नारा है।

—जनता का धारोप है कि जिस काम के लिए इन प्रतिनिधियों को चुन कर भेजा जाता है, वह तो एक किनारे रह जाता है और वे निरन्तर जनता की होड़ और एक-दूसरे के पाँव खींचने में लग जाते हैं। लोग बेचारे यह नया नाटक देखते रहते हैं। 'सोक' को बेवकफ मानकर मनचाही तिरबम करते रहते हैं इन राजधारियों को चक्का लग गया है। इसीलिए जनता का धारोप है कि उन्होंने अपने या अपने गृह के या अपने पक्ष के मकीलों, और तात्कालीन स्वार्थ के खातिर हमारा विश्वासघात किया है और गुरु सत्ताधारियों के हाथ में बंधुवली के माफिक नाचते रहे हैं।

—जनता का धारोप है कि चारों ओर धाज को व्यापक छप्ताचार फैला हुआ है, उसमें धाज उच्चस्थान पर बैठे हुए लोग भी शामिल हैं। इस छप्ताचार को निर्मूल करने की बात तो दूर रही, उनको घबराव बड़ा दे, ऐसी ही इन लोगों की कुछ रीति-नीति रही है। मंत्रसत्रों के साथ मनधारियों की घासस भी गाठगाठ के फलस्वरूप इस छप्ता-चार को घबराव घाज, गीभन और व्यापक स्वरूप मिला है। इनमें से जनता को छड़ाने के लिए वे प्रतिनिधि लगने वाले नहीं हैं, क्योंकि धाज तो म धाज ही प्रधाज बन चुका है।

भूदान-यज्ञ : सोमवार, १० फरवरी, ७४

गुजरात के शासकों के नाम

जनता का आरोपनामा

कान्ति शाह

—जनता का आरोप है कि धाम लोगो को जीवन की आवश्यक चीजें उपलब्ध करने में वे प्रतिनिधि और सरकार बिल्कुल गैर-जिम्मेदार रहे हैं। धाज धव यहाँ से धनराज धा रहा है, वहा से धा रहा है। ऐसी बातें धाते दिन हो रही हैं। लेकिन धाज तक वे सब व्यवस्थापन कहा सोये हुए थे। इस लिए वे सब प्रतिनिधि जनता की तकलीफ दूर करने के लिए उल्लुभ, तत्पर एवं ईमानदार हैं, इसी का विश्वास जनता को नहीं हो रहा है। ये लोग जनता के कष्टों के प्रति शूर रूप में उदासीन हैं।

धारोप है कि जनता की धाम्या और विश्वास के बजाय इनको सत्ता और लाठी-बतूर पर ज्यादा भरोसा है। इसलिए जनता के रोप को समझने और धान करने की कोशिश में लगने के बदले पुलिस-सिपाही के जरिये बुचकने की चेष्टा वे करते हैं। लोक-तांत्रिक भावना के यह विरुद्ध है।

—यह भी समझने की बात है कि यह धारोपनामा पिन्गी एक ब्यक्ति, निन्गी एक गृह, या किसी एक पक्ष तक ही सीमित नहीं है। यह धारोपनामा तो धाज के पार्टी प्रजा-नर के लिए है। और यह सिर्फ पिछले दो-तीन साल की परिस्थिति के फलस्वरूप भी नहीं है। स्वतन्त्रता के बाद पिछले २६ सालों में पार्टी राजनीति के बारे में मन में जो धनाम्या बढनी रही है, वही धाज प्रकट हो उठी है। जनता धव इस राजनीति में उब गई है। जैसे १९४२ में भारत की जनता ने यह दिया था—भात छोडो, वैसे धाज यह इन राजनीति के खिलाड़ियों को बटना चाहती है—गदरी छोडो। हमें ऐसी राजनीति नहीं चाहिए। हम चाहते हैं लोक प्रजातन्त्र।

यह है धाज की घडी की चुनौती। यह चुनौती है सामान्य जनता का दिन चलने वाले सभी के सामने, जिन के सभी मजाल-धारियों के सामने, समाज-विकास के

प्रगति के लिए उल्लुभ सभी के सामने, धाज के लोकतंत्र को परिशुद्ध करने के उसको वास्तविक बनाने की इच्छा रखने वालों के सामने, मानवतावादियों के सामने, नव बामपथ के सामने, नये समाज के नव-निर्माण की आकांक्षा रखने वाले नवयुवकों के सामने। लोकतंत्र के विकास के लिए एक बिल्कुल नया मार्ग ढूँढना है।

धाज सिर्फ अपने देश में ही नहीं, सारी दुनिया में परम्परागत लोकतंत्र और समाज-परिवर्तन कु ठिन हो गया है। सत्ता, सर्पति और सगठित स्वार्थ के लिकेजे में धाज वह जकड़ गया है। और इन तीनों की अदरुनी साठगाठ से मामला ध्यतन्त भयावह हो गया है। सत्ता और सर्पति अपने-अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे को पूरी तरह से मदद दे रही है। धाजी ने लगे काम रखने के लिए सगठित स्वायत्त यूनियनों को भी कुछ हिस्सा देकर मोल ले ली है, राजी कर लेनी है। इन तीनों का बोझ ढो रही है—धाम जनता। बेचारी धाम जनता या लगभग ४०,५०० हो रहा है। इनमें से भुक्ति की कोई राह धाज उसको नहीं दोखती। जो यह राह दिखायेगा, वह धव इस देश में धोर दुनिया में नयी ज्ञाति लायेगा। वह होगी धाम जनता की ज्ञाति, मानवमुक्ति की ज्ञाति।

ऐसी ज्ञाति के लिए सर्वोच्च धादोपन प्रतिज्ञाबद्ध है। पिछले २०-२२ साल से हन सब इसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं। यह धादोपन परिस्थिति की मांग में है, चुनौती में से जन्मा है और पनपा है। १९४९ में तेजगना से एक चुनौती उठी थी। उसका मुख्य स्वरूप धाधिक था। उसके उत्तर में भूदान का कार्यक्रम निबया। वह मुख्यतया धाधिक परिवर्तन का कार्यक्रम था। इसलिए उस वक्त के धामदान में भी जोर रहा मिलिकयन विमर्जन एवं दात पर।

वाद में १९६२ में चुनौती धाधी चीन (शेप पेज १६ पर) →

अन्न भी राजनीति का मोहरा

कुमार प्रशांत



प्रतापचन्द्र

'शरीर का कौनो उपाय नहीं छूटै'

इन दिन सामान्य बर्षों में बम्बई के एक मित्र बोले, "बम्बई में धान दो ही जगह भीड़ है—एक तो राशन की दुकानों पर और दूसरी ल होटलों में जहाँ एक 'डाइट' की बीमन शिप से भी ऊपर हाजी है।" बम्बई इन दोनों में इन देश का प्रतिनिधित्व कर रहा है। देश में भीड़ है उसके दरवाजे पर जिनके। संपत्ति द्वारा शरीरी मत्ता है और शौर उसके नाम का, जिनमें पास सत्ता, संपत्ति स्वाभिमान तीनों से रहिन सभ्या है। रूप में गांधी के दरिद्र नारायण की दर्शनकी सख्खति बन गई है।

याम में सर्वत्र प्रभाव है, और देश का आ बर्ष भविष्य की तमाम धाराण का है। बहुत देर बर्षा करने के बाद के गांव के एक हलवार प्रभावचन्द्र ने गहरी साँस लेकर कहा था 'घर गरीबना कौनो ऊपाय नहीं छूटै।' (गरीब के लिए घर कोई रास्ता नहीं रह गया) शरीर हटाओ' के जोरदार नारे का यह भाग्य निष्कर्ष है।

वैसे का मुख्य सपानागर गिरना जा रहा है। विद्युत् दिनों विषमको ने लोभनाम का बगाना कि १९६७-६९ में रुपये की होमन ६२ ५६ वैसे की जो १९७२-७३ में ५० ३१ वैसे रह गई है। यह स्थिति स्पष्ट में स्पष्टतर होनी जा रही है कि बाजार मरकार के निवृत्त न नहीं है और एक साधारण घादमी का, सर-घर और बाजार दोनों पर कोई फलानगर नहीं है। गरीब के बोट घोर बोट में चल बानी इन दोनों भित्तियों ने उस शरीर को देश की प्रगति के हाथियों पर डाल दिया है।

हरित क्रांति का सूत्रापन

त्रिज हरित क्रांति के शिप में इनके बाड़े हुए, उनका हृद दुआ कि १९७२-७३ में इपि जनास्त में ५५ साल टनने भी जसासागराष्ट हुई है। धन के प्रभाव ने लोगों को बेहाल कर रखा है। धान तक रिनैनी धन टकारी सहायक बनता रहा है। धान के बुद मयप पढ़ने ही प्रभाव की निर्मात् स उबरने के लिए मरकार ने ५५लाग टन धाना धागत करने

की सोची थी। अनुमान किया गया था कि १२५ डालर प्रति टन की दर से ५६० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा, इनने धन की शरीरकारी के लिए पर्याप्त होगी। सभी यह राजना काज पर ही भी कि विदेशी बाजारों में मे साधान दर २०० डालर प्रति टन हो गई। धाना की गई कि पूराप और अमरिका के बाजारों में नई कमल पढ़वृत्त ही धनाज का भाव निरेगा। पर वह धाना भी बिकन गई। धान २१५ डॉलर प्रतिटन की दर से लार्ड बन रही है और पट भाव बने रहने की उम्मीद है। धन हमारे व्यवस्थापकों का धाम्त्र किया के धनाज का भगना है। पर इन वमी का मुकाबला करने के लिए धाम्त्र किया इस पूरा धनाज नहीं दे सकेगा। तमार साधान बनी के सखट में पडा है।

समुक्त राष्ट्र सप की खाद सत्या न

विश्व की गम्भीर साक्षरिपति की सूचना दे दो है। उनके अनुसार विश्व में सा प्रतिगन की दर से जन सभ्या बुद्धि हुई है ती तीन प्रतिगत की दर से धनाज के उत्पादन में गिरावट आई है। परिणामस्वरूप तमार विपट साक्षरिपति के सम्मुख है। धानवा है कि कोई एक करोड़ लोग धनाज की बर्षों के कारण तुरन्त या नर्न-नर्न मृत्यु के मुख में जायेंगे। इस विपट स्थिति के पढ़ने तिमकर विषमकोल दश हागे।

तस्वीर का दूसरा पहलू

यह तस्वीर का एक पहलू है। दूसरा पहलू ज्ञाना महत्वपूर्ण और स्थिति की भी सोचने वाला है। धन धान शारीरिक नागरिक रण की सोटी बन गया है। बड़े मुक्त सखुदुद लेकर बाजार में उतर घाये है। नन तक मनुष्य सोरे की वस्तु था। सभ्या के दति-हाग में यह धरती भी घाई है जब मनुष्य की मोल बाजार में बिकने वाली वस्तु हो गई है।

१९७१ में हम ने १८.१२ करोड़ टन धनाज वंश हुआ और १९७२ में १६.०० करोड़ टन। हम के उत्पादन में सभी हुईं तो

पूर्व यूरोप ने साम्यवादी देशों व उत्पादन बडा। विन्तु उत्पादन के बुद्धि के बावजूद पूर्व यूरोपीय देश धन के मामले में धाम्त्रनिर्भर नहीं हुए है। हम पर के निर्भर है और हस धन निर्भरता का शार्वनैतिक पापदा उठाना रहा है। इस बार अपने धमरिका फाय, धाम्त्र किया बनाया धादि से ३०० लाख टन धनाज शरीरने की शिवायी की है जिनम धकले अमेरिका से उसे ३ करोड़ टन गैर दिया है। और अमेरिका ने हम को यह गैर माटी मोन दिया है—१६५ डॉलर प्रति मूकन। हम इनका बका धनाज-भंडार इकट्ठा कर बयो रहा है? उनके धनाज में धमरिका जापान, चीनी भी उनी कीमते दे कर धाना धनाज भणार इकट्ठा कर रहे है और धमरिका इहे धनाज दे रहा है। इन बडी शरीरकारियों के कारण धनाज बाजार में दाम के हियाव बर गये है। १६५ डॉलर प्रति मूकन गैर हम को देने के बाद धमी बाजार में गैर ४७० डालर प्रति मूकन हुआ है कहा कि के धनकोल धन शरीरकर पेट पाव सके? इस विपट स्थिति में हम दूसरे में शरीरा धन उतर्न हाप उचित

मूदान-मन : सोमवार, १८ अक्टूरी, '७४

कीमत' पर बेचेंगा और खरीदेगा उनकी द्विज स्वामिभक्ति ! हम ने घोषित कर रखा है कि पूर्वी यूरोप की खाद्य समस्या के लिए एक ३० लाख टन अनाज देगा। इटली को हम ने २०,००० टन गेहूँ दिया है और भारत को २० लाख टन गेहूँ उधार दिया। पूर्व यूरोपीय देशों को सिर्फ अनाज के लिए भी नहीं, अपनी कल-कारखानों के बच्चे मान्य के लिए भी हम पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता भी उन्हें खरीदकर लेनी पड़नी है (या अपना कुछ गिरवी रख कर अपनी पड़नी है)।

भारत ने इस से, अनाज पहले ही मांगा था—मरने खरीदे अनाज में से कुछ हमें दो। पर हम ने इन्कार कर दिया था। भारत की स्थिति जब और ख़री हुई तब जाकर हम वही अनाज दे रहा है, किन्तु इसके साथ क्या शर्तें होंगी अनन्त जान पायेगी क्या ?

बदलते हथियार

विश्व में सत्ता सघर्ष के शस्त्र तेज़ी से रूप बदल रहे हैं। हथियारों को लड़ाई जितनी महंगी होंगी जा रही है उतनी ही निरर्थक भी, क्योंकि नियोजित विजय किसी पक्ष की मिल नहीं पाती, धन: आर्थिक शस्त्र ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं। अन्न हो तेल हो या और कुछ, विकसित देश उत्पादक देशों से बड़ी मात्रा में इन चीज़ों को खरीद कर बाजार मुग्न कर देते हैं। बाजार में कीमते घाटा खड़ा लगनी है। अर्थिकसिद्ध देश अपनी जेब की कूबट समझते हैं। इन सहूकार देशों के पास जाते हैं और उनके प्रभाव क्षेत्र में चलने लगते हैं। ये सहायताएँ अर्थिकसिद्ध देशों को किसी भी क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं बनाती, उनका राजनैतिक और आर्थिक शोषण ही करती हैं। अफ्रीकी देशों में चीन समेत सभी बड़े राष्ट्रों की भूमिका, पाकिस्तान में अमेरिका की भूमिका, पूर्वी यूरोप में रूस की भूमिका, चीन १९५० का इस देश का अनुभव—नब मिल कर यही प्रमाणित करते हैं। आज भी परिस्थिति में अमेरिका एक कुशल व्यापारी की भूमिका घटा कर रहा है। इस वर्ष बड़ा फलत वृद्धि की आशा है। कुछ अनाजों के उत्पादन में २० प्रतिशत और कुछ में इससे भी ज्यादा वृद्धि की आशा है।

अनाज की ऊँची (और उधी चटती जा रही) दर ने अमेरिकी उत्पादकों को इस वर्ष लेती में एक खर्चों को आर्ध्रपित किया है। धन: अभी जख़ूरतमंद शक्तियों को उनके स्वार्थ-मुक्त अनाज मुद्देय कर अमेरिका अपनी 'शान्तिप्रिय' भूमिका भी बरकरार रहेगा और अगली फलत घाने पर फिर से अपने प्रभाव क्षेत्रों के विस्तार में मग्न हो जाएगा।

सत्ता-सघर्ष की इस धक्कामेले में भारत समेत सभी विकासशील देशों को अपनी भूमिका तय कर लेनी चाहिए।

देश की आर्थिक नीतियों को फिर से परखने की ज़रूरत है। सरकार के पास खाद्यान्न का भंडार होना चाहिए और इसके लिए उत्पादक को प्रोत्साहित देनी हागी। पाचवी पंचवर्षीय योजना के चालू होने से पहले एक वर्ष के 'योजना-अवकाश' की जो सिफारिश आर्थिक अनुसंधान परिषद के महा-मन्त्री एस० भूतसिन्घ ने की है वह बरदान बन सकती है यदि सरकार हठधर्मिता छोड़कर सारे धारायोजना पर पुनर्विचार करे।

गुल्लार मिडल का यह कथन ध्यान देने योग्य है अर्थिकसिद्ध देशों के अर्थिकतंत्र अर्थ-शास्त्री भी पश्चिमी राष्ट्रों से पढ़ कर आते हैं और इसलिए उनके अर्थशास्त्र का ज्ञान भी पश्चिमी बाजार के अनुकूल होता है। अपने राष्ट्र के लिए उनका ज्ञान निरर्थक है। भारत के लिए भी यह स्थिति लागू होती है। हमारी तमाम योजनाएँ उधार की अर्थक और सहायता पर चलती हैं।

मालगुजारी में अन्न

सरकार ने गेहूँ का थोक व्यापार अपने हाथ में ले लिया। पर कितना गेहूँ सरकारी भंडार में इकट्ठा हो सके ? इसके बदले यदि सरकार विकसित से मालगुजारी के रूप में पैसा ले कर अन्न ले तो बड़ी सहायता से अनाज का नियमित भंडार उनके पास रहेगा। किसान अनाज उपजाये, उसे बाजार में बेचे और फिर सरकार को पैसा दे—इस गोरख पथ में सरकार के हाथ अनाज का एक दाना भी नहीं छाता है। हमें वृहत् योजनाओं का, पानी का मोह छोड़ना चाहिए। छोटे जोन के सेतो की उत्पादन क्षमता कैसे बढ़ेगी, लघु उद्योगों का मान कैसे सत्ता होगा, आदि

हमारी योजना के विशेष पक्ष होने चाहिए। बड़े राष्ट्रों की धक्कामेले से स्वाभिमानपूर्वक अलग बने रहने के लिए आवश्यक है कि विवासाशील देश अन्न के मामले में आत्म-निर्भर हो जायें। और इसके लिए इस देश की आर्थिक नीति में गाँवों की क्या भूमिका होगी इसका स्पष्ट ध्यानन आवश्यक है।

जमीन का सवाल

दक्षिणी गालार्थ में किसी भी सामाजिक परिवर्तन की कल्पना, जमीन के सवाल को परे रख कर नहीं की जा सकती। इस जमीन से जीवन पानेवाली जनता के पुराणों की जिस आर्थिक धारायोजना में जगह न हो वह इस देश के लिए अनुपयुक्त है। सत्ता, सम्पत्ति आदि के केन्द्रीकरण की योजना, धाज की जड़ना को तोड़ नहीं सकेगी। विज्ञान के साधनों के उपयोग की दृष्टि में सबसे पीछे खड़ा गांधी का 'अस्तिम व्यक्ति' अपनी भूमिका नहीं देख पा रहा है।

वह अस्तिम व्यक्ति जब तक अन्न में खड़ा रहेगा, देश आगे घाने वाला नहीं है।

कस्तूरबाग्राम में गोसंवर्धन

इन्दौर, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत निकटस्थ कस्तूरबा ग्राम के कृषि क्षेत्र में कृषि एवं गो-संवर्धन के सघन प्रयोग हो रहे हैं। इन प्रयोगों का लाभ किसानों को भी मिले इस हेतु से किसानों के स्तर पर कृषि एवं गो-संवर्धन का एक प्रविष्टाएँ कार्यक्रम चलाया जा रहा है। पाठ्यक्रम तीन बच्चों मातृ की अर्थिक हैं। प्रविष्टाएँ अर्थिक प्रविष्टाएँ गो-संवर्धन में ६०, २० माहवार छात्रवृत्ति भी दी जाती है। अर्थिक जानवारी के लिए सहायक, प्रविष्टाएँ कृषि क्षेत्र, गो-कस्तूरबा ग्राम (जिला-इन्दौर) से संपर्क किया जा सकता है।

यह स्मरणीय है कि कस्तूरबा ग्राम का कृषि क्षेत्र एवं गोपालना प्रदेश एवं देश में आदर्श है। (ग्रामेय)

आजादी के बाद बदतर के पच्चीस साल

—श्रवणकुमार गर्ग

यह वर्षा फिर हवा में है कि देग से अर्ध जो हटाई जाए या नहीं? समस्त भारतीय भाषाभाषी के लिए क्या एक लिपि हो सचनी है? क्या राष्ट्रसंघ में हिन्दी के प्रवेश को सम्भावना के स्थान से उसे रोमन लिपि में लिखा जाना चाहिए? प्रादि-प्रादि।

कलित भारतीय प्रश्नों हटाओ समेतलत ने हाल ही में डा० वेदप्रसाद वैदिक के भाषण पर लेखों की एक पुस्तिका—अर्ध जो हटाओ क्यों और कैसे? प्रकाशित की है। डा० वैदिक अर्ध जो हटाओ धार्योलत के प्रवक्तव्यों में हैं। पुस्तिका में धरणी राक्षसता के कारण सम्बन्धित सभी तथ्य का ध्यान धार्योलत किया है।

सम्बन्ध ४० पृष्ठों की पुस्तिका में वैदिक ने एक भाषा को हटाने और दूसरी लिखी भाषा, या हिन्दी भाषाओं को स्थापित करने के सम्बन्ध में यथा सम्भव सभी सम्भावनाओं की वर्षा की है। वैदिक का मानना है कि देग की बीतरका प्रगति के रास्ते ध्वत तक केवल प्राणिए सख रह है कि हम एक विदेशी भाषा अर्ध जो को गुलामी की तरह धरनाप हुए है। अर्ध जो को मान का एक माधन होने के जाए इस देग में राने का, निनेपाधिहार का, प्राण का हथियार बन गई है।

अर्ध जो के सम्बन्ध में दिने जाने वाले तमान तर्कों की पुस्तिका में न लिफें भर्त्सना की गई है, भारतीय भाषाओं, विनोदकर हिन्दी को उचित स्थान प्राप कराने की जोर-दार माँग भी की गई है।

वैदिक नहीं दिन्नी स्थित धनार्योलतिया माध स्थान (हाल धांक इन्टरनेशनल स्टडीज) के विचार्यों रहे हैं और धर्योलतिया स्थान की विदेश नीति पर धरणा माध प्रवर्ध अर्ध जो के बजाय हिन्दी में लिगने के लिए उन्हीने ताने धरत तत्र स्थानत और सरकार के माहार्थ की और सपनका हाजिनत की है। धरने माध प्रवर्ध में सम्भावित माधघी प्राण करने के सम्बन्ध में उन्हीने विव्वर के एक धरने में धरित देगों की माध भी

की है। विव्वर के धोर देगों में अर्ध जो का स्थान क्या है? अर्ध जो किन्त हूद तक विव्वर भाषा है? धन्य देग जिना अर्ध जो के भी धरणा वाम-नाज वंसे चला लेते है? इन सब बातों को उन्हीने तजवीक न परला है और इन्हीनाए पुस्तिका में भाषा के सवाल पर विव्वर सन्दर्भ में वर्षा की गई है।

इसे हिन्दुस्थान का दुर्भाग्य ही मानना चाहिए कि भाजारी के पञ्चमी वर्षों के बाद भी एक ऐसे मामले को जिनके लिए किसी विदेशी महायता की धोर विदेशी मधि की ऐति कई छाटे छाटे राष्ट्र है ज। ६५७ के बाद कावाज हुए और धरणी धरणी भाषाओं के वंरो पर लडे हो गए और हम है जिन्हा 'रक्ती' बैसातिया धरणी वंरो से भी धरित प्यारी ह गई है। एक विदेशी गुलाम को खोद कर देग की भाषा का धरनाने में हम तगाधार बन रहे हैं।

जो मोग्य इस देग में अर्ध जो का बनाने रलया चाहते हैं, उनका मुख्य तर्क यह है कि अर्ध जो एक विव्वर भाषा है विव्वर के प्राधराय साग धान मारे महत्त्वपूर्ण धन्य और धर्योलत-निकन वंसाधिक उपलब्धिया अर्ध जो में माध उपलब्ध है। विव्वर के धन्य देगों के साथ हिन्दुस्थान वंसाधिक सुखीरडे में गीते रह जाया धार अर्ध जो का दामन छोड दिया, प्रादि प्रादि।

वैदिक न बतलाया है कि यह सारार भूड है कि अर्ध जो एक विव्वर-भाषा है। धरार धरने अर्ध जो भाषा के ज्ञान पर जिन्हा रहने की बनय ला कर कोई विव्वरयाथा पर विव्वर पड़े तो हूदत मुमकिन है कुछ एक बडे सगरी को खोड कर, जहा (धर्म में साथ) दूरी दूरी अर्ध जो बोलने वाले किन्त जाए, पर धन्य स्थानो पर भूने तत्र सर जाने की नीजड धा सचनी है। इमी प्रकरर विव्वर के धरंठ धा माहिल्य, क्या प्रादि की विरायन भी अर्ध जो में नहीं प्हाणु धरन-धरन देगों की धर्योलत

भाषाओं में सुरक्षित है। दर्शन शास्त्र के जर्मन पद्यों को अर्ध जो में पढने में बैसा ही मजा है जो रामचरित मानस, महाभारत और वेद-पुराणों को किसी कान्फेक्ट पाम हिन्दुस्थानी विचार्यों के अर्ध जो में पढने में है।

तमान गैरवाजिव तर्कों के धारार पर भी इस बात को मान लिया जाये कि अर्ध जो एक विव्वर सगर्न भाषा है तो सोचना यह है कि हिन्दुस्थान जैसे गरीब और धरनड मुल्क में एक भी भाषा को जीवित रहने का बहा तक धीरचित्य है ही गुलामी के काल में कुछ लोगों द्वारा एक बडे मुसुदाय के मोपण का और भाजारी के बाद इन्ही कुछ लोगों के लिए एक बडे मुसुदाय से धरितिका वीपण का हाईप्यार बन गई है। गुलामी में हम प्राधे गुलाम में, भाजारी में हूय पूरे गुलाम हो गये। जहा तत्र भाषा का सवाल है, भाजारी में ये पञ्चमी माल गुलामी के पञ्चमीस गाळों से भी बरतर मिड हुए है।

इस बात में कौन इन्कार कर सकया कि मुद्धी भर अर्ध जो जानने वाले न ग इन देग का शासन बना रहे हैं। ये ही हूय; मोग्य उन लालो वीप्य लोगों को उनकी वापनका के प्रयाणतक न उपाधिग्य देते हैं जिन्हीने धरणी भाषा और सस्कृति पर कार्य किया है, इन्ही लोगों का देग की पचन करडे जनता से तीया सम्बन्ध नहीं है और भाषा के दानत धानक और धरितन में बीच धरुबाधन का वाम करने हैं, देग की सान्धन्य धरना समद में बँडने वाले पाठ को से ज्यारा धरितिधियो में तमगम ला को निफें हाथ उठाने और विभिन्न धरमरों पर 'आन-धाउड' करने के लिए ही बँडे रहते हैं, वे निफें इमान्य नहीं बोल पाते कि अर्ध जो (और कई वर हिन्दी भी) उन्हे बोलना नहीं धाता और धरणी मान भाषा में बोलने में उन्हे कई कारणों से सकोच है। विव्वर मुद्धी पर सवालना दूरी जा सचनी है उन धर्योलत के बीच जो बडी गडी पीग देकर निवारियों के धम पर कान्फेक्ट में लिखा

(मिग पृष्ठ १५ पर)

उत्तरप्रदेश के लोकसेवकों के नाम संयोजक की चिट्ठी

श्रावण एक फरवरी को उत्तरप्रदेश में हमारी १०० दिवसीय पदयात्रा के १०० दिन पूरे हो गए हैं, परन्तु अभी एक गडवाल जिना शेष है। इसलिए हमने २० या २२ फरवरी को यात्रा पूरी करने का निश्चय किया है। दिसम्बर और जनवरी में यात्रा चमोली, अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जिले के दूरस्थ गांवों में चली। इस साल शीतकालीन वर्षा हुई ही नहीं, इसलिए कहीं वर्षा का सामना नहीं करना पड़ा।

पिथौरागढ़ जिले की यात्रा में वहाँ भी शामिल हुई, इसलिए स्थान-स्थान पर स्त्रियों की सभाएँ हो गयीं। वहाँ के विद्यार्थी नेता हयानसिंह तड़ागी ने भी तीन दिनों तक हमारे साथ साथ यात्रा की। अल्मोड़ा के विद्यार्थी नेता चन्द्रशेखर पाठक ने युवकों की एक गोष्ठी का आयोजन किया था। इसमें उ० प्र० तरुण शक्ति सेना के अध्यक्ष कुँवर 'प्रमूख' टिहरी से और प्रतापसिंह श्रीनगर (गढ़वाली) से आकर शामिल हुए। हाल ही में खुलें कुमायूँ और गढ़वाल के विश्वविद्यालयों का पाठ्यक्रम क्या हो, इन विषय पर उनही विचारोत्तेजक चर्चा हुई। वे छात्र नर्सियों की छुट्टियों में 'भ्रमकोंट से आराकॉट' तक की पदयात्रा करने के बारे में सोच रहे हैं। अक्टूबर नेपाल की सीमा पर बसा हुआ भारत का अग्निमय गांव है और आराकॉट हिमाचल प्रदेश की सीमा पर स्थित उत्तर प्रदेश का अग्निमय गांव। इस प्रकार एक छोर में दूसरे छोर तक पूरे उत्तराखण्ड की यात्रा हो जायगी। जब मिले हम की चर्चा नैनीताल में विश्वविद्यालय के उत्कृष्टवर्षीय डा० रवीन्द्रत पत से की तो वे उद्यत पड़े, वहने लगे इन गडवनों की मुझे से मिलायीं। मैं पाठ्यक्रम और यात्रा के कार्यक्रम के बारे में विस्तार में उनसे साथ विचार-विमर्श करना चाहता हूँ।

सम्बन्धन तराई के विषयमें लोग २० फरवरी को एक घंटे जगल में नैनीताल जिना सर्वोदय महल में सभी दीपनगर गणेशों से हुई बैठक में उन्हें और मुझे—दोनों को

आश्चर्य चकित कर दिया। ये मुझ से मिलने गरम पानी गये थे, पर मैं तो अपने साथी को नैनीताल के कार्यक्रम की तैयारी के लिए भागे भेज कर चकेला। रूंदल के रास्ते से बड़ रहा था। वे भुवानी से गांव के लोगों को साथ लेकर मुझे खोजने-खोजने भागे बड़ रहे थे। नैनीताल से छोटे पहाड़ी मार्ग से रामनगर पहुंचने के बजाय हमने हलद्वानी, शानिपुर, विच्छा, खड़पुर, बाजपुर, काशीपुर होते हुए दस दिन बाद रामनगर पहुंचने का निश्चय किया। तराई का यह क्षेत्र हरित भक्ति का केन्द्र है और यहाँ केवल २०-२२ वर्ष से ही जगलों को काट कर और घास को उखाड़ कर आबादी बसी है। नई बस्तियों में सैनिकों, स्वतंत्रता-संग्राम के संग्रामियों, पंजाब और बंगाल के विस्थापितों के अलावा कुछ भूमिहीन भी बसे हैं। परन्तु सम्पन्न तराई के बीच भी बिहार और पूर्वी उ० प्र० की जैसी शैत-भजदूरी बंधे विपन्नता जगह-जगह फैली हुई है।

उपवास दान पहाड़ों में इनकी गरीबी है कि उपवासदान की माल भर की रकम एक साथ देने के लिए हम लोगों को तैयार ही नहीं कर पाये। कितना का अनुमान था कि एक व्यक्ति एक बार एक रकमा तो खाती ही है, परन्तु पहाड़ी गांवों में मुखिया से आठ घंटे का हिसाब बंटता होगा। हम अभी इस संयोज में हैं कि किस प्रकार गरीब से गरीब लोगों को इसमें शामिल करें। उनके पास हाल भर की रकम एक साथ देने को नहीं है। एक गांव में २० बहनों ने उपवासदान करने का निश्चय किया है। वहाँ वे कार्यक्रमों पर सोच रहे हैं कि उनके उस दिन की बचत का राशन बेच कर जो रकम प्राप्त हो वह सर्व सेवा संघ की भेजी जाये। परन्तु तराई क्षेत्र में हमें बहुत आसानी से उपवासदान मिले। नैनीताल जिले के ११ लोकसेवक पहले ही उपवासदान की रकम भेज चुके हैं। प्रतापपुर गाँव में एक गांव २२ लोगों ने उपवासदान किया। इसी प्रकार अंतर्गत में १० लोगों ने। अब तब हमारी यात्रा में

दौरान ५१ उपवासदान हो चुके हैं। हमने इस यात्रा में नैनीताल के लिए १०० उपवासदान तक का लक्ष्य रखा था। यहाँ के साथी इनने उत्साह के साथ इसमें जुटे हैं कि सर्वोदय पक्ष के दौरान वे इसकी पूर्ति कर लेंगे। उपवासदान देने वालों में एक साम्यवादी कार्यकर्ता जमुनासिंह भी हैं। उनका कहना था: "सर्वोदय की मुझे आज तक जानकारी नहीं मिली थी। आप लोग सोचिये थे। अब जागे हैं तो मेरा दान भी हाजिर है।" न मालूम हमारे जागने के इत्तहास में कितने ऐसे लोग हैं? सारे देश से ५० हजार उपवासदान की यात्रा की माग के अनुसार आबादी के हिसाब से हमारे प्रदेश का हिस्सा लगभग आठ हजार का होता है।

भैसागाड़ी वाला 'सर्वोदय' का ग्राहक: हम हलद्वानी से सातकुम्रा आये थे। स्कूल के लड़कों ने रात को हमारी सभा का ऐलान किया। हमारे पास लोगों को आकर्षित करने के लिए इसके सिवा कुछ नहीं था कि हम पंदल चल कर आये हैं। बहुत थोड़े लोग सभा में आये। जब 'सर्वोदय' का ग्राहक बनाने की क्षणिक की तो बोर्ड उत्तर नहीं मिला। जिनके हम क्षीर्ण थे उन्होंने यह कर टाल दिया कि हम राजनीति वाले हैं। हम उन्हें यह नहीं समझा सकते कि 'सर्वोदय' विचार उनके लिए बर्जित नहीं। परन्तु मगस के बीच म एक आदमी ने अपने बेटे के हाथ में एक रुपये का नोट देकर मेरी ओर बढ़ाया। मैंने कहा, हम पैसा नहीं रखते। तागो ने कहा वह शराब पीना है तो मैंने कहा, कि हमारा सत्कार ही करता है तो शराब छोड़ो एक सबलर कीजिए। उनमें धानी वषों पुरानी आदत बही छोड़ दी। उनमें पूछा, "मुझे हमेशा गर्द्विचार मिलता रहे। इसका क्या उपाय है?" हमने कहा 'सर्वोदय' पत्रिका मगसाये, वह जबसे पत्र रूप में निकाल कर श्रेष्ठ बन गया। वह न व्यापारी का और न तराई का बाई सम्पन्न विगान, वह था भैसागाड़ी हलाने वाला मामूली पढ़ा-लिखा राजबहादुर मिश्र।

हृदपुर में गणतन्त्र-दिवस के लिए धायो-
जिन धाम तथा में धायोजकों ने हमें भी
बोलने का प्रवसर दिया, पर माधियों की राय
की कि पहले दिन विशिष्ट लोगों की एक
सभा की जाए। इस सभा की खबर पाकर
एक प्रजातन्त्र व्यक्ति भी पहुँच गये। सभा की
समाप्ति पर उन्होंने हमारे हाथ में २० रुपये
रख दिये। बटवें लगे "यह विनाश जो की
पश्चिमा ने लिए है—'मंशो' का चन्दा। वे
मुरादाबाद जिले के कस्बा भीरपुर के किराना
हुजानदार हरदत्त मिह्र थे

इन यात्रा के दौरान जब एक सर्वोच्च
पत्रिकाओं के २०० बाहर बने हैं, बाबा की
एक माय की माय में एक छाटा मा
योगदान।

बापको मतदान 'शिक्षण के निर्वाचन
में कई अनुभव हो रहे होंगे। लोगों को
बुनाओ के विदोषों—धायप्रसता परनिन्दा
घोर निष्प्राभाषण से परिचित करते हुए
साराब, दबाव, घोर प्रलोभनों से मुक्त रह
कर महापौरकार का प्रयोग करने की सलाह
हम देते हैं। वैसे यहाँ पर मतदाना शिक्षण
के सिलसिलेवार कार्य का कई स्थान क्षेत्र
नहीं बना है, परन्तु जिन क्षेत्रों से हम पुत्र
रहे हैं वहाँ के लोगों को एक नया विचार देने
की कोशिश कर रहे हैं।

—मुन्दरलाल बहुगुणा

पाते हैं घोर उन बच्चों के बीच जो दम
तोड़नी हमाराओ की टपकती छत्रों के नीचे
उभर, गर्मी घोर बरसात में पड़ी टाटपट्टियों
पर टट्टी घोर पैसाय की बटवू के बीच बेन-
खोर मिठाकों के द्वारा गिला शावत करते हैं।
निश्चिन्ता ही नहीं भी समानता नहीं ही
सकती। कान्ठेक वा विद्यापीं देस का शासक
बनना है घोर पाठशाला का विद्यार्थी उमका
कतक, बापराभी घोर दुःखकर।

प्रश्न यह भी है कि देश की शिक्षा के साथ
घोर नौकरियों की प्रतिस्पर्धा के साथ
अपेक्षों का क्या बाधक रखा जाए? क्या
एसा नहीं हो सकता कि जो स्थान हैं उन में
कॉच जर्मन स्थी घोर जापानी भाषा का है
वह अपेक्षों का भी हो जाए। यानी कि
अपेक्षों न्याय स्व, राजकाज कारखानों
कोज धन्यता पाठशाला प्रयागशाला घोर
पर-डांग-बाजार से हटा ली जाय घोर पुष्प-
कानयो घोर विदेगो भाषा शिक्षण सस्थाओं
तक सीमित हो जाए जिनमें पटना हो पड़े।
भारतीय भाषाओं को इस प्रकार अपनी
व्यक्तिगत का पूरा मोहरा मिलेगा। जिस
दिन यह शुरूआत होगी उस दिन कुछ विना-
चुने अपेक्षों के धारदार देश का भविष्य नहीं
बना-बिगाड पाएँगे कम, जर्मन, जात घोर
जगान प्रादि देगों के दूशावामा में निमुक्त
रिचि जाने वाले भारतीय राजदूतों को धानना

परिचय पत्र अपेक्षों में देने घोर अपना काम
अपेक्षों में करने में तब गर्म धायपीं, वे स्त्री,
जर्मनी, मॉच घोर जापानी भाषा सीखेंगे घोर
बहा हो जनता तक भारतीय भावनाएँ ठीक
से पहुँचा पाएँगे। जब ऐसा होगा तो उत्तरा-
खण्ड के पहाड़ों से अपेक्षों पहाड़ों के डर से
मैदान की होइगा। मैं बर्तन धोने के लिए धर
से भागकर भागे वाले बच्चों की वाड हू
जाएगी। घोर जब तक यह शुरूआत नहीं
होगी देश के शासक बोलने रहेंगे घोर शासित
गुणों की तरह मुन्न रहेंगे।

किमी घरव देश की बहानी है। राजा
न राहु मकड़ क मनप देस की महिलाओं से
घायद किश कि वे मोना चादी पहन कर न
पारनें घोर उन राहु के बाप हेतु दान में दे
दे। किमी न राजा की बात पर ध्यान नहीं
दिखा। राजा न दूरोर घायपणा की कि बनेव
वेगसयें ही गाना चादी पहन कर निवल
मकरी है। दूरोर दिन किमी भी भद्र महिला
न राष्ट्र-सामग्य के विरुद्ध सोना चाँदी पहन
कर निवलते की हिम्मत नहीं की। शायद
इस देश में भी अपेक्षों के वारे में एक ऐसी
ही घायपणा की जरूरत है।

बैंडिन की बुकिरका ने भाग में सर्वर्न
म काफी रासक तत्वों को उजागर किया है
घोर भाग के सत्ता पर इस वान की घुरी
सर्कार को है कि अपेक्षों के बिना हिन्दुस्तान
समाजवाद जल्दी खत्म कर सकता है।

प्राणीय भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का
हम अभिनन्दन करते हैं

● साध रंग ● सूतो वस्त्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इगडस्ट्रीज प्रायवेट लि०
(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :
२०१, डा० सी एन. रोड
बम्बई-१

कारखाना :
मैदानी टैक्स्टाइल
मिल बम्हाउड,
मोनापुर लेन,
मुम्बई

जे. पी. गुजरात में

● गुजरात सर्वोदय मण्डल के प्राणह पर जयप्रकाश नारायण महमदाबाद पहुंच गये हैं। ११ फरवरी को प्रादोलन द्रष्टा राजधानी में पहुंचते ही जे० पी० ने प्रवचन पर बैठें विचारियों से चर्चा की और दूसरे दिन उनकी उपस्थिति में विचारियों ने प्रवचन बोडा। जे. पी. गुजरात में प्राध्यापकों, विचारियों, नागरिकों और सर्वोदय कार्यकर्ताओं से मिल रहे हैं। स्थिति का अध्ययन करने के बाद उनकी सलाह पर गुजरात सर्वोदय मण्डल प्रस्ताव घाने का कार्यक्रम बनायेगा।

जे. पी. से मिलने के लिए गुजरात के सर्वोदय लोगों का एक शिष्टमण्डल = फरवरी को दिल्ली भाया था। नारायण देसाई, कादि भाई भादि इस शिष्टमण्डल में भाये थे। और उन्होंने जे. पी. से कहा कि सर्वोदय कां कामों का ही नहीं बल्कि गुजरात के विचारियों, प्राध्यापकों, बुद्धिजीवियों और ताल-रिकों का भी प्राणह है कि ये गुजरात भायें। जे. पी. मउडाना प्रशिक्षण के लिए इलाहाबाद और वाराणसी का कार्यक्रम बना चुके थे। यह कार्यक्रम उन्हे रद्द करना पडा। उनको जगह सर्व सेवा सपके प्राध्याप विचारणा बड्डा प्रव उत्तरप्रदेश का दौरा कर रहे हैं।

● उत्तरराष्ट्र के जेलनार बाबर, रंवाई प्रादि क्षेत्रों की एक माह की पदनात्र करने वाली टीनी का स्वागत = फरवरी की शाम हिमालय सेवा सघ ने नई दिल्ली में किया। पदनात्रा में भाग लेने वाले योगेशचन्द्र बहुगुणा, सुरेन्द्र दत्त भट्ट और गंगापताइ की बैठक में उास्थिन थे।

योगेश भाई ने पदनात्रियों की और से अनुभव सुनाते हुए कहा कि उन्होंने बतौर गावों के लोगों से सम्पर्क किया और तीन सी वीस किलोमीटर की यात्रा की। कुछ क्षेत्रों में प्रथिकाय कोल्डा जाति में ही स्त्रियों को बडे शहरो में बंध्यावृत्ति के लिए ले जाया जाता है। इसके कारण प्राधिक हैं। एव सामाजिक कार्यकर्ता की हत्या करना दी गयी क्योंकि वे बंध्यावृत्ति, पशुबलि प्रादि क्रूरियों को खिलाने काम कर रहे थे।

● गांधी प्राति प्रतिष्ठान, भवाडे, और इमैलके के इण्डिया डेवेलपमेट प्रुष्टात्रा दिल्ली में बुलायी गयी दो दिवसीय गोष्ठी में इस बात पर जोर दिया है कि ग्रामसभाओं को राजनीति से दूर रखा जाये और उन्हे इतना सशम और सक्रिय किया जाये कि वे ग्राम विकास का काम स्वयं कर सकें यह भी जरूरी है कि ग्रामसभाए इतनी आगरुक हों कि सरकारी मशीनरी के ढीले-ढाले रखेये और अष्टानार प्रादि को सवितय धरना और विरोध प्रदर्शन से टोक कर सकें। गष्ठी में कहा गया कि इन ग्रामसभाओं का अपने साधन विकसित करने के लिए नकतकी व्यवस्थापकीय और वित्तीय सहायता भी दी जानी चाहिए।

१० फरवरी को हुई इस गोष्ठी में चवालीस स्वेच्छक सस्थाओं, सरकारी एज-निसियों और ट्रेड यूनियनों के से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। गोष्ठी का उद्घाटन जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में राष्ट्रपति गिरी ने किया था। (विस्तृत रिपोर्ट भगले प्रक में)

जनता का आरोपनामा (पेज १० से जारी)

के प्राक्रमण से उसना मुख्य स्वरूप प्राधिक और सामाजिक था। गाँव में हित-सम्पर्क नहीं हित-भान्ध, हित-समन्वय ही इसके लिए सभी को भागीदारी एव सर्वानुमति से नम करने के सत्कार देने का कार्यक्रम हुआ। उसमें जोर रहा ग्राम-समाज, ग्राम-प्रायोजन और ग्राम स्वराज पर।

प्राज की परिस्थिति में हमारे सामने तीसरी चुनौती उपस्थित हुई है। उसका मुख्य स्वरूप है राजनीतिक और नैतिक। उच्च लोकतंत्र के लिए स्वतंत्र नागरिक की स्वतंत्र लोककति चाहिए। ऐसी स्वतंत्र लोककति के प्राभाव में ही प्राज सारी दुनिया में परम्परागत लोकतंत्र कुटिल है। और दूसरा है अष्टाचार। उसमें से मुक्त हुए बिना सही माने में मानव-मुक्ति अर्थभव है। हर प्रकार के स्थूल-मुदम अष्टाचार में से मुक्ति। इस के लिए प्रव हमारे प्रादीयन में लोकनीति का कोई भीया कार्यक्रम लुडने को प्रात्यन

● देवनागरी को देग की भाषाओं की जोड़ लिपि बनाने पर विचार करने के लिए ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में २३ और २४ फरवरी को एक सम्मेलन बुलाया गया है। इस सम्मेलन में भारत की विभिन्न भाषाओं के जान-कार व्यक्तिगो, लेखको, समादको और बुद्धिजीवियों के प्रलावा राजनेताओं को भी प्राामनित किया गया है।

● राजघाट प्राहिमा विद्यालय, दिल्ली की पहली प्रामीए माला मेरठ की नजदीक खिवाई गाव में प्राधी प्राड दिवस १२ फरवरी को खुल गयी है। लेगाई बाग्या में सुरेशचन्द्र गर्भा और रमेशचन्द्र शर्मा कांय करंगे और वही स्वामी रूप से रहेंगे। यह प्रावा राजघाट प्राहिमा विद्यालय में प्राने वाले युवको के लिए प्रामीए केन्द्र के नाते भी काम करेगी। १२ फरवरी को इस गाव में प्रायोजित एक सभा में केन्द्र ने वाक्यावदा कामनाज शुरू किया। सभा को विद्यालय के सचालक देवेन्द्र कुमार ने सम्बोधित किया।

प्रावश्यकता है। गुजरात में प्राज की विधान सभा का विसर्जन करके नये चुनाव में जनता के उम्मीदवार, जनता की सरकार प्रादि का हमारा कार्यक्रम हमें उठाना चाहिए।

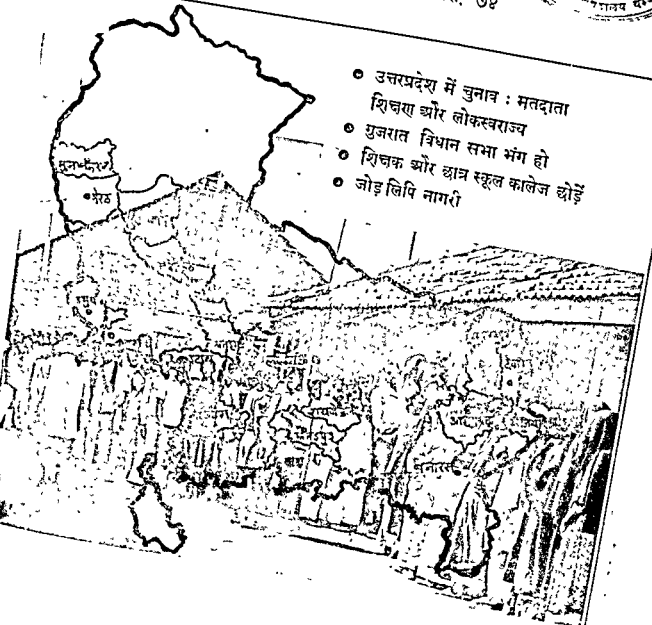
यही प्राज की चुनौती है। गांधीजी ने प्रापने दमोपनाम में कहा था कि प्राधिक, सामाजिक, एव नैतिक स्वतंत्रता प्राणी घभी बाकी है। यह प्रायेणी तभी अर्थों से मिली राजनीतिक स्वतंत्रता वास्तविक बनेगी। प्राज इन तीनों पहलुओं को एक साथ लेकर स्वतंत्र लोककति के जरिये सही माने में जनता का प्रजापन भी प्राज देग देश को ले जाने का काम क्या प्राज हमारा सर्वोदय प्रादीयन उठा सकेगा? उन्नामत्र कति का ऐसा एक समग्र कार्यक्रम प्राज उठाना होगा। १९४२ में इस देश को जनता ने विदेशी शासन से मुक्ति का उद्घोष किया था। प्राज प्रा विदेशीय शासन से मुक्ति का फिर से उद्घोष यह करेगी? प्राज की चुनौती की क्या सर्वोदय प्रादीयन उठा सकेगा?

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २५ फरवरी, '७४



- उत्तरप्रदेश में चुनाव : मतदाता शिक्षण और लोकस्वराज्य
- गुजरात विधान सभा भंग हो
- शिक्षक और छात्र स्कूल कालेज छोड़ें
- जोड़ लिपि नागरी



भूदान-यज्ञ

२५ फरवरी, '७४

वर्ष २० अंक २२

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कायंकारी सम्पादक : प्रभाय जोशी

इस अंक में

- उत्तर प्रदेश के मतदाता क्या करें ३
- विधानसभा मंग हो ५
- विभीषण का राजतिलक मत रोको — प्रभाय जोशी ६
- शिक्षक और छात्र हड़ताल कर दें — विनोबा ७
- नागरी देश को जोड़ने वाली लिपि है — देवेन्द्र कुमार ८
- धामस्वराज्य का रास्ता सामने है — कुमार प्रताप १०
- जैविक खाद : भूल समस्या का हल ११
- सादी श्री रामोद्योग किनके लिये है — डारकाणाय लेले १२

राजपाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

विरोधी पार्टियों की गैरजिम्मेदाराना

हलतों के बावजूद सदन के बजट अधिवेशन की शुरुआत मंभीर हुई है। विपक्ष के कई वर्षों में आर्थिक मोर्चे का इतना निराशासकीय चित्र राष्ट्रपति के उद्घाटन भाषण में नहीं आया था जितना इस बार आया है। इसमें कोई मन्हेह नहीं कि यह वर्ष आर्थिक रूप से आजादी के बाद का सबसे कठिन वर्ष है। तेल के सफट ने हमारी घाटे की अर्थव्यवस्था को अराजकता की हालत में ला पटक है। यह सफट और भी कई देगों के सामने है। बाहर से आने वाली चीजों के भाव चौगुने हो गये हैं लेकिन जो चीजें हम बाहर भेजते हैं उनके भावों में मामूली वृद्धि हुई है। माला जा सक्ता है कि इस सफट पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। लेकिन तेल का सफट ही एक मात्र सफट नहीं है जिम्मे हमारी अर्थव्यवस्था को इनके बावें को में डबेता है। सफट पटने से मोजूद था और वह हमारा अपना बनाया हुआ है। तेल से तो आम बृष्ट और भइकी भर है।

राष्ट्रपति ने कहा है कि देश भर में महंगाई और अभाव का कारण जमापोरी सट्टेबाजी और हड़ताल तथा बन्द हैं। ये कारण कोई नये नहीं हैं। गांधी ने स्वयं राष्ट्रपति इन कारणों को दुखाने आ रहे हैं और बार-बार कह रहे हैं कि जमापोरी और कालेबाजियों के निराप सत्य कार्य-वाही को ज़ियेगी। लेकिन सरकार सत्य कार्यवाही की जितनी धोरणगाए करती है बाजार से उतनी ही तेजी से चीजें मायद होतीं जाती हैं और भाव बढ़ने जाते हैं। अनाज की बमूनी दर सभ्यारी धोरणगाओं में निरन्तर और दिना जाता है। उनके दाने भी सरकार के भण्डार में जमा नहीं होते। सार्वजनिक विभागों की टीक करने के जिनके बंदों को धोरणगा की जाती है उतनी ही व्यवस्था विपडनी जाती है। बावें बाजार में सब निच मज्जा है। अभाव बढ़ी नहीं है। है तो पैसों का है और इस अभाव को दूर करने के लिए सरकार मीट धोरणगी जाती है। घाटे को बहाला ही सज्जद सरकारों साम्यता में उने बय करने का साम्य है।

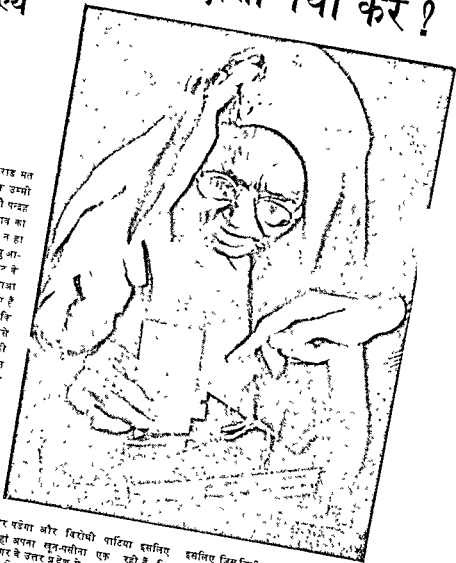
घाटा आर्थिक नहीं है

जमापोरी और कालेबाजारी बड़ी है तो इसका दोष सरकार के लिस को है? सरकार जानती है कि खोरी बहा होनी है और कौन कत कितना अनाज बाजार और सरत भंडार से बाहर है इसका भी अन्दाज को है। कालेबाजारियों को भी जानती है। फिर क्यों इनके खिलाफ कार्यवाही नहीं होती? अनाज के और महंगाई के विप्लव प्रदर्शन करने लोग आर्थिक सुरक्षा कानून और रक्षा कानून के तहत पकड़े जाते हैं। जमापोरी और कालेबाजारियों ने नहीं पकड़े अनाज की लेबीछोटे विमानों से बुरी तरफ की जाती है लेकिन बड़े विमानों पर म का कोई जोर नहीं चलता। जमापोरी कालेबाजारी इसलिए बन्द नहीं होती सरकार में पाल न इतना राजनीतिक है न इतनी प्रशासनिक सज्जा है कि यह सब बंद गये। नीररघारी और मात धाराधरियों के बीच को काला मा पच रहा है उसे तोड़ने की तागत सरकार में नहीं है। राज्य सरकार अनाज की बमूनी को कभी भी मरु में नहीं दिया है। बड़े और प्रभाव विमानों को नाराज करने का साह्य भी राज्य सरकार में नहीं है।

फिर राष्ट्रपति विगने लिए यह कहते हैं: उस जनता के लिए जो हम गाई के लिए जिम्मेदार नहीं है? गोष्ठी में राष्ट्रपति जब अपना जो भाषण दे चुके तो जयप्रकाश नारायण विनम्रता से माय बजा—'मुझे धारण कि आठ उतनी अल्पी-अल्पी कायें बर मेकिज सरकार उनमें मे एक दर भी म नहीं बनगी।' सरकार अथन नहीं कह म क्योंकि मया उसके पास मने ही अपार अधिभार उसके पास होता थन नहीं अधिभार आया और विप्लव में आ जिम्मा घाटा सरकार में आर्थिक घाटे भी उगादा है।

उत्तर प्रदेश के मतदाता क्या करें ?

मत का मूल्य
समझें और
समझकर
वाटे दें



उत्तर प्रदेश के लगभग पांच कराड मतदाना इत सप्ताह चार हजार से अधिक उम्मीदवारों में से विधानसभा के चार सौ पंद्रह विधायकों का चुनाव करेंगे। इस चुनाव का लेकर मतदाताओं में बाह रीज ज़ा या न हा पाटियों और उम्मीदवारों को तर्क स पुआ-चार प्रचार हो रहा है। कागज़ के मक्खन के बावजूद सारे अवसर अपन मतदाताओं की सम्झी-सम्झी ऐसी रायों से भरे हुए हैं जिनमें अटनसबागिया लगायी गयी है कि बीन बड़ा जीत सकता है। बीन जतिन जितने बोट देनी और अलमस्यक इस बार विसयी तरफ जाते लगते हैं। जो जगवार जिस पार्टी का है या जिनकी आर भुंका हुआ है वह उमी पार्टी के जीतने की मभावनाए बना रहा है। इन परस्पर विरोधी रायों का पड़ने वाला मतमानुस इसका कोई अदान नहीं लगा सकता कि उत्तरप्रदेश के मतदाताओं के मन में क्या है ? पाटियों ने तो खीर लीक-मिठाण को तिलाजति दे ही दी है जगवारों में भी यह इच्छा नहीं दिखाई देती कि कोई तटम और मन्चा बिज लीगो के सामने रखें। लोकमिठाण के माध्यम ऐसा लगता है कि चुनाव के समय प्रचार के माध्यम हा जाते हैं। उत्तरप्रदेश के चुनावों को दिखे जा रहे इस अत्यधिक महत्व का कारण यह है कि पाटियों की मन्चा में उत्तरप्रदेश का राजनीतिन बिज सारे देश का नजारा बदनमा है। जो पार्टी देश के इस सबसे बड़े राज्य में साबनवर हो जाती है उसे विस्वांग हो जाता है कि अपने बूरे देश को पकड़ कर निभा। बर्लिस के लिए उत्तरप्रदेश के चुनाव महत्व केन्द्रीकरण के अमर दिल्ली

पर पड़ना और विरोधी पाटिया इसलिए बहुत अपना मून-पतीना एक रही हैं कि अगर के उत्तर प्रदेश में काईस को हरा दें तो फिर दिल्ली की सरकार को जगमगाया सबसे ज्यादा मतदाता हैं जेकिन यह एक पूर्ण है कि हपारी प्रजातानिक व्यवस्था केन्द्रीकरण के गणित पर टिकी हुई है। बोर्ड भी पार्टी इस केन्द्रीकरण के विनाक नहीं है

इसलिए जिस किसी पार्टी को गोठी भी समा-बना उत्तरप्रदेश में दिली उतने अपनी पूरी तागत वहाँ लगा दी है। मनीजा यह हुआ है कि उत्तरप्रदेश का चुनाव इन दिनों देश का केन्द्रबिन्दु हो गया है। सारी चीजें अपने आमनास घूम रही हैं। हालत इतनी बिगड है कि एक अवसर को तो जिलेयु परा कि उत्तरप्रदेश के कारण सरकार देना को प्रन सदी है। जितना पैसा इनटु लिया गया है,

बितनी जीवंत सगामी हैं, बितने वायंवर्ता भंगे गये हैं इसका गणित अमर लगाया जाये तो अर्धसे किसी युद्ध के आरम्भों से कम नहीं निकलेंगे। अतएव प्रत्यारोप और बीचड़ उद्घाटन से कोई नहीं बचा है। चुनाव प्रजातंत्र का पवित्र पर्व जखर है लेकिन उसके कारण सामान्य जीवन इस तरह गड़बड़ायेगा तो प्रजातंत्र बँके चरा सगना है? लेकिन चुनाव एवं अपनी दौड़ है और उसमें पड़ो हुई पार्टियों को मनदान से ज्यादा दूर दिवार्द नहीं देता। ज्यादा से ज्यादा बुद्धिमान देव सक्ती हैं। सबसे तौर तरीके समान हैं और जिसे जहाँ मौका मिलता है वह तत्काल उस का लाभ लेना चाहता है।

इस यु आधारी प्रचार और नाटक के बीच महगाई, अभाव और गरीबी से दुखी मतदाता उम्मीनी और भूम है। यह सारा नाटक उसी का मन जीतने के लिए बिदा जा रहा है जिसमें उसका कोई रोल नहीं है। पात्र वर्ण में एक बार उसने प्राप्तप्राप्त पार्टियों कोल-नगाड़े बजा कर उसी तरह शोर करती हैं जिस तरह शिबारा को पार्टियाँ बरती हैं। एक बार गिरकर हाथ आया यानी मतदाता ने वोट दे दिया तो फिर वह अपने भाग्य पर छोड़ दिया जाता है। वह हर उम्मीदीवार को अपने को जनता का उम्मीदीवार नरुता है और जीतने पर अपनी जीत को जनता की जीत बह कर फूलों से सदा जुलूस में घूमना है देखते-देखते पार्टी का विधायक हो जाता है और राजधानी में जाकर ऐसा खेल खेलने लगता है जिसका खेल सही से कोई बालसा है न जिसमें जनता जनता है। कुम्भी और शोभायात्राओं के बाद देवता अपने भागन पर बिराज जाते हैं और बिराजे के पुजारी मन्दिर के पास बन्द कर देते हैं। देवताओं को पाच साल बाद फुरसत मिलती है।

लेकिन इस नाटक के लिए पार्टियों और विधायकों को दोष देने में कोई मतलब नहीं है। मनदाता को अपने पवित्र अधिपकार का भान नहीं है। वह राजा है लेकिन न अपना राज्य जानता है न राज्य चलाना जानता है। ऐसा भी अक्षर लपना है कि वह चाहता ही नहीं कि उसका राज्य चले। 'कोउ नून होय हमे का हान्दी' वाला जनमानस अपनी हानि और हानत से बेखबर है और जानता नहीं है

कि उसे अमर प्रभाव नहीं मिल रहा है, तब नहीं मिल रहा है, लकड़ी नहीं मिल रही है तो बगो नहीं मिल रही है। अमर वह खुद अपने पात्र पर गड़ा नहीं होता और अपना भाग्यविधाता बनना तब नहीं करता तो इसमें दोष किसका है? वह आजाद देश का आजाद नागरिक है लेकिन उसे अमर अपने नागरिक अधिपकारों की चिन्ता नहीं है तो पार्टियाँ और मरकराँ तो वह सब करेगी ही जो वे फिखले पन्चीम वर्णों से बरती घायी है। मनदाता जैसा कि जयप्रकाश नारायण अक्षर बहते हैं बालू के बरों का तरह बिलेरे हुए हैं वे एक प्रजातांत्रिक रम्य निमावे हुए हैं वे प्राये हैं और और अक्षर जानि धर्म, क्षेत्रीयता आदि के आधार पर बोट देने हैं। उनके बोट खरीद लिये जाने हैं क्योंकि वे बेचने को तैयार हैं। मनदान लिये बिना उनके बोट डाल दिये जाते हैं क्योंकि उन्हें इसकी चिन्ता नहीं है कि उनके बोट का क्या होता है। बल प्रयोग फिखले बुद्ध चुनावको से बंद गया है। भागों के शक्तिशाली मुठ हरजिनो और दूसरी नीची बही जाने वाली जातियों को डण्डे के जोर पर बोट डालने नहीं जाने देते।

पार्टियाँ मतदाताओं की चिन्ता नहीं करती और विधायक उनके विश्वास का समान नहीं करता तो इसका कारण यही है कि स्वयं मतदाता चिन्ता नहीं करता कि उसके मत क्या हुआ और जिस व्यक्ति को उन्होंने चुना था वह क्या कर रहा है। फिखले बल वर्णों से मतदाताओं को समजित करने के छुटपुट प्रयास समाजसेवी संस्थाओं ने लिये हैं। लेकिन ये सफल नहीं हो पाये क्योंकि मौजूदा हालत में वोट एक हवाई चीज है। वोट का सीधा सम्बन्ध नागरिक के जीवन और उसकी सम्पत्तियों से कायम नहीं हो पाया है। अमर ऐसा होता तो मतदाता अपने प्रतिनिधि के जाकर पूछना कि उसकी हालत दिनों दिन बदतर क्यों हो रही है। लेकिन वह जिसे चुनाव है उस पर अज्ञ रहने के बजाय बिराधी पार्टियों के जुलूस में शामिल हो जाता है।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि वोट को वोट देने वाले के जोर से कैंते जोटा जाये? चार-पाँच सात या मनदीय चुनाव क्षेत्र और-भाय-साया लाय या विधानसभा क्षेत्र दशा-बडा हँना है कि उनके मतदाता एक जगह कभी इकट्ठे नहीं हो सकते और योडे बहुत बड़ी इकट्ठे हो तो पार्टियों उन्हें बंधा देती हैं। जन तक मतदाता एवं ऐसे संस्थाओं में नहीं आते जिसमें वे धामने-सामने बैठकर अपनी सम्पत्तियों के हल पर विचार करके

उन्हें प्रभाव में नहीं लाते तब तक उन्हें न तो अपने मन की ताकत का अन्वय होगा न यह विश्वास पैदा होगा कि अपनी समस्याएँ वे खुद गुलामा सकते हैं। देश इतना बड़ा है कि इसमें प्रत्यक्ष प्रजातंत्र संभव नहीं है। प्रतिनिधित्व को एक लम्बी और मारक परम्परा देश में है। प्रजातंत्र में पार्टियों ने इस उरामीय प्रतिनिधित्व की भावना का काफी लाभ उठाया है। अमर देश के प्रत्येक नागरिक को अपने वायं और निर्णय के लिए जिम्मेदार और जागरूक बनाना ही तो इस प्रतिनिधिक प्रजातंत्र को समाप्त करना होगा। ऐसे छोटे-छोटे और परस्पर निर्भर समुदाय गठित करने होंगे जो अपनी समस्याएँ स्वयं निपटायें और क्षेत्र की समस्याओं और मामलों को अपनी परिपदों से और राष्ट्रीय मामलों को राष्ट्रीय परिपदों से हल करें। ऐसा बिनेन्दीकरण के सिवाय संभव नहीं है। ऐसा बिनेन्दीकरण तभी हो सकता है जब वेन्डीकृत व्यवस्था की प्रतीक पार्टियाँ टूटें और पार्टियों के प्रतिनिधि के बजाय जनता के प्रतिनिधि सब स्तरों पर देश का कामकाज चलायें। चिनोवा और जे० पी० ने इसे लोकस्वराज्य का नाम दिया है। ऐसे स्वराज्य के लिए शरारों में पड़ने सभाएँ, और भागों में ग्रामसभाएँ गठित करना होगा। सारे स्थानीय मामलों से सभाओं को सीपने होंगे। सर्व सम्मति से वे सभाएँ अपना कामकाज चलायेंगी और सर्वसम्मति से चुने गये इनके प्रतिनिधि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय मामलों नहीं करते तब तक मतदाता के मत का उस के जीवन से सम्बन्ध नहीं जुड़ना न वह अपने कामकाज के लिए जिम्मेदार होगा। प्रजातंत्र कल्पनी होगा और सत्ता बनी भी जनता के हाथ में नहीं प्रायेगी।

उत्तर प्रदेश के चुनावों के पहले मतदाता जिसका नामित है और जे० पी० ने लोपी के सामने यह विवरण रखा है। विवरण बताने के साथ-साथ समिति ने विचारियों और नागरिकों को मदद से मतदाताओं के जिसएँ और चुनाव निपटण तथा स्वतन्त्र कराने की भी व्यवस्था की है। फरख जिनो और पाँच महानगरीय के समिति ने कार्यक्रम सिद्धते दो महानों से चलाया है। इस सप्ताह उसकी परीक्षा है। इस चुनाव में अनुभव और इन कार्य से मजिद नागरिक व्यक्ति के साथ साथ इस समिति का लोकस्वराज्य के कार्य में लगना है।

विधानसभा भंग करना ही एक मात्र हल

—जे० पी०

चार दिन की ध्वप्यन यात्रा के बाद जयप्रकाश नारायण ने प्रहमदाबाद में कहा कि गुजरात की समस्या का एक ही हल है विधानसभा भंग कर दी जायें। रविशंकर महाराज भी यही मानते हैं और गुजरात के लोगों की भी यही मांग है। जे० पी० ने प्रथम प्रवचन की जि प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी इस मांग का शीघ्रतया समर्थनी और सन् ६० में गुजरात राज्य का उप-पाठन करने वाले महाराज की राय स्वीकार करेंगी।

प्रहमदाबाद से लौट कर जे० पी० पत्रकारों को दिल्ली में इन्दिरा जी और राष्ट्र-पति से मिलने गये। लेकिन ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री विधानसभा को भंग नहीं करवाना चाहती। धारवाहों में धारा है कि उन्होंने इस क्षेत्र को प्रजाजातिक कहा है। जानकारों के भी माने जाते हैं कि गुजरात नहीं माना जा रहा है कि प्रगर में राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है। इन चुनाव में गुजरात के विधायकों के एक ही चालीम वोट महत्वपूर्ण हैं और शक्ति हायकमान उन्हें प्रशाना नहीं चट्टा। गुजरात के गुप्त कार्यय विधायकों ने ऐसा स्पष्ट कहा भी है कि प्रगर के बाद विधानसभा के अधिव्य पर निर्णय किया जायें। पहले जब विमर्शार्थी से इस्तीफे की मांग की जा रही थी और गुजरात में व्यापक शरीरगत बन रहा था तब गुप्तकर्मी को इसलिए नहीं हटाय जा रहा था कि इनका उत्तरदेश के चुनाव में कार्यय भी स्थिति पर बुरा प्रगर पड़ेगा। लेकिन जब शारीरगत और तेज हुआ और विधान से इस्तीफे के दिने तो कार्यय हाई-कमान को विमर्शार्थी को गरी छोड़ने की सलाह देने पर।

ऐसा लगता है कि हाईकमान को राष्ट्र-पति के चुनाव तक गुजरात विधानसभा को विलम्बित रखने का इरादा भी छोड़ना पड़ेगा। समूहज कार्यय से सोलह विधायकों ने इस्तीफे के दिने ही और सलाह कार्यय के भी बुद्ध विधायकों को इस्तीफे देने पर

मजबूर होना पडा है। नवनिर्माण युवक समिति ने विधानसभा को भंग किये जाने की मांग तेज कर दी है और विचार्यी जगह-जगह विधायकों और पापंदो का घेराव कर रहे हैं। समिति ने जनम बनाने और मोर्चे विचारने के प्रयास मन्दिरों मन्त्रियों गुटदारों और गिरजाघरों में प्रार्थना करने का कार्यक्रम भी बनाया है। समिति ने नेता उमाकान्त मनकड ने एक धाम सभा में बताया कि समिति के नेताओं को कार्यय हाईकमान ने दिल्ली में चर्चा करने के लिए बुलाया था लेकिन समिति ने यह नियमण स्वीकार नहीं किया है। एक बयान में समिति ने कहा है कि सभा वाले लाग प्रगर गुजरात के लोगों में रूचि रखते हैं ता वे प्रहमदाबाद प्रकर मिल सकते हैं। धर्यापका के महत्व ने भी विधानसभा को भंग करने के शारोतन को तेज करने का फैसला किया है। प्रध्यापक परीक्षाओं का कोई काम नहीं करेंगे, न प्रजन पत्र बनायेंगे न पत्र जॉयें।

विचारियों और प्रध्यापकों की इन शक्ति-बद्धता और जागरूकता ने जे० पी० को भी शत्यधिक प्रभावित किया है। जे० पी० ने दिल्ली में इन सभादराना को बनाया कि विचारियों और प्रध्यापकों का उनसे बहुत प्रगाढ़ सवाद कायम हुआ। विचारियों ने जे० पी० से कहा कि वे उनका नेतृत्व करें। जे० पी० ने उनसे कहा कि आन्दोलन उनका ही इसलिए नेतृत्व नहीं करेगा जो उठना चाहिए। 'मैं तो प्रारंभिक सलाह कर दे सकता हूँ—' जे० पी० ने विचारियों से प्रहमदाबाद में कहा।

जे० पी० ने प्रहमदाबाद पहुँचने के बाद प्रगल पर बँटे विचारियों से मार्गयोग की और उनका प्रनमान सुधवाया। फिर सोन-बार जगह विचारियों और प्रध्यापकों की बढी-बढी सभाओं को सम्बोधित किया। जे० पी० ने गुजरात के विचारियों की बधाई दी कि उन्होंने कलित के छोटे-मोटे मामलों पर शारीरगत करने के बजाय बडी हुई महगार, प्रगज के विलए और राजनीतिक प्रध्यापक जैसे बडे सत्तावी पर शारीरगत चलाकर देस

भर के युवकों के सामने एग मिलात पैग की है। उन्होंने प्रवाहल किया कि विचार्यी एक साल के लिए कलित छोड कर देस में युव-काज करने के लिए काम करें। गुजरात ने युवकों के मन में यह विश्वास पैदा किया है कि वे प्रध्यापक जैसे ध्यापक मतवों पर राष्ट्रीय शारीरगत चला सकते हैं। लेकिन जे० पी० ने सलाह दी कि कलित के विचार्यी इस्तीफे चक्को को धरने साथ न लें क्योंकि वे प्रहमी छोटे हैं।

जे० पी० ने कहा कि विधानसभा को भंग किये जाने की मांग उचित है लेकिन गुप्तकर्मी के हटाए जाने विधानसभा भंग होने और नये चुनाव करवाने से सम्बन्धित हल नहीं होगी। नये चुनाव होने और उनसे फिर इन्ही पाटिया के उम्मीदवार खडे होंगे। इन उम्मीदवारों का चयन भी पाटियों के हाईकमान ही करेंग। इनका भी गुजरात के लोगों का नवनिर्माण युवक समिति से कोई लेना देना नहीं होगा। जे० पी० ने विचारियों से कहा कि वे माना और शरहों में जाकर जनम बनायें और ऐसे उम्मीदवारों को सडा करवायें जो कितनी पाटों के न होकर जनता के उम्मीदवार हा सचचरिय हो और जनतेरक हों।

जे० पी० ने विचारियों को यह सलाह दी कि विधायकों से इस्तीफे दिलवाने का प्रारो-लेन शक्तिपूर्ण और प्रहितक होना चाहिए जे० पी० ने काटिया एट्टाल चाहिए पर एक प्रचउध धाम सभा को भी सम्बोधित किया।

गुजरात के सर्वोदय कार्ययार्थियों ने सोन-स्वराज्य समेलन बुलाया था जिसमें जे० पी० और रविशंकर महाराज दोनों ने गुजरात की बनंगल स्थिति में सर्वोदय कार्ययार्थियों का कार्यय स्पष्ट किया। एक तोरस्वराज्य समिति गठित की गई है जो विचारियों प्रध्यापकों और नागरिकों के सहयोग से सोनस्वराज्य की स्थापना का कार्यय चलावेगी। रवि-शंकर महाराज बाबनूर धरने सापटिया -राज्य के दस कार्ययक में उबर धार्ये है। नागरए देसाई ने दस कार्य के लिए एक साल देना तय किया है।

विभीषण का राजतिलक मत रोको !

गुजरात कांग्रेस के अध्यक्ष भीना भाई वरुण का आरोप है कि विद्यार्थियों और अध्यापकों ने विधानसभा को भंग करने की मांग करके जो हासत पंदा की है, सर्वोद्यम के लोग उसका फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। "विद्यार्थियों और अध्यापकों की प्रशुभाई करने वाले वे लोग कहाँ थे ?" भीना भाई ने पुछा है "जब पुलिस गोलियाँ चला रही थी और लड़कियों तक पर प्रत्याचार हो रहे थे। मैं ही अरेल्ला ब्रादरों या—भीना भाई का दादा है—कि जिसने इन प्रत्याचारों के खिलाफ प्रयाज उठाई। हालाँकि मैं सत्ताह्वद पार्टी का ब्रादर भी हूँ।"

भीना भाई की शिवायत समझदारी की मांग करती है। लोगों की याददास्त बहुत कम-जोर है और वे भूल गये हैं कि चिमन भाई को गद्दी से हटाने में सबसे बड़ा योगदान उन्हीं का है। लेकिन लोग बहुत हुरतम है और विद्यार्थी और अध्यापक इतने मगरूर हो गये हैं कि भीना भाई को कोई श्रेय देना नहीं चाहते। पन्द्रह दिन पहले लोगों की मांग थी कि चिमन भाई को हटाओ। जनता की इस मांग को पूरी करने के लिए भीना भाई ने क्या नहीं किया ? प्रदेस कांग्रेस के अध्यक्ष होते हुए भी उन्होंने कार्य-सी मुख्य-मन्त्री को हटाने के लिए पूरा जोर लगाया। पहले चिमन भाई को कहा कि इलीफा दे दो। लेकिन चिमन भाई ने जनता की मांग पर ध्यान नहीं दिया और कुर्सी से चिपके रहे। भीना भाई को दिल्ली भ्रान्त पडा। उन्होंने प्रधानमन्त्री और कांग्रेस हाईकमान से कहा कि जनता की मांग है चिमन भाई को हटाओ। लेकिन दिल्ली बातों ने भी उनकी नहीं सुनी। वे लौट कर आये महमदाबाद और जनता की मांग पूरी करने के लिए उन्होंने चिमन भाई के विरोधी कार्यियों को भड़काया। कितना बड़ा खतरा भीना भाई ने उठाया। सत्ताह्वद पार्टी के होते हुए

भी जनता की तरफ से बोले। पुलिस के प्रत्याचारों के खिलाफ बयान छोड़ा और अपने घर में बैठे पढ्यन्त्र करते रहे कि जनता की मांग कैसे पूरी हो ?

लेकिन जब भीना भाई के जोर से चिमन भाई हट गये तो विद्यार्थी और अध्यापक उन्हें अपना नेता मानने के बजाय जयप्रकाश नारायण और रविशंकर महाराज की सुन रहे हैं। अब बताइये क्या जे० पी० या महाराज गुजरात कांग्रेस के अध्यक्ष हैं ? क्या वे दिल्ली गये थे ? क्या उन्होंने पुलिस प्रत्याचारों के खिलाफ बयान दिया था ? क्या उन्होंने चिमन भाई के मन्त्रीमंडल को तोडा ? अगर इन लोगों ने यह सब नहीं किया तो उन्हें विद्यार्थियों की नेतागिरी करने का क्या अधिकार है ? भीना भाई के साथ सरासर अभ्याप हो रहा है। जनता की तरफ से उन्होंने इतनी बड़ी लड़ाई लड़ी लेकिन लोग उलटे उन्हीं पर आरोप लगा रहे हैं कि चिमन भाई बूँक उनके विरोधी गुट के ब्रादरों थे इसलिए भीना भाई ने मौके का फायदा उठाया और पुराना हिसाब साफ कर लिया। जनता की तरफ से बोलने का जयदा नहीं रहा। एक माग पूरी करवाओ तो बैक्का जनता दूसरी माग करने लग जाती है।

भीना भाई की दूसरी शिवायत भी वाजिव है। विद्यार्थी और अध्यापक विधानसभा को भंग क्यों करवाना चाहते हैं ? और सर्वोद्यम वाले क्यों उनकी पीठ ठोक रहे हैं ? गुजरात में प्रधान की कमी क्यों हुई और भाव प्राप्तमाग पर क्यों गये ? क्योंकि चिमन भाई और उनके लोग प्रत्याचारी थे। हमने उन्हें हटा दिया। रावण गया तो श्व विभीषण का राजतिलक होना चाहिए। ठीक है। कुछ दिन गुजरात की हालत सुधारने के लिए राष्ट्रपति का रामराज्य चले। पर विधानसभा भंग होगी तो विभीषण का क्या होगा ? कांग्रेस विधायक पार्टी में भीना भाई के गुट के ऐसे बहुत से लोग हैं जो हूष के धोये हुए हैं। ये लोग सच्चे जनसेवक हैं और चिमन भाई को हटाने में अपनी ही सरकार के खिलाफ जनता की तरफ से लड़े हैं। पार्टी का प्रशासन ठोडने और प्रशासन को उज्ज कराने में इन लोगों ने बड़े साहस से काम किया है। विधानसभा भंग हो जायेगी तो तभी सरकार बना कर इन लोगों को जनता

की सेवा करने का मौका कैसे मिलेगा ? गुजरात का बितना बड़ा नुस्सान होगा ? जिन विधायकों में से एक-एक ब्रादर भी मुख्य-मन्त्री बनने की तमना और ताकत रखता है, वे सब बेचारे पटिये पर भा जायेंगे ? चिमन भाई प्रत्याचारी होंगे, लेकिन भीना भाई और उनके लोग प्रत्याचार का नाम तक नहीं जानते। ऐसे सच्चे-शुद्ध जनसेवकों को सरकार बनाना का मौजा देने के बजाय उन्हें मतदाताओं के सामने फिर से लडा कर देना बहा का प्रजातन्त्र है ? जनता को वोट देने का अधिकार है तो कार्य-सी विधायकों को सरकार बनाने का जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्हें उनके इस प्रजातान्त्रिक अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

भीना भाई ने दिल्ली में कहा था कि गुजरात की जनता को चिमनभाई में विश्वास नहीं है लेकिन इन्दिरा जी पर उसका पूरा विश्वास है। और श्व प्रधानमन्त्री ने भीना भाई की बात का समर्थन किया है। विधानसभा को भंग करने की मांग प्रजातान्त्रिक है। जनता की अधिकार नहीं है कि वह उन प्रतिनिधियों को पाच वर्ष के पहले ही बापस बुलाये जिन्हें उसने दो वर्ष पहले ही चुन कर भेजा है। एक बार फिर चुन दिया उसे पाच वर्ष के पहले जनता वापस नहीं बुला सकती। यह श्वसैधानिक है। सविधान में कहा गया है कि जनता को अपने प्रतिनिधि को बापस बुलाने का अधिकार है। विधायक जनता पाच वर्ष का अमर पट्टा प्राप्त करना है। यह एक बीमा है जिसके जरिये विधायक बीबी बनाने धन जमा करते, बार खरीबने और अपना भविष्य सुरक्षित करने का अधिकारी हैं। बीमे को भुनाने के लिए विधायक दल बदल दे ले कर कुछ भी कर सकता है। उसे जनता के विश्वास की नहीं विधायक होने के साथ ही ग्यारटी चाहिए। प्रजातन्त्र इसी का नाम है और सविधान भी इसी जल देता है। हाईकमान जब तक तय नहीं करता तब तक विधायक फिर से चुनाव नहीं लडे ? और अभी तो हाईकमान को गुजरात के एक ही चात्तिस विधायकों को सख्त जरूरत है। अमल में राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है और इन्दिरा जी के हाथ मजबूत करना है।

प्रभाव भीवी

पवनार में राष्ट्रीय प्राचार्यकुल सम्मेलन में भागे हुए बिहार प्राचार्यकुल के सदस्यों का एक दल विनोबा जी से मिला और उनमें शिक्षा तथा प्राचार्यकुल के मध्य में विभिन्न सवाल बिये। सवाल-जवाब इस प्रकार है—

प्रश्न : प्राज्ञ शिक्षा में परिवर्तन की बात तो बहुत हीनी है किन्तु कुछ होगा नहीं है। क्या किया जाय ?

विनोबा : सबसे बड़ी बात तो यह है कि क्या शिक्षा को जो लगना है कि यह शिक्षा बदनी जानी चाहिए ? प्राज्ञ की शिक्षा तो इसनी निश्चयी है कि उसे एक दिन के लिए भी जारी रखना नहीं चाहिए। बाबा ने तो सन् १९१६ में ही स्कूल छोड़ दिया था क्योंकि वह शिक्षा नौकरी के लिए थी और बाबा को नौकरी तो करनी नहीं थी। वह बेकार शिक्षा को लेकर बना करता ? फिर प्राज्ञ तो नौकरी भी नहीं मिलनी। किन्तु शिक्षा तो बड़ी चल रही है। इसमें तो प्राज्ञ बेकारी बड़ रही है। कम दिन ब दिन वृत्त बनो साधो। यह शिक्षा इसनी निश्चयी है फिर भी कोई ऐसे व्यागम नहीं चाहता। तो मैं कहना है कि शिक्षा निश्चय सर हड़ताल कर दे और इस निकम्मी शिक्षा में भागित होने में इन्कार कर दें। वे प्राज्ञे छात्रों को भी इसमें भागने साय बरतें।

प्राचार्यकुल जिम्मेदारी ले

शिक्षा के सुधार का प्रथम समय नहीं रहा है। पहले कमीशन बेंडे हैं। पहले रामानुजन् कमीशन बेंडा फिर कोटारी कमीशन बेंडा। और भी कई कमीशन बेंडे किन्तु क्या हुआ ? बाबा को कमी नहीं बड़ा था कि प्राचार्यो मिलने ही जैसे हमने मुलामों का पुराना भडा उसी दिन उनपर कर पक दिया जैसे ही शिक्षा जोने दिन बदल तो जानी चाहिये थी। साथी जोने बुनियादी शिक्षा का विचार देना के सामने रखा था। बाबा ने भी योग, उद्योग और सहयोग की शिक्षा का विचार रखा है। प्रथम यह काम प्राचार्यकुल का है कि वह सोचें कि देना में कीनी शिक्षा चलनी चाहिए। मेरा कहना है कि शिक्षा का सवालन विन्त विद्यालयों के हाथों में हो और विन्तविद्यालय तथा स्कूल बालेन सरकार से मुक्त हो। इसमें सभी शिक्षा प्राचार्यकुल का विचार मान कर प्रदान करना : सोमवार, २५ फरवरी, '७४

शिक्षक और छात्र हड़ताल कर दें निकम्मी शिक्षा में शामिल न हों

—विनोबा

बाग बरें। या तो शिक्षा को बदलो या स्कूल का त्याग करो।

प्रश्न प्राज्ञ बढ़ते हैं कि शिक्षक स्कूलों का त्याग करदें तो फिर उनको जीविका का क्या होगा ?

विनोबा : प्रथम बिहार में माधव मुन जो सात शिक्षक होयें। विन्तविद्यालय और स्कूल में सब मिलाकर। और देहात माधव ७५ हजार के करीब हैं। माने हर देहात के पीछे ऐसे दो तीन ही शिक्षक धाते हैं। तो शिक्षक गैर को सेवा बरें और प्राज्ञ उनका दायित्व उठावें। शिक्षा सुधार केवल शिक्षाओं की ही नहीं चाहिए वह सब धर्मिभावकों को भी हो चाहिए न। तो सब लोग शिक्षक और धर्मिभावक मिलकर शिक्षा बदलने के लिए धाते

सरकार के मायने भी एक दुबिया है कि वह लोग को न पढाये तो लोग मूर्ख रहेंगे और पढाये ता वे बेकार रहेंगे। तो उन्होंने भट से कहा कि इसमें तो वे दोनों ही होते हैं। ऐसी को उनको सहज प्रशिक्षा। तो प्राज्ञ शिक्षक लोग इस शिक्षा के विनाशक सत्याग्रह करोगे सब छात्र और शिक्षक मिलकर हड़ताल करोगे तो फिर सरकार के भी ध्यान में प्राज्ञा धारा कि पर क्या करना है। जो फिर इ सोचें सत्याग्र पर संभला होगा वह फिर भी शन बिठायेगी और फिर उस पर धमक भी करोगे।

कर्तव्य अधिकार से पहले है

प्रश्न प्राज्ञ तो शिक्षक सप धाये दिन रोत्र ही हड़ताल करते रहते हैं और सरकार पर उसका कोई भी प्रसर नहीं होता है। इस पर धापना क्या कहना है ?

विनोबा : जहा तक मैंने सुना है प्राज्ञ तो शिक्षक इगर्जि हड़ताल नहीं करते कि शिक्षा में सुधार हो। वे तो केवल प्रश्ना बेतन - बढ़ाने के लिए हड़ताल करते हैं। प्राज्ञे धर्मि-कार के लिए हड़ताल करते हैं। किन्तु इस अधिभार से पहले प्रापका कर्तव्य है कि वे अधिभारी शिक्षा से मुक्ति पावे। इसका प्रथम कर्तव्यो को पहले रखा है। इसका प्रथम कर्तव्यो की धोर से बेलवर होना किन्तु सम्भलाव्याहिए कि भगवान में जीव के लिए कर्तव्य ही रखा है अधिभार धारने हाथ में रखा है। इसलिये हम पहले से प्राज्ञा कर्तव्य पूरा करें तो भगवान अधिभार भी हने दे देगा।

मानव जीवन का ध्येय

प्रश्न : मानव जीवन का ध्येय क्या है ?

परिवर्तन के लिए सत्याग्रह

प्रश्न : प्राज्ञ बढ़ते हैं कि शिक्षा विन्त विद्यालयों के हाथ में रहे। वे तो प्राज्ञ विन्त बागों हद तक स्वतन्त्र हैं फिर भी उनमें सबसे अधिक पाठ्याभियाया है और शिक्षा में विगाड है हो-क्या करें ?

विनोबा : यह हो सकता है क्योंकि जो जितना ऊचा होता है उतने उतना बडा मोह होता है। तो उनके मोह निरस्त का काम देना रहना है कि शिक्षा में सुधार के लिए उल्लोचनय सत्याग्रह करो। प्राज्ञ की शिक्षा बदलने के लिए विन्तविद्यालयों को भी धागे धाना चाहिए। प्राज्ञ तो जानते हैं कि डा० जाकिर हुसैन बटल बडे शिक्षाशास्त्रो वे और हमारे राष्ट्रपति तो वे हैं। वे एक बार मेरे पास प्राज्ञे और शिक्षा सुधार के बारे में बर्षा होने लगी। तो मैंने कहा कि इस तिला से

हड़ताल कर दें....

विनोबा : मानव जीवन का ध्येय तय नहीं हुआ है। किन्तु यह दीयता है कि परमात्मा ने अपनी रचितो इच्छा की पूर्ति के लिए ही मनुष्य को बनाया है। मर्ही तो वह मनुष्य तो पहले बनाये गये धनिक प्राणियों से ही सम्पुट हो जाता। पर उनसे उसे सन्तोज नहीं हुआ और जब मनुष्य बना तो वह बहुत ह्यित हुआ और उसे अपनी इम सृष्टि पर सन्तोष हो गया। तो इममे क्या यह नहीं लगता कि मानव जीवन का ध्येय ईश्वर की इच्छा की पूर्ति करना है। उसका ध्येय है ईश्वर की बनाई इम सृष्टि की याने जीवो की सेवा करना है।

सहरसा के लिए श्रावधान

प्रश्न : सहरसा से भी शिक्षको का एक दल प्राया है। सहरसा के शिक्षको के लिए प्रापका क्या सन्देश है ?

विनोबा : सहरसा मे अभी एक और प्रतिम प्रतिमान हो रहा है। प्राचार्यकुल के लोग साडे तीन माह उसके लिये दें। वहा पर अभी धीरेन दा है जयपबाज जी वहा हो गये हैं। बंगाल के चाह बाबु भी वहाँ बैठ हैं तो इन सब बुगुर्षो की सक्ति से प्राप लोग लाभ ले सक्ते हैं। अब इस प्रतिम प्रतिमान के बाद सफलता हुई तो भी बाहर और असफलता हुई तो भी बाहर। इसके बाद वहा पर धये सेवक सभी बाहर निकल कर लोकगण मे लरने के लिए निकल जायेंगे। तो यह सहरसा मे शिक्षको का दायित्व है कि वे इतमे शामिल होकर इमे सफल करने का काम करें।

प्रश्न : प्रापने वहा वि मे साडे तीन माह दें। किन्तु शिक्षको के प्रापने भी तो धनिक अमेले है और फिर उन्हे इतमे लम्बे समय तक का अत्रकान कंस मिलेगा ?

विनोबा : यह समझना चाहिए कि श्रावितकार्य के लिए हमे हमे हर प्रकार के अमेलो को श्यागता होना। श्रावित करना हो तो फिर वह अमेले सोड कर ही की जा सक्ती है। अत्रकया सभो तो फिर सक्तर भी मान सक्ती है कि प्राप अत्रडे काम मे जा रहे हैं।

नागरी देश को जोड़ने वाली लिपि है

— देवेन्द्र कुमार

दुनिया मे भोलियो का विकास पिछले १०-१२ हजार साल का ही माना जाता है। तथा लिखावट का उपयोग सांकेतिक रूप मे ७-८ हजार साल पुराना भी मिलता हो तो भी विनमिन रूप पिछले तीन हजार साल मे ही हो पाया है। लिखावट के कारण एक पीढी का ज्ञान दूसरी पीढी को देने का जो तरीका इतना को मिला है उसकी यजह से ही ज्ञान मे म्हरी प्रगति प्रा पायी। इस लिए लिपि का महत्व बोली के महत्व से किसी प्रकार कम नहीं है।

प्राज दुनिया मे बडे पैमाने पर बोली जाने वाली दो बोलिया हैं उनको कायम रखते हुए क्या उनके लिए एक लिपि प्रापनायी जा सक्ती है, यह सवाल कई बार उठा है। इतमे भाषाभो को परस्पर निरट प्राने का भीदा मिलेगा और उनको मेलने मे भी प्रासानी होगी। एक ही लिपि ह। तो अलग-अलग भाषाए एक-दूसरे के नजदीक प्राती है। प्राज फेलाव की दृष्टि से देखें तो रोमन लिपि है जिसमे अमरीका, प्रास्ट्रेलिया और पश्चिमो योरोप की सभी भाषाएँ लिखी जाती है। जिनकी अपनी कोई लिपि नहीं थी और जो पाश्चात्य प्रभाव मे प्राये उन्होंने भी विधेय कर रोमन को प्रापनायी है।

अफ्रीका मे महाद्वीप मे उत्तर के धरद-प्रभावित देश छोड दें तो बाकी अफ्रीकी देशो की बोलिया रोमन लिपि मे ही विकसित की जा रही है। पूर्ब यूरोप एशिया और रूस मे ग्रीक लिपि मे सञ्चित लिपिया हैं, परन्तु वहाँ भी रोमन लिपि परिवार की ही भाषी जायेगी।

एशिया मे सोवियत रूस को छोड दें तो तीन प्रकार की लिपियाँ हैं : पूर्ब एशिया मे चीनी चिन लिपि, पश्चिमो एशिया मे धरबो लिपि, और दक्षिण तथा प्राग्नेय एशिया मे नागरी परिवार की लिपियाँ।

रोमन लिपि के अत्यत व्यापक होने पर भी उसकी वैज्ञानिकता के संबध मे बराबर

सदेह उठाया जाता रहा है। इसका सबसे बडा प्रसिद्ध नमूना साहित्यिक वनडिं शा की यह वमीयत है जिसमे उन्होंने अपनी सारी ज्ञायदाद इस बात के लिए टुट कर दी है कि कोई लिपि मे ऐसा सुधार निक्खले जो कम से कम अक्षरो मे भाषा को प्रबल कर सके और जसा बोला जाये वसा ही लिखा जा सके। इन प्राधारो पर जब हम देखते हैं तो उपरोक्त चारो लिपि परिवारो मे, अर्थात् रोमन, धरबो, चीनी और नागरी मे से एक सूची नागरी मे सबसे अधिक पायी जाती है। इसके दो कारण हैं। एक तो नागरी मे व्यञ्जनों की व्यवस्था ऐसी है कि अक्षर जसा बोला जाता है वसा ही लिखा जाता है और दूसरा स्वर का आभास देने के लिए व्यञ्जनों पर मात्रा लगाने का विधान है। 'ब' मे '।' की मात्रा लगा देने से 'बा' हो जाता है जब कि और किसी भी लिपि मे उसके लिए 'क' के साथ दूसरा स्वर-अक्षर लगाया पडता है। यह बड़ी-सूची इस लिपि को सक्षिप्त और प्रासान बना देती है।

अगर दुनिया मे नागरी लिपि बरूध कर ली जाती है तो यह एक बहुत बडा वैज्ञानिक कदम होगा, क्योंकि इतमे भाषाभो को परस्पर नजदीक प्राने मे मदद मिलेगी।

नागरी लिपि परिवार मे निन्वी जाने वाली भाषाएँ . तिब्बती, नेपाली, प्रागमिया, बगला, बर्मी, हिन्दी, डोगरी, गुजराती, मराठी, वनड, मगयालम, तमिल, सिन्ही, तेलुगू, उडिया, थाई, लाओसी, जम्बोडियाई विपत्तनाम की भाषाए और सरहुत तया-पत्नी। इन सब मे क, बा, जि, की, श्रादि बारहलडी तथा व-वर्ग, च-वर्ग, प वर्ग का क्रम भी समान है।

विश्व की सभी लिपिया सबको वर्णों के संसार से धनी है और प्रापने-अपने मोन्धन के साथ प्रस्थापित है। इस साथ वैविध्य, वैचित्र्य को हटा कर एक समान लिपि सारे संसार मे चले यह टीका नहीं होगा और न

उत्तर भारत में हिन्दी या हिन्दुस्तानी एक जोड़-भापा के रूप में चल भी रही है। लेकिन दक्षिण की चारों भाषाएँ एक-दूसरे के बहुत निकट होते हुए भी परस्पर जोड़ने वाली किसी कड़ी से वंचित है। पड़े-लिपों में अंग्रेजी का चलन वहाँ इसीलिए बढ़ा है।

समय ही है। लेकिन जब सभी देशों में उन की अपनी एक लिपि के साथ-साथ एक दूसरी लिपि का भी उपयोग सीधा जायेगा तो वह प्रयोग दुनिया को जोड़ने वाला साधन होगा। किसी भी कार्य को जब हम एक विशेष दृष्टि से सामने रखते हैं तो उसका अर्थ पहले एक छोटे क्षेत्र में सिद्ध करके ही लोकमत उसके पास में बना सकते हैं। इसलिए विश्व लिपि नागरी के विचार को भी पहले नागरी लिपि परिवार के क्षेत्र में लागू करने की बात रखी जा रही है। यो तो भारत में १९६२ में मुख्यमंत्रियों के एक सम्मेलन से पटित नेहरू की अध्यक्षता में यह तय किया गया था कि भारत की सभी भाषाओं को नागरी लिपि में लिखा जाय, इस का प्रयास होगा। परन्तु वह बात काले नहीं बढ पायी। लिपियों की एकता और भाषाओं की एकता को साथ जोड़ना उचित नहीं है क्योंकि जैसा हम देख रहे हैं भाषाओं के अलग रहते हुए भी लिपि एक हो सकती है जैसा कि पश्चिमी योरोप में है। अभी तो बात इतनी ही है कि प्रारम्भ में भारत की विभिन्न भाषाओं में अपनी अपनी विशिष्ट लिपि के साथ एक जोड़-लिपि नागरी को स्वीकार किया जाये। इसमें कहीं भी यह मानना नहीं है कि देश की विभिन्न विरासत लिपियाँ मात्र जिस रूप में प्रचलित हैं उनको समाप्त किया जाये। विचार केवल इतना ही है कि एक और लिपि भी वचने अपनी भाषाओं की लिपि के साथ-साथ सीख लें।

गुजराती पाठ्य-पुस्तकों में एक पद्धति अपनाई गयी थी जो द्रवीय ह्रास्य चरती थी। इसमें गुजराती लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि का भी उपयोग होता था। वचनों की पाठ्य-पुस्तकें के बचलाओं और वेदों के शीर्षक तो नागरी (जिनके बाल्लोप बटने हैं) में छापे थे, आनी सब गुजराती में ही रहता था। इस प्रकार नागरी लिपि

के साथ बाल्व का परिचय हो जाता था। नागरी परिवार की सभी लिपियों के साथ-साथ नागरी लिपि भी सीख लेना कोई बटिन बात नहीं है। ध्यान तो अर्थों जो बच सीखते हैं ही उसकी लिपि के लिए चार प्रकार के अक्षरों के साथ परिचय करना पड़ता है— पड़ाई की प्रथम लिखाई की प्रथम और दोनो में छोटे और बड़े (कैपिटल) अक्षर प्रयोग। इसलिए एक अर्थ जो की सीखने के लिए चार लिपियों का प्रयोग करना पड़ता है। भारत की लिपियों के साथ-साथ मिलती-जुलती नागरी लिपि सीखने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती।

यह काम उत्तर भारत के लिए ब्राह्मण मान्य पड़ता है क्योंकि वहाँ की लिपियों के अक्षरों का विचारण समान है। नेपाली, ओगरी, मराठी, हिन्दी तो नागरी में लिखी ही जानी है, परन्तु दक्षिण की चारों भाषाओं की लिपियाँ भी नागरी के अक्षरों से दूर नहीं हैं। साथ ही जिनकी विशेष आवश्यकता दक्षिण की भाषाओं को निकट लाने की है उनको उत्तर में नहीं है उत्तर में तो स्वाभाविक रूप से भाषाएँ परस्पर मिल-जुल जानी हैं। वहाँ हिन्दी या हिन्दुस्तानी एक जोड़ भाषा के रूप में उपयोग हो भी रही है। लेकिन दक्षिण में चारों भाषाएँ एक दूसरे के बहुत निकट होने पर भी परस्पर जोड़ने वाली किसी कड़ी से वंचित हैं। पश्चिमियों के बीच अंग्रेजी का उपयोग इसीलिए बढ़ा अधिक बढ़ा है क्योंकि कलंड का व्यक्ति तेलुगु बोलते से, अथवा तेलुगु या तमिल का मसामालम बोलने से जिनकी भाषा में समर्थ हो पाता है। इन चारों भाषाओं को पास लाने में एक लिपि बहुत मदद कर सकेगी क्योंकि भाषाएँ इनकी अधिक निकट है कि यदि लिपि एक हो तो ब्राह्मणी से एक दूसरे की भाषा समझी जा सकेगी। नागरी के व्यवहार में प्रचलन रूप में हिन्दी को दक्षिण में लाया जाये यह एक लिपि का उद्देश्य नहीं

है। हा नागरी जानने के बाद उत्तर की भाषाएँ और विशेष कर हिन्दी पढ़ने-लिखने में ब्राह्मणी होगी और सारे देश को जोड़ने वाली लिपि से सभी भाषाएँ एक-दूसरे को समूह कर सकेंगी वह तो अपनी जगह ठीक है परन्तु दक्षिण में वहाँ की भाषाओं के द्वारा परस्पर एक-दूसरे से सम्पर्क सम्भव बढाने में नागरी अक्षर सह्यकर बनेगी।

हाल में विनोबाजी ने एक चीनी प्राईमर नागरी में कैम्ब्रिज कराई है, जिससे भारत के लोग चीनी सीख सकें। इस पुस्तक से वे चीन को भेंट करना चाहते हैं। इसके पीछे यह भी भावना है कि विश्व लिपि बाल्लो की भी के परिवार की भाषाएँ नागरी लिपि की वैज्ञानिकता के सम्बन्ध में विचार करें। चीन के राष्ट्रपति माओ त्से तुंग ने तो यह कहा ही है कि जिस लिपि में एक वचने को डेढ़-दो हजार संकेत सीखे जिनका लिखना नहीं पना सजता, उसे हटा कर जल्द से जल्द दूसरी कोई वैज्ञानिक 'लिपि' प्राप्त करनी चाहिए। और रोमन लिपि की ओर भी उनका झुकाव बना ही यह प्रकट हुआ है। विनोबा विश्व के चारों बड़े लिपि-परिवारों को नागरी की वैज्ञानिकता सम्मानना चाहते हैं।

अभी भारत में अपनी लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि का उपयोग प्रारम्भ करने का प्रयोग सीमित रूप में हुआ है अलमिया बंगला, उदिया, तेलुगु कलंड, गुजराती और पञ्जाबी भाषाओं को सर्वोदय परिषदों नागरी लिपि में छाप रही हैं। उनके द्वारा इस विचार को जनता के समक्ष लाया गया है। यदि देश को जनता को यह सारा वैज्ञानिक तथ्य ठीक से समझना जाय और इस ओर बटने में जो भी मानसिक रुकावटें हैं वे दूर की गईं तो इसमें कोई शक नहीं है कि भारत विश्व के लिए एक नयी देन दे सकता है। इस तथ्य में स्वयं प्राप्ते देश की एकता को भी मजबूत कर सकता है।

ग्रामस्वराज्य का रास्ता सामने है यात्रा लम्बी है, बहुत दूर जाना है

—कुमार प्रशान्त

राधोपुर (सहरसा) से जयप्रकाश बाबू का परिचय नया नहीं है। इतना पुराना और गहरा है कि 'जयप्रकाश बाबू' के बारे में यहाँ किसी मगहूर हैं, कि बदलतिमा चलती हैं। मनः सहरसा अधिवान को गति देने जब २५ जनवरी से ३१ जनवरी तक के लिए जयप्रकाश बाबू सहरसा धामे तो ३१ को राधोपुर में उनका कार्यक्रम हगने रला। प्रलड के तरण भाति सैविक, ग्राम भाति सैविक तथा भन्य युवको की एक रैली की जाये, ग्राम सभा हो, कुड वासगीत के पंच बडे, भूदान की जमीन के पंच कट तथा प्रसण्ट के प्रमुय लोगो, ग्राम-सभा के पदाधिकारियों के साथ परिचय हो ऐसा कार्यक्रम रला था। बहुत कम समय में यह सारा कार्यक्रम हगने बिग्या जिसमें नागरिक मित्रों का बहुत सहयोग मिला। बी० डी० श्री० साहब के विलोप प्रयास से ६३३ वासगीत के पंच तैयार हुए तथा सो से ऊपर भूदान की जमीन के पंच बने जय प्रकाश बाबू के हाथो कुड पचौ का वितरण हुआ। तेज हवा में ठड थी, पर लोग अच्छी सहाय में भाये। '४२' की छिपती-भागती लड़ाई में इस क्षेत्र में जयप्रकाश जी को छिपाने-भगाने के काम में जिन लोगो ने मदद की थी उनमें कुड से मिलकर के काफी भावुक हो गये।

युवकों की रैली के गुडरने के बाद जय-प्रकाश जी ने ग्रामसभा को संबोधित किया : मुझे बची-बची ऐसा लगता है, आज खास तौर पर ऐसा महसूस कर रहा हूँ, भीतर से ऐसा भाव रहा है कि मुझे अब सहरसा प्राना नहीं चाहिए। यहाँ जब भी जाता हूँ तो पुरानी स्मृतियाँ, पुराने बेहरे, पुरानी बर्से मुनता हैं, स्मिटर मन मे एक प्राशेलेन होता है। यह ४२ का जमाना याद आता है और अगर मेरी हृदय-संज्ञाती नहीं कर रही है तो मुझे लगता है कि आज हम एक दूसरे ४२ के चिन्तार पर खडे हैं। एक दूसरी क्रांति होने जा रही है। उसका आभास मिल रहा है।

शहरो में हिंसा नाड, विचारियों के उपद्रव और वही दूसरे प्रकार से जनता का प्रसतोय दुख प्रकट हो रहा है। देहातो मे भी लोगो के दिलों में, मानस में परेशानी है। ये किहू है भाने शाली भाति के।

मुझसे पूछते हैं लोग कि जयप्रकाश जी, ग्रहिसा की भाति पहले होगी कि हिंसा की ? मैं बहता हूँ कि मैं ज्योतिषी नहीं हूँ, पर दुनिया का इतिहास पडने के बाद मैं इतना जानता हूँ कि हिंसा की क्रांति होगी तो उसके गर्म से तानाशाही पैदा होगी। वह भी धावाज गयीवो की हिंसापत की ही लगायेगी, पर सता उसको होगी जिसके हाथ में बन्दूक होगी। माघों में एक सच्ची बात वही है कि सता बन्दूक की नली से निकलती है। पर, चीन में भी किसानों के हाथों में बन्दूक नहीं है। बन्दूक लेकर जनता को कसम खाते हैं, पर राज चलता है बन्दूक का। वीण प्रूछता है किसानो, मजदूरों को ? चीन ये बन्दूकें वाट भी दो तो ये जो बडे हथियार है, वम हवाई जहाज, टैंक वगैरह ये क्या जनता में बाडे जायेंगे ? ये तो जनता का नाम लेनेवलो के हाथ में ही रहेंगे। वहा से सता धामेगी जनता के पास ?

जनता का नाम लेनेवाले राजनीतिक दलो का खेल देखा है हमने। माघो भी जनता का नाम लेता है। मैं नहीं जानता हूँ कि हिंसा से क्रांति होगी या ग्रहिसा से। इनका फैसला तो इतिहास करेगा। पर एक फैसला इतिहास से कर दिया है कि हिंसा से क्रांति होगी तो सारे अधिकार मुड्री भर लोगो के हाथ में रहेंगे। हिंसा की क्रांति मानो को, लोगो को शक्ति के हथियार नहीं देती, इस-लिए हमें हिंसा से क्रांति मान्य नहीं... यदि लोगो का राज, आपका राज होगा हो तो वहा से होगा ? सब पटना, दिल्ली जाकर तो राज नहीं करेंगे। राज गाव में होगा। वही क्षेत्र है ग्रामका। ग्रामस्वराज्य का मतलब है

जनता का राज।

इतिहास में एक ही नेता पैदा हुआ जिसने सच्चाई से जनता राज बनाना चाहा और वह था मोहनदास करमचन्द गांधी। उसने नहा ग्रामस्वराज्य जाना है। प्रनः काब्रंस को तोडकर नया रूप देना होगा। यदि वही प्राजती उसका स्वराज्य हांती तो वह भारत का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बन सकता था। कौन रोकता उसे ? १९४६ में जब दो-तिहाई लोग सत्कार पटले को प्रधान-मंत्री बनाना चाहते थे उसने मिनटों में जवा-हरलाल जी को प्रधान मंत्री बनवा दिया। जो दूसरे को बनवा सकता था उसे स्थय बनने में क्या दिक्कत थी ? पर, उसके स्वराज्य का नगश दूसरा था।

२६ वर्षों में जो हुआ इस देश में वह किसी से छिपा नहीं है। पंखला कोजिये कि भावें बदकर चलना है कि सोलरज ? राज-नीति में मे मेरे जो मिन हैं उनसे मेरी यही निरापत है कि दिमाग के दरवाजे खोलकर सोचते क्यों नहीं ? कोट्टू के बँस की तरह बनी लीक पर चकर काट रहे हैं ये। मेरे एक मित्र ने कहा कि मुझे राजनीति में भाना 'चाहिए। क्या करूँ मैं राजनीति में धाकर कोई जाडू की पुडिया है मेरे पास ? यदि मैं ईमानदारी से चुनाव लडूँगा तो मेरे समेन सारे साथी हार जायेंगे। हमे दूसरा रास्ता खोजना होगा और दूसरा रास्ता धापके पास है। विनोबा जी को क्या दीक्षा सहरसा में कि उन्होंने सहरसा को ग्रामस्वराज्य के प्रयोग के लिए चुना, पठा नहीं। पर, धाप

मैंने गांधी से सीखा और उससे पहले लेनिन से सीखा कि चुनाव का रास्ता क्रांति का रास्ता नहीं है। उसने कहा था कि प्रथम कोटि के नेताओं को चार को 'डूस्मा' में नहीं जाना है। उहने जनता में जाना है। दूसरी पक्ति के लोग वहा जाकर धपनी धावाज बडा तक पडूचाएँ। कानून से क्रांति नहीं होती है, योंडा बहुत मुधार होता है। जमीन के किणने कानून बने, पर वग हुआ धरती पर ? जो चन रहा है वंसा ही चलता रहे यदि धाप ऐसा चाहते हैं तो कुछ मत करें। जो चलता है चलने दें। महगाई वगैरह का रोना न रोयें। लेनिन बदलना चाहते हैं तो

जैविक खाद : अन्न समस्या का हल

हमारी बाग (बिहार) के किसान प्रायः प्रसाद करने पर एक के सेत में रासायनिक खाद के बरते प्राकृतिक खाद का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने यह साबित किया है कि इससे न केवल उपज बढ़ती है बल्कि अपनी ही उपजाऊ ताकत भी बचाकर वापस रहती है।

प्रश्न : पुरानी प्रणाली से कृषि करने में बावतूद भी प्रायः कृषि इतनी सफल क्यों हो रही है ?

उत्तर : पुरानी प्रणाली में इतनी कृषि करने में बावतूद भी बाग के वैज्ञानिक इन से कृषि करने में जो जाज हो सकती है, उससे प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक रूप में धारण करने में रहा है। और यह प्रणाली बहुत जल्द देश के लिए अपना ही उपयोगी है। मैं एक गांव में कम से कम तीन घंटे अन्नदाता प. पत्तल एक ही जमीन पर लगा हूँ, जो कि बाग में बाधुनिक वैज्ञानिकों को प्रसन्न करती होती है।

जैविक खाद को व्यवहार में लाना शुरू करना आवश्यक करने का दौर आने लगी है। बाधुनिक लेनी करने वाले इतिम खाद का व्यवहार करते हैं। बागें वहीं से जैविक खाद व्यवहार करने में शुरू करनी चाहिए।

प्रश्न : जैविक खाद को व्यवहार करने में क्या बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को व्यवहार करने में बाधाएं आती हैं। इनमें से कुछ हैं—
 1. जैविक खाद का उपयोग करने में बाधाएं आती हैं।
 2. जैविक खाद का उपयोग करने में बाधाएं आती हैं।
 3. जैविक खाद का उपयोग करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : प्रायः पर्वत रूप में जैविक खाद मिल जाता है ?

उत्तर : जैविक खाद मिल जाता है। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

प्रश्न : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं ?

उत्तर : जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं। जैविक खाद को प्राप्त करने में बाधाएं आती हैं।

ही भारत की खाद्य समस्या का हल हो सकता है जबकि भारत की पशुसंख्या करीब ४५ करोड़ है। अगर यह काम और भी उचित ढंग से किया जाये तो भारत के पशु एवं जनमस्या से उपलब्ध जैविक खाद से ही योग्य जमीन से दुनिया की सभी जनसंख्या को भ्रारण दिया जा सकता है।

प्रश्न : क्या धातु के विचार से जैविक खाद, कृत्रिम खाद से अधिक उपयोगी है ?

उत्तर : सिर्फ मेरा ही विचार नहीं वल्कि सत्सार के बड़े-बड़े कृषि विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों के विचारों में यह सिद्ध कर दिया है कि जैविक खाद कृत्रिम खाद से बहुत ही अधिक उपयोगी है। वैज्ञानिकों ने इस विषय पर धन-धनना तक दिया है और आज सत्सार के जितने अध्यापक कृषि-प्रधान देश हैं वे जैविक खाद के प्रयोग पर ही जोर दे रहे हैं।

प्रश्न : क्या कृत्रिम खाद और जैविक खाद के हानि और लाभ को स्पष्ट कर सकते हैं ?

उत्तर : कृत्रिम खाद से बहुत-सी हानियाँ हैं जबकि लोगों की नजर में इसमें एक ही लाभ है। लाभ सिर्फ यह है कि कृत्रिम खाद उपज को तुरन्त देती है किन्तु उस उपज की हानि लोगों को साक्षात् नजर नहीं आती है।

तत्काल उपज तो ही जाती है, परन्तु उस उपज का बाजार मूल्य कम होता है और उस जमीन की उपज दूसरे साल कम हो जाती है। इसके साथ ही कृत्रिम खाद के उपयोग के लिए विशेष ज्ञानधार व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। उस जमीन से अधिक उपज लेने के लिए अधिष्ठाधिक कृत्रिम खाद देना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि फसलों में बीमारी लग जाती है। इन सब बुराइयों को हटाने के लिए जैविक खाद के इस्तेमाल का मुझसे दिया जाता है।

जैविक खाद के व्यवहार में इन कुछ बातों से परे हो सकते हैं। इसकी उपज स्वस्थ होती है। इसकी उपज को बहुत दिन तक रखा जा सकता है। इस उपज का बाजार मूल्य अधिक होता है। फसल में बीमारी लगने की सम्भावना नहीं होती है। जमीन की उर्वरता अधिक बढ़ती है तथा विशेषज्ञ की

जरूरत नहीं पड़ती और सबसे जबरदस्त लाभ यह है कि जैविक खाद से एक पीढ़े को जितने तत्वों की जरूरत है करीब-करीब सभी मिलते हैं।

कृत्रिम खाद में दिक्कत यह है कि पीढ़े को आवश्यकतानुसार तत्व नहीं मिल सकते और अगर तत्व मिले भी तो भारत में उन की कीमत इतनी अधिक होगी कि भारत की कृषि अधिक दृष्टि से लाभकर नहीं होगी। एक पीढ़े के लिए १६ तत्वों की जरूरत होती है। कृत्रिम खाद के रूप में इन तत्वों को बहुत कम ही लोग दे सकते हैं।

फिर कृत्रिम खाद के व्यवहार में भी जो बीमारी होती है उसके निवारण के लिए

कीटनाशक दवाइयों का इस्तेमाल करना पड़ता है।

प्रश्न : क्या धातु धरने फार्म में कीटनाशक दवाइयों का इस्तेमाल नहीं करते ?

उत्तर : हमारे खेतों में जहाँ सरकारी अधिकारों ने राष्ट्रीय प्रदर्शन किया उसमें तक मुझे दवाइयों का इस्तेमाल नहीं करना पड़ा। आज तक मैंने धरने खेतों में दवाइयों का इस्तेमाल नहीं किया है। कीटनाशक इस्तेमाल करने से नाइट्रोजन बैक्टीरिया नष्ट हो जाता है जिससे जमीन को बर्दाश्त होती है।



कुरुक्षेत्र

कृषि मन्त्रालय की ओर से प्रकाशित सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका—जिसमें देश की खुदाहाली के आधार सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकारिता सम्बन्धी समाचार, लेख व कहानियाँ प्रकाशित होती हैं।

वाषिक : 5 रुपये, दिवाषिक : 9 रुपये त्रिवाषिक : 12 रुपये

• विचारधर्मों, धार्मिकों (प्रमाण-पत्र देने पर) एवं पुस्तकालयों को कुरुक्षेत्र के चन्दे पर 25 प्रतिशत की विशेष छूट।

• कुरुक्षेत्र के ग्राहकों को हमारी 5 रुपये या अधिक मूल्य की पुस्तकें सस्ती दर पर 20 प्रतिशत की छूट। बृहत सूची-पत्र के लिए लिखें।

ध्यापार व्यवस्थापक प्रकाशन विभाग पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001

आज ही ग्राहक बनें



DAIP 73/576

खादों और ग्रामोद्योग किनके लिए ?

द्वारकानाय वि० लेले

भारत की कुछ सामाजिक तथा

धार्मिक वास्तवों और भारत की करीब ६० करोड़ की आबादी को हम हमारे प्रायण से 'नहीं' रख सकते हैं। करीब ८३ खण्डों की आबादी देहों में घोर कष्टों में रहती है। भारत में कभी भी गहरी सस्त्र-युद्धान नदी थी। इसीलिए उमरका धार्मिक धारा भी गहरे प्रथान नहीं था। बीसवीं सदी के मध्य में जमीन पर उन्नीसवा कृते बालों की सत्या बड़ जाने से तथा निरंतर बेकारी और बडनी धार्मिक कठिनाइयों के कारण रोजगारी बूढ़ने के श्वासे से देशाती जनता प्राथमिकिक सत्वा में कष्टों में तथा औद्योगिक कष्टों में जोरों से भीड़ कर रही है।

भारत की आस्तकारी जमीन का बट-बार देण लेने से यह धार्मिक स्पष्ट होगा।

क्या कहा जाए, वे तो त्रिदशों और भीष के बीच 'जी' रहे हैं।

देण को इतनी उड़ी धामीए जनसत्या के मुहावजे प्राज के बड़े-बड़े कल बारखाने बहुत ही छोटी सत्या में मण्यता दे करे हैं। वेकल सत्या की हृष्टि से विचार किया जाए तो बड़े-बड़े कल बारखानों द्वारा सवकों काम तथा रोजी यानी दाम मिल सकेना पड़ मानने के लिए वृद्धि तदा ही नहीं होती है। गहरी यानी कैमिडन उद्योगों के लिए धामीए यानी विरिद्धि उद्योगों को उपायना क्या सम्भव होगा ? सत्रय हाणा ऐसा मान नी किया तां उनके लिए कल बारखाने घड़े करने म कितनी पूजी लगेगी और उत्पादन की तितानी के लिए भी कला जायेगे यह पढ़ने मोक्ष लेना जरूरी है। बेकरार हो बड़ होगा कि धामीए लोग को उनकें गावों में, वे कर सकें ऐसे ही उपाय राडे करने चाहिए।

धामी तक की पंचवर्षीय योजनाओं में धार्मिक स्तर उठाने के लिए उद्योगीकरण को वास्तविक महत्व नहीं दिया गया है। पहली पंचवर्षीय योजना में देहानी जनता का कुछ कुछ श्वाय जरूर था लेकिन दूसरी योजना म सारा और उद्योगीकरण पर रूढ़ि। धार पंच वर्षीय योजनाओं में बायबुद्ध धनेकाले कारण बनलादे जाते हैं। इन योजनाओं म वही भी जनता को ध्यामाहन नहीं था। न वही भी जनता की करोड़ों में तिनो जलेनामी आबादी सामने थी और न हमारे देश को उत्तर दिशिए तथा पूर्व-पश्चिम की करीब ३००० किलोमीटर की लम्बाई कोडाई र्सीती हुई बलनी का विचार ही था। हमारा का राष्ट्रीय धामोजन करोड़ों करोड़ लोगों को बेरोजगार रखकर होना चाहिए तो बड़ कुछ धाय लोगों को सामने राय कर होना है यह कितनी दयणीय प्रकृत्या है। और फिर भी सुनिया के सामने हमारा देण सोचनत्र भी गवाही देने का माहस्य करता है। सोचनत्र

यानी बहुसंख्यको क, जनता प्रतिशित है, घ भयक्या उमरी प्रावाज उठ पाती को बह नहती कि है बह देहानो में वयो जनता के, ते करना चाहिए।

गांधीजी ने यह सारा देस लिया, करता तथा ग्रामोद्योगों की जो बात उठे गांधीजी को वह इन ध्याने करोड़ों लोगों का पूरा-पूरा श्वाय करके। धाय तो हमने गांधी का नाम लेने के तित्वा उनका काम करना छोड़ ही दिया है। लेकिन यह बहुत दिन चलने वाला नहीं है। जैसे-जैसे जन जागृति होगी जागृती जैसे-जैसे जनता ध्याना एक प्रदा करने की सोचेगी। जगह-जगह भी उनके किन्ह नजर धा रहे हैं। पीछी सी भी प्रसाति बड़ी हो जाती है तो सामान छोड़-फोड़ दिया जाता है या उसको धाय सगा ही जागी है योनिज जनता सोचनी है कि जो सारी सुविधाएँ दितानी देनी हैं वे फोड़े लोगों के लिए है बहुसंख्यको के उपयोग में धाने वाली नहीं है। धायकें नहीं होना चाहिए यदि बेकारी की धाय में जतने वाले लोग उद्योगीकरण न समजौकरए के सारे किन्ह नकमुष हो जता हावें।

इन दिनों बहुत से रचनात्मक काम म बरसो से लगे कार्यकर्ता धाम्यकिक तकनाती वा उद्योगीकरण करते नहीं हैं। तकनाती का धारण करते करना चाहिए लेकिन बहु उद्युक्त तकनाती हीनी चाहिए। लडे बरला जो देण भर में नहीं-नहीं धातु धा उसकी सारी क्षामिया हुटाकर गांधीजी ने देण को यरबदा चक्र दिया। किनी मादक क्षण में गांधीजी ने धार्मिक उत्पन्न देने वाला चरला तैयार करने के लिए एका तात धयणों का इनाम भी जाहिए किया लेकिन उनको उसका दर्शन जब दृष्टा तो उन्होंने बह इनाम बासित सोच लिया। तथा नारायणदास जी गांधी को ध्यामाना महत्त ने तित्वा कि धायकी बडी-उडी धर योजनाओं की बनने धाला चरला ही धर्मियतय माता है। किनोवा जी ने भी शुध्दात में धार तडुडे बाले धर का दर्शन "धरवास्ता"

धूम बडे जमीदार बडे	धूमिती कुट्टु	जमीन का रकबा
मध्यम	१४	१४
छोटे किसान	१४	१४
नाम धार किसान	३०	४४
इसका मतलब ८० फीसदी से ज्यादा धामीए कुट्टु को के लिए पार्क-धर एकर से धार्मिक जमीन है ही होगी। इससे उनका गुजारा किनी मुश्किल से होना होगा।		
उपयुक्त का साग जहा रहते हैं वे गांधी कंते है यह भी देण किया जाए। ४०० से कम धारानी वाले गाँव ३,२२,२९ हैं। और उनमें सारें साय करोड़ लोग रहते हैं। ४०० से १००० तक धारानी के गाँव १,१६,१७ हैं, जिनमें साठें धारु करोड़ साय रहते हैं। जबकि १००० से २००० तक धारानी वाले गाँव ६४,३०३ हैं जिनमें भी करोड़ लोग बसे हैं। भारत के कुल गाँवों की सत्या ४,६७,३३० है जिन में ८० पीसदी कम धारानी वाले गाँवों में ६० फीसदी जनसत्या रहती है और उनमें से करोड़ ८० फीसदी लोग योनी पर गुजारा करते हैं। गुजारा तो		

गोवर गैस :

ईंधन संकट का हल

खारी एवं ग्रामोद्योग प्रायोग, बम्बई में देश में ऊर्जा संकट के मुकाबले के लिए भारत सरकार के सहयोग से बीस हजार गोवर गैस संयंत्र स्थापित करने की एक योजना बनाई है। ये प्रति विकास सण्ड बस के हिसाब से दो हजार विकास खंडों में लगाये जायेंगे।

देश के विभिन्न राज्यों में प्रचलित, १६७३ तक ६, २५० गोवर गैस संयंत्र चल रहे हैं जिनकी राज्यवार तालिका इस प्रकार है—
 —मध्य प्रदेश ३७२, असम १६, बिहार ८७, गुजरात २, ८१३, हिमाचल प्रदेश ७; हरियाणा १७५, केरल १०१; मध्य प्रदेश १६३; महाराष्ट्र १, ४०५; नाटिक २५५; उड़ीसा १५, पंजाब ६२, राजस्थान ४३; तमिलनाडु २०१, उत्तरप्रदेश ४२५, दिल्ली ३, गोवा और दमन ७, तथा पंडिचेरी ४; कुल ६२५०।

इन गोवर गैस संयंत्रों से १५०६१ लाख घन मीटर मिथेन गैस पैदा होती है, जिसका मूल्य २७ लाख ५५ हजार रुपये होता है। इसके बराबर २३ लाख ५७ हजार रुपये मूल्य की ७५,५१६ टन बढ़िया किस्म की पाद भी मिलती है।

ऐसा ही २५०० घन फीट का एक गोबर गैस संयंत्र इंदौर के निवट्ट रुवि क्षेत्र, बम्बईवा प्राय में स्थित चार बरों से सफलतापूर्वक चल रहा है। इससे रुवि क्षेत्र के ३८ मजदूर परिवार ईंधन के लिए गैस का भारपूर उपयोग कर रहे हैं। साधनाथ बरों में लगभग २० हजार मूल्य की उत्तम कम्पोस्ट पाद भी मिलती है।

रुवि क्षेत्र द्वारा लगाये गये एक हिमाल के अनुमान बरों में एक गाय के गोबर से ३६ किगो नाइट्रोजन, १८ किगो फास्फोरस तथा ५७ किगो पोटैशम साद मिलता है।

इसी प्रकार रत्ननाथ जिले के धामराजी गांव रुपावेड़ा में भी मिगालों से स्वयं धर्मिकता से पादें घरों में १७ गोवर गैस संयंत्र लगाये हैं।

नाओं में खादी ग्रामोद्योग का कार्यक्रम बेकारी निवारण के रूप में सभी सोचा ही नहीं गया था किन्तु देश की विविध परिस्थिति देवते हुए छोटे कारखानों की मदद के लिए ये सोचे गये थे और वह काम ठीक से चिया गया है यह मानना पड़ेगा।

पूरी बेकारी दिसायी देती है। और धान की सरकारों की उत्पत्ता विचार करना ही पड़ता है तथा विचार करना भी पड़ेगा। कृषयत्ता प्रसन्नोप की भाग में सारा साज होकर देश में अराजकता फैल जाएगी।

अनेकानेक पंचवर्षीय योजनाओं के बावजूद ७३ फीसदी अमीन वर्षों के पानी पर ही निर्भर करती है। ऊपर देखा गया है कि बहुसंख्य किसान-बारी के पास अमीन का सबका बिना भ्रम है जिसमें उनको पूरे सात के लिए काम मिलना असंभव ही है। भारत की अमीन कई हजार-बम से बम पांच हजार-सालों से काम में घा जाने से एक तरह से बूढ़ भी बगी है इसलिए हमारे प्रकल करने पर भी दूसरे देशों में फी एब्ड जो उत्पादन होता है वह इस देश में सर्वसाधारणतया ही ही नहीं सवेगा।

प्राथमिक बेकारी दिसायी देती है लेकिन वह अति भयंकर है। बहुसंख्य जनता को इस तरह से प्राथमिक बेकारी में रखना और भी प्राथमिक जनरना है। प्राथमिक बेकारी प्रायमी को धीरे-धीरे सजानी है और उम्मे वे दिन-ब-दिन निरुद्धे हो जाते हैं। बहुसंख्य जनता को निरुद्धा रखकर देश का भला ही ही नहीं सजता। जनकी भावाज दुर्बल नहीं है, मज है लेकिन दुम्बर होने तक राह देवना राष्ट्र घातक मिड होगा। क्योंकि देश यही बाधकर है। खादी ग्रामोद्योग के काम में लगे कार्यकर्ताओं को उन उद्योगों की मर्यादा जान लेनी चाहिये।

बेकारी निवारण का काम पारंपरिक खादी ग्रामोद्योग द्वारा नहीं हो सकेगा। पारंपरिक पद्धति छोड़ दी जाएगी तो संपूर्ण स्तरीय उद्योगों के ढंग से काम करना होगा और उनकी सारी मर्यादायें माननी पड़ेंगी। फिर श्रम प्रधानता नहीं रहेगी। जीवन देन देना हीना और संप्रत्यक्षी सारी आनुवांनिक बातें मजूर करनी पड़ेगी।

क लनुवे नही वे सब सक्त जी में ही उम हटि से ७५४ गोवर कितने भी अच्छे होंगे तो भी उन्हें सुदूर जनता तक पहुंचाने में तथा दुर्घट रकने में प्रसन्न घडवनें सही होगी। जिसका साक्षात्कार अभी हम कर रहे हैं।

अंबर प्राया और लाखों पारंपरिक घरों बन्द हुए। बारण कुछ भी हो। यैचिन अबर घरखा लाखों की सादाद में फैलना हो तो उन घरखों का उत्पादन करना, उसके लिए पूंजी जुटाना, उन्हें विचार करके प्रेषितान सूत उत्पादन प्राप्त कर उसकी खादी बनाना और बेचना हो तो बितना बडा काम ही जायेगा। केवल कुछ हजार लोगों को ही काम देकर संनोप मानना ही तो उसमें ल्यागी कार्यकर्ताओं का दल क्यो लयाना चाहिए ? पशुकी पंचवर्षीय योजना में जब खादी ग्रामोद्योग का जिम्मा किया गया तो कम पैसे लचं कर लाखों लोगों को पूरा या प्राथमिक-सधमुच प्राथमिक ही काम दिया जाएगा ऐसी प्रेषेश रखी गयी थी। वह समुचिन ही थी। प्राथमिक काम की सधमुच जरूरत है ही। हमारा देश प्राणीय है, काश्तकारों का है जिन्हे प्राथमिक काम की जरूरत भी है। उम्मे मिलने वाली मजदूरी का पैमाना भी उसी ढग का है दस-लिए पूरे बेकार लोग खादी ग्रामोद्योगों का काम करने के लिए प्राहृष्ट नहीं होते और हीये भी नहीं।

सारे खादी ग्रामोद्योग स्वतन्त्र उद्योग है नहीं। बाधकार जो फलन पैदा करता है उसके प्रयोक्त के स्वरूप के वे सारे उद्योग हैं और बहुत से मौसमी हैं।

खादी ग्रामोद्योग मडलतया बनीजन के काम के मूल्यांकन में यह बतलाना गया है कि बेकार लोगों को बहुत कम परिणाम में बन्द दिया गया है। मूल्यांकन करने वारी को यह मानलम कर लेना चाहिए कि पंचवर्षीय योजना

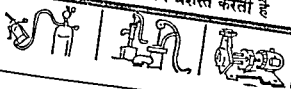


यूकोर्वेक

कृषि उद्योग में सहायक

यूकोर्वेक इस बात का गर्व अनुभव करता है कि अपने देश के विभिन्न भागों में सेतों के सौभाग्य, उर्वरक, बीज, कीटनाशक इत्यादि खरीदने के लिये तथा मृत्ति-विकास, कुलों को क्षमता-युक्त बनाने, स्ट्रट से सिंचाई की योजनाओं, नलकूपों के निर्माण, कुलों की सुदाई, सफ़ेद धान-ची सुविधाओं का निर्माण, पोल्ड्री एवं डेयरी इकाइयों के निर्माण के लिये धन प्रदान करके हजारेों किसानों की सेवा की है।

यूकोर्वेक प्रगतिपथ को प्रशस्त करती है



कृषि धारण . इन्फ़ो

The Fertilizer Corporation of India Limited is the single largest producer of plant nutrients in the country

HOW BIG IS FCI ? FCI's five functioning units at Sindri, Nangal, Trombay, Gorakhpur and Namrup have the installed capacity of half a million tonnes of plant nutrients. This will rise to over two million tonnes when additional six plants under construction go on stream.

TOTAL FERTILIZER TECHNOLOGY FCI has now developed its own know-hows, design and engineering capability and can execute six to eight modern fertilizer plants at a time from the blue print to the final commissioning stage. It has also developed and produced a complete range of fertilizer catalysts.

MARKETING SET-UP With a vast net work of sales outlets and promotional activities, FCI now serves about 80 percent of the country.

The Fertilizer Corporation of India Ltd.

SWING HIGH WITH

bajaj
PRODUCTS



Swinging times and carefree living if that's your wish for a modern lifestyle, Bajaj can make it come true. Any time of day. Any season of year.

The world of Bajaj Products is, in fact, created for modern homemakers: Icecream Freezer, Pressure Cookers, Toasters, Mixers, Ovens, Fans, Lamps, Lighting Fixtures, Accessories and so forth.

And, Bajaj alone have as many as 3,500 Dealers and 18 Branches throughout the country. Here you'll find the greatest Before and After Sales Service—where everything goes with a swing!



bajaj electricals limited

45-47, Veer Nariman Road, Bombay-400 001.
Branches all over India.

heros® BE-180

वार्षिक मूल्य—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ मिनिट या ५ टाइमर, एक घंटा का मूल्य ३० पैसे ।
प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ए० के० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१३ मुद्रित ।

सर्वांगी

स्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ४ मार्च, '७४

9 MAR 1974



- प्रजातंत्र की सवारी :
- आदेश देने वालों से ग्यारंटी ?
- जयपुर की रेगर वस्ती में शरावधन्दी

उत्तर प्रदेश के सभी सहरो के चलनेवाले रिक्तों का सभी पार्टियों ने कोटरो को माने में मुलकर उपयोग किया । रिक्तता गरीब आदमी को सवारी है और प्रजातंत्र भी उनी पर सवार होकर चला है ।

अपनी-अपनी मान्यता

भूदान-यज्ञ

४ मार्च, '७४

वर्ष २०

अंक २३

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

पाटियों को प्रजातंत्र की फिकर
नहीं लेकिन किसे है ?

—एक सवाददाता ३

श्रादेय देने वालों से स्यारटी ?

—प्रभाप जोशी ५

लोकजाप्रति रचनात्मक बने
रेपों की दस्ती में ठेके पर

ताला —रामबल्लभ अग्रवाल ७

कनाटक के राज्यपाल को खुली

चिट्ठी —त्रिलोकचन्द्र ९

दलितों की उभरती नयी शक्ति

—श्रीपाद केलकर ११

रवाई, जौनसार पदयात्रा के

अनुभव —योगेशचन्द्र बहुगुणा १३

हम प्रसफलता के लिए तैयार थे

—निर्मला देसापांडे १५

दत्तपुर कुष्ठघाम का संकल्प

—बद्रीनाथ सहाय १६

राजघाट मॉलेनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

बांगला देश बनने के लगभग सवा दो साल बाद पाकिस्तान ने उसे स्वीकार किया है। सच्चाई को मान्यता देने में प्रधानमंत्री भुट्टो को इतना समय इसलिए लगा कि इस उपमहाद्वीप में दिसम्बर ७१ के युद्ध से हुए परिवर्तनों को वे धीरे पाकिस्तान के लोग आसानी से हजम नहीं कर सकते थे। धर्म के जिस सिद्धांत के आधार पर सन् ४७ में पाकिस्तान बना था धीरे-धीरे वर्षों तक साम्प्रदायिकता के जिस भूत को नचली हवाओं में जन्दा रखा गया था, उसे बांगला देश ने एक भटके में उतार दिया था। लेकिन एक देश के शरीर में आया भूत एक भटके में कभी नहीं उतरता। वास्तविकता लोगों के मानस में बहुत धीरे-धीरे उतरती है। पाकिस्तान के लिए तो यह और भी मुश्किल था क्योंकि अबास्तविकता को ही उसके अस्तित्व की शक्त के रूप में स्वीकार गया था। अस्तित्व की शक्त एकदम बनी नहीं बदलती और पाकिस्तान जैसे देश में तो वे बहुत धीरे बदलेंगी क्योंकि उन्हें न बदलने का आन्तरिक आह्वान बहुत ज्यादा रहा है। भुट्टो अपने देश के मानस की इस हालत को जानते हैं और इसलिए बांगला देश को एक स्वतन्त्र-प्रमुखता सम्पन्न देश के नाते मान्यता देने के लिए उन्होंने इस्लामी सम्मेलन का सहारा लिया। लाहौर में हुआ इस्लामी सम्मेलन पाकिस्तान की जनता के सामने इस्लामी एकता और शक्ति की मिसाल के नाते रखा गया था। बांगला देश के उदय से राष्ट्रियता का जो चार्मिक आधार ध्वस्त हुआ था और इसके कारण लोगों के मन में जो भय आया था, वह इस्लामी सम्मेलन के वातावरण में निश्चित ही दबा होगा। लोगों को विश्वास हो कि इस्लामी देश एक हैं, शक्तिशाली हैं और उन्हें बरने की कोई जरूरत नहीं है इस लिए भुट्टो साहब ने जो, ठोड़ चार्मिंग की कि लाहौर में सभी इस्लामी देशों के राष्ट्र प्रमुख भाग लें। आबस्तित और शक्ति का देना वातावरण बना कर ही भुट्टो बांगला देश को औपचारिक मान्यता दे सकते थे। जो लोग चाहते थे कि बांगला देश न बने और अनात

काल तक के लिए पाकिस्तान का अंग नहीं तो मुसलिम बंगाल, तो बना रहे उन्हें कम से कम इतना तो बताना ही था कि बांगला देश एक मुसलिम देश है और इसी नाते उसे इस्लामी सम्मेलन में शामिल किया जा रहा है। बांगला देश अलग हो गया तो क्या हुआ, वह मुसलमान तो है ही और मुसलमान भाई-भाई हैं इसलिए बांगला देश को विरुद्ध-दरी के ब.हर नहीं रखना चाहिए। यह सही है कि शेख मुजीब का स्वागत सरकारी तामभाम था और भुट्टो-मुजीब भाई-भाई का नारा भी सरकार की ओर से लगाया गया था। फिर भी पाकिस्तान की जनता ने शेख मुजीब को प्रधानमंत्री के रूप में मानने में कोई एतराज नहीं किया। भुट्टो और उनकी सरकार पाकिस्तान को यह नहीं बताना चाहती कि बांगला देश एक धर्मनिरपेक्ष देश है। बांगला देश अपने लिए चाहे धर्मनिरपेक्ष होगा लेकिन पाकिस्तान के लिए तो वह एक मुसलिम देश ही है।

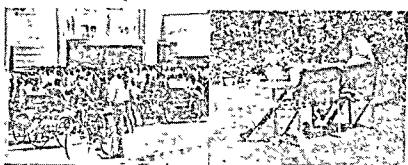
पाकिस्तान द्वारा दी गयी मान्यता और शेख मुजीब के इस्लामी सम्मेलन में लाहौर जाने से हमारे देश में कुछ बचाए पड़ा हुआ है। भुट्टो ने मान्यता का समय सिर्फ अपने देश के लोगों के लिए ही नहीं भारत के लिए भी चुना था। एक तो उन्होंने इस्लामी देशों से सम्पर्कता करवा के भारत को बताया कि उन्हें सिमात और दिल्ली समझौते से ज्यादा इस्लामी सम्मेलन पर विश्वास है। दूसरे वह भारत के कुछ लोगों में इस पुरानी शक का बल देना चाहते थे कि मुगलमान धार्मिक मुसलमान है और भारत, बांगला देश की दोस्ती को भागी हुई बान की तरह नहीं ले सकता। अन्तर्गत में जो कुछ दिया है उनसे लगना है कि भुट्टो अपने इस प्रकार के काफी हद तक सफल हुए हैं। भुट्टो और चीन भी यह दृष्टा होना स्वाभाविक है कि भारत-बांगला देश के सम्बन्धों को बिगाड़ा जाये और उनमें पूरुदानी जाये। हमें इस खेल को गमभीरता चाहिए और एक धामान शिफारश की तरह नेंद में नहीं घुसना चाहिए। अगर हम मानते हैं कि बांगला देश और भारत की दोस्ती दोनों देशों के जवानों के मन में बनी है तो

(दिप पृष्ठ १४ पर)

संगठित करने और उक्ताने के प्रयत्न हुए। ऐसे बापड़े किये गये जिन्हें तानाशाही सरकारों भी पूरे नहीं कर सकनी थी। घन, शराब और दूसरे सभी किस्म के लावच दिए गये। खुले दबाव से लेकर प्रभावशाली लोगों के घसर का उपयोग किया गया। मददाता को नहीं भी और कभी भी उसके अपने फंसते पर छोड़ा नहीं गया। प्रजातन्त्र के पवित्र-नर्व को मनाने के लिए सारे गैर प्रजातांत्रिक तीर-तरीको का इस्तेमाल किया गया। चुनाव पाटियो का धर्ममुद्र हो गया था जिसमे किसी भी पार्टी ने धर्म की रक्षा नहीं की, न नीति-नियमों का पालन किया गया। फिर भी लगातार दावा किया गया और किया जा रहा है कि यह प्रजातन्त्र है। प्रजा का है, प्रजा के द्वारा है और प्रजा के लिए है।

मददान के झांझों से जाहिर है कि चुनाव में पाटियो के झलावा और किसी की रचि नहीं थी। जिस पार्टी को सत्ता हासिल करने की जिनकी जरूरत थीर सभावना थी उतनी ही ज्यादा उसकी रचि थी। किस पार्टी ने जितना राया खर्च किया इसका हिसाब कभी भी जनता के सामने नहीं मागेया। लेकिन सब जानते हैं कि पैसा पानी की तरह बट्टाया गया है। पैसे पर पाटियो का भरोसा इतना माफ और वाचाल था कि यह मानना मजाक बनना होगा कि उनका जनता में भरोसा है। खुले रूप से कहा गया है कि जिस पार्टी ने किस आशयान और रियायत पर किस पैसे को बँसा लिया है। अब चुनाव लड़ने के लिए व्यापार उद्योग और धनवान तबको ने जो पैसा दिया है उससे दुगुना पैसा प्राप्त करते ही कोशिश के लोग करेंगे। दुगुना पैसा बनाने में उन्हें जो रियायतें मिलेंगी वे देश को कम से कम दस गुना घाटा देंगी और यह सब होगा एक अनुत्पादक पत्र के लिए।

बानूना, नीति-नियमों, नीति और प्रजा तांत्रिक माय्यताओं और सार्वजनिक भालीन-ताम्रो का इनका उद्देश्य उल्लंघन हुआ है प्रजातन्त्र और जनता के नाम पर। लेकिन इसे लेकर न कहीं कोई आक्रोश है न कोई चर्चा कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। विनोबा ने कहा है कि छद्मताकार जब इतना व्यापक हो जाये तो यह शिष्टाचार हो जाता



कानपुर में मतदान के दिन कनाडियन फिल्मों के लिए भीड़। सोते हुए प्रहरी।

है। उत्तरप्रदेश के चुनाव में जो कुछ हुआ वह इतना व्यापक और सार्वजनिक हुआ है कि इसे अपने प्रजातन्त्र की धाम परम्परा ही मान लिया गया है। पाटियो ने एक दूसरे को ऐसा करने से नहीं रोका क्योंकि सभी के तीर-तरीके समान थे। काच के धरो में रहने वालों ने एक दूसरे पर पत्थर नहीं फेंके क्योंकि प्रजा-

तन्त्र को इसली और सच्चा बनाने में उनकी रचि नहीं है उनकी रचि इसते मिलने वाली रियायतों और सत्ता में है। लेकिन क्या उत्तरप्रदेश और देश की जनता चाहती है कि राज उमका हो और सचमुच हो? अगर वह चाहती होती तो पाटियो यह सब कर नहीं सकती थी।

बाबा का काका की आश्वासन

“एक बात आप सब के लिए सहज कह दूँ जिससे कि आपको समाधान होगा। बाबा साहब कल बापों के धीर मुक्त से बहने लगे कि आप कभी-नभी बान करने हो कि दो साल में चले जायेंगे, तीन साल में जायेंगे, जल्दी-जल्दी जाने की बान करने हो, यह ठीक नहीं। मैं आपसे दस साल बड़ा हूँ। (काका साहब मुझ से दस साल बड़े हैं) तो मेरे मरने के दस साल बाद तक आपको जीना है। ऐसा उन्होंने मुझे आदेश दिया। और आपकी मुनकर आश्चर्य होगा कि याबा ने मुझसे कह दिया कि ‘जो हा’। उनका आदेश मान लिया। होगा तो वही होगा जो भगवान को मजूर होगा, परन्तु बाबा साहब का आदेश बाबा ने मान लिया। विनोबा (पवनार, २४ फरवरी)।

दिल्ली प्रदेश सर्वोदय मण्डल का पुनर्गठन

दिल्ली प्रदेश सर्वोदय सेवा की १० फरवरी को हुई बैठक में मंडल का पुनर्गठन हो गया है। प्रायं भूपण भारद्वाज सर्व सम्मति से प्रदेश मंडल के सयोजक चुने गये हैं। सर्वोदय मंडल का कार्यालय २, राजपाठ बानोनी नई

दिल्ली-१ (फोन नं० २७१०४३) पर रखा गया है।

पवनार में महिला सम्मेलन

ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार (वर्धा) में प्रथम भारत महिला सम्मेलन ८, ९ और १० मार्च को हो रहा है। सुरक्षित में हुए प्रथम महिला सम्मेलन और स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह में भाग्ये अनुभवों के आधार पर इस सम्मेलन में चर्चा होगी। विनोबाजी के तो मानिष्य में सम्मेलन ही ही रहा है प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी ६ मार्च को सम्मेलन में भागिल होगी।

ग्रन्थ-नीति क्या हो ?

मध्यप्रदेश की बिगड़नी ग्रन्थ-नीति के सदरन, मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल की ओर से इन्दौर में ३ और ४ मार्च को एक मंगल्यी प्रायोजित की गयी जिनमें सर्वोदय कार्यकर्ता राजनीतिज्ञ, पत्रकार और समाज सेवकों ने भाग लिया।

जे० पी० का स्वास्थ्य

जे० पी० का स्वास्थ्य अब घण्टा ही और के सोमवार ४ मार्च को दिल्ली से पटना आ रहे हैं।

आदेश देनेवालों से ग्यारंटी ?

प्रभाश जोशी

गुजरात में हिंसा फिर भड़क उठी है। शहरो में फिर मृतपाट हो रही है, पुनिम घोर लोगों में लड़ाइया हो रही है, बगधूँ लग चुका है, गोविंदा चल रही है और लोग मर रहे हैं। विधानसभा में विमर्जन 41 घण्टोतन बिमान भाई की सरकार को हटाने की मांग से ज्यादा उग्र हो गया है।

यह कहना कठिन है कि हिंसा कौन कर रहा है। मठाच्छ फरवरी को भद्रभावाबाद में माण्डवीनी पोव से नव-निर्माण युवक समिति के कोई तीन को युवकों का जुलूम काफ़ी भी विधायक साभाभाई कुण्डीवाला से त्यागपत्र की मांग करने निवृत्ता। इस जुलूम पर लाठियों और धारियों से लैस एक हजार लोगों की भीड़ ने हमला किया। हमला गीना मन्दिर रोड पर हुआ। विधायियों और इस हमलाकार भीड़ के बीच हुई लड़ाई में छात्र विद्यार्थी घायल हो गये। पुनिम ने कुछ लोगों को गिरफ्तार किया। हिंसा युवकों के जुलूम में नहीं थी, उन पर की गई थी। विधायक वा इस्तीफा मांगने वाले जुलूम पर जिन सशस्त्र लोगों ने हमला किया वे कौन थे और उन्होंने क्यो किया यह जाना नहीं जा सकता। तमन है जिन युवकों पर हमला किया गया वे जानते हैं कि वे लोग कौन क्यो थे। लेकिन किसी पर भूटा धारोप लगाये बिना भी सम्भवा जा सकता है कि हमलाकार कौन रहे होंगे। वे या तो विधायक के लोग होंगे या उन विधायकों की घोर से वे कार्यवाही कर रहे होंगे जिनसे इस्तीफे की मांग की जा रही है और जो त्यागपत्र नहीं देना चाहते।

विधायियों पर हुए इस हमले की प्रतिक्रिया तीव्र हुई। समिति ने प्रहमदाबाद बंद का नारा दिया और हितक पटनायें बंद गर्थीं। बड़ौदा, राजकोट धारि बर्द शहरो में पेशवा, प्रागजनी मृतपाट को बरदायें हुईं। निश्चिन्त ही वे बरदायें ऐसी है जो पुनिम की घोर से सन्धी की मांग करती हैं। पुनिम गोवो चलाती है, लोग मरते हैं और फिर लोग गुस्से में हिंसा पर उतर पाते हैं। यह एक दुष्कर है जिसकी पंचम में गुजरात धा गया है। भारत सरकार ने गुजरात की सरकार को हिराफर्वे दी है कि वह धारोतन-धारियों से सन्धी से निपटे और सत्ताच्छ कार्यक्ष के लोग धारोतन का जवाब देने की

सेवारी घोर र्पमता कर चुके हैं। गीता मन्दिर रोड पर विधायियों पर हुआ हमला इसी जवाबी कार्यवाही का धग है। गुजरात घोर केन्द्र की सरकार शान्ति घोर व्यवस्था बदाये रखने की प्रतीत करती है लेकिन इनके तीर तरीको से साक्ष है कि उनका विश्वास लोगों का सहयोग धीनने पर नहीं है। कर्बिस से विधायक भी लोगों के सामने जाकर उन्हें सम्भानने का साहस नहीं दिता रहे हैं। वे भी जवाबी कार्यवाही पर उतरा रहे हैं। ऐसी हालत में लोगों की घोर से हिंसा होना स्वाभाविक है। राज की समर्पित हिंसा घोर पार्टी की राजकीयक हिंसा घोर ज्यादा हिंसा को ही जन्म देती है। ऐसी परिस्थिति का सव से ज्यादा लाभ वे लोग उठाते हैं जिन्हें प्रशासनिक भाषा में समाज विरोधी तत्व कहा जाता है। यह सभव है कि पवराय और धागजनी में वे क्रोडिन नागरिक भी शामिल हों जो राज्य की सत्ता के प्रतीक स्थानो पर धरना गुस्ता निषाल रहे हों। भासा कि यह सब शलत है लेकिन जिन विधायक न लोगों का विश्वास नहीं रहा हो उनका निलम्बित विधानसभा से विपक्ष रहना भी सही नहीं है।

लेकिन केन्द्रीय नेनाभा के बयाना से यह नहीं लगता कि वे हालत को जानते हैं। जानते भी होंगे तो जालझूठ कर उठोये एक ऐसा रवैया धरना लिया है जो उनके पार्टी हित स्वार्थों के धनुकून है लेकिन जिसके वे संवैधानिक कारण दे रहे हैं। जैसे कर्बिस हाई-कमान से स्वीकर को हिंसायन दी है कि वह विधायकों के इस्तीफे मजूर नहीं करे क्योंकि प्रजाटन को मिटाने वाले तत्व उन पर नाजायज घोर हितक दबाव डाल रहे हैं। यह सही है कि सारे इस्तीफे स्वेच्छक नहीं हैं लेकिन इनमें कई इस्तीफे स्वेच्छक भी हैं और एक विधायक ने सो कहा भी है कि विधायकों को वापस बुलाने का नैतिक धर्धार जनता को है। पत्र इस्तीफे न मजूर करने का फैसला घोर उसकी मांग करने वाले लोगों पर हमले स्थिति को सुधारा नहीं

सकते। इससे निश्चिन्त ही लोगों का गुस्सा भड़कता है। फिर सरकारी नेताओं को तरफ से विधानसभा को भंग करने की मांग को विरोधियों का पदव्यन्त करार देना घोर धारोतनधारियों से समाजविरोधी तत्व कहने से भी लोगों का गुस्सा भड़कता ही है। प्रधानमन्त्री ने उत्तरप्रदेश की चुनावी सभाओं में गुजरात के धारोतन को धनीर पूजो-पतिवो द्वारा उक्तसाये गए साते-पीने लोगों का धारातन कहा है। उनका दावा है कि गरीब लोग इन धारातन में नहीं हैं न उन्हें सम्पत्ति मण्ट करने में कोई रुचि है। गुजरात में नये चुनाव करवाने की कोई उपयोगिता उनकी नजर में नहीं है क्योंकि धाकायदा चुने गये लोगों पर इस्तीफा देने के लिए दबाव डाला जा रहा है। "गुजरात में बहुमत वाली पार्टी है और उसके विधायकों से त्यागपत्र दिलवाने की कोशिश जो रही है। हम तये चुनाव क्यों करवायें ? इसकी क्या ग्यारंटी है कि इन लोगों में स्थान पर चुने गये लोगों के साथ ऐसा ही व्यवहार नहीं किया जायेगा ?" प्रधानमन्त्री ने पूछा है।

प्रधानमन्त्री जनता से तो ग्यारंटी मांगती हैं लेकिन उन विधायकों घोर मत्रियों से कोई ग्यारंटी नहीं मांगती है कि जनता के विर-वास का सम्भान करेंगे। धर्मदाबाद के विधायियों ने लिखा था— इन्दिरा जो गुजरात में धारोतन पचान प्रतिज्ञत बहुमत दिया लेकिन हमें प्राप प्राप प्रतिज्ञत भी ऐसे शासन नहीं दे सकी जो ईमानदार हो। "यह सधुचत हास्यपदर है कि प्रजातन्त्र में प्रधानमन्त्री उन लोगों से ग्यारंटी मांग रही है, जिनसे दो साल पहले उन्होंने धारोस मांगा था। धच्छे व्यवहार की ग्यारंटी जनता को नहीं देना है। उन प्रतिनिधियों को देना है जिन पर निश्चिन्त के बाद जनता का कोई अदुस नहीं रहना, घोर जो बडी बेधार्थी से धरने पर था लाभ उठाते हैं।

(येप शृष्ठ १२ पर)

लोकजाग्रति रचनात्मक बने

गुजरात के रचनात्मक कार्यकर्ता एवं लोकनीति-विचारधारा में दिसनखी रखने वाले मित्रों का यह सम्मेलन, पिछले एक महीने से गुजरात में लोकजाग्रति का जो दर्शन करवाया है उसका हार्दिक स्वागत करता है। विचारपिण्ड एवं धारणापकों ने इस प्रादोलन में जो भूमिका भरा की है, सम्मेलन उसकी तहे-दिल से सराहना करता है।

जिस सरकार ने जनता का विश्वास खो दिया लोकजाग्रति ने ऐसी सरकार को हटा दिया; यह एक घटना हमारी भाज की लोकशाही में लोकमत और लोकतंत्र कितनी बड़ी चीज है इसका हमें दर्शन कराती है। यह घटना हमारी लोकशाही के विकास में एक नई प्राणा की किरण फैला रही है। इस प्रादोलन में जहाँ कहीं भी जनता एवं सरकार द्वारा जिस भी भाषा में हिंसा का प्रयोग किया या सहारा लिया गया वह खेद की बात है। अब हमें यह देखना है कि जो 'लोकजाग्रति' भायी है वह केवल चंद रोज के लिए न हो साथ ही पक्ष या दल अपने संकुचित हितों की पूर्ति के लिए उसका उपयोग न करे।

लोकशासन द्वारा इस लोकजाग्रति को रचनात्मक रास्ते पर ले जाना होगा। भाज जो यह शुभ अवसर हमारी सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था में धामूल परिवर्तन करने का प्राप्ति द्रुभा है उसके लिए लोकनीति की विचार धारा में जो विश्वास रखते हैं उनका सहयोग हमें मिले इसके लिए धनुरोध करते हैं।

मौजूदा हालत में नये चुनाव द्वारा जनता को अपना मत प्रकट करने और जनता की जिम्मेदार रहने वाली नयी सरकार बनाने की बात भी उचित है। अतः यह सम्मेलन मौजूदा विधान सभा चुनाव में भाग करने की माँग का पूर्ण समर्थन करता है।

यह माँग अपने मतदाताओं की है इसे खास तौर से ध्यान में रखते हुए सम्मेलन गुजरात विधान सभा के तमाम सदस्यों से धनुरोध करता है कि वे स्वेच्छा से अपना त्यागपत्र दे दें। यदि प्रावश्यकता ही तो विधान सभा के ये सदस्य अपने मतदाताओं से सम्पर्क स्थापित करें और मतदाताओं की राय हासिल कर लें।

विधान सभा में गये जाने का प्रादोलन जनता द्वारा चलाया जाय। यह प्रादोलन भातिपूर्ण हो, बिना भी तरह के बल या दबाव का प्रयोग न किया जाय। यह बहुत ही जरूरी है। हिंसक एवं विध्वंस वृत्ति भाजमानों से लोक प्रादोलन के मुख्य उद्देश्य को धति पट्टे चिरी। विधान सभा भंग कराने के लिए भ्रमण का प्रयोग अनुचित होगा।

गुजरात में अब चुनाव का वक्त प्रायेण तब नई दृष्टित तत्व जैसे के गलत साधनों का उपयोग, पक्ष-पक्ष में रस्तावत्सी, यह सब होता है। जब वह चीज भा जाती है तब चुनाव में भ्रम जनता की धाकाधार दूर बिना रह जाती हैं। चुनाव में उम्मीदवार की पसंदगी में जनता की राय ही सर्वोपरी

लोकतंत्र को नया रूप देने में पीछे न हटें

माननीय विधान सभा सदस्य,

तेरह फरवरी ७४ को साबरमती प्राथम में श्री जयप्रकाश नारायण और पू० श्री रविशंकर महाराज के सानिध्य में धायोजित सम्मेलन में महाराज ने जो निवेदन किया था वह इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

उस निवेदन में भाज जो गुजरात की भ्रम जनता में जाग्रति धारि है उसका स्वागत किया है किन्तु उस जाग्रति को रचनात्मक ढंग से प्रागे बढ़ाया जाय इस के लिए सबसे धनुरोध किया है। इस वक्त जो लोक जाग्रति हुई है सभन है कि वह गुजरात की तारीख में एक महत्वपूर्ण घटना बन जाये। भ्रम जनता में अब ऐसी धाकाधार पंदा हुई हैं कि लोकशाही में जनता का फर्ज है कि वह जागक हो कर सक्रिय रूप से अपना फर्ज भरा करे। अतः जनता चाहती है कि लोकशाही के लिए चुनाव, विधानसभा, सरकार धारि की जो प्रशंसी बन चुकी है उसमें धामूल परिवर्तन करना चाहिए। जनता की उक्त नई प्राणासाए, उम्मीदें और मनसूओं का दर्शन तो लोकशाही में नये चुनाव के द्वारा ही हो सकता है।

इसलिये सारे गुजरात में एक ही धावाज निकल रही है कि मौजूदा विधानसभा को जल्द से जल्द पत्र भंग किया जाय।

मानी जानी चाहिए। चुनाव जीत लेने के बाद वह जनता वा प्रतिनिधि जनता के साथ हमेशा संपर्क बना कर रखे। इन सब बातों को ध्यान में लाना होगा।

हमारे इन भावधर्नों की पूर्ति हो और सफलता प्राप्त हो इसके लिए जो लोक लोकनीति की विचारधारा में धरणा पूर्ण विश्वास रखते हैं उन सब को एक हो कर समाज के धामने भागी भाक्ति का परिचय कराना होगा।

मतदाताओं के पडलो की स्थापना करनी होगी। उन्हें मडलो में से जनता स्वयं अपने प्रतिनिधि को चुनाव के लिए पसन्द करे। इसके लिए भी हमें भरपूर प्रयत्न करना होगा। ऐसे जनता के प्रतिनिधि किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य नहीं होंगे।

(१३ फरवरी '७४ को जयप्रकाश नारायण व रविशंकर महाराज के सानिध्य में हुए सम्मेलन का निवेदन)

भ्रम जनता की उक्त माँग के साथ हम न केवल सहमत हैं किन्तु इसे उचित भी मानते हैं। हमें पूर्ण धारणा है कि विधान सभा भंग की माँग में आप भी अपनी भावाज दोगे और साथ ही विधान सभा का नया चुनाव हो उसके लिये रास्ते खुलें अतः प्राण अपनी विधानसभा की सदस्यता को त्याग दें और अपना त्यागपत्र स्वेच्छा से गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष को स्वयं पत्र कर दें प्राण द्वारा ऐसा कदम उठाने से किन्तुल भ्रम जनता की जो भावनाएँ हैं उसकी प्राण पे पूरी बदर की है ऐसा माना जायेगा। साथ ही साथ लोकशाही को नया रूप देने में प्राणने एक महत्व का योगदान दिया है ऐसा भी माना जायेगा।

जनता ने ही प्राणकी चुन कर विधान सभा में अपने विश्वास के साथ भेजा है। भाज कही जनता प्राणको भावाज दे रही है अतः प्राण उनकी धारणाओं को ध्यान में रख कर विधान सभा सदस्यता का त्याग कर उनकी भावनाओं की बदर करे।

सलेह,
कातिदाह,

मन्त्री, गुजरात सर्वोपरी मंडल

रंगैर बस्ती के ठेके पर ताला

रामवल्लभ अग्रवाल

२६ नवम्बर से रंगैरो की बस्ती में सप्ताहों एव समाप्तों का कार्यक्रम रखा गया । १ दिसम्बर से बस्ती को प्रमात करी निकाली गई जो सतत अब तक जारी है । रंगैरो की बस्ती, जयपुर नगर की चौकड़ी, घाट दर-बाजे में सबसे घनी एव सबसे गरीब बस्ती है जहा लगभग १००० मजदूर परिवार रहते हैं। शराब का व्यसन उनमें पीड़ियों से चला भा रहा है। बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो इससे बचे हुए हैं। बस्ती के मध्य में शराब का बड़ा ठेका चल रहा है जो शराब के व्यसन को प्रसारित करने का सबसे बड़ा कारण बनेा हुआ है। ठेके पर लगभग तीन हजार रुपये की की शराब विकती है। इन पैसों का धंधा भी धंधे से ज्यादा पैसा इस पर बरबाद हो जाता है। इसके साथ ही बस्ती के कई लोग धाने धरो में शराब की धंधे विकी के धंधे में लगे हुए हैं। यहा की जनता शराब के कारण बेहद परेशान है पर अपने को लाचार मानती थी और इसका कारण भी था। प्राजासो के बाद पञ्चोन्न वषों में बनेक बार इस ठेके को बन्द कराने एव समाप्त से इस शराब को निवृत्त करने के कई प्रयास हुए पर सब निष्फल। हमारी सरकार, ठेके को बन्द करके शरकती है ? यह पाग की कमाई तो उनकी धामरनी का सबसे बड़ा धोर सागान जरिया जो है।

निराशा के बीच

हम लोग मानव चन्द कागरी व कुछ मित्रों के साथ वहा २६ नवम्बर से आये लगे। सब धोर निराशा थी। लोग मान बैठे थे ठेका बन्द कराने की बात निकूल है उसमें शक्ति नगरे को बात नासमझी है। फिर वो वहाँ की पंचायत के अध्यक्ष मंती सत मठावरी, एक भाई नूतनचन्द्री, नरहरचक्र मारी कडोड मन पासोशन व अगलात महेश धारि निने खुने लोगे मे साथ दिया और तीन नवम्बर को गोतुलभाई की धरमभना में एक बैठक हुई तथा एक निम्नवर से निम्नित प्रमाण करी मुखला तथा व सार्द का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। धोर-री बालक व कुछ लोग साथ आने

जयपुर के रंगैरो की बस्ती में शराब की दुकान पर लगा ताला धोर वहाँ दो महीनी से चल रहा शान्त सत्याग्रह इस सच्चाई का उदाहरण है कि पीड़ियों से धारतन शराब पीने वाले लोगो के गले भी अब उतर जाये कि शराब घुरी चीज है तो वं इसे हटाने के लिए क्या नहीं कर सकते। वहा शराब की दुकान पर बस्ती के लोग ही दो महीनों में धरलण्ड कीर्तन कर रहे हैं और धारी-धारी से चौबीस घण्टे में लगातार उपवास चल रहे हैं। शराब की दुकान पर ताला बही के लोगों ने लगया है और उनका यह निर्णय कि ठेका हटाया जाये घुरी बस्ती का निर्णय है। इन कर्मले धोर कार्यवाही की सूचना बस्ती ने सरकार और सभी सम्बन्धित विभागो को दे दी है। फिर भी सरकार की धोर से धम्री तक कोई कदम नहीं उठाया गया है। देश भर की सरकारो ने यह स्वीकार किया है कि प्रगर किसी भावारी के पन्छर प्रतिगत लोग लिख कर दे दें तो वहा से शराब की दुकान हटा दी जायेगी। लेकिन राजस्थान की सरकार ने समी तक कोई कार्यवाही नहीं की है।

रंगैरो की बस्ती में शात सत्याग्रह चल रहा है।

लगे। हिम्मत बढती गई, बस्ती आगने लगी बरिष्ठ लोरो का मार्ग संशय व सहयोग मिलता रहा और फिर से जनता की धोर से ठेका बन्द करने की मांग सरकार को भिजवाई गई और धीधी कार्यवाही की बात भी उनको कही गयी।

अनशन टला

लगत का कि पञ्चीस दिसम्बर को गोकुल भाई के उपवास की निधि के भरा-पारा यहा पिक्नेटिंग या ताताबन्दी करना होगा। राधाकृष्ण बजाज ने भी इसके लिये अपने प्राणकी समर्पित रखा था पर सौभाग्य से धोरत सरकार द्वारा राजस्थान के मन्त्रे पर भीम निर्णय लेने के लिए समिति गठित की गई और गोकुलभाई का अगला टला। सत्याग्रह स्थगित हुआ। ऐसी हालत में एक बुविधा हुई अब हमारे कार्यक्रम का स्वरूप क्या हो ? बरिष्ठ लोरो के निर्देशन एवं बस्ती के सब साथियो की सहाय धोर सहयोग से कार्यक्रम पूर्णतः जारी रहा। बस्ती मे नव जागरण एव सद्गम बढता चला गया। चार जनवरी की प्रगोश की फि उग्रोक्त समिति धर्रेंध ठेके तो बन्द कराने का निर्माण लेगी पर समिति का काम जमा होना है आने तरीके से ही चला। इनले पढते ही हजारे एक विवादी साथी भाई लक्षण रामा ने घोषण कर दी कि यदि चार जनवरी को यहाँ के ठेके के बारे में कोई निर्णय नहीं हो पाता है तो छः जनवरी

को वहा ताला लगा दिया जायेगा।

छ जनवरी का सकल्प था, पाच जनवरी को सायकल से बस्ती के नव युवकों मे मनला हुई, चर्चा हुई, साक्षित हुए और दूसरे दिन ठेके पर ताला जड देने का फंसला कर लिया उस दिन वहा एक धरब माहोल। गमा भाना के मन्दिर के बाहर पचासों की सख्या में नव युवक समय से पहले जमा हो गए। प्रार्थना उल्लाह एव उमग देखने को मिली। शरकबद कारायेंगे चाहे नर निट जायेंगे ने नारे के साथ निकल पडे। दुमावदार और सक्री गन्दी गलियों को चार बरले हुए ज्यो-ज्यो यह जुसूस धामे गया काफला बढता ही गया और ठेके पर पहुंचते-पहुंचते तीन सौ लोको भी भीड़ जमा हो गई और ठेके को बन्द करने की बुगोती सेने लगे। इस इक्य को देखकर ठेके दार व पुलिस जो ठेके के सरक्षण के लिये जब से यह कार्यक्रम चला उपस्थित रहनी थी, एक तरफ खरक गये। युवकों ने धामे बड कर एक नही को-नो ताते जड दिये। 'भासू माता को जय' 'गोकुलभाई की सलवार' से सारी बस्ती गूंज उठी। डानी के अध्यक्ष, अनेक युवकों ने, नव युवकों ने खुने धाम घोषण की कि जब तक यह ठेका यहाँ से नहीं हटता है हय नहीं से नहीं हटेंगे। चाहे नर निट जायेंगे ठेका बन्द कारायेंगे यह ठेका यहाँ नहीं रहेगा, नहीं रहेगा, नहीं रहेगा।

तब मे दिन रात २४घण्टे डेके के बाहर, जहाँ रिग्नी समय बौर्दे जाता पगन्द नरी करता था, रात दिन लड़ाई पगार का बाबाबरला रहता था बाहर सामन व रामधुन वा गैम्पू डटा हुआ है : गधे मोदिद सोनो-शारु छोडो बोनन पोडो। धनेक प्रमुन लोग भोगीलान पईया, गगुपार धनी (रिधापर) चिरजोतान धर्मा, दुर्गो प्रमाद पोधरी, हीनरमलनो गोयल, जे० पी० धरोडा, गोडवड नजी फा, बासुधुन गधे, गययन, रम्भुसाण जेन धादि बरी पट्टने, जनयन के उलाहा मे धमिभुडि की घोर धपने पूरे गटयो का धाशामन दिया। राजकीय धपिधारो भी गने घोर परिस्थिति का जाबजा लिया। स्थानीय पत्रो ने भी जनता द्वारा उठाये गये इन बहम की सराहना की। धव राक्षग तो भरा पर उगरो दफनाने की तैयारी मे घोर प्रतीक्षा मे बहा के लोग है साथ ही घारे समज की इस धारु ईश्वर से मुक्ति मिल गने इतके लिये भी मे मचेष्ट है।

कानूनी और गैरकानूनी

इम टके के चलता वस्तो के ही कुछ लोग जो अवैध रूप से इस धर्मेतिक धर्मे मे लगे हुए थे। उनको भी बन्द करने का निर्णय पचायन ने लिया। ऐसे सभी लोग पचायन के सामने हाजिर हुए और भविष्य मे समाज एव देग डोडी दग नामाक धर्मे को छोडने का संकल जाहिर किया। बली के बाल, युवा, युद्ध नर नारी इस धनी धाधा मे बँडे हुए हैं कि यह बला धव यहाँ से तुलन्त हट जाय और इस स्थान पर एक दयागामा व सरसग भवन खोला जाय। ठेके की तालाबन्दी के बाद से ही मय लोग इस इनजार मे थे कि गोमुल भाई का बड़ा धामन हो। गोमुलभाई के बाहर से धाने ही दग जनवरी को, बात मे विशाल सभा आयोजित हुई। जिसमे धपने प्रेरक के प्रति भाव भीनी अथाजलिया धकल की गई। गोमुलभाई भी धमिभूत हो उठे।

●

जयपुर शहर की रैगर वस्तो

डा० प्रवध प्रसाद

जयपुर गहर की मुग्ध धनी धावादी के एक विनारे पर बसी है रैगर कोठी जिसे रैगर बन्ती भी कहा जाता है। जैता वि मन्द से स्पष्ट है यहा की धधिरराय धावादी रैगरो की है। रैगर जाति के लोगो का मुग्ध धन्या चपडे का काम है। इन्हे सामाजिक दृष्टि से धदुत माना जाता है, गायद इती बारगा से इन्हे गहर के एक विनारे पर बगामा गया था। हालांकि आज गहर का विकास होने के बाद यह हिस्सा विनारे मे नही है। रैगर बन्ती के धासपास भी पिछडी जाति के लोगो का पवोन सख्या है और इस पूरे क्षेत्र मे धायन गिरो हुई ध्राधिक स्थिति के लोग रहते हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे देखें तो यह प्रारम्भ से ही उपेक्षित क्षेत्र रहा है। इस उपेक्षित क्षेत्र मे मुरा एव सुन्दरी का प्रवेश प्रारम्भ से ही माना जाता है।

ऐतिहासिक भट्टी

जिग समय शराव वा केन्द्रित उत्पादन नही था घोर शराव बलालो द्वारा भट्टीठयो मे निबाली जाती थी, उम समय यहाँ जयपुर शहर की प्रसिध शराव की भट्टीठयो थे। यहा के बलान शराव के मुख्य उत्पादको मे से थे। वे बलान शराव के उत्पादन एव विक्रेता थे परन्तु इस कार्य मे रैगर जाति के लोग भी लगते थे। शराव की भट्टीठया रैगर बन्ती मे ही होने के कारण यहा शराव का प्रचलन हो गया। जब शराव वा केन्द्रित उत्पादन प्रारम्भ हुआ घोर टके की व्यवस्था के धनगन शराव की बिक्री प्रारम्भ होने लगी तब यहा स्थायी रूप से शराव की दुकान खुली। एव दो महान परिवर्तन के साथ वर्तमान दुकान प्रारम्भ से इसी स्थान पर है। इम प्रकार रैगर कोठी मे शराव वा

उत्पादन एव बिक्री की परम्परा यहाँ के जनजीवन के साथ जुडी हुई है। त्रितीय वर्ष मे इन दुकान से सरकारी खजाने मे तीन लाख रुपये से धधिवर रररि जाती है। यहा के सामाजिक ध्राधिक पिछडेन का धन्याव यहा के सामान्य जनजीवन की गतिविधिया के धवनोजन से लगाया जा सकता है। यदि हम यह देलना चाहें कि इस मुहल्ले मे शराव पीने वालो की सख्या नितनी है तो यह पायेंगे कि यहा परम्परा से शराव पी जाती रही है और धाम धाधमी वमोवेश शराव पीता है। गिना चुना परिवार शराव से मुक्त भी मिल सकता है। यदि पीने की मात्रा की दृष्टि से देखें तो इस मुहल्ले मे पीने वालो को तीन धर्गो मे बाट सकते है (१) बन्ती-नन्ती तीज त्योहार मे पीने वाले। (२) धपनी ध्राधिक स्थिति को देखते हुए नियमित पीने वाले और (३) शराबी नरसम से पीने वाले। ऐसे लोग धपनी ध्राधिक तथा स्वय की धारीरिख तथा परिवार की परवाह किये बिना शराव पीते हैं।

ध्राधी ध्रामवनी

जित मुहल्ले मे शराव पीने की लत इनकी गहराई तब प्रवेश कर चुकी हो वहाँ शराव मुक्ति का प्रभाव सामाजिक ध्राधिक जीवन पर बरा पडेया इसका उलाहा धर्षक अराज लगाया जा सकता है। जिस परिवार की मुल धाय वा धाधा से धधिक भाग शराव मे बला जाता है उसकी इतनी रजम यदि स्वास्थ, शिक्षा, भोजन पर लखें होगी तो परिणाम पतदायी होगा इते समयने के लिए धायद ज्यादा दिमाग लडने की जरूरत नही है। यह बात रैगर कोठी के लोगो मे समझ ली है और धव वहा की दुकान पर ताला है।

उपदेश की पात्र केवल जनता नहीं, सरकार भी है

सत्याग्रह के साथ यह दुर्व्यवहार करते हैं, तो राजनीतिक प्रादेशियों के साथ योजना बद्ध हिसा का व्यवहार ही करें, यह संभव है। प्रथम प्राप ही समझ लीजिये कि सरकारों की यह दुर्नीति ही हिसा को प्रोत्साहन देती है। भ्रमर डिस्ट्रिक्टों पर सन् १९६६ में प्रापकी सरकार के द्वारा घोषित नीति के परिपालनार्थ ११ महीनों तक शांत सत्याग्रह चला। शरावबंदी सत्याग्रहियों को जेल दी गई। भ्रमर डिस्ट्रिक्टों पर शराव के ठेकेदारों ने सत्याग्रहियों के साथ जो निर्मम पिटाई की और राज्य सरकार तटस्थता से हिसक वातावरण को देखनी रही। क्या किसी सत्तापारी दल के नेताओं ने सरकार की नीति की निंदा की? प्रापने भी शरावबंदी सत्याग्रहियों को महानुष्ठान में एक भी शब्द कहा? राज्य सरकार की निंदा की? प्राप जैसे राज्य पुरुषों को यह दूहरी नीति ही हिसा को जन्म देनी है।

इसलिए प्रापने जहाँ जनता को हिसा नहीं करने का उपदेश दिया, वहाँ राज्य सरकारों को भी प्रदेशों में शांत वातावरण बनाने के लिए शांत सत्याग्रहों का प्रादर करने की सलाह भी देनी चाहिए और आपको भी ऐसे शान्त सत्याग्रहियों की सार्वजनिक सराहना करनी चाहिए। तब शांत सत्याग्रहों की जनता में और राज्याधिकारियों में मानस में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

दो हाथों से ताली

अहिसा और हिसा का वातावरण एक तरफा रास्ता नहीं है। अहिसा राज्यसत्ता को लोभात्मा में विश्वास करना सीखना होगा। पुलिस की लाठी और बंदूक की धरण में सुरक्षा अनुभव करने के बजाय, जब वह आत्मोत्सर्ग की भावना लेकर लोभात्मा की धरण में प्रापे का साहस जुटायेगी, तब के बजाय जनता में शक्ति का अधिष्ठान समझनी तथा संश्रमाही की विरपन व दुराग्रह से मुक्त होकर शांत सत्याग्रहों का समुचित समदर करने के लिए जब राज्यसत्ता अस्मत्त होगी तब ही हिसक आंदोलन शांत सत्या-

ग्रहों में बदलेंगे, तब ही जनतंत्र की सुरक्षा संभव है। प्रापया सत्ता का आक्रोश जब हिसक स्वरूप लेता है और जनता पर जिस बेरहमी से पिल पड़ता है, भ्रमर वासवाडा, और उदयपुर नगर की घटनाएँ इसका उदाहरण हैं। इससे प्रराजकता और तानाशाही के तत्वों को ही अधिक पोषण मिलेगा।

इसलिए देश में व्याप्त हिसा के वातावरण को बदलने के लिए सरकारों को जन आंदोलनों के साथ व्यवहार करने के प्रापने पुराने हिसक तरीकों में ब.स करना चाहिए। क्योंकि हिसा के सशक्त आमुष सरकारों के पास ही हैं। उनके पास प्रशिक्षित जमात भी है जो समाज में योजना बद्ध तरीकों से तनाव

बनाये रखती है। इसलिए प्रापको प्रापने प्रशासकीय अनुभव के आधार पर राज्य सरकारों को भी यह सलाह देनी चाहिए थी कि राज्य के उन नागरिकों के साथ, जिनके कि वे प्रतिनिधित्व होने का दावा रात-दिन प्रस्तुत करते रहते हैं, हिसा का व्यवहार न करें। प्रापनी प्रशिक्षित नौकरशाही को मर्यादा में रहने और लोक व्यवहार में संयम बरतने का भी उपदेश दें और चुनावों के समय जिस भावना के साथ जनता के पास जाते हैं, हिसक वातावरण में भी उसी शक्ति और साहस का प्रावाहन करें, तब ही फिजों बदल सकती है।

—भिलोकपन्द

‘भूदान-यज्ञ’ का प्रकाशन व्यवस्था

[समाचार-यज्ञ पत्रिका के अधिनियम (फार्म नं० ४, नियम ८) के अनुसार हर पत्रिका के प्रकाशक को निम्न जानकारी प्रस्तुत करने के साथ-साथ अपनी पत्रिका में भी प्रकाशित करना होता है। तदनुसार प्रतिलिपि यहाँ दी जा रही है।—सं०]

- | | |
|--------------------------------|--|
| (१) प्रकाशन स्थान | : नई दिल्ली |
| (२) प्रकाशन अवधि | : सप्ताह में एक बार (सोमवार) |
| (३) मुद्रक | : प्रभाप जोशी |
| राष्ट्रीयता | : भारतीय |
| पता | : १६, राजघाट बालोनी, नई दिल्ली १ |
| (४) प्रकाशक | : प्रभाप जोशी |
| राष्ट्रीयता | : भारतीय |
| पता | : १६, राजघाट बालोनी, नई दिल्ली-१ |
| (५) संपादक | : राममूर्ति |
| राष्ट्रीयता | : भारतीय |
| पता | : १६, राजघाट बालोनी, नई दिल्ली-१ |
| (६) पत्रिका के संचालकों का पता | : सर्व सेवा सघ, गोरुपी, वर्या (महाराष्ट्र) |

(सन् १८६० के सोनाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ के अनुसार पंजीकृत सार्वजनिक संस्था) पंजीयन सं० ५२

मैं, प्रभाप जोशी, यह स्वीकार करता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

—प्रभाप जोशी,
प्रकाशक

नई दिल्ली, २८/२/७४

दलितों की उभरती नयी शक्ति : दलित पेंथर

धीमाद केलकर

दलित पेंथर (चीतो) ने भ्रजालक प्रसवारी में सुखिया पा ली है और इसने लिए उन्हें काफी भीमत भी चुबानी पड़ी है। गन महीने के शुरू में बम्बई में पुलिस मीर तवणों के साथ हुए उनके सघर्ष के बाद 'दलित पेंथर' के सभी नेता पकड़े जा चुके हैं और इन समय सीकरो ने बन्द है। इन मुठभेड़ों में उनके एक नेता को जान से हार्य होना पडा और सैकड़ों हरिजनों को धर्म परिवर्तन कर अब बौद्ध हो गये हैं, गम्भीर रूप से मार पडा है।

समाज के दबे हिस्से को साथ लेकर चलने का दावा करने वाली रिपब्लिकन पार्टी की वास्तविक स्थिति देश की भौजूदा व्यवस्था में चलने वाले प्रत्येक राजनैतिक दलों से भिन्न नहीं है। इसके कुछ युवा कार्यकर्ताओं को एक घससे यह पग रहा था कि पार्टी जिस दलित ठकके की वकालत करती है उनके लिए कुछ पास कर नहीं पाती। कपनी-करनी के अन्तर में उन्हें पार्टी के कुछ स्वार्थी नेता भी दिखे। इन युवा कार्यकर्ताओं ने उससे विद्रोह कर अप्रैल ७२ में दलित पेंथर नामक यह नया संगठन बनाया किया था। अमेरिका में कुछ विद्रोही काले लोगों ने गीरो के प्रत्याचार के विरुद्ध 'ब्लैक पेंथर' (काले चीते) नामक एक संगठन बनाया था। उन्नीस फ़ेब्रुअरी सेक्टर महाराष्ट्र के दलितों के बीच 'दलित पेंथर' जन्मा है।

दलित पेंथर को इस बात पर गर्व है कि मध्य बम्बई लोकसभा उपचुनाव में विद्यमान महीने हुई कार्यसूची की करारी हार उसके 'युवा बहिष्कार आंदोलन' की जीत थी। कुछ प्रसवारी और तटस्थ निरीक्षकों को भी इस दावे में काफी सच्चाई दीखती है। पिछले कुछ वर्षों में देश में ससदीय प्रणाली से निरास समाज के कुछ विपक्षी तबकों ने (जैसे प्राविद्यती) या गांधी ने पुनाब बहिष्कार का मुनिषोजित प्रयोग इस्तेमाल किया भी है। लेकिन बम्बई के लोकसभा उपचुनावों में जिस पंमाने पर और जिस करारीरी से 'दलित पेंथर' ने इसका इस्तेमाल किया वह प्राथम्यजनक था। इस युवा शक्ति में परिणामित मतदाताओं (भयूर) की संख्या करीब १ लाख ३२ हजार है। और पेंथर ने बहिष्कार का प्राथम्यजनक नहीं किया होता तो इनमें से कम से कम ८०-९० हजार मतदाता अपना मत खाने के लिए पतदान केन्द्रों पर पडुक्ने। सत्ता कार्यसूची को उन्मीड की कि ये सब मत उसके उन्मीडवार को ही मिलेंगे क्योंकि मानुष नहीं किस उपाय से, रिपब्लिकन पार्टी के दोनो गुटों—नायबवाड तथा खीबागडे—से समझौता करने में सत्ता कार्यसूची के अंतर्गत रजनी पीटल कामयाब हुए थे। पेंथर के बहिष्कार आंदोलन के कारण सत्ता को परिणामित भाति के मतदाताओं के धर्मपति ७०-८० हजार मतों से हार्य होना पडा। कार्यसूची

की हार का निश्चय ही यह एक मुख्य कारण है।

मतदान विधि के पहले इस युवा शक्ति ने एक ध्रमानवीय घटना न घटी होती तो सम्भव पेंथर के बहिष्कार आंदोलन को इतनी सफलता नहीं मिलती। एक जूनस में पेंथर के युवा नेता, साहित्यकार और कलाकार भी भागवत बाघन की कुछ गुटो ने निर्गम हत्या की। बताया जाता है कि ये कार्यसूची और शिवसेना के गुट थे। इसके पूर्व बहिष्कार आंदोलन के सिलसिले में पेंथर द्वारा इस युवा शक्ति के वरसी सड में प्रायो-जित एन सभा पर शिवसेना और कार्यसूची कार्यकर्ताओं ने जबरदस्त पत्थरबाजी की थी। परिणामस्वरूप शिवसेना, कार्यसूची तथा पेंथर के समर्थकों के बीच घमासान सडा हुई। पुलिस ने भी अपना 'कर्तव्य' निभाया था। पेंथर के कई सैनिक घायब हुए थे। पेंथर का जूनस पुलिस और गुटों के प्रत्याचारों के विरोध में ही था और पेंथर का युवा नेता भागवत बाघन उद्यम में शामिल था।

बहिष्कार आंदोलन की कामयाबी का एक और भी कारण है। रिपब्लिकन पार्टी के दोनो गुटों के नेताओं की धर्मसत्वादी और स्वार्थीरित राजनीति से पार्टी के युवा कार्यकर्ताओं की साधारण अनुयायी कुछ घससे से क्रुद्ध हैं। डा० अविशकर के निघन के बाद पार्टी के कई छोटे-बड़े नेताओं ने पद त्यागता

से या तो सत्ता कार्यसूची की कारण ही या कार्यसूची के कुछ अनुयायी ने सीटों का सौदा किया। इस मौकापरस्ती का लाभ कुछ चुने हुए रिपब्लिकन नेताओं को भी प्रशय मिला। लेकिन दलित समाज जटा था, वही रहा। प्रगत मुनिहीनों की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। गांधी के हरिजनों पर प्रत्याचार बढ़ने रहे। प्रगतों की पार्टी रिपब्लिकन पार्टी और कार्यसूची प्रधिनतर इन दोनो दलों में राजनैतिक स्तर पर समझौता जकर हुआ, लेकिन सामाजिक स्तर पर समझौते के जो प्रच्छेद नीतिज्ञे नितालना जरूरी था, वे नहीं निरल पाय। भी यथावतराब चढ्हाए और रिपब्लिकन पार्टी के नेता स्वार्थी दादाभाइ गायकवाड ने कार्यसूची रिपब्लिकन युवावी गठ-बन्धन का सघर्षन इन शब्दों में बनाया था। 'इस समझौते से देहानों में स्वरूप और अस्वरूप समाजों में सदियों से जो भयानक दूरी है वह मिट जायेगी'। मगर यह हुआ नहीं। हो भी नहीं सकता था।

हरिजनों पर प्रत्याचार बढते रहे, लेकिन रिपब्लिकन पार्टी के नेतागणों ने जिस सत्ता कार्यसूची के साथ गठबंधन किया था और जिस से सरकार रूप्यों के प्रभाव के कारण हरिजनों पर प्रत्याचारों के प्रति या तो निष्क्रिय थी या नरम हल अपना रही थी, उस प्रत्याचारों को रोकने के लिए बाध्य नहीं कर पाये। वे कार्यसूची कृपा से प्राप्त करने पद सभाल रहे थे।

इस पुष्टप्राम में जब दोनो गुटों के रिपब्लिकन नेताओं ने बम्बई के लोकसभा उपचुनाव में कार्यसूची उन्मीडवार का समर्थन करने का फैसला किया तो सारे महाराष्ट्र के युवा रिपब्लिकन कार्यकर्ता और भी क्रुद्ध हुए। बम्बई में 'दलित पेंथर' ने इन युवाओं को नेतृत्व दिया, दिया भी दी। बहिष्कार आन्दोलन इसीका मतीया था जो अग्रत्यागित रूप से सकल हुआ। 'दलित पेंथर' एक विद्रोह है—मृतपूर्व रिपब्लिकन दल के मौकापरस्त और स्वार्थी नेताओं की राजनीति के विरुद्ध विद्रोह। पेंथर के लयभग सभी सदस्य युवा हैं—१७ से ३० की उम्र के। अधिकतर पढ़े-लिखे, विश्वविद्यालयों के स्नातक भी हैं। वेरोजगारी और भविष्य के अंधेरे की प्राय में जलने वाले शिशित भी काफी बडी संख्या में

है। यह समझना गलत है कि पंचर ने सिर्फ बौद्ध या ब्रह्मूत ही शामिल हैं। इस में महा-राष्ट्र के सभी पिछले समूहों—मालंग, डोर, रामोही, चमार आदि युवजन वम-ग्रहिक संस्था में हैं। काष्ठी बड़ी संस्था में गरीब मुसलमान भी हैं। बम्बई 'दलिन पंचर' के उपाध्यक्ष सैय्यद निजामी हैं और कार्यकारिणी के एक सदस्य लतीफ खाटीक है। कुछ ब्राह्मण युवा भी हैं—जैसे बम्बई शाखा के उपसचिव बाल खैरमोडे।

'दलिन पंचर' का जन्म कोई डेढ़ साल पहले बम्बई में हुआ था। इस समय नागपुर, बम्बई, भोरंगामाव और पुणे जैसे प्रमुख नगरों के अलावा महाराष्ट्र के तीनों हिस्सों में—विदर्भ, भरतखंडा और पदिचमी जिले—पंचर का विस्तार हो रहा है। पंचर के संस्थापकों में सर्वश्री नामदेव ढसाल ज०पि० पवार, भ्रानिनाथ मालेकर, भाई संगादे, राजा-दासे आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। नामदेव ढसाल तथा राजा ढाले दोनों लोकप्रिय नेता हैं, दोनों जाने-माने दलित साहित्यकार भी हैं। युवा दलित साहित्यकारों का ब्रह्मदा शाखा जमाव पंचर में है। जो साहित्यकार पंचर में नहीं है, वे भी पंचर के प्रशस्त और समर्थक हैं। कुछ वर्षों से महाराष्ट्र में उच्च वर्गीय और सफेदपेशी साहित्य के प्रभाव से भराटी साहित्य को मुक्त करने का जो आन्दोलन जारी है, उस में सभी दलित साहित्यकार प्रगुष्टा हैं।

महाराष्ट्र में राजनीति के सभी समभदार लोगों के लिए अब यह मानना लाजमी हो गया है कि 'दलित पंचर' एक उभरती, लड़ाकू शक्ति है, जिसकी उपेधा नहीं की जा सकती। उसका बाहरी रूप उग्र है। पंचर वाले नारा लगाते हैं—लून का बदला लून से लेंगे। वे यह भी कहते हैं कि 'विधानसभा, कंबोदियायी, धर्मोत्री और धर्मोत्री वलं पंचर हमारे भादर्स हैं। इन घोषणाओं से यह निष्कर्ष निवालाता कि पंचर हिंसा और घात-कबाद के रास्ते पर जाना चाहते हैं, प्रसामयिक होगा। संसदीय प्रणाली तथा सत्याग्रह की उपयोगिता के बारे में पंचर को आशंका है, लेकिन यह नहीं बोलता कि किस्सहाल यह इन साधनों को पूरी तरह से छोड़ना चाहता है।

'जैसे को तैसा' यह पंचर का एक श्लोक नारा है। यह केवल नारा ही नहीं है, क्योंकि पंचर ने पिछले एक वर्ष में यह सावित वर दिया है: बम्बई में कई बार जिवसेना के सैनिकों और वभो पुलिस की भी पंचर की मुठभेड़ हुई है।

राजनैतिक दलों के दक्षिणपथी और वामपथी गुटों में वर्गीकरण के हिसाब से दलित पंचर को वामपथी कहा जा सकता है। अपने सिद्धान्त-नीति वचनव्य में पंचर बहुत है: "दलितों का मुक्ति सधर्ष सर्वदो-मुखी आक्ति चाहता है। सामाजिक दास्य से धगर हम मुक्ति पाना चाहते हैं तो वरिष्ठ राज-नैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में दलितों की सत्ता कायम होनी चाहिए। सारी सत्ता दलितों के हाथ में हो।" इस लिए पंचर का प्रयास है कि "हम समाज के गम्भीरताकारी समूहों को जागृत करेंगे। इन समूहों की सधर्ष शक्ति से प्रान्ति की लहर उठेगी।"

'दलित वीरन है?' इसकी व्याख्या करते हुए नीति वचनव्यो में कहा गया है कि 'प्रनु-

पूचित जातियों, श्रमिक जनता मजदूर, भूमि-हीन, खेतिहर मजदूर, गरीब किसान, आदि-वर्गों इन सबको हम दलित मानते हैं।'

अपने शत्रुओं की घोषणा करते हुए पंचर का नीति वचनव्य पुनारता है, 'सत्ता, संपत्ति, प्रतिष्ठा तथा जमींदार, धनिक, साहू-कार और इन सब के अनुयायी, साथ-साथ साम्प्रदायिक राजनीतिक दल तथा उनको सहाय देने वाला शासन।' दलितों के प्रमुख सवालियों को पंचर ने गिनाया है—'धन, जल, वस्त्र और भोजन, नौकरी, जमीन, धन्युभ्यता तथा अस्पृश्यो पर हो रहे अत्या-चार।' 'दलित पंचर' वम से वम इस समय हरिजनो पर हो रहे प्रत्याघारों को मान्यता वरना अपना प्रमुख कार्यक्रम मानता है। अपने को एक सम्यक राजनैतिक समूह में विवसित करने के लिए इतना ही काफी नहीं है, पंचर जब यह मद्द्म करेगा तभी उसका असली स्वरूप सामने आयेगा।

(वितमान से साभार)

गुजरात की विधान सभा का भंग होना जरूरी है

(पृष्ठ ५ का दोष)

गुजरात की विधानसभा का भंग होना जरूरी है क्योंकि इस देश में एक बार जब तक यह स्थापित नहीं होगा कि जनता के विश्वास का धारण करने वाले प्रतिनिधि विधानसभा या ससद में नहीं रह सकते तब तक प्रतिनिधियों पर अनुशासन नहीं रह सकता। सविधान और प्रजातांत्रिक ढांचा विधायकों पर अनुशासन में सयम नहीं है यह हमने पष्मीय सत्ता में देव लिया है। हमने यह भी देव लिया है कि मनमाना और गैर-प्रजातांत्रिक व्यवहार करने वाले लोग ही सविधान और प्रजातांत्रिक व्यवस्था का लाभ सत्ता के लिए उठाने हैं। जनता जिन्हे अपने प्रतिनिधि चुनती है उन्हीं से अगर वह विषयवत् नहीं माग सकती तो तो फिर उसके पाय क्या धरिधार है? किफं वोट देने का। और वोट देकर धम-हाय दर्शकों की तरह राजनीति का खेल देखते रहने का। गुजरात में जनता का जीवन जरूरी है अगर राज उसका है।

लेकिन अगर गुजरात के विचार्यों धर्मात्मक और लोभ हिमक कार्यवाही करेंगे

तो जनको जीवन नहीं होगी। सरकार उनसे ज्यादा बड़ी और कारगर हिंसा करने की ताकत रखती है। फिर हिमक कार्यवाही में धाम जनता भाग नहीं ले सकती न ऐंगी कार्यवाही का लगातार समर्थन कर सकती है। अगर गुजरात का विचार्यन उनके इस धरिधार को स्थापित करे कि प्रतिनिधियों पर प्रतिम अनुशासन उतका है जिन्हे इन्होंने धारण दिया है तो उनका धारोवन धरिधार्य रूप में धरिहार होना चाहिए। यह हिमद करने के लिए कि पूरी जनता विधानमन्त्रा को भंग करना चाहती है—गुजरात में धरिधारकारिक मन-दान हो सकता है। विचार्यनों से माद लोभ धरिहार धमकार कर सकते हैं। उम जनता पर कोई भी शासन नहीं कर सकता जो शांति होने के लिए तैयार न हो। गांधीजी ने हमें मिद वरके बताया है और गांधीजी ने यह सब हमें गुजरात से शुरू किया था। धरिहार के विचार्यन जनता धरिधार प्राप्त नहीं कर सकती।

रवाई, जौनसार पदयात्रा के अनुभव

योगेशचन्द्र बहुगुणा

एक माह तक उत्तराखण्ड के रवाई, जौनपुर व जौनसार बाबर क्षेत्र के गांवों में पैदल घूमने के बाद हमें इस क्षेत्र की खूबियों और खासियों के एक साथ दर्शन हुए हैं। पारम्परिक विवाह, जो कि लोक-नीति की सुनियार है, इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता मानी जायेगी। पचासवीं राज एक्ट लागू होने के बावजूद भी स्थानीय सुमईया (परम्परागत पचायतों) धारा भी प्रभावशाली हैं। सार्वजनिक हित के प्रश्नों को लेकर लोगों के समझौते होने के एक से एक चमत्कृत कर देने वाले उदाहरण मिलते हैं। हाल ही में सरकार ने चकरोना से भ्रूसुरी तक फलपट्टी बनाने की योजना स्वीकार की। इस योजना के कारण यहां के कीमती जंगलों की विनाश सीला प्रारंभ होने वाली थी। लोगों के चुरान-धुपान के स्थान भी इस योजना के धर्मगत भा रहे थे और सबसे बड़ी विडम्बना यह थी कि फलपट्टी योजना का अधिकतर लाभ बंदासो क्षेत्रों के सम्पन्न वर्ग को ही मिलने वाला था। इस मनमाने विवाह को रोकने के लिए जब क्षेत्रीय जनता की सारी धनुनय-विनय बेकार सिद्ध हुई तो रवाई गांवों ने मिनकर नानुन का सटारा लिया जिस पर उनके उम्मीद हूजर रणने लखें हुए। सरकार के साथ मुकदमा चल ही रहा था कि अधिकाधिक के जमीन के रबने बाइसे प्रारंभ कर दिया। जनता का धाकावा चरम सीमा पर पहुंच गया। रवाई मौ लोगों के पहले दल ने कमिन्कर सहित जीव मे बेंडे अधिकाधिक को हाथ सींचकर बाइर फेंक दिया और जीव को उठाकर डगार मे गिराने लगे। हार मान कर प्रशासन को इस योजना को रद्द करना पड़ा। धारनवं है कि इसी से मने दोष की बन्वा-भ्रूसुरी फलपट्टी योजना भी समाप्त परिस्थिति होने के बावजूद बड़ा की जनता छुटपुट धरदारबाइरों के धीरे धीरे भी सखिच कचप नही उठा सके।

पारम्परिक विवाह और परम्परागत समझ के मुद्दे धारा होने के साथ-साथ

यहां का समाज कई सकोटो का सामना करने लगा है। जिनमे से कुछ प्रमुख समझिए इस प्रकार हैं।

बाल विवाह व छूट. भारत मे राजा राम मोहनराय से लेकर अब तक धनेक समाज सुधारकों ने बाल विवाह पर प्रहार किया है परन्तु उत्तराखण्ड के इस क्षेत्र मे बाल विवाह एक आम बान है। एक गांव मे हमारे पहुंचने से दो दिन पहले ही एक लडकी की मा को उसे दूध पिलाने के लिए बारत के साथ ही लडकी की समुवाल तक जाना पडा (यहां लडके की बारत न जाकर लडकी की बारत जागी है) इसी तरह हमारा एक मेजबान भाने चार साल के लडके को जो सम्भव मूला रोग से पीडित था, भ्रूसुरी गोद मे लेकर उसकी बाती शोध कर देने की प्राशाभा प्रकट कर रहा था।

स्थानीय जनता की मान्यता है कि इस क्षेत्र मे छूट (विवाह विच्छेद) का एक मात्र कारण बाल विवाह है। बाल दम्पति जब तक पूरे यौवन पर भाने हैं तब तक उनका पारम्परिक धारंपर्य समाप्त हो जाना है और नयेपन की सत्ताग शुरू हो जानी है। नारी-शिवन का दुहरा नैमित्त्य इतर इस क्षेत्र मे सहूलियत पंदा करना है। इन पूरे बहुपति-वारी क्षेत्र मे नारी जीवन की दो भूमिकाए हैं। जब वह समुवाय मे होती है तो राडी कहलाती है और जब वही स्त्री मायके में होती है तो ध्याटुडी नही अती है। ध्याटुडी को राडी को पोषाभा ध्याजारी है। वह अल्प मे जरूर भाने समवपस्य पुण्यो के साथ नाच भा सकती है और मावयवता पडे तो नये पति का बचन भी कर सकती है। नये पति का चुनाव यदि पक्का हो गया तो पहले बाने पति को छूट (सत्ताग) दे दी जायेगी। सभी पर्व-धर बार तक लडकी की छूट होती है।

स्थानीय लोगों ने इनकी अधिच छूट का कारण भले ही बाल विवाह बताया है परन्तु वास्तव मे यह कारण प्रबल नहीं है। यदि

ऐसा होता तो भ्रूसुरी पमन्दे का पति मिल जाने पर एक लडकी एक से अधिच बार छूट करवाने को तैयार नही हो सकती। वास्तव मे दूसरे क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र मे भी स्त्री एक अधिच पावना है। कई मामलो मे तो लडकी से जवईस्त्री छूट दिलवाली जाती है और इसमे उसके बाप तथा भ्राय पंको का हाथ होता है। वे जब पंको की धारव्यकता समभते हैं या लडकी के बदले और अधिच पंसा लेने का लालच होता है तो बाप लडकी को घर पर ही रोक लेना समुवाल नही भेजेगा। लडकी को भी सिखा देगा कि वह समुवाल जाने से इनकार कर दे। इस बीच दूसरा पति भी तलाश करना लिया जाता है जो लडकी के बदले में पिता को इनती रकम दे सके कि उसते पूर्व पति द्वारा दी गई रकम भी लोटाई जा सके तथा कुछ बाप को भी बच जाए।

छूट के मामलो को लेकर यहां विवाह बहुतायत से होते हैं। रवाई और जौनपुर मे छूट को रिवाजत बालीन शासन के द्वारा कानूनी मान्यता भी और इससे सरकारी सजाने मे धच्छी साठी धामदनी होती थी। एक बुजुर्ग ने बताया कि पहले छूट की तय होने वाली रकम का दो भ्राना प्रति रणया रिवासनी सरकार को देना पडता था। बाद मे यह रकम कुल तीस रुपये हो गई, छूट की रकम चाहे जो हो। अब छूट स्थानीय पंचो द्वारा होती है। पंचों के पचायन की रकम पंच लोगों मे बट जानी है। इस तरह रिवासती सरकार के स्थान पर अब यह स्थानीय पंचों की कमाई का सत्ता बन गया है और लोग म.जनपूर्वक छूट करवाने की व्यस्तता करते हैं ताकि उन्हें पचायन बटने पचायना प्राल करने का भवसर प्राल हो सके। जौनसार-बाबर म भी छूट स्थानीय सुमईयो के द्वारा ही होती है। पूर्व पति पंचा के सामने रकम प्राणि की धिट्टी लिख देता है। उसको नानुन का धनुमोदन उजलउव(मुल्की नियम) के धारा पर स्वन हो जाना है।

दवा बानी शादो. इस क्षेत्र मे बन्वा-दान धामनोर पर गही होना, पचायत पहले शादो मे लडके के पिता से भारी रकम भी नही ऐंडी जानी, परन्तु जैसा कि एक बुजुर्ग

हम असफलता के लिए तैयार थे

निर्मला देशपांडे

स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह देश भर में मनायेंगे—भारत के तीन सौ जिलों में तीन सौ पदयात्राएँ होगी, कुश्नेत्र के सर्वोदय सम्मेलन के साथ हुए महिला-सम्मेलन के निर्णय मुन कर एक सज्जन सहानुभूति के स्वर में कहते लगे, 'सौ यात्रायें निकल जाए तो भी ग्रामका कार्यक्रम शत-प्रतिशत सफल हुआ माना जाएगा।' कश्मीर से नन्दाकुमारी घौड़ झारिका से डिगू गड़ तक फैला हुआ यह देश, बरसान, बाइ, धापी-नुकान जैसी प्राकृतिक धौड़ मानव निर्मित कठिनाइयाँ, सम्पन्न करने वाली इन्दी-गिनी चार-छह बहनें धौर उनके पास भी पचासो काम-प्रसफलता की पूरी तैयारी थी। लेकिन जब ११ से १७ फरवृबर तक मनाये गये स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के विवरण धाने लगे तो सभी कहने लगे, 'प्रभुभुल, प्रभुतपूर्व, चमत्कार।' सभी तक धाने हुए विवरण के प्रनुसार देश में पाच सौ पदयात्राएँ निकली जिनमें चम-जे-कम पाच हजार बहनें सम्मिलित हुईं धौर इन सबकी सामूहिक साधना के परिणाम-स्वरूप उस सप्ताह में दस हजार मील की पदयात्रा हुई।

इन पदयात्रा भी बहनें में प्रमूलीला बहन की एक माह की बच्ची कण्ठा से लेकर सत्तर पंचहत्तर साल की बुढ़ापे तथा बालिकाएँ, युवतियाँ, प्रौढाएँ भी शामिल हुईं। जीवन में पहली बार घर की देहरी को पार कर धूँधल सेकर निकली हुई महिलाओं से लेकर विदेशों की यात्रायें करने वाली धार्याधुनिक शहरी महिलाएँ, प्रशिक्षित, प्रत्यक्षिक्षित, धामोएँ मुहीणियों से लेकर प्राचार्य, बनील, डाक्टर, राजनीतिक धारि महिलाएँ, इंद्र, धुमजमान ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी, यहूदी, सिक्ख धारि सभी धर्मा भी महिलाएँ, भारत की हरे भाषा बोलने वाली महिलाएँ पदयात्रा में शामिल हुईं थीं। समय भारत की प्रति-निधि स्त्री-शक्ति गणधान हो उठी थी। पदयात्रा करने वाली, पद-यात्राओं का सपोजन करने वाली इन महिलाओं में मुचिस्त

से दस प्रतिशत ऐसी होगी जिनका सर्वोदय कार्य से प्रत्यक्ष सम्पर्क हो। बाकी सन्धे प्रतिशत महिलाएँ उस ध्याम जनता की प्रतीक थीं, जिसको जगाना सर्वोदय ध्यारोलन का एक प्रधान लक्ष्य है।

ध्याविर यह, सब हुआ चँचे? कही पर सर्वोदय धौर रचनात्मक कार्यकर्ता सक्रिय बने कही महिला-सगठन या सस्थाओं में अपने धमिक्रम से धारोलन किया, कही शिक्षा सस्थाओं में जिम्मा उठाया तो कही कोई व्यक्ति धाने धाने। धनम में इन सबके साथ साथ सरकारी धधिकारी भी स्त्री-शक्ति जागरण को अपना काम मान कर दूसरे लगे धौर प्रदेश के करीब-करीब हर प्रसन्न में महिला पदयात्रा टोली निकली। हर जगह स्थानीय धमिक्रम जाग उठा, गये गीत बने, नये नारे बने। सप्ताह के कार्यक्रम में गाव-गाव धौर नगर-नगर में महिला सभा, ससग गोष्ठी, भजन, कीर्तन ध्याम सभाओं के साथ, साथ महिलाओं में धाने धमिक्रम से कई कार्यक्रम उठाये। जनरटिक भी महिलाओं के धार्योभनीय पोस्टरों को हटाने तथा कँबरे मूल को बन्द करवाने का कार्यक्रम उठाकर नारी के धनमान के सितलफ ध्यान्दोलन उठाया। उमिलनाडु धौर बिहार के ध्याम-दानी सधन क्षेत्रों में निर्णय हुआ कि ध्याम-सभाओं में महिलाओं का योगदान हो धौर ध्याम परिवार की भावना को विकसित करने के लिए महिलाएँ धाने धाने। उकल में ध्याम सफाई, धयमदान, बच्चों की सफाई तथा उन्हे कृाननी, खेल, गीत धारि के द्वारा लोस्कार देने के कार्यक्रम भी उठाये गये। तमिलनाडु के तन्नारूर जिले में सत्याग्रह के लिए महिलाओं को सगठन करने का काम पता। गुजरात धौर उत्तरप्रदेश में नाटक तथा ध्याम साहूदतिक कार्यक्रमों के द्वारा क्राति-विचार को लोकप्रिय बनाने के सफल प्रयास हुए। हरियाणा, राजस्थान धौर उत्तरप्रदेश के कुछ क्षेत्रों में नाराबन्दी के काम में गनि लाने का तथा चर्खे के द्वारा

ध्यामीएँ जनता को जगाने के प्रयास हुए। केरल में सर्व धर्म समभाव के कार्य पर विशेष जोर दिया गया। देश भर के नगरो में सर्वो-दय-नाच, शांति सेना तथा गांधी में ध्यामदान का प्रचार पदयात्राओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था ही। स्त्री-शक्ति जागरण को ध्याध्यामिक दुनिया की चर्चा भी चलती रही, कही पर युवतियों में ब्रह्मचर्य की, प्रौढाओं में धानप्रस्था की प्रेरणा भी पायी। स्थायी कार्यधम के लिए धानेको स्थानों पर महिला मडल बने, पहले बने हुए मडलों में कार्यधम उठाये। सर्वोदय साहित्य प्रचार धौर पत्रिकाओं के प्राहल बनाने का काम भी चलता रहा।

सप्ताह के कार्यक्रम में सर्वाधिक सफलता मिली धार्धीजी के गुजरात में। यहाँ १७५ टोलिया निकली धौर हजार बहनें ने पद-यात्रा की। जामनगर जिले में ४४ टोलिया निकली, यह सस्था सबसे ज्यादा थी दूसरा स्थान पाया धयम में जहा ६५ टोलिया निकली। तीभरा स्थान मध्यप्रदेश के इ धौर जिले १८ धौर पश्चिम विमाड जिले में १० टोलिया निकली। एक पदयात्रा टोली में सौसठ सात महिलाएँ होती थीं। लेकिन कई स्थानों पर गाव की संकडो महिलाएँ पदयात्रा टोली के साथ दूनरे गाव पैदल चलती। तमिलनाडु के मधुरै जिले में कुल का कुल गाव पदयात्रा टोली के साथ चल था। बंगाल के चौवीस परगना जिले में ध्रतिम दिन की पदयात्रा में करीब एक हजार बहनें शामिल हुईं थी।

पदयात्रियों का यह कार्यधम लो सेवल धारधम मात्र है—स्त्री-शक्ति, ध्याम शक्ति, जनशक्ति के जागरण के ध्यारोलन का। सभी प्रदेशों से माय धायी है कि यह कार्यधम हर साल चलना चाहिए। बहनों की मांग के धनुवार मार्च में ब्रह्मविद्या मन्दिर (पवनार) में एक महिला सम्मेलन ध्यामीजित किया है, जिसमें देश के फने-बोने से धार लो महिलाएँ सम्मिलित होगी।

दत्तपुर कुष्ठधाम का संकल्प

बद्रीनाथ सहाय



एक उपवासदाता चटाई बनाते हुए

रोगियों ने गांधी की बल्ना का प्रामस्वराज्य यहाँ सड़ा नहीं कर लिया है ?'

उमके मुँह से प्रामस्वराज्य की बात सुनकर मुझे सपसुप लगा कि जहाँ बड़े पैमाने पर कृपि का काम कर भाएने लिए धन पंदा कर लेना, वस्त्र स्वावलम्बन के लिए कपास पंदा कर लेने से लेकर कपडा बना लेने तक की सारी प्रक्रिया, गोशाला, चर्मोद्योग, सिलाई मशीन, बान-मन्दिर एवं पाठशाला, कुकुट पालन, गोबर गैस प्लांट, तथा सहकारी दुकान जैसी अनेक प्रवृत्तियों के द्वारा ब्यवित्तन स्वावलम्बन से धायन तक स्वावलम्बी हो, वहाँ धन कौन सा प्रामस्वराज्य बाकी है ?

जब बिनोबाजी ने दत्तपुर के १२२ उपवासदानियों की सूची तथा उसके प्राप्त १५०४ रुपये की आधिक रकम देखी तो खुश होकर डा० रविशंकर शर्मा की तरफ इशारा करते हुए कहने लगे, 'बहुत धधका काम किया है आप लोगों ने।'

यथायथा पवनार के बीच रास्ते में ही दत्तपुर कुष्ठ पीड़ितों का एक सेवाधम है। इस धाम की स्थापना अगस्त, १९३६ में हुई थी। तब से अब तक यह संस्था कुष्ठ पीड़ितों की सेवा करती आ रही है। अभी इस धाम की सुयोग्य सचालक डा० रविशंकर शर्मा का मार्ग दर्शन मिल रहा है। कुष्ठ रोगी प्रायः अथ कमजोर होने हुए ही स्वाश्रयी हो सका है, इसकी सही तस्वीर दत्तपुर के इस धामधम में दिखाई देती है। बिनोबा के उपवासदान आवाहन पर इस कुष्ठ सेवाधम के रोगियों तथा कार्यकर्ताओं ने अपना उपवासदान तोषित किया है। इस धामधम के १२२ व्यक्तियों ने उपवासदान का सकल पत्र भर कर सर्व सेवा संघ की दे प्रान्त रकम का भी मथन हुआ। रोगी विचार का धनही हो सेवा की अधिक जरूरत है। फिर भी इन्होंने सर्वसेवा में कुष्ठसेवा का ही जानी है, ऐसा मानकर पुण्य कार्य के लिए उपवास कर बचन की रकम दान देना तय किया है।

दत्तपुर धामधम में मुझे घूमते हुए ऐसे अनेक भाई-बहनो से सम्पर्क साधने का अवसर मिला जो कुष्ठ रोग से कुछ न कुछ धीमा तक पीडित होते हुए भी बड़ी की अनेक विषय प्रवृत्तियों में सलग्न हैं और उनमें से बहुत से महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों को उठाते हुए हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि ये कुछ तो शिक्षित हैं ही। उन में से दधनर में काम कर रहे एक भाई से मैंने पूछा, 'क्यों भाई आपने भी उपवासदान किया है ? 'जी, हाँ।' उसका यही उत्तर था।

मैंने फिर पूछा, 'आप तो महारोगी है। जीवन-निर्वाह के लिए काफी, मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी उपवास करने उससे बची रकम दान देने की प्रेरणा कैसे जगी ?' जब डा० साहब (रविशंकर शर्मा) ने उपवासदान की बात समझाई और यह भी बताया कि बिनोबा जी तथा देश के ऐसे बहुत सारे लोग

महीने में एक रोज वा उपवास कर उससे बची रकम सर्व सेवा संघ, जो एक सेवाभावी संस्था है वो दान दे रहे हैं, तो हम लोग भी क्यों न इस बड़े काम में शरीक हों। जैसे हम वृष्ट में हैं वैसे हम से भी ज्यादा बिलुने लोग होंगे जो काफी वृष्ट में जीवन बिताते होंगे। बिलुने तकलीफें सहते होंगे। उनसे तो शायद हम थकड़ी हालत में ही हो। इसलिए सोचा कि यहाँ जो सुविधा हमें प्राप्त है उसी में से थोडा-सा दूसरो के लिए दें। दुपी लोग दूसरो के दुख नहीं समझेंगे तो वह उनका दुख और दुःख-निवारण का उपाय भी एक लोभ बन सकता है जिसे वे धकेले भांग नहीं सकते। वे स्वयं भी फर्बते और समाज में भी उदारता नहीं पनप सकेंगे।'

वह प्रजुएट है। समाज के दबाव के कारण वह पर छोड़कर धामधम की शरण में आ गया है। मुझे निस्तव्य भाव से खड़े देखकर उसने फिर कहा, 'रोगियों को समाज पर भार रूप होकर रहने की जरूरत नहीं और भीस मांगते फिरने की भी जरूरत नहीं। पीछे साधन एवं व्यवस्था उपलब्ध कर देने से कुष्ठ रोगी स्वावलम्बी, आदर्श गौव का निर्माण कर सकता है। अग्रर प्रापको मेरी बात पर यकीन न हो तो दत्तपुर के इस धामधम में घूम कर देख लीजिए। क्या

भंडारा जिल् (महाराष्ट्र) से प्रभाकर वापट लिखते हैं : मेरा जीवन गत २६ सालो से जनाधारित रहा है। भोजन यत्नत्र होता है। दूसरी अहरतो की भी निश्चिन व्यवस्था नहीं है लेकिन मुझे किसी चीज की कमी नहीं पडी। रिलहाल कुछ महीनों से सर्वोदय समिति प्रायलगाव मुझे खाना सिला रही है।

बई वर्षों से बुधवार को मैंने एक बचन का भोजन छोड़ दिया है लेकिन दूध, फल, कन्द आदि कुछ खा लेता रहा। अब उपवासदान के सबल से मैंने बुधवार को चौबीस घण्टे में तिकें एक बत्त के भोजन व पानी के अलावा दूसरा कोई भी भोजन न लेना तय किया है। दूध फलाहार में छोट वारह आना खिलाने वाले का लग ही जाता था। महीने के चार बुधवार से यावर्ष में ५२ बुधवारो से बचने वाली रकम, पचास पीसे के हिसाब से २६ रुपये में सर्वोदय समिति से मांगू या। और दान की पूर्ति कर सर्व सेवा संघ को भेजूंगा।

उपवासदान से विपयता निराकरण भी होगा। सर्वोदय की निधि दृष्टता करने में अभी तक बडे कार्यकर्ता ही ज्यादातर काम करते थे, छोटे कार्यकर्ता दीनता महसूस करते थे। उपवासदान इस विपयता को समाप्त करेगा।

सर्वोदय



सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ११ मार्च, '७४



भारती के लोगों ने शराब की दुकान याबकारी विभाग में आ पटक दी। (विशेष लेख पृष्ठ १ पर)

- स्वेच्छिक शराबबंदी का आन्दोलन
- अपनी टोली में सबको इकट्ठा करो
- नक्कारखाने में तूती की आवाज सुनी गयी
- चमड़े के लिए भैंस को

श्रव चर्चा का समय है!

भूदान-यज्ञ

११ मार्च, '७४

वर्ष २९-

अंक २४

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

श्रव चर्चा का समय है

(सम्पादकीय) २

कानपुर में सीधी उंगली : सीधी

कार्यवाही — एक सवाददाता ३

अपने श्रीर अपनी सरकार से

लड़ती रंगर जाति — रामभूषण ५

अपनी टोली में सबको इकट्ठा

करो — विनोबा ८

चमड़े के लिए भंस को मत

मारो भाई — प्रभाप जोशी १०

एक तटस्थ नजर से आन्दोलन

— कुमार प्रसाद ११

सभी भाषाओं के लिए मायरी

लिपि १५

गुजरात में लोक स्वराज्य

आन्दोलन — श्रुतग १६

आन्दोलन के समाचार १६

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

गुजरात से दिल्ली आये विद्यार्थी नेताओं से चर्चा करने की जो उत्सुकता और तत्परता केन्द्रीय नेताओं ने दिखायी है उससे लगता है कि सरकार ने विधानसभा को भंग करने की मांग पर अपना दिमाग बना लिया है। द्विचक्र शायद एक ही है कि पहले विधानसभा के विसर्जन की घोषणा की जाये या पहले गुजरात में शांति स्थापित हो। विधानसभा के विसर्जन के प्रश्न पर प्रधान मंत्री स्वयं कई बार अपने विचार बदल चुकी हैं। पहले वे इस में बिल्कुल नहीं थीं कि विधानसभा को भंग किया जाये। लेकिन चिमन भाई और मीना भाई दर्जी के ऋण्डे साफ करने के प्रयत्नों का जो मनीषा निरव्त्ता उससे शायद श्रव वे मान चुकी हैं कि गुजरात में काँग्रेस की सरकार फिर से नहीं बन सकती। इसलिए लोकसभा में उन्होंने घोषित किया कि गुजरात के मामले में उनका दिमाग खुला हुआ है और वहाँ शांति स्थापित होने और परिस्थिति सामान्य होने के बाद लोगों की मांग पर विचार लिया जायेगा। लेकिन इस घोषणा से भी वहाँ शांति स्थापित नहीं हुई और मरने वालों का शोषित घटा नहीं। एक बार यह घोषित कर देने के बाद कि विसर्जन की मांग पर अभी विचार होगा जब शांति स्थापित होगी, सरकार के लिए यह शायद मुश्किल है कि शर्त पूरी होने के पहले ही फैसले की घोषणा कर दे। विद्यार्थियों नेताओं से चर्चा करने की उत्सुकता इसीलिए है कि कोई बीच का रास्ता निकल सके।

दिल्ली में केन्द्रीय नेताओं से चर्चा करने के सवाल पर आन्दोलन चताने वाली नव-निर्माण युवक समिति में एक्मत नहीं है। पहले तो विद्यार्थी नेताओं ने दिल्ली आ कर बात करने से इन्कार ही कर दिया था। लेकिन ऐसा लगता है कि दिल्ली से उनके पास इस धाराय के सन्देश गये हैं कि विधान-सभा विसर्जन की मांग मानी जा सकती है अगर समिति के नेता दिल्ली आये और प्राश्वासन दें कि आंदोलन बापस ले लिया जायेगा। आंदोलन वापस होने और शांति स्थापित होने के दौरान भी सरकार विसर्जन

की घोषणा कर सकती है। अगर सरकार शर्त मनवाने की जिद छोड़ने को तैयार हो तो शायद विद्यार्थी नेता भी आंदोलन वापस लेने को तैयार हो जायेंगे। लेकिन जैसा कि समिति के नेताओं ने अहमदाबाद में कहा कुछ विरोधी पार्टियां उन्हें दिल्ली जाने से रोक रही हैं। विद्यार्थी नेताओं की हवाई जहाज में बँडने से रोकने के प्रयत्न इसके उदाहरण हैं। फिर भी वे वांग दिल्ली आ गये हैं और केन्द्रीय नेताओं से उसे चर्चा करने का यह अवसर छोड़ना नहीं चाहिए। विद्यार्थी नेताओं के लिए भी यह श्रेयस्कर होगा कि वे चर्चा कर लें। जिस मामले पर सरकार उनकी बात मानने को तैयार है उस पर अड़ना ठीक नहीं है।

यह गुजरात के हित में होगा कि विद्यार्थी नेता दिल्ली में चर्चा करने के बाद अहमदाबाद जायें और वहाँ समिति के अध्यक्ष नेताओं और विद्यार्थी वर्ग से सलाह करके आंदोलन के बारे में अपने फैसले की घोषणा करें। साथ ही केन्द्रीय सरकार इसकी घोषणा करे कि विधानसभा विसर्जित नहीं जायेगी। विद्यार्थियों और सरकार की तरफ से होने वाली इन घोषणाओं से शांति स्थापना में निश्चित मदद मिलेगी, गुजरात का बातावरण सुधरेगा और हालत सामान्य होगी। विधानसभा भंग होने के बाद विद्यार्थी नेता वे क्या है कि स्कूल कॉलेज खुल जायेंगे लेकिन महाराई और प्रत्याचार के सत्ताक आंदोलन चलता रहेगा। विद्यार्थी निश्चित ही इन प्रश्नों पर आंदोलन जारी रख सकते हैं पर इनका विनिर्णय और अहमदाबाद जहाँ आंदोलन चल रहा है। विधानसभा विसर्जन के बाद गये चुनावों की तैयारी शुरू होगी और विद्यार्थियों के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि वे फिर से ऐसी विधानसभा न बनने दें जो प्रत्याचार कर सकती हो। इसके लिए अलग विद्यम और अलग ही आंदोलन की जरूरत होगी। एक जरूरी यह होगा कि विद्यार्थी मनदानाओं को संगठित करें उन्हें समर्थन और निर्दोष उम्मीदवार को निर्वाचित होने दें जो प्रशासन की व्यवस्था के काम लेने के बजाय लोगों की सेवा करने की इच्छा रखने हों।

कानपुर में सीधी उँगली : सीधी कार्यवाही

कानपुर में मनदाना विद्रोह हुआ, पर्यवेक्षण हुआ और सीधी कार्यवाही भी। लेकिन धरातलगत में रहने वाले इस भीड़ भरे शहर के महापालकाने का शोर भी बहुत अधिक था इसलिए तुरी की छायात्रा का दूब जाना स्वाभाविक है। जब सभी उर्ध्वगतों टैकी हो और भी निरालने में एन डूमेर में उनक रही हो तब एक सीधी उगती की निधार्ई धारणण का नेत्र हो जाती है। कानपुर में मनदाना शिक्षण सीधी उगती की तरह का शोर उगने परिये कई लोगों को प्रभावणन का सीधा रास्ता दिशाया गया।

कानपुर में मनदाना शिक्षण इन दिनों के पहले प्राम चुनाव के चल रहा है। प्रचार और शिक्षण के जरिये वहाँ मनदानाओं से विशेष ही मनपर किया जाता रहा है। कुछ-कुछ मगप्रा, सर्वदलीय मगप्रा और छोटी-छोटी बैठकें वाली पहले भी होनी रही है। डाकबा भाई, डॉ० सोमनाथ मुखन, डॉ० चन्द्रबन्ता रोहनगी और नियम भाई चुनाव के समय हर बार यह प्रतिपान बगाने रहे हैं। लेकिन इस बार प्रतिपान को जो धार मनी उमका श्रय 'पुरा शक्ति' को है। ३० पी० की क्षणीत और फिर करवरी के पहले सप्ताह में उनके कतिजों में घुमने में डेट मो ऐसे नवयुवक धागे धागे क्रहूने मोचतन के लिए नवजवान कोरम सटिन किया। इन युवकों ने करवरी के दूसरे सप्ताह में राज बंटकें करना, मुद्रल्य-पुत्रले धुपना शुरू किया। एक शिबिर हुआ जिनमें युवकों को काम करने का प्रशिक्षण दिया फिर नगर को यह सुचित करने के लिए कि युवकों ने चुनाव को स्वतन्त्र और शुद्ध करवाने का मिष्ठा ले लिया है एन मोन जूज निवाला गया। राधेश्याम सोमी युवकों में इस कार्य-क्रम के लिए सजाव पैदा करने के लिए एक महीने से काम कर रहे थे। मनदान के एक दिन पहले युवकों ने जनरलका चुनाव क्षेत्र के दल मनदान केन्द्र समन कार्य के लिए तय किये। प्रत्येक केन्द्र दर युवक तीनत हुए



मनदाना प्रशिक्षण के लिए मोन जूज

और बाकी के युवकों ने धाने-धाने क्षेत्र में स्थानीय सहायता से काम करना तय किया।

मनदाना शिक्षण समिति ने भी मनदान के पहले कार्यक्रम बताया कि उमने सदस्य पूरबाय में सीधी प्रतिमा पर इकट्ठे हंगि और मनदान की पर्यवेक्षण तथा निगरानी करेंगे। वहाँ चुनाव धायण की तरफ से पाब पास मिते थे। इन तरह प्रतिपान ने पाने को हीन बायों में बैठ किया था। एन दल पर्यवेक्षण करने वाला था, एक दल निगरानी और युवकों के दल चुनाव में ध्रष्टाचार न होने देने के लिए सीधी कार्यवाही करने वाले थे। चौबीस करवरी को पर्यवेक्षण करने वाला दल फूलबाग से रवाना हुआ, निगरानी के दले भी पहुंच गये लेकिन युवकों को तनीकी का समना करना पडा। तय किया गया था कि दल मनदान केन्द्रों के बाहर युवकों के दल उनी तरह तम्बू तल्ल लगायेंगे जिस तरह पार्टीया लगानी हैं।

लेकिन गुजराती स्कूल के बाहर नहर के निनारे पर जब शिवसहाय मिश्र धाने साधियों की मदद से तम्बू लगाने लगे तो जनसभ के लोगों ने एतराज किया। उनकी सहायण

की बि मनदाना शिक्षण के रूप में यह कार्यस चाल है। मनदाना परिषदारी के धादेश में युवकों को हुटना पडा। लेकिन जब मनदान केन्द्र पर लगायो जा रही हल्की स्पाही के कारण लोग मनदान के उदाहरण धाये तो जनसभ के कार्यकर्ताओं ने ही इन युवकों से कहा कि कुछ बीजिए। युवकों की कार्यवाही से ही स्पाही बदननी पडी। लोग मनदान करने वाले कुछ लोगों को युवकों ने पकडा भी लेकिन पुलिस वाले ने उन्हें छोड़ दिया। गुजराती स्कूल में इन युवकों के कारण पार्टीया, मनदान अधिकाारी और पुलिस वाले बाकी 'परेशान' हुए। नत्त्यों और नियमों का पालन करवाने बाजों को धाजकल कोई दोस्त नहीं समभता।

डि० ए० बी० कतिज के बाहर युवकों ने तवारियों के तरेप्राम उपयोग पर एतराज किया। मजिस्ट्रेट को कहा कि यह गलत है और इसे रकबाया जाना चाहिए। मजिस्ट्रेट ने कहा कि जब तक कोई पार्टी एतराज नहीं करती तो कार्यवाही नहीं कर सकते और प्रचार धपनी तरफ से करना भी चाहे तो उनके पास कोसं नहीं है। मजिस्ट्रेट शिसक गये। युवकों ने पाया कि सभी पार्टीयो के

तो तरीके समान हैं इसलिए वे गिरफ्तार नहीं करेगी और मजिस्ट्रेट के पास फोरम नहीं है तो बोर्डर को साने और मतदान तक उनके पीछे पहुंच रहने को कंटे रोका जाये। एक और मजिस्ट्रेट घाय्ये तो लड़को ने उन्हें भंग लिया। मजिस्ट्रेट लगभग जान छुड़ाने के अन्दाज में तम्बुओं में गये और निवेदन करके लिसक गये। युवको की कार्यवाही से कम से कम इतना हुआ कि सवारियां मतदान की घाईन तक मनदानार्थों की नहीं ले जा सकी।

कुछ केन्द्रों पर युवको ने सी गज के भीतर प्रचार नहीं करने दिया और मनदानार्थों को समझाया कि उन्हें अपने मन का उपयोग आजादी से करना चाहिए।

शाम को सब युवक माथी शांति प्रतिष्ठान में इकट्ठे हुए और अपने-अपने अनुभव सुनाये। सवारियों के उपयोग और मतदान केन्द्र के अन्दर तब प्रचार की बातें सभी ने कही। किसी ने कहा कि मतदान की गोपनीयता कई जगह भंग हुई है और अधिकांशों ने कुछ नहीं किया। मतदानार्थों को शराब पिलाई गई और साइन में लगे लोगों को सब को पैसे दे दिए गये। इन्स्पेक्टर सिंह चौहान ने कहा कि डी० ए० वी० बालेज के होस्टल में ऐसे कई लड़के मिले जिन्होंने अलग-अलग नामों से वोट दिये। इनमें कुछ ने पार्टी के लिए और कुछ ने पैसे के लिए ऐसा किया। सब संक्षेपता में एक नवनी मतदाता पत्रिका लेकिन उसकी गिरफ्तारी में नें पार्टियों ने मदद की न पुनिन वालों ने। सन्दीप मिश्र ने बताया कि सभी पार्टियों ने बोगस मतदान करवाया। मतदाता सूची में भयंकर गलतियां थी। तेरह-चौदह वर्ष की एक लड़की वोट देवे आई। 'लोकतन्त्र के लिए नवजवान' विल्लो का दुरुउपयोग करके लोगों ने मतदान तक प्रचार किया। विश्व-बन्धु बाजपेयी छावनी चुनाव क्षेत्र में थे जहां माना जाता था कि सबसे ज्यादा तनाव रहेगा और भगडे की नौबत घायेगी। बहा सवारियों की जबरदस्त होड़ थी। सैकड़ मतदानार्थों के नाम सूची से गायब थे। मतदान अधिकारियों को नीति नियमों का कोई ज्ञान नहीं था। सबसे मजेदार अनुभव सुनाया राफेज



मतदाता की सहायता के लिए युवकों का तम्बू

मिथ्र ने। उन्होंने बड़ी बेतकलुफी से कहा कि उनका पूरा खानदान काफ़ी सी है इसलिए उन्हें पोलिंग एजेंट बनना पडा। उनके घर के लोगों ने ही हजारों की सख्या में बोगस मतदान करवाया। उनका भगडा हो गया और वे पोलिंग एजेंट की जिम्मेदारी छोड़ कर बाहर आ गये। उन्होंने कहा कि सुरक्षा विभाग के बहुत से मतदाता कानपुर में हैं और उन्हें समझाने के लिए मंत्री महोदय दिल्ली से आये थे। वे जानते हैं, क्योंकि मंत्री उनके नजदीकी रिश्तेदार हैं।

विजय भाई के पास चूनि पास था इस लिए वे जगह-जगह मतदान केन्द्रों में गये। दिल्ली और चुनाव चिन्हों के अन्दर तक होने वाले उपयोग को उन्होंने रक़ाया। उन्होंने पाया कि अधिकांशों और पुनिन वालों का रवैया दखल न देने और धनुमनि भरपूर देने का था। चुनाव के नियमों का प्राय हर जगह ध्रान्त था।

पर्यवेक्षकों के दल को डॉ० चन्द्रबाबा रोहतगी ने कहा कि चुनाव में घन का उपयोग

नक्कारखाने में तूतों की आवाज सुनी गयी

छुटकीम फरवरी की शाम उत्तरप्रदेश में मतदान हो जले के बाद धारवा के धनु-मत्री शिरनारायण धरवाल ने कहा 'हम जानते थे कि चुनाव के इस तकरारमाने में तूतों की आवाज कोई नहीं सुनेगा। लेकिन मतदानार्थों ने हमारी बान इनने ध्यान में मुनी कि हमें खुद प्रश्नचर्च है। उन्होंने एक बान और कही 'धारवा में चुनाव के दिनों धार कोई भडबडी नहीं हुई थी हमना कुछ

खुल कर किया गया। मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के लोगों ने अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार अपने साधन पार्टियों को दिए और इसलिए कारो और मिनी बसो और टैम्पो का खुल कर उपयोग हुआ। प्रचार की कोई सीमा नहीं मानी गई न प्रशासन ने लागू करने की कोशिश की। मतदान घंटियों में छेद बहुत छोटे थे और मसपत्र बहुत बडे थे। इसलिए मत को पेटी में उलारने से लिए दूसरो की मदद लेनी पडी और गोपनीयता भंग हुई।

लोकतन्त्र के लिए नवजवान फोरम में पच्छा बाग किया है। लेकिन मतदाता शिक्षण उनका मुख्य कार्य नहीं है। उन्हें दरभमन अपनी जतानी लोकतन्त्र का विषय समझ करने में लगानी है। और इसके लिए उन्हे शहरो और गावों में फंड कर पडीस गभाए और शरामभाए और गठित कर के लोक शराराज की बुनियाद नीचे से उठाना है। नीत और बार मार्च को ३० फी० में पोरस के सात युवकों को दिल्ली बुना कर यह सब गमभया है।

तो थेंय हमारे प्रचार और तारों को दीजिये।' थेंय देने या लेने से चूनि मेरा कोई सम्भान नहीं था इसलिए मैंने बलग नहीं की। चुनाव शोनिपूर्वक सम्पन्न होने के और भी कारण हैं। शानि में उस हर बड़ी पार्टी का दबक लगा हुआ था जिसे जीतने की उम्मीद थी और हर पार्टी के पास इनकी शक्ति थी कि एक दूसरे का भय गदबद करने

[श्रीप पेज १३ प॥]

अपने और अपनी सरकार से लड़ती रेंगर जाती

—रामभूषण

रेंगरो के मुहल्ले में शराब के टंके की दुकान पर कीर्तन चल रहा था। शराब की दुकान और कीर्तन, बात कुछ बेमेल लग रही थी। देखा, दुकान के दरवाजे पर एक कच्चा तख्त जिस पर रामचरित मानस, दोनों धोर राम-सीता की विहासन पर बँधी तस्वीरें बीच में राधापट्टण की एक बड़ी तस्वीर, सभी तस्वीरें मालाए पहनाई हुई, दीवाल पर एक तरफ घायी जो भी तस्वीर जिनके नीचे शराब सम्बन्धी उनके उद्गार, दूमरी धोर ध्यान मुद्रा में भगवान बुद्ध की तस्वीर जिसके नीचे मंदिर के सम्बन्ध में उनकी पुनीत वाणी। बड़े तख्ते की बगले में ही दुकान की दीवाल से लगा एक धोर छोटा तख्त जिन पर नई उबर के दो लकड़े बँटे हुए। दीवाल पर एक धोर से लेकर दूमरी धोर तक मंदिर-बिरोधी तस्वीरें व पोस्टर। बड़े तख्त के सामने ही एक बड़ी चरो जिस पर कुछ लोग बँटे हुए, बच्चों की भी एक अच्छी संख्या धोर माइक पर कीर्तन व भक्ति सम्बन्धी भजन-गाये। पत्रा कता हि इस कमरा यह उपवासमया दिन था। तख्त पर जो दो लकड़े बँटे थे वे बोबीस घंटे के उपवास पर बँटे थे। लोगों से बातचीत करते पर पता चला दुकान के दरवाजे पर बस्ती के लोगों में मुहरबन्द ताला लगा दिया है धोर उपवास, कीर्तन, मांग-पत्र व धपने भावणों द्वारा वे धारवासी विभाग पर यह समय काल रहे है कि उनके मुहल्ले से शराब का टंका हटा लिया जाये व शराब की बिक्री बन्द कर दी जाये।

शराब की दुकान :
दुसरें दिवस सवेरे जाकर दुकान जरा और साफ तोर पर देखी। ई टंग-पट्टो की चूने से पुनी एक छोटी इमारत के दो छोटे कमरे, जयों के बीच का एक बरामदा व ध्यान जिसके बीच बीच का एक छोटा पेड़ है। दोनों के एक समी देवन पड़ी है, कुछ बोनचें सुकरी पड़ी है। एक तरफ टोटी लगा एक कड़ाख रखा हुआ है, अगले से एक मिन्की बन्व लटक

रहा है। एक तरफ काले रंग से रंगा हुआ टिन का वही बोर्ड लटक रहा है जो शराब की दुकानों पर प्रचलित रहता है। बोर्ड पर सफेद रंग से लिखा है

टंका देखो जराब
रेंगरो की कोठी, जयपुर,

दुकान के दरवाजे की साकल मन्दर से भी लगी हुई। लगता है ठंकेदार के आदमों सारा माल-मसा लेकर सातल लगाने के बाद पीछे से निकल गये हैं। रेंगर बस्ती के लोगों ने तालाबन्दी के बाद दुकान की सामने की दीवाल पर कुछ पोस्टर व चित्र लगा रले है।

मैं उपवास पर बँटे दोनों लडकों—सत्रह वर्षीय हरिराम खोम्बाल व चोहद वर्षीय सादराम बूडिया—से मिला। बोना ही आठवीं कक्षा के विद्यार्थी हैं। दोनों ने बताया कि वे उपवास पर अपनी स्वयं की इच्छा से बँटे हैं। बातचीत के दौरान दोनों ने ही बताया कि शराब पीने वालों के खिलाफ जो भी कार्यवाही होगी दोनों उसमें शामिल होंगे। नौ बजे सवेरे इन दोनों के उपवास के चौबीस घट खत्म हुए। इसी बीच बस्ती की कुछ दिन्या-मजदरिया भीन गये धाई। इनमें एक के हाथ में धारनी की घाती थी। उनमें इन दोनों लडकों की धारनी उगारी धोर माये पर निजक लगाया। फिर एक ने इन्हे मात्रा पहनाई। वृत्ति मैं धागनुक था, काशी से गया था, धन: भेरे हाथ से उन्हे कुदहड़ में दूध पीने को दिलाया गया। फिर लिप्या ने उन्हे मिष्ठान खाते को दिये जिनके बाद उन्हे निकट के महाशाल के मन्दिर ले जाया गया, जहाँ दर्शन करने के बाद वे धपना काय करने के लिए लाली हो गये। इसी बीच तेरह वर्षीय बुजक काहैगानान टोपिया व बासीस वर्षीय गीरीजान बडोपिया धाकर चौबीस घंटे के उपवास पर बँठ गये। यह कम रोड-रीज चल रहा है। ६ फरवरी '७५ से नाम दूध उपवास कम से इसके प हुने तक बयानोम अरुजिन जिनमें धाड से दस घण्टे बचने भी थे, शामिल हो चुके है।

रेंगर बस्ती

रेंगर बस्ती में लिए शराब की यह दुकान कोई नई बात हो ऐसी बात नहीं है। रेंगरों की यह बस्ती जो जयपुर शहर में ज्यादातर रेंगरो की कोठी के नाम से जानी जाती है



रेंगर की बस्ती में प्रभात फेरों

एक ऐसा इलाका है जहाँ काफी पहले से शराब की भिट्टिया चली धा रही थी। बाद में उमी अगह जराब की दुकान खुनी जहाँ धाज तन चली धा रही है। जयपुर शहर में जैसे माठ-भतर साल पहले शराब की स्वग्ध दुकानें खुनी थी। उसके पहिले शराब भिट्टिया में बनाई जाती थी। शहर की कई जगहा में शराब की भिट्टिया चरनी रही है। रेंगर काठी में भी शराब की चार भिट्टिया थी। मात्रा जहा शराब की दुकान है, वहा भी एक भट्टी थी। रेंगरों की कोठी की दुकान शहर की सबसे पुरानी दुकानों में से एक है। यहा की शराब प्रच्छी मानी जानी रही है। धोर यही वजह थी कि यहा के बतानों की राखदरवार तक पटुब हो सरी।



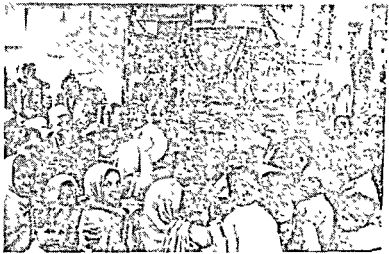
रेंगर कोठी का धर्म है रेंगरो का बुझा। राजस्थान में कोठी का धर्म कुमा होता है। प्राज से ढाई-तीन सौ वर्ष से भी पहले किसी समय रेंगर जाति के लोग यहा धाम्ये धीर यहाँ के हुए को इस्तेमाल करते सगे। इस-लिए इस इलाके को रेंगरो की कोठी कहा जाते सगा। कुछ लोगो का बहना है कि यहा पहले बंजारे रहते थे इस-लिए इसे कभी बंजारे की कोठी कहा जाता था। ऐसा कहा जाता है कि एक बडा कुझा बंजारो ने ही बनवाया था। बंजारो का यह स्वभाव है कि ये किसी एक स्थान पर सभ्ये धर्म तक नही बसते। बंजारों के जाने के बाद यहा रेंगर जाति के लोग बसे। जयपुर के महाराजा रामसिंह के समय राज ने इन्हे बसने में मदद दी थी। रेंगर कोठी के ठीक बगल में कलान जाति के लोग बसे जो शराब बनाते थे। गाने-बजाने की सुविधा के लिए इस इलाके में ऐसे परिवार बसे जो गाना-बजाने का धन्धा करते थे। धीरे-धीरे इस क्षेत्र में नाचने-गाने वाली स्त्रिया धा बसी धीर उनका धन्धा चल निवला। इस तरह शहर के इस इलाके की एक खास स्थिति बन गई धीरे यहा का वातावरण भी एक खास ढंग का हो गया। रेंगर कोठी में रेंगर जाति के लोग रहते थे धीर पास-पड़ोस में गाने-बजाने वाले तथा नाचने-गाने वाली कलाल स्त्रिया रहती थी। शीशिन व सामन्ती मित्राज के लोग यहा प्राते-जाते थे। कुछ ही दिनों में यह दुलारना शराब व नाचने गाने वाली स्त्रियो के लिए मशहूर हो गया।

रेंगरो की कोठी, पुराने जयपुर शहर के पूर्वी किनारे पर बसाई गई थी। प्राज तो सवा शहर कासी धाम्ये तक बढ गया है जिसके धन्दर यह बस्ती भी आ गयी है। रेंगर जाति का मुख्य धन्धा चमडे का है धीर यही वजह थी जो इन्हे शहर के किनारे बसाया गया। प्राज जहाँ केवल रेंगर लोग है मुख्यतः वही रेंगर-कोठी कहा जाता है। इस बस्ती में प्राज एक हजार परिवार है जिनमें छः हजार व्यक्ति हैं। बस्ती में प्राप कभी भी जोर्य अर्धकर गन्दयो धापका सर भन्ना देगी। सभरी पतिषा, बपह-जगह कुडा, मलपूज, सड़ता पानी, सड़ी धास, आदयी भी मया जानवर है जो किसी भी जगह रूह लेता है। रेंगर-कोठी में कुल प्राठ सौ पचास पक्के मकान हैं, डेढ़

सौ भोंपड़ियां हैं। पक्के मकान का धर्म झपटू-डेट पक्का मकान नही बल्कि पत्थर व ईंट का मकान चुना पुता हुआ। यहा के लोगों से जब बात हुई तो उन्होने बताया : "हम धपनी गरीबी-धपनी कुटंबो से जूझते रहे, सरकार हमारे फटेहाली, हमारी कमजोरियो को धपनी कमाई का साधन बनाये रही। मुलुक के प्राजपद होने से प्राज तक सिया हमें बरबाद करने के सरकार ने हमारे लिए किया ही क्या है? पहले हमें इस बीजान (शराब) से निपटने दीजिये, बाकी हम धीरे-धीरे खुद ही निवट लेंगे।" वैसे सामाजिक कल्याण के लिए रेंगर कोठी में आज चार सगठन काम

सकते हैं धीर वे भी राय दे सकते हैं। ऐसी कई उपयोगी रायें मानी भी गई हैं।

शराब की दुकान पर ताला लगाने का निर्णय भी रेंगर पंचायत ने ही लिया। ५ जनवरी '७४ को पचायत ने युवको की एक बैठक बुलाई धीर उसी समय 'शराब-समिति' की पहली बैठक भी वी गई। उसी के बाद शराब की दुकान पर ताला लगाकर उसे मुहर-बन्द कर दिया गया। पंचायत ने वही भी निर्णय लिया कि २२ जनवरी से ठेके वा पूरांत बहिष्कार हो धीर उनके मुहल्ले से शराब की बुराई खरम हो। लेकिन पंचायत के इस निर्णय से ही शराब की विक्री रुकी



शराब के ठेके पर ताला, पाकिस्तानियों तथा कौतिल गाले रहर

कर रहे हैं : रेंगर विवात मडल, नवयुवक सेवा समिति, शू रिपेयर गजदूर सप धीर रेंगर पंचायत। हरिजन सेवा सप की तरफ से यहा एक बाल-मन्दिर भी चलता है जिनमें चालीस विद्यार्थी है।

रेंगरो की पंचायत के काम बरने वा धपना एज तरीका है। इनका सारा मुहल्ला पाव पंचायत क्षेत्रो में बंटा हुआ है जिनमें से प्रत्येक से पाच-पाच व्यक्ति चुनवर प्राते हैं जो धपना प्रधान चुनते हैं। बैठक करने के सम्बन्ध में इसके दो सदस्यो से जानकारी मिली कि इसके लिए कोई खास धपना तय नही है लेकिन जब जरूरत पडती है बैठक बुला ली जाती है। नगाडा बना कर सारे मुहल्ले में बैठक के बारे में मुनादी कर दी जाती है। इस पंचायत की एक यह भी विशेषता है कि इसमें प्राम धादमी भी शामिल हो

सकते हैं तथा कौतिल गाले रहर मही। समाज विरोधी व बमनोर नीयत मुष्ठ लोगो ने लुके छिपे शराब बेचने का धन्धा चालू रखा। पचायत फिर बैठी। नो बडे से सुबह शराब बडे तक पाच सौ धादमी बैठे विचार-विमर्श करते रहे। निर्णय लिया गया कि धर्म रूप से शराब बेचने वालो पर पाबन्दी लगायी जाय धीर एंगा बरने वाले व्यक्ति पर एज सौ एज १० वा दण्ड भी लगाया गया। फिर भी जब ठेकेदार ने एक धादमी को लुके छिपे शराब बेचने के लिए उरुमाया धीर उसने मारा विवाची तो उस धादमी ने मुह पर बालिन पोत कर उसे सारे मुहल्ले में घुमाया गया।

रेंगर पंचायत ने यह भी निर्णय किया कि शराब बन्दी के लिए रोज प्रभात फेरी निवानी जाय धीर प्रत्येक दिन सभा

का कार्यक्रम रखा जाय। १ दिसम्बर '७३ से बस्ती में प्रचार फेरी चालू कर दी गई। मागे चलकर ६ फरवरी से नियमित उपास पर बँटने की प्रक्रिया भी पचासवें से निकली। स्त्रियों ने इस कार्यक्रम में विशेष रुचि ली और उन्होंने इसे एक धार्मिक स्वरूप दे रखा है। २४ फरवरी की प्रभातफेरी में मैं भी शामिल हुआ। मुहल्ले की बाहर सेना ब इरफ सेना प्रथम लोगों के साथ सारी बस्ती में घूमती है और शराब के बहिष्कार पर जोर देती है। बच्चों व नौजवानों में बड़ा उत्साह दिखायी पड़ता है।

२४ की सुबह की सभा में मैं भी शामिल हुआ। सभा का यह क्रम रोज ही चलता है। रात ढाढ़ बने की सभा अल्दी जमती है। उसमें बोलने वालों की संख्या भी कई हो जाती है। कभी-कभी डूर-दूर से लोग भा जाते हैं और स्थानीय बापू प्रशिक्षण लोग भी। रंगर समाज राजस्थान थे जहाँ कभी भी वे उनके सद्भावना सन्देश बराबर धारण रहते हैं। प्रथम समाजों के लोगों को भी सहानुभूति बराबर मिल रही है। मात्र की सभा में मैंने बोलने वालों की संख्या अधिक नहीं थी फिर भी उनके दिवा में जा दर्द, जो प्राणोत्थि व जो तपस्वता व कटिबद्धता थी वह उनकी बात में देवी जा सक्ती थी। ब्रह्मामल मुहल्ले के ही धारमी है। उन्होंने सरकार की निष्क्रियता पर शोध जाहिर करते हुए कहा:

“शराब आन्दोलन के घाज कई दिन हो गये फिर भी सरकार निष्क्रिय है। लेकिन वे याद रखें; चाहे जिनकी कुर्बानी देनी पड़े फिर भी हम हटेंगे नहीं। वे जानते हैं कि यदि वे इसे बंद कर दें तो उनकी ऊंची बुनियाद ध्वस्त जायेगी, उनकी सुरा सुन्दरी ध्वस्त जायेगी, लेकिन इन सासकों, बुरों में भी धब वह जान था चुकी है जो उन्हें अस्वस्थताओं से बाहर लीज सकेगी।” पीपडीवान में बड़े दर्द के साथ धनना निरपेक्ष अन्धक विद्या: “रंगर बस्ती के लोगों में इस शराब की दुकान में हमेशा-हमेशा के लिए ताला लगाया है। सरकार से उम्मीद रखना बेकार है। कला शब हम लोगों को है। मात्र बुद्धि महिलामों में जोर है कि वे इस दुर्गम को मिटाकर ही रहेंगी। पढ़ते हमारे साद गया की हरिद्वार

शाकर भी शराब पी लिया करते थे लेकिन अब यह शुभ चेतना जाग गई है कि पहले डेके को बन्द किया जाय।” रंगर पचासवें प्रयास मोतीसाल अशरारे की बात में दर्द जरूर था लेकिन उत्साह की भी कमी नहीं थी। सरकार की भ्रष्टाचार करते हुए उन्होंने कहा: “जयपुर नगर गुलाबी नगर कहा



उपवास सुबहाते गोकुल भाई

जाना है जिसे देखने के लिए विदेशों से भी लोग धाते हैं। लेकिन भाजारी के छद्मसत वषं बाद भी गरीबों की बहिष्ता नरकदुष्क के रूप में चालू है ... सरकार यदि इसी तरह धनमुनी करती रही तो भी दिन के बजाय प्रगर महीने व वर्ष भी हों तो भी जो हरि-पीतन, उपवास चला रहे हैं वह चलता रहेगा।”

भुरामल डीगवाल ने भी सरकार की बद-नीयमी की ओर इशाा करते हुए कहा. “वे चाहते हैं कि हम ऐसे ही रहें, धोने व बड़ सकें। हम तो गिरफ इतना कहने हैं कि वे ठेका यहाँ से उठा लें फिर चाहे जहाँ रखें।” बस्ती के निवासी बाबुराज सिंह को भी शर-काब की नीयन पर एतवार नहीं था। उन्होंने भी कहा. “शराब की दुकान राजस्थान सरता बन वे ही रास चहुरी है। वे लोग सुरा सुन्दरी में विराम रखते हैं, देश की शुभहाल नहीं रखना चाहते।” रामपाल नाथोदिया ने भी सरकार की प्रकर्म्यता पर शोध प्रकट किया है। शराब की बडी

रंगरी की बस्ती के निजट ही कुछ और पूरव जानर मोनियो (दुनकरों) का मुल्ला है जिसमें ३ हजार घर व भाजारी कटीर

पञ्चमी हजार बटाई गई। इस बस्ती में हिन्दुधो का अनुपात मुललमानों से अधिक है। मुहल्ले के ५०% लोग बुनार में लगे हुए हैं। अन्य ५०% बुनार व मिलने के कारण मज-दूरी तथा अन्य धन्धों में लगे हुए हैं। गरीबी व गन्दगी का वही हाल जो रंगरी की कोठी का है। कहीं-कहीं उसमें भी बदतर। २४ फरवरी की सुबह ६ बजे जब मैं कोलियों की कोठी में शराब की बडी (टिन की दुकान जो उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जायी जा सकती है) पर पहुँचा तो देखा बडी में दोनो तरफ ताला लगा हुआ है। सामने दो बुद्धिया, एक छोटे स्त्री व एक बूढ़े बडी की। मैंने जब छोटे महिला प्रेमा से पूछा कि वे क्या क्यों बँटी हैं तो उन्होंने बताया. “मैंने घर पर मे चार प्राणी हैं, एक मैं, मेरा भावमी, एक बेटा व उसकी बूढ़। बेटा ब्रह्मदाबाद में काम करता है। वह शराब नहीं पीता फिर भी मुझमें दूसरो का दुख नहीं देखा जाता। हम यहाँ ग्याहू बने रात तक बँटे रहते हैं। दिन में बँटे-बँटे यहाँ बिनना, पड़ोसना घादि धरेलू काम करते रहते हैं। छिछने रविवार से बडी में ताला बाल दिया गया है। श्रोतें बनन



रामप्रयाग

बस्ती है, रामयुत बहती है, जलूम में जाती है।” मुझे बताया गया कि मुहल्ले बालों ने ठेकेदार के ताले पर ही धपना ताला जड़ दिया था। लेकिन एक दिन रात को बुनके से ठेकेदार धाना ताला खोल ले गया और मुहल्ले का ताला रहने दिया। २४ना० की रात को ही किसी ने बडी में घाग सगाने की कोमिया भी लेकिन एक बुद्धिया ने भाकर उसे बुझाया।

[कथन]

अपनी टोली में सबको इकट्ठा करो

— विनोबा

गुजरात की सर्वोदय-पत्रिका 'भूमिपुत्र' के दो संपादन प्रबंध चोखसी और भ्रमृत मोदी ने २५ और २६ फरवरी को गुजरात की वर्तमान स्थिति की जानकारी विनोबा जी को पवनार में दी। उनके बीच हुए प्रश्नोत्तर का सार इस प्रकार है।

बाबा : गुजरात में दंगे हो रहे हैं, इसीलिए आपके 'भूमिपुत्र' के पाहक एक लाख होने चाहिए। क्यों नहीं होते हैं? इनकी सुन्दर पत्रिका है आपकी। सब खबरें तटस्थ बुद्धि से छापीं उसमें। आज तुम्हारे पन्द्रह हजार पाहक हैं। पन्द्रह हजार और एक लाख में बहुत फरक है। तुम्हारा मुख्य काम यही होना चाहिए कि इस श्रावोलन के कारण 'भूमिपुत्र' के एक लाख पाहक बने हैं। 'भूज' जो भी जाहिर करो, तटस्थ बुद्धि से जाहिर करो। परस्पर विरोधी खबरें छाती हैं वह भी दें। 'लाठी जिसकी भंस उसी की' ऐसी कहावत अब न चलेगी। ऐसा गीत हुआयल ने लिखा है। (उसकी किसी पत्रिका मागरी में अभी शुरु नहीं हुई है, उसी भी मदद दो।)

भ्रमृतभाई : गुजरात के साथियों में हम क्या कहें ?

बाबा : किसी से कुछ भी नहीं कहना। सिर्फ दो ही बातें कहना, एक, 'भूमिपुत्र' के एक लाख पाहक बनाना, दो, पांच हजार उपवास-दान प्राप्त करना।

गुजरात में जैन लोग ज्यादा हैं। जैन लोग उपवास ज्यादा करते हैं। लेकिन काल ने मुझे बताया कि जैन बहनें उपवास तो खूब करेंगीं, लेकिन पैसा देंगीं कि नहीं सवाल है।

जहां तक 'पोलीटिक्स' का सवाल है, 'पोलीटिक्स' में जो लोग पढ़ेंगे, उनके सिर्फ दो नहीं, आठ टुकड़े पढ़ेंगे। कुछ लोग सर्वोदय का 'पोलीटिकलाइजेशन' करना चाहते हैं। मैंने कहा, 'टोमीटिकलाइजेशन' करो। अपनी 'टोमी' है। तो अपनी 'टोली' में सब इकट्ठा हो। गुजरात में तुम लोगों के (सर्वोदय) दो ही टुकड़े पढ़ें, इसका

भाष्यचर्यें हुआ। क्योंकि राजनीति में पढ़ने वालों के तो भूनेक टुकड़े पढ़ते हैं। इस प्रकार के टुकड़े सर्वोदय वालों के अग्रय पढ़ेंगे, अग्र वे राजनीति में जायेंगे। इसलिए उनको लोकनीति जाननी चाहिए।

प्रबंधभाई : एक ही राजा का राज उत्तम हो सकता है कि नहीं ?

बाबा : हो सकता है। अगर वह राम के जैसा राजा हो। एक राजा का राज जेंडे उत्तम हो सकता है जैसे खराब भी हो सकता है, मध्यम भी हो सकता है। लेकिन 'डेमोक्रेसी' प्रोसत होती है। जैसे डेअरी का दूध होता है। बट न उत्तम होता है, न खराब। 'डेमोक्रेसी' का राज उत्तम राजा के राज के जैसा उत्तम नहीं होता, खराब राज के राज के जैसा खराब नहीं होता। तो 'डेमोक्रेसी' का डीलपील मध्यम है। उससे हमारा मतलब नहीं। हमें तो लोकनीति खड़ी बननी है। वह कब होगीं मालूम नहीं। लेकिन लोग उसे बकूल करेंगे तभी अपना भला होगा। लोकनीति छोड़कर अग्य को बिचार है, उनके दा प्राधार है, 'देइज्म' ('वे' वाद। मतलब, हमारे लिए जो कुछ करना है वह सरकार करे, हम अपने लिए कुछ नहीं करते।) मिलिटरी (सेना)। एक प्रकार है नासी (नाभीज्म), एक है फासी (फसिज्म), एक है बामी (कम्मुनिस्ट), एक है सोमी (सू जीवाद)। ऐसे प्रकार हैं और इन सबका 'संबन्ध' है, 'देइज्म' और मिलिटरी। इसीलिए तुम लोग 'पोलीटिक्स' से जिनना दूर हट जाओ उतना अच्छा है।

(गुजरात के रच-नामक कायं के एक वरिष्ठ नेता को बाबा का इदिराजी के सचय का कचय, (कि 'वह सर्वसिवा सच को सदस्या ही है,') पडकर खेद हुआ। और उन्होंने इस पर एक लेख भी लिखा। वह बाबा को बताया गया।)

बाबा : मैंने पहले ही जाहिर किया है कि मैं पंच शक्तियों का मध्यम चाहता हूँ, ममाज के स्वाम्य के लिए। उसमें जन-

शक्ति, सञ्जन-शक्ति, विद्वज्जन-शक्ति, मजाजन-शक्ति और पांचवी है शासन-शक्ति, इनके बीच सहयोग होना चाहिए। उसमें सबसे कम ताकतवाली है शासन-शक्ति। और सबसे ज्यादा ताकतवाली है, जन-शक्ति और सञ्जन-शक्ति। और शासन के जितने मलत काम होंगे उनका हम विरोध करेंगे। जितने प्रथ्ये काम होंगे उनसे सहयोग करेंगे। हमारे काम में उनका सहयोग हासिल करेंगे। ऐसा मैंने कहा, उस वक्त तो किसी ने विरोध नहीं किया। किसी ने ऐसा नहीं कहा कि शासन-शक्ति के सहयोग की बात क्यों कहते हो ? शासन से प्रसहयोग होना चाहिए ऐसा तो किसी ने नहीं कहा।

भाष्यचर्यं की बात है कि उस दिन (२२ फरवरी) को सुबह दस बजे मैंने कहा (गांधी शांति प्रतिष्ठान की बैठक में) कि पाकिस्तान बांगला देश को जल्दी मान्यता देगा। उसी दिन शाम को मुट्टो ने बांगला देश को मान्यता दी। मैं, देता था कि मुट्टो का 'माइंड' धीरे-धीरे तैयार हो रहा है बांगला देश को मान्यता देने के लिए। वह मुगल है। इसलिए तरह-तरह की बातें बोलना है। ताकि उनके इरादे का पता लोगों को न पने। मेरा जो निश्च-निरीक्षण है उस पर से मैं जानता था कि वह एक दिन बांगला देश को मान्यता देगा। हमसे इदिरा को और एक सफलता मिली है। तीनों को एकत्र धाने में। अब आज खबर है कि मुट्टो ने कहा, 'नाशमीर का सवाल हम ऐसा ही न छोड़ेंगे।' ऐसा कुछ वह बोलेंगा नहीं तो उसकी क्या कीमत रहेगी ? इसलिए वह ऐसा बोलना है। लेकिन वह (नाशमीर का) जो मगला है, दानों के बीच ही हल होगा। तीसरे को उसमें नहीं चलेगी। ठीक है, अभी तो उता पर चर्चा चलेगी।

जहां तक 'फॉरेन पामोसी' का तालुक है, हिटलरनाम को तटस्थ बनाकर रखने में इदिरा को सफलता मिली है। रगिया से

→

भ्रष्टाचार, महंगाई और दूसरी तक-
लोको के लिए गुजरात में एक बड़ा भारी
घातोलन चला। इन दिनों गुजरात में बहुत
तुल्य घटनाएँ घटती हैं। कम से कम पचास
व्यक्तियों की जानें गईं, माल की भी क्षति
होती हुई। और भी कई तकलोफें सहनी पड़ी।
आखिर सरकार को त्यागपत्र देना पड़ा।
राष्ट्रपति शासन आया। अब प्रजा की
इच्छा है कि लोकहित करने वाली सरकार
आये।

विश्वी भी प्रकार की बहुत से पत्रे बिना
विचारन सभा के सर्वस्व अपना त्यागपत्र पेश
करें ऐसी सलाह मैंने चिन्मन्नाई पटेल को दी
थी। यही सलाह अन्य सदस्यों को भी देता
हूँ। जब लोगों का भयिरो और सदस्यों
दोनों से विश्वास उठ गया है तब वे किस
तरह बहा रह सकते हैं? उनका नर्तव्य है
कि वे अपना स्थान जहाँ से जहाँ निकल
करें।

घातोलन करने वालों को भी मालूम है
कि हिंसा और जातघात का नुस्खाना किसी
के हित में नहीं है। समाज के दैनिक जीवन
में शान्ति और स्वस्थ वातावरण लाने के
लिए अनेक विचारधरो और प्रायश्चर्यों ने
उपचार किये हैं और लोगों से शान्ति रखने के
लिए धरोल की है। सरकार ने भी गिरफ्तार
घातोलनकारियों को छोड़ कर बहुत अच्छा
किया है।

आज गुजरात अन्त की भारी तकलीफ
सह रहा है ऐसे में किसानों से मेरी अपील है

कि वे ज्यादा धन उपजाने की कोशिश करें।
अपने लिए जहरी हो उतना रखकर शेष
जन्ता के लिए ठीक भाव से दें। ज्यादा लाभ
की प्राकाशा न रखें। व्यापारी भी वही नीति
अपनाएँ। अपना रोज का काम चल सके
इतने ही मुनाफा से सन्तोष मानें। जमाखोरी
कालाबाजारी रिश्वत आदि देकर अपना
काम निकाल लेना आदि पथे छोड़ें।
आज लोगों के मन में जितना गुस्सा सरकार
के पत्रियों वगैरह के लिए भी है, उतना ही
गुस्सा व्यापारी वर्ग के लिए भी है। इन दोनों
वर्गों का आज आमूल होना आवश्यक है। नहीं
तो बड़ा भारी विप्लव होगा और जन-जीवन
का नाश होगा।

आज लोगों से भी मेरा कहना है कि वे
देश का उत्पादन बढ़ाने में सहायता करें।
अपने हितसे मे जो काम आया है वह प्रामा-
णिकता और बहुत गुणवत्ता से करें। जिस
प्रकार ताँब-बोट और मारकाट हिंसा है उस
प्रकार कालाबाजारी, निस्ती का शोषण और
बिना मेहनत बँटकर पाना भी हिंसा ही है।
उस दोग से भी हेतु मुक्त होना चाहिए।

सरकारी अफसर अपना नर्तव्य बराबर
पूरा करें। वे जन-सेवक हैं। जनता के शक्ति
नहीं। उनका धर्म जनता की तकलीफें कम
करना है। अपने और अपने रिश्तेदारों के
फायदे के लिए लोगों को हैरान-परेशान करके
धन कमाना बड़ा पाप है—ऐसा समझें। रिश्वत
वगैरह से जन्ता धान बहुत तग हो गई है।
वे अपना ध्वजहार नहीं बदलेंगे तो उनका भी

नाश होगा। अब लोग ज्यादा सहने की
तैयार नहीं।

सभी कामों में आज सरकार दखल दे
रही है। जनता को जो काम करना चाहिए
वही काम सरकार करने की कोशिश करती
है। इससे जनता परावलम्बी बनती जा रही
है। वह अपने परिश्रम से जीना भूल गई है।
आज सभी की मनीवृत्ति ऐसी हो गई है कि
सभी काम सरकार करे और वे सिर्फ बँटकर
छायें। लोकतंत्र में लोगों को ही अपना काम
करना चाहिए। सरकार तो सिर्फ रुकी गाड़ी
को आगे बढ़ाने के लिए ही रहती। लोगों को यह
जात बराबर समझ लेनी चाहिए। सभी बातों
में सरकार से आज्ञा रख कर न बँटें, न
बँटना चाहिए।

आने वाले चुनाव के समय हम
जन्ता से सच्चे सेवक को ही चुनेंगे। पैसा,
पद और शक्ति की प्रशंसा का लाच
देनेवालों को नहीं। मैं जीवन रूग्णा तो सब
जगह घूम-घूमकर लोगों की शमभ्राज्या।
किसी की श्रु मे छोड़े बिना सच्चे व्यक्ति ही
चुने जाए। लोगों से मेरी प्रार्थना है कि वे
यह सभी काम यहीता द्वारा ही करें। हिंसा
का आशय अभी भी न बँ। उस भाग से आज
तक कोई लाभ नहीं हुआ है। उलफत और
समस्या लड़ी ही जाती है। निश्चय और
परिश्रम से भागे बड़ें।

—रविशंकर महाराज

मैत्री बनायी, लेकिन रशिया का 'आमीनस'
स्वीकारा नहीं। अरब देशों के साथ सह-
योग है, लेकिन इसराइल को मान्यता है।
पहले तो अरब देश इसराइल को खत्म
करना चाहते हैं, उनकी शीमा—'बाउररी'
तय करना चाहते हैं। इस वास्ते मुझे उम्मीद
है कि बड़ा तर्क 'फॉरिन पॉलीसी' का तालुक
है बड़ा तय अपनी, हिंदुस्तान को भूमिगत
अच्छी रहेगी।

चीन कोरिया एक हो गये हैं, चीन और
जापान का मैल हो रहा है, इसराइल का
ममता हल हो रहा है, इकोनोम का ममता
हल हो गया है, बड़ा सडाई कम हो रहे हैं,
अमरीका और चीन का तालुक अच्छा बन

रहा है। यहाँ भी बागलान देश आजाद हो
गया है, उसका हिंदुस्तान के साथ प्रेम-
संबंध हो गया है। हिंदुस्तान और पाकिस्तान
के बीच मवब अच्छा बनने की आशा है,
क्योंकि पाकिस्तान ने थागला देश को मान्यता
दी है। यह कुन का कुन मुझना है कि
विश्व शान्ति की तरफ जा रहा है।

अमृतभाई, लेकिन देग में अदर तो
प्रशान्ति बढ़ रही है।

आज, देश के अदर प्रशान्ति बढ रही
है, ऐसा आम होगा होगा। लेकिन आज भी
पडरपुड (भंडारण, काशीयौन) की गाना
में लारों लोग जाते हैं। (महाराष्ट्र) में
जानदेव, मुकापाम के प्रथ जितन गये जाने

है उतने और कोई प्रथ पडे नहीं जाये।
उत्तरप्रदेश में तुलनी-रामायण जितनी छापी
जाती है उतनी दूसरी कोई भी विताड नहीं
छानी। इन साल अनेक भारत में बाइवल
की माड काम प्रथिया विकी। इस संबद्ध
प्रथ है कि जनता को अकल है। अपना
भत्ता बोन करेगा, तारक बोन है, हमारा
उडार बोन करेगा, यह जनता जानती है।
वे राजनैतिक नेना तो घायें और जायेंगे।
इनकी कोई शार भी नहीं करेगा। इस वास्ते
हिंदुस्तान की जनता का दिमाग अपने ठिकाने
पर है। दिमाग बिगडा है उनका, जिन पर
पश्चिम के निवार का धमर हुआ है।



चमड़े के लिए भैंस को मत्त मारो भाई

चिमन भाई पटेल का विधानसभा से

इस्तीफा और फिर कांग्रेस से उनका निष्कासन दो बातों को साफ करता है। एक, गुजरात विधानसभा का भंग होना अनिवार्य है; दो, कांग्रेस हार्दिकमान और केन्द्रीय सरकार अभी इसके खिलाफ है। इन्दिन्द्रा जी से ले कर हर बड़े नेता ने कहा है कि वे गुजरात के लोगों को इस माँग पर खुले दिमाग से विचार कर सकते हैं लेकिन इसके लिए पहले यह जरूरी है कि वहाँ शांति स्थापित हो। केन्द्र हिंसा और जोर जबरदस्ती के सामने झुकना नहीं चाहता और गुजरात को जनता चाहती है कि जब तक उसकी माँग पूरी नहीं होती प्रादोलन चलता रहेगा। एक वी श्रद्धांत दलदल को विधानसभा से लगभग साठ विधायक इस्तीफा दे चुके हैं। रोज ही वहाँ न नई गोलीबार होता है, लोग मरते हैं और कई नगरों में एक साथ कपड़ों लगता है। उपद्रव और लूटपाट करने वालों को न पुलिस रोक पा रही है न नवनिर्माण युक्त समिति के नेता। प्रतिष्ठा बा प्रथम मासूम लोगों की जान से खेल रहा है।

नई दिल्ली के नेताओं के सामने अब यह तो स्पष्ट हो ही जाना चाहिए कि गुजरात में वे नयी कांग्रेस सरकार बनाने का अपना इरादा पूरा नहीं कर सकते। चिमन भाई को दिल्ली बुला कर धाँवर यही तो कहा गया था कि वे विधायक दल के नेता पद से इस्तीफा दे दें। साथ ही भीना भाई दलों से कहा गया था कि वे गुजरात कांग्रेस फा प्रथम पद छोड़ दें। चिमन भाई और भीना भाई से वे इस्तीफे इस्तीफा मगि गये थे कि इन दोनों की दुश्मनी सक्षम कर के और उन्हें हटा कर नई सरकार बनाने की कोशिश की जाये। लेकिन चिमन भाई ने तय किया कि

“मैं नहीं तो कांग्रेस नहीं” और केन्द्रीय नेताओं को गुस्सा देकर उन्होंने जनता के सामने अपने को एक वहीद के रूप में पेश कर दिया। अब वे नई पार्टी बनाने का सोच रहे हैं। चिमन भाई भले ही हृदय से ज्यादा बदनाम हो गये हों और उनके इरादों में किसी को भी विश्वास न हो पर उनके इस्तीफे से जनता तो स्पष्ट है कि गुजरात कांग्रेस की अन्दरूनी दरारें केन्द्र को वहाँ दूसरा धारा नहीं करने देंगी। हार्दिकमान को अगर अपने पार्टी हित गुजरात में सुरक्षित रखना हो तो विधानसभा तत्काल भंग करनी चाहिए क्योंकि जो प्रादोलन पहले चिमन भाई पर केन्द्रित था वह अब केन्द्र सरकार के खिलाफ हो गया है और अगर रोज लोग इसी तरह मरते रहे तो कांग्रेस की मिट्टी पलती हो जायेगी।

यह सही है कि गुजरात का प्रादोलन प्रहिसक नहीं है। लेकिन इसका दोष विधायियों को नहीं दिया जा सकता। भाजदों के बाद लोगों में यह विश्वास सरकारों ने ही जमाया है कि दबाव के बिना वे कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हो सकते। गुजरात के बारे में जो रवैया केन्द्र ने अपनाया है वैसे ही हर बार अपनाया है और हर बार सरकारें हिंसा-नृसंहार और व्यापक भ्रष्टाचार के बाद भुकी है। हिंसा को यह बढ़ावा सरकार की निरर्थक हिंसा से मिला है और लोकतन्त्र को जितना सुरक्षा इस हिंसक प्रवृत्ति से हुआ है उतना देश में व्याप्त व्यापक भ्रष्टाचार से भी नहीं हुआ होगा। गुजरात में प्रशासन की धोर से दो महीनों से लगातार चल रही हिंसा का क्या औचित्य है? प्रधानमन्त्री ने कहा है कि गुजरात में जो कुछ हुआ वह तो एक रिहर्सल मात्र है। देश को बर्बाद करने और प्रजातन्त्र को समाप्त करने का एक बहुत बड़ा पडकन इस देश में चल रहा है। इस तरह की बातें कम्युनिस्ट देशों में ही कही जाती हैं कि देश को बाहर से और भीतर से प्रतिभियावादी शक्तियों से घेरा है। खतरा का हल्ला मिला कर जनता को एक करना और उसकी भावनाओं को दबाया निश्चित नहीं लोकतान्त्रिक नहीं है। इस तरह के तीर छीने से न तो प्रजातन्त्र मजबूत होता है न जनता की शक्ति बढ़ती है। जिस सरकार में जनता का विश्वास न रहा हो और जिसकी

प्रथमता बुरी तरह जाहिर हो गई हो उसे हटाने की माँग विस्तृत प्रजातांत्रिक है। जिन विधायकों की ईमानदारी और प्रामाणिकता पर जनता का विश्वास उठ गया हो वे अपने ही दो साल पहले प्रचण्ड बहुमत से जीते हो पर अब उन्हें विधायक बनने का कोई भी नैतिक अधिकार नहीं है। प्रजातन्त्र की भाँसा की संरामा हत्या करके भाग उस के शरीर को जीवित नहीं रख सकते। प्रजातंत्र की भाँसा जनता का विश्वास है और इस विश्वास को भंग करने वाली कोई भी सरकार प्रजातांत्रिक नहीं हो सकती।

भय दिखाया जाता है कि गुजरात में जिस तरह मुख्यमन्त्री को हटाया गया और विधायकों से इस्तीफे लिये जा रहे हैं वैसे अगर देश में सब जगह होने लगा तो प्रजातांत्रिक व्यवस्था ही नष्ट हो जायेगी। यह नहीं कहा जाता कि गुजरात में जिस तरह भ्रष्टाचार हुआ और सरकार जिस तरह धनाम और दूसरी चीजें मुहैया कराने में विफल हुई और अपने प्राचरण तथा प्रथमता को छुपाने के लिए उनको जो हिंसक तीर तरीके अपनाते उनसे प्रजातन्त्र में ही जनता का विश्वास उठ जायेगा। लोग धाँवर क्यों अपने प्रतिनिधियों को विधानसभा में भेजते हैं और वे प्रतिनिधि धाँवर किस लिए सरकार बनाते हैं? धाँस की विश्वसनीयता और सरकार की क्षमता अगर उतनी बुरी तरह टूट जाती है तो प्रजातन्त्र की व्यवस्था का जरूरी दावा कैसे पवित्र हो सकता है जिनकी रक्षा के लिए सेवा और पुलिस को लगातार गोलीबाँ बरानी पड़े? चमड़े के लिए भैंस को मारना प्रजातन्त्र नहीं है।

गुजरात के प्रादोलन में जनता की ओर से हुई हिंसा बाँहे जिनकी प्रथम म्य हो पर एक तथ्य वहाँ के विधायियों और लोगों ने प्रजातन्त्र रूप से स्थापित कर दिया है। अब कोई भी सरकार इस देश में भ्रष्टाचार कर के टिकी नहीं रह सकती। जनता का अंधुध इतने वर्षों से सरकारों पर कही नहीं था वह कम से कम गुजरात में तो कारगर हुआ। लोगों को यह विश्वास तो हुआ कि जितने वे कहीं पर भेजा सके हैं उसे उतार भी सके हैं, जितने विधानसभा में भेज सकते हैं उसे

एक तटस्थ नजर से आन्दोलन

—कुमार प्रशांत

फोनी से निकली नहरो से सहरसा जिले के क्षेत्र पड़े हैं। ऐसी एक नहर में, घुटने भर पानी ठेल कर हम बाइची गोठ नाम के टोले में पहुँचे। बाइची पंचायत के इस टोले में पहुँचने के लिए पाच के प्रतिरिक्त और साधन नहीं है।

यही मिले महाकान बाबू। देखने में महाकान बाबू सामान्य हैं। पान की लानी से खने उनके चेहरे पर एक आत्मियता भवकनी है। जिनोबा के विराट व्यक्तित्व के जिस पहलू ने कब, जिसको, कहा, अपनी और सीच लिया इसका प्रमाण यीशो में मिलने वाले कई 'महाकात बाबुघो' से मिलता है। अपनी भूदान-यात्रा के कम में जब जिनोबा इस गाँव में आये थे, महाकान बाबू और कुछ लोग उनके विचारों से इस प्रकार विचि कि आपके टोले का टोला दान करा दिया। आप सभी-सा एक सगउन गतिव करने की कोशिश भी की। कुछ काम भला फिर जिनोबा गये; उसभर भाई, काम था, समय के प्रवाह में महाकात बाबू को इस दीवानगी से निवाल कर करी और पहुँचा दिया। इस काम में एक बार खूब हूबकर लपे महाकान बाबू काफी समय से इसके तटस्थ दर्शक रहे हैं। इस बार वे फिर मिले तो बातचीत पुस्तकों से शुरू हुई:

“आपने जयप्रकाश बाबू की नई पुस्तक 'मेरी विचार यात्रा' देखी है क्या ?”

कुछ देर चुप रह कर वे बोले, “नहीं देखी है। इन पुस्तकों से, प्रचार से यह आन्दोलन चलने लगा नहीं है। मेरे पास संकड़ो रूप की किताबें हैं, उनका पडा है मैंने, समझा भी है। पर क्या करता हूँ मैं आन्दोलन के लिए ? मैं तो कहूँगा कि हमने ज्यादा अनुभूत वे हैं जो हम विचार को सधमते नहीं, पुस्तकें पढ़ते नहीं, उनमें मात्र भी इस विचार के प्रति श्रद्धा है।

“पुस्तकों से ही यह आन्दोलन चलेगा, ऐसा ही हम भी नहीं मानते, ग्रन्थया पुस्तकों

की दुकान खोलने का ही आन्दोलन चलाने, फिर भी पुस्तकों का अपना महत्व तो है ही।”

“हा महत्व तो है, पर इस आन्दोलन की असहिमत से आप लोगों को वाकिफ होना ही चाहिए। आप लोग जितने सक्रिय हैं, शेष वे आन्दोलन उतना ही निष्पथ है, लोगों में कोई रुचि नहीं है। आपके साथ ही लोग आते हैं वे सब पर्व में रह कर आपका काम करते हैं। पथ की बात और मन की बात में बड़ी दूरी है।

“क्या कारण है इसका ?”

“आपरा तो स्पष्ट है कि आप जिसको काम सुझाते रहते हैं वे कुछ करते नहीं हैं। बाइच का सन्तानिया मेम्बर भी होता है तो कम से कम धूम कर चरा तो इकठ्ठा करता है। आपके लोग इसके लिए भी पर-पर नहीं घूमते हैं। घर-घर से कुछ इकठ्ठा कीजिये तब सबको मालूम होगा कि सभैरय का काम सब भी चल रहा है। उसके लिए हम पंसा दे रहे हैं। पर आप एक तो कुछ करने नहीं और करने भी तो जागर से आगे धरेंगे नहीं।”

“परिस्थिति तो आपके ठीक बयान की।

पर इस आन्दोलन को भागे बढ़ाने के लिए अनुप्य ना ही माध्यम तो है। उसमें कुछ नहीं करने आते हैं तो कुछ करने वाले भी हैं। सही भावनी ही आये ऐसी कोई प्रक्रिया आप मुझा सकते हैं क्या ?”

“आप लोगों की प्रक्रिया चलत है, ऐसा तो मैं नहीं कर सकता हूँ। काम भागे बढ़ाने के लिए माध्यम तो खोजना ही होगा। पर आन्दोलन को आप तक देस कर मैं कह सकता हूँ कि हममें दोही तरह के लोग हैं। एक वर्ग उनका है जो पीछी के त्यागी, सपस्वी, विचार-रक हैं और दूसरा वर्ग उनका है जो एवमभ मूढ़, नौबरी की भावना से भाये हैं और इस आन्दोलन को बेच कर छा रहे हैं। मध्यम-वर्गीय कार्यकर्ता आपके साथ नहीं आया है।

जब तक इन के बीच की बड़ी नहीं बनती तब तक आन्दोलन इसी घबट्टा में रहेगा। मैं मानता हूँ कि यह विचार जितना कातिकारी है उतने ही कातिकारी कार्यकर्ता खोजने होंगे। आज जो स्थापित लोग हैं समाज में, अधिकारी, मंत्री, नेता आदि—वही आपके मंच पर भी हैं। अपनी कतार में खड़े हैं। इनकी जगह एक नई जमात खड़ी करनी पड़ेगी। युवकों में प्रवेश कीजिये, मजदूरों में खोजिये वह नहीं है आपके साथ। यह आन्दोलन जैसे-जैसे जड़पकड़ेगा 'लोकल लीडरशिप' निष्पथ होगी जायेगी और यही लीडरशिप आपके साथ है। यह क्यों पाहेगी कि आपका काम सफल हो ? आपके साथ रह कर वे आपकी जड़ काटते हैं।”

“हम तो युक्त, मजदूर, सबसे मिलते हैं, समझते हैं पर वह इतना बेचन नहीं है कि भागे भागे, वह भागेगा कैसे ?”

“आप की 'लीडरशिप' या जो आपके साथ हैं, उनके 'समानान्तर' एक टीम बनानी होगी। लोकल भाइयों के बीच बैठना होगा और जहाँ जो मिले उसे कुछ न कुछ काम सौंपते चलना होगा। आप लोग तो गांव-गांव घूमते हैं, वहीं से छाटना मुश्किल जाये।”

फिर भूदान से चल कर श्रीदोलन कहा तक पहुँचा है, जिस जगह है और कार्यकर्ता की भूमिका क्या है आदि ती चर्चा होगी है। महाकात बाबू तब के अनुभवों हैं, पर विचार से मात्र के साथ है। आज आन्दोलन जहाँ है उससे उन्हें समाधान नजर आता है।

“आप काम प्रारम्भ करना है और आप को पुरानी भूमिका निभानी है।”

“ठीक है मुझसे जहाँ तक होगा मैं करूँगा। बचपन से ही जिनोबा का भक्त रहा हूँ। क्यों प्युँगे तो नहीं बना सकूँगा। पर निरिन्दा नहने हैं तो कुछ चलत होगा नहीं यही मान कर तब काम प्रारम्भ किया था। विचार समझ कर लगा कि यह काम मात्र

नहीं तो बल तो होगा ही। यह यदि बुरा है तो भी 'नेसेसरी इविल' है।"

"सी०एम० कालेज में पढता था तब गिवानन्द भाई साथ थे हमारे। तब मैं इसका समर्थक था और वे नहीं थे। आज वे इतना प्रागे बढ़ कर काम कर रहे हैं, मैं पीछे छूट गया हूँ।"

"मैं भी चाहता हूँ इस टोले से छूटा काम, इसी टोले से प्रारम्भ हो। एक बार फिर प्रारम्भ किया जाये।"

चलते-चलते धर्मा की तारील नगरेय तप होती है और 'मेरी बिचार यानत्रा' के साथ-साथ वे दो चार पुस्तकें और खरीद लेते है।

महाकात बाबू के गांव में काम होगा " महाकात बाबू ने कहा है।

पृष्ठ १० वा शेष

वापस भी बुला सकते है। एक मूल्य के नाते यह स्थापना प्रजातन्त्र को मजबूत और वास्तविक बनायेगी लेकिन दुख है कि यह सब ग्रहिसा से नहीं हुआ। द्वावल और दमन

→ मे विश्वास करने वाले राजनीतियों के लिए यह सबक भले ही ठीक हो लेकिन व्यापक लोकहित की दृष्टि से यह शकास्पद है। अगर इस आंदोलन से कोई रचना नहीं होती, व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं उभरता तो इतने लोगों का मरना, घायल होना और सम्पत्ति का नष्ट होना बेमानी होगा। यथा स्थिति तोड़ना जरूरी है लेकिन वैकल्पिक व्यवस्था लड़ी करना अनिवार्य है। सवाल यह है कि विधानसभा के विरुद्धन के बाद क्या ?

अगर इसी तरह के पार्टीतन्त्र को चलने दिया गया इसी तरह बुलाव होते गये और इसी तरह सरकारें बनती टूटती रही तो इससे कोई परिवर्तन नहीं होगा। उलटे तानाशाही का मार्ग प्रशस्त होगा। इसलिए अनिवार्य है कि गुजरात में वैकल्पिक व्यवस्था का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जाये। रविशंकर महाराज के नेतृत्व में वहा शुरू हुआ लोकस्वराज्य आंदोलन अन्धेरे के क्षितिज पर मुजह के आभास की तरह उठ रहा है। इस आंदोलन के वहा लोगों को स्थानीय रूप

से और पार्टी-निरपेक्ष ढंग से संगठित करना शुरू किया है। अगर गांधी के प्रामत्सभाएं और शहरों में पड़ोससभाएं बनाने और उन्हें सक्रिय करने में यह आंदोलन सफल हुआ तो पहल पाटियो के हाथों से निवृत्त कर लोगों के हाथ में आ सकती है। गुजरात में परिस्थिति सर्वसम्मति से चुने जा सकने वाले लोकउम्मीदवारों के पक्ष में है। लोकनीति में विश्वास रखने वालों के लिए गुजरात में अवसर है और चुनोती भी।

प्रभाष जोशी

● क्षेत्रीय श्री गांधी आश्रम इलाहाबाद का मुख्य कार्यालय जो अब तक इलाहाबाद में था, काम की सहूलियत के लिए जनवरी २६ से हरपालपुर जिला छतरपुर (म० प्र०) चला गया है। भविष्य में कार्यालय सम्बंधित जो भी पत्र-व्यवहार हो वह इस नये पते पर ही किया जाये।

● जसिल भारतीय शांति सेना मण्डल द्वारा आयोजित शांति सेना जगम विद्यापीठ का पहला जिनिर १६ मार्च से १८ अप्रैल '७४ तक गुजरात में होगा।

Swastik SERVES HOME

HOME & INDUSTRY

Through a wide and varied range of rubber, and P.V.C. products—for domestic and industrial use.

Footwear and hoses, gloves moulded products and oil seals, foam rubber, mattresses, pillows and cushions. Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.,
Pune 411 003.

Continued on SRP-29

(पृष्ठ ४ का जारी)

से उन्हे रोके रहा। फिर सशस्त्र विप्राहिणियों की परदे धीरे-धीरे प्रायः हर मतदान केन्द्र पर उतारी गीतानी भी समन चैन का बाराण थी। मैं मानना हूँ कि वे नगरात्मक बाराण हैं और शक्ति के सभारतमक बाराणों में भव-दाना सिखाए अभियान का काफी बड़ा हाथ है। फिर भी कहना होगा कि शक्ति बनाये रखने के अलावा इस अभियान का एक और लक्ष्य था कि चुनाव स्वतन्त्र और निष्पक्ष हो। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए समय और शक्ति दोनों की ही जरूरत थी और इन दोनों की ही अभियान के पास कमी थी। जितना समय और शक्ति लोग इस अभियान के पास थे उसे देखते हुए प्रचार और संगर्ष ही हो सकता था और यह धारावाही में काफी अच्छी तरह से हुआ।

हर जगह पार्टियों के पोस्टर के साथ अभियान का पोस्टर भी लगा था जो मत-दानाघों को अपना कैसा करने में मदद देना था। अभियान समिति के लोग जब मतदान के समय धारावा पूर्व के मतदान केंद्रों पर घुसे तो पार्टियों के कार्यकर्ताओं और मत-दानाघों में पहुंचान की मुश्किल के साथ उनका स्वागत किया। इस पहुंचान के पीछे पक्षों और जीव बरों पर लगे लाउड-स्पीकर से किया गया प्रचार और संगर्ष भी स्थानों पर ही कई घण्टा सभाओं हैं। धारावा की समिति के सभी लोग प्रतिष्ठित नागरिक हैं और अपने क्षेत्र में उनका काफी नैतिक धार है। इस धार के कारण उन्हे दुर्बिधा भी हुई। लोगों ने उनमें पूछा कि वे किस बोट में। पूँक अभियान का उद्देश्य ही सभावा को स्वयं धरना निर्णय करने की प्रेरणा देना था इसलिए उन्हें चुप रह जाना पड़ा। यद्यपि के समोजक कौटुंबिकता एकराकेट ने कहा कि चुनाव में कोई भी मतदाना सिखाए हवने नहीं किया है। वहीं भी किया था लेकिन हव लोगों ने उम्माह नहीं धारा। इस बार वे ०. १० के अंके से स्वयं और

निष्पक्ष चुनाव के प्रचार का आतावरण बना। लेकिन हमारे पास मुश्किल से पन्द्रह-बीस दिन थे। प्रचार सामग्री भी सबनऊ से बचाव मिली नहीं। पोस्टर-पत्रें सब यही धरावये गये। यहा एक चुनावी सभा बिगाडी गई थी और हमें डर था कि इसकी प्रतिक्रिया होगी। हमने प्रचार किया कि सभा भंग करने वालों को बोट मत दीजिए। इसका अच्छा प्रसर हुआ और फिर कोई सभा बिगाडी नहीं गई। हमें पार्टियों और लोगों दोनों से ही सहयोग मिला। यहा ध्वज ध्वजियों को चुनाव धारावा की ओर से पर्यवेक्षण के पास मिले थे। हमारी राय है कि मतदान अधिकारियों और कार्य-धारियों को चुनाव कानून और नियमों का ज्ञान नहीं था। कई जगह मतदाना सुविधों में हाथ से ही मतदाने सुधार किये गये थे।

लोचन प्रसाद ने कहा कि मतदान में उम्माह की कमी थी। वे ही लोग बोट धारने धारने किन्हे या तो उत्तेजित किया गया था या सञ्चारिया दी गई थी। मतदान केन्द्र के भीतर तक प्रचार हुआ है इस बार। डॉ० अग्रवाल ने कहा कि तिरुती और बरों पर प्रतिबंध लगाता अवर मुश्किल था तो प्रशासन कम से कम टुकों को तो रोक ही सकता था। टुकों में सञ्चारिया बंसे भी नहीं बँटाई जा सकती, बोटों को तो खैर सञ्चार ही नहीं जा सकता।

गणेश भाई ने कहा कि इस अभियान का सबसे उल्लासपूर्ण पहलू यह है कि हव धाम लोगों में प्रवेश कर सके। हव बहुत समय में सोच रहे थे कि धारावा जैसे शहर में सार्वजनिक सभाओं में सर्वोप की पहलू बंसे हो। अब हव मानता है कि ऐसे अक्षर पर लोग हमारी धार सुनने को तैयार रहते हैं। हमारा प्रचार तटस्थ और परिवेरीषी था फिर भी लोग उसे धारानी से और धारा ने सुनने धारें। जनता की धुने बाने धारने धार हव

उठाएँ तो सर्वोप की प्रातिक्रिया और प्रभावशीलता बढती है।

इच्छाचन्द्र सहाय ने कहा कि चुनाव समाप्त हुआ और अब हम फिर सुस्त होकर बैठ जायेंगे। सार्वजनिक कामकाज के साथ यही दिक्कत है। तारकानिक और बुनियादी कामों को जोड़ने की जला धरभी हमें सधी नहीं है। मतदाना निर्दिष्ट अभियान को संरक्षक राज्य के बुनियादी काम से जोड़ना चाहिए।

इस चर्चा में रामनिवास पारव नामक नवयुवक काफी उत्थित रहे। उनका धारह था कि चुनाव वे हने पर्यवेक्षक ही नहीं रहता था। सीधी कार्यवाही का भी कोई कार्यक्रम बनाना चाहिए था। समय की कमी का बहाना हव धरभी तो बना सकते हैं लेकिन ७६ में फिर चुनाव होने हैं। तब लोकस्वराज्य के विचार को कसोटी पर ला सकते हैं। लेकिन इसके लिए धरभी से यही से काम करना होगा।

—एक सभावाता

मुजबकरनगर में उल्हासदान, धारावा-कुल के सदस्य व सर्वोप धारों की सहाय बढाने के लिए सगठित काम शुरू कर दिया गया है। शहर में धर-धर में संगर्ष करने के लिए मोहल्ला सभाओं का धारावत किया जा रहा है। जनवरी महीने में जैत लल्ले बालेख, धाराव जगया इन्वर बालेख तथा मोहल्ला पत्थर वाली साराय में सभाए हुई। इन सभाओं में उल्हासदान का सकल्य देने वाली महिलाओं में हरदन सिंह जी से कहा कि धारिक हानत देखते हुए कई धरों के लिए यह सम्भव नहीं है कि साथ धर के उल्हासदान की ररम एर साथ ही भेज सकें। उन्हे प्रीतिमाह उल्हास से बची ररम भेजने में धारिक सुविधा होगी। स्थानीय सतानन धरम ररम इन्वर बालेख में धारावाकुल की एक धारा सोनी गई है। धारावाकुल के नवे सदस्यों में मार्फन 'धरनी' पत्रिका के धार भी बताये जा रहे हैं।

• कुछ चुनाव की • कुछ बजट की • कुछ.....

बहुगुणा फिर मुख्यमंत्री

× उत्तर प्रदेश में हुए ग्रामचुनाव में कांग्रेस को ४२४ में से २१५ सीटें मिली। भारतीय नातिरल, समाजवादी और मुसलिम मजलिस के त्रिमुट को १०६, जनसघ को ६१, सगठन कांग्रेस को १०, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को १६, निर्दलीय अन्य पार्टियों को ११ सीटें मिली। एक सीट के लिए चुनाव होना है। बहुमत के लिए कांग्रेस को २१३ सीटें चाहिए थी। चूंकि उसे २१५ सीटें मिलीं इसलिए पांच मानचों को हेमवती नन्दन बहुगुणा के नेतृत्व में उसने सरकार बनायी। बहुगुणा मंत्रीमण्डल में अभी ग्यारह मंत्री हैं।

उड़ीसा में अल्पमत सरकार

× उड़ीसा में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। १४६ में से उसे ६६, उल्ल काँग्रेस, स्वतन्त्र और समाजवादियों की प्रगति पार्टी को ५६, कम्युनिस्ट पार्टी को ७, कम्युनिस्ट माजिस्ट्रेट और भारलख को ३-३, तथा निर्दलीय और दूसरी पार्टियों को बाकी की ८ सीटें मिलीं। बहुमत के लिए कांग्रेस को ७४ सीटें चाहिए थी। चूंकि कम्युनिस्ट पार्टी का कांग्रेस को समर्थन है इसलिए श्रीमती नन्दिनी सातपथी ने छः मानचों को सरकार बनायी। उनके मंत्री मण्डल में छठारह सदस्य हैं।

मणिपुर में संकट

× मणिपुर में भी किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। विधान सभा की साठ सीटों में से मणिपुर पीपुल्स पार्टी को २० मणिपुर हिन्दू युनियन को १२ कांग्रेस को १३, कम्युनिस्ट पार्टी को ६, समाजवादी पार्टी और कुकी नेशनल एसेम्बली को २-२, और निर्दलीय को। मणिपुर पीपुल्स पार्टी ने

मणिपुर हिन्दू युनियन और चार निर्दलीय सदस्यों की सहायता से चार मानचों को सरकार बनाई लेकिन दूसरे ही दिन हिन्दू युनियन ने प्रथमा समर्थन वापस ले लिया। हिन्दू युनियन के नेता राजा ने कांग्रेस, कम्युनिस्ट और निर्दलीयों की सहायता से नयी सरकार बना ने का फैसला किया।

नागालैण्ड फ्रंट की सरकार

× नागालैण्ड में हुए चुनाव में भी किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। साठ सदस्यों की विधानसभा में यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट को २५ नागालैण्ड नेशनलिस्ट आगमनाइजेशन को २३ और निर्दलीयों को बाकी की तेरह सीटें मिलीं। नागालैण्ड में यह तीसरा ग्रामचुनाव था। पिछली सरकार में डेमोक्रेटिक फ्रंट विरोधी पार्टी थी लेकिन अब उसने निर्दलीय सहयोग से सरकार बनायी है। विज्ञान के मंत्रीमण्डल में पन्द्रह सदस्य हैं।

इंग्लैण्ड में फिर चुनाव

× लेबर पार्टी के नेता हेरल्ड विलसन ने ब्रिटेन में नयी सरकार बनायी है। कजर-वेटिव पार्टी के नेता एडवर्ड हीथ ने २२ फरवरी को हुए चुनाव में हार जाने के बाद इस्तीफा दे दिया था। बोयला खदान के मजदूरों द्वारा भी मही हड़ताल के कारण हीथ ने नये चुनाव कराये थे। चुनाव में सेसद की ६३५ सीटों में से लेबर को ३०१, कजरवेटिव को २६६ और लिबरल को १४ सीटें मिलीं। किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। कजरवेटिव ने लिबरल की सहायता से सरकार बनाना चाहा पर गठबन्धन नहीं जमा। छात्रियर शान्ति ने विलसन को अल्पमत सरकार बनाने का निमन्त्रण दिया। लेकिन सगना है कि इंग्लैण्ड में फिर से चुनाव करवाने पड़ेंगे।

रेल घाटे में

× २० फरवरी को वित्तमंत्री यशवन्त राव चव्हाण ने भ्रगवे वर्ष के लिए फिर घाटे का बजट ससद के सामने रखा। कुल घाटा उन्होंने ३११ करोड़ रुपयों का माना है जिस में से २५५ करोड़ का घाटा नये टैक्सों से पूरा किया जायेगा। ये टैक्स पेट्रोवियम पदार्थों, टेलीविजन, रेफीजरेटोर, सायून, सोडा वाटर, टूथपेस्ट, महीन कपडा, मोटर, स्कुटर आदि पर लगेंगे। पोस्टकार्ड पन्द्रह पैसे का और अन्तर्वेशीय पत्र बीस पैसे का हो जायेगा। इनके बावजूद १२५ करोड़ का घाटा बचा ही रहेगा। पिछले वित्तीय वर्ष में ६५० करोड़ का घाटा रहा।

बढ़ता हुआ घाटा

× २७ फरवरी को रेलमन्त्री ललित नारायण मिश्र ने भी अगले साल का घाटे का ही रेल बजट रखा। मुसाफिरो का किराया और माल हलाई बढ़ा कर १२२ करोड़ की प्रतिरिक्त प्राय की जायेगी। फिर भी ५२.७६ करोड़ का घाटा रहेगा। गये साल ६६.७५ करोड़ का घाटा था। घाट साल पहले तक रेलवे कमाई बत्ती की और देन के राजस्व में उमका योगदान होता था। लेकिन अब उसमें भी घाटा है।

नये गठित नैनीताल जिला सर्वोदय मण्डल ने तय किया है कि रुद्रपुर तथा बाजपुर प्रखण्डों के हार से सम्पर्क कर ग्रामस्वराज्य समितियों का गठन किया जाये। इन्हीं दो प्रखण्डों में उपवास शान तथा सर्वोदय-विचार की परिभाषाओं के प्रसार के लिए भी काम किया जायेगा। नये गठित मण्डल में सर्वोदय पत्रों की सहाय बढ़ाने का काम भी पर से ही शुरू किया है। अब हर लोक सेवक में यहाँ सर्वोदय पात्र रखा जा रहा है।

सभी भाषाओं के लिये देवनागरी लिपि: विनोबा

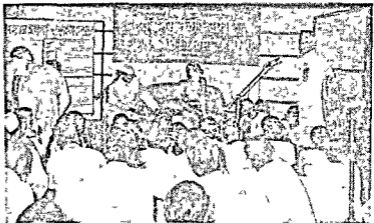
केंद्रीय भाषी स्मारक निधि द्वारा संयोजित देवनागरी लिपि संगोष्ठी २३ और २४ फरवरी, १९७४ को परभाषा प्राथम पवनार में संपन्न हुई। विनोबा ने उसका उद्घाटन किया और उसमें देश के विभिन्न भागों के पचास प्रमुख विद्वान, लेखक, सम्पादक और विद्याशास्त्री शामिल हुए।

इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य पूर्य विनोबा जी के इस विचार को स्वीकार करना और लोकप्रिय बनाना था कि भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं और एशिया की भी कई भाषाओं के लिए उनकी अपनी विशिष्ट लिपियों के अस्तित्वा देवनागरी लिपि का भी प्रयोग किया जाये ताकि हमारी सांस्कृतिक एकता अधिक मजबूत बन सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि एक निरिच्छद कार्ययोजना बनायी जाये।

दो दिन की चर्चा के बाद निम्नलिखित सर्वानुमति प्रकट हुई:

- (१) यह संगोष्ठी श्रद्धि विनोबा के इस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करती है कि प्राचीन सांस्कृतिक एकता को समृद्ध बनाने के लिए सभी भारतीय भाषाओं और एशिया की भी कई भाषाओं के लिए देवनागरी का एक प्रतिरिक्त लिपि के रूप में इस्तेमाल किया जाय। आचार्यकृतानुसार नागरी लिपि में कुछ अल्प अक्षरों को शामिल किया जा सकता है।
- (२) इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए केंद्रीय शासन, राज्य सरकारों, शिक्षण और बहुउत्पी रचनात्मक संस्थाओं के सहयोग से एक कार्य योजना तैयार की जाये। इस योजना में नीचे लिखे उद्देश्य शामिल किये जा सकते हैं:
 - (अ) मौखिक भारतीय भाषाओं को उदात्त कृतियां देवनागरी लिपि में और हिन्दी का ऊंचा साहित्य प्रादेशिक लिपियों में प्रकाशित करने की व्यवस्था की जाय।

- (आ) केंद्रीय शासन की ओर से इस समय भारतीय भाषाओं के तार देवनागरी लिपि में भेजने की जो व्यवस्था है उसका आम जनता द्वारा पूरा साध उठाया जाना चाहिए।
- (इ) सभी केंद्रीय कानून विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में और देवनागरी लिपि में प्रकाशित किये जायें।



देव नागरी लिपि संगोष्ठी में विनोबा और श्री श्रीमन्मारायण

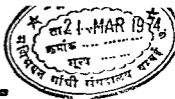
- (ई) भारतीय भाषाओं की दैनिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहित किया जाय कि वे अपने कुछ कालमें प्रादेशिक भाषा के समाचार नागरी लिपि में भी पाठकों के श्रक्षण के लिए प्रकाशित करते रहें।
- (उ) राज्य सरकारों से निवेदन किया जाय कि वे स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकें प्रादेशिक तथा देवनागरी दोनों ही लिपियों में प्रकाशित करें और विद्यार्थियों को विचलन हो कि वे किसी भी

- लिपि में अपनी भाषा का अध्ययन कर सकें।
- (ऊ) राष्ट्रीयकृत बैंक, जीवन बीमा आयोग और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाएँ अपने निवेदन-पत्र आदि प्रादेशिक भाषाओं किन्तु नागरी लिपि में प्रकाशित करें।
 - (ए) इसी प्रकार की नागरीलिपि संगोष्ठी प्रत्येक राज्य में आयोजित की जाय ताकि इस विचार

का तेजी से प्रचार किया जा सके।

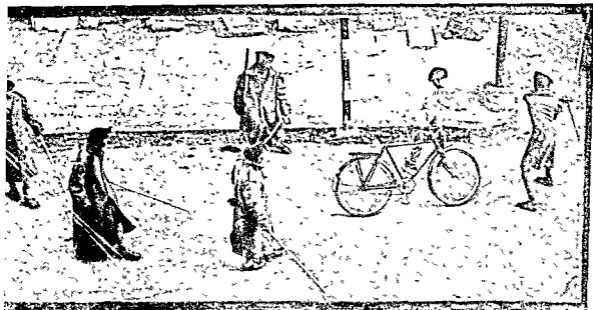
वे मुझे उदाहरण के लिए दिये गये हैं, इनमें और भी मुझे जोड़ें जा सकते हैं।

- (३) इन विचारों को कार्यान्वित करने के लिए संगोष्ठी के सयोजक श्रीमन्मारायण को अधिकार दिया जाता है कि वे विनोबा जी के परामर्श से २१ अक्षरों की एक कार्ययोजना सीमित नियुक्त करें, जिसमें प्रत्येक भारतीय भाषा का कम से कम एक प्रतिनिधि रहे। इस समिति को अधिकार होगा कि वह अपने में और भी सदस्य आवश्यकानुसार जोड़ सें।



सर्वाँदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १८ मार्च, '७४



महमदाबाद की एक सुनी सड़क पर पुनित वालों से घिरा एक विद्यार्थी

- गुजरात के विद्यार्थी : ताजो जागरूकता शक्ति और दोषों के साथ
- शराबवन्दी : क्या जनअभिक्रम धेकार जायेगा ?

भूदान-यज्ञ

१८ मार्च, '७४

वर्ष २०

अंक २५

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

सवाल प्रनाज का

(सम्पादकीय) २

गुजरात के विद्यार्थी : एक ताजी जागरूकता अपनी शक्ति और दोनों के साथ—श्रवणकुमार गर्ग ३
गुजरात में भ्रष्टे लोग चुन कर धायेंगे, इसका क्या भरोसा

—विनोबा ५

व्यवस्था हमारे अनुकूल नहीं
—रणवहादुर सिंह ६

शराबबन्दी : क्या जन-अभिव्यक्त बेकार जायेगा ? —रामभूषण ७

युवकों ने अभी तो काम शुरू किया है —कृष्णस्वरूप भानन्दी १०

मतदाता शिक्षण : बाहू और इटावा में —महावीर सिंह १२

भान्दोलन के समाचार १६

राजपाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

कुछ बातें सामने आई हैं जिनके कारण सरकार द्वारा भनाज के राष्ट्रीयकरण के प्रत्येक पर फिर से विचार या कम से कम कुछ तरमीम जरूरी हो गई है। जो बातें सामने आई हैं उनमें से कुछ तो तरमीम ही हैं; जैसे 'ट्रिप्लू मूव धायोंग' की यह सिफारिश कि सरकार गेहूँ की अपनी खरीदी के भाव निहत्तर रुपये निक्टल से बढ़ाकर नब्बे और सौ के बीच में कर दे। पिछली बार जो दाम रहे गये थे, किसानों को उन दामों पर अपना अनाज बेचने हुए लगभग ऐसा प्रहसास हुआ था कि उनसे बन्दूक दिखाकर गल्ला वसूल किया जा रहा है। बड़े-बड़े व्यापारिक किसान तो खिला-पिला कर इस मजबूरी से मुक्त भी हो गये थे, ऐसा कहा जाना है और उन्होंने खोरी-धुपे महंगे दामों व्यापारियों के हाथ उसे बेचा था। यदि यह सिफारिश मान ली जाये तो छोटे किसानों का कष्ट कुछ कम हो जायेगा। उपभोक्ता का कष्ट तो बितरण प्रणाली की खूबी या खराबी से कम ज्यादा होता है, उसके बारे में 'डाक के तीन पात' रहते ही बाले हैं।

दूसरी एक सिफारिश गल्ले के रूप में लगान को स्वीकार करने की है। विनोबा बहुत दिनों से यह सुझाव देने का रहे हैं। अब के बार जब राष्ट्रीय शिक्षा मन्त्रालय की हीरक जयन्ती के अवसर पर कहा गया तो पहले विनोबा से मिले और अन्य अनेक बातों के बीच विनोबा ने अपना यह सुझाव सामने रखा। राष्ट्रीय ने इसे ठीक माना और कहा जा रहा है कि इस पर अमल करने का विचार हो रहा है। सवाल यह है कि गल्ले के रूप में लेने के बाद सरकार अपने द्वारा निर्वाचित भाबों पर खरीदी भी अनिवार्य रहेगी या नहीं। न रहे तो इस कदम से बड़ी राहत मिलेगी।

तीसरी बात पंजाब और हरियाणा में गेहूँ को फसल के विंगड जाने की परिस्थिति है। ज्वरको की कमी, वर्षा का अभाव और सिंचाई के लिए तेल का न होना इसका कारण है। कहा जा रहा है कि १०-१५ दिन और ऐसे ही बीत गये तो गेहूँ धाँधि की इस सीसम की फसल अत्यन्त गिरने से विंगड जायेगी। सरकार तो १०-१५ दिन में कुछ करने से रही—बर्षा हो जाये तो बात अलग है। फिर विश्व बैंक ने कहा है कि भारत ने

बई दृष्टि से घापी परिस्थिति को समझ और सुधारने में धृष्टि बरती है। अपनी वाणिज्य रूप में विश्व बैंक ने कहा है कि भारत की फसल की हालत पांच दरस तक शोचनीय चलने की सम्भावना है और उसने खपा-मुद्रा में पूर्व से व्यापार का जो प्रवण जमाया है वह पनात्मक नही ऋणारमक है। बाहरी देशों से जबदस्त मदद की भारत को भावश्यक पड़ेगी—वास्तव में वे देश हीन से हो सकते हैं इस पर ठीक विचार नही किया गया। भारतीय योजनाकारों के द्वारा ही हमें ५ अरब डालर भावश्यक होये-विश्व बैंक का ख्याल है कि ५ अरब से काम नही चलेगा; १२ अरब डालर भारत को लेने होंगे। अगर ६ अरब से ज्यादा देने की तो कोई सुरत निबाली ही नहीं जा सकती; ऐसा उसका अनुमान है। फिर चाय और सन व चीनी का हमारा निर्यात भी गिर रहा है। गल्ला जो हमने दुदिन के विचार से इकट्ठा किया है, उसके ख्याल में लगभग नगण्य है। बैंक ने पूर्वी और पश्चिमी सभी देशों से भारत को अधिक से अधिक मदद देने का धनुरोध किया है। अगर सवाल सबसे बड़ा तो भारत का स्वयं अपनी परिस्थिति को समझ कर बरदम उठाने का है। स्वयं 'राष्ट्रीय साधन-साहचर्य परिषद' में अन्त के व्यापार को लेकर मतभेद जोर पकड़ता जा रहा है। बहुत से सदस्यों की राय में सरकार के साथ-साथ व्यापारियों को सीपी खरीदी और बिभी की सुविधा दी जानी चाहिए। कुछ का तो बड़ा तक बतना है कि फसल के सरकारी व्यापार को समाप्त कर दिया जाना ही अयस्कुर है। कुछ कहते हैं नही 'लेवी' अधिक उत्पादन शोषों से ही अनुपात देखकर वसूल की जाये और कम उत्पादन के क्षेत्रों से वसूली बंद कर दी जाये। कुछ की राय है कि जोत के क्षेत्र के साधारण पर कुछ कम जोत वाले किसानों को एनडम छोड़ दिया जाये। गरज यह कि उन्नीस सदस्यों वाली इस परिषद में कम से कम १० प्रकार की रायें तो हैं ही। यह तो सभी मानते हैं कि इस वर्ष गेहूँ की फसल कुल मिला कर पिछले वर्ष से कम आयेगी।

पंजाब और हरियाणा तथा अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी केन्द्र पर गल्ले के व्यापार के संबंध में नीति बदलने की दृष्टि से जोर डाल रहे हैं।
ब० प्र० मि०



पुत्रुस १६० चूरीं क्षीर उतने ही गयीं बा • धारोग की प्रभिव्यक्ति के नये रूप

गुजरात के विद्यार्थी

एक ताजी जागरूकता अपनी शक्ति और दोषों के साथ

—ध्रुवण-कुमार गंग

केन्द्र सरकार इस पत्रोपेय में है कि समयम मन्त्रे विचारियों द्वारा विधानसभा से इस्तीफे दिये जाने के बावजूद भी विधानसभा भंग कर दे या न करे, पर गुजरात से दिल्ली आए दो-हाई हजार विद्यार्थी (अपने तमाम प्राथमिक मन्त्रियों के बावजूद) इस बाल पर दृढ़ हैं कि जब तक विधानसभा भंग नहीं होनी तब तक वे किसी की बुलने वाले नहीं हैं। दिल्ली के गुजराती समाज में रह रहे विद्यार्थियों और उनके नेमाओं ने बताया कि सरकार जिनकी देर करेगी मायता उनका ही विपरीत है।

गुजरात के विद्यार्थियों ने दिल्ली में राष्ट्रपति गिरि और कानून मन्त्री गोयले से धरती सम्मिलित और अल्प-अल्प मुनाफाओं में गुजरात में फँसे व्यापक छप्टाचार की जानकारी दी और पुनिम तथा मेना द्वारा बाप नोगो पर किए जा रहे अत्याचारों के विषय दिसाए। सार्वजनिक जीवन, प्रशासन और व्यवसाय में फँसे छप्टाचार की व्यापक जाब की मांग करने हुए विद्यार्थियों ने हिन्देन्द्र देसाई की सरकार में समाजद विमल भाई पटेल की सरकार तक के मंत्रियों पर व्यापक छप्टाचार के आरोप लगाए हैं। विद्यार्थियों

ने एक भेंट में कहा कि वे पूरी विधानसभा भंग करने की मांग इसलिए कर रहे हैं कि सभी विधायक छप्ट हैं और उन्होंने जनता का विश्वास खो दिया है। विमल भाई पटेल अपने मंत्रिमण्डल की उपस्थिति में छप्टाचार करते रहे और मंत्रिमण्डल के छप्टाचार के समय सारे विधायक सोने रहे। इसलिए विद्यार्थियों का कहना है कि ऐसे विधायक जनता के सेवक नहीं हो सकते जिनकी मौजूदगी में प्रशासन गड़बड़े में गिरता रहे और वे विधानसभा में खड़े होकर भाषाओं में निकाल सकें। सभी विधायकों को इस्तीफा देकर नये निरं से जनता का विश्वास प्राप्त करना चाहिए।

गुजरात के प्रमुख मुख्यमन्त्री हिन्देन्द्र देसाई पर विद्यार्थियों का आरोप है कि १९६६-६७ में उन्होंने ८ लाख रुपये काफ़ा मिलों से इकट्ठा किए, बाबूभाई जगनाई पटेल ने गांधी नगर की राजधानी बनाने के निर्यातियों में छप्टाचार करके पैसा इकट्ठा किया, रसिकनाल पारिल ने धाड़ या पेंसेल की सरकार के लिए खरीदने में बेईमानी की, जयमुल लान हाथी ने प्रभोका के सरप्रायियों के लिए पैसा इकट्ठा करने में छप्टाचार

किया, जयराम भाई पटेल ने सिनेमा के लाप-संस देने के मामले में पैसा इकट्ठा किया, चिमनभाई पटेल ने तेल मिल मालकों से पैसा खाया, सनल मेहता और नरभी शकर पानेरी ने तेल की खरीदी में गँवन किया, माधवसिंह सोलकी ने राजस्थ सम्बन्धी मामलों को निपटाने में घूसखोरी की, जसवंत मेहता ने ट्यूबवेल के ठेको में और उकाई बाप के कार्य में छप्टाचार किया, रतुभाई ने कपाम की खरीद में पैसा जमा दिया अजिताभाई दर्जी ने जिवा पनाइवी और अनाज रहल कोष की राशि में मोलमाल किया, गरेन्द्रसिंह भाला ने तेल मिल मालकों से पैसे इकट्ठे किये। इसी प्रकार के आरोप विव्य-कल नाणावटी, प्रेमजी भाई ठक्कर, भमुल देसाई, प्रबोध रावल और जामनदास बाकरिया पर हैं। कालिनाल घोषा पर आरोप है कि उन्होंने अपने पुत्र के लिए एजेंसियाँ प्राप्त कीं, ठेके प्राप्त किये और प्रदेश कार्य सं समेटे की फण्ड में गड़बड़ की। चनप्रयाप ओभा पर कोयले के कोटे की बिन्की द्वारा पैसा बनाने और नवीनचन्द्र खानी पर साबर कांठा मगरपानिका के पैसे में ह्याकेंटी के आरोप हैं। गुजरात के छात्र जब इन आरोपों

की जाच बराने की माग लेकर राष्ट्रपति से मिले तो राष्ट्रपति ने विधायित्व छोड़े से समय में कुछ समय यह सलाह दी कि युवकों को हिंसामयक कार्यक्रमों से बचना चाहिए और कुछ युवकों को मुनने और मागपत्र देखने में।

बैसे तो महागाई पूरे देश की बड़ रही और भ्रष्टाचार देश के पूरे प्रजातंत्र को खा रहा है। जितना भ्रष्टाचार केन्द्र में है उतना राज्यों में भी हो सकता है। देश का कोई हिस्सा ऐसा नहीं बचा जो महागाई और भ्रष्टाचार की मार से बचा हो। इसलिए गुजरात के सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार फैल जाये, कोई अजबूबा नहीं। पिछले साल गुजरात में भयकर अनाज पड़ा जिसमें कई इन्सान और मवेशी मर गए थे। पंचमहाल जैसे जिले में जहाँ हर तीसरे साल अनाज पड़ता है और लोग मरते हैं, पिछले साल भी अच्छी खासी जानें गई थी। पिछले साल जून जुलाई में बाजरा दो रुपये बिके, गेहूँ साढ़े तीन, चार, आधल पाच और मू गफली का तेल बारह रुपए किलो था। गुजरात के लोग इस महागाई से त्रस्त हो गए। बम्बई और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में महागाई के आज भी ये ही हाल हैं। उत्तर प्रदेश (बुनाव के समय छोड़ कर) और बिहार के ग्रामीण इलाकों में लोगों को चीजों के सही दाम कभी मानूम नहीं होते। सरकार जिस दाम पर उनका अनाज ले ले वही उनके लिए बेचने की कीमत और बनिया जिन दाम पर लोहा दे दे वही लोहा के दाम हैं। पर ये लोग वरतों से इसी तरह जी रहे हैं, आंदोलन नहीं करते। गुजरात और उत्तर प्रदेश, बिहार के लोगों में कुछ फर्क भी है।

पहले अनाज फिर महागाई फिर राजनीतिक भ्रष्टाचार ने गुजरात के आम जीवन की जड़ें हिला दीं। १९५२ के बाद देश में और १९५६ के बाद गुजरात में जनता के दम पर एक आंदोलन खड़ा हो गया। और राजनीतिक स्तर पर और बिना किसी संगठनात्मक प्रयास के आंदोलन को नेतृत्व विधायियों ने दिया, चलाया भी विधायियों ने पर उसे बन्द ध्रुव जनता करेगी। मामला विधायियों के हाथों में भी बहुत कम रह गया है।

इनका सबसे बड़ा सतूत यह है कि गुजरात के विद्यार्थी नेता और डेर सारे विद्यार्थी राजनीतिक समझौते के फेर में दिल्ली चूम रहे हैं, पर गुजरात के शहरो में धर्म भी मोतें हो रही हैं और गोली चल रही है।

इसका कारण यह है कि गुजरात वा आंदोलन मिर्फ महागाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ नहीं है, पूरी व्यवस्था के प्रति है। एच. ऐसी व्यवस्था के प्रति जिसने जनता की कोई भागीदारी नहीं और जनता को यह मानून अधिकार नहीं कि उनके द्वारा चुना गया प्रतिनिधि वेदमान हो जाए तो वह उसे वापस बुला ले। गुजरात के आंदोलन की संभा यह है कि भविष्य के लिए चुनी जाने वाली विधानसभा में मिर्फ भिन्न इस्लाम चुन कर जाए और यह परम्परा स्थापित हो जाए कि अगर जनता के प्रतिनिधि भ्रष्ट होंगे तो जनता उन्हें वापस भी बुला वेगी। गुजरात का उदाहरण अन्य प्रान्तों की सरकारों और केन्द्र सरकार के लिए भी एक खतरे की पथरी है, जिसे प्रागे में पीछे गले में बाधना ही पड़ेगा।

भारत के प्रजातंत्रिक जीवन में पहली बार विरोधी पार्टियों से प्रभग जनता के स्तर पर किसी राज्य के मुख्यमंत्री और उनके सहयोगियों पर सार्वजनिक रूप से गुजरात में लगाये गए और विधायकों का सड़को पर जुलूसों के माध्यमसे मजक उड़ाया गया। विधानसभा मग करने और प्रदेश से भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए जितने उपयाम गुजरात के लोगों ने इस बार किये, पहले कभी नहीं किये। विधानसभा पेटेल गुजरात के इतिहास में अमर हो गये।

कुछ मोटे-मोटे आरोप जो चिमन भाई पर लगाये गये थे ये हैं। चिमन भाई पर यह आरोप है कि मुख्यमंत्री बनने के लिए कॉर्गस विधायकों को उन्होंने पयॉल पैसा देकर अपनी ओर मिलाया। वातिसाल विधायक अगर ज्यादा पैसा दे देते तो विधायक उनमें हों जाते। नवनिर्माण युवक समिति के लोगों ने बताया कि अहमदवादी के पास पवन्दी की वसे चिमनभाई पेटेल ने तीन दिन तक कामेसी विधायकों को मेहमानवाजी की, उन्हें मिलाया मिलाया और पैसा दिया, तीन दिन उन्हें बहा से जाने नहीं दिया, प्रेम के लोगों को युवाकर

अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया और विधायकों के साथ फोटो खिचवाई। विद्यार्थियों का दूसरा आरोप यह है कि बूँद चिमनभाई स्वयं शिक्षक रहे हैं इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में राजनीति की उन्हें अच्छी पकड़ है। चिमन भाई ने मुख्यमंत्री के प्रत्यक्ष होते ही शिक्षा को ब्यापार बना दिया। गुजरात विश्वविद्यालय में उपबुलपति की नियुक्ति को लेकर जिस दंड की राजनीति चिमनभाई ने चलाई और 'अपने' भावनी को उपबुलपति बनाने के लिए जो बिया कलाप धरनाए उससे शिक्षक उनके खिलाफ हो गए। आंदोलन में शिक्षकों के जुड़ जाने का यह भी कारण है। एक अन्य और बड़ा आरोप उन पर यह है कि मू फाल्सी की भारी उपज के बावजूद उनके मुख्यमंत्री बनने के समय तेल के भाव आठ रुपए से बारह रुपए प्रति किलो के बीच थे। कहा जाता है कि मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने तेल मिल मालिकों को चेतावनी दी कि अगर उन्होंने तेल के भाव चार रुपए बिको तक नहीं किये तो राज्य सरकार तेल मिलों को अपने हाथों में ले लेगी। चिमनभाई की चेतावनी के बावजूद तेल के भाव कम नहीं हुए। नवनिर्माण समिति का आरोप है कि चिमन भाई की सरकार ने तेल मिल मालिकों से लगभग पचसीस लाख रुपए चेतावनी के मुआवजे के रूप में प्राप्त किये और इस राशि को उत्तरप्रदेश और उड़ीसा के चुनावों के लिए केंद्र को दे दिया जिससे चुनाव 'टूटि से' सम्पन्न हो सकें।

बहुते हैं जब आपान में अयरी की राष्ट्रपति के धामनावा बा विरोध करना था तो आपान के नवजवानों ने साथ ही शकन में बड़े-बड़े जुलूस निकाले और अन्ततः अमरी की राष्ट्रपति को आपान मात्रा रद्द करवाई। चिमनभाई पेटेल को सरकार और विधानसभा के १६६ विधायकों के प्रति अपना रोप व्यक्त करने के लिए गुजरात के युवकों ने भी कुछ कम नहीं किया। चिमनभाई के पुतले को सार्वजनिक रूप से फाली दी और फिर शक्याया निकान कर दाह सस्कार किया। विधानसभा के सदस्यों ने प्रतीक के रूप में गयो का जुलूस निकाला, १६६ बूँद को डेना गाओ पर रव कर अहूर में घुमाया और (मेष पृष्ठ १३ पर)

प्रश्न : गुजरात में विधान सभा के चुने हुए प्रतिनिधियों को त्याग-पत्र देने का एक अभियान-ना चलता या रहा है। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा है कि चुने हुए प्रतिनिधियों से इस प्रकार त्यागपत्र माया जाना घोर उसके लिए उन पर तबाह झारना कहा तक उचित है? इस बारे में प्राइडरिस्ट्री की राय से कहा तक सहमति है ?

विनोबा : बादा इन दिनों भारतीय राजनीति के बारे में सोचना नहीं है। फिर राजनीति के बारे में सोचना है। अब दुनिया बहुत छोटी हो गई है। इसलिए भारत की राजनीति घोर प्रदेश की राजनीति उसके भी नीचे भा गयी। उस पर सोचना माने अपनी चिन्तन शक्ति व्यर्थ खराब करना। होना तो चाहिए फिर राज्य। भारत उसका एक भाग, चीन उसका एक भाग इत्यादि, इत्यादि घोर इन सबका एक कोट हो। बादा जो दो राष्ट्रों के बीच भगते हैं वे दो प्रांतों के बीच भगते माने जाय घोर इस काट के सामन वे पेश किये जाय। घोर यह कोट जो फेंकता था, वह सर्वनाम होगा। प्राणे जो रचना करती है वह यह है। इसके लिए बाबा एक नाम बोलना है जय रामदास, घोर दूसरी नाम बोलना है जय जगन्। हमने जय-हिन्द, जय-भारत, जय गरवी गुजरात—क्यों गुजरात में कहते हैं कि नहीं, उत्तरमा प्रभा मां, शिबलू मा काशी मा, जय-जय गरवी गुजरात, महाराष्ट्र महारा, यह महाराष्ट्र मेरा—नो इन तरह से प्राणो भावना या भाव-भावना मिलिम है घोर उसम है विश्व-भावना।

फिर ने गुजरात में चुनाव किये जाय तो सर्वे सोचें गुजरात किये इनका क्या करोना ? वही क्व फिर-फिर से जारी रहेगा। यदि प्राण में यह ताबन होनी तो बाबा ने जो विचार पेश किया; पहले से कि हर गाव में एक सामनभा बनायो घोर प्राय-दातमूलक हो तो प्रच्छा है, न हो तो भी सर्व-समर्पन से काम करते बापी घामनभा बनायो। घोर उनके द्वारा एकमति से बनना मुविधा सडा करो—युवाक में प्रामनभा की तरह से। मान भौतिक है एक युवाक-व्यंज में पचचीम गाव है। तो पचचीम गाव के पचचीम घारमी इच्छा हो जाय घोर सर्व-

गुजरात में अच्छे लोग चुनकर आयेंगे, इसका क्या भरोसा ?

महेन्द्र कुमार के प्रश्न घोर विनोबा के उत्तर

नुमति से प्राणने मे से एक घादमी सडा नरें। यदि सर्वानुमति न हानी हो तो क्विक बहुमत से सडा करिये। जो घादमी चुना जायगा, उनके विनाफ कोन सडा होगा ? यह करते भी भगर प्राणी ताबन है तो कम-तो कम एक जिले में घादमायो। होना तो चाहिए कम-से-कम एक प्राण मे। परन्तु ताबन कम है, इसलिए एक जिले में पूरा हो जाय तो मयूना हो जायगा—दूसरे जिले की धन्यकरण करने के लिए। जिस प्रकार से काम करना है, क्या काम करना है यह हम जानते हैं। जिस तरह से यह काम पूरा करना है, इसका मार्ग खोजना होगा हमको। तब हमारे जान मे वृद्धि होगी। इस वास्ते एक-एक जिले में भी भगर करें तो भी हो सकता है। बंत चुनाव में जिले की तय से सडा करना; यह भगर हो सकता हो किमी एक जिले में तो करन जंभा है। लेकिन यह भगर न हो सकता हो तो भी प्राणने मनदान केन्द्र पर जाना घोर वहाँ लोगों को टोकना-रोकना इत्यादि यह तो बेकार का काम है। जिसको धर्म काम हो नहीं है, उनके लिए घच्छा काम है।

नम्बर एक—घरना घादमी सडा करते की ताबन। नम्बर दो—वह ताबन भगर है नहीं ता चुनाव का बहिष्कार। मुझे एक जगह चुनाव क्या कि किमी एक जिले में कुछ हजारा लोगों ने चुनाव का बहिष्कार किया। हमारी मर्गें पूरी नहीं हो तो हम बंट नहीं देंगे। चुनाव का बहिष्कार करेंगे। तो मेने उनको कहा कि हजारा लोगों ने बहिष्कार किया, यह क्या नही। लोगों को बहिष्कार करना चाहिए तो उमघा भगर होगा। भगर चुनाव बहिष्कार करते का कार्यक्रम करेंगे तो यह होगा कि मनदान केन्द्र पर बंसे जा ही नहीं रहे हैं लोग। यदि कुछ भी तो दस-बीस सते से भा जायेंगे मे लोग। तो भी हर्न नहीं, क्योंकि ताबन ही नहीं रहेगी उनमें।

प्रश्न क्या प्रायको लगता है कि घाद की सफ्टपल स्थिति में इंदिराजी द्वारा त्याग-पत्र देकर हटना उचित होगा ? प्राय कोई विचलन सोचने है ?

विनोबा अब इंदिरा को क्या करना चाहिए, यह इंदिरा जाने, बाबा क्या जाने ? बाबा को क्या बहना चाहिए यह बाबा जाने, इंदिरा को क्या जाने ? घोर दानो को क्या करना चाहिए यह भवान जानें। (घारके पास मे मार्गदर्शन के लिए आनी है, फिर से घ्राणेशाकी है—भवनता) मार्गदर्शन के लिए मेरे पास प्राणी है तो मे उन्हें बनाया हू कि यह उत्तर दिया है इस दिशा में दिन्ती है। (हमी) - भगर इस विषय में मुझे पूछेंगी तो मे उनको सलाह दे सकता हू—भगर पूछेंगी तो। मनु-स्मृति मे एक नियम दिया है—मेरे जैसे ब्राह्मण के लिए। बिना पूछे किसी को कुछ बताया नहीं। फिर प्राणे कहा है कि भगर प्राण्य मे पूछेना तो भी जवाब देना नहीं। प्राणे विना है कि समनचाना घादमी जानें हुए भी जड के प्रकन रहना है। लेकिन राजनीतिक स्तर पर साबिए जरा भगर इन्तीका मे भी रिता ता सब कहें घबडा गयी। उनके विनाफ तानावरण पंसा हुआ है—गुजरात में घोर उत्तरप्रदेश में। घोर इसलिए घबडाकर इन्तीका दे दिया। इमने अच्छा तो यह है कि इन्तीका देना ही है तो दूरी मकलना मिले, उस वकन सोचा जा सकता है।

प्रश्न : कई लोगों का कहना है कि अफगानिस्तान में मर्प के लिए बादगाह मान विनादायद व्यक्तित्व बन गये। उनको हियुन्तान में उनके दोरे पर निधि की बंट घोर उन्होंने मुसलमानों के बारे में जो, कन्तु, उस पर टीका हुई। इस संबंध में काशी घमरोना है। क्या बादगाह मान के साथ कुछ सबब जोडा जाय ?

विनोबा : यह बादगाह मान जो है वह [शेष पृष्ठ १३ पर]

व्यवस्था हमारे अनुकूल नहीं है

संसद में मौलिक प्रश्नों पर विचार

रणबहादुर सिंह : हम लोग राष्ट्रपति के भाषण पर चर्चा कर रहे हैं। यहाँ पर जो भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किये गये हैं उनमें तात्कालिक राष्ट्रीय भ्रष्टव्यवस्था के मौलिक कारणों पर चर्चा नहीं हुई है। प्राज का समय कठिनाइयों के वर्णन का नहीं है। अधिक उपयुक्त यह है कि हम सोचें कि इनके निराकरण हेतु क्या किया जा सकता है। भ्रष्ट: कुछ ऐसे विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो अभी तक की चर्चा में सर्वथा उपेक्षित हो गये हैं।

मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि तात्कालिक परिस्थिति के संदर्भ में यह सारी व्यवस्था जो पिछे पिछे पुराने श्रीको रोमन राजनैतिक विचारधारा पर आधारित है, हमारे लिए अनुकूल नहीं है। यह हमारी राष्ट्रीय भावना को घाह नहीं है। उन भ्रष्ट पुरुषों के प्रति भाव्य रखते हुए जिन्होंने हमारे संविधान के ढांचे की संरचना की है मैं यह निवेदन करूँगा कि इस देश का इतिहास उन राजनैतिक विचारों से जिन पर हमारे संविधान का ढांचा आधारित है—कहीं अधिक तात्कालिक है। प्रायः यही समय है जबकि हम तात्कालिक समस्याओं का सामना करके निराकरण ढूँढते हुए यह भी सोचें कि क्या यह श्रीको-रोमन राजनैतिक विचारधारा के क्षेत्र के लिए अंतिम उपलब्धि है ?

राजनैतिक विचारधाराओं और तत्वज्ञानों में सपातार विकास हो रहा है। स्वच्छंद पूँजीवाद में भी धीरे-धीरे सामाजिक नियंत्रण हो रहा है जैसा कि अमेरिका में न्यू डील के बाद स्पष्ट दिखाई पड़ता है। और जब हम समाजवाद की ओर देखते हैं विशेषतः सोवियत समाजवाद की ओर तो वहाँ भी समाजवाद भगवत बटुटरता हो रहा है अबसे प्रोफेसर लाइबर्मेन के विचारों का प्रभाव पड़ा है।

स्पष्ट है कि जब ये दो समानान्तर धारों की लकीरें एक दूसरे की ओर झुकती हैं तो यह भविष्य में एक दूसरे से मिलने वाली है, वह कौन-सा विन्दु होगा ?

प्रो० मधुदण्डवते : सून्य मे।

रणबहादुर सिंह : विद्वान प्रोफेसर साहब चुक रहे हैं। मैंने कहा है कि जब समानान्तर लकीरें एक दूसरे की ओर झुकती हैं। क्या हम एक बुद्धिशील राष्ट्र होते हुए भविष्य के उस विन्दु के प्रति धारें बदल सकते हैं जहाँ यह दोनो लकीरें मिलने वाली हैं। यदि हमने धारें बन्द ही कर ली तो यह एक बड़ी भूल होगी। स्पष्ट है कि भविष्य का यह विन्दु जहाँ ये दोनो लकीरें मिलेंगी वहाँ दोनों वादों को धरुछा दिया होगी। यह मनुष्य मात्र के समस्त सचिव अनुभवों की प्राकृतिक उपलब्धि है। हम सर्वत्र अपनी पिछली भूलों से लाभान्वित हुए हैं।

पर मेरा यह भी निवेदन है, कि यह विन्दु जहाँ पूँजीवाद और समाजवाद का समन्वय होगा वह राष्ट्रीयकरण नहीं है। वह राष्ट्रीयकरण से बहुत आगे होगा। वहाँ जब राष्ट्रीयकरण होगा तो राष्ट्रीयकृत उद्योग में शासकीय अधिकारी नहीं रहे जायेंगे। वहाँ उत्तरदायित्व सिधे नागरिकों का होगा। और इसलिए वह समाजवाद के आगे की स्थिति है। वह पूँजीवाद के भी आगे होगा क्योंकि व्यक्तिगत लाभ की भावना को परिच्छुट करके ट्रस्टीशिप में बदल दिया गया होगा।

यह एक भावार्थ बलपना मात्र नहीं है। इसमें तात्कालिक समस्याओं का स्वरित निराकरण निश्चल सकता है। भ्रष्ट के राष्ट्रीयकरण का सर्वथा भिन्न ही निष्कर्ष निश्चलता यदि सामान्य नागरिक प्रशासन के समक्ष होकर इसका निगमन करे। मैं समझता पर ही बल दे रहा हूँ। इसके अधिक विस्तृत विवेचन का यह समय नहीं है। यदि हम कोयले के राष्ट्रीयकरण को लें तो यह प्रभाव भी प्रभावशाली होता यदि इसमें मजदूरों को बराबरी का उत्तरदायित्व देकर इस कार्य में सहयोगी बनाया जाता जबकि अभी वह केवल दास है जिन्हें नये मालिक दे दिये गये हैं। हमें राष्ट्रीयकरण से आगे उच्च व्यवस्था को लाना होगा जिसे मैं आध्यात्मिक ढंग से नागरिकीकरण ही इस समय कह सकता हूँ। यही सम्भवतः

वह भविष्य का विन्दु है जहाँ दोनों विचार मिलेंगे।

मैं यह कहकर कोई एक पत्रा पत्राया निराकरण नहीं प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं तो केवल विचार मथन के लिए उन सभी सहायक व्यक्तियों को आमंत्रण देना चाहता हूँ जो इस सदन में हैं अथवा इसके बाहर। नागरिकीकरण जैसा मैं सोचता हूँ पूँजीवाद के उन ऐतिहासिक सुरक्षा दलों से भी अधिक जागरूक होगा जो पश्चिमी अमेरिका में बने थे। और साथ ही साथ चीन के पीपुल्स कोर्ट से भी अधिक समाजवादी होगा।

यह इन सभी दर्शनों से इसलिप आगे है क्योंकि इसके स्फुटण का आधार वह प्राचीन मौलिक सत्य है जिसकी खोज इस देश के ऐसे लोगों ने की थी जिनके मस्तिष्कों की अतिम भ्रष्टव्यवस्था समाप्त हो चुकी थी। अप्रज कवि मिल्टन ने इसी को महान मस्तिष्कों की अतिम भ्रष्टव्यवस्था की सत्ता इन शब्दों में दी थी—

यश ही कारण है

जिसे शूद्र हृदय जन्मता है

महान मस्तिष्कों की अतिम भ्रष्टव्यवस्था।

भ्रष्ट में सभी माननीय सदस्यों को आमन्त्रित करता हूँ और माननीय सदस्यों के माध्यम से सभी देशवासियों को भी कि वह इस नये विचार की बुनौती को स्वीकार करके इस देश के जीवन को नया मोड़ दे ताकि भविष्य की पीढ़ियाँ हमारे बारे में यह कह सकें कि प्राज की ही घड़ी हमारे लिए सब से सुन्दर थी।

धीरती इन्दिरा गांधी : मैं एक शब्द

ही रणबहादुर सिंह के ससिध पर साजगी देने वाले भाषण पर बहना चाहूंगी। उन्होंने हमारा ध्यान प्राज की समस्याओं और कठिनाईयों से ऊपर उठाकर उन मौलिक तत्वों की चर्चा की जिन्हें श्रीको-रोमन राजनैतिक विचार बहा जाता है। उन्होंने ससद से इस पर चर्चा करने का निवेदन किया ताकि यह स्पष्ट हो कि यह प्राचीन यूरोपीय विचार पद्धति किस मात्रा में प्राज में भारत के लिए ही नहीं विषय के लिए भी विनयी सार्य रह गई है। मैं कहना चाहूंगी कि मुझे उनसे भाषण में बहुत ताजगी दिती और यदि माननीय सदस्य चाहेंगे तो इस विषय पर मसदीय चर्चा बहुत ही दिनचर्य होगी।

शराबवन्दी : क्या जन-अभिक्रम वेकार जायेगा ?

रामनूपण

देश में शराब से होने वाली बर्बादी का जगर बपान करने बँडा जाय तो एक पूरी किताब भी छोटी ही पड़ेगी। सकेले जयपुर से सरकार को एच बरोड थालीम साल खपये की घामवन्दी होती है। जयपुर में शराब की डिन्डीलरी नहीं है, बहा भिर्ष बाटाजिग होती है यानी शराब बोललो में घरी जाती है। डिन्डिनरी, गगानगर, कोडा, तथा अन्य जगहो में है जहा से शराब जयपुर भाई जाती है, जो वहा के २० ठेकों में बिनरित की जानी है। जयपुर में बिदेसी शराब की दुकानें पहले ४ थी अब ३० हैं।

कोलियो की कोठी में घडी के सामने बूँटी मुथी प्रभा ने मुझे बताया "शराब ने हमारी बस्ती में क्या-क्या कर रखा है बताया मुश्किल हो रहा है। बहुयो ना बाहर निकलना, पेशाब-पयाने तक जाना दुभर हो हो गया है। हरदम धेड़छाड़ होती रहती है। ऐसा इन्तजाम करिये कि हमारे मुहल्ले से यह घडी उठ जाय और फिर कभी न खाने पाये"। इसी तरह की बातें अन्य घनेक ल्वी-मुथयो से सुनने को मिली। २५ जनवरी को मुबह कोली मुहल्ले के ही प्राइमरी स्कूल पर जब बच्चो व बयसी की सभा हुई तो बच्चो ने श्री गोकुल भाई से सामने कहा "घर में हमारी पिटाई होती है, माँ बहिनो को पिटाई होती है, कबोकि पिता पागल बनकर खाने हैं। हय शराब को हटाकर रहिये, गैतान को भगा कर रहिये"। चाहे कोलियो की कोठी हो या रेगरो की, 'ममभाव' व 'गरीब' शब्द में चाहे जो धर्य भर कर घनुना लता लीजिए, 'भयबर' 'भोर' 'विशाफकारी' 'बमरतोड' जैसे विरोधन भी सही घनुवान के लिए माफगरी है।

'शराब गैतान' का जलूस

मैंने २४ फरवरी को कोलियो की कोठी में जब मुथी प्रभा ने पूछा था कि वह इन तरह शराब की घडी के सामने घरना देकर



शराबवन्दी के लिए कटिबद्ध महिलायें व बच्चे

कब तक बँडी रहेगी तो उसने कहा "मैं तो भाज ही हूँ जाऊ लेकिन यह घडी हूँ तब तो। मुझे यहाँ बैठने का कोई शौक पड़े ही है, लेकिन यह श्रापत यहा से हटनी चाहिए।" और उसकी इच्छा का प्रभार हुआ भी। २५ फरवरी से मुहल्ले में यह विचार हड़ होने लगा कि घडी मुहल्ले से जल्द से जल्द हटनी चाहिए और धरुछा हो उसे कल ही यानी २६ फरवरी को हटा दिया जाय। २६ फरवरी की सारील तय भी हो गई और छोटे-बड़े सभी उल्लाहित होने लगे। तय हुआ कि बच्चे हूँ सभी मुबह व बच्चे राजकीय प्राथमिक शाला पर इकट्ठे हो और यही से घडी बैलगाडी पर लादकर जुलूस की शकल में ले जायी जाय।

मुबह व बच्चे हम सभी प्राथमिक शाला पर पहुंच गये। २५ की शाम की ही कुछ लोगों के मुझाब के अनुसार 'शराब-गैतान' का एक गुनला तैयार करवा दिया गया था। बांस की खपचिवयो, लीलियो व काने कागज का दस फीट ऊंचा एक गुलता जिसको मूँछे व भावभंगी सभी गैतान की सी। बच्चे-बूँडों

सभी की हसी व हुर्रहल का कारण बना हुआ। नारो के बीच घडी अपनी जगह से उठाकर प्राथमिक शाला के सामने के मैदान में लाई गई और नगाडे की घावाज के बीच बैलगाडी पर लादी गई। करीब ५०० की भीड के बीच जिसमें बच्चो व स्त्रियो की भी एक शन्डी सख्या थी, घडी व 'शराब-गैतान' का गुलत देगरो की कोठी में उस स्थान पर लाया गया जहा शराब की दुकान के सामने ५२ दिनों से हरिबीर्तन बरगह चल रहा था। उसके बाद जलूस जयपुर शहर के मुख्य बाजारो—रामनज बाजार, जोडरी बाजार, जोडा रास्ता, त्रियोनिया बाजार, तिर हयोडी बाजार—से होता हुआ राजस्थान विधान सभा के निकट शराबकारी विभाग के कार्यालय पहुंचा। जलूस में नोग जोर-जोर में नारो लगा रहे थे—'शराब नहीं अनाज चाहिए', 'दार छोडो जीवन मोडो', 'जन जन को समभावमें दार बन्द करायेने', 'घाधी जी का रहा प्रयास, हो शराब का सत्यानास' आदि। प्रदेस नगावदी समिति के अध्यक्ष श्री गोकुल

→ भाई भट्ट जुलूस के साथ थे। अन्य लोगों में सर्वश्री रामाष्टणु वजाज, दीतरमल गोपल, रामवल्लभ अग्रवाल, मदनलाल सेवान, गो-वर्धन पंत व दुर्गाप्रसाद चौधरी के नाम प्रमुख हैं। काली पंचायत के अध्यक्ष श्री गन्धर्वगौर जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे।

श्री गन्धर्वगौर के नेतृत्व में तीन बहनों का एक प्रतिनिधिमंडल झाबकरी अधिकारी के पास गया और उनमें शराब की थडी को मभाव लेने के लिए निवेदन किया। आव-कारी ने पुलिस अधिकारी श्री चौधरी को थडी मभाव लेने का आदेश दिया। पुलिस भी अनी जगह किसी भी आक्रामक परि-स्थिति से निपटने के लिए तैयार थी। पुलिस जवान जिसमें बंदूकधारी व डोपघारी जवान भी थे, झाबकारी अधिकारी के कार्यालय के सामने मुन्दीद थे। लेकिन ऐसी कोई स्थिति पैदा नहीं हुई जिसमें पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ता। झाबकारी अधिकारी को अपना जीवन देने के बाद मुझी प्रेमाने में 'शराब घौतान' में भाग लगा दी जो सारे राजस्थान से शराबखोरी खत्म करने के प्रतीक स्वरूप था। तत्पश्चात् उपस्थित भीड़ को सम्बोधित करते हुए कुछ लोगों ने संक्षिप्त भाषण किये। रंगर पंचायत के अध्यक्ष श्री मोतीलाल भण्डारे ने कहा कि उनकी बम्नी में ५२ दिनों से ताराबंदी चल रही है फिर भी उनके उलगाह में कमी नहीं है। श्री रामाष्टणु वजाज व गम्पुनिन्द नेना श्री बरुणउत्तमप्रहद ने अपने भाषण में सरकार से नशाबंदी तुरन्त लागू करने पर बल दिया। श्री रामवल्लभ अग्रवाल ने कौनी व रेगर कौठी के लोगों को उनके अभिक्रम के लिए प्रशंसा की और यह आशा प्रकट की कि लोग यदि अपने अधिकारों व बर्तव्यों के प्रति इसी तरह जागरूक रहे तो कुछ मुद्दलों से ही नहीं सारे राजस्थान से शराब हटाई जा सकती है। रामधुन के साथ वहाँ को सभा खत्म हुई।

खटिकों की बस्ती

रेगर की कौठी में शराब बन्दी प्रथम में स्थानीय खटिक बस्ती में भी प्रेरणा ग्रहण की थी। वहाँ के कुछ उलगाही युवकों ने राजस्थान के झाबकारी मिनिस्टर का उनके मुद्दले में गुजरने हुए घेराव किया।

उन्होंने टेकेदार को चेतावनी दी कि यदि निर्धारित समय में दुकान नहीं हटो तो वे उसे स्वयं हटा देंगे। इसी वीच झाबकारी अधि-कारी भी वहाँ गये और मुद्दले के लोगों ने उन्हें भी अपना निश्चय बताया। बस्ती में ऐसा प्रतिजूल मानस देतकर टेकेदार दिसम्बर ७३ के अंत तक स्वयं दुकान खाली कर गया। उसके बाद वहाँ के युवकों ने मुद्दले में 'लोक-सेवा समिति' नाम की एक संस्था खोली और २० फरवरी गिबरादि के दिन वहाँ एक वाचनालय व पुस्तकालय की भी शुरुआत की गई जिसका उद्घाटन उन्होंने जिला संबंधी मंडल के अध्यक्ष श्री छीनरमल गोपल से कराया। वहाँ की समिति बेरोजगारों को रोजगार, सफाई, भण्डो का निरसन बच्चनस मुक्ति की दृष्टि से अच्छा काम कर रही है।

काफी कोशिश

रेगर व कौलियों की कौठी के लोगों ने दुकान में ताराबन्दी या शराब की थडी को एकाएक हटाने का निश्चय सिक्के उलगाह में आकर किया हो ऐसी बात नहीं है। इसके पहले उन्होंने सरकार व उनके ऊंचे अधि-कारियों से बारबार यह प्रयोग की है कि उनके मुद्दलों से शराबबंदी से सम्बंधित चीजें हटाई जायें। २२ फरवरी ७४ को रेगर कौठी की स्त्रियों ने प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के पास एक आग्रह भेजा जिसमें उन्होंने लिखा: "हमारी बस्ती में पिछले वर्ष धरसे से शराब का एक डेका है जो बस्ती के बोचंबोच चल रहा है यह बस्ती नर्क बन गई है... आग्रह गरीबी हटाना चाहनी है तो गरीबों की बर्बदी का सबसे बड़ा कारण जो शराब है उसे हटाओ... हमारा भरोसा है आप हम बहनों को इस छोटी सी प्रार्थना पर ध्यान देंगे और हमारे यहाँ का डेका तो पौरन ही हटाने के लिए आदेश देने की हवा बरोमी... इसी दिन रेगर बम्नी पंचायत के अध्यक्ष श्री मोतीलाल भण्डारे ने राज्य गृह मंत्री, भरन सरकार, के पास एक आग्रह भेजा जिसमें उन्होंने लिखा: "हमें विचित्र हुआ है कि राजस्थान में पूर्ण मंच निवेध लागू करने के लिए जो समिति बनी है नया जिसके कि भाग माननीय गन्धर्व है उसकी धपली बैठक २० फरवरी को जयपुर में होने

वाली है... हमारे यहाँ इस ठेके को प्रतिबन्ध हटाये जाने के लिए राज्य सरकार को निर्देश देने का बजट करें... दिनांक २६ फरवरी जिस दिन कौलियों की कौठी से शराब की थडी हटाई गई उस दिन भी वहाँ लोगों ने एक छात्रा परचा वितरित किया जिसमें उन्होंने लिखा "राजस्थान सरकार ने गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर राज्य की दार्डि करोड़ जनता के साथ यह वादा किया था कि राजस्थान में १ अप्रैल १७२ तक पूरी तौर से शराबबंदी लागू कर दी जायेगी। पर शराबबंदी करना तो दूर रहा, सरकारी की ओर से हरिवन बस्तियों, मजदूर बस्तियों स्कूलों, मन्दिरों मस्जिदों के पास शराब की दुकानों न रखने का राज्य का जो कानून है उसमें खिलाफ चलकर गरीब बस्तियों के बीच आज तक ठेके चलते जा रहे हैं और ऐसी जनता को शराब पिला कर पाप की कमाई द्वारा भ्रामदनी करके राज्य के विकास की बाध करते हैं... हमने चार दिन पहले जिलाधीन का महोदय झाबकारी अधिकारी जी व झाबकारी बम्नी जी को लिखित रूप में तीन दिन की अवधिमें इस थडी को हटाने के लिए निवेदन किया था पर उसके बावजूद इसे नहीं हटाया गया है। इसलिए हम बस्ती वालों को उस 'दाएँ दैत्य' का जनाजा निकाल कर झाबकारी कार्यालय में पहुंचाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है... रेगर व कौली बस्ती के लोग सरकार से कोई नई बात करने के लिए बह रहे हो ऐसी बात नहीं थी। स्वयं सरकार का यह निर्णय व उसका कानून है कि देशी शराब की दुकानों की बिक्री पाठशालाओं प्रत्यंतालों, डिग्रीसरिफ, पूजा-भयलो, बरडों मित्रों अथवा अमित बस्ती, जन आरामगृह के समीप नहीं हो सकती। राजस्थान सरकार वित्त (राज्य लेखापाल) विभाग की शराब बंदी सुले-टिड नं० १४ (अग्रवर्षयव) स्पष्ट बंधों में बहनी है:—

"देशी शराब की दुकानों नया धारा ७५ के अन्तर्गत बहिष्कृत स्थानों की बंधी की दूरी के मन्थन में निम्न मांग निर्दिष्टियाँ राज्य सरकार द्वारा निष्पाद्य की गई हैं:— (क) देशी शराब की दुकानों और अमित बहिष्कृत स्थानों के बीच निर्माण के कारणों

शराब-चलाते रहना मंहगा पड़ेगा...

भी सम्मिलित हैं के बीच की दूरी कम से कम २५० मीटर होगी चाहिए। (ख) देशी शराब की दुकानों और घारा नं० ७५ में लिखित अन्य स्थानों जिनमें वस्त्र मिलें भी पाती हैं के बीच की दूरी न्यूनतम २०० मीटर रहनी चाहिए। इस दूरी का आशय स्थायी और निरन्तर काम में आने वाली सड़क की दूरी से है। दूरी मानने में वाग्य दृष्टि न रहे (उदाहरण दृष्टिकोण हो) एक भवन विशेष अपना बड़े प्रहाते के बाहरी भाग चार बीघारी से दूरी माने। इस स्थिति में अहाते के खोले से १०० मीटर की दूरी पर शराब की दुकान रह सकेगी। पूजा के स्थान इस उद्देश्य के लिए वे माने जायेंगे जहां काफी लोग आते हैं और सामान्य जनो द्वारा कम से कम दस साल से वह स्थान प्राचीन समय के रूप में प्रतिष्ठित हो। महात्मा गांधी की प्रतिमाओं के सम्बन्ध में महात्मा गांधी की मूर्ति और शराब की दुकान के बीच की दूरी कम से कम १०० मीटर होनी चाहिए... यह बुलेटिन राज्य सरकार के विशेष सचिव श्री मार० रामकृष्ण के नाम से प्रसारित की गई है। नियम-मनुष्य व सम्बन्धित बस्तियों के लोगों के बार-बार आग्रह के बावजूद राज्य सरकार या उसके अधिकारियों ने शराब की दुकान बंद करने या पकड़ी हटाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की। यह सरकार की धर्मनिरपेक्षता और उसकी 'नेपादा नहीं तो क्या है? लोकतन्त्र में यदि व्यक्ति और समूह की इच्छा या उसकी राय का महत्व है तो शराब जैसी चीज के सम्बन्ध में मुनवाई क्यों नहीं होनी, हमका उत्तर कौन देगा? मुनवाई तो प्रलय रेंजर बस्ती के धान्दोलन को राजस्थान के मौजूदा जित्त मनो भी पदमनस संघ ने धर्म्य शराब विक्रेताओं का धान्दोलन बनाया। भूमि के राजस्थान में इस तरह शराब को व्यापक बनाना चाहते हैं धन उन्हें रेंजर बस्ती की एक सभा में 'मदिरा रत्न' की उपाय से विमूषित करने की निष्कारिणी भी गई।

प्रभिक्रम का असर

यह सही है कि रेंजों व बस्तियों की कोठी के निवासियों के इस प्रभिक्रम को

राजस्थान नयावदी समिति के पूरे धान्दोलन से प्रेरणा मिली है। राजस्थान के पाना-वर्णन में अप्रैल १९६६, गांधी शताब्दी वर्ष से गोकुल भाई अष्टु के नेतृत्व में प्रारम्भ शराब बन्दी धान्दोलन प्रतिष्पन्नित हो रहा है और वहाँ के वातावरण पर प्रभिक्रम उपवास, पिनिटिंग, प्रदर्शन, व्यापक सहयोग, प्रभावरे डिस्ट्रीलरी पर सीधी कार्रवाई, प्रभावमन्त्री निवास पर गीन प्रदर्शन, विधायकों एवं सखद सदस्यों द्वारा शराबबन्दी सम्पन्न, प्रभिक्रम उपवास तथा जिलों के कार्यक्रम एवं बरिष्ठ लोगों ने प्रयास की छान है। जयपुर के स्थानीय लोकसेवकों व सर्वोदय कार्यकर्ताओं विशेषकर श्री रामवल्लभ धरमवाल को इन बस्तियों में प्रेरणा भरने का बहुत कुछ श्रेय है। लेकिन यह भी सही है कि यदि इन बस्तियों के लोगों ने अपना प्रभिक्रम न दिखाया होता ता प्राय उनमें जो चेतना, जो जागृति, जो दृढ़ता व जो लगन दिखाई पड़ रही है वह न दिखाई पड़ती।

लेकिन लोगों के प्रभिक्रम से इन बस्तियों में कोई बरिक्ता हो गया हो ऐसा बात नहीं है। हाँ यदि यही उल्लाह व जागरणता व वेष्टा बराबर बनी रही तो नयावन्दी की दिशा में जरूर प्रशान्तीय सफलता मिलेगी। इतना फर्क जरूर पड़ा है कि जिस रेंजर बस्ती से ६ लाख रुपये सानाना की धामदनी राज्य सरकार को ठेके में थी, और जहाँ ५ हजार रुपये की शराब प्रतिदिन बिकती थी वहाँ सन्तानि के दिन भी जब लोग छक कर पीने में और ५-७ हजार रुपये तक की शराब बिक जाती थी उन दिन भी शराबबन्दी रही। लोग धीरे-धीरे बोड़ी सिपरेट पीना भी छोड़ रहे हैं। श्री हरिदीपट्ट देवगं की कोठी में ही रहते हैं। वे खुद बीड़ी पीने में लेकिन उन्होंने बताया कि वे जब उत्तम पर बैठें तो उन्हें बीड़ी का ध्यान तक नहीं आया। श्री प्रमचन्द पीपड़ीवान ने बताया कि उन्होंने बीड़ी पीना छोड़ दिया। श्री मानोचन शराब पीने से, धन छोड़ दी है। उनका कहना है कि वे चाय-मगरेट भी नहीं पीते। उन्होंने श्री रामवल्लभ धरमवाल की उपस्थिति में कहा कि इस तरह उनके पास जो पैसा बचेगा

उससे वे लोगों को मिठाई खिलायेंगे। दिल पर काफी असर करने वाली बात तो यह रही जो २५ की मुहब्द प्रभातफेरी के समय कोसियों की कोठी की दो स्थियों ने श्री गोकुल भाई अष्टु से कहा। इन स्थियों ने गोकुल भाई के चरण छाप और कहा "यह हुकान तो हुतबा ही दो और जो लोग पीते हैं उन्हें गोली मार दो"। उनकी बाणी में दुःख व कातरता की भलक थी। पीने वालों में उनके प्रति भी है। पता चला एक स्त्री का पति जब काफी रात शराब पीकर घर लौटा तो पत्नी ने दरवाजा नहीं खोला। कटकटाने जाते की रात हुताश पति वहां आया जहां लोग धम्य जताये हरिचौतन कर रहे थे। जब उसे होम थाया तो वह भी हरिचौतन में शामिल हुआ और उसने शराब न पीने की वसम लाई। ३५ वर्षीय युवक श्री गोविन्द राम से सुनावान रोचक रही। उन्होंने बताया उन्होंने ६ महीने से पीना छोड़ दिया है। शराब के नगे में चुत होकर उनकी धराने दोस्त श्री ईश्वरपाल से लडाईं छोड़। पुलिन में ईश्वरपाल की खूब पिटाई की। भरी जवानी में श्री ईश्वर साल की धन्दनी चोट से मृत्यु हो गई। उनके पाँच बच्चा व विधवा पत्नी का पट्ट इनसे देसा नहीं गया। स्वयं भी बवासीर से भयवर तीर पर बीमार हुए। यह सब देखकर उन्होंने पीना बन्द छोड़ दिया है। जो पीते भी हैं शरम खाते हैं, डरते हैं। यह भयवर महगाईं और ५-७ अधिक से अधिक १० २० रोज की बमाईं, उन्होंने कहा अगर गरीब पीना नहीं छोड़ देते तो उनका जीना मुश्किल है। इस सरकार को क्या बंधे बंधे शराब व मट्टे की दुकानें खुलवानी है जिन पुलिस चलानी है।

समय रहते ही लोगों के प्रभिक्रम व उनकी कोसियों के प्रति सरकार व अन्य लोगों को जागरूक हो जाना चाहिए करना उनका प्राक्गेण हितकर व उष रूप भी धारण कर सकता है जिसका निराकरण बटून मुश्किल हो जायेगा। और शराब जैसी चीज को तो बन्द न कर जये चलाते रहना जिन्हीं भी हृष्ट में डीन नहीं। दुनिया के अन्य देशों की मिमान भी यही बना रही है कि शराब चवाने रहना कुल भिया कर महगा पडना है। उससे लाभ बमाने की बात निराधार है।

(समाप्त)



युवकों ने काम अभी तो शुरू किया है

कृष्णस्वरूप भ्रानन्दी

उत्तर प्रदेश के जिन पाच महानगरी मे मतदाता शिक्षण अभियान चला उनमें प्रभावशालिता के नाते इलाहाबाद का नम्बर निविदाद रूप से पहला है। जयप्रकाश नारायण वहा जा नही सके और कुछ और विचारकों के कार्यक्रम भी रद्द हुए। फिर भी प्रो० बनवारी लाल शर्मा और नवयुवकों ने स्वयं प्रेरणा और अभिन्नम से जो कुछ किया वह इस अभियान के लिए अनुकरणीय है। यहाँ हम इलाहाबाद के काम की रवट दे रहे है—]

इलाहाबाद मे ४०० नैपानी तथा "सर्वोदय विचार प्रचार समिति" के मन्त्री बनवारी लाल शर्मा के समुक्त सयोजनत्व मे "मतदाता शिक्षण एवम् चुनावपद्धि अभियान" चलाया गया।

२० जनवरी को इस अभियान का धीमण्डल जिज्ञामु केन्द्र मे आयोजित नागरिकों की सभा से हुआ, जिसमे सर्वे सेवा सच के मन्त्री ठाकुरदास बग ने अभियान की आवश्यकता एवं कार्यक्रम पर विस्तार से प्रकाश डाला। धर्मनी सीमित शक्ति और साधनों का ध्यान रखते हुए अभियान को जिले के चार निर्वाचन क्षेत्रों (नगर के तीन और चौथे चावल (सुरक्षित) निर्वाचन क्षेत्र) मे सघन रूप से चलाने का निर्णय लिया और संचालन हेतु ३३ सदस्यों की केन्द्रीय समिति गठित हुई जिसकी लगभग प्रति सप्ताह बैठकें होती रही।

तीन कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर नगर मे हुए। पहला २० नववरी को जिज्ञामु केन्द्र में, दूसरा शिविर ३ फरवरी को हिन्दुस्तानी ऐकेडमी मे तथा तीसरा शिविर पुनः जिज्ञामु केन्द्र मे १७ फरवरी को हुआ। चुन्नी भाई बेंच के जिन्होंने धारासम मे 'वोटदाता परिपद' के माध्यम से इस दिशा मे उल्लेखनीय कार्य किये हैं, सहस्रपूर्व अनुभव, विचारों व कार्यों की जलनकारी, स्वस्मन्देह कार्यकर्ताओं के लिए सर्वाधिक लाभदायक रही। कार्यकर्ताओं मे तर्कों की ही ज्यादा सख्या रही है और प्रोसतन ५०-६० कार्यकर्ता इन शिविरों मे भाग लेते रहे। ७ फरवरी को प्रादर्श इष्टर कालेज, सराय झाकिल मे ग्रामीण क्षेत्र के लगभग ५० कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर हुआ, चावल निर्वाचन क्षेत्र मे अभियान के संचालकों मे उक्त कालेज के दो उत्साही अध्यापकों प्रोमप्रकाश दुबे व छोटे लाल श्रीवास्तव का योगदान उल्लेखनीय है।



शुद्ध और स्वतंत्र चुनाव के लिए छात्रों का मोन जुलूस
अभियान की शुरु से १६ फरवरी को मोतीपार्क मे तथा १७ फरवरी को दारागज बस स्टैंड पर ऐसे समुत्पूर्व मंच प्रदान किये गये जिनसे दक्षिणी व उत्तरी इलाहाबाद निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले अधिकांश प्रत्याशियों ने अपने कार्यक्रमों, नीतियों व सध्यों से उपस्थित विनाल मतदाता समुदाय को प्रसंगत कराया। सिद्धराज बड़वा व चुन्नी भाई बेंच ने जम से उन दोनों समाजों की अध्यक्षता की। दैनिक 'भारत' ने इसे अभियान का 'मनोला प्रयोग' कहा है। दक्षिणी निर्वाचन क्षेत्र के जिन प्रत्याशियों ने मोतीपार्क वाली सभा को सम्बोधित किया था, उन्होंने अभियान के इत प्रयास की भूमि-भूमि प्रशंसा की और खुले तौर पर स्वीकार किया कि चुनाव सच के ग्युनीकरण का यह सुमम तरीका है। उत्तरी निर्वाचन क्षेत्र के जिन प्रत्याशियों ने दारागज बस स्टैंड वाली सभा को सम्बोधित किया था, वे परस्पर परनिंदा करना चाह रहे थे। परन्तु उन्होंने इस 'मंच की पवित्रता' की दुहाई देकर अपने को ऐसा करने से बचा लिया। प्रारम्भ मे सयोजक, बनवारी लाल शर्मा ने प्रत्याशियों से परस्पर निन्दा न करने की

अपील करते हुए 'मंच की पवित्रता' कायम रखने के लिए विनय वल दिया था। दारागज मे हुई सभा मे हजारों लोग उपस्थित थे। ४०० सिद्धीकी के सहयोग से मुस्लिम बहुल गांव रसूलपुर मे अभियान की शुरु से एक आम सभा हुई। चुन्नी भाई बेंच ने सरल भाषा मे सर्वोदय विचार प्रचार तथा लोकतन्त्र मे मतदाता की सीधी भागीदारी के विचार को गाँववासियों को समझाया। चावल निर्वाचन क्षेत्र मे चार बड़ी सभा मनाए हुई। पहली सभसभा २ फरवरी को सराय झाकिल मे बस स्टैंड के मैदान मे हुई इसकी अध्यक्षता धारासम राममूर्ति की अनुपस्थिति मे धारासम इन्जीनियर श्रीवास्तव (सयोजक, केन्द्रीय धारासमजुल) ने की। मुख्य वक्ता ये मतदाता शिक्षण व चुनाव शक्ति अभियान के सयोजक बनवारी लाल शर्मा। दूसरी सभा ५ फरवरी को निरहपुर इष्टर कालेज मे हुई, जिसमे गाँधी जी के सहायोगी चन्द्रकाश भाई के प्रस्ताव प्रो० बनवारी लाल शर्मा ने अभियान के विभिन्न पद्धतियों पर प्रकाश डाला। तीसरी शिक्षण सभा ७ फरवरी को बनौली मे तिलक इष्टर

भूदान-यज्ञ : सोमवार, १८ मार्च, '७५

→
 कावेज मे हुई जिसमे स्थानीय लोगो, अम्पा-
 पकों, तराणों के प्रतिरिचन समीप के १०-१२
 गावों के लोग भी उपस्थित थे। सभा को
 स्वामी सत्यानन्द ने सम्बोधित किया। चौथी
 सभा १४ फरवरी को डा० सिद्दीकी के
 सहयोग से मुस्लिम ब्रह्म मंत्र रत्नपुर मे
 हुई।

इलाहाबाद नगर मे छ आम सभाए हुई
 हैं जिनमे सेकड़ों की सख्या मे लोग उपस्थित
 रहे। दो आम सभाएँ दारागज (४ फरवरी
 व १३ फरवरी) मे, एक बलुघाघाट (१५
 फरवरी), मे एक हिन्दी साहित्य सम्मेलन (५
 फरवरी), मे एक नया गट्टरा (२ फरवरी),
 मे तथा एक हरीजन ग्राम (५ फरवरी) मे
 हुई थी। दारागज मे हुई सामसभाओं का
 दूकगामो घाट सब देखने को मिला, जब
 निर्वाचन के दिन किसी भी मतदाता ने
 केन्द्र तक जाने के लिए उम्मीदवारों
 द्वारा को गई बाहुल-मुविधा का किसी भी
 रूप में इस्तेमाल नहीं किया। इन्हे अभियान
 को उपस्थित ही मानो जानो चाहिए।

निर्वाचन के पूर्व नगर मे जहा चुनावी
 दगा हुआ था, वहाँ अभियान के कार्यकर्ताओं
 की टोली ने दौरा किया घोर मतदानों से
 शक्ति भंग न करने की अपील की। टोली ने
 लोगों को सूचित किया कि वे उम्मीदवारों
 द्वारा भ्रष्टकार्य करने से बचें, क्योंकि राज-
 नीतिक साधो के लिए मतदाताओं को जाति,
 धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग भादि वे नाम पर विच-
 रित किया जात है घोर विघटनकारी बर्ण
 उपसे लाभान्वित होना चाहता है। लोगों ने
 टोली की प्रतीत मानी। अगतिप्रवृत्त दौर
 का दौरा, लोगों को समझना बुझाना, लोगों
 से शक्ति व्यवस्था बनाये रखने की प्रतीत
 इन सब का तुरन्त प्रसर हुआ। अभियान
 की घोर से जारी की गई एक प्रतीत पर सभी
 उम्मीदवारों ने हताशर चिये जिसने स-
 दाताओं से शक्तिपूर्ण चुनावों के लिए हर
 सम्भव प्रयास करने की अपील की गई थी।
 यह प्रतीत स्थानीय पत्रों द्वारा धारणी भी
 गयी।

हिन्दुस्तान एकेडेमी मे सर्वदलीय सभा
 ३ फरवरी को हुई जिनमे उपस्थित उम्मीद-
 वारों ने स्वयम्प और मुष्ट चुनाव के लिए
 अपनी सहमति जाहिर की घोर अभियान

द्वारा इस सम्बन्ध मे जारी की गई प्रतीत पर
 हस्ताक्षर भी किए।

मुहल्लो मे कार्यकर्ताओं ने घर-घर
 जाकर अभियान सबधी परचो घोर साहित्य
 का वितरण किया। लगभग ५० हजार परचे
 बाँटे गये। परचों के वितरण ने अभियान को
 काफी लोकप्रिय बनाया। इससे दूसरा लाभ
 यह हुआ कि लोगों के बीच सम्पर्क सधा घोर
 नये-नये कार्यकर्ता तैयार हुए।

मतदाना से सम्पर्क करते समय इस बात
 पर बल दिया गया कि वह लोकतन्त्र में
 मालिक है। घन उत इस बात सावधान
 रहना चाहिए तथा अपने प्रतिनिधियों के
 चुनाव मे प्रत्यन्त सजकता बरनी चाहिए।
 इस बात का ध्याहू किया गया कि मतदाता
 वोट देने प्रवश्य जायें। कोई भी उम्मीदवार
 पम्दन् न हो तो अपना मत पत्र वापिस रू
 करा दें। उम्मीदवारों द्वारा मतदान केन्द्र पर
 ले जाने वाली सवारियों के बहिष्कार पर भी
 काफी बल दिया गया। मतदाता से कहा
 गया कि वह वोट मागने के लिए अपने
 उम्मीदवार प्रयास उनके सम्पर्क से तीन
 घण्टे पूर्व १. चुनाव मे विजयी हो जाने के
 प्रथम निश्चयना के हर एक प्रतिवेदान के
 पहले घोर बार मे मतदाता को राय जानने
 घोर विधानसभा की कार्यवाही मताने के
 लिए ध्यास जनता के बीच मे धार्यो ?
 यदि क्या बल बरसे ? क्या ध्यास स्वायत्त
 देकर पुन चुनाव सत्रे मे ? जोत जाने वर
 क्या अपने साताना धामदनों का ब्योरा
 मतदाताओं को देने ? मतदाता को यह भी
 बताया गया कि कैसे उम्मीदवारों को वोट न
 दें घोर कैसे उम्मीदवार को वोट दें ? अभि-
 यान को केन्द्रीय समिति की ओर से सभी
 उम्मीदवारों के पास पत्र भेजे गए जिसमे
 ऊपरलिखित तीन प्रश्न पुदे गए थे लेकिन
 किसी भी उम्मीदवार का प्रत्युत्तर नहीं
 मिला।

२३ फरवरी को अभियान की घोर से
 नगर मे मोन बलुघ निचाला गया। बलुघ मे
 सयम्प तीन सौ लोगों ने भाग लिया। इसमे
 तराणों की सख्या ज्यादा थी। महिलाएँ भी
 थी। दफिनयों पर चिके हुए विविध प्रश्नो को
 हम्नान्वित पोस्टरो को बन्दो के सहारे
 लिए हुए २५० हाथो ने अँसे उत समय लोक-
 तन्त्र के लोक निर्माण के लिए लोक का मोन

साह्वान किया हो। जिन पोस्टरो मे 'यदि
 कोई भी उम्मीदवार पम्दन् न हो तो यही
 बान मतपत्र पर लिख देना मे डालिए' लिखा
 था, उन पर दमकों का पट्टा काफी कँडित था।

चुनाव के दिन लगभग ६० मतदान
 केंद्रों को अभियान ने अपना कार्य क्षेत्र चुना।
 हर मतदान केन्द्र पर २ से लेकर ४ कार्यकर्ता
 ८ बजे से साय ५ बजे तक रहे। नगर के तीन
 चुनाव क्षेत्रों को पाच क्षेत्रों मे बाटा गया।
 हर एक मे एक भिगरानी उचनदस्ता जिसमे
 कम से कम एक सदस्य के पास चुनाव आयोग
 द्वारा दिया गया अधिकार पत्र था जिसके
 आधार पर वे किसी पोलिंग बूथ का निरीक्षण
 कर सकते थे। बार या सट्टरो पर घूमता
 रहा। साथ ही हर क्षेत्र मे सार्दिकलो घोर
 युवकों की निगरानी टोली ने एक मतदान
 केन्द्र से दूसरे मतदान केन्द्र
 का सपर्क बनाये रखा। चू कि प्रायः हर
 मतदान केन्द्र पर कई मतदेय स्थल थे,
 इसलिए कार्यकर्ताओं ने मतदाताओं को मत-
 देय-स्थल बताने मे पूरा सहयोग दिया, जिन
 से मतदाताओं को काफी सहूलियत हुई।
 मतदेय-स्थल के १०० गज के घन्दर कार्य-
 कर्ताओं की सजकता के कारण ही लोग
 दलीय टोपिया पहिने, बिल्ला लगाये व भण्डे
 लिए नहीं जा पाते थे। तनाव नहीं बढ़ने
 दिया गया, समझा बुझाकर लोगों को शात
 किया गया। कार्यकर्ता किसी दल या उम्मीद-
 वार के शिबिर मे नहीं गये घोर न उनसे या
 उनके सम्पर्क से बातचीत ही की। वोटरो
 की घिनताघटती रोंकी घोर उह धावक्यक
 सहायता दी गई।

मतदान के दिन कार्यकर्ताओं को तरहू-
 तरहू के प्रत्युत्तर मिले जिसकी कुछ भलकिया
 यहा प्रस्तुत हैं एक मतदान केन्द्र पर एक
 प्रदुत्त पार्टी के उम्मीदवार अपनी पार्टी की
 टोली और बिल्ला लगाये प्रवेश करना चाहने
 थे। कार्यकर्ताओं ने उनसे यह टीनो बन्धुए
 उतरता हो सब उन्हे प्रवेश करने दिया। एक
 ध्युक्त मतदान केन्द्र पर एक पार्टी के लगभग
 ३००-४०० कार्यकर्ता पोलिंग बूथ को
 घेर कर आने लगये घोर मतदाताओं
 को परहृ-परहृ कर अपने उम्मीदवार को
 वोट खाने के लिए विवध करने लगे।
 ह्जारो कार्यकर्ताओं ने पौडागीन प्रविचारी

मतदाता शिक्षण : वाह और इटावा में

महाधोर सिंह

मतदाता शिक्षण के लिए वाह (जिला प्रयाग) एवं इटावा क्षेत्र में १०७ नुकसद सभाएं धोर प्रामीण सभाओं की गईं। बाबिजो में भी बैठकें की गईं। करीब ५,००० परचे व १,००० पोस्टर पूरे क्षेत्र में बिपणये धोर विरहित किए गए। हमारे चुनाव सम्बन्धी विचारों का व्यापक प्रसार मामान्य जनता, बुद्धिजीवी एवं तरुणों पर पडा। काफी जिलम्ब से काम प्रारम्भ हुआ, इनलिए अधि-कांश लोग जिन्होंने इस विचार की पसन्द किया, वे सभी किसी न किसी उम्मीदवार के नाम में कार्य कर रहे थे। फिर भी कई सामा-जिक कार्यकर्ता, शिक्षक एवं तरुणों ने तटस्थ भूमिका में हमारा पूरा-पूरा सहयोग किया। जगह-जगह ग्राम लोग चुनाव प्रचारकों से सवाल करने लगे। हर थैल का हर उम्मीदवार हमारे प्रचार कार्य को सही मानता था और अपने चुनाव कार्यालयों तक वे उन्होंने हमारे पोस्टर लगा रखे थे। यह एक प्रकार से इत विचार के प्रभाव से अपने को बचाने के लिये किया जा रहा था। क्योंकि प्रायः सभी उम्मीदवार किसी न किसी प्रकार से चुनाव नियमों का उल्लंघन कर रहे थे।

हमारे सामने ध्यावहारिक बठिनाई यह थी कि नये नव जवान कार्यकर्ताओं की भूमिका परिपक्व न होने की वजह से प्रतिवार के काम में हम उनका उपयोग नहीं कर सके। वैसे इन दोनों ही क्षेत्रों में चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। हम अपनी टोली के साथ मतदान केन्द्रों पर घूमते रहे। कहीं-कहीं हमें ऐसी शिकायतें मिली कि किसी उम्मीदवार विशेष्य के प्रभाव की वजह से प्रमुख गांव के कमजोर लोग वोट नहीं डालना चाहते। शिवायत करने वालों से जब मैंने साथ चलने के लिए कहा तो उन्होंने अपनी मजबूती बढाई और कहा कि वे लोग किसी के बहने से मतदान केन्द्रों पर नहीं गये, उन को बहाने समझाने-बुझाने पर भी वे नहीं माने और अपने धोखों पर खले गए। अनि-यमितताओं की स्थिति यह रही कि बाह क्षेत्र का उठे प्रमुख उम्मीदवारों का एक-एक लाख या उससे भी अधिक खपया तर्च हुआ। शहरी सीट इटावा पर एक प्रमुख उम्मीदवार का अनुमानित तीन लाख से पांच लाख तक खर्च हुआ। जातिवाद का खुला प्रचार था। वोटर साने में सभी उम्मीदवार जिनके पास

साधन थे, बड़े पैमाने पर वाहनों का उपयोग कर रहे थे। इसकी शिवायत हमने संकेत मजिस्ट्रेट एवं निर्वाचन अधिकारियों को लिखित रूप में दी। जहां जिस पोलिंग स्थल पर जिस उम्मीदवार का प्रभाव था, वहाँ फर्जी वोट भी डाले गये। लेकिन जहां दूसरी पार्टी के एजेंट ही एतराज न कर रहे हों, धोर हम वोटर को पहचानता नहीं थे, इसलिए इस गलत कार्यवाही को रोक नहीं सके। इस प्रकार की स्पष्ट स्वीकृति उम्मीदवारों के एजेंटों ने बाद में की कि हमने अपने पोलिंग पर इतने फर्जी वोट डलवाये हैं। इस गलत काम की प्रायः सभी उम्मीदवारों की एक पूर्व नियोजित पद्धति ही बन गई है।

इस अनुभव से यह राय धोर भी मजबूत बनी कि वर्तमान चुनाव प्रणाली के द्वारा तथा दलगत राजनीति के द्वारा देश में लोकतन्त्र न तो सही मांगे में लोकतन्त्र ही है और न जनहित में कार्य करने के लिए सक्षम ही सकता है। और यदि यही स्थिति आगे भी सही तो लोकतन्त्र से जनता का विश्वास उठ जायेगा। और वह हिंसात्मक कार्यवाहियों में हिंसेदार हो जायेगी। मौजूदा जनतन्त्र जिसमें केवल ५०% लोग (मतदाता) हिस्सा लेते हैं। उनकी स्थिति भी यह है कि केवल १०%

[शेष पृष्ठ १५ पर]

→ युवकों में...

तथा पुलिस अधिकारियों से यह अनियमितता ठोकरों की प्रायंता की, लेकिन उन्होंने अपनी प्रसमर्पता जाहिर की। स्थिति विगतती देखकर एक कार्यकर्ता चुनाव अधिकारी धोर पुलिस प्रधीक्षक के पास शोध गया, क्योंकि उनका कार्यालय नजरीक में था। पहले तो उन्होंने धानाकानी की। लेकिन कार्यकर्ता के ध्राहण पर सम्बन्ध-स्वयल पर जिनाधीश धोर सहायक पुलिस प्रधीक्षक अपनी फोर्स लेकर ४-३० बजे भाए और हमारे कार्यकर्ताओं को सहयोग लेकर भीड़ को बाहर किया। दो घुड़ल्लो (दारागज धोर बोटगज-सोहनी पार्क धर्मशाला) में कार्यकर्ताओं ने मत-दाताओं को साने ले जाने वाली गाड़ों पर रोक लगा दी। सवारियों पर पार्टीओं के ऊठे भीड़ स्थानों पर उतरवा दिए गए। एक मत-दान केन्द्र पर एक पार्टी के कार्यकर्ता मत-

दाताओं को सवारी गाड़ों पर ला रहे थे। कार्यकर्ताओं ने जब उन्हें रोका तो कहने लगे कि यह भीमार है, चल नहीं सकता। कार्य-कर्ताओं ने मतदाता को रिश्ते से उतार कर अपनी साइकिल पर बिठा कर तथा वोट डलना कर उसके घर पहुंचा दिया। एक मतदान केन्द्र पर पोलिंग स्थल के पास उठन-दस्ते के सदस्य ज्योंही पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एक पार्टी के कार्यकर्ता (एजेन्ट) मत-दानाध्यक्ष को मारने पर उतारू थे। उनका धरौप था कि मतदानाध्यक्ष भ्रमपट महिलाओं की सहायता करने के बहाने एक विशेष उम्मीदवारों के प्रभाव पर ठपे लगवा रहे हैं उठन दस्ते के सदस्यों ने स्थिति पर बढ़ी चतुराई से काबू किया।

मतदाता-निर्वाचण और चुनाव शुद्धि अभियान ने सोई तरुणाई को अहमोर दिया। लोकतन्त्र निर्माण लोक करे क्योंकि साम्प्रतिक लोकतन्त्र बाबा लोकनिरेपेक्षावादी है

धोर उसका निर्माण लोक नही किया है, बल्कि उस पर धीप दिया गया है धोर सभूचा बाबा तन्त्र-प्रधान है—प्रतएव स्थानीय तर्ण कार्यकर्ताओं ने 'युवामंच' (लोकतन्त्र के लिए) का गठन कर लिया है। इस मंच के धरिये तर्णार्थी लोकतन्त्र को जगने के कार्य-क्रमों को हाथ में लेगी। अब इस बात की प्रभावशाली जोरी से मजबूत की जा रही है कि तर्णार्थी राष्ट्रीय मंच पर प्राकर लोकतन्त्र के लोकनिर्माण में निर्णायक रोल घटा करे। 'युवामंच' (लोकतन्त्र के लिए) इसी दिशा में एक प्रयास है। इस चुनाव के अनुभवों धोर अभियान से नागरिक शक्ति के साथ 'युवामंच' को लोकस्वराज्य के कार्य में संगना है।

कार्यकर्ताओं ने यह माना कि २६ फर-वरी की चुनाव-समाप्ति के साथ यह अधि-मान समाप्त नहीं हुआ बल्कि अब सही अर्थों में शुरू हुआ है।

गुजरात के विद्यार्थी

(गुप्त ४ का शेष)

पापाग हृदय विषादपरी के प्रनीक स्वरूप १९८ पापरी का जन्म निकाल उन पर खून डाल कर लोगों को बताया कि इन पापरी पर किसी भी चीज का धमर नहीं होगा।

विधान सभा भग करते की माग का केन्द्र सरकार ने विधानमन, मान लिया है पर उसे उचिन समय पर भग करते का निश्चय दोहराया है। दिल्ली आए गुजरात के लड़के इस बात से परेशान है कि जब गुजरात में सपानार हासन विगड रही है और जनता की माग प्रबल हो रही है तो इतना उचिन समय और कौनसा होगा? क्या उचिन समय तब प्रायेगा जब गुजरात के लोगों का धगला हृदया मन्द सदस्यो पर होगा कि वे ऐसी ससद से इत्नीपा दें जो जन आवासाओं का निरादर करे? ११ मार्च की प्रदेग में सपाये राष्ट्रपति शासन की सगद द्वारा स्वी-इति के समय गृहमन्त्री ने धारापर सपाया कि गुजरात के धान्दोलन की राजनीतिक दल कान्हे स्वार्थी के लिए मुना रहे हैं। गृहमन्त्री ने कहा कि धगर सामान्य जन-श्रीन कायम हूए किना गुजरात में विधान सभा भग कर दी जाती है तो देश में तानाशाही के लिए रास्ता खल जाएगा और प्रजातन्त्र की जड़ खोसनी हो जाएगी।

गुजरात के विद्यार्थियो ने चर्चा में बताया कि यह सच है कि गुजरात के धान्दोलन में राजनीतिक दल भी सक्रिय हैं पर खुले रूप में नहीं। धान्दोलन का सलासन करने वाली नव निर्माण मुक्त समिति पूरी तरह गैर राजनीतिक है और उनका विभी भी राजनीतिक दल से कोई तेना देना नहीं है। निर्माण समिति धरना धान्दोलन पूरी तरह धान्दोलन पूर्ण दग से चलाने के पक्ष में है, पर राजनीतिक दल और कार्यस भी इस प्रयास में है कि धान्दोलन को साम्प्रदायिक रूप दे दिया जाए और हिमक बना लिया जाए जिससे गुजरात के वे लोग ही इसने विरोध में हो जाए जिनके लिए धान्दोलन चलाया जा रहा है। यही कारण है कि हलाकिक करीब नब्बे विधा-यर्त्थी ने विधान सभा से इत्कीके दे दिने पर पुश्चि और सेना की गोवियो से धमकी



पापरी से पटी बडोरा को एक सडक

निरपराध लोगों के मरने के बाद विद्यार्थियों ने कहा कि हम प्रजातन्त्र में बिस्वास रखते हैं इसलिए प्रजातन्त्र में हम विरोधी दला को इस बात से नहीं रोक सकते कि वे जनता के धान्दोलन में हिस्सा न लें। गुजरात के राजनीतिक दल धगर इस समय जनता का साथ नहीं देगे तो बच देंगे। विद्यार्थियों ने यह भी कहा कि 'यह तप है कि राजनीतिक दल चाहे हमारा साथ दें या न दें, लोगों की लाशों पर हन उन्हें उनकी राजनीतिक रोजगार नहीं सेवने देंगे। विधान सभा भग होने तक गुजरात के विद्यार्थी हर बलिदान के लिए तैयार हैं और हम धान्दोलन दम तक धान्दोलन चलाएंगे।'

गिच्छे कोई दो महीनों से गुजरात में धान्दोलन चल रहा है। भारत के इतिहास में यह पहली घटना है कि जब विद्यार्थियों ने जनता के लिए और जनता के साथ एक धान्दोलन को तिर पर उठा दिया। पर इतने दिनों के बाद सामान्य धारदी चाहना है कि अज रोज रोज की सोबीबारी बन्द हो और वो धरनी रोटी रोजी बसाए। अधिकांश विद्यार्थियों की भी इस बात में रचि थी कि 'रोज-रोज की होने वाली मौने का भिनसिता साम हो, और कोई राजनीतिक

समभौता हो जाए।' हजारों की सख्या में धान्दोलन में जुटे गरीब विद्यार्थियों की भी इस बात में रचि थी कि स्कूल कालेज खल जाए और उनका सात बच जाए। धरत यह तप किया गया कि दिल्ली जाकर किसी समभौते की पहल की जाए। दिल्ली ने विद्यार्थियों के इस परिचरन का पूरा फायदा उठाया और चाहा कि दिल्ली घाने और राजनीतिर समभौता करने की पहल से इत लोगों म धारपी फूट पड़े। और यह पडी भी।

कहा जाता है कि गुजरात से आये विद्यार्थियों ने एक प्रतिनिधि को सरकार ने भेजकर हवाई टिकट दिये कि वह जाकर विद्यार्थियों के भेदह प्रतिनिधियों को दिल्ली उडा लाये। चू कि नव निर्माण समिति का कोई सगठन खडा नहीं हो सका और दूसरे विद्यार्थी सगठन भी इसमें बराबर का हिस्सा ले रहे थे इसलिए इस सडक का खडा होना बाजिब था—बोदह लोग कौन? और मैं क्यों नहीं? नेतृत्व का भगडा सता द्वारा पीडियो से बोए जा रहे बीज का परिणाम है इसलिए वह बीज दल विद्यार्थियों में भी उगा। थंय दिने मिले और नेतृत्व कियका, के भगडे के कारण कुछ विद्यार्थी हवाई बहाज से दिल्ली सर गये। जो बच गये का जिन्हें नहीं लाया गया उन्होंने

रैल से दिल्ली जाने का तय कर लिया। कहा जाता है कि रैल से आने वालों को प्रहमदाबाद स्टेशन पर रोका भी गया जिससे ट्रेन बड़े फ्लेकेट हुई। दिल्ली में घाम स्थिति यह है कि दिना किमी मतलब के गुजरात को दो दवाई हज़ार विद्यार्थी पड़े हुए हैं। इन विद्यार्थियों को यहाँ न तो कोई घरना देना था, जुतूम निकालना था, न उपवास करना था। (था गये तो कुछ उपयोग हो रहा है वह अलग बात है) न सरकार और राष्ट्रपति के साथ चर्चा में इतने लोगों को भाग लेना था।

दिल्ली घाने के सन्दर्भ में हुए मन्वरो के साथ ही साथ कुछ और मसले भी विद्यार्थियों के साथ जुड़ गये। कुछ विद्यार्थियों ने चर्चा के दौरान बताया कि ऐसे समय जबकि गुजरात में लोग बराबर मर रहे हैं, किसी भी चर्चा के लिए दिल्ली आना बेकार था। कुछ का कहना है कि जिस दिन हम प्रहमदाबाद से दिल्ली के लिये चले उस दिन भी भारी गौली बारी हुई और पाच छह लोग मर गये। कुछ विद्यार्थियों का कहना है कि विद्यार्थियों को दिल्ली लाने में राजनीतिक दलों का ही हाथ प्रमुख है। इन विद्यार्थियों का यह भी मानना है कि केवल राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि विद्यार्थी ही दिल्ली आ गये और पूरे मामले को राजनीतिक रूप दे रहे हैं। जैसे कि कुछ विद्यार्थी यह मांग रख रहे हैं कि केवल विधान सभा भंग हो जाये और एक साल बाद नये चुनाव हों। प्रगर विधानसभा गुरत भंग हो जाती है तो ये विद्यार्थी जन-जीवन सामान्य बनाने के काम में जुट जायेंगे। कुछ विद्यार्थी बतते हैं कि विधानसभा भंग होने के बाद भी वे प्रष्टाचार और महागार्द के विनाश प्राना आन्दोलन जारी रखेंगे। यह मान करनेवालों में बडोदा के एम. एस. विश्व विद्यालय की युनिपन के लोग हैं। इस विश्व-विद्यालय में लगभग सत्रह हज़ार विद्यार्थी हैं।

जय पटेल इनके नेता हैं। जय पटेल का कहना है कि वे और उनके साथी विधान सभा भंग होने के बाद भी आन्दोलन जारी रखेंगे। बडोदा स्टूडेंट्स कंफ़ेरेन्स के प्रष्टाचर नरेश तिवारी ने अपनी चर्चा में जय पटेल पर आरोप लगाया कि वे विधान भाई पटेल के लिये कार्य कर रहे हैं और नव निर्माण समिति में फूट डालने दिल्ली घाये हैं। इसी प्रकार नव निर्माण समिति के प्रमुख नेता जानी पर कुछ विद्यार्थियों ने धारोप लगाया कि वह रतू भाई अडानी के प्रुप से मिल गये हैं। सात मार्च की रात को दिल्ली के गुजराती समाज में अहा कि प्रथिकाश विद्यार्थी ठहरे हैं काफी ठोस फोड केवल इसीएए हुई कि, विद्यार्थियों के बहे धनुसार, मनीषी आनी रतूमई घडानी के साथ रात देर तक रहे और डेड हो बडे बापम लीटे। कुछ विद्यार्थियों ने कहा कि प्रगर निर्माण समिति में राजनीति वाले नहीं घुमने तो पुरयोत्तम मावतकर जैसे प्रामर्श समिति से इस्तीफा नहीं देते।

इतना तय है कि प्रथनी तमाम कम-जोरियों के बावजूद गुजरात का आन्दोलन चलता रहेगा। घाने या पीछे सरकार को विधान सभा को भंग करना ही पड़ेगा। प्रगर विद्यार्थी प्रामर्श भंगडे के बारए विलर (जिसकी कि सम्भावना बहुत कम है) तो भी गुजरात के घाम प्रामर्श आन्दोलन चलाएंगे। विधान सभा भंग होने तक गुजरात का आन्दोलन भंग नहीं होगा।

कुछ लोगों का कहना है कि विधान सभा भंग हो जाने से ही क्या हो जायगा? फिर चुनाव हो जाएंगे और विधान सभा जुड जाएगी। विधान सभा भंग होने और जुडने का सिस्तीसना कब तक चलता रहेगा?

विद्यार्थियों का कहना है कि मामला सिर्फ विधान सभा भंग हो जाने से ही समाप्त नहीं हो जाएगा। विद्यार्थियों ने माग की है कि नये चुनाव एक साल के बाद हों। इस एक साल में ये विद्यार्थी मतदाना शिष्टा का काम करेंगे। गुजरात के गाव-गाव में जाएंगे और लोगों को बताएंगे कि किसी भी प्रलो-भय में न प्रारर उठें, जनता के सच्चे सेवक को ही प्राना मत देना है। ये विद्यार्थी इस बात की कोशिश करेंगे कि जनता में से ही प्रच्छे और योग्य उम्मीदवार चुनाव में खडे हों और जीत कर जाएं। पूर्ण के प्रष्टाचारी विधायक फिर से चुनाव न दख सकें। नव निर्माण सुबक समिति का घाभी कोई संताना-कक दावा नहीं है। लोगों ने और राजनीतिक दलों ने भी इस समिति के नाम का फायदा उठाकर अणह-अणह समितियां बनाम कर ली हैं और मामले को राजनीतिक रूप दे रहे हैं। नव निर्माण समिति के विद्यार्थियों ने कहा कि विधान सभा भंग होने के बाद ये समिति का एक गैर राजनीतिक संगठन खडा करना चाहते हैं। इसीलिए नव निर्माण समिति ने उन विद्यार्थियों के साथ प्रथनी प्रगटमनि

प्रबट की है जिन्होंने विधान सभा भंग के साथ नर्मदा विवाद, रामायनिक खाद और पेट्रोल खादि के मामले को भी जोड़ दिया है और चाहते हैं कि विधान सभा भंग होने के बाद भी गुजरात में आन्दोलन चलता रहे।

हालांकि विद्यार्थियों ने कहा है कि वे प्रारिरी दम तक आन्दोलन चलाएंगे, पर बहुत सारे लोगों को शक है कि घाम प्रामर्श की बडनी हुई तकलीफों के बीच और हिंसा के दम पर यह आन्दोलन कब तक चलेगा? अर्थ जो के जमाने में गुलित को गोली से एष प्रामर्श भी मर जाता था तो घाम में तूफान उठ जाता था। गुजरात में रोज लोग मरते रहे हैं और देश के लोग पाय के कप के साथ प्रलभार की खबरों को पी रहे हैं। इसीएए घाज प्रगर पाच लोगों के मरने पर हल्ला मही होता तो कल पनास के मरने पर भी नहीं होगा। राज्य के पास जितनी बडी हिंसा शक्ति है उसके प्रामने गुजरात को छोटी हिंसा कुछ कर नहीं पाएगी।

रविकमर महाराज को गुजरात के विद्यार्थी विला सुए मानते हैं। गुजरात के लोग यह भी मानते हैं कि घाने समय में जो स्मान गांधी जी का था वह घाज महाराज का ही है। महाराज ने ही सबसे पहले विमन भाई पटेल को सरकार से इस्तीफे की माग की थी और केन्द्र से भी पटेल सरकार को हटाने की सिफारिश की थी। प्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन को महाराज ने अपनी ६० वर्ष की उम्र और सापटिका के बाद के बाव-जुड सविश समर्थन दिया, पर महाराज मानते हैं कि प्रगर आन्दोलन प्रहिंसा से और शान्ति-पूर्ण रूप से चले तो वे मरने को भी तैयार हैं। गुजरात के विद्यार्थी बहते हैं कि महाराज के प्रति तमाम सम्मान के बावजूद प्रहिंसा वाली बात हमारे सम्भक में नहीं आती। प्रहिंसा के कारण ही इतना प्रष्टाचार पना है। हम हिंसा, प्रहिंसा के बीच का रास्ता चाहते हैं।

एक ही लक्ष्य को लेकर घाज गुजरात में दो तरह के आन्दोलन चल रहे हैं। रविकमर महाराज के नेतृत्व में प्रहिंसाक लोक स्वराज्य आन्दोलन चल रहा है जिसमें लोग शान्तिपूर्ण ढंग में प्रदर्शन कर प्रथनी शिरपराधिया दे रहे हैं। विरोधी दल भी घाने ढंग से आन्दोलन चलाये हुए हैं। १२ मार्च से मोरारजीदेसाई ने भी प्राना प्रलभन प्रारम्भ कर दिया है। हिंसा और प्रहिंसा की ब्रष्ट में बगैर पडे नव निर्माण समिति भी अपना आन्दोलन चला रही है। सभी लोग विधान सभा भंग करने और नये चुनाव करा सच्चे जन सेवकों को विधान सभा में प्रष्टाचाने के लिए ही खर रहे हैं। रास्ते प्रलय-प्रलय है पर तिष्ठाना एक ही है।

बाबा को बेवकूफ समझता है। बाबा और बेवकूफ दोनों में "ब" समान है, यह तो ठीक ही है। लेकिन बादाशह खान में भी "ब" है। यह क्या समझता है, अपने हुपतानी जी भी यही कहते हैं कि आप लोग जितना भी उत्तम काम करेंगे वह एक दिन खत्म कर देगी पॉलिटिकल पार्टी जो पावर में आ जायेगी। इसलिए आपको राजनीति में प्रवेश करना चाहिए, यह उनकी निश्चित राय है। और बाबा की निश्चिन्त राय है कि गणकार खा भगर धामदान का काम करता तो वह अत्यन्त लोकप्रिय होता। और उसके कहने से धामदान भी होने—इसमें शक नहीं। लेकिन पॉलिटिक्स से उसका दिमाग हटता नहीं। उसने तेरह साल जेल में बिताये और पॉलिटिक्स उसके दिमाग में बैठ गया। लेकिन बाबा की नम्र राय है कि भगर वह धामदान का धामदान उठा लेता तो उनको बड़ी सफलता मिलती। यह क्या हुआ है, उसका लडका जो है पॉलिटिक्स में—बनो खान, उसके और मुरदो के बीच कुछ-न-कुछ भगडें चला करते हैं। यह जो भूटदो है, वह बहुत बड़ा धर्म्य व्यक्ति है। वह किस समय क्या बोलेंगा, उसके विषय में किसी को पता नहीं। यह वह जान-बूझकर करता है जिससे कि अपने इरादे का

किसी को पता न चले। परंतु उसके मन में भारत के साथ संबंध करने का है, ऐसा बाबा समझता है। लेकिन अपना टाइटम देखते हैं। राहु-केतु अनुकूल कब होंगे यह देखना पड़ता है। राजनीतिज्ञ के पीछे हमेशा यही रह लगे रहते हैं। आपकी मालूम होगा कि कई राजनीतिज्ञ तो ज्योतिषियों से सलाह भी करते हैं। नागपुर के एक ज्योतिषी ने तो राहु, केतु, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि सब देखकर जाहिर किया है कि उत्तर प्रदेश में बहुमत मिलेगा जनसभ को। क्योंकि गुरु वहा पर है। कितना मत उनको मिलेगा क्योंकि गुरु इनके खिलाफ है इत्यादि-इत्यादि। सब इतने डीटेल में दिया है। अब ज्योतिषी के नसीब नी परोखा है। लोकमान्य जब बीमार थे तो सवाल उठा कि जीयेगे या मरेंगे। एक घर में दो ज्योतिषी थे भाई-भाई। एक ने कहा कि मरेंगे, दूसरे ने कहा जीयेंगे। तो कुछ भी सही हुआ तो घर का नुकसान नहीं होगा।

यह जो बादाशह खान है उसमें बहुत बड़ी बात है। वह सच्चे धर्म में साधु पुरुष है। जो साधु पुरुष होते हैं, शूरवी भी होते हैं, भोले होते हैं विश्वास कर लेते हैं, व्यवहार ज्यादा जानते नहीं—यह सब सबों का लक्षण है। लेकिन धर्म में एक मत हो गये है—शकरदेव। उनका एक उत्तम वाक्य है—“राजनीति राक्षस राक्ष” (राजनीति राक्षसों का शास्त्र है।)

जामरूक तथा कथित नेता कार्यकर्ता ५०% मतदाताओं को घेर-बंदोर कर पोलिंग बूथ पर लाता है, सही-गाले में ६०% मतदाता भ्रज भी अपने अधिकार और कर्तव्य का नहीं जानते और वे इन खुनावों से उदासीन हैं। लेकिन यह! १० फीसदी कार्यकर्ता जिनका पेशा राजनीति है, वे समय-समय पर कभी देशहित के नाम पर, प्रदेश को उठाने के नाम पर तथा धर्म की उल्लंघन के नाम पर धोये समाजवाद और राष्ट्रवाद के सपने को पूरा करने के नाम पर अतिपता और सांप्रदायिकता के नाम पर बंदोरो को उत्तेजित करके पोलिंग बूथ पर लाते हैं। उसके बाद उदासीन बंदोर अपने काम में लग जाता है। और १०% कार्यकर्ता अपने राजनीति बन्धे में लग जाते हैं। मुख्यतः सभी वर्गों को मिलता है। बड़े-बड़े उद्योगपति और व्यवसायी वर्ग, इस राजनीतिक व्यापार में जुगान के समय लाखों और करोड़ों रकमा साधन के रूप में राजनीति पर लगाने हैं, चुनावों के बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष के मार्फत व्यावसायिक लाभ उठाते हैं। जो जितना पूजी में लगता है, उससे अधिक कमाई करता है।

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का हम अभिनन्दन करते हैं

● छात्र रंग ● सूती वस्त्ररंग ● इपोसिन ● रसायनों के उत्पादक

त्राइडाकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि०
(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :

२०३, डा० एन. रोड
बम्बई-१

कारखाना :

सैतानी टैक्सटाइल
मिल बम्बई, २५,
सोलेपुर रोड,
मुंबई, बम्बई

महिलाएँ हिंसा से जूझें : श्रीमती इंदिरा गाँधी

●प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने ६ मार्च को विनोबा जी से पवनार में तीस मिनट तक चर्चा की और अपनी चर्चा के दौरान देश की मौजूदा समस्याओं पर बातचीत की। प्रधानमन्त्री भारतिय महिला सम्मेलन के अवसर पर पवनार गई थीं। प्रधानमन्त्री की विनोबा जी से यह इसी वर्ष में दूसरी मुलाकात थी। पहली मुलाकात दो जनवरी को हुई थी, जब दोनों नेताओं ने कोई अस्ती मिनट तक विभिन्न विषयों पर बातचीत की थी। इस पहली मुलाकात के बाद विनोबा जी ने कहा था कि शासन और सर्वोदय के बीच सहमति के बहुत सारे क्षेत्र इस चर्चा में गण्ट हुए। इसी अवसर पर विनोबा जी ने कहा था कि 'इंदिरा जी सर्व सेवा सध की सदस्या ही हैं।' अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद श्रीमती गाँधी ने महिला सम्मेलन का प्रतिनिधि होना स्वीकार किया था और वे पूरे थीं।

तीन दिन तक चने छ० भा० स्त्री शक्ति सम्मेलन में देश भर से कोई पाच ही बहनें एकत्र हुईं और आज की बदलती परिस्थिति में 'स्त्री शक्ति' की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार विमर्श किया। सम्मेलन का उद्घाटन विनोबा जी ने किया।

देश में बढ रही हिंसा से जूझने और देश में शांति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रधानमन्त्री ने सम्मेलन में महिलाओं से सल्योग्य देने की अपील की। श्रीमती गाँधी ने कहा कि सिर्फ अज्ञान की कमी ही देश में बढ रही हिंसा का एकमात्र कारण नहीं है। अगर ऐसा होता तो अज्ञान की दुकानें नहीं जलाई जाती। प्रधानमन्त्री ने कहा कि महिलाएँ देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

विनोबा जी ने इस मुझाव पर कि सरकारी कर्मचारियों को उनके वेतन का एक हिस्सा अज्ञान के रूप में दिया जाए और किसानों से लगान की बसुली भी अज्ञान के रूप में की जाए—बोलते हुए श्रीमती गाँधी

ने बड़ा विमरार इस मुझाव की जाँच कर रही है। समझ जाता है कि विनोबा जी ने यह मुझाव राष्ट्रपति श्री गिरि को उनकी छिछे दिनों की पवनार यात्रा के समय दिया था, पवनार के लिए आने से पूर्व श्रीमती गाँधी की और राष्ट्रपति जी के बीच विनोबा के मुझाव के सदर्य में चर्चा भी हुई थी।

अपने पचास मिनट के भाषण में विनोबा जी ने देश को चार चीजों से बचाने की चर्चा की। चार चीजों में विनोबा जी ने गन्दी पिस्सों का निराण रोपने परिवार नियोजन करने के बजाय ब्रह्मचर्य अन्नाने, शराबबन्दी लागू करने और लगान की बसुली अज्ञान में करने के सुझाव दिये। (सम्मेलन के विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा है।)

●उत्तर प्रदेश में हाल ही सम्पन्न हुए चुनावों के अवसर पर इलाहाबाद, बानपुर और झागर के साथ-साथ चारणगी में भी मतदाता शिक्षा का कार्यक्रम उठाया गया। जनवरी के प्रथम सप्ताह में बागी हिन्दु विश्वविद्यालय और काशी विश्वारिठ के छात्रों के बीच शुद्ध और स्वच्छ चुनावों के बारे में गोष्ठियाँ की गईं। पहली फरवरी को आचार्य राममृति की उपस्थिति में 'लोकतंत्र का विचलन' विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गई। इसके प्रतिरिक्त फोल्डरो के बितरण द्वारा, दीवारों पर पोस्टर चिपका कर और गिनेगा घरों में स्लाइड्स के प्रदर्शन द्वारा मतदाता शिक्षण का कार्य किया गया। २४ व २६ फरवरी को मतदान के समय पोलिंग बूथों का निरीक्षण किया गया।

●पाच मार्च को मुझपूरनगर (विहार) जिले के गाव नरसिंहपुर के खादी सदन प्राणण में जिले के सरकारी प्रखण्ड भूदान किसानों की बैठक श्री निर्मल भाई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आचार्य राममृति ने भूदान किसानों की अपनी देवदसी रीढ़ने और सगठित रहने पर बल दिया। राममृति जी ने कहा कि सर्वोदय मडली और अन्य रचनात्मक सदस्यों का

पह काम होना चाहिए कि वे देवदसी रीढ़ने और इस कार्य के विकास को चालना देते हुए अपना उत्सर्ग करें। निर्मल बाबू ने सप्टासाप्तिक शक्ति में विकास पर बल दिया। विहार भूदान कमेटी के अध्यक्ष श्री बडी बाबू ने आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक विकास से लाभ लेने पर प्रकाश डाला, श्री कामेश्वर बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

●मध्यप्रदेश सेवन संघ के तत्वावधान में शांति केन्द्र हस्तिनापुर (ग्वातिपर) में १६, १७ व १८ मार्च को एक त्रिदिवसीय विचार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर के प्रस्ताव १६ मार्च से २४ मार्च तक ग्राम-सम्पर्क अभियान भी चलेगा। शिविर में श्री सुरेशराम भाई, श्री नरेन्द्र दुवे, श्री एस० एन० पुञ्जाराय, श्री गुरसारण और मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री हेमदेव शर्मा भाग लेंगे।

●प्राप्त समाचारों के अनुसार पश्चिम बंगाल के सर्वोदय कार्यकर्ता प्रदेश में होने वाले २२वें शक्ति भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन की तैयारियों में पूरे जोरशोर के साथ लगे हैं। १६ फरवरी को प्रदेश के नडिया जिले के विभिन्न स्थानों से आये कार्यकर्ता कृष्णनगर में एक बैठक में मिले और भी में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन के सदर्य में प्रदेश के सर्वोदय कार्य की स्थिति पर विचार किया। बैठक में उपवासदान पर भी चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता पश्चिमी बंगाल सर्वोदय पडल के अध्यक्ष श्री धनंजय विजय मुखर्जी ने की। बैठक में निर्णय लिये गये कि नडिया जिले के कार्यकर्ता सर्वोदय सम्मेलन के लिए ५००० रुपये की राशि एकत्र करेंगे और कम से कम ५०० सर्वोदय मित्र बनायेंगे।

●जिवा भूदान-यज्ञ कार्यक्रम, डालटन-गंज (बलराम) विहार के कार्यालय में श्री सूर्यनारायण शर्मा ने तय किया है कि वे निर्मात रूप से महीने में चार ग्राम उपवास करेंगे। वर्ष भर के दो उपवास की राशि पच्चीस रुपये उपवासदान में सर्व सेवा सध को भेजेंगे और दो ग्रामों के उपवास की राशि अपने गाव की ग्रामसभा तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं को दान में देंगे।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २५ मार्च, '७४



मनोयी जानी (बायें) तथा धशोक पंजाबी (बीच में सेटे हुए) से 'मुदान-यज' की वित्तोय बालबोत —पृष्ठ

- हिसा का आशय भ० प्र० नि० ● अष्टावार तो केन्द्र में भी है थपण कुमार गर्ग ● बीदियों से भी गये बीते हम विनोवा
- हिसा सरकार की शक्ति है, ग्रहिसा जनता की रामपूजा ● एक गांध में सेवी की बमूली प्रमोद कुमार प्रेम ● धति समृद्धि और
- सेवा का सचट सरला देवी ● ऊर्जा और योजना रणबहादुर सिंह ● उपवासदान : त्रिपति और सूची तथा धान्दोलन के समाचार

राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

हिंसा का आश्रय

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अभी किंव भारत शांति निकेतन के वीसात प्रधिवेशन के प्रवक्ता पर और उसके बाद प्रवक्ता ने 'स्त्री-मनित आग्रहण' सम्मेलन में अनेक बातों की चर्चा करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि राजनीति या अन्य बिन्दुओं भी योग्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लोगों को हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने विचार अथवा मत अथवा उद्देश्यों को उपलब्धि का मयल सर्वथा उचित है—इनमें भेद भी होते ही हैं इसलिए आवश्यक है कि हम उन्हें पाने के लिए उचित उपायों का अवलंबन करें। प्रकारान्तर से 'साधन-शुद्धि' की यह बात बहुरंग प्रदानमंत्री ने अच्छा ही किया है। राजनीतिक दल और उनमें भी जिससे प्राप्त जितनी अधिक शक्ति या सत्ता है, साधन-शुद्धि की उतनी ही अधिक प्रवृत्ति करते हैं। हमारी आज की दुर्दशा इसी मनोवृत्ति का सीधा परिणाम है। जन-सामान्य हिंसा का सहारा क्यों लेता है, इसकी बात करते हुए स्वयं विनोद ने अभी गुजरात और महाराष्ट्र के सदर्भ में यह कहा था कि लोगों ने देखा है कि जब तक हिंसा का सहारा न लें सरकार उचित मांगों पर ध्यान ही नहीं देती। यह तो हुआ एक और की हिंसा का कारण। अब दूसरी ओर अर्थात् स्वयं शासन की ओर से जो अपरिमित हिंसा होती है वन-कुष्ठ-हिंसकों के प्रति उसने बारे में क्या कहा जाये। भूषे और तरह-तरह के अन्याय प्रसन्न लोगों की सत्ता के प्रति हिंसा वैसी कुछ है जैसी गांधी जी ने दिल्ली ड्राफ्ट पत्र लिखे गये चूहे की यतार्थी। बेधारा जान बचाने के लिए दो-मूक पंजे चला कर समाज हो जाता है। उसे हिंसा बंसे बहे।

पिछले दिनों दिल्ली में गुजरात के कुछ विचारार्थी भाये हुए थे। बताया कि पुलिस ने यह स्वीकार किया है कि क्रुद्ध भीड़ को तितर बितर करने के लिए नियमानुसार पहले धातू गैस, फिर बॅल या लाठी चार्ज और प्रहार इससे भी नाम न चले तो हवा में फायर की और आवश्यक होने पर किसी व्यक्ति को टाग धारि में गोली मारी जा सकती है। किन्तु गुजरात में चल रहे ही गोली चलाने का हृद हो गया था। इस हिंसा के विरोध में बोलें तो क्या 'साधन-शुद्धि' का उच्चारण करने वाली, स्त्री होने के कारण सहज दयानुभयी हमारी प्रधानमंत्री इस पर ध्यान देंगी? वे तो कहती हैं जब तक आन्दोलन (अले ही शांतिपूर्ण क्यों न हो) बंद नहीं हो जाता, मांगों पर विचार नहीं किया जा सकता। एक ककर के बरले गोलियों के राउण्ड पर राउण्ड का विचारधीय समझे जायेंगे।

बम्बई में मुरारजी देसाई ने तो सारे देश से प्रत्याचार के विरोध में 'गुजरात प्रणाली' प्रणाली को कहा है और कहा है कि देश धाज ऐसी भयानक स्थिति तक आ पहुँचा है कि प्रामाणिकता के साथ जीवन-यापन करने वाले का जीना असभव सा हो गया है। जनता से 'साधन-शुद्धि' पर किसी भी ह्रातल में हद बने रहने की आशा रखने वाली को कभी-कभी अपनी तरफ भी देख लेना चाहिए।

सो० बी० आई और

सो० बी० आई
आ० बी० आई प्रघात रिजर्व बैंक प्राक इन्डिया और सो० बी० आई० प्रघात सेंटरल ब्यूरो आफ इन्फर्मेसन। एक देश की धर्म व्यस्तता का महत्वपूर्ण अंग तो दूसरा प्रशासन भादि को स्वच्छ रखने के लिए जिम्मेदार। इन दोनों का वास्तव में सभी सीधा धामना-नामना सब तक नहीं हो सकता

जब तक एक में धर्म सम्बन्धी प्रव्यवस्था और दूसरे में किसी आधारहीन शक्ति की भावना पैदा न हो जाये। बम्बई में इनका मोधा धामना-सामना टन गया। किसी नियति-व्यापारी ने सो० बी० आई को सूचिन किया कि उसे धार० बी० आई० के शीर्षस्थ अधि-कारियों को रिक्त देकर आधार चलाना पड़ रहा है तो सो० बी० आई० ने-पहले बैंक के मुद्रा विनियम विभाग और सम्बन्धित कुछ अधिकारियों के घर पर छापे डाले। मगर कोई बात हाय नहीं लगी। सवेहास्पद काग-जात या रप्या-नीसा कुछ नहीं मिला तो धार० बी० आई के अफसर तिर हो गए और उन्होंने केन्द्रीय सरकार से इस प्रकार के व्यवहार के विरोध में विचारणत की है। शिकायत तो करनी ही चाहिए। यहा तो कुछ मित्रा नहीं। प्रपराय के ठोस प्रमाण मिल जाने पर भी जहा प्रमाण इबट्टा करने वाली को तबादला करने का इसी प्रकार की दूसरी सजायें दी गई हैं, ऐसे उदाहरण अनगिनत हैं। इसलिए जब प्रमाण नहीं मिले तब तो सजायें दिलायी ही जा सकती हैं। सभी जानते हैं अपराय करने का जिन के खिलाफ प्रमाण मिलता है या नहीं मिलता, अपराय इन्ही तक मद्रुद नहीं होता—इसके तारे-बाने लगभग धरम समझे जाने वाले छोरो तक पहुँचे हुए होते हैं। ये अगम्य छोर इस घटना पर क्या प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं यह इनीतिग महत्वहीन है। प्रपराधी का रक्षण और निरपराध के प्रति सत्ता का रख हमारी व्यवस्था का लग-भग सिद्ध स्वभाव निश्चित हो चुका है।

साधन-शुद्धि प्रकारान्तर से

जनता को अन मिले और इसनिए किसानों को सिंचाई के लिए पानी, इस दृष्टि से नहरों की प्रपेशा दूरबवेव इस देश में वही अधिक उपयोगी है—इसे विशेषतः नई वार नई तरह से बह चुके हैं। इस दृष्टि को स्वीकार किया जाता तो भावइ, नगल आदि की जरूरत न पड़ती और उनके को खतरा हो सक्ते हैं उनकी भी चिन्ता न करनी पड़ती। नर्मदा-नाथ योजना को लेकर जो महाभाष चल रहा है वह भी प्रप्रस्तुत होता और तथा घाटी में सवा की बाध कर जिस प्रत्यागित भयकरता की बात वहाँ के लोगों के मन में (टीप पृष्ठ १४ पर)

दिल्ली की विहाइ जेन से माने दो
 ती साधियों के साथ जिनवार, सोमह मास,
 की छठने के बार हम मनीषी जानी से मिले।
 उन्होंने कहा कि विधान सभा भंग हो जाने से
 हमारा पुर बहुत बड़ा काम पूरा हो गया।
 प्रहमदावार के आर्टस कालिज में दर्शनशास्त्र
 का अध्ययन कर रहे मनीषी जानी एम० ए०
 प्रथम वर्ष के छात्र हैं और गुजरान में प्राधो-
 तन बनाने वाली नव निर्माण पुस्तक समिति
 के अध्यक्ष भी।

जानी से पूछा कि गुजरान सोटने के बाद
 तब क्या कार्यक्रम रहेगा तो उन्होंने कहा
 कि हमें दो महीनों के प्रादोलन से सामान्य
 तब की तबकीर्ण एकरदम बंद गई है इस-
 ए ने बुलन मोटरर, अर-जीवन की पुन
 को करने के लिए कार्य करेगे। प्रादोलन
 चीन छोड़े-छोड़े मामों में और मोटररों में
 र निर्माण समिति के नाम से राजनीतिक
 ती और निर्दिन स्वार्थों से छोटी-छोटी
 निर्माण कायम कर सी है। जानी ने कहा
 'अब हमारे सामने सबसे बड़ा काम नव
 निर्माण समिति का एक घण्टा सवटन पड़ा
 एता है। बारद घण्टे महीने नव निर्माण
 निर्दिन धावा एक बड़ा सम्भलन भी प्रायो-
 ष्य करने की निर्णय भविष्य के कार्यक्रम के बारे
 विचार होगा।

जानी ने कहा कि घण्टे चुनाव कर एक
 नें बाद ही कराने जायेंगे और इस दौरान
 प्र लोग गार-गार में फँस कर लोगों के
 एजए का काम करेंगे। हम इस बात की
 निर्णय करते कि प्रजा के मन्थे प्रतिनिधि ही
 रानी विधान सभा में पहुँच सकें। नव
 निर्माण समिति एक धाकार महिला तैयार
 लेगी और लोगों को बजायेगी कि किस प्रकार
 के उम्मीदवार को बोट नहीं देना चाहिए।
 जानी ने जब पूछा कि क्या घण्टे उम्मीदवारों
 के प्रकार में नव निर्माण समिति घण्टे उम्मीद-
 वारों को सहा करेगी, तो उन्होंने कहा कि
 धार की राजनीति प्रष्ट हो गई है। अगर
 हमें अपने उम्मीदवार विधान सभा में भेजे
 हैं 'प्रष्टाचार के घण्टे उनके नाम में भी
 नव प्रायेंगे, इसलिए हमारी ऐसी कोई प्रष्टा
 नहीं है कि नव निर्माण समिति के लोग चुनाव
 में न हों।' जानी ने इस बात की स्वीकार
 किया कि अगर बनी देना हो भी कि निर्माण

मनीषी जानी और रंजाबी से बातचीत

अष्टाचार तो केन्द्र में भी है

समिति के लोग चुनावों में जीतकर विधान
 सभा में जायें और प्रष्ट हो जायें तो उन्हें
 भी जनता इसी तरह निहाल बाहर बरेगी
 जिस तरह उसने विधानसभा की प्रष्ट सरकार
 को किया।

जानी से जब पूछा कि जनता की भाग
 पर भग विधान सभा के जिन विचारकों ने
 इस्तीफा दे दिया और जिन्होंने नहीं दिया
 उनका घण्टे चुनाव में क्या भविष्य होगा तो
 उन्होंने कहा कि भग विधान सभा के सारे ही
 विचारक प्रष्ट थे, जिन्होंने इस्तीफा दे दिया
 वे भी और जिन्होंने नहीं दिया वे भी, इस
 लिए इस बात की विस्तृत सभावना नहीं है
 कि भग विधान सभा के १६६ विचारकों में
 से एच भी पुनः चुनाव में खड़ा हों। जानी ने
 कहा कि अगर किसी ने चुनाव में खड़े होने
 की इम्तत भी की तो जनता उन्हें नहीं
 चुनेगी।

जानी ने इस बात को स्वीकार किया कि
 न सिकें भाज की राजनीति प्रष्ट है, चुनाव भी
 प्रष्ट है इसलिए अकरन इस बात की है कि
 प्रष्टाचार को इस पूरी व्यवस्था में ही
 समाप्त कर दिया जाये। पर यह बात दूर की
 है और हमारी गति सीमित है। हम एक-
 एक करके काम को उठाना चाहते हैं।' जानी
 ने यह भी स्वीकार किया कि गुजरान से
 प्रष्टाचार निकट पेटेल मंत्रिमंडल को हटा देने
 और विधान सभा भंग कर देने भर से समाप्त
 नहीं हो जायेगा, पूरे शासन तंत्र को जो
 श्रमहीन व्यवस्था संचालित कर रही है उसमें
 प्रष्टाचार घटता हुआ है और निर्माण समिति
 का मुख्य काम इस व्यवस्था से प्रष्टाचार
 समाप्त करने का होगा। 'पर इसके लिए
 हमें इसे सखे पर धाकर जल्द निकालना
 नहीं है और नहीं करना देना है। अब हमारा
 प्रादोलन बार बीवारी के धावर सीमित
 रहेगा। डेवल पर बैठकर भी हम शासन-गुटि
 का प्रादोलन बनायेंगे', जानी ने कहा।

धाके द्वारा प्रादोलन करने से कीमती
 बिजनी कम हो गई? जानी ने उत्तर दिया
 कि कीमती का प्रत्य सादे हिन्दुस्तान का है,

घण्टे गुजरान का नहीं। पर घण्टी सीमित
 शक्ति को देखने हुए हमने अभी सिर्फ गुजरान
 को लिया है। हमारे प्रादोलन से जमाखोरो
 को डर लगने लगा है और बड़े-बड़े उलाहनों
 ने हमें धारसाधन दिया है कि वर दाम बड़ने से
 रोकेंगे। हमने तब किया है कि भविष्य में
 चाहे जिस पार्टी को सरकार बने हम घण्टी
 और से उस सरकार को एच भाग पर देने
 कि वे मागे इतने समय में पूरी करना पड़ेंगे,
 धार सरकार उन मांगों को पूरा नहीं बरेगी
 तो हम उस सरकार से बहेगे कि यह त्यागपत्र
 दे। साथ ही हम भी घण्टी पुरी गति भर
 सरकार को बंद देंगे।'

जानी ने कहा कि हमें और हमारे प्रादो-
 लन को अपयश की वे बहुत प्रेरणा मिली।
 जयप्रकाश जी ने जब कहा कि एक वर्ष के
 लिए धाकों को घण्टी पडाई बन्द करना
 चाहिए और देश के कामों में लग जाना
 चाहिए तो नव निर्माण समिति ने जे० पी०
 की बात को बन्द किया। 'हामर्गन हमने
 अपयश की वे नेतृत्व की माग की थी और
 कार्यक्रम भी मांगा था। जे० पी० के प्रादोलन
 पर हमें लगभग १००० विगने हैं जो घण्टी
 पडाई छोड़कर समाज सेवा के काम के लिए
 तैयार हैं।'

जानी ने कहा कि नव निर्माण समिति
 को हम एक गैर राजनीतिक संगठन बनाना
 चाहते हैं इसलिए हम हर एक ऐसे व्यक्ति
 का सहयोग लेना चाहेंगे जो राजनीति में
 नहीं है। जानी ने कहा कि रजिस्टर महा-
 राज के नेतृत्व में जो लोक स्वररय प्रादो-
 लन रहा है उसका हम पूरा समर्थन करते हैं
 और मानते हैं कि हम भी उन्हीं का काम
 कर रहे हैं। हम भी प्रजा की यही विस्थापन
 दिवसना चाहते हैं कि हम सत्ताभिमुखी नहीं हैं
 और शासन मुक्ति काना चाहते हैं।

प्रादोलन से धाररत हुआ इसकी चर्चा
 करते हुए मनीषी जानी ने कहा कि गुजरान
 में निष्ठा जनन के इन्हिहाम में पहली बार
 गुजरान विधर विधानमय की सोटने के २२

विद्यार्थी प्रतिनिधियों को स्थान दिया गया। गुजरात विचारविमलये में लगभग १५६ बालक हैं। गुजरात में विद्यालय सभा में विरोधी पक्ष मजबूत नहीं है और सत्कारक दल की ही तरह प्रजा के कामों में उनकी दिलचस्पी भी नहीं है इसलिए जब एएन डी० इंजीनियरिंग बालक में भोजन का बिल २० रुपये में १२५ हो गया और छात्रों के लिए बोझ बन गया तो महाश्री के विरोध में बंध का नारा दे दिया। प्रदेग में तीन गुनी फसल होने के बावजूद बड़नी महाश्री से जनता भी प्रसन्न थी, उम्मेद भी विद्यार्थियों का साथ दिया इस प्रकार छात्रोद्वेग चल निकला।

विमनभाई पर लगाये गये भ्रष्टाचार के आरोपों की चर्चा करते हुए मनीषी ने कहा कि हमारे पास इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि तेल मित्त भाषिकों ने पटेल को २५ लाख रुपये दिये और बदले में तीन करोड़ रुपये का लाभ लिया। मनीषी ने बताया कि जब फरवरी में उन्हें छात्रोद्वेग के सितारिले में गिरफ्तार करके सुरेन्द्रनगर जेल में रखा गया तो छात्रोद्वेग धांपस लेने के बागजों पर हस्ताक्षर करवा लेने के लिए उनके सामने कठोरा चेक भी रखा गया। जानी ने कहा कि भ्रष्टाचार से केंद्र सरकार में भी है पर हमारे लिए उसे हटाना अभी दूर की बात है।

विहाइ जेल से रिहा होने से पहले प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी से भी जानी और अन्य छात्रों की भेंट हुई थी। श्रीमती गांधी से हुई अपनी भेंट का जिक्र करते हुए जानी ने कहा कि हमने इन्दिरा बेन से कहा कि धांपको आपके पासपास के लोग 'मिस यादव' करते हैं। कुछ दिनों पहले धांपस के महाश्री चन्द्रजीन यादव ने गुजरात के छात्रोद्वेग को फासिलेधारियों का काम बताया था। इन्दिरा जी छात्रों को कहा बताते हैं कि वे जाति से घबराती नहीं, पर राजनीतिक दल इस प्रकार के आन्दोलनों से लाभ लेते हैं उससे उन्हें अवश्य चिन्ता होनी है। जानी के अनुसार इन्दिरा जी ने गुजरात के छात्रों को भी उन्हीं प्रशंसा ही की।

जानी ने बताया कि उन्होंने इन्दिरा जी से कहा कि विमन भाई को भ्रष्टाचार के मामले में 'श्रीता' के अन्तर्गत गिरफ्तार करना

चाहिए तथा पुलिस भादि में ऐसे जो कई घमसर हैं जो विमन भाई द्वारा रखे गये हैं, उन्हें हटाया जाये।

मनीषी जानी तेईस-चौबीस साल का एक सीधा-साधा इम्मान है, जिसने कभी स्वाव मे भी नहीं सोचा था कि वह एक रात में गुजरात का इम्मान बड़ा दान नेता बन जायेगा। मनीषी जानी रातो रात बड़ा नेता बनकर बन गया है पर उसकी आकाशवाणी अभी बहुत भौली भौली बच्चों जैसी ही है। मनीषी से जब पूछा कि पढ़ाई खरम करके क्या करोगे, तो बोला 'मैं कवितायें और बहानिया लिखता हूँ। गुजराती में नवजवानों के लिए कोई अच्छी पत्रिका नहीं है, मैं एक अच्छी पत्रिका निकालना चाहता हूँ।' अपनी बान लख करते हुए उसने कहा कि 'प्रधानमन्त्री के पास मेरे बारे में एक गलत खबर यह भी दी गई थी कि दो महीने तक मेने कलकत्ता में नवमतवाधियों से ट्रेनिंग ली थी और मैं एक करोड़पति का बेटा हूँ और अपने पैसे से आदो लन बना रहा हूँ'।

जैसा 'सीधा-साधा' दान नेता मनीषी जानी बँसा हो अशोक पजामी। मूल रहने वाला है हिमाचल प्रदेश का। गुजरात विचार-विचारालय में भी ०० दर्शनशास्त्र विद्यार्थी अशोक जिनगी बड़िया गुजराती बोलता है उसनी ही साक हिन्दी। कहते हैं पजामी की सभा में भी हजारों विद्यार्थी आते हैं और उसे घण्टी सुनते हैं। मनीषी जानी, उमाजान माकड़ के साथ अशोक पजामी का नाम भी बस निर्माण युवक समिति के प्रमुख नेताओं में है। अशोक ने बताया कि गुजरात में छात्रोद्वेग इसलिए खड़ा हुआ कि गुजरात के गाँवके अमीर किसानों और शहर के निम्न मध्यम वर्ग के हितों में टकराव उत्पन्न हो गया था, इन कारण भाजपाई के बाद से ही विद्यते २७ वर्षों से प्रदेश में अन्तर्गत बढ रहा था। केन्द्र ने पानन्याम ओभा को प्रदेश पर बांध दिया तो विमन भाई ने भ्रष्टाचार से उन्हें भी हटा दिया। भाजपाके कहा कि स्कूल-कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अशोक, परिवारों में सम्-स्थाओं को देवते रहते थे, इन आन्दोलन में बस यह हुआ कि वे विद्यार्थी अपने परिवार की समस्याओं को सबको पर ले पाये और बहसूत किया कि जैसे भाजपाई हासिल की

वैसे ही अब भ्रष्टाचार से निपटना होगा, बानून से कुछ नहीं होगा।

अशोक ने कहा कि गुजरात का छात्रोद्वेग एक सही माने में लोकावली और जनवादी आन्दोलन है। जाति एक सम्वी प्रक्रिया है और इन छात्रोद्वेग में उसे एक शूद्रान्ता ही है। हमने अपने आन्दोलन के द्वारा पशुनी मजिल को पा लिया है। अशोक के अनुसार अगर सच्चे दिल से देश में भागि बनना है तो सफल रूप से बाहर नाना होगा। बंधाल के बाद गुजरात ही ऐसा प्रांत है जहाँ छात्रों ने एक सशक्त आन्दोलन की शूरान्ता की और सफलता पायी।

इन्दिरा जी से हुई बातचीत का जिक्र करते हुए अशोक ने बताया कि हम लोग नालन्दाकारियों और जमातियों को पकड़ कर बानून के हवाले करेंगे और अशोक बानून उनका कुछ नहीं कर पाया तो हम उन्हें सशक्त पर लायेंगे। अशोक ने कहा कि जब हमसे वानचीत में इन्दिरा जी ने छात्रोद्वेग में मेरे लोगों के प्रति दुल प्रकट किया तो हमने प्रत्येक मरे हुए व्यक्ति के परिवार को पाच के बजाय पचास हजार रुपये देने की माग की और कहा कि पुलिस अ्याशक्तियों की अ्याधिक जाच की जानी चाहिए। अशोक ने बताया कि इन्दिरा जी से हम लोगों को पन्द्रह मिनट बात हुई।

सोलह मार्च की ही रात को मनीषी जानी और अशोक पजामी गुजरात के लिए चल पड़े। अरुने तुरन्त लोदने के बारे में उन्होंने कहा कि हमें जल्दी से पदुच सर स्थिति को सम्भालना है वरना अन्तर्मात्रिक तत्व गुजरात में शानि नहीं माने देंगे।

दिल्ली स्टेशन पर उस समय मौजूद लोगों का कहना है कि जब ये छात्र स्टेशन पहुँचे तो कहा भारी भीड़ थी और लोगों से पूरा प्लेटफार्म में गुज रहा था। छात्रों को गुजरात पदुचने की जल्दी थी पर लोगों ने छ-सान बार टुन भी वेन सीधों और 'डेड प्लेटा नेट दिया। कहते हैं जब ये छात्र अन्तर्मात्रिक से दिल्ली के लिए चले थे तब भी इतनी बार वेन लीची गई और तब भी टुन डेड प्लेटा नेट दिल्ली पहुँची थी।

● नाम को महिमा ● हम चोटियों से भी गये बीते ● तो मार्क्स भी फेल हैं

प्रतिमान के नवनिर्माण में मदद देने ली, विदेश में गांधी-विचार पट्टाचने वाली, देश के साथ विचारों का तथा विचारकों की प्रतिष्ठान सस्था के छात्रीयन सेवकों की नि-दिग्धीय बैठक पहली बार ही बाबा साहित्य में पत्रचरी के तीवरे सप्ताह में है। वैसे ये सदस्य धलण प्रलय बैठने के नमिल यहा जाने ही थे। परन्तु गांधी प्रतिष्ठान की बैठक कभी हुई नहीं थी। प्रतिष्ठान के अध्यक्ष दिवाकर जी और कभी राधाकृष्ण के अलावा केरल के रत्नानि मिले, राधाकृष्ण मेनन, गौरीनाथन नायर, बगनूर के नारायणस्वामी, इन्दौर के महेन्द्रमर्दि, धारवाड की अशुक्लता नुर्व-कोटी, गांधी शांति प्रतिष्ठान का सुवर्ण विभाय सभाभने बोले तथा धामसमपणकारी कागियों के बीच कार्य करते याने सुब्बाराव इस बैठक के लिए धारये थे। बाबा ने कहा, गांधी शांति प्रतिष्ठान का मुख्य कार्य देश में धर्मार्थन शांति रचना, पुस्तिक को नाम व विनि रस्य नरह वा कार्य करना है और इसके अलावा देश के हर गांव में धोर शहरों में धामना प्रतिनिधि बनाना। गांधी ने साडे पांच पांच तथा शहरों में डेड लाख सेवक, प्रति-निधि तरे करान। इसके अलावा धन्य-अर्थक बुनिगारी विषयो पर चर्चा हुई। एक बैठक में प्रमोचर में सुब्बाराव ने कहा, मैं धीनका गया था। वहा धामरले बोलने हैं कि धारकी ही देरणा से वे काम कर रहे हैं। धामरले हुआ कि जो हम धामने गांधी में करना चाह रहे हैं उनमें उनको खूब सफलता मिली है। विगेन-धामना। वहाँ धामी धामना का विचार फैला है, परन्तु धामसम के कार्य में धामरलेजन प्रगति हुई है।

बाबा : धामरले बाबा से मिलने धामना का बहुत धडा, भक्ति रखते हैं। लेकिन वर जो धाम धडा है, वह गांधीजी से है।

पर गांधी जी की थडा बाबा को भी मुगत में मिल जानी है। महाराष्ट्र में ऐसा ही है। महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, नाथदेव, एरुनाथ, तुकाराम इन सत्वों पर लोगों की बडी थडा है। बाबा ने भी उन धर्मों का सार लिहावा है तो ज्ञानदेव की थडा बाबा का भी मुगत में मिल जाती है। वारवरी समाज के बडे-बडे लोग कहते हैं कि विनोबा में ज्ञानोबा का दर्शन होता है। विनोबा और ज्ञानोबा में नोबा, ये दो अक्षर समान हैं। एक को ज्ञा यानि अज्ञ है, ज्ञान है। वि यानि कुछ है नहीं। तो विनोबा का कुछ है नहीं। ज्ञानोबा और विनोबा में इतना अन्तर है। फिर भी थडा रखते हैं।

सुब्बाराव हम वहा कुछ गांधी म गये, वहाँ देला कि वे दो मिन्द मोन धोर समूह-गीन से काम शुरु करने हैं। जायद बीड धर्म का प्रभाव है।

बाबा : यह बीड धर्म का प्रभाव नहीं है उनको अपनी अज्ञान का प्रभाव है। बीड धर्म से हिन्दू धर्म कम तो नहीं है। उनका वना प्रभाव है हम पर ? धर्म का प्रभाव योडे लोगों पर है। किश्चियानिटी म कहा है, कोई तुम्हारे एक शाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गान सामने करा। यह है किश्चियानिटी। लेकिन जिनकी लडाइया किश्चयन लोग तरे उनकी दूसरे कोई नहीं लडे हैं। धाम बुनिया में १०० करोड किश्चयन है। लेकिन जो बाइस्ट को पगस्ट धामरले ऐसे किने किश्चयन होंगे ? अगर कोई मुझे बहे कि ऐसे १०० किश्चयन हैं तो मैं बहूना बहूना है, धुंधी भा उडार होगा। यही हाल हिन्दू धर्म का है। धाम किनेने हिन्दू होने जो वैदिक धर्म का उत्तम धामकर करने हैं ? इस सारने धी लका के लोग भी धामनी थडा है। यह ठीक है कि गौतम बुद्ध के नाम में उनको प्रेरणा मिलती है। नाम की महिमा अगाथ है।

... ..

दिवाकर जी धाते हैं तब कुछ गम्भीर विषय पर चर्चा हो ही जाती है।

बाबा : महात्मा गांधी, महावीर, राम-तीर्थ, श्री धरविन्द, इन महापुरुषों की शताब्दी मनाई गई। इन शताब्दियों का कुछ अक्षर होता है कि नहीं ?

दिवाकरजी : ऊपर-ऊपर-सुपर किगियल प्रसर होता है।

बाबा : श्री धरविन्द प्रतिमानस की बात करते थे मन की समत्वयुक्त रचना पहली बात है। फिर है अनिमानस। परन्तु हम मन को समत्वयुक्त नहीं कर पाते तो प्रतिमानस की तो बात ही दूर है। इन विषयो पर चर्चा होनी चाहिए। इन विषयो का अध्ययन होना चाहिए।

दिवाकरजी : प्राश्चात्य मानस को ध्यानयोग, भक्ति जल्दी समझ आती है। परन्तु अनासक्तन कर्मयोग समझ में नहीं आता।

बाबा ठीक बात है। स्वामी रामतीर्थ धमरीका गप। वहा बन्दरगाह पर जहाज पट्टा तो लोगों का हो हल्ला चला। स्वामी रामतीर्थ धामने से बैठे रहे। सब लोग अपना अपना सामान बटोरेने में लगे धोर यह शक्त धामने से बैठा रहा। इसी चीज का धामरलेण वहा एक बहन को हुआ। धोर बहन रामतीर्थ के पास गयी। उन्होंने पूछा, रामतीर्थ को, 'आपका कोई परिचय क्या है।' वे बोले, 'हाँ है।' पूछा, 'कौन ?' तो बोले, धाम ही है। फिर बहन ने पूछा, 'क्या धाम मेरे घर चलेंगे ?' स्वामी रामतीर्थ ने कहा, 'हाँ।' बग धव यही से उनका कार्य शुरु हो गया। तालय जहा खूब भीड, नाम के लिए हो हल्ला चलना है वहा धामनि का धामरलेण होगा है। पश्चिम के लोगों को तो 'दाम इज मनी' (समय पैसा है) होना है ना ? इसलिए उनको दुःखत है। नहीं तो कर्म करो धोर धामनाकर रहो यह उनको भयकर मानुष होगा है। ध्यानयोग अच्छा है। क्योंकि उनमें धर्म से दूटकरा है। कोई धामने बडेगा कि किश्चियानिटी में धमटन है उस पर शान सा जाओ, तो वह धामको धामान मानुष होगा कि उन खटिया का दोड कर सोना ? मटनन बाभी खटिया पर मोटा धोर वह भी धामने से सोना धोर

→
 बिनाना बठिन ! तो उन लोगों नी सटमल वाली राटिया है।

बिबाकरजो : भासकिन के बिना मनुष्य काम नहीं कर सकता है, ऐसी उनकी भावना है।

बाबा : हम लोग भी जो नाटक करने हैं कर्मयोग का, वह कहा तक सही है यह देखने की बात है। सबकुछ बहुत ही बठिन है। लोकमान्य की कहानी प्रसिद्ध है। कोर्ट में उनकी सजा सुनाई गई। छ साल की कैद। पुलिस उनकी मोटर में ले गई। रात का समय था। वे मोटर में बड़े झोर सेट गये। दो भिन्ट में सहरी लिफ्ट लप गयी। जो पुलिस भ्रष्टाचार करने पास बंटा था, उसे बहुत ही भासचर्य हुआ। इतनी लम्बी सजा हुई, लेकिन बिना पर कुछ भी भ्रष्टा नहीं। यह है कर्मयोग। झोर मारले गये तो वही आध्यात्मिक चिंतन के बिना दूसरा कुछ भी नहीं किया।

हम लोग १९४२ में जेल गए थे तो सारी पंचांग देखते थे, हम कब छुटेंगे। बाहर यह हो रहा है, वह हो रहा है, हम छुटेंगे बस यही चर्चा। मैंने उन लोगों से एक दिन कहा, हम दो-तीन साल से जेल में हैं, हम को सगला है, बहुत समय हो गया हम जेल में हैं। इस जेल में कुछ चींटियाँ हैं। उनका सारा जन्म जेल में जाता है। उनको भान ही नहीं होता कि हम जेल में हैं। तो चींटियों से भी हम गये बीते हो गये।

अहिंसा से आत्मरक्षा

बम्बई से शाह अपने परिवार के साथ दो दिन के लिए प्राये थे। उन्होंने बम्बई के जीवन के कुछ धनुष्य सुनाये और उस पर से कुछ प्रश्न भी पूछे।

‘कोई हमें लूटने आया तो उसका सामना कैसे करें ? वे हमें मार डालें तो अहिंसा से क्या प्रायें ?’

‘बाबा का यह विस्वास है कि कोई मारने प्राये और आरम्भ-क्षय न हुआ तो मनुष्य मरना नहीं। आरम्भ-क्षय होता है तभी मनुष्य मर जाता है। फिर कोई निमित्त होता है मरने का, ऊपर से बिजली गिर गई, बीमारी हुई, बिचोने में खून बिया, यादू आई, ये सब निमित्त हैं।’

‘बोई मारने प्राये, लूटपाट करें तो अहिंसा से सामना कैसे करें ?’

‘अहिंसा में यह ताकत नहीं कि लूटपाट से बचाव करे। यह ताकत है कि लुट आत्म-समर्पण करने मर जायें, परवश न हों। जल्मी के घग न हों। सामना करना यानी शान्ति से, प्रेम से मार सहन करना। चोर प्राया लूटने के लिए तो उसे समझाना, बाई तुम को जो चाहिए वह मांगो, चोरी मत करो। एबनाथ महाराज (महाराष्ट्र के संत) के घर के लोगों को लूटने चोर प्राये थे। एबनाथ महाराज ने उनमें कहा, ‘भाइयो, रात में प्राये का घण्ट क्यो उठाया, दिन में प्राये। ओर यह घर प्रायका ही है। जो चाहे सो ले जाओ।’ लुटेरे एबनाथ महाराज की शरण में गिर पड़े। दूसरा उदाहरण है तुकाराम महाराज का। वे बड़े उदार थे, सन्त ही थे। दूसरे के खेत में मजदूरी करने जाते थे। मालिक ने एक दिन उनको बहुत सारे गन्ने दिये। गन्नों को डोले तुकाराम महाराज घर आने लगे। रास्ते में गाँव के बच्चे मिले। तो एक बच्चे को एक-एक गन्ना देने लगे प्राविर घर पठते तो एक ही गन्ना उनके हाथ में था। उनकी पत्नी बड़ी आराज हुई। बोली, कैसा मालिक है प्रायका ? दिन भर इतना काम करवाता है और एक ही गन्ना दिया। तुकाराम ने उसे कहा, ‘भरे मेरा मालिक बडा ब्यानु है। उसे कुछ मत कहना। रास्ते में बच्चे मिले तो मैंने ही गन्ने बाँट दिये।’ पत्नी तुकाराम पर बहुत गुस्सा हो गई। उसने वह गन्ना लिया और तुकाराम की पीठ पर मारा। गन्ने के दो टुकड़े हो गये। तुकाराम ने हँसते-हसते कहा ‘प्राव तो दो गन्ने ही गये।’ एक तुम्हारे लिए एक मेरे लिए।’ यह है अहिंसा। अहिंसा में यह ताकत नहीं है कि सबके सब गन्ने हाथ में पकड़ कर पर ले प्राये। जो गन्ना वेया उसे कहना, ले तो, तुम्हारा ही गन्ना है। अहिंसा से घन परा, शरीर-रक्षा नहीं होती, प्रातरक्षा होती है।

ऐसे काम जिनका अन्त हो

तेषाप्राम से निर्मला बहुत गांधी बीच-बीच में बाबा से मिलने प्राती है। एक दिन उनको प्राथम की कुछ समयस्यो पर चर्चा

हुई। निर्मला बहुत को लगा कि ‘प्रासपास के गाव के कुछ बच्चों को लेकर उनको सिखाना प्रायद श्रद्धा रहेगा।’ इस पर बाबा ने उनसे कहा, ‘इसे भंमला’ कहते हैं। मराठी में एक शब्द है—लटावर। एमे प्रायो को चाहे भंमला कहा, चाहे लटावर। दोगो एक ही हैं। बच्चे कब बड़े होंगे ? वे ब्रह्मचारी रहेंगे कि प्रादी करेंगे, प्रादी किसने बरेंगे ? घननी जाति में कि जाति के बाहर... इत्यादि। यह तो अनादि काल से घनन काल तक चलने वाला है। जन्म, प्रादी, मृत्यु...। हमें एमे काम करने चाहिए जिनका अन्त हो। जिनका अन्त ही नहीं ऐसे अन्तव काम हमें नहीं उठाने चाहिए। दुनिया के मतले हल करने वाले हम कौन होंगे ? हमारा मसला हल हो जाये तो बहुत है। रामजी प्राये, उजोने धनुष लिया, मसले हल किये। वे गये, नये मसले लखे हुए। इच्छा भगवान प्राये। उजोने देखा, धनुष की चलेमी नरी। तो उन्होंने बन्सी बजाई। लोगों को इन्द्रा किया, मकलन खाना सिखाया, प्रायो की रक्षा करना सिखाया और बन्सी बजाना सिखाया। कुछ समयस्य एल की। कृष्ण भगवान गये। नयी समस्या खड़ी हुई। गौतम बुद्ध आये। उन्होंने न धनुष चलाया, न बन्सी चलायी। मौन रक्षा। समस्याए हल की। नई समस्याए खड़ी हुई। इस तरह नये नये मसले लखे होने जाते हैं और नये-नये प्रावतार होने जाते हैं। हमारा एक मित्र था। वह सात बार मेट्रिक की परीक्षा में बैठा, सातों बार फेल हुआ। प्राविर शाब्दी बार उसने परीक्षा दी तो पास हो गया। उसे मैंने कहा, तूने बहुत उत्तम काम किया भगवान से बड कर। भगवान ती बार-बार अवतार लेता रहता है और फेल ही होता है। सतत अन्तार येना ही पड़ता है उसे। भगवान के दस अवतार का वर्णन करते हैं। भागवत में चौबीस अवतारो का वर्णन है।

अभी देखिये, मावसं न कहा था, ‘स्टेट बिज विदर प्रावे’ (राज्य का वित्तन होगा) परन्तु स्टेट न चीन में विदर प्रावे हुई, न रशिया में। दोगो देशों में स्टेट पक्की है। तो मावसं भी जो विघ्नो (सिद्धान्त) है वह प्रेकटीकल दीखती नरी। मावसं भी फेल है।

एक गांव में लेवी की वसूली

प्रमोद कुमार प्रेम

सूर्यनारायण साहू परसरमा गांव (सहरसा) के एक साधारण बंिये हैं। मुझे देखते ही उसने बँटने को बटाई दी और उदात्त मन से बट्टा शुरू किया—“बीग जन-वरी को एक बजे दिन में मुणौल प्रमड के विकास पदाधिकारी, प्रमड कृषि पदाधिकारी तथा तीन लाठीधारी सिपाहियों के साथ एक हवलदार ने भेरे घर से पाँच बोरा पान लेवो के रूप में जबरदस्ती निवाल लिया। गांव के तीन चार व्यक्ति भी उन लोगों का सहयोग कर रहे थे। उनके बाद मेरे अचरे भाई नयुनी साहू के घर में हवलदार ने घुमवरा लाठी से एक चोटी पीठ डाली जितमें बाबल रखा हुआ था। दो बोरे में चावल भरा गया और जीप पर मेरे धान के बोरे के साथ ही रख दिया गया। नयुनी घर पर नहीं था, वह अपने खेत पर काम कर रहा था। उसकी पत्नी भी घर से बाहर थी। बाद में वह छाती पीटती और रोती हुई भासी। इतनी देर में बहुत से लोग वहाँ जमा हो गये थे। गांव के तरुण भी धीरे-धीरे एक-एक करके वहाँ पहुंच गये थे। वे लोग उस समय तमासा देखते की दृष्टि से ही जमा हुए थे। तछोने ने बी० डी० भी० से आग्रह किया कि नयुनी साहू का चावल मन लिया जाये। उसकी ऐसी स्थिति नहीं है कि वह लेवो दे सके। सिपाहियों ने चावल का बोरा जीप पर से उतार दिया। बाद में मालूम हुआ कि तीन तरुणी विजय, पकड़ और रतन पर बी० डी० भी० को धन-मानित करने के बुझ में मुकदमा किया गया है।”

“चार दिन के बाद मेरा धान चपत किया गया। कुल ८ मन ७ पंगरी धान हुआ और तीस रुपये प्रति मन की दर से मुझे धान का काम दे दिया गया। बिना किसी पूर्व सूचना के ही हमसे धान वसूल किया गया। मेरा अग्रमन है कि गांव के बड़े लोग-धनी लोग जिन्हें लेवो लगना चाहिए वे बी० डी० भी० को मिलाकर हम जैसे लोगों से वसूल करवा कर अपने नाम से दर्ज करवा लेंते हैं।

भोडा बहुत व धरणी और से भी मिला देने हैं।”

इसी बीच रतन जो उधर वहीं से धार रहा था, मुझे देखकर ठिठक गया। पृष्ठने पर बताया कि हम लोगों पर ३३३ और ३०६ दफा लगावो गयी है यानी हम लोगों पर यह आरोप लगाया गया है कि हमने बी० डी० भी० साहू का धनमान किया है तथा वलात जीप पर से चावल उतार लिया है।

मैं यह स्पष्ट कर दू कि सूर्यनारायण और नयुनी जो अचरे भाई है मामूली विरम के बंिया है, दूबानदारी वरके धरणा और अपने परिवार का पेट पालते हैं। सूर्यनारायण के पास चार बोधे और नयुनी के पास मात्र पन्द्रह बट्टे जमीन है।

परसरमा सहरसा जिले का एक प्रतिष्ठित गांव है। जनसंख्या लगभग पाच हजार से ऊपर होगी तथा पढ़े लिखे लोगों की संख्या भी अधिक है। गांव का नेतृत्व सम्पन्न लोगों के हाथ है तथा आज भी उस गांव से सामन्तवारी जमाने की बू धरानी है। एक बात जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है वह यह कि वहाँ भव तक उन्नायत नहीं बन पायी है। मुझे एक धरामी ने बताया कि लोगों ने सोचा कि पचायन आने से गांव दुबडो में बट जायेगा इसलिए उन दिना में कोई पहल नहीं की गयी। सब बात तो यह है कि वहाँ धराने किसी सुविधागिरी बन्नूल करे? सब धराने धाय को सुनिमा ही समझते है। पचायन गठन के बाद लोगों का यह प्रहम सुत्ते नहीं होगा न!

गांव में बुद्ध तरुण मिलने आये। अधि-बास बालेज छात्र थे। उन्होंने बताया कि गांव में नेता गांव को बरबाद करने पर तुले हुए हैं। गांव में पचायन नहीं होने के कारण एक निगरानी समिति का गठन गांव के लोगों की ओर से किया गया था। मगर बुद्ध लोगों ने जिनकी पहुंच मिनिस्टरो तक है गांव के बहुमत से बनी निगरानी समिति का बहिष्कार किया तथा अपने लोगों की एक दूसरी

समिति बनाली। इस समिति को एक मिनि स्टर का भी धाकीबंद प्राप्त है तथा बी० डी० भी० साहूव तो इन लोगों से बाहर रहनेवाले ही नहीं हैं। निरचय ही यह भोडे से लोगों की समिति है। यही समिति जिसे प्रमड की ओर से मान्यता प्राप्त है गांव का प्रतिनिधित्व करती है। समिति यानी उनके पास में से सिर्फ दो सदस्य तीन सदस्य निष्पन्न जैसे ही है। समिति के वे दोनों सदस्य मतमानी करते हैं। सरकार की ओर से नलकूप के लिए जो ऋण मिले एक सदस्य ने चार-चार बार अपने नाम से या धरने नावालिग बेटे के नाम से लिया है। छोटे और गरीब किसानों को खादद ही कोई नलकूप मिला हो। उसी तरह सरकारी बीज और खाद के बंटवारे में भी धरमा है।

तरुणों ने आगे बताया कि निगरानी समिति के इन्ही सदस्यों के संकेत पर सूर्य-नारायण साहू और नयुनी साहू से जबरन धान या चावल बसूला गया है। सेवी के लिए दस गांव से सोलह व्यक्तियों के नाम भी सूची बनी थी। इस सूची में उपरोक्त दोनों व्यक्तियों के नाम नहीं थे।

तरुणों ने एक बात और बताया। उन्होंने कहा कि निगरानी समिति के उपरोक्त दोनों सदस्यों को सूर्यनारायण साहू और नयुनी साहू की दुकान से लेन-देन के सम्बन्ध में कुछ अलबत्ता दी गयी थी। इसलिए वे लोग (निगरानी समिति के दोनों सदस्य) किसी ऐसे मोके की ताक में थे जब दोनों बंियों से बदला लिया जा सके। और यह उनके लिए मुन्दर मोका था।

“आप में मैं तीन तरुणों पर मुकदमा पलाया गया है। क्या यह सच है कि आपने जीप पर से जबरदस्ती बोरे उतारे या बी० डी० भी० साहूव को माली दी या उनका अपमान किया?” मैंने उनसे पूछा।

एक तरुण ने बडी दृढ़ता से कहा— “नहीं। न तो हमने बी० डी० भी० साहू

को गान्धी दी है या प्रथमान बिना है और न बनाना और पर से बोरे ही उभारे हैं। बोरे डी० डी० श्री० साहब के आदेश पर ही चुनो द्वारा उभारे गये हैं। हम लोगों ने घुमना तक नहीं। हाँ, वह जान सत्य है कि जब हमने नयुनी साहू जैसे गरीब बलिषे से धारण लेने देखा तो बी० डी० श्री० साहब और उनको देखा कि वे बाले पथ प्रदर्शन को पर दुख जकर हुआ। हम नहीं बहने रहे कि नयुनी साहू हम का विषय नहीं है कि उनसे आप धर्मानुषंग रूप से लेनी में। पहले आप उनसे निबन्ध ही तो ले करना सोचा नहीं था। बाद में बी० डी० साहब मान गये और बोले कि आप तो ले लेते क्यों नहीं बताया कि नयुनी साहू मेरी देने के का विषय नहीं है। संतर, मैं चावल उभारना देता हूँ और तब उन्होंने मुझे ही धारण का बोध उभारना दिया। अब प्रथम हम लोगों पर धारण पोषा जाता है तो हम क्या करें? उन पर भी केवल तीन घामनी ही तो बहना नहीं है। प्रथम हमें उर्वरक्षेत्री ही करना होता तो फिर धारण का ही बोधा क्यों करने देते?

"बी० डी० ओ० आर लोगों को जानता पहचानता है?"
 "नहीं। किसी को नहीं।"
 "तो फिर तीन लक्षों ने नाम से जो कि साहू हमारे बहू क्षेपे ?
 एक तथ्य सुनारामा... आप हमसे सब कुछ उभारना लेना चाहते हैं। तो मुनिने, बी० डी० श्री० किसी का नाम नहीं जानता है। निगरानी समिति ने जो उभारना दो कल्प है तो साहब के ही हैं। उन्होंने ही और साहब का हम तीन साक्षियों पर मुकदमा चलाया है।"

"साहब क्यों? के धारण को क्यों तय करना चाहते हैं?"
 कुछ देर के बाद मुझे बहना गया "इसलिए कि प्रथम उनके समझा और पश्चात् पूर्ण रवने को मरू नहीं संकने। साहब के जनावरण को से इन लोगों ने सहाय कर दिया है। धारण लोहे हैं? जिन्हें नयुनी दिया गया है निगरानी समिति के उभार एक सदस्य से उनसे पाषण चलेने प्रथम में लिए हैं। उनी तरह ही प्रथम भी उन्होंने रक्षा बनाया है।"

दूगरे दिन मैं निगरानी समिति के वरिष्ठ अध्यक्ष मित्र रह चुके हैं। उन्होंने कहा—
 "लेवी के सम्बन्ध में निगरानी समिति की एक बैठक गत दिसम्बर माह में हुई थी। उसी में मोहन ब्यक्तिगणों के नाम भी सूची तैयार की गयी थी। मगर जितने विरतना धारण लयना चाहिए यह तय नहीं हुआ था। बी० डी० श्री० ने धारण मन से रकम चढायी। इस पर हमने विरोध भी किया कि लोगों से राश निय बिना ऐसा नहीं किया जाना चाहिए।" उन दिन यानी २० जनवरी को बी० डी० श्री० साहब के साथ में, हरिदेव मिश्र और राधकान्त जी (दोनों निगरानी समिति के सदस्य) सूर्यनारायण का जो अध्यक्ष और सम्पन्न निमान हैं के यहा लेनी के लिए गये। उनके नाम चढाया या और भा जी एक निवृत्त से अधिच ठने को तैयार नहीं है। बाद में हम लोगों ने उन्हें दो और तीस निवृत्त के बीच देने को राजी कर लिया। फिर हम लाभ लाभ दुहित (नवमीनायक पथम) हम को धमकाय के पहा गये। राने में मही सूर्यनारायण साहू और नयुनी साहू को दूकान दूकान में निगरेट लेने गये। दूधकर ने उनको दूकान में बाकी धारण देना। जब हम लोग सान दुहित ने पहा ले लीं तो दूधकर ने बनाया कि इस दूकान में बाकी गल्ला है। फिर हम लोग बहना गये। अनुमान लगाया कि सूर्यनारायण साहू के घर में करीब पचास मन धारण तथा नयुनी के घर बीस मन धारण हैं।

मैने बीच में टोका— "क्या यह सब है कि दूधकर की निगरेट खरीदते समय सूर्यनारायण साहू से वसु देने की बात पर कुछ कहा-मुनी हो गई थी?"
 "नरेन्द्र जी— "मुझे मायूम नहीं। संतर। मैंने सूर्यनारायण साहू को समझाया कि वह के नाम पर धारण भी चला जायगा। मुकदमा उभरना भी कोई टिकना नहीं।" "हेरिदेव मे दे दें। इस पर सूर्यनारायण पाष निवृत्त धारण और नयुनी दो निवृत्त धारण देने पर राजी हो गया। धारण और धारण का तीस

होना साथ और हग लोग दूगरे टोले में चले गये।"
 "मगर मुझे तो लोगों ने बनाया कि धारण या चावल को तोना नहीं गया, वैसे ही बोरे में रख लिया।" मैने फिर दोहरा।
 "नहीं, तोना गया था।" नरेन्द्र जी ने बताया।

नरेन्द्र जी ने धारण बताया कि करीब पाष वने नाम गोरगुल मुनायी पडा। एक लिप्राही दोरना दूधा प्राया और बनाया कि लडको में जोष को घेर लिया है और धारण तथा धारण उभार देने को कह रहा है। पहले राधकान्त जी गेरे फिर हरिदेव जी, मगर हुल्ला मात नही हुआ। फिर मैं गया। मुझे भी तो डूक जबाब दिया। लडको में कहा कि बी० डी० श्री० को भेजिये। लडको राची उपय मे मगर उनमें अब तक सिध्दा मौजूद थी। उजवी नरदा करीब २०-३५ थी। बाद में बी० डी० श्री० साहब के सामने कोई धारा नहीं था। और उन्होंने चावल उभारना दिया।

नरेन्द्र जी चुप रहे गए तो मैने पुनः उनमें पूछा— "नरेन्द्र जी, आपने अभी कहा है कि तीसह धारणियों की सूची निगरानी समिति की धारण में तैयार करने को बी० डी० श्री० साहू को दी गयी थी। क्या उन सज्जनों में से किसी के यहाँ से कमी नये लेको बगुल हुई है?"
 "उनमें से धारण तथा किसी ने लेकी नहीं दी है।" नरेन्द्र जी का उत्तर था।
 "अच्छा, क्या धारण बह सतने है कि जिन तीन लडको पर मुकदमा किया गया है उनके नाम बी० डी० श्री० साहू के भी नाम में है?"

"लडको ने सुद धारण नाम बनाया था। और फिर, जन सेवक तथा कर्मचारी तो नाम जानते ही होंगे कि लडको को।"
 "क्या शकर प्रसाद देकरियाल एम० एम० सी० २५ जनवरी को जानकारी लेने परमरमा जाये है?"
 "हाँ, रतन ने मामा उन्हें पहा साथे थे।"
 "और मुकदमा २५ जनवरी को सघ्या समय जब कोर्ट उठने पर भी, दायर किया गया था?"
 "हाँ।"
 "क्या यह सच है कि उन लडको ने नाम जितने पारदर्शनी की पढ़-ब ऊपर तक है

घोर जो वसकर मुझावरा कर गयने हैं, बी० डी० घो० ने वापस ले लिये।

“वही, एनी बात नहीं है। जो लड़के घणुमाई कर रहे थे उन्हीं का नाम दिया गया है।”

“मगर मुझे मच्छी तरह मासूम है और शायद आप भी सोचने होंगे कि जिन पर मुहदमा किया गया है वे घणुमाई करने की क्षमता नहीं रखते। हा, यह हो सकता है कि सबके माथ दन लोगों ने भी धरना विरोध जाहिर किया हो।”

बी० डी० घो० से मिलने में मुझे पानी परेशानी उठानी पडी। उनके दरपर मैं में दो बार बिना मिले कीट धरना। वे बेथी के मिलसिले में बराबर बाहर ही रहने है। बाद में रात को बरीच ८ बजे मैं पुन गया। वे जीप पर बैठे कहीं बाहर जाने को थे। मैंने अपना परिचय दिया तो उनर कर दहलते हुए वातें करने लगे। मैंने देखा अभी इनसे इन तल्ले वातें करना ठीक नहीं। मैं ठीक से बात करना चाहना था। फिर भी उन्होंने जो कुछ बताया उससे यही लगना था कि वे अपने को प्रजागन से क्या धुंधा मानते हैं। उन्होंने तरफों को भी बमरुदार बनाया तथा बोले कि उन्हें माली तक दी गयी। मैंने उनसे कई प्रश्न पूछे मगर वे टालते गये। मैंने यह भी पूछा कि उस घटना से परदारभा की धमकी जो विस्फोटक विधि है, गांव में जो एच ध्राप फूटने वाली है या गांव जो टुकडों में बिलरने वाला है, लोगों में जो ध्रापसी दुश्मनी बढ़ती जा रही है उसके लिए ध्राप क्या कर रहे हैं? मगर वे टपट-उपर की ही वातें बरते रहे और दूसरे दिन मुझे धाने की बोले। तीसरे दिन बी० डी० घो० से फिर मुलाकात हुई। उन्होंने बत—“मेरे गामने लाभारों है, लंबी वसूल करना मेरे लिए प्रावश्यक है तथा गांव के लोग लंबो देने को तैयार नहीं। गांव के लोगों की मदद ने बिना मैं कर भी क्या सकता हूँ? मुझे नया मासूम कि गांव में क्या-क्या ‘पॉन्टिक्स’ चलती है। परगटना गांव के प्रतिनिधि जो बहते हैं, मुझे तो उन की बात पर भरोसा करना ही चाहिए।”

“लोगों का बहना है कि रिमिने अपने नाथारिण बेटे के नाम से ऋण उठाया है, नलकूप के लिए चार-चार धार ऋण लिया

है। क्या ध्रापको इधर ध्यान नहीं देना चाहिए? जिन्हें ऋण चाहिए उन्हें मिलना नहीं और उन्हें मिल जाना है।”

“जिनके पास धरने भी साधन मौजूद है धोर वे सभी सपन लोग हैं? मैंने पूछा।

“भाई, मैं क्या करूँ? मैं तो सबको जानता नहीं। विश्वास करना पड़ता है और प्रतिनिधि जिनको बहने हैं, हम उनके नाम को स्वीकृति दे जानते है।”

मुश्किलों के बारे में उन्होंने बताया कि जिन सेकव ने जिन-जिनका नाम बताया उनपर मुहदमा चलाया गया होगा। उस पर उन्होंने अपनी धोर से कोई पहल नहीं की इस मामले में। उन्होंने केवल सेकी इशारों को इस घटना के बारे में रिपोर्त दे दी थी। उनकी राय पर ही बैस किया होगा।

बी० डी० घो० साहब ने बताया कि बैस करना उनके लिए प्रविष्टा का सवाल हो गया था। “इसके बावजूद लडके धाकर मुझ से मिलने या सभा माग लेंते तो भावद बात धारो नहीं बढनी। मगर वे लोग आये ही नहीं।” मुझे नरेंद्र जी की वह बात याद आ गयी, उन्होंने भी इसी तरह की बात कही थी। मुझे इस बात पर कुछ तत्कील भी हुई थी और मैंने कहा था कि इससे भाप यह गांठिन करना चाहते हैं कि लडकों ने गलती की है और इसलिए वे माफी माग रहे हैं। दूसरी बात यह कि ध्राप उनके स्वाभिमान को भुका कर गपने प्रहमू को सतुष्ट करना चाहते हैं। धरार ध्रापसे धामा मागने के लडके नहीं ध्राये तो ध्राप उन्हें परेशान करें मुझे यह प्रध्दा नहीं लगता है।

हिंसा सरकार की”

(पृष्ठ ७ का जेप)

नारे लगेगे, सच को भूठ और भूठ को सच बनाया जायेगा, चुनाव जीता जाएगा। क्या गुजरान इनते के लिए ही सारी धारनाएं फेल रहना है? क्या इसी से उसका सध पूरा हो जाएगा?

धमकी से स्पष्ट निर्णय कर लेना चाहिए कि माग सरकार बदलने की बी या व्यवस्था बदलने की? आज की समूची व्यवस्था ही इनकी दूषित है कि उसमें आबर प्रध्दा भी बंदार हो जाना है, बुरा तो बुरा रहता है। इसीलिए तो प्रतिनिधि बुनने की पदति में किसी बुनियादी परिवर्तन की बात सोचनी

चाहिए। मुख्य बात यह है कि उम्मीदवार जनता के हो, राजनैतिक दलों के नहीं। यह तत्वात्त सभव है। मौजूदा संविधान के अन्तर्गत संभव है। गांव-गांव की ग्रामसभाएं गठिन की जायें, और शहरों में मोहल्ला-महाए। एक निर्वाचन-क्षेत्र में इस प्रकार की जितनी समष्टि इच्छाया दें, उसके सर्व-सम्मान प्रतिनिधियों को मिलाकर एक ‘निर्वाचन-मंडल’ बनाया जाये। यह मंडल धरना सर्वसम्मत् या सर्वमान्य (बार-बार मत लेकर) उम्मीदवार तय करे और चुनाव में खडा करे। मंडल के सदस्य धरने-धरने क्षेत्र में इस उम्मीदवार के लिए काम करें और कोशिश करें कि दलों के उम्मीदवारों को (दलों की धरने उम्मीदवार खडा करने की छुट रहनी चाहिए) चोट न मिले। यह काम पूरे गुजरान में हो ताकि चुनाव के बाद विधानसभा जन-प्रतिनिधियों की बने, दल-प्रतिनिधियों की नहीं। यह नयी विधानसभा एक साफ-बंदखर धरना नैना चुने जो मुख्य-मन्त्री हो, और वह पूरी सभा से (सिर्फ धरने दल से नहीं) धन्य मन्त्रियों को चुन लें। सरकार विधानसभा में सर्वमान्य कार्यक्रम के धनुदार काम करे। उधर हर निर्वाचन-मंडल धरने-धरने प्रतिनिधि के कामों को ध्राचरण पर बडी नजर रखे। प्रत्येक प्रतिनिधि धरने निर्वाचन मंडल को धरने काम धा ब्योरा दें और उसका धनुशासन माने। ध्राप-समाए धोर नगर सभाएं धरने-धरने क्षेत्र के भीतरी जीवन को ज्यादा-से-ज्यादा ध्रापसी सलाह और सहकार में चलाने की कोशिश करें। योजना उनकी हो, साधन की सहायता सरकार दे। इस प्रकार व्यवस्था-परिचर्जन की दिशा में एच टोस बुनियादी कदम उठे और जनता महसूस करे कि वह लोचरतन में प्रयत्न रूप से सामर्थ्य है।

दलों का प्रभुत्व समाप्त हो, तथा सरकार का क्षेत्र सीमित हो—यह लोकतंत्र के विकास का धरना चरण है। गुजरान ने कदम उठा लिया है। इसी दिशा में देश के धन्य भागों में भी शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित मुहड कदम उठने चाहिए ताकि प्रष्टिक सामाजिक शक्ति का सध पूरा हो सके। लोक चेतना जग गयी है। अर लोकनिष्ठ प्रवृत्त होनी चाहिए। लोकनिष्ठ प्रवृत्त होनी तो दलवांस्ति टुटेगी। लोकतंत्र का आधार लोकनीति है, राजनीति के दिन गये यदि यह न हथा तो मान्य पड़ना कि गुजरान में एक तो जभी और जलकर कुभगयी।

अति समृद्धि और तेल का संकट

फ़रवरी ४४ में पहली बार 'बाग पाइप वेन' बाजार में पहुंचा। उमें बगने को लागू करने में देरी थी। लेकिन वह बाजार में १२४० डॉलर में खिन्ना था। मार्च १९४६ तक वह बाजार पर चले। निम्नोत्तरी की अधिदुर्घ 'बी' छद्मनीय हुआर बाजार थी, लेकिन अब उक्त बंधन में उलके बीच तात्काल बाजार बसा हो गये थे। महीने-महीने में वह पाच ताप हावर का नया बसा रहा था। १९४६ में अत उक्त एक तो विनिम्न बन्धनी वही पाइप वेन का निर्माण करने लगी। वही बाजार तीस सेठ हो गयी थी और बहुबाजार में २९८० डॉलर पर खिन्ना था। १९४६ में बहु बाजार में उपचारणीय सेठ पर विन्ने लया। लाउज कीमत इस सेठ पर थी १। अब पूँजीपति या उद्योगपति ज्यादा लाभ के पीने बगाने लगने है तो हमारा नयी मशीन हासल होती है।

भाजकन तेल के मातिक अरवी देशों की होना हो रही है। औद्योगिक देशों में ते पेट के लिए जबरदस्त माग है—उन्हीने है कि उक्त माग की पूर्ति करने के लिए धारवाण देश उनवी सब जायद-नाजायद कारिक और राजनैतिक मागों को स्वीकारने को ईबातर है। इतलिए, धरवी देश धरने तेल की माग के आधार पर अरवी देश के निरद बगाना मसुल दिना तो रहे है लेकिन इन्के माग-माय, तेल के बड़े हुए दामों की वंसे बुधपाया जाते—यिच माध्यम से बुधपाया जाने और बुधपाय पर उक्त दरारी का उपयोग बंने हो, यह भी एक बडा संकट बन रहा है। यदि परिषद उन्हें रोस्ट में पुधुचारी (जो बाल्य में अमयक है) तो उक्त रोस्ट का उपयोग बंने हो? इन्के में नहीं हो पायेगा। निच के स्टॉक मार्केटों को एकदम सारी तर परेगा। यदि सामान्य के, अर्द्ध-बदने बुधपाया जाये तो समुचित इतनी बन्दे पर उक्त दामों में खिन्ने सामानों की माग बसूई जाये—अर्थात् उनका सामान बाजार में नाग नहीं बनेगा। तो क्या?

एक जरिया है। १९७२ में फ्रांस में धरक देशों की १७३४ करोड डॉलर के धरक वन होल ही के युद्ध के दमियान परिचामी देशों ने तैकिना अमी मिन राष्ट्र का प्रमाण पत्र पाने के लिए य सब फिर उक्त धरक बंधने को नैवार हो रहे हैं। (मिफ्रं अरबों को नहीं— य इजराइल को भी देन को नैवार है) इन्के की उम्मीद है कि १९७४ में य अरब देशों को ४७ करोड पीउन्ड के धरक वेच पाने में अब दुनिया का अधिक समुक्त जागी रवने के लिए धरक निर्माण एक जबरदस्त साधन बन रहा है। माग ही धरकबिवा बाहें, तो आज ही बहु अरब राष्ट्रों के उपयोग के लिए १४ करोड ९० एम० ९९ निमाइल को नवीदेने की परिस्थिति है। याने इजराइल के पास खिन्ने विमान है—एक विमान के पीछे ३०० मिमाइल (य विमाइल आजकल विमान को गिराने का सबसे सफल साधन मान जाते है।) यह एक तरीका है। एक अर्धशास्त्री न एक दूसरी तरकीब मुभायी। धरक देग अपना फातल धन विकासशील देशों के विकास में सहायता के लिए खर्च करें। इससे विश्व की अद्युधता के सामाजिक मसुल को खनरनाक ढग से विवा-उने के बन्दे, ये विश्व के खतरनाक धारिक अयन्युधन को मुधारने में सहायक होगे। की होइ म समये, तो दुनिया में एक नई भावना पैदा हो मयेगी कीर विकासशील राष्ट्र उनके पन्के द्विभागी बन जायेंगे। वंसे परिषद के राष्ट्र तेज के नये स्त्रोनों का विकास तेजी से करने लगे है (कई जगह इसमें धरक राष्ट्रों की पूँजी भी लगी है) तथा तेल के बन्दे में उर्जा के धन स्रोत (मनसल आधुनिक मालि) भी खोजने लगे है। तं, अरब देशों का अर्ध में ये अयने धन का समुपयोग करने का मार्ग सोरें, जयने उन्हें शोभा है। अभी तक समुक्त शास्त्र की दृष्टि से, अर्थात् तेल पर अतिसमृद्धि एक समत्या

बन रही थी। धरक अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर भी बल विन्ड बन रही है। बहुत शीघ्र ही सर्व-नाग या सर्वोद्य की धीर बाजार की एक चुनौती इस समय विश्व के सामने खड़ी है। फ्रांस के प्रथम ध्यूरी के दो लेगी में खिन्ने हुए थे मरुट्ट विचार भी दिनाते है कि वर्तमान आर्थिक संकट शावर लेगी को एक नई कानिफारो दिना में सोचने को मजबूर कर नई सजता है।

मजबूती में इस समय हुए बहुत महुरी उर्जा के युग का सामना कर रहे हैं। क्या इसमें लाभ उठा कर, हम एक तंत्र तरीके के उत्पादन पर विचार कर मयेंगे, जिसेमें धरक का मरुट्ट कम होगा?

बहुत दिनों से बाजार को साकने के बर जित मामान की बन्धी है उनके व्यापुक्त विरणन के लिए काफी लोंग एण नई पडरि की लोज करने लगे है।

स्टॉकहोम समेलन में इस जायण का प्रस्ताव पारित निचा कि विश्व के लिए ऊर्जा नीति तय करने समय, ऊर्जा के सीमित स्रोतों पर व्यक्तितान मानचिन्तन नहीं रहनी चाडिए। उनका दुष्परणम शापल और व्यक्तितान लाभ के लिए नहीं हाना चाडिए।

धरक ये लोंग, जो कल तक धरणी बाार में पूरत थे, बसा और रेलों का उपयोग बन्दे लयेंगे। कुछ लोंग समयमें लगे है कि साम्यवादी दल में वर्तमान सामाजिक समस्याओं के धरुदुल धरण में परिवर्तन लाने की शक्ति बढूने कम रहे गयी है। यदि "विकासशील धर्यमाण" को सच्चा सर्व देना हो, तो उनमें कई हिस्सों को बदल कर उन्हें एक पूरा नया स्वरुप देना पडेगा।

धरणी तक, विज्ञापन-उद्योग की नीति रही कि ऐसी चीजा का विकास करें जो कलवी में जोग हो जायें, ताकि बाध्म्यो नये सामान के जीवन विरन्तर तथा मायुक्त हो। लेकिन हाल में विज्ञानों में लोंग धरने सामानों के अर्थात्तय तथा सुरक्षितता पर ज्यादा जोर देने लगे है। वर्तमान समय की एक और बुनियादी धारकबन्धता है... धरने खरीदे हुए सामानों का पूरा उपयोग करना। यदि एक कारकी से तीन साल ज्यादा तक धरने सामान भी

श्रुति समृद्धि और...

→ उपबांग बरे तो क्या इससे उसे सद्गुरु बुझसान होगा ?

शापाद एक नयी श्रौद्योगिन व्यक्तीया की घोर बड़ना उपयोगी होगा जिसमें पंसे के लिए काम करने का महत्व कम हो। पंसे का न यह गुणामक न सध्यात्मक महत्व रहेगा, जो आजकल उसे प्राप्त है।

हमने प्रश्नकर समझा था कि धार्मिक समृद्धि का एक लाभ यह होगा कि हम एक प्रकार के स्वर्ग में शान्ति और समन्वय से रहेगे। लेकिन आजकल हम इससे बिलकुल विपरीत नतीजा दिखाई दे रहा है। जीवन की रस्तार बढ जाती है और हमारे जीवन में ज्यादा से ज्यादा परिश्रानियां बढ जाती हैं।

आजकल प्रथम बार, एक उद्योग में काम करने वाले लोगों ने सोचना शुरू किया कि क्या धास्तव में और टाइम के सिमन्त से मुशकला तथा बदलती माग का समन्वय हो पाया है ?

नया साल पश्चिम के लिए नये तरीके से सोचने की खुशीती उपस्थित करता है। क्या हम यह नये सोचने का तरीका दुबलायी मानेंगे ? यह इस पर निर्भर है...क्या हम "उपभोक्ता समाज" को भूत का स्वप्न मानेंगे, या श्रौद्योगिक सम्पत्ता का एक खतरनाक पहलू मानेंगे।

तेल के दाम बढ गये है...इससे धनिकार्यतः मुद्ध का परिणाम धायेगा... ऐसी बात नहीं है। चिन्तितगण और भ्रष्टाडे के सिवा, इससे अन्य भावनाएं भी पैदा हो सकती हैं। '६५ में अचानक कई दिनों तक न्यूयार्क में विजनी बन्द हुई थी। लोग बढते थे कि इसको पहले घक्के के बाद उन्हें धारस्यें हुमा कि एकदम, अपने प्राप, लोगों को एक दूसरे को इतनी मदद देने की प्रेरणा बहूँ से मिली ? एक प्रकार से, मारा बाहर सिर्फ अंधकार से नहीं, बल्कि सहयोग की भावना में भी बूब गया था।

यूनेस्को ने कुछ ऐसे धािबड़े निबाले हैं, जिससे पता चलता है कि हर राष्ट्र में १० प्रतिशत धनिक लोगों की धामदगी तथा १० प्रतिशत गरीब लोगों की धामदगी में क्या अनुपात है। सोवियत रूस में यह अनु-

पात ८ है, ब्रिटेन में १५ है, पश्चिमी जर्मनी में २०.५ है, नाबो में २५ है, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में २६ है, होन्डुरस में ३३ है, लेकिन फ्रांस में ७६ है।

धाकी को देश के साथ पेरिस का सम्पर्क नगण्य सा है। बोई सटी बिनेन्डीकरण नहीं हुमा है, हालांकि हाल ही में स्थानीय स्वायत्त शासन का निर्माण हुमा है। सब लोगों को लगता है कि राजधानी सारे राष्ट्र का प्राण बूस रही है और उसको निर्णय प्रश्नकर पेरिस निवासियों के पक्ष में होते हैं।

राष्ट्रीय नीतियों के स्थान पर केंद्रीकरण का प्रभाव बढत बुरा पड रहा है। क्योंकि इससे समाज वर्तमान नीतियों का सामना नहीं कर पा रहा है। इसका प्रसथी कारण यह है कि सरकारी अधिधारियों ने प्रसली सत्ता धरने हाथों में ले ली है।

संरुचित्व नमूने के तौर पर, अब यन्त्रीकरण की इज्जत नहीं रही। अब यह साबित हो रहा है कि अन्त तक यन्त्र की

शक्ति मनुष्य का स्थान नहीं ले सकती। कीमतों की वजह से और परिस्थितियों की वजह से, उद्योग को कम ऊर्जा और कम कच्चे माल का उपयोग करना ही पडेगा। उसे अपनी धावश्यकताओं के लिए ज्यादा निवृत्त भी देखना पडेगा।

उत्पादन कम करने मात्र से अस्तमानताएं कम होंगी ऐसी बात तो नहीं है। लेकिन यह तो निश्चित है कि उत्पादन बढ़ाने से अस्तमानताएं भी बढती हैं। लेकिन आजकल नई परिस्थितियों के साथ समन्वय करने के साधन, गरीबों की बनिस्बत धनीरों को हाथ में बहुत ज्यादा हैं। यह ठीक है, कि पेट्रोल के बढते दामों का प्रश्न छोटी कारों को बनिस्बत बड़ी कारों पर ज्यादा पडे। अर्थात् खर्च कम करने की दृष्टि से, तथा फालतू दिखावे या खर्च कम करने की दृष्टि से वगैरे सपर्यं कुछ काम हो सकता है। -

सरला देवी

ऊर्जा संकट : योजना संकट

—रण बहादुर सिंह

देश में ऊर्जा संकट है इस तथ्य से हम सब परिचित हैं। यह परिस्थिति तेल के संकट से और भी विवृत्त बन चली है। इससे निपटने के लिए हमें अपने कोपने के प्राइवटिक भण्डारों का अधिधार्मिक प्रयोग करना पडेगा। इस स्थिति धावश्यकता की प्रीति के लिए हम गहराई वाले कोपने की खदानों से उनका कोपला इतनी जल्दी नहीं निकाल सकते कि हमारी धावश्यकताएं पूरी हो जायें। हमें उन क्षेत्रों को ही कोपला निकालना पडेगा जहा कोपला जमीन की सतह से काफी नजदीक हो। जैसा कि मध्य प्रदेश में सगरीला क्षेत्र में है जहां कोपला भूमि की सतह से केवल बीस फुट नीचे है। पर हमें बताया जा रहा है कि यह कोपला भी आवश्यक माना में केवल दो बरों बाद ही उपलब्ध होगा। बठिनाई यह बताई जाती है कि कण्टूर वादन नक्शा तैयार नहीं है। और यह नक्शा तभी बन सकता है जबकि रक्षा मंत्रालय इस र्थन का हवाई सर्वेक्षण कर स्वीकृति दे। रक्षा मंत्रालय स्वीकृति तक

देता है जब यह निश्चय हो जाय कि इस सर्वेक्षण से सुरक्षा रर प्रतिकूल प्रभाव न पडे और यदि ये सब कठिनाई दूर भी हो जाये तो खनिज की भारी मशीनरी का आयात होने पर ही कार्य प्रारम्भ होगा। खनिज की छोटी मशीन देश ही में निर्मित हो रही है—दुर्गों की भी पर्याप्त उपलब्धि है। पर यह निर्णय सा हो गया है कि बाहर से ध्रायात की गयी भारी मशीनरी से ही यह कार्य होगा। और हमारे इस संकट काल में यह कोपला नहीं मिल पायेगा। उस क्षेत्र में व्यापक बेरोजगारी है। यह सर्वथा सम्भव है कि १०००० बेरोजगार भूले व्यक्ति उस कोपले को तीन महीने में खुदाई कर बाहर निकाल सकते हैं। पर सरभावना यही है कि हम तीन साल बाद ही यह कार्य प्रारम्भ करेंगे। यही हमारी योजनाओं की सबसे बड़ी कमजोरी है। हमें तो अब भी योजना से बठिन निर्णय लेने होंगे। उस क्षेत्र के लोगों की बही योजना रचिकर होगी जो उनकी भी धावश्यकता का समुचित निराकरण प्रस्तुत करे।

उपवासदान : स्थिति और सूची

फरवरी २८ तक उपवासदान की प्रवेशवार स्थिति

प्रदेश	संख्या	रकम	विशेष विवरण
ग्राम	८	२१०-००	
ग्राम	६	२४७-००	
उत्तल	१७	१६६-००	मासिक व्योरा
उत्तर प्रदेश	२०६	५४२२-६०	१ नवम्बर १२०
केरल	२	७५-००	२ दिसम्बर ११७
बनारस	२२	४३३-५०	३ जनवरी ३४३
मुंबरात	७६	२१२३-००	४ फरवरी २८७
तमिलनाडु	१०	२६३ ००	
पंजाब	२८	६०४-५०	
पं० बंगाल	४१	१४७०-००	
बिहार	५७	१११६-०६	
मध्य प्रदेश	६७	१७४८-००	
महाराष्ट्र	२४५	४८३६-५०	
राजस्थान	३८	६८१-००	
हरियाणा	३१	७६७-००	
हिमाचल	१	२५-००	
दिल्ली	१४	४६१-००	
नागालैंड	४	—	
विदेश	१	६०-००	
	८६७	२१,१०७-५०	

उत्तर प्रदेश

बाराणसी : विजयादित्य सिंह, विद्या-
नकर पाण्डेय, दासजी, दुबसु प्रसाद, गिरजा
नगर सिंह, महादेव प्रसाद, नरहरि रणपा,
रामदुनार शर्मा । टिहरी मङ्गल । धूमसिंह
नेगी । मथुरा : गौरी नगर धर्मदास, सरस्वती
देवी भांडिया, प्रयत्नी प्रसाद, बनशारीलाल
दूधभरे, श्रीमती निर्मला देवी । देवरिया :
सुदान प्रसाद वर्मा, डा० हरिहर प्रसाद
पाण्डे । मिर्जापुर : प्रेमभाई । कानपुर :
रा० सो० पी० शत्रुघ्नी, श्रीमती एम० नार०
सहायका । गागरा : रोगनलाल गुप्ता,
रामकिशन धर्मपाल, बहा देवी, विभूषकान
चतुर्वेदी, रा० शिवमदन भोनीलाल, गिरीश-
चन्द्र गुप्ता, श्रीम प्रकाश मित्तल, बाबूलाल
मिषत, बालमुष्णद बल्गा, श्रीमती बरतला
कुन्डे, सज्जाराय बनस, हनुमान प्रसाद,
राधारमण अग्रवाल, धर्मरान विचार्यी, राम-

नारायण गुप्ता, आदिराम सिपल, श्रीकृष्ण
गुप्ता, श्रीम प्रकाश शर्मा । पीलीभीत मधु-
मूदल । बलिया । शिवकुमार मिश्र । बदायूं :
भद्रगुण धार्य । सहारनपुर कमला कांत
त्रिपाठी । बुन्देलखण्ड : डारवा प्रसाद गर्ग ।
गोडा सीताराम सिंह । देहरादून लक्ष्मण
देव । सखनऊ लालकिशन मेहता, विचित्र
नारायण शर्मा । गोरखपुर सरस्वती प्रसाद
श्रीवासनव, मकुन्तला देवी श्रीवासनव ।
घाबमण्ड मेरालाल गोस्वामी । नैनीताल :
राजेन्द्र सिंह, श्रीमती राजवती देवी, गोपाल
तिवारी, बच्चप्रसाद हरिजन, राधव सिंह,
राजेश्वर साहू, जितेन्द्रनाथ तिवारी, श्रीरेन्द्र
बहादुर साहू, राजेन्द्र प्रतापचन्द्र, श्रीमती
सुधर्मण्य देवी, पन्नादेवी देवी, कुलवती देवी,
राजकिशोर साहू, गुना देवी, जगदानी देवी,
रामकुमार गुप्ता, रामनैन सिंह, सत्यजीव
गुप्ता, शिव प्रसाद पाण्डे, विभूति मिश्री,
जमुना सिंह, देवनाथ राम, राधेसिंह, श्रीमती

मनिचा देवी, हरदेव सिंह, प० रूपकिशोर
शर्मा, भुन्ना लाल शर्मा, दुष्पोतम, राम-
किशोर शास्त्री । गानोपुर : कृष्णसिंह, राम-
कृष्ण प्रसाद, ओमप्रकाश नेवटिया, गजानन्द,
सतीशचन्द्र । जौनपुर रामनिहोर मिश्र ।
साहभहापुर राजाराम, बन्टहीलाल शुक्ला ।
इटवा : शम्भूदयाल त्यागी । मुजफ्फरनगर :
हरदन सिंह, श्याम सिंह, सुखवीर सिंह,
राजाराम, दिलीप सिंह, ब्रह्मादेवी ।

हरियाणा

हिसार गोदावरी, श्रीमती पार्वती,
शत्रुंनदास, पूर्णचन्द्र गुप्त, रामकुमार नाहर,
सीताराम बागवा, घेराल टाटिया, हरिच-
न्द्र लादूराम शंखलाल, हनुमानदास मुनीम,
अर्जुनदास, श्रीमती शान्तिदेवी, ब्रह्मानन्द,
मुरजाराम, धासाराम सेन, गणेशीलाल ।
रोहताक धीवान चन्द्र, सूरत सिंह, फूलिया
भगत । जोन्द हरिचन्द्र । भिवानी :
राधेश्याम तिवारी । करनाल : सोमदत्त
वेदालकार, शादीराम जोशी । गुड़गांव :
भगवान दास ।

हिमाचल प्रदेश

भटनाथ मठो जयचन्द मल्होत्रा ।

दिल्ली

प्यारा राम छाबडा, नाथराज कालरा,
धार्मभूपण भारद्वाज, रमेशचन्द्र शर्मा, कृष्ण-
मूर्तिगुप्त, राधाकृष्ण, श्रीमती कमला बहल,
डा० भीमसेन हाब्यर, डा० श्रीराम शर्मा,
सी० ए० मेनन ।

पं० बंगाल

कलकत्ता भूतीलाल लाठ, दुर्गाचरण
दास, सी० एम० निरंजोरी, बलदेव दास
अग्रवाल, श्रीमती मोरारजी मन्सूर, राधेनाल
अग्रवाल, धार्म० टी० दामोदरी, शान्तिनाथ विलजी
पटेल, प्रहल्ल कुमार गुप्ता मन्दीनारायण
अग्रवाल, धनयामदास बसल, नैमकुमार
जैन, चौबेस परगना : कु० मन्तराय, चारु
चन्द्र मण्डारी, बीरभूम स्वामी रिकदातन्द ।

राजस्थान

बोकारे : ऋषभराज जैन, सोहनलाल
मोदी । श्री गंगानगर मुरारीधर जी गोयल,
रामचन्द्र मन्कावर, दूरमल शर्मा । जयपुर ।
चौधमजी, विशोचन्द्र, श्रीमती बादाय्याई,
बलवत सिंह । बाणपुर । रामेश्वरलाल ।

पूरल-यम : सोमनार, २५ मार्च, '७४

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

धूम रही है, जमे जागृत करना भी प्रभावशयक होता। मगर कठिनाई यह है कि योजना चाहे बायो की हो चाहे पानाल हुए तैयार करने की सब जगह धाड़ माने वाली चीज वेईमानी का बचा करे।

चार वर्ष हुए पंजाब राज्य में चार करोड़ रुपयो की लागत से पाताल हुए खोदने के लिए एक 'वॉरपेरिशन' की रचना की थी। चार साल में तीन हुए खोदे गये और आनन्द यह है कि काम एक भी नहीं दे पा रहा है। स्वयं सरकार ने विधान सभा में विवरण देते हुए कहा कि राज्य में सब माधनो के द्वारा विगत २६ वर्षों में ३८२ पाताल हुए खोदे गये इनमें से १८० को काम के योग्य बनाने का प्रयास किया गया, शेष को यो ही छोड़ दिया गया। इन १८० में से १२० राजस्थान ट्यूबवेल बोर्ड द्वारा खोदे गये थे और इनमें केवल ८ का पानी खेतों तक ले जाने का प्रयत्न हुआ तथा बिजली केवल तीन को दी गई। मगर काम तो अभी किसी एक से भी नहीं लिया जा सका है।

धन धर वहां के लोग अपनी परेशानी को भांगते रहने में प्रयत्न होकर बिभी दिन ऐसी बदईतजामी और वेईमानी के खिलाफ इकट्ठा होकर आवाज लगायें, मुनी न जाये तो नाराज दिखाई देने लगे, गुजरात की तरह वहां कोई आन्दोलन शुरू हो जाये, विचार्यों या विमान नस्वो पीर शहरों में जुलूस निबाल कर धूमने लगे, वहां की सत्ता का मूयु-घटा नाद जो आन्दोलन का अहितक प्रचार ही वहा जायेगा वज उठे तो 'साधन शुद्धि' के प्रति हमारी मजग सरकार निस्मदेह गुजरात की ही तरह उन्हें तिनर-बितर करने के लिए न समझने दुभाने की कोशिश करेगी न उनकी माग पूरी करने का वायदा। वह सीधी गोलिया चलायेगी और शेष समार से अपेक्षा करेगी कि वह साधु-साधु 'खूब-खूब' 'उचित-उचित' 'उत्तम-उत्तम' का स्वर उठा कर उत्तक समर्थन करेगा।

देवारे मंत्रिकशों ने बम्बई के रोटरों बलव में बोलते हुए कहा कि भाई हम देश में तरह-तरह के भ्रमालो की बाग कर रहे हैं—मगर सबसे खतरनाक जो भ्रमाल है वह स्वच्छ गजासन का है। धन का भ्रमाल लेवी लगाकर, वेल का भ्रमाल 'बाम्बेहार्ड' या

धसासम में नये कुर्छो का पना लगानर संभाला जा सकता है मगर यह जो चारित्रिक भ्रमाल, नेतृत्व में प्रामाणिकता का अभाव जड-पक्ड गया है सबसे अधिक दुख काम तो इनसे मुलदना है। शब्द क्या जाने, मगर उस पर प्रामाणिकता के बदे चारों ओर से लगभग उसी प्रकार दूर पडे हैं जैसे नागपुर में हेडाऊ महामय टूट पडे थे। साथ-साधन एवता की बात मूलगामी है। इस पर जितना जोर दिया जाये कम है। हजार विषयो पर बोलने के बजाय प्रधानमंत्री अपने धामपास इस एक दम गावब तत्व को पनपाने का प्रयत्न करें तो इस एक को साधन से सब सघ जायेगा। सब साधने की भागदोड में सब कुछ नियोज होकर रह जाता है, यह कौन नहीं जानता।

अब तक प्राप्त उपवास-
दानियों की सूची का
शेष भाग अगले
अंक में प्रकाशित
हो रहा है।

खादी

को

पारिवारिक पोशाक बनाइये

अपने

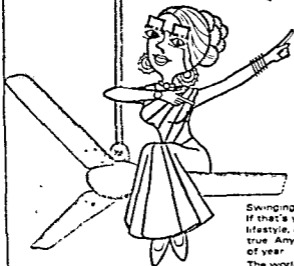
निकटतम खादी भवन या भण्डार से

मनोहारी रेशमी साड़ियाँ तथा

अन्य खादी वस्त्र खरीदें

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन द्वारा प्रचारित

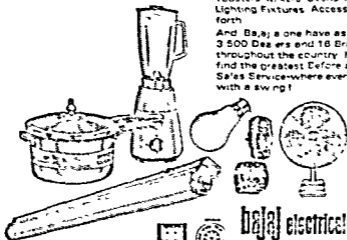
SWING HIGH WITH **bajaj** PRODUCTS



Swinging times and carefree living. If that's your wish for a modern lifestyle, Bajaj can make it come true. Any time of day. Any season of year.

The world of Bajaj Products is, in fact, created for modern homemakers. Icecream Freezer. Pressure Cookers. Toasters. Mixers. Ovens. Fans. Lamp. Lighting Fixtures. Accessories and so forth.

And Bajaj's one have as many as 3500 Dealers and 18 Branches throughout the country. Here you find the greatest Before and After Sales Service-where everything goes with a swing!



bajaj electricals limited

43-47, New Market Road, Bombay-400 021
Branches all over India

Price RS 120

अन्न की नीति पर गोष्ठी

! मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल तथा गांधी ग्रामिण प्रनिष्ठान वेन्डू, इन्दौर के तत्संबन्धितान में ३ और ४ मार्च, ७४ को इन्दौर में आयोजित जल-नीति गोष्ठी में निम्न सुभाव दिये गये :

(१) सरकार के लिए लेवी द्वारा अनाज खरीदना अनिवार्य है पर इममें किसानों से अडेडे लेवी निम्न से अनाज खरीदा जाय। सरकार की खरीद मूल्य और प्रचलित बाजार मूल्य में अधिक अन्तर नहीं रहना चाहिए। अन्यथा किसान लेवी चुकाने में उत्साहित नहीं होगा।

(२) लेवी द्वारा पर्याप्त खरीद न हो तो प्रमाणित व्यापारियों से उनकी खरीद की जाय। उनके पास अनाज का १५ प्रतिशत तक सरकार की खरीद मूल्य पर लेवी के रूप में वसूल किया जाय।

(३) जिनकेन्द्रों और प्रतिव्यय लगाकर ही लेवी वसूली और सरकारी खरीद का प्रतिव्यय कम से कम समय के लिए ही होना चाहिए।

(४) लेवी चुकाने के बाद गेप अनाज किसान प्रमाणित थोक और खुदरा व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं को बेच सके।

(५) प्रमाणित थोक व्यापारियों पर यह प्रतिबंध होना आवश्यक है कि थोक खरीदी और उपभोक्ताओं को बिना के बीच का मार्जिन १५ रुपये प्रति टिन्टल से अधिक का रहे।

(६) गन्ध के ग्रामसभाओं तथा नगर में मोहल्ला सभाओं का गठन करके उनके मार्ग-दर्शन में सहकारिता के आधार पर सस्ते अनाज की दुकानें खोलने को प्रोत्साहन दिया जाय। इन दुकानों की नागरिक चोप ही निगरानी रखेंगे तो वितरण व्यवस्था ठीक चल सकेगी।

(७) सबसे पहले कमजोर वर्ग और निम्न आय समूह को सस्ता अनाज देने की

जिम्मेदारी सरकार उठाये। शहरी में ऐसे निम्न आय वर्गों को राजन कार्ड दिये जायें और उन्हें प्रतिव्यय कम से कम ७ बिलों साठान की आपूर्ति व्यवस्था की जाये। जैसे-जैसे सरकार के पास अनाज का पर्याप्त स्टाक उपलब्ध होता जाय जैसे-जैसे वह अधिक-व्यय लोगों को वितरण व्यवस्था में सम्मिलित करती जाये।

(८) भूमि लगान की वसूली अनाज में करने की नीति बहुत प्रभावशाली हो सकती है। लेकिन इसे और भी सुनिश्चित बनाने के लिए कम भूमि पर अन्न लगान और अधिक भूमि पर अन्न लगान का अधिक भार बढ़ाना होगा।

(९) सरकार अपने कर्मचारियों को वेतन का एक हिस्सा अनाज में दे तो इससे कर्मचारियों को बहुत राहत मिलेगी। इसका कुछ चुने हुए क्षेत्रों और विभागों में प्रयोग किया जाय।

(१०) ग्रामीणों में भूमिहीन श्रमिकों को मजदूरी का एक अंश अनाज में मिले, यह प्रथा कायम रहना आवश्यक है।

● १८ को सम्पन्न हुए चौथे सत्र सेवक समागम के निवेदन में कहा गया है कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं की दृष्टि से जनतंत्र का विकास किस दिशा में हो, यह प्रश्न के नैतिक एवं मानसिक चेतना पर निर्भर है। उस चेतना को जाग्रत एवं प्रबुद्ध रखना इन सभागम का केन्द्रीय अभिष्ट है। समागम में राजधर्म एवं ऋषिधर्म, लोक जीवन में नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठान तथा भारतीय गणतंत्र में दलतंत्र से जनतंत्र की ओर विकास पर विचार से चर्चा हुई है।

कीर्तनको लक्ष्य हुई अफरोडन कर्करों के सदमें में इन प्रकार के समागम की आवश्यकता एवं उपयोगिता विशेष रूप से महसूस हुई।

आध्यात्मिक एवं नैतिक शक्ति के द्वारा देश की वर्तमान समस्याओं के समाधान में लिए दिया निर्देश करना तथा अहिंसक शक्तियों को जोड़ना समागम का मुख्य उद्देश्य रहेगा। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह समागम एक 'ममत्वय मंच' का काम करेगा।

यह कोई सगठन नहीं होगा।

समागम के द्वारा निर्मलित वित्त को प्रेरित किया जाय :

(१) सत्रों के मार्ग दर्शन में सेवकों में सम्मिलित प्रयाग से समाज तथा शासन से संचालन पर जन-शक्ति द्वारा नैतिक अनुशासन स्थापित करना। (२) विभिन्न क्षेत्रों सगठनों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास। (३) लोक जीवन में होने वाले धारोत्सवों का स्वरूप अहिंसक बनाना, तदनुसार प्रयाग करना। (४) देश की वर्तमान श्रमिक समस्याओं के हल के लिए श्रमनिष्ठा, श्रम शक्ति और साधनों का वातावरण बनाना एवं चिन्तक नियंत्रण तथा परिग्रह मर्यादा को विकसित करना। (५) समाज परिवर्तन के अहिंसक विकल्प प्रस्तुत करना तथा उनके प्रयोग करना।

इस कार्य हेतु संयोजन के लिए एक समागम समिति रहेगी तथा समय-समय पर समागम, शिविर आदि इससे माध्यम से आयोजित किये जायेंगे।

समागम में धार्मिक गुणवत्ता स्थायी अलङ्कार मरस्वती, स्वामी नरसिंह आदि ने भाग लिया।

● शब्दा (मं २०) की प्रामाण्य-ग्राम स्वराज्य समिति ने फरवरी में जिनके मोरदड़, सिमोंट, जगवाडी, बनवाडी, पिप-तोड, मुडी, चादपुर आदि २२ गांवों में विचार-प्रचार यात्रा की। इन गांवों में शरल भाषा में प्रामस्वराज्य पर विचार तथा साहित्य बंटोटा गया।

● हिमाचल सर्वोदय मंडल से राज्य जनकारी के अनुसार हिमाचल प्रदेश सरकार ने प्रदेश भूदान-यज्ञ बोर्ड का पुनर्गठन किया है। श्री देसराज महाजन (राजस्व मंत्री), हिमाचल प्रदेश) को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। बोर्ड के सदस्यों में श्रीमती गौरा देवी, श्री धोवार चन्द्र (विधायक) श्री मूलत सिंह, श्री निहलचन्द्र, श्री रणजीत सिंह, श्री अच-चन्द एडवोकेट व श्री सुन्दर सिंह (विधायक) को लिया गया है। श्री लक्ष्मीदास सचिव बनाये गये हैं।

सर्वोदय



सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार १ अप्रैल, '७४



विश्वेश्वर साहू (बायें) अमरनाथ (बीच में) तथा संतीय भारतीय (दायें) - सब मुम्बईपुर जेस में

- धार्मिक संविधानों की निरन्तर प्रभाव जोशी ● बिहार में राजनैतिक व प्रशासनिक अक्षमता की पुरानी कहानी जयप्रकाश नारायण ● अथे विश्व की भाषा है—स्त्री शक्ति चितोडा ● अधिक प्रिय क्या है : योजना या स्वतंत्रता रणवहादुर सिंह ● अट की सधारी में बचके सगे ही स्वामी ब्रह्मानन्द ● सहृदयता : क्या मिला, क्या दिया ? कुमार प्रसाद ● साधन और साध्य सरलादेवी ● एक हजार पूरे हुए ● सर्व सेवा सच का व्यापक स्वल्प बडीप्रसाद स्वामी ● बरपुर में उत्तरप्रदेश सर्वोदय सम्मेलन

विहार में राजनैतिक व प्रशासनिक अदूरदर्शिता की पुरानी कहानी

जयप्रकाश नारायण

घटना में अठारह मार्च को ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए धमकू रोक पाना मुश्किल हुआ होगा जिनमें मोदी भी संवेदनशीलता और देशभक्ति हो और जो जानता हो कि क्या क्या हो रहा है। उन्नीस मार्च को वे पश्चिमिया मिलने हुए मेरी भावों में धमकू उमड़ पड़ रहे हैं। (कल मेरी शक्ति पुनः मनी इन्फिंट घाज में मौन रख रहा हूँ) स्वतंत्रता प्रशमन का प्रवक्ताना-नाचंताइट ही नहीं, और भी बहुत कुछ नाट्य हो चुका है। बिहार की आत्मा घायन पड़ी है और उसके अरीर में सूख बढ़ रहा है। मैं नहीं जानता कि क्या बिहार को नाट्य हीने दिना जायगा ?

अठारह मार्च को घटना में प्रशासन जिन वृत्ति तरह विफल हुआ उसके बाद किसी भी प्रशासनिक देश में सरकार इस्तीफा दे देती लेकिन इन देश में हम अपनी गलतियों को छुपाते, बढ़ते-जानते और बलि के बन्दे बुढ़ने में बहुत साहिर हो गये हैं। अब समय है कि हम अपनी दिशा सुधार लें। श्री प्रद्युम्न गहू एक सम्माननीय व्यक्ति हैं और मेरी जानकारी से घनुराण सत्ता के प्रति उनमें कोई भ्रमपित्त मानना नहीं है। उन्हें मेरी दोस्तीना सहाह है कि हार्दिकमान की चाहे जो राय हो, अपने और प्राण के हित में उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्हें अपनी आत्मा में प्रयुक्त चाहिए। अगर वे सचमुच बहुमूलर कर्त्ते हीं कि बार-बार निवेदन किये जाने के बावजूद भी, वे सचनॉट, इन्डिजन मेसन और दुश्मनों को धागजनी और मुट्टाट से नहीं बना पाये, तो उन्हें स्वागमय दे देना चाहिए। लेकिन अगर वे मानते हो कि युक्तिम मौने पर जब बहुवी तब उगहा आगनी टूई भी, राहगीरी और बन्धो पर अमानुष मोली बनाना उचित था, अगर वे सोचने हैं कि बरमानुष गुणों और बिहार सरकार को उलटते और मुने प्राण हितक व्यस्तार करने और उनका उरजेन देने वाली पाठियों के धाग-जपान नेपाळी को गिरासार न करना लेकिन भी बुरी टाडुर, श्री भविजनान मणन और उनके सहयोगी तथा श्री टाडुर प्रसाद,

श्री दूर प्रसाद सारणी और उनके साथियों को गिरफ्तार करना उचित था, अगर वे मानते हैं कि शस्त्र बानून और विस्फोट बानून के तहत भी बुरी की टाडुर धरपायी हो सकते हैं, अगर वे मानते हो कि यह सब सही है तो निश्चिन्त हो उन्हें इस्तीफा नहीं देना चाहिए। लेकिन अगर वे ऐसा नहीं सोचते तो ब्रह्मती और दुख की इस घड़ी में हार्दिकमान नहीं बलिक्त अपनी आत्मा का मार्ग दर्शन उन्हें सेना चाहिए।

श्री विद्याकर कवि से अधिक विनम्र व्यक्ति मैंने कम ही देते हैं। हाल ही वे गम्भीर रूप से बीमार थे फिर भी प्रदर्शनकारियों से मिलने के लिए अपने घर से निकलने का साहस और सौजन्य दिखाया। यह शक्तिवर सोनहू मार्श की बात है। उस दिन उनके साथ जो हुआ उसे पूरा बिहार जानता है। उस घटना से सम्बन्धित पार्टी या पार्टियों का कोई भी नेता गिरफ्तार किया गया है ?

इस परिस्थिति में न सिर्फ सरकार को स्वागमय देना चाहिए बल्कि प्रशासन और पुलिस के सेवकों के अधिकारियों को भी हटाया जाना चाहिए। पहले नागरिक सुधिया विभाग को भी मैंने इसमें शामिल किया था लेकिन बाद में मिली जानकारियों से पता चला कि वह दोषी नहीं है। कनिपय स्थानों का जलाने और सूटने की योजनाओं को जान बारी यह विभाग बरहू मार्श को ही सरकार को दे चुका था। इन हालत में प्रशासन की रिफरन्सा और भी धारचर्चजनक हो जाती है।

इन सब को वैयक्तिक और राजनैतिक सडरी के लिए प्रेरित बाणों से रूप में गलत समझा जा सकता है। लेकिन मेरा कोई व्यक्तिगत लक्ष्य नहीं है और धम्की सरकार तथा बेहतर प्रशासनिक ढांचे के विनाश में मेरा कोई राजनीतिक लक्ष्य नहीं है। सत्ये ऊपर और पहले मैं लोगों की भलाई चाहूँगा।

घटना और दिव्नी ने कुछ क्षेत्त्रों में बढ़ावा दिया है कि युवकों को मैंने अहकिया है। घटना, मुखबरपुर, बाराणसी, लखनऊ, कानपुर, धागरा और बहमदाबाद में सारे

भाएए सार्वजनिक सभाओं में दिये गये हैं और उनमें से कई के देग भी मौजूद हैं। सरकार उनका पुनर्मिर्माण देव सतरी है। जो हो, मैंने जो भी कहा है उसके प्रत्येक शब्द को जिम्मेवारी में सेता हूँ और जैसे ही मेरा स्वास्थ्य ठीक होगा, युवकों के बीच प्रथमता काम में फिर शुरू करना चाहूँगा।

ऐसा भी माना जाना है कि मैंने अहमदाबाद में कहा कि बिहार प्रथमता गुजरात होगा। यह कोई पहला मोका नहीं है जब मेरे दास्यों को तोडा-मरोडा गया हो। अहमदाबाद में अपने कुछ मित्र सपूहों में मैंने प्रयुक्त था कि बिहार और उत्तर प्रदेश में गुजरात से कोई दस गुना अघटाचार होगा। फिर क्या बात है कि गुजरात इस तरह उठ खडा हुआ ? उनका उत्तर था कि यह गुजरात के लोगों का चरित्र है कि अघटाचार या प्रथमता को वे एक सीमा तक ही सह सकते हैं। उसके बाद पीछे को ठीक करते के लिए लडे हो जाते हैं। कुछ मैं गुजरात को भाई से सहमत हूँ कि गुजरात ने जो कुछ किया उसे और बही दुहराया नहीं जा सकता। और अहा तब मैं देखता हूँ बिहार में तो बिलतुल नहीं। यहा जमींदारी के दिनों से लोग प्रथमता और दमन के भावों हैं। फिर विद्यार्थी यहा आगम से बुरी तरह विभाजित हैं, न केवल गैर-नाम्नवादी बिहार प्रदेश धान सपयर्ध समिति और साम्यवादी बिहार राज्य धाग नोजवान सपयर्ध मोर्चे में बलिक्त विभिन्न पार्टियों, नेताओं धाग अघटा-पत्ते के प्रति अपनी सम्बन्धता, समीपता और बफादारी के कारण ये दोनों मोर्चे अपने धाग भी और विभाजित है। मोटे तौर पर सपयर्ध समिति का विपक्षी शान्तिपूर्ण तरीका में है, लेकिन इन तरीकों से उसकी प्रविचयना न सक्ती है न बज्रवृत्त। सपयर्ध मोर्चे का भवोवैध हिमक तरीका में विख्यात है। बिहार के विद्यार्थियों और शिक्षकों में वैयक्तिक गुण भी नहीं हैं जो गुजरात में छात्रों और शिक्षकों में हैं। फिर भी, जो भी कोई इन देश की भलाई के लिए काम करना चाहता है उसे युवकों में काम करना चाहिए, क्योंकि वे ही देश का भविष्य बना सकते हैं।

घटना में अठारह मार्च को जो हुआ उनके बारे में तो धमकू और कर्त्ता चाहता हूँ। (दुसरी जगहों में बारे में मेरी कोई वैयक्तिक

जानकारी नहीं है।) गुणों और उपायव्यक्तियों के बारे में हर एक कोई अस्पष्ट दृश्य से बोलता है। निश्चित ही कई उपायव्यक्तियों उस दिन सत्य थे। यह भी ठीक सत्यता है कि आगजनी की बड़ी घटनाओं के लिए जिम्मेदार लोग बाहर के थे। सबका: भागलपुर के, और इस काम के कुछ माहिर भी थे। यमों का प्राहरण करने वाले कुछ पातक श्रेष्ठों तरह प्रतिष्ठित थे और ऐसा भी लगता है कि धाम धामों के लिए जित सामग्री का उपयोग किया गया वह सामारण चीजों से अधिक शक्तिशाली थी, क्योंकि धाम एकदम घड़ी तेजी से फंसी। मुझे पता है कि सरकार इसकी छानबीन कर रही है। लेकिन उपाय करने वालों में कुछ हिंसक जातिवारी, और उनके विचारों अनुपामी, घूट या आगजनी की कार्यवाही से धारणित विचारों और ऐसे लोग शामिल थे जो महज उतरे जिन हो गये थे। शायद इन लोगों ने सोचा होगा कि वे सब 'भद्र की शक्ति को दुहरा रहे हैं। लेकिन घूट और आगजनी से शक्ति नहीं होती।

मैं नहीं जानता कि ये तत्व मेरी मुँह में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मामनवादी) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सामयकी मामनवादी) शायद मेरी बात पर विचार करें। इन पार्टियों के राष्ट्रीय नेताओं में मेरे बहूत से मित्र हैं और बावजूद मन्त्रियों के मैं इलाहाबाद जाता हूँ, क्योंकि वे किसी विदेशी शक्ति के मुँह नहीं हैं और शान्त विचार रखते हैं। जहाँ तक भारतीय साम्यवादी पार्टी का सवाल है, मुझे भय है मेरे शब्दों का उल्लेख सामने कोई बजाने नहीं है। जो हो, इन लोगों ने घोर की घोर करने के लिए उपायवादी घोर घोषित कर के साक्ष्य रखने के गेम में गजब की महारत हासिल की है।

इन सब के मेरी सलाह है कि मुझ में भिन्नकार के न मित्रों शक्ति बिगाड़ने हैं, बल्कि धामों सख्त की भी पराजित करने हैं। मेरी दूसरी सलाह है कि वे धारण शक्ति करना चाहते हैं ता शक्ति उन्हें लोगों के साथ न कि उनके विपक्ष करने चाहिए। पटना में इन लोगों ने जो किया उसमें पूरा सहूर उन्हें निमाक हो गया है—गुणों और उपायव्यक्तियों की बात छोड़ दीजिए।

छात्र सपर्य समिति के कुछ नेता उन्नीस मार्च को मुझ से मिले थे, तीन सोमवार को ही मिल चुके थे। ये सब सचिवालय के बाहर प्रदर्शन के थे और कुछ ने पीठ और गर्दन पर साठिया भी लायी है। मैं जानता हूँ कि इन लोगों ने शक्तिपूर्व तरीके धारण की पुरी कॉमिंग की, लेकिन सफल नहीं हो सके। वृत्ति उनका विवरण और बड़ी छानबीन पायेगा इसलिए यहाँ मैं उसे संक्षेप में दे रहा हूँ। एक सप्ताह के रूप में इन युवकों ने घूट, आगजनी और दूसरी हिलक कार्यवाहियों की अर्चना की है। कुछ में सचिवालय के सामने वे विस्तृत शान्त थे। वे उस फाटक के सामने सेट गये थे जहाँ से राज्यपाल विद्यासभा जाने वाले थे। उाते उठने की वजह यथा। उठने में उन्होंने इतना किया और युक्ति से बड़ा वे चाहते तो उन्हें गिरफ्तार कर सकते हैं। उनसे बड़ा गया कि वे गिरफ्तार हैं। कुछ सप्ताह गये और कुछ सप्ताह हो रहे थे। तभी एकदम उन पर साठिया बरस पड़ी। सब वहाँ एकत्रित हजारों विद्यार्थियों में यह बात फैल गयी कि 'हमारे नेताओं को घूटा गया है।' इसके बाद पश्चात शुरु हुआ और दूसरी घटनायें हुईं। इन युवकों ने अपनी कहानी कही उसे प्रकट करना मैं जरूरी समझता हूँ। हालांकि इसकी गश्तबाई को प्रमाणित करने की स्थिति मैं मैं नहीं हूँ। जा युवक नेता मुझ से मिले उनमें

(घूट २ का भाग)

विशाल साहू की ती घोर भी परीक्षण है। मुझमें भी बहुत सख्त ने बीम मार्च के विधानसभा में बजा कि ऐसे कुछ प्रमाण मिले हैं जिनमें इस सभा की एक मित्रता है कि विचार के हान हो हुए उपायों के पीछे विदेशी पक्षक हो सकता है। 'विदेशी पक्षक' का प्रमाण देने हुए सख्त साहू ने कहा कि मुजफ्फरपुर में शशांगद परिस्थिति में भी सख्त ने एक स्थिति का पक्षक गया है। उनमें प्रस्ताव करने के लिए 'विरोध' भेजे गए हैं। सख्त साहू ने न इस स्थिति का नाम विचार में दान करना कि उन पर क्या कार्य है। गिरफ्तार कि आन्तरिक मुद्रा का बजब के अर्थ में किया गया है इलाहाबादी मंत्रियों लक्ष्य को कायम रखने की जरूरत भी नहीं होगी।

विशाल साहू को शिकार और उपायवादी नागरिकों के पक्ष में उपाय के लिए जाने न जानते हैं। अर्थात् घोर सामाजिक एकात्म

के संयुक्त मजजावारी पार्टी के, कुछ सगठन कार्य के और कुछ विद्यार्थी परिपद के थे। इनके अलावा भी कुछ युवक थे।

अभी मुजफ्फरपुर से खबर आई है। खबर क्या है राजनीतिक और सामाजिक अन्तर्दृष्टि को पुरानी कहानी है। गिरफ्तार युवकों में तरण शक्ति सेना, माधो शक्ति प्रस्थान के सचिव और धारणा के सम्पादन शामिल हैं। जो लोग शान्ति में विद्वान बनते हैं और उसमें लिए काम करते हैं उन्हें दूसरी भी शिकायत के लिए दृष्टित किया जा रहा है। तरण शान्ति सेना और माधो शक्ति प्रस्थान के कार्यकर्ता कवरों में महीने तो श्वासारियों को समझा रहे थे कि उन्हें जरूरत की चीजें निश्चित शान्ति पर धेचना चाहिए और इन दामों की सामंजस्य घोषणा की जानी थी। होसके के पहले वे शालका के भाग बचाने में तयन हो चुके थे। जितना अधिकाधिक वे उन्हें सत्योय मिल रहा था। लेकिन बाद का कुछ समय परिभाषा पंदा हुई और वे पकट लिए गये। मैं इस मामले की छानबीन करना रहा हूँ। मुजफ्फरपुर के जितना सजिस्टेंट की मैं जानता हूँ और वे एक अग्रणी और योग्य विचारवादी हैं और मुजफ्फरपुर में हमारे काम में उन्होंने बड़ा सहयोग दिया है। इस कारण मुझको भी गिरफ्तारियों को समझ पाना और भी मुश्किल हो गया है।

(युवक धारणा बलाघ का हिस्सा अनुवाद)

विचार रखने वाले इन युवक के इरादे और मुझ गम्भीर बड़ी वे बड़ी अतिपरीक्षा में भी गये उतर सकते हैं। अर्थात् मोरारजी जयल बनने के विचार हाह, कुमार प्रमाण, मनोय शरमा, धरमपत्र भाई और हासक जित धारणा के अनुपूरकों की युवायें शशांगदपर्य ही घोर हो इसके नेत्र उपायों में कार्य कर रहे हैं। प्रमाण ने इन पर जो धारणा रखी है। निश्चित भूरे निश्चित हिये।

प्रमाण इन युवकों का नहीं है। प्रमाण विचार के मुद्रामात्री, विचार प्रमाण और उनके इरादा का है। विशाल साहू पर विदेशी पक्षक के शक्ति में और दूसरे युवकों पर शोषण करने का धारणा लगा कर विचार सख्तार क्या शक्ति करना चाहती है। दूसरे प्रमाणों का धारणा का शक्ति दृष्टि को मने में उनके शायद में जो सखट गया किया है उसे विदेशी पक्षक बनना का बड़ा विचार करने का शक्ति है।

नये विश्व की आशा है—स्त्री शक्ति

(स्त्री शक्ति सम्मेलन के दूसरे दिन ६ मार्च को पवनार में विनोबा द्वारा दिया गया प्रवचन । तब प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी भी उपस्थित थीं।)

इन दिनों अजरार बोलने के पहले मैं कुछ भी चिन्तन नहीं करता। तथा मे जिन के बाद, तथा मे भगवान का दर्शन होने पर जो भूमना है वही बोलना है। परन्तु आज कम बदना है। प्रायः चिन्तन हिन्दू में लिंग लाया है। नम्बर दो, अजरार इन दिनों बोलने की वृत्ति मेरी कम है। परन्तु दलबल कायदा पोदा कायदा समय लू गा। तो अपनी जो दो धारण हैं, उनको उलट करके मेरा आज काम हो रहा है।

यह स्त्री-शक्ति सम्मेलन है। 'स्त्री' को भारत में महिला कहते हैं। इतना उलन शब्द, मुझे दुनिया की जिन बीस-बाईस भाषाओं का ज्ञान है उनमें नहीं है। जहाँ तक मैं जानना पून योरोप की भाषाओं में है, न एशिया के किसी भाषा में है। पहिला यानी 'महान' शक्तिशाली। बहुत बड़ा शब्द है। यह शब्द ही मुभाता है कि 'स्त्री' के बारे में भारत की क्या राय है और क्या धारणा है। नम्बर दो, यह जो 'स्त्री' शब्द है वह 'स्तु' धातु से बना है। 'स्तु' वा अर्थ होगा है किन्नार करना, कंकान। प्रेम की कुल दुनिया में कंकाना—यह स्त्री का कार्य है। तो प्रेम की व्यापकता सिन्धो द्वारा होगी। फिर धारण पड़ा होगा गीता में, सिन्धो की बात शक्तिशाली का वर्णन है। 'स्मृतिमेंचा युनि धामा—स्मृति, मेधा, पुति, धामा इत्यादि मान दिव्य है। ये सात स्त्री शक्तिनाया है। 'सिन्धो' से भगवत गोना की धारणा हम से जाहिर है। हमने भी बड़ी राय है, गीता स्वयं माना है धार। 'अवा' त्वा धनुस शक्ति। प्राचीन काल से गीता का जो ध्यान होता है उनमें गीता की माता कहा है और उनी माता से हम उनकी तरफ देखते हैं। 'मातृसभाम्' मानु इष्टि है। और गीता नाम भी सिन्धो में होता है। यहाँ भी दो चार गीता हैं। किसी

पुरुष को गीता नाम मिलना नहीं, स्त्री की ही मिलना है। और गीता हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा अर्थ शब्द है। वेद से बड़कर उपनिषद और उपनिषद से बड़कर गीता, यह हमारी परम्परा है और इस गीता का अजरार कुल दुनिया पर पड़ा है। दुनिया की कोई भाषा नहीं, कोई धर्म विचार नहीं जिन पर 'गीता' का अजरार नहीं पड़ा है।

इसकी महान शक्ति सिन्धो में मानी गई और उनका सम्मेलन हो रहा है। और हिन्दुस्तान के मुल प्रदेशों में बहूँ महा हम सम्मेलन में प्रामो है प्रथम से लेकर केरल तक की। हिन्दू भी हैं, जैन भी हैं, मुस्लिम भी हैं, ख्रिश्चियन भी हैं, सब धर्मों की बहूँ यहाँ प्रार्थ हुई है। यह सम्मेलन हमारे लिए बहूँ ही शक्तिशाली होगा, एसी मैं उम्मीद करता हूँ। प्रायः लोगों ने सुना होगा कि १९७४ का साल पूरे विश्व में स्त्री वर्ष माना गया है। उनके साथ हम सम्मेलन का महान मेल मिल गया।

ब्रह्मचर्य-सामाजिक मूल्य

इतनी शक्ति होने पर भी स्त्री की तरफ लोग देखने हैं 'कामिनी' के तौर पर। यह नाम साधना का एक विषय है। यह मानु-शक्ति का सबसे ज्यादा अग्रमान है। हिन्दु-स्तान में माता के लिए मनुस्मृति एवं 'गीता' वैश किया है—'उपाध्यायान् वृत्ताचार्यः' जो मनुष्य दुःखदत्र छोड़ा सा देता है, उपनयन करते समय, उसे उपाध्याय कहते हैं, उस उपाध्याय से दस गुना अर्थ है, दस उपाध्याय बराबर एक धारार्थ है। धारार्थ यानी ज्ञान देने वाला। उपाध्यायान् दस धारार्थों का अर्थ है। और ही धारार्थ बराबर एक पिता। धारि धारि साधु धार्या, सहजबुधित्म् माता गोवृत्तरिच्यते। और हजार पितामो

से माता बड़कर है। यह भी नहीं कहा कि हजार पिता बराबर एक माता। बल्कि एक माता हजार पितामो से अर्थ है ऐसा कह दिया। इनका मानुगौरव हिन्दुस्तान में है। लेकिन प्रायः यह विषय बन गयी है—धाम-वामना का। इसीलिए स्त्री शक्ति बढाने के लिए एक, धामवामना प्रेरक जो-जो चीजें हैं उन पर प्रथम प्रहार करना होगा। उन चीजों में पहली चीज है धामना विनेमा और पोस्टर, वे इतने परराय हैं और वे बच्चों को दिनाए जाने हैं, बहूँ भी देखती हैं, पुरुष भी देखते हैं और सर्वत्र विषयवातना का व्यापक प्रचार हो रहा है। हमके विनाक बारा में इन्दौर में धामोचन शुरू किया था, पोस्टरो पर अजरार लगाने का। वहाँ एक महोना बाबा का विवास था। इस आन्दोलन का परिणाम भी कुछ हुआ था। परन्तु सरकार को निरुण करना चाहिए कि प्रचार स्त्री-शक्ति प्रायः खरी करना चाहते हैं तो इस प्रकार के खराब सिनेमा भारत में नहीं चलेंगे।

प्रायः लोगों को शायद मालूम होगा कि हम में खराब सिनेमा होने नहीं। खराब होने हैं इंग्लैंड, अमेरिका बरबर देखो मे। बाराय क्या है? हम के पास बहुत ज्यादा जमीन पडो है, साइबेरिया पूरा का पूरा और मनुष्य कम पड रहे हैं। इस धारणे से लोग सतति को उत्तेजन देते हैं और मानुशक्ति का गौरव करते हैं। प्रायः हम में जिस माता को १०-१२ बच्चे होंगे उसको उत्तम माना है, इस प्रकार गौरव करते हैं, मानपत्र देते हैं। यह कारण है कि वहाँ क्यों खराब सिनेमा नहीं होने। मातृशक्ति का गौरव करना चाहते हैं और सतान की धामपयचना महसूस करते हैं और यही हालत भारत की भी, प्राचीन काल में। प्राचीन काल में भारत के पास

अनीन बहुत धी धीर लोग बहुत कम थे। इस वास्ते उस बचन भी मातृशक्ति की बंधना करते थे अभी धरत हम समय चाहते हैं तो देखिये प्राचीन काल में मूढसाम्यधर्म की प्रतिष्ठा थी। उसका कारण मैंने बता दिया। परन्तु उस बचन भी ब्रह्मचर्य की महिमा यहां थी। इसे धार्मात्मिक मूल्य था। ब्रह्मचर्य का धार्मात्मिक मूल्य आज कायम है और अद्य इसे सामाजिक मूल्य मिला है। कौन सा? आज ज्यादा संतान की ज़रूरत नहीं। इसका धर्म हुआ—ब्रह्मचर्य को आज धार्मात्मिक और सामाजिक मूल्य मिल गया। इस तरह जिस ट्रेन को ठहरा इंजन लग गया वह ट्रेन जितनी बेग से जानी चाहिए? आज धरत कुछ करना होगा तो समय बढ़ाना होगा, ब्रह्मचर्य को उत्तेजन देना पड़ेगा और फिर भी गृहस्थ धाम्यम जारी रहेगा। उसमें भी समय सीपाना होगा। क्या करना होगा?

राम के दो लड़के थे

पद यात्रा में बिहार में तुलसी रामायण गुना रहा था। बिहार में दो-तीन साल पूना प्रामदान के सिलसिले में। मैंने देखा वहां के लोग रामायण के अलावा कुछ भी पढ़ते नहीं। बिहार में जितनी बहनें हैं तुलसी के तुलसी रामायण जगती हैं। तो उस रोज वहां मैं रामायण गुना रहा था, ज्यादा संतान पैदा करना अच्छा नहीं, इस जमाने में यह मुझे उनको समझाना था। मैंने उनको कहा, आपने रामायण कहा है कि नहीं? सामने द्वित्रया और पुरप बंधे थे। बोले "यही तो एक मात्र किताब है जो हम पढ़ते हैं।" तो मैंने कहा, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र थे, उनके दो ही लड़के थे, यह भूलूम है कि नहीं? बोले, हा मैंने कहा मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने अगर दो ही लड़के उत्पन्न किये तो आपकी हमको क्या धमिदार है कि हम दो से ज्यादा लड़के पैदा करें? (समा में बहनें हंस पड़ी) ये सारी बहनें तो विद्वान बहनें हैं इसलिये हंस रही हैं। लेकिन वे बहनें रोते नहीं। समा में उनको धासो में धासू बहने लगे। क्योंकि उन की निष्ठा भी तुलसी रामायण पर। वे बोली, 'हमको आज तक किसी ने ऐसा समझाया नहीं।' तो बाबा का बड़ा उपकार उन्होंने किया कि तुलसीदास की रामायण के रामचन्द्र

का चरित्र हमको समझाया। मुझे इसमें कोई शंका नहीं कि जिनकी धासो में आगू निकले उन्होंने दो से ज्यादा बच्चों की वल्पना नहीं की होगी। हमें समय का वातावरण पैदा करना होगा तभी स्त्री-शक्ति बढ़ेगी। मैंने एक तो नाम लिया—महावीर का, दूसरा तुलसी रामायण का, दोनों की जयंती इस साल है। लेकिन जीसस क्रॉस्ट के प्रथम शिष्य संत धामस भारत में प्राये थे। इसे बहुत लोभ जानते नहीं कि योद्य में क्रिश्चियानिटी बाद में पयी है और हिन्दुस्तान में प्रथम फ्राई है। सबसे प्रथम क्रिश्चियानिटी जो वहां से निकली तो पहले हिन्दुस्तान में मलबार के विनारे फ्राई। सत धामस मलबार के विनारे प्राया और उसने शुरू किया नाम, जीसस की कहानी वहां समझाई। जो नैबोलिव लोग थे उन्होंने ब्रह्मचारिणी बहनें पैदा की और आज भी धाम देवेंगे (इन्दिरा जी तो सब जानती हैं, उनको क्या कहना।) जगह-जगह प्रस्थानात् में केरल की रोमन कैथोलिक द्वित्रया सेवा करने लैयार दीस पड़ेगी। ब्रह्म-चारिणी, जीसस का फास लगाया हुआ, ब्रह्म-चर्य का प्रथम लिया है सन्यास का व्रत लिया है। जगह-जगह जा करके संदेशा सुनाती हैं, जीसस का, और प्रस्थानात् में जाकर सेवा करना। निरन्तर सेवा करना उनका व्रत है। वे सारे भारत भर में ज्ञान का प्रचार करती हैं। कहा जाता है १०० क्रिश्चियनों में रोमन नैबोलिक में ५ द्वित्रया 'नन' यानी सन्यासिनी होती हैं। हिन्दुस्तान में गीता जितनी छपती होगी? बोले, लागती होगी कोई लाख-दो लाख, बहुत हुआ तो चार लाख। वाईबिस की साठ लाख प्रतिया इस साल भारत में बिकी। इतना व्यापक प्रचार किसी धर्म का जगह-जगह जाकर वै लोग करते हैं। मुझे बड़ा धानन्द होता है। धर्म प्रचार के साध-साध धारणता में जाकर सेवा भी करती हैं। तो हमें महावीर और जीसस क्रॉस्ट के मुखा-बिक द्वित्रयो को स्वतंत्र शक्तिशाली बनाना होगा।

तापस्य यह है कि स्त्री-शक्ति बढ़ाने के लिए हमें जो करना है उसमें पहली चीज करना बतानी संयम का वातावरण लैयार करना चाहिए। उसके लिये ये रही सिनेमा विस्तुल बंध होने चाहिए। उसके लिए धाम धरत

वगैरह कर सकती हैं, पार्लियामेंट के सामने भी कर सकती हैं और इन्दिरा जी के पर के सामने भी कर सकती हैं। (हंस)

शराव : स्त्री और

घर की दुश्मन

स्त्री-शक्ति के लिए और क्या करना होगा? दूसरी बात, धर्म में बता रहा हू। यह दूसरी बात मैंने दो महीने पहले हमारी बहिन (इन्दिरा जी) से कही थी। शराव पीने वाले पतिदेव घर धाकर पत्नियों को डोकते-पीटते हैं। इससे गरीबी तो हटती नहीं, उल्हा जो पैसा मिला है वह शराव में जाता है। धाम लोगों को महसूस होगा, इन्दिरा जी भी जानती होगी कि भारत में बहनों की एक पदयात्रा चल रही है। वह पदयात्रा जगह-जगह जाती है। छः सो मील वह घूम चुकी है। छः प्रान्त हो चुके हैं। अब तमिलनाडु पहुंचती है। उसमें एक बहान है सिध प्रान्त की, एक पाकिस्तान की और एक है अरम की। ऐसी तीन लड़कियां हैं। वे जगह-जगह बहनों को स्वतंत्र सभा करती हैं तो बहनें उनमें सामने यही सिफायत करती हैं कि हमारे पति हमें पति के पीठों में क्या करें? तो बहनें प्रसन्न हैं, शराव पीकर घर घाते हैं और भान रहता बेचारी को? और वह शराव हमनें सब दूर खोल दी है, भारत भर में। परिणाम क्या पेशा। पैसा यानी क्या? उसके लिए क्या क्या किया जाता है। एक जो शराव का पैसा दूसरी बान, एक ही छापाखाना नासिक में। उसमें पैसा छपता है। ठप एक रुपया। ठप सो रुपये। इसको मैं इन्द्रजाल कहता हू। एक रुपये का नोट खरीदने में हमें एक किन्ही प्रनाज बेचना पड़ेगा। सो रुपये का नोट खरीदने में सो किन्ही प्रनाज बेचना पड़ेगा। परन्तु उनको एक ही ठप में सो पया। एक घर दो मू-य दिने बह हो गया। एक ही ठप में एक रुपया और एक ही ठप में दो रुपया इसका नाम है इन्द्रजाल। उस पैसे को क्या घाटने हो? क्या काम देगा वह पैसा? वह नामिक प्रेसवला पैसा क्या धांपको बचायेगा? गुजराने में अभी बहुत ज्यादा धाटोउन पला। धाम लोगों में मुना होगा, पया होगा। पर (शेष पृष्ठ १३ पर)

अधिक प्रिय क्या है, योजना या स्वतन्त्रता ?

एक बात बहुत स्पष्ट होकर सामने आ गई है कि इन पच्चीस वर्षों में योजनाओं के बाद हम एक चौराहे पर आ पहुँचे हैं। एक पुरानी क्या याद आ रही है। एक राजा ने जो विस्तृत निर्वहण या भ्रमण प्रतियों से अपनी योजना के बारे में राय मांगी थी। भय के कारण किसी भी मंत्री को सत्य बात कहना बर्जित हो रहा था। आज भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति बन पड़ी है। योजना प्रतियाँ की उपलब्धियों पर बहुत शाय मुन्ते की कोई भी तैयार नहीं है।

वास्तविकता यह है कि योजना और स्वतन्त्रता में विरोधाभास है। हमारे सारे प्रयास इन दोनों विरोधी गतिविधियों में सामंजस्य लाने के हैं। मैं तो बहूना कि यह समय है जबकि हमें गहराई से विचार कर के निर्णय लेना चाहिए कि हमें अधिक प्रिय क्या है—योजना अथवा स्वतन्त्रता? हम लगातार इन दोनों प्राचीन सचिन विधि को खर्च करने जा रहे हैं। यह विधि सरकार के ऊपर जनता के विश्वास की है। यह विधि इन देश के लोगों की सत्ता शक्ति है। यह विधि किसानों की अटिनाईनीं में मुक्त कर लेने की शक्ति की है। विद्युत् पच्चीस वर्षों में हमने यह प्रभुत्व विधि करीब-करीब जारी रख कर रखी है। यदि इन विशाल विधि के बचे हुए अंश को रखा करना हमें उचित लगना हो तो पात्र को स्वतन्त्रता एक प्रगमशीलता मान्य बनकर रह गई है और जिसमें एक साधारण किसान को बेतन मृत्यु की स्वतन्त्रता रह गई है उममें भीषण हम में परिवर्तन करना होगा। या फिर हम मुझे नम में धर रहें कि स्वतन्त्रता का आचरण पात्र कर केने और एक सामान्य शासन धर होगा।

यद्यपि यदि हम स्वतन्त्रता सेनायक की तरह हैं तो हमें जनसाधारण पर विश्वास करना पड़ेगा।

योजना की दिन्नी में जिनों के केन्द्र तक प्रभुत्व मात्र में जीव बर्ण लगे हैं। क्योंकि प्रत्येक पक्षशील योजना में पानी बार हम

जिला स्तर पर योजना समितियों के गठन की बात सोचने लगे हैं। जिलों में गावों तक पहुँचने में इस गति से धीरे भी बस बर्ण लग सकते हैं। क्या हमारे पास इतना समय है? यदि हमें स्वतन्त्रता प्रिय है और हम एतन्त्रात्मक शासन नहीं लाना चाहते तो हमें दिल्ली में बैठे हुए सबसे बौद्धिक योजना शास्त्री के सामक्या प्रामोणों को भी लाकर बैठाना पड़ेगा। इस देश की प्रत्येक गावों में ही बसती है। विद्युत् पच्चीस वर्षों में एक बड़े ही चिन्ताजनक ढंग से प्रामोण सत्ताओं का विषयन हो रहा है। और इस स्थिति के लिए मुख्य रूप से प्रायः पचास कानून उत्तरदायी है। इन कानून में एक ऐसी परिस्थिति



रामबाहदुर सिंह

पैदा कर दी है जिनें चार वर्ष के बच्चे को जान बूझकर एक ऐसी चार बाता पात्र पकड़ाया गया है। परिणामतः हमारे गांव इन कानून से टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं। हर गांव के अंदर में धर्मयतन पात्र हो गये हैं। विडम्बना तो यह है कि हमारे सामक्य और योजना शास्त्री इन्हीं बर्णों की इंगित बर्णों करतें हैं कि प्रामोण धर्मो उत्तरदायित्व उठाने के सामक्य नहीं बन पाये हैं। यह बात कीज दूँगा है कि साध करने वाला पात्र (प्रायः

पचास कानून) जिसके विभाग को देन है ?

पर यदि आज भी हम प्रामोणों पर विश्वास कर सकें, प्रामोणों को योजना शास्त्रियों के समक्या आदर देने की नटुता को खीकार कर सकें तो परिस्थिति बदल सकती है। हमें प्रामोण वर्ग का पूरा सहयोग प्राप्त योजना हेतु मिल सकता है। इतना ही नहीं प्रथम योजना की सबसे बड़ी बर्णिनाई यानी कि धन की बर्णी में भी एक बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त लाव गावों से मुद्यमदा और सहजता से मिलेगा। एक गाव यदि केवल पन्द्रह सौ रुपये मात्र ही प्रामोण योजना के लिए व्यय करेगा तो मुल धनराशि जो राष्ट्रीय को उपलब्ध होगी, ७५ करोड़ होगी।

पर वास्तविकता तो यह है कि हम देश में अर्थ को द्वारा स्थापित शासकीय तंत्र केवल यहाँ से लगान बमूल बर्के विलायत भेजने हेतु बना था। हमने स्वतन्त्रता के बाद जनताधिक पद्धति में योजना बनाने के प्रयास किये और इन भूल के साथ ही लगान बमूल करने बने तंत्र से योजनाओं की क्रियान्वयन की भी प्रशंसा करती। यह तंत्र अब भी लगान बमूली कानून और व्यवस्था बनाये रखने की विभाग में अधिक महत्व देता जा रहा है। प्रामोण धर्मो में शासक बनकर रह रहे हैं सेवक नहीं। आज भी प्रामोण लोग पत्रकारियों और विभाग शास्त्रियों से बराबर भयभीत रहते हैं। प्रामोणों को दण्ड भय से मुक्त करने पर ही उनका महत्त्व सहयोग योजनाओं के क्रियान्वयन में पिन महत्ता है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम की विचार धारा के पीछे की रोशनी इन देश में अमेरिका से लाकर की गई थी। अन्तर-नेशनल इतना ही था कि अमेरिका में प्रामोण समुदाय इन प्रकार के कार्यक्रमों को स्वयं संचालित करने से, नीति निर्धारण क्रियान्वयन बर्के में, पर यहाँ प्रामोण समुदाय के द्वारा में कोई उत्तरदायित्व नहीं है। हमें निर्णय कर लेना चाहिए कि हम योजना एक स्वतन्त्र देश के लिए बना रहे हैं या कि एक सामान्य देश के लिए।

ऊंट की सवारी में दचके लगंगे ही

रथानी ब्राह्मणानन्द

(१४ मार्च को मोहरसभा में दिये गये भाषण से)

मैं देण रहा हूँ कि विधान ही हमारा देण है। क्योंकि धारमी अंगर उट पर बँडेगा तो दिखेगा। अंगर धारमी गवाही हंगे तो सही दिखेगा। हमारा विधान जिक-कुल काम करने साधक है। धात्र बग बिनी मरीच को म्याय विधान है ? यह मुझीम बोटें लाग कर देती चाहिए, हार्द बोटें लाग कर देती चाहिए। फोना बग चाहिए ? गांधी जी के सपना का पचायन राउर। गांधी पचायन फोनी चाहिए। जिला परिषदें, जिला की धरासभो का काम करें। विधान मया के योग हार्द बोटें का काम करें और ये पाय पीने वाले पानियामेंट के मेम्बर मुझीम बोटें का काम करें यह सचो मारा लाग हो जायेगा। यह धार्य की निरूपणकी हमारे ऊपर सही हुई है। और ये बचीम जो इनने ज्यादा हैं देण में वह क्या करने हैं ? उत्तर प्रदेश के एक जिले में बार साह की धारमी है और साइं ए. तो बचीम हैं। धर कहिए क्या होगा ? साइं बार तो गौब नहीं है। ये बचीम जब तक लाग नहीं होंगे तब तक काम नहीं होगा। १० प्रतिमान मामले गांधी पचायन को दीजिए। कुछ जिला परिषद को दीजिए और साइं को सारी पुनिस जो है अनाक प्रमुप के धपीन हो, जिला परिषद के धपीन जिला पुनिस हो और मुख्य मंत्रियों के धपीन तो धर भी पुनिस रहनी है। लेकिन मुख्यमंत्री बग है ? धात्र-कल हमारे मन्त्री बग क्या है। बिनकुल मोहर लगाने हैं और पूरा का पूरा अधिधारीयों का राउय है। एक दरोगा एक एम. पी. से ज्यादा है विधान रचना है। किसी जमाने में रिपोटें होनी थी तो मुझिया के दलगत होने थे। धात्र जो चाहे चला जाये, किसी का भी नाम निना दे, दरोगा पट्टू-ब जायेगा कि धात्र के गिलाफ यह काम है। विधान नहीं बदला जाता है तो क्या होगा ?

गिशा से लिए हर एक नेता कोन देता है कि गिशा का परिवर्तन करना है। कितने बरदा है ? कौन करने चाहेगा ? क्या खुदा करने चाहेगा ? क्यों नहीं करते हो ? गिशा

के अन्दर बचल पार्दो नहीं होनी चाहिए। बटों उद्योग भी गियाया जाता चाहिए। पुनिस के अन्दर भी एक फटा काम होना चाहिए। पानियामेंट के मेम्बर और विधान मया के मेम्बरों को एक फटा रूप का काम करना चाहिए। तब उद्योग बोगा धीर काम पड़ेगा। धात्र विधान तो हमारा मध्यम है। हम अष्टाध्यायी की बात कहते हैं। बडे-बडे सेकनर इनने ऊपर दिए जाते हैं। पत्रवाहर मास में कहा था कि अष्टाध्यायी करने वाले को पानी पर बड़ा दी। १० जवाहर मास में कुछ धारमियों के ऊपर मुचधम चलाने के धारमी मर गये। हमारे पक्षित जी भी मर गये, मुचधम सेने वाले बचीम गये लेकिन वह मुचधम धारमी भी बडे हुए हैं। यह धरासभें हैं ? इनको नाम करना पड़ेगा। मैंने कहा था कि बनेमान में एक बेईमान ध्यायारी एक बेईमान अधिधारी और एक बेईमान मिनिस्टर को पानी दी जाये पानियामेंट के सामने तो अष्टाध्यायी लाग हो जायेगा। लेकिन बचीम हमने किसी अष्ट मिनिस्टर पर मानना नहीं पचाया। हमने उत्तर प्रदेश में कितना बड़ा विवे अष्टाध्यायी मिनिस्टर हैं। पर एक हमारी नहीं बली। उन्हीने अष्टाध्यायी का बर्माई के बल पर चुनाय लडे काविस के विनायक। बानो तो समाजवाद नहीं चायेगा।

मैं अंधमानस का आता नहीं हूँ। दर्शन जानता हूँ। धारमवल तब भूयेय साारे प्राणियों माने समान हैं, साारे प्राणियों को माना चाहिए, साारे प्राणियों को बपडे चाहिए साारे प्राणियों को बर्माई चाहिए, साारे प्राणियों को म्याय चाहिए। यह भावना होनी चाहिए कि धारमवल धीर मानुषन पन्डरयेय हमने शराब बन्द करने के लिए धरने दिये हैं धीर धारा हमारे बडे-बडे नेता शराब पीते हैं। उनके ऊपर क्या प्रतिबन्ध है ? अंगर बाटूनी प्रतिबन्ध नहीं लगा सकते तो पार्टी में निर्गल देना चाहिए। काविस के अन्दर पार्दो पर स्टलमन लिए जाते हैं कि मैं शराब नहीं पीरगा। धीर यहाँ कई माविसियों के

मुँह में दुर्गंध धानी है। वे शराब पीने हैं। गाँवनीका क्या होगा ? मिडान्त के धनुषार नहीं पचने हैं हम लोग। यह सारा गवाँ अंगर हम बन्द कर दें, गांधी जी की नीतियों पर चर्च तो गारी ममया हूँ हो गवती है। तीन ही नीतियाँ हैं। एक तो है रमिया की नीति, दूसरी है धमेरिका की नीति और तीसरी है गांधी जी की नीति, गांधी जी का समाजवाद। लेकिन हम बटों के नहीं हैं। न रमिया के न धमेरिका के और न गांधी जी के। है क्या हम ? किन्तु बुझियों के चक्कर में हैं।

राउर सभा यमीमगाना है, धात्र की विधान परिषद यमीमगाना है। किसी समय में बनाने वाले ने विधान इर्गनिए बनाया होगा कि कोई बुद्धिमान धारमी या किसी जमान का धारमी रहे गया हो तो उसे राज्य मया का विधान परिषद में से विधा जाये। लेकिन धात्र में यमीमगाना बने हुए हैं। लोक सभा में हाहा तो राज्य मया में से निदा। चाहे वह किसी भी पार्टी का धारमी हो धात्र परधान है कि बँडे बटों धात्र बँडे। रात दिन चक्कर बाटता है। दुर्गो का चक्कर है। इदरिओ को धात्र पाम मकनी तो लहू दौड़ रहे हैं कि उनको से विधा जाये धीर अडल बिहारी जी के भी से धात्रमी माने हैं, उनके यहाँ भी पचास चक्कर लग रहे होंगे कि साहब मुझे भेज दीजिए, मुझे भेज दीजिए। प्रसव में होना यह चाहिए था कि धारमी को मनयाय जाता कि धात्र मिनिट्टी में धात्र कर काम कीजिए धीर वह कहता कि मैं नहीं कर सकता। उसके बजाय धात्र बुझियों के लिए लोग दौड़ रहे हैं। काम कोई नहीं करता। दिहा हो रही है, जगह-जगह उडान हो रहे हैं। क्या जिम्मेदारी है गृह मन्त्रालय की ? हिन्दू मुगलमान के दगे होते हैं, गरीबों के मकान फूँके जाते हैं, गृह मन्त्री क्यों इस्तीफा नहीं देते हैं ? क्या उन्हीने उस जगह की रजिस्ट्री करा ली है ? उस जगह किसी की बनी गि नहीं है। देण का काम जो उसे सोचा गया है, नहीं कर सके तो उसको अलग हो जाना चाहिए। हमारी पार्टी में ३९० धारम हैं। उनमें से काबिल से काबिल मोहरवान बँडे हुए हैं, उनको मोहरा दें, लेकिन वह नहीं देते हैं नवोक्ति बर्मा का कर है।

(गैप पृष्ठ १४ पर)

साधन और साध्य, गुजरात विहार और उत्तरप्रदेश के सन्दर्भ में

—सरला देवी

गांधी जी बहा करते थे कि कायरता से तो हिंसा ठीक है—लेकिन हिंसा से कोई स्थायी स्थिति बनती नहीं—स्थायित्व सत्य और अहिंसा से ही बन सकता है। उनमें यह नैतिक हिंस्रत थी कि एक बहुत सफल आन्दोलन के बीच जब दूर चोरा-चोरी में जनता की तरफ से हिंसा फूट पड़ी तो अपने साधियों के विरोध के बावजूद उन्होंने आन्दोलन वापस लिया। क्योंकि उन्हें पक्का विश्वास था कि साधन से अनुसार ही साध्य मिलेगा—हिंसक साधनों से हिंसा ही पैदा होती है—शान्ति और स्थायित्व की स्थापना अहिंसा से ही हो सकती है।

पश्चिमी बर्ष से जनता बढ़ते हुए अण्डा-भार, जमाखोरी और महगार्द की छूब जवानों की शितायत बरती रही, लेकिन उसने उसके विरुद्ध कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया। यह कुछ कायरता की वजह से, कुछ आत्मस्य और अकर्मण्यता की आदत की वजह से हुआ। आखिर, स्वराज्य तो इने-गिने लोगों के पराक्रम से ही मिला था। सारी जनता उसमें सक्रिय थोड़ी रही।

इसलिए, एक दृष्टि से गुजरात में जो हुआ, धाजकत जो विहार में हो रहा है, और जो भायद उत्तर प्रदेश में होने जा रहा है, उसका स्वागत हम कर सकते हैं कि जनता अपनी अकर्मण्यता छोड़ कर सक्रिय हो रही है। लेकिन हम यह उम्मीद नहीं कर सकते हैं कि ऐसे आत्मिक आन्दोलन गांधी जी या विनोबा के समर्थन के योग्य हैं। कुछ क्षेत्रों में खुशियां मनाई जा रही हैं कि १९४२ के आन्दोलन का जोश फिर पैदा हो रहा है।

इसलिए उचित होगा कि हम एक बार उस वें कि १९४२ के आन्दोलन की जड़ में क्या था और उसका नतीजा क्या हुआ ?

६ अगस्त १९४२ की सुबह जब गांधी जी गिरफ्तार हुए तो उन्होंने 'करो और मरो' कहा, 'करो और मारो' नहीं कहा। याने जनता मतलब था कि अहिंसक प्रतिहार करने लाठी और गोली का सामना प्रेम से करने को तैयार हो। उनके निश्च साधियों

को भागाघात महल तथा अहमद नगर में बन्द करके, सरकार ने देश को उनके नेतृत्व से वंचित किया। देश यह बात सहन नहीं कर सका और इसलिए प्रतिहार हुआ—लेकिन उस प्रतिहार को सही मार्गदर्शन देने वाला कोई न रहा—इसलिए चारों ओर हिंसा फूट पड़ी। दुष्ट प्रवृत्त करने के अलावा गांधी जी के सामने और कोई मार्ग न रहा। अतः उन्हें २१ दिनों का उपवास करना पड़ा। इसमें हम समझ सकते हैं कि १९४२ में गांधी जी ने हिंसक आन्दोलन का समर्थन नहीं किया था।

आगे जाकर, स्वराज्य लेने के लिए एक और बहुत बड़ी गलती हुई जिसको गांधी जी का समर्थन नहीं था और जो हमारे वर्तमान दुखों का एक बहुत बड़ा कारण बना है। अपनी अहिंसक सगर्द में हमने भारत के सब दलों को जोड़ने का प्रयत्न किया लेकिन जल्दी में स्वराज्य पाने के लिए हमने एक सखिष्ठ देश पाकिस्तान और भारत के स्वीकार करने भारत को टुकड़े करके स्थायी मजबूत का बीज बोया। इससे फौरन बंसी भयकर हिंसा फूटी और वह हिंसा अभी तक बीच-बीच में फूटती है। बगला देश में फूटी, साम्प्रदायिक दंगों में फूटती, भाषा के अभाजों में, सीमाओं के अभाजों में कई रूपों में फूटती रही और हम उसके धाड़ी बने हुए हैं। इस लिए किसी भी आन्दोलन के फूलने पर, अने उसके प्रवर्तक अहिंसक आन्दोलन करना चाहे, लेकिन वह जल्दी में अशास्त्रीय तत्वों के प्रभाव में इसलिए धारा है, क्योंकि हमने अहिंसा के सिद्धान्त को गहराई से नहीं समझा और जनता में हिंसा को देखने की आदत बढ रही है। यह इस कारण भी हुआ कि गांधी जी के बाद देश को सक्रिय अहिंसक नेतृत्व नहीं मिला।

हिंसा से जो प्रतिहिंसा पैदा होती है वह और ज्यादा भयकर है। देखते ही गोली मारो' उमकी प्रथम प्रक्रिया है। लेकिन जब देश में 'शान्ति' को कायम रखने के लिए हमें अत्याचार पीज का सहारा लेना पड़ना है—

तो इसका आखिरी नतीजा क्या होगा ? अराजकता या फौजी तानाशाही। 'देखते ही गोली मारो' का अर्थ यह है कि भले ही हम बहने कि यह हिंसक आन्दोलन प्रजातन्त्र के सारथक के लिए उर रहा है, लेकिन वह अपने में प्रजातांत्रिक नहीं है। और वह हमारे देश में प्रजातन्त्र की सत्य करने वाला है। प्रजातन्त्र का तरीका मेज पर बैठकर अपनी समस्याओं का हल करना है, न कि एक तरफ आगजनी और दूसरी तरफ गोली से।

इन दुर्घटनाओं में हम सब लोगों ने मिलकर गांधी जी के काम को दफनाने का भरसक प्रयत्न किया और अब भी हिंसक तरीकों के समर्थन में उनका नाम लेते रहते हैं। अब यह बहुत आवश्यक है कि सब लोग, जो गांधी का नाम लेते हैं, चाहे सरकार में हो, चाहे सार्वजनिक क्षेत्र में हो, चाहे साधारण नागरिक हो, अचछे तरह समझें कि गांधी जी की थड़ा सत्य, अहिंसा, रचनात्मक कामों में जो शक्ति सत्य मिलकर उन चुराइयों को जड़ से निवारने में जुट जायें। इन संघ चुराइयों की जड़ व्यक्तिगत स्वार्थ है इससे भारत और उसकी संस्कृति का ह्रास हो रहा है। यदि इस सबेते से हम मिलकर, चेतकर, गांधी जी के मार्ग पर लौटने में अग्रफल रहे तो निश्चिन्त तौर पर भारत से प्रजातन्त्र सत्य हो जायेगा और हमसे सारी दुनिया में प्रजातन्त्र को एक बहुत बड़ा सबका लगेगा। हिंसक कार्यवाहियों से न प्रजातन्त्र का सरक्षण हो सकता है, न गांधी जी का समर्थन ही उन्हे मिल सकता है।

(पृष्ठ ६ का अन्त)

विहार के साधियों को काम का व्यापक दृष्टिकोण मिले, इस दृष्टि से विहार के साधियों को व्यापक रूप से फैलने को कहा है विनोबा ने। यह ठीक है।

महुरगा से मुझे ग्रामस्वराज्य की 'स्टूटजी' सोचने को मिला। यह सहता की गारे आन्दोलन को देन है। मैं ध्याना ही इन तन्हाय में था। इस अशुभ पर से मैं घाना के अपने काम में कुछ परिवर्तन करूँगा। ●

एक हजार पूरे हुए

मार्च १६ तक उपवासदान

प्रदेश	संख्या	रकम	विशेष विवरण
प्रसन्न	११	२७५-००	
माझ	२२	५४६-००	
उत्तर	२१	२५६-००	
उत्तर प्रदेश	२५०	६३५१-००	
केरल	२	७५-००	उपवासदान प्रगति
कर्नाटक	२६	६६०-५०	१ नवम्बर १२०
गुजरात	६०	२५७३-००	२ दिसम्बर ११७
तमिलनाडु	३६	५६७-००	३ जनवरी ३५३
पंजाब	३१	६५६-००	४ फरवरी २८७
पं० बंगाल	७१	२५००-००	५ मार्च २६६
बिहार	५४	१२३१-००	योग ११६३
मध्यप्रदेश	१०५	२६७०-००	
महाराष्ट्र	३२५	७२५६-५०	
राजस्थान	५२	१००१-००	
हरियाणा	५०	१४००-००	
हिमाचल	१	२५-००	
रिम्पि	१६	५११-००	
नागार्जुन	४		
महिला लोकायुक्ती	३	१०-००	
विदेश	२	१७२-००	
योग	११६३	२८,८१०-००	

द्वाराकनाथ विष्णु सेवे, नामदेवराव गुलहाणे वानाजी सानपुने, मकरराव महाशयकर, मारोती भुटे, बालकृष्ण मुजरेवे, भिवल महाकानकर, रामोदर महावालकर, प्रभादास महावालकर, भानेश्वर सानपुने, गजानन्द पेटकर, तुमसीराम सेवे, भाऊराव मुजरेवे, गणपत पाटील, नरहरि सानपुने, रणजीत भाई, हेमभाई, बाबुलाल जी, मुरलीधरजी, विठ्ठल भाई, विवेकानन्द, ध्यानन्द भाई, निरंजनि, निम्माणाजी, रामभाऊ, गुवा-भाऊ नागोजी चौधरी, धीमती गेवन्नी ताई चौधरी, धीमती मदानसा नारायण, डा० बी० के० धलन्दीर, भीधर राजजी महाजन, माधव नारायण मजूमदार, रामदहिल शर्मा, रामचन्द्र महादेव शर्मा, प्रह्लाद भाऊ रावजी धानसेवे, जयन गमाडे, दिनकर वामनराव कावलकर, उदयभान दमडू हर्ने, रामगोपाल दवल, वेपराव पादुरंगजी मानकर, विठ्ठल नारायण नेमाडे, भाऊराव राउत, कृष्णराव सोमाजी गिरी, मणिशरदाव रामजी मोलकर, र० बी० इभारे, श्यामल पंचुजी गिरी, निम्बाजी रोड्या राउत, धीमती सीता रामजी शर्मा, धीमती विन्तु पाटील, टाकुर प्रयाद, भाना रघुनाथ, मुकुन्द देवार्ड, मुखा सन सोयने, बाबाराव प्रभादाम सिडे, गोविन्दराव सन रायपुटे, विठोबा सोयनी, दत्तात्रेय शायर, विद्यादास तुकाराजी, तुकाराम गवाराम पाटील, हरिचन्द्र मुखा बरकडे, श्वरक दाजीबा देवनले, माधोराव मंनोरथाव, बकाशाम दयड मडावी, नरहरि रघुनाथ प्रभाकर, स्वाभी जगजानन्द ब्रह्मचारी, धीमती ताराबाई तुकाराम, धीमती शान्तादेवी दर-बारी, धीमती चन्द्रभागा शुकडे, धीमती तुतना बाई बापूराव, धीमती मधुदाबाई भागडे, धीमती ताताबाई मंगेशकर, धीमती शैलजा दीनन ठाकरे, नन्कु धारजी मुजब, बनारजी चौधरी, धीमती मानन बाई, धीमती राही बाई, धीमती लक्ष्मी सागडे, शान्ताबाई रामभाऊ बाप, धीमती भीमाबाई राधो, धीमती मनाबाई उषामराव पोद्दार, धीमती मधुसुदा श्यामराव, धीमती गोसावरी दापोदर, धीमती चन्द्रभागा नगोरारव, धीमती जनाबाई भीमाराव, धीमती तानी भुरारी, धीमती दुर्गा देवड, धीमती भुजा-

गुजरात

राजकोट - बिजोर डा० सोहिल ।
बनारस : सोमभाई शहा पटेल, इन्द्रसिंह रावत । धोरनकर । तनिना केन श्यामी, विद्यानन्द शाल जी श्यामी, प्रदुषाभाब : पद्मभाई द्रोडा भाई, वैकुण्ठराव नानाजी, कृष्णदास भाई माणी, जेजानाथ बाजी । सेबा : पुनाभाई भूपत भाई ।

झारखण्ड

गोहाटी : मण्जान सन्धा, योगलाल ।
 मजीपुर : जितल बरधा, हरि पर दत्ता, विष्णु दत्ता । सिवसागर, तरुण चन्द्र बरधा ।
 मरीपारी : एन० सी० वेणुगोपाल ।

तमिलनाडु

चानोशामरुदुरी : धार० एम० बुमार
 मन्नी । तन्नाकर : एम० मारिणकरम ।
 मारुई : धार० धार० मेगान ।

कर्नाटक

कोजापुर सगया बनया सिदेरुडी ।
 बेलगाँव : साशिविराव भोगले, नीलकण्ठ गो० गंगाधारी, फहीरानन्द उम्रन धीर पाटील, गंगाधर मूरिगया, महाविजया बसेठेया ।
 मंगूर ने० पद्मभिरामन ।
कर्नाटक जो०
 बी० नारायण मूनि । बनारस : ए० म० कुपडे ।
महाराष्ट्र : रायणा मारपूड, कण्ठ-राणा हेवीरुडी ।
 कोतार : एन० एन० नागया ।
 बनगूर : एम० धीनिशामसोय ।
 दुर्ग : एन० डी० कृष्णा ।

केरल

कोचीन : ने० पी० माधवन ।

महाराष्ट्र

बम्बई : गोविन्द बा० जिन्डे, कचन मण्जनाथ पटेल, धीमती जयश्री रायजी ।
 बर्मा :

सर्व सेवा संघ का व्यापक स्वरूप

द्विप्रसाद स्वामी

गांधी जी के बाद विभिन्न रचनात्मक कार्य में लगी सत्साम्राज्यीय सेवकों ने सर्व सेवा संघ के रूप में अपने प्रायः संगठित कर विनोबा जी के मार्ग दर्शन में काम करना शुरू किया तथा दिवस २५ वर्षों से लगातार गांधी-गायक में प्रामुख्यता एवं देश में सर्वोच्च समाज रचना के स्वर्ण युग के आरंभ करने में लगे रहे। फलस्वरूप आज देश व दुनिया के सामने सर्वोच्च समाज रचना व व्यवस्था का समग्र विचार ही प्रकट नहीं हुआ बल्कि देश के अनेक क्षेत्रों, नगरों व गांवों में प्रामुख्यता नगर स्वराज्य, शान्ति सेना एवं दृष्टीशक्ति के व्यावहारिक प्रयोग जारी हैं। आज्ञादी के बाद कांठ संसद से जो अपेक्षा गांधी जी ने गांधी गांधी जाकर लोकशिक्षण व संगठन की रखी थी, उस अपेक्षा की पूर्ण काफी हद तक सर्व सेवा संघ ने ही इस लिए कुछ समय पूर्व वर्षों में प्रायोगिक राष्ट्रीय परिषद ने इसे लोकसेवक संघ की सजा दी और विनोबा ने भी जाहिर किया कि सर्व सेवा संघ

लोकसेवक संघ कहलाने योग्य हो गया। क्योंकि अब तब देश भर में व्यापक लोक-शिक्षण कार्य किया है और अब प्रामुख्यता एवं मोहल्ला समाज के रूप में लोक संगठन करना है जिसे परिषद ने भी मान्य किया है। व्यापक लोकसंगठन के लिए यह प्रावधान है कि सर्व-प्रथम सर्व सेवा संघ व्यापक रूप से संगठित हो। इस में कोई शक नहीं कि देश भर में लाखों लोग गांधी विनोबा के विचारों से प्रेरित रचनात्मक कार्य में लगे हैं जिन्हें विनोबा एक से अधिक बार सेवक व सैनिक भांषित कर चुके हैं। अब समय आया है कि हम सब रचनात्मक सेवकगणों को लोकसेवक व शान्ति सैनिक के रूप में संगठित हो कर सर्व सेवा संघ को सक्षम करना चाहिए ताकि गांधी के पांच लाख सेवक व सैनिक की पल्लवा साकार हो सके तथा सर्व सेवा संघ की नीचे से बुनियाद मजबूत हो सके। इसके बाद ही लोकसेवक व शान्ति सैनिक को अपने प्रयासों के सज्जन, सहयोगियों को सर्वोच्च

मित्र के रूप में संगठित करना चाहिए। इस प्रकार सर्व सेवा संघ को सर्व प्रथम सेवक व सज्जन शक्ति को संगठित कर अपने व्यापक स्वरूप को विकसित करना चाहिए तभी वह व्यापक लोक संगठन कर लोकशक्ति प्रकट कर सकेगा।

सर्व सेवा संघ के हर लोकसेवक व सैनिक को सत्सत्ता हर वर्ष जनवरी से प्रारम्भ होती है। १२ फरवरी तक शान्ति पर्व चलता। इस दौरान जो लोकसेवक व शान्ति सैनिक बने हैं या बन चुके हैं उन्हें चाहिए कि वे अपनी-अपनी सत्सत्ता व क्षेत्र के सभी साधियों को लोकसेवक व सैनिक के रूप में अपने साथ संगठित करें तथा हर लोकसेवक व सैनिक अपने सहयोगी सज्जनों को सर्वोच्च मित्र के रूप में अपने साथ लें। इस प्रकार देश भर में सर्व सेवा संघ को चाहिए कि वह अपनी व्यापक शक्ति को संगठित करने का प्रारम्भ प्रेरित तक एक देश व्यापी अभियान चलाये ताकि इस बार के सर्वोच्च सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ के व्यापक स्वरूप का दर्शन हो सके और आगामी वर्ष के लिए देश व्यापक लोकसंगठन का व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया जा सके।

बाई लोलेडे, श्रीमती भिवरा बाई कास्टे, श्रीमती मुलाबाई क्लोराम दोमणे, श्रीमती यणोदा ऋषि धवाते, श्रीमती क्लमाबाई कोरेवार, श्रीमती शेवताबाई चौधरी, श्रीमती शेवताबाई सावदेकर, श्रीमती शांताबाई बुवा, श्रीमती सरस्वती चिडमोड, श्रीमती सारजाबाई सरसे, साजू महाशिव परमभोरे, श्रीमती सीताबाई धार्वाराम पाटील, श्रीमती सुगयाबाई वाय, श्रीमती सोनाबाई पातुरकर, श्रीमती सोनाबाई पूजाराय, श्रीमती मोना मनोहर दत्तरी, श्रीमती मुधा महादेव भोम, श्रीमती पार्वती बाई महादेव राव, गोपालराव वालु जकर, नारायण रामचंद्र सोवानी, वसंत चौबटकर। बंबोरा : प्रभाकर विनायक बापट, शंकर गोपालराव डभरे, नामदेव भिन्न रघुपुटे। ठाणे : बा० गो० गायकवाड़ भि० सी० लोटलीकर, के० जी० पाटील, झ० वि० इंगले, म० र० पाटील, व० खु० धन्वरे, दि० ल० अन्वरे, श्रीमती झा० श० वाडेकर।

प्रकोला एम० वी० मराठे। परभणी वी० अर० दाणे, विश्वराव माधवराव करजे, मुन्दराव बाबासाहेब चौधरी, नागो-गाय नागोराव, व० प० भामुदे, शंकरराव नागोराव खलीकर, श्रीमती शान्ताबाई, पापालालजी काकानी, गुरुद्विज महादेव धणालाल। चन्द्रपुर जाणोबा वी० भांडुज हूनवते। चबतमान . गणपत नारायण राव बोडे, उत्तमराव पुजाराजी भोजने, शंकर सजतकर, श्रीमती सुमनताई म० खलकर। प्रसारवाते : एकनाथ हिरुडकर।

बिहार

मुंगेर : गणेशप्रसाद सिंह, हनुमान प्रसाद सेतल। पटना : जानकी नायक, देवानन्द मिश्र, मधुसूदन बण्ण, प्रमोद कुमार, बपिनन्द कुमार, रामनगीला सिंह, सुरलाल सिंह। सहस्ता : वीरेश्वर प्रकाश कुलश्रेष्ठ, केदार प्रसाद मण्डल। मुजिबा : रामलाल इशर। दरभंगा : मुद्रिदादास, महेन्द्र नारायणदास। मुजुबनी : शिवकिशोर। भागलपुर : डा० रामजी सिंह। नवादा : महावीर प्रसाद।

मध्य प्रदेश

बमोह : रत्नदेव शंकर धमड। सागर :

दुलीचन्द नाहर। सतना : सीताप्रसाद श्रीवास्तव, रामपुर - कन्देवालाल लुणिया, श्रीमती डा० इन्दुमति जोशी, श्रीमती कैशर-देव लुणिया, श्रीमती विजयन्ता बाई, पारिजात गिरी, श्रीमती इन्दुमति देशपांडे, श्रीमती गयाबाई धार्य, श्रीमती सीताबाई रेड्डी महेन्द्र पवार, रोमलाल, श्रीमती स्वप्नी कावडा। मुर्झा : उदयनाथ चौहान, लक्ष्मी चन्द वैष्वा। इन्डोरी : वैश्याय महोदय, दादाभाई नाइक, जम्बूदास जैन। उज्जैन : रामविनाय पोरवाल, मोहनभाई नयनानी। टीकमगढ़ : चतुर्भुज पाठक। रतनाम : रतनलाल गांधी। डुंगे : रामकुमार सिंगरोज, चन्द्रिकाप्रसाद पाण्डेय। जवतपुर : गणेशप्रसाद नायक।

पंजाब

फिरोजपुर : बनारसीदास गोयल। जालंधर : रामरघोषी, सम्पूर्णानन्द, उदयचन्द, देवाराज। संगरूर : यशभारती, मणि-कान भेतान। पठानकोट : पूर्णसिंह, गु० प्रेमलता गुप्ता, सत्यमर्षी। झरमला : गुभाय धनवाज। झरमर : गंगापार्थिव। बरनसली : सतनाम सिंह, वेद प्रकाश।

मान-यज्ञ : सोमवार, १ फरवरी, '५४

लगान अन्न में लिया जाये वेतन अन्न में दिया जाये

(पृष्ठ २ का शेष)

बहा पर नोट कम पड़े ऐसी बात नहीं। कमी घनाज की थी। घनाज की जो कीमत है वह स्वयं ही घोर नाटो की कीमत है नहीं। घाज प्राणों तो किसी अनाज लिया, तो मैंने वापस दे दिया। जैसा स्वच्छ प्राणों लिया वैसा ही स्वच्छ वापस दिया। लेकिन लोचिने प्राणों मैंने ली रुपये का नोट या धोर पाव साव वाद वापस किया तो रा वापस नहीं किया। क्योंकि पाव साव में वे रुपये की कीमत फिर जायेगी। प्राणी भी रिपन नहीं रहेगी। इन बातों के जो नोट उजनाज घनाज मूल्य है नहीं। घनाज का प्राण मूल्य है।

इन बातों उपनिषद के प्रादेश दिया, धन इच्छेति अन्नात्मात्। धन इच्छ है। घोर इनीएण धन बहु बुद्धेन तद्वत्तम्। धन मूढ देहा करो यद धन तेसी। यह कोई मोक्षन प्राणों की शोध नहीं है, उपनिषद की है। उपनिषद इच्छा विद्या है। परन्तु इच्छा विद्या होने के साथ ही साथ उपनिषद के ऋषि भी जानते हैं कि धन पहला इच्छा है। वह पेट में नहीं जलना जो सर्वत्र धर्मिन भवन्तेगी। उन हालत में कोई भी धार्मिक विषय नहीं हो सकता। एक भाई धन पड़े जीवन कुछ के पाव शोध लेने के लिए। देना जीवन मुझ ने कि है भाई कमजोर है तो फिर जो भाखा दी कि देने पहले विनाशो पीछे करने शोध। कुछ भाषान को बुद्धि थी। वे मुझ थे, हम बुद्ध है। इतना जरूर। धन बुद्धि सर्वत्र ही चाहिए।

धर धर प्राणियों को बाव है। राष्ट्रपति इनमें विनये वना धार्य थे। एक ही कीमत सनन व तने रहे। मेरे सामने बड़ी बात, बड़ों के सामने भी बड़ी बात की घोर गांव में (बर्धा १११) में भी बड़ी बात की घनाज केंद्रें बडेगाँव मुझे बना 'साव इनमें प्राणें बढ़िने घोर देण को प्रादेश की जिने। मैंने कहा, मैं ही मिया व की कान्वा। मराठी में बहाना यह राजा बोले निना हाथे। (मिर्वा कोरे दाडी हाते, बाबा की शपो टिनरी रही। सनन बीजना रहा। ऐसी

ही बात पठित नरक से हुई थी। हम मेंवों को बसाने के काम म सगे थे पठित नेहक के साथ। तब एक दफा मैंने उनसे कहा, 'एक प्रादमी को जिफकारण जेल में रखा है। मैंने तलाश की है, उन प्रादमी का कोई भी दोष है ऐसा मैं देखता नहीं।' पठित जो बोले 'मैं भी जानता हूँ घोर मैं प्रादेश के चुका हूँ उनकी रिहाई के लिए। तीन महीने हो गये। परन्तु हमारी यह जो नीचरशाही है वह तो इतनी धीमी चलती है कि धनी तक कुछ हो ही नहीं रहा। तो मैंने उनको बिनोद में यह कहावत सुनाई थी 'राजा बोले सेना हलके।' राजा के इशारे से सेना हिलती है और मिया बोले दाडी हाते घोर पठित नेहक बोले तो कुछ भी। दाडी भी चलने नहीं। (हसी) बाबा की दाडी तो उसनी हिलती है। ता मैं वह रहा था कि राष्ट्रपति प्राणें घोर बहने लगे कि घनाज की कमी है। मैंने सुभाषा कि प्राण जो लगान लेने है उतवार फिर में घनाज न दिया जाये। जाहिर करो कि कान्वा जमीन से प्राणें दस साव इतना इतना घनाज लेते। तो सरकार के पास भी घनाज प्राणों घोर वह प्राणें मोचरो की भी बोझा घनाज दे सकेगी। एक घण्टी बीज होगी। लेकिन किसान को बहने है कि मुझ भाषना घनाज बंधों घोर नोट बनायो, वह भाषना घनाज नोट हमें दे दो। वह नेकर हम क्या करने वाले है? उत्तर सर बड़ें जा रहे है नोट। घनाज को कमजोर समझ कर उसे आधारी को बेचना। यह (आधारी) कम पैसे में खरीदना है घोर ज्यादा पैसे में बेचना है घोर जनता चल है। इन बातों घनाज में ही सेना चाहिए लगान, गाजर में न लेते हुए यह किमुन सारी घनाज को बाव है। मैं नहीं म नना इनमें बहून ज्यादा घनाज की जरूरत है। धनी तक यह किया नहीं है। फिर बोले कि, 'साव इनमें सन लोगों को समझाने है कि एतें वेवारा जो प्राणों गांव-गाव तो यह हो सकता है।' मैंने कहा प्रथम सरकार इनमें नीचरार करे और तब करे कि दस साव के लिए कान्वा जमीन से इतना घनाज

लेते। तो गांव-गांव समझाने के लिए बाबा प्राणें हजारों सेवकों को भेज सकता है, घोर यह बन सकता है।' वही पहला प्रादमी मिला हमको जो सत्ताधारी होने हुए भी प्राण रखने वाला। उन्होंने कहा, इसका प्रकार मैं कहां गा मुझे विश्वास है (बाबा ने इंद्रिा जी से पूछा आणके साथ भी उन्होंने यह बात की होगी) यह सब होगा तब होगा। परन्तु यह धार होगा तो प्राण पूर्वों इसके साथ स्त्री शक्ति का सम्बन्ध क्या है। रिजनों को घनाज पकना पकता है धर में, बच्चों को विनाना पकता है। उन्हीं क्या खिलायें सुद बना पायें यह लगान आता है उसके सामने। जब तक धर में पूर्ण घनाज न हो, धर समृद्ध न हो तब तक स्त्री शक्ति बड़ नहीं सकती।

परदा और स्त्री शक्ति

रिजनों को धार शक्तिशाली बनाना है तो उनको परदे से बाहर लाना चाहिए। परदा उनकी शक्ति को बहून ज्यादा रोक्ने वाली चीज है। साथ करते राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार में मुसलमानों के कारण एक रिवाज चल पडा है। यद इतना रिजक्षण है। बिहार में मैं एक प्राथम में था, एक शहर से पांच मील दूर वह स्थान था। वहाँ मैंने देखा रोज माधम में मैं घुमना था मुझे एक साव हो गया था वहा, लेकिन एक भी स्त्री का दर्शन मुझे नहीं होता था। बहून दिनों बाद एक उमर आया तो कुछ रिजनों घाई। उन से पूछा कहा रहती हो। बोली यही। मुझे तमा नजदीक पाच मील पर शहर है वहाँ मैंने घाई होगी। उन्होंने कहा 'यही में यानी मामने बाते धर में। सब वह प्राथम ऐसी ही था घोर नजदीक ही सामने के धर से वे घायी थी। इतने दिन वही घायी थी परदे के कारण। उस दिन उमर का तो बाबा के दर्शन के लिए घायी। यह है रिजनों की शक्ति। उनकी शारी बहो गई तब धर के अन्दर बैठ गई, फिर धर के प्राण में भी नहीं था सननी। धन्दर ही रहेगी। केवल एक ही रिजना सुनमी-रामायण पडा तो है। बच्चों को धर भी रामायण सुनानी है। मनोप से धर का काम करनी रहती है। 'गवाई धरविद' है। धरविद शोध हो यद मैं ने २५-३० साव एक ही कोट्टी में रहे थे। तो वहा को रिजनों 'गवाई धरविद' है। उन्का बाहर माना होगा तो

आगे युग अहिंसा का है

→ परदा हटाना पड़ेगा। उनको समझाना होगा कि धारणों पर के बाहर जाना चाहिए। इन के आगे धारणों दुनिया है, धारणों यानी स्त्रियों को दुनिया है। जब तक मुख्य आधार सेना का पा सब तक पुष्पों का ही राज चल सकता था। परन्तु इनके आगे दुनिया धीरे-धीरे शक्ति परिवर्तन की तरफ घा रही है और ग्राह्यता का राज होने वाला है, बुल दुनिया में। ग्राह्यता शक्ति को खड़ी करने में स्त्रियां ज्यादा कामयाब होगी। इसके आगे का युग ग्राह्यता का है। यानी स्त्रियों का है इसलिए स्त्रियों को परदे से बाहर आना चाहिए तब स्त्री शक्ति जाग उठेगी।

मुसलिम कानून

स्त्री शक्ति के लिए और क्या करना पड़ेगा? मुस्लिम जमात में एक पति तीन-चार पत्नियां करता है। हमारा धर्म निरपेक्ष राज्य है। फिर भी ऐसा बिलक्षण कानून है स्त्रियों को तकलीफ देने वाला। घर में तीन, चार बहनें हो तो नैसा चल हीता होगा, कौन भी शाति रहती होगी?

ये बहनें हैं इसका कारण है मुस्लिम लॉ। लेकिन बाबा इतना बेवकूफ नहीं है। बाबा ने कुरान शरीफ का अध्ययन कम से कम तीस साल किया और उसका सारा निकाला है। कृष्ण कुरान। उसमें जो मुख्य चीज है उसे 'उम्मुल किताब' बहनें हैं। यानी कुरान का मुख्य हिस्सा। भगवान कॅसा है, उसका स्वभाव क्या है, उसकी शक्ति कैसी करना, उनके लिए दान-धर्म आदि करना, इत्यादि जो है धर्म-विचार सब मुख्य है। बाकी धारा धारणों 'कानून' बहनें है, 'शरियत' वह उत्तरांतर बदलती जाती हैं। मुहम्मद पैगम्बर के जमाने में भी बदलती हैं, बाद में भी बदली हैं। पन्तु हम लोग नमस्ते हैं कि ऐसी मांग मुसलमानों की तरफ से घा जाये तो अच्छा है। कुछ मुसलमानों की तरफ से यह मांग घा भी रही है। हयें जरा राह देखनी चाहिए। मैं उसके विरोध में नहीं हूँ। ठीक है पौड़ी राह देखना

अच्छा है। परन्तु उनकी समझाना चाहिए कि समान व्यवहार सब पत्नियों के साथ सम्भव नहीं है।

साक्षर में एक बात बहता हूँ। शादी में दहेज दिया जाता है। यानी आपने जहाँ लड़की दी वहाँ उसके साथ थोड़ा सा सुवर्ण इत्यादि देने हैं। वह खाम करके स्त्री का धन माना जाता है। उस पर किसी का हब् नहीं माना जाता है। 'स्त्री धन' के तौर पर वह माना जाता है। तो मैं उस 'दहेज' के खिलाफ नहीं हूँ। मैं 'लहेज' के खिलाफ हूँ। एम० ए० की परीक्षा पास की उसमें इतना-इतना खर्चा था। हमारे एक साथी है ध्यापारी है, छोटे, उनके घर में शादी थी तो मेरे पास आये थे ध्यापारीयें मांगने। मैंने कहा, ठीक है, समय से रहो, प्रेम से रहो, सेवा भाव से रहो, ध्यापारी-वर्ग है बाबा का। मैंने उनसे पूछा, 'शादी में कितना खर्च करोगे एक हजार?' उन्होंने पांच उगलियां दिखाईं। मैंने कहा 'पांच हजार?' बोले, नहीं पांच लाख! धन क्या कहा जाये कहां रहेगी स्त्री शक्ति इसमें? यह सब

ऊँट की सवारी में

(पृष्ठ ८ का शेष)

सवाल यही है कि काम नहीं करेंगे तो उत्पादन कैसे बढ़ेगा। हम लोग देहात वालों को... धारा किलो शक्कर एक परिवार को मिलती है और शहर में एक धादमी को एक किलो मिलती है। धराएर एक आदमी के परिवार में २० धादमी है तो शहर में २० किलो मिलेगी, लेकिन देहात में एक धादमी के परिवार में चाहे २० धादमी हो तो भी धारा किलो मिलती है... यह क्या समाजवाद है? मजदूर बना रखा है। पूँजीवादी हमारे समाजवाद का मजदूर उड़ते हैं। हमको जनता के पहलुने के लिए एक यूनोफार्म बना देना चाहिए, सबके लिये तय कर देना चाहिये कि मोटा कपड़ा पहनेंगे। जो लोग दिन में तीन धार नई-नई पोशाकें बदलते हैं, एक नाटक सा करते हैं, उनके ऊपर कुछ प्रतिबंध होना चाहिए।

हमारे यहाँ धन नहीं है तो धारा पाव

मोचने की बात है। हम धरणीवा जा कर प्राये हैं, इनका सारा खर्चा हुआ। वह खर्चा कहा से निकलेगा? तो इस 'दहेज' में से मैंने एक पूज बनाया है। 'एक शादी यानी त्रिदली भर की बरबादी' सनन व्याज देने रहते हैं, साहूवार को। उसमें से छुटकारा होता नहीं। ऐसी हालत है। तो वह जो 'दहेज' है उसका विरोध करना चाहिए। और उस वा स्त्रियों को भी समझते रहना चाहिए। स्त्री शक्ति खड़ी होगी।

और एक साक्षरी बात। भंगी-मुर्गि होगी तब स्त्री शक्ति धारणी। जहाँ-जहाँ भंग नाम बरते हैं, मैंने देखा है इन्दौर में भंग धन्य शहरों में भी, मिला उठाने का क स्त्रियां करती हैं। और पतिदेव बैठे रहते गाड़ी पर। अन्दर जा कर मिला लाना, गा में डालना, नाभ बदलू से भर जाती है तात्पर्य यह है कि भंगी लोग बराब दबाते हैं वहीन को।

स्त्री-शक्ति के लिए क्या-क्या कर पड़ेगा उसका सामान्य हिमाच मैंने धारणों साम रखा। सब इन्दिरा जी अपने विचार रखेंगी क्योंकि ये स्वयं स्त्री हैं।

धन खा कर भी हम जीवित रह सकते हैं यदि समान वित्त रहे। किसी के पास धन भरा पड़ा है और कोई मूलों मरे, ऐसा नहीं होना चाहिए। मेरी धारणें धार्मिक धारणें हैं ससद यह मेरी ससद नहीं है, मेरी ससद तो मानव-समाज है, जहाँ मैं रहना हूँ... सर्वम स्वविदम्ब वह... सब कुछ ब्रह्म है, किसी की कोई सम्पत्ति नहीं है, किसी की कोई जाति नहीं है, सब ब्रह्म है। ये धारणें बाहर कहा करता हूँ। धरार मैं यहा न बोलू तो लोग बहते हैं कि स्थायी जो बोसते नहीं हैं... धारण यहा बजट पर बहस हो रही है, न प्रधान मन्त्री हैं और न दूसरे मन्त्री हैं। हर तरफ कोई जिचकी पक रही है, ऐसे मोने पर तपाम ससद सदस्यों को, प्रधान मन्त्री जी को, सब मन्त्रियों को रहना चाहिये, लेकिन सब में मजदूर बना रखा है। इन धारणों के साथ बजट का इसलिए सम्बन्ध करता हूँ क्योंकि मैं धारणें स का मन्वर हूँ, जो धारणें बानि कहते हैं, बही करता हूँ।

भूदान-यज्ञ : सोमवार, १ धारण, '७४

With Best Compliments

From



PATEL COTTON COMPANY LIMITED

**Suppliers of all Varieties of Indian Cotton,
Foreign Cotton and Cotton Waste**

Regd. Office :

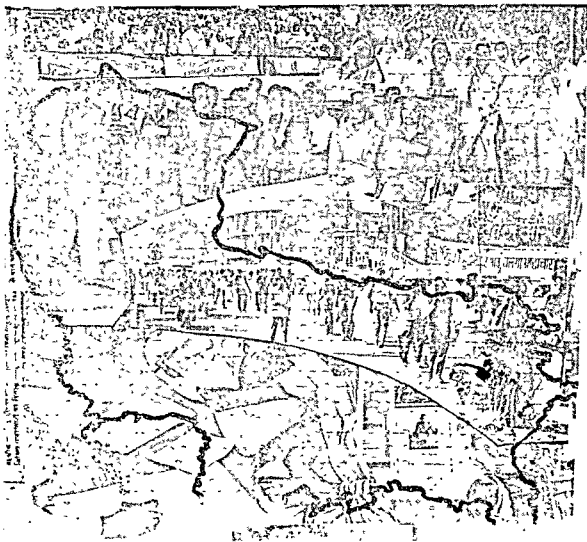
**19, Graham Road, Ballard Estate,
BOMBAY-400001 (BR)**

सर्वोदय



सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ८ अप्रैल '७४

उत्तरप्रदेश-गतिविधियों का एक वृषं



१६ राजघाट बानोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

समझदारी का फैसला

गैहू के ब्यापार का राष्ट्रीयकरण समाप्त करने भारत सरकार ने परिशिष्टानि की आत्मनिर्भरता को समझने का माहुर लक्ष्य है। एक विचारसरण नीति को एक मान बाढ़ ही बदलना सिंगी भी सरकार के लिए प्रमाण नहीं होता। भारत सरकार के लिए तो ऐसा करना घोर भी मुश्किल था क्योंकि हम नीति को गरीब बचाने के लिए विपरीत मान भर में उगने कोई कम प्रकार नहीं किया था। कौंसंग का ऐसा एक भी विरोध करने प्रचलन नहीं होगा जिसे मानि निजी राय को ताक में रण कर हम नीति की सारी कर के नकारणाले में अपनी आवाज न दिनायी हो। राष्ट्रीयकरण घोर प्रगतिशीलता के होड अरे राजनीति कातारण में सरकार के लिए यह निश्चित ही बहुत मुश्किल रहा होगा कि वह प्रति-क्रियाकारी बने जाने का गणना भोत है। फिर भी सरकार ने आत्मनिर्भरता को समझ कर स्वागतयोग्य निर्णय लिया तो इसका अर्थ निश्चित ही धीमती इतिहास गांधी को दिया जाना चाहिए। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, दूसरे साम्यवादी दल घोर कौंसंग के अपने 'प्रगतिवादियों' ने जिस तरह इस फैसले को, पराजय घोर प्रतिक्रियावादियों के सामने मुञ्जना बनाया है उमते घोर भी स्पष्ट हो आडा है कि प्रगतिवादी को जितने साहस से काम लेना पड़ा होगा।

सरकार अपने फैसले पर पुनर्विचार कर रही है यह तो कोई मरिने भर पहुँचे ही साफ हो गया था। राष्ट्रीय याव परिषद की बैठक में काफी लोगों ने मांग की कि गैहू के ब्यापार का एकाधिकार सरकार समाप्त कर दे। फिर जब दिल्ली में राष्ट्रनीति पर

विचार करने के लिए मुख्यमंत्रियों की बैठक हुई तो उमते भी स्पष्ट हो गया कि कई राज्य राष्ट्रीयकरण के पक्ष में नहीं है। माघ परिषद और मुख्यमंत्रियों की राय ने तो सर सरकार के निर्णय को प्रभावित किया ही होगा आत्मनिर्भरताओं में भी कोई कम धगर नहीं किया है। हम मात गैहू की फलन विपरीत मान की सुचना में कम होने वाली है। टण्ड में पानी न गिरना तो इसका एक कारण है ही, बिजली घोर लेन के सफट में मिचार्ड की जो योडी बहुत मुविधाएँ थीं उन्हें भी टण्ड कर दिया था। उर्वरकों की कमी भी उत्पादन में गिरावट के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। सरकार ने आयातगारी हियारियों के अन्दाज से भी इस बार दो करोड बीस लाख टन से ज्यादा गैहू नहीं होने वाला है। यद्यं माल जब बाईं करोड टन गैहू हुआ था तब सरकार आधा करोड टन भी गैहू इरट्टा नहीं कर पायी थी। फिर बीज, मिचार्ड घोर ग्राह को लेनर किसान गये माल उतना परेषान नहीं पा जिनना वह इस वर्ष हुआ है। इस हालत में यह प्रभावही हो था कि सरकार आधा करोड टन गैहू लेवी में ले पाती।

सरकारी मजदूरी की अजगरी प्रथमता घोर सरकारी नीति के प्रति किसानों घोर ब्यापारियों का विरोध प्रयोग के इस एक वर्ष में अन्त्ये को भी दिख सगता है। पूर्व तैयारी किये बिना गैहू जैसी चीज के ब्यापार के सरकारीकरण का विरोध विनोबा घोर जय-प्रकाश नारायण ने इसीलिए किया था कि सरकार के पास वह मजदूरी नहीं है जो इस नीति के अन्तर्गत की ग्यारंटी कर सके। भारतीय लाघ नियम अपनी जिम्मेदारी निवाहने में निम सुरी तरह से विफल हुआ है यह हम

उमोभगामो को हुई परेषानियों से देख सकते हैं। अन्तर्गत की अमागरी घोर आना बाजारी को रोखने में भी सरकारी मजदूरी की अभावना अदखलिर है। अब भी सरकार अगर अपने पंगे पर पुनर्विचार नहीं करती तो गावंप्रतिन विवरण के पूरी तरह टण्ड होने का डर था। समार में, अमरीका को घोड कर सिंगी भी देश के पास गैहू नहीं है जो सरकार बाहर से मगना लेनी घोर फिर गैहू की कौममें इतनी बढ़ गयी है कि विदेशी मुद्रा के तीव्र अभाव में हमारे लिए परेषान माना में आगन करना अगंभव होगा।

फिर इस नीति का उत्पादन पर भी बुरा अगर पड रहा था। सरकार ने गरीबी के जो भाव लख किये थे वे इतने अवास्तविक थे कि किसानों को उत्पादन बचाने को प्रेरणा देने के बजाय उन्हें गैहू के अनावा कोई घोर अविचार बगार्ड बरती फलन लगाने के लिए मजबूर कर रहे थे। बिजली लेन घोर उर्वरकों के सफट ने हमारी अभावविन हरित नीति को फेंक कर दिया है। ऐसी हालत में देश को भुयमयने के बचाने घोर बीमती को घोर भी अज्ञात बदले से रोखने का महीं तरीका था कि साधनीन विमान के गिराफ न जाये।

इन सब कारणों को देखते हुए सरकार ने जो फैसला किया वह भी बहुत हालत में सब से सही फैसला है। राजनीति अन्तर्गत के मामले में जो अडमें लगा रही थीं उन्हें निवाल कर भीमनी गांधी ने दूरदर्शिता से काम लिया है। लोगों को सचमुच इससे कोई मतलब नहीं था कि उनकी सरकार किन्हीं 'प्रगतिशील' है। उनकी सबसे बड़ी समस्या यह थी कि वो जून साविको मिलसगता है या नहीं। अब सरकारने एररीदी के भाव ७५ से १०५ बढा कर १०५ ८० कर दिये हैं तो किसान को अपना गैहू बेचने में हिचक नहीं होगी। सच पूछा जाये तो पंजाब और हरियारा के किसानों ने गये साल एक अरिदोषन चला कर इन्ही भावों की मांग की थी। फिर थोक व्यापारियों को भी अब नोका दिया गया है कि वे व्यापार के लिए से घायं घोर सिद्ध करें कि वे जनविरोधी नहीं हैं जो गये साल उन्होंने सरकारी नीति का जो विरोध किया था वह महज हित स्वार्थी की पूति के लिए नहीं था। सरकार ने उन्हें कहा (विप पृष्ठ १५ पर)



बिहार में फिर एक चुनौती स्वीकार

तीस मार्च को पटना में जयप्रकाश यादव ने कहा, "बिहार सरकार को मेरी सार मनाह है कि वह विधायियों और विरोधियों के विरोध और कार्यवाही का अधिकार नहीं छीने। इसी मर्मांतक क्षण में मजिस्ट्रेट को मौन अनुमति देने की अनुमति नहीं दी गई और नई विधायियों को पिरान्तार किया गया। बिहार मजिस्ट्रेट को मजिस्ट्रेट दिनों से शहर में मौन अनुमति देने की अनुमति मांग रही है लेकिन सरकार को पिरान्तार कर रहे हैं। इस संधर्ष में को धाम सभा करने की इजाजत नहीं दी गई और कहा जाता है कि पिरान्तार को विधायियों को पीटा गया। धर धर लोगो के शान्तिपूर्ण आन्दोलनो को सहज बुझनी रही तो दिसा विरफोट कर रहेगा। अतएव है कि सरकार लोगो के को विरफुज नहीं मरफक पा रही है"।

"धर धर चलने में एक मन्द सर्वोदय के बारे में। जो लोग सम्भवते हैं कि सर्वोदय पद्धतिक कानून की बाण करते वाले ऐसे भले लोगो का आन्दोलन है जो अपनी मान्य के बारे में गम्भीर नहीं हैं, वे धर धर चलने में पढ़ने वाले हैं। जहाँ तक मेरी बात है—मैं प्रध्यावार और बुधवार का मौन धरक नहीं रह मरना फिर चाहे वह पटना में हो, दिल्ली में हो, या और कहीं। कम से कम उनके लिए आजादी की लड़ाई मैं नहीं लड़ाया। इस मन्त्रीमण्डल को उस मन्त्रीमण्डल से हटाने जाने या विधान सभा का विमर्जन करने में मेरी कोई रुचि नहीं है। ये पलायन मन्त्र हैं और इनकी प्रति से कोई पलायन नहीं पड़ेगा। यह माननाय भी जगह माननाय को देने की तरह है। मैंने प्रध्यावार और बुधवार, शनिवार बुधवार को भी जमाखोरी के खिलाफ लड़ना तय किया है, मित्रा व्यवस्था

में पूर्ण परिवर्तन और लोगो के सच्चे लोकतन्त्र के लिए संधर्ष करना तय किया है। दुर्भाग्य से मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। लेकिन लोगो को शान्तिपूर्ण विरोध और कार्यवाही का अधिकार न देने की सरकार को वर्तमान भीतर धर जारी रही तो स्वस्थ होने के पहले ही शान्ति सेनिकों, विधायियों और सत्याग्रहियों के रूप में नाम निखाने वाले नागरिकों का मौन अनुमति निकालने के लिए मैं अपने को बाध्य पाऊंगा। यह धरकी नहीं है एक दोस्ताना चेतावनी है"।

इस वक्तव्य के बाद जयप्रकाश नारायण ने तय किया कि वे आठ अप्रैल को पटना में सत्याग्रहियों का मौन अनुमति निकालेंगे।

एक अप्रैल को भुवनेश्वर, जहाँ का मे प्रधानमंत्री भीमसेन इन्दिरा गांधी ने बुधवार और बिहार में तयारविन पुनिन

सबसे बड़ा संकट सरकार में विश्वास का है

-राममूर्ति

देश सरकार और विचारियों से इन प्रश्नों का उत्तर चाहता है। वह हिंसा के ऐसे घरे में घिर गया है जो उसे दबाता, कसता, चला जा रहा है। सरकार की हिंसा विचारियों की हिंसा, गुन्डों की हिंसा 'इन सब हिंसाओं का मुझको देना एक साथ कैसे करे ? इसलिए देश सरकार और विचारियों दोनों से जानना चाहता है कि वे अपना जहर अपने सिर को उतार रहे हैं ?

घड़ी कुछ दिन पहले १८ मार्च को पटना और बिहार के जो कुछ हूमा उससे तो यही सपना है कि देश की विना न सरकार को रह गयी है न विचारियों को। जहर, विचारियों की बर्दशाही ऐसी थी जो मही और मानने मानक थी, लेकिन उस दिन तो उनकी साम विद यह थी कि राज्यात्म विधान मंडल के समुक्त अधिवेशन में अपना अधिभाषण पत्रके न जाए। राज्यात्म के अधिभाषण को उन्होंने अपना महत्व क्यों दिया ? राज्यात्म रोज एक मायण दें तो क्या विराटता है, और न दें तो क्या बनना है ? सरकार ने विद से विद का जवाब दिया। दोनों ओर से उठने का निश्चय हुआ। सरकार ने हथियारबन्द शैलिक युवा लिये। विचारियों ने देना यही रहने रह कि प्रदर्शन और चरवा शांतिपूर्ण होगा, लेकिन वे यह नहीं समझ सके कि मूछ की मलाई कभी शांति के साथ नहीं होनी। मूछ और बिरेक का सह-प्रतिष्ठल नहीं होता। दर्शन एक विरेक नहीं होता बरौ शांति कैसे रहे सक्ती है ? ऐसी स्थिति में परिणाम रही हुमा भी होना चाहिए था। मगरच मैंतियों से फिरकर राज्यात्म बहुदय विधान क्या बनत था और उन्होंने अपना अधिभाषण पत्रा। बाबजूद सारे बन्दोबस्त के क्या-बनत भी शानि नहीं रह सकी। स्वयं क्या के बर्मा-रियों और मंत्रियों के अग-रत्तों में गुन्धमगुल्यी ही बर्द विमने बर्द भिद्यों को भी बर्ने और गट्टने माने पडे। और, बहर बहर मे तो पूरे पाच बर्द बने बर्द सरकार रही ही नहीं। न पुतिज का पना था, और न खेता का। मानूस नहीं सब के सब बहूषधारी शैलिक बहा रह गये ? उधर

उपद्रव पर उनाह (सब नहीं) विचारियों के साथ मिलकर गुन्डों ने (किनसे कुछ 'भद्र' भी सम्भरे जाते हैं) जो चहटा किया। प्रैस जलाये हाटल जताये, कार्यालय जलाये, लोड-कोड की, गडियाय फू को, दुकानें नूटी।

यह सब बिहार के अनेक स्थानों पर हुआ, किन्तु सबसे अधिक स्वयं रात्रयानी मे हुआ। विविध बात यह है कि जब पटना जलता रहा, तो किसी एक अगह भी कोई बहूषधारी रसाक नहीं दिखाई पडा। जब सब कुछ ही बुका तो सरकार की ओर से कारवाई शुरू हुई। गोली चलने लगी, बर्णु लामू किया गया, गश्त चालू कर दी गई, गिरफ्तारिया होने लगी। इनना होने पर रेडियो दोलने लगा 'ध्वज शांति है, स्थिति कायु मे है।' उपद्रव जब हो चुकता है तो शांति के सिवाय दूसरा होना क्या है ?

जब प्राग लग चुकी और लाघो की सम्पत्ति को जलाकर बुक चुकी ही तो सरकार की ओर से बनाया जाने लगा कि भाग लगाने वाले कोन थे। कहा गया कि वे ऐसे लोग थे जो लोकतन्त्र और समाजवाद के शत्रु हैं, जो सरकार के 'शांतिकारी' कामों से माराज है, जो युवाओं मे हार कर धानी विस्मियाहट भिटांना चाहते हैं, जो देश के पुराने धादतों और सवे मूल्यों को मटियामेट करने पर उनाह हैं। ये तत्व देशी भी हैं, और विदेशी भी। पटना और दिल्ली मे बार-बार ये बातें कही गयीं, लेकिन किसी ने यह नहीं बनाया कि पटना मे १८ मार्च को जब सपटें उठ रही थीं और मूट हो रही थी तो इनने सटों तक उसकी गुंतिम और सेना कहा थी ? क्यों सचल'स्ट' और 'इण्डियन नेगन' जैसे पत्रों को पोल पर कोई एक भी अधिकारी नहीं मिला जिससे वे कह सकते कि उनके प्रैस जलाये जा रहे हैं ? कहा चले गये ये ये लोग ? या, कही ऐसा तो नहीं था कि स्वयं सरकार के घर मे दरार पड गयी थी, और सट्ट की घडी मे कोई किसी की मुन धीरे भान नहीं रहा था... गुन्धमन्त्री की भी नहीं। सबसे विविध बात तो यह है कि सरकार के बुनिया विभाग की भी पहलू से पना नहीं

था... या, बनाया नहीं ? कि १८ मार्च को कौन क्या करते वाला है ? किस प्रकार गुन्डे पुपके-पुपके इस रीमाने पर सर्गटिड हो गये ? कहा से धवानक इतने 'विदेशी तत्व' पैदा हो गये ? एक युवक जिसका मुख्य मंत्री जी ने बिहार विधान सभा मे पडयंत्र का रहस्योद्घाटन करते हुए उल्लेख किया वह न विदेशी है, न विध्वंसक, वह वर्षों से सचो-दय का एक जाना-माना, खुना और निर्भीक, कार्यकर्ता है। नम उसका जकर पचना मे हुआ था लेकिन उसने माता-पिता केव भारत में ही रहने हैं। कुछ भी हो, जनता को सरकार से यह प्रश्न है कि अधिकार है कि प्रगर वह ऐसे खुने उपद्रव से जनता की रक्षा नहीं कर सकनी तो कानून और व्यवस्था के नाम मे करोडो रुपये टैक्स मे क्यों सेती है ? जब सब कुछ हो चुका तो सरकार और शासक-दल के नेताओं को जैसे 'दलहाम' हुआ कि जनसभ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक सभ और ब्रानद मार्ग के लोग देश के शत्रु हो गए हैं। यह कह कर सरकार धरनी शिमसेदारी से बर्द कैसे होना चाहती है ? जितनी भौंती है सरकार ? और माय जैसे जितनी सरल है जनता, कि जो घास सामने रख दीजिए चाव से चर लेगी। जनता को चाहे जो समझ दीजिए, उससे चाहे जो करा लीजिए !

एक बात साफ है। देश के सामने इससे बड़ा सट्ट क्या होगा, कि जनता को अपने ही प्रतिनिधियों पर भरोसा न रह जाए, और भविष्य की मजभा मुने के लिए किसी के कान नैपार न हो ? इससे भी अधिक, सरकार के बहने मे खुद अपने धादती न हो। क्या सरकार यह कहना चाहती है कि मिवाय उसके भीरु उसके दल के नेताओं के देश के प्रति वषादार ध्व देश मे दूधरा बोई नहीं रह क्या है ? प्रगर युवाव मे हारने वाले प्राग लगाने पर उताव हो गये हो तो सोचने की बाज है कि दलों को युवाव का ऐसा सेल मिलने ही क्यों दिया जाये कि जनता के सामने अपने घर और दुकान से हाथ धोने की नौबत आ जाये ?

→ क्यों न प्रतिनिधित्व की कोई दूसरी पद्धति सोची जाये ? एक और दूसरा प्रश्न है। क्या हमारे नेता...सरकार और विरोध दोनों के...कभी अपनी अंतरात्मा को टटोलते हैं ? क्या वे कभी यह सोचते हैं कि देश को भाग की स्थिति तक पहुँचाने में उनकी क्या जिम्मेदारी है ? नीचे से ऊपर तक हर दल के लोग यही कहते रहते हैं कि जो उनके साथ नहीं है वह देग-झोही है। सत्ता की जो राजनीति वे चला रहे हैं उसमें वे अपने दल की सत्ता को सोचसत्ता मान लेते हैं, इसलिए उनके दल की सत्ता उनके लिए साध्य बन जाती है और हर उपाय चाहे वह जितना गलत हो...साधन बन जाता है। स्वयं जनता को काले पैसे और भूठे प्रचार के बल पर वे दल की सत्ता का साधन बना लेते हैं। जनता को ही नहीं, गुंडों को भी। कैसे हमारी देश की राजनीति में गुंडे प्रतिष्ठित हो गये ? एक बार जब चुनाव जीतने के लिए गुंडों से 'ब्लू कैम्बर' करा लिया गया तो क्या उन्हें हुकूमत सूटने, घर जलाने, स्मॉकिंग और चोर-बाजारी करने से रोका जा सकता है ? क्या वे रोकने से रुकेंगे ? क्या हमारे नेता वक्ता समझे हैं कि कैसे हमारी राजनीतिक सारे मूल्यों और मान्यताओं को छोड़कर एक 'संगठित भ्रष्टाचार' बन गई ? गुंडों की सेवा लेने वाले नेताओं की गुंडे का संरक्षक बनने के किन्तुने देह लगती है ? और, अब तो गुंडे अपने नेता भी संवार करने और उन्हें चुनाव जिताने के लिए साधन से एम० पी० तक बनाने लगे हैं।

लोकतंत्र का स्वांग रखने वाला यह दल-तंत्र देश के लिए भाज सबसे बड़ा खतरा बन गया है। इतने राजनीति को भ्रष्टाचार और सरकार को जन-विरोधी बना दिया है। ऐसी लोकतंत्र की छत्रछाया में वे सारे दल बन रहे हैं जो, स्वाधीन और समाज-विरोधी हैं। स्वाभाविक है कि इस प्रकार की सरकार जनता की शक्ति से कहीं अधिक अपनी गोली पर भरोसा करेगी। आज वे यही कर रही हैं, दुर्भाग्य है चाहे जिन सिद्धान्तों, मूल्यों, और धारणों की दें।

इसी भूमिका में देश में गुजरात के प्रायद्वीप को देखा था जिसमें युवकों की अनुवाद में जनता ने एक भ्रष्ट और जन-

विरोधी सरकार को भस्वीकार किया था। वही ध्वनि बिहार में भी प्रकट हुई थी, लेकिन बिहार के युवक चुक गये। बिहार में अंदर से जबर सरकार तथा दलीय राजनीति और विद्यालयों के भ्रष्ट कुप्रभाव में पले कुछ विद्यार्थी, दोनों समाज के 'शत्रु' सिद्ध हुए। वहाँ न सरकार शांति कायम रख सकी और न विद्यार्थी 'शक्ति' को ब्याने बड़ सके। दोनों का 'पाप' समाज के तिर उतरा। सरकार समझती रही कि जनता को भ्रमण रखकर केवल सैनिकों के बल पर शांति रखी जा सकती है। और विद्यार्थी समझते रहे कि जनता को भ्रमण रखकर केवल उपद्रव के बल पर शक्ति की नींव डाली जा सकती है। दोनों ने समान रूप से जनता की शक्ति में श्रद्धाभाव प्रकट किया और उसका दंड भोगा समाज ने। सैनिक शक्ति पर आधारित सरकार का 'बल्यासुबाद' और दलीय राजनीति की प्रेरणा से चलने वाला युवकों का 'सघर्षवाद' दोनों अंत में परिवर्तन-विरोधी, दयास्थिति-वादी ही सिद्ध होते हैं।

युवक सोचें कि इस स्थिति में उन्हें क्या करना है। यह कहना काफी नहीं है 'भाग हमने नहीं लगायी, भ्रष्टाचारिक तत्वों ने लहारे'। जो लोग शांतिपूर्ण शक्ति करना चाहते हैं उन्हें सैनिकों और गुंडों दोनों की हिंसा पर बाजू रखना सीखना होगा। यह तभी हो सकता है जब जनता की शक्ति साथ होगी। जन-शक्ति के प्रभाव में समाज के किसी एक अंग का प्रायद्वीप-मुनिवादी साम्राज्यिक परिवर्तन का चाहन नहीं बन सकेगा। गुजरात में जनता प्रायद्वीप-परिचय के साथ थी, बिहार में नहीं। और, १८ मार्च के अनुभव के बाद तो जनता को साधा नेता पहले से बड़ी शक्ति कटित हो जायगा। बिहार की घटनाओं में युवकों के पक्ष को बचजोर किया है। कुशल है कि वहाँ के युवकों में एक धारा प्रकट हो गयी है जो शांति की शक्ति को समझती है। ऐसे युवकों की अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए।

एक बात समझ लेने की है। किसी समस्या के समाधान के लिए अनुशासित विद्यार्थी की हो या अन्य किसी की, भाज की सामाजिक परिस्थिति में कोई समस्या ऐसी नहीं रह गई है जो समाज की सभी शक्तियों के सहयोग के बिना हल हो सके। शांतिपूर्ण

शक्ति का यह मंत्र है। सहयोग की शक्ति प्रसंग के अनुसार प्रसहयोग बना, भ्रष्टाचार एवं भाव्यक हो सकती है, किन्तु शक्ति विना सहयोग की ही करनी होगी। सहयोग के बंध के भीतर समाज के साथ-साथ सरकार में भी होती है। ऐसा सहयोग दलवादी का दिल भी दिमाग रखने से नहीं प्राप्त किया जा सकता न सरकार प्राप्त कर सकती है, और न विद्यार्थी लेकिन यदि समाज सरकार की निरनुशासिता देगा और विद्यार्थियों को भ्रमेला छोड़ देगा तो उसे अपनी निष्क्रियता का दंड भोगना ही पड़ेगा।

शिक्षण विद्यार्थियों का विशेष क्षेत्र है। निरनुशासित शिक्षण प्रणाली करने से इत्कार करने का उन्हें पूरा अधिकार है। मौजूदा शिक्षण से फीसदी निकम्मा है, इस प्रश्न पर भ्रष्ट देश में दो रायें नहीं रह गई हैं। कोई भी सरकार विद्यार्थियों को इन विद्यालयों में जहाँ विद्या का साथ होता हो, रहने के लिए विवश नहीं कर सकती।

इसी तरह स्वतंत्र और निष्पक्ष शक्तिगत मताधिकार है। इस अधिकार को सुरक्षित रखने की बिना हर एक को होनी चाहिए। युवकों को सबसे अधिक क्योकि इसके साथ उनका पूरा भविष्य जुड़ा हुआ है।

सोचतंत्र की शक्ति शक्ति लोकशक्ति ही है। समाज की भाज सभी शक्तियाँ उतारनी हैं। विद्यार्थियों से प्रप्रेसा है कि शिक्षण और लोकतंत्र के दो प्रश्नों पर वे लोकशक्ति को जगाने और उसे साथ लेने का प्रयत्न करें। इस प्रयत्न में पहला काम है कि गाँव की धाम सभा, नगर में युद्धला सभाएँ, हर विद्यालय की विद्यालय सभा, तथा कार्यालय और कारखानों में धार्मिक-धार्मिक साम्राज्यिक शक्ति को धार्मिक-धार्मिक जीवन के लिए जिम्मेदारी दें। ये इच्छा समाजिक होकर एक होकर, परिवर्तन की दिशा में चलें। जिता परिवर्तन स्वयं कर सकती हैं करें। जहाँ भाव्यक और परिवर्तन के लिए सरकार पर दबाव डालें। यह प्रयत्न देश का होगा, देशव्यापी होगा, शक्ति के साथ होगा, संगठित होगा : न किसी दल का होगा, न जाति और वर्ग का होगा। इसमें शरीक होने के लिए सरकार को भी धार्मिक होगा। यह देश की बात है। शक्तिपूर्ण शक्ति की राह भी यही है।

वाँये हाथ का खेल

—भवानीप्रसाद मिश्र

गुजरान की विधानसभा के भंग होते ही बिहार में सत्ताहट दल के विरोध में छात्रों ने मोलन छेद दिया और सत्ताहट दल ने, जरात से बीसा सबक ले कर जो प्रायः भय-प्रेत व्यक्ति लिया करता है, विहार में प्रभु-वंत दमन की वर्षा की है, उसने जिसे हम तभी माँति कह सकते हैं, स्थापित हो गईं । सत्ताहट दल ने हेमेशा की तरह इस बार भी हिंसा के लिए 'प्रसामाजिक तत्वों' को जम्हेदार बताया और उसमें कुछ सत्ताधारी के नाम भी लिए, राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ, मानन्द मार्गी आदि । फिर सदा से अपने माँति प्रयत्नों के लिए विख्यात गांधी शानि प्रविष्टान के भ्रमरनाथ, सन्तोष भारतीय ब गुमार प्रजातन्त्र जैसे शायकतमों को गिर-फ्तार किया । प्रादोलन में विदेशी तत्वों का हाथ बताया जाना भी जरूरी था इसलिए 'भेडिये घोर मेमने' की प्रतिप्राचीन कहानी को बरितार्य करते हुए 'बीनिया के' किचोर शाह को भी गिरफ्तार कर लिया । अब किचोर शाह के बारे में भलबारी में वाणी टोप्य का बुके है, इसलिए हम इस निर्भय और छो पीसदी सत्य-वैम-वरणा के पथ पर चलने वाले बच्चे का यहा माँतिक परिचय नहीं दे रहे हैं । हम भैवल पाठकों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि एक प्रस्ते के नहीं की भी अनता किसी भी कारण से विमृश्य नहीं न हो, उसके पीछे सरा 'प्रसा-माजिक तत्वों' का हाथ बताया जाता है, उसे सदा उपमादा दक्षिणपन्थियों की बार गुबारी कह कर फिर कुछ सत्ताधारी के नाम गिनाये जाते हैं और घोर दमन का इन प्रकार समर्थन करने-कराने भी भागा की जाती है । सरकार का गुमरा की तरह फेंका हुआ गुन, पाकायवाणी और इसलिए देश के समगण धारिभयान्तर पत्र, जिन्हें मायकीय गुमराज ही बाने के निवा चारा नहीं बचा है, इन बाबों को दोहराने हैं । मगर ससद के सब चर रहे हों तो बहूँ, और नहीं तो साय-साय जहाँ उठना ही निरबक है । सामान्य जनता ने इन के बारे में सोचना बन्द कर दिया है...इन के बारे में उद्योगपति सोचें या बिना सोचे

भी सच्चा स्वर घोषित करने के लिए माध्य मन्त्री आदि इसे चरम धर्म मान कर दोहराने लगते हैं ।

मगर भारत की जनता को क्या हो गया है, वह कहती भी इस प्रकार के उद्घोषों पर विवश बरती दिखाई नहीं देती । कमरो में, सड़को पर, सरकारी-नैर सरकारी कार्यालयों, बाजारों, बसों रेलगाड़ियों या जहाँ कहीं भी संपूर्ण लगा नहीं होता...क्योकि धाजकल वह वहाँ नहीं लगा है । और जहाँ कहीं भी योबो नहीं चल रही होती । क्योकि वह भाजकल बड़ा नहीं चल रही है...सोय जो बात करते हैं उनका धर्म तो यही निवतता है कि हर प्रसन्न का उत्तरदानिय शासन कहिए प्रशासन कहिए या शासन कर्ता या कर्ता न्य है । देश की छोटी से छोटी हुनचल के सवा-लन मून प्रजातन्त्र के नाम पर उँसोने अपनी मुट्ठी में बस कर पकड़ रहे हैं । क्या बात है कि जनता रात दिन 'भेडिया आया' 'भेडिया आया' कहने वाले पातनवाणी बुले-टिनों, समाचार-समीक्षाओं, प्राधुपति, प्रधान मंत्री तथा तरह-तरह के गण्य-नगण्य मन्त्रियों के बसतव्यों के बाबजूद इस बात को जरा भी ध्यान देने योग्य नहीं मानती, क्यों इस से चिन्तित नहीं हो उठती, 'सरकार के साथ' 'प्रसामाजिक तत्वों' से 'विपत्ते' का सन्तप्य क्यों नहीं कर लेती ? क्या वहाँ इसका यह नाजल हो गयी है कि इसे वह सच नहीं मानती इसका जो सत्य के समीप पढ़ू चने वाला कारण उससे मन में डड है वह तो यही है कि टेड वह सच जगह उठ के अगों में ही देखनी है । वह देखती ही नहीं, भोगनी है कि न साक यत्ता मिल रहा है न सडा गल्ला, न खासित भी मिल रहा है न उसका बनावटी रूप बन-स्थित और न नितावट से भरा तेल । मिट्टी के तेल का सवाल, मोट्टे का सवाल भीमंठ का सवाल, पेड्रोल का सवाल, कोयले का सवाल, बिजली का सवाल, नायज का सवाल तो सब उठना ही निरबक है । सामान्य जनता ने इन के बारे में सोचना बन्द कर दिया है...इन के बारे में उद्योगपति सोचें या बिना सोचे

फाले धन की धन्ये की रेवडी तरह किसी फंड में देकर इस सेवा के बदले प्रायः मेवा के रूप में इन सब चीजों की जितना चाहे उतना पाता चला जा रहा है...मगर-सामान्य जनता ने इस सब को फिर पूर्ववत पाने की माता छोड़ दी है । नैरास्य ही परम सुखम् ।

सरकार खुद जानती है कि वह जिन-जिन को रोपी बनाती है वे दोषी नहीं हैं, कई बार परस्पर उनके विरोधी व्यक्तियों से यह साफ हो जाता है और कभी-कभी उसके उन धामुधों से जिसे हमारे कभी के बल्कि धन्यो के भी राज्यकर्ताओं की भाया में जो यथावत अग्रणी ही बनी है 'शोकोदास टियर्स' कहते हैं । मंगलीशरण जी ने इसी मुहावरे का अनु-वाद करते कहा था... 'देशो भयकर भेडिये भी धाज धामु डालते । ' 'सचं लाइट' की मधीन जली तो प्रधान मन्त्री से त्याग कर हर छुटभये में धामुधों की गडक ब्रह्मिण्ट पर दी और मंडक के इस उद्यम को हमने शन्य की मुट्ठी से देवा । तीसरे दिन ही 'सचं लाइट' की ओर से जो वक्तव्य निरला उसने इन धामुधों का पर्दा फास कर दिया...साफ हो गया कि यह भागजनी भानन्दमार्गी प्रसा-माजिक तत्वों की ही हो कर परम सामाजिक और प्रजातन्त्रीय मूल्यों के लिए व्याकुल सत्ताहट दलके दाहिने न कहीं, बायें हाथ की करामत है । दाहिने हाथ की बात बायें हाथ में न धामुध ही ऐसी सतकता की यह दाहिना हाथ आवश्यकता नहीं समझता । न समझे...वह इस पर बेवाक अपने अभिप्राय भोमासित करने कर्णोय सिद्ध करता रहे... मगर कि हमारा दतना ही निवेदन है कि वह सारे सगार को मूर्ख न माने ; या कम से कम मस ही मस और परस्पर हूँ-हूसाये और बहे कि हर प्रकार के विरोधियों को, फिर चाहे वे परम धार्मिक शानि हलके के तक्षण हो, चाहे और कोई...कुचलना हमारे बायें हाथ का खेल ही होगा है, हम उस खेल को रोज-रोज प्रधिवाधिक सफाई से खेलते चले जलने का धम्यास कर रहे हैं । धम्यास के लिए हम कभी मंदान गुजरान को चुनते हैं कभी बिहार को कभी बंगाल को...क्योकि हमें भूमि गोपालनी है । हम सोच रहे हैं बायें हाथ के ये खेल क्या एक के बाद एक सफल होते जायेंगे ?

जयप्रकाशजी हिंसा को उचित या योग्य नहीं समझते

—विनोबा

रक्षा-उत्पादन राज्य मंत्री विद्याचरण मुखर्ज २३ मार्च को विनोबाजी से मिलने आये। उनके सवाल और विनोबा जी के जवाब इस प्रकार हैं—

प्रश्न: सवाल आरक्षणी देश की स्थिति का है। सरकार की तरफ से शौर राजनैतिक दलों की तरफ से इस स्थिति को ठीक करने के लिए क्या करना चाहिए? धन्यवातिक दृष्टि से शौर दीर्घकालिक दृष्टि से।

उत्तर: इस सिलसिले में कल हमने धन्य-बारवालों के लिए वक्तव्य दिया था कि सब पक्ष मिल करके हिंसा का विरोध करें। प्रस-तोप के कई कारण हैं। उसके लिए जो कुछ करना है वह करें। लेकिन वह सब अहिंसा की मर्यादा में करें। उसका परिणाम कम नहीं होगा। अच्छा ही होगा। आज ये लोग हिंसा का प्राथम्य लेते हैं इससे देश की परि-स्थिति बिगड़ती है। अपने देश की एक इमेज (छवि) है, वह बिगड़ती है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर खराब असर पड़ता है। हमारे सामने आज मुख्य सवाल है, भारत, पाकि-

स्तान और बंगला देश का उत्तम संबंध बने। ताकि आगे जाकर सेना पर संसा कम खर्च करना होगा। इस दृष्टि से आज हमारे देश में हिंसक आंदोलन हो रहे हैं, यह बिल्कुल अच्छा नहीं है।

प्रश्न: जयप्रकाश जी ने जो वक्तव्य दिये हैं उसमें आज जो कह रहे हैं वह बात साफ भ्रमकती नहीं। उसमें से ऐसा भ्रमकता है कि उन्हें इसका गहरा असन्तोष नहीं कि हिंसा का प्रयोग भारी मात्रा में सार्वजनिक रूप से किया जा रहा है। इससे लोगों के मन में गलत प्रहृणी हो रहे हैं कि आखिर वे किस चीज को पसन्द करते हैं और किस चीज को नापसन्द करते हैं।

उत्तर: उनके कहने का तात्पर्य आज जो हिंसक आंदोलन चले हैं उसे वे पसन्द करते हैं यह मैं नहीं लेता। तात्पर्य मैं यह लेता हूँ कि आज इतना असन्तोष है कि उसने लिए यह हिंसा स्वाभाविक है। यह उचित है योग्य है ऐसा धर्म मैं नहीं करता। स्वाभाविक है, नेच-रल है। मुझसे अगर पूछा जायेगा तो मैं भी

कहूंगा कि यह स्वाभाविक है। प्रायः मुझ पर गुस्सा करते हैं तो मैं प्रायः पर गुस्सा बर्क यह स्वाभाविक है। प्रायः मुझे पीटने प्राते हैं तो मैं प्रायः पीटूँ यह स्वाभाविक है। परन्तु प्रायः मुझे पीटने प्रा जायें फिर भी मैं प्रायः पीटूँ यह उचित है।

प्रश्न: आज की हालत में तरुण लोगों का हिंसा पर उत्साह होता स्वाभाविक है। जे० पी० वा यही कहना है। उचित है या योग्य है ऐसा मैं उनके कहने का धर्म नहीं लेता। उनसे मेरी बातचीत नहीं हुई है। इन दिनों बहुत दिनों से उनसे मेरा मिलना नहीं हुआ है। लेकिन जिस तरह मैं उनको समझता हूँ उसका धर्म मैं ऐसा लेता हूँ।

प्रश्न: हमारे लिए व्यक्तित्व रूप से क्या निर्देश है?

उत्तर: दिमाग न खोयें। सातकर जो लोगसता में है, जिन पर ज्यादा जिम्मेदारी है वे शांति या समत्व न खोयें। जिम्मेदारी बहुत ज्यादा है, इसलिए समत्व खोते हैं तो गलत निर्णय हो सकते हैं। इसलिए मैं बर्ता हूँ कि जिते 'शोभ' बरते हैं वह आउटस्टैंड है। प्रापने देला होगा सातकर मुझ के समय हवाई अड्डा से जो बय डालते हैं, बेलेटिक वेपना डालते हैं, उन्हें सात दिमाग से काम करना पड़ता है। मुक्तिज की शांति से उन्हें काम करना होगा है। हमने उठते प्रायः शौर मुझे भारने के लिए प्रामेगा तो शोध भरा उसका बेहरा भयकर दीयेगा। धृष्ट रूप दीयेगा। परन्तु आज जो सेना में काम बरने है उनको शांति से काम करना होगा है। हिंसा में भी शोध चलना नही तो अहिंसा में तो शोध चलना ही नहीं चाहिए। इस बास्ते राज्यकर्तियों को विनोबा की हालत में मान-सिक शोध होने गहीं देना चाहिए। क्या उपाय किया जाये? हीना पड़नी चाहिए। हीना में प्राया है, "समत्व मोग उच्छेत्"। (समत्व ही योग्य है) सामने वाला जिनना शून्य होगा उतना हमें सात रहना चाहिए।

समो दल हिंसा का निषेध करें

सर्व सेना संघ के कार्यालय मन्त्री सत्यव्रत प्रबन्ध समिति के कामजात विनोबा को देने मने। कामजात पडने से बाद विनोबा ने कहा "हिंदुस्तान में आज की हालत में अनेक प्रकार के असन्तोष हैं, सामयाए हैं, लेकिन किसी भी कारण से शौर किसी भी परि-स्थिति में हिंसा का प्राथम्य न लिया जाये, हिंसा को उत्तेजन न दिया जाये। हिंसा की जो घटनाएँ हो रही हैं वे देश के लिए नुकसान दायी है। देशहित को सामने रखकर, सभी राजनैतिक दल हिंसा का निषेध करे और देश में शांति और अहिंसा का वातावरण बनाने का काम करें।

हिंसात्मक आंदोलन तो करने ही नहीं चाहिए। शौर जब तक पाकिस्तान, भारत,

बंगलादेश में पूर्ण सामंजस्य नहीं होता है तब तक तक सरकार के खिलाफ प्रहिंसात्मक आंदोलन भी नहीं करना चाहिए। गही सो देश के लिए खतरा है। रचनात्मक काम के द्वारा देश को गरीबी आदि के बारे में बहुत कुछ हो सकता है।

देश की समस्याओं के बारे में प्रायः सोचने ही है, सोचें। इतना बड़ा देश है। हमने चार शून्य दिये हैं (१) पञ्चानिवर्षों का सहयोग (२) शनारगदे (३) उपग्रामदान (४) सर्वसम्मति से जो भी निर्णय करें, प्रायः। सर्वसम्मति निर्णय में केवल बीस-गन्धीय लोग ही नहीं, सारे भारत के जो तीन सौ साधी हैं, वे सब मिलकर जो सर्वसम्मति से निर्णय करें, वह प्रायः है।

मेरे पिताजी सन् १९२६ के फ्रांस-पास रोजी-रोटी बनाने के सिलसिले मे गुजरात से केनिया गये। वहा उनके एक बाबा दुकान चला रहे थे, उसी में मदद करते सगे घोर घोर-घोरे अनाज व्यापार प्रारम्भ किया। हम चार भाई और दो बहनें हैं। सब भाई-बहनों का जन्म केनिया मे धीका नाम के छोटे से कस्बे मे हुआ। १९५२ तक पिताजी के दूसरे भाई भी आ गये थे जिससे व्यापार बहुत बढ़ा चलने लगा। १९६३ मे केनिया को स्वतंत्रता मिली घोर भारततीय

एक 'विदेशी एजेण्ट' का आत्म वक्तव्य

किशोर शाह

व्यापारियों के लिए आगे का भविष्य उज्ज्वल नहीं दीख रहा था। इस परिस्थिति में पिताजी घोर बड़े भाइयों ने भारत में साकर बनने का निर्णय किया। अप्रैल ६८ में बड़ी भाभी घोर उनके बच्चे के साथ मैं भारत प्राया घोर इन्दौर में बस गया। इन्दौर में कुछ रिश्तेदार साकर व्यापार करने लगे थे घोर

प्रयाज का एक बच्चा केन्द्र होने के नाते इन्दौर को चुना था। बड़े भाई नवम्बर ६८ में भारत प्राये घोर नवम्बर '६९ में पिताजी एक साल के लिए प्राये थे घोर व्यापार जमाकर चले गये। पिताजी वापस केनिया लौटकर घोर वहा पर अपना कारोबार समेट कर करवरी—मार्च '७३ में पूरे परिवार के साथ इन्दौर आ गये।

सहरसा में पूर्ण सफलता

घोरेन दा

घोरेन्द्र भाई द्वारा प्रयत्न लोकप्रयायात्रा के राधोपुर (सहरसा) पड़ाव से प्रस्तावित किया गया बहतव्य।

ईस वार सहरसा मे को प्रभियान चल रहा है, उसे विनोबाजी मे सहरसा के लिए प्रावितो परिभाषन कहा है। तीन साल पहले सहरसा को 'राष्ट्रीय मोर्चे' के रूप में चुना गया था। तब से धाज तक हम कुछ साथी जनता के बीच मे धामस्वराज्य के मूल विचार को सजाई करते रहे हैं। हर साल देश भर के हमारे चुने हुए कार्यकर्ता भी काफी तादाद मे वहां प्राये उन्हीने परिभाषन चलाकर जनमानस को प्रावोर्षित किया।

लोग पूछेंगे कि सहरसा मे क्या मिला घोर क्या हुआ? जो लोग ऐसा पूछते हैं, या कुछ देसना चाहते हैं, उनके कहने मे विना पान दिखाने के लिए ऐसा कुछ नहीं हुआ। इस प्रकार की सुनिपादी प्राति, जिसे हम सम्पूर्ण प्राति बहते हैं घोर जिसके परिणाम से सम्पूर्ण नयी सस्कृति के प्राविभाष की प्रपेक्षा रहते हैं, वह इस तरह थोडे समय मे सिद्ध नहीं हो सकती है। लेकिन जो हुआ है, घोर जितना हुआ है, उसे पूर्ण सफलता की संज्ञा दी जा सकती है। लोकमानस में धामस्वराज्य क्या चीज है, इसका स्पष्ट परिचय हुआ है। इस जिले मे कम से कम संवेदन जनता ने पहला समझा है कि धामस्वराज्य का अर्थ क्या है, घोर उनके काफी तादाद ऐसे लोग की भी है, जिनमे यह एहसास हो रहा है कि देश की वर्तमान सकटकालीन समस्या का एकमात्र समाधान धामस्वराज्य-मूलक प्राथिक तथा राजनीतिक ढांचे के निर्माण से ही हो सकता है। जनता मे ऐसे भी कुछ व्यक्ति निकल प्राये हैं जो इस काम मे सक्रिय भाग ले रहे हैं, इतना ही नहीं, बल्कि घोर-घोरे उनमे जिम्मेदारी उठाने का मानस बन रहा है। अर्थात् इस क्षेत्र मे प्राति का बीज बोया जा चुका है। धाज धावश्यकता इस बात की है कि बीज के अंकुरण के लिए उस क्षेत्र को छाड़ दिया जाय ताकि स्वाभाविक नियम के अनुसार वह अंकुरित हो घोर प्रागे बढ़े।

कोई भी विज्ञान बीज बोने के बाद भी जूनाई घोर हूंगारी जारी नहीं रहता है। जब विनोबाजी ने देखा कि बीज की बोझाई प्रब समाप्त हो चुकी है, घोर धामस्वकता यह है कि इन क्षेत्र में जूनाई घोर हूंगारी का काम बंद किया जाय तो एक कुत्तल नेना के नाते उन्हीने-स्पष्ट रूप से यह संकेत किया है कि सहरसा मे परिभाषन-मूलक प्राथिक बन किया जाये घोर वहां की सफलता का अनुभव सेकर हम लोग प्रावित भारत तथा प्राजी शक्ति भर प्रावित रिश्त भर मे कीज जाय। क्योंकि प्रब विवहार हो रहा है कि जमीन के नीचे से प्राति का अंकुरण उभो तरफ से हो हो जायेगा जैसे हर फसल के उठाने मे एक निर्दिष्ट समय समय सजना है। इस प्राति की उगाई में भी उतना समय सजेगा, घोर विज्ञान-प्रिस विवहार के साथ इन्तजार करेगा, उवी विवहार के साथ प्रातिकारी के लिए प्रतीक्षा की धावश्यकता है।

मैने '६२ तक नैरोबी में अध्ययन किया। '६२ में सीनियर कैम्प्रेज की परीक्षा में बहुत ही अच्छा रिजल्ट आया। इस रिजल्ट के आधार पर घोर दूसरी परीक्षाएँ, इण्टरम्यु आदि के आधार पर मुझे अमेरिका के एक छात्रवृत्ति कार्यक्रम के लिए कई दूसरे विद्यालयों के साथ चुना गया और मैं कीरल विवविद्यालय में पढ़ने को '६३ में अमेरिका गया घोर जून '६७ में अर्थशास्त्र में प्रातिन के साथ उपाधि हासिल की। प्रोत्साहन के बाद छ महीने के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें से प्रावितो तीन महीने राष्ट्रसभ के सचिवालय में रहा।

अमेरिका में पढाई के दौरान विपत्तनाम मुद्ध विरोधी आन्दोलन घोर काले लोगों के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया। आन्दोलन के अनुभवों, अमेरिकी समाज के अनुभव, कलिय घोर उसके बाहर के अध्ययन घोर प्रथम में राष्ट्रसभ की प्राथ पदति के अध्ययन घोर अनुभव से यह पक्का विश्वास हो गया कि इस क्षेत्र में रहकर समाज की मुक्ति घोर भलाई के लिए मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा और न मुझे व्यक्तिगत जीवन में कोई समाधान होगा। यह धारणा मजबूत होने लगी थी कि गाँव में काम करना चाहिए। अफ्रीका में काम करना कि भारत में, यह प्रश्न बराबर बना रहा। भारतीय सस्कृति जिसके साथ मेरे सन्धारु उते हुए थे, उसकी प्राध्यात्मिक परम्परा घोर गाँधी जी ने मुझे प्रावित किया। पिताजी का भारत मे बसने का निर्णय प्रावित मुझे भारत की प्राजी कर्म-सुधि बनाने के लिए तर्क लाग्य। अर्थात् '६८ मे भारत प्राया। पाँडेचेरी का प्राथर्षण था।

गिरफ्तारियाँ क्यों हुई ?

२१ मार्च को सन्तोष, प्रयाग सहरसा से सोट कर यहाँ प्राये घोर जे० पी० की घनील पर सुगुनगाते तरणों की जमात को सक्रिय करने में लग गये। चूँकि इनके नाम की बुनियाद शुरू से प्रलय रही है अतः पटने के प्रादोलन में शामिल होने की संवारी न कर ये लोग मुहल्ला समितियाँ बनाने में लगे जिनके माध्यम से सर्वप्रथम मंहगाई की दिशा में कदम उठाने की बात सोची। मुहल्ला समितियों के धलावा व्यापारियों, अधिकांशियों और तरणों की एक मिली जुली जमात नगर स्तर पर शक्ति व्यवस्था के लिए तैयार हुई। ये लोग थोक व्यापारियों के यहाँ जा कर स्टॉक बैकिंग घोर काले बाजार में बिकते माल को खुले में लाने की कोशिश में लगे। उनके प्रयत्नों से कुछ राशन का सामान, चीनी घोर बेबी फूड बाजार में सही दाम पर धावा घोर होली के प्रवसर पर बालका ८-७५ के भाव पर पूरे शहर को उपलब्ध हुआ। प्रथम तक व्यापारी डर और दीर्घ में तथा अधिकांश मजदूरी से इनके साथ थे कि मामला

होली के पत्रवानों तक ही सीमित रहेगा। लड़कों को अधिकांशियों को राशन की दुकानों से मिलने वाले 'हित्से' की भी खबर थी। अतः इन होली के बाद भी धपना महगाई उन्मूलन प्रादोलन मुहल्ला समितियों के माध्यम से इन लोगों में जारी रखा तो व्यापारी, अधिकांशियों का माया टनका। धाव युवा मंच ने १६ मार्च की बँटक में सभी वस्तुओं का उचित मूल्य तय कर उसे अधिकांशियों व्यापारियों से सामने रखा और उस को ज्यादा कम करने पर विचार करने को कहा, व्यापारियों के समय मागा। समय देते हुए इन सबों ने कहा 'यदि निश्चय-प्रबन्ध के बाद भी प्राप मूल्य निर्धारण में धाना-बानी करते रहे तो हम धपना बाजार भाव जगत को गुता देंगे। १७ भी प्राप बँटक का निश्चय हुआ। इस दिन कोई नहीं पढ़वा। जिलाधीन ने इन लोगों को बुला कर अपने समय न होने की बात बही घोर १६ या २० को अपने चैम्बर में बैठक होने की सूचना दी। ये लोग लोट प्राये घोर 'धव ह्य नागरिको से क्या

बहे' इस पर विचार करने लगे। इसी समय 'जिलाधीन अपने यहाँ व्यापारियों की बँटक कर रहे हैं' इसकी सूचना मिली। धव इन लोगों ने तय किया कि १६ को एक प्राप समा बुलाकर सारी स्थिति नागरिकों से कह दी जाये। फिर ने जो करे। मुहल्ला समितियों के माध्यम से घोर भाईके से प्रचार शुरू हुआ। १६ को मुहल्ला ४० एम० ने इन लोगों को बुला कर पूछा कि 'धप समा करने को कटिबद्ध है?' 'पटने के प्रादोलन से हमारा कोई संबंध नहीं अतः हम समा करेंगे। हा उपद्रव नहीं होगा।' जिलाधीन इनके बड़े रख से पहले ही परेशान थे, व्यापारी भी कुछ घोर डरा हुआ। बन्धू मौका जान भारत रक्षा कानून के प्रवर्तन प्रशासन, सन्तोष, कहेया शरण गिरफ्तार बिये गये। शाम की सभा में सुरेश शर्मा नाम का एक लखका गिरफ्तार हुआ उसे तो पीटा भी। पत्सो रात हमारे पर धावा मार कर बिचोर शाह को गिरफ्तार किया घोर कल १० बजे दिन में माथी शक्ति प्रतिष्ठान के प्रमुख सचिव हलधर जी को। हलधर जी को भी पीटा गया है ऐसी खबर है।

धपना भारतीय के २३ मार्च को पत्र से

लेकिन बड़े भाई के धाने तक इन्दौर में रहने का पिताजी का प्राग्रह मानना पडा। घोर नम्बर '६८ तक इन्दौर में ही रहा। इसी बीच सर्वोदय विचार घोर कार्यक्रमाँ से सम्पर्क हुआ और सना कि मेरे विचार घोर दृष्टि के साथ हम समाज का ठीक मेल बैठता है। धीरे-धीरे सर्वोदय विचार और प्रादोलन के साथ सम्पर्क बढता गया घोर '७० में इन्दौर में विसर्जन आश्रम से रहने के लिए चला गया। '७० में ही विनोबा ने सहरसा को सर्वोदय प्रादोलन का राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की दिशा में सकेत किया घोर उसी सिलसिले में दो महीने के लिए सहरसा धाया। यहां के काम का महत्व देखकर यहाँ पर कुछ साल के लिए अपना कार्य-शेन बनाने का तय किया। बीच-बीच में साधियों के प्राग्रह से देश भर में तरुण शान्ति सेना के काम में भी मदद करता रहा। एक साथी के साथ होनी विज्ञान के लिए और साधियों से मित्रता धाने का कार्यक्रम तय करने के लिए मुजफ्फरपुर धाया। इस समय मुजफ्फरपुर में मूल्य निर्धारण का काम युवकी, अधिकांशियों घोर व्यापारियों के प्रापसी सहयोग से चल रहा था घोर मुहल्ला समितियों के माध्यम से इन को घोर व्यापक बनाने की कोशिश भी चल रही थी। मैं सहरसा में ग्रामस्थराज्य का काम कर रहा था। धभी का भाव शहर के लिए एक धन्धे नमूने का प्रारम्भ है, ऐसा मुझे यहाँ दीक्षा घोर यहाँ रुबरु भेद करने का सोचा। जब देवा कि मुजफ्फरपुर में ७ दिन से अधिक घोर सहरसा के बाहर १५ दिन से अधिक हो जायेगा, तब नियमानुसार दे जगह के एस० पी० प्राफिम में, सहरसा में रजिस्टर्ड पत्र के माध्यम से घोर मुजफ्फरपुर में ब्यक्तिगत रूप से मिल कर सूचना दे दी।

यहा पर एक जिक्र करना आवश्यक समझता हूँ कि सहरसा के एस० पी० के विदेश विभाग में जो कर्मचारी हैं, उनको कानून की पूरी जानकारी नहीं है घोर अभी उन जनों तरफ से समुचित व्यवहार नहीं मिलना है। जून '७२ में यहा रहने का परमिट बढाने के लिए दरखास्त दी जिसका प्रव तक कोई जवाब नहीं मिला है। इस सिलसिले में एस०

पी० से विहार प्रदेश बाप्रे स कमेटी के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्र के साथ मिला। लेकिन कोई समाधान वारक हल नहीं निबला रहने को इजाजत जो मेरे पास रहनी चाहिए वह भी सम्बन्धित कर्मचारी ने धपने पास रख ली। धपनी तरफ से मैं विभाग को सब सूचना देता रहा—व्यक्तिगत रूप से, पत्र से जाकर, तार से रजिस्टर्ड पत्र से—जब जैसे सबब हुआ। '७३ में भारतीय माणविकता प्राप्त करने का प्रयाग भी किया, लेकिन सहरसा के जिलाधीन भावलय में प्रादेवत पत्र का पार्ना-तक प्राप्त नहीं हुआ। यहाँ की प्रथमता देख कर नागरिकता प्राप्त करने का काम, मौका मिलने पर, इन्दौर से करवाने का सोचा था। यह मेरा सविनय इतिहास है। सर्वोदय के बपोद्ध नेता धीरे-द मजूमदार का एक वाक्य बार-बार बल देता रहा है कि 'बिचोर तो भारत की मिट्टी में नहीं गये है। कानून तो यहा का नागरिक नहीं बन पाया है, लेकिन मन में मैं धपने को भारत का ही मानना हूँ। जिन लोगों के बीच घोर जिन साधियों के साथ काम करता हूँ, ये इसका सबूत देंगे। ●

लोकसेवकों को संयोजक की रिपोर्ट

सुन्दरलाल बहुगुणा

१७ फरवरी ७३ को पावती बुई के प्रदेशीय सर्वोद्यम सम्मेलन की समाप्ति पर प्रदेश के लोकसेवक साधियों के प्रदेश सर्वोद्यम मण्डल का धन्यस्य बनाने के धारण को मैं नई चारणों से स्वीकार करने में असमर्थ था। उनमें से सबसे बड़ा कारण तो सगठन संबंधी मेरी मान्यताओं का था, जिनके बारे में पिछले दो दिनों से चर्चा हो चुकी थी। जिस प्रकार की विनियमित समाज रचना पर हम विश्वास करते हैं, उस के धनुषख सगठन बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्थान लोकसेवक का और प्राथमिक व जिंदा सर्वोद्यम मण्डल का है। परन्तु वास्तविकता दूसरी ही है। हम देश

प्रकाशित संयोजक की चिट्ठी के रूप में, जो कुछ मुझे जलज्वर हुआ उसे लोकसेवकों तक पहुंचाने का प्रयास करता रहा।

दूसरी ओर प्रदेश स्तर पर क्षेत्रों के काम के तालमेल के लिए प्रदेशीय संयोजक समिति की रचना की गई जिसमें क्षेत्रीय संयोजक समिति क्षेत्र में सघन कार्य के लिए बैठने वाले मुख्य साथी के प्रतिरिक्त प्रदेश भूदान यज्ञ समिति, तरुण शान्ति सेना व चवल पाटी शान्ति मिशन के उपाध्यक्ष शामिल हुए। इस समिति की कुल मितान्वर चार बैठकें हुईं, जिनमें से दो बैठकें तो सघ्न अधिवेदनों के अन्तर्गत पर दुरोधन व सेवाप्राम में हुईं। इनमें अधिकांश लोकसेवक भी शामिल हुए।

सघन क्षेत्रों में क्षेत्रीय सम्मेलनों में पूर्वी क्षेत्र में धाजमगड जिले के हार्य्या व मिर्जापुर जिले के तालगज विकास क्षेत्र को, मध्यक्षेत्र में बानपुर जिले के जगन्नेर प्रखण्ड को सघन कार्य के लिए छाड़ा गया था। पूर्वी क्षेत्र में धाजमगड में तो यह कार्य मुक नही हो सका, परन्तु मिर्जापुर जिले में बनबासी सेवा ग्राम्य में बमनी प्रखण्ड में घाम सभाओं का प्रथम करने भूमिहीनता को मिटाने के अभियान में सफलता प्राप्त की। मध्य क्षेत्र में प्रदेश भूदान-यज्ञ समिति और जिंदा सर्वोद्यम मण्डल के सम्मिलित प्रयास से कुतुबन में तिवरि और परवाणायें पलाई गईं और इस क्षेत्र में काम भी बुनियाद बन रही है। जगन्नेर से कोई समाचार नहीं मिले, यद्यपि बहा पर पट्टे से पत्तने तानन सपकें का नाम जारी है।

स्त्री शक्ति जागरण देश भर में महिला सोचपाठा सफल बनाने की पूर्ण तैयारी के लिए गोरमपुर, बानपुर, धागटा और रामपुर (कोटासराय) में निर्मला देगाम्बे के मार्गदर्शन में महिला तिवरि हुए। इन तिवरि से प्रत्येक जिले से भाग लेने वाली बहनों के प्रस्ताव कुछ बहनें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रों में भी गईं। मध्य क्षेत्र में कु० सरोज व डा० सतीश पोखरी ने, पश्चिमी क्षेत्र में कु० इन्दा बहन और पूर्वी

क्षेत्र में कु० मोरार मेहता व श्रीमती अनुराधा धरामबहादुर ने यात्राएं की। लखनऊ में प्रदेशीय महिला सम्मेलन हुआ। निर्मला बहन ने स्वयं कई जिलों में यात्रायें कीं। उत्तराखण्ड में डा० इन्दु टिकैकर पहले से ही गांव-गांव में श्रीमद्भागवत की कथाएं कर स्त्री-शक्ति जागरण का कार्य कर रही थी। स्त्री-शक्ति जागरण सत्याह के दौरान इलाहाबाद, कानपुर, धागटा मुजफ्फरनगर, देहरादून और टिहरी में विशेष उल्लाह रहा। पत्रकार मे० ए०, ए०, ए० मार्च को हुए महिला सम्मेलन में प्रदेश से ६० बहनों से भाग लिया।

प्रदेशीय भूदान-यज्ञ समिति ने घामदान जिले के मसविदे पर विचार किया और उसे अंतिम रूप देकर राखवट विभाग को दिया है। प्रदेश के कई साधियों ने सहस्त्रा के राष्ट्रीय मोर्चे पर पिछले वर्ष व इस वर्ष भी अभियानों में भाग लिया। इस समय बहा पर १५ साथी कार्य कर रहे हैं।

बाबा की प्रेरणा से भी सोहनताल 'भूमिदा' जो उत्तर भारत की साम्ययोग बाबा पर निकलने वाले थे, दक्षिण भारत की परधाना कर रहे हैं।

देश के धन्य भागों में . . . में केवल सोच-सेवकों की सेवा में उन कार्यक्रमों का स्वीकार हो वे रहा है, जिनमें मैं शामिल हुआ, यह प्रदेश के कार्य की रिपोर्ट नहीं मानी जानी चाहिये। फरवरी के अंत में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अन्तर्गत मैं उत्कल नवजीवन मण्डल के साहिक सम्मेलन में शामिल होने गया। यह साहिकवासी क्षेत्र बन प्रघात है और यहां के लोगों की बन सभ्यताएं बढ़ी हैं जो उत्तर प्रदेश के बन प्रघात क्षेत्रों की हैं। उनके लिए बचने की वन प्रघात के लिए उत्तराखण्ड में होने वाली जनजागृति का सदैव विशेष प्रेरणादायी था।

उसके परबत सहस्त्रा के राष्ट्रीय मोर्चे पर मार्च ७३ के प्रथम पक्ष में हुए अभियान में प्रदेश के धन्य साधियों के साथ भाग लिया।

लोकसेवकों से सघन... इस योजना को पूर्ण रूप देने के लिए पावती में ही क्षेत्रीय सम्मेलनों की योजनाएं बन चुकी थी, जो २२ मार्च ७३ को धाजमगड में, ३१ मार्च ७३ को बानपुर में, ६ अप्रैल ७३ को कुतुबन में हुए। इन सम्मेलनों के धान्य में १२० लोकसेवकों के धान्यमण्डल सगठन के कार्य की अपनी योजनाओं बनने एक नई बंधु की अपनी योजनाओं की मेरे विस्तार पर दर्ज कर दी। ये प्रति-वेस होने के—मेरे और उनके—लिए बहुत प्रेरणादायी थे, क्योंकि वे हमें एक दूसरे के बाणों की जानकारी देने के लिए, स्वयं कुछ करने की बात दिमागें बाने थे। 'सर्वोद्यम' में

प्रारंभ के अंत में पवनार में विनोबा जी के पास हुई गोष्ठी में 'शनायतदे' का मंत्र मिला। बाबा का यह सुभाष भी था कि उत्तर भारत में सेवकों को दक्षिण भारत में जाना चाहिए। उसके अनुसार भारत के अंतिम पलवाड़े में तंजौर जिले के सघन कार्य क्षेत्र में, जहाँ जगन्नाथन जी और वटा के साथी केलवलमणि बाण्ड के परभाव भूमिहीनों की समस्या का अहिसरु हल निकालने के लिए काम रहे हैं, पूमा। यहाँ के सेवकों की निष्ठा, सादगी और कार्य पद्धति अत्यंत प्रेरक है। सर्वोदय सेवकों के प्रलाया में वहा पर पत्रकारों साहित्यकारों व राजनीतिक पक्ष के कार्य-कर्ताओं के भी मिला। उत्तर भारत के जन-जीवन के बारे में जितनी अधिक् रुचि उन्हे थी, उससे भी अधिक् लाभ वहा की जानकारी प्राप्त कर भुक्ते हुए। इस वर्ष जगन्नाथन जी के सुपुत्र भूमिभुमार उत्तराखण्ड की यात्रा पर आ रहे हैं।

देश के अन्य भागों की मेरी यात्रा कुह-सोत्र और सेवास्राम में सघ्न अधिवेशन के निमित्त हुई।

उत्तराखण्ड: मेरे सघन कार्य का क्षेत्र उत्तराखण्ड ही रहा है। प्रदेश के काम से सघर्ष रखने के दायित्व के धारक भी मेरा अधि-बाध समय उत्तराखण्ड में ही बीता। यहाँ पर प्रारम्भ हुए 'चिपको' आन्दोलन की व्यापक बनाने के लिए चमोली व उत्तरकाशी जिले में साधियों के साथ पूमा। गोपेस्वर की सफलता के पश्चात चिपको आन्दोलन केदारनाथ के क्षेत्र में भी फैला। प्रारंभ के अंत में राज्य सरकार द्वारा श्रीनगर (गडवाल) में प्रायो-जित पंचवर्षीय योजना गोष्ठी में 'सर्वोदय सेवकों के पहाड़ों के विवास सवधी विचारों को व्यापक समर्थन मिला और वे सर्वमान्य हुए। वन समस्या के सम्बन्ध में एक सिण्ड-मंडल पीढ़ी में प्रधानमंत्री से भी मिला और बाद में लखनऊ में राष्ट्रपति शासन समाप्त होते ही मुख्यमंत्री ने वन-समस्याओं पर विचार के लिए सर्वोदय सेवकों को भी आम-नित किया।

उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल ने २५ अक्तू-बर को टिहरी में स्वामी रामतीर्थ जी की समाधि से १०० दिवसीय सर्वोदय पदयात्रा

निकाली। यह वेदांती संत स्वामी रामतीर्थ की शताब्दी का वर्ष भी था। वेदांतिक समाज-वाद का उद्बोध इस शताब्दी के प्रारम्भ में उनके द्वारा 'सर्वोदय' विचार के उदय की पूर्व सूचना थी। मैंने इस पदयात्रा में निरंतर रहने का संकल्प लिया, जिससे प्रदेश के अन्य क्षेत्रों के साधियों को भी इस दिशा में सोचने का भवसर मिले और उत्तराखण्ड में जिन कार्यों को पिछले कई वर्षों से हम करते आ रहे हैं उनको बुनियाद भूत और व्यापक हो। इस यात्रा के दौरान को १०० के बजाय १२१ दिनों तक घाट जिलों में चली, ग्राम स्वराज्य की भूटभूमि में वन सुरक्षा, शराब-बंदी और स्त्री शक्ति जागरण कार्य हुए। एक और हजारों लोगों तक सर्वोदय विचार पहुंचा और इसमें विशेष दिलचस्पी रखने वाले संकटों लोग मिले। ६० लोगों ने यात्रा में भाग लिया जिनमें ६ बहनें थीं। युवकों ने इस यात्रा से प्रेरित होकर गमियों की छुट्टियों में 'भस्कोट से भस्कोट' तक के दूरस्थ क्षेत्रों की यात्रा करने और जन-जागरण करने का संकल्प लिया। हमारे आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए इस यात्रा से कई उपनिर्देशों हुई। सघर्ष में आये लोगों तक निरंतर विचार पहुंचाने के लिए पत्रिकाओं के ग्राहक बनाये गये। यात्रा का शुभारंभ और समापन स्वामी चिदानन्द महाराज ने किया था। उनके आश्रम के अन्य सन्यासी, साधक और भक्त सर्वोदय विचार के निकट आये और उन के द्वारा हमारे कार्यक्रमों के समर्थन से आन्दोलन में गतिज प्रकट हुए।

आश्रम: मेरा स्थायी निवास सिल्यारा आश्रम है, जहाँ मैं १८ वर्ष पूर्व अपनी सहधर्मिणी विमला के साथ आश्रमसेवा के लिए बैठा था। इस आश्रम की चतलने की हमारी संयुक्त जिम्मेदारी थी, परन्तु १५ वर्ष पूर्व आवा के धावाहन पर मुझे बाहर के कामों में अधिक् समय देना पड़ा। वहा पर एस्तर और सेती यात्री के घनावा आस-पास के गावों के सामूहिक श्रमदान कार्यों में भी १२ दिन का समय दिया। इनमें से ११ दिन का समय तो धान की रोपाई के समय सरकारी नहर के टूट जाने पर मरम्मत के काम में गये। सिंचाई विभाग स्वर्ष बहुत डीलडाल कर रहा था और नहर बनने में देरी

के कारण संकड़ों मन धान की क्षति होने का अंदेश था, इस बात के दौरान ५ दिन का उपवास भी किया।

प्रदेश सर्वोदय मण्डल के कार्यालय का कार्यभार जुलाई के मध्य तक कृष्णचन्द्र सहाय ने तथा उसके पश्चात मास्टर मुन्दर साला भी तथा तेजसिंह भाई के मार्गदर्शन में मेरठ के कृष्णकुमार खन्ना ने सभाला। उनके प्रति मैं आभार प्रकट करना चाहता हूँ। पिछले कई वर्षों से मैं सर्वोदय मण्डल को अपना मासिक विवरण भेजता रहा। इन महीनों में सयोजक समिति के सदस्यों को भेजता रहा। इसके अलावा सर्वोदय प्रेस सचिव इन्दौर के द्वारा कुछ लेखों का प्रसारण भी हुआ है,

मैं यह व्योरा और पिछले दिनों का हिसाब प्रदेश के सभी लोकसेवकों के समक्ष पेश करना अपना कर्तव्य समझता हूँ और यह निवेदन करता हूँ कि हमारे वार्षिक सम्मेलनों में अन्य बातों के अलावा हम अपने काम का लेखा-जोखा भी पेश करें, एक दूसरे के अनुभवों का लाभ उठायें और अधिस्तक क्रान्ति की मशाल को आगे चलाने के लिए नया तेल प्राप्त करें।

१८ फरवरी '७३ से ३१ मार्च '७४ तक

सिल्यारा आश्रम	कुल दिन ५०
उत्तराखण्ड	५० दिन
उत्तराखण्ड पदयात्रा	१२१ दिन
प्रदेश के अन्य भागों में	६५ दिन
देश के अन्य प्रान्तों में	१२ दिन

(समिलनाड, उत्तर, बिहार)

जिते जिते सघर्ष किया :

आगरा, आजमगढ़, इलाहाबाद, वाराणसी, जौनपुर, मिर्जापुर, भागी, बान-पुर, लखनऊ, मेरठ, देहरादून, टिहरी, उत्तर-काशी, गडवाल, चमोली, पिथौरागढ़, धर्मोडा नैनीताल, बरेली, गोरखपुर।

उत्तराखण्ड पदयात्रा के प्रलाया

पत्रिकाओं के ग्राहक ३५, साहित्य विकी ६६ रु० ३५ रु०

पदयात्रा : भयं मुक्ति के लिए

दिनकर चौधरी

तीन मास पहले दिनकर चौधरी ने विरुंधि किया था कि बी० बॉम्बे के बाद प्रागे में वे दिवादी लेकर लक्षण जानि सेना का काम करना है। तब से लेकर प्रायः सब तैरि लक्षण एक-निष्ठा से लक्षण जानि सेना और सर्वोपय के काम मे, लगा है। विन्दे सेर मे गोविन्दपुर क्षेत्र मे प्रामस्वराज्य के मणन काम मे, सासकर प्रामीण युवकों को सक्रिय र दिनकर जुटा है और मुदूर देहातो मे बैठकर बिलकुल जमीन का काम भी कर

बैनरागी मेका प्राथम १९६८ मे पुर विन्दे के दक्षिणांचन क्षेत्र के गावो प्रशास्य का मणन काम कर रहा है। के प्राठ प्राथमिण केन्द्रों के माध्यम प्रा १०० गावों मे काम चल रहा है। विमर्षण, जमीन समनन करना, जमान के लिए मुयने भाद एव बीज देना प्रादि कार्य के साथ समाज परिवर्तन की काम चल रहा है, जसमे गाव का विकास एवम् प्रशासन, उद्योग के लक्ष्यो मे विशेषज्ञित जागृति करने काम चल रहा है। प्रायः कई गावों मे विविध प्राथमिक के मणले प्राथमिक के काम मे निरतामे गये है।

एकजिन घड़ी करने के लिए नोजन संगठन 'शान्तिवाहिनी' के नाम से बनने का गाचा गया (इस क्षेत्र मे 'प्रायः जमान' का पर्वतीय नाम 'शान्तिवाहिनी' है) यह प्राथमिक के द्वारा संगठन का शान्तिवाहिनी के द्वारा प्रामस्वराज्य के मणन होगा। व्यापक विचार-प्रचार प्रायः प्रमुखों का एव गिर्वरि बहुत-कुछ प्रचार दिवकर, १९७३ मे किया जायेगा और अंततः मे लिए एक व्यापक काम चल रहा है।

मुक्ति पदयात्रा का प्राथमिक क्षेत्र मे प्रायः और जागण का एक महत्वपूर्ण कारण है कि लामा मे काफी भय है। यदि हम को मनुमुक्त करने हैं, तो उनका भागण के लक्षण प्रवृत्त हो संभव है और दीनता को प्राप्त मे उतर उठ मणने है।

इस दृष्टि मे 'सर्वोपय पत्र' मे (३० अक्टोबरी) विचार दिन से १२ फरवरी, १९७३ (२२) मुक्ति पदयात्रा का प्रायोजन का गया, जिसका उद्देश्य था :

लोगो को भयमुक्त करना (इसलिए इस पदयात्रा का नाम 'मुक्ति पदयात्रा' रखा गया था।) गाव-गाव मे शान्तिदल का संगठन करना चुनाव के सन्दर्भ मे मानदाता शिक्षण करना और प्रामस्वराज्य का विचार-प्रचार।

प्रायस्वराज्य के सलो केन्द्रों से (फरीपान बनुतिया, बभनी, गोविन्दपुर, पिपरहर, विदिशारी, बोटा) मुक्ति पदयात्रा एक ही साथ चली। जिसमे १७७ गावों से सम्पर्क किया गया। ६८८ गावित दूर बने। 'शान्तिवाहिनी' का संगठन बनाने मे लोगो का काफी उत्साह रहा। विदिशारी केन्द्र मे तो एक गाव से दुसरे गाव जाते समय मुक्ति पदयात्रा मे ४० लोग तक एक साथ रहे। हर जगह पदयात्रा के साथ मे पोस्टर लेकर चलते रहे। दिन पर लिखा गया था 'जना जाये, पूतखोर भागे, गल्ला खूब उगायेंगे, प्रायःकोप बनायेंगे, बीट-बाद कर लायेंगे।' गाव की प्रती गाव का राज्य, गाव-प्राय मे प्रायस्वराज्य' इत्यादि।

इसी समय उत्तर प्रदेश के विधान सभा का चुनाव प्रचार-प्रम-प्राय मे चल रहा था। लोग चुनाव से लग घाटे हुए दिखाई दे रहे थे। मुक्ति पदयात्रा से कुछ लोगों को यह मतलकहमी हाँवी थी कि यह भी किसी पार्टी का चुनाव प्रचार ही है। लोगों की जका दूर करने का भरसक प्रयास किया जाता था। उनको मुक्ति पदयात्रा का उद्देश्य स्पष्ट करके समझाया जाता था कि चुनाव शुद्ध हों एवम् लोग अपनी धोर से जनता का प्रतिनिधि खडा करने का प्रयास करें। इस मुक्ति पदयात्रा से नया नातावरण तैयार हुआ है।

क्षेत्रीय गिर्वरि शान्तिवाहिनी प्राथमिक के सभी केन्द्रों पर शान्तिवाहिनी के दो दिवसीय क्षेत्रीय गिर्वरि १ मार्च से ११ मार्च के बीच लिये गये। सभी गिर्वरि मे दोस्त उपस्थित ७५

रही। इन क्षेत्रीय गिर्वरि मे सभी शान्तिवाहिनी को निमन्त्रित किया गया था। कुल मिला कर १०० शान्तिवाहिनी ने इन प्राथमिक गिर्वरि मे भाग लिया।

इन गिर्वरि का उद्देश्य था :

शान्तिवाहिनी की जानकारी देना शान्तिवाहिनी को समझावित हो, इस दृष्टि से गिर्वरि मे प्रवचन प्रदान करना और शान्तिवाहिनी का प्रतिभय करना।

फरीपान, बभनी और बनुतिया इन केन्द्रों पर मुवह प्रभाणफरी भी निकली। गिर्वरिवाहो घाते गले मे केमरिया साफा और हाथ पर 'शान्ति दूत' का बिल्ला लगा कर जब चलते तो स्वयं गिर्वरिवाहो मे एवम् जनता मे उस्ताह भासून पड़ता था। सभी केन्द्रों पर १५ से २५ गिर्वरिवाहो मे गाव के मणन के सम्बन्ध मे, गाव की समस्या के बारे मे तथा समस्या के हल के विस्से सुनाये, मुक्ति पदयात्रा के अनुभव वहे। लोग काफी प्रच्छे बोले और उससे पता चला कि समस्या का हल लोगो के पास है। केवल सटहन के प्रभाव से लोगो को अपनी शक्ति का एहसास नहीं है। इन गिर्वरि मे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रादि का भी प्रायोजन किया गया था। शान्तिवाहिनी के वरुंधो के बारे मे सम-भाषा गया।

केन्द्रीय गिर्वरि गोविन्दपुर, इस गिर्वरि मे केवल शान्तिदल सदस्यों को निमन्त्रित किया गया था। यह केन्द्रीय गिर्वरि गोविन्दपुर मे १५ से २० मार्च तक सम्पन्न हुआ। थरुंधेय जयप्रकाश नारायण इस गिर्वरि मे उपस्थित रहने वाले थे। लेकिन प्रवचनता के कारण वे नहीं आ सके।

पूरे क्षेत्र मे १०० गावों मे शान्तिदल बने हैं। जिसमें से ६० गावों के शान्तिदल प्राथमिक उपस्थित रहे प्रतिनिधिवाहो दृष्टि से गिर्वरि काफी अच्छा रहा। इसके अलावा, इन क्षेत्रों के गिर्वरि मे पूरे समय उपस्थित रहना, और चर्चा करना यह प्राथमिक किसानों के लिए नया अनुभव था।

गिर्वरि का उद्देश्य था :

(१) शान्तिदल नायक गावों मे प्रायस्वराज्य के तथा अन्य कार्यक्रमों का संचालन कर सकें, इस तरह का प्रतिभय देना।

(२) शान्तिदल प्रजाज यहाँ के शोषण (लेप ७७३ १४ पर)

चमोली जिले में चिपको आन्दोलन फिर शुरू

तिब्बत से जुड़े चमोली जिले (उ० प्र०) में एक बार फिर वनों की रक्षा के लोचनीय प्रयत्न हो रहे हैं, नगाई बजने लगे हैं। वनों की ध्वजाधुंध कटाई को रोकने तथा वननीति को भाव और वनवासियों के करीब लाने के लिए पिछले साल मई में शुरू हुए 'चिपको' आन्दोलन का यह तीसरा दौर सबसे चुनौती भरा चरण शुरू हुआ है। इस बार वनवासियों को रामपुर (बैदारनाथ) के जंगल की तरह केवल १०-१२ पेड़ों को कटने से नहीं रोकना है, उनके सामने जोशीमठ तहसील का रेणोपिंग नामक पूरा जंगल खड़ा है।

रेणोपिंग जंगल को मार्च के पहले इन्चों में देहरादून में हुई नीलामी में एक ठेकेदार ने ५ साल रुपये में खरीदा था। रेणोपिंग जंगल के निवासी तथा 'चिपको' आन्दोलन के लोगो ने इस नीलामी से पहले वनविभाग के

सोपों को कई तरह से समझाया था कि रेणोपिंग जंगल की नीलामी छोटे-छोटे टुकड़ों में की जानी चाहिए। इससे एक तो गांव वाले भी अपनी सहकारी समितियां बना कर छोटे टुकड़ों की नीलामी में बोली लगा सकेंगे तथा दूसरे जंगल की कटाई धीरे-धीरे होगी, कटाई की रफ्तार कम होने और साथ ही साथ नये पेड़ लगाने की रफ्तार तेज करने से वनसम्पदा समातार बढ़ती रहेगी।

श्रव रेणोपिंग के जंगल को, जिसमें देवदार, सुरई, रागा, घुनेर आदि के पेड़ हैं जोशीमठ, रेणो गांव व मलारी की महिलाएँ घेरे खड़ी हैं। ठेकेदार वनविभाग के अधिकारियों और मजदूरों ने २६ मार्च को जंगल में प्रवेश कर पाया कि जिन पेड़ों को वे काटना चाहते थे, उन पर महिलाएँ लिपटी हुई हैं। ठेकेदार आदि अपने शौचालो समेत जंगल से नीचे उतर आये हैं।

आन्दोलन को विकास क्षेत्र जोशीमठ के गांवों के सभी सभापतियों, अन्य स्थानीय लोगों के प्रस्ताव इस बार गोपेश्वर दिवसी कातेज के छात्रों का भी पूरा समर्थन मिला है। वनों की बेहिसाब कटाई और उसी से जुड़ी बाढ़ और जमीन खिसकने को दुर्घटनाओं से पीड़ित परिवारों के छात्र कातेज छोड़ कर रेणोपिंग जंगल में आ रहे हैं।

स्थानीय पुरुष १२ साल के श्रद्धेय जमीन, जिस पर श्रव सेना का अधिकार हो गया है, के मुद्दावले को लेने जितने के मुख्यालय गोपेश्वर चले गये हैं, उनके श्रमार्थ में गांव-गांव की महिलाओं ने आन्दोलन समाल किया है। रेणोपिंग जंगल से पत्थरीप्रसाद भाट्ट मिलते हैं कि सीमांत क्षेत्र में स्त्री शक्ति जागरण का बहुत ही सुन्दर दृश्य मिल रहा है।

०

छात्र और सरकार हिंसा को कोई प्रोत्साहन न दें

● मुम्बईकरपुर जिला सर्वोदय मंडल की एक प्रास्ताविक बैठक विहार में होने वाले आन्दोलन, विशेषकर मुजफ्फरपुर में घटित घटनाओं पर विचार करने के लिए २५ मई को ध्वजा प्रसाद साहू की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव वास्तु होए:

(१) महाराष्ट्र, छत्ताखार, वरेजगाड़ी एवं अन्य समस्याओं के निदान हेतु १८ मार्च से चल रहे आन्दोलन के सिलसिले में जो हिंसात्मक घटनाएँ हुई हैं उनकी यह समा निन्दा करती है एवं इस क्रम में शहीदों छात्रों के लिए गहरा शोक व्यक्त करती है।

(२) आज की विषम राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थिति के कारण समाज में जो ऊब पैदा हुई है, उसके निदान का उत्तरदायित्व सबसे ज्यादा सरकार का है और उसे उसके लिए धोके बंद कर पहल करनी चाहिए तथा अन्य सगठन और व्यक्ति इस दिशा में जो शान्तिपूर्ण प्रयास करें, उसमें सरकार को योगदान देना चाहिए। ऐसा नहीं होने से हिंसात्मक घटनाओं को भोज्य मिलता है जिन्हें

संशोधित या कोई विचार के बल पर रोना नहीं जा सकता। जनता के वर्तमान कष्ट दूर करने की दिशा में लोक शक्ति तथा अहिंसक तरीकों के आधार पर स्थानीय तहसील शान्ति सेना एवं गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के तत्वाधान में पहल की गई तथा सरकार की पदाधिकारियों, जनता, व्यापारियों एवं छात्रों के प्रतिनिधियों को एक मंच पर साक्षर समाधान ढूँढने के प्रयास में रत तहसील शान्ति सेना, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के कार्यकर्ताओं को तथा इस शान्तिपूर्ण आन्दोलन में लगे हुए अन्य निर्दोष छात्रों को जेल में डाल दिया गया। क्या इससे यह समझ जाय कि सरकार जनता के वर्तमान कष्टों को ज्यों का त्यों बने रहने देना या बदला चाहती है तथा उसकी मुनाफाखोर और जमाखोर व्यापारियों से सॉट-मॉट है? यह सभ्य उन निर्दोष कार्यकर्ताओं को गिरफ्तारी की मर्मांश करती है। साथ ही बालूज की मर्यादा का उल्लंघन करके, बालूज के रथक समर्थक होने वाले पुलिस, वदाधिकारियों द्वारा उक्त सग-

ठनों के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करने के वाद पीटने के जघन्यकृत्य को यह सभा घोर निन्दा करती है और सरकार से प्रपेक्षा करती है कि वह निष्पक्ष जांच करके इस विषय में पूर्ण पदाधिकारियों को दक्षित करे।

(३) उक्त परिस्थितियों में यह साफ है कि उपर्युक्त गिरफ्तारियाँ श्रम या दुर्गमना के फलस्वरूप हुई हैं। अतएव तहसील शान्ति सेना की गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के कार्यकर्ताओं तथा अन्य निर्दोष छात्रों को तत्वात् रहित निया जाय और इस प्रकार बेगुनाह व्यक्तियों को जेल में डालने की घटनाओं की उच्चतरीय जांच करके आवश्यक कार्रवाई की जाय।

(४) अतः यह सभ्य छात्र एवं युवा समुदाय से प्रार्थना करती है कि किसी भी हालत में आन्दोलन में हिंसात्मक ध्वजनी एव नृत्पाट करने वाले तत्वों का समावेश नहीं होने दे तथा सरकार को भी आग्रह करती है कि ऐसी कोई उमेजना पूर्ण कार्रवाई न करे जिससे हिंसा को प्रोत्साहन मिले।

सर्वोदय सम्मेलन में बांगला प्रतिनिधि

● बादसना प्रसिद्ध भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन पूर्व निर्धारित तिथियों, ३१ मई से २ जून, १९७४ तक कलकत्ता में होगा इन तिथियों में किसी प्रकार का परिवर्तन प्रस्तावित नहीं है।

उक्त सम्मेलन के स्वागतार्थ्यक्ष शितीश-राय घोषुरी ने बांगला देश की यात्रा की और बांगला देश के प्रधानमंत्री मुजीबु र्हमान से मेंट कर उन्हें सर्वोदय-समाज-सम्मेलन में भाग लेने का निमन्त्रण दिया। यदि परिस्थिति की अनुमति तर्ही तो बगवन्पु ने सम्मेलन में भाग लेने की इच्छा प्रकट की है। सम्मेलन में बड़ी संख्या में बांगला देश से प्रतिनिधियों के इन के भाग लेने की प्रार्था है।

सम्मेलन की सफल बनाने के लिए प्राथमिक साधन-सहायता जुटाने के सिलसिले में सम्मेलन के सगठन सचिव समरेश्वरबन्धु ठाकुर तथा परमेश बन्धु २१ मार्च से उत्तरी बंगाल दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, कूचबिहार, मालदा तथा पश्चिम दिनाजपुर जिलों का दौरा कर रहे हैं।

स्त्री शक्ति सम्मेलन का सप्त सूत्री कार्यक्रम

● ८ से १० मार्च तक पवनार में हुए स्त्री शक्ति सम्मेलन में निम्नलिखित सप्तसूत्री कार्यक्रम स्वीकृत किया गया है:

(१) स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह २ फरवरी से ८ फरवरी तक देश भर में मनाया जाये, हर स्त्राक में परदात्रा धायोजन का प्रयत्न हो।

(२) मारी का ध्यान करने वाले धनोपभोगी पोस्टर, सिनेमा तथा इतिहासों के खिलाफ धारोलेन करने के लिए देशभर में एक दिन मनाया जाये। उस दिन इन तरह के पोस्टर को हटाने का कार्यक्रम किया जाये। इनके साथ-साथ समाज में समग्र मारी धन-धन का मातावरण निर्माण करने का प्रयत्न किया जाय।

(३) सामुहिक सन्धय, स्वाध्याय निम्निर तथा बन्धनों को सस्वार देने के कार्यक्रमों का धायोजन स्थान-स्थान पर किया जाय।

(४) गाव-गाव में महिलाओं का मण्डल बनाया जाये, जो स्त्रियों पर होने वाले घन्याय और शोषण के विरोध में सक्रिय प्रति-सक प्रतिकार करे। इसमें बरारखसोरी, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, बहुपत्नीत्व, पर्दा-प्रथा आदि के खिलाफ काम हो।

(५) भ्रष्टाचार, घूसखोरी को मिटाने के लिए घुमियादी सामाजिक परिवर्तन जाया जाये। इसमें स्वदेशी, खादी, भारतीयता का प्रचार, मितव्ययिता आदि सब धा जाते हैं।

(६) ज्यादा-से-ज्यादा उपवास-दान प्राप्त करने की कोशिश की जाये।

(७) स्त्री-शक्ति के कार्य को गति देने के लिए बहुविधा-मन्दिर को केन्द्र बनाकर, भारत-ध्यायी सपक रखने की योजना बनायी जाये।

गोपद में धामस्वराज्य पदयात्रा

● सीधी के सदस-सदस्य रणबहादुर सिंह के नेतृत्व में सीधी जिले की गोपद-तहसील के धू गावों में १८ से २४ मार्च तक धाम-स्वराज्य-पदयात्रा का धायोजन किया गया।

इस में क्षेत्र के नागरिक, सर्वोदय सेवकों के प्रतिरिक्त सर्व-सेवा-सच के सहमंथी नरेन्द्र बुले, मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल के मनो इन्द्रसल मिश्र तथा धामस्वराज सचन सेवक, महु (इन्दौर) के सगठन सचिव धमपाल सेनी, भभोली जनपद के मध्यश भूरेन्द्र बहादुरसिंह, पडवास के भूतपूर्व राजा कृष्णदेवसिंह, रीवा के समर बहुदुरसिंह, मोरीसिंह तथा कल्याण चन्द्र त्रिपाठी ने भी भाग लिया। लगभग २५ ध्यागणसियों ने धयना समय देने का सकल्प किया।

रीवा सम्भाग में रघनसतक प्रवृत्तियों के सगठन-सयोजन के लिए सभाग स्तर की एक रचनात्मक संस्था गठन करने का भी निर्णय किया गया है। यह संस्था क्षेत्र में धामस्वराज्य, खादी, धादिवासी-सेवा, कृषि-मोपालन तथा ऐसे ही अन्य सेवा-कार्य करेगी।

(पृष्ठ १३ का शेष)

और घन्याय का महत्वपूर्ण धारण है। इस सिंए कानून की सामान्य जानकारी देने का प्रयास किया गया।

(३) 'शांतिवाहिनी' को सक्रिय एवम् सुगठित करने के लिए शांतिदल के नायकों की प्रतिगठित करना।

शांतिवाहिनी का संगठन : शांतिवाहिनी की घुमियादी इकाई 'शांतिदल' है। गाव के सब शांतिदल मिलकर 'शांतिदल' बनता है। शांतिदल का 'नायक' रहेगा। एक क्षेत्र के (करीबन १५-२० गांव) सब शांतिदल ग्रायक मिलाकर 'शांति समिति' बनती है। शांति समिति का प्रमुख 'संयोजक' कहलायेगा। सब शांतिदल मिलकर 'शांतिवाहिनी' बनेगी।

शांतिदल का साप्ताहिक मिलन होगा। जिसमें गाव की समस्या की चर्चा की जायेगी। सेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम उसमें जोड़े जायेंगे। गांव में बाहर से धानिले विपटन कारी तत्वों की डागरी रधी जायेगी।

इन विशेषताओं के अलावा शांतिवाहिनी धामस्वराज्य सभा को सक्रिय बनाने के सभी कार्यक्रम करेगी। मसलन-धामकोष, जदावल मुक्ति इत्यादि। मन्थाय, शोषण, भ्रष्टाचार आदि समाज विरोधी तत्वों के खिलाफ एक पर्यायी लोकमक्ति खड़ी होगी।

समभदारी का फंसला

(पृष्ठ २ का शेष)

है कि वे अपनी खरीदी का धाधा गेहूं सरकार को निश्चित भाव पर बेचे और बाकी का गेहूं खुले बाजार में बेचे। ध्यायारी ज्यादा से ज्यादा कित भाव पर बेच सकते हैं यह धामी सरकार ने घोषित नहीं किया है। धयुपान है कि खुले बाजार में गेहूं १३० से ले कर १५० रं क्विंटल तक बिकेगा। खुले बाजार में बिन्दी का भाव सरकार धायद इसलिए घोषित नहीं कर रही है कि वह मन्धियों में गेहूं की धायक और ध्यापारियों की खरीदी को देलना चाहती है।

धब जब कि सरकार ने धपनी मघीतरी की एक ऐनी निम्बेदारी से मुक्त कर दिया है जिसे वह पूरी नहीं कर सकी थी इसलिए धपेक्षा करना चाहिए कि धोक ध्यापारियों और धहृकारी समितियों को सांसेल-धरमित देने और कर्मो पर नियन्त्रण करने में वह धमता से काम लेती। यह जरूरी है कि राशन की दुकान के भाव और खुले बाजार के भाव में ध्यादा धन्तर नहीं हो। यह प्रभावशाली नियन्त्रण से ही संभव हो सकेगा। धयाना है प्रधानमन्त्री यह करना सचेंगी।

प्रभाव जोशी



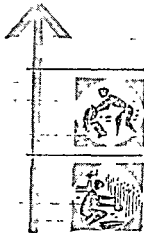
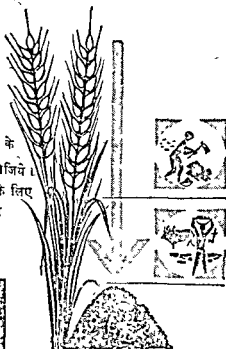
कम्पोस्ट खाद से पेदावार बढ़ाइये

अपने खेतों से अधिक उर्वज लेने के लिए कम्पोस्ट खाद का प्रयोग कीजिये। इस खाद में फसल की बढ़ोतरी के लिए सभी जहरी तत्व हैं। इसे भाप स्वयं प्राप्ताने से बना सकते हैं।

कम्पोस्ट तैयार करने में कोई पैसा नहीं लगता क्योंकि यह नूडे-कचरे, सूखे पत्ते, छिलके, गोबर आदि से बनती है।

अच्छी कम्पोस्ट बनाने का तरीका जानने के लिए ग्राम सेवक से सलाह लीजिये।

कम्पोस्ट डालिये अधिक कमाइये



davp 73/577

सर्वाङ्ग

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार १५ अप्रैल, ७४



पटना में गांधी युग के इतिहास का वातावरण फिर देखा। विशेष तैल पट्ट

लौट तो रहे हैं सुवह के भूले

जयप्रकाश नारायण और इन्दिरा जी के बीच पिछले पचास बरों से जो दुवचारी सवाद चल निकला था उसकी समाप्ति के आशा-जनक आसार नजर भा रहे हैं। नाइस के 'प्रगतिशील' बीरो ने अपने को बकादार सिद्ध करने के लिए हुवा मे पंढा-बनेटी घुमा कर संचयन का वातावरण पैदा कर दिया था। पाच बर्ष की 'सियारी हुआ-हुआ' राजनीति से बन कर निकले ये 'बीर' साम्यवादी देशों के तीर-तारीके अपना कर 'असहमति' की वावाज को बदनाम करने पर तुले हुए थे। ये शायद समझ रहे थे कि काफ़िस के विधेन के बाद सिण्डिकेटी नेताओं को जिस तरह उन्होंने बदनाम करके समाप्त कर दिया था उसी तरह वे जयप्रकाश नारायण से भी 'निपट' लेंगे। शायद इसीलिए उन बीरो ने जे० पी० को पैसे वालो की टूपा पर जीने वाला सफ़्ट शेर प्रतिनिध्यावादी शक्तियों का प्रवक्ता बताया था और आरोप लगाया था कि वे हिंसा और धराजकता फैला रहे हैं। जयप्रकाश नारायण की गतिविधियों और बयानों के खिलाफ जनता को आगाह करने के 'प्रगतिशील' बीर समझ रहे थे कि अब लोग 'हुआ-हुआ' करने लगेंगे। निश्चित ही ये लोग गलतफहमी में थे और अपने अपने उस्ताह में एक ऐसे ब्यक्ति से बदतमीजी के साथ भिड़ गये थे जिनसे 'पचास बर्ष सार्व-जनिक जीवन में त्याग और तपस्या से बन पर लोगों का विश्वास बचाया है।

जनता की अदालत में 'हुआ हुआ' का धोर नहीं चला और ईमादेशर जनसेवा की बिजय हुई। सोमवार घाट अग्रस को पटना के लोमो में जे० पी० ने नेतृत्व में निकले मोन जुलूस का जित तरह समर्थन दिया और दूसरे दिन लाखों लोगों ने तावियां बजाकर

जित तरह उन्हें 'लोकनायक' की उपाधि से फिर विभूषित किया उससे देश ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह भूटे नगाडों के बजाय पवित्र आश्रीक की हुंकार सुनता है। कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद जे० पी० ने जनता की भदावत में अपने को पेश करने के अपने जीवन की भले ही सतरे में डाला हो पर उन सिद्धान्तों और मूल्यों को तो उन्होंने निश्चित ही पुनर्जीवित कर दिया है जो उन्हें अपनी जान से भी प्यारे रहे हैं। बहस्तर बर्ष के सघर्ष से जर्जर हुए शरीर और देश की परि-स्थिति तथा जीवनसंगिनी के विद्योह से दुखी हुए मन को यज्ञ की आहुति बना कर वे फिर उठ सके हुए हैं तो देश के अग्रगण्ये क्षितिज पर प्राणा का उजाला फूटने लगा है।

काफ़िस के इककावन मसद सदस्यों, सर-वार के बुजुर्ग मन्त्रियों और स्वयं श्रीमती इन्दिरा गांधी ने उजाले बी इस सम्भावना को पहचान कर निरर्थक सघर्ष को टाकने के लिए जो पहल की है वह समभदारों का लक्षण है। सुवह के भूले-समभदारी तब पट्टु चने थे लिए शाम तक नहीं भटके और दोप-हर के पहले ही पर लौट आये। जैसा कि स्वयं जे० पी० ने कहा है—इन्दिरा जी ने प्रति मेरे मन में विशेष वैयक्तिक सम्मान है क्योंकि वे हम सब के उस प्रिय ब्यक्ति की लटकी है जिन्हे मैं अपना बड़ा भाई मानता था। मेरे निजी जीवन के बारे में उनके द्वारा लगाये गये आरोपों का पचन करने के पहले सब प्रुधिसे तो मैं काफी हिचका था। लेकिन मुझे ऐसा करना पडा क्यों कि इन आरोपों के गलत लोगों के मन में पैदा हो सकने वाली गलतफहमियों को दूर करना जरूरी था।' काफ़िस स पार्टी और उत्तमी सहयोगी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने पिछले तीन महीनों से

प्रभियान चला रखा था जिसका एवमा उद्देश्य जे० पी० से उनका वह नैतिक प्रथि काय छीनना था जितके चल पर वे सार्वजनिक प्रव्त्ताचार के खिलाफ जिहाद छेड़ रहे थे इस प्रभियान का मतलब था—तुमारी दुः बटो है तो हम तुम्हारी भी दुःम नाटयें जे० पी० अग्र चुप रह जाते और यह प्रथि यान सकल हो जाता तो प्रव्त्ताचार के खिलाफ उठनेवालो कोई भी भावाज इस देर में प्रामाणिक नहीं बचती। सार्वजनिक जीवन की मुक्ति के लिए तब कोई भी शक्तिपूर्ण और प्रथिसक आंदोलन नहीं चल पाता। जनता का आश्रीक दिनों दिन टिसक विस्फोटों में प्रकट होता, धराजकता फैलती और ताना-बाही के लिए मार्ग प्रशस्त होता। नैतिक शक्ति के लिए आखिरी दम तक सडने की प्रतिज्ञा लेकर जे० पी० ने विचारियों का नेतृत्व करने की जो घोषणा की है उनसे अहिंसक और प्रामाणिक जननेतृत्व का सकट दूर होगा और लोगों में विश्वास जमेगा कि उनकी तकलीफें बिस तरह सचमुच दूर हो सकती हैं।

नैतिक शक्ति के लिए विचारियों पर अपनी समस्त आशाएं रेंद्रित करने हुए भी जे० पी० ने उनके बारे में साफ-नाफ वायें नहीं हैं। प्राजदों के बाद युवा शक्ति जिस तरह के सजीव उद्देश्यों की प्रुति में व्यर्थ जा रही थी उससे देश के भविष्य में हृचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति का दुपुं होना स्वाभाविक था। परीक्षाओं में नकलपट्टी, अध्यापकों को हटाने और सिनेमा के रिषायती टिकट प्राप्त करने जैसी बातों को लेकर होने वाले छात्र उपद्रव न छात्रों के हित में थे न देश के हित में। इन उपद्रवों की दुपदायी परम्परा को तोडा नुजरात के विचारियों ने। देश में पट्टी वार बहा के विचार्यों प्रव्त्ताचार, महं-गाई और प्रभाव के खिलाफ जनता की और से लड़े और राजनीतिक पार्टियों से दूर रहे। नुजरात के विचारियों ने युवाशक्ति में जे० पी० के विद्वानों की पुक्ति की। लेकिन बिहार का विचार्यों आंदोलन, नुजरात त्रैसी नैतिक शक्ति नहीं रगता न बहा के अध्यापकों ने यह प्रकट दिखाई है। लेकिन धब चू चि जे० पी० उनका नेतृत्व करने का संयार हो गये हैं तो आशा है कि विचार्यों और अध्यापक बदलेंगे।

—प्रभाप जोशी

पटना ने गांधी युग के अहिंसक प्रतिकार का वातावरण फिर देखा

मौन जुलूस और ग्राम सभा का आँसों देखा हाल—श्रवण कुमार गर्ग

श्रीरघु घोर ने घर्षल को पटना में जो कुछ हुआ वह भारत के इतिहास में अमोघ-स्वर्णकाल के लिए अंकित हो गया। घाटावली के पत्ने गारी ऐसे व्यक्ति थे जिनके दर्शन के लिए लोगों लोग पत्ने जियापुर घण्टे सटे रहते थे। गांधी जब निरवत थे तो लोगों का बाप टूट जाता था। गांधी जब बोलते थे तो लोगों की मना मोन हो जाती थी। गांधी एक गैर राजनीतिक लोग नेता थे। घाट घोर ने घर्षल को पटना में बिहार को जनता के मांथों को फिर से जीवित कर दिया। निमी घोर गैर राजनीतिक जन नेता का आजादी के बाद इतना बड़ा सम्मान नहीं हुआ होगा जो जयपराग जो का हुआ।

दिन घाट घर्षल। समय पीने पार बजे। जयपराग जो घमरथ है पर उहोंने जनता को बचन दिया है उसे पूरा करना है। 'लोगों को भांगिजुगमें विरोध घोर कार्यवाही का धरिभार देन की सरकार को बर्तमान मौन अपार जारी रही तो स्वस्थ होने के पढ़ने ही भांगि संजिको, विचारियों घोर सत्य-पद्धियों के रूप में मांग निर्याने वाले नागरिकों का मौन जुलूस निवाले के लिए मैं अपने को बाध्य पाऊंगा। यह धमकी नहीं है, एक दोस्ताना चेतावनी है'—जे० पी० ने कहा था। डाकटरो का कहना था कि बिभी को भीमा पर मारो मिनट से ज्यादा जुलूस में मन रहिना नहीं तो स्वाम्भ्य पर कराव धगर पड़ेगा। बदम कु धा स्थित मडिना चारों मरिज को पट्टी मजिन से दो व्यक्तियों ने एक घानकी मुना मुना पूरा बँटाव कर जे० पी० की नीचे उतारा। डाए हाथ में छड़ी घोर बाए हाथ से एक हाथी का महारा देकर जे० पी० बिहार रिजिन कमेटी की संघ रोडर तक भागे। महारा देकर उहें बँटाया गया। चार बने-बने जे० पी० बदम कु धा स्थित

कार्यम मैदान पर पहुच गये। जे० पी० स्वयं घाटघर्ष चर्चित थे। जुलूस में प्रतिना-नभ भर कर भाग लेने वाले एक हजार लोगों के प्रति-रिक्त हड़ताये लोगों की अनुशासित भीड़ जमा थी। जैसे ही जे० पी० घाटे भाग उनके दर्शनों के लिए टूट पड़े। मैकडो मूकही घोर स्टील बँदरे किन्तु हास लय। जँसे-जँसे जे० पी० को एक प्रतिना से सामने सटे एक हजार सत्याग्रहियों के माथल तक न जाया जा सका। अनुपटनासोपण बाजू के मरक्षण में जे० पी० ने अपन जीवन की मूरुघात की थी। अनुपट्ट बाजू जब तक रह जे० पी० के मव कुछ रहे। एक जीवन की मूरुघात जे० पी० ने अनुपट्ट बाजू के जीवनदान म की थी घाए एक दूसरी जुल्फान भी उनको प्रतिना के सामने न ही जे० पी० करना चाहते थे। गुमार प्रजात में जे० पी० के गले म भाति मैजिब का कैमरिया स्वर्ण बाधा। जे० पी० न जुलूस में भाग लेने के लिए बनाये गय प्रतिना पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। घीरे-घीरे जुलूस रवाना हुआ।

जुलूस में सबसे आगे संघ रोडर में घणवी मोट पर जे० पी० बँटे घोर उनके बगल में उनका सेवक गुनाब धरने दादवी की सार सम्भाल के लिए। पीछे कीमोटी पर वैद्यनाथ भाव, ध्वजा बावू घोर अन्य जुलूस जो पैदल नहीं चल सकते थे पर जुलूस में भाग लेने पर उठाए थे। जे० पी० की मोटर के पीछे तरुणिया व महिलाएँ। बाहक सान 'से पैसठ साल उमर तक। फिर तरण व पुत्र्य। सस्ते पीछे युविय का हनुम (सुरक्षा के नाम पर)। जुलूस में भाग लेने वाले सभी लोगों के मुह पर कैमरिया पट्टिया। सभी के दोनों हाथ कमर के पीछे। बाजूघो पर भाति सैनिकों का बितना। जिन लोगों ने हाथों में सान पट्टियाँ उठा रली, उनका भी एक हाथ पीछे। जुलूस

पूरा मोन। एर भी नारा मुह में नहीं। जो कुछ कहना है वह हाथों से उठाये गये प्ले पार्स में लिखा हुआ है—हमारे हृदय क्षुब्ध है और जवान बन्द है, हमला चाहे जैसा हो, हाथ हमारा नहीं उठेगा, मडुगी, बेनारी, घण्टाघार, सत्ता ही है जिम्मेदार, साठी, मोली, हिमा, लूट—निमी को इनकी जिने न छूट।

घाट तारीख को ही पटना के नागरिकों के नाम जे० पी० ने एक अधील की थी जिसमें जुलूस के उर्दभयो की घोषणा करते हुए असाभाविक तत्वों द्वारा तोड़-फोड़ करने की भी धागना व्यक्त की थी। 'जुलूस मोन इस लिए है कि यह जनता तथा मानव पर प्रकट करे कि यह खान्दोलन पूर्णतया शासितय है घोर हिंसाकारियों, तोड़-फोड़, धागवनी धादि करने वालों में पृथक् है घोर इसमें सम्मिलित तत्व तथा सगठन ऐसे नाथों की निन्द्य करते हैं घोर जनता से मूक प्रार्थना करने हैं कि ऐसे घातमपानी कुटुंब्यों से दूर रहे और उनका शासितय मुखावता करें। जुलूस में एक हजार से अधिक लोग नहीं होये घोर जो भी इसमें शरीर होये, वे सब शासितय सघर्ष घोर स्वयं के लिए प्रतिजाबद्ध होंगे। इसलिए पटना के नागरिकों से मेरी अपील है कि जुलूस में शरीक होने की कोशिश न करें। सड़कों के दोनों किनारे पर बिना यातायात में विषम उल्ले शासित से सटे रहे घोर स्वयं कोई नारा न लगायें। सम्भव है कि इस खान्दोलन के विरोधी तत्व स्वयं या भादे के मुण्डो द्वारा मुन्ने और खान्दोलन को बदनाम घोर कमजोर करने के लिए जुलूस के समय घातमि वेदा करें। घातये मेरी प्रार्थना है कि ऐसे मोके पर घाग मान रहें, बड़ी घाग लगे तो उनको शासित से मुनाते घोर पैलने न देने का प्रयत्न



बदनाम बना करो जयप्रकाश ! तुम लोगों को गुमराह कर रहे हो !

—टाइम्स ऑफ इण्डिया में लक्ष्मण

सरकारी नगाड़ेवाज़ और जयप्रकाश नारायण

जयप्रकाश नारायण के साक बयानों और सोपी वार्ताकारों के एलान के बाद सरकारी नगाड़ेवाजों के लिए चुप रहना मुश्किल हो गया है। पहले मुक्तेश्वर म धीमती गांधी ने कहा कि स्वयं धारावाहिक विज्ञापन भावों के बिना कुछ धारावाहिकों के धारोत्तरकारी नहीं होते हैं। विज्ञापन जो के इन प्रधानमन्त्री विभिन्न दुग में उन्होंने अपना कुछ भी जोड़ा कि—समाजसे भी अलगजल प्रामयेवा का काम धोर कर राजनीति में बूढ़ रहे हैं। इन सात मिनिटों दो बार विज्ञापन जो से बातचीत करने के बाद प्रधानमन्त्री को समझ म आ गया कि मुव धाने धोर धाने जोइन भर के काम पर मुव कर हयने वाना यह शातदोषी सन धारकन को इनवा टुरी है। पवनार में विज्ञापन जो के दुग का समझ कर प्रधानमन्त्री ने मुक्तेश्वर में उन पर धामु बहाये। धर के धामु निश्चय ही प्रधानमन्त्री के धे धोर धारोत्तर धारोत्तर का धारिक 'छट्ट' होने पर बहाय गये थे। देन की सार्विक राजनीतिक नेकी होने के कारण द्वायसम शक्तिनों के 'प्रहा-पति' होने का सदाम उन्हें नहीं ता बिये लगेया ? भुक्तेश्वर के सोनी धोर उनके धारिके सारे देन को प्रधानमन्त्री ने दो बारों बहाय धारावाहिक किया। ए—सोव्य धारोत्तर में फूट है धोर जयप्रकाश नारायण जो कुछ कर रहे हैं उसे विज्ञापन का समर्थन नहीं है, दो—जयप्रकाश नारायण धरने निरार्ह के लिए धारोत्तरों से पैसा लेने हैं और उन के मेंहमा

धरों में ठहरते हैं इसलिए उन्हें अष्टाचार के खिलाफ बोलने का अधिकार नहीं है। लेकिन विज्ञापन और जयप्रकाश नारायण में आपस में कोई मन्त्रिण न होने की धारणा पवनार धोर पटना से एक साथ की धोर जे० पी० ने कहा कि प्रधानमन्त्री के मागस्य सामु बिये आये तो महात्मा गांधी सबसे अष्ट व्यक्तित्व साबित होते। इन बात का सबसे जगदा दुग दुग विहार के वयोवृद्ध विभूति मिथ को। वे धारायण में गांधी जो के साथ काम कर चुके हैं धोर धर करके से समद सदस्य हैं। उन्हें लगा कि जयप्रकाश नारायण राष्ट्रपिता को बदनाम कर रहे हैं। मिथ जो ने एक पत्र लिखा और जयप्रकाश नारायण के पास पहुंचाने के पहले ही उसे प्रेम को दे दिया। इन पत्र में उन्होंने कहा—जयप्रकाश मुवने गांधीजी पर अष्टाचारी होने का आरोप लगाया है। जो लोग जानते हैं कि गांधीजी पवित्रता धोर त्याग की जीनी-जागीरी धूति थे, उनका निर नाम से भूढ़ गया है कि राष्ट्रपिता के साथ काम करने का दावा करते वाने मुहारे जैसे धारिकने उन पत्र यह नितम्ब धोर आचारहीन धारोप लगाया। फिर मिथ जो ने जे० पी० का धारोत्तरन करने हुए बताया कि गांधी की विज्ञापन धारोत्तरों के साथ तीसरे दर्जे म सकर करते थे। विज्ञापन में रहने धोर उके दर्जे में मकर करने वाले जयप्रकाश बागु के तीर-

तरीकों से अपनी तुलना करते कर सकते हैं ? न्याय की मांग है कि राष्ट्रपिता पर ऐसे अपा-धुष धारोप लगाने के पहले जयप्रकाश धुर धरना दिल उठोलेने। जे० पी० का बयान पढ़ने वाले लोगों को विभूति मिथ की समझ पर किन्नल धारिकर्त दुग। मिथ जो इनके साममभ नहीं हैं कि एव सोपी सी बात भी उनके दिमाग में नहीं धारती। जे० पी० की बात को उन्होंने सूब मोच समझ कर ताडा-मरोडा है। सवाल गांधी जो का नहीं है धीमती इन्दिरा गांधी का है। धीमती गांधी ने कहा है कि जयप्रकाश नारायण को देन में ध्यात ध्यायक अष्टाचार के विनाक बोलने का अधिकार नहीं है धोर जयप्रकाश ने कहा कि वे बोलने धोर उसकी कीमत धुवाने को तैयार है। विभूति मिथ ने यह पत्र लिख कर जे० पी० को बताया है कि उन्हें बोलने की क्या कीमत धुवाना पड़ेगी। मिथ जो के पत्र के बाद समद के नी 'प्रगतिशील' बाइसे सदस्यों ने भी एक बयान दिया। जयप्रकाश नारायण ने धीमती गांधी के बारे में जो कहा वह उनकी राय से देन में पतय रही उन धारिकने धारिकनों को दिया गया आधीनार्द है जो अष्टाचार से मरने के नाम पर देन में हिना धोर धारावाहिक का धारावाहिक बना रही है। मिथ जो की तरह इन समद सदस्यों को भी यह है कि धरने धारावा-

(नेत्र पत्र १३ पत्र)

यथार्थ से साक्षात्कार

—धमरनाथ

मुजफ्फरपुर में तर्क शांति सेना ने शांति स्थापना का काम किया था प्रशांति फंलाते का यह बताते की ज़रूरत मुजफ्फरपुर के नागरिकों को नहीं होनी चाहिए और न शायद वहाँ के प्रशासन को ।

मैं २० मार्च को शांति सेना के प्रधान कार्यालय बारांशसी में था । बिहार की प्रशांति परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए इस पर वहाँ के साथियों से बिचार-विमर्श करने के बाद मैंने बिहार प्रान्त का तय किया ताकि परिस्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन कर सकूँ । 'कू'क पटना के लिए यातायात बंद था इसलिए मुजफ्फरपुर के लिए निकल पड़ा ।

२१ मार्च को मैं मुजफ्फरपुर पहुँचा । सीधा गांधी शांति प्रतिष्ठान गया जहाँ स्थानीय और प्रांतीय तर्क शांति सेना का भी कार्यालय है । वहाँ पहुँचते ही मुझे गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र के मन्त्री हलपरजी ने बताया कि 'प्रमुख तर्क शांति सैनिकों तथा गांधी शांति प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष कन्हैयाशरण जी को गिरफ्तार कर लिया गया है । और मेरी तलाश जारी है । रात में मेरे घर का ताला तोड़कर भी पुलिस ने मेरी खोज की लेकिन मैं तब घर में नहीं था । इस वक्त यहाँ कार्यालय का काम कर रहा हूँ । शायद किसी भी वक्त गिरफ्तार कर लिया जाऊँ' ।

शांति स्थापना का कार्य करने वालों को सरकार ने जेल में डालकर कोई बुद्धिमानी का काम तो नहीं किया है फिर भी मैंने हल परजी से कहा 'हम लोग चलकर जिलाधिकारी से बातचीत करें' । तदनुसार हम दोनों रिक्शे से निकले कि प्रान्त एक साथी से मिलते हुए जिलाधिकारी के पास जायें । सैनिक कन्हैयाजी चौक से कुछ ही दूर भागे बढ़ने पर पुलिस की गाड़ी से उतरकर १०-१२ सार्थीयारी सिपाहियों ने हमें चारों ओर से घेर लिया । हम तत्काल रिक्शे से उतरकर उनके भादेशमुगार

उनकी गाड़ी में बैठे गये, हमें कोनवाली घाने पर ले जाया गया । वहाँ उतरते ही घाने में बैठे कई पुलिस अधिकारियों ने हमें घेर लिया और एक ने मेरी बांह पकड़ कर मुझे खींचना शुरू किया । मैंने कहा... 'बाई जब मैं चले ही रहा हूँ तो बांह पकड़कर खींचने की क्या जरूरत है ।' मेरे इतना कहते ही उस अधिकारी ने मुझे बस कर एक बेंत लगा दिया । और दूसरों ने गाली-गाली शुरू कर दिया... 'ये सब सारे देशद्रोही हैं । नेता गिरि करते हैं, गद्दी पर बैठना चाहते हैं ।' मैंने इस दुर्भ्यंकार के वाक्यबद्ध करने की सवत रखने की कोशिश की और चुप रहा । सोचता रहा कि मैं इस समय राजाजी की रजत जयंती मना चुके १९७४ के प्राजार लोकतांत्रिक और समाजवादी देग में हूँ या १९४७ के बर्बर ब्रिटिश राज्य में ?

साढ़े दस बजे मुझे हाजत में डाल दिया गया और तब से रात के ६ बजे तक बिना भोजन के घाने में ही रहना पड़ा । जेल के जाते समय मेरे हाथ में हथकड़ी डालकर हवालात से बाहर निकाला गया । मुझे जेल ले जाने वाले पुलिस अधिकारी महोदय ने मेरा स्वागत करते मेरे हाथ की हथकड़ी बांद में निकलवा दी । फिर पुलिस की गाड़ी से मैं जेल पहुँचा दिया गया । मुझे किस दफा में और क्यों जेल भेजा गया तब तक इसकी कोई जानकारी नहीं दी गयी थी । दूसरे दिन पूछ-ताछ करते पर मुझे पता चला कि मुझे पर दफा १०७ और १५१ लगाया गया है । मेरे साथ ही हलपरजी को गिरफ्तार किया गया लेकिन उन पर भ्रान्तरिक सुरक्षा अधिनियम लागू किया गया । वहीं मुझे यह भी भात हुआ कि छ. भन्त तर्क शांति सैनिकों को भी इसी अधिनियम में गिरफ्तार किया गया है । क्या सभा करने की स्वीकृति प्राप्त करने की कोशिश को रोकने हेतु यह अधिनियम लागू करना कोई औचित्य रखता है ? क्या यह इस अधिनियम का दुरुपयोग नहीं है ? मुजफ्फरपुर सेन्दुल जेल में बन्दी बनाने गये छात्रों तथा अन्य लोगों से बातचीत करने पर पता चला कि उनके साथ भी दुर्भ्यंकार किया गया है । किसी भी लोकतांत्रिक देग में अपनी शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति चाहते वालों के प्रति

यह व्यवहार क्या उचित कहा जायेगा ? क्या यह बुद्धिमानी की बात नहीं होगी कि सरकार तत्काल इन वेगुनाह लोगों को बिना शर्त रिहा करे ?

रचनात्मक तथा समाज में शांति कायम हो इसके लिए काम कर रही तरुण शांति सेना तथा गांधी शांति प्रतिष्ठान के कार्य-कर्ताओं के साथ पुलिस विभाग ने जो सह-क्रिया दिखाई है बाण उसकी सतिव्यता बिहार में प्रशांति, आगजनी, लूटपाट करने वाले तत्वों के पीछे होती और उसे धपनी मारने-पीटने, गालीगोली करने, जेल में डालने की क्षमता और कुशलता प्रदर्शन करना ही था तो उन क्षत्राधिकारियों को पकड़ने में इसका प्रदर्शन किया होता । मुजफ्फरपुर में तर्क शांति सेना और गांधी शांति प्रतिष्ठान ने छात्रों का संगठन करने मूल्य नियंत्रण का जो काम शुरू किया था जिसमें स्थानीय उच्च अधिकारियों और बड़े व्यापारियों का सहयोग प्राप्त करने की कोशिश शामिल थी वह कोई अपराधी पदवी था ? उससे भ्रान्तरिक सुरक्षा में बाधा पड़ती थी ? या प्रशांति की परिस्थिति का समाधान ही तबता था ।

२७ मार्च की शाम को लगभग साढ़े छः बजे मैं जमानत पर छुटकर जेल से बाहर निकला । मेरे भ्रन्तर पुलिस के प्रति कोई द्वेष भाव नहीं है । मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि मेरे ऊपर भ्रन्त्याय हुआ है, व्यादती हुई है जो किसी भी आजाद लोकतांत्रिक देग के निरपराध नागरिक के साथ हीन्य नहीं होनी चाहिए लेकिन क्या मैं सरकार के पास न्याय माग्ने जाऊँ ? सरकार न्याय दे नही दे ।

पुलिस ने चाहे जो भी सोचकर मुझे गिरफ्तार किया हो पर मैं तो यह मानता हूँ कि उसने मुझे यथार्थ से साक्षात्कार करने का मोवा दिया । इसके लिए उसको कन्वन्साद । नागरिकों से मैं यह निवेदन करना चाहूँगा कि वह गम्भीरता में सोचें कि जिस राजाजी को शहीदों के लून और जनता की तरफया ऐ प्राप्त किया गया उस राजाजी का मुझ उसे बच और कैसे मिलेगा ? इस देग में सच्चा लोकतन्त्र (जिसमें लोकतन्त्र को चलाना ही) बच और कैसे आयेगा ? और लोकतन्त्र के नाम पर वर्तमान 'तन्त्रलोक' बच और कैसे बढेगा ?

बिहार के टीकापट्टी गांव में उपद्रवों के दौरान सरकारी सेधो का धान धौर लादी भण्डार लूटा गया। लेकिन शायद पहला मौका है जब गांव ने मिलकर लूट का सामान वापस किया हो। बंदनाथ बाबू के अहिंसक नेतृत्व का चमत्कार.....

अहिंसक जनशक्ति की उपद्रव पर विजय

बंदनाथ बाबू को राशी में एक बार फिर उत्राग पर बैठना पडा। राशी प्रखंड में बिहार के दूसरे तीसरे गणतह में हुई हिंसक घटनाओं के विनाशक लोकमन जागृत करने, लादी धामोचोग भण्डारों धौर सरकारी सेधो के धान की लूट के विनाशक २४ मार्च से शुरू किया गया यह उपनाय २७ की शाम को धाचाजनक नतीजो म समान हुआ।

राशी प्रखण्ड में सन् ७० की ८ जुलाई को लगभग ऐसी ही परिस्थितियों के बीच बंदनाथ बाबू ने प्रामथ्यराज्य का काम शुरू किया था। उस समय भी इस प्रखण्ड में चारों ओर घनाति थी। फसल की लूट, भूमि हहण धाचोन मुकदमे बासी आदि से पूरा प्रखण्ड तलन था। चार वर्ष की अर्धवधि में उन्होंने समर्थ कार्यन्तर्ताओं की एक टीम के साथ पूरे प्रखण्ड में घूम-घूमकर धामनभाएँ गठित की। ये धामनभाएँ धामे चल कर धामागी मुकदमों को निरस्तो का महत्वपूर्ण भव बनी। गन वर्ष अक्षुब्ध के कुछ धामनभाओं की निष्क्रियता के कारण बंदनाथ बाबू को ५ अक्षुब्ध से ८ अक्षुब्ध तक उपवास पर बैठना पडा था।

हान में ही हुए बिहार के छात्र धाचोन के दौरान राशी प्रखण्ड भी व्यापक अन्तोष धौर नये निर्णय की लहरों से घुलना नहीं रहा। लेकिन इस छात्र धाचोनन को धाड में धुट्टुट लूटपट की घटनाएँ प्रखण्ड में फिर से शुरू हो गईं। एक बार फिर से सन् ७० की निचल लोटने लगी है ऐसा लगने लगा। स्थिति का रोहरा साभ ठडा धर स्वानीय सरकारी अधिकारी धौर उनके एजेंट ऐसे निर्दोष लोगो को इन घटनाओं का जिम्मेदार बता कर फंसाये लगे जिन्होंने जनताज को धाधार बना कर सरकारी काम काज के समानान्तर एक व्यवस्था सडी करने का प्रयास किया था। ऐसी स्थिति में बंदनाथ बाबू का कहना है कि मेरा एक मात्र यही बर्तव्य रह जाता

था कि मैं अपने शब्द सहन कर यहां के गामी लोगों की धामना को जगा सकू ताकि वे घटनाएँ बन्द हो। मैंने २४ मार्च के प्रति-रिचन काज के लिए उपनाय शुरू किया।

राशी प्रखण्ड की जनता बहुत देर तक सोती नहीं रह सती। उत्राग की अर्धवधि में टीका पट्टी गांव के लोग अहाँ सरकारी धनाज धौर लादी धामोचोग भण्डार लूटा गया था, एक्जित हुए धौर उज्ज्वि निर्णय लिया कि एक प्रतिमान के रूप में वे घर-घर जा कर लूटे गये माल को वापस दे देने की प्रार्थना करेंगे। इस अभियान के दौरान ३, ६०६ ६० ८७ ०० में से २,१६३ ६० ४० ०० की लादी उज्ज्वि घर-घर घूम कर वापस प्राप्त कर ली। लूटे गये धान के १६ धामन म भे अत्र सन १३३ किलो ५० धाम धान वापस मिल चुका है। बची हुई लादी धौर धान जो प्राप्त नहीं हो सता है उनके बदले में गांव के लोगो ने धन्दा इकठ्ठा कर उगये होने बले मुकसान को पूरा कर दिया है। देश में लूट-पाट तो रोज ही होगी है लेकिन यह पहला धरणर है जब कि गाँव वालों के प्रयास से लूटा गया माल इस बडी तादाद में वापस एक्जट किया गया।

राशी प्रखण्ड के धामोयो ने टिगव घटनाओं के प्रापरिचत में २७ मार्च को धाने सब कामकाज बन्द रख कर १२ घण्टे का सामूहिक उत्रागत किया। उपवास में लगभग तीन चौराई लोगो ने हिस्सा लिया।

सरकारी पुलिस एव धम्य अधिधारियो ने भी गाव वालो की इन कोशिस की प्रमसा की धौर सभी तरह की दमनात्मक कार्यवाही को रोक कर धामोयो को शाति स्थापना करने का मौका दिया। सर्वोदय धाम्य राशीने पुलिस अधिधारियो ने बंदनाथ बाबू से मिल कर उनके धास्वासन दिया कि वे विचारों धाचोलन के सम्बन्ध में निर्दोष लोगो को परेशान नहीं करेंगे। २७ मार्च को राशी प्रखण्ड

स्वराज्य सभा की कार्य समिति एव इषि तथा धन्तोदय समिति की सम्मिलित बैठक धाम्य में हुई। इन बैठक का प्रायोजन हिंसक वार-दानों धौर जन धन्तोप को बड से हटाने के लिए किया गया था। सदस्यों ने कहा कि प्रखण्ड में गलना म लो महये धौर न सरकारी सन्ने गन्ने की दुकान पर मिल रहा है। ऐसी स्थिति में किसानों द्वारा सेन्टीहर मजदूरों की मजदूरी कम करना, धनाज की जगह नन्द पंते म धौर बट भी पूरा नहीं देने के कारण स्थिति बहुत बिन्ना जनक हो गई है। बैठक ने सर्व सम्मति से निर्णय लिये कि प्रखण्ड के विमान धनाज की बटनी तथा तैयारी में धनाज के रूप में ही पटने की तरह मजदूरी देने रहे। इसके लिए प्रचलित रिवाज के धाधार पर एक सर्वमाय्य रेट भी अलग-धन्य फसलो का तय किया गया है। (बैठक में शामिल सभी सदस्य धाने-आपने गावों में लोट कर प्रयास कर रहे हैं कि ईनिक मजदूरी कही भी डेड रखने से कम न हो इसमें बाधों धौर धौरत दोनों को दिन में एक बार मारना धौर एक बार भोजन भी दिया जाना चाहिए।) बैठक ने माना कि निर्धारित मजदूरी से कम मजदूरी देने को सामाजिक धपर-राथ की तहू माना जाये धौर प्रखण्ड की धामनभाएँ इस बात पर कडी नजर रखें। जहाँ कहीं भी ये नियम लोडे जायें कहा उनमें सुधार के लिए नुरख कार्यवाही की जाय। बटाईदारी को वेदसली को भी बैठक ने बहुत गम्भीरता से लिया। प्रखण्ड में अहाँ-अह्ता वेदसली की घटनाएँ हुई हो वहाँ धासपास की धामनभाएँ लुप्त ही बरदम उठाने वाली है। इन निर्णयों के बाद बंदनाथ बाबू से अनुप्राप्त किया गया कि जिन कारखानों से धाने उपवास शुरू किया था उनको पूरा करने के लिए प्रखण्ड के लोग पूरे मन से जाग गये है इस लिए धव धाने उपवास समाप्त करना चाहिए। ये मान गये।

अकल वलनन नें नहलं आत्मनन नें हें

—वलनषल

लेकिन आज विज्ञान बिच रहा है। बटे-बटे वैज्ञानिक विनाशक शस्त्रास्त्र बनाने को मद्धत देने हैं। ये इतने क्रान्त वाजे होने पर भी पैसे से खरीदे जा सकते हैं। इन्हे पंसा मिनो तो जिस प्रकार की खोज करने की आज्ञा दी जाये, उन्ही प्रकार की खोज ये कर देने फिर उसमे चाहे दुनिया परत हो जाये, चाहे दुनिया का भता हो। अगर वैज्ञानिक — प्राण कर्त कि जिसों के पैसे से वे खरीदे रापये धीर स्वशास्त्रक शस्त्रास्त्र बनाने मे निर्य योग न देंगे, सहार के काम की कोई शोष-खोज न करेंगे, तो दुनिया बच येगी। लेकिन वैज्ञानिकों मे यह क्रान्त तब नही ध्रायेगी जब तक सारा समाज इस ढह के बिधार नही प्राणायेगा। सहार के एग मोष करने की वृत्ति को लोग जब घुणा १ दृष्टि से देखेंगे तभी वह बन्द होगा।

वैज्ञान का विकास

पूजा जाता है कि अगर विज्ञान बडता १ रहा, तो क्या उससे दुनिया का भला होगा? विज्ञान जिस तरह बडता रहा है, उसी तरह बडता रहे, क्या यह उचित है?

विज्ञान इन्हीं दिनों बड रहा है ऐसी बात नही। मनुष्य जबसे पैदा हुआ है, तभी से विज्ञान के लिए प्रयत्न कर रहा था। पुपिते बचने के लोभो ने जो प्रयोग किये उन्हीं के प्राधार पर आज का विज्ञान चल रहा है। प्रथिम पैदा करना पहले के लोग नही जानते थे। उनसे बाद जब प्राणि की खोज हुई तो जीवन मे विज्ञाना चर्च पडा। प्राणि न हो तो पशु को रखां ही बड हा जानगी। फिर टड से टिट्टरे सम्पेग। प्राणि के प्राधार पर चिन्ती ही बनलानियो की दवाए बननी है, वे कैसे बनेंगी?

इसके भी पहले एक जमाना ऐसा था जबकि केहन पाचरी से लोग प्राणो भोजनर कमाते थे। उनर पास मोहो नही था। उसके बाद जब मोहो की खोज हुई, ता जीवन के चिन्ता परिवर्तन हुआ। वैज्ञानिक जीवन के लिए प्राण, कपडे मोहो के लिए मूडी, काठन के लिए कैंची, विज्ञान की हल के लिए फाल धीर साधने के लिए दुसारी, फाडडा।

पहले मोष मय का दूष दुहता नही जानते थे। निकार करके प्राणिया को माने

ये। लेकिन जिस किमी को यह धरन मूभी कि माय पर हम चार कर सकते है, उसे कुछ खिना सकते है धीर उनके रक्तो से दूष वे सकते है उसने चितनी भारी मोष की होगी। मनुष्य यह कि खेती की खोज, घोरशा की खोज अति की खोज, कपाम से कपडा बनाने की खोज चिन्ती ही खोज पहले की गई।

पहले भाष की शक्ति का प्रविष्कार उसके बाद हम आज एटम तक पहुच गये है। अणुगणित से भी कई प्रकार के कारणात्म चलेंगे विकेंद्रित उद्योग भी गाव-गाव जा सकेंगे। इस तरह विज्ञान प्राचीनकाल से धीर तत् लगातार बडता आया है बडेगा धीर बडता चाहेए, उससे मानव जीवन मे सुन्दरता प्रायेगी। मनुष्य को मूर्च्छि का जितना ज्ञान होगा, उतना ही वह मूर्च्छि का रूप अष्टुदी तरह समझकर उसकी शक्ति का उपयोग कर सकेगा।

जैसे पत्ती दो पत्ती से उठता है, वैसे ही मनुष्य आत्मज्ञान धीर विज्ञान, इन दो शक्तियों से अग्रतर हो मुचो होगा है। हर यम मे ती प्रकार की शक्तिया होगी है। एक शक्ति बढाने वाली धीर दूसरी दिशा दिखाने वाली। अगर इन मे से एक भी यत्न न हो, तो काम नही चलेगा। मोटर को दोनो यत्तो की जरूरत रहेगी। हम पाव से चलते है, आख से नहीं। आस से ती दिशा मानुम होनी है। आरम-मानव है आस धीर विज्ञान है पाव। अगर मानव को आत्मज्ञान की दृष्टि न हो तो वह अन्धा मानुम नही कहा चना जायेगा। उसे प्राणें हो, लेकिन पाव न हो तो इषर-उधर देख सकेगा, पर पर मे ही उसे बंटे रहना पडेगा। इसलिए विना विज्ञान के समारा मे कोई काम ही न हो सकेगा। धीर विना आत्मज्ञान के विज्ञान को डीर दिशा ही न मिलेगी।

विज्ञान और अहिंसा का योग हो तो जमीन पर स्वर्ग उतर आयेगा

यदि विज्ञान बडता जायेगा धीर उसे हम बडेने देना चाहते है तो उनके साथ धर्मिया की भी रचना चाहेए। तभी दुनिया का भला होगा। विज्ञान धीर धर्मिया दोनों का योग हो तो दुनिया मे जमीन पर स्वर्ग उतर आयेगा। लेकिन अगर विज्ञान धीर हिंसा की जोडी बन गई उनका गठन-घन हो गया ता दुनिया बरबाद हा जायेगी। हम चाहिना पर इनका जडाश जोर इगलिए देन है कि विज्ञान बडे। अगर विज्ञान को बडाना है, तो उसके साथ उसकी रक्षा के लिए कठिना की जरूरत रहेगी। अगर आप दिना का वायम रक्षणा चाहें है जो विज्ञान का नही बडाना चाहेए।

विज्ञान धीर आत्मज्ञान

विज्ञान नीति-निरपेक्ष है। वत न नैतिक है न अनैतिक। इसीलिए उनको सुन्दरी की धारणरचना है। इन स्थिति मे उन्मे मानव मान्यदर्शन मितना है तो वन नरक मान्य बन जाता है धीर गती मान्यदर्शन मितना है, तो स्वर्ग मे न जा सकेगा है। गरी मान्यदर्शन प्रायमज्ञान से ही मिल सकेगा है।

यदि विज्ञान और टेक्नोलॉजी मे फर्क करता है। विज्ञान और नवसाधन का उपयोग ब्यवहार मे कहा तक करना चाहेए, इनका नियुक्त विज्ञान नही देगा, अभ्यास देगा। जिस समाज मे, जिस काल मे तत्र-शास्त्र का चिन्ता उपायग करना चाहेए, इसकी आज्ञा विज्ञान को मिलेगी। विज्ञान की प्रगति की सीमा नही है, वत जितना धाग वडे उनका अचडा ही है लेकिन उसके उपयोग के लिए आत्मज्ञान का मान्य-दर्शन जरूरी है।

भारत धीर विज्ञान

विज्ञान के युग मे अगर हिन्दुस्तान की जीवन है, तो क्या क्या करना होगा? एन, मानव को समसद्याए अहिंसक शक्ति, नैतिक शक्ति मे ही हल करने का निश्चय किया जाये। दूसरे, विज्ञान का उपयोग सेवा के साधन मे करें, महार के साधन बनाने मे नहीं। और तीसरे, विज्ञान को बडे यत्न बनाने की ध्याना देनी है या छोड़े की वत परिष्कृति देनाकर पय निया सकेगा है। व प्राणें प्रकृति मे हल है, तो विज्ञान से बडूत मान होगा।

सैरकारी मूत्रो के धनुमार सन् १९७०
 में हमें २०० बरोड़ का बच्चा तेल मगाना
 पड़ा था। परन्तु अत्र तेल के मूल्य बढ़ जाने के
 कारण यह राशि ४६० बरोड़ तक जा सकती
 है। यह बहुत बड़ी रकम है। इसके अनावा
 हमारे देश में भी तेल निर्यात ही है और
 उसका मूल्य काफी होता है। इसके परिवहन,
 वितरण, प्रबन्ध आदि में भी धन-जन-समय
 की आवश्यकता होती ही है, उसकी भी हमें
 कीमत चुकानी ही पड़ती है। यह सारी खर्च
 सर्पित पता नहीं किन्तु हजार या लाखों
 वर्षों में एकत्र हो पाई है। परन्तु हम तो इसे
 ऐसी तेजी के साथ खर्च कर रहे हैं कि उसे
 देखते हुए वह नहीं सकते कि मटके का पानी
 बितने दिन चल सकता है? एक-नएक दिन
 वह खत्म होगा ही। तब हम क्या करेंगे?
 इसलिए हमें कोई ऐसा विकल्प ढूँढना ही
 होगा कि जो इन क्षति की पूर्ति भी साथ-
 साथ करता रहे। तो यह हम आज से ही
 क्यों न करें? शासन, समाज और वैज्ञानिकों
 को बच्ये विकल्पों के साथ और उनके उद्गादन
 प्राप्ति, परिवहन, वितरण की समस्या के साथ
 इन सब पर होने वाला खर्च तथा स्थापित-
 पर्याप्तता आदि की ध्यान में रखते हुए
 “गोबर गैस” के विकल्प पर भी विचार
 करना उचित होगा।

गोबर गैस के पद में नीचे लिखी बातें
 हैं:—

बच्चा माल—इसका बच्चा माल
 दुर्लभ नहीं मनुष्य और पशुओं का मलमूत्र
 पशुशाला तथा घर, गाव और जंगलों-मेढों
 का सडा-गला बूडा-नरकट सूणी घास-गावत
 है।

साध:—साडा-गला बूडा-नरकट और
 मलमूत्र गन्धकी और रोग फैलाने रहते हैं
 इनका सङ्ग्रहण होगा, घर और बस्तिया
 साफ-गुंधरी रहेगी। घर के बूढ़े, आटे की
 चकिया, रोशनी आदि के लिए गैस मिलकर
 इन बातों में हर गाव स्वावलम्बी बन सकेगा।
 लकड़ी, कोयला, मिट्टी वा तेल, गैस आदि
 की बचत होगी।

समाजीकरण—इसके लिए हर गाव
 को अपने सम्मिलित पचासवीं गोबर-नीम
 प्लांट गाव के बाहर एक तरफ बनाने होंगे।
 साथ ही अपनी पशुशालाएँ तथा शौचालय भी

गोबर गैस और ईंधन का संकट

—वैजनाथ महोदय

इन गोबर गैस प्लांट के आसपास ही बनाने
 होंगे। ये भी सम्मिलित होंगी। इनसे उपलब्ध
 सर्पित को भी सम्मिलित, सामूहिक या
 पचासवीं बनाकर सबको उसका यथोचित
 लाभ मिलना रहे ऐसा प्रबन्ध किया जा सकता
 है। आज गाव में किसी गृहस्थ के यहाँ कम
 पशु होंगे तो किसी के पास अधिक इस कारण
 वे इस लाभ के समाजीकरण या पचासवींकरण
 को यदि न भी स्वीकार करें तो हिसाब के
 अनुसार अपना हिस्सा ले सकते हैं परन्तु इससे
 सबके स्वार्थ परस्पर जुड़ जायेंगे। इससे उनके
 दिल भी जुड़ जायेंगे। फलतः गाव में परस्पर
 प्रेम और सहयोग, एवता बढ़ेगी।

गैस के साथ-साथ यह प्लांट गाव को
 अच्छा, शुद्ध तथा निर्गंध खार भी देता रहेगा।
 गुण, उपभोगिता और शक्ति की दृष्टि से यह
 लाभमय कम्पोस्ट के समान ही होगा।

इतना उतम वाद मिल जाने से और
 गाव में स्नेह सहयोग बढ जाने से सेली के
 उद्गादन में भी निश्चय ही वृद्धि होगी। और
 रासायनिक खादों से प्राप्त उपज से यह
 अवश्य ही अधिक बढ़ेगी होगी।

समय, संभावना, कीमत—यह
 विकल्प हमारे देश के लिए किस हद तक उन्-
 योजनी हो सकता है इस विषय में स्वतंत्र बुद्धि
 वाले, स्वावलम्बन प्रेमी और हमारी प्राणीय
 जनता की स्थिति, गति और शक्ति के जानने
 वाले तथा उनकी सुख-सुविधा की चिन्ता
 रखने वाले वैज्ञानिक विचार करें। जिन
 किसान गृहस्थों या संस्थाओं में गोबर गैस
 का प्रयोग किया है उनके अनुभव भी प्राप्त
 किये जायें। इनके यदि कोई भूयें हई हों तो
 उनको सुधार कर पूरी वैज्ञानिकता के साथ
 इस विकल्प को प्राथम्यता जाये।

हमारी यही-यही विज्ञानशास्त्रियों के बादे
 में कुछ विचारशील विज्ञानशास्त्रियों से यही
 शिकायत सुनी गई है कि सोव सेना और
 बोहरिह की दृष्टि से धनुसंधान करने के उसे
 व्यावहारिक बनाकर पेश करने का जहाँ तक
 सम्भव है वे विज्ञानशास्त्रों मुख्यतया कथ्या

ही रही है। शासन की दृष्टि भी प्राणीय
 जनता की तरफ ठीक से नहीं गई है।

गोबर गैस के विकल्प द्वारा अपनी इस
 ईंधन समस्या को हम कितने समय में हल
 कर सकेंगे यह हमारे समाज और शासन के
 पुरुषार्थ और प्रयत्न की उलटता पर निर्भर
 है। केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारें तथा सारे
 देश की प्राणीय जनता परिस्थिति की गभीरता
 को समझकर यदि सच्चे दिल से इस काम
 में जुट जायें तो बहुत जल्दी हम सफलता
 प्राप्त कर सकते हैं। अचानक शासन के बस की
 बात तो यह है ही नहीं। हाँ, वह प्रेरणा दे
 सकता है और सहयोग साधन भी दे सकता
 है। मुख्यत यह काम प्राणीय जनता के
 पुरुषार्थ से ही बन सकता है। परन्तु वह अभी
 प्राणीय के अधकार में पड़ी है। शासन और
 पडे-लिखे समझदार नागरिक उसको जगाकर
 उसे उसकी अपनी ही सेवा में लगाकर गाँवों
 को सुखी समृद्ध बना सकते हैं।

नीमत का प्रश्न भी ऐसा नहीं, जिनके
 कारण हम निराशा होकर इस योजना को
 अथवहार्थ कहकर धन्य रग दें।

सबसे पहले हम टिसाव लगायें कि आज
 इस देशी-विदेशी ईंधन-तेल पर हम कितना
 खर्च करते हैं। गोबर गैस परिवहन और
 हमारे आवागमन के साथनों की सारी बहर्तरे
 पूरी कर देगी यह दावा तो नहीं किया जा
 सकता। परन्तु हमारे गावों की ईंधन, रोशनी
 और शक्ति पूर्ति यदि उससे हो सके तो यही
 क्या छोटा लाभ है? इससे शासन वा बहुत
 बडा लाभ हुलका हो सकता है। स्वयं प्राणीय
 जनता को तो वह स्वावलम्बी सुखी, स्नेह-
 सहयोगील बना ही करना है।

देशी-विदेशी तेल ईंधन पर आज हम
 प्रतिवर्ष कितना खर्च करते हैं उतनी
 रकम यदि २-३ वर्ष तक हम खर्च करें—
 और इसमें प्राणीय जनता भी धनस्थ ही पुरा-
 पूरा हाथ बटा सकती है—तो देश वा एक
 बहुत बड़ा काम हो सकता है।

→→

सहरसा से निकला जो अमृत

“कहिए, ग्राम लोगों का नाम क्या चल रहा है?”

‘प्रच्छा ही चल रहा है।’ प्रभी-प्रभी तो महीने भर का एक अभियान समाप्त हुआ है। काफी प्रच्छा……। (बीच में ही बात काट कर) ‘भाई माहब मीने तो मुना है कि जिला-दान क्या, पूरा बिहार प्राप्त वान हो चुका है। फिर जो ग्राम लोग गांवों में ग्रामदान की बात कह रहे हैं उसका क्या अर्थ है?’

‘उसका अर्थ यह है कि उस समय ग्राम-दान की प्रवृत्ति हुई थी और भ्रष्ट जो प्रादोलन चल रहा है वह ग्रामदान की पुष्टि का प्रादोलन चल रहा है।’

‘पुष्टि से आपका मतलब?’

सरकार से ग्रामदानी गांवों को मान्यता दिलवाई जाय इसकी हम लोग पुष्टि करते हैं। पुष्टि के बाद गांवों को ग्रामिक प्रचार की कानूनी सहूलियतें मिल जायेंगी। समय-समय पर सरकार की मदद मिलेगी, को-ऑपरेटिव में उपरोक्त चर्चा को ध्यान से सुन रहा था। चर्चा में ग्रामदान की जब ‘काफी प्रच्छा’ के को-ऑपरेटिव तक पहुँचा दिया तो मेरे बेहरे पर एक दुःख भरी मुस्मान फँस गई थी। अग्रवाल वय संवित की वस थी प्रश्नवर्ता सहस्रा जिन का एक नागरिक था और उत्तर देने वाला एक सशौर्य कार्यकर्ता। एक महीने के प्राभियान की समाप्ति पर मैं अपने प्रसन्न से लौट रहा था और वह अपने प्रसन्न से। होली के धवनार पर घर जाऊँ प्रश्नवा नहीं, मेरे मन में यह डर चल रहा था। लेकिन इस चर्चा में चिन्तन की दिशा ही बदल दी।

हमारे प्रादोलन के बारे में जनता की जो धारणा है वो तो है ही लेकिन जब भी अपने ही साक्षियों के मुँह से ऐसी बातें सुनता हूँ तब तब मन की उत्तमन और बड़ जानी है। क्या पुष्टि का अर्थ यही होता है? क्या यही ग्राम-स्वराज्य की भावना है? सुगम, स्वस्थ सरकारी सचालन का माध्यम है ग्रामदान या कि स्वतंत्र-ग्रामस्वराज्य की बुनियाद है? किफाल गांवों का एक सुगठित माध्यम है या कि क्रांति की प्रक्रिया में समाज की क्रांति करने की एक योजना है? कहावत है—मानो तो

देव नहीं तो परवर। और कहावतों में गहरा सत्य छुपा होता है। ग्रामदान किंगे? यह जिनका यहम सवाल है उससे नहीं ज्यादा ग्रहम सवाल है कि ग्रामदान क्यों? यदि ग्रामदान के भीतर हम ग्रामस्वराज्य की भावना भर देते हैं तो क्रांति का चरण पूरा होता है। लेकिन यदि ग्रामदान यानि वही सब जो वय के उय गांवों का बनाया गया था तो निश्चित रूप से ग्रामदान यथास्थिति को पुष्ट करने वाला होगा। शोषण और दमन का ही एक माध्यम बन कर रह जायगा।

उस दिन भी मुझे एक मित्र की वान प्रश्नर गई थी जिन ने कहा था कि ‘पुष्टि-पदाधिकारी महादय का स्वागत कुछ विशेष रूप से हम लोगों को करना ही चाहिए क्यों कि क्रांतिर सारी बराल का दूल्हा तो वही है।’ हवारी ये सारी बातें हमारे प्रादोलन का यह बिच पेश करती हैं जो हमने अपने मन में बनाया है। और क्या इस बिच के आधार पर हम शोषण विहीन, शासन मुक्त समाज की रचना कर सकते हैं? निश्चय ही नहीं कर सकते हैं। इन्ही कारणों से मुझे तो लगता है कि हमने प्रभी अपने काम की शुरुआत भी नहीं की है। पुष्टि पदाधिकारी हमारी बारात से दूल्हे नहीं हैं वरन हमारी बारात के बिन-बुलाये मेहमान हैं। जब तक हमारी स्वयं की मान्यता ऐसी नहीं बन जाती है तब तक हमें ऐसी प्राथा नहीं करनी चाहिए कि हम अपने प्रादोलन की शुरुआत भी सही परिदृश्य में कर सकेंगे। सही परिदृश्य से मेरा मतलब यह है कि सबों को साफ-साफ महसूस हो जाये कि ग्रामदान से गांव गोकुल बनता हो या नहीं, स्वदेशी शासन से मुक्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

और आज सहरसा के मोर्चे पर हमारे प्रादोलन में प्रदुम्न सफलता प्राप्त की है। सहरसा के मोर्चे में उस किन्दु को स्फटिक की तरह स्पष्ट कर दिया है जिसकी पुष्टिभूमि में हमारा प्रादोलन चलना चाहिए। इतना ही नहीं, उसने साफ-साफ यह भी बता दिया है और सिर्फ इन्ही पुष्टिभूमि में हमारा प्रादो-

लन चल सकता है और यदि किसी अन्य पुष्टि-भूमि में हमने अपने प्रादोलन को चलाने की कोशिश की तो हमारा प्रादोलन इतिहास बन कर रह जायगा। और यह किन्दु है ग्राम-स्वराज्य का। सहरसा के मोर्चे में हमें चिल्ला कर कह दिया है कि यदि तुम्हारी क्रांति ग्रामस्वराज्य के किन्दु पर केन्द्रित नहीं होती तो तुम इतिहास के रास्ते पर धकेल दिये जाओगे। और यदि होनी है तो फिर सम्पूर्ण भविष्य तुम्हारा है।

यह आरोप ठीक है कि सहरसा में हम बीधा-बट्टा नहीं बाट सके, भूदान की पुरानी समस्याएँ नहीं सुलभ सके, ग्राम-सभाएँ नहीं बनवा सके तो भी यह कोई क्रांति का विषय नहीं है। इन घटनाओं का तो निष्कर्ष ही यह है कि बीधा-बट्टा बाटना, भूदान की समस्या सुलभाना, ग्रामसभाएँ बनवाना हमारा काम नहीं है। क्रांतिर दूसरों का काम हमें क्यों करना चाहिए? हम ‘दे इज्ज’ मिताएँ निकले तो हमारा पहला नारा ‘जिला का चाहिए’ नेबर डू देबर वकें। हमारा काम तो सिर्फ यही है कि उनमें दिल में अपना काम प्राप करने की चाह पैदा कर दें। अपने प्राधिकार अपनी मुट्ठी में रखने की चेतना पैदा कर दें। सहरसा में यदि हमने कुछ बीधा-बट्टा बाटा है कुछ भूदान की समस्याएँ सुलभ आई हैं, कुछ ग्रामसभाएँ बनवाई हैं तो उनका शोचिव्य सिर्फ इनका ही है जिनका कि ये ग्रामस्वराज्य की प्राक्रासा पैदा कर सकी है, ग्रामस्वराज्य के प्रति विश्वास पैदा कर सकी हैं। शिखर उत्पादन का गून बढ़ा देता है, परखनली में उसकी प्रक्रिया दिखा देता है, खुद कोई कारखाना खोल कर या दुकान सजा कर नहीं दे देता है। शिखर-निशक है, उसकी भूमिका मानिक की नहीं होनी चाहिए, व्यापारी की नहीं होनी चाहिए। हम भी क्रांति की दीक्षा देने और लेने निकने हैं। हमने शासन विहीन शोषण मुक्त समाज का गून पाया है, ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया देखी है। समाज को यह गून समझाना है, यह प्रक्रिया दिखलानी है, हमें प्रत्यक्षदान या जिला दान का शरीरार के वर नहीं बैठ जाना है। जब समाज गून समझ लेगा, प्रक्रिया देन कर उसकी दिल जकई हो जायगी तो गांधी का समुद्री बलुल बनने देर नहीं लेगी। (शेष पुष्टि १४ पर)

भूदान-वस, सोमवार, १५ फरव, '७४

पटना ने गांधी युग.....

(वेज ४ से जारी)

बरीब डेड लागू। वही विहार (रिलीफ कमिटी) की सेंट्रल रोडर वी० धार० न्यू० ४१६२ फिर धारक स्वामी है। पर धार लोगों को चुप नहीं रहना है। 'जय प्रकाश नारायण की जय' से बानावरण गूँज उठता है। बड़ी मुश्किल से लोगों को हटा-हटाकर जे० पी० को मच पर लाया जाता है। वरतन ध्वनि रा गोर गुजना है धोर जे० पी० खड़े होकर जनता के अभिवादन को स्वीकार करते हैं। सभी मरु होती है। पटना विश्वविद्यालय छात्रसभ से प्रव्यस सल्लू प्रसाद यादव को मभा का अध्यक्ष बनाया गया है। पहले दो मिनट खड़े होकर उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है जो मोहोबारी में मारे गये थे। फिर सल्लू प्रसाद बोलते हैं। उनके बाद एच धोर छात्र नेता श्री नरेन्द्र बोलते हैं। मोरखरी प्रावाज में वे बहते हैं कि हमारी सगई पूरी ब्यवस्था के प्रति है। सत्सार्थन वयो में देश को गर्त में पहुंचाने के जितने दोषी रंभी हैं उतने ही विरोधी दल वाले हैं। तारी सगई दोनो से है। हमारे नेता जय-ग है धोर हमने धारना नेतृत्व उनसे हाथो

में सौंप दिया है। पूरी सभा तानियों की गडगड गहट से गूँज उठती है। हमेशा की तरह स्राज भी जे० पी० ने डाक्टरों की सलाह को नहीं माना। दो घण्टे सभा चलने धोर जे० पी० पूरे पौन घण्टा बोले, निस्स कर कुछ नहीं लाये। पूरी सभा धार एक-एक शब्द लोगों के दिलों में उतर रहा है। देनने में मैं बूझा हू पर दिल से जवान हू। युवकों का साहायन करने का मुझे सीधाय मिलता है। इस सारी ब्यवस्था को बदलना होगा। जनता को बलतन की प्रहरी बनकर साधारण कमचारी से लेकर प्रधानमन्त्री तक की निगरानी कर गके। यह स्वर्ण प्रखर है। जब हम विहार का नैतिक स्तर उठा सकते हैं। इस ब्यवस्था ने हमें मजबूर कर दिया वेईमारी करने के लिए। कम धोर चीन से बीच चुनाव किया जाए तो मैं धार बन्द करके चीन का चुनाव करूंगा। पटना जलना रहा कोई पूछने वाना नहीं रहा। स्वराज्य के बाद सत्सार्थन वयो से सब कुछ चुपचाप देलता रहा अब सहन के बाहर है। प्रण कर लिया है कि यह चलन नहीं ठूंगा।

(पृष्ठ ५ का शेष)
 अबहार को उचिन उहराने के लिए प्रजाज नारायण गांधी जी का नाम घसीट रहे है। 'लेकिन इससे भी ज्यादा दुख की बात यह है कि निष्ठावान पद्धति के सुधार के नाम पर जयप्रकाश सखरीय डाके पर ही प्रहार कर रहे है। श्रीमती गांधी को जयप्रकाश नारायण या किसी के भी प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं है। श्रीमती गांधी को बदनाम करने के लिए बलावे जा रहे हम श्रिययान के प्रति हम जनता को सचेत करना चाहते हैं धोर धारा करते हैं कि लोग इसे समझ जायेंगे।'
 मिथ जी की तरह इन ससद सदस्यों ने भी जयप्रकाश नारायण से बड़ा कि वे धरा-जटना धोर हिमा के खिलाफ धोर इन्दिराजी के समर्थन में खल कर बोलें।
 हमारा निवेदन है कि जब इन्दिरा जी के समर्थन में बोलने वाले इनने पुरधर लोग इस देश में ही तो वेबारे जयप्रकाश नारायण की ये भोगे श्रद्धाचार के खिलाफ लड़ने के लिए प्रकैना क्यों नहीं छोड़ देने? वयो नहीं मुनते कि जयप्रकाश सँको वार अराजकता धोर हिमा को भलना कर चुके है? धोर वयो नहीं समझते कि उन्होंने कभी भी महात्मा गांधी की तरह जीवन जोने का दावा नहीं किया है, उनसे धरनी तुलना करने की तो खर बात ही नहीं उठती है। धनकता चाहें तो य समाजवादी लोग जे० पी० के रहन-सहन से धरने रहन-सहन की तुलना कर सकते है।

दिल्ली

विकास तथा चुनौतियों का नगर प्रगति के पथ पर विगत दो वर्षों के विकास की भांकी

- उद्योग:** नरैला में नई विज्ञान औद्योगिक वस्ती का निर्माण हो रहा है। १०० बेरोजगार इजीनियरों के लिए ३५० औद्योगिक श्रेष्ठ बन चुके हैं।
- ५ लाख बेरोजगारों के लिए कारोबार:** इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग २५, ००० गिनिश बेरोजगारों को कारोबार देने के लिए ५६ नई योजनाएँ प्रस्तावित धोर कार्यान्वित की गई है। प्राथमी बेरोजगारों के लिए सयन कार्यक्रम चालू किये गये है।
- हरिजन कल्याण:** हरिजन तथा पिछड़ी जातियों के कल्याण की नई नई योजनाएँ चलाई है त्रिन पर धोयी योजना के मूल परिचय से दुगुना धन खर्च किया जा रहा है।
- विक्रितता सुविधाएँ:** सन् १९७३-७४ के दौरान पिछड़े तथा भूमि-भोगरों क्षेत्रों में १० नये धोरपालय खोले गये। इस प्रकार प्रब तक १० धोरपालय खुल चुके है। १००-२०० बिस्तरो वाले दो धरनागन निर्माणधीन है।
- किसानों को सुविधाएँ:** छोटे तथा भूमिहीन किसानों को धनुदान तथा सस्ते दर पर कर्ब देने के लिए धरिजनन पधर्म एघोरलववव, लैंगरस लेबरर्स एजेंसी स्थापित की गई है।
 वगु सगर्थन के लिए 'वीन बैंक' तथा बडुन धूप देने वाली धारतु निया की गायों के फार्म की स्थापना की गई है।
 त्रिली की पाबनी पवनपीठ योजना में अधिकाधिक नागरिक सुविधाएँ उठावे, गृह-निर्माण तथा कदी बिनियों की गधार्द, बेरोजगारों को समाप्त करने तथा कथोर वयो के कल्याण धरिदि कार्यक्रमों की प्रशासनता से गई है।

दिल्ली को आदर्श राजधानी बनाने में अपना भरसक योगदान करें।

जौरा में समर्पण की दूसरी वर्षगांठ

● महात्मा गांधी आश्रम, जौरा में १२ १३, १४ तथा १५ अर्द्ध को समर्पण दिवस एवं मित्र-निबन्धन-विचारिण प्रायोगिक विद्या गया है। इन कार्यक्रमों में मध्यप्रदेश के छात्रावास विभिन्न प्रान्तों के अनेक कार्यकर्ता, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि भाग लेंगे। समर्पण के बाद अचल घाटी क्षेत्र में जो परिवर्तन हुआ है उसका मूल्यांकन करने के साथ-साथ भविष्य के कार्यक्रमों के बारे में भी विचार-विनिमय होगा। कार्यक्रम का प्रायोजन गांधी आश्रम, जौरा तथा मध्यप्रदेश सेवक सघ के समुक्त तत्वावधान में हो रहा है।

● रेणु में जो आजकल 'चिपको धादो लन' का नेत्र है, सीमान्त नीतिघाटी के नर-नारियों का ३१ मार्च को विद्यालय प्रदर्शन हुआ। लाता महिला मगल दल के प्रह्लाद प्रघाटी के गावों की संघटी महिलाओं ने प्रदर्शन में भाग लिया। प्रदर्शन के बाद श्रीमती गौरादेवी की अध्यक्षता में सभा हुई, जिनके नेतृत्व में २६ मार्च को रेणु की महिलाओं ने पेड़ों पर चिपक कर उनकी रक्षा की थी। इच्छा प्रमुख गोविन्दसिंह रावत, प्रधान वासवानन्द नौटियाल तथा सुदामासिंह नेगी, महेशानन्द चण्डियाल एवं जगतसिंह सभापति ने संवत्स दोहराया कि रेणु के पेड़ों को काटने से पहले हमारी पीठ पर कुल्हाड़ी चलायी होगी।

श्रीप्रसाद भट्ट ने कहा कि पेड़ों के कटाव के कारण प्रतिवर्ष भूस्खलन एवं बाढ़ के कारण मंदानों में भी भयंकर दुष्परिणाम होते हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश शासन से धरोल की है कि गडग गया से मलारी तक के वनों को कटवाने से पूर्व भूमि विभाग द्वारा जांच करवानी चाहिए।

गौरा देवी ने कहा कि इस जगल से हमें साग भाजी चाय पत्ती से लेकर के बहुरूप्य वनोद्योग भी प्राप्त होंगी थी, किन्तु १९७० की बाढ़ के समय रेणु के जंगलों में भी व्यापक रूप से भूस्खलन हुआ जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे गावों पर पड़ा। यदि इस वर्ष हम २५०० पेड़ों को एक साथ कटवाने की छूट दे दें तो उसका दुष्परिणाम हमारे सभी वर्गों पर पड़ेगा।

● पहली धर्मल से उज्जैन (मं० प्र०) में तीन शराव की दुकानें खुल गई हैं। अब तक वहा एक भी दुकान नहीं थी। प्रांतीय नगवादी समिति इन्दौर के सयोजक अमृत लाल अमृत पिछले दिसम्बर से मध्य प्रदेश शासन के विभिन्न विभागों व मुख्यमंत्री से लागानार लिखा-पट्टी कर इस बन्दम को न उठाने का अनुरोध करते रहे हैं। नयी खोली गई दुकानों में से एक ताड़ी की दुकान माधव नगर क्षेत्र में सावेर रोड पर है। इसके पास-पास घनी झावारी की मजदूर वस्तिया है। दो अन्य दुकानें टकी चौक व मजदूर बस्ती फाजलपुरा में खोली गयी हैं। ताड़ी की इन तीनों दुकानों के प्रस्ताव अर्धजो शराव के साथसंस भी तेजी से दिए जा रहे हैं। शराव से अछूने इस ऐतिहासिक घाट में शराव के प्रवेश से पैदा हुई नयी परिस्थिति पर नया निपेध समिति उज्जैन व प्रांतीय नगवादी समिति इंदौर विचार कर रही है।

● उपर पहली धर्मल से उज्जैन में शराव की नई दुकानें खुली और इधर हरिधाराण के गडो कोटाहा में पिछले एक साल से चल रहे नगवादी आन्दोलन के कारण पहली धर्मल को वहा की शराव की दुकान बन्द कर दी गई। हरियाणा के इस छोटे से गाव में पिछले साल गाव वालों की इच्छा के विरुद्ध शराव की दुकान खोली गई थी। ठंकेदार को गाव में किसी ने भी दुकान खोलने की जगह न देकर अशहूयोग शुध किया था; फिर भी उसने एक भोपड़ी बनाकर दुकान खोल दी थी। दुकान खुली लेकिन बिनी बन्द हो गई, दुकान के अंगे भजन बीर्नन चलता रहा। मुनि जनक विजय व सर्वोदय सेवकों ने नेतृत्व में चले इस आन्दोलन की विजय पहली धर्मल को भारी भीड़ के सामने शराव के ट्रेजे की भोपड़ी, की प्रशासन द्वारा गिराने से मिली। इस जगह विजय उत्सव मगने हुए डा० बलवीर सिंह, चौ साधु राम, बेद प्रकाश, पं० योगध्यान और डा० बेनी प्रसाद ने लोगों से अनुरोध किया कि वे अन्य स्थानों पर भी शराव व अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध अहिंसक आन्दोलन चलायें।

● इन्दौर खादी संघ नया विनोबा जी की प्रेरणा से स्थापित कुछ सेवा संस्था के मंत्री गुन्दरनाल मित्तल की चार धर्मल की रात उनके परदेशीपुरा स्थित निवास के पास हत्या हो गयी। तीन दिन पूर्व उसी मोहल्ले में बन्वाली के कार्यक्रम को लेकर दो दलों के बीच भगडा हो गया था। मित्तल की उसी की चर्चा कर रहे थे और चाह रहे थे कि कोई भी किसी के विरुद्ध नहीं लड़े। अपने तिराड़े से चर्चा समाप्त कर वे घर की तरफ जा ही रहे थे कि कोई पचास बंदम घागे उन पर घनात व्यक्तियों ने चाकू से वारा बिये। मित्तल जी के सोने पर चोट घाई तथा पैट पर एक गहरा चार आया। वे नहीं गिर पड़े। उनके मुह से तीन बार "बचाओ, बचाओ" की आवाज निकली। घासपास के लोग तुरन्त दौड़े। उन्हें टम्पो से अस्पताल भिजवाया गया, परन्तु तब तक उनके प्राण वशेरु उड चुके थे।

परदेशीपुरा श्मशान में दाह संस्कार के बाद शोक सभा हुई जिसमें उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। भूदान यज्ञ परिषद श्री मित्तलजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

(गृष्ट १२ का शेष)

दरलिये सहरगा के मोर्चों की सफलता बीधे-बहु में नहीं है वरन् इस बात में है कि इस मोर्चों पर जुभडे हुए हमने और वहा के नागरिकों ने कहा तब श्मशानराज्य की प्रति-वायता महसूस की है।

जहा तक हमारा सवाल है तो हम क्या हमारे आन्दोलन के ही सामने सहरगा के मोर्चों ने दूसरा कोई विवरण रहने नहीं दिया है और उस दिवस के लोग भी बह रहे थे, किन्तु साधारण लोग, कि 'घापके बीधे-रुद्धों की बात तो बचनी है, लोग यह काम कर रहे हैं और उन्हे करना ही पडेगा, घासभाएं भी बनेगी लेकिन यदि ग्रामस्वराज्य नहीं होगा तो समझिये कि सब कुछ व्यर्थ चला गया।' तीन वर्षों के मन्थन से सहरगा से यह जो चीज निवृत्त है उसे मैं अपने आंदोलन के लिए अमृत मानता हूँ और यह भी मानता हूँ कि यदि इस वर्ष मन्थन पर इस आंदोलन को ध्व जीना है तो उसे यह अमृत पीना पडेगा।

कुमार चुभभूति,

भूदान-यज्ञ : सोमवार, १५ अर्ध, '७५

ग्रामसभाओं की शक्ति नहीं बढ़ी तो सर्वनाश होगा

हैदोमी प्रखण्ड (पूर्णाणा, बिहार) के टीकापट्टी गांव में प्रखण्ड सम्मेलन का आयोजन ३ मार्च ७४ को बंगाल के वरिष्ठ नेता चाचन्द्र भण्डारी की अध्यक्षता में हुआ। गांवों के लगभग १०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में चाह बाबू ने कहा कि आज देश की स्थिति विरग्रेष्ठतः और श्रम समाजों की प्रगति अत्यन्त धीमी है। ग्राम सभाओं की शक्ति नहीं बढ़ेगी तो सर्वोदय के बदले सर्वनाश होगा। मुख्य प्रतिनिधि के रूप में बिहार सरकार के वित्त मंत्री दरोणा राय ने भी भाग लिया। दरोणा राय ने कहा कि समाज-परिवर्तन का काम सरकार से बर्दाप सम्भव नहीं है। आज जनता की स्वयं शक्ति जागृत करने की आवश्यकता है। सर्वोदय के लोभों का प्रयास सही दिशा में है। इस काम में मैं अपनी पूरी मदद दूंगा।

स्त्रीजी प्रखण्ड में ८१ ग्रामसभाएं बनी हैं। ४० ग्रामसभाओं ने प्रथम कुल प्राप्त १४६ एच ७७ डिप्लोमा भूमि में से १२३ एच भूमि का ३६३ भादानामों के बीच वितरण किया है। एक गांव भीराहोली में

कोई भूमिहीन न होने से वीधे बट्टे की जमीन १२ एकर ग्रामसभा के लिए रखी गई है और उसकी उपज ग्राम कोष में जमा होती है। ६५६ दाताओं द्वारा प्राप्त भूदान की १५४१ एच भूमि में से ७२८ एकर भूमि ६६२ किसानों के बीच बांटी गयी है। ५१ गांवों के कागज तैयार करके पुष्टि पदाधिकारियों के पास दाखिल किये गये हैं। १० गांवों की पुष्टि बिहार गजट में प्रकाशित हुई है और ४ गांवों में कानूनी ग्राम सभा का गठन हुआ है। दाखिल सेना बन रही है। पर इस दिशा में प्रगति धृच्छी नहीं है। प्राचायकुल को बैठकें होनी रहती हैं। १६ ग्रामसभाओं में ग्रामकोष की रकम २४६४ रुपये बैंक में जमा है। इसके अलावा १५८६ रुपये नकद और ५६१ किलो अनाज ५२ ग्रामसभाओं के पास है। पुनित, अदानल मुक्ति का धृच्छा प्रयास हुआ और १५८ अगडों का समझौता ग्रामसभाओं में किया है। कार्ट में चन रहे २ मुकदमें और १ मुकदमे घाते से वापस कराये गये हैं। पीने के पानी तथा सिंचाई का प्रवन्ध भी किया गया है।

दीरेन्द्र मजूमदार की लोचगंगा गावा, महिलाओं की पदयात्रा, क्षेत्रीय तथा प्रखण्ड स्तरीय गोष्ठियों के आयोजन से लोगों में चेतना बढ़ रही है। छादी ग्रामोद्योग, स्त्रीजी की पंचवर्षीय योजना, तथा आदर्श विद्यालय योजना को अत्रान्वित किया जा रहा है।

स्त्रीजी में बराबर हलचल होती रहे सुस्ती नहीं घाये इसका प्रयास बंधनघन बाबू बराबर करते रहते हैं। २ मार्च को भूदान किसानों का सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता बिहार भूदानयज्ञ समिति के अध्यक्ष बन्दीनारायण सिंह ने की। इस सम्मेलन में मुख्य प्रतिनिधि पूर्णाणा के जिलाधीश थे जिन्होंने प्रास्तावत दिया कि भूदान किसानों के लगान निशोर्खर का बार्द कौड किया जायेगा और निशोर्खर योजनाओं में उन्हें प्राथमिकता दी जायेगी। ३ मार्च को शिवा सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता की प्रो० रामजी सिंह ने की मुख्य प्रतिनिधि थे नन्दीय मन्त्री भीला पामवान शम्बी। ३ मार्च को ही कृष्णकान्त सिंह की अध्यक्षता में ग्रामसम्मेलन हुआ।

● मध्यप्रदेश राज्य शासन ने विधानसभा द्वारा पारित एकट के अनुसार मध्यप्रदेश ग्रामदान-बोर्ड का गठन कर दिया है। नवगठित ग्रामदान बोर्ड में महाधर पादणकर (मध्यप्र); हेमदेव शर्मा (उपाध्यक्ष), सदस्यों में राधेपाल भूते, नन्दकुमार दांणी, ठाकुर राममान, रणबहादुरसिंह, शिवनाथ शर्मा, कल्याणचन्द्र त्रिवाठी, पुजारीराय, भागवत मातू, भीमती रुक्मणी भार्गव, नरेन्द्र दुबे तथा बन्धारीलाल चौधरी सम्मिलित हैं।

● महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल ने १८ मार्च ७४ से एक सत्र के लिए महाराष्ट्र में 'ग्रामस्वराज्य पदयात्रा' चलाने का सत्रालय महाराष्ट्र सर्वोदय सम्मेलन कैलीजेनी (३६० पत्रोला) में विधा है। पदयात्रा का उद्देश्य है, ग्रामस्वराज्य का व्यापक प्रचार, सर्वोदय पत्रिकाओं के प्राकृ बनाना, सिविल डिब्री, भीर सर्वोदय मित्र बनाना आदि।

● हनु दिना मन्दिर की प्रवीणा देवार्द ने सैदा और रटील बनाने वाली बन्दी 'मुद्रु' में २१ मार्च को सर्वोदय प्राचालय

और अध्ययन वर्ग का उद्घाटन किया जो 'मुद्रु सर्वोदय केन्द्र' की ओर से चलाये जायेंगे। बडे कारखानों के मजदूरों तक सर्वोदय विचार पधुचाने के स्थान से बम्बई के विठ्ठलदास बोदारी ने मुद्रु में मजदूरों के बीच काम गृह किया था।

सर्वोदय केन्द्र में जिमी भी तरह की सदस्यता आदि के नियम नहीं हैं। वह सब के लिए खुला है। विठ्ठलदास बोदारी का कहना है कि केवल एक ही बंधन हमने माना है—स्नेह ही। केन्द्र की ओर से कारखानों की मजदूर बन्तियों में सामूहिक कार्यक्रम भी चलाये जायेंगे हैं।

● सत्रज शक्ति को संगठित कर उसे ग्रामस्वराज्य के लिए हिमाचल प्रदेश में जनवरी और फरवरी में धनन-धनग स्थानों से दो पदयात्राओं की गई। कागडा और अन्वा जिलों की दो जुरी लक्ष्मीजी में पनी इन पदयात्राओं में गावा, स्त्रीजी के छात्र भी धन्या-पत्रों आदि से संपर्क कर प्रान्त में ग्रामस्वराज्य के लिए सम्य देने वाले साधियों को ब टीम तैयार की गई है।

● तरण शांति सेना की राष्ट्रीय कार्य-धारिणी की बैठक २५-२६ मार्च को महमदा वाद में शांति सेना समिति के कार्यार्थ में हुई। राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न प्रान्तों में चल रहे तरण शांति सेना कार्य में विद्युपलोकांन हुआ। जागे की कार्य-योजना पर विशेष तौर पर आपापी प्रीमावकाश में चलने वाले 'गांव पत्तो' योजना पर विचार हुआ।

बजट व प्राथिभ सोजन पर विचार होकर सदस्यों ने गिम्ले कावों की गिम्ले-वारी बाटी गई। सजीविका कुं मदाकिनी दवे ने गुजरात की परिस्थिति पर विस्तार से प्रचार शला व किस प्रकार लोक-शक्ति के निर्माण के सदर्भ में गिम्ले दो महानों म काम हुआ यह समझाया। घलोक भार्गव व नवि-कना देवार्द कुप समय से गुजरात में शक्ति लगा रहे हैं।

● गुजरात के मुद्रुनिष्ठ सर्वोदय सेवक बरन भाई भेटना ने ६ अग्रेय (दाडी सत्याग्रह दिवस) को दाडी से पदयात्रा प्रारंभ की। दाडी से माबरमती तक पदयात्री दल का प्रव्यंज जिले में दस-दस दिवसीय कार्यक्रम रहेगा।

१ से १५ मई तक उपवासदान परबवाड़ा मनाइये

देश भर में उपवास-दान का अच्छा स्वागत हुआ है और अब तक काफी उत्साह-वर्धक तथा प्रेरणाप्रद अनुभव प्राप्त हुए हैं। परन्तु उपवासदान की सख्या मार्च के अन्त तक १६६३ तक ही पहुँची है। सर्व संज्ञा मध की धम्री २६ से ३१ मार्च तक अलगवाय में हुई बैठक में इस सदर्भ में उपवासदान के कार्यक्रम पर विशेष रूप से चर्चा हुई और प्रबन्ध समिति ने इसको देश भर में यथाशीघ्र गतिशील करने और उत्तम लिए देश भर में व्यापक तौर पर १ से १५ मई तक उपवासदान परब मगाने का निर्णय किया है।

प्रदेशों तथा जिला सर्वोदय मंडलों के नाम

इस सितसिले में जारी की गयी एक धरोल में सर्वसेवा सभ के सहमत्री घटापाल मिसल लिखने हैं। इसके लिए प्रायः अपने-अपने स्तर पर धम्री से पूर्व तैयारी आरम्भ कीजिए। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में इसकी जानकारी तथा धरोल प्रकाशित कीजिए। समस्त रचनात्मक सस्थाओं, महिला-सस्थाओं, धार्मिक सस्थाओं, आचार्यकुल, नरुण जालि सेना आदि से सतर्क कर इस कार्य को उठाने के लिए उनसे धरोल की जाए। साधियों और इस काम में सक्रिय सहयोग देनेवाले मित्रों की बैठक बुलाकर प्रदेश के कार्यक्रम की चर्चा की जाए और योजना बनायी जाए। पक्ष के लिए

यदि १ से १५ मई की तिथि धारण के प्रदेश को अनुकूल न हो तो प्रायः विशेष परिस्थिति में पक्ष का आयोजन उससे कुछ पूर्व भी (१८ अप्रैल या बाद की किसी तारीख से) शुरू कर सकते हैं। परन्तु कृपया १ से १५ मई से देर न की जाय, ताकि धार्मिकी सभ-अभिव्यक्तन और सर्वोदय-सम्मेलन से पहले ही इस दिशा में टोल काम हो सके। पक्ष के लोग सभी माधियों और सट्टोगियों को अपनी सारी शक्ति उपवासदान के लिए सतर्क, प्रचार एवं सकल प्रार्थना के लिए ही लगानी चाहिए। धार जो भी कार्यवाही कर रहे हों, उसकी जानकारी गोपनीय रखनी है।

कलकत्ता में बसोबुद्ध लोकसेवक दानाराम मन्डल सर्वोदय कार्यों में सातत्य-पूर्वक लगे हैं। वे प्रतिरूप दीर्घायनी पर अगले पिछले एक वर्ष में निरन्तर कार्य की जानकारी विनोया जी को भेजते हैं। इस वर्ष की जानकारी इस प्रकार है -

पुस्तक विन्धो (छपयो में) १२७५५ ५६ पुत्रिणाई ६२७ २५ वैमन्दिनी ३१५५ ००, माधो डायरी ४४४ ००, जालि बिल्ला ५१५-२०, पत्रिकाओं के प्राक्क भूदान ५३, मंत्री ४५, सुमिपुत्र १८। इस एक वर्ष की धर्मवि में श्री दानाराम ने ११ रुपये से आन्दोलन को सहायता देने वाले ११ सर्वोदय सहायक मित्र बनाये। एा रचना देने वाले सर्वोदय मित्रों के दायरे में ५३ नये साधो जोड़े। अपने सर्वोदय पात्र से ४७-४२ पैसा तथा १२०० रुपये का सम्पत्ति दान दिया है।

C हरियाणा के लोहसेवक कृतिवा भगत ने सन् '७३ में १८८५ रुपये ६६ पैसे का सर्वोदय माहिल्य वेचा। इस धर्मवि में उन्होंने ११२८ मील की पदयात्रा की तथा करीब २५० माधो से सम्पर्क साधा। कृतिवा भगत सन् ५६ से पैदल धूम-धुमार सर्वोदय माहिल्य और विचार पत्रा रहे हैं। अब तक इन १५ सालों में वे कुल २११२८ मील की पदयात्रा

कर चुके हैं। इस दौरान उन्होंने ग्राम स्तरापर क विचार को पाव की वीरी में ५ ७८ गाव के निवागियों के सम्पर्क रखा है। १५ साल में कुल १७८६१ रुपये का साहित्य वेचा है।

सन् ५६५१ में जन्मे कृतिवा भगत ने अपने गाव ठोठ (हरियाणा) में सर्वोदय आश्रम की स्थापना की थी। सन ५६ में उन्होंने माहिल्य प्रचार को अपना काम मान कर आश्रम को जनाधारित बना दिया। तब से वे स्वयं की विनोया का डाकिया मानने हुए धामस्वराम विचार की डाक गाव-गाव टार रहे हैं। कृतिवा भगत के इन जगतों के डाक विभाग में पिछले १५ सालों में काफी भी हड़ताल नहीं हुई है।

२७ मार्च को राजस्वान भूदान बोर्ड की गजरेर कार्योन्म में जिले के लोकसेवकों की एक बैठक देरीदत्त पत्र की की अध्यक्षता में हुई, जिसमें जिना सर्वोदय मंडल का गठन किया गया। गर्व सम्मति से प्रेमसुप जी तोलगीवाल मयोजन चुने गये। मंडल ने इस साल १०१ लोकसेवक, १००० धर्मि सैनिक तथा १०१ उपवास दानी बनाने का फंक्का किया। देरीदत्त पत्र को उपवास दानी तथा लोहसेवक बनाने का, प्रेमसुप तोलगी

वान को सर्वोदय मित्र बनाने का तथा मोहनराम मोदी की शाति सैनिक बनाने का जिम्मा सौंपा गया है।

मध्य प्रदेश सेवक सभके महावधान म २३ से २५ मार्च से होशघाबाद, बैनूर छिद्रवाता जिन्धो का दशमीय मित्र-मिलन हुआ। मिलन में ३० माधियों ने भाग लिया। मुख्य विषय धारण के इस लिए जिन्धो... मुख्य विषय धारण के कुल बना रहा। मिलन का मत था कि धार्य कुल धारण मानि सेना का साम-जय रिटाप विना बोर्ड धारणर काम नहीं हो पायेगा। यह भी सोचा गया कि होशघाबाद में सट्टोगीन या जगरे के राव प्राथमिक शाखाओं के मिश्रकों का एक दिवसीय सम्मेलन करना चाहिए। मित्र-मिलन म ६ उपवास-दान मित्रे।

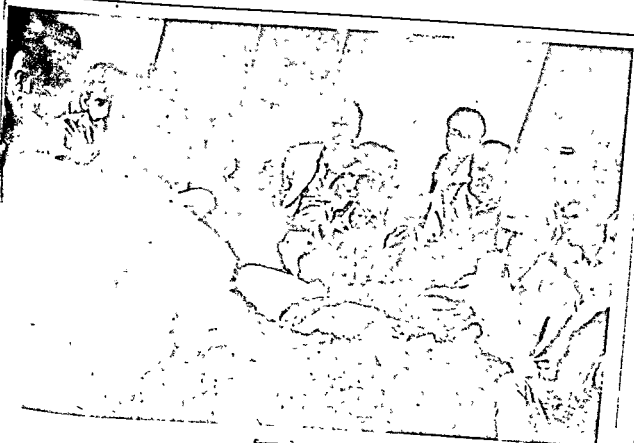
बागपुर के धार्यनगर सर्वोदय मंडल का पुनर्गठन हुआ। मंडल की भूतपूर्व अध्यक्षता भगवती देवी पत ने वृद्धास्था के कारण स्वेच्छा से पद छोड़कर नोजवानो को धारणे किया। नये अध्यक्ष रवीन्द्रमिह चौहान सर्व सम्मति में चुने गये। डॉ. भोमकजान वसुन्दी पुन मधो बनाये गये। डॉ. वसुन्दी गन चौदह सभों में इन भाग को उठाने रहे हैं।

माहिक शुक्र—१५ ८० विदेश ३० ८० या ३५ मितिग या ५ कारन, एक घं का मन्थ ३० पैसे।
 प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा सभ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटमें, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २२ अप्रैल, '७४

भूतान-य



बिहार प्रदेश द्वाय संघर्ष समिति के द्वाय जे० पी० के साथ - लेख पृष्ठ १० पर]

सही मुन्धों के लिए म० प्र० मिथ ● राजनीति का विघटन या विघटन की राजनीति प्रभाव जोगी ● भारत पाकिस्तान और
बागदा देश ● घाम इकरान्य का सतर से सम्बन्ध जुडा धनुषम मिथ ● जयप्रकाश बाबू इतो सोवियत की जगा रहे हैं पीरेड
मनुमदार ● बिहार मे द्वाय सङ्घों पर क्यों हैं ? धरमकुमार गर्ग ● सता, सग्याल और सर्वोदय योगेश नट्टुगुणा

भूखान-आत्म

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाय जोशी

वर्ष २०

२२ अप्रैल, '७४

अंक ३०

१६ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक विधि, नई दिल्ली-११०००१

भारत, पाकिस्तान और बांग्ला देश

भारत, पाकिस्तान और बांग्ला देश के बीच हुआ विपरीत समझौता सन् '७१ के युद्ध से उत्पन्न समस्याओं के ' शब्दों की दिशा में एक रचनात्मक नदम '। अग्रे इसी भावना और समझदारी ने ये दोनों देश अपनी प्रायत्ती समस्याओं के हल निकालने रहे तो प्राया ही जाती है कि ब्रिटिश साम्राज्य ने इन उपमहा-द्वीप का बँटवारा करके जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ही वह धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगी। धर्म राष्ट्रीयता हो सकता है यह विचार भारतीय नहीं है। यूरोप में भी धर्म राष्ट्रीयता की प्रतिभाया नहीं है। फिर भी मुसलमान एक अलग राष्ट्र है और हिन्दू एक अलग राष्ट्र वह अवधारणा अंग्रेजों ने ही हमारे दिमाग में भरी और झाड़ी रेखाओं के जटिल स्वरों में बँटे साम्राज्य को उन्हीं लकी रेखाओं में बाँट कर हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों, पारसियों, बौद्धों और जैनों को एक दूसरे के विनाशक शत्रु बना दिया। इस्लाम की स्थापना के लिए भारत में आये मुसल-मानों ने भी इस देश को धर्म के नाम पर इतने टुकड़ों में नहीं बाँटा था जितना कि सभ्यता और व्यापार के नाम पर आये अंग्रेजों ने बाँटा। मुझे और अराजकता ने दिल-भिन्न और दीवन्दीन हुए भारतीय साम्राज्य में अपनी शक्ति लड़ी थी कि वह अंग्रेजों के खेल को समझ कर उठे रोहने का सग-ठिन प्रयास करना। अंग्रेजों ने सामाजिक विभाजन के जो बीज इस बहुभागी और बहु-धर्मी देश में साक्षात्त खनाने के लिए बोये थे सन् '४७ में बंबू के बुझी की तरह उगे और इस महाद्वीप के द्वितीय टुकड़ा गये। सन् '४७ के बाद अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और महाशक्तियों ने इन द्वितीय विभाजन को फूट और हिंसा की आगनीज्वल से दे कर जिन्दा रखा। जो लोग सदियों से एक साथ रहते आये थे और सहिष्णुता जिनके माना-द्विक जीवन का प्रतिष्ठित मूल्य था वे दो राष्ट्रों में विभाजित होकर एक दूसरे पर शत्रु करने लगे और एक दूसरे के प्रतिष्ठा के

लिए सतारा बन गये। लोगों का मजबूत धाना तो खैर असम्भव था ही उनकी सत्कारों भी प्रायमी मामले मुलमानों के लिए टेवल पर बैठ कर परस्पर विश्वास से बातें नहीं कर सकती थी। विधोनों के स्वार्थ इसी में थे कि यह उपमहाद्वीप बँटा रहे और प्रायस में लड़ता रहे। इन विधोनों ने उपमहाद्वीप की वास्तविकता को हमेशा नकारा और पाकि-स्तान के अहमक के गुस्से को शत्रु की ताजब से पुलाये रखा। पाकिस्तानियों के मन में मध्यकाल की उन स्मृतियों की जीवित विद्या जो मजद इतिहास के धनुरात गिनती के इनामी जिहादियों द्वारा हिन्दुओं की विनाश केना को हुराने की घटनाओं में लपकी थी। भारत और पाकिस्तान की शक्ति की तराजू पर बराबरी में रगने के इरादों ने पाकिस्तान को एक ऐसी आक्रमणना दी जो उसकी शक्ति की वास्तविकता से बागो दूर थी और भारत को एक लड़कपाथो शायी की दृष्टि देकर उगरे मन में अभिमानाहट की ऐसी भावना भरी जो उसकी वास्तविक शक्ति को न...

शक्तियों की जमींदारी के पात्र मजबूत किये। राष्ट्रसय इस जमींदारी को तोड़ने में असमर्थ था और छोटे देशों के हितों की रक्षा कर सकता उसके बस के बाहर ही बाण थी।

एक महाशक्ति के नाते चीन के उदय ने इस और अमेरिका के शक्ति सन्तुलन को गड़बड़ा दिया। हालांकि चीन ने अपने को तीसरे महाशक्ति के उद्धारक के रूप में पेश करने की कोशिश की पर उसने तीर-तरीके भी इस और अमेरिका से भिन्न नहीं थे। वह जमींदारी का इनाम निकाल लेना चाहता था। इस और चीन के मतभेदों ने इन दोनों देशों को अमेरिका के मजदूक बनाया और जागतिक शक्ति सन्तुलन के नये समी-करण दुनिया में उभरने लगे। अमेरिका की तरह चीन भी आक्रमण सैनिक राष्ट्रीयता का समर्थक बना और हमारे उपमहाद्वीप में उगने लगी रोग घटा करना शुरू किया की जो घब लर अमेरिका कर रहा था। कम ने चीन और अमेरिका की तबरे तोड़ दी। अग्रे विद्वाने ने लिए छोटे देशों की राष्ट्रीयता और स्वायत्तता का सम्मान करना शुरू किया। चीन ने पाकिस्तान को अमेरिका की तरह शत्रु दिखे और कम न भारत का समर्थन किया और शत्रु भी दिया।

ग्रामस्वराज्य का संसद से संबंध जुड़ा

उत्तरप्रदेश सर्वोदय सम्मेलन की रपट अनुपम मिश्र द्वारा

वैश्व से चारह घण्टे तक सद्गुरु (जिला नैनीताल) में हुए उत्तर प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन में ३५ जिलों से आये १२५ लोकसेवकों ने पिछले चोदह महीनों से चली आ रही 'ग्रन्तरिम' व्यवस्था को ध्यान कर एक बार फिर बाकायदा सर्वोदय मञ्जल गठित कर लिया है। चम्पन के बागियों को बीच काम करने वाले महावीर सिंह सर्व समिति से सम्बन्ध चुने गये हैं। महागाई, अष्टाधार, कुशामन जैसी जागतिक बुराई के दौर से गुजर रहे देश में छात्र घोर जनता की विचारी घोर सरकार की संभाजित हिंसा के टकराव की पटनाआ का प्रदेश सम्मेलन में हुई बहसों पर पर्याप्त अंतर था। ऐसे वानारण्य में गाव घोर गहर के लोकसेवक क्या काम करें, कैसे करें जैसे प्रश्नों का कोई सर्वसम्मत उत्तर उत्तरप्रदेश सम्मेलन में नहीं निकला लेकिन सर्वोदय आदीन के लकीनेयन के कारण उपमहाद्वीप घोर देश की परिस्थिति पर एक विवेदन सभी लोकसेवकों की सहमति से पाल हो गया। इस अग्रज की शुरु हुए खुने अधिवेशन में महावीर सिंह व सुन्दरलाल बहुगुणा ने कमज सम्मेलन अन्वय धोमराज गौड़ घोर उद्घाटन स्वामी चिन्दानन्द का परिषय बताया। रामप्रदेश शास्त्री ने यह एक वर्ष में जुटा हुए माथियों की स्मृति में लोक प्रस्ताव रखा। स्वातंत्र्य भाषण में सम्मन तराई की जनता की घोर से अभिनन्दन करते हुए राममुनेर भाई ने जड़ा यह उम्मीद की कि सत्ता की राजनीति से धमप रहार काम कर रहे लोकसेवक विरती हुई मन्व्यापा का हन छोड़ निरालंभे वटां उनके वां के बना दे की ने (इस क्षेत्र से कार्य की विधायक हैं) ऐसे ईमानदार लोकसेवकों को मन्व्य राजनीति में धामर-देश की समस्याओं को हन करने का निम्नन दे डाला। उन्हें विश्वास था कि दलीय पद्धति बची रहेगी। पहले के मार्क्सवादी और धव के जनमयी रडपुर के मेयर चतुर्वेदी जी को जिन्हें सन् ७२ में सान्धो का हृदय परिवर्तन देस कर विमान हुआ था कि और जरूरती के बरने सम्भ

बुनाकर भी मन्व्या हल होजाती है, सचों य सम्मेलन का मच दतना पवित्र लगा कि उन्हो ने सत्ताहृद दन की क्षालोचना की इच्छा को रोक कर केवल चरवेनि-चरवेनि धयने लक्ष्य की घोर सदा बढने रहे-धर कहा।

उद्घाटनकर्ता स्वामी चिन्दानन्द ने धान्नी प्रमेरित्री याचा के दौरान टेनिमन की पुस्तक 'द सेंट ह वास' से (पदवाचो गन्धकी) विनोबा को जाना था। वे पिछले तीन वर्षों से उत्तराखण्ड के सर्वोदय कार्यों में मदद दे रहे हैं। उनको गौड़ साहब न माला पटनाई तो स्वामी जी न उनके पर छू लिए।

स्वामी जी का लयगम दो घंटे का उद्घाटन भाषण अध्यात्म रहित विज्ञान की दग्धी दौड बायुद्वयण, मध्यम दर्ज की दलनीन, धादि धनेक विषयों को समेटना था।

जयप्रकाश नारायण का अभिनन्दन

रडपुर (नैनीताल) में १० अग्रल से १२ अग्रल तक आयोजित उत्तरप्रदेश का यह सर्वोदय सम्मेलन धाज देश में जो सामाजिक धाधिक, राजनितिक एव साम्प्रदायिकता व जाति भेद जनित शोषण अष्टाधार व धस-तोय घोर असाति व्याप्त है, घोर उसके फल-स्वरूप जनता को घोर निराशा से तोड-कोड के द्वारा धाज को परिदियति में भयकर धाकोज प्रकट करने की तरफ बड रही थी, ऐसे नाजुक धोके पर जनता के धाधोड को लोकमार्गक जयप्रकाश नारायण ने धयनी क्रातिधारी शून्बूक घोर धनुभव से जो धहि-सात्मक द्वात घोर मोन जनुस का स्वरूप देकर एक नयी दिशा पटना में दिखायी है घोर ७२ वर्ष की धवस्था होते हुए भी धहि-सक धाशोलन के नेतृत्व करने की जो तंयारी बतायी है, उसका यह सम्मेलन हार्तिक धमि-नन्द घोर उसका समर्थन करता है।

प्रस्ताव : विनयभाई धनुमोदक : प्रकाश भाई

धाज की दुनिया पर छाये सकट आ जिक करते हुए उन्होने बटा कि 'इसके मूल नारण हटाये बिना यह दूर नहीं होगा। मन्व्य कोई भी पद्धति लीपापोती ही होगी, हम बोके को सिर से उतारकर बनी बाये कन्वे पर रखेंगे तो कमी दायें पर। केवल कन्वे के राहुते से ही समस्याओं को पठरी हमारे शरीर से उतरेगी। विनोबा ने पद-यानाओं के माध्यम से ही लोगों के मन में प्रवेश कर उनको धमस्थो को हल किया है— ऐसा कहते हुए उन्होने लोक सेवकों से आग्रह किया वे उ०० में धनेक धावड पदयात्राओं द्वारा विचार फैलाए।'

दूसरे दिन, ग्यारह वजे लोकसेवकों की बैठक में सयोजक बहुगुणा ने धाधिक रपट पेश करने की परम्परा को तोडा। उन्होने नया तरीका सुझाया। काम कर रहे धार्यकर्ता ही धयने-अन धेत्रो में गाल भर के काम की रपट दें। किसी एक ध्यक्ति द्वारा पेश की जाने वाली नीरस रपट से यह तरीका बेहतर साबिन होना यदि सम्मेलन में प्रवेश में चल रहे अलग-अलग कामों को करने वाले लोगों का पूरा प्रतिनिधित्व होता या यन्ता धाधिक समय नहीं लेते। लेकिन ऐसा ह्दय नहीं इस-लिए केवल चम्पन का बागी धायासमर्थक, बाहु हटावा में मनदान निक्षए (रपट ही महावीर सिंह में) भूदान यज्ञ सविन (हिर प्रसाद) धाचार्य कुल (समरवन) तरण शाति सेना (प्रदेश मन्व्यध कुवर प्रमूत की धनु-परिषद में विनय भाई), लारी कार्य (वरण भाई) विषको धान्दोलन (धग्धी प्रसाद भट्ट) —इतने ही काम की रपट यन्वयें धा सचों। ककुवन स्नाक, मिर्जापुर का बनयती सेवाधम उपासक दान, उत्तराखण्ड में १२० दिन पद-यात्रा, हिमालय सेवा सघ द्वारा जीनसाधर वावर, रवाई धेत्रो में धायोजित एक साह की पदयात्रा धादि धनेक कार्यों की जनबारी दूट गई।

बैठक के शुरु में विनय भाई घोर राधे-श्याम योगी ने पटना में धाड अग्रल को निकले →

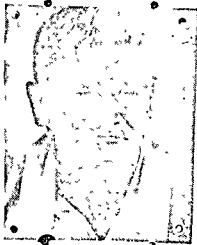
मीन जुलूस का प्राँवों देखा हाल गुना कर बैठक स्थल को कुछ समय के लिए पटना ही पहुँचा दिया था। राष्ट्रीय मोर्चे सहस्रता के अतिम सर्वोत्तम अभियान का वर्तमान प्रकाश भाई ने गुनाया। उन्होंने सहस्रता के मूल्यवान प्रभुभवों को सहस्रता के निधि व देन बताया।

वापिक कार्य के रपट के इस सत्र में साठे दस बने, जबल की रपट रोक कर विष्णु सह-खनाम का पाठ शुरू किया गया। कुछ लोगों ने कार्यकारी रोक कर पाठ करना ठीक नहीं माना। उन्होंने पूछा कि यह पाठ सुनह या बैठक के बाद नहीं किया जा सकता था? सभी जानते हैं कि पाठ का समय पूरे देश में १०-३० रखा गया है। उसे स्थानार करना था न करना विलतुल प्रलय बात है। लेकिन ऐसा वातावरण नहीं बनने देना चाहिए कि जिससे धार्मिक या नास्तिक, निरी के भी मन में प्रपनी निष्ठाओं को लेकर प्रपराय भाव सा ध्रा जाये।

शाम को खुले अधिवेशन में शोम प्रकाश गौड ने ताजगी भरे अध्यक्षीय भाषण में संसदीय प्रणाली के सकट, ग्रामस्वराज्य के स्पष्ट चित्र, ग्रामसभा, क्षेत्रीय परिषद जन प्रतिनिधि धारि पर विस्तार से बोलते हुए कहा कि लोकतंत्र का वर्तमान ढांचा प्रपनी बना रहेगा। इसलिए उसका निरन्तर विकास करते चने जाना है, यह विकास उल्ले सच्चे, प्रत्यक्ष लोकतंत्र में बदल सकेगा। इस वर्ष उ० प्र० में हुई क्षेत्रीय परिषद धोर मत-दाना शिक्षण कार्य में उन्होंने कहा कि जय-प्रकाश ने ग्रामस्वराज्य के काम का वर्तमान संसदीय प्रणाली से भी रिस्ता जोड़ा है। धारि इत संसदीय प्रणाली को ग्रामस्वराज्य की गंगा में ही तो लुप्त होना है। उन्होंने धारिध विषय कि इन परिषदों को ग्रामदान की मूल शक्ति से जुदा कोई कार्यक्रम नहीं मानना चाहिये। हम निरी भी धोर बने हमें मजिल बराबर ध्यान में रखनी है, मजिल हमारी ग्रामस्वराज्य ही है। फल वही हिंसा और धराजकता की भरसना करते हुए उन्होंने बेताया कि देश में ऐसी तावतें हैं जो गांधी-विनोबा को अपना मसीहा नहीं मानती, यदि हम सजग नहीं रहें तो वे तावतें देश को एक ऐसे विन्दु तक भी ले जा सकती हैं जहाँ से लौटना बहुत कठिन होगा। शासन कर्ताओं



स्वामी विद्यानाथ धोर बहुपुषा



नये अध्यक्ष महाशयि सिह

को नेक सलाह देते हुए ग्रामप्रकाश गौड ने कहा कि सरकारें धमन से धत्यापु होनी हैं, सद्भावना धोर उदारता से दीर्घायु। हमें सत्तारुद्ध धोर विरोधी दोनों तरह के दलों को तीसरे रास्ते से परिचित कराना है।

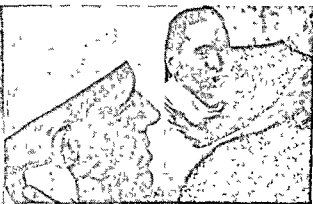
विनोबा या जे० पी० के कार्यक्रमोत्तक ही कोई लोकतंत्र धमन की भीमिन न रहे। उन्होंने धरिहा के तरकज के कई तीरो का जिक्र करते हुए अंत में कहा कि हमारी मजिल समग्र शक्ति की है, समाज धाम या शासन सुधार की नहीं। नयी राहें, नये कार्यक्रम हमें मंदान में शुरूकें।

कभी-कभी लोग धीरज जल्दी खो बैठते हैं, कम से कम उन विचारों को गुनते समय जो उन्हें पसन्द नहीं। अध्यक्ष के भाषण के दौरान 'पट्टी वजाओं' की धाराज वनी गई। भाषण के बाद खुद गौड साहब को यह कह कर कि लोग उब गये हैं, राधेश्याम योगी व कपिल धरस्थी को गुनते बोलवाना पड़ा।

छद्मपुर के लोगों के बीच दूसरी बार श्राये डॉ दयानिधि पटनायक ने देश-दुनिया को समर-यामो का हल तलाशने वालों के सामने एक दूसरा पहलू रखा। विनोद वैज्ञानिक पटनायक का कहना था कि हिसक य। धरिहाक विरी भी तरह के शक्तिकारी को आशावादी बनना होगा। निराशा का अर्थ मौन है निराशा के वीन ध्रष्टाचार, दुरा शासन धारि देव कर उनसे निपटने के लिए सत्याग्रह आदि सोचने के बारे में उ० पटनायक ने कहा कि क्या विनोबा को ध्रष्टाचार नहीं दियाता, उसने तो 'ध्रष्टाचार ही जिष्टाचार हो गया है' कह दिया है। वह सत्याग्रह क्यों नहीं करता—क्या वह सत्य से डरता है? धाज विनी भी समस्या को हल करते समय लोगों को जोड़कर एक साथ धामे ले जाने का हमारा काम होना चाहिए। प्रेम से एचता, एचता से शान्ति, शान्ति से जहिया तब पट्टूच कर ही हम अंत में सत्य की मजिल पर पट्टूच मर्चें।

लोक स्वराज्य की वान करते हुए पटनायक ने कहा कि वावा ने उ० प्र० में एक जिया से लेकर इस काम की पूरा कर दिखाने का मुभाय दिया ही था। वहा से यदि जन प्रतिनिधि सरकार में जातें तो सरकार पर हमारा रग चढ जाता। एशिया में तीन देश हैं। चीन की धारादी ७० करोड, भारत की ५५ करोड और रूस की २५ करोड। रूस धोर चीन के विचार यहा फल रहे हैं। चीना देय २० करोड बाला—अर्थविक्र भी है। धमलिए हम जो भी बदम उठायें, वह साव-धानी बरतें कि उनसे वही मूह-मुह तो नहीं होगा।

'ध्रष्टाचार हटाने की वान एक ध्रम ही है। इसके लिए गामाजिक, धार्मिक राज-नीतिक, परिवर्तन की जरूरत है। वैज्ञानिक युग है, परिवर्तन जरूर धामेगा। हम मौजूदा ध्यवस्था को टिंकारे नहीं रतना चाहते, इसे बदलना है। केवि गमभा बुधाचर या जोर-



निर्मला, देवराजदे, मास्टर सुन्दरलाल, श्रोत्रप्रकाश गौड़ तथा डा० ब्यानिधि पटनायक

→ जबरदस्ती से ?? विचार की शक्ति से धारार तक जायेंगे तब विधान, कानून खुद विचार के पास पर गिरेगा। जब किसी बात से १० लोग महतम होयें १० नहीं तो उन १० के लिए कानून ब्रायेंगे। आग्नि साध्य और साधन पूर उहोने कहा कि आप कोई भी बराम उदायें वह पकवा कर लें कि इसका अंग हिसार, सोडफोड में नहीं हो। हिसा भद्रवाने की कोशिश कोई बरे तो भद्रका न पाने बने कि साध्य हमारा कई विचारों से मिलता है लेकिन साधन हमारे विनकुल भ्रमण है।"

"भाषाचार और बुरे शासन से धरनेले नहीं निरादा जा सरता। हम बहे कि हम दोगे में धार और हन दोगी हैं, आधो एर साध पतनवर देने साक करें। विनोदा के पास राष्ट्रीय धन्य लेखक सस के देवरात भी धरने है और इंदिरा भी, दोनो को उजवा सामंदरगन है। यह हमारी बगोटी होगी, गन से कह सकें कि आधो भिन कर बनें, धोर के बनें भी। पडता के मीन जुनुम का समर्थन बरते हुए उहोने कहा कि ये उस दिन का इलजारा कर रहा हू जब ४ लाख के बदले ४ करोड लोग हमारे साध होयें।

डा० पटनायक के भाषण के दौरान उनके बीच से ही प्रश्न पूछने की कोशिश की गई। भारणा के अंत में भी उनके धमटमत हुए लोकरेणक 'धम फीतारे' जाने की शिकायत करते रहे।

हम गन में सम्मेलन तरार्द के विपन्न मुमिरींगी की समस्या का हल भी गृह किया—६२

बर्षीय लालन प्रसाद ने मंच पर आकर २ एकड जमीन का दान दिया। तरार्द में इस प्रपणाऊ जमीन की कीमत बीस हजार रुपये है। धैरी परिवार ने नये धारको को सपादिका निर्मला बहन ने नये अक भी भेंट किये।

मास्टर सुन्दरलाल के सतुलिन भाषण ने एक धूरे से भिन्न दृष्टिकोण रखने वालों से सहिष्णुता न खाने का आत्मीय आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस परिस्थिति में विनोदा की भी तजजीक है जे० पी० को भी। निर्मला बहन को भी किसी से कम दुख होगा यह मैं नहीं मानता। मुजपपरपुर में निर्मला बहन को नकली धमकी मिलने पर जे० पी० की धारों में धायु आये थे और जे० पी० के लिए वादा की धार में। क्या जे० पी० की धारण प्रीहिसा से हट जायेंगी ? नत में उहोने कहा कि धपने साधियों को साम्प्रदायिक दसों की धारण में भोव देने हैं, कोई साथी धारण धपने को खुद भोक्ने के लिए निवलेगा तो हम विचारों की यहल में नहीं पडेंगे—उनकी विदा फूलमावा पहना कर करेंग।

काम को उत्तराखण्ड के साथी भ्रमण से बँडे, उहोने भ्रमण्ड परवात्राभो, सरारबन्दी रबी गन्धि जागरण, सरला बहन के ७४ वें जाम दिन पर ७१ दिन की महिला परवात्रा निकालने की योजना धोर विचारों धारोलेन पर बराचीन की। सम्मेलनो में बहुप्रतीशान गरम भाष नये जुनात का होया है। लेकिन हद्रपुर में उन रात वह बापी ठडा रहा। भोडन के बाद हुए इस सत्र में कोई १० लोक-लेखक रहे होयें। महावीर सिंह व श्रोत्रप्रकाश

गौड़ के नाम अध्यक्ष पद के लिए ध्राये। नियम से श्रोत्रप्रकाश जी ने अपना नाम इस ध्रायार पर वापस ले लिया कि प्रस्तावक ने उनकी सहमति नहीं ली थी। महावीर भाई ने जब बैठक में प्रवेश किया तो उहो यह सुन कर ध्रायर्ष हुंभा कि ये सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिये गये हैं।

पाचली खुर्द में हुए विद्येन सम्मेलन से ७० प्र० के लोकसेवक एक नये सगठन की तलाश में थे। सगठन का डीलापन धच्छा है लेकिन यह काम को भी डीला नहीं कर दे इस की उहो चिन्ता थी। पाचली खुर्द में किसी एक नतीजे तक नहीं पहुच पाने से एक अंतरिम ध्यवस्था लडो की गई—मुजपरलाल बहुगुणा ने खुद को एक वर्ष तक मयोजकहो माना था। नये अध्यक्ष के चुनाव से उहोने सम्मेलन मुक्त मान कर सबको ध्यवनाद दिया। सगठन में लोकसेवक ईकाई है लेकिन कई कारखो से सम्मेलनो में वे ध्यादा नहीं आ पाने। कारए काम में ध्यवता, धायिक कमी या उदासीनता भी हो सरता है। इसलिए सम्मेलन में बुनो गई कार्यकारिणी में सही प्रतिनिधित्व की कमी लोपो को लगती रही है। इस बार अध्यक्ष ने वहीँ के वहीँ कार्यकारिणी नहीं बनायी। मुजरा आया था कि प्रदेश के जिला धायशो के लेखर एक समिति बने। जिनकाभाई के इम मुभाव से कि कई जिलो में वहा के सक्रिय कार्यकर्ता अध्यक्ष नहीं बन पाने—इन्-लिए जिला धायशो के प्रतिरिक्त, अध्यक्ष ११ सक्रिय कार्यकर्ताभो को भी इस समिति में नामबद करे।

ध्निम दिव सुबह सोजलेकेने, ने धरने

मेजवान रूपि प्रगिभए पावेज के तेनो मे गेहूँ की बटाई की। डेढ़ घंटे के एग टोम थ्रम-दान मे बसंग-भलग हटिकेओ। को घेत पर रङ्ग। कर दिया पर।

मुद्दह के मय मे स्योजक की वारिक-रफ्ट के बन्दे नारियारोंमे द्वारा खे जा रही जानवारी बा छुटा भ्रम पूरा बिया गया। इकबाल बहानुर सिंह ने कानपुर मे मुफ्तना सभामे, मुबारक नगर मे बाबा बहानु ने उपवामदान, मुहल्ला गभासो, आजमगढ़ से मेवालाल ने मधुवन धोर मे टट फाम करने की योजना, धीरेन्द्रा बा थहा शुरु हुआ कार्य-क्रम भादि जानवारी की दी। बानपुर के डा० सोमनाथ ने मुहल्ला सभा, ट्रस्टीगिन, ह्यपुर के बलवन्त सिंह ने भूमिवातो के उन्नत फाम घोर भूमिहीनो के सपर्य, शराब के जोर भादि की जानवारी दी। इती बीच जे० पी० के मोन जुजूस के समर्थन मे एक प्रस्ताव एवाध शब्द के इधर-उधर करने से पास बिया गया। फिर निर्मला बहन ने जो सम्मेलन मे भाग लेने पवनार से झाई बी एक अतरंग चर्चा की शकल मे इत दिवो विनोबा क्या घोर बँसा सोचते है को लोगो के सामने रखा। उन्होंने प्रादोलन मे चल रहे विचार मंथन बा स्वागत करते हुए कहा कि मयन से प्रभुत तो निकलता है लेकिन उसमे पहले विप बाटर आता है, उस विप को पीने वाला कोई एक नीलकण्ठ भी होता है। बाबा विपयन कर प्रभुन विश्व को दे रहे हैं। विनोबा के ही वाक्यो को उद्धृत कर उन्होंने बाबा को सामने रखा। जिस तब पर निष्ठा रख कर हमने काम शुरु बिया उस पर से हमारा विश्वास नहीं उगता चाहिये।

दुनिया मे भाये तेल संकट, उपमहादीप मे बगला देश, भारत, पाक के नजदीक घाने से बने वातावरण को, सर्वोदय के विचार के लिए प्रच्छन्न ब्रह्मसर बताकर उन्होंने प्रादोल की वि अर्थो को द्वारा तोड़े गये टुकड़ो को जोड़ने के इस काम को कोई शक्य नहीं लगता चाहिए। सब पर विरतण कर सब को साथ लेकर सारा हृदय बन्दलता होगा।

समापन सत्र मे भाषो के स्तर पर दो विलुप्त भिन्न भाषण थे। स्वामी इच्छामन्द ने तेज प्रावाज मे कहा कि वोट सबका बराबर

लेकिन पेट अमीर के भलग, गरीब को घ्राण ? गरीब गिलावा जा रहा है घोर हम मरदार की डगनी बजायेंगे ? आज तक किसी जुने गए प्रतिनिधि मे मतदाता ने पूछा नहीं था कि तुम विधानसभा मे क्या कर रहे हो। घ्राज यह पूछा जाने लगा है—बहुन धच्छी गुरु-आन है। परिस्थिति से निपटने के लिए घ्राजे-घ्राजे तरीको को भ्रमजमे की सलाह देते हुए उन्होंने शर्न ररौ कि उससे हिंसा नहीं कूटनी चाहिए। विनोबा, जे० पी० के बीच कोई अन्तर न कर उन्होंने दोनो मे नारायण हरि के दर्शन पाने की बात कही। समापन

सत्र मे महिला सम्मेलन भी होने वाला था, कच्छे ते महिलाए घ्रा चुकी थीं। लेकिन गमय यद्दुन बम था इसलिये तप हुआ कि निर्मला बहन ब्रज बेल एक ही भाषण देंगी— सबके बीच। उनका परिचय कराने कीसानी के लक्ष्मी ब्राधम की प्राघाभट्ट को लुताया। उन्होंने परिचय के लिए मिले समय का उपयोग स्त्री शक्ति जागरण के लिए किये जा रहे प्रयासो के वर्गन मे कर महिला सम्मेलन के न होने से हुई बमी को काफी हद तक पूरा कर दिया।

रुद्रपुर सम्मेलन का निवेदन

देश की भोजूदा गम्भीर परिस्थिति घोर उससे मुक्त होने के लिए किये जाने वाले प्रयासों पर उत्तर प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन ने गम्भीरता से विचार किया। सम्मेलन की निर्दि-चत राय है कि सला की होड मे ब्यस्त राजनैतिक दलो का हिसक प्रदर्शनों बंदो घोर हड-ताल भादि के द्वारा होने वाला घ्रापरण जनहित के लिए पानक है। इसको दवाने के लिए प्रयुक्त राजकीय हिंसा से भी हिंसा की ही शक्ति बढती है। इसलिए सम्मेलन सभी राजनैतिक दलो से विनम्र प्रार्थना करता है कि देश हित को ध्यान मे रख कर शांतिमय तरीके अपनायें।

अष्टाचार, महागाई घोर बेरोजगारी जैसी ज्वलत समस्याओं के विरुद्ध युवाशक्ति का जागरण एक नई घटना है घोर उती क्रम ८ अप्रैल को घटना मे जे० पी० के नेतृत्व मे निवले मोन जुलूस ने सारे देश का घोर पास तीर से युवाशक्ति को एक सया मार्ग दिया है, जिस का घ्रनुरण हिसक प्रदर्शनों वा एव सर्वोन्नत विचलर है।

इती बीच भारत, पाकिस्तान और बगला देश के बीच हुमा समझौता इत उप महादीप की एक शुभ घटना है। अहिंसक के प्रयोगो के लिए नये विनिजो के प्रबलन से बेचल इन सम-स्याओं के हल के लिए ही नहीं, समय क्रांति के लिए अहिंसा की शक्ति के प्रति हुमास विश्वास अधिक दृढ़ हुमा है। अराजकता घोर तापशाही के भार्य को प्रशस्त करने वाली हर प्रकार की हिंसा बा हर स्तर घोर परिस्थिति मे विरोध करने के लिए जनता को तैयार करने के घ्रपने वर्त्यय के प्रति हम निरतर जागरुक हैं।

हमारे देश और प्रदेश मे अहिंसक मार्ग मे समस्याओं को हल करने के कई प्रयोग हुए हैं। भूदान द्वारा सारो एवड भूमि का वितरण हुमा, चम्पलघाटी मे बागियो के प्रात्न-समर्थन को तो विश्व मे एक चमत्कार ही माना है। उदारताच्छ मे शराब बन्दी घोर विपको प्रादोलन अहिंसक जन शक्ति की सकलता के हृदर कीर्तिमान हैं।

सर्वोदय प्रादोलन अहिंसक जन शक्ति के विकास के महान उद्देश्य की घोर हर समस्या घोर परिस्थितियो मे घ्राये बढना जोगेगा क्योकि उसके लिए प्रभुत परिस्थिनिया बन रही हैं। इनके लिए प्राम स्वराज्य के विचार पर आधारित गांधी घोर नगदी मे प्राम सभाओं मे घोर मुहल्ला समितियो के रूप मे संगठित होकर बेचल तात्कालिक समस्याओं को हल करने मे ही नहीं बल्कि लाक स्वराज्य की दिशा मे बढने मे भी जनता समर्थ होंगी। प्रदेश के कोने-कोने मे पदयात्राओं घोर स्त्री-गतिन जागरण व उपवाम दान के कार्यक्रमो के द्वारा अब तेजी से बुनियाद बनाने का समय है। हम राजकीय पक्षो समेन जन जोरन को उन्नत बनाने घोर समाज परिवर्तन के लिए सचलिन सेवको बा इसके लिए घ्रावाहन करते हैं।



६ अप्रैल को आयोजित पटना की विद्याल सभा में श्री जय प्रकाश नारायण

बिहार में प्राग धीरे-धीरे सुलग रही है। प्राग का मुलमाना धगर जारी रह सका तो केवल गफूर साहब के इस्तीफा देने से ही काम नहीं चलेगा, विधानसभा भी भग करना पड़ेगी। जय प्रकाश जी भादोलन जिम तरह चलाना चाहते हैं धगर उन तरह चला तो केवल विधानसभा भग हो जाने से ही नाम नहीं चलेगा, देश के सबसे गरीब और भ्रष्टाचार से सबसे अधिक प्रस्त प्राप्त बिहार में व्यवस्था परिवर्तन की एक शुरुआत का तितमिला प्रारंभ होगा जो रेल मार्ग से उत्तर प्रदेश होता हुआ दिल्ली भी पहुंचेगा। १८ और १९ मार्च को पटना में जो प्राग कृती की घटना हुई उसका बुझा धमी बुझा नहीं है। बुझा जिधर से भी गुजरता है लोगों की भावों में घुसता है, और भावों से पानी निकलता है। तादी लोगों की सभा में जब जयप्रकाश जी ने भरे दिल से ६ अप्रैल को पटना में कहा कि 'पटना जनता रहा और कोई पूछने वाला नहीं रहा' तो पूरी सभा की भाव नम हो आई।

गुजरात में और बिहार में बहुत फर्क है। बिहार में जितना दो दिन में जल भर रहा हो गया उतना गुजरात में साठ दिन तक जलता रहा और आज भी जल रहा है। पटना स्टेशन पर उतर कर पूरे शहर में घूम जाइये ऐसा कुछ नहीं लगेगा कि यह शहर भादोलन की चपेट में है। दुबानें पहले जैसी ही खुली हैं और गरीब सार्वजिन रिक्शावाले पहले की

तरह ही रिक्शा खींचते मिलेंगे। पटना ही नये मुजफ्फरपुर, मुयेर, गया, भागलपुर वही घूम जाइये जिन्दगी बिहार की रफतार से ही चल रही है, कोई तब्दीली नहीं दीखेगी। पर कुछ है कि शहर ही शहर पिघल रहा है।

नात गुजरात से शुरू की जाए। गुजरात के एन० डी० इंजीनियरिंग कालेज में होस्टल के छात्रों के भोजन बिल को लेकर भादोलन शुरू हुआ। गुजरात के गरीब छात्रों ने इन छात्रों से पूछा कि तुम तो भादोलन करके भोजन का बिल कम करवा लोगे पर हम गरीब लोग क्या करेंगे? छात्रों के पास इसका कोई जवाब नहीं था। इसीलिए गुजरात का भादोलन वही के प्राग भादमी की जिन्दगी के साथ जुड़ गया। गुजरात के लोगों को लगा कि जब तक चिमनभाई पटेल के मन्त्रिमंडल को नहीं हटाया जाता तब तक गुजरात से भ्रष्टाचार नहीं जायेगा। फलग-अलग विचारधाराओं को मानने वाले लोगों का जिस प्रकार भाजादी के पहले यह मानना था कि पहले अग्रज जाए तब समस्यायें सुलझेंगी उसी तरह सारा गुजरात पटेल को हटाने के लिए गैर राजनीतिक स्तर पर एक हो गया। पर जिस प्रकार अग्रजों के जाने के बाद बाद हुआ पटेल के जाते ही गुजरात के भादोलनकारियों में धागे के कार्यक्रम को लेकर बंचारिक धुंधोकरण शुरू हो गया।

हालांकि बिहार के छात्रों ने अपने

बिहार में छात्र सड़कों पर क्यों हैं ?

—श्रवण कुमार गर्ग

भादोलन की प्रेरणा गुजरात से प्राप्त की और कहा भी कि 'गुजरात की जीत हमारी है, अब बिहार की बारी है, पर बिहार के भादोलन की शुरुआत बंचारिक धुंधोकरण से हुई और गुजरात की तरह बहा के भादोलनकारी गैर राजनीतिक स्तर पर अपने आंको एबन नहीं कर पाये। इसीलिये बिहार प्रदेश छात्र सभय समिति में इस बात पर अभी तक मतभेद नहीं हो पाया कि क्या गफूर साहब से इस्तीफे की माग की जाये? क्या विधानसभा भग करने की माग की जाये? इन सवालों पर मतभेद होने के कई कारणों में एक यह भी है कि छात्र सभय समिति में ऐसे भी कुछ सक्रिय लोग हैं जो कहते हैं कि केवल गफूर इस्तीफा दे देंगे इससे तो पूरी व्यवस्था बदल नहीं जायेगी, चुनाव की पद्धति ठीकुरानी ही रहेगी और कोई नया मुख्यमन्त्री भा जायेगा। इससे न तो भ्रष्टाचार खत्म होगा न महंगाई मिटेगी। बड़ी अजीबो-गरीब परिस्थिति में बिहार के भादोलन की शुरुआत हुई ?

बिहार सरकार की भांने गुजरात विभाग के माध्यम से इस बात की पूरी खबर थी कि गुजरात में जिस तारे पर भादोलन समाप्त हुआ है उसी तारे को उठा कर बिहार में भादोलन चलाया जायेगा। इसीलिए (एक स्थानीय साप्ताहिक पत्र के धनुवार) 'गुजरात के जन भादोलन से भातकिन बिहार सरकार ने बहुत पहले से यह फैसला कर

→

रखा या कि छात्रों की जायज माँगें मानने के बजाय उनका घोर निरोह जनता या सर साठीभोजियों की मदद से कुचल दिया जाए, क्योंकि सरकार राष्ट्राचार्यों और जमा-घोरों से अपनी साठपाठ खत्म करना, अपने ही पंखों पर बुल्लाही मानना समझती है, इसलिए विधानसभा के घेराव के पूर्व मुहूर्त में बटे-बटे विज्ञापनों के जरिये जनता और छात्रों में यह मतलब पहुंचाती फैलाने की कोशिश की कि सरकार ने छात्रों की सभी माँगें मान ली हैं, अब कि सत्ता कांत्रित के महाभयत्री प्रदीप भावद्र भाद्रोलज के पात्रों दिन भी रकार को यह सलाह दे गये (हैं) कि उसे छात्रों की जलज भगि मान लेनी चाहिए तैर उस दिन भी सरकार विधानसभा में ही राग धलापनी रही कि उसने छात्रों की माँगें मान ली है ।'

फरवरी के तीसरे सप्ताह में पटना में बहार के सभी विश्वविद्यालयों के छात्र प्रति-निधियों का एक दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित हुआ था। इन सम्मेलन में लगभग सभी राजनीतिक दलों के छात्र प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विज्ञानों परिषद, समाजवादी युवज सभा और संगठन कार्यस के लोग इस सम्मेलन में ज्यादा सक्रिय थे। सम्मेलन में भारतीय स्टूडेंट कौन्सिल के लोग भी थे, पर वे बाद में सरकार को हतोत्साही परेकानी के सम्बन्ध में उठे नीति मतभेदों के कारण हट गये और प्रदेश छात्र सभर्पें समिति के संघान्तर एक प्रलग मोर्चा बना कर कार्य-रूप चलाने लगे। सम्मेलन में अध्यक्षता जी द्वारा कलकत्ता और बाराणसी में दिवे भाषणी की बर्षा हुई और यह महत्त्व किया गया कि बिहार में भी कुछ किया जाए।

मुम्बयमी गकूर के विधानसभाई बुनाव का नतीजा जिस दिन घोषित होने वाला था, उसी दिन स्वभग २०० छात्रों ने मुम्बयमी के निवास पर २४ घंटे का अनशन और परत दे कर भी अपनी व्यापक जन मागों को उजागर किया। प्रमुख माँगें थी—प्रत्य-वार सभाज किया जाए और शिक्षा के कानिकारी सर्वजन हो। इन मागों के साथ ही छात्रों की अपनी भी कुछ माँगें थी।

सगभग स्याह माँगें छात्रों की धोर से की गई थी।

अपने माँगों की घोषणा के साथ ही सभर्पें समिति ने चेतावनी दी थी कि धर १८ मार्च तक उनकी माँगें पूरी करने की दिशा में सरकार ने ठोस बरदम नहीं उठाये तो उस दिन प्रदेश के छात्र विधानसभा के सामने प्रदर्शन और घेराव करेंगे तथा राज्यपाल और मंत्रियों समेन किसी भी विषयक को सभा भवन में प्रवेश नहीं करते हैं। १८ मार्च तक सरकार ने सिर्फ यह किया कि विधानसभा भवन के घासपास केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस, सीमा सुरक्षा बल और बिहार पुलिस के हजारों अज्ञानों को बन्दूक की गोलियों और लाठियों से लैस कर लैगत कर दिया और गहर की सुरक्षा को गुण्डों के हवाले कर दिया। जिसका फायदा उठा कर उन्होंने 'प्रदीप' और 'सचनार्ड' को फूक दिया। 'पटना जनता रहा और कोई पढ़ने वाला नहीं रहा।'

१८ मार्च की विधानसभा में अन्दर व बाहर जो कुछ हुआ उसे बहा दोहराना ठीक नहीं। ६ अप्रैल को अध्यक्षता जो ने लारों लोगों के बीच १८ और १९ मार्च की घटनाओं के बारे में केवल इतना कहा कि उन्हें प्रायः जाँकड़ों के धनुसार ८१ लोगों को क्षपताल में भर्ती किया गया। जिन लोगों को गोशिया लगी उनमें दर्शन और बाराणस कर्मचारी लोग ज्यादा थे। छोटे-बच्चों पर भी निर्दयता से गोली चलाई गई।

१८ मार्च को इतनी बड़ी घटना हो जायेगी इसकी उम्मीद छात्र सभर्पें समिति की नहीं थी। न यह उम्मीद ही थी कि विधानसभा के घेराव के समय पच्चीस-तीस हजार लोग पहुंच जायेंगे। इसलिए जब १८ में पटना और १९ को बिहार के भ्रम्य हिससे में प्रेमपूर्वक गोली चलाई गई तो पूरे छात्र आन्दोलन में एक बदल गया।

बिहार प्रदेश छात्र सभर्पें समिति ने छात्रों के लिए एक प्रतिज्ञा पत्र जारी किया 'मैं यह प्रतिज्ञा करता हू कि बिहार प्रदेश छात्र सभर्पें समिति द्वारा आयोजित सत्याग्रह में सक्रियतित होकर बर्तमान सरकार के विश्व निरालस एवं शक्तिपूर्ण सभर्पें करग। मैं सभर्पें समिति की प्रमुख मागों-प्रत्याचार,

वेरोजगारी एवं महंगाई मिटादे, शिक्षा में परिवर्तन, छात्रों एवं भ्रम्य व्यक्तियों की रिहाई, सभर्पें म मार गये एवं धायल व्यक्तियों को मुखाबना, विना शर्त मुकदमे की वापसी, तथा गकूर मन्त्रिमंडल के इस्तीफे में पूर्ण विश्वास करता हू। नाम, पता, दिनांक व हस्ताक्षर। सभर्पें समिति ने यह भी तय किया कि व अप्रैल तक सभा, मोन जलूस भूज हड़ताल खादिना आयोजन किया जाये। और ६ अप्रैल से सरकार ठप करे सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाए। सरकार ठप करे सत्याग्रह के अन्तर्गत सरकारी दफतरो के समय घरने दिव जायें गिरदवारिदा दी जायें, बर्गचारियों से बर्गालय वा स्वैच्छक बर्गिचार करने की क्षीलता को जाये और सभी बर्गों से दफा १४४ के उल्लघन और मत्याग्रह की क्षीलता की जाये। गारे काम मोहल्ला स्तर की सभाओं के द्वारा किए जाए। पटना म सैने एव-एक दिन में डेक सी से अधि स्थानी पर छात्र-छात्राओं, महिलाओं और बच्चों को उपवास करते थेना। गुजरात ने जितने तरह के जलूस (गधे, कुचो, चूहो आदि के) निकाले उससे अधिक बिहार में स्थान-स्थान पर लोगों ने निकाले।

बिहार के पूरे आयोजन में अध्यक्षता जी की भूमिका एक महत्त्वपूर्ण चीज है। यह सही है कि बिहार में जो आन्दोलन कूटा उसके प्रेरणा स्रोत जय प्रकाश जी ही रहे और पूरा धादोलन छात्र नेगामो ने यही बहु कर खड़ा किया कि उनके आन्दोलन को जे० पी० वा नीति' समर्थन ही प्राप्त नहीं है, नेतृत्व भी प्राप्त है। इस सित्तिले में जे० पी० के दो बयानों का पूरा-पूरा उपयोग किया गया। एक वह जिसमें उन्होंने सरकार के प्रतिरोधों वे बाबबूद सभर्पें के द्वारा मौनजाति जलूस का नेतृत्व करने की घोषणा की थी, दूसरा वह जिसमें उन्होंने गकूर साहब से इस्तीफे के लिए अपना मत टटोलने को कहा था। जे०पी० भी न जुलूस बनी निजालना चाहते थे इते उन्होंने बाठ प्रैल को जारी किया अपने बयान में स्पष्ट किया (दिलिपे 'भूदान-वत्' १५ अप्रैल) और गकूर साहब को सलाह बो दी थी यह सपष्ट किया पटना से प्रका-गित होने वाले इन्डियन नेशन के २६

मुद्रकपुर में रहल प्रारम्भ हुई। १७ जनवरी और २० जनवरी को स्थानीय सगट सिंह महा-निघातलय और राम दयालु सिंह महाविद्यालय में जयप्रथाका ज़ी ने सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक समसाम्राजो के रचनात्मक समाधान के लिए तत्काल का प्रावधान किया, जिसका यहाँ के गांधी प्रान्ति प्रविष्टान हुआ। मुद्रकपुर के गांधी प्रान्ति प्रविष्टान केन्द्र के कार्यकर्ताओं तथा तत्काल कानि सेना सरस्वती ने मुद्रकपुर के छात्रों के सहयोग के उपरोक्त सामाजिकों को उचित मूल्य पर जनता को उपलब्ध कराते की योजना बनाई। इसी उद्देश्य से २ मार्च को गांधी प्रान्ति प्रविष्टान केन्द्र में व्यापारियों, सरकारी पदाधिकारियों और छात्रों को एक बैठक बुलाई गई। विचार-विमर्श के बाद एकमत से तय किया गया कि एक सप्ताह बाद भाते भाते होनी के पर्व पर बनस्पति की निर्धारित मूल्यों पर लोगों को उपलब्ध कराया जाए। शासन के सहयोग से छात्रों ने एक उदरव्यस्ता भी कायम कर लिया। छात्र युवा मच के माध्यम से इन तत्कालों ने भी के सभी लोक व्यापारियों के स्टोक की जानकारी की और उनसे मिल कर ६-७५ प्रतिशत की दर से उपभोक्ताओं के बीच भी वितरण करने की योजना बनाई। कहा जाता है कि कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों द्वारा वितरण का नेतृत्व छीने की पर्याप्त कोशिशें हुईं, पर होनी पर छात्र युवा मच द्वारा भी का वितरण कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शासकीय अधिकारियों, व्यापारियों और कम्युनिस्टों ने सोचा था कि होनी पर दालडा के वितरण के बाद से मामला बन्द हो जाएगा, पर दालडा वितरण की सफलता के बाद छात्र युवा मच ने उचित मूल्य पर सात्विक का वितरण और मूल्य निर्धारण का काम हाथ में ले लिया। शासकीय अधिकारियों और व्यापारियों ने मास लगातार बैठते पर भी जब मूल्य नहीं गये हो पाये और छात्रों को व्यापारियों के साथ ही शासन का भी पूरा सहयोग नहीं मिलता तो १७ मार्च को छात्रों ने घोषणा कर दी कि जब उन्हें छात्रों को व्यापारी और सरकारी के अधिकारी सहयोग नहीं दे रहे हैं तो छात्रों द्वारा निर्धारित मूल्य जनता में प्रसारित किये जायेंगे और मोहल्ला समितियों का निर्माण

करके उनके माध्यम से निर्धारित दरों पर सामान विक्री का कार्यक्रम चलाया जाएगा। १७ मार्च की ही बैठक में छात्रों ने तय किया कि १६ मार्च को स्थानीय कम्पनी बाग में सभा बुलाकर भावों की घोषणा कर दी जाए। निर्धारित मूल्य इस प्रकार थे—आम १-६३ प्रतिशत, गेहूँ १-२०, धाटा १-१५, दाल १-७५, चीनी ३-००, मक्का १-२५, चना १-५० और दालडा ६-७५ प्रतिशत। १६ मार्च को सभा के लिए १७ को रात से ही मुद्रकपुर सभाया आयोजन प्रारम्भ हो गया। इसी बीच १६ मार्च को पटना में हुई घटनाओं की खबर मुद्रकपुर में भी फैल गई। १६ तारीख को छात्र युवा मच की एक बैठक में देर रात तक विचार-विमर्श होता रहा कि १६ को सभा की जाए या नहीं। तय किया कि जिताधीन से अनुमति प्राप्त करने का प्रयास किया जाए। १६ मार्च को प्रातः जिताधीन की घोर से सभा की अनुमति न देने की सूचना पा गई। इस सूचना के बाद तय हुआ कि जूनि छाससभा की सूचना लोगों तक पहुँच चुकी है और वे इन्ट्रा भी होगे इसलिए समय पर सभा स्थल पर पहुँच कर सभा स्थगित करने की जानकारी देनी दे दी जाये। इस निर्णय को जनताओं देते जब कुमार प्रधान, सत्ताप भारतीय व मुद्रक जिताधीन कार्यालय गये तो उन्हें धान्तरिक सुरक्षा कानून के प्रान्तगत विरूपार किया गया। इसी वम में विचारों गलत हो विदेशी एजेंट घोषित कर २० मार्च को कुमार प्रधान के घर से पकड़ लिया गया। सभी लोगों को दम दिन जेल में रखने के बाद छोड़ा गया। मोहल्ला समितिया गठन कर जन-प्रावोदन से मोहल्ले और नगर की समस्याओं को हल करने और इस प्रकार धीरे-धीरे पूरी व्यवस्था में लचीलापन सारे की एक शुरुवात मुद्रकपुर में हुई। धार इसी प्रकार का मच भाते बढ़ता है तो निचय ही बहुत सारी सम्भावनायें प्राप्त हो सकती हैं। बिहार प्रदेश सर्वोदय मण्डल और तत्काल कानि सेना के साथी जब ७ प्रदेस को पटना में एकत्र हुए तो जे० पी० ने सुझाया कि जन सपर्य समितियों के नाम से पटना के हर मोहल्ले में मोहल्ला समितिया कायम हो और नीचे से समाज परिवर्तन का काम प्रारम्भ करें। सरल कानि सेना और सर्वोदय मण्डल के योग दग काम में सगे हुए हैं। (क्रमज)

(पृष्ठ ६ का शेष)

धरम रखते थे। ब्रह्मिभवा धारोदनो ने हमेशा तो बिन्दु होते हैं—एक धारोदननात्मक, दूसरा रचनात्मक। क्योंकि ब्रह्मिभवा कानि में conquest और consolidation साथ-साथ चलते हैं। इसका कानि में conquest के बाद consolidation होता है। फलस्वरूप जिन दिनों कानिकारी conquest में कमे रहते हैं उनी समय प्रविर्जाति की कानि कानि का ही बुलन्द नारा लगा कर समाज जीवन में दुहाते से प्रविर्जित हो जाती है। मतीका यह होता है कि हमेशा कानि के बाद प्रविर्जाति का उदय होता है। धनएव शासनाध्यय के प्रत्यक्ष कार्य में सगे हुए कार्यकर्ता धारोदननात्मक काम को सम्पूर्ण रूप से धरना काम सम्भने हुए भी इसे धारोदननात्मक विग पर छोड़ कर अपने काम में जमे रहें।

—धोरिदर महसुसदार

(पृष्ठ ३ का शेष)

जनता के विरुध्वा से इतने बड़ी घोषेबाजी हुई है और यह सब उपदेश नहीं मुनेनी न उन विचार धारोदनको के सक्तों को देखकर तासी वजायेगी जो सिर्फ उसे गुमराह करने के लिए लिए जाते हैं। गुमराह और विरुध्वा की दोहरो पर तब से बेशासतियों किसी की दोहरो पर। इन्दिरा जो उन्हें न पढ़ने और बलि के बन्दे बूढ़ने के लिए स्वतंत्र हैं। लेकिन भगवान के लिए वे यह न समझें कि बहोनी से सकट और इतिहास को टाटा जा सकता है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

ऐसी हालत में भारत के लिए बागला देण के स्वतन्त्रता सभा की सहायता करना प्रविर्जायें हो गया और धारिदर दिसम्बर '७१ में हुए युद्ध में भारत को सौधे लडना पड़ा। धरम शोभनी गांधी हम से सवि नहीं कड़ती तो यह युद्ध भी निष्पादक नहीं हो पाता। लेकिन हम की सधि के कारण चीन और अमरीका युद्ध में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सके और कानिाली की मदद से भारतीय सेना ने बागला देण को मुक्त कर दिया।

धरम यह जरूरी है कि भारत पाकिस्तान और बागला देण 'लो-वी' की भासना को घाये बढ़ावें और इस उपभोदोधी को घास में सिस्ते-नुने का दौरा देकर उन प्रविर्जियों को मिटने दे जो दरमल प्रिडिक्सा साम्राज्य की देन हैं। दिल्ली समझौते की सफलता की बतौती यह है कि वे तीन राष्ट्र अपनी प्रवृत्तता का उपयोग नतीको को घलय करने में नहीं उन्हें जांने दे। —प्रभाष जोषी

पर्दा हटा

विनोबा ने जब इन्दिराजी को सर्व सेवा संघ का सदस्य घोषित किया तो सर्वोदय की शक्ति भीत में कुछ हलचल मची और तब बादो को स्पष्ट करना पड़ा कि उन्हें पंच महाशक्तियों का सदस्य चाहिए। सत्ता से सहयोग लेने और सत्ता प्रतिष्ठानों को सहयोग देने के प्रयोग से गुजरने के बाद अनुभव क्या छाया ? यही कि सत्ता की रीति-नीति, आकार-प्रकार और उसका चरित्र जब तक बदलेगा नहीं तब तक यह सहयोग एक प्रवचना मात्र है। सत्ता प्रतिष्ठानों की अर्थ से सर्वोदय धारोवन को जो अनुभूतता अब तक मिलती रही है वह अधिकतर भाग्य में तो जबानी सहानुभूति रही है और उन बुनियादी परिवर्तनों के लिए सत्ता के डिकेदार कभी भी राजी नहीं हुए जिनके लिए सर्वोदय समाज वचन बद्ध है। जो जबानी सहानुभूति इस धारोवन को सत्ता केन्द्रों द्वारा मिली भी वह केवल इसलिए कि वे यह मान कर चले कि सब बड़े लोग हैं, राजनीति की व्यायामशाळा के भेदे से बाहर हैं, उनकी के व्यक्तिगत की एक फोक है, कल्पना शक्ति के विवरण करते हैं और हमारे लिए चुनौती प्रस्तुत न करके निष्कण्टक राज-भोग में सहयोगी हैं। सत्ताधीशों ने और जनता ने भी यह माना कि वे लोग 'सत्ता समर्थक राजनीतिज्ञ' हैं। स्व० डा० लोहिया ने इसी धारणा के कारण विनोबा को 'सरकारी सत' की उपाधि दे डाली थी। परन्तु इतिहास की नियति ने इस धर्म को ध्रुव तोड़ दिया है। सत्ता प्रतिष्ठान उनकी ही दूर तक शक्तिकारी तत्वों के साथ चल सक्ते हैं, जब तक शक्तिकारी तत्व उनके लिए सबक या अनुसंधान पैदा नहीं करते। उससे धागे का रास्ता दोनो को घेरने ही तय करना पड़ता है। देश की विनाशक परिस्थिति से निवृत्त हो कर सर्वोदय आन्दोलन ने अपने सत स्वभाव से कुछ हटकर जो चरित्र बदलाव शुरू कर दी है और पूंजीवादी दलीय सोच-तन्त्र के स्थान पर 'समाजवादी जनतंत्र (जनता के प्रतिनिधियों को लेकर निर्दिष्ट जन-समाचार्य) का शासन' किया है उससे सत्ताधातियों की महफिल में बुद्धिमान सा भय गया है। अभी नौद हत्या

हो गई है, प्रतिस्पर्धा और स्वायं की राजनीति की नूतने हिलने लगी है। जय प्रकाश बाबू ने युवा शक्ति को जागृत और संगठित करके जनता के राज्य का सही आधार रखने का जो शक्तिकारी कदम उठाया है उस ताड़व से भयभीत होकर तब के चहेतों ने उन्हें तरह-तरह से बदनाम करना भी प्रारम्भ कर दिया है और सत्ता की मुस्कराहट पर जीने वाले समाचार पत्र उनकी प्रतिभा की विकृत करने में लगे हैं। अलबत्ता विनोबा से उन्हें खूब प्यार है क्योंकि वे 'अपने मित्र की बेंटी' को किसी सबक में नहीं डालना चाहते और जे० पी० की तरह वे 'जन्मदायिनी के समर्पण की मुद्रा में नहीं हैं। इसीलिए भाव्य राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमन्त्री तक पवनार धारम के चक्कर लगा रहे हैं।

लोग हैं जो अभी भी सत्ता की रूपों की धारा लगाये बैठे हैं, धारचर्य द्वारा जब कि सादी कार्य के एक बहुत पुराने सेवक (सबक बूढ़ा या अधिकारी) ने खुले सम्मेलन में कहा "धुनोको के समय यदि मैं मन तो किसी की जीत के लिए प्रायणा कर रहा या तो वह है, और चाह रहा या कि...पूरे बहुमत से धाये ताकि किसी के सामने सहायता के लिए हाथ न फैलाने पड़े।" ही सबक है कि सत्ता में हमारे बहुत प्यारे लोग हैं। परन्तु मार्ग-जनिक तौर पर इस तरह के उद्धारों को प्रकट करने का क्या धर्म हो सकता है ? यह रहा धर्म भी शीघ्र ही टूट जायेगा। क्योंकि सत्ता और शक्ति की दो तलवारों एक प्यान में बनी नहीं रह सकती।

घड़ी का पैलूम दूसरी ओर

धर्म प्रयोग का भाव्य दूसरा दौर प्रारंभ हुआ है। घड़ी का पैलूम सत्ता प्रतिष्ठानों की ओर से हट कर धर्म प्रतिष्ठानों की ओर भूकने लगा है। पैलूम बन्ध धारियों द्वारा सर्वोदय सम्मेलनों के उद्घाटनों में इनकी भागी मिलने लगी है। सत्ता प्रतिष्ठानों और धर्म प्रतिष्ठानों में स्वभाव और चरित्र की दृष्टि से कोई बुनियादी फर्क नहीं है। हमें लगता है कि धर्म के गिहामन पर बैठे

नेव्हा वस्त्र त्याग की खबर लाता है और राज के सिंहासन पर आसीन स्वैत वस्त्र धारी भोग की खबर देता है। परन्तु गहरे में डूब कर उत्तर दे डाला जाये तो तथाकथित संस्थास घोषितन बरती हुई सत्ता ब भोग है। सत्ता और भोग उल्टे हो गए हैं इतनी ही बात है। वैसे भी धाज जिसे हम सन्यासी कहते हैं उससे तो त्याग की प्रेरणा भी नहीं मिलती है क्योंकि धाज सन्यासी वह है जो धारकण भोग में डूबा हुआ है, अपनी धारमरशा के लिए उसके पास 'स्वैत त्यक्तन भुंजिया' का स्वर्णिम सूत तो है ही।

सन्यास का मैं एक ही धर्म समझता हूँ — उत्तरे में जीना, धाररुक्षा को बरण करना। निवाए उपनिषद में सन्यासी के सक्षरों को गिनाने हुए एक लक्षण यह भी बताया गया है कि वह 'अनलिप्त मिथ्याधी' होगा है। भोजन के लिए जिस मिथ्या की धारव्यवस्था होती है उसकी भी यह योजना नहीं बधाता है। मुरदा के जो जो उपाय हैं, सबके हैं, उन सबसे वह अपने को पुण्य करता जाता है, वह परमात्मा प्राप्ति ही जाना है। अनिर्भाजित और निरार्थमी होता है उपवास जीवन तभी तो वह परम धारय को पा लेता है; परन्तु मर्यादियों के नाम से जाने कौसी जमान आज जितनी मुरदा और महफिल में है, उतनी कोई भी सन्यास गृहस्थ नहीं। फिर भी मजा तो यह है कि गृहस्थ को धनोपाजन करने में कई पाय-मुष्णों की गच्छी भी डौनी होती है। सन्यासी तो सब पैरह में पायों में मुक्त गया है। उनके फिटसे तो बस है—गुण्य धोर गुण्य, धनोपाजन के पाप से भी उमें गुजरना नहीं पड़ना।

निगन्देह सन्यास जीवन की परम उपलब्धि है। वह मानवीय शक्ति का जनता दिया है, मूर्च्छ या परम ऐश्वर्य है परन्तु तभी जब कि यह विरलाभा के आदर को छोड़कर एक ही की तरह जनता में है। तभी जब कि वह धर्मों का न हो कर बस 'धर्म' का ही रह जाय, वट न हिन्दू सन्यासी ही, न मुसलमान,

वास्तविकता के गर्भ से संभावना का जन्म कैसे होगा ?

न पारमी न ईसाई। 'सर्वे धर्मान् परित्यज्य' जो केवल धर्म का रह जाए। सत्यासी तो वह है जो सम्पूर्ण जाति, धर्म, भाषा, विचार, राष्ट्र की सीमाओं को लाप गया होता है। ऐसा सम्पूर्ण विरुद्ध ही किसी क्रांतिकारी धारोन्त में सगे लोगों का उद्बोधन कर सकता है अन्यथा भय है कि प्राणे हमें अपने सम्भवतो के उद्घाटन के लिए, सम्भव्य व सहयोग के नाम पर मुसलमान मोलवी और ईसाई धारोन्त की लगाश भी करती पड़ेगी। या फिर बार-बार अपने से पूछता पड़ेगा कि हवाई धारोन्त में मुसलमान लोग क्यों शामिल नहीं होते हैं और विनोबा को जवाब देता पड़ेगा कि इसके लिए 'मुसलमान भाषो के बीच मेरे द्वारा सम्पादन रहल पुरान की जिन्को करो।'

प्रस्तुतीकरण की तीसरी पद्धति धर्मन क्रांति के लिए समर्पित हय सोचो की धर्मो दो रूपो मे देना गया है। (१)

या तो लोगो मे माना है कि हम सत्ताधारियो की शक्त है या (२) चाण-बीडी कराव न पीनेवाले, फनाहार करने वाले, लसोटी लगाने वाले, विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने वाले पानी नैतिक और भले लोग हैं। मुन्कराने हैं, हाथ जोड़ने हैं, भलो बातें बताने हैं और भला काम करने हैं, परन्तु स्वयं तो सर्वोदय न भपने को नैनिव से कुछ अधिक ही माना है और 'कुछ अधिक' क्या है वह जनता को भान कराने की आवश्यकता है।

मेरी इच्छि मे वह 'कुछ अधिक' इस प्रकार है:

(१) सर्वोदय न तो सत्ता के तल्ले घाटने वाला है और न सत्ता का विरोधी। स्वयं विनोबा मे अपनी पुस्तक 'स्वराज्य प्राप्त' मे राज्य की धार अपनी तीन भूमिकाएँ बताई हैं—सत्कार, समुहवार और प्रवित्तर, जब कीन ती भूमिका निभानी पड़ेगी यह उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करेगा।

(२) धर्म के मामले मे हम न तो कंडी माना पहलने, चुटिया जनेऊ रखने वाले लोग हैं और न दाडो रखने वाले लोग ही। हम 'धर्मो' के न होकर ब्रम केवल 'धर्म' के हैं।

हम हर समय बहते बहते नहीं कि धर्म और राजनीति के दिन लद गये हैं। नहीं नहीं इनके दिन लने नहीं हैं। धर्मो भी प्रचलित राजनीति और प्रचलित धर्म अपने जोरो पर है। यह वास्तविकता है। राजनीतिज्ञो, राज-नैतिक दलो और धर्मोपदेशको की वाङ्मैसीं धार गर्दी है। पुरानी राजनीति और पुराना धर्म इस समय अपने धरमोत्कर्ष पर है। सम्भावना है कि यह विदा ही और लोक-स्वराज्य व विरोधण मुक्त धर्म का सर्वोदय ही परन्तु यदि हम लोग भी हूँ राजनीति, राजनीतिज्ञो व हूँ धर्म—धर्मोपदेशको से हाथ मिलाने रहे तो वास्तविकता के गर्भ मे से सम्भावना का जन्म किस तरह होगा ?

योगेश बहुमुखा

Swastik SERVES HOME

INDUSTRY

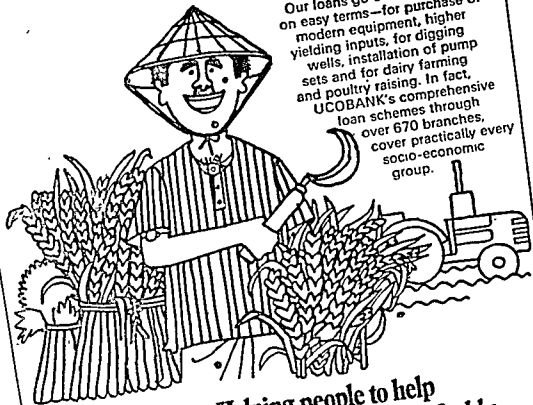
Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and industrial use.

Footwear and hoses, gloves moulded products and oil seals, foam rubber, mattresses, pillows and cushions. Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.
Phone 411 0922.

Richer harvests and a better life...

Our loans go out to the farmer on easy terms—for purchase of modern equipment, higher yielding inputs, for digging wells, installation of pump sets and for dairy farming and poultry raising. In fact, UCOBANK's comprehensive loan schemes through over 670 branches, cover practically every socio-economic group.



Helping people to help themselves — profitably

United Commercial Bank



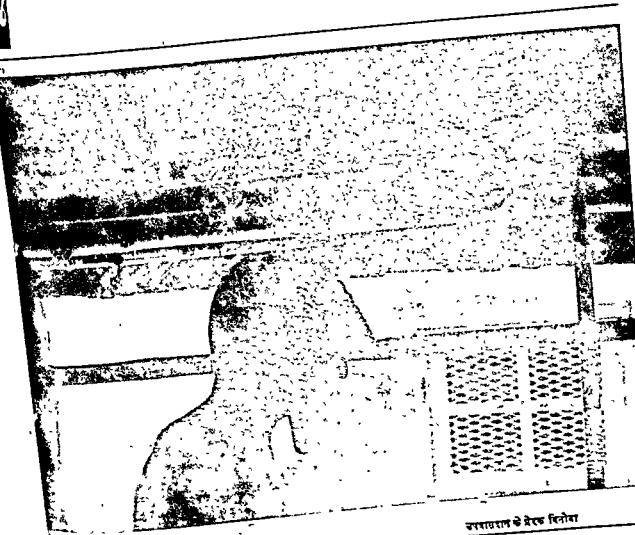
UCOB-1A

वायिक मूल्य—१५ रु० विदेया ३० रु० या ३५ तिनिम या ५ कालर, एक स'क वा मूल्य ३० वेये ।
प्रभाय जोशी द्वारा सर्व सेवा सय के लिए प्रयागित एवं ए० ३० प्रिडस, नई दिल्ली-१ में मुद्रित ।



सर्वादाय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
 नई दिल्ली, सोमवार, २६ अप्रैल, '७४



जरायुदान के बैरक दिल्लीवा

● देश-प्रेम की भाव को मोड़ दो। संपादकीय ● जब बात बन से सपाक का रंग्य हुए होगा। बाका बालेनकर ● बाप मरुतुपुं है पर मुनिन
 ● बाप मरुतुपुं है पर मुनिन के लिए कपोटी है। सपाक बन बाक ● हर मायारिक जिम्मेदार है। अकन पुवार सर्वे।

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

लोकशक्ति की वाढ़ को मोड़ दो !

बिहार में खतरे की घंटी सिर्फं गफूर साहब की कांग्रेसी सरकार के लिए नहीं बज रही है। वह उन राजनीतिक पार्टियों के लिए भी सिर्फं नहीं बज रही है जो सरकार की राजनीतिक और प्रशासनिक विफलताओं का लाभ लेना ही अपनी काम समझती रही हैं। खतरे की यह घंटी सर्वोदय की उस जमात के लिए भी बज रही है जो बीस साल से लोक शक्ति की तलाश में, घूमने घूम रही थी।

सर्वत्र व्याप्त भयव्यवस्था, भ्रष्टाचार और स्वायत्तराज से उत्पन्न साम्राज्य भावनों की निराशा तेजी से आक्रोश में बदल रही है और यह आक्रोश जंगल की धाग की तरह चारों तरफ फैल रही है। दलगत राजनीति के अभिशाप से श्रत कांग्रेस पार्टी दो साल पहले हुए चुनाव में प्राप्त बहुमत के बावजूद बिहार की धाग की हालत में अभ्रासगिक हो गयी है। ये ही वे लोग हैं जिन्हें बागला देश की मुक्ति में भारत की विजय ने रथ पर चढ़ा कर विपान सभ्य में भेजा था। इसकी लोभों ने जन समर्थन की मालाएं पहन कर 'गरीबी हटाओ' का जगपथ किया था। इतिहास ने इन्हीं लोगों को एक ऐसा बिहार दिया था जो एक था, अखंड था और केन्द्र के साथ मिल कर देश का कायाकल्प करने के लिए कटिबद्ध था। कहा गया वह वातावरण और जनता का वह विश्वास ? सत्ता की विषटनकारी राजनीति और घुसर्ना के बल पर वेसर्मी से की जाने वाली लूटपाट ने भादमी की विस्मृत पलटने का वह मुनहरा अवसर क्षण में मिला दिया। इन्दिराजी द्वारा सामंजस्य केदार पाण्डे मुन्किल से एक साल सरकार चला पाये और फिर बिहार में देश भरी तलित नारायण मिश्र की राजनीति चलने लगी। सन् '७२ के आम चुनाव

में इन्दिराजी ने राज्यो के मतदाताओं से कहा था कि उन्हें राज्यो से जनता का प्रादेश चाहिए ताकि वे अपनी जनवादी नीतियों को वाह के स्तर तक लागू कर सकें। लोगों ने उन्हें पूरे मन से आदेश दिया और इन्दिराजी ने कहा कि केदार पाण्डे की सरकार जनता के विश्वास का सम्मान करते हुए उनकी प्राशा आकांक्षाओं को पूरा करेगी। लेकिन देखते-देखते जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि अपनी प्राशा-आकांक्षाएँ पूरी करने लगे और वे जन-विरोधी भी। एक बार फिर विधायकों ने जन प्रतिनिधित्व छोड़कर अपने गुटों और निहित स्वार्थों का प्रतिनिधित्व शुरू किया। इन्दिराजी के प्रतिनिधि को उतरना पड़ा और उनकी जगह तलित नारायण मिश्र के प्रतिनिधि गफूर साहब ने ली। अनाज वितरण के मामले में गफूर साहब की सरकार विफल हुई और राजनीतिक-प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने जनता की रीटी दूधर कर दी। १८ मार्च को जब पटना जलया गया और अंपराधियों को छोड़कर पुलिस ने गोतियां चलायीं तो बिहार सरकार जनता से बिनकुल बट गयी। लोगों ने तो उसका विश्वास समाप्त था ही अपनी पुलिस में भी उसे भरोसा नहीं रहा और प्राक्रोश प्रबट करने वाले लोगों को नियंत्रण में लाने के लिए सीमा सुरक्षा दल और केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस के सिपाहियों का उपयोग किया जा रहा है। चारों तरफ खतरे की घंटी बज रही है लेकिन बिहार के निर्वाचित प्रतिनिधि और उनके भ्रान्त कुसिधों का खेल खेल रहे हैं। जनता क्या करे मांक कर देगी ?

और क्या जनता अपने उन प्रतिनिधियों को भी माफ करेगी जो विरोधी पक्ष में बैठकर सिर्फं सरकार की विफलताओं का लाभ लेना चाहते रहे हैं ? क्या इन लोगों की नजरों में

कुर्सी की तरफ नहीं थी ? अंगर बिहार में विरोधी विधायक भी प्राशासनिक हो गये हैं तो, इसकी भी कारण यही है कि उनकी नजरों की जनता की तरफ नहीं थी। 'जनता के आक्रोश को वाशी देने और उसे कोरगर शक्त बनाने के लिए सबको पर निकले विधायी भी दलगत राजनीति और वर्गगत स्वार्थों के शिकार रहे हैं इसलिए राजनीति उन्हें बाटने और तोड़ने में प्रासांनी से सफल हो गयी। बिहार राज्य छात्र सभ्यं समिति के वित्ताक विधायियों का दूसरा नवजवान छात्र सभ्यं मोर्चा खड़ा हुआ। समानांतर भ्रान्दोलन चले और इनसे निपटने के लिए सरकार ने साम, दाम, दण्ड-भेद का इस्तेमाल किया। विद्या-धियों का यह भ्रान्दोलन भी जनता से बट जाता अगर जय प्रकाश नारायण पटना में मौन जुलूस निकाल कर और भ्रामसभा में बोलकर इसे जनता का भ्रान्दोलन बनाने के लिए आहिसक मेतल नहीं देते। इस सत्य को ध्व केन्द्र सरकार से लेकर उनके पुराने कम्युनिस्ट तक मान चुके हैं कि जे० पी० अंगर धागे नहीं धारें तो बिहार में हिंसा लूटपाट और भ्रान्तजनता को कोई रोक नहीं सकता था। जे० पी० ने लोकशक्ति जागृत कर बी है और ध्व लोकशक्ति ने पुजारियों का इत्थय है कि इतिहास की दृषा से मिले बत्तवसर को वे धूल में न मिलने दें। बिहार में अंगर ध्व लोकशक्ति जोरूदा जवंर ध्वरथा के खिलाफ नया विकल्प खड़ा करनेके विधायक कार्य में नहीं लगीं तो इसकी जिम्मेदारी सर्वोदय के सेवकों पर होगी। बिहार के लोग नयी ध्ववस्था के लिए धातुल हैं। अंगर अभी भी हम अंगार पर बैठ कर लोकशक्ति की बाढ़ के पून दर्शन घने रहे तो बाढ़ तो बुधु करेगी तां करेगी ही, जो तटस्थ है सभ्य निवेगा उनका भी अंगर ही।

—प्रभाय जोशी

महा कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का २४ अप्रैल की रात मद्रास में देहावसान हो गया। भूदान-यज्ञ परिवार बिनकर जी को अपनी हादिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

उपवास दान से समाज का दैन्य दूर होगा

-काका कालेलकर

'उपवासदान' की एक सुन्दर और मठवर्ती प्रवर्तिनी श्री विनोबा जी ने धर्मी-धनी धरने ७६वें जन्म दिन शुरू की है। वे स्वयं हर महीने ग्यारह तारीख को आषाढ दिन का उपवास करेगी और पञ्चमी तारीख महीने में एक उपवास होगा। साल भर में बारह उपवास होंगे। उनके धरने का खर्चा दोर स्वामय तीन रुपये माता है। साल भर में छत्तीस रुपये होंगे। उन्हीं से सोचा है कि सर्व सेवा संघ के काम के लिए उनकी तरफ से बहू दान होगा। अब उनका एक ब्याजक मुखाब्द है कि सर्व सेवा सघ की हर साल फेक बायो के लिए (जो भारत भर में चलते हैं) दस लाख रुपये की जरूरत होती है। सामान्य कार्यकर्ता का रोज का खाने का खर्चा दो रुपया होगा। वे प्रगर हिंसाव भी कामती के लिए अपनी तरफ से एक सान के पञ्चमी रुपये देते तो पूरी रूम पूरी करने के लिए चानीस हजार लोगों को उपवास करना पड़ेगा। विनोबा जी का ब्याज है कि इन उपवास-धेमी भारत में, ऐसे तारीख लोग मिलने चाहिए।

गांधीजी के जाने के बाद जितनी भी सत्साध्याँ—बर्बात सघ, हरिजन सेवक सघ, नयी सालीय सघ, भूदान-धामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता हैं सब का एक सघ बने, बनूह बने यह जरूरी था। विनोबा लिखते हैं—'यह समूह बनाया हमने सर्व सेवा सघ। उपवास करने जो बचा वह दान प्रगर हमने सर्व सेवा सघ को दिया तो वह पवित्र दान होगा। प्राज्ञ तक हम सोचते थे कि हम हैं समुद्र। समुद्र में गये नाले भी मिल सकते हैं और गमा भी। इसलिए प्रच्छेद काम के लिए कोई भी पंसा देने है तो लेने में हर्ज नहीं। बर्बात हम समुद्र के स्थान में हैं। यह धरनी बात आज तक थी। भगवान दो प्रकार का बात प्राज्ञ तक थी। भगवान, दूसरा है शुद्ध है। एक है सर्व भगवान, दूसरा है शुद्ध भगवान—उसमें से पहला रूप लेकर हमने प्राज्ञ तक काम किया। सबकी सपत्ति जो दान में मिलती थी ले ली। अब बाबा ने तब किया कि हम सर्व भगवान की जो सेवा कर सकते थे यह सब तक की। अब शुद्ध भगवान की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय में मानने वाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे। और उसके जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा

संघ को दान दे। कोई करोडपति महीने में एक उपवास करेगा, उसके बारह उपवास के प्रायद सो रुपये होंगे। उनका दान बहू देगा। वह है तो करोडपति लेकिन हम सब सेवा सघ के लिए उसके सो रुपये जितना ही प्राज्ञ करेंगे। वह होगा शुद्ध, स्वच्छ, निरमल दान। इस तरह सब उपवास करने सर्व सेवा सघ को दान देते। दस लाख के ऊपर प्रगर हुआ, तो बहू प्राज्ञ को देता। दस लाख तक सर्व सेवा सघ को देता। इस तरह सबके फाके का पंसा गोपुरी (१०-गोपुरी-वर्षा, महाराष्ट्र) पहुच जाय।'

यह है उन्हीं के सपने में विनोबा की योजना। योजना प्रच्छेदी है। इसलिए, और विनोबा की जैसे पवित्र व्यक्तित्व की है इसलिए भी, हमारा विश्वास है कि चानीस हजार लोग, उपवास दान के पैसे देने वाले जरूर मिल पायेंगे। विनोबा इसे 'सर्व ब्रह्म के बन्दे मूढ़ ब्रह्म की उपासना' कहते हैं। 'उपवास' और 'उपासना' का सम्बन्ध तो सब जानने ही है। अब गांधीजी का मुखाब्द हम 'कार्य' करने वाली ऐसी भी घोड़ी सत्साध्याँ होगी

(शेष पृष्ठ १३ पर)

काम महत्वपूर्ण है पर मुश्किल नहीं

ई सेवा सघ की प्रबध समिति ने धरनी जग ही में हुई (अलगवा) महाराष्ट्र की धरनी डेक में देशभर के सर्वोदय कार्यकर्ताओं से यह निरासिका की है कि ? मई से १५ मई तक वे 'उपवासदान-वध' मनायें। इस अवधि में प्रबध कार्यकर्ता अपने क्षेत्र, जिला व ठह-धीन में धरने साधियों, मित्रों तथा सर्वोदय में गहनमुक्ति रूपने वाले लोगों में व्यक्तिगत मार्ग करें तथा उपवासदान के पीछे सर्वोदय को जवा उठाते, सर्वोदय के प्रति गहनमुक्ति रूपने वाले हर व्यक्ति को उस की निर्दिष्ट के लिए स्वयं बुद्ध-बुद्ध सेलिन्स मंत्र बुधम स्वाम करने की प्रेरणा देते और इस प्रकार प्राज्ञ धरने और स्वार्थ तथा आशावादी से प्रबन्ध देते के सार्वजनिक जीवन में वैकिक प्रायाम दार्मिक करने की पूज्य विनोबाजी की जो गहरी दृष्टि है वह समया-

कर उनके उपवासदान प्राप्त करें। सर्वोदय धारोत्तर देते जो आशाए हैं उनकी पूर्ति सर्वोदय जगत की आंतरिक एका, शुद्धता और मजबूती पर निर्भर है। उपवासदान का कार्यक्रम इसका बहुत प्रभावशाली माध्यम बन सकता है। विनोबांजी स्वयं इस कार्यक्रम को कितना महत्व देते हैं वह पिछले दिनों समय-समय पर उन्हीं को कहा है उसके स्पष्ट है। धरनी पर उन्हीं को कहा है दौरान पूज्य विनोबा हर ही में एक वर्षों के दौरान पूज्य विनोबा की ने फिर कहा—'बाबा में ऐसा क्या काम किया जो आज तक उसने नहीं किया था। बाबा ने धरना उपवासदान दिया। अगर सर्व सेवा सघ को मक्ति पर उसे बिनास नहीं होता सघ को बाबा ऐसा काम क्यों करता ? हम सबकी चित्त मुक्ति हो, एकता हो, भावत बनने ऐसा बाबा चाहता है।'

सघ के सहमयी की यथागत मिलन में व जिता सर्वोदय मठलो को लिखा है। सर्वोदय-कार्यकर्ता साधियों से मेरी प्रार्थना है कि वे धरनी से धरने-धरने बाबा में परिचितों और सर्वोदय-धरिनी की भूषी बनाकर मई में पहले परवाडे में उन सबसे मिलने की योजना तैयार कर लें और इस परवाडे में धरनी यथासम्भव सारी शक्ति इस कार्यक्रम को सफल बनाने में लगा दें। यह काम बहुत महत्वपूर्ण होने हुए भी बड़ा या मुश्किल नहीं है। सामूहिक सबल धरने सम्मिलित प्रयत्न के इस ध्येय के काम की सफलता भी मई के अंत में जब हम सर्वोदय सम्मेलन के सदस्य पर बगाल में एकत्र होने को निश्चय ही आगे के लिए हमें बन देती।

सिद्धार्थ दहदा
अध्यात, सर्व सेवा सघ

उपवासदान जनता के लिए कसौटी है

वा वा की स्वीकृति से उपवासदान की योजना बनायी गयी है इसे ध्यान से पढ़कर इसके अनुसार आज से ही काम में लग जाना चाहिए। नल्पना ऐसी है कि सर्वोदय सम्मेलन तक पूरी ताकत लगाकर एक चौथाई कोटा याने इस हजार उपवासदानी कर लिये जायं। इसी आधार पर सम्मेलन में प्राणामी योजना बना सकेंगे। शुरू से पूरी ताकत हमारे परिवार की याने हमारी रचनात्मक सस्यामो के लोगों को सदस्य बनाने में लगानी चाहिए। धर्म कार्य घर से शुरू होता है। हमारा घर याने सुस्यामो के सचालक मडल के सदस्य, साधारण सदस्य, कार्यकर्ता, कर्मचारी, पूरा समय काम करने वाले कारीगर जैसे हुनकर आदि और सबके परिवार को बहने इतने लोग घाते हैं। सस्यामों में छादी सस्यामों सबसे अधिक हैं। सर्वाधिक कार्यकर्ता भी उन्हीं के पास हैं। हमारी सबसे बड़ी शक्ति ही छादी कार्यकर्ता हैं। भूदान-धामदान, धामस्वनाय्य आन्दोलन का मुख्य भार छादी सस्यामो में उठाया है। इस बार भी मुख्य भार उन्हीं ही उठाना है।

सस्यामो को चाहिए कि सबको सपरिवार इकट्ठा करने उपवासदान का विचार समझाया जाय। व्यक्तिगत रूप से भी लोगों को समझाना होगा। तुमभने के बाद तो उपवासदान करने में शारीरिक, मानसिक दोनों लाभ होंगे।

साधारणतया दो रुपया रोज की वचन मानी जाय तो साल के २५० होते हैं। कम से कम खर्च एक रुपया रोज माना जाय तो सालाना बारह, रुपया मान सकते हैं और अधिकतम १०० रुपया मान सकते हैं। कुछ लोग उपवास किए बिना ही पैसा दे देने को कहते हैं उन्हें हाथ जोड़कर बहाना चाहिए कि उपवास करने उससे बचाई रकम ही हम से सकते हैं। उपवास के रूप में जनता जनार्दन का जो आशीर्वाद मिलना रहेगा वह पैसों के मुकाबले बहुत अधिक काम करेगा। महीने में एक पूरे दिन का उपवास करना है। एक

साथ पूरे दिन का उपवास करने में कठिनाई हो तो हर सप्ताह एक समय का खाना छोड़कर या अन्य जो भी तरीका जिसे अनुकूल पड़े अपना सकता है। इतना ही देखें कि महीने भर में एक पूरा उपवास हो जाये एवं खाना कम करने से एक दिन की वचत भी हो जाय।

सस्यामों के कार्यकर्ता, कर्मचारीगण अपनी वचत सस्या के मार्फत भेजें ताकि रकम भेजने का खर्च उन्हें न उठाना पड़े। भेजने का खर्च व हिसाब की तफसील बार-बार न हो इस दृष्टि से सालभर की वचत प्रथिम भेजने की बात है। कार्यकर्ताओं को सालभर की रकम एक साथ भेजने में कठिनाई हो तो उनकी मांग पर सस्या धरनी और से पूरी रकम प्रथिम भेज सकती है एवं कार्यकर्ताओं को सहूलियत के अनुसार काट सकती है। यह प्रथन सस्या और कार्यकर्ताओं को तय करना है। सर्व सेवा सघ को एक साथ प्रथिम भेजने का ही रखना चाहिए। उपवासदान के लिए सर्वोदय के विचार से सहानुभूति रखने वाले हर भाई से कह सकते हैं। मांगने में सकोच का स्वालन नहीं। प्रेमाग्रह भी कर सकते हैं। कार्यकर्ता प्रायस में मिलकर समूहरूप में सदस्य बनाने

सर्व सेवा सघ द्वारा किये गए नित्यो के अनुसार प्रायस 'सर्वोदय' साप्ताहिक का २६ धर्जन का अंक भेजा जा रहा है। इसके साथ ४ उपवासदान फार्म भी हैं। हम प्राणा करते हैं कि प्राण स्वयं और अपने घर में गया मित्रों में मिलकर सारे फार्म भर कर रकम सीधो गोपुरी बर्षा भिजवा दें। फार्म कम पड़े तो सर्वोदय मण्डल से मंगा सकते हैं या दगी का नमूना हाथ से मिल कर या टाईप करा कर भेजा सकते हैं। छुपे फार्म के लिए रखने की जरूरत नहीं जैसा भी मोका ही भोजियेगा। सर्वोदय सम्मेलन ३० मई से फलवर्त के पास हो रहा है। उत्तरे पूर्व १० हजार उपवास दानी हो सके हम दृष्टि से सुरत प्रयत्न में लगियेगा। फार्म पर पना स्पष्ट हो ताकि हर माट वा धनिम अंक सदस्यो को बराबर पहुंचाना रहे।

ठाकर बास बंग

के लिए तय कर सकते हैं। फिर भी इतना देखना चाहिए कि जिसके दिल में प्रतिच्छा या विरोध हो उसे छोड़ देना चाहिए। प्रेमाग्रह की यह मर्यादा माननी चाहिए।

उपवासदान पर बाबा से चर्चा चल रही थी तो बाबा ने कहा कि ज्यो-ज्यो विचार करता हू त्यो-त्यो इसना अधिक अधिक महत्व मेरे ध्यान में आता जा रहा है। अब तो ऐसा लगने लगा है कि इतनी उत्तम बात मुझे इससे पहले क्यों नहीं सूची।

आज तक बाबा ने धनेक कार्यक्रम हमे बताये और हमने उन पर यथाशक्ति चलने का प्रयत्न किया। कुछ लोग बहते हैं कि क्या धृष्टा एवं भी सफल नहीं हुआ। वही हालत इसकी भी होगी। इस विचारप्राय में नैरास्य वृत्ति है। वास्तव में करीब १५ साल एक्कड जमीन ५ साल प्रादाताओं में बटी है। ऐसी घटना दुनिया के हजारो बर्षों के इतिहास में आज तक नहीं घटी है। भूमि की सम्पत्ता हल करने के लिए सीलिंग आदि जो बानून बनाये जा रहे हैं वह भी उसी आन्दोलन का परिणाम है और आज समाज में अधिक भूमि रखने वालों के प्रति सम्मान की जगह भ्रमस्मान व्याप्त हो रहा है। यह समाज के 'विचार परिवर्तन का नमूना है।

धामदान की बात करेंगे तो उसका परिणाम भी नजर धारिया। भारत का सविधान किस पर खड़ा हो उसकी बुनियाद धामसभा बनेगी। धामसभाए मिलकर जिले का सगठन करें। जिले प्रांत का व सेक्टर का सगठन करें तो प्राज के चुनाबो-मे जो बेहद खर्च और भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है यह समाप्त हो सकता है इसके साथ सर्वसम्मति का विचार भी जड़ पकड़ता जा रहा है। सर्वसम्मति के विचार में वह ताकत है जो नवने प्रतिष्ठान भगडो को मिटा देता, देश को जोड़ता।

सर्वोदयपत्र, मूनामति, सर्वोदय मित्र आदि योजनाएं भी गिद्धने दिनों निबन्धी (शेष पृष्ठ १३ पर)

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एवं त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

आपने स्वयं अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा संघ को दान दें।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा : प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान। यह पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा।

अतः आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रति माह एक या अधिक बार में एक पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा संघ को देने का संकल्प करता हूँ/करती हूँ। मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूँगा/भेजती रहूँगी।

नाम _____

हस्ताक्षर

पता _____

दिनांक

उपवास-आरम्भ तिथि _____

बचत की वार्षिक रकम _____

भेजने का जरिया _____

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुँच ता० _____

सदस्य बनाने वाला _____

रसीद नं० _____

पता _____

रजिस्टर न० _____

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान् के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, धारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचारवालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा सघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत खर्च होने की सम्भावना कम होगी।

गौरीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की सस्याएँ थी—चरखा संघ, ग्रामोद्योग सघ, नयी तालीम, गो सेवा सघ, भूदान-श्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक संघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा संघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों को मदद ली। समुद्र में अनेक नदियाँ आती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिससे जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वभद्र' की उपासना की। अब निर्मल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है। एक है 'सर्व' भगवान्, भला, बुरा सब भगवान्; दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्; स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। अब बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को माननेवाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की बबत साधारणतया दो रुपया मानी जाय तो साल के २५) होते हैं। ऐसे ४० हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा सघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा सघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है सर्व सेवा सघ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (बर्धा)

११ सितम्बर, १९७३

विनोबा

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा
उपवास-दान संकल्प
(तप एवं त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

आपने स्वयं अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय-प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा सघ को दान दें ।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा : प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान । यह पवित्र दान सर्व सेवा सघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा ।

अतः आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रति माह एक या अधिक बार में एक पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा सघ को देने का संकल्प करता हूँ/करती हूँ । मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा सघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूँगा/भेजती रहूँगी ।

नाम _____

हस्ताक्षर

पता _____

दिनांक

उपवास आरम्भ तिथि _____

बचत की वार्षिक रकम _____

भेजने का जरिया _____

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुँच ता० _____

सदस्य बनाने वाला _____

रसीद नं० _____

पता _____

रजिस्ट्र नं० _____

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचारवालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत खर्च होने की संभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की संस्थाएं थी—चरखा सघ, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गो सेवा संघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक सघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा सघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा सघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों की मदद ली। समुद्र में अनेक नदियां आती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पंसा दे—जिससे जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वत्रह' की उपासना की। अथ निर्मल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है : एक है 'सर्व' भगवान्, भला-बुरा सब भगवान्, दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्, स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। अथ बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अथ सर्वोदय को माननेवाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उसमें जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की बचत साधारणतया दो रुपया मानी जाय तो साल के २५) होते हैं। ऐसे ४० हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा संघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा सघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है—सर्व सेवा सघ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (वर्षा)

११ सितम्बर, १९७३

विनोबा

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एव त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

भापने स्वयं अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यवर्ती, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार मे श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय-प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रक्म, सर्व सेवा सघ को दान दे ।

भापने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान । यह पवित्र दान सर्व सेवा सघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा ।

धतः भापके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रतिमाह एक या अधिक बार एव पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा सघ को देने का संकल्प करता हूँ, बन्ती हूँ । मैं यह रक्म प्रतिवर्ष, सर्व सेवा सघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूँगा भेजती रहूँगी ।

नाम _____

हस्ताक्षर

पता _____

दिनांक

उपवास-आरम्भ-तिथि _____

बचत की वार्षिक रक्म _____

भेजने का जरिया _____

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रहस्य पृष्ठ नं० _____

सदस्य बनानेवाला _____

रसीद नं० _____

पता _____

रजिस्टर नं० _____

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान् के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उन्चार वालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह होगा। गलत खर्च होने की सभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की संस्थाएँ थीं—चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गीं सेवा संघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक संघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा संघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों की मदद ली। समुद्र में अनेक नदियाँ आती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिससे जो भी भ्रामा और जितना भी भ्रामा, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वब्रह्म' की उपासना की। अब निर्मल स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है : एक है 'सर्व' भगवान्, भला, बुरा सब भगवान्; दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्; स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। अब बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को मानने वाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की वचत साधारणतया दो रुपये मानी जाय तो साल के २५) होते हैं। ऐसे ४० हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा संघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है सर्व सेवा संघ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (वर्षा)

११ सितम्बर, १९७३

विनीवा

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एवं त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

आपने स्वयं अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय-प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा सघ को दान दें ।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा : प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान । यह पवित्र दान सर्व सेवा सघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा ।

मत: आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रति माह एक या अधिक बार में एक पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा सघ को देने का संकल्प करता हूँ/करती हूँ । मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूँगा/भेजती रहूँगी ।

नाम _____

हस्ताक्षर

पता _____

दिनांक

उपवास-आरम्भ-तिथि _____

बचत की वार्षिक रकम _____

भेजने का जरिया _____

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुँच ता० _____

सदस्य बनाने वाला _____

रसीद नं० _____

पता _____

रजिस्टर नं० _____

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान् के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है, भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचारवालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा सभ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत खर्च होने की संभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की मस्याएं थीं—चरखा मध, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गो सेवा मध, भूदान-ग्रामदान का काम करनेवाले कार्यकर्ता, सबका एक सभ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा मध। हमने उपवास करके जो वचाया वह दान दे दिया सब सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों की मदद ली। समुद्र में अनेक नदियां आती हैं। कोई भी मनुष्य कैमा भी पैसा दे—जिसमें जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वत्रह' की उपासना की। अब निर्मल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है एक है 'सर्व भगवान्, भला, बुरा सब भगवान्, दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्; स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान से मिलती थी, ले ली। अब वावा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को माननेवाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा सभ को दान दे। एक दिन की बचत साधारणतया दो रपया मानी जाय तो साल में २५ होते हैं। ऐसे चालीस हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा सभ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ आधुनिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है—सर्व सेवा सभ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पबनार (वर्षा)

११ सितम्बर, १९७३

चिनोय

उपवासदानी सदस्य

१५ अप्रैल '७४ तक

११२	मद्रास	३२	पंजाब
२४६	उत्तरप्रदेश	३०	कन्नड़क
२२५	गुजरात	२१	प्रायश्च प्रदेश
११९	मध्यप्रदेश	२१	उत्तर प्रदेश
६७	बंगाल	१६	दिल्ली
७१	राजस्थान	७१	धम्म
५८	हरियाणा	६१	केरल
५८	बिहार	५	नागालैण्ड
५८	तामिलनाडु	३	महाराष्ट्र
		२	पुण्याची प्रदेश
		२	विदेश

१,२६६ कुल

उपवासदान जनता के लिए कसौटी है (पृष्ठ ४ का शेष)

बेचने के दौर से कामयाब नहीं हो सके। क्योंकि उनके पीछे भावस्थक शक्ति नहीं लय पायी। विद्युती नागमयाची से सबक लेकर हमने उपासदान के कार्यक्रम पर पूरा जोर लगाया था। हमने जरा भी झिंझाई नहीं रखने दी जाती पाहिले, तो सम्पत्ता अस्थिर मिलेगी। यह काम किसी एक संयोजक का नहीं है। प्रत्येक समिति एक सपके के कुल सदस्यों को आमामो ? ? ? मिलकर तब उभरें पूरी शक्ति लगाती चाहिए। बाबा को हमने १ साल में कार्य पूरा करने का बंधन दिया था। ५ माह में यह काम पूरा करना है याने हर महीने १ हजार सदस्य बनाने होंगे। बाबा के आदेश का हम सबको अग्रदा के साथ पालन करना चाहिए। इस काम पर पूरी शक्ति लगा लेंगे तो उस सम्पत्ता से हमारे भावी काम भी आगम हो जायेंगे।

आज एक अनुभूतना धीरे भी सर्वोप के लिए है। लोग महामार्ग से प्रवृत्त हैं। सत्कार को मिले बहनती नीतिवों के कारण जीवन में नहीं विरता नाजर नहीं धानी। सत्ता

दूरान-यम : सोमवार, २६ अप्रैल, '७५

जिनको सर्व सेना सप धरना नहीं सवा। उनके कार्य के लिए भी बंभे भी जकरल होगी। लेकिन यह सारा मामूली व्यवहार का सवाल है। उनका इरादा ध्यानी तो हो सकता है। मुस्य बात है समाज का संघ्य दूर करने के लिए बंधन मजबूत बात लेने की। इसके दान लेने वाले धीरे लेने वाले दानों का निश्चय रूप से उदार होगा।

विनोबा विमने हैं, ' पाज तब हमन धनेको से मदद नी। मसुद में अनेक नदियां धानी है। इन नदियां में मन्दा जल भी धाना है। बाई भी मनुस्य कंसा भी पैना दे, जिससे जो भी आया धोर जिनना भी धाया हमने लिया। उनम हमने कोई मरनी की ऐसा हम नहीं मानते। वह हमने सब बहल की उपासना की। अब विमल स्वच्छ, शुद्ध पदम लेबा मय की मिलेगा तो उमका उपयोग भी धानी नपद में होगा। मन्त इस से मर्वा से जो तीन फायद हावे में उन्हांन धप्यो तरह से समाभावे है। हम विरवात है यह योजना सकन होगी ही।

(पृष्ठ ३ का शेष)

सर्व सेना सप का धमारी अधिवेशन कलकत्ता के निकट २२वें प्रवित भारतीय सर्वोपर समाज सम्मेलन के स्थान रहारा पर २८ मई, ७४ को सुबह ६.३० से शुरू होगा और ३० मई को दोपहर तक चलेगा। सप अधिवेशन में विद्युती बैठक की कार्यवाही को पुष्टि व मन्त्री के निवेदन के अनिश्चय सम्पन्न, राष्ट्रीय परिस्थिति, धामस्वराज्य आंदोलन, उपवासदान तथा मगरो में का दृष्टीगिर आदि पर विचार किया जायेगा। सप अधिवेशन के बाद ३० वीं शाम में १ जून तक २२वां अखिल भारतीय सर्वोप समाज सम्मेलन होगा। सम्मेलन में शामिल होने के लिए देलवे बन्धनगत पार्यं धामस्य प्राधम बोधधारा, (बिहार) तथा धपने-धपने प्रदेस सर्वोपद मडनी से मिल सक्ते है। रहारा स्थान कलकत्ता से १७ किमी मोटर दूर है। कलकत्ता के दो स्टेशन हैं। हावडा तथा सिपायडा। केवल सिपायडा से रहारा के लिए लोहा रेल मिलती है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

पाटी या विराभी पाटी सभी मत्तावाही हैं ऐसा पिछले कर्गों का अनुभव देलकर जनता का पाटी यद्धति पर से विश्वास उठता जा रहा है। ऐसे समय में जनता की मदद सर्वोप की धीरे लगी है। जनता के बन्ध देलकर व्यवस्था जो भी धारा से एक गहरी वेदना प्रवट हुई धीरे से प्रत्यक्ष मंडन में कूर पर रहे। उन्हें बल पहुंचाने के लिए भी धावस्थक है कि सर्वोप की शक्ति दृढ़ हो। उपवासदान एक ऐसा पवित्र कार्यक्रम है जिससे सब सेना सप को शक्ति दिन दुनी रान कोमुनी बंदनी धीरे जनता की बड़ी त बड़ी सेवा करने के लिए तैयार हो सकता है।

धन जनता को देलना है कि धपने सेलक को बनवाने बनाना है या कमजोर हो रतना है ? भी साहजी ओ की माया में कहुना हो तो सेनापति धपने सेलको की बसोटी कर रहा है। मासिक दो रुपया देना बंदी बात नहीं है लेकिन वह टेस्ट है। कम से कम एक सप सैनिकों की सभी सेना ही तभी सेना-पति धपने बढ सकता है।

राधापुष्प नृजान

● पास लीर पर बिहार की धीरे धाम तीर पर देश की स्थिति पर विचार करपने के लिए सर्व सेना सप में पटना में १६ अपरी भर के कुछ प्रमुख सर्वोप सेलको में भाग लिया। सगोति में शुरू में व्यवस्था नापयुष्प पर विनोबा धीरे इन्दिरा को धपने सबको पर विस्तार से प्रकाश धामा को बलाया की विहार के जन धामोदोन में जलने पर वे को मनजूर हुए। सगोति में प्राय. सभी धपने सर्वोप उभर गये हैं कि लोग अब ह् सम्पथ का ही बदलना चाहते हैं। यह सामय है कि अब सर्वोप विहार धीरे देश में धामने धपना विस्तार प्रस्तुत किएर सक्ता है धाल को धारों तर्क सोचकारि कायत दिखार् है दे रही है अपर उते विभाव मंड नही दिया गया तो देश में सुनी क्रांति भी नही होगी। जो होगा वह धामोदकता से भी बदतर होगा। विहात में हुये चुनोती ही धीरे जनता। जन आन्दोलन को हम अधिकतर जानियुष्प मोड नहीं दे पाये तो हम अपनी जिम्मेदारी धामोदोन को धामस्वराज्य के लिए धपने धपने को धामे जायेंगे। यह जरूरी है कि हम धीरे नीचे से इसकी लिए मर्गों में धाम-समाधो और गहरो में पडने सभाधो के जरिये लोक समूहन सदे विजयें। (समीति की पद धरने सप्याह)।



६ अप्रैल को शाहीबाग (पटना) के बाहर छात्रों की गिरफ्तारी के समय लिए हुए चित्र

हर नागरिक जिम्मेदार है

—श्रवण कुमार गर्ग

गुजरात के भादोलन के औचित्य और उसकी सफलता को लेकर इस देश के उन बुद्धिजीवियों के मन में भारी दुविधा है जो गोलियों से रोज मरने वाले लोगों की खबरों को चाय की चुस्कियों के साथ पीते रहे या प्राकाशवाली से समाचार सुनने के बाद मायन वादन सुनकर मोतके झाँकड़ों को भुलाते रहे।

गुलाबी के दिनों का हमें नहीं मालूम, पर पिछले सत्ताईस वर्षों के धाजदी के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि केन्द्र सरकार ने ससद में बहुमत के जोर से सविधान में ३१ सशोधन निये और गुजरात के विधायकों ने एक ही भादोलन में इन सशोधनों को ताक पर धर दिया। गुजरात के भादोलन से इनता ही सतोष काफी है कि हमारा सविधान अथवा विधायन प्रतिक्रिया के अन्तर्हो जाने पर कार्यकाल समाप्त होने के पूर्व ही उसे वापस बुलाने की इजाजत नहीं देता तो सविधान के मोन को तोड़ कर गुजरात ने यह परम्परा स्थापित की है कि जनता चाहे तो यह भी कर सकती है।

बिहार के भादोलन के भविष्य को लेकर भी इन्हीं बुद्धिजीवियों के मन में चिन्ता है कि जयप्रकाश नारायण जैसा आदमी जो (इन लोगों के मर्दों में) अथ तक सरकार से सामझोत करता रहा और सरकार के विरोध में पिछले २७ वर्षों से कभी तेज जबान से नहीं बोला, अब क्या कर पायेगा ? इन बुद्धिजीवियों और सुविधावादियों के गले यह

बात कभी नहीं उतरेगी कि जब-जब भी विप्रभाक की तरह जयप्रकाश नारायण ने यात्रा शुरू की, राजनीति का वेताल उनकी पीठ पर सवार होकर हर बार सवाल घुड़ना रहा है कि 'क्या तुम यह सब सत्ता में जाने के लिए कर रहे हो, कि जय प्रकाश नारायण पिछले २७ वर्षों से कभी सत्ता में नहीं गये, और कि आजादी के बाद से नयुसवता की जिन्दगी जो रही नोजवान पीठी अगार जे० पी० के भावाहन पर कुछ करने पर उतारू हो जाये तो भी जे० पी० का काम पूरा हुआ माना जाना चाहिए।

प्रधानमन्त्री और उनके साधियों ने बहुत जल्दी ही यह गलती महसूस कर ली कि उन्होंने एक बहुत ही गलत समय और गलत जगह हाथ डाल दिया। इसलिए प्रधानमन्त्री के मन्त्रेश्वर में दिये गये भाषण पर जिस ढंग से केन्द्र सरकार लीलापोली कर एक और जयप्रकाश जी को आश्चर्यचकित करना चाहती है वहीं दूसरी ओर उसने राज्य सरकार को पूरी छुट देदी है कि वह गया में मोती चलाये, मन्त्रिमण्डल में चाहे जैसा फेरबदल कर स्थिति को काबू में करे और बिहार प्रदेश छात्र सभ्य समिति के सारे छात्र नेगामों को अनिश्चित काम के लिए औत्तरिक मुद्रता बानून के दल्ला सीकचों में पीछे कर दे। बिहार के भादोलन को तोड़ने की कोशिसा दोनो सिरी से जारी है। जब जे० पी० दिल्ली छात्रे है तो प्रधानमन्त्री के

'सोम' उन्हें घेर लेते हैं और जब वे पटना जाते हैं तो गफूर साहब प्रदेश की 'ताजा स्थिति' पर उनसे नव्वे मिनट चर्चा करते हैं। जे० पी० को सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि २६ अप्रैल को होने वाले अपने प्रोस्टेट प्लेड के औपरोधान के सिलसिले में जब उन्हें बिहार से लगभग तीन सप्ताह बाहर रहना पड़ेगा तो बिहार के भादोलन का क्या होगा ? हाव ही की धपनी दिल्ली यात्रा के दौरान प्रधानमन्त्री ने अपने एक प्रमुख चिन्तितक को जे० पी० के स्वास्थ्य की जानकारी लेने अवश्य भेजा, पर उस चिन्तितक ने जे० पी० से यह सो निश्चिन्त ही नहीं कहा होगा कि बिहार के भादोलन की इस पडी में जबकि धापकी उपस्थिति अनिश्चय है अगार धाप सोन से गायब हो जायेंगे तो न सिर्फ भादोलन के स्वास्थ्य पर उसका असर पड़ेगा, धापने स्वास्थ्य बर भी खराब असर पड़ेगा, इसलिए येरी उलाह से धाप कुछ महीने धीर रुक जायें।

कुछ लोगों के मन में यह सवाल है कि बिहार से पहले ही जब गुजरात में भादोलन उठा और वहाँ के छात्रों ने जयप्रकाश जी का नेतृत्व मांगा तो उन्होंने क्यों नहीं दिया। दिल्ली की निहाड बेल से धपने दो तो साधियों के साथ सोलह मार्च को छुटने के बाद नवनिर्माण समिति के अध्यक्ष मन्त्री जमीने में मुक्त से बट्ट, 'हमें और हमारे भादोलन

को जयप्रकाश जी से बहुत प्रेरणा मिली। जय प्रकाश जी ने जब कहा कि एक वर्ष के लिए छात्रों को घातनी पढ़ाई बन्द कर देनी चाहिए और देश के कामों में लग जाना ही तब की कबूल किया। पर जब हमने जे० पी० से कहा कि प्राय हमारे आन्दोलन के नेतृत्व कीजिये तो उन्होंने कहा नेतृत्व चुनको को ही करना चाहिए।

पटना में जे० पी० के कदम कुर्बा स्थित मगन में बिहार भर से सैकड़ों नोजवान जब प्रान्त भाते हैं और उनसे नेतृत्व की माग करते हैं तो वे उनसे भी यही बहते हैं। पर यह बात साप की तरह स्थापित हो गया है कि बिहार के सर्वमान्य प्रादोलन का नेतृत्व जे० पी० ही कर रहे हैं।

आन्दोलन के दिनों में गुजरात के लोग देहाती प्रायः घोर जे० पी० को उनसे तराब सत्य के बावजूद प्रेमपूर्वक बना कर लेते हैं। जे० पी० बहा गये घोर चार दिन भी। नव निर्माण समिति के युवकों से जे० पी० ने पूछा कि—प्राय लोगों ने घातनी सहाई का नाम नव निर्माण युवक समिति रखा है, पर क्या नव निर्माण का कोई कार्यक्रम भी बनाया है? तबको ने कहा कि हम एक साथ एक गांव गांव जा कर जन-विश्राण का काम करेंगे ताकि घातनी विधान सभा में अच्छे लोग चुन कर जायें। रविशंकर मंगारज ने जे० पी० से कहा कि वे भी गांव-गांव जाकर लोगों को समझावें कि जोसे किस प्रकार के उम्मीदवार को देना है। जे० पी० ने कहा कि यह ठीक है कि आप साथ एक विधानसभा में अच्छे लोग पढ़ना दें, पर साथ साथ बाद (या पहले भी) फिर चुनाव होने घोर चुनावों पर पड़ति वही रहेगो जो घात है तो जनता को हर बार बोल समझाने चायेंगे? जे० पी० ने कहा कि होना यह चाहिए कि जनता के हस्तर पर एक ऐसा समझ समझदा सहा हो जो बिना किसी सहाई सहायता के टिका रहे, जो स्वयं ही घोर की प्रधानमंत्री से लेकर साधारण कर्मचारी तक के काम को निगरानी रख सके। जे० पी० की बात धार आन्दोलन के मने पूर्ण लक्ष्य तो गुजरात से अपने आन्दोलन का जहाँ तक सम्पन्न कर दिया वह सिर्फ

वही नहीं एक बात उससे, कहीं घोर प्रायः बड़रात घोर बिहार के पहले जे० पी० को गुजरात का नेतृत्व करना पड़ता।

गुजरात के आन्दोलन के दौरान जे० पी० की इस बात में ज्यादा रुचि नहीं थी कि बिमान भाई पटेल हटते हैं या नहीं। घोर इसी प्रकार बिहार के आन्दोलन में भी उन्होंने कि गफूर हटाने जायें। जे० पी० की रुचि इस बात में है कि बिमान भाई और गफूर के हट जाने के बाद कोई नई व्यवस्था या सकती दूसरे के घाने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं। 'नाग नाथ की जगह साप नाथ' या 'किर देताल भाड पर'।

भागलपुर में जा कुछ हुआ उसकी जानकारी देते हुए प्रो० रामजी सिंह ने बताया कि १८ मार्च की रातही भागतपुर में यह खबर फैल गई कि पटना में हुए गोली कण्ड में बिहार प्रदेश छात्र सभर्ष समिति का अध्यक्ष लक्ष्मण प्रसाद यादव घोर भागतपुर सभर्ष समिति के सचिवक निर्वात मारे गये। इस प्रकार यह बातारण में लखेजना फैल गई और स्थापित टावर के पास एक भीड़ जमा होकर भागतजी पर धामारा हो गई। भारतीयों ने जान पर खलकर भीड़ को घातनी फैलाने से रोकने का प्रयास किया। भारतीयों साथ ही सोम नाम के लक्षण भीड़ में मार की छाती पड़ी। किसी ने उन्हें घुसा भी दियाया। जब बिताघोम को फोन पर घटना की खबर की गई तो उन्होंने प्रभारी दण्डा-फोन करने को कहा। कीतवाली भी फोन किया ही जा रहा था कि एकाएक पुलिस के सौकरक घुस प्राये घोर धन्वर बंटे १०-१२ घण्टाघरी सोड ही घोर जो सड का फोन कर रहा था उनके हाथ पर लाठी मारी जिनके रितीघर टूट गया। इतना होने पर भी पुलिस ने प्रहार बन्द नहीं किया। इसी प्रकार १६ मार्च को प्रतिष्ठाण के प्राये भी सडक के दूसरी घोर एक होटल से पुलिस की मोटर पर बम फेंके गये घोर इसके बन्दे गांधी आनि-विधान की धानवीन की गई। पुलिस के

एक कश्चिाती ने प्रो० रामजी सिंह को जो कुछ कहा उसके अनुसार—तो १८ मार्च को घोर न १६ मार्च को ही गांधी आनि प्रतिष्ठाण के कार्यालय में बोई घातति जनक चीर मिली। बम फेंकने की योजना एक बन द्वारा एक होटल के कमरे से बनाई गई थी जिसके बारे में उसने से पकडे गये एक प्रमि-गुजर ने पुलिस को बताया।

घाठ घोर भी घातनी न जयप्रकाश जी के नेतृत्व में घातनि जुलुस निचला और ऐतिहासिक आम सभा हुईं उनसे जनता के सामने स्पष्ट कर दिया कि बिहार में हुईं दिसक घटनाओं में पीछे निन लोगों का हाथ था।

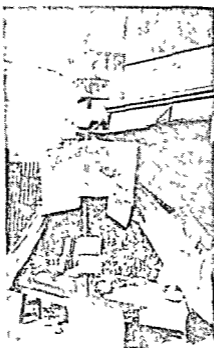
१८ मार्च को विधानसभा के संराय से प्रदेय में सित आन्दोलन की शुरुआत हुई घोर ८ घातनी तक जो कुछ होता रहा उस-घारे में हालांकि बिहार प्रदेश छात्र सभर्ष समिति के द्वारा यही बहा जाता रहा कि जो कुछ भी किया जा रहा है वह जय प्रकाश जी के नेतृत्व में घोर उन्होंने के नैतिक समर्थन से किया जा रहा है पर पूरे आन्दोलन की निष्पक्ष समीक्षा करने के क्षाल से यह जान लेना चाहिए कि सभर्ष समिति को सचान-समिति ने घाने द्वारा बताया जा रहे कार्यक्रको को लेकर जे० पी० से कभी ज्यादा चर्चा नहीं की। इसविषय एक तरफ जे० पी० प्राये वय घे आन्दोलन को चराने के लिए बिहार प्रदेश में लक्षण आनि निचो, प्रदेश सर्वोच्च घोर दूसरी तरफ प्राय सभर्ष समिति घे घाने इस से कार्यक्रम बनाया।

सभर्ष समिति ने यह तद किया था कि ८ घातनी तक उपवास घोर आनिपूरुल प्रदेयको का निरालिना चलेगा घोर ८ घातनी से स-सकारक टण्ड करने के निवधति में निषमति घे विरचचारिया को देंगे। घाठ घातनी के घातनी पूर्व जुलुस ने छात्र सभर्ष समिति के लोगों को सोचने पर मजबूर किया कि सिर्फ इतना कहने से बाय नहीं चलेगा कि आन्दोलन को जे० पी० का समर्थन प्राय है, जे० पी० का प्रायध नेतृत्व भी लेना पड़ेगा। छात्र सभर्ष समिति से जुड़े राजनीतिक दलों के प्रापो को यह भी तथा कि धार जे० पी० के नेतृत्व

भे कार्यक्रम चलाना है तो उन्हें प्राने प्राने दली से भी इस्तीफा भी देना होगा।

८ अप्रैल को संधर्ष समिति ने यह तय किया कि ६ अप्रैल को सुबह १० बजे इस छात्र सचिवालय तक आयें और धरना देते हुए गिरफ्तारिया दें। ६ अप्रैल को दस बजे संधर्ष समिति के चालीस पचास लोग गहरीर पार्क में इकट्ठा हुए और दस लोगों को भेजने की तैयारी करने लगे। इसी समय सो-बेड़ सो पुलिस के जवानों ने पार्क को घेर लिया। पहले सबको बिसर जाने की वहा और जब सब छात्र पार्क के बाहर निकल गये तो कुछ छात्र नेताओं को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया गया। छात्र जब भागने लगे तो १०० आर० पी० तथा ६० एस० एफ० के जवानों ने दूर तक उनका पीछा किया, उन पर लाठिया चलाई और दस-बारह छात्रों को पकड़ कर बस में भर दिया। मैंने और पत्रकार ओमप्रकाश दीपक ने पूरे घटनाक्रम के दौरान जब चित्र लेने के प्रयास किये तो हमें टोका गया और सी० आर० पी० द्वारा लाठी भी उठाई गई। दीपक के कैमरे पर लाठी से प्रहार भी किया गया। छात्र उस समय संयोग से भूतपूर्व मन्त्री और समाजवादी पार्टी के नेता रामनन्द तिवारी नहीं आ जाते और संधर्ष आंदोलन नहीं जाहिर करते तो पुलिस छात्रों के साथ क्या बतव करती नहीं बहा जाता। यहा उन्होंने भी यह है कि छात्रों ने अपनी गिरफ्तारियाँ देते हुए पुलिस से कहा कि ८ अप्रैल को जयप्रकाश जी के नेतृत्व में मिलने जुलूस से जो शान्ति वातावरण बना है उसे सत्कार ही कराकर बर रही है और हिंसा को भड़काने नहीं है। जितने भी लोग गिरफ्तारी से बच पाये वे वे सीधे जे० पी० के पास आये और उनके नेतृत्व में पूरा विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि वे जो भी कार्यक्रम देंगे सबको मंजूर होगा।

बिहार के पूरे आन्दोलन का खतरनाक मोड़ यह है कि गफूर साहब मुसलमान हैं इसलिए इस बात का पूरा ख्याल रखना है कि आन्दोलन के दौरान साम्यवादिता का जहर नहीं फैलाया जाये। पटना के ५०-६० हजार मुसलमानों और बिहार के लाखों मुसलमानों में इस बात के प्रचार की कोशिशें



उपवासदानियों का जयप्रकाश तिबिर जारी है कि जे० पी० एक ऐसे आन्दोलन का समर्थन कर रहे हैं जिसने ४० भा० विद्यार्थी परिषद भी है और शिक्षार्थी परिषद का जनताक्षेत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध है। कुछ तरह मुसलमानों में यह प्रचार कर रहे हैं कि चूंकि गफूर साहब एक मुसलमान हैं इसलिए उन्हें हटाया जा रहा है। यही कारण है कि बहुत कम साराद में मुसलमान प्रदेश के आन्दोलन में जुड़ पाये हैं। प्रदेश में जितनी भी जगह मोहल्ला समितियां बनी हैं उनमें मुस्लिम शामिल नहीं हो पाये हैं। छात्र संधर्ष के भी शान्ति जुलूस के लिए सर्वोच्च कार्यकर्ताओं ने इस बात का काफी प्रयास किया कि एक बड़ी संख्या में मुसलमान मित्र जुलूस में भाग लें पर ज्यादा कामयाबी नहीं मिली।

६ अप्रैल को आम सभा में जे० पी० ने इस बात की सफाई की कि बिहार का वर्तमान आन्दोलन गफूर साहब को हटाने का नहीं है, पूरी व्यवस्था बदलने का है। जे० पी० ने एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में गफूर साहब की तारीफ भी की। जे० पी० ने साफ साफ बोले कि यह है कि देश और प्रदेश के मुसलमानों में फैलाए जा रहे गलत प्रचार को दूर किया जाना चाहिए और उनका भी

सहयोग इस आन्दोलन के लिए प्राप्त करना चाहिए।

इतने बड़े आन्दोलन का यह दुर्भाग्य ही होगा कि हिन्दू-मुसलमानों के बीच लड़ाई खरवा कर इस आन्दोलन को बाट देने की कुछ लोगों की कोशिशें कामयाब हो जाये।

६ अप्रैल को हुई पटना की विद्यालय आम सभा में जे० पी० ने कहा कि विद्युत् सत्ताईस वर्षों से मैं सब कुछ चुपचाप रेलता रहा, पर अब नहीं देस सकता। उसके बाद दिल्ली में १३ अप्रैल को जे० पी० ने कहा कि हमको एक बार फिर जेल जाने की तैयारी करनी होगी।

भाजायी के बाद पहली बार बिहार में और जे० पी० के नेतृत्व में एक नागरिक आन्दोलन की संभावनाएं प्रकट हुईं। भाजायी के सत्ताईस वर्षों बाद एक आन्दोलन प्रकट हुआ है इसलिए इस सतरे को बराबर ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी कमी से अगर यह आन्दोलन खत्म होता है तो प्रागे मानेवाले सत्ताईस वर्षों के लिए भी किसी दिन आन्दोलन की संभावनाएँ निरस्त हो जायेंगी। इस आन्दोलन को विकल करने में प्रगट राजनीति की मथरा कामयाब हो गई तो वह बिना किसी झड़प के अधिनायकवाद का राजनितिक करवाएगी और तब देश भ्रातृजन्ता की जिस स्थिति में पहुंचेगा उसका एहसास भी छात्र नहीं किया जा सकता। इस आन्दोलन के विकल होने पर जे० पी० की मनस्थिति पर क्या प्रसर होगा इसको बल्लरना नहीं की जाये, पर देश का क्या होगा इस पर पूरी तरह चिन्ता की जानी चाहिए। देश के हर एक ऐसे आंदोलन को जो केवल जयप्रकाश नारायण के जिम्मे ही शान्ति वातावरण छोड़कर वेदीयता से निश्चित नहीं हो जाना चाहता, संधर्ष रूप से प्राने को बिहार के आन्दोलन में जोड़ना चाहिए।

२६ अप्रैल को बेलूर में होने जा रहे संधर्ष के लिए २३ अप्रैल को पटना छोड़ने से पहले जे० पी० ने बिहार के आन्दोलन के लिए पांच सलाह का कार्यक्रम दिया है। कार्यक्रम विद्यार्थियों ने स्वीकार कर लिया है। सर्वप्रथम राममूर्ति, नारायण देसाई, मनमोहन चौधरी व किशोरि चर्रा जे० पी० की अनुपस्थिति में विद्यार्थियों को सलाह व मदद देंगे।

सांघिक गुरुद्वारा—१५ ६० विदेश ३० ६० या ३५ मिलियन या ५ अलर, एक घंटा का मूल्य ३० पैसे।

प्रभाप जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ०० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

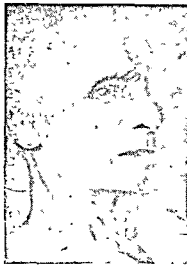
न सबको ईमान की रोटी मिल सकती है, न इज्जत की जिन्दगी

बिहार तरुण शांति सेना ने वहा चल रहे भ्रान्दोलन को एक सूत्रता देने, और जगह-जगह चल रहे स्वयं स्फूर्त कार्यक्रमों की सूचना देने के लिए पटना से 'तरुण क्रांति' नामक एक बुलेटिन छापना शुरू किया है। सम्पादक है—कुमार प्रशांत। १६ अप्रैल को हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना में दादा धर्माधिकारी ने 'तरुण क्रांति' के पहले अंक का विमोचन किया। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत है।

हमारा भ्रान्दोलन शांतिपूर्ण है। हमें शांति की शक्ति में विश्वास है। ८ अप्रैल को हमने पटना में जो जुलूस निकाला उसमें शरीक होने वालों के मुँह पर पट्टी थी और उनके हाथ बगल में न होकर पीठ के पीछे थे। ऐसा क्यों था? मुँह की पट्टी और पीठ पर हाथ हमारे इस संकल्प के संकेत थे कि हमें कितनी भी गाली मिले हथ उसका जवाब देने के लिए मुँह नहीं खोलेंगे और सिर पर पुलिस के कितने भी डंडे पड़ें या सीने में गोली लगे हम किसी पर हाथ नहीं उठाएंगे। हाथ हमें किस पर उठाना है? हमारी किसी व्यक्ति, जाति, संप्रदाय या दल से लड़ाई नहीं है। हमारी लड़ाई राज की सम्पूर्ण व्यवस्था से है। हम इस लड़ाई पर यह कहें गये हैं कि राज की व्यवस्था में न सबको ईमान की रोटी मिल सकती है, न इज्जत की जिन्दगी। हमें इस व्यवस्था को बदलना है और इसकी जगह एक ऐसी व्यवस्था कायम करनी है जिसमें हर दंस्तान, इंस्तान की जिन्दगी जो सके। व्यवस्था गाली देने, या दुकान सूटने से बँसे बदलेगी? ये काम तो गलत हैं ही, शान्ति विरोधी भी हैं।

हमने पटना में शान्तिपूर्ण जुलूस निकाला तो वह पूरे शहर पर छा गया। हमारी सभा

में लाखों लोग भाग्ये। आज बिहार भर में लोग भ्रान्दोलन के कार्यक्रमों में शरीक हो रहे हैं—बच्चे, जवान, बूढ़े, पुरुष स्त्री। लाठी चलती है, गोली चलती है किन्तु घातक नहीं है। जनता निर्भय होती जा रही है। ऐसा



बोलुक है शान्ति का। इसलिए हमें ऐसा कोई काम नहीं करना है, ऐसी कोई बात नहीं बहनी है, जिससे शान्ति की शक्ति कमजोर पड़े। शान्ति ही जनता की शक्ति है। उसकी

कुछ मर्यादाएँ हैं जो किसी भी हालत में गंभीर नहीं होनी चाहिए। वे मर्यादाएँ ये हैं:

(१) हमारी लड़ाई युवासेन से है, भ्रष्टाचार से है, स्पष्ट है कि स्वयं भ्रष्ट होकर हम भ्रष्टाचार को नहीं मिटा सकते। इसी तरह पुलिस के भ्रष्टाचार को नबल करके हम गैर-सरकारी भ्रष्टाचार का समर्थन नहीं कर सकते। गाली, गंदे नारे, बेले-पथर किसी को भ्रष्टमानित करने की कोशिश, मिथ्या लाइन आदि के लिए हमारे भ्रान्दोलन में स्थान नहीं है।

(२) हमारा आन्दोलन कितना भी व्यापक हो ऐसे लोग होंगे ही जो झगल रहेंगे। हमारी बातें कितनी भी उचित हो कुछ ऐसे होंगे जिनका ईमानदारी के साथ हमसे मत-भेद होगा। क्या ऐसे लोगों को हम 'दुस्मन मानेंगे? नहीं। हम उन्हें समझावेंगे, उनका समर्थन प्राप्त करने की पूरी कोशिश करेंगे, ज़रूरत पड़ने पर उनके नामों का विरोध भी करेंगे, लेकिन यह हमेशा मानेंगे कि हर व्यक्ति अपने विचारों में स्वतंत्र है और उसकी इस स्वतंत्रता की कद और रक्षा होनी चाहिए।

(३) हम यह जान लें कि भय यह भ्रान्दोलन केवल छात्रों या तरुणों का नहीं रह गया है, अग्रुआई भले ही उनको ही। भय यह जन भ्रान्दोलन बन गया है जिसमें पूरा बिहार शामिल है। ऐसे व्यापक और शक्तिशाली भ्रान्दोलन को तोड़ने, खरीदने और हड़पने की कोशिश होगी। जैसे वाला खरीदने की कोशिश करेगा और डंडे वाला हड़पने की। हमें दोनों से बचना है।

(४) हमारे भ्रान्दोलन के मूल्य मानवीय हैं, इसमें जातिवाद सम्प्रदायवाद आदि के लिए स्थान नहीं है, इसके विभी नाम में भेदभाव नहीं भ्रमलना चाहिए—न धनी-गरीब का, न ऊच-नीच का, न स्त्री-पुरुष का।

(५) हमारा आन्दोलन समस्त नागरिकों का है। हममें सखेने लिए स्थान है, जो भी समय और शक्ति दे उसके लिए काम है—वास्तव में नागरिक ही हमारी शक्ति की विभूति है। उसकी ही शक्ति को प्रतिष्ठित करना हमारी शान्ति का लक्ष्य है, न कि नेता की, दल या शासक की शक्ति को।

तूफान के बीच संगीति में विचार

पटना की सगोति विहार के जन-घाटोलन के बीचों-बीच हुई इस लिए बाल की सात निहालने वाला तब चिन्तन इसमें नहीं हुआ। देव भर के कोई एक तो सर्वोदय सेवकों ने दो दिन के इस विचार विमर्श में भाग लिया और प्रायः सभी ने पास बहने के लिए कुछ था। लेकिन अपनी लटपटपात के लिए प्रतिष्ठित दादा धर्माधिकारी तक प्रस्तुत परिस्थिति में सर्वोदय के मूक दर्जक बने रहने के पक्ष में नहीं थे। तदणु शासन सेना की मन्दा-किन्ती देवे से लेकर ग्रामस्वराज्य के वयोवृद्ध योद्धा बैलनाथ बाबू तक की एक यही राय थी कि देव में वह लोकचिन्तन जागृत हो रही है जिसकी बीस बरषों से हमें तलाश थी। इतिहास ने हमें एक भ्रमसागर दिया है अब हम अपनी धम्पामो वी समाज में स्थापित कर सकते हैं। पामा पड़ चुका है और दास लग चुका है। भ्रम भी भ्रमर हम विचारों पर बँध कर बाढ़ के पानी का रौद्र रूप देवाने रहे तो देव में वह अराजकता तो घा कर रहेगी जिस का भय समाजकारियों को है। हम कीजिए करों तो इस जनचिन्तन को विचारक मोड़ दे नहें। जे० पी० ने विहार में घट कर के रखा किया है। जे० पी० के कृत्तच को हम पानी समाजि की बीमन पर ही सखरअन्दाज र सकते हैं। बन्ना धनाधरक है कि गोनि ने धाने गुपान के सामने मनुजमुर्ग की लहू वर में सर्वन नहीं दुपारो। परिस्थिति की चुनौती स्वीकार की गयी और सर्वसम्मति उपर कर घारी रि बँडे नहीं रहका है। जमये जो बम पडे, अगो भी बम पडे और बैना भी बम पडे लोकचिन्तन को विचारक मोड़ उने देना है। इस जनघाटोलन को धाम लरायण या मोहरवराज्य से जे बना है।

लेकिन लोकचिन्तन की वाद में दूनों का संघर्ष निर्णो जेस मे नहरे लिया गया। बाढ़ की मोड़ सरने की धानी लरिज को बागी मोड रखा। सन्ध्या प्रकट की घडी और बैना रनिर्णो भी दी गयी। जैसे लरेड हुवे चणुने से

और यह धगर हमारे मूल्यों से भेल खाता हो तो ही इसका समर्थन करें। उनके विप्लेपण के अनुसार यह आंदोलन और राज्यों में फैलता है तो इसका धमर केन्द्र पर निश्चित होगा। धराजकना फिलेयी तो संकिण शासन हो सकता है, गृहयुद्ध भी हो सकता है। हमे अपनी श्रुतनम और धमर मर्यादाएँ तय कर लेना चाहिए और इस सधर्म में कहीं सम्मनोता समन हो तो उसकी प्रक्रिया भी तय करनी चाहिए। किसी भी हालत में धामस्वरज्य से हमे दूर नहीं फिकना चाहिए। देवेन्द्र भाई ने कहा कि विचारियों ने धाम लोगे की प्रयोग को मुसुरित किया है और घाटोलन किसी जग को मुसुरित किया है तो हम इसका समर्थन करना चाहिए। लेकिन हमारा रोल विचारक ही हो सकता है। हमारा विरोध व्यवस्था से है और इसे बदलने में हम उनका भी सहयोग लेना चाहिए जो आज हम व्यवस्था के अग हैं। सन्धर से भी सहयोग लेना चाहिए, वह न दे यह बान अग है। भीमनितामट से भी हमे पूछना चाहिए कि वे कैले मरंगे। सबके साथ हमारे सम्बन्ध प्रेम के होने चाहिए और हमारे हृत्विवाण में सान्ध्य होना चाहिए। धाम-स्वराज्य और सेवा के जो बाम हमने उठा रहें हैं उन पर इस आंदोलन का विपरीत धमर नहीं होना चाहिए।

लरेड हुवे और देवेन्द्र भाई की बाएँ बहरे बानो पर नहीं पड़ी। दरभमन सगोति देव की परिस्थिति और उगम धपने रोक के सामभले के लिए ही बुनारी गयी थी। विद्युते सान प्रकृवर मे लरायण मे हुई राष्ट्रीय परिषद ने लोकचिन्तन को धामनाभा और मोहना सभा के स्तर पर गठित करके धाम लोको की जननम मर्यादो के हल का कार्य-क्रम दिया था और सर्व केवा सध मे उने स्वीकार किया था। जनसभ मे हुई प्रबन्ध समिति की बैठक मे इस कार्यक्रम की मनीशा होनी थी। लेकिन समिति के सामने विनोबा का बम मर्यादा भी था जिसमें लहरी घटियक

और सर्वसम्मति नहीं हो सके न कोई प्रस्ताव पारित हो सका। तय किया गया कि प्रबन्ध समिति के कुछ लोग विनोबा के पास पटना मे बैठ कर समर्थे कि उनकी सलाह का क्या मतलब है। पूरि जे० पी० लोकचिन्तन के जरिये प्रस्तावकार, महाद्वी और धभाव के हल का कार्यक्रम उठा चुके थे इसलिए यह भी तय किया गया था कि पटना मे जे० पी० के साथ बैठ कर भी विचार किया जाये। यह पृष्ठभूमि ठाठुरदास बग संगीति के सामने रखने वाले थे लेकिन उनका यना खराब था इसलिए उनकी मोर से बोले नारायणदेवद्वी।

नारायण भाई ने कहा कि देव की धाज जो परिस्थिति है उनमे मय्यकरोष को समाप्त किया है और धमर हम देवे समर्थे तो घाटोलन एक नवी दिशा ले सकता है। यह परिवर्तन स्वाभाविकोप्य है। इस नवी दिशा के प्रकृत सरण हैं। वर्तमान प्रक्रान्तिक पद्धति मे परिवर्तन की बात हय सगानार करते धपये हैं धम स्थिति ऐसी भाई है कि यह परिवर्तन हो सकता है। व्यवस्था परिवर्तन के लिए हमारा जो धनुभव है उसे हमे देव को देना चाहिए। इस घाटोलन को अन्तिम धारदी और भूमि की समस्या मे जोडना चाहिए। ऐसा हम करिये तो यह तही मानो मे जन घाटोलन हो सकेगा।

नारायण भाई ने कहा कि एक तरह तो हम बहने हैं कि हिंसा से कुछ नहीं होगा लेकिन लोगो को लगना है कि हिंसा होगी तभी धमभुनि होगी। गुजरान मे विधान-सभा के विमर्जन की सर्वमान्य मान वा जन घाटोलन चल रहा था और सरकार कट्टी थी कि इस पर तनी विचार करिये जब हालत सामान्य हो जायेगी। हालन सामान्य नहीं हुई और धमर्ण की धरमनोता पर विधान-सभा का विमर्जन हुआ। हिंसा हो सफल होगी देना धामभाव पंडा करने मे कुछ लोगो का निश्चिन्ता सबाँ है। हमे धमिवा की परिधाम-दायी बनना है। रचनात्मक बावों मे धमिवा

शांति ही जन आन्दोलन की शक्ति है विहार के लिए जे पी का कार्यक्रम

बँदूर जाने के लिए सबबुर हूँ लेकिन
दिल बहुत भारी है घोर दिमाग परमान है ।
माने जाने को मैं जितना भी मुमकिन जाना
लेके रहना चाहता था । पर नहीं दिल्ली में
हल ही मैं मेरी जाक बन्न बान परना
सपनऊ, घोर बँदूर के घर राकटाग रा ।
सनाहू है कि पुश्य द्र पि वा जलरी म जन्नी
घापरेशन करता नू । तो धन जान क
घावावा मेरे पाम कोई चारा नहीं है ।

बिहार में विचारधियों और जनता के
आंदोलन को मोड़ना हालत की सामर्थ्य में
अच्छी तरह समझता हूँ । विचारधिया जवाना
घोर लोगों ने मुझ से जो उम्मीदें की है घोर
मुझ में जो विश्वास रखा है उसे सम्भन दूग
तो आंदोलन के प्रति मेरी जिम्मेदारी घोर भी
बढ़ गई है । प्रदेश छात्रसभ्य समिति के कई
प्रमुख नेता जेल में हैं घोर दूसरों की पुनिस
को तन्नाम है । इसलिए मैं नाग इस आंदो-
लन में कोई योगदान नहीं दे पायेगे, जिसका
पहला चरण समाप्त हुआ है घोर जिते नवी
पान ही जरूरत है ।

मैं यह तो जानता हूँ कि बिहार से जितने
सभ्य तक मुझे बाहर रहना होगा । लेकिन
मई भाव के पहले लोट जाना नामुमकिन ही
नगना है । इसलिए जरूरी समझना हूँ कि मैं
घानी गैर मोड़दूरी के पाक सत्पादों के लिए
माने उन अरोमेसन्द साधियों को छाड जाऊ
जो जितना भी सम्भव हो आंदोलन का माग-
दर्शन करें घोर उनसे सहानुभूति हैं । यह भी
जरूरी है कि इस समय के लिए मैं एए तकसी
सवार कार्यक्रम दे जाऊँ । इन दोनों बातों
पर भारी विचार करने घोर अपने मित्रों,
छात्र सभ्य समिति घोर आंदोलन में सभी
पुन्य सत्पादों के लोगों से सलाह करने के
बाद अपनी धनुरास्थिति के समय के लिए बुद्ध
विचार घोर योजनाएँ आपके सामने रख रहा
हूँ ।

पूना-बन : सोमवार, ६ मई, '५४



बँदूर के विनियमन मेडिकल छास्पताल में २६ अप्रैल को जे० पी० का पुन्य ग्रंथि
का घापरेशन सकल हुआ । उत्तर प्रदेश के राजपताल अकबर अली खान बहा! उपस्थित थे ।
१० अप्रैल को बिहार बन्द रहा घोर लोगों ने जे० पी० के स्वास्थ के लिए उपवास किये ।
छस्पताल में उनका स्वास्थ सुधर रहा है ।

लेकिन ऐसा करने से पहले, विचारधियों
मुनको और बिहार के लोगों ने मुझ में
जो भरोसा लिया है उसके लिए मैं उनके प्रति
अपनी गहरी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता
हूँ । भगवान मुझे इस भरोसे के योग्य बनाये ।
समर्थन घोर साहाय्य के लिए मैं सबको धन्य-
वाद देता हूँ । नासफर महिलाओं, शिक्षकों,
बादलों, डाक्टरों घोर पटना तथा दूसरे कई
गहरो के बुद्धिजीवियों का साधारण हूँ जिन्होंने

मुलुग, घरको, जयबागों घोर अन्य कार्यक्रमों
में भाग लिया ।

बिशाही दलों का भी मैं आभारी हूँ कि
जन्मे इस आंदोलन का समर्थन किया घोर
इसमें सक्रिय भाग लिया । उनके कई नेता जेल
जा चुके हैं घोर कई अभी भी सिकों के
भीतर हैं । विधानसभा में भी इस जनसमर्थन
के समर्थन में वे बोलें हैं घोर आरदार ढंग से
कार्यवाही की है । निजी तौर पर मैं उन्हें

विश्वास दिलाया चाहता हूँ कि विद्यार्थी, सुबक और लोग इस समयन धीरे सहयोग के लिए उनके धामारी हैं और धारा करते हैं कि भविष्य में भी उन्हें यह मिलता रहेगा। राजनीतिक दलों और उन के विद्यार्थी सपठनों से मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ कि भारतीय जन में उनकी भागीदारी पक्षहीनता की भावना से होगी चाहिए और किसी की भी आंदोलन पर बन्ना करने का उतना राजनीतिक उपयोग करने की कोशिश नहीं करना चाहिए। मुझे खुशी है कि स्वयंसेवक पार्टियों के नेताओं ने मुझे आमंत्रण दिया है कि वे ऐसा ही करेंगे। मैं उनका धामारी हूँ।

आंदोलन काय सिर्फ राहों तक सीमित नहीं रह गया है वह देहात में भी फैल गया है। इस मामले में पहल करने के लिए गांधी के जवानों, किसानों और मजदूरों का मैं आभारी हूँ। मुझे आशा है कि 'भागे भागे' नेताओं ने पूरा देहाती बिहार जागेगा और भागे बड़ चलेगा।

इस अन्तरिम अवधि के लिए मेरे सुझाव और व्यवस्था इस प्रकार है। देश के तीन प्रमुख नेताओं से मैंने निवेदन किया है कि वे अपना कार्यक्रम इस तरह बनायें कि उनमें से कम से कम दो पटना या बिहार में जरूर उपस्थित रहें—ये नेता हैं भाचार्य रामभूति, नारायण देसाई और मनमोहन चौधरी। ये और त्रिपुरारिशरय इस बीच मेरी ओर से कामकाज करेंगे और बिहार के लोगों और विद्यार्थियों की सेवा में रहेंगे। दूसरे नेताओं के अलावा, बिहार सर्वोदय मंडल, गांधी शांति प्रतिष्ठान, बिहार शांति सेना और तरण शांति सेना भी उनकी सहायता करेंगे।

आंदोलन में भाग लेने या सहानुभूति रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति को ही धीरे 'बर्म' में किसी भी हालत में हिंसा न करे। सत्योय की बात है कि अधिपतन मोटे तौर पर शांतिपूर्ण रहा है। यहाँ इसकी शक्ति रही है। भयानक जानता है कि उक्त जना कोई बम नहीं रही है और जवानों के लिए उक्त जित और शोधित हो उठना स्वाभाविक है। फिर भी छोटी-मोटी बूको के अलावा उन्होंने अपने को सयमित और शांतिपूर्ण रखा है। दुर्भाग्य से हिंसा के मामले में चूकें प्राधिकर्ण हैं हैं। गाली-गलती की भाषा का दस्तमाला किया गया है और 'मिनिस्ट्रो' की क्या दवाई, सारों, जूते

और मिटाई' जैसे नारों का प्रयोग भी उपयोग हो रहा है। ये बन्द होने चाहिए। नारे ऐसे होने चाहिए कि वे जनता को झगोल करें, संधर्ष के उद्देश्य समझाएँ और गरिमाय भाषा में सरकार या कालाबाजारियों, जमाखोरों आदि के गलत कामों की भर्सना करें।

किसी की भी उसकी मर्जी के खिलाफ कुछ भी करने पर मजबूर न किया जाये। घेराव, धरना, धीरे उपवास दबाऊ न हों। अगर होये तो उनका अक्षर घट जायेगा। मन्त्रियों, विधायकों, अफसरों, व्यापारियों या दूसरे लोगों के परिवारों को किसी भी हाथ में लय न किया जाये और न उनके साथ दुर्व्यवहार हो। जूतों के हार, गंधों या मुयारों के जुलूस बिलकुल नहीं निकाले जायें क्योंकि वे संधर्ष के लिए अग्रमानजनक हैं।

गांधी सप्ताह तक प्रदर्शन, प्रचार और जनशिक्षण के कार्यक्रमों को चलते रहेंगे लेकिन प्रत्येक सप्ताह का एक विशेष कार्यक्रम भी होगा जिस पर खास जोर और ध्यान दिया जायेगा। मेरी अनुपस्थिति में जिम तरह प्रदर्शनकारी और दूसरे कार्यक्रम चलते रहेंगे उसी तरह बीमती को बाधने और नियंत्रित तथा स्वीकृत दामों पर जरूरी चीजों के विल रूप का काम भी चलता रहेगा। कला-बाजारी, मुनाफखोरी और जमाखोरी के खिलाफ भी संधर्ष चलता रहेगा। घटनाओं को ध्यान में रख कर कार्यक्रम के विशेष मुद्दों पर जोर देने के लिए विशेष दिवस मनाये जा सकें हैं।

घटना में एक समिति मैंने गठित की है जो सम्बन्धित अधिचारियों से समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेगी। इसके बाद थोक और खुदरा व्यापारियों के सभों के प्रतिनिधियों के साथ बैठकें होंगी। वनस्पति की जैसी जरूरत की चीजों वाले उद्योगों के प्रतिनिधियों से भी बातचीत होगी।

छात्र और जनसंधर्ष समितियों के प्रतिनिधियों और सरकारी अधिचारियों के संयुक्त दल बनाये जायेंगे जो सस्ते भोजन की दुबानों द्वारा चलाये जा रहे मन्त्री राजनवाडों को दू दू निवासों में छात्र और जन संधर्ष समितियों के स्वयंसेवकों के दस्ते बनाये जायेंगे। ये दस्ते देखेंगे कि चीजें निर्धारित दामों पर बिकें और बर्मी की जो चीजें सरकार से

दुबानदारों को मिलती हैं वे कालाबाजार में न पहुँचें। अगर जरूरत पड़े तो बीमती के निर्धारण और धाम जनता की जरूरत की चीजों को सुलभ करने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह किये जा सकें हैं।

२४ से २० अर्धल वा सप्ताह जन-गरण सप्ताह के रूप में मनाया जायेगा। इस सप्ताह में आन्दोलन के लक्ष्यों, बिहार मन्त्री-मण्डल के त्यागपत्र और विधानसभा के विसर्जन जैसी मूल धारक भागों को समझाने और उनके प्रचार के विशेष प्रयत्न किये जायेंगे।

पहली मई बूकि अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस है इसलिए उस दिन श्रमीण और शहरी इलाकों के मजदूरों का समर्थन प्राप्त करने के विशेष प्रयत्न किये जायेंगे। २ से ८ मई तक का समय राज्यभर में संधर्ष के साधन खड़े करने और उन्हें शक्तिशाली बनाने में लगाया जायेगा। ९ से १५ मई के सप्ताह में मन्त्रीमण्डल के त्यागपत्र और विधानसभा के विसर्जन के जुड़वा लक्ष्यों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। दूसरे कार्यक्रमों के अलावा इस सप्ताह में प्रत्येक नुवाब क्षेत्र में मरदाताओं की बैठकें होंगी जो अपने विधायक से इस्तीफे की मांग करेंगी। १६ से २२ मई तक का सप्ताह सदाचार सप्ताह के रूप में मनाया जायेगा। पिछले कुछ सप्ताहों से मैं लगातार इस बात पर जोर देता रहा हूँ कि 'अष्टाचार' मिटाओ आन्दोलन अगर मन्त्रियों, अफसरों कालाबाजारियों और जमाखोरों तक सीमित रहेगा तो उसकी उपलब्धि सीमित और शयद अस्वाची विराम की होगी। अगर इस आन्दोलन को सफल होगा है तो इसकी परिणति राज्य में नैतिक शांति की दिशा में होनी चाहिए। मेरा कहना यह नहीं है कि ऐसी शांति लाने के लिए एक सप्ताह पर्याप्त होगा। इरादा यह है कि इस सप्ताह में प्रत्येक व्यक्ति को समझाया जाये कि अष्टाचार संबंधी भाषा है और उसे समाप्त करने के लिए सम्पूर्ण प्रयत्न करने होंगे। इस सप्ताह का एक नया कार्यक्रम यह होगा कि मन्त्रियों, अफसरों, व्यापारियों और बड़े जमाखोर किसानों के पुत्र-पुत्री अपने पालकों को यह समझाने के लिए कि वे अष्टाचारी और समाज चिरोपी तरीकों का उपयोग बन्द करें, (बाकी पेज १० पर)

जन असन्तोष को सही दिशा देना है

-सिद्धराज डब्डा

प्रधानमंत्री इन्दिराजी अपने भाषणों में बलाही रही हैं कि पात्र विप-
 को समझना है उनको
 को समझना है उनको
 को समझना है उनको

स्वागत करना चाहिए, क्योंकि परिवर्तन की
 बाकीला सब लोक हृदय में जागृत हुई है।
 पर धारण्य की बात है कि प्रगतिशील बहु
 जाने जाने भी उल्टा चिन्ता प्रकट करने लगे हैं।
 कि इन जन धारणाओं में देश में अल्पसंख्य
 कौनेसी, माध्य (?) समाज की बुनियाद दिन
 जायकी सामुहिक चेतना में जनता की
 गमना ही अन्तम हो जायकी बाधि। स्वय
 इन्दिराजी के मुंह में भी इस प्रकार की चेतना
 निवृत्ती है।

मनस्य भाव की स्थिति को जगों का लो
 बनाये रखने का हरदिक नहीं हो सकता।
 धारादि, हितवा शोध प्रवृत्तिया तो पालन में
 प्राय की स्थिति में ही है। इस महाप्रायिकी को
 स्टैट्य-को को बरतना ही समाज में शांति
 प्राप्त करने का एक एकमात्र उपाय है।

पर निद्वन्द्व दिनों उन्होंने एन से अधिक
 बार हुए ऐसी बातें कही हैं जिसका नेत रहते
 शानो बात से कम ईश्वर ही। भाव देश में
 बड़ा प्रणव मोड़ना स्वयंसा के निष्पाप
 द्वारा उठने लगी हैं। सब तक तो लोग एन
 चीज से उठे तो सुपरी की तलाश करते थे।
 एन पार्टी के समस्तुष्ट हुए तो सुपरी की तरफ
 'गे' में, मरदार की एन नीति से परेजान
 'गे' में, मरदार की एन नीति से परेजान
 'गे' में, मरदार की एन नीति से परेजान

यह इच्छा हर सामन्तवादी की होना स्वाभा-
 विक है, पर इन्दिराजी की धारा से ता लोगों
 पर नहीं धार्य है कि वे सामान्य सामक नहीं
 हैं वे परिवर्तन चाहती हैं। इतने दिनों के
 प्रयुक्त स बहु मण्ट एजा से ता लोगों
 की व्यवस्था धोर भाव से कानून कुच निजा-
 कर मरीजों के हितों के रक्षक धोर लोक-
 नही है बल्कि उन चन्द उन तबके के लागे के
 को बलाय के शोषण पर जीते हैं। धरी तो
 हम चाहते रहें हैं कि यह व्यवस्था बरते।
 फिर इतके धोखा मा हित जाने या टूटने का
 इतना कर क्यों? क्या समाज-परिवर्तन में
 लिए बहिष्कार की बाणें केवल उजरी रही हैं
 या सिर्फ बोट हालित करने के नाते।

बसों तक जगता सरदार नर भी
 नेताओं का प्रतीका करती रही है। वे भी
 बराबर दिखते देते धोर उनके रवते रहे हैं।
 जना भाव्य धोर भी धोरज रखती धोर
 राज्यपालों की ईश्वरपरी पर उत्तर
 अरोता कायम रहता। लेकिन देव देव स
 धोरता बरती नहीं धोर बरती में धोर
 है कि उजरी बरती धोर बरती में धोर
 धरने है, उनको बाजों में ईश्वरपरी नहीं
 है। दिल्ली में नेताओं, शासकों धोर उनके
 प्रकटनों द्वारा लोगी प्रजाओं की धोर उनके
 की जो कार्यवाही धानी प्रजाओं में धार्य है वह
 निद्वन्द्व बला की तबवी भू पाया की तबके
 धारा बड़ी माया है। धर्मां गुण ही निज
 निद्वन्द्व प्रभाव में ही न्यय धरदार की एक
 बरिठो ने धनी प्रसार में एक धरदार का रहनेको
 ध्यान लिया है।
 जेन एन पठना से पत्रजब की धरदार का रहनेको
 धारा माया धरुणय का पाया, विधासनायक के
 धरदार की धरुणीको बंद प्रकटनों द्वारा टूटने
 धरदार की धरुणीको बंद प्रकटनों द्वारा टूटने
 धरदार की धरुणीको बंद प्रकटनों द्वारा टूटने

हिया से या धारणासना में परिवर्तन न हो
 जय इस बात की विना हर एन की होनी
 बाधि। इनके लिए धारणासना है जनता की
 अन्वयाधो के साथ धुनधुनकर, उनके साथ
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

हिया से या धारणासना में परिवर्तन न हो
 जय इस बात की विना हर एन की होनी
 बाधि। इनके लिए धारणासना है जनता की
 अन्वयाधो के साथ धुनधुनकर, उनके साथ
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 उनके धानलोच को, नहीं दिना देने की, बंसा
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को
 धरुणें से कथा नया कर उनके 'प्रोटेस्ट' को

प्रायश्चित का स्थान

मुझे लगना है कि किसी भी देश का कानून तभी सार्थक होता है जब वह राष्ट्र की आवश्यकताओं पर आधारित हो। ऐसा भी कहा जा सकता है कि राष्ट्र की आवश्यकताएँ कानून के विकास का कारण बूझा करती हैं। इस सदर्भ में मुझे इस मदन का स्थान इस तथ्य की धोर आधारित करना है कि हमारे देश में विद्येय मान एव धर्मोपरिस्थिति उत्पन्न हुई थी जबकि एक घटना ऐसी घटी जिसके निराकरण हेतु हमारे कानूनों में कोई विधान नहीं था।

मैं उम घटना की चर्चा कर रहा हूँ जब ४०० से अधिक शत्रुओं ने स्वेच्छा से अधि-कारों के आगे घात समर्पण किया था। मुझे लगता है कि यह परिस्थिति इस कारण उत्पन्न हुई कि हमारे कानूनों में अपने एक प्राचीन ऋषि द्वारा प्रतिपादित उस मूल को कोई स्थान प्राप्त नहीं है जिस में उन्होंने कहा था कि अभियुक्त और न्यायाधीश के ऊपर सत्य की खोज का बराबर उत्तरदायित्व रहना है। लेकिन आज हमारे न्यायालयों में सांख्यिक कानून के कारण अभियुक्त की वास्तविकता को तोड़मरोड़ कर के ही कानून की बटोरता से बचने का विकल्प प्राप्त है।

अनुसूचित में प्रतिपादित एक अन्य मूल को भी हमारी वर्तमान न्याय संहिता में कोई स्थान नहीं है। इस मूल में मनु ने प्रायश्चित और परचाताप को प्रतिपादित किया है। मेरा विनम्र निवेदन है कि इन बर्णियों को दूर करने के लिए शीघ्रता करनी चाहिए। इन मूलों को हमारी न्याय संहिता का प्राथमिक अंग बनाया जाना आवश्यक है। यदि ऐसा किया जाये तो हमें निम्न लाभ मिलेंगे :

प्रायश्चित और परचाताप को हमारी न्याय संहिता में स्थान दिया जाता है तो न्याय प्रक्रिया में सच्चाई से प्रभाव होने लगेगा और शिनाहतगी भ्रमि की न्यायिक आपत्तिका समाप्त हो जायेगी। साथ ही अभियुक्त को इस कारण जो न्यायिक बटोरता से छूट मिलती है और इसी छूट के कारण एक भेद-पूर्ण परिस्थिति निर्माण होगी है, वह भी समाप्त हो जायेगी। किसी भी अभियोग के



जाच की इस मूल के कारण एक वैकल्पिक प्रक्रिया स्थापित हो जायेगी जिसके कारण बरामदगी ठीक दण्ड से दण्डा करेगी तथा पुलिस के प्रति जो सही श्रद्धा गलत व्यापक अधि-श्रद्धा जनसाधारण में निर्माण हो चला है वह कुछ अंशों में कम हो जायेगा। यह मूल न्याय-लयों में सत्य के प्रति निष्ठा को बढ़ावा देगा और नैतिक अधिवक्तियों की अभियुक्त से सत्य का सहारा लेने की सलाह देने को प्रोत्साहन देगा। वास्तविकता तो यही है कि अभियुक्त से अधि उपयुक्त दूसरा गवाह होगा नहीं। भारतीय समाज में सत्य के प्रति निष्ठा की जो सनातन प्रतिष्ठा रही है और जो अभी प्रशासनिक उपेक्षा तथा चिन्ही प्रभाव से क्षीण हो चली थी पुनः जायज हो उठेगी।

ये प्रायश्चित न केवल अभियुक्त के आचरण में सुन्दरने के दौरान अच्छा प्रभाव डालेगा साथ ही साथ सजा हो जाने के बाद भी इनका असर रहेगा। धारा ४०१ तथा ४०२ को मौजूदा हालत में कुछ अनर्कित प्रतीत होती है उनके सशोधन हेतु पुष्टभूमि निर्माण करने में सहूल्यता होगी। धातुनिक अचरयध मनोविज्ञान के इस सत्य को कि अभियोग करते समय मनुष्य एक हलप्रभ रोगी सा हो जाता है, न्याय संहिता में स्थान मिल जायेगा। अभियुक्तों को भी सत्य का सहारा लेने का अवसर मिलने लगेगा जर्क धर्मो वह केवल झूठ बोल कर ही छूटकारा पा सकते हैं। यह सब लाभ हमारी न्यायपालिका में निहित हो इसके लिये मेरे गुणाधेय हैं:—

धारा ४ में एक और धारा जोड़ी जाय जिसमें अभियोगी यदि परचाताप करने को तैयार हो तो उसकी परिभाषा हो। परिभाषा में कहा जा सकता है कि यदि अभियोगी परचाताप या अन्य कारण से अपने अभियोग को स्वीकार करे और प्रायश्चित में दण्ड को स्वीकार करने को सटमान हो तो उसे परचातापिक अभियुक्त की सजा दी जाय।

धारा ३५१ अ के बाद एक और उप-धारा जोड़ी जाय कि यदि कोई परचातापिक अभियुक्त के ऊपर ऐसा अभियोग हो जिसमें उसे क्षान्ज्य कारावास अथवा मृत्यु दण्ड अथवा सात वर्षों से अधिक का कारावास हो सकता है और वह अपना अभियोग स्वीकार करता है तो वह किसी प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट के पास जाकर अपने अभियोग की स्वीकार करे। मजिस्ट्रेट अभियुक्त को न्यायिक कारावास में भेज कर अभियोग की जाच उसी प्रक्रिया से करेगा जैसे पुलिस करती है। जाच के बाद यदि मजिस्ट्रेट को विश्वास हो कि अभियुक्त का प्रायश्चित सही है तो वह अपने प्रतिवेदन के साथ अभियुक्त को शेष जज के पास भेजेगा। यदि जाच में यह सत्य नहीं पाया जाता तो मुकदमा चलाने की सिफारिश की जायेगी।

शेष जज अभियुक्त के बयान लेने के बाद ऐसा दण्ड देगा जो न्यायसंगत हो, पर यह दण्ड मृत्यु का कदापि नहीं होगा। वह शासन को दूसरे दण्डों की माफी के बारे में सिफारिश कर सकता है। जो धारा ४०२ के अन्तर्गत शासन दे सकता है।

धारा ४०१ तथा ४०२ में यह जोड़ा जाय कि शासन अभियुक्त के आचरण को देखते हुए माफी दे सकता है। यही प्रायश्चित धारा ४६२ में अथवा अभियोग अधिनियम में भी जोड़ा जाय। अभी यह छूट तात्कालिक नियमों के अन्तर्गत आचरण पर निर्भर नहीं करती।

मेरा इन तथ्यों को सामने रखने का केवल यही अभिप्राय है कि शासन इन तथ्यों पर विद्येय गाल की घटना के परिप्रेक्ष्य में विचार करे। साथ ही यह भी मेरी इच्छा है कि हमारी न्याय प्रक्रिया जो अभी केवल विदेशी मूलों पर आधारित है हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की मौलिकता से प्रभावित हो जाय।

(सोकरुमा में रणवहादुर सिंह)

सर्वोदय और राजनीति

डॉ० लक्ष्मी नारायण
भारतीय

सत्ता एक दल की राजनीति से सर्वोदय कार्यक्रमों तकत अल्पित रहे हैं, क्योंकि 'सत्ता बाधा' एवं 'पदाहित' समाज की एतदा भग बरते हैं एवं साधन-शुद्धि की बात तो हवा में ही उड़ जाती है। इसलिए बार-बार जनता की धोर से माँग आने के बाद नूतन सर्वोदय इस प्रकार की राजनीति से दूर रहना आया है। जनता की भाग इतनाए है कि वह समझती है, 'सर्वोदय वाले बहुत अच्छे लोग हैं एवं राजनीति की पदवी से धरने को सदा दूर रखेंगे।' प्रथम राजनीति में उतरने के बाद सर्वोदय वाले भी इस धोखा को जितना पूरा कर सके, भगवान ही जाने।

किर सर्वोदय वाले एक ऐसे वाम में भगे हैं जो बुनियादी है एवं समाज की एक व्यापक समस्या को वे हल करने में स्थित हैं। यह वाम राजनीति से सर्वथा अल्पित नहीं है, क्योंकि भूमि समस्या व्यापक राजनीति से सम्बन्धित ही है। इस काम से यदि वे हट जायें तो 'माया मिली न राम' जैसी अवस्था हो जायेगी। जो बोली-बहुत गति गांधीजी के परचात गांधी वालों में आयी है, वह भी विचार जायेगी। अतः नित नयी उठने वाली समस्याओं में रममाण होकर अग्रणीय कार्य की धोर कुनन्ध करना सर्वोदय के हित में नहीं है।

किर भी लोगों को ऐसे वाम में एवं ऐसी राजनीति में लगे रहना है, जो उनके मूल काम में बाधक न हो। उदाहरण दिया जा सकता है, गांधीजी के जमाने का जब रचनात्मक कार्यक्रमों आने वाम में लगे रहते थे एवं गांधीजी के आवाहन पर ही सत्याग्रह में कूद पड़ते थे। इन्हीं प्रकार आज सर्वोदय वालों को धरने काम में लगे रहना है, पर आसरास की स्थिति एवं जिम्मेदारी से मुहू भी नहीं मोड़ना है। धाज जनता गरीबी, भूखमरी, प्रदूषण, सत्ता का के-नीयता आदि से ग्रस्त है। वह चाहती है कि उसने रैनदिन जीवन से सर्वोदय सम्मया भी हल हो। विभिन्न पार्टी वालों ने उसका बहुत शोषण किया है। सत्ताधारियों ने एवं सत्ताधारण रखने वालों ने उसका पूरा शोषण किया है,

पर पहले कुछ नहीं पडा है। अतः वह चाहती है कि सत्ता वालों से दूर, पक्षाधरता रखने वालों से मलिन बोर्ड संगठन हो, जो मोड़ना बुझाये वा मुझावना करे, सज्जनों की शक्ति को एकीकृत करे एवं गांधीजी के जमाने की तेजस्विता प्रकट करे। ऐसा लगता है, जयप्रकाशजी वद अक्षर के धारण है। सर्वोदय को राजनीति में आने के लिए कहा तो जाता है, परन्तु उसकी अगर कोई राजनीति हो सकती है तो वह सत्ताधिरोध एवं दल-विहीन राजनीति ही हो सकती है।

जयप्रकाशजी ने जो नया मच कायम किया है, वह इस कसौटी पर सही उतरता है। यदि वे कोई राजनीतिक पक्ष लडा करते, तो वह सत्ताधारी हो बन जाता। उन्होंने पक्ष-विहीन मच की स्थापना करके उस राजनीति में प्रवेश किया है, जो सत्ताधिरुध राजनीति की विरोधी है। सर्वोदय वालों को यदि इससे कोई एतराज हो सकता है, तो इतना ही कि उनके अग्रणीय कार्य, धामदान से यह भिन्न है। परन्तु साध ही धाम स्वराज्य का भी लक्ष्य सर्वोदय में धामनाया है। अष्टाचारदि से मुक्ति का प्रयास निश्चय ही धामस्वराज्य की स्थापना की प्रक्रिया का ही एवं अय है।

यह मच सही मानने में सर्वोदयी राजनीति का मच बन सकता है, क्योंकि इस मच का कार्यक्रम ऐसा नहीं है, जो सर्वोदय का विरोधी हो। हम जनता की जखत समस्याओं के अक्षिक हल के लिए यदि प्रयत्न नहीं करते हैं, तो स्पष्ट है कि धामदान का काम भी धरने नहीं बढ सकता। धामदान ही शक्ति की एक प्रक्रिया है। यह समाज का सहयोग पग पग पर चाहती है। सहयोग तभी मिल सकता है, जब समाज के मुल-मुल के हम हिस्सेदार बनें। धाज जनता भूख एवं बेकारी से जितनी ग्रस्त है, उससे बड़ी अक्षिक अष्टाचार से पीडित है। सम्भावत उसकी नष्टता, पीडा आदि का उपाय यदि नहीं किया जाता है तो सत्ता सहयोग मिलना बर्तन है, साथ ही, धरणी बर्तनियों के निवारणार्थ वह फिर किसी न किसी पक्ष के ही अधीन हो जा सकती है। राष्ट्रीय मच में जनता को अपनी राह पर जाने का मार्ग तोल दिया है। यह मार्ग तब

कटक रहित बन जाता है, जब जनता के मुल दुख में हम शामिल हो जाते हैं। यदि हम गहराई से सोचें, तो स्पष्ट हो जायगा कि गांधीजी ने जैसे स्वराज्य के काम के साथ रचनात्मक कामों को जोडा एवं रचनात्मक काम को तेजस्वी बनाया, उन्हीं प्रकार जय-प्रकाशजी ने राष्ट्रीय मच के साथ धामदानादि कार्यों को जोडकर एक नई राह खोल दी है, जिससे हम धामस्वराज्य का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। 'धामदान धामदान कायों की धोर इस कारण लापरवाही धर जायेगी, हमारी तटस्थता समाप्त हो जायेगी एवं हम सरकार के विरोध में खडे होंगे' ऐसा धामेप इस तित तिले में किया जा सकता है। वस्तुतः धामदान-धामदान का कार्य विरमूत न होने देना तो हमारे धरने हाथों में है। वह करने हुए भी जनता का काम यदि हम करते हैं, तो जनता धामदान-धामदान का काम उठा लेगी। यानी सर्वोदयी कार्यक्रमों को अपना काम करते रहेंगे ही, इस मच पर से जनता को भी धरने साथ रखने का अक्षिक दू द नितालेपे सारी जम्मा धामदान-धामदान में प्रत्यक्षतः भले ही न लगे, उसके सहयोग से निश्चित ही धामदान को बल मिलेगा।

तटस्थता भी इससे अय नहीं होती, क्योंकि किसी भी पक्ष से हम बधते नहीं हैं। तटस्थता तो रहेगी ही, क्योंकि मच पक्षविहीन है। अतः हमारी तटस्थता तो धोर की उभर आयेगी—जब हम उन सभी को ताडना करेंगे, जो अष्टाचारदि में लिये रहेंगे। इस में सत्ताधारी एवं सत्ताधारी, सय धा सकते हैं, अतः सत्ताधारी ही एवं सत्ताधारी पक्षों की धोर से विरोध भी होगा। पर जनता जब देखेगी कि हमारा लक्ष्य सही है, पक्षों की राजनीति से हम अल नहीं हैं, सत्ताधरता भी हममें नहीं है, तो वह हमारी तटस्थता को चीन्ह लेगी। दर आसल धाज उसके अक्षर में तटस्थता की ही चाह है जो यह मच पूरा करने जा रह्य है। अतः मच के प्रति सहयोग सर्वोदय के लिए जरूरी है।

यह सही है कि तात्कालिक रूप में सरकार का विरोध इनमें से उभर आयेगा। परन्तु सत्कार किसी भी पक्ष की हो, यह मच उस के गलन कदमों का विरोधी रहेगा। वस्तुतः जनता के सामुल यह मच सरकार के विरोधी मच के रूप में नहीं, अल्पि एवं अक्षिक पर

तटस्थ कार्यवाही-दल के रूप में काम करेगा। प्रसंगानुसार वह सरकार का विरोध भी करेगा और समर्थन भी। यानी यह विरोधी दल नहीं बल्कि बुराई का विरोध करने वाला तटस्थ मंच रहेगा, इसलिए सरकार को उससे भय रहने की जरूरत नहीं। मंच क्या चाहता है एवं क्या करता है, यह स्पष्ट हो जाने पर ही सजता है, सरकार भी उससे सहायता ले, क्योंकि सरकार भी तो भ्रष्टाचार का निन्दा-सन करना चाहती है। सरकार का ही काम यह मंच करेगा, धन: यह सरकार-विरोधी नहीं माना जा सकता है।

हा, प्रवक्तक सरकार की गलत नीतियो का सविनय विरोध सर्वोदय ने कम ही किया है। सर्वोदय से संबंधित रचनात्मक सत्पात्रों में सरकार से मदद भी ली है। छादी श्रामो-योग सरकारी सहायता पर ध्वस्तित है। इन सब कारणोंसे सरकार एवं गांधी वाले, सरकार एवं सर्वोदयी, सरकार एवं छादी वाले, ये मानो एक ही सिरके के दो पहलू समझे जाने लगे थे। यह ध्रम इस मंच के कारण टूट जायेगा। एवं सर्वोदय वाले ध्रमना स्वतंत्र अस्तित्व प्रकट कर सकेंगे। सर्वोदय वालों की ओर सरकार सहायुभूति से देखती है एवं उन्हें मदद करती है। पर ध्रम ऐसी सहायुभूति एवं मदद उसकी ओर से नहीं मिलेगी, क्योंकि वह समझ जायेगी कि ये लोग हमारी गलत नीतियो का समर्थन करने वाले नहीं हैं इसे एक 'इष्टापरिप्त' ही माननी चाहिए एवं इस कदम का स्वागत इसलिए करना चाहिए कि सरकार पर हमारी निर्भरता ध्रम कम हो जायेगी व जनता पर निर्भरता बढ़ेगी। यही गांधीजी चाहते थे एवं विनोबा की 'लोकनीति' भी यही चाहती है। कभी न कभी यह ध्रम टूटता ही था कि सरकार एवं सर्वोदय वाले एक हैं। किसी भी कीमत पर सरकारी दुर्नीतियो का विरोध न हो, ऐसा चाहने वाला जो वध सर्वोदय से संबंधित है, उसको इससे जरूर निराशा होगी। पर इसका कोई उपाय नहीं है, क्योंकि रचनात्मक काम एवं सर्वोदय के काम ऐसे हैं कि नहीं न कहीं प्रस्थापित स्थायी से टकराव होगा ही था। फिर भी इसे हम 'सरकार-विरोधी मंच' न मानकर यो भावें कि जहां भी भ्रष्टाचारादि होंगे, यह मंच उनका विरोध करेगा। फिर निरोध में चाहे

सरकार हो, या अन्य कोई ऐसा भी मोबा धा सकता है कि यह मंच सरकार का भी समर्थन करे। यह समर्थन तटस्थता से होगा। हो सकता है इस मंच को अन्य लोगों का भी रोप सजता पड़े। दर बगल इस मंच का काम बहुत ही बठिनादयो से भरा है, क्योंकि भ्रष्टाचार केवल एक ही पक्ष से संबंधित नहीं है। व्यापारी, विरोधी पक्ष, सरकारी, गरीबी अधिकांसी सभी से यह संबंधित है। धन: जहां ये सब देखेंगे कि हमारे स्वार्थ पर साधान हो रहा है, तो वे मंच का विरोध करने लग जायेंगे। इस प्रकार यह मंच किसी एक वा नहीं रह पायेगा। फिर भी उसकी शक्ति इसी है कि वह तटस्थता से उन बुराइयों का विरोध करेगा, जो समाज में व्याप्त हैं। तब जनता तो उसका साथ देगी ही।

सर्वोदय के कार्य में, उसके प्रवाह में यह एक नया मोड़ आया है। इससे गांधी वाले, सर्वोदय वाले, छादी वाले धरारा भी सजते हैं कि जयप्रकाशजी ने यह कहा है कि जयप्रकाशजी ने यह कहा है? भव तक के अविरोधी जीवन में अच्युता काम चल रहा था और सबकी सहायुभूति मिलती थी। ध्रम विनोबी बुराइयो से प्रतिहार होगा, वे निरोध में खड़े होंगे। यह सही है कि विरोध के कारण बठिनाइया खड़ी होंगी, परंतु गांधीजी का रास्ता भी तो बुराइयो से असहकार का रहा है। विनोबाजी का रास्ता तो सजजनचित को सक्रिय बनाने का है ही। हमारा मानना है कि इस मंच को यदि हमने ठीक ढंगभा है एवं इस मंच के नेता के कदम को यदि हमने विरहास के साथ देया है, तो हमें भयभीत होने की जरूरत नहीं है। इसे हम सजजन-शक्ति के सगठन के रूप में ही देखें। यह मंच सर्वोदय के कार्य-कर्ताओं पर मंच नहीं है पर हम यह भी स्तरक लें कि सर्वोदय यदि ध्रमों को इससे अलित एवं ध्रम समर्थकों, तो उसका काम निस्तेज हो जायेगा एवं वह जनता से टूट जायेगा। प्राक्चित हम सजजन-शक्ति इसीलिए तो चाहते हैं कि बुराई का प्रभाव कम हो इसे करने वा ही रास्ता जयप्रकाशजी ने बताया है। इससे विनोबाजी के मूलभूत लक्ष्य का विरोध नहीं है। सावधानी इनकी ही बरतनी है कि एक ओर सर्वोदय वाले जयप्रकाशजी ने पीछे पूरी तावत तो खड़ी करें, पर ध्रमने काम से छुट्टी न लें। दूसरी ओर, जयप्रकाशजी भी सत्ता

एवं दलितजीन राजनीति पर प्रांच न माने दें एवं मंच को गदा तटस्थ बनायें रहें। बन्तुत: जयप्रकाशजी का मंच गांधी-विनोबा के समन्वय का मंच है। गांधीजी बुराई का प्रतिहार सत्पात्रह से भी सजते थे। विनोबाजी सजजन-शक्ति को ही प्रभावित करके बुराई स्वी प्रथकार को दूर करना चाहते हैं। जय-प्रकाशजी ने किया यह कि मीके पर जरूरत पडने पर, बुराई के प्रतिहार की राह ही खुली रती है, पर प्रयत्न यही है कि सजी तटस्थ (सजजन) शक्तिवा अधिवाधिक रूप में सक्रिय हो एवं देश की जड़ें खोदने वाली, जनता से 'प्राहिमाम्य' कराने वाली समस्तार्थ दूर हो।

(पृष्ठ ६ का योग)

अपने धन में बाहर घण्टो का उपवास कर और फिर विचारार्थी भाषण लेते हैं भ्रष्टाचारी तरीके नहीं धनार्थोंके कि जिनके कारण राज्य के विचारार्थी इनके बदनमा हो गये हैं और एकेडेमिक जीवन का इतना पतन हो गया है।

२३ से २६ मई तक के सप्ताह में शिक्षा में प्रामुल परिवर्तन की जरूरत पर जोर दिया जायेगा। पालको और माडा-पिताओं को यह समझाने का विशेष प्रयत्न किया जायेगा कि बच्चों पैदा करने वाली मौजूदा शिक्षा प्रणाली उनके बच्चों, स्वयं उनके और देश के लिए हानिकारक है। इसलिए उन्हें जागृत होकर ऐसी शिक्षा की माग करनी चाहिए जो पढ़ाई-बिताई के साथ, लेतो, बारसभानों और प्रशिक्षण की व्यवस्था करती हो। इस सप्ताह पूरे राज्य में गोटियों, भाषण और विचार विमर्श भी होना चाहिए। सप्ताह का प्रत्येक दिन शिक्षा में शक्ति के एक विशेष पहलू पर जोर देने में लगाया जायेगा जैसे पढ़ाई-लेखों की उपयोगिता, नौकरी के लिए डिग्रियों की आवश्यकता, प्राक्चित नियोजन के साथ शैक्षणिक नियोजन की आवश्यकता ताकि जिन कामों के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाये वे उन्हें सचमुच मिल सकें।

मई के प्राथिनी दो दिन इस कार्यधम की समीक्षा करने और ध्रान्तोलन के बगले चरण के लिए योजना बनाने में लगाये जायें। यह सबक है कि तब तक में पटना लीट धाऊंगा।

शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल दान-उपवासदान

—विनोबा

मैंने कई टका कहा है और आज फिर से दोहराता हूँ, यह देह जो प्राण हृदय है, वह परमात्म-दर्शन के लिए है। वह एक टुकड़ा है। इन टुकड़ों का उद्देश्य भगवद् दर्शन है। भागवत में स्पष्ट शब्दों में वर्णन आया है— परमात्मा में घने घन प्राणी निर्माण विये, लेकिन सतोप हुआ नहीं। आशिर मनुष्य निर्माण किया, तो मुद्रमाप देव, भगवान को सतोप हुआ, ध्यान-रु हुआ। क्यों सतोप हुआ? ब्रह्मावली-कथिणम्—ब्रह्म-साक्षात्कार की-भासनासाक्षात्कार की शक्ति जिसमें पड़ी है ऐसी मानवभूति भगवान ने पैदा की, तब भगवान को सतोप हुआ—मुद्रमाप देव।

यह एक ही प्रश्न बाबा अपने को पूछना है। ७० साल हो गये। २२ साल की उम्र में गानेश्वर महाराज मुक्त हो गए। ४२ में तुषाराम महाराज गये। ६६ में एनराजस्वामी गये। ७३ में रामदासस्वामी गये। भगवान महाराज ७२ में गये। स्वामी त्रिवेकानन्द ३६ में गये। ईशा-मसीह ३३ में गये। बंकरा-धर्म ३२ में गये। ऐसा सारा दृश्य बाबा अपने सामने देखना है। फिर अपने को पूछना है, तेरे ७० साल हो गये, तेरे टुकड़ा का जो उद्देश्य है, उसके नजदीक जा रहे हो या नहीं जा रहे हो? टुकड़ी-ड (टुकड़ा का विलेख) में टुकड़ा का उद्देश्य लिया रहता है कि फलाने-फलाने काम की सिद्धि के लिए टुकड़ा है। उनके साथ यह काम, यह काम ऐसे हुनारे काम भी लिखे रहते हैं, ये मूल उद्देश्य की पूर्ति के लिए होते हैं। हमने कितने भी काम किये हैं, टुकड़ा ने मूल उद्देश्य के नजदीक न जाने हो, तो सारे प्रयास बेकार गये, ऐसा होगा। मेरे भाइयों, यही एक सवाल अपने की पूर्णति—अपने को सुदूर को पूर्ण और अपने साधियों की भी यही पूर्णति। सह भावबन्धु। सह भी भुवनबन्धु। सह सामुहिक साधना करना चाहते हैं। भक्त प्रह्लाद का शायर है—

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिरामा-
देव, मुनि इत्यादि प्रायः ध्यनी मुक्ति की
किता करते हैं।

भोजन चरति विद्वाने न परार्थनिधायः

मुद्रान-वज्र : धोषगार, ६ मई, '७४

जगत्तो मे जाकर, भोजन रह कर साधना करते हैं। लेकिन मैं इस प्रकार मुक्त होना नहीं चाहता—

नैतान् विहाय रूपणान् विमुमुक्ष एक
में धनैला मुक्त होना नहीं चाहता। सबके साथ मुक्ति चाहता हूँ। हम जो अपने लिए मुक्ति चाहते हैं रामोपेप का क्षय हो चाहते हैं, आत्मदर्शन के नजदीक जाना चाहते हैं, हमारे जो साथी हैं, उनके साथ, सबके साथ मुक्त होना चाहते हैं। परस्पर भावयत। एक दूसरे को मदद देने हुए एक साथ जाना चाहते हैं। हम पूछे अपने साधियों को कि हम क्या तक धामे वह रहे हैं। मुख्य यह बात है।

दूसरी बात। बाबा ने अपने जन्मदिन पर जाहिर किया कि बाबा हर महीने में दो दिन, माघ-आषाढ़ दिन का उपवास करेगा और वह दान सर्व सेवा सध को देगा—और साल भर के १२ उपवास के ३६ रुपये बाबा ने सर्व सेवा सध को दे दिये।

हमने ममभना चाहिए कि गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी संस्थाएँ हमने धनेक प्रकार की बनायी थी—चरखा सध, हरिजन सेवक सध, नई लालीयो सध, भूदान-ग्रामदान का नाम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक सध बने—समूह बने वह समूह हमने बनाया सर्व सेवा सध। हमने उपवास कर के जो बचा वह दान दे दिया सर्व सेवा सध को, तो वह पवित्रदान हो जाता है। प्रायः तक हमने धनेको भी मदद ली। समूह में धनेक मददमा दानी हैं। कोई भी मनुष्य कंसा भी पैसा दे—जिससे जो भी धार्या और जिनना भी धार्या, हमने लिया। उलमे हमने कोई गलती की ऐसी मैं नहीं मानना। वह हमने 'सर्वबंध' की उपासना की। धन विमल, स्वच्छ, 'मृदु बहल' भी उपासना करनी है। उसी प्रक्रिया से सर्व सेवा सध सामुहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों की मिल कर हमने नाम दिया सर्व सेवा सध। हम लोग, जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके चलें। उससे विश्वमुक्ति होगी, धारोप्य प्राप्ति होगी। हमारे बाबुभाई (मैहता) हर

महीने की रूपएपस की, एकादशी को उपवास करते हैं, तो उनका धनुभव है कि उससे उन का आरोग्य ब्रच्छा रहता है, मानसिक शांति और समाधान रहता है। हम सब महीने में एक दिन का उपवास कर और बचा हुआ पैसा सर्व सेवा सध को दें।

सर्व सेवा सध को अपने काम के लिए हर साल १० लाख रुपये लगते हैं। अगर ४० हजार लोग महीने में एक दिन का उपवास करते हैं और एक व्यक्ति के साल भर के १२ उपवास के २५ रु० मिलते हैं तो १० लाख रुपये होंगे। मैं अपेक्षा करता था कि वर्षा की घनेक संख्याएँ है—महिला आश्रम, मंगलवाडी, बाकावाडी इत्यादि और वहा छोटे-बड़े कार्यकर्ता हैं, तो १००० उपवास-दान तो वर्षा से ही मिले होंगे। बाबा ने जाहिर किया ११ सितम्बर की, आज २३ धनुजवार है लगभग छः हफ्ते हो गये। लेकिन मुझे धनी रिपोर्ट मिली कि धनी तक कुल भारत में लगभग १०० ही दान धार्य हैं। मतभव २५०० रुपया हुआ। इसमें हमारी परीक्षा है। इसमें क्या होगा? कोई करोड़-पति है मान सीजिए, और वह दान देना चाहता है, तो उसके १२ उपवास करने होंगे। उसका भोजन का खर्च ज्यादा हो सकता है। बाबा का तीन रुपये होता है, उसका पाच, छ या साठ हो सकता है। तो मान लें, उसके १२ उपवास के १०० रुपये होंगे, उतना दान वह देगा। है करोड़पति, लेकिन उससे जतना ही प्राप्त करे। यह है शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल दान। यह बात मैं आज दुबारा रख रहा हूँ। मेरी प्रार्थना है कि धनेला एक वर्षा शहर १००० उपवास-दान तो दे ही सकता है—देना चाहिए।

आगे दो जिले हैं

उत्तर प्रदेश में धार्या शहर और नैनी-ताल जिले के शपुर में उपवास-दानियों की संख्या सबसे ज्यादा है। धार्या गांधी साहित्य-प्रतिष्ठान केन्द्र के मुख्य कार्यकर्ता इष्टुपचन्द्र सहाय तथा नैनीताल जिले सर्वोदय मण्डल के दीपनारायण साहू से जो गई बातचीत वहाँ की सफलता के कारण बनायी है। →

आगरा की अग्रुआई

हृष्याचन्द्र महाराज : आगरा में उपवास-दान के लिए दान-योग तैयार हुए, इनके कुछ कारगर तो विन्मय साफ हैं। विनीया पदयात्रा के दौरान आगरा से गुजरे थे। यहाँ के पत्र-पत्रों, गोपबन्ध-मन्त्रों यात्रे लोभ उतकी जानने हैं, आदर देते हैं। फिर यहाँ बाबुलाल भीतलजी हैं, उनका बहुत सम्मान है। स्वामी हृष्याचन्द्र हैं, उनका भी भगना दाया है। जब विनीया ने उपवासदान का विचार रखा तो शहर के हम सब साधियों ने एक धारणी बैठक बुलाकर इस पर बातचीत की। एक योजना बनाई जिसके अनुसार हर सम्भव माध्यम से लोगों के सामने हम विचार को रचनात्मक किया गया। उत्तर-प्रदेश के हम कुछ साथी आन्दोलन के सभ्य पर पिछले कुछ सालों से मोच भी रहे थे, प्रदेश स्तर पर पंजाबी सुर्द में हमने शायद बदलने का प्रयास भी किया था। अतः जब विनीया ने सर्व सेवा सभ के खर्च को उपवास दान पर चलाने का नया विचार दिया तो हमें भी काफी उत्साह प्राप्त था। सभ्य के आधिष्ठापक के बदलने में उनके समूचे ढाँचे में बदल जाने की भावना दिखाई है।

उत्साह से आगरा में काम शुरू हुआ। बाबुलाल भीतल व स्वामी हृष्याचन्द्र जगह-जगह सभा बुला कर उपवासदान के बारे में लोगों को ममभाते। स्थानीय धलवारों में भी उपवास दान का महत्व समझा कर इस काम में मदद देने की सचील की गई। आगरा में बंसे भी दान की महिमा है, फिर यहाँ के पंसे वाले लोगों में दूसरे शहरों के मुकाबले सामाजिक जिम्मेदारी की भावना अधिक है। एक महिला ने प्रायश्चित्त में छुपी धर्मोत्सव देण कर उपवास दान का पंसा भेजने हुए प्रायश्चित्त, व्यवस्था किया कि मुझे मालूम नहीं था दुनिया में कोई ऐसा आन्दोलन भी होगा जिसका खर्च लोग उपवास कर उठावेंगे। उन्होंने सर्वोदय आन्दोलन कहा—क्या काम कर रहा है इसकी जानकारी भी मांगी।

बाबुलाल भीतल जी की सभाओं में काफी नए लोग आते। सारी बात उनके सामने रखने के बाद कुछ को ऐसा लगना कि आगरा

में, होने वाले काम का तो उनसे कोई तात्कुक है, लेकिन दूर-दूर गांव और शहरों में चलने वाले काम में वे क्यों पंसा दें? कुछ संका परतें कि प्रामस्वरूप आन्दोलन में हमारी रुचि नहीं है लेकिन यहाँ के काम में वे मदद दे सकते हैं। इन उनका उपवासदान स्थानीय कार्यकर्ताओं के ही काम में आये। ऐसे लोगों को भीरु के साथ ममभासा जाना। कन्या-कुमारी में किए गये उपवास का भी आगरा से सम्बन्ध जुड़ना और आगरा में किए गये उपवासों का बन्ध्याकुमारी से।

२५ रुपये धीरे-धीरे उपवासदान में दो प्रपचाद भी सामने आये। एक परिवार में पिता ने उपवास दान किया। उस हफ्ते उनका पहला उपवास आया। खाने की मेज पर जब पिता की घाती नहीं लगाई गई तो उनकी वारह साल की बेटो ने वारण प्रुद्ध। पिता ने बताया कि सर्वोदय आन्दोलन का खर्च लोगों के उपवास से चलेगा। वे आज खाना नहीं पावेंगे। बेटो पर अस्तरण। उसने कहा वहाँ भी महीने में एक दिन का पूरा उपवास रखेंगे। मधु ने एक बार के खाने का प्राड प्राना खर्च माना। दूसरे दिन मधु का दस रुपया सर्व सेवा सभ गोपुरी चला गया। दूसरा उदाहरण आगरा के एक प्रसिद्ध होटल के मालिक का है। उन्होंने उपवास दान का पचा भरते हुए कहा कि उनके एक बाल के खाने का खर्च करीब दस रुपया है। इस तरह महीने में एक उपवास से वे बीस रुपया बचा कर साल भर के २५१ रुपये सर्व सेवा सभ को भेज रहे हैं।

श्री सहाय का बहना है कि हमने स्थानीय उपवासदाताओं से सम्पर्क रखने की भी एक योजना तैयार की है। हम हर महीने उपवासदाताओं की एक बैठक बुला कर उन्हें देश तथा शहर में चल रहे काम की घोड़ी बहूत जानकारी देते रहना चाहते हैं। इससे उन्हें अपने उपवास से देश भर को मिल रही शक्ति का अंदाज लगेगा। इस तरह आगरा में काम जारी है।

नैनीताल में सौ

नैनीताल : जिला मंडल के मंत्री दीप-नारायण साहू रूडपुर के प्रसिद्ध भांडाही हैं।

सर्वोदय आन्दोलन में ध्यापक से समय मिलान कर मदद करते हैं। सुन्दरनाथ बहुगुणा उत्तराखण्ड की १२० दिन की पदयात्रा पर थे। दीपनारायण उनके मिलने गन करवरी को नैनीताल जिले के एक घने जंगल में गये। उन्होंने सुन्दरनाथ जी को रूडपुर आने का निमन्त्रण दिया। पदयात्री ने निमन्त्रण स्वीकार किया लेकिन एक जलत रवी, "रूडपुर-नैनीताल से कम से कम नौ उपवासदान मिलने चाहिए तो मैं इन इलाके को पदयात्रा में शामिल कर सकूंगा।"

२० फरवरी से सम्पर्क शुरू हुआ। चू कि धर्मोत्सव क्षेत्र है इसलिए काम का तरीका सभाओं का न हो कर व्यक्तिगत सम्पर्क का था। दीपनारायण जी के गांव प्रतापपुर के २५ परिवारों में से १२ परिवार के एक-एक सदस्य ने उपवासदान दिया।

पहाड़ों में गरीबी बहुत है। १०० उपवासदान का लक्ष्य रख कर नैनीताल जिले में घूम रहे सुन्दरनाथ ने लिखा कि, "विनीया का अनुमान था कि एक व्यक्ति एक बार में एक रुपए का खाना खाता ही होगा परन्तु पहाड़ी भावों में मुश्किल से एक बार का प्राड प्राना बँट रहा था।" फिर एक दिवस और भी की। गरीबी के बावजूद भी कई लोग उपवासदान के विचार को पसंद करते थे, लेकिन उनके पास पूरे साल भर की रकम एक बार में जमा कर देते स्याक पंसे नहीं थे। एक छोटे से पहाड़ी गांव में २० औरतों ने उपवासदान दिया लेकिन साल भर की रकम वे जमा नहीं कर सकीं। धन यहाँ के कार्यकर्ता सभ रहे है कि उनके उस दिन भी बचत का खजाना बच कर जो रकम प्राप्त हो वह सर्व सेवा सभ को भेजी जाए। नैनीताल के कार्यकर्ता इस खोज में हैं कि किस तरह उपवासदान में गरीब से गरीब लोग भी शामिल हो सकें।

उपवासदान करने वालों में एक साध्यावारी कार्यकर्ता जमुनासिंह भी हैं। उन्होंने पदयात्रियों से कहा, "सर्वोदय की मुझे आज तक जानकारी नहीं मिली थी। प्राय लोग सोचें थे। अब जगें हैं तो प्रायके आन्दोलन को चलाने के लिए मेरा उपवासदान भी शामिल कीजिये।"

आतंक की राजनीति के जनक कौन

त्रिलोकचन्द्र

अज्ञान प्रधानमंत्री राव दिन भारतीय जनता को यह बेनाकनी देती रहती हैं कि उन्हें धारण एवं हिंसा की राजनीति की चुनौतियों का मुकाबला करना है और पाकिस्त पक्षधरकारियों में मजदना है क्यों कि इन्हें दुरादे साफ नहीं है। प्रश्न है कि यह मानववादी और पाकिस्त मनोंवृत्ति कहा से अपना योगदान प्रदान कर रही है? इसका यदि टीका सहहू से नहीं सम्भवा गया तो उन परिस्थितियों का निवारण कठिन होगा।

अभी २ मार्च को राजस्थान के दामाघरी रेलों में मद्रासई के तिलाक राजस्थान बन्द का प्रावाहन किया था। इसके लिए राजस्थान सरकार ने १ वीं शाम की जम्बूतर नगर की मजदूरी पर भी-मजदारी को दूकने में बन्दूकधारी सिपाहियों को भर कर धरती शक्ति का प्रदर्शन किया और सारे नगर में बन्दूक की नोक का भय और धारण फैलाने का योजनावृद्ध प्रचार किया। बहुते मीर से देखने पर भी उन ट्रेनों में न तो मद्रास बन्द के धोर न मद्रास सेना का दल का कोई स्वयं सेवक ही। विशद रूप से हिंसा और आतंक को बढ़ावा देने वाली राज्य पुलिस का यह प्रदर्शन था। उसी शाम को राज्य मद्रास की घोषणा यह भी कि हर स्थिति का मुकाबला करने के लिए शान्त नैतिकाई कर रही है। यह एक भ्रूषक घटना है कि मद्रास शान्त का अपने दल, अपने कार्यकर्ता व अपने मतदाता नागरिकों की शक्ति की अपेक्षा पुलिस और उगरी बन्दूक पर अधिक भरोसा है। पुलिस की पाठी और बन्दूक से न शान्त के बन्दूक उठने है और न पुलिस की शर्मा होती है। क्या यह प्रदर्शन हजारों मद्रास सजनों का धारणा शांति-प्रिया नागरिकों का नहीं हो सकता था जो जनता के धारणवत्त को जामुन करता और उनके धारण करता कि उन्हें हर स्थिति का मुकाबला शान्त से करता है?

धारा सरकार की गलत नीतियों के हर पोलोवर्षिक विरोध को धारणकारी और पाकिस्त मनोंवृत्ति की सजा दे दी जाती है। जनता धारण वृत्तियाईयो की विषम परि-

स्थितियों में दखल बराह रही है। जनता द्वारा धरती वृत्तियाईयो की अभिव्यक्ति को जो कि जनता का गुहोण दम्पू है, सदा पुलिस और एजेंट की लाठी और गोली में ही दबाया जाता क्या धारण में पाकिस्त तरीका नहीं है? यदि मद्रास स्वयं प्रतियोग पाकिस्त और ट्रिपल मनोंवृत्ति का सिक्कार नहीं होली और सत्ता स्थित राजदुराणों का धनुषाणो मंत्र नहीं हानी, तो जब गुजरात जन-विद्रोह की धारण में जन रहा था तब वहाँ के जन-धारणों को शान्त करने के लिए मनी शुकुलनद पन्त के वजाय भारतीय राष्ट्रीय कार्यकर्ता व धारण नगरदयालु धर्मो गुजरात गये होने और वहाँ के कार्यकर्ताओं को सशक्ति किया जाता। केवल पुलिस और सेना की बन्दूक की गोणिया के वजाय, धारण की नागरिक शक्ति से ही वहाँ की समस्या के निवारण की मुक्ति कलायी होती। जब दल से नेता अपनी जय जयनार करने के लिए दिल्ली की सड़कों पर ६-७ लाख की भीड़ इकट्ठी कर सकते हैं तो क्या उन भक्तजनों की भीड़ में ऐसे भी दो पांच हजार धारण जन सामने नहीं धारा सकते थे, जो गुजरात में अपने दल की सरकार को बचावे, धरती सत्ता की नीति को उजागर करने के लिए धारण प्रिय व सत्याग्रह का मार्ग धरणाते और धारण धारण उदार नैतन्व्य करो?

जनता के मन में यह धारण गरीबों बँट गई है कि सरकार हिंसा के सामने ही भुक्की है और नातिप्रिय धारणन को सदा उपहास का उपेक्षा की दृष्टि से देखती है। शान्त धारण सरकार के विचार और निर्णयों को बन्द करने में धारणमें रहते हैं। सरकार का पिछली दो दमाधो का व्यवहार यह सिद्ध करता है। इसलिए वह हिंसा व दबाव की शक्ति का ही धारण सेती है। जनता के वजाय सरकार के पास ही हिंसा के अचनन धारणन प्रचल कर माना में होते हैं। धारा सत्त धारण प्रचल ने किसी भी आन्दोलन का मुकाबला करने दल के स्तर पर धारणसत्यक रूप व सत्याग्रह की भावना से नहीं किया।

जब शान्त सत्ताओं में दैनिक शक्ति क्षीण हो जाती है और सत्ताई जगुन की चमक मात्र ही रह जाती है, मानव जन-आन्दोलन से धारणित रहना है, तब वे हिंसा का धारण प्रयोग करते हैं। यही कारण है कि गुजरात और विहार के हिंसात्मक उपद्रव हुए तो धारण के मन्त्री चन्द्रजीत वादव बाणुपान से प्रहमदावादा और घटना जाने रहे और सन्त मुद्रासत्तिय पक्षों में राज भजन पक्षधर रहे। वही से बँट-बँट गयेते मुत्ताकात कर धरणखरी से परिस्थिति की जानकारी कर वाणन दिल्ली धारण धारण बनाये धारणने के धनुषार उपग्रामपथी और दक्षिणपथी दली पर उपद्रवों का दोषारोपण कर धारणमुद्रि प्राप्त करने रहे हैं। इन प्रकार धरणा सा तरीके से जन भावना का मूर्च्छांजन होना रहा है। वे भी पक्षधरों में मुक्त होना, जिनका लक्षण को समझने का माहुर नहीं कर सके। यही कारण था कि जो भी वे धारण कर रहे, दो तीन दिन बाद ही केन्द्रीय सरकार उसके विपरीत निर्णयों की घोषणा कर देती। एक ऐसे सशक्त का महाभरती, जिन्का लक्षण सारे देश में शासन है, यदि जनता के मानस को सही ढंग से न समझ सके और स्थिति का सही धारणन न कर सके तो इससे बढ़कर उस सशक्त की विन्तनीय व्यवस्था क्या हो सकती है?

स्वयंसेवक, मुस्लिमलीग व मुस्लिम मजलिम इत्यादि साधरधरि सशक्तों के बारे में हमेशा सरकार बुरा मला कहती रही है। ५० मेहरू को बन्दूक इदिरा गांधी तक इन सशक्तों की बन्दूक धारणोचय करते रहते हैं। लेकिन बलरामभाई पटेल से लेकर उमा सरकार कीदक्षि तब के गुहू मन्त्री न इन सशक्तों पर प्रतिग्रन् सगा सने है और न इनको गैर कानूनी करार दे सके। अब यह माना जाता है कि इन सशक्तों के क्रिया कलाप फासिस्टी है और राष्ट्रीय जीवन में जहर पोत रहे हैं, इनके कार्यक्रम धारणकारी एवं उपद्रवकारी है, तो फिर इन्हें कानून की खाट लेकर धर तब क्यों जीवित रखा जा रहा है? निश्चित ही धारण से सरकार यह समझती है कि इनका भी उसके लिए कोई उपयोग है। अपने शासन की गलत नीतियों के कारण जब जनता में धारणित पैदा होती है तो वह सारा दोष इन सशक्तों पर धारण देती है।

भाज भी पश्चिम बंगाल की जेला में समभग ३२ हजार लोग बिना मुकदमा बनाए बन्द है। धार्तरकारी मकलतवादियों का मफाया दिया गया क्योंकि उताके लिए इतना उपयोग नहीं होता था। नुनारों में जब साम्प्रदायिक एवं धराजनतावादी तरुओं में गठबंधन हो सक्ता है, उनकें समझनों की वैधानिक मान्यता हो, मंगर और रिपाल रामाधों में उनरों प्रतिनिधित्व मिले, इतके लिए सत्तादल का प्रयत्न हो, तो फिर उनरों जीवन रखने में मददय ही सत्ता दल का निहितस्वार्थ है। धन्यथा इन्हें भी निर्मूलत किया जा सकता था।


जनता वस्तुधों की महंगाई, जोमनो-पयोगी चीजों की अलभ्यता, कालाबाजारी और भ्रष्टाचार से तग था गई है। उताके धैर्य का बाप टूट गया। और वह दुपरी हो विद्रोही हो उठी। ऐसे अवसर पर देज की युवा पीढ़ी जो निरपयोगी शिक्षा में दीक्षित है, अपने नैराश्यपूर्ण भविष्य की कृंदा से उद्वेगित हो उठे, परिस्थितियों के निरा-करण के लिए जन-विद्रोह का नैतृत्व संभाल ले तो, हममें कोई अस्वाभाविकता नहीं है।

राष्ट्र नियम आधिक सक्त वा मानना कर रहा है। प्रधान मंत्री इंगे निररध्यायी परिस्थिति कह कर उसकी भीपरता को कम नहीं कर सकती। वस्तुधों की नीमतों में गणमर्णशी नृष्टि हो गई है। उनका बाजार में मिलना दुष्कर हो गया है। साद नियम के मोदामों में प्रताज की बिम्म ही बरत जानी है और बोरियों में मिलावट हो जाती है।

इस जनगिडा से उत्रे आन्दानन को धार्तरकारीयों का सत्ता हथियाने का पडवय कह कर टाल देना, वस्तु भिवति से धार्तर नीच लेना होया। जिन लोगों ने सन् ७१ में गरीबी हटाधों का नारा बुलद कर, रिपमना के निराकरण का मपुर स्वर छुट कर जिन स्तर पर जन भावना की मोहित किया और प्रवल रामधन प्राप्त किया, यदि कालानर में उनकी ध्याया फलवित् हीनी नहीं दियाई दे और य आकडे यदि जनता का मोह भग कर दें और उनकी क्रोधानित भडक जाय तो इसम निम्नका दोष ? चुनांओं के बाद की धर्ष नीतिया और उताके परिणाम यह स्पष्ट घापिन कर रहे हैं कि गरीबी हटाधों का नारा केवल मूग-माया थी। बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया

गया। विन्तु इसमें क्या गरीबों को लाभ हुआ ? गरीबों के सामने तो बड़ी समस्या रही कि बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए जमानत के तोर पर क्या रखें ? बैंकों के राष्ट्रीय-करण के बाद बड़े उद्योगपतियों को ३२३ करोड रुपयों का ऋण दिया गया। जब कि छोटे उद्योगों की केवल लगभग १०२ करोड मिल पाया। प्रहमदावाद की ५३ मिलों का मकल लाभ १८ करोड (१९७१) से २९.८३ (१९७२) वा बढ गया और आज भी ४८ बड़े उद्योग घराने जो ५७ उद्योगों का संवा-सन करते हैं, उनके पास २६३७ करोड रुपयों की पंजी उपलब्ध है। यही नहीं समाजवादी सरकार द्वारा भी लगभग ३६ करोड रुपयों का वास्तविक लाभ विदेशी कम्पनियों को विदेशों में ले जानें की मुक्त छूट देतो है। क्या धाज तक भूमि सुधार सम्बन्धी कानून लागू हा गके ? धाज भी बड़े-बड़े जमीदा जिमने पास सोविय कानून से बहुत अधिक भूमि है, वे सत्तादल के सदस्य हैं। इसलि भूमि सुधार के कानून जीतमूह में पडे हुए हैं। वरोजगारी मूह बाये सडी हुई है (धायक पेज पर जारी)

Swastik SERVES HOME.



Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and industrial use.

Footwear and hoses, gloves, moulded products and oil seals, foam rubber...mattresses, pillows and cushions. Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable.

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.
 Pune-411 003

INDUSTRY

सर्वोदय सम्मेलन की तैयारियाँ जोरों पर

× २२ वें सर्वोदय सम्मेलन की तैयारी में श्रीराम के कार्यकर्ता पूरी तरह जुटे हैं। प्रतिनिधियों के निवास के लिए श्री रामकृष्ण मिशन का स्वीकृत स्थान तय हुआ है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विनोबा का निमंत्रण स्वीकार कर सम्मेलन में जाने का आश्वासन दिया है।

सम्मेलन स्थान कुल्लुसा से १५ मील दूर है। वहाँ के पाल योबन रेल गाड़ियाँ सड़का स्टेशन पर हर फाट्टे मिनट में गिया-रुगा से आती रहती हैं। गिया-रुगा पर उतरने वाले प्रतिनिधि सड़का होकर रहना चाहे, हावड़ा पर उतरने वाले के लिए स्वागत समिति की घोर से वत वा इंतजाम होगा।

इस इलाके में मच्छर है, मच्छरदानी साफ़ साना चाहिए।

शांति सेना को रेलों

× २२ वें सर्वोदय सम्मेलन रहुरा (बानरुता) के धरमर पर ११ मई की सुबह शांति सेना की प्रतिल भारतीय रेली हॉमी, ज़िमे शांति सैनिक, शांति सेरक, ग्राम शांति सैनिक, तरण शांति गनिक और उनके मह-योगी भाग लेंगे।

× नगरगटिन उ० प्र० सर्वोदय मडल का नया पना इस प्रगार है : उ० प्र० सर्वोदय मडल, सतसंग धरमर, शाहजटा पार्क, ताज-गन धरमर-१

परीक्षा में शांति

× सड़का (म० प्र०) प्राचार्यकुल ने छात्रों शिक्षकों, पालकों व प्रशासन में परीक्षा के दौरान शांति बनाये रखने में एक दूतरे की पूरा-पूरा महयोग देने की धरील की। ग्राम स्वरारुज्य समिति ने ६ अप्रैल से १३ तक राष्ट्रीय सपाह मनाया जिसमें जगह-जगह सभाओं प्रादि के माध्यम से ग्राम स्वरारुज्य नगर स्वरारुज्य, स्त्री शांति जागरण, छु.प्राधुत निवारण, शराबबन्दी प्रादि के कार्यक्रम लोपो तक पहुँचाये गये।

× मुजफ्फरनगर के गाँव दूधली में गठिन शांति समिति ने माचं में एक माल पूरा किया। इस धरमर पर एक सभारोह में जिलाधीश योगेन्द्रनाथ ने समिति के कामों की प्रशंसा करते हुए धरने पूरे सहयोग व आरुजागन दिया। सर्वोदय विचारों से प्रभावित हुए एक बनीन जयप्रकाश ने पिछले साल इस समिति की स्थापना की थी। दूधली गाँव पूरा तक सु-दूने वाली ने लिए प्रगिष्ठ था। समिति न धरों से अदानना म चन रह मुक-दमो की गैव मुर्शिबंड कर निपटना शुरू किया है।

× माध्यमयोग पदयात्री गाहनलाल 'भूमिध', ने महाराष्ट्र यात्रा मगण्ड कर भ्रम बनीटन में प्रवेश किया है। १३ माचं की सोहनलाल जी एक टुक की सपेट में जाकर बुरी तरह घायल व बेहाश हो मग थे होखे में धरने के बाद उठान पदयात्रा जारी रखी। पढाव इन्चलकरजी के नागरिकों-जर्क कार्यर बमेटो की घोर ने यात्रा का मगान डोन के लिए उन्हें एक गाईनिल की में की। महाराष्ट्र में उन्होंने ६३३ मील की यात्रा की। प्रतिवाका के ३० श्रावण से १६ उपवासदमी बढाये।

भूदान किसानों को कब्जा मिला

× मध्य प्रदेश भूदान यश बोर्ड श्योपुर बला तहसील में भूदान की भूमि ह्व बनाना व उस पर कब्जा दिखने का काम कर रहा है। माचं से शुरू हुआ यह प्रथियान जून मृत तक चलेगा। इस से पहले बोर्ड ने सर्वोदय पक्ष के दौरान इस तहसील में जगह-जगह भूदान किसान-सम्मेलनों का आयोजन किया था। दूही सम्मेलनों में बेदरती प्रादि की व्यापक घटनाएं सामने आने पर इस प्रथियान को चलाना लय किया गया था। शिवपुरी व मुंरना जिलों की ग्रामस्वरारुज्य समितियों व भूदान बोर्ड के इने-गिने साधियों ने तेज गर्मी

मयुरा में विचार प्रचार

× मयुरा में मुहल्ला सभाओं के जरिये लोगों को समगटिन किया जा रहा है। शिक्षण सस्थाओं को विचार-प्रचार का प्रच्छा केन्द्र बनाने की कोशिश भी जारी है। श्री राधेवल्लभ चुन्नीलाल धरमवाल कन्या विद्यालय की घोर से लो सर्वोदय पाठ बढाये जा रहे हैं।

कानपुर के स्टॉल की प्रगति

× कानपुर गांधी शांति प्रतिष्ठान द्वारा संचालित 'सर्वोदय साहित्य स्टॉल' ने ३१ माचं की तीसरे वर्ष में प्रवेश किया। पिछले वर्ष लगभग ३३ हजार रूपये का साहित्य बंका गया। प्रहलाद राय मुरारीलाल की प्राथिन मदद से बनाये गये इस स्टॉल का कामचालन शांति प्रतिष्ठान की एक विशेष समिति करती है।

रामकृष्णानु का सम्पर्क

× बनिया जिन के नगर प्रखण्ड में पिछले एक साल से रामकृष्णानु सधन काम कर रहे हैं। इस दौरान ६५ गावों, व २८ शिक्षण सस्थाओं से सम्पर्क किया गया। तीन प्रगुड स्तरीय पर्यात्राएँ हुईं। ३ ग्राम मगण्ड बनी जिनने धरने गाँव में भूमिहीनता मिटायी, गाँव विकास योजना तैयार की।

की एक तरफ रखकर केवल अधीन की गर-माहट पहचान कर भ्रम तक १०२८ किसानों को कब्जा दिलाया है।

× जाते प्रखण्ड (दरभंगा) के बमतौल शांति केन्द्र पर २१ अप्रैल को भूदान-किसान सम्मेलन हुआ। इगमे भूदान विमान सध का गटन हुआ। यह सध प्रखण्ड में बेदरती की घटनाओं पर नजर-रखने के अलावा ग्रन्थ विचार माचं की भी बढायेगा। वशिष्ठ नारायण पाण्डेय व मदन ठाडुर क्रमशः सध के अध्यक्ष व मंत्री चुने गये।

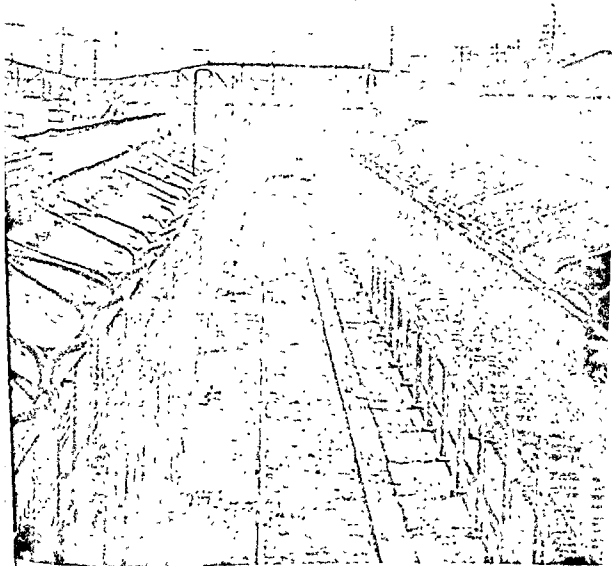
यापिक मुक्त—१५० बिदेश ३००० या ३५ मिलियन या ५ डालर, एक मकं का मूल्य ३० पैसे। प्रभाष ओषी द्वारा सर्व सेवा सध के लिए प्रकाशित एवं ०० जे० प्रिंटिंग, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

भूदान थर

सर्वालय



सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुल पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २० मई, '७४



हड़ताल टूटेगी और विश्वास भी

'भूदान' का पिछला अंक आपको नहीं मिला तो इसका कारण था रेल हड़ताल और यह अंक देर-भदेर ही सही मिल जायेगा क्योंकि हड़ताल टूट रही है। लेकिन असा कि जयप्रकाश नारायण ने अपने तार में प्रधानमंत्री से कहा है—'यह संभव है कि सरकार अपनी सारी शक्ति के बल पर हड़ताल तुड़वाने में सफल हो जाये। पर इतिहास बताता है कि इससे बटुला और क्रोध की एक ऐसी लकीर निश्चित ही बनी रह जायेगी जो देश की सबसे महत्वपूर्ण जन-मुक्ति के बतले रहने पर भस्म आसगी'। हड़ताल की सारी के आठ दिन पहले ही जिस तरह सरकार ने प्रतिक्रिया देना चाहिये वह की, जिस तेजी और दुर्भावना के साथ इतनी बड़ी संख्या में रेल कर्मचारियों के नेताओं और कर्मचारियों को गिरफ्तार किया और बदले की जिस भावना

के साथ रेलवे कालोनियों में दमन किया गया उससे पराजित और चोट खाये हुए कर्मचारियों का हार्दिक सहयोग सरकार प्राप्त नहीं कर सकेगी। हड़ताल से देश की प्रत्येक व्यवस्था की जबरदस्त हानि और जनता को परेशानी हुई है और यह बहुत बुरा हुआ है। लेकिन जिस तरह सरकार ने चर्चा के दरवाजे बन्द कर के बल प्रयोग किया है और संघर्ष समिति के नेताओं को अपमानित किया है उससे देश के औद्योगिक क्षेत्र में शान्ति और सद्भावना का वातावरण नहीं बनेगा।

हड़ताल खत्म होनी चाहिए की लेकिन इस वातावरण का बनना भी जरूरी था। संघर्ष समिति के नेताओं और हड़ताल की घमकी के सामने सरकार का सतत खड़े रहना जरूरी था लेकिन इस सल्टी का उपयोग अतत: चर्चा की टेबल पर समझौते में

होना चाहिए था। सरकार ने, अब किसी सम्मानजनक समझौते का भवसर नहीं छोड़ा है। यह सही है कि रेल कर्मचारियों की मांगों को पूरी करना सर्वमान्य आर्थिक स्थिति में घातक सिद्ध होगा लेकिन सरकारी कारखानों के साथ बतन में समानता और बोनस की मांगों को ही वैराजिब नहीं थी। आखिर सरकार ने खुद घाटे में चलते कारखानों में बोनस देना अनिवार्य किया है और अन्य बतन की समानताएँ भी लागू की है। यह बात अलग है कि अब भ्रष्ट रह रेल कर्मचारियों की मांग भी पूरी करती तो प्रत्येक व्यवस्था चरमरा कर बैठ जाती। प्रत्येक व्यवस्था को ठीक करने का सबसे उपयुक्त तरीका यही हो सकता था कि हड़ताल नहीं होती और उत्पादन बढ़ाने में रेल कर्मचारियों का सहयोग मिलता। लेकिन दुर्भाग्य से सरकार और कर्मचारियों ने एक दूसरे की तत्कालीन की समझ कर समझौते का रास्ता अपनाते में बजाय निरर्थक संघर्ष किया।

अब विरोधी नेताओं के ध्राष्ट्र पर राष्ट्रपति इस स्थिति को संहालने की पहल कर रहे हैं तो आशा की जानी चाहिए कि भौतिक और मानसिक स्तर पर देश की प्रत्येक व्यवस्था को और ज्यादा नुकसान नहीं होगा।

(रेल व्यवस्था पर एक विशेष लेख पत्र नौ पर देखिये।)

सीटों से चिपके हुए लोग

बिहार का जन धान्योलन जे० पी० के कार्यक्रम के अनुसार चोपे सप्ताह में है। पिछले सप्ताह मंत्रीमण्डल के व्यापार और विधान-सभा मंग किये जाने की मांग पर जोर दिया गया। जनसभ के ग्यारह, संयुक्त समाजवादी पार्टी के छः और एक निर्दलीय विधायक ने विधानसभा से इस्तीफा दे दिया। इस्तीफे स्वीकार कर लिये गये। जो पद रिक्त हुए उनके लिए जुलाई में नये चुनाव करवाने की प्रचिष्ट घोषणा भी गई। विधानसभा को भंग करने की लोकप्रिय मांग के इस सरकारी उत्तर ने हालत में भीर बिगाड़ दी है। नैसे विरोधी दलों में भी विधानसभा में इस्तीफा देने की मांग पर भवेद हो गये हैं। कुछ स्थानों पर जोर जबरदस्ती की घटनाएँ भी प्रकाश में आयी और जे० पी० की अनुपस्थिति

में भांगोलन का मार्गदर्शन कर रहे प्रचार्य राममूर्ति ने इसे गलत बताया। विधायक जो भी जनता से कट गये वे अब विधानसभा से चिपके रहने के उनके निर्णय में उन्हें अपने भावदेशकर्ताओं से और भी भ्रमण कर दिया है। भांगोलन बिहार के गांव-वाड़ा में फँस गया है। प्रष्टाचार के लिलाफ सदाचार सप्ताह शुरू हो गया है।

बैंगूर से जे० पी० ने बिहार के विधायकों के नाम एक भरील की है। उन्होंने गाँवों में विरोधी विधायकों से कहा कि वे अपने और एक भ्रष्टी, स्वच्छ और सधाम सरकार के हितों में इस्तीफा दे कर मतदाताओं से नया भावदेश प्राप्त करें। यह भरील खासकर

उन विरोधी दलों के विधायकों के लिए भी जिन्होंने विधानसभा को भंग करने की लोकप्रिय मांग का समर्थन किया था। इन विधायकों को जे० पी० ने बतावनी दी कि अगर वे अपनी सीटों से चिपके रहें तो वे न बचल पड़ने दिये गये अपने समर्थन को खोखला सिद्ध करेंगे बल्कि बिहार सरकार द्वारा की गयी सभी गलतियों के हिस्सेदार भी होंगे।

जे० पी० ने कहा कि सरकार ने जो दमन-धक चलाया है और प्रष्टाचार, महंगाई तथा सत्सत्क पार्टी की दलबन्दी को समाप्त करने में जिस बुरी तरह से यह विफल हुई है, उसके सन् '७२ में जनता से विधायकों को निम्न आदेश समान हो गया है। मीरुदा हालत का

जनता के क्रोध से रक्षा के लिए शिरस्त्राण

पहले लोकसभा में झोर फिर राज्यसभा में देवपते-देवपते वह विधेयक पास कर दिया जो जोर-अबदरस्ती झोर, दबाव में इस्तीफा देने के खिलाफ विधायकों झोर स सद सदस्यों की रक्षा करेगा। तीन मई को यह विधेयक विपक्ष के विरोध के बावजूद लोकसभा में रखा गया। यह मूलतः स विधान का पतीसवा स शोधन था। इसके पहले के दल-बदल झोर भूमि सीमा निर्धारण-सम्बन्धी दो स शोधन विधेयक स सद के सामने थे। एक झोर विधेयक झोर पड़ा गया स सद के सामने था जो कौयला छागो के बारे में था। लेकिन दोनों स शोधन विधेयकों झोर झोर विधेयक को पीछे हटा कर जाठ मई को पतीसवें स शोधन विधेयक को ततीसवा बनाकर झोर पतीसवा शोधन के साथ पारित करवा लिया गया। लोकसभा में इसके पक्ष में तीन स सद मंत्र भाये झोर विरोध में सिर्फ एक मंत्र मुजरात के स्वतंत्र उम्मीदवार मालनर का था। बाकी विरोधी बहिर्गमन कर गये थे। छ दिन बाद चौदह मई को राज्य सभा में भी इसे पारित कर दिया। अब यह विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के बाद स विधान में स शोधन कर देगा।

स शोधन यह होगा कि किसी भी विधायक झोर स सद सदस्य द्वारा दिये गये इस्तीफे

की स्वीकृति के पहले स्वीकर झोर झोर जीवन करेगा। जब ये सन्तुष्ट हो जायेंगे कि विधायक झोर स सद सदस्य ने इस्तीफा जोर-अबदरस्ती अथवा दबाव में भा कर नहीं दिया है झोर वृद्ध पूरी तरह स्वीकृति है तभी ये उसे स्वीकार करेंगे। इस संशोधन का उद्देश्य कानून मंत्री गोखले के अनुसार यह है कि जोर-अबदरस्ती से इस्तीफे दिखवाने की घटनाएँ जो पिछले दिनों एक राज्य में हुई हैं उन्हें दुहराने जाने से रोका जाये।

इस संशोधन से विधान सभा, लोकसभा झोर राज्यसभा के झोर झोर सार्वजनिक विवाद झोर न्यायिक समीक्षा के झोर-गमन आ जायेगा—इस एक बात को तो विरोधी सदस्यो झोर झोर ने भी बताया है। लेकिन इस संभावना से परे भी बहुत कुछ है। अन्वय के पद को सार्वजनिक विवाद झोर न्यायिक समीक्षा से दूर रखना एक प्रजातांत्रिक रत्म हो सकता है झोर इसे निभाया भी जाना चाहिए। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि स विधान ने जनता के झोर झोर विश्वास का उल्लंघन करने वाले विधायकों झोर स सद सदस्यों के खिलाफ जनता को नयी श्रधितार दिया है ? स विधान मलतातामो को यह श्रधितार नहीं देता कि उनके विश्वास का उल्लंघन करने वाले प्रतिनिधि को वे

बापस चुना सकें। स सद ने दल-बदल के रोग के खिलाफ भी अब तक कोई दवा नहीं निकाली है। तो स सद क्या स विधान में वही स शोधन करेगी जो उसके झोर विधानसभा के सदस्यों की जनता की खिलाफ रखा का सके ? क्या ऐसा करके स सद सदस्य अपने हितो की रक्षा में स विधान का दुुरुपयोग नहीं कर रहे हैं ? क्या स सद स्वयं एक वर्गगत हित नहीं बन रही है ?

जन-विरोधी झोर प्रजातंत्र की मालता पर श्रद्धा करने वाला यह संशोधन विधेयक जनता की राय झोर पूरी तरह के विना साबुतबोव पारित क्यों किया गया ? क्योंकि मुजरात झोर अब बिहार हमारे राजनीतियों के मानस पर कच्चे बाये से बधी तलवार की तरह लटक रहे हैं। वे चाहे सला में हो, चाहे विरोध में—सब के सब झोर झोर झोर भयभीत हैं। इस सत्तार से रक्षा करने के लिए स सद सदस्यों ने स विधान की मदद से इस संशोधन का शिरस्त्राण बनाया है। उन्हें यह मुशारक हो। लेकिन झोर ये यह याद रख सकें तो उनका बहुत भला होगा कि जनता के क्रोध झोर झोर के सामने कोई भी शिरस्त्राण काम नहीं दे सकता। प्र० जो०

अगले अंक में पढ़िये—

बिहार के वर्तमान

ग्रान्दोलन पर

ताजा रपट ।

पटना, मुंनेर, रांची,

चाईबासा, धनबाद

झोर देवघर में

चल रहे ग्रान्दोलन

का सचित्र विवरण

हल यह है कि विधानसभा भंग की जाये, कुछ समय के लिए राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये झोर नये चुनाव कराये जायें। ये० पी० की राय में अन्ततः वे हीने वाले राष्ट्रपति चुनाव के पहले बिहार में चुनाव करवाना अभयम नहीं है। झोर सुश्रीम कोर्ट की सलाह हो कि एक या अधिक विधानसभाएँ भंग हो तो राष्ट्रपति चुनाव रद्द माना जायेगा तो हमारे राष्ट्रपति गिर तब तक राष्ट्रपति बने रह सकें हैं जब तक आवश्यक कर्ने पूरी न हो जायें। इसके लिए झोर जरूरी हो तो स विधान में संशोधन किया जा सकता है झोर राष्ट्रपति को काल्पनिक की अवधि बढ़ायी जा सकती है।

ये० पी० ने विधायिको झोर गैर राजनीतिक प्रजातांत्रिक सगठनों से कहा कि नये चुनाव जब भी हों इसकी शारटी की जानी चाहिए कि मूढ झोर निष्पक्ष हों। मलतातामो की शिरस्रण किया जाये।

इस बीच सत्रीमन्त्र के इस्तीफे विधानसभा भंग करने के लिए बिहार से एक करोड़ हस्ताक्षर करवाने का अभियान चलाया गया है। इन हस्ताक्षरों को लेकर ३० मई तक एक लाख लोग पटना भायेंगे झोर राज्यपाल को देंगे।

(बिहार के जन ग्रान्दोलन पर एक लेख पढ़िये पृष्ठ १५ पर झोर अगले सलाह एक विशेष परिशिष्ट)

विहार में सर्वोदय जिन्दाबाद हो रहा है

राममूर्ति जी ने बताया कि बाबा की सीसरी चिन्ता यह थी कि इस समय केन्द्रीय सरकार को किसी दिक्कत में न डाला जाये। बाबा इस समय भारत के लिए खतरा देखते हैं। उनकी यह भी भावना है कि इन्दिराजी के नेतृत्व में भारत, पाकिस्तान और बांगला देश नजदीक आ रहे हैं। इस समय ऐसा कोई भी काम न किया जाये जिससे उपमहाद्वीप में पनप रही जोड़ की प्रवृत्तियों के काम में बाधा पड़े। राज्यों में सरकारी के खिलाफ आन्दोलन हो रहे हैं, मुख्य मंत्रियों को हटाये जाने और विधान सभा को भंग किये जाने की मांग होती है। यह आन्दोलन वहीं केन्द्र में न पहुँच जाये।

बाबा से पूछा गया कि सरकार की तरफ से इतनी अंतर्निहित होली है तो हम क्या करें? बाबा ने कहा, कि स्थानीय परिस्थितियों में अस्थायी और बुगालन के प्रतिहार की छुट्टी पूरी है। बाबूराव बोवटकर वही बैठे थे। उनकी और इशारा कर के बाबा ने कहा—राज्य स्तर पर नाइक (मुख्यमंत्री) को हटाने में लगेये तो मैं कहूँगा बरो पर दिल्ली के खिलाफ नहीं। फिर बाबा ने भारत और एशिया की स्थिति पर अपने विचार बताये। यह भी कहा कि भारत में पृथक्तावादी आन्दोलन भी सर उठा सकते हैं।

बाबा से दो प्रश्न भी सुनावात का सार बताया हुए राममूर्तिजी ने कहा—तब भुवनेश्वर में इन्दिरा जी का भाषण सुन चुका था। हमने महसूस किया कि विलोका को भाइय ले कर इन्दिराजी हमको पीठ रही हैं। जब जे. पी. पिट रहे हैं तो हमारी क्या वक्त? हमने बाबा से पूछा कि क्या यह सब आपको ठीक लगता है। बाबा ने कहा कि इन्दिराजी जब उनमें मिसने आयी थी तो उन्होंने शिकायत भी की कि हमारे कुछ लोग राजनीति में दखल दे रहे हैं। इस जिज्ञास पर बाबा ने कुछ प्रकट किया। हमें लगा कि बाबा को दुख है, इन्दिरा जी को इसका सूत्र वही से मिला। हमने बाबा से कहा कि जब

इन्दिराजी ने आपसे शिकायत की तो आप सर्व सेवा संघ से पूछते। उससे कहते कि इसकी धानबीन करो। अगर आपको ऐसा लगता है कि हमारे कुछ साथी राजनीति में दखल देते हैं तो आप सर्व सेवा संघ की ओर उन्हें कह सकते हैं। फिर बाबा ने दम्पशाक्ति और हिंसा का भेद बताया। इन्दिराजी से हुई अपनी चर्चा का भी सफाई दिया। दोपहर को फिर बातचीत हुई। गुजरात और विहार की घटनाओं के बारे में बाबा के मन में सकोच है। उनका मानना है कि दोनों जगहों पर विरोध का पक्ष ज्यादा है-विधायक कम है।

रात हम लोगों के लिए बहुत खराब राती। या तो हम बाबा की बातों को समझ नहीं पा रहे हैं या हमारे ओर उनकी बीच अन्तर बढ़ गया है। बहुत विचलता रही। हम लोगों ने तय किया कि तीन घण्टे को बातें साफ-साफ कर लेना चाहिए। बाबा से कहना चाहिए कि हम लोग चिन्तित भी हैं और दुःख भी हैं। तीन घण्टे को बाबा ने समय से पहले ही हमें बुलाया। उन्होंने कहा कि देश में अपने काम के लिए बड़ी अनुसूजता है और हमें विश्वासवृत्ति से काम लेना चाहिए भूमि भी समस्या, लोकशाक्ति का जागरण, शिक्षा में जाति, दलमुक्त लोकतंत्र आदि के लिए हमें अपना पूरा जोर लगाना चाहिए।

हम अपने साथ एक वक्तव्य लिख कर ले गये थे। आपका नाम ले कर इन्दिराजी ने यह सब कहा है प्रायः की तरफ से इसका सन्दर्भ होना चाहिए। बाबा ने कहा कि मैं तो वक्तव्य देना नहीं हूँ। वग साहब देते हैं तो वे दें। वक्तव्य हमने बाबा के सामने रख दिया। उसमें जे. पी. का उल्लेख या बाबा ने एक पंक्ति और जोड़ी-वेनी ग्रहिंसा में विश्वास करते हैं फिर वह वक्तव्य वग साहब ने प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया को दिया। हम लोगों ने बाबा से यह भी कहा कि महादेव के प्रश्नों पर आपकी राय प्रश्न-प्रश्न व्यक्त

लोगों तक पहुँचते हैं। और वे सब अपने अपने ढंग से उसकी व्याख्या करते हैं। आप प्रथम समिति को बुला सकते हैं, राय के अग्रपक्ष-मर्थों को बुला कर बात कर सकते हैं और फिर अपनी राय जाहिर करें तो कम से कम गलत फहमिया नहीं होगी। तो बाबा ने कहा कि वे तो आजकल विचंचिन्तन ही करते हैं और उसी के बारे में बोलेंगे। हमने उनसे दो खिलौने मागे थे, दोनों हमें मिल गये। बाबा ने पूछा कि आप लोगों का सन्तोष हुआ तो वग साहब ने कहा—साडे सोलह आना।

प्रथम समिति और पवनार में हुई चर्चाओं का सार देने के बाद राममूर्ति जी ने अपने मुद्दे रखे। उन्होंने कहा—छ. घण्टे तक मैं यहाँ (पटना) पहुँचा। मेरे मन में यह बात कम नहीं थी कि तहराणे ने हीं नहीं पूरे देश में ही करवट ली है। कुछ अटवाय जरूर है पहले के चरण में लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि देश में नयी दिशा ली है। मैंने जे पी से कहा कि मेरी सेवाएँ आपके पास हैं। जेपी ने कहा कि ऐसी शब्दावली का उपयोग आप तो मन कीजिये। बस लग जायें। सन् '५२ में ऐसे जन आन्दोलन में मैंने भाग लिया था। लेकिन उसके बाद से तो दूसरा काम कर रहा हूँ। क्या अपना हाथ और छुटा हुआ अभ्यास। फिर भी कोशिश कर रहा हूँ मरहणों के बीच काम करने की, उन्हें समझने की। इस आन्दोलन के बारे में मेरी चिन्ता के विन्दु

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आवश्यक सूचना

सर्व सेवा संघ से प्राप्त जानकारी के अनुसार मई के अन्तिम सप्ताह में कलकत्ता के निजट होने वाला २२वाँ सर्वोदय सम्मेलन रेल हटार के कारण फिलहाल स्थगित कर दिया गया है।

क्या विधानसभा भंग की मांग उचित है ?

प्रश्न—भाज की बिहार विधानसभा के सदस्य (एम० एल० ए०) जनता द्वारा चुने गये हैं। वहा पाच वर्ष तक बने रहने का उद्देश्य है। तब फिर इस प्रश्नम्बवी को भंग करने की मांग क्यों की जा रही है? क्या यह मांग जनतन्त्र विरोधी नहीं है ?

उत्तर—नहीं, यह मांग जनतन्त्र विरोधी नहीं है, बल्कि जनतन्त्रिय है। यह ठीक है कि पाच वी लोग एम० एल० ए० हैं, वे सिर्फ दो वर्ष पहले चुने गये हैं। इन लोगों को पुनः ज्ञान का टिकट उनसे क्षेत्र के मतदाताओं ने नहीं दिया था, बल्कि उनकी अपनी पार्टी ने पटना और दिल्ली से दिया था। इसलिए वे एम० एल० ए० जनतन्त्र के प्रतिनिधि नहीं पार्टीतन्त्र के प्रतिनिधि हैं। भारतीय संविधान में पार्टी का उल्लेख नहीं है। इसलिए आहिर है कि वर्तमान संविधान के न्यायिक भी इस देश का शासन चलाने के लिए एम० एल० ए० को किसी राजनैतिक दल का होना जरूरी नहीं है।

ये राजनैतिक दल वाले जनता और संविधान के बीच, जनता और जनतन्त्र के बीच, निरर्थक दस्ता हैं, जो धीरे धीरे दस्ताली का पेशा चलाने रखने के लिए जनतन्त्र का नाम लेकर पार्टीतन्त्र चलाने हैं। इनकी यफादारी इनकी पार्टी के प्रति पहले है, देशहित के प्रति पीछे। वर्तमान विधान सभा को भंग करने की मांग का एक मुख्य कारण यह है।

दूसरा यह है कि सभी दल वालो ने जनता को ऊंचे-ऊंचे भाष्यवाचन दिये, एक से बड़कर एक वादे किये। परन्तु चुने जाकर विधान-सभा में जाने पर जनता की दिने गये भाष्यवाचनों को वे भूल गये। वहा बैठ कर अपनी पार्टी को मजबूत करने का धीरे धीरे धारण कर भरने का काम वे लोग करने लगे। स्व-राज्य के रिपब्लिक सतार्ईस बयों में बिहार की जनता ने भी सभी दलवालो से मंत्री-मन्त्र के नामों को देख लिया है और उन्हें धाराज

लिया है। जनता का वह विवरास हो गया है कि इन पार्टीवालो के द्वारा जनता के हित की बात बताई नहीं सोची जा सकती। भाज भी जब सत्ता बिहार महर्गाई, भ्रष्टाचार, घूस-खोरी, बेकारी और नु-शिक्षा की धारा में घुस-जल रहा है तब ये पार्टीवाले इस धारा पर अपनी अपनी रोटिया सेंकने में लगे हुए हैं। हम चाहते हैं कि इनके एम० एल० ए० की जगह चुनाव-क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा नाम-जद उम्मीदवार, जिनकी लगाम चुनाव-क्षेत्र की मतदाता-प्रतिनिधि-सभा(बोर्डर्स-नाउंसिल) के हाथ में रहे। यह तभी संभव है जब वर्तमान विधान सभा भंग हो।

तीसरा कारण यह है कि वर्तमान कार्यक्षेत्री मन्त्र-मन्त्रल, वह चाहे केदार पाडेयजी का रहा हो चाहे शम्भुल गहूर साहब का रहा हो जनता की समस्याओं को सुलभाने में एकदम अक्षम साबित हुआ। इसलिए इनका यह दावा कि पाच वर्ष तक गृही पर बैठकर इस भ्रष्टाचार की चलाये रखने के ये अधिकारी हैं, बिल्कि निरर्थक ही नहीं जनता के प्रति क्षमाल जनक भी है।

किर बिरोधी दलों के एम० एल० ए० भी सरकार के काम पर जो मुहर लगाते रहते हैं तो सरकार वाले यह दावा करते हैं कि पूरे राज्य का विवसास उसे प्राप्त है, और उसको पाच वर्षों तक बने रहने का हक है। हम नहीं चाहते कि कि बिरोधी दलवालो की मोहर जनता का प्रतिनिधि होने के नाते सरकार के काम पर हो। उन्हे यदि जनता का प्रतिनिधि होने का मोरोसा है तो वे रजय इस्तीफा दे और प्रसेम्बवी भंग करने की मांग करें। परन्तु वे तो मात्र दली बात से सन्तुष्ट हैं कि चुनाव का सर्वे समूचने के लिए एम० एल० ए० बने रहकर, वर्तमान भ्रष्ट तंत्र का साथ देकर, अपने दल को मजबूत बनाये रखें, जनता चाहे वृद्धे में जायें।

हम नहीं चाहते कि हमारा प्रतिनिधि

हमारी स्वीकृति के नाम पर विधान-सभा में बना रहे और वर्तमान तन्त्र चलाता रहे। इसलिए हम चाहते हैं कि धारा की प्रसेम्बवी का हर सदस्य इस्तीफा करे और विधान-भंग हो।

प्रश्न—क्या प्रापलोग राष्ट्रपति-शासन की सार्ईस करते हैं? जिन सरकारी कर्म-चारियों के भ्रष्टाचार और घूसखोरी से हम लोगो में से हुए एक जना हुआ है, राष्ट्रपति-शासन में तो वे ही शासन के सर्वोच्च जायेंगे तब तो उनकी मोठी और भी लाल होगी।

उत्तर—जब हम मात्र वर्तमान मन्त्र-मन्त्रल को ही नहीं, विधान-सभा को भी भंग करने की मांग करते हैं तो आहिर है कि हम जलते हुए तब से बूढ़ कर चूल्हे में गिरने की योजना नहीं बना रहे हैं। धारा भी हम देखते हैं कि मन्त्रियों के हाथ में भ्रष्टाचरो की स्याम नहीं है, बरन भ्रष्टाचरो के हाथ में मन्त्रियों की स्याम है। धारा की जनता को सटने सटने में ये मन्त्री और इनके गुण्डे इन भ्रष्टाचरो का ही सटारा लेते हैं। यदा कदा भ्रष्टाचरो में तो आप पड़ते रहने हैं कि मुख्य फाटने प्रात-मार्शियों से ही मायब हो जाती है, अफसर मन्त्री को पादल देते ही नहीं बर्न रहें।

तो हमारी योजना राष्ट्रपति शासन लाने की नहीं है, बरन गांव-गांव में गांववालो की और गहर-गहर में शहरवालो की शासन व्यवस्था—ग्राम स्वराज्य, प्रसवी स्वराज्य—लाने की है वर्तमान चुनाव पद्धति के रहते प्रासस्वराज्य नहीं भा सत्ता है, यह बात किनोबाजी जयप्रकाश लालि किचलो ने बयों पहले कही थी। उन लोगो के जो कुछ कहा था, वह समाज में कंठे लगा जा सकता है, जनता रास्ता भी वे लोगो से थालते प्रा रहे हैं। परन्तु, सभयान: दो कारणों से लोगो ने उस पर बहुत ध्यान नहीं दिया था। एक तो यह कि उन्होंने घोषणा रखी थी कि उनके लिए कोई दूसरा धारमो कुछ कर देगा। यह सोच

सोच कर वे प्रलसाये रहे। दूसरा यह कि भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलवालों ने उनको समझाया कि वे दलवाले जनता के लिए सब कुछ कर देंगे, लोगों को खुद कुछ करने की जरूरत नहीं। लोग सिर्फ उनके दल द्वारा छड़े किन्हीं गये उम्मीदवारों को विधान-सभा और लोक-सभा के लिए वोट दे दें।

उनके इस बहुकावे में सिर्फ साधारण लोग ही नहीं पड़े, युवक और विद्यार्थी भी पड़ गये। इसलिए ये शक्तिशाली नवजवान विभिन्न राजनैतिक दलों के सदस्य बन गये थे। वे प्रायस में बहुत उकरायें और जनता को भी बहुत बरगलाया।

गिखले सताईस वर्षों के प्रभुत्व से चाहिए तो यह बाकि सबकी धारें एक साथ घुल जायें। पर सोभायस्य से द्वाकों की धारें पहले खुली। उन्होंने समझ लिया है कि ये राजनैतिक दलवाले अपनी अपनी पालकी इनसे दलवाते रहे हैं और रहने 'हीरो' बनकर अपना उच्च शोभा करते रहे हैं। ईसे समझते ही वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने का इन्होंने निश्चय कर लिया।

उपर्योगतन्त्र की भाँड लेकर जो लोग गुंडा-राज्य के वल पर टिके हुए हैं, वे इन छात्रों को गण-राज्य विरोधी लोगों के हाथों में ताचने वाली कठपुतली सावित करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि वे देश का भला-बुरा नहीं समझते। समझते वे सब कुछ हैं। पर जिन लोगों की नकल बाहर वालों के इशारे पर घूमते हैं वे लोग तथा निहितस्वार्थ वाले लोग इन विद्यार्थियों को गलत दिया वे जाने वाले साबित कर रहे हैं।

जनता अपना हित-अहित समझती है। ज्यो-ज्यो सच्ची बातें उसकी समझ में आती जा रही हैं, त्यो-त्यो वर्तमान भ्रष्टम्बती की भग करने की मांग का वह समर्थन कर रही है। इस प्रवृत्तमि में विद्यार्थियों की मांग की प्रतिष्ठा बढ रही है और वर्तमान भ्रष्टाचारी व्यवस्था को बनाये रखने की कोशिश करने वाले बे-नचाव हो रहे हैं।

प्रश्न:—वर्तमान विधान-सभा के भग होने पर नये एम० एल० ए० तो फिर इन्हीं पट्टियों के होगे न ?

उत्तर:—यदि ऐसी ही दुर्भाग्यपूर्ण बात फिर से दुहरायी जाय तो विद्यार्थियों और नवजवानों की साथी शहादत, सारी तपस्या बेकार गयी, ऐसा मानना चाहिए। परन्तु मनुष्य विचारशील प्राणी है। वह अपनी पुरानी भूलों से सीखता है और प्रागे उससे बचने की कोशिश करता है। भारत की जनता ने १९४७ में आजादी प्राप्त करने पर, गाँविल पड़ जौने की ओ भूल की, उससे वह सबक सीख रही है। राजनैतिक दलों पर उसका भरोसा अब यो भी भय टूट चुका है। इसलिए वह अपनी वृद्धि पर अरोसा करेगी।

जनता की बुद्धिमता से नयी असेम्बली का चुनाव और मन्त्रि-मण्डल का गठन मोटे तौर से ऐसा होगा :

प्रत्येक गाँव या टोले में प्रायसभा का गठन और शहर के लगभग प्रत्येक एक डेढ़वी परिवार को लेकर 'पड़ोस-सभा' का गठन होगा। इस प्राय-सभा (पड़ोस-सभा) में सभी बालिग, मतदाता, सदस्य होंगे। यह विर-स्थापी सभा होगी। इसे भग करने का अधि-कार किसी को नहीं होगा। हर मतदाता, जब तक वह बड़ा रहता है, सब तक उस सभा का सदस्य रहेगा। वहा रहने वाले नवजवान (एक नवयुवती) बालिग होते ही इसके सदस्य हो जायेंगे। गाव या शहर के उस मकान में रहने एवं बालिग होने के भलावा प्राय-सभा एवं पड़ोस-सभा की सदस्यता की भय कोई शर्त नहीं होगी। इसका कोई सदस्यता-शुल्क भी नहीं होगा।

यह प्राय-सभा एवं पड़ोस-सभा अपनी आतंरिक व्यवस्था सभालने के लिए अपना मन्त्रि-मण्डल बनायेगी। इस मन्त्रि-मण्डल का गठन सर्व-सम्मति (भयवा सबनुमत) से होगा। गाँव शहर के जीवन में घाने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने की चेष्टा प्राय-सभा एवं पड़ोस-सभा विरतर करती रहेगी। यह! किसी राजनैतिक दल का प्रवेश नहीं होगा क्योंकि उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

गाव एवं शहर के सामने घाने वाले भय प्रदनों की तरह विधान सभा के लिए उम्मीद-वार खडा करने का भी प्रश्न है। पूरे चुनाव क्षेत्र की प्राय-सभाओं एवं पड़ोस-सभाओं से एक-एक या दो-दो (बड़ी जनसंख्या वाले गाँवों

से दो) प्रतिनिधि चुनकर एक जगह इकट्ठे होंगे। यह मतदाता सघ (वोटर्स काउन्सिल) कहलायेगा। मतदातासंघ के लोग विधान-सभा के लिए उम्मीदवार का चुनाव सर्व-सम्मति से करेंगे। सर्व-सम्मति पर पहुँचने के पहले विभिन्न व्यक्तिगत की योग्यता की चर्चा वे आपस में करेंगे। योग्यता का मापदण्ड होगा उम्मीदवार द्वारा उस चुनाव क्षेत्र में की गयी पूर्व-सेवा, जात-पात एवं साम्प्रदायिकता की भावना से मुक्त होकर सोच-समझ सकने की उसकी शक्ति, निर्भयता, स्पष्टवादिता आदि। विट्टी डालकर एकमत तय करने, क्लब्यू-लेटिव वोटिंग पद्धति (जिस तरह राष्ट्रपति का चुनाव होता है) आदि में जित तरह से उनका समाधान हो उस तरह से वे एक उम्मीद-वार का नाम ढय करेंगे। कोई उम्मीदवार स्वयं अपना नाम मतदातासघ के सामने नहीं रहेगा।

सम्भव है कि मतदातासघ की उपेक्षा कर कोई व्यक्ति अपनी ताबियत से चुनाव लड़ने खडा हो जाय, जैसा भाज भी होता है। मत-दाता सघ द्वारा छड़े किये गये उम्मीदवार से अपनी तुलना कर यह भी घाने की निर्दलीय सावित करने की कोशिश कर सकता है। उसी प्रकार विभिन्न राजनैतिक दलवाले धाज ही की तरह जात-पात भयवा सम्प्रदाय की मतदाताओं के भासरे पर अपना-मपना उम्मीद-वार भी खडा कर सकते हैं। उन्हें खडा होने देने में मतदातासघ कोई वाधा नहीं देगा, कारण वोट भागने के लिए उम्मीदवार खडा होने का अधिकार सविधान द्वारा निर्धारित उन्नयवाले हर बालिग नागरिक को है।

मतदाता सघ के लोगों का यह काम होगा कि हर मतदाता को समझावें कि संघ द्वारा छड़े किये गये उम्मीदवार को वे मत क्यों दें। दूसरी को मत नहीं देने के कारण भी वे बतायें। इस तरह हर मतदाता को सभी बातें समझाकर उनके मतदान के द्वारा, जो वे स्वयं बूध पर जानकर देंगे, एम० एल० ए० के चुने जाने तक मतदाता सघ सत्रिय रहेगा। स्व-भरती तो इस बात में रहेगी कि मतदाता संघ द्वारा छड़े किये गये उम्मीदवार के लिए जमानत का खया भी प्राय-सभाओं पड़ोस सभाओं के चन्दे से जमा किया जाये

→
 धीर चुनाव में जीतने के लिए उस उम्मीद-
 धार को धपना एक पैसा भी खर्च करना न
 पड़े।

दूसरी धीर चुनाव के बाद मतदातासभ
 भंग नहीं होगा। चुनाव-क्षेत्र में उसका एक
 कार्यालय होगा। हर तीन महीने पर एक
 बार उसकी बैठक होगी जिसमें एम० एल०
 ए० भी उपस्थित रहेंगे। चुनाव-क्षेत्र
 की समस्याओं पर सभ की समझौते में व्योरे-
 वार बर्चा होगी धीर उसमें यह भी उद्य किना
 आयेगा कि राज्य सरकार की उस क्षेत्र के
 लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना
 चाहिए, सभ अपनी राय निर्धारित कर एम०
 एल० ए० को बता देगा। एम० एल० ए०
 मतदाता सभ और सरकार के बीच कड़ी का
 काम करेगा। पाँच वर्ष की अवधि में जिस
 निर्वाचन क्षेत्र का मतदाता सभ अपने एम०
 एल० ए० को जिस समय अपना विश्वास

खता हुआ था, उस समय उसे वापस
 बुलाने के लिए मतदाताओं को तैयार करेगा
 सभ के सविधान में वापस बुलाने—किसे
 की व्यवस्था यद्यपि नहीं है तथापि देश-व्यापी
 जनता को जब यह बात पसन्द आ जायेगी तब
 सविधान में इस पद्धति को दायित्व करना
 कठिन नहीं होगा।

मतराया सभ निर्वाचन क्षेत्र की कायमी
 रक्था होगी। ग्राम-सभा पटोस-सभा को
 अधिकार होगा कि जब वह चाहे मतदाता
 सभ में बैठने वाले अपने प्रतिनिधि को बदल
 दे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ग्राम-
 सभा पटोस-सभा अपना निर्णय सर्व-सम्मति
 अथवा सवोन्मति से करेगी।

इस तरह प्राज के सविधान में भी मजतन
 की अधिक व्यापक धीर सहयोगी (पार्टिसि-
 पेटिंग) बनाया जा सकता है। प्राज दलवाले
 गण-क्षेत्र को धाड़ में गुं-डा-सन्न चलाने की
 हिम्मत किया करते हैं। मतदाता सभ गुण-

तंत्र विकसित करेगा।
 विधान सभा में कोई विरोधी दल नहीं
 होगा। परिश-मण्डल का का गठन पूरे विधान
 सभा के सदस्यों के बीच से होगा। हर समस्या
 पर हर सदस्य की सरकार के पक्ष-विपक्ष में
 अपने विवेक के आधार पर मत देने की छूट
 रहेगी।

प्राज के दलतन्त्र के ह्यिप (सचेतक) का
 स्थान सदस्यों का विवेक लेगा।

इत नयी पद्धति में लोकतन्त्र अधिक सुदृढ़
 होगा स्वराज्य का आधार व्यापक होगा।
 राज धीर गहर के लोग 'ग्राम-स्वराज्य' लोक
 राज्य बनाने में हिस्सा लेंगे। इत तरह
 शासन चलाने का प्रविष्टण व्यवसाय होगा।
 इस व्यवस्था में 'लोक-वत्याण' के नाम से
 सादे गये अफसरों का समूह धीर तन्त्र काफ़ी
 कम होगा, पर लोक का कत्याण काफ़ी
 अधिक होगा।

प्रस्तुतकर्ता : हेमनाथसिंह

(पृष्ठ ४ का सारा)

है—वाचा ने बहा या-भाजनक अधिक
 धान्योलन का मेरी धीर से निवृत्त है। लेकिन
 तर्हणों धीर समाज के क्षेत्र का निष्पादन तो
 बिहार का मजोमण्डल धीर विधानसभा
 बन गयी है। अब बिहार में कुछ होता है
 तो दिल्ली तो उसमें दखलवाह होती ही है
 उस पर धसर पडता ही है। वे शकए मैने
 जे.पी के सामने रखी जे.पी. ने कहा-लोकप्रिय
 धान्योलन की लोकप्रिय मार्ग होनी हैं। मैने ही
 नारे बने हैं। इस लोकप्रिय को ह्यम इसलिए
 जो नरअन्वयन नहीं कर सकते कि इसकी लोक-
 प्रिय भाँति सरकार इस लोकप्रिय को कुचलने
 के लिए क्या नहीं कर रही है। विरोध प्रकट
 करने का प्रभावशालि नागरिक अधिकार तक
 तो दिया हुआ है। ह्यम क्या करें? क्या सर-
 कार को माफ़ कर दें? धासिर तय किया
 कि मीन जुलूस निकाला जाये। अब यह मीन
 जुलूस किस दिशा यह सब ध्राप जालते ही
 हैं। रण जैने प्रकट लेखन के विरुद्ध कह
 धर-धुन का। पूरे शहर पर छा गया था।
 गिहार का धातावरण बदलने में उस मीन
 गान जुलूस का स्थान कम नहीं है। दूसरे
 दिन सभा हुई इनकी बडी। उसमें बोलने वाले
 पच्छों की भाषा अथा दोषी थी। उन्होंने
 कहा कि यह धान्योलन राजनीतिक पसो था

नहीं है और वे भाग लेते हैं तो इसमें बराब
 पड़ती है।

इस सभा के पाँच दिन बाद चार विरोधी
 दलों की सम्मिलित सभा हुई। उनकी शिका-
 यत थी कि तर्हणों ने सत्ता-सुध पार्टी के साथ
 हमें बजो पसोटा? हम तो अपने को इनका
 रिश्तेदार मानते थे, इन्होंने हमें अपना पडोसी
 भी नहीं माना। धान्योलन को दलों से धलग
 रखने के अपने धाग्रह की भी उन्हें शिकायत
 थी। उन्होंने कहा कि हम तो छोटे लोग हैं,
 पार्टी के हैं। पार्टीयाँ छोड़ देंगे तो बहा जायेंगे,
 विरोधी दलों ने १८-१९ मार्च को हुई हिंसा
 को भी माफ़ करने की कोशिश की। कुछ
 इस तरह का उनका भाव था कि ऐसे धान्यो-
 लनों में यह सब तो होता ही है। सर्वोप
 माने होइ इस धान्योलन की कमजोर करिगे।
 इस सभा के बाद विद्यापियों के कुछ दलों में
 भी धासिदक तरीको पर पुनर्विचार होने लगा
 उनका प्रश्न था कि जब स्थिति ऐसी हो धीर
 मरकरा उन्न तरह पित पडो हो तो धरम
 क्या जरूरी है? क्या धान्योलन को पटना
 तक ही सीमित रखना है? फिर विद्यापियों
 के जे. पी. से बातचीत हुई धीर उन्होंने बचन
 दिया कि वे दलमुक्त रहेंगे। तब तक कोई
 ठोस कार्यवाही का कार्यक्रम सामने नहीं होगा
 विद्यापियों में विश्वास आयेगा। (बाद में

विद्यापियों ने विरोधी दलों से हल निषेध
 सहयोग भी मागा धीर जे. पी. ने एक कार्यक्रम
 भी उन्हें दिया)।

तो बिहार में सहज लोकसूक्ति प्रकट
 हुई है। यह विरोध की धावाज है। धीर इस
 धावाज धीर लोकसूक्ति के प्रतीक हैं जे. पी।
 यह प्रतीक धान्योलन की विधा दे रहा है।
 सयमित भी रस रहा है धीर सही मानो में इसे
 लोक धान्योलन बना रहा है, फिर भी
 मुश्कल यह विरोध की ही धावाज है।
 अथर यह धावाज क्रांति की दिशा
 नहीं पकडेगी तो इसमें से सिर्फ सुधार ही
 निकलेगा। किहा में क्रांति की बात विद्यार्थी
 करते हैं लेकिन उनके पास कोई विश्वास नहीं
 है। सर्वोप के पास विकल्प हैं तो हमें देना
 चाहिए। प्राज बिहार में सर्वोप जिन्दाबाद
 हो रहा है। मुझे लडकों का धासन तुडवाने
 के लिए से याता गया। अब वे लडके और
 बहा उपस्थित तीन-सो चार सौ लोग मुझे
 जानते नहीं थे उनन्होंने मेरा नाम सुना था।
 जब मेरे हाथ में उखर, दो ती, कर धन
 जनकारियों ने धनधान तोडा तो जय बोलने में
 उन्हे बडी दिक्कत हुई धीर उन्हे कुछ नहीं
 सूझा तो उन्हीं ने नारा लगाया—सर्वोप
 जिन्दाबाद! तो बिहार में सर्वोप जिन्दाबाद
 हो रहा है। लेकिन चिन्ता के भी कई मुद्दे
 हैं। चिन्ता की जरूरत है।

—प्रभाष जोशी

उड़ीसा की मुख्यमन्त्री श्रीमती नन्दिनी सतपथी गये माह विनोबा से मिलने पवनार प्रायी। वाबा से बातें करने के बाद नौ अप्रैल को उन्होंने कहा कि सर्वोदय के सिद्धांतों पर प्रमत्त करने के लिए उड़ीसा एक उपयुक्त प्रयोगशाला हो सकती है। श्रीमती सतपथी की यह घोषणा हमारे प्रजातांत्रिक संविधान के भावी कार्यरूप के बारे में कई बुनियादी सवाल खड़े करती है।

प्राठ अप्रैल को मुख्यमन्त्री वाबा से मिली थीं तब प्रदेश कांग्रेस के मन्त्री श्रीर उड़ीसा के भूमिसुधार बाबुल दास भी उनके साथ थे। बर्बा का मुख्य विषय उड़ीसा में भूमि-वितरण का वर्तमान कार्यक्रम था। पुरी, कटक, श्रीर बलसोर जैसे तटवर्ती और उनके जैसे कुछ जिलों को छोड़कर उड़ीसा के अधिकांश जिले जंगलों से ढके हैं और उनमें ऐसी बहुत सी सरकारी जमीन है जो फाजिल पड़ी हुई है और भूमिहीन और छोटे किसानों को ही जा सकती है। उड़ीसा की सरकार ने हड़बन्दी लागू की है जिससे लगभग एक लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन वाटने के लिए निकल सकती है।

लेकिन उड़ीसा सरकार का प्रमुख है कि जमीन के वितरण का काम करने वाली मशिनरी इस काम को करने की क्षमता नहीं रखती। इससे भूमि के वितरण में प्रसार घट्ट तरीके अपनाये जाते हैं और भूमि उन्हीं लोगों को मिलती है जिनके पास पहले से काफी जमीन है। हालांकि पिछले वर्षों में हालत काफी हद तक सुधरी है फिर भी यह जरूरी है कि भूमि वितरण के कार्य में सामाजिक कार्यकर्ताओं की मदद ली जाये और हरिजन, धार्मिकसो तथा पिछनी जाति के लोगों को ये बतून समझ कर उन्हें इनका नाम दिलाया जाये। ये कार्यकर्ता सरकारी मशिनरी के सुधारक का काम कर सकते हैं।

इसलिए तय किया गया कि उड़ीसा में भूमि वितरण की पुरी जिम्मेदारी सर्व सेवा सच को दी जाये। सरकारी मशिनरी इसमें संभव की मदद करे। इस निर्णय पर प्रमत्त भी किया जाना है। सर्व सेवा सच को भूमि और प्रामदान में मिली जमीन के वितरण का प्रवर्धन खासा प्रमुख है। भूमि वितरण की जरूरत समझने और भूमि के मामले

क्या उड़ीसा सर्वोदय की प्रयोगशाला बन सकता है ?

। नन्दिनी सतपथी के प्रस्ताव पर रा. कृ. पाटील ॥

में न्याय करवाने की शुरुआत ही दर प्रसन्न सर्व सेवा संच ने की है और सरकार की भूमिसुधार नीति को उसने प्रभावित और प्रेरित किया है।

लेकिन सर्वोदय के कार्यक्रम को प्रमत्त में लाने के लिए उड़ीसा को प्रयोगशाला बनाना निश्चित ही एक बहुत व्यापक और महत्वाकांक्षी तथ्य है और सवाल यही से पैदा होते हैं।

उड़ीसा की मुख्यमन्त्री की राय में सर्वोदय कार्यक्रम क्या है जिस पर तत्काल प्रमत्त किया जा सकता है ? और क्या सर्वोदय के पूरे कार्यक्रम को लोगों की वह प्राम सम्मति मिलती है जो उसके भूमि वितरण के कार्यक्रम को प्राप्त है ?

जब तक इन सवालों का सन्तोषदायी उत्तर नहीं मिलता तब तक उड़ीसा को सर्वोदय की प्रयोगशाला बनाने का श्रीमती सतपथी का इरादा कोरा सपना ही रहेगा। यो तो दरप्रसन्न से बर्बा की पाव है कि उन्होंने खुले प्राम सरकारी मशिनरी की प्रामयता को स्वीकार किया और यह जरूरत महसूस की कि उसकी सहायता के लिए समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं को एक स्वतंत्र संस्था होनी चाहिए। अगर दूसरी राज्य सरकारों भी इसी तरह खुले दिल से विचार और निर्णय करे तो विधानसभाओं और सरकारों के इन इरादों को पूरा करने की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम उठ सकता है कि भूमि उन्हीं लोगों को मिले जो भूमिहीन और सचमुच जरूरत मन्द हैं।

महाराष्ट्र की सरकार, भण्डारा जिले के तेरह चुनिन्दा गावों में भूमि वितरण का सर्वोदय करने के बाद इस निर्णय पर पट्टी भी है कि सभी गावों में भूमि वितरण के बानूनों का पूरा तरह जनचेतन हुआ है। जिन्हें जमीन मिलनी चाहिए की उन्हें तो नहीं मिली और ऐसे लोगों को मिन गई जो पहले से भूमिवा

ये और इसलिए कानून की राय में जमीन पाने के हक्दार नहीं थे। इन सभी तेरह गावों में यह प्रभव है कि पहले के प्रादेश रद्द कर दिये जायें। छ. या सात गावों में तो रद्द कर ही दिये गये हैं और बाकी पा फंसला होना है। लेकिन हमारे वर्तमान प्रशासन की हालत और कानून के राज की यह बड़ी दयनीय दशा है कि भण्डारा के जिलाधीन भूमि के पुनर्वितरण के प्रादेश नहीं दे सकते क्यों कि इससे निधि और व्यवस्था की समस्याएँ खड़ी हो जायेंगी।

लेकिन वहाँ की इतनी ही नहीं है। महाराष्ट्र सरकार के सचिवालय द्वारा बनाये गये नियमों में परिवर्तन भी जरूरत है। उदाहरण के लिए प्रमि देने के मामले में वे उन भूमिहीन को प्राथमिकता देने हैं जो गाव से प्राठ विलोमीटर दूर के गाव जा रहने वाला हो। उसी गाव के भूमिहीन का नम्बर बाद में लगता है। यह मुद्दा सरकार को बत दिया गया है। लेकिन ऐसी साफ बात भी अभी तक सरकार ने स्वीकार नहीं की है।

इन बातों को छोड़ दें तो भी सवाल उठता है कि सर्वोदय कार्यक्रम क्या है जिसे उड़ीसा की मुख्यमन्त्री अपनाता चाहती है ?

सर्वोदय कार्यक्रम का सार तथ्य है कि लोगों को स्वय अपना राय बनाने के लिए तैयार किया जाये। कल्याणकारी राज्य के बहाने मर्जि मण्डन के कुछ चुनिन्दा लोगों द्वारा उन पर राज किये जाने से यह विवक्षुण प्रलय है। यह व्यवस्था प्रा टूटती दिख रही है। मुद्रजन में ऐसा हो चुका है और बिहार में हीना दिनाई दे रहा है। उत्तरप्रदेश की नयी विधानसभा के पहले दिन विरोधी दलों ने जो व्यवहार किया वह भी इसी दिशा में संकेत है।

केन्द्रीय पार्टी ध्यन्स्था, राष्ट्रीय चुनाव विधानसभा के भीतर और बाहर निर्वाचक (मैप पृष्ठ १८ पर)

भारत विदेशी रेलों से मुकाबला किया जाये तो भारत की स्थिति सराहनीय हो मानी जायेगी प्राकड़े इस प्रकार हैं:—

क्रम	रेलवे का नाम	वर्ष	व्यवस्था पर कुल व्यय का प्रतिशत
१	ब्रिटिश रेलवे	१९६८	६२.००
२	कनेडियन पेंसिल्वेनिया रेलवे	१९६९	६०.००
३	कनेडियन नेशनल रेलवे	१९६९	६३.८
४	फोर्ब्स नेशनल रेलवे	१९६९	६६.०
५	जर्मन फेडरल रेलवे	१९६९	७०.३
६	स्टेलियन स्टेट रेलवे	१९६९	६५.६
७	जापानी राष्ट्रीय रेलवे	१९६९-७०	४९.७
८	समरीकी प्रथम वर्ग रेल-रोड	१९६९	५७.५
९	भारतीय रेलवे	१९६९-७०	५४.७

दूसरी ओर, प्रति कर्मचारी यातायात में भी वृद्धि हुई है :

क्रम	वर्ष	यातायात मूनिट (हजार में)
१	१९६५-६६	१६५
२	१९६६-६७	१६७
३	१९६७-६८	१७२
४	१९६८-६९	१७८
५	१९६९-७०	१८५
६	१९७०-७१	१८६
७	१९७१-७२	१८३

इस उन्नति के लिए हमारे रेलवे कर्मचारी अभिनन्दन के पात्र हैं। जाड़ा, गर्मी बरसात, हर मौसम में, सुले में उठे जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, वह कौन नहीं जानता ? उनका साहस से खड़े रहना और निष्ठापूर्वक काम करना उनकी ईमानदारी, सागन व देश भक्ति का सबूत है। इसके लिए रेलवे बोर्ड को कितना श्रेय दिया जाये हम नहीं कह सकते। क्योंकि, देखा यह जाता है कि कहीं कोई गड़बड़, मास की घोरि या नुकसान या जन-हानि हो, तो रेलवे के ऊंचे अधिकारियों पर धाँच नहीं घाली और सारा

रेलवे बोर्ड अकुशलता का शिकार

खामयाजा भुगतना पड़ता है नीचे के कर्मचारियों को। जनकार लोगों का कहना है कि अगर किसी क्षण भारत की सभी रेलें एक साथ एक जायें या दुर्घटना-ग्रस्त हो जायें तब भी रेलवे बोर्ड के किसी सदस्य या अधिकारी पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती। ऐसा परिस्थिति-निरपेक्ष है यह बोर्ड।

रेलवे बोर्ड की प्रशासकानी—हाल ही में समद की जन लेखा समिति ने बोर्ड के कई कार्यों की बहुत तीव्र प्रालोचना की है और कहा है कि वह सावधानी से अपने दायित्व का पालन नहीं कर रहा है। अपनी १०९ वीं रिपोर्ट में (जो लोकसभा में ११ अप्रैल को पेश की गई) समिति ने कहा कि प्रामदनी बढाने के साधनों में समिति के पिछले प्रस्तावों की जो प्रवेष्टनता बोर्ड ने की है, उससे पता चलता है कि वह 'निपट अकुशलता और लापरवाही' का शिकार हो गया है। समिति ने विशेष तौर से 'कन्टेनर सर्विस' के मामले में बोर्ड की प्रशासकानी का दु लपूवक उल्लेख किया है।

रेलवे को चलाने के रोजाना खर्च पर भी समिति ने अपनी १०९ वीं रिपोर्ट में बोर्ड के कार्य पर सैद प्रकट किया है। समिति का कहना है कि इस खर्च के दो हिस्से करने चाहिए—अस्थायी और स्थायी, और दोनों का प्रलग-प्रलग ब्योरा बना कर यह देखा पाहिए कि किस-किस मद में बचत की जा सकती है। पारसात समिति के कहने पर भी बोर्ड ने १९७३-७४ में इस प्रकार का ब्योरा नहीं तैयार किया।

कोयले के सम्बन्ध में २५ अप्रैल को पेश की गयी अपनी रिपोर्ट में समिति ने इस बात की सिखावत की है कि ससपेन्सखाते में मास पड़े सापता कोयले की कीमत रु० २६.५७ करोड़ है और जमापड़े अस्तम्बन्धित कोयले का दाम रु० २६.०७ करोड़ है। विशेष बिता की बात यह है कि सापता कोयले का कुल कोयले के प्रति अनुपात जहाँ १९६५-६६ में ५.२ था, वह १९६६-६७ में ७.७ हो गया और १९७०-७१ में ८.८ पर पहुँच गया, यानी

बारहवाँ हिस्सा कोयला गायब होने लग गया।

भारत के महानिेखाकार, कम्प्यूटर और प्राडीटर-जनरल ने भी १९७२-७३ की अपनी रिपोर्ट में रेलवे बोर्ड के कारनामों पर अपनी दु ख जाहिर किया है। यह रिपोर्ट १५ मार्च १९७४ की ही लोकसभा में पेश की गयी। उसमें कहा गया है कि रेलवे बोर्ड विदेशों से जो राजीनामे करता है वे अस्तोपजनक और हानिप्रद साबित हुए हैं और इन्जिन तथा स्लीपर बनाने के जो डिजाइन हैं वे भी गलत पाये गये हैं। स्पष्ट उल्लेख किया है कभी के पास महुयाग्रोह में डीजल बारखाने का और बिहार—बंगाल की सीमा पर चित्तजन बनखाने का। १९६३-६४ से १९७१-७२ तक डीजल बारखाने में ६५१ बर्षी साइन के इन्जिन बनने चाहिए थे, मगर बने धाधे से भी कम, केवल ५२७ और प्रस्ती बने छोटी साइन वाले। इसी प्रकार से एक विदेशी कम्पनी की मद में चित्तजन में १९६२ में बिजली के इन्जिन बनना शुरू हुए। दिसम्बर १९६३ से दितम्बर १९६७ के बीच ८२ इन्जिन वहाँ बने, लेकिन उनको काम में लाते ही दोष पूर्ण पाया गया जिसके कारण उन्हें लोटाना पड़ा और नवम्बर १९६२ तक उनकी मरम्मत में रु० १.५५ करोड़ से ज्यादा खर्च बैठा था, जो उनकी मूल लागत का दस प्रतिशत है।

हमें नहीं मालूम कि इन दोषों और प्रशासकानियों के लिये बोर्ड का कौन सदस्य किस हद तक जिम्मेदार है, लेकिन इनका जो स्पष्ट है कि बोर्ड अपने दायित्व को धुल्लुल्लु कर एहनियात के साथ नहीं निभा रहा है। यह जानता है कि उगवा कुद भी बिगाड़ कोई नहीं कर सकता।

रेलवे का दुःख धार्मिक स्थिति, बोर्ड की जब यह धर्तिविधि होगी तो रेलवे संघालन में सगानार घाटा होना स्वभाविक है। गण २६ फरवरी को समद में रेलवे मंत्री, सतिद यातायात मिश्र ने जो बजट पेश किया, उसमें अपनी लाचारी बढूत की। उन्हीने यानी-

क्रियामें धीरे माल-दुर्लभ-भाडे में वृद्धि की घोषणा की थी। कहा कि इस तरह से रु० १३६.३८ करोड़ की बेसी धामदानी होगी, लेकिन जिस पर भी लगभग ५३ करोड़ रुपये का घाटा रहेगा। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि रेलवे की प्राथमिक स्थिति बहुत दुःखद दौर से गुजर रही है, धामदानी कम होती जा रही है और खर्चें बढ़ रहे हैं।

यह स्वभाविक है। इसके दो कारण हैं। पहला यह कि रेलवे बोर्ड सजग नहीं है और दूसरा है रेलवे कर्मचारियों में घनत्वोप होने के कारण धाघे दिन हड़तालें या नियमानुसार काम प्रादि। दूर की बात जाने दीजिये, १९७३ की प्रथम मई में धामदानी के कारण रेलवे की धामदानी में घटा दो करोड़ रुपये की कमी आई, प्रथम में द्वादशवर्षों की हड़ताल से साठे चौदह नरौड़ की शिताम्बर में २६ धामदानी हुए, अक्टूबर में ३०, नवम्बर ३१ और दिसम्बर के पहले हफ्ते में ही पन्द्रह हुए। इन सब में कई करोड़ रुपये की हानि हुई गई। ऐसी हालत में रेलवे की आर्थिक स्थिति कैसे सुधर सकती है ?

कर्मचारियों की मांगें पिछले बारह-पन्द्रह वर्षों में देश में दो बड़ी चीजें हुई हैं जिनका प्रसर, रेलवे पर पड़ना लाजिमी है। एक तो यह कि केन्द्रीय वित्त मंत्री के शब्दों में, हमारा जो रूपया १९६० में से जो पैसे के बराबर था, दिसम्बर १९६४ में उसका मूल्य फिर कर ४०.६ पैसे पर घा गया और दिसम्बर १९७३ में केवल ३८.५ पैसे के बराबर रह गया। इन चार महीनों में तो कुछ और भी गिरा होगा। दिन-दिन जो महंगाई बढ़ रही है और चीजों के साम विधेयकर धाने में पड़ने की धीरो के, प्राप्तमान पर चढ़ते जा रहे हैं—उससे मुझे घर, पचास-साठ लाख लोगों की छोड़कर सारा देश परेशान धार बेहाल हो रहा है। दूसरे यह कि सरकार ने लोहा, कोयला और कई अन्य खनिजों को अपने मंत्रियों के हितों में नीचे के कर्मचारियों से ऊपर के अधिकारी को जो तनखाए मिल रही हैं, वे रेलवे में बँसा ही और उतना ही काम करने वालों को मिलने वाली तनखा से कहीं ज्यादा है। रेलवे में न्यूनतम वेतन रु० १९६ है, जब कि कुछ कारखानों में बाईं तो से ऊपर है। इन कारखानों में सरकार साल में एक महीने की तनखा भी ऊपर से बोनस के रूप में दे रही है।

ऐसी हालत में रेलवे कर्मचारियों में घनत्वोप होना अनिवार्य है। इसी आधार पर जाजें फर्नाण्डोज ने घाट मई से हड़ताल का ऐतान किया है। रेलवे में काम करने वाले बन्धुओं की मुख्य मांगें यह हैं—

(१) सांजनािक क्षेत्र के कारखानों में काम करने वालों के समान वेतन व भत्ते रेलवे वालों को भी मिलने चाहिये।

(२) साल में एक महीने का वेतन बोनस की शान्त में मिले।

(३) प्राथम्यवक्ता के अनुसार न्यूनतम मजदूरी दी जाये।

(४) कर्मचारियों को जो सतयाग गया है, उसकी जाच होकर वाजिब मुआवजा दिया जाये।

(५) गलता और अन्य आवश्यक पस्तुधों के लिए रेलवे द्वारा विशेष दुकानें खुलवाई जावें।

रेल मंत्री काम से

रेलवे मंत्री न्याय करें इनमें ताबे ज्यादा धामद नवम्बर एक व दो पर है। और इनके धाघव में रेलवे मंत्री वह चुके हैं कि कुछ नहीं किया जा सकता, क्योंकि इनकी मजूरु करने से कम से कम बार ही करोड़ रुपया साल का बोझ रेलवे पर पड़ेगा जिसे पूरा करना नामुमकिन है। कुछ इस बात का है कि मंत्री महोदय ने परिशिषित की गम्भीरता को नहीं समझा और पूर्णनियत के नेताओं से ठीक से बात नहीं की। बजाय इसके कि वह उन्हें स्वयं बुलाते, उन्होंने कहा कि जिसे मिलना हो वह समय से और धा जाये। फिर, कुछ बातचीत उनमें ही अगुओं के मंत्री के शक्ति के कारण स्थगित हो गई। आश्चर्य है कि रेलवे मंत्री ने बातचीत खुद जारी रखना उचित नहीं महसूस किया।

हर डर है कि रेलवे मंत्री अपने काम के साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं। प्रायद यह कहना ज्यादानी न होगी कि उन्होंने रेलवे की हड़ताल से ज्यादा चिन्ता इस बात की है कि उनके अपने गृह-प्रदेश, बिहार में मुख्य मंत्री कौन होता है और वह किस-किस को अपने मंत्री-मन्थल में लेता है। बिहार की दल-धर्मों को अपने दसारे पर खाने के लिए उनके पास

चितता समय है उतना बोर्ड को अपने वातु में रखने के लिए नहीं है। लेकिन केवल यही नहीं, हमारे अन्य मंत्रीगण भी इस पद-ध्वोलुप राजनीतिक ही दक्षता में ज्यादा समय गावाते हैं और अपने विभागों की तरफ आवश्यक ध्यान नहीं देते। देश का दुर्भाग्य है कि कर्मों स पार्टी का संसद में जबरदस्त बहुमत होते हुए भी, उसके मंत्रियों का अधिकार समय कुर्सी सभालने की चिन्ता में व्यर्थ चला जाता है। यही कारण है कि हमारी प्रधनीति का सतुलन बिगड़ गया है। रेलवे भी इसकी शिकार हो तो उसका अस्तर सब तरफ पड़ने से ब्याधि और भी बढ़ जाती है। और रेलवे मंत्री के पास अपने विभाग के लिये समय का प्रभाव हो तो रेलवे बोर्ड को अपनी मनमानी करने से कौन रोक सकता है ?

सवाल है कि धर क्या किया जाये ? इसका समुचित और पर्याप्त उत्तर प्रायद ही

न्याय नहीं करते

कोई दे सके। लेकिन इतना तो जाहिर है कि रेलवे मंत्री को अपने कार्यवत्तारों में रेलवे को प्रभाता देनी होगी और उती में अपने को रणमा होगा। अगर किसी कारणे यत वह ऐसा नहीं कर सकते तो उन्हें कम कामपला और फुरसत में चला सकने वाला विभाग लेने और रेलवे जँसा व्यस्त और जटिल विभाग किसी दूसरे के हवाले करने की प्रायर्ना प्रधान मंत्री से करनी चाहिए। साथ ही रेलवे बोर्ड का पूरा नाया-कल्प होना चाहिए। ब्रिटिश राज से विरासत में मिले इस बोर्ड की उपयोगिता पर भी ससद में सन्देह किया गया है। अब तक उसका वर्तमान कर्मचारी—विमुख स्वच्छ रहता है, सब तक न तो रेलवे की हड़तालें रुकेंगी, न थोरिना बन्द होगी और न यात्रियों का कष्ट दूर होगा, चाहे उनके दिव्ये की तीसरे की बजाय दूसरा, या फिर दूसरे के बजाये पहला ही बर्बाद नो न दे दिया जाये।

माघें न्याय-संगत हैं। रहा पूर्णनियतों की वर्तमान मांगो का प्रश्न। धात्र जो ढाच भारत सरकारने लखा कर रखा है और कि मान्यताओं को प्रथय दे रही है, उनको देखा हुए, यह मागे अपनी जगह बहुत न्याय-संगत (शिव पृष्ठ १४ पर)

.....केन्द्रीयकरण बढ़ता है और जनता की अभिक्रम घुम्यता भी । स्थानीय नागरिकों का कोई दबाव उनके लिए की जाने वाली व्यवस्था पर नहीं रहने से व्यवस्था निरंकुश बनती है और उसमें भ्रष्टाचार पनपता है.....

इस भ्रष्टाचार को दूर करने के चार कदम

—देवेन्द्र कुमार

ग्राम स्वराज्य, नगर स्वराज्य या लोकस्वराज्य की ओर बढ़ने के लिए प्राज की स्थिति में से प्रगते कदम कैसे उठाये जायें यह समझने के लिए पोंड्री गढ़ाई में जाना जरूरी है । आज की स्थिति है उसमें शासन-तंत्र स्वयं एक स्थापित हित बन गया है जिस का रूप घंघेंज के संनकास से बहुत भिन्न नहीं है । ग्रामनि लोचनन का जो रूप उसके साम जुड़ा है उसके कारण शासन-तंत्र के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं प्राया है और वह उसी पुराने ढरं पर चलता जा रहा है । समुच्य तो उस शासन के पुराने तंत्रने लोकतंत्र की विव-सित होने में एक धोर तो स्पष्ट बाधा लखी की है दूसरी धोर लोचनन द्वारा दलगत राजनीति का जो डाचा हमने पश्चिम से प्राप्त किया है वह भी दोषपूर्ण है । किसी हूड तक एक बोली, एक जानि, एक धर्म वाले देशों में दलगत प्रजातंत्र कारगर होता भी हो पर भारत जैसे बहुविध देश में इस पद्धति को लागू करने से समाज के अलगवाले वाले तत्वों को बढ़ावा मिला है । साथ ही बहुमत के आधार पर चुनाव और निर्णय की पद्धति में जो मूलभूत सीमाएँ हैं वे धोर स्पष्ट होती जा रही हैं । इस सब के कारण सर्वेपानिक प्रजा-तंत्र की मूल भावना प्रकट नहीं हो पाती बल्कि विकृत होती जा रही है और फलस्वरूप लोग उत्तरोत्तर घुम्य होते जाते हैं इस धुस्पटा की मिसाल हमें गुजरात और बिहार में विशेष रूप से और सनी स्थानों पर सामान्य रूप से नजर धा रही है ।

उत्तरोत्तर स्थिति ऐसी बनी है कि जनता को दिखाई देने लगा है कि उसके धारने हाथों में न कोई निर्णय रह गया है और न व्यवस्था में कोई ह्रास । राज्य-शक्ति प्रापति शासन व्यवस्था प्राधिकारिक शक्तिपाली धोर व्यापक होती जाती है चाहे वह व्यवस्था प्रजातंत्र के नाम पर हो या समाजवाद के । प्रजातंत्र में कल्याणकारी राज्य के नाम पर विभागीय

सरकारी नामों का व्याप और बोलचालता बढ़ता जाता है । प्राज हमारे जैसे गरीब देश की ३०% से अधिक प्रावादी सरकारी धंत्र पर प्राधारित है । साथ-साथ समाजवाद के नाम पर जब उद्योग-धन्धों का राष्ट्रीयकरण होता है तो उद्योग-धन्धे सरकारी नोकरी के प्राधार पर चलते जाते हैं—केन्द्रीकरण बढ़ता है और जनता की अभिक्रम घुम्यता भी । स्थानीय नागरिकों का कोई दबाव उनके लिये किये जाने वाली व्यवस्था पर नहीं रहने से वह व्यवस्था निरंकुश बनती है और उसमें भ्रष्टाचार पनपता है ।

इसलिये इसका निराकरण करने के लिए रास्ता यह सोचा गया है कि प्रावादी की जो एक इन्साई निकट पक्षोपन घनुभव करती है उसके हाथों में उससे संबंधित व्यवस्था सौंपी जाये । पहले यह सम्बन्ध नकारात्मक भी हो तो दिशा मिलेगी । धर्षात पडोस-सभा, सोडस्ता-सभा या ग्राम-सभा जो भी जाने पड-चाने लोगों की इन्साई है वह प्राणना सगडन सर्व-प्रतिनिधित्व के आधार पर करके सर्वा-नुपति से नाम में जुडे ।

पहला कदम होगा उन बातों में लयें जो सामान्य जीवन में आवश्यक व्यवहार शुद्धि का प्राशसनन दिलायें—स्थानीय कामों में सर-कारी बर्मचारी, राजनैतिक प्रतिनिधि प्रायवा प्राय राजनीतिक व्यवस्था में जहा भी ऐसा कार्य होता हो जहा जनहित का विरोध दिखाई दे तो उसे रोकने की ताकत प्रापने में पदा करें । गलत काम के खिलाफ प्रावाज उठायें और जो ठीक रास्ता है उस पर चलने के लिए शासन-तंत्र पर असर डाले । इस कदम में जनता की प्रागे बढ़ाने में राजनैतिक विचारक और दूरगामी दृष्टि से सोच सकने वाले व्यवस्था में रहते हुए नेतागण भी सहा-यक हो सकते हैं । यदि इस पहले कदम में कुछ भी सफलता मिल सकेगी तो लोगों का प्रासदविश्वास खुलेगा और सदियों की सरबार

परस्ती की गिरफ्त कुछ बीली पड़ेगी ।

दूसरा कदम होगा प्रागसभा की इन्साई की (नगरी में पडोस सभा) अपने बहुत से नामों को स्वयं बर सेने की ऐसी ताकत पदा करने की होगी जिससे शासन तंत्र का भार कम हो । इसमें प्रापसो भ्रगडे निपटाना पूरे समाज के हित के काम करना और प्रावस्थनताओं की पूति में लगने वाली वस्तुओं के वितरण की व्यवस्था करना प्राधिक कार्यक्रम प्रायेंगे जो आज की स्थिति में समाज की जरूरत हैं और जिनके लिए प्रागपरिवार बाहर की ताकतों पर निर्भर करता है ।

तीसरा कदम है समाज रचना में परि-वर्तन का (अभी ग्रामदान प्रादोलन में प्रास-सभा समाज परिवर्तन का माध्यम मानी जाती है) इस तीसरे कदम में सामान्य न्याय, गरीब से गरीब को बराबरी की धोर बढ़ने का कदम आदि बातें प्रायेंगी जो प्रामदान के चार सूत्री कार्यक्रम में निहित हैं ।

चौथा कदम इन तीनों कदमों—

१-विरोध, २-व्यवस्था, ३-नवनिर्माण के बाद प्रादेगा या साथ-साथ भी लागू किया जा सकता है क्योंकि इन कदमों में पहला कौन, दूसरा कौन यह परिस्थिति पर निर्भर करेगा । इसमें प्राज के सर्विधान को कायम रखते हुए भी 'लोकनीति की दिशा' लागू की जा सकेगी उसके लिए प्राज के चुनावों में लोकप्रतिनिधि साने की बात रखी जाये । इसके प्रथम इन्साई में सब मिल कर सोधें प्रापने प्रतिनिधि चुनावों और वे प्रतिनिधि सहमति से लोक प्रतिनिधित्व की धोर बढ़ाये और विधानसभा या लोकसभा में पार्टी के उम्मीदवार की जगह लोक उम्मीदवार लखे किये जायेंगे । यह लोकप्रतिनिधित्व का कदम होगा । नतीजा यह होगा कि सारी राजनीति को लोकनीति के साथ-साथ बहुमत के बजाय सर्वानुमति की धोर से जाने का अवसर मिलेगा । यह एकादम गुणात्मक परिवर्तन होगा जिसमें बहुमत की जबरस्ती की अगह सभी का प्रेम या 'सोमस्य' पनेगा ।

चिपको आन्दोलन का एक वर्ष

सुन्दरलाल बहुगुणा

तेईस अर्बल ७३ को चमोली जिले के मुक्यालय मे पास एक जुलम डोल-नगाडे घोर घुरही बनाते हुए मखल मे जगल की घोर बा रहा था। उतराणख मे ऐसे जुलम देवी देवनामो की यात्रा के लिए प्राय निर-प्राप्त हो रही थी—उतराणख की बन-हाटा की सुरक्षा की तीर्थयात्रा। खेलकूद का सामान बनाने वाली एक कम्पनी लखनऊ की सरकार से भंगू के वेई को काटने का परवाना लेकर आई थी। इस लकड़ी से लोग बँतों के बंध पर रहने का जुमा बनाते हैं। उन्हें बड़ा मया था कि बन-विमान की हृदय से यह लकड़ी नहीं जा सकती। परन्तु विलेनी-मुठा बनाने का तात्व देते वाली बैल-मुठ कम्पनी ने बन-विमान ही बदल दिया था।

इसमे पहले १२ दिसम्बर को उतरकाशी मे घोर १५ दिसम्बर ७२ को गोरेखर मे लोने के तारपीन व विरोधी बनाने वाली घौटी प्रायोवांग इराइयो को बरली स्थान बरौ केहरी के समान भाग पर बन्धा मात देने की माग को लेकर प्रदर्शन हुए थे। गाँव-गाँव मे इनकी चर्चा हुई वन नीति मे धामून परिवर्तन करने के लिए भावाज उठी।

मखल के प्रदर्शन का साप्ताहिक परि-णाम यह हुआ कि बैल-मुठ कम्पनी को बड़ा के बजाय फाटा (केदार घाटी) मे अगू के लख प्राय स्वरानय सप को संयुक्त करने के १५ ५ रू के काट उद्योग के लिए रिये गये, परन्तु धामनोन की बुनियादें बहुत गहरी थी। १, २, मई को गोरेखर मे चमोली जिला विकास मण्टी की ओर उतके बाद मागो के सपर्यन मे एन प्रदर्शन हुआ। प्रत्ये दिन परवाना टोनी अन्तराणख के नियुक्त-नोनी के बन-प्रधान क्षेत्र से होती हुई उनीमठ के लिए निकल पड़ी। इस टोनी मे एक १२ वर्षीय बालक भी था। इन हस्तक कर्मों में धारोनी की धाराभासोनी को लेकर फैसल दो

ही प्रकार के लोग कभी-कभी पढ़ूच जाने थे— सपरन घोर नेता। पहली बार उन्होंने धपने जैसे लोगों से धम घोर प्रताभन मे बजाय गाँव को संगठित कर अपनी समुद्धि के माध्यम बनो की रक्षा के लिए उठ खड़े होने का नया मन्थ मुना था। उनीमठ मे बेदार नाय प्रखण्ड की बैठक हो रही थी। वहाँ के सभासतियो ने एच स्वर से बनो की सुरक्षा के कार्यक्रम को दोहराया घोर प्रतिज्ञा की— "हम घाटा मे अगू के वेड नहीं काटने देंगे"। रामपुर के युवा प्राय सभासति बेदार मिह ने नेतृत्व मे बेदार घाटी संगठित हुई। गाँव-गाँव से स्त्री पुरुषो घोर यहाँ तक कि तीर्थयात्रियो का बोधा होने वाले नेतानी धर्मिको ने प्रदर्शन कर "चिपको" धामनोन का नारा बुलन्द किया।

लोगो ने वन बचाने के लिए चौकती तमितिवाँ बनाई। कुछ दिनों के लिए अगू के पेडो का काटना पुन-रुक्त गया। उतर प्रदेश मे राष्ट्रपति शासन के दौरान प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी गडवाल प्रायो मे वन-सम्बन्धी बडिनाइयो को लेकर जन प्रतिनिधिये उनके मिले। ५ नवम्बर को उतर प्रदेश मे राष्ट्रपति शासन समाप्त हुआ और १५ दिसम्बर को प्रदेश के मुख्यमन्त्री शंख के विधायको, मन्त्रियो घोर वन विभाग चिपको आन्दोलन के चण्टी प्रगाडे भट्ट के विस्तार से सब समसपर्यायें रथी। कुछ निर्णय भी हुए पर उनका कार्यान्वयन लखनऊ के सचिवालय मे वन्द रहा।

इधर वन-विभाग के विशेषज्ञो द्वारा बनाई गयी योजना के अनुसार वनो की बटाई जारी है। बीड के पेडो से अधिकारिक लोसा निकालने के सातक से इसका एकाधिकार बन प्राय मे विद्ये हीन बर्यो मे १५ हजार पेड हटा के भोंके से हट गये। एक समय धपने सोन्दर्य के लिए प्रसिद्ध घुमुना टोत क्षेत्र के चौड बन अब पेडो के कविस्तान बन

गये हैं। विख्यत ले लने जोशीमठ से लपोवन की घोर मॉटर सड़क के ऊपर के वन सड़क निर्माण समठन के लोयो ने धीरे-धीरे तबाह कर दिये। परन्तु इस वर्ष तो बन-विभाग ने ही रेली के अगल के २४१५ पेडों को कटवाने के लिए नीतामी कर दी। रेली के ऊपर का लोचियर भी २१ हजार ७०० को हटा मा घोर ऊरने साथ जगल के पेड कोर पहाड टूटने पर भास घोर भी धमिक भीएण ही गई थी। रेली के लोय उस हथय को नहीं भूले। इस वर्ष जगल की बटाई से बाड भी प्रासंका से ने पबरा ३। सारे विचार शोष के सभासतियो ने उमेककर प्रस्ताव किये। राज्य के प्रभुपति पर्वतीय विकास मन्त्री से जो इस क्षेत्र के विधायक भी हैं, मिले, भापन भेजे, घोर धमत मे १५ मार्च को जोशीमठ मे प्रद-भंन किया। परन्तु अगल काटने के अनुसार निर्णय तो विशेषज्ञो की योजना के अनुसार हुआ था। इन धपनड लोयो की बहन कौन मुजता ? इस क्षेत्र के गोरेखर महाविद्यालय मे पहले वाले विद्यार्थी प्रतिष्ठ हुए। जिता-धिकारी के प्राय भापन लेकर गये, प्रदर्शन किया। कोई सुनवाई नहीं हुई।

२७ मार्च को कुहराडिया घोर धाँ मेकर जगल कटवाने के लिए उँकेदार के आरमी क्राय के गने मे पुन बानिडे ओर के सभी लोग सेना द्वारा ही गई अमीन का मुयासना लेने दूर गोरेखर गये थे। गाँव बराती हुई एक महिला ने इस दल को देख लिया। सीटियाँ बना कर सब दिवयो को इबट्टा किया घोर देखने ही देखने सारा, सपति, कुहराडी, घोर धारों से लंस बन काटने वाली के दल मे धपने बन को बचाने के लिए हड सफ्ट महिलायो से घिरा हुआ घा— "यह हमारा मायका है, धमन संकट के मोर्के पर हम वहा से चट्टा पास घोर बराती, लुके भेने बटोर कर बर्यो को पालती हैं। जरी ब्रूटिया लोकर घोर मुधिध्या इच्छी कर रोनी कनानी हैं। इस जगल को

→
मन बाटो नरो तो हम पेड़ों से चिपन कर उनकी रक्षा करेगी”।

इसके बाद देवी गाँव 'बन बचाओ' अभियान का केन्द्र बन गया। ५० वर्षीय गीता देवी घोर २२ वर्षीय मृगा देवी ने अपनी सहयोगिनियों—एनला, भनी, मुगी, हरकी, मालती, गंगी, बासी देवी के साथ महिला बौगो टुबड़ियाँ बना ली हैं। उन्होंने जंगल में प्रवेश करने का रास्ता तोड़ रखा है। एक घोर ठेकेदार के मजदूर सड़क के तिनारे ठेकेदार के घग्ग गोदाव में डके पड़े हुए हैं। दूसरी घोर महिलाएँ हैं, दोनो भावने सामने। आन्दोलन का नेतृत्व इस क्षेत्र के जन नेता, विद्याधर शंकर प्रमुख गोविन्द सिंह रायत कर रहे हैं। प्रपथो को बेष कर परि-वार का भरण पोषण करने वाले गोविन्दसिंह दिल से बहुत प्रमीर हैं घोर जनता के लिए धनना राव कुछ होम कर देने वाले युवक हैं।

एक घोर आन्दोलन चल रहा है, दूसरी घोर सरकार से बातचीत भी। सारी परि-स्थिति भी जनकारी देने के लिए बहु लोग लखनऊ में मुख्यमंत्री हेमवती नन्दन बहुगुणा से २३ अप्रैल, ७५ को मिले। जोषीमठ में भूगर्भीय परिवर्तनों घोर बनो की बटाई के कारण होने वाले मुस्लतन की जानकारी उन्हें दिल्ली में वनस्पति विज्ञान के किसी विज्ञान ने पहले ही दे दी थी। एक दिन बन सचिव का इस आशय का वक्तव्य प्रकाशित हुआ था कि "चिपको आन्दोलन अनुचित है"। बन विभाग का कहना था कि जंगल का ठेका घब रू करने पर ठेकेदार को भारी मुआ-बजा देना पड़ेगा और उसमें सरकार को बहुत हानि होगी लेकिन मुख्यमंत्री ने कहा "जो कुछ ये लोग कह रहे हैं वह तो उस भयकर तमाही के सामने कुछ नहीं है जो बाढ़ों के कारण होती है। जंगलो की रखा तो होनी ही चाहिए"।

उन्ही के निवास पर विधेय बन सचिव नरोत्तम त्रिपाठी को बन विशेषज्ञ भी हैं, के साथ एक-एक प्रश्न की लेकर हमारी धार्ता प्रारम्भ हुई जो धगले दिन भी जारी रही। धार्ता के निष्कर्षों को अन्तिम रूप २५ अप्रैल की मुख्यमंत्री के कार्यालय में दिया गया वे इस प्रकार हैं :—

(१) देणी के जंगल का निरोधण करने के लिए स्थापन वनस्पति बन, भूगर्भ घोर सिपाई विभाग के विधेयसो, दो विधायकों व आन्दोलन के दो नेताओं की वमेटो यहा भेजी जायेगी। उसकी रिपोर्ट के आधार पर बटाई रोधी जायेगी, इसके धग्गला वनस्पति विज्ञान के एक प्रोफेसर होंगे। (२) घन सपदा के दोहन में स्थानीय जनता को प्रबतर देने और ठेकेदारो को हटाने के लिए भविष्य में ५० प्रतिघत कुप २० हजार रुपये तक के २५ प्रतिघत ५० हजार रुपये तक के घोर केवल २५ प्रतिघत ५० हजार रुपये से ऊपर के होंगे। धगले वर्ष कम से कम दो सहकारी समितियों को जंगल फाटने के ठेके दिये जायेंगे और ग्रामस्वराज्य सधो द्वारा प्रति दिन बन सहकारी समितियो को लीसा निकालने के ठेके बिना होइ के दिये जायेंगे। सरकार उन्हें पूर्णो निर्माण के लिए भी सहायता देगी। (३) वन क्षेत्रों से बाहर के प्रभागीय कार्यालय वन क्षेत्रों में स्थानांतरित किये जायेंगे। (४) वन सपदा पर धाराधारित धार्मीयम इकाइयो को वन विभाग लीसा, लकड़ी भादि उधारता पूर्वक देगा। जडी बूटियो की नीलामी समाप्त कर दी गई है घोर बटाई व टोकीरी बनाने के लिए रिगल निकालने पर तगी पावन्दी भी हटा दी गई है। (५) वन विभाग के रेंज प्रधिकारी प्रनिवर्त ३० जुलाई तक गाँव के लोगो को उनके हक हकूक की लकड़ी दे देंगे घोर धग्गत में क्षेत्र विकास समिति के समक्ष गये वन लगाने व बनो की नीलामी की योजना रखेंगे। कुछ समाज सेवकों को वन विभाग के कार्यालयो में जन्त की मुविधायको, बनो की सुरक्षा भी हट्ट से बनो की देखभाल करने के लिए अवैतनिक निरोधक नियुक्त किया है। (६) टिहरी और उत्तरकाशी जिलो की वन समस्याओं पर तीन माह में रिपोर्ट देने के लिए जन प्रतिनिधियो को एक समिति नियुक्त की गई।

नीसा निकालने की हिमाचली पद्धति, जिसके कारण बीड के वन बड़ी तेजी से मट्ट हो रहे हैं धगले साल से समाप्त की जायेगी।

"चिपको आन्दोलन" की मुहमात वन घोर वन वासियों के मधुर सम्बन्धो को हड

बना कर जनता में बनो की सुरक्षा के लिए चेतना पैदा करने से हुई। यह एक मौखिक प्रक्रिया है, जिसमें बनवासी क्षमिकारियों घोर सरकार—सभी पदों को शामिल होना है।

भारतीय देलवे : सरकार कोई घोर कर्मकारियों के बीच समवय का प्रमाय (पृष्ठ ११ का शेष)

घोर उचित है। सरकार एक उद्योग में एक रीति धग्गामये घोर दूसरे में दूसरी, यह चलने वाला नहीं। दुर्गापुर के इस्पात कारखाने में काम करने वाले को एक तनखा मिले घोर वही पर देलवे में काम करने वाले को उससे कम मिले, यह कोई सहन नहीं कर सकता। घोर न बोनस से ही सरकार इन्कार कर सकती है। सच तो यह है कि जब हमारे विधायक (हमारी सघद घोर विधान सभ के सदस्य) धग्गने वेतन भत्त बढायेंगे और एक से एक बडकर सुविधाएँ लेने में (इस मामले में सारे पध एग्मत हो जाते हैं) सुकोच नहीं करते तो विस नैतिक बल से वे रखने या धग्ग रखवानो में काम करने वालो को मना कर सकते हैं। रुपया न होने की दमनी कोई नहीं मानेगा। उस्टे इससे वह जल-मून जायेगा घोर मलत काम पर उतर पडेगा। सबसे पहले लोक सभा के हमारे सम्मानित सघद सदस्य धग्गे धायें घोर कुछ टुटोनी का एलान करें। कुल मिलाकर वह रकम धायद दो-चार लाख ही होगी, लेकिन इससे देश का नैतिक बातावरण उन्नत होगा घोर उनमें तथा मित्रयो में ताकत धग्गयेगी जिससे वे परिस्थिति का सामना साहस के साथ कर सकेंगे। वे बनो न वहे कि हम केवल वेतन लेंगे घोर मवान, टेलीफोन, डाक-तार भादि का खर्च धग्गने पास से बर्दाश्त करेंगे? जब तक हमारे विधायक मार्गदर्शन करने से इन्कार करेगे, तब तक कोई भी कर्मचारी-धग्ग ज्यादा मांगे रखने से बाज नहीं धग्गयेगा। इसके फलावा धग्गाने की पुकार यह है कि हर कामचारी को बराबर का साथी सम्भा जाये घोर ऊँची से ऊँची कर्मदियाँ या थोड़े में उसको प्रतिनिधित्व दिया जाये ताकि सघानत में उसका पूरा सहयोग मिले घोर वह धग्गाने जिम्मेदारी को महसूस करे।

विहार का आँखों देखा जन आन्दोलन डॉ० हीरासाह

प्रकारह भर्त्सन को पटना जनसभा पढ़ुचा, मुगलसराय के बाढ़ ही टूटने में यात्रियों की चर्चा का प्रधान विषय विहार की छात्र सभ्य-समिति का धाम्दोलन था। सभी वर्ग के लोगों में इस धाम्दोलन के प्रति उत्साह, उषय एव सहायुभूति को भावना मीने देखी। अभी तक तो मीने केवल जुवागी ही धाम्दोलन की बात लोगों से सुनी थी पर पटना में देखा गया है कि जगह २ विद्यार्थी वल्लय धन्य कोई भीज विद्यार्थक साक-मुचरे बगड़ो तथा फूल-गान्गामों से सुगोभित अगमन कर रहे थे। उस दृश्य को देख कर महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये व्यक्तित्व सत्याग्रह की वान सुने एकाएक पाद धा गई कि नित्त उमन धीर जोश से सत्यग्रह में लोग धीरक होते थे धीर जनता फूल धालाप्रो से उनका स्वागत करती थी। ५-६ बस के रन्वे भी धनशन पर प्रत्यन्त पूर्णक बैठे हुए थे। वही देखा कि सरकारी नौकर धीर वही प्रथितता धीर प्रोफेसर धामि भी धन-शन पर हैं। यह देख कर प्रच्छा लगा कि लोगों में एक मन्धे कार्य के लिए सजने की भावना है।

पटना में इस द्वारा बलियापुर पढ़ुचा बहा भी इतो तरह का माहोल मिला धीर जनता एक स्वर में बहूती थी कि यह धाम्दो-सन नायपाव हो कर ही रहेगा। वहा से विहारशील, जहाँ कि मान्यता सुनिश्चिती है। नम से पढ़ुचा। नम में भी लोगों की चर्चा का विषय यही धाम्दोलन था। लोग बहूने थे कि जब प्रकाश बाजू जैसे भागियों के सभ्यंश कार्य में कामयाब हुए उत्ती प्रकार इन धाम्दोलन में भी निश्चित ही सफल होने बहूने थे धाम की राजनीर पढ़ुचा। नाम को तो कही धनशनकारियों को नहीं देला। दूसरे दिन १६ धर्मन की विहार के राजकीर जल प्रदान तथा ज्ञानाती शान्ति स्तूप को देलने तथा कई धनशनकारी धान-जैतामो तथा धन्य सहायुभूति रखने वाले व्यक्तियों से बान हुई। यहां तक कि ऐसे कार्य भी मिले जो कि ऊपर से तो सरकार के साथ ही लेखिन दित ही दित से इस धाम्दोलन के साथ है।

राजनीर से १६ धर्मन को अंसदीह के लिए बस से रवाना हुआ। किन्तु विहासारीक बलियापुर रेलवे-स्टेशन पर एक ग्या और रात की गाडी नेट होने के कारण ११-२० बने टूटने मिली। इस बीच मुगलको से धाम्दोलन के बारे में बातचीत हुई धीर सभी की सहायुभूति इस धाम्दोलन के साथ दिखाई दी धीर लोगों ने कहा कि प्रदानमयी ने जब प्रकाश बाजू के चरित्र पर दोषारोपण करके बहूने गलती की। २० अर्जन को मुबहू अंसदीह पढ़ुचा बहूने के प्राकृतिक विनित्ता केन्द्र पर गया धीर वहा से दोघर को देखकर से लिए रिक्शा से रवाना हुआ। वे रुक कर बुद्ध लोगों से बात करने का मोका मिला। हर जगह छात्र सभ्यंश समिति का मोर्चा लगा हुआ है धीर लोग धनने काम में टटे हुए हैं। वहाँ से भागलपुर के लिए रवाना धनशनकारी प्रपना मोर्चा लगाये हुए थे धीर बस रुकने पर विद्यार्थी बस के मन्दर भा कर एक दिन्ने में पटना धीर लोग बहो-मुगो-सुगो चन्दा देते। रात को ८ बने भागलपुर पढ़ुचा। वहा श्री० रामजी सिंह के पास सूचीबन्धिती कंपस से ठहरा। वे इस धाम्दोलन में काफी दिलचस्पी ले रहे थे धीर स्वयं भी धनशन कर चुके थे। इस सभ्यंश में उनसे काफी चर्चा हुई धीर उन्होंने बताया कि शिक्षक वर्ग इस धाम्दोलन के साथ पूर्ण रूप साथ बहदर में युग्ने निकला तो हर जगह देखात हू कि विद्यार्थी, मोचयंर, यकीन धामि धनशन का मोर्चा जगह-जगह लगाये हुए हैं धीर विद्यार्थी दामो को नियमित कराने में काफी जो-जान से कोशिश कर रहे हैं। वहा से लौट कर जब मुबहू प्रोफेसर साहब के घर धाम्यो तो देखात हू कि कई ब्यापारी प्रोफेसर साहब की प्रतीगा में बैठे हुए हैं। धामे ही उन लोगों ने प्रोफेसर साहब से कहा कि धाम विद्यार्थियों को एक सलाह दे दें कि वे हमारी भी सुविधा को ध्यान में रख कर तेल वितर

करा दें। प्रोफेसर साहब ने उन्हें धाम्दोलन दिया धीर कहा कि छात्र सभ्यंश समिति से बनारूणा कि तेल का विनरण इस तरह किया जाय कि जनता को धन्य से अधिक लाभ हो सके धीर भ्रष्टाई रुक सके। २१ धर्मन को मैं मुगेर के लिए धना। जमातपुर स्टेशन पर उतरने के बाद टैक्सी में मुगेर लिब बिजित्ता केन्द्र के लिए पढ़ा। रास्ते में देखात गया हू कि कुछ लोग पानामो से सुगोभित एक छोटे से शागियाने के नीचे अगमन कर रहे हैं। पना लगाने पर मान्म हुआ कि इनमें केवल विद्यार्थी ही नहीं ब्यापारी धामि भी शामिल हैं। इस प्रकार का दृश्य गहर में कई जगहो पर देखने को मिला। दूसरे दिन मुबहू मुजगरपुर के लिए रवाना हुआ धीर मुगेरतक पहजान से परा किया। जहाँ पर जिनने यानी से सज सडके, सवधी इस धाम्दोलन में जेल जायेंगे तो हम लोगों को भी उनका साथ देने पड़ेगा धीर उत्तरी मांग भी सही है। वहाँ से सभ्य-दिया के प्राकृतिक विनित्ता केन्द्र पर भाया तो पना चला कि वहाँ की सचालिका धीर पालिका धाम्दुल कीमती सुगोलादेनी धनशन-कारियों को सान्ठिन करने तथा जनधाम्दोलन को तीव्र करने के लिए गहर में प्रकाश कार्य के लिए गई हैं। वहा से बरतोनी धाम्यो। रास्ते में देहाती में देहाती भी इस आन्दो-सन की सराहना कर रहे थे और कह रहे थे कि धन यह दृष्ट प्रतकार धमिक दिन तक नहीं टिक पायेगी। बरतोनी में धोडी देर प्लेटधामं पर भी लोगों में बातचीत करने का मोका मिला। वहा भी एक-धाम्यो लोगों को धीरकर बाबे तब लोग इस धाम्दोलन के पथ में ही बात करते मिले। विशेष कर दिन्वो में काफी उत्साह मिला। रात को मुजगरपुर पढ़ुचा। दूसरे दिन लोगों में कारती भी थे। गहर में होने वाले धनशन के बारे में जनकारी प्रान की तो वहा भी उत्साह का वातावरण बहुत जोर-जोर पर

→ पा। उसने पहले वहाँ १८ मर्चन को एक बहुत बड़ा मोन जुलूस सर्वोदय कामपत्तों ध्वजा प्रसाद साहू के नेतृत्व में निकाला जिस में वकील, प्रोफेसर, व्यापारी, विद्यार्थी आदि सभी प्रकार के लोग शामिल थे। दो दिन बाद हाजीपुर के लिए रवाना हुआ। हाजीपुर में भी यही वातावरण दिखाई दिया। वहाँ से महानगर के लिए बस पर रवाना हुआ बस में काफी लोग इस आन्दोलन का जम-जयकार करते थे साथ ही जयप्रकाश बाबू के व्यक्तिगत भी भी लोग एक्सटरे से सराहना करते थे। महानगर रात भर रकने के बाद २६ ता० को मुबह बैंगुलुराय पहुँचा वहाँ पहुँचने पर भी जगह-जगह वही धनशान का हृन्प दिखाई दिया। वहाँ से मैं टैक्सी टैम्पो द्वारा रोसङ्ग : के लिए रवाना हुआ। रास्ते में कई जगह विद्यार्थी धनशान करते और चन्दा एकत्रित करते दिखाई दिये। निम्नु एक जगह की घटना मुझे प्रच्छा नहीं सभी विद्यार्थी रास्ते में बेंच और तल्ला घादि बाल कर बस को रोक कर चन्दा बसूल करते थे। मैंने उन्हें समझाया कि चन्दा माँगने का यह

तरीका ठीक नहीं है। और उन्हें मैंने चन्दा भी नहीं दिया। जब उन लोगों में तल्ल हटा दिये तो हम लोग चले गये। रोसङ्ग पहुँचा और इतनाक से बस्से में पूरने का मोना मिला। और उसके बाद स्टेशन पर करीब एक घंटे तक रचना पड़ा। इस बीच सबर्न धनशान का उत्साह और जोश-शरोग का वातावरण दिखाई दिया। इस के बाद शाम को मैं सगडिया में एक मीटिंग में शरीक हुआ। वहाँ पना चलता कि चिचिस्सालय की संपालिका श्रीमती मुशीलादेवी ने एक हजार लिपियों का एक बहुत बडा जुलूस इस आन्दोलन के पक्ष में निकाला था जिस से कि काब्रसे ने उनसे जवाबतलब किया। सगडिया से रवाना हो कर पूणिया होते हुए रानी पत्ता पहुँचा। पूणिया में भी जगह-जगह विद्यार्थी और धन्य लोग भी धनशान तथा आन्दोलन के कार्य में लगे हुए दिखाई दिये। सबकी जवान पर एक ही नारा था कि प्रप्टाचार मिटाओ। फिर किशनगज तथा पागोहाट पहुँचा। त्रियानगज के धमिधवता आदि से भी बातचीत करने का अवसर मिला। ये लोग भी इस आन्दोलन के पक्ष में दिखाई दिये

यद्यपि वे महसूस करते थे कि आन्दोलन के चलने से उनकी धार्मिक शक्ति जरूर है फिर भी इस आन्दोलन की सफलता चाहते हैं। धनशानकारी शांतिमय ढंग से धनशान चलता रहे थे। २६ ता० को मैं बटिहार प्राया और वहाँ भी लोगों से बातचीत करने का तथा देने के का मोना मिला। आन्दोलन का वातावरण जोर पकठ रहा था। वहाँ से बरौनी पहुँचा। यहाँ प्रप्टाचार का एक बहुत बडा मसला हमारे सामने प्राया जब कि रिजर्वेशन के लिए हम से १५ ६० दिवस की मांगी गई।

पूरे दोरे के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि आन्दोलन में सभी वर्ग के लोग शामिल हैं और सहानुभूति रखते हैं। लोगों का यह मज है कि यह मिनिस्टरी शीघ्र ही समाप्त होगी और उसका सबसे बड़ा संकेत यह है कि जगजीवनराम ने अपने सड़के को मिनिस्टरी में जाने से रोक लिया है। लोगों को यह प्रतीत हो रहा है कि यदि मिनिस्टरी स्थायी होने वाली होगी तो अपने सड़के को मिनिस्टरी में शामिल होने के लिए जरूर इजाजत देते। बैलूर जाने के पूर्व जयप्रकाश जी ने जो दकतय कार्य सहायन के लिए दिया उसका लोगों पर बहुत ही प्रच्छा प्रसर पडा और लोग धरती जम्मेदारी निभाने के प्रयत्न में हैं।

केन्द्रीय भांडागार निगम

आपकी सेवा में

- खेती के उत्पादनों, खेत में बी जाने वाली चीजों तथा धन्य वस्तुओं की कम खर्च पर वंतानिक ढंग से हिकागत करने, रखाने, सामान की संभालने और लाने-ले-जाने आदि के लिये।
- भांडागार की रतीव पर अधिकृत बंकों द्वारा कर्ज की सुविधा के लिये।
- धापके गोदारों में कीटनाशक आदि के छिड़काव की सुविधा के लिये।

यह सब सेवामें वेदा के ६०० केन्द्रीय और प्रांतीय भांडागारों द्वारा उपलब्ध हैं। हमारे पास धापका सामान सुरक्षित रखने सम्बन्धी सभी सम्स्याओं का समाधान है।

केन्द्रीय भांडागार निगम

(एक भारत सरकारी उद्यम)

सो-६० साउथ एक्सटेशन, पार्ट-२

नई दिल्ली-११००४६

श्रीलंका में सर्वोदय कार्य की सम्भावनाएं

—विनयभाई

श्रीलंका के हवाई, धड़के के करम प्रबिकारी भी "सर्वोदय" के नाम से परिचित और प्रभावित थे और उन्होंने हमारे सामान की निचिड़ण जांच करना भी जरूरी नहीं समना। सवा बरोड की जावारी के इस धोटे दे देग की सर्वोदय सत्था श्रीलंका जातिक सर्वोदय श्रमदान सगम के राष्ट्रीय रचनात्मक सर्वोदय द्वारा तथा वैदेशिक सर्वोदय के कारण ही इनकी ऐसी प्रतिष्ठा जनी है।

श्रीलंका में सर्वोदय-कार्य को सत्वो स्थित मालन्दा कोलेज के स-नालीन डिग्निल एस० एम्० कृष्णमन्द के प्रोपाइज्ज में सत्था के प्रचार सेना के प्रचार सेना योजना के प्रचारि विज्ञान श्री ए० टी० प्रायं रत्ने द्वारा श्रमदान शिबिरो के भागोजन से प्रारम्भ हुमा। श्रमदान शिबिरो के रूप से जन्मे-जन्मे धार्यरत्ने प्राने देग ने पावो के समर्क में धाने गये त्यो त्यो जननी सेना भावना उजकटा प्रत्य करतो गुरु और उ होने धरने प्रभावी व्यक्तित्व एवं कुपुन नेतृत्व के संधारणा धारो को श्रम सेना की ओर प्रेरित कर लिया। धार्यरत्ने के जलाइध और लेवधियता के कारण उन्हें जिन सभायो का सामना करना पडा उससे जनकी प्रतिष्ठा घोर बडी। १९५५ में श्रीलंका की सत्त ने एक्ट द्वारा "श्रीलंका जातिक श्रमदान सगम" को भाव्यता प्रदान की और इसके माध्यम से श्रमदान श्रावजन देस व्यापी रूप में चलने लगा। तत्कालीन शासन द्वारा भी इसे अथ्वा प्रोत्साहन मिला और यह देग के विकास में जनता को भाइए एव प्रशुत् करने की दिशा में उत्त्वेत्तनी सफलता प्राप्त करने लगा।

बोड धर्म का आधार श्रीलंका की ७१ प्रतिशत जनता बोड धर्म अनुयायी है। इस धर्म को तराएए एव प्राथमिकता प्राप्त है। जनता घोर शासन में भी सहका प्रभाव है। देग में सगम ७ हजार बोड मरिद और मठ तथा उनसे सम्बन्ध २० हजार बोड भिक्षु हैं। श्रीलंका की सर्वोदय सत्था ने इस धार्मिक भावना का उपयोग करने के लिए सर्वोदय मिडिल और बोड-मठों का ऐसा सन्धन किया है जिससे उन्हें शासन, बोड धार्मिक सत्थानो तथा धर्मप्रचार जनता का अथ्वा

सहयोग प्राप्त होता है। इसके कारण उन्होंने सर्वोदय के शासनमुक्ति तथा सोवणमुक्त समाज रचना के भावमें से धार्मिक बल करवा नैवी, मुक्तिवा भादि तत्वो पर दिया है। सर्वोदय का धर्म सत्था उदय या बत्थाएव वहा कत्थाएववादा का रूप से रहा है। परिणाम स्वरूप सर्वोदय एक ग्राम-विकास तथा समाज-कत्थाण का कार्यक्रम बन रहा है। बोड जनता में प्रवेश पाने तथा कार्य करने की मनु-श्रुतता हो जाती है, बहा उन्हें ऐसे श्रमदान जनता की प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिलता, भले ही जनकी धर्म-भावना को पोषण और सतयी मिले। श्रमदान द्वारा गाव में बोड-मठिरो का निर्माण होने से तो वहा धार्मिक भावना के आधार पर सामुदायिक विकास में सहायता के मिलती है पर जनी-जनी जैसे प्रेरितता गाव में धर्मश्रीलंकी श्रमदान द्वारा बोड भिक्षुओ निर्माण किये जाने में बहुत धींचिय नहीं लगता। पहले श्रीलंका में श्री बोड-धर्म के अनुयायी धरने परिवार के एक सदस्य को धर्म प्रचार के लिए भिक्षु बनाते थे। आज वदधि इतना नहीं होता फिर भी इस परम्परा का कुछ प्रभाव सर्वोदय सत्था के जन्मगत समाज सेवा के धार्मिक कार्य के लिए धर के तरण को नेजने में अग्रय सहायोगी होता

हयानीय अनुकूलताए-नवा करोड की जनख्यावाले छोटे देग का होना धरने धार्य मरिदी भी और विपमता को कमी, जातिवाद धोर साम्प्रदाय बाद का सगमय अभाव व सहायक तत्व हैं। साधारता का ऊंचा प्रति-धन तथा अथ्वा सांस्कृतिक स्तर भी वहा की सत्थ प्रमुत् अनुकूलताए है। पद-श्रया के न होने से ली-मुक्तयो का साथ काम करना सहज हवाभाजिक है।

कार्य का स्वरूप राहत सुधार तथा विकास घोर निर्माण की प्रवृत्तिया जन-सामान्य को धार्मिक पसन्द माती है। प्रचलित सामाज-व्यवस्था के आधार पर केन्द्रित धार्मिक-राजनैतिक तथा धार्मिक सत्ता के विरुद्ध मूख्य परिवर्तन का लोकासिधए कार्य जनता को उतना अरीत नहीं करता। प्रत्यक्ष रचनात्मक कामो के लिए धार्मिक सहायता प्राप्त करना भी पदोपागत सरल होता है।

केन्द्रित संगठनात्मक स्वरूप, श्रीलंका का सारा सर्वोदय कार्य केवल एक सत्था द्वारा सहादित होता है। तत्वर. सारा कार्य एक व्यक्ति पर आधारित है। धार्यरत्ने हृदय तथा बुद्धि के धर्मेक गुणो से सम्पन्न व्यक्तित्व द्वारा कर्मठता एव कुशलता से सारा कार्य संघालित करते हैं। सत्था का मुख्य केन्द्र स्थल "मेठ-मठुरा" का मूचना केन्द्र तथा केन्द्रीय कार्यालय धार्यरत्ने ध्यवस्थित और दर्यकों को प्रमा-वित करता है।

सत्था परिवार में शामिल सगम १९० सदस्य प्राप्त ५ से १० तक मुक्तपराते हुए स्वाहाशासन की भावना से धरने-अपने कार्य में लगे दिखाई पड़ते हैं।

सत्था का धार्मिक बजट करीब ८ लाख रुपयो का है जिसके करीब ५० प्रतिशत की पूंति स्वानीय सानदाताओ द्वारा तथा शेष की पूंति विदेशी संस्थाओ के धनुदान धादि होती है धरने उत्साहन से इस बजट को पूंति के लिए धरब कुछ सर्वोदय धार्मिक लोने उ रहे हैं। सत्था के पाठ ७-८ मोटर गाडिया हैं धरने वैदेशिक समर्क के आधार पर धार्मिक केन्द्र का रूप दिया है और अनेक देसों में इस की सहायए रवाहित हो रही हैं।

एक समाज सेवी सत्था के रूप में इस सत्था के पाठ प्रनाय कच्चे, प्रोवेशन धर्वाधि सारा सुकित धान्योत्तर (किन्-सारा सपर्यक विदोह) के दामा धावता प्रत्य सदस्यो को भी सुधार हेतु भाषन में रखा जाता है।

(शेष धरने पैज पर)

सीलिंग से बची जमीन विक्री और सरकार देखती रही

—जगदीश शाह

'गरीबी हटाओ' का नारा देने वाली सरकार ने जमीन की उच्चतम सीमा निर्धारण (सिंह सीलिंग) का जो ढीला-ढाला कानून बनाया उसको भी प्रमत्त मे लाने में प्रहारदेबाजी चलती है और सेत-मजदूरों के हक डुबो कर जमींदार जमीन के सीधे कर रहे हैं।

झलोढा, ते० सावली, जि० बडोदरा के निवासी एक अग्रगण्य पत्रिक करीब ४३० एकड़ परती के मालिक थे। प्रलभता यह जमीन उनके सुपुत्र और नाथालिग पौत्र के नामों से चलती थी। पुराने कानून के तहत यह जमींदार, हर किसी उपाय से अपनी जमीन सुरक्षित रख पाये थे, पर उच्चतम सीमा के नये कानून के तहत एक ही परिवार के तीन व्यक्तियों के नाम से चलती यह जमीन वे बना नहीं सकते थे।

सब तो यह है कि इस जमीन में से कानून के अनुसार प्रतिरिक्त जमीन, सेत मजदूर और किसानों के लिए ही भुगत होनी चाहिए। फिर भी इस जमीन को बिक्री हो गई है। कहा जाता है कि कच्ची किसानों के एक दल को बारह साल रुपये की कीमत से यह जमीन बेच दी गई है। घापी रकम तो दी भी जा चुकी है। प्रक्षय तृतीया से पूरी जमीन का बच्चा भी तोप दिया जाने वाला है।

इस संबंध में स्थानीय कार्यकर्ता की धातुरिक वेदना बडोदरा के एक दैनिक प्रस. वार में प्रनाशित हुई। लामडापुरा ग्राम में हुए किसान सम्मेलन के समक्ष भी इस हकीकत का एलान किया गया था। सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री के संसदीय सचिव मण्डिभाई शाह उपस्थित थे। फिर भी जमींदार उस से मत नहीं हुआ। मुंबरात सर्वोदय मण्डल के मंत्री ने राज्यपाल के सलाहकार को पत्र लिख कर इस हकीकत की जानकारी दी थी। साथ ही जिला कलेक्टर तथा तहसीलदार को भी उस पत्र की प्रति लिखिवाई भेजी गई।

इन सारे प्रयत्नों के बावजूद इस जमीन की बेरोकटोक बिक्री हो चुकी है। नये मालिक को कच्चा सौंप दिया गया है। इससे झलोढा और समीपवर्ती गावों में किसानों और मजदूरों में पत्रिकों के सामने सरकार की यह बेवसी देख कर भारी निराशा और तिरस्कार के भाव दिखाई देते हैं।

बडोदरा नगर से बीस किलोमीटर दूर स्थित इतनी बड़ी जमीन एक ही परिवार के नाम से पुरानी उच्चतम सीमा-मर्यादा के कानून से कैसे बच गई यह सवाल तो अनुसूचित है ही है पर नये समाजवादी कानून का भी जाहिरा तौर पर उपहास हो रहा है। बेचने वाले भूमिमालिक भव बडोदरा में अग्रगण्य नागरिक हैं। अभी तक अपने मूनीम और हरिजन तथा धार्मिकवासी मजदूरों के जरिये उन्होंने अपनी सेती करवाई और जमीन का उपभोग किया है।

प्रध्याचार के विरुद्ध गुजरात के प्रसिद्ध लोक आन्दोलन के बाद भी गरीब के हित में बनाये ऐसे कानून को एक और रख कर पूंजीवादी और सरकारी तंत्र, गरीब और शासक पक्ष की नीति की घोर उपेक्षा बर सकते हैं।

बया उटोसा..... (पेज = ते जारी)

प्रतिनिधियों को बुल्यबहार, राज्य-प्रशासन की विभिन्न विफलताओं ने राज्य सरकारों के प्रजातान्त्रिक तंत्र को भस्मना के योग्य और हास्यास्पद बना दिया है। अगर हमने घर को स्थवस्थित नहीं किया तो केन्द्रीय प्रशासन के भी यही हाल होने वाले हैं।

सर्वोदय जगत के लिए उटोसा की मुख्य-मन्त्री द्वारा दी गई चुनौती स्वीकार करना जरूरी है। सर्वोदय में विन्दीकरण का ऐसा व्यावहारिक कार्यक्रम भी बताना चाहिए जो पुराने ग्रामीण समुदायों की तरह लोगों को अपना राज खुद चलाने के लायक बनाये। गाँवों को इस नयी व्यवस्था के लिए पुनर्गठित तो करना ही होगा। लेकिन यह एक ऐसा कार्य है जिसमें देश के सभी गुणवत्तिकों को ध्यान लगाना चाहिए। सर्वोदय के विचार को मानने वालों का तो खैर यह कार्य है ही।

(पृष्ठ १७ का शेष)

भावी सम्भावनाएं: यद्यपि धार्यरत्ने को दूढ़ निरवास है कि प्रामोदय, देशोदय और विरोदय के अपने ध्येय प्रगले तीन बर्ष में ही प्राप्त कर लेंगे किन्तु हमें सपता है कि या तो जन की सर्वोदय की कल्पना ही दूसरी है या उनका उस्ताह उन्हें प्रतिभाशास्त्रादी बनाये हुए है। हमें लगता है कि अभी उनके गंव के काम में धमदान के प्रतिरिक्त गाव वालों को कुछ देना नहीं होता। इस सत्या के माध्यम से वे विकास की योजनाएं और उनके कार्यक्रमों के लिए साधन, कार्यकर्ता और निर्देशन धार्मिक सब कुछ प्राप्त ही कर रहे हैं यह उन्हें कुछ त्याग के लिए कहा जाया तब कठिनाई पड़ेगी। प्रत उन्हें 'देइम' की भावना से मुक्ति दिनाकर स्वावलम्बन की भावना अपनायके लिए भी प्रविषा में कुछ बदल आवश्यक लगता है। साथ ही अब उन्हें यह भी बताना होगा कि राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक और धार्मिक सत्ता का जो केन्द्रीकरण है उस के कारण प्रामस्वरान का सपना साकार होने में सुनिवादी कठिनाई पड़ रही है और इसके लिए उन्हें विकेंद्रित अर्थतंत्र तथा योगदानारमक लोकतंत्र के विचार को समझना, अपनाना होगा।

कुल मिलाकर हम यह सकते हैं कि श्री-लका में सर्वोदय आंदोलन अपनी प्रारम्भिक भूमिका में है और इतने सँकेड़ गाँवों में जो प्रवेश पाया है, देश-विदेश में अपनी निष्पक्षता रचनात्मक क्रियाशीलता एवं सेवा भावना से लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है और डेढ़-दो की समर्पित कार्यकर्ताओं की जो सेना संगठित की है, उसके बल पर यह अपने देश को जनता की सर्वोदय समाज रचना प्रयत्नो के लिए प्रेरित करने में समर्थ हो सकेगा। के० श्री० विरवविद्यालय वेम्पस में होने वाली विरिष्ठजनों की परिपद् में प्रो० हेगवे सरीखे विद्वान तथा सत्या के तरण कार्यकर्ता बर्ष में हूमें समाज सेवा से समाज परिवर्तन की दिशा में बढ़ने की जो तीव्रता के दर्शन हुए। हम धारा करें कि वह पूरी संस्था को एक नयी चित्तिकारी दिशा देने में सहायक होगी और संस्था की सर्वोदय सत्या एक संस्था या संगठन न रहकर एक व्यापक आंदोलन का स्वरूप ग्रहण करेगा।

भुवना-वम, सोमवार, २० मई, ७५

पिछले कुछ वर्षों से सर्वोदय समाज के सभी स्तरो, मुख्यतया जन-संपर्क रखने वाले कार्यकर्ताओं में, प्रत्यक्ष तीव्रता से यह अनुभव किंवा का रहा कि सर्वोदय आन्दोलन एक निस्तेज सुधारवादी सामाजिक राहूत कार्य से अधिक नहीं रह गया है और बापू के बाद उनके हिन्द स्वराज्य आन्दोलन का सृजनारम्भ विकसत नहीं हुआ है। फलस्वरूप उन जैसे एक समग्र व्यक्तिव उभर नहीं पाया है।

बापू की रचना-नीति तथा दार्ढ्य का यदि बहुराई से अध्ययन करें तो यह उष्ण हृदय लगता है कि उनके समस्त कार्यकलाप का सन्दर्भ स्वराज्य-व्यक्ति का और समाज का, जिसमें जीवन का कोई भी क्षेत्र प्रयुक्त नहीं रह जाता था। चिन्तु सर्वोदय समाज की परिस्थिति केवल तत्त्वहीन ही नहीं रही, बने-धने, रचनात्मक कार्यों के बदले सामाजिक सुधार एव राहूत कार्यों तक ही सीमित रह गयी। ब्रह्मसंघ के नाम पर प्रतिष्ठित व्यवस्था को विरोधी प्रचार की परंपराओं में न मानने की नीति, सत्याग्रह की भावना का विकास पूर्वक विरोध तथा "राजनीति के दिन लगे" जैसे उद्योग सर्वोदय आन्दोलन के लिए स्वाभाविक हो गये।

इन नीतियों के प्रति प्रसन्नोद उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। सभी सर्व सेवा सच ने स्पष्टि का धर्मार्थ मूल्यांकन करते हुए गत वर्ष सेवा धारा में ही राष्ट्रीय परिषद आयोजित की। धारा बंधने लगी थी कि सर्वोदय आन्दोलन राजनीति (सत्ता की राजनीति नहीं) से ही सत्याग को अपनी नीति में सुधार साने पर विचार कर रहा है। परन्तु सर्वोदय में एक प्रबल धार्मिक-प्रत्यय ने सारा धारा ही पलट दिया और सच के मंत्री बच साहू को कार्यरत्न के 'राजनीति नहीं' के शब्द बरस देने पर मजबूर कर दिया गया। इस तरह संघ की नयी पहल को विफल कर दिया गया।

द्वार देना में सर्वोदय राजनीतिक प्रस्था-कार सदाचार के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। राजनीति धर्मसंस्कारियों की दासी बन

गयी। जनता द्वारा इसके विरोध का शीघ्रतया गुजराने में हुआ। वहा के सर्वोदयी नेताओं ने जनता की उचित मांगों का साध दिया। देश के सर्वोदय आन्दोलन के संवेदनशील नेतृत्व को धरने सामाजिक दायित्व की प्रतीति होने लगी। तीव्र शांतालोचन का दौर शुरू हुआ। गुजराने के बयोबुद्ध सर्वोदय नेता रविगुजर महाराज तथा जयप्रकाश तारायण ने गुजराने जन-आन्दोलन से सबक सीखा। उसी भावना से जयप्रकाश बाबू अपने निष्काम भावी सर्वोदयी नेताओं के साथ बिहार में आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। देश के प्रायः समूचे सर्वोदय समाज का समर्थन उन्हें प्राप्त है।

इसी बीच राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्थापार, तानाशाही तथा जनविरोधी सरकारी नीतियों के विरुद्ध दलगत राजनीति से मुक्त एक राष्ट्रीय मंच की आवश्यकता की पूर्ति के लिए १३-१४ अगस्त को गांधी भवन प्रतिष्ठान नयी दिल्ली में जयप्रकाश तारायण की अध्यक्षता में जनतंत्र समाज (सिटीजन फॉर डेमोकेंसी) का उद्घाटन हुआ। इसके उद्देश्यों में बहा गया कि यह समाज उन सभी व्यक्तियों को एकज करे का प्रयास करेगा जो जीवन के सभी क्षेत्रों—सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक—में जनताधिक मूल्यों की प्रतिष्ठा चाहते हैं और जो जनतंत्र को सुरक्षित तथा सुरक्ष करने के लिए सक्रिय कदम उठाना चाहते हैं। यह समाज कोई राजनीतिक दल नहीं होगा और धोरन ही वह किसी राजनीतिक दल का समर्थन प्रथया विरोध ही करेगा। वह जनता की जनतंत्र के सिंहालनों का प्रस्थाप देगा आदि।

इसी में सविधान के अनुवार ५ मई को गांधी भवन प्रतिष्ठान में समाज की दिल्ली शाखा का गठन हुआ। कोई १०० सदस्य एवं प्रस्थाधी सदस्य उपस्थित थे। २१ व्यक्तियों की कार्यकारी समिति का निर्वाचन हुआ। समिति के अध्यक्ष पद के लिए बयोबुद्ध स्वतंत्रता सेनानी भीमसेन सक्करा चुने गये। उपाध्यय निरंजनगुण प्रसिध भारतीय लोक सेवक मण्डल (सर्वोदय माफ पीयूसा सोसा-

टी) के मंत्री सेवक राम। एंस० शी० जर्नल महात्मजी तथा गांधी भवन प्रतिष्ठान के श्री रूपनारायण जो प्रसिध भारतीय नशाबंदी परिषद के मंत्री भी हैं, मंत्री चुने गये। युवा वर्ग के प्रतिनिधि विनोद कुमार निर्वाचित हुए। छात्रों तथा युवकों की सगठित करने के लिए एक उपसमिति भी बनाई गई। समाज का मुख्य कार्यालय सत्यमेव नपर में रहेगा और उत्तरी क्षेत्र का कार्यालय गांधी भवन प्रतिष्ठान में रखा जायेगा।

इस बैठक में एक प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें प्रस्थापार के उन्मूलन के लिए कुद्वेक ठोस सुझाव दिये गये हैं और समाज की धोर से कारगर उपायों के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया गया है। इसके प्रतिरिक्त वस्तुओं की मूल्यवृद्धि की रोकथाम तथा शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन की मांग की गई है। प्रत्याय के विरुद्ध ब्रह्मसंघ के प्रतिरोध का सकल्प भी लिया गया।

इस उद्घाटन सभा के तुरन्त बाद कार्यकारी समिति की बैठक हुई जिसमें कार्यक्रम के क्रियान्वयन पर चर्चा के बाद पाया गया कि १६ मई को समाज की दिल्ली शाखा के तत्वावधान में एक तार्वरिक सभा की जायेगी जिसमें जनता की प्रायः गिकायों के निराकरण के उपाय मुद्दामे जायेंगे और जनता को ब्रह्मसंघ के संघर्ष के लिए प्रशिक्षित एवं संगठित किया जायेगा।

नई दिल्ली — जयतराम साहनी

सूचना

देश हड़ताल के कारण 'भूदान-यत्र' साप्ताहिक का १३ मई का अंक प्रकाशित नहीं हो सका इसके लिये हमें खेद है। हृदयया ऐनेन्ड अपने हिसाब में नोट करेंगे। पाठकों को सुविधा के लिये इस अंक में हम प्राड शूड प्रतिरिक्त दे रहे हैं। — व्यवस्थापक

BIG SCALE HELP TO THE SMALL-SCALE INDUSTRIALISTS!



If you are a small-scale industrialist, or intend to become one, come and discuss your projects with any of the UCObANK branches.

You pay interest of only 7½ per cent per annum on aggregate loans upto Rs.10,000; and 8½ per cent over Rs.10,000 and upto Rs.25,000; and 9½ per cent over Rs.25,000 and upto Rs.1,00,000. For details on loans above Rs.1,00,000 contact the nearest branch office.

* Helping people to help themselves—profitably

United Commercial Bank



जनता का लोकतंत्र पर से ही विश्वास न उठ जाए

२३, २८ और २९ अप्रैल को इन्दौर में
द्वि लोक स्वराज्य सभाओ की बिना कोई ठोस
कार्यक्रम तय बिने समाप्त हो गईं। मन्त्रिय
मण्डल की बिना गया। पहले यह सोची २०,
३१ और ३२ अक्टूबर को भीमारा में होने वाली
की भी जाने वाले थे। वे ३० वीं अल्पसंख्यक
के कारण नहीं जा पाये और बाद में सारीमें
करा कर सोची इन्दौर में भी गईं। सर्व
सेवा सच के अध्यक्ष सिद्धारा दत्ता सोची
में सोचीं तिन मोडूद रहे।

सोची की बैठकों में भीमल तयमम घालीय
लोग मोडूद रहे।
सोची के निवेदन में ध्यान दिया गया
कि बिना के बाल बनो पर प्राधारित मनदीय
प्रजापन और एक एकीय राजतन की गड-
विगत बल रही है। इनकी सुराहियों से परमान
होने के बावजूद लोग मनदूरी में दलीय प्रजा-
तन को बेहतर प्रयाशी मान कर चला रहे
हैं। परन्तु बाल्यबिचना यह है कि मापी,
किनीय, जयप्रकाश और एम. एन. राय
जैंगों ने सच्चे लोक-स्वराज्य को जो हरकत
प्रस्तुत की है, वह सभी तक के विरामित दलीय
प्रजातन से अधिक उन्नत और व्यावहारिक
है। विशेषकर हमार देश के लिए तो निरिपन्न
रूप से वह बहुत उपयुक्त है। पर: अब समय
का गरा है कि इतनी प्रजातन के बिन्दु के
रूप में लोक स्वराज्य की स्थापना के कार्य में
समस्त दृष्टा जाए बिनासे जनता का लोचन
वर से ही विश्वास न उठ जाए।

दली की भावों विविधों में परिवर्तन की जरूरत
है। जब तक हमारा लोकस्वराज्य का बुनि-
यादी काम पूरा नहीं हो जाता, तब तक बर्न-
मान ढांचे में परिवर्तन का कार्य चलाना है।
लोकतान्त्रिक सभानों में प्रतिनिधियों का
प्रत्यक्ष दायित्व मातागत से हो, जनता नि-
जब सभनों द्वारा प्रान्त प्रतिनिधि तहें न
जन प्रतिनिधि का विचार व्यावहारिक है
नुमाओं को प्राधारितक भीरं सार्वपात्रिक रूप
की विगतता में प्रष्ट कर दिया है, पर:
नुमा-अन्य पर प्रभाववाली बुजुग सभाया
जुनाए। इसके लिए नुमा-सभाओं से भी चर्चा
कर काएर पडति का बिचार किया जाए।
लोकतान्त्रिक सभानों की स्थापना मात्र से
कोसतन प्रवट नहीं हो सक्ता, बहिक प्रयाश
बोसतन जनसाधारण की सहायतात्मक प्रवृत्ति
से ही सजीव, सदैवजीवित और सचिय रूप
प्रवृत्त कर सक्ता है।

सोची के अगुयों की रूप देना सभाओ
रहने से बन पुरी की और उच हारंगना बनो
की तब तर बिहार प्रादि सभानो पर जो कुछ
दृष्टा उत्तरों कोई जरूरत भी नहीं थी। इस
दृष्टा उत्तरों के प्रतिरिक्त तयर प्राधि-
निए संसोचों में लोकस्वराज्य से सम्बन्धित
सामान्य विषयों के प्रतिरिक्त तयर प्राधि-
सभों तथा नगर-निगमों के चुनाव में पक्षबुजुग
सभों प्रतिनिधितन पर ही विशेष रूप से
विचार करने और कार्यक्रम विगतित करने
का निश्चित किया गया था। हानार्तिक सोची
का सामान्य बहसों में बिहार के जनबोधन
की उममे से ३० वीं तथा अन्य सभोंस्य मित्रों
के सहिय रूप में जुबने की चर्चा पुजुगेर
सभों से की गईं, पर अपने निवेदन और
निर्णयों में सभोच्छे के सार्वजनिकों को सोची के
पूरे बोधन बहसों की सभारा का प्राधीय तब
से मान लिया। सोची का प्राधीय तब
सेवा सच और सभा साहित्य प्रकियान्त्रिक
सोची में किया गया था और नरेड बुजे प्रयुक्त
सोची में किया गया था। सोची के मध्यमवर्ग के सर्वोदय
कार्यियों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, हरियाणा
मिन्नी के बासराज्य के भी कुछ सभों में भाग
लिया। सर्वोदय कार्य के सहायिबूतित रखने
काके इन्दौर तयर के कुछ सामान्य सार्वजिक
की सोची में समाप-समय पर उपस्थित रहे।

सिधारियों के अनुसार देश के निरिपन्न
प्रदेशों में जन-आशोक द्वारा संबट पूरुं स्थित
ना जो निरिपन्न हो रही है, उसके प्रति हर-
बारों, विभिन्न दलों, सहासियों, तागारियों
की बरा बुनिग
सोची में प्रादेशिक सरकारी के सञ्चय में
आम राय रही कि वे भाज की स्थिति में
प्रदेशों में भी सर्वदलीय सरकारी के सञ्चय में
समाप्तियों का रचनात्मक समाधान कर
तकनी है। अत उन्हें भी इस दिना में लोच
करनी चाहिए। उच्चोच-अन्तार की सत्यतें
की समस्त्याओं के समाधान में तत्परतापुर्ण
सहिय हों।

प्रदेशों में जन-आशोक द्वारा संबट पूरुं स्थित
ना जो निरिपन्न हो रही है, उसके प्रति हर-
बारों, विभिन्न दलों, सहासियों, तागारियों
की बरा बुनिग
सोची में प्रादेशिक सरकारी के सञ्चय में
आम राय रही कि वे भाज की स्थिति में
प्रदेशों में भी सर्वदलीय सरकारी के सञ्चय में
समाप्तियों का रचनात्मक समाधान कर
तकनी है। अत उन्हें भी इस दिना में लोच
करनी चाहिए। उच्चोच-अन्तार की सत्यतें
की समस्त्याओं के समाधान में तत्परतापुर्ण
सहिय हों।

पुनः पठ : लोककार, २० मई '७४

परिस्थितियां हम में से हर एक को सत्याग्रही बना देंगी : जे० पी०

(जयप्रकाश नारायण से श्रवणकुमार गर्ग और प्रमोदप्रकाश दीपक की बातचीत)

प्रश्न—इन दिनों तो आप पर घमासान एण बोझ पड़ रहा है। आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

उत्तर : स्वास्थ्य तो आप लोग देख ही रहे हैं किउन खराब है। कई बार तो रोना आता है धरणी बेवसी पर, किनवा कुछ करना चाहता हूँ, कर नहीं पाता स्वास्थ्य के कारण। बचपनकी वी एक कविता याद आती है—तीर पर कंसे रुझूँ मैं, प्राज्ञ सहरो मे निमग्नए। दिसम्बर में 'पूय फार डेमोक्रेसी' कार्यक्रम के लिए मैंने चुको का आयादन किया था। पटना विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच भी गया। फिर कागपुर, लखनऊ और कागरा हों कर दिल्ली पहुँचा तो गुजरात की नव-निर्माण समिति के लोग प्रा गये। प्राग्रह किया कि गुजरात चल कर हमारा मार्ग-दर्शन कीजिए। उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि हम आपकी हाइजेन करके धार्ये हूँ। उनके प्राग्रह को मैं टाल नहीं सका। वारो दिन गुजरात में बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा। इतनी व्यस्तता रही कि दिल्ली लौट कर बीमार पड़ गया। कुछ ठीक होने पर पटना लौटा तो यहाँ के डाक्टरों ने कहा कि 'प्रोस्टेट ग्लैंड' (पुरप ग्रन्थि) का प्रापरेसन करना होगा। पुराना हृदय रोग भी बीच-बीच में तय करता है।

प्रश्न—गुजरात के प्रान्दोलन की उप-तमिष और सभावनामों के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

उत्तर—नव निर्माण समिति के लोगों से गुजरात में जो धारन मैंने नहीं की, वही दोह-राना चाहता हूँ। उन लोगों से धीर उनके नेना मनीषी जानी से भी मैंने कहा था कि यह ठीक है प्रापरे-प्रापरे सगठन का नाम नव-निर्माण समिति रखा है, पर निर्माण की कोई

रूप-रेखा आपने बनाई है क्या ? धरर नहीं बनाई है तो उसे कुछ शक्न देनी चाहिए। आप लोगों ने आन्दोलन किया, चिमनभाई पटेल ने इस्तीफा दे दिया और आप लोगों की एक फनह हो गयी। चिमनभाई गये, आप लोगों ने विधान सभा के विघटन की माग उठाई। लेकिन उसके बाद क्या ? जो भगवती विधान सभा चुनी जायेगी। उसके लिए भी चुनाव तो पुरानी प्रणाली से ही होंगे न ? रविशंकर महाराज का गुजरात में सभी सम्मान करते हैं। नव-निर्माण समिति के लोग भी उनका नहा मानते हैं। धार्यों के प्रान्दोलन को उनका समर्थन भी प्राप्त है। उनसे भी मैंने यही कहा। दादा (रविशंकर महाराज) ने कहा कि एक साल बाद नये चुनाव हों, ऐसी हमने माग की है। इस एक साल में हम गांव-गांव जा कर लोगों की सम्भाव्ये कि किये बोट देना चाहिए। यह ठीक है कि दादा एक चुनाव के लिए लोगों को समझा देंगे इससे समझ है कुछ अच्छे लोग चुन लिये जाय। पर चुनाव तो हर पाच साल बाद, या विधान सभाए इसी तरह भंग होती रही तो बीच-बीच में भी होंगे हर बार कौन जा कर सम्भाव्येया ?

यह जो डाचा कायम है धार, जिस वा चुनाव भी एक भग है, जब तक नहीं बदलता कुछ सभा नहीं निकलेगा। और उसके लिए जरूरी है कि एक सगठन सगठन पूरे प्रान्दोलन में से लड़ा हो। लेकिन यह तो धार्ये की बात है। इन समय भी लोभलस का जो डाचा है, उसके धार्यत चुनाव की पद्धति में परिवर्तन करना जरूरी है। धरभी तो जैसा उत्तरप्रदेश में हुआ, ३२ प्रतिगत नव जिस दल को मिले, उसे बहुमत मिल गया और ६८ प्रतिगत मत

बेकार हो गये। यह पद्धति अत्यन्त दोषपूर्ण है, इसे बदलना जरूरी है। लेकिन जनता लोक-तान की प्रहरी बन सके, इसके लिए नयी सस्याओं का निर्माण और विचार करना होगा जिनके पीछे सगठित जनशक्ति हो। तभी समस्याओं का स्थायी हल निकल सकेगा।

प्रश्न—विहार में तो आपने गफूर साहब से इस्तीफे की माग की थी।

उत्तर—गफूर साहब के इस्तीफे के बारे में मैंने जो पहला बयान दिया था, उसका एक सास सन्दर्भ था। इस बारे में पटना से प्रकाशित 'इन्डियन नेशन' के २६ मार्च के अंक में संपादक के नाम धरने पर मैंने भयना भाषण स्पष्ट भी कर दिया था कि अठारह मार्च को पटना में शासन की जो विफलता उजागर हुई, जिसको स्वयं गफूर साहब ने भी स्वीकारा है, उसे देखते हुए गफूर साहब धरर उस समय तुरन्त इस्तीफा दे देने तो जनता में उनका जो स्थाव प्राज्ञ है, वह नहीं ध्रमिक बढ जाता।

धरणी बात मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूँ कि मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है कि कौन या मन्त्रिमण्डल टूटता है या बनता है। विधान सभा भंग होती है या पुनर्निर्वाचन होता है। चाहे जो मन्त्रिमण्डल बने या जो भी सरकार आवे वह ध्रष्टाचार महाराई, बेरोजगारी डूर, बरेगी या शिक्षा की पद्धति में कोई प्रातिकारी परिवर्तन करेगी, इसमें मेरा बहुत विश्वास नहीं है। इसलिए मैं तो बीमारी की जठ पर प्रहार करना चाहता हूँ और उसके लिए कार्यक्रम सोच रहा हूँ। कार्यक्रम धर केवल प्रान्दोलनात्मक नहीं रहे

→

सत्ता, उसे तो संपर्प का रूप देना पड़ेगा। मेरे सामने प्रश्न है कि नीचे से ऊपर तक प्रत्यक्ष व्याप गया है, महंगाई सारी हुई है। सत्ता गयी है, इसके विरुद्ध किस प्रकार से प्रतिस्पर्ध संपर्प या सत्याग्रह किया जाये ? इसका मुझे लगता है कि परिहारियों हममें से हर एक को सत्याग्रही बना देना।

प्रश्न—बिहार के वर्तमान शासित्व के बारे में आप क्या सोचते हैं और इसे किस ढंग से खलना चाहते हैं ?

उत्तर—बिहार छात्र-संघर्ष-समितिकी संघान्त समिति के कुछ सदस्यों के साथ मेरे बीरवातपीठ हुई थीं तब एक सदस्य न बरुण जोर देकर कहा था कि—जब प्रकाशजी केवल मार्गदर्शन से ही काम नहीं चलता। पापरी हुन लोगों का नेतृत्व भी करना पड़ेगा। मुझे नहीं पता कि क्या उचित सदस्य भी इन बात से सहमत थे। मैंने तब उनसे कहा था कि मैं हूँ तब से उनके साथ ही और उनका संपर्प भी करूँगा, पर मेरी कुछ बातें हैं। पृथ्वी पर है कि शासित्व पूर्णतया शासित्व ही तथा अधून, सारी, गोली के सामने भी शासित्वकारी शासत रहे और सम्भव ही तो उन सब का डटकर मुकाबला करें। हूँ तब यह कि छात्रों का कोई शासित्व ही तो उसे निर्दोष ही रहना चाहिए और उसका नेतृत्व भी छात्रों को के द्वारा में रहना चाहिए ऐसा मैं मानता हूँ और भी ऐसा ही मानता चाहिए।

मुझे लगता कि शासित्व को धार व्याकर बनाना है तो उसे जे तिर से गठित करना होगा। छात्र संपर्प समिति की संचालन समिति में प्राध्यापकों की विद्यार्थी परिषद, मान्यता और समस्त कार्य से तब सह रहे हैं। मेरे कहने पर उन लोगों ने अपने-अपने दलों से उत्सुके दे दिये हैं, पर इलोहरा गो ब्रारी बास है। भाली प्रत्ये है कि वे आगे भी अपने-अपने दलों से निर्देश प्राप्त करके काम करते हैं या नहीं। इनकी सम्मति से ही शासित्व गठी किया जा सकता है कि उनके निष्पत्त दल प्रायः जा सत्ता की उत्कृष्ट विधि का दुहायण करने को चेष्टा करें। मुझे राजनीतिक दलों से कोई विद्रु नहीं है, उन सबका बीजान लोकन में घलना स्थान

है। परन्तु प्राज जो राजनीतिक दल सत्ता में हैं वे सत्ता में ही बने रहने के धोर जो नहीं है वे सत्ता प्राप्त करने के ही प्राकाशी हैं। मुझे नहीं मानूम कि देश में ऐसा भी कोई दल है जो पक्षपात और भ्रष्टाचार भी बुरा लोगों से दूर हो। बिहार में लगभग सभी राजनीतिक दलों के मन्त्रिमण्डलों को धारणा या जा चुका है और उसका सबक धरती लाया ही है।

छात्रों से मैंने यह भी प्रोधा था कि वे शासित्व कितने दिन बलापमें तो तब उन्होंने कहा था कि उन्हें महीने बना सकते हैं। और उसके बाद ? तो कहा कि उनके बाद परो-छाए भा जायेगी। धरत पुरी व्यवस्था को लन से बदलना है तो डेढ़-दो महीने के धारो-नच से नहीं होगा। शासित्व नस्था चने तो इसमें ऐंभ निष्ठावान साग ही चाहिए जो पूरे समय तब साथ रह सकें। तबका प्राति सेना धरत निर्दोषीय छात्र जो बड़ी शय्या में धारः लन से सक्ति हुए है उसम गोवीं।

प्रश्न—क्या आपने शासित्व के लिए कोई कार्यक्रम भी तय किया है ?

उत्तर—बिहार देश का सबसे गरीब प्रांत है और बिहार में ही सबसे प्राधिक भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार निक सरकार और व्यापार में ही नहीं है, पुरी समाज रचना में है। मेरे लिए भ्रष्टाचार केवल एक

नैतिक सवाल ही नहीं है, जनता के पेट से इसका तोषा सबक है। बिहार का शासित्व युवा छात्रों को धारित्व है। बड़ी सत्ता में निर्दोषीय और शासित्व में विस्थापन करने वाले छात्र इस शासित्व से जुड़े हैं। मैंने उनसे कहा कि यह आरंभ के लिए स्वर्ण धरत है और यह धारणा शासित्व है। इनको खलना थाक ही जिनमेंदारी है। धारत गदर निये जब तक रहोगे। धारतों सडल करना होगा कि हम भ्रष्टाचार चलने नहीं देंगे। धारत का यहो कर तब है, हुट रहो है, दारतिय पुरी व्यवस्था पर ही चोट बन्ती पड़ेगी। पठुर साहब हुट कि फिर बेमाल पीपल के माड पर धारणा नाप की जगह लोपना।

जबकि इस बात की है कि छात्रों में धार तथा की तरह कहेंगे में सो-दो धरो की

लेकर पड़ोस समाएँ बनें, कई पड़ोस समाधो को मिला कर मोहल्ला परिषदें बनें। मोहल्ले के युवा लोग इन समाधो, परिषदों का नेतृत्व करें। अपने ही धरो से भ्रष्टाचार मिटाने की शुक्रभात करें। धारा आरतोलन महंगाई के साथ भ्रष्टाचार को लेकर चला है, इसलिये इसमें भाग लेने वाले छात्रों को अपने धाररछ को भी बचोटी पर रलना होगा। तभी उन का धरत भाग जनता पर ही सकेगा। प्राये दिन की बात है विद्यार्थी परीक्षा में नकल करते हैं, पकड़े जाते हैं तो शिक्षक पर धुरा निबाल लेते हैं। परीक्षा में भागल होने पर या पन अथ मिलने पर गलत तरीके से नक्ल बडधाने हैं और उच्च धंजी प्राय करने की चेष्टा करते हैं। जरा-जरा ही बात पर वे ही विद्यार्थी धार सत्ता देते हैं और जनता की भी धारों में बालें हैं जो सदाचार में तो नहीं होगी। धरत ऐंभ ही भ्रष्टाचार में ही विनाक शासित्व नलायेगे तो उधवा धरत नहीं होगा। मेरे कहने का यह मानव कदापि नहीं कि सारे विद्यार्थी सत ही जायें। पर ए साधारण सदाचार को धरता एक विद्यार्थी से को जा सकती है, उसे शासित्व में यह मैं जरूर चाहता हूँ।

छात्रों की बनाई हुई मोहल्ला समाएँ धरत सक्ति रूप से व्यवस्था परिवर्तन का काम बरेंगी तो उनके शासित्व में धार धार भी जुडेंगा सब जनता अपने उम्मीद-धारत तो हालत यह है कि उम्मीदवार भूने जति है जनता के चोट से लेजिन उनकी धारणा गहरी है राजनीतिक दलों के धारत बनान के ह्रापो में।

प्रश्न—ये तो व्याकर कार्यक्रम है। धार कहते रहे हैं कि छात्रों को खलना शासित्व मानो से सीधे जोड कर खलना चाहिए। उन धारि में धारके क्या सुभाज है ?

उत्तर—मेरे ध्यान में छात्रों की धार सुन्य भांने गली है जो जनता की भी सागे है। इनके धारो कुछ भांने छात्रों की धृतिजन से की गई है। भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोज-

पूजान-पत्र : सोमवार, २० मई, '७४

गारी धीर किरां प्रगामी मे धामूल परिवर्तन मे जनता की भी मारो है। महंगाई के बारे मे तो मैं बहता रहा हूँ कि मुख्य रूप से सरकार की प्रचनीति के कारण ऐसी भयकर स्थिति उत्पन्न हुई है। सारी दुनिया मे ही मुद्रास्फीति है, यह बात केवल आर्थिक तथ्य है, क्यों कि भारत मे बाकी दुनिया की प्रेषता कई गुना अधिक महंगाई बढ़ी है। शासन की प्रयोग्यता और नलत नीति इसके लिए जिम्मेदार है यह पूरे देश का मामला है। लेकिन आज जो चोरटा बना है उसके अन्दर विहार मे संपर्क समितिया या ग्राम-सभा पडोस-सभा प्रादि कुछ कर सकती हैं। एक इलाके मे देश से कितना राशन चाहिए, धीर प्रशासन को सूचित कर दें कि हमे कोई विचोषिया नहीं चाहिए। गेहूँ, जवल, चीनी, जो भी हो, प्रशासन हमे दे दे। हम स्वय ही उसे बाट देगे।

इसी तरह धोक व्यापारियों, खुदरा व्यापारियों से दाम के बारे मे बात करें। लागत पर उचित मुनाफा प्राप्त ले लीजिये, लेकिन मुनाफाखोरी, बमाखोरी हम नहीं करते देंगे। आवश्यक वस्तुएं गंजार से गायब हो जाती है, लेकिन चोरन, मे महंगे सामो

(पृष्ठ २१ का अन्त)

पानी, रोगानी, सफाई तथा आरोग्य इत्यादि की व्यवस्था करेगी। मुद्रास्फीति अनुसार ये सामानें मुक्त मण्डल, महिला मण्डल तथा सफाई सेना इत्यादि को गठन भी कर सकती है। मोहल्ला सभाओं तथा नगर पालिका, नगर निगम के बीच की मुख्य कठोरोहोमी बाडे स्वराज्य सभा, जिसके जिम्मे मुख्यतः समन्वय का काम होगा।

गोष्ठी की प्रत्य सिफारिशो मे कहा गया कि जनमानस निर्माण के लिए प्रत्यक्ष रूप से देश के प्रत्येक नागरिक का दरखाज खट-खटाया जाये। सिफारिशो मे राजनीति वालो से यह प्रेषता की गई कि वे देश मे विचार-शिक्षण द्वारा लोक सेवा करते रहे। रचनात्मक संस्थाओ तथा सर्वोपय कारकताओ से प्रेषता की गई कि वे अपने वर्तमान कार्यक्रम

पर जितनी चाहे मिल जाती है। जन-संगठनों मे इतनी शक्ति हो, इतनी छात्र शक्ति हो कि वे इन चीजो को न चलते दें, तभी इनको रोकना जा सकता है। जनता, शासन, व्यापारी छात्र, सब मिल कर तय करें। जनता धीर छात्र प्रहरी बनें, होमियार रहे कि कोई गलत काम न होने पाये। तो शासन धीर व्यापार पर अंकुश रखा जा सकता है छात्र-संघ के माध्यम से जनशक्ति इस काम के लिए सगठित हो सकती है।

प्रगटाचार के मामले में तो मैं सोचता हूँ कि छात्रो की एक समिति बनाऊँ जो प्रगटाचार के तथ्यो की जाच करें। मन्त्रियो धीर बडे प्रफरतो के बारे मे पता लगायें कि उनमे कौन प्रगट लोग है। सभी प्रगट है, ऐसा कह देने से कुछ करने का आधार नहीं बनता। तथ्यो का पता लगाना होगा फिर उसके आधार पर कार्यवाही हो।

शिक्षा मे परिवर्तन के दो पक्ष हैं। पूरी शिक्षा व्यवस्था मे धामूल परिवर्तन तो दूर-गामी लक्ष्य है। लेकिन अभी कुछ तात्कालिक सुधार करना भी जरूरी है। मैं शिक्षा शास्त्रो नहीं हूँ। लेकिन जो कुछ भी मेरे विचार है, उन्हें समय मिलते ही सामने रखूंगा। बेरोजगारी का स्थान शिक्षा की पद्धति और प्रय-

नीति से थुहा है।

प्रश्न:—चन्द्रशेखर का एक वक्तव्य प्रकाशरो मे आया था कि आपके धीर प्रयात मन्त्री के बीच विवाद समाप्त हो जाना चाहिए। उस पर प्राणकी क्या प्रतिक्रिया है ?

उत्तर:—प्रधानमन्त्री के साथ मैंने तो कोई विवाद शुरू नहीं किया उन्होंने मेरे निजी जीवन पर जिस तरह प्रश्नो लयाया है, उस स्तर पर उत्तर कर में तो उन्हें कोई बजाब दे नहीं सकता। जहा तक राजनीतिक दलो की बात है, मैं बराबर बहता रहा हूँ, बल्कि मैंने इसके लिए प्राग्रह किया है कि छात्र प्राडोलन निर्दलीय रहे। दलीय राजनीति मे मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। लेकिन देश की जो हालत हो गयी है उसे अब चुपचाप सहना सम्भव है। महंगाई भी मार ऐसी है कि क्षण क्षण बचने बेच रहे हैं, भूखो मरने से बचने के लिए यत्न खा कर जान दे रहे है। लोगो को ऐसी जलता धीर अन्वय के विरुद्ध मैं लगातार प्रावाज उठाऊंगा, यह मेरा सक्ल सौर प्रण है। महंगाई धीर प्रगटाचार के विरुद्ध जनता के शांतिमय संपर्क धीर सत्याग्रह के लिए जो कुछ भी मुक्त से बन पड़ेगा, वह मैं बर्कंगा।

को चलाते हुए लोक स्वराज्य के कार्यक्रमो मे सामर्थ्य के भूमिका बनाये र्थे। इसी प्रकार सिफारिशो से सरकार के प्रेषता की गई कि वे स्थितिके सम्भान के लिए देश की विभिन्न शक्तियो से सम्भन्धो के परातल पर तत्काल सवाद (विचार-विमर्श) करें।

धाम प्रादमो की समझ मे आने वालो भाषा की बहुत मे न पड़ कर गोष्ठी के निवेदन की समीक्षा की जाए तो भी काफी कुछ पच्छी सिफारिशो गोष्ठी मे की हैं। गोष्ठी की प्राय वैठनो मे जो चर्चो हूँ वे धीर भी तेज धीर प्रयोग्य करणो से उन चर्चो को निवेदन मे उद्याना नहीं गया होगा। इस सबके बाद जो सवाल परेशान करता है वह यह है कि जनमानस निर्माण के लिए प्रत्येक रूप से देश के प्रत्येक नागरिक का दरखाज खटखटाये जाने की जो बात सिफारिशो मे

की गई है वह कब धीर कंते शुरू होगी ? देश के कई दुर्भाग्यो मे एक यह भी रहा कि देश की सरकार को प्राजदो के बादसे इस बात के लिए लगातार शानिया दी जाती रही कि देश के धाम प्रादमो के दिह मे जो योजनायें उसने बनाई उनका क्रियान्वय कभी नहीं हो सका, कुछ दिहने २७ वर्षो मे देश के तहस्य विपत्तयो, निर्दलीययो, राजनीतिक दलो के लोको धीर प्रत्य सत्य कहे जाने वाले लोको ने भी 'गरीब' की भासाई के लिए जितने प्रस्ताव 'पास' किये वे भी बागजो के बण्डलो मे जमा हो कर रह गये। इसलिये इस बात की एक वाजिब जिताता प्रव की जानी चाहिए कि लोग गोष्ठीयो धीर सम्मेलनो मे उनकी निरर्थकता के कारण आना छोड दें उसके पहने ही उनकी सामर्थकता को स्थापित किया जा सके।

श्वपकृमानर्ग

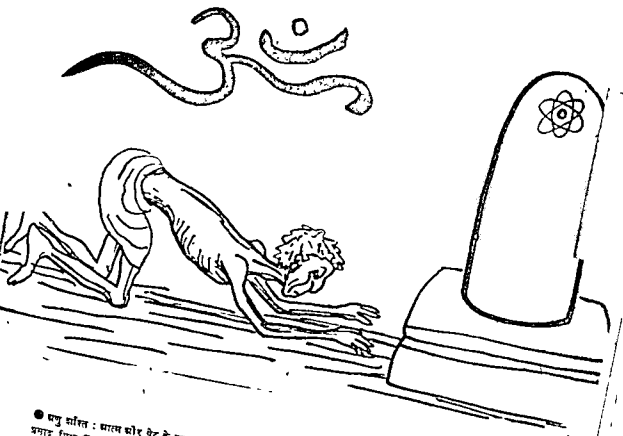
वारिक शुक्र—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ पालिय या ५ इतर, एक घं का मूल्य ३० पैसे।

प्रभाप जोधो द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ० जे० डिप्ले, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

साप्ताहिक

35
 "सति प्रथम"
 5 JUN 1978
 क्रमांक.....
 मूल्य.....
 प्रकाशक श्री श्री मंत्रालय भारत

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
 नई दिल्ली, सोमवार, २७ मई, '७४



● धनु शक्ति : भारत और वेद के तबाल प्रभाय जोशी ● तब तक राह देलना है विनोबा ● रेडियो बसिता की पूज भवानी
 प्रगट निथ ● सावधानी बरतने की अकरत है विप्रात्र बर्दा ● जयता की विरुध अहित मे है नारायण देवाई ● उत्तर
 प्रदेस सर्वोच्च मजस के निर्णय ● लोक धामदीशन की मर्मास दादा धर्माधिकारी ● अष्टाचार सिक्क प्रगासन और सरकार
 में नहीं है जययक, नारायण ● एक करोड़ हस्तास र समुक्ति ● कुछ लेक-मुबरलात डॉ. रविगकर शर्मा ● मुनेर में
 निरुला नु गिया और विज धनुयम निथ

अणुशक्ति : आत्मा और पेट के सवाल

अणु विस्फोट करने के बाद भारत सरकार ने घोषणा की है कि इस शक्ति का उपयोग वह सिकं शान्ति और निर्माण के लिए करेगी और उसके इस दरादे में अधिकांश देशों ने अविश्वास प्रकट किया है। अणुशक्ति का राजनीति का वह स्वभाव नहीं है कि वह किसी देश के पवित्र दरादे में विन्यास करे। जब किसी देश के पास ऐसी कोई शक्ति का ज्ञान जो संयंकर संहार कर सकती है तो अणुशक्ति के भय से अस्त यत्त ससार अकारण हो उठता है। दस साल पहले जब चीन ने विस्फोट किया था तो यह जानते हुए भी कि उसकी शक्ति कितनी कम है हम कितने अधिक चिन्तित और परेशान हुए थे। पाकिस्तान का हथियारों से लस होना हमारे लिए हमेशा खोखलाहट की हृद तक पहुंचने वाली खिन्ता का कारण रहा है जब कि सब जानते हैं कि शक्ति के मामले में पाकिस्तान से हमारी कोई बराबरी नहीं है। दिग्गो गांधिया ने सामरिक अहंता बनाने के अमरीकी प्रस्ताव का हमने विज्ञान विरोध किया है। क्या हम जानते नहीं कि दक्षिण पूर्व एशिया पर अस्तर अज्ञानों के लिए अमरीका जैसे अहंता के बिना भी काम चला सकता है? अणुशक्ति के हथियारों से हमें अपनी सुरक्षा की खतरा महसूस होने लगना है और महाशक्तियों के दरादों को हम शका की हृदित से देखते हैं तो हमारे हथियारों से अहंताओं का निमित्त होना और महाशक्तियों का शकागील होना स्वभाविक है। दूसरी की अणुशक्ति अणु हमारे लिए संकट का कारण है तो हमारी अणुशक्ति दूसरों के लिए अणुशक्ति नहीं हो सकती। इसलिए भारत का अणु शक्ति का यह दरादा है कि उसकी अणु-

शक्ति पूरे ससार के लिए अणुशक्ति सिद्ध हो तो उसे पहले दूसरी से भयभीत होना छोड़ना पड़ेगा और मन वचन तथा बर्ण से स्थापित करना होगा कि उसके लक्ष्य पवित्र हैं। इस देश में ऐसे लोगों की बर्मी नहीं है जो कहेंगे कि यह जिम्मेदारी हमारी ही क्यों हो? क्या पहली अणुशक्ति, अमरीका का दुनिया और मनुष्यता के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है? उसी ने तो हिरोशिमा पर पहला अणुबम गिरा कर एक लाख बीस हजार लोगों की जान ली थी। मनुष्यता पर इतना बड़ा अत्याचार करने के बाद भी वह कहाँ रुका? हाइड्रोजन बम तक उसने बनाया है। उससे भय खा कर रूस ने फिर ब्रिटेन ने और उससे भय खा कर फ्रांस ने, और फिर इन महाशक्तियों की ठेकेदारी छोड़ने के लिए चीन ने बम बनाये। इन देशों की अणुशक्ति कोई शान्ति और निर्माण के कार्यों में ही नहीं लगी है। अणुशक्ति का ग्यादातर महत्व और उपयोग सहायशक्ति के लिए ही है। दुनिया में अणुशक्ति अभी तक तीसरा महायुद्ध नहीं हुआ तो इसका कारण अणुबम है क्योंकि उसने युद्धों को बेमत्तव कर दिया है। तो जो शक्ति दूसरे देश को हम पर हमला करने से रोक सकती है और अणुशक्ति में भी हमारी सुरक्षा की गारंटी दे सकती है उसका विस्फोट करने में क्या खतरा है? इससे तो बल्कि शान्ति ही बनी रहेगी। और फिर हमारा विस्फोट तो अणुशक्ति का। वास्तविकता के अणुशक्ति का सबको खतरा हमारा इस कार्यवाही से है और यह तो हमारा शुरू से बचन है कि हम शक्ति का उपयोग शान्ति के लिए करेंगे। जब अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन के

लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे अपनी अणुशक्ति को शान्ति और निर्माण के कार्यों में लगा कर उसे अणुशक्ति सिद्ध करें तो दुनिया भर की नैतिक और मानवीय ठेकेदारी भारत पर ही क्यों लादी जाये? अणुशक्ति हमें भी एक राष्ट्र के नाते जीवित रहना है और अपनी सम्बन्धी-चौड़ाई और जनसंख्या के अनुकूल दुनिया के देशों में अपना स्थान स्थापित करना है।

वे सब दलीलें छोड़ी राष्ट्रीयता की कोल से नहीं अणुशक्ति राजनीति की सच्चाई से अमरीकी हैं। हमने देखा है कि पाकिस्तान से दो अणुशक्ति युद्ध लड़ने और चीन से लड़ कर अणुशक्ति होने के बाद दुनिया ने हमारा कोई सम्मान नहीं किया जब कि शान्ति और सह-अस्तित्व के पंचशील सिद्धान्तों के हम जनक थे और शीतयुद्ध का अनावृत्त हमने हमने बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा किया था। दुनिया में हमारा स्वभाव दिसम्बर ७१ में बड़ा जब हमारी सेनाओं ने बागला देण के मुक्ति युद्ध में पाकिस्तान को पराजित किया। दुर्भाग्य से आज के समय और विकसित ससार में भी उसी को प्रतिष्ठा मिलती है जिसके पास कारगर अणुशक्ति है। वास्तविकता से अणुशक्ति के अणुशक्ति के सामने अणुशक्ति बनना है। भारत अणु एक अणुशक्ति और अणुशक्ति सम्पन्न देश है और इससे हमारा गौरव बढ़ा ही है। दुनिया के छोटे-बड़े देश अणुशक्ति विस्फोट की अस्तोना करते हैं तो इतना कारण यह है कि हमने महाशक्तियों के अणुशक्ति को अपने पक्ष में लहाया है और छोटे देश अणुशक्ति हैं तो उन्हें अणुशक्ति हम दे सकते हैं।

और फिर अणुशक्ति का उपयोग कर सबने ही तबनीकी धमका प्राप्त करना तो एक वैज्ञानिक उपलब्धि है। जिस तरह विज्ञानों के अणुशक्ति और उपयोग ने अणुशक्ति कर ही उठी तरह अणुशक्ति का उपयोग नये विज्ञानों की अणुशक्ति का सफल है। हमें सर्व होना चाहिए कि हमारे वैज्ञानिकों ने यह कर दिखाना और सबके अणुशक्ति की अणुशक्ति का अपना प्रमुख मिश्र किया। विज्ञान और तबनीक में हम अणुशक्ति के पीछे नहीं हैं। अणुशक्ति का उपयोग सब हम गरीबी हटाने और सामाजिक ग्याय दिखाने



मे कर सकते हैं। धनु विस्फोट करके भारत ने कोई पाप नहीं किया है।

इन सब दलीलों के वजन को स्वीकार करने के बाद भी १८ मई का विस्फोट इस देश की भावना के गले नहीं उतरता। अभी हालांकि प्रधान मंत्री से ले कर साधारण पत्रा लिखा भारती तक गर्व से गर्दन ऊंची उठाये हुए हैं और धार्मिक सकट के इन भाव-पायी दिलों में भी उसे अपना मनोबल ऊंचा रखने का एक साधन मिल गया है। लेकिन कौत्सि की यह धूल विस्फोट से उड़ो रेडियो यहाँ धूल से भी ज़रूरी बँटने वाली है। विस्फोट से पार के रेविस्तान में बनी सुन्दर पहाड़ी हमारी आँखों को ज्यादा दिन लुभा नहीं पायेगी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और विकसित तन्त्रिक के यथार्थ से ज्यादा बड़ा यथार्थ इस देश की भावना और पेट का है।

विनोबा ने सच कहा है कि इस विस्फोट से शान्ति भी हो सकती है और शान्ति भी। इससे शान्ति होगी इस बात पर तो इस देश के कई महत्वपूर्ण लोगों ने जोर दिया है लेकिन इस से शान्ति क्या होगी इसे बनाने का वैदिक साहस दुर्भाग्य है कि निश्चयी ने नहीं दिखाया। आश्चर्य है कि यही वह राष्ट्र है जिसके पिता ने एणु की शक्ति के प्रकटन के बाद कहा था कि एक हजार अणुओं से ज्यादा शक्ति सत्य और अहिंसा में है और भारत अगर भारतीय भावना के इस रास्ते पर चलता तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे मिटा नहीं सकती। उनसे जल्दे जल्दे छद्मगीम घाल बाद हमने हिरोशिमा पर गिरे बम की ताकत का विस्फोट किया और यह याद दिवाने वाला कोई नहीं है कि हम अबसर गर्व का नहीं आत्म परीक्षण का है। कोई नहीं बहाना कि हम अपने सारे इतिहास में हिंसा की विरथकता और अहिंसा की शोकास्य-गना पर जोर देने रहे हैं और भारतीय भावना का-बाद सारा मे स्वामी शान्ति की स्थापना हमारी भावना का एक प्रमुख स्तम्भ रहा है। इन शक्ति के दुरुपयोग के सतरो से हम सारे सभार को बेताबती देने रहे हैं और इनकी कोई ग्यारटी हमने नहीं की है कि हमारी धनु शक्ति का उपयोग सिर्फ शान्ति और निरभय के बायीं में होगा। शान्ति सरकार को अनुभव बनाने से जागरूक अजमत ही तो रोक सकता है। लेकिन है कोई विरोध प्रपचा (शुकी पेज १६ पर)

तब तक राह देखना है : विनोबा

भारत जब मगल यात्रा करके भाग्येता तब वावा अभिनन्दन करेगा। तब तक राह देखना है। मगल को संस्कृत में भौम यानी भूमिपुत्र कहते हैं। य प्रयोग का प्रारम्भ है।

शान्ति के लिए ही यह किया है, इसका उपयोग शान्ति के लिए भी हो सकता है और शान्ति के लिए भी हो सकता है। मंगल पर से अभी को लौटा नहीं है। वहाँ पानी मिलेगा। प्राणी मिलेंगे। तो वे यात्रा करके शायेंगे तब अभिनन्दन करेंगे। तब तक ठहरना।

रेडियोधर्मिता की धूल

धब लिलेंगे भारत में धब तक की—
अन्तर्जाती समृद्धि के फूल
क्योकि भाव उड़ाई गयी है वहाँ भी
रेडियो धर्मिता की धूल और
पीछा करके हेलेनोकोप्टर से भारतीय
किन्गोमीटर तक उस धूल को देल लिया गया है
कि उसमें विष का कुछ नहीं है
तो फिर जो कुछ होगा समुद्र का होगा
धनु का कुछ नहीं होगा इस कथन में
जो कुछ होगा वेशक जल का होगा
एक तो इस कारण से कि हमने अपनी
प्रधानमंत्री को आज तक न कोई
गलन काम करने देखा है, न कोई
भूठ बान कहने सुना है, न क्विक
हमने तो उन्हें, देखा भले न हो,
गरीबों के लिए विन-पाठ
परीशीतो घटे पाठो पहर मरने सुना है
इसलिए हम जो बीम पच्छीस वरसो से
प्रतिवर्ष बरोडो रूपये लखें बरके
अणु-बम धारे हुए हैं तो मानना चाहिए
कि हम लवने धब तक गरीबों की
परेशानी की मार के मारे हुए हैं
यह ठीक है कि अणु-बम का पानन
सर्बोता है और उसमें जो लखें
बरना पड रहा है उसके कारण
मुद्रा स्फीति, महंगाई और भूखमरी बड गयी है

मगर अणु का जब हमने विस्फोट
क ही लिया है तो मानना चाहिए
कि हमारी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा
रेडियोधर्मिता धूल की तरह ऊपर धड गई है।
और अब हम भी अणु-विस्फोट के प्रयोग
शान्ति धर्मान्ताज, सेल अन्न प्रादि
के उत्पादन की दिशा में कर पाये तो
बायें जो संकट दन सब के अभाव में
वे देड जायेंगे और विकासशील
देश भी दो हिस्सों में बट जायेंगे
एक वे जिनमें अणु विस्फोट मारी किया
और एक वे जिनमें कर लिया है
जिनमें कर लिया है उनमें होगा केवल
हमारा देश एक वचन में
और तब बहुवचन में हमारी प्रधानमंत्री
के केस ससार म्यापी ब्योम में बिकर कर
हमारी प्रतिष्ठा का केवल पहरायेंगे
कोटि-कोटि कठ, भ्रुण के मारे धाराज
नहीं निचलेनी, तो भी बायेंगे
'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दीस्तो हमारा'
हम मुनसुर्ते हैं उसकी वह युतिस्ता हमारा'
क्योकि युतिस्ता तो यह धब बनेगा
धब लिलेंगे उसमें अणुधर्मिता समृद्धि के फूल
उड़ाई जो जा मरेंगे है धब यहाँ
रेडियोधर्मिता की धूल

—मधानो प्रसाद मिश्र

सावधानी बरतने की जरूरत है

ग्रणु विस्फोट पर सिद्धाराज डड्डा

मई १८ को सवेरे राजस्थान में किसी जगह भारत ने अपने पहिले आणविक विस्फोट का परिष्कार किया। अभी तक दुनिया में सिर्फ पांच देशों ने ग्रणुशक्ति के परीक्षण किये हैं—अमेरिका, रूस, इंग्लैण्ड, फ्रांस और चीन। इस प्रकार भारत ससारा में छठा देश है जिसने आणविक विस्फोट करके उस शक्ति का उपयोग कर सकने की वैज्ञानिक क्षमता प्राप्त की है।

ग्रणु शक्ति पैदा कर सकने की क्षमता भारत ने हासिल कर ली है, यह शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से सतोप का विषय है। इस क्षमता का उपयोग संहार करने के शस्त्रारत बनाने में भी किया जा सकता है और नुक़ाद तोड़ने, नहरें बनाने, बड़े पैमाने पर परती को इधर-उधर हटाने जैसे जीवनोपयोगी कार्यों के लिए भी किया जा सकता है। भारत से पहिले जिन पांच राष्ट्रों ने अभी तक ग्रणु विस्फोट की शक्ति हासिल की है वे सभी उसका उपयोग मुख्यतः संहार के शस्त्र बनाने में कर रहे हैं, शांतिमय कामों के लिए भी करते हैं। इन पांचों में से सिर्फ चीन ने इस प्रकार का परीक्षण करने के साथ-साथ यह प्रावधान ज़रूर दिया था कि वह आणविक हथियार बनानेगा लेकिन स्वयं अपनी धोर से उनका पहला उपयोग नहीं करेगा। यानी वह प्राणविक वम धारि शस्त्रों का उपयोग दूसरे किसी राष्ट्र द्वारा उसके खिलाफ़ उत्रना प्रयोग किये जाने के जबाब में ही करेगा। केवल भारत ऐसा देश है जहां की सरकार ने पहले भी धोर प्रवृत्त इस समय फिर से, सावजनिक रूप से, यह कहा है कि भारत अपनी ग्रणु-शक्ति-योग्यता का उपयोग केवल शांतिमय कार्यों के लिए करेगा। यह घोषणा भारत की परम्परा धोर इस देश की जनता की भावना के अनुकूल है। इससे पहिले भी स्त्र० पंडित जवाहरलाल नेहरु धोर साम्बहादुर सास्त्री, देश के दोनों भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों

ने समय-समय पर यह प्रावधान दिया था। उस समय दिये हुए आश्वासनों की अपेक्षा इस समय थीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रावधान, जबकि भारत ने आणविक विस्फोट की क्षमता हासिल कर ली है, विशेष धर्म धोर महत्व रखता है। इसके लिए इन्दिाजी धर्मिनन्दन की वात हैं। हम प्राणा करते हैं कि भविष्य में उनकी सरकार वा प्रागे जाने वाली सरकारें धोर इस देश की जनता अभी भी इन्मानियत के प्रति निष्ठा से धोर मनुष्य के प्रति धर्मनी यकादारी से पीछे नहीं हटेगी। पर कई लोगों को भय है कि ग्रणुशक्ति का उपयोग केवल शांतिमय कार्यों के लिए करने की वात एक धावरण है क्योंकि केवल शांतिमय उपयोग के लिए ग्रणुशक्ति के उपयोग के लिए इस प्रकार के विस्फोट की आवश्यकता नहीं थी। वह उपयोग मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के अंतर्गत छुले तौर पर किया जा सकता है।

ग्रणुशक्ति के विकास के सम्बन्ध में दो धोर पहलुओं पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। पहली बात तो यह है कि यह घेव बट्ट महंगा है, साथ नरकें हिन्दु-स्तान जैसे देश के लिए जहाँ अत्यधिक गरीबी धोर अभाव है धोर जहाँ आर्थिक साधनों का सबसे पहला उपयोग सीधे इन्हें बट्ट करने के नामों में होना चाहिए। इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि ग्रणुशक्ति के उपयोग की क्षमता हासिल कर लेने पर भी हम उसका उपयोग शस्त्रों की हॉड में करने के लिए न करें। इस देश के लिए वह धानक होगा। इतना ही नहीं, ग्रणुशक्ति के शांतिमय उपयोग के क्षेत्र में भी हमें बट्ट सावधानी धोर संयम से काम लेना होगा। केवल देशगरीबी या सिर्फ़ प्रतिष्ठा के लिए हमें अपनी क्षमता का उपयोग हरगिज नहीं करना है। धार्मिक साधनों के उपयोग में देशका व्यक्ति धोर समाज दोनों को प्रायधिकता का ध्यान रखना पड़ता है। मिटाई क्षाना

अच्छा लगता है लेकिन जहां बच्चों की दूध भी न मिलता हो तो मिठाई पर लक्ष करना किसी गृहस्थ के लिए अकल्पनीय की वात नहीं माना जायगी।

इस प्रश्न का दूसरा पहलू सतुपण का, धर्मनी हवा, पानी इत्यादि के बिगाड का ?। दुर्भाग्य से ग्रणुशक्ति के विकास धोर उसके उपयोग में ऐसी प्रक्रियाओं को काम में लेना पड़ता है जिनसे हवा, पानी, जमीन आदि का बड़े पैमाने पर दूषित धोर जहरीले हो जाने का खतरा है। ग्रणु विस्फोटों के बारे में एक डर हमेशा यह रहा है कि इन विस्फोटों कें जहरीले परमाणु हवा के जरिये हजारों मील दूर गिरकर बड़ा की धरती, धम्म, हवा-पानी आदि को जहरीला बना देते हैं धोर इस प्रकार मनुष्य और पशु दोनों के लिए घातक सिद्ध होते हैं। भारत के पहिले पांचों "आणु-विस्फोट" राष्ट्रों ने अपने शुरू के प्रयोग धरती के ऊपर किये थे जो अगला खतराक के । धरती के गर्म में किये जाने वाले परीक्षणों से यह खतरा कम होते हुए भी नीचे के पानी के स्रोतों के दूषित हो जाने का खतरा रहता है। इसलिए भारत ने यह धूम्रमं विस्फोट हिमा-लय जैसे निजन प्रदेश में न करके राजस्थान के रेगिस्तानी प्रदेश में किया है, पर यहाँ भी वायुमण्डल पर धोर भूमिगत पानी के स्रोतों आदि पर विस्फोट का क्या धसर होगा, यह धर्मनी देखने की वात है।

घात इस नई शक्ति के उपयोग के बारे में बट्ट सतर्कता धोर सावधानी बरतने की ज़रूरत है। विद्युत धर्मनी पंचधर्म धोर नार्यों के सिन्धिले में हमने परिष्कार की देखा देती या कुछ तात्कालिक उर्ध्वों की प्रीति के लिए गलत नीतियां धर्मनी धोर, दीर्घ दृष्टि से काम नहीं किया जिनका नतीजा धात्र धूम्रम रहे हैं। धम. इन धासर पर हम प्रकाश की सावधानी रखना धोर सतुपण न कीना आवश्यक है।

जनता की शक्ति अहिंसा में है

नारायण देसाई

(चौदह मई को मुग़ेर के नागरिकों ने शहीद शिवाजी सभा आयोजित की। सभा की सूचना लोगों की घर-घर जाकर दी गयी। इसमें सभी पक्षों के लोग शामिल हुए थे।)

प्रायः मु ग़ेर के वातावरण में वेदना प्रदी जिन लोगों ने मार सही है और जितने लोगों की है, उन दोनों की वेदना के दुःख तीव्र में अपने को जिम्मेदार मानता हूँ। और उस वेदना को शेष करके इस सभा में आया। हम सब अपनी-अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं, इस भूमिका को कोई सही ढंग से देना रहा है कोई सख्त ढंग से—लेकिन उस सारी भूमिका में जो मलतियाँ होती हैं, उन्हें मरने पड़ा/गिया, अपने विरोधियों पर खेंकने, मारने के बदले अपने मरने मलतियाँ महसूस कर स्वीकार करना चाहिए। परसों जो दुःख घटना हुई उसमें किसने क्या किया, किसने पढ़ा की—ऐसा सोचने के बदले घटना से ऊपर उठ कर उनसे जुड़ी समस्याओं से अपने को जोड़ना महत्वपूर्ण होगा।

गुजरात घोर विहार के दरवाँ को इन घादीलन में यदि किसी प्रकार का र्थ्य विषय बा सके तो वह उनके घादीलन की प्रवृत्त सफलता पर निर्भर नहीं करता, उन्हें समाज के गव्यारोप, मासूमों को तोड़ने में कितनी सफलता मिली इस बात से नापना होगा।

विहार में चर रहे घादीलन की तुलना समुद्र मयन के जो बा सखती है, इस मूल्य से विप भी निकल सकता है, अमृत भी। अब तक के घादीलन से विप काफ़ी निरास चुना है और मैं कहना चाहूँगा कि समुद्र निवासी उनका उन्नीर जिम्मेदारी है जो स्वयं को वेदनाओं के पक्ष बा मानते हैं। घादीलन के इस समुद्र मयन से कौन से मूल्य निकल सकते हैं? धातक, डेप और तिरस्कार घादि मूल्यों के स्थान पर (हावाफ़) धमो उही मूल्य उभरते दिखते हैं। यदि नये मूल्य यैदा हुए तो हम सब को क्या समुद्र मयन का लाभ मिल गया ऐसा मानना होगा।

घादीलन के पक्ष और विपक्ष दोनों घोर पक्ष कर रहे लोगों को तीन बातों बा धारण

रखना होगा। इन तीन बातों का दोनों पक्षों की धीर से निपेध होना चाहिए। पहली बात है शक्ति प्रदर्शन। तुम जुलूस निकाल रहे हो, सभा कर रहे हो, ता उसी समय मेरा भी जुलूस निकलेगा, मेरी भी सभा होगी—ऐसा सोचना घोर करना दोनों पक्षों के हित में नहीं है। तुम जितने कर रहे हो उसे मैं बुरा तो मानता हूँ पर समय आने पर उससे भी सदाया करना चाहूँगा हूँ। एव निवन्दनीय काम की निवन्दा करने के लिए उससे सवामा निवन्दनीय काम करना हमें कहीं भी नहीं ले जाता। दूसरी बात है घटनाक्रम में किसी घटना विवेक को बलात अपनी धीर मोड़ कर उससे लाभ उठाने का प्रयत्न करना। मुझ को भी यदि धर्मनिष्ठ बनना है तो कुछ सामान्य नियमों का दोनों पक्षों को पालन करना होता है। इसी तरह यदि इस आन्दोलन को एक राष्ट्रीय स्तर तक उठाना है एक नये समान के निर्माण का माध्यम बनना है तो सभी पक्षों के लिए सर्वमान्य नियमों का पालन करना होगा। तीसरी बात हिंसा की है। मैं प्रकृत भारतीय शक्ति सेना मण्डल का समीचक हूँ, बचपन में माषी को गोद में लेना है—मुझ से ग्रहिमा की बात सुनना धारकों स्थापानिक लगता। लेकिन मैं हिंसा-ग्रहिमा की बात इन कारणों से नहीं करता हूँ। प्रायः जब समाज में हिंसा की बात करते हैं तो इस बहस में हमें अधिक गहरे उतरना होगा। समुद्र में वरुँ के पर्वत उतरते हैं। इन हिमराश्यों का केवल एक धोवाई भाग पानी के ऊपर दिखता है। तीन चौथाई भाग पानी के नीचे छिपा रहता है। इसी तरह समाज में हिंसा है। उनका थोड़ा सा भाग ऊपर उभर कर दिखता है, शेष नीचे ही छिपा रहता है। यह ऊपर का भाग कभी दगो तो कभी गोनीनियों के रूप में स्पष्ट दिख जाता है। लेकिन नीचे के बड़ा भाग छिपा ही रह जाता है। हमें मसाम

के नीचे छिपी हिंसा को दबाने के लिए ग्रहिमा का सहारा नहीं लेना है। यह नीचे छिपी सामाजिक हिंसा, सामाजिक भेदभाव, भाविक विषमता, राजनैतिक प्रभुत्ववाद भादि के कारण बराबर बनी रहती है। ऊपर की स्पष्ट दिख जाने वाली छोटो-तो हिंसा से यह छिपी हिंसा बड़ी गुना धमिक रहती है। ततह के नीचे की इस हिंसा का भी बुरा निपेध ऊपर की हिंसा के साथ हमें करना होगा, नहीं तो हमारी ग्रहिमा व्यावहारिक नहीं होगी।

मु ग़ेर में जो घटना घटी उससे मुक्त नहीं होना चाहता हूँ। उसमें मैं स्वयं को भी दोषी पा रहा हूँ। अपना दाप मैं किसी पर डालना नहीं चाहता लेकिन धाज अप्स सभी को उपस्थित में है ग्रहिमा के प्रात्यक्षिक पहलू पर ध्यान देना चाहता हूँ। ग्रहिमा की बात ध्राप गांधी विनोबा, जयप्रकाश नारायण या धीर पीछे जायें तो बुद्ध, महावीर, भादि के नाम से जोड़ कर नहीं अपनायें, तर्कशुद्ध बुद्धि से यदि वह नहीं जषे तो उम फेंक दें। मेरा प्राप सब से निवेदन है कि जनता की, घादीलनकारियों की शक्ति हिंसा में होना प्रथमव है। हम उतावले नहीं से सोचते हैं कि शक्ति विधायन में जनता से मु ग़े कुछ विषय उठे हटाते के लिए मत-दाताओं से हस्ताक्षर करवाने से क्या होगा? यदि कुछ टुपटो तो पं राव करने से होगा। राव मत विधायक के घर के सामने घटिया-घातियों वजाकर उषे सोते नहीं देते से होगा। उने गुना दिखाना होगा, उय पर पानी खेंकना होगा। कुछ भी करी हूँ उनका दस्तका जल्दी चाहिए। हिंसा अपने लिए कोई न कोई कारण उठकर चलाती है। विधायक से जल्दी इतनीया लेना है, दग जल्दी का सहारा लेकर कोई भी सामन धपनने का शीघ्रित्व बताना चाहते हैं। दूसरा सोचने वाले, अपने काम में दिखना बा सहारा लेते वाले थोडा धीरज से सोचें कि वे कित लाभ का मुकाबला कर रहे

है। एक घोर जनता या उसका कुछ भाग है। दूसरी घोर शासन है घोर उसके साथ एक राजनैतिक दल। इन के पास हिंसा का संगठन, हिंसा के साधन घोर हिंसा के अनुभव प्रादोलनकारियों से नहीं ज्यादा है सैद्धान्तिक बहस घनी छोड़ दें, व्यावहारिक रूप से भी देखें तो प्रादोलनकारी यदि हिंसा करेंगे तो वे सफल नहीं होंगे। घोर प्रगर धाप कहते हैं कि प्रादोलन के पास शासन के मुकाबले बड़ी अधिक जनशक्ति है तो फिर तो हिंसा करने की बैसे भी आवश्यकता नहीं रह जाती।

ग्यारह अशोर्हिणी सेना सामने थी, प्रभु'न के हाथ में उनका धरना शस्त्र गण्डीय था। गण्डीय उसकी शक्ति थी। प्रभु'न उसी से लड़ सका। दुर्घोषन की शक्ति गदा चलाने में थी वह उसके सहा। यदि प्रभु'न सोचता कि मैं गदा से लड़ूँ वह दुर्घोषन की गदा से मारा जाता। घोर तो घोर यदि वह कृष्ण के मुदघन शस्त्र से लड़ने का प्रयास करता तो भ्रमफलता ही उसके हाथ भाती। क्यों कि प्रभु'न के प्रतिरिक्त प्रभु'न की विरोधी अन्य शस्त्र में शक्ति नहीं थी।

इसी तरह हमें साफ समझ लेना चाहिए कि जनता की शक्ति हिंसा नहीं हो सकती। उसका अपना शस्त्र अहिंसा का ही है। उसके जन प्रादोलन में मोड़ी भी हिंसा की मुजाहदा नहीं है। क्या करें उन लोगों ने हमें भ्रमका दिया, उनकी काफ़ी हिंसा के बदले हमने तो मोड़ी सी ही हिंसा की थी—ऐसे बहाने दू'डने से प्रादोलन सफल नहीं होगा। जो इस प्रादोलन के लिए धरने धाप को गम्भीर मानते हैं, जिम्मेदार अनुभव करते हैं, उन्हें प्राहिंसा के बारे में पर्याप्त सजग रहना चाहिए।

हिंसा-अहिंसा के इस प्रसंग में विनम्रता-पूर्वक इनाम और ओड़ना चाहता हूँ कि भ्रमसर सुनने में धाता है कि यह प्रादोलन अब जयप्रवाह नारायण जी के हाथ से निकल गया है। धाप लोग कृपया इसे प्राहिंसा की घोर मोड़ने का प्रयास करें। ऐसा बहाने वाले प्रायः इसे प्राहितक बनेति का धाराह इस्तेमाल करते हैं कि समाज की यथास्थिति बनी रहे। हमें प्राहिंसा का धाराह जरूर रखना है लेकिन परिस्थिति को ज्यों का त्यों टिकाने रखने के लिए बतर्द नहीं।

तीन नियेषों का मैंने धम्री आपसे उल्लेख किया। इन नियेषों के धलावा एक विप घोर है। जातिवाद का यह विप प्रादोलन में किसी भी घोर हो सकता है। जातिवाद हमारे टुकड़े कर रहा है। हमारी उत्प्रादवनता को दिन प्रतिदिन क्षीण कर रहा है। समातार भागाकार कर रहा है। इस प्रादोलन में भी जातिवाद दोनों पक्षों को हानि नहीं पहुँचाये इसका दोनों पक्षों को ध्यान रखना है। यहाँ मैं जो कह रहा हूँ वह समर्थको घोर विरोधियों दोनों के फायदे ध्यान में रख कर कह रहा हूँ।

यह प्रादोलन के मन्यन का सत्र चल रहा है। अब विप भी निकल सकता है अमृत भी। जो प्रादोलन के विरोधी हैं, (मुझे इस बात को खुशी है कि जो विरोध में हैं उन्होंने खुले रूप में विरोध किया है, छिप कर नहीं) घोर जो समर्थक हैं उन्हें विशेष ध्यान देना होगा कि उनके धामों से, उनके तरीकों से आगे समाज को बदलने वाले मूल्य बाहर निकलेंगे या नहीं। समुद्र मन्यन के ऐसे धाग में हम सभी को एक नीलकण्ठ की भावश्यकता है, इससे निकले विप को यदि पूरा नहीं भी पाये तो कम से कम गले में तो धटका लें। कोई सहमत हो या नहीं, जनप्रकाश नारायण की ही यह जिम्मेदारी है बहुत श्रुत कर। गुजरात में उनकी यह जिम्मेदारी थी नहीं, लेकिन यहाँ यह बन गई है। सारी जिम्मेदारी उनकी ही न हो जाये इसलिए इस प्रादोलन से जुड़े हरेक व्यक्ति को नीलकण्ठ की मोड़ी-मोड़ी मूर्धिका निर्भानी होगी। केवल एक जे० पी० नदी, कई नीलकण्ठ बनेंगे तब यह प्रादोलन के मन्यन से धमृत निकलेगा।

आज सुबह तथणो से सुत कर बात हुई। मेरी आधी उन्न गुलामी में गयी घोर बची हुई प्राधी धाआदी में जा रही है। आजादी की लड़ाई के जो उदाहरण मैंने उनके सामने रखे उन्हें वे एक इतिहास से ज्यादा समझते नहीं। इधर पिछले २० वर्षों के दौरान उन्होंने बैसे घटनाएँ देखी नहीं। उन्होंने यह भी देना कि गांधी का ही नाम ले कर क्या-क्या नहीं किया गया। अभी गुजरात विहार के संदर्भ में कहा कि 'गांधी का नाम लेने वाले हिंसा को भ्रमका रहे है'। मुझे लगा कि मैं इस उक्ति पर हस्ताक्षर कर हूँ। गांधी के नाम का सबसे अधिक उपयोग किसने किया ? इन



लडको ने स्वराज्य का जीवन नहीं देखा, ऐसे स्वराज्य के बाद के तरह-तरह के आन्दोलन, अन्त शब्द चलने वाले आन्दोलन। वे उस धनु-मल से इस प्रादोलन में धाये हैं। कई बातें बहुत कर रहे हैं, उनसे जब भी मिलता हूँ—साफ-साफ उनकी बलवतियाँ बताता हूँ। लेकिन नागरिकों से भी मेरा एक निवेदन है। जिन लोगों ने स्वराज्य के पहले वा वातावरण देखा या वे इस आन्दोलन में भा कर इन तथणो के सामने उस समय के उदाहरण रखें। जे० पी० ने जन समर्थक समितियों की बात इसीलिए की है। उर्दय एक हो, पदति एक हो, प्राधाय एक हो—तब कहीं यह आन्दोलन कण्ट सहर कर एक तापस्या से बाहर निकल कर खरा बनेगा, सफल होगा। प्रादोलन बिना तापस्या के, बिना कण्ट सहे सफल हो परिणाम यह सोचना गलत है। केवल ऐसा कार्यक्रम दें जिसमें हम पर लाठी न चले, जेल नहीं जाना पड़े, जेल में बेड़ी नहीं लगायी जाये ऐसी मांग करने वाले तथणो से धतन ही बहना चाहता हूँ कि हम ऐसे मूल्यों के लिए समर्थक करें जिनके पीछे गिरफ्तार होने पर बेड़ी, हथकड़ियाँ भी गहनें बन जायें। कण्ट को जब हर्षपूर्वक स्वीकार किया जाता है तो वह धप बन जाता है। मुँगेर के नागरिक इस प्रादोलन की पदति के बारे में सजग रहे जिससे कण्ट से तप, घोर तप से नये मूल्यों की ओर हम बढ़ सकें।

विपमता और भ्रष्टाचार दूर करने के लिए सघन कार्य

नवगठित उत्तरप्रदेश सर्वोदय मण्डल के निर्णय

उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल ने तब किया है कि चम्बल घाटी क्षेत्र, बुन्देलखण्ड, तराई तथा पूर्वांचल में प्राथिक विपमता को दूर करने के लिए सघन रूप से काम किया जाये और पंच महाभागियों में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाया जाये। १८ और १९ जून को इलाहाबाद में हो रहे युवा सम्मेलन को इस प्रकार सर्वोच्च किया जाये कि यह पूरे उत्तर प्रदेश की युवाशक्ति के जागरण और सञ्चालन का सम्मेलन सिद्ध हो सके।

मण्डल को पिछले माह गांधी भवन सदनक में हुई बैठक में अध्यक्ष महाश्वर सिंह ने नये मण्डल और नयी कार्य समिति की भी घोषणा कर दी है।

बैठक में नरेश भार्गव ने कहा 'कार्यक्रम के लिए आठ कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगी जो विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करेंगे तथा धर्म का सभ्य भी करेंगे जिससे मण्डल की प्राथिक स्थिति एवं कार्यक्रम पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने श्रदान में हुए भ्रष्टाचार के बारे में भी राय दी कि इसकी सुरक्षित द्वाबीन होनी चाहिए और उसका सफ्योकरण समाज के सामने रखना चाहिए। विनय भार्गव ने कहा 'जे० पी० ने जिस महत्त्वक शक्ति को जागृत किया है वह लोकस्वराज्य की दशा में बड़ता हुआ बनने है। उसका स्वागत करते हुए विभिन्न तरीकों से काम करने की एक योजना प्रस्तुत की। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि प्रति कार की स्थिति धार्ये तो उसके लिए भी व्यापार रहना चाहिए। कानपुर क्षेत्र में सौकरक रूप से कार्य करने का सुझाव दिया। ३० बनेबारी जाल सामने इलाहाबाद में १८-१९ जून को आयोजित हुआ सम्मेलन की जानकारी दी। इसका बहुरूप सिद्धा ने धामापी सिटान्बर नाम में पंचवहनगरियों में होने वाले बुनाव के सम्बन्ध में जानकारी देने हुए सुझाव दिया कि पंचयों से परामुक्त ध्वजियों को तलाक प्रारम्भ करने चाहिए जो मरदानाओं के रूप में प्रतिनिधि हों। कानपुर नगर में इस विषयमें ने कार्य प्रारम्भ हुआ है। निम्नलिखित

धामों ने कहा- दान्दोलन हृदय से उद्बैलित होता है वरन् धरन से नहीं। अतः हम जो भी काम करें उसके बारे में पहले महाश्वर से विचार कर लेना चाहिए। अमरनाथ भार्गव ने कहा कि भाज की परिस्थिति ऐसी है कि जनता की धाराज बन चुकी है किसी समुदाय की नहीं। अपनी शक्ति को जनमानस बनाने में लगायें और उसकी व्यापकता को बढ़ायें। परन्तु तालाकालिक समस्याओं में पड़ कर महत्त्वक शक्ति का विकास करना चाहिए। राधेश्याम योगी ने कहा—युध फार डेमोक्रेसी तथा सिटी जन्म और डेमोक्रेसी के संगठन को मजबूत करना चाहिए। विनोबा जयन्ती तक अभियान चलाना चाहिए। श्याम बहादुर नख . गुजराल में दा विहार में जो कुछ जो हुआ और कुछ जो हो रहा है उसकी प्रसंग-प्रसंग स्थिति है। वहाँ किसी सर्वोदयी ने धर्मोदोलन प्रारम्भ नहीं किया। परिस्थिति वनी। उत्तर प्रदेश की प्रसंग स्थिति है। सभी वातावरण नहीं बना है। इसलिए प्रदेश में सदाचारसत्ताह बनना चाहिए अपनी सत्ताधर्मों से एवं अपने स्वयं से शुरू करें। रामप्रवेश शास्त्री . शराज सभी भ्रष्टाचार की जननी है इसलिए व्यापक पैमाने पर इस समस्या को उठाना चाहिए।

अतः ने महाश्वर रामधारी सिंह दिनकर के प्राकृतिक निधन पर दो मिनट मौन रख श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के बाद दोपहर की बैठक समाप्त हुई। दूसरी बैठक

इकबाल बहादुर बर्मा प्रत्येक लोक-सेवक यदि अपनी प्राय का पात्र प्रतियत सर्वोदय मण्डल को दे तो धर्म में कमी नहीं पड़ेगी इकबाल भार्गव उपवास हान के साथ-साथ सह-योगी सदस्य भी बनने चाहिए। सरजूप्रसाद-बाज वेधो : यदि हमारे काम में दम होगा तो धर्म का धमाक कभी नहीं मायेगा। नरेश भार्गव : हमारी नीतिगत एशमन के लिए होनी चाहिए केवल मीटिंग के लिए नहीं। जहाँ भ्रष्टाचार हो रहा हो सुरक्षित सामाजिक नेतृता जागृत करना चाहिए। सेवा सत्ताधर्मों में भी

सत्याग्रह करना चाहिए। मेवालाल गोस्वामी महावीर भार्गव ने कहा, वहा से कार्य प्रारम्भ होता है और जो नरेश भार्गव ने कहा वहाँ तक पहुचाना हमारा कर्तव्य है। विनोबा जयन्ती से गांधी जयन्ती तक धर्म अभियान चलाना चाहिए। प्रकाश भार्गव : हमारा काम जो सेवा और स्वाग पर आधारित था और जो उसी के द्वारा जोड़ने वाला काम था वही ऐसा न हो जाये कि वह तोड़ने वाला काम बन जाये। इतना ध्यान रख कर भ्रष्टाचार विरोधी अभियान में पड़ना चाहिए। प्रलज भार्गव ने सहा-रता अभियान की जानकारी दी और बताया कि सभी कार्यकर्ता जे० पी० के कार्यक्रम में लग गये हैं। सरजू भार्गव : जो अपने साधियों को विचार अच्छा करता है वही कहंगा जैसे अपनी दृष्टि होगी वही सृष्टि होगी रामबचन सिंह : कार्यक्रम के आधार पर संगठन मजबूत होगा तो प्राथिक आधार स्वतः ही बनता चला जायेगा। हरिप्रसाद गुप्त : कार्यक्रमों में पाए गए धर्म सयोजन के लिए तीन वा साथ व्यापक भी उपसमिति गठित करनी चाहिए तथा जिला सर्वोदय मण्डलों को सक्षम बनाना चाहिए। ब्रह्मोबचन बुधे : तख-नक में प्रदेश बायोलिय बने तथा अर्थ सयोजक के लिए एक उपसमिति बने। कृष्णचन्द्र सहायः भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाने वालों को स्वयं अपनी सत्ता को तथा स्वयं अपने को देवता चाहिए क्योंकि जे० पी० की प्रविष्टा वा प्रश्न है। करण भार्गव ने विभिन्न रचनात्मक सत्ताधर्मों की समन्वयी सुविधा पर विचार-प्रकट किया तथा सघन चिन्तन भी और ध्यान प्राकृतिक किया और कहा कि जे० पी० के आवाहन पर यदि हम लोग धान्य नहीं रहेंगे तो पीछे भी नहीं रहेंगे। जनकी बगल में हमारी सत्याग्र दिशाई पढ़ेंगे। स्वामी कृष्णानन्द ने धर्म पढ़ते के प्राथोवचन में सर्वोदय आन्दोलन की प्राथोवचन सुनिता पर प्रकाश डाला तथा सुझाव दिया कि जे० पी० की ७२ की बर्गठक के अन्तर्गत पर धर्म सघन करना चाहिए तथा धर्म में चार शिबिरों का धामोत्रज होना चाहिए।

लोक आन्दोलन की मर्यादा

दादा धर्मधिकारी

एक बात हम अपने मन से निकाल दें कि हमें परिस्थिति पर प्रभुता करना है। नेता की सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि वह हर परिस्थिति का अपने लिए लाभ उठाना चाहता है। इसको मैं सांख्यिक जीवन का, भ्रष्टाचार मानता हूँ। ऐसा कोई, सालभर एक कर काम करने की आवश्यकता नहीं है।

हमने कुछ मर्यादाएँ, कुछ मूल्य अपने लिए स्वीकार किये हैं। उनकी प्रस्थापना एवं विकास के लिए जितनी गुंजाइश होगी उतना ही हमारा सक्रिय सहयोग रहेगा। ऐसा करते हुए हम भ्रमफल हो तो हमारी देश भ्रमफलता की भी कृपापूर्वक क्षमा जाय अपनी भ्रमफलता को प्रामाणिकता से स्वीकार करने से जल्द बढती है। आन्दोलन कभी पराजित नहीं होता है। पराजित तो व्यक्ति होता है, आन्दोलन करने वाले होने है।

प्रभी एक नोजवान ने यहाँ कहा कि आप लोग हमें कोई कार्यक्रम नहीं देते हैं। मुझे उन्हे सिर्फ यही बहना है कि यह सोचने का काम आप बूढ़ों के सुपुर्दे न करें। हमारे सोचने में भी एक जीर्णता आ जाती है। प्रभी आपके मन में भी हमारे बारे में यही स्थल है। प्रतः आपके विचार भीर आकाशमो के अनुरूप समाज कीता ही इसका नवधा आपको स्वयं ही सोचना चाहिए। आन्दोलन भीर सधर्प में सोचना नम पडता है, भीर सधर्प कोई सदा के लिए नहीं चलते हैं और बाद में तो सोचना ही पडता है। बुजुर्ग भीर नेता लोग तथ्यों को खुद सोचने का मौका ही नहीं देते हैं, उनका जीवन की वास्तविकता के साथ सामना नहीं होने देते हैं। इसलिए मैं बुजुर्गों से अनुरोध करना हू कि वे तथ्यों को सोचने की स्वतंत्रता पर ध्यान न करें। भ्रष्टाचार उनकी यह शिक्षागत भावना रहेगी कि बुनिया उनकी है जो बूढ़े हैं भीर उसमें जीना हमको पडता है। बुनिया बूढ़ों के मरने के लिए भीर आपके जीने के लिए है।

इस क्षण का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम मैं यह मानता हू कि क्या जीवन की आवश्यक चीजें सुलभ व सस्ती मिल सकती हैं? इसके दो पक्ष हैं। एक तो समाज में ऐसी चीज-वस्तु के उत्पादन की प्रेरणा बढे, भीर दूसरा उसका

वितरण सुलभ हो। मेरा यह विचार है कि इस बारे में विनोबाजी से बढकर कोई दृष्टा पिछले पचास सालों में पैदा नहीं हुआ है। तथ्यों को वे पुराणपथी समते हैं तो उनको वे छोड दें। पर मुख्य बात यह है कि ऐसा कोई कार्यक्रम बनाया चाहिए जिससे जीवन की मूलभूत आवश्यक चीजों का उत्पादन बडे भीर उसका वितरण सुलभ हो।

भ्रष्टाचार के संदर्भ में एक बात मैं कहना चाहता हू कि पैसा खाने के लिए कोई मर्जी बनने की आवश्यकता नहीं है। मैं खादी भण्डार का मैनेजर बनू तो भी पैसा खा सकता हूँ। सर्वोदय का सैक्रेटरी बनू तब भी खा सकता हूँ। इस देश में सरकार के तंत्र एवं मशीनरी के ऊपर लोगों का जितना प्रतिबन्ध है उससे ज्यादा प्रतिबन्ध ग्रं-शासकीय संस्थाओं पर है। सरकार के ऊपर कम से कम प्रतिबन्ध है। इस परिस्थिति का मुकाबला करना ही होगा। यह ऐसा देश है जिसमें शिक्षा बढता है कि हमारा वेद सौधा शासन ही वे। सर्व-ग्रं-शासकीय संस्थाओं की सरकार अपने हाथ में ले ले। ऐसी राष्ट्रीयकरण की नहो, राष्ट्रीयकरण की माँग चारों भीर से आ रही है। ये सारी इस क्षण की हमारी बुनियादी नमजोरियाँ हैं जिनका मुकाबला तथ्यों को करना ही पडेगा।

मान लीजिये कि इंदिराजी समेत सब का शासन एक बाल्मीक्यशाही हो जाये तो उसका विफल क्या है? यह सोचने की आवश्यकता है। क्या अक्षयतिथि नर-सिंहल है? तथ्य और विचारों मुझे धमा करें, पर बहलायति के पीछे तबिलनाद के विचारों भीर नोजवान हैं। प्रलय राज्य की माग बूढ़े नहीं मौजवान करते हैं। वेल्पाव के आन्दोलन में भी तथ्य हैं।

राष्ट्रपति शासन तो बटून दिना तक नहीं चलेगा। या फिर जिसकी छाठी उनकी भंश वाला राज्य चलेगा। प्रथवा पडोस के किसी देशका वंचक हमारे ऊपर स्थापित हो जायेगा ये सब प्रलय प्रलय विफल है। हाँ, आज की परिस्थिति से तो इनमें से कोई भी विफल

मच्छा भयवा नम से नम बुरा तो नहीं हो है, ऐसा भी किसी को लग सकता है। पर उसकी प्रतीति भीतर से उठनी चाहिए।

निश्चय ही इसका एक जवाब यह हो सकता है जो जवाहरलासजी ने दिया था। जवाहरलासजी को कहा गया कि आप अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर लीजिये। तब उन्होंने एकदम बुनियादी बात कही थी। उन्होंने जवाब दिया कि लोकतंत्र में ऐसी बात हो ही कैसे सकती है? जो अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करेगा वह तो राजा बन गया! प्रीर लोकतंत्र में राजा कैसे हो सकता है? तो फिर मैं अपना उत्तराधिकारी किस तरह नियुक्त कर सकता हूँ? मेरा उत्तराधिकारी तो जनता की कोल से निकलेगा। मैं किसी को बना नहीं सकता। न मुझे किसी को बनाता चाहिए। इसलिए इसका एक विफल जनता खुद भी हो सकती है। उस दिशा में हम काम कर सकते हैं। फिर भले ही उसमें हमें प्रसफलता ही मिले। प्रीर, प्रामदान, प्राम स्वराज्य, सब प्रसफल आन्दोलन हमने चनाये। और मुझे इस बात का गर्व है कि विनोबा के साथ रह कर अमकन हुआ। यह हमारे निजी के साथ रह कर सकन होने की अनिश्चय अधिभयेंस्ककर है, क्यों कि विनोबा को दिशा सही दिशा है। उन्होंने इस लोकतंत्रा को जागृत करने की बात देश के मापने रखी। उनमें बिना प्रत्ये सारे विफल प्रीरचारिक ही रहेगे। आप सबका ध्यान इस भीर भ्रष्टाचार चाहिए।

धार्मिक ही एक चीज। लोकगाही अधिभयेंस्ककर होनी चाहिए, धीए वदापि नहीं। याभी विनोबा या हिंसा-महिंसा का नाम छोड लीजिये। पर इनका देखियेगा कि धार्मिक प्रतिभार से लोकतंत्र अधिभयेंस्ककर इनका धार्मिक करना ही चाहिए। प्रतिभार तीव्र हो, मद्यम हो, गूढ भी हो, पर धार्मिक वह विचारिए? लोकशाही के विनाम के लिए।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कहने के लिए कि साथ भाप लोग तृण भ्रान्ति सेना और यह शान्ति और यह शान्ति नकते हो। यह तो नामर्दी की बात है। हमने कहा कि ठीक है आप मर्द हो तो भाप करो क्रांति भाप जिस दिन क्रांति करोगे मैं भापका हाथ रोकने नहीं आऊंगा। लेकिन कुर्सी पर बैठ कर बहस करते हो? जाओ क्रांति करने के लिए।

जो दल-बदल करके आया उसको मंत्री। यद्यपि यह भ्रष्टाचार नहीं है? भयंकर भ्रष्टाचार है। मुझे पॉन्डियो से कुछ मतलब है। मुझे जनता से मतलब है। जनता की शक्ति से मतलब है जो चाहे किसी पार्टी का समर्थन हो उसको ठीक रास्ते पर चलाने का हक़ मतलब रखे।

इस सड़ाई में संतबे धागे रहने वाले हैं तृण। यह जमाने की मांग है। मैंने देखा है, समक़ लिया है, तब इनका भावाहन

विधानसभा भंग करने के लिए एक करोड़

विधानसभा में काँग्रेस दल का बहुमत है। उसका यह फल है कि 'सरकार' मारी है, वह कुछ भी करे, हम उसका साथ नहीं। जो विरोधी दल है वह विरोध करता है तो यह सोचकर कि उसका नाम ही तृण करणा है इसलिए सरकार परब्राह्मण नहीं रहती। जनता प्रसह्य युक्तों की तरह भौकनी हवी है और सरकार का हाथी मदमस्त लता चला जाता है। सरकार का दावा है कि उसके पीछे विधानसभा है जिसमें जनता प्रतिनिधि हैं। विधान सभा के कारण सरकार को यह दावा करने का मौका मिल गया कि उसके साथ पूरे बिहार की जनता है; तो और मचाले हैं वे बस बोड़ें से छात्र और उनके विधायकों की।

जनता की भावना इस सरकार के साथ नहीं, तथा प्राज्ञ की विधान सभा उसका ही प्रतिनिधित्व कर रही है या नहीं, इसका संला तो स्वयं जनता करेगी। इसलिए जब कास माराएलु ने कहा है कि बिहार विधान सभा के ३३० निर्वाचन क्षेत्रों में से हर एक में भाया जाये और वहाँ के बालिगों की, मतदाताओं की राय जानी जाये। जो लोग विधान सभा भंग करने के पक्ष में हो, उनके स्तावर या धर्म-दान-निधान लिये जायें। पूरे

बिना है। मैं गांधी नहीं हूँ लेकिन गांधी ने भी तरुणों का भावाहन किया था। 'यम-इधिया' के नाम से अपनी पत्रिका चलायी। उन्होंने देखा कि एक नयी शक्ति इसको जगाना चाहिए। मैंने भावाहन किया। भाते हैं हमारे पास कि हमारा नेतृत्व कीजिये। मैं इनकार करता हूँ नेतृत्व नहीं करूंगा, सलाह दूंगा। नेतृत्व आप करो। आत्म विश्वास पैदा हो, आपका दिमाग खले, आपस में बैठ कर, किस तरहसे मिलकर फँसला करना है, आपस में फूट न पैदा हो जाये, और जो निर्णय आप करो, उस निर्णय की पूरी जिम्मेदारी आप पर हो, नहीं तो आप कहेंगे कि जयप्रकाशजी ने तो कह दिया था, हमने कर दिया। उसका उल्टा परिणाम हो गया तो अब जयप्रकाशजी इसमें से रास्ता न बनाये सलाह लो, निर्णय आप करो, ये सीलो, सवा नेतृत्व इस देश में पैदा होना चाहिए और युवकों में से पैदा होना चाहिए। ऐसा नेतृत्व पैदा होना चाहिए कि

बिहार राज्य में एक करोड़ हस्ताक्षर लिये जायें इससे अधिक भले ही हो, कम नहीं। ३० मई को हर निर्वाचन-क्षेत्र से दो-दो तीन-तीन प्रादमी पटना जायें। पटना में पटना के तथा बाहर से घाये हुए एक साल लोगों का जुलूस निकले और हस्ताक्षरों के ढेर से ढेर राख-पाल को दिये जायें। यह इस बात का प्रकाश्य प्रमाण होगा कि मन्त्रिपरिषद और विधान सभा मतदाताओं का विश्वास खो चुकी है। जिस सरकार में जनता का विश्वास नहीं है वह जनता की सरकार कैंसे मानी जायेगी? उसे भंग होना ही चाहिए।

मतदाताओं की सम्मति जानने का सरल उपाय है उन्हें अपनी बात समझना और हस्ताक्षर लेना। यह काम हर निर्वाचन क्षेत्र के हर गांव और हर गहर के हर मुहल्ले में होना चाहिए। इसके अलावा एक उपाय और है जिसे 'रेकॉर्डम' कहते हैं। उदाहरण के लिए कोई एक निर्वाचन क्षेत्र लीजिये। उसमें पूरी ऐसी व्यवस्था कीजिए जो चुनाव में की जाती है। निष्पक्ष चुनाव-प्रधिकारी तथा मतदाना केन्द्रों प्रादि सबकी व्यवस्था कीजिये। मतदान के लिए दो रंग के कागज रखिये। एक-एक मतदान पेट्टी रखिये। एक कागज 'विधान सभा भंग करो' का होगा और दूसरा

जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता हो। कुछ युवक हैं, नेता बन कर कुछ बन जाना चाहते हैं, कहीं पहुंच जाना चाहते हैं, कोई टिक्ट ले लेना चाहते हैं। इस तृण भ्रान्दोलन में, इस क्रांतिकारी आन्दोलन में उनका कोई स्थान नहीं है। वे स्वार्थी लोग हैं उनसे कोई नाम नहीं होने वाला है।

भाप सब बेईमानी करोगे और दूसरों से कहोगे कि तुम सच्चे बनो तब तो नहीं चलेगा बिचारियाँ इन्तिहान में चोरी करोगे, पैरवी करके नंबर बढवायेंगे तो क्या शक्ति होगी? मैं तो इनकी शक्ति ऐसी बनाना चाहता हूँ कि इतिहास हो रहा है तो छात्र सचपं समिति के लोग जा कर कहें कि निरीक्षक लोग हट जायें। किसी के निरीक्षण की जरूरत नहीं। छात्र निरीक्षण करेंगे। हम देखते हैं कि कौन चोरी करेगा। कौन छुटा लेकर चुराया है। तब न भ्रष्टाचार के खिलाफ सड़ाई न करने का अधिकार मिलेगा। तब न आप उसके

हस्ताक्षर (शेष अगले पृष्ठ पर)

—राममूर्ति

न भंग करने का—इन तैयारियों के साथ एक निश्चित दिन वोट लीजिये और देखिये कि इस प्रश्न पर कितने लोग पक्ष में हैं वित्तने विपक्ष में। सारा काम तो पीसदी ईमानदारी का ही है।

स्पष्ट है कि इस तरह की विशेष योजना अधिक क्षेत्रों में नहीं लागू की जा सकेगी। लेकिन कुछ क्षेत्रों में भी की जा सके तो बरछा होगा। प्रश्न पूरे एक निर्वाचन क्षेत्र को न लिया जा सके तो गहर के एक-दो मुहल्लों को लेकर तथा प्राणीय क्षेत्रों में कुछ पचायतों को लेकर कीजिये।

'विधानसभा भंग करो' के लिए यह प्रत्यक्ष जोरदार दंग से होना चाहिए कि प्रत्येक बालिग के पास पट्टा जाये और उसे समझा कर हस्ताक्षर प्राप्त किया जाये। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाये कि किसी व्यक्ति से दबाव डालकर हस्ताक्षर न कराया जाये। विधायकों से जबरदस्ती इस्तीफा बदायित्व न लिया जाये। घेराव आदि की तो बात ही नहीं मानी जा सकती है।

गहर यह काम पूरा कर सेते हैं तो कोई शक्ति नहीं है जो इतने प्रबल जनमत के मुक़ाबले में खड़ी हो सके। उमे सोच शक्ति के सामने मुक़ना ही पड़ेगा।

कुष्ठ सेवक—सुन्दरलाल मित्तल

कुष्ठ सेवा के क्षेत्र में काम ही लोग प्राते हैं। जो प्राते हैं वे प्रेरणा और मानवीय सेवा की दृष्टि लेकर ही इस कार्य में पड़ते हैं। वैसे ही एक कुष्ठ सेवक हम लोगों के देखते-देखते कहीं हो गया। मत् माह इन्दौर में महाश्वीर पत्नी के पवित्र दिन दी पुटो के भण्डो के विबाद को लेकर बिन्हीं कूर हावों में उनकी धुप भोक कर हत्या कर दी। वे तो विबाद मिटाने के प्रयत्नों में लगे थे। उनका किसी से झगडा नहीं था। शांति कायम करने की एक शांति सैनिक की मनोभूमिका से ही वे काम करते थे। इन्दौर और मध्यप्रदेश के सर्वोपर परिवार के वे बहुत ही लोकप्रिय और सन्निभ नम्र सेवक थे। इस क्षेत्र में चल रहे कुष्ठ कार्य के तो वे एक मात्र धाधार और मुख्य स्तम्भ थे। नगर के लोगों ने ५१ हजार रुपये की रकम उनकी स्मृति के स्थापित कर कुष्ठ कार्य को प्रागे बढ़ते रहने का निर्णय बहुत ही उपयुक्त किया है। भारत भारतीय कुष्ठ निवारण सघ दिल्ली की वार्षिक बैठक में मितल जी को नाम विभोरी हो कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। राष्ट्रीय कुष्ठ सघ और हिन्दी कुष्ठ निवारण सघ दोनों ही संस्थाओं के कार्य में मितलजी ने बड़ा उपनिवार काम किया था। गर्मी—परजुरे गर्मी की तबदीर की सील बनाया और कैम्पेडर की बल्पना को भी उन्होंने ही सबसे पहले धाधार दिया। उनकी सुमधुम बंदी उपयोगी, व्यावहारिक और तर्क सागर रहती थी। वेदायाम को प्रशिक्षित भारत कुष्ठ सम्मेलन के समय भी उन्होंने मौलिक विचार-रखे थे कि हम सबकी समय दृष्टि से काम करने की जरूरत है। इसी दृष्टि से उन्होंने अनेक प्रश्नों के बीच बन्धुमाल पुनित और सुनकर दोनों का काम शुरू किया था। परन्तु उनकी धोर से समय पर धार्मिक मदद न मिलना धोर स्वतः के साधन भी धरापाय होते हुए उन्होंने इत्मीत नहीं हारी धोर मित्रों के सहयोग से काम बनाते रहे। आज धनेक कुष्ठ रोमी धोर कार्यकर्ता उनका प्रभाव महसूस करते हैं धोर उनका एक बड़ा धाधार ही समाप्त हो गया है। हम सबका यही प्रयास होना चाहिए कि उनके शुरु किये कुष्ठ कार्य

को हम प्रागे बढ़ायें धोर जो जवाबदारियां उनकी थीं उन्हें हम उठा लें। इसी से उनकी अत्मा को शांति मिलेगी धोर हमारा भी कर्तव्य हम पूरा करेंगे धोर यही हमारा सही श्रद्धाञ्जलि होगी। उनके मित्रों का बड़ा परिवार है इसलिये उनके स्वयं के परिवार को भी दाख धायना है धोर उनके सुख-दुख में भी शामिल होकर उन्हें हर प्रकार की सहायता करना कर्तव्य प्राप्त धर्म होगा। जिन प्रशिक्षित भारतीय कुष्ठ संस्थाओं का ऊपर जिक्र किया गया है वे भी हर सभव मदद करने को प्रस्तुत रहेंगे लेकिन मुख्य जवाबदेही इन्दौर धोर मध्यप्रदेश सर्वोपर सेवक परिवार को ही उठानी होगी। हम मितलजी की स्मृति की प्रेरणा ज्योति धोर धार्मिक प्रन्वित कर सकें तो निश्चय ही दूसरे कामों में भी प्रगाम धोर बल मिलेगा। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह वंशी शक्ति हमें प्रदान करे धोर हमारे हावों धोर भी उत्तम कुष्ठ सेवा का धायोजन हो।

डॉ० रविशंकर सम्राट

श्रष्टाचार सिर्फ.....

(पिछले पृष्ठ से जारी)

योग्य बनोगे ?

मैं महानुभावाना गया था तो नव-निर्माण समिति के युवकों से हमने दो बातें कही। प्रायः नवनिर्माण नाम रखा है तो नव-निर्माण क्या चाहते हैं? कैसा समाज चाहते हैं? कोई तस्वीर है भापके पास ? यदि नहीं तो नव-निर्माण के क्या मानी? कोई जवाब नहीं सुनाया मे क्या होगा? जवाब दिया कि हम मध्ये लोगों को जेवेंगे, हमने कहा कि बस इतना ही, इतने ही से काम चल जायेगा? उसी से नव-निर्माण हो जायेगा? उसी से समाज बन जायेगा? दूर तक सोचो। जैसे-जैसे उनका अनुभव धायेगा, जैसे-जैसे वे सीलेंगे।

यहां भी मैंने कह दिया है कि तुम लोग फंसल, करते हो तो मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर गलत फैसला होगा तो नहीं साथ हूँ। अगर फैसला करोगे कि लोकसभा का विधित्व हो और इन्दिराजी की हकूमत का इत्तीफा हो तो मैं कभी तुम्हारा साथ नहीं दूंगा। यह गलत इत्तीफा है कि तुम्हारी शक्ति नहीं है। बेसी बघाले हो। गुजरात में हो गया तो अब सब तम्के चले गये। कुछ बालेज में पड़

रहे हैं कुछ परीक्षाओं की तैयारी कर रहे है। प्रान्दोलन बन्द है, ठण है वहा बिहार में कुछ चला है तुम्हारे जूते की बात जो है वही करो बहकी बात करोगे कि धातमान के सितारे हम तो सब लार्पे हो तुम्हारा साथ हम नहीं देंगे। प्रम में मत रहो, अपनी शक्ति तोन कर चलो, प्रायने को ठीक करो।

लोक आन्दोलन को मर्यादा

(पृष्ठ ८ का सारा)

अब लोकधारा का विकास हुआ है या नहीं, इसकी कसौटी क्या ? उस प्रतिकार से सामान्य नागरिक न भयभीत होना चाहिए न श्रांतिकित, उस प्रतिकार से व्यन्तिक को शक्ति बढनी चाहिए। हमारे प्रतिकार से सामान्य मनुष्य परेयान नहीं होना चाहिए। भयन्या वह जिस प्रकार पुलिस से परेशान है वैसे ही यदि सत्याग्रही से परेशान होता होगा तो ऐसे प्रतिकार से लोकतन बभी भी मुहड़ नहीं हो सकेगा। प्रतिकार के लिए यह एक कसौटी है। भयन्या बहुत सारे अहितक सीलने वाले आन्दोलन भी धार्मिक हितक सिद्ध होंगे। एक बार मेरे पडोसी की पलत कुए में गिरने की घमको के कर नूँक की जगल पर बँठ गये। पडोसी मेरे पास आकर कहने लगा यह तो कँटी भयकर रनी है। धाण कुछ उन्हीं सम-भाये। मैं गया तो वह रनी धुने कहने लगी कि मैं कहाँ उन्हे गातो देती हू या अन्य किसी प्रकार से परेशान करती हूँ ? मैं तो कुए में गिर कर के खुद अपने ऊपर कष्ट भँस रही हूँ। कुछ शांतिमय कहलाने वाले आन्दोलन इस तरीके से खून करने को धपेसा धार्मिक हितक बन सकते हैं। यदि धायेके आन्दोलन से सामान्य नागरिक भयभीत होता है तो वह आन्दोलन जबर्दली का आन्दोलन है।

होना तो ऐसा चाहिए कि जिस जयवावी का प्रतिकार हो रहा है वह खुद भी बल्ये बन्दे नहीं। परन्तु वह घोडी धागे की चीज है। फिर भी प्रत्येक आन्दोलन में इतना तो क्याल रहना ही चाहिए कि जिनका भयन्या के साथ कोई प्रत्यक्ष संबन्ध नहीं है वे तो काम से कम हमारे प्रतिकार से भयभीत न हो। जोक आन्दोलन की यह मर्यादा होनी चाहिए।

हिमाचल को न भूलें

६ मई के 'सर्वोदय' में पटना में हुई संगीति की रिवॉल्ट पत्रकार बड़ा हाजिरुब हुआ। उसमें लिखा था देश भर के सौ सर्वोदय सेनक इकट्ठा हुए थे लेकिन इस संगीति की न तो हिमाचल के किसी सर्वोदय सेनक को सूचना हो दी गई थी और न निमन्त्रणा ही यहाँ किसी को मिला। इसी तरह पत्रकार में हुई संगीति में भी हिमाचल से किसी व्यक्ति को आमन्त्रित नहीं किया गया था। मैं नहीं जानता इसका क्या कारण है? हिमाचल के हम सभी साथी भारतीयता की मुख्य धारा में रहने की भरसक कोशिश करते हैं। फिर भी एक प्रदेश को इस तरह से नजरअन्दाज करना क्यों आवश्यक लगता है यह मेरी समझ में नहीं आया। मैं जानना चाहता हूँ कि इस तरह की संगीतियों में किस योग्यता वाले सर्वोदय सेनकों को बुलाया जाता है ताकि हिमाचल के हमारे मित्र भी उसके योग्य बनने की कोशिश कर सकें या पूरा माना जाये कि संगीति बुलाने वाले के नकशे में हिमाचल का नाम ही नहीं है।

लक्ष्मी भाई धर्मशाला कांगड़ा

भले श्रावमी यनाम क्रांति

गया में हुए मोलीबाण्ड की जाप के लिए जयप्रकाशजी ने जनसमिति नियुक्त करने की घोषणा की। यह एक क्रांतिकारी कदम है। क्रांतिकारी दृष्टिकोण है और इसका जितना स्वागत होना चाहिए, जितना प्रचार होना चाहिए, उतना नहीं हुआ। अन्य क्षेत्रों के पत्रकों की धीरे-धीरे स्वयं सर्वोदय समाज (सर्व सेवा सच) के सर्वोदय प्रेस ने भी उसका स्वागत व प्रचार उतना नहीं किया जितना कि होना चाहिए। बैसे यह स्वाभाविक है। राहत परंपरा, सुधार व सरकार सापेक्ष नीति अपनाते वाले संघटन से यह अपेक्षा करना उतने साथ ज्यादनीहीनी। ग्रामदान की स्वीकृति सरकार

के, लगान इकट्ठा कर सरकार को दिया जाये, चुनाव पद्धति में सुधार सरकार करे, भ्रानाज इकट्ठा कर विवरण सरकार करे, यह उस संगठन की नीति है जो शासन मुक्त समाज चाहता है, लोगों के दिल में से 'दे-इज्म' निबालना चाहता है।

हम ग्रहिसक प्राति करना चाहते हैं परन्तु कर रहे हैं काम राहत, परंपराकार मीर सुधार के। धीमा-बट्टा, ग्रामकोष, तरण शांति सेना, भाचार्यकुल, सर्वोदय धारा, उप-वासदान आदि ऐसे ही कार्य हैं।

हमें अब यह प्रहसाज होने लगा है। यह शुभ संकेत है। तभी भूदान यज्ञ (१५ अप्रैल ४५) में कुमार शुभमूर्ति लिखते हैं कि आश्विन दूरी का काम हमें करो करना चाहिए। हम 'दे-इज्म' मिटाने निकसे हैं तो हमारा पहला नारा होना चाहिए—'नेवर डू देयर बक'। हमारा काम तो सिकं यही है कि हम लोगों के दिल में अपना काम आप करने की चाह पैदा कर दें। अपने परिचार अपनी मुट्ठी में रखने की चेतना पैदा कर दें। उनका यह कहना सही है कि तीन वर्षों के मध्यन से सहृदया से यह जो आन्दोलन का प्रभूत निबला है उसे यदि इस आन्दोलन को जीना है तो पीना पड़ेगा।

हम सरकार निरपेक्षनीतिया अपनायें और वे नीतिया राहत, परंपराकार सुधार की न हो वर लोगों में ग्रामस्वराज्य की प्राणांसा पैदा करने वाली हो तभी हमारा आन्दोलन जन-आन्दोलन बनेगा—हम प्राति के बाहक बनने। अन्यथा हमारा नाम इतिहास में सिकं इस रूप में लिखा जायेगा कि कुछ भले लोग वे जो भला काम करके चले गये। अब हमें यह सोचना है कि हमें क्रांतिकारी बनना है या भले प्रादी भी।

मदनमोहन व्यास
रतलाम

सर्व सेवा सच के मन्त्री जो एक पत्र में बानपुर से विनय भाई ने लिखा है:

ग्रहिसक कार्यवाही की व्यूह रचना

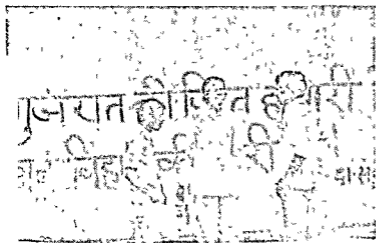
अद्वय जयप्रकाश बाबू के ऐतिहासिक कदम से हम सभी सर्वोदय कार्यकर्ता समाज में व्याप्त भ्रानाज, शोषण और श्रद्धाघात के विरुद्ध ग्रहिसक प्रतिचार से लिए लोकशक्ति विद्योप कर सुराजविन के जागरण, संघटन एवं प्रशिक्षण में सहभाग्य बनने में एक नये उत्साह के प्रयुक्तानि हुए हैं। धतः भावव्यवस्था इस बात की है कि सर्व सेवा सच के प्राणामी अधिवेशन में हम अपनी चर्चाएं ग्रहिसक प्रत्यक्ष कार्यवाही की व्यूह रचना के विन्दु पर ही केन्द्रित करें। साथ ही हमें 'सर्वोदय समाज सम्मेलन का वह पुराना स्वरूप जिसमें सत्ता के शीर्षस्थ व्यक्ति भी विभिन्न रचनात्मक एवं कल्याणकारी प्रवृत्तियों में लगे सत्याग्रहों के कार्यकर्ताओं को उप-देश और सहयोग का आश्वासन देने के लिए पधारते रहते हैं, अब एकदम अलग लगता है। विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि प्रधान मन्त्री जी सम्मेलन में पधार रही हैं और भी जयप्रकाश बाबू नहीं पहुँच पा रहे हैं। प्राज की विशेष स्थिति में यह कहा तक उचित और संभव बैठना है?

हमारा प्रापसे अनुरोध है कि और प्रापने प्रादीलन के ऐसे नाशुक मोड और मनो-वैज्ञानिक अवसर पर सम्मेलन के पुराने दृष्टिगत स्वरूप में परिवर्तन करे और सर्वोदय आन्दोलन में संलग्न हम कार्यकर्ताओं को सत्तासुद्ध विभूतियों की मायावी ध्याना से दूर लोभनायक जयप्रकाश नागरण के प्रत्यक्ष प्रावाहन से प्रेरित होने का अवसर प्रदान करें।

अमरनाथ भाई फिर से गिरफ्तार कर लिए गये हैं। वे छपरा में १३ मई की एक छोटी सी गोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे। गोष्ठी में कुछ नार्मिक, ध्यापारी, छात्र, दो प्रादेशिक अखबारों के सवाददाता तथा भूदान समिति के एक कार्यकर्ता उपस्थित थे। पुलिस ने गोष्ठी के व-मरे को घेर कर बस्ता धमरनाथ भाई के साथ साथ श्रोताओं की भी गिरफ्तार कर छारा से भागलपुर जेल रवाना कर दिया है।

मुंगेर में निकला मूंगिया और विष भी

दक्षिण बिहार से अनुपम मिश्र की पहली रपट



बिहार की बाड़ों में गुजरात की गतलियां गुजारनी होंगी

घ्रांस घोर निषिद्ध इन दो छोरों के बीच जंगल भी छोड़ सकते हैं, इन सबकी वहीँ तम बड़ी ज्यादा छुने वाला बिहार का घ्राण्डोलन बरु बहरो से बरुओ में घोर कल्यों से पाव नें पृषुच रहा है। घ्रांस से एक महीने पहले से घारे केवल बहरो की सीमेठ पची दीघारो रर मिलने से ये घब गोजर से तिपि दीघारो रर भी बमक रहे है। जगह-जगह छात्र सघर्ष सभितिया के साथ जनसंघर्ष सभितियां बननी बा रही है। घ्राण्डोलन की सही ताकत ने ० पी० डारा मुभाये गये बाँध सातह के कार्यक्रम के घनसार चलने में है। लेकिन बही-बही परिस्थितिया ऐसी बननी गयी हैं कि छात्रों वा नागरिकों ने घ्राणे इस कार्यक्रम से छोड़ कर दूसरो डारा सादे घरे कार्यक्रम से उठाने में घ्राणी ताकत सगा ही है। घ्यान बाँधने की इन योजनाय्य सभितिया बा नतीजा रही होमा को इन घ्राण्डोलन के विराधी बाह रहे हैं—जनघ्राण्डोलन बमजोर होमा, सभने सभने की उपरनिध के प्रपलन से हटकर वठ घेरी-मोटी निरबंध बाणो के विरोध से पम कर दूट बागेमा।

विधान सभा भंग करने के तीसरे सप्ताह के दौरान घ्राण्डोलन के समर्थको घोर विरोधियों के बीच बिहार के कई क्षेत्रों में सघर्ष होने की खबरें घ्रायी हैं। घ्रांस के कार्य-बर्तायो घोर नागरिको न छात्रो के बीच हुए इस सघर्ष में मुँेर की घटना एव साथ बई तय्यों को सोलती है। वैश्याजी घोर सोनी चलने के बाद सने बफू के उठने पर भूदान-यज्ञ के सवादधाना ने घटना का विवरण इस प्रकार दिया है: तेरह मई को मुँेर की घोर जैसे-जैसे हम बढने गये, सरने बाणो की सख्या सगानार कम होती गयी। देवघर में बताया वा कि बज के सघर्ष में घ्राठ लोग रहे हैं, बरिघारपुर (मुँेर से १५ मील पीछे) तक बहु सख्या एक तक उतर गयी। कहा गया कि छात्र शाम घ्राठ बने से पुन. बफू सभेमा, सात बज चुके से इतलिय हम तेजी से खाना हुए, जिनसे बफू से पहले बहूर में प्रवेश कर सके। राखे भर हमारे मन में एक तनाव घोर घ्राण्डोलन से भरे मुनमान बहूर बा बिज उजर रहा था। मुँेर की सीमा बर मुक हुई हने मान्य ही नहीं पडा, देहायी

अधेरी सडक पर बहरी बिजली के सवे मुक हो गये थे, हम सोच रहे थे कि अब बफू का इलाका घ्रायेमा पुतिम रोनेगी.....।

लेकिन रिश्ते वाले, औरतें-बच्चे फिर पान की चुली दुकानें, रेडियो सीलोन से घ्राते फिल्मो गानो के बीच से होते हुए हम लोगों की टैकमी बाजार के थोक तक अब बिना किसी रोक टोक के घा गयी तो हने सुद उतर बर पृथना पडा कि यहा कफू नहीं है क्या? पान की पीक बूक कर जवाब मिला, शाम सपा वा सुबह उठा निघन गया। कल घाने १२ मई को घ्रांस का जुलूम निकला था, उस पर हुए हमले में ६७ लोग घामस हुए, एक छात्र गोली से घायल हुआ फिर भी केवल २५ घटे बाद बहूर की इननी सामान्य हालत वा कारण जान सकना बहुत कठिन दिख रहा था। लेकिन इस सामान्य हालत के कारण पूरी घटना में मीमूद ही थे।

पोसा पीछे लोटें: १७ अप्रैल को केन्द्रीय उपमयी टी० पी० यादव ने तय किया कि ये घ्राणे बुदाव क्षेत्र मुँेर में घ्रायेगे। उनका यह हक था ही, इस हक से उन्हें कोई रोक नहीं सकता था, रोचना भी नहीं चाडिये वा। मुँेर के छात्रो घोर नागरिको को यादव की प्रस्तावित यात्रा की खबर सगी। उन्होंने सरकार की दमन नीतियो के विरोध में यादव की यात्रा का बहिष्कार तय किया। पूरे मुँेर में बाले भडे छा गये। तय हुआ कि जब सन्धी बहूर में प्रवेश करें तो उन्हें एक भी घ्रादमी सडको पर न दिखे। ऐये स्वागत की लंघारी की सखर यादव को घटना में ही सग गयी, उन्होंने मुँेर यात्रा रद कर दी।

द्वार मई के पहले हारो में प्रदेश कार्यस समेटी ने तय किया कि घ्राणी 'जनवादी' नीतियो के प्रघार में, 'प्रतिघ्राणवादी' सतियो से निरड जनपज जगाने के लिए जगह-जगह कार्यस रैलियो वा घ्राणेजन

बिया जाना चाहिए। मुंगेर में जिला स्तरीय रेलों की तारीख तय हुई १२ मई।



धायक कांग्रेसी विधायक तथा छात्र : हिंसा के शिक्षार

प्यारह मई की रात को केन्द्रीय गिशां उपमंत्री यादव व बिहार के उद्योग मंत्री चन्द्रशेखर मुंगेर घाये। कहा जाता है कि मुंगेर के घातघास के घाव में धूम, यादव जाति के लोगों से घातह बिया गया कि वे बल के जुलूस में घायें। बिहार में कहा जाता है कि कोई घादमी नहीं होता, घादमी वा आदमी होता है। जनता को राजनैतिक दलों में बाटा जाता है फिर उन दलों को कुछ घादमियों में। इस तरह वहाँ घातकी जगजीवन राम के घादमी मिलेंगे, कही सलिन बाबू के तो बई यादवकी के तो कही कपूरी ठाकुर के, सब घादमी के घादमी माने जाते हैं। इसी सिद्धान्त से मुंगेर में घादमोलन की तीन जातियों—भूमिहार, राजपूत, और मुसलमान के नेनाघों के आधार बना तोड़ने की कोशिश चली। लोगों ने इसे बडती 'मह-गार्ड, घट्टाचार और उल्लेखी भी उतर हाल में ही हुए मोलीकाण्ड के कारणए अस्वीकार बिया ऐसा बनाया गया। फिर भी जुलूस की संवारी की गयी। जितने अधिकारी विधायक, दो मंत्री व कुछ स्थानों के सचिव कार्यकर्ता मुंगेर घा चुके थे लेकिन लोगों का बहना है कि जुलूस में शामिल होने बहुत से 'गैर कांग्रेसी' भी घाये थे।

छात्र सघर्ष समिति ने तय किया कि वह टाउनहॉल का घेराव करेगी। घोर जुलूस के बाद उसमें होने वाली सभा में विधायकों से इत्तीके मांगेंगी। उसका निर्णय था कि वह कांग्रेस जुलूस में कही भी अडचन नहीं देना करेगी। लेकिन १२ मई की सुबह तड़के ही समिति के कार्यालय में घाग लग गयी। घाग से बँधे कोई खास नुकसान नहीं हुआ फिर भी छात्रों में घाघ घटना से काफी घसलोप फैल गया। इन्डोलेन के समर्थन घोर विरोध में काम कर रहे मुठों के बीच परस्पर उल्लेखना फैलाने का घटनाक्रम शुरू हो गया।

दफनर जलने के बाद छात्रों ने शहर में एक टुक पर धूम कर शहर में घाये मंत्रियों, विधायकों के खिलाफ नारे लगाये। दोपहर को तिलक मंदान में जहाँ से जुलूस शुरू होने

वाला था, गुच्छों को भोजन कराने घोर पंसा बटने की खबर शहर में फैल गयी।

चार बजे जुलूस तिलक मंदान से खाना हुआ। छात्र वहाँ नहीं थे, उन लोगों ने घादमी पूरी ताकत जुलूस की मजिल माने टाउनहॉल पर लगा दी थी। हाँल के गेट पर विधायकों का प्रवेश रोक्ने बच्चे लेटे हुए थे, या फिर दूसरों के शब्दों में किराये पर लिये गये बच्चे लिटाये गये थे। इधर कार्यस वा जुलूस या फिर दूसरों के शब्दों में 'सारी दे गये गुच्छे' वा जुलूस शहर की घोर बढ रहा था। 'प्रतिक्रियावादियों' के विरुद्ध जनमत जगाने वाले उस जुलूस में कितने लोग शामिल थे? प्रदेश मंत्री चन्द्रशेखर के अनुसार जुलूस में ५००० लोग थे, एक धन्य कार्यस विधायक राजेन्द्र प्रसाद सिंह के अनुसार 'हम लोग हज़ार से कम थे।' नागरिकों का बहना है कि जब जुलूस चला तब उसमें कोई ५०० लोग रहे होने लेकिन शहर की घोर आते-घाते उस की सख्या घटकर करीब २०० रह गयी। इसी क्रम में विरोध करने वालों की सरया कांग्रेस के लोगों के अनुसार २००/३०० से अधिक नहीं थी जब कि लोग भावावेश में कह जाते हैं कि 'पूरा मुंगेर जुलूस वा विरोध कर रहा था'।

जुलूस तिलक मंदान से निकल कर शाह जुबेर रोड पर मुडा। इधर ८-१० बरस के छोटे-छोटे बच्चों वा एक मूड्ड खडा था। उसने जुलूस को हूर हूर कह कर बिड़ाया। आगे जीप में मंत्री थे उनके पीछे पुलिस की जीप फिर केन्द्रीय मंत्री पंचल थे। फिर कार्य-

बर्ता। अत में एक टुक था जिस पर बहुत से लोग बँधे थे। कहा जाता है कि इस टुक में लाठी घोर पत्थर भरे हुए थे जिनका 'उचित समय' पर इस्तेमाल बिया जा सकता था। वह 'उचित समय' घाया भी लेकिन जुलूस के विरोधियों के पक्ष में।

कोल्ड स्टोरेज के पास पहला पटाखा, चला, दोनो पक्ष एक दूसरे को उसका श्रेय देते हैं। जुलूस में न बाजार में घा गया था। उसके समर्थन में शाम चार बजे हूर दुकान पर पोस्टर्स चिपकाये गये थे। केवल एक ही पट में वे सब गायब थे। उनके बदले 'यादव-बापास जाओ', की पत्रियाँ जगह-जगह दीवारों पर, नीचे पिचली डामर की सड़क तक पर चिपकी हुई थी।

पटाखे की धवाज बम की धफरोह बनी। टाउनहाल तक पहुची। कहा जाता है कि छात्र सघर्ष समिति ने किसी भी परिस्थिति में जुलूस से गही उलभना तय बिया था लेकिन समिति वा एक हिंसा किसी मोर्चे की तलाश में था। बम की धफवाह ने उन्हें वह मोर्चा दे डाला। कुछ छात्र टाउनहाल से जुलूस की घोर चल दिये। जुलूस जिस जगह जितना ऊचा वाला मण्डा देलता उतनी जोर से 'इन्दिरा की सरदारी में देश की घागे बढना है' नारा लगाता।

जुलूस मुख्य बाजार में लाठी भण्डार के सामने घा गया था। भण्डार के कार्यकर्ता भण्डार से सरीदे गये लाठी के भडो से सजे जुलूस को छात्र से देल रहे थे। (पूरा बाजार

जुल के विरोध में बन्द था) अंडे घोर-
तिरे विसर्ज रहे थे, प्रगले चौराहे पर पट्ट
पर चक्र गये। सुना कि आगे छात्र भी गये
। दोनों ओर फूटपाय पर भी दलों की
तोड़ जमा थी। लीकमोड हुई। कहा गया
कि टुक से कुछ साठियां निचाल कर भीड़
से एन बी लोगों को जुलूसमें लीक कर मारा
गया। फूटपाय पर लोगों में भगदड़ हुई।
अन्य बवाल के लोग जुलूस के पीछे भी गये।
जुलूस फिर गया। सामने छात्र, पीछे, दायें-
बायें भीड़ बगल के घरो से दूँट छोड़ देनी की
बरतान शुरू हो गयी। धारे चल रहे यंत्रियों
को पुलिस की जीप ने एक प्रत्य जीप में बिठा
कर घटना स्थल से तेजी से निचाल कर बचा
गया। सादी अम्बार से भीड़ में विसर रहे
पास के भडे एकाएक भाग्य हो गये, जुलूस
के लोग भागपास की गतिवधि में भागे, ऊपर
परों से चलने वाले देतों से बचने। बड़ों है
हर गयी में एक एक को पकड़ कर लोगों ने
मारा। फा को ऊपर से डेने फेंकने में 'रानी
मलिन' का काफी बड़ा हाथ था। इने भावने
पासों से लेकर मार खाने वाले सभी लोगों ने
स्वीकार किया। मारने वालों ने गर्व के साथ
मार खाने वालों में आश्चर्य मिश्रित धर्म के
साथ।



महिला सचप समिति को सवरस्याएं

सिंह ने, जिनका पुरा परिवार सर्वोच्च से
संबन्धित रहा है, संयोजन समिति के सदस्य
नारायण देसाई को बताया कि दूसरी घोर
से काफी तैयारी थी, फिर भी हम लोगों को
घटना जुलूस निकालने का सोच था। फिर
जब से जे० पी० ने इस आन्दोलन का नेतृत्व
स्वीकारा था तब से हम निश्चित हो गये थे।
छात्रों ने भी हमें न धाने समय छोड़ा (सु गेर
में प्रवेश करने समय) न जाने समय। छात्र
सचप समिति के दपतर जलाये जाने की घटना
से हम परिचित नहीं थे। लेकिन जुलूस पर
हमारा छात्रों ने नहीं किया, उनको छात्र में
मुहत्वा समितियों के लोगों ने किया। हैरत
है कि भीरतें घोर छोड़े-छोड़े बरबे भी घरो
की दान से डेने जला रहे थे। बार्सिस में रहते
हुए भी हम सर्वोदय में हाथ चलने रहे हैं।
भाव हमारा आत्मना-सात्मना हो गया है।
मैंने तो 'भाचार्य' राममूर्ति से भी धावक किया
है कि भाचार्य की परिस्थिति के हन के लिए
हम सबको साथ बैठ कर कुछ करना चाहिए।
घारो ओर फँसे एक अष्ट योजन को मिटाये

भाष को मुनेर धरतल में ६७ पायल
भरनी हुए। प्रायः सभी सिर पीठ, हाथों,
पैरों पर साड़ी छोड़ देतों की मार से घायल
हुए थे। सुबह तक धारपाल में कोई ३०
साम रह गये। लोगों का कृदा है कि आस-
पास से साये गये पीयित गुबरी को 'आप' सियो
की तरह ली धारपाल में रखा नहीं जा सकता
था। छात्रों की घोर से बेफूर बनराम को
पासी सगी घोर उसकी बाँधी टाग को घुटने
के नीचे से काटना पडा। बनराम धाये
बड़े पड़ने पटना से साये में जुलूस देत रहे
थे। छात्र सचप समिति का बड़ता है कि
दूसरी घोर से भी कुछ छात्र घायल हुए है,
लेकिन उन्हें गिरफ्तारी के भय से धरपाल
में बरती नहीं किया गया। लेकिन हमने मका
की बुकबुश है, नागरिकों में से भी कोई
बचन नहीं हुआ। तो इस तरह मोटे तीर
पर जुलूस के बायें ही सारक ब गैर कायें सी
सचपों से ही घायलों के धाकड़े बन जाते हैं।
भायन बार्सिस विभायक राखेरप्रसाद



डॉ० आबिर हुसैन : बिदवास ली गया

के लिए जो आन्दोलन बला है यही अष्ट हो
रहा है, मैं भयभीत अनुभव कर रहा हूँ। उस
दिन पुलिस प्रभावहीन थी, उस दिन यदि
वह काफी पहले बोली चलती तो गया बोली
काट से भी चौगुना सहर हो जाता। हम
कार्सिस के लोग इस बात से खुश ही है कि
पुलिस में हस्तगोप नहीं किया।

उस मुहल्ले की महिलाओं का बहना
कि 'यह घटना नहीं होनी चाहिए थी फिर
भी सारी घटना की जिम्मेदारी यादव की
है। चाहे काफी सी घायल हुए ही चाहे छात्र,
सब यादव के कारण हुआ। वे जुलूस ही
निकालना चाहते थे तो धारने कार्यकर्ताओं का
निकालते। गुन्डों को बुला कर अपनी ताकत
दिखाने का यह नीतया निकला।' धारिय में
सब रही इन घोरतों में नारायण देसाई के
समभागे पर बड़ देत ब्याद यह स्वीकार
किया कि स्त्रियों की शक्ति दिखाने नहीं है
घोर उन्हें इस घटना पर भेद है। नारायण
भाई ने उनसे काह बड़ा कि साथ लोगों ने
प्रतिष्ठा की भी, वह गुस्ते से कारण भा हो
गयी। कारण विदवा भी ठीक रिशे, सत्य
घोर प्रहिंसा पर धाचारित ताकत तो खो
गयी है।

जनाब मोहताब मिनमुल्लाह रहमान ने,
जो सु गेर के एक मुस्लिम सगठन के धारिय
नेना है घोर हाल में ही कार्सिस की घोर से
बिहार विभाय परिषद के सदस्य नामजद किये
गये हैं, बड़ा कि आन्दोलन धार लोगों के
हाथ से निकल कर उनके हाथ में धा गया
है जो हिंसा में बरोसा रखने हैं।

आन्दोलन के समयक, 'बिहार धाचार्य-
जुल के सचप सदस्य अंघों की प्रो० आबिर
हुसैन का बयान धार लोगों में ब्याप्त न सिर्फ
विरोध बरिक्त बूला तक को सुचित करता है।
प्रो० आबिर जुलूस देतने चौराहे पर गये थे।
जब देतों की बरसात होने लगी तो वे लानी में
बचने गये। बहा उन्होंने एक बहुत तडुस्त
आदमी को सयभग मरणासन्न हालत में सडक
पर गिरा पाया। बहा पानी-पानी धिल्ला रहा
था। प्रो० आबिर ने धारपाल के घरो से
पानी मागा, "लोगों ने बिनवे कई घोरतें भी
भागत थी, मुझे उसे पिलाने की पानी नहीं
दिया एक ने तो बड़ा कि इस गुबरे से बहुत ही
सहायुधुति है तो गवायज से धामो घोर रिवा

अणुशक्ति : आत्मा और...

(पृष्ठ ३ का जेप)

सावधानी की धावाज जो बहते कि अपनी अणुशक्तियों का उपयोग पहले आइसोटोप बनाने और बिजली पैदा करने में तो सगाओ। बिजली की कमी के कारण हमारे उद्योग और सेती की उत्पादनता मारी जा रही है। क्या हमारी अणुशक्ति अपनी पूरी शक्ति से बिजली पैदा कर रही है? क्या वे उर्जा संकट का सामना करने में मदद कर रही हैं? शक्ति के लिए अणुशक्ति का कौनसा उपयोग हमने कर दिखाया है अभी तक? और हमी क्यों सतार के किस देश ने इस शक्ति का कारगर उपयोग शक्ति और नवनिर्माण में किया है? अणुशक्ति से होने वाला संहार हमने देखा है और उससे होने वाली शक्ति को हम भुगत रहे हैं। फिर भी उससे रावक

नहीं लेते और जो सिद्ध नहीं हुआ है उस पर अपनी धारणा लगाते हुए हैं।

तकनीक संसार के विकासशील देशों की होइये में माने के लिए अरुदी है या इस देश की आवश्यकताओं के साथ अनुकूलता स्थापित करने के लिए है? दुर्द्वेष वषों से हम विचारित तकनीक शास्त्र की दुहाई दे रहे हैं और विदेशों से भारी कीमत पर आयात कर-कर के उसका उपयोग कर रहे हैं लेकिन उससे इस देश के गरीब आदमी की कौन सी समस्या हल हुई है? घनी धावादी वाला यह गरीब देश है हमारा। इसमें पू जी आधारित और केन्द्रीय इत विद्यालय तकनीक की नहीं अम आधारित, विवेकित और मानवीय तकनीक की जरूरत है। लेकिन खासतः हाथों को काम और भूखे पेटों को रोटी देने के बजाय हम परिष्कृत के बहुलता-वादी तकनीक के पीछे पड़े हैं। हमें परिष्कृत के साथ सोचपर एर आधारित समृद्धि की

दौड़ में बराबरी पर धावा है या इस देश के विपत्तया मित्रता है? विदेशों को तीन वर्ष से इस देश में उठ रही उपयुक्त और देश तकनीक की मांग को अणु विस्फोट दबा देग क्योंकि वे लोग जो पश्चिम के धमाकनीक केन्द्रीकृत तकनीक के उपयोग में माहित हैं और उसके जरिये अपने हित स्वार्थ पूरे करते हैं, धन शान से कह सकते कि देखो हमने नितनी बड़ी उपलब्धि कर ली! यह प्रच्छेद वालों की तावज धन बम हो आयेगी कि अणु शक्ति पर धाम धादमी का क्या नियंत्रण होगा और इससे अपना वह कौनसा काम कर सकेंगे? ये सवाल इस देश की आत्मा के भी हैं और पेट के भी। लेकिन अभी ये गौरव कमीर धर जिनके, कृष्ण, रम्ये अजन्त त ही गोपाल। लेकिन प्राथमिक संकट ने इन भुय-भरे दिनों में कोई बकीर नहीं है जो यह सके कि मुझे अणु विस्फोट नहीं भूय और धमाक या समन चाहिए।

(पृष्ठ १५ का जेप)

दो। मैं वहाँ से भाग कर सादी अणुधर प्राया जहाँ से पुलिस को फोन कर सूचित किया कि पंजाब मेसनल बैंक के पीछे ऐसी हालत में एक धादमी पड़ा है। उसे तुरन्त अस्पताल पहुँचाये।

यह घृणा हमें कहाँ से जायेगी यह सवाल तो है ही लेकिन इसके साथ एक और सवाल आता है। जिन लोगों ने धाज से दो साल पहले प्रचण्ड बहुमत प्राप्त कर व्यवस्था संभाली थी इतने कम समय में जनता ने उनके प्रति विश्वास क्यों खो दिया, वह विश्वास इस घृणा में क्यों बदल गया? क्या लोगों की इस घृणा और हिंसा के पीछे आसन और समाज में एक बड़े पैमाने पर छिपी घृणा और हिंसा नहीं है?

जिला सर्वोदय मण्डल मुंगेर के अध्यक्ष निर्मल चन्द्र का कहना है कि मुंगेर के इन काण्ड में हम असफल हुए हैं। बिहार आचार्य मुल के अध्यक्ष प्राचार्य कपिल ने कहा कि समाजिक तत्व शब्द धन भाववाचक संज्ञा बनता जा रहा है।

घटना की रात को उद्योगमंत्री चन्द्रशेखर ने सरकिट हाउस में नारायण देसाई से कहा कि वे अनिश्चित बाल के लिए भ्रमण पर बंठ रहे हैं, नारायण भाई ने कहा कि यदि उनकी जगह होते तो वे भी भ्रमण ही करते, अपनी वैदना ध्यक्त करने के लिए। नारायण भाई ने अनुरोध किया कि वे अनिश्चित के बदले निश्चित समय का भ्रमण करें। उधर केन्द्रीय उपमन्त्री यादव ने सखेत किया है कि वे मुंगेर में अगले माह एक जूलस फिर निकालेंगे।

घायल लोग धीरे-धीरे अपने घर रवाना हो रहे हैं। उनके घाव भर जायेंगे। लेकिन मन में हथला करने वालों के प्रति जो घृणा के धाव होने में आसानी से भरेंगे नहीं और उन हमलाचरों के मन में जो घृणा है उसके घाव भरेंगे? १२ मई के बाद मुंगेर फिर बिलकुल स्वाभाविक हो गया है, लोग गन खा रहे हैं, पीक-मुक रहे हैं, रेडियो पर गाने बज रहे हैं, लेकिन मुंगेर का मन ???

संघ अधिवेशन पवनार में

सर्व सेवा सघ का अर्धवार्षिक अधिवेशन ५, ६ और ७ जुलाई ७४ को ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में होगा। सघ के मंत्री ठाकुर दास बाबू के अनुसार इस अधिवेशन में गये साल सेवाधाम में हुए अधिवेशन द्वारा अनुमोदित न्यायक्रम में प्रमत्त की समीक्षा और देश की वर्तमान परिस्थिति में सर्वोदय की भूमिका पर विचार होगा।

इन्दिराजी से बातचीत

सर्व सेवा सघ का छाठ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल २७ मई को प्रयाग मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिला। सानचीन काई बालोम मिमट चली। इन्दिरा जी को सर्वोदय के विभिन्न कार्यक्रमों से अवगत कराया गया। प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व अध्यक्ष सिद्धराम इन्द्रा ने किया और ठाकुरदास बाबू, जयनारायण, निर्मला देगपाण्डे, प्रभावार, राधाहरण, धार० रामचन्द्रन और देवेन्द्र भाई उनमें शामिल थे।

प्राथमिक शूलन—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ मिलियन या ५ बालर, एक घंटा का मूल्य ३० पैसे। प्रभाप जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ०६ जे० प्रिंटेड, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार ३ जून, '७४



क्या नहीं छोड़ी साह-मुबरो व्यवस्था की नीर में पल लकेयो ? लेल वृठ ३ पर

● पशु दारिद्र्य और धारण दारिद्र्य के बीच विमादु प्रभाव जोती ● सत्य, दारिद्र्य और अनुमानित मरणात्मा मरपी की नजर म ● पशु
विमादु से धारणा में बनने हुए सवाय - नारायण देवार्थ ● परिणाम कब तक लायेगा ? अनुमान विध ● दे० बी० का काम धारणकार
का द्वारा धरतु : पीरेन दा ● मया में गीतियां बेसनन बनार्थ मई' . दे० पी० द्वारा नितुन मर्दि की राट ● मोर लेवकी के नाम

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

पशु शक्ति और आत्म शक्ति के बीच त्रिशंकु

प्रधान मंत्री ने अपने सभी पड़ोसियों और दूसरे देशों को फिर विश्वास दिलाया है कि वे भारत की अणुशक्ति से कतरई नहीं करें क्योंकि वह पूरी तरह शांति के कामों के लिए है। इन्दिराजी का बार-बार यह भावनात्मक देना ही इस बात का सबूत है कि पड़ोस के देश हमारे अणुविस्फोट से शक्ति हैं और बड़े देशों ने सहामात्रा को लेकर ऐसी कार्यवाहियों शुरू कर दी हैं जो भारत को सजा देने की उनकी इच्छा की परिचायक हैं।

हम साब्त कहे कि हमारी अणुशक्ति शांति के लिए है लेकिन यह तो हमें मानकर ही चलना चाहिए कि हमारी इन बातों पर अब किसी को विश्वास नहीं होगा। अणु-विस्फोट इस सदी का एक ऐसा पाप है जिसे बर मुजरने के बाद वह देश अविश्रान्त के लिए अभिगम्य हो जाता है। हिरोशिमा पर गिराया गया पहला अणुबम अतन्वित मनुष्यता की चेतना पर भय का डरना गहरा गड्ढा खोद गया है कि अणुशक्ति से अब चाहे जितना निर्माण हो जाने यह गड्ढा पूरा नहीं जा सकेगा। अमरीका ने वह पाप मित्र राष्ट्रों की ओर से किया था इसलिए पूरा पश्चिम अणुबम को लेकर एक गहरे अमराध भाव से प्रस्त है और जापान तो खर उसके परिणाम अब तक भुगत रहा है। इस अमराध को दबाने, पाप को छुड़ाने और भय से मुक्ति पाने के लिए पश्चिम ने अणुबमों की होड़ खली की और अब उनके पास इतने बम हैं जो देखते-देखते पूरी दुनिया को नष्ट कर सकते हैं। सर्वनाश की देहरी पर पहुंच कर ही पश्चिम अपने अमराध और भय को दबा पा रहा है। अमरीका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस में सब जानते हैं कि बमों की उनकी अणुशक्ति निधि निरर्थक है क्योंकि उसके उपयोग का मतलब

मानसगत और सर्वनाश है। जब किसी देश के गंध को चीजें उसमें निरर्थकता पैदा करे तो उसका पूरा जीवन ही निरर्थक हो जाता है। पश्चिम इस निरर्थकता से प्रस्त है। महात्मा गांधी की एक और अविष्यवाणी सही साबित हुई है। हिरोशिमा के विनाश के बाद उन्होंने कहा था—'विनाश करने वाले राष्ट्र की भास्त्रा का गया छुड़ा है यह अमो नहा नहीं जा सकता। प्रकृति की शक्तिया बड़े रहस्यमय ढंग से काम करती हैं।' गुलाम बनाने वाला खुद को या अपने सहामक को कैद में डाले बिना गुलाम को कैद में नहीं रख सकता। पश्चिम अपने अणुबमों से संसार के मन में जो भय और घातक वंदा करना चाहता था आज वह खुद उसका शिकार है।

तो पश्चिम तो हिरोशिमा का पाप दो रहा है लेकिन भारत के मन में कौन सी प्रथि थी जो उसने अणुविस्फोट किया और अमराधियों के गंध में शामिल हो गया? यह कह कर कि हमने तो शांति के लिए बिरकोट किया है हम अपनी उस प्रथि को दबा नहीं सकते जो विदेशी अाक्रमणकारियों से सगा-तार हारने, अममानित होने और आजाद हो कर राष्ट्र बनने के बाद लड़े गये तीन अमि-एत युद्धों के कारण हमारे मानस में बनी थी। यह तथ्य कम महत्वपूर्ण नहीं है कि अणु विस्फोट करने का निर्णय हमने तीन साल पहले लिया था जब अपने इतिहास की पहली सझाई हम बांगला देश में लीते थे। एक बार यह सिद्ध करने के बाद कि इस उपमहा-दीप की सबसे बड़ी ताकत हमी हैं, हमारी प्रथि में हमें सिखाया कि अब हमारी चीज से बराबरी होनी चाहिए क्योंकि नेफा की अमं घोता है। अणु विस्फोट करने हमने चीन को

बताया है कि एशिया की जागीरदारी पर उसका एकाधिकार नहीं है। जो हमने हिमालय की बर्फीली चोटियों पर खोया था उसे हम पार के रेगिस्तान में प्राप्त करना चाहते थे। यानी शक्ति को पूजा में मानसिक स्तर पर हम अमरीका, रूस और चीन से भलग नहीं है हम भी मुख में शांति और बगल में अणुबम रखना चाहते हैं।

हमारी दिक्कत यह है कि अणुविस्फोट हमने ऐसे समय किया जब उसे शद्ध और खुले रूप से अपनी गनीली शक्ति के नाते हम विजापित नहीं कर सकते। न हमारी आचिक स्थिति ऐसी है कि हम कह सकें कि दुनिया की आलोचना दो कौड़ों की है न हमारा मन साफ है कि कह सकें, 'ठीक है, हमें खाने और पहनने' को नहीं मिलता लेकिन हम राष्ट्रीय गौरव को गिरने नहीं देंगे। आदमी सिर्फ रोटी से नहीं जीता उसे गौरव भी चाहिए।' ऐसा हम कह नहीं सकते क्योंकि महाभारत और कलिग के युद्धों ने हिंसक शक्ति को हमारे मन में निरर्थक कर दिया है। हमारा राष्ट्रीय गौरव हमारी संन्य शक्ति और विव्ससक क्षमता में हमने कभी नहीं माना। खुद से लेकर महात्मा गांधी तक हमारे अने महापुरुषों ने शांति, महिसा, प्रेम बरहण और सहअस्तित्व को हमारी शक्ति माना और बताया। नेहरू यह कहते कभी नहीं थे कि पचशील भारत के इतिहास की उपलब्धियों का निचोड़ है। जिन तत्वों को हम अपनी आत्मा की शक्ति मानकर चले उन्हें हम आज चाहें भी तो छोड़ नहीं सकते। इसलिए हमारे अणु विस्फोट ने हमें अणुशक्ति को घरती और आत्मशांति के आसमान के बीच में निजकुशी की तरह लटक का दिया है। इस लिए इतिहा जी ने बड़ी भू'भसाहट और तत्वों के साथ बहा कि इसरा क्या मतलब है कि अमरी देश विनाश के लिए अणुशक्ति का प्रयोग करे तो कोई हरकत नहीं लेकिन एक गरीब देश शांति के लिए उसका उपयोग करने का उपयोग करे तो यह गलत है। अमरी देश पूर्ण था न पूर्ण, हम जरूर पूछना चाहते हैं कि क्या भारत जैसे गरीब देश ने शांति और विनाश के सस्ते और उपलब्ध साधनों का उपयोग कर लिया है?

—प्रभाय जोशी

सत्य, अहिंसा और अग्निशक्ति महात्मा गांधी की नजर में

विश्व में उचल-पुचल मचाने वाले परि-
वर्तन हुए हैं। सत्य और अहिंसा की अपनी
निष्ठा पर क्या मैं आज भी कायम हूँ परमाणु-
बम ने क्या मेरी इस निष्ठा के घुंटे उड़ा
दिने हैं? घुंटे तो खैर उड़े ही नहीं हैं, उसने
यह बान भी मेरे सामने बिजकुल स्पष्ट कर
दी है कि सत्य और अहिंसा की जुड़वा
शक्तिया सत्कार की सबसे बड़ी शक्ति है।
इस शक्ति के सामने अणुबम की कुछ भी
नहीं चल सकती। अणुबम तथा सत्य अहिंसा
दो बिजकुल विपरीत प्रकार की शक्तिया हैं,
एक नैतिक और धार्मिक दूखरी धारैरिक
धुरी भौतिक। पहली शक्ति दूखरी से मन्त्र
बुनी बड़ी हुई है क्यों कि दूसरी का सहज
रूप में ही कहीं न कहीं मन्त्र है। आत्मा की
शक्ति सदा विकसित होती रहनी है और वह
अपनी है—अन्तहीन है। धरने परिपूर्ण
विक्रम में वह सत्कार में अध्येय है। जब मैं
ऐसा बहना हूँ सब इतना जानकर बहता हूँ कि
मैं कोई नई बात नहीं कह रहा हूँ मैं यहां केवल
एक सत्य का साक्षी हूँ। इस शक्ति का प्रत्येक
स्त्री पुरुष बालक के अन्दर में निवास है—वह
किसी भी वर्ण या वर्ग के बच्चे न हो। इतना
ही है कि यह तब ज्यादातर लोगों में सुल
है किन्तु विवेकपूर्ण विश्वास से उसे जानून किया
जा सकता है। यह बात भी समझ लेनी
चाहिए कि सत्य की समझ बिना और इसे
उपभूष करने के लिए आवश्यक प्रयत्न किये
बिना धार्मिकता से बचा ही नहीं जा सकता।
उपाय हरेक व्यक्ति के पास है। आगपास के
सोपान साधने ही या नहीं इसे सोचने बिना
प्रत्येक व्यक्ति को धार्माभिव्यक्ति करना
सोचना चाहिए।

क्या धर्मधर्म के हिंसा मात्र की अर्थशा
सिद्ध नहीं हो गयी है ?
अहिंसा एकमात्र उपाय :

हमारे अन्तरीक शक्ति का बहना है कि
अणुबम ऐसी अहिंसा साधना जैसी और कोई
नहीं जा सकता। यदि उनके बहने का बहु धर्म
है कि इसकी विनाश शक्ति किन्तु सत्कार
के रूप में हिंसा के प्रति मुला इत्तान् कर
देती तो उनका बहना ठीक नहीं है। यह तो

बुद्ध इसी तरह की बात हुई कि कोई आदमी
इतने ज्यादा पकवान था कि उसका जी
मचलाने नये और वह उनसे प्रधा जाये लेकिन
जैसे ही मितली का धसर दूर हो बहु दुग्ने
उत्साह से उन पर दूट पड़े। ठीक इसी तरह
पूणा का अस्तर समाप्त होने के बाद क्या
सत्कार नये उत्साह से हिंसा पर नहीं लोट
धायेगा ?

कई बार बुराई में से भलाई निकल
जाती है। लेकिन ऐसा तब होता है जब वह
ईश्वर के हाथ की बात हो। मनुष्य के हाथ
की नहीं। मनुष्य तो यही जानता है कि जैसा
भलाई का परिणाम भला होता है उसी तरह
बुराई का बुरा। यह सम्भव हो सकता है कि
अणुशक्ति का—जिसका उपयोग अमरीकी
वैज्ञानिकों ने विनाश के लिए किया है—दूसरे
वैज्ञानिक सोकोकारों कार्यो में उसका उपयोग
करें। लेकिन अमरीकी मित्र यह नहीं कह रहे
ये। एक स्पष्ट सत्य को छुपाने की सोचिा
करने की हद तक वे भोले नहीं हैं। सत्कार
अपने अहंकारने वाला भाग का उपयोग तबही
के लिए करता है जब कि गुहणी उसी भाग
का उपयोग वैश्विक सत्कार बनाने में करती
है।

मुझे ऐसा लगता है कि अणुबम ने, युगो
युगो से पची धा रही मनुष्यता की पीपक
ऊंची-ऊंची भावनाओं को खत्म कर दिया है।
पुराने जमाने में सत्कार के कुछ ऐसे नियम होते
थे जिनसे उसे सहज करने में सहायता मिलती
थी। लेकिन अब हम युद्ध की नव वास्त-
विकता देख रहे हैं। धर्म शक्ति ने सिवाय
युद्ध का कोई दूसरा नियम नहीं है। अणुबम
ने निच राज्यों को एक सोसनी जीत दी है।
सोही देर के लिए उसने आगान की भावना
को भी खत्म कर डाला है। गच्छ होने वाले
राष्ट्र की भावना की कितना चक्का लगा है
यह धार बहना कठिन है। अग्नि बड़े रहस्य-
मय इतने अपना काम करती है।

ऐतन्मम की इस भावरी से हमें एक
सच्ची विश्वास यह मिल सकती है कि जिस
तरह हिंसा की हिंसा से नहीं निरास का
सत्कार, उसी तरह एक अणुबम दूसरे अणुबम

को नहीं मिटा सकता। सिर्फ अहिंसा के बल
पर ही हिंसा से बचा जा सकता है। पूणा
को प्यार से जीता जा सकता है। पूणा के
बदले पूणा से वह और गहरी हो जाती है।
मैं जानता हूँ कि जो बात मैं पहले कई
बार कह चुका हूँ और जिसका मैं अनुसरण
सत्कार का भरसक प्रयत्न करता हूँ, वही धार
किर दोहरा रहा हूँ। सब तो यह है कि पहले
मैं मैंने कोई नयी बात नहीं कही थी। यह
तो एक सनातन सत्य है। यह जरूर है कि
मैंने कोई किताबी बात नहीं कही थी। जो
मेरी रग-रग में समाया हुआ है उसी को मैंने
बोले के कर कहा। छोट साल तक मैंने इसे
जीवन के हर क्षेत्र में परखा है और मेरी
धार्मिक और दृष्ट हो गयी है। मित्रिके अणुबम
ने मेरी धार्मिक को और बल दिया है, यह एक
ऐसी शक्ति है, जिसके सहारे आदमी अनेसा
हो तो भी बेभिभक्त सत्कार रह सकता है।
मंससमूलर को बरसो पहले नहीं गयी इस
बात को मैं मानता हूँ कि अब तक सत्य पर
अविश्वास करने वाले मौजूद रहेंगे, सत्य को
दोहराना ही पड़ेगा।

"अणुबम की अभावकता सत्कार पर
अहिंसा नहीं घोष करती। यदि सारे राष्ट्रों
के पास अणुबम हो तो वे उसका उपयोग करने
में उरेंगे, क्योंकि ऐसी हालत में अणुबम के
उपयोग का मतलब होगा सभी सम्बन्धित
शक्तियों का धर्म"—मैं ऐसा नहीं मानता।
अणुबम का उत्तर

अणुबम का प्रतिकार क्या है? क्या इतने
अहिंसा को अपनी-गुदरी बना दिया है? नहीं,
इसके विपरीत अब केवल अहिंसा का ही
(मेघ पृष्ठ १५ पर)

२ जून को जे० पी० पटना में

बेनूर अस्पताल में सफल धारदेशान के
बाद दूरी तरह स्वस्थ होकर जे० पी० पटना
आ गये हैं। वे दो जून को पटना पहुंच रहे
हैं।

अणु विस्फोट से आकाश में जलते कुछ सवाल

पूछे हैं शांति सेना मण्डल के संयोजक नारायण देसाई ने

भारत में भणुगणित के विस्फोट के कारण जगह-जगह जो बधाइयों दी जा रही हैं और विजयोत्सव मनाया जा रहा है, उसके बीच हम कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं डा० होमी सेठना से, जिन्नीवा भावे से, इन्दिरा गांधी से।

बाइटर सेठना, आप शायद भूल गये होंगे, अनेक वर्ष पहले टाटा इन्स्टिट्यूट आफ फण्डामेंटल रिसर्च के एक हाल में आपने यह विचार व्यक्त किये थे कि 'भारत भले शांति की नीतिन शक्तिपार करता रहे, लेकिन उसके लिए सामूहिक बनावर अपने स्टॉक में रख लेना उचित है।' तब आपके स्थान पर एक शांतिवादी मनुष्य भारत के अणु प्रायोग की श्रम्य-शस्ता कर रहा था। श्रम्य स्वयं श्रम्यथ हैं। आपकी सलाह का वजन भारत सरकार की नीति पर अरुण पडता होगा। अभी जो आपने राजस्थान की सीमा पर अणुविस्फोट किया है, वह आपकी उची नीति का इगारा देने वाला तो नहीं है? बधाइयों की स्वीकार करते हुए आपने यह भी कह दिया है कि धावस्यता होगी तो और भी विस्फोट किये जायेंगे। आप देश भर में इस विषय के सबसे बड़े उज हैं। क्या आप हमें यह बतायें कि 'शांति के लिए अणु विस्फोट और 'युद्ध के लिए अणु विस्फोट' में वैज्ञानिक दृष्टि से क्या अन्तर होता है? क्या इस प्रकार के साधन से परमाणु बम नहीं बन सकते? क्या इन विस्फोटों से विकिरण नहीं होता? इस विस्फोट के बाद हवा दक्षिण पश्चिम की ओर याने पाकिस्तान की ओर बड़ी, उसके वरले में यदि उत्तर पूर्व की भांने भारत की ओर बही होगी, तो उसे रोकने के लिए आपने उपाय सोच रखे थे?

आचार्य जिन्नीवा भी आप सन हैं, तत्व-दर्शी हैं, श्रम्य प्रवेगी हैं। शांति के लिए नोबेल पारितोषिक आपकी मिलना चाहिए यह मानने वाली मे इस दिग्गणी का लेख भी था, जब तक डा० कितिबर को यह पारितोषिक नहीं मिला था। ज्ञात हुआ कि आपने

कहा है कि इस विस्फोट से भारतीय उपमहा-द्वीप में शांति बने रहने में सहायता होगी। इस विस्फोट से शांतिमय प्रयोग आपने बर्धमें ऐसा आपने कहा होता तो हम आपको वैज्ञानिक मानने, जैसे कि आप हैं ही। 'बड़ी हिंसा से मुझे भय नहीं, छोटी हिंसा ही से भय है' ऐसा आप कहने तो हम आपको वेदाती मानते जैसे कि आप हैं ही। किन्तु आपने तो शायद यह कहा है कि 'दसते उपमहाद्वीप में शांति बनी रहेगी।' श्रीमती गांधी के मुख से तो यह बात हमारी समझ में आती, किन्तु आपके मुख से यह बात कुछ अटपटी लगी। हमारी तरह ही शायद यह बात जनाब जुल्फिकार अली भुट्टो को अटपटी मालूम होगी, क्योंकि वे तो इस विस्फोट से भयभीत हुए मालूम होते हैं। तो क्या आप सत तुनसीदासजी की तरह यही कहना चाहते हैं कि 'भय विन होन न प्रीति?'

श्रीमती गांधी, आपकी रणनीति के हम वास्तव में प्रशंसक हैं। कहने हैं कि आपके पूर्य पिताजी जो काम नहीं कर पाते थे वे आप कर पाती हैं। वे निश्चय नहीं कर पाते थे, आप तडाक से निश्चय कर लेती हैं। वे राजनीति में भी प्रादशंवाद को घुसेडने का प्रयत्न किया करते थे, आप इन दोनों को तीरसीर की तरह अलग रखती हैं। मुना है कि उन्होंने बांधूय परिषद में पञ्जील का दोष किया तब भी आपने अपनी विरोध दर्ज करवा दिया था? विस्फोट की घटना के विषय में हमें एक बात समझ में नहीं आती कि यह इतनी देर से क्यों किया गया? क्या अब तक हमारे पास इतनी वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं थी, क्या हमारे पास उसके लिए प्रावश्यक युरेनियम नहीं था? लेकिन हम तो अब से चीन ने विस्फोट किया (उसने भी उसके लिए दावा तो यही किया था न कि यह शांतिमय कामों के लिए है?) तभी से यह मुनवे आये हैं कि हमारी यह वैज्ञानिक उपलब्धि है। हमें कुछ समय पहले यह भी मुना था कि हमारे यहाँ से युरेनियम को तस्कर विधा से बाहर

जाने हुए पकड लिया गया। यानी उसकी भी कोई खास कमी अपने देश में ही ऐसा तो नहीं जान पडता। तब फिर इस विस्फोट का समय यही क्यों, यह पूरी तरह समझ में नहीं आया। क्या इन्ड्र का सिंहावन डोलता है, तभी वज्र छूटता है?

आपने कहा है कि यह विस्फोट शांतिमय कामों के लिए ही था। अमरीका हिरोशिमा और नागासाकी के लिए राक्षसी देश था यह मानने को आप सतक हैं। दलील के लिए तो आपके कुछ मित्रों के साथ हम उसे प्राज तक राक्षसों का देश मानने को तैयार हैं। उस अमरीका को छोडकर और किस देश में अपने विस्फोट को अशांतिमय बतलाया है? भाविर सभी अणुशक्त बनते तो हैं शांति के लिए ही। अणु शक्त भी बनते हैं तो वे औरों के शान्मण से बचने के लिए होते हैं। हम यह तो जानते हैं कि रूस के ब्रंजेव, चीन के साओ प्रोर इंगलैड, केनेडा तथा फ्रांस के नेताओं से आपकी सत्यनिष्ठा का ही अधिक है। आप उस देश को नेता हैं, जिसके युद्ध-लेख में ही 'सत्यमेव जयते' मन्त्र अंकित है। लेकिन हमारी समझ में यह नहीं आता कि अणु पारिस्तान के गांधी जी आपके शांति के प्रतिभावन को न मानें, अणु पूर्वी एशिया का जापान इससे कंचित हो, यदि जिसको सहायता से हमारे देश में अणुशांति यात्रा का प्रारम्भ किया वह केनेडा ही इस विस्फोट से शक्ति हो तो उन्हें आपकी सत्यनिष्ठा पर भरोसा कैसे देवायें? केनेडा ने आपको शांतिमय कामों के लिए ही अणु साधन दिये थे। क्या अमरीका इनी प्रकार पारिस्तान या ईरान को जैसे साधन नहीं दे सके? भारत सागर से अमरीकन अणु अड्डे होने के, आपकी तरह, हम भी विरोधी हैं। प्रश्न हमारा इतना ही है कि क्या पाकिस्तान, क्या अफगानिस्तान, क्या नेपाल, क्या बहाम्येद, क्या श्रीलंका भी उसी प्रकार शांतिमय नहीं होने जैसे आप इरिया का शांतिमय से हुई थीं।

परिणाम कब तक आयेगा ?

(दक्षिण विहार से अनुपम मिश्र की दूसरी रपट)

श्रीरंगबाद : पुरत मे मूरज वैसे ही कुछ जल्दी हूब जाता है, फिर यहा शाम से बादल छा गये थे, अब धूल भरी धांधी चल रही है। कुल मिला कर घना धानेरा छाया है। करने के मुनसान बलब के धारण मे छात्र सचप व अन सचप समितियो के सदस्यो के साथ नारायण देसाई की गोन्डी चन रही है। कुछ जवान लडके हैं, बडे-बडे बाल हैं, कुछ बघेड हैं, मटमंठी धोती बढियाण मे, दो ठेठ पोटी माने हैं, कुछ पकके नेना की पोशाक मे है। गोन्डी मे सामिल कुछ लोग धानोवन की सेबर बढुन घाघीर है, 'बब तक परिणाम आयेगा?'

धानोवन नरबो से अनुमंडलो, घ बनो से होला हुधा घब गाँवो तक पहुँचने लगा है, १० दिनी की एक लम्बी यात्रा कर चुका है। अब बह छात्रो का ही नही लोगो का धानोवन बनता जा रहा है। भाजारी के पहले के अनुसरो को छोड दें तो इस धानोवन मे शामिल हो रहे नये-नये लोगो ने कमी भी इतनी लम्बी लडाई नही लड़ी है। लेकिन परिणाम जानने की घाघीरला बकावट से नही रबावट से उपरो है। बकावट से पहले इसी धोरगाबाद मे भरी दोराहुर में सभकियो तक के अनुम निबन्धने से, मुबह ६ से रात तफ चन्ने धानो नू के दोरान भी जगह-जगह ठबुमो मे मोग अनशन पर बैठे थे। १५ हजार जानी रागत काडो मे से ४ हजार सानो काडो छात्रो ने बच-बाचे थे—इनमे हुर छात्रो के कुछ घररो के काडो थे। अपने घरने के बाजार का अध्ययन किया गया था और ११ प्रसंगो मे जनसचप समितिया बनानी का चुनी थी।

बढ़ी एा दो जगह छात्रो ने मूल्य निर्धारण के लिए दुकानो पर छात्रे मार कर अर्धघ घाघ बरामद किया—प्रतिभियाम में कुछ चीजें बाजार मे मारब हो चलीं—छात्र उदास हो रहे और छात्रे किनी कार्वकम के धमाम में बैठ गये, परिणाम की बिन्धा करते सये। नारायण घाई ने इन विषय को सविस्तार

समझाया, 'नगर स्तर पर कार्यवाही, बीजो का धमाम पैदा कर सकती है, जे० पी० ने नेतुर जाने से पहले प्रदेश स्तरिय एक छात्र समिति तैयार की है जो अलग-अलग व्यापारियो से मिल कर अधिकारियो के साथ बैठ कर मूल्य निर्धारण का काम करेगी। तब तक नगर स्तर पर उपभोक्ता व्यापारी और प्रशासन की मिली जुली बैठक बरवा कर समस्या को हल करने की कोशिश की जाये।' श्रीरंगबाद के दिक्कट गेहूँ में छात्रो, अधिका-रियो और पुलिस में पूरा तालमेल है। छात्रो के मनशन को वहा के दरोगा ने ही रस पिना कर लीसा था। इसी जिन के दाउदनगर में कमोज की बाह पर बाली-पट्टी बाघे छात्र घोर नागरिक विधान सभा भंग करने की मांग पर हस्ताक्षर करवा रहे हैं।

छारा (भोजपुर) के चौराहे पर धानोवन के समर्थन में बैक कर्मचारियो का एक पोस्टर लगा है। गहर में घूमते हुए कई जगह भाग पायेगे कि गरीबी हटाने की जिम्मे-दारी इंदिरावाणी से हटा कर अय्यराज



कति का शासन : छात्रा में छात्रों की कसा लेने नारायण देसाई

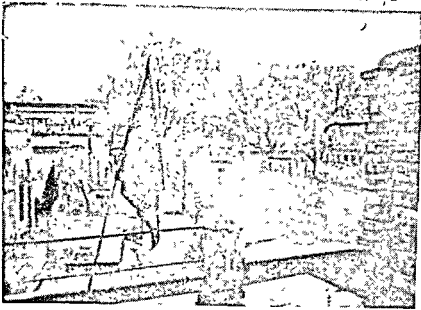
नारायण के कचे पर डान दी गयी है। नगर में जन तथा छात्र सचप समितिया बन चुकी हैं। १० मार्च के बाद छात्रा प्रशासन था, जे०पी० के समर्थन के बाद काम करने के रास्ते बरते। घोरो लो बहड आये छात्रों

१२५ सौतेले रोज धरना देती थी, २०० तक के जुलूस निकलते थे। जन जागरण सप्ताह बहुत प्रचन्दा चला। अब अहा मुक्कड समाए चल रही है। कामकाजी दिन में दस बजे सुबह भी जनसभा आयोजित करने पर सफल हो जाती है। सचप समिति ने ६ उपसमितियाँ नियुक्त की हैं, महगाई निवारण उपसमिति की सत्रियता के कारणए गहर में गेहूँ, पावल और साबुन के दाम गिरे है।

छारा के छात्रो मे सामाजिक चेतना जायो है। सचप समिति में छात्र अपने राज-नैतिक दनु छोड कर आये है। नारायण भाई के शब्दो में, 'छात्रो ने लो राजनीति छोड दी है किंकिन धमो उनमें से कुछ को राजनीति तही छोड पाई है।

हजारो वाग के इंदगिद ४० गाँवो में जनसचप समितियाँ बन चुकी है। मनशन का बायजम वहा! बिलकुल सररवती पुवा जैसा बना था। कोने पर, लोब चौराहे पर, हर कड़ी हर कोई मनशन पर बैठा था। छात्र-सचप समिति को तब मानुम ही नही पड़ा कि बिन्दे स्थानो पर अनशन चलता है। ५-६ बरन के बच्चे, छात्र, बकील, उनके मुषी भी, रिश्तेवाले, शिखर, प्राध्यापक, मोटर मानिक यूनियन के सदस्य, धराजपनित्र कर्म-चारी, पत्रकार और दामोदर घाटी योजना के कर्मचारी-जारी लम्बी सूची है अनशन पर बैठने वालो की। १५० बकीलो ने विधानसभा नग करने की मांग की, केवन् ४ ने इस के बने रहने पर जोर दिया।

६ मई को हजारो वाग में एा प्रतिष्ठित सामान नागरिक को बन्धा का विवाह था। क्रीक डेड ताल के क्षेत्र, समेन विवाह का कूल संघं चार लाख माना गया। छात्र सचप समिति के सदस्यो में इस पर क्या किया जाये, बहम हुई। तय किया कि यदि विवाह के घर को बहुत पहले यह खबर की गयी होनी कि मात्र क जमाने में ऐसा विवाह नही होना चाहिए, हम धरना विरोध करेगे।



रांची की सुनी सड़क पर झूलता काला झंडा

तब तो ठीक रहता। लेकिन भ्रम भ्रान्तक जा कर विवाह कार्य में बाधा नहीं पहुँचानी चाहिए। फिर भी अपनी अग्रहमति दर्ज करवाने के लिए छात्र हाथों में इस फिजूल खर्च के विरोध में पट्टी लिए विनम्र बुचबुस उस घर तक गये कुछ देर रुके फिर बरत भ्राने से पहले ही वहाँ से लौट आये।

हजारों बाग के नजदीक ही फिल्मी गानों की फरमाइश के लिए प्रसिद्ध भुमरी तलैया के १८ सभिय छात्र गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

रांची में छात्रों ने सभर्प समिति के बदले नवनिर्माण समिति बनायी है। वे मानते हैं कि इस सभर्प के दौरान उन्हें चीजों को तोड़ने के बदले बनाता है। यहाँ नये निर्माण में लगे इन छात्रों ने व्यापारियों, अधिकारियों के साथ मिल कर चीजों के दाम बाँधे हैं—इस प्रयास में बाजार-से चीजें पायब नहीं हुई हैं। जाली राशन कार्डों के पकड़वाने में छात्रों ने अधिकारियों के साथ-साथ काम लिया है।

ठेठ घादिवासी क्षेत्र में श्राईवासा है। यहाँ एक छात्र २२ दिन का अनशन कर चुका है। अनशन में कस्के के २०० रिश्तेवाले भी शामिल हुए थे। यहाँ छात्रों पर राजनैतिक शब्दावली हावी है लेकिन वे स्वयं निर्दलीय हैं। वे सभी व्यापारियों अधिकारियों और पुलिस को अपने विरुद्ध मान कर चल

रहे थे। नारायण देसाई ने महा के दोरे में एक दूसरे से संबंध बढ़ाने, मदद देने, परस्पर विश्वास करने का प्रग्रह किया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी शक्ति को गुपा करना है भाग नहीं।

इस्पातनगरी जमशेदपुर में श्रान्दोलन की दिशा शुरू में कुछ दूसरी रही। छात्रों ने अपना मुख्य कार्यक्रम कांग्रेस से या साम्यवादी-पार्टी का विरोध ही मान लिया। इसमें कुछ तो सैद्धांतिक भटकाव या झोर कुछ परिस्थितियों का अंतर भी। यहाँ बड़ी-बड़ी कंक्टारियों से ही पूरा झूठ बसा है। हरेक नागरिक कर्मचारी है—यूनियन का सदस्य है। सबसे प्रमुख मजदूर यूनियन साम्यवादियों की है। जब दो माह पहले जमशेदपुर में श्रान्दोलन शुरू हुआ तो उसे सगठित साम्यवादियों का विरोध सहना पड़ा। फिर कुछ समय तक इन छात्रों ने उनका प्रभाव समाप्त करने में ही अपनी ताजत बरबाद कर दी। भ्रम वे समझ गये हैं कि यह उनका काम नहीं है। उनका अपना एक कार्यक्रम है अपनी एक पद्धति है। उसे छोड़ने से वे लोगो का साथ छोड़ देंगे।

जमशेदपुर से घनबाद जाते हुए बगाल का एक हिस्सा पढ़ता है। दैक्खियों के पास भस्सर पूरे बिहार में धूमने का धनुमति पत्र होता है। बिहार से बिहार ही जा रहे हैं, लेकिन बंगाल पार करना पड़ता है। इस धंधे

से निश्चयने वा परमित पटना से बनवाना पड़ता है। लेकिन जरा रुकिए एक झालान तरीका भी है : बंगाल की चौकी पर दस रुपया दो झोर पार मंते जाओ। केवल बिहार बंगाल की सीमा पर ही नहीं जीवन में हरक्षेत्र में झाल ऐसी चौकियों की भर-भार है, उनको पार करने के दो रास्ते हैं—कठिन कानूनी कार्यवाही को पूरा करो या चौकी पर रिश्वत दो।

बिहार बंगाल की इस चौकी पर छात्र सभर्प समिति की झोर से नाम बर रहे रपु-वंस तथा जे० पी० द्वारा नियुक्त सहायकार नारायण देसाई को ले जा रही कार को रोका गया। कार के पास पूरे बिहार का परमित या, बगाल का नहीं। बगाल परमित के प्रभाव में चौकी के कर्मचारियों ने दस रुपये घूस मागी। गाड़ी सड़क से हटा कर विनारे पर सगा दी। श्रष्टाचार मिटाने निचले लोग एक चौकी पार करने की उतावली में श्रष्टाचार को अपनाते ! थोड़ी देर बाद एक झोर टैक्सी श्राफी दुईवार नीचे उतरा, चौकी तक गया जोर तुरंत लोट घाया—चौकी का डंडा ऊपर कर टैक्सी को गुजरने की धनुमति मिल गयी। उसने टैक्सी चालू करते हुए रकी हुई दस गाड़ों की झोर देखा झोर बारएा पूछा, बताया परमित नहीं है, बह हँसा, कहने लगा 'मरे वार दस रुपया दो झोर जाओ ना। उसकी हूसी में 'सँते मूले लोप हैं' का भाव था। उस टैक सी के बाद रूसी तरह कुछ और गाड़िया निकल गयी। यह गाड़ी उसी तरह चुपचाप विनारे पर सड़ी रही। बालिर दस चुपों से चौकी के लोग धरवाये, भास ऊपर कर बहने लगे—'जाइये-जाइये, आप लोग क्यों रुक गये हैं ?'

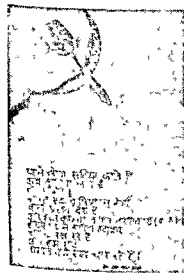
घनबाद कोयले का शहर है। धूल के बदले भी कोयला ही उड़ता है। लेकिन यहाँ नुजरात से बरसो पहले भा बरसे ईट-भट्टे नै एक व्यापारी ने भ्रम भ्रान्त व्यापार समेट लिया है—कोयले के शहर में उसे कोयला नहीं मिल रहा। अब महा बाले पैसे से ही बाला कोयला मिल पाता है।

घनबाद के छात्र काफी सक्रिय हैं, पहले सभर्प समिति जनता कम्पू सगती थी, युवा कार्य से उसे तुड़ाती थी। दुपानदारों की मुसीबत थी। एक बार दुपान बन्द करके

→

दूसरी बार सोलते। दोनों धार भय वा आघात होता। छात्रों ने इसे समझा है कि भय वा आघात जनता को उनसे दूर ही करेगा। यह काम बन्द कर दिया गया है। छात्रों ने एक शिक्षात्मक रूप स्थापित किया है जिससे सभी तरह की शिक्षात्मक दर्जे करा सकते हैं। समिति के सदस्य शिक्षात्मक को लेकर उनसे संबंधित विचारों के अधिकारियों से मिल बैठ कर उनका हानि निवारण करते हैं।

हस्त प्रयोजितियों में से एक वैदनाय काम, देवघर में प्रवेश करते हुए जगह-जगह निराश्रित भवन गले में फूल की मालाएँ डाले घूमते दिख जाते हैं। लेकिन माला धारी भक्त छात्र भी इस समय विधायकों को वापस बुलाने पर जनमत संग्रह कर रहे हैं, हस्ताक्षर अभियान में जुटे हैं। हस्ताक्षर मतदाता सूची के अनुसार ही करवाये जा रहे हैं। यहाँ पहले विधायक का घेराव किया गया था उन गलती का महत्त्व होने के बाद अब छात्रों ने घेराव के बजाए 'पट्टाचार' शब्द निकाला है। पट्टाचार में विधायक तक अपनी बात भर पट्टाचार दी जायेगी वह भी पहले से सूचित कर—मानना न मानना विधायक के विवेक पर छोड़ा गया है। देवघर में छात्र एक सस्ती रोटी को दुपान भी चला रहे हैं।



मुंगेर प्रदर्शनों का एक चित्र

मुंगेर में वकील, व्यापारी, छात्र, शिक्षक कलाकार झेरतेँ सब अपने परो से निवृत्त कर प्रान्दोलन में आ रहे हैं। प्रखंड स्तरीय काम में मजदूरों को गलत में मजदूरी लाने पर जोर दिया जा रहा है। जमुई अनुमण्डल में विधायक से विश्वास उठ जाने के कारण बनते हुए मतदाता अपने प्रतिनिधि को मोस्ट-कास्ट खाना कर रहे हैं। अष्टाचार निवारण के साथ सदाचार का भी पाठ हम सीख सकें इसकी कोशिश करती है। छात्र बल में यात्रियों को विना टिकट न चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यहां छात्र, नागरिकों, धोर रचनात्मक कार्यकर्ताओं में एक दूसरे के प्रति काफी समझ है। मुंगेर के भाषोपुर धोर भोगन बाजार की छात्र व छात्रा सघर्ष समितियों ने मिल कर एक चित्र प्रदर्शनी लगायी है। बहुत गम्भीर चित्रों से लेकर हल्के फुल्के मजाक, व्यंग्य कविताओं तक के इन चित्रों से छात्र की सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक परिस्थिति दर्शायी गयी है।

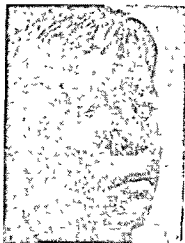
यहां हस्ताक्षर अभियान में महिलाएँ घूम रही हैं। उनका कहना है कि हमें इस काम में कहीं भी विरोध नहीं मिला। कांशंस धोर साम्यवादी विचार के धरो में भी हमारी बात-चीत मजे में होती है। विधानसभा भंग के पक्ष धोर विपक्ष में इन महिलाओं को मिते हस्ताक्षरों का अनुपात ३० धोर ३ है।

इस तरह बिहार में प्रान्दोलन चल रहा है। कहीं लगेगा कि आन्दोलन ने सरकार को ठण्ड कर दिया है, कहीं लगेगा कि प्रान्दोलन ही ठण्ड पडा है। कहीं के कामों से गर्व ने सिर ऊंचा हो जायेगा तो कहीं शर्म से नीचा भी हो सकता है। प्रान्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ताओं सहानुभूति रखने वाले लोगों धोर अपने को केवल दर्शकों की भूमिका तक ही सीमित रखने वाले लोगों के सिर इन दोनों स्थितियों में घा सकते हैं। प्रान्दोलन के काम कर रहे लोगों की, छात्रों की अपनी-अपनी सीढ़ियाँ हैं, किसी एक सीढ़ी पर खड़े छात्र पत्थर मारना, पुलिस को बुला कहना, दुकानें जबरन बन्द करवाना, अपने विरोधियों को मारना बकना, विधायक को गुला पट्टाजाना, ही क्रान्ति मानते हैं। उनसे भिन्न सीढ़ी पर खड़े लोगों उन्हें समझा रहे हैं, सीढ़ी बदल रहे हैं उनकी। जो छात्र अपनी ही समस्याओं पर कभी सोच नहीं पाये वे एक प्रान्दोलन में

बह कर समाज की, देश की समस्याओं पर सोचने लगे हैं, आज कनेले सोच रहे हैं कल अपने विरोधी को भी साथ लेकर सोच सकते हैं।

साधन श्रुति का मामला उनका आदर्श तो है लेकिन कहीं-कहीं वह उनकी परत में गड़ी है। तुरन्त प्रसर हो इसका मोह छोड़ा भूठ, थोड़ी हिंसा की धोर भुक्ता देवा है। लेकिन एक तरफ कुछ छात्र प्रान्ति के अपने ही सपने में गहरी भयतश्रुह को धामने रख लेते हैं तो दूसरी धोर वे ही छात्र 'पुलिस भातक फैला रही है' ऐसा कह धबरा कर भूमिगत हो जाते हैं। भूमिगत होकर वे जन प्रान्दोलन नहीं चला सकेंगे यह उन्हें अपने अनुभव से सीखना बाकी है।

केंद्रीयकरण की परम्परा की बिहार के इस दौर ने तोडा है। स्वयं छात्र संघर्ष समिति के प्रदेश कार्यलय पर लोगों की, छात्रों की नजर उतनी नहीं उठती। सब अपने-अपने



बंध छात्र संघर्ष समिति के नवल किशोर साधनों से जंसा बनाया है, जंसा मुक्तता है प्रान्दोलन चलाते हैं। इसमें कहीं-कहीं डील भी जाती है, लेकिन समन्वय बना रहना तो जरूरी है।

प्रान्दोलन अपने फैलाव पर है। इस भोके पर इसका विरोध करने वाले इसे तोड़ने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। वैसे भी प्रारम्भी जुड़ नहीं पाता—जाति, सम्प्रदाय और राज-
(शेष अगले पृष्ठ पर)

जे० पी० का काम ग्रामस्वराज का दूसरा पहलू

प्रश्न: प्रायः जे० पी० की गतिविधि पर धनना जो बलवत्प्र जाहिर किया है इससे हम सर्वोदय कार्यवाहियों की गलतफहमी दूर होने में काफी राहत मिली है। लेकिन उसमें एक दूसरी बात साफ नहीं हुई है। गांधीजी ने स्वराज्य की जो परिभाषा की है उसके संदर्भ में प्रायः जे० पी० के काम को देखा है। लेकिन तब से आज के सर्वोदय के विचार में और देश की परिस्थिति में काफी अंतर आ गया है और ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रम में स्वतंत्र लोकशासित के लिए एक स्पष्ट दिशा दी है। 'जे० पी० का काम अपनी जगह पर सही होते हुए भी वह ग्रामस्वराज्य का ही दूसरा पहलू है' इस चीज को प्रायः थोड़ा और समझाएँ तो अच्छा होगा। इसी बारे में संपादन होने के कारण हम में से कुछ लोगों की राय है कि विनोबाजी के विचार से जे० पी० का विचार विरोध में है, यह सही है क्या?

भीरूदेव: यह सही है कि सर्वोदय का विचार भागे बड़ा है लेकिन गांधीजी के बुनियादी विचार से भिन्न नहीं बन गया। वह विचार और दृष्टि अपने स्थान पर कायम है। विनोबा ने इसी विचार और दृष्टि को ही अधिक व्यापक पैमाने पर विकसित किया है और उसे नयी भाषा में समझाया है। वह भाषा उनकी १९५३ की चाउल सर्वोदय सम्मेलन की भाषा है। उन्होंने वहाँ का 'सर्वोदय का लक्ष्य दशकवित्त से भिन्न हिंसा शमित की विरोधी स्वतंत्र लोकशासित के अधिष्ठान का है' इसी लक्ष्य की प्रीति में विनोबाजी ने

धीरे-धीरे ग्रामस्वराज्य का कार्यक्रम देश के सामने प्रस्तुत किया है। सरकार मुक्त गांव के अधिष्ठान की तरकीब तो सामने आ जाती है लेकिन वह शक्ति हिंसा शक्ति की विरोधी कैसे बन सकती है या बनायी जायेगी इसका दर्शन अभी तक नहीं हुआ है और विनोबाजी ने इसका स्पष्ट दर्शन ही हमें कराया है।

जयप्रकाशजी ने मौन युक्त से छोटे से कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से हिंसा के उभार को रोककर दंड शक्ति से भिन्न स्वतंत्र लोकशासित द्वारा हिंसा शमित या विरोध करने का स्पष्ट मार्गदर्शन किया है, जो सर्वोदय के विचार में सम्पूर्ण नवीन लोख है। जयप्रकाश बाबू ने पट-1 का काम करते विनोबा जी के चाउल के विचार को एक कदम और आगे बढ़ाया है। इसका मतलब यह है कि बुनियादी तौर पर विनोबा और जयप्रकाश बाबू की दृष्टि में कोई अंतर नहीं है।

जयप्रकाश बाबू ने बिहार में जो काम किया है उससे विनोबाजी के एक दूसरे बड़े सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है। विनोबा हम सब को समझाते रहते हैं कि अधिष्ठा से रेजिस्ट्रेशन नहीं होता है, अधिसूचना होता है। जयप्रकाश बाबू ने सरकार के विरोध में कोई प्रान्तीय नहीं छोड़ा है। बल्कि यह तो उनको अधिसूचना करने का काम है। सरकार ने प्रत्येक और महंगाई रोकने के लिए जो कदम किया है और जिसके फल के प्रत्यक्ष में वह असफल हो रही है इस चीज के प्रत्यक्ष

प्रीति के लिए जयप्रकाश बाबू मदद ही कर रहे हैं। लोकशासित विनियमित करके उसके द्वारा सरकारी सकल प्रीति में पूरी मदद कर रहे हैं। समझना यह चाहिए कि लोकशासित सरकार की शक्ति सैनिक शक्ति नहीं, नौकर-शाही की शक्ति भी नहीं, बल्कि लोकशासित ही होती है। दुर्भाग्य से इस शक्ति को हमारे नेताओं ने प्रारंभ में ही उपेक्षा करके कुटिल कर रखा था। उसी शक्ति की जयप्रकाश बाबू लोकतंत्र की सफलता के लिए पुनर्जीवित कर रहे हैं। इस प्रकार से यही काम ग्रामस्वराज्य का दूसरा पहलू बनता है।

आज देश की नीकरशाही, पूँजीवाद और सामन्तवाद के साथ मिलकर सरकारी प्रत्यक्ष को विकल कर रही है और इसी कारण से जयप्रकाश बाबू के प्रान्तीय को दबाने की कोशिश करते हैं। इसलिए ऊपर से देखने में लगता है कि जयप्रकाश नापसण्ड सरकार का विरोध कर रहे हैं जो कि वस्तुस्थिति नहीं है। अभी हाल में ही बिहार के एक महत्वपूर्ण मंत्री ने ग्राम वक्त्रण्य द्वारा यह स्वीकार किया है कि जे० पी० का कार्य मदद का कार्य है।

इसीलिए जे० पी० और विनोबा में मत भेद है—यह गलतफहमी भाषकों छोड़ देनी चाहिए। इसी सिलसिले में मैं प्रायः लोगों से एक निवेदन करना चाहता हूँ कि विनोबा और जे० पी० के बीच में क्या मतभेद है, क्या अंतर है या धीरे-धीरे मनुमदार और दादा धर्म-विहारी की बीच क्या अंतर है इसकी चर्चा कर बेकार का बौद्धिक पैदा न कीजिये। उसे विनोबा और जे० पी० पर या दादा और धीरे-धीरे पर ही छोड़िये। हम लोग इसकी समझने के लिए काफी योग्य हैं। इसका भाष्य करने में फिर। प्रायः लोगों में हमारी किसी बात से मतभेद है तो सीधे हमसे चर्चा करें। हम भाषकों काभी समय देंगे और समझाने की कोशिश करेंगे। ऐसा करने से प्रायः लोग प्रायः बुद्धिभेद पैदा करते हैं और सर्वोदय विचार शक्ति को कमजोर करते हैं, क्योंकि इसी छोर से प्रतिनातिगारों शक्ति हमारे जैसा ही नारा लगाकर हमारे अन्दर घुसनी है और हमको तोड़ने का काम करती है।

(गुलशन मनुमदार जी धानखोल)

(निघल वृष्ट का मय)

नीति उसे अलग रखती है। एक जब प्रान्तीय ने इतने अलग-अलग पेशों और विचारों के लोगों को एक जगह कर दिया है। इस एकता के तोते में प्रान्तीयों के प्राण हैं, इस तोते को मारने की कोशिश ही भी रही है। कुछ बच्चों में एक ही छात्र सम्पन्न समिति में दो गुट बनने लगे हैं, यह विभाजन प्रायः सभी जगह सिद्धांत के नाम पर ही है, लेकिन इससे तोड़ने की ताकत और ताकतवर होगी, इतना ध्यान रखना चाहिए।

नेत्रहीन उच्च विद्यालय पटना में दसवीं

दज में पढ़ रहे नवलकिशोर का कहना है कि 'बाहर से हम अंधे हैं, लेकिन घब भीतर से हमें दिखने लगा है। जे० पी० के मौन जुलूस में शामिल होने के बाद हमारा रास्ता बदल गया है। हमने इस व्यवस्था का बिना अपनी धर्म्यी धारों से भी देख लिया है। एक बेतुकर व्यवस्था लाने में हमारी भी उमगी लग सके, इस उमड़ी से हम इसमें आये हैं।' नवल किशोर और उसके अन्धे साथियों के मन में जो ज्योति जगी है उसे कायम रखना बिहार के तरल्यो की जिम्मेदारी है।



गया में गोलियां बेमतलब चलाई गयीं

गया में गोली काट होने के समय तक छात्रों के कार्यक्रम पूर्णतया चालिपूर्ण रहे और सरकारी कार्यालयों के काम को ठप्प करने के लक्ष्य तक वे पहुंच गये थे। छात्रों की इस महती सफलता से स्थानीय प्रशासन की परेशानी बहुत बढ़ गयी थी, क्योंकि छात्रों के घरने के चलते गया के सभी सरकारी कार्यालयों का काम-धाम बन्द हो चुका था। प्रशासन के अधिकारी जो तौड़ कोशिश करके किसी ऐसे उपाय की खोज कर रहे थे जिससे स्थिति को बदलने की कोई राह मिल जाय।

पहले दिन से ही गया का डाकघर और टेलीफोन एक्सचेंज घरना देने वालों के सामने खेत बने हुए थे। सरकारी अधिकारी इसी क्षेत्र में स्थिति-परिवर्तन लाने के लिए सचेष्ट थे।

११ अगस्त १९७४ को उन्होंने जारदार कोशिश की कि सेना की सहायता से टेलीफोन एक्सचेंज तक पहुंचने का मार्ग घरना देने वाली से मुक्त कर सकें, लेकिन उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। अपनी विफलता को उन्होंने अपने लिए बहुत अपमानजनक माना। प्रशासन के कठोर रूप की मुद्दखात

१२ अगस्त को प्रातः काल से ही प्रशासन के अधिकारियों का एल बदला हुआ था। सीमा सुरक्षाबहिनी के जवानों से भरी पोजी गण्डियों की गलत धोर सराभ्यां बंद गयी। पोजी गण्डियों की गलत धोर प्रशासनिक अधिकारियों की बालू मुद्रा से धाम लोगो को इस बात का पूर्वभास मिल गया था कि अधिकारियों और छात्रों के बीच निष्पक्ष धामना सम्भना होने वाला है।

बाई बने दिन में छात्र मनोज कुमार बंस को गिरफ्तार कर लिया गया और छात्रों ने उन्हें छोड़ देने की मांग की। दो दिनों से धनेक छात्र और महिलाएँ गिरफ्तारी के बाद छात्रों के अनुरोध पर रिहा कर दिये गये थे। धमनी विद्युते दिनों की सफलता से

उत्साहित होकर छात्रों ने उस दिनी मनोज कुमार बंस को रिहा करने की मांग प्रस्तुत करते हुए उस जीप के धामे पीछे घरना दिया जिसमें वे बँधाये गये थे। धमने परिवर्तित रह के कारण इस बार अधिकारी मनोज कुमार की रिहाई के लिए राजी नहीं हुए। उन्होंने हार्शिवारी से एक दूसरी जीप मगा कर उसने द्वारा मनोज कुमार को ले भगाने में सफलता प्राप्त कर ली। इसके बाद बहा जो लोग घरना देने के लिए उपस्थित थे, एस डी धोर सदर ने उन पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करने का धादेश दिया। घरना देने वालों में छात्रों के साथ-साथ महिलाएँ और बालक भी धपछी सख्या मे थे। घरना देने वालों में से किसी ने बैला ला पत्थरबाजी नहीं की। हा, डाकघराने के भगुते मे से दो डेले धवय कँके गये थे, पर वह भगुता धुरी तरह पुलिस के नियन्त्रण में था। उसके लिए घरना देने वाले किसी प्रकार उत्तरदायी नहीं थे।

लाठी-चार्ज होने के बाद पास-पड़ोस के क्षेत्र में खलवली मच गयी। जी. डी रोड के समीप पुलिस धोर स्थानीय जनता के बीच रोडेबानी हुई धोर धनेक लोगो को चोटे धपयो। भीड को तितर-बितर करने के लिए अधिकारियों ने पुन. लाठी चार्ज करने धोर धम्युंगल छोडने का धादेश दिया। सबक की दोनो दिशाओ से पुलिस के दो दलों ने लोगो को घेर लिया धोर धामे बढने लगे तो भीड में से धनय होकर लोग इधर-उधर की बगल की सबको की धोर भागे। इस प्रकार जी. डी रोड की मुख्य भीड धम्युंगल तथा लाठी चार्ज के द्वारा तितर-बितर कर दी गयी। गोली चलाने की उस समय आवश्यकता नहीं पडी।

पहला गोली कांड

भगने वाली भीड के कुछ लोग भारी रोड की धोर बडे। पुलिस ने उनका पीछा जारी रखा। ऐसा नवो किया गया था यह अधिकारी ही जानते होंगे। कार्यवाहक दण्डा-

धिकारी थी ए. के. सिन्हा नं साथ सीमा सुरक्षा बहिनी का एक दस्ता सहायक कमांडेंट पी. बी. राय के नेतृत्व में भीड का पीछा करते हुए बजीर भली रोड तक पहुंच गया। उस स्थान पर न तो किसी का बडा मकान था और न तो कोई निजी सम्पति ही थी। यहा पहुंचकर सहायक दण्डाधिकारी ए. के. सिन्हा ने सहायक पी. बी. राय को गोली चलाने का धादेश दिया।

सीमा सुरक्षाबहिनी के कानून धोर बिहार पुलिस नियमावली दोनो के धनुसार यह कार्य सहायक कमांडेंट पी. बी. राय के अधिकार क्षेत्र के बाहर ना कार्य था।

पी. बी. राय और उनके दरले को जवानों ने बजीर अभी रोड धोर के पी. रोड की भीड पर घुमाधार गोलियां चलायी जिसके कारण धनेक लोग फायल हुए धोर कईयो को मृत्यु हुई।

जहा गोली चलायी गयी उसके धास-पास न तो नहीं धामजनी की घरना हुई, न लूट-पाट धोर न कोई धम्य सतरनाक घटना घटी।

अधिकारियों का यह कथन कि दण्डाधिकारी तथा उनके दल के लोगो का जीवन सतरने मे था इसलिए उनकी रक्षा के लिए गोली चलानी पडी थी, सही नहीं है, क्योंकि गोली चलाने के स्थान से धायल होकर चित्ने वाले की दूरी ४५० से ५०० फीट तक थी।

जो लोग धास-पास छोटे-छोटे समूह मे सते थे, न तो उन्हें गैर कानूनी घोषित किया गया था और न तो गोली चलाने के पूर्व किसी प्रकार चो चेतावनी दी गई थी। धाम तोर पर गोली चलाने के पूर्व धम्युंगल छोडो जानी है अथवा लाठी चार्ज किया जाता है। यहाँ एकाएक ही गोली चलाने का धादेश दिया गया। जाहिर है कि इस प्रकार का गोली कांड स्पष्टतः अनासम्भक था। यह इसलिए किया गया प्रतीत होता है कि लोग धातकित हो धोर उपस्थित भीड पर सेना का रोड जम सनें। यथा गोलीकांड के पहले मुकाम का विवरण यहा समाप्त होता है। →

एक सैनिक के फालते कारनामे

गया मे गोली-कांड का दूसरा मुकाम के. पी. रोड, नदी के बिचारे की सड़क, जैन-मन्दिर तथा लहेरिया टोला रोड़ के समीप था। इस क्षेत्र मे जो कुछ घटित हुया वह अत्यधिक अमानुषिक घोर हृदय-विदारक था। यहाँ की घटना इतनी अनौचित्यपूर्ण थीर दर्दनाक थी कि अधिकारियों ने इस क्षेत्र के सम्बन्ध मे एकदम बुध्ती साध ली।

हमें इस बात का स्पष्ट सञ्चत मिला कि सीमा सुरक्षा-वाहिनी का एक सैनिक तीन होमगार्डों को साथ लेकर राजेन्द्रनगर के पूरव की ओर गया। सुरक्षा वाहिनी के सैनिक ने के. पी. रोड के पूरव की ओर गोली चलानी जिसके कारण कुछ लोग जो सड़क पर थे गोली लगने से घायल हो गये और नीचे गिर गये। इसके बाद उस सैनिक ने राजाराम की दूकान को जवर्दस्ती खुलवाया और बन्दूक तानकर दो गोलीयाँ चलायी। गोली से रामशैलावन साव और उमेय सिंह घायल हो गये। उन्हें दुकान से घसीटकर बाहर सड़क पर छोड़ दिया गया। वहाँ उमेय सिंह की उस सैनिक ने तलाशी लेकर उसकी जेब से १६०० रु० और उसकी कलाई की पट्टी छीन लिये।

वे सैनिक और तीनों होमगार्ड उसके बाद और पूरव की ओर बढ़े। जैन-मन्दिर के करीब पहुँचने पर उसने फिर बन्दूक चलायी। दो गोलीयाँ जैन-मन्दिर की दीवार से टकरायी। उनमे से एक गोली गया नगर काँटस कपटो के सभापति श्री अणुकुमार पानित को मिली थी। उसे उन्होंने श्री भारद्वाज, प्रतिरिक्त आयुक्त पटना को दे दिया।

सैनिक और होमगार्ड और कुछ घागे बड़े और उस स्थान पर पहुँचे जहाँ जैन-मन्दिर रोड और नदी बिचारे की सड़क की दो मुहानो है। वहाँ उस सैनिक ने पुनः गोली चलकर रघुनन्दन पाडेय और सज्जन कुमार की भयना निशाणा बनाया। उस सैनिक ने रघुनन्दन पाडेय की ओर बन्दूक तानी तो उन्होंने अपने प्राण की रक्षा के लिए दोनों हाथ जोड़ लिये थे और कहा था मैं 'यहा का आदमी नहीं हूँ, मैं निर्दोष हूँ'। पुनः पर दया कीजिए'। श्रीरघुनन्दन पाडेय की प्रार्थना का कोई असर नहीं हुआ और उन पर गोली

चला दी गयी। घायल होकर वे अपनी जान बचाने के लिए भागना चाहते थे पर कुछ दूर जाकर जमीन पर गिर पड़े। दो होमगार्डों ने उन पर लाठी चलायी और फिर एक ने उनकी टांग पकड़कर उन्हें घसीटना शुरू किया और बहुत दूर तक इसी प्रकार घसीटते हुए ले गये। रघुनन्दन पाडेय के जखमी शरीर से खून बह रहा था। खून के चिन्ह कई दिनों तक रास्ते पर दिखाई देते रहे।

कुछ और घागे ले जाने के बाद रघुनन्दन पाडेय को दो लाठी के बल पर बड़ी निर्ययता के साथ लटकाया गया और दोनों होमगार्ड उन्हे ढो रहे थे। रघुनन्दन पाडे रास्ते भर पानी-पानी पिचलाते रहे। कुछ लोग उन्हें पानी पिचाना चाहते थे तो उस सैनिक ने धमनाया कि अगर कोई पानी लेकर समीप आता तो उसका भी वही हाल होगा जो रघुनन्दन पाडेय का। इस घटना को घनेक लोगों ने अपने मनान की छत और छिड़की से देखा।

कुल मृतकों की संख्या

१२ अगस्त के गोली बाड मे कुल मृतकों की संख्या कितनी थी यह ठीक ठीक नहीं जात हो सका। गोलीकांड की छानबीन करने वाले सदस्यों को कुल मिलाकर ८ मरने वालों का नाम मालूम हो सका। ठीक संख्या न जात हो सकने का मुख्य कारण यह था कि स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी मृतकों सम्बन्धी सभी सञ्चत यथासाक्षि नष्ट कर देना चाहते थे। उदाहरण के लिए दूकानदार राजाराम की बात बतायी जा सकती है। उनकी सड़की और लड़के की शोतवाली मे जमानत के रूप मे बन्द करके उन्हें बहा गया कि उनकी दूकान का खून का धब्बा साफ हो जाने के बाद ही उनकी लड़की और लड़के को शोतवाली से बाहर किया जायेगा।

मृतकों का दाह-सस्कार एक ही स्थान पर नहीं किया गया। अधिकारियों ने बुद्धेक मये स्थानों पर भी यह कार्य सम्पन्न किया और वहा किसी और को नहीं जाने दिया। इस तरह की घबोशी के कारण मृतकों की सही संख्या नहीं मालूम की जा सकी। कुल मिलाकर मृतकों की संख्या देर से अधिक होने का प्रमाण मिल सता। गोलीकांड के होने के कुछ दिनों के भीतर कई लोगों की

ऐसी लाशें मिली जिनका कोई निश्चित विवरण नहीं मिल पाया था। ग्राम लोगों की धारणा थी कि वे गोलीकांड से सम्बन्धित लोगों की ही लाश थीं। कपयूँ

१२ अगस्त के गोलीकांड के बाद ही ३६ घन्टो के लिए नगर मे कपयूँ लागू कर दिया गया। कपयूँ के बारे मे ठीक से प्रचार या पूर्व सूचना का प्रवण्य नहीं था। बहुत से लोगों को कपयूँ लागू होने की जानकारी पटना द्वारा प्रसारित रेडियो प्रसारण से मालूम हो सकी। इस प्रकार के कपयूँ की श्राड मे गया के घनेक भागो के नागरिकों को सताया और भयमानित किया गया। कपयूँ लागू होने के दूसरे दिन बड़ी कड़ी धावाज मे घोषित किया गया—जिसे बाहर देला जायेगा उसे देखते ही गोली मारदी जाएगी किसी को पर से बाहर नहीं निकलना है।

ग्रामतौर से लगातार दिन और रात मे कपयूँ नहीं लगाया जाता। बीच मे कम से कम घन्टे दो घन्टे की छूट दी जाती है ताकि लोग अपनी अथत जहरी आवश्यकताओं जैसे पानी, दवा, तथा खाने पीने के जरूरी सामान का प्रबन्ध कर सकें। लेकिन गया के अधिकारियों ने एकदम झूठदस्ता और कठोर कपयूँ लागू किया था। १४ अगस्त के बाद ही प्रशासन ने कपयूँ की अवधि मे कुछ कुछ परिवर्तन किया।

देखते ही गोली मारने का आदेश

१२ अगस्त के गोलीकांड के बाद जब लगातार ३६ घन्टो का कपयूँ लागू किया गया तो उसके साथ ही गोली मार देने की भी घोषणा की गयी। घोषणा के शब्द इस प्रकार थे—खबरदार! कपयूँ लागू हुआ है। जो पर से बाहर निकलेगा उसे गोली से मार दिया जायेगा।

पुलिस के प्रत्याचार

कपयूँ की अवधि मे गया के नागरिकों में से संजडो निरपराध और निरीह नागरिकों और विधेय रूप से परिवार की महिलाओं को घनेक प्रकार से सताया और भयमानित किया गया। प्रस्ती नर्य के बुद्ध भरी छोटे छोटे बच्चे भी गोली-गलाज मारपीट और दुर्व्यवहार के गिवार बनाये गये। घरों के

लोक सेवकों के नाम एक अपील

प्रिय गण्य,

लोकसेवक और सर्वोदय मित्त के नाते हम सब का कुछ अनुभव है। हम साधारण कार्यकर्ता भ्रमदान, ग्रामस्वराज्य आन्दोलन से अपने से अधिक पढ़े-लिखे तथा राजनीतिक लोगों से मिलने से और उन्हें सेवा और त्याग के विचार से प्रेरित करते थे। सभी राज-नैतिक दलों के लोग जो परस्पर टकराते थे, हमसे एक मत होकर भूदान ग्रामदान करते थे। हमारे बीच कौन-सी शक्ति कम करती थी, इसे छोचें। यह है विचार की शक्ति जो नैतिक एवं आध्यात्मिक सुनिश्चय पर खड़ी है, जिसके पीछे इस देश की संस्कृति एवं परम्परा पर आधारित गांधी-विनोबा की साधना रही है।

इस विचार के विशेष गुण हैं—सत्य, अहिंसा, प्रेम, बर्चण, त्याग और सेवा, जो दिनों की जोड़ते हैं। विचार की यह विशेषता यहाँ हम जैसे तुच्छ कार्यकर्ताओं की जन-

मानस में कुछ स्थान देती है वहाँ सर्वोदय के नेतृस्थानीय लोगों को इस विचार ने जनमानस में ऊंचा स्थान दिया है। हमें जानना पड़ेगा कि विभिन्न राजनैतिक दलों में चरित्रवान और विचारवान व्यक्ति हैं, लेकिन उनका जनमानस पर उस तरह का असर नहीं होता। इसका कारण यह है कि राजनीति दण्डशक्ति एवं हिंसा के साथ जुड़ी हुई है।

जब हम कोई राजनैतिक दलम उठाते हैं, तब यह स्पष्ट है कि जिस आध्यात्मिक और नैतिक भूमिका पर अभी तक हम खड़े रहे हैं, उसे हमने खोया। विचार-परिवर्तन और हृदय-परिवर्तन का धोप क्यों से हम जनता के बीच करते पा रहे हैं। अष्टाचार हटाने की बात सभी राजनीतिक दल बहते हैं। अष्टाचार का ही नारा लगाकर पड़ोसी देश पाकिस्तान में तानाशाही गयम हुई थी, हम जानते हैं कि जब तक सामाजिक, मान्य-ताएँ तथा धार्मिक ढांचा नहीं बदलता है तब तक समाज में अत्याज गरीबी, बेरोजगारी, विपन्नता और अष्टाचार जैसे समस्याओं का हल नहीं हो सकता है। अब जानते हुए भी उस भूमिका को छोड़कर अष्टाचार हटाने की बात कहना अमार्ग्य है।

भाइयों! जरा सोचिए!! जिस विधा-यक से हम या हमसे प्रेरित छान त्यागपन दिलाते हैं, क्या वह हृदय परिवर्तन के फल-स्वरूप है? क्या हमारा बिकेक यह मानता है? क्या हम इस पर विश्वास करते हैं? क्या हृदय परिवर्तन द्वारा विधायनसभा का भंग और सरकार का ठण्ड होना संभव है? जिस क्षण से हम अष्टाचार हटाने का राजनैतिक नारा देते हैं और उसके लिए युवकों को प्रेरित करते हैं, हमें समझ लेना चाहिए कि उस क्षण हम अहिंसक आचरण के पीछे, जाने-भनकाने हिंसा को प्रोत्साहित करते हैं हमारा यह कदम विभिन्नताओं के समष्टिरूप इस देश की भावनात्मक एकता, स्वाधीनता व सार्वभौ-मिकता को खतरे में डालता है। इसलिए आज अपनी मूल भूमिका को छोड़कर दूसरा मोड़ लेने के पहले हमें गभीरता से सोचना होगा।

हमें इस बात की खुशी है कि हमारे बीच बाबा मौजूद हैं और उनका मार्गदर्शन हमें मिल रहा है।

भाइयों के दयानिधि पटनायक, लक्ष्मीदास (हिमाचल प्रदेश), प्रकाश भाई, (उत्तर प्रदेश) हरमोहन पटनायक (उड़ीसा)

→
 २२ दरवाजे तोड़-तोड़ कर पुलिस के लोग घर में घुसे और गृहस्थी के अंदर सामान को गुप्तान पड़वाया। संकटों परिवारों को कपड़ों की धरधि में जो कुछ भुगतना पड़ा उसकी जो कुछ जानबारी नागरिक छानबीन समिति को मिल सकी वह रिज दहता देने वाली है।

कपड़ों की धाड़ से प्रशासन के अधिकारियों ने पहले बालों की झसली सल्ला को दिग्गने के लिए अन्वेषी क्रिया को अपने नियंत्रण में सम्पन्न किया। अनेक सोधे सादे और साधारण नागरिकों को बिना कारण पीटा गया ठाकि लोगों में भय और दहलत की भावना भरी जा सके। ऊधे पदाधिकारियों की साठगाँठ

नागरिक छानबीन समिति को इस बात के निश्चय प्रसाए मिले कि मोली बांड के घणप और उसके कई दिन बाद तक गया के

संकिट हाउस में पटना के अतिरिक्त प्रायुक्त प्रशासन स्वय उपस्थित थे। स्थानीय अधि-कारियों के १२ अग्रल के बदले हुए रत बा राज शायद यही रहा है कि ऊधे अधिकारी बहा मौजूद थे।

निष्कर्ष
 गया में १ से १२ अग्रल तक और उसके बाद जो कुछ घटित हुआ उससे दो तथ्य एक दम सफाई के साथ सामने धाये हैं—
 एक गया के छान आन्दोलनकारी अपने

बिहार विधान सभा ने गया गौरीहांड को उचित ठहराया। गया की घटना के बाद ही जे. पी. ने विधान सभा भंग की मांग को अपना समर्थन दिया।

शाकिपूरे धरना और सत्याग्रह द्वारा स्थानीय जनता का सहयोग प्राप्त करने और उसके बलपर सरकारी कार्यालयों का काम-काज ठण्ड करने में सफल रहे। उस अग्रधिमे उनकी

या ग्राम जनता की और से सूट-पाट, भाग-जती या तोड़-फोड़ की कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी। छात्रों का यह कार्यक्रम १३ अग्रल तक चलने वाला था। यदि स्थानीय प्रशासन शुरू के तीन दिनों की तरह १-२दिन और सतर्कता और जागरूकता का परिचय देता तो वह कार्यक्रम शांतिपूर्ण ढंग से समाप्त हो गया होता।

दो : सीमा सुरक्षावाहिनी का गठन सीमा को सुरक्षा के लिए हुआ है। जब उनका उपयोग नागरिक समस्याओं के क्षेत्र में किया जाता है तो उनसे नागरिकों के प्रति दर्दनाक व्यवहार होते हैं। जाहिर है कि उनकी योग्यता और ट्रेनिंग नागरिक समस्याओं को हल करने के लिए नाफायरी है।

समिति के सदस्य
 १. रामनन्दन प्रसादसिंह २. द्वारको मुन्दरानी ३. हरीशचन्द्र सिंह ४. रामचन्द्र प्रसाद ५. गीता प्रसादसिंह।

असफलता की स्वीकृति आत्मविश्वास बढ़ाती है

दादा धर्माधिकारी

गुजरात घोर बिहार में पिछले महीनों में जो जन-आन्दोलन का स्फोट हुआ उसका समर्थन सर्वोदय के लोगों ने किया है। बिहार के आन्दोलन का तो जयप्रकाशजी स्वयं नेतृत्व ही कर रहे हैं। गुजरात घोर बिहार दोनों प्रदेशों के सर्वोदय मजदूरी ने इन आन्दोलनों का समर्थन किया है।

कुछ मित्रों का कहना है कि भूदान-ग्रामदान आन्दोलन असफल हो गया इसलिए सर्वोदय कार्यकर्ता दूसरी प्रवृत्ति की खोज में इन आन्दोलनों की घोर मुद्रा रहे हैं। कुछ दिन पहले समाचार-पत्रों में दादा धर्माधिकारी के अहमदाबाद के एक व्याख्यान की रिपोर्ट छपी थी। रिपोर्ट में ऐसा लगना था कि दादा ने यह कहा कि भूदान-ग्रामदान का कार्यक्रम फल हो गया है। इन रिपोर्टों से भी उपरोक्त इलीन को पुष्टि मिली।

चूक समाचार पत्रों में भाषणों की रिपोर्टें प्रसार सदर्थ से कटी छूटी है घोर इसलिए उनका मतलब कहने वाले के ध्रास्य से विपरीत या भिन्न निबलता। इसलिए मैंने दादा को पत्र लिख कर अहमदाबाद के उनके भाषण का ध्रास्य जानना चाहा था। उसका नीचे लिखा उत्तर दादा की घोरसे मिलता जो अपने-भाष में स्पष्ट है।

—सिद्धराज ढड्डा

प्रिय सिद्धराज भाई,

आपका १५ मई का पत्र मुझे बल रहा मिला।

अहमदाबाद के भाषण की रिपोर्टें प्रसारकों ने निकलीं, उसके प्रचार पर 'टाइम्स आफ इंडिया' में एक टिप्पणी निकली थी। मराठी 'महाराष्ट्र टाइम्स' ने तो एक प्रत्येक ही लिखा था। मैं प्रायः सफाई नहीं देता हूँ

मैं जो कहना चाहता हूँ उसका आशय यह है:

गुजरात घोर बिहार के आन्दोलन को हमें सर्वोदय की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने का अवसर नहीं मानना चाहिए। हम में से जो लोग यह मानते हो कि भूदान घोर ग्रामदान आन्दोलन की असफलता के कारण हम हारा घोर हतप्रभ हो गये हैं, वे गुजरात घोर बिहार के आन्दोलन को कोई शक्ति नहीं दे सकेंगे। यदि हम मानते हो कि हमारा आन्दोलन असफल हो गया, तो हमें नज्दता से और प्रांजलता से अपनी असफलता को स्वीकार करना चाहिए। असफलता की स्वीकृति से प्रारम्भ विद्वास और शक्ति बढ़ती है, असफलता पराजय नहीं है। यदि आन्दोलन की दिशा सही हो तो वह कभी पराजित नहीं होता। हर असफलता में से नयी प्रेरणा-शक्ति मिलती

है। स्वराज्य प्राप्ति के सभी आन्दोलन १९४७ तक असफल रहे। लेकिन उन आन्दोलनों में जिन लोगों ने भाग लिया वे कभी पराजित नहीं हुए। जो असफलता को ही अपना सत्य बनाने हैं, वे सफल नहीं होते। जो असफलता के लिए तैयार रहते हैं, सफलता उन्हें तो प्राप्त होती है। गांधी का आन्दोलन १९४७ तक असफल ही रहा। गांधी विनोबा के साथ असफल होने में भी, दूसरों के साथ सफल होने की अपेक्षा, अधिक लोक-कल्याण घोर प्रगति है।

ग्रामदान घोर भूदान घगर सफल हो जाते तो इस देश में भूमि की मानकीयन के विसर्जन की घोर भूमि वितरण की समस्या शेष ही नहीं रह जाती। इस दृष्टि से वह आन्दोलन असफल बनकर रहा। लेकिन भूमि की समस्या के संबंध में अब तक जिनके दूसरे आन्दोलन हुए उनको वनिबलत विनोबा का आन्दोलन अधिक सफल रहा—या वह खोजिए कि कम से कम असफल रहा। इसलिए उस आन्दोलन को अधिक उत्साह, मध्यवसाय और निश्चय के साथ चलाना आवश्यक है।

भूदान-ग्रामदान सफल नहीं हुआ इसलिए वह रास्ता ही गलत है, यह जो बटने है, क्या उन्होंने सही कोई रास्ता अपनाया था ?

घोर घगर अपनाया था तो उन्हें सफलता मिली ? अगर वे यह कहना चाहते हैं कि उनका रास्ता हम अपनाते तो जरूर कामयाब होते, तो हम भी गुजारिए कर सकते हैं कि वे हमारा रास्ता अपनाते तो बेशक कामयाब होते। क्योंकि उनके रास्ते की नामायाबी से हमारे रास्ते की नामायाबी फिर भी कम ही है।

गुजरात में जो हुआ उसका हम अभि-नंदन करें। वह लोकसोम और लोक-व्यापी असन्तोष का सहज-नपुंस स्फोट था। हम उसका स्वागत घोर प्रभिनदन करें। तथ्यों की उमग घोर स्फूर्ति को कोई शक्ति यदि बल प्रयोग से दवाना चाहे, तो हम उस शक्ति का विरोध आत्मिय घोर शिष्ट उपायों से करें। तथ्यों पर अपना सहयोग या सहा-यता हरगिज न धोएँ। वे जितना सहयोग चाहे उतना अपनी मर्चाओं को सम्भालकर मुक्त-हस्त से दें।

जे० पी० बो में भारतीय लोकताया का प्रतिनिधित्व स्वम-सिद्ध प्रतिनिधि मानता हूँ। जननी अतः प्रेरणा प्रायः शुद्ध घोर शुभ हीनी है। बिहार के तथ्यों ने उनका नेतृत्व स्वीकार किया मैं इसे एक शुभ चिन्ह मानना हूँ। लोकनिष्ठा, राष्ट्रीय एतता घोर लोकसत्ता में जे० पी० की जीवत घोर प्रदल थड्डा है। उन के नेतृत्व में लोकहित को कम से कम खतरा है।

आप जानते हैं कि मेरी भूमिका एक एक श्रागर्तिक की है। मैं सर्वोदय की, या अन्य किसी विचार प्रणाली की विनी भी सत्ता का सदस्य नहीं हूँ। न लोकसेवक ही हूँ। मैं जो कुछ कहना हूँ एक व्यक्ति के नाते कहना हूँ। सर्वोदय का रास्ता मुझे अन्य मार्गों की धोना नहीं। अधिक लोकसेवाएँ प्रतीत होता है।

आपने पत्र का उत्तर न देने में प्रक्रिय का दोषी होना। प्रतः प्रदता राष्ट्रीयकरण किया है। आप चाहें तो इसे प्रकाशित करा सकते हैं।

भूदान यम : सोमवार, ३ जून '७५

गांव को बाजार से छुटकारा दिला सकते हैं क्या ?

विनोबा

रा० कृ० पाटोल द्वारा लिखित एक लेख को पढ़ने के बाद विनोबा ने उनसे बातचीत की :

विनोबा: इस विषय के आप अधिकारी हैं। क्योंकि आप 'पंचायत' हैं। एक पहले आप लिखित सर्विस मे थे दो. सर्विस छोड़ कर सत्याग्रहमें भाग लिया, तीन. योजना प्रायोग के सदस्य रहे, चार. मंत्री भी थे, पांच सर्वोदय आन्दोलन मे धा गये। (हसी)

आपने जो लिखा है उस से एक बात ध्यान मे आती कि केवल प्राज की सरकार हटा दी और राष्ट्रपति शासन प्रायेगा तो महंगाई घटेगी ऐसा नहीं। गुजरात मे इतना बड़ा आन्दोलन हुआ लेकिन वहा महंगाई डेढ घुना बढ़ी। इसलिए विद्वान् करना चाहिए कि किस प्रकार महंगाई का यह प्रश्न हल किया जाये। यह आन्दोलन वा विषय नहीं है। विद्वान् का विषय है।

दूसरी बात आपने लिखी है कि यह सरकार हटाओ ऐसा करते जायेंगे तो जिते हम लोकतन्त्र करते हैं उसका विरोध होगा। यह ठीक है। प्राभी ये जो हलचल चली है उसमे मुख्य धार भाई दिल्ली की। प्रख्याचार, महंगाई, बेरोजगारी और शिक्षा मे सुधार। इन चारो को दृढ़ता करके आन्दोलन करना माधराभी होगा क्या ?

शिक्षा मे सुधार होना चाहिए। यह बात तो बहुत लोग करते हैं। परन्तु प्राज तक एक शब्द निभसा है डॉब भोरिएन्टेड, शिक्षा चाहिए। जिनको प्राप शिक्षा देंगे, वे शिक्षा पा कर परीक्षा पास करेंगे। उनको नौकरी देने की जिम्मेदारी सरकार की हो। क्या नौकरी के लिए यह ठीक है ? शिक्षा के विषय मे मैंने निम्नकी शिक्षा कहा ही है। यदि ये हाफ-हाफ स्कूल चलते हैं, वहाँ तीन घण्टे काम और तीन घण्टे तालीम। तमाम सबकी को एक ही शिक्षा, चाहे बड़ा हो चाहे छोटा, छोटा यानी गरीब का लड़का हो, बेनी की टासीमे दे दी है। तो काम करना ही तो भाओ पाव मे बेनी करो।

आपको नौकरी देने की जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिए क्या ? यह एक सवाल है।

दूसरी बात सरकार को नौकरो की जरूरत होती है। मैंने सुझाव दिया है कि रेलवे विभाग है उसमे जिनको काम करना है वे बर्जी दें, उसके साथ १०० रुपये फीस दें। मान लीजिए १०,००० ने बर्जी दी तो १० लाख रुपया प्रापको मिला। उस आधार से प्राप उनको परीक्षा ले सकते हैं। उस परीक्षा मे बँडेने वाली को बी० ए०, एम० ए० होने की जरूरत नहीं। आपने घर मे तालीम प्राप्त की तो भी बर्जी ले सकते हैं। पास हुआ तो सीखा जायेगा इस प्रकार प्रत्येक-प्रत्येक शिक्षाओं की प्रत्येक-प्रत्येक परीक्षा हो और बी० ए०, एम० ए० होने की आवश्यकता न हो ता बहुत कुछ सुधार हो सकता है। लेकिन शिक्षा मे सुधार यह एक स्वतंत्र विषय है। वह ऐसे आन्दोलनो के द्वारा हो सकता है क्या ? यह सवाल है।

प्राज शिक्षा मे सुधार प्रावश्यक है यह कौन नहीं बहता है। इन्दिरा ने भी जाहिर तौर कहा कि स्वराज्य के बाद हमने एक जो बड़ी गलती की वह यह की हमने प्रापनी पुरानी तालीम मे कुछ भी परिवर्तन नहीं किया। दो-दो कपीयन इसलिए बिठाये थे। लेकिन कुछ नहीं हुआ।

एक बेरी भाग है कि शिक्षा सरकार के हाथ मे न रहे, वह विद्वानों के हाथ मे होनी चाहिए। वे विद्वान् विश्वविद्यालय के मुख्य लोग हों, उनके साथ दूसरे भी हो। विश्व-विद्यालय पर भी सरकार का अड्डा नहीं रहेगा। इस वाले प्राचार्य-गुन की स्थापना की। प्राचार्य किसी पार्टी का नहीं, स्वतंत्र रहेगा। पार्टी से मुक्त स्वतंत्र चिन्तन करेगा, स्वतंत्र निर्णय देगा।

तो यह सारा स्वतंत्रचिन्तन का विषय है। प्राज विद्यालयो की बनना है तालीम मे सुधार, सुधार के लिए तो सारी सी बात है। तमाम विद्यार्थी छोड़ दें स्कूल, फालेज,

गाव-गाव मे काम के लिए चले जायें। वहा काम करें, कमायें। सब स्कूल बालेज खाली हो जायेंगे तो शिक्षा-विभाग खतम होगा। फिर सरकार को सोचना पडेगा कि शिक्षा मे कौन सा क्या बदल करना है। तो यह सोचने की बात है कि तालीम मे सुधार के लिए ऐसे आन्दोलनो का लाभ है नहीं।

दूसरी बात है महंगाई। गुजरात मे तो महंगाई बढ़ी। उसका कौन विरोध कर रहा है ? यह सारा धर्मव्यवस्था का सवाल है, उससे मुक्ति मिले। प्राज हमने पढा, एक रुपये की कीमत धन ३० पैसे हो गयी है। प्रागर रुपये की कीमत ३० हो जाये और कुल लोगों का जीवन पैसे पर चले तो देश की खतरा है। इस लिए बाजार मुक्ति चाहिए। गांव-गांव बाजार से मुक्त हो जाये। और प्राभाज के प्राधार पर ही सारा काम हो। जैसे मैंने कहा गांव का गो कुल बनाओ। गाव की चीज गांव मे ही सारा। मसखन खाओ, बपडा बनाओ। आज तो मसखन, बपडू, प्राम सब बाहर जाता है। बहते हैं, पैसा मिलता है। सारे की उत्तम उत्तम चीजें बाहर जाती हैं और उनको पैसा मिला है। पैसे को क्या खायेंगे ? इसलिए सारे की चीजें प्रथम खानी चाहिए। और बची हुई चीज गाव के लिए रखनी चाहिए और फिर बची तो बाहर भेजें।

नासिक के प्रेश पर बन्दगी होना चाहिए, (जहां मोट छाये जाने हैं।) आपने पडा होगा प्रापासाहब पटवर्धन सिन्हाउटे नोटो की बात करते थे। १०० रुपये के मोट की कीमत हर साल १० रुपये कम हो जाती है। तो दस साल मे पुराने मोट खतम होजाये। तब देश बचेगा ऐसा उनका प्राग्रह था। वह एक स्वतंत्र विषय है चिन्ता का, परन्तु प्राथिनांश लोग बाजार से मुक्त हो। उनके प्राम खाने की चीजें उपयुक्त ही और पैसा कम हो।

महंगाई का जो सवाल है उसमें सरकार यह एक ही पंखर नही है। किसान, मजदूर,

व्यापारी, सरकार, दुनिया और भगवान। भगवान बारिश कभी ज्यादा भेजता है कभी कम।

बागला देश में घनाज कम पड़ रहा है। सुलमरी होगी। कुल दुनिया को इस काम के लिए इकट्ठा होकर सोचना चाहिए। जहाँ अन्न समस्या है, उसके लिए केवल सरकार जिम्मेदार है ऐसा मानकर समस्या हल होगी नहीं। कुल दुनिया जिम्मेदार है।

बेकारी की समस्या है। इस बारे में मैंने कहा है कि सरकार जिनको नौकरी देना चाहती है उनको विभागीय परीक्षा लें। उसके लिए बी० ए०, एम० ए० की जरूरत न हो।

अप्टाचार तो अनेक प्रकार का है। मुख्य अप्टाचार चुनाव में न हो ऐसा इन लोगों का मुख्य उद्देश्य है। उस के लिए चुनाव प्रणाली में क्या फर्क करना पड़ेगा। नंबर दो सविधान में फर्क करना पड़ेगा क्या ये दो बातें सोचनी होगी। उसमें से कार्य-क्रम मुकर्रर हो सकता है। वह कमेटी तय करे कि चुनाव पद्धति पतानी हो। यह तो कोई धान्दोलन का विषय नहीं हो सकता। भ्रम मैं यह नहीं जानता कि चुनाव में अप्टाचार न हो इसके लिए चुनाव पद्धति में फर्क करना पड़ेगा कि कुछ भ्रंशुश की अहरत है। यानी ज्यादा सावधानी रखनी होगी? कुछ लोगों ने कहा कि चुनाव प्रामोग की भी बायस होना है। इलेक्शन के लिए एक है चुनाव प्रामोग दूसरा है न्यायाधीश, तीसरा है लोकनिपुण अधिकारी। ऐसे तीन होते हैं।

इसके चलना गांव का राज ही इस लिए

गांव-गांव में लोग खड़े हों इस्यादी हमने यह जो कहा वह हमारा स्वतंत्र विचार है ही।

घापना क्या विचार है? चुनाव की प्रणाली में फर्क हो या चुनाव पर ज्यादा अंधुश रखना होगा। सावधानी रखनी होगी कि सविधान में फर्क करना पड़ेगा?

पार्टील: तोनो करना पड़ेगा।

विनोबा: चुनाव के भ्रम्य क्षेत्रों में जो अप्टाचार है वह धान्दोलन से कैसे दूर होगा उसके लिए हमने कहा व्यापारियों की समिति बनायी है। व्यापार के क्षेत्र में जो अप्टाचार होता है, उसके लिए एक दफा एक भाई ने मुझे से कहा मे किसी से रिश्तत न चू यह हो सकता है लेकिन किसी की रिश्तत न दूँ यह नहीं बन सकता। उसने मुझे मिलात नूँ मेरी मा सखन बीमार है। मुझे उससे मिलने स्टेशन जाना है। मैं स्टेशन पर जाता हूँ। वैसे ४ रुपये का टिकट है लेकिन वह एक रुपया ज्यादा मागतता है जिसको 'मासूल' कहते हैं, 'भैये' कहते हैं, दस्तूर भी कहते हैं। यह एक रुपया मैं न दू तो मेरी मा से भेंट नहीं होगी इसलिए एक मैं दूंगा। माँ का दर्शन करूंगा प्रेत यात्रा में शामिल होऊंगा। वह एक रुपया मैं नहीं दूंगा तो मुझे मा का दर्शन नहीं होगा।

पार्टील: जन व्यवहार की दृष्टि से ठीक है। ऐसा ही हम लोग करेंगे।

विनोबा: उसे अप्टाचार गिनेंगे क्या घाप? इस वास्ते मैंने कहा था अप्टाचार तो सिप्टाचार है और जो अप्टाचार नहीं करते वे त्रिनिप्टाचारी हैं।

अप तो व्यवहार जानते हैं। बाबा तो

व्यवहार शून्य है। एक दफा एक सभा में मे लोगों ने कहा—बाबा व्यवहार शून्य है'' काका साहब उस सभा में थे। उन्होंने कहा 'ठीक है' बाबा व्यवहार शून्य है। लेकिन क्यों है? क्यों कि वह व्यवहार को ही शून्य मानता है। मैंने एक बात सुनायी है, बाजार मुक्ति। मैं लोगों से पूछता हूँ त्रयेक गांव या दो-चार गांव इकट्ठा हो कर बुनियादी चीजें जैसे धान, बरत प्रादि सरीरेंगे नहीं—ऐसा निर्दिश्य कर सकते हैं कि नहीं? मैंने तो गांव के लिए मन दिया है 'मखलन खाभो बपड़ा बनाओ' फिर व्यापारी को गांव के व्यर्तित के पास भाना पड़ेगा है। गांव वाले कहेंगे 'आभो पास सभा के पास, ग्रामसभा कहेंगे, 'जब से मखलन जाना शुरू किया है तब से हमारे लडके मजदूर बने हैं।' व्यापारी नहेंगे 'वह तो ठीक है मगर हमारे भी बच्चे हैं उनको भी मखलन मिलना चाहिए।' ग्रामसभा नहेंगी 'ठीक है शहर से बच्चे हैं तो हम १।६ मखलन देंगे। भाव क्या है?' व्यापारी तो दुसारा है उसके पास नामिक के धापेखाने से छपे नोट होते हैं। वह बहेंगा हम १०० रुपया किलो देंगे, वैनिन ग्रामसभा कहेंगे कि हम बेवकूफ नहीं हैं, प्राप एक किलो के लिए १००० रुपये देंगे तो भी हम प्रापनो १।६ से ज्यादा मखलन देंगे नहीं।'

इस प्रकार बाजार मुक्ति का सिद्धाण हम गांव वालों की दे सकते हैं क्या? यह धण्यवहार की बात है क्या? ग्रामग्राम इकट्ठा हो गांव वाले मिलकर तय करें ह्ये किनना रूप, कितना घनाज चाहिए उनना उत्पादन करें। ये सब सोचने की बात है।

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का हम अभिनन्दन करते हैं

● खाद्य रंग ● सूती वस्त्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि०

(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कायालय :
२०१, डा० डी. एन. रोड
बार्क-१

कारखाना :
केमानी टैक्सटाइल
मिल कल्याणज, सोनापुर तैन,
बर्ना, बम्बई

मुशहरी में रचना व आन्दोलन दोनों

धीरे-धीरे मजूमदार ने अपने एक बयान में ३० पी० के काम को ग्रामस्वराज्य का स्वरूप पहनूँ घोषित करते हुए कहा था कि 'मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि जो लोग ग्रामस्वराज्य के प्रत्यक्ष कार्य में लगे हैं उसे वे छोड़ कर इस हलचल में शामिल हो जायें, वे इसे सम्पूर्ण रूप से अपना काम समझते हुए भी इसे आन्दोलनात्मक विषय पर छोड़ कर अपने काम में जमे रहें।' मुजफ्फरपुर के मुशहरी प्रखण्ड में इसी तरह काम चल रहा है। एक ओर आन्दोलन है, दूसरी ओर ग्रामसभाओं का गठन है। दो पहलू एक दूसरे में प्रेरक बन रहे हैं।

मुशहरी प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य सभा की नव आरंभण समिति ने छात्र आन्दोलन के समर्थन में दूधपैल को मोन जुलूस निकालता। उस दिन केवल पटना में ही मोन जुलूस निकालना तय था लेकिन मुशहरी व जे०पी० के सम्बन्धों के कारण यहाँ भी वैसे ही जुलूस की अनुमति मिल गयी। फिर मुशहरी महिला आरंभण समिति ने महिलाओं के जुलूस

घाणित किए। जल्दवार मनसूनुं चले, शिक्षा में जाति के लिए शिक्षकों ने चौदाहों पर सुती बक्षाएँ सी। प्रभात फेरियो का क्रम अब भी जारी है।

इधर ग्रामस्वराज्य का छूटा हुआ काम भी पूरा किया जा रहा है। रघुनाथपुर प्रह्लादपुर और सभापुर में ग्रामस्वराज्य कार्य गठित कर ली गयी हैं। रघुनाथपुर छात्राभेध पंचायत का छोटा सा गण है। पढ़े लिखे सम्पन्न किसानों और श्रमपट्ट मजदूर परिवारों की लगभग बराबर संख्या है। ग्रामस्वराज्य-विचार को रघुनाथपुर काफी पहले स्वीकार कर चुका था, ग्रामसभा के गठन की भी मिली जुली दृष्टिपूर्ण समझे धाती रही, लेकिन एक दिक्कत थी—गांव के लच्छे बहुत जाग्रत थे, उस्ताही घे वे ग्राम सभा में आगे बढ़ कर काम करना चाहते थे। गाँव के बुजुर्ग उन पर पूरा भरोसा नहीं करते थे। सर्वोच्च कार्यकर्ता उन्हें अपने निर्याप लेने का मोका देने कुछ दिनों के लिए अलग हट गये। इस बीच गांव में बैठकें होती

रहीं। सभी बहसों के बाद वे एक सर्वसम्मत् हल तक आये। फिर मुशहरी समिपान के साथी भविनाता की उपस्थिति में ग्रामसभा गठित हो गयी।

ग्रामसभा बनने से पहले यहाँ के भूमिवाज ने एक विधवा को बेदखल कर दिया था। मालिक और मजदूर-दोनों की ओर से मुकदमे बाजी हुई। लेकिन धन गाँव द्वारा निर्धारित एक समिति ने उनका फैसला कर विधवा को जमीन वापस दिवाली, मुकदमे वापस ले लिये गये हैं।

प्रह्लादपुर पंचायत के जौन गाँवो-भट्टो-लिया, तरीरा गोपालपुर और गगपुर में बहुत पहले ही ग्रामसभाएँ बन चुकी थी। लेकिन प्रह्लादपुर में, जो नवसली प्रतिविधियों का केंद्र रह चुका है, पंचायत के मुखिया की प्रसङ्गमति के कारण ग्रामसभा बन नहीं पायी थी। अब उनकी सङ्गमति के बाद सर्व-सम्मति से ग्रामसभा गठित कर ली गयी है।

मनापुर में दो सम्पन्न भूमिवाजों के परिवारों को छोड़ कर सभी ने ग्रामसभा को स्वीकार था। उनके लिए उसकुल ग्रामीणों ने एक सम्भे समय तक इतजार किया, अब हाफ कर इन लोगों ने एक ग्रामसभा बना ली है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

मालिक बचा है। यही एक मात्र ऐसी चीज है जिसे धारुबम नष्ट नहीं कर सकता।

मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं दिखाई देता कि जब तक बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों का शोषण बन्द नहीं करते और सहज ही युद्ध की ओर ले जाने वाली हिंसा की भावना से मुक्त नहीं होते, तब तक दुनिया में शांति स्थापना की धाता करना व्यर्थ है।

पूर्व का सन्देश

पूर्व के समझदार व्यक्तियों में पहला नाम जयप्रकाश था है। इसके बाद बुद्ध हुए। वे भी पूर्व-भारत के थे। बुद्ध के बाद मौन धार्या। पूर्व से ही ईसा मसीह। ईसा से पहले रिमि-लीन के विवादी मोत्रिय का नाम धाता है। उनका जन्म मिथ में हुआ। ईसा के बाद मोहम्मद। मैं राम कृष्ण और दूसरे महान् गुरुओं का जन्मस्थ बहाने नहीं करूँगा। ऐसा नहीं है कि मैं उन्हें कम महान मानता हूँ,

मगर पदा-सिखा सत्सार उनसे अपरिचित है। जो हो, मैं दुनिया के ऐसे एक भी व्यक्ति को नहीं जानता जो एशिया के इन महान् गुरुओं की बराबरी कर सके। लेकिन फिर क्या हुआ? पश्चिम पट्टुकर ईसाई धर्म का स्वरूप बिखार गया। मुझे ऐसा कहने का दुःख है। इस विषय में और कुछ नहीं बर्तूँगा.....।

जो बात मैं मापकी बताता आहता हूँ वह है एशिया का सन्देश। उसे पश्चिम के चर्कित करने वाले तीर तरीको घोर प्रणुबम की तकल करके नहीं सीसा जा सकता है। अगर माप पश्चिम को कोई सन्देश देना चाहते हैं तो वह प्रेम और सत्य का सन्देश होना चाहिए। प्रजातंत्र के इस जमाने में, गरीब से गरीब की आनृति के इस युग में, धार्य ज्यारा से ज्यारा जीर देकर इस सन्देश का दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। चूंकि धार्यका शोषण किया गया है इसलिए शोषण का बदला शोषण से चुनार नहीं, बल्कि

सच्ची समझदारी के बल पर धार्य पश्चिम पर विजय पा सकते हैं। अगर हृद्य सिर्क दिमाग से नहीं बल्कि दिल से पूर्व के समझदारों के इस सन्देश के मर्म को समझने का प्रयत्न करें और धार्य हम सचमुच उस महान् सन्देश के योग्य बन जायें तो मुझे विश्वास है कि हम पश्चिम को पूरी तरह जीत लेंगे। हमारी इस जीत को पश्चिम भी सराहना।

हिंसा का हथियार, वह धाँह प्रणुबम ही क्यों नहीं, सच्ची प्रहिंसा के समकक्ष व्यर्थ सिद्ध होता है।

(ब' साइडिंग प्रांफ महात्मा गांधी से नविंयता मिथ द्वारा प्रकृत)

पहले घोषित जुलाई की सारोखों के बदले अब सर्व सेवा संप का छमाही अधिवेशन १८ जून से २० जून तक पवनार में होगा। प्रबन्ध समिति की बैठक १७ जून को रखी गयी है।

Where does our interest lie?

In the economic development of the country

With over 670 branches spanning the entire country, UCOBANK today is doing all it can to translate into reality the objective behind bank nationalisation all-round economic development of the country



With the branch expansion programme going full steam ahead, UCOBANK today is going all out to develop priority and preferred sectors like agriculture, small-scale industries, self-employed, etc. Simultaneously, its comprehensive loan schemes are being made available to every socio-economic group

And again in the field of international banking UCOBANK is playing an increasingly bigger role. All this is a reflection of the new social responsibility which UCOBANK feels proud to shoulder.

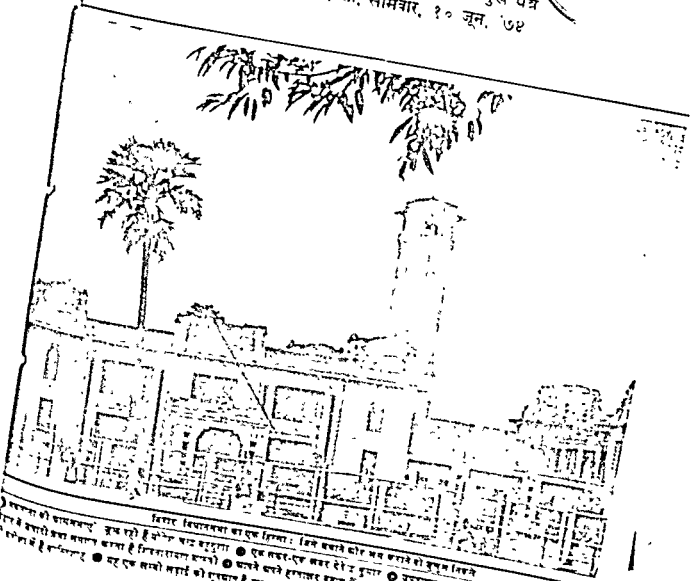


United Commercial Bank
Helping people to help themselves—profitably

UCOBANK

सर्वोदय

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १० जून, '७४



विद्यार्थी विधानमंडल का एक हिस्सा : जिसे बचाने और भंग करने से सुरक्षित निकले

● एक सप्ताह-एक सप्ताह देखें न भुलाने ● उपकरणमंडल की हवाएं बने हुए ● उपकरणमंडल
 ● काले काले हवागत वकाल में काकर हो करी जिने गिरा ● उपकरणमंडल हमारे काशीय
 ● एक एक सप्ताह की सुरक्षा है सप्ताह सप्ताह ● विद्यार्थी : एक सप्ताह की विचारित चीज ।

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

बिहार : एक नया व निर्णायक मोड़

पांच जून को पटना में निकले भ्रम तक के सबसे बड़े जुलूस और गांधी मंदान में हुई विशाल धामसभा के बाद बिहार का जन-आन्दोलन एक नये और निर्णायक मोड़ पर पहुँच गया है। एक माह पहले जयप्रकाश नारायण ने कहा था—विधानसभा भंग करो। लेकिन भ्रम उठाने जो नया कार्यक्रम दिया है उसका नारा है विधानसभा भंग कर-वायेगे। नये कार्यक्रम के अनुसार विधानसभा के सभी-दरवाजों पर शनिवार से शांतिपूर्ण सत्याग्रह शुरू हो गया है। सत्याग्रही इन दरवाजों से मंत्रियों और विधायकों को विधानसभा जाने से रोकेंगे और गिरफ्तार होंगे। यह कार्यक्रम रोज चलेगा। सत्याग्रह विचार्या, विज्ञान और मजदूर करेंगे और कोशिश की जायेगी, कि बिहार के प्रत्येक जिले से बीस सत्याग्रही रोज पटना पहुँचें। विधायकों को चेतावनी दी गयी है कि वे बाहर जून तक इस्तीफा दे दें नहीं तो उनसे असहयोग किया जायेगा और विधानसभा से चिपके रहने के उनके निर्णय के खिलाफ घटना दिया जायेगा।

साथ ही पूरे बिहार में एक व्यापक असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया है। इसमें लगान, तबान्दी और कर न चुका कर जनता सरकार से असहयोग करेगी। छात्र सभ्य समितियों और जन सभ्य समितियाँ इस बात की पूरी कोशिश करेंगी कि शहरो, कस्बो और गाँवों में बीजों के भाव न बढ़ पायें और धानबन्ध बस्तुओं का निरंतरण ठीक होता रहे। कुल मिलाकर बिहार में जन अत्यास छोड़े देने वाली सरकार और चुक गये जन अत्यास के बावजूद विधानसभा से

चिपके रहने वाले विधायकों के खिलाफ गांधी के जमाने जैसा व्यापक असहयोग आन्दोलन छिड़ चुका है। राज्य और केन्द्र सरकार तथा कांग्रेस और उसकी सहायक भारतीय साम्यवादी पार्टी ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। एक तरफ भ्रष्ट व्यवस्था, कुशासन और राजनीतिक तिक्कड़म और जोड़-तोड़ है और दूसरी तरफ इन सबसे निराश और क्रोधित जनताएँ। सभ्य ऐसी स्थिति में पहुँच गया है जहाँ से उसे रोना नहीं जा सकता। बिहार एक भ्रष्ट गलित और अनुपयुक्त व्यवस्था और जनता के बीच सीधे सभ्य का समरस्योत्र हो गया है। बिहार भारत में ससदीय शोषण के प्रबिन्धन के रूप में बसता है।

पाच जून का जुलूस घाट अग्रल के जुलूस से चरित और स्वभाव में भिन्न था। आठ अग्रल का मोन जुलूस घगर पुटन को तोड़ने के लिए निकला था तो पाच जून का जुलूस प्राश्रयो और जन निश्चय की अभिव्यक्ति था। जे. पी. ने बैलूर के अस्पताल से ही प्रावाहन किया था कि यह सिद्ध करना पड़ेगा कि मतदाताओं ने जिन लोगों को दो साल पहले आदेश दिया था भ्रम से उसे वापस लेना चाहते हैं और निर्वाचित प्रतिनिधियों में उनका विश्वास नहीं है। यह सिद्ध करने के लिए जे. पी. ने कहा था कि बिहार के ३१८ चुनाव क्षेत्रों से एक करोड़ हस्ताक्षर विधानसभा भंग करने के लिए इकट्ठे किये जायें और एक लाख लोगों का जुलूस उन हस्ताक्षरों की राष्ट्रपति के हवाले करे। सब से जगद-जगद हस्ताक्षर करवाये गये और कार दिन पहले तक ६३ लाख सौंप विधानसभा को भंग करने के लिए अपना मत दे चुके थे।

पहले से तय था कि पांच जून को यह जुलूस निकलेगा इसलिए इसके पहले शक्ति प्रदर्शन के लिए भारतीय साम्यवादी पार्टी ने तीन जून को विधान सभा भंग न करने के लिए जुलूस निकालने की घोषणा की। जे. पी. ने जब अग्रल में आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार कर के उसे जन आन्दोलन बनाने की कार्यवाही शुरू की थी और अग्रल के लिए बैलूर जाने के पहले पाच सप्ताह का कार्यक्रम दिया तब से ही कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी आन्दोलन का उत्तर आन्दोलन से देने की कोशिश कर रही हैं। यह समझ के बाहर है कि जो पाटिया सत्ता में हैं और बार-बार झुका करती हैं कि उन्हें तीव्रिय समर्थन प्राप्त है और जिनके पास पूरी सत्ता है वे उन समझाओं की हल करने के बजाय जन आन्दोलन के खिलाफ किराये का आन्दोलन कर रही हैं। जे. पी. की अनुपस्थिति का लाभ ले कर इन पाटियों ने पर्याप्त कोशिश की कि आन्दोलन से किसी प्रकार जनसमर्थन हटाया जाये। पिछले माह जो शक्ति इन लोगों ने इकट्ठी की थी उसे वे पटना में प्रदर्शित करना चाहते थे। कोई पनाम-माठ हजार लोगों का जुलूस तीन जून को उसी तरह निकला जाता कि पाच जून को निबलने वाला था। विधानसभा भंग न करने और प्रजातंत्र की रक्षा करने के लिए निकाले गये इस साम्यवादी जुलूस ने जयप्रकाश मुर्दाबाद और अमरीकी एग्जेंट बिहार छोड़ो आदि नारों पर ज्यादा जोर दिया। इसे भारतीय साम्यवादी पार्टी का दुर्भाग्य ही मानना चाहिए कि जब भी देश में कोई जन आन्दोलन लड़ा होता है वह बिचारी अपने को जनता के खिलाफ पाती है। सन् ५२ में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भी उसे यही करना पड़ा था जो आज ७४ में करेगा आन्दोलन के खिलाफ करना पड़ रहा है।

तो जे० पी० ने चाहा हो या न चाहे हो पाच जून का जुलूस कम्युनिस्ट पार्टी की नीति में गरीब श्रमजः शक्ति प्रदर्शन में परिवर्तित हो गया। लेकिन जुलूस के बाद बिहार की सरकार और साम्यवादी पार्टी के सामने यह स्पष्ट हो गया होगा कि लोग किस की तरफ हैं और क्या चाहते हैं। प्रशासन

झाड़ नये समाज के लिए एक वर्ष कॉलेज छोड़ें

झाड़ छात्रों की गयी समस्त रक्षायुक्तों के बावजूद यह जुलूस विद्यालय सिद्ध हुआ। अनुमान है कि उसमें दो से ज़े कर पांच लाख तक लोग शामिल थे। इसमें गांधी मंदिर से जे नई राजनिवास तक की सड़कों के दोनों तरफ रहने वाले लोग शामिल नहीं हैं जो छात्रों वैनरियों, मुंदरों, गलियों और सड़कों पर खड़े हुए जुलूस का भाग समर्थन और जे० पी० का अभिवादन कर रहे थे। जुलूस इतना बड़ा था कि उसका एक सिरा जब राजभवन पहुंच चुका था तब पिछला सिरा गांधी मंदिर से कुछ गद्दी हुआ था और गांधी मंदिर और राजभवन की दूरी लगभग छः किलोमीटर है। यह दूरी तय करने में जुलूस को डेढ़ घंटा लगा।

जुलूस के आगे एक सुसज्जित ट्रक था जिसके ऊपर १२ अप्रैल की गथा में हुए गोलीबार पर एक विद्यालय तैयार था। ट्रक में मिन बुनायत से जो हस्ताक्षरों के भागज भक्षण प्रयोग करने में बंधे रहे थे। ट्रक के पीछे एक सख सख की मीली टट्टियों से डकी बंगडोर की गिमले जे० पी० मन-मोट्टेन चौमरी के साथ बँटे हुए वे उनके पीछे 'भाषायं वायुमिड, नारायण देसाई और विचारारण्य थे। साथ में विभिन्न विरोधी रत्नों के नेता, त्यागपत्र देने लगे विधायक और छात्र सपर्यं समिति के नेता थे। उन लोगों को बाहो पर केतारिया पट्टी बंधी हुई थी जिस पर छात्र सपर्यं संमिति का नाम लिखा था। इनके पीछे वे विद्यापी, नारायण, महिलाएं बच्चियां और बच्चे। तीन बड़े चत्ता जुलूस लगभग पीने पांच बड़े राजभवन पहुंचे। हस्ताक्षरों वाला ट्रक और जे० पी० की लैम्बडोर राजभवन में आने की गयी। जे० पी० छात्र नेताओं और अन्य कार्यकर्ताओं के साथ राज्यपाल से मिले। राज्यपाल बंधारे ने नमस्कार कर के जे० पी० का स्वागत किया और उन्हें शरदत पिलाया। जे० पी० ने राज्यपाल को कहा कि सभार की ओर भी प्रजातान्त्रिक सरकार एक जन-आन्दोलन में इस तरह की तोड़-फोड़ और खजण्डें पैदा नहीं करती जिस तरह कि इस सरकार ने किया है। राज्यपाल बंधारे ने मजाक में

कहा "यह बात है? लेकिन शायद ऐसा इस लिए हो कि आपकी प्रजातान्त्र-विरोधी माना जाता है।" जे० पी० ने मुन्कराकर कहा— "यह उनकी परिभाषा हो सकती है।" राज्यपाल ने कहा— "लेकिन क्या हम जन प्रदर्शनों के जरिये विधानसभाओं को भंग करने की मांग कर सकते हैं?" जे० पी० ने उत्तर दिया— "जब हमारे सविधान में विधायक को वापस चुनने का कोई प्रावधान नहीं है तो जनता इसके भलाया क्या कर सकती है? बाद में राज्यपाल बंधारे ने भलबार वालो से कहा— "मुझे हस्ताक्षर मिल गये हैं और मैं सर्वथाधिक तरीका धरनाऊंगा।"

हस्ताक्षरों के साथ राज्यपाल को दिने गये मांग पत्र में कहा गया है कि सरकार सकोषे माटीगत हित-स्वार्थों से ऊपर उठने में विफल हुई है। विद्यार्थियों ने जब अत्याचार महगार, और बेकारी को दूर करने के विलाफ तत्काल कार्यवाही के लिए श्रांतिपूर्ण जन आन्दोलन शुरू किया तो विधानसभा में अपने बहुमत और पुलिस तथा सेना की शक्ति से सरकार ने इस आन्दोलन को कुचलने की कोशिश की। मांग पत्र में विधानसभा के विसर्जन की मांग की गयी थी जो कि वह सरकार के गलत कामों और भत्या-बतारों को रोकने में विफल हुई है।

जुलूस जब सौट रहा था तो बेली रोड पर एक मकान से गोलियां चलाई गयीं। कहा जाता है कि इस मकान में इन्दिरा त्रिपेड नामक एक सस्या के कार्यकर्ता रहते हैं। इस मकान से हुए गोलीबार से कम से कम २१ व्यक्ति घायल हुए। सभार प्रायुक्त कोहली ने बताया कि पुलिस तत्काल घटना स्थल पर पहुंची और उसने सत्रह व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। एक दुनानी बन्दूक, छः चली हुई गोलियां और दस कारतूस मिले। कोहली ने यह भी कहा कि प्रदर्शनकारियों की तरफ से भडकाने की कोई कार्यवाही नहीं की गयी। वे शांतिपूर्ण रहे।

शाम को गांधी मंदिर में विद्यालय सभा जुड़ी। जे० पी० ने अपने नब्बे मिनट के भाषण में आंदोलन का भागे का कार्यक्रम लोगों के सामने रखा। विधान सभा के दर-

वाजों पर सत्याग्रह, विधायकों को त्यागपत्र देने के लिए १२ जून तक की मोहलत और लगान, तकावी, कर भादि न चुका कर सरकार के साथ झट्टेवांग करने की घोषणा की। जे० पी० ने कहा कि यह जानने के लिए कि मतदाता अपने विधायक से इत्तीफा दिलवाना चाहते हैं या नहीं प्रत्येक युवा क्षेत्र में निष्पक्ष लोगों की देखरेख में मतदान करवाया जाये। एक भवपेटी पर हा और दूसरी पर 'नहीं' लिखा जाये और प्रत्येक मतदाता से कहा जाये कि वह अपनी स्वतन्त्र राय के अनुसार मत दे। जिन क्षेत्रों में इस तरह का मतदान सम्भव नहीं हो वहा हस्ताक्षर करवाये जायें। विधानसभा भंग करने और विधायकों से इत्तीफा लेने की मांग को लेकर जिला अधिकारियों का घेराव करते और कार्यालयों पर धरना देने का भी कार्यक्रम है जिसकी तिथिया तय की जा रही हैं।

जे० पी० ने विद्यार्थियों से कहा कि एक वर्ष के लिए वे कॉलेज की पढाई छोड़ दें और और एक नयी समाज व्यवस्था के लिए नाति करने में जुट जायें। जे० पी० ने यह भी कहा कि इसके बाद वे लोगों से मिल पायेंगे या नहीं, कहा नहीं जा सकता। उनके इस कथन से अफवाह उठी कि उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है। रात को मुख्यमन्त्री भन्दुल एगूर ने इस अफवाह को निराधार बताया और कहा कि जब तक वे मुख्यमन्त्री हैं सरकार ऐसा सोच भी नहीं सकती।

जे० पी० ने पुलिस वालों से कहा कि आंदोलन को कुचलने के लिए उन्हें अपने बरिष्ठ अधिकारियों से जो आदेश मिलें उनका वे पालन न करें।

अमरीका में उनके विद्यार्थी जीवन पर भीमती गांधी के प्रवाहित बयानों को जे० पी० ने एक गन्दी हरबत बताया।

अजयकाश नारायण ने कहा कि उनसे हाथ ही मिले, काफ़स के ससप सदस्यों ने आग्रह किया था कि वे बहुमन्त्री उमाकर दक्षिण से मिलें और अपने आंदोलन को दो महीने के लिए स्थगित कर दें। लेकिन चूकि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है इसलिए वे (शेप पेज ११ पर)

पुनर्जागरण हमारे आन्दोलन की प्रतीक्षा में है

फ़ान्तिशाह का सिद्धराज ढड्डा के नाम पत्र

प्रिय सिद्धराजजी,

न जाने क्यों, प्राग्जन में बहुत ही खुश हूँ। हमारे प्रादोलन में श्रेष्ठ नया सुफ़ान लेंजी से प्रा रहा है। चन्द दिन पहले जे. पी. को प्रेक तार भेजा था अउस में भी वहा—'आपके स्वास्पर भोर मनोबल के लिए प्रायत्ना करता हूँ। पुनर्जागरण हमारे प्रादोलन की प्रतीक्षा में है। यह मैं सचमुच मानता हूँ। भोर प्रिस प्रूफ़ान के निमित्त जे पी. बनें। प्राज की परिस्थिति की चुनौती मुख्यतया राजनीतिक है। तेवंगाना में चुनौती थी—'क्या प्राधिक परिवर्तन के लिअ बल का ही रास्ता है? प्रसूका जवाब भूदान से मिला। बाद में चुनौती प्रापी चीन के प्राक्रमण से। हमने कहा, बोर बनो, महाधीर बनो। भोर साथ-साथ सुलभ प्रादान का कार्यक्रम रला। प्राम दान की सुरक्षा उपाय तो हमने कह दिया था, १९५७ में ही। लेकिन उसे बर्क प्राऊट कलन भाकी था। वह हुआ १९७२-७३ में। गाव-गांव को एक गड बनायेंगे। गाव का एक परिवार। गाव का प्रायोजन। चूँकि चीन की चुनौती सिर्फ़ तीमा पर नहीं थी। वह सामाजिक चुनौती भी थी। क्या साम्यवादी कम्पून का कोई विकल्प है? हा, है। हमारी प्राससभा। यह दूसरी चुनौती का हमारा बंधन हुआ। तूफ़ान प्रादान में कोई नयी बात हमने नहीं की। सिर्फ़ सव्या के कारण गुणात्मक परिवर्तन प्राया।

मैं जानता हूँ कि ये दोनो जवाब भी प्रामी तक मुख्यतया कायज पर ही हैं। प्रत्यक्ष बहुत कुछ तो हम नहीं दिया सके हैं। फिर भी बिचार में श्रेष्ठ बात प्रा गयी। और प्रातिपों में अंसा ही होता है। पहले बिचार में प्राति हो जाती है। पीछे धीरे धीरे प्राचार में उतरती है।

आज श्रेष्ठ तीसरी चुनौती है, हमारे सामने। क्या यह लोकतंत्र प्रिसी डग से चलैगा? अंसा ही प्राष्ट्याचार, भोर अंती ही पक्षीय भोर राजनीतिक जोड तोड भोर तिरुहमनाजी चलती रहेगी? जिसे हम

तीसरी शक्ति बहते हैं, वह क्या मूक प्रेक्षक बनी रहेगी? प्रादान में इतका कुछ जवाब प्रावश्य है। लेकिन प्राज की परिस्थिति प्रादान घन कुछ की माग कर रही है। अिस चुनौती का स्वूप मुख्यतया राजनीतिक होगा। अूसका साथ हमारे प्रादोलन को देना ही होगा। आखिर अंसे प्रादोलन कोओ शून्य में तो काम नहीं करते। प्रस्तुत समस्यो के सदभ में ही उसे काम करना होता है। इध लिए प्राज के सदभ में जो एक चुनौती देश के भोर हमारे सामने खड़ी हुई है उसका जवाब देना ही होगा। भव उसे राजनीतिकरण कहे, या भोर कुछ बहें। मैं तो उसे सक्षम लोकनीति ही बहूँगा। जाग्रक लोकशक्ति द्वारा राजनीति पर अकुजा। बापू का लोकसेवक सप का जो सपना है, वह कभी धरती पर उतरेगा या नहीं? सर्वसेवा सप को यदि लोकसेवक सच बनाना हो, तो इस भोर ध्यान देना ही होगा।

इसलिए आजकल जो मंथन चल रहा है, उस से मैं बडा खुश हूँ। इस में से थोडा जहर निकलेगा। लेकिन धन्ततोगत्वा यह मयन समाज को भ्रमूत को प्राति कराने के लिए ही है। प्राशोध चिंतन ही रट तो हम लोगों में बहुत लगायी है। भव उसे प्रवत्त प्राचार में प्रगट कर दिखाने की देना प्रायी है। क्या हम सब के बीच तटस्थ-वस्तुपरक बिचार-मयन चलैगा?

प्रामी तो मयन का धारम ही हुआ है। कोई सत्य हाथ में नहीं प्राया। हम लोग बरसो से कहते प्राये हैं कि प्राज की बहुत सारी समस्याएँ बुनियादी प्राति के बिना हल नहीं हो सकती। क्या इस में तथ्य नहीं है? मैं मानता हूँ कि यह भूमिका आज भी उतनी ही सही है जितनी पहले थी। फिर भी प्राज हम लोग सोचने के लिए इसलिये मजबूर हैं कि इगी बुनियादी प्राति के पुरायर्ण में कुछ चीजें बाया रूप बन रही हैं। लोकशक्ति भी प्राज कुठित हो गयी है। इसलिये कुछ मायं डू दना ही होगा। प्रादान ही एक मात्र उपाय

है, ऐसा बहते रहने से कोई फायदा नहीं। प्रामस्वराज्य के बुनियादी नाम के प्रति रूप कुछ और कायंक्रम, ग्युह रचना वगैरह क्या हो सकती है, यह सोचें बिना कोई चारा नहीं। ऐसा करने से हम पथभ्रष्ट हो जायेंगे, हमारी नैतिक-प्राध्यात्मिक भूमिका हिन जायेगी, ऐसा चिंतन तो हीन-प्रथि में से हूँ निक्ला है। उस में आत्म-विश्वास का प्राी अपने बुनियादी लक्ष्य एवं मूल्यों के बारे में प्रास-प्रतीति का अभाव ही दिखता है।

दूसरी भोर गुजरात-बिहार में जो चला उस से कोई बुनियादी हल हाथ में प्रा गया है ऐसा भी नहीं है। वस्तुतः तो प्रामी तक कोई नया बुनियादी तत्व या कायंक्रम हाथ में नहीं प्राया। लेकिन वह खोज है, भोर सही दिशा की खोज है। प्राज की राजनीतिक चुनौती का जवाब हमें डू दना है भोर लोकशक्ति को जाग्रत-संगठित करने के तरीके हमें डू देने हैं। हम कोई प्रष्ट्या या श्रुति तो है नहीं। इसलिये गलती भोर सुधार से ही प्रागे बड सकते हैं। भोर जे० पी० प्राज वही कर रहे हैं। उन्हें हम सब का समर्थन ही नहीं, पूरा का पूरा साथ मिलना चाहिए। जे जो कर रहे हैं, वह प्रादोलन के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ बर्तई नहीं है।

मुझ पर एक ऐसा भी अतर है कि प्रामी उन के काम में कुछ प्रतिक्रिया का तत्व है। खोज में इतनी कमजोरी रहेगी। लेकिन वह धीरे धीरे निकल जायेगी। जे० पी० का विकास हमेशा ही ऐसा रहा है। प्राज कोई सब से सराहनीय बात है तो वह है—ध्वंशमान चुनौती को उनका उत्तर। इती उत्तर के कारण कुछ हल हाथ में प्रायेगा। दाद ने टीक ही कहा है—जे० पी० की अत-प्रेरण में हमें पूरा विश्वास है। उस अत-प्रेरण में से कोई चीज निकले, तब तक कुछ लोगों को मयर्ण-दित करने का रोल पडा बनना पड़ेगा। दादा बहुत ही हार्दिकता एवं विश्वबुद्धि से यह कह रहे हैं। मनमोहन का बरिग वेपर—
(शेष पृष्ठ १५ पर)

सकलाना की ग्राम सभाएं जूझ रही हैं

योगेश चन्द्र बहुगुणा

पिछले कुछ वर्षों से गढ़वाल मण्डल के गांव जन आन्दोलन की उर्वरा भूमि बन गये हैं। देशी शराब की दुकानों को बन्द करवाने से लेकर गढ़वाल विश्वविद्यालय, प्राथमिक शिक्षा, टिहरी बाघ भोर जन समस्याओं को लेकर एक के बाद एक जन आन्दोलन सफाई हुए हैं और सफलता की मजिलें तय कर रहे हैं। अब यहाँ के प्राथमिक विकास से जुड़े एक बहुत सवाल को लेकर जनता ने अग्र प्रारम्भ किया है, जो किमिक अन्धश्रम से प्रारम्भ होकर काम रोकों की सीधी कार्यवाही तक पहुँच गया है।

पर्वतीय क्षेत्र के आर्थिक विकास की दृष्टि से तीन प्राकृतिक साधनों का बहुत महत्व है—जल, वन और सजिन सपदा। यहाँ का प्राथमिक विकास इस बात पर निर्भर करेगा कि इन तीनों प्राकृतिक साधनों का दोहन और प्रयोगन किस पद्धति से होता है, दुर्भाग्यवश इस सम्बन्ध सपदा का दोहन अब तक पूरा नहीं करी पद्धति से होता रहा है। वन-सपदा की बुनी लूट ने तो यहाँ की जनता के सामने जीवन भरए का प्रश्न उपस्थित कर दिया है क्योंकि जगलों की खपाही का सम्बन्ध सीधे-सीधे यहाँ के जीवन नाश से जुड़ा हुआ है। यहाँ से बहने वाली नदियों से पैदा होने वाली विद्युत् शक्ति की सम्भावनाओं का तो धमी पडा तक नहीं लगाया गया है और टिहरी बाघ से पैदा होने वाली बिजली व लिफ्टों की बुनियादों का लाभ यहाँ की जनता को सिदान मिल पायेगा यह सदिग्ध है। सजिन सपदा में धमी तक भूने के पत्थरों की खदानों पर ही काम प्रारम्भ हुआ है। परन्तु उच्चता लाभ स्थानीय जनता के बजाय एकाधिकारवादी पूँजीपतियों को मिलता है।

वन समस्याओं को लेकर चम्पौली जिले में जो जन आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है उस भोर पूरे देश का ध्यान आर्षुट हुआ और आन्दोलन परिचयन अवस्था में पहुँच गया है परन्तु सजिन सपदा को लेकर टिहरी जिले के सफरनामा क्षेत्र में जो जन आर्षागत उभडा है आन्दोलन के कारणों की दृष्टि से यह धमी संस्थावस्था में अने ही हो परन्तु उसके व्यापक व भोर प्राथमिक सफाई होने की सम्भावनाएँ प्रकट हो गयी हैं। इन क्षेत्र के समय सद्यः की अर्थपूर्णता के वस्तुओं के इन विषय को लें क्षेत्र में जो बुनौती दी है उससे यह स्पष्ट हो

गया है।

सकलाना टिहरी जिले का ऐतिहासिक क्षेत्र है। यहाँ के लोगों ने बौद्धादा बन्दरीगाह के सामन्ती शासन से जूझे हुए अपनी आजाद पचायतें वापस कर ली थीं। सकलाना के जन आन्दोलन को दवाने के लिए राजशाही की फौज और पुलिस ने जो अत्याचार डाये थे उन की कहानियाँ रोगटे लड़े कर देती हैं। शारीरिक पीडाएँ देने के साथ लड़ी फलत को छोड़े खच्चरों द्वारा रौंदा डालना, मने-मियों की लूट, धनादा व बर्दनों की लूट उस समय की आम घटनाएँ रही हैं। यहाँ तक कि तम्बाकू पीने के हुक्के भोर चिमटे तक भी इस लूटपाट ने नहीं छूट पाये थे। अमर शहीद साधो नागेन्द्रलाल सकलानी ने सीने में गोली खा कर सकलाना की भाति को सोचा था। जुलम के धामे यहाँ की जनता नहीं मुक्ती।

अब सजिन सपदा के दोहन को लेकर यहाँ के आर्थिक विकास से जुड़े प्रश्न पर जनता ने सफाईत होता प्रारम्भ किया है। १५ मई से चूने के पत्थरों को सिदान की भोर लाने वाली गाड़ियों के पहिये लाम करने का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया है। २०० उत्पाद-हियों ने देहरादून से १० मील दूर कुमायूना में जहाँ से चूना मालियों के टुक-सदरों की भोर प्रवेश करते हैं, टुकों की रोक देने का कार्यक्रम बनाया है। इस तरह गावसभाओं की सोजम भूमि पर एकाधिकारवादी पूँजी-पतियों की विपत्त कई वर्षों से चूना-पत्थरों की तम्भी तीज दिने जाने के विरुद्ध जनता ने किमिक अन्धश्रम द्वारा जो आन्दोलन आन्दोलन प्रारम्भ किया था अब उनकी दिशा बदल गई है।

जौनपुर विकास क्षेत्र के वनाक प्रमुख भोर तद्वर साहित्यकार सोभारीपाल उतिपाल की अध्यक्षता में गठित सधर्ष समिति के आवाहन पर २५ अर्षन को लगभग ५०० सपादहियों ने साहित्यपूर्ण घरना देकर बवरी मानियों की गाड़ियों के पहियों की आम कर था और एक विज्ञान सार्वजनिक सभा में

सकल व्यवस्था किया कि यह जन आन्दोलन तब तक जारी रहेगा जब तक पूँजीपतियों द्वारा किया जाने वाला भोरएण बन्द नहीं होता और शासन गाव सभाओं की जमीन पर श्रैयत लाइम स्टोन की लौको को रूद नहीं करता। सधर्ष समिति ने प्राणे निरवचय के अनुसार २५ अर्षन को गाड़ियों के सावैतिक बन्द सफल होने के बाद उसी दिन भोरएणा की कि यदि शासन १५ दिन के अन्दर जनता की मागों पर गौर नहीं करता है तो फिर यहाँ के मजदूर-किसान एक जुट हो कर लाइम स्टोन की खानों के मालिकों को गाड़ियों को इस क्षेत्र में घुसने ही नहीं देंगे। मॉर्टिस की सुनवाई न होने पर १२ मई को एक विज्ञान सार्वजनिक सभा में स्थानीय नागरिकों ने अपने सकल को उहारेते हुए १५ मई से सीधी कार्यवाही प्रारम्भ कर दी है।

सकलाना के क्षेत्र में यथायात और सचार व्यवस्था १६वीं सदी की याद दिला देती है और गाव दूर-दूर विवट स्थानों पर बसे है फिर भी सधर्ष समिति के आवाहन पर हजारों लोग एकजुट हो जाते हैं।

स्थानीय जनता की शासन से 2 मागे हैं। एक गाँव सभामों की भूमि में स्थान समस्त व्यनियत लीगों की रूद कर दिया जाय क्योंकि इनसे ग्रामवासियों के खदान, बुगान और पनचट आदि को सजिन पट्ट च रही है। गाव सभामों की भूमि पर चूना पत्थर की लीज कन्द लोगों को दिने जाने से वे मालामाल बन्य हुए हैं वस्तु आम लोगों के हितों को ठेस ही गही पहुँची अचिनु उनका सम्पूर्ण जीवन सतरे में पड गया है। दो० यदि राष्ट्रीय हिन में इस क्षेत्र में चूना पत्थर निकालना आवश्यक हो तो शासन यह काम स्थानीय पचायतों व सहनरी समितियों को सौदे दे।

ये मांगें पहाड़ों के आर्थिक विकास से पणित सम्बन्ध रखती हैं। स्थानीय आधार पर उपलब्ध कच्चे माल के दोहन और प्रयोगन का अस्सर यदि वहाँ के लोगों को दिया जाय तो बेरोजगारी की समस्या हल हो सकती है (विषय पृष्ठ १० पर)

एक सफर—एक खवर

वेवेन्द्र कुमार

रैतगाड़ियाँ बंद हैं, बंगलौर-में होने वाले धाराणी सम्मेलन की एक बैठक में जाने की हवाईजहाज से सफर कर रहा हूँ। रास्ते में नादता घाटा है, उसमें डबलरोटी के सैंडविच हैं, जिसमें आटा मीठा बनाकर इस्तेमाल किया गया है, बिस्कुट हैं जिनमें चोकर होने की शंका भी नहीं की जा सकती है और मिठाइयाँ हैं। साय में भाज के प्रवाह हैं। पीनी-भाई-0 की यह खबर है, 13 मई के पेंड्रिट्ट-में-ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन के डाक्टर डेनिस पी-0 ब्रिटि में काफी शोध के पश्चात यह सिद्ध किया है कि मोटापा, मधुमेह, पथरी, हृदय रोग, कब्ज- एपेंडिसाइटिस, और घातों के फैसर का कारण है हमारे भोजन में फुजला या तंतु पदार्थों की कमी विशेषतया गेहूँ वाले शोधों के भोजन में चोकर का अभाव। उनके प्रयोगों ने यह सिद्ध किया है कि तनु पदार्थ तथा अनाजों के चोकर का उपयोग इन, बीमारियों से हमें बचा सकता है। उनका स्पष्ट मत है कि इसके लिए जरूरी है कि सफेद आटे की रोटी के स्थान पर बिना छुने आटे का उपयोग हो। चीनी, मिठाइयाँ और मीठी वस्तुओं के इस्तेमाल में भारी कमी की जाये और अपने दैनिक भोजन में चोकर का अधिकारिक उपयोग हो।

डा० बकिट का कथन है कि "भब तक पोषण-शास्त्रीय यह मानते रहे हैं कि तनु पदार्थ हमारे भोजन में अत्यंत जरूरी है किन्तु मानव स्वास्थ्य के लिए चोकर में बसे इस पदार्थ का कितना बड़ा हाथ है इसकी ओर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया।"

"भाज यह स्पष्ट होता जा रहा है कि पारंपार्य देश जहाँ अनाज की सर्वथा चोकर मुक्त करके उपयोग में लाने का रिवाज है उनमें उपरोक्त रोग जोर पकड़ते जा रहे हैं जबकि अफ्रीका के ग्रामीण इलाकों में जहाँ अनाजों और दालों का उपयोग उनके सम्पूर्ण रूप में किया जाता है इस प्रकार के रोगों की मात्रा कम्य जाता है।

"शर्करा पदार्थों (कार्बोहाइड्रेट) के प्राकृतिक दिवने को जब भूल कर दिया जाता है तो उनमें कैलोरी की मात्रा बढ़ जाती

है और उसके खाने से मोटापा बढ़ता है।"

"प्रायोगिक धारापर पर यह सिद्ध हुआ है कि शरीर में कोलेस्टेरॉल की मात्रा का बढ़ना और गैलस्टोन का बनना भोजन में फुजला-पदार्थों की कमी के कारण होता है। यही कारण घातों की खुरकी और कब्ज का भी है। एपेंडिसाइटिस भी तनु पदार्थों की खाद्य में कमी के साथ सीधा संबंध पाया गया है।"

प्रतएव डा० बकिट का स्पष्ट मत है कि पोषण शास्त्र के धारापर पर यह आवश्यक है कि पश्चिम की खाद्य पद्धति का अनुसरण करने से हमारे देशों की रोक जाये और जहाँ खाद्य पदार्थों को चोकर मुक्त करके उपयोग करने का रिवाज है उसे बदला जाये और भोजन में अधिकारिक पूरे अनाज और दालों का उपयोग कराकर पाचन यंत्र के सामान्य रोगों की रोक थाम की जाये।

इस प्रकार वा स्पष्ट वैज्ञानिक मत होने पर भी वैज्ञानिक माने जाने वाले समाज में अप्राकृतिक और अर्धवैज्ञानिक भोजन पद्धति क्यों विवक्षित हो रही है इसके कारणों हमें आज तो पता चलता है कि खाद्य उद्योग में लगे व्यवसायी और औद्योगिक हित बंशित ढग पर जब काम करते हैं तो खाद्य पदार्थों से ये सारे पोषण तत्व निकालता, उन वस्तुओं का टिकाऊपन बढ़ाने के लिए जरूरी होता है। जितना अधिक खाद्य वस्तुओं का टिकाऊ पन होगा उतनी ही उनमें मीठा कमाने की ताकत होगी। सज्जिया, धाम आदि बेचने वाला धाम तक ही धाम बेचने पर मजबूर होता है क्योंकि उसकी चीजें शाम तक खराब हो जायेंगी पर उसी धाम का टिकाऊपन बढ़ते या सज्जी कंपनियों में सालों तक रोक कर रख सकते हैं और स्थल और नाल में ऊंचा भाव पाने की क्षमता बचा लेते हैं अर्थात् जहाँ और जब ऊंचा भाव मिले रोक रख सकने की उनकी ताकत रहती है। यही कारण है कि मुड़ की जगह चीनी, पूर्ण चावल के बजाय पालिश किया चावल, पूरे आटे के बजाय मंदा, तेलों की जगह वनस्पति जैसे उद्योगों में नितने व्यवसायी मालामाल हो गये और

उद्योगपति बहलामे। सचमुच अर्धवैज्ञानिक व्यवसाय को उद्योग बहना एक बड़ी प्रवचना है और तथाकथित वैज्ञानिक इस बात फरेब में मौन या खुले रूप से मीठा कमाने वालों का साथ देने हैं। 'यह तो बाढ़ हो लेत खा गई' बहानवत सिद्ध करने वाली बात हुई।

उद्योग शब्द उत् (अर्थात् ऊंचा) और योग अर्थात् प्रक्रिया शब्दों से बना है जिसका मतलब है वह प्रक्रिया को वस्तु को ऊंचाई प्रदान करे अर्थात् उसे अधिक लोकप्रयोगी बनाये। भाज के अधिकारि खाद्य उद्योग (और भारत के व्यावसायिक) तो प्रमुखतः चीनी मिलों, तेल वनस्पति मिलों आदि से हो बने, हैं वे प्रारंभिक रूप में पोषण पदार्थों को दुर्पोषण परन्तु अधिक सफाई वाला बनाने में लगे हैं। डेनिस बकिट की धोषणा केवल हमको, आपको ही अपने जीवन भोजन को बदलने की बात सोचने की नहीं बल्कि करती है वरन् सारे खाद्य उद्योगों की राष्ट्रीयीति को भी बदलने के लिए मजबूर करती है।

और अब, जब मैं यह लेख समाप्त कर रहा हूँ, ता बोलत में यह खूब चीनी वाली नारंगी का भारत परिवारिका सबको परेश रही है और विमान यात्री समक रहे हैं कि हम बड़े वैज्ञानिक पद्धति से जीवन यापन करने वाले हैं।

केन्द्रीय गांधी स्मारक तिथि द्वारा इस वर्ष रचनात्मक कार्यक्रमों को परिचय पुस्तक का द्वितीय भाग तथा रचनात्मक संस्थाओं की परिषद पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। सत्याप जिन्होंने विस्तार से अपना परिचय प्रथमो तक सही भेजा है वे संस्था का नाम पता स्थापना तिथि, कार्यक्षेत्र, प्रमुख कार्य-पदार्थों के नाम व पद, उद्देश्य, निवासनालाप अर्थात् मंड, स्थायी एवं अस्थायी कार्यक्षेत्रों तथा धर्मिकों की संख्या, आदि के बारे में जानकारी भेज सकते हैं।

कार्यनामों को निम्नानुसार जानकारी भेजनी चाहिए: नाम व पता, जन्म तिथि, मातृनाम, कार्य, सक्षिप्त जीवन परिचय, विगत और वर्तमान कार्य। (पासपोर्ट साइज का फोटो भेजना न भूलें।) जिन व्यक्तियों के नाम प्रथम भाग में हैं उनको यह जानकारी भेजने की आवश्यकता नहीं है।

कार्यनामों को निम्नानुसार जानकारी भेजनी चाहिए: नाम व पता, जन्म तिथि, मातृनाम, कार्य, सक्षिप्त जीवन परिचय, विगत और वर्तमान कार्य। (पासपोर्ट साइज का फोटो भेजना न भूलें।) जिन व्यक्तियों के नाम प्रथम भाग में हैं उनको यह जानकारी भेजने की आवश्यकता नहीं है।

मई माह तक दो हजार पूरे हुए

प्रदेश	संख्या	रकम
प्रयाग	१२	३१०-००
भाय	२६	७५६-००
उत्तर	३४	५०१-३२
उत्तरप्रदेश	३०६	१०, २१०-५०
केरल	१३	३००-००
कर्नाटक	३४	७६२-००
गुजरात	२३६	६, २३२-००
तमिलनाडु	५३	००६-००
पंजाब	३४	७५१-००
पं० बंगाल	१५०	५, ४५१-००
बिहार	७२	१, ६३५-६५
मध्यप्रदेश	२००	५, २६५-००
महाराष्ट्र	५०५	१०, ७५२-००
राजस्थान	१४५	३, २५६-००
हरियाणा	५६	१, ४४०-००
हिमाचल	३	००-००
दिल्ली	२०	७३१-००
विदेश	२	१७२-००
योग	१, ६६६	४०, ५०४, ७७

उत्तर प्रदेश

बांदा : सन्तुन भाई । गोंडा : सुग्रीवा देवी, सूर्य देवी, राधिकाप्रसाद, मन्मथराज सुन्दरी देवी, गंगा देवी, धीरालासुरजी, निन्नी देवी, महेन्द्ररत्न सिंह । बदायूँ : टीताराम भाई । मुजफ्फरनगर : महेन्द्र सिंह, किरणमाना, कुमुद स्वामी, रामानि-रकरूप भद्रवाल । देवरिया : मानिकाम । फर्रुखाबाद : हीराराम, छोटेराम, भैरव-सिंह मारोच्य । किरौलीबाबा : शोभनराज । ग्वालियरपुर : चन्द्रसेन, शारदा देवी, राम-रविदेवी, रामदासजी महल, डा० रामप्रसाद जी विषय, गोपीचन्द्रजी साहेबदर । बरेली : भोमप्रकाश । बाराणसी : गिरधरराम भाई, बी० कुटुम्बराम, बीबीमोहन : स्वामी विपदा-सन् । एटा : बागेराम, गोल्डपुर । इलम भाई, सूर्यनारायण मिश्र । झांझार : गोताच-नारायण गिरोमणि, भीराराम, रामबाबू, गुरुलका, गिरधर वैद्य, स्वामी शिवनान्द, गुरुनाथ बनूदो, रोहन सिंह, रामबाबू दुर्गा, भगवानदास बनन, श्रीमती राधेश-चन्द्र, टीक दोन्, श्रीमती विषय मोहन,

कृष्णदेव, दातचन्द्र भाई, गंगाप्रसाद सिपल, मधुरा प्रसाद भद्रवाल, शीलप्रसाद गुप्त, श्रीकृष्ण प्रसाद भांगन, डीरीनान ब्रह्मवाल, बुजारी दाम गोपच, बाबूनाथ कर्मा गोपालराम बहुगुणा । मेरठ : जलचन्द्र गुप्त, जैपालसिंह, रामभद्र, ब्रह्मजीन गिरी, सुन्दरनाथ, तेज सिंह, रामबाप्रसाद, चरण सिंह, हरिचन्द्र, बचरानी देवी जगदीश नारायण मिश्र । मिर्जापुर : धीरान्त मिश्र, प्रेमचन्द्र, जिन-सूरसिंह, रघुप्रयाग, रामपुरम शिव बहुगुण भाई, रमागहर भाई, लक्ष्मणदास मिश्र, मानिकचन्द्र, विहारीनाथ, हरचन्द्रसिंह स्वामी भैरानाथ पादक, पुरमोलम भाई दलमीकर, लक्ष्मीचन्द्र स्वामी, सुदर्शन प्रसाद, रामये-तासद मिश्र । नैनीताल : मूढानाथ भाई, लखन प्रसाद, प्रतीत कुचार, पुरुषोत्तम, पचदेव तिवारी, रमा पाण्डे, बागीनाथसिंह, श्रीमती लालमणि देवी, नैनीसिंह, श्रीमती रामन्यारी, मुष्कनराम । कासपुर : विषय भाई, डा० चन्द्रनाथ रोहती, डा० सोम-नाथ सुप्त । मधुरा : भगवन्दीनाथ, लक्ष्मी नारायणी कर्मा, सरदार सिंह विहार,

निरंजनलाल बाण्य, दाऊदयाल सराफ, प्रभु-दयाल कुतर्षेष्ठ, साधाराम जी लवानिया, रामस्वरूप बजाज, छीतरमल भद्रवाल, श्री-निवास भद्रवाल, रामबाबू जैन, ज्ञानाप्रसाद कुतर्षेष्ठ, काम्ता प्रसाद, मुरन बनी, डा० रघुवीर प्रसाद भाई, कुमरसिंह, नन्दलाल वर्मा, कारतार सिंह, जुगन्दर सिंह, हरिचन्द्र, राजेश्वर पाण्डे, मोती रामजी, बाबाराम, हेमसिंह, स्वैहीनाथ, कालीचरण, बनीसिंह, हरचरणलाल वर्मा सराफ, श्रीमती देवी । मुरादाबाद : ललमीचन्द्र । भासी : डा० नानकराम मुंदरानी । हमीबपुर : मुललाल ।

मध्य प्रदेश

रामपुर : प्रेमजी रघुभाई टांक, प्रो०बाल-चन्द्रसिंह कच्छवाहा, मंथरीभाई, दाधीभाई मूषा, दुर्गितराम भाई, श्रीमती विजयाबहन मुराना श्रीमती लालकृष्ण बदायिया, श्रीमती रत्ना-बाई मुराना, श्रीमती मलियाबाई वेद, जगधर लाल भद्रवाल, रघुनारायण यादव, किरनूराम भाई, मुलमललाल वर्मा, इतवाररीराम कृष्ण, रामनगोपाल चन्द्रबशी, रामदयाल अग्रवाल, गजधर प्रसाद वर्मा, किरनूराम वर्मा, छोटेताल वर्मा, सुबंदाव वर्मा, जयपाल प्रसाद वर्मा, हरिप्रसाद अग्रवाल, सुन्दरलाल माहू, केनूराम राहू, श्रीमती पार्वतीबाई, विद्या-यादव राज वैरकर, सो० पाद बीबी, चतुर्भुज सुविद्या, श्रीचरनाथ भद्रवाल, भित्तारीराम जी वर्मा, गोमदासजी बायणगढ़, विद्याय-राजजी चन्द्रहर, गणभूदनाथजी, श्रीमती पुष्पा भद्रवाल, चन्द्रभान सिंह किरमौर, तुलसी प्रसाद मुस्ता, श्रीमती चंजनीबाई दानी, माधवर निपाठी विरय, बालाबाबू, शान्तराम वर्मा,

बार : मांगीलाल जोगी, प्रभाकर मां-निक, रामचन्द्र जैन, लीलाचन्द्र दुबे, बानी प्रसाद दास, राधेश्याम वैदिक, चन्द्रनाथ जोगी, नरहरि जोगी, श्रीकृष्ण पुरोहित, मोहन सिंह यादव, श्रीमती कन्हूत कौशिकी मुता ; मांगीलाल चहौर, सुनेकर भाई, रामसिंह, मांगीलाल, श्री बारा, कनिष्क जैन, ललनलाल साहोटी, बेकनचन्द्र जैन, रमेशचन्द्र पाटील, राजाराम, मुरजमल महेन-बाबू, पुरमोलम भाई, बन्वारीराम, लखनन, मीना, बाबूनाथ, श्रीमूलप्रसाद, बडीनाथ,

समाल पटेल, कृष्णसिंह, शूरता, सीनारामजी ताटके, नारायण राव चित्ताम्बरे, दयाराम, श्री व श्रीमती विमलचन्द्र जैन, मांजीलाल प्रहरी, भूवनेश्वर शर्मा। रत्नलाम्: विमलाबाई। उत्तरपुर : शिवनाथ शर्मा, हरिश्चन्द्र। जर्जन : बड़ीप्रसाद शर्मा। अन्धेराज सिंह बटेल, श्रीमती विमला पटेल। घानापाठ सीताराम मयान, फगुलाल धामने, गोपाल रावजी सामीकर, घरमाराज बिबेन, मूरलाल डोगरे। विपश्चिमा : ज० प्र० तिपल। हीरामाबाद : सुरेश दीवान, हरिदास मजुल सत्येन्द्र त्रिपाठी।

बैतूल : केशवराज तितितकर, दीलत राम देशमुख, यादवराज घोटे।

दुर्ग : पंचमलाल जी, पंचरामजी, ईश्वर दास जी।

बिहार

मधुवनी: भवानन्द शर्मा। तन्पालपरगना लक्ष्मीनारायण राय। बेमूसराय : श्रीमती जानकी देवी। सहरसा : रामजी पोद्दार। चम्पारण : ललितेश्वरी प्रसाद सिंह, ललितेश्वरी चरण सिन्हा। समस्तीपुर : डा० रामलखननाथ। श्राचायं सीताराम लाल, सारस्वती, जगदीशप्रसाद लाल। पटना : सर्वनारायण दास, बड़ीनारायण सिंह, उमेश चन्द्र त्रिवेदी, राक्षकुमार प्रसाद, चन्द्रेश्वर महता।

पश्चिम बंगाल

कलकत्ता : गोपीराम भद्रवाल, भीम-प्रकाश गुप्ता, रामप्रताप गोलाल, राजाराम गुप्ता, जीवनमल दुग्गड, दुग्गमलजी, गजानन्द, भद्रवाल, सोहन लाल मंडर, प्रयाग लाल जालान, कमलसिंह फुगलिया, रामकिशन गुप्ता, सम्मतलाल सेठिया, जानीराम दाखन, रंजीत सिंह मांडिया, बैसरीमल सेठ, शान्ति लाल बरांडिया, कल्याण चन्द्र जैन, श्रीमती नन्दिनी भाटिया, श्रीमतीनीला भाटिया, गीता पोद्दार, केशवदेव सिंहानिया, गिरधारीलाल हरिलाल देसाई, हरिलाल शी० शाह तेजूमल दयाराम, वैजनाथ मोदी, भीकमचन्द्र जैन, केशवचन्द्र बागडी, श्रीमती कुमुमलता मोरे, श्रीमती सीतादेवी बागडी, श्रीमती मूरजदेवी बागडी, श्रीमती शान्ति देवी बागडी, श्रीमती लक्ष्मी देवी पुगलिया, भीमप्रताप, सुवच सेन, पुष्पलता सराफ टुंगली : पं दिनेशचन्द्र

मुकुर्जी, मणिन्द्रनारायण राय, राजनारायण कुन्डू, चौबीस परगना : निकुञ्ज चक्रवर्ती ठाकुर, उजाला करमाकर। मिदनापुर : ईश्वरचन्द्र प्रमाणिक।

उत्कल

काताहापरी : ध्रुवचरण महन्ति। कटक : कृष्णसिंह, लम्बोदर खरा, प्रेमगान्ध, एलिमा जयवाप, हरि टवरिया, पुरिया बिलु, करामुर विभवनाथ, नातू गुडा, रतनदास, श्रीमती शान्ति देवी, रामचन्द्र नायक।

आन्ध्र प्रदेश

सिकन्द्राबाद : हरिधोम, श्रीमती एकमणी उत्तमचन्द्र, उत्तमचन्द्र पन्डराग पश्चिम गोदावरी : व० वे० नू० अण्णाराव। धारगल शिवातन्द मेघवी पटेल। विजयनगरम् : श्रीमती डा० सत्यवती। हैदराबाद : विष्णु-शंकर पलवीकर, मगनचन्द्र वेदी।

महाराष्ट्र राज्य के अग्रमन्त्री म० घ० चौधरी लिखते हैं : 'हूँ विनोबाजी की उपवासदान कल्पना श्रुतिवारी ही हूँ। उस योजना में मैं भी शामिल हो रहा हूँ। शीघ्र ही इसमें शामिल हो सकें ऐसी कोशिश कर रहा हूँ। श्रुद्धदान पर चलने वाली धारो-लन जनता में सच्ची शान्ति वा निर्माण कर सकेंगे।

पीलीभीत (३० प्र०) के स्वामी विपदानन्द को लगा कि वे अधिक से अधिक म्यारह साल और जीवित रहें, तब बचो न म्यारह साल के उपवास दान वा पैसा जमा करा दिया जाये। पीलीभीत सर्वोदय मंडल को वे एक साल का पैसा दे चुके हैं। भगले दस लाखों का २५० रुपया सर्वे सेवा सच को भेजते हुए वे लिखते हैं कि यदि श्रुद्धदान से मिला पैसा योग्य रीति से खर्च किया जाता रहा तो सर्वे सेवा सच को पैसे की कमी पड़ेगी नहीं।

कर्नाटक

धारवाड : सुनिगणा लक्ष्मणा। बेलगांव मुत्तप्पा गुरु सिद्धप्पा। उत्तर कानारा : नगेश एन० रायस। हुबली : डा० ए० वी० हुडलंगोल।

केरल

कलौचट : स्वामीजी मुन्दरदास, श्रीमती निर्मला मेनन, श्री के० राधाकृष्ण मेनन।

तमिलनाडु

रामनाथपुरम : जी० नटराजन, ई० एम० वीरकाली वेदार सडुरई : देवी रिजवाजी निर्मल वेद, लक्ष्मी बहन, सो० धन्या कामी, मद्रास : धिनमूराल शर्मा।

दिल्ली

नटवरलालजी गोयनथा, रामगोपाल गार्डोदिया, २० रा० दिवाकर, श्री० आराम राम।

महाराष्ट्र

वर्षा : गंगाधर गणेशराव पांडरे, तुलसी दास मोतीलाल चांडक, जानराव राजत, भगवतराव सीतारामजी चोरे, रामचन्द्र ठाकरे, रामचन्द्र प्रतापे, भीमराव जोशी, श्यामराम महाजन, शान्दाराम कुलकर्णी, भीमती आशा तांरे, रामचन्द्र बाजीराव, लक्ष्मण बुध्याजी शिंदरे, मधुकर सदाशिव बोडे विठ्ठलनाथ गुणवत्त देसापाडे, गुलाब गोमा कुलमेपे, उमराव मोतीराम, बाजीराव पंक्, दत्तमिका सोवडे, जगन तोडाराम, डोगू सखाराम जगुनाथे, गिरधर तुकाराम, राम-विष्णु, चन्द्रभागा मुखदेव, जयवन्ती जयदाम सरस्वती गणपत बिलवणकर, इष्णाबाई नारायण उभंग, वेराजबाई भानुचन्द्र वासर, राधाबाई बेपा पराते, सताबाई केशव देशमुख पारंतीबाई निनाथे, पंचकुलाबालाजी भोयर, मानबाई धत्रुंन, सुभद्रा बाई यशवत लिमबे।

गिरजाबाई केशवराव, पुताबाई वाशीराम, बैनाबाई गणपत चौपरी, श्रीमती तानाबाई सराशिव कोठाले, श्रीमती नीलनीवाई मारोत राय नरडे, श्रीमती सीताबाई सखाराम, श्रीमती गीराबाई जयराम घाटे, श्रीमती विगाबाई मोना गवली, श्रीमती धनुवाबाई भानुदेवसिंह ठाकुर, श्रीमती लक्ष्मीबाई गणपत करबुते, श्रीमती व्यवस्था देवना, श्रीमती जनाबाई चगत बडू, श्रीमती जुलमाबाई शारवे, श्रीमती यमुनाबाई सीताबाई गवली, श्रीमती सालबाई सराशिव, श्रीमती लक्ष्मीनारायण मानपारी, गारामण जाजू, श्रीमती डा० मुनीला मंथर, प्रवीणबंग, संख्यनारायण बजाज, कुमारी सीता वाघमारे, बेबी धृगरे, रामलाल ठाकुर, मुमशा रपडे, चन्द्रबला भट्ट, कु० प्रभा बडू, कु० शट्टलला भुलवरे, कु० कुमुम बाघमारे, कु० येवी भट्ट, कु० बाप्ता भुजबेले, कु०

उपवास दान उद्धार में उधारी-प्रथा समाप्त करता है

शिवनारायण शास्त्री

उपवासदान का आधार पुराना है किन्तु विविधोप में वैज्ञानिक समाज ज्ञाति है, प्रत्याप्त चेतना है। उपनियम काल के मूल्यों को अर्वाचीन युग में विकसित करने की इस दान ने नई दृष्टि भी प्रदान की है। शक्ति सरल जनि होती है, सकलित उपवास दिवस में भूख की स्वाभाविक व्यथना नहीं होती जैसी कि धनदास भोजन न मिलने पर होती है। भगवत्सिद्धि का आधार ही स्वतन्त्र प्रदान करता है। फिर भी एक दिन के उपवास का भी विभाजन दो दिन में धानी और से करके जो सर्वथा सर्व सुतम हो सकता है, लोगों की स्वेच्छा पर भी कोई अतुल्य नहीं लगाया है। जो विनोदा-जीवन की विविध विधियों (११ और २५) को स्वीकार करने से विनोदा के जीवन से सम्बन्ध हटाकर विना नहीं रह सकते। विनोदाने भवन प्रह्लाद की उक्ति को बार-बार धरने प्रवचनों में दुहराया है कि मैं इतने को छोड़कर अनेका मुक्त होगा नहीं चाहता, फिर ऐसा धाम्य प्रवचक कौन होगा जो ऐसे अपूर्व लाभ से अपने को वंचित रहे? दूसरे विनोदा धरने आधार में रहने हुए भी लोगों के जोके तक पट्ट कर, माँकर यह देख रहे हैं कि यह क्या और कितना खा रहा है। 'तेनत्येनेन

भूजीपा' का यथावत धारण कर रहा है? उपवास दिन के दूसरे समय में दैनिक भोजन के प्रतिरिक्त फलाहार या दुग्धाहार जैसे विशिष्ट वैकल्पिक आहार का आग्रह न करने से सर्व सामान्य जन को सुखभता ही प्रदान की है।

सर्व सेवा सप सर्व के लिए है तेविन धम तक इसका प्रत्यक्ष परिचय बौद्धिक या चेतन भागरिक तक ही सीमित रहा है, किन्तु उपवास दान से उसकी सर्वव्यापकता की सभावना प्रकट हुई है। उपवासदान वह माप है जो धनीन और बर्नमान का धाकसव करके भविष्य की अनेक विषय सभावनाओं से परिपूर्ण है। यह! परोपदेक पाठित्यम् वाली बात नहीं चल सकती। भूदान-धामदान की गति-शीलता में जो अंतराल रहा उसकी शक्ति को यह पावन दान पूरी तरह भरने में समर्थ है।

एक वर्ष वा एक साथ त्याग धनपद से विद्वान तक और संपन्न से गरीब तक के बीच बडिनाई अवश्य उपस्थित करता है। कुछ लोगों को एक साल के उपवासों की प्रथिम राशि देने में कष्ट होता है लेकिन साथ ही वह उद्धार में उधारी की प्रथा समाप्त करता है। धर्मस्य स्वरिता गति की जानकारी करता है।

पाटुरकर, रामकृष्ण मारोतराव चादुरकर, धमदादास माधवराव वादरे, सदाशिव बापूजी धरालकर।

यवतमाल श्रीमती अंजनी धष्पाजी साठवरी, कृष्णराव केशवराव गौड, श्रीमती सुमति रामकृष्ण पटनागलकर, रामचन्द्र सूरजमन राठी। बम्बई गुला ओहोल, नरैन्द्र जी दाने, ज्ञानचन्द्र पी० मुद्दीचन्द्र, श्रीमती वत्सा भावचन्द्र, जयराम मा विश्वकर्मा सतारा क० ५४० सक्कीम, डे० ए० देशपांडे भंडारा। दिनकर दोले, लक्ष्मण भाडकूजी शंडे, हरिभाऊ भारोतीराव लिडके, महादेव रघु कुभारे, वत्सानेय मुकुन्दराव, रामदयाल धनपाल पटेल, धमरावती : डे०३० पीतदार, बालकृष्ण धारण बोबडे, रामकृष्ण धारणार-वेल्लसरे, राजेन्द्र भालवाणी, श्रीमती सरोज मालपाणी, रामेश्वर बडी नारायण

पाण्डेय। बोड : सुखलाल जी गणेशलाल बजान धूलिया : सुरेत गर्ग, रामदास सम्भत धीवरे, श्रीमती कीनल्पा ध्रुववाल, पनध्याम-दास सूरजमन धनपाल। कोल्हापुर : माधव रामचन्द्र दलवी, श्रीमती रा० दसनी।

जलगांव : धनिलकुमार जानु, श्रीमती गुला जानु, नन्दलाल रामनारायण बाहेरि, सदानन्द भाई खानचन्द, डा० सतिता राठी, श्रीमती मानकृषर बाई, श्रीमती सरोजाबाई सुरार्या, नन्दलाल रघुनाथ नावरा, राजकुवर नन्दलाल शबररा, सुमीतबाई श्यामसुन्दर, कस्तूरवा बाई श्रीकृष्ण सडे, गीतादेवी, रा० ०० मंत्री, शान्ताबाई श्यामसुन्दर मूदडा। प्रकोता श्रीमती राधाबाई, गोयनका। बुलडाणा, नृपचक्र शिवराम सायजी नागपुर: प्र० गो० वेदुणीकर। सागली : वि० धों० गोरे वत्सानेय, ग्लोक शिरालकर परमधी। रपनाधराव विश्वनाथराव।

बम्बई : चन्द्रकान्त हीरालाल शाह, शकुन्तालाल बहन धडवाणी, प्रभाकर बलवत राय मेहता, माकण्डेय भी० मेहता।

गुजरात

धमदादाबाव रामजीभाई धरमसीभाई सोनोनी, गगोत्री रामजीभाई शाह, इन्दुबहन राखीबाई सोभया, सुराभाई, सुराभाई भरवाड मनुभाई रतिलाल, कमभाई गुवाभाई मुंघवा मूलजीभाई नारायण भाई, प्रवीण एस० बडवणिया, मधुमा चुडासभा, भीमजीभाई बेचरभाई बजारामा, रमोलाबहन अजीत भाई, मुकुला बहन चिम्बलाल शाह, बडोडा : राजेन्द्र महेश, मुलजीभाई लदमीदास, डा० तवनीत भाई पीतदार, कमला बहन चतुर्भुज शाह, जूनागड : सत्यप्रेमी सरस्वती, मोहन लाल ध्यानलाल माडविया, कस्तूरी बहन च० नेवपाणी, देवी बहन मझाणी, लीतामर भाई मी० दावडा, प्रीतमदास पाटुमल, उत्तमा बहन प्रीतमदास जेठवाणी, भगवती बहन सु दराज, तेजराजजी, सीमजी डाड्याभाई कजसागरा, धनमुया बहन वालाभाई नाना-वटी, कीगल्पा बहन एम० नानावटी, मोरी वल्लभ भीमजी, दादन बहन विसचन्द्र, महेश चन्द जपाणुकरजी कार, लक्ष्मण भागचन्द्र मझाणी, भोजाभाई वीरमभाई राठोड, मानकृष्ण, देवराज जोशी, जगजीवन मरेर

धन्तला पेंडरकर, क० कुमुम हजारे, श्रीमणपत सोनटके, बखाराम जोधे, सोनबा ह्वाडे, श्रीमती सित्तु ठाकरे, क० मीरा हजारे, क० कभला भाई, क० पधतुला भुल्लरे, श्रीमती सधुबाई माहरे, क० देवी महादेव बनरे, श्रीमती हीरालसाठेजी, दुर्गाप्रसाद शर्मा, भागवत रावाराय कडे, दिनकर हरिभाऊ बांले, मारोतराव जम्बुजी डहारे, दादा भीधर, माधव गोपालराव मलेजे, रामसुरत प्रसाद, कनकलाल श्वार, रामनाथ लालसाठे, चिन्तामण दोभाजी येवले, श्रीराम बापुदेव सातोड-कर, धनराज रामकृष्ण चादुरकर, सन्तोष सावनी राउन, मुकेशोत्तम गुणवन्तराव सदागकर, दादाजी बापुराव उपने, दुर्गोत्तम देवाराजजी ठाकरे, मुदाम गणपत ताकसाठे, माऊराज कोणडणे, मारोतराव धारण उडके महादेव बलीराम गिरडे, महादेव धामरावजी

उपवासदानियों की सूची

चन्द शाह, बापजीभाई भागजीभाई पुद्गलभा
 पुरत : नारायण नाथूभाई पटेल, विमला
 बहन रमणीकाल शाह, मालती वहुता ज्योति
 भाई देसाई, ज्योतिभाई देसाई, कचन बहन
 प्रवीण भाई शाह, तरला बहन बाबूभाई शाह
 सावरकांठा : बल्लभदास प० दोशी, बहेचर
 भाई जगामाई पगौ । धमरेली० शालजी
 केसवती चामलपगौ, देवायत मोर, चन्द्रकांत
 विधाराम त्रिवेदी । अरुच : पद्मा बहन
 प्राणनाल चौकसी, नानूभाई मजदूर, सोम
 भाई पटेल सीमरथा, कान्तिभाई मणिलाल
 रावल, मीनाश्री बहन यती शंकर जोशी,
 भुवना बहन ब्रदीनकर जोशी, कु० रक्षाबहन
 बदीशकर जोशी, रत्नसिंह भीमसिंह डोंडिया,
 सविता बहन रत्नसिंह, ओडिया, महेंद्रप्रसाद
 पीरखराम जोशी, मानसिंह का० भाई बाबा
 महाशंकर सुरपोसामदास भट्ट, कान्तिनाथ
 नरभयम ध्यास, घनरामदास दलपतराम
 जोशी, मंगलनाथ गणपतराम ध्यास, दीनू-
 भाई प्रमथालाल पटेल, कुमुद बहन दीनुभाई
 पटेल, सतकुमार हरिश्चकर जोशी, रमेशचन्द्र
 मणिराजक जोशी, कल्याण सिंह भास्करसिंह,
 बनेसिंह भीमसिंह डोंडिया, दीलतसिंह
 रणछोड बाबा, लुमन सिंह मोहनसिंह,
 गुलबहन दस्तूर । पीरखन्वर : सुधील झा०
 पंडित । मांडवी डा० मनहरलाल मंगलनाथ
 जानी । खेडा : मणिभाई बहेचर भाई सोलंकी
 जादवजी घोडवजी सोलंकी, चिर्मनभाई
 रणछोड भाई । महेशाणा : मालजी भाई
 जीवाभाई, रामभाई मनोहरदास पटेल, शाह
 कानिलाल मधुददास, रामभाई श्री पटेल ।
 भायबनार : भारती बाबूभाई रावल, बसला
 बाबूभाई रावल, मनुभाई शताभाई कर्षीरिया
 नानूभाई मोहनलाल शिरोया, मुकदराम
 प्रतापराय मेहता, वैशवभाई भीराभाई वाता
 गोपालभाई कानजीभाई वाडंडिया, ललित
 चन्द्र भानुशंकर रायगुह, भीमजी भाई ही०
 जसणी, उकाभाई मोहनदाई पटेल, केसुभाई
 भगवानदास भायबनार, लखीभाई नयूभाई
 डोगा, बल्लभभाई राजाभाई पूट, मजुला
 शांतिलाल त्रिवेदी, नर्मदा शांतिलाल त्रिवेदी,
 सुभमा शांतिलाल त्रिवेदी, भारती शांतिलाल
 त्रिवेदी, प्राणवेश शांतिलाल त्रिवेदी, पुष्पा-
 भाई गोविन्दजी, मद्या बहन झा० तिमगौ,

भगुलता भाई तिमगौ, कानजी भाई हर-
 गोविन्द सोनी, मोहनभाई जेठभाई शिरोया ।
 कच्छ : कर्मसिंह भा० टोक, दुंदराज दुवायल,
 कु०धृष्ण्या के भ्राणणी, धमतरसिंह लक्ष्मीदास
 नानावटी, पावतीदेवी इन्द्राज, परसराम
 पतूगाम ललाणी, नू० लाजवन्ति परसराम
 ललाणी, श्रीमती हरिआई परसराम ललाणी
 परमेश्वरी बहन एम० वासनानी, देवजीभाई
 खीमजीभाई पटेल, गगाराम भागिमा, शांति-
 लाल भूरालाल शाह, जयराम ठ० उक्कर
 मोरलिया धारसी राधवजी, पोबा भारमल
 शाह, नाथाभाई वगवीर, शाह जवाहर
 मंगलनाथ, भीमजी दामजी कुलडीबा, बाबूभाई
 भूराभाई शाह, पेठावीरा बेरा, नरसीभाई
 गाला, शांतिलाल माणजी दोशी, रतिलाल
 वीरचन्द दोशी, जगसी जीवराज दोशी भीमसी
 गागजी सावला, चिमन भाई के० गुधारा,
 बसंतभाई देसाई भाई पटेल, मणिलाल
 बालचन्द सधवी, रामचन्द्र जोशी, चन्द्र
 जोशी ।

राजस्थान

बीकानेर : देवीदत्त पत, बलवन्त सिंह
 रास्त, भामराज शर्मा, लक्ष्मी चन्द तिवारी,
 बंशीधर शर्मा, पूतमचन्द चडक, लजानचन्द
 मिश्र, तारचन्द्र तिवारी, गुभकरण शर्मा,
 सुधील कुमार शर्मा, विश्व गोपाल दासदेव,
 हीरालाल छगणी, धानसिंह मेहरा, भालम
 सिंह नेगी, शतितचन्द्र पत, नारायण अग्रवाल
 फूलराज गण, भानन्द सिंह मेहरा, मालाराम
 बापलाल, किशनाराम, शाखाल, मोदाराम,
 फूलचन्द बर्म, रामस्वरूप शर्मा, शांतिसिंह,
 खेताराम चौधरी, मुहम्मद हुसैन, राम बाबू
 शर्मा, जसकरण नाहटा, बलाराम, धवल
 राम, रघुनाथ सोनी, हनुमान, बेचनराम,
 प्रेमचन्द विस्वा, खेताराम, द्वारिका प्रसाद,
 गणुदरान, अंबर ध्यास, रायजीलाल, शम्पा
 लाल पटवा, जिनसिंह राठीर प्रनाराज चन्द
 जैन, धीमती मनोरमा आचलिया । जयपुर :
 दानमलजी मुचिग, बसन्तलाल मुचिग, श्रीमती
 विमला कुमारी मुचिग, हीराचन्दजी खवाड,
 उमरामचन्द चौरडिया, छीतरसमल गोयल,
 लक्ष्मीचन्द भडारी, बल्यण चन्द्र माहेश्वरी
 पुडू : चन्दनमलजी पीवा, मूरजमल दुग्गड
 जौहरी, मोहनलाल जैन । उदयपुर : देवेन्द्र
 कुमार बनार्जट : भीलवाड़ा : केशरपुत्री

गोस्वामी । जैतलमेर : इरमाइलजग, इरमाइल
 टेकर, श्रीमती बानी, श्रीमती मीराबाई
 मुंहदर, श्री गफूर मोहम्मद, माधाराम,
 बलीमोहम्मद खान, कमरुद्दीन, टिकुराम,
 दयारामदास, भगवानदास भाटिया, मदनलाल
 पुरोहित, भवरलालभूरा, गोपालकृष्ण भाटिया,
 राधेश्याम चडक, मदनलाल भूतडा, ब्रदी-
 नारायणजोशी, नन्दकिशोर भाटिया, भगवान
 दास माहेश्वरी, प्रेमशंकर व्यास, शिवनाथजी
 छागणी, लक्ष्मणदासजी खत्री, गंगासिंह जी
 मोहता, योगेन्द्र प्रसाद शर्मा, तोलाराम जी
 वंवलिया, भवरलाल सुखहालचन्द धीमंगा-
 नगर : रामस्वरूप सिंह भटल । तिरौहो :
 गोमूल भाई सो० भट्ट । जयमेर : बालकृष्ण
 गण । भरतपुर : अगदीशप्रसाद गण, सोहन
 लाल भद्रवाल, दुर्गाप्रसाद, टोक : रामेश्वर
 प्रसाद सोमानी । सवाई माधोपुर : चिरेजी
 लाल शर्मा ।

(पृष्ठ ५ का शेप)

मीर यहां के तटगो की रोजगार की तलाश
 से मीदानी क्षेत्रों की छोरे पलायन का सपता
 है, लोगों को वर्तमान आर्थिक तुरावस्था से
 छुटकारा मिल सकता है मीर यहां के लोगों
 में व्यावसायिक व व्यवस्थापकीय क्षमता का
 विकास भी हो सकता है ।

उपरोक्त दो भागों के भलावा पत्पर
 सदानों पर काम करने वाले मजदूरों को
 नियमावली मजदूरी, योनस व अन्य सुवि-
 धाएं देने की माग भी की गई ।

श्रीमो तब ववैरी के मालिकों को जनता
 की शांति का ज्ञान नहीं हुआ था परन्तु सीपी
 कार्यवाही प्रारम्भ होने पर उन्होंने करस्ट
 बदली है और लाइम स्टोन खनि
 एनोसिथेनन के एजेंट बननेलो मीर भद्रालतो
 का चक्कर लगाने लगे हैं ताकि कानून मीर
 प्रशासन को खरीदने का पटयत्र रचा जा
 सके । यदि गिरफ्तारियां व दमन चक्र प्रारम्भ
 होता है तो शांति पूर्ण आन्दोलन उग्र रूप भी
 ले सकता है और टिहरी-देहरादून जिले का
 विद्यार्थी गण, जिनका नैतिक समर्थन आन्दो-
 लन को मिल रहा है भी इसमें बूझ सकता है ।
 सतनाना से आन्दोलन का प्रभाव टिहरी
 जिले के ही राणीचोरी के पास की बना
 खदान पर भी पड़ सकता है ।

अस्कोट से आराकोट तक पदयात्रा

भारत-तिम्बत नैपाल सीमा पर स्थित विठोरपट्ट जिले के अस्कोट गांव से २५ मई को उत्तरालखण्ड के युवकों की ६० दिवसीय पदयात्रा प्रारंभ हो गई है। सीमित पर्वतीय जिलों के दूरस्थ गांवों की यात्रा करते हुए इस यात्रा का समापन २५ जुलाई, ७४ को प्रमदर शहीद की देव 'सुमन' के बलिदान दिवस के दिन उ०प्र० हिमाचल सीमा पर बसे हुए आराकोट गांव में होगा। पदयात्रा टोली के संयोजक शंभुशेखर पाठक ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य पर्वतीय युवकों में गांवों के कठोर जीवन, के साथ समरस होने का प्रवर्धन प्रदान करना है, जिससे उनमें पर्वतीय क्षेत्र के विकास एवं स्व-निर्माण के प्रति दिलचस्पी पैदा हो। पदयात्रा टोली में सर्वश्री कुंवर प्रमन, प्रतापसिंह 'गिलर' और विजय जयशर्मा के प्रत्याग मुन्दरलाल बहुगुणा भी हैं। उ० प्र० के मुख्यमंत्री हेमवती नदन बहुगुणा ने पदयात्रा की सफलता के लिए शुभ-कामना व्यक्त की है।

●महाराष्ट्र छात्र आन्दोलन धामे दिन बढ़ता जा रहा है। सत्ताईस मार्च को पुलिस ने नीरुरी मांगने वाले दो मुक्तिधित युवकों की हत्या की। उसकी न्यायिक भाव की मांग के लिए महाविद्यालय के छात्रों ने दो अप्रैल को शुरू होने वाले परीक्षा का बहिष्कार किया। फार अप्रैल को महाराष्ट्र शासन ने न्यायिक जांच स्वीकार की। आन्दोलन जारी ही रहा।

●महाराष्ट्र छात्र आन्दोलन, पिछड़े हुए क्षेत्र के विकास का सवाल प्रादि प्रमन उठाये गये हैं। इस समय बड़ी संख्या में सामरिक तथा सत्ताखंड और विरोधी दलों ने आन्दोलन का सन्धि सम्बंध किया। परिणाम स्वरूप महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को नागरिक तथा छात्रों के दो प्रतिनिधि मंडलों की बात चीत के लिए बुलाने पर मजबूर होना पडा। एक सप्ताह तक यह बातचीत चली। विकास के प्रमदर पर कुछ सामाजिक कार्यकर्ता आंदोलन से प्रलग पड गये, कुछ छात्रों को भी आंदोलन

से प्रलग करने का प्रयास हो रहा है। युनिवर्सिटी ने परीक्षा की नवी तिथियों का एलान कर दिया है।

छात्र आंदोलन अपनी ताकत पर धामे बढ़ता जा रहा है। छात्रों की विद्यालय रेली में परीक्षा बहिष्कार का कार्यक्रम चलाना तय हुआ। छात्र सघर्ष समिति की पुनर्रचना की गयी है। तट्टण शांति सेना आंदोलन को पाच जिलों तक सीमित रखने के बजाय व्यापक करने का प्रयास कर रही है। महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल खास इस विषय पर चर्चा करने के लिए बैठक बुला रहा है।

यह आंदोलन भारतीय स्तर के आंदोलन से जुड जाये तथा गांव-गांव में पट्टच जाय इस तरह के प्रयत्न जारी हैं।

●होशंगाबाद ने निरट रोहणा ग्राम में गत २८, २९ मई को तट्टण शांति सेना का दो-दिवसीय शिविर सजान हुआ। ग्रामीण युवक गांवों की समस्याएं हल करने की दिशा में क्या पहल कर सकते हैं इस बारे में शिविर में विचार-विनिमय हुआ। वर्तमान समाज के दांचे में परिवर्तन की आकांक्षा युवकों में अधिक तीव्रतर होती जा रही है। प्रमदर नगर और ग्रामस्वराज के नाम के लिए ग्रामीण और शहरी युवकों का सम्मिलित कार्यक्रम प्रारंभ करने की पहल शुरू करने का भी निश्चय किया गया। शिविर में भासपास के देहातो के ३० नवयुवकों ने भाग लिया। सचालन श्री सुरेश दीवान ने तथा मार्गदर्शन स० प्र० सेवक सघ के मंत्री श्री बनवारीलाल चौधरी ने किया। शिविर में भाग लेने हेतु द्विदवाडा के नीतकार रामकुमार गर्मा, होशंगाबाद के प्रसिद्ध साहित्यकार माहेश्वर तिवारी एवं गांधी शांति प्रतिष्ठान, इन्दौर से प्रमोक्त नराने गये थे।

कुलिया भगत की पदयात्रा प्रमन गहौने में उत्तर प्रदेश के फार जिलों-सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ तथा बुलन्दशहर में चली। १२३ मील की पदयात्रा में ३०६ रुपये की साहित्य विक्री की तथा २० गांवों के ३००० बच्चों में सर्वोदय-विचारप्रचार किया।

●शिवरदार मुम्ब मेंले में सर्वोदय कायंनताओं का एक दल मेंले में धामे सतो से मिला। इस दल के मुखी निर्मला वहन ऊया वहन मानवमुक्ति तथा बंधुपराज मेंहेतु की चर्चा स्वामी तत्या-नन्द, स्वामी सनकराल सिद्ध, स्वामी मुक्ता-नन्द, स्वामी माधवानन्द, स्वामी पुरयोत्तम दास एवं अरुणपूत परमरसों से हुई। सतो की धाम्यात्मिक-शक्ति तथा सेवकों की सेवा-शक्ति दोनों की सामूहिक शक्ति देश के नाम में लग सके, ऐसी विनोबाजी की भावना है। समाज पर सतो का धामे भी प्रभाव है, यह बात सभी सतो ने स्वीकार की और विनोबाजी का विचार मान्य किया और कहा कि विनोबा धामे के मुख के महान सत हैं।

●कानपुर में 'सुख फार डेमोक्रेसी' के सदस्य तथा नगर के नोजवानों ने वनस्पति तेल के भोक व्यापारियों के यहा छापा डलवा कर उन्हें गिरफ्तार करवाया। प्रमन में हुई युवकों की बैठक के निर्णयानुसार जिलाधिकारी से भेंट करके राशन की दुकानों पर निगरानी रखने का कार्यक्रम तय हुआ। तट्टण शांति सेना तथा 'सुख फार डेमोक्रेसी' ने पिछले माह नगर की २७ राशन की दुकानों का निरीक्षण किया और दुबानदारों तथा उप-भोक्ताओं की कठिनाइयों की जानकारी ली।

●श्री पैलभाई तायक ने डाम में २० दिन की पदयात्रा के दौरान ३१ गांवों में २१२ नाई तथा १९ बहनों से नशा-मुक्ति का सबल कराया। पदयात्रा की श्रमधि में धामध-शास्ताओं, शांतिवासी छात्रालयों तथा गांव के युवक-युवतियों से पढाई-लिखाई तथा सर्वोदय विचार के बारे में बातचीत हुई।

डाम की सभी पचायतों और शिक्षण-शाळाओं के द्वारा नशाबन्दी पदयात्रा, सर्वोदय विचार-व्यपत्रा, स्त्री जागृति-पदयात्रा प्रादि के बारे में चर्चा हो रही है।

●प्रमन ७४ में गांधी ग्रम्यन केन्द्र, द्विसार में पाच रचितारी गोटिठ्यो की गर्थी। चर्चा के विषय वे. पुलित और कानून सरक्षण प्राकृतिक चिकित्सा और ह्य, भारत में न्याय-पालिका और उसका भविष्य, धाराबन्दी धावरक कर्णों? तथा हम दुली क्यो?

इन विषयों पर विभिन्न विद्वानों ने प्रमने प्रमने विचार व्यक्त किये। इन बैठकों में मैत्री, भुजान यज्ञ, सव्यादुल तथा विनोबा विचार से भी तेल पड जाते हैं।

भुजान यज्ञ : सोमवार, १० जून '७४

आपने अपने हस्ताक्षर दबाव में आकर तो नहीं किये ?

—बाबू

“भाइये, भाइये अच्छा हुआ, आप आ गये, हम आपका हस्ताक्षर ही कर रहे थे।” मुझ्में देखकर मेरे मित्र ने कहा।

वहा कोई बीस-पच्चीस आदमी बैठे थे और सभी चिन्तित नजर आते थे। “आज तो आपके यहाँ बड़ा जमाव है, कहिये क्या बात है ?” मैंने पूछा।

“ये सारे मुसीबत के मारे हैं।”

“तौरियत तो है ?”

“आप बैठिये तो सही, मैं सब बताता हूँ।”

तब वह एन-एक मित्र का परिचय देने लगे।

“आप हैं एच कालिज के प्रिन्सिपल साहब। इनके कालिज का मासिक वेतन बिल जिला विद्यालय निरीक्षक के यहा से वापिस आ गया क्योंकि उनके दफ्तार ने एत राज किया कि क्या पता कि इन्होंने हस्ताक्षर किसी दबाव या मजबूरी से किये हो।”

“यह तो अजीब बात है।” मैंने खेद पूर्वक कहा।

“आप हैं पी० इन्डू० डी० के ठेकेदार साहब। इनका बाजार खजाने से लौटाल दिया गया क्योंकि सबाल यह एडवा हो गया कि इन्जीनियर साहब ने हस्ताक्षर अपनी इच्छा से किये हैं या नहीं।”

“पहले भी कभी इस तरह लोटा था ?—उन ठेकेदार साहब से मैंने पूछा।

“नहीं, इसी दबाव ऐसा हुआ। बाबू ने बताया कि कोई नया कानून ऐसा बना है जिसके कारण यह रोक लग रही है।”

“आप हैं एक लेखक जिन्होंने एक मोटा उपन्यास लिखा है। उसकी पाण्डुलिपि प्रकाशक

को भेजी थी। उसके साथ एक चिट्ठी रखी थी कि यह किताब भेज रहा हूँ, पंजा भेजिये। उसने इस नोट के साथ चिट्ठी वापिस कर दी कि लेखक साबित करे कि पांडुलिपि उसने खुद और किसी से तैयार की है।”

“और पाण्डुलिपि क्या हुई ?”
“और उसने रख ली।” लेखक महोदय ने दुःखी होकर कहा।

“प्रकाशक बहुत चालाक मालूम पड़ता है।”

“यह देखिये, यह मेरे पड़ोसी का भतीजा है। इसको शादी पर तिलक मे समुराल से पांच हजार का चेक मिला था। वह चेक बैंक वालो ने धानर नहीं किया और वह दिया कि क्या पता कि इसने हस्ताक्षर जोर-जबरदस्ती से करा लिये हो।”

“भरे तो हस्ताक्षर मिला लेते।”

“यही तो मैंने भी कहा—लेकिन वे नहीं माने।” बहुत गुस्से से उस तरफ ने कहा।

“आप हैं एक लोक रियेक्टर के मैनेजर, सैकड़ों फिल्में बम्बई से, दिल्ली से आ कर दिखा चुके हैं। लेकिन गल गये स्टेशन तो पारसल बाबू ने बिल्टी का माल नहीं दिया और वह दिया कि हमें क्या पता कि हस्ताक्षर किस हानत मे किये हैं।”

“उत्तरे रील का बस्ता दिया या नहीं दिया ?” मैंने पूछा।

“नहीं दिया साहब मैंने धमकी भी दी है कि नम्पन्सेशन वगुन कर लू गा लेकिन उस ने एक नहीं मुनी और मेरी दिवान यह है कि उस फिल्म का आज से दिवाने का विनायन मैं अखबार में दे चुका हूँ।”

“आप फोटोग्राफर हैं, इनकी गुरानी फर्म है। इन्होंने फोटो मामानें बलबस्ता से मंगाया था, एग्जेंट खुद धाँदर ने गया। लेकिन माल नहीं आ रहा है।”

“क्यों क्या हुआ ?”

“बहु मुश्किल है कि क्या पता कि धाँदर पर हमारे हस्ताक्षर सच्चे हैं या भूटे।”

“क्या तो आपने पेशगी नहीं दिया था।” मैंने उनसे पूछा।

“देव हजार का माल है, वानगी से पांच सौ दे गया।”

“चलिये संरियन मनाइये कि पाच सौ की थपन पड़ी, बाकी बच गये।”

‘अच्छा, यह बूढ़े दादा देहात से हैं, इन को कई साल पहले भूदान मे जमीन मिली थी। वही जोतते हैं।’

‘बही, दादा, गाव मे सब कुपसत है।’ मैंने पूछा।

‘कुपसत नहा है ? हमारा जमीन का पट्टा गांव के सभापति ने छीन लिया।’

‘क्यों ?’

‘यह कहा कि कौन जाने इस पट्टे पर भूदान वाली के जो दस्तखत हैं वह हमने खया देकर या डरा-धमका कर बनवा लिये हो। नये कानून से यह पट्टा नहीं चलेगा। पहले तबदीक हांगी और फिर पट्टा मिलेगा।’

‘तबदीक कौन करेगा ?’

‘सरकार, हमें कुछ पता नहीं। हमारे सामने तो सवाल यह है कि क्या जोरेंगे-बोरेंगे और बचको को क्या खिलायेंगे ?’

इस तरह एक के बाद एक, सारे सज्जनों का मित्रो ने परिचय बताया और उन्होंने अपनी-अपनी दर्द भरी गाथायें सुनायीं।

सब एक साथ पूछने लगे कि हम धन करें तो क्या करें, इस तरह तो सारा कारोबार चौपट हो जायेगा।

मैं सोच मे पड़ गया कि इत मसले का क्या हल हो सकता है।

किर मेरे मित्र ने कहा, ‘एक रास्ता है।’

‘वह क्या ?’

‘आप इन लोगों के बागजात पर प्रमाणित कर दें कि सारे हस्ताक्षर स्वच्छता से हैं और नहीं कोई भूट या दबाव नहीं है।’

‘मैं वहाँ तब प्रमाणित कर गा और किर बैंक चाये, पत्राजे चाये या दूसरे लोग मेरी बात क्यो मानने लये ?’

‘आपका वहाँ तो कोई टाल नहीं गचना,’ उनमें से कई ने कहा।

‘अच्छा, एक दवाज हो सकता है?’—उस तरफ ने कहा जिसे सारी मे चेक मिला था। ‘हा बेदा, बनाओ, वह क्या ?, मैंने पूछा।

‘मेरे ब्याज मे कट जो कानून मसद में बना है, वह तो बैंकन विषयको से हस्ताक्षर को पुष्टि के लिए है।’

‘यह ठुम सही कह रहे हो।’ मैंने कहा।

(बाकी पेज १५ पर)

पिछले ३० माचं की बात है। मुजफ्फरपुर कचहरी के पास एक मैदान मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के एक नेताजी जोर-जोर से गरज रहे थे: 'गांधी का नाम लेने वाले सर्वोदारी गद्दार हो गये हैं...बम बनाने लगे है... देग में तोड़-फोड़ करने लगे है, हिंसा की भाग भङ्ग कर रहे हैं...लोकतंत्र को समाप्त कर देना चाहते हैं विदेशी प्रतिक्रियावादी शक्तियो के दलाल बन गये हैं...' मैदान मे करीब ४ हजार लोगो की भीड़ थी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की 'सालसेना' खाकी हाफवैट धोत खात जमीज पहने हुए मे कोई-न-कोई हथियार लिए संबुद्धो की तादाद मे चारो तरफ 'ड्यूटी' पर तैनात थी। सरकारी पुलिस मैदान मे कही दिखायो नही दे रही थी। इधर-उधर दू दने पर एक चहारदीवारी की झोट मे कुछ सिपाही बेंठे बीठे पीते दिखायी पड़े। भला लोकतंत्र की रक्षा करने वाली, ग्राहिणा की पुजारी, 'देशभक्ति' का टेका ले रखी कम्युनिस्ट पार्टी की सभा से शांति-मुह्यवस्था को क्या खतरा था कि पुलिस के जल्ये, बहमी बिहार-पुलिस के नही, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के, राइफलें लिये, ड्यूटी, गश्त करते दिखायी देते ? उनकी जहरत तो तब पडती, जब कोई शिक्षको, छात्रो, नागरिको वा मोन जुलूस निकलने जाता होवा, उनकी कोई सभा होनेवाली होती जिसमे वे तराए शांति-सैनिक नहोते, जिन्हे सता-गोली तो क्या, भायद परवर फेंकना भी नही धाता, वा वे छाव्न होने, जो भ्रपने घस-तोप को, भ्रपने विरोध को शांतिपूर्ण ढंग से व्यक्त करने वा सत्त्व लिये होते ?

मुझ्फ्फरपुर कचहरी मे: 'ऐसा घण्टाय, ऐसा भूटकरेवो तो अर्धराज से लडाई के पुनर्जागरण प्रतीक्षा में है जलमाच की बँटक के समय सर्वोदय का राजनैतिक दृक्कोण के बारे मे—भी उपयोगी हो सकता है।

उत्तर, मेरी मनोसूचिना इस प्रकार की है। इसलिये भी भाज कोई सचट नही देख रहा है। बल्कि धाँदोलन के नये सूपान के लिए प्रतिबन्ध ऐसा एक विचार, मयध धारम ह्रस्व है, यह बहुत बड़ा शुभ चिह्न है। यदि यह चरएर विनोबाजी के द्वारा नही गणतेयवत्व के द्वारा सामने आनेवाला हो, तो ऐसा विचार

यह लम्बी लड़ाई की शुरुआत है

—रामचन्द्र राहो

समय भी नही देपा गया। जिनवा इतिहास ही गद्दारी वा है, जिनवा विश्वास ही हिंसा पर है, जो भ्रपनी 'सालसेना' को एक सगठित हिंसक शक्ति के रूप मे विवसित करने की कोशिश मे हैं, जो स्वयं दूसरे देश के इशारे पर पाचले रहे है, वे बेचारे सर्वोदयवालो पर ऐसा धारोप लगाते हैं, जिसकी कोई बुनियाद नही। भूठ की भी कोई हद होती है!"

चाय पीते-पीते जहा मैंने लोगो की ये बातें सुनी, बही एक सज्जन ने कुछ बातचीत करने पर कहा कि 'मुजफ्फरपुर से ३१ माचं तक घारा १४४ लागू थी, लेकिन भाज सधेरे ही १४४ हटा लिया गया, क्योंकि इन लोगो को सभा करने थी। धोर फल ही यानी २६ को यहा के शिक्षको ने मोन जुलूस निकालने की इजाजत मागी तो नही मिली। इसना ही नही, इजाजत मांगने के लिये गये हुए धादमी को ३ घंटे रोक रखा गया।'

कानून के रखवाले

मे कचहरी मे दो विचारियो की जमानत कराने के सिलसिले मे गया था। उगमे से एक दुबले-पतले शरीरवाले लडके को पुलिस ने बेरहमी से पीट-पीटकर भ्रमपरा कर दिया था, भिफं इसलिये, कि पिछली १६ तारीख को पडले से पोपित धामसभा के आयोजन पर रोक लगा दिये जाने के बाद भी सभा की जगह पर जुट छापी भीड़ मे उसने एच पर्वा पडकर मुनाते की कोशिश की थी। पर्वा मे कहा गया था कि सभा पर रोक लगा दी गयी

है, इसलिए ध्राप लोग वापस जायें। उसके पडले से ही मुजफ्फरपुर में दैनिक जहरत की चीजो के भाव तय करने का शांतिपूर्ण धादो-लन चलया जा रहा था, उसमे व्यापारियो, समाज-सेवको से मिलकर तरण शांति-सैनिक तर्पा श्रेय छात्र एक भाव तय करके उसी भाव पर लोगो को चीजें मिलें, इसकी कोशिश कर रहे थे। इसी कोशिश मे कुछ चीजो के भाव तय करके इस सभा मे लोगो को जान-कारी दे देनी थी। उस पर्वा मे, जिसे उस लडके ने पडकर मुनाते की कोशिश की थी, चीजो के भाव भी लिखे हुए थे। उस सङ्के को इसी अपराध (?) पर सार-भारकर वेदप कर देने के बाद 'धारतिक सुरक्षा कानून' के अन्तर्गत उसे जेल मे बंद कर दिया गया था। करीब १०-११ दिन बाद, जब राज्य-सरकार ने इस कानून के अतर्गत गिरफ्तार किये गये लोगो को छोड़ने का धादोप दे दिया तो उस लडके को दो-तीन दूसरे गननुनो की मदद से जेल मे ही बंद कर दिया गया। कानून धोर शांति-मुह्यवस्था के रखवालो ने उस पर यह धारोप लगाया कि उसने पुलिस पर धाक्रम किया था, मारने का प्रयास किया था। ऐसा है कानून, धोर ऐसे ही उसने रखवाले।

कैसे पतंगा न्याय इस देश का गधारण गानरिक, अतंगे ही चुने हुए प्रतिनिधियो द्वारा बनाये गये कानून के बल पर ? क्या कानून से साधारण धादमी को न्याय मिल पायेगा कभी ?

तब से धब तब के दरमियान बिहार मे जनता वा आन्दोलन बहुत धागे बड़ चुका है। इस घटना वा जिक्रसिफं इसलिये किया ताकि कभी-किसी दलीलें धोर भारबाधर्प सरकार, धोर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की की धोर से हो रही हैं, उसकी एक भनक मिले।

इस समय यह सवाल जोर-जोर से उठया जा रहा है कि इस तरह के धादोपनो से मोनतंत्र पर खतरा है। क्या सचमुच देगी बात है ?

(पृष्ठ ४ वा पोष)

मंयन टाल नही सकते। इस मयध के धाणो मे ह्रम लोग ध्रपने दिमाग सानुत रख सके, दिल उदार रख सके, भिन्न विचार वाले धादोपन के साथी के प्रति दृष्टिबला न छोयें, सत्य वा एकाधिकार निमी एच वा नही है ऐसा मानें, सिफं शब्दो के जाल मे धोर नारेवाजी मे न फसे रहे,—तो जब ध्रमुत भी प्राणित होगी तब ह्रम सब एक साथ उगसे हमारे धादोपन को पुष्ट एच अधिक तेज स्वी बना सकेंगे।

पिछले २६-२७ सालों से लोकतंत्र चल रहा है। क्या इस लम्बे समय में लोकतंत्र मजबूत हुआ है? हम बराबर यह कहते आये हैं कि लोकतंत्र में दो शक्तियाँ हैं—'लोक' की व 'तंत्र' की। 'लोक' की शक्ति यानी जनता की शक्ति और 'तंत्र' की शक्ति यानी प्रशासन की शक्ति। पिछले २६-२७ सालों में किसकी शक्ति बढ़ी है 'लोक' की या 'तंत्र' की? साधारण बुद्धिवाला भी आसानी से समझ सकता है कि 'लोक' की शक्ति घटी है, और 'तंत्र' की बढ़ी है। सिर्फ ऐसे लोगों को, जो अपनी 'पार्टी' को ही देश मानते हैं, ऐसा लग सकता है कि हमारी पार्टी की चाहे जैसे भी भासन करने की ताकत बढ़ी है, इसलिए लोकतंत्र मजबूत हुआ है। लेकिन हकीकत अगर यह होती तो देश की यह दुर्दशा न होती जो आज हो रही है। अगर आम जनता मजबूत होती, भासन करनेवाली पार्टियों के साथ होती, तो उनकी सभी नीतियाँ, उनके कारोबार सफल होते। लेकिन क्या ऐसा हो रहा है? नहीं, ऐसी हालत में 'लोक' को कमजोर करनेवाला कोई भी काम लोकतंत्र के खिलाफ होगा।

परस्पर प्रतिद्वन्द्वता

अपने देश में 'लोक' दो धुनियायी मामलों में बंजोर किया जा रहा है, आज के तंत्र द्वारा। एक तो लोकजीवन सकट में पड़ता जा रहा है, जिनका दुबहर हो रहा है, ऐसी अर्थ-व्यवस्था खड़ी हो रही है। दूसरा, नेताओं का विश्वास लोगों पर से और लोगों का विश्वास नेताओं पर से हटता जा रहा है। जनता नेताओं के वादों का संश्लेषण देख चुकी है, इसलिए उनके 'वादों' पर उसे कोई भरोसा नहीं रह गया है। उधर नेता अपनी भासन की गद्दी बचाने रखने के लिए अधिक से-अधिक धैर्य और धम्के भी शक्ति पर भरोसा करने लगे हैं, चाहे वह धैर्य देशों सेठों की हो, विदेशी सेठों की हो, चाहे- सरकारी राजाने की हो; उसी तरह उम्दा चाहे विपत्ती का हो, मुर्खों का हो या कानून का हो। क्या इनमें 'लोक' की शक्ति कमजोर नहीं पड़ रही है? क्या यही सिनसिला चलता रहेगा तो लोकतंत्र मजबूत होगा?

इसलिए लोकशक्ति अगर किसी आन्दोलन से जगती है और संगठित होकर तंत्र चलानेवाले हाकिमों और नेताओं पर अपनी नैतिक शक्ति से, शक्तिपूर्ण सामूहिक शक्ति से मजबूत लगाने की कोशिश करती है और इस प्रकार सरकार-शक्ति से समाज-शक्ति अधिक मजबूत बनती है, तो इससे आज के 'तंत्रलोक' की जगह 'लोकतंत्र' की वृत्तिवादी ही मजबूत होती है, लोकतंत्र खतरों में नहीं पड़ता। हाँ, आज की परिस्थिति का नाज-यज लाभ उठा रहे लोगों को अपने दूर स्वार्थों पर प्रयत्न खतरा दिखायी दे सकता है।

आज के लोकतंत्र का तो सब यही एक अर्थ रह गया है कि जनता धुनतव में इनको या उनको बोट से और उसके बाद कुछ न करे। बस, चुपचाप इनकी धलती चक्की में गिसती रहे। लेकिन यह लिलसिला प्राधिर कब तक चलता रहेगा? जनता जब तक सहती रहेगी? क्या सहती रहेगी? क्यों जनता को यह सहन करना चाहिए भी?

जड़ से इलाज

मुजरात के बाद अब बिहार में जो आन्दोलन शुरू हुआ है, वह 'नागनाथ' की जगह 'सोपनाथ' का यानी एक पार्टी की जगह दूसरी पार्टी का राज कायम करने के लिए बढ़ी है, बल्कि इस पूरे ढांचे में बदल करने की बात उसमें से प्रकट होने लगी है। लोगों को साफ समझ में आने लगा है कि जो रोग है उसका इलाज जड़ से ही होगा चहिए।

पूरी दुनिया का रोग

आज सबसे बड़ा रोग, केवल अपने देश में ही नहीं, पूरी दुनिया में एक ही है कि 'राजसत्ता' और 'अर्थसत्ता' ऊपर के केन्द्रों में सिमटती जा रही है और नीचे कुछ सबूत ही नहीं। ऊपरवालों की मर्जी से जो कुछ भी भित जाय, उसीसे जनता को सन्तोष करना चाहिए—यह दुनिया की सब सरकारों की मशा रहती है। अपने को प्रगतिशील कहाने के लिये ये सरकारें एष और तो लोकतंत्र और समाजवाद यानी समाजता और समता के नारे लगाती हैं, तथा दूसरी ओर अपनी शक्ति मजबूत बनाने के लिए समाज में भेदभाव और विषमता को बढ़ानेवाले बरग करती रहती हैं। कोई भी सरकार यह नहीं

चाहती कि सामान्य जनता की शक्ति सरकार के साथ समाजता और समता के आधार पर खड़ी हो। ऊपर के केन्द्रों पर सिमटी हुई राज्यसत्ता और अर्थसत्ता के लिए जो लड़ाईयाँ होती रहती हैं, उनमें भी जनता के के लिए समाजता और समता की बात नहीं होती, सिर्फ जनता को उभाड़कर उसका लाभ उठाया जाता है 'उसी के लीने पर जमे रहने के लिए।

लम्बी लड़ाई की शुरुआत

लेकिन अब धीरे-धीरे परिस्थिति बदल रही है। सारी दुनिया की जनता अब यह बात समझने लगी है कि राज्य और अर्थ की सत्ता को जब तक साधारण जनता के छोटे-छोटे समूहों के चब्बे में नहीं रखा जायगा तब तक जनता का राज कायम नहीं होगा। इसीलिए अब ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया में जनता की स्वराज्य की आकांक्षा और उसके 'स्वराज्य' को छीननेवाले 'तंत्रों' के बीच लड़ाई शुरू हो गयी है। धीमे दिन दुनिया के देशों में जनता के विद्रोह की लहरें सुनायी पड़ने लगी हैं। भारत में भी मुजरात से जो शुरुआत हुई है, वह तामद उसी बड़ी लड़ाई की शुरुआत है।

(पृष्ठ १२ का रोप)

'तो आप एक वक्तव्य देकर उसमें सारी जनता व समाज दान्तरी की इतमिनान दिला दीजिये कि नया कानून केवल विधायकों या राजनैतिक नेताओं को दृष्टि में रखकर बसा तोर से उनके लिये बना है, आम आदमी पर उसमें कोई शक नहीं दिलाया गया है' और इसलिए समाज की जितनी गति विधि है वह बरसूर चलती रहनी चाहिये।'—उस तरह में बहा।

'ठीक है. ठीक है।' सब तरफ से आवाज आई।

'आप एक वक्तव्य देकर केर नीजिये, मैं श्रेय वालों को फोन करके यही धुनाये लेता हूँ।'—मेरे मित्र ने मुझसे कहा। और जो धीमे धीमे थे उनमें एक-एक कुहड़ गन्ने का रस पिता बर चुगुनी-खुनी बिना दिया।

जाते-जाते उनमें से एक ने कहा—

"बाहरे दे शानत। क्या तेरा ईमान।"

राष्ट्रीयी-समस्याओं पर उ. प्र. युवा सम्मेलन

● उ० प्र० तरुण शक्ति सेना और इलाहाबाद युवा मंच के संयुक्त तत्वावधान में १८-१९ जून को इलाहाबाद में युवा सम्मेलन हो रहा है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय प्रश्नों पर युवकों को खुल कर बहस करने, विचार्यक संघर्ष की दिशा तय करने का भवसर देना है। सम्मेलन में जयप्रकाश नारायण भी उपस्थित होंगे। वर्तमान शिक्षा का विफल, लोक तंत्र-विफल की लोच, प्रष्टाचार जो म्रद शिक्षाचार ही बन गया है, महंगाई, बेरोजगारी, ग्रहिसक युवा आंदोलन की तकनीकी-इत विषयों पर सम्मेलन में छोटे-छोटे समूहों में पक्षों की जायेगी। सम्मेलन को आगामी साहित्यकारों तथा नागरिकों का समर्थन मिल रहा है।

● दिल्ली नशाबन्दी समिति ने दिल्ली प्रशासन की शराबबन्दी के प्रति उदासीन नीति का विरोध करने ६ जून को शाम से रात तक शराब की कुछ दुकानों पर सोम्य प्रदर्शन करना तय किया है। इसमें शराब विरोधी पक्ष व साहित्य वितरण प्रमुख होगा। इतर

जहरीली शराब से हुई कुछ मौतों के बाद स्वयं प्रशासन जनता को 'साफ सुधरी' शराब बना कर पिलाने की योजना बना रहा है।

● मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) में उपवासदानियों की संस्था को से ऊपर चली गयी है। शहर के कालेज में काम कर रही दस महिलाएँ अल्पतः भतिरिक्त समय में शहर में घूम-घूम कर उपवासदान सकल्प पत्र भरवा रही हैं। धार्मिक गंगा पाठजाला इन्टर कालेज की प्रधानाचार्य कृष्णा कुमारी इस अभियान में विशेष रुचि ले रही हैं।


● केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि द्वारा मत जनवरी, १९७४ में आयोजित सर्वोदय विचार परीक्षाओं के परिणाम घोषित हो गये हैं। गुजरात, बंगाल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में १८ केन्द्रों के अन्तर्गत १४५ परीक्षार्थी सर्वोदय विचार श्राविक परीक्षा में सम्मिलित हुए। जिनमें से १०८ उत्तीर्ण हुए और ५० ने विशेष योग्यता हासिल की। परीक्षा फल, ७५.५% रहा। परीक्षा में उत्तीर्ण प्रथम पांच के नाम इस

प्रकार हैं : सर्वथी नरेन्द्र कुमार दुवे (इन्दोर) कु० किरण गंगराडे (सण्टवा), कु० विजया जैन (दमोह), नटवर गोपाल जालोरा (जोधपुर) और कु० पुष्पा गोन्वाडे, (वस्तूरबा ग्राम)।





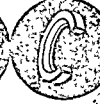
इसी प्रकार सर्वोदय विचार प्रारंभिक परीक्षा में गुजरात, दिल्ली, बिहार, मध्य-प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश से २३ केन्द्रों के अन्तर्गत १४३ परीक्षार्थी शामिल हुए। उनमें ११८ सफल रहे। ४० ने विशेष योग्यता प्राप्त की। परीक्षाफल ८२.५% रहा। प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण प्रथम पांच में सर्वथी प्रखिलचन्द्र, गणेशभाई पटेल, नाया बाल पटेल, सच्चिदानंद तिवारी, कमल किशोर लुकड, कृष्णसहाय पारोड व सुमुक्त अती कुरेशी सम्मिलित हैं। अंतिम दोनों परीक्षार्थियों ने समान अंक प्राप्त किये हैं।

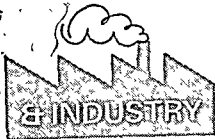
अब ये परीक्षाएँ भागामी अगस्त, ७४ में आयोजित होंगी।

● अमरनाथ भाई २८ मई को जमानत पर रिहा कर दिये गये हैं। वे मई के दूसरे हफ्ते में छरारा में गिरफ्तार कर लिये गये थे।



SWASTIK SERVES HOME



Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and Industrial use.

Footwear and hoses, gloves, moulded products and oil seals, foam rubber, mattresses, pillows and cushions. Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable.

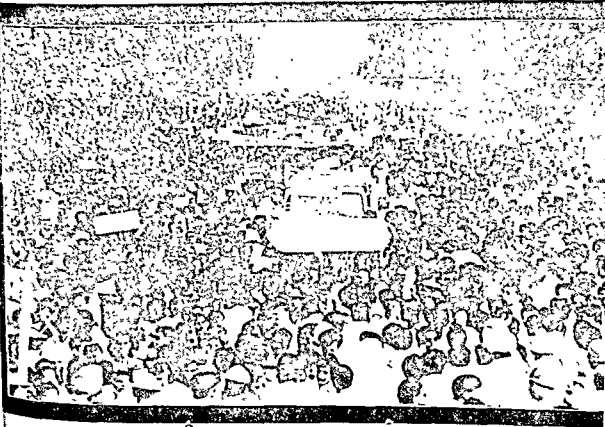
SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.
Phone-411 603.

Continued on P. 29

वार्षिक मुल्य—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिनिंग या ५ डाक्टर, एक घंटा का मुल्य ३० पैसे।
प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १७ जून, '७४



● बिहार में देश की निपटि का महाभारत : प्रभाप जोषी ● बिहार में एक तरफ जनता है, एक तरफ सत्ता : यशवन्त कुमार गर्व ● ग्राम सोंवों की मुक्ति से लोकदासित लड़नी होगी : रामभूति ● जे० पी० राजनीति को लोकनीति की तरफ ले जा रहे हैं : पीरैन रा ● बिहार का जन आन्दोलन एक लाख बीर, नारायण देसाई ● योंडा में मयी जर्मोदारो : नरेन्द्र सोयपुरी जिम्मे-
दारी सरकार पर न डालें : इन्दिरा गांधी ● मुपावतो में काल नहीं बटता : नमकत कुमार

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

विहार में देश की नियति का महाभारत

जयप्रकाश नारायण अंगर विहार के छात्र आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार नहीं करते तो गफूर साहय का बन्दाना और जनविरोधी मंत्रीमंडल कभी वा त्यागपत्र दे चुका होता और विद्यवास्तवीन विधायकों ने विधानसभा बिना किसी के छाती पीटें विस्मृति हो गई होती। अंगर विहार में गुजरत दोहराया नहीं जा रहा है तो उसके कारण भी जयप्रकाश नारायण है। जे. पी. ने मंत्रीमंडल के त्यागपत्र और विधानसभा के विस्तर्जन अंती लोक-प्रिय लेकिन मामूली मांगों को उनके साधारण राजनीतिक धरातल से उठा कर राष्ट्रीय जीवन की मुख्य समस्याओं से जोड़ दिया है। केन्द्रीय सरकार और कांग्रेस सगठन साम-दाम-दण्ड-भेद की पूरी शक्ति लगा कर विहार की सरकार और विधानसभा को बचाने पर कटिबद्ध हो गये हैं क्योंकि वे जानते हैं कि जे. पी. को लोक आन्दोलन विहार में चला रहे हैं उसके अग्रद्वार और सिकड़म की राजनीति को चलाने वाली व्यवस्था भी अंगर जायेगी। दिल्ली से लेकर पटना तक अंगर यथार्थव्यतिरिक्तियों ने खन्कें खोद कर मोर्चे सभ्यता लिये हैं और अपने अस्तित्व की लड़ाई की पूरी तैयारी कर ली है तो इसका कारण यह है कि जे. पी. ने विहार में एक ऐसा जन आन्दोलन लड़ा कर लिया है जो लम्बे समय तक चलेगा, अहिसक होगा उसमें इस देश की नियति तय होगी। सरकार बहुत अच्छी तरह जानती है कि दाब पर क्या है इसलिए वह ऐसा एक भी करतब धाकी नहीं रखना चाहती जो इस जनआन्दोलन को तोड़ने में काम आ सकता हो। पिछले दिनों सरकारी और बांगड़ी लोको ने विनोबा के यथार्थों

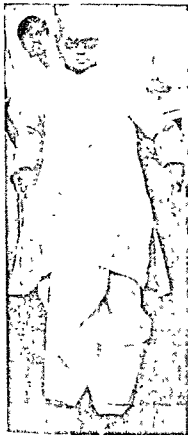
तक वा जो बचम उपयोग घलतकहमी फैलाने के लिए किया है उससे साबित होता है कि वे लोग किस स्तर तक उठर सकते हैं।

केन्द्रीय सरकार, विहार सरकार, कांग्रेस सगठन और उसकी पिछलग्गू कम्युनिस्ट पार्टी अंगर यह सब करती है तो उनके भय समक में धरा सकते हैं। लेकिन इस देश के बुद्धि-जीवियों को क्या हुआ है? क्यों वे एक ऐसी धायातित और भारोपित व्यवस्था की सुरक्षा में अग्रद्वारियों का साथ दे रहे हैं जिसके खिलाफ लिखने और बोलने हुए वे कभी मकले नहीं थे। क्या उनके भी वर्गगत हित-स्वार्थ उन्ही लोगों के हैं जो यथार्थव्यति से लाभ उठा कर जनता के नाम पर अपनी जनविरोधी सत्ता को बनाये रखना चाहते हैं। क्यों जय-प्रकाश नारायण को बार-बार यह चेतावनी दी जा रही है कि अंगर वे मौजूदा व्यवस्था को भंग करेगे तो इस देश में भराजकता आ जायेगी। ऐसा कौन-सा क्षेत्र हमारे सार्वजनिक जीवन में बचा है जहाँ भराजकता नहीं है और जहाँ सत्ता और धन के हाथ में सत्ती नहीं है? प्रश्न की तरह सर्वव्यापी अग्रद्वार इस देश की धात्मा में फैसर की तरह फैलता जा रहा है और कौन है इस देश में जिसे मान्यम न हो कि वह क्यों फँस रहा है? सार्वजनिक जीवन में मूल्यों के दृष्ट पतन और व्यवस्था को खोखला करने वाले अग्रद्वार के खिलाफ क्या दृष्टी लोगों ने बम बोला और लिखा है? फिर ध्यान जब कि एक बहतर वर्ग के समर्पित व्यक्तियों ने गरीब लोगों की रोटी छीनने वाले अग्रद्वार और सत्ता-वादियों की सत्ता को बनाये रखने वाली व्यवस्था के खिलाफ अपनी जान की बाजी

लगा कर मंगल फूँका है तो क्यों वे लोग अपनी खोल में लोट कर भयभीत राजनीतियों को तरह 'हुभा-हुभा' कर रहे हैं? अंगर विहार, जैसे जन-आन्दोलन अग्रद्वार और खोखली व्यवस्था के खिलाफ नहीं चलेंगे तो क्या वे विद्यवास्तवमाएँ और ससद इस देश में प्राप्ति कर देंगी जो तिकडम से बहुमत प्राप्त कर-वाली पाटियों के हारामो के हुबम पर कानू-बनाती जाती है? अखिर इस देश के बुद्धि-जीवियों को क्या चाहिए? जब कुछ महं होता तो वे ऊचे और हाताय स्वर में भिमि यति हैं कि हाय, कुछ नहीं हो रहा है घो-देय मूढ़ने में जा रहा है। लेकिन जँते ही कौनों ऐसा जन-आन्दोलन सत्ता होता है जिसमें इस व्यवस्था को ध्वस्त करने की सभावनाएँ होतें हैं वे लोग भयभीत हो कर यथार्थव्यतिवादियों की और से बकालात करने लग जाते हैं। यह बकालात इन्हे रोटी और मुल-मुविधायें तँ दे देंगी लेकिन उन निष्ठाधो को गिरवी रख देती जो एक देश को उसका चरित्र देती है। विहार का जनआन्दोलन सत्ताधारियों के अग्रद्वारों सगठन को उजागर करता ही है यह इस देश के अनाम सोचने-समझने वाली से भी पूछ रहा है कि उन्हे अपनी प्रास्थाओं के अनुयाय जोने की सार्वक स्वतन्त्रता चाहिए या एक अग्रद्वार के द्वारा फँके गये रोटी के टुकड़े?

विहार वा जन आन्दोलन इन बुद्धि-जीवियों की दुविधा भ्रमवा विपाद के निन्दे तक नहीं चकेगा। वह राज्यशक्ति और राज नीतिक के तमाम पँतरो के बावजूद चल निकला है और उसके पावो में इस देश के करोड़ों पावो की गति और उसकी तनी हुई दुष्टियों में बरोड़ो हावो की शक्ति है। गफूर मंत्री-मंडल वा त्यागपत्र और विधानसभा वा विस्तर्जन इस आन्दोलन की सफलता का माण-दण्ड नहीं है। इसने कारण रातो रात महगाई दूर नहीं होगी न देखने-देखते अग्रद्वार धापी में दुर्गम की तरह उड़ेगा। यह होगा, लेकिन आन्दोलन अंगर अपने लक्ष्यों और साधनों की एकता बनाये रख कर चलता रहा तो इससे पूरे देश का नक्शा बदलेगा। यह ध्य-वस्था बदलेगी जो जनता के नाम पर इसकी रोटी छीन कर और उसे अग्रद्वार बना कर

(शेष पृष्ठ १६ पर)



बिहार में एक तरफ जनता है, एक तरफ सत्ता और जे० पी० हैं प्रतीक जनता की ताकत के

श्रवण कुमार गंगों की पटना से रपट

एक बार फिर ऐतिहासिक क्षण । ५ जून को जुलूस में आने के लिए सीटियों से उतरते जे पी

जयप्रकाश मुदाबाद, 'अमेरिका को दे दो तार—जय का' भी हो गई हार, 'जय-प्रकाश की गुणदागिरी नहीं अदेगी—नहीं अदेगी,' 'जयप्रकाश पर हमला बोल—हमला बोल—हमला बोल'। पटना की जनता को अपने बानों पर विश्वास नहीं हुआ कि उनके शहर की सड़कों पर ये नारे लगाये जा रहे हैं। कुछ लोगों ने धरने दरवाने और विड-हियों से भांक कर देखा और पाया कि जो कुछ वे सुन रहे हैं एक सच्चाई है ।

पटना के लोगों ने ३ जून को पहली बार महसूस किया कि बिहार में भी शहर कोई पाहें तो 'जयप्रकाश मुदाबाद' के नारे लगाये जा सकते हैं। धरने हाथों में साल मण्डे के साथ-साथ तीर-नमाल, बल्लम,

फरसा और धन्य घातक हथियार लिये लय-भंग तीक्ष्ण हजार लोगों का जुलूस साम्यवादी दल ने पटना में निकाला और एक घातक का वातावरण बनाने की धोर यह बताने की कोशिश की कि अयप्रकाश नारायण लोकतन्त्र को समाप्त कर रहे हैं और विधान सभा को भंग करवा कर प्रतिक्रियावादी ताकतों को बढ़ावा दे रहे हैं। बिहार प्रदेश छात्र सपर्य समिति ने पटना और बिहार के नागरिकों से अपील की थी कि वे इस जुलूस का पूर्ण सहिष्णुता करें, पटना के नागरिकों ने इस शारीक को पूरी तरह माना। सड़क के दोनों तरफ केवल सीमा सुरक्षा दल और सी० आर० पी० के जवान थे। गांधी मैदान जहाँ से जुलूस चला और राजभवन, जहा जुलूस शरय हुआ, दोनों के बीच के चार-पांच किलोमीटर के रास्ते पर कड़ी भी सी आदमियों का मुष्ट नहीं मिला जिसकी जुलूस को देखते में दित-बस्ती हो ।

साम्यवादी दल ने जुलूस इसलिए निकाला था कि देश को यह बता सके कि बिहार की जनता उसके साथ है और बिहार की जनता नहीं चाहती कि विधान सभा भंग हो। पर जुलूस में भाग लेने वाले अधिकांश शरीकों को यह नहीं भासना था कि उन्हें पटना नया साधा गया है। जुलूस में हालांकि ऐसे भी लोग थे

जो जुलूस के राजनीतिक महत्व को समझते थे, पर ज्यादा लोगों का ताल्लुक 'जयप्रकाश-मुदाबाद' के नारे लगाने से था, सरपर सामान की पीटसी उठाये, फटे हाल, नगे पैर बिल-चिलाती शूय में पाच किलोमीटर का सफर, इन शरीय प्रदर्शनकारियों के लिए मजबूरी थी जो इन्हे विधानसभा भंग न होने देने के लिए भेदनी थी। जुलूस के समाप्त हो जाने के बाद पटना के नागरिकों ने प्राप्त में बातचीत की कि जुलूस में भाग लेने वाले अधिकांश लोग दक्षिण बिहार के थे और ड्रेंड यूनियनों के सदस्य थे। और कि हर जिते के कम्युनिस्ट 'बकर' को अपने जिते से लोगों को लाने का कोटा दे दिया गया था, जिते उले 'पूरा' बरता था। प्रदर्शन में भाग लेने वालों के धाने-जाने का पूरा प्रबन्ध ऊपर से किया गया था। और कि जलूस में इन लोगों की भाग लेने में कोई शासकीय बाधा नहीं डाली गई ।

दावे साहब पटना में मौजूद थे पर जुलूस का नेतृत्व उन्होंने नहीं किया। न ही वे राज्य-पाल को तापन देने चाये; इसलिए जुलूस का नेतृत्व राज्य स्तरीय नेताओं ने ही किया। कुछ पत्रकारों से पटना में यह अकवाह सुनने को मिली कि मूय चू कि बहुत तेज थी इसलिए मूय लग जाने के डर से इने साहब ने जुलूस



जयप्रकाश पर हमला बोल, हमला बोल, हमला बोल । ३ जून को निकले साम्यवादियों के जुलूस का दृश्य

में भाग नहीं लिया । मार्पेन्म के अनुसार वे जुलूस का नेतृत्व करने वाले थे ।

सब कुछ बिलक्षण था इस जुलूस में-जारे भी, नारे लगाने वाले भी और मांगपत्र भी । जनता के नाम झरील में कहा गया 'भाईयो और बहनो ? हमारे राज्य पर एक बार फिर सभ्य के बादल मड़रा रहे हैं । प्रति-क्रियावादियों ने घमची दी है कि वे ५ जून से विधानसभा की बैठक नहीं होने देंगे । वे जबदस्ती विधानसभा को भंग करने पर तुले हुए हैं और विधायकों के साथ जोर जबदस्ती कर रहे हैं । वे बिहार विधानसभा को ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों की विधान-सभाओं और प्रांतिर में लोकसभा को भी जबदस्ती भंग करना चाहते हैं । वे भगस्त में होने वाले राष्ट्रपति के चुनाव को रोकने का बकक रूप रहे हैं । उनका भसली दुरादा यह है कि बड़ी-बड़ी कृषिवादियों के बाद जनता ने जो संसदीय जनतंत्र कायम किया है, उसे नष्ट कर दें और एक सूँदवार, दमनकारी तानाशाही कायम करें । पहुँचानिये वे कौन हैं, जो निर्विकृत विधानसभा को भंग करने के लिए हल्ला मचा रहे हैं । वे जनसभ, सगठन कार्यरत, संघोपा प्रादि दल हैं । ये बही दल है, जिन्होंने तीन साल पहले एकजुट होकर प्रतिप्रियावादी महागठबंधन बना कर दिल्ली की घड़ी पर कब्जा करना चाहा था । जनता ने उस महागठबंधन को ठोकर मार दी और थह छिन्न-भिन्न हो गया । अब सर्वोदय का दम

भरने वाले श्री जयप्रकाश नारायण संसदीय जनतंत्र को नष्ट करने के लिए 'महागठ-बन्धन' के बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं ।



जे. पी. का जुलूस निकला तो लाली की भीड़ पटना की सड़कों पर उमड़ पड़ी । सचिवालय के पास जमा भीड़ का एक दृश्य

राजभवन के दरवाजे पर पट्टा कर दस बजे तक जुलूस बँट गया । घरे मंदि 'मजदूर और 'विमान' पेशे की छाह में पसर गये । प्लासे प्रदर्शनकारी मंत्रियों के घरों में पानी के लिए घुस गये ।

बिहार प्रदेश कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव

बगलनाथ सरकार के नेतृत्व में चन्द्रशेखरसिंह शत्रुभानु मिश्र, इन्द्रदीप मिश्र, तेजनाथरायण भा और रामावतार शास्त्री का एक प्रति-निधिमण्डल साठे म्यारह बजते-बजते राज्यपाल के स्वागतवक्ष में पहुंच गया । शेष प्रदर्शनकारी राजभवन के दरवाजे पर नारा लगाते रहे—'अमेरिका को दे दो तार, जय प्रकाश की हो गई हार ।'

३ जून की रात । गाँधी मैदान में जागे साहूब की आगसभा । उपस्थित पन्द्रह-बीस हजार । सभा में पटना के नागरिक, शासन के 'घादमी' और सबेरे जुलूस में भाग लेने वाले 'विमान' और 'मजदूर' भी ।

सभा में कम्युनिस्ट विधायक चन्द्रशेखर सिंह भाग्य कर रहे हैं । 'विधानसभा भंग का नारा भविष्य की भ्रष्टकार में डालने की कोशिश है', जो विधान सभा भंग करने की मांग करेगा उसे बिहार की जनता वीरो से मसलकर खत्म कर देगी । 'सू जीपतियों का साथ देने वाली सरकार को भी कुचल दिया

जायेगा' हमने राज्यपाल से कहा कि जमा-खोर नेठो के लड़के जे० पी० के समूह में बैठते हैं, 'अष्ट मंत्रियों, नीररघाओ और मिलावट करने वाले ख्यादारियों—तीनों की लागों इली मैदान में भूलनी चाहिए ।'

(शेष पृष्ठ १३ पर)

ग्राम लोगों की मुक्ति से लोकशक्ति खड़ी होगी

(प्राचार्य राममूर्ति से श्रवण कुमार गर्ग की बातचीत) :

प्रश्न—आप लो वारीग्राम में रहने हुए भी वेदवली रोकने और भूमिहीनों को जमीन दिवाने के काम में लगे हुए थे, बिहार के वर्तमान आन्दोलन में लगने की प्रेरणा आपको कैसे हुई ?

राममूर्ति : मुझे मे भूदानपुरी का जो मामला हमने उठाया उसके भी पहले से मेरे मन में यह बात चल रही थी कि भूदानमूलक ग्रामदान का जो कार्य चल रहा है उसके हम एक चक्कर में ही घूम रहे हैं। जन्ता हमें स्वीकार नहीं कर रही है, यह चिन्ता मेरे मन में थी। पिछले साल १५ जून को भूदानपुरी की घटना हुई और मैं २० जून को वहाँ पहुँचा तो पहली बार लगा कि हम जिस अग्रिम व्यक्ति की बात करते हैं उसकी स्थिति ही यही समझने। वारीग्राम में मैं रहना था परन्तु का कि हम उसके ही प्रासपात के गावों को नहीं जानते और तोड़-टुकड़ को दर्श नहीं कर रहे हैं। छाड़ महीने तक मैं एक छोटी सी समस्या में पड़ा रहा। समस्या छोटी थी पर उसके शिष्टाणु बहुत बड़ा हुआ। १९५५ में मैं वारीग्राम आया था वीरभारद्वाइ के पास घोर २० साल रहा, लेकिन यह तक नहीं जान पाया कि करीब का गाँव ही राज्य विभाग को सत्तर-अस्सी साल से घुस दे रहा है। भूदानपुरी का काम उठाया तो वास्तविकता सामने आई।

मन में एक खोज चल ही रही थी। इसी समय बिहार का धारोलन चला घोर २२ मार्च को जे० पी० का घतघबे देखा। इसके पूर्व पुत्ररात में आन्दोलन चला था। ऐसी प्रतीति हुई कि एक नया रास्ता खुला है और लोक चेतना में पहली बार 'एक्ट' किया है, जिसकी खोज इतने वर्षों से हम कर रहे थे। बिहार की स्थिति से हमें अब अदर छुने हुए जवानामुखी का मान हुआ।

मार्च के अन्त में जलगाव में सर्वसेवा सप को प्रथम समिति की बैठक होने वाली थी उनके पहले मैं जे० पी० से मिला घोर पुछा कि क्या ग्रामदान के लिए ग्राम स्वराज्य बना रहेगा? जे० पी० ने कहा कि करो हाँ रहेगा,

ग्राम-दान नहीं है तो भी लोगों को संगठित किया जा सकता है। जे० पी० से बात करके प्रथम समिति में गया तो साक्षिण्य से बड़ा कि बिहार के धारोलन में लोकशक्ति फूट रही है और हमका इसके भागना नहीं चाहिए। जलगाव में लोटकर ६ अर्बल को पटना आया घोर जे० पी० से कह दिया कि 'मैं भय छोड़के 'डिपोज़न पर हूँ'।

प्रश्न : १९५१ से आर सर्वोदय धारोलन के जरिये मिलजुबत चरम करने के ग्राम-स्वराज्य के बुनियादी काम चलने हुए थे, आरको इस नये जन धारोलन घोर १९५१ से चल रहा सर्वोदय आन्दोलन में क्या बाई पार्ठ नजर आया ?

राममूर्ति : सर्वोदय धारोलन में हम कुछ मूल्यों का जनता के सामन रखने से और जनता को 'परमुष्ट' करने से कि उनको वह स्वीकार करे। इस धारोलन में हम जनता से कह रहे हैं कि ग्राम की व्यवस्था खराब है, इसलिए इसे प्रवर्धित करो। एक में स्वीकृति का मानन बनाने की बात थी, दूसरी में प्रवर्धित का मानन बनाने की। इस धारोलन से यह बात प्रकट हुई कि जिस देश की जनता में आज के युवासन को प्रवर्धित करने की शक्ति नहीं होनी यह नये मूल्यों को स्वीकार नहीं करती। गांधी के ग्रामहयोग धारोलन की सबसे बड़ी देन यह है कि उसने पहली बार जनता को 'ना' कहना सिखाया। यह धारोलन भी जनता को 'ना' करना सिखा रहा है।

सर्वोदय धारोलन में भविष्य को अपना स्वरूपान विन्दु बनाया, इस धारोलन में वर्तमान को। जिनने भी ऐतिहासिक धारोलन होने हैं उनमें सहाई की शुरुधात प्रकलित व्यवस्था में भविष्यारो वी मांग से होती है। इस धारोलन में भी ऐसा ही है कि जनता अपने भविष्यारो की मांग के लिए लड़ रही है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि हमें इस बात की देर से धनुभूमि हुई कि हम वर्तमान को नजर प्रत्याज करके भविष्य में जाना चाहते थे। इसलिए ऐसा हुआ कि हमने जिन

कामों को बुनियादी माना उन्हें जनता ने स्वीकार नहीं किया और हम जनता को साथ नहीं ले सके।

प्रश्न : सर्वोदय धारोलन भूमि की समस्या के समाधान में लगा हुआ है। क्या आप इसे बुनियादी काम नहीं मानते ?

राममूर्ति : जमीन का मसला बुनियादी है, पर पट्टि में 'दान' की प्रक्रिया को हम आपूर्णित नहीं बना पाये। हमारा काम क्रिया बनकर रह गया, प्रक्रिया नहीं बन पाया। भूदानपुरी के काम के बाद हमने खतामी घोर सरकारी जमीन के विवरण का काम हाथ में लिया था। बार-बार हमें उच्चधिकारियों के पास दोड़-दोड़ कर जाना पड़ता था, क्योंकि जनता की मजित हमारे पास नहीं थी। हमें ही राज्य विभाग में, बिदही लिपनी पड़ती थी। भव स्थिति दूसरी है। इस धारोलन में जो जगह-जगह तक सभ्य समितिया बनी हैं वे सब रेवेन्यू धारण को बिदही लिपनी, तारीख देकर कि भुगत दिन तक काम हो जाना चाहिए। हम लोगों के ऐसे जितने भी काम हैं जिन्हें जनता समझती जा रही है, जनता को सीपने चाहिए।

प्रश्न : आपको इस नये प्रकार के धारोलन से सवाद स्थापित करने में क्या कठिनाई हुई ?

राममूर्ति : चूकि हमने स्वराज्य के धारोलन से के इसलिए इस धारोलन के जुड़न में कोई मुश्किल नहीं आई। इस धारोलन में हम आश्रम से निपन्न कर नहीं आये हैं कि कठिनाई आये।

सामाजिक शक्ति का कैसे काम करती है, इसका काफी प्रशिक्षण हमको मासवेवाद के जरिये ही चुका था। इसी प्रकार देश की मजिबिधिया बँसे संचालित होती है इसकी मिला स्वराज्य धारोलन से मिल चुकी थी। इसलिए जब इस धारोलन में जुड़े तो जनता से छुड़ने में कोई तकलीफ नहीं हुई। हा, पूर्व अनुभव नहीं होगा तो सो जावे। यह (शेष पृष्ठ ७ पर)

जे० पी० राजनीति को लोकनीति की तरफ ले जा रहे हैं

रामचन्द्र राही से कहा धीरेन्द्र भाई ने

राही: आपने बिहार के आन्दोलन में जे० पी० की भूमिका से सम्बन्धित जो वक्तव्य दिया है, उससे कुछ सफाई हुई है, फिर भी मुझे लगता है इसपर और अधिक मंचन होना चाहिए। क्योंकि हमारे कुछ साथियों को तो ऐसा लगता है कि इस आन्दोलन के कारण हमारी भूमिका अहिंसक और राजनीति विरुद्ध या तटस्थ नहीं रह जाती है इसलिए वे इसका विरोध करते हैं। कुछ साथियों को ऐसा लगता है कि इस आन्दोलन से लोक स्वराज्य की जो भूमिका बन रही है, वह प्रायः स्वराज्य का विरुद्ध है, और इस तरह का आन्दोलन हर प्रदेश में खड़ा किया जाना चाहिए। कुछ साथी ऐसे भी हैं, जो इन दोनों से कुछ भिन्न मत रखते हैं, वे प्रायः केवलव्य के अधिक निकट हैं, भले ही वे बिहार के आन्दोलन में लगे हों या उसमें न लगे हों। उनका मानना है कि परिस्थितिवश जन-जागरण को 'सुराज' नहीं 'स्वराज' की ओर मोड़ना चाहिए, उसकी जेतना पैदा करनी चाहिए, लेकिन साथ-साथ प्रामस्वराज्य की बुनियाद पर लोच विरोध की तैयारी का काम भी मानने से अधिक तेजी से करना चाहिए। वे तीन मुख्य प्रतिक्रियाएँ अपने साथियों की बातचीत में ब्यक्त हुई हैं। प्रायःका दृष्टिकोण क्या है ?

धीरेन्द्रभाई: वस्तुतः मैंने जो वक्तव्य प्रसारित किया था, वह इसी धीरेन्द्र की सफाई के लिए था। मैंने स्पष्ट कहा था कि पटना में जनप्रवास वाकू के नेतृत्व में जो कुछ चल रहा है, वह निरपेक्ष रूप से राजनीति को लोकनीति की तरफ ले जाने का प्रयास है। मैं मानता हूँ कि जब तक यह नहीं होगा, और हम गांव में या वहाँ बैठकर केवल लोकनीति-निर्माण का प्रयास करेंगे, राजनीति के प्रति उदासीन रहेंगे, और भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियों द्वारा खुले मैदान में राजनीति विस्तार-

रित और प्रसारित होती रहेगी, तो हम अहिंसा की समग्र शक्ति का विकास नहीं करेंगे, बल्कि एकांगी युद्ध के कारण उसको हानि ही पहुँचायेंगे। मुझे भय है कि समाज-परिवर्तन की परम्परागत पद्धति के संस्कार के कारण हमारी दृष्टि कहीं मूलित न हो जाय। गांधीजी से पहले समाज के संचालन तथा परिवर्तन की शक्ति हिंसा है, ऐसा माना गया था। बहु-बड़े विचारक भी यही मानते रहे हैं, धर्मयुद्ध, जेहाद और क्रुसेड शब्द धर्मयुद्धों तथा विचारकों द्वारा ही प्रतिपादित किए गये हैं। धर्मयुद्ध में वीरगति की प्राप्ति शीघ्र-शीघ्र वाले मनुष्य के लिए सर्वोत्तम भाषाशास्त्री रही है।

गांधीजी से हमने अहिंसा को सामाजिक शक्ति के रूप में अधिष्ठित करने की दीक्षा ली है, और आज विनोबा की प्रेरणा से इसी अधिष्ठान के प्रयास में क्रियाशील हैं। ऐसे समय में अत्यन्त गहरापी और सूक्ष्मता के साथ हिंसा-गति की अभिव्यक्ति और अहिंसा-शक्ति की अभिव्यक्ति में मूलभूत फर्क समझ लेना चाहिए।

हिंसात्मक परिवर्तन यानी शक्ति का लक्ष्य समाज के अवांछनीय तत्वों को भंग करने का होता है, उसके विपरीत अहिंसक शक्ति का लक्ष्य समाज के अवांछनीय तत्वों को अपने में मिलाकर उसे वांछनीय तत्व में बदलने का होता है। अर्थात् हिंसा समाप्त करने की पद्धति है और अहिंसा मिलाने की पद्धति है। दोनों में ही एक बात समानरूप से दिखाई देती है। हिंसक शक्तिवादी अवांछनीय तत्व से अपने को उदासीन नहीं रख सकता है, बल्कि उसको समाप्त करना चाहता है। अगर वह उदासीन रहता है तो वांछनीय तत्व के अधिष्ठान के प्रति ही रहता है। वह सोचना है कि अवांछनीय तत्व को सम्पूर्णरूप में खत्म किये बिना दूसरी सत्कारत्मक चीज का अधि-

ष्ठान सम्भव नहीं है। इसीलिए उसका ध्यान सम्पूर्णरूप से समाप्त करने पर ही केन्द्रित हो जाना है। और इस प्रकार शक्ति का मूल लक्ष्य पीछे छूट जाता है। इसी तरह वह कि अहिंसक शक्ति आज प्राथमिक चरण में है, इसलिए आज के अहिंसक शक्तिवादी पूर्व संस्कार के अनुसार एक पक्ष पर अपना ध्यान केन्द्रित करने रहते हैं अर्थात् वे भी केवल संस्कारत्मक पर ही ध्यान देते हैं नकारात्मक की ओर ध्यान नहीं देते। यह अहिंसा की पद्धति नहीं है।

हर शक्ति में दो प्रकार के सोचनेवाले होते हैं। कुछ लोग धार्मिकी कथम भी बात सोच कर बयाना चाहते हैं, दूसरे, जो कुछ धृष्ट हैं, उनको जमा कर अगला कदम बढ़ाना चाहते हैं। इसी प्रकार के चिंतन को वाग और दक्षिण की सजा दी गयी है। वामपंथ वाले यह सोचकर कि दक्षिणपंथी शक्तिविरोधी हैं, उनका विरोध करते हैं, इसी तरह दक्षिणपंथी सोचते हैं कि वामपंथी अल्पवाजी में शक्ति को हानि पहुँचायेंगे, इसलिए वे वामपंथियों का विरोध करते हैं। ऐसे परस्पर विरोध के अन्तर्गत प्रतिशक्तिवादी शक्तिशाली शक्ति के मैदान में प्रवेश कर जाती हैं, वे शक्तिवादी से अधिक बुद्धिमान के शक्ति का नारा लगा कर दोनों की छाई को बढ़ाती रहती है, और इसी अन्तर्गत का लाभ उठाकर अपने को बीच में ही अधिष्ठित कर लेती हैं। इसी प्रक्रिया में प्रतिशक्ति का जन्म होता है। इसी के फलस्वरूप हमने इतिहास में देखा है कि शक्ति-शक्ति हर हिंसात्मक शक्ति के बाद प्रतिशक्ति-शक्ति उठती रही है। मैं मानता हूँ कि हिंसा शक्ति के इस्तेमाल का यह एक अनिवार्य फलित है।

अहिंसक शक्ति का मार्ग इससे सम्पूर्ण विपरीत है। उसका लक्ष्य अवांछनीय तत्व को शामिल करने, बदल कर समाजजीवन से उसका निराकरण करना है ताकि पूरा समाज वांछनीय तत्व के प्रभाव में शुद्धता की ओर अग्रसर हो सके। और पूरा समाज परिवर्तित होकर सम्पूर्ण शक्ति में परिणत हो जाय। अतः अहिंसक शक्तिवादी केवल वांछनीय तत्व के अधिष्ठान में ही अपने को केन्द्रित करने अवांछनीय तत्व के प्रति उदासीन नहीं रह सकता। उनके लिए अहिंसक शक्ति का

प्रतिष्ठान जिनका महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है हिंसा शक्ति का मुखावला। हम स्पष्टरूप से यह मानते हैं कि राजनीति के उभाड़ से हिंसा का उभाड़ होता है, जिसका दर्शन सारी दुनिया में हो रहा है इसलिए इतिहासिक क्रान्तिकारियों को सावधान रहना है। वही उन्हें हिंसा की शक्ति का उभाड़ दीये, तो इतिहासिक शक्ति के प्रतिष्ठान के साथ हिंसा के उभाड़ का मुखावला करना ही है, यह उसका स्वयं है। इस चीज से कार्यान्वय के लिए ध्वान्हारिक पद्धति यही है कि इतिहासिक क्रान्तिकारियों को जमात में अपनी-अपनी रीति, संस्कार और प्रवृत्ति के अनुसार दो धर्मों का संघटन हो। दोनों का नाम प्रलय रते, और दोनों धर्म दोनों को प्रलय का काम माने, क्योंकि दोनों में शक्ति केन्द्रित करने की आवश्यकता है। प्राचीनो ने जीवित भर अपने प्राचीनत्व में यही नीति रखी थी।

सकता। एक पैर धागे बढ़ाया, और जब तक वह पैर मजबूती से जम नहीं जाता तब तक पिछला पैर अपनी जगह जमा रहता। अगले पैर के जमाने के बाद ही पिछला आगे बढ़ेगा।

सर्वोदय विचार के समस्त साधियों से भेरा निवेदन है कि इतिहास की उपरोक्त पद्धति के अनुसार आज जो सामयिक और दक्षिणपथ का दर्शन हो रहा है, उसके परस्पर सहकार से अपनी शक्ति को मजबूत बनायें, न कि परस्पर का विरोध खड़ा करने के अपने को कमजोर बनायें। जिसका पदवेला युक्त हो रहा है।

राष्ट्री धारके उत्तर से कई महत्वपूर्ण विचारों की युद्ध सामने आये हैं, जिन पर हम सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को विचार करना चाहिए। लेकिन एक बात कुछ अधिक स्पष्टता के लिए—व्याज-जन-जीवन में जो महंगाई, प्रचंडता, धनुषता आदि व्याप्त है, धीरे

की उभाड़कर हम काम करते जायेंगे, तभी वास्तव में हम राजनीति में घसीटे जायेंगे और हमारे छेड़ने का साथ ठठाकर हिंसा को मानने वाले परिस्थिति को अपनी धीरे मोड़ लेंगे। प्रत्यक्ष हमको इस फंटे में तभी धानना चाहिए जब तक विषय परिस्थिति के कारण सहज जन-प्रतिष्ठापित हिसक रूप धारण कर लेने लगी है।

लोगों की..... (पेज ५ का शेष)

सच है कि युद्ध की दुनिया जितनी बदल गई है उसका भाग प्राम सर्वोदयो को गरी है। इस काम में प्रार उन्हीं अपने को डालना है तो बुद्ध को पूरा बदलना पड़ेगा।

प्रश्न धारको इस प्राचीनत्व से भविष्य के लिए क्या सम्भावनाएं नजर आती हैं ?

शामसूति एक सम्भावना यही दिख रही है कि युद्ध यह महसूस कर रहे हैं कि वे भी इस व्यापक जन-जीवन में अलग हैं। अभी तक यह नहीं था। जे० पी० के कारण धम्बीकार करने और 'ना' बहने का जो धम्बना युवकों की हुआ है उसके उनको बेतन्ना आसूत होभी, वह सभी प्रकार के बो-की धम्बीकार कर देनी।

मैं लोकशक्ति के तीन तरह मुख्य मानता हूँ—युद्ध, स्त्री और शक्ति। चीनियों की अपनी क्रान्ति के लिए इन्हीं तीनों ब-सथावित किया और सत्ता में आने के वा इन्हीं तीनों बलों की मुक्ति के लिए था किया। विचार के वर्तमान प्राचीनत्व से युद्ध बर्ण मुक्त हो रहा है। स्त्रियों को भी मुक्ति की हवा दूँ रही है। यह प्राचीनत्व शक्ति की धम्बी दूँ घु-धारा है, पर उन्हीं भी साथ में लेंगे। इन तीनों बलों की मुक्ति से ही हमारी लोकशक्ति सही होगी। जे० पी० का अभी युवकों पर ही जोर है, क्योंकि युद्ध प्राचीनत्व ज्यादा वैधन तब है, पर आगे चलकर शेष दोनों बलों को भी हम पूरी तरह शामिल करेंगे।

प्रश्न : हम प्राचीनत्व में जे० पी० को इतना व्यापक समर्थन उनको किम विधेयता के कारण दिया ?

शामसूति : जे० पी० से एक ऐसी विधेयता है जो बहुत कम लोगी है। सभी चीजें मुक्तने के लिए जे० पी० हमेशा तैयार रहते हैं।

अहिंसक क्रान्ति की अनिवार्यता

हमारी क्रान्ति में जयप्रकाश वाजु के नेतृत्व में जो काम हो रहा है, वह हिंसा शक्ति का मुखावला करने का काम है। हम लोग जो धामस्वरवाजु के काम में गये हैं, वह इतिहासिक शक्ति के प्रतिष्ठान का काम है। दोनों मिल-कर ही काम पूरा हो सकेगा। इसलिए राज-नीतिक कारकों से हिंसा के उभाड़ की परिस्थिति अब बन गयी है, जो जयप्रकाशवाजु ने जो काम शुरू किया है, वह इतिहासिक शक्ति को एक परिस्थिति बना गयी है। वे उनके मुकाबले में अपनी जान खता रहे हैं। और मुखावला करता है, जो उनके प्रलय रहकर नहीं हो सकता है, उनके युद्धभेद होगी ही। अपने में परिस्थिति का जो तब इतिहासिक शक्ति में दिखने भी धीरे लोगों का ध्यान दीये सकता है उनका इन्तेंसात धामस्वरवाजु है। इसका मजबूत यह नहीं समझना चाहिए कि हमको करने में हम धामस्वरवाजु की शक्ति को धीरे गिनकर हिंसा को बढाता दे रहे हैं।

इतिहासिक शक्ति कोई घटना नहीं होगी है। यह हमेशा प्राचीनत्व की प्रकिया होगी है। इस शक्ति से लोग विचार करने करते हैं। एकीकृत उनका बनना एक धर्म से नहीं हो

सकता, मजबूत-असंतोष और लोभ है, उनको धामस्वरवाजु हर प्रदेस में विचार देता ही प्राचीनत्व हमें अपनी ओर से खड़ा करना चाहिए ?

विशेष भाई मैं मानता हू कि यह सब राजनीति का कलित है। इसलिए उस फंटे पर हमको वैधानिक और प्रशासनिक क्षेत्र में ही राजनीति के धम और लोकनीति के उदय के काम में लगे रहना चाहिए। हम अब तक जो जनता के उन्मीकरण आदि की बात कर रहे हैं उसी का प्रमल चिम सहह उपरोक्त असंतोष और लोभ के कारणों का निराकरण कर सकता है, उनको ही अधिक से अधिक स्पष्ट बनाकर और समझाने की जरूरत है ताकि जनता का ध्यान उन धीरे धारण हो और वह उन दिशा में सक्रिय हो जाय। साथ ही धामस्वरवाजु के काम में धामस्वरवाजु की मजबूत बनाकर नीचे के स्तर पर प्रचंडता, धमस्वरवाजु धारित तराओं को इन्कार करने की शक्ति पैदा करनी चाहिए। जितने दासीनी में सत्ता का दुर्भावना होगा, तब तक लोगों के डरता उनका प्रतिहार करने की क्षमता प्रायः कम हो जायेगी। अपनी पहल से जनता

विहार का जन आन्दोलन : एक खास दौर

समीक्षा की है आन्दोलन के एक मुखिया नारायण देसाई ने

बिहार का आन्दोलन एक निर्णायक काल से गुजर रहा है। एक ओर उषावा नेतृत्व है, दूसरी ओर उनके विरोधी तत्व हैं, तीसरी ओर बिहार की धरती राजनीति का स्वस्था है। तीनों मिला कर यह निरवधारणक बहवा जा सक्ता है कि यह आन्दोलन का निर्णायक काल है।

यह मानना होगा कि मौन जुलूम का नेतृत्व सेते ही जयप्रकाश जी पर "नैतिक क्रांति" का नैतिक नेतृत्व सेने की जिम्मेवारी भा गयी थी। यद्यपि उन्होंने हर नित्यय छात्रों द्वारा ही करवाने के लिए आग्रह रखा, फिर भी लोग उनकी ओर नेतृत्व के लिए देखने लग गये। बिहार के बाहर भी हजारों लोगों ने इस बात से आश्चर्यजन पाया कि क्रांतिकारी जयप्रकाश एक क्रांति की धनुर्गाई करते फिर आगे धामे हैं।

परिस्थिति बटिन जरूर है, पर इतनी कठिन नहीं, जितनी बाहर से दील पड़ती है। इस आन्दोलन के वेग ने ही एक नया नेतृत्व निर्माण किया है। यह नेतृत्व उन छात्रों का है, जो धाज तक राजनीति में गयी थे और भाज भी जो जय प्रकाश जी द्वारा प्रस्ताव मार्ग पर ही चलना चाहते हैं। बिहार के संकड़ों स्थानों पर यह नया नेतृत्व धारने ढंग से आन्दोलन को जयप्रकाशजी द्वारा दिखलाये कार्यक्रम पर चलाने का जो प्रयत्न कर रहा है वह सधमुच मे आश्चर्यकारक है।

छात्रों के भलावा बिसी और वर्ग में इस आन्दोलन में सबसे अधिक रुचि की होती यह है महिला वर्ग। धायद ही ऐसा कोई स्थान आप बिहार में पायेंगे जहाँ महिलाओं ने बिना किसी की प्रेरणा के धारने आप ही जुलूस न निकाले हो, या धनदान न किये हो। बंदीलों, शिक्षितियों, अध्यापकों का समर्थन भी इस आन्दोलन को काफी मिल रहा है। इस तरह सब जगह-जगह जन सपर्य समितिगा बनने लग गयी है। विख्यात साहित्यकार फकीरबदर नाथ "रेलु" के संयोजकत्व में पटना

नगर तदर्थ जन सपर्य समिति की स्थापना हो चुकी है। इनमें प्रेरणा पाकर सब संकड़ों स्थानों पर और भी जन सपर्य समितियाँ बनेंगी। इन जन सपर्य समितियों का काम एक तरह से छात्रों द्वारा धारम्भ किये आन्दोलन को मुहट कराने का होगा। वे इस आन्दोलन को योग्य दिशा तथा धारमयक धनुर्गासन व परिपक्वता देंगी। यह बात तो तय है कि इससे पहले बिहार का कोई भी छात्र आन्दोलन इतने दिन नहीं टिका था। जयप्रकाश जी के प्रवेग ने इस आन्दोलन को इनना लम्बा जीवन दिया, जन सपर्य समितियों की स्थापना आन्दोलन को दीर्घ काल तक टिकाने रखने में भी सहायता बनेगी।

आन्दोलन के विरोधियों को भी धायद इस बात का अज्ञान नहीं होगा कि आन्दोलन इतने दिनों तक चलना। पिछले माह विरोधियों की चाल भी जगह-जगह कठिन प्रदर्शन करके आन्दोलन को अपने मुख्य रास्ते से गुम-राह कर प्रनि-प्रदर्शनों में उलभा देना। यह भी देला गया कि जहाँ कहीं सबव का आन्दोलन को हिसक बनाने के लिए भी पूरी उत्तेजना दी गयी। कठिन प्रदर्शन में तीन-चार तत्व हर जगह प्रायः समान थे (एक) जुलूस में काप्र सिंधी से वही अधिक कियारे के लोग थे, जिनमें से कई उन क्षेत्रों के आने-माने धामामाजिक तत्व थे, (दो) जुलूस जुटाने में जतिवाद का भरसक उपयोग किया गया, (तीन) जनता की अरदर्शन भीड़ के सामने मुकाबला होने पर जुलूस में से भाग खड़े होने वालों में धवतर जुलूस के नेता पहले थे (चार) मारपीट दोनों ओर से हुई, लेकिन अधिक मात्रा में जुलूस निकालने वालों को ही रानी पड़ी। प्रत्य. हर स्थान पर मंत्रियों को मार पड़ने के समाचार धरवश्य धामे लेकिन दूगरे दिन उन समाचारों के गनत होने के सवाद ही छात होते थे। इस प्रकार मंत्रियों को बिना मार साथे ही मार खाने की प्रनिष्ठा मिल जाती थी।

यह सही है कि एक दृष्टि से विरोधियों के जुलूस का इच्छित परिणाम निकला। जुलूस में हिंसा हुई। उनके बाद बड़े प्रमाण में गिरफ्तारियाँ हुई और नई जगह छात्र आतंक्रित हो गये। जिन लोगों ने पिछले २५ वर्षों में कोई सत्याग्रह देला ही नहीं था, उन लोगों के मन में जेल या बड़े-बड़े अभियोगों का डर होना धरवशाभाविक हो नहीं मानना होगा। लेकिन जिस प्रमाण में इन कठिन प्रदर्शनों से छात्रों को प्रति-प्रदर्शन करने की प्रेरणा हुई है, जिस प्रमाण में हिंसा हुई है, जिस प्रमाण में छात्रों में धातक छाया है, उस प्रमाण में विरोधियों का दाव सफल हुआ है यह मानना होगा। सधभाग्य से जुलूसों को जति के आधार पर जुटाने का प्रयत्न उतना सफल नहीं हुआ। खुना है कि, मूगेर के प्रदर्शन में शरीक होने वाले एक मंत्री महोदय ने रात-रात गुमकर धरनी जति के लोगों को जुलूस में शरीक करने का प्रयत्न किया था, लेकिन उरगमे उन्हे सफलता नहीं मिली। इन्ही मंत्री महोदय ने इस लेखक के साथ बातचीत में यह भी इशारा किया था कि आगे की "बयागत" दूसरी एक जति के लोगों की होगी। "संचलाइट" धरवार में यह समाचार छाता था कि एक नर्वचिक नेता को धरव्यक्षता में प्रदेश के एक सप्रदाय के धरमध लोप इबट्टा हुए थे और उन्होंने यह तय किया कि धारव्यवना होगी तो साप्र-दरिद्र उरं भी अरधये जा लखे हैं। ह्य धामा रखते हैं कि यह समाचार झूठ सिद्ध होगी, नहीं तो यह घटना इस बात का प्रमाण होगी कि सत्याध धादमी सत्ता को टिकाने रखने के लिए जिन हट तक नीचे गिर सक्ता है।

किन्तु जान पड़ता है कि विरोध प्रदर्शनों का सितगिता लम्बा चलना नहीं। धारित निरामे का आन्दोलन कितना चल सक्ता है ?

यहा एन बान और भी ध्यान में रखनी

होगी कि बिहार में हिमा को रोकने का सबसे बड़ा कारण कोई है तो वह जयप्रकाश जी हैं। उनकी प्रगुण्डा के कारण भादोलन भ्रम तोर पर गानिपूर्ण रहा है। उनके प्रतिनिधियों ने भी हर प्रकार से हिमा को रोकने का प्रयत्न किया है।

बिहार की अपनी राजनैतिक प्रवस्था क्लिनी डाबाडोल है, यह तो अब प्रकट बहानी है। सत्ताहृद दल के सभी गुट इस बात में सायद एक ही गये हैं कि गफूर साहब को मुख्यमंत्री नहीं रहना चाहिए, अब प्रश्न है तो इतना ही है कि भाला कमान का विरोध करने तक वे लोग चायेंगे या नहीं? जान पड़ता है कि गफूर साहब की नाव अपने ही बंधु से टूटेगी।

गुजरात और बिहार के भादोलन को लेकर बिदानी ने कुछ प्रश्न उठाने शुरू किये हैं। किसी भी भाविकारी भादोलन के समय बिदानी का भाव व्यवस्था के साथ होना स्वाभाविक ही है।

कुछ बिदानी यह कहते हैं कि आजीवन गरीबों के लिए ऊभने वाले भाविकारी जय-प्रकाश प्रचलन के प्रतिभाविचारियों ने साथ किये कुछ गये? क्या गरीबों हटाओ के नारे लगाने भर से सत्ताहृद दल भाविकारी और उसका विरोध करने वाले प्रतिभागी बन गये? 'प्रतिभागी' साम्यवादी शब्दकोष की ऐसी भाषी है, जो हर उय विरोधी के लिए इस्ते-मान की जा सकती है, जिसके बारे में और कुछ बहना मुश्किल हो। अगर जनसघ या कण्ठन बाँटने के समर्थन के कारण ही यह भादोलन प्रतिभागी बन जाता हो तो भाविकारी साम्यवादी दल, समाजवादी दल या सुरुवात समाजवादी दल ने समर्थन से बह नहीं बनेगा? अगर यह कहा जायेगा कि यह भादोलन चलनामों के बेटी का है तो प्रश्न यह उठता है कि इस भादोलन में जिन हजारों किसानगणों, भूदान किसानों तथा लाखों शालीरों ने समर्थन दिया है वे किस वर्ग के गये जयों? एक जिन के इतिवृत्त वैसिडेंट बिजनी महानुभूति भादोलन से नहीं थी, उजो। इस लेखक से कहा था : "हाँ, इतना तो मानना होगा कि इस भादोलन को व्यापक जनता का समर्थन है। बिना उनके समर्थन के भादोलन उनसे दिन टिकना

ही नहीं"

बिदानी का धोर एक धारण यह है कि इससे भले ही विधानसभा का विघटन हो जाय, लेकिन इससे मूल्यवृद्धि नहीं खेगी। अपनी दलील के समर्थन में वे गुजरात का उदाहरण देने हैं कि वहा विधानसभा भंग के बाद मूल्यवृद्धि नहीं हुई। प्रश्न यह कि विधानसभा भंग के बाद शासन व्यवस्था की जिम्मेदारी क्या गुजरात की नवनिर्माण समिति के सदस्यों ने ले ली है, जो मूल्यवृद्धि के लिये उन्हे दोषी बतार दिया जाता है? गुजरात में इस समय राष्ट्रपति शासन है। वहा अगर मूल्यवृद्धि नहीं रही है, तो उसकी जिम्मेदारी केन्द्रीय सरकार की है।

दिल्ली के उच्चासनस्थ लोगों ने तो यह भी इकजम लगा दिया कि गांधी का नाम इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति और सस्था ही हिंसा की बड़ावा दे रहे हैं। एच तरह से इन की बात सही है। भाग जरा इतिहास देख लीजिए। स्वराज के बाद गांधी का नाम बिन लोगों ने तथा किस सस्था ने सबसे अधिक इस्तेमाल किया है? आप चायेंगे कि वह काम सबसे अधिक कांग्रेस तथा कांग्रेसियों ने ही किया है। चुनाव जीतने के लिये गांधी का नाम, रेल चक्का चलाने के लिये गांधी का नाम, नगदों की मिलों का उद्घाटन करने में गांधी का नाम, अंत की डेरी खोलने में गांधी का नाम, वहा तक कि परिवार नियोजन के प्रचार के लिए भी गांधी का नाम इस्तेमाल करने में उन्हे सहोच नहीं होता। इन्ही ने भाज की परिचरिण में स्थित हिंसा को बड़ावा दिया है, यह कहने में कौन भावित कर सकता है? लेकिन दिल्लीवालों का मनबह यदि जयप्रकाशजी या गांधी भाविकारियों से हो तो मानना होगा कि भूडा प्रचार करने में वे गोबेला से भी बाज नहीं चायेंगे। यह बात बिहार में सर्वमान्य है कि इस भादोलन को यदि किसी एक व्यक्ति ने हिमा की धोर बढे से रोक है तो वह जयप्रकाश ने धोर गांधी भाविकारियों के बिहार के धारों केन्द्र में भी किसी भी स्थान पर तनिक भी हिंसा नहीं हुई। हाँ, भागपुर के भाविकारिणिये में कुछ गुफा में घुसकर द तराज भाविकारियों पर दुरा अकर चलाया जा। लेकिन दल गुफागर्दी का जबाब भी उस केन्द्र में भाविकारियों विरोध प्रदर्शन से किया था।

गोंडा में नयी जमींदारी

गोंडा (उ० प्र०) के गांधी पार्क में कई

छथीम को एक बैठक हुई। इसमें जिले के नई हिलोसे के धार्य दाईं ती लोगों ने भाग लिया। जिमा सर्वोदय सभन द्वारा प्रायोगिक दस बैठक का उद्देश्य गोंडा जिले की परि-स्थिति पर विचार करना था।

उत्तर प्रदेश की पूर्वोत्तर सीमा पर नेपाल से जुड़े, अब तक हलचल से दूर इस जिले में पिछले दिनों कुछ ऐसी घटनाएँ घटी हैं, नयी परिस्थितियाँ सामने आयी हैं कि जिमा सर्वोदय सभन को कुछ सोच समझ कर करने के लिए यह बैठक बुलानी पड़ी। कुछ महीने पहले भूमिहीनों के दो गांव सम्य, समग्रदार और प्रभावशाली बहे जाने वाले सम्मानित व्यक्तियों ने जला दिये थे। जाच कमेटी भी बैठे एक सतद सदस्य ने बाबायदा प्रमाणित कर दिया कि गलती भूमिहीनों की ही थी।

जमींदारी प्रथा समाप्त हो चुकी है लेकिन इधर गोंडा जिले में एक नयी जमींदारी प्रथा शुरू हो गयी है। नये जमींदारों को इस बड़ी विरादरी में प्रायसभा के प्रधान से लेकर न्याय प्रमुण, विधायक सस्य सदस्य, जिले के बडे प्राधिकारी, बैंक व सहकारी समिति के निदेशक—बैठ लोग शामिल हैं। वस्तु है जिले का भूमिहीन सेविहर मजदूर, छोटा किसान। यहा की मजदूरों की दरें प्रायः २० प्रतिशत बढ़ी हैं। प्रत्या-धार की लगेड में भूदान की जमीन का वितरण सामन्वराज्य कोय धोर सारी सस्थाएँ तक नहीं बच सकी।

एग परिस्थिति में क्या किया जाये यह नय करने के लिए ही यह बैठक थी। बैठक की राय में समाज में प्रत्याधार चलाए, अनैतिकता, धराजकना और राज-नैतिक दमन बढी तेजी से बढ़ रहा है। इसकी प्रतिक्रिया में हृदनाल, पैदाय, तोषकोर तथा राजनैतिक विरोध जगद-जगद ही रहा है। पर सब धनुविन है, लेकिन इधरके केनन अनुचित बह देते भर में काम चलेगा नहीं।

(१ पृष्ठ १६ पर)

लोग पूरी जिम्मेदारी सरकार पर न डालें : इन्दिरा

सर्व सेवा संघ की प्रधान मन्त्री से चर्चा : रपट : ठाकुरदास बंग

बार्देई मई की संघरे माडे ग्यारह बजे सर्व सेवा संघ की ओर से सर्वश्री सिद्धराज ढड्डा, निर्मला देशपांडे, जयन्नायन, वी० रामचन्द्रन, ठाकुरदास बंग, राधाङ्गण, देवेन्द्र कुमार और प्रभावराजी, प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से उनके कार्यालय में मिले। करीब ५० मिनट तक बातचीत हुई।

सिद्धराज ढड्डा ने प्रारम्भ करते हुए कहा कि हमारा काम मुख्य तौर पर लोक-शक्ति को जगाने का है, ताकि लोग अपनी समस्याओं का हल खुद कर सकें। इस काम में हमारी दृष्टि 'लास्टमेन' की स्थिति को मुचाराते की रहती है। सर्व सेवा संघ की भूमिका पक्ष-मुक्ति की है किसी राजनैतिक दल के साथ संबन्ध न होते हुए उन सबका तथा शासन का सहयोग लेकर काम करने की है। सरकार की लोकप्रियता नीतियों का समर्थन या श्रेय प्रकाश की नीतियों की कमी धारो-चना करनी पड़ती है तो वह तटस्थता की भावना से करते हैं, पराथा व्यक्त-विशेष को दृष्टि से नहीं। सरकार के साथ मिलजुलकर कई क्षेत्रों में हमने काम किया है तथा कर रहे हैं, जैसे खादी-ग्रामोद्योग, नारायणपुर में शांति कार्य, नेफा का सेवा-कार्य आदि। पाकिस्तान बांग्ला देश और भारत के संबंध सुधारने का श्रेष्ठ काम प्राप्त कर रहे हैं, उसकी हमारे क्षेत्र में सभी ने प्रशंसा की है।

भूमि समस्या : किरा-किरा क्षेत्रों में सरकार का शीघ्र सर्वोदय प्रान्तीयन का सहयोग हो सकता है, इसकी चर्चा करते हुए हमने बताया कि जमीन का प्रश्न इसमें मुख्य है। भूदान-ग्रामदान के द्वारा स्वेच्छा से भूमि समस्या का हल करने की कोशिश की गई। करीब १५ लाख एबड़ जमीन अब तक बांटी गयी है। भूमिगत के द्वारा जमीन से वितरण का जो प्रयास शासन की ओर से किया जा रहा है, उसमें भी बदवारे का नाम ग्रामदान के सामने शीघ्र उसके द्वारा हो, ऐसी हम लोगों की राय है। ग्रामतथा का अर्थ गांव के

कुल निवासियों की सभा से है, जिसका निर्णय सर्वसम्मति के आधार पर हो, ऐसा इन्दिरा जी के प्रश्न के उत्तर में उन्हें बताया गया। यह ग्राम-सभा ग्राम-पंचायत और उसकी राजनीति से भिन्न है, इन्दिराजी को इस उत्तर से समाधान हुआ। इन्दिराजी के सामने यह बात भी रखी गयी कि सीरिंग में जो कानून प्रलप-प्रलप राज्यो में बने हैं, उनमें कई बानों में परस्पर-भ्रंशतर है। कानून की मुख्य-मुख्य बातों में तो कम-से कम एकरूपता होनी चाहिए।

इन्दिराजी ने कहा कि यह विषय राज्य शासन का है। केन्द्र की ओर से सूचनाएं आती हैं। समूदा किसानों से कानून के क्रियान्वयन में रोड़े भाने के कारण लोगों के श्रमिन्नता को जगाना आवश्यक है। हम लोगों ने बताया कि ग्रामदान का काम हम इसी दृष्टि से कर रहे हैं। सरकार की भूमि वितरण की नीतियों से भी इसका मेल है। प्रतः इस काम में शासन का सहयोग मिले ऐसा हम चाहते हैं। ग्रामदान का काम नई प्रान्तों में विशेष रूप से हुआ है, बड़ी तादाद में ग्रामदान हुए हैं, उनके क्रमबद्ध के लिए कानून भी बने हैं, पर उनको लागू करने में कई बठिनाइयां आती हैं। बेर बढ़त लगती है। इन्दिराजी के प्रश्न पर बताया गया कि बिहार तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि प्रदेशों में ग्रामदान का अक्षर काम हुआ है। यदि सरकार सीरिंग से मिलने वाली जमीन, सरकारी पड़त जमीन और भूदान ग्रामदान में मिलने वाली जमीन, इन सभी का वितरण करने की मिली जुली कोशिश हो और उसके लिए कुछ चुने हुए क्षेत्रों में सरकार, जनता और सर्वो-दयवाले, सब मिलकर एक मुहिम के रूप में एक प्रकार से करके योजनाबद्ध काम करें तो जमीन बास्तव में जिसके पास पहुंचनी चाहिए उसके पास पहुंचेगी और लोगों में भी आत्मविश्वास बढेगा। इन्दिराजी को यह ठीक लगा।

इन्दिराजी ने कहा कि मुझे सबसे जरूरी यह लगता है कि स्थानीय लोग अपनी जिम्मे-दारी पर काम उठावें। सब बातों में सरकार पर निर्भर रहेंगे तो सरकार का बोझ ही बढेगा। लोग उसकी कीमत देने को भी तैयार नहीं होते। कीमत, यानी फिर सरकार के अधिन्वार शीघ्र शक्ति बढ़ानी पड़ती है। शिक्षण-सत्याधरो की भी सरकार अपने हाथ में लेते, यह माग प्राजक्ल होती रहती है। चर्चा के दौरान सर्वोदय-सेवकों ने कहा कि हमारा यह नियेदन है कि जिन प्रान्तों में ग्रामदान का काम कुछ प्राथिक हुआ है, उन प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों को श्राप इस बारे में लिखती रहें एव उन प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों तथा राज्य मंत्रियों को श्राप एक बार सुचार्य भी, उस सभा में हम लोग भी धार्यें शीघ्र प्राप ग्रामदान के काम में सहयोग देने के बारे में बहें। ग्रामदान-कानून नई प्रान्तों में बने हैं, लेकिन उनके क्रमबद्ध में बहुत देरी होती है, ग्रामदान-विज्ञानों को सामान्य विज्ञानों की घोषा नर्ज धादि मिलने में भी दिक्कत होती है।

खादी धार्यः लोग : दूसरा विषय हमने खादी-ग्रामोद्योग का रखा। खादी के लिए परिश्रित अनुकूल हो रही है, यानी मिलों के मुनाबले खादी की कीमत इन दिनों खत शीघ्र माग के अनुकूल है, लेकिन खादी के विकास में पूर्ण, बच्चे माल की सप्टाई धादि की कई बठिनाईयां हैं, इस विषय को लेकर एक बार फिर हम आपसे मिलना चाहेंगे ताकि तत्कालीन से मानचीन हो सके। इन्दिरा जी के प्रश्न पर बताया गया कि खादी प्रायोग के क्षेत्र में करीब ३० उद्योग श्राप भाने हैं उनको लोगों में माग भी है। पर इनमें क्षेत्रों का रिजर्वेशन हो यह आवश्यक है। बच्चे माल की अपूर्ण भी नहीं हो पाती। श्राज गंवर गंस की माग काफी है। पर उसमें लोहा धादि की मागयशकता पूरी नहीं हो पाती इस पर इन्दिराजी ने कहा कि गीबर गंस का

राम बड़ा रहा है यह अच्छा है, पर सोहे के भनावा दूसरी किसी चीज से यह नाम कैसे हो सके, इसका हमारे वैज्ञानिक कोई रास्ता निकालें तो अच्छा हो।

खादी का आधार अन्वेषण है, पर इसे यदि शासन व पुरा सहायता मिले तो आज जो भूमिहीन मजदूर या दूसरा गरीब काम न मिलने पर भ्रूषा रहना है, (क्योंकि वेतन में हमेशा काम मिलता नहीं) उसे खादी से सहायता दिया जा सकता है। जैसे दूसरे देशों में मजदूर को काम न मिलने पर डोल के रूप में सहायता दिये जाने की व्यवस्था होती है, वैसे अपने देश में खादी के द्वारा किया जा सकता है। जब दूसरा काम न मिले तो चरले की हर जगह बैसी ही व्यवस्था हो। फिर देश में कोई भ्रूषा नहीं होगी। इस बारे में योजना बनानी चाहिए।

सपना की अनाज में समूची - बावा ने आपके सामने जो सुझाव रखा है वह अनाज के रूप में लागू करने का है। इन्द्रियायी ने कहा कि बाग तो बड़ ठीक है, पर हमारे लोग नहते हैं कि इसने अनाज बहुत कम मिलाया। तब हमने बताया कि सपना के प्रतिरिक्त किसान से बर्ज की समूची में या उसे उत्पादन में दी जाने वाली सहायता के बदले अनाज लिया जाये तो काफी अनाज मिलेगा और किसान को अपना अनाज बेकरारपैसे में चुकाने की नीवतनही धायेंगी। इसी का दूसरा पहलू यह है कि सरकारी नर्मकारियों को उनके वेतन का कुछ अंश अनाज में दिया जाये। देश के कई हिस्सों में मात्र भी सासभर काम करने वाले सेठोहर मजदूरों को जो मजदूरी दी जाती है उसका एक निश्चित अंश अनाज में दिया जाता है। रिश्ते १०-१२ वर्षों में बँसे के रूप में दी जानेवाली मजदूरी बर्ज है, लेकिन अनाज बाग मज को १० वर्ष पहले या उनका ही मास भी है। इससे बँसे वाले और देने वाले दोनों को समानाना है। यह अनाज गरीब के लिए 'दुग्ध' का काम करता है। इन्द्रियायी ने कहा कि उन्होंने दो राज्यों के मुख्यमंत्रियों से कहा है कि वे इस दिशा में कुछ प्रयोग करें, प्रयोग के बाद ही हमें कुछ दिशा मिलेगी।

साराबंदी : यह विषय धायकी भी निश्चयी है कि और हमारी भी। राजस्थान

के मामलों में तो आपने समिति बनाई ही है। गोबल भाई जसने काम लगाये हुए हैं। धाय कर गरीबों को दृष्टि से कराबबंदी बहुत आवश्यक है। सरकार आमदनी का प्रश्न उठाती है। यह इन्द्रियायी के कहने पर हमने कहा कि शराब को धाय को आम राजस्व का हिस्सा नहीं मानना चाहिए। आमदनी वाली दलील में ज्यादा लक्ष्य भी नहीं है। राजस्थान का ही उदाहरण लीजिये। दो बरब से ऊपर का राज्य सरकार का बजट है, उसमें शराब की आमदनी १०-१२ करोड़ अर्थात् मुश्किल से ५ प्रतिशत है। फिर हमने तो कई उपाय भी सुझाये हैं जिनसे यह घाटा कम भी हो जाता है। इसलिए आमदनी कम होने की दलील बेवुनियाद है। तमिलनाडु एवं गुजरात में इस आमदनी के बिना भी काम चल रहा है। इन्द्रियायी ने हसकर कहा कि यह बात राज्य सरकार वाली को भी समझावें।

जुने हुए संधे में समितित काम हमने कहा कि सर्वोदय सभी समस्याओं पर महत्त्वक हल देता है और उसके ध्रुवचक्र-विशेष द्वारा वातावरण बनाने का काम करता है। इन संधे में निश्चित योजना लेकर शासन का सहयोग मिलेगा तो उससे ठोस नतीजे आ सकेंगे। जनता में आत्मविश्वास बढ़ेगा और शासन की नीतियों और योजनाओं पर प्रभल भी आसानी से हो सकेगा। कुछ निश्चित क्षेत्रों में सर्वोदय का काम विशेष रूप से चल रहा है इस प्रकार सहयोग से काम करने की योजना बनाई जा सकती है।

हमने अब निवेदन किया कि हम आपसे अब कुछ मुताबक चाहिये तब इन्द्रियायी ने कहा कि आप लोग तो अच्छा नाम कर ही रहे हैं। मुझे तो विशेष कुछ नहीं कहना है। एक ही बात सगती है कि लोग सब बातों की जिम्मेदारी सरकार पर न डाल कर अपनी जिम्मेदारी भी समझें। शासन पर आधारित रहने की मनोवृत्ति बदलें। हमने कहा कि हमारा भी यही उद्देश्य है। हम इसी उद्देश्य से काम कर रहे हैं। यह खूबों की बात है कि आप भी यह चाहती हैं।

अंत में इन्द्रियायी ने इन्द्रियायी को उपवासदान बाग फार्म दिया। फार्म में उन्होंने रख दिया और हसकर कहा कि मैं तो बँसे भी एक ही समय भोजन करती हूँ।

मुंगावली में काल नहीं कटता

यशवंत कुमार सिन्धू

पौढ गवम्बर ७३ से ही मध्यप्रदेश गांधी स्मारक निर्माण के हम दो भाई, उत्तम गांधी चौधे और मैं खुशी जेल मुंगावली में आम समर्पित बागी भाइयों के सत्कार और योग्य सेवा का काम चमक पाटी शांति मिशन की ओर से देख रहे हैं।

पचासवत् प्रारम्भ से अब तक ७० और ६० के बीच बागी इस नवजीवन शिविर में रहने प्राये हैं। तुनी जेल का आन्तरिक प्रशासन कौन देते? इस मुद्द सुविधा का ध्यान रखते हुए दैनिक जीवन में प्राये वाली व्यक्तिगत समस्याओं एवं कठिनाइयों का निराकरण कौन करे? इन प्रश्नों के समाधान हेतु मास्य समर्पित भाइयों की एक आम सभा में सर्वसम्मत ६ सदस्यों की पचासवत् गठित की गई है जो समय-समय पर बैठकर एक राय से काम करती है। इस पचासवत् के कर्मठों को मिशन, जेल प्रशासन और सभी वर्गों के धार पूर्वक मानते हैं। पचासवत् के प्रभावशील होने के कारण किसी भी बागी भाई के अल्पनी व्यक्तिगत समस्या के लिए शासन प्रभव मिशन से अधिक सम्पर्क नहीं करन पड़ता।

सामूहिक रसोड़ा : समर्पण से खुशी जेल के प्रारम्भ तक सभी लोग पुराने ढंग से वर्ग और वर्ग का विचार रखते हुए अलग-अलग अल्पनी-अल्पनी भोजन व्यवस्था करते थे किन्तु १५ नवम्बर ७३ को जब अनाज की कसक से व्यवस्था परिवर्तन में बड़ी मदद मिली है और अब सामूहिक रसोड़ा चल रहा है। एक रसोड़े को दो भागों में बाट देने से उत्तमोत्तम पद्धति से काम चल रहा है।

अंत, उपवास और उपचार परहेज वाली को छोड़कर सब एक ही रसोड़े में भोजन करते हैं। जब नीच, छत-अच्छत, तथा जाति-पार्थिक के विचारों से बागी भाई ऊपर उठ रहे

है, किन्तु अभी एक साथ विधिवत बैठ कर सामूहिक रूप से भोजन करने की शक्ति नहीं बन पाई है। इस दिना में प्रयत्न चल रहा है।

पारिवारिक मिसल : किसी बागी भाई के परिवार से कोई मिलने जाता है तो उसके लिए दस दिन तक मिनाई भवन में रहने की व्यवस्था है और निविराधियों के परिवार में रह सकते हैं। वैसे भी दिन में किसी भी वजन कोई भी व्यक्ति बन्दी भाइयों से मिल सकता है।

छः बागी भाइयों के परिवार भी मु'गा-बली भा चुके हैं। जो नवजीवन शिविर क्षेत्र के समीप अपनी झोपड़ी बना कर रहे हैं। इसमें एक विशेष छूट जेल प्रशासन से उन्हें मिलती है कि वे अपने परिवार में जाकर नित्य भोजन कर सकते हैं।

पैरोल प्रणाली : नव जीवन शिविर से जब तक सभी भाई पैरोल प्रणाली का लाभ लेकर वापस आ गये हैं। अपने-अपने गृह-क्षेत्र में उन्हें जाने आने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। अब दूसरी बार भी प्राप्ति से अधिक धारण समर्पित भाई पैरोल का लाभ उठाकर शादी विवाहों में शरीक हो रहे हैं। समाज उन्हें स्नेह-पूर्वक स्वीकार कर रहा है। यह बात सीटों पर उनके चर्चा प्रसंगों से उल्लेखी है।

सर्वोदय विचार परीक्षा : लुली जेल से इस वर्ष फरवरी सन् 1९७३ वाले सत्र में २६ धारा समर्पित बागी भाइयों ने प्रारम्भिक परीक्षा के फार्म भरे, जिनमें से २ भाई बीमारी के कारण अन्य अस्पतालों में चले गये। २४ परीक्षा में बैठे। साथ ही लुली जेल के अधीक्षक इसराजहयद, उनकी धर्म पत्नी, जेलर तथा स्टॉफ के साथ भाई बहन, इस प्रकार बलीय परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए हैं।

निर्णयित कार्यक्रम : वैसे तो मु'गा ५ बजे से रात ९ बजे तक कार्यक्रम बना हुआ है, किन्तु कार्यक्रम में बहिष्कृत उद्योग-विधा, कृषि, डेरी, मुर्गापालन और सुतारी-सुहारो-सितलाई आदि के लिए शासन की शोर से अब तक कोई साधन है और न शिक्षक, इस लिए शांति मिशन की ओर से केवल सस्कारों के लिए प्रशिक्षण, प्रभाव फेरी, प्रातः प्रायना सफाई वर्ग, रामायण-गीता और सर्वोदय साहित्य

का पठन-पाठन व सांस्कृतिक सामूहिक कार्यक्रमों के कार्यक्रम चलाये जाते हैं। कभी-कभी भजन नाटक, प्रहलानों के भी प्रायोगिक होने रहते हैं, जिनमें मु'गावली नगर तथा पास पड़ोस के ग्रामों की ग्राम जनता भाग लेती और सम्मिलित होती है।

साक्षरता : नवजीवन शिविर में आने के पूर्व ग्रन्थ जेलों में धारण स्वर्पित भाइयों को साक्षर बनाने का कार्यक्रम था और शासन की ओर से शिक्षक नियुक्त थे किन्तु यहाँ नवजीवन शिविर में बार-बार निवेदन के बावजूद भी शिक्षा का काम नहीं हुआ, इसलिए साक्षरता प्रसार की दिशा में उदासोन्मत्ता है।

काल नहीं कटता : मिशन के साथी प्रातः प्रभात फेरी, प्रायना, दोपहर वर्ग साथ कालीन प्रायना पठन पाठन में अधिक से अधिक कुल मिला कर सामूहिक ढाई घंटे का समय ले पाते हैं, शेष समय व्यतिरिक्त समूक के रूप में जाता है। इससे निविराधियों के पूरे समय का उपयोग नहीं हो पाता, क्योंकि शासन की ओर से इन ६ महीनों में एक भी पधा, उद्योग तथा कार्यक्रम ऐसे नहीं चलाये गये जिनमें निविराधियों को लगाया जा सके तथा उनका मत लग सके। इसलिए वे स्वयं कहते हैं कि दादा काल नहीं बटता। एक दिन एक महीने के बराबर है।

पारिवारिक चिन्ताएं : काम बाज के प्रभाव में स्वभाविक रूप से मन भटकता रहता है, परिवारों की याद आती रहती है, उनकी समस्याएं याद आती हैं फिर सबके सब परिवार की व्यक्तिगत समस्याओं को मुलभाने की ओर अपने ध्यान को लगा देते हैं। शांति मिशन के साथियों तथा जेल स्टॉफ और पंचायत के पास प्रकृत समस्याएं पहुंचती रहती हैं। २० प्रतिशत ऐसे हैं, जिनके परिचारों को सुरक्षा को ध्यानपूर्वक देना है। ये पुलिस और पड़ोसियों से पीड़ित हैं।

भूमि तथा सहायता : जिलाध्यक्ष गुना ने शांति मिशन के सहयोग से इन ६ महीनों में इस शिविर में रहने वाले ३५ भाइयों को जमीन और सहायता की वन राशि दी है। ५ परिवारों को छात्रवृत्तियां दी गई हैं। बागी पीड़ितों की सहायता इसके अतिरिक्त है। २ भाइयों को छोड़कर सबको मर्यादा दिलाया जा चुका है।

दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं : इस अवधि में दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं भी अनपेक्षित रूप से घटित हुई हैं। मदन विहार नाम के धारण समर्पित भाई परीक्षा के प्रश्नपत्र में गंभ्य थे, फिर वे लोट कर नहीं आये। पना चला कि वे मारे गये। परन्तु सभी निविराधियों का कहना है कि मदन फारार नहीं हुए उनके साथ छान किया गया है। सभी के मन में इस घटना से भय और चिन्ता बढी है।

जेल स्टॉफ और निविराधियों के बीच मन मुटाब बढ़ा, जिनका प्रभाव निविराधियों पर भी पडा। इन घटनाओं से उत्पन्न समस्याओं का शांति मिशन के साथियों ने बड़ी सामर्थ्यशील से समाधान किया है, जब बालाचरण शहा और उत्तम हैं। होली के अवसर पर कुछ निविराधियों का पड़ोस में बने कजूरों के साथ भयंदा हुआ जिसमें एक ग्रामीण के पति में अचिंच चोट आ गई। इस घटना से पास पड़ोस के ग्रामीणों में भी आतंकीयता उत्पन्न हुई थी, उसमें स्कावट आई है।

मन भटक गया : शिविर प्रारम्भ होने के बाद नाते रिश्तेदार और मित्रों के मिलन का ताता लगा। परिवारों से लोग भी आने जाने लगे। मु'गावली में स्टेशन भी है तथा शराब की दुकानें भी। पास पड़ोस में बसे ग्रामीण, पुराने अपराधी समाज के कजर, सासी मोगिया और बागडी लोग हैं, लुली जेल से लगी जिनकी बलिगता है, वे स्वयं शराब बनाते हैं और परिवारों में स्त्रियों तथा बच्चों सभी को पिताते हैं। फिर बागी सरदारों के पुराने जीवन के दोस्त याद भी आते और पड़ोस ठहरते हैं। इन तथ्यों का प्रभाव हमारे निविराधियों पर पड़े बिना कैसे रहता? इसमें से कुछ लोग गतवर्ष बिये गये मद्य निषेध सन्वय से गिरे। वता चलने पर द्रष्ट प्रवृत्ति को बदलने और इस गंदे पातावरण से बचाने के उपाय बिये गये। आज शिविर में मांस मदिता स्वाज्य है। केवल दो भाई मांसाहारी हैं। आज से ३ मास पूर्व एक भाई के मेहमान में प्राग्रह से शराब पिनानी। उसके दो बार दिव बाद फिर पुनः उल्लेखित प्राये और उन्होंने दो तीन भाइयों को उनकी पुरानी पद्धति में होने पाव करा डाला। यह बात मानुस साहित्य पर मिशन के भाइयों ने तदारता पूर्वक बन्द कराया, (प्रतिज्ञाएं कराई) अल-यन बिना गलती नचल कराई।

(पेज ४ से जारी)

सभा में घोड़ी सी सलबती हुई। क्या नोजवान में धीरे से बह दिया कि यह क्या बहा जा रहा है और मारो साबे को बह कर दूध लोग उस पर टूट पड़े और उसे पीट दिया।

कम्युनिस्ट विधायक विधानसभा का विषयन क्यों नहीं चाहते हैं ? क्या इसलिए कि हमसे लोकतंत्र खतरों में पड़ जायेगा ? ३ जून की रात में चन्द्र शेलर सिंह ने जब कहा कि अगर गफूर मशिमखंड ने प्रगतिशील सैनिकों के काम में सहायता नहीं दिया तो उसे हटा दिया जायेगा तो विधानसभा भग न करने के पीछे छुपे कम्युनिस्ट इरादों की प्रसन्नता खुद गई। लोगों के सामने साफ हो गया कि कम्युनिस्ट विधायक कसपयो तलित नारायण मिश्र की गह पर गौर साहब की हत्याना चाहते हैं और उनकी जगह जयगणप मिश्र को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं जिससे 'प्रगतिशील' नीतियों को लागू करने लिए उन्हें गुना हाथ मिल सके। अगर विधानसभा का विषयन हो जाना है तो न सिर्फ ललित-नारायण मिश्र का बिहार में राजनीतिन भविष्य पुष्टनाश हो जायेगा, उनको अपनी विधि भी सत्राव हो जायेगी।

चार जून की सुबह जब पटना ने घास सोनी तो पाया कि पूरा का पूरा शहर जैसे किने में बंद हो गया है। पुलिस का जैसे जान बिध गया है। हर दो मिनट से सड़कों पर पुलिस की गाड़ियां गुजर जाती हैं। रिपोवाल बहाना है कि बस के जुलूस में गोली नहीं चली पर बस अडर चलेगी। पूरा का पूरा शहर जैसे घातकों की गिरफ्त में बंद होना जा रहा है। किंगी घनहोनी के प्रति लोग भयभीत हैं।

जैसे जैसे दिन बीतता है न जाने कहां से भूख का भूख विद्यार्थियों का घाता है और शहर की रंग में समा जाना है। पाच जून की सुबह जे० पी० के नेतृत्व में निकलने वाले जुलूस के लिए हजारों लोग एकत्र हो रहे हैं। कोई साकर बनाना है कि बिहार राज्य पत्र-पत्रिका विभाग के अध्यक्ष ने गौरीनाथ झादेस बिहार के बप दिवों को भेजा है कि ४ जून की दोपहर में ३ जून तक बिहार के किसी भी स्थान से निगम की कोई बस पटना नहीं जाएगी। पटना से जिनको भी जाने वाली बस

चलती रहेगी। कोई साकर बताना है कि भगलपुर होकर पटना की तरफ जाने वाली 'भार इन्डिया' ट्रेन को बसूल जकजक से ही गया की तरफ धुमाने की कोशिश की गयी पर भागलपुर आदि स्थानों से जुलूस में भाग लेने वाले संकडो विद्यार्थियों ने रेल चालकों को मजबूर कर दिया कि वे ट्रेन पटना लायें। कोई खबर लाना है कि विद्यार्थियों को जाने के लिए जिन टुकों को तय किया गया था उन्हें शासन के अधिकारियों द्वारा रास्ते में ही रोक लिया गया है। कहीं से हस्ताक्षर को छीन लेने के समाचार माते हैं कहीं से जुलूस में भाग लेने का रहे विद्यार्थियों के साथ मार पीट के। शासन की ओर से सुभाष झाया कि जुलूस के लिए जो रास्ता पहले निर्धारित किया गया था उसमें एक दो स्थल ऐसे हैं जहां से जुलूस निकलने के समय किसी प्रकार की बाधियां पटना हो सकती हैं, इसलिए चार जून को जुलूस का पूर्व निर्धारित मार्ग शासन द्वारा बदल दिया गया।

जैसे-जैसे समय बीतता जाता शहर में डर में बड़ला जाता। इसी समय शासन की ओर से पुलिस की सभ्य गयी गाड़ियों का एक 'थर्मन मार्च' शहर के प्रमुख मार्गों से निकाला गया। इन गाड़ियों में सीमा सुरक्षा दल, नेटिव रिजर्व पुलिस और बिहार पुलिस के वामपक्ष दस्ते थे। बहा है कि पाच जून को निकलने वाले जुलूस के समय शांति बनाये रखने और प्रशासनिक कर्तव्यों से निपटने के लिए यह 'थर्मन मार्च' निकाला गया था। पर शाम होने लगे पटना में काफी डर भर गया कि ५ जून को कुछ भी हो सकता है। जून ५ की शाम बिहार प्रदेश छात्र सभयें समिति को एक उच्च स्तरीय बैठक में एक किया गया कि पूर्ण जुलूस में भाग लेने वालों को रोका व पीटा जा रहा है और उनसे हत्याघरों को छीनकर जलाया जा रहा है इसलिए प्रातः सात बजे निकलने वाले जुलूस का समय तीन बजे कर दिया जाये जिससे जुलूस और सभा में अधिक से अधिक से लोग पहुंच सकें और जुलूस समाप्त होने के तत्पश्चात् बाद ही गांधी मैदान में धामयना प्रायोजित हो। रात होने लगे बिहार में समय परिवर्तन को सूचना फेंक गई।

दिव : पाच घण्टे, समय : पीने तीन बजे, स्थान : बरम बुधा रिचन महिला

चर्चा समिति। बहतर सात की उम्र का नवयुवकों का नेता प्रपनी छोड़ी के सहारे सीडियों से उतर रहा है। बेहरे पर निश्चिन्तता का भाव, कोई चकन नहीं। आठ अग्रल के बाद एक बार फिर धात्र ऐतिहासिक क्षण। जयप्रकाश जी जुलूस का नेतृत्व करने गांधी मैदान जा रहे हैं। महिला चर्चा समिति से निकलकर जीप शहर में घाती है। कोई हलचल नहीं, प्रथिचाल चुकाने बन्द। जैसे ही कोई जे० पी० को देखता है हाथ जोड़ता है। जे० पी० बहरे की उदासीनता से धोत्रे परेशान नजर भाते हैं, पर यह उदासीनता ज्यादा देर टिकती नहीं। जीप जैसे ही गांधी मैदान पहुंचती है 'लोक नायक जयप्रकाश की जय' से घाकास गूज उठता है। गांधी मैदान पर सारों की भीड़ जे० पी० का इन्तजार कर रही है। सपला है बिहार की जनता ने आठ घण्टे को जे० पी० को घाननी जिन पलकों पर बैठाया था वे पलकों भभी तक भयभीत नहीं है। जे० पी० बिहार का प्रेम देखकर सों सये हैं।

साठे तीन बजने-बजने जुलूस गांधी मैदान छोड़ देता है। सबसे धागे हत्याघरों के बन्दल लिये टुक, फिर जे० पी० की जीप, फिर जे० पी० का बिहार। घावादी के बाद पटना में सबसे सम्बा, प्रत्येक और प्रभाव-घाती जुलूस।



जुलूस में भाग लेने वालों में देश के सत्य-प्रतिष्ठित साहित्यकार कवीरचरणराय देव (धरमा लगाये) भी थे।

घाठ घरेल के जुलूस में प्रतिगण भर कर शरीर होने वाले केवल हजारों लोग थे इन बार प्रतिगण करके शरीर होने वाले लो हजार। गमने के दोनो ओर माणो मोर्चों की बनी ही बनारें जः घाठ घरेल को बी। देसा

सयता चाकि नोग घाट अमेल से ही इसी तरह जे० पी० के इनकार में सड़े है। लोगों की धार्ये वैसे ही नम जैती घाट तारीख की भी प्रांमू सूखे नहीं थे। घटातिवाओं के छत्रे वैसे ही भरे हुए घोर फूलों की मासामो वा भार उतना ही। सब कुछ आलौकिक। पूरा वा पूरा पटना जे० पी० की धारतो में वा घोर जे० पी० पूरे पटना की धारतो में।



‘विधान सभा भंग करो’ ‘हर बार विद्यार्थी जीना है इस बार विद्यार्थी जीतेगा, ‘दम है विद्वाना दमन मे तेरे देव लिया है, देवोंके, ‘हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई—सबके घर में है मङ्गल’ ‘देन सके जो सस्ता राशन—वह भी क्या जनता का धानन’, ‘मा की मोद मुनी है—यह सरकार धुनी है, ‘हमला चाहे जैसा होगा—हाय हमारा नहीं उठेगा’, ‘अधिकांश—जिन्दावाद’—पटना की सड़कों पर गारे गुंज रहे हैं। जुलूस का सबसे धमला छिद्रा राजभवन के नजदीक है और सबसे विद्यला गांधी मैदान पर।

साठे पाँच बजते-बजते जे. पी. की जीप राजभवन के बन्द दरवाजे तक पहुँच गई। पहले विरक्ति जे. पी. राज्यपाल भवनसे साहज से मिलने गये बाद में संचय समिति के लोग भी चर्चा में शामिल हो गये। वमरे में घुसते ही राज्यपाल ने स्वागत किया और स्वास्थ्य के बारे में पूछा। जे. पी. और राज्यपाल ने दस मिनट एकांत वमरे में चर्चा की। जे. पी. ने राज्यपाल से कहा कि मंहगाई और छट्टा-घार से जनता उज्र चुकी है और विधानसभा का विघटन चाहती है। राज्यपाल हँसते हुए निश्चिन्ता पूर्ण भाव से कहते हैं प्रदर्शनों से तो विधानसभा विघटित नहीं होती। जवाब में जे. पी. कहते हैं कि जनता का दम विधानसभा में विस्थापन उठ गया है और चुंकि सविधान मे समय से पहले विधायकों को हटा देने का कोई प्रावधान नहीं है इसलिए जनता यहाँ भाई है। चर्चा के बाद राज्यपाल से कहा गया कि विधानसभा भी मांग के समर्थन में साधो लोगों में हस्ताक्षर फार्म भरे हैं और उसे साध सार्ये हैं। साल बपड़ो से बंधे हस्ताक्षरों से सही दृष्टि को राज भवन में पहुँचा दिया गया। हस्ताक्षर फार्म पर लिखा था—‘हम बिहार राज्य के नागरिक और निवाँचन

शासन, सत्ता, शोषणकारी सेवा से ही मुक्ति हमारी। राजभवन पर जे. पी. के जुलूस का का एक सत्याग्रही

क्षेत्र के मतदाता हैं। हमें इस बात का दुःख है कि प्राज्ञ सरकार छट्टाघार, मंहगाई बेरोजगारी जैसे जन-जीवन के सवाल को हल करने में सबंधा असफल रही है। उसने एक भी ऐसा ठोस बन्दम नहीं उठाया है जिससे यह विश्वास हो कि वह निजी और दल के स्वार्थों से ऊपर उठकर हमारी समस्याओं का हल करने की नियत भी रखती है। इससे विपरीत हम देखते हैं जो छात्र दल सुराक्षकों के खिलाफ आवाज उठा रहा है तथा हमारे बच्चों का जीवन बनाये-बिगाड़ने वाली शिक्षा में बुनियादी परिवर्तन की मांग कर रहा है उसे सरकार अपनी पुलिस और सेना की शक्ति से कुचलने की नीतिगत बर रही है। अनेक स्थानों पर निर्दोष लोग यहाँ तक कि बच्चों भी गोली के शिकार हुए हैं। एक और सरकार प्रनीति और क्षम्य पर उचार है, दूसरी और हमारी विधान सभा उसके कारनामों पर मुहर लगाती चल रही है। दल के बहुमत का इस्तेमाल जनता के विपक्ष किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में हम यह घोषणा करने को विवश हैं कि प्राज्ञ की मन्त्रि परिषद में हमारा विश्वास नहीं रहे गया है तथा यह विधान सभा न हमारी भावनाओं का प्रतिनिधित्व

कर रही है न हमारे हितों का। इसलिए राज्यपाल महोदय से हमारा अनुरोध है कि वह विधान सभा को प्रतिबन्ध भंग करे और मन्त्रि परिषद के हाथों से प्रशासन निष्काज लें। ये दोनों हमारा विश्वास खो चुके हैं। अपने शक्तिवत्ता को प्रकट करने के लिए हम नीचे भपना। हस्ताक्षर भंगूटे का निशान दे रहे हैं।

सात बजे जब गांधी मैदान में साधो की भीड़ जमा हुई तो बिजली की तरह खबर फैल गई कि राजभवन से लौटते हुए लोगों पर बेल्ती रोड स्थित इंदिरा त्रिगुंड के दरपतर से गोनिया चलाई गई और २१ लोग घायल हो गये। पूरी सभा में रोप फीज गया। कुछ नौजवान खड़े होकर गारे लगाने लगे कि घन का बदला खून से लेंगे। बड़ी मुश्किल से लोगों को शांत किया गया कि पहले वे जे० पी० का भाषण सुन लें। एक बार फिर जे० पी० ने बिहार को जलने से बचा लिया। जे० पी० के पूर्व राममूर्ति बोले। एक-एक शब्द तुला हुआ। ‘आठ अमृत का दिन सबल का था आज का दिन समर्पण का है,’ ‘इतिहास का उत्तरार्ध लिखा जा रहा है उसे युवाव व छात्र ही लिखेंगे,’ ‘एक आदमी आया और उसने बिहार की जनता के सिरहाने एक आदोलन रस दिया,’ ‘गह देव न जाने कितने पाल तक जे० पी० के प्रति वृत्तन रहेगा,’ ‘जे० पी० ने इस अंधमरे देश को प्राण दिये हैं’ सांगी सभा मंत्रमुग्ध होकर सर्वोदय श्रावो-वन के देशस्वो वक्ता को सुनती रही।

साधो की सभा शांत है। जे० पी० ने सोलना मरू किया है—भाइयो, बहनों...। एक-एक शब्द लोगों की बेधने लगा—‘निती को प्रतिकार नहीं नि जय प्रकाश को सोच-लन की गिस्ता दे’, जनता का देश है कि पुलिस वालो का देश है,’ ‘मेरा किसी से व्यक्तिगत भगडा नहीं है। सिद्धान्तों का भगडा है। गगत नीतियों की विरोध बरूना,’ एक साल तक मुक्तिवर्गी और राज्य शब्द रहेंगे एक वर्ष में जनता का सच्चा राज्य होगा,’ ‘तज्जा नहीं धारती उनको जो मुक्तियों पर बैठे हैं,’ ‘देस गवर्नमेंट में जितने पात जितने उनका धारापर रह धरनेचाली है,’ ‘सात जून से अने-म्बती बिघाटकों पर सत्याग्रह और निवेदन ही विधायकों मे बहा जाए कि जाना है तो हमारी



‘जैस से हो स्वराज्य पंदा हुआ है। जैस से हो तुम्हारे अधिकार प्राप्त होंगे।’ ७ जून को रामनग्न बाबू के नेतृत्व में विधान सभा पर पटना के जा रही सत्याग्रहियों की पहली डोली को बिदा देते हुए जे पी।

पीठ पर से जायो, ‘जेलो को भर देंगे,’ ‘अब विधान सभा भंग करो नहीं विधान सभा भंग करेंगे,’ ‘आवश्यकता पडी तो धीर भी तीव्रतर कार्यक्रम देंगे,’ ‘यह भादोलन धर जयप्रकाश के रोकने से भी नहीं खेदा।

पर सरकार ने जयप्रकाश नारायण से निपटने का ढय कर लिया है। पहाड से आराम करके लौटते वकन चर्फीगड हवाई बंदूके पर पत्रकारों ने जय प्रयाल मंत्री से जयप्रकाश नारायण के नये रुख पर टिप्पणी करने की कहा तो उन्होंने कह दिया कि यह निराल्य करना जनता के हाथ मे है कि भादोलन देश के हित मे है या नहीं, पर दिल्ली लौट कर उन्होंने उमाककर दीक्षा को कह दिया कि यह धर जनरी त्रिमेवारी है कि वे बिहार की सभाओं में देश के मुक्तिवादिनों, बुद्धि-वीरियों और वनिपय बडे धरवारों के सम्पादकों मे भी जयप्रकाश के भादोलन के खिलाफ कभर कस की है। बडे-बडे धरवार जो किसी समय, जे० पी० को तारीफो के पुन बापते थे, अब निर रहें हैं कि सरकार की जे० पी० की सेनावनी का जवाब देना चाहिए। पाच जून को जे० पी० के ऐतिहासिक भाएण के बाद ६ जून को कर्बंत सवरीय बोंडे की एक धनोपचारिक बैठक हुई और उसमें जे० पी० के नये कार्यक्रमों के

सदरंभ में बिहार के भादोलन की समीक्षा की गई। बैठक के बाद पारित प्रस्ताव मे बिहार के काब्रसी विधायको के नाम निर्देश दिया गया कि वे धरने और घेराव की धमकियो के बावजूद निरिचल रूप से राज्य विधान सभा के अधिकेशन मे भाग लें। विधान सभा के विघटन की मांग के प्रागे घुटने टेकने का प्रश्न ही नहीं है। डा० ककर दयाल शर्मा की अध्यक्षता मे हुई इस बैठक मे जयजीवन राय, पलशुदीन शर्मा अहमद, यशवन्तराव चव्हाण और सी० सुब्रह्मण्य मे भाग लिया।

जे० पी० के बडे अनुयाय सात जून को पुलिस के भारी पहरे मे जुडी विधान सभा के दरवाजो पर २२ सत्याग्रहियो ने गिरफ्तारिया दीं। इनमे लगभग बीस सवरीयो कर्बकर्ता ये और बाकी विद्यार्थी थे। दस जून को पुन साठ विद्यार्थियो ने धरनी गिरफ्तारिया दी। गिरफ्तार लोगो को पटना से दूर जेलो मे भेजा जा रहा है। जेलो मे जगह बनाई जा रही है कि हजारो की तांदाद मे गिरफ्तार

होने वाले विद्यार्थियों को उनमे भरा जा सके। काब्रसी विधायक काब्रस संसदीय बोंडे के निर्देशो का ईमानदारी से पालन करते हुए विधान सभा में भाग से रहे हैं। और धर-बारो मे कहा जा रहा है कि जयप्रकाश नारायण व उनके समर्थको सथा बिहार सरकार, जिसे केन्द्र का पूर्ण समर्थन प्राप्त है, के बीच पूर्ण शक्ति परीक्षा होनी धनिवार्य है और धर इनमे समझोते की भासा नहीं है।

सवाल यह है कि क्या यह भादोलन याम दिया जायेगा? क्या वो० ए० ए० ए०, सी० धार० पी० धीर प्रदेश पुलिस के हजारो जवान बन्दूको के दम पर विधान सभा की बचा लेंगे और लोगो से कर वसूल कर लेंगे? सवाल यह भी है कि अगर विधान सभा भंग हो गई तो क्या होगा धीर नहीं हुई तो क्या होगा? बिहार मे वे लोग जो आदोलन में लगे हुए हैं कहते हैं कि विधान सभा भंग हो जाएगी तो उसके बाद के लिये भी नया रास्ता अवश्य चिन्तेया, पर धर सरकारी शक्ति भादोलन को विफल करने मे कामयाब हो गई तो प्रागे धरने वाले वीरियो वर्णों के लिए किसी भी जय भादोलन की सम्भावनाए निररन हो जाएगी।

दिल्लो जैसे पुरा देग नहीं है, पटना पुरा बिहार नहीं है। बिहार मे भादोलन गावों तक पट्टक गया है। भादोलन धर जनता का ही गया है धीर बडे राजनीतिक दलो धीर विद्यार्थियो का भी दन्धवार नहीं करेया। बिहार मे सरकार का शक्ति परीक्षा जयप्रकाश नारायण के साथ नहीं जनना के साथ हो रहा है।

लडाई धर सता धीर जनता के बीच है। लोगो के मन मे भाव है कि यह आन्दोलन ज्यादा समय चलेगा या रास्ते ही मे बिखर जाएगा। ऐसी ककए उठना सहज भी है। पर बिहार के युवको को पुरा विश्वास है कि जीन जनता ही ही होंगी है। सवाल केवल समय का ही।

अगले अंक में पढ़िये

पटना के गाँवों मैदान में पांच

जून को दिया गया जयप्रकाश जो

का ऐतिहासिक भाषण ।



दादा धर्माधिकारी १६ जून को अपने जीवन के ७५ वर्ष पूरे करके ७६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। कबीर ने कहा था कि साधु की जानि मत पूछो। भगवत ने दादा से मिले होते तो निश्चित ही कहते कि उनकी उम्र मत पूछो। धापीजी के प्रसहयोग भान्दोलन में कलिंग छोड़कर धाने के बाद से अब तक दादा तुफानी धीर ज्वार-भाटो के बीच एक विचारशील दीप स्तम्भ की तरह रहे हैं। पार-

विनीबा जी ने सर्व-सेवा-सभ के सभी प्रोग्राम ठानकर वास्तविक रूप में प्रवर्तन के लिए प्रयत्न किए हैं। धापीजी के प्रसहयोग भान्दोलन में कलिंग छोड़कर धाने के बाद से अब तक दादा तुफानी धीर ज्वार-भाटो के बीच एक विचारशील दीप स्तम्भ की तरह रहे हैं। पार-

विनीबा जी ने सर्व-सेवा-सभ के सभी प्रोग्राम ठानकर वास्तविक रूप में प्रवर्तन के लिए प्रयत्न किए हैं। धापीजी के प्रसहयोग भान्दोलन में कलिंग छोड़कर धाने के बाद से अब तक दादा तुफानी धीर ज्वार-भाटो के बीच एक विचारशील दीप स्तम्भ की तरह रहे हैं। पार-

विनीबा जी ने सर्व-सेवा-सभ के सभी प्रोग्राम ठानकर वास्तविक रूप में प्रवर्तन के लिए प्रयत्न किए हैं। धापीजी के प्रसहयोग भान्दोलन में कलिंग छोड़कर धाने के बाद से अब तक दादा तुफानी धीर ज्वार-भाटो के बीच एक विचारशील दीप स्तम्भ की तरह रहे हैं। पार-

दशी धीर मुक्त चिन्तन करने वाला व्यक्ति कभी बूढ़ा नहीं होता। सच पुष्टि तो दादा जैसे विचारक के सम्बन्ध में उन्नत एक धार्मिक प्रतिभावता है। विचार शरीर, काल और शून्य के भी परे जा सकता है।

पूरा सर्वोदय भान्दोलन दादा की हीरक जयन्ती मनाते हुए स्वयं गौरवान्वित हो रहा है धीर कामना करता है कि दादा अपने चिन्तन की तरह कालजयी हो कर जीते रहे।

प्रथमदाबाद में २२ और २३ जून को होने वाला प्रथम भारतीय युवा सम्मेलन मध्य प्रदेश विधियों पर इलाहाबाद में हो रहा है। उत्तर प्रदेश युवा सम्मेलन जो पहले १८-१९ को होने वाला था इसी सम्मेलन में शामिल कर दिया है। यह व्यवस्था जयप्रकाश नारायण के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर की गयी है।

हिमालय सेवा संघ का सम्मेलन हिमालय सेवा संघ का सम्मेलन धरम-साता (हिमाचल प्रदेश) में १७ से २० जून तक हो रहा है। सम्मेलन में सीमा क्षेत्र की जनसेवा संस्थाओं के प्रतिनिधियों के ध्यान में रखकर हीरक धीर विद्वानगण भाग लेंगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

धरम-साता संस्थान कायम रखना चाहती है। कीर्ति भी इसप्रकार में रहे कि विहार में जयप्रकाश नारायण पकुर धीर इन्दिरा गांधी के खिलाफ लड़ रहे हैं। विहार में जनता एक ऐसी व्यवस्था धीर सत्ता के खिलाफ लड़ रही है जो धरम बने रहने का प्रोत्साहन देती है धीर धरम से भी सिद्ध नहीं कर सकती। धरम फुल गया है धीर सपर्य्य जारी है। फलतः नगर पर बैठे हुए लोग नहीं, जनता का का खून धीर आक्रोश देता।

—प्रभाप ओती

(पृष्ठ १ का शेष)

इस परिस्थिति में से रास्ता तो निकालना ही होगा। चूंकि इस परिस्थिति को बनाने में, बनाने रखने में हम सब किसी न किसी रूप में जिम्मेदार हैं अतः हर नागरिक में परिस्थिति बदलने की धार्मिकता पैदा होना जरूरी है।

स्थानीय व्यापारी प्रभावशील व बड़े बड़े जाने वाले व्यक्ति, समाज सेवी संस्थाएं धार्मिक धीर सुधारवादी संस्थाओं में धार्मिक-जिक तत्वों का इन दिनों बहुत सहारा लिया है, वे इनको प्रोत्साहन व प्रतिक्रिया न दे पायें इसकी कोशिश करनी होगी।

सरकार के कानूनों का पालन करवाने धीर उसकी योजनाओं को प्रवर्तन में लाने के लिए जो नौकरशाही का ढांचा है, यदि यह किसी भी तरह की भविष्यनिर्माण करता है तो हर नागरिक को मार्गिक की हैसियत में उसे ठीक करने का हक है। जनता को यह हौस दिलाया होगा।

जनता के पुत्रों द्वारा प्रतिनिधि मंडल निर्दुष्ट हो जायें, जनसेवा संस्थाएं धरम-साता में उनसे सहाय धरम-साता वर उन्हें वापस बुलाने का भी धरम-साता जनता का है।

गोडा के नागरिक हत धरम में धरम-साता तैयार कर रहे हैं, स्थानीय से गांव तक लोक शिक्षण की योजना बन रही है। बैठक के बाद जिला सर्वोदय मंडल के धरम-साता में कई लोगों ने नव-चेतना व संगठन के लिए होरा शुरू कर दिया है।

—अरुण

आधिकारिक मूल्य—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ मिलिंग या ५ डालर, एक घंटा का मूल्य ३० पैसे।

प्रभाप ओती द्वारा सर्व-सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २४ जून, '७४



परमा गीतकार को जांच के तहत विपुल मन्दिन के समय के ० पी० को अपनी रपट देने हुए (विबरण पृष्ठ ४ पर)

यह क्रांति है मित्रो ! सम्पूर्ण क्रांति : पांच जून को गांधी मैदान में युवकों से जयप्रकाश
नारायण का आवाहन

सन्त का "सद्गुपयोग"

बिहार का जन प्रान्दोलन जैसे-जैसे शक्ति और गति प्राप्त करता था रहा है और लोग जयप्रकाश नारायण नाम के प्रतीक के आस-पास जुड़ने लगे हैं जैसे-जैसे सरकार और सत्तारूढ़ दल यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि विनोबा इसके खिलाफ हैं और सरकार का समर्थन कर रहे हैं। जानबूझ कर किये जा रहे इस मतत प्रचार का सबसे ताजा उदाहरण कांभोजी संसद सदस्य बसन्त साठे का बयान है। साठे साहब इस मास में गुरु-धर्म में कभी विनोबा से उनके आश्रम में मिले। काफी देर उनकी बातचीत हुई। सरकार की धीनी में यह मान लिया गया है कि विनोबा सरकार का साथ दे रहे हैं इसलिए वे सारे लोग जो सत्ता की सीड़ियों पर चढ़ने की उत्सुक हैं, पंचनाम आश्रम की तीर्थयात्रा कर सकते हैं। श्रीमती गांधी, राष्ट्रपति गिरी, केन्द्रीय राज्यमंत्री विद्याचरणकुमार, दामाधरचरण मुकुल आदि नई राजनेता पिछले छः महीनों में विनोबा की सलाह का साथ ले चुके हैं। साठे साहब की धारणा भी इसी अर्थसत्ता की एक बड़ी धी।

विनोबा ने अपने विश्व परिषदय और संत की तटस्थ भूमिका से जो कुछ कहा उस का मतलब साठे साहब ने यह निकाला कि वे बिहार के प्रान्दोलन को एक मतत कदम मानते हैं। उनका बयान अखबारों में मुद्रित होने पर भी फिर आकाशवाणी में उन्हें अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रम 'स्पॉट लाइट' में भी बुलाया। सर्व सेना संघ के मंत्री ठाकुरदास बग साठे साहब का बयान ले कर १२ जून को विनोबा से मिले और विनोबा ने उनमें कहा कि बिहार के प्रान्दोलन के बारे में अब तक उन्होंने कोई राय नहीं बनायी है

और अब तक वे जयप्रकाश नारायण से बर्चा नहीं कर लेने कोई राय नहीं बनायेंगे। धी बग तो साठे साहब के बयान का सख्तन कर ही चुके हैं लेकिन साठे-विनोबा वार्ता का जो विवरण दिया है उससे भी कही यह सनेत तक नहीं भिन्नता कि विनोबा बिहार के प्रान्दोलन को एक गलत कदम मानते हैं।

भार विनोबा की इतनी पक्की राय होती तो वे उसे अब तक निश्चित ही जे० पी० तक पहुंचा चुके होते।

आजकल विनोबा अपना अधिवांस समय बह्मविद्या पर चिन्तन में लगाते हैं और उनकी एक ही मनोकामना है कि इस देश की सभी भाषायें देवनागरी को दूसरी लिपि के गति स्वीकार कर लें। विनोबा का विश्वास है कि देवनागरी लिपि जिन तरह इस देश को जोड़ सकती है उस तरह कोई भी राजनीतिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक शक्ति नहीं जोड़ सकती है। वे तो अपने भूदान-भ्रमदान कार्य को भी देवनागरी की स्वीकृति के सामने कुछ नहीं मानते क्योंकि उनकी राय में यह शक्ति हजारों साल बल रखती है। आज के सवाल पर टिप्पणी करने से वे हनुमन्त पंचनाम करते हैं और सब मम-स्वामी को एक लम्बे ऐतिहासिक और विश्व परिषदय में देखने पर और देने हैं। हाथ ही वे विनोबा ने कहा—“मसलो की बात ऐसी है कि रामजी धार्ये, उन्होंने कुछ मसले हल किये फिर रामजी मर गये। फिर से गये मसले रखे ही गये। फिर कृष्ण धार्ये राम ने धनुष लिया था कृष्ण ने मुरली बजाई, कुछ मसले हल किये, वे भी बने गये। दूसरे नये मसले खड़े हो गये। फिर बुद्ध आये। उन्होंने भीन पारण किया। कुछ मसले हल किये। अब

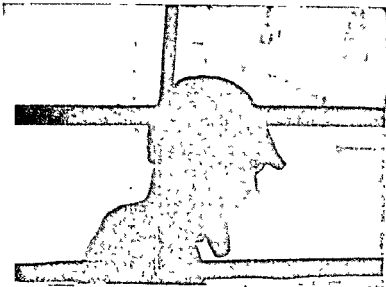
फिर से मसले खड़े हैं। दुनिया के मसले तो चलते ही रहेंगे।”

उसकी राय में आज सबसे ज्यादा जरूरत विद्यवात की है। “आप और हम साथ काम करते हैं तो आपके लिए नैरे मन में विश्वास होना चाहिए। बड़े-बड़े नेता सब पद्यो के बाबा के पास आते हैं और अपनी बात कहते हैं तो बाबा उन पर विश्वास रखता है। आप कहते हैं कि बाबा के विश्वास और भागीबाद को लोग एक्सप्लोइट (शोषण) करते हैं। तो एक्सप्लोइटेशन तो उनका काम है। लेकिन वे जितना एक्सप्लोइट करेंगे उतना बाबा और विश्वास रखता जायेगा। हम कहते हैं न कि हिंसा को प्रतिहारा से, प्रत्यक्ष को सत्य से जोड़ेंगे। इसलिए सामने जितना अधिवांस होगा उतना हम विश्वास रखेंगे। अधिवांस का वातावरण ही ही। हम विश्वास से जीते यह वाक्य भी शक्ति है।”

सरकार के समर्थन और विरोध के बारे में उनका कहना है—“सरकार के शक्त बाध होंगे उनका निषेध नहीं करना चाहिए, ऐसा हम नहीं करते। बल्कि इस बार हमारी शक्ति समेतन (पंचनाम, ६ मार्च) के साथ बाबा जो व्याख्यान दिया उसमें इन्दिराजी की काफी बर्तों तोड़ी गयी, उन्हीं के सामने। इसलिए मैं सिर्फ़ भीड़ी-भीड़ी बार्नें करूंगा ऐसा नहीं।”



भूदान-थान, सोमवार, २४ जून '७४



दिये गये उनके मुद्दाओं को जब तक नहीं बरते तो फिर उन्हें क्या नैतिक अधिकार है कि जे० पी० धीर बिहार के मांदोलन को विनाश के विनोबा का उपयोग करें? विनोबा धारणावान सन्त हैं, लेकिन सरकार धीर वापस की एवमात्र धारणा तिनमड़ धीर जोड़तोड़ के प्रभावों क्या है ?

जयप्रकाश नारायण बीस वर्षों से सर्वोच्च धान्दोलन को समर्पित हैं धीर पूरा देश उन्हें सर्वोच्च नेता बहना है। लेकिन जे०पी० ने तो बिहार का धान्दोलन बनाने के लिए विनोबा का नाम कभी नहीं लिया। सर्वोच्च के प्रमुख कार्यकर्ता इस क्षेत्र में जब पटना में उनके मिले तो उन्होंने साफ कहा कि धार लोगो को अगर कोई भी गवा हो तो धार जाकर पहले विनोबा जी से मिल लीजिये। सर्व सेवा सभ से उन्होंने नहीं कहा कि वह उनके धान्दोलन का समर्थन करें धीर उनके जब तक किया भी नहीं है। जे० पी० ने कहा—“मैं तो या कर विनोबा जी से नहीं पूछूंगा कि बिहार में क्या कर ? यह उनके साथ धार्या होना क्योंकि वे यहा नहीं हैं धीर उन्होंने स्वयं देखा नहीं है कि यहा क्या हुआ है। मैं तो सनाह माग कर उन्हें मदिन्दा नहीं करूंगा।

तो मिन्डे विनोबा धीर सर्वोच्च धान्दोलन का समर्थन प्राप्त करने का पूरा अधिकार है वे जयप्रकाश नारायण, तो सन्त का उपयोग नहीं कर रहे हैं लेकिन सरकार धीर कार्य स कर रही है क्योंकि वे जयप्रकाश नारायण की राष्ट्रीय नैतिक हैमियन को एक तटस्थ सन्त के नैतिक अधिकार से निरस्त कर देना चाहती हैं।

धीर जो लोग धमी भी समझते हैं कि विनोबा जयप्रकाश नारायण धीर बिहार के धान्दोलन के विनाश हैं उनके लिए विनोबा को वे बाणें उड़पुन कर रहा हैं जो उन्होंने सर्व सेवा सभ के मंत्री धीर धारणा को ३० धीर ३१ मई को बही :—

“जे० पी० को भी नाम करने बहु बाबा को समत है क्योंकि ए००० जे० पी० सम्यक हैं दो० निन्दा धीर धारणा ही नाम करने तीन० बनती दिनाई देते पर दुष्टत करीत धार० इसके होते जाने बाबा कुछ नहीं है। मनेने उठते रहते हैं। बनते रहते हैं। मैं वे कम ए००० में पा।”

(धिर वृष्ट १६ धर)

है। लेकिन प्रेम रखूंगा। प्रेम छोड़ कर कुछ नहीं कहा था।” इन्दिराजी ने जब इस जवाब में उनके धामी मिनट बाव की तो विनोबा ने विदेग नीति पर उनकी बहुत साराइया की लेकिन साफ कहा कि धरेनु नीतियो मे काफी सुधार को जरूरत है। विदेशी मामलो मे इन्दिराजी की मदद करने के लिए मार्च में उन्होंने सर्व सेवा सभ को सनाह दी—“अब जो ने इन देश को तोडा। यह जो देश के टुकडे हो मण्डे हैं उनको जोडने की प्रक्रिया धमी इन्दिराजी कर रही है। सत्ताधर साल के बार पढ़ना भौवा धार्या है भारत, पाकिस्तान धीर बगला देग के मेलाजोत का। धमी सरकार के तिलाक महिनक धान्दोलन भी नहीं होना चाहिए। इसके देत कमजोर होगा।” लेकिन जब सभ की प्रबंध समिति के सदस्यो ने उनके धारणा पर परिनिर्माड पर धर्षा की तो रास्यो में महिनक धान्दोलन की छूट विनोबा ने दी।

को नैतिक समर्थन मे उन्होंने इन्दिरा जी ने कहा था कि साठ समस्यो, मट्टगाई धीर मुद्रास्फीति को समस्यो को हल करने के लिए समान प्रजासभ मे निवा जाये धीर सरकार को बनेकारियो के बेनग का कुछ भाग भी धारणा मे दिया जाये। उन्होंने पूर्ण मदाव कयो, धर्षा इत्तयो पर धारणी धीर परिनिर्माक : सोमधार, २४ जून, '७४

बार निधीजन के लिए बहुरूप्य के पालन का मुभाव दिया था।

तो इस तरह विनोबा की धारणा के स्तम्भ हैं—विश्वाम प्रेम, सबका सहयोग, अधिरोध, सर्वसम्मति पर चलने वाला दमहीन प्रजासभ धीर गाव को प्रशासनिक, धारिक धीर राजनीतिक मामलो म सुनिवार्य टकाई के रूप मे स्वीकृति। धामी के बार लोचशक्ति का धारण पर रचनात्मक धान्दोलन विनोबा ने ही चलना धीर दो बार पूरे देश की परिन्मा की। वे धामी के जमाने में भी धान्दोलनकारी नहीं रहे। लेकिन रचनात्मकता पर इनका धीर देने के बाबजुद मात्र, मिनेया के मन्वे पोस्टरो, समिनवाहु मे मठों द्वारा विदे का रहे धार्या धारिक के विनाश धान्दोलन करने की धनुमति उन्होंने दी।

धर सरकार धीर सत्ताहूट दल को पूरा अधिकार है कि वे धाने पत्र मे विनोबा का समर्थन प्राप्त करें। लेकिन उनके प्रयत्नों में कम से कम कुछ ईमानदारी धीर निष्ठा तो होनी चाहिए। क्या यह विनोबा के साथ धारणा नहीं है कि उनके धारयो को सर्व में ले लाइ कर धारण को समयो की तरह उनका उपयोग किया जाये? धार सरकार धीर सत्ताहूट दल उनके सुनिवार्य मिद्दानो को स्वीकार नहीं करते, धीर तो धीर धरधार में

नागरिकों के साथ दुश्मनों का व्यवहार

सरकार द्वारा गया में किये गये गोली-काण्ड की जांच के लिये जयप्रकाशजी द्वारा नियुक्त की गई जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि गया में गोलीया वैमलम्ब चलाई गईं। १८ और १९ मार्च को पटना में जो कुछ हुआ उसकी जांच के लिए जय-प्रकाशजी द्वारा नियुक्त की गई जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि १८ मार्च को पटना में हुई घटना में नागरिकों के साथ दुश्मनों-सा व्यवहार किया गया। १७ जून को एक पत्रकार परिषद में पटना गोलीकाण्ड जांच समिति की रिपोर्ट प्रसारित करते हुए जयप्रकाशजी ने कहा कि प्रेषित गवाहों की संख्या में कमी रहने के कारण मरने वालों की संख्या का ठीक-ठीक पता नहीं चल सका। जांच के क्रम में केवल बीस व्यक्तियों की गवाही प्राप्त हो सकी। जांच समिति ने सदस्य थे—श्री वैश्वी रमण शरण, श्री राम पारसराय, श्री रामविहारी सिंह, गोरखनाथ सिंह और श्री अंगद खोभा।

जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि १८ मार्च को पटना में जो कुछ घटित हुआ वह सन् १९४२ के बाद देखने में नहीं आया। प्रशासन तंत्र के लोग उस दिन इनके पबरा गये थे कि उन्हें विधान सभा को छोड़ कर और कहीं भी कानून और व्यवस्था की स्थिति से कोई मतलब नहीं रह गया था। ऐसा लगता है कि सार्वजनिक तत्त्वों की सम्पत्ति को पूर्णतया प्रशासात्मिक तत्त्वों की मर्जी पर छोड़ दिया गया हो। नागरिक प्रशासन, कार्यलयों तथा न्यायालयों में कामकाज ठप्प सा हो गया था।

१८ मार्च को गडबड कीसे प्रारम्भ हुई इसका उल्लेख करते हुए जांच समिति ने बताया है कि उस दिन बढ़ती हुई भीमनो, भट्टाचार्य, बेरोजगारी आदि नागरिक जीवन की समस्याओं की घोर राज्यपाल एवं विधायकों का ध्यान प्राप्त करने के लिए छात्रों और युवकों का एक विधान सभा और सचिवालय के पास पड़ना। वहाँ पहुँचने पर

उन लोगों ने राजभवन और सचिवालय के बीच के मार्ग पर धरना दिया। छात्रों में पटना विश्व-विद्यालय छात्र सभ के अध्यक्ष और महासचिव भी धरना दे रहे थे। उस समय पुलिस ने धरना देने वाले छात्रों और सामान्य जनता पर बड़ी निर्दयतापूर्वक लाठी चार्ज किया। छात्र-नेताओं पर पुलिस ने विशेष वेरहमी से लाठी चार्ज किया। इसके बाद ही उपस्थित समूह में पथराव प्रारंभ कर दिया। कई बार के लाठी-चार्ज और शस्त्रों के प्रयोग के बाद अधिवारियों द्वारा गोली चलाने का आदेश दिया गया। स्थिति कादू के बाहर होती गई और अन्त में नागरिक प्रशासन सेना के अधिवारियों को सोप दिया गया। सेना ने वर्षभू लागू किया और उसके बाद पटना की जनता का दर्दनाक यातनायें भुगवनी पड़ी।

सीमा सुरक्षा दल तथा केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस के जवानों के व्यवहार के बारे में प्रतिवेदन में कहा गया है कि वे अपनी मानसिक समुलन को बँटें थे तथा अपने ही देश की जनता से ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे वे दुश्मन ही चीखियों पर पड़ूक गये हो। लगता था जैसे जंगल के कानून को प्रमत्त में लाया जा रहा था। जांच-समिति का कहना है कि यह समझ में नहीं आता कि जब विधान सभा छात्रों में भाग बुझाने वाले दस्ते तैनात थे तो विधान सभा के सचिव श्री विश्वनाथ मिश्र के निवास में लगी आग को बुझाने के लिए उनका इस्तेमाल क्यों नहीं किया गया, जब कि विधान सभा के दक्षिणी पाठक से वह मुद्रिकल से तो बरफ भी दूरी पर होगा।

'सर्व माइटी' और 'प्रदीप' जैसे अग्रवागों के दफ्तर को जलने से बचाने के मयात सचिव ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि कोन-वाली घाने में डेढ़ सौ से दो सौ तक सशस्त्र गिराही थे, पर घाने में उपस्थित अधिवारियों ने सर्वराइट प्रेस को बचाने के लिए पुलिस भेजने से इन्कार कर दिया। जिला दण्डाधि-

कारी ने प्रभारी दण्डाधिकारी को आदेश दिया कि वह सर्वराइट प्रेस जायें और इसे किसी भी बीमत्त पर जलने से बचायें, पर कोई नहीं गया और जिलादण्डाधिकारी के आदेशों की अवहेलना की गई। तब जिला दण्डाधिकारी स्वयं वहाँ पहुँचे (लेकिन वे प्रवेश करने स्वयं वे) भाग बुझाने वाला पहला दस्ता ४ बजे शाम को वहाँ पहुँचा। पर इसके पास पानी नहीं था। इसके बाद रात १२ बजे भाग बुझाने वाले तीन दस्ते वहाँ पहुँचे, लेकिन इनमें से भी एक दस्ता पानी लाने के लिए लौट गया।

मुसलदुष्ट की शिक्षा श्रीमती गुगीला लाल को प्रातः दृष्ट से लौटते गोली लगी। उसी मोहल्ले के रामचन्द्र साहू को उगी शिक्षा को पर पहुँचाने की कोशिश करने के दौरान गोली लगी। बारह वर्षीय बालक रामजी को भी दाढ़िने पैर में घुटने के नीचे गोली लगी। अशोक को हथेली में गोली लगी और उतने एक अशुली सदा के लिए लो दी। यह सब तब हुआ जब कि उस समय पर न तो कोई पथराव हो रहा था न ही छात्रजनों की घटना।

नागरिक जांच समिति के समक्ष दो गवाहों ने बयान दिया कि १८ मार्च को गये सचिवालय के निष्पट दो व्यक्तियों को गोली लगी और उन्हें तुरन्त ही पास में जलने हुए भवन की आग की लपटों में फँक दिया गया।

सब सेवा सभ का अधिवेशन अब ६ से ११ जुलाई तक पटना में होगा। अधिवेशन की नयी तिथियों की सूचना देते हुए तप के मंत्री डा. कुरेशीय वगैरे ने कहा है कि अधिवेशन में किनोबाजी और जयप्रकाश नारायण दोनों भाग लेंगे। पूर्व निर्धारित विषयों के अलावा अधिवेशन में जे० पी० के नेतृत्व में चल रहे विहार के जन आन्दोलन पर चर्चा होगी। किनोबा और जे० पी० की भेंट की इच्छा भारतीयों में होगी और पूरी संभावना है कि वे दोनों मित्र-र गवर्नर आन्दोलन को एक नयी दिशा देंगे।

भारत-गज • मोमकार, २४ जून, '७४

यह क्रांति है मित्रो ! सम्पूर्णा क्रांति

पांच जून, गांधी मैदान पटना में युवकों

से जयप्रकाश नारायण का आवाहन

अब मेरे मुँह से भाव टुकार नहीं सुनें। लेकिन जो कुछ विचार मैं आपके वजूत या वे विचार टुकारों से भरे होंगे। क्रांतिकारी के विचार होंगे। उन पर धमल करना घासना नहीं होगा। धमल करने के लिए जितान करना होगा, कष्ट सहना होगा, मोक्षी धीर साधियों का सामना करना होगा, जेसो को भरना होगा। जमीनों की कुकिया होगी। यह सब होगा। यह क्रांति है मित्रों, और सम्पूर्ण क्रांति है। यह कोई विधान कमा के विषय का ही धान्योत्पन्न नहीं है। यह तो एक मजिल है जो रास्ते में है। दूर जाना है। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में धमी न जाने कितने मील इस देश की जनता को जाना है उस स्वराज्य को प्राप्त करने के लिए, जिसके लिए देश के हजारों-सालों जवानों ने कुर्बानिया की हैं। जिसके लिए सरदार भगत सिंह, उनके साथी, बगाल के सारे क्रांतिकारी साथी, महाशय्य के साथी, देश भर के क्रांतिकारी साथी गोली के निशाना बने, क्रांतियों पर मटकवाये गये। जिस स्वराज्य के लिए देश की जनता सालों से बार-बार जेलों को भरती रही लेकिन मात्र सत्ताईस-षट्ठाईस वर्ष के बाद भी वह स्वराज्य नहीं प्राया है धीरे जनता कराह रही है। भूष है, महागाई है, षट्ठाचार है कोई काम नहीं जनता का निकलता है बगैर रिशत दिने। सरकारी दफ्तरो में, बैंकों में हर जगह। देश का चिट्टा नेता है उसमें भी। हर प्रकार के धन्याय से जनता दब रही है। मित्रा-संस्थाएँ षट्ट हो रही हैं। हजारों नौजवानों का भविष्य धांधरे में पड़ा हुआ है। उनका जीवन नष्ट हो रहा है। गुलामी की शिक्षा, कलम पिपने की शिक्षा भी जाती है। किस शिक्षा पाकर दर-दर की ठोकने-साभा नीरती के लिए। नीकरियों मिलती नहीं, दिन-पर-दिन बेरोजगारी बढ़ती जाती है। 'गरीबी हटाओ' के नारे जकर सगल हैं, लेकिन गरीबी बढ़ी है पिछले वर्षों में। भूमिहीनता विधानों के लिए सींगिन के कानून, दूधरे कानून बने हैं, लेकिन वहाँ के सुराबने में प्राज ज्यादा भूमिहीन है। जमीनों दिन गयी हैं छोटे-छोटे गरीब किसानों की।

मुझे आपसे कुछ बातें कहनी हैं। भ्रष्टासा लेकर आप प्राये हैं। हजारों छात्र बन्धुओं की अपेक्षा है, प्रदेस की जनता की अपेक्षा है कि आप के इस मन्त्र में मैं कोई नया कार्यक्रम प्राणे के लिए हूँ। तो मित्रो, यह कोई मेरा कार्यक्रम नहीं है। मैंने अपने छात्र बन्धुओं से चर्चा की। सचलन कृपण प्राज : सोमवार २४ जून '७४

समिति में इसकी चर्चा हुई। उनमें से कई लोगों ने लिखके धन्ये मुग्धव भेजे। बुद्धिजीवियों से चर्चा हुई। सभी चर्चाओं का निष्पत्त हमने निवाला है, वह प्राणके सामने रजु गा। पाठ वाले में कहना चाहता हूँ।

आज बड़ी भारी जिम्मेदारी हमारे कंधों पर प्रायी है धीरे मैंने जिम्मेदारी धरती तरफ से माँगकर के नहीं ली है। तच्छोँसे, छात्रों से बराबर कहना रहा हूँ। जब पहला हमने प्राट्, जान किया था 'गुप फार टेमो' की सी लोकतंत्र में युवकों का क्या रोल हो, उसमें लिखा था, धीरे उसके बाद बराबर कहा रहा हूँ, मचलन समिति में बहुत करता रहा हूँ—हम बूझे हो गये, हमारी सलाह लीजिए, हम दूसरी पीढ़ी के हो गये। प्राण नई पीढ़ी के लोभ है, देश का भविष्य प्राणके हाथों में है। उस्ताह है प्राणके धन्दर, क्रांति है प्राणके धन्दर, जवानों है प्राणके अन्दर अ.प नेता बनिये। मैं प्राणकी सलाह हूँ गा। तो मित्रो ने कहा—जय-प्रकाशजी, मार्गदर्शन से काम नहीं चलेगा। प्राणको नेतृत्व स्वीकार करना होगा। मैं टालता रहा, टालता रहा। लेकिन भन्त में प्राते समय मैंने उनके प्राग्रह को स्वीकार किया। स्वीकार करते समय मैंने अनुभव किया धनकीपिपरीयोंका का धीरे सन्नतपुर्वक यह स्वीकार किया। परन्तु छात्रों से भी, प्राण सबसे भी यह धनुरोप है कि नाम के लिए नेता मुझे नहीं बनना है। मुझे सामने सडा कर के, धीरे कोई हूँ डिक्टे करे पीछे से कि यह करना है जयप्रकाश नारायण मुझे, तो नेतृत्व को कल में छोड़ देना चाहूँ गा। मैं सबकी सलाह लूँ गा (तर्भिया नहीं), बात सुनिये, बात समझिये) सबकी बात सुनूँ गा, छात्रों की बात, जितना भी ज्यारा होगा, जितना भी समय मेरे पास होगा, उनसे बहुत कफू का, समझूँ गा और धमिक-से-अधिक उनको बात में स्वीकार करूँ गा। आपकी बात, जन-धर्मपर्व लामितियों की बात स्वीकार करूँ गा, लेकिन फँसता मेरा होगा। इस फँसने को हट्टें मानना होगा, धीरे प्राणको मानना होगा। तब तो इस नेतृत्व का कोई मतलब है, अब तो यह तर्भिन सगल हो सकती है। धीरे नहीं तो आपस के मगडों में, बहडों में, पता नहीं कि हम मित्रो के विपदर जायेंगे धीरे क्या नतीजा निकलता है।

तो मित्रो, कुछ तो टिपणिया में करूँगा धीरे कुछ कार्यक्रम प्राणके

सामने रखूंगा। बहुत दिनों से सार्वजनिक जीवन में हूँ। १९२१ में जन-वरी को महीने में, इसी पटना कालेज में आय. एस सी. का विद्यार्थी था। हमारे साथ, हमारे निकट के साथी, वे सब छात्रवृत्ति पाने वाले थे। मुझे भी छात्रवृत्ति मिलती थी। सब धन्यत्व दर्ज के 'कीम' थे, उस समय के विद्यार्थियों में। शोरही मुझे एक साथ गांधीजी के आह्वान पर धस-हटोगे किया। धसहटोगे के बाद करीब डेढ़ वर्षों ही मेरा जीवन बीता, क्योंकि मैं साइंस का विद्यार्थी था। तो राजेन्द्र बाबू के सचिव या मन्त्री या मित्र या जो कहिये—मथुरा बाबू ने, उनके जामाता, बाबू फुलदेव सहाय यर्मा थे, उनके पास भेज दिया गया कि फुलदेव बाबू के साथ रहे और उनको प्रयोगशाला में कुछ प्रयोग करो और उनसे कुछ सीखो। महात्मा यदनमोहन मालवीयजी के लिए मैंने हृदय में पूजा का भाव है, परन्तु हिन्दू विश्वविद्यालय में भी दाखिल होने के लिए मैं तैयार नहीं था, क्योंकि सरकारी रपया-सरकारी मदद विश्वविद्यालय को मिलती थी। स्वतंत्र नहीं था वह। पूर्णरूप से राष्ट्रीय विद्यालय नहीं था। तो मैं किसी विद्यालय में नहीं गया। बिहार विद्यापीठ में मैंने परीक्षा दी भाय-एस सी-० की। पास तो करना ही था, पास कर गया। उसके बाद बचपन में मैंने हार्दिकूल में स्वामी सत्यदेव के भाषण सुने, अमेरिका के बारे में। मैं कोई पगो घर का नहीं हूँ। थोड़ी सी धैर्यी और पिताजी नदूर विभाग में जिलादार थे। बाद में देवेयू प्रसिस्टेंट हुए। मान-जेने-टेब प्रफसर थे। उनकी हैसियत नहीं थी कि वह मुझे इरलैंड भेजें। वो मैंने बहुत था कि अमेरिका में शुद्ध मजदूरी कर के लड़के पढ़ सकें हैं। मेरी इच्छा यह थी, भागे पढ़ना ही मुझे। प्रांतीलन तो गिराव पर भा गया है—बड़ाव पर था, उतर चुका है। इस बीच मैं अमरीका से कुछ शिक्षा प्राप्त करके आ जाऊ इसीलिए अमेरिका गया। कुछ लोग हैं पता नहीं कि उन्हें किस नाम से मैं पुकारूँ, मुझे ध्याज बरसों से गानियाँ देते रहे हैं। उस दिन तीन जून को कितनी गालियाँ मुझे दी गयीं हैं। चूंकि अमेरिका में मैं पढ़ा इसलिए मैं अमेरिका का दलाल बना हूँ। 'निषेधन को वे दो तार जयप्रकाश की हों गयी हार' वे नारे लगाये थेकरम लोगों ने।

मिर्चों, अमेरिका में खदानों में काम किया, कारखानों में काम किया, सोहें के कारखानों में, जहाँ जानकर जाते जाते हैं उन कारखानों में काम किया। जब मुनिर्विस्टो में पड़ता था, छुट्टियों में काम कर के इतना कमा लेता कि कुछ खाना हम तीन-चार विद्यार्थी मिलकर पकाते थे, और सस्ते में हम लोग खा-पी लेते थे। एक कोठरी में कई घामनी मिल के रह लेते थे। खपया बचा लेते थे। कुछ कपड़े खरीदने के लिए कुछ फीस के लिए। और बानी हर दिन, रविवार को भी छुट्टी नहीं। दिन का खाना, एक पंटा देखा मैं, होटल में—या तो बर्तन भोजे या बेंटर का काम किया, तो खाम को रात का खाना मिल गया, दिन का खाना मिल गया। किराया कहा से मकान का हफको धाया? बराबर दो-तीन सड़के कितने वर्षों तक—दो चारपाईं नहीं थी कमरेमें, एक चारपाईं पर मैं और कोई-न-कोई साथ हमारा अमेरिकन लड़का रहता था। हम दोनों साथ सोते थे। एक रुखाई हमारी होती थी। इस गरीबी में मैं पढ़ा हूँ। इतवार के दिन या कुछ प्राइंटाइम में, यह जो होटल का काम है, उसको छोड़कर के जुते साफ करने का काम किया शू घादन पानरें में। उसने लेकर के

कमोड साफ करने का काम होटलों में। वहाँ जब भी ००० पास कर लिया, स्वतंत्रतापत्र कित गयी—तीन महीने के बाद प्रसिस्टेंट हो गया डिपार्टमेंट का, 'ट्यूटोरियल क्लास' लेने लगा तो कुछ धाराम से रहा। इन लोगों से पृथिये, मेरा इतिहास वे जानते हैं, और जानकर भी मुझे गालियाँ देते हैं। अमेरिका में विसकासिन में, मेडिजन में, मैं पोर कम्युनिस्ट था। पोर माक्सवादी बना। स्टॉलिनवादी नहीं, वह. लेनिन का जानना था, वह टूटकर का जमाना था। १९२४ में लेनिन मरने थे, और १९२४ में मैं माक्सिस्ट बना था। और दाते के साथ कह सकता हूँ कि उस समय तक जो भी माक्सवाद के श्रम छुपे थे श्रमजी में, हम लोगो ने पढ़ डाले थे। एक सखी दर्जो था, रात को रोज उसके यहाँ हमारे बस लगे थे। और वहाँ से जब भारत लौटा तो पोर कम्युनिस्ट वन में सोता था। लेनिन मैं कोर्र में बने दाखिल हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी में न नहीं दाखिल हुआ? ये कहते थे—महात्मा गांधी देश के भावबलका का, भावबलदारो का, पूंजीपतियो का दलाल है। जोपाटी में, बम्बई में भाषण हुआ ओपलेकर का कि गांधी दलाल है पूंजीपतियो का। काग्रेस में पूंजीपतियो की सत्था है। मैंने जो लेनिन से सीखा था वह। सीखा था कि जो गुलाम देश है, वहाँ के जो कम्युनिस्ट हैं उनको हरगि वहा की भाजादी की सड़ाई से धपने को अलग नहीं रखना चाहिए। भ ही उस सड़ाई के गेवतु, जिसको माक्सिस्ट भाषा में 'बुडु' धा क्लॉस' कह हैं, उस क्लास के हाथ में हो। पूंजीपतियो के हाथ में उसना नेतृत्व हैं फिर भी कम्युनिस्टो को प्रलग नहीं रहना चाहिए, 'भाइसोलेट' ना रहना चाहिए। उस समय मेरठ काग्योरेसी चल रही थी। वड़े लो जेल में थे, लेकिन खोज-खोज कर मैंने उनको ढूँढा। पागे को ढूँढ मिरजगर को ढूँढा, पी-० सी-० जोशो को ढूँढा, बहस की इन लोगो खन्दन में। सर्वमेखस्त, पायसत के भाई, पायसत बैलिजम गये थे, इ लिए उनसे तो मुलाकात नहीं हुई—सेबर मथलो के सम्पादन और विदा वहा की कम्युनिस्ट पार्टी के श्रम कर्मेश दस्त से वित्ती बात की। गस रास्ता बना रहे हो भाप, स्टॉलिन के गुलाम हो, स्वत के गुलाम हो लैन को भूल गये। इसलिए इनके साथ नहीं गया—आजादी की सड़ाई गहारी की इन्होंने। खगे साहब ने सी-० घाई-० डो-० का नाम दिया क्योंकि रूस मित्र था, अमेरिका के साथ इरलैंड का 'वीयुला विया' धा-हम लड़ रहे थे धपनी भाजादी के लिए। गांधीजी जेल में थे। नेहुरु थे में थे, और यह लोग गहारी किये हुए थे, उस जमाने में और हम कहते। यह लोग!

तो मित्रो, यह तो कहनेवाला नहीं था। यह भाठ में से एक पादन नहीं था। लेकिन निवत गया, क्योंकि दित भरा हुआ है। ऐसा दुषी है हृदय हमारा, नारे सगाते हैं—'पूंजीपतियो का कौन दलाल-जयप्रकाश जयप्रकाश'। अमेरिका का कौन दलाल-जयप्रकाश, जयप्रकाश'। किम दुनिया में ये रहते हैं, पता नहीं।

पहली बात जो मैंने नोट की है भापसे बटने के लिए वह इस सफ-कार के बारे में है। आज से तीन दिन हुए, गफूर साहब मिलने भाये के-बहुत प्रेम से मिले। इसके दो दिन बाद चन्द्रशेखर बाबू मिलने भाये-बहुत प्रेम से मिले। लेकिन प्रयागमंथो से लेकर के, दीक्षाजी से नीचे तक के सब लोग मुझे डेमाकेसी का सब सिखाते हैं। इनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं है कि जयप्रकाश नारायण को लोचनन को गिया

पुनान-नस, सोमवार, २४ जून, ४४

हैं। नेत्रिन के जयप्रकाश नारायण को गिरा देने की हिम्मत करते हैं—
 धोर इनकी (नहीं, तासिमा नहीं) धोर इनको हरकत देखिये—शांतिमय
 प्रदर्शन, शांतिमय जुलूस, हजारों लोग वा रहे हैं, 'प्रदेश के कोने-कोने से
 छात्र धार रहे हैं, विमान आ रहा है, मध्यम वर्ग के लोग धार रहे हैं,
 इहाँ रंगो से धार रहे हैं कोई दूध भाँचे पर सेकर के, बीजल अथवा सरीसृप
 कर के, मेकर के आ रहे हैं। जहाँ-तहाँ रोना है इनको, सबको की पीडा
 है, गिरफ्तारी की है। धनायाम, कोई बारन नहीं है धोर यहा हमसे
 धारक के सब मीठी-मीठी बात धारि-ओओ साहब, कोहली साहब और
 बमिन्तर धोर सब धारणर लोग करते हैं। त्रिद की कि धार रास्ते से
 जुलूस नहीं जायेगा, इसमें सजरा है। मुझे कोई सतरा दिसाई नहीं
 दिया, निरिन जब उन्होंने बड़ा कि धारपर जेत तोबने की कोसिमा हो, धोर
 धारक उधरहें गोभी चलायी पड़े तो मीने बहा इमकी जिम्मेदारी मैं
 नहीं लेता हूँ। धामोनेन हमारो किनी दूनरे उहाँय से हो रहा है, बीच
 में यह 'आइजनेन' भटकना ही जाये, रास्ता ही भटक जायें हमलोग, तो
 चलिये जो धार बहो है, बही मैं मान लेता हूँ। कुछ विगडे भी होंगे धार
 लोग उधरले जलता धा इधर से बनीं धारो। हामाकि उर सबको धो से आये
 धोर एक दुसरी विनिमि में राडा कर ने, जो सड़के हमारो धार सधर
 सभित के बहाँ जेप में है—उनको विधत्ते के लिए। मैं नहीं जानता हूँ कि
 अये की गारकर के अमाने ने भी इस प्रकार का व्यवहार बनी हुआ हो।
 पैरो से उतार दिने अये, बसों से उतार दिने अये, टिकक धा उधरे पास।
 बेडरत लोग है उनको उतार दिना बलग ? यह जुलूसकरपुर की फिरोट
 काय धनसभार ने पड़ी होगी। सारे इतिबन्धन के बन्धन नहीं हुआ है।
 धामेनहीं आनी इन लोगो की। डेमोनेनी की बान बलते हैं ? तोसतत्र मे
 प्रवता को धारिधार नहीं है ? जहाँ भी चाहें वे शांतिपूर्वक सभा करे
 धरनी ? जहाँ भी चाहें शांतिपूर्वक प्रदर्शन करें ? राज्यगत के जहाँ
 जलता हुआ तो तासो की तादाद मे जायें विधान सभा के सामने जलें ?
 उनको पूरा धारिधार है। हिया करे कोई तो दुसरी बलते हैं। सब बहते
 हैं—हमने मिनने आये पुनिन के उधर धारिधार ने बहा—बडे उधरवा-
 धारिधारी ने बहा—नाम लेता यहा ठीक नहीं होगा कि मीने दीक्षित जी के
 मुह से मुना है कि जयप्रकाश नारायण नहीं होंगे तो बिहार जल गया
 होगा। जयप्रकाश नारायण के बारे मे ऐसा धारण सोचने है, तो जयप्रकाश
 नारायण के नेतृत्व में यह प्रदर्शन धोर यह सभा होनेवाली है—बपों
 लोगों की रोसते हैं धार ? जनता से धरबराते हैं धार ? जनता के आप
 प्रतिनिधि है ? निच की तरकसे शासन करने बडे हैं धार ? धारकी
 यह हिम्मत कि लोगों को पटना आने से रोक लें ? उनकी राजधानी है।
 आरुको राजधानी है ? यह पुनिनसत्ताओं का देश है ? यह जनता का देश
 है (तासिया) दूध जलना चाहिए इन लोगो को। ऐसी नीचना भा व्यवहार
 से बहुत बडोर धारकी का प्रयोग कर रहा हूँ, मैं बडोर सधर का प्रयोग
 नहीं करता। नेत्रिन यह संजलना भा व्यवहार है। धार कोई डेमोनेनी
 के दुसरे हैं—धो से लोग दुसरेन हैं, जो जनता के शांतिमय धारक्रमों में
 बाधा सजने है। उनकी बिरननारिधर करते हैं, उन पर सारी
 चलाते हैं, गोसिमा चलाते हैं। इन सजरा ने, इस विधान
 सभा की सम्मति से यह किया है धोरकि विधान सभा की सम्मति से
 यह गारकर धर रही है धारक सम्मति नहीं है—तो धारिये सधरों बंधक
 कर के धर करे कि जितने काम १० मार्च से धर मिनित्डी ने किये हैं,
 मुसल बसः सोसवार, २५ जून, ७५

उन सबकी हम निन्दा करते हैं, धमान्य करते हैं, हम दुसरी मिनित्डी
 बनायेगे। तो टोक है—हमारो राय बदल जायेगी। कीई सोचता है ?
 इनके धारण में भगडे होंगे हैं, दिल्ली जाते हैं, यह बाहू के लिए ? इस
 बात के लिए कि मिनित्डी मिनित्डी गनत बान कर रही है। इस बात के
 लिए कि हमको मिनित्डी बनाओ (हसी) यह डेमोनेनी है ? धुनाय में
 प्रचार हुआ कि बार्थेस स्थापित सायेगी, सिधला सायेगी। सविद
 सरकारी ने जा किया वह सब आगने देगा है, बार-बार हुडमुट। भरे
 मुसारी 'मेगारटो' है, ओर ये हानन है। दस महीने दस मिनित्डी को
 हुए होंगे। जितने महीने इन्होंने काम किया है ? कोई काम ही रहा है ?
 तो हुडमुट देने हैं मिनित्डीर लोग—बाँक मिनित्डीर हुडमुट देते हैं, उन पर
 अमान नहीं होता। बागज पर वह रहता है। टण्ड है सारा एडमि-
 नित्डीर बा। कीन करेगा काम ? सब धारण में भगडा है, दिन रात का।
 यह डेमोनेनी है ? इसको बदलना चाहती है जनता जयप्रकाश नारायण
 धार, युवक, बर्षाकि जो भी धामोनेन इस देश में आज उठेगा उसका
 नेना युवक रहेगा, धार रहेगा इगमे कोई सन्देह नहीं है हमको। जो
 बदलना चाहता है, तो वह प्रजासत्र विरोधी है ! वह दुसरे को क्या !
 धोर ये लोग इसको डेमोनेनी बहते हैं। दिन-रात बँडकर के जो सार्जिस
 करते हैं। जितने ए एम-एल-ए हैं बार्थेसके, सब टिकक बटा धा,
 तो किनने टिकक बटा धा वह दिया हुआ है बिहार से ? जितने टिकक
 बाटा धा ? एच ब्यक्ति ने बाँटा धा। उसके बारे में बिहार की जनता
 की राय मानूय है। मैं मान नहीं सुं धा। आप सब जानते हैं बहु ब्यक्ति
 कीन है यही के, एक ब्यक्ति के धारिधारक एम-एल-ए हैं धोर जनने से
 सबको बरौन-बरौन धारधार, महीना बधा हुआ है। धरक बार्थेस
 चाहती है कि धरनी सनि जनता के सामने धरणी बनाकर उठे, धरना
 भला चाहती है तो उनको मुद चाहिए, इन्दिराजी की चाहिए कि इस
 विधानसभा को भंग कर दें। वह उनको पाटी नहीं है। वह एक ब्यक्ति
 की पाटी है जो सपने के बल पर सजी हुई है।

अभी हाल में जब मैं नेल्सोन ने धा, तो हमारे परम स्नेही मिन
 उमागार की दीक्षित पटना धारये थे। उन्होंने मेरे सधर्य मे कुछ धरणी
 बाते कही। साय-साय बर्द प्रशन उठाये। मेरा उनका बहुत पुराना सधर
 है। १२-१३ का धामोनेन जो चला धा उसमें वे अडरघाउ'ड वे बर्द में।
 बर्द में वे रहने ही थे, बर्द के ध'रघाउ'ड नेता थे। अभी सदानदधर
 है, जो की प्रेस के मार्सिक भी थे, उनकी स्थापना की थी उन्होंने, उनको
 ब्रँन धारक धाम्ये' बहा धा। मुझे भी कोई बड़ी पदवी दी थी धारपर,
 पर मैं धरनी प्रधंस नहीं कर्ना। उस समय दीक्षित जी से हमारो परि-
 धर धोर हमारो धरिधारता, मित्रता हुई। धोर अ डरघाउ'ड जमाने की
 भी मित्रता होती है, ठोस होती है। धार यह कही रहे हैं बर्द रहे हैं,
 उसके बाद हम एक दुसरे के मित्र धारक बन गे हुए है। इस मित्रता के
 चलते मीने उचित नहीं समझा कि प्रेस के जरिये मैं दीक्षित जी का जवाब
 दू। उनके साथ किसी विचार में यह। इसीलए मैं पुन रहा हूँ। धार
 भी मैं उनका जवाब देना नहीं चाहता। धारधर्य सधरता करने के लिए
 जो कुछ उन्होंने बात कही है, प्रसंगक उसकी कुछ धरिधर मैं कर्ना।
 उनको जवाब दू धा, बात कर्ना जब उनके मुनाकात होती। उन्होंने
 मुझ से मिलने की बान कही है। धार मेरा स्वारस्य सभ देना, तो मैं
 बल ही उठने चला जाता दिल्ली में, लेकिन वेने लिए वह धरसनन है।

→
 जून का पूरा महीना यही रहना। स्वास्थ्य लाभ करना है। डाक्टर मुझे
 पाने के लिए, मुझे बड़ा भ्राने देना नहीं चाहते थे। उन्होंने मुझे से पूछा
 प्रलय कि जयप्रकाशजी अगर प्राप प्राप तारीख के पहले नहीं पढ़ते तो
 क्या आपके दिल पर उसका बड़ा बोझ पड़ेगा? हमने कहा—बहुत बोझ
 पड़ेगा। यह सारा कार्यक्रम मुझे सामने रखने किया गया है। तब उन्होंने
 कहा—जल्द जाइये प्राप। क्योंकि मन का शरीर पर बहुत असर पड़ता है।
 इस प्रकार से उनका धमपुति मिलनी। नहीं तो वे चाहते थे कि यह
 जो प्राप है वह कुछ जाय, धर्म नहीं गुना है। मैं समझता था मूला है।
 लेकिन प्राप फिर डा० सिन्हा ने देखा तो एक दो बूद फिर निकल प्रायी
 बहुदहाल भरा हुआ है—मैं खला जाता, लेकिन जा नहीं सकता हू। वह
 प्रायों तो खुशी से उनसे बातें करूंगा। लेकिन कुछ ऐसे मित्र हैं जिनके
 भाव अशुद्ध हैं। हमारे पुराने मित्र जो सोशलिस्ट पार्टी में थे या जो नहीं
 थे वे वह बातें हैं कि जयप्रकाश नारायण में श्रीर इन्दिराजी में कुछ
 मेल-मिलाप हो।

तो मित्रों, मेरा किसी व्यक्ति से भगडा नहीं है। चाहे वे इन्दिराजी
 हो या कोई हो। हमारा तो नीतिप्रा से भगडा है, सिद्धान्तों से भगडा है,
 प्रायों से भगडा है। जो काम गलत होंगे, जो नीति गलत होंगी, जो
 सिद्धान्त गलत होंगे, जो पॉलिसी गलत होंगी, चाहे किसी की भी हो मैं
 विरोध करूंगा, धपनी अकल के मुताबिक। हम लोग इनकी तरह नोजवान
 वे उस जमाने में लेकिन वे जुरंत होती थी हम लोगों की कि बापू के सामने
 हम कहते थे कि हम नहीं मानते है बापू यह बात, श्रीर बापू में इतनी
 महत्ता थी, इतनी महानता थी कि बुरा नहीं मानते थे। फिर भी सुलाकर
 हमें प्रेम से समझाना चाहते थे, समझाते थे। तो उनकी भी आलोचना
 की है। उस जमाने में तो मैं श्रीर मावसंबादी था। बाद में लोकतांत्रिक
 समाजवादी था। बापू की मूषण के बाद, कई वर्षों के बाद १९५४ में मैं
 सर्घादों में आया, गया में। जवाहरलालजी थे। एक बड़े भाई थे। मैं
 उनको भाई कहना ही था। उनका बाद खेह था हमारे ऊपर। पना
 नहीं क्यों मानते थे। मैं उनका बड़ा आदर श्रीर प्रेम करता था। लेकिन
 उनकी कटु आलोचना करता था। उनमें भी बहुपन था। धसतर तो
 उन्होंने हमारी आलोचनाओं का बुरा नहीं माना, लेकिन पटना गोलो-
 काष्ठ पर जो मैंने बपान दिया था—मैं मानता हूँ कि बहुत सदा प्राप
 का मैंने प्रयोग किया था, उस पर बहुत नाराज हूँ। साल बहादुर जी में
 बावमीर के मामले में कुछ किया, मैंने उनकी भी आलोचना की। उनको
 तार भी दिया कि वह बहुत गलत काम प्रापने किया है। इससे बावमीर
 के सवाल को हल करने में आपको दिक्कत होगी। घोड़े ही दिनों में,
 महीनों में वे चल बसे। देश का दुर्भाग्य है। इन्दिराजी को जो मैंने मनबंद
 हैं, वह जवाहरलालजी के साथ जो मनबंद थे उसके कही ज्यादा गभीर हैं।
 जवाहरलालजी से परराष्ट्र के सम्बन्ध में थे, स्वराष्ट्र के सम्बन्ध में प्राधिक
 हमारा मतबंद नहीं था, तिब्वत के मामले में था, चीन के मामले में था, हमारी
 के मामले में वे चल बसे। मैंने कहा है, जवाहरलालजी को बाद में मानना
 की, हमारी के मामले में जो कुछ था, जवाहरलालजी को बाद में मानना
 पडा। तिब्वत के बारे में मेरी बात तो नहीं मानी उन्होंने, लेकिन जब
 चीन ने उनको घोषा दिया, जिस घोषे में वारण उनके हृदय को ऐसी
 कोट लगी कि वो बरस में चले गये, ममल नहीं सके, ऐसा प्राप सता।
 चीन ने प्रापण कर दिया, कभी उम्मीद नहीं करते थे प्राप्रा नहीं करते

→
 थे। घोड़ी इनकी भी गलती है कोई परराष्ट्र नीतिप्रा के सबब में मतभेद
 था। परेडू प्रश्नों में नहीं था उतना मतभेद। लेकिन इन्दिराजी से तो
 परेडू प्रापनी में है। जब दीक्षित जी ने कहा कि मैं जयप्रकाश नारायण
 के साथ बैठकर के अष्टाचार के बारे में बात करना चाहता हू मैं सहयोग
 करने को तैयार हू। तो बाबा प्रापसे इस आन्दोलन के फल होने के पहले
 से, वर्षों से मैं अष्टाचार के सवाल पर लिख रहा हूँ, बोल रहा हूँ, इन्दिरा
 जी से मेरी बातचीत हुई, सदा के सभी सदस्यों से, लोकसभा श्रीर राज्य
 सभा दोनों के—हमने छपी हुई लिपि भेजी जिसमें एक तो सुधीय कोई
 श्रीर बुनियादी प्राधिकारों के बारे में जनता के मूल प्राधिकारों के बारे में
 और दूसरे हमने सुभाष द्विये में अष्टाचार को दूर करने के लिए श्रीर
 भेरे सुभाष नहीं थे वे, एक-दो में बाकी सधानम् समिति की रिपोर्ट से
 लिया, प्रासासिक सुधार समिति की रिपोर्ट से लिया, किसी और लेख से
 लिया, कोई जोड़कर के उनको रखा उनके सामने थे। दीक्षितजी को कुछ
 करना था, इन्दिराजी को कुछ करना था तो क्यों नहीं किया? दन
 बदल रोजने का विधेयक क्यों पडा सड रहा है छ वर्ष से? लोकपाल
 बिल क्यों दस वर्ष से लटका हुआ है? किसी के कुछ कहने की जरूरत
 है—जो बिल उन्हे पास करना होता है, जो उनके मतलब का होता है
 स्टीम रोलर कर के न सिलेबट कमिटी बनेगी, न पब्लिक प्रोपियनली भी
 जायेगी, फन्ट रीडिंग बातें बातों में ही गई पहली रीडिंग दूसरी श्रीर
 तीसरी-बस पास हो गया बिल-एक्ट बन गया। चू कि दी-तीहाई बहुमत
 है।

अष्टाचार को रोकना, मैं नहीं बहटा कि वे छ। जो हमारे सुभाष
 है, मजूर हो जाय तो अष्टाचार रुक जायेगा। लेकिन बहुत उस पर
 प्र कुच पड जायेगा। क्यों नहीं मानते? दीक्षितजी चाहते है तो उन पर
 प्रमल करावें। उसमें किसी पर मतभेद हो तो वह करें—श्रीर मैं ही प्रकेला
 हू? किनने लोगों ने किया है, कहा है, सुभाष द्विये हैं, कुछ कम हैं वे।
 किसी बात पर कुछ किया है? अब एक बात से लीजिये। जिसके चलते
 बहुत ज्यादा अष्टाचार राजनीति में है। वह क्या है? चुनाव का सर्घा।
 चुनाव का सर्घा—करोड़ों रुपया वे चुनाव पर सर्घा करेंगे। एक तरफ
 'परीधी हटाओ' का नारा लगायेंगे, समाजवाद का नारा लगायेंगे, श्रीर
 यह सब रुपया काले बाजारों में प्राप इकट्ठा करे। बिना हिासत प्रा
 प्रा करोडों रुपया, कोई हिासत नहीं, कोई निाव नहीं, प्रासे
 की निाव में, हिासत-निासत की निावों में वही वह दाखिल नहीं, की
 वह सर्घा हमा, विसने वह सर्घा किया, कुछ मालूम नहीं। इस अष्टाचार
 की जब घोड़ी। तो प्राप से नहीं वर्षों से मैं पुकार रहा हूँ कि मैं इस
 चुनाव की पदनि में प्रापूल परिवर्तन होना चाहिए। चुनाव का सर्घा
 करना चाहिए। अगर चाहते है प्राप का श्रीर उम्मीदवार सडा ही
 सके, मजदूर उम्मीदवार सडा हो सके, किसान उम्मीदवार सडा हो सके,
 गरीब पार्टी को, गरीबों की पार्टी है वह प्रापने उम्मीदवार सडे कर सके-
 गुनता है कोई? अब गुन रहे हैं कोई कमेटी-कमेटी बनानी है उन्होंने
 की, जेडी-जेडी-कुछ कर लेंगे, श्रीर ऐसे सुधार कर लेंगे जिसे
 उनका ही श्रीर फायदा हो जाये। गुणी की बात है, प्रायें दीक्षितजी,
 बात बरूंगा। लेकिन वे बातें तो सब के प्रापने है। प्राप से नहीं, बरती
 से है।

एक मित्र वन मिले थे मुझे। दोनों के बीच-बचाव करना चाहते हैं। हम

ने समझाया लोगों को कि बाबा उग्र ने हमारी धीर इ दिराजो की बहुत फर्न नहीं है। लेकिन मैं धीर हमारी पत्नी प्रभावती—हम दोनों—उनको बेटी की तरह मानते हैं, क्योंकि जबवाहाराजों की वह बेटी है। छोड़ने से देखा है—हम जानते हैं, स्नेह है उनके लिए हृदय में। हमारा उनसे मरणा इच्छा क्या है? लेकिन जब उन्होंने मुझे भय से भाग्य दिया तो उसमें—मैं वस इतना ही नहूँगा—कोई राजनीतिक मतभेद की बात नहीं बहो उन्होंने—राजनीतिक मतभेद भयने हैं। जो भयद भागी हमसे उन्होंने, मनभेदों के बावजूद यह भयद दी है हमसे, उनकी वे भी जानती है। १५ फरवरी को मेरी बात हुई, जब मैं प्रहमरावाद से लौटा था। उन्होंने भयद भागी थी कि पार्टी में का सहयोग दिलाने में हमें भाग्य पद कीजिए। बीमार पदा था मैं। बीमारी से थोड़ा था अस्थि हृष्या, घटल-विशारी बाजपेयीजी को बुलाया। इस स्थान से कि जनसभ पोर विरोधी है चायें से का तो पहले इनके साथ मिलें। मैं भाग्ये नहूँ कि घटलजी की जो प्रतिक्रिया हुई वह सुनकर इतनी प्रसन्नता हुई कि घटलजी ने कहा—जयप्रकाशजी, पार्टी एक चीज है, दूसरा दूसरी चीज है। देस की स्थिति बहुत ही नाजुक है। धीर भाग्य मार्गदर्शक नरें भाग्य हमें रास्ता दिनायें, मैं भाग्यको विश्वास दिलाता हू कि इ दिराजो की सरकार को हम सच सहयोग देने को हम तैयार हैं। हमारा सघ देने को तैयार है। मैंने इ दिना जो की बिट्टी लिखाकर भेज दी। उसके बाद फिर इहाज के लिए गया। फिर बीमार पदा। फिर अस्थि हृष्या तो सोशलरिस्टों की दुताया। मुद्रणमोहनभाईजी को।

बावजूद इच्छा कि उनके साथ हमारे राजनीतिक मतभेद है लेकिन मुझे भयद में कहा—जो श्रादयी धीर लोगों से क्या लेता हो उसकी उत्पत्तार के लिताय कहने का क्या अधिकार है? मेरा नाम नहीं लिया। इतनी में आकर बिहार के सघ सदस्यों के सामने कहा—जो बड़े लोगों 'पॉजिगेट हाउस' यानी धीरों के घरनि घरों में रहता है जो रादयी, धीर जो उनके पंसे से सफर करता है उसको क्या फलियार है? मैं भी गांधीजी के घरसों की घुल के बराबर नहीं हू। उनको भूल गये थे? दिल्ली आते थे तो कहाँ रहते थे? कभी भभी कॉलोनी में तो कभी बिला हाउस में। कभी किसी में गांधीजी को कहा कि बिहारा के सघे पर विच गये हैं? प्रष्ट हो गये हैं? उसके बाद हमने एक ही बार जवाब दिया है। वस फिर नहीं। रोहरामा नहीं है। वे दोहराती रहती हैं। राजनीतिक मतभेद के हमारे मित्र कभी-कभी सब पार्टी में है—इस कार्य में पार्टी में भी, कम्युनिस्ट पार्टी में भी, जितने हमें इतनी माली दी। हमारे नजदीक जितने विचारों भाई हैं—उनत हमारा छोटा भाई भी नहीं होगा। विचारोंप्रसन्न सिद्धा की बात रहें हू जब हमारा पार्टी में थे तो हम थे ही निकटतम—लेकिन भाज जो उनसे हमारा जो स्नेह है, वह किसी भाई से कम नहीं है। अब यह कहते हैं हमारे मित्र गाय नहीं नंगा, कार्यकी सघ सदस्य हैं जो मैल मिलाय की बात, कि बयद भागी, सोलियानी मिलना पाइते हैं। मैंने कहा जकर मिलूंगा। मैं नहीं जा सकता। वह जब घायें मिलूंगा, बान करूंगा। फिर कहा उन्होंने—जब सब बान घायें न हो जाये दो महोने के लिए आन्दोलन स्थानिक कर दीजिये। स्थानिक कर दीजिए? मुनकर मैं स्थानिक रह गयी। यह सब निता धादयी, समभदर धादयी, संसद का सदस्य ऐसी बान करणा है। मुझे ऐसा मूर्ख समझता है? इस आन्दोलन को समझा ही मूरान यमः सोमवार, २४ जून, '७४

वहीं है। क्यों यह शुरू हुआ, कैसे यह आन्दोलन शुरू हुआ, यह जय-प्रकाश नारायण की जेब का आन्दोलन है, जब चाहे इतकी निहालकर अण्डा सामने दिला दे। आन्दोलन हो रहा है, जब चाहे अण्डा लपेट लें (तात्पार्य) इतके उमाकांकर बोधितजी से मेरी बात होगी, इसके लिए जो महोने आन्दोलन स्थानिक कर दूँ, ऐसी नालमभी की बात हो। मैं तो मुनके हूँ रान हो गया। इस बातचीत से क्या निकलेगा, जो लो तो भगवान जानें, लेकिन बातचीत हुई नहीं। बातचीत करने वाले हैं। भरे बाबा बातचीत तो उस दिन करना चाहिए था जिस दिन मैंने घोषणा की यहाँ अपने स्थान के जरिये, कि धम अण्डाकार का मामला स्थितिगत रूप से मेरे सल के बाहर है, इसलिए मैं स्वयं अण्डाकार की लडाई लडने के लिए मंडान में भागा हूँ। मैं समझता था कि इ दिराजो का पद मुमं मिलेगा या बिट्टी मिलेगी कि भाग्ये जैसा स्थिति जब 'करघान' के लिताय लडने को तैयार हो, तो मेरा पुरा सहयोग है। बगाय उस पुरे सहयोग के उन्होंने पाली दी है मुमं। मुम तो सघा लेते हो धमारी से, मुम करघान मिटाणे की बात क्या करते हो? मेरा नाम नहीं लिया यह ठीक बात है, लेकिन प्रसवालोंने मेला "इन एन आर्बियस रेफरेंस टु जयप्रकाश नारायण"। पी टी आर्बियस के डिफरेंस में इन एन आर्बियस रेफरेंस टु जयप्रकाश नारायण" स्पष्ट है कि इशारा जय-प्रकाश नारायण की तरफ था।

तो मिना, वे आन्दोलन किसी के रोबने से जयप्रकाश नारायण के रोके से नहीं खनेवाता है। यह आन्दोलन क्यों हुआ है? धाजो में जो खलवती है, उनकी जा धाय की हैसियत से समस्या है जैसे शिशा है, बिशा के बाद डिधी के बाद जो फलियार उदके सामने लडा है, किश प्रकाश कालेजों में इम्हान होत है, कुछ मुहोता है—इस दोषपूर्ण शिशा के चलते। उसके धलाया—धाजो को भी, प्राय लोगों का भी—महागाई की चक्की में पिस रहे हैं, दिन रात महागाई बडती जानी है, यह प्रण्टाचार है, रिखत देना पडता है। रिखतलोरी है, बेकारी बडती चली जा रही है, धन्य लोगों की भी, पडे-लिसे लोगों की भी। प्रमय पर सब मालें न होतों यह सब परेआनिये न होतों तो हज्जार जयप्रकाश नारायण भी चाहते तो यह आन्दोलन खडा होला? हज्जार धाय-सघयें समिति चाहती तो आन्दोलन खडा होला? जमाने की पुकार है यह। एक लकाकर पर लोग इकट्ठे हो गये हैं, इतने लोग। जंसा रामभूते भाई ने कहा—कोने-कोने में यह फंन गये हैं। यह पडतेआते समझते हैं ये थोडे-से लोग हैं। एक बीज है जो रिल में घाय लागी हुई है। न जाने बिहार के कितने बच्चे बिहालने-बिहालने रात को सो जाते हैं कि उनके घेड में एक दाना नहीं। कितने लोगों को मैं देखता हूँ कि दिन पर दिन बान कूड होला है। हमारे मांय का एक दाना है यहाँ बंठता है बेबाय। घाया था तो उसको देखकर हूँ रान हो गया। "अई क्यों बुलते हो रहे हो रामभूत ठाकरे?" 'सरकार जाने को नहीं मिलता है।' घायय' होता है, कैसे लोग मुआरा करते हैं इत महागाई में? क्या खाते हैं? कैसे खाते हैं? हमें हियाय रलना पडता है। प्रभावती चली गयी, हियाय रलना पडता है। मैं हूँ रान हो जाना हूँ, एक दिन के धाने में इतना खर्च हो जाया है। मिना आते ही रहते हैं। उनकी चाय पिनाया, चाय के साथ नाचना देना-उमका विनाया खर्च हो जाता है। भयद मिनां की मयद न हो, भी, 'मैगसेके धवाई' का जो

सूद माता है साठे बार सो रूपया महीना, वह नहीं होता, दो-तीन मिन ही-कोई बहुत बडे करोड़पति नहीं हैं-अगर इनकी मदद नहीं होती तो पता नहीं मैं भी, मुझे भी फाका करना पड़ता। महिला चर्चा समिति मे रहना हूँ। खैर अपने बारे मे क्या कहूँ।

तो मैं उन मित्रों से यह वह देना चाहता हूँ कि यह मान्दोलन तो खनेवाला नहीं है। बात मैं बर्खा, लेकिन खनेवाला नहीं है। यह आन्दोलन तो अपनी गति से जायेगा।

एक बात मैं भीर कहूँगा—यह भी एक टिप्पणी है। प्रोधाम-आर्य-चम तो बाद मे दूँगा। समय सय रहा है। इतना कष्ट कर के इतनी धूम मे आप लोग घाये हैं, तो यहा तो जरा वातावरण अच्छा है इस समय, तो प्राराम से बैठ के बात सुन बीजिये। क्योंकि मैं नहीं जानता हूँ जिस तरह से इनका व्यवहार हुआ है धाज अवसल बनाने के लिए इस सारे प्रायोजन को-उस पर से लगता है कि कितने पागल हो गये हैं ये लोग। मुझे भी गिरफ्तार कर के ले जा सकते हैं। 'हाउस अरेस्ट' मे रख सकते हैं। राजनारायणजी को यहा से निकाल दिया। फर्नाण्डोज को निकाल दिया। मैं तो बिहार का हूँ मुझे कहा निकाल देंगे। कल-न कुछ करते। जब आदमी पागल हो जाता है, समझता है कि बस बही एक आदमी ही जो धाज लगा रहा है। आग तो लगी हुई है, तुमकी नजर नहीं धा रहा है। घर मे तुम्हारे धाज लगी है। हुकूमत करते हो, कुसियो पर बैठते हो, तो तुम्हारी कुसियों के नीचे धाज सुलग रही है। (हसी।)

इन्दिराजी, दोस्तजी, इन लोगों से लेकर के गफूर साहब भीर दूसरी कांग्रेस विरोधी पार्टियों ने इस आन्दोलन को लडा दिया है ! इन पार्टियों का पड़यंत्र है-इसका राजनीतिक उद्देश्य है, ये पार्टियां कार्य से बो बनाना कर के, निकाल कर के जितनी जबर हो, जीतना चाहती है-नये चुनाव मे ! अब आपने देख लिया सब पार्टियों का भयदा-फोड़ हो गया। इन लोगों ने (धानि कुछ धाज नेताओं ने) कहा या उस पिछली मीटिंग मे पार्टियों के बारे में-मैंने मैंने इनको नधा या भाई तुम लोग बहुत ज्यादा बोल गये। जो पार्टियां तुम्हारी मदद कर रही हैं उनको धार जिस पार्टी से तुम्हारी लडाई है, याने कांग्रेस से सबको एक तराजू पर रख दिया है। लेकिन मैं धाज देखता हूँ कि ये लडके बहुत गलत मही कह रहे मे। इन पार्टियों के समर्थन का क्या मतलब है ? जब बलिवान का मोका आया, जब विधानसभा के विघटन का मोका आया जब इन विधायकों के इस्तीफे का मोका आया तो कौन इस्तीफा देने को तैयार है ? मैं समझता हूँ कि जनसभ मे अधिक्त-से-अधिक लोग इस्तीफा देंगे। सोशलिस्ट पार्टी के घोडे धाधे से भी कम ही लोग मालूम पड़ते हैं। सतोगा बा भी ऐसा ही मालूम पड़ता है। संगठन कांग्रेस बा तो अभी तक एक भी नहीं आया है। तार-केबलकी सिन्हाजी हुने बता रही है क्या होगा अंग करने के बाद, पडना चाहिए क्या होगा ? इसका जवाब मैंने एक लेख मे लिखा है जो धाधेजी के धाबवार इन्डियन एक्स-प्रेस मे छपा है, 'एनोमैस' मे छपा है। यह धाधे मे बहनेवाला हूँ, महा मैं इस सदभ मे इसका ही कह देना चाहता हूँ-यह सवाल मैंने ही उठाया धीर बुकरान के लडकों से कहा कि बिजनेस ! बिजनेस ! बिजनेस ! लेकिन बिजनेस के बाद क्या ? डिजोल्युशन, डिजोल्युशन, डिजोल्युशन ! स्ट्राट घाटार डिजोल्युशन ? विघटन के बाद क्या होगा ? फिर बैसा ही चुनाव

होगा न ? फिर वही लोग उम्मीदवार खड़े बर्ये न ? तो फिर ? यही चीज दोहराई जायेगी न ? इतिहास अपने आपको दोहरायेगा तो फायदा क्या होगा इससे ? तो हुने रास्ता बताया उनको। लडकों को हमने कहा, भाइ राखे तो घुम्ट करने के लिए, एक विकल्प देने के लिए कि चुनाव का नतीजा अच्छा हो कम-से-कम आपको कालेज छोड़ के एक वर्ष तक आन्दोलन मे लग जाना चाहिए। धीर मैं इन छात्रों से और बाकी जो विद्यार्थी यहा बैठे हैं उनसे कहना चाहता हूँ कि गम्भीरता से धीर पूरी ईमानदारी धीर बहादुरी से काम करना चाहते हो तो हाई स्कूलों के बात नहीं कहना, यूनिवर्सिटी-नालेज एक वर्ष तक बन्द रहेंगे एक बरस मे (तालियां) एक बरस में परीक्षाएँ नहीं होगी। एक बरस सिर्फ मैं कहता हूँ। गाधीजी ने एक बरस में स्वराज्य कहा था। मैं आज कहता हूँ कि एक बरस मे जनता का सच्चा राज्य होगा (तालियां)। एक बरस मे शिक्षा का सच्चा व्यवस्था निकलेगा। ज्यादा तो मैं नहीं मांगता हूँ। गाधीजी ने तो सारा बीज लगा मागा था। जब हमने प्रसह-योग किया था। मैं यह वही कह रहा हूँ कि बराबर के लिए धार करो। एक बरस दो, नया देग बनाने के लिए नया विहार बनाने के लिए।

देखो मित्रों, एक हजार बरस तक भारत का इतिहास बिहार बा इति-हास था या बिहार का इतिहास भारत का इतिहास था। मीरों के जमाने से लेकर के अंतिम गुल् तक के जमाने तक। एक हजार बरस तक यह पाटलीपुत्र दुनिया का बडा-से-बडा एक बाहर माना जाता था, सस्कृति का केन्द्र माना जाता था। ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र माना जाता था। आज यहा बा यह हाल है ! बिहार को ऐसी अरबोज जमीन, सोना उपलने वाली जमीन। बिहार मे काम जैसी नदी, बोती जैसी नदी, पडक जैसी नदी, सवासिला नदिया है, मिट्टी अच्छी है धीर हम भूलो पर रहे हैं। क्यों जनता का दोष है ? नेतृत्व का दोष है। जिनके हाथों मे राज्य रहा, उनका दोष है। बिहार मे खनिज पदार्थ जितना है उस देश के किसी अन्य प्रदेश मे नहीं है। बिहार सब से गरीब प्रदेश है सब से पिछडा हुआ प्रदेश है। शर्म नहीं आती है, लज्जा नहीं आती है इन लोगों को जो हुकूमत की कुसियो पर बैठे हैं ? क्या किया है इन्होंने ? सेती के विकास के लिए ? अपने विकास के लिए बहुत कुछ किया है धीर लोगों के बाले बन गये हैं धीर जमीनों खरीदी गयी हैं धीर क्या-क्या किया है इन लोगों ने ?

हा मित्रों, एक तो यह भ्रम फैनाया था इन्दिराजी से लेकर सब ने कि सभूचे देग मे जो होगा यह सब विरोधी पार्टियां करानी हैं। अब विरोधी पार्टियां एक घाये बड़ नहीं रही हैं उनमे फूट हो गयी है, अधिकांश लोग पीछे रह गये हैं। ये पार्टियां आन्दोलन चलायेगी ? कानि-बारी आन्दोलन चलायेगी ? तो मैं कहना चाहता हूँ इन्दिराजी से, दोस्तजी से; गफूर साहब से उनके साधियों से पूरी जिम्मेदारी के नाप कि चुबको बा, छात्रों बा, जनता बा, साधारण सामान्य जनता बा आन्दोलन के अयप्रकाश नारायण बा नहीं, किसी पार्टी का नहीं है। यह वह समझ लेंगे तो घायद उनका भी भला होगा धीर बिहार बा भी भला होगा, जनता बा भी भला होगा-नहीं तो घोये मे धाधे को रखेंगे जनता तो घोये मे है नहीं, लोग तो कोई घोये मे है नहीं।

भूतान यः सोमवार, २४ जून '७१

मंग कार्यक्रम के बारे में बात घाघरे कर रहा। इस समय हमारी पुरानी भाग भगती जगह पर है। अन्धकार, महार्द्र, बेरोमांगी, गिंसा में धाम्नुन परिवर्तन में पार बड़ी बातें धार बानी छोटी-छोटी बातें। ये सब धपनी जगह पर है। लेकिन १५ मार्च को जब प्रादोलन शुरु हुआ, घाघ देश कीजिए विचारधियो के 'साध सधयं समित' के पुराने जो उर्द-रघ ये उनमें मन्त्रीमण्डल का इस्तीफा नहीं है—उनमें विघटन नहीं है। यह क्यों घायत? क्यों उड्डा? १५ मार्च को, १६ मार्च को जो नासा-वनी साहित्य हुई। जयजीवन बाबू श्री दीक्षितजी मुम्लसे मिलने घाघे १६ की रात को धोर दोनो ने कहा 'जयप्रकाशजी, घाघने जो कहा है वही हमने पार्टी में सुना है, वही हमने दूसरो से सुना है—उन्होंने कहा कि डेड पण्टे ठक पटने में कोई प्रशासन नहीं था। कोई राज्य नहीं था पटना गुं को कृपा पर है। मैंने कहा, उड्डना ही फर्क है कि डेड पन्टा नहीं डाई घण्टे का वह समय था।' पटना जब समिति की रिपोर्ट मुझे बल रात को मिली है। बल या परसो पत्रकार परिषद कर के वह सबके सामने रख दूंगा। दो प्रादमियो ने—दो बडे बकीलो ने खुद जाकर के विधानसभा से लेकर के एक तक जो विवरनाय मिश्रजी का—विधानसभा के सचिव का—जो एक न्यायाधीश की इज्जत धोर हैसियत के ब्यक्ति है—उनका जो मन है, माया कि जितनी दूरी है। मुज सो गज है, सो गज। वह जल रहा था धोर उसको यह सरकार बचना नहीं सकी। कायर रिण्डे वहा था, पुसित धेरे हुई थी। न जाने हज्जारे की तादद में विधान सभा को, लेकिन सो गज पर जो उनका मकन था उसको नहीं। बुलबुले उनके मर रहे हैं, वे बिल्लाते रहे। गेट तो कम-से-कम खनवा दोरिए। वह भी नहीं हुआ। तो विधानसभा के कर्मचारी लोग नाराज होकर के कि हमारे सचिव के साथ ऐसा पुब्बवहार हो रहा है तो गिटाई की इत लोको की। (हसी) मन्त्री लोग भाग कर के धर-उधर छिपे। एही मालाचकी कि 'सचलाइट' जैदा सगठन, जिसका बिहार की धाबारी की सद्गर्दि के इतिहास से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, वह घण्टो बलना रहा। काय डिग्रेड पडूवा, तो पानी नहीं उसके पास। कोई धमि-वार है ऐसे मन्त्रीमण्डल को जिन्दा रहने का? कायर। तो जजानो ने कहा कि सब, धन तक यह हमारी माग नहीं थी। यह मन्त्रीमण्डल जाना चाहिए। हमने स्वीकार किया, ठोक है। मैं भी मानता हु कि जाना चाहिए। उसके बाद एक-एक कर के घटनाए घटती गयी। एक तो इस मन्त्रीमण्डल में धान्तरिक मगडा है। बिहास जल रहा है—बिहार भूषो मर रहा है—धोर इन लोगो को बस दिल्ली धोर पटना, दिल्ली धोर पटना कि हूमे मिनिस्टर बनायो, हूमे मिनिस्टर बनायो, यही भगडा पल रहा है। उजद-केर, उजद-केर। धयने का बाजार बनयो। एक के बाद एक इनके ऐजे-ऐजे छुल्य होते गये। जो लोग बहिंसा का नाम करने वाले हैं, गांधी शांति प्रतिष्ठान के मंत्रियों को गिरफ्तार किया। बनारस से अमर-नाथ भाई घाघे, उनको गिरफ्तार किया। तसए शांति सेना के हमारे इन धाघो को गिरफ्तार किया उन्होंने। यह कह कर के कि ये हिंसा करनेवाले हैं। बिघी ने हिंसा-विंसा की नहीं थी। ये जो शांति-बहिंसा के नाय पर जो नाम कर रहे हैं—भागलपुर के लिए प्रखारार्थी में धय गया कि गांधी शांति प्रतिष्ठान के दसतर में घातक हथियार थे, माने ऐसे हथियार थे कि जिनो को तो मार जा सबसा है जान से। ऐसी भूडी सबरे धारवाई। गिरफ्तारिया हुई। विस जसता रहा है। जो ब समिति हमने वही के लिए बनाई—मुजकफरपुर के लिए। भागलपुर की भी रिपोर्ट आयी है।

पुढान-बन्ध। सोमवार, २५ जून, '७५

मैं वंदा हुआ छारे जिले में। हमारे दो घर हैं—वितामह का धोर पिताजी का बनाया हुआ। वह गिर गया सरगू नदी की बाघ में। हम दिपारे में हैं। हमारे एक तफक गंगा बहती है, एक तरफ सरगू। टीब-बीचो-बीच मे है। दोघाया बहलाता है। जमीन बलिया मे बाप-दादो ने ले रखी थी। वहाँ में बस गया। बलिया का रहते बाता हूँ, बलिया का निवासी हूँ। लेकिन मेरा राजनीतिक जीवन गया मे बीता है। सन् ३७ मे धी बाबू थे यहा मुख्य मन्त्री तो मैं वही जिला बाघस बमेटी का धम्यस था—'राजेन्द्र भवन' या क्या नाम है, वही रहता था। स्वामी सहजानन्दजी सरस्वती के नेतृत्व मे वही हूमे लोको ने जमींदारी प्रथा का नाश हो' का नारा उठाया। वही रामेश्वर बाबू के साथे थे। बाबू साहब के खिलाफ सत्याग्रह हुआ—'जेल गये लोंग। वही जब चिनोवनी ने भूदान धान्दोलन शुरु किया तो सन् ५५ मे मैंने पार्टी छोडी धोर वही हूमे धरना धाधम बनाया। तो गया से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है। गया में गोलीबारी हुई मैं सुन चुका था कि जब धानो ने, मेरे कहने से नहीं, धपनी मर्जी थे, 'सरकार को ठग करे' धान्दोलन पनाया—वडी घण्टी मुझ धी इनकी—धोर गया मे तीन या चार दिन ऐसा ठग पिया इन्होंने कि न एक दफतर बलन, न पोस्ट ऑफिस पना धोर न एक बैंक बला। धमिकारी घबरा गये कि क्या करना चाहिए। तो साजिग की गयी धोर ऐसी परिस्थिति वंदा की गयी कि स्वामिबहाह इन्होंने कायरिय की। मैं एकदम से गया पडूवा। बीमार था उस वकन। वेल्नोर जाने की तैयारी की। गया पडूवा का ओर गया में हूर तरह के नागरिक, बकील लोग आये, गिास लो घण्टे घारे, बाधर लोग घारे। गिवाधी तो धेर घाघे ही थे। नागरिक लोग घाघे, ब्यापारी लोग घाघे। एक स्वर से सबने कहा कि जितनी धादसं रीति से विचारधियो ने 'सरकार को ठग करे' धान्दोलन पलाया गया मे, उतना सबल ओर शांतिमय वही नहीं हुआ होगा। और यहा जो बोली चनी है, जानबूझ कर पलायी गयी है। धब मैं वहाँ से सीटटा हूँ धोर पोडे बिन के धार यह धराहम साहब, हमारे पुराने मित्र हैं, बोधं धाक रेवेन्यू के सखस हैं, इनको जेता गया जांच करने वे लिए। ये इतने ऊंचे धकतर, मैं गिपस ही उनको समझता रहा हु। लेकिन मैं हूँरान हो गया कि धाघ शांति को घये धोर कल लोटे के घाघे जांच कर के। धब-बाघ में रिपोटे धोर कि तीन जगह जो कायरिया हुई थी, तीनों जगह उचित थी। मेरे बदन मे धाघ लग गयी। यह सरकार झूठ पर उताऊ हो गयी है। स्वराज्य की सद्गर्द सत्य धोर बहिंसा के धाघार पर गांधीजो ने लड़ी धोर जितना बल गया जनता से, उस रास्ते पर जनता चली। धाघ जो सरकार चल रहा है, वह झूठ धोर हिंसा पर चल रहा है। सत्य धोर बहिंसा पर नहीं, असत्य धोर हिंसा पर चल रही है। इसके ह्राप में एक ही ताकत है, जनता को बवाने की। पुसित सभ्यो, हथियार लाधो धोर यह भी कहा गया कि जरूरत होगी तो टंक भी। जनत के खिलाफ टंक भी इस्तेमाल किया जायेगा, बतइये। तो बदन में धाघ लग गयी। सङ्को को मैं कहता रहा, जब विसर्जन की उग्योने बात कही, हमने कहा—'कितो कारणसे घण्टा हो या बुरा हो—हमारी किमलत तुम्हारे हाथों, मैंने सोच बो है। मैं तुम्हारे साथ हूँ। सभ जो संसला करोगे, मैं उसका समर्थन करूंगा। लेकिन यह सोच लो डेटे कि तुम तैयार हो, तुम्हारे धरर यह ताकत है कि विधानसभा का विघटन हो।' कैसला किया इन्होंने, माना हमने। लेकिन उस बरत

वेदिल से माना। लेकिन 'प्रभातम कर्मिणी' के बाद—यह श्रद्धों को कहावत—साहट इटा प्रान्त से कमलस बंक—उसके बाद मेरा बिल्कुल इरादा पक्का हो गया कि इनको एक दिन यहाँ रहने को ज़रूरत नहीं। यह जनता के प्रतिनिधि नहीं है (तालियाँ) चोट लेकर घासे होंगे। रोहित जी कहते हैं पांच बजे इनको रहने का हक है—हरगिज नहीं रहने का हक है, जब यह जनता के प्रतिनिधि नहीं रह गये—(तालियाँ)—जब जनता के दुःखन बन गये, जनता के विरोधी बन गये हैं तो एक दिन रहने का इनको अधिकार नहीं है। कोई, नैतिक अधिकार नहीं है। कोई संवैधानिक प्रजातांत्रिक अधिकार नहीं है। इनको चाहिए कि फिर जाकर के जनता से पूछे, उनका फिर से बोट हो। इसलिए मैंने कहा, इनको जाना चाहिए। आप लोग पूछते हैं—हमारे लोग जाते हैं गांधी में पूछते हैं—यह महंगाई, अष्टाचार के लिए हुआ था, यह विधान सभा का विधेयत क्यों? यह इसलिए कि इस सरकार ने जितने पाप किये हैं, उस पाप का धाधार यह विधानसभा है। इसलिए कि उसका समर्थन है। उस पार्टी को सरकार है जिस पार्टी ने इन सब बातों को मान्यता दी है। नहीं तो मैंने पहले कहा कि भ्रम मान्य नहीं है तो वह कहे कि पग में मोलीबार ठोक नहीं हुआ था। पटना में मोलीबार ठोक नहीं हुआ था, बिखनाय मिश्रजी का मकान नहीं जलना चाहिए था, या इसकी सजा दो। इनको निवारने, उलटनी निकालने। कहा है इन्होंने कभी? हिम्मत हुई है? हाँ मे हार भित्ताने वाले, जो—दुन्दुरी करने वाले, और राज के लिए झोड़ लगाने वाले—इसके बदले हमको मर्जी बनाने दो, उसको निवाली और हमको मर्जी मंडल दो—यही करते हैं। और यह बार-बार मन्त्रो-मण्डल बदलने के बाद भी जो नामी—जनता के भ्रष्टर-रक्षक नाम है। उसे लोग पक्के रिश्तखतोर हैं, पक्के भ्रष्ट लोग हैं, जो—केन्द्रेणें वहाँ पड़े हुए हैं। कुछ लोग निवारने गये, लेकिन जिनकी ताकत है, जिनको गम्भीर साहब निवारने को हिम्मत नहीं कर सकते, वे मौजूद हैं। इसलिए अब देर करने से क्या फायदा होगा? इस मन्त्री मण्डल को जाना है, विधानसभा को जाना है। क्या करना होगा।

भाज में आपके सामने दो-तीन बातें इसलिए रखता हूँ। मैं यहाँ हूँ। भ्रष्टर में गिरफ्तार नहीं हुआ तो उसमें जोइसा जाऊंगा आपकी राय। देखता हूँ किस तरह यह मान्योवन चलाता है। गांधीजी एक बार मे देव के लिए एक कदम काफी है—(बन स्टेप एफ ए टाइम इज इनफ फोर मेनन) बहते थे। एक बन्धन हमारे लिए काफी है। मैं गांधीजी तो नहीं हूँ, लेकिन मैं भी बहुत दूर तक सोच कर के सारी चीज सामने रख दूंगा, ऐसा भी मैं पसंद नहीं करता। परिस्थितियों बदलती हैं। भाज जो मैं बटूंगा यह करना चाहिए, उसकी कल ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैं समझता हूँ—सोना प्रकाश के काम होते। एक तो यह काफी है—पदम में—कि विधानसभा में धार फाटक हैं—तो भाज पाच सारी है, छः सारी के छोटी मनाये। कुछ विषय बर ले। बहुत मेहनत हुई, इतनी धूप में लोग सूके। ७ सारी से अर्धवली के चारों गेटों पर सत्ताग्रह हो। सत्ताग्रह का रूप क्या हो—पिकेटिंग हो, पचास हो—(तालियाँ)—हम सब गेटों पर पड़े हो जायें। विषयक साहब धायें, मंत्री साहब धायें—उनको रोहें कि आप नहीं जाइए। जाना है, हमारी पीठ पर से जाइए। हम आपकी जाने नहीं देंगे, विधानसभा नहीं चलने देंगे—(तालियाँ)—गिरफ्तारिया हो, हम जेलो को भर देंगे। कई लड़के जेल जाने से डरते

हैं, ये मैं लड़को के सामने कहना चाहता हूँ। जेल जाने से डरोगे, कभी तो तुम्हारी सफलात नहीं होगी। जेल से ही स्वराज्य पैदा हुआ है। जेल से ही तुम्हारे अधिकार प्राप्त होगे, जनता के अधिकार प्राप्त होंगे, धीरे सच्चा स्वराज्य मिलेगा। साठी भी तुम पर चलती जायेगी, बदामत कर्मिणी। हर दिन दो सौ भादमी-पचास-पचास लोग हर गेट पर पर रहे। हर जिले से लोग धायें—हर जिले से दोसी बाप के, पंदल यात्रा करते हुए। कम से कम २० हर जिले से लोग धायें ही रहे—रोज धायें रहे। पटना नगर के छात्र, पटना नगर के नागरिक। एक पार्टी को तरफ से मेरे पास सत्ताग्रह धायें है कि हर दिन के लिए डेढ सौ स्वयंसेवक हम लोग दूए—(तालियाँ)—बड़ा धन्यवाद है उस पार्टी को। नाम नहीं लेना चाहता सूफि दूसरी पार्टी को ठोक नहीं मरोगा। अगर यह सत्ताग्रह धायें पचास, सत्ताग्रहियों को संख्या धार बढी, तो इसको एक बन्द भी धायें हम से जायेंगे धीरे विधायको का निवास-स्थान पर चौराव करोगे। पर से उन्हें नहीं निचलने देंगे। उनके बाल-बच्चों को नहीं, उनकी बीवियों को नहीं। उनको नहीं निचलने देंगे।—(तालियाँ)—विधानसभा का चलना असभव कर देंगे। धार नारा यह नहीं रहेगा कि 'विधान सभा भंग करो'। धार रहेगा 'विधान सभा भंग करोगे'।—(तालियाँ)—जो विधानसभा पर चलते हैं, जिनकी बमाई विधान सभा से है, वे भंग करोगे—विधान सभा? भंग करना होगा। 'भंग करोगे'—भंग करायेंगे, 'भंग करोगे'। यह नारा रहेगा। यह लोग चुनकर धायें हैं—जनता के बोट से। इनके हर चुनाव धैर्य में धार सम्भव हो तो बोट बिया जाय। दो बक्से रते जायें। हर मतदान केन्द्र पर दो बक्से। एक बक्सा यह हो जिसमें वह कागज डाला जाय जिसमें बोट-रक्ता हो कि 'हमारे प्रतिनिधि, हमारे यहां के विधायक पर हमारा विश्वास नहीं, वह इस्तीफा दे दे' और एक बक्सा जो बहता हो कि 'वह इस्तीफा नहीं दे'। 'हाँ' धोर 'नार', ये दो बक्से रहे धोर मतदान धायें। और निष्पक्ष लोगो को हम बहा नियुक्त करिये कि देखो कोई गडबडी नहीं हो, ठीक भित्तो हो। एक दिन के भ्रष्टर पुरे चुनाव धैर्य में चुनाव हो। जनता का मत विया जाये इसका सगड करना है। इनके समय लगेगा जहा यह म हो सके, बिहार लिये जायें। जो लोग चाहते हैं कि 'इस्तीफा दे' उनका हस्ताक्षर हो। जो लोग चाहते हैं कि नहीं इस्तीफा दे, वे हस्ताक्षर नहीं करें। बिहार में कुछ जगहों में यह काम हुआ है धोर देना गया है कि पनचान्ने पीसती बोट धारा है इस्तीफे के पक्ष में। लेकिन ध्यापक रूप से नहीं हुआ, यह ध्यापक रूप से करना होगा। सभा करती है, जनता को समझता है धोर साध-साध यह करना है। इसके साध-साध तीसरी बात यह कि यह ऐलान कर देना है कि जो इस्तीफा नहीं देता है एक सप्ताह उनको समय धोर दे देता हूँ धोर से लेकर बारह सारी तक दे देता हूँ। बारह सारी तक, जो इस्तीफा नहीं देंगे चुनाव में वह जहाँ से भी लडे होंगे, जनता को हमारा आहवात है जनता को धार मैं प्रादेश देने के स्थान पर हूँ तो मेरा प्रादेश है जनता उनको एक बोट न दे (तालियाँ) हम गहारी को (तालियाँ) उनको धोर जो जाये कि जनता का विश्वास हमने तो दिया है। बैठे रहे वह विधानसभा में, अपनी महावारी बनाते रहें और मंत्री भी बनूंगा धोर उसको निवाली, मुझे बनायो, वह बक्से रहें धोर बिहार जयता रहे धोर बिहार मरता रहे धोर वह सडता रहे, यह धोर →

बुधवार-यज्ञः सोमवार, २७ जून, '४५



जे० पी०

रहे। एक बोट नहीं देता है और सब बिहार की सरकार ने यह घोषणा की यह जो इन्दीया एन घम है कि जिन लोगों ने इस्तीफा दे दिया है वहाँ उप-चुनाव कराये, करा लो, भाग वहाँ से यह बात लेकर जाइये छात्रसंघों अभिनि की तरफ से, जयप्रकाश नारायण की तरफ से कि एक-एक चुनाव उपचुनाव का बीज हों कि तीस हो जितने भी हो बहिष्कार होगा। एक बोट भी कोई देने नहीं चायेगा (आविर्भाव)। जिन लोगों ने इस्तीफा दिया है, वह लोग फिर चुनाव नहीं लड़ेंगे। जिस विधानसभा से इस्तीफा दिया उसी के फिर उम्मीदवार होंगे? जनता क्या कहेगी उनकी? विधानसभा से इस्तीफा देकर भागे हो फिर लड़ रहे हो? डाई बयं तक प्रश्न करो, तग करो, जनता की सेवा करो। बड़ा बेंडरक बना करते हो? किनी न किसी की पैरवी करते हो घोर क्या हो सक्ता है धारसे? एक बोट 'एल्लेक्शन' 'वाई एल्लेक्शन' में नहीं पड़े इसकी कीर्ति होगी बरिष् एर एक कांग्रेस घो० के समद सदस्य हैं जो बिरुद्ध सोनह मना पध में है इन्दीने के सपठन कांसेस के नाम ही ले लेना हूँ इसम बरु वामपन्थक विधाय जो रान कह रहे थे, धार के कराये। उपचुनाव कर में एक बोट नहीं पडेगा। यह बट्टा से धार भग्ने-भग्ने इलाकों के लिए लेकर जाइये एफूर साट्टव उपचुनाव करा के देखें। देखा जाये उपचुनाव में किन को बोट पडता है। धरत यह जन धारदोलन है, जनता की यह आवाज है तो कौन बोट देने चायेगा? किन की सिम्भन होगी जनता के साथ इट्ट करे की?

पुस्तक-संघ साधना २४ जून '७४

यह विधानसभा के विघटन की बात हुई। धारशक्कता पड़ेगी तो इसमें घोर तीव्रतर कार्यक्रम बीडा जायेगा।

यह धार संघर्ष है तो फिर यह पुलिस के जवानों को पुलिस में जो बम तनलवाह तीन चार सौ, पांच सौ मिलनेवाला है, क्या हुआ, उसकी हैमियत सी शय्ये की है धर। उसको पांचसौ रुपया मिलता है पाचवा हिस्सा है तो रुपया है पुराने शय्ये के बराबर, परिवार है, बेटे की पडना है, बेटों की शादी बाली है तुम नहीं समझते हो। नासमझ हो, हकूम पालन करो। जो तोड़फोड़ करता हो उनको पकडो कि हर जगह गोली चलता? धर तो सुणी की वाज है बी०एस० एक बिहार की बाईर गिबपुरिटी फोर्स के वे डापरेंटर जनरल थे वे स्तमजी जैसे एक व्यक्ति ने (जगहोने एक सुभाव दिया उसका मने सामर्थन भी किया कि यह राइफनें नहीं चलनी चाहिए हमारे देज के लोको के ऊपर। यह तो लड़ाई लडने की चीज है। नयी राइफन बनी है, नई मालिया बनी है। स्तमजी की जिनता भी धर्यवाद दिया जाये, प्रष्टा है। बड़े मानकीय व्यक्ति है घोर उन्ही के नीचे यह जान है, जो इस तरह से व्यवहार करने है। घोर हमारे मित्र ही हैं धर नल बोन दिये कि टैंक की जकरन होगी तो टैंक भी हल निगत देंगे। धरे बाबा, टैंक तो धार मोबा पर ले जाओ न, तुमनों के सिताफ। धारने ही धर के लोको के सिताफ टैंक निशान कर दिनाओने? किन की डराने हो राजदेव बाबू को कह रहा हूँ जो हमारे मित्र हैं जिन्ने लिए हमारे हूय में धार है जो धार०बी०, बी०एस०

एक हूँ और वह मानते हैं कि हमको हटा दिया जाये। हमारे जवानों को तो सीमा पर सड़क की गिराई है। वहाँ तो हम गिराई ही देने हैं कि डेला भी गिरे तो एकदम से गोली चला दो। वहाँ दुश्मन का मुनाबवा करना है। यहाँ हमारे झपने घर के लोगों का मुनाबवा करने के लिए भेज दिया गया है। हमें यह काम नहीं सेना चाहिए, लेकिन क्या किया जाये ? इस बिहार सरकार को बिहार की झपनी पुलिस पर कोई भरोसा नहीं है। लेकिन आप लोगों को बाहर से बुलाया गया है। हमारे देश की सेना है, देश की जिनगी भी इसजब, उन्होंने बुलव की है हमारी सेना है, और हमारे इन बहादुर सिपाहियों का झपने देश के लोगों पर गोली चलाने के लिए इस्तेमाल किया जाय। इससे कोई धर्मनाक बात हो सकती है? क्या गोली मार साठी और जेल में सिवा और कोई तरीका

मिथो, झमो-झमी आचार्य राममूर्तिजी
एक बहुत दुखदायी समाचार प्राप्त करने वाले हैं। मैं स्वयं देता, लेकिन उनका देना और मेरा देना एक ही प्राण समझियेगा। मैं कुछ टाल नहीं रहा हूँ। बैठते बैठते

आचार्य राममूर्ति - आप बस रहिये दो
मिनट की बात है। आप में से शायद कुछ लोगों ने सुना होगा कि जब हम लोगों का जुलूस राजभवन से घासित था रहा था तो "इन्दिरा ब्रिगेड" के दफ्तर के सामने जब भीड़ पहुँची, तो वहाँ कुछ घटना घटी और उस पटना में जो हमारे कुछ नवयुवक साथी घायल हुए, उनमें से एक यहाँ खड़ा है-और भी है-कुछ और युवक हैं जिनको चोट लगी। उसके बारे में जिसा न्यायाधीश साहब ने जो चिट्ठी लिखी है वह चिट्ठी मैं पढ़ रहा हूँ। बैठ जाइये, मुन लीजिये यह चिट्ठी। जिसा न्यायाधीश साहब की लिखी हुई चिट्ठी है-भ्रंजी में पहले पढ़ रहा हूँ, फिर हिन्दी में आपकी समझा दूँगा। जयप्रकाश जी के नाम यह पत्र है :

आदरणीय श्री जयप्रकाशजी : आज शाम को जुलूस में चलने वाले लोगों पर कुछ गोल गोली चलाई, उसको मुनकर आप और सबको, पटना के सभी निवासियों को बहुत सदाय पहुँचा होगा।

जब यह घटना घटी, इन्दिरा ब्रिगेड के कार्यालय में जिन लोगों ने, इन सरकार के अधिकारियों ने जा कर के और सेनाधी की तो क्या पाया वहाँ ? छः लोगों को मय हवि-

नहीं है जनता के आन्दोलन से निपटने के लिए घोर समझने के लिए? क्या यह भागे ऐसी नहीं हैं जिनको ये मान्य कर सकते हैं ?

तो मित्रों, जो कुछ मैंने आपसे कहा, अगर उसे समझा आपने तो ध्यान में धार्या होगा कि यह सम्पूर्ण आन्तिक का आन्दोलन है। इसके कई पहलू हमने छोड़ दिये हैं नैतिक आन्तिक का पहलू, शिखा में आन्तिक का पहलू। लेकिन यह सम्पूर्ण आन्तिक हमारी पहले रह चुकी है रम्य, रिवाज विप्लव दहेज यह सारा जो नीजवान लोगों की बेटो, इनके बाप लोभ बचते हैं उसे मोठे बेधे जाते हैं, तो ये सारे नैतिक सुधार क्या आन्तिक नहीं हैं ? जीवन हमारा बदल जाये, फिर बिहार उस जगह पहुँच जाये जिन जगह सम्राट शशोक के जमाने में था (तात्पार्या)

यारो के साथ रेड हूड माने रगे हाथों पकड़ा। एक बन्दूक मिली और बारह कार-तूँस, और छः खोलें मिली (कारतूँसों को जो चल चुकी थीं, लेकिन खोले पड़ी थीं।) दो धादमी, जिनको ज्यादा चोटें लगीं उनका मरहम-पट्टी हो रही है, उनमें एक पुलिस का ड्राइवर भी है।

जयप्रकाश नारायण : आचार्य राममूर्ति ने कलक्टर साहब श्री डूले का पत्र पढ़कर मुनयाया। एक दुपटना हुई थी, कुछ समय पहले-डाक बगले में-एक कमरे में बम फूटा था। जो दिन उसकी खबर छपरी-अखबारों में। उसके बाद भ्रंजी में जो शब्द हैं उसे हलक्षय कर दिया गया। क्यों हलक्षय कर दिया, पता नहीं।

पटना शहर में एक अफवाह है जो लोभ दस मकान में ये, वह इन्दिरा ब्रिगेड के लोग थे। धर्म जानना नहीं मैं, लेकिन अफवाह है-यह बात तो सही है-अफवाह नहीं है। फिर दो दिन के बाद मुन नही गया कि उस पर नया कार्रवाई हुई है। यह वहाँ जिस स्थान से यह गोली चली वह एक विधायक साहब है-कुर्लना राय साहब, उनका फुलेंट है और उसी फुलेंट में इन्दिरा ब्रिगेड का दफ्तर है। सरकार कहती है, मैं कुछ नहीं जानता हूँ-बोर्ड लगा है ऐसा ये मित्र हमारे कहते हैं-इन्दिरा ब्रिगेड का दफ्तर है वहाँ और आपसे के एक विधायक साहब है। पुलिस ने भट किया तो रगे हाथों पकड़े गये, कुछ लोग भाग गये। क्या-क्या वहाँ से बरा-

मद हुआ, यह सब सुना आपने। हम, इ कार्रवाई के मित्र लोकतंत्र की शिखा दे चाहते हैं, मैं दुबेजी से कहूँगा, भाई-जी साहब से कहूँगा, कोहलीजी से कहूँगा-कि को शिखा देनी चाहिए? जयप्रकाश नारायण को, छात्र समर्थ समिति को, बिहार जनता को, बिहार के युवकों को और छात्र को देनी चाहिए ?

एक बात मुझे कहनी थी। दूसरी यह नहीं थी कि इस सब को मुनकर के आ उत्तेजित नहीं हो-खासकर छात्र उत्तेजित नहीं हो ऐसा नहीं कि आप सारा में वह जायें उस स्थान पर और वहाँ जाकर ध्याय सनायें। अगर ऐसा आप करेंगे, तो इस आन्दोलन को प्राय धक्का देंगे, इसको मुकसान पहुँचावेंगे। उससे कुछ नहीं होगा। जो कुछ सरकारी कार्रवाई होगी, सरकार नरेगी। जितनी करेगी, मैं नहीं जानता। अगर वास्तव में वह इन्दिरा ब्रिगेड के लोग हैं, जिसको भाई राममूर्तिजी "मस्कि ब्रिगेड" के लोग कहते हैं, उनके लिए क्या कहा जा सकता है ? उनको सात सून माफ होंगे शायद। कर्लक्टर साहब की या गफूर साहब की हिम्मत न होगी कोई कार्रवाई कर भगवान जाते।

लेकिन मित्रों, यह सब पाप का बड़ा भरता जा रहा है। भरने दीजिये-टूट जायेगा आपसे पाप, फूट जायेगा। (तात्पार्या)-आपसमें एतना होगी। ठीक है हमें धार बचन देते हैं ? (हाँ, हाँ-न) धक्की बात है। आपका बहुत धन्यवाद।

अगले अंक में पढ़िये

इलाहाबाद में २२ व २३ जून को आयोजित हो रहे प्र० भा० युवा सम्मेलन की रपट।

क्रांति की भूमिका सुरक्षित है

धादूराव चन्दावार

सहस्राब्द का अन्तिम अध्याय बन गया हो चुका है। सामन्तशासन की दिशा में सहरसा से तथा सहरसा से नई ब्यूह रचना करने के लिए नया मोड़ मिले ऐसी प्रतीक्षा शम्भर के साधियों की थी, लेकिन गुजरात तथा बिहार में राजनैतिक स्तर पर जो परिवर्तन होने लगे, उनको उरक साधियों का ध्यान धाड़ट्ट होना प्रत्यक्ष स्वाभाविक था। विभेदकर जयप्रकाशजी की इस दिशा में एक भूमिका बन जाने के बाद हमारे में से कोई भी साधो उसने प्रभावित हुए बिना रह नहीं सकता था। जयप्रकाशजी के कारण भारत के राजनैतिक स्तर पर एक नये मन्थन का आरम्भ हो चुका है। लेकिन इससे साथ साथ कुछ लोगों में मूल भूमिका में परिवर्तन आने की आशा भी उठने लगी है। क्योंकि प्राचीन-वर्तन के लिए जो वैदिकत्व प्रतिमा हमारी प्रायतःक बनी थी उसे विकृत करने की नई परिस्थिति हमारे भूमिका-परिवर्तन से हमने बनायी है यह दबो धावाभ में कुछ साधो प्रायः वे बोलने लगे हैं। कई सद्यों में विनोबाजी के किये गये निवेदनो का सहारा लेकर कुछ साधियों ने विनोबाजी तथा जयप्रकाशजी को भूमिका में विभेद देवना शुरू कर दिया है। इससे सर्वोदय जगत में दो मिलन धाराओं का धामास पैदा हो सकता है। गुजराती परिवर्तन लाने की दिशा में बढ़ने लगे किसी भी धादोलन में ऐसी स्थिति कभी ना बनी आती है। इससे धादोलन के भविष्य पर कोई बुरा धामर पड़ेगा यह कहना मेरी दृष्टि से ठीक नहीं है। धादोलन तभी आगे बढ़ सकता है जब उसमें मुक्त विचार मन्थन करने की गुआदश होती है। कितना भी महत्पूर्ण धादोलन क्यों न हो उसमें यदि मुक्ती विचार-मन्थन नहीं होना न तो वह धागे जा कर मुतनाम हो जाता है। इसलिए किसी षय को मन में रखकर सोचने की धावश्यकता नहीं है।

जब हम विचार मन्थन के स्तर पर आ जाते हैं तब पूर्वाग्रह से हटकर सोचना जरूरी धुरान पत्र : सोमवार २४ जून ७४

हो जाता है। इसलिए किसी के बारे में धना-वश्यक विनय के प्रदर्शन को रोकना भी चाहिए। क्योंकि धादोलन की धानि दिशाने में यह विनय बाधक हो सकता है। इस विनय में श्रेष्ठ व्यक्तित्व का दबाव अधिक काम करता है। धीरे धीरे व्यक्तित्व हर समय धादोलन को सही दिशा देना ही है ऐसी बात नहीं है। कभी यह व्यक्तित्व गलत दिशा भी देता है या दे सकता है। इसना आधार इतिहास में मिलता है। व्यक्तित्व के दबाव से सोचने की मुक्तता में खानाट घाटी हो तो उसका धादोलन के भविष्य पर अनुभूति प्रसर पड़ता है। इसे स्पष्टता से कहने की धावश्यकता इसलिए है कि हमारे निर्णयों में आजकल सर्वसम्मति का धमाव दिखने लगा है। इससे निर्णय के कार्यन्वय में बाधा पैदा होने लगती है। यह स्थिति किसी भी दृष्टि से स्वस्थ नहीं कही जा सकती।

सहरसा अध्यायन के बाद धामन्तराज्य की वास्तविकता को लेकर साधियों का एक साथ बैठ कर सोचना चाहिए था। ऐसा किये बिना धामन्तराज्य की उपयुक्तता के बारे में धावाप पैदा करना उचित नहीं था। लेकिन परोक्ष या धाप्ररोक्ष तरीके से कुछ साधियों ने शकालू खती की हैं। और जयप्रकाशजी की लोचस्वराज्यवादी बात इसी सदर्न में कुछ मित्रों ने महत्पूर्ण मान रखी है। लोकस्वराज्य अपनी जगह पर महत्पूर्ण है। लेकिन धामन्तराज्य के बारे में शकालू पैदा करके उसे महत्पूर्ण न कहना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता। इसने धामन्तराज्य तथा लोकस्वराज्य दोनों के साथ न्याय करना संभव नहीं हो सकता धीरे एक धम पैदा होता है। इस धम को पैताने में गुजरात तथा बिहार की राजनैतिक परिस्थिति में सहायता की है जिसका विद्वेषण धमो ठीक ढंग से किया जाना किसी के लिए भी सम्भव हुआ नहीं है। इस धम में जो परिस्थिति बनी है, वह लोकतंत्र को शक्तिशाली नहीं बना सकती है, इससे किसी वा मतभेद

हो नहीं सकता। लेकिन लोकतंत्र की शक्ति कैसे बनेगी? यह प्रश्न धमनी जगह पर से हटा नहीं है। धामन्तराज्य की बुनियाद पर लोकतंत्र को खड़े करने से लोकतंत्र को शक्ति मिलेगी धीरे लोकतंत्र के उचित प्राधान्य निकलेंगे यह हम मानते हैं। इसलिए धामने हैं समदीय पद्धति से लोकतंत्र की बुनियाद बनी नहीं है यही जगह है कि इस पद्धति से लोकतंत्र को शक्ति नहीं मिल रही है। गुजरात तथा बिहार की नई राजनैतिक परिस्थिति लोकतंत्र की बुनियाद बनाने के लिए पड़ोस तक सहायता दे सकती है इसे सोचना जरूरी है। नमोकि बुनियादी सत्ताओं से हट कर किसी सुधारवादी कार्यक्रम में जुट जाने से हमारी रेडिकल प्रतिभा धम होने से हमारा धादोलन बुनियाद से खड़ सकता है।

इस शक्ति से भिन्न दिशा विरोधी तीसरी शक्ति के निर्माण में सर्वोदय समाज के साधियों ने जो योगदान दिया है उसका महत्त्व कभी भी कम नहीं हो सकता। बुनियादी परिवर्तन की दिशा इससे मिली है। किये गये प्रयासों का उदारता तथा तटस्थता से मूल्यांकन करना धावश्यक है। तीसरी शक्ति के निर्माण को धामदान एक पद्धति रही है। इस पद्धति को चलाना धावश्यक लगता हो तो नई पद्धति क्या होगी? विभिन्न राजनैतिक परिस्थिति से प्रभावित न होकर हम तीसरी शक्ति के निर्माण को प्रकिया को छोड़ नहीं सकते। गुजरात तथा बिहार के धादोलनो से तीसरी शक्ति के निर्माण में सहायता हो सकती है इसे में मानता हूँ। लेकिन राजनीति के सामान्य परिवर्तन से जो बुनियाद को छूटना न हो सहाय देना उचित नहीं है। व्यवस्था के धामन इ इ प्रसर होने लगते हैं तब स्वाभाविक तरीके से व्यवस्था टूटने लगती है। इस स्थिति के सम्पूर्ण क्षण से प्रकट होने की धावश्यकता बिना बुनियाद के तथा मानसिक विकृतियों से बनी है—यह किसी की समक में नहीं धाटा। ती धामर इ इ दो के प्रकट होने से

व्यवस्था टूटेगी। लेकिन प्रागे जाकर विस्वास के आधार पर नये सम्बन्ध बनाने से तथा विपक्षित करने से एक प्रच्छन्न सुमस्तुत समाज बन सकता है। यह प्रागा प्राग की व्यवस्था टटने से बनती है। इसलिए जिस तरह की पब्लिक से मुसंस्कृत समाज बनाने की सभायना है उस तरह पब्लिक की प्रक्रिया हमें चलानी चाहिए। ग्रामदान की पद्धति से ग्रामस्वराज्य की स्थापित करने का कार्यकामी ही एक प्रक्रिया है। इस पर हमारे हमेशो-को हड़ रहना चाहिए। प्रभोति राजनैतिक परिवर्तन का लाभ हमें है। लेकिन राजनीति में परिवर्तन का समाजपरिवर्तन होगा नहीं। राजनैतिक परिवर्तन से प्रभावित होने रहने की मर्यादा हमें बांध लेनी चाहिए।

जयप्रकाशजी की 'मिक्सडकान आफ इण्डियन पॉलिटि' नाम से सालो पहले लिखी गयी थीसिस से 'लोकस्वराज्य' की बल्ना सामने आयी है। इसमें राजनैतिक परिवर्तन की तथा राज्यव्यवस्था की नई बात बतही गई है। तो भी लोकतंत्र के लिए जिस लोकशास्त्रि की प्रेरणा है उसके निर्माण के लिए अक्षर मिले इसका ध्यान भी पर्याप्त रखा गया है। इसलिए ग्रामस्वराज्य की प्रेरणा से 'लोकस्वराज्य' अक्षर पढ़ने वाला नहीं है। लेकिन बंडशास्त्रि से भिन्न हिगा विरोधी स्वतंत्र लोकशास्त्रि की प्रेरणा से 'लोकस्वराज्य' की धारा प्रकट पडती है। इस नम्रता से स्वीकार करना पडा चाहिए। इसे स्वीकार कर लेने से 'लोकस्वराज्य' का प्रकट बन होगा ऐसा नहीं मानना चाहिए। अर्थात् ग्रामस्वराज्य की बुनियाद पर 'लोकस्वराज्य' की रचना करना जैसे सम्भव होगा उसे हमें सोचना चाहिए। लेकिन इन दोनों का सम्बन्ध करना ठीक नहीं है। क्योंकि सम्भव हो नहीं सकता। सम्भव्य करने की कोशिश से स्वतंत्र लोकशास्त्रि के निर्माण में बाधा आ सकती है। लेकिन 'लोकस्वराज्य' की विनिष्ट क्रम में विदाया जाना ग्रामस्वराज्य के शीर यह क्रम ग्रामस्वराज्य की बुनियाद डालने के बाद ही स्थिति में ही बन सकता है।

ग्रामस्वराज्य की बुनियाद सर्वधो में विस्वास करने के लिए है। मनुष्यों के संबंध जो प्रभो राज्य के कानून से बनाये जा रहे हैं, उसमें विस्वास का अभाव है। इसीलिए एक

दुग्धरे हील्लो में विरोध प्राणा रहता है। इस से मनुष्य की परेशानी बट रही है इस परेशानी को हटाना है। इसी वजह से विस्वास को आधार बना कर संबंध बनाने का तरीका ग्रामस्वराज्य को माध्यम बना कर हमें दूटना है। यह किसी भी राजनैतिक परिवर्तन से या नई राजनैतिक व्यवस्था करने से संबंध होने वाला नहीं है। 'लोकस्वराज्य' राजनैतिक व्यवस्था से स्वभावतः अर्थिक प्रभावित है। अर्थात् इसमें लोकनीति का आधार लिया गया है। लेकिन राजनैतिक व्यवस्था के लिए सीधे उपयोग में लाये जाने के कारण लोकनीति को अक्षत समाप्त हो जायेगी। राजनीति लोकनीति को अपने वेट में समेट लेगी। अर्थात् लोकनीति ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया चलाने से ही अपना अस्तित्व टिका सकती है। इसे हम नहीं भूल सकते। अतः लोकनीति को ग्रामस्वराज्य की बुनियाद पर ही अपने शक्ति प्रकट करना चाहिए। ग्रामस्वराज्य के बिना 'लोकस्वराज्य' स्वतंत्र शक्ति के निर्माण में सहायोगी नहीं बन सकता। इसका मतलब यह हुआ कि पहले ग्रामस्वराज्य की बुनियाद चाहिए। बाद में स्वतंत्र लोकशास्त्रि के निर्माण को नई स्थिति बना सकते हैं। इसमें 'लोकस्वराज्य' महत्वपूर्ण योगदान करेगा। 'लोकस्वराज्य' ग्रामस्वराज्य की बुनियाद को छोडेगा तो संबंधों में विस्वास का आधार नहीं बना पायेगा। और इसलिए 'लोकस्वराज्य' को एक राजनैतिक प्रक्रिया बन कर रह जायेगी जो अभी तक हिन्द-विरोधी को पंदा करके मानव को परेशान करने प्राणी है।

जयप्रकाशजी के दिल में हाल की परिस्थिति से एक दर्द पैदा हुआ है जो हम सब साथियों के दिल में ध्वनित हो चुका है। सम्भव अक्षि को प्रकट कराने में यह दर्द प्राज की परिस्थिति पर निश्चिन्त रूप से प्रसार करेगा हममें मुझे जका नहीं है। फिर भी यह अक्षि के दुनियादी सिद्धांतो को छोडकर बहने की कोशिश करने तो गलती कर बेंडेगे। इसलिए विशेषता ने कई बार सकेत दिया है कि दिल में दर्द हो लेकिन दिमाग ठंडा रहे। दिमाग ठंडा करके दिल में दर्द यानी गरमी रखना प्रभावित है। अक्षर यह होना है कि दिमाग गरम होता है और दिल ठंडा पब जाता है। लेकिन इससे दिल को गति नहीं मिलती।

दिमाग को गति मिलनी है। और सिर्फ दिमाग की गति से अक्षि या परिवर्तन सम्भव होता नहीं। दिमाग का साथ न छोडते हुए दिल को गति मिलने से अक्षि या परिवर्तन सम्भव होता है। दिलों को गति देने से दिल जुड़ते हैं। सम्भव अक्षि के लिए दिलों को जोडने वाली प्रक्रिया हम छोडने नहीं। जय प्रकाशजी के तथा विनोबाजी के दिलों को गति मिलने से दिलों को जोडने वाला प्राडो-लन इस देश में संडो है। इन अवस्था में किसी भी बाहरी परिवर्तन के प्रभाव से भिन्न धाराओं का प्रभाव हमारे साथियों के दिमाग में न घुसे इसकी मूमबुद्ध हमें रखनी चाहिए। बिना दिल के साथ रहे दिमाग दिलों को बलाना नहीं तोडता है। और राजनीति से तो तोडने की ही प्रक्रिया चलाई जाती है। इसे खूब प्रच्छो तरह हम सब जानते हैं।

गुजरान तथा बिहारी राजनैतिक परिस्थिति के कारण जयप्रकाश जी की भी भूमिका बनी है वह राजनैतिक भूमिका पढ़ी है। इसलिए यह दिलों को जोडने वाली है। उनकी इस भूमिका से सर्वोदय प्राडोशन की बुनियादी भूमिका में परिवर्तन आने की स्थिति पैदा नहीं होगी। कान्तिजी भूमिका सुरक्षित है।

(पृष्ठ ३ का लेख)

'जे० पी० ने जो लाइन ली है वह ठीक है, दोन्नीन वालों का ध्यान में लेते हुए। एक, बाबा के चिन्तन छोड़ दिया है। दो, बाबा एक जगह बैठा है। प्राज हिन्दुस्तान में घुमने रहते हैं। इसलिए बाबा को जो दीसत नहीं वह प्राणनो दीसत है। कीरतन को पूछा था क्या शीर भट में बिठना प्रान्त है? उसने सहा चार उँगलियो बा। और शीर काय में चार उँगलियो का प्रान्त है। हम लिए सत्य भीर भूट में उनका ही प्रान्त है। इसलिए प्राणनो जो दीसत है, जो जानवारी है, तदनुसार आग को विस्मय करते हैं यह पक्का है। इसके साथ बाबा सत्य है। यह प्राणनो मान लेना चाहिए। तीन, बाबा नेतृत्व चाहना नहीं। गणतंत्रवाच चाहता है। इसलिए बाबा हमेशा प्राणनो सबहद देता रहेगा, प्राणनो सप के विस्वास, तो नेता बन जायेगा।

इन तीनों कारणों से वह (जे० पी० की लाइन) ठीक है।

—प्रभाव फौती

वार्षिक मूल्य—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ गिनिंग या ५ डालर, एक बरक का मूल्य ३० पैसे।

प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा सप के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

प्रभाव जोशी द्वारा सर्व सेवा सप के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।



सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १ जुलाई, '७४

ए
त
श
र
ता
मो
!



इ
न्क
ला
व
आ
ये
गा !

दलहाबाद में कालि के लिए उरसाहित नवयुवक

परिधान को लोड या दन लोड : भवानी प्रसाद मिश्र ● एतबार साधो लो इन्कलाव बावेगा : प्रभाप जोशी ● युवा सम्मेलन के प्रस्ताव
कीमतम इन्कलावम घोर नवीनतम विज्ञान को जोडी बनानी होगी विनोबा ● का पुर के कवहरी बाने लडकों का कमाल देवप्रिय ●
एर - देस को चङ्गती हुई जवानी : रामचन्द्र राही ।

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

अभियान 'जी तोड़' या 'दम तोड़'

खाद्यान्न के उत्पादन और वितरण की लयानार विगड़ती हुई परिस्थिति कदाचिन् देश का सबसे चिन्तनीय विषय है। सरकार पिछले अनेक वर्षों से विभिन्न उपाय-योजनाओं का सहारा ले रही है, किन्तु कम से कम इस मामले में पांसा हट बार उलटा पड़ता है। नेट्रों के वितरण का अब राष्ट्रीयकरण किया तो सारे देश में सरकार से कहा कि इसमें अनेक तलवे हैं और सम्भावना यही है कि सरकारी तंत्र के हाथ में भाने के बाद वितरण व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जायेगी। शासन ने इस बात को कोई महत्व नहीं दिया किन्तु जो फल प्रकट हुए उम्हरे इस वर्ष में नेट्रों की वितरण व्यवस्था में सरकार को परिवर्तन के लिए बाध्य कर दिया। तत्पश्चि इस बीच शान कुछ ऐसी विगड़ चुकी थी कि बदनी हुई वितरण व्यवस्था भी जनता के लिए वैफल दुखदायी सिद्ध हो कर रह गई। जिस प्रकार पिछली बार सरकारी हाथों में आकर वितरण व्यवस्था के चारण छुट्टाकारी-तन और कालाबाजार करने वाले भूगारियों को लाभ हुआ था, उन्ही प्रकार इस बार अर्ध-बडे किसानों, अमाछारों और छुट्टाकारी-तन को लाभ हुआ। छोटे किसान और उपभोक्ता पहले से भी अधिक परेशानी में पड़ गये। अर्थात् छरी चाहे घररूजे पर गिरे, चाहे घररुजा छुरी पर—पाव तो वेगारे घररूजे के माथे में ही बसा है।

अन सरवार ने मरीफ-की फसल की तरफ मुह मोडा है। लगता है रवी की फसल के छेड़-छाड़ का विचार सरकार छोड चुकी है या इसे बह फिर उन समय करेगी जब निवास विचार के कुछ भी करना सम्भव नहीं बचेगा। मरीफ की फसल के मामले में सरकार ने सोचा है कि कुछ रीमाने पर 'जी

तोड अभियान' (क्रेण प्रोग्राम) लागू किया जाय और समय पर बडे-बडे किसानों को धान, ज्वार, मकका और बाजरा आदि के उतम बीज देकर साड इत्यादि का भी श्रेष्ठ प्रदम्भ किया जाय और खरीक की फसल को इस हरित प्रारि के दायरे में लाकर दिखाया जाय।

यह विचार १७ जून को तय हुआ, जब कि आमतान में बादल छा ही नहीं गये हैं, बरसने लगे हैं, और किसान अपने खेत तैयार करके बोने के लिए बडिबडे हैं। १७ जून को हमारे जईक तादमनकी फलरहीन खली भडुमद ने तय किया कि खरीक फसल बढने के लिए राज्यों के मुख्यमंत्रियों से फसल-सलस बात की जायेगी और उत्पादन की नई योजना दस दिन में तैयार करके उस पर अमल गूढ हो जायेगा। अर्थात् साड-मश्री और योजना आयोग, इंस्ट्रोल रसायन, सिचाई-विजली मन्त्रालयों के प्रतिनिधि तथा राज्यों के मुख्य मंत्री मिलेंगे तथा बाजचीन करके यह योजना तैयार करेगे कि सिचाई साधनों का अधिकतम उपयोग किस प्रकार किया जाय। लघु सिचाई साधनों से किस प्रकार लाभ उठाया जाय। इस तरह अछडे बीज, उर्वरक, बिजली, बीजक, बीडमासक दवाइयों को किस प्रकार जल्दी से जल्दी किसानों को मुहैया करके मनचाहे फल प्राप्त करना मरी माहोदय को मासान दीय रहा है।

दस दिन में दतनी बड़े योजनार दस प्रकार सम्पूर्ण रूप में लागू कर देने की आशा सुरागो है या भोलापन, क्या बहे? शासन समझता है कि नीतिवा हा सदा से नीरख हैं; उनमें कमी कोई कमर रही ही नहीं। कमर केवल शासन-तन को चुसती में घी, यह अब तक बिलकुल टोन हो गयी है या दन

दस दिनों में टाक हो जायेगी।

हमारा कहना है कि यह फिर फलत इव से सोचना है, गलन बंग से चलना है। इसके अनुसार अमर समय पर मदद पडू की भी तो यह केवल बडे-बडे किसानों तक पहुंचेगी, छोटे-छोटे किसान फिर कोरे के कोरे रह जायेंगे। सन साड और सलर के बीच में धारि प्राति के जो प्रयोग किये गये थे, वे भी इसी प्रकार के थे। किन्तु उनसे राष्ट्रीय साड स्थिति नहीं सुधरी। शान का उत्पादन भने बड गया ही, उपभोक्ता तक लादान न समय पर पहुंचा न टोन नीमत पर। वर्तमान योजना भी कुछ उसी तरह के विचार का फल है। छटपट बडी-बडी योजनाएँ बनाकर उन्हें भड-भट लागू करने की सरकारी जड-निमत हर बार मुंह के बल पर गिरी है, किन्तु उतसे उतने कुछ सीला नहीं है। ध्यान रखना चाहिए कि अब तक नीति का सन्तुषा डाका ही नहीं बदला जाता और धोरन के साथ नित्य जागत रहकर उस पर अमल की किया जाता, तय तक चाहे जितनी अछडी नीति से बनाई गई साड योजनाएँ बिकन होती रह्यो। इस अभियान का फल भी वही होगा जो पिछले अभियानों का हुआ है, अर्थात् फिर अछुटाकारी-तन, अमाछार, अडे-बडे किसान और काला बाजार करने वाले व्यापारियों को वन धायेगी। छोटा किसान और उपभोक्ता वैसा ही परेशान रहेगा जैसा वह पिछले दो दशकों से है और रोज-रोज अधिक परेशान होता चला जा रहा है। खरीक की इस नीति को जईक नीति बढे में कोई नहीं है। यह न ई है और न इसमें कोई दम है। 'जी तोड़' खरीक का यह अभियान 'दमतोड़ अभियान' सिद्ध हो कर न रहे जाय।

बिहार में उपचुनाव ?

बिहार में बिपारी दलों के विचारकों द्वारा जो इतनीके दिये गये थे और इस कारण रिक्त हुए १६ स्थानों पर सरकार ने जो उपचुनाव करने का निर्णय लिया था, यह रह कर दिया गया है। चुनाव आयोग ने इन उप-चुनावों को कराने की दिला में जो जल्दबाजी दिखाई थी (सिप पृष्ठ १५ पर)

बैन-बात पर ये इतनी बहल, हो-टूल्वा पीर हंगामा करने हैं। जल्लेजल मे मुट्टिया लने हैं और सभा मे बैठे लोगों का नुहाज नही करने हैं। सभे यान रखने हैं और चौड़ी गोल मोरी के पन्ट पहनते हैं। इस मे लडके बहु सम्पूर्ण आंगि कर सबने हैं ओ वे ली० कहते हैं कि इन्ही से होनी ?

अलाहाबाद मे २२ और २३ जून को हुए अखिल भारतीय युवा सम्मेलन को पुरानी पीढ़ी के दिन लोगों ने धरनी धाली देला उनके भर मे यह सवाल बार-बार उठा है। मेरे मन मे भी उठा है। हालांकि मे पुरानी पीढ़ी का नहीं हू। देश के सार्वजनिक जीवन मे एक विस्फोट की तरह पायी युवागमि के प्रति मेरे मन मे सहा-नुभूति और प्रशंसा का भाव है। फिर भी यह सवाल बार-बार नुपं की तरह पुनरावृत्त



ग्रामसभा को जे० पी० का सम्बोधन

एतवार लात्रो, इन्कलाब आयेगा

अखिल भारतीय युवा सम्मेलन, अलाहाबाद की रफट

है: 'क्या ये इन नैतिक सांस्कृतिक पार्षाति के बाहक हो सकते हैं जिसकी प्रतिपाद्यता विनोबा, जे. पी. दादा भयमिधकारी और पीरुड दा इतने वर्षों से प्रतिपादित करते था रहे हैं ?

यह सवाल २३ जूनकी भी गुबह मुझे तग कर रहा था जब हाथडा से दिल्ली लौट रही प्रदान एमप्रेम को अलाहाबाद मे दडी मुक्तियोंके बाद मे पकट पाया। मार्ग खुली सा पर्वों वकी। जिसकी थी—बिहार का प्रायद्वलन और देश की हानत। मैं न बर्षों में माग नहीं किया और पुनःप्राप्त सुनता रहा। मुने लगा कि रेलगाड़ी के तीसरे (शामा कीबरे, धर नुमरे) दर्जे के डबे मे इस देश का प्राय धरनी जिनता सुनता है उनना बरी नहीं सुनता। याका धरनी को उसके परिचय और सामाजिक बर्षाओं के सू टा से बर्षाएं रहनी है और धरन नत की वे सारी बर्षां वह बेहिचन कह देता है जिन्हें प्राय और पर कह नहीं पाता। सामने की लीटों

पर बैठे छाट ब्रादरियों मे पार व्यापारी, एक सरकारी नोकर, तीन विद्यार्थी और एक सदगृहस्थ नोकीपेता व्यक्ति थे। एक



प्रधान—नूपार प्रशांत

व्यापारी बिहार का था, बाकी सब उत्तर-प्रदेश और दिल्ली के। बिहार के व्यापारी की आन्दोलन-सम्बन्धी जानकारी किसी भी जालसाजिये से ज्यादा थी और ज्यादातर बही बोल रहा था। सब मानते थे कि महंगाई, अष्टाचार और अभाव भव बर्दाश्त के बाहर है लेकिन किसी को विश्वास नहीं था कि जे. पी. और ये लडके हालत को सुधार सकते हैं। इन देश मे व लनी क्रांति हो सनती है न शांति से सुधार। लोग चिंतना महते हैं। कोई और मुक्त होता तो अब तक कई के तथे पकट गये होते, प्रारण के व्यापारी ने कहा। बिहार का व्यापारी न ह रहा था कि बस मोड़ी ही वसर और देर है। लोग अब और नहीं सह सकते ! फिर उनमे धरने एक करीगर की भुलमरी का विस्सा सुदाया जा पहले देर भर चावल खाता था और अब पाव भर भी नहीं खा पाता। 'बचो की क्या विजाज', धुर टा लू तो ?' करीगर नहना है और पहले की

दुलता में चार आना भी काम नहीं कर पाता। हालत का रोना सखने रोया, सखने अपने अपने व्यवसायों की बकानत की। सखने नृदा कि हालत बदलनी चाहिए लेकिन किसी को भरोसा नहीं था कि आन्दोलन से वह बदल जायेगी।

भरोसा नहीं आता। दिल्ली में बंडे बुद्धिजीवियों से लेकर देव भर में बिजयेश्वर और आधी-पूरी जनकारी या मलत जानकारी पर राम बनाने वाले धाम लोगों की राम में परिवर्तन धनिकारों और धन्यप्रभाषी हैं। लेकिन वे मान नहीं पाते कि यह दृष्टिगत परिवर्तन बिहार जैसे शांतिपूर्ण आन्दोलन से हो सकता है। जिस तरह अलाहाबाद का युवा सम्मेलन चला उसके मुझे भी भरोसा नहीं आ रहा है कि नाति ये युवक कर देंगे। नाति के लिए हम जिस तैयारी को जरूरी मानते हैं और उसके बाहों में बलिदान की जो तय्यारी हम देवना चाहते हैं वह दीपनी नहीं। आन्दोलन चाने, मारे लगाने और आम उदयलता भाग्य देने से ही नाति नहीं होती। क्या जे० पी० ने गरी माध्यम मिल गया है? सम्मेलन में तय था कि मद्रास, प्रयाग, बरेली, बरेली, वर्तमान शिक्षा का विफल और महिगम युवा आन्दोलन की तकनीक-इन छा: विषयो पर उद्घाटन के बाद जनम-प्रलय मधुमे में चर्चा होगी और फिर इन समूहों की चर्चा में निष्कर्ष पूरे अधिवेशन के सामने ले जायेगे। विषयो मे मे तीन तरह प्रवेश भाग्य हुए थे कि सम्मेलन के अध्यक्ष कुमार प्रमान को इन विषयो का सामना करना पडा कि वे प्रतिनिधियों का सम्मान नहीं कर रहे हैं। सम्मेलन की नातिप्रति प्रतिनिधियों के साथ बैठकर तय करनी चाहिए थी, पहले से नहीं।

उत्तरा प्रायश्च का कि सम्मेलन में विचार-विनिमय होने देना निरूपेण सब प्रतिनिधियों को मिल कर चर्चा चाहिए था। यह कुछ काफी देर तक चली और धारिण धारंवाजी पत्रक मिला के लिए त्यागित करने पडी। फिर जे. पी. ने छा कर सम्मेलन की सर्व-सम्मति भी और तय हुआ कि युवा अधिवेशन काम को सारे साथ बने तक चलेगा। फिर जे. पी. चले गये। एक पर एक भाग्य हुए, जोन और काम में भरे हुए। राज को

भोजन के बाद महिला विद्यापीठ के प्राणने में जिसे जहाँ जगह मिली प्रतिनिधिमण्डल बैठे और बडे जोश खराब के साथ आन्दोलन की तकनीक पर बहस हुई। दो मन ये-बिहार के आन्दोलन की मदद करना है और अपने प्रांत में आन्दोलन छेड़ना है। बिहार का प्रतिनिधि मण्डल कहना था कि हमें तत्काल-प्रतिहो की जरूरत नहीं है। प्राय जहा हैं वहीं से समर्थन और सहाय्य दीजिये। जब जरूरत होगी हम आपसे मदद मांगेंगे।

सम्मेलन ने एक समिति नियुक्त की थी जिसने देर तक बैठ कर दो प्रस्ताव तैयार किये। एक राष्ट्रीय परिस्थिति पर और एक कार्यक्रम पर। २३ जून को मुंबई के अधिवेशन में वे पड़े गये और बकाशों ने उनी जोश के साथ उनका समर्थन किया और सशोधन प्रस्तुत किये। सशोधन प्रस्तावों में शामिल कर लिये गये। दोपहर के अधिवेशन में प्रस्ताव सर्वसम्मति में पारित हुए। जे पी बटून यह जाने के बादए समाज भाग्य देने नहीं आ सके। अध्यक्ष कुमार प्रमान ने समाज में बड़ा और बिलकुल सही बड़ा कि हम लोग यहाँ देव के कोन-जाने में बाधे हैं। (यत्नभक्त सात ही प्रतिनिधि) हमारी कुछ-भूमिका और भूमिका अभिन्न रही है। तबिन हमें मज करने वाली कोई बाकाशा है ना वह है परिवर्तन की बाकाशा। लेकिन मेरी सम्मत्त म तनी आता कि हम एक दुगर को सम्मेलन और एक दुगर की नातिन बढ़ाने के बजार एक दुगर को नातिन क्यों मज जाने है? हमें सबकी नातिन मिला कर काम करना है। एक ऐसा मज बनाना चाहिए जहाँ देव को युवा समिति समझते हुए सारे और नाति के लिए काम कर सके। फिर कुमार प्रमान ने जे. पी. की बात दोहरायी कि वे इस आन्दोलन का मजत मानेंगे अगर हममें में निष्कर्ष युवा नातिन निकल सके। प्रमान ने अपनी बात की जोड़ी कि वे इस सम्मेलन को मान्य म नेंगे अगर हममें देव भर के मुहर्षों की ही विवक्ति और उनको नातिन समझते हो सके। निरूपेण मजत बनने में कई आन्दोलन तय हुए हैं। लेकिन जनता में विश्वास नहीं दिया है कि ऐसा कोई आन्दोलन होगा जो जनता की हानि बढत गये। कुमार प्रमान

ने तत्कालीन का वाक्य उदयुत किया जेना-वनी के रूप में कि नातिकारियों ने सब कुछ किया पर जनता की पीठ से नहीं उतरे। समाज का वे सबसे प्रभावशाली और प्रेरक भाग्य दिया जनारत हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष आनन्द ने।

तो युवकों में परिवर्तन की आकांक्षा और उनकी नातिकारी शक्ति में जनता के विश्वास के घनाव को प्रकट करने वाला यह दो दिवसीय सम्मेलन-प्रायोगिक-उत्तरण नाति सेना और युवा मज के लिए कुछ सबक कुछ चुनौतीय और उन्हें सीपने और हत करने की शक्ति देकर समाप्त हुआ। तरण नाति सेना को मज एक जन आन्दोलन की अनुप्राई करना है और एक संपूर्ण नाति का वाहन बनना है। उसे सबको साथ लेकर चलने की क्षमता धारण में वेदा बननी होगी और तैयारी की क्षमता अब तक की क्षमता को छाहचर गीषे मंडान में धाना होगा। जैसा कि एक युवा बक्ता ने कार्यक्रम नाति प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा था एनवार फ़ायेन आये इस्लाम बायेना दोस्त। लेकिन इस्लाम सभी धर्मों का जब जनता को एनवार बायेना।

जे०पी० न इन मधुमेपूर्ण मुहर्षों को २३ जून की शाम को टपन रात्र की नातिन में भीगनी सजा के सामने बढ़ी स्वरुता से रमा। जे०पी० ने बड़ा कि कार्यक्रम के मजत मिन सम्मत्त है कि भीमों इतिहास नाथी में मेरा कोई वैयक्तिक मज नहीं है। मेरी कोई बात नहीं है। मज पार देगांती का बाकाशा मेरी मिन दिमाक ७३ में ही दिया था क्योंकि उत्तर प्रदेश में युवा होने वाले थे। और निहाय युवकों के उत्तर काई भी निहाय और मजत रूप में उत्तर काये को मजारी नहीं कर सकता था। फिर मुज-राम में छावनी में मद्रास और प्रयाग के विचार आन्दोलन जाता। मेरे धारणन का उत्प्रेषण उत्प्रेषण किया था। बाद में उत्प्रेषे में मिला भी। उसे वहा मजतना भी मजनी बोकी, बिना काई मज और विचारणा का विद्वान हुआ। फिर बिहार में छावनी में मेरा ही धारणन छेड़ा। मुनें का बननी चलने में यह दिन रमा था कि देव के दिवस (मज पर २६ पर)

अखिल भारतीय युवा सम्मेलन यह मानता है कि श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहा बिहार का वर्तमान छात्र जन सघर्ष देश में लोकतंत्र और मानव मूल्यों की रक्षा तथा गांधी युग के अन्तर्द्वन्द्व जग-रण की पुन मुक्ति की सपूर्ण और सर्वोपीण क्रान्ति का पहला उपा चरण है। छात्रों और युवकों की अनुवादी में बिहार की जनता के सघर्ष के माध्यम अपनी एकात्मता प्रकट करते हुए सम्मेलन यह भी धनुभव करता है कि बिहार का जन-सघर्ष एक प्रासरी लड़ाई है जिसकी सफलता जहाँ पूरे देश में सर्वांगीण क्रान्ति के द्वार खोलिगी वहीं उनकी समकलता से देशमें एक धारसे के लिए साधक, कर्ता तबे धारसे के लिए फिर सघर्षकार छा जायगा और भारत है कि लोकतंत्र के बचे-मुचे संरक्षण भी नष्ट हो जायें।

देश के युवकों का आवाहन करता है कि इस सघर्ष की यथाशक्ति बल देने और उसे सहायता प्रदृष्टाने का सक्ता है। इस सक्ता की कार्यरूप देने के लिए सम्मेलन नीचे लिखे कार्यक्रम प्रस्तावित करता है —

(१) बिहार के जन सघर्ष की सहायता के लिए घन,स्वय सेनक और सगठन, प्रादो-सन तथा सत्याग्रह के प्रतिरक्षक यथा समभव अधिक से-अधिक बिहार भेजे जायें। सुचना और प्रचार के स्थानीय माध्यमों के द्वारा जन सघर्ष की वास्तविक जनकारी अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचाकर जनता समर्थन और सहायता प्राप्त की जाये। प्रावश्यकता पडने पर संपात श्री जयप्रकाश नारायण, बिहार छात्र सघर्ष समिति और जन संघर्ष समिति के निमंत्रण पर सघर्ष में भाग लेने के लिये सत्याग्रहियों की टुकडिया भी भेजी

इलाहाबाद में

अखिल भारतीय युवा सम्मेलन

सम्मेलन बिहार के तहसी और बिहार की जनता का अभिनन्दन करता है जिन्होंने अभीम धर्म और साहस के साथ, बड़ी से बड़ी कुर्बानी देते हुए पिछले ती दिना से पहुंचाई बेरोजगारी, कुशिक्षा और जन-विरोधी शासन-तंत्र के विरुद्ध तथा शोषणविहीन, दूध लोकतंत्र की स्थापना के लिए धरने कातिपुण सघर्ष की अधिक-अधिक गति देते हुए चलना है। सघर्ष में बिहार की छात्राओं और महिलाओं के अग्रजपूर्व निर्भीक और साहसपूर्ण योगदान में वेपद बिहार और भारत की नारियों का ही नहीं सपूर्ण भारत का गौरव बढ़ाया है। स्वतंत्र, स्वच्छ और शासन-समाप्तपूर्ण जीवन के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में सम्मेलन ध्यानत है।

बिहार की वर्तमान जनश्रीही सरकार और विधान सभा की भंग करने का सघर्ष उस वास्तविक लोकतंत्र की उपलब्धि के सघर्ष का ही एक अंग है जिसमें प्रायिक, सामाजिक और राजनीतिक सत्ता पर वास्तविक निर्भर सख जनता का ही हो। बिहार के जन सघर्ष के लिए अधिक महत्व को देवते हुए सम्मेलन

जायें।

(२) हर प्रदेश में सुविधानुसार तिथियां निश्चित करके बिहार-सगताई भनायें जिसमें मुख्य रूप से जन जागरण का काम हो, गांव से लेकर जिना स्तर तक जहाँ भी हो सके सभा, प्रदर्शन जुलूस, प्रतीकसक (विद्यालय के लिए १२ घंटे का) धनसभ या धरना प्रादि कार्यक्रम चलाने जायें और उपयुक्त साहित्य के माध्यम से बिहार के जन-सघर्ष में उद्वेगियों,स्वरूप और उपलब्धियों से लोगों को परिचित कराया जाय।

सत्याग्रह के अंत में प्रादेशिक युवा सम्मेलन प्रायोजित किये जायें जो शक्ति, सगठन और परिस्थिति सक्थों अपने मूल्यांकन के आधार पर अपने प्रदेश के लिए कार्य-क्रम तप करें।

अ० भा० युवा सम्मेलन मानता है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता के सघर्ष के दौरान गांधी जी के नेतृत्व में सगता और स्वतंत्रता की पारगाओं से जुड़े जिन नैतिक और मानवीय मूल्यों और मर्यादाओं की प्रतिष्ठा हुई थी, पिछले सताईस वर्षों में वे सभी धीरे-धीरे

को प्रस्ताव

→
 नष्ट होने गये हैं, यहाँ तक कि लगभग भ्रष्टाचार की स्थिति उलटनी हुई गई है जिसमें कहीं कोई मर्यादा नहीं बची है और शासक वर्ग ने भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार और विलासिता को वांछनीय बनाया, बल्कि यही हृदय तक वांछनीय मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। बलिदानों के बाद देश की जनता को बलिदान के फलस्वरूप मिला था, चुनाव में स्थापित भ्रष्टाचार ने उसे भी यही हृदय तक भूखा और खोला बना दिया है।

यह सच है कि भ्रष्टाचार और विषमता इस प्रणाली व्यवस्था की ही देन है जिसको बदल कर समता और संपन्नता के प्राचार पर देश का नवनिर्माण भाजादी की लड़ाई का व्यापक लक्ष्य था लेकिन व्यवस्था की प्रणाली कुरुरता पिछली चौपाई गताब्दी में लगतार बढ़ती ही गयी है और सामान्य भारतीय नागरिक आज अपने को हर समय, हर स्थिति में पीड़ित, प्रताड़ित, अपमानित और सर्वथा घमुराहित पाता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो हर भारतीय नागरिक को उपलब्ध हो। पिते का पानी भी नहीं, जबकि कुछ लोगों के लिए दुनिया की कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं। ऐसी भ्रष्टाचार विषमता ने मानवीय सज्जनों को सगर्भ भ्रष्टाचार बना दिया है।

देश में अकाल स्वाधी हो गया है। हर साल न जाने कितने लोग, कितने बच्चे, भोजन न मिलने या पर्याप्त मात्रा में न मिलने के कारण मरते हैं। द्रव्य मर्ष भी देश वा बहुत बड़ा हास्यास्पन्न भ्रष्टाचार की चोट में है। दाम प्राकृतिक धन रहे हैं। और निरंतर बढ़ने जाते हैं: ऐसी गति से कि भ्रष्टाचार गृहस्वियम टूट रही है। भ्रष्टाचारक जीवनोपयोगी वस्तुओं के दाम वा लागत से कोई रिश्ता नहीं रहा, बल्कि अक्षरत ये दाम साधारण व्यर्थिन भी पट्टक के बाहर हो गये हैं। वल क्या होगा यह सवाल करोड़ों के लिए स्वाधि बन गया है, जिसमें कुछ मूढता नहीं, लोग या तो जड़ और निर्जीव हो जाते हैं या निष्पत्त। मां-बाप अपने बच्चों को बेच रहे हैं या भ्रष्टाचार की पीडा से बचने के लिए पूरे के पूरे परिवार धारण हल्ला कर लेते हैं। तस्करी, मुनाफा-खोरी, रिश्तत वा धन्य भ्रष्टाचार को बनाई

साने घालो के धलावा कोई घर ऐसा नहीं जिसमें महंगाई धून के धामू न दसा रही हो।

भ्रष्टाचार तो जैसे सर्वव्यापी हो गया है। शासननय में कोई छोटे से छोटा काम भी रिश्तत के सिवा नहीं होता। व्यापार में तस्करी, मुनाफाखोरी और सट्टेबाजी वा प्राथिपर्य इतना जयवंस्त है कि काला धन वा दो नबर के पैसे की श्रेक समानान्तर धन्य-व्यवस्था ही बन गयी है। भ्रष्टाचार की धन्यवस्था ने जाने कहा-कहा से जकड कर जनता वा रक्त चूसती हैं। उससे लडना तो क्या उससे प्रपने को धलन रलना भी प्राण-कषपी सधर्ष बन जाता है। विकास कार्यों के लिए नियत सचों वा मुश्किल से अंक चौपाई वा श्रेक तिहाई ही निश्चित कामों में लग पाता है। जेप भ्रष्टाचार के पेटमें समा जाता है। दाम धेतहाशा बड रहे हैं, लेकिन उत्पादन नहीं बड रहा वा श्रेकिक से अधिक रंग रहा है। हरित श्रति श्रेक मरीचिना लिड हुई है। छोटे स्थितानों की अशोनी निष्कल वर महाजन्यों और बडे कितानों के हाथ में जा रही है। जमीन की हदयदी के कानून बनते हैं लेकिन सारों के विकास की समस्या की जड में न जाकर केवल उनके साथ छेड-छाड करने से भ्रष्टाचार, के नये रूप ही निकलते हैं, हालत बराबर रिश्तत जाती है। भूमिहीनों की सख्या बडती जाती है। घेन मजदूरों की शास्त्विक आय पटती है और वे पीडो दर पीडो बढ़ते हुए कर्ज में डूबते जाते हैं।

अंधकार के किसी क्षेत्र के सरकारीकरण से एक और तो नीकरगादी के भ्रष्टाचार के कारण उद्योग चोपट होते हैं, दूसरी ओर मजदूर उन मुश्किलों में भी बचते ही जाते हैं जो निजी क्षेत्र में उन्हें बानून द्वारा मिली होती है और जिनके हाथ में सत्ता है, स्वाय की किसी भी माग वा उनके पाग श्रेक ही उत्तर है—दमन।

बेरोजगारी बराबर बडती ही चली जाती है। देश में पहले से ही विशाल श्रम शक्ति श्रंसी है जिसका कोई उपयोग नहीं हो पावा इसके इतिरिक्त प्रतियर्ष श्रम शक्ति में जो बुद्धि हीनी है उसमें से श्राधे लोगों को भी काम नहीं मिल पाता। फलस्वरूप देश के पालीय प्रविधान धरो में मामान्य स्थिति में

भी दो जून खाना नसीब नहीं होता। गरीब मां-बाप पेट काटकर जमीन जायदाद देहन रख करभी बच्चों को न जाने कैसी-कैसी भाषाधर्म सिक्कर पडाते हैं। शिवपा ध्यवस्था इतनी निष्कमी है कि पडाई करने के बाद भविष्य शंभेरा नबर धाता है, कहीं कोभी काम नहीं मिलता। शिवपण सस्याधर्म भी भ्रष्ट हो चुकी है। हजारों नौजवानों के दिल टूटते हैं, जिद-गिया बर्बाद होती है।

पूरी शिवपा व्यवस्था में गरीब बच्चों के खिलाफ श्रेक साजिन काम करती है, जिसकी घुरघात यही से हो जाती है कि हर वर्ग के लिए धलन-धलन किस्म के स्कूल होते हैं। शिवपण की सुविधाधर्म से लेकर शिवपा धर परीकषाधर्म के माध्यम तक यह साजिन धर श्रेक-श्रमिधुल शासक वर्ग के हित में और गरीब बच्चों के विलाक काम करती है।

इन सब के धरपर प्रतिष्ठित हो गयी है राजनीति की निरकृतता, स्वेच्छाचारिता और धसोमित भ्रष्टाचार। जनता के प्रतिनिधि कहलाने वाले महंगाई पर रोक न लगाकर स्वयं श्रपने बेतन-अलते और मुश्किलों बढ़ा लेते हैं। संसद और विधानसभाधर्म में शासन के प्रवक्ताधर्मों का श्रतय भाषण ध्राम बात हो गयी है। निजो स्वाधर्म के लिए सत्ता का दुर्योग्य ध्रम ध्रपदाद नहीं नियम बन गया है। नागरिकों के निजो जीवन में राज्य का घनुरित हस्तक्षेप निरंतर बडता जाता है। सविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक ध्रमिकारों में ध्रम नागरिक स्वतंत्रता की कोभी घुरधवा नहीं रह गयी है। स्वयं मौलिक ध्रमिकारों की प्रतिष्ठा ही श्रतम कर हो गयी है। राज-नेताधर्मों की भीहे टेंडी होने पर सरकारें गिरती हैं, बनती हैं, विधानसभाधर्म स्वागित होती हैं, घुनर्जावित होती हैं, भंग होती हैं। लेकिन जनता का न ध्रपने प्रतिनिधियों पर कोभी श्रेकभूश या नियंत्रण है न सरकारी पर, चुनाव पैसे और सारी के धल पर जीते जाते हैं।

अंसी हालत में सरकारी नीतियों के नतीजों वा सीधे सामना महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी की विवराल समस्याधर्मों के रूप में देश के लोगों को हर समय बरदा पडाता है, ये हर तन को तोड रही हैं, हर मन को बीप रही हैं। इनके विशड जनता के

→
 गहनतम अन्तर्गत का फूटना प्रतिनिधाय है।
 सवाल है इन विस्फोटों को दिखा देने का,
 उनको किसी सार्थक परिणति तक ले जाने
 का। यह किस विस्फोट संघर्ष, सर्वांगीण क्रांति
 से ही हो सकता है।

इस क्रांति को प्रभावदाई केवल तथ्य और
 पुनर्क ही कर सकते हैं, क्योंकि लड़ने का
 साहस, बौद्धिक उठाने की क्षमता और
 सज्जातीयक प्रवृत्ति, ये तीनों ही गुण सबसे
 प्राथिक युवकों में होते हैं।

राजनीतिज्ञ दलों की अलग-अलग और
 मिलकर भी बल्कि पूरी संपूर्ण राजनीति
 की इस सर्जनी में अग्रगण्यता सिद्ध हो चुकी
 है। लगभग तीस करोड़ मउदावाओं में से
 किसी भी दल के सदस्यों की संख्या कुछ लाख
 से अधिक नहीं है और सदस्यता भी राज-
 नीतिक जागरूकता या प्रतिक्रिया की दृष्टि से
 विशेष महत्व नहीं रखती। दूसरे, आज बिना
 क्रांति की आवाज नहीं है, उनके सारे प्रथम
 लक्ष्यों में यह भी है कि राजनीति पर जनता
 का नियंत्रण स्थापित हो, बहुमत के, राजनीति
 संपादन हो। फिर भी, जो दल कम से कम
 सिद्धता का संचालन भूमिगत और लोकतांत्रिक
 हैं, उनको इस क्रांति में एक महत्वपूर्ण भूमिका
 हो सकती है—युवकों या दूरदूरी की। बिहार
 के जन-संघर्ष में यह प्रक्रिया चली भी है।

बिहार का जन-संघर्ष आरंभ में इस
 संघर्ष क्रांति का एक चरण है। क्रांति का
 लक्ष्य स्पष्ट है, जैसे शोषणविहीन समाज
 की स्थापना जो वास्तव में सोशलात्मिक हो
 लेकिन क्रांति का एक-एक छोटा चरण भी
 अपने आप में क्रांतिकारी हो, संघर्ष को यह
 रणनीति न क्रांति के मार्ग से एक डच सहने
 देती है, न हजारों धारदोषकारिता। क्रांति जनता
 के द्वारा होती, जनता को करनी है, इस
 कारण हर कदम प्रतिनिधाय ही जनप्रतिनिधि के
 निर्माण और संघटन से जुड़ा होता है। लेकिन
 सगठन के लिये संघर्ष स्थापित नहीं रहेगा,
 बल्कि मात्र जितना हो सकता है उतना तो
 ही ही यही इस क्रांति की रणनीति है। इनमें
 संघर्ष के हर चरण के साथ नये-नये
 उद्देश्य जुड़ते, और उद्देश्यों के प्राथिक
 स्थापक होने के साथ-साथ संघर्ष के नये
 रूप विकसित होते। इसमें न कमजोरी

के लिए जगह है न बचकाने उतावलेपन की।
 संघर्ष के कुछ चरण हमारे सामने हैं,
 और कुछ नये-नये उद्देश्य भी। कोई प्रति-
 निधि संस्था अगर जनदोही बन जाती है तो
 उसे चुनने वालों को अधिकार है कि अपने
 फंमले से उसे भंग कर दें। यह उद्देश्य,
 मिनास के लिए बिहार के जनसंघर्ष में जुड़ा
 है। ऐसा फंमला होने पर, जनता के संघर्ष
 का आदर करने हुए इन्हीं पर देने वाले प्रति-
 निधियों के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए
 उप-चुनाव न होने दिये जायें, यह हमने जुड़ा
 संघर्ष का नया रूप है। हज़ारों के साथ
 समान व्यवहार और सामाजिक विषयमामों
 का मत मुनाफाखोरी, जमाखोरी, और
 जनता के रोज़-रोज जीवन से नीकरदाही के
 हस्तक्षेप को समाप्त करने के लिए गांव या
 पड़ोस सभाओं जैसी प्रत्यक्ष लोकतंत्र की
 छोटी इकाइयों में जनप्रतिनिधि का सीधा
 इस्तेमाल उद्देश्य और संघर्ष में नये रूप
 बनने का प्रथम कदम से जुड़ा सकता है।

इसी में निहित है कि यह क्रांति मात्र
 राजनीतिक क्रांति नहीं, मात्र सामाजिक
 और आर्थिक क्रांति भी नहीं बल्कि संपूर्ण
 जीवन को बदलने की क्रांति है जिसमें नैतिक
 और वैयक्तिक पहलू भी हैं। नैतिक क्रांति का
 अर्थ या उद्देश्य यह नहीं कि हर धारदोषी
 संत बन जायें या सैनिक जीवन में साथ भी
 प्रतिष्ठा और सवावरण के सामाज्य मूल्यों
 का पालन इनके बिना किसी भी प्रकार का
 संस्थात्मक परिवर्तन अस्तित्व में सिद्ध
 होगा, सत्यापन फिर भ्रष्ट हो जायेंगे।
 शिक्षा इस तरह की बनानी होगी कि उससे
 जन और हुनर का विकास हो कि विद्यार्थी
 को जिज्ञासा बढनी जायें। शिक्षा न केवल
 विद्यार्थी को प्राथिक कुशल और कार्यक्षम
 बनाने बल्कि उसे एक बेहतर मनुष्य बनाने
 में भी सहायक हो।

क्रांति की यह प्रक्रिया हर हालत में,
 आरंभ से घट तक अक्षिपूर्व हो रहेगी, क्रांति
 पूर्ण ही हो सकती है। इस प्रक्रिया में शिक्षा
 के लिए कोई स्थान नहीं है, जनदोरी दिना के
 लिए तो विमुक्त ही गयी। क्रांति की प्रक्रिया
 के विकास में स्वाभाविक ही एक नयी राज-
 नीतिक कृति का उदय होगा। इस कृति

का दोहरा रूप होगा, दोहरी भूमिका होगी।
 सत्ता परिवर्तन भी होगा। राज्य और समाज
 का स्वरूप भी बदलेगा। लेकिन यह भी
 मूलतः क्रांति की प्रक्रिया में एक चरण ही
 होगा। यह प्रक्रिया भागे और भी चलेगी। इस
 में अन्वयता भी बदलेगी और लोभ भी।
 लेकिन इस क्रांति की मुख्य और स्थायी उप-
 लब्धि होगी हरप्रकार की सत्ता पर जनता का
 प्रभावकारी प्रभुत्व और नियंत्रण। इस निय-
 ंत्रण के उपकरण भागे और भी विकसित होते
 रहेंगे।

सम्मेजन सारे देश की जनता का अन्व-
 यता में प्रामुख्य परिवर्तन की इस क्रांति में
 सक्रिय हिस्सेदारी के लिए आवाहन करता
 है। सम्मेजन देश के दरघों और युवावर्ग से
 खास तौर पर रहना आह्वान है कि इस
 क्रांति में बौद्धिक क्रांति के लिए तत्पर होकर
 इसको प्रभावदाई करें। सम्मेजन को निरिच्छत
 विस्वास है कि देश के युवा अपनी ऐतिहा-
 सिक भूमिका निभायेंगे।

हिसार में नागरिक परिषद का गठन

हिसार में हरियाणा भूदान बोर्ड के
 सचिव श्री जगन्नाथराव वर्मा के समोजकत्व
 में एक नागरिक परिषद का गठन किया गया
 है। परिषद के समोजक मंडल में हरियाणा-
 राज्य के सभासद सेठ महेशचन्द्र, युवक
 एडवोकेट ए० जगन्नाथराव, सायन लक्ष्मण के
 सचिव श्री एम० एम० चौधरी, नवीनवन
 प्रंत के श्री एम० आर० जोहर एव आ०
 राजमोन सदस्य मन्गेरीनि किये गये हैं।
 परिषद कार्योन्मय सरोध-जनक में रचा है।

नागरिक परिषद की ओर से घाम अकबर
 की वस्तुओं की जमाखोरी के विरुद्ध प्रयास
 किये जा रहे हैं। साथ ही जनप्रतिनिधि को
 संघटन कर, विनय-अन्वयता जो प्रयत्न ही
 चुकी है, उसे अपने हाथ में लेने का आवाहन
 किया जा रहा है। सार्वजनिक सभाएँ व
 प्रदर्शन हो रहे हैं। परिषद की ओर से प्रा-
 यामी २२ अक्टूबर को हिसार नगर के बटला
 रामजीना मैदान से एक विराट जुलूस प्रायो-
 जित है जो जन-समस्याओं पर उपायुक्त को
 संपन्न प्रस्तुत करेगा।

प्राचीनतम अध्यात्म और नवीनतम विज्ञान की

जोड़ी बनानी होगी

विनोबा

नागपुर टाईम्स के श्री देवापाठे से बातचीत

प्रश्न : अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय हो ऐसा आप बूढ़े हैं। भारत भी आध्यात्मिक परम्परा का गुणगान आज तक हमें किया पर विज्ञान के विषय में हमारा कोई अधिकार न होने से हमारी आध्यात्मिक परम्परा का कोई खास अंगर नहीं हो पाया। अब अनुशासन पर हमारा अधिकार हो गया है। अब प्रब अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का समय आया है तो समन्वय यानी क्या? इस समन्वय के कारण समाज कैसा होगा? आज का समाज और समन्वित समाज को अंतरात्मिक जोड़ने के लिए हमें क्या करना होगा? सकाति की समस्या में इसे बोन करेगा ?

विनोबा : विज्ञान की खोज प्राचीनकाल में भारत में हुई थी। भारतीय विज्ञान से ही अग्नि की खोज हुई। अग्नि प्राचीनकाल में इसी खोज के कारण अन्न के चूल्हे आदि बने। उसके पहले अन्न पारने की विधि ज्ञात न थी। अग्नि की खोज के पश्चात ही अन्न पकाना प्रारंभ हुआ। 'अग्निमीडे पुरोहितम्' ऐसी श्रुतिवेद में अग्नि की प्रार्थना है। इसमें स्पष्ट है कि भारत में प्राचीन काल में विज्ञान था। बीच के कालखण्ड में उसमें कमी आयी। अब फिर विज्ञान का उदय हुआ है यह खुशी की बात है। हमारी सरकार में यह स्पष्ट घोषित कर ही दिया है कि इस अनुशासन का उपयोग, अग्नि के लिए किया जायेगा। उससे शक्ति निर्माण नहीं होगा, यह अच्युत बात है। इसलिए अब शक्ति के लिए गुंजाइश नहीं, किसी को मजबूत होने का कोई कारण नहीं।

वे खुशी जितार्थ (सत्यता पर रखी जितावों की ओर अनुभूति करते हुए) क्या पहले थी? वे पुरुषों पर ते कठोर किया जाना था। लिखा नहीं जाता था। उनके रक्षण के लिए निर्णय लिया गया कि उसे ब्राह्मण ही समावे। अन्य लोगों की बाणी से उनके अग्र्य होने की संभावना थी। फिर उसका डीक

अर्थ नहीं हो पाता। वेबल वेद सरक्षण के लिए यह सावधानी बरती गयी। जितार्थ लिखने की प्रथा होती तो कोई भी लिखे या कोई भी पढ़े, हर्ज न होता।

बाबा अभी आपसे चर्चा कर रहा है। लोग पटापट लिख ले रहे हैं। यह सब छापा जाएगा। बाबा ने आज तक जितने व्याख्यान दिये उन्हें पदरूप में छापा जायेगा तो कितना बड़ा प्रयत्न होगा? शंकराचार्य के कितने व्याख्यान छापे गये? उनके क्या प्रयत्न किये गये? अब तो जितावों का भार ही चला है। इसलिए किताबों को प्राग नगा रहे हैं। पहले कोई वेदव्यासी विद्वान, ज्ञानी ब्राह्मण सत्यासी ही तो 'वेदानधि सत्यसिधि' यानी वेद वा भी सत्यास करता था। कोई वेद भी रखा करने वाला उत्तम विद्वान ही तो उसे वेद सौंप दिये जाते थे वरना उन्हें गणपण किया जाता था। इस प्रकार हम समन्वय करते ही आये हैं। गायत्री के लेख, पत्र, तार तारा का सारा छपकर तैयार है। बडे-बडे ४०-४५ प्रयत्न हो गये। और भी होंगे। एक बार सवहृत्संगण मेरे पास आये और पूछा कि क्या मैंने इन ग्रन्थों को देखा है, कोई राय है इस सत्य में? मैंने उन्हें कहा कि मैंने उन्हें थोड़ा-थोड़ा देखा लिखा है। मेरी एक सूचना है। वे प्राइमाल से मेरी ओर देखने लगे कि मैं क्या बूढ़ा? मैंने कहा, मोहनदास करम चन्द गांधी नक जो कुछ भी लिखा गया वह सब आपने छाप लिया है। पर उनके पिछले जन्म की कुछ सामग्री मिले तो उसे भी छपवा दोिए। सब हसने लगे।

प्रश्न : यह समन्वय कैसा किया जाय ?
विनोबा : समन्वय पहले जैसा ही किया जाय। छोड़ते, जलाने, नदी में डबोते हुए चलें। भूदानयात्रा में तो मैंने मुझे अनेक मानपत्र दिये। मैं उन्हें बहना था कि दरभसन मानपत्र तो मैं आपको दूँ क्योंकि आपने दानपत्र भरे हैं। मैंने तो केवल विचार रखा। इसलिए मुझे जो बरना चाहिए वह आप कर

रहे हैं। यह उलटा है। एक बार मार्ग में जब गोदावरी का पुल आया तो मैंने सारे मानपत्र नदी में छोड़ दिये।

अनु ऊर्जा हाथ में आने पर ये सारी छोटी-छोटी बातें हैं, उन्हें तजना चाहिए। लोग अनु, विस्फोट वगैरें बहने आये तब मैंने कहा जब आप "मगल" ग्रह पर पढ़ेंगे तो मैं अभिनन्दन करूँगा। तब तक राह देखूँगा, मगल को सङ्गत में भोग बूढ़े हैं। भीम भी भूमिपुत्र, पूर्वजों की बल्ला के अनुसार मगल का वातावरण भूमि के जैसा ही होगा यदि वना पानी होगा तो प्राणी भी होंगे। उनकी आपसे पहचान होगी। वहा हो आने पर आपका ज्ञान प्रकट होगा। तब बाबा आपका अभिनन्दन करेगा।

कुछ दिन पहले रैलवे हड़ताल हुई तो कुछ लोग मेरे पास आये और पूछा कि इस हड़ताल के क्या परिणाम होंगे? मैंने कहा, 'भारत की प्रजा आगामी ३० वर्षों में दूनी होगी। तो सेती के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता रहेगी। भी अग्नि जमीन कम रहेगी। इसलिए सारी जमीन सेती के लिए देनी होगी। तब सेती के लिए रेल मार्ग उलाड़ने, मोटर मार्ग रीढ़ने होंगे। इसलिए दो ही तरीके रहेंगे: बाबा की पैदल यात्रा और निजीयक की हड़त जहाज यात्रा! क्योंकि ये सेती में रकावट नहीं डालने। वैज्ञानिक युग में ये ही प्रकार यात्रा के रहेंगे।

अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। अग्नि का उपयोग रसों के लिए था, प्राग लगाने के लिए भी किया जा सकता है। तब उसका उपयोग रसों के लिए ही हो, प्राग लगाने में न हो यह समन्वय है आत्मज्ञान विज्ञान का। अब भी वैसा ही समन्वय रहे। मोटर में, रेल में नहीं बँडेगें। हा, हवाई जहाज रहेगा। बाकी सारी जमीन सेती बाडी में लगायी जायेगी। उत्तम ब्रह्मचर्य पाठन हो जिनमें सतति कम हो। जनसंख्या नियमित रखने में समय की

शहर उत्तम होंगे, देहात में भ्राना होगा

की दृष्टि विज्ञान के साथ जोड़ें। धातुकल विज्ञान के कारण छोटे बच्चे नरक नहीं। पहले क्या होता था? बालक न जन्म दिया कि चौथे पांचवें दिन-भर जानपा यह संभावना। न मरा तो पाचवी छठी का कार्यक्रम। बाहर दिन जिन्दा रहना तो नामकरण। उसके पहले रखने से क्या था? क्योंकि तब तक मर जाने की ही धातुकल। विज्ञान के कारण बालकमूल्य कम है। इसलिए सभ्य बड़ रही है। विज्ञान के कारण ही बुद्ध लोग धार्मिक दिन तब जीने हैं इसलिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक हो गया है। उस समय ब्रह्मचर्य को धार्मिकमूल्य मूल्य था। क्योंकि उस समय जन्मसंख्या कम थी। तब ब्रह्मचर्य का सामाजिक मूल्य नहीं था। धर्म ब्रह्मचर्य का धार्मिकमूल्य के साथ सामाजिक मूल्य भी है। इसलिए विज्ञान युग में ब्रह्मचर्य की विशेष आवश्यकता है। विज्ञान युग में बेटी बढ़ाने की ज्यादा जरूरत है। इसलिए जमीन का उपयोग धन्यज जो किया जाता है उसे कम करना होगा। समझो ऐसी सभ्यता है कि मराने के छत पर खेती की जा सकेगी। सस्त्री उपायी जा सकेगी तो वैसा करना चाहिए। तब बड़े-बड़े शहर पालन करने होंगे। खानों सम्यता पुर दर सहजृति है। वेद में इन्द्र को पुर दर बढ़ा है। इन्द्र ने सी नगरो का नाम किया इसलिए उसे पुर दर बढ़ा गया।

नव धातुकल नागपुर नगर लम होगा। धातुकल के देहात के जाना होगा। धातुकल अल्प धर हो जाय तो हर्ज नहीं। क्योंकि धारण के लिए नामज उपयोग धातुकल के वैसा न होगा। वृत्तपत्र न रहे तो भी जान तो मित्रता ही जायेगा। विज्ञान के कारण धातुकल से जान मित्रता। यहा धातुकल हम बार्ने कर रहे हैं। इन समय यह अमेरिका में खानों सुनाई देगा। दुनिया के बाहे जिम स्थान पर जाने के लिए रेलगाडी आवश्यक न होगी। विज्ञान युग में यह भी संभव है कि सीधे नाव द्वारा हम से पोषण मिलेगा। (दीर्घवाचन करते हुए वाचा ने यह कहा) भोजन की आवश्यकता न रहेगी। बूझ ऐसा करने ही है वे धातुकल से पोषण लेते हैं। हम भी वैसा ही करे। हम भी धातुकल से पोषण लें।

नाव को नवी लगामी धोर प्राणापायम किया कि पोषण प्राप्त हुआ। भोजन की जरूरत न होगी। इस प्रकार के बोध भी होंगे। प्रश्न : समन्वय यानी क्या? उसे कैसे किया जाय?

विनोबा : समन्वय यानी दो का मेल। पहले से ही ऐसा चला पा रहा है। मैं बहूदा हूँ बैसा धातुकल करूं। नागपुर से खाने की धातुकल भवना नहीं। वहा बड़े-बड़े वाचा से वात-चीन की जाय। यह हुआ समन्वय। धातुकल धातुकल नाहक यथा धातुकल पडा। यहा पुत्र-लीजो बंटे हैं। उनकी हमारी वातचीन ५०० मील दूरी पर एक कमरे में बंठकर हुई। उन्होंने वहा से प्रश्न पूछे। मैं ने सहा से जबाब दिया। विज्ञान के युग की यह वात है मानसिक संदेश भी भेजे जा सकेंगे।

प्रश्न यह बुद्ध विज्ञान की वात नहीं है। विनोबा ठीक है धातुकल से भी संदेश देत-लेते बनेगा। आज मुझ उपदेश देने हैं। लम्बे-लम्बे ध्यान्धान देते हैं। उपनिषदों में क्या है? गुरु के पास शिष्य जायें। देव, दानव धोर मानव। गुरु न उडा उपदेश दिया 'ध' यह एक धरम ही बताया। द द द द द द द धरम में ही वे बोल गये। किन्तु धारने बड़े हुए वे वे धातुकल हमें पालन धार्मिक बोलना पड़ता है। विज्ञान के विकास के कारण हम धार्मिक न वालना होगा। बांडा कहरर काम चल जायेगा।

प्रश्न सञ्चित की आवश्यकता में यह कौन करेगा?

विनोबा : सञ्चित की धरवस्था सतत चल रही है। प्राचीनकाल से धातुकल तक चानू है। छायावाला नही था वह स्याप। मोटर रेल हुआई जहाज धारये। उनगे ज्वीनता तास है नही। जवान ना बूझ बना। मरा एक दिन न बना? प्रत्येक शान पुद्गावस्था आनी ही रहती है। यह विचारसन्त चलनी ही है।

प्रश्न : भौतिक सफलता के गिहार पर पहुंचने पर दिशाहीन बने पश्चिमी राष्ट्र धातुकल के लिए भारत की धोर देत रहे हैं। धरम भारत ने धातुकलकोट किया। इस लिए कुछ राष्ट्रों ने भारत पर की धातुकल जमनावन लगी है। उन्हें रिधर करने के लिए भारत क्या करे?

विनोबा : धातुकल दिग्गते ना कोई धारण नही। भौतिक संघर्ष की सीमा तक अमेरिका भी नही पहुंच पाया है। अमेरिका में धातुकल भी तापो लोग देवार भूसे हैं। धातुकल बड़ रूप, उसे धातुकल के लिए गेरू की पूति बाहर से करनी पडती है।

धरम तक दुनिया के मानव मजाजो में धार्मिक एकात्मता नही है। महाकुल वाता-वरण है। सदा-सर्वदा सञ्चित ही रहने हैं। धारने रिधर राध होगा तो भारत उनका एक प्राण होगा। चीन, रूप, अमेरिका वे धारे उन विधर राज्य के एक-एक प्राण होंगे। विधर राज्य का ध्यान्कोट होगा। विधरराज्य की सेवा रहेगी। यह सब धारये चलकर होने वाला है ही। धरमो जैसा तय हुआ है कि भारत के किसी प्राण से दूररे किसी प्राण में अनाज आ सकता है, उसी तरह दुनिया निर्णय नेगीक पुच्यो पर विधर राज्य के किसी प्राण से (धातुकल के देश राष्ट्र से) अनाज धारयत जा सकेंगा। धोर वैसा जैसा भी जाये। विज्ञान के कारण अनाज आसानी से नहीं भी भेजा जा सनेगा। विज्ञान धरम छोटे-छोटे देश धरवाहन न करेगा। देश प्राण की दृष्टि से स्वीकार किये जायेंगे।

प्राण ही कर्नाटकु के पुंडलीकजी को मैंने महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमा प्रश्न पर एक उपाय सुभाया। कर्नाटक धोर महाराष्ट्र को मिला दें, स्कूलों में मराठी धोर बन्ध डोनी भाया सिखायी जायें। दोनो राज्यभावाए रहगी। प्रत्येक पत्रक दोनो भायाधो में निकाला जायेगा। धाट करोड धातुकल का वडा मजतूत प्रदेश बनेगा। स सद में भी धातुकल धातुकल बुल द होंगी क्यों कि वह धाट करोड की धातुकल होगी। भायावार प्राणत रचना का पुत्र मोलसलकरजी ने विरोध किया था। वे कहते थे इससे भारत सञ्चित होगा। मेरा भी यही मत है। यदि राष्ट्रीय एकाता कायम रखनी हो तो एक प्राण के बहुत सारे धरम प्राणो में भी रहने चाहिए। एक भायावाले पूरे के पूरे एक धोर-यह ठीक नहीं। कर्नाटकमहा-राष्ट्र एक ही जय तो उत्तम होगा। सत जानदेव ने काव्य में 'विटलण ही कानडक कर्नाटक' कहा। पडरपुट का विटलण दोनो प्राणतीकी सीमा पर खडा है। यह मेरा विचार है। धरम धातुकल जोरधार किलिए कि कर्नाटक (बाकी पेज १२ पर)

कानपुर के 'कचहरी वाले लड़कों' का कमाल

देवप्रिय

मुजरान घोर बिहार की तरह उ० प्र० का युवक भी वर्तमान दलगत राजनीति से प्रमगुष्ट व समाज व्यवस्था बदलने के लिए आगे जाने को तत्पर हो रहा है। तरल्लो के प्रनेक छोटे-छोटे सगठन स्थान-स्थान पर संपठित होकर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार से सपर्यं के लिए आगे घ्रा रहे हैं। कानपुर में 'तरण शान्ति सेना' तथा 'लोकतंत्र के लिए नवजवान' सगठनों के सदस्यो ने इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए गत ६ मई से 'सदा-चार-अभियान' प्रारंभ किया है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी नागरिक चेतना जाग्रत करना है, जिससे कि वह अपनी वास्तविक शक्ति व अधिकार का प्रामास कर सके और स्वयं भी प्रत्याय व भ्रष्टाचार के विरोध में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रणे घ्राये। अभियान में न्यायालय, यु गी चौकियां महापालिका के कर वसूल बाजार, प्रादि विभिन्न सेनो में व्याप्त सुबे भ्रष्टाचार को रोकने तथा उसके माध्यम से व्यापक जन सम्पर्क करने का कार्यक्रम उठाया है।

कानपुर कचहरी में कार्य प्रारंभ सदा-चार-अभियान' का पहला लक्ष्य न्यायालयों में चन्ने वाली सुनौ रिस्वत को रोकने का था। प्रारंभ से दिनों में युवकों की कई टुकडियों ने वानपुर को विभिन्न भदालों के प्रेसाइडिंग प्रखरों को एक जापन देबर प्रणे अभियान का उद्देश्य बनाया और उनसे प्रनो भदा-लत व प्रापीतरय बर्माचारियों में व्याप्त प्रनि-यगितताओं को रोकने का निवेदन किया। किन्तु इन जापनो पर कोई कार्यवाही नहीं की गयी। तरण शान्ति सेना को बोधी कार्य वाही करने का निश्चय करना पडा। भदा-सत चलते समय जब भी तरण शान्ति संनिक रिस्वत का प्रादान-प्रदान होवे हुए देखते... स्वयं बीच में जाकर सम्बन्धित व्यक्तियों का ह्राय पकड़ लेते और उनसे इस काम को भदासत में उपस्थित जनता को दितलाते तथा उन्हे जनता के सामने प्राकी मंगवाकर भविष्य में रिस्वत न सेने का निश्चय करने को बहते और रिस्वत का पंसा भी तुलत जापन करा



कानपुर में कालाबाजारी रोकने के लिए उपभोक्ताघो घोर व्यापारियों में संवाद शुरू हो गया है। सदाचार अभियान के कार्यकर्ता एक दुकानदार से दाम मांघने लिए के बातचीत करते हुए।

देते। इस प्रकार की कम से कम सी घटनाएं' इन पन्द्रह दिनों के प्रयासों में पाई गयीं।

अधिकारियों का प्रस्तूयोग जैसे-जैसे अभियान जोर पकडता गया कचहरी के भ्रष्ट रिस्वतखोर बर्माचारियों में सुबरो का एक नैतिक प्राणक छा गया घोर किसी भी युवक को उपस्थिति में, चाहे वह अभियान से सम्बन्धित हो या नहीं, वे चाकित रहने लगे। वे नैतिक प्राणक की इस स्थिति से निपटने के लिए रिस्वतखोरी के नये तरीके निबालने और अभियान के विरोध में प्राने उच्च अधिकारियों को भडकाने का प्रयास करने लगे। प्रयास में वे बहुत कुछ सफल रहे। पहले १० मई को प्रनिरिक्त जिलाधिकारी (जहर) ने हमारे साधियों को चेनावनी दी कि यदि वे अपने अभियान के द्वारा बर्माचारियों को रिस्वतखोरी रोकने का प्रयास जारी रखेंगे तो वे सादी बर्ी में सुलित भगानर अभियान के कार्यकर्ताओं को निरस्वार कर लेंगे। रिस्वतखोरी को न पडकर उसे रोकने का प्रयास करने वाली को पकडने की यह

धमकी हास्यास्पद और औचित्यहीन थी। इसी दिन एक नोट इन्सपीक्टर को भदासत के अन्दर देथ रूपये की रिस्वत व सौदा करते घोर भेते हुए टोकरने पर एक कार्य-कर्ता को वहाँके प्रेसाइडिंग अफसर ने अदासत के प्रपमान के आरोप में घरासलती कार्यवाही करके हिरासत में रोक लिया। बाद में अभियान के सहायोगी वकीलों के प्रयास से उन्हें छोड दिया गया। प्रारंभ में ही ऐसी घटना के विरोध में कोई गम्भीर बर्दम उठाना उचित न मानकर अभियान को पूर्ववत् जारी रखा गया। अधिकारियों के इस प्रमहयोगात्मक रूप के विरोध में 'तीन दिन का अमिक मोन प्रदर्शन जिलाधिकारी कार्यालय के सामने किया गया जिससे कि अभियान के उद्देश्य को दृढ से प्राधिकारिक व्यक्तियों तक पहुंचाया जा सके। इस प्रदर्शन के दौरान जिलाधिकारी ने तरण शान्ति सेना के साधियों को १५ मई को घमरी दी कि यदि प्राप लोग कम से कचहरी के बम्पाउड के भ्रष्टर प्राकर प्रनारा अभियान जारी रखेंगे तो प्राप लोगोंको निर-

→ पतार कर लिया जायेगा। जवाब में अभियान के संचालक शिवसहाय मिश्र ने कहा कि हमारा अभियान शान्तिपूर्ण व अहिंसक पद्धति से जिस प्रकार चल रहा है, उसी प्रकार चलता रहेगा। यदि हम कोई गलत कार्य करते हैं तो भाग्य को भ्रष्टिकार व किं धारा कानूनी कार्यवाही करें। हम अभियान बन्द नहीं कर सकते। इस पर जिलाधिकारी महोदय ने प्रहरी घमकी पुनः दुहरायी। इस घटना के बाद हुई तथ्यों की एक आकस्मिक बैठक में जिलाधिकारी वी इस घमकी पर विचार किया गया और सर्वसम्मति से अभियान को जारी रखने का निश्चय किया गया। कई साधियों ने रिश्ततखोरी रोकने के लिए जेल जाने का तैयारी व्यक्त की। किन्तु सयोग्यता इस घमकी के बाद स्वयं जिलाधिकारी एक सप्ताह तक घमने कार्यालय नहीं भाये। बाद में उनका तबादला हो गया।

इस बीच जिला न्यायाधीश ने एक शारेज जारी करके सभी प्रेसाइविंग अपसरों को निर्देश दिया कि यदि कोई सुबक किसी घटना से एक चेतानवी के बाद बाहर नहीं निकलना तो उसे अदालत के भयान के धारो में निरपराण कर लिया जाये। किन्तु प्रष्टाचार के विरोध में अहिंसक प्रतिकार व जन जागरण का कार्य करने वाले युवकों पर इन घमकियों का कोई प्रभाव नहीं पडा तथा रिश्ततखोरी को रोकने का कार्य पूर्ववत् जारी रहा।

बकीलों व भागरिकों का समर्थन - अभियान के माध्यम से हमारा अधिवाधिक प्रयास प्रष्टाचार विरोधी बानावरण बनाने का था। इसमें हमें पर्याप्त सफलता भी मिली। १८ मई को 'सामयं प्रसोसियेशन' तथा २२ मई को 'बार प्रसोसियेशन' ने अभियान को भयना पूर्ण समर्थन देने सम्बन्धी प्रस्ताव पारित किये अनेक बकीलों ने स्वयं कार्यालय भावर अभियान के कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन दिया। २३ मई को नगर के वरिष्ठ नागरिकों की ओर से प्रसारित एक धरोल में अभियान का समर्थन किया गया।

कार्यकर्ताओं की विटाई व न्यायमूर्तों का बहिष्कार - अधिचारियों के अहट्योग्यपूर्ण रूप से रिश्ततखोरी को प्रथमप्रथम प्रथम निना वे सगठित होकर कार्यकर्ताओं में साथ प्रथम

व्यवहार करने लगे। २२ व २३ मई को दो प्रलग-प्रलग न्यायालयों में वहा के कर्मचारियों ने दो कार्यकर्ताओं के साथ रिश्ततखोरी के समय रोक्ने पर हाथपाई की। इन घटनाओं की लिखित सूचना जिला न्यायाधीश को दी उन्होंने यह कहकर कि इस पर टिकट नहीं लगा है, सूचना वापसकर दी। २४ मई को उस समय अभियान ने एकएक गम्भीर मोड लिया जब कि अभियान के संचालक व प्रदेश तरण शान्ति सेना के प्रमुख सदस्य शिवसहाय मिश्र को जिला न्यायाधीश कार्यालय में बन्द करके वहा के कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से उनपर हमला दिया। प्रत्येकदर्शी लोगों के अनुसार इस अभियान टोली के कार्यकर्ताओं एक रिश्तत खे मामले की रोकने के बाद वापस जा रहे थे तो वहा के कर्मचारियों ने इन कार्यकर्ताओं को धरारबन्द करे। इस पर वहा पर उपस्थित एक नागरिक शिव शबर साल ने उन्हे इस प्रकार से प्रथमशब्दो वा प्रयोग करने से मना किया। उन कर्मचारियों शिवशबर साल को बुरा भला कहते हुए अदालत के एक कमरे में पकड़कर बन्द कर लिया। अभियान के कार्यकर्ताओं जब देखा कि उनके कारण एक निरपराण नागरिक को परेशान किया जा रहा है तो वे इसका प्रतिरोध करने के लिए कार्यालय में धुस गये। इस पर कुछ वररासी शिवसहाय जी को पकड़कर जिला न्यायाधीश के कार्यालय में खींचे गये और धन्दर से बन्द कर लिया कार्यालय के हेडबन्क ने अपने धरोलत कर्मचारियों को शिवसहाय जी को मारने को कहा अनेक चपरासियों व लिफिको ने मिलकर सामूहिक रूप से मिश्र जी को बुरी तरह से मारा। यह देखकर कार्यालय के बाहर काफी जनता व बकील एवज हो गये और उनमें से कुछ स्त्रियों ने दरवाजे के बाब फाई लीड डारे। वहा ने एवजित बकीलों ने शिवसहाय जी को कार्यालय से बाहर निचाला और जिला न्यायालय के जाकर न्यायाधीश महोदय का ध्यान उन घटना की ओर लीचा। न्यायाधीश महोदय ने दीनिक कार्य निपटाने के बाद उन घटना पर विचार करने का प्रारंभान किया। इस बीच बार प्रसोसियेशन के प्रथम प्रेसनारायण शुक्ल ने शिवसहाय मिश्र को धरारबन्द करके जिला न्यायाधीश महोदय के पास उन घटना का लिखित

विवरण लेकर पढ़े व और उनसे निवेदन किया कि धराराधी व्यक्तियों को तुरन्त उचित दंड दें ताकि इस प्रकार की घटना पुनः न दुहराई जा सके। किन्तु न्यायाधीश महोदय ने तुलत कोई निर्णय न लेकर पूरी जाच करके ही कोई निर्णय लेने की बात कही। निर्णय को टालने की प्रवृत्ति के विरोध में सारे बकील न्यायालय का बहिष्कार करके चले गये बाद में बार प्रसोसियेशन की एक प्रस्तावण बैठक में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर सोमवार २७ मईको सभी न्यायालयों को सामूहिक बहिष्कारना निर्णय लिया। नगर के सभी प्रमुख राजनैतिक दलों व अनेक सामाजिक सदस्यों ने उक्त घटना पर निम्ना प्रस्ताव पारित करते हुए सदाचार अभियान का समर्थन किया। बार प्रसोसियेशन द्वारा न्यायालयों के सामूहिक बहिष्कार के निर्णय की सूचना पाकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्यन्यायाधीश श्री डी० एस० मायूर अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को छोड़कर बानपुर दोडे भाये। उन्होंने बार प्रसोसियेशन द्वारा प्रायोजित विरोध सभा में भाग लिया और घटना की पूरी जाच करने का प्राश्वासन दिया। उन्होंने तरण शान्ति सेना 'सथा लोकतंत्र के लिए नवत्रवान' प्रयासों की सराहना करते हुए वहा कि न्याय प्रशासन में र्चि ररखने वाले सभी लोगों के सहयोग से हम इस प्रकार के परिवर्तन लागू कर सकते हैं जो न्यायपालिका को वही गौरव प्रदान करें जैसा कि इसे अतीत में प्राप्त रहा है।

बकीलों द्वारा किया गया न्यायालयों का बहिष्कार पूर्णतया सफल रहा।

बकीलों द्वारा 'सदाचार' अभियान के इस प्रकार के सक्रिय समर्थन से अभियान के कार्यकर्ताओं का मनोबल तो बहुत ऊँचा उठा ही साथ ही न्यायालयों में चलने वाली खुली रिश्तत लपण समाप्त प्राय ही गयी। किन्तु रिश्तत की कमाई करने वाले कर्मचारियों ने नियमानुबन्धन कार्य करने की ओर पद्धति अपनाई जससे बकीलों के सामने अनेक नयी बर्तनोपदी घाने लगी। फिर भी वे अपने निर्णय का पालन करने व बर्तनाइयो से मथयं करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अथ कार्यधर्मः न्यायालय में उक्त कार्य के प्रतिरिक्त सदाचार अभियान के अन्तर्गत युग्मी शौकियों, व नगर महापालिका के अथवा कार्यालयों में चलने वाली अभियमितताओं तथा उपभोक्ता वस्तुओं (राशन, वेस्टमिनि धी, साबुन आदि) की शोचनीयकारी को रोकने के लिये प्रयास भी किंये गये।

प्रायोगिक रूप में जिन युग्मी शौकियों पर अभियान के कार्यकर्ताओं ने निगरानी का कार्य किया वहा पर अभियमितरूप में रसीद दिये बिना वमूल की जाने वाली रकम अभियान के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में विलुप्त बन्द रही। महापालिका के एक विभागीय अधिकारियों के अनुसार हमारे द्वारा जिन युग्मी शौकियों पर निगरानी का कार्य किया गया वहा पर निगरानी के दिनों में सामान्य दिनों की अपेक्षा लगभग तीन गुना अधिक नर जमा हुआ। समय-समय पर विभिन्न चण्डी शौकियों पर छोपाभार कार्यवाही करके वहा के कर्मचारियों को अभियमित राशि वमूलने से मना किया गया।

बानपुर नगर महापालिका के साइसेन्स कार्यालय में जहा रिशयो, ठेको छादिके लाइसेन्स बनते हैं, प्रति साइसेन्स एफ रूपया से पांच रुपये तक की प्रतिरिक्त वमूलनी की जाती थी, इसे रोकने का प्रयास किया गया। कार्यलय में अब दूसरे दिन हमारे साथी पहुंचे तो वहाँ के कर्मचारियों ने से एके ने 'नाय पानी बन्द' कहकर अभियान टोली की उपस्थिति की सूचना अपने साथियों को बर दी।

गहाने व बगड़े, घोंने के कुछ प्रमिड साबुनों की कमी के कारण चौरवाजारी में उनकी भीमत दो गुना तक पहुंच गयी। अभियान की विभिन्न टोलियों ने कई स्थान पर साबुन की थोक व फुटकर दुकानों पर चौरवाजारी से बिकने वाले साबुनों के स्टॉक की जाच की और अपनी उपस्थिति में दुकानदारों को निर्धारित कीमत पर साबुन बिकने के लिए बाध्य किया।

सहयोगी सस्था फुटबल बिकेटा संघ के सदस्यों ने वनस्पति के अर्धम स्टॉक का पौ सागारक उसको खोल करवाया। एक अथम युवा सस्था 'बिकार नवयुवक संघ' ने ५० विबटल गेहूँ—जो एक एक आठारी नियमों का उल्लंघन करके तै आ रहा था, अपने बन्धु में बेकर १-५० प्रति बिल्ली की दर से बिकवाया।

और महाराष्ट्र एक बन जाय। यह गारा की सूचना मान्य हो तो सीमा प्रान्त सहज होगा।

यहाँ बेकोमत्तोवाकिया का युवक बैठे है। उसे देख छोड़ना पडा। वह फ्रास में गया। वहा से उसे वहा भ्राने का प्रेरणा मिली। पाच छ महीनों से वह यहा है। इतने दूर-दूर के लोग यहा एकत्र हो रहे हैं।

प्रधान : सामान्य कलना यानी 'छोड़ते जाना, जलते जाना एमए जो आपने कहा उसे अधिक स्पष्ट कीजिए।

बिजोबा : पहिले बिवाह समय (मुहूर्त) के लिए घटिका प्रायश्चक थी। घटिका पान रखा जाता था। ध्व उसकी जखत नहीं। घडी के कारण मिनट सेंचड सब जान हो जाता है। घटिका छोडी, घडी ली। पुराना छोटा नया लिया।

प्रधान : अणुशक्ति हाथ में घाने पर छोटी-छोटी बातें छोड़ देने का मतलब क्या ?

बिजोबा : आपके पास बडी शक्ति घाने पर छोटी शक्ति की जरूरत नहीं। उसे छोड़ देना चाहिए। स्फुटर सबको उपलब्ध होने पर साइन्स के आग्रह का कारण नहीं। पुराना छोड़ने का यह दूसरा उदाहरण दिया।

आप मान रहे हैं कि भारत में अणुशक्ति प्रबुट हुई यह बडी बात है। पर अणुशक्ति की बलना प्राचीन ऋषियों की थी। एक वैदिक दर्शन है। उसे 'वैशेषिक' कहते हैं। उसका दर्शनकार अणुदा था। वह मरते समय पीलत्रपीलत्र ऐसा बहते गया। पीलत्रः यानी परमाणु। मरते समय परमात्मा का

कचहरी में मिली सफलता से उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी नगरी कानपुर में तरण शांति सेना के नाम और काम दोनों ही स्थान-स्थान पर खर्च में विषय बन गये हैं। कार्यकर्ता जब शहर के विभिन्न मुहल्लों में पहुंचते हैं तो स्थानीय लोग 'बचहरी वाले सड़कों' के रूप में उनका स्वागत करते हैं। नियमितरूप में होनेवाली नुबवड सभाओं के द्वारा जन-जागरण का प्रयास व्यापक किया जा रहा है और निर्दलीय व सामाजिक मुता सगठनों के साथ सम्पर्क बनके उन्हें अभियान के कार्यक्रम में सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

का नाम लेना चाहिए। पर परमात्मा कहा से आया ? परमाणुओं से ही वह जगत निर्माण हुआ है ऐसी उसकी मान्यता थी। इसलिए वह परमाणु-परमाणु बहते बहते मरा। तो परमाणु शक्ति की बलना प्राचीन काल के लोगों की थी। उनमें इतनी ताकत भरी होगी इसकी कल्पना न होगी। वह कल्पना ध्व है। अणुशक्ति हाथ में घाने पर छोटी-छोटी शक्ति को छोड़ देना चाहिए। इंजीनियरिंग में नयी कल्पना रड होने पर पुरानी छोड़ दी जाती है। नदी को मोड़ देना है। नहरें निकालनी हैं, उसके लिए अणुशक्ति का उपयोग हो तो पुरानी पद्धति से काम करने की आवश्यकता नहीं। इसी तरह नयी चीज हाथ में घाने पर पुरानी छोड़ दें।

प्रधान : विज्ञान और अध्यात्म के सम्बन्ध की दृष्टि से भारत की योजना में क्या मूलभूत, फर्क करने होंगे ?

बिजोबा : भारत की योजना में मुख्य बात यह होगी अति प्राचीन समय से भारत में अध्यात्म बिदा बली श्रायी है। अध्यात्म ने जो अति प्राचीन हो वही प्रमाण माना जाता है विज्ञान में जो अद्यतन, सबसे ताजा हो वही प्रमाण होगा। अध्यात्म अध्यात्म के अनेक षंथ यहा हैं। जानेबारी लीजिए या धार्मिक समय का अध्यात्म बिदा का प्रथम है। लोग बिसे पढ़ेंगे ? धार्मिक प्रथ नही पढ़ेंगे। जानेबारी ही पढ़ेंगे। क्योंकि वह सानु भी वर्ष पुरानी है इसलिए अत्यंत प्राचीन अध्यात्म बिदा और अतीव प्राचीन विज्ञान की जोड़ी बनानी होगी। विज्ञान में पीछे जाना नहीं, अति अद्यतन, अतीव नयी सिद्धांत लेना होगा और अध्यात्म में विज्ञान पीछे जा सकेंगे उतना जाना होगा।

प्रधान : अणु-विस्फोट भारत के जीवन का एक नया अध्यात्म है ऐसी स्थिति में भारत सर्वप्रथम क्या करे ?

बिजोबा : भारत मारी दुनिया की शांति का आग्रहान है। उसने बँदा आग्रहानन दे भी दिया है। पीव एनयम विवधान न करें। वे क्यों करें ? दम-पीव बरत देंगे। परीक्षा लेंगे। फिर दुनिया अणुबुध करेगी कि भारत अणुशक्ति का उपयोग शांति तथा वैज्ञानिक मोर्जे के लिए ही कर रहा है। तब बाकी दुनिया में भारत के लिए आदर बढ़ेगा। पात्र जो मोड़ा अविश्रवात है वह दूर होगा।

बिहार : देश की चढ़ती हुई जवानी

रामचन्द्र राहो

चार जून को पटना के ब्रिम्होने, स्टेन-गनो, मशीनगनो, और तनी हुई बम्बूको से लस करीब १०० टुकों और बुलिस-गाइडो मे लदे जवानों का प्रदर्शन देखा, उनके मन मे सहज ही यह सवाल पैदा हुआ कि हमारे देश मे लोकतन्त्र है या तानाशाही ? ३ जून को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का जुलूस निकला, जिनमें लोग लाठी-भावा तलवार भादि किंगे हुए थे, लेकिन उन जुलूस से पहले सेना और पुलिस की शक्ति का प्रदर्शन करना सरकार ने जरूरी नहीं समझा, जबकि वह धरती पर ही जानती है कि कम्युनिस्टो का जुलूस प्रश्नर हृदयिारो से लस निकलता है। लेकिन ५ जून को भी जयप्रकाश नारायण को नेतृत्व मे निकलने वाले जुलूस के पहले सरकार को यह जरूरी लगा कि अपनी पुलिस और सेना का प्रदर्शन किया जाय, जब कि हर प्रादमी जानता था कि जयप्रकाश जी को नेतृत्व मे निकलने वाला जुलूस हिंसा-विरोधी होगा, उसमें कोई हथियार लेकर नहीं शामिल होगा। फिर भी इस जुलूस के पहले राज्य की संगठित हिंसक शक्ति का प्रदर्शन, इस ऐतिहासिक तथ्य की ओर संकेत करता है कि राज्य हमेशा लोक की संगठित शक्ति से, अन्वय को सहने से इन्कार करने की आत्मशक्ति से भय खाने है। क्योंकि राज्य इगवा मुकाबला नहीं कर पाता। लाठी-भावा तलवार भी शक्ति का मुकाबला वह धामानो से अपनी संगठित शक्ति शक्ति द्वारा कर लेता है। और इसी निवामिले मे यह बात भी साफ हो जाती है कि नाम चाहे जो दिया जाय, सरकारो का हरिष एव होता है—सरकारें लोक स्वतन्त्र्य की विरोधी होनी होंगी, होना चाहेगी, वह उतनी ही लोक स्वतन्त्र्य को दबाने की कोशिश करेगी, करती रहेगी। मोरूदा भारतीय लोकतन्त्र का हरिष इनका प्रवाद नहीं। वरना, ८ प्रश्न ७४ को जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व मे जो मोन-जुलूस निकला था, जिसके बाद पूरे बिहार राज्य मे हिंसा का धारांक सहाय हो गया था, उस धनुष्य के बाद भी सरकार ने

शांतिपूर्ण जुलूस का सामना करने में लिए पटना मे सेना की ऐसी किलेबंदी नहीं की होती।

जयप्रकाश नारायण और बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने पहले से ही यह घोषणा कर दी थी कि '५ जून को एव लाग से अधिक लोगो का शांतिपूर्ण जुलूस निकलेगा, जो प्रदेश के १ करोड़ मतदाताओं के हस्ता-धर ले जाकर राज्यपाल को देगा। इन हस्ताधरो द्वारा राज्यपाल को यह बताया जायगा कि मौजूदा विधायको के प्रति हम मतदाताओ का विश्वास नहीं रहा, इसलिए वर्तमान विधान सभा भंग की जाय।' क्या 'लोक-भावन' का यह इजहार 'लोकतन्त्र' को मयाप्त करने वाला था, और सेना द्वारा लोक की इस भावना को दबाकर लोकतन्त्र की रक्षा हो जानी ? यादव लोक जीवन से नटे हुए, समाज के दुखदर्द से बेचिफ अपनी सत्ता की कुर्सी से चिपके रहने वाले कुर्सी प्रेमी नेताओ को यह बात समझ मे आनी नहीं आ रही है, क्योंकि उनकी हृदय मे वे और उनकी कुर्सी दोनों की सेना द्वारा रक्षा ही लोकतन्त्र की रक्षा है, और उन पर सतरा ही लोकतन्त्र पर सतरा है।

लेकिन इतिहास गवाह है कि लोकशक्ति को दुनिया की कोई भी ताकत धाज तक रखायी रूप से दबा नहीं सकती है और न भविष्य मे दबा सकेगी। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण धन गया ५ जून का विशाल प्रदर्शन। क्या-क्या कीर्तियाँ नहीं थी गयी सतरार की धरो ने, कि प्रदर्शन नमजोर पड जाय। लेकिन बावजूब उनके पटना मे ५ जून को जो प्रदर्शन हुआ, जो सभा हुई, उसे सरकार सरकारों की सडार्ड को घांती आगो देवने वानो ने भी कहा कि गिज्जे २७ वर्षों मे ऐसा जन-प्रदर्शन हमने नहीं देखा।

पटना गांधी मैदान से रात्रभवन तक लगभग ६ किलोमीटर का रास्ता लोगों से पट गया था, सडक के किनारे के मकानों की छतों पर, पेड़ों, चहार दिवारियों पर प्रादमी ही प्रादमी तिराई दे रहे थे। सेना की कडी सुरक्षा तथा नाम-तार की घरेबन्दी मे सरल

लिये प्रादमी को जनता का प्रतिनिधि कहने वाले विधायक और मंत्री लोगो ने पता नहीं यह दृश्य देखा था नहीं, देखकर क्या सोचा, क्या नहीं, लेकिन यह तो मानुष हो ही गया, बिहार की करोड़ ५ लाख से भी अधिक प्रत्यक्षदर्शी जनता को और सतरों को पड-मुनकर पूरे बिहार को जनता को, कि उनके प्रतिनिधियों मे बहुत मोठे ही लोग ऐसे हैं जो उनकी (लोगों की) भावनाओं की बड करती है, उनके साथ उनके बीच रहने मे गौरव महसूस करते हैं, अधिक लोग ऐसे हैं जो 'कुर्सी', मान कुर्सी की बड करना जानते हैं और घरे मे, सेना के सहाय मे रहकर प्रादमे को सुरक्षित महसूस करते हैं। उन्हें प्रादमे मनवानाओ से ही भय हो गया है। क्या ऐसे प्रतिनिधियों से लोकतन्त्र मजबूत होगा ?

इन जनता का विश्वास लोप, कुर्सी से चिपके नेताओ को इतनी हिंमत तो नहीं ही हुई कि बिहार के कोने-कोने से आये हुए, किसी प्रकार की हिंसक न करने के लिए वचनबद्ध, लोगों का सामना करें, उनकी बात सुनें, अपनी मुनायों, उल्टे राजभवन से लौट रहे लोको पर एक कब्रिस विधायक के स-र-ही मनाने से गोतिवा चलायी गयी, जिसमे २१ प्रादमी प्रायण हो गये।

यह है लोकतन्त्र के रवबावो की करतून। इसके बावजूब जुलूस मे शामिल लोगो ने पैयं नहीं लोया और जब धामसभा मे घटना की जानकारी दी गयी तथा जयप्रकाश नारायण ने लोगो से यह वचन माया कि मौनो चली इसके बदले की कार्रवाई जनता और से, छात्रों की ओर से नहीं होगी, सो सवने एक स्तर मे यह बात मजूर की।

धामसभा के शुरू होने-शुनि बाकी अंधेरा हो गया था, विशाल जनसमूह मध से फल रही घु घली रोशनी मे जयप्रकाश नारायण को मुन रहा था और मुनने-मुनते गन् ४२ के शक्तिवारी तदन जयप्रकाशजी की याद कर रहा था। उग्र की परवाह विषे दिना प्रकट हो रही था, विशाल जनसमूह मे सन् ४२ से ७४ के बीच की अवधि भी धनुषमविज्ज परि-पक्वता ने तिलार ला दिया है, यह भी उन दिनों के साथी धनुषमवचन रहे थे।

५ जून ७४ का जयप्रकाशजी वह भाग्य, (पिछला स न देलें) मोक्षनाथन के वे भादेल,

स्वराज्य के बाद के इतिहास में नये मध्याय की शुरुआत कर चुके हैं। गांधी जी ने अपनी आखिरी बसोबास में लिखा था, 'लोकनन्द के ध्येय की तरफ हिन्दुस्तान की प्रगति के दरमियान फौजी सत्ता पर लोकसत्ता की प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है।' (मो० व० गांधी, नयी दिल्ली, २६-१-५८) ऐसा लगता है कि वर्तमान फौजी शक्ति आधारित शासन सत्र पर लोकसत्ता की प्रधानता दिलानेवाली उक्त लड़ाई का बिगुल बज उठा है, और एक बार फिर भारत में उपनिवेशित गुनामी से मुक्ति के बाद 'स्वराज्य' के निर्माण की महायात्रा शुरू हो पड़ी है, जो चापद पूरी दुनिया की एक नयी दिशा दे सकेगी। इस महायात्रा की मांग है बलिदान के लिए तैयार दीवानों की, जिसकी कमी नहीं पड़ेगी, यह बिहार सिद्ध कर रहा है, करेगा, पूरी दुनिया के साथ। किसी समय राष्ट्र कवि दिनकर ने गाथा था : 'जय-प्रकाश है नाम देश की चढ़ती हुई जवानों का' आज बिहार के जन-जय के हृदय में साधार हो उठे लोकनायक जयप्रकाश की निलंबी हुई जवानों की देवदर ऐसा लगता है कि पूरा बिहार ही देश की चढ़ती जवानों का प्रतीक बन चुका है।

विना टिप्पणी के

३ जून के सर्वोदय में डा० दयानिधि पटनायक के साथ अन्य तीन साथियों की अपील पढ़ी। अपील में साथियों ने यह इंगित किया है कि गुजरात घोर विचार के जन प्रायश्चमो से घ्यान हटा गया है और इतिहास से भी, आस्था टिक है क्योंकि वर्तमान आन्दोलनों में हिंसा घोर और जबरदस्ती के नई प्रभाव प्रकट हुए हैं। इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन इतना ही है कि जो साथी गुजरात के आन्दोलन में पड़े और जो बिहार के आन्दोलन में लगे हैं उन्होंने कोई हिंसा को अपना लिया या सर्वोदय आन्दोलन के मूल प्रायश्चमो को छोड़ दिया ऐसी बात नहीं है। बिहार जन आन्दोलन के नेता जयबाबू तो बार बार कह चुके हैं कि विधान सभा भंग करना, सरकार गिराना हमारा लक्ष्य नहीं है। किन्तु जिस सरकार में घोटों भी नॉनविवा शेष न रह गई हो, जो निरीह निरपराध लोगों पर अघातुष गोलियों

बरसाती हो, ऐसी सरकार को जबरदस्ती टिके रहनेका क्या अधिकार है। बार बार यह दुहाई दी जाती है कि इस प्रकार के आन्दोलनों से जैसा भी लोकनन्द प्राप्त है, टूटेगा। बिहार के लोक आन्दोलन की तो मांग ही यह है कि स्वस्थ चुनाव परम्परा कायम हो। चुनाव का तरीका बदला जाये। चुनावी भ्रष्टाचार खत्म किया जाये आदि। ये बातें सरकारों को करना चाहिए। विनोबाजी की यही मांग है कि कम से कम मंत्री स्तर पर भ्रष्टाचार न हो। किन्तु वर्तमान सरकारों तो भ्रष्टाचार की नेत्र बनी हुई हैं। इसलिए देश भर में जातिपूर्ण घोर अहिंसक आन्दोलन की प्रायश्चकता है। इस समय तो बिहार के जन आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करना चाहिए और अपनी अपनी जगह जिससे जो बन सके बिहार के आन्दोलन के समर्थन में कुछ न कुछ प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि बिहार का आन्दोलन वास्तविक लोकतंत्र के लिए लड़ा जाने वाला आन्दोलन है। इससे सर्वोदय आन्दोलन के मूल कार्यक्रमों को भी बहुत कुछ मदद मिलेगी।

इन्द्रलाल मिश्र, लोकसेवक, इन्दौर

आपकी धरती के लिये बैंक ऑफ़ बड़ौदा का एक नये किरण का 'खाद'

किसानों के लिये कृषि-ऋण

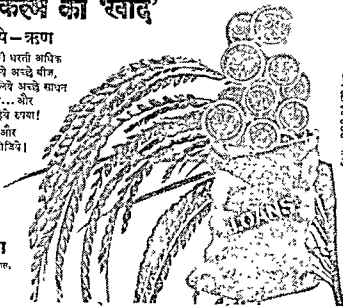
एखा ... एक उत्तम खाद। आपकी धरती अधिक और अच्छी फल उगाये, इनके लिये अच्छे बीज, आधुनिक साध सामान, सिंचाई के लिये अच्छे साधन और उत्तम खाद की जरूरत होती है... और इन सब चीजों के लिये आपको चाहिए एखा! आप केवल बैंक ऑफ़ बड़ौदा आर्ये और हमारे कृषि-ऋण के लिये आर्जन कीजिये। हम बहुत ही मुकामजनक शर्तों पर आरक्षे यह ऋण देंगे।



निर सचिद का लोगन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

भारत क्या निर्देश - वृ के, पूरे अमीबा, नॉरिगा, किनी टोप्यूर और गियाना में जून पिछकर १९६९ से भी अधिक इलाके।



SHIP BOB BA/72 NH

इंदौर में चौखती मंहगाई के विरुद्ध मौन जुलूस

मंहगाई, भ्रष्टाचार, अत्याय और कुशासन के विरोध में १६ जून को इंदौर में तरुण शक्ति सेना के सत्याग्रहान में एक मौन जुलूस निकाला गया। मुभाय चौक से मौन जुलूस प्रारम्भ होकर नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ गांधी हाल प्राणण में पहुंच कर एक सभा में परिणित हो गया।

जुलूस में रचनात्मक कार्यकर्ता, तरुण शक्ति सैनिक, व्यक्तिगत हैसियत से राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता एव अन्व्य नागरिक शामिल थे। जुलूस में स्वयं सेवक प्ले-कार्ड्स लिये थे जिन पर "हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,—सबके घर में है मंहगाई" "मंहगाई-भ्रष्टाचार मिटाने के लिये युवाशक्ति" "लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है" 'नया जमाना नई जवानी देंगे हम अपनी कुर्बानी' आदि नारे लिखे हुए थे। युवाशक्ति के लिए अग्रप्रकाशजी और विनोबाजी के अग्रपेलनुमा पत्रक भी हजारों की संख्या में वितरित किये गए। जुलूस का उद्देश्य मंहगाई भ्रष्टाचार के विरोध में जनता की आवाज बुलन्द करना था। जुलूस में लगभग २०० लोगों ने भाग लिया।

गांधी हाल प्राणण में आयोजित सभा में सुधीर जोशी ने तरुण शक्ति सेना की गति-

विधियों का परिचय दिया। इस अवसर पर राधाभाई नाईक ने कहा कि जनतंत्र नहीं, दलतंत्र या प्रतिनिधितंत्र है। लोकतंत्र में तंत्र गोल और लोक प्रमुख होना चाहिए। उन्होंने अधिवाहन व जनता के चाहने पर निर्वाचित प्रतिनिधियों के "फिर-बाल" की व्यवस्था भी जाने की भी मांग की।

नरेंद्र मुखे ने कहा कि मंहगाई व केवल हमारे देश में है बल्कि विश्व व्यापी है। मुद्रास्फीति और मंहगाई के कारण यूरोप के कई देशों में सरकारें बदल गई हैं। यदि भारत में भी मंहगाई और भ्रष्टाचार बढ़ता रहा तो सरकारें यहां भी टिकी नहीं रह सकती। भूत. सरकार की जिम्मेदारी है कि यह मंहगाई-भ्रष्टाचार को समस्या का निराकरण करे।

दत्तात्रय सरमडल ने कहा कि खेचशाही को रद्द के लिए हर नागरिक को सक्रिय होना होगा। नगर सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष शांभुभाई देसाई ने कहा कि हमारे देश में ससदीय लोकतंत्र है। चुनाव पद्धति में दोष हैं। चुनाव-पक्ष का कोई भी सही हिसाब पैज नहीं करता। भ्रष्टाचार की शुरुआत यहीं से होती है। सभा में धीमनी हीरबाई बोडिया और गिरीश शर्मा ने भी अपने विचार

व्यक्त किए। गांधी शक्ति प्रतिष्ठान के तरुण साथी अमोक बंराले ने सभा की अध्यक्षता की।

सत में विजय भोसले ने मध्यप्रदेश सरकार को दिया जाने वाला जापन पदकर सुनाया। तरुण शक्ति सेना के सयोजक महेश भंडारी ने आभार प्रदर्शन किया।

● नुलाई को ब्रह्मविद्या मंदिर, पनवार में विहार में सहरमा अभिवादन से जुड़े मित्रों का भिन्न भिन्न नया लोकगंगा यात्रियों का विदाई समारोह आयोजित किया गया है। इस अवसर पर सहरसा के रामदास-दुष्टि एवं रामस्वरराज के राष्ट्रीय मोर्चे पर साठे तीन वर्षों में हुए कार्य पद्धति और परिष्कार का लेखजोमा प्रस्तुत किया जायेगा। सहरसा में राष्ट्रीय मोर्चे की सफलता के लिए उत्साहपूर्वक काम करने वाले देश भर से आये सर्वोदय-सेवक उक्त आयोजन में सम्मिलित होंगे।

● बम्बई सर्वोदय मंडल का कार्यालय धान तक मण्डलभवन, १६, सेक्टरनम रोड पर स्थित रहा। धन बम्बई सर्वोदय मंडल ने मुख्य कार्यालय के लिये एक नयी जगह ली है - मंडल का मुख्य कार्यालय दम पने पर होगा बम्बई सर्वोदय मंडल, माताश्रम, २६६, जावजी दावाजी रोड, (पुराना तारदेव रोड) नामक चौक के पास, बम्बई ७।

(पृष्ठ २ से जारी)

उसके पीछे सत्ताहृद दल का इशारा था, इसे मानने में कोई हर्ज नहीं है। विचार कायद यह था कि दम प्रसार और धन विभाषक त्याग-यत्र देने की बात सोच रहे हैं, वे सोच में पड़ जायेंगे और जिसे धान लोकतंत्र कहा जा रहा है, यह जैसे-जैसे चलना रहेगा। चुनाव आयोजन भी दम पोषणा का इसी तरह का प्रसार हुआ भी। किन्तु जनतंत्र, सोशलिस्ट पार्टी और ससोपा तथा सगजन कार्य में ही नहीं सत्ताहृद दल के साथ जिसका गठबंधन है एव भारतीय कम्युनिस्ट दल ने भी चुनाव आयोजन के आयुक्त श्री स्वामीनाथन को लिखा कि दम समय जबकि वर्षा शुरू हो गई है और गांधी में घाने-जाने के साधन लगभग समाप्त हैं, उपयुक्त करना न उचित है और न सम्भव। जनतंत्र और ससोपा ने दो यदि

बुनाव होता है तो उसके बहिष्कार का एतान भी कर दिया था, फिरतय सत्ताहृद दल के लोग सामने आए और उन्होंने कहा कि प्रान्त में जो प्रतिस्थिति है और अग्रप्रकाश नारायण जी तथा धावो का जो राज्यव्यापी प्रान्तोत्थन तथा प्रभाव है, उसे देखते हुए चुनाव के लिए खड़े हो जाने का माहूम बचना, दुस्माहस कहलायेगा। कांग्रेस विरोधी लहर बहुत ऊंची उठ रही है और इस बात का प्रयास भी शुरू हो गया है कि कोई चुनाव-पत्र न भरने पाव। रोहताग जिले के भामुभा नगर में दम प्रकार का सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया और बैंगनुर तथा रामयध चुनाव क्षेत्रों में चुनाव पत्र भरने के इच्छुक कार्यक्षी प्रत्यासिधियों ने बुद्धिपूर्वक चुनाव-पत्र दायित्व करने का विचार छोड़ दिया। सत्ताहृद दल के प्रत्यागी चुनाव में लोगों के सामने जाने

से डर रहे थे। विधान सभा में भले ही सत्ताहृद दल अग्रप्रकाशजी को लोक-पत्र विरोधी अधिवाहन बनाने वाला व्यक्ति कहकर सतोप कर के, किन्तु यह चीज जनता में जाकर बढ़ना आसान नहीं था। इसलिये मानवृद का धाना, बादलो का धाना और भूतलाधार पानी का बरसना, उनसे लिए दम अर्थ में बदरान ही मिट हो गया। वे इसकी भाव में यह कह लें कि वह कि ऐसी सीसमें ने मन-दानासो तक पहुंचना सम्भव नहीं है, चुनाव की तिथि आगे बढ़ा दी जाय।

नुनाव आयोजन और उससे भी ज्यादा केन्द्रीय शासन ने इस बारे में समभदारी से काम लिया कोलने ने निर देने के प्रिक्का का खनार टालकर धनन का काम किया।

बधाई!

—भो प्र० मिश्र



७२ वर्ष के युवा जयप्रकाश : भोगतो सभा में भोगते बस्ता का प्रगिन धावाहन ।

(पेज ४ के आरी)

एर सन् ४२ धा रहा है। एक प्रातिवारी परिस्थिति बन रही है और अगर लोगो की निराशा और घुटन को रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं मिली तो इस परिस्थिति में से सिवाय तानाशाही के कुछ निकलेगा नहीं। मैं सब पार्टीयो को जानना हूँ। सबसे मेरे मित्र हूँ। लेकिन ऐसी एक शक्ति नहीं है वेग में जो बूनी कानि कर सके। छिटपुट हिंसा हीमी सब तरफ और उससे धराजकता हीमी और तानाशाही ध्रायेगी। इस निराशा, धमनीय और घुटन में से युजको वे एक रास्ता निकाला, इस में से रचनात्मक मार्ग निकलेगा। इस में से सम्पूर्ण प्राति निश्चिन्ता। लेकिन मध से सम्बन्धी बातें करने से नहीं। इसीलिए मैं इन युजको से कहता हूँ प्राओ निकल के। गांधी जी ने कहा था अस्तव्योग करो। मैं तो कहना हूँ कि निकर एच वर्ष दो। एच वर्ष के लिए जीवन नहीं दोमे तो युद्ध नहीं होगा। (इस पर सभा ने तालियाँ घजायी और वे ०पी० ने पहली बार कहा कि बजाइये ताली। ये ताली टोक बज रही है क्योंकि सम्पन्न की ताली है।) जबसे देश भर में सधर्ष युद्ध होगा, हजारी की ताराव में प्रातिकारी विचारों निकलें। एक वर्ष में समाज का रूप

बदल जायेगा।

स्वराज्य की लड़ाई बापू चला रहे थे। उनके अन्दर इतनी शक्तिप्रा मिली हुई थी। प्रवतारी युद्ध थे। मैं तो उनके चरणों की धूल के भी बराबर नहीं हूँ। लेकिन उनका भी आन्दोलन सारे देश में एक दिन में नहीं फैला। अन्धारा में सत्याग्रह किया मुद उन्होंने, बारडोली में तरारार पटेल ने दिया। धीरे-धीरे जनता को प्रहियन शक्ति में विश्वास आया। इसके पहले बहादुर लोगो ने बम फेंके, सधर्षात्मिक तरीकों में विश्वास करने वाली ने प्रस्ताव पाए किये। लेकिन प्राति नहीं हुई। जब जनता को प्रहियन शक्ति में विश्वास हुआ तो गांधीजी ने इसे अमोघ हथियार कहा। प्रहिया की शक्ति बन गई काट नहीं है। इन सत्याग्रहों से हुआ वनी। जब बापू नमन नानुन तोडने चने तो दिल्ली में सरकार ने कहा कि टोक है जाने दो। क्या होगा इससे, गिरफ्तार भी नहीं किया। इन्होंने नमक गत्याग्रह किया और यह प्राण की तरह फंन गया पूरे देश में।

तो मिश्री, विहार देशभ्रमणी आन्दोलन की संघारी है। उनका भार विहार पर है, विचारियों पर है। बच्चों तक में गत्याग्रह

करने और बेल जाने का उत्साह है। मैं तो बहुत धामा देखता हूँ। अभी हम सत्याग्रही नहीं चाहिए। लेकिन एक दिन ऐसा आ सकता है जब हम नहे कि सत्याग्रही भंत्रिये तो प्राय धामे अन्धे नारे लगाते हुए। यह नैतिक सांस्कृतिक प्राति है। हमें खुद अन्ध-चारी नहीं होना है। सधर्ष सदाचार से चलाना है। सम्पूर्ण प्राति की बात है। बिहार को मैं बारडोली समझ रहा हूँ। इसमें से विधायक शक्ति निकलेगी सभी परिवर्तन होगा। बिहार में आन्दोलन सफल होगा तो नया भारत बनेगा। सपना साकार होगा। लोकशक्ति पैदा होगी। डॉ० रघुवाम ने सभा की अध्यक्षता करते हुए शुरु में कहा था कि हमने जयप्रकाश जी को युजको वे नेता के रूप में देखा था। आज बलीस बरस बाद उन्होंने युजको वे भपना नेता माना है। युजक सधर्ष नेता है लेकिन उन्हें प्राति में जनता का विश्वास पैदा करना है। — प्रभाय जोशी-

महूव नगर सर्वोदय सम्मेलन

साँ और आठ जून को महूव नगर जिता सम्मेलन मन्मकोडा (मुनीकोडा) में धाट सो साल के पुरातन थ्यंकेटेयर मंदिर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में प्राये १२० लोगो के निवास और भोजन का प्रबंध मंदिर की धोर से किया गया। २५ युगनिप भाई भी इस सम्मेलन में शरीक हुए। आरंभ प्रबंध सर्वोदय मंडल के मंत्री सुभोमी धर्मा ने अध्यक्षता की। ठाडुर दाम बग मुग्य प्रतिधि थे।

सम्मेलन में प्राति नियेयन में कहा गया कि लोगो की दिक्कतें दिन-दिन बढ़ती जा रही हैं। अन्धारा, महुगाई, बेरोजगारी तो लोग नमन हैं। इन बातों के निराकार ही जयप्रकाश जी द्वारा छेदने गये धर्षयुद्ध का यह सम्मेलन स्वागत करता है। मुजरात, बिहार और माराठगंडा के विचारियों ने इस सभ में उल्लेखनीय भाषे किया है। उनका यह गमेसन धर्मियन करता है। वर्तों की गन-दिया दास वर, हमारे यहाँ की परिस्थिति को थ्यास में रख कर प्रातिमय, नैतिक और धार्मिक-बुद्धिवाद पर युवा धारोदन हमारे यहाँ की चालि हो, लोग भी उनमें हाथ पडाये लोगो से हमारा यह प्रावाहन है। ऐसे प्रादीन को हमारा सन्धि सहयोग देना। प्रामादत धामेन्द्रायक के बिना ये सभयाए स्थायी रूप में हल नहीं हो सकती ऐगा हमारा विश्वास है।

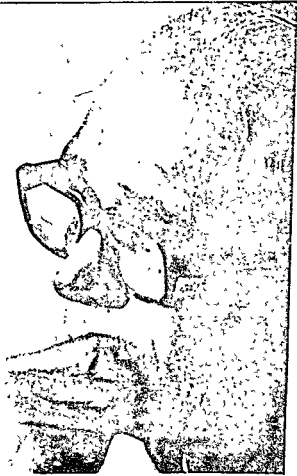
वायिक शुल्क—१५ रु० विदेय ३० रु० या २५ मिलिय या ५ डालर, एक धक का मूल्य ३० पैसे।

प्रभाय जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ०६ अं० प्रिंटसे, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

प्रति भवन
3 JUL 1974
क्रमांक
मूल्य
सर्वोदय संघ की संपादन

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ८ जुलाई, '७४



“.....बाबा को बीकता नहीं यह बापको बीकता है।”

१९६. राजपूत कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

प्राठ जुलाई को ही जयप्रकाश जी विनोबा से कूचीबंद महीने बाद मिल रहे हैं और इन प्राठ महीनों में कई बार यह महसूस हुआ है कि दोनों की परस्पर बातचीत और अधिक जल्दी-जल्दी हो पाती तो अच्छा होता। जब कि विनोबा जी स्वयं ग्रामीणों और से कोई विशेष अभिक्रम विनो जी के लिए नहीं ले रहे हैं और अपनी भूमिका अभिप्राय ही रही है परन्तु उनको सलाह से इस बीच जो विशेष पटनाएँ हुईं, उन्हें समझना उचित होगा।
शाखा के विचार : ५ साल से चल रहे

चाहिए और इसलिए उन्होंने भारत की धन-दानी सबको को कम और विषय की जागतिक प्रभाव वाली सबको की और अधिक ध्यान दिया। इस बीच बयला देश, पाकिस्तान और भारत के बीच परस्पर बातों हुईं, फलस्वरूप पाकिस्तानी फौजी कंठी करीब एक लाख की तादाद में भारत से वापस स्वदेश लौटे। इन तीनों देशों के बीच और भी निबटता हों इस दृष्टि से इनकी बातों को लेकर कोई धान्दलन न घडा किया जाय ऐसी भी एक राय उन्होंने दी।

मनुबल न हो तो उसके किसी क्षेत्र विषय में इस प्रकार सहकार करने से क्या बन पायेगा।
गुजरात और बिहार में क्रमशः विचार्य-प्रतियोग ने धान्दलन का स्वरूप पकड़ा, जिसके फलस्वरूप गुजरात में सरकार बन कर देनी पडी और बिहार में उसी उद्देश्य से धान्दलन जारी है। इस संबंध में विनोबा जी के विचार धान्दलन के बहुत मनुबल हैं ऐसा नहीं दिखाई दिया। यद्यपि बिहार के संबंध में उन्होंने बराबर यह कहा है कि स्थानीय परिस्थिति का जितना प्राकलन थी जयप्रकाश जी को है और उसके अनुसार अपनी महिम्ना दृष्टि से जो कार्यक्रम वे लोगो को सुझा रहे हैं उसके प्रति अपने विचार तब तक वे नहीं बना सकते जब तक जे० पी० से तब्य बात करने पूरी तरह समझ नहीं लेते। मतएव वहा के पूरे कार्य रूप का उन्होंने धानी घोर में भगवान समर्पित माना है। लेकिन कुल मिला कर धान्दलनसमय कामों की बिम्बित सीमा मानते हुए वे रचनात्मक दृष्टि का ही प्रतिपादन करते रहे हैं।

विनोबा और जयप्रकाश नारायण

देवेन्द्रकुमार

सहरसा के सचन रामदान बायं को धालिरी जोर लगाते के बाद स्थानीय धाराधार पर ही विकसित होने के लिए छोड़ दिया गया।
स्त्री शक्ति आगरण की दृष्टि से ब्रह्म-विद्या मन्दिर के जिन चिन्तन को विनोबा जी ने मूर्त रूप दिया है उस हेतु ७-८ मार्च को एक सम्मेलन महालाषो का हुआ, उसमें प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी प्रधारी। उसके पूर्व जनबरी के प्रथम सप्ताह में भी उन्होंने विनोबा जी से भेंट की थी और एक पारस्परिक निकटात्ता प्रकट हुई। सरकार की नीतियों और कार्य के सम्बन्ध में एक सहानुभूति की दृष्टि रखने की बात विनोबा जी की रही है और जब कभी इस संबंध में आवश्यक टीका के की प्रतिबन्धना घाटें हैं उन्हें नें स्पष्ट परन्तु सहानुभूति के स्वरों में स्त्री उमका निर्देश दिया है। इन दोनों मुलावतों में यह परिलक्षित हुआ।
वे कहते रहे हैं कि बिना सरई में स्त्री देस की समस्याओं का प्राकलन किया जाना

१८ मई को धारणिक विस्फोट राजस्थान में भारत की घोर से किया गया। उस समय भी उन्होंने भारत सरकार की इस घोषणा का समर्थन किया कि किसी भी परिस्थिति में भारत धरु का उपयोग युद्ध नें लिए नहीं करेगा और यह प्रयोग धनु के शान्तिव्य उपयोग की ही किया जा रहा है। यद्यपि यह वातवन्नी भी उन्होंने दी कि इस प्रकार का प्रयोग शान्ति भी वेदा कर सकता है और धान्ति भी। और वंगा हुआ भी है।
उत्तर प्रदेश घोर उरीमा के हाल में हुए चुनाव में कोई दिखवानी लेने की बात तो थी ही नहीं परन्तु चुनाव के परचात उरीसा की मुख्यमंत्री जब बाबा से मिलने आईं तो उन्होंने सीमांनी सत्यको में सर्वोदय के कार्य को पूरा सहयोग देने की बहा जिस मुख्यमंत्री ने सीधारा किया। बुद्ध साधियों के मन में यह बात आई कि जब तक किसी राज्य व्यवस्था की नीति और दिशा सर्वोदय के

जे०पी० की भूमिका : श्रेय जयप्रकाश नारायण अपने हृदय की सारी वेदना को समेटे हुए और स्वास्थ्य की विवट स्थिति में रहते हुए भी देस की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थिति के प्रति अपनी सवेदन-शीलता को तीव्र से नीचतर बनाये रहे। जब वे पछिनी मकबर में बाबा से मिलने से तब ही उन्होंने राज्यों में होने वाले मुलाषो के संबंध में तरणों के बतव्य के प्रति धाना एक नोट तैयार किया था और उन्हें दिखाया था। उनमें भाषना कई थी कि देस में जो भी प्रगतिधना फैली हुई है, उनमें सरकार की जिम्मेदारी बहुत बडी है और क्योंकि सरकारें चुनाव से बनती हैं, यदि चुनाव ही प्रष्ट भाषा पर सम्भव हो पाते हैं तो उत्तम से कि बिचलने बाणा पन भी दूचित होता है। इसलिए प्रष्टाधार दूर करने में चुनाव की दृष्टि का एक बहुत बड़ा बन्दय है; यह मान कर दिखायी और तरणों को धाराहन किया कि धाना समय में घोर सीमा की समझावें कि जो नियम चुनाव आयोग द्वारा तय किये हैं उन पर पूरा-पूरा पालन हो। सीमा सामाजिक प्रहरी के रूप में इसे देवें। इन दिशा (मिच पृष्ठ ४ पर)

जयप्रकाश बाबू के प्रान्दोलन को लेकर अपने शिबिर में जो बुद्धिभेद पैदा हो रहा है, वह बहुत दुख की बात है। इस प्रश्न को लेकर 'राष्ट्री' के प्रश्न के उत्तर में (दिल्ली भूदान-पत्र १०.६.७४ : पृष्ठ ६.७५) मैंने इतिहास व इतिहास क्रांति में क्या फर्क है, उसका विवेचन किया है। एक ही क्रांति के लिए भिन्न मार्ग मानने के बारे में जो मतभेद पैदा होता है, वह इतिहास क्रांति की अभिव्यक्ति है। इतिहास में उसका स्थान नहीं है। इतिहास क्रांति की विशेषताओं में स्वतंत्रता व कर्मसंन की प्रकिया है इसलिये मन व मार्ग की दूरी जितनी अधिक होगी, उतनी ही उसके लिए परस्पर धारण-धरने की आवश्यकता होगी। इसका अभाव अपने शिबिर में देखकर दुख होता है।

गम्भीरता से सोचें

मैं अपने समस्त साथियों से निवेदन करना चाहता हूँ कि सर्वोदय विचार और प्रकिया के बारे में गम्भीरता से सोचें और मतभेदों के कारण भारत में बुद्धिभेद न पैदा करें। भारत सर्वोदय विचार और प्रकिया क्या है? काङ्ग्रेस सम्मेलन के ऐतिहासिक भागण में विनोबा जी ने कहा था कि सर्वोदय का सत्य बंधनान्वित से भिन्न व इतिहास की विरोधी इस्तंज लोकवाचित का अर्थान्वित है। तब से भारतवर्ष उनके साथ जुड़कर हम सब उसीके प्रयास में लगे रहे।

भूदान से लागे हुएकर, धारणधरने के कार्यक्रम में हथ को बंधनान्वित से भिन्न स्वतंत्र लोकवाचित के मार्ग के धारणधरने की दिशा का रमन हुआ। लेकिन अब तक इतिहास की विरोधी स्वतंत्र लोकवाचित के मार्ग की कोई स्पष्ट कल्पना हमारे सामने नहीं रही। बिहार में जयप्रकाश बाबू ने धारणधरने के माध्यम से जो काम शुरू किया, उसमें इतिहास की विरोधी लोकवाचित का मार्ग कोजना था, और है। उन्होंने उस प्रान्दोलन की मूल्यांकन उसी समय, की जिस समय बिहार की परिस्थिति विफोटक थी और तेजी से प्रवेश के दृष्टि इतिहास के पुनारिचो की ओर झुकती जा रहे थे। ऐसे अवसर पर इतिहास के पुनारिचो का स्वयं ही जाता है कि वह उसके मुकामिल का मार्ग सोधे। शुरू में जयप्रकाश की के मन में वह नीज नहीं थी, जिसके आज

हमारे साथियों को राजनीतिक की गंध मिल रही है। उन्होंने उस समय स्पष्टरूप से कह दिया था कि यही उनसे साथ रहे जो किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य न हो और जो तो दल से स्वागपन देकर प्रायें। और धारण भी वे सब लोगो को समझने हैं कि सरकार बदलने से परिस्थिति नहीं बदलेगी बल्कि परिस्थिति बदलने के लिए पद्धति बदलने की आवश्यकता है।' वे राजनीति के आगूल परिवर्तन की बात करते हैं और साथ-साथ लोकनीति का विकल्प भी पेश करते हैं।

प्रान्दोलन के दरम्यान जब उन्हें लोक में प्रवेश करने मोका मिला तब उन्होंने देखा कि कुछ निहित स्वार्थ वालों को छोड़कर शेष सर्वजन में प्रपटाचार धारि के कारण मरवार विरोधी मन स्थिति दीवना से उभर रही है और उसका साकार रूप विधान सभा भंग करने की माग है। स्पष्ट है धारण देश की मनस्थिति में इस उभाध का लाजिमी परिणाम इतिहासिक विफोट था। ऐसे अवसर

वह विचार भी। मुसलिम समुदाय की भावना को शांतिमय विकल्प की ओर मोड़कर तथा स्वराज्य से ही इन प्रश्नों का हल हो सकता है, यह ममभाकर, उसके लिए रचनात्मक दिशा का निर्देश कर, इतिहास के प्रचंड विफोट से उन्होंने समाज को बचाया। जयप्रकाशजी भी वही कर रहे हैं।

आज बिहार में आग लगी होती

अगर वे तत्कालीन की अभिव्यक्ति के लिए शांतिमय व रचनात्मक विकल्प नहीं प्रस्तुत करते तो धारण की जनता चारों ओर भाग लग, देती और सरकार उसके जवाब में पछापीन की वृद्धि करती होनी। जयप्रकाशजी ने अपने शांतिमय प्रान्दोलन से उस भयकर परिस्थिति का मुकामिल किया। बिहार सरकार के अनेक मंत्रियों ने इस बात को स्वीकार भी किया।

हमारे मित्र कहते हैं, कि 'जयप्रकाश बाबू ने विधान सभा भंग करने की माग करके

जे० पी० ने बिहार की जनता के प्रचंड क्रोध को शांतिमय व रचनात्मक मोड़ दिया है

धारेन्द्र मजूमदार

पर कोई भी इतिहास का पुनारिचो तथा विवेचनीय जिम्मेदार सांघिक, यह माग राजनैतिक है, वह कर जमसे उदासीन नहीं रह सकता है। उसको इस परिस्थिति के मुकामिल के लिए जान की बाजी लगानी पडनी है। जयप्रकाश बाबू ने अपने जीएँ स्वास्व को ले कर उसमें बुद्धक वह बाजी लगा दी है।

गंभीरी ने भी यही किया था

गांधीजी ने भी ऐसी परिस्थिति में ऐसा ही किया था। विलापत का प्रश्न भारत के स्वतंत्रता प्रान्दोलन के लिए कोई प्रश्न नहीं था। लेकिन उस प्रश्न को लेकर इस देश का पूरा मुकामिल समुदाय धरत्यल उत्तेजित हो उठा था जिसके परिणामस्वरूप व्यापक इतिहासिक विफोट अवसर-मारी था। गांधी जीने अहिंसावादी के लिए 'यह स्वतंत्रता का प्रश्न नहीं है' कहकर उससे उभरती रहना समझ नहीं था। बल्कि मानवता के प्रहरी के नाते उसको अक्षान्त स्वयंसेवा का और उन्होंने

अपने को राजनीति में घसीट लिया है।' यह समझता मतल है। उन्होंने जब देखा कि जनता की सांघिक माग यही है, तब यह सरकार जनता की विश्वासपात्र नहीं रह गई है। धारण समाजान में इच्छा विधान होता कि अविश्रवत को परिस्थिति में जनता सहयोगों को वापिस बुना सकती है तो धारण की मन स्थिति में प्रचंड बहुमत से वापिस को मन सतक होती। जयप्रकाश बाबू जैसे स्थिति बंधनान्वित नहीं देखते, धारणकता देखते हैं। इसलिए उनकी वृद्धि से यह मांग जायज है और ऐसी मांग करना राजनीति में प्रवेश करना नहीं है बल्कि यह लोकतन्त्र के सिद्धांत को स्वीकार करना तथा उसके लिए लोकसिखण करना है।

यह गठो है कि हमारे समाज में कई ऐसे साथी हैं जो इस प्रश्न को लेकर जयप्रकाश बाबू के सिद्धांत ही मने हैं। किसी भी काम में नया मार्ग प्रस्तुत करने वालों के लिये

यह स्वाभाविक है। परम्परागत धार्मिकवाद तथा विधानवाद से भिन्न प्रसहयोग का मार्ग प्रस्तुत करने वाले गांधी का भी यही हाल था। अधिकांश राष्ट्रवादी, जिनमें मुद्देबंद, लोक-मान्य तिलक, साहा लाजपतराय, सुभद्र बनर्जी, विपिनचन्द्र पाल, सी० धार० दास आदि नेता शामिल हैं, प्रसहयोग के प्रश्न पर गांधीजी के खिलाफ थे। विलासत के प्रश्न को लेकर लोग बेचल खिलाफ ही नहीं थे, बल्कि नाराज भी थे। देश के बहुसंख्यक राष्ट्रवादी इस प्रश्न को स्वतंत्रता संग्राम के लिए निरिखत रूप से हानिकारक मानते थे। इस लिए हमारे साथियों में पैदा हो रही

प्रगला सत्ताह इसी की समझ और समन्वय का है (पेज २ से जारी)

में कुछ काम भी हुआ। गुजरात के विद्याभियो पर भी इस धाराहून का प्रभाव पड़ा। वहाँ उन्होंने अष्टाध्याय के विलासत धाराहून उठाई। एक धान्दोलन उठा लिया। जे०पी० धपनी और से वहा जाने के उत्सुक नहीं थे परन्तु सर्वोदय के विमो ने यह धाराहून समझा कि इस विद्यापी शक्ति को यदि बहिस्तक मोड़ दिया जा सके तो लोकजीवन शुद्ध करने में बहुत सहायता मिलेगी। प्रत्यय वहा दो दिन के लिए वे गये। गुजरात के धान्दोलन के बाद बिहार में विद्याभियो का धान्दोलन बढ़ता गया और उसने भी धीरे-धीरे विधान समाप्त करने का रूप पकड़ा। बिहार के ही निराली होने के नाते धीरे विद्यापी समुदाय के इस आदवासन पर कि उनके नेतृत्व के बहिस्तक तथा शान्तिपूर्ण धान्दोलन के लिए धपने को उत्सर्ग करने से तयार है, बिहार की हलचल में अवप्रकाश जी ने सक्रिय भाग लिया। धपारि उनको इस बीच प्रोस्टेट के धीरे-धीरे के लिए महीने-सत्रा महीने के लिए बाहर रहना पड़ा और उनकी धनुषस्थिति में अन्य सर्वोदय साथियों ने धान्दोलन का मार्ग-दर्शन किया। धान्दोलन बहुत बढ़ी हद तक धराजनेतिक और शान्तिपूर्ण धाराहून ही भागे बढ़ता जा रहा है। जाने के बाद उन्होंने उतरोत्तर तीव्र कार्यक्रम का प्रस्तावित किया जिसमें धपारिधिक जनशक्ति सहितवा दे सके।

स्वाभाविक ही शासन से संबंधित संस्थाएँ

लेकर परस्पर बुद्धिभेद नहीं होना चाहिए। भागा है मेरे साथी मेरे इस विचार व दृष्टि को ठीक से समझे। धीरे धपिक सफाई की आवश्यकता ही तो मुझसे प्रश्न करके और सफाई कर लेंगे।

मेरा स्वास्थ्य काफी गिर गया था। नेट्टे के पोथे के सेवन से काफी सुधार रहा है। विश्वास होता है, इस साल लोकमान्य शाहा से पूर्व पूरा स्वयं हो जाऊंगा। विभासिक के कारण मैं सर्वे सेवा संघ धपिवेशन में नहीं था सकूया, धपने विचार लिखकर भेज रहा हूँ। (ठाकुर-दास बंग, मंत्री, सर्वे सेवा संघ को लिखे गये एच पय से।)

धीरे मेलागए इस रूप से विस्तित धीरे परे-धान हुए। उनका मानना है कि राजनेतिक दृष्टि से इन कामों को सरकार के सहयोग से ही किया जा सकता था धीरे जब शासन का विरोध करके इन धीजे को लादा जायेगा तब जो वातावरण बनेगा उसमें कोई मिठास नहीं रहे धपेगी तथा सर्वोदय की जो एक वृत्ति 'सर्वोद्यम—धपिरोधेन' है वह नहीं बन पायेगी। इससे जिन संघों में जनता की शक्ति को शासन की शक्ति के साथ जोड़ कर नई समाज रचना के काम सर्वोदय के द्वारा किये जाने के प्रयोग हो रहे हैं, उन पर इसका बुरा धसर पड़ेगा। दूसरी धीरे यह भी सुष्ट विचार बजा कि जो सरकार-परस्पर संबन्धो-हजारो धपों से भारत की जनता में ध्याप है धीरे जिससे उभर कर धपने वरों सदे होने की शक्ति दिताने की बहुत बड़ी जरूरत है, उस दृष्टि से जनता की ऐसी आगुनि जिसमें वे गलत कामों का विरोध करे धीरे जिसमें जनता का धपिक संबेदनशील तत्व तरए धनुआई करने वाले बनें—यह प्रसन्नता धीरे स्वागत की बात है।

जी अय्यरबाग जी के साथ बट्टिआई यह रही कि उनके बदलते हुए विनासमान विचारों को न समझ कर घुसने राजनेतिक दर्शन के (तावर पौलिटिक्स) के धारापर पर ही उनको मानने की कोशिश की जाती है। मुद्रान-सूत्रक, धामोवीध-प्रधान धपिहाक कान्ति लिए जनता जीवन धपणित है ऐसे अय्यरबाग

धपवा निकटगामी फल के मोह में साधन धीरे साध्य के बीच कोई समझौता करने यह धसंभव बात है। किसी भी परिस्थिति में धाम जनता प्रसहयोग न बने। जो धपयाय, धपवाचार अथवा धपनीति होती हो उसका वह शान्तिपूर्ण मुकाबला कर सकें—यह शक्ति ही हर मुश्किल परिस्थिति में उभरती ही चाहिए। यह धपय संभव है कि जो सोय 'धज' की परिस्थिति के ऐसे धान्दोलन के माध्यम बनते हैं, उनकी धपनी कमजोरियों को देखते हुए कुछ सहूलियतें उनके लिए की जाएँ।

धपनी जिन बातों का धाराहून जे० पी० में किया है वे हैं: (क) बिहार में सरकार धसम सिद्ध हुई है इसलिए वह पुनः जनता से मोट हासिल करे। (ख) सरकारें धीरे उनके होने वाले पुनाय सही धीरे शुद्ध ही इसकी जिम्मेदारी ऐसे धपने को उठानी चाहिए जो न किसी दलगत राजनीति में हैं धीरे न जिनका धपना कोई निजी स्वार्थ है। ऐसे उस्ताही निर्मल-मन के नवयुवक जनहित की दृष्टि से बन्ध उठाने की संभारी रल नर लोक जीवन शुद्धि के लिए सर्वे धीरे ह्वाके लिए सात भर का समय धपनी पढ़ाई में से निकालें। (ग) गुजरात की पदति धीरे शासन की ध्यवस्था में सुधार के लिए समय-समय पर विभिन्न जानकार लोगों धीरे धपेदियों को द्वारा जो सुझाव दिये गये हैं उन पर धीरे धपि-तिशीम धसल किया जाय अथवा देग की स्थिति उतरोत्तर धपिक अष्टाध्याय की धीरे बढ़ती धपेगी।

इस प्रकार अय्यरबाग जी धात्र की जो देशधपनी परिस्थिति है, उनमें लोक-धान्दोलन का मार्ग पकड़ रहे हैं धीरे पू० सिन्हा धुद्रगामी दृष्टि से सभी भी साथ लेते हुए बंते लोक-शक्ति धारागार ही इसका चिन्तन धीरे ध्यान कर रहे हैं। सर्वोदय बयज में धीरे उसके सहानुभूति रखने वाले समाज में तथा धपनी सभी लोगों में इस धीरे धपनी धान्दोलन हुआ है कि इन दो महान विभूतियों के नाम से जुड़े धान्दोलन धीरे विचार परस्पर पूरक हैं या नहीं। धपला साठ्याइ इसी के बसाब को लिए, इसी की समझ के लिए धीरे इसी के समन्वय के लिए धपने में होने वाली बैठकों का है।

मशीनों ने आदमी को गुलाम बना दिया है

—इवान द० इलिच—

फोर्ड एक शान्दी से हमने यह बोधिका की है कि मशीनों ने आदमी के लिए काम करे घोर आदमी को अपने जीवन में उनका उपयोग करना सिखाया। परिणाम यह हुआ है कि मशीनों काम नहीं करती घोर लोग इस तरह को जिन्दगी जीना सोच-सोच कर ऊबने लगे हैं जिससे उन्हें मशीनों से सेवा लेने के बजाए मशीनों की सेवा करने पड़ती है। यह प्रयोग जिस आधार पर किया गया था वह आधार छोड़ने का समय आ गया है। माना गया था कि मशीनों का जायेगी तो आदमी को गुलामो नहीं करनी पड़ेगी। जो काम पहले गुलामो से लिया जाता था, मशीनों उस काम को करेगी। अब प्रत्यक्ष हो गया कि मशीनों ने गुलामो की जगह नहीं ली, आदमियों को गुलाम बनाया है। उद्योगों की प्रगत के साथ जो उपकरण घोर भोजन प्रकृत से आ रहे हैं उनके आधिपत्य से अधिनायकवाद के प्रतर्गत काम करने वाला सर्वथा मजदूर, पूंजीवादी पद्धतियों में पतने वाली भी, कोई भी अपने को बचा नहीं पाता।

इस समस्या का एक ही हल है और वह यह है कि हम आदमी को भोजनो से जोड़ने के बजाए, आदमी को ऐसे भोजन दे दें जिनकी मदद से वह अपने प्राण धरती रचि के कामो को पूरवी से घाजाम देने में समर्थ हो जाय। इस तरह भोजनो को आदमी के बीच गुलाम घोर मानिक का समय समय हो जायेगा घोर हर व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वतंत्रता बरतने का ठीक दायरा मिल जायेगा। प्राय आदमी को जबरन इस बात की है कि उसे ऐसे नये भोजन मिले जिनसे वह कुछ काम से, ऐसे भोजन न मिलें जो उसके काम से। इसके लिए बहुराशीलता का तकनीकी मान में साक्षात् समावेश करना पड़ेगा। तब हम देखेंगे कि हर काम करने वाले में बहुराशीलता घोर कार्यकुशलता आयेगी, घोर तब वे गुलामो की तरह काम में जुटे रहने वाले एक दूसरे प्रकार के र्थ बनकर नहीं रहेंगे।

मेरी मान्यता है कि समाज की संपन्नता

नये गिरे से ही की जानी चाहिए घोर इस नवसगठना का उद्देश्य होना चाहिए ऐसे स्वतंत्र व्यक्ति और स्वतंत्रव्यक्ति समूहों का निर्माण जो मनुष्य की उन आवश्यकताओं की पूर्ति करें, जिन को उसने स्वयं सोच समझ कर प्रावश्यकता माना है। रचि यह पूर्ति की उत्पादन के एक ऐसे ढंग से हो जो हमारी प्राय की रूढ़ि पद्धति से भ्रमण और नयो हो। प्राय का धोषोमिक समाज घोर उसकी सस्थाए इससे विलगुल विपरीत दिया मे उत्पादन कर रही है। यय को शक्ति जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, समाज में व्यक्ति का स्वात योग्य होता चला जाता है घोर वह एक घोर स्वयं मशीन घोर दूसरी घोर मशीन से बनी हुई मनुष्यादी वस्तु का उपयोग बनने का विवग हो जाता है। व्यक्ति को चलन फिरने, रचने, एक-दूसरे से व्यवहार करने घोर सभी-नभी अपने को स्वयं रचने के लिए ओजारो की जरूरत पड़ती है। प्रत्यय व्यक्ति इन सारी बातों को नहीं कर सकता परन्तु भ्रमण-अवग सभ्यताओं में वह भ्रमण-ईय से एक-दूसरे की सेवा पर, काम या उत्पाद, निर्भर करना है। जैसे कुछ लोग भ्रमण में आदमिर्भर नही होते। उन्हें दूसरा का पैदा किया हुआ अन्न लेना जरूरी हा जाता है घोर कुछ लोगों को अपने भोजन के लिए दूसरे से लेना या बालकेपरिण लेने की जरूरत पड़ सकती है। विन्तु याद रखना चाहिए कि ऐसा कोई लक्ष्य समाज में नहीं होना चाहिए जो केवल लेता ही रहे। उसे जिन चीजों की जरूरत पड़ती है, उरमें उस विन्तु न किसी चीज का उत्पादक हर व्यक्ति या व्यक्ति-समूह के लिए होना आवश्यक है। इन चीजों का उत्पादन भी उन्हें अपनी रचि के धनुवार करना चाहिए घोर इस तरह करना चाहिए कि उनकी रचि दूसरो की भी मुक्तिपूर्ण मासुम पड़े घोर वे लोग भी उन वस्तुओं का उपयोग करने समय आनन्द का अनुभव करें। अर्थात् जो उत्पादन किया जाय, वह आनन्द देने वाला ही घोर जो उपयोग किया जाय उसमें भी उपयोग को सहज बनाया जा

अनुभव हो। कई घनधान देशों में कैंदियो की भी ऐसी अनेक चीजें मुहैया होती हैं जो उन्हो के परिवार के स्वतंत्र व्यक्तियों को मुहैया नहीं होती !- विन्तु ये कैंदो चीजें किस प्रकार बननी चाहिए या किस प्रकार की बनी हुई चीजें इनके मन की हैं, यह व्यक्ति नहीं कर सकते। इसलिए आवश्यक चीजें घोर सेवार्थ प्राप्त होते हुए भी वे एक सत्रा भोग रहे होते हैं, जिनमें आनन्द-विहीनता की मजा बहना चाहूंगा। वे अपनी रचि से उदासीन, कंठे उपभोक्ता हैं।

मेरे ऊपर यह भूषित करना चाहता है कि उत्पादन आनन्दपूर्ण होना चाहिए घोर उनका उपयोग भी। ये दोनो वस्तु एक-दूसरे पर आधारित हैं। भ्रमण उत्पादनु आनन्द-विहीन होता तो उपयोग भी बेशा हो आनन्द विहीन होगा। उपयोगिता अपनी ओर से उत्तम आनन्द के तत्व नहीं डाल सकता। जबकि मैं यह चाहता हू कि उत्पादन इस प्रकार का हो कि वह व्यक्ति-व्यक्ति में सर्वनाशक-व्ययोग पैदा करे घोर सहयोग के बावजूद व्यक्ति अपने को स्वतंत्र महसूस करे। सहयोग केवल व्यक्तिगो से नहीं सारे वातावरण में से निश्चता हुआ-ना महसूस किया जाना चाहिए प्राय ऐसा नहीं होता। प्राय तो ह्रमण के मुताबिक मशीन के छन्द पर व्यक्ति को काम करना पड़ना है, घोर जिस वातावरण में काम करना पड़ता है, वह वातावरण न परेश होता है, न आत्मीय, न प्राकृतिक। आनन्द का श्योन व्यक्तिगत स्वतंत्रता में घोर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्राानन्दयय श्योन जब तक किसी प्रकार की श्यण छोटी-नही व्यक्तिगत धाराओ से नहीं मिलता, तब तक समाज में किसी वास्तविक नैतिक शक्ति को उद्भा-वना नहीं होनी। मेरा निदिचन मन है कि यदि किसी समाज के उत्पादन क्षेत्र में प्राानन्द का परिणाम घीरे घीरे कम होना चला गया तो धोषोमिक उत्पादन के बल पर वस्तुएं बाहे जिसनी बढ़ जाय, वे समाज के प्र हाथ की नहीं बढ़ा सकतीं, उसे कोई गीरवस्तु संरक्षित घोर सम्बन्धी की चार में घीर

से प्रेरित न हो घोर न उन्ने ऐसी जबर-
दस्ती करना सिलसबा जाय घोर न यह
दमिच्छापूर्वक किसी के लिए चीजें बनाने के
लिए बाध्य किया जाय ।

वैज्ञानिक तकनीकों का जब इतना विकास
हो चुका है तो धीमागो के उपयोग को
धानन्दम बनाया जा सकता है । इसे समाज
प्रबन्धक प्रतिपाद्यता मानें । न्यायपूर्ण जीवन,
वस्तुओं को वितरित करने और सहयोग की
भावना को बढ़ाने के लिये विज्ञान ने धनेक
नई ऊर्जा शक्तियों के स्रोत खोज दिये हैं ।
यदि हम इस समय परस्परिक स्वभाव में पड़
जायेंगे तो वह हमें विनाश की घोर लो
पायेगा । यदि केन्द्रीय सत्ताएं उनकी मानिक
हो गईं तो समाज अधिभार की बनि चड
आदिनी घोर उत्पादन बाधे जितना धनो न
हो जाय, समाज वितरण एक सपना बनकर
रहू स्वधिया । सर्व-संगत धानन्दपूर्ण जीवन
करने वाले धीमा सहयोग पर प्राथमिक
सामाजिक ग्याय व्यवस्था के लिए एहदम
जहरी हो गए हैं । तथापि इतना यह सम्-
भव नहीं समझना चाहिए कि जब हम धान
की व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था में बदल
करेंगे तो हमसे किसी बर्ग या वर्गों के अस्तित्व
पर आघात नहीं लगेगा । धान लोगों और
उनके धीमाओं के बीच का सम्बन्ध धानधारी
रूप से विकसित हो चुका है । पात्रिस्तानियों
का जीवन बनाया के मेहूँ का महत्ता है और
ग्युमार्क के निवासियों का अस्तित्व दुनिया भर
के मैसजिन साधनों के योग्य पर अवलम्बित
है । हम जिन समाज की कल्पना कर रहे हैं,
जब वह जन्म लेगा तो आज की सर्वभौमि-
कता को देखते हुए उसका भूमे पात्रिस्तानियों
का भारतियों पर घोर इसी प्रकार ग्युमार्क
के निवासियों पर बुरा प्रसर पड़ेगा । यह
बहुत संभव है कि धान की धति उद्योगजाल
उत्पादन पद्धति से धानन्दपूर्ण उत्पादन
पद्धति वाली व्यवस्था में मनुष्य काति प्रत्य-
काल में ही प्रवेश कर जाय । वैज्ञानिक प्रगति
को देखते हुए इस बात की प्रावण्यकता है कि
उत्पादन पद्धति का यह परिवर्तन एकाएक न
हो । हमें समझे नहीं कि अस्तित्व, वर्य घोर
समुदायों को सारी दुनिया में वस्तुओं के धारी-
नित उपभोग पर हान्यत सदाता पड़ेगा ।

पश्चिम हिमालय सेवा संघ के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन

सुरेश ठाकरान

पश्चिम हिमालय सेवा संघ कार्यकर्ता
सम्मेलन धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में १७
जून से १६ जून तक हुआ । उत्पादन प्रदेश
राजस्व मंत्री देवराज महाजन ने घोर समापन
मुद्रामंत्री डा० परमार ने किया । सम्मेलन
में प्राये ७५ कार्यकर्ताओं ने तीन दिन की
तीन बैठकों में विद्युत् साल के काम का
मूल्यांकन व धन्यते साल की योजना बनायी ।
उत्पादन प्राणण में देवराज महाजन ने
हिमालय सेवा संघ के सामंजस्य पर धारा-
प्रकट करते हुए कहा कि संघ को कुछ
रचनात्मक काम करने चाहिए जिससे युवागत
को समाप्त किया जा सके । भाषण के एक छोटे
से हिस्से में उन्होंने छोटे उद्योगों, सामाजिक
व रचनात्मक कार्यकर्ताओं धारि का उल्लेख
किया, शेष अधिभार भाग उन्होंने राजनीति
को दे दिया, जिसका हिमालय सेवा संघ से
कोई सम्बन्ध नहीं था ।

धर्मशाली प्राणण में हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने हिमालय सेवा
संघ के साथ विश्व विद्यालय का सम्बन्ध हद
करते पर जोर दिया ।

सम्मेलन में विद्युत् वष जो १५ सिका-
रिमें की गयी थी, उन पर सम्बन्धित कार्य-
वर्तमान व्यवस्थाएं इस परिस्थिति का एका-
एक रीतिपर नहीं करेगी । इसे ती केवल
साधारण व्यक्तित्व स्वीकार करेगा घोर तब
स्वीकार करेगा, जब वह धानन्द, शान्ति,
मुक्ति देने वाले स्वयं घोर-एक दूसरे के सह-
योग को समीन की युवागी घोर बोरे उप-
भोगजाव पर तरजीह देना सीखने लगेगा ।
आज के उद्योगामुख मन को विकेंद्रिकरण
की दिशा में ले जाना है । घोर यह किसी
प्रकार के विधि नियमों से सम्भव नहीं होगा,
साधनों व । घीरे-घीरे सीमित करने से
होगा ।

(इवान ब० इलिन की पुस्तक 'व हुसत
धाम् कर्नाधिकारिणी' के एक पैक के अंश
का स्वतंत्र रूप ५० प्र० लि० द्वारा)

कर्ताओं ने स्पष्ट पेश की । सुची राधा भट्ट
बंधी प्रसाद, सुरेश बजाज, श्री मयानी, पंडित
भास्कराज, पान्दराय रहुड़ी, योगेश बहुगुणा,
डा० भट्ट घोर सुशीला जैन ने धन्यते-धन्यते
बाणों की जानकारी दी ।

दूसरे दिन की बैठक में अग्रते वष की
रूपरेखा तैयार की जाने वाली थी । पहाड़ों
ने धामानी स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह की
तैयारिया भी इस कार्यक्रम में की । संकित
इसे लेकर कार्यकर्ताओं में काफी बहुत हुई
जिसमें व्यक्तितगत धारोप तक बात जा पहुंची ।
कुछ कार्यकर्ता 'स्त्री शक्ति जागरण' नाम को
'लोक शक्ति जागरण' में बदलना चाहते थे ।
दूर-दूर पहाड़ी गावों में काम कर कार्य-
कर्ताओं को धाम विकास आदि बाणों में बँक
से कर्ता की सुविधाएं लेने में कई बार
बहुत दिक्कत धार्यी है । उनको इस सिलसिले
में जानकारी देने के लिए धामांत्रित किये गये
थी धामांत्रित ने बैकिंग धण प्रणाली को
सर्विस्कार सयक्याय ।

अंतिम बैठक में कुछ कार्यकर्ताओं ने
समय की कमी महसूस की । कुछ ने 'आनन्दम
कर अवसर नहीं दिया गया, ऐसा भी माना ।
समापन समाधी में पूंकि मुष्कमंजी परमार
उपस्थित थे, इसलिये अलग-अलग क्षेत्रों में
काम कर रहे कार्यकर्ताओं को एक बार फिर
पारत बाणों की जानकारी उनके कपाल से
रखनी पड़ी । इसमें डा० अरम (नागालैण्ड)
देवेंद्र कुमार (हिस्ती) लक्ष्मी धार (हि० अ०)
रूपनारायण (नमा बंदी) श्यामबहन (स्त्री
शक्ति) धी दुने (सारी धामांत्रित) धारि ने
हिस्सा लिया ।

मुख्य मंत्री परमार ने समापन करते हुए
हिमालय सेवा संघ के कार्य पर सुची मांदि
भी घोर संस्था की प्रगति की कामना की ।

समापन से पहले सभी प्रतिनिधियों ने
सही निवास कर रहे डिम्पटी बर्मनेला दसा-
नामा से भेंट की घोर उनका धारीवार्द प्राण
किया ।

ग्रामस्वराज्य से लोकस्वराज्य की ओर

बढ़ी प्रसाद स्वामी

बिहार में श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे प्रदेश व्यापी जन आन्दोलन ने सरकार, समाज तथा सर्वोदय के सामने कई बुनियादी प्रश्न खड़े कर दिये हैं। इन प्रश्नों पर देश भर में चिन्तन शुरू हुआ है, यह समाज परिवर्तन के लिए शुभ चिह्न है। आन्दोलन को सब अपनी दृष्टि से प्राक रहे हैं। सरकार भारतीय है कि यह आन्दोलन लोकतन्त्र को ही समाप्त कर देगा और प्रति-क्रियावादी शक्तियाँ जो बल पहुंचायेगी। ग्राम समाज में इस आन्दोलन के प्रति प्रथम उत्साह है। उसे इसमें प्राणा की नई किरण नजर आ रही है। सर्वोदय कार्यक्रमों इस आन्दोलन को हर पहलू से हिंसा प्रशिक्षण की कसौटी पर कस रहे हैं। कुछ ऐसे ग्राम स्व-राज्य की दिशा में व्यापक व व्यावहारिक कदम मान रहे हैं और कुछ नहीं। कुछ लोग टाउन्स बुन्डि से सर्व सेवा संघ के निर्माण का इन्तजार कर रहे हैं, कुछ बाबा इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं इस पर ध्यान भेजित किये हुए हैं।

देश भर में करोड़ों परिवारों के हस्तगत व साक्षरता कल्पने से लाखों गांवों में ग्राम-दान से ग्रामस्वराज्य के विचार को मान्य किया है। सरकार व करीब-करीब सभी राजनैतिक दलों ने इस विचार का स्वागत व समर्थन किया। प्रत्येक प्रदेशों की सरकारों ने ग्रामदान नियाज भी बनाया, जिनके अनुसार देश में हजारों गांव ग्रामदान एग के अन्तर्गत कार्यरत हैं। इन गांवों में ग्राम स्वराज्य के रूप में लोक स्वराज्य की शुरुआत हो चुकी है। यह लोक संघ की वास्तविक बुनियाद है। लोक स्वराज्य के इस बुनियादी कार्यक्रम को बिहार व देश के अन्य प्रदेशों में विकास खंड स्तर व जिला स्तर तक साकार करने के सघन प्रयास विद्यमान हैं जो चल रहे हैं। लोक संघ व प्रतिपक्ष द्वारा नीचे से ऊपर तक लोक भाव की व्यवस्था से मुक्त होने वाले गांवों तथा पंचायत वास्तविक लोकतन्त्र की लोक स्वराज्य के रूप में विकसित करना इन प्रयोगों का अन्त उद्देश्य है, ताकि वास्तविक विकेंद्रित लोकतांत्रिक समाजवाद कायम हो

सके। इन बुनियादी प्रयोगों के साथ-साथ सरकार ने गरीबी व बेकारी दूर करने का नारा दिया तथा शीघ्र शोषण समाप्त कर समाजवाद को साकार करने के कई महत्वपूर्ण कदम उठाये। इन कदमों के पीछे न लोक समर्थन या न लोक सकल्प। प्राप्त करने वाली पार्टी ने समझा कि वे बिना जन समर्थन व सहयोग के, सरकारी बजट-कारियों के सहयोग से ही इन उद्योगों को सफल कर लेंगे। इसलिए एक के बाद एक वे नये-नये कदम उठाते ही चले गये। परन्तु भूमि से लेकर अनाज के राष्ट्रीयकरण तक के कोई कदम सफल नहीं हो पाये। गरीबी व बेकारी हटना तो दूर रहा, जीवनोपयोगी वस्तुओं का अभाव ही गया। वैदेशीय व अन्धकार चरम सीमा पर पहुंच गया। सरकार ने ज्यों-ज्यों इलाज करते-सा प्रयास किया, स्थिति-स्थिति बड़ता ही गयी। इस क्षारी परिस्थिति ने जनता के लिए जीना दुर्लभ व अशुभ। अन्ध ही अन्ध जनता में भी मध्यवर्ग प्रसक्तियों की प्रायः जल रही थी। यह भाग सर्व प्रथम गुजरात में प्रकट हुई, जहां सरकार की शक्ति पर जनता की शक्ति की पहली जीत हुई। गुजरात के बाद बिहार में भी जनता के संतोष ने उपर्युक्त कारण किया। तीर्थकोट व ग्रामनियंता ता तांडवनूय भारम्भ हुआ। परन्तु जे० पी० ने तत्काल अपने सर्वोदय समर्थनों के सहयोग से बिहार के आन्दोलन को अहिंसक मोड़ देकर बिहार को भरम होने से बचा लिया। बिहार की ग्राम जनता व छात्रों के प्राग्रह पर जे० पी० ने जो यहां के जन आन्दोलन को नेतृत्व देना स्वीकार किया है उसका हमें ही नहीं बल्कि सरकार व सभी राजनैतिक दलों को हार्दिक स्वागत करना चाहिए था। क्योंकि प्रायः सभी शासन व्यवस्था का अन्तर्गत व आधागत विधान सभा का अन्तर्गततांत्रिक ढांचा तोड़ना आन्दोलन का कोई मुख्य उद्देश्य नहीं है। बल्कि वह तो वास्तविकता लोक प्राधारित पंचमुक्त लोकतन्त्र की स्थापना है। लेकिन अधार्थिकता को कायम रखने वाले इसकी बलना ही नहीं कर

सकते। इसलिए वे जे० पी० पर प्रतिनिध्या-वादी व लोकतन्त्र की समाप्त करने का आरोप लगा रहे हैं। जे० पी० का यह प्रयोग इस देश को ही नहीं बल्कि दुनिया को पाटीतन के विकास के सोचवत्र की धोर बनने की नहीं दिया देगा।

हमें समझ में नहीं आता कि सरकार विधान सभा भंग करवाने के कार्यक्रम से जनता अभ्युत्थित क्यों है। जब भी जनता दल नयन्त्र परड़ता है सरकार तत्काल विधान सभा भंग कर राष्ट्रपति मानन कायम कर देती है तो फिर जिस सरकार को समाज अपने मनदान से बनाता है, उसे अपने प्रति-निधि को वापिस बुताने का अधिकार क्यों नहीं? हर मतदाता को अपने प्रतिनिधि से जवाब तलब करने व उसे अपने पद से हटाने का प्रादेश देने का पूर्ण अधिकार है चाहे वह प्रायः के सविधान में हो या नहीं। जनता ने इस अधिकार का अब प्रयोग करना शुरू किया है। मतदाता इस अधिकार का प्रयोग अहिंसक ढंग से कैसे करे पड़ती तो जे० पी० व सर्वोदय कार्यकर्ता बिहार की जनता को समझा रहे हैं और वह भी जनता के प्राग्रह व भाग पर।

यहां कहीं नहीं व्यवस्था कायम करनी हो, यहाँ पुरानी व्यवस्था से तो मुक्त होना ही पड़ेगा। यह सही है कि पंच मुक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था अभी तक कहीं नहीं आ रही इसलिए सरकार व समाज को यह भी वास्तविक व प्रथम स्तरीय लगती है। इसके लिए सर्व-पंच लोक शिक्षण का प्रवर्धन है। इस समय बिहार के जन आन्दोलन को दो काम साथ-साथ करने होंगे—प्रायः सभी शासन व्यवस्था को लोकतांत्रिक ढांचा समाप्त करना तथा लोक शिक्षण द्वारा नई पंचमुक्त समाज व्यवस्था कायम करना। इस प्रयोग के वास्तविक लोकतन्त्र का विकास होगा, शासन व शोषण से समाज मुक्त होगा। सभी का ग्राम-स्वराज्य नीचे से ऊपर तक लोक स्वराज्य के रूप में विकसित होगा। ऐसे प्रयोगों की लोकतन्त्र की समाधि, प्रतिनायकवाद की स्थापना व प्रतिनिध्यावादी शक्तियों को प्रतिस्थापन देना मानना वास्तव में प्रतिप्रम नहीं तो क्या है?

ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य की सकलता

हर घर तक पहुँचने की व्यापक तैयारी

निर्मला देशपाण्डे

पिछले साल मार्च में पवनार में आयोजित स्त्री-शक्ति संगठन में वह तय हुआ था कि हर साल गांधी-जयंति सप्ताह, स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के रूप में मनाया जाये। उसके अनुसार इस साल दो से षाठ अक्टूबर तक महिला-पदयात्राओं का व्यापक आयोजन किया जा रहा। गत वर्ष देशभर में ३०० पदयात्राओं का आयोजन रखा था। महिलाओं के मद्दुत उग्रह के कारण ५०० टोलियाँ निकली, जिसमें ५००० बहनों ने हिस्सा लिया। इस साल देश के ६०० प्रखंडों में ५,००० टोलियाँ पदयात्रा करेंगी। इसके लिए अभी से सुव्यवस्थित योजना और प्रदेशीय स्तर का संगठन बनाने के लिए निर्मला बहू ने ये सुझाव दिये हैं :

एक : प्रदेश-स्तर का दो-तीन दिन का महिला शिविर या समेलन प्रेक्षित जुलाई तक प्रथम आयोजित किया जाये, जिसमें प्रदेश-स्तर की व्यापक योजना बने। शिविर में प्रदेश की सर्वोच्च तथा रचनात्मक कार्य करने वाली 'हस्तुर्बा' ट्रस्ट, समस्त महिला संगठनों की प्रतिनिधि, स्त्री-शक्ति कार्य में दिलचस्पी लेनेवाली प्रध्यापिकाओं शिक्षिकाओं प्रबंध सभाज सेवा बोर्ड आदि में काम करनेवाली बहनों आदि को बुलाया जाये। बीमेन्स काफ़े 'रस', ग्रामीण सभ, युनिवर्सिटी बीमेन्स केंद्र-खान तथा नगर-घामों के महिला-संस्था के द्वारा काम करनेवाली सभी बहनों से संपर्क किया जाये।

दूसरे शिविर में प्रदेशीय स्तर की समिति तथा प्रदेश के विभिन्न भागों के स्तर पर प्रथम-प्रथम समितियाँ बनाई जायँ।

तीसरे : विभागीय स्तर पर भी दो दिनों साथी मोर्चे पर जाना चाहें उन्हें जाने के लिये तैयार रहना चाहिए। साथ साथी धरने-धरने क्षेत्र में बिहार के जनप्रान्दोलन की दुरी जान-कारी देते हुए ग्रामस्वराज्य से लोकस्वराज्य का पूरा बिचार व्यापक लोक शिक्षण द्वारा समझाएँ और जहाँ-जहाँ जनप्रान्दोलन आरम्भ हो उसे दृष्टिक लोक शक्ति से सफल बनाते हैं सक्रिय सहयोग दें।

के शिविरो का आयोजन किया जायें, जिसमें हर जिले की प्रतिनिधि बहनों को बुलाया जाये। हर जिले में संगठन पर दायित्व दो-एक बहनों को सौंपा जाय। यह काम प्रेक्षित प्रगस्त तक पूरा हो।

चौथे : हर जिले में जिला-स्तर-पर एक शिविर का आयोजन किया जाये, जिसमें हर जिला के प्रतिनिधि बहनों आयें। ग्रामदानी गांवों की महिलाओं को जरूर बुलाया जाये। हर जिला में पदयात्रा-टोली में शामिल होनेवाली बहनों की समिति बनाई जाये। ऐसी बहनों के प्रशिक्षण-शिविर सितम्बर १५ तक चलाये जायें।

पाँच : स्त्री-शक्ति जागरण के बिचार का व्यापक प्रचार किया जाये। पदयात्री बहनों के लिए मार्गदर्शक-स्तुतिबाएँ जुलाई में ही प्रकाशित की जायें। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में तथा रेडियो पर स्त्री-शक्ति जागरण कार्य, तथा पदयात्राओं के बारे में समय-समय पर लेख निकलें। ११ सितम्बर दिनांक-अवधि के दिन, या दो अक्टूबर के दिन 'स्त्री-शक्ति-जागरण' विशेषांक निकालने के लिए समस्त पत्रिकाओं के संपादकों से निवेदन किया जाये।

छह : दो अक्टूबर को महिला-पदयात्रा का प्रारंभ बड़े समारोह के साथ हो। उसके लिए प्रचार आदि की प्रच्यो योजना बने। पदयात्राओं के लिए परचे, पोस्टर आदि तैयार किये जायें।

सात : पदयात्राओं के अंतिम दिन याने षाठ अक्टूबर को हर जगह विशाल महिला समेलन आयोजित किये जायें, जिसमें स्थानीय संगठन तथा स्थायी कार्य योजना बने।

व्यवस्था की कुछ कठिनाइयों के कारण आगामी १५ जुलाई का प्रेक्षित प्रकाशित नहीं हो पायेगा।

—सचिव
व्यवस्थापक यूनान-युव

के लिए जिन सरकारों ने ग्रामदान कानून बनाये वे ही सरकारें आज ग्रामस्वराज्य के इस व्यापक रूप लोक स्वराज्य का समर्थन व सहयोग करने के बजाय विरोध कर रही हैं। इससे स्पष्ट है कि ग्रामदान ग्राम स्वराज्य को वे एक मुधारवादी कार्यक्रम ही माने हुई थीं। वे परिस्थिति परिवर्तन वास्तव में नहीं चाहतीं। अगर सरकारें गांधीजी के विचार में कुछ भी धारणा रखती हैं तथा राजनैतिक दल वास्तव में अपने देश में शोषितों को बचाना चाहते हैं तो उन्हें विनोबा के सर्वोदय समाज रचना के पूरे विचार को एवं बिहार में जनशक्ति के आधार पर जे० पी० के नेतृत्व में चल रहे प्रान्दोलन को समझना ही नहीं होगा, बल्कि सक्रिय सहयोग देकर सफल भी बनाया होगा।

हम सभी सर्वोदय कार्यकर्ता पिछले १-५ वर्षों से बराबर इस खोज में लगे हुए थे कि सर्वोदय समाज रचना का प्रान्दोलन जनप्रान्दोलन का रूप कैसे ले। इसके लिये देश भर में व्यापक लोक शिक्षण के साथ-साथ कुछ सघन शोधों में ग्रामस्वराज्य को साकार करने के प्रयोग भी आरम्भ किये। परन्तु प्राज की दायपूर्ण समाज-व्यवस्था के कारण उसमें हम कोई खास प्रगति नहीं कर पाये।

परन्तु दूसरी तरफ दायपूर्ण समाज व्यवस्था से पीड़ित जनता स्वयं अपने ढंग से ही उठ खड़ी हुई। गुजरत में छात्र व शिक्षक धनुषा बने तथा बिहार में छात्रों के साथ युवा समाज ही उठ खड़ा हुआ। उन्होंने जे० पी० के नेतृत्व की व सर्वोदय वालों से सक्रिय सहयोग की मांग की। मेरे विचार से उनके मांग न करने पर भी हमारा शांति सैनिक व लोक सेवा के नाते कर्ज था व कि हम उत्काल सारी परिस्थिति को हिलाते महिषा की ओर मोड़ते तथा हमारे ग्रामस्वराज्य के विचार को लोकस्वराज्य के साथ जोड़ते। जे० पी० व बहनों के सर्वोदय कार्यकर्ता प्राज यही ही कर रहे हैं। ऐसी शूरत में मुझे नहीं लगा कि हम हमारे बुनियादी कार्यक्रम से हटे हों व न कोई सांख्यिक भूल कर रहे हों। सभी सर्वोदय कार्यकर्ताओं, रचनात्मक कार्यकर्ताओं को ही हमारे संगठनों को बिहार के जन प्रान्दोलन का दृष्टिक समर्थन ही नहीं बल्कि सक्रिय सहयोग कर रहे सफल बनाया चाहिए। न।

अब अर्थवैध ठेकों पर भी गिरफ्तारियां

बंब शराब के ठेकों और कारखानों पर तो सराबबंदी सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया ही जाता है, लेकिन अब अर्थवैध ठेकों पर भी यत्न कीर्तन करते सत्याग्रही बकड़ जा रहे हैं। राजस्थान नशाबंदी समिति के कार्यालय सभी पूर्णचन्द्र पाटणों द्वारा प्रदेश मुख्यमंत्रों को लिखे एक पत्र के पं. अंत सराब और सरकार के बीच पत्रव. रहे नये सम्झौतों की और इगारा करते हैं।

जयपुर शहर में शराब के अनेक अर्थवैध ठेके सरकार को घोषित नीति के विपरीत चलाने पा रहे हैं। उनमें से एक ठेका गज-गोरी बाजार में शादुल्लाह की नाम का है, जो मंदिर से सटा हुआ है और मसजिद के भी नजदीक है। यह ठेका नगर परिषद की जमीन पर आम सड़क पर चलता है। इससे मोहम्मद के लोग बहुत परेशान हैं। जिनायीश महोदय, जयपुर तथा प्राय. स्वयं की सेवा में मोहम्मद के लोग उपरिचय हो चुके हैं। उन्हें प्राश्नान भी ठेके को छोड़ हटाने के बारे में मिले हैं। स्वयं ठेकेदार ने भी मोहम्मद को धाम सभा में १ जून तक वहां से ठेका हटाने की मोहम्मद मांगी थी। किन्तु अल्पकाल बाद ही बात है कि सारे आदवासनों के शत्रुत्व वह ठेका नहीं हटाया गया। धन दस्ती के लोगों को वहां शराब की बिनी पर रोक लगाने के लिए घरने एवं सत्य 'का कार्यक्रम चालू करना पडा। आशा थी कि बस्ती के कल्याण के इस प्रयास न रा.ज्य सरकार स्वागत ही करेगी। पर हुई कुछ उरठी बात। वहां रविवार २ जून, '७४ को शांति पूर्वक घरने पर बैठे हुए कीर्तन कर रहे भाई बहनों को बराने के लिए पुलिस द्वारा बड़ा शक्ति प्रदर्शन किया गया।

घायी रात के समय जब पुलिस व धाम जनता के चने जाने के बाद वहां अज्ञान करने वाले लोग ही बच गये तो करीब ड्राई बजे सा. १० सी. के जवान बड़ी सत्या. में घायी और ५० लोगों को गिरफ्तार कर के ले गये।

इनमें राजस्थान नशाबंदी समिति के उपाध्यक्ष श्री रामचलाम जी शरणाए एवं पांच सत्याग्रही कार्यकर्ता भी शामिल थे। यह अल्पकाल सेव की बात है कि गिरफ्तार किये गये लोगों के साथ जोकर मारना, बाल खीचना, धोर धक्का मुक्की भादि जैसा दुर्व्यवहार किया गया। पुलिस के जवान सत्याग्रहियों को शायियाने, बिघावत, लाउडस्पीकर, मोटर साइकिल भादि सब सामान ले गये। तोड़ फोड़ भी करे गईं। अर्थवैध ठेके की रखा के लिए पुलिस द्वारा रात्रि के समय जब न शराब का ठेका चलता है धोर न भ्रष्टाचि की रिपति बनी थी, शांतिपूर्वक कीर्तन कर रहे लोगों की

जब शराब अभिशाप है तो कारखाने का उद्घाटन क्यों ? देव कुमार जैन

हरियाणा के राज्यपाल बीरेन्द्र शारापण चक्रवर्ती ने सोनीपत से ५ कि.मी. दूर सुरपल गांव में शराब के एक कारखाने का उद्घाटन करते हुए कहा कि शराब एक अभिशाप है, इससे छुटकारा पाने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

जिस कारखाने का उद्घाटन रा.ज्यपाल महोदय ने किया है उस कारखाने में प्रतिवर्ष ७५ लाख बीतल बीयर का उत्पादन होगा। क्या यह माना जाये कि बीयर शराब नहीं है या राज्यपाल महोदय जनता के लिए इसे बरदान समझते हैं ? क्या बीयर को हम शराब न कहें या बीयर पीने वाला किसी भी प्रकार की शराब से परहेज कर सकने वाला होगा ? क्या बीयर पिचाने की आदत डालना लोगों को तेज शराब तक पहुंचाने के लिए, पहला कदम नहीं है ? यदि राज्यपाल महोदय वास्तव में अपने हृदय से शराब को अभिशाप समझते हैं तो इस प्रकार के कारखाने का उद्घाटन उन्हे नहीं करना चाहिए था। उन्हें हरियाणा सरकार को कारखाने खोलने की इजाजत ही नहीं देने चाहिए थी।

यह ठीक है कि इस प्रकार के कारखानों से सरकार को भारी घाय होगी परन्तु जनता को अधिक तथा सामाजिक स्थिति का कितना पतन होगा इसकी सरकार को कोई कल्पना नहीं है।

जहां हरियाणा सरकार अपने निर्माण कार्यों द्वारा जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में एक छोटे तगी हुई है क्या वहां सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि लोगों का नैतिक स्तर भी ऊंचा किया जाये ताकि सामाजिक जीवन में भी सुगहानो घा सके ? इस प्रदेश में लोगों की आयदनी बढ़ी है लेकिन सरकार द्वारा माई-नाथ में तथा नगर नगर में शराब के ठेके खोल कर उनकी धाय तथा चरित्र को समाप्त करने के साथ ही धुंटा दिये गये हैं।

इसलिए देश को सबूती के लिए, प्रदेश भी सुगहारी के लिए यह जरूरी है कि सरकार उन साधनों को बन्द करे जिनसे व्यक्ति की धाय तथा चरित्र का नाश होता है।

क्या हम उम्मीद करें कि इसारी सरकार शराब को अभिशाप मानकर इससे छुटकारा पाने के लिए राज्यपाल महोदय ने जो सलाह दी है उस पर ध्यान करेगी ? और क्या वह भी उम्मीद करें कि 'राज्यपाल महोदय 'अभिशाप' उत्पन्न करने वाले ऐसे कारखानों का उद्घाटन नहीं करे ?

ईना के प्रथम बार हिण्डो में से एक टैंट पामस ने भारत में प्रवेश पाने के लिए केरल में ही पहली बार चरण रखे। केरल वही प्रदेश है जहाँ भारतखान आदि मुस्लिम राष्ट्रों से गत घनेक शताब्दियों से लोण इस्लाम का सतत अंतर भोगे भाते रहे हैं। यहाँ जगह जगह सपरनीक हज कर के प्राये हुए 'हाजी' लोण पाये जाते हैं। हिंदू धर्म को विजय-पताका मारे भारत में पहुँचाने वाले प्राघ शकराचार्य भी इन्हीं केरल की अग्रतिम देन हैं। इस तरह सदियों से केरल दुनिया के तीन प्रमुख धर्मों का गमन स्थान बना हुआ है। परमेश्वर की धर्मोम रूपा केवल यही तक सीमित नहीं रही। केरल तो मानो सृष्टि-सौन्दर्य की खदान है। हमारे सरीखे रूध प्रदेय में रहने वाले महाराष्ट्रीयनों के लिए तो मई माह में भी इतना हराभर रहने वाला प्रदेश नंदनवन ही था। नेता, नारियल, पतानास, काजू, प्राय, कटहन आदि फलों का मानो केरल बगीचा है।

कालिकत जिले का मुसलान बतेरी एक प्रखंड है। कभी टीपू मुसलान का तोपखाना ब्रह्म रहा होगा अतः इस प्रखंड का नाम 'मुसलान बतेरी' (बटेरी का अपभ्रंश) पड़ा है। तीन हजार फीट की ऊँचाई पर बसा होने से गरमी का तो सवाल ही नहीं था। ३ से १० मई तक की पदयात्रा की पूर्व-संध्या के लिए नदतल काबरा, ठाकुरदास बग, बसंतराज बोसटर आदि हम कुछ लोग २५ अप्रैल को ही चढ़ा पहुँच गये थे। कालिकत जिला सर्वोदय नरत के अध्यक्ष बाघाण्ड्य मेनन, गांधी शांति प्रतिष्ठान के रामकृष्ण जी आदि लोग इसके पहले प्रखंड में धूम भुके थे। बतेरी प्रखंड के इतिहास में यह पहली ही पदयात्रा होने जा रही थी। विनोबा जी की पदयात्रा भी यहाँ से गुजरी नहीं थी न कभी पंचप्रकाश जी का दौरा ही इस लक्ष्य में हुआ था। विनोबा जी की पदयात्रा तब तब तब प्रकाशजी के केरल के दौरे के समय कैसपन जी के प्रयत्न से यहाँ के कई दाताओं ने धपनी काफ़ी मूल्य भूदान में दी थी, जिससे से बहु-तास भूमि का बँटवारा होना सम्भी भी शेष है। हमारी इस पदयात्रा में हम उन दाताओं से फिर से मिले। करीब-करीब सबको पुराना शान भंजूर था। जमाना भीत चुका था।

केरल की सुरम्य भूमि में

व्यापी व रवर के वगीचे में ग्रामदान की बेल

सुमन बंग

तीरी में खेलेने वाले बच्चे जवान होकर कारी-बार/संभालने लगे हैं, वानुन बदल चुके हैं, परिस्थिति बदल चुकी हैं। अत व्यावहारिक शौर का नतीजा इष्टि से ये जवान अपने पिता के बचन का पालन कई जगह करने में असमर्थ सिद्ध हुए। उसका उन्हें रंज भी होता था। संपूर्ण बतेरी प्रखंड काँची व रवर का बगीचा है। वही-वही चाय के बगीचे भी हैं पर बहुत कम। टेपिओको, नारियल, वानोमिर्च, काँची और रबर अहा की मुख्य पैदावार है जो यहाँ से बाहर जाती है। धान की खेती अणवाद स्वच्छ दिखायी दी। अन्य किसी भी प्रकार के गेहूँ, चना, धरहर, मक्ई आदि अनाज की खेती अणवाद के लिए भी नहीं है। मलवल बतेरी प्रखंड और शायद पूरा केरल ही इस इष्टि से अनाज में परावर्तनी है। बतेरी में सबको सब "भनी फ्रांस" पैदा की जाती है। असम की तरह पान, सुपारी आदि चीजें पैदा करने ही पर खुद उनका उपयोग नहीं के बराबर करते हैं। इसमें वे निर्भयगो हैं लेकिन शराब काफ़ी चलती है। शिक्षण का प्रमाण भारत में सबसे ज्यादा केरल में है। पर यहाँ का आदिवासी धर्मो भी अल्प ही नरत धनपट्ट, पिछडा हुआ और भोगित है।

पूर्व संध्या में केरल प्रदेश सर्वोदय मंडल के सचिव रामकृष्ण बोटी, राधाकृष्ण मिदन, बाघाण्ड्य आदि केरल के प्रमुख कार्य-कर्ता तथा हम चारों साथ भुके। संपूर्ण केरल भाते एक गाव। पचीस-तीस हजार बस्ती का एक-एक गाव। पहला गांव बहूँ शरम होना है और दूसरा बहा गुरु होता है पना ही नहीं चलता। मद्रक के बिना-बिना-रे दोनो ओर मलन असे हुए होते हैं। पांच दस पर भी एक साथ बहूँ बने हुए नहीं मिलेगे। पांच-पांच, दस-दस एकड़ के टुकड़े पर अनेता धर। और दह पांच दस एकड़ का टुकड़ा माने दो चार तो फीट ऊँची टेकड़ी। किसी एक से दूसरे धर जात माने पन्ध्र बीस मिनट, पांच तो फीट का बड़ना उतरना। यह सारा देख कर समर्थ में नहीं था रहा था कि देखी स्थिति में सात दिन की पदयात्रा में कैसे दौर

कितने ग्रामदान होगे, कौसी ग्रामसभाएँ बनेंगी चर्चा करने से पता चला कि विनोबा जी ने धपनी केरल पदयात्रा के समय बीस परो का मिलकर एक गाव माना जाय ऐसा बनाया था। हमने भी २५ से १०० परो तक का मिलकर एक गाव मानने का तय किया।

सरकार की वित्तो भी प्रचार की मदद के बिना २ और ३ मई को संपूर्णतः लोवा-धरित शिविर हुआ। केरल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष मगमपन जी का सार्वजनिक सभा में जोरदार भाषण हुआ और जनानाथन् जी ने शिविर में मार्गदर्शन किया। मसवालम 'मनोरमा' दैनिक अलवार के सम्पादक पीठा देवर्षी, केरल गांधी स्मारक निर्माते अण्डय माधवन नायर, सची जनादेन विल्ले उपस्थित थे। उड़ीसा से विनोद महुँती, तमिलनाडु से नटराजन् तथा बर्धन, माराणसी से स्वामी सरयानद आदि कार्यकर्ता बाहर से आये थे। और कुछ आने वाले थे लेकिन देल हुआत के कारण नहीं आ पाये। केरल से गोवि-नाथन्, बालकृष्णन्, वपन आदि करीब पचीस कार्यकर्ता थे। सुव्यवस्था जी को भी देल की गड़बड़ियों के कारण शिविर धपूर छोड़कर जाना पड़ा। नो टेलियाँ बनायी गयीं।

फैला हुआ गाव और टेकड़ियों पर बसे हुए सवान होने के कारण काम करने में काफी बठिनी हुई। पचीस होत सात पहले केरल के अन्य भागों से लोग आए प्राकर बसे और प्राज काँची और रबर स्टेट के राजा बने हैं। सरकार ने शेवानिवृत्त कर्मियों को भी यहाँ पर भूमि देकर पुनर्वासित किया है। केरल के लोग शिवित होने में और अनेक राजकीय पची का प्रभाव होने से जगृत हैं। हम महाराष्ट्र से आये हैं ऐसा परिचय हमारा दिया जाता था। उनके बाद शायद ही कोई आना होनी, जिसमें शिवसेना के बारे में प्रथम न पूछा गया हो।

१९५३ में बालको में सर्वोदय समेलन हुआ था। उसके बाद यहाँ की दल काम

→

केरल को सुरम्य भूमि में

नहीं हो पाया। कार्यकर्ताओं में तंत्रा सी भी कुछ निराशा थी। ग्रामदान पत्र पर लोग हस्ताक्षर कर रहे और बीसवा हिस्सा भूमि बेंगे इस पर कार्यकर्ताओं को विश्वास नहीं होता था। मत: वे हस्ताक्षर व भूमि मांगने में सकोच करते थे। लेकिन बड़ी भी धनुभव ऐसा नहीं थाया जहां मांगने पर लोगों ने बीसवा हिस्सा भूदान न दिया हो। फिर भी कार्यकर्ताओं में आशिर तक यह भावविश्वास नहीं आ पाया कि हिम्मत न साथ वे मांगेंगे। मत: परिस्थिति धनुकुल होने पर भी कई कार्यकर्ताओं ने न ग्रामदान पत्र पर हस्ताक्षर लिये, न जमीन मांगी, और न ग्रामभाए ही बनवाई। पदयात्रा शुरू होने के पहले ही केरल की प्रमुख कार्यकर्ताओं से इस पदयात्रा की फनधुति के बारे में जनकी तथा प्रेरणा है प्रेषा गया था। इस ग्रामदान और पन्ड-बीस एकड भूदान मिला तो यह प्रभियान एकल हुआ ऐसा हंस मानेंगे। १० मई के समाप्ति शिविर में थोड़ा लगाने वर पाया गया कि इस ग्रामदान तथा आईस एकड भूदान भिन्ना है। पुरानी भूदान को भूमि वा भी नहीं बड़ी वितरण किया गया। फलधुति के बारे में सबको संतोष था। परिणामत कार्यकर्ताओं में कुछ उत्साह दिखायी देने लगा। नागरिकों से इस काम के लिए समयदान की माग की गयी तो समारोह के समय करीब २०-२५ लोगों ने प्राशिक समय देने की घोषणा की। आगे के काम के लिए प्रमुलत उन्ही लोगों की एक 'ग्रामस्वराज्य समिति' बनयी गयी। सभा में अनुपम विचार डा० के० वेणुदेवरी को बोले की प्रेरणा हुई। ईसाई धर्म की सर्वोच्च पदवी हासिल कर के वे विचार बने थे। परन्तु शापीजी ईसा मसीह का काम कर रहे हैं यह उनकी भूमिका शक्तिन सभा को पसन्द न होने से उन्हें इस्तीफा देना पडा। उन्हीं समारोह की सभा में फिर दोहराया, "आप गांधी विनोबा काले ये ईसा का ही काम कर रहे हैं ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस काम में अवश्य मदद करूंगा। आपके नियम के मुताबिक बीसवा हिस्से के तोरे पर मेरी एक एकड़ भूमि भाए मिल सकीये।"

ग्रामदान के बाद ग्रामदानी गांधी को क्या करना चाहिए, और पागे काम कैसे बनाया जाय इस विषय में ठाकुरदास बग ने कहा, "हमें बताया गया था कि केरल की भूमि, यहाँ की जनता और उनके प्रयत्न भारत के अन्य प्रदेशों से भिन्न हैं। खुला दिमाग रख कर हमें लोग यहाँ घ्राये। यहाँ जो धनुभव घ्राये उस पर से मूलत भारत से भिन्न कुछ है, ऐसा हमें लगाने। जो भाग में देला यदि बैसा ही बचा हुआ केरल होगा तो मैं कहूंगा कि ग्रामस्वराज्य के लिए यह उत्तम भूमि है। सरकार व राजकीय पक्षों की तुलना में हमारा कार्य प्रत्यन्त उन्नत है। फिर भी भ्रष्टोस है कि हमारे कार्यकर्ता जनता के पास जाने में सकोच महसूस करते हैं। राजकीय पक्ष धास कुछ काम न करते हुए जनता के पास पडलते से जाते हैं। यह हमें उनसे सीखना चाहिए व हिम्मत के साथ जनता के पास जाना चाहिए। हमारे कार्यकर्ता पडा नहीं क्यों इतनी प्रारम्भिकान महसूस करते हैं। ऐसी स्थिति होते हुए भी इस ग्रामदान होना, सात ग्रामभाए बनना, बीस एकड भूदान प्राप्त होना, सँकडे रुपये की साहित्य विनो होना क्या दर्शना है? पदयात्रा में जो कार्य-वर्ता थे उनमें जरा प्रारम्भिकता होता तो चित्र भिन्न प्रकट होता, यह बडा ही उत्साह-वर्षक बन सकता था।

ग्रामदानी गांधी का मार्गदर्शन करते हुए उन्हीं ने कहा, "विनोबा जो ने ग्रामदानी गांधी के लिए वचनिक कार्यक्रम सुनाया है—
ग्रामदानी शर्तों का पालन, व्यसनमुक्ति, कोर्ट-वर्जन, सफाई व प्राथना। हम इस पर जोर दें।"

केरल की बहनों काफ़ी प्रगतिशील होंगी ऐसी हमारी कल्पना थी। लेकिन बतेरी प्रखंड का धनुभव निराशाजनक रहा। हमारी भरोसाए पुरी नहीं हो पायी इसका हम सब बाहर के लोगों के मन में बडा ही रज रहा। असम की तरह (शिष्टाए का प्रसार जगदा होने से प्रथम से भी बड़त ज्यादा) यहाँ की बहनों भागे बडी हुई होगी ऐसा हमने माना था। परन्तु बैसा दिखायी नहीं दिया। सभा में, शिविर में या साथ में कभी-कभी कोई बहन कहीं भायी हो ऐसा याद नहीं आता। नौकरि करने वाली, लारीधारी, शिष्टिन बहनें भी साथ सब में नहीं भायी थी तो

दक्षिण सहभाग्य की तो बान ही दूर रही। हो सकता है यह सितों बतेरी प्रखंड की ही बहनों के बारे में सही हो। क्योंकि यहाँ मुसलमानों की जनसंख्या काफी है। जो भी हो लेकिन बहा को शिखाओं की बान मन में भाग भी साधती है। दूसरी बात केरल सर्वोदय मंडल की बंई पत्रिका मलयालम या किसी भाषा में नहीं है जिसके द्वारा लोगों तक सर्वोदय विचार पहुंचाया जा सके। सर्वोदय में विचार को लोग नुनया व पठना पसंद करते हैं ऐसा हमारा धनुभव है और इस पदयात्रा में करीब पांच बी रुप्यों की साहित्य विनो ने यह पात्र भी मिड कर दिखाया है। बग साहब ने अपने समारोह भाषण में सर्वोदय की पत्रिका मलयालम भाषा में शीघ्र शुरू करने का आवाहन किया।

● इलाहाबाद में २२-२३ जून को हुई उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल की कार्यकारिणी समिति की बैठक में सर्व सम्मति से लोक नायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन का पूर्ण समर्थन विद्यत गया। कार्यकारिणी के १५ सदस्यों सहित मण्डल के अध्यक्ष महावीर सिंह ने जयप्रकाशजी से चर्चा की और विहार के आन्दोलन में भाव-व्यक्ततानुसार हर प्रकार की मदद के लिए तैयार रहने के कार्यकारिणी के नियुक्त की जांनकारी उन्को दी।

बैठक में सर्व सेवा सच के वर्तमान सग-ठनारसक स्वरूप को जन-आन्दोलन के धनुकुल बनाने के लिए सच के सविधाय में धारश्यक सक्षोषणों पर भी चर्चा की गयी।

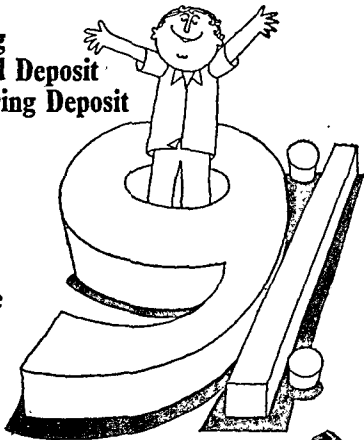
कार्यकारिणी ने यह महसूस किया कि यथास्थिति को बदलने कासा जन आन्दोलन, जिसकी मुख्यालय २० पी० के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन से हुई है, ग्रामस्वराज्य के दुविधारी विधायक, नयी समाज रचना के कार्यक्रम का पूरक और धनियार्थक अंग है। उस विधायक और इस जन आन्दोलन को, जिसका हकचर निर्वाहक भी है, परस्पर पूरक रूप में चलाने के लिए कार्यकारिणी ने यह भी तय किया है कि जुलाई के अन्त में पीरडे धनुभवार के साथ एक प्रदेश स्तरीय ग्रामस्वराज्य सम्मेलन पूर्वाचन में किया जाय। सम्मेलन की पूर्ण तैयारी मेघानाथ गोरखानी कर रहे हैं।

At UCOBANK
your Fixed Deposit
can now earn more than
9% effective interest:

By linking
Fixed Deposit
with Recurring Deposit

*For further details
contact your nearest
UCOBANK Branch.*

**Helping people
to help
themselves-
profitably**



United Commercial Bank 

मंडलों द्वारा समर्थन

● बिहार सर्वोदय मंडल ने तीन दिन तक चली बैठक के बाद बिहार प्रान्तेलन पर एक प्रस्ताव पास किया। प्रस्ताव के कुछ प्रमुख बिंदु प्रकाश हैं:

'आजादी के बाद, राष्ट्र के जीवन में प्रथम बार जन धर्मतोष ने छात्र प्रान्तेलन का रूप लिया है। यह एक शुभ संकेत है कि छात्रों ने छोटी छोटी सङ्घबद्ध क्षेत्रीय मांगों को छोड़कर राष्ट्रीय समस्याओं के साथ अपनी मांगों को जोड़ा है।

सर्वोदय प्रान्तेलन मूल रूप में मूल्य परिवर्तन, समाज परिवर्तन और नैतिक जागरण का प्रान्तेलन है। अभी कुछ दिन पहले सर्वोदय संघ ने राष्ट्रीय परिवर्तन के अष्ट सूत्री कार्यक्रमों को स्वीकार कर राष्ट्रवादी आह्वान किया है। इन आह्वानों के तत्पर्य में ही छात्रों की राष्ट्रीय परिस्थिति से व्यथित और प्रतिबन्धित होकर लोकतंत्र के मौलिक अधिकारों की रक्षा हेतु जयप्रकाश नारायण ने प्रतिम धरणा के रूप में छात्रों का आह्वान मूल फार मेंकोरी के उद्घोष से किया है।

यह सुनी की बात है कि कुबरात के छात्रों ने सर्वप्रथम इस आह्वान पर आंदोलन शुरू किया। अब बिहार के छात्रों ने अपनी गौरवमयी आतिकारी परम्परा के अनुसार आह्वानक शक्ति की शुरुआत की है।

बिहार सर्वोदय मंडल इस आह्वानक छात्र-प्रान्तेलन की भूरि-भूरि सहायता करता है और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे इस छात्र आंदोलन को अपना आंदोलन स्वीकार करता है।

यह मूल्यतः ही वेदजनक परिस्थिति है कि छात्रों के आतिपूर्ण, व्यापकित एवं नैतिक प्रान्तेलन को बिहार सरकार की ओर से कुचलने का प्रयास जारी है। यह एक कि छोटे-छोटे छात्रों को भी निर्व्यतपुर्बक गोनी और संगीनों का शिकार बनाया गया है और बनाया जा रहा है। जेलों में भी प्रमानुषिक रूप से मारपीट का तरीका अपनाया गया है। सरकार को और से ऐसे प्रवर्तनों पर सङ्कटित शिक्षा का प्रदर्शन जिस रूप में हुआ है, वह प्रनाशित तत्त्वों के द्वारा की गयी शिक्षा से कम निन्दनीय नहीं है।

● हरियाणा सर्वोदय मण्डल की बैठक सोमवत वेदानाकर की अध्यक्षता में सादी

धायक, वानीपत में हुई। पं. प्रो. प्रकाश विश्वा, दादा गणेशीलाल, माधुराम गीलत, जयना रायण वर्मा, सुधीराम लोकसेवक, महावीर त्यागी, राजेश्वर जोशी हत्यादि लगभग तीस सेवकों ने जयप्रकाश नारायण के मार्गदर्शन में बिहार में चल रहे प्रान्तेलन के समर्थन में अपने विचार प्रस्तुत किये।

निबन्ध किया गया कि सर्वोदय संघ अधिवेशन के बाद २१ जुलाई को सर्वोदय भवन, हिसार में एक बैठक बुलाकर हरियाणा प्रान्त के लिये कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाय।

● झरकोट से धाराकोट की ओर २६१ किलोमीटर की पदयात्रा के पश्चात यहाँ पर पत्रवी विभवविद्यालय के विद्यार्थियों की टोली के दो सदस्यों प्रतापसिंह विश्वर और कुबेर प्रयुक्त ने एक भेंट में बताया कि जयप्रकाश के दूरस्थ गावों के लोग जानवरों जैसा जीवन बिना रहे हैं। अल्मोड़ा जिले के दानपुर परगने में नर्पदल सङ्घ है और न पिण्डर और उसकी सहायक नदियों पर कोई पुल। बरसात के तीन महीने तक यहाँ के लोगों का शेष दुनिया से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। ५७ किलोमीटर दूर निवटलम भोटर पड़ाव झरकोट से जाइके के दिनों में भेड-बकरियों की पीठ पर (संघ बगले पैज पर)

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का हम अभिनन्दन करते हैं

● साध रंग ● सूती यस्त्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इगडस्ट्रीज प्रायवेट लि०

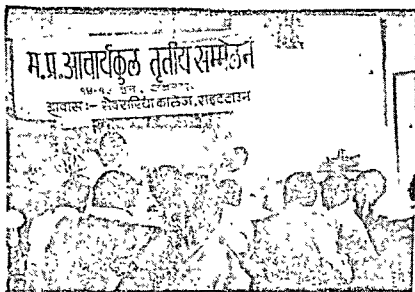
(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय:

२०१, डा० बी. एन. रोड
बम्बई-१

कारखाना:

बेलाणी टैलरदारम
मिल कम्पाउण्ड,
छोतापुर मेन,
कुर्ना, बम्बई



आचार्य अपना जिम्मेदारी निभायें

मध्यप्रदेश आचार्यकुल व तृतीय वार्षिक सम्मेलन जबलपुर में दिनांक १४ और १५ जून १९७४। उद्घाटन केन्द्रीय आचार्य-कुल के संयोजक ब्रजेश्वर भीमराव ने और मुख्य अतिथि के रूप में डा. सुरेश चंदा ने उद्बोधित किया। उद्घाटन कार्यक्रम में विभिन्न जिलों से आये प्रतिनिधियों के प्रस्ताव जबलपुर के शिक्षकों, साहित्यकारों, पत्रकारों और समाज सेवियों ने भाग लिया। कार्यकारी स्वागताध्यक्ष डॉ. हर रामप्रसिंह ने स्वागत किया। स्वागत सभी डा. सुशीलचंद्र दिवाकर और प्रदेशीय संयोजक प्रो. ० मुख-शरण ने प्रतिवेदन एवं कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जिला संयोजक राजकुमार मुनिम और नगर संयोजक श्री बी.रूपायल पटेल ने आभार व्यक्त किया।

१४ और १५ को प्रातः व सायं तीन बिसार गोष्ठीया आয়োजित हुईं जिनमें पारस्परिक विचार विमर्श के उपरान्त तीन प्रस्ताव पारित हुए। प्रो. ० महेश्वर मिश्र, गणेशप्रसाद नायक, महाश्रीर डा. ० एल. ० दुबे, डा. ० सोहनलाल गदगन दुबे, डा. ० विमल-प्रकाश जैन, प्रो. ० बी. ० पी. ० नामदेव, राम-कुमार भार्गव और डा. ० सुशीलचन्द्र दिवाकर ने बर्चाओं में भाग लिया।

आगामी वर्ष की प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति में नूतनतुमार लाल भोपाल, डा. ० शिवानन्द आरिवा, जे. ० पी. ० सिधल विपरिया (होशंगाबाद) और राजकुमार गुमिच जबलपुर को सदस्य के रूप में शामिल किया गया जिससे समिति की सदस्य संख्या अब १६ हो गई। कार्यकारिणी के सदस्यों को सभागीय जिम्मेदारिया सौंपी गई। हर सभाग में सभागीय स्तर के सम्मेलन आयोजित होंगे। प्रदेश के पिछड़े हुए १० जिलों के सर्वेक्षण करने का भी निश्चय किया गया। सेवा निवृत्त शिक्षकों की एक सूची तैयार कर उनका योगदान प्राप्त करने की योजना बनाई गई।

द्वि बार सम्मेलन में ५० विचारकों ने भी भाग लिया। उन्होंने अपने विचार भी रखे और अपनी कार्यक्रम भी प-रुत्त किया। हरिहृष्य डिवेदी और ५० ५० नह चौधरी के रचनात्मक विचारों का भी सराहना हुई। जबलपुर आचार्यकुल ने उन छात्रों की योजनाओं को ध्यान पूरा समर्थन दिया।

प्रस्ताव जो पास हुए

मध्यप्रदेश का यह तृतीय वार्षिक सम्मेलन देश के विभिन्न प्रदेशों यथा गुजरात, बिहार और असम आदि में पूट रहे युवा

आचार्य कुल आचार्यकुल बड़ी गम्भीरता से लेता है। ये आचार्यकुल सकारण हैं। महंगाई बेकारी, दोषपूर्ण शिक्षाप्रणाली और सभी प्रकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध किया जाने वाला हर अहितक आचार्यकुल आचार्यकुल की दृष्टि से स्तुत्य है। मनः युवाओं के आचार्यकुल को समर्थन और सही नेतृत्व देने का कार्य आचार्यकुल को करना चाहिए और अपनी अहिंसात्मक नीति के अनुसार संपर्क को सफल बनाने के लिए दिया-निर्देश प्रदान करना चाहिए।

युवा आचार्यकुल आचार्यकुल तत्त्वों और स्वार्थी राजनीतियों के हाथों का सिलोस न बन जावे इसलिए आचार्यकुल के प्रत्येक सदस्य को तप और त्याग की दृढ़ आस्था भूमि पर निरंतर सचेष्ट और सतर्क रहकर अपने महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करना होगा।

युवा-आचार्यकुल का विनयेण करने पर प्रतीत होता है कि हमारी दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली बहुत अंधो में इस विरासतजन्य प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि जो आचार्यकुल एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यवहार में लाई जाय जो हमारी संस्कृति की पृष्ठभूमि में निहित हो और हमारे सर्वांगीण जीवन से सुसम्बद्ध हो। अतः आचार्यकुल का यह सम्मेलन प्रस्तावित करता है कि केन्द्रीय आचार्यकुल, समिति द्वारा पारित शिक्षा नीति का सुचारु हो कार्यान्वयन करने के लिए आवश्यक कदम उठाया जाय।

ग्रहकोट से आराकोट

राजन और दूसरी आवश्यकताओं को बरतुएँ माने हैं। वे इन बाजारों में आलू, रामदास, जगल जहाँ-गुठिया और रियाल को चटाइयाँ बेचकर गुजारा करते हैं। वन-विभाग के अधिकारियों चटाइयाँ बेचने पर इनका पीछा करते हैं। यहाँ मीलों तक कोई अस्पताल नहीं और लोग बेमोल मरते हैं।

स्वराज्य के बाद वहाँ जिलाधिकारी तो दूर रहे कोई परतन अधिकारी भी नहीं गया। कोई विभागीय भी उन्होंने अभी तक नहीं देया है।

याना टोली गोपेश्वर के नदाराघाटी और पंचालीकाटा पार करती हुई २५ जून को सिल्लारा आश्रम में पहुँची, जहाँ से वह अर उत्तराखण्ड की ओर बढ़ रही है।

वार्षिक गुरुक—१५, २० विदेशी ३० ४० या ३५ मिलियन या ५ बालर, एक एक का मूल्य २० ३० है।

प्रमाण बोधों द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए. ० जे. ० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २२ जुलाई, '७४



परमधाम बकनार में बुने परिषदाल को विनोबा का सम्बोधन

बहु परिषद ऐतिहासिक निर्णय का : दादा धर्माधिकारी ● विनोबा के ० सी० बार्णे : प्रभाव जीर्ण ● मुनम सर्व सेवा संघ : विनोबा
● मंत्री का निवेदन : टाकुपदात भग ● ऐतिहासिक परिषदाल : तकरोर बर तकरोर : धनुष विष ● पस्यणी साक है : कति या बापू
धरबा का परिषदाल समर्थन : नारायण देवर्ण ● उपबालदान प्रपति प्रोर ● बडीनाद

वह अनिर्णय ऐतिहासिक निर्णय था

नौ के बारह जुलाई तक सर्वे सेवा सघ का जो अधिवेशन वर्षों में हुआ, वह कई दृष्टियों से अपूर्व रहा जा सकता है। पूरुष विनोबा ने पहली बार इस बात का प्रायश्चिद रखा कि अधिवेशन में उपस्थित सदस्य ही प्रापस में चर्चा करके किसी सर्वसम्मति या सर्वानुमत परिणाम पर पहुँचें। उन्होंने कोई सलाह या परामर्श देने से भी इन्कार किया। बहुत विनय-अनुनय करने के बाद भी वे अपनी इस भूमिका से नहीं डिगे।

इस बहाने हमारे नेता ने श्रुति की प्रक्रिया के प्राथुनिकत्वम आपाम का संकेत दिया। प्राथुनिकत्वम श्रुति की यह धारणा है कि भ्रव कोई मार्गदर्शक या नेता न हो। केवल ऐसे साथी हो जो लोगों में नेतृत्व जगृत कर सकें। अर्थात् नेता नहीं नेतृत्व के प्रेरक साथी चाहिए। विनोबा 'गण-सेवकत्व' के प्रवर्तक और प्रवक्ता रहे हैं। उन्होंने भ्रव की बार इस विषय में अपने साथियों को कसौटी पर रखा।

मर्यादा का पालन हुआ

साथी भी खरे उठरे। अधिवेशन में बहुत चर्चा हुई। उसमें हार्दिकता और उत्कटता थी। शीघ्र-शीघ्र में चर्चा उभ भी होती थी। परन्तु अपनी मर्यादा का पालन करने में सघ नहीं चूका। ११ की रात को जब सर्वसम्मति या सर्वानुमति के सारे उपाय हार गये तब भी सदस्यों में पराजय की भावना नहीं थी। जब तक एक भी सदस्य का विरोध है तब तक कोई निर्णय संभव नहीं, यह सघ की निष्ठा है। इस पर सारे सदस्य अडिग रहे।

११ की रात का वह 'अनिर्णय' एक ऐतिहासिक निर्णय था। उस अनिर्णयपरमक निर्णय के द्वारा सर्वे सेवा सघ ने यह सिद्ध किया कि बोट या मत की अपेक्षा सीधार्द और पारस्परिकता का मूल्य कई गुना अधिक है। उस अवसर पर प्रचण्ड बहुमत ने प्रति अल्प मत के लिए अपनी समादर व्यक्त किया। यह



घटना सर्वे सेवा सघ के सदस्यों की सहयोग और परस्पर विश्वास की भावना को बढ़ावा देने वाली होगी।

विनोबा का नेतृत्व भी विरोधाभासात्मक, अतएव अद्भुत है। उनके साथियों ने जब अपने अनिर्णय की सूचना उन्हें दी तो उनके हृदय से जो स्वाभाविक प्रतिक्रिया निकली वह अपने में उनके महान व्यक्तित्व के अनुरूप ही है। उन्होंने केवल इतना ही नहीं कहा

कि जे० पी० के प्रान्दोलन में सक्रिय भाग लेने की अनुमति सर्वे सेवा सघ के साधारण सदस्यों, प्रथम समिति के सदस्यों तथा पदाधिकारियों को है, अथितु यामदान और पटना के प्रान्दोलन की उपमा गंगा और ब्रह्म-पुत्र की धाराओं से देकर और दोनों को पवित्र बह कर गौरवान्वित किया। इस प्रकार अपने हृदय की उदारता का परिचय दिया। वह उदात्त परस्पर-समर्पण का धनुंठा दृश्य था। विनोबा विनोद प्रिय हैं। उन्होंने तुरन्त एक श्लोक भी रच दिया।

इस सारे प्रकरण में जे० पी० की महानता तथा अपार सज्जनता और भी निखर उठी। सर्वानुमति के लिए वे अपनी तरफ से जितना धागे बढ़ सकते थे उतना धागे बड़े और वह भी बड़ी तत्परता और सहृदयता से। जे० पी० के सौजन्य की कोई सीमा नहीं। इसीलिये जब विनोबा ने 'अनुसूच्य' की सूचना अधिवेशन को दी तो जे० पी० ने उसी क्षण कहा, 'मेरा सोलन धाने समाधान हो गया है' जब कि उनका ८५ प्रतिशत बहुमत था।

पदाधिकारियों का धर्म संकेत

सघ के अध्यक्ष मंत्री तथा प्रथम समिति के सदस्य बड़े नाजुक धर्म संकेत में थे। उनमें से अधिकांश 'पटनाक्षेप' जाने को उल्लिखित थे। परन्तु वे जानते थे कि विनोबा का मन भ्रमन है। ऐसी स्थिति में उनके लिए संध की प्रथम समिति में या पदाधिकारियों के रूप में रहना कठिने उचित होता? इसीलिए उन्होंने बड़ी तत्परतापूर्वक भारी दिल से अपने त्याग-पत्र प्रस्तुत किये थे।

संविधान से मानवीय मूल्य श्रेष्ठ हैं।

वे सारी घटनायें अपने में सांकेतिक और सूचक हैं। सर्वे सेवा सघ की यह निष्ठा कि किसी संविधान और समगटन से मानवीय मूल्य नहीं श्रेष्ठ हैं—इस अधिवेशन में बड़े उच्च-वत् रूप में प्रकट हुई। धर्माधिक मानव निष्ठा की इस भावना में भविष्य के समगटनों के स्वरूप के विषय में एक संकेत निहित है। लोच-निष्ठ समगटनों के लिए यह पारस्परिक सीधार्द प्राणवायु के समान है।

द्वारा धर्माधिकारी

पवनार में विनोबा-जे० पी० वार्त्ता



बाबा की कुटिया में बाता का दूसरा दौर

विनोबा, जे० पी० वार्त्ता का पहला दौर तो जुलाई की सुबह साढ़े नौ बजे शुरू हुआ था। जे० पी० साठ जुलाई की रात ही नागपुर से बार में भाये और बहा विद्या मन्दिर के अतिथिगृह में टहरे। अपने भावपूर्ण और वक्तव्यों की प्रतिया जे० पी० ने पहले ही बग साहब के जरिये पटना से भिजवा दी थी। लेकिन बाता सुबह साढ़े नौ बजे शुरू नहीं हुई। महिषाशम वर्षा से सिद्धराजजी, बग साहब, नारायण देसाई आदि सबेरे भाये और जे० पी० से निवेदन किया कि वे पहले प्राथमिक को सम्मोहित करें तो अच्छा रहेगा। जे० पी० ने इसे मंजूर किया। बाबा को सदेश पहुँचा दिया गया कि जे० पी० नौ बजे मिलने प्रायेंगे। लेकिन उठते-उठते नौ बज कर दस मिनट हो गये। जे० पी० जब बाबा से मिलने निकले तो बाबा खुद प्राथमिक के पाठक तक भा चुके थे। जे० पी० ने बाबा के चरण छुए। बाबा ने पूछा कि 'बातें क्व होयीं?' लिख कर दिया गया कि साढ़े ग्यारह बजे। बाबा ने कहा "ठीक है। जब तक करना चाहें कर सकते हैं। सारा समय घांपका।" दोपहर साढ़े तीन बजे वा समय लय हुआ तो बाबा ने फिर कहा— 'उमके बाद जब तक बात करें सारा समय घांपका।'

जे० पी० सवा नौ बजे गये लेकिन साढ़े बारह बजे के करीब लौट कर भाये। बाबा अतिथि गृह की छग पर कुछ बहन और बाल भाई के साथ प्रतीक्षा में टहल रहे थे। जे० पी० को जाया देन कर वे नीचे उतरे। अतिथि गृह में जे० पी० ने नमस्ते में बातचीत शुरू हुई। बाबा ने स्वास्थ के बारे में और नींद के बारे में पूछा। फिर कहा— 'प्रभावनी जो परामर्श करती थी वह घांप करते हैं न?' जे० पी० ने फिर हिना कर 'हाँ' कहा और धनमा निकाल कर घांप पीये। फिर बाबा गया, कुम्भ मेला आदि भी बान करने रहे। घांपिर में उन्होंने कहा— 'भापने कागज मैंने सरसरी तौर पर पढ़ लिये हैं। घांप भी मैंनी में भेरे बिचार पठ लीजिए।' बाबा बजे पचा (बाबा पत्र ११ पर)

सुलभ सर्व सेवा संघ : बाबा की नयी युक्ति

१२ जुलाई को परमधाम पवनार में विनोबा का प्रवचन

ग्रामदान के बाद सुलभ ग्रामदान की बात मैंने निकाली थी। उसी प्रकार आज मैं आप लोगों के सामने सुलभ सर्व सेवा संघ पेश कर रहा हूँ। मैंने उसकी युक्ति ढूँढ़ निकाली है। कल जे० पी० मुम्बई मिले। काफ़ी बातें हुईं। आध्यात्मिक चर्चा भी हुई। काम के बारे में भी हुई। उन्होंने मुझसे यह प्रश्न किया था कि आपने कहा था कि मतभेद भले ही रहें, हृदय एक होना चाहिए। तो हृदय की एकता मजबूत कैसे हो? उनके इस प्रश्न का उत्तर आज मैं दे रहा हूँ।

यह महावीर स्वामी की उन्नीसवीं निर्वाण संवत्सरी का वर्ष है। महावीर स्वामी ने कभी तोड़ने का काम नहीं किया था। अगर उनके पास कोई उपनिषद् का ग्रन्थिमाना आता तो वे उसका उपनिषद् के आधार पर समाधान करवाते थे, गीता वाला आता तो गीता के आधार पर, वेदवाला आता तो वेद के आधार पर, बौद्ध विचारों को बौद्ध विचारों के आधार पर—किसी पर उन्होंने अपना विचार नहीं लाया। निर्वाण शताब्दी के इस वर्ष में भी जैन विचार सार एकत्रित करने के काम में लगा हूँ। तो हमको यह निश्चय करना चाहिए कि तोड़ना हो तो भी निर्वाण शताब्दी के वर्ष में न तोड़ें।

वहाँ तक किस युक्ति से काम करना चाहिए। यह बात मैं आपको बताता हूँ : सघ का कोई सदस्य, प्रतिनिधि, लोकसेवक इत्यादि, जिसे जो कोई काम करने की इच्छा हो—कोई ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का काम करता है, कुछ क्रांतिकारी समझकर बिहार के काम में गया है—सब अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार काम करें। केवल तीन शर्तों को ध्यान में रखें—सत्य, अहिंसा और संयम। जहाँ तक मैं समझा हूँ, दो ही पक्ष हैं—तीन पक्ष नहीं हैं। संस्कृत में तीन को ही बहुवचन कहते हैं, दो को अलग स्थान है—माता पितरौ जेसा। तो यहाँ भी तीन पक्ष नहीं हैं, दो ही हैं—तो उनके लिए मैंने यह युक्ति सुझा दी। सभी 'धर्मक्षेत्रे पटनाक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। जयका गकूरकाश्चैव किम कुर्वंत सजयः ॥' (हसी के बीच जे० पी० ने पूछा कि संजय-कौन बनेगा। बाबा ने कहा-कृष्ण राज शायद सजय हो सकता है। जे० पी० ने फिर कहा कि वो तो युयुत्सु है। बाबा बोले कि वह साहित्य प्रचार का काम कर रहा है, तो संजय हो सकता है।)

अगर इतना हीता है तो त्यागपत्र की जरूरत नहीं रहती। अगर कोई एक से पूछेगा कि तुम ग्रामदान का काम करने के बदले इस आन्दोलन में क्यों हो तो वह उत्तर देगा कि हमारा हृदय एक ही है, काम अलग-अलग हैं। इसी प्रकार अगर कोई यह पूछेगा कि तुम आन्दोलन में क्यों नहीं लगते तो वह भी यही उत्तर देगा। क्यों इससे समाधान है?

जे० पी० : सोलह आना।

दादा धर्माधिकारी : विनायक का विनायक ही रहा।

विनोबा : हाँ ठीक है। बानर नहीं बना। पटना वालों का कार्यक्रम अगर खूब चला तो ये दूसरे लोग भी उनके साथ हो जायेंगे और अगर इसमें से कुछ नहीं निकला तो ये लोग इसे छोड़ें वहाँ आ सकते हैं।

जे० पी० : यह ठीक है। यदि सघ अधिवेशन में इस विषय पर सर्वसम्मति हो जायेंगी तो ये लोग अपने त्यागपत्र वापस लेंगे और दादा की सूचना के अनुसार अपनी-अपनी इच्छा से काम करेंगे। संघ लचीला बने, आज है, उससे भी अधिक लचीला बने, उसके एक सपोजक रहें। प्रबन्ध समिति की आवश्यकता नहीं। संघ साल में दो बार मिले। एक बार बाबा के पास, दो, कोई प्रस्ताव न करे। यह तो एकता सघ गयी होती तो भी करने लायक निर्णय था।

विनोबा : महावीर स्वामी की जय !!

सर्व सेवा संघ

मंत्री का निवेदन

१५ सितम्बर, ७३ से ३० जून ७४ तक के काम का विवरण

ग्रामदान प्रकम में नौगाव जिले में भूर-बप एवं कपिली प्रखंडों में, ललीमपुर जिले में नारायणपुर प्रखंड में, मध्य प्रदेश में सोपी जिले के सीधी एवं सोहावल प्रखंडों में, महाराष्ट्र में पुना जिले में जुन्नर प्रखंड में, केरल में कासीकत जिले में मुलान बनेरी प्रखंड में ग्रामदान पर्याप्त हुए हैं। सहरसा में २६ जनवरी से २० फरवरी तक प्रतिम प्रतिभा चलाया गया, जिसमें २५० कार्य-कर्ताओं ने हिस्सा लिया।

इन यात्राओं की निष्पत्ति भावकों में निम्न है —

प्रखंड का नाम	ग्रामदान प्राप्ति	ग्रामसभा गठन	भूदान-प्राप्ति	वितरण	साहित्य-विधो
भूरबंध	१०	१०	३४ एकड़	६४ एकड़	१२१
कपिली	२६	५	१६ "	...	३००
नारायणपुर	२६ "	१३ एकड़	...
सीधी	१३	६
जुन्नर	१०	५	५ "	...	३००
मुलान बनेरी	१०	५	२२ "	१५ एकड़	५००
सहरसा जिले के १२ प्रखंड	...	५०५	१५४४ बीघा	१०४४ बीघा	...

कई प्रदेशों के विभिन्न क्षेत्रों में पुष्टि-कार्य चल रहा है। बिहार के मुर्शिदाबाद जिले के मंगला ग्रामदानी घाट की पञ्चवर्षीय ग्राम-निर्माण योजना ग्रामसभा की सहायता से बनाई गई।

शांति-सेना चक्र के बर्गियों के लिए मध्य प्रदेश के मुना जिले में सुवावली में सुनी केन का उद्घाटन १४ नवम्बर को किया गया। यह एक नया प्रयोग है और हमारे भवने कीजिए आ रहे हैं। देवगाव में कन्नड एव मराठी भाषी नागरिकों को साथ बिहार

ग्रामसभा बनाया कम करके शांति-स्थापना का एक सर्वसम्मत हल खोजने का प्रारम्भिक प्रयास किया जा रहा है। गुजरात में कराची में तस्पर एव ग्राम शांति-सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए सितम्बर से दिसम्बर तक दो प्रशिक्षण-वर्ग चलाए गए। मध्यप्रदेश प्रदेश में शांति-सेना के कर्म ने एक नया मोड़ लिया है। वहा शांति-केन्द्र, तस्पर शांति-सेना केन्द्र एव नागरिक विद्यालय खोले गए हैं। शांति-केन्द्रों के भासपास को बस्तियों के लिए धारोग्य-ज्ञान प्रशिक्षण की योजना हाथ में ली गयी। गुजरात में मोडासा में साप्रदायिक दमो में शांति-स्थापना का प्रयत्न हुआ। सुदूर सायप्रस देश में ग्रीक एव तुर्की बोलने वाले लोगों के बीच अमरिका, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका के कार्यकर्ताओं के साथ भारत के ५ शांति-सैनिकों ने शांति एव पुनर्वास के लिए गृह-निर्माण का कार्य किया। भारत के शांति-सैनिकों को आन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में काम करने का यह एक नया अनुभव था। सभ के सम्पन्न एव मंत्री ने नवम्बर में नागाभूमि एव मणिपुर की यात्रा की एव नागाभूमि में डा०

धारन द्वारा चल रहे स्तुत्य शांतिकार्य का अध्ययन किया।

समोति एवं कोठियाँ १ से ६ दिसम्बर तक परधाम में सगुनि हुई जिसमें लोकनीति, सगुन धारि विषयों पर मुक्त चर्चाएँ हुई। बिहार में चल रहे आन्दोलन पर विचार करने के लिए जयप्रकाश जी के साथ धर्म १६ एव २० को देश भर के ५० कार्यकर्ता मिले। पू० बाबा के साथ प्रथम समिति के कुछ सदस्य धर्म में तीन दिन एव मई में सम्पन्न एव मंत्री दो दिन विने एव राष्ट्रीय परिस्थिति

एव जन-आंदोलन के बारे में बाबा से धार्मिक-साध हुआ।

सादी सादी समिति को सक्षम बनाने का प्रयास चल रहा है। नुनाई उपदान को छोड़ने के बारे में सादी-अल्प में विचार-मण्डल शुरू हुआ है। सादी-अल्प में कई महत्वपूर्ण षण, अंतिम—सहाय-कर्मचारी सबध, भाव कर से मुक्ति इत्यादि निर्माणा हुए हैं, जिसका अध्ययन एव प्रयत्न हो चल करने का प्रयास जारी है।

मतदाता-सिक्ख जयप्रकाश जी ने दिसम्बर में 'लोकतंत्र के लिए तस्पर' नाम की झपल निकाली एव भागामी चुनाव स्वच्छ हो इस विषय में सचिव होने का आवाहन किया। उत्तर प्रदेश में एव उत्तर में विधानसभा के चुनावों के समय मतदाता-सिक्ख का नाम किया गया। जयप्रकाश जी के इस विषय में कई रेकर प्रवचन उत्तर प्रदेश में हुए।

शराबबंदी—शराबबंदी का आन्दोलन राजस्थान में जारी है। रंगरो की बली के टेंके को हटाने के लिए ८५ दिनों के सत्याग्रह के बाद यह दुकान बंद हुई। जयपुर, झजमेर, टोंक धारि जिलों में कई शराब की दुकानें बंद की गईं। इस प्रयत्न पर विचार करने के लिए केन्द्र सरकार ने समिति बनाई है जिसकी बैठकें चल रही हैं।

उपवासदान—११ सितम्बर, ७३ को विनोबा ने स्वयं उपवास कर उपवासदान का प्रारम्भ किया। इस विचार का प्रसार जारी है। इसके प्रसार के लिए मई में एक पत्रावाह भनाया गया। आज उपवासदानियों की संख्या ३ हजार के करीब पहुंची है। इस बारे में सब साथियों को अधिक सान्त्व से प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

गुजरात एव बिहार में जन आंदोलन— गुजरात एव बिहार में छात्रों की धनुवाई में मह्यार्थ, मेरोरशाही एव अष्टाचार की जन-समस्याओं को लेकर आंदोलन शुरू हुए। बिहार में शिक्षा में शांति यह उद्देश्य भी प्रमुख उद्देश्य बन गया। श्री जयप्रकाश जी ने इस आंदोलन का गुजरात में समर्थन किया एव आज बिहार में विद्यार्थियों को साथ कर जयप्रकाश जी के नेतृत्व में यह आंदोलन चल

श्रागामी सर्वोदय सम्मेलन तक पन्द्रह हजार उपवासदान

सर्व सेवा संघ का सद्यः सत्य धीर प्रहिंसा पर आधारित सोपसु-रहित श्रीर मास-मुक्त समाज की स्थापना करने का है। इस लक्ष्य की प्राप्ति समग्र जाति की अपेक्षा रखती है। साधन-गुडि इस समग्र जाति का एक महत्वपूर्ण अंग है। सत्य धीर प्रहिंसा पर आधारित समाज की रचना के साधन भी उर्द्वेष के अनुरूप होने चाहिए, यह आवश्यक है।

सर्व सेवा संघ की शुरु से ही यह बोधित रही कि संगठन धीर धर्म-गुडि के मानने से भी परंपरागत पद्धतियों धीर तरीकों से हटकर उत्तरोत्तर भावों के अनुरूप दिशा में बढ़ा जाय। इस दृष्टि से समय-समय पर पूज्य विनोबाजी का मार्ग दर्शन भी बराबर मिलता रहा है। निधि-मुक्ति धीर तन-मुक्ति की ऐतिहासिक बन्धना इस दृष्टि का एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। मृतानजलि, सर्वोदय-पात्र संपत्तिदान आदि के कार्यक्रम भी जो समय-समय पर विनोबाजी ने हमारे सामने रखे तदा संघ ने स्वीकार विषे वे आन्दोलन को धारण बढाने वाले कार्यक्रम होने के साथ ही आन्दोलन के लिए लगने वाले खर्च अधिक से अधिक जनाधारित तरीकों से धीर स्वेच्छा से किये गये त्याग के आधार पर प्राप्त हो सके, यह सभावना भी इन कार्यक्रमों के पीछे ही धीर है। हम इन कार्यक्रमों का पूरा उपयोग अभी तक नहीं कर पाये हैं। इससे शायद हमारे अपने सातत्य की कमी ही कारण है।

विद्युत् ११ सितम्बर की अपने जन्म-दिवस के अवसर पर पूज्य विनोबाजी ने उपवासदान का नया कार्यक्रम हमारे सामने रखा। उन्होंने यह प्रेरणा भी आह्वित की कि सर्व सेवा संघ का खर्च उपवासदान पर ही चले। स्वेच्छा से, बिना मागे कोई दान भेज दे तो वह स्वीकार किया जा सकता है लेकिन अपनी ओर से संघ के खर्च के लिए चंदा नहीं दिया जाय। उन्होंने स्वयं महीने में एक दिन का भोजन छोड़कर उस बचत का दान सर्व सेवा संघ को दिया, धीर इस कार्यक्रम की शुरुआत की। जब आन्दोलन के लिए

यह आर्थिक स्रोत उपादेय है, तो केवल सर्व सेवा संघ का खर्च ही नहीं, बल्कि प्रदेश, जिला तथा स्थानीय सभी स्तर पर सर्वोदय मजदोरी का, धीर आन्दोलन का खर्च धनतो-गत्वा इस दायरे में आना चाहिए। धारण जा कर देश भर के सारे आन्दोलन का खर्च उपवासदान से चल सके, यह वादनीय है लेकिन व्यवहार की दृष्टि से ऐसा मुभाब है कि पहले सर्व सेवा संघ के काम के लिए उपवासदान का आधार पक्का कर लिया जाय। मृतानजलि, सर्वोदय-पात्र, संपत्ति दान आदि का उपयोग पूरा का-पूरा प्रतीय स्तर तक के काम के लिए हो धीर इन स्रोतों को बढ़ाने की भी कोशिश की जाय।

इस सारे अर्थों की ध्यान में रखते हुए तथा उपवासदान से ही संघ का खर्च चले, इसके विविध पहलुओं पर खर्च के वाद प्रथम समिति सर्वानुमति से नीचे निम्ना निर्युक्त बरती है—

एक. सर्व सेवा संघ के केन्द्रीय काम का खर्च उपवासदान के आधार पर चले, यह भावना सबको मान्य है।

दो. चासू वर्ष के खर्च का कम-से-कम ५० प्रतिशत उपवासदान से प्राप्त किया

(पृष्ठ ५ का शेष)

रहा है। गुजरात एवं बिहार सर्वोदय मजल ने इस आन्दोलन का समर्थन किया है धीर इस आन्दोलन में साथी हिंसा भी ले रहे हैं। आंध्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों के सर्वोदय मजदोरी ने इस आन्दोलन का समर्थन किया है। उत्तर प्रदेश में उत्तराखण्ड में 'विपकी' आन्दोलन चल रहा है धीर उसे सफलता मिल रही है। आंध्र में महानुभव नगर जिले में २५ हजार व्यक्तियों ने पत्रागणिक सातकीता(शाही), धर्याधार आदि के बारे में आन्दोलन किया धीर २५ हजार नागरिकों ने सहलीत कायलिय पर उपवासना किया।

परवासा—बहुनों की सोचपात्र-धारा गति से चल रही है। स्वी-मणि-जगरण सप्ताह में करीब ५ लाख परवासाए निकाली गईं, जिनमें हजारों बहनों ने भाग लिया। कुट्टी जी की पदयात्रा प्रदेशों में जागरण करती हुई चल रही है। सोहन लान जी

जाय तथा बाकी के लिए चन्दा आदि का आधार जारी रहे।

तीन. अभी तक उपवासदानियों की संख्या करीब ३ हजार तक पहुंची है। आगामी सर्वोदय सम्मेलन तक यह संख्या १५ हजार तक पहुंच जाय, यह देश भर के सर्वोदय में सहानुभूति रखने वालों की बोधित होनी चाहिए। प्रवचन समिति के सदस्य तथा निम्न-हित स्वयं इस बारे में पहल करें और आगामी सम्मेलन तक इनमें से हर व्यक्ति कम से कम एक सौ उपवासदान प्राप्त करें, ऐसी अपेक्षा है। इसी प्रकार सभी प्रदेश सर्वोदय मजदोरी के अध्यक्ष व मंत्री कम से कम ५०-५०, संघ सदस्य व जिला प्रतिनिधि २५-२५ तथा लोक सेवक १०-१० उपवासदान प्राप्त करें।

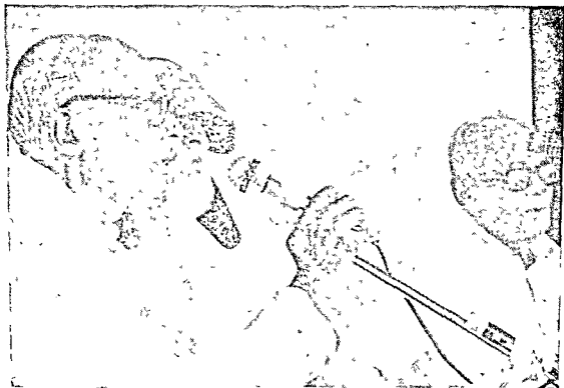
चार. जैसा जलगांव की प्रथम समिति में तय हुआ था, उपवासदान का उपयोग सर्व सेवा संघ के खर्च के लिए ही हो। सर्वोदय-पात्र, मृतानजलि, संपत्तिदान आदि का जो प्रथम तब सर्व सेवा संघ को देने की बात थी वह न होकर अब इन स्रोतों से प्राप्त होने वाली संपूर्ण प्राय का उपयोग प्रदेश स्तर तक हो। इन कार्यक्रमों को बढ़ाने की धीर भी हम सब पूरा ध्यान दें। इन स्रोतों के अलावा प्रथम स्तर तक फिलहाल धेदे का उपयोग भी मान्य होगा।

भूमिदु में दिसम्बर से यात्रा की एवं महाराष्ट्र की यात्रा पूरी कर आज बनारस में यात्रा कर रहे हैं। श्री भवानी भाई की पदयात्रा शुरू हुई है। श्री दादा भाई नाईक की पदयात्रा में मध्यप्रदेश भर जागरण किया और दिसम्बर में वही पूरी हुई। महाराष्ट्र में धारण-स्वराज्य-पदयात्रा शुरू हुई है। गीताई प्रवार पदयात्रा की वसंत राव गांधे के नेतृत्व में महाराष्ट्र में चल रही है।

विद्युत् व्यक्तियों से संघर्ष—प्रधान मंत्री से संघ के अध्यक्ष एवं संघ समिति के सान सदस्य मिलें। संघ के काम की उन्हें जानकारी दी गई। सर्वोदय कार्यकर्ता एवं मासल मिलकर बुद्ध क्षेत्रों में भूमि-विशरल का काम करें यह उन्हें सुभाषा गया। उत्कल की मुख्यमंत्री श्रीमती नादिनी सत्यपी से इस बारे में दार्शनिक जारी है। महाराष्ट्र के वारकरी समाज के प्रभु श्री मुभाषा, अक्षय के श्री हताराव दास, दिल्ली के कल-सेवक समागम एवं हरद्वार में कुम भंश में प्राए हुए सने के स्वेच्छा सपक बना है।

ऐतिहासिक अधिवेशन : तकरीर दर तकरीर

अनुपम मिश्र की रपट



[संघ अधिवेशन, महिलाभंग सभा में ६ से ११ जुलाई तक होना था लेकिन १२ जुलाई तक हुआ। ऐसा ऐतिहासिक अधिवेशन संघ के इतिहास में पहले कभी हुआ नहीं था। संघ विसर्जन की ब्यार तक पहुंच गया था। अधिवेशन सही भावों में संघ की प्रतिन परीक्षा थी। ११ जुलाई को रात तक लगा रहा था कि अगिन संघ को जला देगी। लेकिन १२ जुलाई को मुबह बिनोबा ने उसे कुदरत की तरह निचाल लिखा। अधिवेशन के विवरण की पहली रिपोर्ट आगे के हाथ में है।]

भैंसों के निवेदन के बाद सिद्धराजजी ने अधिवेशन को १० पी० की उपस्थिति से शुरू किया। १० पी० बनारस से उसी समय अधिवेशन को सम्बोधित करने आये। उन्होंने बिहार प्रांतीय के सम्बन्ध में अधिवेशन के दौरान उठाये जाने वाले धोरणों पर ही उठ चुके प्रश्नों के उत्तर देने के बदले अपनी बात को केवल सभा के लिए रखना चाहा जिससे धरत्यों को उन्हें समझने में मदद मिले। उनके इस विस्तृत भाषण के मुख्य मुद्दों में थे : मैंने

दूते अपनी बिम्बेदारी पर उठाया है। अणु-का समर्थन करने दबाव नहीं आला। १) इससे पहले बिहार तथा वेग्ड सरकार से जिनका सहयोग मैंने किया था वर ही किसी ने किया हो। उधर सब दलों को मिलाने के लिए राष्ट्रीय-सहमति में भी मैंने दो वर्षों गवाये। २) अणुआधार केवल शासन या कार्य में ही नहीं है, लेकिन इनका असर हमारे अंतर्गत देश पर सबसे ज्यादा पड़ता है। अणुआधार की नीव बालिधन पर आधारित चुनाव-पद्धति है

इसके बारे में एक लेख भी लिखा, उसे लेकर प्रधानमंत्री से भी मिला, सुभाव दिये। यह सब करके चक गया मैं। ३) देखा कि हमारे नागरिक के एकमात्र चोट का अधिकार भी उससे घिनना जा रहा है। हम इससे अछूता ही मोक्षताम बनाया चाहते हैं लेकिन अब तक यह न बने तब तक कम से कम इसे तो बचा लें। ४) बुधवार और बिहार प्रांतीय १६ घाना मानिमतय नहीं रहा। लेकिन यदि इस परिस्थिति से निकलने का कोई मानिमतय तरीका

जनता के हाथ नहीं लेना तो फिर निश्चित है कि देश में घनागति लेतेगी। इस प्रकार दोलन की संकट कई प्रश्न उठते हैं, उठते हैं, लेकिन यदि प्राप्त मूल बात से सहमत नहीं हो तो उसे छोड़ दें। मैं कोई आग्रह लेकर बर्तावत करने प्रार्थना नहीं। जे० पी० के प्राण का अंतिम वाक्य था, "स्वभाव परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं, मेरी भीतर प्राणवी। प्रथम प्राण इतना समर्थन करें तो ठीक नहीं करे तो ठीक। भव में प्राण के सामने धाऊंगा नहीं। वहम में पड़ना नहीं चाहना।" इस तरह जे० पी० फिर अविषेणन में अतिम दिन तक नहीं प्राये।

सिद्धांतजी बीमार थे, वे मंच पर पीछे बैठे रहे इस बैठक में। प्रकाश भाई: गुजरना के प्राणदोलन के कई साधियों ने हिस्सा लिया। सब वह हमारी नीति में निश्चय था। उस प्राणदोलन के पहले या बाद में तो संघ अधिवेशन होना ही चाहिए था। यह नहीं हुआ। कई लोगों ने हमसे पूछा कि क्या यही सर्वोपर्य है? कुछ ने यह भी कहा कि देखो अब सर्वोपर्य प्राणने प्राप्त की रूप में प्राया है। प्राण जे० पी० ने कहा कि 'सब से या राध में निश्चय कर उसका समर्थन किया हो, ऐसी बात नहीं है।' अब हम विचार करें। मुक्त चिंतन करें। इसके आधार पर गणसेवकत्व की श्रौर बड़ संकेतों? बिहार प्राणदोलन के पक्ष में वे बातें जाती हैं—(१) श्रद्धाचार (२) चुनाव के बाले धन का आधार, (३) महंगाई, (४) युवा प्राणोत्थ को गांधी मार्ग पर अहिंसक मोड़ देना। यह भी ठीक है कि ३५% की सरकार है लेकिन विधानसभा के अंग होने के बाद वे समझाए हल गही हो पायेंगी, दल-विहीन सत्र नहीं आ पायेगा।

इतने ज्यों के जो सत्र अधिवेशन के प्रतिनिधि को वापस बुलाने के अधिकार पर चर्चा नहीं हुई थी। आज वह हो रही है। इसी से स्पष्ट होता है कि यह आन्दोलन वैचारिक नहीं राजनीतिक आन्दोलन है। चार साल पहले धराराणी में हमने राजधानि में परिवर्तन की बात को गमन बताया था। उसकी परिवर्तना की बात थी। प्राण हम उसी में परिवर्तन की मांग कर रहे हैं।

कोई इकार नहीं कर सकता कि श्रद्धा-चार, महंगाई, बेरोजगारी, अत्याय घटि कई प्रश्न मूर्तरूप से सामने हैं। लेकिन इनकी

जड़ हमारी सामाजिक भाग्यताओं में गहरे पंटी हुई हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए ७५ दल काम कर रहे हैं, लेकिन वह जगते हुआ नहीं। इसीलिए इस देश में ग्रामस्वराज्य का विचार प्राया। यह गाँव तक ही सीमित रह जाने वाला विचार नहीं है। ग्राम स्तर के चिंतन से देश भर में नवनिर्माण की नींव रखेगी। कोई भी स्तर परिवर्तन से अछूता बच नहीं रह सकता।

एक सामाजिक विचार होना है। इसके आधार पर राजनीति चलती है। प्रायिक बाधा उसके प्रदुष्ट बनता है। वह बाधा बना रहे और उसके परिष्कारन बदल जायें ऐसा होना जरूरी है। यह दुराशा माथ है। हमारी सरकार जब ऊपर की श्रौर, सरकार की श्रौर रहेगी तो वह राजनीति होगी और जब नीचे की श्रौर, जनता की श्रौर रहेगी तो लोकनीति होगी। प्राण ऐसा लगना है कि हम इस राजनीति के मार्ग की श्रौर चल पड़े हैं।

प्राणदोलन करने से पहले हमें इन बातों पर गौर करना चाहिए (१) स्वराज्य से पहले श्रौर बाद की स्थिति (२) देश में विदेशी ताबतो द्वारा किया आ रहा प्रकार। यदि उनके कारण हमारे दुःख हुए तो हम कमजोर होंगे क्यों नहुँदुख की समाधान है। (३) येलवाल में सभी दलों ने हमारी तटस्थ भूमिका को स्वीकार किया था। अब सगता है कि हम उसे तोड़ रहे हैं। (४) इस समय प्राणने आन्दोलन में एक ऐसी घाटा है जो दोनों तरह के नामों को चलने देना चाहती है, वह 'दुग्धल टॉक' चलेगी नहीं। (प्रवाश भाई का इमारत धीरे-धीरे प्रादि की श्रौर रहा होगा जो ग्रामस्वराज्य के साथ-साथ इसे आन्दोलन नर-सुदृढ, विश्व-समर्थक है—जो अहं है अपना-अपना काम करें। विनोबा ने खुद अतिम दिन जिसे स्वीकार, सबको स्वीकृति दी।) (५) गांधी स्वयं सत्ता में गये नहीं। सत्ता विकास भर कर सकती है। परिवर्तन नहीं। अब तक हम यह विचार देते थे कि प्रदुष्ट का निर्माण विचार-चिंतन करना है। अब उससे हट हट रहे हैं। (६) प्राणियण सत्र का बिहार आन्दोलन के साथ बहुत इतनेमाल किया गया। इसके बारे में नेषष एक ही वाक्य कहेंगा 'लोकसेवक के निष्ठापन' में केवल अहिंसा शब्द है।

प्राण के शीतल प्रसाद ने कहा कि वे किसी के—गांधी, विनोबा, जे० पी० के लोछे हैं नहीं। लेकिन प्राण जो हालत बनो है उसे देख कर उन्हें तो सगता है कि गुगणत श्रौर बिहार में जो हुआ वह २२ वर्ष पहले ही होना चाहिये था। अब ऐसी हालत में क्या करें, उन्होंने स्व विवक्त सुभाये—(१) शुद्ध-मृग की तरह वेत में सिर छुआये (२) हिमक शक्ति का सुभावला करे। (३) अहिंसक शक्ति से मुभावला करें (४) आत्महत्या कर लें।

चार बाधु—व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह पूर्व जन्म के संस्कार लेकर आता है उसी तरह जब देश जन्म लेता है तो पूर्व संस्कार उसके साथ आता है। संकेतों पूर्ण की मुतामिने पुर्नजन्म के समय (१९४७) दो संस्कार हमें दिए, सरता की साक्ष्य और आलस्य।

प्राणारी के बाद वे दोनों बगले बरती गयी। चुनाव पद्धति ने भी यह किया। सत्ता की साक्ष्य में उम्मीदवारों ने चाहे जो तरीके अपनाये और जनता ने 'वोट देते भर से काम चल पायेगा, सब फिर सरकार ही करेगी' ऐसा सोच कर अपना आलस्य बढ़ाया।

बहुमत ही मंगलकारी है। अल्पमत धम-गलकारी है यह माना। इस तरह ४१—१०० हुआ है, और ४९—० मान लिया: तो वर्तमान संसदीय गणतंत्र जब तक ऐसी रहेगा तब तक वे सब दोष सरकार में रहेंगे।

इसीलिए हमें उपाय प्रकृत ३५ बहुत उपकार मानना चाहिए जिसमें हरे प्राण स्वराज्य विचार' दिया, सर्वसम्पति का सिद्धांत दिया। लेकिन साक्ष्य और आलस्य समाप्त होगा। लेकिन यह सम्बा कोष है प्रम से कृते से अक्षेण। ऊपर-ऊपर सत्र १२४ सभापित करने से यह होगा नहीं।

जे० पी० ने जो किया ठीक है, नहीं तो हिया भवती, लेकिन उसका हमें नेतृत्व नहीं लेना चाहिए था। प्राण बुभुना तो हमारा काम है लेकिन बुभुने-बुभुने उसमें भीतर घुस जाना नहीं है। हम वहाँ केवल सगता दें, नेतृत्व नहीं। प्राण स्वर राज्य हमारी बनति है उसे छोड़ कर देश आन्दोलन में प्राण नहीं चाहिए। दोनों काम साथ चलना भी ठीक नहीं क्योंकि प्राण स्वराज्य तो हमारा प्राप्त की सिक्का है। कुछ समय में नवनी

सिक्का बसली सिक्के को ही बाजार से बाहर कर देगा। हमारी पद्धति दवाव को नहीं है मनाव ही है। वहाँ जो चल रहा है वह दवाव है।

यदि हम एक-एक पहलू को लेकर आन्दोलन करते हैं तो ठीक है। सब मिल कर शिक्षा का कार्यक्रम दें और नोटिस दें। वह पूरा नहीं होता तो फिर घोषित करें कि छात्र स्कूल छोड़ दें। बिहार में हम जो कर रहे हैं यदि वह सब करते रहे तो धरना बुनियादी कार्यक्रम खो बैठे।

बैचनराय बाबू—एक बात की ओर ध्यान दें। हम खुद कोई आन्दोलन शुरू कर रहे हैं या कोई प्रतिनियोग धर्म सामने आ जाता है तो उसमें पड़ रहे हैं? हमने दूसरा काम किया। बिहार गये होते थे भाई, तो बिहार के हम लोग जो कर रहे हैं उसमें बुद्धिभेद नहीं करते।

हम ध्यान पर बैठे हैं, लेकिन बल के धर में धाय लग गई। तो क्या हम ध्यान पर से उठने भी नहीं? इतने सालों से हमने बुनियादी काम किये। वहाँ गया कि बहुत आजादी है, कम से कम बोलने की तो है ही। छात्रों ने आन्दोलन शुरू किया। ठीक था या नहीं यह बहुत अभी छोड़ दें। उन्हीं गोतियों से चुप करने की कोशिश की गई। जे० पी० ने बोच में सखे होकर कह दिया कि इस देश में तुम गोती से किसी को चुप नहीं कर सकते। फिर मौन जुलूम निकला, सभा हुई, उनके बयान छपे, पीरे-पीरे वहाँ की किजा बंदनी।

नहते हैं कि बोट वा अधिवार है, उससे सरकार बरल सकते हो। लेकिन सब जानते हैं कि वह जितना खोलता हो चुका है। बिहार के मुख्यमंत्री के चुनाव में गिने के एक अन्त-राष्ट्रीय स्वयंसेवक की चुनाव क्षेत्र में बातावना प्रभाया गया घाटक बिठाने के लिये। धर में ही नारे लगा रहे हैं, कि जे० पी० जनजन विरोधी है। ऐसे नारे लगाने वाले इस देश में उठने वाली आवाजों को गोती से चुप कराना चाहते हैं।

भाबा ने कहा कि ये पूर्वाचन वाले भावनाप्रधान लोग होते हैं। बिहार में दृष्टा बाबू के राज में, एक बार गोती चनी, धरनी

धार वह न मुख्यमंत्री बन सके और न उनको पार्टी की सरकार बन पाई। लेकिन धर वहाँ इतना जुलूम हुआ और हम अपने मूलगामी काम में ही लगे रहे। धर वहाँ इस आन्दोलन में गरीब थे धरनी, नीचे से ऊपर तक हर स्तर तक के लोग लगे हैं। क्या हम सर्वोदय वाले इससे अपने को मुक्त मान सकते हैं? जिस पीढ़ा ने इस सबको स्पष्ट किया, उससे हम अपने को बखूता रख सकते हैं? उसी स्पष्ट के कारण ही तो हमने धरना मूलगामी काम शुरू किया था। धर सब खूब समझ लें कि बिहार सर्वोदय-मण्डल ने यह आन्दोलन शुरू नहीं किया था, लेकिन उस घटना के परिणाम ने उसे इसमें शामिल होने की मजबूर किया। अधिवार हम धराम सभाएँ बना कर क्या कर रहे थे? धराम स्वराज्य में हम लोगों को उनके बतल्य धर अधिवारों का भान कराना चाहते थे। लेकिन धर बोट ने लोगों को लगातार गुलाम बनाना शुरू किया था। इस धर इस आन्दोलन के कारण उनका भारवलम्बन टूटना शुरू हुआ है। वे अपने अधिवार और बतल्य दोनों जानने की कोशिश कर रहे हैं—यह ठूठा एक भिन्न निमित्त से।

लोक शक्ति पैदा करने के लिये तो हम काम करेंगे, लेकिन जब वह पैदा हो जाय तो जो उसे चुलस रहा है उसको निन्दा भी नहीं करेंगे क्या? बिहार में यही किया गया है बस। बुनियादी काम की बात होती है, अधिवार समाज के निर्माण की। हम भी एक क्षेत्र को लेकर (रखनी में) शुरू रहे हैं। बाबा ने कहा था कि धर किसी एक छोटी सी जगह को एयरकण्डीशन्ड नहीं बना सकते—पूरे देश में हिंसा की किजा होगी तो हम छोटे-छोटे सेवों में एयरकण्डीशन्ड स्थिति नहीं पैदा कर पायेंगे। धर यह धरनुधर धरने भी लगा है। तजगुर, मुसहरी, रूनी की कई ऐसे क्षेत्र हैं वहाँ हम काम करते रहे—कुछ काम नहीं बना उनमें।

लोग कहते हैं कि इस आन्दोलन में कई तरह के लोग हैं हम उसे अपने तरीके से नहीं चला पायेंगे। लेकिन क्या गांधी के आन्दोलन में सब तरह के लोग नहीं धरए थे? वहाँ लोगों की गांधी की जहरत थी तो उन्होंने उसे चले की पून दी। बरला चला दिया

और गांधी की मदद ली। जहाँ जे० पी० की लोग 'मानितमय तरीके' की पून दे रहे हैं उन्हें अपने साथ करने के लिए।

एक परम्परा रही है सर्वोदय में। यहाँ लोक सेवकों में क्या नहीं किया? सत्याग्रह हुए, प्रबन्ध समिति के लोग चुनावों में प्रचार तक करने गये। लेकिन धरना जे० पी० ने गरीबों से चुप करने वालों की निन्दा भर की तो हम उनके सिलाफ हो रहे हैं।

बहा जाता है कि ऐसे आन्दोलनों में खतरा है। ठीक है खतरा तो जीवन में भी छिपा हुआ है। दृष्टा को भी गीता ठीक महाभारत के बीच सुगामी पड़ी, उसने भी उतना खतरा तो भोल लिया ही। जे० पी० दन छात्रों को, लोगों को लोकशक्ति, अधिवार, स्वावलम्बन धरि सिद्धांत उनके कालेजी, परों में सुनते तो कोई सुनता भी नहीं, अमल की बात तो छोड़ दे। लेकिन धरना जे० पी० वह गीता मंदान में सुना रहे हैं लोगों, वो के सुन रहे हैं बडे ध्यान से, अमल भी करने की कोशिश कर रहे हैं।

हमने सोच रखा है कि हमारी पद्धति पर बुनिया एका-एक चलने लगेगी, लेकिन धरना जो चल रहा है हम उससे अपने को बिलकुल अलग रख सकेंगे क्या? दूसरे उभय से वही काम शुरू किया जा सकता है। इस पहलू के लिये हम बजुड बनाए हैं। अनता ने पार्टी बालो को बला दिया है कि धरनाका गुन समाप्त हो गया है। धरना बिहार की जनता में पधमुत्तता भी भावाभा जागी है। बिहार के लोग तो सभी दलो का राग देख चुके थे, धर में उनसे उरकाव हो गए है। बिहार कार्य सं, पार्टी की भाया नहीं सता भी भाया खोल रही है। धर पटना धर केंद्र की भाया में भी फल हो जाता है। पटना वाले साथ दे देते हैं लेकिन दिल्ली का तानाशाह इसे देखना नहीं चाहता। इस सरकार ने हिंसा को सबसे ज्यादा प्रोत्साहन दिया है, आन्दोलन ने नहीं—यह फल साफ है।

मैं धरपते फिर कहना चाहूंगा कि इस आंदोलन से हमारे मूलधराम में बाधा नहीं पडेगी। उसके लिए एक धरनुत्तता ही बडेगी।

सुरेन्द्राचम भाई ने मुवह जे० पी० और वैदनाय बाबू के भापण को फमन: मानिक हदस्पर्शी बतलये हुए कहा कि इन भापणों में

बाद मेरे जैसे श्राद्धी के लिए जो पिछले ५१५ महीने से बिहार नहीं गया हो, कुछ बहने को रह नहीं जाता। उन्होंने श्राद्धोलन के पक्ष या विपक्ष को न छुकर एक नया सवाल सदन के सामने रखा—“केंद्र और राज्य सरकारों के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण हो? मंत्री एक जमाने में भ्रष्टेजो के प्रति नरम थे फिर एक समय आया जब उन्होंने अर्धज सरकार को गंतान की सरकार कह दिया। आज जे०पी० भी इस सरकार को गंतान की सरकार कहने को तैयार लगते हैं। लेकिन क्या हम लोग बहने को तैयार हैं, ऐसा कहने के लिए? यदि नहीं तो फिर हमारी नीति उसके प्रति सहयोग और श्रान्तिधन की होगी। हमें बाबा का कैमला मान्य होगा। बाकी की चीजें हम तग करेंगे—मंत्र बाबा दें”।

जे० पी० को अब मेरे आपके जवाब की जरूरत नहीं है। इस प्रसंग में राजनैतिक पाटियो की तरह अब भी फूट पड़ सकती है। यह फूट न पड़े यह मेरी प्रार्थना है। यह हमारे धीरज की परीक्षा की घड़ी है। यदि हम उस श्राद्धोलन से सहमत न भी हो तो उसे स्वयं अज्ञान लेने का एक मोता दें। जे० पी० ने इसे बारडोली, बन्पा रण की तरह बहा है। ठीक है उन्हें करे दें।

सामनास्यन बर्मा ने पूछा कि श्राद्धोलन पर चिन्तन करने वाले हमारे तस्वीर विगा-उने की बात करते हैं। क्या हमारी कोई तस्वीर है जो लोगों के सामने? हम लोग इतने बुरासो से यह कहते आ रहे हैं कि जब जन शक्ति लड़ती होगी तो यह होगा—वह होगा सब समस्याएं घाने हुए होने लगेंगी। लेकिन ‘अब’ अब वह जनशक्ति लड़ती हो गई है बिहार ने तो हम भाग रहे हैं वहाँ से, कपार पर खड़े चिन्तन कर रहे हैं। आज जो बिहार श्राद्धोलन से सहमत नहीं है उन्हें वहाँ की परिस्थिति को पूरी तरह समझ कर ही अपनी राय बनानी थी, वे बिहार जाते, जे० पी० से मिलते, तब उनसे प्रसहमति की बात करते तो ठीक रहता”।

सर्वभोवास ने सदन को बताया कि हिमाचल प्रदेश के लोग सोचते हैं, महत्त्व करते हैं कि बिहार का श्राद्धोलन सर्वोच्च माने चला रहे हैं। जब हम गाँवों में जाते हैं तब लोग हमसे पूछते हैं कि बाबा का एक

मत एक धीर जे० पी० का मत है। आपका क्या मत है? ,

श्रद्धाचार महगाई के विषय यह श्राद्धो- है, नौबान लोग चला रहे हैं। मुझ में भी जवानी का जोश है लेकिन यह सब हल कैसे होगा यह सवाल तो मेरे मन में उठता ही है। श्रद्धाचार के कारण मंत्रियों को त्याग पत्र देना पड़ेगा क्या? मंत्रियों श्रद्धाचारियों के कारण संस्थाओं में श्रद्धाचार नहीं होता? यदि इन संस्थाओं में श्रद्धाचार है तो उसके लिए हम उसके मंत्री श्रद्धाचारों जिम्मेदार नहीं मानते, वह क्या त्यागपत्र देता है?’

“हमारे देश में अक्षरार श्राद्धा है, प्रेस को श्राद्धा ही है। लेकिन हमारी संस्थाओं की तरह की तो हम देखें। यहाँ चाहें जो कोई किसी को भी निकाल सकता है। क्या हमारी संस्था की तानाशाही स्वयं मानी जा सकती है?”

हमारी पद्धति विचार फंला कर उसके लिए एक ऐसा वातावरण बनाने की ही जिस में विधान की विचार के पीछे चलना ही पड़ेगा। हम धीरज और मनाब से विचार फंलाते थे अब तक। हमारी संस्था में हम सुनते थे कि राजनीति में जाना नहीं चाहिए, समस्यायें नीचे से ही हल की जा सकती हैं। लेकिन आज हम विधान सभा को ही समस्याओं का केन्द्र मान रहे हैं। जो यह समझते हैं वे उसके भीतर जायें और वहाँ बैठ कर समस्याओं से लड़ें। धीर भीतर नहीं आना चाहते तो जो भीतर है उन्हें बापस बुलाने की माँग क्यों करते हैं? ‘धीर फिर उन्हें बापस बुलाने के श्राद्धोलन में हमारा साथ भी कौन दे रहे हैं—” यह सवाल सदन से पूछने हुए लक्ष्मीभाई ने बहुत ही व्यंग से छुद्र जवाब दिया—“महान पवित्र वीजू, पटनायक धीर महासमाजवादी जनसंघ।” अतः मैं उन्होंने किसी को ठेस लगी ही तो उसकी क्षमा माँगी।

कपार प्रशांतः लोकसेवक के निष्ठापन में अहिंसा शब्द है, शान्तिमय नहीं और अहिंसा ही हमारी टेक रही है। बिहार के श्राद्धोलन के सिलसिले में शान्तिमय शब्द की ही चर्चा हुई है। ये दोनों शब्द जिनके महत्त्व में साथ अन्तर के लिए रखे गये हैं उनमें मुझे लगते नहीं हैं। बिहार की परिस्थिति धीर हिंसा से शान्ति की

ओर आई है। शान्ति से अहिंसा की ओर भी जा सकती है। श्राद्धादी के बाद की पीढ़ी का शान्ति पर किनास प्रायः रहा है यह हम सब जानते हैं। फिर भी बिहार में शान्ति की कितनी घटपटाए फटती है। फुलवारी शरीक जेल में सत्याप्राही पीठे गये। कहीं कोई प्रति-कार नहीं किया उन्होंने। जेलर तक ने श्राद्धचर्य व्यक्त किया। कहा कि ‘जब इन सत्याग्रहियों को पीटा जा रहा था तब वे केवल इतना ही कह रहे थे हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा। ये सब सत्याग्रही अहिंसक ही गये हैं ऐसा तो मैं नहीं कहूँगा। फिर भी धीर हिंसा के वातावरण से शान्ति की तरफ भाये हैं।

ओड़ने वाली ताकत हम लोग है तोड़ने वाली नहीं ऐसा कहा गया है क्योंकि दो बड़ी पाटियो को हमारे इस श्राद्धोलन ने हम से भलग किया है। फिर भी एक उदाहरण मैं आपके सामने रखता हूँ। बिहार के ३ हजार डाक्टरों ने एक साथ इस्तीफा दे दिया था। उनके बीच का विवाद मुझमें के लिए स्वास्थ्य मंत्री धीर डाक्टरों के प्रतिनिधि जे. पी. के ही कम्परे में लगाना मिसले रहे हैं और फल में जे० पी० ने ही मध्यस्थता करके डाक्टरों की हड़ताल को टुड़वाया। जोड़ने और तोड़ने के सन्दर्भ में हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमें वियो जोड़ना है। हम राज-नैतिक दलों को जोड़ने वाली ताकत बनें या ६५% गैरराजनैतिक बनता को जोड़ने की क्या जवना को छोड़कर केवल दलों को ही जोड़ने का काम करें? बिहार के इस श्राद्धोलन में ६५% गैरराजनैतिक दलना को जोड़ने पर ज्यादा जोर दिया है धीर साथ ही साथ दलों को भी।

यह भी कहा गया कि श्राद्धोलन में व्यवस्था में ऊपरी लेव ही होगा। समस्याओं को पूरी तरह हल करने के लिए व्यवस्था में सामूह्य परिवर्तन करना होगा। यह भी कहा गया कि उपर की बुराइयों को मिटाने के लिए पहले से ही ५० राजनैतिक दल काम कर रहे हैं। मैं कहना चाहूँगा कि इन ५० राजनैतिक दलों में अपनी ताकत इन ऊपरी समस्याओं को बनाने में लगायी है मिटाने में नहीं। हम सुनिवादी काम में रमान दे और ५० राजनैतिक दलों पर ऊपर की बुराई को हटाने का काम (मंत्र वेज १५ पर)

पसंदगी साफ है : क्रांति या चालू व्यवस्था का पांडित्यपूर्ण समर्थन ?

नारायण देसाई

घटकलें लगायी जाती हैं कि धातिलर जयप्रकाशजी ने बिहार के छात्र धातिलर में योग क्या रीया । क्या उनके पास कामो की कमी थी ? या वे सक्षी प्रतिलिड चाहते थे ? या वे राष्ट्रपति या प्रधानमत्री बनने की अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने का यही रास्ता देखने हैं ?

हने कुछ बातें समक लेनी चाहिए । सबसे पहले तो यह मान ध्यान में रहे कि जयप्रकाशजी ने अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि बरबन इस धातिलरन का नेतृत्व सभूला है ।

यह मान सही है कि विश्व भर में पिछोे कुछ बर्षों से तत्पणे द्वारा जिस क्रांति की धनुवाई हो रही है उनका महत्व समझने वाले इनेगिने भारतीय नेताधो में से एक जयप्रकाशजी हैं । इनीलिए कुछ सहीने पढ़ने पबनार संगीति के समय, बिनेबानी से सलाह करने के बाद जब राष्ट्र के युक्को से गणतंत्र के लिए धागे धाने का धातुवान दिया तब भी उन्होंने यही धारा व्यक्त की थी कि एक राष्ट्र बंधाी रचनात्मक क्रांतिकारी धातिलरन का नेतृत्व तरण करे । नेतृत्व तत्पणे के करने की बात थी, जयप्रकाशजी के नहीं ।

बिहार के इस आतिलरन के तिलसिले में भी छात्र कई बार उनसे धातिलरन का नेतृत्व करने का प्रापह कर चुके से । पर जयप्रकाश जी बराबर यही कहते रहे कि आतिलरन का नेतृत्व धातिलरन है ।

आतिलर जब १८ मार्च को पटना में युविस का बेनहादा दमन देखा, धोर घंटो तक युविस की नजरो के सामने धातिलरनो होते हुए भी सरकार को कोई कारवाई करने न पाया तब तस होकर जयप्रकाशजी ने कहा कि 'यव मैं युव नहीं बैठ सकूंगा । जय-प्रकाशजी के इस धातिलरन में पढ़ने से धुनव हुए भोग बरा बभी यह भी लोचंगे कि इन घटनाधों ने उन्हें लुद को नयो धातुव नहीं किया ?

दूसरा प्रन यह धातुा है कि धातिलर जयप्रकाशजी पने तो गये, लेकिन सदस्यवर्षों गये? यानी इस धातिलरन में धाचार्य रामपूडिजी, मनमोहन, बिपुरारिरण धादि

को पसीटने की क्या जरूरत थी? २०-२१ प्रलेख को पटना में मिसी संगीति ने इस धातिलरन में श्री जयप्रकाशजी के काम का समर्थन किया था । संगीति ने यह भी माना था कि सर्व सेवा सच के सेवादाम अधिवेशन में बने धातुसूची कार्यक्रम के धनुष्य ही यह कार्यक्रम था पर यह प्रन नेवल संविधान का नहीं था । धाचार्यजी, मनमोहन धादि इस आतिलरन में धाये उसके पीछे एक कारण तो स्पष्टरूप से यह था कि जयप्रकाशजी बीमारी के कारण वेतोर जा रहे थे धोर उनकी धनुसिस्थिति में धधिक समय बिहार में देने के लिए उन्होंने इन मियो से ध्रापह किया था । जयप्रकाश के प्रति व्यंगितगत प्रेम व धदा, उनके स्वास्थ्य के बारे में चिंता तथा उनका बोध कुछ हल्का करने की वृति तो इन लोगो के काम करने के कारण से ही, लेकिन साथ वे सभी यह भी देख रहे थे कि जयप्रकाशजी के इस आतिलरन द्वारा गांधीजी के धादर्य समाज में चरितार्थ ही रहे हैं । नरना भूदान यज्ञ के प्रारभ से धाज तक प्रत्येक प्रकार के 'सत्याग्रहों' के मोको से प्रविलय रहे थे लोग इस धातिलरन में क्यों धाये? उन्होंने देखा था कि समाज को जो कष्ट हैं वे इस समय इतने धधिक बढ गये हैं कि धाचार्यमक परिवर्तनो में ही युवात्मक परिवर्तन कर दिया है । उन्होंने यह भी देखा कि धारो धोर ऐंसा मानजरण बना हुआ जिससे हिसा की ही उत्तेजना मिल रही है । इस रोरने के लिए इन शक्तिलो से धधिक प्रन धातिलरन आतिलरन लिङने की जरूरत थी जो बिहार के धातिलरन द्वारा पूरी हो रही थी । इन मियो ने यह भी महसूस किया था कि हमारी सल शोशिस करने पर भी हमारा धातिलरन एक अधी गरी में धाकर फस गया था, वह सेक्की का ही धातिलरन रह गया था : सारे धाधियानो और मोरचो के बाधुद भी धोर इधर यह अन धातिलरन हमारे सामने उपस्थित था, हमारे मोडने के अनुसार मुडने के लिए ।

कुछ भोग जयप्रकाशजी तथा उनके साथियो को बिहार के धातिलरन में जो कुछ भी धोडी बहन डिटुड दिया, देखा या

धमदता ही है उसके लिये जिम्मेवार ठहराते हैं । एक तरह से यह ठीक भी है । जिम्मेवार लोग धपने धातिलरन के सारे पाणो को जिम्मेवारी धपने उपर लेते ही हैं इसीलिये लो विधान सभा के सामने सत्याग्रह करते समय अए दर्शको द्वारा कुछ जबर्दस्ती या धमदता होती है, लो भी जयप्रकाशजी उसने लिए धमा याचना करते हैं । वारसत में लो इस धातिलरन में जयप्रकाशजी का काम कुछ-कुछ समुद मयन के समय नीलकड-सा है । धनक विचारकों ने यह स्वीकार किया है कि गांधी के बाद धपने पक्ष में होने वाली भूतलो को स्वीकार करने वाला तथा उसने लिए धाहिर में धाफी मांगने वाला यह पहला लोक नायक है ।

जयप्रकाशजी ने इस धातिलरन में प्रवेश कर इते तीन प्रकार से सुष्ट किया है । उनके धाने के कारण धातिलरन को महिसक मोड मिला । यह लो धव धातिलरन के विरोधी को स्वीकार करने लगे हैं कि जयप्रकाशजी इस आतिलरन में नहीं धाये होते तो पूरा बिहार धाग में जल उठता । १८ मार्च की घटनाधो ने इसी प्रकार का मोड लिया था । जय प्रकाशजी की दूसरी देन धातिलरन को एक सधमित रूप देने की थी । पाव जून को जलस में कोठने वाले धाधो पर जब इन्दिरा त्रिनेड के लोगो ने गोली चलाई तब धाधो का उत्तेजित होना स्वाभाविक था । लेकिन उसके बढने में उनके मुह से निबला यह सुव कि 'हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा', इस सामाजिक सधम का सूचक था । ये छात्र कोई प्रतिलिखन सत्याग्रहो नहीं थे । ये धपने धपने गांधो की छात्र सधय समिसियो के साधारण सदस्य थे । साधारण धाधो द्वारा दिवाया गया यह धनुसालन जयप्रकाशजी द्वारा इन धातिलरन में धाविल किये गये सामाजिक सधम का धनुन था । जयप्रकाशजी ने इस धातिलरन को लो लोयरा धायाम दिया वह है एक सभूर्य क्रांति के लिए शीर्षमान तक चलने वाले सधय की लोयरी ; बिहार के किसी धातिलरन के पीछे, या यों कहिये कि इससे पूर्व हुए भारत के

किसी छात्र भादोलन के पास वह सम्पूर्ण नाति की दृष्टि कहा थी जो जयप्रकाशजी ने इसे दी है ? भादोलन का यह पक्ष उसे गुजरात के भादोलन से विभिन्न बनाता है। गुजरात के भादोलन में उत्साह था, इस आदोलन में धृति-उत्साह-समन्वय है। गुजरात के भादोलन में वर्तमान शासन को बदलने का जोश था, इस आदोलन में सम्पूर्ण ध्वस्त्य भी को बदलने का होश है।

इसी कारण से इसे 'टांगलिंग गैम' नहीं कहा जा सकता। टांगलिंग गैम वह होता है जिसमें एक शासक को बदलकर दूसरे को उसके स्थान पर बँटाने भर का प्रयोजन होता है। किन्तु यहाँ तो जयप्रकाशजी ने प्रारम्भ ही से कहा था कि 'सापनाप को बदलकर मागनाप लाने में मुझे कोई रुचि नहीं है'।

बया इस भादोलन से महगाई और भ्रष्टाचार दूर होने, जो इसके उद्देश्यों में से दो प्रमुख उद्देश्य हैं ? यह सच है कि महगाई एक जटिल प्रश्न है कि जिसका संन्य भ्रष्टाचार में, राष्ट्र की जनराल तथा कुछ भ्रंश में अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति से भी है, तथा भ्रष्टाचार राजनीति, प्रशासन, व्यापार, उद्योग, शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में व्याप्त है। इस भादोलन से जो हो रहा है, वह बातावरण सँवार हो रहा है। स्वराज भादोलन में शामिल होने वालों से ध्वस्त पूछा जाता था कि नमक का कानून तोड़ने से स्वराज कंसे प्रायोगी और भूदान भादोलन में शामिल होने वालों से यह पूछा जाता था कि भूमि के टुकड़े करने से बेरोजगारी की समस्या कंसे हल होगी। लेकिन हर क्रांतिकारी यह जानता है कि क्रांति के लिए बातावरण निर्माण करना यह प्रथम कर्तव्य हीनी है। महगाई और भ्रष्टाचार के बारे में लोग एक दूसरे से शिकायत तो अवश्य करते रहते थे, कोई मिलने के लिए आ जाते तो उसके सामने चुनडे रोना भी होता था। पर महगाई और भ्रष्टाचार के हिलाकार फिर उठाने का काम इस भादोलन ने ही किया है, यह मानना होगा।

भादोलन के बारे में एक प्रायोगिक यह किया जाता है कि विधानसभा के विघटन की माग अन्तर्जातिक है। साथ ही यह भी

कहा जाता है कि इस भादोलन से ऐसे तत्व निकलेंगे जो इस देश में फासिज्म लायेंगे कोयला खदानें मजदूरी की हड़ताल के प्रदत्त पर विदेश प्रधान मन्त्री ने त्यागपत्र दिया, नये चुनाव हुए, नयी सरकार प्रायी बना इससे ब्रिटेन का गणतन्त्र कमजोर हो गया ? बल्कि इस प्रकार की परम्पराएँ तो ब्रिटेन के गणतन्त्र को मजबूत करती हैं। प्रदत्त यह है कि गणतन्त्र में कौन सर्वोपरि है जनता या किसी भी पार्टी का भावनाकामन ? विधानसभा अंग की माग जनतन्त्र में जनता को सर्वोपरि स्थान देने के लिए है। यह सर्वोपरि स्थान माने अपने अन्धीद्वारों को खुद पसंद करने का अधिकार। उनको चुनने का अधिकार, उनकी नीतियों का निर्धारण करने का अधिकार, तथा आवश्यकता ही तो अपने प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार। वही बात फासिज्म की। इतिहास ही इस बात की साक्षी देगा कि बिहार के इस भादोलन में फासिज्म किस घोर है—हुजारे स्थानों पर गठित होने वाली छात्र संघर्ष समितियाँ, जन संघर्ष समितियाँ, महिला मण्डल आदि की बाराँदा में या लोगों की सभा या जुलूस के लिए इकट्ठा न होने देने के लिये जहज्ज, बस और ट्रेनों को रोकनेवाले, ट्रेनों को मोड़ने वाले, रैडियो तथा दसबारों में बेनहासा भूटा प्रचार करनेवाले, संग्रहस्थलों को पकड़ने के बदले उन्हें पकड़नेवालों को ही आतंरिक सुरक्षा कानून की आड़ लेकर गिरफ्तार करने वाले, निगल घोर शान जनता के बीच शस्त्रों का रोबदार प्रदर्शन करनेवाले, बेनहासा गोली चलाकर उसकी ग्याप जाच करवाने तक की परवाह न करनेवाले पक्ष की कार्रवाई में है ?

एक इस्लाम यह भी लगाया जाना है कि यह भादोलन पक्षियों के बेटों का भादोलन है। यह समझ से नहीं जाना कि इस इस्लाम लगानेवालों पर हलना प्राधिक रचिन है या इनकी बुद्धि पर रोना। किसी भी तटस्थ निरीक्षक को प्रथम ही दृष्टिपट में यह समझ में आ जायगा कि भादोलन में पक्षपात पक्ष निघर है और सामान्यजन निघर है। जून मास में हुए कम्युनिस्टों के जुलूस के लिये जो सच हूमा और जयप्रकाशजी के जुलूस के खंचे का अनुगत सायद ही और

एक वा निरन्तर, भादोलन के विरोध में असबारी में छुपनेवाले एक-एक विज्ञापन के खंचे घोर भादोलन के पक्ष में निकलनेवाली पत्रिकाओं के खिंचों की तुलना कीजिये प्रचार के खंचे को देखिये तो यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि कुबेरजी की बुरा गरीब भादोलन कार्टिनों की मोर नहीं, लेकिन शासन की पूरी शक्ति से समर्थित वाप्रेस या विदेशी फंडों से समर्थित कम्युनिस्ट पक्ष के साथ है।

रह गया प्रथम प्रगतिविरोधी पक्षों के समर्थन का यह प्रायोगिक करनेवालों की प्रगतिवाद की परिभाषा बना यही है कि जो वास्तु व्यवस्था को टिनाये रखना चाहता है, वह प्रगतिवादी है और जो उसमें भ्रामूल परिवर्तन माना चाहता है वह प्रतिगामी है ? अगर यही उनकी परिभाषा हो तो वह परिभाषा उन्हीं को मुबारक।

असल में जयप्रकाशजी पर जो जगह-जगह से वाग्वाण बरस रहे हैं उसका प्रमुख कारण यही है कि जयप्रकाशजी एक जैसी नाति करना चाहते हैं जिसके कारण वास्तु व्यवस्था को महत्व के आसन डोल रहे हैं। पिछले बीस वर्षों में भूदान-भ्रामदान-भ्राम स्वराज, लोकस्वराज भादोलन ने जो भ्रामु-लाप नाति करने के लिए पुहर्षार्थ किया उसी को ही जयप्रकाशजी ने एक व्यापक जन-भादोलन के साथ जोड़ दिया है। इसीलिए लोग उनसे पबराकर पूछते हैं कि क्या प्राप अपनी लोकनीति का विचार माना चाहते हैं, क्या निपट्य लोकतन्त्र की बातें करेंगे, क्या वे बातें व्यवहार हैं, आदि प्रश्नों की इस भर्षी में ही भय की एक इच्छा है, भय इस बात का है कि वही सुधुधरा लोक ह्वारे पक्ष को गोए तो वही बना देगा, तुम्हारा देव हमारे पुजारी को अग्रतिपट तो वही देव देगा ? वही तुम्हारा यह भादोलन हमारी यह राजनीति, अर्थनैतिक, भौतिक, सामरिक व्यवस्था को ही नहीं हिला देगा ? मूलगामी नाति के सारे चाहनेवालों के लिए बिहार के भादोलन ने एक सदांम सङ्का कर दिया है। पसंदगी बड़ी साफ है : नातिकारी कार्यक्रम को जनता तक पठवाने के लिए भादोलन में अपनी सारी तावत लगाओ या फिर फासिज्मपूर्ण एनीले करके वास्तु व्यवस्था को टिनाये के लिए बटे रही।

उपवासदान : प्रगति और आंकड़े

विनोबा जी द्वारा उपवासदान की गुरु-आप्त किये जाने के बाद उसी रोज मानी ११ सितम्बर ७३ को सभ के अध्यक्ष मिश्र राज बड़वा, कुच्छाम, दतपुर के डा० रविशंकर गर्मा तथा पूर्णचन्द्र जैन ने अपनी उपवासदान का सबल कर इस विचार की पुष्टि की। इससम्बर तक इसकी गति धीमी रही, लेकिन ज्यों-ज्यों इस विचार की मात्पना मिलने लगी लो-लो इसकी सख्या में वृद्धि होती जाती है। पर धर तक की जो गति रही है सोर हमनारी लक्ष्यांक है उसकी देखते हुए विद्ये दिनों के आरुटे सनोपवद नहीं कहे जा सके। धर तक विभिन्न प्रदेशों से प्राप्त उपवास-दानियों की कुल सख्या २०८६ तथा उनके प्राप्त रकम ६६,०३८-३३ है। उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बंगाल तथा राजस्थान के साधियों ने उपवास प्राप्त करने में अपनी शक्ति लगाकर सख्या बढ़ाने की कोशिश की है। मध्य प्रदेश में भी भले ही सख्या कम है, पर साधियों का प्रयास अधिक से अधिक उपवासदान प्राप्त करने में रहा है। १ जुलाई, ७४ तक विभिन्न प्रदेश से प्राप्त आंकड़े इस प्रकार हैं

विनोबा के इस प्रेरणादायी भावाहून पर सर्वोदय आन्दोलन में भास्था रमनेवाले देश-विदेश के साधियों ने उपवासदान सबल कर आन्दोलन के प्रति अपनी सम्मति जाहिर की है पर कुछ ऐसे भी साथी हैं जिन्होंने इस विचार को गहराई से समझा है। धर तक जिनने सकल्प-यत्न भरे जा चुके हैं वे १२ रुपये से १२० रुपये तक वार्षिक रकम की दर से भरे गये हैं। लेकिन कुछ मित्रों ने इस सीमा से एक बरदम आगे जाकर अपनी निष्ठा दिखाई है पीनी भीन (उ० प्र०) के बलराम कृष्ण जंक स्वामी विद्यादानन्द का भन्दाज है कि वे ज्यादा-से ज्यादा धारक वष तक जीवित रहेगे। एक साल का २५ रुपया उन्होंने धीनीभीत सर्वोदय मडल को दिया जो हमें प्राप्त हो गया है। शेष १० साल के २५० रुपये सर्वोदय सभ को देने हुए धरने सबल पत्र में कहा है 'यह दम साल का मेरा उपवासदान का पैसा है धरर इस साधि से ईश्वर ने मुझे अपनी गरल में गुला लिया

तो उपवास का शेष पैसा सर्वोदय के शुद्ध काम में खर्च किया जाय।' इन्ही के जतनगत रूप ने एक साप दो साल का सबल कर ५० रुपये सभ को दक्षिण भेज दिये हैं। उत्तरप्रदेश के एक निष्ठावान साथी जिन्होंने १२० रुपये वार्षिक उपवासदान का सबल-पत्र पर बिना नाम व पता दिये लिखा है कि 'यह १२० रुपये उपवासदान हेतु हमारा गुलदान है, इसे स्वीकार किया जाय।'

विनोबा के इस जातिकारी करम में देश के जिन साधियों तथा सख्याओं का सक्रिय तथा सामूहिक सहयोग प्राप्त हो सका है उनके हम विशेष धाराारी हैं। वे सख्याएँ जिन्होंने सामूहिक रूप से सबल किया है उनसे भी धर्य मण्डलों को नीले प्रेरणा तथा दिशा मिली है। जिन सख्याओं से हमें सामूहिक उपवासदान प्राप्त हुआ है, वे हैं—उत्तर प्रदेश बनवागो सेवा धार्यम गौरीदपुर, मिर्जापुर। धार्यकन्या पाठशाला इन्टर काॅज मुजबपतनगर। नगरपालिका इन्टर काॅज मुजबकरनगर। सर्व सेवा सभ प्रकाशन राउ-पाट, वाराणसी। सखनपाटी शक्ति समिति, बाह, जिला—धाराता तथा अ० भा० शक्ति सेना मडल, राजपाट, वाराणसी। महाराष्ट्र ब्रह्म विद्या मन्दिर, पनारा, वर्धा। धामरेवा मडल, गौतुरी, वर्धा। परमधाम प्रकाशन, पनारा, वर्धा। धारि सेवा मडल, तनवाडा, वाया—बागा, जिया टाण्डे। निगमोपचार धार्यम, उरुची कांचन, पुर्णे। सर्व सेवा सप-प्रधान कायाचर। मध्यप्रदेश—बन्गूरवा ग.पी स्मारक ट्रस्ट, मिबिल लाइन्स, रायपुर। शिरमंठ धार्यम, बीरगवा, इन्दौर। धाम-धरानी धार्यम टकलाई जिला-धारा। मध्य-प्रदेश भूदान यज्ञ जोई, भीषान। राजस्थान जैमलमेर जिला सारी धामोदोग वरिपद, जैसलमेर। सारी धामोदोग प्रकिष्ठान, सारी मदन, सारी बाजार, बीरमेर। मैसूर धामोदोग सभ, मावर, जिला-धरमेर। बिहार विनोबा धार्यम, महारन। श्री गन्दी धार्यम, पानीपत, हरियाणा। सर्वोदय क.व. तपिनवाण्डु।

प्रदेश	सख्या	रकम
धरम	२०	५१०००
धारा	७३	१८३००
उत्तरप्र	५०	६३६८८
उत्तरप्रदेश	५६५	१५,३१७-७०
केरल	१३	१०८००
कनाटक	५१	६६६००
गुजरात	५५५	१३,३६१-००
अरुण-बन्धीर	१	५८००
तपिनवाण्डु	६७	१,२३६००
पंजाब	५१	६३६००
प० बपान	१५८	५,११०००
बिहार	८१	१,८०६-३२
मध्यप्रदेश	२६५	७७६५५०
महाराष्ट्र	५१०	१२,१५०००
मिर्जापुर	६	२७१००
राजस्थान	१६३	३,६१५-६०
हरियाणा	६०	१,५३०००
द्विभाजन प्रदेश	५	१०५००
दिल्ली	३३	१,०८३-००
विद्येनी	२	१७३००
योग	२,७८६	६६,०३८-३३

महाराजी के धरना जिन भाई-बन्नों ने दुरी सक्रिय होकर उपवासदान प्राप्त

करने में मदद की है। उनकी सेवा भी सराहनीय है। धार्मिक शक्ति भर जितना सबब हो सकता है इन्होंने लक्ष्यका प्राप्ति करने का भरसक प्रयास किया है। ऐसे सक्रिय साथी हैं—सबंभ्री कृष्णसिंह, कटक। तोषण प्रसाद माहेस्वरी, आगरा। दीनानारायण साही, रुद्रपुर। सुन्दरलाल बहुगुणा, टिहरी। जयती प्रसाद, सादाबाद। कृष्णा कुमारी, मुजफ्फर नगर। मेवालाल, मीरपुर, मथुरा। कांति शाह, बडोदा। भाईलाल भीला भाई, बेरी भाबी। दाताराम मन्वड, बलकटा। कपिल देव कुमार, पटना। किशोरलाल गुप्ता, काशीनाथ शिवेरी तथा महेन्द्रकुमार, इन्दौर मोतीलाल त्रिपाठी, रामपुर। धीमती शिव-कुमारी शर्मा, खालियर। कल्याणचन्द्र त्रिपाठी, गुना। मद्दावीर सिंह, लखर। धीमती इन्दुमति जोशी, रामपुर। डा० रवि-शंकर शर्मा, दसपुर। होशियारी बहन, उरलीकाचन। शोभना रानडे, सासबद। सुषी लता भागवत, गुण्डा। नन्दलाल कावरा, एरडोल। जगन्नाथ बत्तार, परदापुर। देवीदत्त पंत, भीखनेर। भगवानदास

माहेस्वरी, जैसलमेर। महेन्द्र कुमार जैन, जयपुर। टीकाराम धार्य घासफपुर। सुरभि शर्मा, घाघर। शत्रुघ्नला चौधरी, मोहाटी। परलाल टाटिया, हरियाणा।

उपवासदान की धीमी गति को देखते हुए मार्च, ७४ के अंतिम सप्ताह में जलगाव में हुई प्रबंध समिति की बैठक में इस विषय पर गहराई से चर्चा हुई। निर्णय लिया गया कि धार सातव्ययपूर्वक इस काम को किया जाय तो उपवासदान के लक्ष्यका को प्राप्त करना कोई कठिन काम नहीं है। धन एक निश्चित शक्ति तय कर देना भर के निष्ठावान साथी इसके लिए जोर लगायें। इस हेतु सभ की ओर से १ से १५ मई तक पूरे देश में उपवासदान पत्र मनाने की प्रपीत की गयी। इस दरम्यान जिन साथियों तथा सस्थायो द्वारा उपवासदान पत्र मनाया गया तथा जो फलनिष्पत्ति हुई वह इस प्रकार है मुजरात सर्वोदय मंडल, १७५ उपवासदान। कृष्णाकुमारी, मुजफ्फरनगर ११० उपवासदान सुरभि शर्मा, घाघर ४३ उपवासदान। महेन्द्र

कुमार, सर्वोदय प्रेस लखिस, इन्दौर १५ उपवासदान। जयती प्रसाद, सादाबाद, मथुरा ३० उपवासदान। धीमती चन्द्रकांता बहन, कानपुर २४ उपवासदान। प्रभाकर शर्मा, सरगांव, वर्षा २४।

सरकार के महत्पूर्ण पदों पर होते हुए भी जिनका प्रत्यक्ष सहयोग सर्वोदय भादोलन में नहीं है, पर उनकी सहाय्यता एवं निष्ठा हमारे भादोलन के प्रति है। सर्वोदय भादोलन इनके प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने स्वयं तो उपवासदान का स्वरूप किया ही है और उनके कारण श्रोतों को भी इसकी प्रेरणा मिली है। ऐसे सर्वोदय-प्रेमियों में भीमतेन सच्चर, भुलपूर्व मुत्स्यमनी, पंजाब, मधुकर राव चौधरी, राजस्व मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, लहटन चौधरी, तत्कालीन राजस्व मंत्री, बिहार सरकार तथा धीमती मधु बहन शाह, धर्मपत्नी, राजवपाल मद्रास का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

—धीमती सहज

आपकी धरती के लिये बैंक ऑफ़ बडौदा का एक नये किरा का 'खाद'

किसानों के लिये कृषि-ऋण

खुशी..... एक उत्तम सादा आपकी धरती अधिक और अच्छी फसल उगायें, इसके लिये अच्छे बीज, आधुनिक साव सामान, सिंचाई के लिये अच्छे साधन और उत्तम खाद की जरूरत होती है... और इन सब चीजों के लिये आपको चाँदिये धरना। आप केवल बैंक ऑफ़ बडौदा आइये और हमारे कृषि-ऋण के लिये आवेदन कीजिये। हम बहुत ही मुक्याजनक शर्तों पर आपको यह ऋण देंगे।



पिन सड़क का सोगन

बैंक ऑफ़ बडौदा

आपका नया सिंचो-पंप के, ईंधन यंत्रोना, मोटोकार, सिंचो यंत्रोना और सिंचाई के उन्नत यंत्रोना ५५५ से भी अधिक तकियाये।



Shilpi BOB 8 A 72, hie.

संघ अधिवेशन का पहला दिन

(पेज १० से जारी)

सींग कर निश्चित हो जायें यह ठीक नहीं। हम मुनिवादी काम तो करें ही और एक बार ऊपर की सफाई करने का भी मौका धार्ये तो उसे छोड़ें नहीं।

विधानसभा में चर्चा धामनी जाये यह बात नहीं है। जो भी जाय, जैसा भी जाय उस पर जनता का नियंत्रण रहे यही मुख्य प्रश्न है। इस सिलसिले में जे० पी० से एक पत्रकार ने पूछा था कि आपने कहा है जनसंघर्ष समितियाँ अपने उम्मीदवार ऊपर चुनकर भेजेंगी। मान लीजिए किसी जनसंघर्ष समिति ने काँग्रेस या साम्यवादी उम्मीदवार चुना तो? इस पर जे० पी० ने कहा कि यह ठीक है, मेरा तो आग्रह केवल इतना ही है कि उस उम्मीदवार पर वहाँ की जनता का पूरा नियंत्रण हो।

धामस्वराज्य में धामन घोर शोषण से मुक्ति की बात थी लोकतान्त्रिक के माध्यम से। उसे जगने के लिए एक तांत्रिक यंत्रणा है—मुदान से धामदान। लेकिन यह जगती सकी कोशिश करते रहे। कोई एक बिन्दु हम ऐसा सोचना चाहते हैं जिस पर जनता इस धामदान को उठा ले। उस बिन्दु पर पहुँचने तक हमें लोगों के सामने विचार भर रखना पड़ेगा। धीरे-धीरे मैं इसे ज़िरो धारण कर रहा था। हम इसी धामस्वराज्य के चम्बक को लेकर सोहे को धोखे रहे हैं कि कब सही लोहा मिले जो संत जाये। वे इज्जत बिहार में टूट रहा है। बिहार में तीन-तीन दिन की सरकारें भी लोगों ने देखीं धारे इस धामदान से तो धर हन राजनैतिक दलों की पोल ही खुल गयी है। धामदान के साथ जनसंघ है, लेकिन उसके एम० एल० एम० युवाओं छोड़ते नहीं। तो युवाओं को नहीं है जिस पर मुख्यमंत्री बैठें हैं। वहाँ जो भी गया है वह विषम गया है। बिहार में सिद्ध हो जायेगी ऐसी बात नहीं है। यह प्रयोग है। हर बंदम गोच-सम्भार उठाया जा रहा है। एक आरोग्य है, एक

सींगी के बाद एक मजिल है, मजिल के बाद फिर एक सींगी है। धामदान से सरकार परस्ती नहीं बड़ रही है। हम तो लोगों से कहा बह रहे हैं कि यह करें, वह करें। हम खुद नहीं कर रहे। इतना जरूरी हुआ है कि राजनीति और लोकनीति की समानान्तर रेखाओं की दूरी जरूर कम हो गई है वह। जिस तलवार पर रहते हम चलते थे वह कोधरी थी ध्रुव जिस पर हम चल रहे हैं उसकी धार तेज है। लेकिन वह तेजी परिवर्तन की है। उसे पार करना है। सावधानी रखना ठीक है लेकिन धार की चुभन से डर कर उससे नीचे उतर धाना में ठीक नहीं समझता। धामदान के प्रति शका रखने वाले इसे सम्पूर्ण शक्ति की कसौटी पर रखकर देखें। सपन कार्य क्षेत्र छोड़कर इसमें नहीं धार्ये लेकिन जो जहाँ हैं वहाँ धामन काम तेज कर दे।

जे० पी० परिस्थिति के साथ इस धामदान में धामस्वराज्य के बिन्दु जोड़ने की गुंजाइश देख रहे हैं। इसलिए ऐसा मानना कि हम पुरानी भूमिका छोड़कर किसी नई भूमिका में जा रहे हैं ठीक नहीं है। केवल बगौठी बन रहे हैं। (कमणः)

विनोवा-जे० पी० वार्ता

(पेज ३ से जारी)

तीसरे पहर के लिए समाप्त हुई।

साढ़े तीन बजे जे० पी० धामन में बाबा की कुटिया में बातों के लिए गए। उनके साथ नारायण देसाई थे। चर्चा में महादेवी ताई, कुसुम बहन, बाल धौर जयदेवी और कृष्णराज मेहता भी उपस्थित रहे। जे.पी. जो बान कहते उसे कुसुम बहन विषय पर बाबा को बेली। यह धौर सभा-पौव बनें तत्र चलता रहा। जे० पी० ने बाहर धामन अलवार वालों में कोई भी बान कहने से इनकार कर दिया। जे० पी० बान चीत में कुछ धमरोष महसूस कर रहे थे क्योंकि बाबा को लिल कर देना पड़ता था। कुसुम बहन बहुत सावधानी से लिल रही थी लेकिन कुछ बातें छूट ही जाती थी धौर इस कारण गम्बाद बराबर ही नहीं पाना था। बाबा विधान सभा विमर्जन के मध्य से धामदान

चलाना परम्प नहीं करते हैं धौर जे० पी० का भी यह लक्ष्य नहीं है लेकिन संसार की द्वा-वट के कारण यह मुद्दा साक्ष होने से रह गया। फिर प्रजातन्त्र की रक्षा के मुद्दे पर भी दोनों का दृष्टिकोण समान था लेकिन सम्वाद ही नहीं पाया। जे० पी० ने तय किया कि अपनी सारी बातों के रत को कृष्णराजजी से लिलवा कर सुबह बाबा को दे देंगे।

दस जुलाई की सुबह साठे नौ बजे के पहले ही कृष्णराजजी जे० पी० के लिलवाये बागज लेकर बाबा के पास पहुंच गए। साढ़े नौ बजे बातचीत शुरू हो गयी। ग्यारह बजे तक चली। फिर महिलाथम से सप की प्रबंध समिति के सदस्यों को बुलाया गया। साढ़े ग्यारह बजे दादा धामनिधारी ने गव लोंगी की ओर से बाबा से बात शुरू की। जे० पी० इस चर्चा में उपस्थित थे लेकिन चर्चा दादा ने ही की। दादा ने जे० पी० ने मसजिद के आधार पर प्रस्ताव बनाने धौर उस पर बाबा की राय जानने की कोशिश की। बाबा ने उस पर अपनी कोई राय नहीं दी धौर कहा कि पहले प्रस्ताव को अधिवेशन में सर्वसम्मति से पास करवाओ। सर्वसम्मति न हो तो सर्वानु-मत पर ले लीजिए। धामजा जो भी फैसला होगा मुझे मज़ूर होगा।

ग्यारह जुलाई की सुबह फिर जे० पी० की धौर विनोवा की चर्चा हुई। उसके बारे में स्वयं बाबा ने बारह जुलाई को सरेरे कहा—“कत जे० पी० मुझे मिते, बाबा बावें हयी। धामधामिच चर्चा भी हुई, काम के शारे में भी हुई। उन्होंने मुझे प्रश्न किया—आपने कत कहा था कि मतदे भरे ही रहे, हृदय बल होना चाहिये। तो यह हृदय की एनता बनें मजबूत हों? जे० पी० ने इस प्रश्न का समाधानकारी उत्तर बाबा ने दिया। यह उत्तर ही दरअसल विनोवा जे० पी० वार्ता का मतीया है।

जे० पी० बारह जुलाई की शाम जब रेल से बम्बई के लिए रवाना हुए तो दूतने प्रमन थे जितने हाल ही के वर्षों में मायद ही नहीं देखे गये हैं।

—प्रभाप जोशी

कुर्सीवाले बीमारों का तमाशा

काँग्रेस महासमितिको अधिकार प्राप्त करने का तमाशा हो गया है। एक ऐसा तमाशा जिसमें न देखने वालों को मजा आता है न करने वालों को। मदारोपायी पेट के लिए अमूरों को नचाता है, तार पर बसाता है, धुरी मार कर झूठेपूठ खून निकालता है और तमाशाबानों के पीछे बटोर कर फिर एक तमाशा दिखाने के लिए चला जाता है। काँग्रेस तमाशा पापी सत्ता के लिए करता है। उसके अन्दर कभी गंधर्वाजिर जीवन पर कोई चलाते हैं और कभी अपने आप पर। लेकिन काँग्रेस के कोड़े चाहे किसी को बँतान बना कर चलाये जाते हैं, चाहे अपनी ही मोटी खास की पीठ पर, उन्हें सुन कर न तमाशाबानों के मन में श्रेय आता है न कृपा। उसके तमाशे से लोग उदासीन हैं। लोगों को मजा भाने, इसमें काँग्रेस की भी धिक् नहीं है क्योंकि पँसा उसे तमाशा दिखाने का बाद नहीं मिलता। वह तमाशा दिखाने का पँसा पहले ही ले लेती है। परम्परा है कि यही तमाशा दिखाने का पँसा ही है। जनता की इस उदासीनता को काँग्रेस वाले प्रच्छेदी तरह उपभुक्ते हैं। इसलिए तमाशा के लोगों के लिए नहीं करते। अपने उन विरोधी तमाशा-बानों के लिए करते हैं जो उनसे सत्ता छीन उनके की घमकी रखते हैं। यह घमकी भी जब तक कभी पूरी तरह भसव नहीं हुई है न इसी दिख रही है। घमकी की भसवियत हो रही अभाव के कारण ही काँग्रेस महा-समितिको सरकारी नेताओं में यह विश्वास है कि वे जहाँ हैं, वहाँ रहेंगे और उन्हें हटाने का कोई नहीं है। जनता, वे जानते हैं कि अपने धाप उन्हें हटा नहीं सकती। इसलिए इसके कुछ दलों ने देवबर में ऐसी तिहुड़के रखे रहते हैं जो इन्हें कुर्सी पर बनाये रखे।

उनीस से इकतीस जुलाई तक दिल्ली में चले महासमितिके तमाशे में हर बोलकार ने जगप्रकाश नारायण पर शब्दों के कोड़े बरसाये और फिर उन्हीं कोड़े को अपनी धोर अपने नेताओं की पीठ पर मारा। जे० पी० से काँग्रेस को खतरा है क्योंकि यह प्रामदी प्राम लोगों को अपने हकों की ऐसी तड़ाई के लिए तैयार कर रहा है जो ज्यादा दिन चली धोर लोगों की मुड़िया तन गयो तो उसकी राज-गद्दी छिन जायेगी। खतरा है धोर उससे काँग्रेस के कुर्सीधारी घबराने हुए हैं फिर भी सबके सब मानते हैं कि जे०पी० के पीछे जनता नहीं है इसलिए वह सफल नहीं हो सके। इन बीमारों और अंधे बोड़ेमारों से किसी ने पूछा नहीं है कि जब जनता जे पी के साथ नहीं है तो भाई तुम इतने घबराने हुए क्यों हो ? ये घबराने हुए हैं क्योंकि चोर की दाढ़ी में तिनका है। अष्टाचार, महगाई धोर बेरोज-गारी के लिए ये जानते हैं कि ये जिम्मेदार हैं। ये घबरा घबरा गले-गले उतरे हुए हैं धोर चाहे तो भी इनमें इतनी ताकत नहीं है कि उससे निचल सकें। इसलिए चोर कोई इन्हें कहता है कि कीचड़ से निचलो नहीं तो जनता तुम्हें निचाल बाहर करेगी तो अपनी ताकत की कमी पर ये बोखलाते हैं धोर बोड़े फटकारने लगते हैं। फिर जब बोड़े बरताने की बोखलाहट भी खुट जाती है तो उनका घासों अपने घन्दर देखती हैं और ये बोड़े अपनी ही पीठ पर मारने लगते हैं। जिन लोगों ने महासमितिके तमाशे में जे० पी० को प्रति-नासिवादी, जनविरोधी, भ्रष्टाचारका धोर दिव्यस फँसने वाला बताया है ही लोग उन सारी बुद्धियों के लिए अपने नेताओं और नीतियों पर निश पड़े, जिन्हें ठीक करने के लिए जे०पी० आंदोलन चला रहे हैं। एक बूढ़े नेता ने कहा कि जनता की यह

अधिकार दिया जाना चाहिए कि यह अपने उन संसद सदस्यों और बिप्रायकों को वापस बुला सके जिन्हें उसने चुना है। जे. पी. जब विधानसभा के विखर्जन की माग करते हैं तो इसके झलावा और क्या चाहते हैं ? एक जवान नेता ने कहा कि काँग्रेसियों को 'साम्य सदस्य' बन कर पार्टी को लगातार पँसा देना चाहिए ताकि बड़े-बड़े पूज्यतियों की पन्ड से यह छूट सके। जे पी. धोर क्या कहते हैं ? यही कि चुनाव लड़ने के लिए काँग्रेस धनी परिवारों से काला धन लेकर अष्टाचार महगाई धोर मुदासफीति को बढ़ावा देनी है। ये खुद प्रधानमंत्री से कहने गये थे कि चुनाव में इतना खर्च मत कीजिए और चुनाव फाड़ के लिए ध्राम लोगों से पँसा लीजिये। कहा गया कि काँग्रेस को अपना हिस्सा माग रखना चाहिए और एक-एक पींटे की धारा धोर खर्च बिताव में दर्ज होना चाहिए। मन्त्रियों से ले कर साधारण सक्रिय सदस्यों तक को पार्टी को अपना हिस्सा देना चाहिए। 'प्रजातंत्र के लिए नागरिक' मच बना कर जे. पी. से धोर क्या माग की है ? यही न कि सभी पाठियों को अपने कोप के लिए जनता के सामने जिम्मेदार होना चाहिए धोर हिस्सा खुली जाव के लिए सामने रखना चाहिए। जयाखोरो धोर कालाबाजारी के खिलाफ सौधी धार्यवाही की माग की गयी धोर कहा गया कि इसमें मौकरवाही घाडे भारी है इस लिए काँग्रेसियों को कार्यवाही करनी चाहिए। जे. पी. धोर जिस नतीजे पर पहुँचे हैं ? वे भी हुए अलग जनता की समितियाँ बना कर जनता की ताकत से ही अमाली धोर कालाबाजारी को समाप्त करना चाहते हैं। तो जब काँग्रेसी भी यही चाहते हैं जो जे. पी. चाहते हैं तो फिर जे. पी. का इतना विरोध क्यों किया जा रहा है ? क्योंकि धार्यसवाले यह सब करने की बात कहते हैं, लेकिन कुर्सी पर बैठे रहने के लिए इन्होंने सब करतूतों को करते हैं। उनको नजर नुर्गा पर है, इन बुराइयों पर नहीं। धोर जे. पी. की नजर नुर्गा पर नहीं इन बुराइयों को भिड़ाने वाली लोभकाली पर है। काँग्रेसवाले जे. पी. का विरोध इसलिए करते हैं कि सवाल नुर्गा का है जे. पी. का आंदोलन धरप हफ्ता हो गया तो नुर्गा जनता के पास चली जायेगी धोर तब धार्यस बना करेगी ? उस दिन को धूर करने के लिए धार्यसवाले कहते हैं कि जे. पी. सफल नहीं होगी। —प्रभाप जोशी

समय हम सामान्य जनों से बड़ा काम करवाना चाहता है

जयप्रकाश नारायण

पांच जून को पटना की जनसभा में मैंने जनता के सामने अन्त-समर्पण के कई कार्यक्रम रखे थे और यह कहा था कि प्रगर में गिर-फार न हुआ तो समय-समय पर धारवय-कानुनगार जोड़-घटाव करता रहूंगा। अभी मैं ऐसी स्थिति नहीं देख रहा हू कि पांच जून को बताये कार्यक्रम में किसी विधेय परिवर्तन की जरूरत हो। हा अरुत इस बात की है कि जो कार्य बनाये गये थे, उन्हें पूरी शक्ति से चलाने के लिये जल्द से जल्द संगठन बनाने का काम पूरा किया जाये और पहले कुछ हफ्तों के लिये कार्या का श्रम नये ढंग से स्थिर कर लिया जाये। संगठन के बिना शक्ति नहीं प्रकट होगी, संगठन ही हमारी कसौटी है।

साज जून को पटना में विधान सभा के फाटको पर सत्याग्रह शुरू हुआ और १२ जुलाई तक चला। भाषा एक भी दिन नहीं हुआ, विहार का एक जिला भी नहीं छूटा जिसके सत्याग्रही न भाये हुए हो। यह सब तब हुआ जब हमारा संगठन अभी उत्ताना ठोम और सशम नहीं है, जितना होना चाहिये। ऐसी स्थिति में सातत्यपूर्वक सत्याग्रहियों का धर्पनी निश्चिन्त लिये पर अना भी सपनाया एक पहिले तब सत्याग्रह को शान्तिपूर्ण ढंग से जारी रखना इस बात का प्रमाण है कि हमारे छात्र और स्वयं जनता दोनों समझते लगे है कि क्रान्ति के अंते सत्य कष्ट सदैव बिना नहीं प्राप्त होते। यह मूष सतण है। कष्ट हये सहना है और कष्ट के लिये हये हर शक तैयार रहना है।

हमारी सबसे पहली चिन्ता होनी चाहिए हमारा मजबूत करने की। विद्युत्, प्रसग-दिन काच चाहे जिनका भावनापूर्ण हो टिकारू नहीं होगा। मुहूट संगठन के प्रभाव में प्रति-बूट परिस्थिति के पैदा होने पर कार्य और कष्टों में टूट जाते हैं। अभी तक हमने जो चर बंधनं समितियों और छात्र सपर्यं समि-

तियों बनाई हैं व काम चलाऊ हैं, 'एकहोँक' हैं, यद्यपि विद्येये दिनों में कई जगहों से स्थाई समितियों के बनाने की सूचना भाई है। श्रव पचासन, ब्लॉक और जिला स्तर पर स्थाई जन और छात्र सपर्यं समितियों को बनाने में देर नहीं होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में उन दो मर्यादाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। सपर्यं समिति के सदस्य वे ही माने जायें जो सक्रिय हो और संयो-जक वे ही बनाये जायें जो निर्दलीय हो। निर्दलीयता को शर्त प्रतिपाद्य है। इस विषय में डिलाई होने से आन्दोलन का प्रहित होगा। यह बातें जन और छात्र दोनों सपर्यं समितियों पर लागू हैं।

एक श्रमस्त से सरकार ठण, कर बन्द व कार्यान्वयन बन्द (का कार्यक्रम शुरू होगा) सर-कार ठण करने के दो मुख्य उपाय होंगे। एक उपाय होगा सरकारी कार्यालयों को न चलने देना, तथा दूसरा सरकार को कर न देना। एक श्रमस्त से दोनों काम जोरी से करने हैं। पांच जून के श्रमने भावण में मैंने कहा था कि नर-बन्दी इस आन्दोलन का सबसे महत्व-पूर्ण कार्यक्रम है। जन और छात्र सपर्यं समितियों को देखना है कि गाँव से सरकार को भूमि का सगान, लगान, शेती-रैसन और सिचाई-रेट का एक पैसा भी न दिये। प्रगर सरकार विहार में कही भी (इस बरसात में भी) सगान या लगानो बसूल करने की कोशिश करती हो तो किसानों को चाहिये कि वे पूरे तौर पर प्रसदयोग करें, और वसूली बिलकुल न होने दें।

शहरों में सबसे पहिले हमारा ध्यान शराव को इतराने की ओर जाना चाहिये, क्योंकि सरकार को उनसे बहुत बड़ी भावदनी होगी है। शराव को इतराने पर सत्याग्रह भी शुरू करना चाहिये। हमारे सत्याग्रही शराव को भी छोड़ खरीदने वागों को समझायें कि वे अपने प्राणको और समाज को सर्वनाश से बचायें

और शराव के निरुक्त न जायें। इतराने पर शान्तिपूर्ण चरना दिया जा सकता है।

इसो प्रकार कई दूसरे व्यवसाय भी हैं जिनमे सरकार साइन्स फीस लेकर कमाई करती है। हमें सरकार को यह कमाई भी बन्द करनी है। इसके लिये सत्याग्रह करना ही करना चाहिये।

करों की बन्दी के साथ-साथ सरकारी कार्यालय भी बन्द होने चाहिये। प्रखण्ड से लेकर जिले तक प्रशासन के किसी कार्यालय को चलने नहीं देना है। सरकार ठण करने के काम में सरकारी कर्मचारियों का भी सहयोग लेना चाहिये। उन्हें यह बताना चाहिये कि यह आंदोलन जनता का तो है ही उनका ही है, नवो कि वे भी इस देश के नागरिक हैं और गृहस्थ होने के नाते उनके भी बास बघने हैं। बाज की सड़ी-गली व्यवस्था के स्थान पर जो नयी व्यवस्था आयेगी वह सबके लिए होगी।

लेकिन तीन तरह के कार्यालय हैं, जिन्हें हमने नहीं बन्द करना है: एक, अदालतें जहाँ न्याय का काम चलता है, दो, ऐसे कार्या-लय जिनका सम्बन्ध जनता के दैन दिन जीवन से हो, जैसे बैंक, रेल, शार, बाक, राशन, सफाई, धादि। हमें इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिये कि ऐसा कोई कार्य न हो जिसके कारण जनता को अना-वश्यक कष्ट या असुविधा हो। इसके विप-रीत हमें सेवा द्वारा जनता का हृदय जीतने का प्रयत्न करना है। हमारी सपर्यं समि-तियों को विशेष रूप से धपनी बंद जिन्मे-दारी माननी चाहिये कि प्रापसी भ्रमडे, प्रापसी तौर पर तय किये जायें और उनके क्षेत्र में गरीब, कमजोर और भ्रमत्यक्षक पर किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती न हो। उन्हें हर आवश्यक संरक्षण मिले ताकि वे प्रासा और विरवात के साथ इस आन्दोलन में शरीक हो सकें, तीन—पटना का सवि-सालय प्रमूनी कुछ दिनों तक ठण करने वा कार्यक्रम हाथ में नहीं लेना है। बाक को परि-स्फिति देखकर ही निर्णय करूँगा।

विहार में कई जगहों पर मुताफासारी, जमाखोरी, कालावाजारी इन तीन सामा-जिक पापों के विरुद्ध समय-समय पर भ्रम्येदी कार्यवाही हुई है, लेकिन इनके मुक्ति पाये के लिये कहीं अधिक सजिड सपर्यं करने की

जरा है। घटों में, मूल्यों में तथा प्रयोगों में—अथि और पचासत तब की मर्पण समितियों को तत्काल इन प्रयोगों की धोर ध्यान देना चाहिये। ये प्रयोग ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध हमारी, प्रायकी, सागे जगता की रोज की जिम्मेरी से है—जाने, पतने से है। मरहारी दूकानों में चीमों के मी बतवारा हो, दूकानों के सामने दामों का बर टाँ दिये जायें, भूरे रागन काई रह किये जायें, धादि काम ऐसे हैं जिनमें महिलायें बहुत सफल हो सकती हैं। उन्हे उट कर इन कामों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी चाहिये। जन स पयें समितियाँ धेन की सहायता से हर प्रकार की मुनाफा-धोरी, जमानोरी, कानाबाजारी और धुस-धोरी के निरुद्ध बडे पैमाने पर बायेंवाही कर सकती हैं। कोई बायरा नही कि साबुन, डालडा, धोर दिवागलाई जैसी चीमों के लिये लोग तबनीक उठायें धोर उनका खजाना धोर मोदामों में पडा रहे। यह होता इसलिए है कि जना अपने हितों धोर अधिकांश के प्रति जागरूक नही है। जना की मुन्नी धोर लापरवाही का धनु-धित लाभ अधिकांश धोर ध्यापारी दोनों ही उठाते हैं।

कई जगहों पर सरकार के अधिकांश राशन की दूकानों में छट्टाकार को रोजने के लिये हमारी मर्पण समितियों का सहयोग लेने धोर उनके साथ सहयोग करने की तैयारी है। जहाँ ऐसी स्थिति हो वहाँ पर-धर सहयोग से काम लेना चाहिये। लेकिन सहयोग के लिये दाने की जरूरत नहीं है। सहयोग न हो तो भी हमें धपना काम करना है।

विधान सभा विघटन का अधिधान जोरी से चलता रहेगा, किन्तु सब पटना में न चल-कर बिहार के उन गाँवों निवाहन धोगों में चलना जिन्हें विधायकों ने त्यागपत्र नहीं दिया है। मेरा सुझाव है कि हर निवाहन क्षेत्र में कम से कम पन्द्रह सभायें हो जायें, सभाओं के अनाथ जूलम निराले जायें, प्रदर्शन किये जायें। सभाओं में धेन के विधायक से त्यागपत्र देने के प्रस्ताव पारित किये जायें और प्रस्तावों की प्रतीति विधायक के पास, राजगणाल महोदय की, किन्तु के सपयें कार्यालय को तथा मर्पण के कार्यालय, पटना

में ही जायें। जिन क्षेत्रों में पट्टे हस्ताधार अधिधान पूरा न हुआ हो उनमें हस्ताधार पूरे किये जायें। जो क्षेत्र कार्यालय तैयारी कर सकें वे 'मतदान' भी करावें। (दो वकते रख-कर विधायक द्वारा त्यागपत्र देने के पक्ष धोर विपक्ष में मठ लिखे जा सकते हैं।)

मुख्य बात यह है कि इन कार्ययमों द्वारा हमें क्षेत्र में इतना प्रबल लोकमत तैयार कर देना है कि विधायक के लिये त्यागपत्र देने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता न रहेगा। रोजमो-में विधायक को संबोधित करने हुए यह कहा जायें '१९७२ के चुनाव में वोट लेने के लिये आपने बहुतसे वादे किये थे। उन्हीं वादों को मुनकर धोर आपको एक ईमानदार ध्यिक समझकर हमने आपको वोट दिया था। आप-का ध्राप्य से अधिकांश समय पूरा हो गया है। आपने अब तक आपने वादे पूरे नहीं किये हैं। हमलिये ध्राप्यको विधान सभा से हट जाय चाहिए। हट ध्राप्यके इसलिए भी जाना चाहिए कि जब से यह ध्यान्दोन गुरु हुआ है सरकार के जिनमें भी वाले बरानामें हुए हैं उन सबका ध्याने समथन किया है। इनके मन्थन काम करने की मतिमानदल इतनीय बना हुआ है, क्योंकि उमें ध्राप्यका समर्थन प्राप्त है। जो विधायक प्रतीति और ध्याय करने वाली, निरपराय लोगों पर गौरी बनान वाली, महामार्द, धोरबाजारी देगाधामो धोर छट्टाकारको न रोज सकने वाली ध्याय बराने वाली, मरहारा का समथन करे उन हम धपना प्रतिक्रिया किये बना सकते हैं? ध्याय ध्याय हमारे प्रतिनिधि मंत्री रह गये, धपनिये हुआ करने इन्हीका दे दीजिये।'

सभा में विधायक के दल का धोरला-पत्र भी पडा जा सकता है धोर उन लोगों को बजाय जा सकता है कि उन्हे धपने ही दल के बचने का धायन नहीं किया है। ऐसे मधी विधायकों को हट जाना चाहिये ताकि मधे चुनाव में नवे प्रतिनिधि चुने जायें धोर नई विधान सभा बनायी जा सके।

त्यागपत्र की माँग सभाओं धोर हस्ताधार अधिधान या 'मतदान' द्वारा तो भी हो जाये, दाने ध्याता उन विधायक विघटन-सभा में होने पर अने धरी पर जायें तो वहाँ उनका ध्यान्दोन 'धेनारा' भी रिपण जायें। धेनारा के उन विधायक का हो, उनमें परिवार के किन्हीं भी धुरते ध्यिक का नहीं।

धेराय में किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती न हो, बाणी धोर बर्म में कोई अधोमनीय धा-न होने पायें। धेराय का प्रदर्शन में इस बात का पूरा ध्यान रखा जायें कि जाति धोर सप्रदाय को बेकर दिये का भावना न पैदा होने पायें, बलिक इस धायंक्रमों में विधायक की अधनी जाति धोर सप्रदाय के लोग भी बची सधवा में ध्यानिव हो ताकि यह स्पष्ट हो जायें कि त्यागपत्र देने की माँग समस्त जनता की है।

यो तो प्रदर्शन, जूलम धोर सभाओं के द्वारा जनता की धायना बनाये, धपनी ध्यायन जूलम करने धोर जन-मानस को इस ध्यान्दोलन, इस सगुणें ध्यानि के साथ जोडने का काम हमेशा चलना रहेगा चाहिये, फिर भी कुछ दिन ऐसे हैं जिनका विशेष महत्व हो जाना है। एन धगत लोकमान्य तिलक का जन्म दिवस है। यो धगत, ४२ को 'भारत छोडो' ध्यानि गुरु हुई थी। पन्द्रह धगत वी भारत में अगरेजी राय का ध्यात हुआ था धोर इय स्वतंत्र हुए ये।

तो एक धगत को बिहार भर में लि भर का उरवास रखा जायें। धाम को प्रदर्शन हो धोर धाम सभा की जायें। सभा में सब लोग गुरु हृदय से सबल में लि हम स्वयं प्रधा-धार तो बचेंगे धोर जहाँ बही भी छट्टाधार होना हुआ दलेंगे हमले विरुद्ध ध्यायन उठायेंगे। इन्ही दिन से सरकार टप करे धोर बर बरी अधिधान भी गुरु हो।

नो धपन 'ध्यानि दिवस' के रूप में मनाया जायें। गुरुह माँवना, गुरुन-गुरु में प्रभातधोरी ध्यानि जायें धोर धाम को जूलम के माय मभा की जायें। जनता की 'सगुणें ध्यानि' के लक्ष्य समभाये जायें, उगरी ध्यानिगुणें पडनि बनाई जायें धोर बरा जायें कि यह जनता की ध्यानि है जिनमें उमें धाँ बडना है।

पन्द्रह धपन यह समभने धोर मधमभने का दिन है कि २७ जून पडते जो स्वतंत्रता मिनी थी वह अधोतक जनता गुरु मारी पडुकी है, उमें जक जन के जीवन में उरारने का काम बाकी है। स्वतंत्र का पुराई पूरा हुआ था अगरेजी राय के धपन में, उरारने पूरा होना मगना धोर मधुद्वि में, माँवना धोर दमन की मुक्ति में। यह ध्यान्दोन इन्ही के (धारी पत्र १० पर)

'मुनि प्रसन्न गम्भीर' जो प्रसन्न भी है और गम्भीर भी है वह मुनि । हम सब मुनि तो हैं नहीं, मुनि होने की हम सब की तैयारी जरूर होनी चाहिए । प्रसन्नता चित्त की कभी खोना नहीं; गाम्भीर्य वायम रखना—यह सर्वोदय-समाज के लिए भावार्थ है । प्रायः सब लोगों ने देखा, भलबारी में भी चर्चा चली कि सर्वोदय-प्रतिबंधन में सर्वसम्मत् प्रस्ताव नहीं हो सके । यह सर्वोदय-प्रतिबंधन के लिए गौरव की बात है । प्रभर बहुमत से प्रस्ताव पास करने की बात हम लोग करते, तो एन पक्ष में बहुत बड़ा बहुमत था, इस धारते प्रस्ताव हो सकता था, परन्तु हमने यह निर्णय लिया है कि जो भी प्रस्ताव चरने सर्व-सम्मति से करे । इसलिए प्रस्ताव न हुआ, यह भी बड़ी गौरव की बात है । लेकिन ऐसी हालत में क्या किया जाए ? यह प्रश्न प्राया । इसका उत्तर बहुत आसान था । कभी-कभी जो अल्पमत प्राप्त होता है वह एकदम रिलाना नहीं, कठिन मासूम होता है । परन्तु उध दिन मैंने सुनाया था, हमारा सबका हृदय एक है यह बात पक्की होनी चाहिए । एक हृदय है तो फिर जो प्रत्येक सिर ही, प्रत्येक दिमाग, उनको ध्यानी है । हमारे दिमागों में, बुद्धि में कितनी भी विविधता हो, विरोध नहीं होगा, प्रभर हृदय भी एका ही । यह मैंने उध दिन समझाया था । विस्मरक वर्ग-भ्रमण में भीना के एकादक भ्रमण में किया है । उसको समझाने हुए मैंने कहा था कि उसमें सिर प्रत्येक हैं, हाथ प्रत्येक हैं, लेकिन हृदय एक है । हृदय एक कैसे रखना—यही प्रश्न होता है, उनका उत्तर एन ही है कि पूरी आत्मीयता हो । हरेक को अपने-प्रायें विचारों के प्रत्युत्तर करने की । कुछ हममें सन्देह-एतना हो यानी कुछ मर्यादाएँ हों । उन मर्यादाओं में जिसको जो करना अच्छा मानूँगा होगा है, वह प्रशस्त किया जाए क्योंकि सम्मोक्षा हृदय एक है । मर्यादा रखनी है तो मैंने तीन मर्यादाएँ बताईं : अहिंसा, सत्य और सयम । ये तीन मर्यादाएँ रखकर हमारे जो लोकसेवक हैं, उनके प्रतिनिधि हैं और सर्व-सोदा-साथ की पदव्य-प्रतिनिधि हैं लोग इत्यादि जिनको जो करना है, बसा करें ।

सत्य, अहिंसा और संयम

विनोय

सब प्रतिबंधन वर्षा में प्रतिम दिन विहार प्रायोजन के सम्बन्ध में दिया गया
निर्णायक भाग्य

ऐसी प्रभर हम आज्ञा दी देते हैं और ये तीन मर्यादाएँ रखते हैं और य एक है यह भूलने नहीं तो फिर कुछ भी नुकसान नहीं होगा, अतिक प्रयोग होग । और अनुभव तो प्रयोग से ही आता है ।

कुछ लोग जाना चाहते हैं पटना में । मैंने उस पर स्याक भी बताया है—धर्मधेने पटना-क्षेत्रे समवेता मुमुक्षुव जयका गफूर-साधक । (हैली) यह जब मुना जयप्रकाश जी ने तो उन्होंने एक सवाल पण किया कि सजय कीन हांगा ? तो हमने नाम लिया था सजय का-वा सडा हो जाए (इत्यादाजभाई सडे हुए) । इत्यादाज भच्छा धादमी है । (हैली)

ये विचारधाराएँ हैं । एक है पना की एक है अष्टापुर की । दोनों प्रायः में मिल जाती है । समुद्र में तो जानी ही है । दोनों पवित्र धाराएँ हैं । इस वाले प्रमाण किए जाएँ । प्रायः-प्रान्त र्थ से दोनों प्रयोग करें । यह हमने प्रायः कह दिया तो सब प्रसन्न हो गए । सब लोगों ने बाबा को पाक कर दिया । जयप्रकाशजी ने कहा कि 'हम मोनह' धाने सम्मन हैं और स.दे सवह प्रायःवाप (सथ के मथो डाठुरदास र्थ की मोर इयाता करते हुए बर्त) तो यहाँ पास बंटा ही है । तो तारायें यह है कि हृदय एक होकर जो तीन मर्यादाएँ जवाईं उन तीन मर्यादाओं के धन्वर रहकर के अपनी-अपनी विचारधारा के प्रत्युत्तर प्रभर व्यपहार फले हैं, तो 'कुछ भी नुकसान नहीं होगा । अनुभव प्रायः । प्रभर अनुभव प्रायः वह पटना-क्षेत्र में विद्यती होता है और बायीं भच्छी जनशक्ति बननी है, तो जो उससे प्रभावित नहीं थे, वे भी प्रभावित होने और उसके साथ हो जायेंगे । इसमें उलटा

प्रभर प्रत्युभव प्रायः कि उसका लाभ खास मिलता नहीं है और चीज निखरती नहीं है, तो वे उसे छोड़ देंगे और दूसरा जो कार्यक्रम है पहले से चला हुआ है, उसे बन्द रखने की धान है नहीं, वह भी चलाने की बात है, तो उसमें फिर से दुबारा जोर लगायें, इस वास्ते नुकसान कुछ भी नहीं होगा । तो यह मैंने प्रायः कह दिया महावीर स्वामी को माद करके । महावीर स्वामी ने हमेंमा जोउने का काम किया—कभी तोउने नहीं दिया । क्योंकि उन्होंने ममभावा कि जिनने सज्जन होने हैं, उन सज्जनों में कुछ न-कुछ सथास हाता ही है, इस वास्ते वह सत्यान प्रदण करना चाहिए न कि अपने सत्य पर अडा रहे और दूसरे के सत्य को ग्रहण ही न करे और सत्य के साथ सत्य को सडाई जारी रहे । तो सारे सतर बट्टा होकर के प्रसय पर प्रहार करने के बजाय सत्य ही एक-दूसरो पर प्रभर प्रहार करने में लग जाए, सा वेकारे सत्य की ताकत टूट जाएगी । जै भी ने कहा कि वे सभी काम करनेवाले लोग हैं, दूसरा भी काम करनेवाले काम करेंगे । मैंने उन्हे 'उभयान्वयी' नाम दिया है । व्याकरण का विषय है । प्रायः लोग सखन व्याकरणए जानते हैं कि नहीं, मानूँ नही । 'उभयान्वयी' बहने हैं उक्वको । तो भ्रमण के माने वे काम करेंगे । उनको शक्ति कभी छोए होगी नहीं । क्योंकि दोनों बाजू का लाभ उनको मिलेगा और उनका लाभ पोले, प्रायः की मिलेगा । धन वाले उनकी प्रत्युन्ध शक्ति रहेगी । इसलिए उनको भ्रमण भ्रमण के माने वे काम करेंगे । उनको शक्ति कभी छोए होगी नहीं । क्योंकि दोनों बाजू का लाभ उनको मिलेगा और उनका लाभ पोले, प्रायः की मिलेगा । धन वाले उनकी प्रत्युन्ध शक्ति रहेगी । इसलिए उनको भ्रमण भ्रमण के माने वे काम करेंगे । उनको शक्ति कभी छोए होगी नहीं । क्योंकि दोनों बाजू का लाभ उनको मिलेगा और उनका लाभ ताकत सडी होगी ।

स्वतंत्र लोकशक्ति का निर्माण ग्रामस्वराज्य का एक आवश्यक पहलू

बिहार ग्रामदोलन पर रामचंद्रराही की घोरिन्द्र मजूमदार से बात-चीत

राही : पिछले कई वर्षों से हम जनता में ग्रामस्वराज्य का विचार-शिक्षण करते रहे हैं, लेकिन जनता की ओर से उसे वैसी व्यापक स्वीकृति नहीं मिली, जैसी जयप्रकाशजी की प्रेरणा से सब रहे वर्तमान ग्रामदोलन को मिल रही है। कई मित्रों के मन में यह सवाल पैदा होनी है, घोर के उल्टे प्रकट भी करते हैं कि ग्रामदोलन का सूत्र, जनता को जागृत करने की पद्धति सब हाथ लगी है। शायद पिछला प्रयत्न उन्हें व्यर्थ भी लगता है और वे मानते हैं कि उसके निष्फलता का सलाह इस ग्रामदोलन से मिला है। कभी-कभी उन्हें ऐसा भी लगता है कि शायद ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया में कोई भारी कमी रही है, जिसके कारण यह जन-घाटीन नहीं बन पाया। तो क्या वर्तमान ग्रामदोलन ग्रामस्वराज्य का बिबल माना जा सकता है? कुछ लोग इसे विरोधी मानते हैं, कुछ विचल्य मानते हैं ?

जब तक जनता में उन नये विचार के प्रभुत्व नये सत्य की प्राप्ति की चाह नहीं पैदा होनी यही कारण है कि जब कभी ग्राम लोग मुझसे पूछते हैं कि ग्रामस्वराज्य के लिए बुनियादी कार्यक्रम क्या होना चाहिए, तो हमेशा मैं कहा करता हूँ कि ग्रामीण जनता में ग्रामस्वराज्य की स्थापना का निर्माण करना ही ग्रामस्वराज्य का बुनियादी काम है। बारी, योगदान-पत्र, समर्पण-पत्र भरवाना छोड़ि काम प्रांतीयक मात्र हैं, क्योंकि जिनके लिए स्थापना निर्माण करना है उनके कुछ व्यवहारिक पहलु के भी दर्शन होना चाहिए।

पात्र जयप्रकाशजी जिस आन्दोलन का प्राधान्य बन रहा है उसके लिए उसी मजदू से मार्गदर्शन चाहें मोड़ है, जिस तरह गांधीयुग में कांग्रेसी के लिए था। जिस तरह गांधीजी ने कांग्रेसी की राह पर की थी, उसी तरह पात्र जयप्रकाशजी भारतीय

कारी उत गति को समझना है, उसके लिए धैर्य रखना है। जिनमें यह धैर्य नहीं है, वे हिम्मती घोर पुष्ट, बिरोही, घोडा तो हो सकते हैं, लेकिन जातिबारी नहीं। यदि जाति में भी बिरोध और बिरोह के तत्व निहित हैं इसलिए घोडा बिरोही तथा हिम्मती लोग भी उनमें शामिल हो जाते हैं घोर शामिल होने के बाद जब जाति के उत्तार-चढ़ाव देखते हैं तो उनके मन में घोर प्रकार की शकाल पैदा हो जाती है। ग्रामस्वराज्य की जाति में उत्तार-चढ़ाव के घबराव पर हमेशा हमारे मित्रों के मन में ऐसी शकाल पैदा होती रही है। पहले उनकी शका गांधीयुग के स्वराज्य आंदोलन के साथ तुलना करने प्रकट होती थी, आज यह शका जयप्रकाश जी के आटापार-विरोधी आंदोलन से तुलना करने प्रकट हो रही है लेकिन दोनों में मानसिक अंतर का सामना है।

प्रति मैं हमेशा उदासीन रहूँगा।

दूसरी बात कि जयप्रकाशजी दण्डशक्ति भिन्न धोर दिशा तकिक की विरोधी स्वतंत्र शक्ति के अधिष्ठान के विचार को यानी गने क्रांतिकारी विचार को, समाज के लक्ष्य में प्रवेश कराने के लिए, वर्तमान तांत्रिक चाल को अवसर के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं, जिस तरह भाजारी को तांत्रिकता काहू को पहिला तथा स्वराज्य की कल्याण को लोकमार्ग में प्रवेश कराने के लिए गांधीजी ने अवसर बनाया था।

घरने समाज के सभी मित्रों से मेरा निवेदन है कि वे इन तमाम प्रश्नों पर गहन-तन्त्र से विचार करें। वे समझें कि जय-प्रकाशजी का प्रदीपित न कामस्वराज्य की प्रति का विरोधी है और न विरुद्ध है, वह एक तांत्रिक और सहायक भावोपेन है। एतिलिए हमारे मातृय के साथ जो लोग कामस्वराज्य की प्रति में लगे हुए हैं, वे अपना काम सहायक रूप में शामिल न हों। तो भी धारा 312 अथवा 313 के मातृय मानकर, धारा 314 करते हुए, इन भावोपेन के सहायक बनने का प्रयास करें। विद्यते सान भित्तर में मेवाप्राम की राष्ट्रीय परिवर के अवसर पर सर्व सेवा सभ में घाने प्रत्यक्ष में कहा था कि सय कामस्वराज्य के अनुभव में परिवर के सुभाओ का धमल करे। हमारे मित्र आराम में गन-पहनी और बुद्धि-भेद पेश न करने हम मानने में भी उस प्रश्नाओ की लिटिटे से धाना काम करें, यह मेरा विनम्र निवेदन है।

राहो: वर्तमान भावोपेन का स्वरूप सरकार विरोधी भी है, जो भावोपेन के अने सहायक नन में स्वाभाविक रूप से बन गयी है। हमारे कुछ गांधी मानते हैं कि इन विरोधी स्वरूप का और हमारी सर्वोपेन की परिवरोधी मुद्रिका का कोई मेन नहीं है। वे सरकार विरोध को सतृयता मानते हैं। क्या यह विचन वर्तमान भावोपेन के साथ और और की परिवरोधी मुद्रिका के साथ भी सय सन है?

भावोपेन: सर्वोपेन की परिवरोधी मुद्रिका को सतृय रूप से समझने की जरूरत है। जिन सतृय-ओ और पद्धतियों के कारण सतृय में सतृय पेश होते हैं, वा समाज के तांत्रिक और भाव-रहित विचार में सतृय

पेश होती है, उसको बदलने के लिए उन सतृय और पद्धति का विरोध तो सर्वोपेन की सतृयता है, वह अहित का स्वधर्म है। अतृय में विरोध का निपेय सतृय-ओ और पद्धतियों के लिए नहीं है, बल्कि उसके सचलन-नर्तकी व्यक्तियों के लिए है। सतृय और पद्धति से विरोध और व्यञ्जन से प्रेम, यह अतृयता का स्वभाव और स्वधर्म है। पाप से घृणा और पाप से प्यार। इसीलिए गांधीजी हमेशा कहते थे कि अर्थ-ओ राज्य सतृयता है, उसे हटाना है, और अर्थ हमारे मित्र हैं, मैं उनसे प्यार करता हूँ। उसी तरह जयप्रकाश जी काय कहते हैं कि वे वर्तमान पद्धति और अर्थ का विरोध करते हैं न कि उसे चलाने वाले व्यक्तियों का। उदाहरणस्वरूप उन्हीं के इन्दिराजी के साथ धाना और प्रभावनी बहन का हादिक स्नेह और पारिवारिक भावोपेन के सम्बन्ध का बतान बार-बार किया है, और कहते हैं कि इन्दिराजी और उनके साधियों से उनका कोई विरोध नहीं है, बल्कि वे उन्हें अपना मित्र मानते हैं। इसीलिए वर्तमान भावोपेन द्वारा सर्वोपेन की अविरोधी मुद्रिका लिखन नहीं होती।

राहो: हमारे कुछ गांधी कहते हैं कि विचार के भावोपेन में धाने में जयप्रकाश जी का नेतृत्व स्वीकार है और वे नेतृत्व कर भी रहे हैं। यह धाननी जगह पर ठीक है और हमारी दृष्टि से चन सतृयता है। लेकिन पूरे सर्वोपेन भावोपेन का उनमें जूट जाना, उमम दिव्यधरणी लेना और कुछ हद तक उन सर्वोपेन का ही दूसरा गहम मानना नहीं है। क्योंकि उनसे हमारी प्रथमा सचिन होती है, जो इनने वर्षों के प्रयत्न से बनी है। हमारी एक धारा-मर्यादा है, मुद्रिका है, जिससे हम समाज में प्रेरणा दे पाते हैं। इन भावोपेन में सब तरह के लोग शामिल हैं, उनमें कोई धारा-मर्यादा नहीं है, इनमें हमारी प्रथमा विपक्षी है, 'इमेज' सतृय होती है।

भावोपेन: ऐसी सतृय उन लोगों की होती है जिनको समाज में धारा-मर्यादा के विकास के इतिहास का धारणन नहीं किया है। यह नहीं है कि कुछ लोग व्यञ्जन गन सतृय से, धाननी धारा-मर्यादा से धाने को मुद्र और मुद्र बना लेते हैं, और एक हद तक समाज को प्रेरणा भी दे देते हैं,

लेकिन इस प्रक्रिया से सामाजिक धारा-मर्यादा और मुद्रता का विकास होना सभव नहीं है, जो सामाजिक प्रगति के लिए अतृय-गत भावव्यक्तता है। सतृयान और व्यञ्जित-गत शिक्षण-प्रक्रिया से कुछ व्यञ्जित भले ही बनें, सतृय नहीं बनेगा। इस तरह कुछ व्यञ्जितों के बनने से धाने धारा सतृय बन जाएगा, वह विचार धारणन पुराना है। समाज-विकास के इतिहास का अनुभव इसमें पूर्णतः भिन्न है। हजारी वर्षों से उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा धाने का सञ्जन, सतृय और महात्मा होते चले गये, लेकिन व्यञ्जित चारित्रिक पन के अवसर पर समाज उनके कारण उपर नहीं उठ सका है। समाज, सामाजिक भूमिका में, तब प्रगति करता है जब कोई सुधार का क्रांतिकारी भावोपेन चलना है। धुकि धानि जमाने की मांग होती है धान उन जमाने के अधिष्ठान लोग उसमें शामिल हो जाते हैं जो हर प्रकार के, हर स्तर के परिवर्तन होते हैं। फिर अधिष्ठान के प्रभाव के कारण उनमें से बड़ी मध्या में उच्च चरित्र के मनुष्य बनकर निकल आते हैं। साथ ही धुकि पूरा भावोपेन सुधारवादी होता है, इतनाएँ पूरे भावोपेन-कारी जमाने को सुधार का वातावरण बनाये रखना पडता है। उन वातावरण के प्रभाव से सामाज्य लोग के चरित्र में कुछ-न-कुछ सुधार आ जाता है। दुनिया के इतिहास में ऐसा ही हुआ है। गांधीजी की प्रेरणा से 1927 में देगव्यापी भावोपेन हुआ जिसके भावोपेन के कारण इस मुद्र के धमस्य सञ्जन उनमें शामिल हुए क्रांतिकारी भाजारी की राष्ट्रीय चाल थी। फिर गांधीजी ने उसमें सतृय प्रहिता के मूल्य बोधे, जिसके कारण पूरे भावोपेन पर धारा-मर्यादा और मुद्रता का रण चडता रहा और उसी प्रक्रिया से हम लोग धनस्य मनुष्य, धारा-मर्यादा की और सतृयता रूप में धाने का गने और ऐसे लोगों की एक सतृय जमान बन गयी जो देश को प्रेरणा देती रही।

उसी तरह 1927-28 में विरोधा की प्रेरणा से देश में धारा-मर्यादा के मूल्य पत्र भावोपेन के लिए भावोपेन पेश हुआ और उनमें भी हजारी को मध्या में सब प्रकार के लोग शामिल हुए। उसी में से आज ओ लोग (मिथ पृष्ठ 12 पर)

‘एक कदम पीछे और दो कदम आगे’

(सब प्राविश्येयन का दूसरा दिन, दूसरी किरत)



पवनार में लोकोत्सवक विरोधा का इन्तजार करते हुए

सैंत्र अण्णा साहब सहलबुद्धे की अस्पृशता में घूर हुआ। वग साहब ने बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष निपुरारि शरख का एक पत्र सुनाया जिसमें उन्होंने जन प्रान्दोलन का स्वीकार देने हुए वर्षों न प्रा पाने की माफी मांगी थी। अण्णा साहब ने कहा कि कोई नयी पीढ़ी का अध्यक्ष बगलें। इस मंत्र में ३५ लोक सेवकों ने अपने नाम की पर्चियाँ बेजी थीं। अण्णा साहब ने कहा कि “इन ३५ में १० कू० पाटील का नाम नहीं है। फिर भी चूँकि वे हमारे प्रान्दोलन के ‘माननी सहाकार’ रहे हैं इसलिए वे तथा उनके बाद वग साहब कोलें। वग साहब सर्व सेवा सभ के मंत्री के माने नहीं एक लोक सेवक के माने विचार रखें। इन दो वक्ताओं को धर्मप्राद्विन समय दिया जायेगा। सप ३५ की मर्णादा प्राण सब सय करें।” सीधी वार्तावाई के नरेन्द्र ने मोका नहीं चूका, गड़े टों बार कहने लगे कि ये दोनों वक्ता बुद्धिमान हैं। ये कम समय में भी अपनी बात को सरे रख सकते हैं, प्राय वक्ताओं ने जिनका अनुभव कम है, ज्यादा समय मिलना चाहिए। दादा पर्माधिरारी ने सड़े हो कर कहा कि बहुत ज्यादा अकन वाले तो मौन रख कर भी अपनी बात सबभा देंगे।

रा० कू० पाटिल : मैं मौन रहना पसंद करता लेकिन दिल की बात प्रकट करने की भी इच्छा थी। प्राज की समस्या से बिसम्बत जनजाने ही मेरा सम्बन्ध जुड़ा है। यदि सर्वोदय के जनक विरोधा है तो जे० पी० उस्तावो बुट्टि देने वाले व्यक्ति है, आज वे उस आन्दोलन में जो जान में कूद पड़े हैं।

हम जैसे प्रादमी क्या करें? पटना संगीनि में गया, जे० पी० से प्रत्य पूछे, लेख भी लिता, ‘क्या बिहार गुजरात के रास्ते पर जायेगा?’ राधा को भी दिया, उन्होंने उस लेख को अपने कुछ साथियों में वितरित करने का वहा। मैंने भी भी दूना और इस तरह बिहार से मेरा नाम भी जुड़ गया।

“हमारा काम बिचार समझना और उसके फल के लिए प्रेरित करना है, यह काम उसके भिन्न है।” भिन्नता के कारण वताते हुए उन्होंने आन्दोलन की उत्पत्ति (१५ मार्च की घटनायें) को लोकतन्त्र के खिलाफ कहा। विशाल जनशक्ति उभरी, ठीक है, लेकिन उभ्र शक्ति में कोई बिचार नहीं है। तरीके चाहे जो हो किसी भी स्वरूप में हैं, उसमें सरकार व्यवस्था का तो विरोध है ही। गया पापरिंग के बाद क्या हुआ मैं नहीं बूझा लेकिन उसके पहले बहा तीन दिन तक ‘सम्भार ठण कर्णे’ आन्दोलन चला। यह अलोकतांत्रिक है। अब यह देहात में जायेगा। नाम क्या है—जन सचपं सामिति, सचपं किससे? सरकार से ही प्रतीत होना है, आन्दोलन का इतिहास देखने पर भी यही लगता है। जे० पी० ने पहले कहा कि विधानसभा मत से कुछ नहीं होगा, फिर वे भीरे-भीरे इस तरह प्राये। और प्राची वक्ताके में उन्होंने जो कहा वह सब प्रागे है। जे० पी० ने कहा कि उनका विश्वास हिता में नहीं है, जिन्हें है वे उसके भी काम करें। यल्ले वे प्राज की परिस्थिति को देखनी अभीरता से लें रहे हैं।” आन्दोलन के स्तरन पर बोलते हुए पाटील साहब ने कहा कि “सत्तास्तरर की प्रास्था है—राजनीति। और इसमें यह अपेक्षा है ही। जय तक यह सत्ता कायम रहेगी तब तक कुछ होगा नहीं ऐसा वे मानते हैं। प्रागे प्राज की व्यवस्था में सुधार की गुआदश नहीं, अब उनका पूरा मुकाबला करना है—ऐसा इस आन्दोलन का स्वरूप है।” आज की समस्या को रगने हुए उन्होंने कहा कि बाग्य बुद्ध भी हो, प्राज का लोकतन्त्र हिन रहा है। सामन्य, पार्टीशबी, इसने कारण है। उसे बर्द तरह से टोका

करना होगा। जन-प्रतिनिधियों को वास्तव बुलाने की मांग ठीक है लेकिन महगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आन्दोलन से दूर नहीं होगी। उनके लिए योजनाएँ बनानी होगी, वे कदम उठावें, आन्दोलन से मदद अवर मिलेगी योजना बनाने में। योजना बनेगी पबशक्ति के सहयोग से, याने राष्ट्र में उपलब्ध सभी ताकतों को जाग्रत कर उनका पूरा सहयोग लेकर।”

यह आन्दोलन बिहार भर तक सीमित रहे तो मुझे कुछ कहना नहीं है। जे० पी० गया के हैं, वहा जो कुछ हुआ उसके उनकी सवेदना पर चोट लगी। लेकिन क्या ऐसे आन्दोलन हम देश भर में चलायेंगे? यदि जनता की हानत सुधारने के लिए सत्ता की मदद लेनी है तो फिर इस प्रान्दोलन का रूप दूसरा ही होगा। और यदि जे० पी० की तरह सत्ता से हमारा भी पूरा बिस्वास उठ चुका है तो फिर इस आन्दोलन का स्वरूप भी भिन्न होगा। मुझे नहीं लगता कि प्राज की सत्ता के घासे से हम इतने निराश हो गये हैं, कि उसमें बोलचाल ही बन्द हो जाये।

जनशक्ति जगाने की कोशिश की गई। सट्टा में वे हल बापी छसफन हुए। अब हमारे सामने यह है कि जनशक्ति जगे कैसे, उनका स्वरूप क्या हो कि उनमें दबाव नहीं हो बनेगी दबाव में साथ हिता जुड़ी ही है। शान्तिपूर्ण घेराव की भी बात प्राची तो हमारी मर्णादा क्या है यह ताक होना चाहिए।

इस आन्दोलन, से ग्रामस्वराज्य के मूल आन्दोलन को क्या लाभ मिलेगा? गये सीग प्रायेगे, जन सचपं मिलितियों में हमारे काम को भी आगबत्ता मिलेगी—यह सार ठीक है लेकिन सोचना होगा कि नीचे से ऊपर उठने की क्षमती बरतना में सचपं की क्या भूमिका होगी?

हम प्रागे क्या करें? देश की प्राविध हानत नाजुब है। प्रायियों का प्रतिवार ली होना ही चाहिए, नहीं तो हम प्राजत घो



→
 उठेंगे। मर्दा तो भाज की बदलना ही है। सत्ता के प्रति दृष्टयथा रखते हुए भी जनता के अधिकार से उसे बदलना है। लेकिन हमारे आन्दोलनों और राजनीतिक दलों के आन्दोलनों में एक धक्का होगा—हमारे आन्दोलनों में विपक्षी का मन भी तारीफ से भर जायेगा। उत्तरांचल के विपक्षी आन्दोलनों की तारीफ स्वयं मुख्यमंत्री ने की है जब कि वह उनकी सरकार भी बनानेवाले के खिलाफ ही चल रहा है।

क्या जे० पी० के प्रति मेरे मन में भावदर कम है? लेकिन सोचना होगा कि क्या हम विचार से सत्ता को प्रत्याज नहीं बांट सकते? क्या सत्ता को प्रत्याज चाँदने की हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर ली है?

ठाकुरदास भगः महगार्द, बेरोजगारी प्रादि मिडाना मासूरी सुधार के काम हैं, उनकी सुलना ग्रामस्वराज्य के नाम से करना ठीक नहीं—ऐसा मानने वालों में मैं खुद भी हूँ। उस सुनिवादी नाम को छोड़ कर इसमें हम सच पढ़ें यह मैं नहीं कहूँगा। २३ साल से भूदान प्रामदान के बाद भी हम सिद्ध कर पाये क्या? इस पर पट्ट कर दें। मैं प्रामदान के खिलाफिने में पदयात्रा करता रहता हूँ। सभी पिछले महीने एक नये प्रदेश केरल में भी पदयात्रा चली। तो उसे छोड़ कर हमने घाते की बात है नहीं।

मै पाटली साहब से सौ फीसदी सहमत हूँ कि विचार से क्रांति होगी, हमने २३ साल तक यह प्रचार किया भी है, अब भी कर रहे हैं। लेकिन छात्रों ने पहले अपनी मागों और फिर उनके राष्ट्रीय प्रश्नों को जोड़कर आन्दोलन शुरू किया। तब क्या गुजरात और बिहार के सर्वोदय वाले भद्राह्वन-भद्राह्वण ऐसा वह कर पाएँ? क्या यह कहें कि इससे क्रांति नहीं होगी केवल सुधार से क्या आयेगी? आज बिहार और गुजरात के छात्रियों के सामने यही प्रश्न है। बाकी बागें हैं। आज बिहार में लोग पृथुने लगे हैं कि सर्वोदय क्या है, लोकनीति कैंसे आयेगी? अब इन प्रश्नों के पीछे जो इच्छा है, उरकटा है, उसका लाभ लेने की हम बांगिस करनी चाहिए या हम आन्दोलन को जे० पी० की प्रथम सफल कर कर उसके पूर्ण करनी चाहिए? या उससे प्यार करना चाहिए?

हा प्यार में कभी-कभी उठना और कान पकड़ना पड़ सकता है।

जे० पी० को बिहार की जनता ने लोकनायक कहा। उन्होंने बिहार को भयकर भ्रम से बचा लिया। उसके बदले तो उन्हें भारत-रत्न की उपाधि दी जानी चाहिए थी। लेकिन उन्हें बदले में मालिया मिली। उनका बसूर क्या था? क्योंकि उन्होंने इस वातावरण को खिलाफ प्रयाज उठाई थी, 'अलोकनायक विपक्ष' लिया था एक। क्या यह उनकी गलती थी? धार्मिक और धर्मधर्म की कीचड़ निकालना उनकी गलती थी? अब उनका घर उन्हें क्या तोहफा देगा? प्रणाम नरेगा या अलोकनायक कहेगा? यह धारण तो कर रहा है।

बल चारुदा ने कहा कि छोटा सिक्का बाजार के सारे सिक्के को निकाल बाहर करता है। क्या हम मान लें कि महगार्द, बेरोजगारी शिक्षा में क्रांति को लेकर किया गया आन्दोलन छोटा सिक्का है और प्रामदान ही बड़ा सिक्का है? २० साल तक जनता उस सारे सिक्के की तरफ धायी नहीं। आज वह धायी है—एक राह खुली है तो क्या इससे प्रामदान की राह बन्द हो जायेगी या उसके भी कई रास्ते खुलेंगे?

लेकिन को मन् २३ में कहना पडा कि अब हमें एक कदम पीछे धो दो कदम आगे बढ़ाने की नीति धरनानी होगी। विनोबा ने भी प्रामदान संसुनभ प्रामदान का विचार सामने रखा। और अब जे० पी० भी बोडा पीछे हटकर प्रामदान की ओर ही बढ़ रहे हैं।

धामदान से प्रामस्वराज्य १०० वर्ष में पूरा होगा तो क्या तब तक लोग ऐसे ही रहेंगे? हम सब को दिन में तीन बार खाना मिलता है भरपेट, जिन्हे नहीं मिलता दिन में भी या दो तीन दिन, उनके बारे में क्या हम सोचेंगे नहीं? मैं कहूंगा कि हमें तो इसमें थोड़ी देर ही हो चुकी है। सरकार और हमने गरीबी हटाने के लिए, २० साल तक काय किया। कुछ कर नहीं पाये, अब धारों ने शुरू किया है।

विधानसभा भग की भाग मुख्य नहीं है, वह एक प्रतीक है। यदि वह आन्दोलन सफल हुआ तो शिक्षा, धर्म, समाज, राजनीति की

एक नयी बुनियाद बनेगी। आन्दोलन के खिलाफ मूठयुद्ध के दंतरे की बात नहीं जाती है। मैं पछुता चाहूंगा कि क्या इस देश में एक अधोपिथ मूठयुद्ध नहीं चल रहा है? क्या घोषित युद्ध ही युद्ध होता है। इस धुंधली-बरण को अहिसक मोड देने के प्रयास में ही यह आन्दोलन है। अब तक मैं चार बार बिहार गया हूँ। भ्रम एक वर्ष के लिये जाने वाला हूँ। कहा जाता है कि जे०पी० राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं और उधर वास्तविकता यह है कि इस आन्दोलन से राजनीतिक दल ही टूट रहे हैं। कई जगह खुद काग्रेस में आन्दोलन की लेकर टूट हुई है। कुछ कांग्रेसी भी स्वयंभूध में भाये हैं। इस आंदोलन पर हमें धारको, कुछ अन्य लोगों की विश्वास भले ही न हो, जनता को उस पर विश्वास गम रहा है।

यह कहा गया कि समसयाए आन्दोलन से हल नहीं होगी, चिन्तन कर, योजना बनायें। लेकिन क्या अब तक चिन्तन नहीं किया गया, योजनायें नहीं बनाई गई थी? उधर वर्षों में ही श्रीमन्नायाम जी ने शिक्षा सम्मेलन बुलाया था। एक योजना बनायी लेकिन क्या हुआ उसका? जब तक योजनाए आन्दोलन के वातावरण में नहीं बनती तब तक वे सफल में नहीं आ पाती।

मैंने अब तक किसी भी सच अधिवेशन में इनका बैठन सवाल उठने देना नहीं जितना आज इस अधिवेशन में उठा है। क्या हम उस आंदोलन को बल पट्टाचर्य? क्या हम उसकी उपेक्षा करें? क्या हम उसे कमजोर करें?

जे०पी० ७२ वर्ष के हो गये हैं। यह मैं भावुकतावक नहीं कह रहा हूँ। उन्होंने सोच समझ कर एक गतिरोध को छोडा है।

निर्मला बहुल : धरने आंदोलन में विचार मयन देखकर बहुत खुशी हो रही है, इससे नवनीत निबन्धन। पहले विष भी निकल सकता है पर अब में अमून ही निकलेगा; हम शांति से प्रशोध चिंतन करें। जे०पी० के लिए जो धारद है वह व्यक्त करने की जरूरत नहीं है, लेकिन हमें सोचना होगा कि हम का बढ़ा रहे हैं। पहले बाग तो यह कि हम अहिंसक क्रांति के लिए समर्पित हैं और उसका अधिष्ठान प्राणायामिक होगा। विचार सफल

भाना हमारी पड़ती है। और भव घेराव की बात है। हमारे प्रतिकार के चांदोलनो मे भी सामने वाले के हृदय मे प्रेम जगना चाहिए। उत्तराखंड का विपकी आंदोलन सामने है हमारे। मुख्यमंत्री ने भी कहा कि प्राण लोग भ्रष्टा काम कर रहे है।

हम मुशासन की नहीं, रखासन चाहते है। उसे आज की व्यवस्था के बदले लाना है लेकिन कठिन काम है, समय लगेगा, धीरज रखना होगा। रखासन तक जाने वाली के लिए कुशासन और मुशासन दोनों ही ज़रूरी है, ज़रूरी बाधे सोने की हो या लोहे की— ज़रूरी तो बाधो ही है।

विधानसभा भंग की माग पहले थी नहीं यह भी कहा गया कि शुरू मे घेराव बंदर भी रखा नहीं था। यह सब गया गोलीकाण्ड मे बाद उभरना पडा। लेकिन यह ऐसा है नहीं यह रास्ता ही ऐसा था जो हमे यहां तक पहुंचना ही।

भव तक हम कहा करते थे कि शक्ति का अधिष्ठान पटना या दिल्ली में नहीं जनता मे है, देहात मे है। लेकिन आज हम देहात से पटना आ गये है। आज हम मानते सगे है कि विधानसभा भंग करवाने से मुधार हो जयमेगा। कुशासनी और बादशाह खान के प्रति हमारे मन मे बहुत आदर है, लेकिन वे मानते है कि सरकार पर प्रकुश रखना जरूरी है नहीं तो यह लुट्टहारे बर्ड छाल के धन्दे काम को एक धाए मे चीपट कर देगी। आज तक हम नीचे से ऊपर का दावा बना रहे थे, सब लगना है कि हम ऊपर से नीचे जाना चाहते है।

हम सब भावो मे घूमते है। क्या हम बर्दा महगाई भ्रष्टाचार घादि नहीं रिगना। यह सब है लेकिन कौन दूर होगा? मान र को वाज्जर से मुफ कराना पड़ेगा, पैंगे की ही जरूरत कम करने जाना होगी ये सब सामयिक जागतिक है। सो कुन उपलब्ध प्रतियोगे से ही ये बनवू मे आयेंगी। देश की तरीको मिटाने के लिए उपलब्ध शक्तियो को एक बुट करना होगा।

२१ सान मे हमने कुछ रास किया नहीं ऐसा सोचना परतून मन है। एक श्रानिहारी को घोरत की आबरुना हमी है। मजल घागे जरूर है, वह घागेगी भी जरूर। क्रातिहारी के नाते हमे लोकरीय

धीर लोक शक्ति मे फर्क करना होगा। फ्रांस में छात्रो के शोध से एक बहुत बड़ा आंदोलन खड़ा हुआ, वहाँ के राष्ट्रपति दगाल को त्यागपत्र देना पडा। फिर से चुनाव कराये गये और फिर दगाल ही सत्ता मे थाया। हम वहाँ की गलतियां नुहरायें। भ्रष्टाचार हम कैसे दूर करे? सबसे वही न कही कोई भ्रष्टाई जरूर होती है। उसे उससे लेकर हम परिवर्तन करेगे। लेकिन आज हम इसे भ्रष्ट, उसे भ्रष्ट कह रहे है। जरा हम धरनी स्तथाओं की घोर भी तो देखें।

आदर की बात नहीं केवल जो रास्ता हमने अपनाया है उसकी ही बात है। जन-शक्ति तो लोगों को एक दूसरे से जोडने से उभरेगी, हम तो मान-भाव मे जनसधर्ष समितिया बनाये जा रहे है भव। ऐसी समितिया से क्या दंगे हम संघर्ष के सिवाय तो मेरा नभ्रतापूर्वक इनना ही निवेदन है कि बिहार चांदोलन के भी जो उद्देश्य है, वे उनके द्वारा अपनायी गयी पदति से पूर्ण होगे नहीं। अत मे इनना भर बतूयो कि घामदान की पदति का भविष्य है।

निमसा बहन के भाषण के बाद लोक सेवक दादा से बोलते का अनुरोध करने रहे लेकिन दादा ने सन के शुरू मे हुई बहम के घावर पर भीन रहना टीक समभा।

दस युवाई को दोगदर का मुला मधिवेशन पवनार मे हुआ। दंगे क्या ने बडे धानिय गूह की दारात से सम्बोधित किया। घामदान लुना हुआ था इगलिए ओ सोमनेवक भूप का बराने कर सवने मे के सामन मंदान में बंडे और बावो के पडो के नीचे धीर छोटे धनिय गूह की दास्तान मे।

मदियामन से पवनार की दूरी तय करने के लिए सध की ओर से बयो का इन्ज-जाल किया गया था। पहली बस बादे बंडे निकल जाने वाली थी। उमने जाने वाले सोचनेवक दो बडे से ही बाहर सरक पर इन्हें ही गये थे। लेकिन एने दिशागु की बस नहीं थी ओ जानना चाहने थे कि पवनार मे विनोबा-ने थी-बार्ना मे क्या निकला। बहुत प्रथम समिति के सदसयो को पवनार जाने की सूचना मुले घाम दी गयी थी। दोपहर के मौजन सफ मे लंग वहाँ मे नोट भी घागे थे। निश्चन ही बार्ना नाबुड दोर मे है लेकिन हुआ क्या? जासबानी भिखना मुभिसन था। प्राणी-दूदी सूचनायो धीर भगवानो के बज पर लोग बड ममभने की मीगिन कर रहे थे जो उन्हें सन्तोपदायो

दंग से मिल नहीं सकता था। बाई बने पहली बस गयी लेकिन बाकी को तीन बसें बाडे तीन के बाद ही रखना हो सकी। चार बने तक सब लोग पवनार पहुंच सके। मधिवेशन गुरू हुआ। भव पर बाबा, जे. पी. धीर सिद्धाराजजी बंटे।

सिद्धाराजजी ने कहा कि पिछली अक्टूबर मे सेवाराज मे सध मधिवेशन हुआ था। दस महीने मे दूसरी याद हम दूया मिल रहे है। आज की परिस्थिति पर हमने विचार किया है। गुजरान मे एक जन आंदोलन हो चुका और बिहार मे चल रहा है। देश काज जित परिस्थिति में है, उसमे हमे क्या करना चाहिए इस पर विचार मन हमारा चल रहा है धीर भव हम पूज्य बाबा का प्राणीवर्द सेने घागे है। बल तीसरे दूहर फिर घागे।

विनोबा ने लोकसेवको को देखकर कहा- घाजकल दर्शन ही मेरा मुख्य धामन्द है। परमात्मा ही भनेक घामने बंडा, धीर लडा हुआ है। हमारा यह मरीर ब्रह्म साक्षात्कार के लामक है। मनराचार्य ने कार-बार समभाया है घामत साक्षात्कार कर के ही मरना चाहिए। घामत साक्षात्कार करतो धीर प्रेत से रहना। भूपणे ने अशून की समभाया कि लडना भी तो निवैर होकर लडना चाहिए।

भगवान बाबा के पास आकर सड्डा हो जाये धीर कहे कि गीनम बुड धीर तेरी उम मे एक ही मान वा फर्क है। गपर वे तो बुड हो गये थे धीर लु बुड ही रह गया। यह नर देर एक दुटे है। इसका अहकार रगता टुट के विण्ड है। बाबा लगातार को जिनम करना रहा है निव अहकार शून्य हो जाते। अहकार शून्य हो रहा है। जन्मे को ज्यादा बुड है नहीं। लेकिन भक्ति का एक प्रकार है घामत निवेदन। हमनिए कोडा बुड घामत निवेदन घाएके सामने कर दूंगा। बाबा लख पडे रात को मोशा है। दो-तीन घटे बिलक मनन करता है। विणु सहरनाम पडना है। घावबार ज्यादा दिगना नहीं। भयेना घाम-बावो को नाम दिया है। गमकला परमहंस घावबार को छुने नहीं थे। घावबा भी (जे. पी. का) घावबार निचकता है एबरीमेन ! मैं उमे एबरीमेन बड नाट बाबाज बहना हू पन बने पाना नहीं हू। मा पनेवु बदाधनु-भगवान का घादेन है। महवीर स्वामी की (गैप घनिय मेर रक)

आन्दोलन फिर लौटकर नहीं आयेगा

श्रवणकुमार गगं

पांच जून को पटना के राष्ट्रीय मंदान में अपने ऐतिहासिक भाषण में अग्रप्रकाश जी ने कहा कि सात जून से विधानसभा के सभी प्रवेगदारी पर सत्याग्रह हो। सत्याग्रह का रूप विकेंटिंग हो। "पंचोत्त हो, पचास हो, हम सब बैठें पर खड़े हो जाए। एम० एन० ए० साहब प्रायें, मंत्री साहब प्रायें, उनको रोके कि प्राय न जाइये। जाना है तो हमारी पीठ पर से जाइये। हम भाषने जाने नहीं

का रास्ता रोक रहे थे, और गिरफ्तारियां दे रहे थे। पांच जून की ही सभा में जे० पी० ने इन सत्याग्रहियों से कहा था 'जेल से डरेंगे (ते) कभी तुम्हारी सफलता नहीं होगी। जेल से ही स्वराज्य पैदा हुआ है। जेल से ही तुम्हारे अधिकांश प्राण हैं, जनता के अधिकांश प्राण होंगे और सच्चा स्वराज्य मिलेगा।' बिहार के लोगों ने अपने नेता की कोई बात धब तक नहीं डाली। वे

बिहार के छात्र और नागरिक 'प्रधा-चार विद्यार्थियों, नया बिहार बनायेंगे' का नारा मगाते हुए बिहार विधानसभा के दरवाजों को छोटछटा रहे थे। जिन लोगों ने भावीयुग के सत्याग्रह नहीं देखे थे वे देख रहे थे कि किस प्रकार चिलचिलाती धूप में चौदह साल के बच्चों से लेकर सत्तर साल के बूढ़े अपने बहुतराफ के नेता के इशारे पर जान देने के लिए चले आ रहे हैं, सैकड़ों मील दूर से।

पांच जून की सभा में जे० पी० ने कहा था, "तो धात पांच तारीख है। छ तारीख को छट्टी मनायें, कुछ विधाम कर लें। बहुत मेहनत हुई, इतनी धूप में लोग धूये। ७ तारीख से अष्टमशती के दरवाजों पर सत्याग्रह हो।" सप्त जून के बाद से कोई दिन ऐसा खाली नहीं गया जिस दिन विधानसभा के दरवाजों में दरार नहीं की गई हो। सत्याग्रहियों का एक तिलतिला बना हुआ धा, जेव जाने के लिए होड़ लगी हुई थी। हर रोज सत्याग्रहियों की तादाद बढ़ती जाती। जो सक्षम थे वे भी और जो अप्रम थे वे भी अपनी शान्ति समर्पित करने आ रहे थे।

२४ जून को विधानसभा के दरवाजों पर १४४ सत्याग्रहियों ने अपनी गिरफ्तारी दी। १ जुलाई को ५०६ लोगों ने। इनमें ११४ महिलायें थीं। २८ जून को हुई गिरफ्तारियों में भागलपुर के एक मूरदास दिनेश मण्डल भी थे, एक पैर से अपंग जोयेन्द्र भी थे और चौदह साल का छात्र विजय कुमार विद्यार्थी भी था। भागलपुर के प्रथम छात्र सत्याग्रही विजय को छोड़कर पटना पहुंच गए तो अपने पांच बंधुपुत्र से वह अवेतन ही चल पडा और बरौनी पहुंच गया, बरौनी से मोराना प्राया और मोराना के पटना स्टेशन और वहा से पैदल चलता हुआ सचपं कार्यालय। विजय ने कहा कि उसके और साथी जेल जाए और वह नहीं जायेगा तो प्रच्छा नहीं होगा। इसलि ए प्रच्छा ही चला प्राया, रात भर सफर करके।

कदमच्छा स्थिति सचपं कार्यालय से कड़ी धूप में चार किनोमीटर पैदल चल कर अर्धे मूरदास दिनेश मण्डल भी छाते थे, लपटे जोयेन्द्र भी और पन्द्रह वर्ष के छात्र विजय भी। रिश्तों की ओर मोटरी पर बैठकर बैठे ही (सेप पेज १५ पर) →



"अग्रप्रकाश साहू ने कहा है कि जाना है तो हमारी पीठ पर से जाओ।"

देंगे। गिरफ्तारियां हों, हम जेलों को भर देंगे।"

बिहार विधानसभा को गफूर सरकार ने एक मजबूत किमा बना दिया था, सैकड़ों की तादाद में पुलिस के जवान जिले की रक्षा में तैनात कर दिये गये और अग्रप्रकाश जी के भावाहन पर सैकड़ों की संख्या में सत्याग्रही वेगमें विधानसभा के दरवाजों पर दस्तक दे रहे थे, पुलिस का घेरा तोड़ रहे थे, रिश्तों और बारां में बैठ कर विधानसभा की बैठक में भाग लेने आ रहे लोकतन्त्र के 'गहरियों'

जेलों को भर रहे थे।

सात जून से बारह जुलाई तक विधानसभा के पांच दरवाजों पर सैकड़ों छात्रों की नियमित गिरफ्तारी से एक बात साफ हो गई है कि 'संवैधानिक' रूप से बिहार का शासन बाहे गफूर साहब चल रहे ही, विधानसभा के इर्द-बिर्द एक ही दूरा पककर काट लेने के बाद यह स्वीकार करने के लिए पर्याप्त कारण मिल जायेंगे कि विधानसभा का अधिवेशन जनता की सममति से नहीं, पुलिस की शक्ति से चल रहा था।

क्या ज्वालामुखी कभी फटेगा नहीं

सिद्धराज डड्डा

धीमे के नीचे अंधेरा होता है ऐसी पुरानी कहावत है। दिल्ली समाजवादी भारत का गिखर है। इन्द्रपुरी जैसी उसकी जन्मगाह है, उसका वैभव है। पर भारत के पाच लाख गावों में हमारे समाजवादी घोर 'गरीबी हटाओ' आंदोलन के बावजूद या उसीके कारण फंसी हालत है इसका अन्धान हम पढ़े-लिखे बड़े जाने-बाने क्रिन्ते प्रबुद्ध नागरिकों को है यह कहना कठिन है।

भूदान-ग्रामदान आन्दोलन के काम करने के कारण देश के अनेक प्रदेशों में गांव-गांव जाने का मोका मिलता रहता है। परिस्थिति अधिकांश क्षेत्रों में करीब-करीब समान है। कुछ समय पहले उत्तरी बिहार के सहस्राक्ष घोर दरभंगा जिले में हम लोग पदयात्रा कर रहे थे। हिमालय की तराई में स्थित, अनेक नदियों से सिंचित, यह इलाका देश के प्रत्यन्त उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है। पर यह हमारी आर्थिक व्यवस्था के स्वच्छता का छोटक है कि जो इलाका जितना उजाड़ा उपजाऊ, वहाँ उसनी ही ज्यादा गरीबी, विपत्तियाँ और शोषण।

उत्तरी बिहार के इस क्षेत्र में हमने देखा कि किसी-किसी गांव में विशेष स्थानीय परिस्थिति घोर सनसपाए भले ही हो लेकिन सामान्यतौर पर सब गांवों में गरीबी घोर बेवारी की स्थिति समान है। हर गांव में इन समस्याओं के बीभत्स रूप का दर्शन होता है। गरीबी की स्थिति पुत्रवती गुस्तामो से भी बदतर है। 'गुस्तामो' के लिए तो मातृत्व योग्य मायक कुछ जिम्मेदारों भी मरहूम करते रहे होंगे, पर यहाँ शोषण तो बाहू लोग पूरा करते हैं लेकिन जिम्मेदारों उनको बूझ भी नहीं है। जब तक गरीब के बदन में दून है या तावत है और वह 'मालिक' को 'भत्ताकर' दे सकता है तब तक मानिन उसे काम देता है (और कर्ज भी), हास्ताकि वह भी गरीब की प्रायव्यवस्था के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी नर्सी घोर सङ्कल्पित के अनुसार। काम के लिए मजदूरी भी उनको ही दी जाती है जिनकी जिन्दा रहने के लिए मृत्युतम धारणक हो। जहाँ गरीबी ज्यादा घोर गरीबी की

सख्या ज्यादा, वहाँ 'दिमाग्द एण्ड सप्लाई'—माग घोर धारपूर्ति—बाला धर्मशास्त्र का सामान्य नियम लागू होता है और मजदूरी की दर उत्तरोत्तर कसी जाती है। इस सारे शोषण के फलस्वरूप जो-ज्यों मजदूर का शरीर क्षीण होता जाता है थो-थो-थो वाम घोर कम मिलने लगता है और कर्ज के लिए दून की दर भी ऊंची होती जाती है। शोषण के दुष्प्रक की दस चक्की में गिपते हुए जब मजदूर की शक्ति क्षीण होने लगनी है तब 'मालिक' शिन्त्यत करता है कि मजदूर धारवती हो गया है, काम नहीं करता, इत्यादि। जब मजदूर विरहूल काम करने लायक नहीं रहता या बूटा हो जाता है तब 'मालिक' पूरा हाथ रीच लेता है और 'मजदूर' भगवान भररोसे छोड़ दिया जाता है।

ऐसे ही एक पड़ाव पर खड़े भूमन जुलहा का पढ़ा। ६०-६५ वर्ष की उम्र, बदन का पूरा ठूआ बपडे के नाम पर तन पर फटे हुए चिपडे। भूमन के बताया कि उसकी भगवती जिता जमीन पर कनी हुई है उसका 'परचा' (बिहार के बानून के अनुसार उस जमीन पर बने रहने के उसके हक का प्रमाण-पत्र) उठे नहीं मिला है, परचा उठे दिलबाने की दूया की जाय। परचा दिलबाने में मदद करने की बात अपने स्थानीय साधियों से कहकर मैंने भूमन से बातचीत जारी रखी। पर में ७ प्राणी है, सुद, रीबी, लडकी, और लडकी के ४ बच्चे। दामद अभी बूद्ध दिन पहले ही क्षयरोग से (शोषण के गिहार का एक और नमूना) मर गया इगलिए लडकी घोर साधियों की जिम्मेदारी भी भूमन पर ही आ गई है। यह पूछते पर की काम जिन्दा तरह चलता है, भूमन कातर नजरो से मेरी घोर देखते लगा। बोया, 'सरकार, जिन् दिन मजदूरी गिन जाती है उन दिन एक बत्त खा लेते हैं, कभी कभी दो दिन में एक बत्त।' भूमन के पाठ पुराने दिनों की यादगार—एक दिन है जिये वट मजदूरी पर लगाता है। सुद को तो कोई जमीन है नहीं। बंन को जिन् दिन काम

मिलता है उस दिन मजदूरी में 'तीन सेर' दाना (सामान्य तौर पर कोई भी मोटा फलन) मिलता है उसके कुछ काम चल जाता है। बंन को इधर-उधर चराकर या पास छीलकर खिलता रहे हैं, बंन को मजदूरी में मिले फलन को घर के लोग खा लेते हैं। मजदूरी की इस दर में भी बितना सूकम शोषण है यह तब पता चलता जब सहज ही धागे पूछनाथ के मिललिले में भूमन जियां में बतलाया कि मजदूरी के लिए सेर भी 'कच्चा' चलता है, यानी ४० सेर के मन वाला बूठी, मन के ६५ सेर वाला सेर। बहने में मजदूरी तीन सेर होनी है लेकिन वास्तव में उसका मतलब दो सेर से भी बूद्ध कम ही होता है। इस प्रकार मनोबोजानिक दृष्टि से मजदूर पर घोर जब तक कि वे धागे पूछनाथ न करें मुलने बाली को भी, ऐसा लगता है कि मजदूर को वास्तव में बितना मिल रहा है उसते अधिक गिगता है।

दो बाबू लोगों से गिगताकर भूमन धानी तक पार-पाप तो खपा कर्ज से पुका है। साल में १० रुपये पर ४ खपा, यानी चालीस प्रतिशत ब्याज देना पड़ता है। साल वे धात में जो बाकी रह जाता है—और बाकी तो रहता ही है, क्योंकि जब सारे घर की भी नहीं मिलता तो ब्याज बहाल से दिया जा गया है?—यह सुद भी मूल में जोड़ दिया जाता है और फिर बूत खम पर उगी हिगाव से सुद चलता है। चालीस प्रतिशत जितने 'कम' ब्याज पर भी भूमन इगलिए मिल जाता है क्योंकि अभी तक भूमन के पात बंन के रूप में बूद्ध पूजी है जिससे धानगोरगा कर्ज बसूल हो सकता है। लेकिन सब उसकी भी सीमा आ चुकी है और कर्ज की धराधनी में बंन के बिन जाने का अंदेशा है। तब भूमन के परिवार का बचा हांगा इसरी बहाना धात कर गाँवों की कठिने। अब नब तिया दूया कर्ज या सुद चुकाला तो भूमन की परिस्थिति में उनमें निग, संकष है ही नहीं यह साक जाहिर है। इगलिए सुद-दर-सुद कर्ज बढ़ता ही जाता है। जिन बाबू लोगों का कर्ज उग पर है वे जकरन पठने पर उनका बंन भी बेगार में काम पर में जाने है, क्योंकि उनका कर्ज जो भूमन पर है। हाइ-इन्ट करने उन दिन भी बंन की मजदूरी (धरने केर पर जागे)

रामय हम सामान्य जनो से बड़ा काम करवाना चाहता है

(शेष पृष्ठ ४ से)

निंदे है। मविमण्डन का जानू या विधान 'अभा का भग होना' इम धारमोपन के प्रथिम सभ्य नहीं है। हाम इन पर और इसलिये दे रहे है, क्योंकि यह प्रगति धोर परिवर्तन के मान्य मे सबसे बड़ी बाधा है धोर यह जनता की नयी भाषा धोर धाराशा का प्रनिनिधित्व नहीं करती।

ईने महाविद्यालयो, विश्वविद्यालयो, मेडिकल और इंजीनियरिंग कालेजो तथा तकनीकी सरधानो के छात्रो से धारम को है कि वे एक साथ वा समय धरनी इम क्रांति को दें ताकि एक मान के बाद वे बरते हुए विद्यालयो धोर 'दरनी हुई' गिशा मे धारित जा सकें धोर अपने जीवन के जिनित पर धारित को नई किरखें देन सकें। यदि उन्होंने यह न किया धोर धर पर बैठकर धारम्य भरे दिन विचारो से विद्यालयो के बन्द होने का क्या धर्य होगा, धोर वे धरने, धरन धरिभाभवकी धोर धरनी इम धारि के प्रति कषायार नहीं भिन्द होंगे। अन्दा सी यह होगा कि छात्र धोर छात्रायाँ स्वयं बसायाँ धोर परीक्षायो से अलग हो जायें, लेकिन सरकार धरनी बिदे से विद्यालयो को सोलना चाहती है। इम अवरदानी का क्या उत्तर है ? उत्तर है सामूहिक बहिष्कार, अज्ञास, धारिपुर्ण धरना, प्रदर्शन सादि। छात्रो के सामने काम ही काम पड़े है। जहाँ भी वे रहे धरन शेष को सधर्य धारिनि मे शरीक होकर धरनी रचि के धरुगार बिनी भी काम मे जी जान से लग सवते है।

प्रदर्शन, जुलूम, सभा, मालन शुद्ध धोर निष्ठा चुनाव, 'सरकार टप करो', कर वदी, 'दस्तीयादो' अभिमान, ध्रष्टाचार, मुदाफा-खोरी, चोरब जारो का प्रनिकार सादि अनेक धार्य है जिनमे से वे कोई एक या दो धरने लिए चुन सवने है। इनके धरना सेवा का ध्यतक शेष खुला पना है। धरिहीन को धूमि, वेधर का बास, निरशर को धान, धीमार का दवा, धमटाय को सहारा सादि सेवा के गिनेही काम है जिनमे कोई भावना-शून्य, मेधाशून्य युवक लग सवता है। काम सवके लिए है धोर सबको काम मे मुर-त लग जाना चाहिए।

हम धारिपुर्ण जन धारिनि को एक नवी राह पर चलन पड़े है। साथ नून से एक महीना धरने हर धरुको, हर जार्ति और धरम के, शिशित धोर धरिधिन धरी धोर मरीच सधर्यप्रतिधयो को धरने धोर धारे लगन हुए जेल जाते देखा है। मैं दम रह गया है यह देखकर कि इन हजारो लोगो के हृदयो म वह कीन ही शक्ति है जा दन्ते रमण धोर कष्ट के धार्य पर चलने क लिए प्रेरित कर रही है। जनता की धरिक्त स बड़ी दूसरी कोई शक्ति नहीं है। उसे ही प्रकट करना हमारा काम है। उम्मी मे हमें भरोषा है। बिहार धोर भारत का भक्ति सामान्य जन की मण्डित शक्ति मे है। हम सब सामान्य जन है। समय हमसे, सामान्य जन से बड़ा काम कराना चाहता है हम धर्य के साथ एक-एक कदम बढते चलें।

धरियो के धरवधान को उत्तराखंड के जन धरिनी मे विचार्ये, जहाँ न कोई नेता जाता है न अधिकाारी और न ही कोई कर्मधारी, वहाँ के लोगो के प्रत्यक्ष सगरुं मे जाकर उनके मुच-मुच में एक रात धारिनि होना। साधव वदी, अग्रवां की घुरसा, स्वीकृति आघरप तथा धुध-शक्ति का रचनारधम उधर्योण जन-सगरुं के प्रमुख धियय थे। गुरु से धरत सब धरवधान मे धारिनि कु वर प्रमून कष्टसेलर पाठक, धरमेधर सिद्ध विद्य तथा प्रताप शिवर मे धारिना समाधि पर बतारा धरि, 'धरकोट के धरारा कोट के बीच का जीवन धरभाव, मरीची और पीठायाँ में पल रहा है। यह दर्शन उम्मी के बीच जा कर हो सकत है। मोटर सवको तक ती सब ठीक दीखता है। उत्तराखंड के बारे में पहले हम युवको के मन

में दूसरी ही कल्पना थी। इम धारना के बाद वह भिठ गयो और एक नये दृष्टिकोण मे जन्म लिया है।

७५- बिनीधोरत लम्बी इत धारना में छात्रो को १२ बडी-बडी नदिना पार करनी पडी। का नामुनि पहाड, माणसोती बुध्याल धोर पवानीकाण्डा जैत पहाड पढने पडे।

क्या ज्वालामुखी कभी फटेगा नहीं (शेष पृष्ठ १२ से)

भी नहीं देते। सात छोटे-छोटे हुए भूमय ने कहा, "अब ती भयवान ही एक सहागा है, सरकार।" बल्लगाह धोर भयवान मे भेद भी हम पडे-लिये लोगो के मन मे ही है, गरीब के नरक।

एक अन्य गाव मे ४०-४५ वर्द के एक मजदूर मे धरने सुखे हुए बदन की सरकार धोर करने हुए कहा, "देस रहे है सरकार, भूल के मारे बदन की क्या हालत है।" ईने पूछा कुछ जमीन-बनोने है, ता बनाया कि ३ कटडा है। इतनी सी जमीन से पूरा पधना तो असभव है धोर मजदूरी भी हमेशा वही मिलती, इसलिए नई दिन भूखा रहना पडता है। करीब सभा कटडा जमीन २-३ बर्ब हुए धारि के लिए ६० रुपये में 'भरना' दे दी थी। भरना, धानी जब तक पूरी रकम एक साथ न लौटाई जाय तब तक जमीन का उपयोग साहूकार करे। वही उसे जौता-बोता है धोर सुद के बन्दे मे सारी उन्न भी उसी की ही होती है। न रामधनी मण्डन के पास कभी ६० रुपये देने को होयेन धर वह जमीन वापस छुडा सकेगा। यह पूछने पर कि मजदूरी कितनी मिलती है, रामधनी ने कहा कि धरवल तो कमजोर धरिनी को लोग जखी से धार देते नहीं, काम मिलना भी है तो मजदूरी पूरी नहीं मिलती। पहले ता मजदूरी मे धार मिलता था लेकिन साहजबल धारिक्त लोच कहते है कि हमारे पास धान नहीं है, धरुवा (सरकार) देवे, हावाधि धारिक्त के धर मे धराना धर हाहा है। रामधनी ने कहा, "धारी ५५ रुपये मन के हिसाब से हमारा धरौदने की तैयारी हो सी जितना पाहे जतना धान धारिक्त के धर से निकल धरगा।" लेकिन धारिक्त साजार से लीडकर भी मजदूरी मे धरुवा देता है, धरिक्त वह रास्ता पडता है, धोर धरुवा सा-सा-सा मजदूर और भी कमजोर होता जाता है।

ऐसे सामन्य धोर रामधनी इत समाज-वादी भारत के इत गाव मे जहाँ हथ गये हमे धिये है। 'धरौची हाटावी' धोर समाजवादी के धारो में हम कोट भने ही हासिल कर लें, पर वस्तुस्थिति की सब तक भूठनायेने धोर उसने धरवधर्याधी परिणाम से जब तक बचके मे

समाचार

पिपरीगढ़ जिले मे नेपाल की सीमा पर धरकोट से १५ मई की धारम्भ हुई उत्तराखंड के छात्रों की धरवधान ८ जुलाई को उत्तराखारी जिले मे दिहावन प्रवेश की सीमा पर धारकोट मे सनाउ हुई। धरवधान मे लगभग उत्तराखंड के धरिनी जिनो के छात्रों का प्रनिनिधिय था। इमसे धरय बहून मे छात्र जुडे सधर्य थे, किन्तु विश्वविद्यालय की परीक्षाएं देर तक होने के कारण वे धारिनि नहीं हो पाये। फिर भी धारिक्त वा धुर्य मसब देने वाले लगभग ५५ छात्र धारिनि हुए। १०० धरिनी धोर कस्बो के सधर्य हुपा तथा ५५ दिन इम धारना मे धिये। धारना का मुख्य उद्देश्य था छात्र धरने

अवसर मत खोयें, लेकिन आदर्श की वलि भी न चढ़ायें

—हरिवत्सल परोक्ष

प्रवाह के सिवाफ चलना मुश्किल है, विन्तु यही कार्य मेरे जैसे छोटे आदमी के लिए निरूपे २५ साल से प्राया है। समाज में स्थिर हिंसा के सिवाफ मैं लड़ता रहा। यह हिंसा मुझे ऊपर की मारीपीट वाली हिंसा से ज्यादा भरती रही। लोगों का खून पीकर जीने वाले ठेठ, साहूकार, अफसर और जमींदार मेरे निशान रहे, सब सब बहु तो मैं उनका निशाना रहा। इनकी पहुंच सर्वोदय के दरवाजे तक भी थी और इसीलिए कई बार सर्वोदय साधियों ने भी मुझे ज्यादा दौड़ जीने से रोक्ना चाहा। मैं बटा रहा। सधर्प, सत्याग्रह, धन्याय का प्रतिकार, यही हमारे ऋण रहे। आज ठक यही सिनसिला चला आ रहा है। आंदोलन में सदा मस्त रहने वाला आदमी आंदोलन के बारे में कुछ बोले तो भाप सबको कुछ समय के लिए सोचना होगा। जो रोज सधर्प करता रहा है वह आज के सधर्प के बारे में 'एक जागो' जैसी प्रवाह विरुद्ध बात कर रहा है, इसका कुछ कारण है।

गुजरात के आंदोलन को सब निकट से देखा। विचार्यों समुदायो से बातें होती रही। यह जानकर भिन्नो को खुशी होगी कि नवनिर्माण समिति के करीब १०० मुख्य लोग १७ से २७ जून तक रंगपुर धाम्राम में रहे, उन्हें यह पना था कि मैंने उस आंदोलन का एक हृद तक विरोध किया था। लेकिन वे नवनिर्माण कार्य के प्रत्यक्ष स्पर्श लेते आ रहे थे। उन्हें प्रेरणा, प्रोत्साहन देने वालो से भी मिला। जयप्रकाश बाबू गुजरात प्राये तो चार दिन लगातार मैं भी प्रहमदावादा रहा। वहां हमारे सर्वोदय के साथी विधान सभा विसर्जन का नारा धरा रहे थे। हमने उस वक्त सम्मेलन में भी और बाद में सर्वोदय मडल की कार्यकारिणी में भी बहा, जयप्रकाश बाबू से भी विनती की कि आज गुजरात को किज के कारण जनता और राजनीति वाले सब

हमारी बात सुनेंगे। भाप और रविशंकर महाराज गुजरात को आदेश दें कि प्राये वाले पुनाय में राजनीतिक दल प्राये उम्मीदवार सबे नहीं करेंगे और गुजरात को लोकनर्तित वा प्रयोग करने देंगे, तभी हम विधान सभा विसर्जन का समर्थन करेंगे। हमारी ये बातें जे० पी० व सर्वोदय साधियों ने नहीं मानी। इसी कारण आंदोलन करने वाले प्पत्तिको भी आंदोलन से दूर रहना पड़ा आज नतीजा सबके सामने है।

पारडी में प्रजासमाजवादियो के भूमि सत्याग्रह का समर्थन गुजरात भूदान समिति ने किया था, पारडी के विसानो को प्राये एक मिले थे, जगजीत घाई थी। विन्तु इस विचार्यों आंदोलन की प्राडू में वह विसान आंदोलन चुबला गया। इसके सिवाय गुजरात में जो तुबारी हुई, जो हिंसा हुई, जो अमानवीय व्यवहार हुए, विचार्यको के साथ उससे कीन से नये मूल्यो वा प्रविर्भाव हुआ? रविशंकर महाराज के हजार मना करने पर भी हिंसा नहीं रुकी। विचार्यको भी येनाद पिलाना, नशा करना, बाल काटना, बीमारी के विस्तर पर से उठा के मरीज विधापक को घटे भर घुमाना, मारना, पिटना, यह सब कुछ हुआ। क्या इसमें से महिंसा प्रकट हुई? लोक नीति के लिए कोई आधाफ मिला? कीमतें गिरी अष्टाचार रुका? जवाब 'नहीं' ही देना पड़ता है और तो और विचार्यों संगठन जो नवनिर्माण के नाम से बना यह भी टूटा। सर्वोदय वालो ने इसे लोक आंदोलन माना। कूद पड़े इसमें। इस युवा आंदोलन पर सर्वोदय का कोई प्रभाव नहीं था। हा प्रामसतोप के लिए लोकस्वराज्य आंदोलन के नाम से हमारे साथी कुछ इधर-उधर करते रहे।

जब यह चित्र हमारी बाजो के सामने है, तब यही नाटक बिहार में हम फिर से सेतना चाहते हैं? क्या यह उस जुवारी की तरह नहीं है, जो हारले पर नये-नये दाब सेलता है? बिहार से मैं दूर हूँ विन्तु बलाना करना आसान है। जो समाचार दूसरे अलवारो में

छपने हैं, वे स्पष्ट बता रहे हैं कि बिहार में भी रही-सही लोकशाही का अंत करने की घोर हम घागे बड़ रहे हैं। सर्वोदय के २७ मई के अंक में मुंघेर का लेख पढ़ा। साफ है कि जहा हमने आंदोलन शुरू किया है, वहां भी आंदोलन पर हमारा धतर नहीं के बराबर है। क्या इस प्रकार के हिंसास्फोटक आंदोलन में से कोई नये तत्व निखरेंगे? मान लो कि बिहार विधान सभा का विसर्जन होगा भी, तो क्या वहा लोक नीति के लिए भूमिका तैयार है? हां, हमारी सारी शक्ति बैसा कि धीरन बाबू ने कहा है और मेरी भी यह स्पष्ट राय है कि जो आंदोलन हमारा चल रहा है उसे ही ज्यादा लोकाभिमुख बना कर, लोगो की समस्याओं से जोड़कर ठेज बनाना चाहिये अगर प्राय भूमिका से हम नये मूल्य लड़े कर सकेंगे तो राजनीति को लोकनीति में पलटाने का प्रारभ करने के हम निमित्त भर बनेंगे। स्वधर्म को छोड़कर इधर उधर दौबने में हमारी शक्ति नष्ट होगी। भूमि-समस्या भारत की मूलभूत समस्या है। हमारी सक्रिय प्राय सभा ही अष्टाचार और रिश्वत चोरों को सफलता-पूर्वक रोक सकती है।

यह सब है कि राज्यकर्ता वर्ग अपनी घोषित नीतियो पर अमल करने में अभी तक निष्फल रहा है। मिलावट, रिश्वत, अष्टाचार राजकीय व प्राधिक सब मिला कर काफी बड़ा है। कीमतें बढी हैं। चीजें मिलती नहीं। विचार्यको की खरीद-फरोख्त भी धाम्र चीज बनी है ये सब ऐसे कारण हैं जो जनता को आज की राजनीति से नयी राह की ओर जाने में धक्का दे सकते हैं। किन्तु नया रास्ता हमने बनाया है क्या? अगर हमने नहीं बनाया तो दूसरे कहा हमारी कल्पना के रास्ते जायेंगे? हमारे पास नये मार्ग के लिए एक साव से प्रथिक गाव हैं घोषित या संकल्पित प्रायदान, क्या प्राणी सारी शक्ति लगा कर हम उन मार्गों में अष्टाचार, रिश्वत, मिलावट प्रादि की रोक सकेंगे? हां रुक सकते हैं, अगर पूरी ताकत लगे-दस कार्यक्रम में युवाशक्ति का प्राह्वान नीजिये, उनकी तदृशाई को मोका दीजिये। गत वर्ष अकाल ने तदृशी ने कमाल किया बैसा ही आंदोलन और प्राह्वान लोक स्वराज्य के लिए देना (मैप पृष्ठ १५ पर)

सका उठाते हैं, घोर घानने को घाघार मर्यादा वाले घोर झुड़ मानते हैं, वे भी निसर कर घाने। भव जयप्रकाशजी के इस धादोलन मे भी इसी प्रकार बहुसंख्यक तरण देश को प्रेरणा देने लायक बन जायेंगे, इसमे कोई सदेह नहीं, क्योंकि यह आदोलन धाम धाम धादोलन से भिन्न, भनुभासन घोर धाति ना रास्ता पकडे हुए है। भव तक तरण धादोलनो मे हमेशा हिसक घोर विस्फोटक तरीके अपनाये जाते थे। यह धादोलन उसमे पूर्णतः भिन्न है। यह सही है कि कहीं-नहीं छुटपुट ज्यादनियाँ हुई हैं लेकिन इस धादोलन के अनुपात में यह गण्य है। सन् ४२ की क्रांति मे भी कहीं-कहीं हिसा फूट पडी थी, लेकिन कुछ धादोलन प्रहितसात्मक ही रहा। वंती ही बात इसमें भी है।

इसी सिलसिले मे प्राण लोनों का यह बहम भी तोड देना चाहता है कि इनमे वषों के प्रयत्न से घायकी अपनी एक प्रतिमा बनी है, घायकी भावा-मर्यादा और मुद्धता बनी है, जिससे प्राण समाज को प्रेरणा दे पाते हैं। गमन जब मुझे भाक करेगे, जब मैं कलना चाहूँ गा कि इनमे विन के प्रयत्न से जहाँ कुछ लोगो की प्रेरणादायो 'इमेज' बनी है, वहाँ हजारो की तापदाय मे हमारे लोनों मे अत्याचार फैला है, जिसके फलस्वरूप

धवसर मत लोमें, लेकिन धादशों की बलि भी न चढ़ायें

(पृष्ठ १४ का शेष)

ही अपनी शक्ति का सही इस्तेमाल करता है। वरना जो प्राण मुजरात मे हुआ है वही कल बिहार मे होया। विधानसभा का विसर्जन हुआ, लेकिन जनता का कोई प्रश्न हल न हुआ, न ईई लोचनीति का ही जन्म। प्राण गर्वनर के नाम पर अक्षरों का राज्य है। कोई भी गतिशील रूपम राज्य की घोर से नहीं उठ रहा। भव धायेंगे बुतान, उसकी तैयारी बही राजनीतिक दल कर रहे हैं।

हम वषों से साम काम करते धायें हैं। हमारी धाति की कलना साफ रही है। प्राण जरा सोचो घोर धवसर हाथ से पक न जाये, इसके लिए तैयार रहो। धवसर को सोना तो नहीं है, किन्तु धादशों की बलि चढ़ा कर नहीं, प्राण समय है जब हम

प्राण देश मे हमारी 'इमेज' प्रच्छदी नहीं है। मैं धमता रहता हूँ, मेरे जो अनुभव धाते हैं, वे सही बात की साधी देने हैं। इसलिए हमारी 'इमेज' के बारे में हमे कोई घटकार नहीं रखना चाहिए। बलिक मेरा विश्वास तो यही है कि यह धादोलन हमारी 'इमेज' को ऊपर उठायेगा। बिहार मे जनसर्पक करने वाले व्यिनियो को पता चलेगा कि कुछ निहित स्थायं वाली को छोडकर जो निश्चितरूप से इस धादोलन को बदनाम बरते हैं, करीब-करीब सभी पक्षघातो तथा प्रमुख लोनों मे स्वीकार किया है कि इस धादोलन के चलते, इसकी पद्धति घोर जय प्रकाशजी के प्रभाव के कारण बिहार के तरणों में धादोलन पर महत्वपूर्ण धारिक परिवर्तन धाया है। उनका विद्योरोपान न जाने कहाँ चला गया है। वे धाण समाज के जिम्मेदार नागरिक लगने लगे हैं। प्राण जनता मे यह भावना है। इतना ही नहीं, राज्य घोर केन्द्र सरकार के कई महत्वपूर्ण व्यिनियो ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि जयप्रकाशजी का नेतृत्व इस धादोलन को नहीं मिला होता तो बिहार प्राण जल चुका होता। इससे स्पष्ट है कि सर्वोदय-धादोलन को इसके साथ जुडे रहने मे अपनी प्रतिमा के सदभं मे कुछ हानि नहीं होगी, बलिक कुछ लाभ ही होगा।

जनता को ज्यादा से ज्यादा लोकनीति की घोर भेड़ सकेंगे। सिर्फ दो थार दस विधावक जनता की घोर से सडे करना ही लोकनीति की समाधि नहीं है। घात-पाव लोकसभा-भामसभा को सक्रिय बनाना-सिर्फ भूमि धादने तक ही नहीं, पूरे घाय की हर समस्या के लिए। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी शक्ति भगर लोकसमाधिया बनाने में लग जाये तो इसी से लोकनीति का जन्म होगा। लोक-स्वरराज्य के इस 'यश में स्कूल-कालेज छोडकर, व्यापार-रोजगार छोडकर, किसान, विद्यार्थी, कारीगर घोर बर्गवारी सब हमारे साथ धायें तो लोकशाक्ति का विस्फोट ही सपता है, जो एटमबम के विस्फोट से भी ज्यादा प्रभाव-

कुछ साधियो को यह भ्रम हो गया है कि उनके कुछ साधियों को प्रपालनभी थीमती इदिरा गांधी के राज्य से धासकित हो घती है, इसीलिए वे इदिराजी के राज्य के विधावक पक्षमे बने धादोलन को बड़ाया नहीं देते। ऐसी ही बाते वे पूज्य विनोबाजी के बारे में भी कहा करते थे कि बाबा को जवाहरलालजी से इतनी धासकित है कि वो हमें सरकार के विधावक सत्याग्रह की इजाजत नहीं देते। हम सब जानते हैं कि पू० विनोबाजी ने जितना बडा धादोलन स्व० जवाहरलालजी के युग में छेडा, घा-भूमि का उतना और किसी ने कभी नहीं छेडा होगा, घोर घुद जवाहरलालजी भी इस बात को जानते थे कि वेधव्यापी धादोलन के प्रणेता विनोबाजी हैं। जवाहरलालजी की प्रथम पच-विधिय योजना की धातोचना धावा मे यह बहवर की, 'इसमे सब कुछ है, सबके बारे मे सोचा गया है, सिर्फ भूल गये हैं, धावो-जन बाते भारत के धादने इत्यान को !'

ऐसी धातोचना करने पर भी दोमे मे परस्पर भाव था। प्राण का हमारा आदोलन इस सत्याग्रही सज्जनता की भलक फिर से दिशायेगा क्या ?

धादोलन फिर लौटता नहीं

(पृष्ठ १५ का शेष)

विधावक धाते वे उनके सामने लेट जाते हैं— 'जयप्रकाश बाबू मे कहा है कि हमारी पीठ पर से जाओ।' पुलिस के जवान कहते हैं— 'उठ जाओ', पर सत्याग्रही नहीं उठते। नारे लगाते हैं— लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद, 'विधावसभा भंग करेने, भंग करेने, 'मत-दाताभों की मांग है इस्तीफा दो, इस्तीफा दो।' जनती हुई सडक पर ये सत्याग्रही तब तब तक सेटे रहते जब तक पुलिस के जवान उठा कर बसो मे नहीं डाल देते। इन तरह १२ जुलाई को जब विधावसभा सत्र समाप्त हुआ तब तक सगमन ३ हजार सत्याग्रही दरवाजों पर गिरसतार किये जा चुके थे।

केन्द्र सरकार के लिए बिहार का आदोलन समाप्त हो चुका है, समाधारकको के लिए बह धीमा पड गया है, मुद्दिनीवियों के लिए यह एक 'शगल' बन गया है, पर बिहार के लिए धादोलन उठे नहीं प्राण घोर रोजनना जीवन सा रहा है। बिहार के लोग कहते हैं कि वे इस धादोलन को हर नीमत पर-सामर्थ्य, क्योंकि भगर यह धादोलन चला गया तो बिहार चला जायेगा, लोनों के रहते हुए।

(पेज १० का पेज)

२५०० वी पुष्पलपि इग साब है। उनके बचनों के बीरों मेरा ध्यान ज्यादा जाना है। लोगों ने विद्वानों को सम्मि बना कर जैनों का मायप्रय बनाये का तप किया है। एक जमाने मे जैन ही गुरु थे। लेकिन वे पहले दूसरों को धागे रखते थे। पहले श्री गणेशाय नम लिखते थे और फिर भोम नम मिद्धम्। तो महावीर स्वामी के बचनों का सार तैयार हो जाये तो ठीक रहेगा।

आपके बुल धान्दोलन इतिहास मे रह जायेंगे। हिन्दुधन्तान के लोग जानते हैं कि किसे याद रखना किसे नहीं। एच बार पद यात्रा करते हुए दिल्ली के पास मासजिद मे मुसलमानों की सभा में मीने पूछा, उन्हें अकबर बादशाह का नाम याद नहीं था, लेकिन कबीर का नाम याद था। नेहरू का इतिहास हमने पढ़ा। उसमे लिखा है तुलसीदास अकबर के जन्मदिन मे हुए लेकिन मुसलमान तब अकबर बादशाह को नहीं जानते और रामायण पर-पर पढ़ी जानी है। तो हमने नेहरूजी से पूछा कि अकबर के जन्मदिन मे तुलसी हुए कि तुलसी के जन्मदिन मे अकबर? वे बोले-इतिहास में ऐसा ही लिखा जाता है। तो नेहरूजी के प्रयोग का प्रारंभ तो याद नहीं रखते थे। अकबर के जन्मदिन याद रखना चाहिए।

अकबर के जन्मदिन मे रामायण राज्यकर्ता मे गो बंधु का मिला गोज जाना फिर एवर : (राज्यकर्ता तो आते और जाते हैं पर कु भ भेला हेमेशा चलना रहना है।) आप लोग जिनना भी काम कर रहे हैं उसे लोग भूल जायेंगे। लेकिन अगर इस देश की सभी भाषाओं मे आपने भाषुरी का उपयोग शुरू करना दिया तो एक देवनागरी ही देश को याद रहेगी। देवनागरी चनी तो उपकार होगा। इससे देश एक बना रहेगा।

जयप्रकाश जी हमारे उपम मचाने साने हैं। गुजरात मे मघाया फिर बिहार मे मघाया क्या वे यूरोप मे ऐसा कर सकते थे? वहाँ तो एक देश से दूसरे देश मे (जो हमारे राज्यों के बराबर हैं) जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत पड़ेगी। इस देश को जोड़ने वाली कई चीजें रही हैं। रेल मोटर के जमाने से पहले लोग देश की यात्रा करते थे। बाबड

मे पानी ले जाते थे। गंगा का पानी रामेश्वरम् मे चलाते थे और वहाँ का समुद्र का पानी काशी के विश्वनाथ पर। लेकिन अब बुडा हुआ हिन्दुस्थान टूट रहा है। भारतमाता के पेट से कहीं उखल माता निकल रही है। एक हुआ भारत टूट रहा है। नागरी लिपि ही देश को जोड सकती है। देवनागरी जोड़ने वाली चीज है।

शंकराचार्य ने कहा—आपके भेरे सबध इंत रहित और अइत रहित हैं। आप हम एक हैं इस लिए बोलना नहीं होता। आप हम एक नहीं हैं इसलिए बोलने का सवाल नहीं उठता। इसलिए हमारे सम्बन्धों मे न इंत हो, न झड़त-समरस भाव रहे। आप जो भी चर्चा करें उसमे मतभेद भले ही घनेको पर हृदय एक रखें। हमारा सर्वोदय है। इस पर पूरे भारत की भाषा टिकी हुई है। हम चाहे जितनी बातें करें पर हृदय एक होना चाहिए। मेरा तो विदवास सब पर है—जय प्रकाशजी पर है इन्दिराजी पर है, हेमगुणा (बहुगुणा) पर है, एम एम आजी पर है नाइक पर है। अब ये सब एक दूसरे से प्रलग लेकिन मेरा इन सब पर विश्वास। ऐसी मेरी विलक्षण भावना है। विश्वास से बाबा धर्मि-शवास को जोतेगा। हृदय हमारा एक रहे, समरस रहे और विश्वास दुश्मनों पर भी रहे।

सर्वं सेवा सप मे सर्वसम्मति से जो भी निर्णय होगा वह बाबा को माय होगा। आप पाल मिल कर चर्चा करें। आप लोगों मे जो कॉमन श्राउड हो-गहमति ही-उम पर प्रस्ताव करें। जिस मुद्दे पर सहमति न हो उसे चर्चा के लिए छोड़ दें। मेरा तो विदचिन्तन चलता है।

फिर बाबा ने प्रस्तो के उत्तर दिये : उत्तरों मे बाबा ने कहा—महमत, न हो पाये तो विवेकपूर्वक समहमन होना चाहिए।... अखिलेवत्रक भी अखिलना हीनी है तो सबको सम्ममना चाहिए। जो भी बोलना चाहे, उसे बोलने देना चाहिए। जोरदार तरीका दिखना हो तो दिखाना चाहिए, यही तो समर्पन करना चाहिए। बिहार के धांदोलन पर पूछे गये सवाान ने जवाब मे बाबा ने कहा—मेरी राय मानून हों जाये तो लोग धनना दिमाग संपेट कर मेरी राय मान लेंगे।

इसी लिए मैं राय नहीं देता। जयप्रकाश जी के काम नाम में विरोध नहीं करता क्योंकि ये सज्जन है निस्वार्थी हैं—बोई-बन्धर उन्हें बुरा लगेगा तो बापस ले लेंगे—और इससे कुछ होगा जाना नहीं है। जे.पी. के लोक-नीति से राजनीति की ओर जाने के उत्तर में बाबा ने कहा—यह भाषको तप करना चाहिए। अगर भगवान यही चाहता कि सब बातें में ही तप करू तो नह बाबा को सिर देना धांपनो देता ही नहीं। अण्य लीवो अण्य अर्चो धरने को टटलो और निर्णय करो। फिर पूछा गया कि बिहार के धांदोलन पर आपनी व्यक्तिगत राय क्या है? बाबा ने कहा—आपके दिमाग तो तनकील न रहे इसलिए आप पृथक् हैं। बिहार के धांदोलन को धांधीबाद देने को कहा गया तो बाबा ने कहा—अगर वह सफल होने लायक हो तो सफल हों। निष्पल होने लायक हो तो निष्फल हों। (कमना)

□ केन्द्रीय भाषाचर्चबुल ने तदर्थ ममिति भय कर अब विषयानुसार राज्य प्रतिनिधियों और सदस्यों का संकर ममिति गठित कर ली है। समिति सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं श्रीतलसदास (उ० प्र०), ड० राजाजी सिंह (बिहार), दि० हा० सट्टलबुडे (महाराष्ट्र), रामकुमार नाना (म० प्र०), पूर्णचन्द जैन (राज०), ईश्वरचन्द प्रासादिक (बहाल), सी० ए० मेहन (दिल्ली), रघुनाथ महापात्र (उत्तरल) गोविन्द सावल (पुत्रवार), के एस० भाचाजु (कनेटिक) एस. जगन्नाथ (तमिलनाडु), मोमप्रकाश तिका (हरियाणा) पद्मपाल मिश्र (जार्जिया), रामाचरण मेहन (केरल) केरना जगार्दन स्वामी (आंध्र), सिद्धराज डट्टा व टाडुवदाता वय (संयंत्रा सभ; बंगीपर श्रीवास्तव मयोजक तथा गुरु-धरण हाट संयोजक होंगे। सहयोगित सदस्यों मे रोहित मेहनता, मामा धीरमगार, श्रीमन्ना-रायए, भावमुनि तथा श्रीमती सुभाषिनी देवी हैं। स्वायो निमनितो के नाम धर्मो तप नहीं हुए हैं, थीमो भट्टादेवी चर्चा, जेनेड-नुमार, प्रमन गोपाल सेकडे, हजारी प्रगद डिवेदी, अशानी प्रगद मिश्र धादि गहिर्य-कारी, बुद्ध समाज सेवियो व प्रयुड गहिर्यको से स्वीडित मागी गयी है।

- आत्म बलिदान के लिये जलदा सच ● भारतीय मूल्य ● भारतीय समाज ● भारतीय संस्कृति ● भारतीय संस्कृति
- नैतिकता की शक्ति ● भारतीय समाज की नैतिकता ● भारतीय समाज की नैतिकता ● भारतीय समाज की नैतिकता
- धर्म, भारतीय धर्म ● भारतीय धर्म की शक्ति ● भारतीय धर्म की शक्ति ● भारतीय धर्म की शक्ति
- बाली : लोकायतन ● भारतीय समाज की शक्ति ● भारतीय समाज की शक्ति ● भारतीय समाज की शक्ति

'बाली' न. १२५ है कि सत्य, यथार्थता और सत्य की शक्ति पर ही भारतीय समाज की शक्ति का आधार है।

सर्वोदय

सर्व सेवा सच का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ५ अगस्त, '७४



१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

कर बन्दी आंदोलन

जयप्रकाश जीने पहली अगस्त से कर बन्दी आंदोलन प्रारम्भ करने का नारा दिया था। वह नारा कार्यान्वित हो गया है। इधर भारत सरकार ने कर बढ़ाये, उधर कर-बन्दी आंदोलन शुरू हुआ। कर बन्दी के साथ अष्ट और महंगे सरकारी तत्व को सवारने और सस्ता करने के विचार से जगह-जगह सरकारी कार्यालयों और अफसरों का घेराव भी शुरू हो गया है। दोहोरी कदम अपने उद्देश्य में सत्ता को ठण्ड कर देने की बात समाहित किये हुए है।

पाच महीनों से जे० पी० विहार में जिस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं, वह दूग दोनो बातों पर ठीक से अग्रस्त हो गया तो देश के सामने सिद्ध होकर ब्यापक बन जाँगा।

छात्र सपर्य समिति के स्वयं सेवकों ने अभी घरना देने के लिए मुख्य रूप से छात्राट कुबान को चुना है। उन सारे स्थानों पर घरना देने की वान है अहा से सरकार को पंसा प्राप्त होता है—याने जिन-जिन चीजों पर लाइसेंस और परमित दिये जाते हैं उन सब चीजों की बिक्री के स्थान 'घरना-स्थान' बन जाये।

इसमें सन्देह नहीं है कि आंदोलन का यह स्वरूप बड़ा कठिन और निष्ठाविक कदम उठाने का पर्याय है। राज्य के मुख्यमन्त्री भी गूबूर नै बहा है 'दक्षिण पंथियों और फामिलियो ने यह जो बुनीनी दी है इसे बढ कर स्वीकार किया जायेगा।' उनके इस कथन को जे० पी० और विहार आंदोलन में अपने को लपकार चल रहे विद्यार्थियों, लोक सेवकों और जनता ने भी एक चुनौती की तरह स्वीकार किया है। पचासवें से अनेक स्तर तक जनसमितियाँ और जनसपर्य समितियाँ बन गई हैं। वे इन परिणामों को सफल बनाने के लिये कटिबद्ध हैं कि सरकार को भूमि कर

मिते।

सपर्य में लगे हुए लोग प्रनिवार्य सदाओं को अग्र्यहृत चलने देंगे। याने डाकघर, अस्पताल, प्रदाता, रेलें, बैंक और अनाज की दुकानों के साथ किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नहीं की जायेगी। महाविद्यालय प्रनिवार्य नहीं हैं—यह लो धीपिन ही है। परीक्षाएँ जितनी और जैसा चल रही हैं वह भी अम तब सारा देश जल चुका है। छात्र सपर्य समिति का बहना है, 'वे सगनों की नोनों पर चल रही हैं।'

सरकार ने अष्टाचार और महागार्द विरोधी तमाम तत्वों की 'अष्टाचारी और कालाबाजारी करने वालों से साठ गाठ है। यह बिना बिची भिन्नक के एक घर से दूसी लिये गहना शुरू कर दिया है कि वह धवसर धाने पर लोक सपर्य को कुरता के साथ दुचलने का समर्थन प्राप्तानी से करने की स्थिति नै रहे। किन्तु पाद रखना चाहिये कि 'पुरानो का धून, कभो छिपाये नहीं छुगा है।'

विगरियो यशवंत है

विरोधी दल के सदस्यों के 'सज्जनक सज्जनक' गारो ने बीच ३१ जुलाई १९७४ को वित्तमन्त्री श्री यशवंत चौहान ने वह पूरक बजट पढ चुनाया जो मुख्य बजट से भी ज्यादा रकम लोगो से वसूल करेगा। इस बजट के फलस्वरूप बपट्टा, नितावं, बस्क, सीमेट, इत्यादें, ताँबे और जस्ते से बना सामान और सिगरेटें पहले से अधिक महंगी हो जायेंगी। बिना चीज के दाम बितने बढ़ेंगे, यह पुर्ये का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि सरकार एक प्रविशत की बृद्धि करती है तो व्यापारी जिन चीजों पर कर बृद्धि हुई है, केवल उन्ही चीजों पर नहीं, सारी चीजों पर दस-बारह प्रविशत दाम बढा देता है।

चीजों पर कर-बृद्धि मैं दाम नहीं है—किन्तु इस बार जो दुनिया में इसके पहले

बैंकों को अपने द्वारा प्राप्त कुल ब्याज पर एक प्रविशत कर देना पडेगा।

करों में इस अग्रत्यथ बृद्धि से वर्ष भर में केन्द्र को २१० करोड़ और राज्यों को २२ करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होगी। इस वर्ष की वची अवधि में होने वाली केन्द्रीय आय १२३ करोड़ और राज्यों की आय १३ करोड़ होगी। इसे वित्तमन्त्री ने वित्तविषयक न० २ कहा है—'पूरक बजट' नहीं बहा।

जब पूरक बजट की बत उठी थी तब हवा में पिछले तीन अग्र्यदिशों का यह मता, 'अइ की तरह पहुराया जा रहा था कि इनके कालेधन और मुद्रा स्फीति पर बानू पाने में मदद मिलेगी और इसलिये लोग अम्मीड कुछ इस प्रकार के 'पूरक बजट' की वर रहे थे जो मुद्रास्फीति को रोकेंगा। यह बजट मुद्रास्फीति को नहीं रोकेंगा और कीमतों के चारो तरफ बढ़ने पर भी इसके कोई अयुक्त नहीं लगेगा—इसें सत्ताबद्ध दल के समद सदस्यों तक ने स्वीकार किया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी भी घाटे के बजट को 'पूरक बजट' पेश करने पुरा लिये जाने नो हक्या एक शुभेच्छा ही है। किन्तु सवाल यह है कि क्या उसमें मुद्रास्फीति कम होकर उत्पादन बढ़ता है और कीमतें गिरती हैं। इस सवाल का जवाब देने के लिए विगी विधेयज की जरूरत नहीं है। यो बरग विधेयको ने भी दिये हैं। हमारे भूतपूर्व उपप्रधानमन्त्री और वित्तमन्त्री मोरारजी देसाई ने बहा है, यह कीमति तो रोग से भी भवत्पाणकारी है। उद्योगपति इण्डियुमार बिड़ला ने बहा—यह वर बृद्धि, जो उत्पादन चल रहा है उसे भी कम करेगी। उत्पादन बढ़े बिना मुद्रास्फीति की सुरापा पराजित नहीं होगी। कांग्रेस के श्री भगवत भाजाद ने बहा, पंसा मिल जायेगा किन्तु कीमतों का बढना नहीं रह पायेगा। कांग्रेस के ही श्री राजा कुलकर्णी ने तो यहा तक बहा कि सरकार घाटे की जितनी पूँजि मोच रही है ऐसा नहीं लगता कि वह भी सम्भर हाँगी।

घाटे के बजट की पूँजि का सबसे सीधा उपाय तो लचं को घटाना है। उपाय मूठया और पाजिन है, प्रधानमन्त्री सबको मिनव्यविना भी वान मुसता है—क्या 'नित्त विधेयक न० २' बनाने के पहले वित्तमन्त्री ने अपने विचार-विमर्श नहीं किया ? क्या पचासवें के बजटों को मोडा-ना बदल कर बहा जा सकता है, 'बनन में वागत में

अग्नि परीक्षा से खरा निकला संघ

संघ अधिवेशन रपट की अन्तिम व समापन किस्त

दस जुलाई को प्राची रात प्रबन्ध समिति ने एक श्रस्ताव पर बहस होती रही थी। आसफ मोहम्मद खान ने कि बाबा ने ममविद्या प्रस्ताव की गैर दो प्रबन्ध समिति और खुने अधिवेशन के मेदान में वापस डेल दिया है। कुछ लोग यह भी जानते थे कि प्रस्ताव पर सर्वानुमति नहीं हो पा रही है। फिर भी जब थ्यारह जुलाई को सुबह भुला अधिवेशन शुरू हुआ तो ऐसा नहीं लगा कि प्रबन्ध समिति के प्रतिनिधियों को छाया उस पर मडरा रही हो। सिद्धांतकी ध्वंसशता कर रहे थे और दादा धर्माधिकारी भी मच पर उत्पन्न थे। सम्भवतः थी कि ध्यान दादा कोलेने।

खुने अधिवेशना में विहार के प्रादोलन पर बोलना रामकुमारजी ने शुरू किया। उन्होंने कहा कि आने वाला इतिहास हमें नपुंसक न बने, नायर न बने। आज पूरे देश में और खासकर विहार में जो परिस्थिति बन रही है उसमें हमें भाग्य साधक बल दू देना चाहिए। हमसे बहुत से लोग निष्ठा वाले लोग हैं। हम मोरखिष्ठ न हो। हमारी निष्ठा तोषांसा के साथ हमारे तापाम्य में आज न प्राए।

विहार के मयूव बा न का भाषण जोतीता था। उन्होंने कहा—जे० पी० और वंछनाय बा न का भाषण सुने के बाद मैं सोच रहा था कि विहार में जो लोकशक्ति प्रकट हुई है उसे प्रामस्वराज्य के काम में लगाने के बारे में हम यहाँ विचार करें और कोई कार्यक्रम बनवेंगे। लेकिन हमारे हाल कुली की तरह हो रहे हैं। यह बार-बार सूर्य का घाटान करती रही लेकिन जब सूर्य छाया तो धाँस्रें मूँद कर भाग गयी। हम भी लगभग तारकशक्ति का आवाहन कर रहे थे लेकिन ध० विहार में जब लोकशक्ति जागृत हुई है तो उसने दूर भाग रहे हैं। हम बँडे-बँडे शास्त्र की बातें करते रहते हैं। लेकिन नदी में तरबरे का शास्त्र राममल। दिवा ज्ञान को धारदी तैरना नहीं सीधिया। वह दूब जायेगा। धारदी जब नदी में डूबता है तभी तैरना सीधिया है।

विहार में हमने अपनी धाँसी सोपण देना है। पुनिया सोपण का उदाहरण है। विहार बूढ़ और महाशोर का प्रदेश है। लेकिन अब बड़ा सोपण और श्लथाचार की हद हो गयी है। प्राग मुनय रही है चारो तरफ। प्राग सोच नहीं सकते कि जे० पी० नहीं होने तो विहार में क्या होता? जे० पी० ने जनता के मनोनीय और प्राचीत को तितने सतिपूरण प्रवटन का अवसर दिया है, इसका उदाहरण है पंच जून का जुलूस। तितने लाख लोग उसमें थे। इन्दिरा बिन्द के लोभों ने उन पर गोली चलायी। लेकिन अनुस के लोगों ने उसका नोई जवाब नहीं दिया पूरा कार्यक्रम बनना चाहिये था। यहाँ बँठ कर जो चर्चा करते हैं वे धरर विहार में होने तो उन्हें दिखाना धीर समझ में पाता। धरर हम इसी तरह बँठ कर सोचने रहे तो जलता हूँ प्राग प्रादयी नहीं समझेगी। ऐसे लोग हिमालय में क्यों नहीं चले जाते?

जो लोग समझते हैं कि विहार का प्रादोलन जे० पी० के हाथ से निकल जायेगा उनके लिए मयूव खान ने कहा—विहार में मोटे पर बँठ हुए हैं। उसकी लगाम हथारे हाथों में है। घोडा उधर ही जायेगा विधर हमारी मर्जी होगी। फल में उन्हीने जेनाधवी



व्यापारियों के बाद उदात्त लोकसेवक

पी—धरर सर्वोदय वाले बँठ कर विचार ही करते रहे तो अमाना माफ नहीं करेगा। देश में शोर सर्वोदय प्रादोलन में एक दिशा ली है। इसकी दिशा मन बदलो। एमन होकर इस प्रादोलन के समर्थन का प्रस्ताव करो।

मयूव खान के भाषणों में बार-बार तात्पिा बजी। एव लोकसेवक ने कहा पहले ऐसा नहीं होना था। लेकिन यहाँ वातावरण ही वाद-विवाद का बन गया है।

सोमभाई का भाषण उल्लेखनीय लेकिन तल्पपूर्ण था। उन्होंने कहा कि हरिनामा सर्वोदय मडल ने करीब करीब सर्वसम्मति से विहार प्रादोलन के समर्थन में प्रस्ताव पारित किया है। एक लोक सेवक ने उठ कर कहा कि उनकी सम्मति नहीं थी। सोमभाई ने कहा कि इसलिए उन्होंने करीब करीब सर्वसम्मति मडल का उपयोग किया है और भाषने की वहा विरोध नहीं किया था। धनुमति की थी। फिर उन्होंने कहा 'मुझे खुशी है कि यहा भी विधानसभा विसर्जन में दलावा सब बाटो पर सहमति है। लेकिन मुझे समझ में नहीं आता कि विसर्जन की मांग में अनेकित बढी है? प्रजातन्त्र में प्रजा की सम्मति की बात कह जाती है। धरर मतसला किसी को भागी सम्मति देता है, वोट दे कर और चुन कर भेजता है तो वह अपनी सम्मति को वापस क्यों नहीं ले सकता? चुनाव किस तरह होते हैं यह हम सब जानते हैं। धरर हमारे जन-प्रतिनिधित्व का यही परिचर है तो विधानसभा के विसर्जन की मांग में सम्मति कहा? सन् ५२ में बड़ी बहस होनी थी। बापसराय ने

● सर्व सेवा सघ के रूप-स्वरूप धीर भाकी सगठन के बारे में विचारके लिए महादिदा पेश करने के लिए सघ के सहमत्री नरेन्द्र बुने के सयोजकत्व में एक उपसमिति गठित हुई है। समिति के प्राय सदस्यों में सर्वथी बडी-प्रसाद स्वामी, बडीनारायणसिंह, डाकरी सुन्दरानी तथा रामचन्द्र राहो प्रतीनीत किये गए हैं। उपसमिति की पहली बैठक ३१ अगस्त की पटना में होगी।

विद्यने दिना वर्षा में हुए सर्व सेवा सघ के अधिवेशन में जयप्रकाश नारायण ने यह मुझाव दिया था कि मविष्य में सघ का केवल एक सयोजक ही रहे जो सर्वसम्मति से चुना जाय। सघ के पदाधिकारी-प्रबंध सतिनि प्रादि के मनोनयन एव गठन की प्रजाती समाप्त कर दी जाए।

गांधी से पूछा था कि प्रायः हिंसा-प्रतिहिंसा ही इन दो बाने कायते हैं। प्राहिंसा भी दुशाईं देते हैं तो यह हिंसा क्यों हुई? तब गांधीजी ने कहा था किस्ती चूहे को पकड़ ले घोर चूहे ने दान को तारोच घमर दिखनी तो लग जाय तो यह चूहे को हिंसा नहीं है।

जनता को प्राणकी प्राणशयी विवेचना की जहूरत नहीं है। भगाली बहून अण्परम घोर भयवत भक्ति मे लगे रहेंगे थे। उन्हें गांधी ने बहूँ सत्य प्रेम बरए। क्या इविषया मे रखने की बीज है? घमर हम प्राशरीय विवेचना मे लगे रहे तो क्या हम पलायन नही कर रहे होंगे? सोमभाई ने एष बहानी गुना कर इषय भाषण समाप्त किया। बहानी इषय प्रकार थी—उो डाक्टर थे। एक महात्तास्तिक घोर एष महात्तास्तिक। दोनो के घर प्राण-पाय थे। आस्तिक प्राणत ज्यदा समय पूजा पाठ मे लगाया करने थे घोर नास्तिक भरीयो को देखते घोर दवा-काहे देने मे। एक बार एक बूढ़ी अण्मे बीमार बच्चे को लेकर आस्तिक डाक्टर के पास प्रायो। वे बच्चे को देख रहे थे कि उनके पूजा पाठ का समय हो गया। वे बीमार बच्चे को छोड़ कर चले गये। बच्चे की हालत विगडती गयी घोर मा उषे मरता देख कर रोने लगी। इतने मे महाना स्तिक डाक्टर उधर से गुजरे। उहोंने बूढ़ी को रोते देखा तो पूछा कि क्या हुआ। बूढ़ी ने सब बताया घोर नास्तिक डाक्टर ने तत्काय दवा दे कर बच्चे को ठीक किया। सोम भाई ने बहानी गुना बर बहूँ अय आप सोच कोजिये कि प्रास्तिकता वहा काम प्रायो या नास्तिकता।

बड़ीप्रसाद स्वामी ने बहूँ कि रियेने दिनों दो बड़ी घटनायें हुई हैं। राजस्थान मे प्रभुशक्ति वा विस्फोट हुआ घोर पटना मे प्राहिंसक शक्ति का। इन दो घटनाओं के बाद हम यहा बैठ कर सोच रहे हैं। प्रभु-विस्फोट पर पहले तरह-तरह की प्रतिवियायें प्रायी थी, अब उस पर भी विचार बढस रहा है। बिहार प्रान्दोलन पर भी इस समय सारा देश गहारायो से गीच रहा है। बिहार का वर्तमान प्रान्दोलन यहा हमारे भूदान-प्राप्तदन के कार्य का नतीजा है। हमने प्रकसर बहूँ है कि हमारा प्रामस्वराज्य जन

प्रान्दोलन ही बन रहा है। बिहार मे कोई बन शक्ति नहीं लगायो गयो लेकिन इनके बावजूद-मुझ हुआ नहीं। कथने ने लोगो की समस्यायें उठा कर बायं गुण किया घोर देखते-देखते एक जन प्रान्दोलन पडा हो गया। उहोंने जे०पी० का नेतृत्व प्रापा होना तो भी यह नेतृत्व दिया जाना प्राश्री था।

बिहार मे प्रांदोलन कीनन्तीति प्राधाभित है। यह सामाजिक प्रायिक प्रांदोलन है जो राजनीति के लिए नहीं कीनन्तीति के लिए बना रहा है। हम कोई सन्देश नहीं है कि जो लोग आज इन प्रान्दोलन को शका को दृष्टि से देख रहे हैं वे ही इसकी तारीक करेंगे। राजस्थान सर्वोदय मण्डन ने तो सर्वसम्मति से इसके समर्थन मे प्रस्ताव प्रास्त कर ही दिया है।

कस्तिलेव गुमार ने सर्वोपाय ध्वि-रोपेन को दृष्टि मे रख कर प्राभूतिक चिन्तन के लिए चार मुद्दे रये (१) प्राभाति समन के लिए जे० पी० को सम्मान पदक दिया जाना चाहिए। (२) बिहार प्रांदोलन मे बाबा दाना प्रतिपाति चार सूत्री बायंभय जोडा जाना चाहिए ताकि सबका सहयोग मिल सके। (३) पवनार प्राथम से चार प्रचारक दूत भेजे जा रहे हैं उन्हे सहयोग देना चाहिए (४) उपासतदान बायंभय।

हरबिल्लास उपासपाय ने बहूँ कि हम गाव-गाव जा कर प्रामस्वराज्य के लिए शोशकान्ति की बात करते थे। घोर अण् हमने सरकार के खिलाफ प्रांदोलन छेड़ दिया है। इराते सरकार पर जनता की निर्भरता बदेगी या घटेगी? गांधीजी पर समय सचय का समय था अण्निर्माण का समय है। नण्णो को सरकार के विाफ प्रांदोलन चलाने के अजय गाव-गाव जा कर रांशकशक्ति जगात करना चाहिए। काशंराने भी घरीकी दृष्टाओ का नारा दिया था घोर जनता उसके साथ हो गयो थी लेकिन उसयं यहा घरीकी हट गयो? हम प्राज घप्टाघार के खिलाफ प्रांदोलन चला रहे हैं तो क्या उतने घप्टा-घार घट जायेंगे। हमने 'शेदजम' घोर बडेगा ही। जनता की प्राक्ति होगी नहीं। महाराष्ट्र घोर घप्टाघार के लिए क्या कोई एक व्यक्ति जिम्मेदार है? हर प्रादगी इनके

लिए जिम्मेदार है घोर इते घमर दूर करना है तो हम सब को हर एक प्रादगी को इसमे लगना होगा। सबका सहयोग लेना होगा।

पूलवण भाई ने कहा कि प्रामस्वराज्य ही एक हल हमने बताया है। सर्वसम्मति घोर प्रासमन्वितरता नहीं प्रायगी तो काम चलैगा नहीं। अय तब तो हम लोगो को कहते थे कि हमारी प्राति मे सबके सहयोग की जरूरत है घोर मरकार पर निर्भर नहीं रहना है। क्या प्राय उन्हे सरकार हटाने को कहेंगे? घोर क्या इस तरह के नारे लगाने से हमारी हालत बही नहीं होगी जो इदिराजी की हुई। प्रामस्वराज्य को हमें छोड़ना नहीं चाहिए। विवेक पर निर्भर रह कर विचार करना चाहिए। प्राग्रह छोड़ना चाहिए।

वेकटरामाबाय हिन्दी मे नतिनाई महसूस कर रहे थे फिर भी अन्धर से इतने भरे हुए थे कि बोलने ही गये। उहोंने बहूँ 'यदा भी महाभारत के समय का प्रजुन विपार भोग नजर प्रा रहे हैं। जयप्रकाश हमें इच्छ की तरह जमा रहे हैं। घोर हम सोच मे पडे हुए हैं। हमें खुल पर उनका समर्थन करना चाहिए। प्राग्र हम यह सोच खो देंगे तो इतिहास हते माक नहीं बरेगा। प्राग्रध के लोग तो बिहार प्रान्दोलन का समर्थन कर ही रहे हैं। पूरा दशिय भारत जे०पी० के साथ है।

डा० दयानिधि पटनायक विजय प्राम-चित मे इमलित उन्हे पत्रह मिनट द्विये गये थे। उहोंने बहूँ-सात दिनम्बर ७३ को मैं पवनार मे जे०पी० मे मिला था। मैंने वहा था प्रापका गांधी से मतभेद था। लेकिन अण्दा आदर घोर प्रेम बम नहीं था उनके प्रति। प्रागके बारे मे भी मेरा ऐगा रबैया है। मैं विज्ञान छोड़ कर सर्वोदय मे प्राया हूँ लेकिन उमके गुण प्रागे साथ लाया हूँ। सत्य का का शोचक हूँ। हमारे प्रान्दोलन की क्या उपलब्धि है? घरीअ-घरीअ सब मानते हैं कि कोई लाभ नहीं है। हमारा प्रांदोलन शोच प्रांदोलन नहीं दवा। लेकिन जब बिहार मे नीमों ने एक प्रांदोलन शुरू किया तो सर्वोदय के जे०पी० के नेतृत्व की जहूरत क्यों पडी?

(शेष पृष्ठ १३ पर)

गांववालों और प्रशासन के बीच चातक और वर्षा जैसे सम्बन्ध

बालोद विकास सड पूर्व परिचय भ जितना सम्या है, उतना ही उत्तर दक्षिण मे चोडा है। दक्षिण का हिस्सा पहाडी घोर जंगलो से आच्छादित है। प्रसिद्ध मादमानाद बाघ जलाशय यही पर है। प्रदुषणजल के दक्षिण मे मुद्रुमकसा बालोद-धमतरी सडक दोडती है, पूर्व में शुष्क विभाग सड की सीमा लगी है, उत्तर मे मुद्रुमदेही विभाग सड तथा परिचय मे सेन्हारिया मदी सीमा बनी है।

इस उपसड की यात्रा के प्रारभ मे प्रादीण अथल की जाणकारी जलसा घोर शासकीय कर्मचारियो-दोने से आधार से प्राण करने की कं.शिश की थी। इयमे योडी कठिनाई महसुस हुई। जनता शासकीय कर्मचारियो के बीच खुज कर साथे बाज बहने हे दिवकती थी तथा कर्मचायी भी साथे को दिपावे के लिए मूठ वाकते थे। इतलिये हम शासकीय कर्मचारियो को उपरिचित का प्राहव कम रखने लगे। यदपि उनके घ्राणे पर हम प्रेमलता ही होती थी घोर यदि ग्राम मे उपरिचय रहते तो हम प्राहवपूर्वक उहे धामनित भी करते। लेकिन देखने मे ज्यादा यह धाना था कि या तो वे हमाने धाम प्रवेण के पूर्व ही भाग जाते थे या फिर घ्राणे के बाद कोई बहाना बनाकर विपक जाते।

इस तरह भविष्य आनकारी अनत के प्राधार पर ही प्राप्त होती। टोमी सपट उनसे कहनी है कि स्वराज्य मिना लेकिन इन २५ सालो मे भी हम घ्राणे गाव की सपदा के विषय मे जान न सके, परिवारों के बीच लोहित सबध स्थापित कर न सके।

हम पडाय पर टोमी सुवह ७ वने पत्र च जाती। एक दिन पूर्व टाली के एक समी घ्राणे पडाय पर पनुचकर पदयात्री टोमी ने आगमन की सूचना दे दिया करता। कोडवार भी टोली के घ्राणे की सूचना रात को हाक दे कर दे दिया करता। अनता द्वारा प्राप्त

(बाईस मार्च ७५ से ०० प्र० के दुर्ग जिले के बालोद विकास सड मे सर्वोदय सघन धेन पदयात्रा चल रही है। तटमीन के लागो मे सर्वोदय धामनितन मे काफी उल्लाह से भाग लिया है, घ्राव यहाँ तीन प्राथमिक सर्वोदय मण्डल, डोडी लोहरा, नाटावोड घोर मुधर नावलत हैं। दुर्ग जिला सर्वोदय मण्डल ने यहा प्राथिक पिछडेपन और आदिवासी बहुल घ्रावारी को देगते हुए इसे धपने कार्य ना सघन क्षेत्र बनाया है। लोकसेवक चन्द्रिका प्रसार पाण्डेय, पयराय बर्मा, पबमलाल माहू, लोचनाय बर्मा, विश्वनाथ साहू, गौरीम साहू रतन लाल भर्मासी तथा ईश्वरदास अणुवावल उरखड के २६ गावो की यात्रा समाप्त कर चुके हैं। इस टोली मे तनेत्र नियम घोर जुड गये हैं, धर ये लोकरुवेक परमाणव उखड के २७ गावो मे घूम रहे हैं इन गावो मे ग्रामीण जनता घोर धामन के सम्बन्ध घ्राण घोर वर्षा जैसे हो गये हैं। लोग मुह खोले ऊपर की घोर साक रहे हैं, जब मरद धायिनी इतजार कर रहे ऐसे लोंगो की इनआरी को नोट कर उन्हें धामस्वराज्य का विचार समझा रही इस टोली की रपट प्रस्तुत है। स०)

आनकारी की एक प्रति जिलाध्यत, प्रमुविभागीय धधिकारी प्रध्यत भ० प्र० सर्वोदय मण्डल इन्डोस खयोड F दुर्ग तथा एक प्रति उस घाम मे निर्माणाधीन सर्वोदय मित्र मण्डल के लिए मुद्रित रख देते।

राज को धामसभा होनी। इस परिचय सभा मे टोली के सदस्य ब्यक्तिगत घोर सामूहिक प्रार्थना, रामकोठी निर्माण, स्वयं स्वावलम्बन घोर नये मानव के निर्माण हेतु सर्वोदय पात्र स्थापना के विषय मे बोसते। जो व्यक्ति सर्वोदय पात्र रखने के लिए स्वीकृतित देते उनका नाम नोट कर लिया जाता। इग वैदत यात्रा के बाद दो लोकसेवक कम के कम एक उपसड के प्रत्येक गाव मे एक बार भास मे प्रबन्ध पडुनेगे। इत्ये सर्वोदय पात्र सवह का काम सुविधा से हो सकेगा।

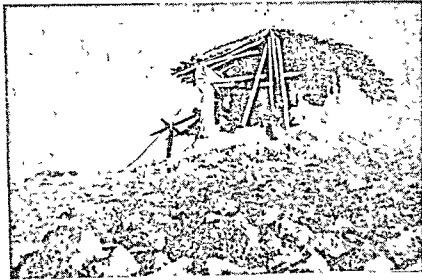
इस क्षेत्र के विधायन हीरा ताल सोन-बोहर है। कुछ लोगो का कहना है कि विधायक महोदय केवल सडक पर स्थित गावों मे दर्शन दते हैं और बडे व्यापारियों घोर बडे किसानो के निवासो की शोभा घ्राणे है। इस क्षेत्र के 'बरहीभद' घाम की ही इतना सीमाव्य मिला है कि वे कई बार इस घाम मे पधार चुके हैं। बोडवी, भडिया, बारतरा, मेगारी तथा पारवाही घाम मे केवल एक बार घ्राये हैं। चिचबोड, परलोडा, खरोडा, प्रादि गावो मे लोंगो ने कभी उन्हें देखा नहीं है।

यहाँ जीवनमानव ना मरुट घरा कति

है, किनु भास भर गर्मी, घूप घोर वर्षा मे परिश्रम करने के बाद भी लोग बारह मास के लिए पेट भरने तथा जीवन की प्राहव-बन्धाओं की पूति के लिए पूरा धनाज नहीं जुटा सक्ने। साल के कुछ भागो मे झनाज वाडी मे समी गाव मे बुधन न बुध लोगो की लेना पडता है। इससे कमर टूट जाती है; कभी-कभी धति आवश्यक्ता पर दुगनी वाडी भी डेनी पडती है।

रागापनिक साद के उपयोग मे कास-बारो की कमर ही तोड दी है। जो कर्ज से दिवकते थे उन्हें भी इसके बजुल मे घाना पडा है। स्थावलकी धेती ध्रव परतलबी सावित हो रही है। पहले स्थानीय साद की ध्ववस्था की घार थोडा बडुन ध्यात जाता था, पर ध्रव रागापनिक साद के स्ववस्थित और सघनित प्रधार ने प्रामीणो का ध्यान उधर से विलकुल ही हटा दिया है। गाव मे एक दो ही व्यवि एते हैं जो कम्पोस्ट साद की घोर ध्यान देत है। रात पनिक साद यदि बैक ले, या एनॅटोले किमी भी वर्त पर नहीं मिलती ता उनको धेती भीड हो जाती है। गाव के क्षेत्र भी इन रागापनिक सादों के इतने भारी हो चुके हैं कि इन सादों के अनुपस्थिति में फसल देने से इन्कार करते हैं।

रागापनिक साद को घडती हुई माग के कारण धामकीय घोर व्यापारिक दोनों संस्थायो ने उतका कुनिम ध्यावक रिसानो



पाठशालाएँ घुड़साल बन जाती हैं ।

देकर जहाँ भी खाद मिले कास्तकार उसे पाने को परेशान रहता है ।

कर्म अधिकतर बँक से उठाने का प्रयास करते हैं, पर कुछ दक्षिणा देनी ही पड़ती है । यहाँ कई हिस्सों में ग्रामीणों को श्राव तक प्रथमवार में रखा गया है कि जो समिति सेवक हैं वे उनकी सहकारी सेवा समिति के कर्मचारी हैं और वेतन उन्हें ग्रामीणों के एकत्रित हिस्से के सांभाम से मिलता है । फलतः अपने ही कर्मचारी को घूस देकर कर्म बढ़ाने-पटाने, मिलने-मिलाने का व्यापार बसता है । कहीं-कहीं तो कर्म की रकम लेते बचत और कर्म भद्रायगी पर भी नजराना देना पड़ता है ।

बँक रिस्वत व तरह-तरह के कानूनों के कारण ग्रामीण साहूकारों ने अपनी शर्तें थोड़ी कड़ी कर दी हैं । बिना रहन के रकम ब्याज पर देने ही नहीं । कहीं-कहीं साल भर का ब्याज काट कर राशि दी जाती है और कहीं-कहीं जमीन का विभय करा लिया जाता है । रकम पटाने पर फिर उस जमीन की विकल्प नामा की लिहाजदी की जाती है ।

मिट्टी तेल, शक्कर और गेहूँ को शासन ने एक सामस्या ही बना दी है । गेहूँ को ग्रामीणों के लिए अनुपयोगी वस्तु, नगर-वासियों के हित के लिए साबित करने की कोशिश की है और धव बहु देहावी क्षेत्र में

दुर्लभ हो गया है । यदि कभी यदाबदा देहावों में भ्राता भी है तो ऐसा जो जनवरी के उपयोग भी न पाये । काड़े में मनिहार के घर टोली टहरी भी । उस समय भाग्यवश गेहूँ पचायत के पास आया । भाषा किलो प्रति परिवार दिया जा रहा था । देखने से पता चला कि इधे चक्की में पीस जाय तो चोकर के सिवाय भाटा निकालना कठिन होगा । मैंने पूछा कि आप क्यों खरीद रहे हैं इसे तो उत्तर मिला कि इसलिए खरीद लिया कि गाय बछड़े को तो कम से कम यह मिल सकेगा ।

शक्कर तो शहरी क्षेत्र के लिए वैसे बचाने जा जरिया हो गया है । चू कि खुले बाजार के लिए शक्कर मिलनी है तो राशन की भी शक्कर उसमें बेच दी जाती है । शहर में प्रतिव्यक्ति एक किलो शक्कर मिलती है देहाव वालों को १२५ ग्राम । मेहनत करने वाली, उत्पादन करने वाली ८० प्रतिशत जनता देहाव में रहती है । सचमुच में समुचित आहार उन्हें चाहिए जो उत्पादक श्रम करते हैं, पर उसकी रीति-नीति नजर भ्राती है । नुर्सों पर बैठे व्यवस्था करने वाले नगर-निवासियों की सुविधा के लिए रांष्ट्रीयकरण करने समस्त कर्मचारियों और प्राधिसरों को उनकी सेवा में व्यस्त करा देना एक मात्र सरकार की नीति है । दाना-पानी और पोटिच-भाहार तो उन बँकों को दिया जाता

है जो प्रदर्शन हेतु रखे गये हैं । सेती में काम धाने वाले पशुओं को केवल 'घुमाल' पर ही निर्भर रहना पड़ता है ।

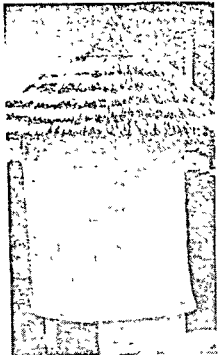
मिट्टी का तेल तो गोरखघा है । ग्रामीणों को केवल भास में प्रति परिवार एक डिबरी तेल प्राप्त होता है । पर कासा बाजार से घाप जितना चाहिए ले सकते हैं ।

शिक्षण संस्था एक मजाक का स्थान हो गया है । २५ साल के बाद भी वही गुलामी की शिक्षा प्रचलित है । राष्ट्रपति से लेकर प्राथमिक शाला के शिक्षक तक यह महसूस करते हैं कि इस शिक्षा ने एक राष्ट्रीय सबट खडा कर दिया है । लेकिन बिस्ली के गले घटी बोन बापे अभी तक तय नहीं कर पाये हैं ।

शिक्षक हैं गायकीद, शाला की इमारत है सार्वजनिक । शिक्षक को कोई जिम्मेदारी नहीं कि शाला भवन की देखरेख करे । शाला भवन घुड़साल होता जाता है । जनपद के के ओहोरसियरो को इसकी बिन्ता कम है, चू कि 'बड़ी मरम्मत पर ही बडा कमीशन मिलता है । बहुत से भवन शासकीय अनुदान और स्थानीय धमदान से बने हैं । पर तकनीकी प्रशानतः ने उन इमारतों को अधिक बाल नक जीवित रखने में प्रसमर्थ बना दिया है ।

होटो गाय बालों ने बताया कि उनकी शाला के लिए ३००० रुपये का अनुदान स्वीकृत हुआ है, पर अधिकारी उसमें से ५०० रुपये अपना हिस्सा काट कर देना चाहते हैं । ग्रामीणों ने इस तरह बहु राशि उठाना ठीक नहीं समझा है । यह रीति नीति प्रत्येक स्वीकृत राशि के साथ होती है, ऐसी जानकारी कई जगह से मिली । बेमेतरा में मात्रा करते वक्त किरीतपुर ग्राम के सरपच ने तमाम ग्रामीणों के समक्ष स्वीकार किया कि बु'आ के लिए प्राप्त ३००० रुपये में तथा शाला भवन के निमित्त शासकीय अनुदान ५००० रुपये में ५००-५०० रुपये अभी तक प्राप्त नहीं हुए यद्यपि उनसे हस्ताक्षर पूरी रकम पाने की के लिए गये हैं । यह छूट भी बीमारी सर्वत्र व्याप्त है ।

नागाइबरी तथा चरोटा में शाला है ही नहीं । लोग उत्पन्नता से शासन की घोर जातक की तरह देख रहे हैं, तबसा कर रहे



मिथा है, नेताओं के गांवों को अधिक से अधिक सुविधायें मिली हैं। परहीभेदर से निगरी सड़क निर्माण में काम आई जमीन का मुआयजा बहुतों को मिला गयी है। रैंड तो चले गये पर गैसे न मिलने के कारण वे दूसरी जमीन खरीद न सके। इस तरह दोनों तरफ मार किसानों को पड़ रही है।

निगरी के लोगों की शिकायत है कि सड़क निर्माण में उनकी जमीन के विषय में ठीक निर्णय नहीं लिया गया कई खेतों में जमीन बचाई जा सकती थी। केवल भूतपूर्व मालगुजारी, ग्रन्थ प्रनिष्ठन लोगों को अपनी जमीन बचाव की सुविधायें दी गयी। सामान्य लोगों को जमीन नष्ट गयी।

सोहतरा तथा उनके आगपास के ग्रामीणों का कहना है कि उनके गांव को आवागमन की सुविधा प्रदान हेतु एक बड़ी राशि स्वीकृत हुई थी। लेकिन बूक के वर्तमान विधायक के विरोधी हैं, उस खम की राशि का उपयोग भ्रममला, सेह रशोना, वालोद मेंडकी तथा जोरामाटा ग्राम में किया जा रहा है क्योंकि वे उन विधायन के समर्थकों के गांव हैं।

इस क्षेत्र में पिपरछेड़ी ग्राम है, जहां पर रामकोठी की स्थापना पूर्य विनोबा के आगमन के वर्ष में हुई थी तब का १६ एकड़ भग्नाश्रम भव लगभग ६०० खड़ी भग्नाश्रम हो गया है। अभी यह पंजीकृत नहीं है। कुछ वज्रदार पटाने में हीला हवाला करते हैं, मही तो एक भाद्रेश कोठी इस क्षेत्र में थी।

हरिन प्राति धोर दूसरी फगत की योजना यथाय प्रससनीय है, पर धार्मिक दृष्टि से दो वर्षों की विपन्नता को बढाने में यह धार्मिक योगदान दे रही है। बरी आगे चल कर यह समस्या प्रशासित व संपर्क का कारण न बन जाये। धार्मिक विकास को योजनाओं में सब तक उसकी पट्ट व उपाय अविन वितरण का ध्यान रखना ही होगा।

कुर्ग जिला के विधायक दिन-प्रति-दिन के शासकीय कार्य में हस्तक्षेप करते के लिए बहुत बदनाम हैं। इससे शोको की नैतिकता पर प्रहार होता है शासकीय कर्मचारी तो चाहते हैं उनके लिए एक कबच तैयार हो, किन्तु इस तरह कर्मचारियों को नैतिक स्तर से गिरा कर पालने वाले नेताओं से क्या अपेक्षा भी जा सकती है? ○

शाब्दात्ता में नागरिक समस्याओं पर नागरिक सहयोग

वाबूताल शर्मा

शब्दात्ता गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र जिला अधिकारियों व दुगानदारों के सहयोग से शब्दात्ता छात्रों क्षेत्र में वनसन्धि पो व मोटे कपड़े का वितरण कर रहा है। नागरिक समा धोर केन्द्र के इन मिले जुने प्रयास से ग्राम भाद्रेशी को बहुत राहत मिली है। केन्द्र ने लोगों की समस्याओं से सीधे जुड़ने धोर उन्हीं को आगे रख कर उन्हें हल करने के लिए यह काम उठाया था। इन दुर्लभ वस्तुओं के मुचाह वितरण के दौरान ही केन्द्र ने इस विषय पर पिछले दिनों गोष्ठी भी की। वर्तमान नागरिक समास्थाओं पर नागरिक सहयोगी गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र ने वहां कि समस्याएं इनकी जटिल हो गयीं हैं कि भ्रम भाद्रेशी के पाग सघर्ष के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है; यह सघर्ष भी किसान से लेकर भगवान तक की पवित्रों को करना है।

दो दिवसीय इस गोष्ठी के अन्त्य विषय थे आश्रमिक वस्तुओं का वितरण, प्रघटा-चार नगरपालिका की समस्यायें। पहले सत्र में आश्रमिक वस्तुओं की कालाबाजारी और भ्रमण की चर्चा करते हुए वेदप्रकाश ने बड़ा कि खुदरा दुकानदार, विनकरों व उत्पादकों से मिली भगत में कालाबाजार गरम है, सामान्य लोगों को परिस्थिति से सगभोगी करना पड़ रहा है। उन्होंने वितर-ए प्रशान्ति को गुधारने के मुआव देते हुए केन्द्र द्वारा की गई पहल को बतया। चर्चा के दौरान जानी राजन नाटों के बारे में बड़ा गया कि ऐसे नाटों की नागरिक स्तर पर जांच होनी चाहिए, वरन शो को शक था कि इन नाती नाटों के अन्तर्गत में निता प्रयागन व उनसे मिले दुगानदारों के निहित स्वार्थ हैं।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

विपरछेड़ी की आश्रम राम कोठी में विधायक भी इन प्रपत्तों के साथ धूम फिर कर भागरी रोटी लेंकने में पीछे नहीं रहते। दूसरी फगत खरीक से ज्यादा निश्चितता से होती है धोर होनी भी अधिक है। प्रत. प्रारंभ में सिचाई विभाग पानी देने की रकब, काम प्रदर्शन कर प्राचीणों से मगमानी मेंट लेता है। प्रत्येक गांव में दूसरी फगत के लिए जितने एकड़ जमीन में पानी देने की योजना बनी थी, वह धब कम से कम दुगनी तो है ही।

इस क्षेत्र में मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन योजनाओं को धार्मिक दृष्टि से वितनी सफलता मिली यह कहना कठिन है। पर इतना जरूर हुआ कि लोगों का मास धोर शराव की धोर भूकाव अधिक बढ़ा है धोर गांधी के अंतर्गत प्रशासित ये केन्द्र शासकीय कर्मचारियों ने पहाव के रूप में परिधनित हो गये हैं। नवयुवकों को धब मास धोर मराव से भलग रखने का संस्कार धीरे-धीरे कम से कम होता जा रहा है। धरो में धभी भी इन दोनों चीजों का निषेध होने के कारण उपर होटलोकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। आवागमन के साधन बढ़े तो हैं, लेकिन इसके कारण प्रघटाचार को भी प्रोत्साहन

“सारे देश में सूखी लकड़ी पड़ी है”

कुमार प्रशाद

जयप्रकाश जी ‘सोशलव समाज’ की बैठक में हिस्सा लेने और अपने स्वास्थ्य को जांच करवाने बम्बई आए थे, किन्तु वहाँ के विद्यार्थियों और सहोदय गण्डन ने दो सभाओं का आयोजन किया—एक विद्यार्थियों की, और दूसरी ग्रामसभा।

थपों में दुकानें-मिशनरी बम्बई में सभा करने की जगह खोजना सगना कठिन सिद्ध हुआ और यह कठिनाई तब और बड़ गयी जब ‘वे लोग’ वक्ता को गोली लकड़ियों में भी धाग लगाने वाला मानने लगे। छात्रों की स्वान सन्निधि के सपोजक निरीक्षण देगाई ने बताया कि विश्वविद्यालय का हॉल हमें सभा के लिए बयो. गरी मिल सकता है। इसे लेकर कोई लडाईं हमने इसविषय नहीं शुरू की क्योंकि स्वराज्य में हम विद्युतवा नहीं चाहते थे। उसमें फस जाते तो स्वराज्य नहीं हो पाता (विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर ने कहा कि हम हॉल दग मॉडिंग के लिए नहीं दे सकते और कारख भी नहीं बना सकते)।

विद्यार्थियों की सभा में भी नागरिक अगुया थे, किन्तु आयोजन करने वाले मित्रों की मेहनत प्रग सनीय थी। बम्बई की जो सामान्यतः जानते हैं उनके लिए भी पुत्रकों की उपस्थिति सुखद थी।

“इक नाट यू, ईन हू” गन्दर के ब्राह्मण समाज का वह हॉल सभाओं के बजाया गया था और पुत्रकों ने शाहीनता बनाये रखने का पूरा प्रयास किया था। मुंबयाराजकी के गीत तब शुरू हुए जब जय-प्रकाश जी के आने में कुछ विचम्ब हो रहा था। काफी देर तक मुंबयाराज गाने में साथ देने वाले रिमो मित्र नरे उत्साह-मन्तो रहे और फिर लाभावार हो कर अकेले ही गाने लगे। शाहित सेना के ‘सम्भनवी’ गीतों को उपस्थित भीड़ ने जिस तरह दुहराया उनसे सभा बंध गया।

जयप्रकाशजी काफी देर तक विलार से बोलते रहे। बिहार आन्दोलन की पूरी पृष्ठ-

भूमि और उनके कदमों की तार्किक व्याख्या करते रहे। लम्बा व्याख्यान जिस भीरज से लोगों ने मुना उसके लुगा कि लोग प्रब भी तर्कों की भाषा सुनते और समझते हैं।

मध के एक और लडरो ने बड़े अक्षरों में लिख रखा था—“इक नाट यू, देन हू” मैंने एक युवक नेता से कहा “इस ‘यू’ की जगह यदि ‘थी’ करें तो प्रान्दोलन की गुरु-भाव हो सकती है। बात उसने समझी नहीं लेना, “नही यह सवाल जे० पी० ने हमसे पूछा है।”

ग्रामसभा चौपाटी के विद्यार्थयन के बड़े हॉल में ग्राम सभा रथी गयी थी, जहाँ हॉल से अगुया बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। एक छोटे गलियारे में माइक लगा दिया था, जिससे वह गलियारा भी भर गया था। जयप्रकाश जी का उस दिन का भाषण सुन कर एक व्यक्ति ने बहुत भरे मन से कहा “यह तो साक्षान ईमानदारी ही बंट कर पान रही की।”

जयप्रकाश ने बड़े प्रवाह के साथ अपना भाषण दिया जिसमें वही सारे मुद्दे थे जो बिहार आन्दोलन के सन्दर्भ में थे बराबर बहते रहे हैं, “बहुत से सवाल हैं जिनके उत्तर प्राप्त मुझसे मुनगा चाहते होये, मेरे पास नहीं है कोई जवाब। कोई दार्शनिक हो, चिन्तासफ हो, तो वह बैठकर सारे सवालों का जवाब निचाल कर रख दे। पर जितने काम करना है उनके लिए समभव है कि सारे सवालों का वह जवाब दे सके। गंधी कहते थे, मेरे लिए एक कदम काफी है तो हब कहते थे कि इन बुद्धों को पूरा रास्ता देना पना नहीं है। इने तो एक-दुकरा कदम हमारे सामने रख देना चाहिए। अब यही बात समभव देवता है। लखन, तरीना और साफल साक और स्पष्ट हो बस इतने की माग हब कर सकते हैं। हमारे लिए एक कदम से क्या परिस्थिति बनेगी और उस बक हमें क्या बनना पड़ेगा कोई कह नहीं सकता है।”

“काफी देर पहले एक पत्रकार ने कई तरह के सवाल पूछे, बाद में लिखा कि जय-प्रकाश भी अन्वेष में ही अटकल लगा रहे हैं। मैंने उसे लिखा कि छात्र की विषय परिस्थिति में सारे सवालों का जितके पास जवाब हो यह या तो सर्वशक्तिमान भगवान होगा या निपट मूर्ख। (माइक बी ए माइटी गॉड आए ए डैमकूल)। मैं तो करना हू और अन्वेष में सीखता हू यही स्वभाव रहा है मेरा।”

लारतम्ब की वर्तमान परिस्थिति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि ‘पूरे इस माहौल में प्रसङ्गमयि व्यक्त करने का साहस कम से कम होता जा रहा है आज देव की जो स्थिति है उसमें सनता के हित को कोई सवने बड़ी धार्मिकियालोंनी है तो यह है ईमानदारी। बाकी किसी का कोई अर्थ नहीं है। सारे दय में जैसे सूखी लकड़ो पड़ी हुई हैं, कहीं स एक चिनगारी आए और धाग भनक उठेगी। ऐसी परिस्थिति में मैं लोकनयन को प्रखर, प्रबल बनाना चाहता हूँ ताकि इस खतर से जनता स्वयं वा बचा सके। बूक सविधान न मही लिखा है इसलिए जनता को ‘रिफाल’ का, अपने प्रयोग प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार नहीं है। इसकी माग करना, आन्दोलन करना ‘धन-दंडमोर्किक’ हो गया है और कई दलों के सविधान में लिखा हुआ है ‘रिफाल का अधिकार’ नहीं बना होगा? यह तो जनता का जन्मसिद्ध अधिकार है। सिर्फ लिखा नहीं है इसलिए जनता चुप रहे?

“ओर अज नै, गांधी की बात करते हैं वे लोग। गांधी से बिठना खबरतने में अज नै। दिल्ली पृष्ठबदे थे गांधी तो कहते थे लोग, ‘फिर आ गया बुद्धा।’ प्राथंन सभा में बोलते थे तो हब लोगों को डुब होता था, मैं नहीं हू कि वापु होते आज तो जयप्रकाश नारायण की क्या बात, प्रसम्भव कर देते इन लोगों का रहना। क्या करते मैं कह नहीं सकता है?

मैं इस आन्दोलन को सम्पूर्ण कति को और मोझे की घोषित कर रहा हूँ। सफल हो पाऊगा या नहीं, वह नहीं सकता है। इस आन्दोलन के द्वारा बिहार में कोई नैतिक

दल, सरकार और राष्ट्र पर्यायवाची नहीं

सिद्धराज डड्डा

द्वितीय कांग्रेस के अध्यक्ष डा० शंकरदास शर्मा गोप-समूह का बोलने वा सम्बन्ध बना उनसे नहीं छपने में इन्तसाह करने के लिए त्रिपाठ नहीं है, इसलिए उनके बचन को कितनी गम्भीरता से लेना, यह सब समझने है। फिर भी वे जित पद पर है उसके कारण उनकी सब बातों को दरगुजर करना संभव नहीं है।

दिल्ली में प्राथम भारतीय कांग्रेस (भासक पक्ष) कमिटी के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि जो लोग वस्तुस्थिति का पता लगावे बिना प्रष्टाचार के आरोपों का प्रचार करते देना में जहरीला वातावरण पैदा करते हैं वे 'देशद्रोह' कर रहे हैं। किसी भी नागरिक के खिलाफ देशद्रोह का आरोप लगाना किन्हीं गम्भीर बात है इसका अर्थ डा० शर्मा को भान नहीं है तो वे एक जिम्मेदार राजनैतिक दल के अध्यक्ष पद पर बने रहने के योग्य हैं—यह शक्य वा विषय है। डा० शंकरदास ही नहीं, उनकी पार्टी के छोटे से सगा कर स्वयं प्रधानमंत्री जैसे जिम्मेदार लोग भी जिस तरह उनके शासन को या पार्टी को नीतियों से सहमत नहीं होने वाले लोगों को 'जनता विरोधी' 'फासिस्ट' 'प्रतिक्रियावादी', 'पूँजीवादी' के समर्थक तथा क्रौर न जानने किन-किन सरकारी से विमुक्ति करते रहे है वह जाहिर करता है कि या तो इन लोगों के लिए शक्यता का कोई धर्म नहीं रह गया है या वे लोग प्रजातन्त्र, प्रगतिशीलता आदि का कांग्रेस (भासक पक्ष) क्रौर सरकार का पर्यायवाची मानते हैं। क्रौर अब देशद्रोह जैसे गम्भीर विशेषण का उपयोग करने डा० शर्मा अपनी पार्टी क्रौर सरकार को राष्ट्र का पर्यायवाची भी मानते सके हैं।

प्राज्ञ प्रष्टाचार इतना व्यापक हो गया है कि कितनीबातों के शब्दों में वह शिष्टाचार ही बन गया है। जो प्रष्टाचार नहीं कर रहे है वे विभिन्न आचरण कर रहे है विया मानना चाहिए क्रौर इस व्यापक प्रष्टाचार को जड़ देश के राजनैतिक नेताओं के आचरण में

है। क्योंकि जब नेता प्रष्ट होना है तो दूसरों को प्रोत्साहन मिलता है क्रौर उन्हें रोचना भी सम्भव नहीं होगा। प्रथम यह दलील दी जाती है कि प्रष्टाचार कोई नई चीज नहीं है, यह समाज में सदा से रहा है। प्रष्टाचार क्रौर बुराई समाज में हमेशा रही है क्रौर रहने वाली है यह कौन नहीं जानता, पर जब कोई बुराई अपनी सीमा को पार कर जाती है तब उसके खिलाफ आवाज उठाना क्रौर उसका प्रतिहार करना समाज के हित में आवश्यक हो जाता है। आज प्रष्टाचार केवल नैतिक अपराध नहीं रहा, बल्कि वह एक सामाजिक अपराध बन गया है, क्योंकि देश-विदेश से कर्ज लिया हुआ जो अरबों रुपये देश के विकास पर खर्च होता वह अधिकतर प्रष्ट नेताओं, प्रकण्डों क्रौर ठेकेदारों को जेब में चला गया। इतना ही नहीं प्रष्टाचार के कारण गरीब लोगों को रोटी भी सीपे उनके मुँह तक नहीं पहुँचती। ऐसी हालत में 'देशद्रोह' का अराध प्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वालों पर नहीं बल्कि प्रष्टाचार करने वालों पर क्रौर उसकी क्रौर श्रौष मूढ़ने वालों पर लगाना उपादा सही होगा। लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष शायद यह समझते है कि उनकी पार्टी या उनकी पार्टी की सरकारें जो प्राज्ञ के व्यापक प्रष्टाचार के लिए या कम से कम उसे न रोखने के लिए जिम्मेदार हैं, यही 'देश' है, इसलिए प्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना 'देशद्रोह' है। डा० शर्मा को समझना चाहिए वे अपनी तक एक जनतन्त्री देश में रह रहे हैं जहाँ शासक या शासक पार्टी ही 'देश' नहीं माने जा सकते। पिछले दो वर्ष से अमेरिका में राष्ट्रपति किन्नन और उनके सहयोगियों के प्रष्टाचार के खिलाफ जो गुला प्रभियोग समाज रहा है उससे देश-विदेश में अमेरिका पर प्रष्टाचार प्रतिष्ठा पट्टी ही या बड़ी है? यह डा० शर्मा सोचें। निवगन की पार्टी वालों ने भी उसे देशद्रोह बहने की हिम्मत नहीं की है।

उत्तर प्रदेश की विधान सभा में इसी सप्ताह एक भाष्यजनक क्रौर गंभीर घटना सामने आई। प्रजाज को 'सेवी' बसुत करने के सिविलिने में उस प्रदेश के सरकारी प्रधि-कारी गात्र-गर्व में विधानो से जो प्रस्तावली भवा रहे हैं उसमें सेवी का क्षेत्रफल, कुल उपज आदि भी जानकारी चाहने के साथ ही एक जानकारी यह भी चाही जा रही है कि किसान किस राजनैतिक पार्टी से सम्बन्धित है। हावाकि प्रतिपक्ष की सनर्ता क्रौर बड़े विरोध के कारण उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की बहुगुणा को यह प्रासनामान देना पडा कि सरकार उस प्रस्तावली को वापस ले लेगी। पर इस तरह का प्रश्न उसमें दाखिल क्यों किया गया यह अपने आप में इस वाक का स्पष्ट सूत्र है कि शासक दल जब सब जनतन्त्र की जो दुर्दाई देना है वह केवल अपने मतलब से। वास्तव में तो उसरा उद्देश्य जित तरह से भी हो अपनी पार्टी का बर्चस्व कायम रखने का है। जनतन्त्र की पहली क्रौर बुनियादी धर्म वहा है कि हर नागरिक को विला किसी दबाव, डर या सातक के अना राजनैतिक विचार रखने की क्रौर किसी भी पार्टी में शामिल होने की आजादी होनी चाहिए। सेवी में प्रजाज की वगुली क्रौर किसान की राजनैतिक पसन्दगी का परस्पर बरा सम्बन्ध है, सिवाय इसके कि शासक दल सेवी की वगुली में अपने समर्थकों को सहूलियत क्रौर विपक्षियों को परेशान करना चाहता है? आज की व्यवस्था कायम रहने में जिनका निहित स्वार्थ है उनकी वात छोड़ दें, पर प्राज्ञ जनता को इस प्रकार की घटनाओं से यह समर्थक में आ जाना चाहिए कि जयप्रकाशजी ने जो आवाज उठाई है वह जनतन्त्र के खिलाफ नहीं बल्कि जनतन्त्र के नाम पर क्रौर उसकी नबाव के पीछे जो तानाशाही प्रवृत्ति मुक्त में पनपती जा रही है उसके खिलाफ है। जनतन्त्र को बचाना हो क्रौर जनता की सच्ची आजादी कायम करना हो तो इस प्रवृत्ति वा परदाशय करना ही होगा क्रौर उसका मुकाबला भी करना होगा।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

उत्तर प्रदेश के कोल मजूर

रूपरेखा 'अग्रगण्य'

'नाहीं कहित तो हक मारि जात है, भी नहे पै पीठ ।'

एक कोल मजूर ने टॉस धोर बेलन नरिये के सगम के निनट स्थित उत्तरप्रदेश के सीमांत गावो छापरा, कोढी, मोहरा, गरगटा व ऊ चगाव मे भूस्वामियो द्वारा कोल मजूर पर द्राये जा रहे दर्दनाक जोर जुल्मी को रो-रोकर बताया ।

सर्वोदय विचार-प्रचार समिति, इलाहाबाद के मन्त्री प्रो० बनकारीलाल शर्मा की सहायता से इन पांच गावो के भाठो पहर मूनी पर रहने वाले कोल मजूरों ने 'जन जागरण मण्डल' की स्थापना की है । मण्डल की राज नाम की बैठक होती है, जिये प्रत्येक सोम कोल मजूर उपस्थित रहा करते हैं । मण्डल के मन्त्री हैं उसाही व प्रवृद्ध हृदयक व भूस्वामी प० मुन्दिना प्रसाद और अध्यक्ष हैं कोल मजूर नुसलाल ।

इन आदिवासी मजदूरों को दिन भर भूस्वामियों के शेतखनिहानो मे जीन्डो परिश्रम करने के बावजूद पांच पात्र भ्रतज 'बनी' (मजदूरी) के रूप मे मिलता है । इन आदिवासियों की जोरदार शिकायत है कि पूरा पात्र पात्र भ्रतज भी उन्हे नही मिलता है । कारण, उन्हे मजदूरी लोहे के बाटो से नही पत्तर के पिंसे पिंसे पुराने बाटो से दी जाती है । मजदूरी मे इस प्रकार मिला भ्रतज तोल मे चार पात्र ही ठहरता है । नियमानुसार डेढ़ बीघे सेत उन्हे हलवाही मे खाने कमाने के लिए 'भापी' मिलना चाहिए । लेकिन, जो सेत उन्हे मिलते हैं, वे मुश्किल से बीघे सवा बीघे ही ठहरते हैं । कर्म मे कोल ने यदि किसी भूस्वामी से दस रुपये बनी लिये थे तो दस सवाई होने-होने वह दस ही ठहे गया है । इस प्रकार, पीछे दस पीछे सीमांत जनशोषण व गुनामी मे वे जितना लागे उतने धते धा रहे हैं । सच कहा जाय तो गरीबी व लाचारी इन कोलो की जीवन पद्धति बन गयी है ।

२१ जुलाई की प्रो० बनकारी लाल शर्मा व प्रो० उदयप्रकाश अरोड़ा की उपस्थिति मे 'जन जागरण मण्डल' की कार्यगमिति की

बैठक हुई थी । कार्यगमिति में छापरा, नौडी, मोहरा, गरगटा और ऊ चगाव के तीन तीन कोल मजूर है । उक्त बैठक मे कार्यगमिति ने यह निर्णय लिया है कि कोल मजूरों की 'बनी' छाठ पात्र होगी चाहिए और उन्हे हलवाही मे डेढ़ बीघे सेत की 'भापी' मिलनी चाहिए । बाद में कोल मजूर मेवाताल के नेनुल मे एक प्रतिनिधि मण्डल जिसमें हर गाव से एक-एक मजूर के भ्रतजाल बनवारी लाल शर्मा व प्रो० उदयप्रकाश अरोड़ा भी थे, स्वामीय मुख्य मुख्य भूस्वामियों से मिला, उन्हे अपनी बर्तनाइयो व मांगो से भ्रतज कराय तथा उन्हे इन पर सहृदयतापूर्वक विचार करने की जरूरत पर विशेष बल देने को बहा । मजूर मानिओ की इस पढ़नी मुला काल मे बाद अथ चार भ्रतज की काममजूरों व भूस्वामियों की मिली जुली एक बरी सभा होगी । यदि भूस्वामियों ने कोल मजूरों की इन मांगो को नही माना तो ये बोल-मजूर उनके सेत खनिहानो मे गम करने से साफ इन्कार करेंगे तथा अपनी मांगो के लिए शान्तिपूर्णे दम से सीधी कार्यवाही व जोरदार सत्याग्रह करेंगे ।

जब वे मांगे पूरी हो जायेंगे, तब 'जन जागरण मण्डल' 'कर्म मुक्ति ध्वियान' बनायेगा, जिसके अन्तर्गत वे कोल मजूर बाप दादो के ऋणो को भरने प्रथवा पूर्वमी की ऋणप्रस्तता के कुफल—जीवनपर्यन्त

वाणी : जोड़ने वाली या तोड़ने वाली

सरला बहुम

अज्ञातकारी दुनिया की मुख्य समस्या यह है कि दुनिया के लोग कैसे जुड़ें ? क्योंकि जब जब के सामने संवेनाश या सर्वोदय जुनने की चुनौती स्पष्ट से दिखाई दे रही है । सर्वेध सुघरों के तब मानव भागे बड़ सकेगा, बिउरंगे तो सर्वनाश निश्चय है ।

लेकिन एक दूसरे को गहराई को हम कैसे समझ सकेंगे ? कभी-कभी सगत है कि एक ही विचार के प्रति समर्थित लोग भी एक दूसरे की बाणी को गहराई को नहीं समझते हैं । एक प्रकार से सबको मे सार्द वैरा होती है ।

गुलामी करने से मुक्ति पाने के लिये भूस्वामियों को विवश करेगे । कोल मजूरों ने चार-सबल किये हैं—सम्तानों को पदाना, उन पर कर्म का बोधन न छोड़कर भरना, ईमानदारी को रोटी व दृजत की जिवनी ।

कोल मजूरों ने यह भी निश्चय किया है कि वे बात को ठोकरिया व भ्रोवा बनाने तथा बाध जुनने के लघु टुट्टीरीयोग की सुवगत शीघ्र ही करेंगे । उनका यह भी दृढ संकल्प है कि सभी लोग भूस्वामियों का काम पूरी सुरतैवी व ईमानदारी से करेंगे । यदि कोई कामचोरी करता हुआ पाया जायेगा, तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा । ये कोल मजूर यह मानते लगे हैं कि उनकी समल्यार्थे सिर्फ प्राथिक कार्यकम से नही हल होगी । प्राथिक कार्यकम अक्षय है, लेकिन काफी नहीं । प्रो० बनवारी लाल शर्मा ने उन्हे महत्सत कराया है कि उनका कार्यक्रम समग्र होना चाहिए, जो एक साथ पेट भर सके, सुम्भस सुधार सके, उनकी प्रायें धतीत से हटाकर भविष्य की धोर ला सके, दिमाग बदल सके धोर जीवन वा सम्पूर्ण सन्दर्भ बदल सके ।

सर्वोदय विचार-प्रचार समिति द्वारा सगठित यह जन जागरण मण्डल सामान्य मजदूर सगठनो से विनकुल अलग है । इसमे जिनके अस्थाचारी धोर शोषण का मुकाबला मजूरों को करना है, वे लोग स्वयं मजूरों की मदद मे आगे आ रहे हैं । सगठन के मन्त्री स्वयं एक भूस्वामी ही । सगठित होने वाले मजूरों मे धामने प्रधिकारो से पहले कल्लेथ भावना भी जाग रही है ।

अपनी ही बुनियाद से विनोबाजी मृग रूप मे अपनी बानो को प्रकट करते हैं । बगैर उस पहराई को समझते हुए, हम उनकी धानो को सही धर्म से नहीं समझ पाते । सीधी कार्यवाही का सवाल जब बनी उठता है, भाग नहते हैं कि रचनात्मक काम ही करो । लोग उतेजिन हो उठते हैं कि तात्कालिक समस्याओं को उठाना चाहिए । लेकिन रचनात्मक कार्य-कम को उठाने का अर्थ क्या है ? उन्ही के द्वारा हनारा जन सभक इतना गहरा हो जाये (केप भ्रनने पेज पर)

(पिढेने पेज से जारी)

कि फूटने वाली जनशक्ति में हम शामिल होकर उसे सही मोड़ दे सकें। तब, मजदूरी पहावत का फलुआह हम कह सकेंगे कि 'कुत्ता भानी पूँध हिला रहा है'। नहीं तो ऐसा ऐसा है कि स्फुरित होनी हुए जन शक्ति में हम उसी प्रकार क्षय नहीं दे पाते, बाद में बाहर नें प्रकार उसे मोड़ देने की शोशिय करते है नव "पूँध कुत्ते को हिलाने लगती है"। ऐसी परिस्थिति में साधनों और लक्ष्य में कुछ समझौता करना पड़ता है। इसलिए अब बाबा 'रचनात्मक कार्यक्रम करो' कहते हैं तो उसका अर्थ होता है कि ज्यादा सीधता से और ज्यादा सोच्यता में मीधी कार्यवाई हो सकेगी। उसका यह अर्थ नहीं होता कि सीधी कार्यवाई करना ही नहीं है। उसकी सही युनिवार डालकर उसे ज्यादा सफल बनाया है, जिस प्रकार दूध में जामन डालने पर जामन खुल हो जाता है लेकिन सादे दूध का दही बनना है, इसी प्रकार समाज में खुल होकर समाज की दिशा को मोड़ना है।

भारत में हम सब अलग-अलग मासु भाषा बोलने मिलकर काम करते हैं। एक दूसरे के विचारों को गहराई से समझने की आवश्यकता होती है। लेकिन एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने में अक्सर शब्दों का सूदम अर्थ प्रवृत्त नहीं हो पाता है। विशेष करने अब उसने लिए हम एक विलासनी भाषा का उपयोग करना पड़ता है। यह हिन्दी को अपनी सम्पर्क भाषा बनाने का एक और मर्म है, कि कम से कम हम एक दूसरे के शब्दों का सूदम विचार ज्यादा अर्थहीन तरह समझ सकें।

एक बार एक शब्दासु सज्जन मुझे से कहते सगे, 'जेन्टल जेटलर, जेटलेट'; 'सोपट, सोपटर, सोपेटट' यह कैसे हो सकता है? तब तो सत्याग्रह में कोई तथ्य नहीं रहेगा। कोई शक्ति नहीं रहेगी। मैं चिन्तित हुई कि बाबा में ऐसा कब नहो? फिर क्याल कायम, यह 'सोम्य, सोम्यनर, सोम्यउम का अनुवाद करने में सापत्तवाही हुई है, जिससे उस शब्द के मर्म में जो अर्थ है, यह स्पष्ट हुई है। एक भाषा में शब्द उस देश की संस्कृति से, परम्पराओं से, संस्कार से निम्नते हैं। इसलिए एक दूसरी भाषा में अनुवाद करने

पर उसका पूरा अर्थ समझ में नहीं आता है। सोम्य सत्याग्रह अर्थ 'जेन्टल' होगा ही, 'सोपट' होगा ही लेकिन उसके साथ-साथ सत्याग्रह करने वाले की आर्या में एक ऐसा प्रेम और शक्ति स्फुरित होगी जो समाज के हृदय में प्रवेश करके तीव्र सत्याग्रह के बलित्व, ज्यादा गहरा प्रभाव डालेगी।

इसी प्रकार, एक दूसरे के शब्दों का सूदम अर्थ समझने में, एक और तथ्य की आवश्यकता होती है, वह है—विश्वास। बाबा कहते है, दुनिया को जोड़ने के लिए वैदान्त विज्ञान और विश्वास की आवश्यकता है। इधर पश्चिम के लोग, पाँच गहराई से पूरा अर्थ में समझें तो ये भी उत्पन्न हो सकते हैं। लेकिन इस प्रयोग में 'वैदान्त' शब्द का अर्थ अभाव्य है, न कि हिन्दू धर्म का शास्त्र। बाबा पर हमारा विश्वास हो, तब हम गहराई में जाकर उनका अर्थ समझेंगे। विश्वास किस पर? एक दूसरे

पर, एक दूसरे की सच्चाई और प्रेरणा पर, विश्वास पर, उसकी शक्ति पर, परमात्मा के गुण हेतुओं पर, दुनिया हितकारी है, प्रवृत्ति शुभ है, इस पर।

मुझे लगता है कि सर्वोदय परिवार में यदि इस प्रकार की दृष्टि हो, तो बहुत सारी व्यक्तिगत और सामाजिक गलतफहमियां दूर हो सकेंगी और होने सर्व सम्मति से एक बड़े समाज की ओर बढ़ने में सफलता मिल सकेगी।

इधर, मैंने बाबा का उदाहरण दे कर लिखा है, क्योंकि मैं सब के सामन स्पष्ट है। यह बाबा की सफाई करने के दुःखप्रह से नहीं। लेकिन सिर्फ एक स्पष्ट उदाहरण देने की दृष्टि से। हम साधारण कार्यकर्ताओं में जो कुछ ऐसी गलतफहमियां उठती रहती होगी जो कुछ साधनांगी और गहराई से सोचने पर फोरन दूर हो सकेंगी है।

अखिल भारतीय गोसर्वधन गोष्ठी

एक अखिल भारतीय गोसर्वधन सगोटो विशेषकर गाय के सदर्भ में, १३ और १४ जुलाई को वर्षा में हुई। अखिल भारत कृषि-गोसर्वा सघ की ओर से आयोजन इस गोष्ठी का उद्देश्य पवनर श्रायम से आचार्य विनोबा भावे ने किया। भारत सरकार की राजस्व सकारों और समाज सेवा सस्थाओं के लगभग ६० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। महाराष्ट्र और राजस्थान के संबन्धित मंत्री भी शरीक हुए।

नस्ल-सकरण, (क्रास ब्रीडिंग) नीति डि-प्रयोजन नस्लों का विकास, गाय तथा भैर दूध संबंधी मूल्य-नीति, तथा पशु-खाद्य व चारे की समस्याएँ मुख्य विचारणीय विषय थे। दो दिन की विस्तृत चर्चा के बाद नीचे लिखी सिफारिशें सर्वानुमति से की गयीं। भारत के प्राथमिक सयोजन की रीट कृषि है, और कृषि-विश्वास की रीट को हृदयी को-सर्वधन है। इसलिए भारत की राष्ट्रिय योजनाओं में गाय को प्रमुख स्थान देना आवश्यक है।

भारत की प्रजनन-नीति का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार की सवर्गी (इसुल पररज) नस्ल का विकास होना चाहिए जिसके द्वारा दूध का विपुल मात्रा में उत्पादन हो सके और हमारी कृषि के लिए अच्छे बेल भी तैयार हो। साथ ही साथ, हम छोटे किसानों को आवश्यकताओं पर निरन्तर ध्यान देना

चाहिए जो भारतीय प्राचीण समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

इस प्रकार की प्रजनन-नीति ने अन्तर्गत निम्नी नस्लों से सकरण (क्रास ब्रीडिंग) के कार्यक्रम, ऐसे इलाकों में ही संचालित करने चाहिए जहाँ युवाएँ गायों के पालन-पोषण और देखरेख की समुचित व्यवस्था हो सके। यह भी जरूरी है कि नस्ल-सकरण की योजनाएँ नियमित हो और निश्चित मार्गदर्शकों के अन्तर्गत चलाई जाय।

यह भी जरूरी है कि दूध की कीमत घूटास (फैट) और फैट के अलावा अन्य तत्वों (एस-एन-एफ) के आधार पर निर्धारित करने चाहिए। गाय के दूध के विशेष गुणों का अध्ययन और अन्वेषण करना उपयोगी होगा ताकि उसी प्रकार जन्मते को तिष्ठित किया जा सके।

गोसर्वधन के लिए देश में दाना और चारे की पर्याप्त व्यवस्था होना नितांत आवश्यक है। इस सदर्भ में, पशु-खाद्य का निर्वाण तुरन्त बन्द होना चाहिए। इतने पलायन मिथिल-मेठी की आयात बन्द से योजना बनाई जाय। पावनी पशुवर्षीय योजना में काफी सत्याम से चारे में बीजों के फार्म, चारों से बँक और चारा-संरक्षण के कार्यक्रमों की प्राथमिकता देना जरूरी है।

संघ अग्नि परीक्षा में खरा उतरा

(पृष्ठ ४ से जारी)

सर्वोदय को वह ताकत कहाँ से मिली ? दमभुक्तता सर्वोदय आंदोलन की विशेषता है। सब मानते हैं कि सर्वोदय माने किसी एक पक्ष को नहीं है। जनता की अर्थात् हमें किसी है वह सर्वोदय के कारण है। सरकार के जिनके भी प्रकार हैं उनकी कार्यवाही सब जानते ही हैं। बीन सा दान ऐसा है जिसमें वे कर्मिया मही हैं। लेकिन इन मोननेर का हमने साधारण से अर्थात् माना है। मर्यादा, कान्या धा, बुनाय में अर्थात्धार रिकान, प्रविचार, अर्थात्धार की श्रेणी बहूते में ध्यान दिलाया। लेकिन लोकना हीन विषयना अर्थात्धार की जननी है। और यह विषयता प्राथिक सामाजिक वर्ग प्रकार की है, उसे हटाना है। निन्हा के उते हटाने का रास्ता भी दिया है— गांधी गांधी, जनतास बदाश्री। हम भुगतन वे जीवितन क पाये, वही हमारी बुनियाद है। आज जब हम बहूते हैं कि अर्थात्धार हटाओ तो सामे लोग हमारे भाग आते हैं, लेकिन वह ऊपरी काम होगा, हमारी बुनियाद बहू है नहीं। यह कुछ समय के लिये तो ठीक है लेकिन स्थायी रूप से इग्रेसे कुछ होगा नहीं, गुजरात है ही हमारे सामने।

युवाशक्ति—का मैं स्वागत करना हूँ लेकिन इस जोश को हीन नीते र्हे हम ? विधान सभा का भाग का गाया दिया, मैं निम्नकारी से नहसा हूँ कि वह नारा उठे देना नहीं था। जो विषयक दायरपन नहीं देता, जने धनजाने हम पर दबाव डालते हैं, पंचराज की भाव धार ली इन्से हिता होगी ही। मानते यह आज सर्वोदय का न होना र किमी पार्थी का नारा होना तो क्या दान से स्वायं भी भाग नहीं आती ? केवल सर्वोदय के रूपों से वह दलभन राजनीति के नीते हट गया ? हम क्या जन समर्थ समिन्ध्या बना रह हैं, सम्भव है कि वह ग्राम सभा तक बने लेकिन सोचें कि सचयं से कानि नमजित कीसे वनेगी ? आज हाए राजनीति में धार है। धिरोब में है। हमारा साथ कुछ राजनीति दल दे रहे हैं, कुछ हमारे विरुद्ध काम कर रहे हैं। भले ही उनमें से कुछ दलो का निश्चयन किया में हो, उनके

साथ समझौता करना पडा है। तो हम बिना दल के भी दलगत राजनीति कर रहे हैं। सर्वोदय की बुनियाद राजनीति नहीं आध्यात्मिकता है गांधी विचार भी उमी पर खडा है। हम उन बुनियाद को छोड़ नहीं सकते। वही शक्ति है हमारी। आज दलगत राजनीति ग जा कर हम जनवप पादि को नभुल देकर उन्हे बदल भी नहीं सकते। इसलिए हम धननी बुनियाद पर ध्यान न आते हैं। स्वाय से सेवा, सेवा से प्रेम, प्रेम से शान्ति, शान्ति से अहिंसा, अहिंसा से राज्य यही रास्ता है हमारा।

राममण्डल मिश्र ने कहा कि जे० पी० का आन्दोलन ग्राम स्वराज्य और लोकनीति का ही है।

रामचन्द्र राठी ने महनुस किया कि अधिपतन होना है लेकिन हम लोगो के बीच खुला और हादिक सम्वाद नहीं होता। सब धननी ही कहते चले जाते हैं दूसरो की नहीं सुनते। हमें दूसरो की बात सुननी चाहिए। फिर उन्हेसे सवाल किया—“अब तक हमारे आन्दोलन से क्या यह (बिहार का) आन्दोलन नया है ? इसे समझने के लिए हमें अब तक के और दम आन्दोलन के मुद्दे स्पष्ट करना चाहिए। हमारा भी सचट विश्वास था है। हम धननर व्यक्तिगो के केन्द्र में रह कर विचार करते हैं। लेकिन मैं आगे के सामने जे० पी०—स्वाय केन्द्रित विचार तही रच रहा हूँ। हम सोचो मे विरोध मनमिन्गता के कारण ही है। मनमिन्गता है तो क्या हम बीटो का उपयोग करेंगे ? या तोपे मिलेंगे ? या पर्व वांटेंगे ? यह प्रश्नना राजनीति की है, अहिंसक नहीं है।

वर्तमान प्रजातन्त्र प्रौद्योगिक क्रांति की उत्रा है। अभी यह विकसित हो रहा है। लेकिन हम देखते हैं कि इसका दाया लोक गणकान्ना के विरुद्ध होता जा रहा है। व्यवस्था बह चाहे जैसी भी हो उरफा दावा सवेदनशील नहीं होना। दावे को तोड़ना ही पडेगा। व्यवस्था के मिलाक बुनियाद में धान जो बिटोह हो रहा है उससे भारत में भिन्न नहीं है। लेकिन भारत मे जो

युवा बिटोह हो रहा है, उसकी एक विवेचना है, उसके पास एक विकल्प है। यह स्वराज्य आन्दोलन की देन है। सर्वोप की तरह हिन्दुस्तान का समाज अभी टूटा नहीं है। यहा “कंठ टू कंठ” कोसावटी भोजूद है इसलिए सामान खडा हुआ है। लेकिन यहा के दावे के अन्वितरोध अगते धारिनी विन्दु तक पहुच गये हैं। यह धनने धनविरोधो से टूटने ही वाना है, हम चाहे या न चाहे।

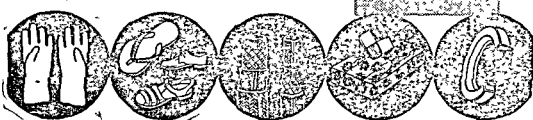
गांधीजी ने कहा था कि मन्वी लोकशाही की स्थापना के लिए नागरिक शक्ति और सैनिक शक्ति का सचयं अविभाय्य है। सैनिक शक्ति का आधार राज्य से सचयं अजाबो के बाद पहुच ही चलता तो सचयं जो हारत है वह नहीं होती। हम लोक शिष्टाण पर बहूत जोर देने हैं लेकिन लोक शिष्टाण जन विरपेक्ष नहीं हो सकता।

बिहार आदलत दमस्वराज्य आंदोलन का ही सही परिणाम है। हमारा शिष्टाण लोकशासन से होगा और राजनीति दलो का मिश्रण हमसे होगा। बिहार आंदोलन इस सत्य का उदाहरण है कि सरकारें जो नित्य जनता से निरपेक्ष हो कर कर्तवी हैं उनमें अब जनता ने दखल देना शुरू कर दिया है। और जन आंदोलन प्रच पूरे देश मे धनने धार छिडेगा। सवाल यह है कि जनता की मनोभूमिका से धारादलन शुरू होगा या हमारी संवैधानिक मलाभुमिना से ? जनआफरमा के विरुद्ध कोई जन आन्दोलन नहीं बन सकता। हमारी माधना बन सकती है।

कृष्णचन्द्र सहाय ने कहा—मनमन्गल का तपस्य, हमने सुना है कि बिहार आंदोलन के समर्थन के लिए रसात गया है। जो लोग सर्वसम्मति हने की राह मे राडे अटकावेंगे जो प्रस्ताव का विरोध करेंगे, इतिहास उन्हें माक नहीं करेगा। बिहार के आंदोलन को वे नर पंचबाजी की गयी। हम लोग जो मानते हैं कि यह आंदोलन सही है उन्कोने लो इसके जवाय मे कोई पंचबाजी नहीं की। अब बगौटी का समय आ गया है। कुछ ही लोग देखें हैं जो चाहे और मनमन्गलारी से काम लें ता यहा का साक्षरतण बदल सजता है। सर्वसम्मति हो सकती है।

(पृष्ठ पन्ना १५ पर)

Swastik SERVES HOME



Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and Industrial use.

Footwear and hoses, gloves, moulded products and oil seals, foam rubber mattresses, pillows and cushions. Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable.

INDUSTRY

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.
Pune-411 003.

Patent-311-29

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का हम अभिनन्दन करते हैं

● लाख रंग ● सूती वस्त्ररंग ● इयोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि०

(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :

२०३, डा० डी. एन. रोड
बम्बई-१

बारखाला . .

मिनाजी टेक्स्टाइल
लिमिटेड, कम्पाउण्ड,
मोतापुर रोड,
मुंबई, बम्बई

→ मनमोहन चौधरी ने कहा—“बिहार प्रादोलन से कुछ बुनियादी मुद्दों सामने आये हैं। प्रादोलन का बुनियादी काम घोर डाइर जन ? राजनीति या लोकनीति ? प्रतिक्रिया प्रादोलन की प्रतिष्ठा क्या है ? सरकार से हमारा सम्बन्ध क्या रहे ? आदि सवाल यहां उठाये गये हैं।

मैं मानता हूँ कि कानि के अलावा काम नहीं चलेगा। सभी लोग नियम बने हुए हैं, वे लक्ष्य होने चाहिए। ग्रामसंस्थाओं में लक्ष्य को मैं मानता हूँ। अल्पकालीन वा प्रादोलन कानि का सहायक हो सकता है। मानस परिवर्तन के लिए हमने लोअिभार किया। भूदान प्रादोलन शुरू हुआ। भूमि इस देश के तीन चौथाई लोगों की समस्या थी। उसे हमने भूदान के जरिये उठाया। फिर ग्रामदान आया। महाभारत, भ्रष्टाचार की समस्या भागी तो भय उत्पन्न निवारण में भी हम गये हैं। ग्रामदान असफल हुआ ऐसा मैं नहीं मानता। ग्रामदान के अलावा भी जो छोर निपटें ऊँचे खेता चाहिए।

हमारी प्रक्रिया क्या है ? भूदान की मा समस्याओं को ? निरपेक्ष सत्याग्रह का उद्देश्य भी गांधी जी के जमाने में था। निरपेक्ष बहुत आवश्यक चीज है उसके बिना सत्य प्रह ही नहीं सकता। हमें सरकार से किसी से प्रतिस्वत्ता नहीं है। लेकिन लक्ष्य नीतियों की बात प्राणी है तो व्यक्ति घोर नीति में फँक करता चाहिए। विनोबा जिसे निरपेक्ष सत्याग्रह करते हैं उसमें भी पोजीटिव सत्य है। सत्याग्रह दबे हुए आंदोलन को खड़े होने की ताकत देता है। लोकनीति बनाम राजनीति को जान चलनी है। राजनीति क्या है ? मर्यादा घोर साधनों पर नियंत्रण। लोकनीति क्या है ? जिसमें जनता अपनी कर्ता बनती है। सत्य वही है—सत्ता घोर साधनों पर नियंत्रण। लोकनीति में यह नियंत्रण जनता के हाथों में होता है, राजनीति में सत्ताशुद्ध पार्टी के हाथों में।

विधानसभा विसर्जन की माँग को धरजालाधिक कहा जाता है। इनमें धरजाला-ताधिक क्या है ? प्रधानमंत्री को इच्छा से, मुक्तमन्य भी इच्छा से यह हो सकता है तो जनता की इच्छा के क्या नहीं हो सकता ? सरकार में सम्बन्ध के बारे में मनमोहन भाई

ने कहा कि सरकारें ऐसी होती हैं कि सब कुछ अपने पास रचना चाहती हैं। घाज भी सरकार की प्रतिष्ठा भारतीय इच्छा वही है कि सब कुछ हमारे हाथ में रहे। जे.पी. ने विरोध के अपने अधिकार की रक्षा की है। जनता के ऊपर लक्ष्य हावी हो-आजा चाहता है। उदाहरण के हैं—एटन में नन्दनी सतपथी के चुनाव में तीस लाख नहीं सतर रिचहल्टर लाख खपया खर्च हुआ है। रेल हटाना किस तरह तीव्र गयी यह सब ध्यान जानते हैं। सरकार ने जो कुछ किया क्या वह कानूनी था ? परिवर्तन बंगाल में लगभग सात सौ राजनीतिक विरोधियों का आगमना मारा गया। विनोबाजी जिन पक्ष-धर्त के सहयोग को खात करते हैं वह भ्रमान धरातल पर आये बिना नहीं हो सकता। जे पी के पास जब विनोबाजी आये तो उनके सामने दो विकल्प थे। बुनियादी काम में लगा हूँ—वे यह सबते थे। आपके साथ सहर्ष में यह हूँ भी वह सबते थे। इन्होंने दूसरा विकल्प चुना। कठमुलने बन कर बैठे रहेंगे तो जन आंदोलन नहीं होगा।

इसके बाद दादा धर्माधिकारी का प्रभावशाली भाषण हुआ जिसमें उन्होंने लोकसेवकों से कहा कि वे अपने स्वतन्त्र बुद्धि विवेक का उपयोग करके निर्णय करें। (दादा का पूरा भाषण अगले अंक में पढ़िये) दादा के भाषण के साथ ही अधि-वेशन की सुवह भी बैठक समाप्त हुई।

अधिवेशन की धास्तिरी बैठक पवनार में में दिनों का सान्निध्य में होती थी। लेकिन चू कि कोई सर्वसम्मति प्रस्ताव ही नहीं रहा था घोर प्रबन्ध समिति की बैठक चल रही थी इसलिए पवनार का कार्यक्रम रद्द हुआ। लक्ष्य का अन्तिम बैठक तीन बजे से सड़िवा-धर्म के हाल में ही शुरू होगी। लेकिन पाच बजे तक प्रबन्ध समिति की बैठक लगातारपूर्व-वातावरण में चलनी रही फिर भी बिहार प्रादोलन में सहर्षण में किसी प्रस्ताव पर सर्वसम्मति नहीं हुई। घास्तिर प्रबन्ध समिति के सदस्य घोर प्रबन्ध मंत्री अधि-वेशन में आये घोर सिद्धराज जी ने दादा धर्माधिकारी द्वारा बनाया गया प्रस्ताव मग संशोधनों के नोकनैक्यों के मागने रक्ष दिया। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यह

प्रबन्ध समिति का प्रस्ताव नहीं है क्योंकि यह कोई सर्वसम्मति नहीं हो सकी। लोक-सेवकों में माग की कि प्रस्ताव की प्रतिष्ठा घोर संशोधन विवरित कर दिये जायें ताकि उस पर चर्चा हो सके। यह भी सुभान प्राया कि समूहों में बट कर चर्चा कर ली जाये। प्रस्ताव की प्रतिष्ठा तैयार करने घोर उलो-जित वातावरण को घात करने के लिए बैठक रात घाट बजे के लिए स्थगित कर दी गयी।

इस बीच रामचन्द्र राही, बाबुराव चन्दावार, नरेंद्र भाई कुमार प्रगाथ प्रादि ने एक घोर प्रगाथ प्रस्ताव का विरोध करने वाले को मनाने का किया। लेकिन घाट बजे जब बैठक शुरू हुई तो राही ने सूचना दी कि उनका प्रगाथ सकल नहीं हुआ है घोर सवाल मतभेद का नहीं है। दिल की दूरिया यह गयी है। सिद्धराज जी ने जैसे-तैसे बैठक चलाने की कोशिश की लेकिन मनमोहन भाई ने भरे गले से सूचना दी कि उन्होंने प्रबन्ध समिति से त्यागपत्र दे दिया है। सर्वसम्मति न कर पाने की उन्होंने अपनी अग्रोप्यता बताया। दादा धर्माधिकारी ने कहा कि यह रापोप्यता नहीं है गौरव का नियम है घोर सर्वसम्मति न हो पाने की सर्वसम्मति हमें अपने गेला से अधिधरनों में रख देना चाहिए। फिर ठाडु रदास बग ने भी भोपस्या की कि इस स्थिति में वे सध के मंत्री पद से कार्य-नहीं कर सकते इसलिए इस्तीफा दे रहे हैं घोर एक साल के लिए बिहार जायेंगे। सिद्ध-राज जी ने घोषित किया कि उनके पास प्रबन्ध समिति के सेरह सदस्यों के त्यागपत्र था गये हैं। लेकिन वे स्वयं भी प्रार्यता पद से त्यागपत्र दे रहे हैं इसलिए प्रबन्ध समिति अपने आप हो भग हो जायगी।

घास्तिर तप हुआ कि १२ जुलाई को सुवह सर्वसम्मति न हो पाने की सर्वसम्मति घोर सबके त्यागपत्र बाबा के पास पहुँचा दिये जायेंगे घोर वहीं अधिवेशन की धास्तिरी बैठक होगी। १२ जुलाई की विनोबा ने किस तरह सध घोर सर्वोदय प्रादोलन को पिघलने से बचाया, जैसे हार्दिक घोर जोड़ने वाले वातावरण में धास्तिरी बैठक हुई यह सब आन पिछले दो अकों में पढ़ ही चुके हैं।

विशंकर महाराज का जै० पी० को पत्र

भारद्वी जयप्रकाशजी,

भापने जो प्रवृत्ति हाथ में ली है, उससे मैं खुश हुआ हूँ। अभी-अभी विनोबाजी के साथ भापनी चर्चा हुई, सर्व सेवा सभ के अधिवेशन में भी चर्चा हुई वह सीने अलवारों में पड़ी। 'मूनिपुत्र' के द्वारा तकमिल में जान सकूँगा। यहाँ बाबा हरकिलस बहन भाई हैं उनसे भी वहाँ भी याते नुनी। पूरे देश में यह प्रवृत्ति (प्राग्दोषन) उठाय जाय तो भी कोई हुरात नहीं है। जो अष्टाचार भाषा है वह ऊपर से ही भाषा है। भविष्य में भाषा है। छोटे से लेकर बड़ो तक सभ अष्टाचार में फणे हुए हैं। इनसे सखे घनतदार पीडित है, दुग्री है।

भापनी प्रवृत्ति मुझे बहुत पसन्द है। परमेश्वर सफल करेगा ही। आपकी तबोपन अच्छी नहीं है फिर भी देना वडा पुण्यार्थ साधन करने हैं, इससे मुझे आश्चर्य और आनन्द होता है। परमेश्वर आपसे सफल करे ऐसी मेरी हार्दिक मुण्डच्छायें साधक के साथ है ही।

(रविशंकर महाराज द्वारा 12 जुलाई को लिखा गया पत्र)

नागरिक समस्याओं पर नागरिक

(पृष्ठ 2 से जारी)

अष्टाचार के अनेक पहलुओं पर चर्चा करते हुए डा० पियोगी ने कहा कि इसी व्यापकता में वर्तमान व्यवस्था से ही विपन्नता उठा दिया है। डा० जनक जुनेजा का कहना था कि 'अष्टाचार का प्रश्न केवल नैतिक नहीं है, इसका लोगों की रोटी से भी सम्बन्ध है।

नागरिक समस्याओं पर चले हुए केन्द्रीय गांधी शांति प्रतिष्ठान के जल-सामलों से सम्बन्धित विभाग के निदेशक कानासायण ने राजनीति रहित मुहल्ला सभाओं की उप-योजिता, उनके समूहों में भाई की चर्चा की। उन्होंने कहा कि नागरिक समस्याओं के निदान का काम केवल राजनीति के सुदूर नहीं किया सकता, उनही दृष्टि पक्षपात पूर्ण होती होनी है। गैर राजनीतिक आधार पर गठित ये मुहल्ला सभायें नागरिक और प्रशासन के बीच लगातार गहरी होती हुई पाई को पाटने का काम कर सोंगे के बीच एक मजबूत पुनर्बन्धन बन सकनी है।

गोष्ठी में एक मान मूनी ने संक्षेप स्वीकार किया है: (१) नागरिक समस्याओं का गठन। (२) उच्च स्तरीय पक्षगत कमेटी (३) मुहल्ला सभा का गठन। (४) जन-मिलाप। (५) जनता को स्वायत्त भागन के अधिनतार दिवाने की दिशा में जन प्राग्दोषन का निर्माण। (६) विचारण व्यवस्था में

सहभागन के लिए स्वयं सेवक टुकड़ियों का गठन तथा (७) नागरिक विकासको को निरादने के लिए नागरिक समिति का गठन।

गोष्ठी के बाद छात्र छात्राओं को उनकी समस्याओं से ऊपर उठा कर द्रम्य लोगों से जोड़ने के प्रयास में केन्द्र के गुएर कार्यकर्ता देवीसरण देवत ने 'गन्दरी के विरुद्ध युवा' अभियान शुरू किया। भाई कल्या महाविद्यालय की ६० छात्राओं ने गन्दरी बसियों की सफाई की, वहाँ की तरुली को को समझने की कोशिश की।

विहार के सहरसा जिले में पिछले साडे तीन सालों में बनाये गये ग्रामदान पुष्टि अभियान की जानकारी देने हुए अभियान के एक मुख्यव्यवस्था विद्यापार भाई ने बताया कि सहरसा जिले में प्रथम बार ७७ ग्रामदान गठन की जा चुकी है। काशी पुष्टि के लिए ३६ ग्रामदानों के वापसात प्रस्तुत किये गए अभियं १० की वागूनी पुष्टि हो चुकी है। ६ गावों में गजेडेड ग्रामदानों बन चुकी है। ग्रामदान की एकसत बोधा में गूटा के भूमिदानों से ७२३ बोधा जमीन मिली जो अनुमानतः ३५५ भूमिदानी में विवरित कर दी गई। इसके अलावा भूदान से प्रत्य २७ ५७ एकड़ भूमि भी ३०७० छात्राओं में बाँटी गई। यह विवरण जिले के २६ प्रपञ्चों के समग्र १००० गावों में सम्पन्न हुआ।

बम्बई में जे० पी० (पृष्ठ ६ का दोरा) जागृति नहीं हुई तो मैं इस अग्रपत्र सा ही समझूँगा।

बम्बई में देखा अनुभव हुआ कि सारे देश को एक भाजक एक गेलुन की लवान है जिग पत्र वह अरोगा कर सके जितनी आजाय पर वड रिमगण बड गजे। सारी जगह दोसम दलों के लोगों ने हडप रकी है। 'विद्युत्' के लोगों का कर क्या था पता नहीं, बॉकि-न इमके छोटा ही होगा।

दलीप उग्र, मिरे स्यान्ना के बावजूद देश भागा 'मुलिवर' जयप्रकाश में ही रोज रहा है। परिस्थिति एक जेजधानी प्राग्दोषन के प्रकूल है। पर जयप्रकाश जी कहते हैं और एरदम सही करते हैं कि "विहार का प्रयोग सफल हुआ तो देश को राड मिलेगी। मैं विहार को सम्पूर्णता या सारकारी नीतरह देखा रहा हूँ।"

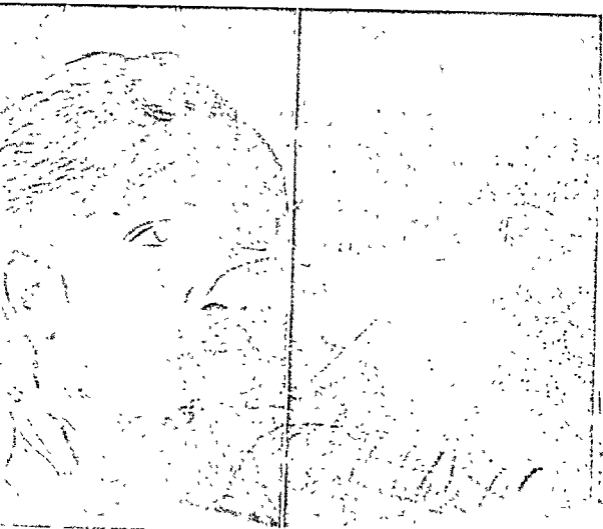
देख सही रहे हैं—वागुण्य भी और सन, सामान्य लोग भी—विहार से क्या निकलता है ?

चिन्तन प्रयाह (१० पेज से जारी)

काँध से विधान में सारवों के लिए "हाथ-कनी, हाथ-तुली" गाती गतना का तक लाजभी रहा है। का भागन कायरे में जो नया विधान बनाया है उन "हाथ-कनी" शब्द छोड दिया गया है। सारी के समर्थकों ने जब फ़ालिण भारतीय काँध से कनेटी की बंदरु में दसका बडा विचार किया नतीक राडो का मतलब वही है जो हाथ पीली हो, तो स्वयं भीमनी इतिहास में यह उत्तर दिया कि "हाथ-कनी" शब्द इन्फि-ए छोडा गया है कनेटी शब्द चर्चा से बत हुए मूड से सा तीना भी समर्थक बना है। यह दलीप मिन्नी हास्यापद और गरीबी के बारे में लिख प्रकूल से भी हुई है यह दस बाव से ज दिख है कि सार्वत चर्चा की बर्ताई बनत ई में ही मानिय है और वर सारी काय भी सारी कमीशन द्वारा प्रमाणित है। सारी की ऐसी प्रारम्भिक बाल का जिन समाल में इनका अज्ञान हो कि ऐसी सनी दी जा सके और यह प्रथम भी हो जाय उस उभात के लिए सारी का पामर छोड देना ही ठीक है। जतने सारी की प्रकृता कम नहीं होगी, बनेगी ही।

सावाँदर्या

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १६ अगस्त, '७४



With best Compliments from

INDIAN AIR GASES LIMITED

Regd. Office -

" KISHORI NIWAS "

Eirhana Road, KANPUR (U P)

Gram 'IAGEE'

Phone 66028, 62347, 65761, and 65867

Telex : IAGEE KP-329

Factory at

G. T. Road
MOGHALSARAI,
Distt. Varanasi

Gram : GASES'
Phone : 7301, 7302

City Office

Bir Bhavan, D-61/43,
Sidhgiri Bagh,
VARANASI

Phone . 66350 & 52456

Delhi Office :

No. 1, Park Avenue,
Maharani Bagh,
NEW DELHI

*Manufacturers
of*

**Oxygen, Acetylene, Nitrogen, Medical Oxygen
and Liquid Oxygen Gases**

**Standard Products turned out from Uptodate
Foreign Manufacturing Plants for
Industrial requirements & Hospitals**

RATES COMPETITIVE

QUICK SERVICE

विषय-सूची

युवा शक्ति विशेषांक

तटभाई का सन्तान रूप (सपादकीय)	३	भवानी प्रसाद मिश्र
युवाओं के एक-एक वंदन से सपनों का भारत वास्तविक बन सकेगा	५	जय प्रकाश नारायण
सेनानी निकल पड़ा है	११	श्रीधर महादेव जोषी
अभाव घोर गरीबी के पहाड़ों पर छावों की यात्रा	१५	प्रताप सिन्हा
छान सगठनों की राजनीति घोर भारतीय सदर्भ	१७	शारदा पाठक द्वारा सञ्जित
तट्णु शक्ति सेना : नयी सांस्कृतिक शक्ति के लिए	२२	कुमार प्रसाद
गंधी की पुनर्जीवित करो	२४	इत्तारैय सरमण्डल
जब हमने हिंसा के बंदे भ्रष्टा भ्रमनाई	२७	सकलित
गिशा की कमरे की चारदीवारी से बाहर निकालना होगा	३०	शशीधर श्रीवास्तव
शिष्टाचार के मुखाटे में प्रष्टाचार	३४	मुनिषी महेंद्र कुमार प्रथम
एक नुनौनी	३७	भद्रोक्त कुमार उब्जा
साहित्य भ्रान्दोलन के साथ जाये	४१	कृष्ण राज मेहता

प्रकाशकीय

प्रतापवादी कागज के प्रकाश के इन दिनों में 'भूदान पत्र' जैसे पत्र का विशेषांक निकालना अपने पानों पर कुल्हाड़ी मारना है। कुल्हाड़ी इसलिए कि विशेषांक जिस कागज पर छपा है वह साधारण अको का होता है। यानी विशेषांक के भोज के लिए रोज की रोटी छोड़नी पड़नी है। सेहन के लिए यह ठीक नहीं है लेकिन पत्र के प्रगम स्वयं एक ऐसा अवसर है जब कुछ विशेष किया जाना चाहिए। युवा शक्ति के प्रवर्तन का लेख जोला इत अवसर पर जरूरी है क्योंकि प्रजादी का प्रविश्य उसे ही बनाना है।

इसलिए वाचक कर्मों के यह विशेषांक आपके हाथों में है। हमारी योजना और इच्छा का यह प्रतिरूप नहीं है। हमारा इरादा ही पत्र का विशेषांक निकालने का था। हम युवाशक्ति के प्रवर्तन के सभी पहलुओं पर सामग्री देना चाहते थे। उसकी प्राप्ति-साधनों का नक्शा सोचना चाहते थे। और अपनी दिशा का संकेत भी देना चाहते थे। यह भी बताना चाहते थे कि उसके सामने निम्न-स्तरे घोर विपत्ती चुनीविया है।

सर्वोदय भ्रान्दोलन घोर युवा शक्ति के सपनों का मेघ भी आपके सामने रखना चाहते थे। लेकिन कागज की कमी के कारण यह संभव नहीं हो सका। आपसे धामा चाहते हुए प्रेषणा करते हैं कि यह विशेषांक जैसा भी बन पड़ा है आपकी सहानुभूति घोर शक्ति के योग्य होगा।

जैसे तो देश के विश्वविद्यालयों में कई वर्षों से छात्र प्रसन्नोप पत्र रहता है। वह प्रकट भी होता था लेकिन बिलंबे सत्रों में भ्रान्दोलनों और छुटपुट हिमक घटनाओं से ऊपर कभी उठ नहीं पाता था। प्रसन्नोप युवाशक्ति के निरर्थक धाने घोर उसके सामने कोई स्थापक लक्षण न होने से घटन बढ़ती जा रही थी।

इस घटन को तोड़ा युवाशक्ति के घटना ने। महंगाई से परेशान अपनी मेस के बड़े हुए बिल के निस्तार भ्रान्दोलन कर रहे छात्रों को नगरिकों ने कहा कि महंगाई तो हमें भी तोड़ रही है, हमारे लिए कौन सरेगा। छात्रों को एक स्थापक सामाजिक प्रयोजन मिला और उनका भ्रान्दोलन जन-

भ्रान्दोलन बन गया। अगर जन प्रसन्नोप की रचनात्मक दिशा देने की क्षमता विश्वविद्यालयों में होनी तो गुजरात महज एक घटना बन कर नहीं रह जाता। बिहार में भी सुप्रभात छात्रों ने ही की घोर अगर जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व प्राप्त करने में वे सफल नहीं होते तो बिहार भी गुजरात के रास्ते ही जाता। अब वहां युवकों को पूरे समाज के साथ मिल कर स्वयंस्वयं परिवर्तन करने का अवसर मिला है।

बिहार भ्रान्दोलन का परिणाम चाहे जो हो उसकी सबसे बड़ी सफलता यही है कि युवा शक्ति को नया समाज बनाने की दिशा घोर लक्ष्य मिल गया है। पूरे देश के लिए यह स्वयं स्वयं है कि उसकी सबसे बड़ी शक्ति नये समाज की निर्माण में सही है।

हम इस दिशा को स्पष्ट करना चाहते थे। हमने प्रयास किया भी है शायद आपके कर्णों में। यह विशेषांक हीन प्रकी का कागज मिला कर बनाया है इसलिए प्रगल्भ साधारण प्रकृति यानी २६ अग्रस्त का भ्रक नहीं निकलेगा। प्रस्ता है इस प्रवृत्ति को आप आप हमारे साथ सहन करेंगे।

१६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

तरुणाई का सनातन रूप

अस्तू ने २३०० वर्ष पहले ही तरणो के विषय में इस तरह कहा था ,

जवानो की प्रवृत्ति मनमूषे वाधने और फिर उन यवां हूए मनमूषो को सत्कार करने की होती है। इसी से सम्प्रतिन मनमूषो में युवनी का युवक और युवक का युवनी के प्रति आकर्षण इन्हें बहुत जल्दी प्राणा भूलने पर साधारण कर देना है। इस इच्छा के जगने पर उन्हे याद ही नहीं रहता कि समय किस चिडिया का नाम है।

वे अपने दरारो को बड़ी आसानी से बचल भी देते हैं, वे जितनी जोर से किसी बात को तरफ बढ़ते हैं, उगे उतने ही बढके से वे पीठ भी दे देते हैं। इस का कारण यह है कि उनकी इच्छाएं बीमार आदमी की भूत या प्यास की तरह एकाएक महसूस होने वाली चीजें हैं, उनमें तीव्रता होती है, स्वयं नहीं। वे शोधशील और जल्दी ही आशय में आ जाने वाले होने हैं और भावनाएं उन्हे आसानी से बहाकर ले जाती हैं। वे अपनी उर्तना के बन्धनो से ही प्राणे बढ़ते या गीधे टट्टे हैं। उनकी महत्वाकांक्षा ऐसी जबरदस्त होती है कि उस पर आच घाने का स्थान भी उन्हे उमलत कर देता है और वे आच पहुंचाने के लिए तत्पर शक्तियों के प्रति जार-भी सहनशील नहीं रह पाते। वे मान-सम्मान और गौरव से इच्छुक तो होते ही हैं, किन्तु इनसे भी अधिक प्यार उन्हे जीवन से है। क्योंकि तरणो की इच्छा का उद्देश्य मुरावने की शक्ति से बचाना है। जीवन हमी प्रकार के बलपन या ऊार उटने का एक प्रकार की है। वने के प्रति गौरव और विजय

का उन्हे मोह नहीं होता और हो सकता है कि इसका कारण यह हो कि उन्हे अपनी तरुणाई तक मन के प्रभाव का ठीक अनुभव नहीं होता। इसलिए वे उदार होते हैं, सबीएँ नहीं होते। वे भोले भी होते हैं, क्योंकि तब तक धूर्तों से उन्हे काम नहीं पडता है। इसलिए वे आसानी से विश्वास कर लेते हैं। वे वैवल प्राणवादी ही नहीं अति-प्राणावादी तक होने हैं। क्योंकि प्रवृत्ति उन्हे अपने हामो से मानो शरारत पिसा देती है। इस प्रतिप्राणावाद की भोक में वे प्रसफलतामो को भी कुछ नहीं गिनते। इस तरह वे जीवन के दिन घास में आशा भरकर बिताते हैं। आशा भविष्य का रूप है और भूतकाल की स्मृति। तरुण व्यक्ति के सामने जो भविष्य होता है वह शल्पकालीन नहीं होता। दीर्घ काल तक उसकी आशा टिकी रह सकती है और भूतकाल की स्मृति तो दायिक है ही। हम जिस दिन पंदा होते हैं, उस दिन का हमें क्या याद रहता है। इस लिए जीवन तो आशा और भविष्य में ही है। सहज आशाशील होने के कारण उन्हे बार-बार धोखा भी खाना पडता है। क्योंकि उनके प्राणों में उसाह ही आजार रहता है, वे निर्भय होते हैं, बीर होते हैं, उनमें आत्म-विश्वास की प्रेरणा आसानी से जगाई जा सकती है और वे बल्वाणकारी बामो के प्रति उम्मुक्त विजे जा सकते हैं। उनके मन में एक भिन्नक भी होती है। परम्परागत पद्धतियों को गौद में पडे, बडे होने के कारण वे एवा-एक नौई नाम हाथ में उठाने हुए हिचकते हैं। यद्यपि उनकी महत्वाकांक्षाएं बड़ी होती हैं, किन्तु वे यह नहीं जानने कि उनकी धोर वे कैसे बड़ें। अस्मर-धावित से गौरवपूर्ण बार्प उन्हे अति-आवृत्त कर रहे हैं। वे हित्वा-चित्रक नहीं करते, सहज स्वभाव उनके जीवन

वादिता का हामी है और हृदय के गुण महत्वाकांक्षा के सम्मान के, गौरव के।

तरुणाई एक ऐसी उम्र है जिसमें व्यक्ति अपने साथियों, तर्क-विधो और मित्रों के प्रति धपने कर्तव्य का तीव्रता से अनुभव करता है। जवान प्रादमी जो गलती करता है, फिर वह चाहे प्रेम के क्षेत्र में हो, चाहे घृणा के क्षेत्र में प्रतिशयता की और झुकी रहती है। वे अपने को लगभग सर्वज्ञ समझते हैं और इसलिए उन्हे अपनी बातों का जबरदस्त धारण होता है। यही यह कारण है जो उन्हे किसी भी क्षण में आसानी से शक्ति की धोर ले जाता है। वे जो अपराध करते हैं उनमें सबीएँता नहीं होती, प्राणह हो सकता है। उनका हृदय प्रेम, वरणा और ममता से भरा हुआ टाता है, वे मानते हैं कि सब लोग भले हैं, कम से कम ऊपर से जितने नुरे दिलते हैं, उतने बुरे नहीं हैं। वे अपने निरछल स्वभाव से अपने आसपास को निरछल मानते हैं। यदि उनके गिर पर शमाय्य टूटता है तो वे निरपच हीं अपने को उसका पात्र नहीं समझते। मरत से तरुण के बारे में यह याद रखना चाहिए कि उसे हसी-युवो पसन्द है और इसीलिए कमी-कमी मजाक उठाना भी उन्हे श्रच्छा लगता है। मजाक उठाना आखिरकार एक प्रतुणातिव प्राणह है।

अस्तू में जवानो के बारे में ऊपर जो कुछ कहा है वह लगभग परिपूर्ण विवरण है। अस्तू द्वारा जवान के शीवें गये इस चित्र में कुछ जोटना या घटाना बर्तन है। आज वे मानवशास्त्री ऊपर के विवरण में निगाये गए गुणों या धरगुणों को किसी भी स्वभाव समुपन (एगवोपेलैस), भावनात्मक परिवर्तनशीलता (इमोजनल सोपैलिटी), अधिक आन-अम (आइडेंटिटी कन्फुजन) प्रादि शब्दो द्वारा बखित करते हैं। किन्तु कुल मिलाकर परंपरों में तरणो के स्वभाव का उरोपन किया है वह यथार्थ में प्राद की परिभाषा से भिन्न नहीं है। भिन्नता अमर है तो शब्द एरो को ही है।

तरुणाई मनुष्य जीवनचक्र की एक अस्पष्ट ध्रुविक है। इस अत्रिधि के शरीर की बदना है, मन भी बदलता है। किशोरों में तरुण होने तक यदि टीक मार्गदर्शक मिल जाये तो तरुण दुनिया को कथ्याए की दिशा में बढ़ते की बडी से बड़ी शक्ति बन जाता है। इतिहास में किसी भी काल में अर-अर तरुणां को टीक मार्गदर्शन मिले है, समाज में बहुमुनी विज्ञान किया है। तरणो के धरगुण की अमर बादीकी में देने तो गुण ही हैं और यदि इन्हें उच्च उद्देश्यों के लक्ष्यमो में प्रवाहित किया जाये तो वे बडे से बडे बजर की भी हृष-

युवाओं के एक-एक कदम से सपनों का भारत वास्तविक बन सकेगा

जयप्रकाश नारायण

(२३ जून '७४ को इलाहाबाद की भ्राम तथा मे दिव्य गव्य भाषण से)

मेरा राजनीतिक जीवन इलाहाबाद से ही शुरू हुआ। सो तो सन् २१ में जबचरी में पटना कनिष्ठ में अमृतयोग किया तो उसे राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ कहा जा सकता है, परन्तु अमृतयोग का आरोपन गिरावट पर था और छेड़ बपें खुलवाप बैठे रहने के बाद मैं पढ़ने के लिए अमेरिका गया, सन् २६ में मैं लोहा, ७ वर्ष के बाद और सन् ३० में फिर से राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया। यहाँ पर पठित अकादमी में नेहरू कार्य में अग्रणी थे। उनकी अध्यक्षता में पठित भारतीय दक्षिण समिति के अग्र-दूर विभाग का मैं भार सम्भाला था। इस प्रकार से मेरा जीवन यहाँ शुरू हुआ था।

(इसी दौरान मैं नमक सत्याग्रह के दौरान) एन चूल्हा बना था, उस पर बडापी रखी थी। नमक का पानी कडापी में रखा था। लकड़िया उसके नीचे थी। पण्डित मोतीलालजी आपें एक लकड़ी तुलसी हुई बाहर रखी थी वह चूल्हे के अन्दर डाल दी जल्दी से। (इस तरह) नमक कानून तोटा गया। इलाहाबाद शहर में वह एक सकेन था कि छाजारी की लडाईं दिलगयी। उस लडाईं में इलाहाबाद के लोगो ने कितना पाई घटा किया वह आप जानते हैं। बगला भाभी, हमारी स्व० पत्नी प्रभावती बड़े पडि-तजी की डाट फटकार के बाद बड पीछे के दरवाजे से निकल करके कपडे की डूंगल पर, मारा की डूंगल पर निरैडिग करते उस गर्मी में चली जाती थी।

मैं बहुत चाहता था कि इन तीन दिनों में पहा के कुछ पुराने स्थान देल घाघें, जिनके हमारे जवानी के बपें से अनुभव जुडे हुए में। लेकिन समय ही नहीं मिला। भाव से भर गया है हृदय यह सब कहते हुए।

बहरहाल आज मैं घाघने पामने कोई बर्षकम देने नहीं क्षायतू हूँ। यह मेरा कोई अधिका रहती है। मैंने उत्तरप्रदेश का ही विधानी हूँ सब तो।

लेकिन मेरा कोई अधिका नहीं है कि उत्तरप्रदेश की जनता को, छात्रों को मैं कोई कार्यक्रम देकर पर जाऊँ। जो भी उत्तरप्रदेश में होगा वह उत्तरप्रदेश के छात्र, जनता और यहाँ के युवा करेंगे। उनको करना है। मुझसे परामर्श करें, मुझे जो डीक लगेगा मैं उनको उचित परामर्श दूंगा। यह उनकी जिम्मेदारी है। मैं नहीं समझता हूँ कि आज वह स्थिति छात्री है उत्तरप्रदेश में जो बिहार में ५ जून को या १० मार्च को था नहीं थी। इसलिए एक बहुत बड़ा महत्व का काम करना है सारे देश में, मैं यह नहीं कहता हूँ कि जो बिहार में हो रहा है वह बिहार तक ही सीमित रहना चाहिए। वह कोई बिहार की समस्याएँ हैं? उत्तरप्रदेश को वे समस्याएँ उठी हैं? या और प्रदेशों की नहीं हैं? देशज्यापी समस्याएँ हैं और सारे देश में उनके लिए कुछ न कुछ होना चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह] जो आरोपलन बिहार में चल रहा है उसको बिहार तक ही सीमित रखना है। यह तो देशव्यापी होना ही है। लेकिन हर प्रदेश की अपनी अपनी परिस्थिति है।

एन वान में घाघने और निवेश बर देना चाहता हूँ। कि आप इलाहाबाद के निवासी हैं और इन्दिराजी इलाहाबाद की हैं, बहुपुत्राजी इलाहाबाद के हैं, ही तो भूत में पडाओ के, लेकिन है इलाहाबाद के के। मेरा भी सब जो इलाहाबाद से रहा है वह मैंने आपके सामने रखा है। इसलिए एक बात मैं कहना चाहता हूँ। बहुत से लोगो को और साथ करके कार्यक्रमों को ऐसा लगता है कि जयप्रकाश नारायण ने जो यह आरोपलन बिहार में देखा है वह इन्दिराजी के साथ उनको कोई लडाईं है उसका एक वह रहा है। इन्दिराजी के साथ जयप्रकाश नारायण का कोई मुकाबला है। तो मैं आपको पूरी ईमान-दारी और मर्यादाईं मैं कहना चाहता हूँ कि हमारा उनके साथ किसी प्रकार का भगडा नहीं है। मन्नेद उरने साथ अनेक हैं और रहते। अगर वे दूर ही जाय तो मुझे बड़ी



प्रसन्नता होगी। लेकिन मन्नेद हैं और उनमें से बहुत से विद्यार्थी पर मन्नेद हैं। भारती जगह पर यह है। लेकिन यह आरोपलन जो चल रहा है वह कोई हमारा उनका व्यक्तिगत भगडा है जिस कारण से चल रहा है ऐसी बात नहीं है। वे जवाहरम्मानजी की लडाईं हैं मन्नेदजी की लडाईं हैं। प्रभावती ने और हमने उनको उनी रूप में स्मृति से देना। उनका भी स्मृति मिला है ही हमारा उरने साथ कोई सबब

किसी भी विचारधारा के अनुयायी यह दावा नहीं कर सकते कि उनके ही निर्णय हमेशा सही होते हैं। हम सबसे गलतियाँ हो सकती हैं और हमें अक्सर ही अपने निर्णय वाद में बदलने पड़ते हैं। हमारे इस विशाल देश में सब ईमानदार विचारधाराओं के लिये गुंजाइश होनी चाहिये। और इसलिये अपने प्रति और दूसरों के प्रति हमारा कम से कम यह कर्तव्य तो है ही कि हम अपने विरोधी का दृष्टिकोण समझने की कोशिश करें; और यदि हम उसे स्वीकार न कर सकते हों तो उसका इतना आदर अवश्य करें जितना हम चाहेंगे कि वह हमारे दृष्टिकोण का करे। यह चीज स्वस्थ सार्वजनिक जीवन का और इसलिये स्वराज्य की योग्यता का एक अनिवार्य प्रमाण है।

—महात्मा गांधी

राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग
मिल्स लि० के सौजन्य से

नहीं है। और इलाहाबाद नगर के निवासियों को ग्रैन और स्नेह अरु भागी बेटी के लिए होना चाहिये क्योंकि इन्दिराजी यहीं की बेटी हैं। इलाहाबाद की, सारे देश की बड़े बड़े लोग हैं। देश की नेता हैं। लेकिन धाराओं खाणगीर पर समझ लेना चाहिए कि अथवायस नारायण का कोई व्यक्तिगत भगडा नहीं है। उनकी नीतियों से भगडा है, उनकी कृपियों से भगडा है। उनकी हकूमत का जो डग है, जिस तरह वे चल रहे हैं उससे भगडा है, और वह भगडा रहेगा। जब तक कि वह देश में जनता को धाजना है, जनता को अधिकार है, नागरिकों को अधिकार है अपनी बात जनता के सामने रखने का

अब इस आंदोलन का क्या महत्व है यह सधोप में आपको समझाऊं। यह कहा जाता है, दीक्षितजी ने भी वहां जाकर कहा, इंदिरा जी ने भी कहा, कांग्रेस के नेताओं ने धारा-वार कहा कि यह जो भारतीय रिहायश में चले रहा है और उसके रूप का आंदोलन और जगह चले, जो मुजराय में चले चुका था, ऐसे सारे आंदोलन लोकतन्त्र के विरुद्ध हैं। इस बात को मैं नहीं बहूत करता हूँ। यह धाराओं समझना चाहना है। यह गलत बात है। यह चिन्तन गलत है। यह राज्य के ऊपर पदां शासन है। अब आज जनता मुसीबत में है, तकलीफ में है, धन्याय की सहज कर रही है, भ्रष्टाचार का शिकार बनी हुई है। ग्राम नागरिकों का कोई काम ही नहीं हो सकता है सरकारी दफ्तर में, बैंक में जहाँ राष्ट्रीयकरण हुआ, वगैरह पैसा खर्च किये हुए जिना रिक्वेन दिये हुए। भ्रष्टाचार का यह हाल है कि कोई नैतिक प्रश्न नहीं रहा है वह। घरबो हरया जो गरीब की भलाई के लिए पंचवर्षीय योजनाओं में था उनके बादर भी उनके हित में खर्च करने का था, उनमें से न जाने कितना खर्चा दूसरों की जेबों में जाता गया। गरीब तक पहुँचा नहीं। यह सारा गरीबों तक पहुँचा होगा तो आज देश की गरीबी मिट तो नहीं गयी होगी, लेकिन बड़ा धन्यर हुआ होगा। इसलिए भ्रष्टाचार कोई नैतिक प्रश्न नहीं है देश की जनता का, धारा करके गरीबों की रोटी का स्वात उसके साम जुटा हुआ है।

अब यह जनता दुख सह रही है। चुनाव होने वाला है बिहार में सन् ७७ में। आपके यहाँ चुनाव होने वाला है ७६ में। विधान सभा का चुनाव होगा। मैं नहीं जानता कि आपके विधान सभोप है शासन से यह आप जानें। लेकिन मान लीजिये कि धाराओं जो आज का शासन है, प्रशासन है, उससे आपको संनोप नहीं है, तो पांच वर्ष चुनाव आपके बँठना है? यही लोकतन्त्र का तकाजा है? दुनिया के कई संविधानों में, जनता को प्रतिकार रहता है कि जिन लोगों ने चुनाव देखा है, उनसे धनसुध हो जाय तो उनको वापस जुला ले। अब हमारे संविधान में यह अधिकार नहीं है जनता को इसलिए यह असंबंधितिक है? यह लोकतन्त्र के खिलाफ है? जनता दुखी है और पांच वर्ष तक चुनाव घुमे की तरह, धनहाय की तरह तकलीफ सहती रहे? धारा भी नहीं करे? घुं भी नहीं करे? उसके सामने क्या दूसरा रास्ता नहीं है? रास्ता प्रवाय है।

लेकिन जिस प्रकार से चुनाव आज हो रहे हैं, जिनका चुनाव पर रणयो का असर है, जिनका बल प्रयोग होता है गरीब लोगों को वोट नहीं देने देने हैं, रोक लेते हैं गावों में लोगों को, जिनका विध्याचार होता है, बोगस वोट चलाता है। यह सब रहते हुए पांच साल बाद भी क्या होगा? एक दिन में सारा चुनाव हो गया बिहार में। तीन दिन में उत्तरप्रदेश में सारा चुनाव हो गया। अब जो प्रिमाइडिज आगिर है, नीलिय आगिर है वे किस हैसियत के लोग हैं? वडा के जो नेता हैं उनके भुवाबले में वो पदां हो सकता है? उसकी हिममत होनी है? उसे उरा दिया जाना है, घमका दिया जाना है, सगडी के जोर से। तुम कैसे सहा रहोगे। भागिस में हम देख लेंगे तुमको हमारी बात मानना है। यण्ड बना करके उसी के हाथों से ठपका लगाया के मन्पत्र डात दिये जाते हैं। कई जगह तो रिक्वेन दी जाती है उन लोगों को, धयें एक तरफ तो इस प्रकार का स्वरूप होगा आता है चुनाव का, उनमें वे जनता को चाहती है वहाँ तो नहीं होता है। कुछ बड़ा कुछ हो जाना है। उत्तर प्रदेश में ही चुनाव में कांग्रेस का प्रान् बन। जो लोग वोट नहीं देने पयें उनको

तो बात छोड़ दीजिए। कुछ ५० फीसदी से कम लोग वोट देने नहीं पयें। लेकिन जो वोट देने पयें उनमें से लगभग ३२ फीसदी लोगों ने कांग्रेस को वोट दिया और ६८ फीसदी लोगों ने कांग्रेस से विरुद्ध वोट दिया। ३२ फीसदी वोट पाकर उनकी हकूमत बन गयी। ६८ फीसदी के वोट पायव है। बेकार, जाया हो पये। जाता तो बड़ेभी, मन्दाता तो कहेगा कि क्या है ये चुनाव? ये विपक्षी पलो का रोप होगा। चुनाव पर पडति का रोप होगा। जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, यही होगा। हमारे राय ली जाती है तो १०० में से ६८ फीसदी की राय तो खराब थी। उसका कोई परिणाम निबलता नहीं तो लोकतन्त्र जिस प्रकार का अपने देग में चल रहा उससे भी हम घ्राणा नहीं कर सकते हैं कि यह स्वस्थ रीति से काम करेगा। जनता का प्रतिनिधित्व हो सकेगा और ये ये ही सम्भव है कि जनता जब तक फिर ग्राम चुनाव हो दुख सहती रहे, बण्ड सहती रहे, रोती रहे कि अब चुनाव होगा तो हम शासन बदलेंगे। फिर वही शासन प्रा पया। वही सब वार्ड ही गयी।

लोकतन्त्र की यह निपलता हो रही है। अगर लोकतन्त्र को नायम रखना है, उसको मजबूत रखना है तो लोकतन्त्र के आधार लोक हैं, जनता है। जनता अगर चाहती है आज तो एक एक चुनाव क्षेत्र के जो मतदाता हैं, सभयें करने को कहें कि जो प्राण हमारे प्रतिनिधि पदां वे गये हैं उन पर हमारा विश्वास नहीं रह गया तो वापस आदये। हम दूसरे को भेजेंगे। ये लोकतन्त्र नहीं हुआ। लोकतन्त्र के विरुद्ध हुआ है। जिसकी चाहती नहीं है जनता वह वहा बुर्गो पर बँठा रहे, वो लोकतन्त्र है? तब ही तब है, लोक का नहीं पता ही नहीं लगना है। तब तो बहुत है। समना जाव है शासन का कि उसमें से सम्भ में ही नहीं पता कैसे निबलता जाए। गाधीजी ने कहा कि वो शासन सबसे अच्छा शासन है, जो कम से कम शासन करता है। अब तो शासन काहें समाजवाद के मास पर हो या किसी भी शासन के नाम पर, ऐसा शासन बनता जाता है जिसमें सब कुछ शासन ही करे। कम की शायद शादी ब्याह भी सडने-मडकिये में शासन की और से तय

होगे, ऐसी परिस्थिति घ्रा जायेगी कि हमारे परंपरे मामलों में भी शासन हस्तक्षेप करेगा।
 एक दिशा हमारी गलत होती जा रही है, इस दिशा को बदलना है। स्वस्थ रीति से, शांतिमय तरीके से जनता की शक्ति से, हस्तक्षेपकारी धोर गुंडेबाजी से नहीं। जनता के मन का प्रदर्शन करके जनता की शक्ति का प्रदर्शन करके समझन रूप से। लेकिन उस शक्ति का प्रदर्शन तभी सम्भव होगा जब वह रहेगा शांतिमय। अगर ये नहीं होगा तो मुझे स्पष्ट दोष रहा है धायको दिखे यान दिखे कि आज की जो स्थिति है उसने से तानाशाही का निर्माण होगा। कोई रास्ता मिलता नहीं है, जनता को, भसंतोष प्रकट नहीं होता है, कोई विधायक रास्ता हम लोग नहीं देते हैं, भंगल नहीं देते—जैसा गांधीजी ने स्वराज्य की विपत्ता को, स्वराज्य की भूषण को, ध्यास यो एक विधायक दिशा थी धोर ऐसी दिशा थी कि करोड़ों लोग उस दिशा में चल पड़े, अगर धाय यह नहीं किया जाता है तो क्या होगा? कहीं रेल की पटरी उखाड़ी जायेगी, कहीं रेलवेके स्टेशन में धाय लगा दी जायेगी। कहीं घाते पर, घाते पर तो शांति मुद्रित नहीं, पुनिस चौकिया पर लोग हमला करेगे। कहीं स्कूल में धाय लगा देंगे, कहीं बालेज में हो जाये, कहीं ब्याक के धायिस में धाय लग जाये। जनता का भसंतोष है यह प्रकट होगा, दिसा होगा। क्रांतिकारी दिसा नहीं, धायकता भंगेगी उससे।

मैंने कहा है धोर फिर दोहराता हूँ कि देश की सभी क्रांतिकारी पाठियो से मेरा सम्बन्ध है, केवल सम्बन्ध ही नहीं है मित्रता है। सम्बन्धियो से, सम्बन्धवादी कम्युनिस्टो से है। ये जो दक्षिणपंथी हैं उनसे कम है। क्यों है सम्बन्ध जाने। मगर वो मुझे बराबर गालियाँ देने रहते हैं। कांग्रेस में भी धनेक मित्र हैं। विपक्षियों में भी धनेक मित्र हैं। मे कोई ऐसी समझित शक्ति देखता नहीं हूँ देग मे जो दिसा की शक्तिनो का संघर्ष करके दिसाक शक्ति-रक्त शक्ति को सफल बना सके। उससे अराज्यता फंसेगी धोर फिर कोई भी धायक हो दिसाक हो धोर कोई हो, सेना हो सकती है, वो कहेगी धय तो देग विगत रहा है। मिट जायेगा देश में धाय नगी हुई है, तानाशाही के सिवा यशना नहीं है। देग

के मुद्रिजीवी लोग वह रहे हैं लोकतंत्र से कुछ होने जाने वाला नहीं है। तानाशाही चाटिए, डिक्टेटोरशिप चाटिए, तो इसमें से तानाशाही निकलेगी।

इसलिए मेरा दावा है कि मैंने धोर मेरे साथियो ने, युवक साथियो ने, ध्यान साथियो ने जनता में धाय फंसे हुए धोर जनतोष को एक हमने रास्ता दिया है। ऐसा रास्ता दिया है जिससे समाज का परिवर्तन होगा। पटना की सभा में मैंने कहा कि ये मंत्रिसदलके इत्तोकके के लिए धोर विधानसभा के विघटन के लिए रूपयं नहीं है—यह तो पूर्ण क्रांति के लिए रूपयं है। सम्पूर्ण क्रांति सारे जीवन की क्रांति है। उस तरफ हमें बदन बढ़ाना है।

धोर धाय संघडो की तादाद में नहीं हजानो की तादाद में कम से कम एक वर्ष के लिए पडाई छोड़ कर सघर्ष के लिए धनना जीवन समर्पित नहीं करे तो कुछ नहीं होगा, हजारों की तादाद में क्रांतिकारी विधायी जो क्रांति के सारे सघर्षों में नति का सपना देखते हैं और सच्चे भाव से करने हैं वे बालेज होइ बालेज एक वर्ष के लिए धायें—गांधीजी ने तो एक वर्ष में स्वराज्य कटा था, मैं तो उनसे बरगो की धूल के बजार हूँ, मैं क्या बहूँ—लेकिन धोर युवकों की ऐसी शक्ति मिल जाए, तो एक वर्ष में सारे समाज का रूप बदल जाएगा।

धय मे लडाई के संदान में धाय गया हूँ धाय धपने देग मे यह नहीं घाति हो रही है, लोकनायक शक्ति, जनशक्ति, शांतिमय क्रांति नये समाज के निर्माण के लिए। ध्रष्टाचार उन्मूलन, महागाई पर रोक, शिधा में धायूल परिवर्तन, बेरोजगारी, के दल सवाल का कोई एक दिन में हल नहीं होने वाला है। युवकों, धायो, जनता के धोर भी धन हो स्थानीय, ये सब शामिल होंगे। इनके लिए देश भर में देशव्यापी क्रांति होने वाली है, एक वर्ष में हो, दो वर्ष में हो, वह पक रही है। उसके लिए युजगत पहला धोर बिहार दूम्स है। गुजरात में एक माने में विघ्नता हुई लेकिन उस बात को बाद-बाद दोहराने को जरूरत नहीं है। इस माने में बहुत बड़ी सफलता भी हुई है कि युवकों, धायों में धपनी शक्ति से, जनता के समर्थन में और बहा की मजबूत शक्तिके, रविचकर महाराज जैसे पूज्य नेताओं

के समर्थन से जो उन्होंने विजय प्राप्त की वह कोई छोटी बात नहीं है, विफलता इस माने में हुई कि इतनी बड़ी जीत के बाद धायो का काम नहीं हुआ। लेकिन मुझे विदयना है कि वह धायो का काम होनेवाला है।

गांधीजी स्वराज्य की लडाई की तैयारी कर रहे थे; उनके धयदर तो धयीय एक मिलन था शक्तिमो वा। ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है लेकिन बापू के धयदर भी इतनी शक्तिया मिली हुई थी कि वे ईश्वरीय अवतारी पुरुष मे ऐसा मानना पडेगा। उन्होंने ऐसा नहीं कहा था कि एकाएक सारे देश में धायोलन, गुरु हो जाय। वह उन्होंने करके देल लिखा था १९२०-२१ में। एक वर्ष में स्वराज्य का नारा दिया था, उससे सबक लिया उन्होंने कि यह गलत हो गया। धायो जो देशव्यापी लडाई सड़ने घाते थे वे तिविनाकारमानी भी, सत्याग्रह की, उसके लिए जहा-जहा तैयारिया हुई। चपराय में उन्होंने स्वयं जाकर सत्याग्रह किया। बार-डोली में किया सत्याग्र मल्लभाई पटेल ने, वही उनको बराबर की पदवी मिली। इस प्रकार से धय ने बड़ स्थानो में प्रादेगिक या स्थानीय रूपयं हुए विगत जनता को शक्ति की शक्ति का परिचय दूधा। एक विघ्नता मिला। एक तरफ तो ये वम फंसेने घाते लोग थे जिनकी गम्या घांटी थी, बहादुर लोग थे, फांसी पर सटक गये, बालापानी उनको भेज दिया गया, लेकिन क्रांति नहीं हुई दूमरी तरफ ये लोग हैं जो निकं प्रस्ताव धाय करते हैं, गरम-गरम बात जरूर करते हैं। गरम दल धोर गरम दल का भेद मैं धायने सामने नहीं रन रहा हूँ। लोकन्याय तिलकने भी ऐसा कोई शक्तिमय कार्यक्रम जनता के सामने नहीं रन। जिसमें देश में क्रांति पैदा हो जाय।

गांधीजी इस बात को देल रहे थे, एक नया हीमधार उन्होंने इदाद किया था, जिसको उन्होंने धयमोष बनाया था। धयमोष हमारे पाग हथियार है यह धयिगा का धयट्योय था, धयिगक प्रतिधायर का, जिनका कोई उधर नहीं है, कोई भी जवाब दयका नहीं दे गणना ऐसा उनका दावा था। उनकी तैयारी भी इभां प्रकार से हुई। चपारण धाय, बारडोली की धायि दूधा, भडा मयाग्रह नागपुर धायि का दूधा धोर धीर-धीर दूधा नये नये में। धाय-मराय की योग्य मे नया हीमो धि धि धुद

क्या कह रहा है ? बुद्ध लोगों को राय भी बिचले हैं वे माघरामणी ध्यामन मे तो इनको बड़ो नहीं गिरनारकर लिया जाता । बुद्ध लोगों ने कहा कि बेकार बात है । उनको हीरो कबो बनाया जाय । यह समक कानून तोड़ने से बड़ा होने वाला है । लेकिन देव ने मानस को उन्हीने तैयार कर दिया था । गारा देव इनकार कर रहा था इनके इगारे का धोर दाड़ी मे पड़ु बकर जब उन्हीने नमक उठाया तो वम मीने धागको पुष्टकोस नाम उठान परां की बचती था किन्तु चिया, उमकी तन्वीर धात्र भी हमारी प्राणी मे मानस है धोर देव भर मे बड़ नमक सत्यायुद्ध फिर धाग की तरह कौन गया । धोर ध धोख को मजदूर होकर उनके साथ समनोश करना पडा स्वराज्य नहीं मित्त लेकिन इरतिन गाथी पंकेट दूआ । एक बरदम धागे बडे गाथीबी ।

श्रीज बिहार मे प्रादीनव को मैं उभी रूप मे देखा हू कि देगध्यायी प्रादोलन को वह उँवारी है । उमकी क्रिमेतारी हम पर है, बिहार के छात्रों पर है, युवकों पर है, जनता पर है । यह भारो ह्राप पर नहीं मारना हू । लेकिन मैं धागको क्हापुनूति जम्ब बाइता हू उनको धाप समर्थे । मुझे बडा दुस है कि जिनके हाथों मे सत्ता है वे हर चीज को ऐसा ही समजते है कि उनके बिबद्ध हो रहा है । ऐसा लगता है कि इनका मिहासन इनता शोन रहा है, इनता कमजोर है कि बूझ कुछ होता है तो लगना है कि बस धरने को बचाला चाहिए और बचाने के लिए क्या उपाय रहना है इनके पास ? धर पटना धाप चले जायें सभा मिनियो के निवाम, सेक्रेटैरियेट बिधानसभा भवन धादि हैं वहा धाप देवोंने कि सारा किलावदी करदे रगा है, सक्नी के मोठे-मोठे क्लेन धारो तरफ ले भेदे हुए हैं । धपर धाप किसी बिधापक से मिलने के लिए लो बगर परमिट के जा नहीं सकते । धर परदानमीन होकर के ये बँठ गये हैं । जनता के प्रतिनिधि है धोर जनता से इनकी दूर धाप होकर किलावदी करने बहा परदे मे बँठे हैं । पहले जब कभी बिहार मे शासिया होती थी तो जैसे मिला जाता था कि चन्ताने बाधुसायब की भावी मे पाच हाथी धाये, दस हाथी धाये । हमारे बिहार मे शादी की धाल को हाथियो

की संख्या से मित्त जाना था । फिर इधर मज्राह चलना था कि उमकी शादी मे कितने मत्री धाये थे, जिनके ज्यादा मत्री उनना ज्यादा मज्जु उग शादी का दूआ धर मे मज्जोगा गादियो मे भी जान मे बरते है ।

धर वे निर्भर करने हैं बहूधारी उनकी पुनित पर । पुनित चाडे कू धाँरे मेघपोरिटी को हो, चाडे की मी. या सेंटन रिजबे पुनित हो धन-तोगला सेवा का कभी भी अगतरिब मामलो मे इलेमाल नहीं करना चाहिए । यह खतरनाक बात है धरघ्दी बात नहीं है देग क नागरिकों को इनके पिताप धात्र उठानी चाहिए, मेता को धराग बा-बा धानरिब मामलो मे इन्तेमाल चिया तो लोचनक के लिए भयानक खतरा है । बिगनी न किमी सेनामि के दिमाग मे यह बात भा जायगी कि धपर हम देग की रखा हम ही कर सक्ने है अनलोपगना हमारी लो धात्रयचना होनी है हम गिविन कषयंभट का तो हम आन हाथ मे कयों मदनंभट न ल लें ? यह नहीं होना चाहिए, यह खलत है ।

लेकिन क्या करें बहूने हैं जनता मे हम को पुनकर भेजा है धोर जयजकास नारायण ओर उनको बर भोग जयविरोधी हैं तोच विरोधी हैं, तो बाबा जनता मे पुनकर भेजा है तो जनता का समर्थन भीजिए ! किन्तु पुनित का कयो समर्थन लेने ? सगीन ओर बहूकों के भेदे मे धागने धरने धागको कयो रगा है ? धोर जन आदीनव को दबाया च रहे हैं धाग बस पटी एक जन्म की ताकत है, इसी से धाग दबाते हैं ? धाग धाधवे भँदा म, धाग, धाग सभायें हो, हमारी सभायें हो हमारे धागो की सभायें हो, धागवे धात्र हो जायें, बहल करें, बिचारों का समर्थ होना है तो पध्दी धान है ।

श्रीज हम धागकी मदद चाहते हैं । धादोलन धर बेचन धात्र सपर्थ नहीं । युवा सपर्थ नहीं रहा, जस सपर्थ बन गया है गात्र-गात्र मे जहाँ हन गये नहीं, कोई धोर गया नहीं, जन सपर्थ समितिया धरने धाग बन गई हैं । धात्र सपर्थ समितिया बन गई हैं । हानाकि हमने कहा कि हाई स्कूल के बच्चो को छोडे दिया जाय, फिर भी उन्हीने भी धात्र सपर्थ समितिया बना ली है । पटना में, अहा में रहला हू, महिला चरखा समिति मे, हमारी पत्नी ने उसकी स्थापना

की, ११-१२ साल के दो लड़के धाये । बहूने लगे हम भी मज्जापठ करेंगे, हम भी जेल जायेंगे । हमने कहा बच्चो मुझारा धानी जेल जाने का नाम नहीं है । मुझारे बडे भाई गए हैं ? तो पना चना कि उनके बडे भाई गए हैं । उन परिहार से तीन जेल गये हैं । हमने कहा कि तुम लोग बातर लेना बनायो । स्वराज को मडाई मे जमाने मे धानर मेना ने बहून काम किया था । बच्चो मे उल्लाह ही देगा है कि छोटे-छोटे बच्चे धा रहे हैं ।

मैं तो दगमे बहुत धाग देगना हूँ धोर धाप सबका समर्थन मित्तया । हमें बहून सत्यायुधी नहीं चाहिए । लेकिन एक समय आ सक्ता है कि उतर प्रदेश से भी सरगिन होकर जो नारे हैं धात्रिणक के उन्ही नारो की समर्थन हुए (धात्र दहा धाये) । उसमे धाग धयोभनीय मारे लगायेंगे किमी को गाथी देग ता हम धागका ह्मप्राध स्वोकार नहीं करेंगे, लोटा देंगे । हमारे नारे हैं सम्पूर्ण प्राणियों के । सापूर्ण प्राण लो सबके सहल-पूर्ण धग होना वह सारैदुतिक प्राणि होगी, बड़ नैतिक प्राति होगी । हम धरना नैतिक उत्पान करना चाहते हैं । धरघ्दाधार के बिबद्ध हम सडाई लड़ना चाहते हैं तो ह्य धात्र बँठकर दूठ सलवियो के गाध देर-खानी करेंगे ? पटीया भवन मे बँठ कर हम मकन करेंगे ? धोर हम नहींने कि धरघ्दाधार के विनायक हम प्रादीनव लख रहे हैं ? धरना मुधार हमें करना चाहिए लव तो हमें धरिधार होना है धूमरो से बहने वे लिए । धोर हम मुद धरघ्द है, धरानी धाग का हम हिमाव नहीं रच रहे हैं, धरानी मुनिवन के भेदे हम रग गये हैं जो हिमाव मागता है उसको पिटया देत हैं । भेदे धागो को कोई धरिधार मिश हूमा है कि बहूगुण जो के विनायक प्रादीनव करें कि यहा बडा धरघ्दाधार पैना हुआ है ?

मिहाधो का हमें बडा खल मिला है । धात्र बिहार मे गारी शक्ति पैदा हो रही है । मैं धरिधर से धरिधर समर्थ देना चाहला हू बिहार को, कनोके उसको धारडोली समर्थ रहा हू । उसको सपनता पर धागे की सफलता निर्भर करती है । धगर विकन हो गया, बहू धपर दूठ गमा, उसको धपर दवा

दिया गया तो फिर जनता के लिए कोई धामा नहीं है। जनता के सामने कोई दूसरा रास्ता ही नहीं रहेगा मिया इगरे कि धरने शोध के कारण कोई पुश्तैतमशात पार्क में आधर के धामहूनि कर लेगा। और जिनी ने जारर धाने में धाग लगा दी, बितो ने धोर बृष्ट कर दिया । मी बार-बार दोह-राज्या नहीं, बह बुता पू उसमें से देग के निर्माण की विधायन गति नहीं बनने वाली है ।

उत्तर प्रदेश शासन का संकल्प

जनता की सेवा के लिए एक स्वच्छ, चुस्त और कुशल प्रशासन । प्रदेश का सामाजिक एवं आर्थिक विकास कर राज्य के साथ जुड़े 'पिछड़े' शब्द को हटाना ।

इस दिशा में शासन के कतिपय सुदृढ़ पग—

- 'भारत रक्षा' और अन्य कानूनों के अन्तर्गत ४४ जिलों में १४३४३ छापे मारे गये । पूरे प्रदेश में तस्करी की रोकथाम के लिए ६० चौकियों की स्थापना ।
- पुलिस विभाग, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी की सरकारी सेवाओं में हरिजनों एवं जन-जातियों के लिए ५० प्रतिशत स्थान आरक्षित ।
- हरिजनों के उत्पीड़न के मामलों में पुलिस तथा सिविल अधिकारियों से अब जवाब-तलब की व्यवस्था ।
- एक पूर्णकालिक डी० आई० जी० (हरिजन सुरक्षा) की नियुक्ति ।
- ५४ लाख से अधिक खेतिहर मजदूरों की दैनिक न्यूनतम मजदूरी में १.२० रुपये की वृद्धि ।
- चीनी मिलों के ६० हजार श्रमिकों के महंगाई भत्ते में प्रतिमाह ३२ रुपये तक की वृद्धि ।
- चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक राजकीय सिंचन साधनों की कुल क्षमता ६५ लाख हेक्टेयर पहुँच गयी ।
- वर्ष १९७४-७५ में लघु सिंचाई योजनाओं के अन्तर्गत १३०० राजकीय ५०,५०० निजी नलकूप और २७,६०० पम्पिंग सेट लगाने का प्रस्ताव ।
- सहकारी हथकरघा उद्योग के विकास के लिए पांचवी पंचवर्षीय योजना में ७.५० करोड़ रुपये का प्राविधान है । इससे सहकारी हथकरघा कपड़े का उत्पादन १८ करोड़ मीटर से बढ़कर २४ करोड़ मीटर हो जायगा ।
- प्रदेश में सूत की कमी को दूर करने हेतु ३० कताई मिलों के लगाने का प्रस्ताव जिसमें ८ मिलों का शिलान्यास हो चुका है ।
- ग्रामीण रोजगार की त्वरित योजना के अन्तर्गत विगत वित्तीय वर्ष में ४,४६६ किलोमीटर सड़क और ४,१०४ पुलियों का निर्माण ।

ये हैं हमारी जनप्रिय सरकार के कतिपय सक्रिय पग

। सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

विज्ञापन—३

सूराज की लडाई के बाद धाज सब से महत्व का कार्य हो रहा है। वृत्ति में उस कार्य में लगा हूँ, इसलिए नहीं कह रहा हूँ। हमका मारा श्रेय छात्रों को है। थोडा बहुत प्रादान के रूप में मुझे श्रेय दिया जाता है। काम तो उनका दिया हुआ है। यह सबसे महत्व का काम है और सपन होता है तो नया भारत बनता है। इसमें हमें कोई शक नहीं है। धाजारी की लडाई के हम सिपाहियों ने जो सतना देखा था वह २८ वर्ष के बाद नजर नहीं आ रहा है, वरु भारत लोकशासिक से पैदा होगा इसमें हमें कोई सन्देह नहीं।

□ उ० प्र० के ८ सर्वोदय कार्यकर्त्ता विहार पहुच गये हैं। कार्यकर्त्ता १६ जमाई की पटना पट्टने पर जे० पी० से मिले, धगले कामो की खर्चा कर विहार के विभिन्न भागो में काम के लिए फँस गये हैं। उ० प्र० सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष महावीर सिंह ने जे० पी० को धारवाहन दिया है कि उ० प्र० के कार्यकर्त्ता विहार पर भार नहीं बनेंगे। उ० प्र० सर्वोदय मंडल का केन्द्र कार्यालय फिनहाल कदम कुशा पटना में रहेगा।

सर्व सेवा संघ का केन्द्र कार्यालय पटना में खुला है। पता इस प्रकार है : सर्व सेवा संघ, ७० रोड नं० २ राजेन्द्र नगर, पटना—१६।

सर्व मंत्री ठाकुरदास बग का भी अब यही पता रहेगा। सर्व सेवा संघ का मुख्यालय गोपुरी में ही रहेगा।

करीब दो वर्ष पूर्व सर्वोदयी नेता जय प्रकाश नारायण ने 'इण्डियन एक्स्प्रेस' में एक लेख द्वारा भारतीय लोकशाही के भविष्य के बारे में अपनी व्यथा व्यक्त की थी। उसी के बाद विनोबा-जयप्रती के निमित्त मल्लिकार्जुन वर्मा ने छायांजित एक सभा में वे और मैं सम्माम्भ पर पाय-पास बैठे थे। तब उन्होंने उक्त लेख के संबंध में मेरी प्रतिक्रिया जाननी चाही। मैंने वहाँ धारण के लेख पर राजनीति का गहरा रस चढ़ा हुआ है। (इट इज द्युस ऑफ पोलिटिकल ओब्लेटोन्स) भारतीय राजनीति को गांधी की चप से फनी है, यह थापही चारहा मुझे मान्य है। पर क्या यह सबंध में धारणों अपनी जिम्मेवारी महसूस नहीं होती? क्या सामाजिक के उत्पत्ति का राजनीति की तरह साधारणही बरतने रहना ठीक है? क्या राजनीति और लोकनीति में कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं है? विनोबा तो धन मुझ हों गये हैं और उनका पिण्ड तो मुझ पर झपासम का है। इस अवस्था में उनसे हमारी कोई धोखा नहीं है। उनका धारणीय ही हमारे लिए पर्याप्त है। पर धारा राजनीति के बारे में निष्क्रिय नहीं रह सकते हैं। मैं यह नहीं कहना कि धारा युवा में छड़े हो गये हैं या समाजवादी दल का नेतृत्व करें। वह ठीक भी नहीं है पर जब जनता में तीव्र घनताप फैल जाए और लोकशाही प्रकट होने लगे, तब जनता का नेतृत्व कर उसका मांग दर्शन करने की जिम्मेवारी धारा उठाये, हमारी धोखा एसी क्या गनन मानी जायेगी? लोकशाही का भविष्य खतरे में है, वैभव प्राक्रोश व्यक्त करने से काम नहीं चलेगा।

प्रश्न हमारा क्या कर्तव्य है ?
 लगा, मेरी प्रतिक्रिया मुनकर जे० पी० का मन बरविण हुआ। मैं सोचता, व्यर्थ ही मैं इनका बतार बाल गया। अब जयप्रकाशजी द्वारा बिहार-भारोदन का नेतृत्व ग्रहण करने और उनके विनायक शासकीय दल द्वारा उठाये गये बबरद से मुझे दो साल पूर्व के उम प्रसंग की बार बार याद प्राती रहती है। जयप्रकाश जी ने अपनी जिम्मेवारी समहाल की है। तब फिर हमारा क्या कर्तव्य हो जाना है? हम अपनी जिम्मेवारी स्वीकार करने या नहीं? जयप्रकाश नारायण और

सेनानी निकल पड़ा है

शोधर महादेव जोशी

अब तक मन भर चर्चा और कण भर काम था रिश्ता था, आज पर्याप्त काम और कम से कम चर्चा का सूत्र अपना कर तहणों को अपना पुरुषार्थ प्रकट करना होगा।

प्राचार्य विनोबा भावे के भूदान प्रादेशन आंदोलन में मेरी आस्था है। देहालो में पद-पाता कर शानीय जनता को जागरूक करने का जो महानिष्पत्त किया जा रहा है कोई भी इनके महत्व को समझ नहीं कर सकता इसलिए जयप्रकाशजी के धारावाहक पर हड़सलर सेवा दल की रैली में मैं राष्ट्र सेवा दल की ओर से भूदान आंदोलन के लिए एक वर्ष देना का आवासन दिया था और उसे अधिकार्य पूर्व भी किया। उम धारावाहक के कारण ही नाना साहब गारे द्वारा प्रवर्तित गोवा-मुक्ति सत्याग्रह में मैं सक्रिय भाग नहीं ले सका। उस समय सेवादल के भूदान पत्रक के साथ मैं खानदेश में पूरा रहा था। एक सभा में किसी ध्येयवादी व्यक्ति ने बिलगाकर कहा 'जोशी जी, आपका स्थान इस समय गोवा के कारागृह में है। यहाँ खानदेश में नहीं।' परन्तु मैं लाचार था। मुझे सेवा दल की ओर से दिए गए वचन की पूर्ति करनी थी। सर्वोदय में क्यों ?

भूदान आंदोलन में निहित सूक्ष्म शक्तियों का मुझे अनुमान था ही गया था। आगे चलकर भारोदन व्यापक होता गया। भूदान का स्थान अन्धकार में विद्यमान था पर सर्वोदयी कार्यकर्ताओं की नितात श्रद्धा के बावजूद धारावाही आंदोलन जनता के मानस को नहीं पकड़ सका। भूदान आंदोलन की मुख्य प्रेरणा नैतिकता थी थी, शैक्षणिक थी और मुझे उसकी भावस्थवना महसूस हो रही थी। भारत में यदि सच्ची शक्ति होती है तो उसका प्राथम प्राणीय जनता के जीवन से ही होता चाहिए, यह मेरी भावना थी। जयप्रकाशजी को भी इस सम्बन्ध में पूरी श्रद्धा थी। रगुन

में हुई एशियाई समाजवादी परिषद में उन्होंने कहा था कि एशिया की समाजवादी शक्ति की नीव चारदानोंमें काम करने वाले श्रमिकों द्वारा नहीं, बल्कि सेतो में काम करने वाले खेतिएर मजदूरों व छोटे किसानों द्वारा डाली जायेगी। इसके लिए वे भूदान-भामदान धारा स्वयंभ्य धारोदन में सतत कार्यरत रहे। उन्होंने उसके लिए 'जोशनदान' दिया, इसके लिए उन्होंने अपने दल से दूर होना भी स्वीकार किया और वे प्राचार्य विनोबा के शिष्य बने क्योंकि उन्हें अपना शक्ति का स्थान साकार करना था।

यह तो कर्तव्य ही था

उस दिन चर्चा में एक भाषण में जय प्रकाशजी ने कहा कि प्राग्भदान-भाम राज्य की कल्पना जनता के मन में हट करने के लिए मैं गत परग्रह कीत वर्षों से सतत प्रयत्नशील हूँ। इसके लिए बिहार के मुजराही श्लाक में जाकर मैं बैठा था। यहाँ स्वनात्मक कार्य द्वारा गरीब-बीडिल जनता की सेवा की जा रही है, पर केवल इतने से काम नहीं चलेगा शासन की गलत नीति राजनैतिक क्षेत्रों की सत्ता-न्योपुत्पत्त, देश की कुल परिस्थिति धारि के कारण गरीब जनता का दुःख घटने की वजय बढता ही जा रहा है। अष्टाचार की परिधीमा हो गई है। सामाजिक जीवन में सबत सबाह है। गुजरात में कावेज के छात्रों के लिए सहजनीयता जब घसहय हो गयी तब उन्होंने शासन के विरुद्ध विद्रोह का ढाडा उठाया। उन्होंने मन्त्रिमण्डल को त्याग पत्र देने के लिए विवग किया और अन्ततः सत्ता दल को विधानसभा बरखास्त करने पर मजबूर किया। इसके परचात नया क्रम उठाने में वे सकल नहीं हुए परन्तु जो पराक्रम उन्होंने जनमत के ओर पर किया, कम कीमती नहीं है। गुजरात में बाद बिहार में विस्फोट हुआ। विचारियों ने अपनी बाह्य मार्गें वंश की जिनमें जाड उनकी अपनी देगन्दिन कठिनाइयों के सम्बन्ध में हैं और गेप चार व्यापक स्वरूप की हैं। अष्टाचार का निर्मूलन करो, बेकारी दूर करो, महंगाई एवं भावपूज पर नियन्त्रण करो और सिता पत्रि में धारमूल्य, परिष्कृत करो, सत्त प्रचार की उनकी मार्गें हैं। इसके लिए उन्होंने जब भारोदन भारत किया तब शासन की

शिक्षा के मोर्चे पर पंजाब के बढ़ते चरण

पंजाब ने विगत दो वर्षों के दौरान शिक्षा के
मोर्चे पर सराहनीय प्रगति की है

- ❖ ६ से ११ वर्ष की आयु वर्ग के ६३ प्रतिशत बच्चे प्राथमिक शालाओं में दाखिल किये गये हैं, जबकि राष्ट्रीय लक्ष्य ६० प्रतिशत है।
- ❖ विगत दो वर्षों में प्राथमिक स्तर पर ५ लाख से भी अधिक अतिरिक्त दाखिले हुए हैं।
- ❖ वर्ष १९७३ के दौरान एक हजार नयी प्राथमिक शालाएं खोली गयी हैं जिनमें प्रत्येक ग्राम से एक किलोमीटर की दूरी के भीतर एक शाला हो गई है।
- ❖ सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के लिए निवेशानय स्थापित करने का निर्णय किया है।
- ❖ राज्य में १९७४-७५ में शिक्षा के विस्तार के लिए ५० करोड़ ४३ लाख रुपये की राशि निर्धारित की गई है जबकि १९७३-७४ में निर्धारित राशि ४५ करोड़ ४६ लाख थी।
- ❖ शाला स्तर पर विज्ञान और खेलकूद के विषय अनिवार्य कर दिये गये हैं।
- ❖ पंजाब में शिक्षा की रोजगारोन्मुख प्रणाली लागू करने के लिए बुद्धिमत्तियों की एक समिति गठित की गयी है।

पांचवीं पंचवर्षीय योजना में पंजाब में शिक्षा का विस्तार
नयी ऊँचाइयों का स्पर्श करेगा।

धोर से उन पर धमामुणी घलाचार हुए। उस समय अवप्रकाशजी पटना में रहण शय्या पर पड़े थे। उन्होंने कैसे खन पडवी? युवकों के इस धादोलन का नेतृत्व लेना उनके लिये अन्याय ही गया। सर्वोदयी नेता के नाते भी उनका यह कर्तव्य ही था।

प्रच्छन्न धारोप

अवप्रकाशजी धव देहातो मे काम करने से ऊब गये हैं। धव वे धादोलनवादी बन गये हैं, सर्वोदयी की उदात्त भूमिका छोड़कर धव के पुन. राजनीति मे लूट पड़े हैं। इस प्रकार के प्रच्छन्न धारोप उन पर हथियार मारकी से लेकर छोटे-बड़े सभी कार्य में नेताओं की ओर से किये जाने लगे। परन्तु यहाँ के सर्वसेवा सघ सम्मेलन मे भी जब इस प्रकार का प्रतिपादन कुछ सर्वोदयी नेताओं द्वारा किया गया तब मुझे बड़ा क्रोध हुआ। उस समय मुझे परिश्रम के उंस, प्रसंग की याद गुन एक बार मनायास ही प्रा यदी।

कल्पना दृष्ट हुई

अवप्रकाशजी मे सर्वोदयी भूमिका को, लेकर ही धात्र-धादोलन का समर्थन किया है। उन्होंने विद्यापियो का नेतृत्व कुछ शर्तों के साथ ही मान्य किया है। इसके लिए वे विनोबाजी की सम्मति लेने हिन्नु रहे हैं। उन्होंने लोकनिन्दा की भी परवाह नहीं की। विनोबाजी के कुछ निकटवर्ती अनुयायियों को समझ कि उनको विनोबाजी से विचार-विनिमय करने के पत्रवात् ही यह जिम्मेवारी उठाा चाहिए थी। ऐसा न करने के कारण कुछ लोग उनसे नाराज हैं। अवप्रकाशजी मे विधानभा भग करने की माय का जो समर्थन किया है, वह विनोबा जी को पसन्द नहीं है, यह स्पष्ट है। फिर भी अवप्रकाश जी धानी प्रतिभा के धुगाार ही चले, ऐसा उन्हें लगता होगा, यह मेरी कल्पना थी। वहाँ के सर्वसेवा सघ के सम्मेलन मे उचित रहने के पत्रवात् मेरी यह धारण दृष्ट हुई है। त्रिनोबाजी अवप्रकाश म शकत हुए प्रकाश को मिटा कर बहा धात्रधार बनना नहीं चाहते थे बेधान्ती है, उन्हें अन्य धात्रा से नकरत है। फिलहाल 'अवप्रकाश विरुद्ध जय धवकार' का सम्मान हो रहा है। ऐसे मौके पर अवप्रकाश जी के हाथ कमजोर करने का पाप विनोबा कैसे करते? इसीलिये उन्होंने अपने

दंग से ममभोता करा दिया। उनकी यह धारणा है कि सर्वसेवा सघ मे विभिन्न मन्धेदो के सावजूद सबका हृदय एक है। मानवी धात्राई के बारे मे आस्तिक बुद्धि होने पर मन्धेदो के रहते हुए भी सर्वसेवा सघ को सशिय रहना चाहिए और वह सशिय रहेगा, विनोबा जी को मन ही मन ऐसा विश्वास है और इसीलिये उन्होंने बड़ी धुक्ति से उस समय के गवामरणों को दूर कर दिया। विनोबाजी मे विचार विनिमय किये विना विहार धादोलन का नेतृत्व स्वीकार कर लेने के कारण धोर सासकर विधानसभ भग करने की माय को बढावा देने के कारण सर्वसेवा सघ के जीवन मे यह अत्यन्त नाशुक प्रसंग उपास्थित हुआ था। ऐसे समय मेरे जैसे सघ बाह्य कार्यकर्ता को सर्वसेवा सघ के मयी की धोर से सम्मेलन का निमन्त्रण मिला। तब मुझे धात्रा ही तथा योकि इस बहुते मुझे परिचित के प्रत्यक्ष धवलोचन, विचार-विनिमय का धवसर धोर विनोबाजी से भेंट वर विविध साध मिल रहा था।

सर्वसेवा सघ के अधिवेशन मे उपस्थित रहने का मेरा यह प्रथम ही धवसर होने के कारण मुझे इसके धारे मे विधेय उल्लुका और जिज्ञासा थी। अधिवेशन के लिए उभरी राश्यों के प्रतिनिधि धोर लोकसेवक धाये हुए थे। दो-चार सुरोपिनन युवक धुचितया भी धाये हुई थी। सम्मेलन की विविधता धोर विविधता मेरी कल्पना से भी अधिक मनो-हारी थी। देखकर धारण किने हुए सन्धाली मुनि मे यहा मे धोर छोटे बच्चों के साथ गृहस्थापनी दम्पति थी। वहा तब भी वे धोर वृद्ध भी। आधुनिक पद्धति के बाल बढाये हुए सन्धाली वृत्ति के सध भी वहा दिखाई दिये। जिन धेय, जिन भाव, भिन्न जाति, भिन्न धर्म के इन दल-ध सो लोकसेवकों को एवत्र परोने वाला पाया था, महात्मा गांधी और विनोबा की सिला-वनः। सत्य, अधिया धोर सधन का पालन करते हुए लोकसेवा करने और उमी को जीवन साध्य धनुभव करने वाला हमारे राष्ट्रपिता की सीय है। सर्वसेवा सघ के माध्यम से संग उने अथल मे लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। गांधीजी के पत्रवात विनोबाजी द्वारा उन्हे धूदान, धामदान एवं धार धय

की प्रेरणा मिली है। अधिवेशन वा वह दृश्य देखकर मन मे हमारी पुरानी कार्यस की स्मृति-जागृत हुए बिना नहीं रही। धारे भारत का धिन मुझे बहा दिखाई दिया। विविधता मे एकरा का दर्शन हुआ।

धामा पल्लवित हुई

सध दल दूर रहे है, फूट रहे हैं। क्या सर्वसेवा सघ मे भी फूट पडेगी? विहार मे उठे हुए धुधान से सर्वसेवा सघ की गाव तो नहीं दूब जायेगी? इस आशका से मन व्यथित हो रहा था। ऐसा न हो यह मनोगत था। इन सबकी इतने शर्तों की साधना तपस्या व्यर्थ चली जाय, ऐसा कीन सोचता होगा। सर्व सेवा सघ मे इस हथियार का यदि जय प्रकाशजी ने कुशलता से प्रयोग किया, तो वह नीतिक क्रांति का साधन बन सकेया ऐसी धाशा भी मेरे मन मे पल्लवित हुई। मुना है, गांधीजी ने एक बार कहा था कि विनोबा, जवाहरलाल धोर अवप्रकाश मेरी विरासत धाये बलायेगे। अधिवेशन मे समा-धारणको के सवाददाताओं से जहाँ के दर-मिदान एवक प्रतिनिधि ने पूछा कि यहा का वाद-विवाद धोर आपसी उठे बडे देलकर क्या मायरी ऐसा नहीं लगता कि विनोबा का धूदान-धामदान धारोदन धवफल सिद्ध हो सगा है। मैंने कहा—यहा मे वाद-विचार का स्वभाव भगडे-भगडे वरानही है। राजनीतिक दलों के अधिवेशनो मे जैसा धवदर आया करता है, यहाँ वैसा कुछ भी नहीं है। धूदान-धामदान धादोलन सकल धुधा या नहीं, इस धा निर्णय ऐसे लडे-लडे नहीं किया जा सकता। फिर भी मे एक प्रश्न पूछना चाहता हू कि विहार-धादोलन के लिए एक सर्वसाध्य नेता क्या इसी धादोलन से नहीं मिला? उन्हे सर्वोदयी धादोलन मे अवप्रकाश जी ने करीब बीस साल तक बढोर तपस्या धोर बलि कर्मयोग की साधना की है धोर इसी लिए उनके धारिण, सरलता धोर सधनुके के धारे मे सवेह प्रवृत्त करने की हिमन्त उनके किसी विरोधी को भी नहीं हो सकी, क्या यह सत्य नहीं है? उनकी कर्मबलिती (विश्व-सतीया) को ही सर्वसाध्य नहीं हो गई है।

जयप्रकाशजी की कल्पना

धूदान-धामदान-धामधवराज्य की कल्पना

को यदि मन्पाद्य ही प्रेरणा से धनुप्रारित किया गया तो वह भारत की आर्थिक, सामाजिक और गवर्नरिन्ग पॉली का माधन बन जाएगी, ऐसी मुझे ध्याता है। चीन में वायु-निन्द गार्टो ने माधो-मन्-गु के नेतृत्व में किया तो के डारा नाति कर दियाई। वहा भी परिस्तिथि बेसा भिन्न थी। यहा उन्हे स्थापित राज्य एवं गमान् व्यवस्था के सलाहक मन्थन सपर्यं करना पडा। एक के बाद एक गाँव और प्राणो पर चक्का किया गया। अधिभूत प्रदेश पर वे नये समाज की योजना करने पडे। बूजि और किसान, यही उन नई व्यवस्था का मूलाधार था। भारत की परिस्तिथि कुछ और है। यहा बहूनों के तल पर ग्रामराज्य की स्थापना नहीं की जा सकती। वहा जन-जागृति के बल पर ही, तस्याग्रही सपर्यं समितियों के जरिये ही ग्राम-सभा की सत्ता प्रस्थापित की जा सकती है। जो कार्यकर्ता ग्रामसभा के माध्यम में भूमि शान्ति और नियंत्रण का कार्य करते हुए ग्रामीण जनता की सेवा कर रहे हैं, उनके सफलता की पर्याप्त सफलता नहीं मिल पाई है, यह स्पष्ट है, पर इससे ग्रामराज्य की कल्पना ही गलत है यह सिद्ध नहीं होता। उसके लिए वे प्रावण्यक लोचनीक निर्माण नहीं कर सके और उसके धनुकुल लोकाभिमुख शासन भी उपलब्ध नहीं हो सका। प्रायः देश में जो जातिवारी बानावरण निर्माण हुआ है,

उपरोक्त उद्देश न करके जनता के सगठन को उचित दिशा देकर लोचनीक निर्माण की जाए, यह जयप्रकाशजी की कल्पना है। देश की सर्वध्वस्तता नगरकार के बाध से बाहर हो रही है। सत्तापारी दल की घबस्था प्रवाह पतिन व्यक्ति जैसी हो गई है। बिहार में तो मत्तापारी दल बिल्कुल गड हो गया है। फल स्वरूप गरीब जनता का जीवन घमसा हो गया है। जीवन की दृष्टि में वर्तमान शिक्षा सर्वथा निराशोणी सिद्ध होने के कारण विद्यार्थी समुदाय प्रचलित शिक्षा-पद्धति में घायल-खून परिवर्तन की मांग कर रहा है। अष्टाचार और महगाई के खिलाफ उसने रणभेरी बजा दी है। सरकार दमन द्वारा उनकी प्राणाज दुबाने का भरलक प्रयत्न कर रही है। जयप्रकाशजी कह रहे हैं कि इन समस्याओं के निराकरण के लिए विद्यार्थियों को कम से कम एक साल तक कालेज का मोह छोड़ कर, देहातो में जाकर रहना चाहिए और वहाँ ग्रामीण जनता को उनके मत्ताधिकार के बारे में जागरूक बनाना चाहिए। वे अत्याय के खिलाफ सत्याग्रह आन्दोलन लडा करें, जगह-जगह सपर्यं समिति स्थापित करें और समय प्राप्ति पर असहयोग का प्रयोग कर ग्रामसभा की सत्ता गाव-गाव में स्थापित करें। ऐसा होगा तभी हम धाज के सर्ध में किसान और वृषि मजदूर क्रांति के वाहक बन कर समाज

व्यवस्था का बानाबल कर सकेंगे। भारतीय समाज-जीवन को अष्टाचार, महगाई और बेरोजगारी का विरोध हो गया है। उस पर सत्याग्रही ग्रामदानी ग्रामराज्य की 'मत्ता' लागू हो सकेगी, ऐसा जयप्रकाशजी का विश्वास है। बिहार आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार करके उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया है। अब युवकों को अपनी जिम्मेवारी संभालनी चाहिए। एक दो साल यदि वे कालेज की पढाई बन्द रखेंगे तो उससे कुछ भी नुकसान नहीं होगा। स्वतन्त्रता-ग्राम में हजारों विद्यार्थियों ने वर्षों तक कारावास का कष्ट सहन किया था, इन बात को वे न भूलें। उसकी तुलना में एक दो साल तक कालेज का मोह छोड़ना बड़ी बात नहीं है। कम से कम बिहार के कालेज विद्यार्थियों को मंदान में उतरना ही चाहिए। उन्हे देहातो में जाकर ग्रामीण जनता से समरस होने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रस्थापितों के जाल में फसी हुई प्रचलित शिक्षा-पद्धति को मुक्त करने का भी यही मार्ग है। अब तक मन भर चर्चा और कण भर काम का शिरस्त था धाज अविष्य में पर्याप्त काम और कम से कम चर्चा का मूत्र धपना बर तस्यो को अपना पुरुषार्थ प्रकट करना होगा। उन्हे अपने बल और अपनी हिम्मत पर अपने जीवन में और समाज में शांति कर दिखानी होगी।

आजादी के २७ वर्ष बाद भी

- ★ जहा धाकाश छूटी महगाई से नागरिक का जीवन दूभर हो गया हो।
- ★ जहां अष्टाचार ग्राम हो गया हो और ऊपर से नीचे तक सब सराबोर हों।
- ★ जहा ईमान से रोटी कमाता और इज्जत की जिन्दगी बसर करना दुष्कार हो गया हो।

वहाँ प्रजातंत्र, समाजवाद, स्वतंत्रता एवं गरीबी हटाओ नारे का क्या अर्थ रह गया है ?

इस परिस्थिति से मुक्त होने के लिये गांधी विचार से अनुप्रेरित जय प्रकाश जी के नेतृत्व में चल रहे बिहार आन्दोलन में जन-धन से सहयोग कीजिए।

लोकभारती समिति, शिवदासपुरा (जयपुर) द्वारा प्रसारित

अभाव और गरीबी के पहाड़ों पर छात्रों की यात्रा

पदयात्री प्रताप शिखर की डायरी के कुछ पन्ने

अस्कोट वर विधायक भवन में डेरा डाला दिया है। हम लोग बाजार की ओर बढ़े, तारा बाजार छान डाला पर कहीं चाय के साथ पकौड़ी तक नहीं मिली। कंमरा बो जी. भो. के पास से दिया, क्योंकि बॉयज ग्रेज में वे जाने की अनुमति नहीं है। काली नदी के उस पार नेपाल व इस पार भारत सीमान्त के लोगो में लूब रिश्नेदारियास होनी है। व्यापार भी चलता है। वैवाहिक संबंधों में नेपाल की लड़कियां यहाँ प्रचिक घाती हैं, भारत की कम।

बलभद्रा पर काली-नोरी के समग जीव जीवी में कार्तिक सत्रासि से एक हप्ते का दोनों देशों का सम्मिलन भेना होवा है।

सुम्ती में त्रिभोज चन्द्र जोशी नाथ में है, उनसे पता चला कि बनरौल पास ही बही रहते है। बहते है कि अस्कोट के राजा पहले बही थे। आज भी मनुष्यों से दूर भागते है। काष्ठ का मच्छा काम करते है। जोशी जी के घर पर उनका बनाया हुआ एक सुबसूत काष्ठ का बरतन देखा था, वे जगती मानवी का जीवन जीते है। प्राप्तमान ढग गया, वर्षा

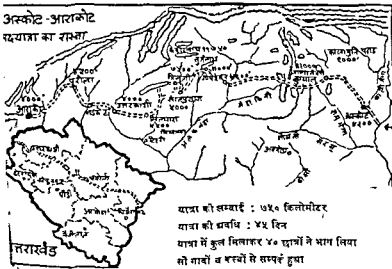
युवा छात्रों द्वारा उत्तराखण्ड के एक कोने से दूसरे कोने तक की गयी पद-यात्रा के समाचार प्राप्त पढते ही रहे है। पदयात्रा में कम-ज्यादा समय तक ४० छात्रों ने हिस्सा लिया। युवाओं के इस साहसिक अभियान में कु वर प्रमूत चन्द्रशेखर, शमशेर तथा प्रताप शिखर शुद्ध से आखिर तक रहे। पदयात्रा के दौरान प्रताप शिखर द्वारा लिखी गयी डायरी के ये अंश (२५ मई से १ जून) वहीं आपको कीमतों की तरह ऊंची धड रही पहाड़ी चढ़ाई पर चढ़ाईयों में तो कहीं निराशा की घाटी में जी रहे लोगो तक नीचे उतार नायेंगे। जैसा कि इन अंशों से मालूम होगा यह युवा अभियान समस्याओं के उत्तर खोजने या देने बनाये उत्तर धोपने के लिए नहीं था, वह तो समस्याओं को समझने ही निकला था, सब की समस्याओं में एक-एक दिन शामिल होने।

भा गयी, चाभी पाव के एक होटल में टिके। यहाँ पर रामदास के रेरे निकाल कर रस्ती बनायी जा रही थी, लडगसिंह के घर पर रहे हुए है। यह भोटिया बरती है, इस डिब्बे जंस छोटे से मकान की छत पर पढाई, केवल पढाई डाल रही है। इन लोगो का तिब्बत के साथ व्यापार चलता था, लेकिन चीन आक्रमण से टूट गया, सब भी कालीन आदि बनाते रहते है। पञ्चकोली पर सफेद चोटी गीरी नदी के दोनों ओर की घाटियों के विपरीत

लडी है, लगना है किमी ने प्रागे का दरवाजा बंदकर दिया हो। रास्ते में अनेक प्रकार के भग्ने मिलते है।

मुन्सपारी ६,५०० फीट की ऊ चाई पर स्थित है, सामने बर्फ से ढकी हुई सफेद चोटिया है, उस पार तिब्बत है। गांधी बाकी में महिलाओं की सभा की गई। लगभग ५० महिलायें थीं। बर्फ होने के कारण कार्यक्रम जल्दी समाप्त करना पडा। कुछ सच्ची मिल गया। भोजन की कमी होने के कारण पानी में सत्तु धोलकर खाया।

कालामुनि पहाड की चढ़ाई और गिरगाव का दाल ! इस पर्वत का प्रसवी नाम काल-मेनी कहते है। बाजार में सभी चीजों का अभाव है। सीमान्त बहना भुलावे में डालना है। जनता के लिये सीमावन्त नहीं है। भव ८१०० फीट की ऊ चाई पर घा घये हैं। भरने के ऊपर से मुन्पाल एक लूब घूरत पडी बहुकता हुआ उड गया, यह कस्तुरी मृग तो समाप्त हो रहा है। कुछ लोग अपने भैंसों को दुग्धाली (पहाड की चोटी पर मलमली घास के मैदान, जहाँ बर्फ पिघल जाती है) में ले जा रहे हैं। जगत्सिंह भीषा कट्टू चरों से रोडिया, सक्जी व दाल दकटडी करके ले आया। हमने बड़े चाव से खाया। सुम्ती में भी अनेक प्रकार की सन्धिया थी, पर रोटी लडगसिंह ने ही बनाई थी। ये सब लोग तिब्बत व्यापार से टूटे हुए घाडमी हैं। भोटिया चाय भी थी और नमक से बनायी जाती है, हमे पिलायी।



यात्रा की सम्प्राप्ति : ७५० किलोमीटर
यात्रा की अवधि : ४५ दिन
यात्रा में कुल मिलाकर ४० छात्रों ने भाग लिया
सो नाचों व कर्तव्यों से सम्पन्न हुआ

हरियाणा की प्रगति को कहानी तथ्यों एवं आंकड़ों की जवानी

हरियाणा ने भारतीय संघ के एक अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आने के बाद विकास के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसाधारण प्रगति की है। विकास के क्षेत्र में तेजी से हुई तरक्की एवं सफलता का श्रेय राज्य सरकार द्वारा बनाई गई सभी नीतियों तथा योजनाओं को है। यद्यपि हमने अभी विकास का एक लम्बा सफर तय करना है तथापि जनसाधारण को पेश आने वाली प्रमुख समस्याओं को हल करने में वायु की सी तेज गति से कदम उठाये गये हैं। हरियाणा की इस शानदार सफलता की कहानी आगे दिये तथ्यों एवं आंकड़ों की जवानी सुनिए—

अनाज की पैदावार

आज हरियाणा अपनी जरूरत का अनाज पैदा करने में न सिर्फ आत्म निर्भर हो गया है बल्कि अब यह अपनी जरूरत से भी अधिक अनाज पैदा करने लगा है जबकि वर्ष 1966 में यह अनाज की कमी वाला राज्य था।

सिंचाई सहूलियतें

हरियाणा में वर्ष 1972-73 के दौरान 37.16 लाख एकड़ भूमि (15.04 लाख हेक्टेयर) को नहरों से सिंचाई की सहूलियतें मिलने लगी जबकि वर्ष 1967-68 के दौरान 33 57 लाख एकड़ (13.59 लाख हेक्टेयर) भूमि को ही नहरों से सिंचाई की सहूलियतें उपलब्ध थी।

मई, 1968 में हरियाणा में 29,000 नलकूप थे लेकिन आज राज्य में नलकूपों की संख्या बढ़ कर 1,27,639 हो गई है।

गांव-गांव में बिजली

मई, 1968 में हरियाणा के हर पांच गांवों में से सिर्फ एक गांव में बिजली पहुंची थी लेकिन नवम्बर, 1970 के अन्त तक राज्य का गांव-गांव बिजली के प्रकाश से जगमगा उठा। हरियाणा देश का पहला राज्य है जिसने शत-प्रतिशत ग्राम-बिद्युतीकरण का कीर्तिमान स्थापित किया है।

उद्योगों का प्रसार

राज्य में छोटे पैमाने की औद्योगिक इकाइयों की संख्या वर्ष 1973-74 के अंत में 13,418 थी जबकि मई, 1968 में राज्य में 4598 छोटे पैमाने के उद्योग थे।

पीने का शुद्ध पानी

छ: वर्ष पहले राज्य के केवल 203 गांवों में ही पीने के शुद्ध पानी की सप्लाई की सहूलियतें जुटाई गई थीं लेकिन आज राज्य के अनुमानतः 700 गांव इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं और इन तरह पिछड़ी स्थिति में 250 प्रतिशत सुधार हुआ है।

परिवहन

हरियाणा में यात्री परिवहन के राष्ट्रीयकरण का कार्य नवम्बर 1972 में पूरा कर लिया गया था। इस समय हरियाणा राज्य परिवहन की 1,571 बसें हैं जबकि मई, 1968 में सिर्फ 567 बसें थी। आज हरियाणा परिवहन सेवा देश भर में सबसे अधिक कार्य-कुशल मानी जाती है।

कमजोर वर्गों का कल्याण

सामाजिक एवं शारीरिक रूप से घबराते व्यक्तियों को राहत देने के उद्देश्य से अनेक योजनाएँ चालू की गई हैं। वृद्ध तथा अशक्त व्यक्तियों को हर सम्भव सहायता दी जा रही है। अनुसूचित जातियों एवं पिछड़े वर्गों के लोगों के उत्थान के कार्य को प्राथमिकता दी गई है।

सड़कें

राज्य के 60 प्रतिशत गांवों को पक्की सड़कों से मिला दिया गया है। पक्की सड़कों में मिलाये गए गांवों की संख्या अब 4210 हो गई है जबकि मई, 1968 में राज्य में केवल 1500 गांव ही पक्की सड़कों से मिले हुए थे।

निवेदाक, लोक सम्पर्क, हरियाणा द्वारा प्रचारित।

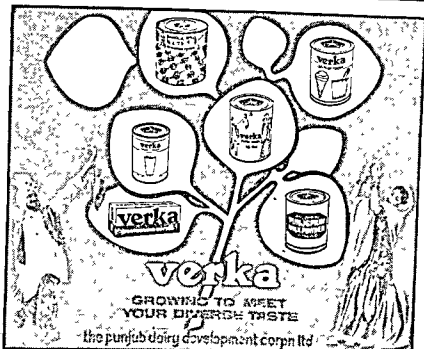
के साथ भेड़ पासकों के दशन होते हैं। बुग्यातो पर नयी पास और फूल उग रहे हैं। बफौली हवा चल रही है, हमारे बेहद गरम कोट भी उसके आगे ठंडे पड़ जाते हैं। सामने विशूल नौ हिमाच्छादित चोटी है गाव बहुत ही दूर है। घाटी की गहवाड़ी नीचे को धँसती ही जा रही है। यहाँ के लोग दूर ज्वालदय से बबरियो की पीठ पर सामान लाते हैं, २५ रु० कम्बल भाड़ा पडता है। झालू भी ज्वालदय तक बकरी की पीठ पर जाते हैं। कुमाऊ के लोग घान देकर झालू से जाते थे लेकिन अब दो जिलो के घान के व्यापार पर प्रतिबंध लग गया है। बुग्याल में चलते हुए ऐसे लग रहा था जैसे मखमल के गदों पर चल रहे हों।

इस सारे इलाके के अधिकांश जवान फोज में भौकरी करते हैं। मुकताल बुग्याल में बिजली गिर जाने से—११० भेड़ बकरिया मर गयी। फिर एक बार भेड़ की बीमारी फैली थी। तब से यहाँ के लोग भेड़ ही नहीं पालते। इस सारे भोज में महिलाओं के बदन काले रंग के होते हैं। एक भी घर में मिट्टी का तेल नहीं है, मूरज खाता है उजाला लाता है, मूरज जाता है उजाला भी पषा जाता है।

आज हमारे साथ भ्रमरासिंह है, भ्राजाद हिन्द फौज में रहे हैं ६४ साल की उम्र में भी गजब का उत्साह है। लम्बी बीर लड़ी मूख। श्री भ्रमरासिंह ने बताया कि एक बार पनाग में जब वे पत्थर के ऊपर भोजन कर रहे थे तो नेलू जी ने पुछा पत्थर पर क्यों खा रहे हो। उत्तर दिया, "भारत भ्राजाद होने पर सोने की धाबी में खाऊँगा। २५ साल बाद उन्हे २५ रु० पैसाल मिल रही है।

बनोज गाव में स्व० हवलदार लीमासिंह की विधवा बहुली देवी ने पेंशन का प्रार्थना पत्र भेजा है उनके छोटे से दो बच्चे हैं। गरीबी ने इनके घर को भपना घर ही मान लिया है। यहाँ के स्व० शिवसिंह भ्रमरासिंह जी के साथ रहे हैं। पत्नी मी र गयी है। ७ बच्चे हैं। पहला १२ साल का। भ्राजादी के लिए जान दे देने वाले मा बाप के बाद इन सात बच्चों को माली गरीबी ने ही गोद ले लिया। बूरा गाव में हमारी टोली पहुँचने पर कुछ बच्चे झोर लीग ऐलान करते हैं, हम लीग गीत गाते हैं, सभा के लिए लीग जुट जाते हैं। एक शराबी व्यक्ति भी वहाँ पहुँच कर बक-भङ्ग करने लगता है। वह यहाँ का प्रतिष्ठित व्यक्ति है। हवलदार व दुबानदार

वालसिंह रावत है। नशे में भ्रमता हुआ वह सभा की घोर मुंह बर पूछता है; ये लीग इस इलाके में घुस कैसे गये? इनके पास कोई परमिट है यहाँ आने का? मेरे पास तो इनके सम्बन्ध में कोई कागज नहीं आया? इनका कौद करलो। ये चीन के जासूस हैं। इनको कतल करदो। गाव के लोग हसते रहे, कुछ ने उसे सभा से थोड़ा प्रभल लेजाकर हमारे बारे में बताया। उसने समझा कि हम सरकारी लीग हैं, तैजी से डगमगाते बढभो से सभा तक आया, गाली बक्ते हुए बहने लगा, "अब तक क्या किया है कितो ने हमारे लिये ये, है खा पी बर चले जाते है। हमारा इलाका पिछडा हुआ है। हमारे लिए कुछ नहीं करता कोई। गुम नीचे जाना, हमारे सब प्रमुदान काट देना स मागे रू कर देना। पानी के लिए दररवास्त दो ही भभी तक कुछ नहीं हुआ। कुछ ने फिर समझाया कि हम सरकारी विभाग से नहीं हैं, पूम रहे हैं लोगों के दुग मुल में हिरसा बटाने घामे हैं। वह फिर चिलाने लगा ये नैता क्या बर रहे हैं। वोठ लेने घा जाते हैं, बाहर बरो इनको।



छात्र संगठनों की राजनीति और भारतीय संदर्भ

छात्र संगठन माने प्रकार के होते हैं। इनमें एक छोर पर मुद्दर संघातिक आधारों पर संगठित जुआरू छात्रों के राजनीतिक गुट हैं तो दूसरे पर भीमिंत सदस्य वाले विद्युद सामाजिक धधवा सांस्कृतिक ऐसे संगठन, जिनका प्रभाव समाज धधवा छात्र समुदाय पर नाम मात्र का ही होता है। इन दोनों छोरों के बीच कई तरह के मध्य मगडन होते हैं। छात्रों के धधवलन के स्वरूप से परिचित होने के लिए राजनीतिक संगठनों में से कुछ का मसिक्त विवेचन धधवयक है, जिनका छात्र समुदाय में महत्वपूर्ण स्थान है।

छात्रों के सांघिक महत्वपूर्ण राजनीतिक धधवलन में से कई को विशेष रूप से तदर्थ समूहों द्वारा संगठित किया जाता है। जब धधवलन से संबंधित विशेष मामले पर जो मिश्रण कुरुक म वृद्धि से लेकर सरकारी नीतियों के प्रति विरोध से प्रदर्शन तक कुछ भी हो सकता है, समझौता हो जाता है तो ये संगठन प्रायः निष्पक्ष होकर समान हो जाने हैं और धधवलनकारी छात्र नधाधधो में चले जाते हैं। लेकिन कभी-कभी किसी एक मामले को लेकर बना धधवलनकारी संगठन उस मामले के हल हो जाने पर भी स्वामी छात्र संगठन का रूप से लेता है और उसके संघातिक आधार निश्चित हो जाते हैं।

छात्रों के कुछ प्रति प्रभावशाली संगठन धधधे ही जनकी धधधरी प्रेरणा की उपलब्ध हो लेकिन उनके राजनीतिक संगठन हमेशा स्व-प्रेरणा से ही नहीं बनते हैं। कई देशों में, विशेष रूप म विकासगत देशों में, बधधकी के राजनीतिक इन छात्रों के बीच सक्रिय रहते हैं। छात्रों को महत्वपूर्ण साधो मानते हैं तथा छात्रों का समर्थन पाने के लिए काफी प्रयास करते हैं। चन्मरुका विभक्तिधधधय धधधवा धधधिविधधधय के अणुल राजनीतिक मधधय के धधधधे बन जाते हैं। विरमिधध धधधे विधानर देशों ही प्रकार के देशों में राजनीतिक दलों से धधधवद छात्र संगठन भी होते हैं। इन संगठनों से प्रायः छात्रोलनो धधधे विधानरधार के प्रकार का काम किया जाता है। ये मग-

“छात्र धधधवलनो ने राष्ट्रवादी नेताधधो की एक पूरी पीढी को प्रधि-सिक्त किया था और उन धधधेको को सिद्धांतों की दीक्षा दी थी, जो बाद में राजनीति तथा रचनात्मक कामों में लगे थे। धधध छात्र धधधवलन इस प्रकार की कोई भूमिका नहीं निभा पा रहे हैं। यद्यपि सक्रियता को परम्परा धधधो पूरी तरह विलीन नहीं हुई है, समाज में धधधुकूल परिस्थितियाँ दीख पडने पर वह पुनर्जीवित हो सकती है। फिलहाल तो जो छात्र धधधुशासनहीनता सामने आ रही है वह गहरी निराशा और विधा-सदस्यधधो की बदतर होती जा रही हा वत का ही प्रतिबिम्ब है।” बिहार धधधवलन से काफ़ी पहले लिखे गये इस लेख में जिस धधधुकूल परिस्थिति का संकेत किया था, वह आज सामने है।

उन छात्रों के बीच बल विशेष के सिद्धांतों का प्रसार करने के प्रति सधधेपु रहते हैं और छात्रों में उस दम के धधधुवादी बनाने धधधवा तवारा करने में लगे रहते हैं।

राजनीति से सीधे संबधध छात्र संगठनों के अलावा कई देशों म विधिधध प्रकार के पाठ्यधधेतर गतिविधियों का संचालन करने वाले संगठन भी होते हैं। ये संगठन धधधिक रूप से राजनीतिक हो सकते हैं जैसे कि अर-राष्ट्रीय मामलों धधधवा ऐसे ही किसी विषय का संगठन। दूसरी धधधे ये पूरे तौर पर सांस्कृतिक, सामाजिक, धधधिक या धधधेरी संगठन हो सकते हैं जैसे नाट्य सधध, धधधिक समाज धधधवा साहित्य समिति। कुछ मगडन ऐसे भी होते हैं जो विभिन्न धधधेरी पर राजनीतिक तथा धधधेरी संगठन दोनों ही होते हैं जैसे कि जर्मनी का ‘कारफारेगन’। धधधिक देशों में ये धधधे-राजनीतिक मगडन प्रकट रूप से राजनीतिक मगडनों की धधधेधा छात्रों को धधधिक धधधिकरण करते हैं। ये संगठन प्रायः तीस्राणक कार्यक्रम में बडे सहायक होते हैं और छात्रों को कई प्रयुग क्षेत्रों में उतारोती धधधिसाधध प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए कुछ देशों में वाद-विवाद समितियाँ राजनीतिज्ञों की प्रधिधधय धधधेए हैं क्योकि उन में सांघजनिक धधधय बना धधधे सधधरीय धधधे-तरीकों का प्राधधिक धधधुधध मिल जाता है।

पाठ्यधधेतर संगठन धधधेधध प्रकार से

बनाये जा सकते हैं। कुछ देशों में सरकार धधधवा विधधविधानलय के धधधिकारी इत प्रकार की गतिविधियों को संगठित करने तथा उनके लिए विशेष साधन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीवियन सुट के धधधिक देशों धधधे और मिश्र ताईवान तथा धधधे विकासगत देशों सहित कुछ देशों में बधधेक धधधिकारी इन पाठ्यधधेतर संगठनों पर पर्याप्त कडा नियंत्रण रखते हैं। अन्य देशों में छात्र संगठनों के गठन का कार्य स्थानीय छात्रों की पहल पर छोड दिया जाता है और उन्हे कोई सहायता भी नहीं दी जाती। कई देशों में जिनमें गठन के धधधिकरण धधधुधधे उपनिवेश धधधिल हैं, छात्रों के सामाजिक या सांस्कृतिक मगडनों की मिश्रा विधधय धधधवा सरकार के धधधिकारियों से कभी पर्याप्त समर्थन या सहायक नहीं मिलता और न उन पर धधधन दिया गया। यह हावत धधधे बधधन रही है। अमेरिका जैसे कुछ धधधे देशों में स्थानीय विधधविधानलयों के धधधिकारी तथा सरकारी तन्म धधधेक प्रकार की पाठ्यधधेतर गतिविधियों को सहायता देने हैं। इन धधधे-का साधधधधधधय इनका कडुने से अधिक नहीं किया जा सकता है धधधिकारी देशों में धधधे-राजनीतिक कार्यों में सलन छात्र संगठनों का धधधिकत्व है और ये मगडन छात्र समुदाय के लिए पर्याप्त महत्व के हैं।

धधधुधधिक समाज में युवापीढी को धधधेक

प्रकार के दबावों के बीच रहना पड़ता है। ये दबाव विचारविधालय प्राणण में स्थित राजनीतिक समूहों के स्वरूप, छात्र को अपने समुदाय के बीच उभरने वाली छवि और मुख्य के राजनीतिक तथा अन्य प्रकार से सामाजिककरण के ढंग को प्रभावित करते हैं। छात्रों को अपने गिराए गए काल में कई दबावों और तनावों को सहन करना होता है। इनमें से कुछ सीधे विचारविधालय से ही संबन्धित होते हैं जबकि अन्य कुछ का सम्बन्ध सामान्य रूप से युवा वर्ग से होता है। किंगडोर-वल्फा और धारमिक युवावस्था के साथ धारने वाले शारीरिक तथा मानसिक तनावों का सामना सभी युवजनों को करना पड़ता है और उनके आचरण पर विचार के समय यह एक महत्वपूर्ण तथ्य होता है। युवजनों को अपने शरीर में होने वाले परिवर्तनों, नई तथा हीन भावाभावों और व्यवस्थी हुई अपनी छवि के अनुकूल अपने आपको ढाल लेना चाहिए। युवाओं की योग्यता तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व के एहसास को समझना युवा वर्ग में बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न समाज इस मामले को धरने-अधरने तरीके से निपटाते हैं। उच्च शिक्षा का अनुभव इस समस्या को और गहरी कर सकता है क्योंकि इस स्तर पर दोनों ही लोगों के युवा व्यक्तित्व प्रायः एक दूसरे के निकट धाते हैं, नर-नारी संबंधों के मामले में पश्चिमी प्रभावों से प्रसिद्ध भी होने हैं और उसी समय वे परम्परागत धारारों का पालन करते भी हैं। विश्व देशों में परम्परागत एवं धार्मिक यौनाचार के बीच संपर्क का मामला एक प्रमुख मुद्दा है। विकसित देशों में भी नर-नारी सम्बन्ध एवं शाश्वत समस्या बने हुए हैं और छात्रों के भी भाषा में व्यापक निराशा तथा उच्चल-गुचल के कारण है। विश्वविद्यालय इस समस्याओं से धरने-अधरने ढंग से निपटते हैं। इनमें एक और तो रॉडनेविया के विरव-विचार्य में जो धरने छात्रों को इस मामले में पूरी छूट दिए हैं तो दूसरी ओर बिनामरत देशों तथा अमेरिका के भी कुछ महाविद्यालय हैं जिनमें इस संबंध में बहुत बढी नियम हैं।

उच्च शिक्षा के छात्रों की वय प्रलय-प्रलय देशों में धन-धन्य है। भारत में बड़े १६ वर्ष हैं तो स्वीडन में २१ वर्ष। इस प्रकार

के बावजूद उच्च शिक्षा का समय सभी जगह एक जैसा ही तासमेल बैठाने, भविष्य की योजना तैयार करने तथा धार्मिकभिव्यक्ति के विकास का काल होता है। विशेष रूप से कला-संकाय प्रथवा मानविकी में 'सत्य' तथा 'न्याय' का अन्वेषण होता है और यह प्रायः उस सैद्धांतिक चेतना की ओर धरकर जाता है जिसकी चर्चा छात्रों की राजनीतिक सन्धियता के लिए आवश्यक तत्व के रूप में की जा चुकी है। प्रत यह स्पष्ट है कि युवाओं के स्वभावगत मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक पहलुओं का प्रभाव महाविद्यालयीन अनुभव, राजनीतिक सन्धियता के विकास तथा छात्र उप-संस्कृति पर पड़ता है। छात्रों की राजनीतिक सक्रियता से सम्बन्धी धारण धरनेक समाजों में इस बात से जुड़ी है कि महाविद्यालय में विताया गया समय परिवार से स्वतन्त्र रहने का काल है। धर्मभावकों और बच्चों के बीच प्रायः बढने वाले तनाव का प्रतिबिम्ब प्रथम मामलों में सभी प्रकार के अधिकार जगाने वालों के प्रति बगलत की प्रतियोगिता के रूप में सामने आता है। अमेरिका में महाविद्यालय में छात्रों के सामाजिक और बौद्धिक विकास के मामले में 'धर्मभावकों के समान' के सार्विक निभाने की चेष्टा परम्परागत रूप से की है और अमेरिकी छात्र समुदाय के स्पष्टवादी तत्वों ने इस चेष्टा का उत्तरोत्तर अधिक प्रतियोगिता किया है।

धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में युवाओं का अतिरिक्त स्तर धरनेक देशों में महाविद्यालय की धरधियों की बटन बना देता है। यह राजनीतिक सक्रियता के लिए उत्प्रेरक का काम करता है क्योंकि राजनीति में आने के फलस्वरूप छात्र को जो कुछ भी यवना पड़ता है वह जगता के धरधियों की वषा की तुलना में बहुत कम होगा है। धरधियाग मामलों में छात्र को न तो परिवार का पालन पोषण करना होता है और न किमी व्यवसाय की जिम्मेदारी—यह तथ्य उनकी राजनीति तथा धरधियों में जोधिम उठा सकते हैं की क्षमता को प्रवत रूप में बढा देता है। धरनेक देशों में युवा वर्ग के लिए धरधिय अनुभव अनुकूल बने आसने की तुलना में बहुत कम है और धरधिय प्रभाव राजनीतिक सक्रियता

में वृद्धि के रूप में सामने प्रवतता है जबकि साथ ही साथ यह स्थिति छात्रों को धरधियों का कार्य-कलापों के प्रति सक्रियक सतर्क रख अथवा नी की ओर भी लेजा सकते हैं। भारत में अहाँ कि शिखित बेरोजगारी की समस्या बहुत विचाराल है, यही अनुभव हुआ है कि उपयुक्त परिस्थितियों के कारण छात्रों में व्यापक निराशा है और इस स्थिति के परिणाम छात्रों की धरधियत रूप से धरधिय तब यत न भइक उठने वाली हिंसा के रूप में आते हैं किन्तु इसका स्थातर शक्तिशाली राजनीतिक प्रदीपन के रूप में सामान्यतः नहीं हो पाता।

हमारे देश का उदाहरण इस स्थितिने विशेष मनोरजक है। उच्च स्तरीयता प्राप्ति के बाद की धरधिय में यक शिक्षा का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है। बहुसंख्यक छात्र जिन स्थितियों में धरधियन करते हैं वे दुनिया में सर्वाधिक बुरी बहो जा सकते हैं। उनको निभने वाली प्रदायण की सुविधाएँ मामला भी हैं, शिक्षक क्षरपाय हैं और उनमें भी बहुत से प्रयोग हैं, छात्रों की धरधियत स्थिति दयनीय है और इन सबसे बढ-बढकर है, लगभग सभी क्षेत्रों में रोजगार की सम्भावनाओं का धरधियन।

बेचल तकनीकी और प्राकृतिक विज्ञानों में राजगार की कुछ प्राशा होती है। वृ कि बहुसंख्यक छात्र कला सहाय प्रथवा मानविकी में प्रवेश लेते हैं, इसविषय स्थिति विशेष रूप से गभीर है। यदा छात्रों की सक्रियता की परम्परा भी गुणिय है। छात्रों ने स्वाधीनता सशाम में भाग लिया और हजारों की अपने राष्ट्रवादी कार्य-कलापों के लिए धरधियत मुहता पडा। धरधियत विश्व-विद्यालय प्राणणों में शक्तिशाली राजनीतिक धरधियत गठन के जिनमें न केवल गांधी के नेतृत्व में धरधियत राष्ट्रवादी ही शामिल थे बढने समाजवादी, मार्क्सवादी तथा साम्य-धरधियत तत्वों का भी प्रतिनिधित्व था। धरधियत समुदाय की सैद्धांतिक धरधियत ऊँची थी। उन समय की धरधियत छोटो छात्र तथा का एक बडा भाग गणपन बहरी परिवारों से जुडा होने के कारण छात्रों के पास राजनीतिक सक्रियतियों के लिए पर्याप्त समय होता था। सन् १९४७ में स्वाधीनता प्राण

होने के बाद छात्रों के राजनीतिक जीवन में बड़ी सीमा तक परिवर्तन आ गया। स्वाधीनता के पूर्व छात्र छान्दोलन के समय भारत की स्वतंत्रता का एक सुस्पष्ट और निश्चिन्त सत्य था, जिसके आधार पर बड़ी संख्या में छात्रों को संगठित किया जा सकता था। छात्र छान्दोलन को प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं का समर्थन भी प्राप्त था। स्वाधीनता का लक्ष्य पूरा हो जाने के बाद छात्र संगठनों में से अनेक ने संवैधानिक राजनीति पर वाद विवाद आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही वे राष्ट्रीय नेता जो छात्रों की गतिविधियों को बढ़ावा देते रहे थे, सरकारी नेता बनकर अपना रूप बदल लगे और छात्रों को समर्थन देने से हाथ सींचने लगे। स्वाधीनता के पूर्व तटस्थ रहने वाले शिक्षा अधिकारियों ने भी नकारात्मक रुख अपना लिया और शिक्षा संस्थाओं के प्राणुर से राजनीतिक संगठनों को दूर रखने का प्रयास करने लगे। इन दबावों के अलावा कालेजों में प्रवेश संख्या में तीव्र गति से वित्तीय तथा परिणाम स्वरूप छात्रों में समुदाय भावना की निविन्तता

से स्वाधीनता पूर्व के छात्र आंदोलन का दम उभरू गया।

भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों के प्राणुरों में अब जुझारू तथा सुसंगठित छात्र छान्दोलनों के स्थान पर उन उपद्रवों का उभार सामने आता है जिन्हें छात्र धनुशामन हीनता बहा जाता है। इनका आधार छात्रों में बढ़ती जा रही निराशा में सर्वथिन स्थानीय मामलों होते हैं। छात्रों ने जहाँ अपने अनेक मुद्दों पर जिनमें भाषा को समावा तथा राजनीतिक अड्डाधार प्रमुख है, प्रभावी रूप से संगठित करा में सफलता प्राप्त की है वही दूसरी धार कोई प्रभावशाली छात्र छान्दोलन भी पतितत्व में नहीं रह गया है। भारतीय विश्व विद्यालयों के प्राणुर में यद्यपि पाठ्यक्रमेतर वैर-राजनीतिक संगठन बड़ी संख्या में हैं किन्तु वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। इसका एक भांगक कारण यह है कि अनेक भारतीय छात्रों के सामने काम करके बमाने की विव्यता भी है और इसीलिए उनके काम दन गतिविधियों के लिए समय नहीं बच पाता। प्राणिक रूप से इनके लिए सुदृढ

परम्परा का अभाव भी जिम्मेदार है। मीनों के अभाव का सामना कर रहे तथा छात्रों को अधिष्ठ स्वतंत्रता दिने जाने के प्राणि सशक्त शिक्षा प्रशासकों ने सभी इलाकों में इन संगठनों के निर्माण की आवश्यकता की धोर से धीरे धूदकर उधोधा का रूप ही प्रदर्शित किया है।

छात्र छान्दोलन में भारत के राजनीतिक जीवन तथा शिक्षा संस्थाधा के प्राणुरों में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इन आंदारनों में राष्ट्रवादी नेताओं की एक पूरी पीढ़ी को प्रशिक्षित किया तथा उन अनेकों को सिद्धांतों की दीक्षा दी जो बाद में राजनीति में आये। अब वे छान्दोलन इस प्रकार की कोई भूमिका नहीं निभा रहे हैं, यद्यपि सक्रियता की परम्परा अभी पूरी तरह विहीन नहीं हुई है समाज में अनुपूल परिस्थितियाँ दील पडने पर वह पुनर्जीवित हो सकती हैं। फिलहाल तो जो छात्र धनुशामनहीनता सामने आ रही है वह गहरी निरपशा और शिक्षा संस्थाओं की बदतर होती जा रही हालत का ही प्रतिबिम्ब है।

INDIAN GEMMOLOGY

(English)

रत्नप्रकाश

(हिन्दी)



By Rajroop Tank

Published By

DULICHAND TANK
Moti Singh Bhomia Ka Rasta
Johari Bazar,
JAIPUR-3

ALL
ABOUT
GEMS

T. No. 72621

लेखक—राजरूप टांक

प्रकाशक—दुलीचंद टांक
मोतीसिंह भोमिया का रास्ता,
जोहरी बाजार,
जयपुर—३

तत्काल शांति सेना न तो कोई राजनैतिक संगठन है और न ध्यान संगठन है। इतल प्रथम में देश के तमाम युवा संगठनों से एक प्रलय चरित्र है इसका। यह उन युवकों का भाई-भार्या है, जिन्होंने विचार-पूर्वक अपने प्राणि 'युवक' के प्रतिरक्ति और किसी विशेषण को मानने से इनकार कर दिया है। लोकतन्त्र के उत्तम नागरिक की निर्णायक भूमिका है और होनी चाहिए जो किसी राजनीतिक दल के सदस्य नहीं है, प्रत्येक परिस्थिति का विवेचन अपनी तटस्थ युक्ति से करते हैं। तरण शान्ति सेना इस उपर्याहीन नागरिक की प्रतिष्ठा का सकेत देती है और इसलिये तरणों का प्रावाहल करती है।

१९६७ में बिहार में भयकर मूला और धकाल पड़ गई थी। एक तरफ लाखों लोग भोज की और बेसब चिन्तित जा रहे थे और दूसरी तरफ जारी थे हिन्दी विरोधी या अंग्रेजी विरोधी प्रान्दोलन, देश में और तोड़-फोड़। भाषा का प्रश्न देश के लिए बड़े महत्व का प्रश्न है, लेकिन मनुष्य के जिन्दा रहने के बाद। पर लाखों मीतों की मुश्किल न केवल का प्रान्दोलन चक रहता था, वह जनाकाशा कम राजनीतिक धकालपेल, धकिक भी (या आज जनाकाशा के प्रगटीकरण, का प्रसन्न इतना कम रह गया है कि वह प्रायः राजनीतिक धकालपेल में हिस्सेदार हो जाती है) उस वक्त जयप्रकाश नारायण ने युवकों के नाम एक अपील निवासी थी और यह पूछता था कि युवक देश के लिए नयी विपदायें सडी करेण या इस और इतल जैती धनेक विपदाओं से लडणे ? बिहार के अनाल में धानकर काम करने का उनका प्रावाहन कई युवकों को खीच लाया। विदेश विदेश से प्राये युवकों ने उन दिनों जो काम किये उसने तरण शान्ति सेना की कल्पना में मदद की। युवा, शक्ति के नाम पर धाज जो कुछ चलता उससे प्रलय भी युवकों की एक धकाली संख्या है जिनके लिए कोई मच नहीं है। तत्काल शान्ति सेना का जन्म धकाल की विधीविधा और उसके लडणे के तत्काल के बीच से हुआ।

तरण, शान्ति, सेना—ये तीन शब्द इस भाई-भार्या की, विशेषताओं के धोतक हैं। उग्र तट्टणर्दी की बसोटी नहीं है, एक विशेषता है। जीवन से जो प्राणा रखता हो और उसके लिए पिल पडने का मकल

तरण शान्ति सेना : नयी सांस्कृतिक क्रांति के लिए

—कुमार प्रशांत

करता हो वह तरण है। तरणार्थी की एक विशेषता—उग्र—का इसी कारण सदस्यता के लिए आग्रह है पर तरण की परिधि में अस्ती साल का गांधी भी जाता है। शान्ति शब्द इतना ज्यादा धकमूल्यित हुआ है कि शान्ति का वायरता का पर्याय मानते हैं। प्रतिशील शान्ति जो शान्ति के मूल्यों पर खडी होगी, हमारी आकाशा है। सैनिक की तलरता और प्रात्यानुशासन तरण शान्ति सैनिक के गुण हैं। फौज और सेना में इस पण्टि से गुणात्मक अतर है। किसी विशेष लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध, संगठित अमात सेना है। तरण शान्ति सेना, युवकों की वंसी ही सेना है।

तरण शान्ति सेना के कार्यन्त्रमों के तीन लक्ष्य हैं—धम, सेवा और स्वाध्याय। तरण शान्ति सेना की वह निष्ठा भी है और धनुशासन भी। धाज व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन से इन तीन मूल्यों का लोप हो गया है। इन तीन निष्ठाओं के धभाव ने समाज को पण्ट और परमुतापेक्षी, लडी और पलायनवादी तथा मूड और धकविकेयी बनाया है। श्रमिक की प्रतिष्ठा उसके धम में भागीदार होकर ही की जा सकती है। सारा का सारा ध्यान समुदाय, अपने जीवन के बेहतरीन वर्ष इस समाज की धनुशासक रक्षाई बन कर गुजार दे चुकी उसने 'पड़ रहा हूँ' की लडली लया रनी है, यह तरणार्थी की धममानजनक धकस्था है। धम की प्रतिष्ठा सेवा का मूल है और रिनी भी सामाजिक व्यक्तिके लिए प्रमाणपत्र है। संकट को धकस्था में यह प्रमाणपत्र काम देता है। स्वाध्याय और धाज की पडार्ड में अतर है। जो दूसरों का बनाया इतिहाम पडते भर है के बराबर पूछते हैं कि जो धाज तब नहीं हुआ वह होगा कौन ? स्वाध्याय समुदायों के बीच से नये इतिहाम के मूजक का नाम है। धम, सेवा और स्वाध्याय की बनी ने समाज में पडधान का मकट—यंदा कर दिया है। एक बडा युवक समुदाय यह पडधान नहीं पा रहा कि वह किम बिन्दु पर धा कर

समाज से जुड सनता है। पडधान बोध का यह सकट इन तीन निष्ठाओं को जीवन में उतारे बर्गर मिटने वाला नहीं है, तरण शान्ति सेना इन मूल्यों पर व्यक्तित्व और सामुहिक धाचरण कर इतल इस देश के अंतिम धकति की लडाई का हथियार बनाता चाहती है।

राष्ट्रीय एकता, स्वधर्म, समभाव, लोकतन्त्र सामाजिक समता, धाधिक न्याय तथा बिब्वशान्ति के बिद्वान्त रखने वाली तरण शान्ति सेना के नियम कायदे बहुत डीले हैं। कोई भी युवक जो इनमें धास्था रखता है फाम भर कर इसका सदस्य बन सकता है। देश में परमाणु प्रत्येक प्रान्त में तरण शान्ति सेना का संगठन है। प्रत्येक नेत्र धपने में स्वतन्त्र है और धपने काबन्धनी का निर्धारण बटा के साथी स्वयं बरते हैं, न कोई प्रादेश देता है और न कोई वैधानिय नियन्त्र माना जाता है। साल भर में दो-चार कार्यन्त्रम धकित भारतीय स्तर पर उठाये जाते हैं। साल में एक या दो बार राष्ट्रीय शिविर सम्मेलन होता है और इसी नम में नीचे की इबाइया अपना शिविर सम्मेलन करती रहती है।

गिरा। में शान्ति का एक समग्र विचार केवर तरण शान्ति सेना ने १९७० से युवकों के बीच सन्त काम प्रारम्भ किया। तरण शान्ति सेना के इतल सम्मेलन में कई युवकों ने पडार्ड छोड कर एक वर्ष इसके लिए देना लय किया। उमी वर्ष ९ धगस्त को कई प्रांतीय राजधानियों में गिरा में शान्ति के लिए युवकों के युलुम निकले। ९ अगस्त को गिरा में शान्ति दिवग मान कर, तरण शान्ति सेना का प्रत्येक नेत्र विशेष कार्यन्त्रम का धापोजन बनता है, जिनमें मेमिनार, गो-प्टिया, गमानान्तर महाविद्यालय, ममयाओ के मध्य लडणे को ले जाना धादिक काम प्रमुम रहते हैं। गिरा धकनी चाहिए वह सभी बहने हैं बिन्दु इस छोडने को लैदार नहीं होने हैं। यह मोड नहीं टूटेगा तो गिरा में बुनियादी परिवर्तन विधायी, गिरा और

प्रतिभाषक स्वोत्तर करेगे नहीं। बिनोवा वार-वार कहने हैं कि प्राइमरी स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक के तमाम लड़के यह धोखा करने निकल पायेंगे कि ऐसी शिक्षा हमें स्वीकार नहीं है तो शिक्षा-पद्धति में तुरन्त परिवर्तन हो सकता है। यह बतौर भावना-निर्माण के सम्भव नहीं है। समाज में क्षोभ के धननिन्दक दिग्गु हैं। उनका सम्पत्तिक परिणाम है कि प्रायः समाज मनुष्य को मनुष्य के गाने व पहचानता है और न सम्मान देता है। प्रायः मनुष्य से ज्यादा कीमत उसकी उपाधि की मानी जाती है। मनुष्य बिल्लो द्वारा पहचाना जाता है, भग्धो द्वारा सम्मान पाता है। मनुष्य के इस घोर झरमान को प्रायः की शिक्षा-पद्धति पाल रही है। समाज में गैर-बराबरी कायम करने का एक प्रमुख हथियार मात्र की शिक्षा पद्धति है। तदर्थ शान्ति सेना इसे जड़ से बरतना चाहती है। शिक्षा में शान्ति का ध्यान्दोलन तदर्थ शान्ति सेना ने प्राप्त परिवर्तन को दृष्टि से देखा है।

तदर्थ शान्ति सेना अपनी नीति की इनाइयो द्वारा बुनियादी महत्व के कार्यक्रम चला रही है। शान्ति की शक्ति ही नागरिक की

शक्ति हो सकती है यह मानते हुए तदर्थ शान्ति सेना ने भिखण्डी-जलगाव और म्हा-मदाबाद में हुए दण्डों के अवसर पर, बपला देश के शारणाचार्यों के सवाल पर, पिछले वर्ष देशव्यापी भूखे और भकाल के अवसर पर "दुर्भिक्ष बनाम तदर्थ" का कार्यक्रम ले-नर कार्य किया है। यह उसकी सेवा का पक्ष है।

समस्याओं की जड़ तक ले जाने का तदर्थ शान्ति सेना का प्रयास प्रायः "रुम प्रसार-कारक लयना है। पहले गुजरान और प्रब बिहार के ध्यान्दोलन में इन दिनों तदर्थ शान्ति सेना सक्रिय रूप से जुड़ी है तो इसका कारण यह नहीं है कि वह इसे धनवर मानती है। अपना प्रभाव बढ़ाने की निर्दलीय युक्तियों की सामाजिक भूमिका की दिशा में तदर्थ शान्ति सेना शुरू से प्रयास रत रही है। प्रायः ज्यादा स्पष्टता के साथ समाज की पृष्ठ में घा रहा है कि प्रायः की व्यवस्था में यह दल चुनकर प्राये या वह दल, कोई शक्ति नहीं पड़ता है। दलीय लोकतन्त्र के प्राये की खोज समाज की चरनी चाहिये और यही उसकी समस्याओं का जवाब हो सकता है। प्रायः तक तदर्थ शान्ति सेना जो करती

माई है, अब उसकी प्रहणशीलता बढ़ गई है। परिस्थिति ने समाज को सुद इसकी प्रतीती करा दी है, इसलिए तदर्थ शान्ति सेना ने इस आन्दोलन की व्याप बढ़ाने की चेष्टा की है। सरकारों को उलटने या विधानसभाओं को भंग करवाने का कार्यक्रम चलाने में तदर्थ शान्ति सेना की रूचि नहीं है, बू कि सम-न्यायो का यह समर्थान नहीं है, मुद्दला और गाव स्तर पर नागरिकों की ऐसी समितियाँ बनें जो सरकार की पृष्ठ सीमित करें। और इस प्रकार कमशः समाज चले और 'सरकार' मरद करे—इसकी विस्तृत रूपरेखा चर्चा का विषय हो सकती है।

तदर्थ शान्ति सेना के लक्ष्य और कार्य-क्रमों में उत्तरोत्तर नये विचार जुड़े हैं। कोई याद, कोई शब्द, कोई व्यक्ति तदर्थ शान्ति सेना के लिए प्रमाण नहीं है। समस्याओं का विवेचन और उनका हल खोजना—पारे पूर्व धनुषभरो की सहायता लेकर—तदर्थ शान्ति सेना की निष्ठा है। एक जीवित स-ठन के विनाश के लिए यह सर्वथा आवश्यक है। तदर्थ शान्ति सेना का लक्ष्य सामाजिक गुण्डायों, तुराईयो और शास्त्रविक्रम रुडियों से सघर्ष करना और एक नई सांस्कृतिक शान्ति का सूत्रपान करना है।

स्वाधीनता दिवस को पुनोत वेला में

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रति

शतः शतः प्रणाम

राजस्थान खादी संघ, पो० खादीवाग (जयपुर)

गांधी को पुनर्जीवित करो

दत्तात्रेय सरमंडल

ईसा को गूली पर चढ़ाने में परचात्र गांधीजी की हत्या एक गुनाहाराकारी घटना थी। विद्वद् इतिहास में राजनीतिक हत्याएँ कई हुई हैं, लेकिन गांधीजी की हत्या सही ढंग से राजनीतिक नहीं बल्कि आ सच थी। गांधीजी किसी राजनीतिक या शासकीय पद पर आसीन नहीं थे। और उनकी हत्या कर गोडसे भी किसी राजनीतिक लाभ का अभिलाषी नहीं था। मुस्लिम-द्वेष पर आधारित धर्मनिरपेक्ष विचार प्रणाली के लिए शहीद होने, तत्कालीन ब्राह्मणवाद से प्रेरित हो उसने यह जड़कियाँ प्रकट कीं। अपनी कृति के परिणाम को वह अच्युत तरह जानता था। और उसका फल भोगने को भी वह तैयार था। परम्परागत हत्यारों की तरह उसने यह हत्या छिप कर नहीं की। दिन के उजाले में हजारों की उपस्थिति में उसने यह हत्या की। छोड़कर उसकी यह धारणा रही हो कि गांधीजी का शरीर नष्ट कर वह उनका नैतिक तथा प्राध्यात्मिक साम्राज्य भी नष्ट कर देगा। लेकिन ऐसा कि इन हत्याओं में भ्रमसर होता थाया है हजारों द्वारा हनन किये गये महान् व्यक्ति बनसोली भ्रमरता आया कर लेते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद छः माह के बाद उनका चत्त बसना भारत के लिए एक कठोर अभिप्राय था। गई-नई प्राप्त सत्ता को चलायौय में हम अंधा बना दिया। और हमने हमारी परीक्षा को भुला दिया। शासकीय जलजनों तथा तालकालीन समस्याओं ने गांधीजी के वरिष्ठ शिष्यों को व्यावहारिक यथायुक्त न उलझा दिया। जिन धारणाओं के लिये गांधीजी जीवित भीरु जीवित रहे उसको उन्होंने तुरन्त भुला दिया। गांधीजी की स्थिति एक पवित्र पूजन की बन गई। वे एक सत्कारी देवता बना दिये गये जिसकी महा पूजा का व्यय तो उठाया जायेगा। पर वे एक मूक भीरु मृत प्रतिमा मात्र बनके रहेंगे।

गांधीजी के निकटवर्ती शिष्यों के लिए जो देश की राजनीति या शासन में रहने के और उनके द्वारा निर्दिष्ट रचनात्मक कार्य में संलग्न थे गांधीजी को भुला देना इतना आसान नहीं था। गांधीजी से विद्वदने के बाद वे एक ऐसे व्यक्ति की खोज में थे जो गांधीजी की नैतिक प्रतिमा बन सके और उनकी रचनात्मक प्रणाली से प्रविष्ट हो। इसीलिए

दत्तात्रेय सरमंडल उन अनुभवविद्ध व्यक्तियों में से हैं जो विचार यात्रा के दौरान कई पहलुओं से गुजरे हैं। भूदान-ग्रामदान आन्दोलन में भी रहे और रचनात्मक कार्य भी किया हालांकि इसके पहले वे मार्क्सवादी थे। उनका यह लेख हम एक नजरिये के नाते प्रकाशित कर रहे हैं और कतई अचरु नहीं है कि उनको विश्लेषण से सहमत हो। सम्पादक

गांधीजी की सभी रचनात्मक सत्याग्रहों का एकीकरण कर सर्वदेवा सध बना दिया गया। विनोबाजी को गांधीजी का एक मत से उत्तराधिकारी मान लिया गया।

भूदान के बारे में विनोबाजी की अंतर-ध्वनि जिसे वे भगवान का आदेश कहते हैं एक सामाजिक तथा सही कदम था। उनके हाथ में घुरा छाते ही सभी रचनात्मक कार्यो को दूसरा या तीसरा स्थान देकर भूदान को ही प्राथमिकता दी गई। सर्वोदयो कार्यक्रमों के लिए भूदान कार्य ही सर्वोपरि माना गया, उसे उल्लाह और समर्पण भाव से करने का निश्चय हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय जनता की भ्रूणभूत आकाशा को पहचान भूदान को बुनियादी कार्यक्रम बनाने के लिए विनोबाजी अभिनन्दन के पात्र है। उन्होंने यह वरावर महसूस किया कि भारत में यदि कृषि की और दुर्लक्ष्य किया तो कितना ही औद्योगीकरण क्यों न हो भारत का विकास असम्भव है और कृषि में उन्नति तभी सम्भव है जब भारत की जमीन सामग्री बधनो से मुक्त की जाय। विनोबाजी कहते हैं कि उन्हें भूदान का आदेश प्राप्त होने तक लगानर तीन दिन नींद नहीं आई। बीमारी की ठीक-ठीक चिकित्सा करने के बाद विनोबाजी ने स्वयं को भूदान कार्य में प्रारुणन से समर्पित कर डाला। क्षेत्र-कार्य लेने तक वे लगातार २० वर्ष उममें जुटे रहे।

भूदान की चलना के आधिपत्यार का घोड़ा बहुत श्रेय लेलगना में पोषणरूपी के उन समयकलन को भी देना होगा जिन्होंने विनोबाजी द्वारा भूदान आन्दोलन की शुरुवात होने के पहले अपने मृत्यु पर वे मुम्बईनो के लिए १०० बीघा जमीन दान देने की इच्छा लिय रखी थी। वैसे कुछ क्षेत्र लेलगना से उन

सामयकारियों को भी देना होगा जिन्होंने विनोबाजी द्वारा लेलगना में प्रवेश करने के पहले हजारों एबड जमीन देशमुखो से छीन भूमिहीनो में तिलक कर दी थी। इसी कल्याणकारी लेकिन विस्मय वातावरण में विनोबाजी भूमिहीनो के लिए भूमि प्राप्त कर ने का अद्विष्टक मार्ग खोज रहे थे। सैनिक तथा साम्यवादी हिंसा से भूमिल वातावरण ने विनोबाजी को भूदान आन्दोलन की प्रेरणा दी। और वही से शुरुवात कर भग्ने हजारों अनुयायियों के साथ पन्द्रह वर्ष तक उन्होंने भारत की समुची भूमि पादाकाल की।

विनोबाजी की परयात्रा स्वयं में एक महान् उपलब्धि रही है। गांधीजी भी इतना साहस भरा कर्म कर पाते या नहीं इसमें शक है। हो सकता है कि गांधीजी ने दादो भाव से ही विनोबाजी ने यह प्रेरणा प्राप्त की हो। भारत में गांव से गांव तक सर्वोदयी कार्य-कार्यों द्वारा भूदान का अदेश पहुंचाया गया लेकिन विनोबाजी के इन अग्रोपय प्रयासों ने बावजूद यह मानना पड़ेगा कि भूदान कर्म भी और बुरी भी जन-आन्दोलन नहीं बन पाया। यह गृही है कि फिनिकों ने अपनी भूमि का थोडा अंश भूदान में दिया। उस दान के पीछे समाज परिवर्तन या तरीको के प्रति बरखा की भावना नहीं थी। दान देने के मूल में था तो मयाज के प्रतिष्ठा प्राप्त करने की साधना रही या फिर पुण्य प्राप्ति की।

अंत ही आन्दोलन पागे बड़ा प्रारंभिक सफलता के साथ कार्यकर्ताओं ने उठाया के साथ एक कृपाती मनोवृत्ति निर्माण हो गई। मरुवे भारत में मरुकालिन के आन्दार वे देयने लगे। सही या गलत हस्ताक्षरों से सडकों में भूदान से आमादान और आमादान में प्रवडतान, प्रवडतान से जिना दान और जिना दान में

गांधीजी की अहिंसा जनसाधारण के दुखों को मूक दर्शक नहीं थी

भाव से उत्पादन तथा सहजीवन में संलग्न हैं। चीन में न केवल वर्ग घोर उसीसे उत्पन्न बरिष्ठता को नष्ट किया जा रहा है, अपितु विद्या, प्रविष्टा आदि पर आधारित बरिष्ठता को भी नष्ट किया जा रहा है। इससे जनता में सचमुच समता का प्रादुर्भाव हो रहा है। घन प्रतीमन द्वारा अधिभूत काम की प्रथा, जो दूसरे समाजवादी देशों में अभी प्रचलित है, चीन में खत्म कर दी गई है। हरेक को स्वयं घोर अपने कुटुम्ब के लिए ही नहीं, जन सेवा के लिए भी रहना है, काम करना है— यह शिक्षा भी दी जाती है। स्त्रियों पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य में जुड़ी हुई हैं। स्त्रियां घोर युवकों की पूजनीय देवता कंगन तथा चकाचौंध का वहाँ सामाजिक बहिष्कार है। सादगी और अमप्रविष्टा

वहा पूजनीय माने जाते हैं। गांधीजी की प्रिय बुनियादी शिक्षा वहा परिष्कृत हो लम्बे लम्बे डग भर रही है। शिक्षा अब धनिकों का विनाश न रह कर हर क्षेत्र में जीवन तथा उत्पादन से जोड़ दी गई है। जनता का स्वावलम्बन तथा सक्रियता वहा की सर्वाधिक विशेषता है। ये कुछ पहलू हैं जहाँ गांधीजी के सपने, दूसरे देश में क्यों न हो, साकार होते दिख रहे हैं। हमें उनका नम्रता पूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

गांधी जी की अहिंसा को जितने केवल मूल रूप में रट डाला और गांधी विचारों को जितने धीरधार्मिक रूप से ग्रहण किया, ऐसे नट्टर गांधीवादी को चीन में इन सब कामों की बुनियाद में हिंसा ही हिंसा नजर

आयेगी और वह नाक निकोडेगा। लेकिन ये सब प्राप्त करने के लिए हमें जन युद्ध अनिवार्यतः करना है ऐसा तो नहीं है। हम जन युद्ध की जगह हम जन सत्याग्रह अपना सकते हैं। गांधी जी की अहिंसा अन्याय तथा जन साधारण के दुःखों की प्रसहाय धीर मूक दर्शक तो कभी नहीं रही थी।

वृद्धावस्था और बीमारी के बावजूद जयप्रकाश नारायण ने अपने अहिंसक तर्पण दुःख एक मात्र सनेन से देश में हो रहे पतन को ललकारा है। क्या यह सनेन केवल शासन के लिए था? या गांधी के अंतों के लिए भी। अब गांधी पूजकों को सोचना है कि वह जे० पी० के आवाहन को स्वीकार करें या अपनी सत्प्रवृत्ति में ही लीन रहें।

ALWAYS USE

VITA PASTEURISED BUTTER

B' cause it tastes so butterly Its freshness 'N' creamy flavour make it so different from ordinary BUTTER

VITA, PASTEURISED BUTTER IS GOOD AND ECONOMICAL ALSO. VITA PURE GHEE, INSTANT NON-FAT DRY MILK POWDER, WHOLE MILK POWDER, PASTEURISED BUTTER, SWEETENED CONDENSED MILK, ICE CREAM AND STERILISED FLAVOURED MILK ARE MANUFACTURED BY

The Haryana Dairy Development Corporation

(State Govt. Undertaking)

at its most modern and sophisticated milk plants at JIND, BHIWANI and ANBALA, in a most hygienic manner from FRESH MILK procured directly from producers in the area.

बसों में मांग लगाई जायेगी, तभी वे चोर के बच्चे सेतेंगे। किन्तु राजन घोर गैपन ने हार नहीं मानी। उन्होंने एड़ी-चोटी का जोर लगा कर छात्रों को भागत दिया और इस बात पर राजी किया हम सब एक बार फिर शिक्षा-मन्त्री से मिलें। कोई ठीक नतीजा निकलेगा, इस पर अन्य छात्र नेताओं को भरोसा नहीं था, किन्तु फिर भी उन्होंने राजन की बात मान ली। राजन ने कहा—

“मान लीजिये हम लोग सफल नहीं होते। मन्त्री महोदय हमारी बात नहीं सुनते। उस हावड़ा में हम लोग हड़ताल करके घोर सारे कालेजों को बन्द करवा देंगे, मगर खून-खराबी के पिछले तरीके बिलकुल नहीं अपनायेंगे। प्रायः सब लोग बचन धीजिए हड़ताल का मोका प्राया तो आप सब लोग शान्तिपूर्वक हड़ताल करेंगे, किसी तरह की मार्शरीट में भाग नहीं लेंगे और मगर राज्य के किसी भी हिस्से के छात्र हिंसक हो उठें तो हम लोग अपना भान्दोलन वापस ले लेंगे।

सब छात्रों ने इस शर्त को माना और एक प्रतिनिधि मण्डल फिर शिक्षा मन्त्री से मिलने के लिए रवाना हुआ। जाने के पहले विद्यार्थियों ने समाचार पत्रों में खबर भी छापवाई और वह इसलिए कि कहीं मन्त्री महोदय विधान सभा में यह बयान न दे दें कि हड़ताल करने के पहले विद्यार्थियों ने हमसे बातचीत करना भी जरूरी नहीं समझा। राजन का कहना है कि सफेद भूट बोलने में आज के नेताओं का सानी नही है। शिक्षा-मन्त्री महोदय के साथ विद्यार्थियों की औपचारिकी सी बैठक हुई। राज्य के शिक्षा सचिव भी उपस्थित थे। उन्होंने दूसरे राज्यों के बसूल की जाने वाली फीस के अंकड़े पत्रकर सुनाये और कहा कि हमारे यहाँ का प्रस्तावित शुल्क ज्यादा नहीं है। विद्यार्थियों ने उत्तर में कहा कि हमारे प्रान्त की सीसत प्रामदनी इन दूसरे प्रान्तों की सीसत प्रामदनी से कम है और हमारे प्रान्त में कुटुम्ब ज्यादा बढ़े हैं। शुल्क बढ़ि का असर लड़कों की शिक्षा पर भी पड़ेगा, किन्तु माता-पिता लड़कियों को पढ़ाने का विचार ही छोड़ देंगे। मन्त्री महोदय के हल में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, वे केवल मधुर बचन बोलते रहे और फीस कम करने में अपनी प्रमथता

प्रबल कर दी। उन्होंने कहा कि इस पर पुनर्विचार ही ही नहीं सकता। विद्यार्थियों ने मन्त्री महोदय को बताया कि इस परिस्थिति में वे हड़ताल करने के लिए बाध्य हो जायेंगे।

प्रान्त की राजधानी में जाकर भान्दोलन की बागडोर राजन, गैपन और उनके एक अधिक समभदार साथी कृष्ण ने सभाल ली। हड़ताल का नोटिस दिया गया और विद्यार्थियों की एक बड़ी सभा बुलाई गई। मगर सभा में विद्यार्थी इकट्ठी नहीं हुए, बड़ी निराशा हुई। कोई डेढ़-सो छात्र ही सभा में आये। इनमें से अधिकांश को तो यह भी नहीं मालूम था कि सभा किस लिए बुलाई गई थी? कालेज दस दिन पहले खुल चुके थे, अधिकांश छात्रों ने फीस अभी तक नहीं दी थी। इसलिए उन्हें मालूम भी न था कि फीस बढ गई है। सभा बुलाने वालों को निराशा हुई, किन्तु उन्होंने सोचा कि मगर हम हड़ताल शुरू कर दें तो हजारों विद्यार्थी साथ हो जायेंगे। इन तीनों छात्र नेताओं ने हड़ताल को सफल करने के लिए रात-दिन एक कर दिया। उनके पास न पंसा था, न जाने के लिए कोई बाहन। तीनों के बीच में एक साइकिल थी। प्रथम ही इन तीनों की हर कालेज के विद्यार्थियों में पंठ थी, सब उन्हें प्रच्छी तरह जानते थे और सबको उनकी ईमानदारी पर भरोसा था।

राजन, गैपन और कृष्ण—तीनों ने ठण्डों में पिचड़े लपेट कर ब्रूश बनाये, बाटियों में रंग घोला और सारे गहर को हड़ताल के नारों से भर डाला। एक मित्र का छोटा-सा प्रेंस भी था, उससे मदद लेकर हड़ताल की जरूरत के कारणों से सम्बन्धित एक पर्चा छपाया और कुछ साधियों से मदद लेकर उन्हें गहर, के सब कालेजों में बंटवा दिया। राजन और गैपन इसके बाद सबसे पहले लॉ कालेज पहुँचे। लॉ-कालेज छात्र भान्दोलन में सबसे आगे रहने के लिए मशहूर था। वहाँ के सारे छात्रों ने राजन और गैपन को सुना और बताया कि वे बाहर आ गये। छात्रों ने जुलूस की श्रवण में विभिन्न कालेजों के सामने नारे लगाना शुरू कर दिया। इसने सारे में राजन ने लिखा है—

“हमने हर जगह बिलकुल एक-सा तरीका प्रकृतियार किया। जुलूस कालेज के पाठक से

बाहर थोड़ी दूर पर रुक जाता था, फिर हम में से एक कालेज के प्रिन्सिपल के पास जाता और उनसे विद्यार्थियों के सामने भाषण की इजाजत माँगता। ज्यादातर प्रिन्सिपल तो ऐसे थे जो फीस का बढाया जाना स्वयं अनुचित मानते थे। हम लोगों के सोचन्य-पूर्ण व्यवहार से हम बिना बहस किये प्रायः छात्रों से बातचीत करने की इजाजत मिल गई। कुछ लोग थायद भौड़ देस कर उर गए हों। विद्यार्थियों को तो हमारी बात मानने में देर ही नहीं लगी। हम जिस कालेज में गये उसी कालेज के विद्यार्थी-नारे लगाते हुए हमारे साथ हो लिये।

लड़कियों के एक कालेज में जरूर थोड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ा। वहाँ की प्रिन्सिपल सख्त थी। लड़कियां बाहर तो प्राना चाहती थी, लेकिन फाटकर पर प्रिन्सिपल खाड़ी थी और वे बाहर जाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं। हड़ताल में लड़कियों का शामिल होना जरूरी था। राजन का कहना है कि जब तक किसी आन्दोलन में स्त्रियों का साथ भी नहीं मिल पाता, तब तक उस आंदोलन में न तो सच्चा शौर्य प्रयाता, न शक्ति और न पवित्रता। इसलिए मैंने सोचा कि लड़कियों को तो किसी न किसी तरह जुलूस में शामिल करना ही चाहिए। मगर वे जुलूस में भावेंगी तो सबसे पहले प्रायः सयत हो जायेंगे और सारी जनता की सहा-जुभूति हर हालत में हमारी होगी। राजन का कहना है कि लड़कियों को साथ सेने के लिए मैं एक भूट तक बोल गया। मैंने कहा कि आप जानती हैं कि मुख्य मन्त्री ने क्या कहा है? जब हमने मुख्य-मन्त्री से कहा कि अगर फीस कम नहीं की गई तो माता-पिता पहले लड़कों की ही पढावेंगे, लड़कियां घर की खादीकारी में बन्द कर रहे जायेंगी तो मुख्य-मन्त्री ने जवाब दिया कि यह तो अच्छा ही है। श्रादी करें और अपना-पना घर बसायें। सब प्राय ही तय कीजिए कि प्राय को शादी करना है या पढ-लिख कर, नाबिल बनना है। इतना सुनते ही लड़कियां प्रिन्सिपल की परवाह किए बिना ही फाटकर बाहर निकल गईं और इनलाब जिन्दाबाद के नारों से बाजारपर पूज उठा।

दोहर तक सारे राज्यों में समाचार फैल

गया कि विद्यार्थियों को हस्ताल पूरी तरह सफल हुई है। बीस हजार विद्यार्थी जुम्स बनाकर विधानमंडल पर गए। और फिर शाम को एक छात्रालय के कमरे में जो अब विद्यार्थियों का कार्यालय हो गया था धान्दोलन को तत्परी देने के लिए कुछ विद्यार्थी बैठे। राजन, गोपन और कृष्णन सब जानिसे ब्राह्मण थे राज्य में ब्राह्मण विरोधी वातावरण था। इसलिए उन्होंने तय किया कि छात्र सघर्ष समिति ऐसी बनायी जाय जिसमें ब्राह्मणों का प्रतिनिधित्व हो और जिसका अध्यक्ष भी ब्राह्मण ही हो। ऐसा करने से धान्दोलन पर साम्प्रदायिक होने का जो घबरा लगाया जा सकता था, उसकी सम्भावना खत्म हो गई। बराबर चार दिन तक सारे बालेज बंद रहे और विद्यार्थी शान्तिपूर्वक सड़को पर जुलूस निकाल कर अपनी मांगें दुहराते रहे। नागरिक समिति और कुछ राजनैतिक दलों ने भी हमारा साथ देने की इच्छा प्रकट की, किन्तु हम लोगों ने सहाय्यता के अतिरिक्त किसी को साथ लेना अनुचित माना।

राजन का कहना है कि इन दलों में से कुछ विरोधी दल थे और कुछ कार्यरत के हो

कुछ ऐसे लोग जो भीतर ही भीतर पद पावे की इच्छा से सत्ताकृत व्यक्तियों को नीचा दिखाना चाहते थे। कम्युनिस्ट और जनसभ ने भी सहयोग का हाथ बढ़ाया। हमने हाथ मिलाते से इकार कर दिया। हमने सोचा कि हमारे धान्दोलन में अभी जिस सौजन्य की सुगन्ध है, वह इस प्रकार का सहयोग लेने से नष्ट हो जायेगी। इसके बावजूद मंत्री महोदय ने बतवश दिया कि हम विरोधी दलों के हाथ में खैल रहे हैं। किन्तु इस तरह के दोष लगाना तो एक धाम रवैया है, इसलिए हम विद्यार्थी और नागरिकों को धासानी से सम्माना सके कि छात्र प्रपना धान्दोलन स्वयं चला रहे हैं, वे न किसी से मदद ले रहे हैं और न किसी के इशारे पर नाच रहे हैं।

चार दिन के बाद एक नगर से खबर आई कि वहां विद्यार्थियों ने उग्र रूप धारण कर लिया है और पथराव किया है। वे विद्यार्थी थे या किसी राजनैतिक दल के सदस्य यह कहना कठिन है, किन्तु पुलिस विद्यार्थियों पर टूट पड़ी और अनेक विद्यार्थी गिरफ्तार कर लिए गये। राजन को लगा कि धान्दोलन

हाथ से बाहर जा रहा है। सारे प्रान्त में धान्दोलन पर काबू रखना कठिन है, इसलिए उसे अधिक से अधिक दो शहरों तक सीमित रखना चाहिए। उसका विमर्श था कि जिला स्तर के नगर भी इन दोनों बड़े शहरों के डग से धान्दोलन करेंगे, बिन्दु ऐसे की कमी थी, व्यक्तिगत रूप से शहर-शहर में जाकर विद्यार्थियों को सम्माना कठिन था, इसलिए छात्र धान्दोलन के नेताओं के मन पर यह डर छा गया कि सारे धान्दोलन को हिंसक कहकर कहीं कुचल न दिया जाय। इसके शिवाय ऐसा भी लगा कि भवसर का लाभ उठाकर विरोधी राजनीतिक दल जहाँ-तहाँ घुसपैठ करते की कोशिश कर रहे हैं। राजन का कहना है कि इन सारी भासकामों के रहते हुए भी हम लोगों ने मुख्य दो बड़े नगरों में प्रपना धान्दोलन शान्तिपूर्वक जारी रखा और भगवान् की दया से दो दिन के बाद राज्य के मुख्यमन्त्री ने घोषणा की कि कौस वृद्धि के मामले पर पुनर्विचार किया जा रहा है। हस्ताल गौरव के साथ चली और गौरव के साथ समाप्त हुई। ७

SAVE HALF THE COOKING TIME EVERYDAY

FOR MARKED QUALITY
BUY

Sohna Markfed Dehydrated Vegetables FOR INSTANT COOKING

dehydrated onion slices/powder
dehydrated potato chips/cubes
dehydrated peas * dehydrated bhindi
dehydrated mustard spinach (Sag)
dehydrated chillies & powdered spices

MARKFED CANNERIES
JULLUNDUR CITY (INDIA) POST BOX 122

A. S. Pooni, I A S
Managing Director

The Punjab State Cooperative Supply and Marketing Federation Ltd.
Post Box 67, Sector 17-E,
CHANDIGARH

शिक्षा को कमरे की चारदीवारी से बाहर निकालना होगा

—वंशीधर श्रीवास्तव

“मैं जवाहर लाल की हैमियत से बहुत हूँ, मेरे दिमाग में कोई शक नहीं है कि बुनियादी तर्कमय के रास्ते पर ही हमें चलना है—साम वष की बुनियादी तर्कमय, इसके पहले पूर्व बुनियादी और इसके बाद भी।”

बुनियादी तर्कमय का यह रास्ता है—किसी समाजोपयोगी उत्पादक उद्योग के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का संस्कार और विकास—एक ऐसे व्यक्तित्व का विकास, जो समाजवादी समाज के लिए, जिसमें कोई दूसरे के शोषण पर न पड़े, आवश्यक है। लोकतंत्रीय समाजवाद का यह तर्कज्ञ है कि समाज का प्रत्येक नागरिक समाज की उत्पादन इकाई ही और यह तभी सम्भव है जब विद्यार्थी शिक्षा बाल के प्रारम्भ से ही कोई समाजोपयोगी उत्पादक काम सीखे जैसा वैश्विक शिक्षा में है। “सब लड़के हाथ से काम करें—सब लड़के पढ़ें—आपे बक्त काम करें, आपे बक्त पढ़ें—ताब लड़को की समान शिक्षा हो, चाहे लड़का धनी का हो या गरीब का, ऐसी वैश्विक शिक्षा की मांगवता है। समाजवादी समाज बनाना है तो सामान्य शिक्षा सबके लिए समान होनी चाहिए। सामान्य शिक्षा की यह अवधि हाई स्कूल स्तर तक की यानी हाई-सीन वष से लेकर पन्द्रह-सोलह वष तक की होनी चाहिए।

सामान्य शिक्षा की इस अवधि में शिक्षा की कोई दूसरी समानांतर प्रणाली नहीं

चलेगी, जैसी प्राज नर्सरी शिक्षा, कान्वेन्ट शिक्षा प्रयत्न पब्लिक स्कूल शिक्षा के रूप में देश में चल रही है, जहाँ पाठ्यक्रम, माध्यम और शूलक का ढांचा भिन्न है। कोठारी कमिशन के इस सुभाष को दृढ़ता पूर्वक तत्काल मान्य करना चाहिए कि देश में लोक शिक्षा की एक समान प्रणाली चलनी चाहिए। इसके लिए यदि सविधान में सुधार करना हो तो करना चाहिए, आवश्यक हो तो प्रादोलन भी चलाना चाहिए।

लोक शिक्षा की यह सामान्य प्रणाली वैश्विक शिक्षा ही हो सकती है जिसकी शुरुआत गांधीजी ने शोषण-मुक्त, वर्ग-विहीन समाज से रखना से लिए की थी। प्रारम्भिक शिक्षा से उच्च स्तर तक के लिए वैश्विक शिक्षा ही प्राज की वर्तमान शिक्षा का विकल्प है। प्राज की नर्सरी शिक्षा का विकल्प है पूर्व बुनियादी, प्राज की प्रारम्भिक शिक्षा का विकल्प है वैश्विक शिक्षा, प्राज की माध्यमिक शिक्षा का विकल्प है उत्तर बुनियादी और प्राज की उच्च शिक्षा का विकल्प होना चाहिए उत्तर बुनियादी का प्रसार।

ऐसा इसलिए कि वैश्विक शिक्षा के आधारभूत मिश्रण अर्थात् (१) समाजो-पयोगी उत्पादक कार्य बलाप (२) वाद्य विषयों का उत्पादन कार्यबलाप और प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से सह-सम्बन्ध और (३) विद्यालय वा स्थानीय समुदाय

में निवृत्त वा सम्पर्क शिक्षा, ऐसे महत्वपूर्ण मिश्रण हैं जो समाजवादी शिक्षा नीति के पारगम गत्य हैं और जिनसे राष्ट्र की सभी स्तरों की शिक्षा प्रणाली वा मार्ग-दर्शन होना चाहिए।

परन्तु वैश्विक शिक्षा वा कार्यन्वयन करने गमय नीचे त्रिती बातों वा ध्यान रखना होगा

पूर्व प्रारम्भिक शिक्षा (पूर्व बुनियादी स्तर)—हमारे सविधान में शिशु शिक्षा सरकार वा उत्तरदायित्व नहीं है। परन्तु इस स्तर की शिक्षा (हाई से पाच वष तक) का अत्यन्त महत्व है। घट जहाँ भी सम्भव हो वैश्विक शिक्षा की पूर्व तैयारी के रूप में दो तीन घण्टे की बालवाडिया चलाई जायें। इन बालवाडियों में शिक्षा वा माध्यम अनिवार्य रूप से बच्चों की मातृभाषा हो और पाठ्यक्रम स्थानीय समुदाय के जीवन से सम्बन्धित हो। गुजरात के तालीम गण ने बालवाडी की एक बहुत ही सफेदी प्रणाली वा विकास किया है जो अपनी सवृष्टि और वैश्विक शिक्षा के सिद्धान्तों के अनुसर है। इसका उपयोग करना चाहिए। पूर्व प्रारम्भिक स्तर पर प्राज देश में जो नर्सरी वा माट्रेटरी स्कूल चल रहे हैं वे वास्तव में देश में चलने वाले कान्वेन्ट और पब्लिक स्कूलों में फीडर मात्र हैं। इनमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और इनके पाठ्यक्रम भी प्राय विदेशी हैं, जिससे ये स्कूल प्रारम्भ से ही अन्तर्गत की प्रवृत्ति को जन्म देने हैं। इनका वृद्धिधार होना चाहिए और गुजरात के उद्योग की बालवाडिया चलनी चाहिए। यह लोकतंत्रीय समाजवाद के हित में होगा।

प्रारम्भिक शिक्षा (वैश्विक शिक्षा)—यह केवल खेती-वागवर्ती, कर्तार, बुध्द, गते वा काम, सिलाई-सुनाई आदि कुछ परम्परागत दस्तकारियों तक ही सीमित न रहे। इन उद्योगों के प्रतिरिक्त लकड़ और बाघ बनाने के काम, गृह विज्ञान, प्राथमिक वैद्युती, सामान्य रेडियो यांत्रिकी, आदि-आदि की आज सामान्य जीवन के अंग होते जा रहे हैं, वैश्विक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किये जायें जिससे शिक्षा वा बलाप जीवन से सम्बन्ध बना रहे। वैश्विक शिक्षा में उत्पादक उद्योग शिक्षा का माध्यम है। घट. घगर समाज के

→ सभी विद्यार्थियों को जितनी समाजोपयोगी उत्पादक हुनर की शिक्षा देनी है तो वैसिक स्कूलों को पर्याप्त साधन (कच्चा माल और उपकरण) देने होंगे जो किसी भी सरकार के लिए सम्भव नहीं है। प्रथम यह प्रतिनिधित्व ही जाता है कि उद्योग शिक्षण के लिए हम छात्रों को समुदाय के खेती—वर्गिहानी, कृषि-कामों, दुबानों, कारखानों पर ले जाए। दुनिया में शिक्षा का नया विचार था यह नहीं मानता कि शिक्षा विद्यालय में बंधकर मात्र के पुनर् से सार्वजनिक शिक्षण के लक्ष्य को पूरा कर सकती है। इसीलिए यूरोपों का का सार्वजनिक शिक्षा छात्रों को विदेश-विद्यालयों की नरनुत्ति करता है। स्वविद्यालयी-करण छात्र की शैक्षिक विचारधारा का अंग हो रहा है।

अतः अग्र वैसिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाना है तो शिक्षा को सस्था की चहार दीवारी से बाहर निकाल कर उसका निभान्धन उन स्थानों पर करना होगा जो समुदाय के उत्पादक केन्द्र हैं अथवा जहाँ समुदाय के लिए विकास का काम हो रहा है। यदि सामान्य विषयों के शिक्षण का पूरा वैशिक मूल्य प्राप्त करना है तो बोर्डिंग शिक्षा और हाथ के काम की शिक्षा का समन्वय होना चाहिए और अध्ययन और काम को निरन्तर अनुबन्धन करने की चेष्टा होगी चाहिए। यह सिंघारित प्रोत्सवों में शिक्षा-आयोग की है, मात्र भाषीकी की नहीं। सामुदायिक जीवन की सामान्य प्रवृत्तियाँ जैसे खेल बूद, नाच-गाने, मेले-डेजे, पर्व-दोहार इदि वैसिक शिक्षा के प्रतिष्ठित घण्टे हो, जिनसे छात्र म इस भावना का विकास हो कि वह समाज के अंग है और उसका समाज के प्रति रचनात्मक उत्तरदायित्व है। पाठ्यक्रम के इस अंग की प्रयोगशाला भी समाज हींसा।

इस स्तर की शिक्षा का पाठ्यक्रम माध्यमिक शिक्षा सस्थाओं में प्रवेश मात्र की तीवरी न हो कर जीवन की तीवरी हो। इस दृष्टि में यह पाठ्यक्रम अपने में पूर्ण हो और इसके उन छात्रों का, जो तात्कालिक परिस्थितियों के कारण अपने नहीं बड सबते हैं इनका बोर्डिंग विद्यालय भी हो जाय वि अग्रतर मिलने पर वे उच्च स्तर की

माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने योग्य बन जाए।

शिक्षा का माध्यमिक स्तर—(उत्तर बुनियादी शिक्षा) शिक्षा का माध्यमिक स्तर सही माने में उत्तर बुनियाद शिक्षा होनी चाहिए। अर्थात् माध्यमिक शिक्षा नो नीचे की बुनियादी शिक्षा का प्रसार होना चाहिए। सही माने में माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायिकरण, जो आज का तत्काल है, तभी होगा। आज की माध्यमिक स्तर की शिक्षा में एक औद्योगिक अथवा व्यावसायिक वर्ग जोड़ने भाष से और उस वर्ग की शिक्षा को सबके लिए प्रतिनिधित्व बना देने से भी माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायिकरण नहीं हो जाएगा। आज की माध्यमिक शिक्षा बहुवर्गीय है। विभिन्न साहित्यिक, वैज्ञानिक, इधि, टेकनिकल, पाणिज्य प्रादि वर्ग हैं। प्रावश्यकता इस बात की है कि इन वर्गों के भेद को मिटाकर सामान्य शिक्षा की संरचना को ही इतना व्यापक बना दिया जाए कि उसमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, टेकनिकल, व्यावसायिक प्रादि शिक्षा भी आ जाए। पोस्ट वैसिक शिक्षा इस प्रकार की शिक्षा है, जहाँ माध्यमिक स्तर पर उसको प्रपनाया चाहिए। किन्तु इसके कार्यान्वयन के समय नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखना चाहिए

वैसिक शिक्षा की भांति जब हम उत्तर बुनियादी शिक्षा को सर्व साधारण तन् उपलब्ध कराने की कोशिश करने को विद्यालय का प्राणन बहुत छोटा साधन होगा और हम को समुदाय में स्थित रूप परामों और औद्योगिक कारखानों का व्यापक शैक्षिक उपयोग करना होगा। चू कि किसी व्यवसाय की ट्रेनिंग इस स्तर की शिक्षा का अन्विर्वाय घण्टे होगी अतः व्यावसायिक और टेकनिकल ट्रेनिंग का उत्तरदायित्व केवल विद्यालयी प्रणाली पर नहीं होना चाहिए। विद्यालय के शिक्षार्थों, उद्योगों के मानिकों या प्रबन्धकों अधिकों और सरकार के सहयोग के बिना और उत्पादन और विनरण से संबंधित राज्य के विभिन्न विभागों में समन्वय स्थापित किये बिना, बुनियादी शिक्षा का ठीक कार्यान्वयन यानि माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायिकरण नहीं हो सकता है।

उत्तर बुनियादी शिक्षा के बाद प्रत्येक

विद्यार्थी को कम से कम एक वर्ग के लिए अपनी रचि और व्यवसाय के अनुसार समुदाय के उत्पादक केन्द्रों में काम करना चाहिए। इस काम के लिए सरकार को छात्रवृत्ति देनी चाहिए। चू कि ये छात्र किसी न किसी समाजोपयोगी उत्पादक अन्धे में समुदाय की सहायता कर रहे होंगे, अतः यह राष्ट्र को महंगा नहीं पड़ेगा। इस काम का दोहरा लाभ होगा—समुदाय में काम करने से सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होगा— जो समाज-वारी समाज का प्रमुख लक्ष्य है और थम-प्रतिष्ठा की भावना मजबूत होगी।

पोस्ट वैसिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा होगी।

पोस्ट वैसिक स्तर पर शिक्षा का व्यावसायिकरण तभी सफल होगा जब शिक्षा विभाग और योजना विभाग का समन्वय हो। ऐसा होगा तभी समुदाय की उत्पादक प्रक्रिया में व्यवसाय सीधे हुए विद्यार्थियों को सलाहा जा सकेगा और शिक्षित बेरोजगारी कम होगी। इस स्तर की शिक्षा का लक्ष्य विद्यार्थियों में प्रवेश जतना नहीं होना चाहिए जितना कि क्रियाशील जीवन की तैयारी। फिर भी पाठ्यक्रम इस तरह का हो जिससे छात्रों में ऐतिसी समता का विकास हो कि वे अग्रतर मिलने पर उच्च शिक्षा अथवा उच्चतर व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हो सकें।

उच्च शिक्षा (शिक्षा का विद्यार्थियों की स्तर) उच्च शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति और समुदाय की अधिकधिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो। इसलिये उच्च शिक्षा के स्तर पर भी व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सामान्य शिक्षा का प्रतिष्ठित घण्टे बनाया जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि छात्र के परम्परागत स्थिती बालेजों के स्थान पर, जो किसी हुनर की शिक्षा न देने के कारण बेरोजगारी में कारखाने बन रहे हैं, छोटे-छोटे व्यावसायिक कारखानों और तकनीकी कारखानों की स्थापना की जाय और इस प्रकार जीवन-प्रतिष्ठित व्यवसाय मूलक उत्तर बुनियादी शिक्षा को छात्रों बचाया जाए। भारत प्रांतों में बसा है। अतः इन बालेजों और सहायकों के अध्ययन का क्षेत्र इनका व्यापक हो जितना व्यापक

उन्नत ग्राम-जीवन और औद्योगिक विकास-शील भारत की आवश्यकताएँ हैं। देश में उन्नत कृषि—विधियों और प्राधुनिक लघु उद्योगों के संचालन के लिए, सिंचाई योजनाओं के प्रबंधन के लिए, नलकूपों के चलाने के लिए, बिजली की मरम्मत के लिए, यातायात क्रय-विक्रय, प्रशासन आदि विविध सेवा के क्रियाकलापों के लिए और इनके अतिरिक्त राष्ट्र के विकास के लिए जो व्यवसाय चलेंगे वे कालेज उन व्यवसायों की प्रायोगिक शिक्षा के केन्द्र होंगे। इनमें जो शिक्षा दी जायेगी उसका जीवन की और बाजार की आवश्यकताओं से मेल होगा। शिक्षा के क्षेत्र में ये कालेज बुनियादी और बुनियादी स्तर की संस्थाओं के लिए शिक्षक और व्यवस्थापक तैयार करेंगे और उद्योगों के क्षेत्र में ये उत्पादन और वितरण की पद्धतियों में सुधार के लिए अध्ययन और अन्वेषण करेंगे।

विश्वविद्यालय स्तर पर वैज्ञानिक शिक्षा का रूप क्या हो- अभ्यास-क्रम क्या हो, इस का भ्रमरूप चित्र राधाकृष्णन विश्वविद्यालय प्रायोगिक के एक सदस्य डाक्टर आर्यर ई० मार्गन के 'हायर एजुकेशन इन इंडिया' नामक पुस्तिका में दिया है। इस पुस्तिका में दिये गये सुझावों को आधार मान कर शिक्षा का नया ढाँचा तैयार करना चाहिए। वर्तमान शहरी विश्वविद्यालयों में सुधार से काम नहीं चलेगा। आज जब देश का व्यावसायिक और आर्थिक ढांचा बदल रहा है तो उच्च शिक्षा को बदलना होगा, जिससे उच्च शिक्षा युग की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके—उन्हीं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं जो किसी कारखाने कागारिय या प्राधुनिक फार्माई पर काम करेंगे वरन् उनकी भी जो किसी कारखाने या फार्माई पर काम नहीं करेंगे परन्तु जिन्हें आज के औद्योगिक समाज में पग पग पर टेक्निकल ज्ञान की आवश्यकता पड़ेगी।

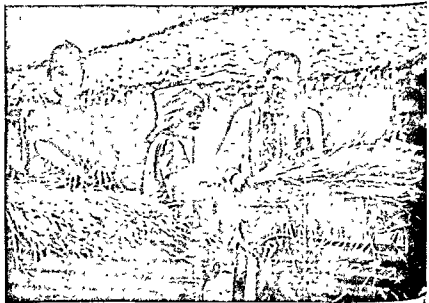
इस परिवर्तन की रुतरेखा कुछ इस प्रकार होनी चाहिए—उच्च शिक्षा की इन संस्थाओं में प्रवेश पाने की बगोटी प्रयोगाचारिक और उदार और और यह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनकी क्षमता,

अभिरुचि और ज्ञान पर निर्भर करे और कालेज में प्राप्त डिग्रियों और डिप्लोमाओं का परिणाम न हो। उच्च शिक्षा की संस्थाओं में प्रवेश के लिए यह सिफारिश यूनेस्को के अंतर-राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की भी है।

शिक्षा की इन संस्थाओं में ऐसे सत्रणों का आयोजन हो जो व्यक्ति को स्वयं सीखने में सहायता दें, जैसे नाना प्रकार की प्रयोग-शाखाएँ (भाषा, समाज विज्ञान, सामान्य विज्ञान और तब नीकी आदि की), पुस्तकालय, सूचना केन्द्र, शब्द रस्य उपकरण, प्रोग्राम्ड शिक्षण के साधन आदि।

समुदाय को उच्च शिक्षा के इन संस्थाओं की प्रयोगशाळा होना चाहिए। संस्था के भीतर प्राप्त ज्ञान, तकनीकी ज्ञान को तब तक पर्याप्त और लाभप्रद नहीं माना जा सकता जब तक कि समुदाय में उनको लागू न कर लिया जाये। जो लोग संस्था के बाहर उत्पादन और समाज के विकास की अन्य क्रियाओं में लगे हैं, उनके साथ काम किये बिना उत्पादन और विकास की प्रक्रियाओं के रहस्यों को समझा नहीं जा सकता। धन इन संस्थाओं का टाइमटेबुल इस प्रकार बनाया जाय कि विद्यार्थियों को समुदाय के उत्पादन और विकास केन्द्रों पर काम और प्रयोग करने का मौका मिले। इसके बिना पठार्थी मानी

शिक्षा कमरे से खलियामन तक : छात्र और शिक्षक एक साथ काम करते हुए।



प्रमाण से दूसरी भागा में जाने की पूरी स्वतन्त्रता हो। घन हमारा मुआवज़ है कि शिक्षियों और प्रमाण-पत्रों को बिना अध्ययन के कौनों को पुरा करने के लिए अथवा मोठरी पाने के लिए आनन्दन न माना जाय।

एसा मानना ठीक नहीं होगा कि उच्च शिक्षा के इन नये सम्बन्धों में तुलनी-मूर या शेषमरीपर-मिन्टन अथवा मूटम गलिन और विज्ञान के विद्वानों का अध्ययन नहीं होगा या शक्रापायं और काण्ट के दर्शन छूट जायेंगे। ये तो मानव सस्टूनि की महान जगनियमियाँ हैं। इनसे कबिन होकर मानव सम्मता पशु और लकीण हो जायेगी। घन इन सम्बन्धों में छात्र अपनी श्रद्धालय मानव विरागत का पुरा अध्ययन और मनन करे।

शैक्षिक प्रशासन शैक्षिक प्रशासन स्थापन शैक्षिक नियमों के हाथ में हो। शिक्षा सरकारी पर सरकार का नियन्त्रण नहीं हो। घन सरकार के परन्तु पाठ्यक्रम क्या हो, परीक्षा पद्धति क्या हो, इनका सञ्चालन कैसे हो इन विषय में सरकार दगान न दे। विद्यन कुछ वर्षों में निजी प्रबन्ध प्रणाली के प्रण्टा-कारों से उठ कर स्वयं शिक्षा जगन से ही शिक्षा के सरकारीकरण को माग उठनी रही

है। यह स्वायत्तता छीनने के माघ समान की स्वायं दगाना का कारण होगी। शिक्षा सर-कार के हाथ में गई ना वत लोक मानम को अपने अनुकूल एक ढाबे में ढालने की कोशिस करेगी, जिनका परिणाम लोचनन के लिए पातक होगा।

शैक्षिक प्रशासन का दूसरा निर्देशक विद्वान होगा-शिकेंडीकरण। स्कूल स्तर में राष्ट्रीय स्तर तक शैक्षिक नियमों की प्रशासन नीतियां हमी विद्वान में निर्दिष्ट होगी।

बयस्क शिक्षण : शिक्षित बयस्क लोच-लन की रीढ़ है। घन लोचनन का सचन बनाने के लिए बयस्क शिक्षण का प्राथमिकता देनी चाहिए। शासना बयस्क शिक्षण का एक अनिवार्य विन्तु बटून छोडा घन है। घन बयस्क शिक्षण का मध्य ब्यार्यारिक शासना ही होनी चाहिए। राष्ट्रीय के बयस्क शिक्षण के लिए भी बैंगिक शिक्षा को हितकर बनाया या। उनका बहना या कि माना-विना के ब्यक्तिव का गम्हार जब बैंगिक शिक्षा से होगा तभी उनकी गन्तान भी बैंगिक शिक्षा में निष्ठावान छात्र बन सचेंगी।

प्रतिपत्रं प्रीयम घोर गरद अक्काश में महीने बंड महीने के लिए कानेज के विद्यार्थी

प्राथमिक बयस्क शिक्षण का काम हो। यह कोरी शासना न होकर ब्यार्यारिक शासना हो। बैंगिक शिक्षा के छात्रों के लिए यह काम आमान होगा। जहाँ भी बैंगिक स्कूल हों वहाँ मान को एक बंड घण्टे के लिए बयस्क शिक्षा का प्रबन्ध हो। इन काम को बैंगिक अथवा उत्तर सुनिवादी स्कूल के अस्था-पत्रों की सेवा का एक घन बना दिया जाय।

परीक्षा-पद्धति छात्र को शिक्षा परीक्षा पुरक है। शिक्षा की एक भागा से दूसरी भागा में जाने के लिए अथवा लोचरियों के लिए अगर दिदी और प्रमाण-पत्र घनाकरक हो जायें तो परीक्षा का महत्व घट जायेगा और छात्र को शिक्षा में जो प्रण्टाकार है वह बटून घन तब गमाव हो जायेगा। कैंते बैंगिक शिक्षा में छात्र के ब्यक्तिव का दिन प्रतिदिन मूल्यांकन होना चाहिए यही तो उस के साथ न्याय नहीं होगा। मानरिक मूल्या-ंकन अक्षिक में अक्षिक घोर बाह्य परीक्षा कम से कम घोर वह भी छात्र के डग की नहीं एबदम लागी, यह छात्र की परीक्षा पद्धति का बिलस होया। प्रमाण-पत्र बैंगिक बलुंनान-मक होगा, अपने पास फेन या दिबीजन नहीं निगा जायेगा।

स्वाधीनता दिवस पर

हादिक

शुभकामनाएँ



उद्योग मंदिर, आमेर (जयपुर)

शिष्टाचार के मुखौटे में भ्रष्टाचार

मुनिश्री महेंद्र कुमार प्रयम

प्रतिदिन भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। इसके साथ धार्मिकमिथो नहीं की जा सकती। पर प्रश्न यह है कि भ्रष्टाचार क्या है? एक खाता दूध में पानी मिलाता है, एक दूधान-दार निर्धारित मूल्य से अधिक बंसे लेकर बसु बेचता है, कभी-कभी वह मूल्य सूधी दुकान पर लटकना भूल जाता है, या एक गिणाही किसी में दो-चार रुपये रखित ले लेता है—क्या यही भ्रष्टाचार है? चोर-दाजारी, जमाखोरी, गिनाटप तथा रिक्कत को भ्रष्टाचार के बड़े रूपों में गिना जाता है। इन्हें मिटाने के लिये सार्वजनिक क्षेत्र से कई आन्दोलन चलाये गये, सरकार ने भी अपने कई प्रतिष्ठान स्थापित किये मर, भ्रष्टाचार-रूपी मुरसा का मुल दब तक भी बन्द नहीं हो पाया है। वह कमस फैलाना जा रहा है। भ्रष्टा: इनका कारण क्या है? सार्वजनिक क्षेत्र के आन्दोलनों और सरकारी उपक्रमों के विफल हो जाने का परिणाम भी तो भयंकर भा सकता है।

तगना है, भ्रष्टाचार के मूल तक दब भी पहुँचा नहीं जा रहा है। वर्तमान में भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए हल्ला अधिक मचाया जा रहा है पर सतह पर उतर कर प्रयत्न कुछ भी नहीं किया जा रहा है। यदि वैसा प्रयत्न होता, तो भ्रष्टाचार को मिटाने में प्रायः पच्चीस वर्ष नहीं लगते, यह क्रम बरता हुआ भी नजर नहीं आता। ऐसा लगता है, भ्रष्टाचार के विरुद्ध बोलना धाज-कल फैलान बन गया है। धर्माचार्य भी भ्रष्टा-चार के विरुद्ध बोलते हैं, रिश्तत और सिफारिशों के बीच धिरे रहते जाने मन्त्री भी भ्रष्टाचार को बोलते हैं, अनहद सोपणर के के वसा कमाने वाले उद्योगपति भी भ्रष्टा-चार के विरुद्ध भण्डा उठा कर प्रगुमा हो रहे हैं, सार्वजनिक कार्यकर्ता भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध अनकथ तक कर बैठते हैं, पत्रकारों की कलम धाए दिन होने वाले भ्रष्टाचार की कतई खोमने में पीछे नहीं है, अधिकांशियों को तो भ्रष्टाचार का नाम

लगता और यहा तक कि जन-जन के मुख पर भ्रष्टाचार की खूनी निन्दा है। ऐसी परि-स्थिति में धायद भ्रष्टाचार को भला-बुरा कह कर सभी उसके पतने-पूलने में परोक्ष सहयोग दे रहे हैं।

बुरा बता देने मात्र से उसकी जड़ें हिलने वाली नहीं हैं। उसके लिए तो व्यवस्था-परिवर्तन के कुछ ठोस आधार खोजने होंगे। भ्रष्टाचार ने अपने पैर इनकी मजबूती से जमा लिए हैं कि मात्र निन्दा करने से पता-वन करने वाला नहीं है। इस रोग के प्रतिष्कार के लिए महाराष्ट्र में विमान और तन्तुडूल प्रयत्न अभिभिन है। कजरी उपचार से यह भयंकर रोग समाप्त होने वाला नहीं है।

भ्रष्टा ने बहुत सारी विदेशी एजेंसियाँ प्रयत्न काम कर रही हैं। चुनावों तथा अन्य धवमरों पर यहा कुछ सुछ सुछने को करोडों रुपये देती हैं और उनके माध्यम से अपने-अपने देश के प्रति सद्भावना बनाये रखने के साथ-साथ भारतीय व्यवस्था को भ्रस्त-व्यस्त भी करती रहती हैं। कुछ देश नहीं चाहते कि भारत अपने पैरों पर लडा हो जाए। उनका प्रयत्न है कि वह सैनिक दृष्टि से कमजोर रहे, धार्मिक व्यवस्था लडखानी रहे, उलाढल बड़ने न पाये, महगाई बढ़ती रहे। साथ की दृष्टि से भी धात्म-निर्भर बनने, वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भी पिछडा हुआ रहे, जगता में धमन्नेय चरम छोर पर पहुँच जाए, जिससे राजनैतिक परिस्तरता यती रहे। यह एक ज्वलत प्रश्न बन जाता है कि क्या उन सगटनों के द्वारा धर्म के लोभ में भारत की स्वतन्त्रता को उन देशों की गिथी रखने का यह धमपिहृत प्रयत्न नहीं है? इतने बडे भ्रष्टाचार की ओर कभी किसी ने ध गुत्ती उठाने का साहस भी किया?

भारत ने जनतन्त्र पद्धति को धनपाया है। तागागुठी यहा के नागरिकों को धर्म-प्रेत नहीं है। जनतन्त्र पद्धति भी स्वतन्त्र

चिन्तन के साथ विकसित हो सकती है। जब उसकी ओर किसी देश के छोर के साथ बांध दी जाती है, तो स्वतन्त्र विकास की महाबना समाप्त हो जाती है। मनदाता दस-बीस रुपये लेकर मनदान करता है, उसे अन्यत्र बुरा कहा जाता है और राजनैतिक दल विदेशी एजेंसियों से करोडों रुपये लेकर दूध के नहाये रह जाते हैं, यह चिन्तन का धयत्न धायदक पहलू है।

राजनैतिक दल भी अपनी विकलता सामने धाने पर शासक दल पर धनेक धारोप लगाने लगते हैं। बहा वे धर्षण में धनना मुह नहीं देखते। साथ ही धन्य दलों के द्वारा होने वाली धनतिकता भी उन्हें नहीं कचो-उत्ती। यह एकांगी दृष्टिकोण जनतन्त्र को स्वस्थ नहीं रहने देता। मनदाताओं में जा-तीय तथा साम्प्रदायिक भावना भरना, धनेक प्रकार के प्रलोभन तथा दबाव देना, धाज-धादि विवरित करना धादि जो बुराईया हैं, उनसे बडकर बुराई है, विदेशी एजेंसियों से धन लेना और उनसे मनेत पर भारत की व्यवस्था को ध्रस्त-व्यस्त करने का प्रयत्न करना। यही कारण है, पच्चीस वर्षों की लम्बी अवधि में भी देश न तो जनतन्त्र को ही प्रशस्त बना पाया है और न किसी किशम में गतिशील व धात्मनिर्भर ही हो पाया है।

जनतन्त्र में प्रशासन का सम्बन्ध मत-दाता से लेकर मन्त्री तथा मुख्य मन्त्री तक जुड जाता है। मुख्य मन्त्री वह रह सकता है, जो बहूसंख्यक विधायकों का विश्वास प्राप्त किए रहे। विधायक वह रह सकता है, जो मनदाताओं में अपनी मोह-प्रियता कम-नहीं होने दे। ऐसी स्थिति में बहून कुछ मनदाता के हाथ में बेरिद्रित हो जाता है। वह विधायक पर उचिन-धनुचिन दबाव डालता है। विधायक को विवध हो कर उसे मानना पटना है। यदि वह नहीं मानता है तो धनेके चुनावों में उसे हरी भण्डी दिखाई जा सकती है। मनदाता के प्रस्ताव को किदाग्विन करने के लिए विधा-यक सम्बन्धित धपिधारी तथा मन्त्री पर दबाव डालता है। मुख्य मन्त्री भी विधायकों के प्रस्ताव में इनना उलम जाता है कि प्राय को प्रगति की योजनाए एक धोर रह जाती

→ हैं और उसे अपने दल के विधायकों के प्रस्तावों को मूर्त रूप देने के लिए प्रयत्न करती होती है। फिर सम्बन्धित अधिकारियों को दबाव पड़ना है। वे यदि उस प्रस्ताव को विभाजित कर देते हैं, तो उन्हें स्थानान्तरण के समय अल्पे कार्योन्मत्त में भेज दिया जाता है, अन्यथा ऐसे कार्योन्मत्त में भेजा जाता है, जहाँ कि वह स्वतः धकेला पड़ जाता है। कुछ कार्योन्मत्त अधिकारियों के लिए कारावास की व्यवस्था जेंगे होते हैं। ऐसी परिस्थिति में नैतिकता में वने रहने वालों के लिए चारों ओर धमकाने के परिणाम कुछ नहीं रहता।

कुछ अधिकारी पहले से ही सावधान होते हैं। वे समयसे ही, विधायक, मन्त्री या मुख्यमन्त्री को सिफारिश पर काम करना होगा, तो बसों उम्र काम को पहले से ही सम्पन्न कर वार्षिक अगुलियों की में ही डाल दे जाय। सम्बद्ध व्यक्ति उपचार भी मानेगा और रिश्तत म होने वाली आय में भी कमी न होगी। यह भी देना जाता है कि सामक पत्र के विधायक द्वारा मुद्राणा गया काम मुद्राणा से होता है। विरोधी पक्ष के विधायक के कार्य बहुत समय तक टपटपे ही रहते हैं। अधिकारियों की पदी-न्दन में भी सावध कर के विचारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी है। बहुत बार तो सामक पत्र के विधायक अपने प्रभाव की व्यापक बनाने के लिए अपने अनुसूचित अधिकारियों का सम्बद्ध मंत्रियों पर बड़ा बवाल करवाने बुलाव क्षेत्र में स्थानान्तरण भी करता लेते हैं। फिर वे उनके साम्प्रदाय को बाधे, करवाने हैं। क्या सभी इस प्रकार के प्रयत्नकार के विषय भी किसी ने धान्ते-लन देखा ?

अधिकारियों से सम्बद्ध एक अन्य प्रकार का प्रयत्नकार भी है। पर-बाबा मेरा जीवन वृत्त है, धन प्रवेश प्रदेशों के छोड़े-बड़े पगरी, देशतो, जिला-मुख्यालयों तथा प्रांतीय राजधानियों में जाने का व्यवहार विस्तार है। सैकड़ों उच्चाधिकारियों एक अधिकारियों से मुक्त बर्बातें हुई हैं। उन सब के धारधार पर लिखते यह है—पट्टारों को उप-सह-सीवदार, उप-सहसीलदार को सहसीलदार, सहसीलदार को उप-जिलाधीन और उप-

जिलाधीन का जिलाधीन में पर-पर अनाम, फण, साक मन्त्री, बुध, यी धारिद रीति धारणकता की वस्तुएँ बिना मुख्य पदधारी होंगी है। यहाँ तक कि किसी का उम्र, भेन रखने का जोर होता है, ना उनके पर विना मुख्य विद्ये गाय-भैम तथा काम-धारे धादि को व्यवस्था भी उन्हें ही करनी होती है। सहृद ही निष्पक्ष निष्कला है वे अधी-नस्य अधिकारियों उनकी पूर्ण विम प्रकार करते हैं ? रिश्तत का पत्र गुला प्रोम हन विधायक से भी अज्ञान नहीं रहता।

अधिकारियों को जो वेतन मिलना है, बड़ा जाता है, वह उनके लिए कार्योन्मत्त होता है। उनका घरेलू राक्ष भी उमरे युग नहीं पन पाना, जब कि बाड़ी, कार बसंधारी, बिजली-पानी धारिद का व्यय सरकारों हाता है। कुछ केन्द्रीय तथा प्रांतीय मंत्रियों ने बड़नामा कि बुलाव क्षेत्र में बहुत काम संभर्रा अर्किन धाने-अपने काम लेकार धारें हैं। उनका यदि धारिदर नहीं किया जाता है, तो वे बुरा मानन है। धारिदर करने पर उम सब की पूर्ण को मस्य्या मदी हो जाती है। समय-समय पर मगत, बिधापण तथा अन्य मंत्र भी काफी मस्य्या में धान रहते हैं। उनका धारिदर को धारिदर होता ही है। इस लक्षे का सहृद अनुमान ही नहीं किया जा सकता। मंत्रियों की इस दुर्बलता का धारिदर मुद्राणा में पूंजीपति लगा लेते हैं। मंत्रियों की सहृदनुनि प्रान्त करते तथा उसे म्हायी बनाये रगने के लिए बहुत धारे पूंजीपति प्रतिमास हजार दो हजार रुपये मंत्रियों के धर पड़ना कर रहे हैं। पूंजीपति मंत्रियों के निरु प्रतिदिन काम धान हैं और म्हापण विधिति से फिर मन्त्री पूंजीपतियों को उबारते हैं। जो पूंजीपति मंत्रियों के काम में सहृदोन्मत्त नहीं होते, वे समय पर बुरी तरह फल भी जाने हैं और जो सहृदोन्मत्त होने हैं बुरी तरह फल हुए भी बुशल धोम से रह जाते हैं। वे पूंजीपति इस मासका में वि न मालूम विम समय वित्त दल की सरकार बन जाय। इस-विध विरोधी दलों के नेताओं को भी प्रतिमास गाठने रहते हैं। इनकी मिश्रता का महत्ता स्थान वित्तमन्त्री तथा वित्त मन्त्रि होने हैं। वे दोन्नी गाठने में बुझन होने ही हैं। बाहृ महीने प्रतीक्षा में निकाल देते हैं। जिस समय बजट प्रस्तुत होने वाला होता है, वित्त

मंत्रियों एवं वित्त मंत्रियों के म्हापणों को धान मास विना लगे हैं और सहृदनु बजट का बाई रहस्य प्रान्त कर लेते हैं। एक-दो दिन बगडोर रायसत्य बटोर लेते हैं और अपने धनस्य मित्रों को भी एक दिन में बरोड पति बना देते हैं। क्या प्रयत्नकार की अह-रीयो धारिदरों को नष्ट करने के लिए तथा सभी विधियों धारिदरों, सार्वजनिक कार्योन्मत्त या अन्य विधियों में धारिदर उठाई ?

कुछ म्हापण ऐसे हैं, कि-ह एव प्रकार ग टकमान बड़ा जा सकता है। जिस मंत्रियों के धारिदर के म्हापणों ही गय। पर इन म्हापणों म जो अधिकारी निरुक्त हो गये कुछ ही दिनों म बिना किसी प्रयत्न के वे सामी-करीयो धारिदर सहृदनु बनन में मुद्राणा से सपन्न हो जाने हैं। ऐसा नगमा है उनके लिए धर धारिदर पाई कर बरगता है। मासमें और परदिम प्राण करने के लिए उद्योगधरियों को उनके धार पर ही पड़ना होता है। सापी ह्राय पड़ने बराने के लिए एक प्रकम विधिद है। सापी धारिदरों की वृत्त ज्यो ही काम में पड़नी है, अधिकारियों और मन्त्री तत्काल तत्कार हा जाने हैं और बिना किसी ध्यवधान के उनका बह काम हो जाता है। कुछ लान धरि देकर बरोडों की प्रतिष्ठाण धारिदर सार्वभेम प्रान्त पर लेना क्या धारिदर का मोर्रा है ?

साम्प्रदाय देने में वित्त प्रकार का म्हापण बरता जाता है यह भी धरा ह्मा नहीं है। सरकार को चाहे जितनी हानि उठावी पदे, मंत्रियों और अधिकारियों को कोई पीडा नहीं होगी, यदि बह लान धरि सम्बन्धित मन्त्री या अधिकारियों के पर एव ध जाते हैं। पूंजीपति दम लान धरि यदि इस प्रकार देते हैं। एव बरोड धरिने लिए पहले से ही सुरक्षित रग लेते हैं। उनका सिद्धांत होगा है, मुष भी लगी, हम भी मगए। सरकारी योत्रनाल पुरी हो पायें या नहीं, इनकी चिन्ता किस है ?

सरकार के प्रति म्हापण धरतोप तथा धोष को व्यपन करने के लिए विरोधी दल समय-समय पर हस्तान, व धोषे काम करो का प्रभियान चलाते रहते हैं। ऐसे धरतरी पर धारिदर तथा बेकार मुद्राणों की विधेयता धोरार बनाया जाता है। धारिदर तथा मुद्रा

दिल्ली

विकास तथा चुनौतियों का नगर

प्रगति के पथ पर

विगत दो वर्षों के विकास की भाँकी

उद्योग

नरेला में नई विशाल औद्योगिक बस्ती का निर्माण हो रहा है। एक हजार बेरोजगार इंजीनियरों के लिए ८६२ औद्योगिक सेटों का निर्माण।

पाँच लाख बेरोजगारों के लिए कारोबार

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग १६,००० शिक्षित बेरोजगारों को कारोबार देने के लिए ५६ नई योजनाएँ प्रस्तावित और कार्यान्वित की गई हैं। ग्रामीण बेरोजगारों के लिए सघन कार्यक्रम चालू किये गये हैं। इस वर्ष २० लाख रुपये की लागत से विद्युत् रोजगार योजनाएँ चालू की गई हैं।

शिक्षा

दिल्ली में शिक्षा को कार्य-अनुभव व विज्ञान सम्पन्न बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं।

हरिजन कल्याण

हरिजन तथा पिछड़ी जातियों के कल्याण की कई नई योजनाएँ चलाई हैं जिन पर चौथी योजना के मूल परिष्कार-से दुगुना धन खर्च किया जा रहा है।

चिकित्सा सुविधाएँ

सन् १९७३-७४ के दौरान पिछड़े तथा भुंगी-भोंवड़ी क्षेत्रों में १० नये प्रौपघालय खोले गये। इस प्रकार अब तक ५० प्रौपघालय खुल चुके हैं। ५००-५०० बिस्तरों वाले दो अस्पताल निर्माणाधीन हैं।

किसानों को सुविधाएँ

छोटे तथा भूमिहीन किसानों को अनुदान तथा सस्ती दर पर ऋज देने के लिए 'माजिनल फार्मर्स एग्रोक्लरल लैण्डलेस लेबरर्स एजेंसी' स्थापित की गई है।

पशु संवर्धन के लिए 'वीथी बैंक' तथा बहूत दूध देने वाली भारतदेलिया की गायों के फार्म की स्थापना की गई है।

दिल्ली की पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में अधिकाधिक नागरिक सुविधाएँ जुटाने, गृह-निर्माण तथा मन्दी बस्तियों की सफाई, बेरोजगारी को समाप्त करने तथा कमजोर वर्गों के कल्याण भादि कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी गई है।

दिल्ली को आदर्श राजधानी बनाने में
अपना भरसक योगदान करें।

अगर
दाम
बढ़ रहे हों

आप इतना तो कर सकते हैं

— जरूरत में ज्यादा चीजें न खरीदें।
जिनके पास फालतू पैसा है,
वे किसी भी कीमत पर चीजें खरीद सकते हैं।
लेकिन क्या इन्हीं के भरोसे
दुकानदार दाम बढ़ा सकता है ?
ऐसे लोग कितने हैं ?
उसे आपकी खरीदारी की जरूरत है।
मुनाफाखोर व्यापारी की चाल
नाकाम कीजिए।
सामान्यता की 'सापिण' मत कीजिए।
केवल जरूरत की चीजें खरीदिए।
जब कीमतें बढ़ने लगें तो
घबराहट में कल के लिए भण्डार मत बनाइए।
धर धर खरीदें।
दाम जरूर बढ़ेंगे।

केवल जरूरत की चीजें खरीदें

एक चुनौती

अशोक कुमार ढड्डा

जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में विहार का जन-धाम्दोलन श्यो-श्यों और पकड़ता जा रहा है, श्यो-श्यों में मावूम कपो, देश की सत्ताकूट पार्टी के एडी से लेकर पोटी तक के नेतृत्व में एक झंडी की बोखनाहट पैदा होनी जा रही है। देश भर में जहाँ वही भी इन नेताओं के भागण, गिबिर, सम्भलन आदि होते हैं उनमें पूरा नहीं तो आधा समय तो धवय ही जयप्रकाशजी के ऊपर गुस्सा उतारने कायदा उस जन धाम्दोलन से लोहा लेने के उपाय सोचने में चला जाता है। शायद पड़ोसी देशों के समय-समय पर हुए हमलों में भी ये लोग उतने चिन्तित नहीं हुए होंगे जितने आज हैं। यही नहीं है सोच जिन्हीं भी मूल्य पर जयप्रकाश के द्वारा बनाये जा रहे आन्दोलन को चुनक देना चाहते हैं। इन्दिरा त्रिपेठ का तो इस समय यह एक मूल्यत उर्ध्व हो गया है।

जयप्रकाश जी ने साफ़ तौर से जाहिर

किया है कि वे अपना पूरा समय और शक्ति विहार शासन में व्ययक रूप से फीके झंटा-चारू रूपी गदगी की सफाई में ही देंगे, अन्य प्रान्तों के शासकी विधायकों में न-जाने क्यों यह भय पर करता जा रहा है कि कहीं जे.पी. इधर न चले धायें। अतः जे.पी. को गिरफ्तार करने एवं प्रान्त में प्रवेश पर रोक लगाने की प्रजासत्ताकिक माय करने लग गये हैं कायदा विभिन्न संगठनों व लोगों के माध्यम से नरवा रहे हैं। क्या जे पी का भ्रष्टाचार आदि को गिठने का संकल्प इनका 'धार्मिक-कारी' है कि वे जे.पी. को सम्भर एक का 'दुग्धमन' भी समझने लग गये हैं? आजादी के बाद सत्तामोह को त्याग कर जे.पी. ने समय समय पर जो भी नकल्प एवं बरदम उठाये हैं, वे इस देश की संस्कृति के अनुरूप और देश की अनुष्ठान को बनाये रखने के लिये ही थे और उनके परिणाम घन प्रतिफल देश के गौरव की बढाने वाले ही धारि हैं।

जो काम हमारे 'इन' शासनकर्ताओं कायदा इनके पूर्वजों की गांधी जी के कहे अनुसार आजादी के साथ ही कर लेना चाहिए या यह क्यों नहीं किया? गांधी के नाम पर दुहाई दे देकर बाँट प्राप्त करके राज्य बनाने धोर 'घर भरने' तब ही क्यों सीमित रखा? और आज जबकि 'स्वतंत्रता सश्रम' के अर्थवा जयप्रकाश जी तथा उनके निकट तम सहयोगियों का एवं संगठन, देश से ही क्यों नहीं, पर एक छोटा सा नाम बड़ी विषय दाता एवं बिना किसी प्रकार की साक्ष्य के सत्य, अहिंसा और सश्रम के साथ करने जा रहा है तो वे प्रजासत्ताकिक विरोधी, कृति विरोधी प्रतिभिलाषावादी आदि नामों से देश में बदनाम किये जा रहे हैं? क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि देश के मन में कहीं घोर घुसा दुहाई है। और अब जब जे.पी. असली जनतंत्र राज्य के रूप में सामने आये हैं तो धानी कलई खुल जाने के भय से वे बुरी तरह पवरा गये हैं। लेकिन यदि इन शासकों के मन में जरा भी संतो नहीं है तो फिर गांधी जी के बनाये 'राभराज्य' को लाने में जे.पी. के साथ कथों में क्या भिन्नकर काम करने से क्यों विवकिंचा रहे हैं? ✕

Salient Features and Advantages of 'Haramrit' Cattle Feed.

This is scientifically prepared. Nutritionally balanced, contains all essential nutrients like protein, fat, carbohydrates, minerals and vitamins. Free from iron, other harmful foreign matter and infestation. No chances of adulteration being in pelleted form.

Sweet in taste and more digestible. Unlike imbalanced conventional items of feeding i.e. gram, oil cakes, cotton seed, guar etc. It contains requisite and proportionate value of nutrition and thus avoids national wastage. The formula is prepared after Scientific analysis of different ingredients and the finished product is moved out only after laboratory test Ensures more milk, better health, resistance to diseases and early maturity of milch animal Cheaper and economical than conventional items of feeding.



“वीकानेर के खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान में लगी एक हजार की पूंजी एक परिवार को रोजगार देती है, जबकि भारत सरकार के अन्य किसी भी उद्योग में १५ से ५० हजार तक की पूंजी लगाने पर भी एक व्यक्ति को काम मिलता है।”

श्री जगजीवन राम
केन्द्रीय रसायन मंत्री

खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान वीकानेर (राजस्थान)

र के आधार पर आज की जीवन-समस्याओं को कैसे सुलभाये ? इतिहास पद्धति से प्रशस्त करें ? यह जानने के लिए हर भारतीय को सर्वोदय-विचार समझना जरूरी है ।

विपन्न और सरल परोक्षाओं द्वारा सर्वोदय विचार जानने की सुविधा प्रकृत भारतीय स्तर (केन्द्रीय) द्वारा की गयी है ।

7 साल में दो बार होती हैं—जनवरी और अगस्त में ।

अः, प्रवेश, परिचय—ये तीन अमण परोक्षाएं हैं ।

परीक्षा के लिए पाठ्य-सामग्री के रूप में ८-९ पुस्तकें हैं जिनका मूल्य १० रुपये से अधिक नहीं है ।

इसके बाद इन पुस्तकों का उपयोग किया जा सकता है ।

सक पद्धति होने से, प्रश्न-पत्र पर ही उत्तर लिखना होता है ।

न-पत्र परीक्षा के डेढ़ मास पूर्व ५० ३/-परीक्षा मुक्त सहित सेवाग्राम भिजवाये ।

पुस्तकों का भोग्य इतने पर भेजें—गांधी स्मारक निधि,

राजघाट, नई दिल्ली-११०००१

मानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें :

वस्थापक, गांधी स्मारक निधि,

धम, पो० सेवाग्राम, जि० वर्धा (महाराष्ट्र)

हमारी स्वतंत्रता की २८ वीं वर्षगांठ के

प्रेरक अवसर पर

विपन्नता निवारण, शोषण मुक्ति, स्थायी

शांति एवं समृद्धि के लिए

राष्ट्र के नव-जागरण की कामना के साथ

राजस्थान राजी रामोदयोग मन्धा मण

(राजस्थान की प्रशासनिक गांधी व रामोदयोग संग्रहालयों का मध्यवर्ती मण्डल)

बजाज नगर, जयपुर,

Gram : 'BHARAT' BIRLAGRAM

Phone : NAGDA 23 & 26

Regd. Office :

'SURYA KIRAN'
5th Floor,
19 Kasturba Gandhi Marg,
NEW DELHI-100001

BRANCHES :

Kiran Spinning mills;
Thana (Maharashtra)

Bharat Commerce & Industries Limited
Rajpura (Punjab)

Suja a Textile Mills,
Nanjangud (Mysore State)

'BHARAT'

STAPLE FIBRE YARN

It will pay you to use Superior and popular quality

"Bharat" Staple Fibre Yarn

Manufactured in all Counts of every requirement—

20s, 30s, 2/30s, 2/40s 2/60s, 2/80s,

Fancy, Dyed, Terene and other synthetic Yarns on Cones
as well as in Hanks

For further details please contact

STAPLE FIBRE YARN DIVISION
BHARAT COMMERCE & INDUSTRIES LIMITED
P. O BIRLAGRAM, NAGDA (W.R.) (M.P.)

हादिक शुभकामनाओं सहित

ग्वालियर रेयान

स्टेपल फायबर डिविजन

इंजीनियरिंग एण्ड डेवेलपमेंट डिविजन, केमिकल डिविजन

पो. ब्रा. बिरलाग्राम (नागदा) मध्यप्रदेश

गांधी—विचार के आधार पर आज की जीवन-समस्याओं को कैसे सुलझाये ? अहितक पद्धति से विश्वशांति का मार्ग कैसे प्रशस्त करें ? यह जानने के लिए हर भारतीय को सर्वोदय-विचार समझना जरूरी है ।

शासन पाठ्यक्रम और सरल परीक्षाओं द्वारा सर्वोदय विचार जानने की मुविधा प्रदत्त भारतीय स्तर पर गांधी स्मारक निधि (केन्द्रीय) द्वारा की गयी है ।

- Ⓐ परीक्षाएं साल में दो बार होती हैं—जनवरी और अगस्त में ।
- Ⓑ प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय—ये तीन क्रमगत परीक्षाएं हैं ।
- Ⓒ हर परीक्षा के लिए पाठ्य-सामग्री के रूप में व-६ पुस्तकें हैं जिनका मूल्य ₹० रुपये से अधिक नहीं है ।
- Ⓓ परीक्षास्थल पर इन पुस्तकों का उपयोग किया जा सकता है ।
- Ⓔ तथ्यमूलक पद्धति होने से, प्रश्न-पत्र पर ही उत्तर लिखना होता है ।
- Ⓕ आवेदन-पत्र परीक्षा के डेढ़ मास पूर्व व० ३/-परीक्षा शुल्क सहित सेवापाम भिजवायें ।
- Ⓖ पाठ्यपुस्तकों का मागपत्र इतने पर भेजें,—गांधी स्मारक निधि,

राजघाट, नई दिल्ली-११०००१

अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें :

व्यवस्थापक, गांधी स्मारक निधि,

आश्रम, पो० सेवापाम, जि० धर्मा (महाराष्ट्र)

हमारी स्वतंत्रता की २८ वीं वर्षगांठ के

प्रेरक भवितर पर

विपमता निवारण, शोषण सुक्ति, स्थायी

शांति एवं समृद्धि के लिए

राष्ट्र के नव-जागरण की कामना के साथ

राजस्थान गांधी दामोद्रीय मण्डला मण

(राजस्थान की प्रमाणित गांधी व दामोद्रीय मंडलाओं का मध्यवर्ती मण्डल)

बनारस नगर, जयपुर,

हरियाणा

विजली करण के क्षेत्र में

सबसे आगे

- हरियाणा भारत का प्रथम राज्य है :
- जहाँ सारे गाँव विजलीयुक्त हैं,
- उपजाऊ भूमि के प्रत्येक वर्ग किलोमीटर में तीन ट्यूबवेल हैं,
- कृषि के लिए भारत भर में सबसे अधिक विजली उपभोग में लाई जाती है ।
- प्रत्येक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में १.८ किलोमीटर लम्बी विजली की लाईन लगी है ।
- विजली का प्रति व्यक्ति उपभोग १३२ यूनिट है,
- हर चौथे घर में विजली का कनेक्शन है ।

हरियाणा राज्य विजली बोर्ड ।

Make Modern Your Daily Bread

Nutritious and Wholesome

Good for Both Health and Growth

MODERN BAKERIES (INDIA) LIMITED

DELHI UNIT

(A Government of India Enterprise)

Lawrence Road, Industrial Area,

Ring Road, NEW DELHI-110035

Branches :

AHMEDABAD, BANGALORE, BOMBAY,
CALCUTTA, COCHIN, DELHI,
HYDERABAD, KANPUR & MADRAS

It is the quality
of service
that makes
the difference

BANK OF INDIA

With Best Compliments

From :

**MOTILAL PADAMPAT
UDYOG LTD.**

P. B. No. 69, Gutaiya, KANPUR 208005

Manufacturers of

"SUGAR"

"IRON & STEEL"

and

"MOTI VANASPATI"

Grams :
"MOTIPAT" KANPUR

Phones : PBX (4 Lines)
8439, 8673, 8279 & 8239

Telex—"MOTIPAT" KP-266

आदर्श ग्राम-ट्रस्ट फण्ड सिरोही

केसर विलास, सिरोही (राजस्थान)

सिरोही जिले में—गांधी विचार धारा को धामे बढ़ाने के लिये
भूतपूर्व सिरोही राज्य के लिये यह ट्रस्ट वायम हुआ है जिसके ट्रस्टी हैं.—

श्री राज माता श्री कृष्ण बंधर बा साहिबा

सिरोही दरबार हिजडाईनेस महाराजाधिराज श्री भ्रमपालहि जी सा० बहादुर,

श्री गोकुल माई दो० भट्ट

महाराज कुमार श्री रघुवीर सिंह जी

ट्रस्ट की प्रवृत्तियाँ :—

- (1) बाल म्यूजियम को प्रोत्साहन
- (2) गांधी विचार निबन्ध प्रतियोगिता
- (3) सत्याग्रह प्रचार, "ग्रामराज" साप्ताहिक पत्र को सहायता
- (4) गांधी ग्रन्थमय केंद्र (शिवकुटी ब्राह्मू) में गांधी भवन का निर्माण
- (5) विधवाओं को, विधवायियों को, हरिजन-घादियासियों को चरखा द्वारा सहायता
- (6) चरखा-खादी तथा ग्रामोद्योगों के कार्यों में सहायता
- (7) सर्वोदय कार्यक्रम को प्रोत्साहन देना
- (8) चलनी-फिरनी गांधी प्रदर्शनी योजना भी विचाराधीन है
- (9) ग्रामदानों गांधी को आदर्श बनाने में सहायता
- (10) राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्षा की गांधी विचार प्रचार योजना में योगदान
- (11) गांधी विचार के सब कार्यों में यथायोग्य सहायता
- (12) धारावन्दी कार्यों में सहायता देना
- (13) कृषि उत्पादन कार्यों में सहायक होने वाली मंस प्लांट योजना में सहयोग।
- (14) मिल कोठी का पूरा खर्चा मिलने पर औद्योगिक वाणिज्य विद्यालय (छात्रावास सहित) स्थापन करने की योजना।
- (15) श्री अग्र्य कार्यक्रम गांधी विचारों के विचारामुसार हो।

आज से शिव कुटी में गांधी भवन बन गया है जिसमें गांधी विचार के अध्ययन के लिये सब सुविधाएँ उपलब्ध होगी। बाहर से आने वालों के लिये एक सप्ताह तक ठहरने की भी व्यवस्था है।

गांधी भवन में बाल मन्दिर चल रहा है। मध्यम स्थिति के करीब 5 गिगू लाभ उठा रहे हैं। बहिन उमा मु छावा उसके चार्ज में हैं।—

इस तरह ट्रस्ट की प्रवृत्तियाँ दिन ब दिन धामे बढ़ती जा रही हैं। ट्रस्ट का ट्रस्ट टोटल रजिस्टर्ड हो गया है। उसमें ट्रस्ट के चौथे ट्रस्टी महाराज कुमार श्री रघुवीर सिंह जी नियुक्त किये गये हैं।

सिरोही जिले—मेचरखा, खादी का कार्य "नया समाज मण्डल" द्वारा करवाया जाता है। ग्रामदान सर्वोदय का कार्य 'जिला सर्वोदय मण्डल' द्वारा करवाया जाता है।

भूदान-यज्ञ पत्रिका की सफलता के लिए-दृच्छुक

मारबल एम्पोरियम, आगरा

संगमरमर हस्तकला में सक्रिय

मारबल एम्पोरियम

पोस्ट वायम नं ६८,

१८/१, ग्वालियर रोड

आगरा कैंट (उ० प्र०)

देश की तरुणाई को आह्वान

जयप्रकाश नारायण

देश में उत्तरोत्तर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, घूसखोरी और सत्तालोलुपता से उत्पन्न लोकतंत्र के खतरो की जनमानस का एवम् मस्ताम्हद व्यक्तियों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु गुजरात में युवकों को सम्बोधित करके गये तीन ऐतिहासिक भाषणों का हिन्दी रूपान्तरण । पृष्ठ सख्या ४८ मूल्य १२० मात्र ।

अज्ञान-निवृत्ति साधना के १७ पहलू

बालकोश भावे

अज्ञान-निवृत्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करने में सहायक १७ पहलुओं जैसे ध्यान, भक्ति, वैराग्य, आत्माम विवेक, आदि का सरल एवं सुयोग्य भाषा में साम्प्रदायिक विवेचन । पृष्ठ ३२ मूल्य ५० पैसे मात्र ।

विनोदा की सतु-सूत्री

सेवाश्रम की राष्ट्रीय परिषद और सर्व सेवा नग्न अधिवेशन के बाद वावा से हुए सवाद में पूज्य विनोदा द्वारा अपने हाथ से लिख कर दिये गये ४ सूत्र जिस पर चल कर गिन-गिन मत और दृष्टिकोण रखने वाले क सेवाकों का सर्वसेवा सध, एक हृदय बने, शुद्ध भाषा पर लब्धा हो और समाज में तीव्ररी दानि सखी करने का समर्थ माध्यम बने । पृष्ठ ३२ मूल्य ५० पैसे ।

दादा के शब्दों में दादा

दादाधर्माधिकारी

यह कृति कु० विमला ठकार को अत्यन्त स्नेहयुक्त भावना से लिखे गये गये दादा के पत्रों की मजूपा है । न्दोलन के जल में डूबे हुए फिर भी कमल के समान उनसे परे स्नेहशील दादा के निराके व्यक्तित्व की भाँवी पुस्तक में मिलती है । पृष्ठ १७६ मूल्य ६० ६/ मात्र ।

प्रभा स्मृति

सर्वोदय में बडे ही स्यादर के साथ 'दीदी' शब्द से सम्बोधित प्रभावती बहन की पुण्य स्मृति में प्रकाशित ग्रथ जो दुर्लभ चित्रों के ३२ पृष्ठों से युक्त है जिससे हमें सकालपुरष गांधी की प्ररणा, इतिहास पुरष जे० पी० का जीवन सधर्ष और मौन साधिका प्रभावती बहन की पुण्य स्मृति मिलती है जो कभी मुत्तारी नहीं जा सकेगी । पृष्ठ ३०८ मूल्य ३० रुपये ।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी-१ (उ. प्र.)

देश के युवा वर्ग द्वारा

समग्रशांत क्रांति के लिये

चल रहे राष्ट्र व्यापी आन्दोलन

का

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर

हार्दिक अभिनन्दन ।

खैराड ग्रामोदय संघ, सावर (अजमेर)

(राज०) द्वारा प्रसारित

अंतर्ध्वनि

हे नम्रता के सम्राट !
 दोन भंगी की हीन कुटिया के निवासी !
 गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित
 इस सुन्दर देश में
 तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे ।
 हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे ;
 हिन्दुस्तान की जनता से
 एकरूप होने की शक्ति और उत्कठा दे ।
 हे भगवन् !
 तू तभी मदद के लिये आता है,
 जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है ।
 हमें बरदान दे,
 कि सेवक और मित्र के नाते
 जिस जनता की हम सेवा करना चाहते है,
 उससे कभी अलग न पड जाये ।
 हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना.
 ताकि इस देश को हम ज्यादा समझे
 और ज्यादा चाहें !



महात्मा गांधी

शोषण मुक्त समाज रचना के लिए सम्पूर्ण शुभ-मंगल कामनाओं सहित

KANAK BOARD SUPPLYING AGENCY

24/1/B. BUDHU OSTAGAR LANE
CALCUTTA-700009

Phone No 35-2461

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ कि० ग या ५ डालर, इन जगह का शुल्क ६० पैसे ।
 प्रयाग जोगी द्वारा सर्व सेवा मण्डल के लिए प्रकाशित 'मन्व ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१' में मुद्रित ।

१६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

लोकसेवकों से

भाज लोकसेवक को हर जगह हाजिर रहना है—फिर चाहे वह सेत हो चाहे कार-खाना, चाहे मदरसा कालेज, सभा वा मन्च थोडा समाज या दगे-फसाद भ्रष्टवा सघर्ष का कोई क्षेत्र। उसे हर जगह कड़कर धोर करके लोगों के बीच फँलो हुई लाचारी की भावना हटानी चाहिए। भाषिक, सामाजिक धोर राजनीतिक भ्रष्टवस्थाएँ ग्राम धादमी को चक्की में डाल कर पीम रही हैं। हर लोकसेवक को भाज बिना चैन लिए गांधी-विनोबा जय-प्रकाश के विचारों ओर कार्यक्रमों का प्रचारक होना है। इन विचारों ओर कार्यक्रमों का परचम उसे उड़ाना है धोर ऐसे विचारों धोर कार्यक्रमों के छाड़े धाना है जो पार-स्परिक ढेप बढाते हैं, वर्ग सघर्ष को जन्म देते हैं धोर कानि के नाम पर दाताना का हार हमारे देश के गले में डालना चाहते हैं। हर लोकसेवक को चाहिए कि वह फासिज्म साम्यवाद, समाजवाद धोर सच्चे 'जनतन्त्र' को स्वयं समझे धोर घूम घूम कर वा पलिटिक भाव से एक ही जगह रहकर धाने धापास के लोगों को इनका धनतर समझाये—बताये कि सच्चा स्वराज्य किन्हे कहते हैं धोर वह कैसे मिलता है। प्रेम के इस वाम को बरते हुए धगरर बहु विद्रोही वा विरं-पी या प्रति-क्रियावादी कहा जाता है तो इन विरोधियों को नासमझ लोगों द्वारा दिया गया लपगा समझें। लोकसेवक ने बहुत दिनों तक यकिरचित सेवा में सततीय माना। भ्रव वह समय सेवा में जुटे।

याद रखना चाहिए कि प्रेम धोर धोरज से किये जानेवाले वाम धमकल कभी नहीं होते। हमने इन दिनों कुछ नये वाम हाथ में लिए हैं। उन कामों को तरह-तरह के नाम

दिये जा रहे हैं। मुट्टी भर शोपक या जिन्हे शोपक के बढने से धनत में धपने मन की कानि करने में आसानी जायेगी, उसे प्रतिक्रियावादी धोर फासिज्म कह रहे हैं। वे बेचारे भाज तक चली धा रही पढति से जो लाभ उठा रहे थे, उन्हें मुट्टी से घटता दीख रहा है। उनका इसलिए सभी तरह के उपाय करना स्वाभाविक है वे यह दिखाने के लिए कि जनता उनके साथ है, मजदूर उनके साथ है, जवान उनके साथ है, हास्यास्पद नाटक रच रहे हैं। पिछले महीने ६ धगस्त की बुध्यात युवक-रैली उनका एकनमूना था। उसे भ्रव तो याद करते धाभोजक तब धपने को शांतिद महसूस कर रहे हैं। मगर हम उसकी धाएँ से धाएँ की शर्म पर न जायें। शर्म ऐसे तन्त्रों का कोई धय ही नहीं है। वे धव इससे भी बडा कोई खेल करंगे। मिसा धोर डी० ध्राई० धार० का कापी उपयोग सर्वथा धरिस्तक धादोलन को दवाने के लिए किया जा रहा है। इनके उपयोग में धोर-धोर तेजी धायेगी। मगर लोकसेवक ऐसे भीरिहीन कानूनो, निर्धर्म दमनचक्र वा खुद उसे उभाडकर गलत काम कर लेने को चाल को इस तरह समझे धोर व्यक्त करेगा जैसा धाजाधी के दीवानो ने गांधीजी के नेतृत्व में किया था।

यार रखें सेवा कुचली गही जा सक्ती इसलिए लोकसेवक किसान मजदूर धोर धाभावप्रस्त की पीडा धोर परेशानी की चलती फिरती अभिव्यक्ति है। धोर हो उसकी पीडा तथा परेशानी को दूर करने की बसम धोर मरहम धोरतो सभी रामबाण बहु सेवा के लिये निवला ही इसलिए है कि उसे दूरको का दर्द है धोर धपने दूरको के लिए उठाये जाने वाले दर्द को यह गनीमत मानता है, अरुही

मानता है, बरदान मानता है। भारत भर हर जगह लोकसेवक है। उसे इस पई सदा से भी अधिक सावधान रहना है। सबसे प्रति ढेप रहित भावना से प्रेम सहयोग की शक्ति के प्रति लोगों वा सं दृष्टा विश्वास जानाना है।

लोगों में प्रेम धोर सहयोग के प्र विश्वास बँसे जायेगा? इसकी एक पू प्रिया है धोर बहु प्रिया फील कर सप करने से भी धाषिक धनिष्ठ रूप से धोर बु कर रचनात्मक काम करने में धधिव है लोकसेवक इस समय एक दोहरे पर ख है। इतना ही नहीं एक दुविधा में पडा है एक विचार उसे ग्राम स्वराज्य में लगे रा को कहना है, दूसरा स्थान उसे विहार। तरह के सघर्ष के लिए पुकारता है। कि एक मारक चीज है। सशानामा विनमरि जिस लोक सेवक को सघर्ष में गाव में दुईध में दिखे, वह वही बरे धोर जिसे विहार में तरह का सघर्ष पुकारे, वह धाने प्रामर्श में लगा हुआ, चुपचाप जब तक ऐसा सघर्ष इस चलकर उसके पास नहीं जाता सघर्ष में दिशा में स्वयं न जाये।

विहार की स्थिति जो लोक सेवक को है, वहा पैदा नहीं है। जब पैदा होगा त उसमें भाग लेना धोर बहु भी अवे जाने में प्रेम धामसंघम ओर धरिहा के तरीके उसका धर्म हो जायेगा। जब तक उसके में ऐसी परिस्थिति उद्भूत नहीं होती त तक तो वह धगरर खादी के काप में लगा तो उसमें लगा रहे, शाराव बन्दी के नाम लगा है तो उसमें। कार्य की इसी पढति विनोबा ने सेवा व्यक्ति की धोर भवित समा की कहा है। कार्य की यह प्रिया धा प्रिया है।

विहार के ग्राम पंचायत स्तर से लेर जिला स्तो तक पालित सघर्ष समिनिर्वा में जन-सघर्ष समितिया गठित हो चुकी है। म मदद लेने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों धनुभवी कार्यकर्ता भी पहुंच चते हैं। वहा हूँ वीटन वा विरनुन विवरण हम दे रहे हैं। पाठकों को इस बात का धनुभवी हो जाने कि धादोलन शांतिमय तरीके से चल रहे है धोर फिर भी दमनचक्र जारी है। ध धरने अक में यथासम्भव हर बार विर विन्ती न विन्ती प्रतण्ड के कार्य का विर विररण देने का प्रयत्न कर रहे हैं। पाठकों को कभी-कभी आन्दोलन के विर होनेवाली धपनी धावाधो वा समाधान रहेगा। (संपादक)

सब मिलकर एक महाशंख बजायें

आपके छोटे-छोटे शहर बजने हैं—एक लखनऊ में बजता है, एक दिल्ली में बजता है, एक श्यामपद जयपुर में, एक पटना में आदि। और किसी के हजार प्राइड हैं, किसी पाँच सौ। कुल मिला कर बहुत हद तक तो कि हजार। उसके बजने एक यह शहर बजाये। आपकी एक सम्मिलित पत्रिका हो। सभे आपके आप की जानकारी हो, आस्था-मक चर्चा हो, जेने आजकल तुवनीपर्वत चल हा है, महावीर पर्व चल रहा है, उसकी जानकारी हो। और दुनिया में जो कुछ चल हा है उसका भी सोच। अथ उसमें आ जाय आपकी पत्रिका ऐसी हो कि वह पढ़ने के बाद मरी परिवरा पढ़न की अधरत न रहे। ती एक सम्मिलित पत्रिका आप निकालें। मिनटों का मुभाय है कि उसके ५०,००० हक होने चाहिए—मैं तो एक साल से कम जाना नहीं। ऐसी सम्मिलित पत्रिका आप निकालने हैं तो उसके द्वारा ठीक जानकारी ज-मात्र में लोगों को मिल सकती है। आप का होता है? आप जो कुछ करते हैं उसकी रत कुछ न कुछ जानकारी पत्रिकारी में आती है और वह जो होती है, उनके अपने-पने रंगों में रगी होती है। मलत असर लोगों र पड़ता है। ठीक जानकारी उसके मिलती ही। इस बातसे आपका विचार सशुद्ध हो। पर सभभने की बात है।

सोहरामप विवर साखिर 'तक पत्रिका' निकले रहे। जेन गये तो लिखना बन्द हो या। जेन से बाहर धारे तो लिखत मुक्त र दिया—'पुनश्च हरि धीम्'। जेन से उदर धारने हो 'पुनश्च हरि धीम्' नाम का। गदनीपत्रिका। महात्मा गा.पी साखिर तक रनने रहे। साखिर में तो धरना लेख हरि-धन की हवाई अड्डा के अड्डे से कपो के कंध से बन्द धा जाना चाहिए। राजनीति साखिर पर लिखे रहे। विन्डुन, धरने के हिते ए-पी सपनाह तक विनने रहे। इन रर, हनरे ब्रमने के जो मुम्ह-मुम्ह नेना से

वे मल तक निरन्तर प्रचार के लिए प्रयत्न करते रहे। वंता प्रचार आपकी भी करना चाहिए।

एक भाई ने मुझे पूछा कि दैनिक अला-बार निवाला चाहिए क्या? अगर आप निवाला सकते हा तो मेरी सम्मति है, लेकिन उसके लिए काफी सभेला होता है। वरह-तरह की खबरें देनी पड़ती हैं, वे मलत भी हो सकती हैं, इत्यादि इत्यादि। इतनासे मैं साप्ताहिक पर प्रसन्न हूँ। आपकी पत्रिका द्वारा आपकी ठीक जानकारी सात दिन में लोगों के पास ठीक ढंग से पहुंच जाये तो बहुत काम होगा। नहीं तो मलत इमेज (प्रतिमा) आपकी खरी हो जाती है। बाद में आप कुछस्त होगी नहीं। लोगों के धार में जो अक्षर दरस्त करने की कोशिश करते हैं तो भी होना था, वह घो ही ही चुकन।

गये सान र्गनिक का वादबिल सोसायटी ने भारत की लगभग ८० भाषाओं में ६० लाख वादबिल बाटी। कुछ पूरे दाम पर बेचते हैं, कुछ आपके दाम पर, कुछ मुक्त बेते हैं। ६० लाख प्रतिवर्ष उनको मर्गों। आपके साहित्य की कितनी प्रतिमा जायी है? कुल मिलाकर मेरा स्थान है, पात्र-एक लाख रुपये की जायी होगी इनबासे साहित्य प्रचार में बनेक लोगों को लगना चाहिए। इसकी पूरी योजना करनी चाहिए। हर एक प्रखण्ड में अपनी दुकान होनी चाहिए। अगर हर प्रखण्ड में न हो सक तो दस लाख व्यक्ति जहा हो, वही कम से कम एक दुकान होनी चाहिए। इसकी योजना पूरे भारत भर में होनी चाहिए। इसका धारोत्पन्न भी योजना कर के करना चाहिए। धान जो पोडा स्थान उपर दिया जा रहा है, वह नाकारी है।



—विनोया

आन्दोलन में छात्रों को आगे रहना है

पटना में अगस्त २० और २१ को जयप्रकाशजी ने पूरे बिहार प्रदेश के बाम वा जायजा लेने और सलाह मसिवरा करने के स्थान से राज्य-भर की छात्र सघर्ष समितियों को बुलाया था। यह बैठक जरा जल्दी में चुनावी गई थी। लोगों को एक-एक दो-दो दिन पहले ही खबर लग पाई। अगस्त १६ की शाम तक काफी लोग और २० की सुबह तक तो बिहार के ३१ जिलों में से २५ जिलों के सयोजक और प्रतिनिधि आ गए थे। उत्तर बिहार के जिलों से कम ही लोग आ पाये, वहा इन दिनों बाढ़ का प्रकोप है।

२ दिनों की यह बैठक चार हिस्सों में हुई। १६ को सांठे ६ बजे से १ बजे तक और फिर तीसरे पहर ३ से ७ बजे तक। इसी प्रकार २० तारीख को जरा जल्दी सांठे घाट से १ बजे तक और फिर दोपहर ढाई से ६ बजे तक। पहले दिन बैठक का उद्घाटन हुआ, निस्संदेह जयप्रकाशजी द्वारा। जयप्रकाशजी ने पहले तो प्रश्न किया कि प्रदेश-छात्र सघर्ष समिति के कोई प्रतिनिधि आए हैं या नहीं? फिर वे इसी तरह विभिन्न जिलों और प्रखंडों के नाम लेकर थोड़ी देर तक यह पूछने लगे कि समूह-समुक स्थानों से किसने-कितने लोग आये हैं। इसके बाद उन्होंने कहा, छात्र-सघर्ष-समिति और जन-सघर्ष समिति की ओर से आए हुए सयोजक प्रतिनिधियों, सर्वोच्च कार्यकर्ता और उत्तर-प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा पंजाब तथा गुजरात से आए हुए हमारे सहायक मेरे साथी द्वितीय और तृतीय गण। मैं पहले तो भावते यह कहना चाहता हूँ कि यह आंदोलन छात्रों का है। छात्र समुदाय है और बाकी वे हम सब लोगों का। इन्हें पीछे चलना है। वे हमसे पूछेंगे तो हम सलाह देंगे, बतायेंगे, फिर यह उन्हें देखना है कि हमारी सलाह का स्वीकार्य किया नहीं। हर परिस्थिति में बच करना है, यह संसला उन्का होना, मैं इसे अपना सोभाव्य मानता हूँ कि प्रदेश-सघर्ष समिति ने भाषण-पूर्वक मुझे नेता के पद पर बैठाना

और उसके बाद भी उन्होंने मुझे बंदम-बंदम पर गौरव दिया। मेरी कोशिश रही कि मैं इस बात को भूलूँ नहीं कि आंदोलन कैसे शुरू हुआ, इसे किसने शुरू किया और उन्होंने क्या-क्या किया। इसी तरह हम सभी को यह नहीं भूलना चाहिए कि इस आंदोलन में आगे छात्रों को रहना है। अगस्त हम भूल गये कि छात्र ही इस सघर्ष के नेता हैं तो यह सघर्ष के साथ खत्म होना।

जयप्रकाशजी ने जब यह जाना कि ३१ जिलों में से २५ जिलों के ही प्रतिनिधि आए हैं और उनमें से भी सयोजकों की संख्या कम है, अन्य प्रतिनिधियों की संख्या ज्यादा है तो उन्होंने इसका सबब जानना चाहा और मानस हुआ कि कुछ सयोजक जेलों में है और कुछ प्रतिनिधि भी। भूलना भी उन्हें समय पर नहीं मिल पाई थी क्योंकि बैठक का नियंत्रण जरा जल्दी लिया गया था। तब कहा गया कि प्रखंड स्तर से लेकर जिला और राज्य स्तर के जो प्रतिनिधि आए हैं, वे अपने अपने बाम वा विचार पय पय करें और इसके बाद तालमेल में एक बैठक फिर बुलाई जाये, जिसमें आगे के कार्यक्रम पर विचार हो। पहले यह देखें कि हमने क्या बनाया है, क्या बना है। जब उस सबको सामने रख कर आगे की बात सोचें। बैठक को जल्दी में बुलाया गया जयप्रकाशजी ने इस बारे में सेद प्रकट किया। यह भी कहा गया कि विद्यार्थी-संगठन में दलों के आधार पर ग्रुप बन गए हैं और कई बाई मेरे सामने भी छात्र गण-दलों पर प्रहार करते हैं। अगस्त हमें धारचर्चों की बात नहीं है, यह है कि वे धनी तक किसी भी तरह हों, बाम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगस्त किसी कारण से कुछ विद्यार्थीगण इस बैठक में नहीं आए हैं ता वे ३ बजे से बैठक में शामिल हों क्योंकि मिलकर बैठने, साथ-साथ बातचीत करने और परस्पर विचार करने कायदेम निर्दिष्ट करने से किसी भी सघर्ष को राजत बरनी है। उन्होंने विद्यार्थियों के बीच परस्पर संबंध

हुई गलतफहमी को दूर करने पर जोर दिया और कहा कि मैं तो यह चाहता हूँ कि आप एक होकर अपना नेतृत्व खुद करें और नेतृत्व को सेहरा आपने मुझे सोपा है, वह धारा ही को वापस कर लें। आप भी आंदोलन में हैं और मैं भी आंदोलन में हूँ। हमारे रिस्ते सहयोगियों के हैं। अगस्त आप लोग आपस में मिलकर बाम न करें या उसमें से टूटने का बान्त अगस्त-येंगे, तो आंदोलन चलना नहीं सनेगा हमने जिन बुवाईयों से लड़ने का ठानी है वे सुरक्षित दूर करनी हैं।

ममधार में तो छोड़कर तो मही जायेंगे ऐमा भी किसी विद्यार्थी ने जयप्रकाशजी ने पूछा। उत्तर देने हुए जे० पी० बोले कि छोड़ने की कोई बात नहीं है। क्योंकि ममधार में तो आप भी हैं और मैं भी हूँ। दिल्ली से पटना तक रंज मुक्त पर प्रहार होते हैं। नव क्या हो, कहा नहीं जा सकता। कहा जाता है कि हमारे साथ नैकमलाइट हैं। और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ, विद्यार्थी परिषद आदि का नाम लिया जाता है। तो क्या सब 'पासिस्ट' नहीं इन्हे पासिस्ट कहा जा रहा है और इसके साथ-साथ मुझे भी। क्या ये लोग देशभक्त नहीं हैं? उनसे अपने कुछ ढग जरूर है। और उनसे मुझे कभी-कभी परेशानिया होती हैं। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि समस्या उलट करके या बिकुल करने पेश नहीं करना चाहिए। विद्यार्थी परिषद और फिर छात्र-सघर्ष समिति ने इस सलाह का भीगलेंग बिबा और मैंने कहा कि वे ही समुदाय हैं और वे ही आगे रहेंगे और यह मच भी है। विद्यार्थियों को धामशक्ति का एहसास भी। उन्हें दूसरों पर भी विश्वास होना चाहिए। अगस्त कोई महसूस करता है कि हमें दबाया जा रहा है। ता यह परस्पर विस्वांग की बचनी है। आपने आगे कहा कि धाम, जनसंघ आदि उलना देख नें क्या रहा है, क्योंकि धानी पूरी जनता इन्हीं नहीं आई है। मुख्य तो जनता ही है, हम सब तो उन के भाग ही हैं। एक छोटा हिस्सा

.... आदिवासी हमारे खिलाफ नहीं हैं

८। जनता से बड़ा कोई नहीं हो सकता। न भाप हो सकते हैं, न मैं हो सकता हू।

जे० पी० ने फिर करबन्दी की बात की और पूछा कि हमारा जो आन्दोलन बड़ा आन्दोलन है वह करबन्दी आन्दोलन होगा, हममें, आपमें फिस्ले लोग है, जो कर देते हैं? भाप विचारियों में से तो कोई कर नहीं देगा। इसलिये उनमें जाकर काम करना पड़ेगा जो कर देते हैं और उनमें सबसे प्रधान वर्ग है किसानों का। करबन्दी के भास्कत की जो आति होगी उसके मूल में भाप रहेंगे। सो, 'मूल' वहने में बहकार आना है। तो मूल में तो किसान ही है। भाप इस मूल को सींचेंगे और संचालन करेंगे। मैं श्रीगणेश कर दूंगा। भाप जाते हैं कि मेरा शरीर कमजोर है। फूँक २ कर चलता हू। संचालन तो ध्यान-समर्थन समिति या जन-समर्थन समिति के लोग करेंगे चाहे वे प्रदेस के हो, चाहे जिलों के हो, चाहे प्रखंड स्तर के हों। भाप एक साथ बैठकर जो हो लय करें। सर्वोदयवालों को आपने आति में आगे बढ़ने का साधनात्मक दिया तो हम सब लोग आपके साथ भा गये। अब कुछ लोग सदेह करते हैं और सोचते हैं कि हमें नेतृत्व चाहिए। मेरा भरोसा है कि ये सदेह धीरे-धीरे समाप्त हो जायेंगा, कब दूर हो जायेगा नहीं कहा जा सकता।

आपने बोरों का सतिन विवरण श्री जे० पी० ने दिया और बताया कि मैं राची गया था, जमशेदपुर भी गया था। रांची दुबारा गया। भारखण्ड में भी समितियों को सतिन विश्व। कई अन्य स्थानों पर भी जिला स्तर और प्रखंड स्तर पर समितियों के गठन किये मगर अब मुझे बन्द करना चाहिए, हम फिर कल मिलेंगे और आपकी रिपोर्टों को सुनने के बाद क्या हुआ है यह जानकर क्या होगा है सो लय करेंगे। हम सब आते हैं कि भाप अपना काम सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से करें। काम से मानव रहें। मैं कई जगह गया। उत्साह सब जगह था लेकिन जंगी व्यवस्था सारी आम कार्यालय के कार्य-धर्म में दिखाई दी वहीं दूसरी जगह नहीं दी। सामने भाचार्य राममूर्ति बंटे हैं, तो भी

मुझे यह कहने में सकोच नहीं होता। लोग दर्जा-व्यवस्था बंटे थे। भाप भी इसी तरह से व्यवस्थित काम कीजिये। प्रखंडों को ठीक ङग से सींचें और विचार करने के बाद ही उनका उत्तर दूँ। मेरा निवेदन है कि मिल-कर ही काम का स्वरूप तय करना चाहिये। मुझे तो काम से ही काम है। जहाँ जाता हू, लासो लोग जमा हो जाते हैं। बेगूसराय में गया था तो २ लाख इकट्ठा हो गये थे। जबरदस्त बारिश में भी बैठे रहे। वे सारे लोग क्या-क्या शपथें लेंगे केकर गये होंगे। हमें ये शपथें पूर्ण करनी हैं। आपने प्रारंभिक इस वक्तव्य को कहा सत्य करें, यह जे० पी० सोच नहीं पा रहे थे। बाँटें बहुत बहनी थी और बैठक छोड़े थे हाप में कई काम छोड़कर। व बोले, २६ प्रतिशत बिहार की जनता हमारे साथ है। मुसलिम जनता भी हमारे साथ है। रईसों को छोड़ दें। हो सकता है ये भी हमारे साथ हो जायें। मैं मधुबनी भी गया था। उसके बारे में मैंने सोचा था कि वहाँ के लोग आन्दोलन के साथ नहीं हैं अर्थात् आदिवासी हमारे साथ नहीं हैं। मगर मैंने देखा, वे हमारे खिलाफ भी नहीं हैं। मेरी राची में उनसे बात-चीत हुई। उन्होंने कहा कि लोग सरकार के खिलाफ हैं। मगर अभी आपकी भी साथ नहीं हैं। क्या करें? सब तरफ से हमारी उपेक्षा की गई है। उनका विचार था कि वे आन्दोलन हाप में नहीं लेंगे, जरूरत पड़ी तो हाप बचायेंगे। पूर्ण समर्थन उनके बस की बात नहीं है। जितना बनेगा, करेंगे। उनकी कुछ मर्ति है। जैसे—भारखण्ड प्रदेस चलत गा। मुझे उसमें दिक्कत नहीं। क्योंकि मैं तो छोटे राज्यों में विश्वास करता हूँ। मगर यह मेरी व्यक्तिगत राय है। मुख्य बात यह धार रखनी चाहिए कि जनता सब एक है। आदिवासी और आदिवासी ऐसे बाट-र टाट कम्पार्टमेंट नहीं हैं। उम्हा! कहा कि हम सब मिले जुलें, मिल-कर बढ़ने वाली पारा बनें। जे० पी० ने आगे चलकर यह भी कहा कि इस बक्तव्यनी बहुत बल रहता है। सब भीग गया है, हूय गया है, बस से कम मत तो हो ही गया है। हमारा आन्दोलन ही इसवक्तव्य नम है, ठग्य है। तो

जहाँ जहाँ बागिस है, वहाँ वहाँ राहत का काम करें। हम कर भी रहे हैं। जहाँ नहीं हो रहा वहाँ भी, जहाँ बाट न हो वहाँ भी। जो भी काम करें, सुचारु रूप से करें। यह सच-नार ठग्य करने का काम तो चलता ही रहेगा। सितेमा बन्द, सेलस टेबल 'बन्द, बर्दरा, बर्दरा। यदि सेलस टेबल नहीं देंगे तो सरकार को ६ करोड़ रुपये साल की हानि होगी। २०/४० साल शपथे मढ़ीने की तो होगी ही। मगर वे इस तरह के घाटे की परवाह नहीं करते। घोबरदुष्टन निकालते चले जायेंगे। दिवाला निकला हुआ है इस सरकार का तो।

आपना वक्तव्य समाप्त करते हुए जे० पी० ने कहा कि हमारा सघटन कमजोर न होने पायें। सरकार का सघटन तो है ही सचारा। हम जगह जगह प्रस्ताव करें। विधान सभा के विषय का प्रस्ताव। विधान सभा के विषय का प्रस्ताव जब आयेगा, आन्दोलन तीव्र गति पकड़ेगा। नरपतंगव के गाव गाव में स्वयंसेवक बनाई गई समर्थ समितियों से प्रेरणा लें और गाव गाव समर्थ समितियों का निर्माण करें। निर्मल स्थानों से सभी तरह के लोगों की मदद लें।

इसके बाद जे० पी० सभा का संचालन भार श्री कर्पूरी ठाकुर की सौकर चले गये। उन्होंने जाते जाते कहा, 'ये इस बीच दो बार जेल होकर घाये हैं।

कर्पूरी ठाकुर के संचालन में पन्चीस जिलोंसे आये प्रतिनिधियों ने अपने अपने जिलों की रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्टें सुनकर लगा, बहुत काम हुआ है और इस आन्दोलन में सब ४२ से भी ज्यादा दमन हो रहा है। सारी रिपोर्टों के सुनने के बाद भाचार्य राममूर्ति बोले। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि हमने कल सुबह से रात तक लगभग २५ रिपोर्टें सुनीं। उन्हें सुनकर लगा कि हमारा आन्दोलन जितने व्यापक पमाने पर चल रहा है। दमन भी उसी के अनुपात में व्यापक है। मुद्दे भी सुनाने के लिए सामने आये। हमारा आन्दोलन और उनका दमन एक-ये दोनों व्यापक बन गये हैं। इतने बड़े दमन चक्र के लिये अधिक सघटन ही आवश्यकता होगी। और अधिक सघटन

....हर सत्याग्रही का दिमाग साफ चाहिए

होना पड़ेगा। एक डग का काम, एक डग का संगठन और मिलजुलकर बैठें तो ठीक होगा। एक दूसरे के काम की तबरे मिलनी चाहिए। इसी विचार से २२ और ३० अगस्त को राजनैतिक दलों की बैठकें के बुलाये जाने की बात भी उन्होंने बताई। उन्होंने कहा कि ४/६ दलों का समयन है ही। बैठक में के० पी० भी रहेंगे। वे ध्यानीलन के नये ध्यायाम सामने रखेंगे। वठिनाइयो को भी वहा स्पष्ट जिया जा सकेगा।

धलमात्र, तनात्र, टकराव मव हमारे सामने है, इस समय। मगर तडप तां सब के मन मे है। सब मिलकर रास्ता निकालेंगे।

उसके बाद ध्याचार्य राममूर्ति ने संगठन की समस्याओं पर विचार पेश करते हुए कहा कि एडहाक समितियां सितम्बर के अन्त तक बनी रहे। तब तक नये चुनावों द्वारा नयी छात्र सचपं समितिया, जनसचपं समितियां, युवक समितियां, राजनैतिक संगठन बनाये जायें। अक्टूबर में एडहाक समितियां समाप्त हो जाये। निचली इकाई में गाव और पचायत होनी चाहिए। वहाँ भी संयोजक सक्रिय ब्यक्ति हो। किसी दल का ही हो तो सदस्य हो सकता है। मगर वह संयोजक न हो। दलीय ब्यक्ति संयोजक नहीं हो सकता। ऊपर तो संयोजक ही सदस्य होंगे। इसलिए वहा ब्यक्ति नहीं होने। उन्होंने कहा, सभक है समिति के गठन में कम सभपा के कारण गाव और किसी किसी पंचायत में भी वठिनाई रहे तो १०/१० पचायतों की क्षेत्रों में बटकर समितियां बना लें। छात्र सचपं समितियों की तरह अन्य, समितियां भी बन जायेंगी। याने जनता के समाप्तर संगठन भी बनें। इनमें सामजस्य की भावना होनी चाहिए। ऐसा न होने पर परस्पर शिकायतें शुरू हो जायेंगी। महीने में कम से कम एक धार सम्मिलित बैठकें हो और काम वैसे चलें, प्रागे क्या कार्यक्रम बने, सब बातों पर उन बैठकों में विचारविमर्श हो। एक दूसरे के वार्षिकम की भी जानकारी परस्पर प्रावश्यक है। छात्र सचपं समिति की ध्याम शिकायत है कि शिक्षित सक्रिय जन भावस में नहीं मिलते। ऐसा न हो।

हम अपने दिमागों को भी साफ रखें। सक्रिय किसानों मातें? बकीलों को, किसानों को, म्यायाधीशों को, हम तो सबको नग्न्य मानते हैं, मलना चाहते हैं। मन्वे हमें कुछ सेना है। सचपं में पडना ही सक्रिय होना नहीं है। यदि कोई जेल जाने की परिस्थिति में न हो तो उसे हम अपने से प्रलय न मातें, उसको निष्ठा के प्रति ध्यादर रखें। 'गद्वार' ध्यादि शब्दों को छोड दें, सबको साथी बनाए नहीं तो इन्ने वडे ध्यादीसन में हम अकेले ही 'शहीद' वच जायेंगे। ध्याचार्य राममूर्ति ने यह भी कहा कि सत्याग्रही श्राति वा चाहक है। उसकी शक्ति वडने और उसके प्रशिक्षित होने पर ही काम प्रागे वड सकता है। उन्होंने गुजली के सत्याग्रह का उदाहरण देते हुए कहा कि वहा के सत्याग्रह में ८ साल से ६२ साल तक के लोग भी कार्यरत हैं। और तुलन तीन हजार का शर भी घडाइस लोग वहा जेल गये।

हम ध्याना सचपं सतन जारी रखें। नही तो जो सचपं में ध्याये है, वे भी धारे धारे वाहर चल जायेंगे।

धमो जिसान सेतो में सगे हुए है, यह धान रोपने का समय है। कल जब वे खाली हो जायेंगे तो जेल भरे जा सकते हैं। किन्तु जेल भरने से हमारा हित नहीं है। हमारा कार्य प्रशिक्षित को शिक्षित करना भी है। क्रान्ति के लिए लोगों को प्रशिक्षित करे और क्रान्तिकारियों का निर्माण करे। इसका ह्याल रहे कि परिवार के कमानेवाले जेल न जायें क्योंकि इससे ग्रहिन होगा। सामने लोगों की रोजी की समस्या खडै हो जायेगी। जो क्रान्ति में असमर्थ हैं उन्हें क्रान्ति में न पसीटें तो उरीश होभा।

उन्होंने स्पष्ट जिया कि हर सत्याग्रही को ये जान होना चाहिए कि वह क्रान्ति क्यों चाहता है, हर सत्याग्रही को जानना चाहिए कि विधान-सभा का विघटन क्यों होना चाहिए। ध्यार दिमाग में बातें साफ नहीं होगी तो क्रान्ति कमजोर पड जायेगी। सत्याग्रही के सामने यह भी साफ होना चाहिए कि उसकी निष्ठा कहा है? वह क्या कहा है? ऐसा न जानने पर लोकनायक और जनता के बीच की कड़ी कमजोर हो जायेगी। सत्या-

ग्रही ही हो वह बीच की कड़ी है। मातूम होना चाहिए कि निष्ठा जाति के प्रति, प्रवेश के प्रति, परिवार के प्रति, राज्य के प्रति, विचार के प्रति कहा है? पहली निष्ठा लोक के प्रति होनी चाहिए। इसके लिए १०/१० दिन के प्रशिक्षण गिविर हाने चाहिए। यह जरूरी है। लडाई लकी होगी तो प्रशिक्षण भी मुन्दर होना चाहिए। उडीसा ध्यादि में ३-३ दिन के गिविर लगायें गये हैं। जो शक्तिवा पडी है उनका उपयोग करना चाहिए। हमें पार्ट टाईम बर्करो की भी जरूरत होगी। 'लोग एडकमिटियो' की मिनाल सामने है।

चू कि जे पी ने धमो तक सम्पूर्ण बहि-ध्वार का नारा नहीं दिया है इसलिए ध्याचार्य जी ने कहा, हम ध्यापारी बकील, धरकारी कर्मचारी सबका, पैसे का सहयोग ले सकते हैं। सभी श शिक समय देकर सहयोग दे सकते हैं।

इसके बाद दूसरे दिन की कार्यवाही में एकत्रित संयोजकों और प्रतिनिधियों को और से कई मुभाष ध्राए। इस दिन करीब ४४ धादमो बोले, सभी के मुभाष किसी न किसी हृष्टि से उपयोग थे। कोई भी बोलने वाला ब्याख्यान की दृष्टि से नहीं काम की दृष्टि से ही बोला।

सर्वोदय समाज की धार से यह बहा नाफ की गई कि हमें नेतृत्व नहीं करना है, हम केवल सहयोग देनेवाले हैं और जहा-जहा आय जायेंगे, वहा हम साथ होंगे। कई प्रति-निधियों ने धारती तरफ से धम बात पर जोर दिया कि सर्वोदय का नेतृत्व चाहिए। प्रचार संघर्षी समस्या को भी उठाया गया धरि वहा गया कि रेडियो और धलवार माधुनल सबधी समाचार नहीं देंगे। प्रचार के लिए जुद्ध बादि निचालना भी मुधिरल हो गया है। निरीह बच्चों तक पर साठी चार्ज जिया जाना है। ऐसी हालत में छोटे-छोटे पर्चे द्यप कर बटवाये जायें। धारने पर इन्हे बडी धुंध्या में पडा जा जवेगा। पटना सचपं समिति ने युवक सचपटने की मगः स्थिति अलग जियस की दिलाई दी। ऐसा मगा कि उनके मन में नेतृत्व की सेकर कुछ चल रहा है। मगर बाड

गुलाम भारत के जेल

मैं पिछले ७ जुलाई से गांव में था और प्रादोलन के पहले चरण की तैयारी कर रहा था । १ अगस्त को सामूहिक उपवास के बाद शाम को फारबिसगंज जनसमर्पण समिति के अध्यक्ष श्री दयानन्द साहू की अध्यक्षता में सभी हुई जिसके माध्यम से प्रादोलन के सदस्य और सरूप को डूहराया गया । इसी बीच सारे इलाके में धरूपपूर्व बाइक धा गयी । इस प्राकृतिक प्रकोप से पीड़ितों को राहत दिलाने के उद्देश्य से 'लायस क्लब फारबिसगंज से सहयोग से बरीब पंचसिंह हजार रुपये इकट्ठे किये गये । यह योजना बनी कि छात्र एवं जनसमर्पण समिति के सदस्य सधर्ष के साथ साथ राहत का भी कार्य करें । इस सिलसिले में मैं स्वयं छात्रों की एक टोली के साथ नरगतगंज, फारबिसगंज के सड़कग्रन्थ क्षेत्र को देख आया, और किस प्रकार राहत का कार्य किया जाये, इस सम्बन्ध में आपस में बैठकर फैसला किया । छात्र और जनसमर्पण समिति ने 'बाइकीडित सहायता टोली' बना

कर राहत कार्य शुरू कर दिया । हमने जोगबनी, कुसमाहा, अमहारा, रमाई आदि क्षेत्रों में पुराने तथा नये कपड़े, चाव की दवाइया, नूटा, चना, निरासन, तेल, दियासलाई के डब्बे आदि सामग्रियों का वितरण किया और करवाया । जेल में जैसी सूचना मिली है उसके अनुसार राहत का कार्य चल रहा है । किन्तु अधिकारी तथा पुलिस-वाले हमारे छात्र स्वयं सेवकों के पीछे पड़े हुए हैं, जिसके कारण राहत कार्य में भी बाधा पड़ रही है ।

प्रादोलन के कार्यक्रम के अनुसार हमने एक विशाल जुलूस, जिसमें करीब दो-ढाई हजार प्रदर्शनकारी सम्मिलित हुए, निकाला । हम जुलूस लेकर जब प्रवेश विवास कार्यालय की ओर जा रहे थे 'सीनापट पुल' (राजीवगंज रोड) पर स्थानीय पुलिस दरोगा और इन्स्पेक्टर सी० धार० पी०, वी० ए० एफ० की टुकड़ी के साथ-साथ इस तरह रड़े से मानो हम पुल को तोड़ने या उड़ाने जा

रहे हो । पुल के पास पहुंचते ही जुलूस की अगली पंक्ति पर लाठी से प्रहार हुआ और रिश्ता गाड़ियों को इस तरह धकेल दिया गया कि रिश्ता पुल के नीचे अग्राह जल में गिरते-गिरते किसी प्रकार बच सका । रिश्ता-चालक जूरी यादव और लाऊडपीकर से नारे लगानेवाले सभी रामाजकर गुप्त को लाठी से चोट लगी । हमने आगे बढ़कर पुलिसवालों को रोका और कहा, 'आप यह क्या कर रहे हैं ? लाठी चार्ज क्यों करवा रहे हैं ?'

दारोगा ने मुझसे कहा 'जुलूस यहां से आने नहीं बड़ेगा ।'

क्यों ? आप हमें बी० डी० धो० से मिलने नहीं देंगे ? आप नहीं देख रहे हैं कि जुलूस में दर्जनों बच्चे हैं, बूढ़िया हैं । इनसे आग की क्या खतरा है ? ये सभी बाइकीडित हैं और इन्ट्रे बी० डी० ओ० से फरियाद करनी है ।

पुलिस दरोगा ने कहा, 'आपको नहीं मालूम है कि धारा १४४ लागू है ?'

'मालूम है । और आपको यह नहीं मालूम है कि सारा इलाका बाइ से पीड़ित है ? हम तो जुलूस लेकर आगे बढ़ेंगे 'आप लाठी चलाने या गोली ।'

इसके बाद हम धारो बंद । बरीब ३०-४० मिनट तक मुख्य-मन्थी और पेर-पार होना रहा । अन्ततः वे हमें रोने से अलग कर रहे ।

हम जब थर्वाँस प्रांतिम पहुंचे तो वहाँ पहुंचने में ही मुख्य द्वार पर सी० धार० पी० और वी० एम० एफ० के जवान तैनात थे । फिर वही रस्ता बनी शुरू हुई । अन्त में अग्र्य छट साधियों (श्री चालचन्द साहू, मलय-नारायणदास दास, जिदकुमार नेता, जय-नन्दन ठाकुर, रत्नेश्वरदास एवं रामदेवसिंह) के साथ अग्र्य वी० डी० धा० के दरवाजे में पहुंचा । हमारे साथियों ने कार्यलय में जनता का ताना मटकाया और हमने बी० डी० ओ० में कहा कि बाइ से मारा दयावा लका है और आप मिर्ठ 'ता एण्ड टाईर' में टैल कर

श्री फणीश्वरनाथ 'रेणु' का एक पत्र मूणिया जेल से मुझे मिला है जहां वे इस समय बन्दी हैं । यह पत्र स्वयं उन जुलूस-सितम की सहानी बह रहा है जो वर्तमान शासन द्वारा शांतिपूर्ण सत्याग्रही छात्रों और युवकों पर दायें जा रहे हैं ।

अभी हाल में मुंगेर और भागलपुर जिलों का दौरा करके मैं लौटा हू । जहां भी मैं गया, बड़ी-बड़ी सभाएं हुईं । भागलपुर नगर की सभा (१० अगस्त) में तो बस से बस तीन साल लोग इकट्ठे थे । सब जगह लोगों में, छात्राओं में, युवकों में अगार उत्साह देखा गया । जनता ने सर्वत्र एक स्वर से वर्तमान शासन के प्रति अविश्वास प्रकट किया । जनता वर्तमान शासन को, धारने वर्तमान प्रतिनिधियों को अमान्य कर चुकी है । हममें अब भी अगार किसी को कोई सदेह रहा हो तो वह मिट जाना चाहिए ।

सम्भव है, रेणु को मुझे इस प्रकार का पत्र लिखने के कारण और अधिक बन्दी का सामना करना पड़े । परन्तु मैंने सोचा कि उनकी भावनाओं में जनता तक पहुंचा दू । जनता ने तो वर्तमान शासकों को अपने दिल से निकाल ही दिया है । अगार वह ममटिन होंगी तो अपना समाप्तान्तर शासन बना लेनी ।

रेणु जी के पत्र से जाहिर है कि निम्न प्रकार फारबिसगंज के छात्रों और युवकों ने बाइ-पीडितों के लिए लायस क्लब के सहयोग से राहत का काम शुरू किया है । मैं उन्हें इस अभिप्रेत के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि अग्र्य क्षेत्रों में भी बाइ-पीडितों की सहायता के लिए छात्र सधर्ष समिति तथा जनसमर्पण समिति के स्वयंसेवकों द्वारा ऐसे कार्यक्रम उठाये जायेंगे, और शासन की ओर से सारी गतिधर्मों के बावजूद हमारे छात्र और युवक अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रिय रहेंगे ।

पटना,

१४-८-७४

—जय प्रकाश नारायण

आज के जेल से अच्छे थे

रहे हैं? हमने अपनी माँगें उनके सामने रखी तो वे बोले कि धाप सोग मिलकर खाली कार्टस को बदलाव करते का काम कर रहे हैं। धाप यह जान लें कि महादी और अष्टाचार को कोई भी पार्टी और कोई भी व्यक्ति पाठे वह किसना भी बडा काम न हो, नही मिटा सकता। हमने उनसे बातें करना किन्तु समझा। हमने ऐलान किया कि हम धापका कोई भी काम नहीं चलायें वेंगे और हम अपने साथियो सहित घरदा पर बैठ गय। पुलिस दरोगा ने धागें बड़कर कहा, 'हमने धाप लोगों को गिरफ्तार किया।'

हम गिरफ्तार हो गये। किन्तु बाहर प्रदर्शनकारी प्रखंड के मुख्य द्वार को घेरकर खड़े रहे जिसमे सात साल के बच्चे और पच्चीस साल की नुई औरत भी थी। प्रदर्शनकारी नारे लगा रहे थे। हमारे नेताओं को रिहा करो या हमें भी गिरफ्तार करा।

पुलिस ने उन्हें राइफले की बटून धेप्टा की किन्तु वे घब्रिय रहे। धमक: पुलिस ने २०३ प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया जिसमे सतार्दीय घोरतें भी (शोध में बच्चे सेकर) थी।

एक ठुकर, एक बग घोर एक जोर में भरकर हमें पारबिसगज घाना से ले गये जहां धान सपर्यं मर्मित की घोर से जवपान की व्यवस्था थी। मेरे बटून बट्टे के बाय पुलिसवालों ने टाणों को गिनाने की धतुमर्गि दी। बट्टों से हवे सीपें धाररिया भेजा गया। हमें दिन से करीब डार्ड बजे गिरफ्तार किया गया था।

धारिया हम करीब ६ बजे रात को पट्टे। बट्टों धाररिया जेल के जेलर ने हमें मेरे मे इन्कार किंग कर्वाँटि उनके पास इनकी जगह नहीं थी। हमें पुरी रात सुपे मे पुलिस कबल के भीन संशान मे घेरकर रखा गया। पुलिस के डाग इमारे गाने-गीते की कोई व्यवस्था नहीं थी घोर वे हूँ भी० धार० पी० घोर डी० एन० एच० के घेरे मे डीड कर न जाने बट्टा भवे गये।

सब हमारे साथियो ने फँसला किया कि हम एस० डी० घो० के पर पर पहुंचकर उनका पेंराय करें। रात के करीब डेड बज रहे थे। हम नारे लगाकर भागे बडे। सी० धार० पी०, बी० एस० एफ०, पुलिस दरोगा के जल्दये ने हमें फिर घेरा। हमने भोजन तथा पानी की माग की। मगर उन्होंने एक नूटद पानी भी हन नहीं दिया।

उन्होंने हमारे बच्चों को पानी पिलाया। हमने धरने काल से बिहार पुलिस के जवानों को धापस मे बाणें करते मुवा, यतो जुलूम हे। हमें तीन सी, डार्ड सी महीना देंगे, ये चावल लीन हयथा विलो हे। ये लडके ठीक ही तो कर रहे हैं। अफसर लोग चलानें इन पर लाठी। हमसे तो धब यह पाप नहीं होया।'

तीन बजे रात मे धाररिया के एम० डी० घो०, डी० एस० पी० दलबल सहित पहुंचे और घाने ही १४ व्यक्तियों की (टाचें की रोगी से घेंटेर देकर) गिनी की। बाकी लोगों को जबरदस्ती पकड-पकड कर बस मे घहेलना धोर लादना शुरू किया। उनके विरोध करने पर उन्हें गानिया दी गयी और नुख्त बस को न जाने कहा धाली कर दिया। पूछने पर वे बोले कि उन्हें क रजिसगज भेज दिया गया।

इसके बाद फिर वे (पबिशारीमण) न जाने कहा गायब हो गये। हम रात भर वहीं बैठे रहे।

सुबह हमने नारे लगाने शुरू किये तो एक पुलिस दारोगा धाकर बोला कि धाप लोगों को नुख्त पुनिया भेजा जा रहा है। हमने जव घानेगीने की मात की तो वे बोले कि व्यवस्था हो रही है।

(मेघ पृष्ठ १२ पर)

पटना
१५-६-७४

त्रिपरेण जी

घापके पप के लिए घनेक धयबाद। पप पड कर बडा उल्साहित घोर भविय के लिए घामाबिन हुआ।

घापके पप से जहा एक धार यह प्रखट होता है कि यह शासन बितना नीचे उतर सकता है, बहा दूगरी और यह भी सिद्ध होता है कि जहा भी जनता की सही नेतृत्व मिलना है वहाँ वह किसना ऊना उठ सकता है घोर तब यह क्या नहीं कर सकता है।

घापके पप से एक घोर बाय प्रखट होती है कि यदि शासन के कुछ धारिवादी, पारबिसगज के बी० डी० घो०, शासन की अष्ट नीतियों के कट्टर समर्थक बने हुए है तो दूगरी तरफ पुलिस के गिपाही तथा धन्य गरीब तबके के धारिवादी हृदय मे दम नानिवादी सपर्यं के साथ ही कर्पोकि वे इमम धानी भी मुक्ति देखते हैं। इनमे से कुछ लोग देते हो सकने हैं जो मारपीट और बर्बरता के धन्य काम कर घाने हो। परन्तु मेरा विश्वास है कि सरकारी घोने का एक वर्ग दिल से हम लोगों के साथ है, धाज भवे ही उन्हें घाने पेट के लिए सुनामी करनी पडती हो।

घाप मेरे स्वास्थ्य की बिना बरडे है परन्तु धुभे तो घापके स्वास्थ्य की धरिध बिना है। पूरियाय सदन बनरा का जो हान घाने लिला है, उन पर मे यय होगा है कि वहाँ धापका स्वास्थ्य धरिध त्रिगड न जाय। धामामभव स्वास्थ्य पर ध्यान रकिपेया। मैं धानी धरडी तरहू हे किन्तु धुगु दिलो मे हाप की उगनियो के जांघो मे धुद दर्द होन लगा है। धानी जांच करेह चन रही है।

घातका मनेह
जयप्रकाश नारायण

श्री धानीधरनाथ रेणु,
पुनियाय सदन कार,
पुनिया।

खेती-गौपालन के पीछे पागल



पृ० उ० पाटनकर

मैं खेती-गौपालन के पीछे पागल बन गया हूँ। २१-४ बजे जागता हूँ। बिजोवा व्यक्तित्व और 'बिचार' में से पढ़ रहा हूँ। सूरज की कमी और खेती, गोमेषा पड़ रहा हूँ इसकी पढ़ने पर लगता है कि मैं ठीक राह पर हूँ। भारतीय के लिए २-४ घण्टा चाय घोर ११-२ घण्टा मफाई व १२-१ बजे तक लेनी के अभिन्न काम। २१-३ स ६-७ बजे तक फिर काम। इस प्रकार एक गवार किसान ही बन गया हूँ। साथ में प्राणायाम, ५११ साल का अन्नबीज बढ़ते भूमि विद्या भाई, मुण्डर भाई (कोरड) और उमरे भाईन इस्तिषा, पशु गम्हालने वाला पत्तर (को०), बूँदे इन्धु-इन्धु जुनाई में इनने ही लोग जयप्रकाश सर्वोदय विद्यालय के विद्यार्थी हैं। गांव के लोग नहीं चाहते कि उनके बच्चे अन्न, सफाई, लेनी आदि गीलें-करें। तो उन्होंने भीर-भीरे छाते बड़े बच्चों को रोडा भेजना शुरू कर दिया था। गावियों के लिए येन भी विद्यालय के नाम नहीं बसा तो 'सर मुने पढी उठे'—एक साथी यादरगछ छोटे को डारको भाई के साथ काम करने को कहेंगे। उनका बहुत आग्रह था। अन्न छोटे का बहो मन लग गया तो डारको ओ को पन्दी मरद हो जयिगी। १०-१२ दिन लगा तार रोरे की घाल लगायी। समने बारिस के साथ मरहा-मूकपनी, उडद, मूंग, माग-भाजी आदि मरणी की फसमें, मगामी कोजी हाथ से अग्रि मेंनी बाजी करने है, एक साथ दो-तीन फसमें लेने के प्रयोग चलन है। मर-दार ब्यारियो में मरहा के साथ मूकपनी,

धमरद-रफला के साथ मवा-मूकपनी। इस साल मनी-मुनी बारिस धमो तक हुई तो सब फसलें बहुत सुन्दर हैं। सब फसलें रोग भुका हैं। कपोस्ट व मल-मूत्र के खाद का सुविस्थान साफ दिखाई देना है। प्राणको जानकर प्राचरण होगा कि सारा भारत गोबर खाद बनाना नहीं जानता और ठीक से देना तो और भी दूर की बात है। इसलिए छाटे के समान खाद बना-गवानर जडा बीज बढ़ा खाद, यह एक नई चीज मिली है। गरीब किसान के लिए ये काम किये जा सकते हैं। बिना साहब के गांधी मेवक समाज से गोबर गैंग प्लाण्ट के लिए अनुदान दिया था तो बेंतुल म उमो की बन्दोत गैंग प्लाण्ट का पूरा प्रचार हो गया। तन-पानी भी चाहिए जिससे गावो का मनी नी जा सके और जितना का लेन (पानी ता १०-१२ मास तक चलनी रही थी)।

अगर मनुष्य-मवेशी को मानिक छाजार दिया जा सके तो अनेक प्रमानबीय समस्याओं व शोष से बच मुक्त हो सकेगा। खांडे माहूक भी बचावे दानी बिना मे लग हुए है।

१२-१५ प्रकार की फसलों के वृक्ष लवडे है और छापाया यह उपकर मणी होगी कि

(म यदा मोरमेवक उमराव पाटनकर का, गांधी स्मारक निधि के मनी देके-उभाई के नाम लिये हुए एक पत्र का अंग लेण-रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। इसका अर्थमय अर्थ छोड़ दिया गया है। इस पत्र में इस बात का एक उदाहरण होता है कि लोकोपेक का काम बिना काठिन, बिना दिलचस्पी और मोरक में बना हुआ है। उमम जिनविद्यालय का उन्नेय है, वे उम नवी लागनी की पद्धति अपना कर कर्मता में चला रहे थे और साथ ही अपने विद्यार्थियों की सरकार माध्य परीक्षाओं में भी यही पद्धति के साथ बगोटी करा जाने से। उन्होंने अपनी इस पाठनगला के विद्यार्थियों में से हरकत का छाटा बडा लोकोपेक बना दिया था और फलवकर कामनाम के कई गावो में शरक धरन छाप उठ गयी थी। याने उन्का 'बरजगल' 'परजगल' बन गया था। इन हरकट में गाव अर्थी कर्मता कर्मथन बिहाय रहा है; किन्तु चाहे जिन तरह लोगों का पैसा मरजाने म जमा करके विप्लवधर्मों के खादि छांधानी पठे पातेने काने इस गाव की छात्रका का स्थान मानने लगे और पत्र ही एक कल्पन इमार्ण मरुतवा दिया कि लोगों को जगामेथानी मक मरगा मगाल हो जय वा नैन मि'। फलतः का हुआ, उने लोकोपेक पाठनकर ने बडे लेने-मुने मगर प्रमाअर्थी कर्मता म मूकथन बिहाय है। वे इन परिस्थिति में भी बाजी दिलो मक पूजे और जब दान टि पाठनगला बर जिव दिना चारा लडी है तो वे 'मोवजाना' का निर्माण करने चल रहे हैं। छत्र उन्के छाणगला के मने मंग और पर, मेरा और जिन्गले के स्थान बने पठे उनको मरुतवा मरगा है। इस मरुतवा मंग की पूरा कर्मने के लिए उन्गने काम पुता है 'मेरी और मं पाठन' का अर्थ मरुतवा है कि वे उने बिना प्रचार अजाम देने की कोशिश कर रहे हैं।)

एक आन्दोलनभरा सफर

—कुमार प्रशांत

पटना जकतन। गया का टिकट लेनेवाली की नतार मे सटा हूँ। रेल हटताल के कारए एक भी गाडी, किसी भी दिशा के लिए खुलती है तो जाननाक भीड़ हो जाती है। सम्झी नतार के प्रायः अतिम सिरे पर खड़ा हूँ, तभी लिडकी के निकट धोर होना है। एक चांदमी चिन्हा चिल्ला कर वह रहा है, अब नहीं चलेगा यह सब। निजालो चार पैसा। शोर होता है। कार टूट जाती है। लिडकी पर भीड़ है। गया का टिकट है तीन रुपये सोलह पैसे, लिया जाता है तीन रुपया बीस पैसे। चारपैसे का पयला अब नहीं चलेगा। यह 'अब' क्या है? धारोलन का मुकब है।

देख रहा हूँ लोगों को चार-चार पैसे वापस मिल रहे हैं या तीन रुपये सोलह पैसे ही दिये जा रहे हैं। पर अब तक यह 'अब' बना रहेगा? इसका उत्तर भी इस आंदोलन मे खोजना होगा।

घोडकर डिब्बे के पायदान पर खड़ा हो जाता हूँ। हाथ मे 'वक्ष्य भक्ति' (धारोलन की बुलेटिन) है, कबे पर भोला। अन्दर एक नौजवान भाएर दे रहा है, जयप्रकाश बाबू तो अपने साथियो से कह गये हैं कि वाप से एम० ए० अब नहीं मारें तो सडका को इशारा कर दो मारने के लिए, अरे जय-प्रकाश बाबू इण्डियन गवर्नमेण्ट के मोनियर मोस्ट भादमी हैं।' टेलटाल कर मैं भीतर धुलता हूँ, 'बघों भाई साहब, धाय जयप्रकाश को जे उन साथियो मे है क्या, जिन्दे मारने

तैयार नहीं हो पाता। फिर भी बोल-डाय-जेक्टर सगने का विचार है। जिहालव के मरे जानखरो को हुइया सपह करके रखी है।

गो-सेवा मे चारा-गानी हो मुख है धोर भारत मे उसकी भी व्यवस्था नहीं जैसी है। बेचारे अनुष्य की भी कहीं है? बेक बटर बिजलीचालिन मिल सके तो सलुलिन कारे-दाने के प्रयोग आसानी से देश का हर नागरिक, जो भी भोजन करता है हू कर सक्ता है। देश की खेती-गोपालन की 1-2 फट दे तो धन-दूध की कमी नहीं पड़ेगी धोर सारा देश स्वस्थ और सुन्दर होगा।

जिंमे मे नीबे लिखा कार्यक्रम खेतर कुछ पाठों मे गांर के लोगों के साथ भूमने का घोषा है :

का सदेव दिया है उन्होंने?' नौजवान घोडा चौकस है, काय किंसी मुकब सभा मे मुकब को देख चुका है। चुप हो जाता है धोर मैं ट्रान के डिब्बे मे तरुण प्राति के अक बेचने लगता हूँ। सब बड़े उरसाह से एरीरते हैं धोर कहते है कि जयप्रकाशजी के बिचार सही-सही लोगो तक पहुंचने चाहिए।

एक सज्जन यही मुचना देते हैं कि 'भोमा' के अतर्गत गिरफतार छाप सधर्ष समिति के जिवाणन्द तिवारी मे अर्पजी मे लिखा आराय पत्र लेन से इन्कार कर दिया धोर उनका आरोप-पत्र फिर से हिंदी मे तैयार करवाया गया।

गया में जा रहा था तबए गाति सेना के एक सिविर मे भाग लेने करजरा स्टेशन से काफी दूर पैदल चलना पडता है। राते भर शिवरात्रिया मे विधानमभा भग के बाद क्या धोर जयप्रकाशजी के दलबिहीन लोकतन्त्र को चर्चा चलनी है अर्पेक्षा भी है धोर सान-बाए भी। युवकों को इस प्रकार सामाजिक समस्याओं की टोह लेते देखना काफी सुखर दयता है।

शिविर के जम मे युवकों ने कई बातें बतायीं। युवकों का बडा वर्ग ऐसा है जो अब भी तमाजबेन है, या वैरिष' के मोह मे फसा है। दूसरी तरफ किंसी का भाई, किंसी

१ धरातल मुवित गाव-गाव समाधान समिति गठन, धाम-गन्नि-सेना।

२ अरसन मुक्ति दूध-उत्पादन (गासेवा) फल उत्पादन।

३ धानर-गुडि, बाह्य गुडि

(१) फेरी (२) सामूहिक प्राप्ति (३) धाम-स्वराज्य परिषद, धाम-भावना, परिवार-भावना का निर्माण, मत-मूक, गोबर सो-मूक-जुडी गनी घोडों का वैज्ञानिक महत्व, उनके धार आदि तैयार करना। रासी-गलिया समान कला। सडास, गोबर गैस प्लांट का महत्व समझना धोर (४) धाम-सभा का निर्माण। धाम-स्वराज्य के लिए इन्मे पहना कदम दिशावी देता है।

का चाचा मासाबाजारी करता है। अपने घर के अष्टाचार के विरुद्ध अनगण को जो वात जयप्रकाशजी ने कही है वह वह बडी भारी पडती है। रेलजी ने बताया था कि युगिनों की तरफ किंसी बडे जमीदार परिवार परिवार का लडका अपने घर की जमाखोरी के विरुद्ध घर छोड़ने की तैयारी मे है, मैं बला देता हूँ। एक लडका नहीं रोच पाता है तो कह देता हूँ, 'मैं उपवास करके धा रहा हूँ अपने घर के अष्टाचार के विरुद्ध।' उसके पिता ब्लाक आफिस मे किसी छोटे-मोटे पद पर है।

गाम मे किसानों की शिक्षावत है कि हर धारोलन के बाव अनाज का बाजार भाव तो कुछ गिरता भी है, बाजी चीजो का धाम बड जाता है। मारा जाता है किसान धारोलन गावों तक फैला है।

ठेट मज है सकरदास नवादा। महा मजदूरो को खरीदने, ब-धक रखने की प्रथा अब भी चलती है। एक मालिक अपना मज-दूर हुसरे के हाथ बेच देता है फिर सारी जिन्दगी उसको वहाँ मजदूरी करनी पडती है मजदूर बेध खरकर साहूदर किस्म के लोग पैसा भी उगाते हैं। यह भी प्रथा चलती है कि गमंवती महिला को लिहाने विलाने की जिम्मेवारी 'मातबर' लोग बडा लेते हैं धोर वाद मे उसकी सतान पर बजूर रखते हैं।

अभीधारी खत्म होने के दावों से तेकर गुलामी खत्म होने तक के दावों की पोल यहाँ दिशाई देते हैं। भारत के गांव को भाइना हैं जिंमे कोई भी सखार धरनी सही सूरत देख सकती है।

सकरदास नवादा से गया जाने के लिए बजोरगर्ज जाना पडता है। रास्ते मे, वष घट्टे तक वाते हुए एक नदी मिलती है—शायद लिखा था—अकेरी नदयु—जिस पर बने पुल पर लिखा था, यह ४ घासधिक कमजोर हो गया है। ६ टन सेपरसधिक का बोध नहीं उठा सकता है। इस।' से धाय धरनी जिम्मेवारी ने जा रहे हैं।

जकेरी नदी पार करते का धोर कोई रास्ता नया था। देवा सारी सवारिया उकी पुल से धा-जा रही हैं। पर इस परहुई किसी दुपुंटाए को जिम्मेवारी सखार नहीं लेगी, उसने सुचना दे दी है।

लेकिन ११ बजे तक वे फिर गायब रहे। १ बजे वे हमारा वारंट तैयार कराकर आये और हमें चलने को कहा। हमने एतराज किया। 'हमें मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर किये बिना वारंट पर दखलदारी कैसे किये करवाया गया है? हमें मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर होने दें।'

उन्होंने कुछ भी नहीं सुना और हमें पकड़-पकड़कर खुदे टुक में चढाया गया। हम ४ बजे (१० तारीख को) पुणेिया जेल पहुँचे।

हमारे साथियों पर चार-चार वारंट और दस-दस दफाये लगायी गयी है। हमारे प्रचार करनेवालों को पीटा गया है, साउ-स्पीकर छीना गया है। रिक्शा जप्त किया गया। रिक्शाचालक को गिरफ्तार किया गया।

उस दिन (दस तारीख को) फारबिसगज बाजार पूरी तरह बन्द रहा। नरपतनज प्रखंड प्राक्सि में तालाबन्दी हुई। फारबिसगज में मोहन यादव और अणोबदास (दोनों छात्र) को गिरफ्तार किया गया। इसके बावजूद हमारे बहादुर साथियों ने फैसला लिया है कि वे ११ तारीख को फारबिसगज में ८ चोरी पर बम-से-नम १० व्यक्ति १२ घंटे के धन-दान पर—पुसिज जुर्म के खिलाफ बंटेंगे।

१५ तारीख को काला दिवस मनाने का फैसला किया गया है। इसी के साथ-साथ धमले चरण के कार्यक्रम के अनुसार धान एवं जन सघर्ष समिति के लोग प्रादोलव के घोषित कार्यक्रम में अनुसार भी काम करेंगे।

मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है। यों, पिछले एक सप्ताह से मेरा पेटिंक में दर्द का दौरा शुरू हुआ है, फिर भी मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हूँ।

जेल की वात? कुछ दिन पहले... ने मुझ से कहा था कि गुलाम भारत के जेल और स्वतंत्र भारत के जेल में कौसी फरक है? सचमुच, पुणेिया जेल मोजूदा भारत का असली नमूना है जिसमें आदमी भी जानवर बन जाये। एक हजार एक सौ बासठ कैदियों ने मायद एक भी व्यक्ति स्वस्थ नहीं है... यादव सरक ऐसा ही होगा... १६४२ और १६४७ में इतना फरक?

प्रणाम स्वीकार करें।
भाई ही, रेणु

ग्राम शान्तिसेना शिविरों की कड़ी

□ हमीरपुर जिले के मोहाड विकास जाहूँ पर ग्रामशांति सेना भी गठित की जा रही है। इस विकास सड में ऐसे शिविरों की दिन के ग्राम शांति सेना शिविर लगे। दोनों एक बडी चल रही है।

शिक्षक वह प्रकाश स्तम्भ हैं जो समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है जिसकी निष्ठा पर देश का भविष्य निर्भर करता है।

उसो शिक्षक के कल्याण हेतु उत्तर प्रदेश शासन ने संकल्पी प्रयास किये हैं

- 1 शिक्षकों को शिक्षण-कार्य में दक्षिण रखने के उद्देश्य से उनके वेतनमानों को महंगाई-भत्ते में वृद्धि।
- 2 प्रारंभिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए सामूहिक बीमा योजना।
- 3 मूल धन्यता सेवा-निवृत्त होने वाले बीमायुद्ध प्राधमरी अध्यापकों को १ माह के भीतर ही बीमे का लाभ दिलाने की व्यवस्था।
- 4 वैयक्तिक शिक्षा परिषद के उन सभी अध्यापकों को, जिन्होंने १ जनवरी १९७४ तक तीन वर्ष की सेवा पूरी कर ली हो, स्वायी करने का निर्णय।
- 5 १ अक्टूबर, १९७४ से पूर्व सेवा-निवृत्त जीवित एवं स्वामी अध्यापकों को १ नवम्बर, १९७२ से अनुग्रह पेंशन।
- 6 'लान्धनी' योजना में अन्तर्गत १ अक्टूबर, १९६४ से पड, पेंशन और प्रचुटी की व्यवस्था।
- 7 गैर सरकारी माध्यमिक और जूनियर हाई स्कूलों में प्राधमरी अध्यापकों को भी वैयक्तिक शिक्षा परिषद के अधीन अध्यापकों के समकक्ष वेतन।
- 8 सरकारी अनुदान प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों को भी समन्वरीय सरकारी शिक्षण सस्थाओं के शिक्षकों के बराबर वेतन एवं महंगाई-भत्ता।
- 9 'निर्धित बेरोजगार' योजना में अन्तर्गत प्राधमरी और जूनियर हाई स्कूलों में १५,००० अध्यापकों की नियुक्ति।

शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर प्रदेश सरकार और समस्त नागरिक

शिक्षक समुदाय के प्रति अपनी श्रद्धा और वृत्तमना प्रकट करते हैं।

सूचना-विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित। विन्यक्ति संख्या-४

(पृष्ठ ७ का शेष)

कार्य सीधा। उन्होंने कहा कि इस प्रकार से काम सीधे जा सकते हैं और इस प्रकार सार्वजनिक हित के लिए उनका उपयोग किया जा सकता है। तब सरकार इस प्रकार सोचने पर मजबूर हो जायेगी कि वे सब संतो हो रहा है। हम एक साथ आगे बढ़ें। वेचल बड़ी धारावाज से काम नहीं चलनेवाला है, यद्यपि काम की आवश्यकता होगी। उसी से हीसला बड़ेगा। पौडान-बहुत कुछ होकर रह जाये, यह ठीक नहीं। इसलिए मैं बहुत ही कि हमारे हीसले बुनसिने हमारे चाहिये।

बे० पी० ने इसके बाद कहा कि सरकार जिस तरह भी० धार० पी० के लोगों से सहायता ले सकती है। वह हमारे प्रागे धाडे पाना चाहती है। सरकार बहती है कि बाड वा समय है और इस समय हमें अपने धारोलन को बन्द कर देना चाहिए राहन वा कार्य करना चाहिए। लेकिन मैं तो पहले ही राहन की अपील कर चुका हूँ। हर जगह हमारे कार्यकर्ता लोग राहन के कार्य में लगे भी हैं। जे० पी० ने कहा कि युक्त से धारोलन बन्द करने को कहा जाता है लेकिन आंदोलन मेरा तो नहीं जो युक्त से धारोलन बन्द करने को कहा जाता है। लेकिन धारोलन जनता का है जनता से धारोलन समाप्त करने की धारणी की जा सकती है। और जब वे आंदोलन समाप्त करने में समझना चाहिए कि छष्टाचार समाप्त हो गया है। मैं एक बात बह देना चाहता हूँ कि मैं निजना फूट सा कामल हूँ उतना ही पत्कर सा कठोर भी। शायद वे बात अपने लिए मुझे नहीं कहनी चाहिए। इन्ने गांधीजी भी मानते थे कि कठोर रहे और कोमल भी। मान ४६ में जब सब छूट गये थे तब मैं और मोहियाजी जेन मे थे। गांधीजी हम लोगों की बात लेकर संकेटरी श्री मेकनसे से मिलने गये थे। मा शायद मैं भी संकेटरी था तब हमसे बाई बात नहीं है। विरोध हमारा व्यक्ति या व्यक्तिगत से नहीं है, व्यवस्था से है।

दो दिन की यह बैठक बहुत महत्वपूर्ण रही। दोनो दिन सभी प्रकार से चर्चा हुई। ग्यारहवें चर्चाएं राज्य की हुईं। २२ मसि

जांच से भी क्या होगा ?

४ अगस्त को राजधानी में सत्ताह्व दल के समर्थन में युवकों की गश्ता का प्रदर्शन करने के विचार से जा रंली हुई थी, उसमें शामिल होनेवाले युवकों ने धाते जाते स्टेशन पर जो उरपात किये उनका चरम-बिन्दु मुजरात के बलमाड स्टेशन पर हुआ। युवकों को तिनर-बिनर करने के लिए पुलिस को गोली चतानी पड़ी। लोकताभा में इस पर जाच की मांग की गयी। वह स्वीकार भी हुई किन्तु उसमें यह स्वीकार हुआ कि जाच सरकारी स्तर पर होगी और यह इसलिए कि न्यायिक जाच में बड़ी देर लग जाती है।

गृहमन्त्री ने गो तो कह ही दिया है कि उपद्रव करनेवाले युवक कार्रस के नहीं थे। यद्यपि इनके बाद जाच के नतीजे का कोई बडा अर्थ नहीं है। क्या जाने यहा तक कह दिया जाय कि उपद्रवकारी युवक नहीं थे कार्रसी नहीं थे और कम से कम वे युवक तो नहीं ही थे जो दिल्ली की रंली में शामिल होकर लोटे थे।

इन युवकों ने जिन घाडिया में धाने-जाने मात्रा की, जरा उनके धन्य यात्रियों से भी पूछा जाये कि गाडी में वे भारतरतन क्या-क्या करते रहे। दिल्ली घाटे हुए धारारा स्टेशन के पेडेवालो से पूछा जाये—घारणो देखनेवालो ने बताया 'धारारा-स्टेशन पेडा-विहीन हो गया था।

युवक उपद्रव करते हैं और भारपोट भी

हल हुए, कई हल नहीं हुए, सभी सचालो पर विचार जरूर हुआ।

सारे सचालो का हल नहीं होया, जैसा कि धारसर होन है। धारचार्य मानपूति वपूरी ठाकुर, राममोहित धी जयप्रसाजजी और धनेक व्यक्तियों ने समस्या के हल और उनके बारे में कुछ दर्शन दिये। मगर सबसे धारसी बात जो हुई वह ठीक समझने के विषय को लेकर हुई। सबसे धारण कि मजबूत समझन की रुसल जरूरत है, हमें मिल बैठकर सम-स्याओं को मुलमाना होगा। पूरी बैठक से किये गये काम का और सरकारी दमन का जैसा धारवाज हुआ, वह तो धरभूतपूर्ण था।

होती है, गोली तो खर हमारे खननक देश में वहीं न वहीं रोज चन ही जाती है। बारख यहा तक मुना गया है कि धारमूर्गम से गोली सस्ती पडती है। इसलिए यह उतना विचार-रणीय नहीं है कि इन युवकों को भय नहीं था, सत्ता के समर्थन का विश्वास था। सत्ता के समर्थन के विश्वास का बल, भयवान में विश्वास के बल से ज्यादा तो होता ही है, इसलिए इस विश्वास को बमबोर बनाने के लिए सत्ता का जो असाभाविक तत्वों को समर्थन प्राप्त हाता है, उसके समर्थन में धारवाज उठाभी जानी चाहिए। जांच तो होती है और समाप्त हो जाती है, मगर विरोध को धारवाले मुखबती है और कई बार धारसमान धर उठता है।

मोटरो के दाम-दो उदाहरण

हमारे यहा धरभी-धरभी हर तरह की मोटर गाडी के दाम बिना कोई पूर्व-सूचना दिये एकदम बडा दिये गये है। दाम इन घाडियो की कानियो में धरनी मजो के नही बढाये है—यह काम सरकार से सगाह मग-विरा करके हुआ है।

सवाल किया जाता है, मोटर धररोदने वाला धरणी जेड से देया यह धरवी धरदनी से चूसकर ही चुकायेगा? यह हाम मत में पूछ कर देखे, तो हाफ हो जाता है कि धान चाहे गेहूँ के बडे, चाहे मोटर-गाडी के, किरावा चाहे रेल का बडे चाहे हवाई जहाज वा, कमी लाद की हो चाहे विमानो की, धारविर-कार इन सब बातों का बोझ उनी पर धारकर पडता है जो धरसे से बोझ उताने की ताकत खो चुका है। फिर भी वह भनवान का करिषमा है कि बोझ उठा नवनेवाला यह मुर्दा जिनना बोझ पीड धरर रह पर धर वर डीकर दिलावा देता है। उने ऐसी सारो पर नाराज होता जो नहीं घाता, बह दूहें धरने 'मान' की बात समझना है।

हमारी मन्कार ने मोटर-गाडियो के दाम बढाने में हाथ बढाया और धररोवा जैते धरवी देश के नये राष्ट्रपति ने मोटरो के दाम बढाने पर 'जनस मोटर्स' धाररो-देवान' को नाम सभायने ही धाडे हाथो दिया है और दमले मुजरातीत बढने में सतरे की बात की है। हमारी मन्कार ऐसी बीजो की मुशकौति में नहीं च बनी।

Where does our interest lie?

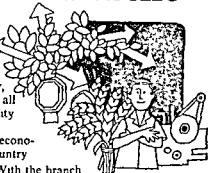
In the economic development of the country

With over 670 branches spanning the entire country, UCOBANK today is doing all it can to translate into reality the objective behind bank nationalisation - all-round economic development of the country

With the branch expansion programme going full steam ahead, UCOBANK today is going all out to develop priority and preferred sectors like agriculture, small-scale industries, self-employed, etc. Simultaneously, its comprehensive loan schemes are being made available to every socio-economic group

And again in the field of international banking UCOBANK is playing an increasingly bigger role. All this is a reflection of the new social responsibility which UCOBANK feels proud to shoulder

United Commercial Bank
Helping people to help themselves - profitably



सर्वोदय

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ६ सितम्बर '७४



श्रीवि विनोबा

१६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

दुर्लभ समन्वय

पूज्य विनोबा इस ११ सितम्बर को जीवन के ७६ वर्ष पूरे करके ६०वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। इस अंक में इसी को ध्यान में रखकर हम उनके विषय में दो लेख प्रौर इस स्तम्भ में जयप्रकाशजी के शब्द उद्धृत कर रहे हैं। यह उद्धरण हमने जे. पी. की पुस्तक 'मेरी विचार यात्रा' से लिया है। इन शब्दों से शब्दों में जे. पी. ने विनोबा के प्रति अपने हृदय के सारे भाव समो दिये हैं -

"विनोबा राजनीति नहीं है, न वे समाज-सुधारक हैं, न क्रांतिकारी। वे शुरुके आधारित तक भगवान के बन्दे हैं। मनुष्य की सेवा उनके लिए भगवान से साक्षात्कार के प्रस्ताव प्रौर कुछ नहीं हैं। वे प्रतिफल अपने को शून्य बना लेते, अपने भाषकों विरक्त कर देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, ताकि भगवान उन्हें सवालब कर दे प्रौर उन्हें अपना साधन बना ले।

ईश्वरपरायण, गहरी प्रगल्भ टि सम्पन्न साधुपुरुष, उद्भट विद्वान तथा विचारक, तीक्ष्ण-बुद्धि व प्रसाधारण स्मरणशक्ति-सम्पन्न भाषावेत्ता, उच्चकोटि के लेखक, जन्मजात शिक्षक प्रौर धार्मिक शिक्षा-विचारक, मनुष्य के नेता प्रौर निर्माता, समग्र राष्ट्रतर १२ दसकों को क्रियाशील बनानेवाले तथा बाल-श्रद्धांजरी विनोबा का व्यक्तित्व सचमुच अमूर्त है। अध्यात्म, विज्ञान, तत्वदर्शन, समाज-विज्ञान तथा समाज रचना के क्षेत्रों में उनकी देन यथावत: मौलिक तथा स्फुटितयाक है, जोकि ज्यो-ज्यो वर्तमान दक्षिणानुशी विचारव्यवस्था के स्थान पर मयी जिज्ञासा प्रौर तर्क को स्थान मिलता जायेगा, स्थो-स्थो अधिनायिक प्रगति होगी। परम्परागत भारतीय विचार के अनुसार कहा जा सकता है कि विनोबा में एव ही साय ज्ञानयोगी, भक्ति-योगी प्रौर कर्मयोगी का दुर्लभ समन्वय है।"

कांग्रेस का विकल्प

कहा जाता है कि श्री लोहिया कांग्रेस का विकल्प दूबने की दसदस में पस गये थे। वे यदि इस प्रयत्न की ही अथवा ध्रुवता न मानते प्रौर स्वयं दृष्टि रख कर कांग्रेस का हर बात पर विरोध न करके केवल विरोध करते सायक लुहो पर विरोध करते प्रौर सह योग करने सायक मुर्दा पर हाथ बटाते तो भारतीय राजनीति का छक्का राज जिस तरह कीचड़ में फसा है, बँसा न होता। श्री लोहियाजी के जाने के बाद और कांग्रेस के दो टुकड़े होने के बाद फिर इस बात के प्रयत्न हुए कि सब दल मिलजुलकर कांग्रेस यानी कांग्रेस का विकल्प बन जायें। मगर प्रायः लोगो को यह बात भी शायद 'विरोध के लिए विरोध' जैसी लगी। चुनाव में क्या हुआ क्या नहीं हुआ, इसे छोड़ दें—परिणाम जो सामने थाया उसने मिसी-जुली विरोधी दलों की शक्ति को नगण्य करके दिखा दिया। पिछले कुछ बरसों ने दक्षिण में द्विद्विमुक्त-नयमान ने तमिलनाडु में और केरल में एक-दूसरे तक भारतीय कम्पुनिरट दल ने कांग्रेस का विकल्प दिया। अभी-अभी ऐसा सगने लगा था कि उत्तर प्रदेश में भी भारतीय जाति दल जो एक बार कांग्रेस के विकल्प में उभर कर ऊपर आ गया था, एक बार फिर उसकी शक्ति बढती दिख रही थी। मगर विरोधी दलों के साथ गठबन्धन करते ही वह टूटने के लक्षण जाहिर कर रहा है।

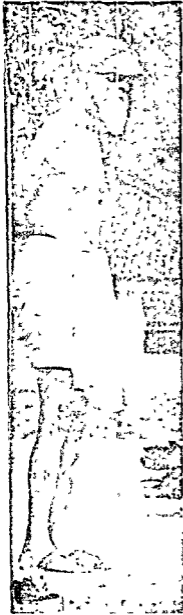
इसमें कोई सदेह नहीं है कि दलों का इस प्रकार निर्बल होना सत्ताहृद दल को अधिनायिक निरंजुष बनाता चला जा रहा है। जयप्रकाशजी ने जो धावाज उठाया है उसे भी कई लोग बर्षोंस बा विकल्प प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं। माना जा सकता है कि प्रारम्भ में परिणाम इसका ऐसा ही कुछ निकले, मगर वे पहले नहीं तो दूसरे

पुनाव तक निर्दलीयो को एक करके दलहीन सत्ता का गठन करेगे। जन-सदस्य हामिदो द्वारा सड़े बिये गये बुद्ध उम्मीदवार पहले पुनाव में वर्तमान दलों के भी हूँ हवते है, यह जयप्रकाशजी ने कहा है। नि-नु दूसरे पुनाव के प्राणे तब हम प्राय स्वरायण से लिए बापी काम कर चुकेंगे। तब जो सदस्य प्राय सभा सामने रहेगी, वे अगर बिहो राजनी-तिक दल से सम्बद्ध हुए तो भी उनही पहले विम्मेदारी भवनी श्राम-सभाए और श्राम-मठल होंगे, केन्द्र से सचालन करने वाला कोई दल नहीं। लोकसेवको के सामने यह लक्ष्य साफ रहना चाहिए प्रौर गरीबों तथा कर्मियों के सिवाय अन्य सभी स्तरों पर उन्हें चाहिए कि वे लोगों के सामने दलहीन शासन को स्थापना भी स्पष्ट बंद प्रौर बतायें कि 'नागनाथ की जगह सापनाय' जनता के सिर पर डाले यह उनका उर्द गये गरी है। सत्ताहृद दल की प्रौर से जो तरह-तरह के काम जयप्रकाशजी के प्रायोस्मिन्त बा विफल करने के लिए होंगे उनमें फासिस्ट प्रतिनिधायक और विदेशी सहायता भी बात के सिवाय यह भी बहा जा रहा है कि अभी-अभी जयप्रकाशजी ने कहा था कि वे प्रायंस बा कोई ऐसा विवल्प उपस्थित करने भी जा रहे है जो राजनीति से संबंधित दल हों प्रौर सब उन्होंने यह कह दिया है कि जन सघर्ष सभितिया दलों से संबंधित प्रष्टे उम्मीदवार जो सजे कर सकतो है। पहले चनाय में यह कही-कही प्रावश्यक हों सकता है। बड़े विचारों को चुनवी बजाते ही सागु नहीं किया जा सकता। मगर जनसघर्ष सभिति की कोशिश प्रस्तोतगया दलविहीन सत्तार बगाने की ही होगी।

● राजस्थान सभप्रवेश सघ की २२ अगस्त की सभा में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव श्वीकार करके श्री जयप्रकाश नारायण ने जन्म दिवस देवाहरे पर उनका राजस्थान में सार्व-जनिक धर्मनन्दन एव १ लाख रुपये की धैली भेंट करने का निश्चय किया गया है। इस हेतु श्री जयप्रकाश धर्मनन्दन सभिति का गठन राजस्थान के चर्चोबुद्ध सचोदय नेता श्री गोबुलभाई भट्ट के सचोयकत्व में किया गया है। प्रदेश की जनता से प्राणी भी को गयी है कि लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण बा धर्मनन्दन राजस्थान की शान के अनुकूप ही किया जाना चाहिए।

ऋषि विनोबा

—श्रीमन्मन्त्राराधण



‘जेय प्रियाची परिसीमा
तेय भेटें माउली आत्मा ।’

यह हम सभी के लिए आनन्द का दिव्य है कि अगले ११ दिनांक को ऋषि विनोबा की अष्टमशती वर्षगांठ है। इसलिए हमें इन दिनों को बड़े उन्नासपूर्वक लेकिन रचनात्मक ढंग में गौरव देना मनाया चाहिए। अर्घ्यदा होगा यदि उन दिनों सभी रचनात्मक कर्मों में उनका साहित्य का सामग्री पर प्रचार किया जाय ताकि उनका दिव्य संदेश व्यापक ढंग से जनता में पहुंच सके।

पूज्य विनोबाजी ने कर्म, ज्ञान और भक्ति की त्रिवेणी का अद्भुत मगम है। कर्म की दृष्टि से वे भूदान परवाना में लगभग पचास हजार बीघे देश के कोने-कोने में भर्त्से हैं। 'भूदान' आन्दोलन में उन्हें कबीर ज्ञान-योग प्राप्त एक जमीन प्राप्त हुई जिसमें १५ लाख एकड़ जमीन का बटवारा भी हो चुका है। अगले वर्ष १८ अक्टूबर को भूदान आन्दोलन का २५ वां वर्ष प्रारम्भ होगा। बहुत अर्घ्यदा हो यदि तब भूदान में प्राप्त जमीन में से कम से कम पांच लाख एकड़ जमीन और बट जाय तथा पांच लाख एकड़ और नयी जमीन प्राप्त हो और वह भी बंट जाय। ऐसा होने पर हम सन् १९७५ में भूदान यज्ञ की रजत जयन्ती मना सकेंगे और यह निश्चय रूप से कह सकेंगे कि २५ लाख एकड़ जमीन इस आन्दोलन द्वारा प्रतिष्कृत ढंग से बेजमीन लोगों में बाँटी जा चुकी है। रजत जयन्ती मनाते का यही रचनात्मक ढंग अर्घ्यदा रहेगा। यदि देश के सभी सर्वोदय कार्यकर्ता इस काम में कर्म लो सब दृष्टि से हितकर होगा। ऋषि विनोबा ने इन दिनों कई बार कहा है कि उनका भूदान आन्दोलन जिसका सफल रहा है उसका आभास का नहीं। इसलिए नये ग्रामदान यदि प्राप्त न होने हा, तो कम से कम भूदान ही प्राप्त किया जाये।

बुद्ध महोनी से पूज्य विनोबाजी बार-बार कह रहे हैं कि इन दिनों उनका विशेष ध्यान दो विषयों की ओर लगा है। एक तो सामूहिक ब्रह्म विद्या की साधना और दूसरे, देव-

नागरी का सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक प्रतिरिक्त लिपि के रूप में प्रचार। हमारे देश में व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना को परम्परा तो हजारों वर्षों से चली आ रही है, किन्तु अब यह जरूरी है कि यह साधना और तब सामूहिक हो। पवनार के ब्रह्म-विद्या मन्दिर में इसी प्रकार की सामूहिक साधना पूज्य विनोबाजी के मार्गदर्शन में निरंतर चल रही है। देवनागरी के लिए भी कुछ महीने पहले गांधी स्मारक निधि द्वारा एक सगोष्ठी आयोग की गयी थी जिसमें राष्ट्र के विभिन्न भाषाओं के लगभग ५० साहित्यिक और विद्वत्जन शामिल हुए थे। यह अतीव वा विषय है कि इस कार्य में सभी सरकारी और गैर-सरकारी मन्त्रालयों का अर्घ्यदा सहयोग प्राप्त हो रहा है। हमें उम्मीद है कि इस ओर भी हमारे रचनात्मक कार्यकर्ता पूरी दिलचस्वी दिखायेंगे।

आजकल विनोबाजी मन्त्र-निषेध के बारे में भी बहुत बात देते हैं। उन्हें इस बात का बहुत दुःख है कि हमारी राज्य-संरक्षक दिन-प्रतिदिन सराव का पीना अधिक होला बनाती जा रही हैं। उन्होंने गत मार्च में पवनार में हुए एकी जागृति सम्मेलन में भी प्रधानमन्त्री श्रीमन्त्री इन्दिरा गांधी की उपस्थिति में अपना गहरा दुःख व्यक्त किया और कहा कि अब तक देश में शराबबन्दी नहीं होती तब तक सभी जागृति भी नहीं हो सकेगी। कुछ तब तक पहले जब राजस्थान के कमंड सेक्रेटरी गोड्डल भाई अष्ट उनसे मिले थे तब भी विनोबाजी ने उनसे कहा कि यदि राजस्थान सरकार अगले ग्राम चुनाव के पहले पूर्ण नशाबन्दी लागू करे तो फिर हमें शासन के विरुद्ध संस्थाग्रह करना ही पड़ेगा और उसमें मैं भी शामिल हो सकता हूँ। इस उद्गार से पूज्य बाबा के दिल की व्यथा साफ जाहिर हो जाती है।

विनोबाजी को देश की बढती हुई जन-संख्या के बारे में भी बहुत फिक है। वे कहते हैं कि अगले भारत भी आगामी इसी तरह

घटती गयी तो भूदान में भाग्यहीन और जमीन के बटवारे की सभी योजनाएँ बेकार साबित होगी। जिन जमीन के टुकड़ों को हम बाँटेंगे उनसे और भी छोटे-छोटे कुछ बर्ष बाद हो जायेंगे करोड़ों इस बीच परिवारों की संख्या भी बढ़ जायेगी। फलतः श्रृष्टि विनोद की हादिक इच्छा है कि कृत्रिम साधनों के स्थान पर देश में श्रद्धावर्ष का वातावरण पैदा किया जाय। उनका सुभाव है कि पच्चीस बर्ष के पहले विवाह न हो और चालीस बर्ष के बाद अधिक से अधिक लों वानप्रस्थ आश्रम की विधिबन्ध दीक्षा लें। इस प्रकार गृहस्थ आयुष्य की सीमा केवल १५ बर्ष की रखी जाय ताकि परिवारों की संख्या कम करने में मदद मिले। उनका यह भी सुभाव है कि यदि किसी परिवार में तीन भाई हैं तो उनमें एक भाई शादी न करे और अपना समय देश के विभिन्न रचनात्मक कार्यों में ही लगावे। दो भाई जो शादी करने उन्का यह बतव्य हो जाता है कि वे इस तीसरे भविष्यवादिता भाई के भरण-पोषण की योग्य व्यवस्था कर दें। इस तरह विनोदवादी की दिव्य इच्छा है कि हम सभी का ध्यान मततिनियम की ओर आकर्षित हो और भारत तथा अन्य विकसित राष्ट्रों की सामाजिक प्रगति के दृष्टि से नियंत्रण किया जाय। श्रद्धावर्ष का वातावरण बनाने के लिए गन्धी विचारों और पोस्टरो के प्रचार पर सख्ती से पाबन्दी लगायी जानी चाहिए।

२१ अगस्त को श्रृष्टि विनोद ने अपने जीवन का एक नया त्रय प्रारम्भ किया है और वह है 'श्रृष्टि-सूत्र' में प्रवेश। उस दिन उन्होंने मुझे अन्तर्गत कहा कि आज से मैंने कुछ नये निश्चय किये हैं :
 एक तो अब मैं दैनिक समाचार-पत्र नहीं पढ़ूँगा। केवल रेडियो की खबरें मुझे मिलकर बताया जायेंगी। हाँ, मैं मासिक और मासिक प्रेष पढ़ूँगा। मैक्सि बुद्ध की नागरी लिपि में। दूसरे, अब मैं शिष्यवृन्द हटाने का साहित्य नहीं पढ़ूँगा। विदेशी दुर्गमिक की किताबें और सांघाहिक सामाजिक पत्रिकाएँ पढ़ सकूँगा। इन्हीं दिनों मैंने भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा हास में हो रही श्रृष्टि जमनालाल बजाज सम्प्रदायी धरती प्रश्नों की पुस्तक उन्हें पढ़ने को दी थी। विनोदजी ने मुझसे कहा, 'प्रश्नों में निखी आपकी यह पुस्तक मैंने

धाखिरी-तोर पर पढ़ी है। अब प्रविष्टि में भारतीयों द्वारा लिखित प्रश्नों की कोई पुस्तक नहीं पढ़ूँगा।' जब मैंने उनसे पूछा कि आपने सूत्र प्रवेश के लिए निश्चय क्यों किये हैं तो उन्होंने पौरुष उत्तर दिया—
 'दैनिक समाचार-पत्रों को पढ़कर अपना समय क्यों बर्बाद करूँ ? उनमें दिन-प्रतिदिन यही खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि कहीं वहाँ घायली वही मृत्ता पड़ा, वही कोई देगा हो गया और कहीं कोई आकस्मिक घटना में कुछ लोग मर गये। इस तरह के समाचारों को पढ़ने से क्या लाभ ? मैं तो उस दिन की राह देखता हूँ जिस दिन प्रश्नकारों में पढ़ने को मिलेगा कि अब दुनिया की एक सरकार बन गयी और वर्तमान राष्ट्र उसके प्रान्तों के रूप में काम करेंगे। तभी तो सचची और ध्यायी विद्वान्-शास्त्रि हूँ सवेगी न ? जब प्रश्नकारों में इस तरह की खबरें प्रकाशित होने लगेंगी तो शायद मैं फिर प्रश्नकारों को पढ़ने की सोचूँ। दूसरे, मेरी हादिक इच्छा है कि भारतीय व एशिया की विभिन्न भाषाओं के लिए देवनागरी वा एक अतिरिक्त लिपि के रूप में तेजी से प्रचार हो। इसलिये मैं भारतीय विद्वानों का वही साहित्य पढ़ना चाहूँगा जो नागरी लिपि में प्रकाशित हो। भारतीय लेखक यदि प्रश्नों की भाषा किन्तु नागरी लिपि में अपनी पुस्तकें छापें तो मैं उन्हें भी पढ़ने को तैयार हूँ।'

श्रृष्टि विनोद इन दिनों यह भी कहने लगे हैं कि 'मैंने पूज्य बापू की उन्नत भी पा ली है और अब प्रश्नों के बर्ष में प्रवेश कर रहा हूँ। भगवान् बुद्ध भी इसी उन्नत में चले गये थे। इसलिये यदि मैं भी ५०० बर्ष में जन्म जाऊँ तो भगवान् बुद्ध का सत्य सहज प्राप्त होगा। घट मेरा जिसको जो उपयोग लेता हूँ मोक्ष ले ले। भविष्य का कोई ठिकाना नहीं है।'

एक बार श्रृष्टि जमनालालजी ने पत्र-तार से ही मुझे कहा था—'मैं विनोद को भारत के बड़े से बड़े श्रृष्टियों के समान मानना हूँ। आज भले ही हम उन्हें पूरी तरह से न समझें, किन्तु प्रविष्टि में हमारे देश के बड़े उच्च कोटि के श्रृष्टि के रूप में सम्मानित होंगे। मेरा भी पक्का विश्वास है कि पूज्य जमनालालजी के ऊपर दिव्य शक्ति उद्वारण बिल-कुल सच है। श्रृष्टि विनोद का उपयोग केवल हमारे राष्ट्र के लिए ही नहीं, सारे ससार के लिए होना चाहिए।'

पवित्र कार्य के लिए साधन भी पवित्र

दिव्य जीवन सच, गिवानन्द आश्रम के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानन्दजी ने पवित्रकी उ २० और उत्तराखण्ड के खादी ग्रामोद्योग कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें अपने में यह देखकर हीनता की भावना का प्रवेश नहीं होने देना चाहिए कि देश में चारों ओर बड़े-बड़े उद्योगों का बोल बाला है। भारतवर्ष में एक मौलिक अध्यापन है। जैसा पवित्रमी देश करते हैं वंसा हम करते हैं पर वे अपनी प्रौद्योगिकतासे श्रद्धा तंग आ चुके हैं। इससे बड़ा के वायु-मण्डल में, नदियों में इतना अधिक संप्रदूषण हो गया है कि वहाँ के पशु-विचारक बटने लगे हैं कि मानव जाति विश्वव्यापक शांतिपात की ओर बढ़ रही है। वे इस की जड़ से छटकारा पाने का रास्ता ढूँढ रहे हैं। सारी ग्रामोद्योगों के द्वारा प्राप्त मानव जाति को इस दलदल से बाहर निकालने का रास्ता दिखा रहे हैं।

उन्होंने बड़ा 'गांधी विचार की बुनियाद आध्यात्मिक है और उसका अतिम लक्ष्य भी आध्यात्मिक है। कार्यकर्ताओं के लिए आत्मसाक्षात्कार की साधना में यह आध्यात्मिक और सामाजिक सेवा एक श्रद्धा है।'

सर्वोदयकार्य की सहायता के लिए विनोद द्वारा प्रारम्भ किए गए उपवास-दान के लिए अग्रणी करते हुए उन्होंने कहा, पवित्र कार्य के लिए साधन भी पवित्र होने चाहिए। आज हम कहते हैं कि सर्वत्र श्रद्धाचार आया हो गया है, तो जहाँ से भी हम प्रसन्न रहेंगे वहाँ श्रद्धाचार से मुक्त नहीं रह सकेंगे। घट, उपवास करके सर्वोदय के लिए पैसा बचायें। यह प्रत्यत निष्कलक और पवित्र होगा।

प्रारम्भ में उ २० में सारी ग्रामोद्योग कार्यकर्ताओं के क्षेत्रीय निर्देशक श्री मुकुल ने बताया कि उ २० खादी और ग्रामोद्योग के कार्य में सारे देश में प्रवृत्ति है और यहाँ पर ३० बराह रूपये का वार्षिक उत्पादन होना है।

मेरा सारा काम मित्राधार से हो चला

—धीरेन्द्र मजूमदार

मेरा सारा काम मित्राधार से चलेगा। धन्य कोई सस्था नहीं बनेगी। भारतीय सभ्यता की यह परम्परा रही है कि कोई धार्मिक, श्रद्धि, मुनि, सम्प्रदाय नहीं बैठकर अपनी साधना के साध-साध धारण विचार धोर पद्धति से पीठ, अष्टाङ्ग, ध्यायक य. धोर किसी नाम से व्यापक मोक्ष-शिक्षण का काम करने से। उस दिनों का तोर-शिक्षण धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक भूमिका से होना था। धन्य उसमें राजनीतिक भूमिका भी जुड़ गयी है। क्योंकि मनुष्य की बुद्धि के विकास के साथ सामाजिक लोक-चेतना में भी बुद्धि हुई है धोर धन्य राजनीति किसी राजा के जन्म नहीं है। यानी वह आज राजनीति नहीं रह गई है। लोक-तंत्र के विचार की बुनियाद पर लोकनीति बन गयी है। वह मानव-जीवन का एक मुख्य अंग भी बन गयी है। मेरा लोक-शिक्षण पहले के विषयो पर तो रहेगा ही लेकिन मुख्य रूप से लोकतंत्र के विचार की बुनियाद पर लोकनीति कायम का होगा धोर यह मेरा उद्दी तरहू मित्रो नाम होगा जिस तरहू धाराधारी का होता है।

ये धाराधारी अपनी व्यक्तिगत साधना धोर सेवा के आधार पर लोगो की धन्य के पात्र होते से धोर उनके भक्तजन कोई एक चीज कोई दूसरी चीज धन्य मन्त्र से धरित करते हैं। ये पीठ, ध्यायक, ध्याय धारि इसी तरहू बनते रहे हैं। पुराने जमाने में इसी तरहू से असंख्य साधक स्थान-स्नान पर बैठकर देश-व्यापी लोक-शिक्षण करते से और साल में एक बार कुम्भ के अवसर पर मिलकर विचार मयन करते से।

इसीलिए मित्राधार का प्रकार मैंने इस तरहू बनाया है। भारतीय सभ्यता के अनुसार इस देश में किसी केन्द्रित सस्था या केन्द्रित निधि के आधार पर, संचालित-पद्धति से लोक-शिक्षण का काम नहीं चलता था। धर्मस्थ मुकुन्द, श्रद्धिपुत्र तथा सत्यसिधो के धरणा से जन्म-जन्म से शहराई से लोक-शिक्षण का काम करते रहे हैं, वे सब व्यक्तिगत ढंग

से ही चलेते रहे हैं। वे सब भी बाकी करते रहे हैं, लेकिन उनका परिणाम काम मुकुन्द-शिक्षण विराम की चीजों से ही चलता रहा है। मुकुन्दो की जो काम धागे लोक-शिक्षण का करना है उसे व्यक्तिगत तोर पर ही करना है धोर देशधारा के आधार पर करना है।

इतना समझ लेना चाहिए कि रक्षणा धोर चन्दे में पकड़ है। कोई भी किसी ढंग में चन्दा दे सकता है धोर चन्दा समग्र करने बानो से देने बानो का कोई चैनन संबंध नहीं रहता है। उनमें विचार की कोई विचारदोरी नहीं बनती है। रक्षणा उन्ही से ली जा सकती है जिनमें लेने का अधिकार लेने बानों का हो। यानी जिनके दिन से लेने वाले के प्रति धारद धोर धन्य की भावना हो ताकि लेने वाले धोर देने वाले में हदया के लिए चेतन सम्बन्ध बना रहे। उस संबंध को केन्द्र मान कर इस बड़ा परिवार यानी विचारदोरी में धोर इस प्रकार देना में सेकड़ो हजारो धाम दें, तभी स्वतंत्र लोक-सहित का उदय हो सकेगा ऐसी मेरी मान्यता है। धनएव मैंने यह मिश्रण रखा है कि हम मुकुन्द-शिक्षण नहीं, मित्र-शिक्षण लेंगे। प्राचीन काल की परम्परागत साधना मुकुन्द-शिक्षण की थी। धार की साधना सब भावना की है इसलिए धन्य मुकुन्द-शिक्षण में जगह पर मित्र शिक्षण की परिपाटी चलनी चाहिए। देश में मैं उन मित्रो से मिलेना करना चाहता हूँ, जिसके दिल में मेरे लिए धारद है कि वे मुझे अपनी सामर्थ्य से अनुभार शिक्षण दें। लेकिन रक्षणा से निर्धारित नियम के अनुभार ही दें। इसके लिए मैंने जींचे तिनो तीन नियम बनाये हैं।

(१) मुख्य प्रकार यह होगा कि देश भर से ऐसे मित्र, जिनमें मेरे काम के प्रति शक्ति, प्रेम धोर मेरे लिए धारद की भावना है, वे मुझे ली कथा धार्मिक के हितार्थ से मित्र शिक्षण दें। इस शिक्षण को देने वाले के साथ मेरा रहेह सम्बन्ध रहेगा। एक स्थान पर जहा पात्र ऐसे शिक्षण देने वाले होते वहा धोरमान है, जिस समय मेरी लोक मया धारा स्थिति रहती है एक दिन मित्र-मिलन के

दिन आजाएँ। यहाँ मित्रो से मिलकर धन्य धार्मिक की बचाई कर पाऊँ। मेरी ध्यायका हागी कि वे कभी-कभी रोज में धारद मेरा काम करें धोर धन्य विचार से मेरे विचार को सांगला दें। जहाँ पात्र से थ्यायक मित्र होंगे वहाँ प्रति पात्र मित्र पर एक दिन का समय दे सारूंगा। उस समय का सफर सचंचे वहाँ से मित्र धारद म मिलकर बन बनेंगे। लेकिन पात्र दिन से अधिक एक स्थान पर समय नहीं दे सकूंगा।

(२) कुछ ऐसे मित्र होंगे जिनमें मेरे लिए थन्य होगी, जिनमें वे एक ली छत्रण धार्मिक शिक्षण नहीं दे सकते हैं। ऐसे मित्र अपने साथ धोर तीन-चार मित्रो को मिला कर एक मित्र-मंडली बनाए धोर मंडली की आर से मुझे ली सथा शिक्षण दे दें।

(३) मैंने जीवन भर धन्य की उपासना की है, इसलिए मैं धन्य की शिक्षण पसंद करता हूँ। उसका प्रकार होगा कि वे मुझे महीने में एक दिन यानी साल में १२ दिन में धन्य की शिक्षण दें। लेकिन यह शिक्षण १२ दिन एक साथ या १-१ दिन की दो शिक्षणों में ही दी जा सकेगी, उससे कम दिन में नहीं। धोर धन्य की यह शिक्षण मेरे धाम पर धारद ही दे सके हैं, ताकि धन्य के धरणा के साथ-साथ प्रतिदिन विचारों का धन्यमय तथा उसकी धरणा धारद से धोर मेरे साथ ही सके धोर दानाधो में परस्पर वैचारिक विचारदोरी की भावना पैदा हो सके। इस ६ या १२ दिन की धरणा में वे धन्य लखें से धन्य भोजन की व्यवस्था करेंगे। वे धन्य भोजन के लिए धरणा साथ साथों, धारदों के रूप में धा धन्यक के रूप में, क्योंकि शिक्षण शुद्ध होनी चाहिए। शिक्षण देने वाले, लेने वाले से शिक्षण के बदले में कुछ प्राति की परिपाटी नहीं रहेंगे। उपरोक्त तीनों प्रकारों से मे जिसे को प्रकार सुविधाजनक या समाधान-कारी जगे, उसे वे अपना सकते हैं।

मैं मानता हूँ कि इस देश में लोक तंत्र की भूमिका से लोक नीति की सभ्यता-निर्माण से लिए जब तक भारत में ऐसी पद्धति की स्थापना नहीं होगी, तब तक धारधारा जह संस्था जमात या पार्टी द्वारा लोकतंत्र की हत्या ही होती रहेगी।

दूसरों के भाष्य अपने-अपने हैं

—दादा धर्माधिकारी

अपने कपन का जो धर्म पूज्य बाबा वत-रावें वही सही मानना चाहिए। दूसरो के भाष्य उनके अपने-अपने हैं। दूसरो के लिए कहे गये धर्मों का जब तक बाबा लक्ष्मण नहीं करते, तब तक उन धर्मों को भी मूल धर्म के लिए उपकारक ही समझना चाहिए। कई बार ये धर्म परस्पर विरोधी भी हो सकते हैं। उस स्थिति में उन अर्थों को उन ध्वनिधर्मों का अपना मत माना जाये। ऐसी मत-भिन्नता मूलभूत नीति के विषय में भी हो सकती है। भोपाल में जो प्रभेय रखा था, उससे धीरे-धीरे का मूलभूत मतभेद था। फिर भी उसे वाया-मत के प्रतिबल मने नहीं माना और किसी



दादा धर्माधिकारी

ने बुलन्द आवाज भी नहीं उठायी। चीन के प्राकमण के भ्रमसर पर चिन्मंता, वग प्रभृति का मन विनोदा धीरे सर्व-मेवा सध के मत से भिन्न ही नहीं, प्रतिबल था। फिर भी श्रद्धेय शकटावजी धोर जे० पी० से लेकर निमंला की सखे भूरि-भूरि प्रशंसा की। उस वकन निमंला वा बंध में यह प्रचार नहीं किया कि बाबा को सीमा पर अहिंसक मोर्चे से जाने की बात पसन्द नहीं है। मंत्री-यात्रा की योजना के लिए भी बाबा को सम्मति नहीं

थी। परन्तु सारे सर्वोदय मंडल धीरे कायं-कर्ता भी मंत्री-यात्रा की सहायता में जुट गये थे। मनदाना शिक्षण, निर्दलीय सम्मेलनों के लिए भी शुरु-शुरु में बाबा की नेचल अनुमति ही थी। तर्मलनाहु के सत्याग्रह के लिए भी धारम्भ में अनुमति भी नहीं थी। फिर भी हमारे किसी ने उसका विरोध नहीं किया। यह तो स्पष्ट ही है कि स्वयं बाबा किसी सत्याग्रह में भाग नहीं लिये। हिन्दी के मामले में उन्होंने अन स्फुटि से उदबास किया। उममें हम लोगों में से अनेक का मन नैद था। मेरा तो था ही। अंग्रेजी के बहिष्कार के विषय में मैं राजाजी का अनुयायी हूँ। बिहार के प्रजासत्ता के समय भी बाबा प्रजासत्ता की सहायता का काम अपना काम नहीं मानते थे। परन्तु सर्वोदय संस्थाएँ धीरे कायं-कर्ता उसे अपना काम मानते थे।

मेरा मनवल यह है कि अब तक हमने सर्वोदय धीरे सर्व मेवा संघ के नाम पर गेने कई विधायक धीरे प्रविचारात्त ध्यान्दोलन किये जिनके प्रति बाबा की अनुमति नहीं थी धीरे कुछ मामलों में तो परोक्ष या प्रत्यक्ष प्रतिकूलता भी थी।

सर्व सेवा संघ का जो प्रामदान का कायं-नम था उममें परिवर्तन करते भी हरियाणा, पंजाब धीरे उत्तरप्रदेश के कुछ रिस्मों में अपने डग के कायंक्रम चलाये गये और वे सर्व सेवा संघ के नाम में ही चले।

फिर इसी वकन इनकी तीव्रता क्यों ? इसका कारण हमें समझना चाहिए। गांधीजी के जमाने में १९२२ में पानिवामेटरों प्रोचाम का प्रश्न चित्तरजनमान में उठाया था। राजाजी ने उमका प्रसार विरोध किया। कायंम में परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी ऐसे दो दल बन गये। परन्तु गांधीजी ने जेल बाटने पर विधानमगमा प्रवेग की अनुमति दे दी। कायंम स्वरानुपश बना। कायंम के नाम पर मोर्चानगम प्रभृति विधान समाधान में गये। गांधीजी स्वयं नहीं गये। १९३० में गांधी ने कायंम छोड़ दी क्योंकि कायंम ने अपने उद्देश्य में 'दृष्यकृत धीरे नानवायणें'

शब्द डालने से इनकार किया। शांतिमय धीरे उचित उपाय ही रखा। प्रसल में यह मतभेद नैदातिक धीरे मूलगामी था। फिर भी गांधी ने कहा, "द पानिवामेटरों में जो लिटी है वम टूटे", धीरे अनुमति दे दी। जो अविमडल बने उन्हें मार्गदर्शन दिया धीरे उन पर नियन्त्रण रखा। खरे प्रकार ए इसका उचित उदाहरण है। गांधी का विश्वास तिलाकत में नहीं था। फिर भी उन्होंने अमहयोग का प्रस्थाव पहले विभाजन कमेटी में रखा। बाद में तो बाद में स्वीकार किया।

गांधी धीरे विनोदा की भूमिकाएँ धीरे विमुक्तिया भिन्न हैं। परन्तु सारीय १२ जुलाई की विनोदा की भूमिका में धीरे गांधी की भूमिका में बहुत साम्य है। १२ जुलाई के अधिवेशन में उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि संघ के अध्यक्ष, मंत्री धीरे प्रबंध सदस्य भी बिहार के ध्यान्दोलन में भाग से सकते हैं। 'धामका पाण्डवायंके' की जगह 'जयका:मपूरबायंके' कहा। इसमें यह ध्यान देने की बात है कि 'मामका' के स्थान पर 'जयका' कहा, ध्यान्तु जयका हमारे हैं। हमके धनाका यह भी कहा कि ध्याय चाहे तो दग ध्याय का एक प्रस्थाव बाद में निस्वर उते अहितम गममें। उममें सर्वममनि ही ही। इसका स्पष्ट अर्थ है कि बिहार का ध्यान्दोलन सर्व मेवा संघ धीरे सर्वोदय के नाम पर ही सकता है। इंगी-निए मने गांधीजी के समय में हटाने दिये। गांधी धीरे विनोदा के विमुक्तिभेद को पूरी तरह मानने पर धीरे मैं यह मानता हूँ।

अब १२ जुलाई की भूमिका में बाबा परिवर्तन करना चाहे तो उन्हें कीम रोक सकता है ? १० जुलाई की उत्तरी भूमिका में १२ जुलाई की भूमिका भिन्न तो थी ही। १० जुलाई को उन्होंने यह भी कहा कि मेरी भूमिका जो 'मेरी' में प्रकाशित हुई है, वही है। इमके बावजूद उन्होंने १२ जुलाई की ध्यान्दोदा दी। अब उनको ध्यान्दोदा में स्वयं बरें तो उनकी को मानना पड़ेगा। उनमें बाद भी हमारा मतभेद ही गबना है। उन स्थिति में जो मोग बिहार में गये है या बिहार का

समर्पण कर रहे हैं, उन्हें बाबा से पूछकर सब सेवा सभ के प्रति अपनी भूमिका का निर्णय करना होगा।

हम लोगों में से कुछ लोगों की यह प्रामाणिक धारणा है कि जे० पी० के आन्दोलन के फलस्वरूप यदि वर्तमान सामन्य दुर्वल या सिपिन हो जाना है तो साराजकता फेलैगी और हमारे हिन्द-विरोधी राष्ट्र उससे लाभ उठावेंगे, इसलिए इस समय धार्योलन करने में खतरा है। कुछ तो उसे मद्रिदास, सत्य, समय और लोकनीति के प्रतिकूल भी मानते हैं। मैं इन मतभेदों को स्वस्थ और जादनीय मानता हूँ। उन्हे ध्यान होने के लिए प्राधान्य देना चाहिए। हमारे मनो में भी उनका स्थान प्रावश्यक है। 'द्वार विभाग को एक दिन' के साम्य पून को हम सभी चरितार्थक कर सकेंगे। मेरी यह धारणा है कि विनोबा का यह मूल सचमुच प्रयोग्य ही है।

मैं पचपन वर्षों से लगातार गांधी-निष्ठ आन्दोलन में रहा हूँ। मैं अपने अनुभव और प्रबलोकन के आधार पर यह विना द्विचक के कह सकता हूँ कि प्रबल तर्क इस देश में ऐसा एक भी आन्दोलन नहीं हुआ जिसमें हिंसा और भयत्व की भावना न रही हो। सन् ४२ के आन्दोलन में तो गांधी के निवृत्तनी साधनों ने भी केवल मनुष्य पर प्रत्यक्ष प्रभावकार को ही हिंसा माना था। बाद में उन्हे परभावना भी हुआ। परन्तु इसका यह अर्थ कदाहि नहीं है कि हम हिंसा का प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्पण करें। हमें तो हिंसा का निषेध ही करना चाहिए। मैं तो यह भी बतुना कि सामन्य की दमन नीति के विरुध में ३० पी० ने विम प्रार प्रोद्धान्य साधुत्वाय उपासन का धारणा किया, उभी तरह वैर-सरकारी हिंसा के विरोध में प्राथमिकताय उपसम का प्राशन करना चाहिए। चाहे वह हिंसा कुछ दरमों द्वारा जानबूझ या अनजानबूझ ही क्यों न करानी जानी हो।

मैं उन लोगों में से हूँ जो नेवार से नेवार जनतम को धकती से धकती सामासाही की घोषणा बन्द मुना बंधनर मानते हैं। तथायी मैं जे० पी० के नविक को भोजन और साधुत्व स्वतन्त्रता के लिए उपाहार को स्वतन्त्र-मोय मानता हूँ। जो लग उन नेवुव की दम दरमों में साधुकार को द्या-पावक

विश्व-धर्म परिवार के

संत कृपालसिंह

—बाका कालेलकर

सुबह नित्य की प्रार्थना पूरी करने के बाद प्रसवार में देखा कि संत कृपालसिंहजी का कल ही देहान्त हो गया। इतने बड़े संत पुरुष को हमने छोया, स्वका बड़ा दुःख तो हुआ ही, साथ-साथ मन में हृदय जमाने के दम सन, सत्पुरुष के समय जीवन का चिन्तन भी शब्दा हुआ। उन्होंने संत-जीवन के बारे में काफी लिखा है, और संत-जीवन जीकर बताया भी। उन्होंने मृत्यु का भी गहरा चिन्तन करके इसके बारे में काफी लिखा है। प्रब ८६ वर्ष की पवित्र धातु पूरी करने से इतलोका को छोड साथे, सब उनकी मृत्यु का भी उन्ही के शब्दों में चिन्तन करना स्वाभाविक हो गया।

हमारे जमाने में यह आधुनिक संत अपने नम के जैसे परम-इष्टायु में। अपने गुरु सन बाबा साधुनिहजी के द्वारा ही भगवान का चिन्तन करने की उनकी साधना सचमुच उनके लिए पसदायी सिद्ध हुई थी।

उनके जीवन के प्रारम्भ के दिनों में एक बड़ा परिवर्तन हुआ एक के पीछे एक ऐसी तीन मृत्यु देसकर। तबसे उन्हीने जीवन का और मृत्यु का एक साथ चिन्तन किया। जीवन के साथ मृत्यु धारिहारा है, इतना तो निरपवाद सद्भव के कारण सब प्राणी जानते हैं। किन्तु मृत्यु के तथे स्वरुप को, पहचाने बिना जीवन साधना मूढ और मूर्ख हो नहीं सक्ती, दम का अनुभव तो सद्भावनिहजी के जैन चिन्तन विमल ही कर शकते हैं। मृत्यु का रहस्य ध्यान में, ध्यान पर सब लोगों को मानते हैं उनके निर मेरे मन में सद्भाव और गौरव है मैं 'एक हृदय' का यही धर्म समझा है। जे० गनभेदों का सम्मानपूर्वक प्रकट होने का प्रवर्तन न दे हूँ साधुत्व विमला साधित होगा।

(शुक्रवार सत्रोदय मठल के धारि मण्डल को २५ ध्यान, ७५ को विने पर मे)

मृत्यु का रहस्य समझना, यही एक सर्वोत्तम जीवन सेवा है। ऐसे विचारस से उन्हीने मृत्यु के रहस्य का प्रचार भी किया है।

पलत इषावनिहजी की मृत्यु का (मेरा और उनका बहुत पुराना सम्बन्ध था) समाचार मुझे ही मृत्यु विषयक उनके विचार फिर से पढ़ने का मन हुआ।

अभी-अभी पन्ध महीने के पहले हम यहीं दिल्ली में मिले थे। दुनिया के सब धर्मों में बौद्धिक सम्बन्ध स्थापित करने का हम लोगों का मिशन है, यह समझने के कारण वे मेरे साथ एक हृदय होकर विचार-विनिमय करने लगे। उन्हीने प्राचीन धातु ८५ वर्ष पुरो की। मैं स्वयं मन्वे के हीकर पहुँचा हूँ। इसलिए भी हम एक हृदय होकर सोच सकते थे। दुनिया के सब धर्मों का प्रमाण रहस्य एक ही है। सभूत जीवन की परिपूर्ण उन्नति यही रहस्य है। इसके लिए प्रथम हम सब धर्मों का यह रहस्य धरती जीवन में प्रपनाएँ। धर्मो-धर्मों के बीच (याने धरने-धरने धर्म के अभिमानियों के बीच) जो ईर्ष्या चक्षी है, उसको जगह, सब धर्मों में पारिवारिक कुटुम्बभाव पैदा करने सग जायें, यही सक्ती सेवा है। यह युग-धर्म पहलू में हूँ। कृपालसिंहजी का सेवाधर्म हमारा ही है।

सन्तों ने धनेक देशों, यूरोप, अमेरिका धारि की अनेक बार यात्रा करने सत्रधर्म कुटुम्ब भावना का प्रचार किया था और सब धर्मों में धार्योलन और मानवजाति के विकास में जो सामान्य है उनका भी पूरी धार्योलना से प्रचार किया था। उनका यह काम बर नही पडना चाहिए। विश्वधर्म परिवार को स्थापना द्वारा, विश्वधर्म की स्थापना करना ही सामवजाति का मंत्र का प्रथम युगधर्म है, धने पढवाने वाले सब एक साथ काम करने के लिए एक हृदय बन जायें, यही हम सबों की प्रार्थना है।

भागलपुर कारागार से तीन पत्र

विशेष केंद्रीय कारा
भागलपुर
४-८-७४

प्रार्थनीय...

सादर प्रणाम ।

मैं यहा कुशल से हूँ। लेकिन आज सुबह ५-३० मिनट पर लाठीचार्ज किया गया। वह लगभग दो घंटा चलता रहा और कारा अधीक्षक ने स्वयं कुछ लडकों को छाती पर चढ़कर बुरी तरह पीटा है जिसमें लगभग १०० सत्याग्रही जो निर्दोष थे बुरी तरह घायल हुए है जिसमें १५ की स्थिति विना-जनक हैं और कुछ लडकों को जेल में रखा गया है। साथ ही पैंतीस छात्रों को घबरी, नपडा और शपया जबरन छीन लिया गया है। यहाँ की स्थिति बहुत गम्भीर होनी जा रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप उचित कदम उठाएँ और न्यायिक जाच की माग करें। यह सूचना पटना सर्वोदय कार्यालय में एवं छात्रों को टेलीग्राम द्वारा भवश्यक दें।

आपका छात्र
छात्र सचयं समिति
तरुण माति सेना
भागलपुर
विशेष केंद्रीय कारा
भागलपुर
४-८-७४

प्रिय साधियों

मुझ् सेद के साथ लिखना पडता है कि अभी विशेष केंद्रीय कारा भागलपुर बहुत ही तनावपूर्ण स्थिति में है। सुबह साठे छह बजे के करीब यहा भयकर लाठी चार्ज हो गया है। हमारे पदरुह साथी लाठी की मार से घायल है। साथी शिवपूजनत्री, रामेश्वर विद्यार्थी से गोपालनाथ अवेदकर को स्थिति खतरों से खाली नहीं है। दिनेश तिवारी को घाम-रण घनजन पर ही उसे सेल दे दिया गया है। किसी को भी उससे नहीं मिलने दिया जा रहा है। जेल अधिकारी और सुप्रिन्टेन्डेंट

भयकर पाजी की तरह हम लोगों के साथ व्यवहार कर रहा है। घायल और घन्य साथियों को पसीटा-पसीटा कर नगा करके मारा गया और 'नक्सलखंड' में भेज दिया गया। घायल साथियों में तीन की हालत चिन्ताजनक है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप हम लोगों को आवश्यक सहायता पहुंचाएँ और इनकी सूचना अलबार प्रादि में भवश्यक दें दें।

आपके

—सभी सत्याग्रही

आदरणीय ..

आज दिनांक ४-८-७४ को ५ बजे सुबह एकाएक प्रत्येक वार्ड में तलाशी का बहाना बनाकर छात्रों के सामानों को केचना और अपशब्द कहना शुरू किया। सहायक कारापाल श्री बृजनाथन प्रसाद सिंह ने अपने सभी वार्डों को तथा उपोपित केंद्रियों के साथ यह कार्य किया।

सुबह पाच बजे बहुत से छात्र अपने-अपने वार्ड में लगे ही थे, अचानक हल्ला हुआ। विभिन्न वार्ड में कुछ छात्र बाहर निकले, लेकिन थोड़ी ही देर बाद पगनी घंटी बजा दी गयी। घंटी बजने ही लाठी पार्टी जवान तथा मूँसार बंदी लोहे के सीकचों, लाठियों, छोलनी से लंग होकर टूट पड़े।

इस प्रकार के बर्बर प्रहार की देनकर छात्र अपने-अपने वार्ड में घुस गये। तत्पश्चात् विभिन्न वार्डों में तलाबन्दी कर दी गयी।

थोड़ी देर बाद अधीक्षक महोदय अपने सहायक जेल अधिकारियों के साथ अपने और बारी-बारी से एक-एक वार्ड को चुपचाकर लाठी, जुता और छोलना, लोहे की सीकचों से कुछ छात्रों पर प्रहार होने लगा। फल-स्वरूप कुछ छात्र जग्गी होकर वार्ड में ही कारावासी हो गये और कुछ को वार्ड में निकालकर भारते-गीटने घसीटकर आफिस के तरफ ले गये। घसीटने के क्रम में कुछ छात्रों के सिर चट गये, कुछ के पाव टूट गये, कुछ की पीठ छलनी हो गयी थी। संक्षेप सत्या-

ग्रहियों ने अपनी आंखों से इस घटना को देखा। कुछ देर बाद काराधीक्षक की आज्ञा के अनुसार रामेश्वरनाथ तिवारी और सरदार रमेश कपूर को भेड़ी-भेड़ी गाती देते हुए घण्ट-घण्टे से मारते हुए, दस लाठीधारी जवान लगे गये।

स्वयं काराधीक्षक महोदय ने वार्ड नं. २ में रामप्रवेश विद्यार्थी की और गोपाल धन्वेदकर को लाठी से पीटबाकर पाराशायी कर दिया तथा स्वयं जूते की ठोकर से मारने लगे और सीने पर चढ़ गये तथा यह कहने लगे कि साले को बाहर निकालकर जानसे मार दो। आदेश पाकर उन के जवान और बंदी टांगपकड़ कर घसीटकर बाहर ले गये।

इन १५-२० सत्याग्रहियों के साथ ईसा धर्माभवीय व्यवहार हुआ है, कहा नहीं जा सकता। लेकिन विशेष सूत्र से पता चला है कि इन लोगों पर आफिस में और बर्बर अत्याचार हुआ है जिसमें कुछ की हड्डिया टूट गयी हैं।

घण्टीक प्रियदर्शी जो वार्ड नं. ६ में था, उसने सम्बन्ध में सहायक कारापाल बृजनाथ प्रसाद सिंह ने अपनी लाठी पार्टी जवान से कहा कि यह सामा छोटा है, लेकिन जहर की पुष्टि है, गांते की टांग फीर दो। यह वालक १० वर्ष का है, इसने पैर में विशेष चोट है। और एक पैर का बहुत भाग फट गया है।

"शिवपूजनमिहू" को जो रोहताम जिले के सत्याग्रही हैं, नगा करके इतना पीटा गया है कि मंशान में ही बेहोश हो गये थे। बेहोशी की अवस्था में उन्हें टांग-पकड़कर घसीटते हुए कारागार की तरफ ले गये। ये शरीर से निकल चुके-मृत-नहीं हैं। इनकी हालत अत्यन्त विनाशजनक है।

महेशमिहू को जो गीतामङ्गी का सत्याग्रही है पटककर लाठी से घायल कर दिया गया और आंग फोड़ने के प्रयास में घायल के नीचे वा भाग बाकी पटक गया है।

आगे बढ़ता आन्दोलन

—कुमार प्रशान्त

गंगा और राप्ती के दौरे के बाद एक सप्ताह समय अवप्रकाश जी ने पटना या राज्य से बाहर बिताया। घब जिले में धोरे का उनका कार्यक्रम पुन शुरू हुआ है। २५ जुलाई को वे धारा पहुंचे। स्वास्थ्य इस बात की अनुमति नहीं देता है प्रसन्न शक्ति उन्हें यह सब बर्दाश्त करने की ताकत अब दे रही है सरकार की यकान और सभाओं, गोष्ठियों में लगातार बोलना, सभासभा इस उम्र में अच्छे स्वास्थ्य के धनजुद बहुत नठिन काम है पर इन दिनों जो समा दिलाई दे रहा है वह धाराजी के बाद कभी देग में दिखाने वाला हो ऐसी जानकारी नहीं है। हजारों-हजार उत्साह में उफानते लोग रास्ते में जगह-जगह बैठे मिले, और इन लोगों की उम्र-परिधि में काने बाल से लेकर बर्फ से उजले बाल, सब शामिल थे।

धारा बिहार धारादोलन का वह धोहरहा है जहां सबसे पहले महिलाओं की गिरफ्तारी हुई थी और प्रो. भीमती हुमाँ देवी 'मोसा' के अध्यक्षता गिरफ्तार हुई थी। बिहार के संपूर्ण धारादोलन में प्रयापक वर्ग का सहकार आवश्यकता से बहुत कम है जिसकी धोरे द्वारा करते हुए आरा की धमसभा में जय-प्रकाश जी ने कहा, 'घान गिधाको को इन लड़कों से मोलना होगा। धाज में आगे आने निकल गये हैं। धाज इनके पीछे चलकर धाज को खीसना है।'

विभिन्न वादों से बहुत से सत्याग्रहियों को धरती, रुपये प्रादि छीन लिये गये हैं।

धोरे जिनने सत्याग्रही बारा में हैं उनका भी जीवन धनुरीशत है और इन जुमन को देखते हुए जंसा कि धापीशक बोल रहे थे बब बया होया, कहा नहीं जा सकता है।

यह घटना पूर्व निरोजिन है।

धाजको पता होगा कि जिन की धाजबत्या तथा बोल पदाधिकारियों के धाननवीध व्यवहार के कारण कुछ दिन पूर्व धापीने धनि-विचयदाकीन धानन किया था जो बाद में बबचन बनने के धानरण धनन में परिणत हो गया।

भदरी

वरी सत्याग्रही
विशेष केंडीय काय, धाननपुत्र

धारा की जनसमर्थ समिति और छात्र समर्थ समिति का समोजन बहुत व्यवस्थित नहीं है। और इनका संगठन बहुत नीचे तक हो भी नहीं सका है। धारादोलन घोष हो जन दोर में पहुंच जाते बाला है जब संगठन के लिए अलग से समय नहीं मिलेगा। मत यह दोर है जब संगठन सजा करते से पूरी शक्ति से जुट जाना चाहिए। पहली प्रगस्त से 'सर-कार ठण' का कार्यक्रम गावों में शुरू हो चुका है। आरक्षारी की धामदनी रोक्ने और एक नैतिक उत्पादन की दृष्टि से शहरो में धारा की दूकानों पर विरेटिंग कार्यक्रम का दुहरा महत्व है। विरेटिंग का काम मुख्य महिलाओं को करना है। सरकार ने सत्याग्रह के काम में गिरफ्तार सत्याग्रहियों को बड़ी-बड़ी टोलियों में रखा करना शुरू किया है ताकि धारादोलन का यह प्रगला दोर सुरु होने से पहले उनकी जेलें खाली हो जायें। १२ जुलाई तक विधान सभा के पाठको पर चले सत्याग्रह की बरह से जेल की धमता से दूने बंदी भर देने पर भी जेलें भर गयी थी। प्रतिम तोन दिन के सत्याग्रहियों को तो अधिकारियों ने शाम तक एक पार्क में रता और फिर माटी में बिठाकर जो जहाँ से धाये थे वहा पहुंचा दिया। धोरे धमसस्या के बीच पुन रहीं जेलों में इनके केंद्रियों का पहुंच जाना स्थिति को बदल बलाये दे रहा है। एक जेल में तो सत्याग्रहियों को इतनी घुट दी कि वे दिन भर शहर में घूमने, खाना खाने, मिलेमा देने धोर रात में धाकर धानी गिनती करता देखे थे।

राज्य के बोने-बोने से पुलिस की अादती की तवर आ रही है जिसमें सोमा सुरक्षा बज के जवानों का हाथ सबसे अादा है। गिरफ्तारी करना एक बाज है, मारना-पीटना दूधरी बाज है। उले मटर बजने हुए जय-प्रकाश जी बोने कि से पुलिस बानों को अच-दुष्टी करने से नहीं रोका है। वे बरें। मैंने पाच जून को पटना में भी कहा था कि मैं

उनको बगवत नहीं सिला रहा हू। पर धाज इतना धावरय कर रहा कि एक दिन आयेगा जब मैं पुलिस बानों से कृपा कि सब धाज-व्यान कर दीजिए। से मत मानिये इस धमसयो निरकमी सरकार की बात। शक्ति वा वह चरण धायेगा जब धाजको एक नियुंय करना पड़ेगा। पर धमो में बगवत की बाल नहीं कहवा हू जो आदेश मलत हो उसे मत मानिये।

धारादोलकारियों को डकैती, धुन से लेकर लुट, धागजनी सब तरह के मामलों में पुलिस फला रही है। मुबदमे चल रहे हैं। कानूनों के तहत काम करना धाजबयव है, कानूनों का कोई प्रोचिच्य है, दण्ड का दोष से कोई सभ्य होता है और कुल मिला कर इस संपूर्ण व्यवस्था का सत्य से कोई नाता है यह नियंय कर पाना किसी भी समभदार श्थितिके लिए नठिन है।

सर्वोदय प्रकाशनों पर विचार के लिए बंटक

सर्वं मेरा-सध, गांधी शक्ति प्रतिष्ठान धोर गांधी स्मारक निधि में संयुक्त उत्पाव-दान में पुण्य विनोदबाबू के सानिध्य में प्रामाणी २७-२८ गिठम्बर, ७५ को पवनार [धर्ष] में सर्वोदय सर्वोदय-साहित्य-प्रकाशन तथा सर्वोदय पत्र-पत्रिकाओं के सत्याग्रहों एवं प्रकाशकों की एक धाजबयव बैठक आयोजित की जा रही है जिसमें सर्वोदय-प्रकाशनों तथा पत्रिकाओं की वर्तमान स्थिति, सर्वोदय साहित्य तथा सर्वोदय पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए एक केंद्रीय समिष्टन बनाने, 'भूदान-यज'—'सर्वोदय' (हिन्दी-भाषाहित्य) को ध्याज धाधार देने, 'सर्वोदय' (संघर्ष) साप्ताहिक के प्रकाशन, 'गांधी-सार्ग' को रचन-रचन प्रकृतियों का मुद्रान बनाने, प्रादे-निक भाषाओं में प्रकाशित सर्वोदय-पत्रिकाओं की संपूर्ण सर्वोदय साहित्यिक से सम्बद्ध करने और विभिन्न रचनात्मक समर्थकों द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के वर्तमान रचन, प्रसार-मध्या, सभारनाओं एवं समर्थकों पर विशेष रूप में विचार किया जायेगा।

विहार आन्दोलन जिला-व-जिला

यह १ अगस्त से सरकार ठण करके का कार्यक्रम पूरे वेग से चल रहा है। राजाना प्रखण्ड कार्यालय को ठण करने में गिरफ्तारियां हो रही हैं। सिवरी गांव के भ्रष्टाचार घास-पास के गांवों से राजाना सत्याग्रही घाने हैं, उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाता है और समा के बाद उन्हें कार्यालय पर पिके-टिंग के लिए भेजा जाता है। इसी क्रम में दिनांक ५ अगस्त को पि। टिंग के समय साथ में ग्रामी जनता और छोटे बच्चों के ऊपर लाठी चार्ज किया गया। लाठी चार्ज से जनता में उत्तेजना प्राम्नी, उन्होंने सभी पुलिस अधिकारियों, बी० डी० प्रो०, एल० डी० प्रो० आदि को घेर लिया किन्तु युवक नेताओं ने जनता को शांत किया कि हमारे नेता का आदेश है कि हम मार खायेंगे लेकिन मारेंगे नहीं, और मारेंगे नहीं। यह हमारी पद्धति है। दूसरे दिन से और बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों के साथ जनता एकत्रित होने लगी। अधिकारियों ने अधिक पोर्स को इकट्ठा किया। लाठी चार्ज का जनता ने शांतिमय प्रतिकार, प्रशासन से सम्पूर्ण सहकार का किया। फलस्वरूप ७ अगस्त को प्रशासन के किसी अधिकारी व कर्मचारी को बाजार से किसी भी कीमत पर कोई भी सामान नहीं मिला, यहाँ तक कि चायवालों ने चाय नहीं दी, हजामत वालों ने हजामत नहीं बनाई। राशन का एक दाना भी नहीं मिला। सिमरी ग्राम जिसकी प्रथमी आबादी ही करीब १५ हजार है यहाँ से बड़ी तादाद में सत्याग्रही घाने हैं। इस गांव के भ्रष्टाचार में घास-पास के ५ गांवों में घुसा। मैंने देखा कि टीक सिमरी की ही भांति उन गांवों में भी सफाई और सफाई है। सिमरी क्षेत्र की जनशक्ति को देखकर मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इस क्षेत्र में जन आंदोलन, जनविद्रोह के विचारों पर पहुँच गया है। कार्यकर्ता और जनता की हुई सभाओं में यह निर्णय किया गया कि प्रथम प्रखण्ड ठण करके से राजाना अधिक से अधिक ५ सत्याग्रही हिस्सों में और शेष प्रखण्ड का प्रयोग क्षेत्रों में उपयोग किया जाय। तबए

हम इस अंक से एक विशेष प्रारम्भ कर रहे हैं। यह यथा संभव हर अंक में रखा जायेगा। इस अंक में एक खण्ड प्रकाशित की जा रही है। इस बार हम जो खण्ड प्रकाशित कर रहे हैं वह चम्पलघाटी में जापियों के प्रारम्भसमय के समय अपनी कर्मठता के लिए ख्याति प्राप्त श्री महावीरजी की रिपोर्ट है।

महावीरसिंहजी जिला भोजपुर, रोहतास में ७ अगस्त से १६ अगस्त तक विभिन्न स्थानों में घूमे। घूमेने नहीं घूमे साथ सिमरी प्रखण्ड के स्थानीय छात्र-नेता श्री जनार्दन राय भी थे। वे भोजपुर जिला छात्र-समितिके अध्यक्ष हैं और इस समय भूमिगत प्रवस्था में काम कर रहे हैं क्योंकि उनके नाम पर सिमरी के प्रशासनिक कार्यालय में भी अतिरिक्त कार्यवाही के अर्थ में कार्यवाही करने का अर्थ है जनार्दन राय को ही जाता है।

ये दोनों ७ से १६ अगस्त तक जिला भोजपुर, रोहतास के सिमरी गांव से सञ्चलित रहे। जिला भोजपुर के प्रखण्ड प्रशासिकारी है। सिमरी गांव की आबादी लगभग १५००० है। ७ गांव मिलाकर यह एक गांव बना है। इसी-लिए इसे 'गांवसिमरी' कहते हैं। यह बहुत ही आसन्न क्षेत्र है। स्वामी सहायनन्द सरस्वती का प्रमुख कार्यक्षेत्र रहने के कारण सन् ४२ में भी यहाँ प्रशासकीय काम हुआ था। यहाँ से युवकों ने कर्मिक के इस क्षेत्र में प्रारम्भ पर बन्धा करके दिखाया था। १० मील का कच्चा रास्ता पार करने में यहाँ लोग पहुँच सकते हैं परन्तु यहाँ तक की सुविधा यहाँ नहीं है। शांति-काल में लोग इसे बरदान मानते हैं, क्योंकि सरकारी 'कुमुब' यहाँ बमु-जिल हाँ पहुँचने हैं और शांति काल में यहाँ लोग 'दमनिल' रहते हैं कि व्यापारी भी आसानी से रुक करने यहाँ तक नहीं आ पाते। गांवसिमरी का इतिहास पुराणकाल

नेताओं ने २०, २५ छात्रों व सत्याग्रियों को छात्रागार दस्तों के रूप में तैयार करने का काम शुरू कर दिया है। उन्होंने पाठना है कि राजाना किसी न किसी प्रखण्ड कार्यालय को या सरकारी कार्यालय को आसन छापा-

से अभी तक प्रातिविकारी ही रहा है। राम ने ताड़का-नक्ष यही किया था। इसे परशुराम का क्षेत्र भी माना जाता है। १८५७ में प्रसिद्ध प्रातिविकारी कुबेरनेने ने इसे अपनी विशेष कार्यक्षेत्री के रूप में प्रयत्न किया था।

प्रातिविकारियों को यह परम्परा अभी तक दन्द नहीं हुई है। बल्कि कहा जा सकता है कि अधिक आसन्न हुई है। यहाँ के बूढ़े भी प्रायः में प्रातिविकारियों की ही चमक लिये हुए दिखाई देते हैं।

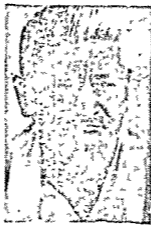
जातीय दृष्टि से इस क्षेत्र में ब्राह्मणों का निवास माना जाता है। सत्ताकर्मियोंस दल और सी० पी० आई० के लोगों ने इसी आधारे पर यहाँ जो प्रातिविकार चल रहा है उसे एक जाति विशेष का आन्दोलन कहा है। इस आधारे को मुक्त कर रहा के एक निवासी, जो अपनी सोच-समझ और कार्यक्षेत्री के लिए प्रसिद्ध है, तथा एक बालक में प्राध्यापक हैं इसने लिये। उन्होंने कहा कि हम यहाँ जातिवादों ही सही कम्युनिस्ट और कार्यक्षेत्री वाले थे और जान लें कि यद्यपि गांव भी हमारे क्षेत्र में ही माना है। विपराशक्ति दिशा है। इसलिए धर्म व लोग चाहें तो हमें बुलाकर रहें भी नष्ट सकते हैं। हम इनका समया मानते हैं।

पाठकों को इन विशेष विवरणों से प्रसन्न बन आठ क्षेत्रों समभने में सफलता मिलेगी कि ०० पी० का आन्दोलन ठण हो गया है। यह समय धातु रोगाई का समय है। ज्यादातर किसान इस वर्षक व्यस्त हैं। निम्नर के अंत तक वे काम से मुक्त हो जायेंगे। और तब विहार का आंदोलन क्या रूप लेता है, नहीं कहा जा सकता। बहरहाल, हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे एर सत्ताकर्म प्रकाशित होनेवाले इस पृष्ठों को ध्यान से पढ़ें और देखें कि जन-जाति का क्या अर्थ होता है। १००

मार कर चम्पल करने और दूसरे दिन दूसरी तरफ दूसरे क्षेत्र में निवास जायेंगे। इस प्रकार इन क्षेत्र में छात्रों, तमणों और आगिकियों का संयुक्त प्रातिविकारी मोर्चा बन गया है। छोटे-छोटे बच्चे राजाना ही गांव की गतिवियों

में इंग्लिश जिन्दावाद, लोकनायक जयप्रकाश जिन्दावाद के नारे लगा रहे हैं। मुझे सूचना मिली है कि इसी प्रकार की कुछ तैयारी राजपुर प्रखण्ड में चल रही है। किन्तु बड़ा जाने का मौका नहीं मिला। १४ तारीख को बक्सर में जन प्रदर्शन हुआ, १५ अगस्त को धारोलेन कारियों पर लाठी चार्ज हुआ। जिन्ना कार्यालय अभी तक व्यवस्थित नहीं हो सका है। धारा के छात्र नेताओं की गिरफ्तारी ब प्रमिगत हो जाने के कारण हमारे एक छात्रों की है जो धारा में शराब की दुकानों पर घरना देती है। जिले के सभी प्रखण्डों में अभी तक तदर्थ समितियों का संगठन नहीं हो सका। जनसमर्थ समिति में अभी ऐसे कार्यकर्ताओं का प्रभाव है जो प्रखण्ड स्तर पर गांवों में पूरा समय देकर संगठन और धारोलेन का काम धार्ये बड़ा सके। अभी तक शहरों में छात्रों का काम शराब की दुकानों पर घरना देना और प्रखण्डों में जहाँ तथा सरकारी काम ठग्य करने की और विलेप है। विद्यार्थकों से त्यागपत्र दिवाने के लिए धारोलेनकारियों का ध्यान नहीं है। जनसभाओं में त्यागपत्र की मांग की जाती है। बक्सर छात्र सभर्प समिति अभी तक बटी हुई थी, अब सर्वसम्मति से एक सभ्यो जक चुना है। उम्मीद है कि धार्ये काम ठीक चलेंगा। मुल मिलाकर भोजपुर जिले में कहीं-वहीं काम बहून प्रच्छा है, वही बिलकुल नहीं, व्यवस्थित कार्यालय और एवजान प्रोग्राम की और ध्यान देने की आवश्यकता है।

जिला रोहतास:—दिनांक १४ से १८ तक दस जिले में घुमा। रोजाना जनसभा और कार्यकर्ता मीटिंग की। बुदरा प्रखण्ड में जनसभर्प समिति के माध्यम से एक राजनीतिक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाया गया जिसमें मुख्य चर्चा का विषय धादि प्रश्न समय का भाग है कि जनसभाओं को सफल बनाने के लिए राजनीतिक पक्षी को समाप्त किया जाय क्योंकि इस धारोलेन से एक नयी राजनीति का जन्म हो रहा है। इस विचार के प्रेरक थे बुदरा समाजवादी नेता श्री गिरधरीधामसिंह, भभुधा और मुख्य प्रवक्ता थे विधान सभा से त्यागपत्र देने वाले समाजवादी श्री सच्चिदानन्दसिंह। २ दिन की बैठक में बाद निर्णय किया गया कि यह सम्मेलन राजनीतिक कार्यकर्ताओं से घनीय करना है कि जिनको यह



महाबीर सिंह

विचार प्रसङ्ग हो वे व्यभिगत रूप से दलो से मुक्त होने की धोपणा करें। चू कि यह व्यभिगत धारोलेन के रूप में प्रस्ताव था इसलिए कुछ साधियों के विरोध के कारण प्रस्ताव के रूप में पारित नहीं किया गया लेकिन इस विचार के प्रेरक श्री शिवपतीश सिंह ने समाजवादी दल से त्यागपत्र की सार्वजनिक रूप से धोपणा की। उनके साथ-साथ भभुधा धनुमडल के अनेक समाजवादी कार्यकर्ताओं ने अपनी दलबन्दी की धोपणा की। संगठन कार्य के प्रभुत्व विधायक श्री राम-नगोनासिंह तथा श्री जगबहादुरसिंह जो उस धनुमडल में संगठन कार्य के कार्यधार हैं, उन्होंने भी सार्वजनिक सभा में संगठन कार्य से त्यागपत्र देने की धोपणा की। इस सम्मेलन की यह विषये उल्लेखि हई कि भभुधा धनुमडल में दलबिहीन राजनीति का व्यापक वातावरण बना है।

१५ अगस्त को गांधी मंडान कु दारा में राष्ट्रीय ध्वज फहराने की यह परंपरा की कि वहाँ बी० डी० श्री० राष्ट्रीय अण्डा पहराता था, मगर इस बार कार्यकर्ताओं के ल जनता के प्रयास से बी. डी. श्री को भण्डा नहीं पहराने दिया गया। बदरा ग्राम के मुखिया ने जनता की राय से राष्ट्रीय ध्वज पहराया। अण्डा फहराने के समय बी. डी. श्री. साहब धा चुके थे, पुलिस गाईं सलामी के लिए धायी थी, लेकिन वहाँ के जनसभर्प समिति के प्रमुख कार्यकर्ता श्री कृष्णमोहन रमोनी ने धार्ये बदर अण्डे की पेशी पकड़

ली धीर बी. डी. श्री को भण्डा पहरा रोना। इस पर बी. डी. श्री ने गाईं को धार्ये दिया कि इन लोगों को गिरफ्तार किया जाय। गाईं ने भण्डा स्थान पर एकदित लोगों को घेर लिया। बात धार्ये बड़ी जनता में उल्ट जनता बढती देखी तो चक्रवादी प्रधिवारी ने बीच-बचाव किया और फलस्वरूप जनता की राय से गांव के मुखिया ने राष्ट्रीय ध्वज पहराया। इससे बाद हाई स्कूल के मंडान में लोकस्वराज्य दिवस मनाया गया इस कार्यक्रम के तुरन्त बाद मैं नासीराज्य जे जे० पी० का जन्मस्थान बनाया जाता है, लोकस्वराज्य दिवस सभा में भाग लेने पट्टा। चार घण्टे हजारों की तादाद में लोगों ने सभा की कार्यवाही में हिस्सा लिया। १६ अगस्त को विदराड, ग्राम को आत्मनिर्वाणर में छात्र एव जनसभर्प समिति के साधियों से संगठन और धारोलेन के संबंध में चर्चा की। १७ को नोरवा की जनसभा में शामिल हुआ। १८ को जिला सभर्प समिति की बैठक सासाराम में भाग लिया।

रोहतास जिले में सहयोगी राजनीतिक दलो विशेष कर समाजवादी कार्यकर्ताओं की बहून बड़ी शक्ति है लेकिन यह शक्ति अभी तक संगठित रूप से सक्रिय नहीं हो सकी है, इसलिए कोई एकजान प्रोग्राम सुचारु रूप से नहीं चल रहा। छिट पट जैसे ६ अगस्त, १५ अगस्त इन दिनों में कहीं-वहीं सरकारी काम ठग्य करो कार्यक्रम लिये गये हैं। जिला कार्यलय को व्यवस्था अभी तक नहीं हो सकी है। जनसभर्प समिति की बैठक नियमित होती हैं। जिले की शिथिलता पर १८ तारीख की बैठक में साधियों ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया और पञ्चाङ्कित एवजान प्रोग्राम लेने की योजना बनायी। पहले बैठक में समिति ने शराब की पहरना पर घरना और सिनेमा बन्द करने की योजना बनायी थी किन्तु श्री विपिनबिहारी सिन्हा के द्वारा पटना से मिली सूचना के अनुसार जानकारी मिली कि अभी सिनेमा पर घरना म देने का तय किया गया किन्तु शराब की दुकानों पर घरना दिया जायगा और जहाँ शक्ति होगी वहाँ प्रखण्ड कार्यालय धादि दल्ल किया जायेगा। जिला समिति के पास अभी तक कोई कैश नहीं इसलिए भी कार्यालय

→ धीरे धीरे काम में कुछ रुकावट है जबकि इन जिलों में सभी पिछली जिलों में करीब ३५ हजार रूपय धारण धीरे इस बार फिर २५ हजार के कुरान दिये गये हैं। पिछले कुरान को विवरित विषये गये हैं उनका हिस्सा-विताय कोषाध्यक्ष को नहीं मिला। सपर्ये वार्षिक से जिला सर्वोदय मण्डल को तबकादा किया जाता है इस लिए जब वे हिस्सा की मांग करते हैं तो धारण में विवाद खड़ा होता है। केन्द्रीय समिति के निर्णय के अनुसार जिला समितियों को ही रूपन जाने चाहिए लेकिन सभी भी छा। सपर्ये वार्षिक से सीधे रूपन जा रहे हैं इस लिए आपस में काफी विवाद है। जनसपर्ये समिति की बैठक में जे पी के दोरे पर विचार किया गया जिसमें भुमुभा, विश्वमगज, सासाराम, डालमियानगर आदि में कार्यक्रम बनाने का सोचा गया। श्री विपिनविहारोजी को सूचना के अनुसार बनाया गया कि डालमिया नगर के समस्त मजदूरों से एकदिवसी मजदूरी देने की प्रार्थना की जाय। इसके लिए सभी राजनैतिक पक्षों के प्रमुख तथा श्री सावान

विह व सपर्ये कार्यालय की धीरे से भी आचार्य रामभूति के साथ एक बैठक ३० तारीख से पहले की जाय। यदि वे योजना सफल होगी तो करीब एक लाख की खंली भेंट की जा सकती है। इसके अलावा जिले में भी जे. पी. जहाँ-जहाँ जायें, खंली भेंट की जाय। जिले में सहयोगी राजनैतिक दलों की बहुत बड़ी ताकत होती हुए भी सभी तक प्रवण्ड स्तर पर कोई कार्यक्रम नहीं चल रहा। यहाँ जिला कार्यालय को व्यवस्थित करना है तथा राजनैतिक कार्यक्रमों की शक्ति को संगठित करना व सतिय बनाना है। सर्वोदय कार्य-कर्मियों की शक्ति कम है व साधन भी नहीं। इस बार के दोरे में जगह-जगह साधियों से पर्चा करने पर ये फिर तय किया गया है कि प्रवण्ड स्तर पर लोक संगठन व प्रादोलन का काम करेंगे। डालमियानगर के छात्र जो शुरू से करीब ३५ निरन्तर क्रिये गये थे छटकर आ गये हैं। उन्होंने अपना नाम फिर शुरू किया है। कुछ छात्र कार्य-कर्मियों से देहात में भी घूमने का कार्यक्रम बनाया है।


—महावीरसिंह

कस्तूरबाग्राम में कृषि परीक्षण

कस्तूरबा दृष्ट द्वारा संचालित कृषि-क्षेत्र के धन्यंत विद्यार्थी १ जुलाई से प्रायोगिक विज्ञान नवयुवकों के लिए कृषि प्रशिक्षण शुरू हुआ। प्रशिक्षण में देश भर के तरुण विज्ञान भाग ले सकते हैं। किलहाल ८ विज्ञान युवक प्रशिक्षण ले रहे हैं जिसमें ४ मध्यप्रदेश २ बिहार १ महाराष्ट्र तथा १ पंजाब का सम्मिलित है। एक सत्र में कुल दस प्रशिक्षणार्थी लिए जाते हैं, प्रशिक्षण अवधि है छ मास की प्रशिक्षणार्थियों के लिए १०० रुपया मासिक छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

इसके अलावा कस्तूरबाग्राम में छः माह की अवधि का प्रौढ़ साक्षरता शिक्षक प्रशिक्षण भी चल रहा है। इसमें ३७ प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हैं। स्मरणीय है कि पश्चिम निमाड जिले की संघना सहस्रीय में निगली प्राविनी संघ के १०० तारों में कस्तूरबा दृष्ट द्वारा व्यावहारिक साक्षरता का कार्यक्रम उठाया गया है।


Swastik SERVES HOME



Through a wide and varied range of rubber and P.V.C. products—for domestic and Industrial use.

Footwear and hoses, gloves, moulded products and oil seals, foam rubber...mattresses, pillows and cushions. Over 4000 products in all—each one built as only Swastik can, dependable and durable.

SWASTIK RUBBER PRODUCTS LTD.,
Pune-411 002.



Form-127-59

पुस्तकें

मानस सुभताओं, श्री रामचंद्र उपाध्याय के रामचरितमानस सम्बन्धी प्रबन्धों का संग्रह है। यह एक लम्बी योजना है जिसके दो खण्ड छद्मर नामने प्रा चुके हैं। पण्डित-प्रवर रामचंद्र ने मानस से कुछ मोती चुने हैं और उन्हें धनी रसज्ञवाणी के सूत्र में पिरो दिया है। वेग में इस समय श्री रामचंद्र के अधिक अधिभारपूर्वक वाणी में रामचरित मानस पर प्रबन्ध करनेवाले व्यक्तित्व दुर्लभ हैं, कदाचित्त ही नही। मानस चतुष्पादी बर्ण के सर्भ में प्रकाशित विभुज साहित्य के बीच वे दोनों खण्ड गौरवकर के गिहार के समान सोभायमान हैं। इनका विनया आरोहण विद्या जाय उत्तमा कम है। भाषा है प्रकाशक विरला प्रकाशकी धाक भाट एण्ड बन्कर, १०८। १०६ सदन एवेन्ग, कलकत्ता क्य लखौं को भी जिज्ञासु और विद्यासुओं के लिए विधासम्भक इत प्रुतवाकार प्रस्तुत करके पुण्य और इतलता का साथ करेगी। प्रयेक खण्ड का मूल्य २५ ६० रखा गया है, जो पुस्तक के साधार और नवनाभिराम रूप को देखने हुए स्वल्प ही है।

प्रभा-मन्त्रित, सर्वे सेवा सध प्रकाशन, -पाठ्य बाराएसी द्वारा बहून प्रभाषी की णि की साधार करने के विचार से प्रणीत है। पुस्तक में प्रभाषीजी के सतरण, ११ दो गयी व्यष्टिमिमी, स्वयं उनके द्वारा ली गयी वाणी के बहिण्य पृष्ठ, बहौ नवे मने कमला मेहम्, जहाहराम नेहू, जेम्ड प्रसादी और स्वयं बापू और विनोबा के पत्रों के सकलंन के साथ-साथ कुछ जीवक-पत्र और पुंभं विच है। बीवी की जीवक-वासा मन्त्र में निर्मला देवगान्ने ने एक मज्जुवा स्मरणही धमपाय जोशा है और सारी स्मृति के लगे में सुगीना विनहा ने महिला कर्मात्मनि के इतिहास और प्रणति को लेनदंड किया है।

बादा परमाधिपानी के कर्त्तों में, बाधी सुय में जो कल्याण इस देश में हुईं उनसे परि-प्रा, निर्भेसा और सपनंलमिना की, १५

दृष्टि से मैं समझता हूँ कि प्रभाषीजी का जीवन धर्मप्रतिपत्त बा। उनसे घटना का सम्-प्रेण जितना होना गया, घातनिष्ठा उनकी ही प्रभावित होती गयी, उज्ज्वल होती गयी। इसमें सन्देह नहीं कि प्रथम प्रभा-मन्त्रित प्रभा-बहून के समूने व्यक्तित्व को बड़े सुन्दर और पठनीय रूप में प्रस्तुत किया है। रावल साइज की ३०० पृष्ठ की इस सुन्दर पुस्तक के तीन खण्डों का मूल्य २५ रखा है। इसके प्राप्त होनेवाली प्रेरणा को तो दूना नहीं जा सकता।

सत्य-सरिता, सत्या साहित्य मंडल द्वारा काशासाहेब कालेलकर के उन निबन्धों का संग्रह है जो देश की वास्तविक लोकमानाओं पर्याप्त हमारी मुर सरिताओं के बारे में लिखे गये हैं।

यद्यपि पुस्तक में जिन सरिताओं का बर्णन है, वे सध्या में घलेक हैं किन्तु बरवा-राज्य में पुस्तक का नाम सत्य-सरिता रखा है। सत्य-मिथु, सत्य-दीप, सत्य-सरिता सत्य-अनल आदि हमारे यहाँ प्रचलित हैं। सुयं के बोधे भी सात ही बने गये हैं। सत्य का हमारे धार्मिक साहित्य में बड़ा महत्व है। सत्य-श्लोकी गीता, सत्य-धन की रामायण और सत्य-व्रताकी भागवत सर्वविदि ही हैं। यद्यपि गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी ये सात सरिताएँ ही पूजा के समय पुजारी जाती हैं, किन्तु काशासाहेब तो वास्तव में प्रवृत्ति पुत्र हैं। उन्होंने ब्रह्मपुत्र, सुप्रभासा, लाली और यहाँ तक कि माकंभरी जैसी छोटी किन्तु धाराल पवित्र मानी जानेवाली हमारी नदियों में बहने भी बड़े स्नेह के साथ इस पुस्तक में स्थान दिया है। माकंभरी को उन्होंने सली माकंभरी कहा है और उनके साथ बने व्यक्तित्वन सत्य-का स्नेह से बर्णन किया है। एक परि-जिष्ट देकर काशान, हेने हिमालय, प्ररावती, शिन्ध्याचल, महाद्वि, धनय, महेन्द्र और मुक्तिमन वर्धन में वे उर्ध्वम पावेवाली नदियों के नाम लेकर पुस्तक को और भी परिपूर्ण बना दिया है। ये सारे नाम उन्होंने भारतीय भाषाओं से लिये हैं। साहित्यशास्त्र की काशासाहेब कालेलकर द्वारा अतिर जनन पुर्णों में यह पुण्य जन्मन कथन को तह

तरता हुआ दिखायी देगा। इस पुस्तिका का मूल्य तीन रुपये है।

स्वतंत्र भारत की भक्तक भी मण्डल से प्रो-विन श्रीमती शानवती दरबार के नाम लिखे गये भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र-प्रसाद के पत्रों को बड़े श्रेणी की दरबार के पत्रों में से उन्हीं पत्रों को छांटने है जो स्वराज्य के बाद के भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अर्थी विषय रूप से प्रस्तुत करते हैं। इन पत्रों को पढ़कर इस बात की प्रतीति होती है कि राजेन्द्रबाबू देश को छोटी-बड़ी हर बात के प्रति आकण्ठ थे और इनके साथ ही साथ यह बात भी स्पष्ट होती है कि पत्रों के माध्यम से कली से कली बातें लिखनी सरता के साथ बनी जा सकती हैं। दश की प्राय की परि-रिचयि सभ्यते के लिए भी ये पत्र बहून उप-योगी सिद्ध हो सकते हैं, क्योंकि आजाद होने के बाद से पात्र तक दगने धवर किसी दिशा में तरबरी की ही तो यह दिना धमीर की धमीरी और गरीब को गरीबी है। राजेन्द्र बाबू का हृदय पत्र विमो न किसी रूप में इस परिस्थिति को विचिन करता जान पसता है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या ३३८ और मूल्य प्रतिरुद के साठ रुपये और सजिद के दस रुपये हैं।

जीवन भाष्य, पुस्तक में जे० बन्धुमूर्ति के ४८ प्रबन्धों का सरल और प्रभास्यम भाषा में अनुवाद है। अनुवाद है श्री जयनाथलाल सेठ

जे० बन्धुमूर्ति के विचार प्राय सारे सारर हैं निरुद विचारशील बने हुए हैं। उनके प्रबन्धों का बोझ भी क्पासलर धमो तक हिरी में धराय्य था। जयनाथलालजी जैन ने यह अनुवाद तीसरे मं संघों से प्राभुन न बने मराठी अनुवाद जीवन्-भाष्य के साधार पर किया है। श्रीमती विमला देवगान्ने और माई जयनाथलाल दीर्घो ही इन अम्यास्यन काय की पुरां करते के लिए समस्त हिन्दी जगल के निरुद कूलतले के पात्र हैं। साक्षा हे कि इन पुस्तक को सर्वसाधारण पुस्तकों के मुकाबले के बहून अधिक प्रकाश होना। दिवाई साइज की ८०० पृष्ठों का भाट रखा मूल्य नहीं के आवाह माना जाना चाहिए।

समाचार

वन बचाओ अभियान

वन-विनाश से उत्तम परिस्थिति पर विचार करके २० मीर २१ को गढ़, जिला प्रल्मोडा में उत्तराखण्ड के रचनात्मक कार्य-वर्ताओं और सर्वोदय सेवकों ने यह निर्बिचत किया कि सारे हिमालय क्षेत्र की भीर मुख्यतः उत्तराखण्ड की मुख्य संपदा वन है, इसलिए इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए यहाँ के विकास का कार्यक्रम वन-केन्द्रित होना चाहिए। इसके लिए वन से वन बगले पाच वर्षों के लिए उत्तराखण्ड में वन-सपदा के दोहन का कार्यक्रम—वनो की कटाई प्रादि को सुरत रोक दिया जाये और इस बीच वन-सपदा व वनों के रोपण की नई व्यवस्था के लिए कार्य किया जाये। ठेकेदारी प्रथा अतिस्व समाप्त की जाये और जहाँ वन-सपदा का दोहन प्रत्यावश्यक हो, जगलों की कटाई व धन्य कार्य सोधे अभिकों के द्वारा कराये जाय। वन-अभिकों को न्यूनतम मजदूरी की गारण्टी दी जाये, जैसे विद्या के लिए १००, रु. प्रति स्त्रीपर, दुलान के लिए ६० पंसा प्रति चौकी और लीसा गढान के लिए ४५ रु. प्रति किबटल।

इस बात पर भी और दिया गया कि वन-सपदा का वास्तविक सरक्षण तो तब ही हो सकता है कि जब वनों का प्रबन्ध प्राग, विकास-क्षेत्र और जिला स्तर की जन-प्रतिनिधि-पंचायतगण संस्थाओं की सहाय जाये और वनाधारित छोटे उद्योग माल के स्रोतों के निकट हो। वनों की सुरक्षा के लिए जन-जागृति हेतु लोकप्रिय आवश्यक है। इसके लिए वनप्रधान क्षेत्रों में पदयात्राएँ और यदि प्रावश्यक हो तो 'चिपको' धारणोत्सव चलना चाहिए। यह निश्चिन्त है कि इस प्रकार के धारणोत्सव पशुबुक्त और सत्य, धर्मिणा व संयम पर धारणित होंगे।

काँग्रेसकोल में स्वागत सभा

दुर्गागण, बोधानोल में २० प्रातः ७। ३ बजे भारण्ड पाच को धरित्रियों का एक मोन जन्म सरकारी मार्यात्यों एवं धाजार की सङ्कट से पूम्दा हुआ दुर्गा स्थान पर पृथवा और सभा के रूप में परिणत हो गया जिससे

पाच हजार व्यक्तित उपस्थित थे। अध्यक्षता श्री सोनाराम साब ने की। विधानसभा के सामने सत्याग्रह करके जेल से लोटे हुए सत्याग्रहियों का स्वागत किया गया एवं लोक-स्वराय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इस संकल्प को श्री उदितनारायण चौधरी ने सभा के सामने रखा जिसे सभी लोगों ने दुहराया। इसके बाद दो भूतपूर्व विधायकों सर्वश्री मोरीशकर केसरी एवं शिवनन्दन भा ने अपने भाषण में श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे धारणोत्सव को सफल बनाने के लिए करवन्दी, शराबबन्दी के कार्यक्रम को गावों में प्रसारित करने की प्रावश्यकता बताई तदुपरांत श्री उदित नारायण चौधरी ने गोविन्दपुर निर्वाचन क्षेत्र के विधायक द्वारा जनता का विश्वास खोने के कारण इस क्षेत्र में चुनाव कराने की मांग सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। छात्र नेता श्री आदित्य कश्यप ने कोषाकोल में गत १५ अगस्त को स्थानीय प्रखंड विकास अधि-कारी द्वारा संशय पुस्तिक की मदद से सभा के पूर्व श्री उदित नारायण चौधरी एवं छ छात्रों को गिरफ्तार करने, गिरफ्तारी के समय उनसे से तीन छात्रों को धोपडों एवं कुन्दे से बर्बरतापूर्वक मारने की भर्त्सना एवं इस दुर्व्यवहार पर न्याय की मांग सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित किया जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

कानपुर का तरुण पटना में

गिरफ्तार

कानपुर तरुण शान्ति नेता के मदस्य ओमप्रकाश पाण्डे २८ अगस्त को पटना में शराबबन्दी मत्याग्रह में गिरफ्तार कर लिये गये हैं। पाण्डे तथा जगदीश नारायण बान-पुर तहल्ले शान्ति नेता के दो ऐसे मदस्य हैं जे, विहार धारणोत्सव में काम करने गये हैं और जिन्होंने धपनी लगन और निष्ठा से सबको प्रभावित किया है, जगदीश भाई गया जिले में अचछा काम कर रहे हैं। उन्होंने पटना जाते समय उन्हें दिये गये सर्वे के पंचम शोधे माहिल्य विभो की छुट में एकत्र करने धाम भेज दिये हैं और बड़ा इमी धाधार पर स्वावलम्बी रहकर-कार्यरत हैं।

सर्वोदय पर्व मनायें

सर्वोदय पर्व के संबंध में सर्वे सेना सघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज डड्डा ने सभी प्रदेशों तथा जिला सर्वोदय मण्डलों से प्रपत्ती की है कि हर वर्ष ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक, अर्थात् विनोबा जयन्ती से गांधी जयन्ती तक की अवधि में देश भर में 'सर्वोदय पर्व' का आयोजन किया जाता है। इस पर्व की शुरु-धात सन १९६१ में साहित्य प्रसार के काम से हुई थी जिसे विनोबा ने 'शरदाराम्भे-भारदो-पासना' की संज्ञा दी थी। १९६३ से इस अवधि को समग्र दृष्टि से सर्वोदय धारणोत्सव के एक विशेष अभियान के तौर पर मनाये का सय किया गया था। हमारी कीर्तिशहीनी चाहिए कि साहित्य विभो के प्रलावा सर्वोदय विचार के प्रचार का सार्वभिक वातावरण इस अवधि में बने। हर वर्ष यह पर्व उत्तरोत्तर अधिक उत्साह से मनाया जाय ताकि विनोबा जयन्ती से गांधी जयन्ती तक वा यह प्राण एक राष्ट्रीय पर्व बन जाय।

पर्व के दौरान चलाये जानेवाले कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार है :—पर-पर पहुंचकर सर्वोदय-साहित्य की विक्री तथा प्रसार सर्वोदय-विचार की पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रकाशन विभाग की 'नमुना-योजना' के प्राहक बनाना, इन उद्देश्यों की हृष्टि से गांधी और नगरो में पदयात्राओं का आयोजन, रङ्गन, वात्सेजो में साहित्य-विक्री, खादी भडारी पर भी साहित्य विक्री का विशेष प्रबन्ध, विनोबाजी की 'गीताई', 'तीसरी राति' और जयप्रकाशजी की 'मेरी विचार-यात्रा' का विशेष प्रचार, साहित्य प्रदर्शनों का आयोजन, रस और बस-स्टेशनों, नगरस्थानों, व्यवगावी पर्वों आदि में साहित्य-प्रसार।

उपवासदान

सर्वोदय पर्व में

उपवासदान का

संकल्प करें

आज ही काम भरे।

जरू ऊपर भी देखिए

खबर है कि बंगलूर में ईन के एक चपरासी के घर भायकर अधिकारियों ने छापा मारा। चपरासी ने घर छापा मारना, लोगों को एक विचित्र बात लगी। अगर विचित्रता का यह भाव एक भावधर्म में बदल गया—भावधर्म इसलिए कि उस चपरासी के घर दफ्तर लाह सोलह हजार रुपये के नोट निकले।

चपरासी के पास यह बहुत-सा पैसा कहाँ से आया, इसका कोई जवाब चपरासी नहीं दे सका। पैसा खासतौर से छिपाकर रखा गया था। रसोईघर का धुआँ निकलने के लिए बन चोगे में यह जगह बनायी गयी थी। इस राशि में दस-दस घोर पाब पाब के दस-दस बल्ले थे। भायकर विभाग का कहना है कि चपरासी की भाय के अन्य स्रोत भी ये घोर विभाग की भायकर घोर सम्पत्तिकर देनेवालों की सूची में उसका नाम भी है।

खाल है कि बैंक से रुपया लेकर दिलाने के मुजाबरे में जो 'ऊपरी कमाई' होती थी, उसे वह इस प्रकार छुपा कर रखता था। घटबहा है कि यह 'ऊपरी' भावधर्मनी उन ऊपरी भावधर्मनी का एक नगम्य अन्न ही है जो इस मिलसिबे में उसके अन्य उच्च पदो पर पर बैठे हुए सहायोगियों के हिस्से में जाती है। अब सवाल इतना ही है कि उन पर छाये दाने जायेंगे या नहीं। घटबहरो के पास रसोईघर से बेहतर जगहें हैं। छाया डालने वाले भायकर अधिकारी पहले उन जगहों का मुराग लगा लें, सब भागे बड़ें। छाया डालकर छोटी भूमतियों को एकदमे की पर्याप्त लवरे आती है। 'बड़ी मछलियाँ' जाले डालनेवालों घोर जाल की पहुँच आदि तम म चीजों की काट जाननी है।

करुणानिधि की नयी विधि

तमिलनाडु में गांधी शाब्दी नहीं मनानी थी किन्तु अब वहाँ भी ऐसे काम किये गये हैं जिन्हें हर विचारमौल्य आदमी सज्जदोया। एकलौते वहाँ शराबबंदी का निर्णय लिया गया है और दूसरे तय किया गया है कि नवंबर से तमिलनाडु में घुड़दौड़ एकदम निषिद्ध हो

जायेगी।

शराबबंदी के विताफ जो तर्क दिया जाता है, वही अब घुड़दौड़ को बंद करने के विताफ भी दिया जा रहा है। हर धधधे घुरे सगठन के अध्यक्ष प्रादि तो हाते ही हैं। तमिलनाडु के घुड़दौड़ सगठन के अध्यक्ष कोई विध्वंसक है। उन्होंने घनेक पापसिपा उठाये हैं जिनमें सबसे जोरदार यही है कि इससे तमिलनाडु की भाय बढेगी और पड़ोसी राज्य जैसे आंध्र प्रादि की भावधर्मनी बढेगी। घुड़दौड़ के सगठनकर्ता अब धपना पैसा वहाँ सहायोगे, कमायेंगे और उसका साथ अन्य राज्यों को मिलेगा।

शराबबंदी के बारे में भी सदा ऐसी ही कुछ बातें कही जाती हैं कि लोग बाहर जाकर पीकर मारेंगे, गैरकानूनी शराब बनायेंगे और उससे जनता का स्वास्थ्य खराब होगा। हर चीज के साथ और हानि की बातें भासना-कर्ताओं को जनतम में जनतम का नाम लेकर ही करनी पडती है। खासकर तब, जब जनता की हानि घटाकर कोई काम करने से अपना नाम लिया जा सकता हो। देश की सारी राज्य-सरकारों ने 'जनता के स्वास्थ्य' प्रादि की प्राड में ही शराबबंदी खरद की है। अब घुड़दौड़ में भी जनता आडे सी जा रही है।

करुणानिधि अब तक कई बार गलत बातों को उठाकर उन पर घाटे रहे हैं। घटके बारे में शराब और घुड़दौड़ पर सही खब अपना कर मजबूत बने रहेंगे।

खाने का तेल, दिखाने का तेल

घमो-घमो तर्फ दो महीने हुए, सरकार ने कहा था कि खाने के तेल की बाहर से मगाने की कोई जरूरत नहीं बची है। और अब खबर है कि सरकार ने २६,००० टन खाने के तेल के साथ-साथ १०,००० टन दिखाने भी बाहर से मगाना तय किया है।

घमो ठक बाहर से जो खाने का तेल मगया जाता है, 'बनस्पति' बनाने के विचार से खरद की बीमर से कम बीमर पर बनस्पति की बानेवाली कपतियों का दिया जाता था। ये बनस्पति की के दाम बाघबूद सस्ता तेल पाने के बढाजी बनी जा रही है। घमय ही सरकारी स्वीचुनि की मोहर तो उस पर होती ही है। कहा जा रहा है कि बाहर सोयाबीन और सजूर के तेल के

दाम पिचयने दिना कापी गिरे हैं। नीति क यह परिवर्तन उन घटे हुए दामों को ही बेह कर दिया गया है। 'बनस्पति-ची' बनानेवालों को अब पहले से भी कम दाम पर तेल दिया जा सकेगा और समथ ही नया पक्का है कि ये हमें घाड से भी बडे दामों पर 'बनस्पति-ची' दें और तो भी, खान-रक्ताकर। यह बाहर से आनेवाला खाने का तेल भी कम-जफे की हद तक को दिखाने का तेल ही साबित होगा।

राजनीतिक अर्थ और सिद्धांत

पश्चिम मगल के विरवविद्यालय से सव-पित छात्रावतों में एक ऐसी समस्या है जो कदाचित देश के किसी छात्रावतों में नहीं है। अनेक छात्रावतों में बरनों से ऐसे लोग जने बडे हैं जो 'बाहरी' हैं। ये 'बाहरी' तब जैसा कि भाषा जा सकता है, प्राय भ्रामा-जिक है। छात्रावत में इनके बने रहने से को वास्तविक धान वहाँ होत हैं, एक भयनीत जिदो विताते हैं एक घोर 'त्रिभन' तथा स्वाभाविक परिणाम इन महाशयो में यहा मुकाम परमाने का यह दुभा है कि अनेक छात्रावतों में कोई शिक्षक 'मुनरप्टेडेड' होने को तीवरा नहीं होते। अनेक छात्रावत तानाविर घोर किना किसी देल देल के किसी तरह चने जा रहे हैं।

इस परिस्थिति को समथत करना विरव-विद्यालय के अधिकारियों के बस की बात नहीं बच रही है। कारण इसका यह बताया जाता है कि ये 'बाहरी' लोग ऐसे राजनीतिक दल या दलों के अस्तित्व हैं, जिन्हें हाथ लगना पसान बात नहीं है। दो बरत पहले 'गरीब-बन्द छात्रावत' तो इती समस्या से निपटने के ख्याल से बन्द ही कर दिया गया था। मगर दल भागने के कलकता विरवविद्यालय का हाडिगज हास्टेल सबसे भयानक है। वहा ली फिलहाल दनी भी हुए और कोई एक ह्पना पडाई लिखाई बन्द रही।

मलग-मलग छात्र-सगठन इन 'बाहरी' लोगों से समथत है। कुलपति ने सिंडिकेट के सल्ल प्रस्ताव के बाद अब राज्य के मुख्यधनी सिद्धार्थंगकर राय से हल पर चर्चा करने का निरवय किया है। घाघा ही कम से कम इस भागने में सिद्धार्थंगकरनी राजनीतिक प्रयो घोर सदर्भों में नहीं घटके रहेंगे।

समाचार

भूमि वापसी सत्याग्रह

जहांगीरबाद, जिला कानपुर, तहसील घंटमपुर में कानपुर नगर की किंमतान् अन्व-साथी फर्म जगन्नाथ मन्नीलाल के मालिकों ने कई वर्ष पूर्व धनूचित ढग से भूदान की करीब ७२ बीघा भूमि के पट्टे धनने परिवार के कई सदस्यों के नाम, जिसमें परिवार की महिलाएँ भी सम्मिलित हैं, करा लिये हैं। जब स्थानीय भूमिहीनों, गरीबों, बेतिहूर मजदूरों, हरि-जनों को इसका पता चला तो उन्होंने ग्राम प्रधान तथा मुख्य व्यक्तियों द्वारा सत्कालीन प्राधिकारियों से इस धनूचित बाण्डे को शिवा-यत की। जाच सरकारी स्तर से भली प्रकार की जा चुकी है। उत्तरप्रदेश की भूमि भूदान यज्ञ समिति ने अधिकांशियों ने भी भोके पर जाँच की और शिकायतों को सही पाया।

परिणामस्वरूप उत्तरप्रदेश भूदान यज्ञ समिति ने निवेद्य किया कि इस भूमि को वापस लेकर गरीब भूमिहीन, साधूभ्रष्टीनों में वितरित किया जाय। प्रदेशीय भूदान यज्ञ समिति की अर से सेठजी से निवेदन किया गया कि जिस ७२ बीघे भूमि के उन्होंने पट्टे करा लिये हैं वह भूदान समिति को वापस देकर गरीबों में उस भूमि को बँटवाने में मदद करें।

सारे प्रयासों का परिणाम सेठजी की ओर से शून्य ही रहा है। भूदान यज्ञ समिति के पास अब उक्त भूमि को वापस करने हेतु सत्याग्रह का सहारा लेने के संकल्पित कोई चारा नहीं रहा है। धनू कानपुर जिला भूदान यज्ञ समिति उस भूमि को प्राल्त करने के लिए ७ सितम्बर १९७४ से सर्वप्रथम दोष में जन जंगण तथा ११ सितम्बर १९७४ से सत्याग्रह का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रही है। उत्तरप्रदेश भूदान यज्ञ समिति के सदस्य तथा सर्वोदय कार्यकर्ता एव स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री धोमप्रकाश गौड़ सत्याग्रह का सवालन करेंगे।

दिल्ली में जन जागरण

राजघाट अहिंसा विद्यालय में २५ अगस्त को प्रातः साढ़े नौ बजे दिल्ली विर-विद्यालय के विद्यार्थियों की एक बैठक बुलाई

गयी जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति-रक्षक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय धोर दत्तक स्थानीय कालेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। निरन्तर किया गया कि महुनाई, जमाखोरी, रिश्वतखोरी धादि की समस्या दिल्ली में दूसरी जगहों की तरह ही व्यापक रूप से विद्यमान है और प्रमुख रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए भी धादि की काफ़ी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी दिक्कतों से लड़ने का कोई न कोई विकल्प निकाला जाना चाहिए। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कालेजों धोर विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की ११ सदस्यीय समिति का चुनाव हुआ। निरन्तर हुआ कि यह समिति कालेजों धादि में प्रशि-धाय शिबिरो द्वारा युवकों में जागृति लाने धोर-लोमों को सगठन करनेका काम करेगी। यह भी निश्चय हुआ कि यह समिति नगरी में राहत का काम भी करेगी। इसी दिन दोपहर को दिल्ली प्रदेश की स्थापक विधि द्वारा भी एक बैठक का धाद्योजन किया गया। अध्यक्षता प्रशिद्ध लेखक श्री जनेन्द्र कुमार ने धोर बैठक में बिहार धाद्योजन से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया गया। मुख्य वक्ता धाद्योजन कृपालनी थे। बैठक में जनसभ के वी करलसानी गुप्ता, भीमसेन सुब्रह्म, मेवा-राम धाद्य (स्वतन्त्र पार्टी) धाद्योजन के श्री सी के नायर धोर लगभग धन्य ५० लोगी में भाग लिया।

इसी सदमें एक सितम्बर को एक बैठक धनू. धाद्योजित की गयी जिसमें धाद्योजन कृपालनी, श्री जनेन्द्रकुमार एव कृष्णारायणजी की दोन सदस्यीय समुक्त समिति धोर निर्णय (समिति) गठित की गयी धोर कृष्ण नारायणजी से धाद्योजन की गयी कि वे विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों एव संस्थाधो धोर दलों से सभ्य संघापित करके जनसभ्य समितियों का गठन करें। बैठक में दिल्ली विश्वविद्यालय धाद्योजन के सचिव हेमन्त सिन्हाई धोर जनतन्त्र समाज के सचिव एम. डी. धार्मा भी थे। उल्लेखनीय है कि धाद्योजन चुनाव में, विजयी विद्यार्थी परिवर्ध के उम्मीद-कारी ने जयप्रकाशजी के धाद्योजन की समर्थन को धोयल्ला करके चुनाव लडा धा ओर धन नागरिकों के सहयोग से राजधानी में जन-जागृति का प्रथम किया जा रहा है।

नशाबन्दी

प्रशिद्ध भारतीय नशाबन्दी परिवर्ध की कार्यकारिणी समिति तथा सामान्य समिति की दो दिवसीय बैठक २६ अगस्त १९७४ से सम्पन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता परिवर्ध की धन्यशा डा. मुषुली नैयर ने की। विभिन्न प्रदेशों से धाये हुए कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने एक प्रस्ताव पास करके १ सितम्बर १९७४ से तामनाहु में पूर्ण मचनिवेद्य को पुनः लागू करने के धनवर पर सामान्यतः तमिलनाहु की जनता धोर विधायो: महि-लाधो एव नशाबन्दी कार्यकर्ताधो को बधाई दी धोर उक्त राज्य की उन महिलाधो की प्रशंसा की जिन्होंने राज्य में पुनः मचनिवेद्य लागू कराने के लिये सभ्य की है।

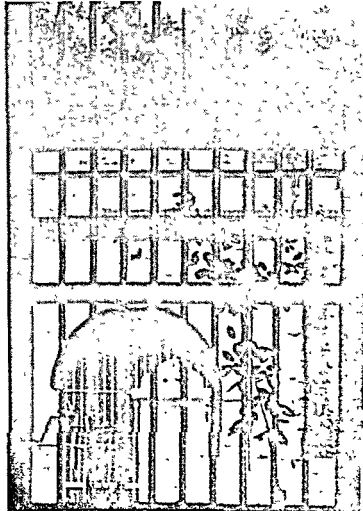
दूसरे प्रस्ताव में देश भर के 'स्वतन्त्रता सेनानियों का धाबाहन' किया गया कि वे धनने धनने लोको में यथाशीघ्र पूर्ण मचनिवेद्य लागू किये जाने के पक्ष में प्रभावी जनमत जागृत करने की हृष्टि पर धान्य दाखिल निधायें।

एक धन्य प्रस्ताव में राज्य की जनता के जीवन स्तर को सम्पन्न बनाने की हृष्टि से राज्य में पूर्ण मचनिवेद्य को माग के समर्थन में धन्यकर स्तर पर धाद्योजन की धुनगो पर धनना देने के लिए बिहार की जनता धोर शिरोपल धनने तथा कार्यकर्ताधो को बधाई दी गयी धोर जिन स्वयंसेवकों ने धाद्योजन की धुनगो पर धनना देकर स्वयं की बंदी बन-वाना धोर शक्तिपूर्व तरीको को धननाया उनको शिरोपल से प्रशंसित की गयी।

धनने प्रशिद्ध भारतीय नशाबन्दी परि-वर्ध ने बिहार राज्य सरकार से धनुरोध किया कि वह समय न गवाने हुए बिहार में पूर्ण मचनिवेद्य की धोयल्ला कर जनता की माग को स्वीकार करें। राज्य सरकार द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बली माधुसूदन दल का उद्योग कर मचनिवेद्य के पक्ष में शक्तिपूर्व धोर वीध धाद्योजन की हतोत्साहित करने के लिए धननायी गयी धनन नीति का बडा विरोध भी किया गया। परिवर्ध ने धाद्योजन की कि बिहार के युवक सरकार द्वारा बिधे जा रहे धनन के बावजूद धनने धाद्योजन को तब तक जारी रखेंगे जब तक कि राज्य में मच-निवेद्य लागू नहीं हो धाधो धोर सत प्रशान-ने देन के धन्य धाद्योजन की धुनगो का भी धाद्योजन करेंगे।

सर्वांतर

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १६ सितम्बर '७४



'बिचको छात्रोत्सव' मे एक नया अध्याय
—मुन्दरलाल बटुगुणा
परमसूक्ति विनोबा
—शबानीप्रसाद मिश्र
गोइडा मे एक छात्रोत्सवभरा दिन
—राधेश्याम योगी
धलहयोगी छात्रों के लिए कार्यक्रम
—जयप्रकाश नारायण

पगली घंटी, पागल लड़के,
पगलायी सरकार

भ्रष्टाचार बनाम शिष्टाचार

केवल मूलतः बंग से पैसे कमाना ही भ्रष्टाचार नहीं है। ऐसा कोई भी काम, जो एक की शक्ति पर दूसरा व्यक्ति अपना किसी न किसी प्रकार का लाभ करने की नीयत से करता है, भ्रष्टाचार है। जैसे हम किसी व्यक्ति को खुश करने के लिए उसे किसी जगह मुख्य प्रतिनिधि, अध्यक्ष की हैसियत से आमंत्रित करते हैं, और खुश इसलिए करना चाहते हैं कि उसके हाथ में बड़े प्रकार की शक्ति है, वह चाहे तो हमारा भला कर सकता है और हमने अगर कुछ मूलतः काम कर लिया है तो उस पर इस प्रकार पौछा लगाया चाहते हैं। या समझिए किसी मंत्री या उसके समकक्ष व्यक्ति का धूम-धाम से जन्म दिवस मनाते हैं या उसके जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में अभिनन्दन ग्रन्थ निकालने में जुट जाते हैं। यह और धन्य इसी प्रकार के कामों को लोग भ्रष्टाचार नहीं कहते, किन्तु ये प्रकृति वास्ते भ्रष्टाचार हैं।

एक और दमते भी भयानक भ्रष्टाचार वह है जब हम समस्त शिष्टाचार को ताक पर रखकर ऐसे किसी ठीक भादमी को बुराई करने में जुट जाते हैं, जिसकी बुराई करने से शक्ति-सम्पन्न कोई व्यक्ति या संस्था हमसे खुश होकर किसी न किसी प्रकार के दान इकराम से से उसका बदला चुका सके। इस प्रकार का भ्रष्टाचार जब किसी ऐसी संस्था के मुखपत्र के द्वारा हो जो किसी देश की सगर्भत सब से शक्ति-सम्पन्न संस्था हो तो इस प्रकार के भ्रष्टाचार की घनिष्ठता और उससे होनेवाले लाभ या मुक्तान को मापना मुश्किल हो जाता है। हम उत्तरप्रदेश का प्रसार के

मुखपत्र 'नया भारत' का महीने से जो रबैया देव रहे हैं, वह इसी दरजे का है। उसकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ और उसमें छपनेवाली साधारण से साधारण बातों में भी इस बात का स्थान रखा जाता है कि जयप्रकाश नारायण का जितनी तरह से बने चरित्र हनन किया जाये। उसके ८ जुलाई के अंक से कुछ अंश हमारे पास एक मित्र ने भेजे थे। हम सोच रहे थे कि कीचड़ में पत्थर फेंकने की प्रक्रिया में न पड़ें। इसीलिए चुप थे। मगर इस बीच नया-भारत के सम्पादक ने कुछ कवि भी जुटा लिये हैं और जो अंग के नाम पर जयप्रकाश को खुशी मालिया दे रहे हैं और लोग परेशान हैं कि कार्यस जैसे किसी काल की शालीन संस्था बहूत तक उतर सकती है।

उत्तरप्रदेश के लक्ष्य-प्रतिष्ठ और समस्त हिन्दी जगत के जनिमाने श्रीनारायण चतुर्वेदी ने इस पत्र के दृष्टिगत लेखन पर दिल्ली के सहयोगी 'लोकराज' में एक लम्बी और प्रत्यत समत टिप्पणी लिखी है, 'एक प्राधुनिक भजन' जो उसके उल्लेखीय जुताई के अंक में प्रकाशित हुई है। हम 'लोकराज' को भी बधाई देते हैं कि जो बान किसी की दृष्टि में 'कार्यस का विरोध' तक हो सकता है अर्थात् कार्यस के मुखपत्र की दृष्टिगत पर टिप्पणी प्रकाशित करता, उसने छापी। ज्यादातर समाचार-पत्र खतरा उठाने की जरा-सी गंध हो तो या तो साफ टान जाते हैं या फिर उसे बहुत बनावट छापते हैं। 'प्राधुनिक भजन' का शीर्षक है 'जय सर्वनाथ नारायण'। हम, वहाँ तो पूरा धपसा है, यहाँ केवल महला दे रहे हैं :

"दुखीजनों के दुख से नमाया बन जि
हुरबा।
जिसके मुंह पर धूक रहा है देखो सब
ससारा।

जनम-जनम का चोर बना बंठा है साहूकार।
परम धर्म है जिस पापी का धनर्ष अत्याचार।
हूँड लिया है भ्राज फिर उसने एक नया
भवतार।

सर्वोदय से सर्वनाथ बन जाने को तैयार।
जय सर्वनाथ नारायण,
जय जय सर्वनाथ नारायण!"

धारे के पदों को तो उद्धृत भी नहीं किया जा सकता। चतुर्वेदीजी ने पाठकों को नीचे लिखे की सीमा का पूरा धनुमान करा देने के विचार से पूरा पद दिया है और पद के पहले और फिर बाद में भी बड़ी व्याकुलता से इस पतन पर दुख प्रकट करते हुए अंत में प्रपील की है :

'हम प्रधान मंत्री, डॉ० शंकर दयाल शर्मा, मन्त्र केन्द्रीय नेताओं और विशेषकर पंडित कमलापति त्रिपाठी से (जो दृष्टिगत शिष्टाचार की मूर्ति हैं, अनुभवों पत्रकार हैं और इस प्रातीय कार्यस समिति के अध्यक्ष प्रभावशाली सदस्य हैं) यह पूछना चाहते हैं कि क्या इस कविता के छापने से कार्यस की प्रतिष्ठा बढ़ी है? क्या यही उसकी शिष्टता का नमूना और मानदंड है? पाठकाल्य देखो मे ऐसी चीजें छापनेवाले पत्र 'यसो प्रेस' (कुल्लित पत्र) कहे जाते हैं। क्या भारत के कार्यसो पत्र इस स्तर पर उतरने में अपनी शोभा समझते हैं?'

हम इसमें घब और नया जोड़ें। चतुर्वेदी जी को धन्यवाद देने हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे इस पर यदि किसी उचित प्रतिनिधि की प्राशा करते हैं, तो निश्चय ही ऐसा प्राधान करें। सत्ता के तगे में भ्रष्टाचार ही अब शिष्टाचार बन चुका है, और तो और विनोबा ने इसे प्रलय सदर्भ में सहो, किन्तु बहा है।

'भूदान-यज्ञ' के ८ और ९ सितम्बर के अंकों में पृष्ठ १६ पर 'इस अंक का मूल्य ६० पैसे' छप गया है। उसे कृपया ३० पैसे पढ़ें।

‘चिपको आंदोलन’ में नया अध्याय

गुन्दरलाल बहुगुणा

हर साल की तरह इस साल भी सितम्बर के प्रथम सप्ताह में उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से उत्तराखण्ड के पर्वतीय वनों की बिचो कोटों की ओर से देहरादून और नैनीताल में नीलामी द्वारा हुई है। इस नीलामी में बड़ी सख्या में जंगलों का कारोबार करनेवाले देहरादून, हरिद्वार, यमुनानगर और इमारती सफाईयो का ध्यान करनेवाले दूसरे नगरों के बड़े वनाधिकारियों का जमेट लगा। वन-संपदा से करोड़ों की बर्बाद करनेवालों के लिए यह महापर्व था जिसमें देहरादून और नैनीताल की विज्ञान नगरियाँ ठेकेदारों द्वारा प्रविक्तात्रियों की दावतों में बुव गयी थीं परन्तु पर्व-रोप खोंकों के जनसाधारण के लिए ये नीलाम केवल चीज के पैडों के ही नहीं सारे शोष की मुल धोर समुद्रि की नीलाम होने हैं। एक लोखनेता ने भरे हुए हृदय से मुझे कहा, ‘यह उत्तराखण्ड की नीलामी है, जिसमें सरकार की ठेकेदारों की हितसेवारी है।’ परन्तु विद्युले डेड वनों से वन-संपदा की सुरक्षा के लिए उत्तराखण्ड में चलने वाले ‘चिपको आंदोलन’ के प्राविक्ताकारक और प्रणेता लॉर्डय और रचनात्मक वार्थबनधि का बहना है, ‘यह केवल उत्तराखण्ड ही नहीं सारे देश की मुल धोर समुद्रि की नीलामी है।’ उत्तराखण्ड के वनों के साथ सारे देश का धोर खस तौर से गगा धोर यमुना के उपजाऊ मैदान का भाग्य युवा हुआ है। बाढ़ों से होतवाली प्रबलो रचयो की क्षति के एक साल के धाव भरने भी नहीं पाते कि धमले वष पुन-दुगने वेग से बज भा जाती है। उत्तरप्रदेश धोर बिहार की बाढ़ों से इन वष १ अरब २० करोड रचयो की फसल की क्षति हुई है।

धासपास के घामोणो ने कहा कि, ‘हमारा धनाडी विज्ञान यह कहता है कि इतनी वष पातासपगा के धासपास के जयल वन-विज्ञान के धनुसार बटे धोर हमारे लिए सर्वनास का पंगाय लेकर यह बाड प्रायी।’ इसकी पुनरावृत्ति प्रायः सब पर्वतीय जिलों में हुई है। इस वष ‘चिपको आंदोलन’ के फलस्वरूप हुई वन-आगुति के कारण पर्वतीय जलता में वनों की सुरक्षा के प्रति जो उत्तरदायित्व की भावना पैदा हुई है उसका एक शुभ-परिणाम हुआ है। लोगों ने ठेकेदारों द्वारा बाटे आनेवाले वनों की प्राविक्ताता करनी प्रारम्भ कर दी है।

यमुना और टोस की घाटियाँ भारत के सर्वोत्तम चीज के वनों के लिए प्रशिद्ध हैं। यमुना घाटी के पुरोला रेंज में इकाडा जयल के लगभग ५ हजार चीज के शूखे व गिरे हुए पेडों की पिछले वर्ष-नीलामी की गयी थी। जब जयल में वास्तविक कटाई शुरू हुई तो सडे पेड भी बटने प्रारम्भ हुए। खेडों के प्रायकक प्रधात कृपासमिहू ने इकाड विरोध किया। सरकारकी प्रायगापन भेजे, वनाधिकारियों से मिले, परन्तु कोई परिणाम न निकला। जून में जब प्रवेष कटाई प्ररम सीमा पर पड़व गयी तो इसकी जाच प्रारम्भ हुई धोर इस जाच के धनुसार २५५५ परस्वीकृति से प्रतिरिक्त काटे पाये गये। वनों की सुरक्षा के लिए नियुक्त उन्वधिकारियों का कार्यालय इस वन से केवल ६ किलोमीटर दूर है। प्रवेष डग से बाडी गयी लभशिधां वन-रामि कर्वालय के सामने से बुडरनेवाली सडको से डोयी जाती रही। इनसे यह स्पष्ट हो गया कि ठेकेदारों प्राय के धलसर्गत स्वीकृत सख्या से अधिक पेड बटाना एक धाय निधम हो गया है। धोर यह कार्य वनों की सुरक्षा के लिए नियुक्त प्रविक्ताकारियों के सतिय सहयोग से धोर वही-वहीं तो सामेवारी से होना है।

यही बहानो चीज के पेडों से लीसा निजानले के लिए गहरे धाव करने के कारण होनेवाली तबाही थी है। टोस वन प्रभाग के

देवता रेंज में १३ हजार गहरे धाव पाये गये। इनके कारण पेड या तो मूल जाते हैं या तेज हवा चलने पर टूट जाते हैं। इस प्रकार टूटनेवाले पेडों की सख्या प्रतिवर्ष हजारों तक होती है।

प्रसख देलने से नीलामी की बोली, तीसा निजालने व गिरे हुए पेडों की बिचो से सरकार की धच्छी धामदनी होती है, परन्तु यह आभदनी सोने का बहवा देनेवाली मुषी का एक ही बार गेट धोरकर सड धग्ने प्रात करने के समान है। तटध वन-विशेषज्ञो का बहना है कि उत्तराखण्ड के कीवती वन धोर खासतौर से यमुना धोर टोस प्र भाग के चीज के वन, निजक वषुंन करते हुए एक नदी पूर्व कर्नल पियसंत्र ने लिखा था, ‘इव नदियो के किनारो पर फले हुए वृशो का निजाल समुड धर्णनातीन है। इनकी गणना ‘गहरो’ में नहीं करोडों में की जा सकती है, कुछ वर्षों में लुप्त हो जायेगे।

इस प्रकार यह प्रश्न केवल उत्तराखण्ड धोर उत्तरप्रदेश ही नहीं सारे देश के लिए बिचारणीय है। ठेकेदारी प्रथा को ररुड सभाय कर पाव वषों के लिए नयो व्यवस्था होने तक वनों की कटाई रोकने की माग का धौचित्य समभने हुए भी उत्तराखण्ड के वनों से होनेवाली १० करोड की धाय का मोहू छोडने के लिए उत्तरप्रदेश की सरकार रंवार नहीं है। इसलिए इस वष वनों की नीला गी के साथ ही ठेकेदारों व सरकार को ध्याक पंगाने पर चरनेवाले ‘चिपको आंदोलन’ की सभाजनाओं से सतर्क किया जायेगा। धव तः ६ आंदोलन केवल चम्पेनी धोर उत्तरवाडी जिलो तक ही सीमित रहा है, धव यह सभी पर्वतीय जिलो में फल सकता है। कुनाभू मन्डल में, बिहाड़ जयल उत्तराखण्ड सर्वोदय पदयाच धोर गुवकों की ‘धस्कोट-भारत-कोट’ याच के दौरान ‘चिपको आंदोलन’ का संदेश फेला, यह नदी घटना होयी।

प्रथम सख ‘चिपको-आंदोलन’ की धार माँग रही है - (१) वन-संपदा से लोहन की

डेनेशरी पद्धति समाप्त हो और उमरे रखा पर पत्र-भूमियों की गहकरी समितियों द्वारा पत्र-नियंत्रण का दोहन हो। (२) वन-व्याप्तियों को रोजगार देने के लिए वनों के निरुद्ध वन-संग्रहण पर साधारण छोटे उद्योगों की स्थापना की जाये। (३) वनों का नया बंटवारा हो और (४) वनों की ध्वस्तता घोर प्रशासन म वन-व्याप्तियों को शांतिन किया जाये।

घोड़ के पैदो से सीमा विभाजन के लिए बिगै जानेवाले गहरे घाबों से होनेवाली क्षति को रोकने के लिए पाचवी माग यह जाड़ी गयी कि सीमा विभाजन की हिंसापली पद्धति रखाय राख नहीं चाहिए।

अब यह दृष्टी माग जुड़ी है कि वन-भूमियों को मौजूदा पशुधन्य जीवन से मुक्त करने के लिए उन्हें न्यूनतम गजदारी की गारण्टी दी जाये। बठोर बट्टानों पर घोड़ पर एन-एन मुनन के होने की मजदूरी सन् १९५० से मय तक २५ पैसे प्रति चोरी है। भारे से लकड़ी बीरने का काम साधारण धकाने घोर प्रतिन का हाम बननेवाला होना है। परणु इगरी मजदूरी की दर भी प्रति स्लीवर पर सन् १९५० में डेढ़ रुपये थी, अब तीन रुपया हुई है। इसके साथ ठेकेदार सत्ते दामो पर राशन देने हैं जो दूसरो को फगाने का प्रलोभन है। प्राय यह राशन पशुधों के साने के साथ भी नही होना। इसमे घरीर को पोषण देनेवाले परिष्ठितक तत्व तो होने ही नही। इन बठोर परिस्थितियों से श्रमिक भाज भी काम करने हैं इनका मुश्र कारण है उनका भापने ही गाव के इलाके ठेकेदारो की जो प्राय घाम नेता भी होने हैं, बर्जदारी के नीचे दबा रहना। उनका ही यही पैगगी बनी समाप्त नही होनी। बीच में काम छोडने पर भूटे मुकदमों में फगने का डर रहता है। ये श्रमिक बर्गमीर से लेकर नेपाल तक के दूरस्थ गावों के रहनेवाले होने हैं और बर्धमीर व हिमाचल के श्रमिक उतरासड में तथा उत्तराखण्ड के हिमाचल के जसलो में काम पर देने जा सकते हैं। बनी-बनी-तो स्त्रिया भी हून पीने वचको भी पीड पर बाधक विधान करती हैं। 'चिरने-आडोपन'ने तुलानियों के लिए ३८-पैसे प्रति.बीरी घोर चिरानियों को १० रुपये प्रति.रीपर देने की मांग है। यह लकड़ी

के व्यापारियों को भाज प्रति रीपर होनेवाले लगभग १०० प्रतिशत मुनाफे को देगते हुए सफल नहीं है। इन वर्ष भारोवन में धर्मिकों के शांतिन होने से वनों की सुरक्षा के इस महायत्न में, जो वास्तव में पूरे देग की रखा का बर्षायम है, सफलता निश्चिन है।

‘हिंसा की कोई चर्चा नहीं’

बुद्ध समाचार पत्रों में श्री जयप्रकाश नारायण के एव भाषण का समाचार इस प्रकार प्रकाशित हुआ है जिससे ध्वनित होता है कि वे हिंसा के विरोधी नहीं रह गये हैं। एग सम्भव में उन्होंने एव स्पष्टीकरण में कहा है कि, "छात्र घोर जनता के सघर्ष में सहयोग देनेवाले बुद्ध राजनीतिक कार्य-कर्ताओं के सामने ३० घण्टे को गीने एक भाषण दिया था। समाचार देनेवाले एकाध सन्धान में जो खबर छलवारो को भेजी है, उमने वारण मेरो समझ में अवर्स्त गनत-कदमी हुई या ही सकनी है।

मैने उस भाषण में कहा था कि अति-द्विस्त धर्मिय या मरण्यमंत" धमोशन का प्राधार अज प्रेरणा ही होनी है। यदि किसी समय ऐसी घ.न.प्रेरणा हुई तो मैं उसके अनु-सार चलने में प्रागाय-वीदा नहीं कहूंगा। मैने यह भी कहा था कि प्रगर सघर्ष को समर्थन देनेवालो को बनी ऐमा लगा कि विधानसभा का विघटन जल्दी हो तकने के विचार से मुझे भापने प्राणो को सखट में आतवर धनशय शुरू कर देना चाहिए, तो मैं उनकी प्रच्छा वा भादर करूंगा। इस सदर्थ में मैने हिंसा वा बोई बर्षा नही किया। हिंसा के बारे में मेरे जो विचार हैं, उन्हें दोहराने की मैं कोई जरूरत नहीं मानता। मैं उनके पूरी तरह विरोध में हूँ—घोर जब तक बिहार के आन्दोलन से मेरा तालुकु है वह शांतिम सघर्ष ही रहेगा।

वास्तव में मनमाने ढंग से पशुतापूर्ण हिंसात्मक बार्नवाई तो छात्रो घोर जनता के प्रति सारकार के चट्टे ब्यूटे हो कर रहे हैं। जनता की ही छात्र एकाध घटनाको छोड दें तो गदा शांत घोर अहिंमक ही रहे है।'

पत्र और पत्रांश

धर्मक्षेत्र

पूज्य बाबा ने 'धर्मक्षेत्र' कहा। क्या इसमें कोई संदेह नहीं है? 'साम्यसूत्रों' का सूत्रकार एक मात्र भी क्या व्यर्थ तिन मकता है-या वह सकता है? सूत्र को परिभाषा है। 'स्वल्पाधारमसद्विषय सारचिद्विषयोमुत्सव'। अस्तोभयनवचन मुयसूत्रविदो विदुः ॥' स्वल्पाधार, धर्मदिग्ध (स्पष्ट) सारवत् (सार-गभित) विदरतोमुत्सव (चोमुत्स) अस्तोम (मप्रतिरुद्ध) धनवच (सुन्दर, तिदोप)। विनोवा के शब्द नये-तुले, धकूक घोर धर्म-गभीर तथा साहित्यपूर्ण होते हैं न? उन्होंने पटना क्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा है। यो ही? जबसपुर

—दादा धर्माधिकारी

बौद्धिक ब्लैकपाउट

प्रकाशन-जगत पर प्राया सबट वास्तव में साहित्य-मसार का सबट है। धाज बागज की दरें एकाएक इनकी ऊची हो गयी हैं कि इन पर खरीदा गना कागज पुस्तकों के मुद्रण के उपयोग में नहीं पा सकता। पुस्तकें इतनी महंगी हो जायेंगी कि उनके लिए कोई खरीदार नहीं होगा।

फेडरेशन काफ इंडियन पब्लिशर्स बागज की अनाप-बनाप बडी हुई दरों से सरकार को सचेत करने में सचेष्ट है, लेकिन जैसा कि गुजरात के मुद्रसिद्ध विचारक घोर साहित्य-कार भी उमाशकर जोषी का कहना है, इसके धनस्यभावी परिणाम 'बौद्धिक ब्लैकपाउट' के प्रति सचेतकों को सचेत करना तैत्तिक-बर्षों का भी धर्मोच्छ घोर बर्त्स्य है।

हमारा अनुरोध है कि प्राय एक पत्र प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को अति-सम्ब निलें। फेडरेशन का विश्वास है कि भारत की विभिन्न भाषाओं के ऐसे पत्र वह प्रधान मंत्री तक पहुंचा सकने में सफल होंगी। प्रायके उत्तर, या हस्ताक्षरित पत्र की उत्सु-कता से प्रतीक्षा रहेगी।

बी-६८ ए,

—धूमप्रकाश

साउथ एक्सपेंशन (२) सयोजक पर बनेटी

नई दिल्ली-५६

डि. फेडरेशन काफ

इंडियन पब्लिशर्स

भूदान यज्ञ : सोमवार १६ सितम्बर ५७



धर्ममूर्ति विनोबा

विनोबा ११ फिनम्बर को अपन जीवन के ७६ वर्ष पूरे करके ८० वें वर्ष में पदाग्रण कर चुके हैं। उनके हृदयों से उनका जीवन अद्वितीय जीवन रहा है। सबसे बड़ी बात जो हम उनके बारे में धारणित करनी है, वह है उनका खालिस चरित्र। हर व्यक्ति पर प्रायः किसी दूसरे की छाया होती है। वह किसी और के परचिन्हों का अनुगमन करके अपना विचार करता है, किन्तु गहरे धर्मों में देखें, हममें तो स्पष्ट हो जायेगा कि विनोबा का व्यक्तित्व स्वयं व्यक्तित्व है। के किसी की प्रतिच्छाया नहीं है और इसीलिए वे धारण तक को सम्पूर्ण मानवता को अपने भीतर समाये हुए हैं। उन्होंने सन जापन रहकर अपने जीवन को स्वयं नडा है। बादभी धारण-मान से नहीं जनरता। वह घरती पर पैदा होता है और घर उसकी वृद्धि जापन और तेजस्वी हो तो घरती के सारे महिमाभय सत्य सहे सहज ही विरासत में मिल जाते हैं। और फिर वह एक कोई अनेकी 'व्यक्तित्व' न रह, विराट-सत्ता का प्रतीक बन जाना है, विनोबा ऐसी ही विराटसत्ता के प्रतीक हैं।

वह ठीक है कि विनोबा के विरासत के सोपान हैं, उन्हीं के शब्दों में वे 'मनो के पथ पर अपने पावों' चले हैं। किन्तु उन्हीं इतने पथ को जितना मनो का पथ माना है, उतना ही अपना भी माना है। मुझे याद है कि उन्हीं बापू के निघण्टे के बाद सेवाप्रथम में सर्व सेवा सच को जो पहली सभा हुई, उसमें बिलकुल प्रारम्भ में वह कहा था कि 'मैं जो कह रहा हूँ वे बापू के कथन नहीं हैं।' इसके बाद उन्होंने जो वाक्य कहा उसे सुनकर तो हम सब भीक ही गये थे। दूसरा जो वाक्य उन्होंने कहा कि 'जो विचार में स्पष्ट कर रहा हूँ,

वे बापू के नहीं हैं बापू के वाक्य वे नहीं हैं। सब लोगोंको बड़ा विचिन मानूँ हूँ, किन्तु तत्काल उन्होंने स्वर में एक तीव्रता सागर कहा कि 'मगरन मेरा, कारलाना मेरा बैक मे रला हयाय मेरा लडका मेरा, पत्नी मेरी और विचार बापू के ? घर विचार बापू के हैं तो वे मेरे किसी काम के नहीं हैं, जिस तरह बैक मे रला किती और का हयाय मेरे किसी काम का नहीं। घर हमने बापू के विचारों को अपना नहीं बना लिया, घर वे विचार हमारे जीवन की साम नहीं बन गये और घर हम उनके अनुसार जीने और मरने के लिए नैवार नहीं ता हम बापू का नाम तक लेने का अधिकार नहीं है।' जो व्यक्ति शासन मरतो को इस प्रकार अपना बजा लता है वह स्वयं सत्यमूर्ति और धर्ममूर्ति बन जाता है। विनोबा एक ऐसी ही धर्ममूर्ति हैं।

विनोबा का जन्म कोताबा जिले के गामादा में सन् १८६५ में हुआ। विनोबा उनके वास्तविक नाम विनायक का रूपान्तर है। पराठी में धारण स्वयं करन के लिए 'बा' लगा दियाजाना है जैसे शानबा, तुकोबा। हमारी सद्ध संवेदनशील जनता में जिन प्रकार धार्मिकी का विना किसी क मुक्तये 'महात्मा' कह दिया और आज तक सिते तेकर वह सच चलती है कि पहले पहले उन्हे महात्मा किमने कहा, उसी प्रकार अपने बीच भगवान की भेकी हुई आदरस्पद इस मूर्ति के लिए 'बा' शब्द का उपयोग सब शुरू किया, कोई नहीं जानता। कथन में विनोबा को उनकी मा 'विन्दा कह कर पुकारती थी। कहा जाना है कि गांधीजी ने विनोबा नाम के साथ आगे पीछे कभी कोई उल्लेख या प्रत्यय नहीं लगाया, सतों की श्रेणी में गुम्फन इस व्यक्तित्व के धामे-निधि मुक्त लयाया उन्हे भाव्यद प्रपटा लगना रहा है। किन्तु हम जो साधारण व्यक्ति हैं, जिन्हे घर से सनोय नहीं होतो, जो अपने मूर्ति में अपने महात्मा पुत्रों के प्रति भक्ति का समावेश विवे बिना एक

प्रकार की न्यूनता का अनुभव करते हैं उन्हे कभी धार्मिक विनोबा तो कभी धीविनोबाजी कहने रह और सब हा उनका सार्वभौम नाम 'बाबा' हो गया है। वह नहीं सकते भारत के राजनैतिक, नैतिक या सांस्कृतिक दृष्टिकोण में वादा का नैतता नाम अधिक चलेगा तथापि आभार तो ऐसा है कि देश को धार्मिक प्रतिष्ठा और परम्परा महात्मा गांधी द्वारा लिया जायेजाना उनका विनोबा नाम ही समाकट रहेगी।

वाक्य विनायककेमन में धर्म की भावना का बीज मी के हाथों रोपा गया था। इसके प्रभूत प्रमाण स्वयं विनाबा के मुख से चाहे जब मुने को मिल जात है। माँ की वान करते हुए बलिज जनके उल्लेख मात्र से विनोबा की वाणी रुक जाती है और धातु बहने लगते हैं। वे सदा कहा करत है कि 'बाई और गीनाई, मेरे ये दो सबल मुझे अपने आपकी कभी निर्वल महसूस नहीं करने देत।' परिवार की ओर से जब विनोबा के सामने मुहम्बो का भार उठाने का प्रश्न उपस्थित किया गया तो वे 'निबंध के बल राम अपनी माता की चरण मे गये। माता ने कहा विन्दा, यदि तू विवाह करता है तो तू केवल अपना माता पिता और परिवार की सेवा करेगा और अगर तू ब्रह्मचारी रहता है तो तेरी ४२ पीढ़ियां तर जायेंगी।' साक्षात्कार की उपस्थिति की पृथ्वी तो भाव्यकता तो विनोबा के मन में तभी अकुरित हो गयी थी, जब वे कैवल १० वर्ष के थे। धीरे-धीरे वह अकुर बरता गया और पदसत चला गया। वह सक्ते हैं कि मा ही वह मान्यो थी, जिसने इस सींचा और जीवन दी।

विनोबा को आनन्दशंन हूँ या नहीं ? उन्होंने प्रश्न का साक्षात्कार किया है या नहीं? कई जगह भोग ऐसे प्रश्न करत हैं। सन् १९४२ में विनोबा नामपुर जेल में प्रवचन किया करते थे और तुलनात्मक तरीके में कभी-कभी कोई प्रश्न भी कर उठता था। एकाएक एक सज्जन

ने ईश्वर के प्रतिस्वर्ग की भीमासा बरतते हुए विनोबा को टोका और पूछा, 'क्या आपने ईश्वर देखा है?' विनोबा सहज प्रसन्न मुद्रा में कुछ गभीर हो गये और उन्होंने सामने रखी लाटनेन की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'मैं इस क्षण इस लाटनेन को देखने में संदेह कर सकता हूँ किन्तु मेरे मन में ईश्वर के दर्शन को लेकर संदेह नहीं है।' याद रखना चाहिए कि विनोबा भगवान के सपुण्य रूप के पुजारी हैं और वे उसे देखते हैं अपने ध्यात-पास की हर वस्तु में, विशेषतः पीड़ित और दलित मानव के रूप में। वे कहा करते हैं, 'सैवा व्यक्ति की ओर भक्ति समाज की' धर्मात् सारे ससार के प्रति पूज्य बुद्धि रखकर प्राप्त-सेवा में लीन हो जाना ही भगवान के सान्निध्य में बने रहना है। विनोबा ने इस धर्म में भगवान को पाया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। किन्तु भगवान को पाने के जो हृदय अर्थ हैं उनमें भी उन्होंने भगवान को नहीं पाया, ऐसा कौन वह सकता है ?

गांधी और विनोबा के मिलन की कहानी सभी जानते हैं। गांधीजी ने एक बार विनोबा के पिता को पत्र लिखते हुए कहा कि आपके पुत्र ने भ्रष्टाचार में ही तो कुछ पा लिया है उसे पाने में मैंने जितना दीर्घकाल व्यतीत कर दिया। गांधीजी विनोबा को ऋण मानते थे। और विनोबा उन्हें अपना गुरु। पहले विनोबा स्वभाव के तीव्र थे और अग्रिय सत्य बोलते हुए तनिकभी धागा-नीछा नहीं करते थे। विनोबा का कहना है कि नम्रता तो मैंने गांधीजी के नरणाँ में बँठकर सीखी। शब्दों को सहज मात्र से तोल कर वह तनिक भी शक्ति, नित्य प्रार्थना और दुःखियों की सेवा—ये सारी बातें जिन्होंने मे गांधी के प्रास-स्पर्श से अनायास ही साकार हो गयीं।

बापू के चले जाने के बाद जाने-अनजाने विनोबा के मन में यह ध्यंन चलने लगा कि बापू की सौपी हुई विरोधता की कैसे निमाऊँ परम-धाम में बापू के प्रतिध्विसर्जन के समय हजारी हैं और वे प्रतिध्विसर्जन करते हुए विनोबा को ध्याता भूलकर ईशावास्योपनिषद् का उच्च स्वर से पाठ करते देखा, वे उसी क्षण समझ गये कि विनोबा को बापू के कण-धन में व्यथित हो चुकने की प्रतीति हो गयी है और वे दिग्बत बापू को ससार में

वहुविध साधारण करेगे। 'जयहिन्द' की जगह उनका 'जयजगत' का नारा मानो उनके इसी सकल्प का प्रतीक है। बापू के जाने के बाद विनोबा ने अपने 'सैवा व्यक्ति की ओर भक्ति समाज की' इस सिद्धान्त का एक नये धर्म में विकास किया। समूचे मानव-समाज को उन्होंने व्यक्ति-सत्ता में समेट-सा लिया और ध्वत तक की जीवन पद्धति के अनुसार एकाग्र-साधना का घनिष्ठ श्रेण छोड़ कर लोक-सेवा के व्यापक क्षेत्र में आ गये। 'वन स्टैंप इज इनक' का जैना सापेक्ष विनियोग विनोबा ने अपने जीवन में किया जैना उदाहरण धर्म्य दुर्लभ ही नहीं प्रलम्ब है। काचन-मुनित, ऋषि शैली, भूदान, धामदान आदि के एक के बाद एक जो महान् ध्यादोलन-विचार सामने धायें, वे ध्याये तो गम्भीर चिंतन प्रक्रिया में से किन्तु ध्याये एक के बाद एक स्वाभाविक रूप से। दिल्ली के शरणार्थियों के बीच काम प्रारम्भ करने से विनोबा के कार्य-क्षेत्र की व्यापकता भी गुरु-प्राप्त हुई थी। तब से सर्व-सेवा सध के तपे हुए कार्यकारिणों के अतिरिक्त देश के राज-नैतिक नेताओं के सम्पर्क में भी गांधी और फिर यह सम्पर्क अगत तब अधिकाधिक घना होना गया। पश्चिमी ने विनोबा के सम्पर्क में आने के बाद जो लिखा वह विनोबा के मूल्यांकन को उजागर करनेवाला मिला लेख ही है। उन्होंने कहा, 'मैं थोड़ा बहुत दुनिया के अन्य देशों से भी परिचित हूँ। मैं उन तमाम लोगों से मिला हूँ जो बड़े कहलाते हैं ... लेकिन जब कभी सोचता हूँ कि किसी और देश में विनोबा—जैना ध्यादमी है या नहीं तो मुझे बँसा कोई ध्यामी नजर नहीं आता। ... ऐसे ध्यादमी के काम का ध्याज करना तो बहुत मुश्किल है। ... इसीलिए मैं कहता हूँ कि अगर कभी किसी सच्चे इतिहास की सृष्टि हुई तो उसमें विनोबाजी की बड़ी जगह होगी। भूदान ध्यादोलन एक प्रसिद्धि का काम है। इस ध्यादोलन को बड़ी सफलता मिली है। ... लेकिन उसमें भी महत्वपूर्ण परिणाम जो इस ध्यादोलन का मिला है वह तो उसके द्वारा निमित्त वातावरण है।' ...

प्रायः लोग कहते हैं—गांधीजी का मुख्य विचार सफल नहीं हुआ और विनोबा का भूदान ध्यादोलन भी सफल नहीं हुआ। इस

वाक्य में अनेक भ्रष्टाचार्य उत्तर हैं। किन्तु सर्वाधिक भ्रष्टाचार्य उत्तर तो यह है कि जो जहनि-यत इस सवाल के पीछे है, उस जहनि-यत से देखा जाये तो कोई चीज सफल नहीं हुई। केवल व्यक्ति नहीं धर्म, दर्शन, इतिहास, धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र और सबसे अग्रक धर्म जानेवाला विज्ञान सभी सफल हुए हैं। प्रभु ईसा का क्या हुआ ? मोहम्मद साहब के अनुयायियों का क्या हुआ ? मानव के माननेवालों का क्या हाल है ? इतिहास को जो कभी सफलता की मूर्ति कहा जा रहा था, कब तक वे दर्शित नहीं किया गया। और बाद में जिस सु-प्रेषक की तुल्य श्रेणी थी, उसके प्रति दिन बँसे कटे ? सारे श्रेष्ठ लक्ष्य, सपने बने हुए हैं। क्या इसीलिए उन लक्ष्यों को लाने में जुट जानेवाले और उनको लाने में सच्चे पथ का प्रदर्शन करनेवालों को छोड़ा जा सकता है ? गांधी तो भले ही अपने द्वारा लाये हुए स्वराज्य के ध्याते ही चले गये, लेकिन लेकिन तो फलित के सात बरस बाद तक टिके रहे थे। फिर भी उनकी सार्थी हुई शक्ति का चेहरा उनके सामने से लगाकर प्राज तक जितनी बार जितना अमानक और विद्रुप होकर हमारे सामने ध्याता है। गांधी सात बरस और रहे तो वे देश को और जितना क्या देने यह भी कौन वह सकता है। किन्तु उन्होंने साध्य और साधन की एकता की जो बात सिखायी और विनोबा ने जो उसे अपने दम से विकसित किया वह सारे सगर में दुर्बलों को सहारा दे रही है और भारत में परिवर्तन की गति तेज है। अर्थजी में जिसे 'राज्यधर्म' कहते हैं, विनोबा धर्म और ज्ञान की भ्रमज गंगा में घिसे हुए शालिग्राम हैं—'जितना ही वह किन्तु धारणा है, हीर किन्तु बल है, जो कुछ कुछ नहीं करते, कुछ समयात् नहीं करते। इसीलिए वे शून्य भी उनकी ही ध्यादानी से हैं, जिनकी ध्यादानी से पूर्ण। वे क्या नहीं हैं ? वे विमान हैं, मजहूर हैं, भंगी हैं, बतैये हैं, जुगहाड़े हैं, गाएक हैं, विद्वत् हैं, साधक हैं, शिशाशास्त्री हैं, धनेक भाष्यायों के ज्ञानी ही नहीं धर्मज हैं—बहा जा सकता है कि उनके बुद्धि और हृदय के गुणों का पार नहीं है। विनोबा में मानदेय और तुलसीदास, नबीर और शरणाधर, भूदान और गांधी और और मार्ग सभी प्रभा के दर्शन होते हैं।

आन्दोलन तीव्र करने की तैयारी

द्विहार के वर्तमान सभ्य को तीव्र से तीव्रतर बनाने के लिए २ फरवृबर गोबी-जयन्ती से प्रदेश भर में हड़ताल, बन्द, बहिष्कार और धरने आदि के कार्यक्रम दिये जायेंगे और उसके धनगत सभी सरकारी, सभ्य सरकारी संस्थाएँ ठग किये जायेंगे। यह निर्णय आन्दोलन के समर्पित राजनीतिक दलों की राज्य स्तरीय तदर्थ सम्बन्ध समिति और प्रदेश छात्र सभ्य समिति की सञ्चालन समिति के सदस्यों की अध्यक्षतामें के साथ हुई सयुक्त बैठक में लिया गया। बैठक में जो सभ्यमा डेढ़ घण्टा तक चली, २३ और ३० अगस्त को घटना में हुए राजनीतिक कार्य-कर्ताओं के सम्मेलन के समर्पित चारों राजनीतिक दलों, जनसभ, सयुक्त समाजवादी पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी, स एनके काँग्रेस द्वारा आन्दोलन को तीव्र बनाने के सम्बन्ध में

रखे गये विभिन्न सुझावों पर चर्चा की गयी और अध्यक्षताओं की सहमति से एक सयुक्त प्रस्ताव तैयार किया गया।

प्रस्ताव में कहा गया कि आन्दोलन के सम्पूर्ण तत्वों की प्राप्ति के लिए भूमिहीनता निवारण, खेतियार मजदूरी (जिसका एक योग्य हिसाबा भ्राम्य हो ताकि वे पेट भरने की बिना से मुक्त हो सकें), किसानों के लिए नहर देट, मालतुजारी देट आदि में वृद्धि के निराकरण, मूदरारी से मुक्ति, मादिकारियों की तात्कालिक समस्याओं तथा ऐसे सभी नामों की जिनका सीधा सम्बन्ध प्रदेश की गरीब जनता से है, कार्यक्रमों में जोडा जायेगा।

प्रस्ताव में कहा गया है कि सितम्बर मास में २ फरवृबर से चलाने जानेवाले तीव्रतर कार्यक्रम की प्रदेश भर में व्यापक तैयारी

की जायेगी। इस सम्बन्ध में पचास से लेकर बिसा स्तर तक नियमानुसार जन सभ्य प्रीर छात्र सभ्य समितियाँ गठित की जायेंगी। सत्याग्रहियों की भर्ती का काम भी बड़े पैमाने पर चलाना जायेगा। सितम्बर के दूसरे अठ्ठा-वाडे में किसी एक दिन बिले छोड प्रयुक्तकों के मुदरासयों पर प्रदर्शन का आयोजन किया जायेगा जिनमें किसान, खेतियार मजदूर, छात्र, युवक व महिलाओं को भी बड़ी संख्या में शामिल किया जायेगा। इसी प्रकार दौधोगिक क्षेत्रों में भी मजदूरी के अनुस निकाले जायेंगे और समाजों का आयोजन होगा। बैठक के बाद आन्दोलन के एक प्रवक्ता ने बताया कि २ फरवृबर से चलाने जानेवाले कार्यक्रमों की वित्तुत रूपरेखा भी शीघ्र ही तैयार की जायेगी।



जानवर्न की परिभाषा में कहा गया है, 'साक्षर रिशे परि गोडी न रिशे, त्या परि ज्ञानवर्न', मगर यहाँ तो साक्षर भी दिखती है और उसकी भण्डारिया भी।

विनोबा ने वेद, उपनिषद्, गोसा, बाइबिल, कुरान, धम्मपद, विनय पत्रिका, विष्णु-सहस्रनाम आदि बिलती ही ग्रन्थ—अबुधियों का मन्थन करके उनके रत्न हमारे सामने रख दिये और १४ वर्ष देश में धूम-धूम कर समुची किया बदल दी और फिर एक दिन धरने इन साके काम का बिना कोई बोझ माने परधाम में वापस जाकर बैठ गये और सत्रकें साध करने लगे, सत्रकें बनाने लगे। इस धरधि में उनका चिन्तन धरणा रहना है और विष्णु-महामनाम के उच्चार के साथ म्भुत शरीर-भ्रम—मे से मुहम में प्रवेश की प्रथिया तीव्रतर होती जा रही है। परधाम में जो सत्रकें बनी हैं, उन्हें वे 'मुक्ति-पथ' कहते हैं, 'दिव्य-पथ' कहते हैं। ध्रव वे प्राय बुध नहीं पठने, बुध नहीं लिखने। देवतासरी में धरनेवाले प्रज्ञाचार उलट लेने हैं और साक धरनों में निश्चर भेजे गये पत्र पढ़ लेने हैं। सांग उनके पाम लिखकर पूजते हैं तो वे कोलकर उत्तर दे देते हैं और परधाम

में जिसानुओं को कभी कभी विभिन्न विषयों पर प्रवक्ता भी देते हैं। ध्रव वे शीघ्र समास ले चुके हैं किन्तु उन्हीं के शब्दों में उनकी किया कम हुई है, कर्म तो सतत चल रहा है।

दाया धर्मधिकारी ने एक बार विनोबा का हाँ हवासा देते हुए कहा था कि, "वे शरीर में हैं, इसलिये 'काय स्व' हैं—देह के हैं इसलिये 'देश-स्व' हैं और सबसे पहले और सबसे अधिक धरने हैं, इसलिये 'स्व-स्व' हैं। इसी 'स्वस्व' किन्तु धरयत्न दुर्बल शरीरशाली विनोबा से एक दिन धानु में पूजा, 'तुम इतने दुर्बल होकर भी इतना काम कैसे कर लेते हो?' तो विनोबा ने कहा, "काम करने की इच्छा शक्ति से।" विनोबा की यही सधम धीर प्रबल द्रव्या शक्ति देण ही नहीं धनेक धरनों की विचलित दिये है। उन्हींने मूहम स धरन मूहम में प्रवेश करने के बाद भी स्थूल धगत पर बिचार करना बन्द नहीं किया है। उन्हींने कहा है कि जनता को धाम्यनिभर बनाया जाय; जिससे देक दनों की नीति से मुक्त रह सके और गाववालों की राज्य के धनावायक इस्तरण से बचे रहकर सचची

स्वतन्त्रता का उपयोग करने का धरधार मिलना रहे। सत्रप में कहें तो ध्रव यह हृष्य कि वे देव में धाम-स्वरात्म को धावदपक मानते हैं और इसीलिए एकनिष्ठा और एकाधता के साथ धाम-स्वरात्म आन्दोलन पर वे इन दिनों जीवन के धरम बिदु धरण का भी धिन्तन कर रहे हैं और धरने हाए-धण को उपयोगी बनाने के लिए सधने से भी अधिक जागत हैं। प्रभु इत महाप्राण विराट ध्यन्तिक को सत्सर के लिए धानुयु करे।

—भवानीप्रसाद मिश्र

उपवासदान

सर्वोदय पथ में
उपवासदान का
संकल्प करें
ध्राज ही फार्म भरे।

पगली घंटी, पागल लड़के, पगलायी सरकार

झाट घग्गस्त गमलत हो गया है। रात के दो बजे हैं। पटना से भागलपुर आनेवाली गाडी से बिहार प्रदेश सर्वोदय मण्डल के मंत्री देवानन्द मिश्र के साथ भागलपुर स्टेशन पर उतरता हूँ। स्टेशन के बाहर एक सास किंस का तोलिया मरो पर लपेटे तरुण शांति सेना का स्कार्फ गले में लगाये सैकड़ो युवक इधर-उधर घूम रहे हैं—उनमे से रामवृद्धसिंह मुझे पहचान लेना है। आज ८८२ छात्र भागलपुर जेल से मुक्त हुए हैं। अधिकांश स्टेशन पर नारे लगाते हुए अपने घरों को जा रहे हैं।

चार घग्गस्त को भागलपुर जेल में साठे पाच बजे तबेरे लाठीचार्ज हुआ था। कुछ पायल युवकों से मिलना चाहता था किन्तु नौ घग्गस्त को छ बजे तक किसी ऐसे छात्र को न खोज पाया। शाम को देवानन्द भाई सूचना देते हैं कि गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र भागलपुर के मंत्री बेदारप्रसाद चौरसिया 'मीता' के घग्गस्त जेल में हैं और उनका कार्यालय ही छात्र मधर्ष समिति का कार्यालय है, चहरी चलें।

गांधी शांति प्रतिष्ठान का कार्यालय पटल बागू रोड पर है—द्वारों की भीड़ है—सहस्रां केन्द्र के अन्दरवाले कमरे में प्रवेश कर जाता हूँ तो एक दृश्य देखकर कुछ मिथिल घग्गस्तचर्चे होना है। पहली दृष्टि पडती है विनोदकुमार नामक २५ वर्षीय वी. एस. सी. अतिम वय के एक छात्र पर। विनोद घग्गस्तने से लुंरी लपेटे जेल में मिले कबल पर प्रश्नते हैं, हाथों में पट्टिया बंधी हैं, सड़े नहीं हो मकने, दोनों पैरों में लाठियों की तीस चोटें हैं। दुबले-पतले हृदियों के डानेपात्र, बड़ी हुई दाढ़ी, बिबाह हुए कुल १५ दिन हुए हैं। नवविभ्रमिता पत्नी से मुखराबर दूर से नमस्ते की। अचक पिता को विनाअज्ञापे पटना सत्याग्रह में भाग घाये थे। विनाभी पड्डास में उदास बँधे हैं। विनोद अभी भी महीनो चल नहीं पायेंगे। इनका घरपात्र था कि इन्होंने जेल में घग्गस्तार के सिग्ड घग्गस्तार प्रशासन किया था। बरौती प्रवड् छात्र मधर्ष समिति

के मधोजक हैं। अग्गडा बॉनते हैं। बड़ी-बड़ी कान्नी आंखों से मर-मिटने की इच्छा भासती है—जे. पी. उनके घग्गस्त हैं।

दूसरा पागल

“जी, मेरा नाम रामप्रवेश विद्याधी है। आयु २१ वर्ष है। गया जिले के गानोपुर का रहनेवाला हूँ। राजा शिवप्रसाद नातेज, भरिया में इण्टर साइस का छात्र हूँ। १८ दिन पहले बिबाह हुआ था—पिता की बड़ी सतान हूँ। चार घग्गस्त को जब मैं सो रहा था, नुरलहसन घग्गस्त नामक महायक जेलर महीयस मेरे बाढे में १० सिपाहियों के साथ घ्राये। ‘बहा है साला विद्याधी ? साला छू रा रखना है, फँक दो साले का सामान’ कहकर मेरा मामान फँका जाने लगा, बूटो की ठोकलें पडने लगी। लम्बी-लम्बी सीटिया बनी। पगली घंटी बजी, बाहर लाकर पीटा गया फिर घसीटकर नीम के तले पीटा गया और वेहीय हो गया—तीस घण्टे पत्थरों पर पडा रहा, बिना दवा, बिना पानी, बिना भोजन के। सहायक जेलर रमेशचन्द्र सिन्हा ने पटब-पटक कर भारा, मध्यक जेलर नन्दलाल भा ने बूटो से रौदा, ठोकर मारी, ५६ लाठियों की चोटें हाथों-पैरों, अघासों, टलनो व पीठ पर। मेरा बमूर यह था कि मैं स्वस्थ हूँ, जरा तगडा हूँ। बड़ी हुई दाढ़ी है, घग्गस्त को सहन नहीं कर पाता हूँ। मैंने ‘माठी गोती हिसा लूट, नहीं बिभी को इसकी छूट’ के नारे लगाये थे। मैं आज भी लगाता हूँ, लगाता रहूना—जब तक जीवित हूँ अन्त्याय का विरोध करता रहूगा। एक दिन ऐसा आयेगा—जब हम देश से अग्गटाबर दूर हो जायेगा—मुझे पद नहीं चाहिए। मैं भारत माता का सेवक ही रहना चाहता हूँ। और कुछ मुन्नैने ?” मैंने पीठ ठोकी—घोर कुछ डबडबायी धरलें नीचे की भूक गयी।

तीसरा पागल

“सर, मगर, मुनिने” — मैं मुझकर देवता हूँ। छूट लम्हा, लम्बी दाढ़ीवाला बरुणाण कुमार सिन्हा उदास चहारा निचे मेरी घोर

बड रहा है। स्टेशन के पासवाले होटल में घाट बजे रात मेरी उससे यह दूसरी भेंट है। अभी एक घण्टे पहले संधर्ष कार्यालय में पूरे जोश-खरोश में जेल की यातनाओं को मुखराने कर मुना रहा था। समीप ही टूटा हाथ गले में लटकाने रामप्रवेश विद्याधी खडा है—बहु भी उदास है। पूछने पर पता चला कि उसके पिता जो सीनियर मार्केटिंग घग्गस्त हैं उसे लेने घ्राये हैं। उसकी मा ने अवचार में पड लिया है कि जेल से सारे विद्याधियों को छोड दिया गया है। बरुणाण जेल से छूट कर अपने माता-पिता के पास न जाकर, संधर्ष कार्यालय में छिप गया था। वह १० घग्गस्त की जयप्रनाय से मिल लेना चाहता था। उधर उनको मा ने घग्गस्त छोड दिया है। पिता बिना खाये पिये घ्राये हैं। बरुणाण को मीने से लगाकर ही उन्होंने जेल पिया है। स्टेशन पर उसके पिता भी सिन्हा उसका हाथ पकड कर लीच रहे थे। यह मेरी घोर डबडबायी घ्रायो से देखता है, मैं घ्राता दे देता हूँ। बरुणाण भाग कर पर पकड लेता है। फूट-फूट कर रो पडता है।

उसके पिता उसका हाथ घसीटे जा रहे हैं। मैं, देवानन्द भाई, बेदार पाडेव, मंत्री, भागलपुर जिला सर्वोदय मण्डल एक देवचन्द्र मिश्र घ्रासुभरी घ्रायो से उस लम्बे-चौडे, स्वस्थ एव सबलरी छात्र को जाते हुए देखते रह जाये हैं।

चौथा पागल

दाहिने हाथ की हड्डी टूट गयी है। इ गलिया मुठी हुई हैं। चौथा मीना, ऊपर की छुंटी गयी मुँह, स्वस्थ बलवान बाया। हाथों, पैरों, टलनो, जांघों घ्रादि में अतगिनत लाठियों के निश न, एक घाब सर पर भी। जाँघरी बाहिरत भर जगह कान्नी पड गयी है। मुखराने हुए नन्दन ठाडुर मेरे सामने मुठी मियेदने हुए बैठ जाते हैं—मैं पूछता हूँ—‘घात तो बागू गड्डर जान के हैं, घ्राप रँगे गिट मने ?’ नन्दन बागू की उमर २८ वर्ष है, बापी मधर्ष सेना में मैरंड मेरिटमेंट रहे हैं, एक बेटा, एक बेटो के पिता है। उनका एक भाई

धृष्टा हो गया है। इनके पिता लीलानन्द ठाकुर ६० वर्ष के वृद्ध हैं। पर वी गारी जिम्मेदारी नन्दन भाई की ही है। सुन से समय पट्टी भूँजी दिखाने हुए जानचीत करते हैं। (ये मधुबनी जिले के निवासी बी. ए., बी. टी. हैं)। 'योगी भाई', प्रसन्न मे लोगों को पिटाई पूर्व नियोजित दण्ड से ड्रैड है। जिस दिन पगली सरकार की पगली पट्टी जेल में बजती थी हम सब भाग कर अपने कमरी में चले जाते थे। उस दिन तो हमारे साथी सोकर भी नहीं उठे थे कि 'सर्ज' होने लगी। बाईं नं० ३०, ३२, ३४, ३६, ३७, ३९, ३९ में चरित्र हूँ। (वे लोग नाम से लेकर हम लोगों को खोज रहे थे। सर्ज के नाम पर हमारे शासन की उठा पट्टा हो रही थी। हमारे पैसे व सड़िया बटोरी जा रही थी, सिपाहियों के साथ बँदी भी उठे लेकर छाये थे। जेल के मँड की उठे लिये हुए थे। एकाएक सीटी बजने लगी। थोड़ी ही देर में पगली पट्टी बजी। हम सबने भागना शुरू ही किया था कि हवालदारचोर मेरे पास धाया और घोसा कि, 'धापको एम वी साहब चुना रहे हैं।' मैं निताव लिये खड़ा था, जैसे ही चल दिया। विषेण कॅंटीन कारा, भागलपुर के पूरव के द्वार पर पहुँचा ही था कि चौके ने पुधा कि 'तेरे लीडर का क्या नाम है?' मैं किसे लीडर बना देला? हय सब लीडर ही थे। धाय्य का विरोध करते थे। मेरी चुपि से चौब को क्रोध आ गया। पगली भणकते ही १०-१५ सिपाही और धा गये और मुझे जानवर की तरह मारा। मैं भगा ही गया था। वे मारते रहे बूटो से, लाडियों से। मैं द्रष्टवैतन था। सभी चौबे बोला 'मार मर गया लगता है। साता धरणात्म मे मर जायेगा। लपेट दो लीपिया, पहना दो चट्टी साते को।' भाईजी मैं दो दिन तक टट्टी पेसाव नहीं कर पाया—इतनी ठोकरें मेरे पुलागों में मारी गयी हैं। बाद में सानी पीठने के ३० घंटे बाद एम वी धाया और बोला, 'जैर का सुन करते गये थे। मज्जा चला?' और चला गया। भैया, उस हृष्यारे रेषेधन्द सिन्हा के पूर्वूँ; यह बालबच्चेवाला है, उसे किसी ने धरणावद भी कहा हो। वृत्त नं० बहुत दूर की बात है। यहा देर पर, मरने नहीं है—एक न एक दिन इस धरणावद का घाल होगा ही।' तब तक कोई बुगाने का गया और ठाकुर भाई शमा मग कर चले गए।

संघर्ष व सहयोग साथ-साथ

वाढपीड़ित क्षेत्रों में जे० पी० का दौरा

श्री जयप्रकाश नारायण ने ५ सितम्बर में प्रदेश के वाढपीड़ित क्षेत्रों का प्रमण धारण किया है। कार्यक्रम इस प्रकार रहा—

५ सितम्बर को जयन्ती जनता एक्सप्रेस से समस्तीपुर के लिए प्रस्थान, वहाँ से नार द्वारा तुरन्त ही दरभंगा से लहिया गया वृद्ध कर सावैजलिक सभा का सम्मेलन, ६ सितम्बर की सुबह कार द्वारा मधुबनी के लिए प्रस्थान, वहा दोपहर में कार्यकर्ताओं के समक्ष श्री धाम की सावैजलिक सभा में भाषण, ६ सितम्बर की राति को जानकी एक्सप्रेस से

श्री जयप्रकाश नारायण ने समस्तीपुर से प्रागे वाढपीड़ित लोगों से जानचीत की व सरकारी राहत कार्यों की जानकारी ली। सड़क की मजह को छुटा हुआ बागमती का पानी कई जगह मड़को परसे वह रहा था व जिन्हारे की मिट्टी तेजी से बट रही थी। लहियासराय की धामभामा कोई सवा-साव लोग उपस्थित थे। वहा जयप्रकाशजी ने कहा, 'वहा मुख्य प्रदन बांड से उत्पन्न सधिया है, जिससे जनता को बचावे से छात्र एव जन-सधर्ष नसिनियो को बूट जाना है। छात्र बहु सोचने का समय नहीं है कि इत सरकार ने हम पर मोलिया चलायी है साडिया चलायी हैं तो उसके साथ सहयोग क्यों करें? यह दूसरी बात है। सरकार को बरे हम तो अपनी नागरिक जिम्मेदारी निबाहन जभा है।' उन्हीने धाम कहा कि इस मधर्ष का चरित्र ही ऐसा है कि सधय व सहयोग साथ-साथ चल सकता है।



दरभंगा म उहोंने कहा कि वर्तमान मधर्ष लम्बा चलनेवाला है। विधानमभा के विघटन के बाद भी अगामी चुनाव की तैयारी में लगना होगा। छात्र व जनसधर्ष समिनियो चुनाव पूर्व का ताक-शिक्षण का कार्य करेगी ताकि इस समय स्वायत्त न देने वाले विधायकों का एक भी बोट न मिले। कांग्रेस सदा के तरह बोट हासिल करने के लिए करेगी सर्ष करेगी, हथकड चलेंगे। धतएव जनता का सगठन धारणक है। कार्य सजत भी सजत नही जा लाण्ड नहे कि विधान सभा विघटन न होने से कांग्रेस को हानि है।

लहिया के लिए प्रस्थान, ७ सितम्बर की दोपहर पुणिया में कार्यकर्ताओं की एक बैठक को सम्मोषित करने के तुरन्त बाद कटिहार, वहा धाम को गाव बने आमसभा में भाषण, ७ सितम्बर की राति की ही भागस पटना के लिए प्रस्थान करके ६ सितम्बर की सुबह समस्तीपुर—नारायण एक्सप्रेस से पटना पहुच गये।

समस्तीपुर में अपने सावैजलिक भाषण के दे के वे विधेयकर पुनिस इधिकाऱियो व मैजिस्ट्रेटो से धाग्रह किया कि वे बाल व इतिरक प्रदर्शनकारियो के प्रति धनत्र भाषा का प्रयोग न करें, न उन्हे निर्दलनापूर्वक पीठें। यह व्याप व कानून के सभी भाग्य सिद्धांतों के विरुद्ध है।

गोड्डा में एक आन्दोलन भरा दिन

गांधीधाम, गोड्डा के भाई महावीर भा मुर्खे भागलपुर से गोड्डा ले जाने के लिए रूके थे। दोपहर को यहाँको की सभा सम्बोधित करने के पश्चात् गोड्डा प्रस्थान किया और ७ बजे शाम पहुंचे गया। भागलपुर के छात्रों की बहुसूत्रित विदाई, उनके सघर्षरत जीवन की भाँखिया, वहनों, बच्चों एवं बूढ़ाधमों की प्रत्येक मुखर स्तुतियाँ रास्ते भर भक्तभरोरती रही। लगता था, वहाँ के युवक एवं युवतियाँ चन्द दिनों में भागलपुर का भाग्य बदल कर रख देंगे। किन्तु गोड्डा पहुँचने पर जिस धार्मिक संगठन शक्ति, जनसहयोग एवं सशक्त मादुल्लेखन का दर्शन हुआ, वह न केवल बिहार मप्रिनु देश के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान का पात्र है।

गोड्डा सपर्यं कार्यालय के बाहर जब रिश्ता रखा तो उसके धास-धास प्रसख्य युवा साथी घूम रहे थे। कार्यालय कक्ष में शान्ति-कारियों के चित्र, पोस्टर, लिखे हुए पट्ट आदि रखे थे। दीवारों पर लोकनायक जयप्रकाश का नाम मोटे अक्षरों में अक्षरपा बड़ा रहता था। कुछ मिन्टो में ही उस कक्ष में कुछ प्रोफेसर, वकील, नागरिक, एवं युवा भाई-बहन इकट्ठे हो गये। १५ अगस्त का कार्यक्रम बनना प्रारम्भ हो गया। इस छात्रो-नेता के प्रेरक एवं सचाल परगना के युवक नेता रत्नेश्वर भा के धाले ही मार्गदर्शक पर वक्ताव विचार होने लगा। 'हम अपना अण्डारोहण अलग और सरकारी अण्डारोहण स्थलों के समीप ही करेंगे। हमारे भडे का धारोहण रत्नेश्वर भा ही करेंगे। हम एक प्रधान की निकासेमें 'एकमत हीकर निर्णय' लिखा गया। सपर्यं करने के लिए, रत्नेश्वर भा, धीला रामी, माधव चौधरी और मेरा नाम रखा गया। रात्रि में मण्डल जुलूम एवं गारुक्तिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया और ७ बजे सतिम विरामित हो हो गयी। अन्ततः अन्तरे सपर्यं कार्यालय के कक्ष में प्रत्येक रात्रि बिजली गयी और छात्रों किन्तु सात्त कार्य निवासी, रामी, धीला रामी धनुशासन डंग में अभ्यन्त हो गया।

गांधीधाम के चलकर जब हम गोड्डा सपर्यं कार्यालय पहुँचे तो विद्यार्थियों की

अपार भीड़ विभिन्न कार्यों में लगी थी। कुछ ही देर में प्रयात फेरी के लिए युवक बन पड़े। 'लोकनायक जयप्रकाश जिन्दावाद' के नारों से गोड्डा का वायुमण्डल गूँज उठा। जुलूस धामे बढना गया। छात्रों-छात्राओं, एवं नागरिकों की टोलियाँ जल्म से जुडती चली गयीं। नगर के विभिन्न भागों से मूमता हुआ जुलूम जब ग्रीहीद स्वम्भ पर पहुँचा, तो वहाँ का दृश्य देखकर मत कुछ देर निराशा में डूबा रहा। अन्तरे जनसमूह ने सरकारी परेड व अण्डारोहण देलने के लिए आवाकाश गांधी मैदान की घेर रखा था। किन्तु, जुलूस के ग्रीहीद स्वम्भ के समीप पहुँचते ही हवा बदलने लगी। युवा एडवोकेट पंज कुमारसिंह की युलन्द झावाज भाईक पर गूँजने लयी। टोलियाँ बढा-बढा कर छात्र-छात्राएँ ग्रीहीद स्वम्भ के समीप धाने लये। बहनों की एक टोली के ग्रीहीद स्वम्भ ने सरकारी अण्डारोहण के लिए रोचना चाहा किन्तु उन्होंने दो फलांग का चक्कर लगाया और समूची टोली छात्र-जन सपर्यं सतिमित द्वारा प्रापोजित उत्सव में शरीक हो गयी। ६ बजे अगस्त बगले में दो अण्डारोहण होने लये। एक धोर तुमिल पर बैठे अक्षर, उनकी बीविया और बच्चे, कुछ उनके धाने लींग और सामने राइफल लिये पुनिस के जवान। भूतपूर्व वित्तमन्त्री हेमन्त कुमार भा अण्डारोहण करनेवाले थे। किन्तु जनमाओवा की खबर उन तक पहुँच गयी थी। उन्होंने डाक बगले में पडे रह कर प्राराम करने हुए १५ अगस्त मनाना ही उचित समझा। तब अण्डारोहण गोड्डा के ए००-टी०० की बनना पडा। ६ बजने ही गोंधी दापी गयी। सरकारी अण्डारोहण केवल पुनिस के जवानों के लिए हो रहा था। दूसरी ओर जनता के त्रिय नेना रत्नेश्वर भा अण्डारोहण कर रहे थे त्रियमें लगभग १५ हजार छात्र-छात्राएँ एक नगर के लोग भाग ले रहे थे। 'लोकनायक जयप्रकाश जिन्दावाद' के मण्डनदी नारों ने सरकारी उत्सव को धार भी फोड बना दिया। देवारे अक्षर पर रत्नेश्वर भा, पंजकुमारसिंह, माधव प्रसाद चौधरी (मरीक) छात्रसपर्यं सतिमित, बीगा

रानी एवं प्रबुद्ध नागरिकों ने संकलों की भाषा में वास्तविक अण्डारोहण के महत्व पर प्रकाश डाला। लोग ग्रीहीद-स्वम्भ छोडकर जाना नहीं चाहते थे। 'छात्र एकता जिन्दा-बाद', 'भारतमाता की जय', 'महामा गांधी की जय', 'लोकनायक की जय' के नारों के साथ ग्यारह बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ। 'हम नया सबेरा लायेंगे, मजिल धायेंगी-धायेंगी' गाथा हुआ जनसमूह नगर की घोर चल पडा।

दोपहर के बारह बज चुके थे। बिना धायें-धिये युवक सड़कों पर यात्रा कर रहे थे। कबजों से मिलते हुए जुलूस जेत एवं धाने की घोर मुद्रा। कुछ बतों में अन्तरे लगभग-दो हजार विद्यार्थी भासपास से धा मिले और 'जेल का फाटक टूटेगा, भाई हमारा छुटेगा', लोकनायक जिन्दावाद', के नारे संगते हुए धाने की ओर बढ़े और उसको तीत धार से घेर लिया। मैं धाने के अक्षरों की वेत चीत बचने अक्षर की घोर बडा तो बाना कि धान्योलन के गीन महारथी पंज, अक्षरी और देवेन्द्र पाण्डे, सीनो वकील, पहले हे ही धान्यधिकारियों से भिडे हुए हैं। 'मे तुम्हारे दामाद हैं, उन्हें रगना नहीं जानते तो मुक्त कर दें'। पंज भाई बड़े जा रहे थे। सड़क पर सडे ४ हजार विद्यार्थी 'जेल का फाटक टूटेगा, भाई हमारा छुटेगा' का मण्डनदी नारा लगा रहे थे और जेल का फाटक सवमुच टूट गया। ४ विद्यार्थी मुक्त कर दिये गये। छात्र इन्तरे धोर पर उठाये हुए ग्रीहीद की घोर बडे चले।

ग्रीहीद स्मारक पर 'गरावमन्दी', 'परीक्षा-बन्दी' और 'निन्दा-बन्दी' की घोषणा हजारों हाथ उठाकर की गयी थी। पंज का विद्रोही स्वर वाय-वाय गुँजा था। जहाद स्मारक में युवा जुलूम रत्नेश्वर भाई एवं पंज भाई के साथ मण्डन-मन्तो की घोर बडा। किन्तु मण्डन-मन्तो के सतिम स्वन् धापर जुलूस में सतिमित हो गये ? उन्होंने घोषणा कर दी कि वे कौं और धया कर लेंगे। मण्डन-मन्तो के अन्तरे ग्रीहीद की युवा नर माला-बन्दी। मन्तो में युवा न 'धायें-धिये' के

एक आन्दोलन भरा दिन....

गफूर, हेमन्त कुमार भा, इन्दिरा गांधी सारे नगर में (सबकी) धर्याचार भचाते, सोषो को गिरफ्तार करते, गोलिया चलाने का हुकम देते प्रमत्त करते हैं। हजारों आवाल-बुद्ध इनके पीछे पीछे चलते हैं। हर मोड़ पर प्रसन्न बहनें इनका स्वागत करती हैं, बधाई देती हैं और अन्त में जुलूम विमजित हो जाना है। वास्तविक अजिबारी मेंच खेलेने प्राये ही नहीं थे।

मशाल जुलूम निबन्ध चुका था। प्रसन्न सुबको एव नागरिकों ने बिहार विधानसभा की अर्थी जला दी थी। गांधी मंदान के एक किन्तारे पर माइकिली के पुराने टायर (उन्ही से बनी मशालें लेकर सुबक निकले थे।) एक बांसों की गन्धिये के डेर धू-धूकर जल रहे थे। जूलूस लौटकर सड़क पर था गया था। मेरे कुछ एडवोकेट साथी धीरे-धीरे पीछे चल रहे थे। कुछ छात्र भी साथ थे। 'दाखीवाले (यानी मैं), रत्नेश्वर और पक्क को पकड़ लो सब ठीक हो जायगा—पकड़ लो मांसों की मारो हुरामखोरो को' की आवाजे सुँजी। मुडकर देला ही थाकि धुप अन्धकार हो

गया। सारे शहर की बिजली ने गुल होकर सरकारी हिमकी के भिरोहु बनाम पुलिस को अन्धेरे मचाने की छुट दे दी। अन्धेरे का लाभ उठा कर मैं कचहरी की एक दीवाल के पीछे छिप गया। भागती हुई सशस्त्र पुलिस ने कुछ छात्रों को अन्धकार में पकड़ लिया। धीरे-धीरे पुलिस का घेरा बढता गया। आगे-आगे दण्डधारी, पीछे राइफनधारी, उनके पीछे और पर सवार पुलिस अकसर आगे बढ़ने लगे। पक्क भाई के निर्देश पर छात्र पीछे हटते गये। पुलिस आगे बढ़ती गयी गालिया देती गयी और सधर्ष कार्यालय को घेर लिया। प्रमुख छाननेवा आहोर भाई, पक्क भाई गविदानन्द मण्डल, महावीर भा आदि सधर्ष कार्यालय में दूरहुँ हो गये। सधर्ष कार्यालय लचालख भर गया। बाहर सशस्त्र पुलिस राईकलें लेकर बैठ गयी। अदर कविताए हुई भापण हुए, आतिशारी निशंभ हुए और गोष्ठी विमजित हुई। १६ अगस्त का परीक्षा बहिष्कार का कार्यक्रम बनाकर हम साग गांधीग्राम प्रा गये।

स्थान-स्थान पर आंदोलन में सक्रियता :

पनवाड में १ सितम्बर से विद्यापिथो का शराब की दुकानों पर घरना चल रहा है। पनवाड व भरिया की लगभग सभी शराब की दुकानें बंद हैं। इस मिलसिले में ६ गिर-पनारिया हुई हैं।

हजारीबाग में भारत सुरक्षा नियम को भंग कर छात्रों ने जुलूम निवाला। नगर में वई भागों में पुलिस के बड़े प्रबध थे। ६ गिरफ्तारिया हुई।

पटना में आतिश गुरक्षा अभिनियम के अनर्गत वदी थी अर्जुनसिंह बिदौरिया व श्री अक्षर हुसेन पिछले कुछ दिनों से बांकी-पुर जेल में अन्नशन पर हैं। उन्हें जेलके नियमानुसार दी जानेवाली मुविधाए प्राप्त नहीं हो रही है।

अगले अंक में...

संभोल गोलीकाँड का

एक नन्हा शहीद

ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण में लगे रचनात्मक कार्यकर्ताओं का हम अभिनन्दन करते हैं

● लाल रंग ● सूती वस्त्ररंग ● इपोसिन ● रसायनों के उत्पादक

आइडाकेम इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि०

(तुरखिया उद्योग ग्रुप)

कार्यालय :

२०३, डा० डी. एन. रोड
बम्बई-१

कारखाना :

खैरानी टैकटाइल
मिन बग्गाउड,
सोनापुर लेव,
बुर्सा, बम्बई

असहयोगी छात्रों के लिए कार्यक्रम

—जयप्रकाश नारायण

बलापूर्वक घोर परीक्षाओं का बहिष्कार करनेवाले छात्र मुझे पूछते रहते हैं कि वे क्या करें। इनमें मेहनत बर्बाद, पढ़ना के छात्र भी थे। जो लोग स्वदेशीय में स्वयंसेवक के रूप में काम करना चाहते हैं उनके लिए काम की कोई बर्बादी नहीं है। जनता की सेवा हो, लोगों की बुद्धिमान पद्धि में घोर फांदोलन को बचाने में, काम धनुर्मानिन घोर मजदूरी रीति में हो, बचपन की बर्बादियाँ हैं। समय के सदुपयोग का प्रश्न मित्रों के लिए भी है, विशेषतः उनके लिए जो फांदोलन को गतिव्यवस्था में रहने दे रहे हैं। कुछ कामों में मित्रों का योगदान विशेष महत्व का हो सकता है। मित्रों को घोर छात्र हटाने से बचना और माँगों में जाबर भी काम करने है। वे रचनात्मक काम भी फांदोलन के उद्देश्यों से जुड़े हैं।

कुछ स्वयंसेवक, जम्बरू हों तो पारी बाँध कर जिज्ञा केन्द्रों में सरकारी दफ्तरी घोर फांदोलनों में जाय घोर दिनभर रहें। शिक्षणपोरी घोर अन्य वित्तीयता तथा धनियतियन कामों की रोकथाम करें। हमसे पूरे सम्बन्धन के साथ कलकट और अन्य अधिभारिता का सहयोग माँगा जाय। जो अधिभारिता घाने अधीन कार्यालयों घोर बर्बादियों में फाँटाकार रोकने के इच्छुक हैं, उनमें घोषणा रखनी चाहिए कि वे तदारता से हममें सहयोग देंगे।

शराब, मास-भाग घोर धर्मीय की दुकानों पर शिरोटिफ का पृथक् उद्देश्य गर-बार को धारकारी से होनेवाली धाय को रोकना है। दून का सामाजिक उद्देश्य इसके साथ अन्य धाय जुड़ा है कि हमसे गणजपोरी की सामाजिक युवाई भी घटेगी। इस समय केवल धनुषीय किया जाय। घाड़कों से प्रायंता की जाय कि वे मास, मास-भाग घोर धर्मीय न खरीदें। क्रिश्चियन न परना दिना जाय, न कोई शारीरिक बाधा शानी जाय।

स्वयंसेवक धारणवक वस्तुओं की उप-लब्धि और दामों के बारे में जानकारी हाँविल

करें। एक प्रयत्न किया जाय कि व्यापारियों घोर धर्माचारियों के सहयोग में उचित दाम पर उचित रीति में बिबी की व्यवस्था हो। ऐसा सहयोग मिले, तो स्वयंसेवक बोझी करें कि जो फाँटते होते हैं उन पर टीक-टीक धमन हो। सहयोग न मिले तो स्वयंसेवक धाना चौकरी दान बचाकर जमापोरी घोर मुनाफापोरी के मामलों का पना सगाये। रिमंघटीन बन्धु, यथाम्भव स्थानीय प्रदायन के सहयोग में लोगों को उचित दाम पर बेची जाय। बिबी का टीक-टीक दूयाव रना जाय, घोर जो मूल्य प्राण हो वह सम्बन्धित कार्यालय में जमा कर दिया जाय। जनसहयोग के जरिये व्यापारियों का मुनाफा-पोरी और फोरबाजरी में रोकने की कोशिश की जाय घोर हमम मिलने पर मुनाफापोरी घोर फोरबाजरी करनेवाले व्यापारियों को पुनित या अन्य सम्बन्धित अधिभारियों के हवाले कर दिया जाय। धार बोई अधि-कारी ऐसे मामलों में आवश्यक कार्रवाई न करें तो इनकी मूचना उच्च अधिभारियों के साथ-साथ स्थानीय छात्र घोर जन सचपं समितियों की दी जाय। जन-सहयोग से ऐसे मामलों में धाने धरना या सामाजिक बहिष्कार जैसी कार्रवाई की जाय।

राशन की दुकानों में धनियतियन बावों की रोकथाम की जाय। जली राशन बाटों का पना साना हम एक काम है। बहुधा दुकानदार गरीब नागरिकों को निषेधित मास के अभाव काम मास में सामान देने हैं। कुछ दुकानदार मूल्य-सूची भी नहीं लगाते। यहाँ भी जरूरत पड़े तो पारी बाँधकर स्वयं-सेवकों को राशन की दुकानों पर बैठकर देयता होगा कि बोई धारणी न हो।

राशनकार बनाने के बारे में कुछ राबारी है। कार्र उन्हीं का बनना है जिनका सहर में कोई स्थानीय पना हो, बोई निय संस्था हो। लेकिन हमारा देग तो ऐसा है कि सहरों में सखे घरीब लोग होते हैं, उनका कोई घर नहीं होता। रिचवापाले, बोमा डोनेवाले

मजदूर, काम की मजदम में मास के अतिवाते दुगरे मजदूर, हर सहर में हजारी को मर्या में होने ही को पुत्रधाय पर मास ही या रिक्ने पर ही रहने है, उनी पर मास है, बरों उनका घर है। मरन दर पर धनात्र मिले, इसकी ब्रह्मण इन्हीं को मरने उसादा है, घोर इन्हीं को राशन कार्र नहीं मिलता। अधि-भारियों से मिलकर, पना सगावक इन लोगों का राशन कार्र दिनाता एक जरूरी काम है। मूल्य कम से यह काम जन-गणपे समितियों का है।

मनदाना सूची में मुफ्त घोर मनदाना प्रथिभाल विधानसभा का विघटन होन के बाद जम्मी या देर में निर मुनास होने। ये मुनास स्वयंसेवक घोर निवृत्त हो, हमसे निर हो बड़ी आवश्यकता है। मनदाना सूची टीक हो घोर मनदानाओं को धाने धरिबारी का मत हो। हमसे निर सहरों के धराना गौर-गाव में स्वयंसेवकों को धराना सूचियों की जीब करके उन्हें मुनास कार्यालयों के द्वारा टीक करना होगा। हमस कार्यकर्ताओं का घर-घर सगपे भी होगा। इसी सगपे से दोरान मतदानाओं को उनके अधिभारों की जानकारी देनी चाहिए।

हरिजनों की कामगीत के परसे दिनाने के बारे सरकारी केमता बहुत पढ़ें हा बुधन है। लेकिन प्रथिभाल घोर मनास की बुध्य-वस्था के कारण हम पर धर्मीय ल नही के बराबर धमन दुगम है। यह नाम भी मास-गाव में करने का है। धर्मी जो कामगीत का बानून है उसके मुताबिक परसे मिल जाने पर हरिजनों को कामगीत की जमीन पर मास-बिधन का अधिभार प्राण हो जामेना। धाम-तीर पर हरिजनों को जमीन मिल गयी है, बच्चा भी मिल गया है, लेकिन तउके अभी तक नहीं मिले हैं। स्वयंसेवकों को हमकी जीब करके जिनको परसे नहीं मिले हैं उनको परसे दिनाने होगा। अन्य वेधर लामों को बयाने का काम भी हाथ में लेना होगा।

भूमि मुफ्त के बरई बानून है जिन पर

मेडिकल छात्र चेकक के टीके लगाने का काम हाथ में लें

घमी तक भ्रमल नहीं हुआ, या इस प्रकार हुआ कि बटाईदारो को उससे लाभ के बजाय हानि ही हुई। प्रादोलन की महारई में जाने पर कार्यकर्ताओं को यह काम भी उठाना पड़ेगा।

जमीन की हदबन्दी का कानून भी बना है। लेकिन जमीन मालिको ने फर्जी या बेनामी बन्दोबस्ती कराके इसके उद्देश्य को धामतौर पर निफल कर दिया है। फिनहाल इन फर्जी या बेनामी बन्दोबस्तियो का पता लगाकर इसकी सूची तैयार करना ही एक बड़ा काम है। बायें में इन बन्दोबस्तियो को ठीक कराने और हदबन्दी से अधिक जमीन का भूमि-हीन खेतहरो में बटवारा नराने का काम भी हाथ में लेना होगा।

कृषि विज्ञान के विद्यार्थी और छोड़े प्रशिक्षण के बाद ग्रन्थ लोग भी किसानों को क्रपोस्ट खाद बनाना, या मामूली खर्ष से गोबर गंस बनाना आदि काम सिखा सकते हैं। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद और ग्रन्थ विज्ञान लोग भी यह स्वीकार करने लगे है कि इसी तरह खेती का विकास हो सकता है और भारत का इसी में निस्तार है कि स्थानीय सामनो के अधिकतम इस्तेमाल से खेती की उपज बढ़ायी जाय।

शहरो और गावो में हरिजनो, शेत मजदूरो और ग्रन्थ मजदूरो को न्याय मिले, यह जन-सघर्ष का एक व्यापक उद्देश्य है। लेकिन सघर्ष नो एक एक चरएल करके प्रागे बढ़ता है। सामन्या का हल खोजने के पहले उसकी पूरी जानकारी हासिल करना जरूरी है। स्वयंसेवक समस्य का विस्तृत और गहन अध्ययन करें। प्रायत जनबारी की रिपोर्टें जन-संघर्ष, समिति के स्थानीय कार्यालय में दें।

मेडिकल कालेजों के ऐसे छात्र है जो कक्षाओं का बहिष्कार कर रहे हैं और जिसकी बड़ी संख्या स्वयंसेवकों के रूप में काम करने को तैयार है। उनके लिए एच जरूरी और तात्कालिक काम है। लगभग सारे बिहार में बेचर का प्रबोध है। प्रदेश सरकार इन मामिले में इतनी प्रथम सिद्ध हुई है कि इरानी हानी है। बेचर से सरकारी मूषो के अनुसार लगभग २० हजार बरजिनयों की मृत्यु हो

चुकी है, कुछ प्रमुख डाक्टरों के अनुसार पचास हजार से अधिक व्यक्ति मर चुके हैं। मेडिकल कालेजों के छात्र दो-दो, तीन-तीन के दल बनाकर चेकक का टीका लगाने का काम करने हाय में लें। इसकी कोशिश की जा रही है कि इसमें सरकार के स्वास्थ्य विभाग और विवर स्वास्थ्य सगठन का सहयोग मिले। कुछ न होने पर सघर्ष कार्यालय स्वयं आवश्यक सामान जुटाने को व्यावस्था करेगा।

बाद में मेडिकल कालेज के छात्रों की सेवाओं की आवश्यकता होने के टीके लगाने और स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी ग्रन्थ कामों के लिए भी होगी। शहरो और गावो में सफाई और शारीरिक स्वच्छता सम्बन्धी ऐसे काम हैं जिनका जनता के जीवन से सीधा सम्बन्ध है। लोगों को पीने लायक पानी मिले, और समुचित भोजन सम्बन्धी साधारण जानकारी लोगों को दी जाय, इसकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। स्वास्थ्य रक्षा और मामूली इलाज सम्बन्धी काम तो बहुत अधिक हैं। इसमें गाव में पालाने, बम्पोस्ट के गड़े और सोक पिट आदि बनें जिनसे खाद तो मिलेगी ही, वातावरण अधिक स्वच्छ होगा और घास-गास की सफाई भी होगी।

छात्राओं और महिलाओं के लिए अलग से कोई कार्यक्रम नहीं है। लेकिन कुछ काम ऐसे हैं जिनमें छात्राएँ और गृहणियों भी महत्वपूर्ण योग दे सकती हैं, जैसे घाराब प्रक्रीम, और गावा-भागे की दुबानों पर फोरेटिंग। गृहणियाँ अगर कुछ समय निचामें तो रागत की दुबानों पर होन्वेनाही धपनी को रोकने में कुछ समय दें। जेलों में महिला सत्याग्रहियों की सस्था अधिक नहीं है। अधिकतर महिला सत्याग्रहियों को गिरफ्तारी के बाद भी छोड़ी रिहा कर दिया गया। लेकिन कुछ महिलाएँ अभी भी जेल में हैं। महिलाएँ जेल में जाकर इनमें मिलें। ये काम पुरुष स्वयंसेवकों के साथ मिलकर करें।

सरकार ठप करने का कार्यक्रम शीघ्रमय रहे और पुलिस का धावनाग मन्थ हो, तो उनमें भी महिलाओं का भाग लेना सम्भव होगा। महिलाएँ एच विविध काम कर सकती हैं—जहाँ कहीं सारी और गोपी बनती है,

प्रादोलनबारी या नागरिक पायल होते हैं महिलाएँ उनको देखने के लिए प्रसप्ततालों में जायें। वहाँ ऐसे भी मरीब अथवा ऐसे प्रसमर्थ लोग रहते हैं जिन्हें फल, दूध, दवा आदि की जरूरत होती है जिसका खर्च नो स्वयं नहीं उठा सकते। प्रसप्तताल में महिलाओं के जाकर मिलने से पायल या बीमार लोगों को सू भी संतवना मिलेगी। उनकी जरूरतों का पता लगाकर महिलाएँ संयुक्त रूप से प्रयास करें कि जरूरी सामान बीमारों को मिले।

जनसघर्ष समितियों का गठन कम से कम पचासत स्तर तक, हो सके तो गांव-गांव में करना है। समितियों के सदस्य वार्यक्रमों को ठीक-ठीक समझें और समितियों ठीक ढंग से काम कर, इसके लिए आवश्यक है कि जन-जन तक प्रादोलन का साहित्य पहुँचे। लेकिन प्रसप्त नागरिक भी प्रादोलन के उद्देश्य और चरित्र को समझकर उनमें भाग ले सकें, इनके लिए आवश्यक है कि बड़े पैमाने पर मौखिक चर्चा हो। यह काम सगमो और गोपिठयो के द्वारा ही हो सकता है। कुछ स्वयंसेवक सघने ऊपर वही भार लें, प्रादोलन का साहित्य घाटकर या बेचकर पर-पर पहुँचायें। कुछ स्वयंसेवक गोपी-केन्द्र पनायें जहाँ प्रादोलन का साहित्य पढ़ा जाय और उसकी चर्चा भी जाय।

प्रौढ शिक्षा का कार्यक्रम भी बननाया जाय। पुराने दरें को प्रौढ शिक्षा नहीं, बल्कि ऐसी जो भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हैं। मैं और मेरे सहयोगी, शिक्षार्थों की ग्रन्थ शिक्षाविदो की सहायता से मुक्त शिक्षा के कुछ प्रयोग भी करना चाहते हैं। एच एल दिवसविद्यालय आरम्भ करने की योजना कुछ मिन बना रहे हैं। बिनाशजी का यह विचार भी हमारे सामने है कि एच घंटा पढ़ाई और दो घंटा काम। यह विचार भी है कि छात्र और शिक्षक मिलकर कोई बिनाश लेकर बैठें, उसे पढ़ें और उस पर विचार चर्चा करें। जो लकड़-सदबियाँ कोई हुनर सीखना चाहते हैं वे जिनकी कुशल क्लिओ या ग्रन्थ कारीगर के गिण्य बनकर काम करयें। इन सभी पर विचार-विमर्श हो रहा है और मुझे धारा है कि इनमें से कुछ पर शीघ्र ही काम शुरू हो

कुछ-न-कुछ बलिदान तो सभी को करना होगा

सकेगा। इसके विना भी जाति की शुद्धता होगी। इन कार्यों के लिए प्रकृति पटना नगर में ही एक हजार से अधिक स्वयंसेवकों की जरूरत पड़ेगी।

इन कार्यों का बहुत अधिक मौसलिक मूल्य है। छात्र जिन्दगी को जीना सीखेंगे, और सीखेंगे कि लोग किस हाल में रहते हैं, कौसी उनकी पीड़ा है, कौन-से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण हैं जिनके फलस्वरूप यह भ्रष्टाचार है। लेकिन स्वयंसेवकों के जीवनयापन के सर्व का भार उठाना सघर्ष कार्यक्रम के लिए समर्थ नहीं। इसका प्रबन्ध स्वयंसेवकों को अपने ध्याय करना होगा। सदारी के धीरे ऐसे भ्रष्ट खर्चों की आवश्यकता जा सकेगी। कम से कम पटना में राशन की दुकानों की देख-रेख करनेवाले स्वयंसेवकों को सरकारी अधिकार पत्र भी मिल जायेंगे। घ्राणा है धरम स्थानों में भी ऐसा संभव होगा।

भादोलन के कार्यक्रम के तार मुख्य अंग है—संगठन, प्रचार, सघर्ष और रचनात्मक कार्य। इसलिये विचारियों के लिए आधी कार्यक्रम की जो उपराला पहले प्रस्तुत की गयी है वह मुख्यत रचनात्मक है, यद्यपि कार्यक्रम के सभी अंग अभिन्न रूप में एक दूसरे से जुड़े होने हैं। भव सेवो का काम शुरू हो गया है और सभवत किसानों के लिए सेवो छोड़ कर प्रदर्शन में लिपे जाना बहुत कठिन होगा। लेकिन जब भी यह संभव हो, जितनी जल्दी हो सके विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शनों तथा समाग्रो का आयोजन होना चाहिए।

संगठन के बिना कोई काम नहीं हो सकता। भादोलन का जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है उसे लोगों तक पहुंचाने के लिए भी संगठन जरूरी है। हर कालेज और हाईस्कूल में छात्र सघर्ष समिति बने, हर पंचायत में जनसघर्ष समिति बने, इसके बिना हमारा शांतिमय लेकिन क्रान्तिकारी सघर्ष नहीं चल सकता। जरूरत को देखते हुए संगठन की प्रति बहुत ही धीमी है। मिलों में जो भादोलन के नेता हैं उनको इस धीरे पहले से कहीं अधिक ध्यान देना होगा।

भादोलन के दौरान जो विशाल जनशक्ति मुवाशक्ति, छात्रशक्ति उभरी है, वह सारे संगठन में बाँटे धीरे सकिरे हो। यह सभी हो सकता है जब भादोलन के छात्र-साथ संगठन भी गहराई में जाय। प्रत्येक पंचायत में सघर्ष समितियों का गठन हो जाये, अभी यह लक्ष्य है। लेकिन इस समय तक प्रखंड स्तर पर भी संगठन हर जगह नहीं पहुंचा है। पंचायत स्तर तक तो जाय ही, यथाशक्ति धीरे भी गहराई में जाय, धीरे गाँव-गाँव में फैले। सकिरे, निष्ठावान व्यक्तित्व हर स्तर पर नेतृत्व करें। नेतृत्व मौजूदा संगठनों या समाज में पहले से प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्तियों तक सीमित न रहे। भ्रष्टाचार संगठन के फैलाव में कठिनाई होगी। जनशक्ति की विज्ञान बहुसंख्या किसी संगठन से जुड़ी हुई नहीं है। सामूहिक सामाजिक परिवर्तन का सघर्ष जनकी सक्रिय हिस्सेदारी से ही चल सकता है।

भादिवासी भव भादोलन में धीरे अधिक संख्या में शामिल हो रहे हैं। इसी तरह हरिजन, सेव मजदूर, छोटे किसान, इनकी अधिक से अधिक हिस्सेदारी होगी सभी सघर्ष का ध्यान धीरे विराट रूप प्रकट होगा। सम्पूर्ण समाज परिवर्तन के आदोलन में सभी वर्गों की सक्रिय हिस्सेदारी स्वाभाविक, प्राकृतिक और वास्तविक है। लेकिन जो यरीब हैं, महंगाई धीरे प्रदर्शनाकार से जो सबसे अधिक धीरे पीड़ित हैं उन के जुटे बिना भादोलन का प्रावश्यक फैलाव संभव नहीं।

छात्र संघर्ष समितियों धीरे जन सघर्ष समितियों के बीच हर स्तर पर पूरा सहयोग और सघर्ष्य रहे। छात्र समिति धीरे जनसमिति एक दूसरे से जुड़ें। सारे कार्यक्रम—प्रचार के, रचनात्मक कार्य के, सघर्ष के, छात्र धीरे जन सघर्ष समितियों मिल कर एक दूसरे के सहयोग से चलायें।

भादोलन का वर्तमान चरण सघर्ष का है। सघर्ष की सफलता के लिए कार्यक्रम के सभी अंगों को चताना आवश्यक है। लेकिन सघर्ष किस प्रकार चलाना है, किन-किन मुद्दों पर चलाना है? सघर्ष का स्वरूप क्या

रहे? भ्रष्टा-धुंध दमन में बहुतेरे लोग भ्रष्टाचक्र ही सरकारी विद्याया उपायों के शिकार हो जाते हैं, निर्दोष व्यक्तियों की जान भी पत्नी जाती है। लेकिन समझ नूक कर, स्वेच्छा से जो बलिदान दिया जाता है उसी से सघर्ष को सफलता मिलती है। सब लोग एक जैसा भावधान नहीं कर सकते। प्राणों की बाजी सगने का सर्वोच्च बलिदान कुछ ही लोग कर सकते हैं। लेकिन जेल जमाना, साठियों के सामने इट्टेडोर बटे रहना, ऐसा बलिदान लाखों को करना होगा। कुछ-न-कुछ बलिदान तो सभी को करना होगा, चाहे छात्र ही, युवा हो, या किसी भी वर्ग के नागरिक हो। सभी सम्पूर्ण क्रान्ति का यह सघर्ष सफल होगा।

यह भादोलन मूलत छात्रों का है, छात्रों को ही इसे आरम्भ करके का श्रेय प्राप्त है धीरे इसमें जनता की हिस्सेदारी तेजी से बढ़कर रही है, लेकिन इसका अधिकार बोक भव भी छात्रों के कर्ण पर है। हजारों छात्रों ने लाठिया खायी हैं, हजारों छात्र धीरे नागरिक भव भी जेलों में हैं। कालेजबन्दी धीरे परीक्षाबन्दी इनके सघर्ष का ही एक हिस्सा है—सरकार धीरे उसकी शिक्षा-व्यवस्था से प्रसहयोग, शिक्षा में जाति के लक्ष्य से जिसका सीधा सम्बन्ध है। भ्रष्ट जुट्टेडो से भी है क्योंकि सघर्ष केवल किसी सामयिक मांग को लेकर नहीं, सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए है। धरना धीरे विकेटिंग तो सामान्यतः सभ्य धीरे लोकतांत्रिक समाज में नागरिकों का अधिकार होता है, इस रूप में मान्य होता है। लेकिन इस समय सरकार से लोकतांत्रिक मर्यादाओं के सम्मान को प्रेषणा करना व्यर्थ सगता है। इस कारण धरना धीरे विकेटिंग भी सघर्ष का एक रूप बन गया है। सरकारी आचरण जैसा भी हो, यह हो सकता है। कालेजबन्दी का एक धीरे साधक सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कि छात्र निकम्मी पढाई हो धीरे धीरे समाज परिवर्तन के सघर्ष में लयें। देश धीरे समाज को बदलने धीरे नये ढंग से बनाने के सघर्ष का नेतृत्व छात्र धीरे तय्य ही कर सकते हैं। उन्हीं में इसके लिए आवश्यक साहस, जीवित उठाव की क्षमता धीरे रचनात्मक शक्ति

छोटे किसानों को न्याय संघर्ष का महत्वपूर्ण उद्देश्य

होती है। प्राथमिक में यह विश्वास होना चाहिए कि समाज परिवर्तन के लिए जो संघर्ष चल रहा है, यही उच्चतम सिद्धा है और यह सिद्धा मानने को मर्यादित वर्तमान सिद्धा से बहुत उम्दा महत्वपूर्ण है क्योंकि सच्ची सिद्धा जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर ही हो सकती है।

प्रदेश की मौजूदा सरकार, जाय, विधान सभा का विपटन हो, यह माय झटोलेन में सरकार के प्राचरण और विधान सभा के जन-द्रोहों रचने के कारण जुड़ो। इसी कारण यह झटोलेन को सार्वजनिक मांग भी बन गयी है। विधान सभा की बैठक स्थगित होने के बाद प्रशासन के इस पक्ष का कार्यधर्म गावों में चला गया है।

इस सार्वजनिक लक्ष्य के साथ-साथ व्यापक उद्देश्यों के लिए भी संघर्ष के दो अन्य कार्यधर्म हैं—करबन्दी और कार्यालय बन्दी। पहला चरण है सरकारों का मठ ठहर करना है, प्रत्यक्ष से लेकर जिले तक प्रशासन के किसी कार्यालय को बन्दे नहीं देना।

दूसरा पक्ष है करबन्दी। जलता सरकार को टैक्स देना बन्द करे। सरकार को पैसा देना बन्द हो जाय। बड़ी हद तक यह काम सरकार ठप करे प्रभियानों के द्वारा ही होगा। सरकारी खजानों का काम बन्द हो, बिकी कर कार्यालय बन्द हो। प्रशासनिक कार्यालयों का काम भी ठप करने में शामिल है। लेकिन करबन्दी का काम सीधे भी हाथ में लेना होगा। भराव, गाँवा, भाग फकीम आदि की बिकी बन्द हो, सरकार को इनसे होनेवाली प्रावधानों की आमदनी बन्द हो। लाटुसंग फीस से होनेवाली अन्य आमदनी बन्द हो।

करबन्दी का विशेष सत्रघ किसानों से है। लगान-मालगुजारी, तकवी और अन्य सरकारी कर्ज, पटवन, लेवी, सब बन्द हो। सरकार ने मालगुजारी बड़ा दी है, पटवन की दर द्योपीटी और गुमुनी कर दी है। लेकिन न चीज मिलना है, न खाद मिलती है, न बचन पर पानी मिलता है, न बिजली मिलती

है। किसानों को मिलनेवाली खाद व्यापारियों को मिल जाती है जो उसकी चोरबाजारी करते हैं। लेवी भी वसूली में दे-हिंसाव साधनी होती है। छोटे किसानों के पास पनाज नहीं होता तो भी बड़े-स्तो वसूली होती है। प्रशासन और बड़े भाइयों की मिलीभगत से किसानों को पूरा दाम नहीं मिलता लेकिन सरौदकर खानेवालों को तोना-गुना, चार गुना दाम देना पकता है।

किसानों को, खासतौर पर छोटे किसानों को न्याय मिले, यह संघर्ष का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इनके लिए किसानों को स्वयं भी संघर्ष के मैदान में उतरना होगा। सरकारी मालगुजारी, तकवी, पटवन, सेस आदि का एक पैसा बसूल न हो। पटवन की बड़ी दर के विरोध में किसान खेत के लिए पानी लेते रहे लेकिन टैक्स न दें। वसूली के लिए जानेवाले बर्गधारियों-अधिकारियों के सामने गाव के लोग दीवार बनकर खड़े हो जायें और गाँव में घुसने न दें। कुर्सी जतों की कार्रवाई का साक्षिपूर्ण, सामूहिक प्रतिरोध हो, सत्याग्रह हो। गाव की पूरी जनशक्ति प्रगर विरोध में खड़ी हो जाय तो न वसूली होगी, न कुर्सी जतों हो सकेगी।

संघर्ष के वर्तमान चरण में शौचोगिक मजदूरों की भूमिका सीमित ही है लेकिन उनका महत्व कम नहीं। प्राधान्य होने पर शौचोगिक मजदूर एक दिन की लाक्षणिक हड़ताल प्रादोलन के समर्थन में करें। मजदूर संगठन संघर्ष कीय के दूपनों के जरिये घन संघर्ष करायें। यह भी प्रादोलन की बाकी बड़ी सहायता होगी।

छात्र संघर्ष समितियों और जनसंघर्ष समितियों का स्थायी संगठन बने, इसका उद्देश्य यह भी है कि इनके जरिये लोकतंत्र की छोटी-छोटी इकाइयों का विकास हो। सरकार से प्रसहयोग का, दूरगामी दृष्टि से यह सबने महत्वपूर्ण पहलू है। पाना रहेगा, धरासत रहेगी, इनको बंद करने का धामी कोई कार्यक्रम नहीं है। जरूरत पड़ने पर लोग

इनका उपयोग भी करेंगे। लेकिन जनता के दैनिक जीवन में सरकार का अनुचित और भ्रष्टाचरणीय हस्तक्षेप बंद हो, लोग अपने प्राथमिक-सामाजिक जीवन से संबंधित प्रश्नों का निर्याय तथासम्भव स्वयं आपसी सहमति से कर लें, इसके लिए छात्र और जनसंघर्ष समितियों को प्रयत्न करना होगा। गाव में अभ्याय के जो प्रत्यक्ष, अधिकांश गैर-कानूनी रूप हैं, उनको समाप्ति के लिए संघर्ष, सरकार से प्रसहयोग और लोकतंत्र की छोटी इकाइयों का विकास, तीनों काम एक दूसरे के सन्दर्भ में ही सार्थक होंगे। हरिजनो के साथ समानता का व्यवहार हो, खेत मजदूरों को पूरी मजदूरी भनाज के रूप में मिले, बडाईदारों को उनके कानूनी अधिकार प्राप्त हो, पर्वों और वेनामी बन्देवस्तिया खत्म हो और जमीन भूमिहीन सेविहरो में बड़ी जायें, इनके बारे में सिद्धांत के स्तर पर विचार नहीं के बाबर है। लेकिन व्यवहार में इन पर धमक हो, यह काम बहुत बड़िन है। इस झटोलेन में जो जनशक्ति उमड़ी है, उससे ये बड़िन काम भी भासान हो गये हैं। फिर भी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। गुण्डे और पुलिस की साक्षिपूर्ण इन कामों में भी खाँसी पड़ सकती है। अंगर प्रकासन प्रच्छा होता, सरकार सच्ची ईमान-दार होतो तो स्वयं इन कामों को बराही मा प्रादोलन की सहायता करती। लेकिन ये सारे गैर-कानूनी काम झटोलेनारी व्यवस्था के समर्थन से चलते हैं। इसीलिए गुधार के जो कानून बने हैं, उनको लागू करने भी संघर्ष का एक हिस्सा बन गया है।

कोशिश करनी चाहिए कि बिना कटता के, प्राप्ति समझ से ये अभ्याय दूर हो जाय। लेकिन आवश्यक हो तो इसके लिए सत्याग्रह करना होगा।

संगठन, रचनात्मक कार्य, और संघर्ष के सा त्रिविध कार्यधर्म से शासितय प्राप्ति को, व्यवस्था में प्राप्त्य परिवर्तन को; एक नये बिहार और प्रायं चलकर नये देश के निर्माण की गुहागत होगी।

१६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

पहरे पर चोर बैठे हैं

हिन्दी में एक कहावत है 'चोर है तो उसे रे पर बैठाना दो।' पहले पर बंठा हुआ चोरी नहीं कर पायेगा, बुरे आदमी को ता बहने लगे, उसे शब्द की शर्म घाने ली। जिस तरह जिद करनेवाले बच्चे को गुई धार 'राजा भैया' बगैरा बहकर शात र लते हैं, ऐसे ही बंद और बदनाम को लिष्ठा दे दो ता उनके बर्कत कम होत-ते समाप्त हो जाते हैं। मगर एक दूसरा ही हनु इस बहावत का हमारे देश में निव-लित, गमना जन है, रात दिन घासों के पाने नाचता रहता है। कौन से हैं : कल्पक, गुणुरी, गरवा, भागड़ा घोर यहा तक कि 'रतनादृय के ये कलाकार जो विभिन्न चौर-द्राघो में सिद्ध-हस्त घोर पटु-वरण देश की च-रच माटी में वास्तव में ताण्डव ही उप-स्यत करने पर तुले हैं।

केन्द्र के राज्य वित्तमन्त्री गणेश ने घनी (क भेंट में कहा, 'सरकार जब तक काले पैसे उ जमान घोर समानांतर चलन पूरी तरह रलन नहीं करती, तब तक मुद्रास्फीति घोर नहगाई पर काबू नहीं पाया जा सकता।' इन्होंने कहा, 'काले घन पर टूटना चाहिए घोर लगतातर इस काम में लगे रहना चाहिए। उमाज के हित-महित को सोचे बिना व्यापार करने का चलन रुक हो गया है, सहजदिव मर्य नमनसहृत बगैरा का मूरज इव गया है घोर मूठ, बेईमानी, स्वार्थ प्रादि का बाजार घर्म है।'

ऐसा कुछ उन्होंने कहा, नेगक 'घंघं' जी । हिन्दी ये बेचारे किससे बोलने जायें घोर

कौन उनको हिन्दी बोलने पर विवद करे। यह घनी हिन्दी विसय गुबरा है न 14 सित-म्बर को इसलिए इतना वह प्राया, नहीं तो सरकार के किसी भी छोटे-बड़े व्यक्तित, विभाग या शोध से हिन्दी-अंघे जी की बात करने का कोई घर्म ही नहीं बचा। हजारों मच्छो वातो की तरह हिन्दी भी तब प्रायेगी जब जड से ऊपर से ऊपर की फुनगी पर लगे किसी पत्ते की तरह विपाक यह सरकार कहिये, सत्ता कहिये, प्रभावन कहिये, जायेगा।

तो गणेशजी ने काले घन की समाप्ति देश की सबसे बड़ी प्रावश्यकता मानी। घाम प्रादमी भी मानता है कि जब तक काला-घन कमाया जा सकता है घोर किसी न किसी रूप में फिर बाजार में लाया जा सकता है, साधारण से लगाकर ऊँचे दर्जे तक के मध्यम-वर्गीय सादमी को जान साँतन में पड़ी रहेगी। काले घन से, घाम प्रादमी का रुयाल है कि सबसे ज्यादा निस्वत सत्ताकड बत की है, हर चुनाव में पछुते चुनाव से कई गुना पैसा खर्च होता चला जा रहा है, यह वह देखता घा रहा है। घब ये को १६७६ में चुनाव प्रायेगे, इतने घोर पैसा लगेगा, इतना पैसा कि जिसको गिनती कोई उसी तरह नहीं लगा सकता जिस तरह कोई समुद्र के किनारे की रेत के कनो या घासमान में फँसे तारो की गिनती नहीं कर सकता। ललित नारायण मिश्र घोर नदिनी सत्यो के नाम चुनाव खर्च के मिल-सिधे में ज्यादा लिभे गये, मगर इस मिलसिले में घमणगी, एक से एक महाराषी लोखे जा सकते हैं। 'गुन न हिरानी, गुन 'सोजक'

हिरानी है।' हम यमादातर लोग इन तथ्य को भगवान् की मूर्जी मानकर जँते-जँते दिन काट रहे हैं। मन में कभी एकाध बार ऐसा भी सोच लेते हैं कि कायद जयपकावजी का घ्रादोलन जोर पकड़ें गा घोर हमारे भी दिन पलटेंगे। नहीं तो सही तो यही है कि जो कालाबाजार घोर कालेघन के खिलाफ बड़े-बड़े वलव्य देवें रहते हैं, 'रग्हे' इससे प्रेम है, वे ही इसके पोपक, रक्षक घोर इसलिए उस कमाई के भी खास बड़े हिस्सेदार हैं। एक तरह से साहने घोर को पहले पर नही बँठाया है। जिसने बँठाया है उसकी भी संकेत पैसे में श्रद्धा नहीं है घोर मशा भी उसकी साफ है कि कालाघन कमाने की सुविधा देते तो दल के नाम बलुवी चलेंगे घोर 'धुटरोगेट' काडो की तरह के हून घाने संकडो काँडो के बावजूद फिर विरोधियों को चारो खाने चुनाव में चित पछाड़ेघे घोर जब तक चुनाव आता नहीं है तब तक इस काले पैसे का उपयोग करके अच्छे से मच्छे इरादो घोर चलत से उतत कामो को मसामाजिक तत्व घोषित कराते रहेगे, घलबाराँ से, मचो से, रैलिया भरवाकर, जुलूस निगाकर। घोर जो बिलकुल पक्षी तरह सता के घान्धारिक तोर-लरीको को नहीं जानते, तब तक उनके मन में तो भय, सदेह घक बनाये रल सकते हैं। इस पर घोर भी बहुत कुछ कहा जा सकता है मगर हम यी गणेश का ही एक वाक्य घनत में कहेगे, 'इस कालाघन जमा करनेवालो ने समाज में ही नहीं राजनीति में भी प्रविष्ठा प्राप्क कर ली है घोर सब जगह इनका प्रभाव देखा जा सकता है।'

घब एक प्रश्न करना भी ठीक ही रहेगा, कालेघन की राजनीति में किसने प्रतिष्ठित होने दिया है? चोरे को चोरे पर किये बँठाया है घोर किस नीयत से ?

इस अंक के साथ 'भूतान-यज्ञ' के प्रकाशन के बीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अगला अंक इकोसवें वर्ष का प्रवेशांक होगा घोर गांधी जयन्ती के अवसर पर दो अक्टूबर को विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

—संपादक

- १६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

पहरे पर चोर बैठे हैं

हिन्दी में एक कहावत है 'चोर है तो उसे हरे पर बंठाव दो।' पहरे पर बंठा हुआ तोर चोरी नहीं कर पायेगा, बुरे आदमी को लात कहते लगे, उसे गन्ध की शर्म घाने गयी। जिस तरह जिद करनेवाले बच्चे को गिंफे रुई बार 'राजा भैया' वगैरह कहकर घात हर लेते हैं, ऐसे ही बद और बदनाम को शिष्टता दे दो ता उनके बदफैल कम होतें-होतें समाप्त हो जाते हैं। मगर एक दूधरा ही रहनु इस नवाहत का हमारे देश में नियत-शक्ति, गमनाम जन है, रात दिन प्राधो के आम्ने नाचता रहता है। कौन से हैं : कल्पक, नगीपुरी, गरबा, भोगड़ा और यहा तक कि नारतनाट्य के ये कलाकार जो विभिन्न चोर-मुद्राओं में सिद्ध-हस्त और पटु-चरण देश की रज-रज माटी में वास्तव में ताण्डव ही उपस्थित करने पर तुले हैं।

- केन्द्र के राज्य वित्तमन्त्री गणेश ने धर्मी एक भेंट में कहा, 'सरकार जब तक काले पंचे का जमाव और समानातर चतन पूरी तरह पालन नहीं करती, तब तक मुद्रास्फीति और महंगाई पर काबू नहीं पाया जा सकता।' उन्होंने कहा, 'काले धन पर टूटना चाहिए और लगातार इस काम में लगे रहना चाहिए। समाज के हित-अहित को सोचें बिना व्यापार करने का चलन रुक हो गया है, सरकारी खल्य भनमनसाहनु बर्ग रा का सूरज डूब गया है और भूड, बेईमानी, स्वार्थ भादि का बाजार गम है।'।

ऐसा कुछ उन्होंने कहा, नेमक घ'धे जो ने। हिन्दी के बेकारे किलते बोलते जायें और

कौन उनको हिन्दी बोलने पर विषय करे। यह धर्मो हिन्दी दिवस गुजरा है न 14 सितम्बर को इसलिये इतना कह प्राया, नहीं तो सरकार के किसी भी छोटे-बड़े व्यक्तित्व, विभाग या शोध से हिन्दी-अर्धों की बात करने का कोई धर्म ही नहीं बचा। हजारों शब्दों बावो की तरह हिन्दी भी तब धामेगी जब जड़ से ऊपर से ऊपर की फुनगी पर लगे किसी पत्ते की तरह विपानत यह सरकार कहिये, सत्ता कहिये, प्रशासन कहिये, जायेगा।

तो गणेशजी ने काले धन की सम्यक् देश की सबसे बड़ी आवश्यकता मानी। धाम प्रादमी भी मानता है कि जब तक काला-धन कमाया जा सकता है और किसी न किसी रूप में फिर बाजार में लाया जा सकता है, साधारण से लगाकर ऊँचे दर्जे तक के मध्यम-वर्गीय प्रादमी की जान साँसत में पड़ी रहेगी। काले धन से, धाम प्रादमी का स्थान है कि सबसे ज्यादा निरदर सत्तास्व दल को है, दर चुनाव में पिछले चुनाव से कई गुना पैसा खर्च होता चला जा रहा है, यह बह देखता धा रहा है। अब ये जो १६७६ में चुनाव प्रायेगे, इनमें फिर पैसा लगेगा, इतना पैसा कि जिसको गिनती कोई उसी तरह नहीं लगा सकता जिस तरह कोई समुद्र के किनारे की रेत के कनो या भासमान में पीते लारो की गिनती नहीं कर सकता। ललित नारायण मिश्र और नरिनी सत्यो के नाम चुनाव खर्च के सिलसिले में ज्यादा लिये गये, मगर इय सिलसिले में धरणी, एक से एक महारथी खोजे जा सकते हैं। 'गुन न हिरानो, गुन 'खोजक

हिरानो है।' हम रजादातर लोग इन तथ्य को भयधान की भर्जी मानकर जैसे-तैसे दिन काट रहे हैं। मन में कभी एकाध बार ऐसा भी सोच लेते हैं कि चायद जयप्रकाशजी या प्रादोलन और पकड़े गा और हमारे ही दिन पढेंगे। नहीं तो सही तो सही है कि जो कालाबाजार और मालेधन के खिलाफ बड़े-बड़े बकतबन्ध देने रहते हैं, नन्हे इससे प्रेम है, वे ही इसके पोषक, रक्षक और इसलिये उस कमाई के भी खास बड़े हिस्सेदार हैं। एक तरह से साह ने पोर को पहरे पर नहीं बंठाया है। जिनमें बंठाया है उसकी भी मकद पैसे में थडा नहीं है और मशा भी उसकी साफ है कि कालाधन कमाने की सुविधा देंगे तो दल के बाप दन्वो बलेंगे और 'बाटरलेट' काढों की तरह के हम अपने संकड़ों, बांडों के बावजूद फिर विरोधियों को चारो खाने चुनाव में पित पदाडगे और जब तक चुनाव आता नहीं है तब तक इस काले पंचे का उपयोग करके मध्ये से मध्ये हाराओ और उत्तम से उत्तम काभो को प्रासाभाजिक तत्व धोपित कराते रहिये, धलबाराओ, मचो से, रैलिया भरवाकर, जूस निकालकर। और जो खिलकुल पक्की तरह सत्ता के भास्तरिक तौर-तरीको को नहीं जानते, तब तक उनके मन में तो भय, सरेह थक बनाये रख सकते हैं। इस पर और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है मगर हम श्री गणेश का ही एक वाक्य धनमें कहिये, 'इस कालापन जमा करनेवालो ने समाज में ही नहीं राजनीति में भी श्रिष्टि प्राप्त कर ले है और सब जगह इनका प्रभाव देता जा मरना है।'।

धव एक प्रश्न करना तो टीक ही रहेगा, कालेधन को राजनीति में कितने प्रतिष्ठित होने दिया है? चोर को पहरे पर कितने बंठाया है और कितन नीवले से?

इस अंक के साथ 'भूदान-यज्ञ' के प्रकाशन के वीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अगला अंक इसीसर्वे वर्ष का प्रवेशांक होगा और गांधी जयन्ती के अवसर पर दो अक्टूबर को विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

—स—

न स्पष्ट लिख दिया कि उनके पास जंगल, पहाड़ आदि का झलम-अलग विवरण नहीं है, इस कारण पूरी जमीन का दान कर रहे हैं। इनमें से बाविल वास्तु जमीन गरीबों में सेतो के लिए बाँटी जा सकेगी। ऐसी दान की पूरी जमीन का सरकार से मुआवजा नहीं मने।

जमींदारों के कागज बड़े झूठे थे। इसके बावजूद भूदान समिति को सम्बोधित विवरण प्राप्त हुआ। दूसरी ओर बेतिया राज की जमीन प्रायः पचास वर्षों से सरकार के राजस्व परिषद की व्यवस्था में थी, फिर भी बेतिया राज के सरकारी कार्यालय ने कलक्टर को प्रत्यन्त ऋटिपूर्ण प्रतिक्रिया दिया है। इस ऋटि के कारण आज तक वहाँ नगरमजदूरों का मालिक जमीन की वेतनहू लुट हो रही है। वहाँ का राजस्व अभिलेख प्रथम भी एकदम अधूरा है।

भूदान के दाताओं में से धनेक भी कथा कर्ण और रघीचि का स्मरण करानी है। फतेहा (बिगुसराय) के डा० देवनागरण को जानने का कौन कष्ट करेगा? अपनी सारी जमीन

भूदान की जमीन पर बिहार में उनतोस नये गांव बसाये गये हैं। सैकड़ों गांव की भूमि-हीनता का निवारण हुआ। यह सत्य है कि इन गांवों में कोई स्वयं नहीं उत्तर दया है। वरि लोग जब इन गांवों में जाते हैं तो 'गोकुल' देखने की अपेक्षा में कुछ निराश होकर लौटने हैं। ऐसे लोग यदि चम्पारण के चोतरवा का हरिजन सेटलमेंट देये होते तो उन्हें भूदान का पुरुषार्थ अवश्य वील पडता। चोतरवा में गडक की सदा-सलिला नहर व्यवस्था, बंटोरे से धरती, मक्कन जैसी मिट्टी, गवा के भूदानों गांव की कडी ककरीलो मिट्टी से इसकी क्या तुलना? चोतरवा हरिजन ग्राम में सरकार की ओर से नि शुल्क प्रादासीय शिक्षण व्यवस्था, अन्न भण्डार, बेरोजगारी निवारण के लिए उद्योग भवन, अस्पताल, डाक्टर, परिचारिका सब सुपास, पर सारी सुविधा के बावजूद गांव का एक-एक घर धन उजड़ गया है। सारी जमीन पर बड़े लोगों का टुंकर चलता है। यही दशा बंगाल के शरणापियों के गांवों की है। सरकारी आरुध

में दर्ज नहीं होने के कारण एक ओर वे किसान प्रधर में लटक रहे हैं, दूसरी ओर प्रतिवर्ष लाखों रुपयों का राजस्व बिहार जैनी कनाल सरकार लौती जा रही है।

कानून ओर ट्टपाए जाने ककण को कन-जोर मानते हैं। विनोबा ने श्राति रोक दी, यह बात तो कही ही जाती है, कुछ लोगों को यह भी भ्रम है कि भूदान में नाहक समय गया, कानून से धानन-फानन में काम पूरा हो जाता। सभी पन्थों की सरकार की बिहार ने देला। अपवाद के रूप में भी बटाईदारी कानून का झमल नहीं हो रहा है। सीमावन्दी से कितनी जमीन बाटी गयी? दस कठछा बारी-भारी का एक लोकर जहा एक दो डिसमल छोड़ो मात्र का बासगीत का पर्चा भी मिला तो कितने लोगों की रमीद उतनी भूमि की भी बटने लगी। १९६१ में विधायको ने विनोबा से कहा कि आपको बिहार की चिन्ता नहीं करनी होगी, हम भूदान पूरा कर लेंगे। सीमावन्दी कानून में भूदान के बदले भूमिकर की व्यवस्था की गयी। इसकी

‘किस कारण अधिकार स्वयं वन भिखमंगा आया है ?’

गरीबों में बाटकर एक गांव में होमियोपैथी प्रेषित कर अपना जीवन-यापन करते हैं। साथ ही भूदान किसानों के बाल-बच्चों के अध्ययन और अरण-पोषण पर अपनी गाडी कमाई में से आज भी खर्च करते हैं।

एक-एक भूदान के दान-पत्रों को बाजापटा नोटिस देकर राजस्व विभाग के अनुमंडलीय कार्यालय में जांच कर क सुट्ट किया गया। डेढ़ लाख दान-पत्रों की जांच के प्रारंभ विवरण से मात्र दवा चार सौ दान-पत्र प्राप्त के कारण खारिज हुए। पूरा एक प्रतिशत भी नहीं। एक प्रतिशत का भी तीसरा भाग। दाता ने स्वयं इनकार किया हो, यह तो प्रभावद स्वरूप ही देखने मिलता।

यह भी कहा जाता है कि भूदान निमान बड़े पैमाने पर बेदखल हो गये। मुजहरी प्रखंड (मुजफ्फरपुर) में, जहाँ की जमीन बहुत बीथती है, एक-एक गांव का भूदान का सर्वेक्षण स्वयं जयप्रकाश बाबू का देखरेख में हुआ। वहाँ भी ७५ प्रतिशत भूदान किसान का जमीन पर कब्जा पाया गया।

के अनुसार ७० प्रतिशत लोग अपनी जमीन से बेदखल हैं। बड़े-बड़े फार्म खरीदकर ये गांव सरकार की ओर से बगये गये थे। दूसरी ओर भूदिया भूदान की जमीन लेकर प्रथ इज्जत की रोटी पाने लगे हैं। भूदानपुरी, भूदानर, गांधीग्राम, बापुग्राम, विनोबा नगर, राजेन्द्र नगर, स्वाम नगर, विदनी, चारेन्टोला आदि सिट्टर के भूदान के २६ गांव चोतरवा डेम सेटलमेंट, तथा नरणाथी गांवों की तुलना में धवस्व स्वयं हैं।

सरकार की व्यवस्था और भूदान के लोक पुरुषार्थ में फिलना प्रन्तर है, यह दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से प्रकट होगा। प्रसा-सलिक बटिनाईओ की चर्चा की जाय तो एक स्वतंत्र विषय खड़ा हो जायगा। 'गरीबी मिटाओ' के वातावरण में गत वर्ष भूमि सुधार अभियान चला। इस मीके पर कम से कम सारे भूदान किसानों की जमीन का कानूनी उपबन्ध के अनुसार समाज निर्धारण हो जाता तो इनकी बेदखली नहीं होती। दु स है कि ऐसे लाखों किसानों का एक कानूनी बाज

घाग आजतक कानून की कितान में प्रविन मात्र है, कायान्वय शीतागार में पडा है। विनोबा कानून के कायान्वय के विम्व को गलत मानते हैं। इससे भय निर्माण होता है। 'कानून बनायेवाले नहीं सोचते हैं कि जो कुछ करना है उसे भी श्र करना चाहिए। देर में करते हैं तो सारा बेकार जाता है।' क्यों देर होतो है कानून के प्रथम में एक बड़े राजस्व अधिकारी ने जयप्रकाश नारायण के साथ व्यनियगत चर्चा में बडी दबी जवान से कहा था—'इट इज सैक भाक पोपिटिवक इंटेंशन, सर' (यह राजनैतिक नीयत की खाती है)। विनोबा जब बिहार में घूम रहे थे तो धी दिनकर ने कहा था, इण्डू लूट बनकर घाया है, इसकी मरण गयो—

'पहलानो यह कौन द्वार पर प्रथनगा घाया है ?'

किस प्रकार अधिभार स्वयं वन भिखमंगा आया है ?

शामे किंर उन्हेने कहा कि यदि मुनु-मुंगं की तरह अपनी चोच दबाकर हवा नहीं

पढ़ावने के तो

‘शोध तोड़ जिस रोज फीज हल्ला
कोलेगी,
मुम दोगे क्या चीज धरत वह
चाहेगी सो लेगी।’

भाज भी विनोबा को बिहार से प्रेम है। धामदान का भजन दिया। सहरसा को राष्ट्रीय अभियान का मुखर मोर्चा बनाया। सभी राजनैतिक पक्षों ने धामदान के समर्थन का प्रावधान दिया था, पर कुर्सी की छीना-भपरी से समय निकाल कर सहरसा जाने का कष्ट कौन लेता है? बिनाभा तो हट्टा है। बिहार को समाज के मान्य करवाने के लिए

न तो वे मन्त्र ग्रहण कर मकाने डै धीरन सत्ता स्वीकार कर सकते हैं। वे मन हैं, शासनकार हैं, समय की गिना पर एक समय स किन कर जानेवाले हैं। कीरव धीर पाडव दोनों हृष्य के धपने थे। कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के पहले प्रयत्न किया, विनोबा धब धपनी ध्रायु के प्रसीधैं वर्यं मे भी धपने मुधम ध्रमिध्यान के द्वारा बिहार की मगलकामना करते रहते हैं। विनोबा को निस्वल्प नीद छाती है, स्थूल की चिन्ता से बह पडे हैं। बगला देश के युद्ध के समय तो उन्होंने बहा था—‘सिर काटना बरबबर घास काटना। घास फेंकना बरबबर लाग फेंकना।’ इतना कठोर धन्तर है जिसका

वह अत्यात्मलिन विनोबा भी बिहार की घटना से चिन्तित होता है, उसकी भी नीद हुराम होती है। मायद जीवन में एक दो-बार ही समस्याओं ने जात मे विनोबा की नीद हुराम हुई हो।

विचार करना होगा बिहारवासियों को, राजनेता को, प्रधिकारियों को, वृद्धजीवी धार विदारियों को। शब्द जो भी इस्तेमाल करणा हो, करें। भूदान-धामदान ध्रादि शब्द धुड भी दें, पर बह तो स्पष्ट हो ही गया है। ह गाव-गाव जाना होगा, लोक-शक्ति जागृन करनी होगी।’ तभी भाग गोकुल होगा, बिहार नया बनेगा।

विनोबा जयन्ती सम्पन्न

झकोड़ी, निरवापुर मे सर्वोदय धाम-स्वराज्य समिति द्वारा आयोजित विनोबा जयन्ती मे भजन तथा नृ।।जलि के कार्यक्रम हुए और विनोदशकर पाण्डेय, जिपाउल्लाह अग्वारी, काकीरामदा धीकास्व, श्रीतला प्रसाद गुप्ता, नेशवासिंह पटौहा, रयेत बहा-दुरसिंह, धवोदध्याप्रसाद तथा मोहनलालगुप्तन ने धपने विचार व्यक्त किये। श्री पाण्डेय ने समिति को १०१ रुपये दान दिया।

अयपुर मे गांधी धानि प्रतिष्ठान केन्द्र मे विनोबा जयन्ती मनायी गयी जिसमे राज्य के छात्री धाम।योग मडल के धप्यध भोगी-पाल परदा तथा डा० सुखरामदास के धाधन हुए। धप्यधता विष्णुदत्त शर्मा ने की। केन्द्र के सचिव रामेश्वर शिवादी ने सर्वोदय पक्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

जोधपुर मे गांधी धानि प्रतिष्ठान केन्द्र धीर श्रतः।रिष्य गुमार साहित्य परिषद ने विनोबा जय ती तदए धाजिड सेना के सत्योदक कृष्णगुमार देव की धप्यधता मे मनायी। मासुः।टिक प्रायन्ता की गयी।

कडवड, जाधपुर मे गांधीरानि प्रौत-प्टान केन्द्र, जोधपुर के सचिव नेमकन्द जैन ‘भानुव’ की धप्यधता मे धायाजिन विनोबा जयन्ती मे मोरीनात बोहरा, हरबन्धाल, कहेधाराण, गुध्दराम, सरजामर एध धीमप्रदास ने विचार व्यक्त किये।

जहडोल मे धी रामदयाल धधवाल के निवास स्थान पर धायाजिन विनोबा जयन्ती

मे मध्यप्रदेश के विधि एव जेल मंत्री श्री हृष्यगतसिंह की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। उन्होंने ब गिया के धामसमर्पण से लेकर नवजीवन गानिधर म रहने तक के प्रकरण पर विस्तार से प्रकाश डाला। रामकृष्णधर्मा दीनदयाल गुप्ता धीर रामदास गुप्ता के धाधय तथा प्रायन्त, भजन एव कीर्तन के कार्यक्रम हुए।

रिवाड़ी मे गांधी धप्यधन केन्द्र म धभात फेरी, सर्वोदय साहित्य विधी धीर सार्वजनिक सभा के धायाजिन विनोबा जयन्ती पर किये गय। गल्लोकीलाल एनोडेट, बाजुनन्द जर्मा धीर सुशीराम लोकेवक ने विचार व्यक्त किये। सभा की धप्यधता रामजीलाल जैन ने की। नगर के विचारयो म भी सभाए धायोजित हुई।

एस० एम० जोशी विहार में

प्रसिद्ध समाजवादी नेता धीर बिहार धाम्नीतन के समर्थक धीधर महाधेव जोशी पटना पहुंच गये हैं। जयप्रकाशजी के नाम लिखे धपने एक पत्र मे ‘उन्होंने इच्छा प्रवट की थी कि वे एक लम्ब समयतक बिहार मे रहने की तयारी के साथ धा रहे हैं धीर बिहार के वर्तमान जन सधर्प मे एक धनिय कार्यवाही की हैमियत से कार्य करेगे। श्री जोशी इसके पूर्व भी बिहार ध्राय वे धीर प्रदेश के विभिन्न जिलो मे धूमकर धाम्नीतन की स्थिति वा धप्यधन कर चुके हैं।

माधोसिंह अथ “निर्दलीय” के संरक्षक नहीं

गु गावली स्थित खुली जेन मे धाजीवन का रावात भुगत रहे धामसमर्पणकारी बागी भास्टर माधोसिंह ने घोषणा के प्रकाशित पत्र ‘निर्दलीय’ का संरक्षक रहने से ध्वजार धर दिया है। उन्होंने लिखा है कि एक कर्दी को हैमियत से वे किसी भी धधकार के संरक्षक रहते हैं तो वह कानूनी तौर पर जुर्म है। ध्रात ‘निर्दलीय’ धासक से उनका कोई बास्ता नहीं रहा है।

एक वर्ष में ३३६८ उपवासदान प्राप्त

गत वर्ष धपने जन्म दिवस पर ११ सितम्बर, १९७३ को पूज्य विनोबा ने उप-वातदान का धीमल्लोण किया था। इस वर्ष १० सितम्बर को उपवासातन धमियान का एक वर्ष पूरा हो गय। इस एक वर्ष मे कुल ३३६८ उपवासदान मिले हैं जिनमें २ विद्वानों से भी मिले हैं। इन उपवासातनो से १ लाख ६ हजार १४६ रुपय ८३ पैसे की राशि प्राप्त हुई है। भारत के विभिन्न राज्यों से प्राप्त उपवासातनो की सख्या इस प्रकार रहीः

असम २९, धाध्र २४४, उत्कल ७३, उत्तरप्रदेश ६९, केरल १४, कर्नाटक ४९, गुजरात ३१३, तमिलनाडु ७४, पंजाब ४७, पश्चिमी बंगाल १८९, बिहार ८८, मध्य प्रदेश ३००, महाराष्ट्र ६२९, मणीपुर ७, राजस्थान १८३, हरियाणा ६७, हिमाचल प्रदेश ६, बम्होर १ धीर दिल्ली ६।

लोकयात्री दल श्रीलंका प्रवास श्रीमती भंडारनायके को इन्दिराजी का पत्र

न्यू देलही, जुलाई १८, १९७४

डियर प्राइम मिनिस्टर,

यू हैव नो डाउट हूँ घ्राफ भाचार्य विनोबा भावे, ए कनोज कलीग घ्राफ महारमा गांधी हू हैज डिबोटेड हिज लाइफ टु इम्प्रूविंग वॉरियस प्रास्पेक्ट्स घ्राफ घबर करल इकानामी । फार ईयर्स ही मूड घान फुट घाम स्टेट टु स्टेट कंरीयिंग दि मैसेज घ्राफ 'सर्वोदय आर दि घनलिपट घ्राफ दि धीकेस्ट घू टू थ एंड कम्पेशन । ही नाउ लिज इन हिज घ्राथम इन सेन्ट्रल इण्डिया । घनडर हिज गाइडेन्स, ए घूप घ्राफ धीमेन बर्कसं घ्राफ दि सर्वोदय मूवमेन्ट हैव घनडरटेवन ए वाकिंग टूर फार ट्वेंल्व ईयर्स सिंस १९६६ टु प्रोपेगेंड दि प्रिन्सिपल्स घ्राफ दि मूवमेन्ट । दे काल देमसेल्वज 'लोकयात्रा' घूप एंड कनिस्टर घ्राफ मिस हेमा मराठी, मिस देवी रिजवानी, मिस निर्मल बंध एंड मिस लक्ष्मी फूलन । दे हैव नाउ रीन्ड साउथ इण्डिया एंड प्रपोज टु ट्रैवल टु श्रीलंका फाम दि सिबस्टीय घनस्त । दीज घार नान-पोलिटिकल पीपुल हू विल बी एवल टु एस्टेब्लिश फॉन्डली कन्टेक्ट्स विथ दि धीमेन घ्राफ श्रीलंका एवाउट घ्राचार्य विनोबा भावेज वकं एंड घ्राइडियल्स ।

घ्राई होप दैट दि पीपुल घ्राफ श्रीलंका विल रिसीव दैम विथ टू डीशनल गुडविल ।

विथ धार्म पसनेल रिगाइड्स,

योसं सिनसियरली

साइ ड।—

(इन्दिरा गांधी)

दि आनरेबुल मिसेज तिरिमावो घार० डायस

भंडारनायके, एम० पी०

प्राइम मिनिस्टर घ्राफ दि रिपब्लिक घ्राफ श्रीलंका,

कीलम्बो (श्रीलंका)

नयी दिल्ली, जुलाई १८, १९७४

प्रिय प्रधानमंत्रीजी,

घ्रापने घ्राचार्य विनोबा भावे के बारे मे तो मुना ही होगी, वे महारमा गांधी के घनिष्ठ सहयोगी रहे हैं और उन्होंने घनना सारा जीवन हमारे गांधी की धार्मिक व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की उन्नति करने में लगाया है । बरसों तक वे एक राज्य से दूसरे राज्य मे सर्वोदय का संदेश लेकर पदयात्रा करते रहे हैं । सर्वोदय का धर्म है समाज के कमजोर से कमजोर अंग की सत्प और कष्टना के घ्राधार पर उन्नत बनाना । इन दिनों वे भारत के मध्य मे अपने आश्रम मे रहते हैं । उनके मार्गदर्शन मे सर्वोदय घ्रान्दोलन से सम्बन्धित महिला कार्यकर्ताओं का एक दल बारह वर्ष अर्थात् १९६६ से इस घ्रान्दोलन के सिद्धांतों का प्रचार करने के विचार से पद यात्रा कर रहा है । उन्होंने घ्रापने समुदाय का नाम 'लोकयात्रा' समुदाय रखा है और इसमें कुमारी हेमा मराठी, कुमारी देवी रिजवानी, कु० निर्मल बंध और कु० लक्ष्मी फूलन हैं । यह दल इस समय दक्षिण भारत तक जा पट्टेवा है और १६ अगस्त को उनकी इच्छा श्रीलंका की पदयात्रा करने की है । ये महिलाएं राजनीति से निरात घनसम्बन्धित हैं और उनका उद्देश्य घ्राचार्य विनोबा भावे के काम और घ्रादर्शों के अनुसार श्रीलंका की महिलाओं से भाईचारे का सम्बन्ध स्थापित करना होगा । ये इसी की कोशिश करेंगी ।

मुझे आशा है कि श्रीलंका की सरकार उन्हें अपनी परम्परागत सद्भावना देगी और उनका स्वागत करेगी ।

हादिक समादर सहित,
निनीत

हू० (इन्दिरा गांधी)

महामायाश्री श्रीमती तिरिमावो

घार० डायस भंडारनायके, एम० पी०

प्रधानमंत्री-मण्डल श्रीलंका, कीलम्बो (श्रीलंका)

इन्दिराजी से मिलो

इन्दिराजी से मिलो

गैहू पाच छपया किलो ।

बहू खाद्यमन्त्री तो राष्ट्रपति हो लिए
भ्रमन्त्री से उन्होंने हाथ ही धो लिए
तो शायद छोटे खाद्यमन्त्री नुसू करेंगे
मगर व्यापारी उनकी बंधो मुनंगे, उनजे बंधो डरेंगे
तो फिर खायें हम सब सडा गला 'मिलो' ।

गैहू पाच छपया किलो ।

इस 'सब' शब्द में कौन कौन आवे हैं

वे सब जो कम कमाते हैं और धूस नहीं खाते हैं

मगर इनकी संख्या तो बहुत ज्यादा है

इनके एक जुट हो जाने मे क्या बाधा है

इन्दिराजी ने कहा है जमागंधो की हिलाभो

यानी हलचल करो थोड़े लूट भी हिता ।

गैहू पाच छपया किलो ।

तो क्या हम घ्रान्दोलन करे जुलूस निकालें

हाथो मे प्लैकार्ड और पोस्टर सभालें

यह तो बिहार मे चल ही रहा है

मगर वहाँ तो इने प्रतिक्रियावाद कहा है

तो फिर घोठो को सो लो या चुन

बपडे की तरफु मिनी ।

गैहू पाच छपया किलो ।

— भवानीदास मिथ

पर : दो प्रधान मंत्रियों के पत्र

श्रीमती भंडारनायके का इन्दिराजी को उत्तर

प्राथम मिनिस्टर

श्रीलका

कोलम्बो, २६ जुलाई, १९७४

प्रधान मंत्री

श्रीलका

कोलम्बो, २६ जुलाई, १९७४

माई डियर प्राथम मिनिस्टर,

आई पीक यू फार युवर लेटर थाफ १८५ जुलाई, १९७४ इन्टिमेडिय टु मी दि अराइवल इन श्रीलका थाफ ए प्रुप थाफ वीमेन वर्कर्स थाफ दि सर्वोदय मूवमेन्ट। आई हैव मोटेड विम सम सरप्राइज, ईट विल प्रुप हैव अउरटेन्ज ए थाकिंग टूर फार टवेल्थ ईयर्स सिन्स १९६६, टु प्रोपेनेट दि 'प्रिन्सिपलस थाफ दि मूवमेन्ट। दिस काइन्ड थाफ डेविकेसन टु ए काज, परटीकुलरली, टु ए वर्दी काज साइड सर्वोदय, इज थाल टु रेयर इन दि वर्ल्ड टुडे, एन्ड, वी शॉल सरटेनली इ अवर बेन्ट टु इनस्पोर दैट दे हैव ए मूलकुल एड इन्ट्रिस्टिप टाइम इन श्रीलका।

आचार्य विनोबा भावे इज बेलगोन टु दि पीपुल थाफ श्रीलका, एड, वी अवरसेलेन्ज हैव एन एक्टिव सर्वोदय मूवमेन्ट डियर। देवरफोर इट विल बी ए प्रॉट प्लेजर टु हैव रोज फोर लेडीज कम जोबर टु श्रीलका

विषय नाम पसंतकल रिगाइस,

वोर्स सिनसिधरली,

साइड/— तिरिमावो भंडारनायके

प्राथम मिनिस्टर

हर एक्सलेन्सी मिसेज इन्दिरा गांधी

प्राथम मिनिस्टर थाफ इंडिया

न्यू देवली।

मेरी प्रिय प्रधानमंत्रीजी,

आपके १८ जुलाई, १९७४ के पत्र, जिसमें आपने सर्वोदय आन्दोलन की महिला कार्यकर्ताओं की एक टोली के श्रीलका जाने की मुझे सूचना दी है के लिए धन्यवाद। मुझे यह जानकर किन्हीं आश्चर्य हुआ कि आन्दोलन के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए इस टोली ने १९६६ से बारह साल की पदयात्रा प्रारम्भ की है। किसी उद्देश्य के लिए प्रौर विवेक सच से सर्वोदय जैसे उपयुक्त उद्देश्य के लिए इस प्रकार नो लगन धाज की दुनिया में बहुत दुर्लभ है और हम श्रीलका में इनका गमय उपयशी तथा दिलचस्प बनाने में, निश्चय ही, कुछ न उठा रहेंगे।

आचार्य विनोबा भावे की श्रीलका की जयता सुपरचित है और हमारे यहां भी एक सक्रिय सर्वोदय आन्दोलन है। इसलिए, इन चार महिलाओं का श्रीलका प्राथमक वडे ध्यान दे की जान होगी।

हादिक समादर सहित,

विनीत,

ह० (तिरिमावो भंडारनायके)

प्रधान मंत्री

महिन्यामकिशा श्रीमती इन्दिरा गांधी

प्रधानमंत्री भारत,

नयी दिल्ली।

— (दोनो मूल पत्र अंग्रेजी में हैं जो देवनागरी लिप्यान्तर प्रौर हिन्दी अनुवाद सहित धिये जा रहे हैं। प्रथमे अक में लोकयात्री दल से श्रीलका प्रवेद के सम्बन्ध में प्राप्त पत्र)

“गीता प्रवचन” और “गीताई” याद रखें,

बाबा को भूल जायें

आचार्य विनोबा भावे की ८० वीं वर्षगली यल ११ डिसेम्बर को सारे देश भर में मनायी गयी। इस निमित्त वर्षा के एक पत्रकार श्री जगन्नाथर मुकुम ने रिपोफजी से पत्रकार से उनके आशय में अट की प्रौर उनसे पूछा कि उनका व्यवसर के लिए भाषना क्या पदम है ? उन्होंने (बाबा ने) कहा कि “गीता-प्रवचन” प्रौर “गीताई” को लोग याद रखें और बाबा

को सब भूल जाय।

यह स्मरणोद्य है कि ‘गीता प्रवचन’ विनोबाजी द्वारा पूर्व-स्वामीय में गीता पर रिय गवे उनके प्रवचनों का संग्रह है जिम्मा अनुसार देव-विदेन की कई प्रमुख भाषाओं में हा पुका है और ‘गीताई’ सरल एवं सुबोध मराठी भाषा में पद्यानुवाद है। दोनो पुस्तकें विनोबाजी की साध्यात्मिक मौलिक इन्दिया है।



मंफोल गौलीकांड का एक नन्हा शहीद

वेगूसराय जिंजे में, वेगूसराय नगर से १७ किमीमीटर उत्तर, लगभग २२ हजार जनसंख्या का कच्चा मंफोल घनेक सरकारी कार्यालयों, विद्यालयों, मजिरी प्रत्यक्ष, डाक-तार एव दूरभाष केन्द्र तथा छोटे से बाजार जैनी शहरी मुविषाओं के साथ ही प्रामाणिक सम्पन्न, संस्कृति और सहकारी से विराट् हूमा अपने नाम को सम्बंध करता है।

मंफोल में छात्र तथा छात्राओं के अलग अलग माध्यमिक विद्यालय हैं और स्वनीय सिवाई मन्त्री रामचरित सिंह की स्मृति में स्थापित तथा भगवत्पुर विश्वविद्यालय से स्थापित तथा सन् १९६३ महाविद्यालय। इस वर्ष महाविद्यालय के इन्टर प्राईस के ७७ छात्रों की परीक्षा गणेशदत्त महाविद्यालय, वेगूसराय केन्द्र से देनी थी किन्तु १८ जुलाई से होनेवाली इस परीक्षा को अधिकांश छात्रों ने बहिष्कार किया। तब सरकार ने परीक्षा की नवी तिथि १६ अगस्त घोषित की।

इस बीच सी. पी. भाई के सक्रिय समर्थक प्रभारी प्राध्यापक ने (इस महाविद्यालय में प्राचार्य की नियुक्ति अभी तक न हो पाने से वे ही काम देखते हैं) छात्रों को अवैध एवं अर्न्तिक मुविषाओं के सम्बन्ध में दिखलाकर १० छात्रों से मंफोल में ही परीक्षादेख खोले जाने की मांग उठावायी और सी. पी. भाई तथा काई से नेताओं से मुलपति पर दबाव डलवाकर केन्द्र खुलवाने और इस केन्द्र के अधीशक स्वयं मन जाने में सफलता प्राप्त करनी। गणेशदत्त महाविद्यालय, वेगूसराय के एक व्याख्याता को उन्होंने 'इनविजिटेड' बनाया। व्याख्याता महोदय मंफोल के महाविद्यालय में कभी प्राणी निवास के सदस्य रहे थे और प्रभारी प्राध्यापक के 'यममन' माने जाते थे।

परीक्षाकेन्द्र खुलवाकर प्रभारी प्राध्यापक ने केन्द्र अधीशक बनने और सरकार के आने तकवादी दिखाने की अपनी महत्वाकांक्षा तो पूरी की, धनियों के उन साहज-जादी को सर्वेय और अर्न्तिक मुविषाएँ दकर जतोरुं कराने का मार्ग भी प्रकट कर दिया

जो पिछले कई वर्षों से असफल हो रहे थे। महाविद्यालय शांती निवास के सचिवसोपा विधायक श्री रामजीवनसिंह विधानसभा से त्यागपत्र देकर वेगूसराय जिंजा जनसमर्थ समिति के मंत्री बन चुके थे तथा परीक्षा के विरोधी थे। उनके घर में ही 'उनको नीचा दिखाने का सपना भी प्रभारी प्राध्यापक ने परीक्षा केन्द्र खुलवाकर पूरा कर लिया। अनुमंडल अधिकारी ने परीक्षा केन्द्र बनाये जाने का कड़ा विरोध किया किन्तु न तो उनकी धीर न ही जिलाधिकारी की मजूरा ली गयी और न शांती निवास को सहमत। निजीभयन और नियमित प्राचार्य की प्रति-वार्य शर्तें पूरी किये बगैर ही महाविद्यालय परीक्षाकेन्द्र बन गया।

यह केन्द्र 'इनविजिटेड' तथा 'इन्विजिटेड' ने छात्रों को बुला-बुलाकर तथा उनके घर पर जाकर फुलताना चालू किया, 'परीक्षा दे, जैसे चाहे बने दो, बापी-बिताब रखकर लिखो, बाहा तो उत्तर पुस्तिका घर ले जाओ, चाहो तो पंच एक दिन पहले आउट कर दिये जायेंगे। इतने सुभीके के साथ भी यदि इस साल परीक्षा न होगी तो फिर जिन्दगी में कभी पास न दोगे। लीडरी तो बाद में कर सकते हो।' अथिकांश छात्रों पर तो इन प्रलोभनों का कोई असर नहीं हुआ, लेकिन छात्र बाहिर लडके ही थे, कुछ तो इन आश्वासनों के जाल में फंकर परीक्षा देने को तैयार हो ही गये। केन्द्र अधीशक ने १४ अगस्त को प्राध्यापकों की बैठक भी बुलायी लेकिन अभिभावकों ने भी उसका बहिष्कार दिया।

स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त को छात्र-समर्थ समिति के प्राध्यापक पर स्थानीय छात्र-छात्राओं ने मुबह एक जोरदार जुलूस निकाल कर उतमें परीक्षा नवाकेन्द्र अधीशक विरोधी गारे लगाये। उसी दिन शाम को जिंजा जनसमर्थ समिति तथा छात्रसमर्थ समिति के तत्वावधान में प्रायोजित विधायनसभा में छात्रों, अभिभावकों तथा नागरिकों ने इस प्रकार की

अर्न्तिक परीक्षा की निन्दा का घोर विरोध किया, किन्तु सातिपूर्वक सत्याग्रह करने का निर्णय किया।

दूसरे दिन परीक्षा प्रातः १० बजे से पी लेकिन ७। बजे ही कोई ५० छात्राएँ पढ़ने गयी और परीक्षार्थी छात्रों ने परीक्षा के बहिष्कार का अनुरोध करने लगी। घटे भर बाद ही सी प्रार पी के जवानों को लेकर बी एस पी. आ पढ़ने और छात्राओं को हट जाने को कहा। सत्यपरन छात्राओं ने निर्भयतापूर्वक आगे बढ़कर जवानों को चन्दन रोली के टीके लगा दिये और नारे लगाये, "पुलिस हमारा भाई है, उससे नहीं लडाई है।" बहनों के इस ज्नेह के प्राये पुलिस के जवान भाई पीछे हट गये। छात्राएँ सत्याग्रही बनकर दीवार की भांति परीक्षा भवन के द्वार पर अड गयी और परीक्षा देने आनेवालों के पंरो से लिफ्टकर वागत चने ना अनुरोध करने लगीं। सम्पूर्ण इश्य प्रत्यक्ष मार्गिक हो उठा।

गाड़ों की बजे के लगभग कुछ छात्रों की दो जीपों पर नाटकीय ढंग से लामा गया और वे छात्राओं को डकैतों द्वारा दौड़कर परीक्षा भवन में फुस भये। ऐसा लगा कि उन्हें इसके लिए पूर्व प्रशिक्षण दिया गया था। इस घटना से उपस्थित छात्रों और नागरिकों में रोष फैल गया किन्तु वे शान्त बने रहे।

सवा दस बजे परीक्षा चालू होने की पटी बजी और परीक्षा केन्द्र के सामने की सड़क पर हजारों की सख्या में एकत्र छात्र तथा नागरिक इस अर्न्तिक परीक्षा का नमादा देवने लगे। गाड़ों दस बजे के कुछ मिनट बाद देखा गया कि परीक्षार्थी क्रापी-निदाये रज मिल रहे हैं और केन्द्र अधीशक दो-दोडकर उनको विताये पढ़ना रहे हैं। बन्दूक के बल पर जो जा रही इस सीग-जोरों को प्रतिहासक तरीके से रोवने के लिए विचार करने परीक्षा दो गो छात्र समीप ही स्थान जय मगला माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में बने गये। वे चर्चा कर ही रहे

कि हाथ समेट कर परीक्षाभवन में जायें, प्रार्थनिक कार्यरोंकें धीरे धीरे आपकी गिफतार करायें कि दसों बीच पुलिस घा गयी और लाठियों से छात्रों को छेड़ने लगी। देखते देखते भगदड़ मच गयी। इसी दौर में एक पुलिस अधिकारी ने परीक्षाभवन के द्वार पर सत्याग्रह कर रही छात्राओं में से एक बा हाथ पकड़कर लीचना चाजू किया और वहाँ सबको वहाँ से हट जाने को बहा। इस पर उपस्थित सभी लोगों को क्रोध धा गया। कुछ छात्रों ने इस पुलिस अधिकारी को समझाना चाजू किया ही था कि कहीं ये दो चार डेनें आकर धनानक वहाँ गिरे। इस पर पुलिस ने एकदम से लाठी चार्ज कर दिया। गांजि भग होने देर छात्राए वहाँ से हट गयी और छात्रों तथा पुलिस को लडाईं होने लगी। छात्र इंटरनलर फेंक रहे थे और उनका उत्तर पुलिस प्रभुगैस तथा गोसियों से देने लगी थी। यही नहीं, पुलिस ने आसपास स्थित गरीबों तथा मजदूरों के घर में घुसकर औरत धा डेनें जो भी सामन पडा उसकी भरपूर पिटाई की। हवाई-फायरो से बीच

१४ वर्षीय छात्र नित्यानन्द साहू को होने में गोली लगी थी। नन्हा सा नित्यानन्द गोली लगते ही तड़फकर जमीन पर गिरा और फिर नहीं उठ सका। पलक झपकते ही उसने दम तोड़ दिया। उसको मा धीरे बहून अपने घर के दरवाजे पर खड़ी 48 सारी हलचल देख रही थी। नित्यानन्द का गिरते देखा तो उसकी धीरे दौड़ी लेकिन 'बहादुर' पुलिस-वालों ने लाठियां मारकर उन्हे दूर रहने का विवश कर दिया। घब्र इस सारी बरतून पर परदा डालने के लिए पुलिस ने अश्रुगैस का गोला छोडा जिसस कि लोग वहाँ से हट जायें। बाद में नित्यानन्द की माने बताया कि पुलिस के पांच जवान उस छभागे मासूम छात्र को लाश की फेरकर खड़े हो गये थे और उनमें से एक ने ता शायद नित्यानन्द को जिवित समझकर उमके गले को अपने भारी भरकम बूटोवाले फेर से भरपूर जोर लगाकर दबाच दिया था।

पन्द्रह मिनट बाद पुलिस नित्यानन्द की लाश को जीप में रखकर परीक्षाभवन के भीतर ले गयी और वहाँ लापरवाही से जीप

धीरे धीरे जुलूस घागे बढता जा रहा था। जुलूस के भीत की आवाज पुलिस की गोसियों से कही अधिक प्रखर और हृदय प्राचक थी।

महाविद्यालय द्वार पर पुलिस ने १६ भगदड़ की उस खूनी दोपहर को १२ चक्र अश्रुगैस के गोले छोडे, तीन चक्र गोसियां चलायी तथा लाठी चार्ज तो न जाने कितनी बार किया। नन्हे छात्र नित्यानन्द की मोत तो घटनास्थल पर ही गयी थी, एक धीरे बालक की चमड़ी छीकते हुए गोली निकल गयी थी, जिन्दगी धीरे मोत के बीच परसला शायद एकाध मिनटोमोटर रहा था। लाठियों से घायल होनेवालों की सख्या तो दर्दनीय म थी।

शाम चार बजे, जब नित्यानन्द की मोत को धार घटे बीत चुके थे, खबर मिली कि लाश लावारिस की भांति बिना कपन के पडी है। इतना सुनते ही जिला जनमधर्म समिति के अध्यक्ष ब्रह्मदेव प्रसादसिंह, नित्यानन्द के दो मिशक शिवशकर प्रसाद धीरे रघुनाथ प्रसाद तथा नागरिकों के प्रतिनिधि रघुसुन्दर प्रसादसिंह गणोद छात्र के प्रतिभावक शांति

मौन की आवाज गोलियों से कहीं अधिक प्रखर थी

इंदो का चलना बन्द ही रही था कि रोने बारहू बने के आसपास डिटी कलेक्टर एक जीप में घागे और परीक्षा केन्द्र की तरफ जाने लगे। छात्र उन्हे तो पहचान नहीं पाये, जीप में बँडे पुलिस को देखकर पयराव करन लगे जिसस जीप का रोना टूट गया। तयागि पयराव बन्द हो गया धीरे कुछ देर में शांति हो गयी। जीप घागे बढकर महा-विद्यालय में प्रविष्ट होगयी।

डिटी कलेक्टर साहू और परीक्षाकेन्द्र में पहुँचे धीरे वहाँ न जाने क्या हुआ कि घबानक हो बारहू खडे पुलिस बजाने की गोली चलाने का प्रादेश धा गया। मान धीरे निस्तब्ध वातावरण में बारहू बने के कुछ मिनट पूर्व ही बन्दूकों की 'घाय'घाय गूँज उठी और उसकी प्रतिध्वनि सयाप्त होने के पूर्व ही मरिचामो के नीःपार की दिस हिला दने-वामी तेजे फावार घाने लगी। महाविद्यालय के फाटक से तीय-न्यासीन गज दूर स्थित घर में रहनवाले विमान के आडकीं पडा के

से उतारकर जमीन पर पटक दी। वहाँ परीक्षाकेन्द्र घघोषक बने प्रभारी प्राप्यापक से लाज की शिवास्त करने का नाटक किया गया। केन्द्र अधीक्षक महोदय ने तातों की टोकर से लाज को उलटा-पलटा धीरे वह दिया कि वे मृतक को नहीं पहचानते।

नित्यानन्द की इस दर्दनाक मोत ने नागरिकों के मोने में घाय लगा दी। वे संकटों की सख्या में कुछ भी कर गुजरने धीरे मरने-मारने पर उतारू हो गये थे। तयागि गांजि धीरे बहिंस के सकल पर दुजे धारोलनकारी छात्रों ने अपने इन पितामो, दादाभो धीरे भाईयो को किसी प्रकार समभाव धीरे एक सपर्य टल गया। इस काण्ड के बाद एक और ती जिपे के प्रमानसिक घाघिपारी मामले पर पोछा लगाने की दृष्टि से घटनास्थल दनेने पहुंचने लगे और दूसरी परना छात्रों का विहाल समूह हाथ समेटे तथा मुँह बन्द बिच भीन जुलूस बनाकर सबक पर धा गया— पुलिसवाल पटीपटी घाघों से दल रहे थे

साहू धीरे उनके सहयोगी विपिन बिहारीसिंह लाज को वचन देने के लिए चल पडे धीरे परीक्षा केन्द्र पहुँचे जहाँ लाज के पास विर-फिरा पुलिस घघोषक लडा था। ब्रह्मदरजी को दखते ही वह बरम पडा, अही से भडी से गालियो की बोझार घारभ बर दी धीरे पुलिस बजाना की सानासाही लहने के प्रादेश दिया कि, "इन जुडे को उरना दखला लगाकर टुक के पीडे बाप दो धीरे बेगुमराय तक घकीडते ले चलो।" ब्रह्मदेवजी ने घपनी बजानी घाजडी की लडाई के बहादुर सिपाही बनकर देख के लिए होमी। अरबों न उनके खिलक 'गुडिय बर-ड' निराशा धा और उनके ऊपर इनाम घोषित किया था, लेकिन जब उन्हे विरलवार किया गया था तो बडे सम्मानपूर्वक जेल ले जाया गया था। दोनो हाथ पीडे के पीडे कर रल्लों से बाध दिय जाने का जो प्रभुभव उन्हे सान समुद्र धार से घाय अरबों की सरकार ने नहीं कराया था वह उनकी और उन्हीं जैसे घपनी की बुद्धिनीयों

दिल्ली में सत्याग्रही जुलूस की तैयारी

गांधी जयंती, 2 दिसम्बर के दिन दिल्ली में राजभाट समीप से सत्याग्रहियों वा एक जुलूस निकलेगा जो खास खास सड़कों पर होता हुआ प्रधानमन्त्री के निवासी, सपदरजम रोड पहुँचेगा। प्रधानमंत्री घर उस दिन दिल्ली में ही हुई तो उन्हें या फिर उनके फार्मलिय को स्मरण पत्र दिया जायेगा। यह स्मरण पत्र बिहार आन्दोलन के बारे में होगा और बिहार के सत्याग्रही ही उसे लेकर आयेगे।

देश भर के सत्याग्रहियों से उस दिन दिल्ली पहुँचने का आग्रह जयप्रकाश नारायण ने किया है। जे० पी० से नई राज्यों के लोगों ने पिछले महीने में कहा है कि वे उनके यहां आकर बिहार जैसे आंदोलन को शुरूआत करें। लेकिन वे ऐसे सभी नियमनों को यह कह कर टालते रहे हैं, "बिहार को मैं बारडोली

सत्याग्रह मानता हूँ। बिहार आंदोलन सफल होगा तो उसका मसर पूरे देश पर पड़ेगा और अभी जो आंदोलन शुरू करने के लिए मुझे बुला रहे हैं खुद अपना आंदोलन शुरू करेंगे।"

दिल्ली में सत्याग्रहियों का मौन जुलूस यहाँ बिहार जैसा आंदोलन शुरू करने के लिए नहीं होगा। यह जुलूस बिहार आंदोलन के देश व्यापी समर्थन में होगा और दिल्ली में इसलिये निकलेगा कि जयप्रकाश ही नहीं, देश की हालत पर सोच-विचार करनेवाले नई शोध इसके लिए भारत सरकार को जिम्मेदार मानते हैं। इस जुलूस का नेतृत्व आचार्य कृपलानी करेंगे।

जुलूस में दिल्ली के अलावा हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, राजस्थान मध्यप्रदेश, बिहार आदि के सत्याग्रही भाग लेंगे। वैसे वे

पी. ने आत्माहन तो पूरे देश के सत्याग्रहियों से किया है लेकिन आघोजक इसे मुख्य रूप से उत्तर भारत के सत्याग्रहियों का जुलूस मानते हैं। जुलूस में उन्ही लोगों को शामिल किया जायेगा जो सामाजिक परिवर्तन के लिए अहिंसा की शक्ति में विश्वास करते हैं और मानते हैं कि सत्याग्रह से अश्रद्धाचार, महंगाई, बेरोजगारी और कुशासन जैसी बीमारियाँ दूर की जा सकती हैं। दिल्ली में लाजपत भवन में जनतंत्र समाज की ओर से सत्याग्रहियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

पिछले दिनों दिल्ली में बिहार आंदोलन के समर्थन के लिए नागरिक सचदं समिति गठित की गयी है जिसमें विद्यार्थियों, युवकों, मजदूरों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों, धर्मसंस्थाक समुदायों और श्रमिकों के प्रतिनिधि हैं।

सर्वोदय सम्मेलन मार्च तक स्थगित

कलकत्ता में नवम्बर, १९७४ के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया जा रहा २२वाँ सर्वोदय सम्मेलन परिचमी

बंगाल में खाद्यान्न के भोषण प्रभाव की स्थिति को देखते हुए चलने मार्च तक टाल देने का निर्णय सम्मेलन की

स्वागत समिति ने सर्वसम्मति से किया है। मार्च में होने वाले सम्मेलन की तिथियाँ बाद में घोषित होगी।

देश की तरुणों को आह्वान

जयप्रकाश नारायण

देश में उत्तरोत्तर बढ़ते हुए अश्रद्धाचार, घूसखोरी और सत्तालोलुपता से उत्पन्न लोकतंत्र के खतरो की ओर जनमानस का एवम् सतारुद्ध व्यक्तियों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु गुजरात में युवकों को सम्बोधित करते दिये गये तीन ऐतिहासिक भाषणों का हिन्दी रूपान्तरण। पृष्ठ सख्या ४८ मूल्य १४० मात्र।

दादा के शब्दों में दादा

दादाधर्मधिकारी

यह कृति कु० विमला ठकार की अत्यन्त स्नेहयुक्त भावना से लिखे गये गये दादा के पत्रों की मजूपा है। आन्दोलन के जल में डूबे हुए फिर भी कमल के समान उससे परे स्नेहयुक्त दादा के निराले व्यक्तित्व की भूँकी पुस्तक में मिलती है। पृष्ठ ७६ मूल्य ४०/ मात्र।

प्रभा स्मृति

सर्वोदय से बड़े ही आदर के साथ 'दीदी' शब्द से संबोधित प्रभावती बहन की पुण्य स्मृति में प्रकाशित ग्रंथ जो दुर्लभ चित्रों के ३२ पृष्ठों से युक्त है जिससे हमें अकालपुरुष गांधी की प्रेरणा, इतिहास पुरुष जे० पी० का जीवन सचदं और मौन साधिका प्रभावती बहन की पुण्य स्मृति मिलती है जो कभी भुलायी नहीं जा सकेगी। पृष्ठ २०८ मूल्य ३० रुपये।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी-१ (उ. प्र.)

अमरीका में 'पड़ोसी सभा' आन्दोलन

अमरीका में पिछले दस सालों में तरह-तरह के प्रयोग और प्रयास हो रहे हैं। अब यहाँ कुछ जगहों में लोग पड़ोसी-सभा सरकार स्थापित करने की कोशिश में हैं। 'सर्वोदय' के पाठकों को ग्राम-सभा, मुद्रव्वा सभा या पड़ोसी सभा का परिचय देना तो 'उल्टे बास बरेली' भेजना ही है। अमरीकी पड़ोसी सभाएं ग्रामीणों को बदले शहरो में ही शुरू हो रही हैं। लोग नीचे से सभा बना रहे हैं, और राजनीति में उनके एक समर्थक उसे ऊपर से कानूनी मान्यता भी दिलाने की कोशिश में लगे हैं। लेकिन यह सुस्पष्ट भ्रम है, एक ऐसे नाम की जिसे वे लोग बाकई काम मान रहे हैं, जिसे बीच में छोड़ा नहीं जा सकता। लोगों को उम्मीद है कि 'एक ऐसे समय में जब घर-परिवार टूट रहा है, नैतिकता में लगातार गिरावट आ रही है, पड़ोसी सभा टूटे हुए घरों को एक-दूसरे से जोड़ कर एक सुखद भागीदारी के भविष्य तक ले जा सकती है।'

अमरीका के कुछ बड़े शहरो में उपभोक्ता और वातावरण-दूषण जैसे प्रादोलनों के साथ 'पड़ोसी सभाओं' का प्रादोलन भी जोर पकड़ता जा रहा है। न्यूयॉर्क में कुछ पड़ोसी सभाओं के गठन ने श्रवणकारों में भी जगह पा ली है। कुछ राजनीतिज्ञों ने भी पड़ोसी सभाओं की हवा को पहचाना है, वे व्यवस्था के विकेन्द्रीकरण 'नागरिक सेवाओं के ज्यादा बेहतर बटवारे' के नारे उठाते लगे हैं। लेकिन जनता के पुने हुए प्रतिनिधियों में से केवल एक ने ही पड़ोसी सभाओं की धारणा को पहचाना है। धोरणों के सोनेटर मार्क हेडफोल्ड ने पिछले दिनों 'पड़ोसी सभा सरकार' विषयक पेश करने की योजना बनायी है। इस विषयक में उन्होंने सही धारणा में राजनैतिक और धार्मिक विकेन्द्रीकरण का बांचा रखते हुए पड़ोसी सभा सरकार की धारणा और सिद्धान्त को पकड़ने की कोशिश की है। उनकी यह कोशिश उन्हें उन धर्म नेताओं से अलग करती है जो इसे केवल प्रग-

सकीय विकेन्द्रीकरण की तरह ही देख रहे थे।

पड़ोसी सभा सरकार के विचार को इन शहरो के उदारवादी और उच्च मध्यम वर्ग के लोग कुछ धक्काहट और डर के साथ ले रहे हैं। उनके डर के कुछ कारण तो साफ ही हैं। वे लोग अब तक राजनैतिक सत्ता के बदले धार्मिक सत्ता को ज्यादा महत्व देते रहे हैं। उन की इस कोशिश ने उन्हें धमका बना दिया है। दरमसल वे राजनैतिक सत्ता के मामले में लगभग उतने ही पिछड़े हैं, जितने कि अमरीका के गरीब और अल्पमतवाले लोग हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि राजनैतिक सत्ता का लाभ इन बड़े लोगों को मिलता नहीं है। वे अपने पैसे, प्रतिष्ठा, सफाई, ऊंचे पदों पर बैठे दोस्तों के जरिये जरूरत पड़ने पर राजनैतिक सत्ता से फायदा पा लेते हैं। लेकिन पड़ोसी सभा प्रादोलन में छिपी यह बात कि किसी हिस्से पर लागू की जानेवाली योजना, बिना उस हिस्से के लोगों की सहमति के, ऊपर से लादी नहीं जानी चाहिए, इन सम्पन्न लोगों को प्रसह्य श्रुतिवादी लगती है। स्थानीय नेताओं की खटक लगने लगी है कि क्या बाकई ऐसी परिस्थिति भी जायेगी, जब केवल उनका फायदा हो सब कुछ नहीं माना जायेगा ?

उदारवादी नेताओं के भय की बुनियाद इस बात पर टिकी है कि क्या लोग मिल बैठ कर अपने और अपने भविष्य के बारे में सही फैसला लेने लायक हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर पड़ोसी सभा प्रादोलन के लोग अमरीकी सविधान को बनानेवाले धर्मसंस्कारों के शब्दों में देने हैं, 'जब आप अपनी व्यवस्था सुद नहीं बना सकते, तो दूसरों की व्यवस्था बनाने की अपनी क्षमता पर कैसे भरोसा कर लेते हैं ?'

अमरीका में पिछले दशकों में सत्ता तेजी से राजधानी वाशिंगटन की ओर निकुड़नी गयी है। राजधानी में विराजमान लोगों का विचार है कि 'देश का भला होना चाहिए,' और बाहिर है, वे मानते हैं कि 'देश का

भला' उन्हीं के फैसलों से हो सकता है। इस तरह बिल्कुल नीचे तक के बारे में फंसले बिलकुल ऊपर से ही निये जाते हैं (यह बात प्रायः सभी देशों की व्यवस्था पर लागू होती है।)

पड़ोसी सभा आदोलन अपनी शुरुआत पर ली है, फिर भी उसका जोरदार विरोध भी होने लगा है। उदारवादी नेताओं का कहना है कि इसके जोर पकड़ने से वर्तमान राजनैतिक पद्धति को काफी धक्का लगेगा। वे यह तो कबूल करते हैं कि व्यवस्था खराब हो गयी है, लेकिन उसका हल वे यही मानते हैं कि व्यवस्था में ग्राह्य बंटें खराब लोगों के बदले अच्छे लोगों की भेजना चाहिए। इसके विपरीत पड़ोसी सभा प्रादोलन वाले 'अच्छे घुरे' की बात वे मतलब मानते हैं, वे उस व्यवस्था को पलटना चाहते हैं जहाँ फंसले ऊपर से नीचे की ओर घाते हैं, चाहे वे 'अच्छे धारमियों' ने लिए हों, चाहे बुरे धारमियों ने।

इस प्रादोलन का विकास अमरीका में सन् ६० से ७० तक चले कई विस्म के प्रादोलनों से हुआ था। सन् ६६ में यह अपनी ठीक शकल में धार्या। उस साल तीनों सांजुर्मेन नामक एक शांतिवादी लेखक ने 'यूकलिन हाईस्ट्र नागरिक स्थानीय लोकतंत्र' की स्थापना की। इस संगठन ने 'यूनायिड' पत्रिका शुरू की, उनके माध्यम से पड़ोसी सभा विचार को फैलाया। सन् ७१ तक संगठन ने कई लोगों को अपनी ओर लीच लिया, इंग्लैंड के महाशौर लिंडे भी शामिल थे। फिर उसलानी महाशौर भी धोर से ही एक सम्मेलन बुलाया गया, किय था 'पड़ोसी सभा कैसे चलेगी?' सम्मेलन में पड़ोसी सभा के धारिधारों पर भी विस्तृत चर्चा हुई। इसी बीच वाशिंगटन में मिस्टन कोल्डर नामक एक लेखक ने 'पड़ोसी सभा' पर एक किताब भी लिख डाली, जो काफी लोकप्रिय साबित हुई। नोटवर ने बाद में वाशिंगटन में 'पड़ोसी सभा धार्यजन सस्थान' भी स्थापित किया। सस्थान की धोर से देश

ठीक कदम

इन्हीं-विशेषर भाद को समरीका के नये राष्ट्रपति फोर्ड ने पुराने राष्ट्रपति पर वाटरगेट कांड के अपराधों को माफ़ी दे दी। उन्होंने जो कारवायें किये हैं वे पूरी तरह मान-वीर्य हैं और इसलिए स्वागत के योग्य हैं।

उन्होंने जो कदम उसका आशय हैं अक्टूबर २०, १९६७ से ६ घण्टा १९७४ तक निवसन से जो गलतियाँ समरीका के समुद्र राज्य के प्रति हुईं, उन्हें क्षमा इसलिए किया जा रहा है कि धार इस मामले को लेकर निवसन प्रयास में प्रतीति गये तो बरसो तक फिर उनको उसी मानसिक चपट में से गुजरना पड़ेगा, जिसमें से उन्हें काफी बरसों से गुजरना पड़ रहा था। उन्होंने यह भी कहा कि निवसन के प्रलाभा उनके मारे परिवार को भी नष्टकर मानसिक पीड़ा में धपने दिन काटने पड़ेगे।

इसमें सन्देह नहीं कि कुछ लोगों को विकार करने या देखने में जो मजा धाना है, उन्हें इससे निरामा ही नहीं भू भ्रष्टाहट

के कई हिस्सों में लोगों ने घूम-घूमकर मुहल्लों में लोदी को पड़ोसी सभा बनाने के लिए प्रेरित किया। हाईस्टू की पड़ोसी सभा के काम करने के ठोके से इस बात का अन्दाजा लगाया जा सकता है कि बड़ा क्या हो रहा है, क्या-क्या आगे हो सकता है। मुहल्ले के शौचालय से बड़े हुए निवासियों के लिए सदस्यता के दरवाजे खुले हैं। वे सदस्य सभा में बहस कर सकते हैं, बोट भी दे सकते हैं। इन्दी के हाथ में फैसले लेने का अधिकार है। मुख्य सभा की एक योजना समिति भी है जो महीने में एक बार मिलती है। मुख्य सभा में पड़ोसी मुहल्ले की पड़ोसी सभा के सदस्य भी विशेष आग्रहों को तरह भाग ले सकते हैं। पड़ोसी सभा की सबसे बड़ी दिक्कत उसरी आर्थिक विपत्ति है क्योंकि धर्मों कर वीर्यद्वैतों से सब ऊपर जाता है। फिर भी उसके सदस्यों को उम्मीद है कि एक ऐसे समय में जब घर परिवार टूट रहा है, नैतिकता में सघाराने गिरावट आ रही है, पड़ोसी सभा टूटे हुए घरों को एक दूसरे से जोड़कर एक सुखदा भागीदारी के भविष्य तक ले जा सकती है।

तक हुई होगी। मगर हम याद दलना ही दिलाना चाहते हैं कि यह वाटरगेट खुल गया था और समरीका के स्वतंत्र वानावरण में इसकी हर तरह खोजी जा सके, लगभग सभी देशों के शासक कम ज्यादा धरने प्रति-द्विगियो से निवटने के लिए बँसे ही दौबेच काम में लाते हैं, जैसे निवसन ने अपनाये थे। उनके देश में समाचार-पत्र, रेडियो, लिखक और आम आदमी को जँसा होता है वँसा कहने की आजादी है, धर्य देशों के बारे में दतने ही प्रसदिग्ध भाव से यह नहीं कहा जा सकता।

क्षमा समर्थ का भूपण है। श्री फोर्ड ने मानवीय मूल्य की रक्षा के साथ इस काम से अपनी निमंय वृत्ति का परिचय भी दिया है। इस घडो में दूसरे देश छोटाकाणी करने के बजाय धरने-धरने गरेबा में मुहल्ले मानकर देखें।

नाममा आयात के लाइसेंस का

कथित बाइस सदस्य-सदस्यों के हस्ताक्षर युक्त सिकाफिच के बन पर नियमित्युची में टकी हुई व्यापारिक पेटियो को कुछ आयात लाइसेंस दिये गये। उन पर सभाकार पत्रों और विरोधत सदस्य में विपक्ष में जो कठोर और हर हालत में सही धर्य प्रपनामा है, उसे सत्ताकद दल पठने के बीसियों माधलो की तरह सहज टाल पायेगा या नहीं। इसमें लोच शका कर रहे हैं।

हमारी समर्थ में ऐसी शका निराधार है। विद्युत् कुछ बरसों में अष्टाधार, गबन, गोली-कांड, पक्षपात, मनमाने चुनाव, मनमाने ढंग से बहुजन और प्रध्यादेशों के बन पर सविधान में परिवर्तन आदि एक से बढ़कर एक ऐसी बरनादा होनी रही है जिनको यदि शारीकी से छाया-बीना जाता तो एक-एक छोटा बड़ा वाटरगेट कांड लिख होता। मगर हमारी गुणाप्रवृत्ति सरकार या उसके मूल-संचालन करनेवाली शक्ति से उन्हें जो पैदा किया कि जना के मन में से वे सब बाजें धो-पार बार भूमकर साज हो गयीं। इन बार भी देसा ही कुछ होगा—मन्यथा कुछ अभी होनेवाला नहीं है। जो तो जिन्होंने इस चपट का अबाकोड

किया है या करना चाहते हैं, हमारी सहानु-भूति उनके साथ है।

सरकार खुश है

भारत सरकार खुश है कि पिछले चार महीने में इसी अवधि के मुकाबले में भारत में २६ करोड रुपये मूल्य की वस्तुओं का अधिक निर्यात किया है। किसी को कुछ देख-कर हमें भी खुश होना चाहिए, हम होना चाह रहे थे कि दो बातों की ओर हमारा ध्यान गया। एक तो यह कि पिछले चार महीने में प्रभार २६ करोड रुपये का निर्यात बढ़ा है तो आयात भी बढ़ा है और उसका मूल्य है ३० करोड। यानी आयात ४४५ प्रतिशत बढ़ा है और निर्यात ५३ प्रतिशत। इस प्रकार व्यापारिक समुल्लेख में ७६ करोड का जो अंतर घाटे की तरफ पड़ा है, इससे हम भारत सरकार की प्रयत्न वृत्ति पर हद नहीं रह सके। दूसरी बात जिसकी ओर हमारा ध्यान गया कि सबसे अधिक निर्यात की कमाई उस चीनी के बल पर हुई है जो हमारे देस-देसतें डेड रुपये किना से इसी अवधि में देस के गरीब प्रादमी को साठे छ रुपये कितो मिल रही है। बोलचाल में इसे 'घर-फूँक तमासा' कहते हैं।

क्या प्राप्ता करें

५ सितंबर को गया जिले के कुर्चा स्थान में महाराज के विरोध में जुमूय विचारवागया। जुलूस का नेतृत्व शोषित दल के भी अवदेव प्रसाद कर रहे थे। जुमूय शांत था। मगर भायद भ्रगत था क्योंकि पुलिस ने गोली चलायी और तो भी लीच जुलूस के नेता जगदेव प्रसाद पर और उनकी मृत्यु हो गयी।

शोर मचा। शोर को दवाने का एक तरीका साधा गया कि भारतीकी कम्युनिस्ट दल दिवंगन नेता के प्रति अद्धारभिसया देने के लिए शोक सभा करे। स्पष्ट है कि जनता को इस बर्गों पर कोष धारा। लोगों ने उस अद्धारभिस सभा को होना नहीं दिया—बहुत मुनने कोई नहीं गया, सभा न होने देने के लिए गया और यह तब किया गया कि १३ सितंबर को दाख समर्थ समिति जगदेवप्रसाद दिवंगन मनोवैधी। हम प्राप्ता करते हैं कि 'उपद्रवी' धाराओं की ओर किसी गहरी का दिवंगन मनाने पर धाम्य नहीं किया जायेगा।